Fatawa Rizvia With references and translation of Arabic phrases Imam Ahmed Raza Barelvi (May his secret be sanctified) 12 Raza Foundation Jamia Nizamia Rizvia Inside Lohari Gate Lahore, 8 Pakistan (54000)

फतावा रिज़विया तखरीज़ (संदर्भ) और अरबी इबारतों के अनुवाद के साथ इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (क़ुद्दुस सिर्रुहु) 12 रज़ा फाउंडेशन जामिया निज़ामिया रिज़विया अंदरून लोहारी दरवाज़ा लाहौर, 8 पाकिस्तान (54000)

فتاویٰ رضویہ مع تخریج و ترجمہ عربی عبارات امام احمد رضا بریلوی قدس سرہ ۱۲ رضا

فاؤنڈیشن جامعہ نظامیہ رضویہ اندرون لوہاری دروازہ لاہور، ۸ پاکستان (۵۴۰۰۰)

Fatawa Razawiyya Volume Twelve

Contents Summary Index ..... 4 Foreword ..... 5 List of Subjects ..... 9 List of Subsidiary Issues ..... 67 Chapter on Dower (Mahr) ..... 101 Treatise ..... 101 Al-Basat al-Musajjal fi Imtina' al-Zawja ba'da al-Waty lil-Mu'ajjal 1305 AH ..... 101 (The wife can withhold herself to receive the prompt dower even after consummation; an extensive write-up and decision regarding Mr. Mahmood's card on this matter) ..... 101 Chapter on Trousseau (Jahiz) ..... 201 (Statement on dowry/ trousseau) ..... 201 First Section ..... 211 Second Section ..... 227 Chapter on Marriage of a Disbeliever ..... 261 (Statement on the marriage of a disbeliever) ..... 261 Chapter on Marital Relations (Mu'ashara) ..... 267 (Statement on mutual behavior between spouses) ..... 267 Chapter on Turn-taking (Qasm) ..... 273 (Fixing turns among wives and maintaining equality in rights) ..... 273 Chapter on Second Marriage ..... 287 Treatise ..... 287 Ataib al-Tahani fi al-Nikah al-Thani 1312 AH ..... 287 (Detailed rules for the second marriage of a widow) ..... 287 Book of Divorce (Kitab al-Talaq) 321

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

विषय-सूची संक्षिप्त सूची 4
प्रस्तावना ..... 5 विषयों की
सूची ..... 9 गौण मुद्दों की
सूची ..... 67 मेहर का अध्याय (बाबुल
मेहर) ..... 101 रिसाला (लघु
ग्रंथ) ..... 101 अल-बसतुल
मुसज्जल फ़ी इम्तिनाइज़ ज़ौजा बादुल वत्य लिल मुअज्ज्ल १३०५ हिजरी ..... 101 (पत्नी
संभोग के बाद भी शीघ्र देय मेहर प्राप्त करने के लिए स्वयं को रोक सकती है, इस बारे में विस्तृत
लेखन और मिस्टर महमूद के कार्ड का फैसला) ..... 101 दहेज का अध्याय (बाबुल
जहेज़) ..... 201 (दहेज का
बयान) ..... 201 पहला
खंड ..... 211 दूसरा
खंड ..... 227 काफ़िर के निकाह का
अध्याय ..... 261 (काफ़िर के निकाह का
बयान) ..... 261 पारस्परिक व्यवहार का अध्याय
(बाबुल मुआशरत) ..... 267 (दंपति के बीच
आपसी व्यवहार का बयान) ..... 267 बारी तय करने
का अध्याय (बाबुल कस्म) 273
(पत्नियों के बीच बारी तय करना और अधिकारों में समानता बनाए रखना) 273
दूसरे विवाह का अध्याय (बाबुल निकाहिस
सानी) 287
रिसाला ..... 287 अताइबुत तहानी
फ़िल निकाहिस सानी १३१२ हिजरी ..... 287 (विधवा के दूसरे
विवाह के विस्तृत नियम) ..... 287 तलाक की किताब
(किताबुत तलाक) 321

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدھم

Contents اجمالی فہرست .....

4 پیش لفظ ..... 5 فہرست

مضامین ..... 9 فہرست ضمنی

مسائل ..... 67 باب

المهر 101

رساله ..... 101 البسط

المسجل في امتناع الزوجة بعد الوطی للمعجل ۱۳۰۵ھ ..... 101 (زوجہ بعد وطی بھی مہر معجل لینے کے لئے اپنے نفس کو روک سکتی ہے اس بارے میں کشادہ تحریر اور فیصلہ مسٹر محمود کارڈ) ..... 101 باب

الجهاز ..... 201 (جہیز کا بیان) ..... 201 فصل

اوّل ..... 211 فصل

دوم ..... 227 باب نکاح

الکافر ..... 261 (کافر کے نکاح کا بیان) ..... 261 باب

المعاشرة ..... 267 (زوجین کے باہمی برتاؤ کا بیان) ..... 267 باب

القسم ..... 273 (بیویوں میں باری

مقرر کرنا اور حقوق میں مساوات رکھنا) ..... 273 باب النکاح
الثانی 287
رساله ..... 287 اطائب التهانی
فی النکاح الثانی ۱۳۱۲ھ ..... 287 (بیوہ کے نکاح ثانی
کے مفصل احکام) ..... 287 کتاب
الطلاق 321

Fatawa-e-Razvia Volume Twelve

321 ..... (Statement on Divorce) 513 ..... Chapter of Al-Kinaya (Metaphorical Expressions) 513 ..... (Statement on Kinaya Divorce) 513 ..... Raḥīq al-Iḥqāq fī Kalimāt al-Ṭalāq 1311 AH 513 ..... (Regarding the number of words for irrevocable divorce and their details) 637 ..... Chapter of Delegation of Divorce 637 ..... (Statement on the Delegation of Divorce) 657 ..... Sources and References 681 ..... Appendix 681 ..... Sources and References

www.dawateislami.net I.T. Majlis of Dawateislami

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द बारहवीं

321 ..... (तलाक का बयान) 513 ..... बाब अल-किनाया (तलाक के प्रतीकात्मक शब्दों का अध्याय) 513 ..... (तलाक-ए-किनाया का बयान) 513 ..... रहीक़-उल-इहक़ाक़ फ़ी कलिमात-उत-तलाक 1311 हिजरी 513 ..... (तलाक-ए-बाइन के शब्दों की संख्या और उनके विवरण के बयान में) 637 ..... बाब तफ्वीज़-ए-तलाक (तलाक सौंपने का अध्याय) 637 ..... (तफ्वीज़-ए-तलाक का बयान) 657 ..... स्रोत और संदर्भ 681 ..... परिशिष्ट 681 ..... स्रोत और संदर्भ

فتاوٰی رضویہ جلددوازدہم

321 ..... (طلاق کا بیان) 513 ..... باب الکنایۃ 513 ..... (طلاق کنایہ کا بیان) 513 ..... رحیق الاحقاق فی کلمات الطلاق ۱۳۱۱ھ 513 ..... (طلاق بائن کے الفاظ کی تعداد اور ان کی تفصیل کے بیان میں) 637 ..... باب تفویض الطلاق 637 ..... (تفویض طلاق کا بیان) 657 ..... مآخذومراجع 681 ..... ضمیمہ 681 ..... مآخذومراجع

Volume Twelfth | Fatawa Razawiyya

Fatawa Razawiyya With extraction and translation of Arabic passages

Imam Ahmad Raza Barelvi (may his secret be sanctified) Raza Foundation Jamia Nizamia Razawiyya

Inside Lohari Gate Lahore Number 8 Pakistan (54000)

www.dawateislami.net I.T. Majlis of Dawateislami

Page 1 of 688

जिल्द बारहवीं | फतावा रजविया

फतावा रजविया अरबी इबारतों की तख़रीज और तर्जुमे के साथ

इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (कुद्दिस सिर्रहु) रज़ा फाउंडेशन जामिया निज़ामिया रजविया

अंदरून लोहारी दरवाज़ा लाहौर नंबर 8 पाकिस्तान (54000)

www.dawateislami.net आई.टी. मज्लिस ए दावते इस्लामी

पृष्ठ 688 में से 1

جلد دوازدہم | فتاویٰ رضویہ

فتاویٰ رضویہ مع تخریج و ترجمہ عربی عبارات

امام احمد رضا بریلوی قدس سرہ رضا فاؤنڈیشن جامعہ نظامیہ رضویہ

اندرون لوہاری دروازہ لاہور نمبر ۸ پاکستان (۵۴۰۰۰)

www.dawateislami.net آئی ٹی مجلس دعوت اسلامی

صفحہ ۱ از ۶۸۸

Fatawa Razawiyya Volume Twelve

“Whomever Allah intends good for, He gives him understanding of the religion.” (Hadith) AL-ATAYA AL-NABAWIA FI AL-FATAWA AL-RADAWIA With citation and translation of Arabic phrases

Volume Twelve A magnificent fourteenth-century jurisprudential encyclopedia containing rare research. Imam Ahmad Raza Barelvi (May his soul be sanctified) 1272 AH ——————— 1340 AH 1856 AD ——————— 1921 AD

Available at: * Raza Foundation, Jamia Nizamia Razawiyya, Inside Lohari Gate, Lahore 0300/9415300 ———— 7765772 * Maktaba Ahle-Sunnat, Jamia Nizamia Razawiyya, Inside Lohari Gate, Lahore * Zia-ul-Quran Publications, Ganj Bakhsh Road, Lahore * Shabbir Brothers, 40-B, Urdu Bazaar, Lahore

Page 2 of 688

फ़तावा रज़विया बारहवाँ खंड

“जिसके साथ अल्लाह भलाई का इरादा करता है, उसे दीन (धर्म) की समझ प्रदान करता है।” (हदीस) अल-अताया अल-नबविया फ़िल फ़तावा अर-रज़विया अरबी वाक्यांशों के संदर्भ और अनुवाद के साथ

बारहवाँ खंड चौदहवीं शताब्दी का एक भव्य न्यायशास्त्रीय (फ़िक़्ही) विश्वकोश जिसमें दुर्लभ शोध शामिल हैं। इमाम अहमद रज़ा बरेलवी (अल्लाह उनकी रूह को मुक़द्दस करे) 1272 हिजरी ——————— 1340 हिजरी 1856 ईस्वी ——————— 1921 ईस्वी

प्राप्ति के पते: * रज़ा फ़ाउंडेशन, जामिया निज़ामिया रज़विया, अंदरून लोहारी दरवाज़ा, लाहौर 0300/9415300 ——— 7765772 * मकतबा अहले-सुन्नत, जामिया निज़ामिया रज़विया, अंदरून लोहारी दरवाज़ा, लाहौर * ज़िया-उल-क़ुरान पब्लिकेशन्स, गंज बख़्श रोड, लाहौर * शब्बीर ब्रदर्स, 40-बी, उर्दू बाज़ार, लाहौर

पृष्ठ 2/688

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

مَنْ یُرِدِ اللّٰہُ بِہٖ خَیْرًا یُفَقِّھْہُ فِي الدِّینِ (الحدیث) الْعَطَایَا النَّبَوِیَّۃِ فِي الْفَتَاوَی الرَّضَوِیَّۃِ مع تخریج و ترجمہ عربی عبارات

جلد دوازدہم تحقیقاتِ نادرہ پر مشتمل چودہویں صدی کا عظیم الشان فقہی انسائیکلوپیڈیا امام احمد رضا بریلوی قدس سرہ العزیز ۱۲۷۲ھ ——————— ۱۳۴۰ھ ۱۸۵۶ء ——————— ۱۹۲۱ء

ملنے کے پتے * رضا فاؤنڈیشن، جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور 0300/9415300 ——— 7765772 * مکتبہ اہلسنت، جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور * ضیاء القرآن پبلیکیشنز، گنج بخش روڈ، لاہور * شبیر برادرز، ۴۰ بی، اردو بازار، لاہور

صفحہ 2 از 688

Fatawa Razawiyya Volume Twelve

Name of the Book: Fatawa Razawiyya Volume Twelve Author: Shaykh-ul-Islam Imam Ahmad Raza Qadri Barelvi (Mercy of Allah be upon him) Translation of Arabic phrases: Hafiz Abdul Sattar Saeedi, Director of Education, Jamia Nizamia Razawiyya, Lahore Foreword: Hafiz Abdul Sattar Saeedi, Director of Education, Jamia Nizamia Razawiyya, Lahore Arrangement and Index: Hafiz Abdul Sattar Saeedi, Director of Education, Jamia Nizamia Razawiyya, Lahore Research and Correction: Maulana Nazir Ahmad Saeedi, Maulana Muhammad Abbas Razawi Under the supervision and patronage of: Maulana Mufti Muhammad Abdul Qayyum Hazarvi, Secretary General of Tanzeem-ul-Madaris Ahl-e-Sunnat, Pakistan Calligraphy: Muhammad Sharif Gul, Katrial Kalan (Gujranwala) Pasting: ..... Pages: 688 Publication: Rajab-ul-Murajab 1418 AH / May 1997 AD Printing Press: ..... Publisher: Raza Foundation, Jamia Nizamia Razawiyya, inside Lohari Gate, Lahore Price: ..... Rupees

Available at: - Maktaba Qadriya, Jamia Nizamia Razawiyya, inside Lohari Gate, Lahore - Maktaba Tanzeem-ul-Madaris, Jamia Nizamia Razawiyya, inside Lohari Gate, Lahore - Maktaba Ziya-iya, Bohar Bazar, Rawalpindi - Zia-ul-Quran Publications, Ganj Bakhsh Road, Lahore

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

किताब का नाम: फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं लेखक: शैख़-उल-इस्लाम इमाम अहमद रज़ा क़ादरी बरेलवी (रहमतुल्लाह अलैह) अरबी इबारत का अनुवाद: हाफ़िज़ अब्दुल सत्तार सईदी, नाज़िम-ए-तालीमयात जामिया निज़ामिया रज़विया, लाहौर प्रस्तावना: हाफ़िज़ अब्दुल सत्तार सईदी, नाज़िम-ए-तालीमयात जामिया निज़ामिया रज़विया, लाहौर व्यवस्था और सूची: हाफ़िज़ अब्दुल सत्तार सईदी, नाज़िम-ए-तालीमयात जामिया निज़ामिया रज़विया, लाहौर शोध और संशोधन: मौलाना नज़ीर अहमद सईदी, मौलाना मुहम्मद अब्बास रज़वी प्रबंधन और संरक्षण में: मौलाना मुफ्ती मुहम्मद अब्दुल क़य्यूम हज़ारवी, नाज़िम-ए-आला तंज़ीम-उल-मदारिस अहल-ए-सुन्नत, पाकिस्तान लेखन: मुहम्मद शरीफ गुल, कट्रियाल कलां (गुजरांवाला) पेस्टिंग: ..... पृष्ठ: ६८८ प्रकाशन: रजब-उल-मुरज्जब १४१८ हिजरी / मई १९९७ ईस्वी प्रेस: ..... प्रकाशक: रज़ा फाउंडेशन जामिया निज़ामिया रज़विया, अंदरून लोहारी दरवाज़ा, लाहौर कीमत: ..... रुपये

मिलने के पते: - मकतबा क़ादिरिया, जामिया निज़ामिया रज़विया, अंदरून लोहारी दरवाज़ा, लाहौर - मकतबा तंज़ीम-उल-मदारिस, जामिया निज़ामिया रज़विया, अंदरून लोहारी दरवाज़ा, लाहौर - मकतबा ज़ियाइया, बोहड़ बाज़ार, रावलपिंडी - ज़िया-उल-क़ुरान पब्लिकेशंस, गंज बख्श रोड, लाहौर

पेज 3 ऑफ़ 688

فتاوی رضویہ جلد دواز دہم

نام کتاب: فتاوی رضویہ جلد دواز دہم تصنیف: شیخ الاسلام امام احمد رضا قادری بریلوی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ ترجمہ عربی عبارات: حافظ عبدالستار سعیدی، ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ رضویہ، لاہور پیش لفظ: حافظ عبدالستار سعیدی، ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ رضویہ، لاہور ترتیب و فہرست: حافظ عبدالستار سعیدی، ناظم تعلیمات جامعہ نظامیہ رضویہ، لاہور تخریج و تصحیح: مولانا نذیر احمد سعیدی، مولانا محمد عباس رضوی با ہتمام و سرپرستی: مولانا مفتی محمد عبدالقیوم ہزاروی ناظم اعلیٰ تنظیم المدارس اہلسنت، پاکستان کتابت: محمد شریف گل، کٹریال کلاں (گوجرانوالا) پیسٹنگ: ..... صفحات: ۶۸۸ اشاعت: رجب المرجب ۱۴۱۸ھ / مئی ۱۹۹۷ء مطبع: ..... ناشر: رضا فاؤنڈیشن جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور قیمت: ..... روپے

ملنے کے پتے - مکتبہ قادریہ، جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور - مکتبہ تنظیم المدارس، جامعہ نظامیہ رضویہ، اندرون لوہاری دروازہ، لاہور - مکتبہ ضیائیہ، بوہڑ بازار، راولپنڈی - ضیاء القرآن پبلیکیشنز، گنج بخش روڈ، لاہور

Fatawa Razawiya Volume 12

Summary Table of Contents

Preface.....5 Chapter on Dowry (Mahr).....101 Chapter on Trousseau (Jahiz).....201 Chapter on Marriage of Non-Believers.....261 Chapter on Conjugal Life.....267 Chapter on Equality (among wives).....271 Chapter on Second Marriage.....287 Book of Divorce.....321 Chapter on Allusions (Kinaya).....513 Chapter on Delegation of Divorce.....637 Sources and References.....657

List of Treatises o Al-Bast al-Musajjal.....101 o Ata'ib al-Tahani.....287 o Rahiq al-Ihqaq.....513

www.dawateislami.net Majlis of Dawateislami Page 4 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

संक्षिप्त विषय-सूची

प्रस्तावना.....५ महर का
अध्याय.....१०१ दहेज का
अध्याय.....२०१ काफ़िर के निकाह का
अध्याय.....२६१ सामाजिक जीवन (मुआशरत) का
अध्याय.....२६७ पत्नियों के बीच समानता का
अध्याय.....२७१ दूसरे निकाह का
अध्याय.....२८७ तलाक की
पुस्तक.....३२१ तलाक के सांकेतिक शब्दों (किनाया)
का अध्याय.....५१३ तलाक के अधिकार सौंपने (तफ़वीज़) का
अध्याय.....६३७ स्रोत और
संदर्भ.....६५७

लेखों की सूची ० अल-बस्त अल-मुसज्जल.....१०१ ० अत़ाइब
अत-तहानी.....२८७ ० रहीक़ अल-
इहक़ाक़.....५१३

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

اجمالی فہرست

پیش لفظ ..... ۵ باب

المہر ..... ۱۰۱ باب

الجہاز ..... ۲۰۱ باب نکاح

الکافر ..... ۲۶۱ باب

المعاشرہ ..... ۲۶۷ باب

القسم ..... ۲۷۱ باب النکاح

الثانی ..... ۲۸۷ کتاب

الطلاق ..... ۳۲۱ باب

الکنایہ ..... ۵۱۳ باب تفویض

الطلاق ..... ۶۳۷ مآخذ و

مراجع ۶۵۷

فہرست رسائل o البسط المسجل ..... ۱۰۱ o

اطائب التہانی ..... ۲۸۷ o رحیق

الاحقاق ۵۱۳

Volume Twelve Fatawa Ridawiyya

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful

Preface

All praise is due to Allah. The institution named "Raza Foundation," established in March 1988 at Dar-ul-Uloom Jamia Ridawiya Lahore to present the scholarly treasures and jurisprudential stores of Ala Hazrat, Imam-ul-Muslimeen Maulana Shah Ahmad Raza Khan Fazil-e-Barelvi (may Allah have mercy on him) in a modern style according to the requirements of the present age, is moving towards its goal with great speed, completing the evolutionary stages of the proposed plan. Beautiful, voluminous volumes consisting of Kitab al-Taharah (Book of Purification), Kitab al-Salat (Book of Prayer), Kitab al-Jana'iz (Book of Funerals), Kitab al-Zakat (Book of Alms), Kitab al-Sawm (Book of Fasting), Kitab al-Hajj (Book of Pilgrimage), and Kitab al-Nikah (Book of Marriage) have reached you. Most of the references in Kitab al-Nikah have been extracted by the noble scholar, expert in the art of Asma al-Rijal (biographies of narrators) and debate, Hazrat Allama Maulana Muhammad Abbas Ridawi, resident of Gujranwala, for which the members of the institution are grateful to him. Now, by the grace of Allah Almighty and the kindness of His Noble Messenger (peace and blessings of Allah be upon him), the twelfth volume is being presented.

The details of the volumes published so far, in terms of years of publication and total pages, are as follows: First Volume: Sha'ban al-Mu'azzam 1410 AH / March 1990 AD, Pages: 838 Second Volume: Rabi' al-Thani 1412 AH / November 1991 AD, Pages: 710 Third Volume: Sha'ban al-Mu'azzam 1412 AH / February 1992 AD, Pages: 756 Fourth Volume: Rajab al-Murajjab 1413 AH / January 1993 AD, Pages: 760

खंड बारह फ़तावा रज़विया

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम (अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत दयालु और कृपाशील है)

प्रस्तावना (पेश लफ्ज़)

अल्हम्दुलिल्लाह (सभी प्रशंसा अल्लाह के लिए है)। आला हज़रत इमाम-उल-मुस्लिमीन मौलाना शाह अहमद रज़ा खाँ फाज़िल-ए-बरेलवी (रहमतुल्लाहि अलैहि) के ज्ञान के खजानों और न्यायशास्त्र (फिक्ह) के भंडार को आधुनिक शैली में वर्तमान युग की आवश्यकताओं के अनुसार सामने लाने के लिए दारुल उलूम जामिया रज़विया लाहौर में "रज़ा फाउंडेशन" के नाम से जो संस्थान मार्च 1988 में स्थापित किया गया था, वह प्रस्तावित योजना के विकास के चरणों को पूरा करते हुए अत्यंत तीव्र गति के साथ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है। किताबुत तहारत (पवित्रता की पुस्तक), किताबुस सलात (नमाज़ की पुस्तक), किताबुल जनाइज़ (जनाज़े की पुस्तक), किताबुज़ ज़कात (ज़कात की पुस्तक), किताबुस सौम (रोज़े की पुस्तक), किताबुल हज (हज की पुस्तक) और किताबुन निकाह (निकाह की पुस्तक) पर आधारित सुंदर और विशाल खंड आप तक पहुँच चुके हैं। किताबुन निकाह के अधिकांश संदर्भों का शोध (तख़रीज) महान विद्वान, अस्मा-उर-रिजाल (वर्णनकर्ताओं की जीवनी) और वाद-विवाद कला के विशेषज्ञ हज़रत अल्लामा मौलाना मुहम्मद अब्बास रज़वी, निवासी गुजरांवाला ने किया है, जिसके लिए संस्थान के सदस्य उनके आभारी हैं। अब अल्लाह तआला की कृपा और उसके उदार रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की दया से बारहवां खंड प्रस्तुत किया जा रहा है।

अब तक प्रकाशित खंडों का विवरण प्रकाशन वर्ष और कुल पृष्ठों के आधार पर निम्नानुसार है: पहला खंड: शाबान अल-मुअज़्ज़म 1410 हिजरी / मार्च 1990 ईस्वी, पृष्ठ: 838 दूसरा खंड: रबी-उल-सानी 1412 हिजरी / नवंबर 1991 ईस्वी, पृष्ठ: 710 तीसरा खंड: शाबान अल-मुअज़्ज़म 1412 हिजरी / फरवरी 1992 ईस्वी, पृष्ठ: 756 चौथा खंड: रजब अल-मुरज्जब 1413 हिजरी / जनवरी 1993 ईस्वी, पृष्ठ: 760

पृष्ठ 688 में से 5

جلد دوازدہم فتاویٰ رضویہ

بسم اللہ الرحمن الرحیم

پیش لفظ

الحمد للہ اعلیٰ حضرت امام المسلمین مولانا شاہ احمد رضا خان فاضل بریلوی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کے خزائن علمیہ و ذخائر فقہیہ کو جدید انداز میں عصرِ حاضر کے تقاضوں کے مطابق منظرِ عام پر لانے کے لئے دار العلوم جامعہ رضویہ لاہور میں "رضا فاؤنڈیشن" کے نام سے جو ادارہ مارچ ۱۹۸۸ء میں قائم ہوا تھا وہ انتہائی برق رفتاری کے ساتھ مجوزہ منصوبہ کے ارتقائی مراحل کو طے کرتے ہوئے اپنے ہدف کی طرف بڑھ رہا ہے۔ کتاب الطہارۃ، کتاب الصلوٰۃ، کتاب الجنائز، کتاب الزکوٰۃ، کتاب الصوم، کتاب الحج اور کتاب النکاح پر مشتمل خوبصورت ضخیم جلدیں آپ تک پہنچ چکی ہیں۔ کتاب النکاح کے اکثر و بیشتر حوالہ جات کی تخریج فاضل جلیل، فن اسماء الرجال و مناظرہ کے ماہر حضرت علامہ مولانا محمد عباس رضوی ساکن گوجرانوالہ نے فرمائی ہے، جس پر ادارہ کے اراکین ان کے شکر گزار ہیں۔ اب بفضلہ تعالیٰ جل مجدہ وبعنایتہ رسولہ الکریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم بارہویں جلد پیش کی جارہی ہے۔

اب تک شائع ہونے والی جلدوں کی تفصیل سنینِ اشاعت اور مجموعی صفحات کے اعتبار سے حسبِ ذیل ہے: پہلی جلد: شعبان المعظم ۱۴۱۰ھ / مارچ ۱۹۹۰ء، صفحات ۸۳۸ دوسری جلد: ربیع الثانی ۱۴۱۲ھ / نومبر ۱۹۹۱ء، صفحات ۷۱۰ تیسری جلد: شعبان المعظم ۱۴۱۲ھ / فروری ۱۹۹۲ء، صفحات ۷۵۶ چوتھی جلد: رجب المرجب ۱۴۱۳ھ / جنوری ۱۹۹۳ء، صفحات ۷۶۰

Fatawa Rizwia Volume Twelve

Fifth Volume: Rabi-ul-Awwal 1412 AH / September 1991, 692 pages Sixth Volume: Rabi-ul-Awwal 1415 AH / August 1994, 736 pages Seventh Volume: Rajab-ul-Murajab 1415 AH / December 1994, 720 pages Eighth Volume: Muharram-ul-Haram 1416 AH / June 1995, 664 pages Ninth Volume: Zil-Qa'dah 1416 AH / April 1996, 946 pages Tenth Volume: Rabi-ul-Awwal 1417 AH / August 1996, 832 pages Eleventh Volume: Muharram-ul-Haram 1418 AH / May 1997, 736 pages

Twelfth Volume This volume comprises answers to 428 questions from the 'Chapter on Mahr' (Dowry) to the end of the 'Chapter on Delegated Divorce' (Tafweed-e-Talaq) of the old fifth volume of Fatawa Rizwia. By the grace and guidance of Allah Almighty, the translation of the Arabic and Persian passages in this volume has been carried out by this humble writer. Furthermore, a detailed table of contents for the treatises included herein has also been prepared by the writer for the benefit of the readers. Besides numerous secondary issues and points of interest, the following nine topics are brought under discussion in this volume:

(1) Chapter on Mahr (Dowry) (2) Chapter on Jehaz (Trousseau) (3) Chapter on Marriage with a Disbeliever (Kafir) (4) Chapter on Marital Conduct (Al-Mu'ashara) (5) Chapter on Division (Al-Qasm - among wives) (6) Chapter on Remarriage (Al-Nikah al-Thani) (7) Book of Divorce (Kitab al-Talaq) (8) Chapter on Allusion (Al-Kinaya - in divorce) (9) Chapter on Delegated Divorce (Tafweed-e-Talaq)

In addition to the above topics, the following three treatises containing extremely subtle and valuable research and investigations are also included in this volume: (1) Al-Bast al-Musajjal fi Imtina' al-Zaujah ba'd al-Wati lil-Mu'ajjal (1305 AH) Regarding whether a woman has the right to refuse herself to the husband after intercourse for the recovery of the prompt dowry (Mahr-e-Mu'ajjal) or not. (2) Ata'ib al-Tahani fi al-Nikah al-Thani (1312 AH) On the rulings regarding remarriage.

Page 6 of 688

फ़तावा रज़विया बारहवीं जिल्द

पांचवीं जिल्द: रबी-उल-अव्वल 1412 हिजरी / सितंबर 1991 ईस्वी, पृष्ठ: 692 छठी जिल्द: रबी-उल-अव्वल 1415 हिजरी / अगस्त 1994 ईस्वी, पृष्ठ: 736 सातवीं जिल्द: रजब-उल-मुरज्जब 1415 हिजरी / दिसंबर 1994 ईस्वी, पृष्ठ: 720 आठवीं जिल्द: मुहर्रम-उल-हराम 1416 हिजरी / जून 1995 ईस्वी, पृष्ठ: 664 नौवीं जिल्द: ज़िल-क़ादा 1416 हिजरी / अप्रैल 1996 ईस्वी, पृष्ठ: 946 दसवीं जिल्द: रबी-उल-अव्वल 1417 हिजरी / अगस्त 1996 ईस्वी, पृष्ठ: 832 ग्यारहवीं जिल्द: मुहर्रम-उल-हराम 1418 हिजरी / मई 1997 ईस्वी, पृष्ठ: 736

बारहवीं जिल्द यह जिल्द फ़तावा रज़विया (प्राचीन) के पांचवें भाग के'बाबुल महर' (महर का अध्याय) से लेकर 'बाब-ए-तफ़वीज़-ए-तलाक़' (तलाक़ का अधिकार सौंपने का अध्याय) के अंत तक 428 प्रश्नों के उत्तरों पर आधारित है। अल्लाह के फ़ज़्ल और तौफ़ीक़ से, इस जिल्द की अरबी और फ़ारसी इबारतों का अनुवाद इस कमतर लेखक ने किया है। इसके अतिरिक्त, इसमें शामिल रिसालों (लेखों) की विस्तृत विषय-सूची भी लेखक ने पाठकों के लाभ के लिए तैयार की है। अनेक गौण मसलों और लाभों के अलावा इस जिल्द में निम्नलिखित नौ विषयों पर चर्चा की गई है:

(1) बाबुल महर (महर का अध्याय) (2) बाबुल जिहाज़ (दहेज का अध्याय) (3) बाब निकाह अल-काफ़िर (4) बाब अल-मुआशरा (दांपत्य व्यवहार) (5) बाबुल क़स्म (पत्नियों के बीच समय विभाजन) (6) बाब अन-निकाह अस-सानी (पुनर्विवाह) (7) किताबुत तलाक़ (तलाक़ की किताब) (8) बाबुल किनाया (इशारे में तलाक़) (9) बाब तफ़वीज़-ए-तलाक़

उपरोक्त विषयों के अलावा, अत्यंत सूक्ष्म और बहुमूल्य शोध और अन्वेषणों पर आधारित निम्नलिखित तीन रिसाले भी इस जिल्द में शामिल हैं: (1) अल-बस्त अल-मुसज्जल फ़ी इम्तिना-उज़-ज़ौजा बाद अल-वती लिल-मुअज्जल (1305 हिजरी) क्या संभोग के बाद महर-ए-मुअज्जल की प्राप्ति के लिए महिला को स्वयं को रोकने (संसर्ग से मना करने) का अधिकार है या नहीं। (2) अताइब अत-तहानी फ़ी अन-निकाह अस-सानी (1312 हिजरी) निकाह-ए-सानी (पुनर्विवाह) के प्रावधानों के बारे में।

पृष्ठ 6 / 688

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

پانچویں جلد: ربیع الاول ۱۴۱۲ھ / ستمبر ۱۹۹۱ء صفحات ۶۹۲ چھٹی جلد: ربیع الاول ۱۴۱۵ھ / اگست ۱۹۹۴ء صفحات ۷۳۶ ساتویں جلد: رجب المرجب ۱۴۱۵ھ / دسمبر ۱۹۹۴ء صفحات ۷۲۰ آٹھویں جلد: محرم الحرام ۱۴۱۶ھ / جون ۱۹۹۵ء صفحات ۶۶۴ نویں جلد: ذیقعدہ ۱۴۱۶ھ / اپریل ۱۹۹۶ء صفحات ۹۴۶ دسویں جلد: ربیع الاول ۱۴۱۷ھ / اگست ۱۹۹۶ء صفحات ۸۳۲ گیارہویں جلد: محرم الحرام ۱۴۱۸ھ / مئی ۱۹۹۷ء صفحات ۷۳۶

بارہویں جلد یہ جلد فتاویٰ رضویہ قدیم جلد پنجم کے باب المہر سے باب تفویض الطلاق کے آخر تک ۴۲۸ سوالوں کے جوابات پر مشتمل ہے۔ اس جلد کی عربی و فارسی عبارات کا ترجمہ بتوفیق اللہ تعالیٰ و بفضلہ اس راقم پُر تقصیر عفی اللہ تعالیٰ عنہ نے کیا ہے۔ علاوہ ازیں اس میں شامل رسائل کے مندرجات کی مفصل فہرست بھی راقم نے افادہ قارئین کے لئے تیار کر دی ہے۔ متعدد ضمنی مسائل و فوائد کے علاوہ اس جلد میں مندرجہ ذیل نو عنوانات زیر بحث لائے گئے ہیں:

(۱) باب المہر (۲) باب الجہاز (۳) باب نکاح الکافر (۴) باب المعاشرۃ (۵) باب القسم (۶) باب النکاح الثانی (۷) کتاب الطلاق (۸) باب الکنایۃ (۹) باب تفویض الطلاق

مندرجہ بالا عنوانات کے علاوہ انتہائی دقیق اور گراں قدر تحقیقات و تدقیقات پر مشتمل مندرجہ ذیل تین رسائل بھی اس جلد میں شامل ہیں: (۱) البسط المسجل فی امتناع الزوجۃ بعد الوطی للمعدل (۱۳۰۵ھ) وطی کے بعد مہر معجل کی وصولی کے لئے عورت کو منع نفس کا حق حاصل ہے یا نہیں۔ (۲) اطائب التہانی فی النکاح الثانی (۱۳۱۲ھ) نکاح ثانی کے احکام میں۔

صفحہ 6 از 688

Fatawa Razawiyya Volume Twelve

(1) Raheeq al-Ihaqaq fi Kalimat al-Talaq (5) The number and details of the words of irrevocable divorce. Note: A part of the Arabic text from the end of issue number 121 of this volume, which was on pages 413 to 418 of the old Fatawa Razawiyya, Volume 5, has been omitted as it was disconnected. In fact, this Arabic text is from the noble composition "Jadd al-Mumtar" by the author (may Allah have mercy on him), which was inadvertently copied here.

Rajab al-Murajab 1418 AH November 1997 AD

Hafiz Abdul Sattar Saeedi Director of Education (Jamia Nizamia Razawiyya, Lahore)

फ़तावा रज़विया खंड बारह

(१) रहीक अल-इहाक़ फ़ी कलिमात अल-तलाक़ (५) तलाक-ए-बाइन (अपरिवर्तनीय तलाक) के शब्दों की संख्या और उनका विवरण। नोट: इस खंड के मसला नंबर १२१ के अंत से अरबी इबारत का कुछ हिस्सा, जो पुरानी फ़तावा रज़विया खंड ५ के पृष्ठ ४१३ से ४१८ तक था, असंबद्ध होने के कारण हटा दिया गया है। वास्तव में, यह अरबी इबारत लेखक (रहमतुल्लाहि अलैहि) की प्रसिद्ध रचना "जद्दुल मुमतार" से है, जो गलती से यहाँ शामिल हो गई थी।

रजब अल-मुरज्जब १४१८ हिजरी नवंबर १९९७ ईस्वी

हाफ़िज़ अब्दुल सत्तार सईदी शिक्षा निदेशक (जामिया निज़ामिया रज़विया, लाहौर)

فتاویٰ رضویہ جلد دو از دہم

(۱) رحیق الاحقاق فی کلمات الطلاق (۵) طلاق بائن کے الفاظ کی تعداد اور ان کی تفصیل نوٹ :

اس جلد کے مسئلہ نمبر ۱۲۱ کے آخر سے عربی عبارت کا کچھ حصہ جو فتاویٰ رضویہ قدیم جلد پنجم کے صفحہ ۴۱۳ سے ۴۱۸ تک تھا غیر مربوط ہونے کی وجہ سے خارج کر دیا گیا ہے ، در اصل یہ عربی عبارت مصنف علیہ الرحمہ کی تصنیف جلیل "جد الممتار" کی ہے جو سہواً یہاں نقل ہو گئی تھی۔

رجب المرجب ۱۴۱۸ھ نومبر ۱۹۹۷ء

حافظ عبدالستار سعیدی ناظم تعلیمات (جامعہ نظامیہ رضویہ ، لاہور)

Fatawa Razawiyya Volume Twelfth

www.dawateislami.net Dawat-e-Islami I.T. Majlis of DawateIslami

Page 8 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

www.dawateislami.net दावत-ए-इस्लामी आई.टी. मजलिस ऑफ़ दावत-ए-इस्लामी

पेज 8 का 688

Fatawa Razawiya - Volume 12

Index of Topics

Page	Topic	Page
102	**Chapter on Dower (Mahr)**	101
	Mr. Mahmood's five invented reasons.	
103	◦ Treatise: *Al-Bast al-Musajjal fi Imtina' al-Zawja ba'd al-Wat'i lil-Mu'ajjal*	101
	(Detailed explanation of a woman's right to refuse herself for the collection of prompt dower after intercourse. This treatise consists of answers to two questions.)	
	Answer to the first question.	101
103	**First Question**	101
	A woman has the right to refuse surrendering herself to her husband until she receives the prompt dower.	
103	Hind refuses to go to her husband's place until she receives prompt dower. Does she have the right to refuse herself? Will she not be considered disobedient (Nashizah)?	101
	A woman who does not surrender herself to her husband for the purpose of collecting prompt dower will not be considered disobedient.	
103	**Second Question**	102
	Despite intercourse with the woman's consent, she has the right not to surrender herself for intercourse to her husband for the collection of prompt dower and to refuse to travel with him.	
103	When intercourse occurs with the woman's consent before the payment of prompt dower, does the right to refuse herself lapse or not? And is this the school of thought of the 'Sahibayn' (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad)? And is it correct to prefer it over the Imam's school based on the reasons invented by Mr. Mahmood in his decision?	102
	The maintenance (Nafaqah) of a woman who refuses intercourse and travel for the purpose of receiving prompt dower will not lapse.	

फ़तावा रज़विया - जिल्द 12

विषय सूची

पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
102	**महर का अध्याय (बाबुल महर)**	101
	मिस्टर महमूद के पांच मनगढ़ंत कारण।	
103	◦ रिसाला: अल-बस्त अल-मुसज्जल फ़ी इम्तिना' अल-ज़ौजा बा'द अल-वती लिल-मुअज्जल	101
	(सम्भोग के बाद त्वरित महर की वसूली के लिए स्त्री के स्वयं को रोकने के अधिकार का विस्तृत विवरण। यह रिसाला दो सवालों के जवाब पर आधारित है।)	
	पहले सवाल का जवाब।	101
103	**पहला सवाल**	101
	स्त्री को यह अधिकार प्राप्त है कि जब तक वह त्वरित महर (महर-ए-मुअज्जल) प्राप्त न कर ले, वह स्वयं को पति के सुपुर्द न करे।	
103	हिंदा त्वरित महर प्राप्त करने तक पति के घर जाने से इनकार करती है, क्या उसे स्वयं को रोकने का अधिकार प्राप्त है? क्या वह नाशिज़ा (अवज्ञाकारी) तो नहीं होगी?	101
	त्वरित महर की वसूली के लिए स्वयं को पति के सुपुर्द न करने वाली स्त्री नाशिज़ा नहीं होगी।	
103	**दूसरा सवाल**	102
	स्त्री की सहमति से सम्भोग होने के बावजूद, उसे यह अधिकार है कि वह त्वरित महर की वसूली के लिए सम्भोग हेतु स्वयं को पति के हवाले न करे और उसके साथ यात्रा करने से इनकार कर दे।	
103	जब त्वरित महर की अदायगी से पहले स्त्री की सहमति से सम्भोग हो जाए, तो क्या स्वयं को रोकने का अधिकार समाप्त हो जाता है या नहीं? और क्या यह साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद) का मज़हब है? और क्या मिस्टर महमूद के फैसले में गढ़े गए	102

कारणों के आधार पर इसे इमाम (अबू हनीफा) के मज़हब पर प्राथमिकता देना सही है या नहीं?

त्वरित महर की वसूली के लिए सम्भोग और यात्रा से इनकार करने वाली स्त्री का खर्चा (नफ़क़ा) समाप्त नहीं होगा।

पृष्ठ 9 / 688

فتاوی رضویہ - جلد دوازدہم

فہرست مضامین

مضمون	صفحہ
باب المہر	۱۰۱
مسٹر محمود کی پانچ وجوہ مخترعہ	۱۰۲
ہ رسالہ البسط المسجل فی امتناع الزوجۃ بعد الوطی للمعجل (وطی کے بعد مہر معجل کی وصولی کیلئے عورت کو منع نفس کا حق حاصل ہونے کا مفصل بیان) یہ رسالہ دو سوالوں کے جواب پر مشتمل ہے	۱۰۱
جواب سوال اول۔	۱۰۱
سوال اول	۱۰۱
عورت کو اختیار حاصل ہے کہ جب تک مہر معجل وصول نہ کر لے اپنے آپ کو تسلیم شوہر نہ کرے۔	۱۰۳
ہندہ تا وصول مہر معجل شوہر کے یہاں جانے سے انکار رکھتی ہے آیا اسے حق منع نفس حاصل ہے، ناشزہ تو نہ ہوگی۔	۱۰۱
مہر معجل کی وصولی کے لئے اپنے آپ کو تسلیم شوہر نہ کرنے والی عورت ناشزہ نہ ہوگی۔	۱۰۳
سوال دوم	۱۰۲

مضمون صفحہ	صفحہ
وطی برضا عورت کے باوجود عورت کو یہ اختیار ہے کہ وہ مہر معجل کی وصولی کے لئے اپنے آپ کو وطی کے لئے شوہر کے حوالے نہ کرے اور اس کے ساتھ سفر سے انکار کرے۔	
جب ادائے مہر معجل سے پہلے برضائے زن وطی ہو تو منع نفس کا حق ساقط ہو جاتا ہے یا نہیں، اور کیا یہ مذہب صاحبین ہے اور اسے مذہب امام پر مسٹر محمود کی اپنے فیصلہ میں ایجاد کردہ وجوہ سے ترجیح صحیح ہے یا نہیں۔	۱۰۲
برائے وصولی مہر معجل وطی و سفر سے انکار کرنیوالی عورت کا نفقہ ساقط نہ ہوگا۔	۱۰۳

Volume 12 | Fatawa Razawiyya

104 | Difference in the schools of Imam-e-Azam Abu Hanifa and the Sahibayn regarding the right to prevent oneself and prevent travel. | 109 | Muzara'at (sharecropping), meaning giving land on a crop-sharing basis, is permissible. 105 | Most prominent leaders, scholars, and jurists prefer the Imam's school in this matter and place firm trust and reliance upon it. | 109 | After Imam-e-Azam, one should refer to the saying of Imam Abu Yusuf, then Imam Muhammad, then Imam Zufar, and Hassan bin Ziyad. 105 | Specific texts are established for reporting the correct and reliable school of thought. | 110 | It is obligatory for us to give fatwa based on the Imam's saying, even if the Mashaykh (elders) give fatwa against it. 105 | Iqtisar (brevity) and Ta'leel (justification) are both ways of selecting and interpreting evidence. | 110 | Answer to the second question. 106 | Ta'leel (justification) of evidence leads to preference. | 111 | No one except a Mujtahid has the authority to examine the strength of evidence. 106 | Multaqa al-Abhur is among the reliable texts in the school of thought. | 111 | In matters of time and judgment, the fatwa is mostly on the saying of the Second Imam. 106 | In Multaqa al-Abhur, the saying mentioned first is the most preferred and chosen for fatwa. | 111 | In millions of transactional matters, the fatwa is on the Imam's saying, even if Imam Muhammad agrees with Imam Abu Yusuf's opinion. 106 | Faqih al-Nafs Imam Qazi Khan prioritizes the saying which is most famous, apparent, and reliable. | 111 | Difficulty attracts ease. 107 | The author of Hidaya often prioritizes the strong saying, and it is his constant habit to delay the evidence for the chosen saying. | 112 | In terms of knowledge, Imam Abu Yusuf is not equal to Imam-e-Azam. 107 | If the seller hands over part of the sold item to the buyer before receiving the price, he has the right to withhold the remainder. | 112 | Without the permission of Imam-e-Azam, Imam Abu Yusuf established a teaching circle; becoming perplexed at the answers to five questions, he returned to the service of the Imam. 108 | Allama Shikhi Zada was a scholar of the Roman lands, a judge of the Ottoman state, and a contemporary of the author of Durr al-Mukhtar. | 112 | Any matter not resolved in the presence of Imam-e-Azam will remain unsettled until the Day of Judgment. 108 | Allama Khayr al-Din Ramli is the teacher of the author of Durr al-Mukhtar. | 112 | Imam Abu Yusuf says, "We are in a state of distress in a matter for which our teacher has no saying." 109 | Scholars clarify that a Mufti should give fatwa absolutely on the Imam's saying, and a judge should generally decide according to the Imam's school, except when there is an urgent necessity for departure. | 112 | It is narrated from Imam Abu Yusuf: "In some

matters, I thought the Hadith was on my side, but after scrutiny, it became clear that the Hadith the Imam spoke from was beyond even my dreams."

Page 10 of 688

जिल्द 12 | फ़तावा रज़विया

104 | हक़ मना-ए-नफ़्स और मना-ए-सफ़र के बारे में इमाम-ए-आज़म अबू हनीफ़ा और साहिबैन के मज़हब में फ़र्क़। | 109 | मुज़ार'अत यानी बटाई पर खेत देना जायज़ है। 105 | अक्सर अकाबिर अइम्मा व उलमा व फ़ुक़हा इस मसले में मज़हब-ए-इमाम को तरजीह देते हैं और इसी पर जज़्म व एतिमाद करते हैं। | 109 | इमाम-ए-आज़म के बाद इमाम अबू यूसुफ़ फिर इमाम मोहम्मद फिर इमाम ज़फ़र व हसन बिन ज़ियाद के क़ौल की तरफ रुजूअ करना चाहिए। 105 | मुतून-ए-ख़ास नक़्ल-ए-मज़हब सही व मोअतमिद के लिए वज़ा किए जाते हैं। | 110 | हम पर इमाम के क़ौल पर फ़तवा देना वाजिब है अगरचे मशाइख़ इसके ख़िलाफ़ फ़तवा दें। 105 | इक़्तिसार व ता'लील दोनों दलील इख़्तियार व ता'वील हैं। | 110 | जवाब सवाल दोम। 106 | ता'लील दलील-ए-तरजीह होती है। | 111 | मुज्तहिद के सिवा किसी को क़ुव्वत-ए-दलील पर नज़र का इख़्तियार नहीं। 106 | मुल्तक़ा अल-अब्हुर मुतून-ए-मोअतमिद फ़िल मज़हब से है। | 111 | मसाइल-ए-वक़्त व क़ज़ा में ग़ालिबन इमाम-ए-सानी के क़ौल पर फ़तवा है। 106 | मुल्तक़ा अल-अब्हुर में जो क़ौल मुक़द्दम हो वही अरजह व मुख़्तार लिल-फ़तवा होता है। | 111 | लाखों मसाइल-ए-मुआमलात में क़ौल-ए-इमाम पर फ़तवा है अगरचे इमाम अबू यूसुफ़ की राय से इमाम मोहम्मद भी मुवाफ़िक़ हों। 106 | फ़क़ीह-उन-नफ़्स इमाम क़ाज़ी ख़ां इसी क़ौल को मुक़द्दम करते हैं जो अश्हर व अज़हर और मोअतमिद होता है। | 111 | मशक़्क़त जालिब-ए-तयसीर है। 107 | साहब-ए-हिदाया अक्सर क़ौल-ए-क़वी को मुक़द्दम करते हैं और क़ौल-ए-मुख़्तार की दलील को मुअख़्ख़र करना उनकी आदत-ए-मुस्तमिरा है। | 112 | इमाम अबू यूसुफ़ इल्मन इमाम-ए-आज़म के हम पल्ला नहीं। 107 | बाएअ ने वसूल-ए-समन से क़बल अगर मबीअ का बाज़ हिस्सा मुश्तारी के हवाले कर दिया तो बक़िया को रोकने का उसे हक़ हासिल है। | 112 | बे-इज़्न-ए-इमाम-ए-आज़म इमाम अबू यूसुफ़ ने मज्लिस-ए-दर्स क़ायम की पाँच सवालों के जवाब में मुतहैयर होकर फिर ख़िदमत-ए-इमाम रुजूअ लाए। 108 | अल्लामा शैख़ी ज़ादा दियार-ए-रुमिया के आलिम, दौलत-ए-उस्मानिया के क़ाज़ी और साहब-ए-दुर्रे मुख़्तार के मुआसिर थे। | 112 | जो मसला इमाम-ए-आज़म के हुज़ूर तय न हो लिया वो क़यामत तक मुज़्तरिब रहेगा। 108 | अल्लामा खैर-उद-दीन रमली साहब-ए-दुर्रे मुख़्तार के उस्ताद हैं। | 112 | इमाम अबू यूसुफ़ फ़रमाते हैं जिस मसले में हमारे उस्ताद का कोई क़ौल नहीं उसमें हम परेशान हाल हैं। 109 | उलमा तसरीह फ़रमाते हैं कि मुफ़्ती मुतलक़न क़ौल-ए-इमाम पर फ़तवा दे और क़ाज़ी उमूमन मज़हब-ए-इमाम पर फ़ैसला करे मगर ब-ज़रूरत-ए-दाअया तर्क। | 112 | इमाम अबू यूसुफ़ से

मंक़ूल है कि मैं बाज़ मसाइल में जानता कि हदीस मेरी तरफ़ है, तन्क़ीह के बाद खुलता कि जिस हदीस से इमाम साहब ने फ़रमाया है मेरे ख़्वाब में भी न थी।

पृष्ठ 10/688

۱۰۴ | حق منع نفس و منع سفر کے بارے میں امام اعظم ابوحنیفہ اور صاحبین کے مذہب میں فرق۔ | ۱۰۹ | مزارعت یعنی بٹائی پر کھیت دینا جائز ہے۔ ۱۰۵ | اکثر اکابر ائمہ و علماء و فقہاء اس مسئلہ میں مذہب امام کو ترجیح دیتے ہیں اور اسی پر جزم و اعتماد کرتے ہیں۔ | ۱۰۹ | امام اعظم کے بعد امام ابو یوسف پھر امام محمد پھر امام زفر و حسن بن زیاد کے قول کی طرف رجوع کرنا چاہئے۔ ۱۰۵ | متون خاص نقل مذہب صحیح و معتمد کیلئے وضع کئے جاتے ہیں۔ | ۱۱۰ | ہم پر امام کے قول پر فتویٰ دینا واجب ہے اگرچہ مشائخ اس کے خلاف فتویٰ دیں۔ ۱۰۵ | اقتصار و تعلیل دونوں دلیل اختیار و تعویل ہیں۔ | ۱۱۰ | جواب سوال دوم۔ ۱۰۶ | تعلیل دلیل ترجیح ہوتی ہے۔ | ۱۱۱ | مجتہد کے سوا کسی کو قوتِ دلیل پر نظر کا اختیار نہیں۔ ۱۰۶ | ملتقی الابحر متون معتمدہ فی المذہب سے ہے۔ | ۱۱۱ | مسائل وقت وقضاء میں غالبا امام ثانی کے قول پر فتویٰ ہے۔ ۱۰۶ | ملتقی الابحر میں جو قول مقدم ہو وہی ارجح و مختار للفتوی ہوتا ہے۔ | ۱۱۱ | لاکھوں مسائل معاملات میں قول امام پر فتویٰ ہے اگرچہ امام ابویوسف کی رائے سے امام محمد بھی موافق ہوں۔ ۱۰۶ | فقیہ النفس امام قاضی خاں اسی قول کو مقدم کرتے ہیں جو اشہر و اظہر اور معتمد ہوتا ہے۔ | ۱۱۱ | مشقت جالبِ تیسیر ہے۔ ۱۰۷ | صاحبِ ہدایہ اکثر قولِ قوی کو مقدم کرتے ہیں اور قولِ مختار کی دلیل کو مؤخر کرنا ان کی عادت مستمرہ ہے | ۱۱۲ | امام ابویوسف علما امام اعظم سے ہم پلہ نہیں۔ ۱۰۷ | بائع نے وصولی ثمن سے قبل اگر مبیع کا بعض حصہ مشتری کے حوالے کردیا تو بقیہ کو روکنے کا اسے حق حاصل ہے۔ | ۱۱۲ | بے اذن امام اعظم امام ابویوسف نے مجلسِ درس قائم کی پانچ سوالوں کے جواب میں متحیر ہو کر پھر خدمتِ امام رجوع لائے۔ ۱۰۸ | علامہ شیخی زادہ دیارِ رومیہ کے عالم، دولتِ عثمانیہ کے قاضی اور صاحبِ درمختار کے معاصر

تھے۔ | ۱۱۲ | جو مسئلہ امام اعظم کے حضور طے نہ ہو لیا وہ قیامت تک مضطرب رہے گا۔ ۱۰۸ | علامہ خیر الدین رملی صاحب در مختار کے استاذ ہیں۔ | ۱۱۲ | امام ابویوسف فرماتے ہیں جس مسئلہ میں ہمارے استاذ کا کوئی قول نہیں اس میں ہم پریشان حال ہیں۔ ۱۰۹ | علماء تصریح فرماتے ہیں کہ مفتی مطلقاً قولِ امام پر فتویٰ دے اور قاضی عموماً مذہبِ امام پر فیصلہ کرے مگر بضرورت داعیہ ترک۔ | ۱۱۲ | امام ابویوسف سے منقول ہے کہ میں بعض مسائل میں جانتا کہ حدیث میری طرف ہے، تنقیح کے بعد کھلتا کہ جس حدیث سے امام صاحب نے فرمایا ہے میرے خواب میں بھی نہ تھی۔

Fatawa Razawiyya Volume 11

[Column 1] 113: Texts are prior to commentaries, and commentaries are prior to Fatwas. 113: If there is a conflict between text and commentary, the text shall be followed. 113: If texts and fatwas are mutually contradictory, the reliable one will be that which conforms to the texts. 114: The author of Hedaya is among the Ashab-e-Tarjeeh (those authorized to prefer opinions). 114: Imam Kamal-ud-Din Ibn al-Humam, author of Fath al-Qadir, is worthy of ijtihad and among the Ashab-e-Tarjeeh. 114: Contemporaneity is a cause of discord. 114: Imam Qazi Khan is among the Ashab-e-Tarjeeh; his authentication takes precedence over that of others, and one should not deviate from his authentication. 115: Scholars have rejected some explicit authentications of commentaries and fatwas solely because the texts are contrary to them. 115: The opinion supported by the texts shall be the reliable one. 115: After the agnates, the guardianship of marriage belongs to the mother. 115: The author of Muheet is among the Imams of Tarjeeh. 116: Reasons for Fatwas based on the opinion of the two companions (Sahibayn) in certain instances. 116: Nearly one-third of the school of thought follows the opinion of the Sahibayn against the Imam's opinion, but reliance is mostly on the Imam's opinion.

[Column 2] 117: Imam Abu Hanifa (RA) is a Tabi'i (successor to the companions). 117: Scholars have authenticated that it is mandatory for us to give fatwas according to the Imam's opinion, even if the mentors (Mashaikh) have given fatwas against it. 118: One should not deviate from the Imam's opinion to the opinion of the Sahibayn, or either of them, without necessity. 118: The author of Hedaya says that, in any case, fatwa according to the Imam's opinion is obligatory in my view. 118: In 'Durr', the Sahibayn's opinion was cited as 'Mufta Bihi' regarding the time of Isha; reliance on this is not permissible because there is no reason to deviate from the Imam's opinion. 118: Without weakness of evidence, necessity, social practice, or change of era, the Sahibayn's opinion cannot be preferred over the Imam's opinion. 119: The weakness of evidence due to which deviation from the Imam's opinion is permissible is when the great mujtahid Imams explicitly specify its weakness in their fatwas. 119: Sale applies to the specific essence of an item. 119: Marriage does not apply to the woman's physical body, but to the benefits of cohabitation. 120: In the case of renewal, the acceptance of a part is not the acceptance of the whole, nor does satisfaction with a part necessitate satisfaction with the whole. 120: If several items are sold in one contract and some are given willingly, the seller can withhold the rest until the full price is received. 120: In multiple items, handing over some is not

considered handing over all. 120: If the price is deferred, the right to withhold the sold item is lost by consensus.

Page 11 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द 11

[कॉलम 1] 113: मतून (मूल पाठ) शरूह (व्याख्याओं) पर और शरूह फ़तावा पर मुक़द्दम (अग्रणी) हैं। 113: मतन और शरह में विरोधाभास होने पर मतन पर अमल किया जाएगा। 113: मतून और फ़तावा आपस में विरोधाभासी हों तो विश्वसनीय वही होगा जो मतून के अनुकूल होगा। 114: साहिब-ए-हिदाया असहाब-ए-तरजीह (वरीयता देने वाले विद्वानों) में से हैं। 114: इमाम कमालुद्दीन इब्न अल-हुमाम, साहिब-ए-फ़तह अल-क़दीर, इज्तिहाद के योग्य और असहाब-ए-तरजीह से हैं। 114: समकालीनता वैमनस्य का कारण है। 114: इमाम क़ाज़ी ख़ान असहाब-ए-तरजीह से हैं; उनकी तस्हीह (प्रमाणीकरण) दूसरों की तस्हीह पर मुक़द्दम है, उनकी तस्हीह से विचलन नहीं करना चाहिए। 115: उलेमा ने शरूह और फ़तावा की कुछ स्पष्ट तस्हीहों को केवल इस आधार पर रद्द कर दिया कि मतून उनके विरुद्ध हैं। 115: जिस पर मतून आधारित हों, वही कथन विश्वसनीय होगा। 115: असबात (पितृपक्षीय संबंधियों) के बाद निकाह की विलायत (संरक्षण) माँ को प्राप्त है। 115: साहिब-ए-मुहीत अइम्मा-ए-तरजीह में से हैं। 116: कुछ स्थानों पर साहिबैन (दो साथियों) के कथन पर फ़तवा देने के कारण। 116: मज़हब का लगभग एक तिहाई हिस्सा इमाम के विरुद्ध साहिबैन के कथन पर आधारित है, लेकिन अक्सर भरोसा इमाम के कथन पर ही है।

[कॉलम 2] 117: इमाम अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ताबई हैं। 117: उलेमा ने इसे प्रमाणित किया है कि हमारे लिए इमाम के कथन के अनुसार फ़तवा देना अनिवार्य है, भले ही मशाईख़ (गुरुओं) ने इसके विरुद्ध फ़तवा दिया हो। 118: बिना आवश्यकता के इमाम के कथन से साहिबैन के कथन या उनमें से किसी एक की ओर विचलन नहीं किया जाना चाहिए। 118: साहिब-ए-हिदाया कहते हैं कि इमाम के कथन पर फ़तवा देना हर हाल में मेरे निकट वाजिब है। 118: 'दुर्र में इशा के समय के संबंध में साहिबैन के कथन को 'मुफ़्ता बिही' कहा गया; इस पर भरोसा करना उचित नहीं है क्योंकि इमाम के कथन से विचलन का कोई कारण नहीं है। 118: दलील की कमज़ोरी, आवश्यकता, सामाजिक व्यवहार या समय के परिवर्तन के बिना इमाम के कथन पर साहिबैन का कथन प्राथमिकता नहीं पा सकता। 119: दलील की वह कमज़ोरी, जिसके कारण इमाम के कथन से विचलन स्वीकार्य है, वह है जब महान मुजतहिद अइम्मा स्पष्ट रूप से अपने फ़तवे में इसकी कमज़ोरी का उल्लेख करें। 119: बिक्री वस्तु के मूल रूप पर लागू होती है। 119: निकाह औरत के शरीर पर नहीं, बल्कि सहवास के लाभों पर लागू होता है। 120: नवीनीकरण की स्थिति में, कुछ की स्वीकृति पूरे की स्वीकृति नहीं है, और न ही कुछ पर संतुष्टि से पूरे पर संतुष्टि अनिवार्य है। 120: यदि एक ही

अनुबंध में कई वस्तुएँ बेची जाएँ और कुछ स्वेच्छा से दे दी जाएँ तो विक्रेता शेष वस्तुओं को तब तक रोक सकता है जब तक पूरा मूल्य प्राप्त न हो जाए। 120: एकाधिक वस्तुओं के मामले में, कुछ को सौंपना पूरे को सौंपना नहीं माना जाता। 120: यदि मूल्य आस्थगित (उधार) हो, तो बेची गई वस्तु को रोक कर रखने का अधिकार सर्वसम्मति से समाप्त हो जाता है।

पृष्ठ 11 / 688

فتاویٰ رضویہ جلد دو از دہم

[کالم 1] ۱۱۳: متون شروح پر اور شروح فتاویٰ پر مقدم ہیں۔ ۱۱۳: متن و شرح میں تعارض ہو تو عمل متن پر ہوگا۔ ۱۱۳: متون و فتاویٰ باہم متعارض ہوں تو معتمد وہی ہوگا جو متون کے موافق ہوگا۔ ۱۱۴: صاحبِ ہدایہ اصحابِ ترجیح میں سے ہیں۔ ۱۱۴: امام کمال الدین ابن الہمام صاحب فتح القدیر لائقِ اجتہاد اور اصحابِ ترجیح سے ہیں۔ ۱۱۴: معاصرت دلیل منافرت ہے۔ ۱۱۴: امام قاضی خاں اصحابِ ترجیح سے ہیں اُن کی تصحیح اوروں کی تصحیح پر مقدم ہے ان کی تصحیح سے عدول نہ کیا جائے۔ ۱۱۵: علماء نے شروح و فتاویٰ کی بعض صریح تصحیحیں صرف اس بناء پر رَد کر دیں کہ متون ان کے خلاف پر ہیں۔ ۱۱۵: جس پر متون ہوں وہی قول معتمد ہوگا۔ ۱۱۵: عصبات کے بعد ولایتِ نکاح ماں کو ہے۔ ۱۱۵: صاحبِ محیط ائمہ ترجیح سے ہیں ۱۱۶: بعض جگہ قول صاحبین پر فتویٰ کی وجوہ۔ ۱۱۶: ایک تہائی مذہب کے قریب قول صاحبین قول امام کے خلاف ہے لیکن اکثر اعتماد قول امام پر ہی ہے۔

[کالم 2] ۱۱۷: امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ تابعی ہیں۔ ۱۱۷: علماء نے اس کی تصحیح فرمائی کہ ہم پر بقولِ امام فتویٰ دینا لازم ہے اگرچہ مشائخ نے اس کے خلاف پر فتویٰ دیا ہو۔ ۱۱۸: قولِ امام سے قولِ صاحبین کی طرف یا ان میں سے کسی ایک کی طرف بلا ضرورت عدول نہ کیا جائے۔ ۱۱۸: صاحبِ ہدایہ فرماتے ہیں قولِ امام پر فتویٰ بہر حال میرے نزدیک واجب ہے۔ ۱۱۸: وقتِ عشاء میں قول صاحبین کو درر میں مفتی بہ کہا اس پر اعتماد جائز نہیں کہ قولِ امام سے عدول کا کوئی سبب نہیں۔ ۱۱۸: بغیر ضعفِ دلیل یا ضرورت یا تعامل یا اختلافِ زماں قولِ امام پر قولِ صاحبین مرجح نہیں ہو سکتا۔ ۱۱۹: ضعفِ دلیل جس کے سبب قولِ امام سے عدول جائز ہے وہ ہے کہ اعاظم ائمہ مجتہدین فتویٰ اس کے ضعف پر تنصیص کریں۔ ۱۱۹: بیع عین پر وارد ہوتی

ہے۔ ۱۱۹: نکاح عورت کے گوشت پوست پر نہیں منافعِ بضع پر وارد ہوتا ہے۔ ۱۲۰: بصورتِ تجددِ بعض کی تسلیم کل کی تسلیم نہیں اور نہ بعض پر رضا سے کل پر رضا لازم ہے۔ ۱۲۰: بیع میں اگر چند چیزیں ایک عقد بیچیں اور بعض بخوشی دے دیں ، بعض باقی کو روک سکتا ہے جب تک تمام ثمن وصول نہ ہو۔ ۱۲۰: اشیائے متعددہ میں اقباضِ بعض اقباضِ کُل نہیں۔ ۱۲۰: ثمن مؤجل ہو تو حبسِ مبیع کا استحقاق بالا جماع زائل ہو جاتا ہے۔

Fatawa Razawiyya Volume 12

120 | Imam Abu Yusuf states that the right to withhold in a sale is not a requirement of the original contract, but in marriage, in a general state, it is a requirement of the marriage contract itself. 124 | It is mandatory to interpret the words of every contractor, swearer, waqif (endower), and testator according to their custom.

121 | Zaid married Hindah and left; the rukhsati (consummation/moving-in) did not take place. After ten years, Hindah sued to either have the rukhsati or for him to divorce her. He gave the divorce; Hindah's father forgave the dower (Mahr), but Hindah does not accept the forgiveness and is asking for half the Mahr. 125 | Mahr Fatimi was four hundred Mithqal of silver, which in today's rupees amounts to one hundred and sixty rupees.

121 | A father has no authority to forgive his daughter's Mahr; even if he forgives it, it can never be considered forgiven. 125 | At the time of a corruption in the specification (of Mahr), Mahr Mithl (fair market dower) is established.

122 | If divorce is given before privacy (khalwat) and consummation (dukhool), no waiting period (iddat) is mandatory for the woman. 125 | Is a Mahr that is free from any mention of immediate (ta'jeel) or deferred (ta'jeel) payment currently payable before death or divorce, or not?

122 | If a man says, "I divorce my wife Hindah on the condition that my Mahr is forgiven," and Hindah does not forgive it, then neither was the Mahr forgiven nor did the divorce occur. 126 | If a woman is divorced due to her immorality (fisq), will the payment of Mahr still be mandatory or not?

122 | If it's stated whether Mahr is immediate (mu'ajjal) or deferred (mu'ajjal), it will be so; otherwise, what is customary there will be decided. 126 | Which act causes the entire Mahr to be forfeited, and which one causes half to remain?

122 | If one unknowingly marries a foster (breastfed) sister, is Mahr mandatory or not? 126 | Mahr becomes mandatory by the contract itself and is confirmed and established through intercourse, privacy, or the death of either spouse.

122 | In an invalid (fasid) marriage, Mahr Mithl becomes mandatory after intercourse, provided it does not exceed the specified Mahr (Mahr Musamma). 126 | After confirmation and establishment, if the woman becomes an apostate, the Mahr or any part of it will not be forfeited.

123 | God forbid, if someone has intercourse with a mahram (forbidden relation) after marriage, full Mahr Mithl will be mandatory, even if it's twice the agreed-upon dower. 127 | Before the three confirmatory acts (intercourse, valid privacy, death of a spouse), if, God forbid, she becomes an apostate, the Mahr will be completely forfeited.

123 | What is the amount of dower (Mahr) according to Shariah-e-Muhammadi? 127 | If a woman commits adultery with her husband's father or son (i.e., the husband's ancestors or descendants), the entire Mahr will be forfeited if none of the three confirmatory acts have occurred yet.

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

120 | इमाम अबू यूसुफ फरमाते हैं कि बिक्री में सामान रोकने का अधिकार मूल अनुबंध की आवश्यकता नहीं है, और विवाह में सामान्य स्थिति में यह स्वयं अनुबंध की आवश्यकता है। 124 | प्रत्येक अनुबंध करने वाले, शपथ लेने वाले, वक़िफ़ और वसीयत करने वाले के शब्दों को उसकी प्रथा (उर्फ़) के अनुसार समझना अनिवार्य है।

121 | ज़ैद ने हिंदा से निकाह किया और चला गया, रुख़्सती नहीं हुई। दस साल बाद हिंदा ने मुकदमा किया कि रुख़्सती कराए या तलाक़ दे, उसने तलाक़ लिख दी, हिंदा के पिता ने महर माफ़ कर दिया, हिंदा माफ़ी स्वीकार नहीं करती और आधा महर माँगती है। 125 | महर-ए-फ़ातिमी चार सौ मिस्क़ाल चाँदी था, जो आज के रुपयों में एक सौ साठ रुपये है।

121 | पिता को किसी भी तरह से अपनी बेटी का महर माफ़ करने का अधिकार नहीं है, न ही उसके माफ़ करने से महर कभी माफ़ हो सकता है। 125 | महर के निर्धारण (तस्मिया) में दोष के समय महर-ए-मिस्ल (उचित महर) स्थापित होता है।

122 | यदि ख़लवत और दुख़ूल (प्रवेश/मिलन) से पहले तलाक़ दे दी जाए, तो महिला पर इद्दत अनिवार्य नहीं है। 125 | वह महर जो शीघ्र (तअज्जुल) या विलंब (ताजील) के विवरण से मुक्त हो, क्या वह मृत्यु या तलाक़ से पहले वर्तमान में देय है या नहीं?

122 | यदि पुरुष कहे कि "मैंने इस शर्त पर अपनी पत्नी हिंदा को तलाक़ दी कि मुझे महर माफ़ हो जाए" और हिंदा ने माफ़ नहीं किया, तो न तो महर माफ़ हुआ और न ही तलाक़ हुई। 126 | यदि महिला के फ़िस्क़ (अनैतिकता) के कारण तलाक़ दी जाए, तो महर का भुगतान अनिवार्य होगा या नहीं?

122 | यदि महर का शीघ्र (मुअज्जल) या विलंबित (मुअज्जल) होना वर्णित हो तो वही माना जाएगा, अन्यथा जो वहां प्रचलित (उर्फ़) हो वही माना जाएगा। 126 | वह कौन सा मामला है जिससे पूरा महर समाप्त हो जाता है और कौन सा जिससे आधा रह जाता है?

122 | अनजाने में रज़ाई (दूध शरीक) बहन से निकाह कर लिया, क्या महर वाजिब हुआ या नहीं? 126 | महर अनुबंध (अक़्द) से ही वाजिब हो जाता है और सहवास, एकांत (ख़लवत) या जीवनसाथी में से किसी एक की मृत्यु से पुष्ट और निर्धारित हो जाता है।

122 | निकाह-ए-फ़ासिद (अमान्य विवाह) में सहवास के बाद महर-ए-मिस्ल वाजिब होता है, जो तय महर (महर-ए-मुसम्मा) से अधिक न हो। 126 | पुष्टि और निर्धारण के बाद यदि महिला धर्मत्यागी (मुरतदा) हो जाए, तो भी महर या उसका कोई हिस्सा समाप्त नहीं होगा।

123 | खुदा न करे, अगर कोई महरम (निषिद्ध संबंधी) से निकाह के बाद सहवास कर ले, तो पूरा महर-ए-मिस्ल वाजिब होगा चाहे वह तय महर से दोगुना ही क्यों न हो। 127 | मुअक़्क़दात-ए-सलासा (सहवास, सही एकांत, जीवनसाथी की मृत्यु) से पहले अगर खुदा न करे महिला धर्मत्यागी हो जाए, तो महर पूरी तरह समाप्त हो जाएगा।

123 | शरिया-ए-मुहम्मदी के अनुसार महर की मात्रा क्या है? 127 | यदि महिला अपने पति के पिता या पुत्र यानी पति के पूर्वजों या वंशजों में से किसी के साथ व्यभिचार करती है, तो पूरा महर समाप्त हो जाएगा, बशर्ते कि अब तक तीनों पुष्टि करने वाले कार्यों में से कोई भी न हुआ हो।

पृष्ठ 12 का 688

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

۱۲۰ | امام ابو یوسف فرماتے ہیں کہ حق حبس بیع میں اصل عقد کا اقتضاء نہیں اور نکاح میں بحالت اطلاق نفس عقد کا مقتضی ہے۔ ۱۲۴ | ہر عاقد وحالف اور واقف وموصی کے کلام کو اس کے عرف پر محمول کرنا لازم۔

۱۲۱ | زید ہندہ سے نکاح کر کے چلا گیا کہ رخصت نہیں ہوئی ۔ دس برس بعد ہندہ نے نالش کی کہ رخصت کرائے یا طلاق دے، اس نے طلاق لکھ دی ، پدرِ ہندہ نے مہر معاف کردیا ، ہندہ معافی مہر منظور نہیں کرتی نصف مہر مانگتی ہے۔ ۱۲۵ | مہر فاطمی چار سو مثقال چاندی تھا، آج کل کے روپے سے ایک سو ساٹھ روپے۔

۱۲۱ | باپ کو کسی طرح اپنی بیٹی کا مہر معاف کرنے کا اختیار نہیں، نہ ہرگز اس کے معاف کئے معاف ہو سکے۔ ۱۲۵ | فسادِ تسمیہ کے وقت مہر مثل قائم ہوتا ہے۔

۱۲۲ | خلوت و دخول سے قبل طلاق دی تو عورت پر عدت لازم نہیں۔ ۱۲۵ | جو مہر بیانِ تعجل و تاجیل سے معرا ہو وہ موت یا طلاق سے پہلے فی الحال واجب الاداء ہے یا نہیں۔

۱۲۲ | مرد کہے کہ میں اس شرط پر اپنی بیوی ہندہ کو طلاق دی کہ مجھے مہر معاف ہو جائے اور ہندہ نے معاف نہیں کیا تو نہ مہر معاف ہوا نہ طلاق پڑی۔ ۱۲۶ | فسقِ زن کے سبب طلاق دے دے تو مہر کی بھی ادا لازم ہو گی یا نہیں۔

۱۲۲ | مہر کا معجّل یا موجّل ہونا بیان ہو تو وہ ورنہ وہ جو متعارف ہو یعنی وہاں جس کا رواج ہو وہ ٹھہریگا۔ ۱۲۶ | کون سا وہ امر ہے جس سے تمام مہر ساقط ہو جاتا ہے اور کون سا وہ جس سے نصف رہ جاتا ہے۔

۱۲۲ | بے خبری میں رضاعی بہن سے نکاح کرلیا مہر واجب ہوا یا نہیں۔ ۱۲۶ | مہر نفس عقد سے واجب ہوتا اور وطی یا خلوت یا موت احد الزوجین سے تاکد و تقرّر پاتا ہے۔

۱۲۲ | نکاح فاسد میں مہر مثل بعد وطی لازم ہوتا ہے جو مہر مسمّٰی سے زائد نہ ہو۔ ۱۲۶ | بعد تاکید و تقرر اگر عورت مرتدہ ہو جائے تو بھی مہر یا اس کا کوئی حصہ ساقط نہ ہوگا۔

۱۲۳ | محارم سے پناہ بخدا اگر کوئی نکاح کے بعد وطی کرلے تو مہر مثل پورا واجب ہوگا اگرچہ باندھے ہوئے مہر سے وہ دو چند ہو۔ ۱۲۷ | موکداتِ ثلثہ وطی، خلوت صحیحہ، موت احد الزوجین سے پہلے اگر معاذ اللہ مرتد ہو جائے تو مہر بالکل ساقط ہو جائے گا۔

۱۲۳ | مہر شرع محمدی کی مقدار کیا ہے۔ ۱۲۷ | اگر عورت اپنے شوہر کے باپ یا بیٹے یعنی شوہر کی اصول و فروع سے کسی سے زنا کرائے تو بھی پورا مہر ساقط ہو جائے گا جبکہ مؤکداتِ ثلثہ سے کوئی اب تک واقع نہ ہوا تھا۔

Fatawa-e-Razvia | Volume 12

(Right Column rulings) 127 | Similarly, the husband's lustful kissing of his wife's origin or branch [lineage], or touching of the penis, or looking with lust towards the origin or branch of the penis. 127 | If a woman breastfeeds her minor co-wife before intercourse, valid seclusion, or death of either spouse, the dowry (Mahr) will be forfeited. 127 | If, before any of these three stressors occur, the man or woman chooses to annul the marriage via the "option of puberty" (Khiyar-ul-Bulugh), the entire Mahr will be forfeited. 127 | If an invalid contract (Aqd-e-Fasid) is terminated before actual intercourse, the entire Mahr will also be forfeited. 127 | God forbid, if a man becomes an apostate or commits adultery with his wife's daughter, or if someone has lustful kissing, touching, embracing, or looks at the internal vulva of the woman's origin or branch, in all these cases half the Mahr will be forfeited if any of this occurs before the three stressors. 127 | If divorce occurs before intercourse or seclusion, half the Mahr must be given. 128 | If an adult woman breastfeeds a minor girl, both become forbidden [to the husband], and half of the minor's Mahr is forfeited while half remains mandatory. 130 | Zaid married his minor daughter to Bakr. The wife died at Bakr's house while still a minor. How much Mahr can the minor's heirs claim from Bakr, the husband?

(Left Column rulings) 132 | Hind's Mahr is deferred (Muajjal), no fixed period was determined, and no divorce occurred. When is Hind entitled to receive her Mahr? 133 | Zaid divorced Hind. When Mahr was demanded, he said it was ten Dirhams. Neither Hind nor her guardian (Wali) Khalid, nor the judge (Qazi) or lawyer (Vakil) remember the amount. Nor is it remembered who the witnesses of the marriage were. However, in that community, the minimum Mahr is usually five hundred rupees and two red Dinars. Ten Dirhams is unheard of in the entire city, and there is no equal Mahr. Hind's guardian is demanding five hundred rupees and two red Dinars. Will Hind receive ten Dirhams or, according to custom, five hundred rupees and two red Dinars? 135 | What was the amount of Mahr for the pure wives (Azwaj-e-Mutahharat) and Hazrat Fatima Zahra? 135 | The sacred Mahr for most of the pure wives and noble daughters of the Holy Prophet (may the best of blessings and most perfect of greetings be upon him and them) was not more than five hundred Dirhams. 136 | 'Nash' refers to half an 'Oqiyyah'. 136 | The Mahr of the Mother of the Believers, Hazrat Umm Habiba (may Allah be pleased with her), was four thousand Dirhams according to one narration and four thousand Dinars according to another. 136 | The Mahr of Hazrat Batool Zahra (may Allah be pleased with her) was four hundred

Mithqal of silver. 136 | The weight of the Sharia Dirham. 137 | The weight of the Dinar.

Page 13 of 688

(दायां कॉलम) 127 | इसी तरह पति का अपनी पत्नी के मूल या शाखा (वंश) को कामुकता से चूमना या लिंग का स्पर्श करना, या कामुकता के साथ लिंग के मूल या शाखा की ओर देखना। 127 | यदि कोई महिला संभोग, वैध एकांत (खलवत-ए-सहीहा), या पति-पत्नी में से किसी की मृत्यु से पहले अपनी नाबालिग सौतन को स्तनपान करा देती है, तो मेहर (स्त्रीधन) समाप्त हो जाएगा। 127 | यदि इन तीन पुष्टिकर्ताओं में से किसी एक के होने से पहले, पुरुष या महिला "यौवन के विकल्प" (खियार-उल-बुलूग) के माध्यम से निकाह रद्द करना चुनते हैं, तो पूरा मेहर समाप्त हो जाएगा। 127 | यदि एक अमान्य अनुबंध (अक़्द-ए-फ़ासिद) वास्तविक संभोग से पहले समाप्त हो जाता है, तब भी पूरा मेहर समाप्त हो जाएगा। 127 | ईश्वर न करे, यदि कोई व्यक्ति धर्मत्यागी हो जाए या अपनी पत्नी की बेटी के साथ व्यभिचार करे, या महिला के मूल या शाखा का कोई व्यक्ति कामुकता के साथ चुंबन, स्पर्श, आलिंगन करे या आंतरिक जननांग को देखे, तो इन सभी स्थितियों में आधा मेहर समाप्त हो जाएगा यदि इनमें से कोई भी बात तीन पुष्टिकर्ताओं से पहले हुई हो। 127 | संभोग या एकांत से पहले तलाक होने पर आधा मेहर देना होगा। 128 | यदि किसी वयस्क महिला ने नाबालिग लड़की को दूध पिला दिया, तो दोनों (पति के लिए) हराम हो गईं, और नाबालिग का आधा मेहर समाप्त और आधा अनिवार्य होगा। 130 | ज़ैद ने अपनी नाबालिग बेटी का निकाह बक्र से किया। पत्नी नाबालिग अवस्था में ही बक्र के घर मर गई। नाबालिग के उत्तराधिकारी बक्र पति से कितने मेहर का दावा कर सकते हैं।

(बायां कॉलम) 132 | हिंदा का मेहर 'मुअज्जल' (विलंबित) है और कोई निश्चित अवधि तय नहीं हुई है, और तलाक भी नहीं हुआ है। हिंदा मेहर लेने की हकदार कब है? 133 | ज़ैद ने हिंदा को तलाक दे दिया। जब मेहर की मांग की गई, तो उसने कहा कि मेहर दस दिरहम था। मेहर की सही मात्रा न तो हिंदा को याद है, न उसके अभिभावक (वली) खालिद को, न ही काज़ी या वकील को। न ही यह याद है कि निकाह के गवाह कौन नियुक्त किए गए थे। लेकिन उस समुदाय में मेहर का न्यूनतम स्तर अक्सर पांच सौ रुपये और दो लाल दीनार है। पूरे शहर में दस दिरहम किसी का नहीं है, और न ही मेहर-ए-मिस्ल (समान मेहर) उतना है। हिंदा का वली पांच सौ रुपये और दो लाल दीनार की मांग कर रहा है। हिंदा को दस दिरहम मिलेंगे या प्रथा के अनुसार पांच सौ रुपये और दो लाल दीनार? 135 | अज़वाज-ए-मुतह्हरात (पवित्र पत्नियों) और हज़रत फातिमा ज़हरा का मेहर कितना था? 135 | हुज़ूर-ए-पुरनूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की अधिकांश पवित्र पत्नियों और प्रतिष्ठित पुत्रियों का

पवित्र मेहर पांच सौ दिरहम से अधिक नहीं था। 136 | 'नश' आधे 'ओकिया' को कहते हैं। 136 | उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा (रज़ियल्लाहु अन्हा) का मेहर एक रिवायत के अनुसार चार हज़ार दिरहम और दूसरी के अनुसार चार हज़ार दीनार था। 136 | हज़रत बतूल ज़हरा (रज़ियल्लाहु अन्हा) का मेहर चार सौ मिस्क़ाल चाँदी था। 136 | शरीयत के अनुसार दिरहम का वज़न। 137 | दीनार का वज़न।

पृष्ठ 13/688

(دایاں کالم) ۱۲۷ | یونہی اصل وفرع شوہر کا بشہوت بوسہ لینا یا مسِ ذکر یا بشہوت اصل یا فرع کے ذکر کی طرف نظر کرنا۔ ۱۲۷ | عورت اگر اپنی صغیرہ (سوت) کو دودھ پلا دے قبل وطی یا خلوتِ صحیحہ یا موت یا شوہر کی موت سے پہلے ایسا کیا تو مہر ساقط ہو جائے گا۔ ۱۲۷ | اگر ان مؤکداتِ ثلاثہ سے کسی ایک کے وقوع سے پہلے بخیارِ بلوغ مرد یا عورت فسخِ نکاح اختیار کرے تو پورا مہر ساقط ہو جائے گا۔ ۱۲۷ | اگر عقدِ فاسد قبل از وطی حقیقی متارکہ ہو جب بھی پورا مہر ساقط ہو جائے گا۔ ۱۲۷ | اگر معاذ اللہ مرد مرتد ہو یا عورت کی دختر سے زنا کرے یا عورت کی اصل وفرع کسی سے یا ان میں سے کسی کا بشہوت بوسہ لے یا مماس کرے یا ہم آغوش ہو یا فرجِ اندرونی پر نظر کرے ان سب صورت میں نصف ساقط ہو جائے گا جبکہ مؤکداتِ ثلاثہ سے پہلے ان میں سے کوئی بات واقع ہو۔ ۱۲۷ | قبل وطی یا خلوت کے طلاق ہو تو نصف مہر دینا ہو گا۔ ۱۲۸ | اگر کبیرہ نے صغیرہ کو دودھ پلا دیا تو دونوں حرام ہو گئیں اور صغیرہ کا مہر نصف ساقط نصف لازم۔ ۱۳۰ | زید نے اپنی دختر نابالغہ کا نکاح بکر سے کیا زوجہ بحالت نابالغی بکر کے گھر مرگئی ورثائے نابالغہ بکر شوہر پر کس قدر مہر کا دعویٰ کرسکتے ہیں۔

(بایاں کالم) ۱۳۲ | ہندہ کا مہر مؤجل ہے اور کوئی میعاد معین قرار نہ پائی اور طلاق بھی نہ ہوئی، ہندہ مہر لینے کی کس وقت مستحق ہے۔ ۱۳۳ | زید نے ہندہ کو طلاق دے دی جب مہر طلب کیا گیا تو کہا مہر دس درہم تھا تعداد مہر نہ ہندہ کو یاد ہے نہ اس کے ولی خالد کو، نہ قاضی اور نہ وکیل کو، اور نہ یہ یاد ہے کہ نکاح کے گواہ کون کون مقرر ہوئے تھے، مگر اس قوم میں مہر کم درجہ پانچسو روپے اور دو دینار سرخ اکثر ہے، دس درہم کسی کا نہیں بلکہ شہر بھر میں شاید کسی کا بھی نہ اور ہم مہر نہ ہو، ولی ہندہ پانچسو روپے اور دو دینار سرخ کا طالب ہے، ہندہ دس

درہم پائے گی یا بموجب عرف پانچ سو روپیہ اور دو دینار سرخ۔ ۱۳۵ | مہرِ ازواجِ مطہرات اور حضرت فاطمہ زہرا کس قدر تھا ۱۳۵ | عامہ ازواجِ مطہرات وبناتِ مکرمات حضورِ پر نور علیہ وعلیہن افضل الصلوات واکمل التحیات کا مہرِ اقدس پانچسو درہم سے زائد نہ تھا۔ ۱۳۶ | نش نصف اوقیہ کو کہتے ہیں ۱۳۶ | ام المومنین حضرت ام حبیبہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کا مہر ایک روایت پر چار ہزار درہم اور دوسری پر چار ہزار دینار تھا۔ ۱۳۶ | حضرت بتول زہرا رضی اللہ تعالیٰ عنہا کا مہر چار سو مثقال چاندی تھا۔ ۱۳۶ | درہم شرعی کا وزن۔ ۱۳۷ | دینار کا وزن۔

Fatawa Rizvia | Volume 12

117 | Price of Dinar | 140 117 | In our lands, general dowry (mahr) statements are often without specification of immediate (mu'ajjal) or deferred (mu'ajjal) payment, and the custom is that its obligation of payment is kept dependent on death or divorce. | 140 117 | Calculation of Dinar and Dirham in current currency. | 141 117 | Marrying a woman pregnant from adultery in ignorance. The man says he married thinking she was a virgin. Is this excuse sufficient for the cancellation of mahr or not? | 141 117 | During the holy Prophetic era, a gold tola was 7 rupees, 5 annas and 3/5 pies. | 142 117 | Composite mahr becomes obligatory; when is it deferred and when is it immediate? | 142 117 | The man stopped maintenance; the woman claimed mahr. In this case, will she be given mahr or not? | 142 117 | Is 'Khalwat-e-Sahiha' (valid privacy) necessary for the obligation of mahr or not? | 142 118 | If no period was fixed for mahr, the customs and traditions of that city will be followed. | 142 118 | What is the definition of Khalwat-e-Sahiha? | 142 119 | If immediate and deferred mahr are not specified at the time of marriage, when will it be payable? | 142 119 | Definition of deferred mahr. | 142 119 | Is forgiving mahr a good deed or not? | 142 119 | Deferred mahr will be payable when the promised time arrives; before that, the woman cannot demand it. | 142 119 | One who gives respite to a debtor or forgives a debt will be under the shade of the Divine Throne on the Day of Judgment. | 142 119 | If 'deferred' was stated but no duration was mentioned, it will remain deferred until divorce or death and will be payable only after separation. | 142 119 | Allah Almighty has forgiven those who overlook debtors and granted them a place in Paradise. | 143 119 | Khalwat-e-Sahiha is not a condition for the obligation of mahr. | 143 120 | At the time of marriage, the proxy stated the amount of mahr. The husband said he doesn't have the status to pay even a tenth of it. The proxy said he doesn't have the authority to reduce mahr, and that this mahr is not intended to be settled during their lifetimes. The marriage took place on this mahr. The minor girl was sent to the husband's home but due to her being underage, intercourse did not occur. The girl's father took her back to his home against the husband's will and claims a part of the mahr on her behalf. In this case, will he be given the mahr or not? | 143 120 | The obligation of mahr arises from the marriage contract, however, it is confirmed by privacy (khalwat) in the sense that if he divorces before intercourse and valid privacy, half mahr would be due; now that privacy has occurred, the full amount becomes due. | 143 120 | If immediate and deferred mahr are not clarified, it will depend on the custom of the city. | 143 120 | Zaid married Hindah and privacy

occurred. The mahr was agreed as deferred. Hindah demands mahr and does not go to Zaid. Zaid refuses to pay mahr because Hindah does not come. Is the demand correct or not? Is the mahr forfeited because Hindah does not come? | 143

फतावा रज़विया | जिल्द बारहवीं

११७ | दीनार की कीमत | १४० ११७ | हमारे शहरों में आम तौर पर मेहर का बयान तुरंत (मुअज्जिल) या बाद में (मुवज्जिल) भुगतान की जानकारी से खाली होता है और रिवाज यह है कि इसके भुगतान की अनिवार्यता को मृत्यु या तलाक पर निर्भर रखा जाता है। | १४० ११७ | वर्तमान मुद्रा से दीनार और दिरहम का हिसाब। | १४१ ११७ | अज्ञानता में ज़िना से गर्भवती महिला से निकाह किया। पुरुष कहता है कि मैंने उसे कुंवारी समझकर निकाह किया था। क्या यह बहाना मेहर रद्द करने के लिए काफी है या नहीं। | १४१ ११७ | पवित्र रिसालत काल में सोने का एक तोला ७ रुपये, ५ आने और ३/५ पाई था। | १४२ ११७ | मिश्रित मेहर अनिवार्य होता है; कब वह मुवज्जिल (स्थगित) और कब मुअज्जिल (त्वरित) होगा। | १४२ ११७ | पति ने भरण-पोषण बंद कर दिया, स्त्री ने मेहर का दावा किया। इस स्थिति में उसे मेहर दिया जाएगा या नहीं। | १४२ ११७ | क्या 'खलवत-ए-सहीहा' (वैध एकांत) मेहर की अनिवार्यता के लिए आवश्यक है या नहीं। | १४२ ११८ | यदि मेहर की कोई अवधि तय नहीं की गई, तो उस शहर के रीति-रिवाजों और आदतों पर अमल होगा। | १४२ ११८ | खलवत-ए-सहीहा की परिभाषा क्या है? | १४२ ११९ | निकाह के समय यदि त्वरित और स्थगित मेहर स्पष्ट न हो, तो वह किस समय देय होगा। | १४२ ११९ | मुवज्जिल (स्थगित) मेहर की परिभाषा। | १४२ ११९ | मेहर माफ़ कर देना नेक काम है या नहीं। | १४२ ११९ | मुवज्जिल मेहर उस समय देय होगा जब वादे का समय आएगा, उससे पहले स्त्री इसकी मांग नहीं कर सकती। | १४२ ११९ | कर्जदार को मोहलत देने वाला या कर्ज माफ़ करने वाला कयामत के दिन अर्श के साये में होगा। | १४२ ११९ | अगर 'मुवज्जिल' कहा गया और कोई अवधि नहीं बताई गई, तो वह तलाक या मृत्यु तक स्थगित रहेगा और अलगाव के बाद ही देय होगा। | १४२ ११९ | कर्जदारों को माफ़ करने वाले की अल्लाह तआला ने मगफिरत (क्षमा) फरमाई और उसे जन्नत में जगह बख्शी। | १४३ ११९ | खलवत-ए-सहीहा मेहर की अनिवार्यता के लिए शर्त नहीं है। | १४३ १२० | निकाह के समय वकील ने मेहर की राशि बताई। पति की ओर से कहा गया कि उसकी हैसियत इतनी भी नहीं कि वह इसका दसवां हिस्सा दे सके। वकील ने कहा कि मुझे मेहर कम करने का अधिकार नहीं है, और यह मेहर ऐसा नहीं है कि दोनों के जीवित रहते लिया-दिया जाए। इस मेहर पर निकाह हो गया। नाबालिग लड़की की रुख़सती हुई लेकिन वयस्क न होने के कारण संभोग नहीं हुआ। लड़की का पिता पति की मर्जी के बिना उसे अपने घर ले गया और उसकी तरफ से कुछ मेहर का दावा करता है। इस स्थिति में उसे मेहर दिया जाएगा या नहीं। | १४३ १२० | मेहर की अनिवार्यता निकाह के अनुबंध से होती है,

हालांकि एकांत (खलवत) से मेहर पुख्ता हो जाता है इस अर्थ में कि यदि संभोग और वैध एकांत से पहले तलाक देता तो आधा मेहर आवश्यक होता, अब जबकि एकांत हो गया है तो पूरा मेहर आवश्यक होगा। | १४३ १२० | यदि मेहर में त्वरित और स्थगित की स्पष्टता न की गई हो, तो वह शहर के रिवाज पर आधारित होगा। | १४३ १२० | ज़ैद का हिंदह से निकाह हुआ और एकांत भी हो गया। मेहर स्थगित (मुवज्जिल) तय हुआ था। हिंदह मेहर की मांग करती है और ज़ैद के पास नहीं जाती है। ज़ैद, हिंदह के न आने के कारण मेहर देने से इनकार करता है। मांग सही है या नहीं, क्या हिंदह के न आने से मेहर खत्म हो गया या नहीं। | १४३

पृष्ठ १४ / ६८८

۱۱۷ | دینار کی قیمت | ۱۴۰ ۱۱۷ | ہمارے بلاد میں عام مہر بیان تعجیل و تا جیل سے خالی ہوتے ہیں اور رواج یہ ہے کہ اس کے لزوم ادا کو موت یا طلاق پر موقوف رکھا جاتا ہے۔ | ۱۴۰ ۱۱۷ | سکہ رائج سے دینار و درہم کا حساب۔ | ۱۴۱ ۱۱۷ | زنا سے حاملہ سے لاعلمی میں نکاح کیا مرد کہتا ہے میں نے باکرہ سمجھ کر نکاح کیا تھا۔ یہ عذر اسقاط مہر کے لئے کافی ہے یا نہیں۔ | ۱۴۱ ۱۱۷ | عہدِ پاک رسالت میں سونانی تولہ سات روپیہ ہے/ آنہ ۵- ۳/۵ پائی تھا۔ | ۱۴۲ ۱۱۷ | مہر مرکب واجب ہوتا ہے، مؤجل کب اور معجل کب۔ | ۱۴۲ ۱۱۷ | مرد نے نان نفقہ بند کر لیا عورت نے مہر کا دعویٰ کیا، اس صورت میں مہر اس کو دلایا جائیگا یا نہیں۔ | ۱۴۲ ۱۱۷ | خلوتِ صحیحہ وجوب مہر کے لئے ضروری ہے یا نہیں۔ | ۱۴۲ ۱۱۸ | مہر کی اگر کچھ مدت مقرر نہ ہوئی وہاں اس شہر کے عرف و عادات پر عمل ہوگا۔ | ۱۴۲ ۱۱۸ | خلوتِ صحیحہ کی تعریف کیا ہے۔ | ۱۴۲ ۱۱۹ | وقتِ نکاح مہر مؤجل و معجل کی تصریح نہ ہو تو کس وقت واجب الادا ہوگا۔ | ۱۴۲ ۱۱۹ | مہر مؤجل کی تعریف۔ | ۱۴۲ ۱۱۹ | مہر معاف کر دینا نیک کام ہے یا نہیں۔ | ۱۴۲ ۱۱۹ | مہر مؤجل اس وقت واجب الادا ہو گا جب وعدے کا وقت آئے گا، اس سے پہلے عورت اس کا مطالبہ نہیں کر سکتی۔ | ۱۴۲ ۱۱۹ | مدیون کو مہلت دینے یا دین معاف کرنے والا قیامت کے دن عرش کے سایہ میں ہوگا۔ | ۱۴۲ ۱۱۹ | اگر مؤجل کہا اور کوئی میعاد بیان نہیں کی تو وہ طلاق یا موت تک مؤجل ٹھہرے گا اور بعد فرقت ہی واجب الادا ہوگا۔ | ۱۴۲ ۱۱۹ | مدیونوں سے در گزر کرنے والے کی اللہ تعالیٰ نے مغفرت فرمائی اور اس کو جنت میں جگہ بخشی۔ | ۱۴۳ ۱۱۹ | خلوتِ صحیحہ وجوب مہر کے لئے شرط نہیں۔ | ۱۴۳ ۱۲۰ | نکاح کے وقت وکیل نے تعدادِ مہر بتائی شوہر کی طرف سے کہا گیا کہ اس کی حیثیت اتنی بھی

نہیں کہ اس کا دسواں حصہ ادا کر سکے، وکیل نے کہا کہ مجھ کو مہر کم کرنے کا اختیار نہیں ہے، یہ مہر ایسا نہیں کہ دونوں کی زندگی میں لیا دیا جائے، اس مہر پر نکاح ہو گیا، لڑکی نابالغہ کی رخصت ہوئی مگر بوجہ عدم بلوغ وطی نہ ہوئی، لڑکی کا باپ بے مرضی شوہر اپنے گھر لے گیا اور دعویٰ بعض مہر کا بولایتِ خود کرتا ہے، اس صورت میں اس کو مہر دلایا جائے گا یا نہیں۔ | ۱۴۳ ۱۲۰ | وجوبِ مہر عقدِ نکاح سے ہوتا ہے البتہ خلوت سے مہر متاکد ہوتا ہے بایں معنی کہ اگر پیش از وطی و خلوتِ صحیحہ طلاق دیتا تو نصف مہر لازم ہوتا اب جبکہ خلوت واقع ہوگئی تو کل لازم آئے گا۔ | ۱۴۳ ۱۲۰ | مہر میں معجل و مؤجل کی وضاحت نہ کی گئی ہو تو وہ عرفِ بلد پر رہے گا۔ | ۱۴۳ ۱۲۰ | زید کا ہندہ سے نکاح ہوا اور خلوت بھی ہوگئی مہر مؤجل قرار پایا تھا ہندہ مطالبہ مہر کرتی ہے اور زید کے پاس نہیں جاتی ہے زید ہندہ کے نہ آنے کے سبب مہر دینے سے منکر ہے مطالبہ صحیح ہے یا نہیں، ہندہ کے نہ آنے سے مہر ساقط ہوا یا نہیں۔ | ۱۴۳

صفحہ ۱۴ از ۶۸۸

142 | A woman went to her parents' house several times without her husband's permission and often quarreled, even hit her husband. If the husband does not pay the dower (Mahr) for these reasons, will he be held accountable, and should he keep her in his house or not? 143 | The dower is not waived by a woman being a transgressor or a sinner. 144 | Maintenance (Nafaqah) is not obligatory on the husband for a disobedient (Nashiza) woman. 145 | At the time of marriage, if the term "Mahr-e-Fatimi" was used without specifying the number in current coins or Dirhams, will it remain Mahr-e-Fatimi or revert to Mahr-e-Mithl due to conflicting narrations? 145 | Apparent differences in narrations regarding the amount of Mahr for Hazrat Sayyidatun-Nisa Batool Zahra (Allah be pleased with her) and their refined reconciliation. 145 | There are three reliable supported narrations regarding Mahr-e-Fatimi. 145 | First: The blessed dower consisted not of dirhams and dinars, but an armor that the luminous Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) had given to Hazrat Ameer-ul-Momineen Ali-al-Murtaza (may Allah honor his face), which was given as dower. 147 | Second: It was four hundred and eighty (480) dirhams. 149 | Third: It was four hundred mithqal of silver. 150 | Apart from the three aforementioned narrations, unknown claims that Mahr-e-Fatimi was five hundred dirhams or forty mithqal of gold or nineteen mithqal of gold are all baseless. 151 | The armor of Hazrat Ali al-Murtaza (Allah be pleased with him) was sold for four hundred and eighty dirhams. 152 | During the blessed eras of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) and Siddiq-e-Akbar (Allah be pleased with him), dirhams were of different types. 152 | During the Faruqi era (Hazrat Umar's caliphate), there were three types of dirhams: 152 | (1) Ten dirhams equal in weight to ten mithqal. 152 | (2) Ten dirhams equal in weight to six mithqal. 152 | (3) Ten dirhams equal in weight to five mithqal. 152 | Hazrat Umar (Allah be pleased with him) took one-third of each of the three types (ten, six, five), the sum of which makes seven, and fixed a dirham such that seven dirhams are equal in weight to ten mithqal. Therefore, that dirham remained in use subsequently to avoid dispute in transactions. 155 | The conclusion reached is that the actual noble dower of Hazrat Zahra (Allah be pleased with her), upon which the sacred marriage contract took place, was four hundred (400) mithqal of silver, and the armor was given as an advance at the time of the wedding procession, which was sold for four hundred and eighty (480) dirhams by sacred command.

फ़तावा रज़विया (हेडर) जिल्द द्वादश (हेडर)

142 | एक औरत पति की अनुमति के बिना कई बार अपने मायके चली गई और अक्सर झगड़ती रहती है, पति को मारा भी। पति इन कारणों से मेहर न दे तो क्या पकड़ होगी और उसे अपने घर रखे या नहीं। 143 | स्त्री के फासिक़ा और गुनहगार होने से मेहर साक़ित (रद्द) नहीं होता। 144 | नाशज़ा (नाफ़रमान) औरत के लिए पति पर नफ़क़ा (भरण-पोषण) वाजिब नहीं। 145 | निकाह के समय 'महर-ए-फ़ातिमी' शब्द कहा, लेकिन प्रचलित सिक्कों या दिरहमों में उसकी संख्या नहीं बताई, तो क्या वह महर-ए-फ़ातिमी ही रहेगा या मतभेदों के कारण महर-ए-मिसल की ओर लौट जाएगा? 145 | हज़रत सैय्यदतुन-निसा बतूल ज़हरा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) के महर की मात्रा के बारे में स्पष्टतः भिन्न-भिन्न रिवायतें और उनमें सुंदर सामंजस्य। 145 | महर-ए-फ़ातिमी के बारे में तीन विश्वसनीय मुस्तनद (प्रमाणित) रिवायतें हैं। 145 | प्रथम: मुबारक महर दिरहम और दीनार नहीं थे बल्कि एक जिरह (कवच) थी जो हुज़ूर पुरनूर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने हज़रत अमीरुल मोमिनीन अली मुर्तज़ा (कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम) को प्रदान की थी, वही महर में दी गई। 147 | द्वितीय: चार सौ अस्सी (480) दिरहम थे। 149 | तृतीय: चार सौ मिस्क़ाल चाँदी थी। 150 | उपरोक्त तीन रिवायतों के अलावा जो अज्ञात कथन हैं कि महर-ए-फ़ातिमी पाँच सौ दिरहम या चालीस मिस्क़ाल सोना या उन्नीस मिस्क़ाल सोना था, वे सब बेबुनियाद हैं। 151 | हज़रत अली मुर्तज़ा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) की जिरह चार सौ अस्सी दिरहम में बिकी। 152 | रसूल अकरम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) और सिद्दीक़-ए-अकबर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के मुबारक दौर में दिरहम अलग-अलग तरह के होते थे। 152 | फ़ारूक़ी दौर में दिरहम तीन प्रकार के थे: 152 | (1) दस दिरहम दस मिस्क़ाल के बराबर वज़न के। 152 | (2) दस दिरहम छह मिस्क़ाल के बराबर वज़न के। 152 | (3) दस दिरहम पाँच मिस्क़ाल के बराबर वज़न के। 152 | हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने तीनों प्रकारों (दस, छह, पाँच) में से प्रत्येक का तिहाई (एक-तिहाई) लिया जिसका योग सात बनता है, और ऐसा दिरहम मुक़र्रर फरमाया जिसमें से सात दिरहम दस मिस्क़ाल के वज़न के बराबर हों। चुनाँचे बाद में लेन-देन में झगड़े से बचने के लिए वही दिरहम चलता रहा। 155 | निष्कर्ष यह निकला कि हज़रत ज़हरा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) का वास्तविक महर-ए-करीम, जिस पर पावन निकाह हुआ, चार सौ (400) मिस्क़ाल चाँदी थी, और जिरह शादी की रस्म के तौर पर पेशगी दी गई जो पावन आदेश से चार सौ अस्सी (480) दिरहम में बिकी।

पेज 15 of 688 (फ़ुटर)

۱۴۲ | ایک عورت بے اجازت شوہر کئی بار میکے چلی گئی اور اکثر لڑتی رہتی ہے، شوہر کو مارا بھی، شوہر ان وجوہ سے مہر نہ دے تو مواخذہ تو نہ ہوگا اور اس کو اپنے گھر رکھے یا نہیں۔ ۱۴۳ | عورت کے فاسقہ اور گنہ گار ہونے سے مہر ساقط نہیں ہوتا۔ ۱۴۴ | ناشزہ عورت کے لئے نفقہ شوہر پر واجب نہیں۔ ۱۴۵ | وقت نکاح مہر فاطمی کا لفظ کہا سکہ رائجہ سے یا دراہم سے اس کی تعداد نہ بتائی تو مہر فاطمی ہی رہے گا یا مہر مثل کی طرف عود کر جائے گا بوجہ اختلاف روایات۔ ۱۴۵ | مہر حضرت سیدۃ النساء بتول زہرا رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی مقدار میں بظاہر مختلف روایات اور ان میں نفیس تطبیق۔ ۱۴۵ | مہر فاطمی کے بارے میں روایاتِ مسندہ معتبرہ بہا تین ہیں۔ ۱۴۵ | اول: مہر مبارک درہم و دینار نہ تھے بلکہ ایک زرہ کہ حضور پُر نور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے حضرت امیر المومنین علی مرتضیٰ کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم کو عطا فرمائی تھی وہی مہر میں دی گئی۔ ۱۴۷ | دوم: چار سو اسی ۴۸۰ درہم تھے۔ ۱۴۹ | سوم: چار سو مثقال چاندی تھی۔ ۱۵۰ | مذکورہ روایاتِ ثلثہ کے سوا جو اقاویل مجہولہ ہیں کہ مہر فاطمی پانچ سو درہم یا چالیس مثقال سونا یا انیس مثقال سونا تھا سب بے اصل ہیں۔ ۱۵۱ | حضرت علی مرتضیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی زرہ چار سو اسی درہم میں فروخت ہوئی۔ ۱۵۲ | رسول اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اور صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے عہد مبارک میں دراہم مختلف ہوتے تھے۔ ۱۵۲ | عہدِ فاروقی میں دراہم تین طرح کے تھے: ۱۵۲ | (۱) دس درہم دس مثقال کے ہم وزن۔ ۱۵۲ | (۲) دس درہم چھ مثقال کے ہم وزن۔ ۱۵۲ | (۳) دس درہم پانچ مثقال کے ہم وزن۔ ۱۵۲ | حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے انواعِ ثلثہ (دس، چھ، پانچ) میں سے ہر ایک کا ثلث لیا جس کا مجموعہ سات بنتا ہے، اور ایسا درہم مقرر فرمایا جس میں سے درہم سات مثقال کے

ہم وزن ہوں چنانچہ بعد ازاں اخذ و عطا میں خصومت سے بچنے کے لئے وہی درہم جاری رہا۔

۱۵۵ | حاصل یہ قرار پایا کہ حضرت زہرا رضی اللہ تعالیٰ عنہا کا اصل مہرِ کریم جس پر عقدِ اقدس واقع ہوا چار سو ۴۰۰ مثقال چاندی تھی اور زرہ برسمِ پیشگی وقتِ زفاف دی گئی کہ بحکمِ اقدس چار سو اسی ۴۸۰ درہم کو بکی۔

(فوٹر) Page 15 of 688

Fatawa Razawiyya (Right Header) Volume 12 (Left Header)

156: After marriage, it was discovered that the husband's mother had breastfed the wife's father. Intercourse took place in ignorance. What is the ruling regarding the dower? 159: An explicitly stated matter takes precedence over a matter understood by implication through custom, tradition, etc.

156: In an irregular marriage (nikah fasid), separation (mutaraka) can occur by words alone; for example, by saying "I have opened your way" or "I have left you." 159: Jewelry etc. given by the husband to the wife, if ownership (tamleek) is not proven either explicitly or by custom, then the husband's statement will be considered credible, and he can take it back by force.

157: If a marriage with prohibited relatives (maharam) happens unintentionally, after intercourse, the full proper dower (mahr mithl) becomes obligatory, even if it exceeds the specified amount. 160: Without transfer of ownership by the husband, the wife's using, wearing, and utilizing jewelry etc. does not establish her ownership.

157: Hinda's marriage took place with Zaid in her adulthood; departure to the husband's home (rukhsati) did not happen. If Hinda wants her dower, can she get it or not? 160: Regarding clothing for wearing at home, the provision of which had become obligatory for the husband as maintenance (nafaqa); if he provides them and then claims, "I did not make the wife the owner," then the husband's statement should not be considered credible in this matter.

157: If a marriage is valid but not binding (ghayr lazim) and one of the spouses dies before cancellation (radd), the entire dower will be obligatory. 160: If a woman admits that a certain item was the husband's property and then claims its ownership has been transferred to her, her claim will not be proven without witnesses.

157: The marriage was suspended (mawqoof) and not yet implemented (naafidh) when one of the spouses died; in this case, no dower at all will be given. 160: He married his wife's foster sister without divorcing his wife. When it was known to be forbidden, he wanted to divorce the second wife. She demands dower. In this case, is only separation (tafriq) credible, or will a divorce occur, and will the dower be obligatory on the husband or not?

158: Zaid married a woman, found her physically unsuitable for a man, and divorced her. Will dower be obligatory, and if so, how much? 160: If one sister is already in marriage, marriage with the second is irregular (fasid).

159: Zaid turned out his wedded wife and did not provide maintenance for several months, then divorced her. The woman's dower was (475). Zaid had registered a house (Siddiqah) in lieu of the dower debt. Now he has evicted the woman and claims to take back the jewelry he gave. What is the ruling? 160: Separation (mutaraka) is obligatory in an irregular (fasid) marriage.

159: When husband and wife gift something to each other, they have no right to revoke it, even if the marriage is terminated.

Page 16 of 688 (Footer)

फ़तावा रज़विया (दाएँ शीर्षक) जिल्द बारहवीं (बाएँ शीर्षक)

156: निकाह के बाद पता चला कि शौहर की माँ ने बीवी के बाप को दूध पिलाया है। अज्ञानता में हमबिस्तरी हो चुकी, महर के संबंध में क्या हुक्म है? 159: साफ़ तौर पर कही गई बात को उस बात पर वरीयता दी जाती है जो रीति-रिवाजों आदि के माध्यम से इशारों में समझी जाती है।

156: निकाह-ए-फ़ासिद (अनियमित निकाह) में जुबानी तौर पर भी अलगाव (मुतारका) हो सकता है, जैसे यह कहना कि "मैंने तेरा रास्ता खोल दिया" या "तुझे छोड़ दिया।" 159: शौहर ने जो ज़ेवर आदि औरत को दिए, अगर उनका स्वामित्व (तमलीक) स्पष्ट रूप से या रिवाज के अनुसार साबित न हो, तो शौहर की बात विश्वसनीय मानी जाएगी और वह उन्हें जबरन वापस ले सकता है।

157: अगर महरमों (निषिद्ध रिश्तेदारों) के बीच अनजाने में निकाह हो जाए, तो हमबिस्तरी के बाद महर-ए-मिसल पूरा देना अनिवार्य होता है, चाहे वह तयशुदा महर से ज़्यादा ही क्यों न हो। 160: शौहर द्वारा स्वामित्व सौंपे बिना, पत्नी के ज़ेवर आदि पहनने या इस्तेमाल करने से वह उसकी मालिक नहीं बन जाती।

157: हिंदा का निकाह बालिग होने पर ज़ैद के साथ हुआ, लेकिन रुख़्सती नहीं हुई। क्या हिंदा महर माँग सकती है या नहीं? 160: घर में पहनने के कपड़े, जिन्हें देना शौहर पर भरण-पोषण (नफ़क़ा) के तौर पर वाजिब हो चुका था, उन्हें देने के बाद अगर वह दावा करे कि "मैंने औरत को मालिक नहीं बनाया था", तो इस मामले में शौहर की बात विश्वसनीय नहीं मानी जानी चाहिए।

157: अगर निकाह लागू (नाफ़िज़) हो लेकिन अनिवार्य (ग़ैर लाज़िम) न हो, और रद्द (रद) होने से पहले किसी एक साथी का इंतकाल हो जाए, तो पूरा महर वाजिब होगा। 160: अगर औरत ने स्वीकार किया कि कोई चीज़ शौहर की संपत्ति थी, फिर दावा करे कि उसका मालिकाना हक उसकी ओर स्थानांतरित हो गया है, तो गवाहों के बिना औरत का यह दावा साबित नहीं होगा।

157: निकाह मुअक़्क़फ़ (स्थगित) था और अभी लागू नहीं हुआ था कि किसी एक का इंतकाल हो गया, तो बिलकुल भी महर नहीं मिलेगा। 160: अपनी पत्नी को तलाक़ दिए बिना उसकी रज़ाई (दूध शरीक) बहन से निकाह कर लिया। जब इसके हराम होने का पता चला तो दूसरी को तलाक़ देना चाहा। वह महर का दावा करती है। इस स्थिति में क्या केवल अलगाव (तफ़रीक़) विश्वसनीय है या तलाक़ होगा और महर शौहर पर वाजिब होगा या नहीं?

158: ज़ैद ने निकाह किया, औरत को मर्द के क़ाबिल नहीं पाया और तलाक़ दे दी। क्या महर वाजिब होगा, और अगर होगा तो कितना? 160: एक बहन निकाह में हो, तो दूसरी से निकाह फ़ासिद (अनियमित) है।

159: ज़ैद ने अपनी ब्याहता को निकाल दिया और कई महीनों तक गुज़ारा भत्ता नहीं दिया, फिर तलाक़ दे दी। बीवी का महर (475) था। ज़ैद ने महर के बदले एक मकान (सिद्दीक़ा) रजिस्ट्री करा दिया था, अब औरत को बेदखल कर दिया और दिए हुए ज़ेवर वापस माँग रहा है। क्या हुक्म है? 160: निकाह-ए-फ़ासिद में अलगाव (मुतारका) अनिवार्य है।

159: जब पति-पत्नी एक-दूसरे को कुछ तोहफ़ा (हिबा) दें, तो निकाह खत्म होने के बाद भी उसे वापस लेने का अधिकार नहीं होता।

पृष्ठ 16 का 688 (पादलेख)

فتاویٰ رضویہ (سرخی دائیں) جلد دو ازدہم (سرخی بائیں)

۱۵۶: نکاح کے بعد معلوم ہوا کہ عورت کے باپ کو شوہر کی ماں نے دودھ پلایا ہے لاعلمی میں ہمبستری ہو چکی مہر کی نسبت کیا حکم ہے۔ ۱۵۹: صراحتاً کہی ہوئی بات عرف ورواج وغیرہ سے دلالتہً سمجھی جانے والی بات پر ترجیح رکھتی ہے۔

۱۵۶: نکاح فاسد میں متارکہ بالقول ہی ہو سکتا ہے مثلاً یوں کہہ دے کہ میں نے تیری راہ کھول دی یا تجھے چھوڑا۔ ۱۵۹: زیور وغیرہ جو شوہر نے عورت کو دیا اور تملیک صراحتاً یا عرفاً کسی طرح ثابت نہ ہوئی تو اس میں قول شوہر معتبر ہوگا اور وہ جبراً واپس لے سکتا ہے۔

۱۵۷: نکاح محارم نادانستہ واقع ہو جائے تو بعد وطی مہر مثل پورا لازم آتا ہے اگرچہ مسمّٰی سے زائد ہو۔ ۱۶۰: بلا تملیک شوہر زیور وغیرہ عورت کے برتنے، پہننے اور استعمال کرنے سے ملک عورت ثابت نہیں ہو سکتی۔

۱۵۷: ہندہ کا نکاح بالغی میں زید کے ساتھ ہوارخصت نہیں ہوئی، ہندہ مہر چاہے تو پاسکتی ہے یا نہیں۔ ۱۶۰: گھر میں پہننے کے کپڑے جن کا دینا بحکم نفقہ شوہر پر واجب ہو چکا تھا وہ دے کر دعویٰ کرے کہ میں نے عورت کو مالک نہیں بنایا تھا تو اس میں شوہر کا قول معتبر نہ ہونا چاہئے۔

۱۵۷: نکاح نافذ غیر لازم ہو اور رَد سے پہلے احد الزوجین کا انتقال ہو جائے تو کل مہر لازم ہوگا۔ ۱۶۰: عورت نے اقرار کیا کہ یہ چیز شوہر کی ملک تھی پھر دعویٰ کرے کہ اس کی ملکیت میری طرف منتقل ہوگئی ہے تو بغیر گواہوں کے عورت کا یہ دعویٰ ثابت نہ ہوگا۔

۱۵۷: نکاح موقوف تھا ہنوز نافذ نہ ہوا تھا احد الزوجین نے انتقال کیا تو اصلاً کچھ مہر نہ ملے گا۔ ۱۶۰: اپنی زوجہ کو بے طلاق دے اس کی رضاعی بہن سے بھی نکاح کر لیا جب اس کا حرام ہونا

معلوم ہوا تو ثانیہ کو طلاق دینا چاہا وہ مطالبہ مہر کرتی ہے اس صورت میں صرف تفریق معتبر ہے یا اس پر طلاق ہوگی اور مہر زوج پر لازم ہوگا یا نہیں۔

۱۵۸: زید نے نکاح کیا عورت کو مرد کے قابل نہ پایا طلاق دے دی مہر لازم ہوگا تو کتنا۔ ۱۶۰: ایک بہن نکاح میں ہو تو دوسری سے نکاح فاسد۔

۱۵۹: زید نے اپنی منکوحہ کو نکال دیا اور کئی مہینے نان نفقہ نہ دیا پھر طلاق دے دی۔ عورت کا مہر (۴۷۵) تھا زید نے ایک مکان (صدیقہ) کا بعوض دین مہر رجسٹری کرا دیا تھا اب عورت کو بے دخل کر دیا، اپنے دئے ہوئے زیور واپس لینے کا دعویدار ہے کیا حکم ہے۔ ۱۶۰: نکاح فاسد میں متارکہ واجب ہے۔

۱۵۹: جب زن وشوہ ایک دوسرے کو کچھ ہبہ کریں تو رجوع کا اختیار نہیں اگرچہ نکاح منقطع ہو جائے۔

Fatawa Razawiyya Volume 12

160 - Mutaraka (separation) is an annulment, not a divorce, even if words of divorce are used. 164 - The husband paid one-sixth of the prompt dower (Mahr Mu'ajjal) at the time of marriage. Now, does the wife, Hindah, have the right to demand the remaining five parts before separation? And if departure (rukhsat) happened but not valid privacy (khalwat-e-sahiha), does she have the right to claim? 161 - In an irregular marriage (Nikah Fasid), if intercourse has actually taken place, then the lesser of the proper dower (Mahr Mithl) and the specified dower (Mahr Musamma) will be mandatory. 165 - What is the Sharia-stipulated Prophetic amount of dower, and what was the dower of the Queen of Paradise (Lady Fatima)? 161 - In an irregular marriage, dower does not become mandatory solely due to privacy (khalwat), kissing and embracing with desire, or penetration in a place other than the vagina. 165 - If marriage was done on the Sharia dower, how much dower should be given after divorce? And (money/property worth 250) he is also an interest-bearing debtor. 161 - An irregular marriage is one in which any condition of validity is missing, such as a marriage without witnesses. 166 - Zaid married off his minor daughter to Amr. The agent specified that the dower fixed would be taken in cash at that time, and there is no promise for payment at the time of departure or otherwise. Departure has not yet occurred. When will Hindah or her father have the right to demand part or all of the dower, and what will this dower be called? 161 - Marriage to two sisters at the same time is irregular. Similarly, marrying the second sister during the waiting period ('iddah) of the first is also irregular. 166 - What are the meanings of deferred dower (Mahr Mu'ajjal), non-deferred (Ghayr Mu'ajjal), and prompt dower (Mu'ajjal), and what are their rulings? 161 - In an irregular marriage, if intercourse occurred in the anus instead of the vagina, dower will not be mandatory. 166 - How many rupees is a Sharia dinar worth? 161 - Since separation in an irregular marriage is actually an annulment and not a divorce, the number of divorces (allowed) will not decrease because of it. 167 - The value of ten dirhams in today's rupees. 161 - Zaid married Hindah for ten dirhams. Dirhams are not in circulation in India. Instead of ten dirhams, will ten dirham-weight of silver be sufficient, or will its count be completed with rupees? If rupees and annas are decided, how many would there be? 167 - When the second level of Prophetic Sharia dower was established, the marriage registrar (Qazi) asked what its amount was. The Qazi who was a witness said (65) rupees. 162 - The minimum dower is two tolas and seven and a half mashas of silver. 167 - What are the amounts for the first, second, third, and fourth levels of dower? 162 -

Marriage occurred for a dower of (property worth 25,000). Now, can the husband increase the dower or not? If he can, what are the conditions for it?

Page 17 of 688

फतावा रज़विया खंड 12

१६० - मुतारका (विच्छेद) एक रद्दीकरण (फस्ख) है, तलाक नहीं, भले ही तलाक के शब्दों का उपयोग किया गया हो। १६४ - पति ने निकाह के समय महर-ए-मुअज्जल (तत्काल महर) का छठा हिस्सा अदा कर दिया। अब क्या पत्नी, हंदा, जुदाई से पहले शेष पांच हिस्सों की मांग करने का अधिकार रखती है? और यदि रुख्सती हुई लेकिन खलवत-ए-सहीहा (पूर्ण गोपनीयता) नहीं हुई, तो क्या उसे दावा करने का अधिकार है? १६१ - निकाह-ए-फासिद (अनियमित विवाह) में, यदि वास्तव में संभोग हो चुका हो, तो महर-ए-मिसल (उचित महर) और महर-ए-मुसम्मा (निर्धारित महर) में से जो कम होगा वह अनिवार्य होगा। १६५ - महर की शरई पैग़म्बरी संख्या क्या है और खातून-ए-जन्नत (हज़रत फ़ातिमा) का महर क्या था? १६१ - निकाह-ए-फासिद में केवल खलवत (गोपनीयता), कामोत्तेजना के साथ चुंबन और आलिंगन, या योनि के अलावा किसी अन्य स्थान पर प्रवेश से महर अनिवार्य नहीं होता है। १६५ - यदि शरई महर पर निकाह किया गया हो, तो तलाक के बाद कितना महर दिया जाए? और वह (माल ६५/२५०) का सूदी (ब्याज वाला) ऋणी भी है। १६१ - निकाह-ए-फासिद वह निकाह है जिसमें वैधता की कोई शर्त गायब हो, उदाहरण के लिए गवाहों के बिना निकाह। १६६ - ज़ैद ने अपनी नाबालिग बेटी का निकाह अम्र से कर दिया। वकील ने स्पष्ट कर दिया कि जो महर तय हुआ है वह उस समय नकद लिया जाएगा और न ही रुख्सती के समय और न ही महर अदा करने का कोई वादा है। अभी तक रुख्सती भी नहीं हुई है। हंदा या उसके पिता को कब महर के आंशिक या पूर्ण भाग की मांग करने का अधिकार होगा, और इस महर को क्या कहा जाएगा? १६१ - एक साथ दो बहनों से निकाह फासिद है, इसी तरह एक की इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) में दूसरी से निकाह भी फासिद है। १६६ - महर-ए-मुअज्जल (विलंबित महर), गैर-मुअज्जल और मुअज्जल (तत्काल महर) के क्या अर्थ हैं, और उनके क्या अहकाम (नियम) हैं? १६१ - निकाह-ए-फासिद में योनि के बजाय मलाशय में संभोग हुआ तो महर अनिवार्य नहीं होगा। १६६ - शरई दीनार कितने रुपये का होता है? १६१ - चूंकि निकाह-ए-फासिद में विच्छेद वास्तव में रद्दीकरण है न कि तलाक, इसलिए इसके कारण तलाक की संख्या में कमी नहीं होगी। १६७ - आज के रुपयों में दस दिरहम का मूल्य। १६१ - ज़ैद ने हंदा से दस दिरहम पर निकाह किया, भारत में दिरहम का चलन नहीं है। क्या दस दिरहम के बदले दस दिरहम भर चाँदी पर्याप्त होगी या इसकी संख्या रुपयों से पूरी की जाएगी? यदि रुपये और आने तय किए जाएं तो वे कितने होंगे? १६७ - जब शरई पैग़म्बरी महर का दूसरा स्तर स्थापित किया गया, तो निकाह कराने वाले काज़ी ने पूछा कि इसकी संख्या क्या है। जो काज़ी गवाह था उसने कहा (६५)

रुपये। १६२ - न्यूनतम महर दो तोले साढे सात माशे चाँदी है। १६७ - प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्तर के महर की संख्या कितनी है? १६२ - निकाह (२५,००० के माल) महर पर हुआ, अब क्या पति महर में वृद्धि कर सकता है या नहीं? यदि कर सकता है, तो उसकी क्या शर्तें हैं?

۱۶۰ - متارکہ فسخ ہے طلاق نہیں اگرچہ الفاظ طلاق سے ہو۔ ۱۶۴ - شوہر نے مہر معجل کا چھٹا حصہ وقت نکاح ادا کر دیا، اب ہندہ زوجہ کو باقی پانچ حصوں کا مطالبہ قبل افتراق پہنچتا ہے یا نہیں، اور اگر رخصت ہوئی خلوت صحیحہ نہ ہوئی تو دعویٰ کا اختیار ہے یا نہیں۔ ۱۶۱ - نکاح فاسد میں حقیقتاً وطی کر چکا ہو تو مہر مثل و مہر مسمیٰ میں سے جو کم ہو گا لازم آئے گا۔ ۱۶۵ - مہر کی تعداد شرعی پیمبری کیا ہے اور حضرت خاتونِ جنت کا مہر کیا تھا۔ ۱۶۱ - نکاح فاسد میں محض خلوت یا بوس و کنار بشہوت یا غیر فرج میں دخول سے مہر لازم نہیں ہوتا۔ ۱۶۵ - مہر شرعی پر نکاح کیا تو بعد طلاق کتنا مہر دے اور (مال صہ ۲۵۰) کا سودی قرضدار بھی ہے۔ ۱۶۱ - نکاح فاسد وہ نکاح ہے جس میں شرائط صحت سے کوئی مفقود ہو مثلاً بے شہود نکاح۔ ۱۶۶ - زید نے اپنی دختر نابالغہ کا عمرو سے نکاح کر دیا وکیل نے تصریح کردی کہ جو مہر بندھا ہے وہ اس وقت نقد لیا جائے گا اور نہ وقتِ رخصت اور نہ کوئی وعدہ ادائے مہر کا ہے نہ ہنوز رخصت ہوئی ہے تو ہندہ یا اس کے باپ کو جزیا کل مہر کہ مطالبہ کا کس وقت اختیار ہو گا اور اس مہر کو کون سا مہر کہا جائے گا۔ ۱۶۱ - معاً دو بہنوں سے نکاح فاسد ہے، یونہی ایک کی عدت میں دوسری سے نکاح بھی فاسد ہے۔ ۱۶۶ - مہر مؤجل کے کیا معنی ہیں اور غیر مؤجل کے کیا، اور معجل کے کیا، اور ان کا کیا حکم ہے۔ ۱۶۱ - نکاح فاسد میں قبل کے بجائے دُبُر میں وطی ہوئی تو مہر لازم نہ ہو گا۔ ۱۶۶ - دینار شرعی کتنے روپے کا ہوتا ہے۔ ۱۶۱ - چونکہ نکاح فاسد میں طلاق دراصل نہیں بلکہ فسخ ہے لہذا اس سے تعداد طلاق میں کمی نہ ہو گی۔ ۱۶۷ - دس درہم کی آجکل کے روپے سے قیمت۔ ۱۶۱ - زید نے ہندہ سے دس درہم پر نکاح کیا، ہند میں درہم کا رواج نہیں، کیا بجائے دس درہم دس درہم بھر چاندی کافی ہو گی یا اس کی تعداد روپے سے پوری کی جائے

گا، اگر روپے آنے تجویز ہوں تو کتنے ہوں گے۔ ۱۶۷ - مہر درجہ دوم شرع پیمبری قائم کیا گیا تو قاضی نکاح خواں نے کہ اس کی تعداد کیا ہے، جو قاضی شاہد تھا اس نے کہا (صہ ۶۵) روپے۔ ۱۶۲ - کم از کم مہر دو تولے ساڑھے سات ماشے چاندی ہے۔ ۱۶۷ - مہر درجہ اول، دوم، سوم، چہارم کی تعداد کتنی ہے۔ ۱۶۲ - نکاح (مال صہ ۲۵۰۰۰) مہر پر ہوا اب شوہر مہر میں اضافہ کر سکتا ہے یا نہیں، اگر کر سکتا ہے تو اس کے کیا شرائط ہیں۔

Fatawa Razawiya - Volume Twelve

Zaid married Hind on the condition that if he divorces her, the dower (Mahr) will be 100 rupees, and if she wants a divorce, it will be 3 rupees. If Hind wants a divorce, is she entitled to 100 or 3? 168

If there is a common custom in a community or city that even if not explicitly stated, a certain amount must be paid in advance, then it will become 'Mu'ajjal' (prompt dower) even without an explicit agreement. The rest will remain 'Muwajjal' (deferred dower) or 'Mu'akhkhar' (delayed dower) as usual. 171

A person wrote a deed for his wife stating that all expenses for celebrations of weddings, sorrows, and family events will be his responsibility, and it has no connection with income, salary, or estate. After this deed, if he or his children do not fulfill this condition, and whatever he gives to the wife, if he counts it towards her mahr, what is the ruling? 169

Will marriage be valid without determining the Mahr? And if Shar'i Mahr is mentioned, how much will be mandatory? 172

Whatever the husband gave to the wife, if he says under oath that "I gave it as Mahr," then except for three cases, his statement will be accepted. 169

Shar'i Mahr, which is four hundred Mithqals of silver for pious daughters, how many rupees is it in today's currency? 172

Is there a fixed amount for Mu'ajjal (prompt) and Mu'ajjal (deferred) mahr? And at what time is one authorized to receive the dower money, and is there any reason? 171

The Mahr of the pure wives (Azwaj-e-Mutahharaat), except for Umm Habiba (may Allah be pleased with her), is five hundred Dirhams. How much is that in the current currency? Please clarify the weight of Dirham, Uqiyah, Mithqal, and Dinar. 173

How many rupees are ten Shari' Dirhams in current currency? 171 173

Mahr is of three types: (1) Mu'ajjal (Prompt), (2) Mu'ajjal (Deferred), (3) Mu'akhkhar (Delayed).			
Mu'akhkhar mahr is that which was neither agreed upon in advance nor was any time limit fixed, thus it was fixed in an absolute and vague manner.	171	Nowadays, Mahr is fixed more than one's status, for which there is no way of payment in the current situation. If one accepts it thinking in heart that it doesn't have to be paid and it's just verbal expenditure, and then marries, what is the ruling?	173
Nowadays, generally, mahr is fixed as Mu'akhkhar (delayed).	171	What is the situation where a wife is entitled to receive only one pair of clothes?	173
In Mu'akhkhar mahr, the woman has no right to demand until death or divorce occurs.	171	Based on false news that the in-laws would poison her, the parents' side has kept Hind. Their intention is to collect the mahr and marry her off elsewhere. Half of the mahr is Mu'ajjal (prompt) and half is non-Mu'ajjal. There is no time limit for Mu'ajjal. Is it permissible to keep her away, collect the mahr before divorce, and marry her elsewhere?	173
The pure Shariah has not fixed any specific amount for Mu'ajjal and Mu'ajjal mahr.	171		

ज़ैद ने हिंदा से इस शर्त पर निकाह किया कि अगर मैं तुझे तलाक़ दूँ तो महर सौ रुपये दूँ और तू खुद तलाक़ चाहे तो तीन रुपये, हिंदा तलाक़ चाहती है तो सौ की मुस्तहिक होगी या तीन की। १६८

अगर किसी क़ौम या शहर का रिवाज आम हो कि अगरचे तसरीह न करें मगर इस क़दर पेशगी देना होता है तो बिला क़रार दाद सरीह भी इतना मुअज्जल हो जाएगा बाक़ी बदस्तूर मुअज्जल या मुअख़्ख़र रहेगा। १७१

एक शख़्स ने अपनी मनकूहा (पत्नी) को क़बाजा लिख दी कि जो कुछ तक़रीबात शादी व ग़मी व ख़ानदानी में सर्फ़ होगा इसके सर अंजाम का सर्फ़ा मेरा है और आमदनी व तनख्वाह व जागी, से कोई अलाक़ा नहीं, इस क़बाजा के बाद वो या इसकी औलाद इस शर्त को वफ़ा न करे तो ज़ौजा को जो कुछ दे वो इसके महर में शुमार करे तो क्या हुक्म है। १६९

बे तअईन (निश्चित किए बिना) महर निकाह होगा या नहीं और शरई महर कहा तो किस क़दर लाज़िम होगा। १७२

शौहर ने जो कुछ औरत को दिया अगर क़सम के साथ कह दे कि मैंने महर में दिया तो तीन सूरतों के मासिवा में इसका क़ौल मान लिया जाएगा। १६९

महर-ए-शरई जो बनात-ए-सालिहात का चार सौ मिस्क़ाल चाँदी है आज कल के सिक्के से कितने रुपये हुए। १७२

महर मुअज्जल व मुअज्जल की कुछ तादाद है या नहीं, और किस वक़्त ज़र-ए-महर वसूल करने का मजाज़ है और कोई सबब है या नहीं। १७१

महर अज़वाज-ए-मुतहरात सिवाए उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा के कि पांच सौ दिरहम है सिक्का-ए-मुरव्वजा से किस क़दर होते हैं, वज़न दिरहम और ओकिया और मिस्क़ाल और दीनार की तसरीह फ़रमाई जाए। १७३

महर तीन क़िस्म है: (१) मुअज्जल (तुरंत देय) (२) मुअज्जल (स्थगित) (३) मुअख़्ख़र (विलंबित)। १७१

महर मुअख़्ख़र ये है कि न पेशगी ठहरी हो न कोई मियाद मुक़र्रर की गई हो यूँही जो मुतलक़ व मुबहम तौर पर बंधा हो। १७१

आज कल आम महर बतौर मुअख़्ख़र ही बंधते हैं। १७१

महर मुअख़्ख़र में जब तक मौत या तलाक़ न हो औरत को मुतालबा का इख़्तियार नहीं। १७१

महर मुअज्जल व मुअज्जल के लिए शरह मुतह्न ने कोई तादाद मुअईयन न फ़रमाई। १७१

दस दिरहम शरई के सिक्का-ए-मुरव्वजा से कितने रुपये होते हैं। १७३

आज कल जो हैसियत से ज़ियादा महर बांधा जाता है जिसके अदा की कोई सूरत हालत-ए-मौजूदा से नहीं, दिल में ख्याल करके कि देना पड़ता नहीं ज़बानी जमा खर्च है क़बूल कर लो निकाह करे तो क्या हुक्म है। १७३

वो कौन सी सूरत है कि सिर्फ एक जोड़ा कपड़ा पाने की ज़ौजा मुस्तहिक है। १७३

मायके वालों ने महज़ झूठी ख़बर पर कि ससुराल वाले ज़हर दे देंगे हिंदा को रोक रखा है उनका इरादा महर वसूल करके दूसरी जगह शादी कर देने का है, निस्फ़ महर मुअज्जल है और निस्फ़ ग़ैर मुअज्जल, मुअज्जल में ज़माना की कोई हद नहीं इसे रोक रखना क़ब्ल तलाक़ महर वसूल करना, दूसरी जगह शादी करना जाइज़ है या नहीं। १७३

पृष्ठ १८/६८८

زید نے ہندہ سے اس شرط پر نکاح کیا کہ اگر میں تجھے طلاق دوں تو مہر سو روپے دوں اور تو خود طلاق چاہے تو تین ۱۶۸ روپے ، ہندہ طلاق چاہتی ہے تو سو کی مستحق ہو گی یا تین کی۔

ایک شخص نے اپنی منکوحہ کو قبالہ لکھ دی کہ جو کچھ تقریبات شادی و غمی و خاندانی میں صرف ہو گا اس کے سر انجام کا صرفہ میرا ہے اور آمدنی و تنخواہ و ۱۶۹ جاگیر سے کوئی علاقہ نہیں، اس قبالہ کے بعد وہ یا اس کی اولاد اس شرط کو وفانہ کرے تو زوجہ کو جو کچھ دے وہ اس کے مہر میں شمار کرے تو کیا حکم ہے۔

شوہر نے جو کچھ عورت کو دیا اگر قسم کے ساتھ کہہ دے کہ میں نے مہر میں دیا ۱۶۹ تو تین صورتوں کے ماسوا میں اس کا قول مان لیا جائے گا۔

۱۷۱

اگر کسی قوم یا شہر کا رواج عام ہو کہ اگرچہ تصریح نہ کریں مگر اس قدر ۱۷۱ پیشگی دینا ہوتا ہے تو بلا قرار داد صریح بھی اتنا معجل ہو جائے گا باقی بدستور مؤجل یا مؤخر رہے گا۔

بے تعین مہر نکاح ہوگا یا نہیں اور شرعی ۱۷۲ مہر کہا تو کس قدر لازم ہوگا۔

مہر شرعی جو بنات صالحات کا چار سو ۱۷۲ مثقال چاندی ہے آج کل کے سکہ سے کتنے روپے ہوئے۔

۱۷۳

مہر ازواج مطہرات سوائے اِمِ حبیبہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے کہ پانچ سو درہم ہے سکہ مروجہ سے کس قدر ہوتے ہیں، وزن درہم اور اوقیہ اور مثقال اور دینار کی صراحت فرمائی جائے۔

مہر معجل و مؤجل کی کچھ تعداد ہے یا نہیں، اور کس وقت زرِ مہر وصول کرنے کا مجاز ہے اور کوئی سبب ہے یا نہیں۔

مہر تین قسم ہے: (۱) معجل (۲) مؤجل (۳) مؤخر۔ ۱۷۱

دس درہم شرعی کے سکہ مروجہ سے کے روپے ہوتے ہیں۔ ۱۷۳

آج کل جو حیثیت سے زیادہ مہر باندھا جاتا ہے جس کے ادا کی کوئی صورت حالتِ موجودہ سے نہیں، دل میں خیال کر کے کہ دینا پڑتا نہیں زبانی جمع خرچ ہے قبول کر لو نکاح کرے تو کیا حکم ہے۔ ۱۷۳

مہر مؤخر یہ ہے کہ نہ پیشگی ٹھہری ہو نہ کوئی میعاد مقرر کی گئی ہو یونہی جو مطلق و مبہم طور پر بندھا ہو۔ ۱۷۱

وہ کون سی صورت ہے کہ صرف ایک جوڑا کپڑا پانے کی زوجہ مستحق ہے۔ ۱۷۳

آج کل عام مہر بطور مؤخر ہی بندھتے ہیں۔ ۱۷۱

میکے والوں نے محض جھوٹی خبر پر کہ سسرال والے زہر دے دیں گے ہندہ کو روک رکھا ہے ان کا ارادہ مہر وصول کر کے دوسری جگہ شادی کر دینے کا ہے، ۱۷۳

مہر مؤخر میں جب تک موت یا طلاق نہ ہو عورت کو مطالبہ کا اختیار نہیں۔ ۱۷۱

نصف مہر معجل ہے اور نصف غیر معجل، معجل میں زمانہ کی کوئی حد نہیں

اسے روک رکھنا قبل طلاق مہر وصول

کرنا، دوسری جگہ شادی کرنا جائز ہے یا

نہیں-

مہر معجل و مؤجل کے لئے شرع مطہر
۱۷۱
نے کوئی تعداد معین نہ فرمائی۔

صفحہ ۱۸ از ۶۸۸

Fatawa Rizvia Volume 12

- What is the ruling regarding matters decided by the community that are outside the Shari'ah? (176) | What should be the minimum dower (Mahr) in a renewal of marriage (Tajdeed-e-Nikah)? (176)
- If a wife knows that the marriage will not work out and gives up her entire dower for her release, and returns what she received, then it is permissible. (176) | A person died after marriage without intimacy. How much dower became mandatory? After how many days should this woman's (remarriage) take place? Some say there is no waiting period ('Iddah) for such a marriage because if there was no intimacy, what is the 'Iddah for? Some say she should marry after three months. (176)
- Taking and giving interest remains strictly forbidden even if both parties agree. (177) | According to one's status and salary, what is the maximum permissible Shari'i dower to fix, and is there any accountability for dower exceeding one's status? (177)
- In the rights of people (Huquq-ul-Ibad), if the owner of the right agrees, there is no prohibition. (177) | If the woman's heirs forgive her dower from her husband or his heirs, will it be Shari'i permissible or not? (177)
- Taking another's property by force is forbidden, but taking it with their consent is lawful. (177) | Zaid, after repentance, married a promiscuous woman for a Prophetic Shari'i dower. There is no woman of her tribe, and if there were, her marriage details are unknown, so 'Mahr-e-Mithl' (typical dower) cannot be determined. After Zaid's death, that woman abuses him and calls him an illegitimate child. Now, those people come to her place who did not come during Zaid's life. She roams around at night, goes to lawyers, and now claims all things. What will be her dower? (177)
- Is it necessary to write 'Kabeen' in deferred dower (Mu'ajjal) or not? What is its content according to Shari'ah? (175) | What is the condition for paying prompt dower (Mu'ajjal)? If a marriage was on prompt dower and about 25 years passed without the dower being paid, does it become deferred (Mu'ajjal) or will the entitlement cease? (178)
- In 'Mahr-e-Mithl', is the dower of the pure wives (Azwaj-e-Mutahharat) of the Prophet superior, or familial examples like mother and paternal aunt? (175) | In villages, there are no details of dower. If there are, it's such that jewelry etc. is considered prompt dower, and some judges give it a non-prompt name;

otherwise, generally, they don't name prompt or deferred. In such a situation, can the woman demand from her husband to give dower first and then she will go (Rukhsati)? (179)

- By 'Mahr-e-Mithl', it means the dower of one's father's family. (175) | A husband asked his wife to forgive the dower. Upon her refusal, he troubled her greatly and kept her under hardship. The in-laws also spoke ill of her. She came to her parents' house. When the husband came to take her, she said she wouldn't go until she received the full dower. Can he take her by force without paying the dower? (179)
- The pure wives (Azwaj-e-Mutahharat) are 'Mothers of the Believers' (Ummahat-ul-Mu'minin), not 'Mothers of the female Believers' (Ummahat-ul-Mu'minat). (176)

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

- जो मामलात बिरादरी से तय हों और शरीअत से बाहर हों तो क्या हुक्म है। (176) | तजदीद-ए-निकाह में महर कम अज़ कम कितना होना चाहिए। (176)
- अगर ज़ौजा (पत्नी) यह जाने कि निबाह न होगा तो अपनी ख़लासी के लिए कुल महर छोड़ दे और लिया हुआ वापस दे दे तो जायज़ है। (176) | एक शख्स बाद निकाह बे-क़ुर्बत (बिना संभोग) किए मर गया, महर कितना लाज़िम हुआ? उस औरत का निकाह कितने दिन बाद किया जाए? कुछ लोग कहते हैं ऐसे निकाह की इद्दत नहीं क्योंकि जब क़ुर्बत नहीं तो इद्दत किस चीज़ की, और कुछ कहते हैं तीन माह के बाद निकाह किया जाए। (176)
- सूद (ब्याज) के लेने और देने पर अगर दोनों राज़ी हों तब भी हराम-ए-क़तई रहती है। (177) | हस्ब-ए-हैसियत (हैसियत के अनुसार) तनख्वाह ज़ाइद से ज़ाइद कितना महर शरई बांधना जायज़ है और हैसियत से ज़ाइद महर होने का कुछ मुवाखिज़ा (जवाबदेही) है। (177)
- हुक़ूक-उल-इबाद में अगर साहब-ए-हक़ (हक़ वाला) राज़ी हो तो ममानअत नहीं रहती। (177) | औरत के वर्सा (उत्तराधिकारियों) से उसका महर शौहर या वर्सा-ए-शौहर बख्शवा लें तो शरअन जायज़ होगा या नहीं। (177)
- पराया माल जब्रन लेना हराम और उसकी खुशी से लेना हलाल है। (177) | ज़ैद ने एक फ़ाहीशा (व्यभिचारिणी) से बाद तौबा महर-ए-शरअ पैम्बरी पर निकाह किया, उसके क़बीले की कोई औरत नहीं और हो तो उसका निकाह मालूम तो महर-ए-मिसल मालूम नहीं हो सकता। बाद मार्ग ज़ैद वो औरत उसे गालियां देती वलद-उज़-ज़िना कहती है, अब वो लोग उसके यहाँ आते हैं जो ज़ैद की ज़िंदगी में नहीं आते थे, रातों को घूमती है वकीलों के पास जाती है, अब वो सब अशिया (चीज़ों) पर दावा करती है उसका महर कितना होगा। (177)
- मुअज्जल (स्थगित महर) में काबीन का लिखना ज़रूरी है या नहीं है, तो मुवाफ़िक़-ए-शरीअत उसका मज़मून क्या है। (175) | महर-ए-मुअज्जल की शर्त अदा किया है, महर-ए-मुअज्जल पर निकाह हो और तक़रीबन 25 बरस गुज़रें महर अदा न हो तो वो मुअज्जल हो गया या उसका इस्तिहक़ाक़ न रहेगा। (178)
- महर-ए-मिसल में महर-ए-अज़वाज-ए-मुतहरात अफ़ज़ल है या खानदानी मिसल उम्म व अम्मा (माँ और बुआ)। (175) | देहात में महर की तफ़सील नहीं होती, और अगर होती है तो यूँ कि ज़ेवर वग़ैरह महर-ए-मुअज्जल होता है और बाज़ क़ाज़ी ग़ैर-मुअज्जल नाम रख देते हैं वरना

अला-उल-उमूम न मुअज्जल और न मुअज्जल कुछ नाम नहीं रखते, ऐसी हालत में हिंदा अपने शौहर से मुतालबा कर सकती है कि पहले महर दे दो तो रुख़सती होगी। (179)

- महर-ए-मिसल से अपने खानदान-ए-पिदर (पिता के खानदान) ही का महर मुराद है। (175) | औरत से खाविन्द ने महर माफ़ करने को कहा, इंकार पर उसे सख्त परेशान किया, तंग रखा, सास ससुर ने भी बुरा भला कहा, वो मायके आ गई, खाविन्द लेने आया तो उसने कहा जब तक कुल महर न ले लूँगी न जाऊँगी, क्या बीच इसे बे-महर अदा किए ज़बरदस्ती ले जा सकते हैं। (179)
- अज़वाज-ए-मुतहरात उम्मात-उल-मोमिनीन हैं, उम्मात-उल-मोमिनात नहीं। (176)

पृष्ठ 19 / 688

- جو معاملات برادری سے طے ہوں اور شریعت سے باہر ہوں تو کیا حکم ہے۔ (۱۷۶) | تجدید نکاح میں مہر کم از کم کتنا ہونا چاہئے۔ (۱۷۶)
- اگر زوجہ یہ جانے کہ نباہ نہ ہوگا تو اپنی خلاصی کے لئے کل مہر چھوڑ دے اور لیا ہوا واپس دے دے تو جائز ہے۔ (۱۷۶) | ایک شخص بعد نکاح بے قربت کئے مرگیا مہر کتنا لازم ہوا، اس عورت کا نکاح کتنے دن بعد کیا جائے، بعض لوگ کہتے ہیں ایسے نکاح کی عدت نہیں کیونکہ جب قربت نہیں تو عدت کس چیز کی، اور بعض کہتے ہیں تین ماہ کے بعد نکاح کیا جائے۔ (۱۷۶)
- سود کے لینے اور دینے پر اگر دونوں راضی ہوں تب بھی حرام قطعی رہتی ہے۔ (۱۷۷) | حسب حیثیت تنخواہ زائد سے زائد کتنا مہر شرعی باندھنا جائز ہے اور حیثیت سے زائد مہر ہونے کا کچھ مواخذہ ہے۔ (۱۷۷)
- حقوق العباد میں اگر صاحب حق راضی ہوں تو ممانعت نہیں رہتی۔ (۱۷۷) | عورت کے ورثاء سے اس کا مہر شوہر یا ورثائے شوہر بخشوا لیں تو شرعاً جائز ہوگا یا نہیں۔ (۱۷۷)
- پرایا مال جبراً لینا حرام اور اس کی خوشی سے لینا حلال ہے۔ (۱۷۷) | زید نے ایک فاحشہ سے بعد توبہ مہر شرع پیمبری پر نکاح کیا اس کے قبیلہ کی کوئی عورت نہیں اور ہو تو اس کا نکاح معلوم تو مہر مثل معلوم نہیں ہوسکتا۔ بعد مرگ زید وہ عورت اسے گالیاں دیتی ولد الزناء کہتی ہے، اب وہ لوگ اس کے یہاں آتے ہیں جو زید کی زندگی میں نہیں آتے تھے، راتوں کو گھومتی ہے وکیلوں کے پاس جاتی ہے، اب وہ سب اشیاء پر دعویٰ کرتی ہے اس کا مہر کتنا ہوگا۔ (۱۷۷)

- مؤجل میں کابین کا لکھنا ضرور ہے یا نہیں ہے تو موافق شریعت اس کا مضمون کیا ہے۔ (۱۷۵) | مہر معجل کی شرط ادا کیا ہے، مہر معجل پر نکاح ہو اور تقریباً ۲۵ برس گزریں مہر ادا نہ ہو تو وہ مؤجل ہو گیا یا اس کا استحقاق نہ رہے گا۔ (۱۷۸)
- مہر مثل میں مہر ازواج مطہرات افضل ہے یا خاندانی مثل ام وعمہ۔ (۱۷۵) | دیہات میں مہر کی تفصیل نہیں ہوتی، اور اگر ہوتی ہے تو یوں کہ زیور وغیرہ مہر معجل ہوتا ہے اور بعض قاضی غیر معجل نام رکھ دیتے ہیں ورنہ علی العموم نہ معجل اور نہ مؤجل کچھ نام نہیں رکھتے، ایسی حالت میں ہندہ اپنے شوہر سے مطالبہ کر سکتی ہے کہ پہلے مہر دے دو تو رخصت ہوں گی۔ (۱۷۹)
- مہر مثل سے اپنے خاندان پدر ہی کا مہر مراد ہے۔ (۱۷۵) | عورت سے خاوند نے مہر معاف کرنے کو کہا انکار پر اسے سخت پریشان کیا، تنگ رکھا، ساس سسر نے بھی برا بھلا کہا، وہ میکے آگئی، خاوند لینے آیا تو اس نے کہا جب تک کُل مہر نہ لے لوں گی نہ جاؤں گی کیا بیچ اسے بے مہر ادا کئے زبردستی لیجا سکتے ہیں۔ (۱۷۹)
- ازواج مطہرات امہات المومنین ہیں، امہات المومنات نہیں۔ (۱۷۶)

Fatawa Razviya, Volume 12

- It is absolutely forbidden for a husband to force his wife to waive her dower (Mahr), and doing so does not result in a waiver. (Page 182)
- Masuman (the claimant) asserts that her Mahr is 110 rupees. The lawyer and witnesses have died. There are four paternal cousin sisters; the Mahr amounts for three are unknown, but everyone says it was according to Sharia Mohammadi. One sister's Mahr is known to be 500 rupees. In such a situation, what will be decided as Masuman's Mahr? (Page 182)
- A man and woman stayed in a room only on the first day, and enemies were standing around to attack. The couple also knew this. In the morning, the man gave a divorce. The man admits to consummation, but the woman denies it. Is this consummation or valid seclusion (khalwat) considered credible or not? (Page 183)
- A person has been missing for 30 years. His brother does not give the wife her husband's share, saying there has been no news of him for five or six years, so he probably died. The law says that after three years, a claim for Mahr can be made. Now, if you say he died, I can demand Mahr for up to three years from today. She states the Mahr amount is 200. Hind's relatives don't remember the amount. Hind states the same Mahr as her mother, paternal aunt, nieces, and brothers. In this case, can the local people testify in court to help her get her right, saying her Mahr was 200 rupees? (Page 183)
- An admission is voided by the denial of the person in whose favor it was made (muqarr-lahu). (Page 184)
- A person stayed away for fifteen months. Upon return, he discovered his wife was eight months pregnant. He is ready for divorce. After the divorce, can that woman claim Mahr or not? (Page 184)
- During his wife's death throes, he asked for a waiver of Mahr. Since her voice was gone, she only nodded her head. Was the Mahr waived or not? (Page 184)
- One sister was in marriage, then he married the second one as well. Are both these women entitled to Mahr or not? What is the ruling on the second marriage and what is the status of children born to both? (Page 184)
- He gave a written divorce in which it was also written that "the two children from your womb are given to you in lieu of your Mahr." What is the ruling? (Page 184)

- Children of established lineage will inherit from the father's estate, even if born out of wedlock. (Page 184)
- The Mahr is prompt (Mu'ajjal). The husband inflicts various pains and sufferings on the wife and does not provide maintenance (nafaqa). Can the woman file a lawsuit to recover the Mahr and withhold herself from him? (Page 184)
- In invalid (fasid) and void (baatil) marriages, the spouses do not inherit from each other. (Page 184)

फ़तावा-ए-रिज़विया, जिल्द 12

- पति के लिए यह पूर्णतः हराम है कि वह पत्नी पर महर माफ़ी के लिए दबाव डाले और ऐसा करने से महर माफ़ नहीं होगा। (पृष्ठ १८२)
- मासूमन (दावेदार) का कहना है कि महर ११० रुपये है। वकील और गवाह मर चुके हैं। चार चचेरी बहनें हैं, तीन के महर की राशि पता नहीं है, सब यही कहते हैं कि शरीयत-ए-मोहम्मदी के अनुसार था। एक बहन का महर ५०० रुपये पता चला है। ऐसी स्थिति में मासूमन का महर क्या तय किया जाएगा? (पृष्ठ १८२)
- स्त्री और पुरुष केवल पहले दिन एक कमरे में रहे और दुश्मन कमरे के चारों ओर हमला करने के लिए खड़े थे, जोड़ों को भी यह पता था। सुबह पति ने तलाक दे दिया। पति संभोग (दखुल) स्वीकार करता है और पत्नी इनकार करती है। क्या यह संभोग या एकांत (खलवत) विश्वसनीय माना जाएगा या नहीं? (पृष्ठ १८३)
- एक व्यक्ति ३० साल से लापता है। उसका भाई उसकी पत्नी को उसके पति का हिस्सा नहीं देता, यह कहते हुए कि पाँच-छह साल से उसकी कोई खबर नहीं है, शायद वह मर गया होगा। कानून कहता है कि तीन साल बाद महर का दावा किया जा सकता है। अब अगर आप कहते हैं कि वह मर गया, तो मैं आज से तीन साल तक महर मांग सकती हूँ। वह महर की राशि २०० बताती है। हिंदा के रिश्तेदारों को राशि याद नहीं है। हिंदा अपनी माँ, बुआ, भतीजी और भाइयों जैसा ही महर बताती है। क्या इस स्थिति में मोहल्ले के लोग अदालत में उसे उसका अधिकार दिलाने के लिए यह कह सकते हैं कि उसका महर २०० रुपये था या नहीं? (पृष्ठ १८३)
- जिसके पक्ष में इकरार किया गया हो (मुक़र-लहु), उसके इनकार करने से वह इकरार रद्द हो जाता है। (पृष्ठ १८४)
- एक व्यक्ति पंद्रह महीने बाहर रहा, वापस आया तो पता चला कि पत्नी को आठ महीने का गर्भ है। वह तलाक देने को तैयार है। तलाक के बाद क्या वह स्त्री महर का दावा कर सकती है या नहीं? (पृष्ठ १८४)
- पत्नी की मृत्यु के समय महर की माफ़ी चाही। आवाज़ बंद हो जाने के कारण उसने केवल सिर हिला दिया। महर माफ़ हुआ या नहीं? (पृष्ठ १८४)

- एक बहन निकाह में थी, फिर दूसरी से भी कर लिया। क्या ये दोनों औरतें महर की हकदार हैं या नहीं? दूसरे निकाह का क्या हुक्म है और उन दोनों से जो संतान हो उसका क्या हुक्म है? (पृष्ठ १८४)
- तलाक लिख कर दिया जिसमें यह भी लिखा कि तेरे गर्भ के दोनों बच्चे तेरे महर में दिए। इस पर क्या हुक्म है? (पृष्ठ १८४)
- सिद्ध वंश (साबितुल नसब) वाली संतान पिता की विरासत पाएगी, चाहे वह अवैध (हरामी) ही क्यों न हो। (पृष्ठ १८४)
- महर मुअज्जल (तत्काल देय) है। पति पत्नी को तरह-तरह की तकलीफें देता है और गुज़ारा भत्ता (नफ़क़ा) भी नहीं देता। क्या पत्नी मुकदमा दायर करके महर वसूल कर सकती है और खुद को उससे रोक सकती है? (पृष्ठ १८४)
- निकाह-ए-फासिद और निकाह-ए-बातिल में जीवनसाथी एक-दूसरे के वारिस नहीं होते। (पृष्ठ १८४)

पृष्ठ 20 / 688

۱۸۰ شوہر پر حرام قطعی ہے کہ زوجہ پر معافی مہر کا جبر کرے اور نہ ایسا کرنے سے معاف ہوگا۔ ۱۸۲ ۱۸۰ معصومن مدعیہ ہے کہ مہر ۱۱۰ روپے ہے وکیل اور گواہ مر چکے ہیں چار چچازاد بہنیں، تین کے مہر کی تعداد معلوم نہیں، سب یہی کہتے ہیں کہ شرع محمدی تھا، ایک بہن کا مہر پانچ سو معلوم ہوا ہے، ایسی صورت میں معصومن کا مہر کیا قرار پائے گا۔ ۱۸۲ ۱۸۰ مرد و عورت صرف روز اوّل کوٹھے میں رہے اور دشمن کوٹھے کے گردا گرد مارنے کو کھڑے رہے، زوجین کو بھی یہ معلوم تھا، صبح مرد نے طلاق دے دی، مرد دخول کا مقر ہے اور عورت منکر۔ یہ دخول یا خلوت معتبر ہے یا نہیں۔ ۱۸۳ ۱۸۰ ایک شخص تیس ۳۰ سال سے غائب ہے اس کا بھائی اس کی زوجہ کو اس کے شوہر کا حصہ نہیں دیتا کہ پانچ چھ برس سے اس کی کوئی خبر نہیں غالباً مر گیا ہو گا اور قانون کہتا ہے کہ تین برس بعد دعویٰ مہر اب اگر تم کہتے ہو کہ مر گیا تو آج سے تین برس تک مہر طلب کر سکتی ہوں، مہر کی تعداد دوسو بتاتی ہے، ہندہ کے اعزّہ کو تعداد یاد نہیں، ہندہ اپنی والدہ اور پھوپھی بھتیجوں بھائیوں کا بھی یہی مہر بتاتی ہے، کیا اس صورت میں اہل محلہ کچہری میں اس کا حق دلانے کے لئے یہ کہہ سکتے ہیں کہ اس کا مہر دوسو ۲۰۰ روپے تھا یا نہیں۔ ۱۸۳ ۱۸۰ اقرار مقرّلہ کے انکار سے رَد ہو جاتا ہے۔ ۱۸۴ ۱۸۰ ایک شخص پندرہ ۱۵ ماہ باہر رہا، واپس آیا تو معلوم ہوا کہ بی بی کے آٹھ ماہ کا حمل ہے وہ طلاق پر آمادہ ہے بعد طلاق وہ عورت مہر کا دعویٰ کر سکتی ہے یا نہیں۔ ۱۸۴ ۱۸۰ بی بی کے نزع کے وقت مہر کی معافی چاہی اس نے آواز بند ہو جانے کے سبب سر ہی ہلا دیا، مہر معاف ہو گیا یا نہیں۔ ۱۸۴ ۱۸۰ ایک بہن نکاح میں تھی پھر دوسری سے بھی کر لیا یہ دونوں عورتیں مہر کی مستحق ہیں یا نہیں، نکاحِ دوم کا کیا حکم ہے اور ان دونوں سے جو اولاد ہو اس کا کیا حکم ہے۔

۱۸۴ ۱۸۱ تحریر طلاق دی اس میں یہ بھی لکھا کہ تیرے بطن کے دونوں بچے تیرے مہر میں دئے تو کیا حکم ہے۔ ۱۸۴ ۱۸۱ اولاد ثابت النسب باپ کا ترکہ پائے گی اگرچہ حرامی ہو۔ ۱۸۴ ۱۸۱ مہر معجّل ہے، عورت کو طرح طرح کی اذیتیں تکلیفیں شوہر دیتا ہے نفقہ بھی نہیں دیتا، کیا عورت نالش کر کے مہر وصول کر سکتی ہے اور اپنے نفس کو اس سے روک سکتی ہے۔ ۱۸۴ ۱۸۱ نکاح فاسد و باطل میں زوجین ایک دوسرے کے وارث نہیں۔ ۱۸۴

Fatawa Razawiyya Volume 12

Page	Summary/Ruling	Ref No.	Question/Topic
193	Having nothing left for maintenance does not hinder the validity of the dower (mahr); whatever was given in dower became the woman's property.	185	Hindah (the claimant) proved through witnesses that her dower was one lakh rupees; the husband proved through witnesses that it was ten thousand. Whose witnesses will be credible, those for the lesser amount or those for the greater?
193	The custom of not giving a sister her share of inheritance is void and rejected.	189	Is it mandatory for there to be a dower for marriage? What is the Sharia ruling regarding cash or deferred dower?
193	If both the divorcing husband and the divorced wife say that intercourse and consummation did not occur, what is the ruling?	189	If a woman wishes, she can receive the entire dower like cash or as her debt.
193	If there is a dispute between the divorcer and the divorcee regarding privacy (Khalwat) and consummation, whose word will be trusted?	189	If the husband takes back the jewelry given as prompt dower (Mahr Mu'ajjal), will he be a debtor or not?
193	Proof of valid privacy (Khalwat-e-Sahiha) or consummation will be through witnesses or from the divorcer and the divorcee.	189	The husband promised to buy a house worth five hundred rupees as part of the prompt dower; is the wife entitled to receive the prompt dower or not?
194	The word of a person who denies something in which there is his own benefit is not credible.	189	Can she receive maintenance until the husband pays the prompt dower or not?

Page	Summary/Ruling	Ref No.	Question/Topic
194	Testimony on a negative is not credible.	189	From when and for how long is she entitled to receive non-prompt dower after valid privacy? If she is entitled to receive it at any time, can she refuse to go to the husband's house until she receives it or not?
195	In a certain tribe, it is customary that before the contract, the conditions related to the contract are settled by parents or other relatives. The groom remains silent. He is considered bound by what is settled and he complies. Zaid belongs to this tribe. It was settled that Zaid, after his wife's maturity, will stay at the in-laws' house and provide maintenance, and in lieu of dower which is 5,500 rupees, he will buy immovable property in the wife's name within two years or give cash. Zaid denies the agreements, saying they were with his father, not him, even though he was present and an adult at the time and didn't object. Is Zaid responsible for fulfilling these agreements?	189	Definitions and details of the three types of dower: prompt (Mu'ajjal), deferred (Mu'ajjal), and postponed (Mu'akhkhar).
		191	A person got married and set his entire property as dower. The property has been hereditary, consisting of a rain-fed field, a residential house, and income from a shrine of every kind - his own share; some cash comes from a village. In short, he gifted (Hiba) all movable and immovable property to his

Page Summary/Ruling	Ref No.	Question/Topic
		wife. Is this permissible or not? If not, what kind of dower will be mandatory?

Page 21 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

पेज	सारांश/निर्णय	संदर्भ संख्या	प्रश्न/विषय
193	गुज़ारे (नफ़का) के लिए कुछ न बचना मेहर की वैधता में बाधा नहीं है; जो मेहर में दिया गया वह औरत का हो गया।	185	हिंदा (दावेदार) ने गवाहों से साबित किया कि मेरा मेहर एक लाख रुपये था; पति ने गवाहों से साबित किया कि वह दस हजार था। किसके गवाह विश्वसनीय होंगे, कम वाले या ज़्यादा वाले?
193	यह रिवाज कि बहन को विरासत (तरका) नहीं देते, बातिल और अस्वीकार्य है।	189	क्या निकाह के लिए मेहर का होना लाज़िम है? मेहर के नकद या उधार होने का शरिया हुक्म क्या है?
193	अगर तलाक़ देने वाला और तलाक़शुदा दोनों कहते हैं कि संभोग और प्रवेश नहीं हुआ, तो क्या हुक्म है?	189	अगर औरत चाहे तो पूरे मेहर को नकद की तरह या अपने कर्ज के रूप में वसूल कर सकती है।
193	अगर तलाक़ देने वाले और तलाक़शुदा के बीच एकांत (ख़लवत) और प्रवेश के बारे में विवाद हो, तो किसकी बात पर भरोसा किया जाएगा?	189	पति ने जो जेवर मेहर-ए-मुअज्जल (तुरंत देय मेहर) के रूप में दिया, अगर वह वापस ले ले तो वह कर्जदार होगा या नहीं?
193	सही एकांत (ख़लवत-ए-सहीहा) या प्रवेश का प्रमाण गवाहों से होगा या तलाक़ देने वाले और तलाक़शुदा से।	189	पति ने मेहर-ए-मुअज्जल के हिस्से के रूप में पांच सौ रुपये का मकान खरीद कर देने का वादा किया; क्या पत्नी मेहर-ए-मुअज्जल पाने की हकदार है या नहीं?
194		189	

पेज	सारांश/निर्णय	संदर्भ संख्या	प्रश्न/विषय
	जो व्यक्ति ऐसी बात का इनकार करे जिसमें उसका अपना फायदा हो, उसकी बात विश्वसनीय नहीं है।		जब तक पति मेहर-ए-मुअज्जल अदा न करे, क्या वह गुज़ारा (नान-नफ़का) पा सकती है या नहीं?
194	नकारात्मक (नफ़ी) पर गवाही विश्वसनीय नहीं है।	189	मेहर-ए-ग़ैर-मुअज्जल (देरी से देय मेहर) सही एकांत के बाद कब से कब तक पाने की हकदार है? अगर वह हर समय पाने की हकदार हो, तो जब तक वह उसे प्राप्त न कर ले, क्या वह पति के घर जाने से मना कर सकती है या नहीं?
195	किसी कबीले में रिवाज है कि निकाह से पहले निकाह से संबंधित शर्तें माता-पिता या अन्य रिश्तेदार तय करते हैं। दूल्हा चुप रहता है। जो तय होता है, वह उसका पाबंद माना जाता है और वह पालन करता है। ज़ैद उसी कबीले का है। यह तय हुआ कि ज़ैद पत्नी के बालिग होने के बाद ससुराल में रहकर गुज़ारे (नान-नफ़का) की खबरगिरी करेगा और पाँच हजार पाँच सौ रुपये मेहर के बदले दो साल के भीतर पत्नी के नाम अचल संपत्ति खरीदेगा या नकद देगा। ज़ैद समझौतों से इनकार करता है, कहता है कि यह समझौता मेरे पिता से हुआ था, मुझसे नहीं, हालांकि उस समय वह मौजूद था और बालिग था और किसी बात पर इनकार नहीं किया	189	मेहर के तीन प्रकारों यानी मुअज्जल (तुरंत), मुअज्जल (स्थगित) और मुअख़्ख़र (विलंबित) की परिभाषाएं और नियमों का विवरण।

पेज	सारांश/निर्णय	संदर्भ संख्या	प्रश्न/विषय
	था। क्या ज़ैद इन समझौतों को पूरा करने का ज़िम्मेदार नहीं है?		
		191	एक व्यक्ति ने निकाह किया और अपनी पूरी संपत्ति मेहर में दे दी। संपत्ति वंशानुगत चली आ रही है, जिसमें एक वर्षा-आधारित खेत, एक रिहायशी मकान और खानकाह से हर तरह की आय का अपना हिस्सा शामिल है; एक गाँव से कुछ नकद राशि आती है। सारांश यह कि उसने सभी चल और अचल संपत्ति पत्नी के नाम करके हिबा (उपहार) कर दी। क्या यह जायज़ है या नहीं? यदि नहीं, तो कैसा मेहर लाज़िम होगा?

पेज 21/688

صفحہ خلاصہ / حکم	حوالہ سوال / موضوع نمبر	
		ہندہ مدعیہ نے گواہوں سے ثابت کیا کہ میرا مہر ایک لاکھ روپے تھا شوہر نے گواہوں سے یہ ثابت کیا کہ دس ہزار تھا کس کے گواہ معتبر ہوں گے کمی کے یا زیادتی کے۔
نفقہ کے لئے کچھ پاس نہ رہنا مانع صحت مہر نہیں جو مہر میں ہیں دے دیا وہ عورت کا ہو گیا۔	۱۸۵	۱۹۳
		نکاح کے لئے مہر کا ہونا لازم ہے یا نہیں، مہر کی نقد ادھار، ان کا کیا شرعی حکم ہے۔
یہ رواج کہ بہن کو ترکہ نہیں دیتے باطل و مردود ہے۔	۱۸۹	۱۹۳
		اگر عورت چاہے تو سب مہر کو مثل نقد یا اپنے قرضہ کے وصول کر سکتی ہے۔
اگر طالق و مطلقہ دونوں کہتے ہیں کہ وطی اور دخول نہیں ہوا تو کیا حکم ہے۔	۱۸۹	۱۹۳
		زوج نے جو زیور مہر معجل دیا اگر واپس لے لے تو مقروض ہوگا یا نہیں۔
اگر طالق اور مطلقہ میں خلوت و دخول کے بارے میں اختلاف ہو تو کس کے قول پر اعتماد ہوگا۔	۱۸۹	۱۹۳

صفحہ خلاصہ / حکم		حوالہ سوال / موضوع نمبر
		زوج نے پانچ سو روپے کا
		مکان منجملہ مہر معجل خرید
ثبوت خلوت صحیحہ یا دخول گواہوں سے ہوگا یا ۱۹۳ طالق و مطلقہ سے۔	۱۸۹	کر دینے کا وعدہ کیا تو زوجہ
		مہر معجل پانے کی مستحق
		ہے یا نہیں۔
		جب تک شوہر مہر معجل ادا نہ
جو شخص ایسی بات کا انکار کرے جس میں اس کا ۱۹۴ نفع ہو تو اس کا قول معتبر نہیں۔	۱۸۹	کرے نان نفقہ پاسکتی ہے یا
		نہیں۔
		مہر غیر معجل بعد خلوت
		صحیحہ کب سے کب تک
		پانے کی مستحق ہے، اگر ہر
۱۹۴ نفی پر شہادت معتبر نہیں۔	۱۸۹	وقت پانے کی مستحق ہو تو
		جب تک وصول نہ کرلے زوج
		کے گھر جانے سے انکار کر
		سکتی ہے یا نہیں۔
کسی قبیلہ میں رسم ہے کہ عقد سے پیشتر جو شرائط		مہر کی اقسام ثلثہ یعنی معجل،
۱۹۵ متعلق عقد طے کرنا ہوتے ہیں والدین یا اور اعزہ	۱۸۹	مؤجل اور مؤخر کی تعریفات
طے کرتے ہیں نوشاہ خاموش رہتا ہے جو طے ہوتا		اور احکام کی تفصیل۔

صفحہ خلاصہ / حکم	سوال / موضوع	حوالہ نمبر
ہے اس کا وہ پابند سمجھا جاتا ہے، اور پابندی کرتا ہے زید اسی قبیلہ کا ہے یہ طے ہوا کہ زید بعد بلوغ زوجہ سسرال میں رہ کر نان و نفقہ کی خبر گیری کرے گا اور بعوض مہر جو پانچ ہزار پانسو روپے ہے جائداد غیر منقولہ دو سالہ کے اندر زوجہ کے نام خریدوا دیگا یا نقد دیگا، زید معاہدوں سے منکر ہے کہتا ہے یہ معاہدہ میرے والد سے ہوا تھا نہ مجھ سے، حالانکہ اُس وقت وہ موجود تھا اور بالغ تھا اور کسی بات پر انکار نہ کیا، کیا زید ان معاہدوں کے پورا کرنے کا ذمہ دار نہیں۔		
ایک شخص نے نکاح کیا اپنی ساری جائیداد کا مہر کیا جائیداد علی التوریث چلی آرہی ہے جو ایک کھیت زمین بارانی اور مکان سکنی اور آمدنی خانقاہ ہر قسم حصہ خود، ایک گاؤں سے کچھ نقد رقم آتی ہے وہ غرض سب		۱۹۱

صفحہ خلاصہ / حکم	سوال / موضوع	حوالہ نمبر
	جائداد منقولہ و غیر منقولہ بیوی کے نام کر کے ہبہ کر دی یہ جائز ہے یا نہیں، اگر نہیں تو کیسا مہر لازم ہوگا۔	

Fatawa Razawiyya | Volume 12

199 | 195 | Al-Ma'ruf kal-Mashroot (What is customary is like what is stipulated). Meaning of the Hadith which states that those who marry without the intention of paying the dowry (mahr) will be raised as fornicators on the Day of Judgment.

201 | 195 | Before the contract, it was decided that the deferred dowry (mahr mu'ajjal) was for a period of two years. Within two years, in lieu of the dowry, the husband would purchase immovable property worth five and a half thousand rupees in the wife's name or pay in cash. However, at the time of the contract, it was only stated that the dowry would be absolutely deferred or deferred for two years.

201 | 197 | Bab al-Jihaz (Chapter on Dowry) Zaid, during the engagement of his grandson Khalid, gave a piece of jewelry to Khalid's father Amr and said, "I am giving this to the girl as a token from your boy." At that time, Khalid was a minor. Amr accepted it and had the girl wear it on behalf of Khalid. Now the boy and girl have grown up, and the boy is ready for divorce. The jewelry, etc., have been returned. Zaid says, "I should get the jewelry I gave." The boy says, "I should get it." Amr says, "I should get it." Who is entitled to receive it back? Is the husband the owner of the dowry during the wife's lifetime, or is she herself?

202 | 198 | If the husband disposes of the jewelry received in the dowry without the wife's permission, will it be valid or not? If a gift (hiba) is made to a minor and the father takes possession, the gift is complete.

202 | 198 | A father cannot take back what he has handed over to his daughter in a state of good health, nor do his heirs have any right to take it. A gift made to a mahram (blood relative within prohibited degrees) cannot be taken back.

202 | 199 | In these cities, it is customary for a dress set to be sent from the groom's side to the bride with the hope that substantial jewelry, etc., will be received from there. Therefore, very expensive sets are sent, along with other items, and it is explicitly stated that if something worth two hundred is sent from here, something worth four hundred will be returned from there. In such a scenario, can it be taken back upon separation or not? And what is the ruling if it is lost or destroyed? Parents, out of worldly considerations, fixed such an exorbitant dowry that the boy could not possibly pay it. The boy, thinking that the marriage would not be approved if he didn't accept, gave his consent. The adult girl later waived it voluntarily. Some people claim this marriage is invalid and intimacy is forbidden.

199 | 195 | अल-मारूफ कल-मशरुत (प्रचलित परंपरा शर्त के समान है)। उस हदीस का अर्थ जिसमें कहा गया है कि जिनका निकाह हुआ और उनकी नियत मेहर अदा करने की नहीं थी, वे कयामत के दिन व्यभिचारी के रूप में उठाए जाएंगे।

201 | 195 | अनुबंध से पहले यह तय हुआ था कि आस्थगित मेहर (महर मुअज्जल) की अवधि दो साल है। दो साल के भीतर, मेहर के बदले में पति अपनी पत्नी के नाम पर साढ़े पांच हजार रुपये की अचल संपत्ति खरीदेगा या नकद भुगतान करेगा। लेकिन अनुबंध के समय केवल इतना कहा गया कि मेहर पूर्ण रूप से आस्थगित होगी या दो साल के लिए आस्थगित होगी।

201 | 197 | बाब अल-जिहाज़ (दहेज का अध्याय) ज़ैद ने अपने पोते खालिद की सगाई में उसके पिता अम्र को एक आभूषण देकर कहा कि यह तुम्हारे लड़के की ओर से निशानी के तौर पर लड़की को पहनाता हूँ। उस समय खालिद नाबालिग था। अम्र ने स्वीकार कर लिया और खालिद की ओर से लड़की को पहना दिया। अब लड़का और लड़की जवान हैं, लड़का तलाक देने को तैयार है। आभूषण आदि वापस किए जाते हैं। ज़ैद कहता है कि जो आभूषण मैंने दिया था वह मुझे मिलना चाहिए। लड़का कहता है कि मुझे। अम्र कहता है कि मुझे मिलना चाहिए। वापसी का हकदार कौन है? पत्नी के जीवनकाल में दहेज का मालिक उसका पति है या वह स्वयं?

202 | 198 | यदि पति पत्नी की अनुमति के बिना उन आभूषणों का निस्तारण करता है जो उसे दहेज में मिले थे, तो क्या यह मान्य होगा या नहीं? नाबालिग को दिया गया उपहार (हिबा) तब पूर्ण हो जाता है जब उसके पिता उसका कब्ज़ा ले लेते हैं।

202 | 198 | एक पिता अपने स्वास्थ्य की स्थिति में अपनी बेटी को जो कुछ सौंप देता है, वह उसे वापस नहीं ले सकता और न ही उसके उत्तराधिकारियों को इसे लेने का कोई अधिकार है। रक्त संबंधी (महम) को दिया गया उपहार वापस नहीं लिया जा सकता।

202 | 199 | इन शहरों में यह प्रचलित है कि दूल्हे की ओर से दुल्हन को जोड़ा भेजा जाता है, इस उम्मीद में कि वहां से बहुत सारे आभूषण आदि मिलेंगे। इसलिए बहुत महंगे जोड़े और उसके साथ कुछ और भी भेजा जाता है, और स्पष्टता भी होती है कि अगर यहाँ से दो सौ का जाएगा तो वहाँ से चार सौ का आएगा। इस स्थिति में क्या अलगाव पर इसे वापस लिया जा सकता है या नहीं, और यदि

यह नष्ट हो जाए तो क्या हुक्म होगा? माता-पिता ने दुनियादारी के खयाल से इतना भारी मेहर तय कर दिया कि लड़का उसे किसी भी तरह अदा नहीं कर सकता। लड़के ने इस डर से कि अगर स्वीकार नहीं किया तो निकाह मंजूर नहीं होगा, उसे स्वीकार कर लिया। बालिग लड़की ने कुछ दिनों बाद स्वेच्छा से उसे माफ कर दिया। कुछ लोग कहते हैं कि यह निकाह नाजायज है और संभोग हराम है।

पृष्ठ 22 का 688

فتاویٰ رضویہ | جلد دوازدہم

199 | ۱۹۵ | المعروف کالمشروط اس حدیث کا مطلب جس میں فرمایا گیا کہ جن کا نکاح ہوا اور ان کی نیت میں اداء مہر نہیں وہ روز قیامت زانی و زانیہ اٹھائے جائیں گے۔

201 | ۱۹۵ | عقد سے پہلے یہ طے ہوا کہ مہر مؤجل باجل دوسال ہے دو سال کے اندر بعوض مہر ساڑھے پانچ ہزار روپے جائداد غیر منقولہ زوجہ کے نام شوہر خرید دے گا یا نقد ادا کرے گا مگر وقت عقد صرف اتنا کہا گیا کہ مہر موءجل مطلق ہوگا یا باجل دوسال مؤجل۔

201 | ۱۹۷ | باب الجھاز (جہیزی) زید نے اپنے نواسے خالد کی منگنی میں ایک زیور اس کے والد عمرو کو دے کر کہا کہ یہ تمہارے لڑکے کی طرف سے بطور نشانی لڑکی کو پہناتا ہوں اُس وقت خالد نابالغ تھا عمرو نے قبول کر کے لڑکی کو خالد کی طرف سے پہنا دیا اب لڑکا لڑکی جوان ہیں لڑکا طلاق پر آمادہ ہے زیور وغیرہ واپس ہوئے، زید کہتا ہے وہ زیور جو میں نے دیا تھا مجھے ملے، لڑکا کہتا ہے کہ مجھے، عمرو کہتا ہے مجھے ملنا چاہئے۔ کون مستحقِ واپسی ہے۔ جہیزی کا مالک بی بی کی حیات میں اس کا شوہر ہے یا وہ خود۔

202 | ۱۹۸ | اگر شوہر اس زیور میں بے اذن زوجہ تصرف کرے جو اسے جہیز میں ملا تھا تو نافذ ہوگا یا نہیں۔ نابالغ کو ہبہ کیا اس کے باپ نے قبضہ کر لیا تو ہبہ تام ہوگیا۔

202 | ۱۹۸ | باپ جو چیز اپنی صحت کی حالت میں بیٹی کو سونپ دے وہ اس سے واپس نہیں لے سکتا نہ اس کے وارثوں کے لینے کا کوئی حق۔ ذی رحم محرم کو ہبہ کیا تو واپس نہیں لے سکتا۔

202 | ۱۹۹ | ان شہروں میں یہ متعارف ہے کہ جوڑا دولھا کی جانب سے دُلہن کو بھیجا جاتا ہے بایں اُمید کہ اُدھر سے بہت زیور وغیرہ ملے گا لہذا جوڑے بہت گراں قیمت اور اس کے ہمراہ اور کچھ بھی بھیجا جاتا ہے اور صراحت بھی ہوتی ہے کہ ادھر سے دو سو کا جائے گا تو اُدھر سے چار سو کا آئے گا۔ اس صورت میں کیا جدائی پر واپس لیا جا سکتا ہے یا نہیں، اور اگر ہلاک کر دے تو کیا حکم ہوگا۔ والدین نے بخیال دنیا اس قدر وسیع مہر بندھوایا کہ لڑکا کسی طرح ادا نہیں کر سکتا، لڑکے نے اس خیال سے کہ منظور نہ کروں گا تو نکاح منظور نہ ہوگا منظور کر لیا، بالغہ لڑکی نے کچھ دن بعد بخوشی معاف کر دیا، چند لوگ کہتے ہیں یہ نکاح ناجائز ہے اور صحبت حرام۔

Fatawa Razawiyya - Volume 12

- 212: Disposal of another's property without permission or guardianship is impermissible.
- 212: In some cases, disposal of another's property without permission or guardianship is permissible.
- 214: A Mufti gives a fatwa based on integrity.
- 214: One who does not know the people of the era and does not consider the condition of his region while giving a fatwa is ignorant.
- 214: Meaning of "standard maintenance" (Nafaqah Mithl).
- 215: One who donates or does a favor will not receive reimbursement from anyone.
- 215: No statement is attributed to someone who remains silent.
- 215: If someone sees their property being destroyed and remains silent, this silence does not constitute permission for destruction.
- 215: A minor does not have the capacity to donate, nor does anyone have the authority to donate from their property.
- 216: In the case of partnership, gifts, loans, destruction of property, and transfer of ownership without compensation are not permissible unless the partner explicitly says so.
- 216: In Inan partnership and Mufawada partnership, partners are each other's agents and are authorized to dispose of the property.
- 216: In joint ownership of a specific item (Shirkat-e-Ain), a partner is a complete stranger to the other's share and is not allowed to dispose of it.
- 212: If gathering and birth expenses are not included in funeral rites, then spending beyond funeral rites will be borne from the heir's share if they are the one spending, and they will be considered a volunteer; similarly for a stranger.
- 212: Distribution of different types of goods by gathering them together without mutual consent is impossible, to the extent that even a judge does not have the authority for it.
- 214: A contract (aqd) is a link, and for a link, the existence of two things is necessary.
- 214: Something that is devoid of its intended purpose is void.
- 214: Ignorance that does not lead to dispute does not prevent the validity of a settlement (sulh).

- 217: Legally, a settlement is a contract that removes conflict and cuts off dispute.
- 217: If ignorance is such that it leads to dispute, it will prevent the validity of a settlement.
- 217: An act that indicates the mutual consent of the exchange of ownership is a pillar of sale.
- 218: According to some, sale is valid by delivery from one side (Ta'ati), and this is the Mufta-bi (the position on which fatwa is given) and the predominant view, but specifying the price/exchange is necessary. If the exchange is unknown, the sale will not be concluded by consensus.
- 220: A trustee (amin) becomes liable (zamin) when they commit a transgression (ta'addi).
- 221: If a usurper (ghasib) gives the usurped item to someone as a gift, charity, or loan, and it is destroyed while with them, they will be liable to the original owner and cannot seek recourse from the usurper. This is unlike a pledgee, a lessee, or a depositary, who can seek recourse from the usurper.

फतावा रज़विय्या - जिल्द 12

- 212: दूसरे के माल में अनुमति या अभिभावकत्व के बिना हस्तक्षेप नाजायज़ है।
- 212: कुछ स्थितियों में अनुमति और अभिभावकत्व के बिना दूसरे के माल में हस्तक्षेप जायज़ है।
- 214: मुफ़्ती दयानत (ईमानदारी) पर फतवा देता है।
- 214: जो अपने समय के लोगों को नहीं जानता और फतवा देते समय अपने क्षेत्र की स्थिति को ध्यान में नहीं रखता, वह अज्ञानी है।
- 214: 'नफ़का मिस्ल' (मानक गुज़ारा) का अर्थ।
- 215: दान या उपकार करने वाला किसी से मुआवज़े की उम्मीद नहीं रखेगा।
- 215: शांत रहने वाले की ओर कोई बात संबद्ध नहीं की जाती।
- 215: यदि कोई व्यक्ति अपने माल को नष्ट होते देखे और चुप रहे, तो यह चुप्पी विनाश की अनुमति नहीं होगी।
- 215: नाबालिग दान करने की क्षमता नहीं रखता और न ही किसी को उसके माल से दान करने का अधिकार है।
- 216: साझेदारी की स्थिति में हिबा (उपहार), ऋण, माल का विनाश और बिना मुआवज़े के स्वामित्व का हस्तांतरण तब तक जायज़ नहीं है जब तक कि साझेदार स्पष्ट रूप से न कह दे।
- 216: शिर्कत-ए-इनान और शिर्कत-ए-मुफ़ावज़ा में साझेदार एक-दूसरे के वकील और माल में हस्तक्षेप के लिए अधिकृत होते हैं।
- 216: शिर्कत-ए-ऐन (विशिष्ट वस्तु की साझेदारी) में साझेदार दूसरे के हिस्से से पूरी तरह अजनबी है और उसे दूसरे के हिस्से में हस्तक्षेप करने की अनुमति नहीं है।
- 212: यदि अंतिम संस्कार के खर्चों में जन्म और उत्सव के खर्च शामिल नहीं हैं, तो अंतिम संस्कार के अलावा खर्च करने वाला (यदि उत्तराधिकारी है) तो उसके अपने हिस्से से कटेगा और वह दानकर्ता माना जाएगा; इसी तरह अजनबी भी।
- 212: विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को बिना आपसी सहमति के एकत्रित करके बांटना असंभव है, यहाँ तक कि काज़ी (न्यायाधीश) को भी इसका अधिकार नहीं है।
- 214: अनुबंध (अक़्द) एक संबंध है और संबंध के लिए दो चीज़ों का होना आवश्यक है।

- 214: जो चीज़ उद्देश्य से रहित हो वह शून्य (बातिल) होती है।
- 214: वह अज्ञानता जो विवाद का कारण न बने, सुलह की वैधता में बाधक नहीं होती।
- 217: शरीयत के अनुसार सुलह एक अनुबंध है जो विवाद को दूर करता है और झगड़े को समाप्त करता है।
- 217: यदि अज्ञानता ऐसी हो जो विवाद तक ले जाए, तो वह सुलह की वैधता में बाधक होगी।
- 217: ऐसा कार्य जो स्वामित्व के आपसी विनिमय की सहमति को दर्शाता है, वह क्रय-विक्रय (बैअ) का एक स्तंभ है।
- 218: कुछ विद्वानों के अनुसार एक पक्ष से लेनदेन (तआती) द्वारा बिक्री जायज़ है और यही मुफ़्ता-बिही (जिस पर फ़तवा दिया जाता है) और प्रबल मत है, लेकिन मूल्य (बदल) का विवरण आवश्यक है। यदि मूल्य अज्ञात होगा, तो सर्वसम्मति से बिक्री संपन्न नहीं होगी।
- 220: अमानतदार (अमीन) तब उत्तरदायी (ज़ामिन) होता है जब वह उल्लंघन (तअद्दी) करता है।
- 221: यदि हड़पने वाला (ग़ासिब) हड़पी हुई वस्तु किसी को उपहार, सदक़ा या उधार के रूप में दे और वह उनके पास नष्ट हो जाए, तो वे असली मालिक के प्रति उत्तरदायी होंगे और हड़पने वाले से मुआवज़ा नहीं मांग सकेंगे। इसके विपरीत गिरवी रखने वाला, किराएदार और अमानतदार हड़पने वाले से मुआवज़ा मांग सकते हैं।

पृष्ठ 24 / 688

جلد دو از دہم - فتاویٰ رضویہ

۲۱۲: غیر کے مال میں اذن ولایت تصرف ناجائز ہے۔ ۲۱۲: چند صورتوں میں بلا اذن و ولایت مال غیر تصرف جائز ہے۔ ۲۱۴: مفتی دیانت پر فتویٰ دیتا ہے۔ ۲۱۴: جو اہل زمانہ کو نہ جانے اور فتویٰ دیتے وقت اپنے علاقے کے حال کو ملحوظ نہ رکھے وہ جاہل ہے۔ ۲۱۴: نفقہ مثل کے معنی ۲۱۵: تبرع اور احسان کرنے والا کسی سے مجرانہ پائے گا۔ ۲۱۵: ساکت کی طرف کوئی قول منسوب نہیں ہوتا۔ ۲۱۵: اگر کوئی شخص اپنا مال تلف ہوتا ہوا دیکھئے اور خاموش رہے تو یہ خاموشی اذن اتلاف نہ ہو گی۔ ۲۱۵: نابالغ تبرع کی اہلیت نہیں رکھتا اور نہ ہی اس کے مال سے کسی کو تبرع کرنے کا اختیار ہے۔ ۲۱۶: بصورت شرکت ہبہ ، قرض ، اتلاف مال اور تملیک بلا عوض جائز نہیں جب تک شریک صراحتاً کہہ نہ دے۔ ۲۱۶: شرکت عنان اور شرکت مفاوضہ میں شریک ایک دوسرے کے وکیل اور مال میں ماذون التصرف ہوتے ہیں۔ ۲۱۶: شرکت عین میں دوسرے کے حصہ سے اجنبی محض ہے اور اسے دوسرے کے حصہ میں تصرف جائز نہیں۔

۲۱۲: تجہیز میں جمع و مولد داخل نہیں تو تجہیز کے علاوہ خرچ کرے گا اگر وارث ہوگا تو اسی کے حصہ پر پڑے گا اور وہ متبرع ٹھہرے گا یوں ہی اجنبی۔ ۲۱۲: اجناس مختلفہ میں قسمت جمع بلا تراضی ناممکن ہے، یہاں تک کہ قاضی کو بھی اس کا اختیار نہیں ۲۱۴: عقد ایک ربط ہے اور ربط کے لئے دو چیزوں کا ہونا ضروری ہے۔ ۲۱۴: جو شئی مقصود سے خالی ہو وہ باطل ہوتی ہے۔ ۲۱۴: جو جہالت مفضی الی المنازعہ نہ ہو وہ جواز صلح سے مانع نہیں ہوتی۔ ۲۱۷: صلح شرعاً ایک عقد ہے جو رافع نزاع اور قاطع خصومت ہے۔ ۲۱۷: جہالت اگر منازعت تک پہچانے والی ہو تو وہ جواز صلح سے مانع ہوگی۔ ۲۱۷: ایسا فعل جو رضائے تبادلِ ملکین پر دال ہو وہ بیع کا رکن ہے۔ ۲۱۸: تعاطی احد الجانبین سے بعض کے نزدیک بیع جائز ہے اور یہی مفتی بہ اور

راجح ہے مگر بیان بدل ضروری ہے اگر بدل مجہول ہوگا تو بیع اجماعاً منعقد نہ ہوگی۔ ۲۲۰: امین ضامن ہوتا ہے جبکہ تعدّی کرے۔ ۲۲۱: غاصب اگر مغصوبہ شئی کسی کو بطور ہبہ یا صدقہ یا اعاریت دے اور وہ ان لوگوں کے پاس ہلاک ہو جائے تو وہ اصل مالک کے لئے ضامن ہوں گے اور غاصب کی طرف رجوع نہی کر سکیں گے بخلاف مرتہن ، مستاجر اور مودع کے کہ غاصب کی طرف رجوع کریں گے۔

Fatawa Razawiya, Volume 12

Page 221 | The giver knows the reason for giving better. | Page 221 | (4) In Sharh al-Wiqayah, there is a ruling on the return of a gift; is the gift of dowry of this kind? | Page 228 Page 221 | If brother and sister share inheritance and the brother gives dowry to the sister, this is not customarily a gift. Unlike parents, their dowry will customarily be a gift. | Page 221 | (5) What right does the female claimant have to the return of what she gave to the son-in-law? | Page 228 Page 222 | A branch of acceptance of knowledge. | Page 222 | (6) Can the female claimant also take the items the defendant gave to his wife at the time of marriage? | Page 228 Page 222 | If someone said, "I have given permission to people for the fruits of my trees, that whoever takes them becomes the owner," then those who knew of this permission become owners of what they take. But someone unaware of the permission will not own what they take. | Page 222 | (7) Who will redeem the things mortgaged for her expenses by the deceased's order? | Page 228 Page 225 | A gift of an undivided share (musha') capable of division is not valid nor does it effectively transfer ownership. | Page 225 | Answer to questions one through four. | Page 228 Page 225 | The condition for the validity of a gift of an undivided share not capable of division is that the quantity must be known. | Page 225 | Some Shariah rulings, by the decree of Shariah, are based on custom. | Page 228 Page 227 | Faiz-un-Nisa married off her stepdaughter; the girl died one and a half years after the marriage. Faiz claims back all dowry items, saying, "I provided everything from my own pocket, so I am entitled to its return." This custom exists in Madras. The girl's husband replies that jewelry etc. were mortgaged for her treatment by the deceased's order. He also spent much money. After the deceased's death, her son was alive and owned her property; after him, the husband is the heir as a father. What is the Shariah ruling? | Page 227 | In movable items, it is permissible for those whose customary time is known, otherwise not. | Page 228 Page 227 | (1) If a girl dies in Madras, there is a custom of taking back the dowry; what is the ruling? | Page 227 | For items where manufacturing (istisna) is customary, it is permissible to pay wages to have a non-existent item made, otherwise not. | Page 228 Page 228 | (2) What role does custom play in ownership according to Shariah? | Page 228 | Of the conditions of sale, a condition that becomes a known corrupting factor is possible, otherwise not. | Page 228 (Blank) | (3) Will the dowry items be considered a loan (ariya) or a transfer of ownership (tamlik)? | Page 228 | (Blank) | (Blank)

Page 25 of 688

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

पृष्ठ 221 | देने वाला देने के कारण को बेहतर जानता है। | पृष्ठ 221 | (4) शरह-ए-विकाया में उपहार वापसी का नियम है; क्या दहेज का उपहार इसी प्रकार का है? | पृष्ठ 228 पृष्ठ 221 | यदि भाई और बहन विरासत में भागीदार हों और भाई बहन को दहेज दे, तो यह प्रथागत रूप से उपहार (हिबा) नहीं है। माता-पिता के विपरीत, उनका दिया गया दहेज प्रथागत रूप से उपहार माना जाएगा। | पृष्ठ 221 | (5) वादिनी को उस वस्तु की वापसी का क्या अधिकार है जो उसने داماد को दी थी? | पृष्ठ 228 पृष्ठ 222 | ज्ञान की स्वीकृति की एक शाखा। | पृष्ठ 222 | (6) क्या वादिनी वह सामान भी ले सकती है जो प्रतिवादी ने शादी के समय अपनी पत्नी को दिया था? | पृष्ठ 228 पृष्ठ 222 | यदि किसी ने कहा, "मैंने अपने पेड़ों के फलों की लोगों को अनुमति दी है कि जो भी ले वह उसका मालिक है," तो वे लोग जिन्हें दाता की इस अनुमति की खबर हुई, वे जो भी लेंगे उसके मालिक बन जाएंगे। लेकिन वह व्यक्ति जो दाता की अनुमति से अनजान होगा, वह जो कुछ लेगा उसका मालिक नहीं होगा। | पृष्ठ 222 | (7) मृतक के आदेश से उसके खर्चों के लिए गिरवी रखी गई वस्तुओं को कौन छुड़ाएगा? | पृष्ठ 228 पृष्ठ 225 | अविभाजित हिस्से का उपहार (हिबा मुशा) जिसका विभाजन संभव हो, वह वैध नहीं है और न ही प्रभावी ढंग से स्वामित्व हस्तांतरित करता है। | पृष्ठ 225 | प्रश्न एक से चार तक का उत्तर। | पृष्ठ 228 पृष्ठ 225 | अविभाजित हिस्से के उपहार की वैधता की शर्त यह है कि मात्रा ज्ञात हो। | पृष्ठ 225 | शरीयत के कुछ आदेश, शरीयत के हुक्म से, प्रथा (उर्फ़) पर आधारित होते हैं। | पृष्ठ 228 पृष्ठ 227 | फैज़-उन-निسا ने अपनी सौतेली बेटी की शादी की; शादी के डेढ़ साल बाद लड़की की मृत्यु हो गई। फैज़ सभी दहेज वस्तुओं की वापसी का दावा करती है और कहती है, "मैंने यह सब अपने संसाधनों से उपलब्ध कराया था, इसलिए मैं इसकी वापसी की हकदार हूँ।" मद्रास में दहेज वापस लेने का रिवाज प्रचलित है। लड़की का पति जवाब देता है कि गहने आदि मृतक के आदेश से उसके इलाज आदि के लिए गिरवी रखे गए थे। इसके अलावा, मैंने बहुत पैसा खर्च किया। मृतक की मृत्यु के बाद, उसका बेटा जीवित था, वह उसकी संपत्ति का मालिक बना, और उसके बाद, मैं पिता के रूप में उत्तराधिकारी हूँ। शरीयत का हुक्म क्या है? | पृष्ठ 227 | चल वस्तुओं में, जिनके लिए प्रथागत समय ज्ञात हो, वह जायज़ है, अन्यथा नहीं। | पृष्ठ 228 पृष्ठ 227 | (1) यदि मद्रास में लड़की की मृत्यु हो जाए, तो दहेज वापस लेने का रिवाज है, हुक्म क्या है? | पृष्ठ 227 | जिन चीज़ों के निर्माण (इस्तिसना) का रिवाज हो, उनमें मज़दूरी देकर गैर-मौजूद चीज़ बनवाना जायज़ है, अन्यथा नहीं। | पृष्ठ 228 पृष्ठ 228 | (2) शरीयत के अनुसार स्वामित्व में

प्रथा की क्या भूमिका है? | पृष्ठ 228 | बिक्री की शर्तों में से वह शर्त जो एक ज्ञात भ्रष्ट करने वाला कारक बन जाए, संभव है, अन्यथा नहीं। | पृष्ठ 228 (रिक्त) | (3) दहेज के सामान को उधार (आरिया) समझा जाएगा या स्वामित्व हस्तांतरण (तमलीक)? | पृष्ठ 228 | (रिक्त) | (रिक्त)

पृष्ठ 25 का 688

۲۲۱ | دینے والا دینے کی جہت کو بہتر جانتا ہے۔ | ۲۲۱ | (۴) شرح وقایہ میں ہبہ واپسی کا حکم ہے، کیا ہبہ جہیز اسی قسم کا ہے۔ | ۲۲۸ ۲۲۱ | بہن بھائی ترکہ میں شریک ہوں اور بھائی بہن کو جہیز دے تو یہ عرفاً ہبہ نہیں۔ بخلاف والدین ان کا جہیز عرفاً ہبہ ہوگا۔ | ۲۲۱ | (۵) جو شئی منجانب مدعیہ داماد کو ملی ہو اس کی واپسی کا مدعیہ کو کیا حق ہے۔ | ۲۲۸ ۲۲۲ | قبول علم کی فرع۔ | ۲۲۲ | (۶) جو سامان مدعیہ علیہ نے بوقت شادی اپنی بی بی کو دیا مدعیہ اسے بھی لے سکتی ہے۔ | ۲۲۸ ۲۲۲ | اگر کسی نے کہا میں نے اپنے درختوں کے پھلوں کی لوگوں کو اجازت دی کہ جو لے وہ اس کا مالک ہے تو جن لوگوں کو واہب کے اس اذن کی خبر ہوئی وہ جو بھی لیں گے اس کے مالک بن جائیں گے مگر جو شخص اذن واہب سے بے خبر ہوگا وہ جو کچھ لے گا اس کا مالک نہیں ہوگا۔ | ۲۲۲ | (۷) مرحومہ کے حکم سے جو شئی اس کے صرف کے لئے رہن ہوئی اسے کون چھڑائے گا۔ | ۲۲۸ ۲۲۵ | ہبہ مشاع محتمل قسمت صحیح نہیں اور نہ ہی مفید ملک۔ | ۲۲۵ | جواب سوال اول تا چہارم۔ | ۲۲۸ ۲۲۵ | ہبہ مشاع غیر محتمل قسمت کی شرط صحت یہ ہے کہ مقدار معلوم ہو۔ | ۲۲۵ | بعض احکام شرع بحکم شرع عرف پر دائر ہوتے ہیں۔ | ۲۲۸ ۲۲۷ | فیض النساء نے اپنی سوتیلی لڑکی کی شادی کی، شادی کے ڈیڑھ برس بعد لڑکی مر گئی۔ فیض کل سامان جہیز کی واپسی کو کہتی ہے کہ میں نے اپنے پاس سے یہ سب سامان کیا تھا اس لئے اس کی واپسی کی میں حقدار ہوں، سامان جہیز واپس لینے کا رواج مدراس میں جاری ہے۔ لڑکی کا شوہر جواب دیتا ہے کہ زیور وغیرہ مرحومہ کے حکم سے اسکے معالجہ وغیرہ میں رہن رکھے ہوئے ہیں، اس کے علاوہ میرا بہت روپیہ صرف ہوا، مرحومہ کے مرنے کے بعد اس کا لڑکا زندہ تھا وہ اسکے مال کا مالک ہوا اور اس کے بعد میں بطور باپ وارث ہوں،

حکم شرعی کیا ہے۔ | ۲۲۷ | اشیاء منقولہ میں اسے جنکا وقت معروف ہو جائز ہے ورنہ نہیں۔ | ۲۲۸ ۲۲۷ | (۱) مدراس میں لڑکی مر جائے تو جہیز واپس لینے کا رواج ہے کیا حکم ہے۔ | ۲۲۷ | جن چیزوں کے استصناع کا رواج ہو ان میں اجرت دے کر معدوم شئی کا بنوانا جائز ہے ورنہ نہیں۔ | ۲۲۸ ۲۲۸ | (۲) شرع میں رواج ملک کو کیا دخل ہے۔ | ۲۲۸ | شرائط بیع میں سے جو شرط مفسد معروف ہو جائے محتمل ہے ورنہ نہیں۔ | ۲۲۸ | (۳) جہیز کا سامان عاریہ سمجھا جائے گا یا تملیکا۔ | ۲۲۸ | |

Fatawa Razawiyya, Volume 12

228 - If the mortgagee uses the mortgaged item with the mortgagor's permission, it is permissible if conditional; otherwise, it is forbidden. However, in our time, an absolute ruling of prohibition will be given, as there is a custom and practice of not giving a loan without the greed for profit from the mortgaged item.

229 - When two matters are possible, the overshadowed one will be unacceptable, and where both are equal, the statement on oath determining the intent will be credible.

229 - Prevailing custom will be considered; the overshadowed one will be unacceptable, and where both are equal, the statement on oath determining the intent will be credible.

229 - A daughter was given a dowry, then it was claimed it was given as a loan. The daughter says it was given as ownership. If after her death her husband says this, then whose statement will be credible, when, and how?

230 - Whose statement will be credible in matters of dowry (jahaz)? It will be credible on oath.

230 - It is obligatory to respect all the specificities with which a custom is associated.

232 - The person granting ownership knows the intent of the transfer best.

233 - A gift for a lifetime is a complete gift, and the condition of 'for a lifetime' is futile and void.

235 - The death of one of the contracting parties is among the obstacles to revoking a gift.

236 - In the absence of custom, the claimant's statement on oath will be credible. This ruling is for the father; the biological mother has also been customarily linked with him in this.

236 - A mother's claim of exclusivity needs evidence, except in two cases: first, if the father possesses no wealth; second, if the mother separated from him and performed the marriage herself.

238 - A girl prepared some dowry items through handicrafts from her father's wealth. After the mother's death, the father gave those items to her in the dowry. Then all of it belongs to her; her brothers have no

228 - If the mortgagee uses the mortgaged item with the mortgagor's permission, it is permissible if conditional; otherwise, it is forbidden. However, in our time, an absolute ruling of prohibition will be given, as there is a custom and practice of not giving a loan without the greed for profit from the mortgaged item.

230 - If there is a custom of giving dowry up to a certain amount according to status, and anything beyond that as a loan, then up to that amount it will be considered as transfer of ownership, and for the excess, the statement made will be considered credible by consensus.

231 - The daughter owed a debt to her father; he gave dowry then said, "I gave it towards the debt." The daughter says, "No, it's from your own wealth." Whose statement will be credible?

232 - A husband sent something to his wife; the woman says it's a gift, the husband says it's dower (mahr). Then when and whose statement will be credible?

232 - The person granting ownership knows the intent of the transfer best.

right to declare it as the mother's inheritance and demand their share.

239 - A grandfather is like a father, except in a few matters.

242 - If a wife came without a dowry, the husband has the right to demand from his father-in-law the dirhams and dinars he sent, provided he did not remain silent for a long time after the wedding night.

244 - What is meant by a 'long time'?

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

228 - यदि गिरवी रखने वाला (मुर्तहिन) गिरवी रखी हुई चीज़ से लाभ उठाता है और वह गिरवी रखने वाले (राहिन) की अनुमति से है, तो शर्त के साथ जायज़ है अन्यथा हराम। लेकिन हमारे ज़माने में स्पष्ट रूप से हराम होने का हुक्म दिया जाएगा क्योंकि गिरवी रखी चीज़ से लाभ की लालच के बिना ऋण न देने की प्रथा और रिवाज है।

229 - जब दो मामले संभावित होंगे, तो कम संभावना वाला अस्वीकार्य होगा, और जहाँ दोनों बराबर हों, वहाँ नीयत को निर्धारित करने वाला शपथ पूर्वक कथन विश्वसनीय होगा।

229 - प्रचलित रीति-रिवाजों पर विचार किया जाएगा; कम संभावना वाला अस्वीकार्य होगा, और जहाँ दोनों बराबर हों, वहाँ नीयत को निर्धारित करने वाला शपथ पूर्वक कथन विश्वसनीय होगा।

229 - बेटी को दहेज दिया गया, फिर दावा किया गया कि मैंने ऋण के रूप में दिया था। बेटी कहती है कि स्वामित्व के रूप में दिया गया। उसकी मृत्यु के बाद यदि उसका पति यह कहे, तो किसका कथन कब और किस प्रकार विश्वसनीय होगा?

232 - स्वामित्व (तम्लीक) प्रदान करने वाला स्वामित्व के उद्देश्य को अधिक जानता है।

233 - जीवनपर्यंत के लिए दिया गया उपहार एक पूर्ण उपहार है और 'जीवनपर्यंत' की शर्त निरर्थक और अमान्य है।

235 - अनुबंध करने वाले पक्षों में से एक की मृत्यु उपहार वापस लेने की बाधाओं में से एक है।

236 - रीति-रिवाजों के अभाव में, दावेदार का शपथ पूर्वक कथन विश्वसनीय होगा; यह आदेश पिता के लिए है; सगी माँ को भी प्रथागत रूप से उसी के साथ जोड़ा गया है।

228 - यदि गिरवी रखने वाला (मुर्तहिन) गिरवी रखी हुई चीज़ से लाभ उठाता है और वह गिरवी रखने वाले (राहिन) की अनुमति से है, तो शर्त के साथ जायज़ है अन्यथा हराम। लेकिन हमारे ज़माने में स्पष्ट रूप से हराम होने का हुक्म दिया जाएगा क्योंकि गिरवी रखी चीज़ से लाभ की लालच के बिना ऋण न देने की प्रथा और रिवाज है।

230 - दहेज (जहाज़) में किसका कथन विश्वसनीय होगा? शपथ पूर्वक कथन विश्वसनीय होगा।

230 - उन सभी विशिष्टताओं का पालन करना अनिवार्य है जिनके साथ कोई प्रथा जुड़ी हुई है।

230 - यदि हैसियत के अनुसार एक निश्चित राशि तक दहेज देने की प्रथा हो और उससे अधिक ऋण के रूप में, तो उस राशि तक इसे स्वामित्व का हस्तांतरण माना जाएगा, और अतिरिक्त के लिए सर्वसम्मति से दिए गए बयान को विश्वसनीय माना जाएगा।

231 - बेटी का पिता पर ऋण था; पिता ने दहेज दिया फिर कहा कि मैंने ऋण के बदले दिया है। बेटी

232 - स्वामित्व (तम्लीक) प्रदान करने वाला स्वामित्व के उद्देश्य को अधिक जानता है।

236 - माँ के विशिष्टता के दावे के लिए साक्ष्य की आवश्यकता है, सिवाय दो स्थितियों के: पहला, यदि पिता के पास कोई धन न हो; दूसरा, यदि माँ उससे अलग हो गई हो और स्वयं विवाह संपन्न कराया हो।

238 - एक लड़की ने अपने पिता के धन से हस्तशिल्प के माध्यम से दहेज का कुछ सामान तैयार किया। माँ की मृत्यु के बाद पिता ने उसे दहेज में वही सामान दे दिया। तो यह सब उसी का है; उसके भाइयों को इसे माँ की विरासत घोषित करने और अपना हिस्सा माँगने का कोई अधिकार नहीं है।

239 - दादा पिता के समान है, कुछ मामलों को छोड़कर।

242 - यदि पत्नी बिना दहेज के विदा होकर आई, तो पति को अपने ससुर से उन दिरहम

228 - यदि गिरवी रखने वाला (मुर्तहिन) गिरवी रखी हुई चीज़ से लाभ उठाता है और वह गिरवी रखने वाले (राहिन) की अनुमति से है, तो शर्त के साथ जायज़ है अन्यथा हराम। लेकिन हमारे ज़माने में स्पष्ट रूप से हराम होने का हुक्म दिया जाएगा क्योंकि गिरवी रखी चीज़ से लाभ की लालच के बिना ऋण न देने की प्रथा और रिवाज है।

कहती है नहीं, अपने स्वयं के धन से। तो किसका कथन विश्वसनीय होगा?

232 - पति ने पत्नी को कुछ भेजा; स्त्री कहती है उपहार है, पति कहता है महर है। तो कब, किसका कथन विश्वसनीय होगा?

पृष्ठ 26/688

232 - स्वामित्व (तम्लीक) प्रदान करने वाला स्वामित्व के उद्देश्य को अधिक जानता है।

और दीनार की माँग करने का अधिकार है जो उसने भेजे थे, बशर्ते कि वह विवाह की रात के बाद लंबे समय तक चुप न रहा हो।

244 - 'लंबे समय' (ज़माना दराज़) से क्या तात्पर्य है?

۲۲۸ - مرتہن کا شئی مرہون سے انتفاع اگر باذنِ راہن ہے بشرط ہو تو جائز ورنہ حرام، مگر ہمارے زمانے میں مطلقاً حکمِ حرمت دیا جائیگا کہ بے طمعِ نفع بہ مرہون قرض نہ دینے کا عُرف ورواج ہے۔

۲۲۹ - جب دو امر محتمل ہوگا مغلوب نامقبول ہوگا اور جہاں دونوں برابر ہوں وہاں تعیینِ مراد کا قول بقسم معتبر ہوگا۔

۲۲۹ - عرفِ غالب کا اعتبار ہوگا مغلوب نامقبول ہوگا اور جہاں دونوں برابر ہوں وہاں تعیینِ مراد کا قول بقسم معتبر ہوگا۔

۲۲۹ - بیٹی کو جہیز دیا پھر مدعی ہوا کہ میں نے عاریتہً دیا تھا بیٹی کہتی ہے تملیکاً دیا اس کے مرنے کے بعد اس کا شوہر یہ کہتا ہو تو کس کا قول کب اور کس طرح معتبر ہوگا۔

۲۳۰ - جہاز میں جس کا قول معتبر ہوگا، بقسم معتبر ہوگا۔

۲۳۲ - تملیک جہتِ تملیک کو زیادہ جانتا ہے۔

۲۳۳ - ہبہ تاحینِ حیات ہبہِ کاملہ ہے اور حینِ حیات کی شرط لغو و باطل ہے۔

۲۳۵ - احد المعاقدین کی موت رجوع ہبہ کے موانع میں سے ہے۔

۲۳۶ - بحالتِ عدمِ عرف مدعی کا قول بقسم معتبر ہوگا یہ حکم باپ کے لئے ہے حقیقی ماں کو بھی اس سے عرفاً لاحق کیا گیا ہے۔

۲۳۶ - ماں کا دعویٰ اختصاص محتاجِ بینہ ہونا چاہئے مگر دو صورتوں میں ، ایک یہ کہ باپ مال

۲۲۸ - مرتہن کا شئی مرہون سے انتفاع اگر باذنِ راہن ہے بشرط ہو تو جائز ورنہ حرام، مگر ہمارے زمانے میں مطلقاً حکمِ حرمت دیا جائیگا کہ بے طمعِ نفع بہ مرہون قرض نہ دینے کا عُرف ورواج ہے۔

۲۳۲ - تملیک جہتِ تملیک کو زیادہ جانتا ہے۔

نہ رکھتا ہو، دوسرے یہ کہ ماں نے اس سے جدا ہو کر بطورِ خود تزویج کی ہو۔

۲۳۸ - لڑکی نے باپ کے مال سے دستکاری کر کے جہیز کا کچھ سامان تیار کیا ماں کے مرنے بعد باپ نے وہ سامان جہیز میں اسے دے دیا تو یہ سب اسی کا ہے اسی کے بھائیوں کو حق نہیں کہ وہ اسے ماں کا ترکہ قرار دے کر اپنا حصہ طلب کریں۔

۲۳۰ - عرف جن خصوصیتوں کے ساتھ ہو سب کی رعایت واجب ہے۔

۲۳۰ - اگر ایک خاص مقدار تک حسبِ حیثیت جہیز دینے کا عرف ہو اور اس کے زائد عاریت تو اس مقدار تک تملیک سمجھیں گے اور زائد میں قولِ واقع بالاتفاق معتبر مانیں گے۔

۲۳۹ - دادا باپ کی طرح ہے سوائے چند مسائل کے۔

۲۴۲ - بی بی بے جہیز رخصت ہو کر آئی تو شوہر کو پانے خسر سے ان دراہم ودنانیر کا مطالبہ پہنچتا

۲۲۸ - مرتہن کا شئی مرہون سے انتفاع اگر باذنِ راہن ہے بشرط ہو تو جائز ورنہ حرام، مگر ہمارے زمانے میں مطلقاً حکمِ حرمت دیا جائیگا کہ بے طمعِ نفع بہ مرہون قرض نہ دینے کا عُرف ورواج ہے۔

۲۳۱ - بیٹی کا باپ پر قرض تھا جہیز دیا پھر کہا میں نے قرضہ میں دیا ہے، بیٹی کہتی ہے نہیں اپنے مال سے تو کس کا قول معتبر ہوگا۔

۲۳۲ - شوہر نے زوجہ کو کوئی چیز بھیجی، عورت کہتی ہے ہدیہ ہے، شوہر کہتا ہے مہر، تو کب، کس کا قول معتبر ہوگا۔

۲۳۲ - تملیک جہتِ تملیک کو زیادہ جانتا ہے۔

ہے جو اس نے بھیجے ہوں جبکہ بعدِ زفاف زمانہ دراز تک چپ نہ بیٹھا ہو۔

۲۴۴ - زمانہ دراز سے کون سا زمانہ مراد ہے۔

Fatawa Rizwia, Volume 12

If someone observed the use/possession of an item for a long time and then became a claimant, whereas there was nothing preventing the claim earlier, his claim will not be heard.	245	If a person pledged someone's item after asking the owner, and later the owner validated this disposal with his permission, then the pledge became valid and correct. Now, as long as the pawnee's debt is not paid, the owner cannot take back the pledged item.	249
If a stranger provided a dowry and after the death of the bride claimed it was a loan (ariyah), his statement is not credible without proof.	245	If someone pledged an item with the owner's permission, the owner has the option to pay the pawnee's debt and redeem his item, and whatever he pays to the pawnee, he may recover it from the debtor or his heirs.	249
Now, the fifth question.	245	A stepmother gave goods and assets as a dowry to a girl according to the local custom. After the girl's [death], she wants it back. At the time of giving, there was neither an intention of transfer of ownership (tamleek) nor of a loan (ariyah) or gift (hibah). Therefore, it should be returned according to local custom; fatwas were sought on this. A fatwa also came from Bareilly, stating that local custom has no role in Sharia. Neither can Faiz-un-Nisa be entitled to the return of the dowry; her claim is rejected and the local custom is discarded, etc. Is this meaning correct?	250
The destruction of the gifted item or its removal from the ownership of the donee (mauhub-lah), both prevent the revocation of the gift.	247	An association (Anjuman) arranged the marriage of an orphan; the husband did not keep her. The dowry items provided by the association were returned. Is the owner the orphan girl or the association?	252
	248	The president of the association, by whose order all tasks are performed, all disposals are	252

A loan for use (ariyah) is a trust; there is no liability for it without transgression.		valid. The association is the authorized agent of the contributors.	
Answer to the sixth question:	248	If someone was appointed as an agent (wakil) to purchase a specific item etc., the conditions will apply to the agent, but only if the agent intended to purchase for the principal (muwakkil) or purchased the item with the principal's money.	252
Answer to the seventh question:	248	If two people gift a house to someone, this gift will be valid because it is not joint property (musha).	255
If someone pledged an item without the owner's permission and the owner did not later validate this disposal, the owner has the option to cancel this pledge and take back his item from the pawnee; let the pawnee recover his debt from the debtor.	249	A purchase by an unauthorized person (fuzuli) is binding on the buyer until it is executed.	255

फतावा रज़विया, जिल्द 12

यदि कोई लंबे समय तक किसी वस्तु के उपयोग/कब्जे को देखता रहा और फिर दावेदार बन गया, जबकि पहले दावे को रोकने वाली कोई बात नहीं थी, तो उसका दावा नहीं सुना जाएगा।

यदि किसी अजनबी ने दहेज दिया और दुल्हन की मृत्यु के बाद दावा किया कि वह ऋण (आरियत) था, तो बिना प्रमाण के उसका कथन विश्वसनीय नहीं है।

अब पाँचवाँ प्रश्न।

245

यदि किसी ने मालिक से पूछकर उसकी वस्तु को गिरवी रखा और बाद में मालिक ने अपनी अनुमति से इस निपटान को वैध कर दिया, तो गिरवी रखना सही और मान्य हो गया। अब जब तक गिरवी रखने वाले (मुर्तहिन) का ऋण अदा न हो जाए, मालिक गिरवी रखी वस्तु को वापस नहीं ले सकता।

249

यदि किसी ने मालिक की अनुमति से कोई वस्तु गिरवी रख दी, तो मालिक के पास मुर्तहिन का ऋण चुकाकर

245 अपनी वस्तु छुड़ाने का विकल्प है, और मुर्तहिन को वह

249

जो कुछ भी भुगतान करता है, उसे वह कर्जदार या उसके वारिसों से वसूल कर सकता है।

एक सौतेली माँ ने स्थानीय रिवाज के अनुसार एक लड़की को दहेज के रूप में सामान और संपत्ति दी। लड़की के बाद [मृत्यु के बाद], वह उसे वापस चाहती है। देते समय न तो स्वामित्व हस्तांतरण (तमलीक) की नीयत थी और न ही ऋण (आरियत) या उपहार (हिबा) की। इसलिए इसे स्थानीय रिवाज के अनुसार वापस किया जाना चाहिए; इस

245 पर फतवे मांगे गए। बरेली से भी एक फतवा आया, जिसमें

250

कहा गया कि शरीयत में स्थानीय रिवाज की कोई भूमिका नहीं है। न ही फैज़-उन-निसा दहेज की वापसी की हकदार हो सकती है; उसका दावा खारिज है और स्थानीय रिवाज को त्याग दिया गया है, आदि। क्या यह अर्थ सही है?

247

252

उपहार में दी गई वस्तु का नष्ट होना या उपहार प्राप्तकर्ता (मौहूब-लह) के स्वामित्व से बाहर होना, दोनों ही उपहार की वापसी को रोकते हैं।

एक संस्था (अंजुमन) ने एक अनाथ का विवाह कराया; पति ने उसे नहीं रखा। संस्था द्वारा दिए गए दहेज के सामान वापस आ गए। क्या इसकी मालिक अनाथ लड़की है या संस्था?

आरियत (उपयोग के लिए ऋण) एक अमानत है; बिना किसी उल्लंघन के इसके लिए कोई जिम्मेदारी (ज़मान) नहीं है।

संस्था का अध्यक्ष, जिसके आदेश से सभी कार्य किए जाते हैं, उसके सभी निपटान मान्य हैं। संस्था अंशदान करने वालों की अधिकृत एजेंट है।

248 252

छठे प्रश्न का उत्तर:

248

यदि किसी को किसी विशिष्ट वस्तु आदि की खरीद के लिए एजेंट (वकील) नियुक्त किया गया था, तो शर्तें वकील पर लागू होंगी, लेकिन केवल तभी जब वकील ने मुवक्किल (प्रमुख) के लिए खरीदने का इरादा किया हो या मुवक्किल के पैसे से वस्तु खरीदी हो।

252

सातवें प्रश्न का उत्तर:

248

यदि दो लोग किसी को एक घर उपहार में देते हैं, तो यह उपहार मान्य होगा क्योंकि यह संयुक्त संपत्ति (मुशाअ) नहीं है।

255

यदि किसी ने मालिक की अनुमति के बिना कोई वस्तु गिरवी रख दी और मालिक ने बाद में इस निपटान को वैध नहीं ठहराया, तो मालिक के पास इस गिरवी को रद्द करने और मुर्तहिन से अपनी वस्तु वापस लेने का विकल्प है; मुर्तहिन अपना ऋण कर्जदार से वसूल करता रहे।

249

एक अनधिकृत व्यक्ति (फुज़ूली) द्वारा की गई खरीद खरीदार पर तब तक बाध्यकारी होती है जब तक वह निष्पादित न हो जाए।

255

ایک زمانہ تک کسی شئی میں تصرف ہوتا دیکھتا رہا پھر مدعی ہوا حالانکہ پہلے بھی دعویٰ کے کوئی امر مانع نہ تھا اس کا دعویٰ مسموع نہ ہوگا۔

اگر مالک سے پوچھ کر اس کی شئی کو رہن رکھایا بعد میں مالک نے اس تصرف کو اپنی اجازت سے نافذ کر دیا تو رہن نافذ صحیح ہوگیا۔ اب جب تک دین مرتہن ادا نہ ہو مالک مرہون شئی کو واپس نہیں لے سکتا۔

۲۴۵ ۲۴۹

اگر اجنبی نے جہیز دیا بعد مرگ عروس عاریت کا مدعی ہوا تو بے بینہ اس کا قول معتبر نہیں۔

مالک کی اجازت سے کوئی شئی کسی نے رہن کر دی تو مالک کو اختیار ہے کہ مرتہن کا دین دے کر اپنی چیز چھڑا لے اور جو کچھ مرتہن کو دے وہ مدیون یا اس کے وارثوں سے واپس لے لے۔

۲۴۵ ۲۴۹

اب سوال پنجم ۔ ۲۴۵

سوتیلی ماں نے حسبِ رواجِ ملک مال ومتاع بنام جہیز لڑکی کو دیا لڑکی کے بعد واپسی چاہتی ہے دیتے وقت نہ تو تملیک کی نیت ہوتی ہے نہ عاریت ہبہ کی ، لہذا حسب رواجِ ملک واپس ہو اس پر فتاویٰ طلب کئے گئے۔

۲۵۰

بریلی سے بھی فتویٰ آیا جس کا مطلب بتایا گیا کہ رواجِ ملک کو شرع میں کچھ دخل نہیں۔ نہ فیض النساء واپسی جہیز کی حقدار ہو سکتی اس کا دعویٰ مردود اور رواجِ ملک متروح الخ ، کیا یہ مطلب صحیح ہے؟

مہوب شئی کا ہلاک ہو جانا یا

موہوب لہ، کی ملک سے

خارج ہونا دونوں رجوع ہبہ

سے مانع ہیں۔

عاریت امانت ہے بے تعدی

اس میں ضمان نہیں۔

جواب سوال ششم : ۲۴۸

جواب سوال ہفتم : ۲۴۸

بے اجازت مالک کوئی شے

رہن کر دی مالک نے بعد میں

بھی اس تصرف کو جائز نہ

کیا تو مالک کو اختیار ہے کہ ۲۴۹

اس رہن کو فسخ کر کے

مرتہن سے اپنی چیز واپس

انجمن نے یتیم کا نکاح کیا، شوہر نے اسے نہ رکھا

۲۴۷ سامان جہیز جو انجمن نے دیا تھا واپس آیا اسکی مالک ۲۵۲

یتیمہ ہے یا انجمن ۔

صدر انجمن جس کے حکم سے سب کام ہوتے ہیں تمام

۲۴۸ تصرفات جائز انجمن میں چندہ دینے والوں کا وکیل مجاز ۲۵۲

ہوتا ہے۔

اگر کسی کو وغیرہ معین شئی کی خریداری کا وکیل کیا

تو شرائط وکیل کے لئے ہوگی مگر جبکہ وکیل نے

۲۵۲

مؤکل کے لئے خریداری کی نیت کرلی ہو یا مال مؤکل

سے شئے خریدی ہو۔

اگر دو شخص کسی کو ایک گھر ہبہ کر دیں تو یہ ہبہ

۲۵۵

صحیح ہوگا کیونکہ مشاع نہیں۔

فضولی کا شراء جب تک نفاذ پائے مشتری پر نافذ ہوتا

۲۵۵

ہے۔

لے لے اپنا دین مدیون سے

لیتا رہے۔

صفحہ ۲۷ از ۶۸۸

Fatawa Rizwia, Volume 12

255: If something was purchased for another, the purchase will be binding upon the buyer as long as it was not attributed to the other person. Yes, if it was said, "Sell this item for so-and-so," and upon this an adult said, "I have sold it for so-and-so," then this purchase will be suspended. | [Heading:] Chapter on the Marriage of the Disbeliever | Page 261

256: At the time of marriage, Zaid's parents presented traditional sets of clothes. After the marriage, the girl's parents gave some jewelry and sets of clothes in the dowry. Later, Zaid had some jewelry made, in addition to some ordinary clothes. The woman did not waive the dower (Mahr) either at the time of her husband's death or until now. Who is the owner of this property? On whom does the responsibility of paying the Mahr lie? | [Additional:] Zaid became a Qadiani, while his wife remained a Muslim. What is the ruling? | Page 261

257: Traditional and well-known transactions prevalent in the management of marriages are permissible according to the Noble Sharia. If something or cash is taken from the groom based on custom, whether with or without a condition, such as the custom in Bengal and Burma where before the marriage, they take for Sanchaq (engagement gifts) and feast expenses for friends from both sides, will it be permissible or not, etc. | [Additional:] Can a Muslim marry a Christian or a Zoroastrian woman or not? | Page 262

258: Before the marriage contract, some jewelry was given to the girl according to custom. Before the departure (Rukhsati), the son-in-law passed away. In this case, is that jewelry returnable or not? Often jewelry is presented after being taken on loan (Ariyat), which is returned after Rukhsati. This person has very low income; his parents are not in a position to consider such a large value as a gift after Rukhsati. Moreover, the custom is also that such offerings are taken back. | [Additional:] If a woman insulted the Sharia, did she become an apostate and was the marriage annulled? | Page 263

259: What is the ruling on 'Chadhawa' (offerings)? Is it permissible or not? | [Additional:] Can the husband now sever ties with her without giving a divorce, and will there be no accountability? | Page 263

259: Ruling on 'Lagan' (vessel/contribution) and who owns it? | [Additional:] If Hindah renews her faith, are Zaid and Hindah legally compelled to renew their marriage? | Page 263

259: Zaid used to do business with his father since childhood and was under his father's authority and worked as well. His father Amr married him off. Zaid died. The woman demands from her father-in-law her dowry, her property and wealth, and the wealth given to her at the time of engagement (i.e., Chadhawa) and the dower (Mahr). What is the ruling? | [Additional:] After renewal of faith, can the woman marry someone else without her husband's permission? | Page 263

[Blank] | [Additional:] Will Hindah's maintenance (Nafaqah) be obligatory on Zaid in such a case? | Page 263

फ़तावा रज़विया, जिल्द बारहवीं

255: यदि किसी ने दूसरे के लिए कुछ खरीदा, तो खरीद इस खरीदार पर प्रभावी होगी जब तक कि इसे दूसरे व्यक्ति के लिए निर्दिष्ट न किया गया हो। हाँ, यदि ऐसा कहा गया था कि यह वस्तु फलां व्यक्ति के लिए बेच दी गई, और इस पर एक वयस्क ने कहा, "मैंने इसे फलां व्यक्ति के लिए बेच दिया," तो यह खरीद निलंबित (मूक़ूफ़) रहेगी। | [शीर्षक:] काफ़िर के निकाह का अध्याय | पृष्ठ 261

256: विवाह के समय, ज़ैद के माता-पिता ने प्रथा के अनुसार कपड़े के जोड़े चढ़ाए। निकाह के बाद, लड़की के माता-पिता ने दहेज में कुछ गहने और जोड़े दिए। बाद में, ज़ैद ने कुछ गहने बनवाए, साधारण कपड़ों के अलावा कुछ और कपड़े भी दिए। महिला ने अपने पति की मृत्यु के समय या अब तक मेहर माफ नहीं किया है। इस संपत्ति का मालिक कौन है? मेहर की अदायगी किसकी जिम्मेदारी है? | [अतिरिक्त:] ज़ैद कादियानी हो गया, जबकि उसकी पत्नी मुस्लिम ही रही। क्या हुक्म है? | पृष्ठ 261

257: विवाह प्रबंधों में प्रचलित प्रथागत लेन-देन और व्यवहार शरीयत के अनुसार जायज़ हैं। यदि प्रथा के अनुसार दूल्हे से कोई वस्तु या नकद लिया जाता है, चाहे वह शर्त के साथ हो या बिना शर्त, जैसा कि बंगाल और बर्मा में दस्तूर है कि निकाह से पहले सांचक (सगाई के उपहार) और दोनों पक्षों के मित्रों की दावत के खर्च के तौर पर लिया जाता है, क्या यह जायज़ होगा या नहीं आदि? | [अतिरिक्त:] क्या किसी मुसलमान का निकाह किसी ईसाई या पारसी महिला से हो सकता है या नहीं? | पृष्ठ 262

258: निकाह के अनुबंध (अक़द) से पहले रिवाज के अनुसार लड़की को कुछ गहने दिए गए। रुख़्सती से पहले दामाद का निधन हो गया। इस स्थिति में, क्या वे गहने वापस करने योग्य हैं या नहीं? अक्सर गहने उधार (आरियत) लेकर भी चढ़ाए जाते हैं, जिन्हें रुख़्सती के बाद वापस कर दिया जाता है। इस व्यक्ति की आय बहुत कम है; उसके माता-पिता की हैसियत इतनी नहीं है कि वे इतनी बड़ी कीमत की वस्तु को रुख़्सती के बाद उपहार (मूहूबह) समझ लें। इसके अलावा, रिवाज भी यही है कि ऐसा चढ़ावा वापस ले लिया जाता है। | [अतिरिक्त:] यदि किसी महिला ने शरीयत का अपमान किया, तो क्या वह मुर्तदा हो गई और निकाह समाप्त (फ़स्ख़) हो गया? | पृष्ठ 263

259: चढ़ावे का क्या हुक्म है, क्या यह जायज़ है या नहीं? | [अतिरिक्त:] क्या अब पति बिना तलाक दिए उससे संबंध तोड़ सकता है और क्या उस पर कोई जवाबदेही नहीं होगी? | पृष्ठ 263

259: लगन का हुक्म और यह कि वह किसकी मिल्कियत है? | [अतिरिक्त:] यदि हिंदा ईमान का नवीनीकरण (तजदीद-ए-ईमान) कर लेती है, तो क्या ज़ैद और हिंदा निकाह के नवीनीकरण के लिए शरीयत के अनुसार मजबूर हैं? | पृष्ठ 263

259: ज़ैद बचपन से ही अपने पिता के साथ व्यापार करता था, अपने पिता के अधीन था और काम भी करता था। उसके पिता अम्र ने उसकी शादी की। ज़ैद मर गया। महिला अपने ससुर से अपना दहेज, अपनी संपत्ति और वह धन जो सगाई के समय उसे दिया गया था (यानी चढ़ावा) और मेहर माँगती है। क्या हुक्म है? | [अतिरिक्त:] ईमान के नवीनीकरण के बाद, क्या महिला पति की अनुमति के बिना दूसरा निकाह कर सकती है? | पृष्ठ 263

[रिक्त] | [अतिरिक्त:] क्या ऐसी स्थिति में ज़ैद पर हिंदा का भरण-पोषण (नफ़क़ह) अनिवार्य होगा? | पृष्ठ 263

पृष्ठ 28 / 688

۲۵۵ | اگر دوسرے کے لئے کچھ خرید ا تو شراء اس مشتری پر نافذ ہوگی جبکہ اسے دوسرے کی طرف مضاف نہ کیا ہو ، ہاں اگر یوں کہا ہو کہ یہ شئی فلاں کے لئے بیچ کر ، اس پر بالغ نے کہا میں نے فلاں کے لئے بیچ کی تو یہ شراء موقوف ہوگی۔ | باب نکاح الکافر | ۲۶۱

۲۵۶ | وقت شادی زید کے والدین حسب دستور جوڑے چڑھائے، بعد نکاح لڑکی کے والدین نے کچھ زیور، جوڑے جہیز میں دئے ، پھر زید نے کچھ زیور بنوادیا، علاوہ معمولی کپڑوں کے کچھ کپڑا بھی، عورت نے شوہر کے مرتے وقت پر بلکہ اب تک مہر میں معاف نہ کیا اس مال کا مالک کون ہے، مہر کی ادا کس کے ذمہ ہے۔ | زید قادیانی ہوگیا، اس کی عورت مسلمان ہی رہی، کیا حکم ہے۔ | ۲۶۱

۲۵۷ | داد و ستد معتاد و معروف کہ در انتظام مناکحت مروج است ازروئے شرع شریف جائز ست، اگر چیزے ونقدے بنار عرف از ناک گرفتہ میشود خواہ بشرط یا بغیر شرط چنانکہ در بنگالہ وبرہماد ستور است کہ قبل نکاح بطور ساچق وخرچہ ضیافت احباب طرفین مے گیرند جائز خواھد شد یا نہ شد الخ۔ | مسلمان کا نصرانیہ یا مجوسیہ سے نکاح ہو سکتا ہے یا نہیں۔ | ۲۶۲

۲۵۸ | قبل عقد حسب رواج کچھ زیور لڑکی کو دیا، رخصت سے قبل داماد کا انتقال ہو گیا، اس صورت میں وہ زیور قابلِ واپسی ہے یا نہیں۔ اکثر زیور عاریت لے کر بھی چڑھایا جاتا ہے جو بعد رخصت واپس آجاتا ہے، یہ شخص بہت قلیل المعاش ہے اس کے والدین اتنی حیثیت نہیں رکھتے کہ اتنی مالیت کو بعد رخصت موہوبہ سمجھ لیں اور رواج بھی یہی ہے کہ ایسا چڑھاوادواپس لے لیا جاتا ہے۔ | عورت نے شریعت کی توہین کی تو کیا وہ مرتدہ ہو گئی اور نکاح فسخ ہو گیا۔ | ۲۶۳

۲۵۹ | چڑھاوے کا کیا حکم ہے آیا جائز ہے یا نہیں۔ | کیا اب شوہر بے طلاق دئے اس سے تعلق ترک کر سکتا ہے اور کوئی مواخذہ تو نہ ہوگا۔ | ۲۶۳

۲۵۹ | لگن کا حکم اور یہ کہ وہ کس کی ملک ہے۔ | ہندہ تجدیدِ ایمان کر لے تو کیا زید و ہندہ تجدیدِ نکاح پر شرعاً مجبور ہیں۔ | ۲۶۳

۲۵۹ | زید بچپن سے اپنے باپ کے ساتھ بیوپار کرتا تھا اپنے باپ کے ماتحت تھا اور کام بھی کرتا تھا اس کی شادی اس کے باپ عمرو نے کی، زید مر گیا، عورت اپنے خسر سے جہیز اور اپنا مال وزر اور وہ مال جو نسبت کے وقت اسے دیا گیا تھا یعنی چڑھاو ا اور مہر طلب کرتی ہے کیا حکم ہے۔ | بعد تجدیدِ ایمان عورت بلا اجازت شوہر دوسرا نکاح کر سکتی ہے۔ | ۲۶۳

| | کیا ہندہ کا نفقہ ایسی صورت میں زید پر واجب ہو گا۔ | ۲۶۳

Fatawa Razvia Volume Twelve

[267] In this situation, if Zaid is ready for renewal of marriage, will the previous dower amount remain fixed, or will a new amount be decided upon the consent of both parties? [263] Rulings on taking the breast in the mouth.

[267] In this situation, will Hind be forced to accept a lesser dower according to Zaid's wish? [263] It is lawful for a man to enjoy his wife from head to toe wherever he wishes, except for that which Allah Almighty has forbidden.

[268] If a woman commits disbelief (kufr), she does not exit the marriage; this is the relied-upon fatwa. [263] To kiss the wife is Sunnah and commendable if the intention is righteous; then he will receive a reward for it.

[268] An apostate woman will be forced to renew the marriage after returning to Islam; there is no maintenance (nafaqah) for an apostate woman. [264] If a woman is not breastfeeding, it is permissible for the husband to take her breast in his mouth.

[268] Becoming an apostate does not waive the dower for a consummated marriage. [264] If a man takes the breast of a breastfeeding wife in his mouth, he should be careful that no drop of milk enters the throat.

[268] Just as an apostate woman is forced to renew marriage after returning to Islam, she can also be forced to accept a minimum dower, for example, one dinar. [264] It is forbidden for a man to intentionally drink his wife's milk.

[268] Can a marriage take place with Hind's minor girl without the permission of her guardian and without converting her to Islam or not? [264] If the wife has a lot of milk, or there is a fear that milk will enter the throat, then taking the breast in the mouth is disliked (makruh).

[268] Can a marriage be performed with a Rafidhiah? [265] When a woman is left at home, how long can one stay on a journey?

[269] If someone mistakenly marries a Rafidhiah without knowing she is one, what is the ruling? [265] Does the husband have the authority to keep his wife with him or not?

[270] A Khattak divorced his woman according to his religion. After four months, the woman became Muslim. In the same meeting, her marriage was arranged. How was the marriage and was the waiting period (iddah) necessary? There is no iddah for a

non-believer at all. [265] To cause hardship or harm to a woman is prohibited by the command of the Quran.

[265] If the dower is not prompt (mu'ajjal), she has no right to withhold herself because of it.

[267] Chapter on Social Relations

[267] Ruling on kissing.

फ़तावा रिज़विया जिल्द बारहवाँ

[267] इस स्थिति में यदि ज़ैद पुनर्विवाह (तजदीद-ए-निकाह) के लिए तैयार है, तो क्या मेहर पिछली राशि पर ही निर्धारित रहेगा या अब दोनों पक्षों की सहमति से नई राशि तय होगी? [263] स्तन को मुँह में लेने के अहकाम (नियम)।

[267] क्या इस स्थिति में हिन्दा को ज़ैद की इच्छा के अनुसार कम मेहर पर मजबूर किया जाएगा? [263] एक पुरुष के लिए जायज़ है कि अपनी पत्नी के सिर से पैर तक जहाँ से चाहे आनंद ले, मगर वह चीज़ जिससे अल्लाह तआला ने मना फ़रमाया है (उससे बचे)।

[268] यदि स्त्री कुफ़्र करे तो वह निकाह से बाहर नहीं होती, यही मुफ्ती का मत है। [263] पत्नी को चूमना सुन्नत और मुस्तहब है यदि नीयत नेक हो, तो उस पर सवाब मिलेगा।

[268] धर्मत्यागी महिला को इस्लाम में लौटने के बाद पुनर्विवाह के लिए मजबूर किया जाएगा; धर्मत्यागी महिला के लिए कोई भरण-पोषण (नफ़क़ा) नहीं है। [264] यदि स्त्री दूध पिलाने वाली न हो, तो उसका स्तन मुँह में लेना पति के लिए जायज़ है।

[268] धर्मत्यागी होने से निकाह के बाद का मेहर समाप्त नहीं होता। [264] यदि पुरुष दूध पिलाने वाली पत्नी का स्तन मुँह में ले, तो ध्यान रखे कि दूध की कोई बूँद गले में न जाए।

[268] धर्मत्यागी स्त्री को इस्लाम के बाद पुनर्विवाह के लिए जैसे मजबूर किया जाएगा, वैसे ही उसे न्यूनतम मेहर, जैसे एक दीनार पर भी मजबूर किया जा सकता है। [264] पुरुष के लिए जानबूझकर पत्नी का दूध पीना हराम है।

[268] क्या हिन्द की नाबालिग लड़की से उसके वली (अभिभावक) की अनुमति के बिना और बिना मुसलमान बनाए निकाह हो सकता है या नहीं? [264] यदि पत्नी के पास अधिक दूध है अन्यथा डर है कि दूध गले में चला जाएगा, तो स्तन मुँह में लेना मकरूह (नापसंद) है।

[268] क्या राफ़िज़िया से निकाह हो सकता है? [265] जब स्त्री को घर पर छोड़ जाए, तो कितनी अवधि तक यात्रा में रहा जा सकता है।

[269] यदि धोखे से किसी राफ़िज़िया से निकाह कर ले यह जाने बिना कि वह राफ़िज़िया है, तो क्या हुक्म है? [265] पति को अपनी पत्नी को अपने साथ रखने का अधिकार है या नहीं?

[270] एक खट्टक ने अपनी स्त्री को अपने धर्म के अनुसार तलाक दे दिया। चार महीने बाद वह महिला मुसलमान हो गई। उसी सभा में उसका निकाह करा दिया गया। निकाह कैसा हुआ और क्या इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) की आवश्यकता थी? काफ़िर के लिए इद्दत बिल्कुल नहीं है। [265] कुरान के हुक्म के अनुसार स्त्री पर तंगी करना और उसे नुकसान पहुँचाना वर्जित है।

[265] यदि मेहर मुअज्जल (तत्काल देय) न हो, तो इस कारण स्त्री को अपने आप को रोकने का कोई अधिकार नहीं है।

[267] बाबुल मुआशरत (सामाजिक जीवन का अध्याय)

[267] चूमने का हुक्म।

पृष्ठ 688 में से 29

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

۲۶۷ | اس صورت حال میں اگر زید تجدید نکاح پر تیار ہو تو مہر سابقہ تعداد پر معین رہے گا یا اب نئی تعداد فریقین کی رضامندی پر ہوگی۔ ۲۶۳ | چھاتی منہ میں لینے کے احکام۔

۲۶۷ | کیا اس صورت حال میں ہندہ زید کی مرضی کے موافق کم مہر پر مجبور کی جائے گی؟ ۲۶۳ | مرد کے لئے حلال ہے کہ اپنی بیوی کے سر سے پاؤں تک جہاں سے چاہے لطف اندوز ہو مگر وہ جس سے اللہ تعالیٰ نے منع فرمایا۔

۲۶۸ | عورت اگر کفر کرے تو نکاح سے نہیں نکلتی، یہی مفتی بہ ہے۔ ۲۶۳ | بیوی کا بوسہ مسنون و مستحب ہے اگر نیت صالحہ ہو ، تو اس پر اجر پائے گا۔

۲۶۸ | مرتدہ بعد اسلام تجدید نکاح پر مجبور کی جائے گی ، مرتدہ کے لئے نفقہ نہیں۔ ۲۶۴ | عورت اگر دودھ والی نہ ہو تو اس کا پستان منہ میں لینا شوہر کے لئے جائز ہے۔

۲۶۸ | مرتدہ ہونے سے مہر مدخولہ ساقط نہیں ہوتا۔ ۲۶۴ | مرد اگر دودھ والی بیوی کا پستان منہ میں لے تو یہ خیال رکھے کہ دودھ کا کوئی قطرہ حلق میں نہ جائے۔

۲۶۸ | مرتدہ عورت جیسے بعد اسلام تجدید نکاح پر مجبور کی جائے گی کم از کم مہر مثلاً ایک دینار پر بھی مجبور کی جا سکتی ہے۔ ۲۶۴ | مرد کو قصداً بیوی کا دودھ پینا حرام ہے۔

۲۶۸ | ہند کی نابالغ لڑکی سے بے اس کے ولی کی اجازت کے اور بے مسلمان کئے نکاح ہو سکتا ہے یا نہیں؟ ۲۶۴ | اگر بیوی زیادہ دودھ والی ہے ورنہ خدشہ ہے کہ دودھ حلق میں جائے گا تو پستان منہ میں لینا مکروہ ہے۔

۲۶۸ | رافضیہ سے نکاح ہو سکتا ہے؟ ۲۶۵ | جب عورت کو گھر پر چھوڑ جائے تو کتنی مدت تک سفر میں رہ سکتا ہے۔

۲۶۹ | اگر دھوکے سے کسی رافضیہ سے نکاح کر لے کہ معلوم نہ ہو کہ یہ رافضیہ ہے تو کیا حکم ہے۔ ۲۶۵ | شوہر کو اپنے ہمراہ میں اپنی بی بی کو رکھنے کا اختیار ہے یا نہیں۔

۲۷۰ | کھٹک نے اپنی عورت کو اپنے مذہب کے موافق طلاق دے دی چار ماہ بعد عورت مسلمان ہوئی اسی جلسہ میں اس کا نکاح کرا دیا گیا نکاح کیسا ہوا اور عدت کی ضرورت تھی یا نہیں۔ کافر کے لئے عدت اصلاً نہیں۔ ۲۶۵ | عورت پر تنگی کرنا اور اسے ضرر پہنچانا بحکم قرآن ممنوع ہے۔

۲۶۵ | اگر مہر معجل نہ ہو تو اس کی وجہ سے عورت کو اپنے نفس کو روکنے کا کوئی اختیار نہیں۔

۲۶۷ | باب المعاشرة

۲۶۷ | بوسہ کا حکم۔

Fatawa Razawiya Volume 12

Page	Subject
270	Financial penalty is sharia-wise illegitimate and void.
270	Acting upon the abrogated is forbidden.
270	Is there any harm if the husband looks at the wife's private parts at the time of intercourse? Similarly if he touches it.
270	Is there any harm if a woman touches her husband's penis?
271	Viewing the private parts during intercourse is prohibited and a cause of blindness.
278	If a woman's life is in danger from her husband, she cannot be forced to stay with him, and in this case, she is not considered disobedient (nashizah).
	Chapter of Apportionment (Bab al-Qasam)
274	Just as men have rights over women, similarly, according to the command of the Great Quran, women have rights over men.
275	He who has two wives and does not act justly between them will rise on the Day of Resurrection with one side leaning.
275	Is it obligatory for a man to observe equality between two wives? If one of them is from the prostitute community, should any distinction be made or not?
276	What is the manner of food in justice between two wives? Should the same thing given to one be given to the other even if it is by way of compensation?
279	After childbirth, Hindah made a vow not to engage in intercourse to avoid birth pains and told her husband, "If you cannot be patient, go ahead and marry a second time, and if you are not able to, do not provide me with maintenance (naan-o-nafaqah)." Is it sharia-wise permissible for the husband to act upon Hindah's words?
280	Can the guardian of a girl who is apparently unable to bear intercourse prevent her from going to her husband's house or not?
281	A father betrothed his young daughter to a boy, then after some time broke it off

Page	Subject
273	Is it permissible or not to cause unnecessary pain and suffering to a woman, and not to observe equality between two wives, and to keep both in one house by force?
273	Softness and good manners with wives, patience with their bad temper, pleasing them, and observing their rights that are not against Sharia is beloved by Sharia.
273	A few hadiths on the excellence of such a person.

Page	Subject
	and betrothed her to another. Is this permissible? And is the permission and consent of the boy to whom she was first betrothed necessary?
281	There are three forms of breaking a promise.
282	If after betrothal it is found that the one to whom the girl was betrothed is a Rafizi, Wahabi, etc., an adherent of a bad sect, then it is sharia-wise obligatory to break the betrothal.

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

पृष्ठ	विषय
270	आर्थिक दंड शरीयत के अनुसार नाजायज़ और बातिल है।
270	मंसूख़ (निरस्त) पर अमल करना हराम है।
270	क्या पति संभोग के समय पत्नी के गुप्तांग को देखे तो कोई हर्ज है? इसी तरह अगर वह स्पर्श करे।
270	क्या स्त्री का पति के लिंग को छूना हर्ज है?
271	संभोग के समय गुप्तांगों को देखना वर्जित है और अंधेपन का कारण है।
278	यदि महिला को पति से जान का खतरा हो, तो उसे उसके पास रहने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता, और इस स्थिति में वह नाशिज़ह (अवज्ञाकारी) भी नहीं है।
274	पुरुषों के अधिकार महिलाओं पर जिस तरह हैं, ठीक वैसे ही महान कुरान के आदेशानुसार महिलाओं के अधिकार पुरुषों पर हैं।
275	जिसके पास दो पत्नियाँ हों और वह उनके बीच न्याय न करे, तो वह कयामत के दिन एक तरफ झुका हुआ उठेगा।
275	क्या दो पत्नियों के बीच समानता का पालन करना पुरुष पर अनिवार्य है या नहीं, यदि उनमें से एक वेश्या समुदाय से हो तो क्या कोई अंतर किया जाना चाहिए या नहीं?
276	दो पत्नियों के बीच न्याय में भोजन की क्या स्थिति है, क्या जो चीज़ एक को दी जाए वही दूसरी को भी दी जाए भले ही वह मुआवजे की तरह हो?
279	हिंदा ने प्रसव के बाद प्रसव पीड़ा से बचने के लिए संभोग न करने की प्रतिज्ञा की और पति से कहा कि यदि आपको धैर्य न आए तो दूसरी शादी कर लें और यदि सामर्थ्य न हो तो मुझे भरण-पोषण (रोटी-खर्चा) न दें, क्या शरीयत के अनुसार इसकी अनुमति है कि पति हिंदा के कहने पर अमल करे?
280	ऐसी लड़की जो स्पष्ट रूप से संभोग सहन नहीं कर सकती, क्या इस स्थिति में उसका वली (अभिभावक) उसे पति के घर जाने से रोक सकता है या नहीं?

पृष्ठ	विषय
	बाबुल क़स्म (विभाजन का अध्याय)
273	स्त्री को बिना कारण कष्ट और पीड़ा देना और दो पत्नियों के बीच समानता न करना, दोनों को जबरन एक ही घर में रखना जायज़ है या नहीं?
273	पत्नियों के साथ कोमलता और अच्छा व्यवहार, उनके बुरे स्वभाव पर धैर्य, उनका दिल जीतना, उनकी वे रियायतें जो शरीयत के खिलाफ न हों, शरीयत को प्रिय हैं।
273	ऐसे व्यक्ति की श्रेष्ठता के बारे में कुछ हदीसें।
281	पिता ने अपनी जवान लड़की का रिश्ता एक लड़के से किया, कुछ समय बाद उसे तोड़कर दूसरे से कर दिया, क्या यह जायज़ है, और क्या इसमें उस लड़के की अनुमति और सहमति आवश्यक है जिससे पहले रिश्ता किया गया था?
281	वादा खिलाफी (वचन तोड़ने) के तीन रूप हैं।
282	रिश्ता होने के बाद पता चला कि जिससे लड़की का रिश्ता हुआ वह राफ़ज़ी, वहाबी आदि विधर्मी (बद-मज़हब) है, तो रिश्ता तोड़ना शरीयत के अनुसार अनिवार्य है।

पृष्ठ संख्या 30/688

صفحہ	مضمون
۲۷۰	مالی جرمانہ شرعاً ناجائز و باطل ہے۔
۲۷۰	منسوخ پر عمل حرام ہے۔
۲۷۰	شوہر شرمگاہِ زن وقتِ جماع دیکھے تو کچھ حرج ہے؟ یونہی اگر مس کرے۔
۲۷۰	کیا عورت شوہر کے آلہ تناسل کو چھوئے تو حرج ہے۔
۲۷۱	بوقتِ جماع رویتِ فرج ممنوع اور نابینائی کا سبب ہے۔

صفحہ	مضمون
۲۷۴	مردوں کے حقوق عورتوں پر جس طرح ہیں یونہی بحکمِ قرآنِ عظیم مردوں پر عورتوں کے۔
۲۷۵	جس کے دو بیبیاں ہوں اور ان میں عدل نہ کرے تو قیامت کے دن ایک طرف کو جھکا ہوا اٹھے گا۔
۲۷۵	رعایتِ مساوات دو زوجہ میں مرد پر واجب ہے یا نہیں، اگر ان میں سے ایک قوم طوائف سے ہو تو کچھ فرق کیا جائے یا نہیں؟
۲۷۶	عدل بین الزوجین میں کھانے کی کیا صورت ہے، آیا جو چیز ایک کو دے وہی دوسری کو بھی دے اگرچہ از قسم مکافات ہو۔
۲۷۹	ہندہ نے بعد ولادت تکلیفِ ولادت سے بچنے کے لئے جماع نہ کرنے کا عہد کیا اور شوہر سے کہا کہ تمہیں صبر نہ آئے گو دوسری شادی کرلو اور جو مقدرت نہ ہو تو مجھے نان نفقہ نہ دو، کیا شرعاً اس کی اجازت ہے کہ شوہر ہندہ کے کہنے پر عمل کرے۔

صفحہ	مضمون
	عورت کو شوہر سے جان کا خطرہ ہو تو اس کے یہاں
۲۷۸	رہنے پر مجبور نہیں کر سکتی، اور اس صورت میں ناشزہ بھی نہیں۔
	باب القسم
۲۷۳	عورت کو بے وجہ تکلیف و اذیت دینا اور دو ۲ زوجہ میں مساوات نہ کرنا، دونوں کو ایک مکان میں بجبر رکھنا جائز ہے یا نہیں۔
۲۷۳	بیبیوں کے ساتھ نرمی اور خوش خلقی، انکی بدخوئی پر صبر، ان کی دل جوئی، ان
۲۸۰	ایسی لڑکی جو بظاہر جماع کی متحمل نہیں ہو سکتی اس صورت میں اس کا ولی اسے شوہر کے یہاں جانے سے روک سکتا ہے یا نہیں۔
۲۸۱	باپ نے اپنی جوان لڑکی کی نسبت ایک لڑکے سے کردی، کچھ عرصہ کے بعد اس سے چھڑا کر دوسرے سے کردی، کیا یہ جائز ہے، اور کیا اس میں اس لڑکے کی اجازت و رضامندی ضروری ہے جس سے پہلے نسبت کی تھی۔
۲۸۱	خلف وعدہ کی تین صورتیں ہیں۔
۲۸۲	نسبت کرنے کے بعد معلوم ہوا کہ جس سے لڑکی کی نسبت کی وہ رافضی وہابی وغیرہ بد مذہب ہے تو نسبت چھڑانا شرعاً لازم ہے۔

صفحہ	مضمون	صفحہ	مضمون
	کے مراعات جو خلافِ شرع نہ ہو محبوبِ شرع ہے۔		
۲۷۳	ایسے شخص کی فضیلت کی چند حدیثیں۔		

Fatawa Rizvia | Volume 12

283 | It is not permissible to send a proposal to another after engagement as long as the engagement remains. | First: People of negligence who consider widow marriage as a severe disgrace, shame, and forbidden like Hindus. If young women in need of marriage are stopped from marrying and, God forbid, get involved in some sin due to the evil of self, then its burden will be on those who stopped the marriage. | 289 284 | Whether the money people take at the time of engagement or marriage is lawful or not. | According to the Hadith, when a girl reaches twelve years of age, she should be married. | 290 285 | A husband sent some dinars to his in-laws, they made clothes for the groom according to custom. He claimed I gave it as dowry. In this case, his statement will be reliable. And if he gave it and said spend it on making something, wages, price of some thread, etc. They did so, then he claimed I gave it as dowry, in this case, his statement will not be reliable. | Second: People of excess, who are mostly Wahhabi preachers, etc., strict people, they have declared widow marriage as an absolute mandatory, definitive duty, and a final obligation. | 290 286 | Sugar, walnuts, fruits, etc., were sent to the fiancé's house and for some reason, the marriage did not take place. If these things were distributed with the suitor's permission, they will not be returned, otherwise, they will be returned unless ownership is established by custom. | It is the majority habit of Wahhabis that they declare Muslims as infidels, polytheists, and faithless for no reason. | 290 Chapter of Second Marriage | Excessive and improper strictness is impermissible and a cause of destruction. | 290 287 | Treatise: Ataib al-Tahani fi al-Nikah al-Thani (Account of the rulings of second marriage and those who call widow marriage mandatory and those who call those who don't do it infidels). | The author's elegant research that second marriage, like the first marriage, can be mandatory, necessary, Sunnah, permissible, disliked, and forbidden. | 291 288 | Summary of the Fatwa of Maulvi Abdul Rahim Dehlvi regarding widow marriage. | Detail of different forms of marriage and their rulings. | 291 289 | Answer from the author (Ala Hazrat Imam Ahmad Raza Fazil Barelvi) Rahamatullah Ta'ala Alaihi. | For which woman marriage is prohibited and impermissible. | 291 289 | Regarding the issue of widow marriage, two sects of Indian ignoramuses emerged. | For which woman marriage is absolutely forbidden. | 291

फ़तावा रज़विया | जिल्द द्वादश

२८३ | सगाई के बाद दूसरे को पैग़ाम भेजना जायज़ नहीं जब तक सगाई बाक़ी है। | अव्वल: अहल-ए-तफ़रीत कि निकाह-ए-बेवा को हनूद की तरह सख़्त नंग-ओ-आर और हराम जानते हैं। निकाह की हाजत वाली जवान औरतें अगर निकाह से रोकी गईं और मआज़ अल्लाह बशामत-ए-नफ़्स किसी गुनाह में मुब्तला हो गईं तो उसका वबाल निकाह से रोकने वालों पर पड़ेगा। | २८९ २८४ | निस्बत या निकाह के वक़्त जो रुपया लोग लेते हैं हलाल है या नहीं। | हदीस की रूह से लड़की जब बारह बरस की हो जाए तो उसका निकाह कर देना चाहिए। | २९० २८५ | शौहर ने कुछ दनानीज़ (दीनार) ससुराल भेजे, उन्होंने हस्ब-ए-आदत दूल्हा के कपड़े बना दिए, वो मुद्दई (दावा करने वाला) कि मैंने महर में दिए थे, इस सूरत में उसका क़ौल मोतबर होगा और अगर देकर कहा कि कुछ बनाई की उजरत, कुछ सूत की क़ीमत वग़ैरह में सर्फ़ करो। उन्होंने ऐसा ही कर दिया, फिर दावा किया कि मैंने महर में दिए, इस सूरत में उसका क़ौल मोतबर न होगा। | दोम: अहल-ए-इफ़रात कि अक्सर वाज़ीन-ए-वहाबिया वग़ैरह हम जत्ताल मुशद्दिदीन हैं, उन्होंने निकाह-ए-बेवा को गोया अला-इत़लाक़ वाजिब-ए-क़तई और फ़र्ज़-ए-हत्मी क़रार दे दिया। | २९० २८६ | मंगेतर के यहाँ शकर, अखरोट और फल वग़ैरह भेजे गए और किसी वजह से निकाह न हुआ, अगर ख़ातिब की इजाज़त से ये चीज़ें तक़्सीम हुई हैं तो वापस न मिलेंगी वरना मिलेंगी जबकि उर्फ़ से तमीलीक साबित न हो। | वहाबिया की अक्सरियत आदत है कि मुसलमानों को वजह बे-वजह काफ़िर, मुशरिक और बे-ईमान ठहरा देते हैं। | २९० बाबुन निकाह-ए-स़ानी (दूसरा निकाह का अध्याय) | तशद्दुद-ओ-बेजा नाजायज़ और सबब-ए-हलाक है। | २९० २८७ | रिसाला अताइबुत तहानी फ़िन निकाहिस स़ानी (निकाह-ए-स़ानी के अहकाम और बेवा के निकाह को फ़र्ज़ बताने वालों और न करने वालों को काफ़िर कहने वालों की ख़बरगीरी)। | मुसन्निफ़ की तहक़ीक़-ए-अनीक़ कि निकाह-ए-स़ानी मिस्ल-ए-निकाह-ए-अव्वल फ़र्ज़, वाजिब, सुन्नत, मुबाह, मकरूह और हराम सब कुछ है। | २९१ २८८ | ख़ुलासा-ए-फ़तवा मौलवी अब्दुल रहीम देहलवी दरबारा-ए-निकाह-ए-बेवा। | निकाह की मुख्तलिफ़ सूरतें और उनके अहकाम की तफ़्सील। | २९१ २८९ | जवाब अज़ मुसन्निफ़ (आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िल-ए-बरेलवी) रहमतुल्लाह तआला अलैहि। | किस औरत को निकाह ममनू-ओ-नाजायज़ है। | २९१ २८९ | निकाह-ए-बेवा के मसले में जाहलान-ए-हिन्द के दो फ़िर्क़े हो गए। | कौन सी औरत को निकाह हराम-ए-क़तई है। | २९१

पृष्ठ ३१ का ६८८

۲۸۳ | منگنی کے بعد دوسرے کو پیغام بھیجنا جائز نہیں جب تک منگنی باقی ہے۔ | اول: اہل تفریط کہ نکاح بیوہ کو ہنود کی طرح سخت ننگ و عار اور حرام جانتے ہیں۔ نکاح کی حاجت والی جوان عورتیں اگر نکاح سے روکی گئیں اور معاذاللہ بشامت نفس کسی گناہ میں مبتلا ہو گئیں تو اس کا وبال نکاح سے روکنے والوں پر پڑے گا۔ | ۲۸۹ ۲۸۴ | نسبت یا نکاح کے وقت جو روپیہ لوگ لیتے ہیں حلال ہے یا نہیں۔ | حدیث کی رُوسے لڑکی جب بارہ برس کی ہو جائے تو اس کا نکاح کر دینا چاہیے۔ | ۲۹۰ ۲۸۵ | شوہر نے کچھ دنا نیز سسرال بھیجے، انہوں نے حسب عادت دولھا کے کپڑے بنا دئے ، وہ مدعی کہ میں نے مہر میں دئے تھے اس صورت میں اس کا قول معتبر ہوگا اور اگر دے کر کہا کہ کچھ بنائی کی اجرت، کچھ سوت کی قیمت وغیرہ میں صرف کرو۔ انہوں نے ایسا ہی کر دیا، پھر دعویٰ کیا کہ میں نے مہر میں دئے، اس صورت میں اس کا قول معتبر نہ ہوگا۔ | دوم: اہل افراط کہ اکثر واعظین وہابیہ وغیرہ ہم جتال مشددین ہیں انہوں نے نکاح بیوہ کو گویا علی الاطلاق واجب قطعی اور فرض حتمی قرار دے دیا۔ | ۲۹۰ ۲۸۶ | منگیتر کے ہاں شکر، اخروٹ اور پھل وغیرہ بھیجے گئے اور کسی وجہ سے نکاح نہ ہوا، اگر خاطب کی اجازت سے یہ چیزیں تقسیم ہوئی ہیں تو واپس نہ ملیں گی ورنہ ملیں گی جبکہ عُرف سے تملیک ثابت نہ ہو۔ | وہابیہ کی اکثرت عادت ہے کہ مسلمانوں کو وجہ بے وجہ کافر ، مشرک اور بے ایمان ٹھرا دیتے ہیں۔ | ۲۹۰ باب النکاح الثانی | تشدد و بیجا نا جائز اور سبب ہلاک ہے۔ | ۲۹۰ ۲۸۷ | رسالہ اطائب التھانی فی النکاح الثانی (نکاح ثانی کے احکام اور بیوہ کے نکاح کو فرض بتانے والوں اور نہ کرنے والوں کو کافر کہنے والوں کی خبر گیری) | مصنف کی تحقیق انیق کہ نکاح ثانی مثل نکاح اول فرض، واجب، سنت، مباح مکروہ اور حرام سب کچھ ہے۔ | ۲۹۱ ۲۸۸ |

خلاصہ فتویٰ مولوی عبدالرحیم دہلوی درباره نکاح بیوہ۔ | نکاح کی مختلف صورتیں اور ان کے احکام کی تفصیل۔ | ۲۹۱ ۲۸۹ | جواب از مصنف (اعلیٰحضرت امام احمد رضا فاضل بریلوی) رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ۔ | کس عورت کو نکاح ممنوع و ناجائز ہے۔ | ۲۹۱ ۲۸۹ | نکاح بیوی کے مسئلہ میں جاہلانِ ہند کے دو فرقے ہو گئے۔ | کون سی عورت کو نکاح حرام قطعی ہے۔ | ۲۹۱

Fatawa Razawiya Volume 12

Page	Topic	Topic	Page
291	To encourage which woman for marriage is against Shariah and a sin.	For whom marriage is permissible (mubah).	294
291	For which woman marriage is obligatory (wajib).	A few Hadiths regarding the habits of women.	295
291	For which woman marriage is an absolute obligation (farz qati).	Women were created from a crooked rib.	295
291	Women for whom marriage has become an absolute obligation (farz) or obligatory (wajib) shall be compelled to marry.	For women, there is a reward equal to Jihad in obeying husbands and recognizing their rights.	296
291	Women for whom marriage is farz or wajib, if they do not marry themselves, they will be sinners, and if the guardians (awliya) do not try their best, they too will be sinners.	If women do not disobey their husbands and offer prayers, they will go straight to heaven.	296
291	A person does not become a disbeliever (kafar) for not performing duties (faraiz) or for preventing their performance.	Mention of some rights of the husband over the wife.	296
291	One who denies the obligation of such a duty (farz) whose obligation is among the essentials of religion (zaruriyat-e-deen) becomes a disbeliever.	Funeral prayer is obligatory (farz) for every Muslim, no matter how sinful they may be.	297
292	Having bad suspicion about a Muslim is forbidden (haram).	The incident of the proposal of marriage to Umm Hani bint Abi Talib (may Allah be pleased with her) on behalf of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him).	300
292			301

Page	Topic
	Marriage will be farz or wajib for a man only when he owns the means for dowry (mahr) and maintenance (nafaqah); otherwise, he will be a sinner for abandoning marriage.
292	If one fears falling into adultery (zina) if they do not marry, and fears committing injustice (jur-o-zulm) if they do marry, then marriage will not be an absolute obligation (farz).
293	Injustice and oppression (jur-o-zulm) are sins related to the rights of people (huquq-ul-ibad), while abstaining from adultery is related to the rights of Allah (huquq-Allah).
293	In case of conflict, the right of the servant (haqq-ul-abd) takes precedence over the right of Allah (haqq-Allah).
293	In what situation marriage is Sunnah.

Topic	Page
The best among Arab women are the women of Quraish, who are very kind to their children and are great guardians and protectors of their husbands' wealth.	
The incident of the marriage proposal to Hazrat Umm Salama (may Allah be pleased with her) on behalf of the Radiant Prophet (peace and blessings of Allah be upon him).	302
The blessed age and year of passing of the Mother of the Believers, Hazrat Sayyidah Umm Salama (may Allah be pleased with her).	303
The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) married Hazrat Umm Salama (may Allah be pleased with her) at the end of Shawwal, 4 AH.	303

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

पृष्ठ	विषय	विषय	पृष्ठ
291	किस औरत को निकाह की तरग़ीब देना ख़िलाफ़-ए-शरअ और मासियत (गुनाह) है।	किसके हक़ में निकाह मुबाह है।	294
291	किस औरत को निकाह करना वाजिब है।	औरतों की आदतों के मुताल्लिक़ चंद अहादीस।	295
291	किस औरत को निकाह करना फ़र्ज़-ए-क़तई है।	औरतें टेढ़ी पसली से पैदा हुईं।	295
291	जिन औरतों पर निकाह फ़र्ज़ या वाजिब हुआ उन्हें निकाह पर मजबूर किया जाएगा।	शौहरों की इताअत (आज्ञापालन) और उनके हुक़ूक़ की मारिफ़त (पहचान) में औरतों के लिए जेहाद के बराबर अज्र (पुण्य) है।	296
291	जिन औरतों पर निकाह फ़र्ज़ व वाजिब हो, वह अगर ख़ुद न करेंगी तो गुनहगार होंगी और अगर औलिया (संरक्षक) मक़दूर भर (यथाशक्ति) कोशिश न करेंगे तो वह भी गुनहगार होंगे।	औरतें अगर शौहरों की नाफ़रमानी न करें और नमाज़ पढ़ें तो सीधी जन्नत को चली जाएंगी।	296
291	फ़राइज़ (अनिवार्य कर्तव्य) अदा न करने या उनकी अदायगी से बाज़ रखने पर आदमी काफ़िर नहीं होता।	शौहर के बीवी पर बाज़ (कुछ) हुक़ूक़ का ज़िक्र।	296
291	ऐसे फ़र्ज़ की फर्ज़ियत का मुनकिर (इनकार करने वाला) काफ़िर हो जाता है जिसकी फर्ज़ियत ज़रूरियात-ए-दीन (धर्म की अनिवार्यताओं) से हो।	हर मुसलमान की नमाज़-ए-जनाज़ा फ़र्ज़ है चाहे वह कितना ही गुनहगार हो।	297
292	मुसलमान पर बदगुमानी (बुरी धारणा) हराम है।	हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तरफ़ से उम्मे हानी बिन्त अबी	300

पृष्ठ	विषय
292	मर्द पर निकाह उसी वक़्त फ़र्ज़ व वाजिब होगा जब वह मेहर-ओ-नफ़क़ा का मालिक हो वर्ना वह तर्कए-निकाह (निकाह छोड़ने) पर गुनहगार होगा।
292	अगर निकाह न करे तो ज़िना (व्यभिचार) में मुब्तिला होने का ख़ौफ़ है और अगर करे तो जौर-ओ-ज़ुल्म (अन्याय) का डर है तो निकाह फ़र्ज़ न होगा।
293	जौर-ओ-ज़ुल्म ऐसी मासियत (पाप) है जिसका ताल्लुक़ हुक़ूक़ुल इबाद (इंसानों के अधिकार) से है और ज़िना से बाज़ रहना हुक़ूक़ुल्लाह (अल्लाह के अधिकार) से है।
293	बर-वक़्त-ए-तआरुज़ (टकराव के समय) हक़-ए-अब्द (बंदे का अधिकार) हक़-ए-अल्लाह पर मुक़द्दम (प्राथमिक) होता है।
293	किस हालत में निकाह सुन्नत है।
301	तालिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को पैग़ाम-ए-निकाह का वाक़िआ।
301	अरब की औरतों में सबसे बेहतर ज़नान-ए-क़ुरैश (क़ुरैश की औरतें) हैं जो अपने बच्चों पर बहुत ज़्यादा मेहरबान और शौहरों के माल की ज़्यादा निगरान व मुहाफ़िज़ (रक्षक) होती हैं।
302	हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तरफ़ से हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को पैग़ाम-ए-निकाह का वाक़िआ।
303	उम्मुल मोमिनीन हज़रत सैयदा उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की उम्र-ए-मुबारक और सन् विसाल (मृत्यु वर्ष)।
303	हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आख़िर शव्वाल सन् चार हिजरी में हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से निकाह फ़रमाया।

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

صفحہ	عنوان	صفحہ	عنوان
۲۹۱	کس عورت کو نکاح کی ترغیب دینا خلافِ شرع و معصیت ہے۔	۲۹۴	کس کے حق میں نکاح مباح ہے۔
۲۹۱	کس عورت کو نکاح کرنا واجب ہے۔	۲۹۵	عورتوں کی عادات کے متعلق چند احادیث۔
۲۹۱	کس عورت کو نکاح کرنا فرضِ قطعی ہے۔	۲۹۵	عورتیں ٹیڑھی پسلی سے پیدا ہوئیں۔
۲۹۱	جن عورتوں پر نکاح فرض یا واجب ہوا انہیں نکاح پر مجبور کیا جائے گا۔	۲۹۶	شوہروں کی اطاعت اور ان کے حقوق کی معرفت میں عورتوں کے لئے جہاد کے برابر اجر ہے۔
۲۹۱	جن عورتوں پر نکاح فرض و واجب ہو وہ اگر خود نہ کریں گی گنہگار ہوں گی اور اولیاء اگر مقدور بھر کوشش نہ کریں تو وہ بھی گنہگار ہوں گے۔	۲۹۶	عورتیں اگر شوہروں کی نافرمانی نہ کریں اور نماز پڑھیں تو سیدھی جنت کو چلی جائیں۔
۲۹۱	فرائض ادا نہ کرنے یا ان کی ادائیگی سے باز رکھنے پر آدمی کافر نہیں ہوتا۔	۲۹۶	شوہر کے بیوی پر بعض حقوق کا ذکر۔
۲۹۱		۲۹۷	ہر مسلمان کی نمازِ جنازہ فرض ہے چاہے وہ کتنا ہی گنہگار ہو۔

صفحہ	عنوان
	ایسے فرض کی فرضیت کا منکر کافر ہو جاتا ہے جس کی فرضیت ضروریاتِ دین سے ہو۔
۲۹۲	مسلمان پر بدگمانی حرام ہے۔
۲۹۲	مرد پر نکاح اسی وقت فرض و واجب ہو گا جب وہ مہر نفقہ کا مالک ہو ورنہ وہ ترکِ نکاح پر گنہگار ہوگا۔
۲۹۲	اگر نکاح نہ کرے تو زناء میں مبتلاء ہونے کا خوف ہے اور اگر کرے تو جور و ظلم کا ڈر ہے تو نکاح فرض نہ ہوگا۔
۲۹۳	جور و ظلم ایسی معصیت ہے جس کا تعلق حقوق العباد سے اور زناء سے باز رہنا حقوق اللہ سے ہے۔
۲۹۳	بوقتِ تعارض حق العبد حق اللہ پر مقدم ہوتا ہے۔
۳۰۰	حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی طرف سے اُم ہانی بنت ابی طالب رضی اللہ تعالیٰ عنہا کو پیغامِ نکاح کا واقعہ۔
۳۰۱	عرب کی عورتوں میں سب سے بہتر زنانِ قریش ہیں جو اپنے بچوں پر بہت زیادہ مہربان اور شوہروں کے مال کی زیادہ نگران و محافظ ہوتی ہیں۔
۳۰۲	حضورِ پُرنور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی طرف سے حضرت ام سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کو پیغامِ نکاح کا واقعہ۔
۳۰۳	ام المومنین حضرت سیدہ ام سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی عمر مبارک اور سنِ وصال۔
۳۰۳	حضورِ اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے آخر شوال سن چار ہجری میں

صفحہ	عنوان	صفحہ	عنوان
			حضرت ام سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے نکاح فرمایا۔
		۲۹۳	کس حالت میں نکاح سنت ہے۔

Fatawa Razviya, Volume 12

Page Content

303 In the verse "Wa Ankihu al-Ayama," the word 'Ayam' means a woman without a husband, which includes virgins, divorcees, and widows.

308 If a woman's husband dies and both are destined for paradise, and the woman does not marry after him, Allah Almighty will gather them together in Paradise.

304 Several Quranic verses specifically regarding the marriage of widows.

308 Sayyiduna Imam Hussain's (RA) blessed wife Rubab bint Imra' al-Qais (RA) was the mother of Hazrat Ali Asghar and Hazrat Sakina (RA). After the martyrdom of the oppressed Imam, rejecting marriage proposals from the nobles of Quraish, she said, "I am not one to make anyone my father-in-law after the Messenger of Allah (PBUH)." Consequently, she did not marry anyone as long as she lived.

305 The waiting period (Iddah) for death (for a non-pregnant woman) is four months and ten days according to the explicit text of the Quran.

308 The story of a female companion (Sahabiya) of the Holy Prophet (PBUH) whose noble name was Rubab (RA).

306 The permissibility of a second marriage is established through continuous reports (tawatur) in word, deed, and tacit approval from the Master of the Universe (PBUH), the noble household (Ahl al-Bayt), and the exalted companions (RA).

309 Several Hadiths in praise of a widow who stays unmarried for her orphaned children and does not marry out of consideration for them.

307 Except for Hazrat Sayyida Aisha Siddiqah (RA), all other blessed wives (Azwaj-e-Mutahharat) were previously married (thayyibat).

309 Note: The entrance of the Holy Prophet (PBUH) into Paradise will occur repeatedly.

307 Not considering a second marriage as lawful according to Sharia is disbelief (kufr).

309 Priority in entering Paradise is specifically for the Holy Prophet (PBUH).

307 An incident of the hard work and resilience of Hazrat Asma bint Siddiq-e-Akbar (RA).

Page	Content
310	Meaning of the Hadith: "The first to open the gate of Paradise will be I, then I will see a woman rushing towards me."
307	A permissible act that leads to major sins and following Satan is not permissible due to that external factor.
312	Taunting a permissible act can only be disbelief (kufr) if its permissibility is among the essentials of religion (zaruriyat-e-deen).
307	Mentioning lofty truths and complex subtleties before common people, which are beyond their comprehension and understanding, is prohibited by Sharia.
312	The permissibility of a second marriage is among the essentials of religion.
308	The proof of the permissibility of a second marriage is from multiple verses of the Holy Quran.

फ़तावा-ए-रज़विया, खंड १२

पृष्ठ विषय सामग्री

303 "व अंकिहुल अयामा" में 'ऐम' का अर्थ है पति-रहित स्त्री, जिसके अनुप्रयोग में कुंवारी, तलाकशुदा और विधवा सभी शामिल हैं।

308 जिस स्त्री का पति मर जाए और वे दोनों जन्नती हों, फिर वह स्त्री उसके बाद निकाह न करे, तो अल्लाह तआला उन दोनों को जन्नत में इकट्ठा फरमा देगा।

304 विशेष रूप से विधवा के निकाह से संबंधित कुछ कुरानी आयतें।

सैयदुना हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की पाक पत्नी रबाब बिन्त इमरा अल-क़ैस रज़ियल्लाहु अन्हा, हज़रत अली असगर और हज़रत सकीना रज़ियल्लाहु अन्हा की माँ हैं।

308 इमाम-ए-मज़लूम की शहादत के बाद कुरैश के रईसों के निकाह के पैगामों को ठुकराते हुए आपने फरमाया कि "मैं वह नहीं हूँ जो अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद किसी को अपना ससुर बनाऊँ।" चुनाँचे आप जब तक जीवित रहीं, किसी से निकाह नहीं किया।

305 मृत्यु की इद्दत (गैर-गर्भवती के लिए) कुरान के स्पष्ट पाठ के अनुसार चार महीने दस दिन है।

308 हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक सहाबिया का किस्सा जिनका नाम रबाब रज़ियल्लाहु अन्हा है।

306 हुज़ूर सैयदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, अहल-ए-बैत और सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन से ज़ुबानी, अमली और खामोश मंज़ूरी के ज़रिए दूसरे निकाह की इजाज़त तवातुर (निरंतरता) से साबित है।

309 अनाथ बच्चों के लिए बैठी रहने वाली और उनके ख्याल से निकाह न करने वाली विधवा की प्रशंसा में कुछ हदीसें।

307 हज़रत सैयदा आयशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा के अलावा तमाम अज़वाज-ए-मुतह्हरात थय्यिबात (पहले से विवाहित) थीं।

309 चेतावनी: हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जन्नत में बार-बार जाना होगा।

307 शरई तौर पर दूसरे निकाह को हलाल न मानना कुफ्र (अविश्वास) है।

309 जन्नत में प्रवेश में प्राथमिकता हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए विशेष है।

पृष्ठ विषय सामग्री

307 हज़रत अस्मा बिन्त सिद्दीक-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अन्हा की मेहनत और मशक्कत का एक वाकया।

310 हदीस "अन अव्वलु मन यफ्तहु बाबल जन्नति..." का अर्थ।

307 जो मुबाह (अनुमेय कार्य) बड़े गुनाहों और शैतान के अनुसरण की ओर ले जाए, वह उस बाहरी वजह से मुबाह नहीं रहता।

312 मुबाह पर ताना मारना केवल उसी स्थिति में कुफ्र हो सकता है जब उसकी मुबाहियत दीन की ज़रूरतों (ज़रूरियात-ए-दीन) में से हो।

307 आम जनता के सामने उच्च सत्यों और बारीक बारीकियों का ज़िक्र करना जो उनकी समझ और बोध से परे हों, शरई तौर पर वर्जित है।

312 दूसरे निकाह की इजाज़त दीन की ज़रूरतों में से है।

308 दूसरे निकाह की मुबाहियत का सबूत कुरान मजीद की कई आयतों से है।

صفحہ مضمون

۳۰۳ وانکحوا الایا ٰمی میں ایم کا معنی ہے زن بے شوہر جس کے اطلاق میں کنواری، مطلقہ اور بیوہ سب داخل ہے۔

۳۰۸ جس عورت کا شوہر مر جائے اور وہ دونوں جنتی ہوں پھر عورت اس کے بعد نکاح نہ کرے تو اللہ تعالیٰ ان دونوں کو جنت میں جمع فرمادے گا۔

۳۰۴ بالخصوص بیوہ کے نکاح سے متعلق چند قرآنی آیات۔

۳۰۸ سید نا حضرت امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی زوجہ مطہرہ رباب بنت امر والقیس رضی اللہ تعالیٰ عنہا حضرت علی اصغر اور حضرت سکینہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی والدہ ہیں۔ امام مظلوم کی شہادت کے بعد شرفاء قریش کے پیغامات نکاح کو مسترد کرتے ہوئے آپ نے فرمایا کہ میں وہ نہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے بعد کسی کو اپنا خسر بناؤں۔ چنانچہ آپ جب تک زندہ رہیں کسی سے نکاح نہ کیا۔

۳۰۵ عدت وفات (غیر حاملہ) کی بنص قرآن چار ماہ دس دن ہے۔

۳۰۸ حضور انور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی ایک صحابیہ کا قصہ جن کا نام نامی رباب ہے رضی اللہ تعالیٰ عنہا۔

۳۰۶ حضور سیّد عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم واہل بیت کرام و صحابہ عظام رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین سے قولاً، فعلاً اور تقریراً نکاح ثانی کی اباحت بالتواتر ثابت ہے۔

۳۰۹

صفحہ مضمون

یتیم بچوں کے لئے بیٹھی رہنے والی اور ان کے خیال سے نکاح نہ کرنے والی بیوہ کی تعریف میں چند احادیث۔

۳۰۷ حضرت سیدہ عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے علاوہ تمام ازواج مطہرات ثیبات تھیں۔

۳۰۹ تنبیہ : حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا بہشت میں تشریف لے جانا بار بار ہوگا۔

۳۰۷ نکاح ثانی کو ازروئے شرع حلال نہ جاننا کفر ہے۔

۳۰۹ دخول جنت میں اولیت مطلقہ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے لئے خاص ہے۔

۳۰۷ حضرت اسماء بنتِ صدیقِ اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی جفاکشی کا ایک واقعہ۔

۳۱۰ حدیث شریف ان اول من یفتح باب الجنۃ الانی اری امرۃ تبادرنی کا مطلب۔

۳۰۷ جو مباح کبائر اور اتباع شیطان کی طرف منجر ہو وہ اس عارجہ کی وجہ سے مباح نہیں ہوتا۔

۳۱۲ مباح پر طعن صرف اسی صورت میں کفر ہو سکتا ہے کہ اس کی اباحت ضروریاتِ دین سے ہو۔

۳۰۷ عوام کے سامنے حقائق عالیہ اور دقائق غالیہ کا ذکر جوان کے مدارک و افہام وراء ہو شرعاً ممنوع ہے۔

۳۱۲ نکاح ثانی کی اباحت ضروریاتِ دین سے ہے۔

۳۰۸ اباحت نکاح ثانی کا ثبوت قرآن مجید کی متعدد آیات سے ہے۔

Fatawa Razawiyya Volume 12

Page	Description
312	Propagation of knowledge is obligatory and concealing knowledge is forbidden.
312	Speak to people words that they understand.
312	Leaving the tail of the turban is Sunnah, but where the ignorant mock it, later scholars chose to avoid it outside of prayer.
315	The ten recitations of the Holy Quran are truth and revealed by Allah, and the Holy Prophet (peace be upon him) recited all ten ways.
315	Whichever recitation is prevalent in a place, only that should be recited before the public in prayer and outside prayer. Recitations unfamiliar to their ears should not be read, lest they ruin their faith by mocking and taunting it.
316	What changes did the Quraysh make to the structure of Ibrahim (pbuh) when rebuilding the Kaaba during the pre-Islamic period of ignorance?
316	The Holy Prophet (peace be upon him) maintained the changes made by the Quraysh in the construction of the Kaaba for the sake of preserving the faith of the new converts, and did not reform them.
317	
318	One who calls those who say 'La ilaha illAllah' disbelievers is himself closer to disbelief.
318	Three things are included in the essence of faith.
318	Do not call anyone from the people of the Qibla a disbeliever.
318	Summary of the objective.
318	No one's daughters and sisters can have more honor and self-respect than the daughters of Muhammad, the Messenger of Allah (peace be upon him) and the daughters of the Chief of Women, Batul Zahra (may Allah be pleased with her).
321	**Book of Divorce**
321	It is commendable to divorce an unchaste woman.
321	Three statements regarding divorce:

Page	Description
	Boldness and audacity in declaring people of the Qibla and people of the Kalima Tayyiba as disbelievers is sheer ignorance and severity, which carries the risk of great punishment and clear ruin.
317	It is an absolute duty to protect every word and deed of a reciter of the Kalima from disbelief, no matter how heinous and repulsive it may appear.
317	If any interpretation, however weak, can be found for a Muslim's word or deed that allows for a ruling of Islam, then it is necessary to follow it, even if there are a thousand possibilities leading towards disbelief.
317	Islam remains dominant, it is not dominated.
317	Those who abandon the possibility of Islam and lean towards the possibilities of disbelief make Islam dominated and disbelief dominant.

Page	Description
321	(1) Absolutely permissible.
322	(2) Permissible due to a woman's immorality and old age, otherwise forbidden.
322	(3) Permissible if necessary.
323	Divorce without necessity is severely disliked by Allah Almighty, yet if one gives divorce, it takes effect.

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

पृष्ठ	विवरण
312	ज्ञान का प्रसार अनिवार्य है और ज्ञान को छिपाना हराम है।
312	लोगों से ऐसी बातें कहें जिन्हें वे समझ सकें।
312	अमामा (पगड़ी) का शमला छोड़ना सुन्नत है, लेकिन जहाँ अज्ञानी इस पर हँसते हों, वहाँ बाद के विद्वानों ने नमाज़ के अलावा अन्य स्थितियों में इससे बचने को अपनाया।
315	कुरान मजीद की दसों क़िरअतें सत्य और अल्लाह की ओर से अवतरित हैं और दसों तरह से हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पढ़ा है।
315	जहाँ जो क़िरअत प्रचलित हो, नमाज़ और गैर-नमाज़ में जनता के सामने वही पढ़ी जाए, जिस क़िरअत से उनके कान परिचित न हों वह न पढ़ी जाए, कहीं ऐसा न हो कि वे उस पर हँसने और ताना मारने से अपना दीन खराब कर लें।
316	कुरैश ने जाहिलियत के दौर में काबा के पुनर्निर्माण के समय इब्राहीमी ढांचे में क्या-क्या बदलाव किए?
316	हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नए मुसलमानों के दीन की सुरक्षा के लिए
318	जो 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहने वालों को काफ़िर कहे, वह खुद कुफ्र के अधिक करीब है।
318	तीन बातें ईमान की असलियत में शामिल हैं।
318	अहल-ए-क़िबला में से किसी को काफ़िर न कहो।
318	सारांश।
318	किसी की बेटियाँ और बहनें मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की साहबज़ादियों और सैय्यदतुन्निसा बतूल ज़हरा रज़ियल्लाहु अन्हा की साहबज़ादियों से अधिक गैरत और इज्ज़त वाली नहीं हो सकतीं।
321	**किताबुत् तलाक (तलाक का अध्याय)**
321	व्याभिचारिणी स्त्री को तलाक देना मुस्तहब (पसंदीदा) है।

पृष्ठ	विवरण	पृष्ठ	विवरण
	कुरैश द्वारा काबा के निर्माण में किए गए बदलावों को बरकरार रखा, उनमें सुधार नहीं किया।		
317	अहल-ए-क़िबला और कलिमा पढ़ने वालों को काफ़िर कहने का साहस करना केवल अज्ञानता और कठोरता है, जिसमें भारी पाप और स्पष्ट तबाही का डर है।	321	तलाक के बारे में तीन कथन:
317	कलिमा पढ़ने वाले के हर बोल और काम को कुफ़्र से बचाना फर्ज़-ए-क़तई (अनिवार्य कर्तव्य) है, चाहे वह ज़ाहिर तौर पर कितना ही घिनौना और बुरा क्यों न हो।	321	(1) पूर्णतः जायज़।
317	मुसलमान के किसी बोल या काम में कोई कमज़ोर से कमज़ोर व्याख्या ऐसी निकलती हो जिससे इस्लाम का हुक्म हो सकता हो, तो उसी की ओर जाना आवश्यक है, चाहे उसमें कुफ़्र की ओर ले जाने वाली हज़ार संभावनाएँ हों।	322	(2) स्त्री की बदचलनी और बुढ़ापे के कारण जायज़, अन्यथा वर्जित।
317	इस्लाम हमेशा प्रबल रहता है, वह पराजित नहीं होता।	322	(3) ज़रूरत हो तो जायज़।
317	इस्लाम की संभावना को छोड़कर कुफ़्र की संभावनाओं की ओर जाने वाले इस्लाम को पराजित और कुफ़्र को प्रबल करते हैं।	323	बिना ज़रूरत तलाक अल्लाह तआला को सख्त नापसंद है, फिर भी यदि कोई तलाक दे तो वह प्रभावी हो जाता है।

पृष्ठ 34/688

صفحہ	مضمون
۳۱۲	اشاعتِ علم فرض اور کتمانِ علم حرام ہے۔
۳۱۲	لوگوں سے وہ باتیں کہی جائیں جنہیں وہ سمجھیں۔
۳۱۲	عمامہ کا شملہ چھوڑنا سنّت ہے مگر جہاں جہال اس پر ہنستے ہوں وہاں علماء متأخرین نے غیر حالت نماز میں اس سے بچنا اختیار فرمایا۔
۳۱۵	قرآن مجید کی دسوں قرأتیں حق اور منزل من اللہ ہیں اور دسوں طرح حضور اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے پڑھا ہے۔
۳۱۵	جہاں جو قرأت رائج ہو نماز اور غیر نماز میں عوام کے سامنے وہی پڑھی جائے، جس قرأت سے ان کے کان آشنا نہ ہوں وہ نہ پڑھی جائے مبادہ وہ اس پر
۳۱۸	لا الہ الا اللہ کہنے والوں کو جو کافر کہے وہ خود کفر سے نزدیک تر ہے۔
۳۱۸	تین باتیں اصلِ ایمان میں داخل ہیں۔
۳۱۸	اہل قبلہ سے کسی کو کافر نہ کہو۔
۳۱۸	خلاصہ مقصود۔
۳۱۸	کسی کی بیٹیاں اور بہنیں محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی صاحبزادیوں اور سیدۃ النساء بتول زہرا رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی صاحبزادیوں سے زیادہ غیرت اور عزت والی نہیں ہوسکتیں۔

صفحہ	مضمون
	ہنسنے اور طعن کرنے سے اپنا دین خراب کر لیں۔
۳۱۶	قریش نے زمانہ جاہلیت میں کعبہ کی ازسر نو تعمیر کے وقت کیا کیا تبدیلیاں بناءِ خلیل میں کیں۔
۳۱۶	حضور انور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے حفظِ دینِ نو مسلمین کے لئے قریش کی طرف سے تعمیر کعبہ میں کی گئی تبدیلیوں کو برقرار رکھا، ان کی اصلاح نہ فرمائی۔
۳۱۷	تکفیر اہل قبلہ واصحاب کلمہ طیبہ میں جرات وجسارت محض جہالت اور سخت ہے جس میں وبال عظیم ونکال صریح کا اندیشہ ہے۔
۳۱۷	کلمہ گو کے ہر قول وفعل کو اگرچہ بظاہر کیسا ہی شنیع و قبیح ہو کفر سے بچانا فرضِ قطعی ہے۔
۳۱۷	مسلمان کے کسی قول یا فعل میں کوئی ضعیف سے ضعیف تاویل ایسی نکلتی ہو

صفحہ	مضمون
۳۲۱	**کتاب الطلاق**
۳۲۱	فاحشہ عورت کو طلاق دینی مستحب ہے۔
۳۲۱	طلاق کے بارے میں اقوالِ ثلاثہ:
۳۲۱	(۱) مطلقاً مباح
۳۲۲	(۲) عورت کی آوارگی اور بڑھاپے کے سبب سے جائز ورنہ ممنوع۔

صفحہ	مضمون	صفحہ	مضمون
	جس کے سبب سے حکم اسلام ہو سکتا ہو تو اسی کی طرف جانا لازم ہے اگر چہ اس میں ہزار احتمال جانبِ کفر جاتے ہوں۔		
۳۱۷	اسلام غالب رہتا ہے مغلوب نہیں ہوتا۔	۳۲۲	(۳) ضرورت ہو تو جائز۔
۳۱۷	احتمالِ اسلام کو چھوڑ کر احتمالاتِ کفر کی طرف جانیوالے اسلام کو مغلوب اور کفر کو غالب کرتے ہیں۔	۳۲۳	بے ضرورت طلاق اللہ تعالیٰ کو سخت ناپسند، پھر بھی طلاق دے تو واقع ہے۔

Fatawa Rizvia - Volume 12

Ruling on the dower of a non-consummated wife	**323**	**Disobedience to parents is forbidden.**	**322**
Ruling on dower if a minor incapable of intercourse is divorced.	323	Abstaining from the forbidden is mandatory.	322
Details of Mut'ah, i.e., a set of clothes.	323	Divorce without need or Sharia-compliant reason is disliked (Makruh), but if given, it will occur.	322
Divorce is neither the right of Allah (Haqq Allah) nor the right of the servant (Haqq al-Abd); if the husband cannot keep the wife in a Sharia-compliant manner, then it becomes both the right of Allah and the right of the servant.	324	Divorce during menstruation (Haiz) is disliked, but if given, it will be effective.	322
Divorce is not anyone's right, and in case of necessity, it is both the right of Allah and the right of the servant.	325	If divorce is given after promising not to, it takes effect; however, there will be the sin of breaking a promise.	322
After occurrence, divorce is Allah's right in the sense that testifying to it is necessary without being asked, and delaying the testimony without a Sharia-compliant reason makes one a transgressor (Fasiq) and disqualified from testifying.	325	A husband cannot legally invalidate the right to grant a divorce.	322
When a husband is unable to fulfill his wife's rights, divorce is the right of the servant.	325	The phrase "Anta Taliq La-Yuradduka Qadi" results in a revocable divorce.	333
It is not necessary to divorce a woman for her bad character; rather, efforts should be made to live together as much as possible. If it must be given	328	Divorce will be considered effective from the moment it is acknowledged; however, maintenance will be provided up to today, and from today onwards,	333

Ruling on the dower of a non-consummated wife **323**
out of necessity, only one divorce should be granted.
In revocation (Raj'at), it is sufficient to say, "I have kept you in my marriage." 328
The waiting period (Iddah) for a pregnant woman ends upon childbirth. 328
It is not far-fetched for permissibility and prohibition to meet in one thing from two different aspects. 330
Explanation from the Quran and Hadith of divorce being lawful yet detestable. 330
It is recommended (Mustahabb) to divorce a woman who does not pray, even if unable to pay the dower. 331
If parents command a divorce, then it is obligatory (Wajib) to give the divorce. 332
Disobedience to parents is forbidden. **322**
maintenance for the waiting period (Iddah) will be provided.
There are two types of rulings (Hukm). 336
Details of the ruling of religious conscience (Diyanat) and the ruling of the court (Qada). 336
Divorce will not occur religiously (Diyanatan) if it is given without reference to the woman or her name. 336
If the ruling pertains to the woman's side, even then the husband's statement under oath will be credible. 337
In the phrase "Agar To-Zan Mani Seh Talaq," if he denies the intention regarding his wife, divorce will not occur. 338
The phrase "One like you is divorced" will not result in divorce if there is no intention. 338

फ़तावा रज़विया - जिल्द १२

गैर मदख़ूला के महर का हुक्म

संभोग के अयोग्य नाबालिग को तलाक दी तो महर का हुक्म।

मुत'आ यानी जोड़े का विवरण।

तलाक न हक़ अल्लाह है न हक़ अल-अब्द, और शौहर औरत को शरई तौर पर न रख सके तो हक़ अल्लाह और हक़ अल-अब्द दोनों है।

तलाक किसी का अधिकार नहीं है और ज़रूरत पर हक़ अल्लाह और हक़ अल-अब्द दोनों है।

होने के बाद तलाक इस अर्थ में हक़ अल्लाह है कि उसकी गवाही बिना माँगे ज़रूरी है और बिना शरई कारण गवाही देने में देरी करने से फासिक़ और मरदूद अल-शहादत है।

शौहर जब पत्नी के अधिकार पूरे करने में असमर्थ हो तो तलाक हक़ अल-अब्द है।

औरत की बदमज़ाजी पर उसे तलाक देना ज़रूरी नहीं बल्कि जहाँ तक संभव हो निबाह किया जाए, अगर ज़रूरत के कारण देनी ही हो तो केवल एक तलाक दी जाए।

रुजू (तलाक की वापसी) में ज़ुबान से यह कहना पर्याप्त है कि मैंने तुझे अपने निकाह में रख लिया।

३२३ माता-पिता की अवज्ञा हराम है। ३२२

३२३ हराम से बचना वाजिब है। ३२२

३२३ बिना आवश्यकता या शरई कारण के तलाक मकरूह है, लेकिन देने पर हो जाएगी। ३२२

३२४ मासिक धर्म (हैज़) की स्थिति में तलाक मकरूह है, लेकिन देने पर प्रभावी होगी। ३२२

३२५ तलाक न देने का वादा करने के बाद तलाक दी तो प्रभावी है, वादा खिलाफी का गुनाह अलबत्ता होगा। ३२२

३२५ तलाक देने के अधिकार को शौहर शरीअत की दृष्टि से अमान्य नहीं कर सकता। ३२२

३२५ "अन्ता तालिक़ लायुरद्दुक़ा क़ाज़ी" से तलाक-ए-रजई प्रभावी होगी। ३३३

३२८ तलाक का जब से इक़रार करे उसी समय से प्रभावी मानी जाएगी, अलबत्ता आज तक का और आज से इद्दत का खर्च दिलाएंगे। ३३३

३२८ हुक्म (आदेश) की दो किस्में हैं। ३३६

गैर मदख़ूला के महर का हुक्म

गर्भवती की इद्दत बच्चा पैदा होने पर समाप्त होती है।

एक ही चीज़ में हलाल और हराम का दो अलग पहलुओं से इकट्ठा होना असंभव नहीं है।

कुरान और हदीस से तलाक के हलाल और नापसंदीदा होने का वर्णन।

बे-नमाज़ी औरत के महर की अदायگی में असमर्थ होने पर भी तलाक देना मुस्तहब है।

माता-पिता तलाक का हुक्म दें तो तलाक देना वाजिब है।

पृष्ठ ३५/६८८

३२३ माता-पिता की अवज्ञा हराम है। ३२२

३२८ हुक्म-ए-दियानत और हुक्म-ए-क़ज़ा का विवरण। ३३६

३३० औरत की तरफ़ मंसूब किए और उसके नाम के बिना तलाक देने में दियानतन तलाक प्रभावी न होगी। ३३६

३३० अगर हुक्म औरत की ओर से है, फिर भी شوہر का कथन शपथ (क़सम) के साथ विश्वसनीय होगा। ३३७

३३१ "अगर तू मेरी बीवी है तो तीन तलाक" अपनी औरत की नीयत का इनकार करे तो तलाक प्रभावी न होगी। ३३८

३३२ "तेरी जैसी तलाकशुदा है" नीयत नहीं तो तलाक न होगी। ३३८

غیر مدخولہ کے مہر کا حکم ۳۲۲

ناقابلِ جماع نابالغہ کو طلاق دی تو مہر کا حکم۔ ۳۲۲

متعہ یعنی جوڑا کی تفصیل۔ ۳۲۳

طلاق نہ حق اللہ ہے نہ حق العبد، اور شوہر عورت کو شرعی طور پر نہ رکھ سکے تو حق اللہ اور حق العبد دونوں ہے۔ ۳۲۴

طلاق کسی کا حق نہیں اور ضرورت پر حق اللہ اور حق العبد دونوں ہے۔ ۳۲۵

وقوع کے بعد طلاق اس معنی میں حق اللہ ہے کہ اس کی شہادت بے مطالبہ ضروری ہے اور بے وجہ شرعی ادائے شہادت میں تاخیر سے فاسق اور مردود الشہادۃ ہے۔ ۳۲۵

شوہر جب ادائے حقِ زوجہ پر قادر نہ ہو تو طلاق حق العبد ہے۔ ۳۲۸

۳۲۳ والدین کی نافرمانی حرام ہے۔ ۳۲۲

۳۲۳ حرام سے اجتناب واجب ہے۔ ۳۲۲

۳۲۳ بے حاجت بے وجہ شرعی طلاق مکروہ، مگر دے گا تو پڑ جائے گا۔ ۳۲۲

۳۲۴ حالتِ حیض میں طلاق مکروہ، مگر دے گا تو واقع ہوگی۔ ۳۲۲

۳۲۵ طلاق نہ دینے کا اقرار کر کے طلاق دی تو واقع ہے، وعدہ خلافی کا گناہ البتہ ہوگا۔ ۳۲۲

۳۲۵ طلاق دینے کے حق کو شوہر شرعاً باطل نہیں کرسکتا۔ ۳۲۲

۳۲۵ انت طالق لایردك قاض سے طلاق رجعی واقع ہوگی۔ ۳۳۳

۳۲۸ ۳۳۳

غیر مدخولہ کے مہر کا حکم ۳۲۲

عورت کی کج خلقی پر اسے طلاق دینا ضروری نہیں بلکہ حتی الامکان نباہ کیا جائے، اگر بضرورت دینی ہی ہو تو صرف ایک طلاق دی جائے۔ ۳۲۳

رجعت میں زبان سے یہ کہہ لینا کافی ہے کہ میں نے تجھے اپنے نکاح میں رکھ لیا۔ ۳۲۸

حاملہ کی عدت بچہ پیدا ہونے پر ختم ہوتی ہے۔ ۳۲۸

شئ واحد میں حل وحظر دو جہت سے مجتمع ہونا بعید نہیں۔ ۳۳۰

طلاق کے حلال و مبغوض ہونے کا بیان قرآن و حدیث سے۔ ۳۳۰

بے نمازی عورت کے ادائے مہر پر قادر نہ ہو تب بھی طلاق دینا مستحب ہے۔ ۳۳۱

ماں باپ طلاق کا حکم دیں تو طلاق دینی واجب ہے۔ ۳۳۲

۳۲۳ والدین کی نافرمانی حرام ہے۔ ۳۲۲

طلاق کا جب سے اقرار کرے اسی وقت سے واقع مانی جائے گی نفقہ البتہ آج تک کا اور آج سے عدت کا نفقہ دلائیں گے۔

۳۲۸ حکم کی دو قسمیں ہیں۔ ۳۳۶

حکم دیانت اور حکمِ قضاء کی تفصیل۔ ۳۲۸ ۳۳۶

عورت کی طرف اضافت اور اس ۳۳۰ کے نام کے بغیر طلاق دینے میں دیانۃً طلاق واقع نہ ہوگی۔ ۳۳۶

اگر عورت کی طرف کا حکم ہے ۳۳۰ پھر بھی شوہر کا قول قسم کے ساتھ معتبر ہوگا۔ ۳۳۷

"اگر توزن منی سہ طلاق" اپنی ۳۳۱ عورت کی نیت کا انکار کرے تو طلاق واقع نہ ہوگی۔ ۳۳۸

"تیری جیسی مطلقہ ہے" نیت نہیں ۳۳۲ تو طلاق نہ ہوگی۔ ۳۳۸

Fatawa Razawiyya Volume 12

- 339 | Regarding "If she leaves without my permission, I have sworn an oath of divorce," the husband's statement is considered valid. | 353 | A person was invited by people to drink wine. He lied, saying "I have sworn an oath of divorce upon drinking wine." If he drinks wine now, divorce will occur. | 353
- 340 | In the case of saying "Taliq" (divorced), the husband will be asked what his intention was. | 353 | If there is no attribution in the word and no contextual clues, it will depend on the husband's intention. | 353
- 340 | In the case of saying one divorce, two divorces, three divorces, it is not a divorce legally (Qaza'an) either. | 354 | A woman said, "You bought me dear, so return me with my defect." The husband replied, "I have returned you with the defect." If the intention was divorce, it occurs; if he only said "returned," divorce does not occur. | 355
- 341 | In the case of "Mi Deham" (I give), the husband's statement will be credible. | 358 | In a divorce without attribution, if divorce is apparent from the context, the husband's statement after an oath is credible. | 358
- 342 | At night he said one, two, three divorces; in the morning, without attribution, he informed: "I have given divorce." Religiously (Diyanatan), divorce does not occur. | 358 | In ambiguous and un-attributed words of divorce, it depends on the husband's statement. | 358
- 343 | Various forms of omitting attribution. | 359 | Certainty is not dispelled by doubt. | 359
- 344 | Attribution in the word or intention is necessary for divorce to occur. | 359 | If in reality there was an intention of divorce but he claimed there wasn't, the entire burden will be on the husband. | 359
- 344 | There are three ways of attribution in words. | 360 | If three divorces occur, reconciliation (Raja'at) is impossible. | 360
- 348 | In response to "Divorce me," he struck her and said "this is divorce," then divorce will not occur. But if he said "this (is) divorce (to) you," then it occurs. | 360 | A mother said give the woman a divorce, the boy said "divorce, divorce," then divorce occurred upon the woman. | 360
- 349 | When a speaker mentions something separate from the answer in his speech, it is no longer an answer but considered separate speech. | 360 | Once three divorces have occurred, she cannot return to the first husband's marriage without Halala. | 360

- 350 | What is customarily understood is like what is verbally present. | 361 | Before marriage, an agreement was written: "I will provide for Ulfat and will not disobey the command of Aleem Allah. If I act against it, then divorce." Divorce will not occur upon failing to provide maintenance or for disobedience. | 361
- 350 | If there is no attribution in the word, it will religiously depend on intention; and legally, if context indicates attribution, the husband's statement after an oath is credible. | 350 |

फ़तावा रज़विया खंड १२

- 339 | "अगर वह मेरी अनुमति के बिना बाहर निकली तो मैंने तलाक की कसम खाई है" के मामले में पति का कथन मान्य है। | 353 | एक व्यक्ति को लोगों ने शराब पीने के लिए बुलाया, उसने झूठ बोला कि "मैंने शराब पीने पर तलाक की कसम खाई है"। अब अगर वह शराब पीता है, तो तलाक हो जाएगा। | 353
- 340 | "तालिक" (तलाकशुदा) कहने की स्थिति में पति से पूछा जाएगा कि उसकी क्या नियत (इरादा) थी। | 353 | यदि शब्द में कोई संबंध (अज़ाफ़त) न हो और कोई संदर्भ भी न हो, तो यह पति की नियत पर निर्भर करेगा। | 353
- 340 | एक तलाक, दो तलाक, तीन तलाक कहने की स्थिति में कानूनी तौर पर (क़ज़अन) भी तलाक नहीं होता। | 354 | एक महिला ने कहा, "आपने मुझे महंगा खरीदा है, तो मुझे मेरी कमी के साथ लौटा दें।" पति ने कहा, "मैंने तुम्हें कमी के साथ लौटा दिया।" यदि नियत तलाक की थी तो हो गया, और यदि केवल इतना कहा "लौटा दिया", तो तलाक नहीं होगा। | 355
- 341 | "मी देहम" (मैं देता हूँ) की स्थिति में पति का कथन मान्य होगा। | 358 | बिना संबंध वाले तलाक में, यदि संदर्भ से तलाक स्पष्ट हो, तो पति का शपथ के बाद का कथन मान्य है। | 358
- 342 | रात में उसने एक, दो, तीन तलाक कहा; सुबह बिना किसी संबंध के सूचित किया: "मैंने तलाक दे दिया है।" धार्मिक रूप से (दियानतन) तलाक नहीं हुआ। | 358 | तलाक के संदिग्ध और बिना संबंध वाले शब्दों में, आधार पति के कथन पर है। | 358
- 343 | संबंध छोड़ने के विभिन्न रूप। | 359 | निश्चितता संदेह से दूर नहीं होती। | 359
- 344 | तलाक होने के लिए शब्द या नियत में संबंध होना आवश्यक है। | 359 | यदि वास्तव में तलाक की नियत थी और ज़ाहिर किया कि नियत नहीं थी, तो सारा बोझ पति पर होगा। | 359
- 344 | शब्द में संबंध के तीन तरीके हैं। | 360 | यदि तीन तलाक हो जाएं तो सुलह (रुजू) असंभव है। | 360
- 348 | "मुझे तलाक दे दो" के जवाब में उसने उसे मारा और कहा "यह तलाक है", तो तलाक नहीं होगा। लेकिन अगर उसने कहा "यह (तुझे) तलाक (है)", तो हो गया। | 360 | माँ ने कहा औरत को तलाक दे दो, लड़के ने कहा "तलाक, तलाक", तो औरत पर तलाक हो गया। | 360

- 349 | जब बोलने वाला अपने भाषण में उत्तर से अलग कोई बात कहता है, तो वह उत्तर नहीं रहता बल्कि अलग भाषण माना जाता है। | 360 | यदि तीन तलाक हो गए, तो वह बिना हलाला के पहले पति के निकाह में नहीं आ सकती। | 360
- 350 | जो प्रथागत रूप से समझा जाता है, वह वैसा ही है जैसे वह मौखिक रूप से मौजूद हो। | 361 | निकाह से पहले एक इकरारनामा लिखा गया: "मैं उल्फ़त का खर्च उठाऊँगा और अलीम अल्लाह की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करूँगा। यदि इसके विरुद्ध किया, तो तलाक।" खर्च न देने या आज्ञा उल्लंघन पर तलाक नहीं होगा। | 361
- 350 | यदि शब्द में कोई संबंध न हो, तो धार्मिक रूप से यह नियत पर निर्भर होगा; और कानूनी रूप से, यदि संदर्भ संबंध का संकेत देते हों, तो शपथ के बाद पति का कथन मान्य होगा। | 350 |

पृष्ठ 36 का 688

فتاوی رضویہ جلد دو ازدھم

- ۳۳۹ | "اگر میری اجازت کے بغیر نکلی تو طلاق کی قسم کھائی ہے" شوہر کا قول معتبر ہے۔ | ۳۵۳ | ایک شخص کو لوگوں نے شراب پینے کے لئے بلایا، اس نے جھوٹ کہا کہ میں نے شراب پینے پر طلاق کی قسم کھائی ہے۔ اب شراب پئے تو طلاق واقع ہوگی۔ | ۳۵۳
- ۳۴۰ | "طالق" کہنے کی صورت میں شوہر سے پوچھا جائیگا کہ یہ کس کی نیت کی ہے۔ | ۳۵۳ | لفظ میں اضافت نہ ہو اور قرائن بھی نہ ہو تو شوہر کی نیت پر دار و مدار ہوگا۔ | ۳۵۳
- ۳۴۰ | یک طلاق دو طلاق سہ طلاق کی صورت میں قضاء بھی طلاق نہیں۔ | ۳۵۴ | عورت نے کہا "مجھے گراں خریداتو عیب کے ساتھ لوٹا دو"۔ شوہر نے کہا " تجھ کو عیب کے ساتھ لوٹا دیا نیت طلاق ہے تو واقع ہے ، اور اگر صرف اتنا کہا لوٹا دیا، طلاق واقع نہ ہو گی۔ | ۳۵۵
- ۳۴۱ | می دہم کی صورت میں شوہر کا قول معتبر ہوگا۔ | ۳۵۸ | بے اضافت طلاق میں اگر قرائن سے طلاق متبادر ہو تو شوہر کا قول قسم کے بعد معتبر ہے۔ | ۳۵۸
- ۳۴۲ | رات میں کہا یک طلاق دو طلاق سہ طلاق، صبح کو بے اضافت خبر دیا کہ "طلاق دادہ ام" دیانۃً طلاق واقع نہیں۔ | ۳۵۸ | مبہم اور بے اضافت الفاظ طلاق میں مدار شوہر کے قول پر ہے۔ | ۳۵۸
- ۳۴۳ | ترک اضافت کی مختلف صورتیں۔ | ۳۵۹ | یقین شک سے زائل نہیں ہوتا۔ | ۳۵۹
- ۳۴۴ | وقوع طلاق کے لئے لفظ یا نیت میں اضافت ضروری ہے۔ | ۳۵۹ | اگر فی الواقع طلاق کی نیت تھی اور ظاہر کیا کہ طلاق کی نیت نہ تھی تو سارا وبال شوہر پر ہوگا۔ | ۳۵۹

- ۳۴۴ | لفظ میں وجوہ اضافت کی تین صورتیں ہیں۔ | ۳۶۰ | تین طلاقیں ہو جائیں تو رجعت محال ہے۔ | ۳۶۰
- ۳۴۸ | "طلقنی" کے جواب میں مارا اور کہا کہ یہ طلاق ہے تو طلاق واقع نہ ہوگی، اور اگر کہا یہ "تجھے طلاق" تو واقع ہے۔ | ۳۶۰ | ماں نے کہا عورت کو طلاق دے دو، لڑکے نے کہا طلاق طلاق، عورت پر طلاق واقع ہوگئی۔ | ۳۶۰
- ۳۴۹ | متکلم جب اپنے کلام میں جواب سے الگ بات ذکر کرے تو وہ جواب نہیں رہتا بلکہ الگ کلام مانا جاتا ہے۔ | ۳۶۰ | تین طلاقیں ہو گئی تو بے حلالہ شوہر اوّل کے نکاح میں نہیں آسکتی۔ | ۳۶۰
- ۳۵۰ | جو عرفاً معہود ہو وہ ایسے ہی ہے جیسے موجود لفظاً ہو۔ | ۳۶۱ | نکاح کے پہلے اقرار نامہ لکھا میں اُلفت کا خرچ چلاؤں گا اور علیم اللہ کی حکم عدولی نہیں کروں گا ، اور اس کا خلاف کروں تو طلاق، نان نفقہ نہ دینے اور حکم عدولی کرنے پر طلاق نہ ہوگی۔ | ۳۶۱
- ۳۵۰ | لفظ میں اضافت نہ ہو تو دیانۃً نیت پر مدار ہوگا ، اور قضاء اگر قرائن اضافت پر دلالت کرتے ہوں تو شوہر کا قول قسم کے بعد معتبر ہوگا۔ | ۳۵۰ |

Fatawa Razviya, Volume 12

Page	Subject
362	The Sunnah method of giving divorce is to give one revocable divorce (talaq raj'i) during a period of purity (tuhr) before having intercourse.
362	Even if there is no written document for the dower (mahr), according to Sharia, the fixed dower must be given.
362	If divorce is given in the absence of the woman, it will take effect.
362	Divorce was given in solitude and no one heard it; the divorce has taken effect.
362	Divorce given in the heart will not take effect.
363	The tongue moved but the sound did not reach one's own ears; divorce did not take effect. Correct pronunciation of letters is necessary.
363	The husband said, "I give divorce if they don't send [her] with me"; if "wife" was not intended, divorce will not occur due to lack of attribution.
365	Said to his wife with the intention of divorce, "marry
366	Divorce was given to the wife in the heart; it did not take effect. It was spoken with the tongue and the sound could have reached the ears, but did not due to some reason; the divorce took effect.
367	The husband denies the third divorce, and a non-Muslim woman is a witness; her testimony is not reliable at all.
367	Up to two divorces are revocable; if one more is given after that, it will become severely irrevocable (mughallazah).
367	Divorce occurs in a state of anger as long as the intellect is not lost.
368	Two divorces are revocable; a return (ruju') can occur during the waiting period (iddah), and remarriage (nikah) after the waiting period.
368	Details of the waiting period (iddah) days for a free woman who has had intercourse and a slave girl. What is the method of return (ruju')?
368	The better method of return (ruju').
368	Gave one divorce to the woman, and upon repeated questioning by others,

Page	Subject
	someone else"; it became an irrevocable divorce (talaq ba'in).
365	Divorce by an insane person, a child, or one with corrupted intellect does not take effect.
366	Divorce was given in solitude and he mistakenly thought it wouldn't take effect unless in front of four [witnesses]; it has taken effect.
366	A woman married someone else in the absence of her husband's knowledge and a child was born; if the first husband makes a claim, the claim is heard.
369	kept saying, "I have divorced my woman." If he swears an oath that each time he was only informing of the first divorce, his statement will be reliable.
369	"She is of no use to me" with intention is one irrevocable divorce (talaq ba'in).
369	If valid seclusion (khalwah sahihah) occurred, the waiting period (iddah) is obligatory even if penetration did not occur, and if seclusion did not occur, the waiting period is not necessary.
370	The basis for the validity of seclusion is the absence of a physical impediment even if a legal (sharia) impediment exists.

फ़तावा रज़विया, जिल्द १२

पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय
३६२	तलाक़ देने का सुन्नत तरीक़ा यह है कि तुह्र (पवित्रता की अवधि) में संभोग से पहले एक तलाक़-ए-रजई दे।	३६६	दिल में औरत को तलाक़ दी, वाक़े(प्रभावी) नहीं हुई। ज़बान से कहा और आवाज़ कान तक पहुँच सकती थी मगर किसी वजह से न पहुँची, तलाक़ हो गई।
३६२	मेहर की कोई तहरीर न हो तब भी शरअन मेहर मुक़र्ररा देना होगा।	३६७	शौहर तीसरी तलाक़ का मुनकिर है और एक काफ़िरा गवाह, उसकी गवाही बिल्कुल मोतबर (विश्वसनीय) नहीं।
३६२	औरत की ग़ैर मौजूदगी में तलाक़ दी तो वाक़े हो जाएगी।	३६७	दो तलाक़ तक रजई, उसके बाद एक भी देगा तो मुग़ल्लज़ा हो जाएगी।
३६२	तन्हाई में तलाक़ दी, किसी ने न सुनी, तलाक़ वाक़े है।	३६७	ग़ुस्से की हालत में तलाक़ हो जाती है जबकि अक़्ल ज़ायल न हो।
३६२	दिल में तलाक़ दी, वाक़े न होगी।	३६८	दो तलाक़ें रजई हैं, इद्दत में रुजूअ और बा'द इद्दत निकाह हो सकता है।
३६३	ज़बान हिली आवाज़ अपने कान तक भी न आई तलाक़ वाक़े न हुई, तसहीह-ए-हुरूफ ज़रूरी है।	३६८	हुर्रह मूतूअह और लौंडी के अय्याम-ए-इद्दत की तफ़सील। तरीक़-ए-रुजूअ क्या है।
३६३	शौहर ने कहा मैं तलाक़ देता हूँ अगर मेरे साथ न भेजें, अगर औरत मुराद न हो तो अदम-ए-इज़ाफ़त की वजह से तलाक़ न होगी।	३६८	रुजूअ का बेहतर तरीक़ा।
३६५	अपनी बीवी से तलाक़ की नियत से कहा ग़ैर से निकाह कर ले, तलाक़-ए-बाइन पड़ गई।	३६८	औरत को एक तलाक़ दी, दूसरों के बार-बार पूछने पर कहता रहा "मैंने अपनी औरत को तलाक़ दे दी" अगर क़सम खाकर कहे कि मैं हर बार पूछने पर

पृष्ठ	विषय
३६५	मजनून, बच्चा और फ़ासिद-उल-अक़्ल की तलाक़ वाक़े नहीं होती।
३६६	तलाक़ तन्हाई में दी और ग़लती से यह समझ रहा था कि जब तक चार के सामने न हो वाक़े न होगी, वाक़े हो गई।
३६६	औरत ने शौहर की बे-ख़बरी में किसी और से शादी कर ली, बच्चा पैदा हुआ; शौहर-ए-अव्वल दावा करे तो दावा मसमूअ (सुनने योग्य) है।
३६९	पहली ही तलाक़ की ख़बर दी थी, तो उसका क़ौल मोतबर होगा।
३६९	"मेरे काम की न रही" नियत के साथ एक तलाक़-ए-बाइन है।
३६९	ख़लवत-ए-सहीहा पाई गई तो इद्दत वाजिब है अगरचे दुख़ूल न हो, और अगर ख़लवत भी न हुई तो इद्दत ज़रूरी नहीं।
३७०	सेहत-ए-ख़लवत की बुनियाद माने-हक़ीक़ी के मादूम होने पर है अगरचे माने-शरई मौजूद हो।

فتاوی رضویہ، جلد دو از دہم

صفحہ	مضمون
۳۶۲	طلاق دینے کا مسنون طریقہ یہ ہے کہ طہر میں جماع سے پہلے ایک طلاق رجعی دے۔
۳۶۲	مہر کی کوئی تحریر نہ ہو تب بھی شرعاً مہر مقررہ دینا ہوگا۔
۳۶۲	عورت کی غیر موجودگی میں طلاق دی تو واقع ہو جائیگی۔
۳۶۲	تنہائی میں طلاق دی کسی نے نہ سنی، طلاق واقع ہے۔
۳۶۲	دل میں طلاق دی واقع نہ ہوگی۔
۳۶۳	زبان ہلی آواز اپنے کان تک بھی نہ آئی طلاق واقع نہ ہوئی تصحیح حروف ضروری ہے۔
۳۶۳	شوہر نے کہا میں طلاق دیتا ہوں اگر میرے ساتھ نہ بھیجیں، اگر دل میں عورت کو طلاق دی واقع نہ ہوئی۔ زبان سے کہا اور آواز کان تک پہنچ سکتی تھی مگر کسی وجہ سے نہ پہنچی طلاق ہوگئی۔
۳۶۶	شوہر تیسری طلاق کا منکر ہے اور ایک کافرہ گواہ اس کی گواہی بالکل معتبر نہیں۔
۳۶۷	دو طلاق تک رجعی، اس کے بعد ایک بھی دے گا مغلظہ ہو جائیگی۔
۳۶۷	غصہ کی حالت میں طلاق ہو جاتی ہے جبکہ عقل زائل نہ ہو۔
۳۶۸	دو طلاقیں رجعی ہیں عدت میں رجعت اور بعد عدت نکاح ہوسکتا ہے۔
۳۶۸	حرہ موطوہ اور لونڈی کے ایام عدت کی تفصیل۔ طریق رجعت کیا ہے۔
۳۶۸	رجعت کا بہتر طریقہ۔

صفحہ	مضمون
	عورت مراد نہ ہو تو عدم اضافت کی وجہ سے طلاق نہ ہوگی۔
۳۶۵	اپنی بیوی سے طلاق کی نیت سے کہا غیر سے نکاح کر لے، طلاق بائن پڑ گئی۔
۳۶۵	مجنون، بچہ اور فاسد العقل کی طلاق واقع نہیں ہوتی۔
۳۶۶	طلاق تنہائی میں دی اور غلطی سے یہ سمجھ رہا تھا کہ جب تک چار کے سامنے نہ ہو واقع نہ ہوگی، واقع ہو گئی۔
۳۶۶	عورت نے شوہر کی بے خبری میں کسی اور سے شادی کرلی بچہ پیدا ہوا شوہر اول دعوی کرے تو دعوی مسموع ہے۔
۳۶۸	عورت کو ایک طلاق دی، دوسروں کے بار بار پوچھنے پر کہتا رہا "میں نے اپنی عورت کو طلاق دے دی" اگر قسم کھا کر کہے کہ میں نے ہر بار پوچھنے پر پہلی ہی طلاق کی خبر دی تھی، اس کا قول معتبر ہوگا۔
۳۶۹	"میرے کام کی نہ رہی" نیت کے ساتھ ایک طلاق بائن ہے۔
۳۶۹	خلوت صحیحہ پائی گئی تو عدت واجب ہے اگرچہ دخول نہ ہو، اور اگر خلوت بھی نہ ہوئی تو عدت ضروری نہیں۔
۳۷۰	صحت خلوت کی بنیاد مانع حقیقی کے معدوم ہونے پر ہے اگرچہ مانع شرعی موجود ہو۔

Fatawa-e-Razvia Volume 12

Page	Topic	Page	Topic
370	The obligation of Iddat (waiting period) arises after Khulwat-e-Sahiha (valid privacy), not after Khulwat-e-Fasidah (invalid privacy).	376	Divorce (Talaq) occurs even in a state of anger.
370	Marriage during the Iddat period is never valid; instead, it is absolutely forbidden (Haram).	376	Details regarding Halala.
371	Saying "I have divorced her" three times results in three divorces, though the person is a sinner.	377	Refutation of a Fatwa by Maulana Abdul Hai regarding divorce given in a state of intense anger.
371	The excuse of anger in divorce is useless because most divorces occur in anger.	377	There is a consensus (Ijma) among the majority of the Sahaba (Companions), Tabi'un, and the four Imams that three divorces given in one sitting count as three.
373	The oath of a woman claiming divorce is not reliable.	378	If anger reaches the level of insanity, divorce will not occur, but it must be verified that reason was indeed lost at that time.
373	The oath of the claimant is not heard; instead, witnesses are demanded from him.	379	Divorce occurs in a state of anger.
373	If the claimant cannot provide witnesses, the defendant is asked to take an oath.	379	Someone said to a husband, "Divorce your wife," and he said, "Yes, yes." The detailed ruling on this.
373	If a woman is certain that her husband has given her three divorces, it is obligatory for her	380	In some regions of India, people do not use the word "na" (not) even with transitive verbs; for example, they say

Page	Topic
	to get away from the husband by any possible means.
374	Divorce does not occur by just intending it in the heart.
374	A minor cannot give a divorce himself, nor can his father give it on his behalf through guardianship or agency.
374	Divorce occurs during pregnancy.
375	A woman's pregnancy does not prevent the occurrence of divorce.
	"tu bika" (you sold) or "aap farmaya" (you said).
380	The word 'Na'am' (Yes) is for confirmation after a statement and for a promise after a command or prohibition.
381	Divorce does not occur by intending it in the heart unless it is spoken with enough volume to be heard if there is no obstacle.
381	Someone asked, "What did you do with your wife?" If he replied, "I gave divorce in my heart," the divorce did not occur. But if he said, "I gave divorce from my heart," one revocable (Raj'i) divorce occurred.
382	With three divorces, a woman completely leaves the marriage. With fewer than three, there are some words whereby she leaves the marriage, but Halala is not required for remarriage.

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द बारहवीं

पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय
३७०	इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) का वाजिब होना खुलवत-ए-सहीहा (वैध गोपनीयता) के बाद है, न कि खुलवत-ए-फासिदा (अवैध गोपनीयता) के बाद।	३७६	गुस्से की हालत में भी तलाक हो जाता है।
३७०	इद्दत के दौरान निकाह कभी भी सही नहीं होता बल्कि पूरी तरह से हराम है।	३७६	हलाला का विवरण।
३७१	"मैं उसे तलाक दे चुका हूँ" तीन बार कहने से तीन तलाक हो जाते हैं, हालांकि कहने वाला गुनहगार हुआ।	३७७	गुस्से की हालत में तलाक देने के बारे में मौलवी अब्दुल हई साहब के एक फ़तवे का खंडन।
३७१	तलाक में गुस्से का बहाना बेकार है क्योंकि अक्सर तलाक गुस्से में ही होता है।	३७७	एक ही बैठक में तीन तलाक देने पर तीन तलाक होने पर सहाबा, ताबेईन और चारों इमामों का सर्वसम्मति (इज्मा) है।
३७३	तलाक का दावा करने वाली महिला की शपथ विश्वसनीय नहीं है।	३७८	अगर गुस्सा पागलपन की हद तक पहुँच जाए तो तलाक नहीं होगा, लेकिन यह जाँच करना ज़रूरी है कि वाकई उस वक्त अक्ल खत्म हो चुकी थी।
३७३	दावेदार की शपथ नहीं सुनी जाती बल्कि उससे गवाह माँगे जाते हैं।	३७९	गुस्से की हालत में तलाक हो जाता है।
३७३	अगर दावेदार गवाह न दे सके तो प्रतिवादी (मुदआ-अलैह) से शपथ ली जाती है।	३७९	किसी ने पति से कहा "अपनी बीवी को तलाक दे दे", उसने कहा "हाँ हाँ", इसका विस्तृत हुक्म।
३७३		३८०	

पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय
	अगर औरत को यकीन है कि पति ने उसे तीन तलाक दिए हैं, तो उस पर फ़र्ज़ है कि जिस तरह भी मुमकिन हो पति से छुटकारा हासिल करे।		भारत के कुछ हिस्सों में लोग सकर्मक क्रिया के साथ भी "न" शब्द का प्रयोग नहीं करते, उदाहरण के लिए "तू बिका" या "आप फ़रमाया" बोलते हैं।
३७४	दिल में तलाक देने से तलाक नहीं होता।	३८०	'नाम' (हाँ) शब्द खबर के बाद पुष्टि के लिए और आदेश या निषेध के बाद वादे के लिए होता है।
३७४	नाबालिग न तो खुद तलाक दे सकता है और न ही उसकी तरफ से उसका पिता विलायत (संरक्षण) या वकालत के माध्यम से दे सकता है।	३८१	दिल में तलाक देने से तलाक नहीं होता जब तक जुबान से इतनी आवाज़ में न कहा जाए कि अगर कोई रुकावट न हो तो सुना जा सके।
३७४	गर्भावस्था की स्थिति में तलाक हो जाता है।	३८१	किसी ने पूछा "तूने अपनी औरत का क्या किया", उसने जवाब में अगर यह कहा "अपने दिल में तलाक दे दी", तो तलाक नहीं हुआ। और अगर यह कहा "अपने दिल से तलाक दे दी", तो एक रज़ई (प्रतिसंहरणीय) तलाक हो गया।
३७५	स्त्री का गर्भवती होना तलाक के होने में बाधक नहीं है।	३८२	तीन तलाक से औरत पूरी तरह निकाह से निकल जाती है। तीन से कम में कुछ शब्द ऐसे हैं कि निकाह से तो बाहर हो जाती है लेकिन दोबारा निकाह के लिए हलाला की ज़रूरत नहीं होती।

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

صفحہ	عنوان
۳۷۰	عدت کا وجوب خلوتِ صحیحہ کے بعد ہے نہ کہ خلوتِ فاسدہ کے بعد۔
۳۷۰	دورانِ عدت نکاح ہر گز صحیح نہیں ہوتا بلکہ حرامِ محض ہو گا۔
۳۷۱	"میں اس کو طلاق دے چکا" تین بار کہنے سے تین طلاق ہو گی، البتہ گنہگار ہوا۔
۳۷۱	طلاق میں غصہ کا عذر بیکار ہے کیونکہ طلاق اکثر غصہ میں ہی ہوتی ہے۔
۳۷۳	طلاق کی مدعیہ عورت کی قسم نا معتبر ہے۔
۳۷۳	مدعی کا حلف نہیں سنا جاتا بلکہ اس سے گواہ مانگے جاتے ہیں۔
۳۷۳	
۳۷۶	غصہ کی حالت میں طلاق واقع ہو جاتی ہے۔
۳۷۶	حلالہ کی تفصیل۔
۳۷۷	حالتِ غضب میں طلاق دینے کے بارے میں مولوی عبدالحئی صاحب کے ایک فتویٰ کا رد۔
۳۷۷	ایک جلسہ میں تین طلاقوں کے تین ہونے پر جمہور صحابہ و تابعین و ائمہ اربعہ کا اجماع ہے۔
۳۷۸	غصہ جنون کی حد کو پہنچ جائے تو طلاق واقع نہ ہو گی لیکن اس کی تحقیق ضروری ہے کہ واقعہ عقل زائل ہو چکی تھی۔
۳۷۹	غصہ کی حالت میں طلاق واقع ہو جاتی ہے۔
۳۷۹	

صفحہ	عنوان
	مدعی گواہ نہ دے سکے تو مدعاعلیہ پر حلف رکھا جاتا ہے۔
۳۷۳	عورت کو یقین ہے کہ شوہر نے مجھے تین طلاقیں دیں تو اس پر فرض ہے کہ جس طرح بھی ممکن ہو شوہر سے چھٹکارا حاصل کرے۔
۳۷۴	دل میں طلاق دینے سے واقع نہیں ہوتی۔
۳۷۴	نابالغ نہ خود طلاق دے سکتا ہے نہ اس کی طرف سے اس کا باپ ولایتًا و وکالتًا دے سکتا ہے۔
۳۷۴	حمل کی حالت میں طلاق واقع ہو جاتی ہے۔
۳۷۵	

صفحہ	عنوان
	کسی نے شوہر سے کہا "اپنی عورت کو طلاق دے دے" اس نے کہا ہاں ہاں، اس کا تفصیلی حکم۔
۳۸۰	بعض اطرافِ ہند کے بلاد میں فاعل فعل متعدی کے ساتھ بھی لفظ "نہ" نہیں کہتے، مثلاً تو بکا یا آپ فرمایا بولتے ہیں۔
۳۸۰	لفظ نعم (ہاں) خبر کے بعد تصدیق کے لئے اور امر و نہی کے بعد وعدہ کے لئے ہوتا ہے۔
۳۸۱	طلاق دل میں دینے سے نہیں ہوتی جب تک زبان سے اتنی آواز سے نہ کہے کہ اگر کوئی مانع نہ ہو تو سُن سکے۔
۳۸۱	کسی نے پوچھا "تُو نے اپنی عورت کو کیا کیا" اس نے جواب میں اگر یہ کہا "اپنے دل میں طلاق دے دی" طلاق واقع نہ ہوئی۔ اور اگر یہ کہا "اپنے دل سے طلاق دے دی" ایک رجعی واقع ہوئی۔
۳۸۲	

صفحہ	عنوان صفحہ	عنوان
		تین طلاق سے عورت نکاح سے بالکل نکل
عورت کو حمل ہونا مانع و وقوع طلاق نہیں۔		جاتی ہے، تین سے کم میں کچھ الفاظ ایسے ہیں کہ نکاح سے تو باہر ہو جاتی ہے مگر دوبارہ نکاح کے لئے حلالہ کی ضرورت نہیں۔

Fatawa Razawiyya Volume 12

Page	Content	Page	Content
382	A woman with whom marriage has not been consummated is released from the marriage with a single divorce.	386	People consider someone's persistence to be compulsion (jabr), although it is not compulsion. If, under such pressure, someone consumes an intoxicant and divorces while intoxicated, the divorce will take place by consensus.
383	Divorce takes effect from a false admission of divorce.	386	If someone was threatened with death or dismemberment, or had their hands and feet tied and was made to drink wine, and then gave a divorce while intoxicated, it will not take effect.
383	The court gave notice to the husband that if he doesn't take his wife within a week, three divorces (will follow). Nothing will happen because of this.	387	Compulsion was used to get a divorce pronounced; if the person whispers an exception or a negative word such that the compeller cannot hear, it is a divorce legally (qada'an) but not religiously (diyanatan).
383	Mere nervousness is not called insanity; if one divorces in this state, it will take effect.	387	A legal remedy (heela) to avoid divorce under compulsion.
383	If intellect is not lost, then even in a state of anger, divorce takes effect; divorce also takes effect through such writing.	387	An insane person can neither divorce by themselves nor can their guardian (wali) do so on their behalf.
384	To prove insanity, just witnesses are needed or it should be that insanity occurred before.	388	If the husband is absent and the woman knows for certain that he has given a divorce, she can remarry after the waiting period (iddat). However, if the husband returns and denies it, it must be proven through witnesses.

Page	Content
385	If insanity is proven by just witnesses, then divorce will not take effect.
385	For someone known to lose their mind when angry, their divorce will not take effect in that state.
385	Divorce takes effect even under compulsion and coercion.
385	Marriage is like glass and divorce like a stone. Whether the stone is thrown at the glass happily, under compulsion, or it accidentally slips from the hand, the glass will break in any case.
385	In case of legal compulsion, if only writing was given and nothing was said by mouth, divorce will not take effect.
389	With three divorces, a woman becomes 'mughallazah' (severely divorced) and eligible for 'halala'. Cohabitation of the divorcer with such a woman is adultery (zina). If done knowingly, he is an adulterer, the children are illegitimate, and they are deprived of paternal inheritance. Such a person is not fit for leadership (khilafat) or spiritual succession (sajjada nashini).
389	What is the procedure for Halala?
390	The marriage of a minor girl or boy can take place through a guardian.
390	If a father marries off a nine or ten-year-old girl to a twenty-four-year-old boy, it is valid.

फतावा रज़विया जिल्द बारहवीं

पृष्ठ	विवरण	पृष्ठ	विवरण
382	गैर-मदखूला (जिससे संभोग न हुआ हो) एक ही तलाक से निकाह से बाहर हो जाती है।	386	लोग किसी के आग्रह को भी जब्र (मजबूरी) समझते हैं, हालांकि यह जब्र नहीं है। अगर ऐसे जब्र से किसी ने नशीली चीज़ पी और उस नशे में तलाक दिया तो सर्वसम्मति से तलाक हो जाएगा।
383	तलाक के झूठे इकरार (स्वीकृति) से तलाक हो जाता है।	386	किसी ने जान से मारने या अंग-भंग की धमकी देकर या हाथ-पांव बांधकर शराब पिला दी और उस नशे में तलाक दिया, तो वह प्रभावी नहीं होगा।
383	कचहरी ने पति को नोटिस दिया कि एक हफ्ते के भीतर अपनी पत्नी को न ले गए तो तीन तलाक। इससे कुछ नहीं होगा।	387	जब्र से तलाक दिलवाया गया, अपवाद (इस्तिसना) या नकारात्मक शब्द धीरे से कहा कि मजबूर करने वाला न सुन सके तो यह कानूनी तौर पर तलाक है लेकिन धार्मिक रूप से तलाक नहीं।
383	सिर्फ घबराहट का नाम पागलपन (जुनून) नहीं है, इस स्थिति में तलाक देने से तलाक हो जाएगा।	387	जब्र और दबाव के तलाक से बचने का उपाय (हीला)।
383	यदि बुद्धि नष्ट न हो तो गुस्से की स्थिति में भी तलाक हो जाता है, ऐसे लेखन (तहरीर) से भी तलाक हो जाता है।	387	पागल न तो स्वयं तलाक दे सकता है और न ही उसकी ओर से उसका वली (अभिभावक)।
384	पागलपन साबित करने के लिए न्यायप्रिय गवाह होने	388	पति मौजूद न हो और पत्नी को पक्का विश्वास हो कि पति तलाक दे चुका है, तो वह इद्दत के बाद निकाह कर सकती

पृष्ठ	विवरण
	चाहिए या पहले भी पागलपन हुआ हो।
385	न्यायप्रिय गवाहों से पागलपन साबित हो जाए तो तलाक नहीं होगा।
385	जिसके बारे में ज्ञात हो कि गुस्सा आने पर बुद्धि चली जाती है, उसका तलाक भी उस स्थिति में नहीं होगा।
385	जब्र और दबाव के साथ भी तलाक हो जाता है।
385	निकाह शीशा है और तलाक पत्थर। शीशे पर पत्थर खुशी से फेंकें या जब्र से, या खुद हाथ से छूट जाए, शीशा हर तरह से टूट जाएगा।
385	कानूनी मजबूरी की स्थिति में अगर सिर्फ तहरीर दी और ज़ुबान से कुछ नहीं कहा, तो तलाक नहीं होगा।
389	है। लेकिन वापस आकर अगर पति ने इनकार किया, तो गवाहों के ज़रिए साबित करना होगा।
389	तीन तलाक से औरत मुग़ल्लज़ह (कठोर तलाकशुदा) हो जाती है और हलाला के योग्य हो जाती है। ऐसी औरत के साथ तलाक देने वाले का संभोग ज़िना (व्यभिचार) है। यदि मसला जानते हुए ऐसा किया तो वह ज़ानी है, बच्चे अवैध होंगे और पिता की विरासत से वंचित होंगे। ऐसा व्यक्ति खिलाफत और सज्जादा नशीनी के योग्य नहीं है।
389	हलाला का तरीका क्या है।
390	नाबालिग लड़की और लड़के का निकाह वली के माध्यम से हो सकता है।
390	पिता ने नौ-दस साल की लड़की का निकाह चौबीस साल के लड़के से कर दिया तो यह दुरुस्त (सही) है।

صفحہ	مضمون
۳۸۲	غیر مدخولہ ایک ہی طلاق سے نکاح سے باہر ہوجاتی ہے۔
۳۸۳	طلاق کے جھوٹے اقرار سے طلاق واقع ہو جاتی ہے۔
۳۸۳	کچہری نے شوہر کو نوٹس دیا کہ ایک ہفتہ کے اندر اپنی عورت کو اگر نہ لے گئے تو تین طلاق۔ اس سے کچھ نہ ہوگا۔
۳۸۳	صرف گھبراہٹ کا نام جنون نہیں، اس عالم میں طلاق دے گا واقع ہوجائے گی۔
۳۸۳	عقل زائل نہ ہو تو غصہ کی حالت میں بھی طلاق واقع ہو
۳۸۶	لوگ کسی کے اصرار کو بھی جبر سمجھتے ہیں حالانکہ یہ جبر نہیں اگر ایسے جبر سے نشہ کی چیز پی اور اس نشہ میں طلاق دے دی تو بالاتفاق طلاق ہو جائے گی۔
۳۸۶	کسی نے قتل یا قطع عضو کی دھمکی دے کر یا ہاتھ پاؤں باندھ کر شراب پلادی اس نشہ میں طلاق دی واقع نہ ہوگی۔
۳۸۷	جبر اطلاق دلوائی، استثناء یا کلمہ نفی آہستہ کہا کہ مکرہ نہ سُن سکا قضاء طلاق ہی ہے دیانہ طلاق نہیں۔
۳۸۷	جبر واکراہ کی طلاق سے بچنے کا حیلہ۔
۳۸۷	مجنون نہ خود طلاق دے سکتا ہے نہ اس کی طرف سے اس کا ولی۔

صفحہ	مضمون
	جاتی ہے، ایسی تحریر سے بھی طلاق واقع ہو جاتی ہے۔
۳۸۴	جنون کے ثبوت کے لئے گواہان عادل یا پہلے بھی جنون طاری ہوتا ہے۔
۳۸۵	گواہان عادل سے جنون ثابت ہو تو طلاق واقع نہ ہوگی۔
۳۸۵	جس کے بارے میں معلوم و مشہور ہو کہ غصہ آتا ہے تو عقل جاتی رہتی ہے، اس کی طلاق بھی اس عالم میں واقع نہ ہوگی۔
۳۸۵	جبر واکراہ کے ساتھ بھی طلاق واقع ہو جاتی ہے۔
۳۸۵	

صفحہ	مضمون
۳۸۸	شوہر موجود نہ ہو اور عورت بیقین جانتی ہو کہ شوہر طلاق دے چکا ہے تو عدت کے بعد نکاح کرسکتی ہے۔ لیکن واپس آکر اگر شوہر نے انکار کیا تو گواہوں کے ذریعہ ثابت کرنا ہوگا۔
۳۸۹	تین طلاق سے عورت مغلظہ قابلِ حلالہ ہوجاتی ہے، ایسی عورت سے طالق کی ہمبستری زنا ہے، اگر مسئلہ جانتے ہوئے ایسا کیا تو زانی، اولاد ولد الزناء اور ترکہ پدری سے محروم۔ اور ایسا شخص قابلِ خلافت و سجادہ نشینی نہیں۔
۳۸۹	حلالہ کی صورت کیا ہے۔
۳۹۰	نابالغہ اور نابالغ کا نکاح بذریعہ ولی کے ہوسکتا ہے
۳۹۰	

صفحہ	مضمون	صفحہ	مضمون
	نکاح شیشہ ہے اور طلاق سنگ ۔ شیشہ پر پتھر خوشی سے پھینکے یا جبر سے یا خود ہاتھ سے چھوٹ پڑے شیشہ ہر طرح ٹوٹ جائے گا۔		
۳۸۵	اجبار شرعی کی صورت میں اگر صرف تحریر دی زبان سے کچھ نہ کہا تو طلاق واقع نہ ہوگی۔		باپ نے نو دس سالہ لڑکی کا نکاح چوبیس سالہ لڑکے سے کردیا تو درست ہے۔

Fatawa Razawiyyah Volume 12

[390] What was the age of Umm-ul-Momineen Sayyidah Aisha Siddiqah (may Allah be pleased with her) at the time of her marriage? [390] The Wahhabis are followers of Muhammad ibn Ishaq, and he has written explicit condemnation (tabarra) against the Commander of the Faithful, Hazrat Umar (may Allah be pleased with him). [396]

[390] For a minor girl, proposal and acceptance (ijab-o-qabul) by gesture or explicitly by herself without a guardian (wali) is not sufficient. [390] Imam Malik and Imam Hisham bin Urwah are among the followers of the successors (Tabi' al-Tabi'in) and are far superior to Imam Bukhari in the knowledge of Hadith and Fiqh. [396]

[390] If an adult husband divorces his wife, it takes effect whether the woman is pleased or displeased. [390] Ibn Ishaq is an impostor (Dajjal) and a liar (Kazzab). [396]

[391] If seclusion (khalwat) has occurred, the waiting period (iddat) is obligatory; three menstrual cycles for those who menstruate, otherwise three months. If seclusion did not occur, iddat is not necessary. [391] If legal witnesses to the divorce are present, the husband's statement or oath will not be considered. [396]

[392] In a divorce without explicit addition, intention is a condition; if said without intention, divorce will not occur. [392] If a woman cannot prove the divorce but is certain it was given, she should obtain freedom from her husband by whatever means possible. [396]

[392] "Go, I have given divorce, divorce." If he swears that there was no intention of divorce for both, it will be accepted. If he doesn't swear for both or refuses to swear on the second statement, three divorces take effect. If he takes an oath on the second that "I gave divorce" was not with intention and doesn't swear on "Go", the judge will rule it as three divorces. [392] By the consensus (ijma) of the four Imams, three divorces in one sitting are three. [397]

[395] Divorce given with the intention of a threat takes effect. [395] After giving three divorces in one sitting, the intention of revocation (ruju) is not valid. [398]

[395] Explicit words do not need intention. [395] Marrying a woman with the intention of Halala into a suitable match (kufu) without the guardian's permission is valid. [398]

[395] If divorce is proven by reliable witnesses, the husband's denial is not considered. [395] A woman who married with the intention of Halala cannot marry someone else without being divorced by the second husband. [398]

[395] Considering three divorces in one sitting as one is against the school of thought of all four Imams. [395] If a triple-divorced woman (mutallaqah-e-mughallazah) is divorced by her second husband without consummation, she does not become lawful for the first husband. [398]

[395] The old habit of Wahhabis. [395] Those who marry off a woman to someone else without a divorce, or those who arrange remarriage with the first husband if the second husband divorces without consummation, are procurers of adultery (Zina). [398]

फ़तावा रज़विया खंड 12

[390] निकाह के समय उम्मुल मोमिनीन सैयदा आयशा सिद्दीका (रज़ियल्लाहु अन्हा) की उम्र क्या थी? [390] वहाबी मोहम्मद बिन इसहाक के अनुयायी हैं और उसने अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) पर स्पष्ट निंदा (तबर्रा) लिखी है। [396]

[390] वली (अभिभावक) के बिना किसी नाबालिग लड़की का इशारे से या स्वयं स्पष्ट रूप से प्रस्ताव और स्वीकृति (ईजाब-ओ-क़ुबूल) करना पर्याप्त नहीं है। [390] इमाम मालिक और इमाम हिशाम बिन उरवा तब-ए-ताबईन में से हैं और वे हदीस और फ़िक़्ह के ज्ञान में इमाम बुखारी से कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं। [396]

[390] यदि एक वयस्क पति अपनी पत्नी को तलाक देता है, तो वह प्रभावी हो जाता है चाहे महिला प्रसन्न हो या अप्रसन्न। [390] इब्न इसहाक एक दज्जाल (ढोंगी) और कज़्ज़ाब (झूठा) है। [396]

[391] यदि खलवत (एकांतवास) हो चुका है तो इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) अनिवार्य है; मासिक धर्म वाली के लिए तीन मासिक धर्म, अन्यथा तीन महीने। यदि खलवत नहीं हुई तो इद्दत आवश्यक नहीं है। [391] यदि तलाक के कानूनी गवाह मौजूद हैं, तो पति के कथन या शपथ पर विचार नहीं किया जाएगा। [396]

[392] बिना स्पष्ट जुड़ाव वाले तलाक में नियत (इरादा) एक शर्त है; यदि बिना नियत के कहा गया तो तलाक नहीं होगा। [392] यदि कोई महिला तलाक साबित नहीं कर सकती लेकिन उसे यकीन है कि तलाक दिया गया है, तो वह जिस तरह भी संभव हो पति से छुटकारा पा ले। [396]

[392] "जा, तलाक तलाक दिया।" यदि वह शपथ लेकर कहे कि दोनों से तलाक की नियत नहीं थी, तो मान लिया जाएगा। यदि दोनों पर शपथ न ले या दूसरी बात पर शपथ से इनकार कर दे तो तीन तलाक प्रभावी हो जाएंगे। यदि दूसरे पर शपथ ले कि "तलाक दिया" नियत से नहीं था और "जा" पर शपथ न ले तो न्यायाधीश तीन तलाक का आदेश देगा। [392] चारों इमामों की सहमति (इजमा) से एक ही बैठक में दिए गए तीन तलाक तीन ही माने जाते हैं। [397]

[395] धमकी की नियत से दिया गया तलाक प्रभावी होता है। [395] एक ही बैठक में तीन तलाक देने के बाद सुलह (रुजू) की नियत मान्य नहीं है। [398]

[395] स्पष्ट शब्दों को नियत की आवश्यकता नहीं होती। [395] हलाला की नियत से किसी महिला का वली की अनुमति के बिना उपयुक्त कुल (कुफ़ू) में निकाह करना सही है। [398]

[395] यदि विश्वसनीय गवाहों से तलाक का प्रमाण मिल जाए, तो पति के इनकार का कोई महत्व नहीं है। [395] हलाला की नियत से निकाह करने वाली महिला दूसरे पति द्वारा तलाक दिए बिना किसी और से निकाह नहीं कर सकती। [398]

[395] एक बैठक में तीन तलाक को एक मानना चारों इमामों के मज़हब के खिलाफ है। [395] यदि मुतल्लका-ए-मुग़ल्लज़ा (तिहरा तलाकशुदा महिला) को उसके दूसरे पति ने सहवास किए बिना तलाक दे दिया, तो वह पहले पति के लिए हलाल नहीं होगी। [398]

[395] वहाबियों का पुराना तरीका। [395] तलाक के बिना किसी महिला का निकाह किसी और से कराने वाले, या दूसरे पति के सहवास के बिना तलाक देने की स्थिति में पहले पति से निकाह कराने वाले, व्यभिचार (ज़िना) के दलाल हैं। [398]

فتاویٰ رضویہ جلد دوا زدہم

[۳۹۰] ام المؤمنین سیدہ عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی عمر شریف بوقت نکاح کیا تھی۔

[۳۹۰] وہابیہ محمد بن اسحاق کے مقلد ہیں اور انہوں نے امیر المومنین حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ پر صریح تبرا لکھے ہیں۔ [۳۹۶]

[۳۹۰] بغیر ولی کے نابالغہ کا اشارۃً یا خود زبان سے صراحۃً ایجاب و قبول کرنا کافی نہیں۔

[۳۹۰] امام مالک اور امام ہشام بن عروہ تبع تابعین سے ہیں اور امام بخاری سے علم حدیث و علم فقہ میں بدرجہا افضل ہیں۔ [۳۹۶]

[۳۹۰] بالغ شوہر نے عورت کو طلاق دی، یہ واقع ہے عورت راضی ہو یا ناراض۔ [۳۹۰] ابن اسحق دجال و کذاب ہے۔ [۳۹۶]

[۳۹۱] خلوت ہو چکی تو عدت واجب، حیض والی کے لئے تین حیض، ورنہ تین ماہ۔ اگر خلوت نہیں ہوئی تو عدت لازم نہیں۔ [۳۹۱] طلاق کے شرعی گواہ موجود ہوں تو شوہر کے قول قسم کسی کا اعتبار نہیں۔ [۳۹۶]

[۳۹۲] بے اضافت طلاق میں نیت شرط ہے، بے نیت کہے گا طلاق نہ ہوگی۔ [۳۹۲] عورت طلاق ثابت نہ کر سکے اور یقین جانتی ہو کہ طلاق دی ہے تو جس طرح ممکن ہو شوہر سے چھٹکارا حاصل کر لے۔ [۳۹۶]

[۳۹۲] "جا، طلاق طلاق دادم" اگر قسم کھا کر کہہ دے دونوں سے نیت طلاق نہ تھی مان لیں گے۔ اگر دونوں پر قسم نہ کھائے یا دوسری بات پر قسم سے انکار کر دے تو تین طلاقیں واقع ہو گئیں۔

اگر دوم پر حلف لے کہ "طلاق دادم" بہ نیت نہ تھا اور "جا" پر قسم نہ لے تو حاکم تین طلاق کا حکم دے گا۔ [۳۹۲] باجماع ائمہ اربعہ ایک مجلس کی تین طلاقیں تین ہیں [۳۹۷]

[۳۹۵] دھمکی کی نیت سے طلاق دی واقع ہے۔ [۳۹۵] ایک مجلس میں تین دے کر رجعت کی نیت جائز نہیں۔ [۳۹۸]

[۳۹۵] صریح لفظ محتاج نیت نہیں ہوتا۔ [۳۹۵] بنیت حلالہ عورت کا بغیر اذن ولی کفو میں نکاح کر لینا صحیح ہے۔ [۳۹۸]

[۳۹۵] ثقہ گواہوں سے طلاق کا ثبوت ہو تو شوہر کے انکار کا اعتبار نہیں۔ [۳۹۵] شوہر ثانی کی طلاق کے بغیر بنیت حلالہ نکاح کرنیوالی کسی اور سے نکاح نہیں کر سکتی۔ [۳۹۸]

[۳۹۵] ایک مجلس میں تین طلاقوں کا ایک ہونا، چاروں اماموں کے مذہب کے خلاف ہے۔ [۳۹۵] مطلقہ مغلظہ کو شوہر ثانی نے صحبت کئے بغیر طلاق دے دی تو شوہر اول کے لئے حلال نہ ہوئی ۔ [۳۹۸]

[۳۹۵] وہابیہ کا قدیمی داب۔ [۳۹۵] طلاق کے بغیر عورت کا نکاح کسی اور سے کرنیوالے یا بلا صحبت شوہر ثانی کے طلاق دینے کی صورت میں شوہر اول سے نکاح کرانے والے زناء کے دلال ہیں۔ [۳۹۸]

Fatawa Rizvia Volume 12

- 398 | Consenting to what is forbidden is forbidden, rather sometimes it leads to disbelief. | 400
- 398 | Halala is not valid without intercourse with the second husband. | 401
- 398 | Hadd (legal punishment) will be enforced upon one who has intercourse with a Mughallaza divorcee during the Iddat (waiting period). | 401
- 398 | Marrying a second sister during the Iddat of the first is forbidden and void. | 401
- 399 | Reconciling a husband and wife through Halala with the intention of reform and solving difficulties is a source of reward. | 401
- 399 | Those who perform a marriage during Iddat merely upon hearing about a divorce are sinners; repentance is obligatory for them. | 401
- 399 | Telling lies to turn right into wrong or wrong into right is a trait of the Jews. | 401
- 399 | A question regarding a passage in the book 'Irshad al-Talibin' attributed to Sayyid Ali Tirmidhi. | 403
- 399 | Disregarding Halal and Haram to follow false customs is the habit of disbelievers. | 403
- 399 | Asking ignorant people about subtle matters of [God's] Essence and Attributes is impermissible. | 403
- 399 | Boys and girls are considered mature from the moment signs of puberty appear; if no signs appear, they are considered mature upon completing fifteen years of age. | 403
- 399 | Whoever wishes for a Muslim to become a disbeliever becomes a disbeliever himself before it happens. | 403
- 399 | An adult does not essentially need a guardian (wali) for their marriage. | 403
- 399 | The marriage of an apostate woman or man cannot take place with anyone in the whole world; if it happens, it will be pure adultery. | 403
- 399 | An adult female does not need a guardian for her marriage when marrying within her Kufu (social equal) or outside Kufu if she has no guardian. However, if she has a guardian, her marriage outside Kufu will not be valid unless the guardian explicitly permits it knowing it is outside Kufu. | 403
- 399 | If a woman becomes an apostate, she is not exempt from Halala; if she becomes a Muslim again, then Halala will be necessary. | 403

- 399 | Sharia matters are not a place for mockery; anyone doing so is a sinner and repentance is obligatory upon them. | 399 | The ruling is not of Ali Tirmidhi but of Muhammad Madani. |
- 400 | Divorce takes place by the admission of divorce. | 404
- 400 | Considering three divorces in one sitting as one is against the consensus of Islam; it is the sect of Ibn Qayyim Zahiri. | 404
- 400 | After three divorces, a woman becomes forbidden forever until Halala takes place. | 404
- 400 | One who speaks disrespectful words against the dignity of Sayyiduna Farooq-e-Azam (may Allah be pleased with him) is a clear Rafidi (heretic). | 406
- 400 | Performing intercourse with a woman during Iddat after three divorces is pure adultery if one is aware of its prohibition. | 406
- 400 | A woman is not permissible after three divorces without Halala. | 406
- 400 | It is mandatory for Muslims to boycott men and women who engage in forbidden acts. | 407
- 400 | The background of revelation (Shan-e-Nuzul) of the Quranic verse 'Divorce is twice'. | 407

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

- 398 | हराम चीज़ पर राज़ी होना हराम है, बल्कि कभी-कभी यह कुफ़्र होता है। | 400
- 398 | हलाला दूसरे शौहर के साथ संभोग (वति) के बिना सही नहीं है। | 401
- 398 | मुग़ल्लज़ा तलाक़शुदा से इद्दत के दौरान संभोग करने वाले पर हद (सज़ा) जारी होगी। | 401
- 398 | एक बहन की इद्दत में दूसरी बहन से निकाह हराम और बातिल (अमान्य) है। | 401
- 399 | पति-पत्नी में सुधार और मुश्किल दूर करने की नीयत से किसी को हलाला पर राज़ी करना सवाब का काम है। | 401
- 399 | सिर्फ़ तलाक़ का सुनकर इद्दत में निकाह पढ़ा देने वाले गुनहगार हैं, उन पर तौबा फ़र्ज़ है। | 401
- 399 | झूठी बातें कहकर हक़ को नाहक़ या नाहक़ को हक़ बनाना यहूदियों की आदत है। | 401
- 399 | सैय्यद अली तिर्मिज़ी की तरफ़ मंसूब किताब 'इरशाद-उत-तालिबीन' की इबारत के बारे में सवाल। | 403
- 399 | बातिल रस्म की पैरवी के लिए हलाल और हराम की परवाह न करना काफ़िरों की आदत है। | 403
- 399 | जाहिलों से ज़ात और सिफ़ात के बारीक मसाइल पूछना नाजायज़ है। | 403
- 399 | लड़के और लड़की को जब बालिग होने के निशान नज़र आएँ, तो उसी वक़्त से वे बालिग हैं। और अगर निशान नज़र न आएँ, तो पन्द्रह साल की उम्र पूरी होने पर बालिग समझे जाएँगे। | 403
- 399 | जो किसी मुसलमान के लिए चाहे कि वह काफ़िर हो जाए, वह खुद उससे पहले काफ़िर हो गया। | 403
- 399 | बालिग को अपने निकाह में वली (अभिभावक) की कोई ज़रूरत नहीं है। | 403
- 399 | मुर्तदा (धर्म त्यागी औरत) और मुर्तद (धर्म त्यागी मर्द) का निकाह पूरी दुनिया में किसी से नहीं हो सकता, जिससे होगा वह महज़ ज़िना (व्यभिचार) होगा। | 403

- 399 | बालिगा को अपने निकाह में वली की ज़रूरत नहीं है जब निकाह कुफ़ू (बराबर का) में हो या ग़ैर कुफ़ू में हो मगर उसका कोई वली न हो, वर्ना जब तक वली निकाह से पहले उस ग़ैर कुफ़ू को ग़ैर कुफ़ू जानकर साफ़ इजाज़त न देगा, बालिगा का निकाह सही न होगा। | 403
- 399 | औरत अगर मुर्तदा हो जाए, तो हलाला से छुटकारा नहीं मिलेगा; अगर वह फिर से मुसलमान होगी, तो हलाला की ज़रूरत होगी। | 403
- 399 | शरई मसला मज़ाक की चीज़ नहीं है, ऐसा करने वाला गुनहगार है और उस पर तौबा फ़र्ज़ है। | 399 | हुक्म अली तिर्मिज़ी का नहीं, मुहम्मद मदनी का है। |
- 400 | तलाक़ के इक़रार (स्वीकृति) से तलाक़ वाक़े हो जाती है। | 404
- 400 | एक ही महफ़िल में तीन तलाक़ों को एक मानना जमहूर इस्लाम (बहुसंख्यक मुसलमानों) के ख़िलाफ़ है, यह इब्न क़य्यिम ज़ाहिरी का मज़हब है। | 404
- 400 | तीन तलाक़ के बाद औरत हमेशा के लिए हराम हो जाती है जब तक कि हलाला न हो। | 404
- 400 | सैय्यदना फ़ारूक़-ए-आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु की शान में गुस्ताखी भरे अल्फाज़ कहने वाला खुला हुआ राफ़िज़ी है। | 406
- 400 | तीन तलाक़ देने के बाद इद्दत में औरत से संभोग करना शुद्ध व्यभिचार (ज़िना) है, जबकि उसकी हुरमत (निषेध) का पता हो। | 406
- 400 | तीन तलाक़ के बाद औरत बिना हलाला के जायज़ नहीं है। | 406
- 400 | मुसलमानों के लिए हराम काम करने वाले मर्द और औरत का सामाजिक बहिष्कार करना लाज़िम है। | 407
- 400 | आयत 'अत-तलाक़ु मर्रातानि' के उतरने की वजह (शान-ए-नुज़ूल)। | 407

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

- ۳۹۸ | رضا بالحرام حرام بلکہ بعض دفعہ کفر ہوتی ہے۔ | ۴۰۰
- ۳۹۸ | حلالہ بغیر وطی زوج ثانی صحیح نہیں۔ | ۴۰۱
- ۳۹۸ | مطلقہ مغلظہ سے دورانِ عدت وطی کرنیوالے پر حد جاری ہوگی۔ | ۴۰۱
- ۳۹۸ | ایک بہن کی عدت میں دوسری بہن سے نکاح حرام و باطل ہے۔ | ۴۰۱
- ۳۹۹ | میاں بیوی میں اصلاح اور مشکل کشائی کی نیت سے کسی حلالہ پر راضی کرنا باعثِ اجر و ثواب ہے۔ | ۴۰۱
- ۳۹۹ | صرف طلاق کا سُن کر عدت میں نکاح پڑھا دینے والے گنہگار ہیں ان پر توبہ فرض ہے۔ | ۴۰۱
- ۳۹۹ | جھوٹی باتیں کہہ کر حق کو ناحق یا ناحق کو حق بنانا یہودیوں کی خصلت ہے۔ | ۴۰۱
- ۳۹۹ | سید علی ترمذی کی طرح منسوب کی گئی کتاب ارشاد الطالبین کی عبارت کے بارے میں سوال۔ | ۴۰۳
- ۳۹۹ | رسمِ باطل کی پیروی کے لئے حلال و حرام کی پروانہ کرنا کافروں کی عادت ہے۔ | ۴۰۳
- ۳۹۹ | جاہلوں سے ذات و صفات کے دقیق مسائل پوچھنا ناجائز ہے۔ | ۴۰۳
- ۳۹۹ | لڑکے اور لڑکی کو جب آثارِ بلوغ ظاہر ہوں تو اس وقت سے وہ بالغ ہیں اور اگر آثارِ بلوغ ظاہر نہ ہوں تو پندرہ برس عمر پوری ہونے پر بالغ سمجھے جائیں گے۔ | ۴۰۳
- ۳۹۹ | جو کسی مسلمان کے لئے چاہے کہ کافر ہو جائے اس کے ہونے سے پہلے وہ خود کافر ہو گیا۔ | ۴۰۳

- ۳۹۹ | بالغ کو اپنے نکاح میں ولی کی اصلاً ضرورت نہیں۔ | ۴۰۳
- ۳۹۹ | مرتدہ اور مرتد کا نکاح جہاں بھر میں کسی سے نہیں ہوسکتا جس سے ہوگا محض زناء ہوگا۔ | ۴۰۳
- ۳۹۹ | بالغہ کو اپنے نکاح میں ولی کی ضرورت نہیں جبکہ نکاح کفو سے ہو یا غیر کفو سے ہو مگر اس کا کوئی ولی ہو ورنہ جب تک ولی قبل نکاح اس غیر کفو کو غیر کفو جان کر صریح اجازت نہ دے گا بالغہ کا نکاح صحیح نہ ہوگا۔ | ۴۰۳
- ۳۹۹ | عورت مرتدہ ہوجائے تو حلالہ سے چھٹکارا نہیں مسلمان ہوگی تو پھر حلالہ کی ضرورت ہوگی۔ | ۴۰۳
- ۳۹۹ | مسئلہ شرعیہ محل استہزاء نہیں ہوتا، ایسا کرنے والا گنہگار ہے اس پر توبہ فرض ہے۔ | ۳۹۹ | حکم علی ترمذی کا نہیں محمد مدنی کا ہے۔ |
- ۴۰۰ | اقرارِ طلاق سے طلاق واقع ہو جاتی ہے۔ | ۴۰۴
- ۴۰۰ | ایک جلسہ میں تین طلاقوں کو ایک ماننا جمہور اسلام کے خلاف ابن قیم ظاہری کا مذہب ہے۔ | ۴۰۴
- ۴۰۰ | تین طلاق کے بعد عورت ہمیشہ کے لئے حرام ہو جاتی ہے جب تک حلالہ نہ ہو۔ | ۴۰۴
- ۴۰۰ | سیدنا فاروقِ اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی شانِ اقدس میں کلماتِ گستاخی بکنے والا کھلا رافضی ہے۔ | ۴۰۶
- ۴۰۰ | عورت کو تین طلاق دے کر عدت میں وطی کرنا زناءِ خالص ہے جبکہ اس کی حُرمت کا علم ہو۔ | ۴۰۶
- ۴۰۰ | تین طلاق کے بعد عورت بغیر حلالہ جائز نہیں۔ | ۴۰۶
- ۴۰۰ | مسلمانوں کو حرام کار مرد و عورت سے مقاطعہ کرنا لازم ہے۔ | ۴۰۷

• ۴۰۰ | آیت کریمہ الطلاق مرتان کا شانِ نزول۔ | ۴۰۷

Fatawa Razawiya Volume Twelve

- Whether three divorces (talaq) are given at once or separately, the woman is not permissible after them without halala. (Page 407)
- The waiting period (iddat) for a divorced woman during menstruation. (Page 408)
- The waiting period (iddat) for a minor and a menopausal divorced woman. (Page 408)
- The waiting period (iddat) for a pregnant divorced woman. (Page 408)
- What is meant by kufw (compatibility). (Page 408)
- In which cases is the marriage of a woman into a non-compatible (ghair kufw) family permissible and in which cases impermissible? (Page 408)
- There is no need for a judge, representative, or people of the community for marriage. (Page 408)
- If a man and woman perform the proposal and acceptance (ijab-o-qabul) before two witnesses, the marriage will be valid. (Page 408)
- A man does not need to take permission from his first wife for a second marriage. (Page 408)
- If a marriage is performed before the completion of the waiting period (iddat), it is not a marriage but purely forbidden (haram). (Page 408)
- A woman should be immediately separated from someone who marries her during her waiting period (iddat); if he does not comply, he should be excluded from the community. (Page 408)
- A person kept a woman and now keeps her daughter; she is certainly forbidden to him, whether he keeps her without marriage or marries her. (Page 408)
- It is necessary for the community members to completely boycott forbidden men and women. (Page 408)
- Stipulating halala in marriage is a sin, but if there is an intention in the heart without stipulating it, there is hope for reward. (Page 409)
- Meaning of the Hadith: "May Allah curse the one who performs halala and the one for whom it is performed." (Page 409)
- Three divorces given at once are three according to the consensus of the Imams. (Page 410)
- Halala is necessary after three divorces in one sitting. (Page 410)

- A written piece on the consensus regarding the issue of three divorces in a single sitting. (Page 410)
- Three divorces written together on a postcard; all three have occurred. (Page 413)
- In a written divorce, a woman's pregnancy or not appointing someone as a representative does not negate the divorce. (Page 413)
- No writing can be accepted without testimony or the writer's confession, even if the handwriting appears to be theirs. (Page 415)
- Handwriting can resemble handwriting and a seal can resemble a seal. (Page 415)
- Divorce via writing occurs only when the husband admits that the writing is his. (Page 415)
- In testifying for divorce, if the husband is present, he should be pointed to; if not present, mention of his father's and grandfather's names is necessary; without it, the testimony is deficient. (Page 415)
- It is not necessary to speak verbally for divorce; writing is sufficient if it is done without legal compulsion. (Page 416)
- "A writing is like a speech" (Al-Kitab kal-Khitab). (Page 416)
- "I gave divorce", "I left her" are words of explicit divorce. (Page 416)

फ़तावा रज़विया खंड बारह

- तीन तलाकें एक साथ दी जाएं या अलग-अलग, उनके बाद बिना हलाला के महिला जायज़ नहीं है। (पृष्ठ ४०७)
- तलाकशुदा मासिक धर्म वाली महिला की इद्दत (प्रतीक्षा अवधि)। (पृष्ठ ४०८)
- नाबालिग और रजोनिवृत्त तलाकशुदा महिला की इद्दत। (पृष्ठ ४०८)
- गर्भवती तलाकशुदा महिला की इद्दत। (पृष्ठ ४०८)
- कुफ़ु(संगतता) किसे कहते हैं। (पृष्ठ ४०८)
- गैर-कुफ़ु में महिला का निकाह किस स्थिति में जायज़ है और किस स्थिति में नाजायज़ है। (पृष्ठ ४०८)
- निकाह के लिए काजी या वकील या बिरादरी के लोगों की जरूरत नहीं है। (पृष्ठ ४०८)
- पुरुष और महिला दो गवाहों के सामने ईजाब और कबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) कर लें, निकाह हो जाएगा। (पृष्ठ ४०८)
- दूसरे निकाह के लिए पुरुष को पहली पत्नी से अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं है। (पृष्ठ ४०८)
- इद्दत खत्म होने से पहले निकाह कर लिया तो यह निकाह नहीं बल्कि सरासर हराम हुआ। (पृष्ठ ४०८)
- इद्दत के दौरान निकाह करने वाले से महिला को तुरंत अलग कर दिया जाए, अगर वह न माने तो उसे बिरादरी से बाहर कर दिया जाए। (पृष्ठ ४०८)
- एक व्यक्ति ने किसी महिला को रखा, अब उसकी बेटी को रखता है, तो वह उस पर निश्चित रूप से हराम है, चाहे वह बिना निकाह के रखे या निकाह कर ले। (पृष्ठ ४०८)
- हरामखोर पुरुष और महिला से बिरादरी वालों का पूर्ण बहिष्कार करना आवश्यक है। (पृष्ठ ४०८)

- निकाह में हलाला की शर्त लगाना गुनाह है और बिना शर्त लगाए दिल में इरादा हो तो उस पर अज्र (पुण्य) की उम्मीद है। (पृष्ठ ४०९)

- हदीस 'लअ-नल्लाहुल मुहल्लिल वल मुहल्ला लहू' (अल्लाह हलाला करने वाले और जिसके लिए किया जाए उस पर लानत करे) का अर्थ। (पृष्ठ ४०९)
- एक बार में तीन तलाक, इमामों की सहमति से तीन ही हैं। (पृष्ठ ४१०)

- एक ही सभा में तीन तलाक के बाद हलाला अनिवार्य है। (पृष्ठ ४१०)
- एक ही सभा में तीन तलाक के मसले पर आम सहमति (इज्मा) पर लेख। (पृष्ठ ४१०)
- पोस्टकार्ड पर तीन तलाक एक साथ लिखे गए, तीनों प्रभावी हो गए। (पृष्ठ ४१३)
- लिखित तलाक में महिला का गर्भवती होना या किसी को वकील न बनाना तलाक के विपरीत नहीं है। (पृष्ठ ४१३)
- कोई भी लेख गवाही या लेखक की स्वीकारोक्ति के बिना मान्य नहीं हो सकता, भले ही लिखावट उसी की प्रतीत हो। (पृष्ठ ४१५)
- लिखावट लिखावट के और मुहर मुहर के समान हो सकती है। (पृष्ठ ४१५)
- लेखन से तलाक तब प्रभावी होता है जब पति स्वीकार करे कि यह लेखन मेरा है। (पृष्ठ ४१५)
- तलाक की गवाही में यदि पति उपस्थित हो तो उसकी ओर संकेत किया जाए और यदि उपस्थित न हो तो पिता और दादा के नाम का उल्लेख करना अनिवार्य है, इसके बिना गवाही अधूरी है। (पृष्ठ ४१५)
- तलाक में जुबान से कहना जरूरी नहीं है, लेखन पर्याप्त है बशर्ते वह बिना किसी कानूनी दबाव के हो। (पृष्ठ ४१६)
- 'अल-किताब कल-खिताब' (लिखा हुआ बोले हुए के समान है)। (पृष्ठ ४१६)
- 'तलाक दी', 'छोड़ दिया', स्पष्ट तलाक के शब्द हैं। (पृष्ठ ४१६)

पृष्ठ ४२ / ६८८

فتاوی رضویہ جلد دو از دہم

- تین طلاقیں ایک ساتھ ہوں یا متفرق، ان کے بعد بغیر حلالہ عورت جائز نہیں۔ (۴۰۷)
- مطلقہ حائضہ کی عدت۔ (۴۰۸)
- مطلقہ صغیرہ اور آئسہ کی عدت۔ (۴۰۸)
- مطلقہ حاملہ کی عدت۔ (۴۰۸)
- کفو کسے کہتے ہیں۔ (۴۰۸)
- غیر کفو میں عورت کا نکاح کس صورت میں جائز اور کس صورت میں ناجائز ہے۔ (۴۰۸)
- نکاح کے لئے قاضی یا وکیل یا برادری کے لوگوں کی ضرورت نہیں۔ (۴۰۸)
- مرد عورت دو گواہوں کے سامنے ایجاب و قبول کرلیں نکاح ہو جائے گا۔ (۴۰۸)
- نکاح ثانی کے لئے مرد کو پہلی بیوی سے اجازت لینے کی ضرورت نہیں۔ (۴۰۸)
- عدت ختم ہونے سے پہلے نکاح کر لیا تو یہ نکاح نہیں نرا حرام ہوا۔ (۴۰۸)
- دورانِ عدت نکاح کرنیوالے سے عورت کو فوراً جدا کردیا جائے، اگر نہ مانے تواسے برادری سے خارج کردیا جائے۔ (۴۰۸)
- ایک شخص نے کسی عورت کو رکھا اب اس کی بیٹی کو رکھتا ہے تو وہ اس پر ضرور حرام ہے چاہے بلا نکاح رکھے یا نکاح کر سکے۔ (۴۰۸)
- حرامکار مرد و عورت سے برادری والوں کو مکمل مقاطعہ کرنا ضروری ہے۔ (۴۰۸)
- نکاح میں حلالہ کی شرط لگانا گناہ ہے اور بے شرط لگائے دل میں ارادہ ہو تو اس پر اجر کی اُمید ہے۔ (۴۰۹)
- حدیث لعن اللہ المحلل والمحلل لہ ، کا مطلب۔ (۴۰۹)

- ایک بار میں تین طلاق باجماعِ ائمہ تین ہیں۔ (۴۱۰)
- ایک مجلس میں تین طلاق کے بعد حلالہ ضروری ہے۔ (۴۱۰)
- مسئلہ طلاق ثلاثہ در مجلس واحد پر اجماع کی تحریر۔ (۴۱۰)
- پوسٹ کارڈ پر تین طلاق ایک ساتھ لکھی تین واقع ہو گئیں۔ (۴۱۳)
- تحریری طلاق میں عورت کا حاملہ ہونا یا کسی کو وکیل نہ بنانا منافی طلاق نہیں۔ (۴۱۳)
- کوئی تحریر بے شہادت یا اقرار کاتب مسلم نہیں ہو سکتی اگرچہ خط اسی کا معلوم ہوتا ہو۔ (۴۱۵)
- خط خط کے مہر مہر کے مشابہ ہو سکتی ہے۔ (۴۱۵)
- تحریر سے طلاق اس وقت پڑتی ہے کہ شوہر کو اقرار ہو کہ تحریر میری ہے۔ (۴۱۵)
- طلاق کی گواہی میں شوہر اگر موجود ہو تو اس کی طرف اشارہ کر کے اور موجود نہ ہو تو باپ دادا کے نام کا ذکر ضروری ہے، بے اس کے گواہی ناقص۔ (۴۱۵)
- طلاق میں زبان سے کہنا ضروری نہیں تحریر کافی ہے جبکہ بلا جبر و اکراہ شرعی ہو۔ (۴۱۶)
- الکتاب کالخطاب۔ (۴۱۶)
- طلاق دی چھوڑ دیا، صریح طلاق کے الفاظ ہیں۔ (۴۱۶)

Fatawa Rizvia, Volume 12

Page	Subject
416	"Relationship no longer remains" is a metaphor; two previous explicit divorces will serve as circumstantial evidence for the occurrence of divorce.
418	The husband told the scribe to write a declaration of relinquishment. The scribe wrote three divorces, the husband heard it and sent it to the woman; three divorces took effect.
418	For the proof of a letter, its admission or the testimony of reliable witnesses is required.
419	It cannot be proven through circumstantial evidence that the letter belongs to so-and-so.
419	Handwriting can resemble handwriting and a seal can resemble a seal.
419	For a woman, the husband's writing is credible, and if he does not deny it, she can act according to it.
419	The husband said, "I give three divorces if any matter was kept hidden." In the word "kept" (rakhi), there are two possibilities (linguistic nuances). In the first case, if
420	Divorce was made conditional on specific terms; since those terms were not met, divorce did not occur.
421	The woman claims divorce; her brothers are witnesses and the husband is absent. If the heart is convinced by the woman's statement and the waiting period (iddah) has passed, one can perform marriage.
421	Finding a reliable person these days is difficult.
421	A reliable woman's mere statement that "I have been divorced and the waiting period has passed" is sufficient for the permissibility of marriage.
422	A warning regarding an ambiguous question about divorce.
422	In written divorce, the husband's admission or proof by reliable witnesses is necessary.
423	Writing in a divorce deed that "I have waived the waiting period" is an ignorant

Page	Subject
	she hides something after this statement, divorce occurs; in the second case, if she had already hidden something, it occurred immediately.
419	He wrote a formal release stating "I, so-and-so son of so-and-so, divorce my wife so-and-so." Even if the wife was not informed, divorce took effect.
420	Writing documents in agreements, according to custom, is a preamble to the agreement and not its execution.
420	*Al-mashrutu 'urfan kal-mashrutu lafzan* (What is customarily conditional is like what is verbally conditional).
420	The husband told the woman, "If you waive the dower (mahr), I will give a divorce." She waived the dower but the husband did not give a divorce. The dower is not waived.
423	statement; the waiting period is not nullified by this.
423	Marriage with a woman during her waiting period (iddah) is void.
423	A Muhallil (intermediary husband) does not make the woman lawful for the first husband until he performs intercourse after a valid marriage.
423	An irregular (fasid) or suspended marriage is not sufficient for halala; a valid, operative marriage is necessary.
423	He gave divorce in front of witnesses, now he denies it. If the witnesses are reliable, his denial will not be heard.

फ़तावा रिज़विया, खंड 12

पृष्ठ	विषय
416	"वास्ता नहीं रहा" एक किनाया (रूपक) है; पूर्व के दो स्पष्ट तलाक़, तलाक़ होने का प्रमाण बन जाएँगे।
418	पति ने लेखक से त्याग पत्र लिखने को कहा, उसने तीन तलाक़ लिख दिए, पति ने इसे सुना और पत्नी के पास भेज दिया; तीन तलाक़ प्रभावी हो गए।
418	पत्र सिद्ध करने के लिए उसकी स्वीकारोक्ति या विश्वसनीय गवाहों की गवाही आवश्यक है।
419	परिस्थितियों से यह सिद्ध नहीं किया जा सकता कि पत्र अमुक व्यक्ति का है।
419	हस्तलेख हस्तलेख के समान और मुहर मुहर के समान हो सकती है।
419	स्त्री के लिए पति के लेखन का महत्व है, और यदि वह इनकार न करे तो वह उसके अनुसार कार्य कर सकती है।
419	पति ने कहा "अगर कोई बात छुपाई तो तुझे तीन तलाक़"। "छुपाई" (रखी) शब्द में दो संभावनाएं हैं। पहली स्थिति में, इस कथन के बाद यदि वह कुछ छिपाएगी तो तलाक़ होगा;
420	तलाक़ को शर्तों पर आधारित किया गया था; शर्तें पूरी नहीं हुईं, अतः तलाक़ प्रभावी नहीं हुआ।
421	स्त्री तलाक़ का दावा करती है, उसके भाई गवाह हैं और पति अनुपस्थित है। यदि स्त्री के बयान पर निकाह के बारे में मन पक्का हो जाए और इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) बीत चुकी हो, तो वह निकाह कर सकता है।
421	आज कल विश्वसनीय व्यक्ति मिलना कठिन है।
421	एक विश्वसनीय स्त्री का केवल इतना बयान कि "मुझे तलाक़ हो गया है और इद्दत बीत गई है" निकाह की अनुमति के लिए पर्याप्त है।
422	तलाक़ के एक अस्पष्ट प्रश्न पर चेतावनी।
422	लिखित तलाक़ में पति की स्वीकारोक्ति या विश्वसनीय गवाहों से उसका प्रमाण आवश्यक है।
423	तलाक़नामे में पति का यह लिखना कि "मैंने इद्दत माफ़ की", एक अज्ञानतापूर्ण बात है; इससे इद्दत समाप्त नहीं होती।

पृष्ठ	विषय
	दूसरी स्थिति में, यदि उसने पहले ही कुछ छिपाया था तो तलाक़ तत्काल हो गया।
419	औपचारिक त्याग पत्र लिखा कि "मैं अमुक पुत्र अमुक अपनी पत्नी अमुक को तलाक़ देता हूँ", भले ही पत्नी को सूचित न किया गया हो, तलाक़ हो गया।
420	समझौतों में दस्तावेज़ लिखना प्रथा के अनुसार समझौते की प्रस्तावना होती है, निष्पादन नहीं।
420	अल-मशरूत उरफ़न कल-मशरूत लफ़्ज़न (जो प्रथागत शर्त है वह शाब्दिक शर्त के समान है)।
420	पति ने स्त्री से कहा "यदि तुम मेहर माफ़ कर दो तो मैं तलाक़ दे दूँगा"। उसने मेहर माफ़ कर दिया लेकिन पति ने तलाक़ नहीं दिया। मेहर माफ़ नहीं हुआ।
423	इद्दत के दौरान स्त्री से निकाह बातिल (अमान्य) है।
423	मुहलिल (मध्यस्थ पति) जब तक वैध निकाह के बाद संभोग न करे, स्त्री पहले पति के लिए हलाल (वैध) नहीं होती।
423	हलाला के लिए निकाह-ए-फ़ासिद (अनियमित निकाह) या मुवक़्क़फ़ (निलंबित निकाह) पर्याप्त नहीं है, प्रभावी निकाह आवश्यक है।
423	गवाहों के सामने तलाक़ दिया, अब इनकार कर रहा है; यदि गवाह विश्वसनीय हैं, तो उसका इनकार नहीं सुना जाएगा।

صفحہ	مضمون
۴۱۶	"واسطہ نہیں رہا" کنایہ ہے، سابقہ دو صریح طلاقیں وقوع طلاق کا قرینہ بن جائیں گی۔
۴۱۸	شوہر نے کاتب سے کہا دستبرداری کی تحریر لکھ دو، اس نے تین طلاقیں لکھ دیں سُن کر انہیں عورت کے پاس بھیج دیا، تین طلاقیں واقع ہوگئیں۔
۴۱۸	ثبوتِ خط کے لئے اس کا اقرار یا گواہانِ عادل کی شہادت درکار ہے۔
۴۱۹	قرائن سے یہ ثابت نہیں کیا جاسکتا ہے کہ خط فلاں کا ہے۔
۴۱۹	خط مشابہ خط اور خاتم مشابہ خاتم ہوسکتی ہے۔
۴۱۹	
۴۲۰	طلاق کو شرائط پر موقوف کیا شرائط نہ پائے گئے طلاق واقع نہ ہوئی۔
۴۲۱	عورت طلاق کی دعویدار ہے گواہی میں اس کے بھائی ہیں اور شوہر غائب ہے، نکاح کا دل عورت کے بیان پر جمے اور عدت گزر چکی ہو تو نکاح کرسکتا ہے۔
۴۲۱	آج کل عادل شخص کا ملنا دشوار ہے۔
۴۲۱	عادلہ عورت کا صرف اتنا بیان ہی کہ مجھے طلاق ہوگئی اور عدت گزر گئی جوازِ نکاح کے لئے کافی۔
۴۲۲	طلاق کے ایک گول مول سوال پر تنبیہ۔
۴۲۲	

صفحہ	مضمون
	عورت کو شوہر کی تحریر ہونے کا اعتبار ہے، اور وہ انکار نہ کرے تو اس کے موافق عمل کرسکتی ہے۔
۴۱۹	شوہر نے کہا" مجھے تین طلاق اگر کوئی بات پوشیدہ رکھی"۔ "رکھی" میں دو احتمال ہیں ہائے مجمولہ و معروفہ۔ اول میں اس قول کے بعد کچھ چھپائے گی طلاق پڑے گی، اور ثانی میں چھپایا ہو تو اسی وقت پڑ گئی۔
۴۱۹	فارغ خطی باقاعدہ لکھاکہ میں فلاں ابن فلاں اپنی زوجہ فلاں کو طلاق دیتاہوں، تو اگرچہ زوجہ کو اس کی اطلاع نہ دی طلاق واقع ہوگئی۔
۴۲۰	معاہدوں میں دستاویز کا لکھنا حسب عرف معاہدے کی تمہید ہوتا ہے نہ کہ تنفیذ۔
۴۲۰	المشروط عرفاً کالمشروط لفظاً۔
۴۲۰	

صفحہ	مضمون
۴۲۳	تحریری طلاق میں شوہر کا اقرار یا گواہانِ عادل سے اس کا ثبوت ضروری ہے۔
۴۲۳	طلاق نامہ میں شوہر کا یہ لکھنا کہ میں نے عدت معاف کی، جاہلانہ بات ہے، اس سے عدت ساقط نہیں ہوتی۔
۴۲۳	دورانِ عدت عورت سے نکاح باطل ہے۔
۴۲۳	محلل جب تک نکاحِ صحیح کے بعد وطی نہ کرے عورت شوہرِ اوّل کے لئے حلال نہیں ہوتی۔
۴۲۳	نکاح فاسد و موقوف حلالہ کے لئے کافی نہیں نکاح نافذ ضروری ہے۔
۴۲۳	

صفحہ	مضمون	صفحہ	مضمون
	عورت سے شوہر نے کہا "تو مہر معاف کردے تو میں طلاق دوں"۔ اس نے مہر معاف کردی لیکن شوہر نے طلاق نہ دی۔ مہر معاف نہ ہوا۔		گواہوں کے سامنے طلاق دی، اب انکاری ہے، اگر گواہ عادل ہوں اس کا انکار نہ سنا جائے گا۔

Fatawa Razawiya, Volume 12

- If there are no just witnesses and divorce is not given in front of the woman, she should take an oath from her husband. If he denies divorce by taking an oath, she should consider herself his wife. If he gave divorce in front of her and then denied it and there are no witnesses, she should try to get separation from him in every possible way. (Page 423) | Taking a fatwa from the ignorant is haram, and turning to the opponents of religion is severely haram. (Page 426)
- A woman who is triple divorced (mutallaqa-e-thalatha) and cannot get separation from her husband in any way and is completely helpless, she should never behave as husband and wife with him by her own will, nor should she agree to his compulsion; then the burden of sin is only on the husband. (Page 424) | When an irrevocable (Bayin) divorce occurs, the woman is out of the marriage; now the husband has no right of return (ruju). (Page 427)
- Proof of divorce from letters depends on the husband's confession or the testimony of just witnesses. (Page 424) | "Go away from me" - even in the state of discussion, the intention of divorce is necessary. (Page 427)
- After proof of writing, divorce will be considered from the time of writing, and all letters received during the waiting period (Iddah) will be considered as new divorces. (Page 424) | "You have the choice to do what you want" - in the state of discussion, the intention of divorce is not necessary. (Page 427)
- Establishing a new ruling (Tasees) is preferable compared to emphasis (Takid). (Page 425) | If an irrevocable (Bayin) divorce is given after an explicit (Sareeh) one, then that explicit one also becomes Bayin. (Page 427)
- Explicit divorce applies to others. (Page 425) | The waiting period (Iddah) will start from the moment the Bayin divorce was given, even if it was given during menstruation. (Page 427)
- If some letters show that he is informing about a previous divorce, it will not be considered a new one (Insha). (Page 425) | All rulings of Iddah will be established from the time of divorce. (Page 427)
- If the one giving divorce via letter denies it and there isn't sufficient evidence, no divorce will be proven. (Page 425) | The menstruation during which divorce was given will not be counted in Iddah; rather, three complete menstrual cycles after that are required. (Page 427)
- Merely receiving a letter is not a Sharia proof. (Page 425) | As soon as a Bayin divorce occurs, the dower (Mahr) becomes payable. (Page 427)

- If the one who divorces via letter and then denies it is lying in this denial, then God is the one to deal with him; the woman is free from this burden and separate. (Page 426) | If after divorce both husband and wife deny it, then mutual relations are haram and intercourse is adultery (Zina). (Page 427)
- For testimony of divorce, a formal claim (Da'wa) is not necessary. Even if no one makes a claim, it is obligatory on the witnesses to present the matter before a Qazi (judge). (Page 428)

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

- यदि न्यायप्रिय गवाह न हों और महिला के सामने तलाक़ न दिया गया हो, तो महिला को अपने पति से शपथ लेनी चाहिए। यदि वह शपथ लेकर तलाक़ से इंकार कर दे, तो महिला स्वयं को उसकी पत्नी समझे। और यदि उसने महिला के सामने तलाक़ दिया और फिर मुकर गया और गवाह न हों, तो महिला को हर संभव तरीके से उससे छुटकारा पाने की कोशिश करनी चाहिए। (पृष्ठ 423) | अज्ञानियों से फ़तवा लेना हराम है और धर्म के विरोधियों की ओर रुख करना अत्यंत कठिन हराम है। (पृष्ठ 426)
- जो तीन तलाक़ वाली महिला अपने पति से किसी प्रकार छुटकारा पाने में सक्षम नहीं है और बिल्कुल लाचार है, वह कभी भी अपनी इच्छा से उसके साथ पति-पत्नी का व्यवहार न करे और न ही उसके मजबूर करने पर सहमत हो; तब गुनाह का भार केवल पति पर है। (पृष्ठ 424) | जब महिला पर तलाक़-ए-बाइन (अटल तलाक़) पड़ गया, तो वह निकाह से बाहर हो गई; अब पति को वापस लेने (रुजू) का कोई अधिकार नहीं रहा। (पृष्ठ 427)
- पत्रों से तलाक़ का प्रमाण पति के स्वीकारोक्ति या न्यायप्रिय गवाहों की गवाही पर निर्भर है। (पृष्ठ 424) | "मेरे पास से चली जा" - चर्चा की स्थिति में भी तलाक़ की नियत (इरादा) आवश्यक है। (पृष्ठ 427)
- लेखन के प्रमाण के बाद, तलाक़ लिखने के समय से मानी जाएगी और इद्दत के दौरान जितनी बार पत्र आएगा, उन सभी को नया तलाक़ माना जाएगा। (पृष्ठ 424) | "तुझे अधिकार है जो चाहे कर" - चर्चा की स्थिति में तलाक़ की नियत की आवश्यकता नहीं है। (पृष्ठ 427)
- ज़ोर देने (ताकीद) की तुलना में नया हुक्म स्थापित करना (तासीस) बेहतर है। (पृष्ठ 425) | यदि एक सरीह (स्पष्ट) तलाक़ के बाद बाइन (अटल) तलाक़ दिया गया तो वह सरीह भी बाइन हो जाएगा। (पृष्ठ 427)
- सरीह (स्पष्ट) तलाक़ दूसरे पर भी लागू हो जाता है। (पृष्ठ 425) | इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) उसी समय से गिनी जाएगी जब से बाइन तलाक़ दिया गया, भले ही वह मासिक धर्म की स्थिति में दिया गया हो। (पृष्ठ 427)
- यदि कुछ पत्रों से यह पता चले कि वह पहले के तलाक़ की सूचना दे रहा है, तो इसे नया तलाक़ (इंशा) नहीं माना जाएगा। (पृष्ठ 425) | इद्दत के सभी नियम तलाक़ के समय से लागू होंगे। (पृष्ठ 427)

- यदि पत्र के माध्यम से तलाक़ देने वाला इनकार कर दे और पर्याप्त गवाही न हो, तो मूलतः तलाक़ सिद्ध नहीं होगा। (पृष्ठ 425) | जिस मासिक धर्म में तलाक़ दिया गया, वह इद्दत में नहीं गिऺ जाएगा, बल्कि उसके बाद तीन पूर्ण मासिक धर्म आवश्यक होंगे। (पृष्ठ 427)
- पत्र का मिलना कोई शरीयत का प्रमाण नहीं है। (पृष्ठ 425) | बाइन तलाक़ होते ही मेहर (स्त्रीधन) देय हो गया। (पृष्ठ 427)
- यदि पत्र द्वारा तलाक़ देकर इनकार करने वाला इस इनकार में झूठा है, तो उससे निपटने वाला खुदा है; महिला इस बोझ से मुक्त और अलग है। (पृष्ठ 426) | तलाक़ देकर यदि पति-पत्नी दोनों इनकार कर दें, तो आपसी संबंध हराम हैं और संभोग ज़िना (व्यभिचार) है। (पृष्ठ 427)
- तलाक़ की गवाही के लिए औपचारिक दावे (दावा) की आवश्यकता नहीं है। यदि कोई दावा न भी करे, तो गवाहों का कर्तव्य है कि वे मामला काज़ी के सामने पेश करें। (पृष्ठ 428)

فتاوی رضویہ، جلد دوازدہم

- گواہ عادل نہ ہوں اور عورت کے سامنے طلاق نہ ہو تو عورت شوہر سے حلف لے اگر قسم کھا کر طلاق سے انکار کردے تو عورت خود کو اس کی زوجہ سمجھے، اور عورت کے سامنے طلاق دے کر مکر گیا اور گواہ نہ ہوں تو عورت ہر ممکن صورت سے اس سے چھٹکارا حاصل کرے۔ ۴۲۳ | جاہلوں سے فتویٰ لینا حرام اور مخالفان دین کی طرف رجوع کرنا سخت اشد حرام ہے۔ ۴۲۶
- جو مطلقہ ثلاثہ تین طلاق دینے والے شوہر سے کسی طور پر چھٹکارا حاصل کرنے پر قادر نہیں اور بالکل بے بس ہے وہ کبھی بھی اپنی خواہش سے اس کے ساتھ زن و شوہر کا برتاؤ نہ کرے نہ اس کے مجبور کرنے پر اس سے راضی ہو پھر وبال صرف شوہر پر ہے۔ ۴۲۴ | عورت پر جب طلاق بائن پڑ گئی عورت نکاح سے نکل گئی اب شوہر کو رجعت کا کچھ اختیار نہ رہا۔ ۴۲۷
- خطوط سے طلاق کا ثبوت، شوہر کے اقرار یا گواہان عادل کی گواہی پر موقوف ہے۔ ۴۲۴ | "تو میرے پاس سے چلی جا" حالت مذاکرہ میں بھی نیت طلاق کی ضرورت ہے۔ ۴۲۷
- ثبوت تحریر کے بعد، وقت تحریر سے طلاق مانی جائے گی اور عدت کے اندر جتنی بار خط آیا سب جدید طلاقیں مانی جائیں گی۔ ۴۲۴ | "تجھ کو اختیار ہے جو چاہے کر" حالت مذاکرہ میں نیت طلاق کی ضرورت نہیں۔ ۴۲۷
- تاسیس اولیٰ ہے بنسبت تاکید کے۔ ۴۲۵ | صریح کے بعد بائن طلاق دی تو وہ صریح بھی بائن ہو جائے گی۔ ۴۲۷

- طلاق صریح غیر کو لاحق ہو جاتی ہے۔ ۴۲۵ | عدت اسی وقت سے لی جائے گی جب سے طلاق بائن دی اگر چہ حالت حیض میں دی ہو۔ ۴۲۷
- اگر بعض خطوط سے یہ پتا چلے کہ پہلے کے طلاق کی خبر دے رہا ہے تو اس کو انشاء نہ قرار دیں گے۔ ۴۲۵ | تمام احکام عدت وقت طلاق سے ثابت ہو جائیں گے۔ ۴۲۷
- اگر بذریعہ خط طلاق دینے والا منکر ہو اور شہادت کافیہ نہ ہو تو اصلاً ثابت طلاق نہ ہوگا۔ ۴۲۵ | جس حیض میں طلاق دی وہ عدت میں شمار نہ ہوگا بلکہ اس کے بعد تین حیض کامل درکار ہوں گے۔ ۴۲۷
- شانِ خط ملنا کوئی حجت شرعیہ نہیں۔ ۴۲۵ | طلاق بائن پڑتے ہی مہر واجب الاداء ہو گیا ۴۲۷
- اگر بذریعہ خط طلاق دے کر انکار کرنے والا اگر اس انکار میں جھوٹا ہے تو اس کا لینے والا خدا ہے، عورت اس وبال سے پاک اور جدا ہے۔ ۴۲۶ | طلاق دے کر میاں بیوی دونوں منکر ہو جائیں تو باہم تعلقات حرام اور جماع زنا ہے۔ ۴۲۷
- طلاق کی گواہی کے لئے دعویٰ ضروری نہیں کوئی دعویٰ نہ کرے تو گواہوں پر فرض ہے کہ معاملہ قاضی کے سامنے پیش کریں۔ ۴۲۸

Fatawa Razawiya Volume 12

Page	Ruling
428	It is obligatory for the judge (Qazi) to hear testimony even without a claim in cases of pure Hudud, divorce (Talaq), Ila, and Zihar.
428	For the acceptance of testimony in matters of people's rights (Huquq al-Ibad), the prior filing of a claim is a condition, but it is not a condition for the rights of Allah.
429	If the witnesses do not remember the number of divorces and the husband swears an oath on one, his oath shall be relied upon.
429	Obtaining a decree from a worldly court through corrupt (fasiq) witnesses does not result in a divorce being enacted.
429	It is mandatory to expel an abductor from the community and sever all ties with them.
430	Among the witnesses of a divorce: a boy of twelve or fourteen years, the mother of the woman, a sister-in-law, and a strange woman. Then, a difference among them regarding the number of divorces. Ruling on these different scenarios.
430	The testimony of women alone is not acceptable.
432	A husband's denial of divorce in the presence of reliable witnesses shall not be heard at all.
432	A brother's testimony in favor of his sister is legally acceptable according to Sharia.
432	For the proof of divorce, two legal witnesses are sufficient.
433	If the sound of divorce was heard but the person who gave it was not seen, testimony cannot be given.
433	"Gave divorce to so-and-so." By saying the word "gave" (di) three times, three divorces will be established.
433	If in reality three divorces have been given, it is obligatory for him to leave the woman and not touch her without halala.
433	A husband who keeps a woman divorced three times (mutallaqa thalatha) without halala will be

Page	Ruling
430	The testimony of a descendant (far') for an ancestor (asl) and the testimony of an ancestor for a descendant is not acceptable.
431	According to the Imam, in testimony, whatever is agreed upon both literally and in meaning is established.
431	Disagreement among witnesses leads to the rejection of testimony.

Page	Ruling
	involved in adultery (zina) and will deserve severe punishment.
433	When Zaid uttered these words three times separately: "I divorced my wife," even if under threat, coercion, or if the one forcing him was a Hindu or someone else, three divorces must certainly take place.
434	A man said, "My wife is divorced," while having two or three wives; one of them is divorced, and the husband has the choice to specify which one.
434	If a husband of two wives, being absent-minded, gives three divorces to his wife using some words without intending any specific one, it is not mandatory to apply all three divorces to one woman; rather, he can distribute them, meaning he can apply one to one and two to the other.

फतावा रज़विया जिल्द बारहवीं

पृष्ठ	निर्णय
428	क़ाज़ी पर लाज़िम है कि हद-ए-ख़ालिस, तलाक़, ईला और ज़िहार में बिना दावे के भी गवाही सुने।
428	हुक़ूकुल इबाद (बंदों के अधिकार) में गवाही की क़बूलियत के लिए दावे का पहले होना शर्त है, हुक़ूक़ुल्लाह (अल्लाह के अधिकार) में शर्त नहीं।
429	अगर गवाहों को तलाक़ की तादाद याद न हो और शौहर एक की क़सम खा ले तो उसकी क़सम का एतबार है।
429	फ़ासिक़ गवाहों के ज़रिये दुनियावी कचहरी से डिक्री हासिल कर लेने से तलाक़ वाक़े नहीं होती।
429	अगवा करने वाले को बिरादरी से ख़ारिज करना और उससे मेल-जोल छोड़ देना लाज़िम है।
430	तलाक़ के गवाहों में एक बारह-चौदह साल का लड़का, एक औरत की माँ, एक भावज और एक अजनबी औरत। फिर तलाक़ की तादाद में उनके दरमियान इख्तिलाफ़। इन मुख़्तलिफ़ सूरतों का हुक्म।
430	तन्हा औरतों की गवाही मक़बूल नहीं।
432	मोतबर गवाहों की मौजूदगी में शौहर का तलाक़ से इनकार बिल्कुल भी सुना नहीं जाएगा।
432	भाई की गवाही बहन के हक़ में शरअन क़बूल है।
432	तलाक़ के सबूत के लिए दो शरई गवाह काफ़ी हैं।
433	तलाक़ की आवाज़ सुनी, देने वाले को देखा नहीं, गवाही नहीं दे सकते।
433	फ़लां को तलाक़ दी। "दी" का लफ्ज़ तीन बार कहने से तीन तलाक़ें साबित हो जाएंगी।
433	अगर हक़ीक़त में तीन तलाक़ दे दे तो उस पर फ़र्ज़ है कि औरत को छोड़ दे और बिना हलाला उसे हाथ न लगाए।
433	

पृष्ठ	निर्णय
430	फ़राअ (संतान) की गवाही असल (माता-पिता) के लिए और असल की गवाही फ़राअ के हक़ में क़बूल नहीं।
431	इमाम साहब के नज़दीक शहादत में लफ्ज़न और मा'नन जितने पर इत्तिफ़ाक़ हो वह साबित है।
431	गवाहों का इख्तिलाफ़ शहादत के रद होने का सबब है।

पृष्ठ	निर्णय
433	मुतल्लक़ा सलासा (तीन तलाक़शुदा) को हलाला के बिना रखने वाला शौहर ज़िना में मुब्तला होगा और शदीद अज़ाब का मुस्तहिक़ होगा।
433	जब ज़ैद ने अपनी ज़बान से तीन बार अलग-अलग ये अल्फाज़ कहे "मैंने अपनी बीवी को तलाक़ दी", चाहे धमकी, जबर-ओ-इकरार से, चाहे कहलवाने वाला हिन्दू या कोई और था, उस पर तीन अदद तलाक़ ज़रूर लाज़िम आई।
434	मर्द ने कहा "मेरी बीवी को तलाक़ है", उसकी दो या तीन बीवियाँ हैं, उनमें से एक को तलाक़ हो गई, उसकी तईन (पहचान) का इख़्तियार शौहर को है।
434	दो बीवियों के शौहर ने ख़ाली-उज़-ज़हन होकर किसी लफ्ज़ से किसी की नियत किये बिना अपनी बीवी को तीन तलाक़ें दे दीं, तो लाज़िम नहीं कि तीनों तलाक़ें एक ही औरत पर डाले बल्कि तफ़रीक़ कर सकता है यानी एक पर एक और दूसरी पर दो डाल सकता है।

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

صفحہ	مسئلہ	صفحہ	مسئلہ
	قاضی پر لازم ہے کہ حد خالص،		شوہر کا انکار طلاق ثقہ گواہوں کی موجودگی
۴۲۸	طلاق، ایلاء اور ظہار میں بغیر دعوی بھی شہادت سنے۔	۴۳۲	میں اصلاً مسموع نہ ہوگا۔
	حقوق العباد میں قبول شہادت کے		
۴۲۸	لئے تقدم دعوی شرط ہے حقوق اللہ میں شرط نہیں۔	۴۳۲	بھائی کی گواہی بہن کے حق میں شرعاً قبول ہے۔
	گواہوں کو طلاق کی تعداد یاد نہ ہو		
۴۲۹	اور شوہر ایک کی قسم کھا لے تو اس کی قسم کا اعتبار ہے۔	۴۳۲	طلاق کے ثبوت کے لئے دو شرعی گواہ کافی ہیں۔
	فاسق گواہوں کے ذریعہ دنیوی		
۴۲۹	کچہری سے ڈگری حاصل کر لینے سے طلاق واقع نہیں ہوتی۔	۴۳۳	طلاق کی آواز سُنی، دینے والے کو دیکھا نہیں، گواہی نہیں دے سکتے۔
	اغواء کرنے والے کو برادری سے		
۴۲۹	خارج کرنا اور اس سے میل جول چھوڑ دینا لازم ہے۔	۴۳۳	فلاں کو طلاق دی۔ "دی" کا لفظ تین بار کہنے سے تین طلاقیں ثابت ہو جائیں گی۔
۴۳۰		۴۳۳	

صفحہ	مسئلہ	صفحہ	مسئلہ
	طلاق کے گواہوں میں ایک لڑکا بارہ چودہ سال کا ایک عورت کی ماں ایک بھاوج اور ایک اجنبی عورت۔ پھر طلاق کی تعداد میں ان کے درمیان اختلاف۔ ان مختلف صورتوں کا حکم۔		اگر فی الواقع تین طلاق دے دے تو اس پر فرض ہے کہ عورت کو چھوڑ دے اور بغیر حلالہ اس کو ہاتھ نہ لگائے۔
۴۳۰	تنہا عورتوں کی گواہی مقبول نہیں۔	۴۳۳	مطلقہ ثلاثہ کو حلالہ کے بغیر رکھنے والا شوہر مبتلائے زنا ہوگا اور مستحق عذاب شدید ہوگا۔
۴۳۰	فرع کی گواہی اصل کے لئے اور اصل کی گواہی فرع کے حق میں قبول نہیں۔	۴۳۳	جبکہ زید نے تین بار جدا جدا یہ الفاظ اپنی زبان سے کہے "میں نے اپنی بی بی کو طلاق دی" اگرچہ دھمکانے جبر واکراہ سے اگرچہ کہلوانے والا ہندو یا کوئی اور تھا اس پر تین عدد طلاق ضرور لازم آئی۔
۴۳۱	امام صاحب کے نزدیک شہادت میں لفظاً اور معنیٰ جتنے پر اتفاق ہو وہ ثابت ہے۔	۴۳۴	مرد نے کہا میری بیوی کو طلاق ہے اس دو یا تین بیویاں ہے ان میں سے ایک کو طلاق ہو گئی اس کی تعیین کا اختیار شوہر کو ہے۔
۴۳۱	اختلاف شہود موجب رَدّ شہادت ہے۔	۴۳۴	دو بیویوں کے شوہر نے خالی الذہن ہو کر کسی لفظ سے کسی کی نیت کئے بغیر اپنی

صفحہ	مسئلہ صفحہ	مسئلہ

بیوی کو تین طلاقیں دے دیں تو لازم نہیں کہ

تینوں طلاقیں ایک ہی عورت پر ڈالے بلکہ

تفریق کر سکتا ہے یعنی ایک پر ایک اور

دوسری پر دو ڈال سکتا ہے۔

صفحہ ۴۵ از ۶۸۸

Fatawa Rizvia - Volume 12

- A person has two wives and said "I divorced my wife" without specifying which one; rulings on various scenarios. (Page 436)
- Detailed description and rulings of the 58 scenarios mentioned above. (Page 436)
- The rulings for the aforementioned 58 scenarios can be derived from four universal principles. (Page 437)
- A woman with whom marriage was not consummated does not have the capacity for separated divorce (Tafreeq-e-Talaq). (Page 437)
- A woman with whom marriage was consummated can receive up to three divorces, collectively or separately, not more, as there is no divorce beyond three. (Page 437)
- As long as speech can be interpreted as a delay or postponement, it will not be considered redundant or void. (Page 437)
- Any claim where a part of the speech becomes redundant or void will not be accepted. (Page 438)
- If someone has two wives and divorces "his wife" without specifying, he has the choice to assign it to whichever he wishes. His statement in specifying the divorced one will be reliable as long as it doesn't lead to the speech becoming redundant. (Page 438)
- Zaid admits to two divorces. Amr, Hindah, and Safiyah state that he said "I give three divorces." A statement on the non-establishment of irrevocable divorce (Talaq-e-Mughallazah) in such a case. (Page 440)
- Nowadays, Sharia adjudication is rare among men, and reliable Sharia-abiding women among those traditionally considered lacking in intellect in India are perhaps countable. (Page 440)
- A person who has such worldly and apparent enmity towards Zaid that he becomes suspect regarding Zaid's rights; his testimony against Zaid's interests is not acceptable. (Page 440)
- Completion of the waiting period (Iddat) makes her a stranger and removes her from the state of being eligible for divorce. (Page 441)
- The wife of an intoxicated man ran away. He followed her but couldn't find her and said "three divorces." If he says he meant his wife, the divorce occurred. (Page 441)

- Will divorce occur by saying "If you are my wife, one divorce, two divorces, three divorces"? (Page 442)
- A man said to his wife "In kharajti yaqa'at-talaq" (If you go out, divorce occurs) or "don't go out without my permission because I have sworn an oath of divorce." If she goes out, divorce will not occur. (Page 442)
- If the man swears not to divorce and the woman swears to take a divorce, the husband's oath is considered, but the woman should seek release however possible. (Page 443)
- If witnesses are reliable and just, the husband's denial will be of no use; divorce will be established. (Page 444)
- If witnesses are not reliable or just and the husband denies the divorce, his word under oath will be reliable. (Page 444)
- If legal witnesses are not present, then for taking an oath, it is sufficient for the woman to have the husband, who denies the divorce, take an oath at home. (Page 444)

फ़तावा रज़विया - जिल्द 12

- एक व्यक्ति की दो पत्नियाँ हैं, उसने कहा "अपनी पत्नी को तलाक दिया" किसी को स्पष्ट नहीं किया, इसकी विभिन्न स्थितियों का निर्णय। (पृष्ठ 436)
- उपरोक्त कुल 58 स्थितियों का विस्तृत विवरण और उनके आदेश। (पृष्ठ 436)
- उपरोक्त 58 स्थितियों का निर्णय चार मूल सिद्धांतों से निकाला जा सकता है। (पृष्ठ 437)
- वह स्त्री जिसके साथ विवाह संपन्न नहीं हुआ, तलाक के पृथक्करण (तफ़रीक़) की क्षमता नहीं रखती। (पृष्ठ 437)
- जिस स्त्री के साथ विवाह संपन्न हो चुका है, वह सामूहिक या पृथक रूप से तीन तलाक तक के योग्य है, इससे अधिक नहीं क्योंकि तीन से आगे कोई तलाक नहीं है। (पृष्ठ 437)
- जब तक कथन को अर्थपूर्ण बनाया जा सकेगा, उसे व्यर्थ नहीं माना जाएगा। (पृष्ठ 437)
- ऐसा दावा जिसमें कथन का कोई हिस्सा व्यर्थ हो जाता हो, स्वीकार नहीं किया जाएगा। (पृष्ठ 438)
- जिसके पास दो पत्नियाँ हों और वह बिना किसी को निर्दिष्ट किए अपनी पत्नी को तलाक दे दे, तो उसे अधिकार है कि वह तलाक जिसकी ओर चाहे फेर दे। तलाकशुदा को निर्दिष्ट करने में उसका कथन तब तक विश्वसनीय होगा जब तक कि उसे स्वीकार करने में कथन का व्यर्थ होना आवश्यक न हो। (पृष्ठ 438)
- ज़ैद दो तलाक स्वीकार करता है। अम्र, हिंदा और सफिया बयान करते हैं कि उसने हमसे कहा कि "तीन तलाक देता हूँ"। ऐसी स्थिति में तलाक़-ए-मुग़ल्लज़ह (अटल तलाक) साबित न होने का बयान। (पृष्ठ 440)
- आजकल पुरुषों में शरीयत की समझ रखने वाली अदालतें कम हैं और भारत में कम अक्ल वाली महिलाओं में विश्वसनीय शरीयत वाली शायद उंगलियों पर गिनी जा सकती हों। (पृष्ठ 440)
- वह व्यक्ति जो ज़ैद से इस हद तक सांसारिक और स्पष्ट शत्रुता रखता हो कि उसके कारण वह ज़ैद के अधिकारों के संबंध में संदिग्ध हो जाए, तो ज़ैद के विरुद्ध उसकी गवाही स्वीकार्य नहीं है। (पृष्ठ 440)
- इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) का पूरा होना उसे अजनबी बना देता है और तलाक की पात्रता से बाहर कर देता है। (पृष्ठ 441)

- नशे में धुत व्यक्ति की पत्नी भाग गई और वह उसके पीछे गया लेकिन उसे पा न सका और कहा "तीन तलाक"। यदि वह कहता है कि पत्नी ही उसका उद्देश्य थी, तो तलाक हो गया। (पृष्ठ 441)
- "यदि तुम मेरी पत्नी हो तो एक तलाक, दो तलाक, तीन तलाक" कहने से तलाक होगा या नहीं? (पृष्ठ 442)
- पति ने पत्नी से कहा "यदि तुम निकलीं तो तलाक हो जाएगा" या "मेरी अनुमति के बिना मत निकलना क्योंकि मैंने तलाक की कसम खाई है"। यदि वह स्त्री निकली तो तलाक नहीं होगा। (पृष्ठ 442)
- पुरुष तलाक न देने की कसम खाए और महिला तलाक देने की, तो पति की कसम का भरोसा किया जाएगा, लेकिन महिला जिस तरह भी संभव हो छुटकारा प्राप्त करे। (पृष्ठ 443)
- गवाह विश्वसनीय और न्यायप्रिय हों तो पति का इनकार किसी काम का नहीं होगा, तलाक साबित हो जाएगा। (पृष्ठ 444)
- यदि गवाह विश्वसनीय और न्यायप्रिय न हों और पति तलाक से इनकार करे, तो उसका कथन कसम के साथ विश्वसनीय होगा। (पृष्ठ 444)
- यदि कानूनी गवाह मौजूद न हों, तो कसम लेने के लिए महिला का पति से, जो तलाक से इनकार कर रहा है, घर पर कसम ले लेना ही काफी है। (पृष्ठ 444)

पृष्ठ 688 का 46

- ایک شخص کی دو عورتیں ہیں، اس نے کہا "اپنی عورت کو طلاق دی" کسی کی تصریح نہ کی، اس کی مختلف صورتوں کا حکم۔ (صفحہ ۴۳۶)
- مسئلہ مذکورہ بالا کل اٹھاون ۵۸ صورتوں کا تفصیلی بیان اور ان کے احکام۔ (صفحہ ۴۳۶)
- مذکورہ اٹھاون صورتوں کا حکم چار اصل کلی سے نکل سکتا ہے۔ (صفحہ ۴۳۷)
- زن غیر مدخولہ تفریقِ طلاق کی صلاحیت نہیں رکھتی۔ (صفحہ ۴۳۷)
- مدخولہ جملاً و تفریقاً تین طلاق تک کی صالحہ ہے زیادہ کی نہیں کہ تین سے آگے طلاق ہی نہیں۔ (صفحہ ۴۳۷)
- کلام جب تک مؤخر بن سکے گا لغو نہ ٹھہرائیں گے۔ (صفحہ ۴۳۷)
- ایسا دعویٰ جسمیں کوئی حصہ کلام کا لغو جاتا ہو تسلیم نہ کریں گے۔ (صفحہ ۴۳۸)
- جسکے پاس دو زوجہ ہوں وہ بلا تعیین اپنی عورت کو طلاق دے دے تو اس کو اختیار ہے کہ وہ طلاق جس کی طرف چاہے پھیر دے تعیین مطلقہ میں اس کا بیان معتبر ہو گا جب تک اس کے قبول میں کلام کا لغو ہونا لازم آتا ہو۔ (صفحہ ۴۳۸)
- زید دو طلاق کا اقراری ہے۔ عمرو ہندہ وصفیہ بیان کرتے ہیں کہ ہم سے کہا کہ "تین طلاق دیتا ہوں" ایسی صورت میں طلاق مغلظہ نہ ثابت ہونے کا بیان۔ (صفحہ ۴۴۰)
- آج کل عدالت شرعیہ مردوں میں کم ہے اور زنان ناقصات العقل میں ثقہ شرعیہ ہندوستان میں شاید گنتی کی ہوں۔ (صفحہ ۴۴۰)
- جو شخص زید سے عداوت ظاہر ہ دنیویہ اس حد تک رکھنے والا ہو کہ اس کے باعث زید کے حق میں متہم ہو تو اس کی گواہی ضررِ زید پر قبول نہیں۔ (صفحہ ۴۴۰)

- انقضاءِ عدت کو اجنبی اور محلّیتِ طلاق سے خارج کر دیتی ہے۔ (صفحہ ۴۴۱)
- نشہ والے کی بیوی بھاگی اور وہ اس کے پیچھے گیا مگر اسے نہ پا سکا اور کہا "سہ طلاق" اگر کہتا ہے کہ بیوی مراد تھی تو طلاق ہو گئی۔ (صفحہ ۴۴۱)
- "اگر تو زن منی یک طلاق دو طلاق سہ طلاق" کہنے سے طلاق ہوگی یا نہیں؟ (صفحہ ۴۴۲)
- بیوی سے مرد نے کہا "ان خرجت بقع الطلاق" یا "یو کھا" میرے اذن کے بغیر مت نکلنا کیونکہ میں نے طلاق کی قسم کھائی ہے۔ وہ عورت نکلی تو طلاق نہ ہو گی۔ (صفحہ ۴۴۲)
- مرد طلاق نہ دینے کی قسم کھائے اور عورت طلاق دینے کی، اعتبار شوہر کی قسم کا ہوگا، لیکن عورت جس طرح ممکن ہو چھٹکارا حاصل کرے۔ (صفحہ ۴۴۳)
- گواہ ثقہ اور عادل ہوں تو شوہر کا انکار کچھ کام نہ دے گا، طلاق ثابت ہو جائے گی۔ (صفحہ ۴۴۴)
- گواہ ثقہ عادل نہ ہو اور شوہر منکرِ طلاق ہو تو اس کا قول قسم کے ساتھ معتبر ہو گا۔ (صفحہ ۴۴۴)
- گواہ شرعی موجود نہ ہوں تو قسم لینے کے لئے عورت کا شوہر منکرِ طلاق سے گھر میں قسم لے لینا کافی ہے۔ (صفحہ ۴۴۴)

صفحہ ۴۶ از ۶۸۸

Fatawa Razawiyya, Volume 12

451 | Fear of the community that does not reach the level of coercion is no excuse. | 457 | If the husband is in doubt whether there were two divorces or three, they will be considered as two until three are proven by witnesses. 452 | From today, he will give this much monthly, month by month; if he doesn't, divorce will occur. In this case, if one month passes and he doesn't give, divorce will take place. | 457 | "I have divorced you, get out of my house" twice, and if with the words "get out" he had the intention of divorce even once, then three divorces occurred. 452 | If the wife is satisfied with the husband's letter that it is written by him, she can consider herself divorced. But if he comes from abroad and denies it, witnesses will be needed. | 458 | The phrase "get out of the house" also has the possibility of rejection, so the intention is necessary even in the state of negotiation. Merely considering the wife prohibited (haram) does nothing. If the word 'Ba'in' (irrevocable) is said verbally, it will be Ba'in; no intention is needed. 453 | In case of dispute between husband and wife, the wife's witnesses for divorce will be reliable. If the witnesses are not just ('adil), the decision will be made after taking an oath from the husband; the husband's witnesses cannot be presented. | 459 | If a person marries after giving one or two divorces, she will not return without a new halala (new marriage contract). 453 | The wife claimed that her husband kicked her out of the house saying, "It is my mother's will that if you keep your wife in marriage, I will hold your collar on the Day of Judgment." This will not prove divorce, even if the husband himself admits it, divorce will not be proven. | 459 | Three divorces in one sitting are three. 453 | Kicking a woman out of the house is not divorce until "get out" is said with the intention of divorce. | 459 | If the occurrence of three simultaneous divorces at once is not proven from any verse or Hadith, then from where did Sayyiduna Hazrat Umar Farooq (may Allah be pleased with him) take this command and how was a consensus (ijma') reached on it? 454 | The word "go" in the state of negotiation will prove divorce, and the explicit divorce before it will be the negotiation for it. | 459 | Those who deny the occurrence of three divorces in one sitting are against the 'Sawad-e-A'zam' (great majority). 455 | With an irrevocable divorce (Talaq-e-Ba'in), the woman immediately leaves the marriage. | 459 | The command of Umar (may Allah be pleased with him) is the command of God. 455 | Said verbally "I give divorce," a divorce deed was written "I give you divorce," witness is one woman, rulings for various situations of this issue. | 459 | Allah Almighty said regarding the right of Umar: "those who extract (laws) from it among you would have known it."

फतावा रज़विया, जिल्द 12

451 | बिरादरी का डर जो ज़बरदस्ती की हद तक न हो, कोई उज़्र (बहाना) नहीं है। | 457 | शौहर को शक हो कि दो तलाक़ें थीं या तीन, तो दो ही समझी जाएँगी जब तक कि गवाहों से तीन साबित न हों। 452 | आज से इतना माहवार महीने-दर-महीने दिया करेगा, न दे तो तलाक़ वाक़े होगी। इस सूरत में एक महीना गुज़र गया और न दिया तो तलाक़ वाक़े हो जाएगी। | 457 | "मैंने तुझे तलाक़ दी मेरे घर से निकल जा" दो बार कहा और लफ़्ज़ "निकल जा" से एक बार भी नियत तलाक़ की तो तीन तलाक़ें वाक़े हो गईं। 452 | शौहर के खत पर इत्मीनान हो कि उसी का लिखा हुआ है तो औरत अपने को मुतल्लक़ा (तलाक़शुदा) तसव्वुर कर सकती है। लेकिन परदेस से आकर इंकार करे तो गवाहों की ज़रूरत होगी। | 458 | लफ़्ज़ "घर से निकल जा" रद्द का एहतेमाल भी रखता है इसलिए हालते-मुज़ाकरा में भी नियत की ज़रूरत है। औरत को हराम समझने से कुछ नहीं होता। लफ़्ज़ 'बाइन' ज़बान से कहे बाइन होगी नियत की ज़रूरत नहीं। 453 | मियाँ-बीवी के इख़्तिलाफ़ की सूरत में तलाक़ के गवाह औरत के मोतबर होंगे। अगर गवाह आदिल न हों तो शौहर से क़सम लेकर फ़ैसला किया जाएगा, शौहर के गवाह पेश नहीं हो सकते। | 459 | एक या दो तलाक़ देकर निकाह किया तो हल-ए-जदीद के साथ न लौटेगी। 453 | ज़ौजा ने दावा किया कि शौहर ने मुझे यह कहकर घर से निकाल दिया कि "मेरी माँ की वसीयत है कि अगर अपनी बीवी को ज़ौजीयत में रखियेगा मैं हश्र में दामनगीर होंगी" इससे तलाक़ न साबित होगी बल्कि इतना अगर ख़ुद शौहर इक़रार करे तो उससे भी तलाक़ साबित न होगी। | 459 | एक मजलिस की तीन, तीन ही हैं। 453 | औरत को घर से निकाल देना तलाक़ नहीं जब तक ज़बान से बनियत-ए-तलाक़ न कहे कि निकल जा। | 459 | आन-ए-वाहिद में तीन इकट्ठी तलाक़ें वाक़े होना किसी आयत व हदीस से साबित नहीं तो सैय्यदना हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह हुक्म कहाँ से लिया और इस पर इज्मा' कैसे मुनअक़िद हो गया। 454 | लफ़्ज़ "जा" हालते-मुज़ाकरा में तलाक़ साबित करेगा और उससे पहले की तलाक़ सरीह उसके लिए मुज़ाकरा होगी। | 459 | एक मजलिस में तीन तलाक़ों के वुक़ूअ के मुनकिर मुख़ालिफ़ेसवाद-ए-आज़म हैं। 455 | तलाक़-ए-बाइन से औरत फ़ौरन निकाह से निकल जाती है। | 459 | हुक्म-ए-उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हुक्म-ए-ख़ुदा है। 455 | ज़बान से कहा तलाक़ देता हूँ, तलाक़ नामा लिखा गया मैं तुझको तलाक़ देता हूँ, गवाह एक औरत, इस मसले की मुख़्तलिफ़ सूरतों के अहकाम। | 459 | हक़ सुब्हानहू व तआला ने हक़-ए-उमर में फ़रमाया "ल-

अलमहुल लज़ीना यस्तनबितूनहू मिनकुम" (ताकि वे लोग जो इस का इस्तिनबात करते हैं उसे जान लेते)।

पृष्ठ 688 का 48

فتاوی رضویہ، جلد دوازدہم

۴۵۱ | خوفِ برادری کہ حدِ اکراہ تک نہ ہو کوئی عذر نہیں۔ | ۴۵۷ | شوہر کو شک ہو کہ دو طلاقیں تھیں یا تین، تو دو ہی سمجھی جائیں گی جب تک گواہوں سے تین ثابت نہ ہوں۔ ۴۵۲ | آج سے اس قدر ماہوار ماہ بماہ دیا کرے گا، نہ دے تو طلاق واقع ہوگی۔ اس صورت میں ایک مہینہ گزر گیا اور نہ دیا تو طلاق واقع ہو جائے گی۔ | ۴۵۷ | "میں نے تجھ کو طلاق دی میرے گھر سے نکل جا" دو بار کہا اور لفظ "نکل جا" سے ایک بار بھی نیت طلاق کی تو تین طلاقیں واقع ہوگئیں۔ ۴۵۲ | شوہر کے خط پر اطمینان ہو کہ اسی کا لکھا ہوا ہے تو عورت اپنے کو مطلقہ تصور کر سکتی ہے۔ لیکن پردیس سے آکر انکار کرے تو گواہوں کی ضرورت ہوگی۔ | ۴۵۸ | لفظ "گھر سے نکل جا" رد کا احتمال بھی رکھتا ہے اس لئے حالتِ مذاکرہ میں بھی نیت کی ضرورت ہے۔ ۲۵۷ عورت کو حرام سمجھنے سے کچھ نہیں ہوتا۔ لفظ بائن زبان سے کہے بائن ہوگی نیت کی ضرورت نہیں۔ ۴۵۳ | میاں بیوی کے اختلاف کی صورت میں طلاق کے گواہ عورت کے معتبر ہوں گے۔ اگر گواہ عادل نہ ہوں تو شوہر سے قسم لے کر فیصلہ کیا جائے گا، شوہر کے گواہ پیش نہیں ہو سکتے۔ | ۴۵۹ | ایک یا دو طلاق دے کر نکاح کیا تو حلِ جدید کے ساتھ نہ لوٹے گی۔ ۴۵۳ | زوجہ نے دعویٰ کیا کہ شوہر نے مجھے یہ کہہ کر گھر سے نکال دیا کہ "میری ماں کی وصیت ہے کہ اگر اپنی بیوی کو زوجیت میں رکھئے گا میں حشر میں دامنگیر ہوں گی" اس سے طلاق نہ ثابت ہوگی بلکہ اتنا اگر خود شوہر اقرار کرے تو اس سے بھی طلاق ثابت نہ ہوگی۔ | ۴۵۹ | ایک مجلس کی تین، تین ہی ہیں۔ ۴۵۳ | عورت کو گھر سے نکال دینا طلاق نہیں جب تک زبان سے بنیتِ طلاق نہ کہے کہ نکل جا۔ | ۴۵۹ | آن واحد میں تین اکھٹی طلاقیں واقع ہونا کسی آیت وحدیث سے ثابت نہیں تو سیدنا حضرت عمر فاروق رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے یہ حکم

کہاں سے لیا اور اس پر اجماع کیسے منعقد ہو گیا۔ ۴۵۴ | لفظ "جا" حالتِ مذاکرہ میں طلاق ثابت کریگا اور اس سے پہلے کی طلاق صریح اس کے لئے مذاکرہ ہوگی۔ | ۴۵۹ | ایک مجلس میں تین طلاقوں کے وقوع کے منکر مخالفِ سوادِ اعظم ہیں۔ ۴۵۵ | طلاقِ بائن سے عورت فوراً نکاح سے نکل جاتی ہے۔ | ۴۵۹ | حکمِ عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ حکمِ خدا ہے۔ ۴۵۵ | زبان سے کہا طلاق دیتا ہوں، طلاق نامہ لکھا گیا میں تجھ کو طلاق دیتا ہوں، گواہ ایک عورت، اس مسئلہ کی مختلف صورتوں کے احکام۔ | ۴۵۹ | حق سبحانہ و تعالیٰ نے حقِ عمر میں فرمایا "لعلمہ الذین یستنبطونہ منکم"

Fatawa Razawiyya Volume 12

- Rulings on various situations of keeping a woman in the house after divorce. (460)
- Knowingly spreading a false rumor of divorce is haraam and the work of Iblis. Such people deserve punishment. (460)
- It is strictly forbidden (haraam qati) to meet a woman without marriage after a 'ba'in' divorce, after the 'iddah' in a 'raj'i' divorce, or without 'halala' after triple divorce. All those who support such a person are perpetrators of haraam and are 'fasiq' (transgressors). (462)
- Leadership (Imamat) of a fasiq is impermissible. (462)
- One who keeps a fasiq as an Imam will be a sinner. (462)
- A fasiq is not eligible for the position of a Shari'i judge. (462)
- Blind following (taqlid) of a fasiq is impermissible, and their follower is a sinner. (462)
- The position of traditional judiciary, i.e., performing marriages, should also not be delegated to a fasiq. (462)
- Marriage is a specific religious matter, and hundreds of religious rulings stem from it throughout life. (462)
- A fasiq has no credibility in religious matters, nor can one be satisfied with anything they say. (462)
- What is the ruling if someone gives triple divorce to his wife and then marries his divorced sister-in-law? (462)
- Keeping a non-mahram woman in one's house without marriage and being in seclusion with her is 'fisq' (wickedness). (463)
- The custom of giving a proprietary payment for divorce is haraam to both give and receive. (463)
- It is permissible to give some amount to the husband for 'khula', whether the woman gives it herself or someone else gives it on her behalf. (464)
- If Bakr unknowingly married another's wedded wife, he is not a sinner. (464)
- The lineage of children of someone who unknowingly marries another's wedded wife will be established from that marriage. (464)
- One who married a woman with a husband despite knowing, or did so unknowingly but did not leave her upon finding out, is an adulterer (zani). (464)
- If a person intentionally married a woman who has a husband, the children will belong to the first husband. (464)

- Praying behind someone who marries a non-wedded woman (unlawfully) is 'makruh tahrimi' (severely disliked); if prayed, it must be repeated. (464)
- In the case of 'ba'in' divorce which is not 'mughallaza', remarriage with the husband can occur within the 'iddah' period, and with someone else after the 'iddah'. (465)
- As soon as a 'ba'in' divorce occurs, the woman becomes independent; she cannot be forced to remarry the first husband. (465)
- Regarding becoming an apostate (murtad) to avoid 'halala', the sin of apostasy is separate, and even after returning to Islam, 'halala' remains necessary. (466)

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

- तलाक देकर घर में रख लेने की विभिन्न स्थितियों के नियम। (460)
- जानबूझकर गलत तलाक की खबर फैलाना हराम और इब्लीस का काम है। ऐसे लोग सज़ा के हकदार हैं। (460)
- तलाक-ए-बाइन में बिना निकाह, और रजई में इद्दत के बाद बिना निकाह और तीन तलाक के बाद बिना हलाला औरत से मिलना कतई हराम है, जितने लोग ऐसे व्यक्ति के साथ हैं सब हराम के अपराधी और फासिक हैं। (462)
- फासिक की इमामत नाजायज है। (462)
- जो फासिक को इमामत पर बरकरार रखेगा वह गुनहगार होगा। (462)
- फासिक शरीयत के न्यायाधीश (काजी) के पद का हकदार नहीं होता। (462)
- फासिक की तकलीद (अनुसरण) नाजायज है और उसका मुक्लिद (अनुयायी) गुनहगार है। (462)
- उर्फए-कज़ा यानी निकाह ख्वानी का पद भी फासिक को नहीं सौंपा जाना चाहिए। (462)
- निकाह धर्म का एक विशेष मामला है और जीवन भर सैकड़ों धार्मिक नियम इसी से जुड़े रहते हैं। (462)
- धार्मिक मामलों में फासिक का कोई भरोसा नहीं है, न ही उसकी किसी बात पर इत्मीनान किया जा सकता है। (462)
- अगर कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को तीन तलाक देकर अपनी तलाकशुदा साली से निकाह कर ले तो क्या हुक्म है। (462)
- गैर-महरम औरत को बिना निकाह अपने घर में रखना और उसके साथ एकांत में रहना फिस्क (गुनाह) है। (463)
- तलाक के लिए मालिकाना (पैसा) देने का जो रिवाज है, उसे लेना और देना दोनों हराम हैं। (463)
- खुला के तौर पर शौहर को कुछ रकम देना जायज है चाहे औरत खुद दे या उसकी तरफ से कोई और दे। (464)
- बक्र ने अनजाने में किसी दूसरे की ब्याही हुई औरत से निकाह किया तो वह गुनहगार नहीं। (464)

- किसी दूसरे की ब्याही हुई औरत से अनजाने में निकाह करने वाले की संतान का वंश उसी निकाह से सिद्ध होगा। (464)
- विवाहित महिला से जानते हुए निकाह किया या अनजाने में किया और पता चलने पर उसे नहीं छोड़ा तो वह ज़ानी (व्यभिचारी) है। (464)
- यदि किसी व्यक्ति ने जानबूझकर विवाहित महिला से निकाह किया, तो संतान पहले पति की होगी। (464)
- गैर-मंकूहा (जिससे निकाह जायज न हो) से निकाह करने वाले के पीछे नमाज पढ़ना मकरूह तहरीमी है, अगर पढ़ ली तो उसे दोबारा पढ़ना वाजिब है। (464)
- तलाक-ए-बाइन गैर-मुगलज़ा की स्थिति में पति से इद्दत के अंदर भी निकाह हो सकता है और दूसरे से इद्दत के बाद। (465)
- तलाक-ए-बाइन होते ही औरत स्वतंत्र हो जाती है, वह पहले पति से निकाह के लिए मजबूर नहीं की जा सकती। (465)
- हलाला से बचने के लिए मुर्तद (धर्मत्यागी) होने का पाप अलग है, और फिर मुसलमान होने के बाद हलाला भी जरूरी है। (466)

فتاوی رضویہ جلد دو ازدہم

- طلاق دے کر گھر میں ڈال لینے کی مختلف صورتوں کے احکام۔ (۴۶۰)
- دیدہ دانستہ غلط طلاق کی شہرت دینا حرام اور کارِ ابلیس ہے۔ ایسے لوگ تعزیر کے مستحق ہیں۔ (۴۶۰)
- طلاقِ بائن میں بے نکاح، اور رجعی میں بعد عدت بے نکاح اور تین میں بے حلالہ عورت سے ملنا حرام قطعی، جتنے لوگ ایسے شخص کے شریک ہوں سب مرتکب حرام فاسق۔ (۴۶۲)
- فاسق کی امامت نا جائز ہے۔ (۴۶۲)
- جو فاسق کو امامت پر برقرار رکھے گا گنہگار ہوگا۔ (۴۶۲)
- فاسق قضاء شرعی کے عہدہ کا مستحق نہیں ہوتا۔ (۴۶۲)
- فاسق کی تقلید ناجائز اور اس کا مقلد گنہگار ہے۔ (۴۶۲)
- قضاء عرف یعنی نکاح خوانی کا عہدہ بھی فاسق کو تفویض نہ کرنا چاہئے۔ (۴۶۲)
- نکاح خاص امر دین ہے اور عمر بھر صد ہا احکام دینیہ اس پر متفرع ہوتے رہتے ہیں۔ (۴۶۲)
- فاسق کا امورِ دینیہ میں کچھ اعتبار نہیں، نہ اس پر کسی بات میں اطمینان۔ (۴۶۲)
- کوئی شخص اپنی بیوی کو طلاقِ ثلاثہ دے کر اپنی مطلقہ سالی سے نکاح کر لے تو کیا حکم ہے۔ (۴۶۲)
- غیر محرم عورت کو بلا نکاح اپنے مکان میں رکھنا اور خلوت میں اس کے ساتھ ہونا فسق ہے۔ (۴۶۳)
- طلاق کے لئے مالکانہ دینے کا جو رواج ہے اس کا لینا اور دینا دونوں حرام ہیں۔ (۴۶۳)

- بطورِ خلع شوہر کو کچھ رقم دینا جائز ہے چاہے عورت خود دے یا اس کی طرف سے کوئی اور دے۔ (۴۶۴)
- بکر نے لاعلمی میں غیر کی منکوحہ سے نکاح کیا تو گنہگار نہیں۔ (۴۶۴)
- منکوحہ غیر سے لاعلمی میں نکاح کرنے والے کی اولاد کا نسب اسی نکاح سے ثابت ہوگا۔ (۴۶۴)
- خاوند والی عورت سے علم رکھنے کے باوجود نکاح کیا یا لاعلمی میں کیا اور علم آنے پر اس کو چھوڑا نہیں تو یہ زانی ہے۔ (۴۶۴)
- کسی شخص نے خاوند والی عورت سے جان بوجھ کر نکاح کیا تو اولاد شوہرِ اول کی ہوگی۔ (۴۶۴)
- غیر منکوحہ سے نکاح کرنے والے کے پیچھے نماز مکروہ تحریمی ہے پڑھ لی تو پھیرنی واجب ہے۔ (۴۶۴)
- طلاقِ بائن غیر مغلظہ کی صورت میں شوہر سے عدت کے اندر بھی نکاح ہو سکتا ہے اور دوسرے سے بعد عدت۔ (۴۶۵)
- طلاقِ بائن ہوتے ہی عورت خود مختار ہو جاتی ہے شوہر اول سے نکاح پر مجبور نہیں ہو سکتی۔ (۴۶۵)
- حلالہ سے بچنے کے لئے مرتد ہونے سے ارتداد کا گناہ الگ رہا اور پھر مسلمان ہونے کے بعد حلالہ بھی ضروری ہے۔ (۴۶۶)

Fatawa Rizvia, Volume 12

Page	Question / Subject	Fatwa / Answer	Page
466	Marriage with Bakr occurred two months after divorce. Eighteen years later, she fled from there to Khalid. Whose claim on this woman is correct? Ruling on various forms of the issue.	The wife of the deceased is entitled to inheritance.	470
466	According to Imam-e-Azam, three menstrual cycles can occur in a minimum of sixty days, and according to Sahibayn (two disciples), in forty-eight days. (Footnote)	Other than the severance of the organ or impotence, no other illness of the husband is a cause for annulment (faskh) of marriage.	470
467	If the intention is to divorce after a few days, it will not be Mut'ah (temporary marriage), but making such a habit or encouraging people towards it is not permissible.	According to the Shafi'i Imams, the meaning of obtaining the option to annul marriage (Khiyar-e-Faskh) due to established insanity, leucoderma, and leprosy.	470
468	Mut'ah marriage and temporary (Muwaqqat) marriage are not valid.	The deceased wife's entitlement to inheritance is proven from the Quranic text.	471
468	In marriage, specification of time (Tawqit) is by words.	If the deceased has no children, the wife gets a fourth share as inheritance, and if there are children, she gets an eighth share.	471
468	Divorce without a Shari'a necessity is prohibited by Shari'a.	Inheritance of the wife is among the essentials of religion (Zaruriyat-e-Deen) and there is consensus (Ijma) among all Islamic sects on this.	471
468	Do not give a valid divorce without a correct need, for Allah Almighty does not like men and women who taste much (Al-Hadith).	To say that marriage is not a means of inheritance in Shari'a is a clear word of disbelief (Kufr).	471

Page	Question / Subject	Fatwa / Answer	Page
469	What prohibition is hinted at in the holy verse "Muhsinina ghaira musafihina"?	To deny a woman her right to inheritance considering leprosy as a cause for annulment of marriage is ignorance and foolishness.	472
469	Removal of a doubt regarding Sayyiduna Imam Hasan Mujtaba and Mughira bin Shu'ba (may Allah be pleased with them).	After consummation (Zafaf), even if the marriage is annulled, the full dower (Mahr) is obligatory to be paid.	472
469	There is Shari'a permission to keep up to four wives at one time; more than that can never be gathered.	Maintenance (Nan-o-Nafqa) during the 'iddah' period after the husband's death or afterwards is not obligatory according to the consensus of the correct Hanafi and Shafi'i schools.	472
469	The carnal soul (Nafs-e-Ammara) gives with difficulty and spreads more when given slack.	Maintenance is not obligatory for a woman in 'iddah' from an invalid (fasid) marriage or 'iddah' of death, even if she is pregnant.	472
469	The widow of the deceased will definitely receive her dower (Mahr).	There is no maintenance for a disobedient (nashiza) wife.	473

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 12

पृष्ठ	प्रश्न / विषय	फ़तवा / उत्तर	पृष्ठ
466	तलाक के दो महीने बाद बक्र से निकाह हुआ। अठारह साल बाद वह वहाँ से भागकर खालिद के पास चली गई, इस महिला पर किसका दावा सही है? मसले के विभिन्न रूपों का हुक्म।	मृतक की पत्नी विरासत की हकदार होती है।	470
466	इमाम-ए-आज़म के अनुसार तीन मासिक धर्म कम से कम साठ दिनों में हो सकते हैं और साहिबैन के अनुसार अड़तालीस दिनों में। (फुटनोट)	अंग-विच्छेदन या नपुंसकता के अलावा पति की कोई और बीमारी निकाह रद्द (फ़स्ख़) करने का कारण नहीं है।	470
467	यदि नीयत यह हो कि कुछ दिनों बाद तलाक दे दूँगा, तो यह मुता (अस्थायी निकाह) नहीं होगा, लेकिन ऐसी आदत बनाना या लोगों को इसके लिए उकसाना जायज़ नहीं है।	इमाम शाफ़ई के अनुसार स्थिर पागलपन, कोढ़ और कुष्ठ रोग के कारण निकाह रद्द करने का विकल्प प्राप्त होने का अर्थ।	470
468	निकाह मुता और अस्थायी (मुवक़्क़त) निकाह सही नहीं हैं।	मृतक की पत्नी का विरासत का हकदार होना कुरानी आयत से प्रमाणित है।	471
468	निकाह में समय सीमा (तौक़ीत) शब्दों से होती है।	यदि मृतक की संतान न हो तो उसकी पत्नी को विरासत के रूप में चौथा हिस्सा मिलता है और यदि संतान हो तो आठवां हिस्सा।	471
468	बिना किसी शरीअत की आवश्यकता के तलाक देना शरई रूप से वर्जित है।	पत्नी की विरासत धर्म की अनिवार्यताओं (ज़रूरियात-ए-दीन) में से है और इस्लाम के सभी समुदायों का इस पर इज्मा (आम सहमति) है।	471
468	बिना किसी सही ज़रूरत के सही तलाक न दें क्योंकि अल्लाह तआला स्वाद चखने वाले		471

पृष्ठ	प्रश्न / विषय	फ़तवा / उत्तर	पृष्ठ
	पुरुषों और महिलाओं को पसंद नहीं फरमाता। (हदीस)	यह कहना कि शरीअत में वैवाहिक संबंध विरासत का ज़रिया नहीं है, कुफ़्र का स्पष्ट शब्द है।	
469	पवित्र आयत "मोहसिनीना ग़ैरा मुसाफ़िहीना" में किस मनाही की ओर इशारा है।	कुष्ठ रोग को निकाह खत्म करने वाला समझकर महिला के विरासत के अधिकार का इनकार करना अज्ञानता और मूर्खता है।	472
469	सैयदुना इमाम हसन मुज्तबा और मुग़ीरा बिन शुबा (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) के बारे में एक शंका का समाधान।	निकाह के पूर्ण होने (ज़फ़ाफ़) के बाद यदि निकाह रद्द भी हो जाए, तब भी पूरा मेहर अदा करना अनिवार्य होता है।	472
469	एक समय में चार तक पत्नियाँ रखने की शरई अनुमति है; इससे अधिक कभी एकत्र नहीं की जा सकतीं।	पति की मृत्यु के बाद इद्दत की अवधि या उसके बाद का भरण-पोषण (नान-ओ-नफ़्क़ा), सही हनफ़ी और शाफ़ई मज़हबों की सर्वसम्मति से वाजिब नहीं है।	472
469	नफ़्स-ए-अम्मारा (प्रवृत्त मन) सख्ती से देता है और ढील देने पर अधिक फैलता है।	निकाह-ए-फासिद (अमान्य निकाह) वाली मोअत्तदा और मौत की मोअत्तदा के लिए भरण-पोषण वाजिब नहीं होता, चाहे वह गर्भवती ही क्यों न हो।	472
469	मृतक की पत्नी को मेहर निश्चित रूप से मिलेगा।	नाशिज़ा (अवज्ञाकारी पत्नी) के लिए कोई भरण-पोषण नहीं है।	473

صفحہ	مسئلہ / عنوان	فتویٰ / حکم	صفحہ
	طلاق کے دو مہینہ کے بعد بکر سے نکاح ہوا۔		
۴۶۶	اٹھارہ سال بعد وہاں سے بھاگ کر خالد کے پاس گئی، اس عورت پر کس کا دعویٰ صحیح ہے، مسئلہ کی مختلف صورتوں کا حکم۔	متوفی کی بیوی مستحق وراثت ہوتی ہے۔	۴۷۰
۴۶۶	امام اعظم کے نزدیک تین حیض کم از کم ساٹھ دن اور صاحبین کے نزدیک اڑتالیس دن میں ہو سکتے ہیں۔ (حاشیہ)	آلہ بریدگی یا نامردی کے سوا کوئی مرض شوہر سبب فسخ نکاح نہیں۔	۴۷۰
۴۶۷	نیت ہو کہ تھوڑے دنوں بعد طلاق دے دوں گا، تو یہ متعہ نہ ہو گا، لیکن ایسی عادت بنانا یا لوگوں کو اس کی ترغیب دینا جائز نہیں۔	ائمہ شافعیہ کے نزدیک جنون، برص مستحکم اور جذام مستحکم سے خیار فسخ نکاح کے حاصل ہونے کا مطلب۔	۴۷۰
۴۶۸	نکاح متعہ اور نکاح موقت صحیح نہیں۔	زوجہ متوفی کا مستحق میراث ہونا نص قرآنی سے ثابت۔	۴۷۱
۴۶۸	نکاح میں توقیت لفظ سے ہوتی ہے۔	متوفی کی اولاد نہ ہو تو اس کی بیوی کو چوتھا اور اولاد ہو تو آٹھواں حصہ بطور میراث ملتا ہے۔	۴۷۱

صفحہ مسئلہ / عنوان		فتویٰ / حکم	صفحہ
۴۶۸	بے ضرورت شرعیہ طلاق شرعاً ممنوع ہے۔	وراثت زوجہ ضروریات دین سے ہے اور تمام فرق اسلام کا اس پر اجماع ہے۔	۴۷۱
۴۶۸	بے حاجت صحیحہ طلاق مت دو کہ اللہ تعالیٰ بہت چکھنے والے مردوں اور عورتوں کو دوست نہیں رکھتا۔ (الحدیث)	یہ کہنا کہ زوجیت شرع میں ذریعہ وراثت نہیں صریح کلمہ کفر ہے۔	۴۷۱
۴۶۹	آیت کریمہ "محصنین غیر مسافحین" میں کون سی ممانعت کی طرف اشارہ ہے۔	عروض جذام کو مزیل نکاح سمجھ کر عورت استحقاق وراثت کا انکار جہل و سفاہت ہے۔	۴۷۲
۴۶۹	سیدنا امام حسن مجتبیٰ اور مغیرہ بن شعبہ رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے بارے میں ایک شبہ کا ازالہ۔	بعد زفاف اگر نکاح فسخ بھی ہو جائے تب بھی پورا مہر لازم الادا ہوتا ہے۔	۴۷۲
۴۶۹	ایک وقت چار تک عورتیں رکھنے کی شرعی اجازت ہے اس سے زائد کبھی جمع نہیں ہو سکتی۔	بعد موت شوہر زمانہ عدت یا اس کے بعد کا نان و نفقہ باتفاق مذہب صحیح حنفی و شافعی واجب نہیں۔	۴۷۲
۴۶۹	نفس امارہ سختی سے دیتا ہے اور ڈھیل دینے سے زیادہ پاؤں پھیلاتا ہے۔	نکاح فاسد کی معتدہ اور معتدۃ الموت کا نفقہ واجب نہیں ہوتا اگرچہ حاملہ ہو۔	۴۷۲
۴۶۹	متوفی کی زوجہ کو مہر قطعاً ملے گا۔	ناشزہ کے لئے نفقہ نہیں۔	۴۷۳

Fatawa Razawiyya, Volume 12

Page	Text Content
473	If the maintenance (nafaqah) is prescribed by a judge's order, it lapses with the death of either spouse. However, if the prescribed maintenance was not received from the husband and the wife spent by taking loans under Shariah-compliant conditions, it becomes a debt upon the husband and does not lapse with death.
475	Maintenance for the wife is obligatory even if the husband is sick, as long as she remains in his custody.
475	Maintenance for a vagrant/errant woman is not mandatory for the husband.
475	If nothing has occurred from the woman's side that would forfeit maintenance, yet the husband still doesn't provide it, the judge should compel the husband to provide maintenance or else give a divorce.
475	If a woman obtains Khul' (divorce initiated by the wife) on properties like dowry with the husband's consent, it is permissible.
475	If a leprous woman is capable of fulfilling rights, divorce is not obligatory. If she is not capable, he should give a divorce; divorce becomes obligatory, and if he
473	If there is a fear of religious, worldly, life, or physical harm to the woman, she will not be forced to stay with her husband.
478	Harm is legally (Shariah) required to be repelled.
478	Allah Almighty and His Messenger (peace and blessings be upon him) have commanded: do not cause harm to women.
478	What possibility is there for a woman to stay with a cruel and oppressive husband?
478	If a woman is forced to live with her parents due to the husband's cruelty and aggression, maintenance remains obligatory on the husband.
479	If the husband cannot be corrected in any way, divorce can be obtained from him by force.

Page	Text Content
	doesn't give it, divorce can be obtained by force.
476	Divorce is not valid if granted by a Tehsildar (government official) without the husband's consent.
476	If the husband is old and unable to fulfill rights, it is his duty to give a divorce. However, the woman cannot remarry without being divorced.
477	Legally (Shariah-wise), divorce does not occur by the decisions of current (civil/ secular) courts.
477	If Zaid did not actually give a divorce, and Hind obtained a decree by presenting false witnesses, or if he gave a revocable divorce (talaq-e-raj'i) and Zaid revoked it before the iddah period ended, then it is strictly forbidden (haram-e-qati) for Hind to marry elsewhere.

Page	Text Content
479	Abandoning an obligation (wajib) is a sin for which a ruler can punish.
479	For an act of disobedience (sin) where a fixed (Hadd) penalty doesn't apply, there is discretionary punishment (Ta'zir).
479	In the Hanafi school, it is not possible for a woman to unilaterally annul the marriage herself in the event of the husband's excessiveness/transgression without a divorce.

फतावा रज़विया, जिल्द 12

पृष्ठ	पाठ्य सामग्री
473	यदि भरण-पोषण (नफ़क़ा) न्यायाधीश के आदेश द्वारा निर्धारित है, तो पति-पत्नी में से किसी एक की मृत्यु के साथ यह समाप्त हो जाता है। लेकिन यदि निर्धारित भरण-पोषण पति से प्राप्त नहीं हुआ था और पत्नी ने शरीयत के अनुसार ऋण लेकर खर्च किया था, तो यह पति पर ऋण बन जाता है और मृत्यु के साथ समाप्त नहीं होता है।
475	बीमार पति पर भी पत्नी का भरण-पोषण अनिवार्य है जब तक कि वह उसकी देखरेख में रहे।
475	आवारागर्दी करने वाली महिला का भरण-पोषण पति के लिए अनिवार्य नहीं है।
475	यदि महिला की ओर से भरण-पोषण रद्द करने वाली कोई बात नहीं हुई है और फिर भी पति भरण-पोषण नहीं देता है, तो न्यायाधीश पति को भरण-पोषण देने के लिए मजबूर करे अन्यथा तलाक देने को कहे।
475	यदि पति की सहमति से महिला मेहर आदि संपत्ति पर खुला (पत्नी द्वारा पहल किया गया तलाक) करती है, तो यह जायज़ है।
475	यदि कोढ़ी महिला अधिकारों को पूरा करने में सक्षम है, तो तलाक अनिवार्य नहीं है। यदि सक्षम नहीं है, तो उसे तलाक
473	यदि महिला को धार्मिक, सांसारिक, जान या शारीरिक हानि का डर हो, तो उसे पति के साथ रहने के लिए मजबूर नहीं किया जाएगा।
478	शरीयत के अनुसार नुकसान को दूर करना अनिवार्य है।
478	अल्लाह तआला और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का आदेश है कि औरतों को नुकसान मत पहुँचाओ।
478	एक ज़ालिम और अत्याचारी पति के पास महिला के रहने की क्या गुंजाइश हो सकती है।
478	यदि पति के ज़ुल्म और ज्यादती के कारण महिला को मजबूरी में माता-पिता के पास रहना पड़े, तो पति पर भरण-पोषण अनिवार्य है।
479	

पृष्ठ	पाठ्य सामग्री
	दे देना चाहिए; तलाक अनिवार्य हो जाता है और यदि वह नहीं देता है, तो जबरन तलाक लिया जा सकता है।
476	पति के तलाक दिए बिना तहसीलदार द्वारा दिया गया तलाक मान्य नहीं होता।
476	यदि पति बूढ़ा हो और अधिकारों को पूरा करने में सक्षम न हो, तो उस पर फ़र्ज़ है कि तलाक दे दे। हालाँकि, महिला तलाक के बिना दूसरा निकाह नहीं कर सकती।
477	मौजूदा अदालतों के फैसले से शरीयत के अनुसार तलाक नहीं होता है।
477	यदि ज़ैद ने वास्तव में तलाक नहीं दिया और हिंदा ने झूठे गवाह पेश करके डिक्री ले ली, या यदि उसने रजई तलाक (वापस लेने योग्य) दिया था और ज़ैद ने इद्दत समाप्त होने से पहले रुजू (वापसी) कर ली, तो हिंदा के लिए दूसरी जगह निकाह करना निश्चित रूप से हराम (हराम-ए-क़तई) है।

पृष्ठ	पाठ्य सामग्री
	यदि पति किसी भी तरह से ठीक न हो, तो उससे जबरन तलाक लिया जा सकता है।
479	वाज़िब (अनिवार्य कार्य) को छोड़ना एक पाप है जिस पर शासक सज़ा दे सकता है।
479	जिस पाप पर 'हद' (निश्चित सजा) लागू नहीं होती, उस पर 'तज़ीर' (विवेकाधीन दंड) है।
479	हनफ़ी मज़हब में, पति की ज़्यादती की स्थिति में बिना तलाक के औरत खुद निकाह को खत्म (फ़स्ख़) कर ले, यह संभव नहीं है।

صفحہ مضمون

نفقہ اگر مفروضہ بحکمِ حاکم ہو تو موت احد الزوجین سے ساقط ہو جاتا ہے مگر جبکہ نفقہ مفروضہ شوہر
۴۷۳ سے نہ ملا ہو اور قاضیِ شرع عورت نے قرض لے لے کر خرچ کیا ہو کہ اس صورت میں ذمہ شوہر پر دین قرار پا کر موت سے ساقط نہیں ہوتا۔

بیمار شوہر پر بھی عورت کا نان و نفقہ واجب ہے
۴۷۵ جبکہ وہ عورت اس کی قید میں رہے۔

۴۷۵ آوارہ گرد عورت کا نفقہ شوہر کے ذمے لازم نہیں۔

عورت کی طرف سے کوئی بات مسقطِ نان و نفقہ نہیں
۴۷۵ ہوئی شوہر پھر بھی نفقہ نہ دے تو حاکم شوہر کے مجبور کرے کہ وہ نفقہ دے ورنہ طلاق دے۔

شوہر کی رضا سے عورت مہر وغیرہ مال پر خلع
۴۷۵ کرے تو جائز ہے۔

صفحہ مضمون

عورت کو دینی، دُنیوی، جانی اور جسمانی ضرر کا
۴۷۳ اندیشہ ہو تو شوہر کے پاس رہنے پر مجبور نہیں کی جائے گی۔

۴۷۸ ضرر شرعاً واجب الدفع ہے۔

اللہ تعالیٰ اور رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا
۴۷۸ ارشاد ہے کہ عورتوں کو ضرر مت پہنچاؤ۔

ظالم و جابر شوہر کے پاس
۴۷۸ عورت کے رہنے کی کیا صورت ہو سکتی ہے۔

شوہر کے ظلم و تعدی کی
۴۷۸ وجہ سے عورت مجبوراً

صفحہ	مضمون
۴۷۵	جذامی عورت کے ادائے حقوق پر قادر ہو تو اس طلاق واجب نہیں، قادر نہ ہو تو طلاق دے، طلاق واجب ہو اور نہ دے تو جبراً ہی طلاق لی جا سکتی ہے۔
۴۷۶	بے شوہر کے طلاق دیئے طلاق تحصیلدار کے دیئے نہیں ہوتی۔
۴۷۶	شوہر بڈھا ہو اور عورت کے ادائے حقوق پر قادر نہ ہو تو اس پر فرض ہے کہ طلاق دے دے مگر عورت بے طلاق دئے دوسرا نکاح نہیں کر سکتی۔
۴۷۷	موجودہ کچہریوں کے فیصلہ سے شرعاً طلاق واقع نہیں ہوتی۔
۴۷۷	زید نے واقع میں طلاق نہیں دی ہندہ نے جھوٹے گواہ پیش کر کے ڈگری لے لی یا طلاقِ رجعی دی تھی اور ختمِ عدت سے پہلے زید نے رجعت کر لی تو ہندہ کو دوسری جگہ نکاح حرامِ قطعی ہے۔
۴۷۹	والدین کے پاس رہے تو نفقہ شوہر پر لازم ہے۔
۴۷۹	شوہر کسی طرح درست نہ ہو تو اس سے جبراً طلاق حاصل کی جا سکتی ہے۔
۴۷۹	ترکِ واجب گناہ جس پر حاکم سزا دے سکتا ہے۔
۴۷۹	جس معصیت پر حد لاگو نہ ہوتی ہو اس پر تعزیر ہے۔
۴۷۹	حنفی مذہب میں شوہر کی زیادتی کی صورت میں بے طلاق عورت خود فسخِ نکاح کرے ایسا ممکن نہیں۔

جلد دوازدہم (Volume Twelve) فتاویٰ رضویہ (Fatawa-e-Razawiyya)

[Left Column] - Various forms of annulment of marriage (Faskh-e-Nikah) and their rulings. (480) - Situations where there is no need for a court decree for annulment, rather it is obligatory for both the man and the woman to annul it themselves. (480) - Situations where the decree of a Qazi (Islamic judge) is a condition for the annulment of marriage. (480) - The Sharia Qazi is a representative of the pure Sharia. (481) - Leading the prayer is the right of the rulers, provided they are Muslims. (481) - Insanity or death is not an annulment of marriage. A follower (Muqallid) judge cannot rule against his school of thought (Madhab). (481) - A Fatwa or ruling based on an outweighed (Marjooh) opinion is ignorance and a violation of consensus (Ijma). (482) - A Mujtahid has been missing for centuries. (482) - If a non-Hanafi judge from the four schools of thought decides according to his Madhab, or a Hanafi judge appointed by the Sultan who is authorized to decide on an outweighed opinion at the time of need, then his judgment will be enforced. (482) - Under what circumstances can a follower (Muqallid) act upon an outweighed opinion or the school of thought of another Imam. (482) - A Mufti's fatwa on an outweighed opinion is void, and he cannot give a fatwa according to another Imam's school of thought either. (482) - A follower judge's decision according to another Imam's school of thought, when he is bound to judge by his own, is void. (482) - A follower judge restricted to judging by his school of thought deciding by another Imam's school is void. (482) - The husband's illness and disability are not reasons for the annulment of marriage. (483)

[Right Column] - In the case of delegation of divorce (Tafwid-e-Talaq), the choice remains until the end of the session. (485) - According to the Sahibayn (Imams Abu Yusuf and Muhammad), divorce does not occur with the sentence "Neither you are my wife, nor I am your husband." (486) - Divorce is by words; the thought of the heart means nothing. (487) - Divorce does not occur through promises or seeking advice. (487) - According to Imam Shafi'i (may Allah have mercy on him), separation is not due to non-payment of maintenance, but rather due to the inability to pay maintenance. (487) - Details of the issue of impotence (Inneen). (487) - It is obligatory for a man who cannot fulfill the rights of a woman to divorce her, otherwise, he will be a sinner and deserving of punishment. (487) - If a woman marries another man while her husband is alive without a divorce occurring, it will be rejected. (488) - The annulment of marriage by current court judges on the basis of insanity is void. Detailed arguments on this issue. (488) - Imam Qazi Khan prioritizes the opinion which is prevalent and reliable. (488) - Allama Ibrahim Halabi prioritizes the opinion

which is supported. (489) - Neither of the spouses has the right to annul the marriage due to a defect in the other. (489) - Seven reasons for preferring the school of thought that neither spouse has the option of annulment due to a defect (Khiyar-e-Ayb). (490)

جلد دوازدہم (बारहवाँ खंड) فتاویٰ رضویہ (फ़तावा-ए-रज़विया)

[बायां कॉलम] - निकाह खत्म (निख़्-ए-निकाह) होने के विभिन्न तरीके और उनके नियम। (४८०) - वे स्थितियाँ जिनमें निकाह खत्म करने के लिए अदालत के फैसले की ज़रूरत नहीं होती, बल्कि पति-पत्नी दोनों पर यह अनिवार्य है कि वे स्वयं इसे खत्म कर दें। (४८०) - वे स्थितियाँ जिनमें निकाह खत्म करने के लिए काज़ी (इस्लामी न्यायाधीश) का फैसला शर्त है। (४८०) - शरीयत का काज़ी, पाक शरीयत का प्रतिनिधि होता है। (४८१) - नमाज़ का नेतृत्व करना शासकों का अधिकार है, बशर्ते वे मुसलमान हों। (४८१) - पागलपन या मृत्यु निकाह का खत्म होना नहीं है। मुकल्लिद काज़ी (अनुयायी न्यायाधीश) अपने मज़हब के खिलाफ फैसला नहीं दे सकता। (४८१) - कमज़ोर (मरजूह) राय पर फतवा या फैसला देना अज्ञानता और सर्वसम्मति (इज्मा) का उल्लंघन है। (४८२) - सदियों से मुजतहिद (स्वतंत्र व्याख्याता) का अभाव है। (४८२) - चारों मज़हबों में से कोई गैर-हनफी काज़ी अपने मज़हब के अनुसार फैसला करे, या कोई हनफी काज़ी जिसे सुल्तान ने काज़ी नियुक्त किया हो और ज़रूरत पड़ने पर कमज़ोर राय पर फैसला करने की अनुमति दी हो, तो उसका फैसला लागू होगा। (४८२) - मुकल्लिद (अनुयायी) किन स्थितियों में कमज़ोर राय या किसी दूसरे इमाम के मज़हब पर अमल कर सकता है। (४८२) - कमज़ोर राय पर मुफ्ती का फतवा बातिल (अमान्य) है, और वह किसी दूसरे इमाम के मज़हब के अनुसार भी फतवा नहीं दे सकता। (४८२) - अपने मज़हब के अनुसार फैसला करने के लिए बाध्य मुकल्लिद काज़ी का किसी दूसरे इमाम के मज़हब पर फैसला करना बातिल है। (४८२) - अपने मज़हब के फैसले से बंधे हुए मुकल्लिद काज़ी का किसी दूसरे इमाम के मज़हब पर फैसला करना बातिल है। (४८२) - पति की बीमारी और विकलांगता निकाह खत्म होने का कारण नहीं है। (४८३)

[दायां कॉलम] - तलाक का अधिकार सौंपने (तफ़वीज़-ए-तलाक) की स्थिति में, विकल्प सभा समाप्त होने तक बना रहता है। (४८५) - "न तो तू मेरी पत्नी है और न ही मैं तेरा पति हूँ", इस वाक्य से साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ और मुहम्मद) के अनुसार तलाक नहीं होता। (४८६) - तलाक शब्दों से होता है, मन की सोच का कोई महत्व नहीं है। (४८७) - वादे और सलाह मांगने से तलाक नहीं होता। (४८७) - इमाम शाफ़ई (रहमतुल्लाह अलैह) के अनुसार, तलाक गुज़ारा भत्ता (नफ़क़ा) न देने के कारण नहीं, बल्कि गुज़ारा भत्ता देने में असमर्थ होने के कारण होता है। (४८७) - नामर्दी (इन्नीन) के मसले का विवरण। (४८७) - जो पुरुष स्त्री का अधिकार पूरा नहीं कर सकता, उस पर तलाक देना अनिवार्य है, अन्यथा वह पापी और दंड का पात्र होगा। (४८७) - पति के जीवित रहते हुए, तलाक हुए

बिना यदि कोई महिला किसी दूसरे पुरुष से निकाह करती है, तो वह अमान्य (मर्दुद) होगा। (४८८) - पागलपन के आधार पर वर्तमान अदालतों के न्यायाधीशों द्वारा निकाह को खत्म करना बातिल है। इस मसले के विस्तृत तर्क। (४८८) - इमाम काज़ी खान उसी राय को प्राथमिकता देते हैं जो प्रचलित और विश्वसनीय हो। (४८८) - अल्लामा इब्राहिम हलबी उसी राय को प्राथमिकता देते हैं जो समर्थित (मोय्यद) हो। (४८९) - पति-पत्नी में से किसी को भी दूसरे के दोष (ऐब) के कारण निकाह खत्म करने का अधिकार नहीं है। (४८९) - पति-पत्नी में से किसी को भी दोष के कारण निकाह खत्म करने का अधिकार (खियार-ए-ऐब) न होने के मज़हब को प्राथमिकता देने के सात कारण। (४९०)

पृष्ठ ५२/६८८

جلد دوازدہم فتاویٰ رضویہ

[Left Column] - فسخ نکاح کی مختلف صورتیں اور ان کا احکام۔ (۴۸۰) - وہ صورتیں جن میں فسخ نکاح کے لئے حاجت قضا نہیں ہوتی بلکہ مردو عورت میں سے ہر ایک پر واجب ہے کہ خود فسخ کر دے۔ (۴۸۰) - وہ صورتیں جن میں فسخ نکاح کیلئے قضاء قاضی شرط ہے۔ (۴۸۰) - قاضی شرع نائب شرع مطہر ہوتا ہے۔ (۴۸۱) - امامت در نماز حق حکام ہے بشرطیکہ وہ مسلمان ہوں۔ (۴۸۱) - جنون موت فسخ نکاح نہیں۔ مقلد قاضی اپنے مذہب کے خلاف حکم نہیں کر سکتا۔ (۴۸۱) - قول مرجوح فتویٰ اور حکم، جہل و خرق اجماع ہے۔ (۴۸۲) - مجتہد صدیوں سے مفقود ہے۔ (۴۸۲) - مذاہب اربعہ سے غیر حنفی قاضی اپنے مذہب کے مطابق فیصلہ کرے یا حنفی قاضی جسے سلطان نے منصب قضاء پر مقرر کیا ہو اور اجازت دے رکھی ہو بوقت ضرورت قول مرجوح پر فیصلہ کر دے تو اس کی قضاء نافذ ہو گی۔ (۴۸۲) - مقلد کس صورت میں قول مرجوح یا دوسرے امام کے مذہب پر عمل کر سکتا ہے۔ (۴۸۲) - مفتی کا قول مرجوح پر فتویٰ باطل ہے نیز کسی دوسرے امام کے مذہب کے مطابق بھی فتویٰ نہیں دے سکتا۔ (۴۸۲) - قاضی مقلد بالقضاء بالمذہب کا کسی دوسرے امام کے مذہب پر فیصلہ کرنا باطل ہے۔ (۴۸۲) - قاضی مقلد مقید بالقضاء بالمذہب کسی دوسرے امام کے مذہب پر فیصلہ کرنا باطل ہے۔ (۴۸۲) - شوہر کی بیماری اور معذوری سبب فسخ نکاح نہیں۔ (۴۸۳)

[Right Column] - تفویض طلاق کی صورت میں اختیار مجلس تک باقی رہتا ہے۔ (۴۸۵) - "نہ تو میری زوجہ نہ میں تیرا شوہر" اس جملہ سے صاحبین کے نزدیک طلاق واقع نہیں۔ (۴۸۶) - طلاق لفظ سے ہے دل کا تصور کچھ نہیں۔ (۴۸۷) - وعدہ اور طلب مشورہ سے طلاق نہیں ہوتی۔ (۴۸۷) - امام شافعی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کے ہاں نفقہ نہ دینے پر تفریق نہیں ہے بلکہ ادائے نفقہ پر

قادر نہ ہونے پر۔ (۴۸۷) - مسئلہ عنین کی تفصیل۔ (۴۸۷) - جو مرد عورت کا حق ادا نہیں کر سکتا اس پر طلاق دینا فرض ورنہ گنہگار و مستحق عذاب ہوگا۔ (۴۸۷) - زندگی شوہر میں بے وقوع طلاق اگر عورت دوسرے شخص سے نکاح کرے تو مردود ہو گا۔ (۴۸۸) - جنون کی بنیاد پر موجودہ کچہریوں کے حاکم کا نکاح فسخ کرنا باطل ہے۔ اس مسئلہ کے تفصیلی دلائل۔ (۴۸۸) - امام قاضی خاں اسی قول کو مقدم رکھتے ہیں جو رائج و معتمد ہو۔ (۴۸۸) - علامہ ابراہیم حلبی اسی قول کو تقدیم دیتے ہیں۔ جو مؤید ہو۔ (۴۸۹) - زوجین میں سے کسی کو دوسرے کے عیب کی وجہ سے نکاح فسخ کرنے کا اختیار نہیں۔ (۴۸۹) - احد الزوجین کو خیار عیب حاصل نہ ہونے کے مذہب کے لئے سات وجوہ ترجیح۔ (۴۹۰)

Fatawa Razawiyya Volume 12

490 - The Madhhab (school of thought) of the Imam is among the schools from which deviating without reason is never permissible. 494 - In matters of integrity and religious affairs, the word of a transgressor (fasiq) or a non-Muslim is not reliable.

490 - Imam Abu Yusuf is a supreme pillar of the Madhhab. 494 - Separation by a judge constitutes a definitive divorce (talaq ba'in).

490 - After the statement of Imam-e-Azam (may Allah be pleased with him), the word of Imam Abu Yusuf is preferred and prioritized. 494 - In divorce, a waiting period (iddah) of three menstrual cycles is obligatory for a menstruating woman.

490 - No book can reach the majestic status of the primary texts (Mutun). 494 - Marriage to an impotent man is valid, and if divorced, the woman is entitled to her dower (mahr).

490 - According to the clarification of scholars, commentaries (Shuruh) are prioritized over fatwas. 495 - A doctor's certificate alone is insufficient and unreliable to prove impotence.

491 - The rule is that practice will be based on the statement upon which the majority of authoritative scholars agree. 496 - Marriage to an impotent man is permissible; if he is unable to fulfill the woman's rights in intercourse, it is obligatory for him to grant a divorce immediately.

491 - The rule is that practice will be based on the statement upon which the majority of authoritative scholars agree. 496 - Marriage to an impotent man is valid; a ruling to annul the marriage will not be given solely based on the woman's claim of impotence.

491 - The preference given by Imam Qazi Khan takes precedence over the preferences of others. 496 - If a man is unable to fulfill marital rights, it is obligatory (fard) to give a divorce.

491 - Imam Qazi Khan is a profound jurist (faqih-un-nafs). 497 - If an impotent husband does not grant a divorce, the woman and the man should appoint a learned jurist as an arbitrator.

491 - What is contained in the primary texts (Mutun) and commentaries (Shuruh) takes precedence over what is in the Fatwas. 497 - Details of the issue of separation due to impotence (innin).

491 - Refutation of the opposing narration regarding insanity; even in that narration, it is necessary to give a full year's grace period from the day of the hearing. 499 - In Islam, there is no causing harm and no reciprocating harm (la darara wa la dirara).

492 - After the grace period, they will remain husband and wife as usual until the woman's second claim. 500 - If the man also does not agree to appoint an arbitrator, then the woman should present the claim of the husband's impotence to the most learned scholars of the city.

492 - Upon the re-presentation of the claim, the judge (Qazi) will give the woman the choice. If she exercises her choice regarding herself in that same gathering, the judge will effect the separation, otherwise, the choice will become void.

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

490 - इमाम का मज़हब, मज़ाहिब में से है जिससे बिना वजह हटना हरगिज़ जायज़ नहीं। 494 - दयानत और मज़हबी मामलात में फ़ासिक़ और ग़ैर-मुस्लिम की बात मोतबर नहीं।

490 - इमाम अबू यूसुफ़ मज़हब के अज़ीम अरकान हैं। 494 - हाकिम द्वारा कराई गई तफ़रीक़ (अलगाव) तलाक़-ए-बाइन होती है।

490 - इमाम-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के इरशाद के बाद इमाम अबू यूसुफ़ का क़ौल मुरज्जह (वरीयता प्राप्त) और मुक़द्दम (सर्वोपरि) है। 494 - तलाक़ में हाएज़ा (ऋतुस्वती) स्त्री के लिए तीन हैज़ (मासिक धर्म) की इद्दत फ़र्ज़ है।

490 - मतून की जलालत-ए-शान (महानता) को कोई किताब नहीं पहुँच सकती। 494 - नामर्द का निकाह सही हो जाता है और अगर तलाक़ हो तो औरत महर पाएगी।

490 - उलमा की तसरीह (स्पष्टीकरण) के मुताबिक़ शूरूह (व्याख्याएं) फ़तावा पर मुक़द्दम हैं। 495 - नामर्दी साबित करने के लिए महज़ डॉक्टर का सर्टिफिकेट नाकाफ़ी और ना-मोतबर है।

491 - क़ायदा यह है कि अमल उस क़ौल पर होगा जिस पर जज़्म (दृढ़ता) व एतमाद करने वाले कसीर (बहुसंख्यक) हों। 496 - नामर्द का निकाह जायज़ है, अगर हमबिस्तरी में औरत के हक़ अदा करने पर क़ादिर न हो तो उस पर फ़र्ज़ है कि फ़ौरन तलाक़ दे दे।

491 - क़ायदा यह है कि अमल उस क़ौल पर होगा जिस पर जज़्म व एतमाद करने वाले कसीर हों। 496 - नामर्द का निकाह जायज़ है, औरत के दावे-ए-नामर्दी पर ही निकाह फ़स्ख़ (रद्द) करने का हुक्म न होगा।

491 - इमाम क़ाज़ी ख़ां की तरजीह औरों की तरजीह पर मुक़द्दम है। 496 - मर्द अदा-ए-हुक़ूक़-ए-ज़ौजियत पर क़ादिर न हो तो तलाक़ देना फ़र्ज़ है।

491 - इमाम क़ाज़ी ख़ां फ़क़ीह-उन-नफ़्स (गहन विधिवेत्ता) हैं। 497 - नामर्द शौहर अगर तलाक़ न दे तो औरत और मर्द किसी फ़क़ीह आलिम को पंच (मध्यस्थ) मुक़र्रर करें।

491 - जो मतून व शूरूह में है वह उस पर मुक़द्दम है जो फ़तावा में है। 497 - मसला-ए-तफ़रीक़-ए-उन्नीन (नामर्दी के कारण अलगाव) की तफ़सील।

491 - मसला-ए-जुनून पर रिवायत-ए-ख़िलाफ़ की तरदीद (खंडन), उस रिवायत में भी रोज़-ए-मुराफ़ा से एक साल कुल्ली की मोहलत देनी ज़रूरी है। 499 - इस्लाम में न नुक़सान पहुँचाना है और न ही नुक़सान का बदला नुक़सान से देना है।

492 - मोहलत के बाद औरत के दावा-ए-सानिया (दूसरे दावे) तक बदस्तूर मियाँ-बीवी रहेंगे। 500 - अगर मर्द पंच मुक़र्रर करने पर भी राजी न हो तो औरत वहाँ के आलम तरीन उलमा-ए-बलद (शहर के सबसे विद्वान विद्वान) के यहाँ शौहर की नामर्दी का दावा पेश करे।

492 - दोबारा दावा पेश होने पर क़ाज़ी औरत को इख़्तियार देगा। इसी मज्लिस में अपने नफ़्स को इख़्तियार किया तो क़ाज़ी तफ़रीक़ कर देगा वरना इख़्तियार बातिल होगा।

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

۴۹۰ - مذہب امام، امام مذاہب سے ہے جس سے بلا وجہ عدول ہر گز جائز نہیں۔ ۴۹۴ - دیانات اور مذہبی معاملات میں فاسق و غیر مسلم کی بات معتبر نہیں۔

۴۹۰ - امام ابو یوسف اعظم ارکان مذہب ہیں۔ ۴۹۴ - تفریق حاکم طلاق بائن ہوتی ہے۔

۴۹۰ - امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے ارشاد کے بعد امام ابو یوسف کا قول مرجح و مقدم ہے۔ ۴۹۴ - طلاق میں حائضہ کے لئے تین حیض کی عدت فرض ہے۔

۴۹۰ - متون کی جلالت شان کو کوئی کتاب نہیں پہنچ سکتی۔ ۴۹۴ - نامرد کا نکاح صحیح ہو جاتا ہے اور طلاق ہو تو عورت مہر پائے گی۔

۴۹۰ - علماء کی تصریح کے مطابق شروح فتاوی پر مقدم ہیں۔ ۴۹۵ - ثبوت نامردی کے لئے محض سند ڈاکٹر ناکافی و نامعتبر ہے۔

۴۹۱ - قاعدہ یہ ہے کہ عمل اس قول پر ہوگا جس پر جزم و اعتماد کرنے والے کثیر ہوں۔ ۴۹۶ - نامرد کا نکاح جائز ہے اگر ہمبستری میں عورت کے حق ادا کرنے پر قادر نہ ہو تو اس پر فرض ہے کہ فوراً طلاق دے دے۔

۴۹۱ - قاعدہ یہ ہے کہ عمل اس قول پر ہوگا جس پر جزم و اعتماد کرنے والے کثیر ہوں۔ ۴۹۶ - نامرد کا نکاح جائز عورت کے دعوی نامردی پر ہی فسخ نکاح کا حکم نہ ہوگا۔

۴۹۱ - امام قاضی خاں کی ترجیح اوروں کی ترجیح پر مقدم ہے۔ ۴۹۶ - مرد ادائے حقوق زوجیت پر قادر نہ ہو تو طلاق دینا فرض ہے۔

۴۹۱ - امام قاضی خاں فقیہ النفس ہیں۔ ۴۹۷ - نامرد شوہر اگر طلاق نہ دے تو عورت اور مرد کسی فقیہ عالم کو پنچ مقرر کریں۔

۴۹۱ - جو متون و شروح میں ہے وہ اس پر مقدم ہے جو فتاوی میں ہے۔ ۴۹۷ - مسئلہ تفریق عنین کی تفصیل۔

۴۹۱ - مسئلہ جنون پر روایت خلاف کی تردید، اس روایت میں بھی روز مرافعہ سے ایک سال کلی کی مہلت دینی ضروری ہے۔ ۴۹۹ - اسلام میں ضرر اور ضرار نہیں۔

۴۹۲ - مہلت کے بعد عورت کے دعوی ثانیہ تک بدستور میاں بیوی رہیں گے۔ ۵۰۰ - اگر مرد پنچ مقرر کرنے بھی راضی نہ ہو تو عورت وہاں کے اعلم علماء بلد کے یہاں شوہر کے نامردی کا دعوی پیش کرے۔

۴۹۲ - دوبارہ دعوی پیش ہونے پر قاضی عورت کو اختیار دے گا۔ اسی مجلس میں اپنے نفس کو اختیار کیا تو قاضی تفریق کر دے گا ورنہ اختیار باطل ہوگا۔

Fatawa Razawiya, Volume 12

Serial No.	Topic Description	Page No.
501	Details of the issue of separation.	508
501	In this situation, it is mandatory for Zaid, if he is unable to fulfill the rights, to give a divorce.	508
502	An impotent man divorced a woman; now he files a case in court claiming no divorce occurred. He is a sinner. Yes, if the iddah (waiting period) was remaining and he files for return (rujoo), it is admissible.	508
502	Another issue regarding an impotent person (Anin).	508
503	In the Hanafi school, one spouse does not have the authority to annul the marriage due to a defect in the other. According to Imam Muhammad (RA), there is authority, but this is contrary to the school's primary position. Nonetheless, in case of real necessity, Imam Muhammad's view can be acted upon.	509
503	After proof of impotence, the man will be given a full year's grace. If he becomes capable with the woman during this time, well and good; otherwise, upon the woman's claim and the continued proof of impotence, the judge will give the woman the choice: she can agree to stay with the husband or seek separation. If she immediately says she wants separation, the judge will separate them.	509
504	Details of Imam Muhammad's issue in the case of the option (Khiyar) due to defects in either spouse.	509
504	The wife of a missing person (Mafqud-ul-Khabar) should wait until the husband's age would have been seventy (70) years.	509
506	Separation due to a defect cannot occur without the order of a Sharia judge.	509
506	Statement of the positions of Imam Ahmad, Imam Shafi'i, and Imam Malik regarding the wife of a missing person.	509
506	Where there is no Sharia Qazi (judge), the religious scholar who is the most knowledgeable in jurisprudence (Fiqh) among all the people of the city is the Sharia judge.	509
506		509

Serial No.	Topic Description	Page No.
	The decree of Commander of the Faithful, Maula Ali (Karam Allah Wajhahu al-Karim) regarding the wife of a missing person.	
506	If an impotent man is unable to fulfill the wife's rights, it is obligatory upon him to give a divorce. If the man cruelly refuses to divorce, the woman should present the matter before a judge, who should proceed with the separation.	510
506	In case of true necessity, following any Imam (Taqleed) can be done specifically in that issue, while observing the rules of their schools.	510
507	Separation by a judge results in a 'Talaq-e-Ba'in' (irrevocable divorce).	510
507	A husband tried to kill his wife but she survived; this does not result in divorce or separation.	510
507	How separation between spouses will occur where there is no Sharia judge.	510
507	According to the Hanafis, the absence of the husband or his poverty leading to non-payment of maintenance (nafaqah) is not a cause for separation.	510
508	If intercourse has happened even once, the right to claim impotence (Aniniyat) is lost.	511
508	A woman's vagina was impenetrable; after marriage, the husband could never perform intercourse, nor were there any children. Now that woman has passed away; what rights of this woman are incumbent upon the husband?	511

फतावा रज़विया, जिल्द 12

क्रम संख्या	विषय विवरण	पृष्ठ संख्या
५०१	अलगाव (तफ़रीक़) के मसले का विवरण।	५०८
५०१	इस स्थिति में ज़ैद पर अनिवार्य है कि यदि वह हक़ अदा करने में सक्षम न हो तो तलाक़ दे दे।	५०८
५०२	नामर्द ने औरत को तलाक़ दे दी, अब कचहरी में तलाक़ न होने का दावा करता है; वह गुनहगार है। हाँ, अगर इद्दत बाकी थी और रुजू (वापसी) का दावा करता है तो वह सुना जा सकता है।	५०८
५०२	एक और मसला 'अनीन' (नामर्द) के बारे में।	५०८
५०३	हनफी मज़हब में पति-पत्नी में से किसी एक के दोष के कारण दूसरे को निकाह रद्द करने का अधिकार नहीं है। इमाम मुहम्मद (रह.) के अनुसार अधिकार है, लेकिन यह मज़हब के विरुद्ध है। फिर भी, वास्तविक आवश्यकता होने पर इमाम मुहम्मद के कथन पर अमल किया जा सकता है।	५०९
५०३	नामर्दी साबित होने के बाद मर्द को पूरे एक साल की मोहलत दी जाएगी। अगर इस दौरान वह औरत पर सक्षम हो गया तो ठीक, वरना फिर औरत के दावा करने और अब भी नामर्दी साबित होने पर हाकिम औरत को अधिकार देगा कि चाहे वह शौहर के पास रहना स्वीकार करे या जुदाई। अगर वह तुरंत कहेगी कि मैं जुदाई चाहती हूँ, तो हाकिम दोनों के बीच अलगाव कर देगा।	५०९
५०४	पति-पत्नी में से किसी एक के दोष के कारण खियार (विकल्प) की स्थिति में इमाम मुहम्मद के मसले का विवरण।	५०९
५०४	मफ़क़ूदुल ख़बर (लापता) की बीवी शौहर की उम्र सत्तर (७०) साल होने तक इंतज़ार करे।	५०९
५०६	दोष के कारण अलगाव बिना शरीयत के हाकिम के आदेश के नहीं हो सकता।	५०९
५०६	मफ़क़ूदुल ख़बर की पत्नी के बारे में इमाम अहमद, इमाम शाफ़ई और इमाम मालिक के मज़हब का बयान।	५०९

क्रम संख्या	विषय विवरण	पृष्ठ संख्या
५०६	जहाँ शरीयत का क़ाज़ी न हो, वहाँ जो आलिम-ए-दीन शहर के तमाम लोगों में फ़िक़्ह का सबसे बड़ा जानकार हो, वही शरीयत का हाकिम है।	५०९
५०६	मफ़क़ूदुल ख़बर की पत्नी के बारे में अमीरुल मोमिनीन मौला अली (करम अल्लाह वजहुहुल करीम) का फरमान।	५०९
५०६	यदि नामर्द पत्नी के हक़ अदा करने पर सक्षम न हो, तो उस पर फ़र्ज़ है कि वह तलाक़ दे दे। अगर मर्द ज़ुल्म के तौर पर तलाक़ न दे, तो औरत मसले को क़ाज़ी के सामने पेश करे और वह अलगाव की प्रक्रिया पूरी कराए।	५१०
५०६	सच्ची ज़रूरत के समय किसी इमाम का अनुसरण (तक़लीद) केवल उसी मसले में उनके मज़हब के नियमों के पालन के साथ किया जा सकता है।	५१०
५०७	हाकिम द्वारा कराया गया अलगाव 'तलाक़-ए-बाइन' (अटल तलाक़) हो जाता है।	५१०
५०७	शौहर ने अपनी ओर से औरत को मार डाला लेकिन वह बच गई, इससे तलाक़ या अलगाव नहीं होगा।	५१०
५०७	जहाँ शरीयत का क़ाज़ी न हो, वहाँ पति-पत्नी के बीच अलगाव की क्या स्थिति होगी।	५१०
५०७	हनफ़ियों के नज़दीक शौहर की ग़ैर-मौजूदगी या तंगी के कारण ख़र्च (नफ़क़ा) न देना अलगाव का कारण नहीं है।	५१०
५०८	एक बार भी संभोग हो चुका हो, तो नामर्दी (अनीनियत) के दावे का अधिकार नहीं रहता।	५११
५०८	औरत का गुप्तांग प्रवेश के अयोग्य था; निकाह के बाद कभी भी पति संभोग नहीं कर सका और न ही कोई संतान हुई। अब वह औरत मर गई है; इस औरत के क्या-क्या अधिकार शौहर पर लागू हो सकते हैं?	५११

نمبر شمار	تفصیل مضمون	صفحہ نمبر
۵۰۱	مسئلہ تفریق کی تفصیل۔	۵۰۸
۵۰۱	اس صورت میں زید البتہ واجب ہے کہ ادائے حق پر قادر نہ ہو تو طلاق دے دے۔	۵۰۸
۵۰۲	نامرد نے عورت کو طلاق دے دی، اب کچہری میں نالش عدم طلاق کی کرتا ہے گنہگار ہے ہاں اگر عدت باقی تھی اور رجعت کی نالش کرتا ہے مسموع ہے۔	۵۰۸
۵۰۲	ایک اور مسئلہ عنین۔	۵۰۸
۵۰۳	مذہب حنفی میں عیب احد الزوجین سے دوسرے کو فسخ نکاح کا اختیار نہیں، امام محمد رحمتہ اللہ علیہ کے نزدیک اختیار ہے مگر یہ خلاف مذہب ہے، بایں ہمہ ضرورت واقعیہ ہو تو امام محمد کے قول پر عمل کیا جاسکتا ہے۔ ثبوت نامردی کے بعد مرد کو سال بھر کامل کی مہلت دی جائے گی، اگر اس میں عورت پر قادر ہو گیا فبہا، ورنہ پھر عورت کے دعویٰ کرنے اور اب بھی نامردی ثابت ہو جانے پر حاکم عورت کو اختیار دے گا کہ چاہے شوہر کے پاس رہنا مانے یا جدائی اگر وہ فوراً کہے گی کہ جدائی چاہتی ہوں تو دونوں میں تفریق کر دے گا۔	۵۰۹
۵۰۴	عیب احد الزوجین سے حصوں خیار کی صورت میں مسئلہ امام محمد کی تفصیل۔	۵۰۹
۵۰۴	مفقود الخبر کی بیوی شوہر کی عمر ستر ۷۰ سال ہونے تک انتظار کرے۔	۵۰۹
۵۰۶	عیب کی وجہ سے تفریق بے حکم حاکم شرع نہیں ہو سکتی۔	۵۰۹

نمبر شمار	تفصیل مضمون	صفحہ نمبر
۵۰۶	زوجہ مفقود الخبر کے بارے میں امام احمد، امام شافعی اور امام مالک کے مذہب کا بیان۔	۵۰۹
۵۰۶	جہاں قاضی شرع نہ ہو وہاں جو عالم دین تمام اہل شہر میں فقہ کا اعلم ہو وہ حاکم شرعی ہے۔	۵۰۹
۵۰۶	مفقود الخبر کی زوجہ کے بارے میں امیر المومنین مولیٰ علی کرم اللہ وجہہ الکریم کا فرمان۔	۵۰۹
۵۰۶	نامرد ادائے حق زوجہ پر قادر نہ ہو تو اس پر فرض ہے کہ طلاق دے دے اگر مرد ظلماً طلاق نہ دے تو عورت مسئلہ کو قاضی کے سامنے پیش کرے اور وہ مسئلہ تفریق پر عمل کرائے۔	۵۱۰
۵۰۶	ضرورت صادقہ میں کسی امام کی تقلید صرف اس مسئلہ میں ان کے مذاہب کی رعایت کے ساتھ کی جاسکتی ہے۔	۵۱۰
۵۰۷	تفریق حاکم سے طلاق بائن ہو جاتی ہے۔	۵۱۰
۵۰۷	شوہر نے اپنے طور پر عورت کو مار ڈالا مگر وہ بچ گئی، اس سے طلاق یا تفریق نہ ہوگی۔	۵۱۰
۵۰۷	جہاں قاضی شرع نہ ہو وہاں تفریق بین الزوجین کی صورت ہوگی۔	۵۱۰
۵۰۷	حنفیہ کے نزدیک غیبت زوج یا عسرت کے سبب عدم ادائے نفقہ باعث تفریق نہیں۔	۵۱۰
۵۰۸	ایک بار بھی ہمبستری ہو چکی تو دعویٰ عنینیت کا حق نہیں پہنچتا،	۵۱۱

نمبر شمار	تفصیل مضمون	صفحہ نمبر
۵۰۸	عورت کا اندام نہانی ناقابل ادخال تھا بعد از نکاح کبھی شوہر وزن میں مجامعت نہ ہو سکی اور نہ کوئی اولاد ہوئی اب وہ عورت فوت ہو گئی اس عورت کے کیا کیا حقوق شوہر پر عائد ہو سکتے ہیں۔	۵۱۱

Fatawa Razawiyya | Volume 12

511 - The husband does not have the right to claim annulment due to a defect in the woman. | 532 - Some words of revocable divorce (talaq-e-raj'i). 513 - Chapter on Allusions (Bab al-Kinayah). | 532 - Seventy-three (73) situations where revocable divorce occurs without the need for intention. 513 - Rahiq al-Ihaq fi Kalimat al-Talaq (On the explanation of allusive words of divorce). | 549 - Twenty situations where, if there is intention, one revocable divorce occurs, and if there is no intention, nothing happens. 513 - Irrevocable divorce (bain) is that divorce by which a woman immediately exits the marriage. | 552 - Twelve (12) situations in divorce are prohibited, i.e., they occur in such a state while the woman is still under the bond of marriage or iddah (waiting period) and the man still has some divorce left in his hand. 513 - The first form of irrevocable divorce. | 556 - List of divorce words. 514 - The second form of irrevocable divorce. | 556 - In all these cases, if the intention is divorce, an irrevocable divorce will occur. 514 - The third form of irrevocable divorce. | 558 - "I sold you to your hand" is an allusive divorce if no compensation is mentioned and there is no need for the woman to say "I bought." (Footnote) 515 - The fourth form of irrevocable divorce. | 558 - Just saying "separated" or "became [separated]" is not enough, even if said with the intention of divorce. (Footnote) 515 - In these four situations, there is no specific word; all words have the same ruling. | 558 - If he said "I gave you to your brother, maternal uncle, paternal uncle, or a stranger," nothing happens. (Footnote) 515 - The fifth form of irrevocable divorce. | 558 - Saying "Nothing remains between me and you" results in nothing even if he intended divorce. (Footnote) 515 - Certain words are prescribed for the fifth situation. | 559 - Upon the wife's request for a divorce deed (farigh-khati), the husband wrote back "there is a divorce deed from my side three times," then three divorces occurred. 515 - In revocable divorce, the right of return (ruju') will be given within the waiting period (iddah). | 559 - When Zaid gave three divorces, it is purely forbidden for the divorced woman to go to him. 515 - Some words of irrevocable divorce. | 559 - A woman divorced three times cannot remarry the first husband without halala. 515 - One hundred and twenty-five (125) situations where if there is an intention of divorce, an irrevocable divorce will occur. | 559 - The word "farigh-khati" (divorce deed) is explicit in meaning divorce. 515 - Thirty-five situations where an irrevocable divorce will be ruled without the need for intention.

फतावा रज़विया | जिल्द बारहवीं

५११ - स्त्री के दोष के कारण पति को निकाह रद्द करने का दावा करने का अधिकार नहीं। | ५३२ - तलाक-ए-रजई (प्रतिसंहरणीय तलाक) के कुछ शब्द। ५१३ - बाबुल किनाया (इशारों में बात करने का अध्याय)। | ५३२ - तिहत्तर (७३) स्थितियाँ जिनमें नीयत (इरादे) की आवश्यकता के बिना तलाक-ए-रजई हो जाता है। ५१३ - रहीकुल इहकाक फ़ी कमातिल तलाक़ (तलाक के सांकेतिक शब्दों के वर्णन में)। | ५४९ - बीस स्थितियाँ जिनमें यदि नीयत हो तो एक तलाक-ए-रजई पड़ेगा और यदि नीयत न हो तो कुछ नहीं होगा। ५१३ - बाइन वह तलाक है जिसके कारण स्त्री तुरंत निकाह से निकल जाए। | ५५२ - तलाक में बारह (१२) स्थितियाँ वर्जित हैं, अर्थात वे ऐसे हाल में पड़ती हैं जब तक स्त्री निकाह या इद्दत की कैद में हो और पुरुष के हाथ में कोई तलाक शेष हो। ५१३ - तलाक-ए-बाइन की पहली सूरत। | ५५६ - तलाक के शब्दों की सूची। ५१४ - तलाक-ए-बाइन की दूसरी सूरत। | ५५६ - इन सभी स्थितियों में यदि तलाक की नीयत हो तो तलाक-ए-बाइन हो जाएगा। ५१४ - तलाक-ए-बाइन की तीसरी सूरत। | ५५८ - "मैंने तुझे तेरे हाथ बेच दिया" सांकेतिक तलाक है यदि किसी मुआवजे का उल्लेख न हो और स्त्री के यह कहने की भी आवश्यकता नहीं कि मैंने खरीदा। (हाशिया/फुटनोट) ५१५ - तलाक-ए-बाइन की चौथी सूरत। | ५५८ - केवल "जुदा हूँ" या "हुआ" काफी नहीं, भले ही तलाक की नीयत से कहे। (हाशिया) ५१५ - इन चारों सूरतों में किसी शब्द की विशिष्टता नहीं है, सभी शब्दों का एक ही हुक्म है। | ५५८ - यदि कहा "मैंने तुझे तेरे भाई, मामा, चाचा या किसी अजनबी को दे दिया" तो कुछ नहीं। (हाशिया) ५१५ - तलाक-ए-बाइन की पाँचवीं सूरत। | ५५८ - "मुझ में तुझ में कुछ न रहा" कहने से कुछ नहीं होता चाहे तलाक की नीयत करे। (हाशिया) ५१५ - इस सूरत में पाँचवें के लिए कुछ शब्द निर्धारित हैं। | ५५९ - पति ने पत्नी की फारग-खती (तलाकनामा) की मांग पर लिखकर भेजा कि मेरी तरफ से तीन बार फारग-खती है, तो तीन तलाकें हो गईं। ५१५ - तलाक-ए-रजई में इद्दत के अंदर रुजू (वापसी) का अधिकार दिया जाएगा। | ५५९ - जब ज़ैद ने तीन तलाकें दे दीं तो तलाक़शुदा का उसके पास जाना पूर्णतः हराम है। ५१५ - तलाक-ए-बाइन के कुछ शब्द। | ५५९ - तीन बार तलाक़शुदा महिला का हलाला के बिना पहले पति से निकाह नहीं हो सकता। ५१५ - एक सौ पच्चीस (१२५) स्थितियाँ जिनमें यदि तलाक की नीयत हो तो तलाक-ए-बाइन हो जाएगा। | ५५९ - शब्द 'फारग-खती' तलाक के अर्थ में स्पष्ट है। ५१५ - पैंतीस स्थितियाँ जिनमें नीयत की आवश्यकता के बिना तलाक-ए-बाइन का हुक्म दिया जाएगा।

۵۱۱ - عورت کے عیب کے سبب شوہر کو دعوی فسخ نہیں۔ | ۵۳۲ - طلاق رجعی کے بعض الفاظ ۵۱۳ - باب الکنایہ | ۵۳۲ - تہتر ۷۳ صورتیں جن بے حاجت نیت طلاق رجعی پڑتی ہے۔ ۵۱۳ - رحیق الاحقاق فی کلمات الطلاق (طلاق کے کنائی الفاظ کے بیان میں) | ۵۴۹ - بیس صورتیں جن میں ایک اگر نیت ہو تو اگر طلاق رجعی پڑے گی اور اگر نیت نہ ہو تو کچھ نہیں۔ ۵۱۳ - بائن وہ طلاق ہے جس کے سبب عورت فوراً نکاح سے نکل جائے۔ | ۵۵۲ - طلاق میں بارہ ۱۲ صورتیں منع ہیں یعنی مرد ان حال پڑ جاتی ہے جب تک عورت پر قید نکاح یا عدت اور مرد کے ہاتھ میں کوئی طلاق باقی ہے۔ ۵۱۳ - طلاق بائن کی پہلی صورت۔ | ۵۵۶ - فہرست الفاظ طلاق۔ ۵۱۴ - طلاق بائن کی دوسری صورت۔ | ۵۵۶ - ان سب صورتوں میں اگر نیت طلاق ہو تو طلاق بائن پڑ جائے گی۔ ۵۱۴ - طلاق بائن کی تیسری صورت۔ | ۵۵۸ - میں تجھے تیرے ہاتھ بیچاکنایہ طلاق ہے اگر کسی عوض کا ذکر نہ کرے اور عورت کے اس کہنے کی بھی حاجت نہیں کہ میں نے خریدا۔ (حاشیہ) ۵۱۵ - طلاق بائن کی چوتھی صورت۔ | ۵۵۸ - فقط جدا ہوں یا ہوا کافی نہیں، اگرچہ بہ نیت طلاق کہے۔ (حاشیہ) ۵۱۵ - ان چاروں صورتوں میں کسی لفظ کی تخصیص نہیں سب الفاظ کا یک ہی حکم ہے۔ | ۵۵۸ - اگر کہا میں نے تجھے تیرے بھائی، ماموں، چچایا کسی اجنبی کو دے دیا تو کچھ نہیں۔ (حاشیہ) ۵۱۵ - طلاق بائن کی پانچویں صورت۔ | ۵۵۸ - "مجھ میں تجھ میں کچھ نہ رہا" کہنے سے کچھ نہیں ہوتا اگرچہ نیت طلاق کرے۔ (حاشیہ) ۵۱۵ - اس صورت میں پنجم کے لئے کچھ الفاظ مقرر ہیں۔ | ۵۵۹ - شوہر نے بیوی کے فارخطی کے مطالبے پر لکھ بھیجا کہ میری طرف سے تین مرتبہ فارخطی ہے تو تین طلاقیں ہو گئیں۔ ۵۱۵ - طلاق رجعی میں عدت کے اندر رجعت کا اختیار دی جائے گا۔ | ۵۵۹ - جب زید نے تین طلاقیں

دے دیں تو مطلقہ کا اس کے پاس جانا حرام محض ہے۔ ۵۱۵ - طلاق بائن کے بعض الفاظ | ۵۵۹ - مطلقہ ثلاثہ کا شوہر اول سے بلا حلالہ نکاح نہیں ہو سکتا۔ ۵۱۵ - ایک سو پچیس ۱۲۵ صورتیں جن میں اگر طلاق کی نیت ہو تو طلاق بائن پڑ جائے گی۔ | ۵۵۹ - لفظ فارخطی معنی طلاق میں صریح ہے۔ ۵۱۵ - پینتیس صورتیں جن میں بلا حاجت نیت طلاق بائن کا حکم دیا جائے گا۔

Fatawa Razawiya, Volume 12

Rulings / Details	Ref
If there are revocable divorces (talaq-e-raj'i), one can reconcile within the 'iddah period. If three divorces occur, the woman is not lawful for the first husband without halala. If there are two irrevocable divorces (ba'in), the woman leaves the marriage, but he can remarry her with her consent, whether the 'iddah has passed or not.	569
The phrase "I leave/release you" (chhodta hoon) is explicit (sarih); if said three times, a Mughallazah (final) divorce occurs.	570
Scholars do not demand references for self-evident matters.	570
Demanding a reference from an ignorant person along with the text is bad etiquette.	570
During a fight between father-in-law and son-in-law, if the son-in-law says "If you get her released tomorrow, I leave	570
"I have cleared it up" (Safai de diya) - this phrase is an allusion (kinaya); if there is intention, one irrevocable divorce (talaq-e-ba'in) occurs.	572
An irrevocable divorce (ba'in) does not follow another irrevocable one. If the husband swears an oath claiming lack of intention for divorce, it shall be accepted. There is no need for a judge or arbiter to administer the oath; the woman herself can take this oath from the husband.	573
The phrase "La Da'wa" is synonymous with the Arabic phrase "anki mujaratun"; if there is intention, an irrevocable divorce (talaq-e-ba'in) will occur.	574
If the husband refuses to swear an oath regarding the lack of intention for divorce, the woman should present the case before a judge; in case of refusal, the judge will decree separation.	575
If the husband intended divorce with the word "La Da'wa" and now lies by swearing an oath otherwise, the divorce has occurred before	575

Rulings / Details	Ref
her today," one revocable divorce (talaq-e-raj'i) will occur.	
If he said "Get her married to someone else" with the intention of divorce, an irrevocable divorce (talaq-e-ba'in) occurs; in case of denial of intention, the husband's sworn statement is reliable.	570
Two irrevocable divorces will occur from the phrase "I have left her, she is of no use to me."	571
After an irrevocable divorce, if the woman does not agree to remarry, she cannot be forced.	571
"I have left you" is explicit (sarih), and "You are of no use to me" is allusive (kinaya).	571
When an irrevocable divorce (ba'in) follows a revocable one (raj'i), it makes it irrevocable as well.	571
"Go wherever you want, find another husband" - these words are allusions (kinaya); intention is a condition for divorce to occur through them.	572

Rulings / Details	Ref
Allah, but the burden of it is on the husband; there is no blame on the woman.	
Repeated question regarding the phrase "La Da'wa".	575
"She is not my wife, I have no concern with her" - these words are not of divorce. Even if there is an intention for divorce, no divorce will occur through them.	576
"She is no longer my wife, she is out of my marriage, she is of no use to me" - these are allusive words (kinaya).	577
The common public's assumption is wrong that if a woman leaves home without her husband's permission, she is out of the marriage.	578
An irrevocable divorce (talaq-e-ba'in) does not follow another irrevocable one. For example, if he says "You are divorced irrevocably" then says it again, only one irrevocable divorce will occur.	578

अहकाम व तफ़सीलात	संदर्भ
यदि रजई तलाकें हों तो इद्दत के भीतर रुजूअ (सुलह) किया जा सकता है, तीन तलाकें हो जाएं तो बिना हलाला वह औरत पहले शौहर के लिए जायज़ नहीं, और दो तलाकें बाइन हों तो औरत निकाह से निकल गई लेकिन उसकी रज़ामंदी से दोबारा निकाह किया जा सकता है चाहे इद्दत गुज़र चुकी हो या नहीं।	५६९
"छोड़ता हूँ" का लफ़्ज़ सरीह है; तीन बार कहा तो तलाक मुग़ल्लज़ह वाक़े होगी।	५७०
स्पष्ट बातों पर अहल-ए-इल्म (विद्वान) सनद (संदर्भ) नहीं माँगा करते।	५७०
जाहिल से सनद (संदर्भ) वह भी इबारत के साथ तलब करना सू-ए-अदब (अशिष्टता) है।	५७०
"सफ़ाई दे दिया" यह शब्द किनाया है; यदि नीयत हो तो एक तलाक बाइन वाक़े होगी।	५७२
बाइन को बाइन लाहिक नहीं होती। शौहर क़सम खाकर अदमे-नीयत-ए-तलाक (तलाक की नीयत न होने) का क़ौल करे तो मान लिया जाएगा और क़सम लेने के लिए क़ाज़ी या पंच की ज़रूरत नहीं, खुद औरत भी शौहर से यह क़सम ले सकती है।	५७३
'ला दावा' का लफ़्ज़ अरबी लफ़्ज़ "अन्कि मुजारत" का हम-मानी (समानार्थी) है; नीयत हो तो तलाक बाइन होगी।	५७४
शौहर अदमे-नीयत-ए-तलाक पर क़सम खाने से इंकार करे तो औरत मामला क़ाज़ी के सामने पेश करे, वह इंकार की सूरत में तफ़रीक़ (अलगाव) कर देगा।	५७५
	५७५

अहकाम व तफ़सीलात	संदर्भ
ससुर और दामाद के बीच लड़ाई के दौरान दामाद कहे कि "अगर तुम कल छुड़वाते हो तो मैं आज ही छोड़ता हूँ" तो इससे एक तलाक रजई हो जाएगी।	
"दूसरे से निकाह कर दो" ब-नीयत-ए-तलाक (तलाक की नीयत से) कहा तो तलाक बाइन वाक़े होगी और नीयत न होने के बारे में शौहर का क़ौल मुक़सिम (हलफ़िया बयान) मोतबर होगा।	५७०
"छोड़ दिया मेरे काम की नहीं" से दो बाइन तलाकें वाक़े होंगी।	५७१
तलाक बाइन के बाद औरत दोबारा निकाह पर राजी नहीं तो उस पर जब्र (दबाव) नहीं किया जा सकता।	५७१
"मैंने तुझे छोड़ दिया" सरीह है और "तू मेरे काम की नहीं है" किनाया है।	५७१
बाइन जब रजई को लाहिक हो तो उसको भी बाइन बना देती है।	५७१
"तुम्हारा जहाँ जी चाहे चली जाओ, दूसरा ख़ावन्द (पति) कर लो" ये अल्फ़ाज़ किनाया के	५७२

अहकाम व तफ़सीलात	संदर्भ
लफ़्ज़ "ला दावा" से शौहर ने तलाक की नीयत की थी और अब झूठी क़सम खा ली तो अल्लाह के नज़दीक तलाक हो गई मगर उसका वबाल (गुनाह) शौहर पर है, औरत पर कोई इल्ज़ाम नहीं।	
लफ़्ज़ "ला दावा" का सवाल दोबारा।	५७५
"वह मेरी बीवी नहीं, मुझे उससे ग़रज़ नहीं" ये अल्फ़ाज़ तलाक के नहीं, नीयत-ए-तलाक हो तब भी इनसे तलाक वाक़े न होगी।	५७६
"वह मेरी बीवी न रही, वह मेरे निकाह से बाहर है, मेरे काम की न रही" ये अल्फ़ाज़ किनाया के हैं।	५७७
आम लोगों का यह गुमान ग़लत है कि औरत बे-इजाज़त-ए-शौहर घर से चली जाए तो निकाह से निकल जाती है।	५७८
तलाक बाइन, बाइन को लाहिक नहीं होती जैसे कहा "अन्त बाइन" फिर कहा "अन्त बाइन", तो एक ही बाइन तलाक होगी।	५७८

अहकाम व तफ़सीलात	संदर्भ	अहकाम व तफ़सीलात	संदर्भ
हैं, इनसे वुक़ूअ-ए-तलाक (तलाक होने) के लिए नीयत शर्त है। पृष्ठ 688 में से 57			

احکام و تفصیلات صفحہ		احکام و تفصیلات صفحہ	
دور جعی طلاقیں ہوں تو عدت کے اندر رجعت کر سکتا ہے، تین طلاقیں ہوجائیں تو بلا حلالہ وہ عورت شوہر اوّل کے لئے جائز نہیں، اور دو طلاقیں بائن ہوں تو عورت نکاح سے نکل گئی مگر اس کی رضا مندی سے دوبارہ نکاح کر سکتا ہے چاہے عدت گزر چکی ہو یا نہیں۔	۵۶۹	"صفائی دے دیا" یہ لفظ کنایہ ہے نیت ہو تو ایک طلاق بائن واقع ہو گی۔	۵۷۲
"چھوڑتا ہوں" کا لفظ صریح ہے تین بار کہا تو طلاق مغلظہ واقع ہوگی۔	۵۷۰	بائن کو بائن لاحق نہیں ہوتی۔ شوہر قسم کھا کر عدم نیت طلاق کا قول کرے تو مان لیا جائے گا اور قسم لینے کے لئے قاضی یا پنچ کی ضرورت نہیں، خود عورت بھی شوہر سے یہ قسم لے سکتی ہے۔	۵۷۳
بدیہیات پر اہل علم حوالہ طلب نہیں کیا کرتے۔	۵۷۰	لادعوی کا لفظ عربی لفظ "انک مجارۃ" کا ہم معنی ہے نیت ہو تو طلاق بائن ہوگی۔	۵۷۴
جاہل کا حوالہ وہ بھی مع عبارت طلب کرنا سوءِ ادب ہے۔	۵۷۰	شوہر عدم نیت طلاق پر قسم کھانے سے انکار کرے تو عورت معاملہ	۵۷۵

احکام و تفصیلات	صفحہ
خسرو و داماد میں لڑائی کے دوران داماد کہے کہ "اگر تم کل چھڑواتے ہو تو میں آج ہی چھوڑتا ہوں" اس سے ایک طلاق رجعی ہو جائے گی۔	۵۷۰
"دوسرے سے نکاح کر دو" بنیت طلاق کہا تو طلاق بائن واقع ہوگی اور عدم نیت کے بارے میں شوہر کا قول مقسم معتبر ہوگا۔	۵۷۰
"چھوڑ دیا میرے کام کی نہیں" سے دو بائن طلاقیں واقع ہوں گی۔	۵۷۱
طلاق بائن کے بعد عورت دوبارہ نکاح پر راضی نہیں تو اس پر جبر نہیں کیا جاسکتا۔	۵۷۱
	۵۷۱

احکام و تفصیلات	صفحہ
قاضی کے سامنے پیش کرے وہ انکار کی صورت میں تفریق کر دے گا۔	
لفظ "لا دعویٰ" سے شوہر نے طلاق کی نیت کی تھی اور اب جھوٹی کھالی تو عنداللہ طلاق ہو گئی مگر اس کا وبال شوہر پر ہے عورت پر کوئی الزام نہیں۔	۵۷۵
لفظ "لا دعویٰ" کا سوال مکرر۔	۵۷۵
"وہ میری بیوی نہیں، مجھ کو اس سے غرض نہیں" یہ الفاظ طلاق سے نہیں، نیت طلاق ہو تب بھی ان سے طلاق واقع نہ ہو گی۔	۵۷۶
"وہ میری بیوی نہ رہی، وہ میرے نکاح سے باہر ہے، میرے کام کی نہ رہی" یہ الفاظ کنایہ کے ہیں۔	۵۷۷
	۵۷۸

"میں نے تجھے چھوڑ دیا" صریح ہے اور "تو میرے کام کی نہیں ہے" کنایہ ہے۔

بائن جب رجعی کو لاحق ہو تو اس کو بھی بائن بنا دیتی ہے۔ ۵۷۱

"تمہارا جہاں جی چاہے چلی جاؤ، دوسرا خاوند کر" یہ الفاظ کنایہ کے ہیں ان سے وقوع طلاق کے لئے نیت شرط ہے۔ ۵۷۲

احکام و تفصیلات صفحہ

عوام کا یہ گمان غلط ہے کہ عورت بے اجازت شوہر گھر سے چلی جائے تو نکاح سے نکل جاتی ہے۔

طلاق بائن بائن کو لاحق نہیں ہوتی مثلاً کہا انت بائن، پھر کہا انت بائن، تو ایک ہی بائن طلاق ہو گی۔ ۵۷۸

Fatawa Razawiyya - Volume 12

Page	Entry	Entry Description	Entry Description	Entry	Page
585	578	The statement of the husband regarding the absence of intention, given under oath, is reliable.	"I have freed you" is a metaphor for divorce with intention; if this phrase is said three times, one [divorce] will occur and two will be void.	578	585
585	579	Compulsion and coercion regarding marriage do not make it valid, effective, or binding.	After an irrevocable divorce (Talaq-e-Ba'in), if the man and woman agree, the husband can remarry her either during or after the waiting period (Iddah).	579	585
585	580	All verbal transactions of a coerced person are executed.	An irrevocable divorce (Ba'in) does not attach to [another] Ba'in if it is possible to consider it as information [about the first one].	580	585
585	580	Marriage, manumission, and divorce by a coerced person are binding.	After one divorce, a woman with whom marriage was not consummated (Ghayr Madkhulah) is no longer a subject for further divorce.	580	585
585	580	"I am unmarried, my marriage never happened with anyone, I have no concern with anyone in my homeland" - none of these words are words of divorce.	Until the waiting period (Iddah) passes, a woman with whom marriage was consummated (Madkhulah) is a subject for both separate and collective divorce.	580	585
586	581	The wife is in Baghdad; the husband says "all women of Baghdad are divorced" - if he	The word "Haram" (forbidden) is joined with explicit terms due to common usage ('Urf).	581	586

Page	Entry	Entry Description	Entry Description	Entry	Page
		did not intend his own wife, divorce will not occur.			
586	581	The term 'Watan' (homeland) is more general than city or village.	You said like this: "Therefore she is forbidden for me." This could also mean that he considers this action as a cause for prohibition; if this is the intention, divorce will not occur.	581	586
586	582	"I have freed you" - subject to the intention of divorce, an irrevocable divorce (Ba'in) will occur, and if said with the intention of three, then three will occur.	It is a thought of the ignorant that if a woman leaves the house without the husband's permission, she is out of the marriage contract.	582	586
586	583	"Chhorna" (leaving/releasing) is an explicit word for divorce. "Go wherever you want" is metaphorical; if both are said, the first explicit one will become context for the subsequent metaphorical one.	A declaration of divorce based on a false premise is purely void.	583	586
588	584	Calling one's wife a sister is neither Zihar nor divorce. The phrase "Chhutti di" (gave leave) in a state of anger is specifically for divorce.	"We will not keep you" is a promise for the future. Even if an explicit phrase like "will give divorce" is used, divorce will not occur.	584	588
588	585	"The person who does not act upon the fatwa of the purified Sharia is a sinner and deserves punishment and torment."	In the Persian language, if the phrase "Talaq mi-kunam" (I am divorcing) is said, divorce will occur, but if "Talaq kunam" (I may divorce) is said, it will not.	585	588

फ़तावा रज़विया - जिल्द 12

पृष्ठ	प्रविष्टि	प्रविष्टि विवरण	प्रविष्टि विवरण	प्रविष्टि	पृष्ठ
585	578	नियत की अनुपस्थिति के बारे में पति का शपथ पूर्वक कथन विश्वसनीय है।	"आज़ाद किया" तलाक़ की नियत से किनाया है, यह शब्द तीन बार कहा गया तो एक तलाक़ होगी और दो व्यर्थ होंगी।	578	585
585	579	विवाह के संबंध में ज़बरदस्ती और दबाव इसकी वैधता और प्रभावशीलता का स्थान नहीं है।	तलाक़-ए-बाइन के बाद यदि स्त्री और पुरुष सहमत हों, तो पति इद्दत के भीतर या बाद में नया निकाह कर सकता है।	579	585
585	580	विवश व्यक्ति के सभी मौखिक व्यवहार लागू होते हैं।	बाइन बाइन के बाद लागू नहीं होती यदि उसे सूचना करार देना संभव हो।	580	585
585	580	विवश व्यक्ति का निकाह, दास-मुक्ति और तलाक़ अनिवार्य हैं।	एक तलाक़ के बाद केवल गैर-मदखूला (जिससे सहवास न हुआ हो) और तलाक़ के योग्य नहीं रहती।	580	585
585	580	"मैं अविवाहित हूँ, मेरा निकाह किसी से नहीं हुआ, वतन में मेरा किसी से कोई लेना-देना नहीं" - ये सब तलाक़ के शब्द नहीं हैं।	जब तक इद्दत न बीत जाए, मदखूला औरत अलग-अलग और सामूहिक, दोनों प्रकार की तलाक़ के योग्य है।	580	585
586	581	पत्नी बगदाद में है, पति ने कहा "बगदाद की सभी औरतें तलाक़शुदा हैं", यदि उसने अपनी पत्नी की नियत नहीं की तो तलाक़ नहीं होगी।	शब्द "हराम" लोक-प्रथा (उर्फ़) के कारण 'सरीह' (स्पष्ट) के समान है।	581	586
586	581			581	586

पृष्ठ	प्रविष्टि	प्रविष्टि विवरण	प्रविष्टि विवरण	प्रविष्टि	पृष्ठ
		शब्द 'वतन', शहर और गाँव से अधिक व्यापक है।	तुमने ऐसा कहा "इसलिए वह मुझ पर हराम है", इसका यह अर्थ भी हो सकता है कि वह इस कार्य को हराम होने का कारण समझता है; यदि यही इरादा हो तो तलाक़ नहीं होगी।		
586	582	"मैंने तुझे आज़ाद किया" - तलाक़ की नियत की शर्त पर तलाक़-ए-बाइन होगी, और तीन की नियत से कहा तो तीन होंगी।	यह अज्ञानियों का विचार है कि यदि स्त्री पति की अनुमति के बिना घर से निकले तो वह निकाह से निकल जाती है।	582	586
586	583	"छोड़ना" तलाक़ का स्पष्ट शब्द है। "जहाँ चाहे चली जा" किनाया (अस्पष्ट) है, दोनों शब्द कहे जाएँ तो पहला स्पष्ट शब्द बाद वाले अस्पष्ट शब्द के लिए संदर्भ बन जाएगा।	गलत आधार पर तलाक़ का इकरार पूरी तरह व्यर्थ है।	583	586
588	584	अपनी पत्नी को बहन कहना, न ज़िहार है न तलाक़। "छुट्टी दी" शब्द क्रोध की स्थिति में तलाक़ के लिए ही है।	"हम तुझ को न रखेंगे" भविष्य के लिए वादा है। यदि स्पष्ट शब्द "तलाक़ देंगे" हो, तब भी तलाक़ नहीं होगी।	584	588
588	585	"जो व्यक्ति शरीअत-ए-मुतहरा के फतवे पर अमल नहीं करेगा, वह पापी है और सजा व अज़ाब का हकदार है।"	फ़ारसी भाषा में शब्द "तलाक़ मी कुनम" (मैं तलाक़ दे रहा हूँ) कहा तो तलाक़ हो जाएगी, और यदि "तलाक़ कुनम" (मैं तलाक़ दूँ) कहा तो नहीं होगी।	585	588

تفصیل نمبر	صفحہ نمبر
عدم نیت کے بارے میں شوہر کا قول بقسم معتبر ہے۔	۵۷۸ ۵۸۵
جبر واکراہ در بارہ نکاح محل صحت ونفاذ ولزوم نہیں۔	۵۷۹ ۵۸۵
مکرہ کے تمام تصرفات قولیہ منعقد ہوتے ہیں۔	۵۸۰ ۵۸۵
مکرہ کا نکاح، عتاق اور طلاق لازم ہے۔	۵۸۰ ۵۸۵
"میں بے شادی شدہ ہوں، میرا نکاح کسی سے نہ ہوا، وطن میں میرا کسی سے سروکار نہیں" یہ سب الفاظ طلاق میں سے نہیں۔	۵۸۰ ۵۸۵
	۵۸۱ ۵۸۶

تفصیل نمبر	نمبر صفحہ
"آزاد کیا" نیت طلاق سے کنایہ ہے، یہ لفظ تین دفعہ کہا ایک واقع ہوگی دو لغو ہونگی۔	۵۷۸ ۵۸۵
طلاق بائن کے بعد زن و مرد اگر راضی ہوں تو شوہر عدت کے اندر یا بعد عدت نکاح جدید کر سکتا ہے۔	۵۷۹ ۵۸۵
بائن بائن کو لاحق نہیں ہوتی اگر اس کو خبر قرار دینا ممکن ہو۔	۵۸۰ ۵۸۵
ایک طلاق کے بعد صرف غیر مدخولہ مزید طلاق کی محل نہیں رہتی۔	۵۸۰ ۵۸۵
جب تک عدت نہ گزرے زن مدخولہ طلاق مفرق و مجموع سب کی محل ہے۔	۵۸۰ ۵۸۵
	۵۸۱ ۵۸۶

صفحہ نمبر	تفصیل نمبر	تفصیل نمبر	نمبر صفحہ
	عورت بغداد میں ہے شوہر نے کہا		
	بغداد کی ساری عورتیں مطلقہ ہیں،	لفظ "حرام" بوجہ عرف ملحق	
	اگر اپنی عورت کی نیت نہ کی	بالصریح ہے۔	
	طلاق واقع نہ ہو گی۔		
		تم نے ایسا کہا "لہذا وہ مجھ پر حرام	
		ہے" اس کا یہ مطلب بھی ہو سکتا	
۵۸۶ ۵۸۱	لفظ وطن بلد و قریہ سے عام ہے۔	ہے کہ اس فعل کو سبب حرمت ۵۸۱	۵۸۶
		سمجھتا ہے اگر یہی مراد ہو تو	
		طلاق واقع نہ ہوگی۔	
	"میں نے تجھے آزاد کیا" بشرط نیت	یہ جہال کا خیال ہے کہ عورت بے	
۵۸۶ ۵۸۲	طلاق بائن واقع ہوگی، اور تین کی	اجازت شوہر گھر سے نکلے تو ۵۸۲	۵۸۶
	نیت سے کہا تو تین ہوں گی۔	نکاح سے نکل جاتی ہے۔	
	"چھوڑنا" طلاق صریح کا لفظ ہے		
	"جہاں چاہے چلی جا" کنایہ ہے،		
		مبنائے باطل پر اقرار طلاق محض	
۵۸۶ ۵۸۳	دونوں لفظ کہے تو پہلے والا صریح	۵۸۳	۵۸۶
	بعد والے کنایہ کے لئے قرینہ بن	لغو ہے۔	
	جائے گا۔		
		"ہم تجھ کو نہ رکھیں گے زمانہ	
۵۸۸ ۵۸۴		مستقبل کے لئے وعدہ ہے۔ اگر ۵۸۴	۵۸۸

صفحہ نمبر	تفصیل نمبر	تفصیل نمبر	نمبر صفحہ
	اپنی بیوی کو بہن کہا، نہ ظہار کہے نہ طلاق۔ "چھٹی دی" کا لفظ حالت غضب میں طلاق کے لئے ہی ہے۔	صریح لفظ "طلاق دیں گے" ہو تب بھی طلاق واقع نہ ہو گی۔	
	"جو شخص شریعت مطہرہ کے فارسی زبان میں لفظ "طلاق می کنم"		
۵۸۸ ۵۸۵	فتویٰ پر عمل نہ کریگا گنہگار و مستحق سزا و عذاب ہے۔	کہا تو طلاق ہو جائے گی، اور اگر "طلاق کنم" کہا تو نہیں ہوگی۔	۵۸۵ ۵۸۸

Fatawa Razawiyya, Volume 12

Page 59 of 688

Ref No.	Ruling / Content
588	The word "mikanam" (I do) is solely for the present tense and the word "kunam" (I will do) is solely for the future, whereas in Arabic the word "atluqu" encompasses both present and future.
589	"She is no longer worthy of us" is among the allusive words, but in a state of anger, it can also be used for abuse, therefore intention is necessary in any case for the occurrence of divorce.
589	Expelling the woman and snatching clothes etc. is evidence of anger, not evidence of divorce.
589	The husband said "Will not keep her, she is no longer worthy of us" and left; just by this much, it is absolutely not permissible for the woman to remarry.
589	For the wife of a missing person (mafqud-al-khabar), remarriage is absolutely not permissible without the occurrence of divorce or death, either in reality or by legal decree.
590	"Let her have intercourse with whomever she wants, make whoever she wants her husband, there is no relationship with me anymore" - these three phrases are allusive
592	"Get out of my house" is among the allusions (kinayat) of divorce; with the intention of divorce, divorce will occur by it.
594	If the husband said with the intention of divorce, "Now go and marry some husband," then an irrevocable (bain) divorce will occur.
594	"I have nothing to do with you" - this phrase is among the allusions of divorce, such that on the condition of intention, an irrevocable (bain) divorce occurs by it.
595	After an irrevocable (bain) divorce, intercourse with the woman is forbidden without renewing the marriage (nikah).
596	If there is no explicit attribution (idafat sariha), then the matter depends on the husband's intention.
597	An irrevocable (bain) divorce is established by the phrase "freed you" (azad kiya).

Ref No.	Ruling / Content
	(kinayi). For the third one, intention is not needed in a state of anger. The ruling for different scenarios of these three phrases.
592	"I have no business with her, I will not keep her, if I do I would drink her milk" - these are not words of divorce.
592	A man said, "If I keep my wife in the house, I will drink her milk" - this is neither ila' (vow of abstinence) nor an oath, therefore expiation is not mandatory.
593	Drinking the wife's milk is prohibited.
593	If someone says "If I do this work then I am an adulterer, thief or drunkard" then he will not be considered one who has sworn an oath (halif).
593	Critique of a fatwa related to allusive (kinayi) words.
597	In a general state, divorce will be considered from the time the notice was written.
598	For which 'iddah (waiting period) does a woman receive maintenance (nafaqah) and for which 'iddah she does not.
598	Tufful 'alal Khairiyyah.
600	"I have no concern with you" is not among the words of divorce.
-	-

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

पृष्ठ 688 का 59

संदर्भ संख्या	हुक्म / विषय
588	शब्द "मीकनम" केवल वर्तमान काल के लिए और शब्द "कुनम" केवल भविष्य काल के लिए है, जबकि अरबी में शब्द "अतलुकु" वर्तमान और भविष्य दोनों में आता है।
589	"हमारे काबिल न रही" किनाया (संकेत) के शब्दों में से है, लेकिन क्रोध की स्थिति में गाली-गलौज के लिए भी हो सकता है, इसलिए तलाक के होने के लिए नीयत हर हाल में ज़रूरी है।
589	स्त्री को निकाल देना और कपड़े आदि छीन लेना क्रोध का प्रमाण है, न कि तलाक का प्रमाण।
589	पति "न रखेंगे, हमारे काबिल न रही" कह कर चला गया, केवल इतनी बात से स्त्री को दूसरा विवाह (निकाह) करना हरगिज़ जायज़ नहीं।
589	मफ़क़ूदुल ख़बर (लापता व्यक्ति) की पत्नी को तलाक या मौत (वास्तविक या कानूनी) ज़ाहिर हुए बिना दूसरा निकाह हरगिज़ जायज़ नहीं।
590	"जिससे चाहे संभोग करे, जिसे चाहे पति बनाए, मुझसे संबंध नहीं रहा" - ये तीनों शब्द किनाई (सांकेतिक) हैं। तीसरे के लिए क्रोध की स्थिति में
592	"तू मेरे मकान से निकल जा" तलाक के किनयात (संकेतों) में से है; तलाक की नीयत (इरादे) से इससे तलाक हो जाएगा।
594	पति ने तलाक की नीयत से कहा कि "तू अब कोई पति कर ले," तो तलाक़-ए-बाइन (अटल तलाक) प्रभावी होगा।
594	"मुझ को तुझ से कुछ वास्ता नहीं" - यह शब्द तलाक के किनयात में से है कि नीयत की शर्त पर इससे तलाक़-ए-बाइन होता है।
595	तलाक़-ए-बाइन के बाद बिना निकाह के नवीनीकरण के स्त्री से संभोग हराम है।
596	यदि स्पष्ट उल्लेख (इज़ाफ़त सरीहा) न हो, तो आधार पति की नीयत पर है।
597	शब्द "आज़ाद किया" से तलाक़-ए-बाइन सिद्ध हो जाता है।

संदर्भ संख्या	हुक्म / विषय	संदर्भ संख्या	हुक्म / विषय
	नीयत की ज़रूरत नहीं। इन तीनों शब्दों की विभिन्न स्थितियों का हुक्म।		
592	"मुझे इससे काम नहीं, मैं इसको नहीं रखूँगा, रखूँ तो इसी का दूध पियूँ" - ये शब्द तलाक के नहीं हैं।	597	सामान्य स्थिति में, तलाक नोटिस लिखे जाने के समय से माना जाएगा।
592	पुरुष ने कहा कि "अगर पत्नी को घर में रखूँ तो इसी का दूध पियूँ" - यह न तो ईला (ब्रह्मचर्य की शपथ) है और न ही कसम, इसलिए कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) अनिवार्य नहीं है।	598	किस इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) में स्त्री को गुज़ारा भत्ता (नफ़क़ा) मिलता है और किस इद्दत में नहीं मिलता।
593	पत्नी का दूध पीना हराम है।	598	तफ़्फ़ुल अलल खैरिया।
593	यदि कोई कहे कि "अगर मैं यह काम करूँ तो मैं व्यभिचारी, चोर या शराबी हूँ" तो वह शपथ लेने वाला (हालिफ़) नहीं होगा।	600	"मुझे तुझ से सरोकार नहीं" तलाक के शब्दों में से नहीं है।
593	किनाई (सांकेतिक) शब्दों से संबंधित एक फ़तवे की समीक्षा।	-	-

فتاوی رضویہ، جلد دوازدہم

صفحہ 59 از 688

شمارہ	حکم / مضمون	شمارہ	حکم / مضمون
۵۸۸	لفظ "میکنم" محض حال کے لئے اور لفظ "کنم" محض مستقبل کے لئے، جبکہ عربی میں لفظ "اطلق" حال و استقبال میں دائر ہے۔	۵۹۲	"تو میرے مکان سے نکل جا" کنایاتِ طلاق سے ہے بہ نیتِ طلاق اس سے طلاق ہو جائے گی۔
۵۸۹	"ہمارے قابل نہ رہی" کنایہ کے الفاظ میں سے ہے لیکن حالتِ غضب میں سب و شتم کے لئے بھی ہو سکتا ہے اس لئے وقوعِ طلاق کے لئے نیت بہر حال ضروری ہے۔	۵۹۴	شوہر نے بہ نیتِ طلاق کہا کہ "تو اب کوئی شوہر کرلے" تو طلاقِ بائن واقع ہوگی۔
۵۸۹	عورت کو نکال دینا اور کپڑے وغیرہ چھین لینا دلیلِ غضب ہے نہ کہ دلیلِ طلاق۔	۵۹۴	"مجھ کو تجھ سے کچھ واسطہ نہیں" یہ لفظ کنایاتِ طلاق سے ہے کہ بشرطِ نیت اس سے طلاقِ بائن ہوتی ہے۔
۵۸۹	شوہر "نہ رکھیں گے ہمارے قابل نہ رہی" کہہ کر چلا گیا، صرف اتنی بات سے عورت کو نکاحِ ثانی ہرگز جائز نہیں۔	۵۹۵	طلاقِ بائن کے بعد بے تجدیدِ نکاح مباشرت عورت سے حرام ہے۔

شمارہ	حکم / مضمون
۵۸۹	مفقودالخبر کی بیوی کو بے ظہورِ طلاق موت حقیقتاً یا حکماً ہرگز نکاحِ ثانی جائز نہیں۔
۵۹۰	"جس سے چاہے مباشرت کرے جیسے چاہے خاوند بنائے مجھ سے تعلق نہ رہا" یہ تینوں الفاظ کنائی ہیں۔ تیسرے کے لئے حالتِ غضب میں نیت کی ضرورت نہیں۔ ان تینوں لفظوں کی مختلف صورتوں کا حکم۔
۵۹۲	"مجھے اس سے کام نہیں، میں اس کو نہیں رکھوں گا، رکھوں تو اسی کا دودھ پیوں" یہ الفاظ طلاق کے نہیں ہیں۔
۵۹۲	مرد نے کہا کہ "اگر بیوی کو گھر میں رکھوں تو اسی کا دودھ پیوں" یہ نہ تو ایلاء ہے اور نہ ہی قسم، لہذا کفارہ لازم نہیں۔
۵۹۳	بیوی کا دودھ پینا حرام ہے۔
۵۹۳	اگر کوئی یوں کہے کہ "اگر میں یہ کام کروں تو میں زانی، چور یا شرابی ہوں" تو حالف نہیں ہوگا۔
۵۹۳	الفاظِ کنائی سے متعلق ایک فتویٰ کی تنقید۔
۵۹۶	اضافتِ صریحہ نہ ہو تو مدار شوہر کی نیت پر ہے۔
۵۹۷	لفظ "آزاد کیا" سے طلاقِ بائن ثابت ہو جاتی ہے۔
۵۹۷	عام حالت میں وقتِ تحریرِ نوٹس سے طلاق مانی جائے گی۔
۵۹۸	کون سی عدت کا عورت نفقہ پاتی ہے اور کونسی عدت کا نہیں پاتی۔
۵۹۸	تطفل علی الخیریہ۔
۶۰۰	"مجھے تجھ سے سروکار نہیں" لفظِ طلاق میں سے نہیں۔
-	-

Fatawa Razvia, Volume 11

Urdu Text (Row 1 Left)	Page	Urdu Text (Row 1 Right)	Page
The husband said, "Consider my words 'I have no concern with you' as divorce." Even with this, divorce will not occur.	601	Divorce does not occur through a letter until the husband admits to writing the letter.	608
Making something valid which is not valid according to Sharia is not within anyone's power.	602	"I have no relation with her" with the intention of divorce is divorce.	608
Divorce by a sleeping person does not occur, even if he says, "I made it occur."	602	Explanation on an ambiguous question.	609
A man said to his wife, "Assume that you are divorced," then divorce will not occur.	602	In a fourteen-year-old girl, both puberty and non-puberty are possible.	609
If someone denies his wife's marriage for some interest, he is a sinner for a false oath. The woman's marriage remains intact and she will not be deprived of inheritance.	603	For a Mufti to create categories himself and answer each category is against the Sharia interest.	609
Expiation (Kaffara) is not mandatory for a false oath (Yamin Ghamus).	604	The marriage of an irreligious person, i.e., an atheist or heretic, does not occur at all.	609
"You are out of my marriage" in a state of anger results in an irrevocable divorce (talaq bain).	604	If there is no marriage at all, how can there be a divorce?	609
Saying "instead of my mother and sister" after divorce is not a place for Zihar.	605	"I have no relation with Mahmooda" is a metaphor (kinayah); intention is a condition for divorce to occur.	609
"I have no claim, go wherever you want" are metaphorical words. If there is intention, one divorce; if no intention, then nothing.	606	In metaphorical terms, the husband's statement under oath regarding the presence or absence of intention for divorce will be credible.	609
	606		

Urdu Text (Row 1 Left)	Page	Urdu Text (Row 1 Right)	Page
Regarding the lack of intention, if the husband swears an oath in front of the wife, she shall believe him.		"I have no concern with you" is not among the words of divorce.	
If he refuses to swear an oath, then a new marriage is necessary.	606	"I have no connection with you" is from metaphorical words of divorce.	610
"Relinquishment, I have absolutely no relation left with you" is a metaphor; in a state of anger, divorce will occur.	607	"I have left you" is explicit (sarih).	610
The woman asked for a divorce, the husband said, "You have become our sister," an irrevocable divorce (talaq bain) occurred.	607	Explicit divorce can follow an irrevocable one.	611
"You have become our sister" - this is not Zihar because there is no comparison (tashbih) in it.	608		

फ़तावा रज़विया, जिल्द 11

उर्दू पाठ (पंक्ति 1 बायां)	पृष्ठ	उर्दू पाठ (पंक्ति 1 दायां)	पृष्ठ
पति ने कहा "मेरे शब्द 'मुझे तुझसे कोई सरोकार नहीं' को तलाक समझो", इससे भी तलाक नहीं होगा।	601	खत (पत्र) से उस वक्त तक तलाक नहीं होता जब तक शौहर खत लिखने का इकरार न करे।	608
जो शरीयत के अनुसार विश्वसनीय न हो उसे विश्वसनीय बनाना किसी के बस में नहीं।	602	"मेरा उसका कोई संबंध नहीं" तलाक की नीयत के साथ तलाक है।	608
सोये हुए व्यक्ति का तलाक प्रभावी नहीं होता, चाहे वह कहे कि "मैंने इसे प्रभावी किया।"	602	गोल-मोल (अस्पष्ट) सवाल पर समझाइश।	609
आदमी ने अपनी पत्नी से कहा "तो यह गुमान (मान) ले कि तू तलाक वाली है" तो तलाक नहीं होगा।	602	चौदह वर्ष की लड़की में बालिग होना और न होना दोनों संभव हैं।	609
किसी हित के कारण अपनी पत्नी के पत्नीत्व से इनकार किया तो झूठी कसम पर गुनहगार हुआ। औरत का निकाह बाकी है और वह विरासत से वंचित नहीं होगी।	603	मुफ़्ती का खुद श्रेणियां बनाकर हर श्रेणी का जवाब देना शरीयत के हित के खिलाफ है।	609
झूठी कसम (यमीन ग़मूस) पर कफ़ारा वाजिब नहीं होता।	604	ला-मज़हब यानी नास्तिक और धर्मद्रोही का निकाह ही नहीं होता।	609
"तू मेरे निकाह से बाहर है" गुस्से की हालत में तलाक-ए-बाइन (अकाट्य तलाक) हो जाएगा।	604	अगर निकाह ही न हो तो तलाक कैसा।	609
तलाक के बाद "मेरी माँ बहन के समान" कहना ज़िहार का स्थान नहीं है।	605	"मुझसे महमूदा से कोई संबंध नहीं रहा" यह कनाया (संकेत) है, तलाक होने के लिए नीयत शर्त है।	609
"मुझे कोई दावा नहीं, जहाँ चाहे चली जा" कनाया के शब्द हैं, नीयत हो तो एक तलाक, नीयत न हो तो कुछ नहीं।	606	कनाया में नीयत होने या न होने के बारे में पति का कथन कसम के साथ विश्वसनीय होगा।	609

उर्दू पाठ (पंक्ति 1 बायां)	पृष्ठ	उर्दू पाठ (पंक्ति 1 दायां)	पृष्ठ
नीयत न होने के बारे में पति पत्नी के सामने कसम खा ले तो वह मान लेगी।	606	"मुझे तुझसे सरोकार नहीं", ये शब्द तलाक के शब्दों में से नहीं हैं।	609
कसम खाने से इनकार करे तो नए निकाह की ज़रूरत है।	606	"मुझसे तुझसे कोई वास्ता नहीं", ये शब्द कनाया (सांकेतिक) तलाक से हैं।	610
"दस्तبرداری (अधिकार त्याग), मेरा बिल्कुल तुमसे कुछ संबंध नहीं रहा" कनाया है, गुस्से की स्थिति में तलाक प्रभावी हो जाएगा।	607	"छोड़ दिया" स्पष्ट (सरीह) है।	610
औरत ने तलाक माँगी, पति ने कहा "तू हमारी बहन हो चुकी", तलाक-ए-बाइन प्रभावी हो गया।	607	स्पष्ट तलाक बाइन के बाद हो सकता है।	611
"तू हमारी बहन हो चुकी" - यह ज़िहार नहीं है क्योंकि इसमें तुलना (तशबीह) नहीं है।	608		

کلام / مسئلہ	صفحہ
شوہر نے کہا "میرے قول مجھے تجھ سے کوئی سروکار نہیں، کو طلاق سمجھو" اس سے بھی طلاق نہ ہو گی۔	۶۰۱
جو شرعاً معتبر نہ ہو اس کو معتبر بنانا کسی کے بس میں نہیں۔	۶۰۲
سوئے ہوئے شخص کی طلاق واقع نہیں ہوتی اگرچہ کہے کہ "میں نے اس کو واقع کیا۔	۶۰۲
مرد نے بیوی سے کہا " تو یہ گمان کر لے کہ تو طلاق والی ہے " تو طلاق نہ ہو گی۔	۶۰۲
"کسی مصلحت سے اپنی عورت کی زوجیت سے انکار کیا تو جھوٹے حلف پر گنہگار ہوا۔ عورت کا نکاح باقی ہے اور ترکہ سے محروم نہ ہو گی۔	۶۰۳
یمین غموس پر کفارہ لازم نہیں ہوتا۔	۶۰۴
"تو میرے نکاح سے باہر ہے" حالتِ غضب میں طلاق بائن واقع ہو گی۔	۶۰۴
خط سے اس وقت تک طلاق نہیں ہوتی جب تک شوہر خط لکھنے کا اقرار نہ کرے۔	۶۰۸
میرا اس کا کوئی تعلق نہیں بنیّت طلاق طلاق ہے۔	۶۰۸
گول مول سوال پر فہمائش۔	۶۰۹
چودہ برس کی لڑکی میں بلوغ و عدم بلوغ دونوں محتمل ہیں۔	۶۰۹
مفتی کا خود شقوق قائم کر کے ہر شق کا جواب دینا خلاف مصلحت شرعیہ ہے۔	۶۰۹
لا مذہب یعنی زندیق دہریہ کا نکاح ہی نہیں ہوتا۔	۶۰۹
اگر نکاح ہی نہ ہو تو طلاق کیسی۔	۶۰۹

کلام / مسئلہ	صفحہ
طلاق کے بعد "بجائے میری ماں بہن کے" کہنا تو ظہار کا محل نہیں۔	۶۰۵
"مجھ کو کوئی دعویٰ نہیں، جہاں چاہے چلی جا" الفاظ کنایہ سے ہیں نیت ہو تو ایک طلاق، نیت نہ ہو تو کچھ نہیں۔	۶۰۶
عدم نیت کے بارے میں شوہر بیوی کے سامنے قسم کھالے مان لے گی۔	۶۰۶
قسم کھانے سے انکار کرے تو نکاح جدید کی ضرورت ہے۔	۶۰۶
"دست برداری، میرا بالکل تم سے کچھ تعلق نہ رہا" کنایہ ہے حالت غضب میں طلاق واقع ہو جائے گی۔	۶۰۷
عورت نے طلاق مانگی، شوہر نے کہا "تو ہماری بہن ہو چکی" طلاق بائن واقع ہو گئی۔	۶۰۷
تو ہماری بہن ہو چکی " یہ ظہار نہیں کیونکہ اس میں تشبیہ نہیں۔	۶۰۸
"مجھ سے محمودہ سے کوئی تعلق نہ رہا" کنایہ ہے وقوع طلاق کے لئے نیت شرط ہے۔	۶۰۹
کنایہ میں نیت طلاق ہونے یا نہ ہونے میں مرد کا قول قسم کے ساتھ معتبر ہو گا۔	۶۰۹
مجھ سے تجھ سے سروکار نہیں، الفاظ طلاق میں سے نہیں۔	۶۰۹
مجھ سے تجھ سے کوئی واسطہ نہیں، الفاظ طلاق کنائی سے ہے۔	۶۱۰
"چھوڑ دیا" صریح ہے۔	۶۱۰
صریح بائن کو لاحق ہو جاتی ہے۔	۶۱۱

Fatawa Razawiyya - Volume 12

Page	Subject / Ruling	Related Detail / Reference	Page
611	A revocable divorce (Raj'i), when combined with an irrevocable one (Ba'in), becomes irrevocable because in this case, returning (Raj'at) is impossible.	According to Imam-e-Azam, three menstrual cycles can pass in at least two months, and according to the two companions (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad), in thirty-nine days.	614
611	Explicit words (Sareeh) do not require intention.	Reprimand for encouraging false confession in a Shariah matter.	615
611	When explicit words follow metaphorical (Kinaya) words of divorce, they cannot serve as an indicator for the intention of divorce.	Deliberately calling the truth falsehood and returning from the truth to express doubt is not a cause for honor, but for severe humiliation in both worlds.	615
611	In metaphorical expressions (Kinayat), the indicator (Qareenah) should come first.	The Rightly Guided Caliphs and the Mujtahid Imams (may Allah be pleased with them) never retracted from the truth.	615
611	Indication towards the difference of opinion in Fatawa Khairiyyah and Muheet.	One who attributes turning away from the truth to sacred personalities is disrespectful and deficient in religious understanding.	615
612	What is the ruling if a husband says to his wife: "You are divorced, so observe the waiting period" or "You are divorced and observe the waiting period" or "You are divorced, observe the waiting period"?	Words like "I am not capable of anything, I will give an answer later, she is not my wife, she is my maternal cousin" are not among the words of divorce.	615
613	The validity of the waiting period (Iddah) starting from the time of confession, which is the fatwa of later scholars against the four Imams and	"Marry her off to someone else" is among metaphorical words; intention is a condition for it to count as divorce.	616

Page	Subject / Ruling	Related Detail / Reference	Page
	the majority of companions and successors, applies only in cases of suspicion, and even then, only where divorce is proven by confession alone.		
613	If the divorce is known before the confession, then by consensus, the waiting period will start from the time of the divorce, not the time of confession.	In metaphorical divorce, an oath will be taken from the husband regarding his intention. If he says divorce was not intended, the ruling of divorce will not apply, and for the woman to marry elsewhere would be strictly forbidden.	616
613	If divorce is not proven before confession, but he states he gave divorce at the time he separated from his wife, then the waiting period will be counted from the time of divorce.	In the case of metaphorical divorce, if the husband refuses to take an oath, the divorce will take place.	616
613	Reconciliation between the statement of Imam Muhammad and the fatwa of later scholars.	If metaphorical words were used and the husband disappeared, and an oath could not be administered, the divorce will not be proven.	617
614	Although for those who menstruate, it's not necessary that the waiting period ends in one and a half to two years, this duration is certainly sufficient for its completion.	"Get away from my sight and presence" with the intention of divorce, is considered a divorce.	617

फ़तावा रज़विया - जिल्द 12

पृष्ठ	विषय / नियम	संबंधित विवरण / संदर्भ	पृष्ठ
611	रजई (Raj'i) तलाक बाइना (Ba'in) के साथ मिलकर बाइना हो जाती है क्योंकि इस स्थिति में रुजू (رجعت) करना वर्जित होता है।	इमाम-ए-आज़म के अनुसार कम से कम दो महीने और साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद) के अनुसार उनतालीस (39) दिनों में तीन मासिक धर्म बीत सकते हैं।	614
611	स्पष्ट शब्द (Sareeh) नीयत (इरादे) के मोहताज नहीं होते।	शरई मामले में गलत स्वीकारोक्ति के लिए प्रोत्साहित करने पर फटकार।	615
611	जब स्पष्ट शब्द किनाया (सांकेतिक) तलाक के बाद आएँ तो वे तलाक की नीयत के लिए संकेत (Qareenah) नहीं बन सकते।	जानबूझकर सत्य को असत्य कहना और सत्य से मुड़कर उसमें अपना संदेह बताना सम्मान का कारण नहीं, बल्कि दोनों लोकों में भारी अपमान का कारण है।	615
611	सांकेतिक शब्दों (Kinayat) में संकेत (Qareenah) को पहले होना चाहिए।	खुलाफा-ए-राशिदीन और मुजतहिद इमामों (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने कभी सत्य से मुँह नहीं मोड़ा।	615
611	फ़तावा खैरिया और मुहीत में मतभेद की ओर संकेत।	पवित्र हस्तियों की ओर सत्य से हटने का संबंध जोड़ने वाला असभ्य और धर्म की समझ में कमी रखने वाला है।	615
612	पति ने पत्नी से कहा 'तू तलाकशुदा है तो इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) बिता' या 'तू तलाकशुदा है और इद्दत बिता' या 'तू तलाकशुदा है, इद्दत बिता' तो क्या नियम है?	"मैं किसी काबिल नहीं जवाब दे दूँगा, मेरी पत्नी नहीं ममेरी बहन है" जैसे शब्द तलाक के शब्दों में से नहीं हैं।	615
613	इकरार (स्वीकारोक्ति) के समय से इद्दत का मान्य होना, जो कि बाद के विद्वानों का फतवा है		616

पृष्ठ	विषय / नियम	संबंधित विवरण / संदर्भ	पृष्ठ
	और चार इमामों और बहुसंख्यक सहाबा व ताबेईन के विरुद्ध है, केवल संदेह की स्थिति में है और वह भी वहां जहां तलाक केवल इकरार से सिद्ध हो।	"फलाँ से उसकी शादी कर दो" सांकेतिक शब्दों में से है, तलाक के लिए नीयत शर्त है।	
613	यदि तलाक इकरार से पहले ही ज्ञात हो, तो सर्वसम्मति (Ijma) से इद्दत तलाक के समय से होगी, न कि इकरार के समय से।	सांकेतिक तलाक में नीयत के बारे में पति से शपथ ली जाएगी, यदि वह कहे कि तलाक का इरादा नहीं था, तो तलाक का आदेश नहीं होगा और महिला का दूसरी जगह निकाह करना पूर्णतः हराम होगा।	616
613	यदि तलाक इकरार से पहले सिद्ध न हो लेकिन वह उस समय से तलाक देना बताता है जब से पत्नी को अलग कर दिया था, तो इद्दत तलाक के समय से गिनी जाएगी।	सांकेतिक तलाक की स्थिति में यदि पति शपथ लेने से इनकार कर दे तो तलाक प्रभावी हो जाएगा।	616
613	इमाम मुहम्मद के कथन और बाद के विद्वानों के फतवे में सामंजस्य।	सांकेतिक शब्द का प्रयोग करके पति गायब हो गया और उस पर शपथ नहीं ली जा सकी, तो तलाक सिद्ध नहीं होगा।	617
614	डेढ़-दो साल में यद्यपि मासिक धर्म वाली महिलाओं की इद्दत का समाप्त होना अनिवार्य नहीं है, लेकिन यह अवधि इद्दत की समाप्ति के लिए निश्चित रूप से पर्याप्त है।	"तुम हमारे सामने और नज़र से दूर हो जाओ" तलाक की नीयत के साथ तलाक है।	617

صفحہ	مضمون / مسئلہ	متعلقہ تفصیل / حوالہ صفحہ
۶۱۱	رجعی بائن کے ساتھ جمع ہو کر بائن ہو جاتی ہے کیونکہ اس صورت میں رجعت ممتنع ہوتی ہے۔	امام اعظم کے نزدیک کم از کم دو ماہ اور صاحبین کے نزدیک انتالیس دن میں تین حیض گزر سکتے ہیں۔ ۶۱۴
۶۱۱	صریح نیت کی محتاج نہیں ہوتی۔	مسئلہ شرعیہ میں غلط اعتراف کی ترغیب پر سرزنش۔ ۶۱۵
۶۱۱	صریح جب کنایہ طلاق سے مؤخر ہو تو وہ نیت طلاق پر قرینہ نہیں بن سکتی۔	دانستہ حق کو باطل اور حق سے رجوع کر کے اس میں اپنا شبہ بتانا موجب عزت نہیں دارین میں سخت ذلت کا باعث ہے۔ ۶۱۵
۶۱۱	کنایات میں قرینہ کو مقدم ہونا چاہئے۔	خلفاء راشدین اور ائمہ مجتہدین رضی اللہ تعالیٰ عنہم نے کبھی حق سے رجوع نہیں کیا۔ ۶۱۵
۶۱۱	فتاویٰ خیریہ اور محیط میں اختلاف کی طرف اشارہ۔	مقدس ہستیوں کی طرف رجوع عن الحق کی نسبت کرنے والا بے ادب مختل الدین ہے۔ ۶۱۵
۶۱۲		۶۱۵

صفحہ	مضمون / مسئلہ	متعلقہ تفصیل / حوالہ صفحہ
۶۱۳	شوہر نے بیوی کو کہا انت طالق فاعتدی یا انت طالق واعتدی یا انت طالق اعتدی تو کیا حکم ہے۔	"میں کسی قابل نہیں جواب دے دوں گا، میری بیوی نہیں ماموں زاد بہن ہے" الفاظ طلاق میں سے نہیں۔
۶۱۳	وقت اقرار سے عدت کا معتبر ہونا ائمہ اربعہ اور جمہور صحابہ و تابعین کے خلاف جو فتویٰ متاخرین ہے صرف محل تہمت میں ہے اور وہ بھی وہاں کہ طلاق صرف اقرار سے ثابت ہو۔	"فلاں سے اس کی شادی کر دو" کنایہ کے الفاظ میں سے ہے، طلاق کے لئے نیت شرط ہے۔ ۶۱۶
۶۱۳	اگر طلاق اقرار سے پہلے معلوم ہو تو بالا جماع عدت وقت طلاق سے ہوگی نہ کہ وقت اقرار سے۔	"طلاق کنائی میں نیت کے بارے میں شوہر سے قسم لی جائے گی، اگر کہے طلاق مراد نہ تھی تو حکم طلاق نہ ہوگا اور عورت کا دوسری جگہ نکاح محض حرام ہوگا۔ ۶۱۶
۶۱۳	طلاق اگر اقرار سے پہلے ثابت نہ ہو مگر وقت سے طلاق دینا بیان کرتا ہے جب سے زوجہ کو جدا کر دیا تھا تو عدت وقت طلاق سے شمار ہوگی۔	طلاق بالکنایہ کی صورت میں شوہر قسم سے انکاری ہو تو طلاق واقع ہو جائے گی۔ ۶۱۶
۶۱۳	امام محمد کے ارشاد اور متاخرین کے فتویٰ میں تطبیق۔	۶۱۷

صفحہ	مضمون / مسئلہ	متعلقہ تفصیل / حوالہ صفحہ
		لفظ کنائی استعمال کر کے شوہر غائب ہو گیا اور اس پر قسم نہ رکھی جا سکی تو طلاق ثابت نہیں ہوگی۔
۶۱۴	ڈیڑھ دو سال میں اگرچہ ذوات الحیض کی عدت کا انقضاء لازم نہیں مگر یہ مدت انقضاء عدت کے لئے کافی ضرور ہے۔	"تم ہمارے سامنے و نظر سے دور ہو جاؤ" بنیت طلاق طلاق ہے۔ ۶۱۷

Fatawa Rizvia | Volume 12

Ref No.	Content
618	A husband while expelling his wife from home said, "You get out, from today there is no relation of any kind between me and you." Later, when asked, the husband admitted, "I have already left her from the same date when she left." In this situation, an irrevocable divorce (Talaq-e-Ba'in) has occurred.
618	Although after a period of six years, it is apparent that three menstrual cycles must have passed, there is also a possibility that they haven't. Until three cycles have passed, the waiting period ('Iddah) for a menstruating woman does not end.
618	Divorce was given earlier, but admitted later; if they were separated since the time of divorce, the 'Iddah will be counted from that time, and if they were living together, then from the time of admission.
618	The statement of Imam Muhammad that 'Iddah starts from the time of divorce, and the fatwa of later jurists that it starts from the time of admission; reconciliation and harmony between them.
620	In explicit divorce (Sarih Talaq) without attribution, the decision will depend on the intention.
623	If a person says about his wife, "She is of no use to me anymore," and denies the intention of divorce, the wife can ask for an oath from him. If he refuses to take the oath, he should be presented before a Qazi (judge); if he refuses there too, it will be considered Talaq-e-Ba'in.
624	"I give Aisha Begum the choice, whether she marries someone or remains single, I have no objection." Divorce will occur with these words provided there is an intention for it.
624	"Go away" (Chali ja) constitutes divorce if intended as such.
625	"She is not for my purpose" constitutes divorce provided there is an intention for it.
625	The 'Iddah for a pregnant woman is childbirth.

Ref No.	Content
621	Saying "I set free" in a state of anger will result in Talaq-e-Ba'in, but if there is no attribution towards the woman, it depends on the husband's intention.
621	"Go away" is among metaphors (Kinaya). If the husband refuses to swear that he did not intend divorce for his wife, the matter should be presented before a Qazi.
622	Divorce occurs even in a state of anger, pregnancy, or if the woman is far away.
623	"She is absolutely of no use to me" results in divorce provided there was an intention for it.
625	Remarriage without proof of divorce or within the 'Iddah period is forbidden (Haram).
626	"If she doesn't come to me within a week, she can go wherever she wants; you have the choice of your heart, I have the choice of mine." This constitutes divorce provided there is an intention for it.
626	In metaphorical expressions, if the husband refuses to swear regarding his intention, a case should be filed before the Shari'ah authority. If the husband refuses to take an oath before him as well, divorce will be established.
626	"I am not liked, then marry someone else." This sentence spoken during discussion and in anger will result in divorce.
627	"Go to your home, you are of no use to me, I have divorced you." In case of no specific intention, a revocable divorce (Talaq-e-Raj'i) will occur based only on the last words.

सं.	सामग्री
618	पति ने पत्नी को घर से निकालते समय कहा, "तू निकल जा, आज से मेरा और तेरा किसी प्रकार का कोई संबंध नहीं"। बाद में पूछने पर पति ने स्वीकार किया, "मैंने उसे उसी तारीख से छोड़ दिया है जब वह गई थी"। इस स्थिति में तलाक़-ए-बाइन (अटल तलाक़) प्रभावी हो गया।
618	छह साल की अवधि बीतने के बाद यद्यपि तीन मासिक धर्मों का गुजरना स्पष्ट है, फिर भी न गुजरने की भी संभावना है। जब तक तीन मासिक धर्म न गुजरें, मासिक धर्म वाली महिला की इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) समाप्त नहीं होती।
618	तलाक़ पहले दी, इकरार बाद में किया; यदि तलाक़ के समय से ही अलग हों तो इद्दत उसी समय से मानी जाएगी, और साथ रहते हों तो इकरार के समय से।
618	इमाम मुहम्मद का कथन कि इद्दत तलाक़ के समय से है और बाद के विद्वानों का फ़तवा कि इकरार के समय से; इनमें सामंजस्य और समन्वय।
620	बिना संबोधन के स्पष्ट तलाक़ में फैसला नीयत पर आधारित होगा।
621	

सं.	सामग्री
623	किसी व्यक्ति ने अपनी पत्नी के बारे में कहा कि "वह मेरे काम की नहीं रही" और तलाक़ की नीयत से इनकार करता है, तो पत्नी उससे शपथ ले सकती है। यदि वह शपथ से इनकार करे तो उसे काज़ी के सामने पेश किया जाए, वहाँ भी इनकार करने पर तलाक़-ए-बाइन हो जाएगा।
624	"मैं आयशा बेगम को अधिकार देता हूँ कि वह चाहे किसी से निकाह करे या बैठी रहे, मुझे कोई आपत्ति नहीं है"। इन शब्दों से तलाक़ की नीयत होने पर तलाक़ प्रभावी हो जाएगा।
624	"चली जा" तलाक़ की नीयत से तलाक़ है।
625	"मेरे मतलब की नहीं" तलाक़ की नीयत होने की शर्त पर तलाक़ है।
625	गर्भवती महिला की इद्दत प्रसव (बच्चे का जन्म) है।
625	

सं.	सामग्री
	क्रोध की स्थिति में "आज़ाद किया" कहने से तलाक़-ए-बाइन हो जाएगा, लेकिन यदि स्त्री की ओर संबोधन न हो तो फैसला पति की नीयत पर होगा।
621	"चली जा" कनाया (परोक्ष शब्दों) में से है। यदि पति इस बात की शपथ लेने से इनकार करे कि उसने अपनी पत्नी का इरादा नहीं किया था, तो मामला काज़ी के सामने पेश किया जाए।
622	क्रोध और गर्भावस्था की स्थिति में भी, और स्त्री के दूर होने पर भी तलाक़ प्रभावी हो जाएगा।
623	"वह बिल्कुल मेरे काम की न रही" तलाक़ की नीयत होने की शर्त पर तलाक़ प्रभावी हो गया।

सं.	सामग्री
	बिना तलाक़ के सबूत के और इद्दत के दौरान दूसरा निकाह हराम है।
626	"हफ्ते के अंदर मेरे पास न आए तो जहाँ चाहे जाए, तुझे अधिकार तेरे दिल का, मुझे अधिकार मेरे दिल का"। तलाक़ की नीयत होने की शर्त पर यह तलाक़ है।
626	कनाया में यदि पति अपनी नीयत के बारे में शपथ लेने से इनकार करे, तो शरीयत के न्यायाधीश के पास शिकायत की जाए। यदि पति उसके सामने भी कसम खाने से इनकार करे, तो तलाक़ सिद्ध हो जाएगा।
626	"मैं पसंद नहीं हूँ तो दूसरे से निकाह कर दो"। बातचीत और क्रोध की स्थिति में इस वाक्य से तलाक़ हो जाएगा।
627	"अपने घर चली जा, मेरे काम की नहीं, मैंने तुझे तलाक़ दी"। नीयत न होने की स्थिति में केवल अंतिम शब्द से तलाक़-ए-रजई (प्रतिसंहरणीय तलाक़) होगा।

نمبر	عبارت
۶۱۸	شوہر نے عورت کو گھر سے نکالتے وقت کہا "تو نکل جا، آج سے مجھ سے اور تجھ سے کسی قسم کا کوئی تعلق نہیں" بعد میں پوچھنے پر شوہر نے اقرار کیا "میں اس کو اسی تاریخ سے چھوڑ چکا ہوں جب وہ گئی" اس صورت میں طلاق بائن واقع ہو گئی۔
۶۱۸	عرصہ چھ سال اگر چہ تین حیضوں کا گزر جانا ظاہر ہے مگر نہ گزرنے کا بھی احتمال ہے اور جب تک تین حیض نہ گزریں حیض والی عورت کی عدت ختم نہیں ہوتی۔
۶۱۸	طلاق پہلے دی، اقرار بعد میں کیا، اگر طلاق کے وقت سے ہی جدا ہوں تو عدت اسی وقت سے لی جائے گی اور ساتھ رہتے ہوں تو وقتِ اقرار سے۔
۶۱۸	

نمبر	عبارت
۶۲۳	کسی شخص نے اپنی بیوی کے بارے میں کہا کہ "وہ میرے کام کی نہیں رہی" اور نیت طلاق سے انکار کرتا ہے تو بیوی اس سے حلف لے سکتی ہے اگر حلف سے انکار کرے تو قاضی کے سامنے پیش کیا جائے وہاں بھی انکاری ہو تو طلاق بائن ہو گئی۔
۶۲۴	"میں عائشہ بیگم کو اختیار دیتا ہوں چاہے کسی سے عقد کرے یا بیٹھی رہے، مجھے کچھ عذر نہیں" ان الفاظ سے بشرط نیت طلاق واقع ہو گی۔
۶۲۴	"چلی جا" نیت طلاق سے طلاق ہے۔
۶۲۵	

نمبر	عبارت
	قول امام محمد کہ عدت وقتِ طلاق سے اور فتوائے متاخرین کہ وقتِ اقرار سے ہے، ان میں تطبیق و توفیق۔
۶۲۰	بے اضافت صریح طلاق میں مدار نیت پر ہوگا۔
۶۲۱	"آزاد کیا" سے محلِ غضب میں طلاق بائن ہو جائیگی، لیکن عورت کی طرف اضافت نہ ہو تو مدار شوہر کی نیت پر ہوگا۔
۶۲۱	"چلی جا" کنایات سے ہے۔ اگر اس پر حلف لینے سے انکار کرے کہ میں نے اپنی عورت مراد نہیں لی تھی تو معاملہ قاضی کے سامنے پیش کیا جائے۔
۶۲۲	غصہ اور حمل کی حالت میں نیز عورت دور ہو تب بھی طلاق واقع ہو جائے گی۔
۶۲۳	"وہ بالکل میرے کام کی نہ رہی" بشرط نیت طلاق واقع ہو گئی۔

نمبر	عبارت
	"میرے مطلب کی نہیں" بشرط نیت طلاق ہے۔
۶۲۵	حاملہ کی عدت واضع حمل ہے۔
۶۲۵	بلا ثبوت طلاق اور عدت کے اندر دوسرا نکاح حرام ہے۔
۶۲۶	"ہفتہ کے اندر میرے پاس نہ آئے تو جہاں چاہے جائے، تجھ اختیار تیرے دل کا مجھے اختیار میرے دل کا" بشرط نیت طلاق ہے۔
۶۲۶	کنایہ میں شوہر نیت کے بارے میں حلف سے انکاری ہو تو حاکم شرعی کے حضور نالش کی جائے اگر شوہر اس کے سامنے بھی قسم کھانے سے انکار کرے تو طلاق ثابت ہو جائے گی۔
۶۲۶	

نمبر	عبارت نمبر	عبارت
		"میں پسند نہیں ہوں تو دوسرے سے نکاح کر دو" اس جملہ سے حالت مذاکرہ و غضب میں طلاق واقع ہو گی۔
	۶۲۷	"اپنے گھر کو چلی جا میرے کام کی نہیں، میں نے تجھے طلاق دی" عدم نیت کی صورت میں صرف آخری لفظ سے طلاق رجعی پڑے گی۔

Fatawa Razvia Volume Twelve

- If a revocable divorce (Talaq-e-Raj'ee) is given to a pregnant woman and no reconciliation occurs before delivery, then a new marriage contract (Nikah) is required with the woman's consent. (Page 627 | 631)
- Halala becomes mandatory after three divorces, and once mandatory, there is no way to waive it. (Page 627 | 631)
- All legal ploys (Heela) mentioned in 'Quniya' etc. to waive the requirement of Halala after it becomes mandatory are invalid. (Page 627 | 632)
- If multiple divorces are given using several words to a woman with whom the marriage was not consummated, she becomes irrevocably separated (Ba'in) with just one divorce; the rest are superfluous. (Page 628 | 632)
- Saying "I am leaving your daughter, she is of no use to me" resulted in two irrevocable (Ba'in) divorces. (Page 628 | 632)
- If a woman is divorced before the consummation of marriage (Rukhsati), there is no need for a waiting period (Iddah). (Page 628 | 633)
- The addition of an irrevocable (Ba'in) state to a revocable (Raj'ee) divorce due to the prohibition of reconciliation makes the revocable divorce irrevocable as well. (Page 628 | 633)
- The word "leaving" (Chhorta hoon) is explicit; saying it three times resulted in a triple irrevocable (Mughallaza) divorce. (Page 629 | 633)
- "I answer from this moment and keep no connection" constitutes one irrevocable (Ba'in) divorce. (Page 629 | 634)
- Returning the registration of a divorce does not rescind the divorce. (Page 631 | 634)
- Ruling on several phrases regarding whether they constitute words of divorce or not. (Page 631)

(Second Index Column) - A husband saying "consider this letter as a divorce deed" is not a valid way to effect a divorce. (Page 631) - The wife asked for a divorce, and the husband said "Talaq dada angar" (in Persian) or said "Ahsibee annaki Taaliq" (in Arabic), meaning "consider yourself divorced"; despite the intention, divorce will not occur. (Page 631) - A husband's statement that "If you arrange my wife's marriage, I will have no further objection or dispute of any kind" is outwardly a promise to end the conflict. (Page 632) - "I no longer have any concern (Sarokar) with my wife" are not words of divorce. (Page 632) - Literal meanings of the word "Sarokar" (concern/ connection). (Page 632) - A husband's claim that "Since my wife left without my

permission, her being out of the marriage is clearer than the sun" is completely absurd and incorrect. (Page 633) - A confession or admission made on false grounds is not credible. (Page 633) - The following three phrases equate to giving permission for marriage and are among the indirect expressions (Kinayat): (1) I give permission with full willingness for her marriage to be done with someone else, (2) I gave you permission with consent and desire, (3) Her improper conduct was the reason for allowing another marriage. (Page 633) - No matter how many irrevocable indirect terms (Kinayat-e-Ba'ina) are used, even if the intention for divorce is present in all, only one divorce will occur because an irrevocable state (Ba'in) does not follow another. (Page 634) - Read the letter word for word so that divorce occurs according to Sharia; if even one word of the letter remains unread, the divorce will not take place. (Page 634)

फतावा रज़विया जिल्द बारहवीं

- गर्भवती महिला को तलाक़-ए-रजई दी गई और प्रसव (डिलीवरी) से पहले मेल नहीं किया गया, तो अब महिला की सहमति से दोबारा निकाह की आवश्यकता है। (पृष्ठ ६२७ | ६३१)
- हलाला तीन तलाकों पर अनिवार्य होता है, और जब यह अनिवार्य हो जाए, तो इसे रद्द करने का कोई तरीका नहीं है। (पृष्ठ ६२७ | ६३१)
- हलाला की अनिवार्यता के बाद इसे रद्द करने के लिए 'कुनिया' आदि में उल्लिखित सभी हीले (बहाने) बातिल (अमान्य) हैं। (पृष्ठ ६२७ | ६३२)
- यदि कई शब्दों में कई तलाक़ें दी जाएं तो जिस स्त्री के साथ संबंध न हुआ हो, वह एक ही तलाक़ से 'बाइन' (विच्छेदित) हो जाती है, बाकी निरर्थक हैं। (पृष्ठ ६२८ | ६३२)
- "मैं तुम्हारी लड़की को छोड़ता हूँ, वह मेरे काम की नहीं" कहने से दो 'बाइन' तलाक़ें प्रभावी हो गईं। (पृष्ठ ६२८ | ६३२)
- रुख़सती (विदाई) से पहले यदि महिला को तलाक़ हो जाए, तो इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) की आवश्यकता नहीं है। (पृष्ठ ६२८ | ६३३)
- मेल-मिलाप की मनाही के कारण 'बाइन' का 'रजई' से मिलना 'रजई' को भी 'बाइन' बना देता है। (पृष्ठ ६२८ | ६३३)
- "छोड़ता हूँ" शब्द स्पष्ट है; तीन बार कहने से 'तलाक़-ए-मुग़ल्लज़ा' (अत्यधिक गंभीर तलाक़) प्रभावी हो गई। (पृष्ठ ६२९ | ६३३)
- "मैं इस समय से जवाब देता हूँ और मेरा उससे कोई संबंध नहीं है" एक 'बाइन' तलाक़ होगी। (पृष्ठ ६२९ | ६३४)
- तलाक़ की रजिस्ट्री वापस कर देने से तलाक़ वापस नहीं होती। (पृष्ठ ६३१ | ६३४)
- कुछ शब्दों के बारे में निर्णय कि वे तलाक़ के शब्द हैं या नहीं। (पृष्ठ ६३१)

(अनुक्रमणिका का दूसरा स्तंभ) - पति का यह कहना कि 'इस पत्र को तलाक़नामे के रूप में स्वीकार करें', तलाक़ प्रभावी करने के लिए उपयुक्त नहीं है। (पृष्ठ ६३१) - पत्नी ने तलाक़ माँगी, पति ने कहा 'तलाक़ दादा अंगार' (फारसी में) या कहा 'अहसिबी अन्नाकि ताि़लक' (अरबी में) यानी 'तू खुद को तलाक़शुदा मान ले', तो नीयत के बावजूद तलाक़ नहीं होगी। (पृष्ठ ६३१) - पति का यह कहना कि 'यदि आप मेरी पत्नी का निकाह करा देंगे, तो मुझे आगे किसी प्रकार का कोई ऐतराज नहीं होगा', यह स्पष्ट रूप से विवाद खत्म करने का वादा है। (पृष्ठ ६३२) - "मुझे अपनी पत्नी से अब कोई वास्ता

(सरोकार) नहीं रहा" तलाक़ के शब्द नहीं हैं। (पृष्ठ ६३२) - शब्द "सरोकार" के शाब्दिक अर्थ। (पृष्ठ ६३२) - पति का यह कहना पूरी तरह व्यर्थ और गलत है कि 'मेरी पत्नी मेरी अनुमति के बिना चली गई, इसलिए उसका निकाह से बाहर होना सूर्य के समान स्पष्ट है'। (पृष्ठ ६३३) - जो इक़रार (स्वीकृति) गलत आधार पर हो, वह मान्य नहीं होता। (पृष्ठ ६३३) - निम्नलिखित तीन वाक्यांशों का अर्थ निकाह की अनुमति देना है और वे प्रतीकात्मक शब्दों (कनायात) में से हैं: (१) मैं अपनी पूरी खुशी से अनुमति देता हूँ कि उसका निकाह किसी अन्य से कर दो, (२) रजामंदी और इच्छा से आपको अनुमति दी, (३) उसका अनुचित व्यवहार दूसरे निकाह की अनुमति का कारण बना। (पृष्ठ ६३३) - कितने ही प्रतीकात्मक विच्छेद (कनाया-ए-बाइन) शब्द हों और सबमें तलाक़ की नीयत भी हो, तब भी केवल एक ही प्रभावी होगी क्योंकि 'बाइन' के बाद 'बाइन' प्रभावी नहीं होती। (पृष्ठ ६३४) - पत्र को अक्षर-दर-अक्षर पढ़कर सुनाएँ ताकि उस पर शरिया के अनुसार तलाक़ प्रभावी हो जाए; यदि पत्र का एक शब्द भी पढ़ने से रह गया, तो तलाक़ प्रभावी नहीं होगी। (पृष्ठ ६३४)

فتاویٰ رضویہ جلد دو از دہم

- حاملہ کو طلاق رجعی دیا اور وضع حمل سے قبل رجوع نہ کیا تو اب برضاء عورت دوبارہ نکاح کی حاجت ہے۔ (۶۲۷ | ۶۳۱)
- حلالہ تین طلاقوں پر لازم ہوتا ہے اور جب لازم ہوتا ہے تو اس کے ساقط کرنے کی کوئی صورت نہیں۔ (۶۲۷ | ۶۳۱)
- لزومِ حلالہ کے بعد اس کو ساقط کرنے کے جو حیلے قنیہ وغیرہ میں مذکور ہیں سب باطل ہیں۔ (۶۲۷ | ۶۳۲)
- متعدد الفاظ سے چند طلاقیں دیں تو غیر مدخولہ ایک ہی طلاق سے بائن ہو جاتی ہے بقیہ لغو ہیں۔ (۶۲۸ | ۶۳۲)
- "میں تمہاری لڑکی کو چھوڑتا ہوں، میرے کام کی نہیں" سے دو بائن طلاقیں واقع ہوگئیں۔ (۶۲۸ | ۶۳۲)
- رخصتی سے پہلے عورت کو طلاق ہوگئی تو عدت کی حاجت نہیں۔ (۶۲۸ | ۶۳۳)
- بائن کار جعی کو لحوقِ امتناع رجعت کی وجہ سے رجعی کو بھی بائن بنا دیتا ہے۔ (۶۲۸ | ۶۳۳)
- "چھوڑتا ہوں" کا لفظ صریح ہے تین بار کہا تو طلاق مغلظہ واقع ہوگئی۔ (۶۲۹ | ۶۳۳)
- "اس وقت سے جواب دیتا ہوں اور اپنا کوئی تعلق نہیں رکھتا" ایک بائن طلاق ہوگی۔ (۶۲۹ | ۶۳۴)
- طلاق کی رجسٹری واپس کردینے سے طلاق واپس نہیں ہوتی۔ (۶۳۱ | ۶۳۴)
- چند الفاظ کے بارے میں الفاظِ طلاق سے ہونے نہ ہونے کا فیصلہ۔ (۶۳۱)

(فہرست کا دوسرا کالم) - شوھر کا یہ کہنا کہ اس خط کو بطور طلاق نامہ تصور فرمائیں صالحِ ایقاعِ طلاق نہیں۔ (۶۳۱) - بیوی نے طلاق مانگی، شوہر نے کہا طلاق دادہ انگار (بزبانِ فارسی) یا کہا احسبی انک طالق (بزبانِ عربی) یعنی تو خود کو طلاق شدہ شمار کر ، تونیّت کے باوجود طلاق نہیں ہوگی۔ (۶۳۱) - شوہر کا یہ کہنا کہ "اگر آپ میری بیوی کا نکاح کرادیں گے تو مجھے کسی نوع کا عذرِ تکرار آگے نہیں اور نہ کروں گا" بظاہر ترکِ نزاع کا وعدہ ہے۔ (۶۳۲) - "مجھے اپنی بیوی سے اب کچھ سروکار نہیں رہا" الفاظِ طلاق سے نہیں ۔ (۶۳۲) - لفظ "سروکار" کے لغوی معانی۔ (۶۳۲) - شوہر کا یہ کہنا محض لغو وغلط ہے کہ "میری بیوی میری بلا اجازت گئی تو نکاح سے باہر ہونا اظہر من الشمس ہے"۔ (۶۳۳) - جو اقرار غلط بناء پر ہو وہ معتبر نہیں ہوتا۔ (۶۳۳) - مندرجہ ذیل تین الفاظ کا حاصل اجازتِ نکاح دینا ہے اور وہ بیشک کنایات سے ہے : (۱) بخوشی تمام اجازت دیتا ہوں کہ اس کا نکاح کسی دوسرے سے کردو (۲) برضاء و رغبت آپ کو اجازت دی (۳) اس کا خرابانہ ہونا سببِ دوسرے نکاح کی اجازت دی۔ (۶۳۳) - کتنی ہی کنایاتِ بائنہ ہوں اور سب سے نیتِ طلاق بھی ہو تب بھی صرف ایک واقع ہوگی کیونکہ بائن بائن کو لاحق نہیں ہوتی۔ (۶۳۴) - خط کو حرف بحرف پڑھ کر سنادیں تاکہ اس پر شرعاً طلاق واقع ہوجائے اگر خط کا ایک لفظ بھی پڑھنے سے رہ گیا طلاق واقع نہ ہوگی۔ (۶۳۴)

Fatawa Razawiya Volume 12

Page	Description	Description	Page
634	In the case of giving permission for a second marriage, in the presence of prior and subsequent indications, one divorce will occur judicially.	There are three ways to give divorce to another with the husband's permission: delegation (tafwiz), agency (tawkeel), and message (risala).	638
635	Indication by speech is like indication by circumstance.	The words of delegation (tafwiz) are three: choice (takhyir), matter in hand (amr bi al-yad), and will (mashiyat).	638
635	Indication by circumstance is more general than indication by speech.	If a woman marries another person before the completion of the waiting period ('iddat), it is absolutely void and strictly forbidden.	639
635	The ruling of divorce based on a letter can only be made when the husband admits or it is proven by two just male witnesses or one man and two women according to Sharia that the letter is his; otherwise, a ruling is not based on mere similarity of handwriting.	In the case of delegation of divorce, if there is a dispute between husband and wife regarding exercising the choice for oneself, the woman will have to present witnesses; explanation of a specific detail from Alamgiri related to a similar issue.	640
636	In a divorce matter, the woman will act upon the judicial ruling.	After Khula, when the waiting period passes, a woman can marry another; she cannot do so before that.	640
636	A false confession has no religious effect.	If the husband makes a claim contrary to the apparent facts, the woman's statement will be considered credible.	641
636		If the woman claims divorce and the husband denies it, the	641

Page	Description	Description	Page
	After valid seclusion (khalwat sahihah), the full dowry (mahr) becomes obligatory upon divorce.	husband's statement will be considered credible.	
637	**Chapter on Delegation of Divorce**	A master said to his slave, "I gave you the choice of your manumission yesterday, but you did not free yourself." The slave said, "I had done so." In this case, the slave's statement will not be accepted.	641
638	"I will marry you on the condition that you do not marry anyone else, and if you do, I will have the choice over myself." This choice will be limited to the gathering where the news of the other woman's marriage is heard.	A person said to his slave, "I freed you yesterday in exchange for money, but you did not accept." The slave says, "I had accepted." In this case, the master's statement will be considered credible.	642
638	Unnecessary and foreign talk or a fight changes the nature of the gathering.	For the validity of giving choice to a woman before marriage, it is also necessary to say, "If I marry you, you have the choice of divorce."	642

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

पृष्ठ	विवरण	विवरण	पृष्ठ
६३४	दूसरे निकाह की इजाजत देने की सूरत में पिछले और बाद के संकेतों की मौजूदगी में न्यायिक रूप से एक तलाक हो जाएगा।	शौहर की इजाजत से दूसरी को तलाक देने की तीन सूरतें हैं: तफ़वीज़, तौकील, रिसाला।	६३८
६३५	वाणी का संकेत, स्थिति के संकेत की तरह है।	तफ़वीज़ के शब्द तीन हैं: तख़्हीर, अम्र बिल-य़द और मशियत।	६३८
६३५	स्थिति का संकेत वाणी के संकेत से अधिक सामान्य है।	इद्दत खत्म होने से पहले औरत किसी दूसरे शख्स से निकाह करे तो वह बिल्कुल बातिल (अमान्य) और कतई हराम है।	६३९
६३५	खत की बुनियाद पर तलाक होने का हुक्म उसी सूरत में हो सकता है जब शौहर खुद स्वीकार करे या शरीयत के मुताबिक दो आदिल मर्द गवाह या एक मर्द और दो औरतें गवाह साबित कर दें कि यह खत उसी का है, वरना सिर्फ लिखावट की समानता पर हुक्म नहीं होगा।	तफ़वीज़े तलाक की सूरत में अपने नफ़्स (स्वयं) को इख़्तियार करने या न करने में मियां-बीवी में मतभेद हो, तो औरत को गवाह पेश करने होंगे; इसी तरह के एक मसले से मुताल्लिक़ आलमगीरी के एक जुज़िया (विवरण) की व्याख्या।	६४०
६३६	तलाक के मसले में औरत न्यायिक मसले पर अमल करेगी।	खुला के बाद जब इद्दत गुज़र जाए तो औरत दूसरे से निकाह कर सकती है, उससे पहले नहीं कर सकती।	६४०
६३६	झूठे इकरार (स्वीकारोक्ति) का धार्मिक रूप से कोई प्रभाव नहीं होता।	शौहर ज़ाहिर के खिलाफ दावा करे तो औरत का क़ौल (बयान) मोतबर (विश्वसनीय) होगा।	६४१
६३६	खलवते सहीहा के बाद तलाक से पूरा मेहर वाजिब हो जाता है।	औरत तलाक की मुद्दई (दावेदार) हो और शौहर मुनकिर (इनकारी), तो शौहर का क़ौल मोतबर होगा।	६४१

पृष्ठ	विवरण	विवरण	पृष्ठ
६३७	**बाब तफ़वीज़ुल तलाक़ (तलाक सौंपने का अध्याय)**	मालिक ने गुलाम से कहा कि मैंने कल तुझे तेरी आजादी का इख़्तियार दिया था मगर तूने खुद को आजाद नहीं किया, गुलाम ने कहा मैंने ऐसा कर लिया था, तो गुलाम की तस्दीक़ (पुष्टि) नहीं की जाएगी।	६४१
६३८	"मैं इस शर्त पर तुमसे निकाह करूंगी कि तुम किसी और से शादी न करो, और अगर करो तो मुझे अपने नफ़्स का इख़्तियार रहेगा," यह इख़्तियार दूसरी औरत की शादी की खबर सुनने की मजलिस (बैठक) तक सीमित रहेगा।	किसी शख्स ने अपने गुलाम से कहा कि मैंने कल तुझे माल के बदले आजाद किया था मगर तूने कबूल नहीं किया, गुलाम कहता है कि मैंने कबूल कर लिया था, तो मालिक का क़ौल मोतबर होगा।	६४२
६३८	फिजूल और अजनबी बातों और लड़ाई से मजलिस बदल जाती है।	निकाह से पहले औरत को इख़्तियार देने की सेहत (वैधता) के लिए यह कहना भी ज़रूरी है कि "अगर मैं तुझसे निकाह करूं तो तुझे तलाक का इख़्तियार है।"	६४२

صفحہ	عبارت
۶۳۴	دوسرے نکاح کی اجازت دینے کی صورت میں قرائن سابقہ ولاحقہ کی موجودگی میں قضاءً ایک طلاق واقع ہوگی۔
۶۳۵	دلالت قال دلالت حال کی طرح ہے۔
۶۳۵	دلالت حال دلالت مقال سے عام ہے۔
۶۳۵	خط کی بناء پر وقوع طلاق کا حکم اسی حالت میں ہوسکتا ہے جب شوہر مقر یا گواہان عادل شرعی دو مرد یا ایک مرد اور دو عورت ثابت ہو کہ یہ خط اس کا ہے ورنہ محض مشابہت خط پر حکم نہیں۔
۶۳۶	
۶۳۸	شوہر کی جازت سے دوسری کو طلاق دینے کی تین صورتیں ہیں: تفویض، توکیل، رسالہ۔
۶۳۸	الفاظ تفویض تین ہیں: تخییر، امر بالید اور مشیت۔
۶۳۹	عدت ختم ہونے سے پہلے عورت کسی دوسرے شخص سے نکاح کرے تو باطل محض اور حرام قطعی ہے۔
۶۴۰	تفویض طلاق کی صورت میں اپنے نفس کو اختیار کرنے نہ کرنے میں میاں بیوی میں اختلاف ہو تو عورت کو گواہ پیش کرنے ہوں گے، اسی قسم کے ایک مسئلہ سے متعلق عالمگیری کے ایک جزئیہ کی توضیح۔
۶۴۰	

صفحہ	عبارت
	طلاق کے مسئلہ میں عورت مسئلہ قضاء پر عمل کرے گی۔
۶۳۶	اقرار کاذب کا دیانۃً کوئی اثر نہیں ہوتا۔
۶۳۶	خلوت صحیحہ کے بعد طلاق سے کل مہر واجب ہوجاتا ہے۔
۶۳۷	**باب تفویض الطلاق**
۶۳۸	میں اس شرط پر تم سے نکاح کروں گی تم کسی سے شادی نہ کرو، اور اگر کرو تو مجھے اپنے نفس کا اختیار رہے گا، یہ اختیار دوسری عورت کی شادی کی خبر سننے کی مجلس پر محدود رہے گا۔
۶۳۸	فضول واجنبی کلام اور جنگ سے مجلس بدل جاتی ہے۔

صفحہ	عبارت
	خلع کے بعد جب عدت گزر جائے تو عورت دوسرے سے نکاح کرسکتی ہے اس سے پہلے نہیں کرسکتی۔
۶۴۱	شوہر خلاف ظاہر دعویٰ کرے تو عورت کا قول قول معتبر ہوگا۔
۶۴۱	عورت مدعیہ طلاق ہو اور شوہر منکر تو شوہر کا قول معتبر ہوگا۔
۶۴۱	مولیٰ نے غلام کو کہا کہ میں نے کل تیرے عتق کا تجھے اختیار دیا تھا مگر تو نے خود کو آزاد نہیں کیا، غلام نے کہا میں نے ایسا کرلیا تھا، تو غلام کی تصدیق نہیں کی جائے گی۔
۶۴۲	کسی شخص نے اپنے غلام کو کہا کہ میں نے کل تجھے مال کے بدلے آزاد کیا تھا مگر تو نے قبول نہیں کیا، غلام کہتا ہے کہ میں نے قبول کرلیا تھا، تو مولیٰ کا قول معتبر ہوگا۔
۶۴۲	قبل نکاح عورت کو اختیار دینے کی صحت کے لئے یہ کہنا بھی ضروری ہے

کہ اگر میں تجھ سے نکاح کروں تو تجھ کو

طلاق کا اختیار ہے۔

Fatawa Razawiyya - Volume 12

- Possession (Milk) or attribution to possession is necessary for the delegation of divorce. (Page 643)
- Unauthorized divorce (Talaq-e-Fuzooli) is dependent on the husband's permission. (Page 643)
- Ruling on various forms of marriage on the condition of delegation of divorce. (Page 643)
- Delegation of divorce is valid through possession or attribution to it. (Page 644)
- Whatever is in the question is implied in the answer. (Page 644)
- If a man delegates divorce to a woman contingent on a condition, the woman will have the choice until that same session (majlis) upon the occurrence of the condition; her choice will expire if the session changes. If she divorces herself after that, it will not occur. (Page 644)
- Forms of changing the session. (Page 644)
- There are two types of conditional delegation: absolute and timed. (Page 644)
- Another question related to the above-mentioned issue. (Page 646)
- A woman for whom 'iddat' (waiting period) is mandatory, if she marries another man before the passing of 'iddat', it is invalid, void, adultery, and forbidden. (Page 648)
- For a woman who menstruates, it is not certain that the 'iddat' will be completed in four months; it is possible that even in three years, three menstrual cycles are not completed. (Page 651)
- If a man delegates divorce to a woman and she leaves the house saying, "I cannot live according to the agreement now," divorce will not occur. (Page 652)
- Those who make changes and alterations in the 'Istifta' (formal request for a fatwa) are sinners; they should fear God. (Page 652)
- A person made his wife 'Mukhtar' (empowered) after marriage with the words "Amraha bi-yadiha" (her affair is in her hand), giving her the choice to leave the marriage and become free; this is a delegation of divorce. If he intends, divorce will occur; if not, it will not. (Page 652)
- He made divorce contingent on making jewelry and set a period of six months; if the attribution is from the woman's side in the contingency, then conditional divorce has occurred. (Page 652)
- Divorce will not be proven if there are no Sharia-compliant witnesses. (Page 655)

• The sole testimony of a woman regarding divorce will not be accepted. (Page 655)
• Sources and References. (Page 657)
• Appendix of Sources and References. (Page 681)

फतावा रज़विया - जिल्द 12

- तलाक के प्रत्यायोजन (तफवीज़) के लिए स्वामित्व (मिल्क) या स्वामित्व की ओर संबंध (इज़ाफ़त) आवश्यक है। (पृष्ठ 643)
- अनधिकृत तलाक (तलाक-ए-फुज़ूली) पति की अनुमति पर निर्भर है। (पृष्ठ 643)
- तलाक के प्रत्यायोजन की शर्त पर निकाह के विभिन्न रूपों का हुक्म। (पृष्ठ 643)
- तलाक का प्रत्यायोजन स्वामित्व या उसकी ओर संबंध करने से सही होता है। (पृष्ठ 644)
- जो कुछ सवाल में होता है, जवाब उसमें शामिल होता है। (पृष्ठ 644)
- यदि किसी पुरुष ने किसी शर्त के साथ स्त्री को तलाक का अधिकार दिया, तो शर्त पूरी होने पर स्त्री को उसी महफ़िल (मजलिस) तक अधिकार रहेगा; मजलिस बदलने से अधिकार खत्म हो जाएगा। इसके बाद यदि वह स्वयं को तलाक देगी तो वह प्रभावी नहीं होगा। (पृष्ठ 644)
- मजलिस बदलने के रूप। (पृष्ठ 644)
- शर्त के साथ जुड़े प्रत्यायोजन के दो प्रकार हैं: निरपेक्ष और समयबद्ध। (पृष्ठ 644)
- उपर्युक्त मामले से संबंधित एक अन्य प्रश्न। (पृष्ठ 646)
- जिस महिला पर इद्दत अनिवार्य हो, यदि वह इद्दत बीतने से पहले दूसरे पुरुष से विवाह करती है, तो यह नाजायज, बातिल (अमान्य), ज़िना (व्यभिचार) और हराम है। (पृष्ठ 648)
- मासिक धर्म वाली महिला की इद्दत का चार महीने में पूरा होना निश्चित नहीं है, बल्कि संभव है कि तीन साल में भी तीन मासिक धर्म पूरे न हों। (पृष्ठ 651)
- जिस महिला को पुरुष ने तलाक का अधिकार दिया और वह यह कहकर घर से चली गई कि "अब मैं इकरारनामे के अनुसार नहीं रह सकती," तो तलाक नहीं होगा। (पृष्ठ 652)
- इस्तफ़ता (फतवे के लिए आवेदन) में फेरबदल करने वाले पापी हैं; उन्हें खुदा का खौफ होना चाहिए। (पृष्ठ 652)
- एक व्यक्ति ने निकाह के बाद अपनी पत्नी को "अम्रहा बियदिहा" (उसका मामला उसके हाथ में है) कहकर अधिकार दिया, निकाह से बाहर होने और आज़ाद होने के साथ अधिकार दिया; यह तलाक का प्रत्यायोजन है। यदि वह नीयत (इरादा) करेगा तो तलाक होगा, नहीं करेगा तो नहीं होगा। (पृष्ठ 652)
- ज़ेवर बनवाने पर तलाक को शर्त के साथ जोड़ा और छह महीने की अवधि रखी; यदि इस जुड़ाव में स्त्री की ओर से संबंध (इज़ाफ़त) है, तो तलाक प्रभावी हो गया। (पृष्ठ 652)

• यदि शरीयत के अनुसार गवाह न हों तो तलाक साबित नहीं होगा। (पृष्ठ 655)
• तलाक के बारे में अकेली महिला की गवाही स्वीकार नहीं की जाएगी। (पृष्ठ 655)
• स्रोत और सन्दर्भ (माअखिज़ ओ मराजे)। (पृष्ठ 657)
• परिशिष्ट स्रोत और सन्दर्भ। (पृष्ठ 681)

فتاویٰ رضویہ - جلد دو ازدہم

- تفویض طلاق کے لئے ملک یا اضافت الی الملک ضروری ہے۔ (۶۴۳)
- طلاق فضولی اجازت زوج پر موقوف ہوتی ہے۔ (۶۴۳)
- تفویض طلاق کی شرط پر نکاح کی مختلف صورتوں کا حکم۔ (۶۴۳)
- تفویض طلاق ملک یا اس کی طرف اضافت کرنے سے صحیح ہوتی ہے۔ (۶۴۴)
- جو کچھ سوال میں ہو جواب اس کو متضمن ہوتا ہے۔ (۶۴۴)
- مرد نے عورت کو تفویض طلاق کسی شرط سے معلق کی تو وقوع شرط پر عورت کو اسی مجلس تک اختیار رہے گا، مجلس بدلنے سے اختیار جاتا رہے گا اس کے بعد اپنے نفس کو طلاق دے گی تو واقع نہ ہوگی۔ (۶۴۴)
- تبدیلی مجلس کی صورتیں۔ (۶۴۴)
- تفویض معلق بالشرط کی دو قسمیں ہی مطلق و مؤقت۔ (۶۴۴)
- سوال دیگر متعلقہ مسئلہ مذکورہ بالا۔ (۶۴۶)
- جس عورت پر عدت واجب ہو وہ مرور عدت سے قبل دوسرے مرد سے نکاح کرے تو ناجائز و باطل و زنا و حرام ہے۔ (۶۴۸)
- ذات الحیض کی عدت کا چار ماہ میں پورا ہونا قطعی نہیں بلکہ ممکن ہے کہ تین سال میں بھی تین حیض مکمل نہ ہوں۔ (۶۵۱)
- جس عورت کو مرد نے طلاق تفویض کی وہ یہ کہہ کر گھر سے چلی گئی کہ اب میں مطابق اقرار نامہ نہیں رہ سکتی ہوں، تو طلاق نہ ہوگی۔ (۶۵۲)
- استفتاء میں تغیر و تبدل کرنے والے گنہگار ہیں انہیں خوفِ خدا چاہئے۔ (۶۵۲)

- ایک شخص نے اپنی عورت کو نکاح کے بعد "امرھا بیدھا" مختار کر دیا نکاح سے خارج ہونا اور آزاد ہونے کے ساتھ اختیار دیا، یہ طلاق کی تفویض ہے، نیت کرے گا طلاق پڑے گی، نہ کرے گا نہ پڑے گی۔ (۶۵۲)
- زیور بنوانے پر طلاق معلق کی اور چھ ماہ کی میعاد رکھی، اگر تعلیق میں عورت کی طرف سے اضافت ہے طلاق معلق ہوگئی۔ (۶۵۲)
- گواہ شرعی نہ ہوں تو طلاق ثابت نہ ہوگی۔ (۶۵۵)
- طلاق کے بارے میں اکیلی عورت کی گواہی قبول نہیں ہوگی۔ (۶۵۵)
- مآخذ و مراجع (۶۵۷)
- ضمیمہ مآخذ و مراجع (۶۸۱)

Fatawa Razawiyya Volume 12

Index of Subsidiary Issues

Menstruation (Haiz): - According to Imam-e-Azam, three menstrual cycles can occur in a minimum of sixty days, whereas according to the Sahibayn, they can occur in forty-eight days. (466) - According to Imam-e-Azam, three menstrual cycles can pass in at least two months, while according to the Sahibayn, they can pass in thirty-nine days. (614) - Although it is apparent that three menstrual cycles would pass in a period of six years, there is also a possibility of them not passing. (618)

Leadership (Imamat): - The leadership (Imamat) of a transgressor (fasiq) is impermissible. (462) - Whoever allows a transgressor to remain in the position of Imam will be a sinner. (462) - Performing prayer behind someone who marries a non-wedded woman (in an improper marriage) is 'Makruh-e-Tahrimi' (highly disliked); if the prayer is performed, repeating it is obligatory (wajib). (464) - Leadership in prayer is the right of rulers, provided they are Muslims. (481)

Marriage (Nikah): - Marriage is not established over the woman's physical flesh and skin, but rather over the benefits of intimacy. (120) - In an invalid marriage (Nikah-e-Fasid), separation (mutarkah) can occur through verbal declaration alone; for example, saying "I have opened your path" or "I have left you." (156) - If one sister is already in a marriage, marrying the other sister is an invalid marriage. (160) - Separation is obligatory in an invalid marriage. (160) - Marrying two sisters together is invalid; similarly, marrying another sister during the 'Iddah' (waiting period) of the first is also invalid. (161)

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

अनुपूरक मुद्दों की सूची

मासिक धर्म (हैज़): - इमाम-ए-आज़म के अनुसार तीन मासिक धर्म कम से कम साठ दिनों में हो सकते हैं, जबकि साहिबैन के अनुसार वे अड़तालीस दिनों में हो सकते हैं। (४६६) - इमाम-ए-आज़म के अनुसार कम से कम दो महीने में और साहिबैन के अनुसार उनतालीस दिनों में तीन मासिक धर्म गुज़र सकते हैं। (६१४) - छह साल की अवधि में हालांकि तीन मासिक धर्म का गुज़र जाना ज़ाहिर है, लेकिन उनके न गुज़रने की भी संभावना है। (६१८)

नेतृत्व (इमामत): - एक फासिक (अधर्मी) की इमामत नाजायज़ है। (४६२) - जो फासिक को इमामत पर बनाए रखेगा वह गुनहगार होगा। (४६२) - गैर-मनकूहा (बिना निकाह वाली) से निकाह करने वाले के पीछे नमाज़ मकरूह-ए-तहरीमी है; यदि पढ़ ली जाए तो उसे दोहराना वाजिब है। (४६४) - नमाज़ में इमामत शासकों का अधिकार है, बशर्ते कि वे मुसलमान हों। (४८१)

निकाह: - निकाह औरत के मांस और त्वचा पर नहीं होता, बल्कि संभोग के लाभों पर लागू होता है। (१२०) - निकाह-ए-फासिद (अमान्य विवाह) में अलगाव (मुतारका) मौखिक घोषणा द्वारा भी हो सकता है, जैसे कोई कहे कि "मैंने तुम्हारा रास्ता खोल दिया" या "तुम्हें छोड़ दिया"। (१५६) - यदि एक बहन निकाह में हो तो दूसरी से निकाह फासिद (अमान्य) है। (१६०) - निकाह-ए-फासिद में अलगाव वाजिब है। (१६०) - दो बहनों से एक साथ निकाह फासिद है; इसी तरह एक की इद्दत के दौरान दूसरी से निकाह भी फासिद है। (१६१)

पृष्ठ ६७ / ६८८

فتاویٰ رضویہ جلد دو ازدہم

فہرست ضمنی مسائل

حیض: - امام اعظم کے نزدیک تین حیض کم از کم ساٹھ دن اور صاحبین کے نزدیک اڑتالیس دن میں ہو سکتے ہیں۔ (۴۶۶) - امام اعظم کے نزدیک کم از کم دو ماہ اور صاحبین کے نزدیک انتالیس دن میں تین حیض گزر سکتے ہیں۔ (۴۱۴) - عرصہ چھ سال میں اگرچہ تین حیضوں کا گزر جانا ظاہر ہے مگر نہ گزرنے کا بھی احتمال ہے۔ (۴۱۸)

امامت: - فاسق کی امامت نا جائز ہے۔ (۴۶۲) - جو فاسق کو امامت پر باقی رکھے گا گنہگار ہوگا۔ (۴۶۲) - غیر منکوحہ سے نکاح کرنے والے کے پیچھے نماز مکروہ تحریمی ہے پڑھ لی تو پھیرنی واجب ہے۔ (۴۶۴) - امامت در نماز حق حکام ہے بشر طیکہ وہ مسلمان ہوں۔ (۴۸۱)

نکاح: - نکاح عورت کے گوشت پوست پر نہیں منافع بضع پر وارد ہوتا ہے۔ (۱۲۰) - نکاح فاسد میں متارکہ بالقول ہی ہو سکتا ہے مثلاً یوں کہہ دے کہ میں نے تیری راہ کھول دی یا تجھے چھوڑا۔ (۱۵۶) - ایک بہن نکاح میں ہو تو دوسری سے نکاح فاسد۔ (۱۶۰) - نکاح فاسد میں متارکہ واجب ہے۔ (۱۶۰) - معاً دو ۲ بہنوں سے نکاح فاسد ہے، یونہی ایک کی عدت میں دوسری سے نکاح بھی فاسد ہے۔ (۱۶۱)

صفحہ ۶۷ از ۶۸۸

Questions/Subject	Page	Answers/Rulings	Page
One sister was already in marriage, then married the second one as well; are both these women entitled to dower (Mahr), what is the ruling on the second marriage and what is the ruling on the children born to both?	184	Marriage with a woman during the waiting period (Iddah) is void.	423
Can a Muslim marry a Christian or a Magian woman?	262	During the life of the husband, without the occurrence of divorce, if a woman marries another person, it will be rejected.	488
What is the ruling if someone mistakenly marries a Rafidi woman without knowing that she is a Rafidi?	265	**Prohibitions (Muharramat)**	
It is not permissible to send a proposal to another person after an engagement as long as the engagement exists.	283	Marrying another sister during the waiting period (Iddah) of one sister is forbidden and void.	401
The author's refined research is that the second marriage is like the first marriage: mandatory (Fard), obligatory (Wajib), Sunnah, permissible (Mubah), disliked (Makruh), and forbidden (Haram), it can be all.	291	A person kept a woman, and now keeps her daughter; she is certainly forbidden to him, whether he keeps her without marriage or by performing marriage.	408
In what state is marriage a Sunnah?	293	**Guardianship (Wilayah)**	
In whose right is marriage permissible (Mubah)?	294	After paternal male relatives (Asabat), the guardianship of marriage belongs to the mother.	115
Marriage during the waiting period (Iddah) is never valid, rather it will be sheerly forbidden.	370	A father has no right to waive his daughter's mahr in any way, nor can it ever be waived even if he waives it.	121

Questions/Subject	Page	Answers/Rulings	Page
Qazi, lawyer, or community members are not required for marriage.	408	Can marriage be performed with a minor Hindu girl without her guardian's permission and without her becoming a Muslim?	262
If a man and a woman perform the offer and acceptance (Ijab-o-Qubul) before two witnesses, the marriage will be completed.	408	The marriage of a minor girl or boy can be performed through a guardian.	390
There is no need for a man to seek permission from his first wife for a second marriage.	408	If a father marries off a nine or ten-year-old girl to a twenty-four-year-old boy, it is correct.	390
If marriage is performed before the waiting period (Iddah) ends, then it is not a marriage but rather a forbidden act.	408	An adult does not essentially need a guardian for their marriage.	399

प्रश्न/विषय	पृष्ठ	उत्तर/फ़ैसले	पृष्ठ
एक बहन निकाह में थी फिर दूसरी से भी कर लिया, क्या ये दोनों औरतें महर की हक़दार हैं या नहीं, दूसरे निकाह का क्या हुक्म है और उन दोनों से जो औलाद हो उसका क्या हुक्म है।	१८४	इद्दत के दौरान औरत से निकाह बातिल (अमान्य) है।	४२३
मुसलमान का नसरानिया (ईसाई) या मजूसिया से निकाह हो सकता है या नहीं।	२६२	शौहर की ज़िन्दगी में तलाक़ हुए बिना अगर औरत दूसरे शख़्स से निकाह कर ले तो वह रद्द होगा।	४८८
अगर धोखे से किसी राफ़ज़िया से निकाह कर ले कि मालूम न हो कि यह राफ़ज़िया है तो क्या हुक्म है।	२६५	**मुहर्रमात (वर्जित सम्बन्धी)**	
मंगनी के बाद दूसरे को पैग़ाम (प्रस्ताव) भेजना जायज़ नहीं जब तक मंगनी बाक़ी है।	२८३	एक बहन की इद्दत में दूसरी बहन से निकाह हराम और बातिल है।	४०१
मुसन्निफ़ (लेखक) की तहक़ीक़-ए-अनीक़ (सूक्ष्म शोध) कि दूसरा निकाह पहले निकाह की तरह फ़र्ज़, वाजिब, सुन्नत, मुबाह, मकरूह और हराम सब कुछ है।	२९१	एक शख़्स ने किसी औरत को रखा अब उसकी बेटी को रखता है तो वह उस पर ज़रूर हराम है, चाहे बिना निकाह के रखे या निकाह करके।	४०८
किस हालत में निकाह सुन्नत है?	२९३	**विलायत (अभिभावकता)**	
किसके हक़ में निकाह मुबाह (अनुमेय) है?	२९४	असबात (पिता पक्ष के पुरुष सम्बन्धी) के बाद निकाह की विलायत माँ को है।	११५
दौरान-ए-इद्दत निकाह हरगिज़ सही नहीं होता बल्कि सरासर हराम होगा।	३७०	बाप को किसी तरह अपनी बेटी का महर माफ़ करने का अख्तियार नहीं, न हरगिज़ उसके माफ़ किए माफ़ हो सके।	१२१
	४०८		२६२

प्रश्न/विषय	पृष्ठ	उत्तर/फ़ैसले	पृष्ठ
		हिन्दू की नाबालिग लड़की से बिना उसके वली (अभिभावक) की इजाज़त के और बिना मुसलमान किए निकाह हो सकता है या नहीं।	
निकाह के लिए क़ाज़ी या वकील या बिरादरी के लोगों की ज़रूरत नहीं।			
		नाबालिग लड़की और नाबालिग लड़के	
मर्द औरत दो गवाहों के सामने ईजाब-ओ-क़ुबूल कर लें निकाह हो जाएगा।	४०८	का निकाह वली (अभिभावक) के ज़रिए हो सकता है।	३९०
		बाप ने नौ दस साल की लड़की का निकाह	
दूसरे निकाह के लिए मर्द को पहली बीवी से इजाज़त लेने की ज़रूरत नहीं।	४०८	चौबीस साला लड़के से कर दिया तो दुरुस्त है।	३९०
इद्दत ख़त्म होने से पहले निकाह कर लिया तो यह निकाह नहीं बल्कि हराम काम हुआ।	४०८	बालिग को अपने निकाह में वली की असल में ज़रूरत नहीं।	३९९
पृष्ठ ६८ / ६८८			

سوالات/مضامین	صفحہ
ایک بہن نکاح میں تھی پھر دوسری سے بھی کرلیا یہ دونوں عورتیں مہر کی مستحق ہیں یا نہیں، نکاح دوم کا کیا حکم ہے اور ان دونوں سے جو اولاد ہو اس کا کیا حکم ہے۔	۱۸۴
مسلمان کا نصرانیہ یا مجوسیہ سے نکاح ہو سکتا ہے یا نہیں	۲۶۲
اگر دھوکے سے کسی رافضیہ سے نکاح کرلے کہ معلوم نہ ہو کہ یہ رافضیہ ہے تو کیا حکم ہے	۲۶۵
منگنی کے بعد دوسرے کو پیغام بھیجنا جائز نہیں جب تک منگنی باقی ہے	۲۸۳
مصنف کی تحقیق انیق کہ نکاح ثانی مثل نکاح اول فرض، واجب، سنت، مباح مکروہ اور حرام سب کچھ ہے	۲۹۱

جوابات/احکام	صفحہ
دوران عدت عورت سے نکاح باطل ہے۔	۴۲۳
زندگی شوہر میں بے وقوع طلاق اگر عورت دوسرے شخص سے نکاح کرلے تو مردود ہوگا۔	۴۸۸
محرمات	
ایک بہن کی عدت میں دوسری بہن سے نکاح حرام و باطل ہے۔	۴۰۱
ایک شخص نے کسی عورت کو رکھا اب اس کی بیٹی کو رکھتا ہے تو وہ اس پر ضرور حرام ہے چاہے بلا نکاح رکھے یا نکاح کرکے۔	۴۰۸

سوالات/مضامین	صفحہ
کس حالت میں نکاح سنت ہے	۲۹۳
کس کے حق میں نکاح مباح ہے	۲۹۴
دورانِ عدت نکاح ہر گز صحیح نہیں ہوتا بلکہ حرام محض ہوگا	۳۷۰
نکاح کے لئے قاضی یا وکیل یا برادری کے لوگوں کی ضرورت نہیں	۴۰۸
مرد عورت دو گواہوں کے سامنے ایجاب و قبول کرلیں نکاح ہوجائے گا۔	۴۰۸
نکاحِ ثانی کے لئے مرد کو پہلی بیوی سے اجازت لینے کی ضرورت نہیں۔	۴۰۸
عدت ختم ہونے سے پہلے نکاح کرلیا تو یہ نکاح نہیں نزاحرام ہوا۔	۴۰۸

جوابات/احکام	صفحہ
ولایت	
عصبات کے بعد ولایت نکاح ماں کو ہے	۱۱۵
باپ کو کسی طرح اپنی بیٹی کا مہر معاف کرنے کا اختیار نہیں، نہ ہر گز اس کے معاف کئے معاف ہو سکے۔	۱۲۱
ہندو کی نابالغ لڑکی سے بے اس کی ولی کی اجازت کے اور بے مسلمان کئے نکاح ہو سکتا ہے یا نہیں۔	۲۶۲
نابالغہ و نابالغ کا نکاح بذریعہ ولی کے ہو سکتا ہے۔	۳۹۰
باپ نے نو دس سالہ لڑکی کا نکاح چوبیس سالہ لڑکے سے کردیا تو درست ہے۔	۳۹۰
بالغ کو اپنے نکاح میں ولی کی اصلاً ضرورت نہیں۔	۳۹۹

Fatawa Rizvia, Volume 12

Page 390: For a minor girl, a gesture or explicit offer and acceptance (Ijab-o-Qabool) by her own tongue without a guardian is not sufficient. Page 391: If privacy (khalwat) has occurred, Iddat is mandatory; for those who menstruate, it is three menstrual cycles, otherwise three months. If privacy did not occur, Iddat is not necessary.

Kafa'at (Compatibility in Marriage) Page 408: Iddat for a divorced woman who menstruates. Page 399: An adult woman does not need a guardian for her marriage whether it is with an equal (kufu) or an unequal person, provided she has a guardian. However, until the guardian explicitly grants permission for marriage with an unequal person before the marriage, knowing them to be unequal, the marriage of the adult woman will not be valid. Page 408: Iddat for a divorced minor or a woman past menopause (Ayisa). Page 408: Definition of 'Kufu' (Compatibility). Page 408: Iddat for a pregnant divorced woman. Page 408: Cases in which a woman's marriage to an unequal person is permissible and in which it is impermissible. Page 423: A husband writing in a divorce deed 'I have waived the Iddat' is an ignorant statement; Iddat is not waived by it.

Iddat (Waiting Period) Page 427: Iddat will be counted from the time irrevocable divorce (Talaq-e-Ba'in) is given, even if given during menstruation. Page 422: If divorce is given before privacy or consummation (dukhul), Iddat is not mandatory for the woman. There is fundamentally no Iddat for a non-believer. Page 427: All rulings of Iddat will be established from the time of divorce. Page 427: The menstrual period in which divorce was given will not be counted in Iddat; instead, three complete menstrual cycles after it will be required. Page 508: According to the Quranic text, the Iddat for death (for a non-pregnant widow) is four months and ten days. Page 496: For a menstruating woman in divorce, an Iddat of three menstrual cycles is obligatory. Page 528: The Iddat for a pregnant woman ends upon childbirth. Page 496: If there was seclusion/privacy (khalwat-e-sahiha), Iddat will also be mandatory after divorce. Page 568: Details of the Iddat period for a free woman who has had intercourse and for a slave girl. Page 496: Marriage with an impotent man is valid; a decree for annulment of marriage will not be given based solely on the woman's claim of impotence. Page 569: If valid privacy (khalwat-e-sahiha) occurred, Iddat is mandatory even if no consummation occurred, and if even privacy did not occur, Iddat is not necessary. Page 613: The ruling of late scholars that Iddat counts from the time of acknowledgment, which is against the four Imams and the majority of Companions and Successors, is only applicable in cases of suspicion where divorce is

proven only by acknowledgment. Page 570: Iddat becomes mandatory after valid privacy (khalwat-e-sahiha) and not after invalid privacy (khalwat-e-fasida).

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

पृष्ठ 390: बिना वली (अभिभावक) के, नाबालिग लड़की का इशारा या अपनी ज़बान से स्पष्ट रूप से ईजाब-ओ-क़बूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) करना काफी नहीं है। पृष्ठ 391: यदि ख़लवत (एकांतवास) हो चुका है तो इद्दत अनिवार्य है; मासिक धर्म वाली के लिए तीन मासिक धर्म, अन्यथा तीन महीने। यदि ख़लवत नहीं हुई तो इद्दत ज़रूरी नहीं है।

कफ़ाअत (विवाह में बराबरी) पृष्ठ 408: तलाक़शुदा मासिक धर्म वाली महिला की इद्दत। पृष्ठ 399: एक बालिग (वयस्क) महिला को अपने निकाह में वली की आवश्यकता नहीं है, चाहे निकाह कुफ़ू (बराबर) से हो या गैर-कुफ़ू से, बशर्ते उसका कोई वली हो। हालाँकि, जब तक वली निकाह से पहले उस गैर-कुफ़ू को गैर-कुफ़ू जानकर स्पष्ट रूप से अनुमति नहीं देगा, बालिग महिला का निकाह सही नहीं होगा। पृष्ठ 408: तलाक़शुदा नाबालिग या रजोनिवृत्त (आयिसा) महिला की इद्दत। पृष्ठ 408: कुफ़ू (बराबरी) किसे कहते हैं। पृष्ठ 408: तलाक़शुदा गर्भवती महिला की इद्दत। पृष्ठ 408: किस स्थिति में महिला का निकाह गैर-कुफ़ू में जायज़ है और किस स्थिति में नाजायज़। पृष्ठ 423: तलाक़नामा में पति का यह लिखना कि 'मैंने इद्दत माफ की', एक अज्ञानतापूर्ण बात है; इससे इद्दत समाप्त नहीं होती।

इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) पृष्ठ 427: इद्दत उसी समय से गिनी जाएगी जब से तलाक़-ए-बाइन दी गई हो, चाहे वह मासिक धर्म की स्थिति में दी गई हो। पृष्ठ 422: यदि ख़लवत और दुखूल (संभोग) से पहले तलाक़ दी गई हो तो महिला पर इद्दत अनिवार्य नहीं है। काफ़िर के लिए मूलतः कोई इद्दत नहीं है। पृष्ठ 427: इद्दत के सभी नियम तलाक़ के समय से स्थापित हो जाएंगे। पृष्ठ 427: जिस मासिक धर्म में तलाक़ दी गई, उसे इद्दत में नहीं गिना जाएगा; बल्कि उसके बाद तीन पूर्ण मासिक धर्मों की आवश्यकता होगी। पृष्ठ 508: कुरान के निर्देशानुसार, मृत्यु की इद्दत (गैर-गर्भवती विधवा के लिए) चार महीने दस दिन है। पृष्ठ 496: तलाक़ में मासिक धर्म वाली महिला के लिए तीन मासिक धर्म की इद्दत फ़र्ज़ है। पृष्ठ 528: गर्भवती महिला की इद्दत बच्चे के जन्म पर समाप्त होती है। पृष्ठ 496: यदि एकांत में मिलन (ख़लवत-ए-सहीहा) हुआ है, तो तलाक़ के बाद इद्दत भी अनिवार्य होगी। पृष्ठ 568: स्वतंत्र संभोग की गई महिला और दासी की इद्दत के दिनों का विवरण। पृष्ठ 496: नामर्द का निकाह जायज़ है; केवल महिला के नामर्द होने के दावे पर निकाह रद्द करने का आदेश नहीं दिया जाएगा। पृष्ठ 569: यदि ख़लवत-ए-सहीहा पाई गई तो इद्दत अनिवार्य है चाहे दुखूल न हुआ हो, और यदि ख़लवत भी नहीं हुई तो इद्दत ज़रूरी नहीं है। पृष्ठ 613: इकरार (स्वीकृति) के समय से इद्दत का मान्य होना, जो चारों इमामों और बहुसंख्यक सहाबा एवं ताबिईन के विरुद्ध बाद के विद्वानों (मुताख़िरीन)

का फतवा है, केवल संदेह की स्थिति में है और वह भी वहां जहां तलाक़ केवल इकरार से साबित हो।
पृष्ठ 570: इद्दत का अनिवार्य होना ख़लवत-ए-सहीहा के बाद है न कि ख़लवत-ए-फासिदा के बाद।

पृष्ठ 688 में से 69

فتاویٰ رضویہ، جلد دوازدہم

۳۹۰: بغیر ولی کے نابالغہ کا اشارہ یا خود زبان سے صراحۃً ایجاب و قبول کرنا کافی نہیں۔ ۳۹۱: خلوت ہو چکی تو عدت واجب، حیض والی کے لئے تین حیض، ورنہ تین ماہ۔ اگر خلوت نہیں ہوئی تو عدت لازم نہیں۔

کفاءت ۴۰۸: مطلقہ حائضہ کی عدت۔ ۳۹۹: بالغہ کو اپنے نکاح میں ولی کی ضرورت نہیں جبکہ نکاح کفو سے ہو یا غیر کفو سے ہو مگر اس کا کوئی ولی ہو ورنہ جب تک ولی قبل نکاح اس غیر کفو کو غیر کفو جان کر صریح اجازت نہ دے گا بالغہ کا نکاح صحیح نہ ہوگا۔ ۴۰۸: مطلقہ صغیرہ اور آئسہ کی عدت۔ ۴۰۸: کفو کسے کہتے ہیں۔ ۴۰۸: مطلقہ حاملہ کی عدت۔ ۴۰۸: غیر کفو میں عورت کا نکاح کس صورت میں جائز اور کس صورت میں ناجائز ہے۔ ۴۲۳: طلاق نامہ میں شوہر کا یہ لکھنا کہ میں نے عدت معاف کی، جاہلانہ بات ہے، اس سے عدت ساقط نہیں ہوتی۔

عدت ۴۲۷: عدت اسی وقت سے لی جائیگی جب سے طلاق بائن دی اگرچہ حالت حیض میں دی ہو۔ ۴۲۲: خلوت و دخول سے قبل طلاق دی تو عورت پر عدت لازم نہیں۔ کافر کے لئے عدت اصلاً نہیں۔ ۴۲۷: تمام احکام عدت وقتِ طلاق سے ثابت ہو جائیں گے۔ ۴۲۷: جس حیض میں طلاق دی وہ عدت میں شمار نہ ہوگا بلکہ اس کے بعد تین حیض کامل درکار ہوں گے۔ ۵۰۸: عدت وفات (غیر حاملہ) کی بنص قرآن چار ماہ دس دن ہے۔ ۴۹۶: طلاق میں حائضہ کے لئے تین حیض کی عدت فرض۔ ۵۲۸: حاملہ کی عدت بچہ پیدا ہونے پر ختم ہوتی ہے۔ ۴۹۶: تنہائی میں یکجائی ہوئی تو عدت بھی بعد طلاق واجب ہوگی۔ ۵۶۸: حرہ موطوہ اور لونڈی کے ایام عدت کی تفصیل۔ ۴۹۶: نامرد کا نکاح جائز عورت کے دعوی نامردی پر ہی فسخ نکاح کا حکم نہ ہوگا۔ ۵۶۹: خلوتِ صحیحہ پائی گئی تو عدت واجب ہے اگر چہ دخول نہ ہو، اور اگر خلوت بھی نہ ہوئی تو عدت

ضروری نہیں۔ ۶۱۳: وقت اقرار سے عدت کا معتبر ہونا ائمہ اربعہ اور جمہور صحابہ وتابعین کے خلاف جو فتویٰ متاخرین ہے صرف محل تہمت میں ہے اور وہ بھی وہاں کہ طلاق صرف اقرار سے ثابت ہو۔ ۵۷۰: عدت کا وجوب خلوتِ صحیحہ کے بعد ہے نہ کہ خلوت فاسدہ کے بعد۔

Fatawa-e-Razvia | Volume 12

447 | If divorce is known before the declaration, by consensus, the waiting period (Iddah) starts from the time of divorce, not from the time of declaration. | 613 | When an irrevocable divorce (Talaq Ba'in) occurs, the woman is out of the marriage contract; the husband no longer has any power of revocation (Raj'at). | 447

447 | If divorce is not proven before the declaration but it is stated that divorce was given from the time the wife was separated, then Iddah will be counted from the time of divorce. | 613 | In a revocable divorce (Talaq Raj'i), the husband can revoke verbally within the days of Iddah; the woman's consent is not necessary. | 447

515 | Although in one and a half to two years the completion of Iddah for menstruating women is not mandatory, this period is certainly sufficient for the expiry of Iddah. | 614 | In a revocable divorce, the right to revoke (Raj'at) will be given within the Iddah. | 515

| Until three menstrual cycles pass, the Iddah of a menstruating woman does not end. | 618 | **Halala** |

389 | If divorce was given first and declaration was made later; if they separated from the time of divorce itself, Iddah will be taken from that time; if they stayed together, then from the time of declaration. | 618 | What is the method of Halala? | 389

398 | The Iddah for a pregnant woman is until delivery. | 625 | Halala is not valid without sexual intercourse with the second husband. | 398

399 | If a woman is divorced before moving into her husband's home (Rukhsati), no Iddah is required. | | To agree on some Halala with the intention of reconciliation and solving difficulties between husband and wife is a source of reward. | 399

408 | It is not certain that the Iddah for a menstruating woman is completed in four months; rather, it is possible that even in three years, three menstrual cycles are not completed. | 651 | Details of Halala | 408

409 | **Raj'at (Revocation)** | | Setting a condition for Halala in marriage is a sin, and if it is intended in the heart without setting a condition, there is hope for reward. | 409

423 | In Raj'at, it is sufficient to say verbally, "I have kept you in my marriage." | 328 | The 'Muhallil' (second husband) does not make the woman lawful for the first husband until he has sexual intercourse after a valid marriage. | 423

423 | If three divorces occur, Raj'at is impossible. | 360 | An invalid (fasid) or suspended marriage is not sufficient for Halala; an effective (nafidh) marriage is necessary. | 423

466 | What is the method of Raj'at? | 368 | Committing apostasy to avoid Halala carries the sin of apostasy separately, and after becoming Muslim again, Halala is still necessary. | 466

| Better method of Raj'at | 368 | |

फ़तावा-ए-रज़विया | जिल्द बारहवीं

447 | अगर तलाक इकरार से पहले मालूम हो तो बिल-इजमाअ (सर्वसम्मति से) इद्दत तलाक के वक्त से होगी, न कि इकरार के वक्त से। | 613 | औरत पर जब तलाक-ए-बाइन पड़ गई, औरत निकाह से निकल गई, अब शौहर को रजअत का कोई अधिकार नहीं रहा। | 447

447 | अगर तलाक इकरार से पहले साबित न हो मगर वक्त से तलाक देना बयान करता है जब से बीवी को अलग कर दिया था, तो इद्दत तलाक के वक्त से गिनी जाएगी। | 613 | तलाक-ए-रजई में इद्दत के दिनों के अंदर ज़बान से रजअत कर सकता है, औरत की रज़ामंदी ज़रूरी नहीं। | 447

515 | डेढ़-दो साल में अगरचे मासिक धर्म वाली औरत की इद्दत का समाप्त होना अनिवार्य नहीं, मगर यह अवधि इद्दत की समाप्ति के लिए निश्चित रूप से पर्याप्त है। | 614 | तलाक-ए-रजई में इद्दत के अंदर रजअत का अधिकार दिया जाएगा। | 515

| जब तक तीन मासिक धर्म न गुजरें, मासिक धर्म वाली औरत की इद्दत खत्म नहीं होती। | 618 | **हलाला** |

389 | तलाक पहले दी, इकरार बाद में किया, अगर तलाक के समय से ही अलग हों तो इद्दत उसी समय से ली जाएगी और साथ रहते हों तो इकरार के समय से। | 618 | हलाला की सूरत क्या है। | 389

398 | गर्भवती की इद्दत प्रसव (बच्चे का जन्म) है। | 625 | दूसरे शौहर के साथ संभोग (वति) के बिना हलाला सही नहीं। | 398

399 | रुख़्सती (विदाई) से पहले औरत को तलाक हो जाए तो इद्दत की ज़रूरत नहीं। | | पति-पत्नी के बीच सुधार और मुश्किल हल करने की नीयत से किसी हलाला पर राजी करना सवाब (पुण्य) का कारण है। | 399

408 | मासिक धर्म वाली औरत की इद्दत का चार महीने में पूरा होना निश्चित नहीं है, बल्कि मुमकिन है कि तीन साल में भी तीन मासिक धर्म पूरे न हों। | 651 | हलाला का विवरण | 408

409 | **रजअत (तलाक वापस लेना)** | | निकाह में हलाला की शर्त लगाना गुनाह है, और बिना शर्त के दिल में इरादा हो तो उस पर अज्र की उम्मीद है। | 409

423 | रजअत में ज़बान से यह कह लेना काफी है कि मैंने तुझे अपने निकाह में रख लिया। | 328 | मुहल्लिल (दूसरा शौहर) जब तक सही निकाह के बाद संभोग न करे, औरत पहले शौहर के लिए हलाल नहीं होती। | 423

423 | तीन तलाकें हो जाएं तो रजअत असम्भव है। | 360 | निकाह-ए-फासिद व मौकूफ हलाला के लिए काफी नहीं, निकाह-ए-नाफ़िज़ ज़रूरी है। | 423

466 | रजअत का तरीका क्या है। | 368 | हलाला से बचने के लिए मुर्तद (धर्म त्यागना) होने से इर्तिदाद का गुनाह अलग रहा, और फिर मुसलमान होने के बाद हलाला फिर भी ज़रूरी है। | 466

| रजअत का बेहतर तरीका | 368 | |

۴۴۷ | اگر طلاق اقرار سے پہلے معلوم ہو تو بالا جماع عدت وقت طلاق سے ہوگی نہ کہ وقت اقرار سے۔ | ۶۱۳ | عورت پر جب طلاق بائن پڑگئی عورت نکاح سے نکل گئی اب شوہر کو رجعت کا کچھ اختیار نہ رہا۔ | ۴۴۷

۴۴۷ | طلاق اقرار سے پہلے ثابت نہ ہو مگر وقت سے طلاق دینا بیان کرتا ہے جب سے زوجہ کو جدا کردیا تھا تو عدت وقت طلاق سے شمار ہوگی۔ | ۶۱۳ | طلاق رجعی میں ایام عدت کے اندر زبان سے رجعت کرسکتا ہے عورت کی رضامندی ضروری نہیں۔ | ۴۴۷

۵۱۵ | ڈیڑھ دو سال میں اگرچہ ذوات الحیض کی عدت کا انقضاء لازم نہیں مگر یہ مدت انقضاء عدت کے لئے کافی ضرور ہے۔ | ۶۱۴ | طلاق رجعی میں عدت کے اندر رجعت کا اختیار دیا جائے گا۔ | ۵۱۵

| جب تک تین حیض نہ گزریں حیض والی عورت کی عدت ختم نہیں ہوتی۔ | ۶۱۸ | **حلالہ** |

۳۸۹ | طلاق پہلے دی، اقرار بعد میں کیا، اگر طلاق کے وقت سے ہی جدا ہوں تو عدت اسی وقت سے لی جائے گی اور ساتھ رہتے ہوں تو وقت اقرار سے۔ | ۶۱۸ | حلالہ کی صورت کیا ہے۔ | ۳۸۹

۳۹۸ | حاملہ کی عدت وضع حمل ہے۔ | ۶۲۵ | حلالہ بغیر وطی زوج ثانی صحیح نہیں۔ | ۳۹۸

۳۹۹ | رخصتی سے پہلے عورت کو طلاق ہوگئی تو عدت کی حاجت نہیں۔ | | میاں بیوی میں اصلاح اور مشکل کشائی کی نیت سے کسی حلالہ پر راضی کرنا باعث اجر وثواب ہے۔ | ۳۹۹

۴۰۸ | ذات الحیض کی عدت کا چار ماہ میں پورا ہونا قطعی نہیں بلکہ ممکن ہے کہ تین سال میں بھی تین حیض مکمل نہ ہوں۔ | ۶۵۱ | حلالہ کی تفصیل | ۴۰۸

۴۰۹ | **رجعت** | | نکاح میں حلالہ کی شرط لگانا گناہ ہے اور بے شرط لگائے دل میں ارادہ ہو تو اس پر اجر کی اُمید ہے۔ | ۴۰۹

۴۲۳ | رجعت میں زبان سے یہ کہہ لینا کافی ہے کہ میں نے تجھے اپنے نکاح میں رکھ لیا۔ | ۳۲۸ | محلل جب تک نکاح صحیح کے بعد وطی نہ کرے عورت شوہر اول کے لئے حلال نہیں ہوتی۔ | ۴۲۳

۴۲۳ | تین طلاقیں ہو جائیں تو رجعت محال ہے۔ | ۳۶۰ | نکاح فاسد و موقوف حلالہ کے لئے کافی نہیں نکاح نافذ ضروری ہے۔ | ۴۲۳

۴۶۶ | طریق رجعت کیا ہے۔ | ۳۶۸ | حلالہ سے بچنے کے لئے مرتد ہونے سے ارتداد کا گناہ الگ رہا اور پھر مسلمان ہونے کے بعد حلالہ بھی ضروری ہے۔ | ۴۶۶

| رجعت کا بہتر طریقہ | ۳۶۸ | |

Fatawa Razawiya - Volume 12

559 | A woman divorced thrice (Talaq-e-Thalatha) cannot remarry her first husband without Halala. | Khula | 627 | Halala becomes mandatory upon three divorces, and once it becomes mandatory, there is no way to waive it. | 646 | It is permissible to give some amount to the husband as Khula, whether the woman gives it herself or someone else gives it on her behalf.

Taliq (Conditional Divorce) | | | It is permissible for a woman to perform Khula on her dower (Mahr) or other property with the husband's consent. | 475

420 | Divorce was made conditional upon certain conditions; since the conditions were not met, the divorce did not occur. | 630 | After Khula, once the waiting period (Iddah) has passed, the woman can marry someone else; she cannot do so before that.

442 | A man said to his wife, "If you go out, divorce will occur" or said "Do not go out without my permission because I have sworn an oath of divorce." If she went out, divorce did not occur. | Anin (Impotence) |

451 | Read the letter to him so that divorce legally becomes binding on him; the divorce is conditional (Muallaq). | 470 | No illness of the husband, except for amputation of the organ or impotence, is a cause for annulment (Faskh) of marriage.

452 | From today he shall pay this much monthly, month by month; if he doesn't, divorce will occur. In this case, if one month passes and he hasn't paid, divorce will occur. | 487 | Details regarding the issue of impotence (Anin).

560 | Wrote in a letter "I have given you clearance (Farigh-khati)", then one divorce occurred as soon as it was written. If it was written "When the letter reaches you, you are cleared", then divorce will occur upon the letter's arrival. | 495 | The marriage of an impotent person is valid, and in case of divorce, the woman will receive her dower (Mahr).

633 | Read out the letter word for word so that divorce occurs legally upon it. If even one word of the letter is left unread, divorce will not occur. | 495 | For the proof of impotence, a doctor's certificate is insufficient and unreliable.

654 | Divorce was made conditional on getting jewelry made and a six-month deadline was set. If the condition has an addition from the woman's side, the conditional divorce took place. | 496 | Marriage to an impotent person is

impermissible if he is unable to fulfill the rights of the woman in intercourse; it is obligatory for him to give a divorce immediately.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 12

559 | तीन तलाक प्राप्त महिला का पहले पति से बिना हलाला निकाह नहीं हो सकता। | खुला | 627 | हलाला तीन तलाकों पर अनिवार्य हो जाता है और जब यह अनिवार्य हो जाता है, तो इसे टालने का कोई तरीका नहीं है। | 646 | खुला के रूप में पति को कुछ राशि देना जायज़ है, चाहे महिला स्वयं दे या उसकी ओर से कोई और दे।

तअलीक (शर्तिया तलाक) | | | पति की सहमति से महिला का मेहर या अन्य संपत्ति पर खुला करना जायज़ है। | 475

420 | तलाक को शर्तों पर निर्भर किया गया था; शर्तें पूरी नहीं हुईं, इसलिए तलाक नहीं हुआ। | 630 | खुला के बाद जब इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) बीत जाए, तो महिला दूसरे से निकाह कर सकती है, उससे पहले नहीं कर सकती।

442 | पति ने पत्नी से कहा "अगर तुम बाहर निकलीं तो तलाक हो जाएगा" या इस तरह कहा "मेरी अनुमति के बिना बाहर मत निकलना क्योंकि मैंने तलाक की कसम खाई है"। वह महिला निकली तो तलाक नहीं हुआ। | अनीन (नपुंसकता) |

451 | उसे पत्र पढ़कर सुना दें ताकि तलाक कानूनी रूप से उस पर लागू हो जाए; तलाक मुअल्लक (लंबित/शर्तिया) है। | 470 | अंग के कटने या नपुंसकता के अलावा पति की कोई और बीमारी निकाह के विच्छेद (फ़स्ख़) का कारण नहीं है।

452 | "आज से वह इतना मासिक भुगतान महीने-दर-महीने करेगा; यदि नहीं करेगा तो तलाक हो जाएगा।" इस स्थिति में यदि एक महीना बीत गया और उसने भुगतान नहीं किया तो तलाक हो जाएगा। | 487 | नपुंसकता (अनीन) के मसले का विवरण।

560 | पत्र में लिखा कि "तुझे फ़ारिग-ख़ती (छुटकारा/तलाक) दी", तो लिखते ही एक तलाक हो गया। और यदि यह लिखा कि "पत्र पहुँचने पर तुझे फ़ारिग-ख़ती", तो पत्र पहुँचने पर तलाक होगा। | 495 | नपुंसक का निकाह सही (मान्य) हो जाता है और यदि तलाक हो जाए तो महिला मेहर प्राप्त करेगी।

633 | पत्र को शब्द-दर-शब्द पढ़कर सुनाएं ताकि उस पर कानूनी रूप से तलाक लागू हो जाए। यदि पत्र का एक शब्द भी पढ़ने से रह गया, तो तलाक नहीं होगा। | 495 | नपुंसकता के प्रमाण के लिए डॉक्टर का प्रमाण पत्र अपर्याप्त और अविश्वसनीय है।

654 | जेवर बनवाने पर तलाक मुअल्लक किया और छह महीने की समय सीमा रखी; यदि शर्त में महिला की ओर से कोई जोड़ (इज़ाफ़त) है, तो मुअल्लक तलाक हो गया। | 496 | नपुंसक का निकाह नाज़ायज़ है यदि वह संभोग में महिला के अधिकार पूरे करने में सक्षम न हो; उस पर फ़र्ज़ है कि वह तुरंत तलाक दे दे।

पृष्ठ 71 का 688

فتاویٰ رضویہ - جلد دوازدہم

۵۵۹ | مطلقہ ثلاثہ کا شوہر اول سے بلا حلالہ نکاح نہیں ہو سکتا۔ | خلع | ۶۲۷ | حلالہ تین طلاقوں پر لازم ہوتا ہے اور جب لازم ہوتا ہے تو اس کے ساقط کرنے کی کوئی صورت نہیں۔ | ۶۴۶ | بطور خلع شوہر کو کچھ رقم دینا جائز ہے چاہے عورت خود دے یا اس کی طرف سے کوئی اور دے۔

تعلیق | | | شوہر کی رضا سے عورت مہر وغیرہ مال پر خلع کرے تو جائز ہے۔ | ۴۷۵

۴۲۰ | طلاق کو شرائط پر موقوف کیا شرائط نہ پائے گئے طلاق واقع نہ ہوئی۔ | ۶۳۰ | خلع کے بعد جب عدت گزر جائے تو عورت دوسرے سے نکاح کر سکتی ہے اس سے پہلے نہیں کر سکتی۔

۴۴۲ | بیوی سے مرد نے کہا "ان خرجت یقع الطلاق" یا یوں کہا "میرے اذن کے بغیر مت نکلنا کیونکہ میں نے طلاق کی قسم کھائی ہے"۔ وہ عورت نکلی تو طلاق نہ ہوئی۔ | عنین |

۴۵۱ | خط اس کو سنادیں تاکہ طلاق شرعاً اس پر واجب ہو جائے، طلاق معلق ہے۔ | ۴۷۰ | آلہ بریدگی یا نامردی کے سوا کوئی مرض شوہر سبب فسخ نکاح نہیں۔

۴۵۲ | آج سے اس قدر ماہوار ماہ بماہ دیا کرے گا، نہ دے تو طلاق واقع ہو گی۔ اس صورت میں ایک مہینہ گزر گیا اور نہ دیا تو طلاق واقع ہو جائیگی۔ | ۴۸۷ | مسئلہ عنین کی تفصیل۔

۵۶۰ | خط میں لکھا کہ "تجھ فارغ خطی دی" تو لکھتے ہی ایک طلاق واقع ہو گئی اور اگر یہ لکھا کہ "خط پہنچے تو تجھے فارغ خطی" تو خط پہنچنے پر طلاق ہوگی۔ | ۴۹۵ | نامرد کا نکاح صحیح ہو جاتا ہے اور طلاق ہو تو عورت مہر پائے گی۔

۶۳۳ | خط کو حرف بحرف پڑھ کر سنادیں تاکہ اس پر شرعاً طلاق واقع ہو جائے اگر خط کا ایک لفظ بھی پڑھنے سے رہ گیا طلاق واقع نہ ہوگی۔ | ۴۹۵ | ثبوت نامردی کے لئے مع سند ڈاکٹر ناکافی و نامعتبر ہے۔

۶۵۴ | زیور بنوانے پر طلاق معلق کی اور چھ ماہ کی میعاد رکھی، اگر تعلیق میں عورت کی طرف سے اضافت ہے طلاق معلق ہو گئی۔ | ۴۹۶ | نامرد کا نکاح نا جائز ہے اگر ہمبستری میں عورت کے حق ادا کرنے پر قادر نہ ہو تو اس پر فرض ہے کہ فوراً طلاق دے دے۔

Fatawa Razawiyya, Volume 12

- Details of the issue of separation due to impotence. — 497
- An impotent man divorced his wife, now he sues in court for non-divorce; he is a sinner. Yes, if the iddah (waiting period) was still pending and he sues for return (raj'at), it is maintainable/audible. — 502
- Another issue of impotence. — 508
- After proof of impotence, the man will be given a full year's grace. If he becomes capable of being with the woman during this time, then fine. Otherwise, upon the woman's claim and proof of ongoing impotence, the judge will give the woman a choice: either stay with the husband or separate. If she immediately says she wants separation, he will separate them. — 509

Zihar: - Calling one's wife a sister is neither Zihar nor divorce. — 584 - Saying "instead of my mother and sister" after divorce is not a case for Zihar. — 605 - "You have become our sister" - this is not Zihar because it lacks comparison/similitude. — 608

The Missing Person (Mafqud): - The wife of a missing person should wait until the husband would have been 70 years old. — 509 - Explanation of the schools of Imam Ahmad, Imam Shafi'i, and Imam Malik regarding the wife of a missing person. — 509 - Decree of the Commander of the Faithful, Mawla Ali (may Allah honor him), regarding the wife of a missing person. — 509 - The wife of a missing person is absolutely not permitted a second marriage without a clear divorce or evidence of death, either actual or legal. — 589 - If the husband disappeared after using an allusive/indirect word (for divorce) and an oath could not be administered to him, divorce will not be established. — 617

Lineage (Nasab): - The lineage of children of someone who unknowingly married a woman already married to someone else will be established from that marriage. — 462 - If someone knowingly married a woman who already has a husband, the children will belong to the first husband. — 462

Option (Khiyar): - In the case of delegated divorce (tafwiz-e-talaq), the option remains until the end of the meeting/sitting. — 485 - Neither of the spouses has the right to annul the marriage due to a fault in the other. — 489 - Seven reasons for preferring the school of thought that neither spouse has an option based on a fault/defect (khiyar-e-ayb). — 490

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

- नपुंसकता (इन्नीन) के कारण अलगाव के मुद्दे का विवरण। — 497
- एक नपुंसक व्यक्ति ने अपनी पत्नी को तलाक दे दिया, अब वह अदालत में तलाक न होने का दावा करता है; वह पापी है। हाँ, यदि इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) बाकी थी और वह वापसी (रजअत) का दावा करता है, तो यह सुनने योग्य है। — 502
- नपुंसकता का एक और मुद्दा। — 508
- नपुंसकता साबित होने के बाद, व्यक्ति को पूरे एक साल की मोहलत दी जाएगी। यदि उस दौरान वह पत्नी के साथ सक्षम हो जाता है, तो ठीक है। अन्यथा, महिला के दावे पर और अभी भी नपुंसकता साबित होने पर, न्यायाधीश महिला को विकल्प देगा: या तो पति के साथ रहना स्वीकार करे या अलगाव। यदि वह तुरंत कहती है कि वह अलगाव चाहती है, तो वह उनके बीच अलगाव कर देगा। — 509

ज़िहार: - अपनी पत्नी को बहन कहना न तो ज़िहार है और न ही तलाक। — 584 - तलाक के बाद "मेरी माँ बहन के बजाय" कहा, तो ज़िहार का मामला नहीं बनता। — 605 - "तुम हमारी बहन हो चुकी हो" - यह ज़िहार नहीं है क्योंकि इसमें कोई तुलना नहीं है। — 608

मफक़ूद (लापता व्यक्ति): - लापता व्यक्ति की पत्नी पति की उम्र 70 वर्ष होने तक प्रतीक्षा करे। — 509 - लापता व्यक्ति की पत्नी के संबंध में इमाम अहमद, इमाम शाफ़ई और इमाम मलिक के मज़हब का विवरण। — 509 - लापता व्यक्ति की पत्नी के बारे में अमीर-उल-मोमिनीन मौला अली (करम अल्लाह वजहुहु अल-करीम) का फरमान। — 509 - तलाक के प्रकट होने या वास्तविक या कानूनी रूप से मृत्यु स्पष्ट होने के बिना, लापता व्यक्ति की पत्नी के लिए दूसरा विवाह किसी भी तरह जायज़ नहीं है। — 589 - यदि पति सांकेतिक शब्द (किनाया) का उपयोग करने के बाद गायब हो गया और उस पर कसम नहीं रखी जा सकी, तो तलाक साबित नहीं होगा। — 617

नसब (वंश): - अज्ञानता में किसी और की विवाहित स्त्री से निकाह करने वाले की संतान का वंश उसी निकाह से सिद्ध होगा। — 462 - यदि किसी व्यक्ति ने जानबूझकर शादीशुदा महिला से निकाह किया, तो संतान पहले पति की होगी। — 462

खियार (विकल्प): - तलाक के अधिकार सौंपने (तफ़वीज़-ए-तलाक) की स्थिति में, विकल्प सभा के अंत तक बना रहता है। — 485 - पति-पत्नी में से किसी को भी दूसरे के दोष के कारण निकाह रद्द

करने का अधिकार नहीं है। — 489 - इस विचारधारा के पक्ष में सात प्राथमिकता के कारण कि पति-पत्नी में से किसी को भी दोष का विकल्प (खियार-ए-ऐब) प्राप्त नहीं है। — 490

पृष्ठ 72/688

فتاویٰ رضویہ، جلد دو از دہم

- مسئلہ تفریق عنین کی تفصیل۔ — ۴۹۷
- نامرد نے عورت کو طلاق دے دی، اب کچہری میں نالش عدم طلاق کی کرتا ہے گنہگار ہے ہاں اگر عدت باقی تھی اور رجعت کی نالش کرتا ہے مسموع ہے۔ — ۵۰۲
- ایک اور مسئلہ عنین۔ — ۵۰۸
- ثبوتِ نامردی کے بعد مرد کو سال بھر کامل کی مہلت دی جائے گی ، اگر اس میں عورت پر قادر ہو گیا فبہا، ورنہ پھر عورت کے دعوی کرنے اور اب بھی نامردی ثابت ہو جانے پر حاکم عورت کو اختیار دے گا کہ چاہے شوہر کے پاس رہنا مانے یا جدائی اگر وہ فوراً کہے گی کہ جدائی چاہتی ہوں تو دونوں میں تفریق کر دے گا۔ — ۵۰۹

ظہار: - اپنی بیوی کو بہن کہنا نہ ظہار ہے نہ طلاق۔ — ۵۸۴ - طلاق کے بعد "بجائے میری ماں بہن کے" کہا تو ظہار کا محل نہیں۔ — ۶۰۵ - "تو ہماری بہن ہو چکی" یہ ظہار نہیں کیونکہ اس میں تشبیہ نہیں۔ — ۶۰۸

مفقود: - مفقود الخبر کی بیوی شوہر کی عمر ستر ۷۰ سال ہونے تک انتظار کرے۔ — ۵۰۹ - زوجہ مفقود الخبر کے بارے میں امام احمد، امام شافعی اور امام مالک کے مذہب کا بیان۔ — ۵۰۹ - مفقود الخبر کی زوجہ کے بارے میں امیر المومنین مولی علی کرم اللہ وجہہ الکریم کا فرمان۔ — ۵۰۹ - مفقود الخبر کی بیوی کو بے ظہور طلاق یا وضوحِ موت حقیقۃً یا حکماً ہرگز نکاح ثانی جائز نہیں۔ — ۵۸۹ - لفظ کنائی استعمال کر کے شوہر غائب ہو گیا اور اس پر قسم نہ رکھی جاسکی تو طلاق ثابت نہیں ہوگی۔ — ۶۱۷

نسب: - منکوحہ غیر سے لاعلمی میں نکاح کرنے والے کی اولاد کا نسب اسی نکاح سے ثابت ہوگا۔ — ۴۶۲ - کسی شخص نے خاوند والی عورت سے جان بوجھ کر نکاح کیا تو اولاد شوہر اول کی ہوگی۔ — ۴۶۲

خیار: - تفویض طلاق کی صورت میں اختیار مجلس تک باقی رہتا ہے۔ — ۴۸۵ - زوجین میں سے کسی کو دوسرے کے عیب کی وجہ سے نکاح فسخ کرنے کا اختیار نہیں۔ — ۴۸۹ - احد الزوجین کو خیار عیب حاصل نہ ہونے کے مذہب کے لئے سات ۷ وجوہ ترجیح۔ — ۴۹۰

Fatawa-e-Razvia Volume 12

Page No.		Subject	Subject	Page
472	503	In the Hanafi school, one spouse does not have the right to annul the marriage due to a defect in the other. According to Imam Muhammad (may Allah have mercy on him), there is a right, but this is contrary to the school's standard position. Nevertheless, if there is a necessity and a real-life situation, Imam Muhammad's view can be followed.	Maintenance is not obligatory for a woman observing the waiting period (iddah) after an invalid marriage or after the death of her husband, even if she is pregnant.	472
473	502	Details of Imam Muhammad's ruling regarding the option of annulment in case of defects in one of the spouses.	There is no maintenance for a disobedient wife (nashiza).	473
473		**Maintenance (Nafaqah)**	If the maintenance has been prescribed by a judge's order, it ceases upon the death of either spouse. However, if the prescribed maintenance was not received from the husband and the woman, by the judge's order, took loans for her expenses, then in this case it becomes a debt upon the husband and is not waived upon death.	473
474	103	Maintenance will not be forfeited for a woman who refuses sexual intercourse or travel in order to receive her prompt dower (Mahr Mu'ajjal).	Food and maintenance for a woman are obligatory even on a sick husband as long as she remains in his custody.	474
475	142			475

Page No.		Subject
475	160	Maintenance for a disobedient woman (nashiza) is not obligatory upon the husband.
478	189	Regarding domestic wear clothes whose value (as maintenance) had become due upon the husband; if he gives them and then claims he did not make her the owner, his claim should not be considered reliable.
510	214	Whether a woman can receive food and maintenance until the husband pays the prompt dower.
598	263	Meaning of "Maintenance of the Like" (Nafaqah Mithl).
499	472	There is no maintenance for an apostate woman.
		When a divorce is acknowledged, it will be considered effective from that time; however, maintenance until today and maintenance for the iddah from today will be awarded.
		Maintenance after the husband's death during the iddah period or after it is not obligatory according to the consensus of the correct Hanafi and Shafi'i schools.

Subject	Page
Maintenance of a vagrant woman is not the responsibility of the husband.	
If nothing has occurred from the woman's side to forfeit maintenance, yet the husband still doesn't provide it, the judge should compel him to provide it or else grant a divorce.	475
If a woman is forced to stay with her parents due to the husband's oppression and injustice, maintenance remains obligatory upon the husband.	478
According to the Hanafis, non-payment of maintenance due to the husband's absence or poverty is not a cause for separation.	510
During which iddah does a woman receive maintenance and during which does she not?	598
Interdiction (Hajr)	
When signs of puberty appear in a boy or girl, they are considered mature from that time. If no signs appear, they will be considered mature upon completing fifteen years of age.	399

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 12

पृष्ठ	नंबर	विषय	विषय	पृष्ठ
472	503	हनफ़ी मज़हब में एक जीवनसाथी के दोष के कारण दूसरे को निकाह रद्द (फ़स्ख़) करने का अधिकार नहीं है। इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैहि) के अनुसार अधिकार है, लेकिन यह मज़हब के विपरीत है। फिर भी, यदि आवश्यकता और वास्तविक परिस्थिति हो, तो इमाम मुहम्मद के कथन पर अमल किया जा सकता है।	निकाह-ए-फ़ासिद की मोअतदा (इद्दत बिताने वाली) और मौत की मोअतदा के लिए नफ़क़ा (खर्च) वाजिब नहीं होता, चाहे वह गर्भवती ही क्यों न हो।	472
473	502	जीवनसाथी में से किसी एक के दोष के कारण ख़ियार (विकल्प) की स्थिति में इमाम मुहम्मद के मसले का विवरण।	नाशिज़ा (अवज्ञाकारी पत्नी) के लिए नफ़क़ा नहीं है।	473
473		**नफ़क़ा (रखरखाव/खर्च)**	यदि नफ़क़ा हाकिम (न्यायाधीश) के आदेश से निर्धारित हो, तो किसी एक जीवनसाथी की मृत्यु से वह समाप्त हो जाता है। लेकिन यदि निर्धारित नफ़क़ा शौहर से न मिला हो और शरई काज़ी के आदेश से औरत ने कर्ज़ ले-लेकर खर्च किया हो, तो इस स्थिति में वह शौहर के ज़िम्मे ऋण (क़र्ज़) माना जाएगा और मृत्यु से समाप्त नहीं होगा।	473

पृष्ठ	नंबर	विषय	विषय	पृष्ठ
474	103	महर-ए-मोअज्जल (तत्काल देय मेहर) प्राप्त करने के लिए संभोग और यात्रा से इनकार करने वाली औरत का नफ़क़ा समाप्त नहीं होगा।	बीमार शौहर पर भी औरत का रोटी और नफ़क़ा वाजिब है, जब तक कि वह औरत उसकी देखरेख (कैद) में रहे।	474
475	142	नाशिज़ा औरत के लिए नफ़क़ा शौहर पर वाजिब नहीं है।	आवारागर्द औरत का नफ़क़ा शौहर के ज़िम्मे ज़रूरी नहीं है।	475
475	160	घर में पहनने के कपड़े, जिनकी कीमत नफ़क़ा के तौर पर शौहर पर वाजिब हो चुकी थी, यदि वह उन्हें देकर दावा करे कि मैंने औरत को उसका मालिक नहीं बनाया था, तो इसमें शौहर की बात विश्वसनीय नहीं मानी जानी चाहिए।	औरत की तरफ से नफ़क़ा समाप्त करने वाली कोई बात नहीं हुई, फिर भी शौहर नफ़क़ा न दे, तो हाकिम शौहर को मजबूर करे कि वह नफ़क़ा दे, अन्यथा तलाक़ दे।	475
478	189	जब तक शौहर महर-ए-मोअज्जल अदा न करे, क्या औरत रोटी और नफ़क़ा पा सकती है या नहीं।	शौहर के ज़ुल्म और ज़्यादती के कारण औरत मजबूरी में माता-पिता के पास रहे, तो नफ़क़ा शौहर पर वाजिब है।	478
510	214	नफ़क़ा-ए-मिस्ल का अर्थ।	हनफ़ियों के निकट पति की अनुपस्थिति या निर्धनता के कारण नफ़क़ा अदा न कर पाना जुदाई (तफ़रीक़) का कारण नहीं है।	510
598	263	मुरतदा (धर्मत्यागी स्त्री) के लिए नफ़क़ा नहीं है।	कौन सी इद्दत में औरत नफ़क़ा पाती है और कौन सी इद्दत में नहीं पाती।	598
		तलाक़ का जब से इक़रार (स्वीकृति) करे, उसी समय से उसे प्रभावी माना जाएगा; अलबत्ता नफ़क़ा आज तक का और आज से इद्दत का नफ़क़ा दिलवाया जाएगा।	**हज्र (प्रतिबंध)**	
499	472	शौहर की मृत्यु के बाद इद्दत के समय या उसके बाद का रोटी और नफ़क़ा, हनफ़ी	लड़के और लड़की में जब बालिग होने के लक्षण प्रकट हों, तो वे उसी समय से	399

और शाफ़ई मज़हब के सही मत के अनुसार सर्वसम्मति से वाजिब नहीं है।

बालिग हैं। और यदि बालिग होने के लक्षण प्रकट न हों, तो पंद्रह वर्ष की आयु पूरी होने पर उन्हें बालिग समझा जाएगा।

صفحہ نمبر	مضمون	مضمون صفحہ
	مذہب حنفی میں عیب احدالزوجین سے دوسرے کو فسخ نکاح کا اختیار نہیں، امام محمد رحمۃ اللہ علیہ کے	نکاح فاسد کی معتدہ اور معتدۃ الموت کا
۵۰۳ ۴۷۲	نزدیک اختیار ہے مگر یہ خلاف مذہب ہے، بایں ہمہ ضرورت و واقعیہ ہو تو امام محمد کے قول پر عمل کیا جاسکتا ہے۔	۴۷۲ نفقہ واجب نہیں ہوتا اگرچہ حاملہ ہو۔
۵۰۲ ۴۷۳	عیب احد الزوجین سے حصوں خیار کی صورت میں مسئلہ امام محمد کی تفصیل۔	۴۷۳ ناشزہ کے لئے نفقہ نہیں۔ ۴۷۳
۴۷۳	**نفقہ**	نفقہ اگر مفروضہ بحکم حاکم ہو تو موت احدالزوجین سے ساقط ہو جاتا ہے مگر جبکہ نفقہ مفروضہ شوہر سے نہ ملا ہو اور بحکم قاضی شرع عورت نے قرض لے لے کر خرچ کیا ہو، کہ اس صورت میں ذمہ شوہر پر دین قرار پاکر موت سے ساقط نہیں ہوتا۔ ۴۷۳

صفحہ نمبر	مضمون
	برائے وصولی مہر معجل وطی و
۱۰۳ ۴۷۴	سفر سے انکار کرنیوالی عورت کا نفقہ ساقط نہ ہوگا۔
۱۴۲ ۴۷۵	ناشزہ عورت کے لئے نفقہ شوہر پر واجب نہیں۔
	گھر میں پہننے کے کپڑے جن کا
	دینار بحکم نفقہ شوہر پر واجب ہو
۱۶۰ ۴۷۵	چکا تھا وہ دے کر دعویٰ کرے کہ میں نے عورت کو مالک نہیں بنایا تھا تو اس میں شوہر کا قول معتبر نہ ہونا چاہئے۔
۱۸۹ ۴۷۸	جب تک شوہر مہر معجل ادا نہ کرے نان نفقہ پاسکتی ہے یا نہیں۔
۲۱۴ ۵۱۰	نفقہ مثل کے معنی۔
۲۶۳ ۵۹۸	مرتدہ کے لئے نفقہ نہیں۔

مضمون	صفحہ
بیمار شوہر پر بھی عورت کا نان و نفقہ	
واجب ہے جبکہ وہ عورت اس کی قید میں رہے۔	۴۷۴
آوارہ گرد عورت کا نفقہ شوہر کے ذمے لازم نہیں۔	۴۷۵
عورت کی طرف سے کوئی بات مسقط	
نان و نفقہ نہیں ہوئی شوہر پھر بھی نفقہ	
نہ دے تو حاکم شوہر کو مجبور کرے کہ	۴۷۵
وہ نفقہ دے ورنہ طلاق دے۔	
شوہر کے ظلم و تعدی کی وجہ سے	
عورت مجبوراً والدین کے پاس رہے تو	۴۷۸
نفقہ شوہر پر لازم ہے۔	
حنفیہ کے نزدیک غیبت زوج یا عسرت	
کے سبب عدم ادائے نفقہ باعث تفریق	۵۱۰
نہیں۔	
کون سی عدت کا عورت نفقہ پاتی ہے	
اور کونسی عدت کا نہیں پاتی۔	۵۹۸

صفحہ نمبر	مضمون
	طلاق کا جب سے اقرار کرے اسی وقت سے واقع مانی جائے گی نفقہ البتہ آج تک کا اور آج سے عدت کا نفقہ دلائیں گے۔
۴۷۲ ۴۹۹	بعد موت شوہر زمانہ عدت یا اس کے بعد کا نان و نفقہ بالاتفاق مذہب صحیح حنفی و شافعی واجب نہیں۔

مضمون	صفحہ
حجر	۳۳۳
لڑکے اور لڑکی کو جب آثار بلوغ ظاہر ہوں تو اس وقت سے وہ بالغ ہیں اور اگر آثار بلوغ ظاہر نہ ہوں تو پندرہ برس عمر پوری ہونے پر بالغ سمجھ جائیں گے۔	۳۹۹

Fatawa Razawiyya Volume 12

Hiyal (Legal Stratagems) - Stratagem to avoid divorce under compulsion and coercion. | 387 | 579 | Compulsion and coercion regarding marriage are not grounds for validity, execution, or necessity. - All stratagems mentioned in 'Quniyah' etc. to nullify the requirement of Halala after it becomes mandatory are void. | 627 | 580 | All verbal dispositions of a coerced person are legally binding. - | | 580 | Marriage, manumission, and divorce of a coerced person are binding.

Ikrah (Coercion) 'Itaq (Manumission) - Divorce occurs even under compulsion and coercion. | 385 | 641 | A master said to his slave, "Yesterday I gave you the authority for your manumission, but you did not free yourself." The slave said, "I did so." In this case, the slave's claim will not be verified. - In the case of legal compulsion, if it is only written and nothing is uttered verbally, then divorce will not take place. | 385 | 642 | A person said to his slave, "Yesterday I freed you in exchange for money, but you did not accept." The slave claims, "I did accept." In this case, the master's word will be deemed credible. - People consider someone's persistence as coercion, even though it is not. If under such persistence one consumes an intoxicant and gives a divorce in that state, it will unanimously be valid. | 386 | Jana'iz (Funerals) - If someone is forced to drink wine under the threat of murder or dismemberment, or while being bound hand and foot, then a divorce given in that state of intoxication will not occur. | 386 | 299 | Funeral prayer is obligatory for every Muslim, no matter how great a sinner they may be. - If a woman fears religious, worldly, life-threatening, or physical harm, she shall not be forced to live with her husband. | 478 | Iqrar (Admission/ Acknowledgment) - If a husband cannot be rectified in any way, then a divorce can be obtained from him through compulsion. | 479 | 180 | A man and woman stayed in a room only on the first day while enemies stood around the room to kill them; both spouses were aware of this. In the morning, the man divorced her. The man admits to consummation, but the woman denies it. Is this consummation or privacy (Khalwat) valid or not? - If a woman is not willing to remarry after an irrevocable divorce (Talaq-e-Ba'in), she cannot be forced. | 517 | 180 | An admission is rejected if the person in whose favor it was made denies it.

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

हीयल (कानूनी तरकीबें) - जबर और इकरा (जबरदस्ती) की तलाक से बचने का हीला (उपाय)। | ३८७ | ५७९ | निकाह के मामले में जबर और इकरा वैधता, कार्यान्वयन और अनिवार्यता का आधार नहीं हैं। - हलाला की अनिवार्यता के बाद इसे समाप्त करने के जो उपाय 'क़ुनिया' आदि में वर्णित हैं, वे सभी शून्य हैं। | ६२७ | ५८० | एक मजबूर (मकरूह) व्यक्ति के सभी मौखिक कार्य निष्पादित माने जाते हैं। - | | ५८० | मजबूर व्यक्ति का निकाह, एताक़ (दास मुक्ति) और तलाक अनिवार्य (लाज़िम) है।

इकरा (जबरदस्ती) एताक़ (दास मुक्ति) - जबर और इकरा के साथ भी तलाक प्रभावी हो जाता है। | ३८५ | ६४१ | एक स्वामी ने अपने दास से कहा, "कल मैंने तुम्हें अपनी मुक्ति का अधिकार दिया था, लेकिन तुमने खुद को मुक्त नहीं किया।" दास ने कहा, "मैंने ऐसा कर लिया था।" ऐसी स्थिति में दास की बात की पुष्टि नहीं की जाएगी। - कानूनी जबरदस्ती की स्थिति में, यदि केवल लिखित रूप में हो और मौखिक रूप से कुछ न कहा गया हो, तो तलाक प्रभावी नहीं होगा। | ३८५ | ६४२ | किसी व्यक्ति ने अपने दास से कहा, "मैंने कल तुम्हें धन के बदले मुक्त किया था लेकिन तुमने स्वीकार नहीं किया।" दास कहता है, "मैंने स्वीकार कर लिया था।" यहाँ स्वामी का कथन विश्वसनीय माना जाएगा। - लोग किसी के आग्रह को भी जबरदस्ती समझते हैं, जबकि यह जबरदस्ती नहीं है। यदि ऐसे आग्रह पर किसी ने नशीली चीज़ पी ली और उस नशे में तलाक दे दिया, तो सर्वसम्मति से तलाक हो जाएगा। | ३८६ | जनाइज़ (जनाज़ा) - यदि किसी ने हत्या या अंग-भंग की धमकी देकर या हाथ-पाँव बांधकर शराब पिला दी हो, तो उस नशे की हालत में दिया गया तलाक प्रभावी नहीं होगा। | ३८६ | २९९ | हर मुसलमान का जनाज़ा पढ़ना फर्ज़ है, चाहे वह कितना भी बड़ा पापी क्यों न हो। - यदि स्त्री को धार्मिक, सांसारिक, जान या शारीरिक हानि की आशंका हो, तो उसे पति के साथ रहने के लिए मजबूर नहीं किया जाएगा। | ४७८ | इकरार (स्वीकृति/कन्फेशन) - यदि पति किसी भी तरह से सुधर न सके तो उससे जबरन तलाक प्राप्त किया जा सकता है। | ४७९ | १८० | एक पुरुष और स्त्री केवल पहले दिन एक कमरे में रहे और दुश्मन उन्हें मारने के लिए कमरे के चारों ओर खड़े रहे; दोनों जीवनसाथी को यह मालूम था। सुबह पुरुष ने तलाक दे दिया। पुरुष संभोग (दखूल) की बात स्वीकार करता है और स्त्री इनकार करती है। क्या यह संभोग या एकांत (ख़लवत) विश्वसनीय है या नहीं? - तलाक-ए-बाइन (अटल तलाक) के बाद यदि स्त्री दोबारा निकाह के लिए राजी नहीं है, तो उस पर

दबाव नहीं डाला जा सकता। | ५१७ | १८० | इकरार (स्वीकृति) तब रद्द हो जाती है जब वह व्यक्ति जिसके पक्ष में वह किया गया हो, उसका इनकार कर दे।

पृष्ठ ६८८ में से ७४

فتاویٰ رضویہ جلد دو ازدہم

حیل جبر واکراہ کی طلاق سے بچنے کا حیلہ۔ | ۳۸۷ | ۵۷۹ | جبر واکراہ در بارہ نکاح محل صحت ونفاذ ولزوم نہیں۔ لزومِ حلالہ کے بعد اس کو ساقط کرنے کے جو حیلے قنیہ وغیرہ میں مذکور ہیں سب باطل ہیں۔ | ۶۲۷ | ۵۸۰ | مکرہ کے تمام تصرفات قولیہ منعقد ہوتے ہیں۔ | | ۵۸۰ | مکرہ کا نکاح، عتاق اور طلاق لازم ہے۔

اکراہ عتاق جبر واکراہ کے ساتھ بھی طلاق واقع ہو جاتی ہے۔ | ۳۸۵ | ۶۴۱ | مولیٰ نے غلام کو کہا کہ میں نے کل تیرے عتق کا تجھے اختیار دیا تھا مگر تُونے خود کو آزاد نہیں کیا، غلام نے کہا میں نے ایسا کر لیا تھا، تو غلام کی تصدیق نہیں کی جائے گی۔ اجبارِ شرعی کی صورت میں اگر صرف تحریری زبان سے کچھ نہ کہا تو طلاق واقع نہ ہوگی۔ | ۳۸۵ | ۶۴۲ | کسی شخص نے اپنے غلام کو کہا کہ میں نے کل تجھے مال کے بدلے آزاد کیا تھا مگر تُونے قبول نہیں کیا، غلام کہتا ہے کہ میں نے قبول کر لیا تھا، تو مولیٰ کا قول معتبر ہوگا۔ لوگ کسی کے اصرار کو بھی جبر سمجھتے ہیں حالانکہ یہ جبر نہیں اگر ایسے جبر سے نشہ کی چیز پی اور اس نشہ میں طلاق دے دی تو بالاتفاق طلاق ہو جائے گی۔ | ۳۸۶ | جنائز کسی نے قتل یا قطع عضو کی دھمکی دے کر یا ہاتھ پاؤں باندھ کر شراب پلا دی اس نشہ میں طلاق دی واقع نہ ہوگی۔ | ۳۸۶ | ۲۹۹ | ہر مسلمان کی نمازِ جنازہ فرض ہے چاہے وہ کتنا ہی گنہگار ہو۔ عورت کو دینی، دنیوی، جانی اور جسمانی ضرر کا اندیشہ ہو تو شوہر کے پاس رہنے پر مجبور نہیں کی جائے گی۔ | ۴۷۸ | اقرار شوہر کسی طرح درست نہ ہو تو اس سے جبراً طلاق حاصل کی جاسکتی ہے۔ | ۴۷۹ | ۱۸۰ | مرد و عورت صرف روز اول کوٹھے میں رہے اور دشمن کوٹھے کے گرد اِگر د مارنے کو کھڑے رہے، زوجین کو بھی یہ معلوم تھا، صبح مرد نے طلاق دے دی، مرد دخول کا مقر ہے اور

عورت منکر۔ یہ دخول یا خلوت معتبر ہے یا نہیں۔ طلاق بائن کے بعد عورت دوبارہ نکاح پر راضی نہیں تو اس پر جبر نہیں کیا جا سکتا۔ | ۵۱۷ | ۱۸۰ | اقرار مقر لہ کے انکار سے رد ہو جاتا ہے۔

Fatawa Razawiya, Volume 12

Summary of Subject/Legal Ruling	Page No.	Legal Question / Topic Details	Page No.
Divorce occurs upon the acknowledgment of divorce.	400	A woman's vagina was such that penetration was impossible. After marriage, intercourse with the husband never took place, nor were there any children. Now that woman has died, what rights of this woman can be incumbent upon the husband?	511
Divorce does not occur through a letter until the husband acknowledges writing the letter.	608	**Exegesis (Tafsir)**	
A false acknowledgment has no effect in religious matters (diyanatan).	636	Evidence for the permissibility of a second marriage from various verses of the Holy Quran.	308
Rights of People (Huquq-ul-Ibad)		The meaning of 'Ayim' in the verse 'Wa ankihul ayama' is a woman without a husband, which includes virgins, divorcees, and widows.	308
In the rights of people, if the possessor of the right is agreeable, there is no prohibition.	174	Specifically, several Quranic verses regarding the marriage of widows.	308
It is forbidden to take another's property by force, but it is lawful to take it with their consent.	174	The context of the revelation (Shan-e-Nuzul) of the blessed verse 'Al-talaqu marratan'.	407
Just as men have rights over women, so women have rights over men by the command of the Great Quran.	274	To which prohibition does the blessed verse 'muhsinina ghayra musafihina' point?	469

Summary of Subject/Legal Ruling	Page No.	Legal Question / Topic Details	Page No.
He who has two wives and does not act justly between them will rise on the Day of Judgment with one side leaning.	275	**Benefits of Hadith (Fawaid-e-Hadithiya)**	
At the time of conflict, the rights of the servant take precedence over the rights of Allah.	293	The meaning of the Hadith which states that those who marry with no intention of paying the dower (mahr) will be raised as fornicators on the Day of Resurrection.	199
For women, there is a reward equal to Jihad in obeying their husbands and knowing their rights.	296	The meaning of the blessed Hadith: "I am the first to open the gate of Paradise, but I will see a woman hastening before me."	307
If women do not disobey their husbands and offer their prayers, they will go straight to Paradise.	296	The meaning of the Hadith: "Allah curses the one who makes a woman lawful (muhallil) and the one for whom she is made lawful (muhallal lahu)."	409
Mention of some rights of the husband over the wife.	297	**Biography of the Prophet (Sirat-un-Nabi) ﷺ**	
When a husband is unable to fulfill the wife's rights, divorce becomes a right of the servant.	325	The incident of the marriage proposal sent by the Holy Prophet ﷺ to Umm Hani bint Abi Talib (may Allah be pleased with her).	300

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

विषय/क़ानूनी व्यवस्था का सार	पृष्ठ संख्या
तलाक़ के इकरार (स्वीकारोक्ति) से तलाक़ प्रभावी हो जाती है।	400
पत्र के माध्यम से तलाक़ तब तक नहीं होती जब तक पति पत्र लिखने का स्वीकार न कर ले।	608
झूठे इकरार का धार्मिक दृष्टि (दियानतन) से कोई प्रभाव नहीं होता।	636
हुक़ूक़-उल-इबाद (लोगों के अधिकार)	
लोगों के अधिकारों में यदि अधिकार रखने वाला व्यक्ति सहमत हो, तो कोई मनाही नहीं है।	174
दूसरे की संपत्ति जबरन लेना हराम है और उसकी खुशी से लेना हलाल है।	174
	274

क़ानूनी प्रश्न / विषय विवरण	पृष्ठ संख्या
एक महिला की योनि ऐसी थी जिसमें प्रवेश असंभव था। निकाह के बाद पति के साथ कभी संभोग नहीं हो सका और न ही कोई संतान हुई। अब वह महिला मर गई है, तो इस महिला के कौन-कौन से अधिकार पति पर लागू हो सकते हैं?	511
तफ़सीर (व्याख्या)	
कुरान मजीद की विभिन्न आयतों से दूसरे निकाह की अनुमति का प्रमाण।	308
'वानकिहुल अयामा' में 'अयम' का अर्थ है बिना पति वाली स्त्री, जिसमें कुंवारी, तलाक़शुदा और विधवा सभी शामिल हैं।	308
विशेष रूप से विधवाओं के निकाह से संबंधित कुछ कुरानिक आयतें।	308
आयत-ए-करीमा 'अल-तलाक़ु मर्रातान' के अवतरण का संदर्भ (शान-ए-नुज़ूल)।	407
	469

विषय/क़ानूनी व्यवस्था का सार	पृष्ठ संख्या
जैसे पुरुषों के अधिकार महिलाओं पर हैं, वैसे ही महान कुरान के आदेशानुसार महिलाओं के अधिकार पुरुषों पर हैं।	
जिसकी दो पत्नियाँ हों और वह उनके बीच न्याय न करे, तो वह कयामत के दिन एक ओर झुका हुआ उठेगा।	275
टकराव के समय बंदे का अधिकार अल्लाह के अधिकार पर प्राथमिकता रखता है।	293
महिलाओं के लिए अपने पतियों की आज्ञा मानने और उनके अधिकारों को जानने में जिहाद के बराबर पुण्य है।	296
महिलाएँ यदि पतियों की अवज्ञा न करें और नमाज़ पढ़ें तो वे सीधी जन्नत में जाएँगी।	296
पत्नी पर पति के कुछ अधिकारों का उल्लेख।	297
जब पति पत्नी के अधिकारों को पूरा करने में सक्षम न हो, तो तलाक़ बंदे का अधिकार बन जाती है।	325

क़ानूनी प्रश्न / विषय विवरण	पृष्ठ संख्या
आयत-ए-करीमा 'मुहसिनीना ग़ैरा मुसाफ़िहीना' में किस मनाही की ओर संकेत है?	
फ़वाइद-ए-हदीसिया (हदीस के लाभ)	
उस हदीस का अर्थ जिसमें कहा गया है कि जिनका निकाह हुआ और उनकी नीयत में महर (स्त्रीधन) देने की नहीं थी, वे कयामत के दिन व्यभिचारी के रूप में उठाए जाएंगे।	199
हदीस शरीफ़ "मैं जन्नत का दरवाज़ा खोलने वाला पहला व्यक्ति हूँ, लेकिन मैं एक महिला को देखूँगा जो मुझसे पहले दौड़ रही होगी" का अर्थ।	307
हदीस "अल्लाह ने हलाला करने वाले और जिसके लिए हलाला किया जाए, दोनों पर लानत भेजी है" का अर्थ।	409
सीरत-उन-नबी ﷺ (नबी का जीवन चरित्र)	
हुज़ूर अकरम ﷺ की ओर से उम्मे हानी बिन्त अबी तालिब (रज़ियल्लाहु अन्हा) को निकाह का संदेश भेजने की घटना।	300

خلاصہ مضمون/ حکم شرعی	صفحہ نمبر
اقرار طلاق سے طلاق واقع ہو جاتی ہے۔	۴۰۰
خط سے اس وقت تک طلاق نہیں ہوتی جب تک شوہر خط لکھنے کا اقرار نہ کرے۔	۶۰۸
اقرار کاذب کا دیانۃً کوئی اثر نہیں ہوتا۔	۶۳۶
حقوق العباد	
	۱۷۴

فقہی سوال / تفصیلِ عنوان	صفحہ نمبر
عورت کا اندام نہانی ناقابل ادخال تھا بعد از نکاح کبھی شوہر وزن میں مجامعت نہ ہو سکی اور نہ کوئی اولاد ہوئی اب وہ عورت فوت ہوگئی اس عورت کے کیا کیا حقوق شوہر پر عائد ہو سکتے ہیں۔	۵۱۱
تفسیر	
اباحتِ نکاح ثانی کا ثبوت قرآن مجید کی متعدد آیات سے ہے۔	۳۰۸
وانکحوا الایامی میں ایم کا معنی ہے زن بے شوہر جس کے اطلاق میں کنواری، مطلقہ اور بیوہ سب داخل ہیں۔	۳۰۸
بالخصوص بیوہ کے نکاح سے متعلق چند قرآنی آیات۔	۳۰۸

خلاصہ مضمون/ حکم شرعی	صفحہ نمبر
حقوق العباد میں اگر صاحبِ حق راضی ہوں تو ممانعت نہیں رہتی۔	
پرایا مال جبراً لینا حرام اور اس کی خوشی سے لینا حلال ہے۔	۱۷۴
مردوں کے حقوق عورتوں پر جسطرح ہیں یونہی بحکم قرآن عظیم مردوں پر عورتوں کے۔	۲۷۴
جس کے دو بیویاں ہوں اور ان میں عدل نہ کرے تو قیامت کے دن ایک طرف کو جھکا ہوا اٹھے گا۔	۲۷۵
بوقتِ تعارض حق العبد حق اللہ پر مقدم ہوتا ہے۔	۲۹۳
	۲۹۶

فقہی سوال / تفصیلِ عنوان	صفحہ نمبر
آیت کریمہ الطلاق مرتان کا شانِ نزول۔	۴۰۷
آیت کریمہ محسنین غیر مسافحین میں کون سی ممانعت کی طرف اشارہ ہے۔	۴۶۹
فوائد حدیثیہ	
اس حدیث کا مطلب جس میں فرمایا گیا کہ جن کا نکاح ہوا اور ان کی نیت میں اداءِ مہر نہیں وہ روزِ قیامت زانی وزانیہ اٹھائے جائیں گے۔	۱۹۹
	۳۰۷

خلاصہ مضمون/ حکم شرعی	صفحہ نمبر	فقہی سوال / تفصیلِ عنوان	صفحہ نمبر
شوہروں کی اطاعت اور ان کے حقوق کی معرفت میں عورتوں کے لئے جہاد کے برابر اجر ہے۔		حدیث شریف "انا اول من یفتح باب الجنۃ الانی اری امرۃ تبادرنی" کا مطلب۔	
عورتیں اگر شوہروں کی نافرمانی نہ کریں اور نماز پڑھیں تو سیدھی جنت کو چلی جائیں۔	۲۹۶	حدیث "لعن اللہ المحلل والمحلل لہ" کا مطلب۔	۴۰۹
شوہر کے بیوی پر بعض حقوق کا ذکر۔	۲۹۷	**سیرۃُ النبی صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم**	
شوہر جب اداءِ حقِ زوجہ پر قادر نہ ہو تو طلاق حق العبد ہے۔	۳۲۵	حضور اکرم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی طرف سے ام ہانی بنت ابی طالب رضی اللہ تعالیٰ عنہا کو پیغام نکاح کا واقعہ۔	۳۰۰

Fatawa Rizvia Volume 12

302 | The incident of the marriage proposal sent by the radiant Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) to Hazrat Umm Salama (may Allah be pleased with her). 312 | That which is permissible (mubah) but leads to major sins (kabair) and following Satan, does not remain permissible due to that complication. 303 | The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) married Hazrat Umm Salama (may Allah be pleased with her) at the end of Shawwal in 4 AH. 312 | To mention high realities and precious intricacies before the general public, which are beyond their understanding and intellect, is prohibited by Sharia. 316 | For the sake of preserving the faith of new Muslims, the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) maintained the changes made by the Quraysh in the construction of the Kaaba and did not rectify them. 317 | To have the audacity and boldness to declare the people of the Qibla (Muslims) and the followers of the Kalima Tayyiba as infidels is pure ignorance and severe, carrying the risk of a great burden and clear punishment. Beliefs and Kalam (Theology) 317 | It is an absolute obligation to protect every word and deed of a reciter of the Kalima from a charge of infidelity (kufr), no matter how heinous and repulsive it may outwardly appear. 291 | A person does not become an infidel (kafir) by failing to perform obligatory duties (fara'iz) or preventing their performance. 317 | If any interpretation, however weak, arises from a Muslim's word or deed by which a ruling of Islam can be applied, it is necessary to incline towards it, even if there are a thousand possibilities towards infidelity. 291 | A person who denies the obligatoriness (farziyat) of such an obligation whose necessity is part of the essentials of religion (zaruriyat-e-din) becomes an infidel. 317 | Islam remains dominant and is not subjugated. 291 | To hold bad suspicions (bad-gumani) against a Muslim is forbidden (haram). 317 | Those who abandon the possibility of Islam and lean towards possibilities of infidelity make Islam subjugated and infidelity dominant. 307 | Admonition: The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) will visit Paradise repeatedly. 318 | Whoever calls those who say "La ilaha illallah" (There is no god but Allah) infidels, is himself closer to infidelity. 307 | Absolute precedence in entering Paradise is specific to the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). 318 | Three things are part of the core of faith (asl-e-iman). 307 | Criticism of a permissible (mubah) act can only be infidelity (kufr) if its permissibility is among the essentials of religion. 318 | Do not call anyone from the people of the Qibla an infidel. 307 | The permissibility of a second marriage is among the essentials of religion. 403 | It is impermissible to ask the ignorant about the

subtle issues of the Essence and Attributes (of Allah). 309 | Not considering second marriage as lawful according to Sharia is infidelity. 403 | Whoever wishes for a Muslim to become an infidel, becomes an infidel himself before that happens.

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

302 | हुज़ूर-ए-पुरनूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की तरफ से हज़रत उम्म-ए-सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को निकाह के पैगाम का वाक़िया। 312 | जो मुबाह (जायज़) बड़े गुनाहों और शैतान के अनुसरण की ओर ले जाए, वह उस समस्या के कारण मुबाह नहीं रहता। 303 | हुज़ूर-ए-अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने शव्वाल सन् 4 हिजरी के अंत में हज़रत उम्म-ए-सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से निकाह फ़रमाया। 312 | आम जनता के सामने उच्च सच्चाइयों और कीमती बारीकियों का ज़िक्र करना, जो उनकी समझ और बुद्धि से परे हों, शरीयत के अनुसार वर्जित है। 316 | नए मुसलमानों के धर्म की रक्षा के लिए, हुज़ूर-ए-अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने कुरैश द्वारा काबा के निर्माण में किए गए परिवर्तनों को बरकरार रखा, उनमें सुधार नहीं फ़रमाया। 317 | अहल-ए-क़िबला और कलिमा तैयबा के मानने वालों को काफ़िर कहने की जुर्रत और हिमाक़त कोरा अज्ञान और सख्त है, जिसमें बड़े गुनाह और स्पष्ट सज़ा का डर है। अक़ायद व कलाम (ईश्वरमीमांसा) 317 | कलिमा पढ़ने वाले के हर बोल और काम को कुफ़्र (धर्मत्याग) से बचाना फ़र्ज़-ए-क़तई (अनिवार्य) है, चाहे वह ज़ाहिरी तौर पर कितना ही घिनौना और बुरा क्यों न हो। 291 | फ़राइज़ (अनिवार्य कर्तव्यों) को पूरा न करने या उनके पूरा होने में बाधा डालने पर व्यक्ति काफ़िर नहीं होता। 317 | यदि किसी मुसलमान के किसी बोल या काम में कोई कमज़ोर से कमज़ोर भी ऐसी व्याख्या निकलती हो जिससे इस्लाम का हुक्म लग सके, तो उसी की तरफ जाना लाज़िम (ज़रूरी) है, भले ही उसमें कुफ़्र की तरफ हज़ारों संभावनाएँ हों। 291 | ऐसे फ़र्ज़ की फर्ज़ियत का इनकार करने वाला काफ़िर हो जाता है जिसकी फर्ज़ियत 'ज़रूरियात-ए-दीन' (धर्म की अनिवार्य आवश्यकताएं) में से हो। 317 | इस्लाम ग़ालिब (प्रबल) रहता है, मगलूब (दबा हुआ) नहीं होता। 291 | मुसलमान पर बदगुमानी (बुरी धारणा) रखना हराम है। 317 | इस्लाम की संभावना को छोड़कर कुफ़्र की संभावनाओं की ओर जाने वाले लोग इस्लाम को मगलूब और कुफ़्र को ग़ालिब करते हैं। 307 | चेतावनी: हज़रत-ए-अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का जन्नत में बार-बार तशरीफ़ ले जाना होगा। 318 | जो 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहने वालों को काफ़िर कहे, वह खुद कुफ़्र के ज़्यादा नज़दीक है। 307 | जन्नत में दाखिले में पूर्ण प्राथमिकता हुज़ूर-ए-अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के लिए विशिष्ट है। 318 | तीन बातें असल-ए-ईमान (ईमान की जड़) में शामिल हैं। 307 | मुबाह पर तन्ज़ (आलोचना) सिर्फ उसी सूरत में कुफ़्र हो सकती है जब उसकी इबाहत (जायज़ होना) ज़रूरियात-ए-दीन से हो। 318 | अहल-ए-क़िबला में से

किसी को काफ़िर न कहो। 307 | निकाह-ए-सानी (दूसरी शादी) की इबाहत ज़रूरियात-ए-दीन से है। 403 | जाहिलों से अल्लाह की ज़ात और सिफ़ात के बारीक मसले पूछना ना-जायज़ है। 309 | निकाह-ए-सानी को शरीयत की दृष्टि से हलाल न जानना कुफ्र है। 403 | जो किसी मुसलमान के लिए चाहे कि वह काफ़िर हो जाए, उसके(काफ़िर) होने से पहले वह खुद काफ़िर हो गया।

पृष्ठ 76/688

فتاوی رضویہ جلد دو ازدہم

۳۰۲ | حضورِ پُر نور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی طرف سے حضرت ام سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کو پیغامِ نکاح کا واقعہ۔ ۳۱۲ | جو مباح کبائر اور اتباعِ شیطان کی طرف منجر ہو وہ اس عارضہ کی وجہ سے مباح نہیں رہتا۔ ۳۰۳ | حضورِ اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے آخر شوال سن چار ہجری میں حضرت ام سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے نکاح فرمایا۔ ۳۱۲ | عوام کے سامنے حقائق عالیہ اور دقائقِ غالیہ کا ذکر جو ان کے مدارک و افہام وراء ہو شرعاً ممنوع ہے۔ ۳۱۶ | حضورِ انور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے حفظِ دین نو مسلمین کے لئے قریش کی طرف سے تعمیر کعبہ میں کی گئی تبدیلیوں کو برقرار رکھا، ان کی اصلاح نہ فرمائی۔ ۳۱۷ | تکفیرِ اہلِ قبلہ و اصحابِ کلمہ طیبہ میں جرات و جسارت محض جہالت اور سخت ہے جس میں وبال عظیم و نکال صریح کا اندیشہ ہے۔ عقائد و کلام ۳۱۷ | کلمہ گو کے ہر قول و فعل کو اگرچہ بظاہر کیسا ہی شنیع و فظیع ہو کفر سے بچانا فرضِ قطعی ہے۔ ۲۹۱ | فرائض ادا نہ کرنے یا ان کی ادائیگی سے باز رکھنے پر آدمی کافر نہیں ہوتا۔ ۳۱۷ | مسلمان کے کسی قول یا فعل میں کوئی ضعیف سے ضعیف تاویل ایسی نکلتی ہو جس کے سبب سے حکمِ اسلام ہو سکتا ہو تو اسی کی طرف جانا لازم ہے اگرچہ اس میں ہزار احتمال جانبِ کفر جاتے ہوں۔ ۲۹۱ | ایسے فرض کی فرضیت کا منکر کافر ہو جاتا ہے جس کی فرضیت ضروریاتِ دین سے ہو۔ ۳۱۷ | اسلام غالب رہتا ہے مغلوب نہیں ہوتا۔ ۲۹۱ | مسلمان پر بد گمانی حرام ہے۔ ۳۱۷ | احتمالِ اسلام کو چھوڑ کر احتمالاتِ کفر کی طرف جانیوالے اسلام کو مغلوب اور کفر کو غالب کرتے ہیں۔ ۳۰۷ | تنبیہ: حضرت اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا بہشت میں تشریف لے جانا بار بار ہوگا۔ ۳۱۸ | لا الہ الا اللہ کہنے والوں کو جو کافر کہے وہ خود کفر سے نزدیک تر ہے۔ ۳۰۷ | دخولِ جنت میں اولیتِ مطلقہ حضورِ اقدس صلی

اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے لئے خاص ہے۔ ۳۱۸ | تین باتیں اصلِ ایمان میں داخل ہیں۔ ۳۰۷ | مباح پر طعن صرف اسی صورت میں کفر ہو سکتا ہے کہ اس کی اباحت ضروریاتِ دین سے ہو۔ ۳۱۸ | اہلِ قبلہ سے کسی کو کافر نہ کہو۔ ۳۰۷ | نکاحِ ثانی کی اباحت ضروریاتِ دین سے ہے۔ ۴۰۳ | جاہلوں سے ذات و صفات کے دقیق مسائل پوچھنا ناجائز ہے۔ ۳۰۹ | نکاحِ ثانی کو ازروئے شرع حلال نہ جاننا کفر ہے۔ ۴۰۳ | جو کسی مسلمان کے لئے چاہے کہ کافر ہو جائے اس کے ہونے سے پہلے وہ خود کافر ہو گیا۔

Fatawa Razawiyya, Volume 12

- The ruling is not of Ali Tirmidhi, but of Muhammad Madani. (403)
- To say that marriage is not a means of inheritance in Sharia is a word of disbelief (kufr). (417)
- **Rebuttal of Misguided Sects**
- If after betrothal it is found that the person the girl is betrothed to is a Rafidi, Wahabi, etc. (misguided), then breaking off the betrothal is Shariat-wise mandatory. (281)
- It is a common habit of Wahabis to label Muslims as disbelievers, polytheists, and faithless without cause. (290)
- The ancient way of Wahabis. (395)
- Wahabis are followers of Muhammad bin Ishaq and they have written explicit insults (tabarra) against the Commander of the Faithful, Hazrat Umar (may Allah be pleased with him). (396)
- Considering three divorces in one sitting as one is against the majority of Islam; it is the doctrine of Ibn al-Qayyim al-Zahiri. (402)
- One who utters insolent words against the exalted status of Hazrat Farooq-e-Azam (may Allah be pleased with him) is an open Rafidi. (404)
- Those who deny the occurrence of three divorces in one sitting are opponents of the 'Sawad-e-Azam' (the great majority of Muslims). (459)
- The marriage of a religionless person, i.e., a heretic (zindiq) or atheist (dahriya), does not occur at all. (609)

- **Limits and Punishments (Hudud and Ta'zir)**

- A financial fine is Shariat-wise illegitimate and void. (270)
- Having intercourse with a woman after three divorces during the waiting period ('iddat) is pure adultery if the prohibition is known. (400)
- The prescribed punishment (hadd) will be applied to one who has intercourse with a woman after an irrevocable (mughallazah) divorce during her waiting period. (400)
- It is mandatory for Muslims to boycott men and women who engage in forbidden (haram) acts. (400)
- A woman who marries during her waiting period ('iddat) should be immediately separated; if they do not comply, they should be expelled from the community. (408)

- It is necessary for community members to completely boycott men and women who engage in forbidden acts. (408)
- It is mandatory to expel an abductor from the community and sever all ties with them. (429)
- A husband who keeps a thrice-divorced woman without halala will be involved in adultery and deserve severe punishment. (433)
- Knowingly spreading false news of a divorce is forbidden and a satanic act. Such people deserve disciplinary punishment (ta'zir). (460)
- Abandoning an obligatory act is a sin for which a ruler can impose punishment. (479)
- For any disobedience (sin) where a fixed punishment (hadd) is not applicable, there is disciplinary punishment (ta'zir). (479)

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

- हुक्म अली तिर्मिज़ी का नहीं मुहम्मद मदनी का है। (403)
- यह कहना कि शरीअत में वैवाहिकता उत्तराधिकार का ज़रिया नहीं है, कुफ़्र का कलमा है। (417)
- **बद-मज़हबों का खंडन**
- निस्बत (सगाई) करने के बाद मालूम हुआ कि जिससे लड़की की निस्बत की गई वह राफ़ज़ी, वहाबी आदि बद-मज़हब है, तो निस्बत तोड़ना शरीअत की दृष्टि से अनिवार्य है। (281)
- वहाबियों की अक्सर यह आदत है कि वे बिना किसी कारण के मुसलमानों को काफ़िर, मुशरिक और बे-ईमान ठहरा देते हैं। (290)
- वहाबियों का पुराना तरीका। (395)
- वहाबी मुहम्मद बिन इसहाक़ के मुक़ल्लिद (अनुयायी) हैं और उन्होंने अमीर-उल-मोमिनीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पर स्पष्ट रूप से तबर्रा (अपमानजनक शब्द) लिखे हैं। (396)
- एक ही बैठक में तीन तलाक़ों को एक मानना इस्लाम के बहुमत के विरुद्ध इब्न-ए-क़य्यिम ज़ाहिरी का मज़हब है। (402)
- सैय्यदना फ़ारूक़-ए-आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शान में गुस्ताख़ी भरे शब्द बोलने वाला खुला राफ़ज़ी है। (404)
- एक मजलिस में तीन तलाक़ों के होने का खंडन करने वाले 'सवाद-ए-आज़म' (मुसलमानों के बहुमत) के विरोधी हैं। (459)
- ला-मज़हब अर्थात ज़िंदीक़ और दहरिया का निकाह ही नहीं होता। (609)

- **हुद्दूद ओ ताज़ीर (सीमाएँ और दंड)**

- माली जुर्माना शरीअत के अनुसार नाजायज़ और बातिल है। (270)
- औरत को तीन तलाक़ देकर इद्दत में सोहबत (संभोग) करना ख़ालिस ज़िना (व्यभिचार) है, जबकि उसकी हुरमत (निषेध) का ज्ञान हो। (400)
- मुग़ल्लज़ा (अंतिम) तलाक़शुदा से इद्दत के दौरान सोहबत करने वाले पर हद्द (निर्धारित दंड) लागू होगा। (400)

- मुसलमानों के लिए हराम काम करने वाले पुरुष और महिला से बहिष्कार करना अनिवार्य है। (400)
- इद्दत के दौरान निकाह करने वाले से औरत को फ़ौरन अलग कर दिया जाए, अगर वे न मानें तो उन्हें बिरादरी से बाहर कर दिया जाए। (408)
- हराम काम करने वाले पुरुष और स्त्री से बिरादरी वालों का पूर्ण बहिष्कार करना ज़रूरी है। (408)
- अपहरण करने वाले को बिरादरी से बाहर करना और उससे मेल-जोल छोड़ देना अनिवार्य है। (429)
- मुतल्लक़ा-ए-सलासा (तीन तलाक़ वाली) को हलाला के बिना रखने वाला पति ज़िना में लिप्त होगा और कड़े अज़ाब का हक़दार होगा। (433)
- जानबूझकर ग़लत तलाक़ की चर्चा फैलाना हराम और शैतानी काम है। ऐसे लोग ताज़ीर (सज़ा) के पात्र हैं। (460)
- वाजिब (अनिवार्य कार्य) को छोड़ना एक गुनाह है जिस पर शासक सज़ा दे सकता है। (479)
- जिस गुनाह पर हद्द (निश्चित दंड) लागू नहीं होता, उस पर ताज़ीर (विवेकाधीन दंड) है। (479)

पृष्ठ 77/688

فتاویٰ رضویہ ، جلد دوازدہم

حکم علی ترمذی کا نہیں محمد مدنی کا ہے۔ (۴۰۳) یہ کہنا کہ زوجیت شرع میں ذریعہ وراثت نہیں کلمہ کفر ہے۔ (۴۱۷) رد بد مذہباں نسبت کرنے کے بعد معلوم ہوا کہ جس سے لڑکی کی نسبت کی وہ رافضی وہابی وغیرہ بد مذہب ہے تو نسبت چھڑانا شرعاً لازم ہے۔ (۲۸۱) وہابیہ کی اکثر عادت ہے کہ مسلمانوں کو وجہ بے وجہ کافر، مشرک اور بے ایمان ٹھہرا دیتے ہیں۔ (۲۹۰) وہابیہ کا قدیمی داب۔ (۳۹۵) وہابیہ محمد بن اسحاق کے مقلد ہیں اور انہوں نے امیر المومنین حضرت عمر رضی اللہ تعالی عنہ پر صریح تبرآ لکھے ہیں۔ (۳۹۶) ایک جلسہ میں تین طلاقوں کو ایک ماننا جمہور اسلام کے خلاف ابن قیم ظاہری کا مذہب ہے۔ (۴۰۲) سید نا فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی شان اقدس میں کلمات گستاخی بکنے والا کھلا رافضی ہے۔ (۴۰۴) ایک مجلس میں تین طلاقوں کے وقوع کے منکر مخالف سوادِ اعظم ہیں۔ (۴۵۹) لامذہب یعنی زندیق دہریہ کا نکاح ہی نہیں ہوتا۔ (۶۰۹)

حدود و تعزیر مالی جرمانہ شرعاً ناجائز و باطل ہے۔ (۲۷۰) عورت کو تین طلاق دے کر عدت میں وطی کرنا زناء خالص ہے جبکہ اس کی حرمت کا علم ہو۔ (۴۰۰) مطلقہ مغلظہ سے دورانِ عدت وطی کرنیوالے پر حد جاری ہوگی۔ (۴۰۰) مسلمانوں کو حرام کار مرد و عورت سے مقاطعہ کرنا لازم ہے۔ (۴۰۰) دورانِ عدت نکاح کرنیوالے سے عورت کو فوراً جدا کر دیا جائے ، اگر نہ مانے تو اسے برادری سے خارج کر دیا جائے۔ (۴۰۸) حرامکار مرد و عورت سے برادری والوں کو مکمل مقاطعہ کرنا ضروری ہے۔ (۴۰۸) اغواء کرنے والے کو برادری سے خارج کرنا اور اس سے میل جول چھوڑ دینا لازم ہے۔ (۴۲۹) مطلقہ ثلاثہ کو حلالہ کے بغیر رکھنے والا شوہر مبتلائے زناء ہوگا اور مستحق عذاب شدید ہوگا۔ (۴۳۳) دیدہ دانستہ غلط طلاق کی شہرت دینا حرام

اور کارِ ابلیس ہے۔ ایسے لوگ تعزیر کے مستحق ہیں۔ (۴۶۰) ترکِ واجب گناہ جس پر حاکم سزا دے سکتا ہے۔ (۴۷۹) جس معصیت پر حد لاگونہ ہوتی ہو اس پر تعزیر ہے۔ (۴۷۹)

Fatawa-e-Razvia | Volume 12

Ifta and Rasm-ul-Mufti

113 | If texts and fatwas are mutually contradictory, the reliable one will be that which accords with the texts. | — 114 | Primary texts (Mutun) are specifically established for transmitting the correct and reliable school of law (madhhab). | 105 114 | The author of Hidaya is among the scholars of preference (Ashab al-Tarjih). | — 114 | Multaq al-Abhur is among the reliable texts in the school of law. | 106 114 | Imam Kamaluddin ibn al-Humam, author of Fath al-Qadir, is worthy of independent reasoning (ijtihad) and is among the scholars of preference. | — 114 | The opinion prioritized first in Multaq al-Abhur is the most preferred and chosen for fatwa. | 106 114 | Imam Qazi Khan is among the scholars of preference; his authentication (tashih) precedes the authentication of others, and one should not deviate from it. | — 115 | Faqih al-Nafs Imam Qazi Khan prioritizes the opinion that is most well-known, most apparent, and reliable. | 106 115 | Scholars have rejected some explicit authentications in commentaries and fatwas simply because the primary texts are contrary to them. | — 115 | The author of Hidaya often prioritizes the strong opinion, and his constant habit is to postpone the evidence for the chosen opinion. | 107 115 | The opinion supported by primary texts will be the reliable one. | — 115 | Scholars explicitly state that a Mufti should absolutely issue fatwas according to the Imam's opinion, and a judge generally should decide according to the Imam's school, except when there is a compelling need to leave it. | 109 115 | The author of Al-Muhit is among the Imams of preference. | — 116 | After Imam al-A'zam, one should refer to the opinion of Imam Abu Yusuf, then Imam Muhammad, then Imam Zufar and Hasan ibn Ziyad. | 109 116 | Reasons for fatwas according to the opinion of the two disciples (Sahibayn) in some cases. | — 116 | It is obligatory for us to issue fatwas according to the Imam's opinion, even if other scholars (masha'ikh) give fatwas against it. | 110 116 | Nearly one-third of the school's opinions follow the Sahibayn against the Imam's opinion, but reliance is mostly on the Imam's opinion. | — 117 | In matters of endowment (waqf) and judiciary (qada), the fatwa is mostly according to the Second Imam's (Abu Yusuf) opinion. | 111 117 | Scholars have authenticated that it is necessary for us to issue fatwas by the Imam's words even if the sheikhs issued fatwas against them. | — 118 | In millions of transactional matters, the fatwa is on the Imam's opinion, even if Imam Muhammad agrees with Imam Abu Yusuf's view. | 111 118 | One should not deviate from the Imam's opinion towards the Sahibayn's opinion or either of them without necessity. | — 118 |

Primary texts precede commentaries, and commentaries precede fatwas. | 113 118 | The author of Hidaya says that issuing fatwas on the Imam's opinion is obligatory in any case, in my view. | — — | If there is a conflict between the text and the commentary, action will be based on the text. | 113

फ़तावा-ए-रज़विया | जिल्द 12

इफ़्ता और रस्म-उल-मुफ्ती

113 | यदि मूल ग्रंथ (मतून) और फ़तवों में परस्पर विरोध हो, तो वही विश्वसनीय होगा जो मतून के अनुकूल हो। | — 114 | मूल ग्रंथ (मतून) विशेष रूप से सही और विश्वसनीय संप्रदाय के हस्तांतरण के लिए बनाए गए हैं। | 105 114 | हिदाया के लेखक 'असहाब-ए-तरजीह' (प्राथमिकता देने वाले विद्वान) में से हैं। | — 114 | मुल्तकल अभुर मज़हब के विश्वसनीय ग्रंथों में से है। | 106 114 | इमाम कमालुद्दीन इब्न अल-हुमाम, फ़तह-उल-क़दीर के लेखक, इज्तिहाद के योग्य और असहाब-ए-तरजीह में से हैं। | — 114 | मुल्तकल अभुर में जो राय पहले दी गई हो, वही फ़तवे के लिए सबसे बेहतर और चुनी हुई होती है। | 106 114 | इमाम क़ाज़ी खान असहाब-ए-तरजीह में से हैं; उनका सत्यापन दूसरों के सत्यापन पर भारी है, उससे नहीं हटना चाहिए। | — 115 | फ़क़ीह-उन-नफ़्स इमाम क़ाज़ी खान उसी राय को प्राथमिकता देते हैं जो सबसे अधिक प्रसिद्ध, स्पष्ट और विश्वसनीय होती है। | 106 115 | विद्वानों ने कुछ स्पष्ट व्याख्याओं और फ़तवों को केवल इसलिए ठुकरा दिया क्योंकि मूल ग्रंथ उनके विरुद्ध थे। | — 115 | हिदाया के लेखक अक्सर मजबूत राय को पहले रखते हैं और चुनी हुई राय के प्रमाण को बाद में लाना उनकी स्थायी आदत है। | 107 115 | जिस पर मूल ग्रंथ (मतून) सहमत हों, वही राय विश्वसनीय होगी। | — 115 | विद्वान स्पष्ट करते हैं कि मुफ़्ती को पूरी तरह इमाम की राय पर फ़तवा देना चाहिए और जज को आम तौर पर इमाम के मज़हब पर फ़ैसला करना चाहिए, सिवाय मजबूरी के। | 109 115 | मुहीत के लेखक प्राथमिकता देने वाले इमामों में से हैं। | — 116 | इमाम-ए-आज़म के बाद इमाम अबू यूसुफ़, फिर इमाम मुहम्मद, फिर इमाम ज़ुफ़र और हसन बिन ज़ियाद की राय की ओर रुख करना चाहिए। | 109 116 | कुछ जगहों पर साहिबैन (दो शिष्यों) की राय पर फ़तवा देने के कारण। | — 116 | हम पर इमाम की राय पर फ़तवा देना अनिवार्य है, चाहे अन्य बुज़ुर्ग इसके खिलाफ फ़तवा दें। | 110 116 | मज़हब के लगभग एक तिहाई मसायल में साहिबैन की राय इमाम के खिलाफ है, लेकिन अधिकांश भरोसा इमाम की राय पर ही है। | — 117 | वक़्फ़ और न्यायपालिका के मामलों में अक्सर दूसरे इमाम (अबू यूसुफ़) की राय पर फ़तवा होता है। | 111 117 | विद्वानों ने इसकी पुष्टि की है कि हम पर इमाम के शब्दों के अनुसार फ़तवा देना अनिवार्य है, भले ही मशायख़ ने इसके खिलाफ फ़तवा दिया हो। | — 118 | लाखों लेन-देन के मामलों में फ़तवा इमाम की राय पर है, भले ही इमाम मुहम्मद, इमाम अबू यूसुफ़ की राय से सहमत हों। | 111 118 | इमाम की राय से साहिबैन की राय की तरफ बिना ज़रूरत

नहीं मुड़ना चाहिए। | — 118 | मूल ग्रंथ (मतून), व्याख्याओं (शरुह) पर भारी हैं और व्याख्याएं फ़तवों पर। | 113 118 | हिदाया के लेखक कहते हैं कि इमाम की राय पर फ़तवा देना मेरे नज़दीक हर हाल में वाजिब है। | — — | यदि मूल ग्रंथ और व्याख्या में विरोध हो, तो अमल मूल ग्रंथ पर होगा। | 113

पेज 78 का 688

۱۱۳ | متون و فتاویٰ باہم متعارض ہوں تو معتمد وہی ہو گا جو متون کے موافق ہوگا۔ | — ۱۱۴ | متون خاص نقل مذہب صحیح و معتمد کیلئے وضع کئے جاتے ہیں۔ | ۱۰۵ ۱۱۴ | صاحبِ ہدایہ اصحابِ ترجیح میں سے ہیں۔ | — ۱۱۴ | ملتقی البحر متون معتمدہ فی المذہب سے ہے۔ | ۱۰۶ ۱۱۴ | امام کمال الدین ابن الہمام صاحبِ فتح القدیر لائق اجتہاد اور اصحاب ترجیح سے ہیں۔ | — ۱۱۴ | ملتقی البحر میں جو قول مقدم ہو وہی ارجح و مختار للفتویٰ ہوتا ہے۔ | ۱۰۶ ۱۱۴ | امام قاضی خاں اصحابِ ترجیح سے ہیں ان کی تصحیح اوروں کی تصحیح پر مقدم ہے ان کی تصحیح سے عدول نہ کیا جائے۔ | — ۱۱۵ | فقیہ النفس امام قاضی خاں اسی قول کو مقدم کرتے ہیں جو اشہر و اظہر اور معتمد ہوتا ہے۔ | ۱۰۶ ۱۱۵ | علماء نے شروح و فتاویٰ کی بعض صریح تصحیحیں صرف اس بناء پر رد کر دیں کہ متون ان کے خلاف پر ہیں۔ | — ۱۱۵ | صاحبِ ہدایہ اکثر قولِ قوی کو مقدم کرتے ہیں اور قولِ مختار کی دلیل کو مؤخر کرنا ان کی عادتِ مستمرہ ہے | ۱۰۷ ۱۱۵ | جس پر متون ہوں وہی قول معتمد ہوگا۔ | — ۱۱۵ | علماء تصریح فرماتے ہیں کہ مفتی مطلقاً قول امام پر فتویٰ دے اور قاضی عموماً مذہبِ امام پر فیصلہ کرے مگر بضرورت داعیہ ترک۔ | ۱۰۹ ۱۱۵ | صاحبِ محیط ائمہ ترجیح سے ہیں۔ | — ۱۱۶ | امامِ اعظم کے بعد امام ابو یوسف پھر امام محمد پھر امام زفر و حسن بن زیاد کے قول کی طرف رجوع کرنا چاہئے | ۱۰۹ ۱۱۶ | بعض جگہ قولِ صاحبین پر فتویٰ کی وجوہ۔ | — ۱۱۶ | ہم پر امام کے قول پر فتویٰ دینا واجب ہے اگرچہ مشائخ اس کے خلاف فتویٰ دیں۔ | ۱۱۰ ۱۱۶ | ایک تہائی مذہب کے قریب قولِ صاحبین قولِ امام کے خلاف ہے لیکن اکثر اعتماد قولِ امام پر ہی ہے۔ | — ۱۱۷ | مسائلِ وقف و

قضاء میں غالباً امامِ ثانی کے قول پر فتویٰ ہے۔ | ۱۱۱ ۱۱۷ | علماء نے اس کی تصحیح فرمائی کہ ہم پر بقولِ امام فتویٰ دینا لازم اگرچہ مشائخ نے اس کے خلاف پر فتویٰ دیا ہو۔ | — ۱۱۸ | لاکھوں مسائلِ معاملات میں قولِ امام پر فتویٰ ہے اگرچہ امام ابو یوسف کی رائے سے امام محمد بھی موافق ہوں۔ | ۱۱۱ ۱۱۸ | قولِ امام سے قولِ صاحبین کی طرف یا ان میں سے کسی ایک کی طرف بلا ضرورت عدول نہ کیا جائے۔ | — ۱۱۸ | متون شروح پر اور شروح فتاویٰ پر مقدم ہیں۔ | ۱۱۳ ۱۱۸ | صاحبِ ہدایہ فرماتے ہیں قولِ امام پر فتویٰ بہرحال میرے نزدیک واجب ہے۔ | — — | متن و شرح میں تعارض ہو تو عمل متن پر ہو گا۔ | ۱۱۳

Fatawa Razawiyya Volume Twelve

118 | It is not permissible to rely on the opinion of the two disciples (Sahibayn) mentioned as the preferred opinion (Mufti bihi) in 'Durr' regarding the time of Isha, as there is no reason to deviate from the Imam's opinion. | 491 | The rule is that action will be based on that opinion which is firmly and reliably held by many. | 491 209 | When fatwas differ, it is obligatory to return to 'Zahir al-Riwayah'. | 491 | Imam Qazi Khan's preference takes precedence over the preference of others. | 491 212 | A Mufti gives fatwas based on religious integrity. | 491 | What is in the primary texts (Mutun) and commentaries (Shuruh) takes precedence over what is in the Fatwas. | 491 212 | He who does not know the people of his time and does not consider the situation of his region while giving fatwas is ignorant. | 586 | Acceptance of divorce based on a void foundation is purely absurd. | 586 226 | Taking fatwas from the ignorant is haram, and turning to the opponents of religion is severely haram. | 609 | Both puberty and non-puberty are possible in a fourteen-year-old girl. | 609 282 | A fatwa or ruling based on an outweighed (Marjooh) opinion is ignorance and a breach of consensus (Ijma). | 609 | For a Mufti to create branches himself and answer each branch is contrary to Shariah wisdom. | 609 282 | In what situation can a follower (Muqallid) act upon an outweighed opinion or the school of another Imam? | | Principles of Jurisprudence (Fawaid Usuliyah) | 282 | A Mufti's fatwa based on an outweighed opinion is void; also, he cannot give a fatwa according to the school of another Imam. | 105 | Both brevity and detailed reasoning are modes of adopting and interpreting evidence. | 105 288 | Imam Qazi Khan gives precedence to that opinion which is dominant (Rajih) and reliable. | 106 | Providing reasoning (Ta'leel) is a reason for preference (Tarjeeh). | 106 289 | Allama Ibrahim Halabi gives precedence to that opinion which is supported. | 110 | Answer to the second question. | 110 290 | After the statement of Imam-e-Azam (Radi Allahu Ta'ala Anhu), the opinion of Imam Abu Yusuf is preferred and takes precedence. | 111 | No one except a Mujtahid has the authority to examine the strength of evidence. | 111 290 | No book can reach the exalted status of the primary texts (Mutun). | 111 | Hardship brings ease. | 111 290 | According to the clarification of the scholars, primary texts (Mutun) take precedence over commentaries (Shuruh) and fatwas. | 118 | Without weakness of evidence, necessity, customary practice (ta'amul), or change of times, the opinion of the two disciples cannot be preferred over the Imam's opinion. | 118

फतावा रज़विया जिल्द बारहवीं

११८ | इशा के वक्त में दुरर में साहिबैन के कौल को मुफ्ती बिही कहा गया, उस पर भरोसा जायज़ नहीं क्योंकि इमाम के कौल से हटने का कोई कारण नहीं है। | ४९१ | नियम यह है कि अमल उस कौल पर होगा जिस पर यकीन और भरोसा करने वाले बहुत हों। | ४९१ २०९ | जब फतवा अलग-अलग हो तो ज़ाहिरुर रिवायत की तरफ लौटना वाजिब है। | ४९१ | इमाम काज़ी खाँ की तरजीह दूसरों की तरजीह पर मुकद्दम (सर्वोपरि) है। | ४९१ २१२ | मुफ्ती दयानत (धार्मिक ईमानदारी) पर फतवा देता है। | ४९१ | जो मुतून (मूल पाठ) और शुरूह (व्याख्याओं) में है, वह उस पर मुकद्दम है जो फतावा में है। | ४९१ २१२ | जो अपने ज़माने के लोगों को न जाने और फतवा देते समय अपने क्षेत्र की स्थिति को ध्यान में न रखे, वह जाहिल है। | ५८६ | बातिल (अमान्य) आधार पर तलाक का इकरार करना पूरी तरह से व्यर्थ है। | ५८६ २२६ | जाहिलों से फतवा लेना हराम है और दीन के विरोधियों की ओर रुजू करना सख्त अश्द हराम है। | ६०९ | चौदह साल की लड़की में बालिग होना और न होना दोनों संभव हैं। | ६०९ २८२ | मरजूह (कमज़ोर) कौल पर फतवा और हुक्म देना जहल (अज्ञानता) और इज्मा (आम सहमति) का उल्लंघन है। | ६०९ | मुफ्ती का खुद से शक (शाखाएं) पैदा करके हर शक का जवाब देना शरीयत की हिकमत के खिलाफ है। | ६०९ २८२ | मुकल्लिद (अनुयायी) किस स्थिति में मरजूह कौल या दूसरे इमाम के मज़हब पर अमल कर सकता है। | | उसूली फायदे (फवाइद उसूलिया) | २८२ | मुफ्ती का मरजूह कौल पर फतवा बातिल (अमान्य) है, साथ ही वह किसी दूसरे इमाम के मज़हब के मुताबिक भी फतवा नहीं दे सकता। | १०५ | इक्तिसार और तालील दोनों दलील अपनाने और तावील के तरीके हैं। | १०५ २८८ | इमाम काज़ी खाँ उसी कौल को मुकद्दम रखते हैं जो राजिह (प्रबल) और मोअतमद (विश्वसनीय) हो। | १०६ | तालील (कारण बताना) तरजीह (प्राथमिकता) की दलील होती है। | १०६ २८९ | अल्लामा इब्राहिम हलबी उसी कौल को प्राथमिकता देते हैं जो समर्थित हो। | ११० | दूसरे सवाल का जवाब। | ११० २९० | इमाम-ए-आज़म (रज़ी अल्लाहु तआला अन्हु) के इरशाद के बाद इमाम अबू यूसुफ का कौल मरज्ह और मुकद्दम है। | १११ | मुजतहिद के अलावा किसी को दलील की ताकत पर नज़र रखने का अधिकार नहीं है। | १११ २९० | मुतून (मूल पाठ) की शान को कोई किताब नहीं पहुँच सकती। | १११ | कठिनाई आसानी लाती है। | १११ २९० | उलेमा की स्पष्ट व्याख्या के अनुसार मुतून शुरूह और फतावा पर मुकद्दम हैं। | ११८ | दलील की कमज़ोरी, ज़रूरत, ताअमुल (प्रथा) या समय के बदलाव के बिना इमाम के कौल पर साहिबैन के कौल को तरजीह नहीं दी जा सकती। | ११८

فتاویٰ رضویہ جلد دو ازدھم

۱۱۸ | وقت عشاء میں قول صاحبین کو درر میں مفتی بہ کہا اس پر اعتماد جائز نہیں کہ قول امام سے عدول کا کوئی سبب نہیں۔ | ۴۹۱ | قاعدہ یہ ہے کہ عمل اس قول پر ہوگا جس پر جزم واعتماد کرنے والے کثیر ہوں۔ | ۴۹۱ ۲۰۹ | فتوی جب مختلف ہو تو ظاہر الروایۃ کی طرف رجوع واجب ہے۔ | ۴۹۱ | امام قاضی خاں کی ترجیح اوروں کی ترجیح پر مقدم ہے۔ | ۴۹۱ ۲۱۲ | مفتی دیانت پر فتوی دیتا ہے۔ | ۴۹۱ | جو متون و شروح میں ہے وہ اس پر مقدم ہے جو فتاوی میں ہے۔ | ۴۹۱ ۲۱۲ | جو اہل زمانہ کو نہ جانے اور فتوی دیتے وقت اپنے علاقے کے حال کو ملحوظ نہ رکھے وہ جاہل ہے۔ | ۵۸۶ | بنائے باطل پر اقرار طلاق محض لغو ہے۔ | ۵۸۶ ۲۲۶ | جاہلوں سے فتوی لینا حرام اور مخالفانِ دین کی طرف رجوع کرنا سخت اشد حرام ہے۔ | ۶۰۹ | چودہ برس کی لڑکی میں بلوغ وعدم بلوغ دونوں محتمل ہیں۔ | ۶۰۹ ۲۸۲ | قول مرجوح فتوی اور حکمِ جہل و خرق اجماع ہے۔ | ۶۰۹ | مفتی کا خود شقوق قائم کرکے ہر شق کا جواب دینا خلافِ مصلحتِ شرعیہ ہے۔ | ۶۰۹ ۲۸۲ | مقلد کس صورت میں قول مرجوح یا دوسرے امام کے مذہب پر عمل کرسکتا ہے۔ | | فوائد اصولیہ | ۲۸۲ | مفتی کا قول مرجوح پر فتوی باطل ہے نیز کسی دوسرے امام کے مذہب کے مطابق بھی فتوی نہیں دے سکتا۔ | ۱۰۵ | اقتصار و تعلیل دونوں دلیل اختیار و تعویل ہیں۔ | ۱۰۵ ۲۸۸ | امام قاضی خاں اسی قول کو مقدم رکھتے ہیں جو راجح و معتمد ہو۔ | ۱۰۶ | تعلیل دلیل ترجیح ہوتی ہے۔ | ۱۰۶ ۲۸۹ | علامہ ابراہیم حلبہ اسی قول کو تقدیم دیتے ہیں۔ جو مؤید ہو۔ | ۱۱۰ | جواب سوال دوم۔ | ۱۱۰ ۲۹۰ | امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے ارشاد کے بعد امام ابویوسف کا قول مرجح و مقدم ہے۔ | ۱۱۱ | مجتہد کے سوا کسی کو قوتِ دلیل پر نظر کا اختیار نہیں۔ | ۱۱۱ ۲۹۰ | متون کی جلالت شان کو کوئی کتاب نہیں پہنچ سکتی۔ |

۱۱۱ | مشقت جالبِ تیسیر ہے۔ | ۱۱۱ ۲۹۰ | علماء کی تصریح کے مطابق متون شروح و فتاویٰ پر مقدم ہیں۔ | ۱۱۸ | بغیر ضعفِ دلیل یا ضرورت یا تعامل یا اختلافِ زماں قولِ امام پر قولِ صاحبین مرجح نہیں ہوسکتا۔ | ۱۱۸

Fatawa Razawiyya - Volume 12

119 | The weakness of a reason, due to which deviating from the Imam's opinion is permissible, is that the great Mujtahid Imams explicitly state its weakness in their fatwa. | Abstinence from forbidden acts is obligatory. | 332 120 | In the case of renewal, acceptance of a part is not acceptance of the whole, nor does satisfaction with a part necessitate satisfaction with the whole. | When a speaker mentions something separate from the answer in his speech, it no longer remains an answer but is considered a separate statement. | 349 120 | In multiple items, giving possession of some is not giving possession of all. | What is customarily known is like that which is verbally present. | 350 195 | What is well-known is like what is stipulated. | Certainty is not dispelled by doubt. | 359 202 | Consideration and the thing given in consideration cannot be combined under one ownership. | An explicit word does not require intention. | 395 215 | No statement is attributed to a silent person. | Consenting to the forbidden is forbidden, and sometimes it is even disbelief. | 398 215 | If a person sees his property being destroyed and remains silent, this silence will not be considered permission for destruction. | Establishing (a new meaning) is preferable to confirmation (of an existing one). | 425 215 | A minor does not have the capacity for donation, nor does anyone have the authority to donate from his property. | The similarity of handwriting is not a Sharia proof. | 425 217 | A contract is a connection, and for usury (riba) two things are necessary. | As long as a statement can be effective, it will not be considered futile. | 437 217 | Whatever is devoid of its intended purpose is void. | A claim in which any part of the statement becomes futile will not be accepted. | 438 222 | A branch of the acceptance of knowledge. | The expiration of the waiting period (Iddah) makes her a stranger and removes the capacity for divorce. | 441 228 | Some Sharia rulings, by Sharia decree, depend on custom. | Legally recognized harm must be removed. | 478 229 | When two matters are possible, the lesser one is determined because it is certain. | In cases of genuine necessity, following (taqlid of) any Imam can be done only in that specific issue while adhering to their schools of thought. | 510 229 | Prevailing custom will be considered, the subordinate will be unacceptable, and where both are equal, the statement for determining intent under oath will be reliable. | An explicit word does not require intention. | 559 232 | The owner knows better the aspect of transfer of ownership. | The correct view is that "take [your] divorce" is an explicit divorce. | 561 240 | Acting upon what is abrogated is forbidden. | Establishing (a new meaning) is superior to confirmation. | 561

फतावा रज़विया - खंड १२

११९ | तर्क की वह कमजोरी जिसके कारण इमाम के कथन से हटना जायज़ है, वह यह है कि महान मुजतहिद इमाम अपने फतवे में इसकी कमजोरी को स्पष्ट रूप से प्रमाणित करें। | हराम (वर्जित) से बचना अनिवार्य है। | ३३२ १२० | नवीनीकरण की स्थिति में, एक हिस्से की स्वीकृति पूरे की स्वीकृति नहीं है, और न ही एक हिस्से पर संतोष पूरे पर संतोष को अनिवार्य बनाता है। | जब एक वक्ता अपने भाषण में उत्तर से अलग किसी बात का उल्लेख करता है, तो वह उत्तर नहीं रह जाता बल्कि उसे एक अलग कथन माना जाता है। | ३४९ १२० | अनेक वस्तुओं के मामले में, कुछ का कब्ज़ा सौंपना सभी का कब्ज़ा सौंपना नहीं है। | जो प्रथागत रूप से ज्ञात है, वह वैसा ही है जैसे वह शब्दों में उपस्थित हो। | ३५० १९५ | जो प्रसिद्ध है वह वैसा ही है जैसा कि निर्धारित किया गया हो। | संदेह से निश्चितता समाप्त नहीं होती। | ३५९ २०२ | प्रतिफल और प्रतिफल में दी गई वस्तु एक ही स्वामित्व के तहत एकत्र नहीं हो सकते। | एक स्पष्ट शब्द को नियत (इरादे) की आवश्यकता नहीं होती। | ३९५ २१५ | मौन रहने वाले व्यक्ति की ओर कोई कथन आरोपित नहीं किया जाता। | हराम पर सहमति हराम है, बल्कि कभी-कभी यह कुफ्र (अविश्वास) भी होता है। | ३९८ २१५ | यदि कोई व्यक्ति अपनी संपत्ति को नष्ट होते हुए देखता है और चुप रहता है, तो यह चुप्पी विनाश की अनुमति नहीं होगी। | स्थापना (नया नियम बनाना) पुष्टीकरण से बेहतर है। | ४२५ २१५ | एक नाबालिग दान करने की योग्यता नहीं रखता, और न ही किसी को उसकी संपत्ति से दान करने का अधिकार है। | लिखावट का मिलना कोई शरीयत का प्रमाण नहीं है। | ४२५ २१७ | अनुबंध एक बंधन है और सूद (रिबा) के लिए दो चीजों का होना अनिवार्य है। | जब तक बात प्रभावी हो सकती है, उसे व्यर्थ नहीं माना जाएगा। | ४३७ २१७ | जो वस्तु अपने उद्देश्य से रहित हो, वह अमान्य होती है। | ऐसा दावा जिसमें कथन का कोई भी हिस्सा व्यर्थ हो जाता हो, स्वीकार नहीं किया जाएगा। | ४३८ २२२ | ज्ञान की स्वीकृति की एक शाखा। | इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) की समाप्ति उसे अजनबी बना देती है और तलाक की स्थिति से बाहर कर देती है। | ४४१ २२८ | शरीयत के कुछ आदेश शरीयत के हुक्म के अनुसार प्रथा ('उर्फ़) पर आधारित होते हैं। | शरीयत के अनुसार नुकसान को दूर करना अनिवार्य है। | ४७८ २२९ | जब दो बातें संभावित हों, तो कम वाली को निर्धारित किया जाता है क्योंकि वही निश्चित होती है। | सच्ची आवश्यकता के मामलों में, किसी भी इमाम का अनुसरण (तक़लीद) केवल उस विशिष्ट मुद्दे में उनके संप्रदायों का पालन करते हुए किया जा सकता है। | ५१० २२९ | प्रचलित प्रथा का विचार किया जाएगा, अधीनस्थ अस्वीकार्य होगा, और जहाँ दोनों समान हों, वहाँ शपथ के साथ मंशा निर्धारित

करने वाला कथन विश्वसनीय होगा। | स्पष्ट शब्द को नियत की आवश्यकता नहीं होती। | ५५९ २३२ | स्वामी स्वामित्व हस्तांतरण के पहलू को बेहतर जानता है। | सही विचार यह है कि "तलाक ले" एक स्पष्ट तलाक है। | ५६१ २४० | मंसूख (रद्द) पर अमल करना हराम है। | स्थापना (तसीस) पुष्टीकरण (ताकीद) से बेहतर है। | ५६१

पृष्ठ ८० / ६८८

فتاویٰ رضویہ - جلد دوازدہم

۱۱۹ | ضعف دلیل جس کے سبب قولِ امام سے عدول جائز ہے وہ ہے کہ اعاظم ائمہ مجتہدین فتوٰی اس کے ضعف پر تنصیص کریں۔ | حرام سے اجتناب واجب ہے۔ | ۳۳۲ ۱۲۰ | بصورتِ تجدّدِ بعض کی تسلیم کل کی تسلیم نہیں اور نہ بعض پر رضا سے کل پر رضا لازم ہے۔ | متکلم جب اپنے کلام میں جواب سے الگ بات ذکر کرے تو وہ جواب نہیں رہتا بلکہ الگ کلام مانا جاتا ہے۔ | ۳۴۹ ۱۲۰ | اشیائے متعددہ میں اقباضِ بعض اقباضِ کُل نہیں۔ | جو عرفاً معہود ہو وہ ایسے ہی ہے جیسے موجود لفظاً ہو۔ | ۳۵۰ ۱۹۵ | المعروف کالمشروط | یقین شک سے زائل نہیں ہوتا۔ | ۳۵۹ ۲۰۲ | عوض و معوض ایک ملک میں جمع نہیں ہو سکتے۔ | صریح لفظ محتاج نیت نہیں ہوتا۔ | ۳۹۵ ۲۱۵ | ساکت کی طرف کوئی قول منسوب نہیں ہوتا۔ | رضا بالحرام حرام بلکہ بعض دفعہ کفر ہوتی ہے۔ | ۳۹۸ ۲۱۵ | اگر کوئی شخص اپنا تلف ہوتا ہوا دیکھے اور خاموش رہے تو یہ خاموشی اذنِ اتلاف نہ ہوگی۔ | تاسیس اولیٰ ہے بنسبت تاکید کے۔ | ۴۲۵ ۲۱۵ | نابالغ تبرع کی اہلیت نہیں رکھتا اور نہ ہی اس کے مال سے کسی کو تبرع کرنے کا اختیار ہے۔ | شانِ خط ملنا کوئی حجتِ شرعیہ نہیں۔ | ۴۲۵ ۲۱۷ | عقد ایک ربط ہے اور ربا کے لئے دو چیزوں کا ہونا ضروری ہے۔ | کلام جب تک موثر بن سکے گا لغو نہ ٹھہرائیں گے۔ | ۴۳۷ ۲۱۷ | جو شئی مقصود سے خالی ہو وہ باطل ہوتی ہے۔ | ایسا دعویٰ جس میں کوئی حصہ کلام کا لغو جاتا ہو تسلیم نہ کریں گے۔ | ۴۳۸ ۲۲۲ | قبولِ علم کی فرع۔ | انقضاءِ عدت کو اجنبی اور محلّیت طلاق سے خارج کر دیتی ہے۔ | ۴۴۱ ۲۲۸ | بعض احکام شرع بحکم شرع عرف پر دائر ہوتے ہیں۔ | ضرر شرعاً واجب الدفع ہے۔ | ۴۷۸ ۲۲۹ | جب دو امر محتمل ہوگا تو اقل متعین ہوتا ہے کیونکہ وہی یقینی ہوتا ہے۔ | ضرورت صادقہ میں کسی امام کی تقلید صرف اس مسئلہ میں ان کے

مذاہب کی رعایت کے ساتھ کی جاسکتی ہے۔ | ۵۱۰ ۲۲۹ | عرفِ غالب کا اعتبار ہوگا مغلوب نامقبول ہوگا اور جہاں دونوں برابر ہوں وہاں تعیینِ مراد کا قول بقسم معتبر ہوگا۔ | صریح محتاج نیت نہیں ہوتا۔ | ۵۵۹ ۲۳۲ | مملک جہتِ تملیک کو زیادہ جانتا ہے۔ | صحیح یہ ہے کہ "طلاق لے" طلاق صریح ہے۔ | ۵۶۱ ۲۴۰ | منسوخ پر عمل حرام ہے۔ | تاسیس تاکید سے اولیٰ ہے۔ | ۵۶۱

Fatawa Ridawiyya, Volume Twelve

566 | Delegated authority becomes ownership. 566 | An owner acts of his own will and is not bound by the owner's will. 602 | Making something valid that is not valid according to Sharia is beyond anyone's power. 633 | An admission based on a wrong foundation is not valid. 645 | Indication by speech is like indication by state. 645 | Indication by state is more general than indication by speech. 644 | Whatever is in the question, the answer encompasses it. Jurisprudential Benefits: 123 | What is the amount of Dower (Mahr) in Muhammadi Law? 124 | It is necessary to interpret the words of every contracting party, swearer, waqif (founder of a trust), and testator according to their custom (urf). 125 | In the case of corruption in naming (the dower), the customary dower (Mahr al-Mithl) is established. 126 | What is the matter by which the entire dower is waived and what is that by which half remains? 136 | The weight of the Sharia Dirham. 147 | The weight of the Dinar. 138 | If no period is fixed for the dower, the customs and traditions of that city will be followed. 140 | If the dower is not clarified as prompt (Mu'ajjal) or deferred (Mu'ajjal with 'ain), it will depend on the custom of the city. 140 | In our cities, general dowers are often stated without specifying promptness or deferment, and the custom is that its payment is contingent upon death or divorce. 141 | A marriage was conducted in ignorance with a woman pregnant from adultery; the man says he married thinking she was a virgin. Is this excuse sufficient for the cancellation of the dower or not? 142 | What is the definition of 'Khalwat-e-Sahiha' (valid privacy)? 142 | Definition of prompt dower (Mahr-e-Mu'ajjal). 142 | Deferred dower (Mahr-e-Mu'ajjal) will be payable when the promised time arrives; before that, the woman cannot demand it. 142 | If it was said to be deferred but no time limit was stated, it will remain deferred until divorce or death and will only be payable after separation. 143 | Valid privacy (Khalwat-e-Sahiha) is not a condition for the dower to be obligatory. 159 | What is proven by custom and tradition is as if it was stipulated by tongue. 159 | An explicitly stated matter takes precedence over a matter understood by indication from custom, tradition, etc. 160 | 'Mutarakah' (abandonment) is an annulment (faskh), not a divorce, even if said with words of divorce. 161 | An irregular (fasid) marriage is one in which any condition of validity is missing, for example, a marriage without witnesses. 161 | Since in an irregular marriage there is no divorce in reality but rather an annulment, the number of divorces will not decrease because of it.

फतावा रज़विया, जिल्द बारहवीं

566 | मुफ़व्वज़ (सौंपा गया) मालिकाना हक हो जाता है। 566 | मालिक अपनी मर्ज़ी से काम करता है, वह (पिछले) मालिक की मर्ज़ी का पाबंद नहीं होता। 602 | जो शरई तौर पर मान्य न हो, उसे मान्य बनाना किसी के बस में नहीं। 633 | गलत बुनियाद पर किया गया इकरार (स्वीकारोक्ति) मान्य नहीं होता। 645 | वाणी का संकेत (दलालत-ए-क़ाल) स्थिति के संकेत (दलालत-ए-हाल) की तरह है। 645 | स्थिति का संकेत वाणी के संकेत से अधिक व्यापक है। 644 | प्रश्न में जो कुछ होता है, उत्तर उसमें समाहित होता है। फायदा-ए-फ़िक़हिया: 123 | मुहम्मदी शरीअत में महर की मात्रा क्या है? 124 | प्रत्येक संविदा करने वाले, कसम खाने वाले, वक़्फ़ करने वाले और वसीयत करने वाले के शब्दों को उनके रीति-रिवाज़ (उर्फ़) के अनुसार समझना आवश्यक है। 125 | नामकरण (महर तय करने) में दोष होने पर महर-ए-मिसल (प्रचलित महर) लागू होता है। 126 | वह कौन सी बात है जिससे पूरा महर खत्म हो जाता है और वह कौन सी है जिससे आधा रह जाता है? 136 | शरीयत के दिरहम का वज़न। 147 | दीनार का वज़न। 138 | यदि महर की कोई अवधि तय नहीं हुई है, तो उस शहर के रीति-रिवाज़ और परंपराओं पर अमल किया जाएगा। 140 | यदि महर में त्वरित (मुअज्ज्ल) और विलंबित (मुअज्जल) की स्पष्टता न की गई हो, तो वह शहर के रीति-रिवाज़ पर निर्भर करेगा। 140 | हमारे देशों में सामान्य महर अक्सर जल्दी या देरी के उल्लेख के बिना बताए जाते हैं और रिवाज़ यह है कि इसका भुगतान मृत्यु या तलाक पर निर्भर रखा जाता है। 141 | व्यभिचार से गर्भवती महिला से अनजाने में निकाह किया गया; पुरुष कहता है कि मैंने उसे कुंवारी समझकर निकाह किया था। क्या यह बहाना महर खत्म करने के लिए काफी है या नहीं? 142 | 'खलवत-ए-सहीहा' (वैध एकांत) की परिभाषा क्या है? 142 | त्वरित महर (महर-ए-मुअज्ज्ल) की परिभाषा। 142 | विलंबित महर (महर-ए-मुअज्जल) तब देय होगा जब वादे का समय आएगा, उससे पहले महिला इसकी मांग नहीं कर सकती। 142 | यदि विलंबित कहा गया और कोई समय सीमा नहीं बताई गई, तो वह तलाक या मृत्यु तक विलंबित रहेगा और अलगाव के बाद ही देय होगा। 143 | महर के अनिवार्य होने के लिए वैध एकांत (खलवत-ए-सहीहा) शर्त नहीं है। 159 | जो बात रीति-रिवाज़ से सिद्ध होती है, वह वैसी ही है जैसे ज़ुबान से शर्त रखी गई हो। 159 | स्पष्ट रूप से कही गई बात, रीति-रिवाज़ आदि से संकेत द्वारा समझी जाने वाली बात पर प्रधानता रखती है। 160 | मुतारकः (त्याग) निरस्तीकरण (फ़स्ख़) है, तलाक नहीं, भले ही तलाक के शब्दों के साथ हो। 161 | निकाह-ए-फासिद (अनियमित निकाह) वह निकाह है जिसमें वैधता की शर्तों में से कोई कमी हो, जैसे बिना

गवाहों के निकाह। 161 | चूंकि निकाह-ए-फासिद में वास्तव में तलाक नहीं बल्कि निरस्तीकरण (फ़स्ख़) होता है, इसलिए इससे तलाक की संख्या में कमी नहीं होगी।

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

۵۶۶ | مُفَوَّض ملک ہوتا ہے۔ ۵۶۶ | مُمَلَّک اپنی مرضی سے کام کرتا ہے مُمَلَّک کی مرضی کا پابند نہیں ہوتا۔ ۶۰۲ | جو شرعاً معتبر نہ ہو اس کو معتبر بنانا کسی کے بس میں نہیں۔ ۶۳۳ | جو اقرار غلط بناء پر ہو وہ معتبر نہیں ہوتا۔ ۶۴۵ | دلالت قال دلالتِ حال کی طرح ہے۔ ۶۴۵ | دلالت حال دلالت مقال سے عام ہے۔ ۶۴۴ | جو کچھ سوال میں ہو جواب اس کو متضمن ہوتا ہے۔ فوائد فقیہیہ ۱۲۳ | مہر شرعِ محمدی کی مقدار کیا ہے۔ ۱۲۴ | ہر عاقد وحالف اور واقف و موصی کے کلام کو اس کے عرف پر محمول کرنا لازم۔ ۱۲۵ | فسادِ تسمیہ کے وقت مہر مثل قائم ہوتا ہے۔ ۱۲۶ | کون سا وہ امر ہے جس سے تمام مہر ساقط ہو جاتا ہے اور کون سا وہ جس سے نصف رہ جاتا ہے۔ ۱۳۶ | درہم شرعی کا وزن۔ ۱۴۷ | دینار کا وزن۔ ۱۳۸ | مہر کی اگر کچھ مدت مقرر نہ ہوئی وہاں اس شہر کے عرف و عادات پر عمل ہو گا۔ ۱۴۰ | مہر میں مُعَجَّل و مُؤَجَّل کی وضاحت نہ کی گئی ہو تو وہ عرفِ بلد پر رہے گا۔ ۱۴۰ | ہمارے بلاد میں عام مہور بیان تعجیل و تا جیل سے خالی ہوتے ہیں اور رواج یہ ہے کہ اس کے لزوم ادا کو موت یا طلاق پر موقوف رکھا جاتا ہے۔ ۱۴۱ | زنا سے حاملہ سے لاعلمی میں نکاح کیا مرد کہتا ہے میں نے باکرہ سمجھ کر نکاح کیا تھا۔ یہ عذر اسقاطِ مہر کے لئے کافی ہے یا نہیں۔ ۱۴۲ | خلوت صحیحہ کی تعریف کیا ہے۔ ۱۴۲ | مہر مُعَجَّل کی تعریف۔ ۱۴۲ | مہر مُؤَجَّل اس وقت واجب الادا ہو گا جب وعدے کا وقت آئے گا، اس سے پہلے عورت اس کا مطالبہ نہیں کر سکتی۔ ۱۴۲ | اگر مُؤَجَّل کہا اور کوئی میعاد بیان نہیں کی تو وہ طلاق یا موت تک مؤجل ٹھہرے گا اور بعد فرقت ہی واجب الادا ہو گا۔ ۱۴۳ | خلوت صحیحہ وجوبِ مہر کے لئے شرط نہیں۔ ۱۵۹ | جو بات عرف و رواج سے ثابت ہو وہ ایسی ہی ہے جیسے زبان سے شرط کی گئی ہو۔ ۱۵۹ | صراحتاً کہی ہوئی بات عرف و رواج

وغیرہ سے دلالتہ سمجھی جانے والی بات پر ترجیح رکھتی ہے۔ ۱۶۰ | متارکہ فسخ ہے طلاق نہیں اگرچہ الفاظِ طلاق سے ہو۔ ۱۶۱ | نکاح فاسد وہ نکاح ہے جس میں شرائطِ صحت سے کوئی مفقود ہو مثلاً بے شہود نکاح۔ ۱۶۱ | چونکہ نکاح فاسد میں طلاق دراصل نہیں بلکہ فسخ ہے لہذا اس سے تعداد طلاق میں کمی نہ ہو گی۔

Fatawa-e-Razvia Volume Twelve

- 162: The minimum dowry (Mahr) is two tolas and seven and a half mashas of silver. | 336: Details regarding religious rulings (hukm-e-diyanat) and judicial rulings (hukm-e-qadha).
- 166: What are the meanings of Mahr-e-Mu'ajjal (prompt), non-Mu'ajjal (deferred), and Mu'ajjal (accelerated), and what is their ruling? | 333: Various forms of omitting attribution (tark-e-izafat).
- 166: How many rupees is a red dinar (dinar-e-surkh) worth? | 344: Attribution is necessary in the word or intention for the occurrence of divorce.
- 167: The value of ten dirhams in today's rupees. | 344: There are three forms of attribution in a word.
- 171: Is there a specific amount for prompt and deferred dowry, and when is one authorized to receive the dowry money, and are there any reasons? | 370: The validity of privacy (khilwat) is based on the absence of a real physical barrier, even if a legal (sharia) barrier exists.
- 171: Mahr is of three types: (1) Prompt (Mu'ajjal) (2) Deferred (Mu'ajjal) (3) Postponed (Mu'akhkhar). | 395: Considering three divorces in one sitting as one is against the school of thought of the four Imams.
- 172: Does a marriage take place without determining the dowry or not, and if 'sharia dowry' is mentioned, how much will be mandatory? | 420: Writing a document in agreements is a preamble to the agreement according to custom, not its implementation.
- 173: In what situation is a wife only entitled to receive a single pair of clothes? | 420: What is conditionally implied by custom is like what is conditionally stated in words.
- 175: Mahr-e-Mithl refers to the dowry of one's paternal family. | 425: Explicit divorce (talaq-e-sarih) applies to a non-wife.
- 189: Detailed definitions and rulings of the three types of dowry, namely prompt, deferred, and postponed. | 427: If an irrevocable (ba'in) divorce is given after an explicit (sarih) one, then that explicit one also becomes irrevocable.
- 221: The giver knows best the direction/intent of giving. | 437: A woman with whom marriage was not consummated does not have the capacity for separated divorce.
- 230: It is obligatory to respect all customs with their specific characteristics. | 437: A woman with whom marriage was consummated is eligible for up to three

divorces, whether collective or separate, not more, because there is no divorce beyond three.

- 230: It is not far-fetched for permissibility and prohibition to gather in a single thing from two different aspects. | 445: There is a world of difference in Sharia between 'Kafi li Rukhsat-ul-Amal' and 'Mughni Hajat-ul-Ithbat'.
- 232: A husband cannot legally nullify the right to give divorce. | 450: When explicit divorce applies to an irrevocable one, it becomes irrevocable.
- 336: There are two types of rulings. | 459: If one or two divorces were given and then remarried, she will not return with a new solution (hal-e-jadeed).

फ़तावा रज़विया खंड बारह

- 162: न्यूनतम मेहर दो तोले साढ़े सात माशे चांदी है। | 336: धार्मिक आदेश (हुक्म-ए-दयानत) और न्यायिक आदेश (हुक्म-ए-क़ज़ा) का विवरण।
- 166: मेहर-ए-मुअज्जल (शीघ्र), गैर-मुअज्जल (आस्थगित) और मुअज्जल (त्वरित) के क्या अर्थ हैं, और उनका क्या आदेश है? | 333: आरोपण छोड़ने (तर्कए-इज़ाफ़त) के विभिन्न रूप।
- 166: लाल दीनार (दीनार-ए-सुरख़) कितने रुपये का होता है? | 344: तलाक के घटित होने के लिए शब्द या नियत में आरोपण आवश्यक है।
- 167: आज के रुपयों में दस दिरहम का मूल्य। | 344: शब्द में आरोपण के तीन रूप हैं।
- 171: क्या शीघ्र और आस्थगित मेहर की कोई संख्या है या नहीं, और मेहर की राशि प्राप्त करने का अधिकार कब है और इसका कोई कारण है या नहीं? | 370: एकांत (ख़लवत) की वैधता वास्तविक बाधा की अनुपस्थिति पर आधारित है, भले ही शरई (कानूनी) बाधा मौजूद हो।
- 171: मेहर तीन प्रकार के होते हैं: (१) मुअज्जल (२) मुअज्जल (३) मुअख़्ख़र। | 395: एक ही बैठक में तीन तलाक को एक मानना, चारों इमामों के मज़हब के खिलाफ है।
- 172: मेहर निर्धारित किए बिना निकाह हुआ या नहीं और अगर 'शरई मेहर' कहा गया तो कितना अनिवार्य होगा? | 420: समझौतों में दस्तावेज़ लिखना प्रथा के अनुसार समझौते की प्रस्तावना है, न कि प्रवर्तन।
- 173: वह कौन सी स्थिति है जिसमें पत्नी केवल एक जोड़ी कपड़े पाने की हकदार होती है? | 420: जो प्रथागत रूप से शर्त है, वह शब्दों में शर्त के समान है।
- 175: मेहर-ए-मिस्ल से तात्पर्य अपने पैतृक परिवार का मेहर है। | 425: स्पष्ट तलाक (तलाक-ए-सरीह) गैर-पत्नी पर लागू हो जाता है।
- 189: मेहर के तीन प्रकारों यानी मुअज्जल, मुअज्जल और मुअख़्ख़र की परिभाषाओं और आदेशों का विवरण। | 427: यदि स्पष्ट (सरीह) के बाद बाइन (अटल) तलाक दिया गया, तो वह स्पष्ट भी बाइन हो जाएगा।
- 221: देने वाला देने के उद्देश्य को बेहतर जानता है। | 437: जिस महिला के साथ विवाह संपन्न (संभोग) नहीं हुआ, उसमें अलगाव तलाक की क्षमता नहीं होती।

- 230: जिन विशेषताओं के साथ प्रथाएं जुड़ी हों, उन सबका सम्मान करना अनिवार्य है। | 437: जिस महिला के साथ विवाह संपन्न हुआ है, वह सामूहिक या अलग-अलग तीन तलाक तक के लिए योग्य है, अधिक नहीं, क्योंकि तीन के बाद कोई तलाक नहीं होता।
- 230: एक ही चीज़ में दो अलग-अलग पहलुओं से वैधता और निषेध का एकत्रित होना असंभव नहीं है। | 445: 'काफ़ी लि रुख़सत-उल-अमल' और 'मुग़नी हाजत-उल-इसबात' में शरई तौर पर ज़मीन-आसमान का अंतर है।
- 232: पति तलाक देने के अधिकार को शरई तौर पर रद्द नहीं कर सकता। | 450: जब स्पष्ट तलाक बाइन (अटल) पर लागू होता है, तो वह बाइन हो जाता है।
- 336: आदेश (हुक्म) दो प्रकार के होते हैं। | 459: यदि एक या दो तलाक देकर फिर से निकाह किया, तो वह नए समाधान (हल-ए-जदीद) के साथ नहीं लौटेगी।

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

- ۱۶۲: کم از کم مہر دو تولے ساڑھے سات ماشے چاندی ہے۔ | ۳۳۶: حکم دیانت اور حکم قضاء کی تفصیل۔
- ۱۶۶: مہرِ مؤجل کے کیا معنی ہیں اور غیر مؤجل کے کیا، اور معجل کے کیا، اور ان کا کیا حکم ہے۔ | ۳۳۳: ترکِ اضافت کی مختلف صورتیں۔
- ۱۶۶: دینارِ سرخ کتنے روپے کا ہوتا ہے۔ | ۳۴۴: وقوعِ طلاق کے لئے لفظِ یانیت میں اضافت ضروری ہے۔
- ۱۶۷: دس درہم کی آجکل کے روپے سے قیمت۔ | ۳۴۴: لفظ میں وجوہِ اضافت کی تین صورتیں ہیں۔
- ۱۷۱: مہر معجل و مؤجل کی کچھ تعداد ہے یا نہیں، اور کس وقت زرِ مہر وصول کرنے کا مجاز ہے اور کوئی سبب ہے یا نہیں۔ | ۳۷۰: صحتِ خلوت کی بنیاد مانع حقیقی کے معدوم ہونے پر ہے اگرچہ مانع شرعی موجود ہو۔
- ۱۷۱: مہر تین قسم ہے: (۱) معجل (۲) مؤجل (۳) مؤخر۔ | ۳۹۵: ایک مجلس میں تین طلاقوں کا ایک ہونا، چاروں اماموں کے مذہب کے خلاف ہے۔
- ۱۷۲: بے تعیینِ مہر نکاح ہوگیا یا نہیں اور شرعی مہر کہا تو کس قدر لازم ہوگا۔ | ۴۲۰: معاہدوں میں دستاویز کا لکھنا حسبِ عرف معاہدے کی تمہید ہوتا ہے نہ کہ تنفیذ۔
- ۱۷۳: وہ کون سی صورت ہے کہ صرف ایک جوڑا کپڑا پانے کی زوجہ مستحق ہے۔ | ۴۲۰: المشروط عرفاً کالمشروط لفظاً۔

- ۱۷۵: مہرِ مثل سے اپنے خاندانِ پدری کا مہر مراد ہے۔ | ۴۲۵: طلاقِ صریح غیر کو لاحق ہو جاتی ہے۔
- ۱۸۹: مہر کی اقسامِ ثلثہ یعنی معجل، مؤجل اور مؤخر کی تعریفات اور احکام کی تفصیل۔ | ۴۲۷: صریح کے بعد بائن طلاق دی تو وہ صریح بھی بائن ہو جائے گی۔
- ۲۲۱: دینے والا دینے کی جہت کو بہتر جانتا ہے۔ | ۴۳۷: زنِ غیر مدخولہ تفریقِ طلاق کی صلاحیت نہیں رکھتی۔
- ۲۳۰: عرف جن خصوصیتوں کے ساتھ ہو سب کی رعایت واجب ہے۔ | ۴۳۷: مدخولہ جمعاً و تفریقاً تین طلاق تک کی صالحہ ہے زیادہ کی نہیں کہ تین سے آگے طلاق ہی نہیں۔
- ۲۳۰: شیئی واحد میں حل و حظر دو جہت سے مجتمع ہونا بعید نہیں۔ | ۴۴۵: کافی لرخصۃ العمل اور مغنی حاجت الاثبات میں شرعاً فرق زمین و آسمان کا ہے۔
- ۲۳۲: طلاق دینے کے حق کو شوہر شرعاً باطل نہیں کر سکتا۔ | ۴۵۰: طلاقِ صریح جب بائن کو لاحق ہو تو بائن ہو جاتی ہے۔
- ۳۳۶: حکم کی دو قسمیں ہیں۔ | ۴۵۹: ایک یادو طلاق دے کر نکاح کیا تو حلِ جدید کے ساتھ نہ لوٹے گی۔

Fatawa Razawiya Volume Twelve

Page Number	Topic	Page Number	Topic
494	Separation by a judge constitutes a 'Ba'in' (irrevocable) divorce.	618	The statement of Imam Muhammad that the waiting period (Iddah) starts from the time of divorce, and the fatwas of later scholars that it starts from the time of acknowledgement—reconciliation and harmonization between them.
559	Which words and expressions regarding divorce fall under the category of metaphors (kinayat).	628	The attachment of a 'Ba'in' (irrevocable) divorce to a 'Raj'i' (revocable) divorce makes the 'Raj'i' also 'Ba'in' due to the prohibition of taking back (Raj'at).
559	A word commonly used for divorce in common parlance will be considered explicit (Sarih) for divorce, regardless of its literal dictionary meaning.	634	No matter how many irrevocable metaphors (Kinayat-e-Ba'inah) are used, even with the intention of divorce, only one divorce will occur because a Ba'in cannot be followed by another divorce.
562	If one says to his wife, 'You have become forbidden to me,' divorce will occur without intention because it is explicit; however, it will not attach to a Ba'in, nor will a Ba'in attach to it, because it is already Ba'in.	638	Frivolous and extraneous talk or fighting changes the nature of the sitting (majlis).

Page Number	Topic	Page Number	Topic
571	When a Ba'in divorce attaches to a Raj'i one, it makes that also Ba'in.	648	There are three ways for another person to give divorce with the husband's permission: delegation (Tafweed), agency (Tawkul), and messengership (Risala).
585	A Ba'in divorce does not attach to another Ba'in, if it is possible to consider it as a report/information.	648	The words of delegation (Tafweed) are three: Takhyir (giving choice), Amr-bil-Yad (matter in hand), and Mashiyat (will).
585	After one divorce, only an unconsummated wife does not remain a subject for further divorce.	643	For the delegation of divorce, ownership or attribution to ownership is necessary.
586	The word 'Haram' is treated as explicit due to common usage.		**Claims**
611	A Raj'i divorce combined with a Ba'in becomes Ba'in because in this case, taking back (Raj'at) is forbidden.	160	A woman acknowledged that an item belonged to her husband, but later claimed that ownership had been transferred to her; this claim by the woman will not be proven without witnesses.
611	Explicit (Sarih) divorce does not require intention.	164	The husband paid one-sixth of the prompt dower (Mahr-e-Mu'ajjal) at the time of marriage. Does Hindah (the wife) have the right to demand the remaining five parts before separation? And if consummation took place but 'Khalwat-e-Sahiha' (valid seclusion) did not, does she have the right to claim it or not?
611	When explicit divorce follows a metaphorical divorce, it cannot serve as	184	A person was away for fifteen months. Upon return, he discovered his wife was eight

Page Number	Topic	Page Number	Topic
	an indicator (qarinah) for the intention of divorce.		months pregnant. He is ready for divorce. Can that woman claim the dower (Mahr) after divorce or not?
611	In metaphorical expressions, the context/ indicator (qarinah) should be primary/foremost.		

फतावा रजविया खण्ड बारह

पृष्ठ संख्या	विषय
494	न्यायाधीश द्वारा विच्छेद (तफ़रीक़) 'बाइन' (अपरिवर्तनीय) तलाक होता है।
559	तलाक के संबंध में कौन से शब्द और कौन से शब्द रूपक (किनायात) में से हैं।
559	जो शब्द आम बोलचाल में तलाक के लिए बहुत अधिक उपयोग किया जाता हो, वह तलाक के लिए स्पष्ट (सरिह) होगा, चाहे उसका भाषाई अर्थ कुछ भी हो।
562	अगर अपनी पत्नी से कहा 'तू मुझ पर हराम हो चुकी है' तो बिना नीयत के भी तलाक हो जाएगा क्योंकि यह स्पष्ट है, लेकिन यह बाइन को संलग्न नहीं होगा और न ही बाइन इससे संलग्न होगा क्योंकि यह पहले से ही बाइन है।
571	बाइन जब रजई से संलग्न होता है तो उसे भी बाइन बना देता है।
585	बाइन को बाइन संलग्न नहीं होता, यदि उसे समाचार/सूचना के रूप में लेना संभव हो।
618	इमाम मुहम्मद का कथन कि इद्दत तलाक के समय से है, और बाद के विद्वानों के फतवे कि यह स्वीकारोक्ति के समय से है —उनके बीच समन्वय।
628	बाइन का रजई के साथ संलग्न होना, रुजू (वापसी) की मनाही के कारण रजई को भी बाइन बना देता है।
634	भले ही कितने भी बाइन रूपक (किनायात) हों और सभी के साथ तलाक की नीयत भी की गई हो, फिर भी केवल एक ही तलाक होगा क्योंकि बाइन के ऊपर दूसरा बाइन प्रभावी नहीं होता।
638	व्यर्थ और बाहरी बातचीत और झगड़े से मजलिस (बैठक) बदल जाती है।
648	पति की अनुमति से दूसरे को तलाक देने के तीन रूप हैं: तफ़वीज़, तौकील, रिसाला।
648	तफ़वीज़ (अधिकार सौंपना) के तीन शब्द हैं: तख्यीर, अम्र-बिल-यद और मशिय्यत।

पृष्ठ संख्या	विषय
585	एक तलाक के बाद, केवल वह पत्नी जिसके साथ संभोग नहीं हुआ है, और अधिक तलाक के योग्य नहीं रहती।
586	शब्द 'हराम' लोक व्यवहार (उर्फ़) के कारण स्पष्ट (सरीह) के समान है।
611	रजई, बाइन के साथ मिलकर बाइन हो जाती है क्योंकि इस स्थिति में रुजू (वापसी) निषिद्ध होती है।
611	स्पष्ट (सरीह) तलाक नीयत (इरादे) का मोहताज नहीं होता।
611	जब स्पष्ट (सरीह) तलाक रूपक (किनाया) तलाक के बाद आए, तो वह तलाक की नीयत का प्रमाण नहीं बन सकता।
611	रूपकों (किनायात) में संदर्भ (क़रीना) को प्राथमिकता मिलनी चाहिए।
643	तलाक के अधिकार सौंपने (तफ़वीज़) के लिए स्वामित्व या स्वामित्व का संबंध आवश्यक है।

दावा (दालवी)

पृष्ठ संख्या	विषय
160	एक महिला ने स्वीकार किया कि यह वस्तु उसके पति की संपत्ति थी, फिर दावा किया कि इसका स्वामित्व मेरी ओर स्थानांतरित हो गया है; तो गवाहों के बिना महिला का यह दावा सिद्ध नहीं होगा।
164	पति ने निकाह के समय मेहर-ए-मुअज्जल (तत्काल देय मेहर) का छठा हिस्सा दे दिया। अब पत्नी को शेष पांच हिस्सों की मांग अलगाव से पहले करने का अधिकार है या नहीं? और यदि विदा हुई लेकिन 'खलवत-ए-सहीहा' नहीं हुई, तो दावा करने का अधिकार है या नहीं?
184	एक व्यक्ति पंद्रह महीने बाहर रहा, वापस आया तो पता चला कि पत्नी आठ महीने की गर्भवती है। वह तलाक देने को तैयार है। तलाक के बाद वह महिला मेहर का दावा कर सकती है या नहीं।

صفحہ نمبر	عنوان
۴۹۴	تفریقِ حاکم طلاقِ بائن ہوتی ہے۔
۵۵۹	طلاق کے بارے میں کون سا لفظ اور کونسا کنایات میں سے ہوتا ہے۔
۵۵۹	جو لفظ عرف میں طلاق کے لئے غالب الاستعمال ہو وہ طلاق کے لئے صریح ہو گا چاہے کسی لغت کا ہو۔
۵۶۲	اگر اپنی بیوی کو کہا "تو مجھ پر حرام ہو چکی" تو بلانیت طلاق واقع ہو گی کیونکہ یہ صریح ہے مگر یہ بائن کو لاحق نہیں ہو گی اور نہ اس کو بائن لاحق ہو گی کیونکہ یہ بائن ہے۔
۵۷۱	بائن جب رجعی کو لاحق ہو تو اس کو بھی بائن بنا دیتی ہے۔
۶۱۸	قول امام محمد کہ عدت وقت طلاق سے اور فتاوائے متاخرین کہ وقت اقرار سے ہے، ان میں تطبیق و توفیق۔
۶۲۸	بائن کارجعی کو لحوق امتناعِ رجعت کی وجہ سے رجعی کو بھی بائن بنا دیتا ہے۔
۶۳۴	کتنی ہی کنایات بائنہ ہوں اور سب سے نیتِ طلاق بھی کی ہو تب بھی صرف ایک واقع ہوگی کیونکہ بائن کو لاحق نہیں ہوتی۔
۶۳۸	فضول و اجنبی کلام اور جنگ سے مجلس بدل جاتی ہے۔
۶۴۸	

صفحہ نمبر	عنوان
۵۸۵	بائن کو بائن لاحق نہیں ہوتی۔ اگر اس کو خبر قرار دینا ممکن ہو۔
۵۸۵	ایک طلاق کے بعد صرف غیر مدخولہ مزید طلاق کی محل نہیں رہتی۔
۵۸۶	لفظ "حرام" بوجہ عرف ملحق بالصریح ہے۔
۶۱۱	رجعی بائن کے ساتھ جمع ہو کر ہو جاتی ہے کیونکہ اس صورت میں رجعت ممتنع ہوتی ہے۔
۶۱۱	صریح نیت کی محتاج نہیں ہوتی۔

صفحہ نمبر	عنوان
	شوہر کی جازت سے دوسری کو طلاق دینے کی تین صورتیں ہیں: تفویض، توکیل، رسالہ۔
۶۴۸	الفاظِ تفویض تین ہیں: تخییر، امر بالید اور مشیئت۔
۶۴۳	تفویضِ طلاق کے لئے ملک یا اضافت الی الملک ضروری ہے۔
	دعلوی
۱۶۰	عورت نے اقرار کیا کہ یہ چیز شوہر کی ملک تھی پھر دعویٰ کرے کہ اس کی ملکیت میری طرف منتقل ہوگئی ہے تو بغیر گواہوں کے عورت کا یہ دعویٰ ثابت نہ ہوگا۔
۱۶۴	شوہر نے مہرِ معجل کا چھٹا حصہ وقتِ نکاح ادا کر دیا، اب ہندہ زوجہ کو باقی پانچ حصوں کا مطالبہ قبل افتراق پہنچتا ہے یا

نمبر	عنوان	صفحہ
	صریح جب کنایہ طلاق سے مؤخر ہو	
۶۱۱	تو وہ نیت طلاق پر قرینہ نہیں بن سکتی۔	۱۸۴
۶۱۱	کنایات میں قرینہ کو مقدم ہونا چاہئے۔	

نمبر	عنوان	صفحہ
	نہیں، اور اگر رخصت ہوئی خلوتِ صحیحہ نہ ہوئی تو دعویٰ کا اختیار ہے یا نہیں	
	ایک شخص پندرہ ماہ باہر رہا، واپس آیا تو معلوم ہوا کہ بی بی کے آٹھ ماہ کا حمل ہے وہ طلاق پر آمادہ ہے بعد طلاق وہ عورت مہر کا دعویٰ کر سکتی ہے یا نہیں	

Fatawa Rizvia Volume 12

If there is a dispute between the divorcer and the divorcee regarding privacy and consummation, whose statement will be relied upon? | 193 | If intercourse has occurred even once, the right to claim impotence is lost. | 508

A father gave dowry to his daughter, then claimed he gave it as a loan. The daughter says it was a gift, or after her death, her husband says so. Whose statement is credible, when, and how? | 229 | In this situation, it is mandatory for Zaid; if he is unable to fulfill the rights, he should give a divorce. | 508

In the absence of established custom, the statement of the claimant with an oath will be credible. This ruling is for the father; the biological mother is also conventionally associated with this. | 236 | A husband has no right to claim annulment due to a defect in the woman. | 511

In the absence of established custom, the statement of the claimant with an oath will be credible. This ruling is for the father; the biological mother is also conventionally associated with this. | 236 | If a husband makes a claim contrary to the apparent facts, the woman's statement will be credible. | 641

The mother's claim of exclusivity needs evidence, except in two cases: one, the father has no wealth; two, the mother separated from him and arranged the marriage herself. | 236 | If a woman claims divorce and the husband denies it, the husband's statement will be credible. | 641

Having seen someone use something for a period of time and then claiming it, even though there was no obstacle to claiming it earlier, such a claim will not be heard. | 225 | **Witness Testimony**

If a stranger gave dowry and claimed it was a loan after the bride's death, his statement is not credible without evidence. | 245 | Hind (the claimant) proved with witnesses that her dowry was one lakh rupees. The husband proved with witnesses that it was ten thousand. Whose witnesses will be credible, those for the lesser amount or the greater? | 189

A woman married someone else without her husband's knowledge, and a child was born. If the first husband makes a claim, it will be heard. | 366 | Proof of valid privacy (khalwat-e-sahiha) or consummation will be through witnesses or from the divorcer and divorcee themselves. | 193

If divorce is proven by reliable witnesses, the husband's denial carries no weight. | 395 | Testimony for a negation is not credible. | 194

Marriage took place with Bakr two months after a divorce. Eighteen years later, she fled from there to Khalid. Whose claim on this woman is correct? Ruling on various aspects of the matter. | 466 | The husband denies the third divorce, and a non-believing woman's testimony is not credible at all. | 367

In testimony for divorce, if the husband is present, he must be pointed out. If not present, mention of his father and grandfather's name is necessary, otherwise, the testimony is incomplete. | 415

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

यदि तलाक देने वाले और तलाकशुदा के बीच एकांतवास (खलवत) और संभोग (दखूल) के बारे में विवाद हो, तो किसकी बात पर भरोसा किया जाएगा? | १९३ | यदि एक बार भी सहवास हो चुका है, तो नपुंसकता का दावा करने का अधिकार नहीं रहता। | ५०८

बेटी को दहेज दिया, फिर दावा किया कि मैंने ऋण (आरियत) के रूप में दिया था। बेटी कहती है कि यह उपहार (तम्लीक) था, या उसकी मृत्यु के बाद उसका पति ऐसा कहता है, तो किसका कथन कब और कैसे विश्वसनीय होगा? | २२९ | इस स्थिति में ज़ैद के लिए अनिवार्य है कि यदि वह अधिकारों को पूरा करने में असमर्थ है, तो वह तलाक दे दे। | ५०८

स्थापित प्रथा (उर्फ़) के अभाव में, शपथ के साथ दावेदार का कथन विश्वसनीय होगा। यह नियम पिता के लिए है; जैविक माँ को भी पारंपरिक रूप से इससे जोड़ा गया है। | २३६ | स्त्री के किसी दोष के कारण पति को विवाह विच्छेद (फ़स्ख़) के दावे का अधिकार नहीं है। | ५११

स्थापित प्रथा के अभाव में, शपथ के साथ दावेदार का कथन विश्वसनीय होगा। यह नियम पिता के लिए है; जैविक माँ को भी पारंपरिक रूप से इससे जोड़ा गया है। | २३६ | यदि पति प्रत्यक्ष तथ्यों के विरुद्ध दावा करता है, तो स्त्री का कथन विश्वसनीय माना जाएगा। | ६४१

माँ के विशिष्ट दावे के लिए प्रमाण की आवश्यकता होती है, सिवाय दो स्थितियों के: एक, पिता के पास धन न हो; दूसरा, माँ उससे अलग हो गई हो और उसने स्वयं विवाह आयोजित किया हो। | २३६ | यदि स्त्री तलाक का दावा करे और पति इनकार करे, तो पति का कथन विश्वसनीय होगा। | ६४१

किसी वस्तु का लंबे समय तक उपभोग होते हुए देखने के बाद दावा करना, जबकि पहले दावा करने में कोई बाधा नहीं थी, तो ऐसा दावा नहीं सुना जाएगा। | २२५ | **गवाही (शहादत)**

यदि किसी अजनबी ने दहेज दिया और दुल्हन की मृत्यु के बाद दावा किया कि वह ऋण था, तो बिना प्रमाण के उसका कथन विश्वसनीय नहीं है। | २४५ | हिंदा (दावेदार) ने गवाहों से सिद्ध किया कि मेरा महर एक लाख रुपये था। पति ने गवाहों से सिद्ध किया कि वह दस हजार था। किसके गवाह विश्वसनीय होंगे, कम वाले के या अधिक वाले के? | १८९

स्त्री ने पति की अनभिज्ञता में किसी और से विवाह कर लिया और बच्चा पैदा हुआ। यदि पहला पति दावा करता है, तो उसका दावा सुना जाएगा। | ३६६ | वैध एकांतवास (खलवत-ए-सहीहा) या संभोग का प्रमाण गवाहों से होगा या तलाक देने वाले और तलाकशुदा से। | १९३

यदि विश्वसनीय गवाहों द्वारा तलाक सिद्ध हो जाता है, तो पति के इनकार का कोई महत्व नहीं है। | ३९५ | नकारात्मकता (नफ़ी) पर गवाही विश्वसनीय नहीं होती। | १९४

तलाक के दो महीने बाद बक्र से विवाह हुआ। अठारह वर्ष बाद वह वहाँ से भागकर खालिद के पास गई। इस स्त्री पर किसका दावा सही है? मामले के विभिन्न पहलुओं पर निर्णय। | ४६६ | पति तीसरी तलाक से इनकार करता है और एक गैर-मुस्लिम महिला की गवाही बिल्कुल विश्वसनीय नहीं है। | ३६७

तलाक की गवाही में यदि पति उपस्थित है, तो उसकी ओर संकेत करना चाहिए। यदि उपस्थित नहीं है, तो उसके पिता और दादा के नाम का उल्लेख आवश्यक है, अन्यथा गवाही अधूरी है। | ४१५

पृष्ठ ८४ का ६८८

فتاوی رضویہ جلد دو ازدہم

اگر طالق و مطلقہ میں خلوت و دخول کے بارے میں اختلاف ہو تو کس کے قول پر اعتماد ہوگا۔ | ۱۹۳ | ایک بار بھی ہمبستری ہو چکی تو دعوی عنینیت کا حق نہیں پہنچتا، | ۵۰۸

بیٹی کو جہیز دیا پھر مدعی ہوا کہ میں نے عاریتہ دیا تھا بیٹی کہتی ہے تملیکاً یا اس کے مرنے کے بعد اس کا شوہر یہ کہتا ہو تو کس کا قول کب اور کس طرح معتبر ہوگا۔ | ۲۲۹ | اس صورت میں زید البتہ واجب ہے کہ ادائے حق پر قادر نہ ہو تو طلاق دے دے۔ | ۵۰۸

بحالت عدم عرف مدعی کا قول بقسم معتبر ہوگا یہ حکم باپ کے لئے ہے حقیقی ماں کو بھی اس سے عرفا لاحق کیا گیا ہے۔ | ۲۳۶ | عورت کے عیب کے سبب شوہر کو دعوی فسخ نہیں۔ | ۵۱۱

بحالت عدم عرف مدعی کا قول بقسم معتبر ہوگا یہ حکم باپ کے لئے ہے حقیقی ماں کو بھی اس سے عرفا لاحق کیا گیا ہے۔ | ۲۳۶ | شوہر خلاف ظاہر دعوی کرے تو عورت کا قول قول معتبر ہوگا۔ | ۶۴۱

ماں کا دعوی اختصاص محتاج بینہ ہونا چاہئے مگر دو صورتوں میں، ایک یہ کہ باپ مال نہ رکھتا ہو، دوسرے یہ کہ ماں نے اس سے جدا ہو کر بطور خود تزویج کی ہو۔ | ۲۳۶ | عورت مدعیہ طلاق ہو اور شوہر منکر تو شوہر کا قول معتبر ہوگا۔ | ۶۴۱

ایک زمانہ تک کسی شئی میں تصرف ہوتا دیکھتا رہا پھر مدعی ہوا حالانکہ پہلے بھی دعوی کے کوئی امر مانع نہ تھا اس کا دعوی مسموع نہ ہوگا۔ | ۲۲۵ | **شہادت**

اگر اجنبی نے جہیز دیا بعد مرگ عروس عاریت کا مدعی ہوا تو بے بینہ اس کا قول معتبر نہیں۔ | ۲۴۵ | ہندہ مدعیہ نے گواہوں سے ثابت کیا کہ میرا مہر ایک لاکھ روپے تھا شوہر نے گواہوں سے یہ ثابت کیا کہ دس ہزار تھا کس کے گواہ معتبر ہوں گے کمی کے یا زیادتی کے۔ | ۱۸۹

عورت نے شوہر کی بے خبری میں کسی اور سے شادی کر لی بچہ پیدا ہوا شوہر اول دعوی کرے تو دعوی مسموع ہے۔ | ۳۶۶ | ثبوت خلوت صحیحہ یا دخول گواہوں سے ہوگا یا طالق و مطلقہ سے۔ | ۱۹۳

ثقہ گواہوں سے طلاق کا ثبوت ہو تو شوہر کے انکار کا اعتبار نہیں۔ | ۳۹۵ | نفی پر شہادت معتبر نہیں۔ | ۱۹۴

طلاق کے دو مہینہ کے بعد بکر سے نکاح ہوا۔ اٹھارہ سال بعد وہاں سے بھاگ کر خالد کے پاس گئی، اس عورت پر کس کا دعوی صحیح ہے، مسئلہ کی مختلف صورتوں کا حکم۔ | ۴۶۶ | شوہر تیسری طلاق کا منکر ہے اور ایک کافرہ گواہ اس کی گواہی بالکل معتبر نہیں۔ | ۳۶۷

طلاق کی گواہی میں شوہر اگر موجود ہو تو اس کی طرف اشارہ کر کے اور موجود نہ ہو تو باپ دادا کے نام کا ذکر ضروری ہے، بے اس کے گواہی ناقص۔ | ۴۱۵

Summary of Ruling	Section	Detailed Ruling	Page/ Serial
A claim is not necessary for testimony regarding divorce. If no one claims, it is obligatory for witnesses to present the matter before the Qazi (Judge).	428	In the event of a dispute between husband and wife, female witnesses to the divorce will be credible. If witnesses are not upright (Adil), the decision will be made by taking an oath from the husband; the husband's witnesses cannot be presented.	453
For the acceptance of testimony in the rights of individuals (Huquq-ul-Ibad), a prior claim is a condition, but it is not a condition in the rights of Allah (Huquq-Allah).	428	In matters of trust and religious affairs, the statement of a transgressor (Fasiq) or a non-Muslim is not credible.	494
Among the witnesses to a divorce: a boy of twelve to fourteen years, a woman's mother, a sister-in-law, and an unrelated woman. Then, a discrepancy among them regarding the number of divorces. Ruling on these various scenarios.	430	If the witnesses are not Sharia-compliant, divorce will not be established.	655
Testimony by women alone is not acceptable.	430	Regarding divorce, the testimony of a single woman will not be accepted.	655
The testimony of a descendant for an ancestor and an ancestor for a descendant is not [valid].	430	**Judiciary (Qaza)**	
According to the Imam [Abu Hanifa], testimony is	431	It is mandatory for a Qazi to hear testimony in matters of pure Hadd,	428

Summary of Ruling	Section	Detailed Ruling	Page/ Serial
established based on what is agreed upon in both words and meaning.		divorce, Ila, and Zihar even without a claim.	
Discrepancy among witnesses causes the rejection of testimony.	431	A Qazi shall decide with Sharia proof, not merely based on a letter because a letter can be forged or resemble another.	425
A husband's denial of divorce in the presence of reliable witnesses will not be heard at all.	432	A transgressor (Fasiq) is not entitled to the office of Sharia judiciary.	462
A brother's testimony in favor of his sister is legally acceptable in Sharia.	432	Divorce does not legally occur through the decisions of current [secular] courts.	477
Two Sharia witnesses are sufficient for the proof of divorce.	432	A Sharia Qazi is a representative of the pure Sharia.	481
If someone heard the voice of divorce but did not see the person speaking, they cannot testify.	433	A follower (Muqallid) Qazi cannot give a ruling against his own school of thought (Madhab).	481
A person who harbors such worldly enmity towards Zaid that they become suspect regarding Zaid's rights, then their testimony against Zaid's interests is not accepted.	440	If a non-Hanafi Qazi from the four schools of thought decides according to his school, or if a Hanafi Qazi appointed by the Sultan to the office of judiciary and authorized decides based on a less preferred (marjuh) opinion in case of need, his judicial decision will be enforceable.	482

फतवे का सार	खंड	विस्तृत हुक्म	पृष्ठ/क्रम
तलाक की गवाही के लिए दावा ज़रूरी नहीं है। यदि कोई दावा न करे तो गवाहों पर फ़र्ज़ है कि मामला काज़ी के सामने पेश करें।	428	पति-पत्नी के विवाद की स्थिति में तलाक के लिए महिला गवाह विश्वसनीय होंगी। यदि गवाह आदिल (ईमानदार) न हों, तो पति से शपथ लेकर निर्णय लिया जाएगा; पति के गवाह पेश नहीं किए जा सकते।	453
हुकूक-उल-इबाद (मानव अधिकार) में गवाही की स्वीकृति के लिए पूर्व दावा एक शर्त है, लेकिन हुकूक-अल्लाह (ईश्वर के अधिकार) में शर्त नहीं है।	428	अमानत और धार्मिक मामलों में एक फासिक (पापी) या गैर-मुस्लिम की बात विश्वसनीय नहीं है।	494
तलाक के गवाहों में: बारह से चौदह वर्ष का एक लड़का, एक महिला की माँ, एक भाभी और एक अजनबी महिला। फिर तलाक की संख्या के संबंध में उनके बीच मतभेद। इन विभिन्न स्थितियों पर हुक्म।	430	यदि गवाह शरीयत के अनुसार न हों, तो तलाक साबित नहीं होगा।	655
केवल महिलाओं की गवाही स्वीकार्य नहीं है।	430	तलाक के संबंध में एक अकेली महिला की गवाही स्वीकार नहीं की जाएगी।	655
पूर्वज के लिए वंशज की गवाही और वंशज के पक्ष में पूर्वज की गवाही [मान्य] नहीं है।	430	**न्यायपालिका (क़ज़ा)**	
इमाम [अबू हनीफ़ा] के अनुसार, गवाही उसी पर स्थापित होती है	431		428

फतवे का सार	खंड	विस्तृत हुक्म	पृष्ठ/क्रम
जिस पर शब्दों और अर्थ दोनों में सहमति हो।		काज़ी के लिए अनिवार्य है कि वह विशुद्ध हद, तलाक, ईला और ज़िहार के मामलों में बिना दावे के भी गवाही सुने।	
गवाहों के बीच मतभेद गवाही की अस्वीकृति का कारण बनता है।	431	काज़ी शरई प्रमाण के साथ निर्णय लेगा, न कि केवल एक पत्र के आधार पर क्योंकि पत्र एक जैसा हो सकता है।	425
विश्वसनीय गवाहों की उपस्थिति में पति द्वारा तलाक का खंडन बिल्कुल नहीं सुना जाएगा।	432	एक फासिक (पापी) शरई न्यायपालिका के पद का हकदार नहीं है।	462
बहन के पक्ष में भाई की गवाही शरीयत में कानूनी रूप से स्वीकार्य है।	432	वर्तमान [धर्मनिरपेक्ष] अदालतों के फैसलों के माध्यम से कानूनी रूप से तलाक नहीं होता है।	477
तलाक के प्रमाण के लिए दो शरई गवाह पर्याप्त हैं।	432	एक शरई काज़ी पाक शरीयत का प्रतिनिधि होता है।	481
यदि किसी ने तलाक की आवाज़ सुनी लेकिन बोलने वाले व्यक्ति को नहीं देखा, तो वे गवाही नहीं दे सकते।	433	एक मुक़ल्लिद (अनुयायी) काज़ी अपनी विचारधारा (मज़हब) के विरुद्ध हुक्म नहीं दे सकता।	481
वह व्यक्ति जो ज़ैद के प्रति इतनी दुनियावी दुश्मनी रखता है कि वह ज़ैद के अधिकारों के संबंध में संदिग्ध हो जाता है, तो ज़ैद के हितों के खिलाफ उसकी गवाही स्वीकार नहीं की जाती है।	440	यदि चारों मज़हबों में से कोई गैर-हनफी काज़ी अपने मज़हब के अनुसार निर्णय लेता है, या यदि सुल्तान द्वारा न्यायिक पद पर नियुक्त और अधिकृत हनफी काज़ी ज़रूरत के मामले में कम पसंदीदा (मरजूह) राय के आधार पर निर्णय लेता है, तो उसका न्यायिक निर्णय लागू करने योग्य होगा।	482

خلاصہ حکم دفعہ	مفصل حکم	صفحہ/ نمبر
طلاق کی گواہی کے لئے دعویٰ ضروری نہیں کوئی دعویٰ نہ کرے تو گواہوں پر فرض ہے کہ معاملہ قاضی کے سامنے پیش کریں۔ ۴۲۸	میاں بیوی کے اختلاف کی صورت میں طلاق کے گواہ عورت کے معتبر ہوں گے۔ اگر گواہ عادل نہ ہوں تو شوہر سے قسم لے کر فیصلہ کیا جائے گا، شوہر کے گواہ پیش نہیں ہو سکتے۔	۴۵۳
حقوق العباد میں قبول شہادت کے لئے تقدم دعویٰ شرط ہے حقوق اللہ میں شرط نہیں۔ ۴۲۸	دیانات اور مذہبی معاملات میں فاسق و غیر مسلم کی بات معتبر نہیں۔	۴۹۴
طلاق کے گواہوں میں ایک لڑکا بارہ چودہ سال، ایک عورت کی ماں ایک بھاوج اور ایک اجنبی عورت۔ پھر طلاق کی تعداد میں ان کے درمیان اختلاف۔ ان مختلف صورتوں کا حکم۔ ۴۳۰	گواہ شرعی نہ ہوں تو طلاق ثابت نہ ہو گی۔	۶۵۵
تنہا عورتوں کی گواہی مقبول نہیں۔ ۴۳۰	طلاق کے بارے میں اکیلی عورت کی گواہی قبول نہیں ہو گی۔	۶۵۵

خلاصہ حکم دفعہ		مفصل حکم	صفحہ/ نمبر
فرع کی گواہی اصل کے لئے اور اصل کی گواہی فرع کے حق میں نہیں۔	۴۳۰	**قضاء**	
امام صاحب کے نزدیک شہادت میں لفظاً اور معنیٰ جتنے پر اتفاق ہو وہ ثابت ہے۔	۴۳۱	قاضی پر لازم ہے کہ حد خالص، طلاق، ایلاء اور ظہار میں بغیر دعویٰ بھی شہادت سُنے۔	۴۲۸
اختلاف شہود موجب رد شہادت ہے۔	۴۳۱	قاضی حجت شرعیہ کے ساتھ فیصلہ کرے گا، نہ مجرد خط کے ساتھ کیونکہ خط خط کے مشابہ ہو سکتا ہے۔	۴۲۵
شوہر کا انکار طلاق ثقہ گواہوں کی موجودگی میں اصلاً مسموع نہ ہو گا۔	۴۳۲	فاسق قضاء شرعی کے عہدہ کا مستحق نہیں ہوتا۔	۴۶۲
بھائی کی گواہی بہن کے حق میں شرعاً قبول ہے۔	۴۳۲	موجودہ کچہریوں کے فیصلہ سے شرعاً طلاق واقع نہیں ہوتی۔	۴۷۷
طلاق کے ثبوت کے لئے دو شرعی گواہ کافی ہیں۔	۴۳۲	قاضی شرع نائب شرع مطہر ہوتا ہے۔	۴۸۱
طلاق کی آواز سُنی، دینے والے کو دیکھا نہیں، گواہی نہیں دے سکتے۔	۴۳۳	مقلد قاضی اپنے مذہب کے خلاف حکم نہیں کر سکتا۔	۴۸۱

خلاصہ حکم دفعہ	مفصل حکم	صفحہ/ نمبر
جو شخص زید سے عداوت ظاہر ہ دنیویہ اس حد تک رکھنے والا ہو کہ اس کے باعث زید کے حق میں متہم ہو تو اس کی گواہی ضررِ زید پر قبول نہیں۔	۴۴۰	
مذاہب اربعہ سے غیر حنفی قاضی اپنے مذہب کے مطابق فیصلہ کرے یا حنفی قاضی جسے سلطان نے منصبِ قضاء پر مقرر کیا ہو اور اجازت دے رکھی ہو بوقت ضرورت قول مرجوح پر فیصلہ کر دے تو اس کی قضاء نافذ ہو گی۔	۴۸۲	

Fatawa Razawiya | Volume 12

136 | A judge (Qazi) who is restricted to a specific school of thought (muqallid) and the legal rulings within that school, rendering a verdict based on another Imam's school is void. | 482 | Umm-ul-Momineen Hazrat Umm-e-Habiba (may Allah be pleased with her) is the daughter of Abu Sufyan and the sister of Hazrat Ameer Muawiya (may Allah be pleased with him). | 136 136 | A husband's illness or disability is not a reason for annulment of marriage (Faskh-e-Nikah). | 483 | The dower of Umm-ul-Momineen Hazrat Umm-e-Habiba (may Allah be pleased with her) was four thousand dirhams according to one narration and four thousand dinars according to another. | 136 136 | Annulment of marriage by judges of modern courts on the basis of insanity is void. Detailed arguments on this issue. | 488 | The dower of Hazrat Batool Zahra (may Allah be pleased with her) was four hundred mithqal of silver. | 136 137 | Where there is no Sharia judge, the religious scholar who is the most learned in jurisprudence (Fiqh) among all the townspeople is the Sharia authority. | 506 | In the holy era of Prophethood, gold was seven rupees, 7 annas and 5/3 pies per tola. | 137 151 | If the husband refuses to take an oath regarding the lack of intention for divorce, the woman should present the case before the judge; in case of refusal, he will grant separation. | 565 | The armor of Hazrat Ali al-Murtaza (may Allah be pleased with him) was sold for four hundred and eighty dirhams. | 151 | History and Remembrance | | | 154 | Allama Shaykhizada was a scholar from the Roman lands, a judge of the Ottoman Empire, and a contemporary of the author of Durr-e-Mukhtar. | 108 | During the blessed eras of the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him) and Siddiq-e-Akbar (may Allah be pleased with him), dirhams were of different types. | 154 154 | Allama Khair-ud-Din Ramli is the teacher of the author of Durr-e-Mukhtar. | 108 | In the era of Faruqi (Umar), dirhams were of three types: | 154 154 | Imam Abu Yusuf established a teaching session without the permission of Imam al-Azam; becoming bewildered by answers to five questions, he returned to the service of the Imam. | 112 | (1) Ten dirhams equal in weight to ten mithqal. | 154 154 | How much was the dower of the pure wives and Hazrat Fatima Zahra. | 135 | (2) Ten dirhams equal in weight to six mithqal. | 154 154 | The sacred dower of the general pure wives and noble daughters of the Radiant Prophet (upon him and them be the best of blessings and most complete salutations) did not exceed five hundred dirhams. | 136 | (3) Ten dirhams equal in weight to five mithqal. | 154 154 | | | Hazrat Umar (may Allah be pleased with him) took one-third from each of the three types (ten, six, five), the sum of which makes seven, and fixed such

a dirham in which ten dirhams would be equal in weight to seven mithqal. Consequently, afterwards, to avoid disputes in taking and giving, the same dirham continued to be in circulation. | 154

फ़तावा रज़विया | खंड 12

136 | एक काज़ी जो किसी विशेष विचारधारा (मज़हब) का मुक़ल्लिद हो और उसी के निर्णयों से बंधा हो, उसका किसी दूसरे इमाम के मज़हब पर फैसला करना बातिल (अमान्य) है। | 482 | उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्म-ए-हबीबा (रज़ियल्लाहु अन्हा) अबू सुफ़ियान की बेटी और हज़रत अमीर मुआविया (रज़ियल्लाहु अन्हु) की बहन हैं। | 136 136 | पति की बीमारी और विकलांगता निकाह खत्म (फ़स्ख़) करने का कारण नहीं है। | 483 | उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्म-ए-हबीबा (रज़ियल्लाहु अन्हा) का महर एक रिवायत के अनुसार चार हज़ार दिरहम और दूसरी के अनुसार चार हज़ार दीनार था। | 136 136 | पागलपन के आधार पर वर्तमान अदालतों के न्यायाधीशों द्वारा निकाह रद्द करना बातिल है। इस मसले के विस्तृत प्रमाण। | 488 | हज़रत बतूल ज़हरा (रज़ियल्लाहु अन्हा) का महर चार सौ मिस्क़ाल चाँदी था। | 136 137 | जहाँ शरिया काज़ी न हो, वहाँ जो धार्मिक विद्वान पूरे शहर के लोगों में फ़िक़्ह (न्यायशास्त्र) का सबसे बड़ा जानकार हो, वह शरिया का हाकिम (प्राधिकारी) है। | 506 | रिसालत के पाक युग में सोना सात रुपये, 7 आने और 5/3 पाई प्रति तोला था। | 137 151 | यदि पति तलाक की नीयत न होने पर कसम खाने से इनकार करे, तो महिला को मामला काज़ी के सामने पेश करना चाहिए; इनकार की स्थिति में वह अलगाव (तफ़रीक़) कर देगा। | 565 | हज़रत अली मुर्तज़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) की ज़िरह (कवच) चार सौ अस्सी दिरहम में बिकी थी। | 151 | इतिहास और संस्मरण | | | 154 | अल्लामा शैखीज़ादा दियार-ए-रूमिया के विद्वान, उस्मानी साम्राज्य के काज़ी और 'दुर्रे मुख़्तार' के लेखक के समकालीन थे। | 108 | रसूल-ए-अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और सिद्दीक़-ए-अकबर (रज़ियल्लाहु अन्हु) के मुबारक युग में दिरहम विभिन्न प्रकार के होते थे। | 154 154 | अल्लामा खैर-उद-दीन रामली 'दुर्रे मुख़्तार' के लेखक के उस्ताद हैं। | 108 | फ़ारूक़ी युग (हज़रत उमर) में दिरहम तीन तरह के थे : | 154 154 | इमाम-ए-आज़म की अनुमति के बिना इमाम अबू यूसुफ़ ने शिक्षण सत्र स्थापित किया; पाँच सवालों के जवाबों में हैरान होकर फिर इमाम की सेवा में वापस लौटे। | 112 | (1) दस दिरहम, दस मिस्क़ाल के बराबर वजन के। | 154 154 | अज़वाज-ए-मुतहरात (पवित्र पत्नियों) और हज़रत फ़ातिमा ज़हरा का महर कितना था। | 135 | (2) दस दिरहम, छह मिस्क़ाल के बराबर वजन के। | 154 154 | नूर वाले हुज़ूर (उन पर और उन सब पर श्रेष्ठ दरूद और पूर्ण सलाम हों) की आम पाक पत्नियों और प्रतिष्ठित बेटियों का महर पाँच सौ दिरहम से अधिक नहीं था। | 136 | (3) दस दिरहम, पाँच मिस्क़ाल के बराबर वजन के। | 154 154 | | | हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने इन तीनों प्रकारों

(दस, छह, पाँच) में से प्रत्येक का एक-तिहाई लिया जिसका योग सात बनता है, और ऐसा दिरहम निर्धारित किया जिसमें दस दिरहम सात मिस्क़ाल के बराबर वजन के हों। फलस्वरूप, बाद में लेनदेन में विवाद से बचने के लिए वही दिरहम जारी रहा। | 154

۱۳۶ | قاضی مقلد مقید بالقضاء مبالمنہب کسی دوسرے امام کے مذہب پر فیصلہ کرنا باطل ہے۔ | ۴۸۲ | ام المومنین حضرت ام حبیبہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا ابو سفیان کی بیٹی اور حضرت امیر معاویہ رضی اللہ عنہ کی بہن ہیں۔ | ۱۳۶ ۱۳۶ | شوہر کی بیماری اور معذوری سبب فسخ نکاح نہیں۔ | ۴۸۳ | ام المومنین حضرت ام حبیبہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کا مہر ایک روایت پر چار ہزار درہم اور دوسری پر چار ہزار دینار تھا۔ | ۱۳۶ ۱۳۶ | جنون کی بنیاد پر موجودہ کچہریوں کے حاکم کا نکاح فسخ کرنا باطل ہے۔ اس مسئلہ کے تفصیلی دلائل۔ | ۴۸۸ | حضرت بتول زہرا رضی اللہ تعالیٰ عنہا کا مہر چار سو مثقال چاندی تھا۔ | ۱۳۶ ۱۳۷ | جہاں قاضی شرع نہ ہو وہاں جو عالم دین تمام اہل شہر میں فقہ کا عالم ہو وہ حاکم شرعی ہے۔ | ۵۰۶ | عہد پاک رسالت میں سونا فی تولہ سات روپیہ ۷ آنے ۵/۳ پائی تھا۔ | ۱۳۷ ۱۵۱ | شوہر عدم نیت طلاق پر قسم کھانے سے انکار کرے تو عورت معاملہ قاضی کے سامنے پیش کرے وہ انکار کی صورت میں تفریق کردے گا۔ | ۵۶۵ | حضرت علی مرتضیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی زرہ چار سو اسی درہم میں فروخت ہوئی۔ | ۱۵۱ | تاریخ وتذکرہ | | | ۱۵۴ | علامہ شیخی زادہ دیار رومیہ کے عالم، دولت عثمانیہ کے قاضی اور صاحب درمختار کے معاصر تھے۔ | ۱۰۸ | رسول اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اور صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے عہد مبارک میں دراہم مختلف ہوتے تھے۔ | ۱۵۴ ۱۵۴ | علامہ خیرالدین رملی صاحب در مختار کے استاذ ہیں۔ | ۱۰۸ | عہد فاروقی میں دراہم تین طرح کے تھے : | ۱۵۴ ۱۵۴ | بے اذن امام اعظم امام ابویوسف نے مجلس درس قائم کی، پانچ سوالوں کے جواب میں متحیر ہو کر پھر خدمت امام رجوع لائے۔ | ۱۱۲ | (۱) دس درہم دس مثقال کے ہم وزن۔ | ۱۵۴ ۱۵۴ | مہرہ ازواج مطہرات و حضرت فاطمہ زہرا کس قدر تھا۔ |

۱۳۵ | (۲) دس درہم چھ مثقال کے ہم وزن۔ | ۱۵۴ ۱۵۴ | عامہ ازواج مطہرات وبنات مکرمات حضور پر نور علیہ وعلیہن افضل الصلوات واکمل التحیات کا مہر اقدس پانچسو درہم سے زائد نہ تھا۔ | ۱۳۶ | (۳) دس درہم پانچ مثقال کے ہم وزن۔ | ۱۵۴ ۱۵۴ | | | حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے انواع ثلثہ (دس، چھ، پانچ) میں سے ہر ایک کا ثلث لیا جس کا مجموعہ سات بنتا ہے، اور ایسا درہم مقرر فرمایا جس میں سے دس درہم سات مثقال کے ہم وزن ہوں چنانچہ بعد ازاں اخذ و عطا میں خصومت سے بچنے کے لئے وہی درہم جاری رہا۔ | ۱۵۴

Fatawa Rizvia | Volume 12

[155] It was established that the original noble dower (Mahr) of Hazrat Zahra (may Allah be pleased with her) upon which the holy marriage contract was performed was four hundred (400) Mithqals of silver, and a coat of mail was given as an advance at the time of the wedding, which, by holy command, was sold for four hundred and eighty (480) Dirhams. | [Right Side] If the seller has handed over some part of the sold item to the buyer before receiving the price, he has the right to withhold the remainder. | [Page 107]

[303] The blessed age and year of passing of the Mother of the Believers, Hazrat Sayyidah Umm Salama (may Allah be pleased with her). | [Right Side] In a sale, if several items are sold in one contract and some are given willingly, the remaining can be withheld until the full price is received. | [Page 120]

[304] Sayyiduna Hazrat Imam Hussain's (may Allah be pleased with him) pure wife, Rubab bint Imru' al-Qais (may Allah be pleased with her), is the mother of Hazrat Ali Asghar and Hazrat Sakina (may Allah be pleased with them). After the martyrdom of the oppressed Imam, while rejecting marriage proposals from the nobles of Quraish, she said: "I am not one to make anyone my father-in-law after the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him)." Therefore, as long as she lived, she did not marry anyone. | [Right Side] If the price is deferred, the right to withhold the sold item is lost by consensus. | [Page 120]

[305] The story of a female companion of the Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) whose name is Rubab (may Allah be pleased with her). | [Right Side] Imam Abu Yusuf states that the right to withhold the sold item is not a requirement of the original contract, whereas in marriage, in an absolute state, it is a requirement of the contract itself. | [Page 120]

[310] An incident of the hard work and diligence of Hazrat Asma bint Siddiq-e-Akbar (may Allah be pleased with them). | [Right Side] In a barter sale (Bay' Muqayadah), it is not initially mandatory to hand over one of the two items of exchange. | [Page 120]

[316] What changes did the Quraish make to the structure of Ibrahim (peace be upon him) when they rebuilt the Kaaba during the pre-Islamic period of ignorance (Jahiliyyah)? | [Right Side] An act that indicates the mutual consent for exchange of ownership is an essential element (Rukn) of sale. | [Page 217]

[390] What was the noble age of the Mother of the Believers, Sayyidah Aisha Siddiqa (may Allah be pleased with her), at the time of her marriage? | [Right Side] Sale by mutual delivery (Ta'ati) from one side is permissible according to some, and this is the issued fatwa and preferred view, but specifying the exchange is necessary; if the exchange is unknown, the sale will not be valid even in summary. | [Page 218]

[Sales (Bayu')] | | [Right Side] A condition among the conditions of sale that becomes well-known as invalidating might be tolerated, otherwise not. | [Page 288]

Page 87 of 688

फ़तावा रिज़विया | जिल्द बारह (12)

[१५५] यह निष्कर्ष निकला कि हज़रत ज़हरा (रज़ियल्लाहु अन्हा) का वास्तविक महर-ए-करीम, जिस पर पवित्र निकाह संपन्न हुआ, चार सौ (४००) मिस्क़ाल चाँदी थी, और निकाह के समय अग्रिम के रूप में एक कवच दिया गया था, जो पवित्र आदेश से चार सौ अस्सी (४८०) दिरहम में बिका। | [दाहिनी ओर] यदि विक्रेता ने मूल्य प्राप्त करने से पहले विक्रय वस्तु का कुछ हिस्सा खरीदार को सौंप दिया है, तो उसे शेष को रोकने का अधिकार प्राप्त है। | [पृष्ठ १०७]

[३०३] उम्मुल मोमिनीन हज़रत सैयदा उम्मे सलमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की मुबारक आयु और देहांत का वर्ष। | [दाहिनी ओर] यदि एक ही सौदे में कई चीज़ें बेची गई हों और कुछ स्वेच्छा से दे दी गई हों, तो विक्रेता बाकी को तब तक रोक सकता है जब तक पूरा मूल्य प्राप्त न हो जाए। | [पृष्ठ १२०]

[३०४] सैयदुना हज़रत इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हु) की पवित्र पत्नी रुबाब बिन्त इम्रउल क़ैस (रज़ियल्लाहु अन्हा), हज़रत अली असगर और हज़रत सकीना (रज़ियल्लाहु अन्हा) की माता हैं। मजलूम इमाम की शहादत के बाद, क़ुरैश के कुलीनों के निकाह के प्रस्तावों को ठुकराते हुए आपने कहा: "मैं ऐसी नहीं हूँ कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद किसी को अपना ससुर बनाऊँ।" अतः, जब तक आप जीवित रहीं, किसी से निकाह नहीं किया। | [दाहिनी ओर] यदि मूल्य विलंबित (मुअज्जल) हो, तो सर्वसम्मति से विक्रय वस्तु को रोकने का अधिकार समाप्त हो जाता है। | [पृष्ठ १२०]

[३०५] हुज़ूर अनवर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की एक सहाबिया का किस्सा जिनका नाम रुबाब (रज़ियल्लाहु अन्हा) है। | [दाहिनी ओर] इमाम अबू यूसुफ फरमाते हैं कि विक्रय वस्तु को रोकने का अधिकार मूल अनुबंध (अक्द) की अनिवार्यता नहीं है, जबकि निकाह में सामान्य स्थिति में यह स्वयं अनुबंध की मांग है। | [पृष्ठ १२०]

[३१०] हज़रत अस्मा बिन्त सिद्दीक़-ए-अकबर (रज़ियल्लाहु अन्हा) के कठिन परिश्रम की एक घटना। | [दाहिनी ओर] विनिमय बिक्री (बय मुक़ायदा) में, दोनों विनिमय वस्तुओं में से एक को पहले सौंपना अनिवार्य नहीं है। | [पृष्ठ १२०]

[३१६] ज़माना-ए-जाहिलियत में क़ुरैश ने काबा के पुनर्निर्माण के समय हज़रत इब्राहिम (अलैहिस्सलाम) के निर्माण में क्या-क्या बदलाव किए। | [दाहिनी ओर] ऐसा कार्य जो दोनों पक्षों की

स्वामित्व विनिमय की सहमति को दर्शाता हो, वह बिक्री (बय) का एक अनिवार्य अंग (रुक़्न) है। | [पृष्ठ २१७]

[३९०] उम्मुल मोमिनीन सैयदा आयशा सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की निकाह के समय मुबारक आयु क्या थी। | [दाहिनी ओर] एक पक्ष द्वारा परस्पर लेनदेन (ताअती) से कुछ विद्वानों के अनुसार बिक्री जायज़ है और यही फतवा और तरजीह वाला विचार है, लेकिन विनिमय का विवरण आवश्यक है; यदि विनिमय अज्ञात (मजहूल) होगा, तो बिक्री संक्षिप्त रूप में भी संपन्न नहीं होगी। | [पृष्ठ २१८]

[बय (बिक्री)] | | [दाहिनी ओर] बिक्री की शर्तों में से जो शर्त 'मफ़्सिद' (बिगाड़ने वाली) के रूप में प्रसिद्ध हो जाए, वह स्वीकार्य हो सकती है, अन्यथा नहीं। | [पृष्ठ २८८]

पृष्ठ ८७ / ६८८

۱۵۵ | حاصل یہ قرار پایا کہ حضرت زہرا رضی اللہ تعالیٰ عنہا کا اصل مہر کریم جس پر عقد اقدس ہوا چار سو ۴۰۰ مثقال چاندی تھی اور زرہ برسم پیشگی وقت زفاف دی گئی کہ بحکم اقدس چار سو اسی ۴۸۰ درہم کو بکی۔ | بائع نے وصولی ثمن سے قبل اگر مبیع کا بعض حصہ مشتری کے حوالے کر دیا تو بقیہ کو روکنے کا اسے حق حاصل ہے۔ | ۱۰۷ ۳۰۳ | ام المومنین حضرت سیدہ ام سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی عمر مبارک اور سن وصال۔ | بیع میں اگر چند چیزیں ایک عقد بیچیں اور بعض بخوشی دے دیں ، بعض باقی کو روک سکتا ہے جب تک تمام ثمن وصول نہ ہو۔ | ۱۲۰ ۳۰۴ | سیدنا حضرت امام حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی زوجہ مطہرہ رباب بنت امرؤ القیس رضی اللہ تعالیٰ عنہا حضرت علی اصغر اور حضرت سکینہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی والدہ ہیں۔ امام مظلوم کی شہادت کے بعد شرفاء قریش کے پیغامات نکاح کو مسترد کرتے ہوئے آپ نے فرمایا کہ میں وہ نہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے بعد کسی کو اپنا خسر بناؤں۔ چنانچہ آپ جب تک زندہ رہیں کسی سے نکاح نہ کیا۔ | ثمن مؤجل ہو تو حبس مبیع کا استحقاق بالاجماع زائل ہو جاتا ہے۔ | ۱۲۰ ۳۰۵ | حضور انور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی ایک صحابیہ کا قصہ جن کا نام نامی رباب ہے رضی اللہ تعالیٰ عنہا۔ | امام ابو یوسف فرماتے ہیں کہ حق حبس مبیع میں ۱۲۰ اصل عقد کا اقتضاء نہیں اور نکاح میں بحالت اطلاق نفس عقد کا مقتضی ہے۔ | ۱۲۰ ۳۱۰ | حضرت اسماء بنت صدیق اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہما جفا کشی کا ایک واقعہ۔ | بیع مقایضہ میں احد البد لین کی تسلیم اولاً واجب نہیں۔ | ۱۲۰ ۳۱۶ | قریش نے زمانہ جاہلیت میں کعبہ کی از سر نو تعمیر کے وقت کیا کیا تبدیلیاں بناء خلیل میں کیں۔ | ایسا فعل جو رضائے تبادل ملکین پر دال ہو وہ بیع کار کن ہے۔ | ۲۱۷ ۳۹۰ | ام المومنین سیدہ عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ

عنہا کی عمر شریف بوقت نکاح کیا تھی۔ | تعاطی احد الجانبین سے بعض کے نزدیک بیع جائز ہے اور یہی مفتیٰ بہ اور راجح ہے مگر بیان بدل ضروری ہے اگر بدل مجہول ہو گا تو بیع اجمالاً منعقد نہ ہوگی۔ | ۲۱۸ بیوع | | شرائط بیع میں سے جو شرط مفسد معروف ہو جائے محتمل ہے ورنہ نہیں۔ | ۲۸۸

Fatawa Razawiyya Volume 12

Page 88 of 688

- The purchase by a 'Fuduli' (unauthorized agent) remains effective on the buyer until it is ratified. (255) | Hibba (Gift)
- If something was bought for another, the purchase will be effective on this buyer if it was not attributed to the other. Yes, if it was said "sell this thing for so-and-so," and the adult said "I sold it for so-and-so," then this purchase will be suspended. (255) | When a husband and wife gift something to each other, they do not have the option to revoke it even if the marriage is terminated. (159)
- Sharecropping | A gift was made to a minor and his father took possession of it, then the gift is complete. (198)
- Sharecropping, i.e., giving a field on a crop-sharing basis, is permissible. (109) | If a gift is made to a close blood relative (Dhi Rahm Muhram), it cannot be taken back. (198)
- Drinks | Destruction of the gifted item is absolutely an obstacle to revoking the gift. (202)
- Even a small amount of an intoxicating liquid substance is forbidden. (109) | Prohibited kinship and marriage are both obstacles to revoking a gift. (205)
- Debt | Explicit compensation is an obstacle to revoking a gift. (206)
- One who gives respite to a debtor or forgives a debt will be under the shade of the Throne on the Day of Judgment. (139) | Where there is an option to revoke a gift, one will still be a sinner for revoking it. (206)
- Allah Almighty forgave those who pardoned debtors and granted them a place in Paradise. (139) | The one who gives and then takes back is like a dog that vomits and then eats it again. (206)
- If a woman wishes, she can receive the entire dower (mahr) like cash or as her debt. (189) | Revoking a gift is 'Makruh Tahrimi' (strongly disliked). (206)
- If the husband takes back the jewelry given as 'mahr mu'ajjal' (prompt dower), will he be a debtor or not? (189) | The recipient of the gift's departure from ownership is an obstacle to revoking the gift. (208)
- A daughter had a debt on her father; he gave a dowry and then said "I gave it as repayment of the debt," while the daughter says "No, it's from your own property." Whose word will be credible? (231) | A father married off his son at his own expense; now he keeps the daughter-in-law's dowry saying "I have kept

this property in exchange for what I spent on the wedding." Will the owner of this property and belongings be the wife or the father of Zaid? (210)

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

पेज 88 ऑफ़ 688

- फ़ुज़ूली (अनाधिकृत एजेंट) द्वारा की गई ख़रीदारी ग्राहक पर तब तक प्रभावी रहती है जब तक उसका निष्पादन न हो जाए। (255) | हिबा (उपहार)
- अगर किसी दूसरे के लिए कुछ खरीदा गया तो ख़रीद उस ग्राहक पर प्रभावी होगी यदि उसे दूसरे की ओर संबंद्ध नहीं किया गया हो। हाँ, अगर यह कहा गया हो कि "यह चीज़ फ़लाँ के लिए बेच दें", और बालिग ने कहा "मैंने फ़लाँ के लिए बेच दी", तो यह ख़रीद निलंबित (suspended) रहेगी। (255) | जब पति-पत्नी एक-दूसरे को कुछ उपहार दें, तो उन्हें इसे वापस लेने का अधिकार नहीं है, भले ही निकाह टूट जाए। (159)
- मुज़ारअत (बटाईदारी) | एक नाबालिग को उपहार दिया गया और उसके पिता ने उस पर कब्ज़ा कर लिया, तो उपहार पूर्ण हो गया। (198)
- मुज़ारअत यानी बटाई पर खेत देना जायज़ है। (109) | ज़ी-रहम मेहरम (करीबी रिश्तेदार) को उपहार दिया गया हो तो उसे वापस नहीं लिया जा सकता। (198)
- अशरबा (पेय पदार्थ) | उपहार में दी गई वस्तु का नष्ट हो जाना उपहार वापस लेने में पूर्णतः बाधक है। (202)
- नशीली और तरल चीज़ की थोड़ी मात्रा भी हराम है। (109) | प्रतिबंधित रिश्तेदारी और वैवाहिक संबंध दोनों ही उपहार वापस लेने में बाधक हैं। (205)
- क़र्ज़ | प्रत्यक्ष मुआवज़ा (एवज़) उपहार वापस लेने में बाधक है। (206)
- जो कर्जदार को मोहलत देता है या क़र्ज़ माफ़ करता है, वह कयामत के दिन अर्श के साये में होगा। (139) | जहाँ उपहार वापस लेने का अधिकार हो, वहाँ भी वापस लेने से व्यक्ति गुनहगार होगा। (206)
- कर्जदारों को माफ़ करने वालों को अल्लाह तआला ने माफ़ फ़रमाया और उन्हें जन्नत में जगह दी। (139) | देकर वापस लेने वाला उस कुत्ते की तरह है जो क़य (उलटी) करके उसे दोबारा खा ले। (206)
- अगर औरत चाहे तो पूरा मेहर नक़द की तरह या अपने क़र्ज़ के तौर पर वसूल कर सकती है। (189) | हिबा (उपहार) से रुजू (वापसी) मकरूह-ए-तहरीमी है। (206)

- पति ने मेहर-ए-मुअज्जल (तत्काल देय मेہر) के रूप में जो ज़ेवर दिया, अगर उसे वापस ले ले तो वह क़र्ज़दार होगा या नहीं? (189) | जिसे उपहार दिया गया, उसका मालिकाना हक़ से बाहर निकलना उपहार वापस लेने में बाधक है। (208)
- बेटी का पिता पर क़र्ज़ था, उसने जहेज़ दिया और फिर कहा "मैंने यह क़र्ज़ के एवज़ में दिया है", जबकि बेटी कहती है "नहीं, यह आपके अपने माल से है", तो किसका कथन विश्वसनीय होगा? (231) | पिता ने अपने ख़र्च से बेटे की शादी की, अब बहू का जहेज़ रोकता है और कहता है "शादी में जो ख़र्च हुआ है उसके बदले मैंने यह माल रख लिया है", इस माल-ओ-असबाब की मालिक पत्नी होगी या ज़ैद का पिता। (210)

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

صفحہ 88 از 688

- فضولی کا شراء جب تک نفاذ پائے مشتری پر نافذ ہوتا ہے۔ (۲۵۵) | ہبہ
- اگر دوسرے کے لئے کچھ خریدا تو شراء اس مشتری پر نافذ ہو گی جبکہ اسے دوسرے کی طرف مضاف نہ کیا ہو، ہاں اگر یوں کہا ہو کہ یہ شئی فلاں کے لئے بیچ کر، اس پر بالغ نے کہا میں نے فلاں کے لئے بیع کی تو یہ شراء موقوف ہو گی۔ (۲۵۵) | جب زن وشو ایک دوسرے کو کچھ ہبہ کریں تو رجوع کا اختیار نہیں اگرچہ نکاح منقطع ہو جائے۔ (۱۵۹)
- مزارعت | نابالغ کو ہبہ کیا اس کے باپ نے قبضہ کر لیا تو ہبہ تام ہو گیا۔ (۱۹۸)
- مزارعت یعنی بٹائی پر کھیت دینا جائز ہے۔ (۱۰۹) | ذی رحم محرم کو ہبہ کیا تو واپس نہیں لے سکتا۔ (۱۹۸)
- اشربہ | ہلاک موہوب مطلقاً مانع رجوع ہبہ ہے۔ (۲۰۲)
- نشہ آور اور رقیق شئی قلیل بھی ہو تو حرام ہے۔ (۱۰۹) | قرابت محرمہ اور زوجیت دونوں مانع رجوع ہبہ ہیں۔ (۲۰۵)
- قرض | عوض صریح مانع رجوع ہبہ سے ہے۔ (۲۰۶)
- مدیون کو مہلت دینے یا دین معاف کرنے والا قیامت کے دن عرش کے سایہ میں ہو گا۔ (۱۳۹) | ہبہ میں جہاں رجوع کا اختیار ہو وہاں بھی رجوع سے گنہگار ہو گا۔ (۲۰۶)
- مدیونوں سے درگزر کرنے والے کی اللہ تعالیٰ نے مغفرت فرمائی اور اس کو جنت میں جگہ بخشی۔ (۱۳۹) | دے کر پھیرنے والا مثل کتے کے ہے کہ قے کر کے پھر کھالے۔ (۲۰۶)

- اگر عورت چاہے تو سب مہر کو مثل نقد یا اپنے قرضہ کے وصول کر سکتی ہے۔ (۱۸۹) | ہبہ سے رجوع مکروہ تحریمی ہے۔ (۲۰۶)
- زوج نے جو زیور مہر معجل دیا اگر واپس لے لے تو مقروض ہو گا یا نہیں۔ (۱۸۹) | موہوب لہ، ملک سے خروج مانع رجوع ہبہ ہے۔ (۲۰۸)
- بیٹی کا باپ پر قرض تھا جہیز دیا پھر کہا میں نے قرضہ میں دیا ہے، بیٹی کہتی ہے نہیں اپنے مال سے تو کس کا قول معتبر ہو گا۔ (۲۳۱) | باپ نے بیٹے کی شادی اپنے صرف سے کی اب بہو کا جہیز روکتا ہے کہتا ہے میں نے جو شادی میں صرف کیا ہے اس کے عوض میں نے یہ مال رکھ لیا ہے، اس مال اسباب کی مالک زوجہ ہو گی یا والد زید۔ (۲۱۰)

Fatawa Rizvia, Volume 12

Page 89 of 688

Ref No.	Ruling / Content
221	If a brother and sister share in an inheritance and the brother gives a dowry to the sister, this is not customarily a gift (Hiba). Unlike parents, whose dowry is customarily a gift.
222	If someone said, "I have given permission to people for the fruits of my trees; whoever takes them, they belong to them," then those who became aware of this permission from the donor (Wahib) will become owners of whatever they take. But a person unaware of the donor's permission will not become the owner of what he takes.
225	A gift of an undivided portion (Hiba-e-Musha') of a divisible property is neither valid nor effective in transferring ownership.
225	The condition for the validity of a gift of an undivided portion (Hiba-e-Musha') of an indivisible
159	Regarding ornaments etc. given by a husband to his wife; if ownership (Tamleek) is not proven either explicitly or customarily, then the husband's word shall be reliable and he can take it back by force.
160	Without a transfer of ownership (Tamleek) from the husband, a wife merely wearing or using ornaments etc. does not establish her ownership over them.
203	Parents-in-law gave some ornaments to the daughter-in-law for reconciliation, thinking that they would remain in our house and under our control at all times, to be used for other purposes when desired, just as a merchant gives on loan ('Ariyat), for the decoration of their house and not as a transfer of ownership (Tamleek). In this case, are the parents the owners or not?
203	Property of the husband that wives use informally does not become their ownership.

Ref No.	Ruling / Content
	property is that the quantity must be known.
235	A gift for life (Hiba Ta-Heen Hayat) is a complete gift, and the condition of "during life" is void and invalid.
235	The death of one of the contracting parties is among the obstacles to retracting a gift.
247	The perishing of the gifted object or it leaving the ownership of the recipient (Mawhoob Lahu) both prevent the retraction of a gift.
255	If two people gift a house to one person, this gift is valid because it is not undivided (Musha').

'Ariyat (Loan/Commodatum)

Ref No.	Ruling / Content
208	Retracting a loan ('Ariyat) while the item exists is permissible and lawful at any time.
208	If items taken on loan perish without transgression, then compensation (Daman) is not mandatory.
208	If damage occurs to a borrowed item during use, compensation is not mandatory provided the use was customary.
208	If a loan ('Ariyat) is for a fixed time and the borrower, despite having the power to return it, keeps it past that time, they will be liable for its loss even if they did not use it after the fixed time.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

पृष्ठ 89/688

संदर्भ संख्या	नियम / सामग्री
२२१	यदि भाई-बहन विरासत में साझीदार हों और भाई अपनी बहन को दहेज दे, तो यह प्रथागत रूप से उपहार (हिबा) नहीं है। माता-पिता के विपरीत, जिनका दहेज प्रथागत रूप से उपहार माना जाता है।
२२२	यदि किसी ने कहा, "मैंने लोगों को अपने पेड़ों के फल लेने की अनुमति दी है; जो भी लेगा, वह उसका स्वामी होगा," तो जिन लोगों को दाता (वाहिब) की इस अनुमति की जानकारी मिली, वे जो कुछ भी लेंगे उसके स्वामी बन जाएंगे। लेकिन जो व्यक्ति दाता की अनुमति से अनभिज्ञ होगा, वह जो कुछ लेगा उसका स्वामी नहीं होगा।
२२५	विभाज्य संपत्ति के अविभाजित हिस्से का उपहार (हिबा-ए-मुशा) न तो वैध है और न ही स्वामित्व हस्तांतरण में प्रभावी है।
१५९	पति द्वारा पत्नी को दिए गए आभूषणों आदि के संबंध में; यदि स्वामित्व (तमलीक) स्पष्ट रूप से या प्रथागत रूप से किसी भी तरह से सिद्ध नहीं होता है, तो पति का कथन विश्वसनीय माना जाएगा और वह इसे बलपूर्वक वापस ले सकता है।
१६०	पति द्वारा स्वामित्व हस्तांतरण (तमलीक) के बिना, पत्नी द्वारा आभूषणों आदि को केवल पहनने या उपयोग करने से उन पर उसका स्वामित्व स्थापित नहीं होता है।
२०३	सास-ससुर ने मेल-मिलाप के लिए बहू को कुछ आभूषण दिए, यह सोचकर कि वे हमारे घर में रहेंगे और हर समय हमारे नियंत्रण में होंगे, जब चाहें दूसरे काम में लाएंगे, जैसे कोई व्यापारी उधार (आरीयत) पर देता है, अपने घर की सजावट के लिए न कि स्वामित्व हस्तांतरण (तमलीक) के

संदर्भ संख्या	नियम / सामग्री
२२५	अविभाज्य संपत्ति के अविभाजित हिस्से के उपहार (हिबा-ए-मुशा) की वैधता की शर्त यह है कि मात्रा ज्ञात होनी चाहिए।
२३५	जीवन भर के लिए उपहार (हिबा ता-हीन हयात) एक पूर्ण उपहार है, और "जीवन भर" की शर्त शून्य और अमान्य है।
२३५	अनुबंध करने वाले पक्षों में से किसी एक की मृत्यु उपहार को वापस लेने में बाधाओं में से एक है।
२४७	उपहार में दी गई वस्तु का नष्ट हो जाना या प्राप्तकर्ता (मौहूब लहू) के स्वामित्व से बाहर हो जाना, दोनों ही उपहार को वापस लेने से रोकते हैं।
२५५	यदि दो लोग एक व्यक्ति को घर उपहार में देते हैं, तो यह उपहार वैध है क्योंकि यह अविभाजित (मुशा) नहीं है।

संदर्भ संख्या	नियम / सामग्री
	रूप में। इस मामले में, क्या माता-पिता मालिक हैं या नहीं?
२०३	पति की संपत्ति जिसे पत्नियां अनौपचारिक रूप से उपयोग करती हैं, वह उनका स्वामित्व नहीं बन जाती।
२०८	वस्तु के अस्तित्व में रहने तक किसी भी समय उधार (आरीयत) को वापस लेना जायज़ और वैध है।
२०८	यदि उधार ली गई वस्तुएं बिना किसी उल्लंघन के नष्ट हो जाती हैं, तो हर्जाना (ज़मान) अनिवार्य नहीं है।
२०८	यदि उपयोग के दौरान उधार ली गई वस्तु को क्षति पहुँचती है, तो हर्जाना अनिवार्य नहीं है बशर्ते कि उपयोग प्रथागत हो।
२०८	यदि उधार (आरीयत) एक निश्चित समय के लिए है और उधार लेने वाला, वापस करने की क्षमता होने के बावजूद, उस समय के बाद भी उसे अपने पास रखता है, तो वे इसकी हानि के लिए उत्तरदायी होंगे, भले ही उन्होंने निश्चित समय के बाद इसका उपयोग न किया हो।

आरीयत (उधार)

فتاویٰ رضویہ، جلد دوازدہم

صفحہ ۸۹ از ۶۸۸

نمبر شمار	مسئلہ / مواد	نمبر شمار	مسئلہ / مواد
۲۲۱	بہن بھائی ترکہ میں شریک ہوں اور بھائی بہن کو جہیز دے تو یہ عرفاً ہبہ نہیں۔ بخلاف والدین ان کا جہیز عرفاً ہبہ ہوگا۔	۱۵۹	زیور وغیرہ جو شوہر نے عورت کو دیا اور تملیک صراحتاً یا عرفاً کسی طرح ثابت نہ ہوئی تو اس میں قول شوہر معتبر ہوگا اور وہ جبراً واپس لے سکتا ہے۔
۲۲۲	اگر کسی نے کہا میں نے اپنے درختوں کے پھلوں کی لوگوں کو اجازت دی کہ جو لے وہ اس کا ملک ہے تو جن لوگوں کو واہب کے اس اذن کی خبر ہوئی وہ جو بھی لیں گے اس کے مالک بن جائیں گے مگر جو شخص اذنِ واہب سے بے خبر ہوگا وہ جو کچھ لے گا اس کا مالک نہیں ہوگا۔	۱۶۰	بلا تملیک شوہر زیور وغیرہ عورت کے برتنے، پہننے اور استعمال کرنے سے ملک عورت ثابت نہیں ہو سکتی۔
۲۲۵	ہبہ مشاع محتمل قسمت صحیح نہیں اور نہ ہی مفید ملک۔	۲۰۳	والدین زوج نے بہو کو کچھ زیور واسطے تالیفِ قلب دیا، یہ سمجھ کر کہ ہمارے گھر

نمبر شمار	مسئلہ / مواد
	ہبہ مشاع غیر محتمل قسمت کی شرط
۲۲۵	صحت یہ ہے کہ مقدار معلوم ہو۔
	ہبہ تاحین حیات ہبہ کاملہ ہے اور حین
۲۳۵	حیات کی شرط لغو و باطل ہے۔
	احد المعاقدین کی موت رجوعِ ہبہ کے
۲۳۵	موانع میں سے ہے۔
	موہوب شئی کا ہلاک ہو جانا یا موہوب لہ
۲۴۷	کی ملک سے خارج ہونا دونوں رجوعِ
	ہبہ سے مانع ہیں۔
۲۵۵	

نمبر شمار	مسئلہ / مواد
	میں رہے گا ہر وقت ہمارے اختیار میں ہوگا
	جب چاہیں دوسرے کام میں لائیں گے جیسا
	تاجر بطور عاریت دیا کرتے ہیں، اپنے گھر
	کی زیبائش کے لئے نہ کہ بطور تملیک اس
	صورت میں اس کے مالک والدین ہیں یا
	نہیں۔
	عورتیں جو بے تکلف اموالِ شوہر استعمال
۲۰۳	میں رکھتی ہیں اس سے وہ ان کی ملک نہ
	ہوں گے۔
	عاریت سے بحالت بقاء ہر وقت رجوع جائز
۲۰۸	وحلال ہے۔
	جو اشیاء عاریتاً لی جائیں وہ اگر بلا تعدّی
۲۰۸	ہلاک ہو جائیں تو ضمان لازم نہیں۔
	مستعار شئی میں اگر بحالت استعمال نقصان
۲۰۸	آجائے تو ضمان لازم نہیں بشرطیکہ
	استعمالِ معہود ہو۔
	اگر عاریت کسی وقتِ معین تک ہو اور
۲۰۸	لینے والا واپسی پر قدرت کے باوجود وقتِ

نمبر شمار	مسئلہ / مواد	نمبر شمار	مسئلہ / مواد
	اگر دو شخص کسی کو ایک گھر ہبہ کر دیں تو یہ ہبہ صحیح ہوگا کیونکہ مشاع نہیں۔		معین کے بعد بھی اپنے پاس اسے روکے رکھے تو اب ہلاک ہونے پر ضامن ہوگا اگرچہ وقتِ معین کے بعد استعمال نہ کی ہو۔
	عاریت		

Fatawa Razawiya | Volume 12

Rulings	Page
A borrowed item is a trust; there is no liability for it without negligence.	248
Interest	
Taking and giving interest is strictly forbidden, even if both parties agree.	176
Partnership	
In a partnership, gifting, lending, destruction of property, and transfer of ownership without compensation are not allowed unless a partner explicitly grants permission.	216
In 'Inan' and 'Mufawada' partnerships, partners are agents for each other and are authorized to manage the property.	216
In joint ownership of specific property, a partner is an outsider to the other's share, and dealing in the other's share is not permissible.	216
Partition	
	217

Topics / Rulings	Page
Legally, reconciliation is a contract that resolves conflict and terminates hostility.	217
Ignorance, if it leads to dispute, will impede the validity of reconciliation.	217
Trust	
A trustee is liable when he commits negligence.	220
Usurpation (Ghasb)	
If a usurper gives the usurped thing to someone as a gift, charity, or loan, and it is destroyed in their possession, they shall be liable to the original owner and cannot seek recourse from the usurper. This is unlike a pledgee, lessee, or depositee, who can seek recourse from the usurper.	221
Waqf (Endowment)	
In movable items, partition is allowed if their time is known; otherwise, it is not.	228
Ijarah (Leasing/Hiring)	

Rulings	Page	Topics / Rulings	Page
In diverse types of goods, partition by aggregation without mutual consent is impossible, to the extent that even a judge has no authority over it.			
Reconciliation		For things where custom permits manufacturing (Istisna'), it is allowed to pay wages to have a non-existent item made; otherwise, it is not.	228
Ignorance that does not lead to a dispute does not impede the validity of reconciliation.	217		

फ़तवे / नियम	पृष्ठ	विषय / नियम	पृष्ठ
उधार दी गई वस्तु एक अमानत है, बिना लापरवाही के इसमें कोई गारंटी (ज़मान) नहीं है।	२४८	शरीअत के अनुसार सुलह एक ऐसा अनुबंध है जो विवाद को सुलझाता है और शत्रुता को समाप्त करता है।	२१७
सूद (ब्याज)		अज्ञानता यदि विवाद तक ले जाने वाली हो, तो वह सुलह की वैधता में बाधक होगी।	२१७
ब्याज लेने और देने पर भले ही दोनों पक्ष सहमत हों, फिर भी यह पूरी तरह हराम है।	१७६	अमानत	
शिरकत (साझेदारी)		अमीन तब उत्तरदायी होता है जब वह लापरवाही करता है।	२२०
साझेदारी की स्थिति में हिबा (उपहार), ऋण, संपत्ति का विनाश और बिना प्रतिफल के स्वामित्व का हस्तांतरण तब तक जायज़ नहीं है जब तक कि साझेदार स्पष्ट रूप से न कह दे।	२१६	गसब (अवैध कब्ज़ा)	
'इनान' और 'मुफावज़ा' साझेदारी में साझेदार एक-दूसरे के वकील और संपत्ति में निपटान के लिए अधिकृत होते हैं।	२१६	यदि गसब करने वाला (अवैध कब्ज़ा करने वाला) गसब की गई वस्तु किसी को उपहार, दान या उधार के रूप में देता है और वह उन लोगों के पास नष्ट हो जाती है, तो वे मूल मालिक के प्रति उत्तरदायी होंगे और गसब करने वाले से संपर्क नहीं कर सकेंगे। गिरवी रखने वाले, किराएदार और अमानतदार के विपरीत, जो गसब करने वाले से संपर्क कर सकते हैं।	२२१
	२१६	वक़्फ़ (धर्मस्व)	

फ़तवे / नियम	पृष्ठ	विषय / नियम	पृष्ठ
शिरकत-ए-ऐन (विशिष्ट संपत्ति में साझेदारी) में, एक व्यक्ति दूसरे के हिस्से के लिए पूरी तरह से अजनबी है और उसे दूसरे के हिस्से में हस्तक्षेप करने की अनुमति नहीं है।			
क़िस्मत (बँटवारा)		चल संपत्तियों में यह उनके लिए जायज़ है जिनका समय ज्ञात हो, अन्यथा नहीं।	२२८
विभिन्न प्रकार की वस्तुओं में आपसी सहमति के बिना एक साथ बँटवारा करना असंभव है, यहाँ तक कि काज़ी (न्यायाधीश) के पास भी इसका अधिकार नहीं है।	२१७	इजारा (किराया/पट्टा)	
		जिन चीज़ों के निर्माण (इस्तिस्ना) का रिवाज हो, उनमें मज़दूरी देकर गैर-मौजूद चीज़ बनवाना जायज़ है, अन्यथा नहीं।	२२८
सुलह			
वह अज्ञानता जो विवाद का कारण न बने, सुलह की वैधता में बाधक नहीं होती।	२१७		

مسائل صفحہ

عاریت امانت ہے بے تعدی اس میں ضمان نہیں۔ ۲۴۸

سود

سود کے لینے اور دینے پر اگر دونوں راضی ہوں تب بھی حرام قطعی ہے۔ ۱۷۶

شرکت

بصورت شرکت ہبہ، قرض، اتلافِ مال اور تملیک بلا عوض جائز نہیں جب تک شریک صراحتاً کہہ دے۔ ۲۱۶

شرکت عنان اور شرکت مفاوضہ میں شریک ایک دوسرے کے وکیل اور

عنوانات / مسائل صفحہ

صلح شرعاً ایک عقد ہے جو رافع نزاع اور قاطع خصومت ہے۔ ۲۱۷

جہالت اگر منازعت تک پہنچانے والی ہو تو وہ جواز صلح سے مانع ہوگی۔ ۲۱۷

امانت

امین ضامن ہوتا ہے جبکہ تعدی کرے۔ ۲۲۰

غصب

غاصب اگر مغصوبہ شئ کسی کو بطور ہبہ یا صدقہ یا عاریت دے اور وہ ان لوگوں کے پاس ہلاک ہو جائے تو وہ اصل مالک کے لئے ضامن ہوں گے اور غاصب کی ۲۲۱

مسائل صفحہ		عنوانات / مسائل صفحہ	
مال میں ماذون التصرف ہوتے ہیں۔		طرف رجوع نہیں کرسکیں گے۔ بخلاف مرتہن، مستاجر اور مودع کے کہ غاصب کی طرف رجوع کریں گے۔	
شرکت عین میں دوسرے کے حصہ سے اجنبی محض ہے اور اسے دوسرے کے حصہ میں تصرف جائز نہیں۔	۲۱۶	وقف	
قسمت		اشیاء منقولہ میں اسے جنکا وقت معروف ہو جائز ہے ورنہ نہیں۔	۲۲۸
اجناس مختلفہ میں قسمت جمع بلا تراضی ناممکن ہے، یہاں تک کہ قاضی کو بھی اس کا اختیار نہیں۔	۲۱۷	اجارہ	
صلح		جن چیزوں کے استصناع کا رواج ہو ان میں اُجرت دے کر معدوم شئ کا بنوانا جائز ہے ورنہ نہیں۔	۲۲۸
جو جہالت مفضی الی المنازعہ نہ ہو وہ جوازِ صلح سے مانع نہیں ہوتی۔	۲۱۷		

Fatawa Razawiya - Volume 12

Rahn (Pledge/Mortgage) 1. Zaid became a Qadiani, his wife remained Muslim, what is the ruling? 261 2. If the mortgagee benefits from the mortgaged item with the mortgagor's permission without any condition, it is permissible, otherwise forbidden. However, in our times, a ruling of prohibition will be given absolutely because there is a custom and practice of not giving loans without the greed of profit from the mortgaged item. 229 | A woman insulted the Sharia; did she become an apostate and was the marriage annulled? 263 3. If someone mortgaged something without the owner's permission and the owner did not authorize this action even later, the owner has the right to annul this mortgage and take back his thing from the mortgagee, while the mortgagee may take his debt from the debtor. 249 | After renewing her faith, can a woman marry someone else without her husband's permission? 263 4. If someone's item was kept as a mortgage after asking the owner and after the mortgage, the owner enforced this action with his permission, then the mortgage became valid and correct. Now, as long as the mortgagee's debt is not paid, the owner cannot take back the mortgaged item. If someone mortgaged something with the owner's permission, the owner has the right to release his thing by paying the mortgagee's debt and take back whatever he gave the mortgagee from the debtor or his heirs. 249 | If a woman commits blasphemy/unbelief, she does not exit the marriage; this is the fatwa-based position. 263

Wakalat (Agency) 5. | An apostate woman will be compelled to renew her marriage after accepting Islam. 263 6. The President of an Association, by whose order all tasks are done, is a permitted agent of the donors for all transactions within the association. 252 | An apostate man or woman cannot marry anyone in the world; whoever they marry, it will be sheer adultery. 403 7. If someone was made an agent to buy an unspecified item, the purchase will be for the agent unless the agent intended the purchase for the principal or bought the item with the principal's money. 252 | If a woman becomes an apostate, there is no escape from Halala; if she becomes a Muslim again, then Halala will be necessary. 403 8. An agent for divorce cannot appoint another agent. 566

Yamin (Oath) 9. | A person was invited by people to drink wine. He lied and said, 'I have taken an oath of divorce on drinking wine.' Now if he drinks wine, divorce will occur. 353

Siyar (Miscellaneous)

फ़तावा रज़विया - जिल्द बारहवीं

रहन (गिरवी) 1. ज़ैद क़ादियानी हो गया, उसकी औरत मुसलमान ही रही, क्या हुक्म है। २६१ 2. मुरतहिन का शय-ए-मरहूना से लाभ उठाना अगर राहिन की अनुमति से बिना किसी शर्त के हो तो जायज़ है, अन्यथा हराम है। लेकिन हमारे समय में पूर्णतः हराम होने का हुक्म दिया जाएगा क्योंकि गिरवी रखी चीज़ से लाभ की लालच के बिना ऋण न देने की प्रथा और चलन है। २२९ | महिला ने शरीअत का अपमान किया, तो क्या वह मुर्तदा हो गई और निकाह रद्द हो गया। २६३ 3. मालिक की अनुमति के बिना किसी ने कोई चीज़ गिरवी रख दी और मालिक ने बाद में भी इस कार्य को जायज़ नहीं माना, तो मालिक को अधिकार है कि वह इस गिरवी को रद्द करके अपनी चीज़ मुरतहिन से वापस ले ले, और मुरतहिन अपना ऋण ऋणी से लेता रहे। २४९ | ईमान के नवीनीकरण के बाद महिला पति की अनुमति के बिना दूसरा निकाह कर सकती है। २६३ 4. यदि मालिक से पूछकर उसकी चीज़ गिरवी रखी गई और गिरवी रखने के बाद मालिक ने अपनी अनुमति से इस कार्य को लागू कर दिया, तो गिरवी वैध और सही हो गई। अब जब तक मुरतहिन का ऋण चुकाया नहीं जाता, मालिक गिरवी रखी चीज़ वापस नहीं ले सकता। मालिक की अनुमति से किसी ने कोई चीज़ गिरवी रखी, तो मालिक को अधिकार है कि वह मुरतहिन का ऋण देकर अपनी चीज़ छुड़ा ले और जो कुछ मुरतहिन को दिया हो, वह ऋणी या उसके वारिसों से वापस ले ले। २४९ | महिला अगर कुफ़्र करती है, तो वह निकाह से बाहर नहीं निकलती; यही फतवा देने योग्य स्थिति है। २६३

वक़ालत (एजेंसी) 5. | मुर्तदा महिला को इस्लाम स्वीकार करने के बाद निकाह के नवीनीकरण के लिए मजबूर किया जाएगा। २६३ 6. अंजुमन का अध्यक्ष, जिसके आदेश से सभी कार्य होते हैं, अंजुमन में दान देने वालों का अधिकृत वकील होता है। २५२ | मुर्तद और मुर्तदा का निकाह पूरी दुनिया में किसी से नहीं हो सकता; जिससे भी होगा वह केवल ज़िना होगा। ४०३ 7. यदि किसी को अनिश्चित वस्तु खरीदने के लिए वकील बनाया गया, तो खरीद वकील के लिए होगी, सिवाय इसके कि वकील ने मुवक्किल के लिए खरीदने का इरादा किया हो या मुवक्किल के धन से वस्तु खरीदी हो। २५२ | महिला मुर्तदा हो जाए तो हलाला से छुटकारा नहीं मिलता; यदि वह फिर से मुसलमान हो जाती है, तो हलाला की आवश्यकता होगी। ४०३ 8. तलाक का वकील दूसरे को वकील नहीं बना सकता। ५६६

यमीन (शपथ) 9. | एक व्यक्ति को लोगों ने शराब पीने के लिए बुलाया। उसने झूठ बोला कि 'मैंने शराब पीने पर तलाक की कसम खाई है।' अब यदि वह शराब पीता है, तो तलाक प्रभावी हो जाएगा। ३५३

सियर (विविध)

पृष्ठ 91 का 688

رمن ۱۔ زید قادیانی ہو گیا، اس کی عورت مسلمان ہی رہی، کیا حکم ہے۔ ۲۶۱ ۲۔ مرتہن کا شئی مرہون سے انتفاع اگر باذنِ راہن بے شرط ہو تو جائز ۲۲۹ | عورت نے شریعت کی توہین کی تو کیا وہ مرتدہ ہو گئی اور نکاح فسخ ہو گیا۔ ۲۶۳ ورنہ حرام ، مگر ہمارے زمانے میں مطلقاً حکم حرمت دیا جائیگا کو بے طمع نفع بہ مرہون قرض نہ دینے کا عرف ورواج ہے۔ ۳۔ بے اجازتِ مالک کوئی شے رہن کر دی مالک نے بعد میں بھی اس ۲۴۹ | بعد تجدید ایمان عورت بلا اجازتِ شوہر دوسرا نکاح کر سکتی ہے۔ ۲۶۳ تصرف کو جائز نہ کیا تو مالک کو اختیار ہے کہ اس رہن کو فسخ کر کے مرتہن سے اپنی چیز واپس لے لے اپنا دین مدیون سے لیتا رہے۔ ۴۔ اگر مالک سے پوچھ کر اس کی شئی کو رہن رکھا گیا بعد رہن مالک نے ۲۴۹ | عورت اگر کفر کرے تو نکاح سے نہیں نکلتی، یہی مفتیٰ بہ ہے۔ ۲۶۳ اس تصرف کو اپنی اجازت سے نافذ کر دیا تو رہن نافذ صحیح ہو گیا۔ اب جب تک دین مرتہن ادا نہ ہو مالک مرہون شئی کو واپس نہیں لے سکتا۔ مالک کی اجازت سے کوئی شئی کسی نے رہن کر دی تو مالک کو اختیار ہے کہ مرتہن کا دین دے کر اپنی چیز چھڑالے اور جو کچھ مرتہن کو دے وہ مدیون یا اس کے وارثوں سے واپس لے لے۔

وکالت ۵۔ | مرتدہ بعد اسلام تجدیدِ نکاح پر مجبور کی جائے گی۔ ۲۶۳ ۶۔ صدر انجمن جس کا حکم سے سب کام ہوتے ہیں تمام تصرفات ۲۵۲ | مرتدہ اور مرتد کا نکاح جہاں بھر میں کسی سے نہیں ہو سکتا ۴۰۳ جائز انجمن میں چندہ دینے والوں کا وکیل مجاز ہوتا ہے | جس سے ہوگا محض زنا ہوگا۔ ۷۔ اگر کسی کو غیرہ معین شئی کی خریداری کا وکیل کیا تو شراء ۲۵۲ | عورت مرتدہ ہو جائے تو حلالہ سے چھٹکارا نہیں مسلمان ہو گی تو پھر ۴۰۳ وکیل کے لئے ہو گی مگر جبکہ وکیل

نے موکل کے لئے | حلالہ کی ضرورت ہوگی۔ خریداری کی نیت کر لی ہو یا مالِ موکل سے شئے خریدی ہو۔ ۸۔ وکیل بالطلاق دوسرے کو وکیل نہیں بنا سکتا۔ ۵۶۶

یمین ۹۔ | ایک شخص کو لوگوں نے شراب پینے کے لئے بلایا، اس نے جھوٹ ۳۵۳ کہا کہ میں نے شراب پینے پر طلاق کی قسم کھائی ہے۔ اب شراب پئے تو طلاق واقع ہو گی۔

سیر

Fatawa Rizvia - Volume 12

Subject Regarding Divorce	Page	Recitation (Qira'at)	Page
The oath of a woman claiming divorce is considered credible.	373	Recitation	
The claimant's oath is not heard; rather, witnesses are requested from them.	373	All ten recitations of the Holy Quran are true and revealed by Allah, and the Noble Prophet (PBUH) recited them in all ten ways.	315
If the claimant cannot provide witnesses, the respondent is put on oath.	373	Wherever a particular recitation is prevalent, only that should be recited before the public in prayer and outside prayer; a recitation their ears are unfamiliar with should not be recited, lest they laugh or taunt it and spoil their faith.	315
If witnesses do not remember the number of divorces and the husband swears to one, his oath is reliable.	429	Obligations (Inheritance Laws)	
If the man swears he didn't give a divorce and the woman swears he did, the husband's oath will be considered, but the woman should seek release however possible.	433	Children of established lineage will receive the father's inheritance, even if illegitimate.	184
If Sharia witnesses are not present, it is sufficient for the woman to take an oath from the husband denying divorce at home.	444	In irregular and void marriages, the spouses do not inherit from each other.	184
If the husband swears that he had no intention of divorce, it will be accepted, and there is no need for a judge or arbitrator for the oath;	523	The custom of not giving inheritance to sisters is void and rejected.	193

Subject Regarding Divorce	Page	Recitation (Qira'at)	Page
the woman herself can take this oath from the husband.			
If someone says, "If I do this work, I am an adulterer, thief, or drunkard," they will not become one who has taken a legal oath.	593	Gathering and feast are not included in funeral expenses; if one spends beyond funeral expenses, it will be deducted from their share if they are an heir, and they will be considered a donor; similarly for a stranger.	216
Expiation (Kaffara) is not mandatory for a false oath (Yamin Ghamus).	603	The wife of the deceased is entitled to inheritance.	470
If the husband swears before the wife about the lack of intention, she will accept it.	606	A deceased's wife being entitled to inheritance is proven by Quranic text.	471
In metaphorical expressions (kinaya), if the husband refuses to swear about his intention and refuses to swear before a Sharia judge as well, then divorce will be established.	626	If the deceased has no children, his wife gets a fourth; if there are children, she gets an eighth share as inheritance.	471

फ़तावा रज़विया - जिल्द 12

तलाक़ से संबंधित विषय	पृष्ठ	क़िरात (कुरान पाठ)	पृष्ठ
तलाक़ का दावा करने वाली महिला की शपथ विश्वसनीय है।	373	क़िरात	
वादी की शपथ नहीं सुनी जाती, बल्कि उससे गवाह माँगे जाते हैं।	373	पवित्र कुरान की दसों क़िरात सत्य और अल्लाह की ओर से अवतरित हैं और माननीय पैगंबर (स.अ.व.) ने दसों तरह से पढ़ा है।	315
यदि वादी गवाह न दे सके तो प्रतिवादी से शपथ ली जाती है।	373	जहाँ जो क़िरात प्रचलित हो, नमाज़ और नमाज़ के बाहर जनता के सामने वही पढ़ी जाए; वह क़िरात जिससे उनके कान अपरिचित हों, नहीं पढ़ी जानी चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि वे उस पर हँसें या ताना मारें और अपना ईमान खराब कर लें।	315
यदि गवाहों को तलाक़ की संख्या याद न हो और पति एक की शपथ ले ले, तो उसकी शपथ मान्य होगी।	429	फ़राइज़ (उत्तराधिकार नियम)	
पुरुष तलाक़ न देने की शपथ ले और महिला तलाक़ देने की, तो पति की शपथ मानी जाएगी, लेकिन महिला जिस तरह भी संभव हो छुटकारा प्राप्त करे।	433	सिद्ध वंश वाली संतान पिता की विरासत पाएगी, चाहे वह नाजायज़ ही क्यों न हो।	184
यदि शरीयत के अनुसार गवाह मौजूद न हों, तो तलाक़ से इनकार करने वाले पति से महिला का घर में ही शपथ ले लेना पर्याप्त है।	444	निकाह-ए-फ़ासिद और बातिल में जीवनसाथी एक-दूसरे के वारिस नहीं होते।	184
	523		193

तलाक़ से संबंधित विषय	पृष्ठ	क़िरात (कुरान पाठ)	पृष्ठ
यदि पति शपथ लेकर यह कहे कि तलाक़ की नियत नहीं थी, तो उसे मान लिया जाएगा और शपथ लेने के लिए काज़ी या पंचायत की ज़रूरत नहीं, स्वयं महिला भी पति से यह शपथ ले सकती है।		यह रिवाज कि बहनों को विरासत नहीं देते, बातिल और अस्वीकार्य है।	
यदि कोई यह कहे कि "अगर मैं यह काम करूँ तो मैं ज़ानी, चोर या शराबी हूँ" तो वह शपथ लेने वाला नहीं माना जाएगा।	593	कफ़न-दफ़न के ख़र्च में भीड़ जमा करना और खाना खिलाना शामिल नहीं है; यदि कोई कफ़न-दफ़न के अलावा ख़र्च करता है, तो यदि वह वारिस है तो उसके हिस्से से कटेगा और वह दान माना जाएगा; अजनबी के लिए भी यही है।	216
झूठी शपथ (यमीन-ए-ग़मूस) पर कफ़्फ़ारा अनिवार्य नहीं है।	603	मृतक की पत्नी विरासत की हक़दार होती है।	470
नियत न होने के बारे में पति पत्नी के सामने शपथ ले ले, तो वह मान लेगी।	606	मृतक की पत्नी का विरासत की हक़दार होना कुरान की आयतों से सिद्ध है।	471
स्पष्ट शब्दों के बजाय इशारों (किनाया) में, यदि पति नियत के बारे में शपथ से इनकार करे और शरीयत के न्यायाधीश के सामने भी शपथ लेने से मना करे, तो तलाक़ सिद्ध हो जाएगा।	626	यदि मृतक की कोई संतान न हो, तो उसकी पत्नी को चौथाई हिस्सा और यदि संतान हो, तो आठवाँ हिस्सा विरासत के रूप में मिलता है।	471

طلاق کے متعلقہ موضوعات	صفحہ
طلاق کی مدعیہ عورت کی قسم بالمعتبر ہے۔	۳۷۳
مدعی کا حلف نہیں سنا جاتا بلکہ اس سے گواہ مانگے جاتے ہیں۔	۳۷۳
مدعی گواہ نہ دے سکے تو مد علیہ پر حلف رکھا جاتا ہے۔	۳۷۳
گواہوں کو طلاق کی تعداد یاد نہ ہو اور شوہر ایک کی قسم کھالے تو اس کی قسم کا اعتبار ہے۔	۴۲۹
مرد طلاق نہ دینے کی قسم کھائے اور عورت طلاق دینے کی، اعتبار شوہر	۴۳۳

قراءۃ	صفحہ
قراءۃ	
قرآن مجید کی دسوں قرائیں حق اور منزل من اللہ ہیں اور دسوں طرح اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے پڑھا ہے۔	۳۱۵
جہاں جو قراءۃ رائج ہو نماز اور غیر نماز میں عوام کے سامنے وہی پڑھی جائے،	
جس قراءۃ سے ان کے کان آشنا نہ ہوں وہ نہ پڑھی جائے مباد ہ وہ اس پر ہنسنے اور طعن کرنے سے اپنا دیں خراب کرلیں۔	۳۱۵
فرائض	
اولاد ثابت النسب باپ کا ترکہ پائے گی اگر چہ حرامی ہو۔	۱۸۴

طلاق کے متعلقہ موضوعات	صفحہ
کی قسم کا ہوگا، لیکن عورت جس طرح ممکن ہو چھٹکارا حاصل کرے۔	
گواہ شرعی موجود نہ ہوں تو قسم لینے کے لئے عورت کا شوہر منکر طلاق سے گھر میں قسم لے لینا کافی ہے۔	۴۴۴
شوہر قسم کھا کر عدم نیت طلاق کا قول کرے تو مان لیا جائے گا اور قسم لینے کے لئے قاضی یا پنچ کی ضرورت نہیں، خود عورت بھی شوہر سے یہ قسم لے سکتی ہے۔	۵۲۳
اگر کوئی یوں کہے کہ "اگر میں یہ کام کروں تو میں زانی، چور یا شرابی ہوں" تو حالف نہیں ہوگا۔	۵۹۳
یمین غموس پر کفارہ لازم نہیں ہوتا۔	۶۰۳
عدم نیت کے بارے میں شوہر بیوی کے سامنے قسم کھالے مان لے گی۔	۶۰۶
کنایہ میں شوہر نیت کے بارے میں حلف سے انکاری ہو تو حاکم شرعی	۶۲۶

قراءۃ صفحہ	
نکاح فاسد و باطل میں زوجین ایک دوسرے کے وارث نہیں ۔	۱۸۴
یہ رواج کہ بہن کو تر کہ نہیں دیتے باطل و مردود ہے۔	۱۹۳
تجہیز میں جمع و مولد داخل نہیں تو تجہیز کے علاوہ خرچ کرے گا اگر وارث ہو گا تو اسی کے حصہ پر پڑے گا اور وہ متبرع ٹھہرے گایوں ہی اجنبی۔	۲۱۶
متوفی کی بیوی مستحق وراثت ہوتی ہے۔	۴۷۰
زوجہ متوفی کا مستحق میراث ہونا نص قرآنی سے ثابت ہے۔	۴۷۱
	۴۷۱

بھی قسم کھانے سے انکار کرے تو
طلاق ثابت ہو جائے گی۔

متوفی کی اولاد نہ ہو تو اس کی بیوی کو
چوتھا اور اولاد ہو تو آٹھواں حصہ بطور
میراث ملتا ہے۔

Fatawa Razawiyya - Volume 12

Rulings / Descriptions	Ref.	Details	Page
		The word "Mekunam" is strictly for the present tense and the word "Kunam" is strictly for the future, whereas in Arabic the word "Atliqu" encompasses both present and future.	
Inheritance of the wife is among the necessities of religion and there is a consensus (Ijma) of all Islamic sects on this.	741		588
Saying that wifehood is not a source of inheritance in Shariah is a word of disbelief (Kufr).	741	**Lexicon**	
Denying a woman's right to inheritance by considering the onset of leprosy as a dissolver of marriage is ignorance and folly.	472	Original meaning of "Farigh Khatti" (release deed) and explanation of its use and meaning in the context of divorce.	564
"If someone denies the wifehood of his woman for some expediency, he has sinned by taking a false oath; the woman's marriage remains intact and she will not be deprived of inheritance."	603	The word "La Da'wa" (no claim) is synonymous with the Arabic phrase "Anka Mujara"; if intended, it results in an irrevocable divorce (Talaq-e-Ba'in).	574
Culture and Civilization		The word "Watan" (homeland) is broader than the words "Balad" (city) and "Qariya" (village).	
In these cities, it is customary that a garment set (jora) is sent from the groom's side to the bride with the hope that much jewelry, etc., will be received from the other side. Therefore, expensive sets and other items are sent, and it is explicitly stated that if 200 goes	202	Lexical meanings of the word "Sar-o-kar" (dealings/ concern).	632

Rulings / Descriptions	Ref.	Details	Page
from here, 400 will come from there. In this case, can it be taken back upon separation or not, and what is the ruling if it is destroyed?			
In the common practice (Urf) of our lands, the dowry (jahez) is specifically the property of the wife in which the husband has no right. If a divorce occurs, she will take it all, and if she dies, it will be distributed among her heirs.	203	**Exhortation and Warning**	
In countries like Syria etc., they increase the dower (mahr) in the hope that the woman will bring a large dowry (jahez).	204	"Whoever does not act upon the fatwa of the pure Shariah is a sinner and deserves punishment and torment."	585
Grammar (Nahw)		Reprimand for encouraging false confession in a legal matter.	615
In some regions of India, the word "ne" is not used even with the subject of a transitive verb; for example, they say "tu kya" instead of "tu ne kya".	380	Knowingly calling the truth false and presenting one's doubt as a reason for not returning to the truth does not bring honor; it is a cause of severe humiliation in both worlds.	615
The word "Na'am" (yes) after a statement is for confirmation, and after a command or prohibition, it is for a promise.	380		

नियम / विवरण

पत्नी की विरासत धर्म की अनिवार्यताओं में से है और इस पर इस्लाम के सभी फिरकों का इज्मा (सहमति) है।

यह कहना कि शरिया में पत्नी होना विरासत का जरिया नहीं है, कुफ़्र का शब्द है।

कोढ़ (जज़ाम) की शुरुआत को निकाह खत्म करने वाला समझकर महिला के विरासत के अधिकार से इनकार करना अज्ञानता और मूर्खता है।

"यदि किसी ने किसी मजबूरी के कारण अपनी पत्नी के साथ वैवाहिक संबंध से इनकार किया, तो वह झूठी कसम खाने के कारण गुनहगार हुआ, महिला का निकाह बरकरार है और वह विरासत से वंचित नहीं होगी।"

संस्कृति और सभ्यता

इन शहरों में यह चलन है कि दूल्हे की ओर से दुल्हन को इस उम्मीद में जोड़ा भेजा जाता है कि उधर से बहुत सारे गहने आदि मिलेंगे, इसलिए बहुत महंगे जोड़े और अन्य

सं.	विवरण	पृष्ठ
७४१	शब्द "मीकुनम" केवल वर्तमान काल के लिए और शब्द "कुनम" केवल भविष्य काल के लिए है, जबकि अरबी में शब्द "अतलिकु" वर्तमान और भविष्य दोनों में प्रयुक्त होता है।	५८८
७४१	**शब्दकोश**	
४७२	"फ़ारिग़ ख़त्ती" (मुक्ति पत्र) का मूल अर्थ और तलाक़ के अध्याय में इसके उपयोग और अर्थ की व्याख्या।	५६४
६०३	"ला दावा" शब्द अरबी शब्द "अंका मुजारा" का पर्यायवाची है; यदि नीयत हो तो यह तलाक़-ए-बाइन (अटल तलाक) होगा।	५७४
	शब्द "वतन" शब्द "बलद" और "करिया" से अधिक व्यापक है।	
२०२	शब्द "सरोकार" के शब्दकोश अर्थ।	६३२

नियम / विवरण	सं.	विवरण	पृष्ठ
चीजें भेजी जाती हैं और यह स्पष्ट रूप से कहा जाता है कि यदि यहाँ से २०० का जाएगा तो वहाँ से ४०० का आएगा। इस मामले में, क्या अलगाव होने पर इसे वापस लिया जा सकता है या नहीं, और यदि यह नष्ट हो जाए तो क्या हुक्म होगा?			
हमारे देशों के आम रीति-रिवाजों (उर्फ़) में दहेज विशेष रूप से पत्नी की संपत्ति होती है जिसमें पति का कोई अधिकार नहीं होता। यदि तलाक हो जाता है, तो वह सब ले लेगी और यदि वह मर जाती है, तो इसे उसके वारिसों में विभाजित किया जाएगा।	२०३	**प्रोत्साहन और चेतावनी**	
शाम (सीरिया) आदि देशों में मेहर इस उम्मीद में बढ़ाते हैं कि महिला अधिक दहेज लाएगी।	२०४	"जो व्यक्ति पवित्र शरीयत के फतवे पर अमल नहीं करेगा, वह गुनहगार है और सजा व अज़ाब का हकदार है।"	५८५
व्याकरण (नहव)		किसी कानूनी मामले में गलत स्वीकारोक्ति को बढ़ावा देने पर फटकार।	६१५
भारत के कुछ क्षेत्रों में सकर्मक क्रिया के कर्ता के साथ भी "ने" शब्द का प्रयोग नहीं किया जाता है, जैसे कि वे "तू क्या" (तू ने क्या के स्थान पर) कहते हैं।	३८०	जानबूझकर सच को झूठ कहना और सच की ओर लौटने में अपने संदेह को कारण बताना सम्मान नहीं दिलाता; यह दोनों जहानों में घोर अपमान का कारण है।	६१५
शब्द "नअम" (हाँ) किसी कथन के बाद पुष्टि के लिए और आदेश या निषेध के बाद वादे के लिए होता है।	३८०		

احکام / تفصیلات	ص	تفصیل صفحہ
وراثتِ زوجہ ضروریاتِ دین سے ہے اور تمام فرقِ اسلام کا اس پر اجماع ہے۔	۷۴۱	لفظ "میکنم" محض حال کے لئے اور لفظ "کنم" محض مستقبل کے لئے، جبکہ عربی میں لفظ "اطلق" حال و مستقبل میں دائر ہے۔ ۵۸۸
یہ کہنا کہ زوجیت شرع میں ذریعہ وراثت نہیں کلمہ کفر ہے۔	۷۴۱	**لغت**
عروضِ جذام کو مزیلِ نکاح سمجھ کر عورت استحقاقِ وراثت کا انکار جہل و سفاہت ہے۔	۴۷۲	فارغ خطی کے اصلی معنی اور باب طلاق میں اس کے استعمال اور معنی کی تشریح۔ ۵۶۴
"کسی مصلحت سے اپنی عورت کی زوجیت سے انکار کیا تو جھوٹے حلف پر گنہگار ہوا، عورت کا نکاح باقی ہے اور ترکہ سے محروم نہ ہوگی۔"	۶۰۳	لا دعوی کا لفظ عربی لفظ "انک مجارۃ" کا ہم معنی ہے نیت ہو تو طلاق بائن ہوگی۔ ۵۷۴

تہذیب و تمدن

احکام / تفصیلات	ص	تفصیل صفحہ
		لفظ وطن لفظ بلد وقریہ سے عام ہے۔
ان شہروں میں یہ متعارف ہے کہ جوڑا دولہا کی جانب سے دلہن کو بھیجا جاتا ہے بایں امید کہ ادھر سے بہت زیور وغیرہ ملے گا لہذا جوڑے بہت گراں قیمت اور اس کے ہمراہ اور کچھ بھی بھیجا جاتا ہے اور صراحت بھی ہوتی ہے کہ ادھر سے دوسو کا جائے گا تو اُدھر سے چار سو کا آئیگا۔ اس صورت میں کیا جُدائی پر واپس لیا جا سکتا ہے یا نہیں، اور اگر ہلاک کر دے تو کیا حکم ہوگا۔	۲۰۲	لفظ "سروکار" کے لغوی معانی۔ ۶۳۲
جہیز ہمارے بلاد کے عرفِ عام شائع میں خاص ملکِ زوجہ ہوتا ہے جس میں شوہر کا کچھ حق نہیں طلاق ہوئی تو کُل لے لے گی اور مرگئی تو اسی کے ورثاء پر تقسیم ہوگا۔	۲۰۳	**ترغیب و ترہیب**
بلاد شام وغیرہ میں اس امید پر مہر بڑھاتے ہیں کہ عورت کثیر جہیز لائے گی۔	۲۰۴	"جو شخص شریعتِ مطہرہ کے فتوی پر عمل نہ کریگا گنہگار و مستحقِ سزا و عذاب ہے۔" ۵۸۵
		نحو ۶۱۵

احکام / تفصیلات ص		تفصیل صفحہ
	مسئلہ شرعیہ میں غلط اعتراف کی ترغیب پر سرزنش۔	
	دانستہ حق کو باطل اور حق سے رجوع کرنے	
بعض اطراف ہند کے بلاد میں فاعل فعل متعدی کے ساتھ بھی لفظ "نے" نہیں کہتے ، مثلاً تو کیا بولتے ہیں۔ ۳۸۰	اس میں اپنا شبہ بتانا موجب عزت نہیں دارین میں سخت ذلت کا باعث ہے۔	۶۱۵
لفظ نعم (ہاں) خبر کے بعد تصدیق کے لئے اور امر و نہی کے بعد وعدہ کے لئے ہوتا ہے۔ ۳۸۰		

Fatawa Razawiya --- Volume 12

Subject	Ref	Subject	Page
One who attributes turning away from the truth to holy figures is disrespectful and deficient in religion.	615	Ibn Ishaq is an impostor and a liar.	396
Those who make changes or alterations in an inquiry (Istifsa) are sinners; they should fear God.	652	**Permissibility and Prohibition (Hazr-o-Ibahat)**	
Calculation (Hisab)		Is it a good deed to forgive the dower (Mahr) or not?	139
The Fatimi Mahr was four hundred Mithqal of silver, which amounts to one hundred and sixty rupees in today's currency.	125	Marriage (Nikah) was contracted on a certain Mahr; can the husband now increase the Mahr? If yes, what are the conditions for it?	162
Calculation of Dinar and Dirham from current currency.	137	Based on the false news that the in-laws would poison her, the parents kept 'Hind' back. Their intention is to receive the Mahr and marry her elsewhere. Half of the Mahr is prompt (Mu'ajjal) and half is deferred (Ghair Mu'ajjal). There is no time limit for prompt Mahr. Is it permissible to hold her back, collect the Mahr before divorce, or marry her elsewhere?	173
What is the value in today's currency of the Shariah Mahr for virtuous daughters, which is four hundred Mithqal of silver?	172	What is the ruling regarding matters decided by the community that are outside the Shariah?	177
The Mahr of the Mothers of the Believers, except for Umm Habiba (R.A.), was five	173	If a wife realizes that reconciliation is impossible, is it permissible for her to waive	177

Subject	Ref	Subject	Page
hundred Dirhams. How much does this amount to in current currency? Please clarify the weights of Dirham, Uqiya, Mithqal, and Dinar.		her entire Mahr or return what she received for her release?	
How many rupees in current currency are equivalent to ten Shariah Dirhams?	173	According to status and income, what is the maximum permissible Shariah Mahr to be fixed, and is there any accountability for a Mahr exceeding one's status?	177
Biographies of Narrators (Asma-ur-Rijal)		If the wife's heirs get her Mahr forgiven by the husband or his heirs, will it be legally (Shariah) valid or not?	177
Imam Malik and Imam Hisham bin Urwah are from the Tabi'een (Successors), and they are far superior to Imam Bukhari in the fields of Hadith and Fiqh.	396	It is strictly forbidden (Haram) for a husband to force his wife to forgive the Mahr, and doing so will not result in it being forgiven.	180

विषय	संदर्भ	विषय	पृष्ठ
वह जो पवित्र हस्तियों की ओर सत्य से मुड़ने का श्रेय देता है, वह असभ्य और धर्म में त्रुटिपूर्ण है।	615	इब्न इशाक एक दज्जाल और झूठा है।	396
पूछताछ (इस्तिफ़सा) में हेरफेर करने वाले पापी हैं; उन्हें ईश्वर से डरना चाहिए।	652	**वर्जना और अनुमति (हज़र-ओ-इबाहत)**	
हिसाब		मेहर माफ कर देना नेक काम है या नहीं।	139
मेहर-ए-फातिमी चार सौ मिस्क़ाल चांदी था, जो आज के रुपयों में एक सौ साठ रुपये होता है।	125	निकाह एक निश्चित मेहर पर हुआ; क्या अब पति मेहर में वृद्धि कर सकता है? यदि हाँ, तो इसकी शर्तें क्या हैं।	162
प्रचलित मुद्रा से दीनार और दिरहम का हिसाब।	137	इस झूठी खबर पर कि ससुराल वाले ज़हर दे देंगे, मायके वालों ने 'हिंदा' को रोक रखा है। उनका इरादा मेहर वसूल करके दूसरी जगह शादी कर देने का है। आधा मेहर मुअज्जल (त्वरित) है और आधा गैर मुअज्जल (विलंबित)। मुअज्जल की समय सीमा नहीं है। क्या उसे रोक कर रखना, तलाक से पहले मेहर वसूल करना, या दूसरी जगह शादी करना जायज है?	173
शरीअत का मेहर जो नेक बेटियों के लिए चार सौ मिस्क़ाल चांदी है, आज के सिक्के के हिसाब से कितने रुपये हुए।	172	जो मामले बिरादरी द्वारा तय किए जाएं और शरीयत से बाहर हों, तो उनके बारे में क्या हुक्म है।	177
उम्मुल मोमिनीन (सदाचारिणी पत्नियों) का मेहर, उम्मे हबीबा	173		177

विषय	संदर्भ विषय	पृष्ठ
(रज़ि.) के अलावा, पाँच सौ दिरहम था। वे प्रचलित मुद्रा के अनुसार कितने होते हैं? दिरहम, उकिया, मिस्क़ाल और दीनार के वजन स्पष्ट किए जाएं।	यदि पत्नी यह जान ले कि निबाह नहीं होगा, तो अपनी मुक्ति के लिए कुल मेहर छोड़ देना और लिया हुआ वापस कर देना क्या जायज है?	
दस शरीई दिरहम प्रचलित मुद्रा के कितने रुपये होते हैं। 173	हैसियत और आमदनी के अनुसार अधिक से अधिक कितना शरीई मेहर बांधना जायज है और हैसियत से अधिक मेहर होने पर क्या कोई जवाबदेही है।	177
अस्मा-उर-रिजाल (वर्णनकर्ताओं की जीवनी)	यदि पत्नी के उत्तराधिकारी पति या पति के उत्तराधिकारियों से उसका मेहर माफ करवा लें, तो क्या यह शरीयत के अनुसार जायज होगा या नहीं?	177
इमाम मालिक और इमाम हिशाम बिन उरवा तब-ए-ताबईन में से हैं और वे हदीस और फ़िक़ह के ज्ञान में इमाम बुखारी से कहीं श्रेष्ठ हैं। 396	पति के लिए यह पूर्णतः हराम है कि वह पत्नी पर मेहर माफ करने के लिए दबाव डाले, और ऐसा करने से वह माफ नहीं होगा।	180

مضمون	نمبر شمار	صفحہ
مقدس ہستیوں کی طرف رجوع عن الحق کی نسبت کرنے والا بے ادب مختل الدین ہے۔	۶۱۵	۳۹۶
استفساء میں تغیر و تبدل کرنے والے گنہگار ہیں انہیں خوفِ خدا چاہیے۔	۶۵۲	
حساب		
مہر فاطمی چار سو مثقال چاندی تھا، آج کل کے روپے سے ایک سو ساٹھ روپے۔	۱۲۵	
سکہ رائج سے دینار و درم کا حساب۔	۱۳۷	
حظر واباحت		
مہر معاف کر دینا نیک کام ہے یا نہیں۔		۱۳۹
نکاح (ماسہ عدہ) مہر پر ہوا اب شوہر مہر میں اضافہ کر سکتا ہے یا نہیں، اگر کر سکتا ہے تو اس کے کیا شرائط ہیں۔		۱۶۲
میکے والوں نے محض جھوٹی خبر پر کہ سسرال والے زہر دے دیں گے ہندہ کو روک رکھا ہے ان کا ارادہ مہر وصول کر کے دوسری جگہ شادی کر دینے کا ہے، نصف مہر معجل ہے اور نصف غیر معجل، معجل میں زمانہ کی کوئی حد نہیں اسے		۱۷۳

مضمون	نمبر شمار	مضمون	صفحہ
		روک رکھنا قبل طلاق مہر وصول کرنا، دوسری جگہ شادی کرنا جائز ہے یا نہیں۔	
مہر شرعی جو بناتِ صالحات کا چار سو مثقال چاندی ہے آج کل کے سکہ سے کتنے روپے ہوئے۔	۱۷۲	جو معاملات برادری سے طے ہوں اور شریعت سے باہر ہوں تو کیا حکم ہے۔	۱۷۷
مہر ازواج مطہرات سوائے ام حبیبہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے کہ پانچ سو درہم ہے سکہ مروجہ سے کس قدر ہوتے ہیں، وزن درہم اور اوقیہ اور مثقال اور دینار کی صراحت فرمائی جائے۔	۱۷۳	اگر زوجہ یہ جانے کہ نباہ نہ ہو گا تو اپنی خلاصی کے لئے کل مہر چھوڑ دے اور لیا ہوا واپس دے دے تو جائز ہے۔	۱۷۷
دس درم شرعی کے سکہ مروجہ سے کے روپے ہوتے ہیں۔	۱۷۳	حسب حیثیت تنخواہ زائد سے زائد کتنے کا مہر شرعی باندھنا جائز ہے اور حیثیت سے زائد مہر ہونے کا کچھ مواخذہ ہے۔	۱۷۷
اسماء الرجال		عورت کے ورثاء سے اس کا مہر شوہر یا ورثائے شوہر بخشوا لیں تو شرعاً جائز ہو گا یا نہیں۔	۱۷۷

مضمون	نمبر شمار	مضمون	صفحہ
امام مالک اور امام ہشام بن عروہ تبع تابعین سے ہیں اور امام بخاری سے علم حدیث و علم فقہ میں بدرجہا افضل ہیں۔	۳۹۶	شوہر پر حرام قطعی ہے کہ زوجہ پر معافی مہر کا جبر کرے، اور نہ ایسا کرنے سے معاف ہو گا۔	۱۸۰

Fatawa Razawiya, Volume 12

Rulings / Descriptions	Page	Rulings / Descriptions	Page
By the rule of integrity, in the absence of a guardian, it is Shariah-compliant for the elder heirs to look after the minor heirs, buy them food and drink, and spend their wealth on these matters without extravagance or waste, provided the children are with them.	212	Restricting a woman and causing her harm is prohibited by the command of the Quran.	270
Spending or disposing of someone else's property without permission or authority is unlawful.	212	Is there any harm if the husband sees the wife's private parts during intercourse? Similarly, if he touches them.	270
In several cases, disposal of another's property without permission or authority is permissible.	212	Is there any harm if the woman touches the husband's genital organ?	270
One who performs an act of charity or favor will not receive compensation from anyone.	215	Seeing the private parts during intercourse is prohibited and a cause of blindness.	271
What is the ruling on offerings (Chadhawa)? Is it permissible or not?	259	If a woman faces danger to her life from her husband, she cannot be forced to stay with him, and in this case, she is not considered disobedient (nashizah).	278
The ruling on the 'lagan' (ceremonial bowl) and whose property it is.	259	Gentleness and good character with wives, patience with their bad temper, seeking their heart's content, and respecting their rights that are not contrary to Shariah are beloved by Shariah.	273
The ruling on kissing.	267	Can a guardian prevent a girl who apparently cannot tolerate	280

Rulings / Descriptions	Page
Rulings on taking the breast in the mouth.	267
Kissing the wife is Sunnah and recommended if the intention is good, then one will receive a reward for it.	268
If the woman is not lactating, it is permissible for the husband to take her breast in his mouth.	268
If the wife is heavily lactating, or if there is a fear that milk will enter the throat, then taking the breast in the mouth is disliked (Makruh).	268
intercourse from going to her husband's house?	
A father betrothed his young daughter to a boy, and after some time, broke it off and betrothed her to another. Is this permissible, and is the consent and permission of the boy to whom she was first betrothed necessary?	281
Is the money people take at the time of betrothal or marriage halal (permissible) or not?	284
Undue violence and oppression are unlawful and a cause of destruction.	290
Details of various forms of marriage and their rulings.	291

फ़तावा रज़विया, खंड १२

नियम / विवरण	पृष्ठ
निष्ठा के नियम के अनुसार, वसीयतकर्ता की अनुपस्थिति में, बड़े वारिसों के लिए नाबालिग वारिसों का पालन-पोषण करना, उनके लिए खाने-पीने की चीजें खरीदना और इन मामलों में फिजूलखर्ची और बर्बादी के बिना उनका धन खर्च करना शरीयत के अनुसार जायज़ है, बशर्ते कि बच्चे उनके साथ हों।	२१२
बिना अनुमति या अधिकार के दूसरे की संपत्ति में हस्तक्षेप करना नाजायज़ है।	२१२
कई स्थितियों में बिना अनुमति या अधिकार के दूसरे की संपत्ति का निपटान जायज़ है।	२१२
दान या उपकार करने वाला किसी से मुआवजा नहीं पाएगा।	२१५
चढ़ावे का क्या हुक्म है, क्या यह जायज़ है या नहीं?	२५९
लगन का हुक्म और यह कि वह किसकी मिल्कियत है।	२५९
औरत पर सख्ती करना और उसे नुकसान पहुँचाना कुरान के आदेशानुसार वर्जित है।	२७०
क्या पति संभोग के समय पत्नी के गुप्तांग को देखे तो कोई हर्ज है? इसी तरह अगर उसे छुए।	२७०
क्या औरत पति के जननांग को छुए तो हर्ज है?	२७०
संभोग के समय गुप्तांग को देखना वर्जित है और अंधापन का कारण है।	२७१
यदि किसी महिला को अपने पति से जान का खतरा हो, तो उसे उसके पास रहने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता, और इस स्थिति में वह नाशिज़ा (अवज्ञाकारी) भी नहीं है।	२७८
पत्नियों के साथ नरमी और सुशीलता, उनके बुरे स्वभाव पर धैर्य, उनकी प्रसन्नता प्राप्त करना और उनके अधिकारों का सम्मान करना जो	२७३

नियम / विवरण	पृष्ठ
बोसे (चुंबन) का हुक्म।	२६७
स्तन को मुँह में लेने के अहकाम।	२६७
बीवी का बोसा सुन्नत और मुस्तहब है अगर नीयत नेक हो, तो उस पर सवाब मिलेगा।	२६८
अगर औरत दूध वाली न हो तो उसका स्तन मुँह में लेना पति के लिए जायज़ है।	२६८
अगर बीवी ज्यादा दूध वाली है या यह अंदेशा है कि दूध गले में जाएगा तो स्तन मुँह में लेना मकरूह है।	२६८
पृष्ठ ९५ का ६८८	

नियम / विवरण	पृष्ठ
शरीयत के खिलाफ न हों, शरीयत में प्रिय है।	
क्या एक अभिभावक ऐसी लड़की को, जो जाहिरा तौर पर संभोग सहन नहीं कर सकती, अपने पति के घर जाने से रोक सकता है?	२८०
एक पिता ने अपनी जवान बेटी की मंगनी एक लड़के से की, कुछ समय बाद उसे तोड़कर दूसरे से कर दी, क्या यह जायज़ है, और क्या इसमें उस लड़के की अनुमति और रजामंदी जरूरी है जिससे पहले मंगनी की गई थी?	२८१
मंगनी या निकाह के समय लोग जो रुपया लेते हैं वह हलाल है या नहीं?	२८४
हिंसा और अनुचित सख्ती नाजायज़ और हलाकत (विनाश) का कारण है।	२९०
निकाह की विभिन्न सूरतों और उनके अहकाम का विवरण।	२९१

احکام / تفصیل صفحہ		احکام / تفصیل صفحہ	
بحکم دیانت بحالت عدم وصی وارثان کبیر کو وارثان صغیر کی پرورش کرنا، ان کے کھانے پینے کی چیزیں ان کے لئے خریدنا اور ان امور میں ان کا مال بے اسراف و تبذیر ان پر اٹھانا شرعاً جائز ہے جبکہ وہ بچے ان کے پاس ہوں۔	۲۱۲	عورت پر تنگی کرنا اور اسے ضرر پہونچانا بحکم قرآن ممنوع ہے۔	۲۷۰
غیر کے مال میں اذن و ولایت تصرف ناجائز ہے۔	۲۱۲	شوہر شرمگاہ زن وقت جماع دیکھے تو کچھ حرج ہے؟ یونہی اگر مس کرے۔	۲۷۰
چند صورتوں میں بلا اذن و ولایت مالِ غیر تصرف جائز ہے۔	۲۱۲	کیا عورت شوہر کے آلۂ تناسل کو چھوئے تو حرج ہے۔	۲۷۰
تبرع اور احسان کرنے والا کسی سے مجرانہ پائیگا۔	۲۱۵	بوقت جماع رویت فرج ممنوع اور نابینائی کا سبب ہے۔	۲۷۱
چڑھاوے کا کیا حکم ہے آیا جائز ہے یا نہیں۔	۲۵۹	عورت کو شوہر سے جان کا خطرہ ہو تو اس کے یہاں رہنے پر مجبور نہیں کی جاسکتی، اور اس صورت میں ناشزہ بھی نہیں۔	۲۷۸

احکام / تفصیل	صفحہ
لگن کا حکم اور یہ کہ وہ کس کی ملک ہے۔	۲۵۹
بوسہ کا حکم۔	۲۶۷
چھاتی منہ میں لینے کے احکام۔	۲۶۷
بیوی کا بوسہ مسنون و مستحب ہے اگر نیت صالحہ ہو، تو اس پر اجر پائے گا۔	۲۶۸
عورت اگر دودھ والی نہ ہو تو اس کا پستان منہ میں لینا شوہر کے لئے جائز ہے۔	۲۶۸

احکام / تفصیل	صفحہ
بیبیوں کے ساتھ نرمی اور خوش خلقی، انکی بدخوئی پر صبر، اُن کی دلجوئی، ان کے مراعات جو خلافِ شرع نہ ہو محبوب شرع ہے۔	۲۷۳
ایسی لڑکی جو بظاہر جماع کی متحمل نہیں ہوسکتی اس صورت میں اس کا ولی اُسے شوہر کے یہاں جانے سے روک سکتا ہے یا نہیں۔	۲۸۰
باپ نے اپنی جوان لڑکی کی نسبت ایک لڑکے سے کردی، کچھ عرصہ کے بعد اس سے چھڑا کر دوسرے سے کردی، کیا یہ جائز ہے، اور کیا اس میں اس لڑکے کی اجازت و رضا مندی ضروری ہے جس سے پہلے نسبت کی تھی۔	۲۸۱
نسبت یا نکاح کے وقت جو روپیہ لوگ لیتے ہیں حلال ہے یا نہیں۔	۲۸۴
تشدد و بیجا نا جائز اور سبب ہلاک ہے۔	۲۹۰

احکام / تفصیل صفحہ		احکام / تفصیل صفحہ	
اگر بیوی زیادہ دودھ والی ہے ورنہ خدشہ ہے کہ دودھ حلق میں جائے گا تو پستان منہ میں لینا مکروہ ہے۔	۲۶۸	نکاح کی مختلف صور اور ان کے احکام کی تفصیل۔	۲۹۱

Fatawa Ridawiyya, Volume 12

Topic / Description	Page No.	Topic / Description	Page No.
For which woman marriage is prohibited and unlawful.	291	Leaving the tail of the turban (shamla) is Sunnah, but where the ignorant mock it, later scholars have preferred to avoid it outside of prayer.	314
For which woman marriage is absolutely forbidden (Haram-e-Qati).	291	It is recommended (Mustahab) to divorce a promiscuous woman.	321
Encouraging marriage to which woman is against Sharia and a sin.	291	It is not necessary to divorce a woman due to her bad temper; rather, one should try to endure it as much as possible. If it is for religious necessity, only one divorce should be given.	328
For which woman marriage is mandatory (Wajib).	291	Even if one is not able to pay the mahr (dowry) of a prayerless woman, it is still recommended to divorce her.	331
For which woman marriage is an absolute obligation (Farz-e-Qati).	291	If parents command a divorce, it becomes mandatory (Wajib) to divorce.	332
Women for whom marriage is Farz or Wajib will be compelled to marry.	291	Disobedience to parents is forbidden (Haram).	332
Women for whom marriage is Farz or Wajib will be sinners if they don't marry themselves, and guardians will also be sinners if they don't try their best.	291	With three divorces, a woman becomes 'Mughallaza' (irrevocably divorced) and requires 'Halala' to remarry the same husband.	332
Marriage becomes Farz and Wajib for a man only when he possesses the means for mahr and maintenance, otherwise,	292	Cohabitation after such a divorce is adultery (Zina). If done knowingly, they are adulterers, children are illegitimate, and deprived of paternal inheritance,	389

Topic / Description	Page No.	Topic / Description	Page No.
he will be a sinner for abandoning marriage.		and such a person is unfit for leadership (Khilafat) or being a spiritual successor (Sajjada Nashini).	
If there's a fear of committing adultery if not married, but a fear of oppression and cruelty if married, then marriage will not be Farz.	292	Turning truth into falsehood or falsehood into truth by telling lies is a characteristic of the Jews.	399
Oppression and cruelty are sins related to 'Huquq-ul-Ibaad' (rights of servants), while abstaining from adultery relates to 'Huquq-Allah' (rights of Allah).	293	Not caring about Halal and Haram in order to follow false customs is the habit of disbelievers.	399
According to the Hadith, backbiting is a more severe sin than adultery.	293	A Sharia matter is not a place for mockery; anyone doing so is a sinner and repentance is mandatory (Farz) for them.	399
Dissemination of knowledge is mandatory (Farz) and concealment of knowledge is forbidden (Haram).	312	Cohabiting with a woman without nikah in 'Talaq-e-Bain', or after 'Iddah' in 'Raj'i' without nikah, and after three divorces without 'Halala', is absolutely forbidden (Haram-e-Qati). All those who support such a person are sinners and transgressors (Fasiq).	462
Speak to people according to their understanding.	312	Following a 'Fasiq' (transgressor) is unlawful and its follower is a sinner.	462

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

विषय / विवरण	पृष्ठ संख्या	विषय / विवरण	पृष्ठ संख्या
किस महिला के लिए निकाह मना और नाजायज है।	२९१	इमामे (पगड़ी) का शमला (पूंछ) छोड़ना सुन्नत है, लेकिन जहां अज्ञानी इस पर हंसते हों, वहां बाद के विद्वानों ने नमाज़ के बाहर इससे बचने को चुना है।	३१४
किस महिला से निकाह करना निश्चित रूप से हराम (हराम-ए-क़तई) है।	२९१	व्याभिचारी महिला को तलाक़ देना मुस्तहब (सराहनीय) है।	३२१
किस महिला को निकाह की प्रेरणा देना शरीयत के खिलाफ और गुनाह है।	२९१	महिला के बुरे स्वभाव पर उसे तलाक़ देना ज़रूरी नहीं है, बल्कि जहाँ तक संभव हो निबाह करना चाहिए, अगर धार्मिक आवश्यकता के कारण हो तो केवल एक तलाक़ दिया जाए।	३२८
किस महिला के लिए निकाह करना वाजिब है।	२९१	नमाज़ न पढ़ने वाली महिला का महर अदा करने की शक्ति न होने पर भी तलाक़ देना मुस्तहब है।	३३१
किस महिला के लिए निकाह करना फर्ज़-ए-क़तई है।	२९१	अगर माता-पिता तलाक़ का आदेश दें, तो तलाक़ देना वाजिब है।	३३२
जिन महिलाओं पर निकाह फर्ज़ या वाजिब है, उन्हें निकाह के लिए मजबूर किया जाएगा।	२९१	माता-पिता की अवज्ञा हराम है।	३३२
जिन महिलाओं पर निकाह फर्ज़ और वाजिब है, अगर वे स्वयं नहीं करेंगी तो गुनहगार होंगी, और अगर वली	२९१	तीन तलाक़ से महिला 'मुग़ल्ज़ह' हो जाती है और हलाला के बाद ही पुनः निकाह के योग्य होती है।	३३२

विषय / विवरण	पृष्ठ संख्या
(अभिभावक) अपनी पूरी कोशिश नहीं करेंगे तो वे भी गुनहगार होंगे।	
पुरुष पर निकाह उसी समय फर्ज़ और वाजिब होगा जब वह महर और भरण-पोषण (नफ़क़ह) का मालिक हो, अन्यथा वह निकाह छोड़ने पर गुनहगार होगा।	२९२
यदि निकाह न करने पर ज़िना में पड़ जाने का डर हो और निकाह करने पर जुल्म और अत्याचार का डर हो, तो निकाह फर्ज़ नहीं होगा।	२९२
ज़ुल्म और अत्याचार ऐसा गुनाह है जिसका संबंध 'हुक़ूक़-उल-इबाद' (बन्दों के अधिकार) से है और ज़िना से दूर रहना 'हुक़ूक़-अल्लाह' (अल्लाह के अधिकार) से है।	२९३
हदीस के अनुसार ग़ीबत (पीठ पीछे बुराई), ज़िना से भी सख्त गुनाह है।	२९३
ज्ञान का प्रचार फर्ज़ है और ज्ञान को छुपाना हराम है।	३१२
ऐसी तलाक़शुदा महिला से संभोग ज़िना (व्यभिचार) है, यदि जानते हुए ऐसा किया गया तो वे ज़ानी हैं, संतान अवैध है और पिता की विरासत से वंचित है, और ऐसा व्यक्ति खिलाफत और सज्जादा नशीनी के योग्य नहीं है।	३८९
झूठ बोलकर हक़ को नाहक़ या नाहक़ को हक़ बनाना यहूदियों की विशेषता है।	३९९
झूठी रस्मों का पालन करने के लिए हलाल और हराम की परवाह न करना काफिरों की आदत है।	३९९
शरीयत का मसला मज़ाक की चीज़ नहीं है, ऐसा करने वाला गुनहगार है और उस पर तौबा फर्ज़ है।	३९९
तलाक़-ए-बाइन में बिना निकाह के और रजी में इद्दत के बाद बिना निकाह के और तीन तलाक़ में बिना हलाला के महिला से मिलना निश्चित रूप से हराम है। ऐसे व्यक्ति का साथ देने वाले सभी लोग हराम के अपराधी और फासिक हैं।	४६२

विषय / विवरण	पृष्ठ संख्या	विषय / विवरण	पृष्ठ संख्या
लोगों से वह बातें कही जाएं जिन्हें वे समझ सकें।	३१२	फासिक (पापी/अवज्ञाकारी) का अनुसरण करना नाजायज है और उसका अनुयायी गुनहगार है।	४६२

موضوع / تفصیل	صفحہ نمبر
کس عورت کو نکاح ممنوع و ناجائز ہے۔	۲۹۱
کون سی عورت کو نکاح حرام قطعی ہے۔	۲۹۱
کس عورت کو نکاح کی ترغیب دینا خلاف شرع و معصیت ہے۔	۲۹۱
کس عورت کو نکاح کرنا واجب ہے۔	۲۹۱
کس عورت کو نکاح کرنا فرضِ قطعی ہے۔	۲۹۱
	۲۹۱
عمامہ کا شملہ چھوڑنا سنت ہے مگر جہاں جُہال اس پر ہنستے ہوں وہاں علماء متاخرین نے غیر حالت نماز میں اس سے بچنا اختیار فرمایا۔	۳۱۴
فاحشہ عورت کو طلاق دینی مستحب ہے۔	۳۲۱
عورت کی کج خلقی پر اسے طلاق دینا ضروری نہیں بلکہ حتی الامکان نباہ کیا جائے، اگر بضرورت دینی ہی ہو تو صرف ایک طلاق دی جائے۔	۳۲۸
بے نمازی عورت کے ادائے مہر پر قادر نہ ہو تب بھی طلاق دینا مستحب ہے۔	۳۳۱
ماں باپ طلاق کا حکم دیں تو طلاق دینی واجب ہے۔	۳۳۲
والدین کی نافرمانی حرام ہے۔	۳۳۲

موضوع / تفصیل	صفحہ نمبر
جن عورتوں پر نکاح فرض یا واجب ہوا انہیں نکاح پر مجبور کیا جائے گا۔	
جن عورتوں پر نکاح فرض و واجب ہو وہ اگر خود نہ کریں گی گنہگار ہوں گی اور اولیاء اگر مقدور بھر کوشش نہ کریں تو وہ بھی گنہگار ہوں گے۔	۲۹۱
مرد پر نکاح اسی وقت فرض و واجب ہو گا جب وہ مہر نفقہ کا مالک ہو ورنہ وہ ترک نکاح پر گنہگار ہو گا۔	۲۹۲
اگر نکاح نہ کرے تو زناء میں مبتلاء ہونے کا خوف ہے اور اگر کرے تو جور و ظلم کا ڈر ہے تو نکاح فرض نہ ہو گا۔	۲۹۲
	۲۹۳

موضوع / تفصیل	صفحہ نمبر
تین طلاق سے عورت مغلظہ قابلِ حلالہ ہو جاتی ہے۔	۳۳۲
ایسی عورت سے طلاق کی، ہمبستری زنا ہے، اگر مسئلہ جانتے ہوئے ایسا کیا تو زانی، اولاد ولد الزناء اور ترکہ پدری سے محروم اور ایسا شخص قابلِ خلافت و سجادہ نشینی نہیں۔	۳۸۹
جھوٹی باتیں کہہ کر حق کو ناحق یا ناحق کو حق بنانا یہودیوں کی خصلت ہے۔	۳۹۹
رسمِ باطل کی پیروی کے لئے حلال و حرام کی پروانہ کرنا کافروں کی عادت ہے۔	۳۹۹

موضوع / تفصیل	صفحہ نمبر
جور و ظلم ایسی معصیت ہے جس کا تعلق حقوق العباد سے اور زناء سے باز رہنا حقوق اللہ سے ہے۔	
بحکم حدیث غیبت، زنا سے سخت تر گناہ ہے۔	۲۹۳
اشاعت علم فرض اور کتمانِ علم حرام ہے۔	۳۱۲
لوگوں سے وہ باتیں کہی جائیں جنہیں وہ سمجھیں۔	۳۱۲
مسئلہ شرعیہ محلِ استہزاء نہیں ہوتا، ایسا کرنے والا گنہگار ہے اس پر توبہ فرض ہے۔	۳۹۹
طلاقِ بائن میں بے نکاح، اور رجعی میں بعد عدت بے نکاح اور تین میں بے حلالہ	
عورت سے ملنا حرام قطعی، جتنے لوگ ایسے شخص کے شریک ہوں سب مرتکبِ حرام فاسق۔	۴۶۲
فاسق کی تقلید ناجائز اور اس کا مقلد گنہگار ہے۔	۴۶۲

Fatawa Razawiyya, Volume 12

462 | Customary judiciary, i.e., the office of performing marriages, should also not be entrusted to a transgressor (fasiq). | 559 | When Zaid has given three divorces, it is purely forbidden (haram) for the divorced woman to go to him. 462 | A transgressor (fasiq) has no credibility in religious matters, nor can there be any assurance in anything regarding him. | 570 | People of knowledge do not ask for references for self-evident truths. 462 | What is the ruling if a person marries his divorced sister-in-law after giving three divorces to his wife? | 570 | An ignorant person asking for a reference, especially with the text, is a sign of disrespect. 463 | Keeping a non-mahram woman in one's house without marriage and being in seclusion with her is transgression (fisq). | 593 | Drinking the wife's milk is forbidden (haram). 463 | The custom of giving 'malikana' (ownership fee) for divorce - both taking and giving it are forbidden (haram). | 595 | After an irrevocable divorce (talaq al-ba'in), sexual intercourse with the woman is forbidden (haram) without a renewal of marriage (tajdid-e-nikah). 464 | If someone marries a woman who already has a husband while knowing it, or did it unknowingly but did not leave her after finding out, then he is an adulterer (zani). | 638 | A woman upon whom iddah (waiting period) is obligatory, if she marries another man before the period passes, it is illegitimate, void, adultery, and forbidden. 467 | If the intention is to give divorce after a few days, it will not be mut'ah (temporary marriage), but making it a habit or encouraging people towards it is not permissible. | Virtues and Merits 468 | Mut'ah marriage and temporary (muwaqqat) marriage are not valid. | 112 | Imam Abu Yusuf is not equal to Imam al-Azam in terms of knowledge. 468 | Divorce without a Shariah-based necessity is forbidden in Shariah. | 112 | A matter that was not resolved in the presence of Imam al-Azam will remain unsettled until the Day of Judgment. 469 | There is Shariah permission to keep up to four wives at a time; more than that can never be gathered. | 112 | Imam Abu Yusuf says: In a matter where there is no saying of our teacher, we are in a state of distress. 476 | If the husband is old and unable to fulfill the rights, it is mandatory (fard) for him to give a divorce, but the woman cannot marry another without being divorced. | 112 | It is reported from Imam Abu Yusuf: I used to think in some matters that the Hadith is on my side, but after investigation, it would be revealed that the Hadith based on which the Imam (al-Azam) spoke, I had not even dreamt of it. 487 | A man who cannot fulfill a woman's rights, it is mandatory for him to give a divorce, otherwise, he will be a sinner and deserving of punishment. |

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

462 | क़ज़ा-ए-उर्फ़ यानी निकाह पढ़वाने का पद भी किसी फ़ासिक (पापी) को नहीं सौंपा जाना चाहिए। | 559 | जब ज़ैद ने तीन तलाक़ दे दिए हों, तो तलाक़शुदा महिला का उसके पास जाना पूरी तरह हराम है। 462 | धार्मिक मामलों में फ़ासिक का कोई भरोसा नहीं है, न ही किसी बात में उस पर इत्मीनान किया जा सकता है। | 570 | विद्वान लोग स्वयं-सिद्ध सत्यों (बदीहियात) के लिए संदर्भ नहीं मांगा करते। 462 | अगर कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को तीन तलाक़ देकर अपनी तलाक़शुदा साली से निकाह कर ले तो क्या हुक्म है? | 570 | एक अज्ञानी व्यक्ति का संदर्भ मांगना, वह भी इबारत के साथ, बुरा शिष्टाचार (सू-ए-अदब) है। 463 | बिना निकाह के किसी ग़ैर-महरम महिला को अपने घर में रखना और उसके साथ एकांत में रहना फ़िस्क़ (पाप) है। | 593 | पत्नी का दूध पीना हराम है। 463 | तलाक़ के लिए 'मालिकाना' देने का जो रिवाज़ है, उसे लेना और देना दोनों हराम हैं। | 595 | तलाक़-ए-बाइन के बाद बिना निकाह के नवीनीकरण (तजदीद-ए-निकाह) के महिला से संभोग हराम है। 464 | विवाहित महिला से यह जानते हुए भी निकाह करना, या अनजाने में कर लेना और पता चलने पर उसे न छोड़ना, तो ऐसा व्यक्ति व्यभिचारी (ज़ानी) है। | 638 | जिस महिला पर इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) अनिवार्य हो, अगर वह अवधि बीतने से पहले किसी दूसरे पुरुष से निकाह करती है, तो यह नाजायज़, अमान्य, व्यभिचार और हराम है। 467 | यदि नीयत यह हो कि कुछ दिनों बाद तलाक़ दे दूँगा, तो यह मुतअ (अस्थायी विवाह) नहीं होगा, लेकिन ऐसी आदत बनाना या लोगों को इसके लिए प्रोत्साहित करना जायज़ नहीं है। | फ़ज़ाइल ओ मुनाक़िब (गुण और विशेषताएं) 468 | निकाह-ए-मुतअ और निकाह-ए-मुवक़्क़त (अस्थायी विवाह) सही नहीं हैं। | 112 | इमाम अबू यूसुफ़ ज्ञान में इमाम-ए-आज़म के बराबर नहीं हैं। 468 | बिना शरई ज़रूरत के तलाक़ देना शरीयत में वर्जित है। | 112 | जो मसला इमाम-ए-आज़म की उपस्थिति में तय नहीं हुआ, वह क़यामत तक उलझा रहेगा। 469 | एक समय में चार पत्नियाँ रखने की शरई अनुमति है, इससे अधिक कभी एकत्र नहीं की जा सकतीं। | 112 | इमाम अबू यूसुफ़ फ़रमाते हैं: जिस मसले में हमारे उस्ताद का कोई कथन नहीं है, उसमें हम परेशान हाल हैं। 476 | यदि पति वृद्ध हो और पत्नी के अधिकारों को पूरा करने में सक्षम न हो, तो उस पर अनिवार्य है कि तलाक़ दे दे, लेकिन महिला बिना तलाक़ के दूसरा निकाह नहीं कर सकती। | 112 | इमाम अबू यूसुफ़ से वर्णित है: मैं कुछ मसलों में सोचता था कि हदीस मेरे पक्ष में है, लेकिन शोध के बाद पता चलता कि जिस हदीस के आधार पर इमाम साहब ने

फ़रमाया है, वह तो मेरे स्वप्न में भी नहीं थी। 487 | जो पुरुष महिला के अधिकार पूरे नहीं कर सकता, उस पर तलाक़ देना फ़र्ज़ है, अन्यथा वह गुनहगार और अज़ाब का पात्र होगा। |

पृष्ठ 97 का 688

فتاویٰ رضویہ، جلد دوازدہم

۴۶۲ | قضاء عرف یعنی نکاح خوانی کا عہدہ بھی فاسق کو تفویض نہ کرنا چاہئے۔ | ۵۵۹ | جب زید نے تین طلاقیں دے دیں تو مطلقہ کا اس کے پاس جانا حرام محض ہے۔ ۴۶۲ | فاسق کا امورِ دینیہ میں کچھ اعتبار نہیں، نہ اس پر کسی بات میں اطمینان۔ | ۵۷۰ | بدیہیات پر اہل علم حوالہ طلب نہیں کیا کرتے۔ ۴۶۲ | کوئی شخص اپنی بیوی کو طلاق ثلاثہ دے کر اپنی مطلقہ سالی سے نکاح کر لے تو کیا حکم ہے۔ | ۵۷۰ | جاہل کا حوالہ وہ بھی مع عبارت طلب کرنا سوء ادب ہے۔ ۴۶۳ | غیر محرم عورت کو بلا نکاح اپنے مکان میں رکھنا اور خلوت میں اس کے ساتھ ہونا فسق ہے۔ | ۵۹۳ | بیوی کا دودھ پینا حرام ہے۔ ۴۶۳ | طلاق کے لئے مالکانہ دینے کا جو رواج ہے اس کا لینا اور دینا دونوں حرام ہیں۔ | ۵۹۵ | طلاقِ بائن کے بعد بے تجدید نکاح مباشرت عورت سے حرام ہے۔ ۴۶۴ | خاوند والی عورت سے علم رکھنے کے باوجود نکاح کیا یا لاعلمی میں کیا اور علم آنے پر اس کو چھوڑا نہیں تو یہ زانی ہے۔ | ۶۳۸ | جس عورت پر عدت واجب ہو وہ مرورِ عدت سے قبل دوسرے مرد سے نکاح کرے تو ناجائز و باطل وزنا و حرام ہے۔ ۴۶۷ | نیت ہو کہ تھوڑے دنوں بعد طلاق دے دوں گا، تو یہ متعہ نہ ہو گا، لیکن ایسی عادت بنانا یا لوگوں کو اس کی ترغیب دینا جائز نہیں۔ | فضائل و مناقب ۴۶۸ | نکاحِ متعہ اور نکاح موقت صحیح نہیں۔ | ۱۱۲ | امام ابویوسف علما امام اعظم کے ہم پلہ نہیں۔ ۴۶۸ | بے ضرورت شرعیہ طلاق شرعاً ممنوع ہے۔ | ۱۱۲ | جو مسئلہ امام اعظم کے حضور طے نہ ہو لیا وہ قیامت تک مضطرب رہے گا۔ ۴۶۹ | ایک وقت چار تک عورتیں رکھنے کی شرعی اجازت ہے اس سے زائد کبھی جمع نہیں ہو سکتیں | ۱۱۲ | امام ابویوسف فرماتے ہیں جس مسئلہ میں ہمارے استاذ کا کوئی قول نہیں اس میں ہم پریشان حال ہیں۔ ۴۷۶ | شوہر بڑھا ہو اور عورت کے ادائے حقوق پر قادر نہ ہو تو اس پر

فرض ہے کہ طلاق دے دے مگر عورت بے طلاق دئے دوسرا نکاح نہیں کر سکتی۔ | ۱۱۲ | امام ابویوسف سے منقول ہے کہ میں بعض مسائل میں جانتا کہ حدیث میری طرف ہے، تنقیح کے بعد کھلتا کہ جس حدیث سے امام صاحب نے فرمایا ہے میرے خواب میں بھی نہ تھی۔ ۴۸۷ | جو مرد عورت کا حق ادا نہیں کر سکتا اس پر طلاق دینا فرض ورنہ گنہگار و مستحق عذاب ہو گا۔ |

Fatawa Razawiyya Volume 12

- Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him) is a Tabi'i. [Page 117]
- What is the Prophetic Shariah number for the mahr (dowry) and what was the mahr of the Lady of Paradise? [Page 165]
- The best among Arab women are the women of Quraish, who are very compassionate towards their children and excellent guardians and protectors of their husbands' wealth. [Page 301]
- What is the amount of mahr for grades one, two, three, and four? [Page 167]
- If a woman's husband dies and both are of Paradise, and she does not marry again, Allah will unite them in Paradise. [Page 303]
- The pure wives are the Mothers of the Believers (men), not the Mothers of the Believers (women). [Page 176]
- Some Hadiths in praise of a wife who remains with her orphaned children and does not remarry for their sake. [Page 306]
- A grandfather is like a father except in a few legal issues. [Page 239]
- No one's daughters and sisters can be more modest or honorable than the daughters of Muhammad the Messenger of Allah (PBUH) and the daughters of the Lady of Women, Batul Zahra (may Allah be pleased with her). [Page 318]
- What is meant by "a long period of time"? [Page 244]
- The command of Umar (may Allah be pleased with him) is the command of Allah. [Page 459]
- There are three forms of breaking a promise. [Page 281]
- Allah the Almighty said regarding Umar's truth: "those among them who can deduce it from them." [Page 459]
- Women were created from a crooked rib. [Page 295]
- The madhhab of the Imam is among the schools from which deviation without reason is never permissible. [Page 490]
- Ruling on mahr if an immature girl, incapable of intercourse, is divorced. [Page 323]
- Imam Abu Yusuf is among the great pillars of the school. [Page 490]
- Details of Mut'ah, meaning a set [gift for a divorced wife]. [Page 323]
- Imam Qazi Khan is a Faqih al-Nafs (an expert jurist). [Page 491]
- A question about a passage in the book 'Irshad al-Talibin' attributed to Sayyid Ali Tirmidhi. [Page 401]

- The Rightly Guided Caliphs and mujtahid Imams (may Allah be pleased with them) never turned back from the truth. [Page 615]
- A writing without testimony or the writer's confession cannot be accepted even if it appears to be theirs. [Page 415]
- Miscellaneous [Heading]
- Handwriting can resemble the stamp/seal of a signature. [Page 415]
- Contemporary rivalry is an evidence of aversion. [Page 114]
- It cannot be proven by circumstantial evidence that a letter belongs to such and such a person. [Page 419]
- Apparently different narrations regarding the amount of mahr of the Lady of Women, Batul Zahra (may Allah be pleased with her), and a fine reconciliation between them. [Page 145]

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

- इमाम अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) ताबई हैं। [पृष्ठ 117]
- महर (स्त्रीधन) की शरई नबवी संख्या क्या है और हज़रत ख़ातूने जन्नत का महर क्या था? [पृष्ठ 165]
- अरब की औरतों में सबसे बेहतर कुरैश की औरतें हैं जो अपने बच्चों पर बहुत मेहरबान और शौहरों के माल की बेहतरीन निगरान व मुहाफ़िज़ होती हैं। [पृष्ठ 301]
- पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे दर्जे के महर की मात्रा कितनी है? [पृष्ठ 167]
- जिस औरत का शौहर मर जाए और वे दोनों जन्नती हों, फिर औरत उसके बाद निकाह न करे, तो अल्लाह तआला उन दोनों को जन्नत में जमा फरमा देगा। [पृष्ठ 303]
- अज़वाजे मुतहहरात उम्माहतुल मोमिनीन (मोमिन मर्दों की माएँ) हैं, उम्माहतुल मोमिनात (मोमिन औरतों की माएँ) नहीं। [पृष्ठ 176]
- यतीम बच्चों के लिए बैठी रहने वाली और उनके ख्याल से निकाह न करने वाली बीवी की तारीफ में कुछ अहादीस। [पृष्ठ 306]
- दादा बाप की तरह है सिवाय चन्द मसाइल के। [पृष्ठ 239]
- किसी की बेटियाँ और बहनें मोहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की साहबज़ादियों और सैयदातुन्निसा बतूल ज़हरा (रज़ियल्लाहु अन्हा) की साहबज़ादियों से ज़्यादा ग़ैरत और इज़्ज़त वाली नहीं हो सकतीं। [पृष्ठ 318]
- ज़माना दराज़ (लम्बे समय) से कौन सा ज़माना मुराद है? [पृष्ठ 244]
- हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) का हुक्म खुदा का हुक्म है। [पृष्ठ 459]
- वादा ख़िलाफ़ी (खल्फ़े वअद) की तीन सूरतें हैं। [पृष्ठ 281]
- अल्लाह सुब्हानहु व तआला ने हज़रत उमर के हक में फ़रमाया: "उनमें से वे लोग जो इससे निष्कर्ष निकाल सकते हैं"। [पृष्ठ 459]
- औरतें टेढ़ी पसली से पैदा हुईं। [पृष्ठ 295]
- इमाम का मज़हब उन मज़ाहिब में से है जिनसे बिना वजह रुजूअ (हटना) हरगिज़ जाइज़ नहीं। [पृष्ठ 490]
- नाकाबिले जिमाअ (सम्भोग के अयोग्य) नाबालिग़ा को तलाक दी तो महर का हुक्म। [पृष्ठ 323]
- इमाम अबू यूसुफ़ मज़हब के अज़ीम अरकान (स्तम्भ) हैं। [पृष्ठ 490]

- मुतआ यानी जोड़े की तफ़सील। [पृष्ठ 323]
- इमाम काज़ी ख़ां फकीहुन-नफ्स हैं। [पृष्ठ 491]
- सैय्यद अली तिर्मिज़ी की तरफ़ मंसूब की गई किताब 'इरशादुन तालिबीन' की इबारत के बारे में सवाल। [पृष्ठ 401]
- खुलफ़ाए राशिदीन और आइम्माए मुजतहिदीन (रज़ियल्लाहु अन्हुम) ने कभी हक से रुजूअ नहीं किया। [पृष्ठ 615]
- बिना गवाही या कातिब (लेखक) के इकरार के तहरीर (लिखावट) तस्लीम नहीं की जा सकती, चाहे वह उसी की मालूम होती हो। [पृष्ठ 415]
- मुतफ़र्रिक (विविध) [शीर्षक]
- लिखाई किसी दस्तखत की मुहर के मुशाबा (समान) हो सकती है। [पृष्ठ 415]
- समकालीनता (मुआसरत) नफरत की दलील है। [पृष्ठ 114]
- क़राइन (संकेतों) से यह साबित नहीं किया जा सकता कि खत फलां का है। [पृष्ठ 419]
- हज़रत सैयदातुन्निसा बतूल ज़हरा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के मह़ की मात्रा में ज़ाहिरी तौर पर मुख़्तलिफ़ रिवायात और उनमें नफीस ततबीक (सुंदर समन्वय)। [पृष्ठ 145]

पृष्ठ 98 का 688

فتاویٰ رضویہ جلد دو از دہم

- امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ تابعی ہیں۔ ۱۱۷
- مہر کی تعداد شرعی پیمبری کیا ہے اور حضرت خاتونِ جنت کا مہر کیا تھا۔ ۱۶۵
- عرب کی عورتوں میں سب سے بہتر زنان قریش ہیں جو اپنے بچوں پر بہت زیادہ مہربان اور شوہروں کے مال کی زیادہ نگران و محافظ ہوتی ہیں۔ ۳۰۱
- مہر درجہ اول، دوم، سوم، چہارم کی تعداد کتنی ہے۔ ۱۶۷
- جس عورت کا شوہر مر جائے اور وہ دونوں جنتی ہوں پھر عورت اس کے بعد نکاح نہ کرے تو اللہ تعالیٰ ان دونوں کو جنت میں جمع فرمادے گا۔ ۳۰۳
- ازواج مطہرات امہات المومنین ہیں، امہات المومنات نہیں۔ ۱۷۶
- یتیم بچوں کے لئے بیٹھی رہنے والی اور ان کے خیال سے نکاح نہ کرنے والی بیوی کی تعریف میں چند احادیث۔ ۳۰۶
- دادا باپ کی طرح ہے سوائے چند مسائل کے۔ ۲۳۹
- کسی کی بیٹیاں اور بہنیں محمد رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی صاحبزادیوں اور سیدۃ النساء بتول زہرا رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی صاحبزادیوں سے زیادہ غیرت اور عزت والی نہیں ہو سکتیں۔ ۳۱۸
- زمانہ دراز سے کون سا زمانہ مراد ہے۔ ۲۴۴
- حکم عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ حکم خدا ہے۔ ۴۵۹
- خلف وعد کی تین صورتیں ہیں۔ ۲۸۱
- حق سبحانہ و تعالیٰ نے حق عمر میں فرمایا "لعلمه الذین یستنبطونه منکم" ۴۵۹

- عورتیں ٹیڑھی پسلی سے پیدا ہوئیں۔ ۲۹۵
- مذہب امام، امام مذاہب سے ہے جس سے بلاوجہ عدول ہرگز جائز نہیں۔ ۴۹۰
- ناقابلِ جماع نابالغہ کو طلاق دی تو مہر کا حکم۔ ۳۲۳
- امام ابویوسف اعظم ارکان مذہب ہیں۔ ۴۹۰
- متعہ یعنی جوڑا کی تفصیل۔ ۳۲۳
- امام قاضی خاں فقیہ النفس ہیں۔ ۴۹۱
- سید علی ترمذی کی طرف منسوب کی گئی کتاب ارشاد الطالبین کی عبارت کے بارے میں سوال۔ ۴۰۱
- خلفاء راشدین اور ائمہ مجتہدین رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے کبھی حق سے رجوع نہیں کیا۔ ۶۱۵
- تحریر بے شہادت یا اقرار کاتب مسلم نہیں ہو سکتی اگر چہ اسی کا معلوم ہوتا ہو۔ ۴۱۵
- متفرق [عنوان]
- خط خط کے مہر کے مشابہ ہو سکتی ہے۔ ۴۱۵
- معاصرت دلیل منافرت ہے۔ ۱۱۴
- قرائن سے یہ ثابت نہیں کیا جاسکتا ہے کہ خط فلاں کا ہے۔ ۴۱۹
- مہر حضرت سیدۃ النساء بتول زہرا رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی مقدار میں بظاہر مختلف روایات اور ان میں نفیس تطبیق۔ ۱۴۵

Fatawa Razawiyya Volume 12

421 | Finding a just person nowadays is difficult. | 592 | A man said, "If I keep my wife in the house, I will drink her milk." This is neither ila (a specific type of oath) nor a regular oath, therefore no expiation (kaffarah) is necessary. 440 | Nowadays, Sharia justice is rare among men, and among women with deficient intellect, trustworthy Sharia witnesses in India might be few and far between. | 598 | Remarks on 'al-Khayriyyah' (Tafallul ala al-Khayriyya). 469 | Clarification of a doubt regarding Sayyiduna Imam Hasan al-Mujtaba and Mughira bin Shu'ba (may Allah be pleased with them both). | 611 | Indication towards a difference of opinion between Fatawa Khayriyyah and al-Muhit. 469 | The carnal self (nafs al-ammara) is suppressed by strictness and spreads its feet more if given leeway. | 613 | Harmonization between the statement of Imam Muhammad and the fatwa of later scholars. 482 | A mujtahid (independent jurist) has been missing for centuries. | |

Page 99 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

421 | आजकल एक न्यायप्रिय (आदिल) व्यक्ति का मिलना कठिन है। | 592 | एक व्यक्ति ने कहा, "यदि मैं पत्नी को घर में रखूँ तो उसी का दूध पियूँगा"। यह न तो 'ईला' है और न ही शपथ (क़सम), अतः कोई कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) अनिवार्य नहीं है। 440 | आजकल पुरुषों में शरीयत के अनुसार न्याय कम है, और बुद्धि में कमी वाली महिलाओं में शायद हिन्दुस्तान में विश्वसनीय शरीयत गवाहों की गिनती बहुत कम हो। | 598 | तफ़ल्लुल अलल खैरिया (अल-खैरिया पर टिप्पणी)। 469 | सैय्यदुना इमाम हसन मुजतबा और मुग़ीरा बिन शोबा (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) के बारे में एक संदेह का समाधान। | 611 | फ़तावा खैरिया और मुहीत के बीच मतभेद की ओर संकेत। 469 | नफ़्स-ए-अम्मारा (विषय-वासनापूर्ण मन) कड़ाई से दबता है और ढील देने से ज़्यादा पैर फैलाता है। | 613 | इमाम मुहम्मद के कथन और बाद के विद्वानों (मुतअख़्ख़िरीन) के फ़तवे में सामंजस्य। 482 | सदियों से मुजतहिद (स्वतंत्र न्यायविद्) अनुपस्थित है। | |

पृष्ठ 99 का 688

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

۴۲۱ | آج کل عادل شخص کا ملنا دشوار ہے۔ | ۵۹۲ | مرد نے کہا کہ "اگر بیوی کو گھر میں رکھوں تو اسی کا دودھ پیوں" یہ نہ تو ایلاء ہے اور نہ ہی قسم، لہٰذا کفارہ لازم نہیں۔ ۴۴۰ | آج کل عدالت شرعیہ مردوں میں کم ہے اور زنان ناقصات العقل میں ثقہ شرعیہ ہندوستان میں شاید گنتی کی ہوں۔ | ۵۹۸ | تطفل علی الخیریہ۔ ۴۶۹ | سیدنا امام حسن مجتبیٰ اور مغیرہ بن شعبہ رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے بارے میں ایک شبہ کا ازالہ۔ | ۶۱۱ | فتاویٰ خیریہ اور محیط میں اختلاف کی طرف اشارہ۔ ۴۶۹ | نفس امارہ سختی سے دبتا ہے اور ڈھیل دینے سے زیادہ پاؤں پھیلاتا ہے۔ | ۶۱۳ | امام محمد کے ارشاد اور متاخرین کے فتویٰ میں تطبیق۔ ۴۸۲ | مجتہد صدیوں سے مفقود ہے۔ | |

Fatawa Razawiya Volume 12

Chapter of Mahr (Dower)

Treatise Al-Bast al-Musajjal fi Imtina' al-Zawja ba'da al-Waty lil-Mu'ajjal 1305 AH (A detailed discourse and decision regarding the wife's right to restrain herself for the purpose of receiving prompt dower even after consummation - Mr. Mahmood's case)

Problem 21: From Moradabad, sent by Muhammad Nabi Khan Sahib, 1st Jamadi-ul-Ukhra 1305 AH.

First Question What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid married Hindah, with half the dower being prompt (Mu'ajjal) and half deferred (Mu'ajjal). Following custom, Hindah was sent to her husband's home, and consummation took place with her consent. Subsequently, Zaid turned out to be of bad character and subjected Hindah to great distress, harm, suffering, and torment. For these reasons, Hindah became aggrieved and returned to her father's home, and she refuses to go back to Zaid until she receives the prompt dower. In this situation, does Hindah have the right to refuse sexual intimacy (man-e-nafs) until the prompt dower is received or not? And by refusing, will she be considered disobedient (nashizah) or not? Explain and be rewarded.

Page 101 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

बाब-अल-महर (महर का अध्याय)

रिसाला (लघु शोधप्रबंध) अल-बस्त अल-मुसज्जल फ़ी इम्तिना' अज़-ज़ौजा बाद अल-वती लिल-मुअज्जल १३०५ हिजरी (ज़ौजा बाद-ए-वती भी महर-ए-मुअज्जल लेने के लिए अपने नफ़्स को रोक सकती है, इस बारे में विस्तृत तहरीर और फ़ैसला मिस्टर महमूद कार्ड)

मसअला २१: मुरादाबाद से, प्रेषक मुहम्मद नबी ख़ाँ साहब, १ जमादी-उल-उख़रा १३०५ हिजरी।

पहला सवाल उलेमा-ए-दीन इस मसअले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद का निकाह हिन्दह से हुआ, आधा महर मुअज्जल (तत्काल देय) और आधा मुअज्जल (स्थगित) तय पाया। रिवाज के मुताबिक़ हिन्दह की رुख़्सتی हो गई और हिन्दह की रज़ामंदी से सोहबत (वती) भी हुई। इसके बाद ज़ैद बुरे आचरण वाला निकला और उसने हिन्दह के साथ बहुत ईज़ा-ओ-अज़ार (तक़लीफ़ और ज़ुल्म) का व्यवहार किया। इन कारणों से हिन्दह नाराज़ होकर अपने बाप के यहाँ चली आई और महर-ए-मुअज्जल वसूल होने तक उसके पास जाने से इनकार करती है। इस सूरत में हिन्दह को महर-ए-मुअज्जल लेने तक अपने नफ़्स को रोकने (हक़-ए-मना-ए-नफ़्स) का अधिकार प्राप्त है या नहीं? और मना करने से वह नाशिज़ा (अवज्ञाकारी) होगी या नहीं? बयान फ़रमाएँ, सवाब पायें।

पृष्ठ १०१/६८८

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

باب المہر

رسالہ البسط المسجل فی امتناع الزوجۃ بعد الوطی للمعجل ۱۳۰۵ھ (زوجہ بعد وطی بھی مہر معجل لینے کے لئے اپنے نفس کو روک سکتی ہے اس بارے میں کشادہ تحریر اور فیصلہ مسٹر محمود کارڈ)

مسئلہ ۲۱: از مراد آباد مرسلہ محمد نبی خاں صاحب یکم جمادی الاخرٰی ۱۳۰۵ھ

سوال اول کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید سے ہندہ کا نکاح ہوا، نصف معجّل نصف مؤجّل ٹھہرا، حسب رواج ہندہ کی رخصتی ہوگئی کہ وطی برضائے ہندہ واقع ہوئی، بعدہ زید بد اطوار نکلا اور ہندہ سے بہت ایذا واضرار وتکلیف وآزار کے ساتھ پیش آیا، ہندہ ان وجوہ سے ناراض ہو کر اپنے باپ کے یہاں چلی آئی اور تا وصول مہر معجّل اس کے پاس جانے سے انکار رکھتی ہے، اس صورت میں ہندہ کو مہر معجّل لینے تک حق منع نفس حاصل ہے یا نہیں؟ اور منع کرنے سے ناشزہ ہوگی یا نہیں؟ بینوا توجروا

صفحہ 101 از 688

Fatawa Razawiyya Volume 12

Question Two

What do the scholars of religion say regarding this matter: if sexual intercourse occurs with the wife's consent before the payment of the 'Mahr Mu'ajjal' (prompt dower), in this situation, contrary to the view of the Imam (Abu Hanifa), is it correct and more weightier in legal scrutiny to give preference to the view of the 'Sahibayn' (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad) that the right to refuse oneself is forfeited, based on the following reasons (referenced as 'A'):

(1) It is stated in 'Durr-ul-Mukhtar' that when there is a difference of opinion between Abu Hanifa and his disciples (i.e., the Sahibayn) on such a matter, the opinion of the disciples should prevail.

(2) Imam Abu Hanifa and Imam Muhammad were both legislators of purely intellectual matters, but Qazi Abu Yusuf had an equal level of knowledge of traditions and, due to his position as Chief Justice (Qazi-ul-Quzat), had opportunities to obtain information regarding human conditions. Their rules, especially in worldly dealings and interpretation of Sharia, are considered so authoritative that when the opinion of Imam Abu Hanifa or Imam Muhammad agrees with them, their opinion is accepted according to an established rule.

(3) The best summary (from the most recent authoritative book of Sharia, namely Fatawa Alamgiri, the text is this) makes it clear that contrary to Imam Abu Hanifa's opinion, not only his two famous disciples but also Sheikh al-Saffar has expressed an opinion as far as the discussion of domestic life is concerned.

(4) Imam Abu Hanifa and his two disciples are considered three masters in Hanafi law, and I consider it a general rule that if there is a difference of opinion, the opinion of two against the third will prevail. According to the ordinary rule of Sharia, I adopt the opinion of the two disciples as a majority opinion among the three masters. (5) In the enforcement of this right to have domestic relations with the wife, the obstacle stated is that the Mahr Mu'ajjal has not been paid. This rule is based merely on the similarity to the lien that a seller has over the goods until the price is paid before delivery. But in this lien, the buyer's right of ownership is actually analogized, and once delivery takes place, that lien ends. Finis (End). State the ruling and be rewarded.

Answer:

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

All praise be to Allah, the Bestower of favors in the immediate and the deferred. | All praises are for the one who bestows favors upon us in this world and the hereafter.

(A): These reasons were devised by Mr. Mahmood in his judgment. 12 (M)

Page 102 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

सवाल दूसरा

धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि जब 'मेहर मुअज्जल' (त्वरित मेहर) के भुगतान से पहले पत्नी की सहमति से सहवास हो जाता है, तो इस स्थिति में इमाम [अबू हनीफा] के मत के विपरीत 'साहिबैन' (इमाम अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद) के मत को तरजीह देना कि स्वयं को रोकने का अधिकार समाप्त हो जाता है, निम्नलिखित कारणों (संकेत 'ए') के आधार पर सही और अधिक वजनदार है या नहीं:

(१) 'दुर-उल-मुख्तार' में है कि जब अबू हनीफा और उनके शिष्यों (यानी साहिबैन) के बीच ऐसे मामले में मतभेद हो, तो शिष्यों की राय प्रबल होनी चाहिए।

(२) इमाम अबू हनीफा और इमाम मुहम्मद दोनों ही विशुद्ध रूप से बौद्धिक मामलों के विधायक थे, लेकिन काजी अबू यूसुफ को परंपराओं का उतना ही ज्ञान था और मुख्य न्यायाधीश (काज़ी-उल-क़ुज़ात) के पद के कारण उन्हें मानवीय स्थितियों से संबंधित जानकारी प्राप्त करने के अवसर मिले थे। उनके नियम, विशेष रूप से सांसारिक व्यवहारों और शरीयत की व्याख्या में, इतने आधिकारिक माने जाते हैं कि जब इमाम अबू हनीफा या इमाम मुहम्मद की राय उनसे सहमत होती है, तो उनकी राय एक स्थापित नियम के अनुसार स्वीकार की जाती है।

(३) सबसे अच्छा सारांश (शरीयत की सबसे हालिया प्रामाणिक पुस्तक, यानी फतावा आलमगीरी का पाठ यह है) इससे स्पष्ट है कि इमाम अबू हनीफा की राय के विपरीत न केवल उनके दो प्रसिद्ध शिष्यों बल्कि शेख अल-सफ़र ने भी अपनी राय व्यक्त की है जहाँ तक घरेलू जीवन की चर्चा का संबंध है।

(४) इमाम अबू हनीफा और उनके दो शिष्यों को हनफी कानून में तीन उस्ताद माना जाता है, और मैं इसे एक सामान्य नियम मानता हूं कि यदि राय में मतभेद हो, तो तीसरे के मुकाबले दो की राय प्रबल होगी। शरीयत के सामान्य नियम के अनुसार, मैं तीन उस्तादों में से दो शिष्यों की राय को बहुमत के रूप में अपनाता हूं। (५) पत्नी के साथ घरेलू संबंध रखने के इस अधिकार के प्रवर्तन में, बाधा यह बताई गई है कि मेहर मुअज्जल का भुगतान नहीं किया गया है। यह नियम केवल उस ग्रहणाधिकार (lien) की समानता पर आधारित है जो विक्रेता के पास माल की सुपुर्दगी से पहले कीमत भुगतान तक माल पर होता है। लेकिन इस ग्रहणाधिकार में वास्तव में खरीदार के स्वामित्व के अधिकार का

अनुमान लगाया गया है, और जब सुपुर्दगी हो जाती है, तो वह ग्रहणाधिकार समाप्त हो जाता है। इति (समाप्त), निर्णय बताएं और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब:

अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत दयालु और कृपाशील है।

सभी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो तत्काल और विलंबित में उपकार करने वाला है। | सभी प्रशंसाएँ उस (अल्लाह) के लिए हैं जो दुनिया और आखिरत में हम पर इनामत करता है।

(ए): ये कारण मिस्टर महमूद ने अपने फैसले में ईजाद किए थे। १२ (म)

पृष्ठ 102/688

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

سوال دوم

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ جب ادائے مہر معجل سے پہلے وطی برضائے زوجہ واقع ہو جائے تو اس صورت میں برخلاف مذہب امام مذہب صاحبین کو کہ منع نفس کا حق ساقط ہو جاتا ہے بوجوہ عہ مصرحہ ذیل ترجیح دینی صحیح و ارجح اور نظر فقہی میں قرین تحقیق و تنقیح ہے یا نہیں:

(۱) در مختار میں ہے جب ایسے امر کی نسبت مابین ابو حنیفہ اور ان کے مریدوں (یعنی صاحبین) کے اختلاف ہو تو رائے مریدوں کی غالب ہونی چاہئے۔

(۲) امام ابو حنیفہ اور امام محمد دونوں محض ذہنی باتوں کے مقنن تھے لیکن قاضی ابو یوسف کو اسی قدر علم روایات تھا اور بوجہ عہدہ قاضی القضاۃ کے موقع متعلقہ کرنے کا حالات انسان سے حاصل تھا اور ان کے قواعد خصوصاً معاملات دنیوی اور تعبیر شرع میں اس قدر مستند سمجھے جاتے ہیں کہ جب امام ابو حنیفہ یا امام محمد کی رائے ان سے متفق ہو تو ان کی رائے از روئے ایک قاعدہ مسلمہ کے قبول کی جاتی ہے۔

(۳) سب سے عمدہ خلاصہ سب سے حال کی کتاب مستند شرع یعنی فتاویٰ عالمگیری کی عبارت یہ ہے) اس سے ظاہر ہے کہ امام ابو حنیفہ کی رائے کے خلاف نہ صرف ان کے دو مشہور مریدوں بلکہ شیخ الصفار نے بھی جہاں تک کہ بحث ہم خانگی کو تعلق ہے رائے ظاہر کی ہے۔

(۴) امام ابو حنیفہ اور ان کے دو مرید قانون حنفی میں تین استاد سمجھے گئے ہیں اور میں قاعدہ عام تصور کرتا ہوں کہ اختلاف رائے ہو تو دو کی رائے بمقابلہ تیسرے کے غالب ہو گی بموجب

معمولی قاعدہ شرع کے میں رائے دو مریدوں کی بطور کثرت رائے منجملہ تین استادوں کے اختیار کرتا ہوں۔ (۵) اس حق کے نفاذ میں کہ زوجہ کے ساتھ ہم خانگی کرے مانع یہ بیان کیا گیا ہے کہ مہر معجل ادا نہ ہوا ہو اور یہ قاعدہ محض اس مواخذے کی مشابہت پر مبنی ہے جو بائع کو مال پر تا ادائے قیمت قبل حوالگی مال کے حاصل رہتا ہے لیکن اس مواخذے میں دراصل حق ملکیت مشتری کا قیاس کر لیا گیا ہے اور جبکہ حوالگی عمل میں آ جائے گی تو اسی وقت وہ مواخذہ ختم ہو جاتا ہے انتھی، بینوا توجروا

الجواب:

بسم اللہ الرحمن الرحیم

الحمد للہ المنعم فی المعجل والمؤجل | سب تعریفیں دنیا و آخرت میں ہم پر انعام کرنے والے

عہ : یہ وجوہ مسٹر محمود اپنے فیصلے میں ایجاد کیں ۱۲ (م)

And peace and blessings be upon the one who completed the office of messengership, and upon his family, companions, and all the esteemed people of his religion. All praise is for Allah, and blessings and peace be upon that personality who completed and strengthened the office of messengership, and upon his family and companions and all his chosen religious followers. (T)

Answer to the First Question

In the situation asked, the woman (Hindah) has the right to withhold herself; she has the choice until she receives her prompt dower (mahr-e-mu'ajjal), not to surrender herself to the husband. By doing this withholding, she will not be considered disobedient (nashizah). It is in Al-Wiqayah:

She has the right to prevent him from intercourse and traveling with her and [receive] maintenance if she refuses [herself], even after intercourse or privacy with her consent.[1] | For the purpose of receiving the prompt dower, the wife has the right to stop the husband from intercourse and from taking her on a journey, and to receive maintenance, even if she stops him after intercourse and privacy occurred with her consent. (T)

It is in Niqayah:

Before taking the prompt [dower], she has the right to prevent him from intercourse and traveling with her, even after intercourse with her consent, without the forfeiture of maintenance.[2] | Before receiving the prompt dower, the wife has the right to stop the husband from intercourse and from taking her on a journey, even if it is after intercourse with consent; the wife's maintenance will not be forfeited. (T)

It is in Kanz:

She has the right to prevent him from intercourse and taking her out [on travel] for the [payment of] dower, even if he has [already] had intercourse with her.[3] | For the dower, the wife has the right to prevent intercourse and from being taken on a journey. (T)

It is in Tanwir al-Absar:

She has the right to prevent him from intercourse and traveling with her, even if intercourse or privacy occurred with the consent of both.[4] | Even after consensual

intercourse or privacy, the wife has the right to stop the husband from intercourse and from taking her on a journey for the purpose of receiving the dower. (T)

[1] Sharh al-Wiqayah, Chapter of Dower, Mujtabai Press, Delhi, 25/2 [2] Mukhtasar al-Wiqayah fi Masa'il al-Hidayah, Chapter of Dower, Nur Muhammad Factory of Book Trading, Karachi, p. 56 [3] Kanz al-Daqaiq, Chapter of Dower, H.M. Company, Karachi, p. 102 [4] Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Chapter of Dower, Mujtabai Press, Delhi, 202/1

फ़तावा रज़विया | जिल्द 12

और दुरूद और सलाम उन पर जिन्होंने रिसालत के दफ़्तर को ख़त्म किया, और उनके आल और अस्हाब और उनके दीन के तमाम मोअज़्ज़ज़ लोगों पर। अल्लाह के लिए हैं सारी तारीफ़ें और दुरूद और सलाम उस हस्ती पर जिन्होंने रिसालत के दफ़्तर को मुकम्मल और मज़बूत किया, और उनकी आल और अस्हाब और उनके तमाम चुने हुए दीन के पैरोकारों पर। (त)

पहले सवाल का जवाब

पूछी गई सूरत में, औरत (हिन्दा) को नफ़्स से रोकने का हक़ हासिल है; उसे इख़्तियार है कि जब तक महर-ए-मुअज्जल (जल्द अदा करने वाला महर) वसूल न कर ले, अपने आप को शौहर के सुपुर्द न करे। इस तरह रोकने से वह नाशिज़ा (नाफ़र्मान) नहीं होगी। विक़ाया में है:

उसे महर वसूल करने के लिए शौहर को जिमाअ (संभोग) से और सफ़र पर साथ ले जाने से रोकने का हक़ है, और नफ़क़ा (खर्चा) पाने का भी हक़ है, चाहे उसने रज़ामंदी से सोहबत या ख़ल्वत के बाद ही क्यों न रोका हो।[1] | महर-ए-मुअज्जल वसूल करने के लिए शौहर को जिमाअ से और सफ़र पर साथ ले जाने से रोकने और नफ़क़ा वसूल करने का बीवी को हक़ है, चाहे सोहबत और ख़ल्वत रज़ामंदी से हो जाने के बाद रोक दे। (त)

निक़ाया में है:

महर-ए-मुअज्जल लेने से पहले उसे जिमाअ और सफ़र पर ले जाने से रोकने का हक़ है, चाहे रज़ामंदी से सोहबत हो चुकी हो, और नफ़क़ा साक़ित (ख़त्म) नहीं होगा।[2] | महर-ए-मुअज्जल वसूल करने से पहले बीवी को हक़ है कि शौहर को जिमाअ और सफ़र पर साथ ले जाने से रोक दे, चाहे रज़ामंदी से सोहबत के बाद हो, बीवी का नफ़क़ा ख़त्म नहीं होगा। (त)

कंज़ में है:

उसे महर के लिए जिमाअ और बाहर ले जाने से रोकने का हक़ है, चाहे उसने सोहबत कर ली हो।[3] | बीवी को महर के लिए जिमाअ और सफ़र पर ले जाने से मना करने का हक़ है। (त)

तनवीर अल-अब्सार में है:

उसे जिमाअ और सफ़र से रोकने का हक़ है, चाहे उन दोनों की रज़ामंदी से सोहबत या ख़ल्वत हो चुकी हो।[4] | ख़ुशी से सोहबत या ख़ल्वत के बाद भी बीवी को महर वसूल करने के लिए शौहर को जिमाअ और सफ़र पर ले जाने से मना करने का हक़ है। (त)

[1] शरह अल-विक़ाया, बाब अल-महर, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 25/2 [2] मुख़्तसर अल-विक़ाया फ़ी मसाइल अल-हिदाया, बाब अल-महर, नूर मुहम्मद कारखाना तिजारत-ए-कुतुब, कराची, पृ. 56 [3] कंज़ अद-दक़ायक़, बाब अल-महर, एच.एम. कंपनी, कराची, पृ. 102 [4] दुर्र अल-मुख़्तार शरह तनवीर अल-अब्सार, बाब अल-महर, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 202/1

पेज 103/688

فتاوٰی رضویہ | جلد دوازدہم

والصلوٰۃ والسلام علی من ختم دفتر الرسالۃ واسجل علی الہ وصحبہ و جمیع اھل دینہ المبجل۔ اللہ تعالٰی کے لئے ہیں، اور صلوٰۃ وسلام اس ذات پر جس نے رسالت کا دفتر ختم کیا اور مضبوط کیا، اور اُن کی آل واصحاب اور ان کے تمام برگزیدہ دین والوں پر۔ (ت)

جواب سوال اول

صورت مستفسرہ میں ہندہ کو حق منع نفس حاصل ہے اُسے اختیار ہے جب تک مہر معجل وصول نہ کرلے اپنے آپ کو تسلیم شوہر نہ کرے اس منع کئے سے ناشزہ نہ ہوگی۔ وقایہ میں ہے :

لھا منعہ من الوطی والسفر بھا والنفقۃ لومنعتْ ولو بعد وطی اوخلوۃ برضاھا[1]۔ | معجل مہر وصول کرنے کیلئے خاوند کو جماع سے اور سفر پر ساتھ لے جانے سے روکنے اور نفقہ وصول کرنے کا بیوی کو حق ہے اگرچہ وطی اور خلوتِ رضا مندی سے ہو جانے کے بعد روک دے۔ (ت)

نقایہ میں ہے :

قبل اخذ المعجل لھا منعہ من الوطی والسفر بھا ولو بعد وطی برضاھا بل اسقوط النفقۃ[2]۔ | مہر معجل وصول کرنے سے قبل بیوی کو حق ہے کہ خاوند کو جماع، سفر پر ساتھ لے جانے سے روک دے اگرچہ رضامندی سے وطی کے بعد ہو، بیوی کا نفقہ ساقط نہ ہوگا۔ (ت)

کنز میں ہے :

لھا منعہ من الوطی والاخراج للمھر وان وطئھا[3]۔ | بیوی کو مہر کے لئے وطی اور سفر پر لے جانے سے منع کرنے کا حق ہے (ت)

تنویر الابصار میں ہے :

لھا منعہ من الوطی والسفر بھا ولو وطی او خلوۃ رضیتھما[4]۔ | خوشی سے وطی یا خلوت کے بعد بھی بیوی کو مہر وصول کرنے کیلئے خاوند کو جماع اور سفر پر لے جانے سے منع کرنے کا حق ہے۔ (ت)

[1] شرح الوقایۃ باب المھر مطبع مجتبائی دہلی ۲/۲۵ [2] مختصر الوقایۃ فی مسائل الھدایۃ باب المھر نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ص ۵۶ [3] کنز الدقائق باب المھر ایچ ایم کمپنی کراچی ص ۱۰۲ [4] در مختار شرح تنویر الابصار باب المھر مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۰۲

In Durr al-Mukhtar it is stated:

[Because every act of cohabitation is contracted for, so delivering some does not necessitate delivering the rest - 1] | [Every act of cohabitation is in exchange for dower (separate dower becomes obligatory for each cohabitation), so giving the exchange for some will not establish the giving of the rest. (T)]

In the same it is stated:

[Maintenance is obligatory for the wife upon her husband even if she withheld herself for dower, whether he has consummated with her or not - 2, abridged.] | [Maintenance of the wife is obligatory upon the husband even if the wife has prevented the husband from herself for dower, whether consummation has occurred or not, abridged. (T)]

The research of the matter is that the occurrence of cohabitation or privacy with the consent of the woman before receiving the prompt dower, according to the founder of the school, the foremost Imam, the great exemplar, the leader of the Imams Abu Hanifa (may Allah be pleased with him), does not at all drop anyone's right to withhold self and withhold travel, and the woman has the choice that as long as even one rupee remains, she should neither surrender herself nor agree to travel with her husband even if previously cohabitation had occurred many times with consent. And according to the Sahibayn (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad, may Allah have mercy on them), the mere occurrence of privacy with consent drops both the right to withhold self and withhold travel. Imam Abu al-Qasim Saffar (mercy of the Forgiving upon him) used to give fatwas on the Imam's statement regarding travel and on the statement of the Sahibayn regarding cohabitation. The original meaning is this detail. Those who inclined this way after them followed suit. For example, Imam Sadr al-Shahid, in the commentary of Jami' al-Saghir, after quoting their school of thought, states: "And indeed it is good" 3 (Indeed it is good. T). Imam Bazdawi, in the commentary of the mentioned book, states:

[This is more appropriate for fatwa - 4, as the author of Al-Binayah quoted from him in Al-Binayah, and likewise Al-Tahtawi from Al-Bahr, from Ghayat al-Bayan.] | [This is suitable for fatwa, as the author of Al-Binayah has quoted it from them in Al-Binayah, and similarly Al-Tahtawi has quoted from Al-Bahr and they from Ghayat al-Bayan. (T)]

In Jawahir al-Akhlati it is stated:

1 Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Chapter on Dower, Mujtabai Press, Delhi, 1/202 2 Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Chapter on Maintenance, Mujtabai Press, Delhi, 1/266-267 3 Hashiyah al-Jami' al-Saghir, Chapter on Dowers, Mujtabai Press, Delhi, p. 41 4 Al-Binayah fi Sharh al-Hidayah, Chapter on Dower, Al-Maktabah al-Imdadiyyah, Makkah al-Mukarramah, 2/156

भाग बारह | फ़तावा रज़विया

दुर्रे मुख्तार में है:

[चूंकि हर संभोग के लिए अनुबंध किया गया है, इसलिए कुछ को सुपुर्द करना शेष को सुपुर्द करना अनिवार्य नहीं करता है - 1] | [प्रत्येक संभोग मेहर के बदले में है (हर संभोग पर अलग-अलग मेहर अनिवार्य है) तो कुछ का बदला देने से शेष का देना सिद्ध नहीं होगा। (त)]

उसी में है:

[पत्नी का भरण-पोषण उसके पति पर अनिवार्य है चाहे उसने मेहर के लिए स्वयं को रोक लिया हो, चाहे उसने पहले उसके साथ सहवास किया हो या नहीं - 2, संक्षेपित।] | [पति पर पत्नी का भरण-पोषण अनिवार्य है भले ही पत्नी ने मेहर के लिए पति को अपने से रोक रखा हो, सहवास हो चुका हो या नहीं, संक्षेपित। (त)]

मामले का शोध यह है कि त्वरित मेहर प्राप्त करने से पहले महिला की सहमति से सहवास या एकांत का होना, संप्रदाय के संस्थापक, अग्रणी इमाम, महान आदर्श, इमामों के नेता अबू हनीफा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के अनुसार, स्वयं को रोकने और यात्रा को रोकने के किसी के अधिकार को बिल्कुल भी समाप्त नहीं करता है, और महिला के पास विकल्प है कि जब तक एक रुपया भी शेष रहे, वह न तो स्वयं को समर्पित करे और न ही पति के साथ यात्रा करने के लिए सहमत हो, भले ही इससे पहले सहमति से कई बार सहवास हो चुका हो। और साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद, अल्लाह उन पर दया करे) के अनुसार, केवल सहमति से एकांत का होना स्वयं को रोकने और यात्रा को रोकने के अधिकार दोनों को समाप्त कर देता है। इमाम अबू अल-कासिम सफ़्फ़ार (क्षमाशील की उन पर दया हो) यात्रा के संबंध में इमाम के कथन पर और सहवास के संबंध में साहिबैन के कथन पर फतवा देते थे। मूल अर्थ इसी विवरण के हैं। उनके बाद जो इस ओर झुके उन्होंने उसी का अनुसरण किया। उदाहरण के लिए, इमाम सद्र अल-शहीद ने जामी अल-सगीर की व्याख्या में उनके संप्रदाय को उद्धृत करने के बाद कहा है: "और वास्तव में वह अच्छा है" 3 (बेशक वह अच्छा है। त)। इमाम बज़दवी ने उक्त पुस्तक की व्याख्या में कहा है:

[यह फतवे के लिए अधिक उपयुक्त है - 4, जैसा कि अल-बिनाया के लेखक ने अल-बिनाया में उनसे उद्धृत किया है, और इसी तरह तहतावी ने अल-बहर से, ग़ायत अल-बयान से उद्धृत किया है।] | [यह फतवे के लिए उपयुक्त है, जैसा कि अल-बिनाया के लेखक ने इसे अल-बिनाया में उनसे उद्धृत

किया है, और इसी तरह तहतावी ने अल-बहर से और उन्होंने ग़ायत अल-बयान से उद्धृत किया है। (त)]

जवाहर अल-अख्लाती में है:

---

1 दुर्रे मुख्तार शरह तनवीर अल-अबसार, मेहर का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/202 2 दुर्रे मुख्तार शरह तनवीर अल-अबसार, भरण-पोषण का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/266-267 3 हाशिया अल-जामी अल-सगीर, मेहरों का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, पृ. 41 4 अल-बिनाया फ़ी शरह अल-हिदाया, मेहर का अध्याय, अल-मकतबा अल-इमदादिया, मक्का अल-मुकर्रमा, 2/156

पृष्ठ 104/688

در مختار میں ہے :

[لان کل وطأۃ معقود علیھا فتسلیم البعض لا یوجب تسلیم الباقي - 1] | [ہر وطی مہر کے بدلے میں ہے (ہر وطی پر جدا جدا مہر لازم ہے) تو بعض کا بدل دینے سے باقی کا دینا ثابت نہ ہوگا ۔ (ت)]

اسی میں ہے :

[النفقۃ تجب للزوجۃ علی زوجھا ولو منعت نفسھا للمھر دخل بھا اولا - 2 اھ ملخصاً] | [خاوند پر بیوی کا نفقہ واجب ہے اگرچہ بیوی نے مہر کے لئے خاوند کو اپنے سے روک رکھا ہو دخول ہو چکا یا نہیں اھ ملخصاً (ت)]

تحقیق مقام یہ ہے کہ مہر معجل لینے سے پہلے وطی یا خلوت برضائے عورت واقع ہو جانا صاحب مذہب امام اقدم قدوہ اعظم امام الائمہ ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے نزدیک حق منع نفس و منع سفر کسی کا اصلاً مسقط نہیں، اور عورت کو اختیار ہے جب تک ایک روپیہ بھی باقی رہ جائے نہ تسلیم نفس کرے نہ شوہر کے ساتھ سفر پر راضی ہو اگر چہ اس سے پہلے بارہا وطی برضامندی ہو چکی ہو اور صاحبین رحمہما اللہ تعالیٰ کے نزدیک صرف خلوت برضا واقع ہو جانا بھی حق منع نفس و منع سفر دونوں کا مسقط ہے ، امام ابو القاسم صفار علیہ رحمتہ الغفار درباره سفر قولِ امام اور درباره وطی قولِ صاحبین پر فتوے دیتے تھے اصل معنی اس تفصیل کے یہی ہیں ان کے بعد جس نے ادھر میل کیا انہوں نے اتباع کیا مثلاً امام صدر شہید شرح جامع صغیر میں ان

کا مسلک نقل کر کے فرماتے ہیں: وانہ حسن 3 (بیشک وہ حسن ہے۔ ت) امام بزدوی شرح کتاب مذکور میں فرماتے ہیں:

[ھذا احسن فی الفتیا - 4 کما نقلہ عنہ في البناية كذا الطحطاوي عن البحر عن غاية البيان۔] | [یہ فتویٰ کے لئے مناسب ہے ، جیسا کہ صاحب بنایہ نے اس کو بنایہ میں ان سے نقل کیا ہے ، اور ایسے ہی طحطاوی نے بحر سے انہوں نے غایۃ البیان سے نقل کیا ہے (ت)]

جواہر الاخلاطی میں ہے :

---

1 در مختار شرح تنویر الابصار باب المهر مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۰۲ 2 در مختار شرح تنویر الابصار باب النفقة مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۶۶-۲۶۷ 3 حاشية الجامع الصغير باب في المهور مطبع مجتبائی دہلی ص ۴۱ 4 البناية في شرح الهداية باب المهر المكتبة الامدادية مكة المكرمه ۲ /۱۵۶

Fatawa-e-Razvia, Volume 12

[Arabic Box 1]: Some scholars have favored his choice. (End of quote)[1] [Urdu Box 1]: Some scholars have favored his choice. (End of quote) (T)

Similarly, it is stated in Fatawa Hindiyya from Muhit: *wa lafzuhu masha'ikhuna*[2] — (its words are: our scholars have...). However, the majority of the prominent Imams, scholars, and jurists give preference to the school of the Imam (Abu Hanifa) and rely firmly upon it. 'Mutun' (fundamental texts), which are compiled specifically for the authentic and reliable transmission of the school, generally follow this school. It is mentioned in Fatawa Khayriyya: *bihi sarrahat al-mutun qatibatan*[3] (all 'mutun' have explicitly stated this. T). And you have already heard the statements from Wiqaya, Niqaya, Tanwir, and Durr-e-Mukhtar, where they explicitly negated the opinion of the two disciples (Sahibayn). When the author of the text (Maatin) stated in the chapter on Maintenance: *wa law mana'at nafsaha lil-mahr*[4] — (even if she withheld herself for the dowry. T), the commentator added: *dakhala biha awwalan*[5] (whether consummation had already occurred or not. T). This addition was made to ensure complete explicitness in its negation. Similarly, in Wafi and Mukhtar, reliance was placed solely on this, and in Durr-e-Mukhtar, evidence was established only for this school as previously cited (T). Both the limitation (iqtisar) and the reasoning (ta'lil) serve as evidence for selection and referral. It is stated in Radd al-Muhtar:

[Arabic Box 2]: His limitation in the Matn (meaning Tanwir al-Absar) implies its preference (End of quote), summarized. He mentioned this in the 'Book of Judiciary' regarding the issue of the authority to sell an estate that is not overwhelmed by debt. [Urdu Box 2]: The author's (i.e., of Tanwir al-Absar) limitation to this implies its preference. (End of quote), summarized. He mentioned this in the 'Book of Judiciary' in the problem of the authority to sell an estate not overwhelmed by debt. (T)

In Tahtawi, it is stated: [Arabic Box 3]: Relying solely upon it indicates his reliance on it. (End of quote). He mentioned this shortly before the chapter on bequeathing one-third of the estate.[7] [Urdu Box 3]: Relying solely upon it is proof of his reliance (on that opinion). (End of quote). He mentioned this before the chapter on bequeathing one-third of the wealth. (T)

---

1. Jawahir al-Akhlati, Chapter on Mahr, Manuscript, p. 63
2. Fatawa Hindiyya, Chapter 11 on the woman's withholding herself for her dowry, Nurani Kutub Khana, Peshawar, 1/317

3. Fatawa Khayriyya, Chapter on Maintenance, Dar al-Ma'rifa, Beirut, 1/69
4. Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Chapter on Maintenance, Mujtabai Press, Delhi, 1/267
5. Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Mujtabai Press, Delhi, 1/267
6. Radd al-Muhtar, Discussion on selling an estate overwhelmed by debt, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 4/320
7. Hashiyat al-Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar, Book of Wills, Dar al-Ma'rifa, Beirut, 321/2

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

[अरबी बॉक्स 1]: कुछ मशाइख़ ने उनके चुनाव को पसंद किया है। (अंत)[1] [उर्दू बॉक्स 1]: कुछ मशाइख़ ने उनके चुनाव को पसंद किया है। (अंत) (त)

इसी तरह हिन्दिया में मुहीत से है: वलफ़्ज़ुहु मशाइख़ुना[2] — (इसके शब्द ये हैं कि हमारे कुछ मशाइख़ ने। त)। मगर अक्सर बड़े इमामों और फ़क़ीह विद्वानों ने इमाम (अबू हनीफ़ा) के मज़हब को तरजीह दी है और उसी पर पुख्ता भरोसा किया है। 'मतून' (मूल पाठ), जो विशेष रूप से सही और विश्वसनीय मज़हब के वर्णन के लिए बनाए जाते हैं, सामान्यतः इसी मज़हब पर आधारित हैं। फ़तावा ख़ैरिया में है: बहि सर्रहत अल-मतून क़ातिबतन[3] (सभी मतून ने इसकी स्पष्ट व्याख्या की है। त)। और आपने विक़ाया, निक़ाया, तनवीर और दुर्रे मुख़्तार के कथनों को सुना होगा कि उन्होंने स्पष्ट रूप से साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद) के मज़हब का खंडन किया है। और जब मातिन (मूल लेखक) ने भरण-पोषण (नफ़क़ा) के अध्याय में कहा: व लौ मनअत नफ़्सहा लिल-महर[4] — (चाहे पत्नी ने मेहर के लिए खुद को रोक लिया हो। त), तो शारेह (व्याख्याकार) ने जोड़ा: दख़ला बिहा औवलन[5] (चाहे पहले संभोग हो चुका हो या नहीं। त) और इसे इसलिए बढ़ाया ताकि इसके खंडन पर पूर्ण स्पष्टता आ जाए। इसी तरह वाफ़ी और मुख़्तार में भी इसी पर भरोसा किया गया और दुर्रे मुख़्तार में केवल इसी मज़हब पर दलील दी गई, जैसा कि इसका उल्लेख पहले गुज़र चुका है (त)। और दलील के तौर पर इक़्तिसार (संक्षेप) और ता'लील (कारण बताना) दोनों ही चुनाव और बदलाव का प्रमाण हैं, रद्दुल मुहतार में है:

[अरबी बॉक्स 2]: मतन (यानी तनवीरुल अबसार) में उनका इक़्तिसार (संक्षेप) इसकी प्राथमिकता को दर्शाता है (अंत), सारांश। उन्होंने इसका उल्लेख 'किताबुल क़ज़ा' में ऋण से दबे हुए उत्तराधिकार की संपत्ति की बिक्री के अधिकार के मसले में किया है।

तहतावी में है: [अरबी बॉक्स 3]: केवल इसी पर निर्भर रहना उनके भरोसे की दलील है। (अंत) उन्होंने इसका उल्लेख तिहाई माल की वसीयत के मसले से ठीक पहले किया है।[7] [उर्दू बॉक्स 3]: केवल इसी पर निर्भर रहना उनके भरोसे की दलील है। (अंत) उन्होंने इसका उल्लेख तिहाई माल की वसीयत से पहले किया है। (त)

---

1. जवाहर अल-अख़्लाती, फ़स्ल फ़िल-महर, पांडुलिपि, पृष्ठ 63

2. फ़तावा हिन्दिया, अल-फ़स्ल अल-हादी अशर फ़ी मन'इल मरअति नफ़्सहा बिमहरिहा, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/317
3. फ़तावा ख़ैरिया, बाब अन-नफ़क़ा, दारुल मा'रिफ़ा बेरुत, 1/69
4. दुर्रे मुख़्तार शरह तनवीरुल अबसार, बाब अन-नफ़क़ा, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/267
5. दुर्रे मुख़्तार शरह तनवीरुल अबसार, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/267
6. रद्दुल मुहतार, मतलूब फ़ी बैअत तरिका अल-मुस्तग़रक़ा बिद-दैन, दार इहया अत-तुरास अल-अरबी बेरुत, 4/320
7. हाशिया अत-तहतावी अल दुर्रे मुख़्तार, किताबुल वसाया, दारुल मा'रिफ़ा बेरुत, 321/2

فتاوی رضویہ، جلد دوازدھم

[Arabic Box 1]: واستحسن بعض المشایخ اختیارہ اھ[1] [Urdu Box 1]: بعض مشائخ نے ان کے مختار کو پسند فرمایا ہے اھ (ت)

اسی طرح ہندیہ میں محیط سے ہے : ولفظہ مشایخنا[2] ۔ (اس کے الفاظ یہ ہیں کہ ہمارے بعض مشائخ نے۔ ت) مگر اکثر اکابر ائمہ و علماء فقہاء مذہب امام کو ترجیح دیتے اور اسی پر جزم و اعتماد کرتے ہیں متون کہ خاص نقل مذہب صحیح و معتمد کے لئے وضع کئے جاتے ہیں علی العموم اسی مذہب پر ہیں۔ فتاوی خیریہ میں ہے : بہ صرحت المتون قاطبۃ[3] (تمام متون اس کی تصریح کر چکے ہیں۔ ت) اور وقایہ ونقایہ و تنویر و در مختار کی عبارتیں سُن چکے کہ انہوں نے تصریحاً مذہب صاحبین کی نفی فرمائی اور جب ماتن نے باب نفقہ میں ولومنعیت نفسھا للمھر[4] ۔ (اگر چہ بیوی نے مہر کے لئے اپنے کو روک رکھا ہو۔ ت) فرمایا شارح نے دخل بھا اولا[5] (دخول ہو چکا ہو یا نہ۔ت) اور بڑھایا تاکہ اس کی نفی پر تنصیص تامہ ہو جائے ، اسی طرح وافی و مختار میں بھی اسی پر اقتصاد کیا اور در مختار میں صرف اسی مذہب پر دلیل قائم کی کما سبق نقلہ (جیسا کہ اس کی نقل گزری۔ ت) اور اقتصار و تعلیل دونوں دلیل اختیار و تحویل ، ردالمختار میں ہے :

[Arabic Box 2]: اقتصارہ في المتن (یعني تنویر الابصار) یفید ترجیحہ اہ ملخصاً ذکرہ في کتاب القضاء مسئلۃ ولایۃ بیع التركۃ لا مستغرقۃ بالدین۔ [Urdu Box 2]: ماتن کا یعنی تنویر الابصار کا اس پر اکتفاء کرنا ترجیح کو مفید ہے اھ ملخصاً۔ اس کو انہوں نے کتاب القضاء میں قرض میں مستغرق ترکہ کی ولایت بیع کے مسئلہ میں ذکر کیا ہے۔(ت)

طحطاوی میں ہے : [Arabic Box 3]: الاقتصار علیه یدل علی اعتماده اه ذکره قبیل الوصیة بثلث المال۔[7] [Urdu Box 3]: اس پر اکتفاء ان کے اعتماد کی دلیل ہے اھ اس کو انہوں نے ثلث مال کی وصیت سے قبل ذکر کیا۔ (ت)

---

1. جواہر الاخلاطی فصل فی المهر قلمی نسخہ ص ۶۳
2. فتاوی ہندیہ الفصل الحادی عشر فی منع المرأة نفسها بمهر ها نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۱۷
3. فتاویٰ خیریہ باب النفقة دار المعرفة بیروت ۶۹/۱
4. در مختار شرح تنویر الابصار باب النفقة مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۶۷
5. در مختار شرح تنویر الابصار مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۶۷
6. ردالمحتار مطلب فی بیع التركة المستغرقه بالدین دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۲۰/۴
7. حاشیة الطحطاوی علی الدر المختار کتاب الوصایا دار المعرفة بیروت ۳۲۱/۲

Fatawa Razawiyya Volume 12

It is stated in 'Uqud ad-Durriyya': Reasoning is the evidence for preference[1] (Explaining the cause is evidence for preference - T). In the same [book] it is stated:

[Arabic]: He is the one who gives preference because he is the one adorned with reasoning. He mentioned both of them in [the chapter on] marriage before the chapter on the guardian.[2] | [Urdu]: This is preferred because it is adorned with evidence; he mentioned both these points in the Book of Marriage before the chapter on the guardian. (T)

Allama Ibrahim Halabi, in 'Multaqa al-Abhur', as explicitly mentioned by the eminent Shami that it's from the reliable texts of the school, prioritized the Imam's statement and after giving a ruling based on it, attributed the disagreement to the Two Disciples (Sahibayn).

[Arabic]: Where he said this is before consummation and similarly after it, in opposition to both of them.[3] | [Urdu]: When he said whether this is after consummation or before, there is a disagreement of the Two Disciples in it. (T)

And he himself explicitly states in the preface of 'Multaqa' that 'the statement I bring forward in this book is the most preferred'. The commentator said: 'That is what is chosen for the fatwa'. The wording of the text and commentary is as follows:

[Arabic]: I have explicitly mentioned the disagreement among our Imams and I have prioritized from their statements what is most preferred (chosen for fatwa)[4] (summarized). | [Urdu]: I have explicitly mentioned the disagreement among our Imams and from them, I first mentioned the most preferred statement; the preferred one is what is chosen for the fatwa (summarized). (T)

Similarly, in Fatawa Qadi Khan, the Imam Allama Faqih al-Nafs prioritizes the Imam's statement which is more well-known and manifest; he himself stated in the sermon of his Fatawa:

[Arabic]: I have prioritized what is more manifest and started with what is more well-known.[5] | [Urdu]: I prioritize the manifest and start with the well-known. (T)

Scholars say that whichever [statement] they mention first, that statement is the reliable one. It is stated in Hashiya al-Tahtawiyya:

1. 'Uqud ad-Durriyya', Book of Marriage, Haji Abdul Ghaffar & Sons, Arg Bazar, Kandahar, 1/171.
2. 'Uqud ad-Durriyya', Book of Marriage, Haji Abdul Ghaffar & Sons, Arg Bazar, Kandahar, 1/171.
3. 'Multaqa al-Abhur', Chapter on Mahr, Mu'assasat al-Risala, Beirut, 1/251.
4. 'Majma' al-Anhur Sharh Multaqa al-Abhur', Introduction, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/7.
5. 'Fatawa Qadi Khan', Introduction, Naval Kishore, Lucknow, 2/1.

फ़तावा रज़विया खंड 12

'उक़ूद अद-दुर्रिया' में है: 'तर्क(कारण) देना प्राथमिकता का प्रमाण है'[1] (कारण बताना प्राथमिकता का प्रमाण है - त)। उसी में है:

[अरबी]: वही प्राथमिकता देने वाला है क्योंकि वही तर्क से सुसज्जित है। उन्होंने विवाह की किताब में संरक्षक के अध्याय से पहले इन दोनों का उल्लेख किया है।[2] | [उर्दू]: यही बेहतर है क्योंकि यही प्रमाण से सुसज्जित है, ये दोनों बातें उन्होंने किताब-उन-निकाह में बाब-उल-वली से पहले ज़िक्र की हैं। (त)

अल्लामा इब्राहीम ह़लबी ने 'मुल्तका अल-अबहुर' में, जैसा कि फाज़िल शामी ने स्पष्ट किया है कि यह मज़हब के विश्वसनीय ग्रंथों में से है, इमाम के कथन को प्राथमिकता दी और उस पर निर्णय देकर साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद) की ओर विरोध का श्रेय दिया।

[अरबी]: जहाँ उन्होंने कहा कि यह संभोग से पहले है और इसी तरह उसके बाद भी, उन दोनों के विपरीत।[3] | [उर्दू]: जब उन्होंने कहा कि यह संभोग के बाद हो या पहले, इसमें साहिबैन का विरोध है। (त)

और वह स्वयं 'मुल्तका' की भूमिका में स्पष्ट करते हैं कि 'इस पुस्तक में मैं जिस कथन को पहले लाऊँगा, वही सबसे अधिक विश्वसनीय (राजह़) है'। टीकाकार ने कहा: 'वही फतवे के लिए चुना गया है'। मूल पाठ और टीका के शब्द इस प्रकार हैं:

[अरबी]: मैंने अपने इमामों के बीच मतभेद को स्पष्ट कर दिया है और उनके कथनों में से उसे पहले रखा है जो सबसे अधिक विश्वसनीय है (फ़तवे के लिए चुना गया)[4] (संक्षिप्त)। | [उर्दू]: मैंने अपने इमामों के मतभेदों को स्पष्ट कर दिया है और उनमें से जो सबसे अधिक विश्वसनीय कथन था उसे पहले ज़िक्र किया, विश्वसनीय वह है जो फतवे के लिए चुना गया है (संक्षिप्त)। (त)

इसी तरह 'फ़तावा क़ाज़ी ख़ान' में इमाम अल्लामा फ़क़ीह-उन-नफ़्स ने इमाम के कथन को प्राथमिकता दी है जो अधिक प्रसिद्ध और स्पष्ट हो, स्वयं अपने फ़तावा के उपदेश में कहा:

[अरबी]: मैंने उसे पहले रखा है जो अधिक स्पष्ट है और उसकी शुरुआत की जो अधिक प्रसिद्ध है।[5] | [उर्दू]: मैं स्पष्ट को प्राथमिकता देता हूँ और प्रसिद्ध से शुरुआत करता हूँ। (त)

विद्वान कहते हैं कि जिसे वे पहले वर्णन करें, वही विश्वसनीय (मोअतमद) कथन है। ह़ाशिया तह़तावीया में है:

---

1. उक़ूद अद-दुर्रिया, किताब-उन-निकाह, हाजी अब्दुल गफ्फार एंड संस, अर्ग बाज़ार, कंधार, 1/171.
2. उक़ूद अद-दुर्रिया, किताब-उन-निकाह, हाजी अब्दुल गफ्फार एंड संस, अर्ग बाज़ार, कंधार, 1/171.
3. मुल्तका अल-अबहुर, बाब-उल-महर, मुअस्ससतुर्-रिसाला, बेरुत, 1/251.
4. मजम' अल-अनहुर शरह़ मुल्तका अल-अबहुर, मुकद्दमा, दार इह़या अत्-तुरास अल-अरबी, बेरुत, 1/7.
5. फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, मुकद्दमा, नवल किशोर, लखनऊ, 2/1.

पृष्ठ 106/688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

عقودالدر یہ میں ہے : التعلیل دلیل الترجیح 1 (علت کو بیان کرنا ترجیح کی دلیل ہے۔ت) اسی میں ہے:

ھو المرجح اذھوالمحلی بالتعلیل اہ 2 ذکرھما فی النکاح قبل باب الولی۔ | یہی راجح ہے کیونکہ یہی دلیل سے مزین ہے، یہ دونوں باتیں انہوں نے کتاب النکاح میں باب الولی سے پہلے ذکر کی ہیں۔ (ت)

علامہ ابراہیم حلبی نے ملتقی الا بحر میں کہ بتمریح فاضل شامی متون معتمدہ المذہب سے ہے قول امام کو مقدم رکھا اور اسی پر حکم دے کر صاحبین کی طرف خلاف نسبت کی،

حیث قال ھذا قبل الدخول وکذا بعدہ خلافا لھما 3 | جب انہوں نے کہا کہ یہ دخول کے بعد ہو یا پہلے اس میں صاحبین کا خلاف ہے (ت)

اور وہ خود دیباچہ ملتقی میں تصریح فرماتے ہیں کہ اس کتاب میں میں جس قول کو مقدم لاؤں وہی ارجح ہے شارح نے فرمایا: وہی مختار للفتوٰی ہے، متن و شرح کی عبارت یہ ہے:

صرحت بذکر الخلاف بین ائمتنا وقدمت من اقا و یلھم ماھو الارجح (المختار للفتوی) 4 (ملخصاً) | میں نے اپنے ائمہ کے ہاں اختلاف کی تصریح کردی اور ان میں سے زیادہ راجح قول کو پہلے ذکر کیا، ارجح وہ ہے جو فتوٰی کے لئے مختار ہے (ملخصاً)۔ (ت)

اسی طرح فتاوٰی قاضی خاں میں امام علامہ فقیہ النفس نے قول امام کی تقدیم کو مقدم کرتے ہیں جو اشہر واظہر ہو، خود اپنے فتاوٰی کے خطبے میں فرمایا:

قدمت ماھو الاظھر وافتتحت بما ھو الاشھر 5 | میں ظاہر کو مقدم اور مشہور ابتداء کرتا ہوں۔ (ت)

علماء فرماتے ہیں تو جسے یہ پہلے بیان کریں وہی قول معتمد ہے، حاشیہ طحطاویہ میں ہے:

---

1 عقودالدر یہ کتاب النکاح حاجی عبد الغفار و پسران ارگ بازار قندھار ۱۷۱/۱ 2 عقودالدر یہ کتاب النکاح حاجی عبد الغفار و پسران ارگ بازار قندھار ۱۷۱/۱ 3 ملتقی الابحر باب المھر موسسة الرسالة بیروت ۲۵۱/۱ 4 مجمع الانھر شرح ملتقی الابحر مقدمہ کتاب داراحیاء التراث العربی بیروت ۷/۱ 5 فتاوٰی قاضی خاں مقدمہ کتاب نولکشور لکھنؤ ۲/۱

Fatawa Razawiyya Volume 12

Arabic	Urdu
His terminology is to prioritize the most apparent (al-Azhar), so that is the reliable one. (Ah - mentioned in Kitab al-Wasaya, beginning of Bab al-Wasi).	His terminology is to prioritize the more apparent view, so that is what is reliable. He mentioned this at the beginning of the chapter of 'The Executor' (Bab al-Wasi) in the Book of Wills (Kitab al-Wasaya). (T)

It is the continuous habit of Imam Burhan al-Din Farghani, the author of al-Hidayah, that during reasoning, he brings the evidence for the chosen (mukhtar) view at the end so that it serves as a response to the evidences of the preceding views. However, when citing views, he usually mentions the strongest (qawi) view first so that the correct issue initially reaches the ear of the student. It is stated in al-Durr al-Mukhtar from Nahr al-Faiq:

Arabic	Urdu
The author of al-Hidayah delaying their evidence (i.e., in the issue of the devaluation of borrowed copper coins) is clear in his choosing of their view. (Ah - mentioned at the end of Bab al-Sarf before the supplement).	The author of al-Hidayah bringing the evidence of the two disciples (Sahibayn) later (i.e., in the issue of borrowed coins becoming defunct) is evidence for making their view the chosen one. He mentioned this before the chapter of Exchange (Bab al-Sarf) in the supplement. (T)

Similarly, it is in Fath al-Qadir; Efendi Zayn al-Din Rumi writes in Nata'ij al-Afkar, a commentary on al-Hidayah:

Arabic	Urdu
It is the continuous habit of the author to delay the strong evidence when mentioning evidences for different views so that the delayed one stands as a response to the preceding ones, even if he usually presents the strong view first when citing the views themselves.	It is the continuous habit of the author that while mentioning evidences, he mentions the strong evidence at the end so that it can serve as a response to the previous views. He does this in controversial discussions, although he brings the strong view first when views are being cited; he mostly does this. (T)

Now here, he first cited the school of the Imam (Abu Hanifa) and also brought his evidence last, and did not maintain the view of the two disciples. Thus, through various reasons, he indicated the preference of the view. Allamah Sayyid Jalal al-Millah wa al-Din Khwarazmi, in Kifayah (a commentary on al-Hidayah), reinforced the school of the Imam and gave the Imam's view a clarifying tone through a consensus issue that even the two disciples would accept.

Arabic	Urdu
Where he said: According to Abu Hanifa (may Allah the Exalted have mercy on him), she was prevented from it [the thing] which corresponds to the exchange, just as if he had delivered [the goods].	When he said: The evidence of Imam Abu Hanifa is that the wife can withhold what is in exchange for the substitute, just as any seller [can withhold goods].

---

1. Hashiyah al-Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar, Bab al-Wasi, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 4/420.
2. Durr al-Mukhtar, Bab al-Masraf, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/175.
3. Nata'ij al-Afkar.

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

अरबी

उनकी शब्दावली (اصطلاح) 'अल-अज़हर' (अधिक स्पष्ट) को प्राथमिकता देने की है, इसलिए वही विश्वसनीय है। (इसका उल्लेख किताब अल-वसाया, बाब अल-वसी की शुरुआत में किया गया है)।

उर्दू

उनकी शब्दावली अधिक स्पष्ट राय को पहले रखने की है, इसलिए वही विश्वसनीय (क़ाबिले एतमाद) है। उन्होंने इसे वसीयत की किताब (किताब अल-वसाया) में वसी के अध्याय (बाब अल-वसी) के शुरू में बयान किया है। (त)

हिदाया के लेखक इमाम बुर्हानुद्दीन फ़रग़ानी की यह निरंतर आदत है कि बहस (इस्तिदलाल) के समय वे चुनी हुई (मुख़्तार) राय की दलील अंत में लाते हैं ताकि वह पिछली रायों की दलीलों का उत्तर बन जाए। लेकिन रायों का उल्लेख करते समय वे अक्सर मज़बूत (क़वी) राय को पहले ज़िक्र करते हैं ताकि सही मसला छात्र के कान में पहले पहुँचे। 'दुर्रे मुख़्तार' में 'नहर अल-फ़ाइक़' से उद्धृत है:

अरबी

साहिबे हिदाया द्वारा उन दोनों (साहिबैन) की दलील को अंत में लाना (यानी उधार के सिक्कों के चलन से बाहर होने के मसले में) उनकी राय को मुख़्तार (चुना हुआ) बनाने में स्पष्ट है। (इसका ज़िक्र बाब अस-सर्फ़ के अंत में 'तज़नीब' से पहले किया गया है)।

उर्दू

साहिबे हिदाया का साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद) की दलील को बाद में लाना (यानी क़र्ज़ वाले सिक्कों के बंद हो जाने के मसले में) उनके कौल को मुख़्तार बनाने की दलील है। उन्होंने इसका ज़िक्र तज़नीब से पहले बाब अस-सर्फ़ के अंत में किया है। (त)

इसी तरह 'फ़तह अल-क़दीर' में है, अफ़ंदी ज़ैनुद्दीन रूमी हिदाया के हाशिये 'नताइज अल-अफ़कार' में लिखते हैं:

अरबी

विभिन्न रायों पर दलीलें देते समय लेखक की यह निरंतर आदत है कि वे मज़बूत दलील को अंत में लाते हैं ताकि बाद वाली दलील पहले वाली का जवाब बन जाए, भले ही वे

उर्दू

लेखक की निरंतर आदत है कि दलीलें देते समय वे मज़बूत दलील को अंत में ज़िक्र करते हैं ताकि पहले की रायों का जवाब बन सके। वे इख़्तिलाफ़ी (मतभेद वाली) बहस में ऐसा करते हैं, हालांकि रायों को नक़ल

अरबी	उर्दू
रायों का उल्लेख करते समय अक्सर मज़बूत राय को पहले लाते हों।	करते समय वे मज़बूत कौल को पहले लाते हैं; अक्सर ऐसा ही करते हैं। (त)

अब यहाँ उन्होंने इमाम (अबू हनीफ़ा) के मज़हब को पहले नक़ल भी किया और उन्हीं की दलील को अंत में भी लाए और साहिबैन के कौल को स्थिर भी नहीं रखा, तो कई कारणों से इमाम के कौल की तरजीह (प्राथमिकता) को स्पष्ट किया। अल्लामा सैय्यद जलालुल मिल्लत वद्दीन ख़्वारज़मी ने हिदाया के हाशिये 'किफ़ाया' में इमाम के मज़हब के समर्थन को और सुदृढ़ किया और एक सर्वसम्मत (मुत्तफ़िक़ अलैहि) मसले के माध्यम से, जिसे साहिबैन भी स्वीकार करें, इमाम के कौल को स्पष्टता प्रदान की।

अरबी	उर्दू
जहाँ उन्होंने कहा: इमाम अबू हनीफ़ा (रहमतुल्लाहि अलैहि) के अनुसार, उसे उस चीज़ से रोक दिया गया जो बदले के मुक़ाबले में है, जैसा कि यदि उसने सामान सौंप दिया हो।	जब उन्होंने फ़रमाया: इमाम अबू हनीफ़ा की दलील यह है कि पत्नी बदले के मुक़ाबले वाली चीज़ को रोक सकती है जैसा कि कोई विक्रेता (बाइ'अ) रोक सकता है।

---

1. हाशिया अत-तहतावी अलद दुर्रिल मुख़्तार, बाब अल-वसी, दारुल मा'रिफ़ा बेरुत, ४/४२०
2. दुर्रे मुख़्तार बाब अल-मसरफ़, मतबा मुजतबाई देहली, १/१७५
3. नताइज अल-अफ़कार

पृष्ठ १०७/६८८

عربی	اردو
اصطلاحه تقديم الاظهر فيكون المعتمد اهـ ذكره في كتاب الوصايا اول باب الوصى۔	ان کی اصطلاح زیادہ ظاہر کو مقدم کرنا ہے تو وہی قابل اعتماد ہے اھ، اس کو انہوں نے کتاب الوصایا میں باب الوصی کے شروع میں بیان کیا ہے۔ (ت)

امام برہان الدین فرغانی صاحبِ ہدایہ کی عادتِ مستمرہ ہے کہ استدلال کے وقت قول مختار کی دلیل اخیر میں لاتے ہیں تاکہ اقوالِ سابقہ کے دلائل سے جواب ہو جائے اور نقلِ اقوال کے وقت غالباً قولِ قوی کو پہلے ذکر فرماتے ہیں تاکہ اوّل صحیح مسئلہ سمعِ متعلّم میں آئے، در مختار میں نہر الفائق سے ہے:

عربی	اردو
تأخير صاحب الهداية دليلهما (اى فى مسئلة كساد فلوس القرض) ظاهر في اختياره قولهما اهـ ذكره اخر باب الصرف قبيل التذنيب۔	صاحبِ ہدایہ کا صاحبین کی دلیل کو مؤخر لانا (یعنی قرض والے سکے کے بند ہو جانے کے مسئلہ میں) ان کے قول کو مختار بنانے کی دلیل ہے، اس کو انہوں نے تذنیب سے قبیل باب الصرف کے آخر میں ذکر کیا ہے (ت)

اسی طرح فتح القدیر میں ہے، افندی زین الدین رومی نتائج الاذکار حاشیہ ہدایہ میں لکھتے ہیں:

عربی	اردو
من عادة المصنف المستمرة ان يؤخر القوى عند ذكر الادله على الاقوال	مصنف کی عادتِ مستمرہ ہے کہ دلائل ذکر کرتے وقت قوی دلیل کو آخر میں ذکر کرتے ہیں تاکہ پہلے اقوال کا

عربی	اردو
المختلفة ليقع المؤخر بمنزلة الجواب عن المقدم وان كان قدم القوی فی الاکثر عن نقل الاقوال۔	جواب بن سکے، یہ اختلافی بحث میں ایسا کرتے ہیں اگرچہ وہ قوی قول کو ذکر میں پہلے لاتے ہیں جب اقوال کو نقل کرنا ہو، اکثر ایسا ہی کرتے ہیں۔ (ت)

اب یہاں انہوں نے مذہب امام کو پہلے نقل بھی کیا اور اسی کی دلیل کو مؤخر بھی لائے اور قول صاحبین کو برقرار بھی نہ رکھا تو بوجوہِ عدیدہ ترجیح قول کا افادہ فرمایا، علامہ سید جلال الملتہ والدین خوارزمی نے کفایہ حاشیہ ہدایہ میں تائیدِ مذہبِ امام کو دو بالا کیا اور ایک مسئلہ متفق علیہا سے جسے صاحبین بھی تسلیم فرمائیں، قول امام کو رنگِ ایضاح دیا۔

عربی	اردو
حیث قال، لابی حنیفة رحمه الله تعالی جب انہوں نے فرمایا امام ابو حنیفہ کی دلیل یہ ہے کہ بیوی انها منعت منه ما قابل البدل کما لوسلم	بدل کے مقابل کو روک سکتی ہے جیسا کہ کوئی بائع

---

1 حاشیة الطحطاوی علی الدرالمختار باب الوصی دارالمعرفة بیروت ۴/۴۲۰ 2 درمختار باب المصرف مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۷۵ 3 نتائج الافکار

Fatawa Ridawiyya Volume Twelve

[Arabic]: The seller handing over some of the sold goods to the buyer does not forfeit his right to withhold the remainder of it. (1) [Urdu Translation]: If the seller hands over part of the sold item to the buyer, his right to withhold the rest of the item is not lost. (T)

Similarly, Sadr al-Shariah in the commentaries of Sharh al-Wiqayah, al-Kafi Sharh al-Wafi, al-Ikhtiyar Sharh al-Mukhtar, and Mustakhlas Sharh al-Kanz, etc., established evidence for the Imam's (Abu Hanifa) school and responded to the arguments of the two companions (Sahibayn). The absolute investigating scholar (Imam-e-Muhaqqiq 'al-al-itlaq) Kamal al-Din Muhammad ibn al-Humam (may Allah have mercy on him) in Fath al-Qadir preferred al-Hidayah. Allamah Shaykh-zadah, a scholar of the Roman lands and Qadi of the exalted Ottoman Empire, contemporary and authentic author of Durr al-Mukhtar, gave precedence to Multaqa in Majma' al-Anhur. Allamah Yusuf Chalpi in Dhakhirah al-Uqba fi Sharh Sadr al-Shariah al-Uzma relied on the text and commentary. The investigating scholar, of broad vision and precise thought, Muhammad ibn Abidin Shami, in Radd al-Muhtar ala al-Durr al-Mukhtar, maintained and accepted the findings of Durr al-Mukhtar and did not even hint at any disagreement or dispute regarding the preference for the Imam's school. Then, a large number of scholars of the foundational texts, commentaries, and fatwas, both those mentioned and others, in the chapter of maintenance (Bab al-Nafaqat), state the woman's right to withhold herself in absolute terms for the demand of prompt dower (Mahr Mu'ajjal). They do not impose a condition of absence of intercourse or consensual privacy at all, as is evident from referring to their books. Rather, in Sharh al-Wiqayah, the scenario of the case is hypothesized as follows:

[Arabic]: Her going out is by right, as if he had not given her the prompt dower and she left his house. (2) [Urdu Translation]: The wife's going out is justified, as if the husband had not given her the prompt dower and she left his house. (T)

And it is obvious that after coming to the husband's place, intercourse usually occurs. Nevertheless, they left the ruling absolute and did not pay any attention to restriction. These absolute statements also inform of the same preference for the Imam's school. Necessarily, Allamah Khair al-Din al-Ramli, the teacher of the author of Durr al-Mukhtar, gave the fatwa based only on the Imam's statement and did not even mention the other school. In Fatawa al-Khayriyya li-Naf' al-Bariyya, it is stated:

[Arabic]: He was asked about a woman who surrendered herself before receiving all of what was stipulated as prompt dower: does she have the right after that to withhold herself from him? He replied: Yes, she has the right to withhold herself until she receives the full [prompt dower]. [Urdu Translation]: A question was asked to him about such a woman who had surrendered herself to the husband before receiving the prompt dower: can she then withhold herself from the husband for the sake of the prompt dower? He replied that yes, she can withhold herself until the prompt dower is full.

1 Kifayah with Fath al-Qadir, Chapter of Dower, Maktabah Nuriyya Razawiyya, Sukkur, 3/50-249. 2 Sharh al-Wiqayah, Chapter of Maintenance, Mujtabai Press, Delhi, 2/173.

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

[अरबी]: विक्रेता का खरीदार को बेची गई वस्तु का कुछ हिस्सा सौंप देना, उसके शेष हिस्से को रोकने के अधिकार को समाप्त नहीं करता। (1) [उर्दू अनुवाद]: यदि विक्रेता बेची गई वस्तु का कुछ हिस्सा ग्राहक को सौंप देता है, तो विक्रेता का शेष वस्तु को रोकने का अधिकार समाप्त नहीं होता। (त)

इसी तरह सद्र अल-शरिया ने शरह अल-विक़ायह, अल-काफ़ी शरह अल-वाफ़ी, अल-इख़्तियार शरह अल-मुख़्तार और मुस्तख़लस शरह अल-कन्ज़ आदि की टीकाओं में इमाम (अबू हनीफा) के मज़हब पर दलील कायम की और साहबिदैन (दो साथियों) की दलीलों का जवाब दिया। इमाम-ए-मोहक़्क़िक़ अली अल-इतलाक़ कमालुद्दीन मुहम्मद इब्न अल-हुमाम (अल्लाह उन पर रहम करे) ने फ़तह अल-क़दीर में हिदाया को वरीयता दी। अल्लामा शेख़ज़ादा, जो रूम के विद्वान और उस्मानी साम्राज्य के काज़ी थे और दुर्रे मुख़्तार के समकालीन और प्रामाणिक लेखक थे, ने मजमा अल-अन्हुर में मुल्तक़ा को प्राथमिकता दी। अल्लामा यूसुफ कल्पी ने जखीरतुल उक़बा फ़ी शरह सद्र अल-शरिया अल-उज़मा में पाठ और टीका पर भरोसा किया। व्यापक दृष्टि और सूक्ष्म विचारक मोहक़्क़िक़ अल्लामा मुहम्मद बिन आबिदीन शामी ने रद अल-मुहतार अल दुर्र अल-मुख़्तार में दुर्रे मुख़्तार के निष्कर्षों को स्वीकार किया और इमाम के मज़हब को प्राथमिकता देने में किसी असहमति का संकेत तक नहीं दिया। फिर, बड़ी संख्या में पाठों, टीकाओं और फतवों के विद्वानों ने, चाहे वे उपर्युक्त हों या अन्य, भरण-पोषण के अध्याय (बाब अल-नफ़क़ात) में मेहर-ए-मुअज्जल (तत्काल मेहर) की मांग के लिए महिला के स्वयं को रोकने के अधिकार को स्पष्ट रूप से बताया है। वे संभोग की अनुपस्थिति या सहमति से एकांत की शर्त बिल्कुल नहीं लगाते, जैसा कि उनकी पुस्तकों के संदर्भ से स्पष्ट है। बल्कि शरह अल-विक़ायह में तो समस्या का स्वरूप इस प्रकार माना गया है:

[अरबी]: उसका बाहर निकलना सही है, जैसे कि पति ने उसे मेहर-ए-मुअज्जल न दिया हो और वह उसके घर से निकल जाए। (2) [उर्दू अनुवाद]: पत्नी का बाहर निकलना न्यायोचित है, जैसे कि पति ने उसे मेहर-ए-मुअज्जल न दिया हो और वह उसके घर से निकल जाए। (त)

और यह स्पष्ट है कि पति के यहाँ आने के बाद आमतौर पर संभोग होता ही है। इसके बावजूद उन्होंने आदेश को सामान्य छोड़ दिया और किसी पाबंदी की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। ये सामान्य कथन भी इमाम के मज़हब की इसी पसंद की सूचना देते हैं। अनिवार्य रूप से, दुर्रे मुख़्तार के शिक्षक

अल्लामा ख़ैर अल-दीन अल-रमली ने केवल इमाम के कथन पर ही फतवा दिया और दूसरे मज़हब का उल्लेख तक नहीं किया। फ़तावा अल-खैरिया लिनफ़ अल-बरिया में उल्लेख है:

[अरबी]: उनसे एक ऐसी महिला के बारे में पूछा गया जिसने मेहर-ए-मुअज्जल के रूप में निर्धारित राशि प्राप्त करने से पहले ही खुद को पति के हवाले कर दिया था: क्या उसे उसके बाद पति से खुद को रोकने का अधिकार है? उन्होंने उत्तर दिया: हाँ, उसे खुद को रोकने का अधिकार है जब तक कि वह पूरा प्राप्त न कर ले। [उर्दू अनुवाद]: उनसे ऐसी महिला के बारे में सवाल किया गया जिसने मेहर-ए-मुअज्जल प्राप्त करने से पहले खुद को पति को सौंप दिया था, क्या वह मेहर-ए-मुअज्जल के लिए खुद को पति से रोक सकती है? तो जवाब दिया कि हाँ, वह खुद को रोक सकती है जब तक कि मेहर-ए-मुअज्जल पूरा न हो जाए।

1 किफ़ाया मा फ़तह अल-क़दीर, बाब अल-मेहर, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 3/50-249। 2 शरह अल-विक़ायह, बाब अल-नफ़क़ा, मतबा मुज्तबाई, दिल्ली, 2/173।

पेज 108 / 688

فتاوٰی رضویہ جلد دو ازدہم

البائع بعض المبیع الی المشتری لا یسقط حقہ فی حبس مابقی منہ۔ 1 بعض مبیع مشتری کو سونپ دے تو بائع کے لئے باقی مبیع کے روکنے کا حق ساقط نہیں ہوتا۔ (ت)

اسی طرح صدر الشریعہ شرح وقایہ وکافی شرح وافی واختیار شرح مختار ومستخلص شرح کنز وغیرہا شروح میں مذہب امام پر دلیل قائم کی اور دلیل صاحبین سے جواب دئے، امام محقق علی الاطلاق کمال الدین محمد بن الہمام رحمہ اللہ تعالٰی نے فتح القدیر میں ترجیح ہدایہ اور علامہ شیخی زادہ عالم دیار رومیہ قاضی دولت علیہ عثمانیہ معاصر ومستند صاحب در مختار نے مجمع الانہر میں تقدیم ملتقی اور علامہ یوسف چلپی نے ذخیرۃ العقبٰی فی شرح صدر الشریعہ العظمٰی میں اعتماد متن وشرح اور محقق علامہ وسیع النظر دقیق الفکر محمد بن عابدین شامی نے ردالمحتار علی الدرالمختار میں افادات در مختار کو مقرر ومسلم رکھا اور ترجیح مذہب امام میں خلاف ونزاع کی طرف بھی اشارہ نہ کیا پھر بکثرت علماء اہل متون وشروح وفتاوٰی ان مذکورین اور ان کے غیر باب النفقات میں عورت کو طلب مہر معجل کے لئے بالفظ ارسال واطلاق منع نفس کا استحقاق بتاتے ہیں اور اصلاً عدم وطی وخلوت برضا کی قید نہیں لگاتے کما یظہر بالمراجعۃ الی کتبہم (جیسا کہ انکی کتب کی طرف مراجعت سے ہوتا ہے۔ ت) بلکہ شرح وقایہ میں تو صورت مسئلہ یوں فرض کی کہ :

خروجھا بحق کما لولم یعطھا المھر المعجل فخرجت عن بیتہ - 2 بیوی کا باہر نکلنا برحق ہے جیسا کہ خاوند نے اس کو مہر معجل نہ دیا ہو تو وہ اس کے گھر سے نکل جائے۔ (ت)

اور ظاہر ہے کہ شوہر کے یہاں آنے کے بعد غالبا وطی واقع ہی ہوتی ہے باینہمہ حکم مطلق چھوڑا تقیید کی طرف مطلق التفات نہ فرمایا یہ اطلاقات بھی اسی اختیار مذہب امام سے خبر دے رہے ہیں، لاجرم علامہ خیر الدین رملی استاذ صاحب در مختار نے قولِ امام ہی پر فتوی دیا اور مذہب آخر کا ذکر تک نہ کیا، فتاوی خیر یہ لنفع البریہ میں ہے:

سئل في المرأة اذا سلمت نفسها قبل استكمال ما شرط تعجيله لها من المهر هل لها بعد ذلك منع نفسها عنه اجاب لها منع نفسها حتى تستكمل ان سے ایسی عورت کے متعلق سوال کیا گیا جو مہر معجل وصول کرنے سے پہلے اپنے آپ کو خاوند کے سپرد کر چکی ہو کیا پھر مہر معجل کے لئے اپنے آپ کو خاوند سے روک سکتی ہے؟ تو جواب دیا کہ ہاں روک سکتی ہے یہاں تک کہ مہر معجل پورا

1 کفایہ مع فتح القدیر باب المہر مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۳/۵۰-۲۴۹ 2 شرح الوقایہ باب النفقہ مطبع مجتبائی دہلی ۱۷۳/۲

Fatawa Rizvia Volume 12

That is according to the Imam (Imam Abu Hanifa), even if she had already surrendered herself. All the core texts (Mutoon) have explicitly stated this issue. -1

This is [regarding the right to] recover [the dower] according to Imam Abu Hanifa (may Allah the Almighty have mercy on him), even if the wife has already surrendered herself. All the core texts have explicitly clarified this issue. (T)

After all, these researching scholars and great investigators (may Allah have mercy on them all) were not unaware of the fatwa of Imam Saffar and the choice of some sheikhs. Yet, they express firm belief and reliance on the Imam's statement alone. Some do not even mention the statement of the Sahibain (his two students, Abu Yusuf and Muhammad), and this is the case with most texts. Some explicitly add words that clearly negate their (the Sahibain's) school of thought. Some establish proof only for the Imam's school. Some respond to the Sahibain's proof. Those who promised to prioritize the strong view, prioritize this school (the Imam's). Those who committed to deferring the reliable proof, bring its proof at the end. In short, they demonstrate the preference and correction of the Imam's school in various ways. The great commentators and annotators mentioned above approach it with discourse and acceptance. One is forced to admit that, according to all of them, the reliable, preferred, and refined school is that of the Imam (may Allah be pleased with him). Moreover, the strength of the proof is clear from studying Al-Hidayah, Al-Kafi, Al-Ikhtiyar, Al-Kifayah, etc. So, when this is the school of the Great Imam, and there is a consensus of texts on it, and its proof is strongest, and its preferrers are so numerous, why should it be deviated from? This is while scholars explicitly state that a Mufti should generally give fatwa based on the Imam's statement, and a judge should generally decide based on the Imam's school—that is, when there is no compelling reason to abandon it, such as the practice of Muslims or the consensus of preferrers for an opposing view. As seen in the two issues of the permissibility of sharecropping (Muzara'a) and the prohibition of a small amount of non-liquid intoxicants. (T) And they command that there should be no deviation from the Imam's statement even if the sheikhs of the school give fatwa against it. This is explicitly stated in Munyah, Sarajiyyah, Muhit of Imam Sarakhsi, Fatawa Alamgiri, Al-Bahr al-Ra'iq, An-Nahr al-Fa'iq, Fatawa Khayriyya, Tanwir al-Absar, and Sharh 'Alai' with Hashiyah Tahtawiyyah, and other reliable books. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

The judge, like the Mufti, takes the statement of Abu Hanifa unconditionally, then the statement of Abu Yusuf, then the statement of Muhammad, then the statements of Zufar and Al-Hasan ibn Ziyad. This is the most correct view according to Munyah and Sarajiyyah. -2	**The judge, like the Mufti, will unconditionally take the statement of the Imam [Abu Hanifa], then the statements of Imam Abu Yusuf, then Imam Muhammad, then Imam Zufar and Hasan ibn Ziyad. This is the most correct view, according to Munyah and Sarajiyyah.**

1. Fatawa Khayriyya, Chapter of Maintenance, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/69
2. Durr-e-Mukhtar, Book of Judiciary, Mujtabai Press, Delhi, 2/217

यह इमाम (इमाम अबू हनीफ़ा) के अनुसार है, भले ही उसने खुद को सौंप दिया हो। सभी मूल ग्रंथों (मतून) ने स्पष्ट रूप से इस मुद्दे को बयान किया है। -1

यह [महर] वसूल करने के संबंध में इमाम साहब (अल्लाह उन पर रहम करे) के यहाँ है, भले ही पत्नी पहले ही खुद को सौंप चुकी हो। इस मुद्दे पर तमाम मतून (मूल ग्रंथ) स्पष्ट उल्लेख कर चुके हैं। (त)

आख़िर ये शोधकर्ता विद्वान और महान अन्वेषक (अल्लाह उन सब पर रहम करे) इमाम सफ़ार के फ़तवे और कुछ शेखों की पसंद से बेख़बर नहीं थे, फिर भी वे केवल इमाम के कथन पर ही दृढ़ विश्वास और भरोसा करते हैं। कोई तो साहिबैन (इमाम के दो शिष्य, अबू यूसुफ और मुहम्मद) के कथन का नाम तक नहीं लेता और अधिकांश ग्रंथों का यही हाल है। कोई स्पष्ट रूप से वे शब्द बढ़ाता है जिससे उनके(साहिबैन के) मज़हब का स्पष्ट खंडन हो जाए। कोई केवल इमाम के मज़हब पर ही प्रमाण (दलील) कायम करता है। कोई साहिबैन के प्रमाण का जवाब देता है। जिन्होंने वादा किया था कि वे मजबूत कथन को प्राथमिकता देंगे, वे इसी मज़हब को प्राथमिकता देते हैं। जिन्होंने यह प्रतिबद्धता जताई थी कि वे विश्वसनीय प्रमाण में देरी करेंगे, वे उसी का प्रमाण अंत में लाते हैं। संक्षेप में, वे विभिन्न तरीकों से इमाम के मज़हब की प्राथमिकता और शुद्धिकरण का लाभ पहुँचाते हैं। और महान व्याख्याकार और टिप्पणीकार, जिनका उल्लेख हुआ है, वे इसे चर्चा और स्वीकृति के साथ प्रस्तुत करते हैं। यह मानना ही पड़ेगा कि उन सभी के अनुसार विश्वसनीय, पसंदीदा और परिष्कृत मज़हब इमाम साहब (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) का ही है। इसके अतिरिक्त, प्रमाण की शक्ति 'हिदाया', 'काफ़ी', 'इख़्तियार' और 'किफ़ाया' आदि के अध्ययन से स्पष्ट होती है। अतः जब यही इमाम आज़म का मज़हब है और इसी पर मूल ग्रंथों की सहमति है और इसी का प्रमाण सबसे मजबूत है और इसके समर्थकों की संख्या इतनी अधिक है, तो इससे हटने का क्या कारण है? जबकि विद्वान स्पष्ट रूप से कहते हैं कि मुफ़्ती पूर्ण रूप से इमाम के कथन पर फ़तवा दे, और काज़ी आमतौर पर इमाम के मज़हब पर फ़ैसला करे—यानी जब तक इसे छोड़ने के लिए मुसलमानों के व्यवहार या विरोध पर समर्थकों की सहमति जैसी कोई आवश्यकता न हो। जैसा कि 'मुज़ारत' (बटाई पर खेती) की अनुमति और गैर-तरल नशीले पदार्थों की कम मात्रा के निषेध के दो मुद्दों में है। (त) और वे आदेश देते हैं कि इमाम के कथन से विचलित न हुआ जाए, भले ही मज़हब के शेख इसके विरुद्ध फ़तवा दें। 'मुनिया', 'सराजिया', 'मुहीत इमाम सरख़सी', 'फ़तावा आलमगीरी', 'बहर-उर-रैक', 'नहर-

उल-फ़ैक', 'फ़तावा खैरिया', 'तनवीर-उल-अब्सार' और 'शरह अलाई' हाशिया तहतावी आदि विश्वसनीय पुस्तकों में इसका स्पष्ट विवरण है। 'दुर्रे मुख़्तार' में है:

काज़ी, मुफ़्ती की तरह, बिना किसी शर्त के अबू हनीफ़ा के कथन को लेता है, फिर अबू यूसुफ़ के कथन को, फिर मुहम्मद के कथन को, फिर ज़ुफ़र और अल-हसन बिन ज़ियाद के कथनों को। 'मुनिया' और 'सराजिया' के अनुसार यही सबसे सही है। -2	**काज़ी भी मुफ़्ती की तरह इमाम साहब के कथन को बिना शर्त लेगा, फिर इमाम अबू यूसुफ़, फिर इमाम मुहम्मद, फिर इमाम ज़ुफ़र और हसन बिन ज़ियाद के कथनों को लेगा। यही सबसे सही है, मुनिया और सराजिया।**

1. फ़तावा खैरिया, बाब-उल-नफ़का, दार-उल-मआरिफ़ा, बेरूत, 1/69
2. दुर्रे मुख़्तार, किताब-उल-क़ज़ा, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 2/217

पृष्ठ 109 / 688

ذلك عند الامام وان كانت سلمت نفسہا وبہ صرحت المتون قاطبۃً -1

وصول کرلے امام صاحب رحمہ اللہ تعالٰی کے ہاں ہے ، اگرچہ بیوی پہلے اپنے آپ کو سونپ چکی ہو ، اس مسئلہ پر تمام متون تصریح کر چکے ہیں.(ت)

آخر یہ علمائے محققین و عظماءِ مدققین رحمۃ اللہ علیہم اجمعین فتوائے امام صفار و اختیار بعض مشائخ سے غافل نہ تھے ، پھر قولِ امام ہی پر جزم و اعتماد فرماتے ہیں ، کوئی تو قولِ صاحبین کا نام تک نہیں لیتا اور اکثر متون کا یہی حال ہے ، کوئی صاف وہ الفاظ بڑھاتا ہے جس سے ان کے مذہب کی صریح نفی ہو جائے ، کوئی صرف مذہبِ امام ہی پر دلیل قائم کرتا ہے ، کوئی دلیلِ صاحبین سے جواب دیتا ہے ، جنہوں نے وعدہ کیا کہ قولِ قوی کو مقدم لائیں گے وہ اسی مذہب کی تقدیم کرتے ہیں ، جنہوں نے التزام کیا کہ دلیلِ معتمد کی تاخیر کریں گے وہ اسی کی دلیل پیچھے لاتے ہیں۔ غرض طرح طرح سے ترجیح و تصحیح مذہبِ امام کا افادہ فرماتے ہیں ، اور کبرائے ناظرین شراح و محشین کہ مذکورہ ہوئے تقریر و تسلیم سے پیش آتے ہیں ' ناچار ماننا پڑے گا کہ ان سب کے نزدیک معتمد و مریح و منقح مذہبِ امام ہے رضی اللہ تعالٰی عنہ ، اور قوتِ دلیل کہ مطالعہِ ہدایہ و کافی و اختیار و کفایہ وغیرہ سے واضح ہوتی ہے اس پر علاوہ ، پس جبکہ یہی مذہبِ امام اعظم ہے اور اسی پر متون کا اجماع اور اسی کی دلیل اقوٰی اور اس قدر کثرت سے اس کے مرجحین ، توجہ کیا ہے کہ اس سے عدول کیا جائے حالانکہ علماء تصریح فرماتے ہیں کہ مفتی مطلقاً قولِ امام پر فتوٰی دے ، اور قاضی عموماً مذہبِ امام پر فیصلہ کرے یعنی جب کوئی ضرورت مثل تعامل المسلمین یا اجماع المرجحین علی الخلاف کے داعی ترک نہ ہو ، کما فی مسألتی جواز المزارعۃ و تحریم القلیل من لامائع المسکر جیسا کہ مزارعت کے جواز اور قلیل مسکر

پانی کی تحریم کے دونوں مسئلوں میں ہے۔ ت اور حکم دیتے ہیں کہ قولِ امام سے عدول نہ کیا جائے اگرچہ مشائخ مذہب اس کے خلاف پر فتویٰ دیں۔ منیہ و سراجیہ و محیطِ امام سرخسی و فتاوٰی عالمگیری و بحر الرائق و نہر الفائق و فتاویٰ خیریہ و تنویر الابصار و شرح علائی حاشیہ طحطاویہ و غیر ہا کتبِ معتمدہ میں اس کی تصریح ہے ، در مختار میں ہے :

يأخذ القاضي كالمفتي بقول ابی حنيفة علی الاطلاق ثم بقول ابی يوسف ثم بقول محمد ثم بقول زفر والحسن بن زياد وهو الاصح منية وسراجية-2

قاضی بھی مفتی کی طرح امام صاحب کے قول مطلقاً لے گا ، پھر امام ابو یوسف ، پھر امام محمد ، پھر امام زفر اور حسن بن زیاد کے اقوال کو لے گا ، یہی اصح ہے ، منیہ و سراجیہ ۔

1 فتاویٰ خیریہ باب النفقة دار المعرفة بیروت ۱/۶۹ 2 در مختار کتاب القضاء مطبع مجتبائی دہلی ۲/۲۱۷

Fatawa Razawiyya Volume 12

It is stated in Bahr al-Raiq: "It is mandatory for us to give fatwa according to the saying of the Imam (Abu Hanifa), even if the masters (Mashaikh) have given fatwas against it." We must act upon the saying of Imam Abu Hanifa (mercy of Allah be upon him) even if the scholars have already issued fatwas to the contrary. (T)

And the same is in Fatawa Khairiyyah, especially in the queried case where it appears from the statement of the question that Zaid's ill-treatment towards Hindah has occurred; so here another fatwa is in accordance with the Imam's saying. In Tahdhib, quoting the words of Imam Abu al-Qasim, they say: "In my view, the preferred opinion regarding prevention is that if the ill-treatment is from the husband, she has the right to prevent (him); but if it is from her side, she has no right to withhold herself from the husband. Regarding travel, the fatwa is according to the saying of Imam (Abu Hanifa), may Allah Almighty be pleased with him." In my view, the preferred ruling regarding restriction is that if the bad conduct is on the part of the husband, the wife has the right of restriction. But if the bad conduct is on the part of the wife, then she has no right to keep herself away from her husband. Regarding travel, the fatwa is based on the opinion of the Imam, may Allah Almighty be pleased with him. (T)

Similarly, it is cited from it in Fatawa Ibrahim Shahi and Fatawa Hammadiyyah. This is a brief discourse on this matter, and a somewhat detailed discussion of these topics will come in our second fatwa, and with Allah is all success. In short, in the investigated case, upon research, the mufti and the judge must rely on the saying of the Imam. And Allah, the Pure and Exalted, knows best.

Answer to the Second Question I say: And with Allah is success and by Him is the arrival at the peaks of research. In this statement, the first matter is a very surprising thing; there is no trace of this meaning in Durr al-Mukhtar, rather its contrary is explicitly mentioned in it in the 'Book of Judiciary' (Kitab al-Qada), they say: "The judge, like the mufti, takes the saying of Abu Hanifa absolutely." The judge also, like the mufti, will absolutely take the word of Imam Abu Hanifa, mercy of Allah be upon him. (T)

Then, it is cited from Munyat al-Mufti and Fatawa Sirajiyyah as 'Huwa al-Asah' (That is more correct. T). Yes, they brought a saying from Hawi Qudsi that the matter depends on the time of proof, then they did not maintain it either, and cited from Nahr al-Faiq: 'Al-Awwal Adbat' (The first is more established. T).

1 Bahr al-Raiq, Chapter on Taqlid, H.M. Saeed Company Karachi, 6/269-270. 2 Tahdhib. 3 Durr al-Mukhtar, Book of Judiciary, Mujtabai Press Delhi, 2/7. 4 Durr al-Mukhtar, Book of Judiciary, Mujtabai Press Delhi, 2/7. 5 Durr al-Mukhtar, Book of Judiciary, Mujtabai Press Delhi, 2/7.

बहर अल-राइक़ में फरमाया गया: "हमें इमाम (अबू हनीफा) के कथन के अनुसार फतवा देना अनिवार्य है, भले ही विद्वानों (मशाइख) ने इसके विरुद्ध फतवा दिया हो।" हम पर इमाम अबू हनीफा (रहमतुल्लाह अलैहि) के कथन पर अमल करना वाजिब है, भले ही मशाइख इसके खिलाफ फतवा दे चुके हों। (त)

और ऐसा ही फतावा खैरिया में है, विशेष रूप से पूछे गए मामले में जबकि प्रश्न के विवरण से स्पष्ट है कि ज़ैद की तरफ से हिन्दा के साथ बुरा व्यवहार हुआ है, तो यहाँ एक और फतवा इमाम के कथन के अनुकूल है। तहज़ीब में इमाम अबुल कासिम के शब्दों को उद्धृत करते हुए कहते हैं: "मेरे नज़दीक रोकने के संबंध में पसंदीदा राय यह है कि यदि बुरा व्यवहार पति की ओर से हो, तो उसे रोकने का अधिकार है; लेकिन यदि यह उसकी (पत्नी की) ओर से हो, तो उसे खुद को पति से दूर रखने का अधिकार नहीं है। यात्रा के संबंध में, फतवा इमाम (अबू हनीफा) रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के कथन पर है।" (त) मेरे नज़दीक रोकने के बारे में मुख्तार (पसंदीदा) यह है कि अगर बदअखलाकी शौहर की तरफ से हो तो बीवी को हक़ रोकने का है और अगर बदअखलाकी बीवी की तरफ से हो तो फिर उसको हक़ नहीं है कि वह अपने आप को शौहर से रोक रखे, सफ़र के बारे में फतवा इमाम साहब रहमतुल्लाह तआला अलैहि के कौल पर है (त)।

इसी तरह फतावा इब्राहिम शाही और फतावा हम्मादिया में इससे नक़ल किया गया है, यह इस बारे में संक्षिप्त चर्चा है, और इन विषयों की कुछ विस्तृत चर्चा हमारे दूसरे फतवे में आएगी और अल्लाह ही सफलता देने वाला है। संक्षेप में, शोधित मामले में शोध के अनुसार मुफ्ती और काज़ी के लिए इमाम के कथन पर ही भरोसा करना है। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है।

दूसरे प्रश्न का उत्तर मैं कहता हूँ: और अल्लाह की मदद से ही सफलता है और उसी के ज़रिए शोध की चोटियों तक पहुंचना है। इस बयान में पहली बात एक अत्यंत आश्चर्यजनक बात है, दुर्र-ए-मुख्तार में इस मतलब का कहीं पता नहीं चलता बल्कि इसमें स्पष्ट रूप से इसके विपरीत 'किताब अल-कज़ा' में लिखा है, वे फरमाते हैं: "काज़ी भी मुफ्ती की तरह पूर्णतः(मुतलकन) अबू हनीफा के कथन को लेगा।" काज़ी भी मुफ्ती की तरह मुतलकन इमाम अबू हनीफा रहमतुल्लाह तआला अलैहि का कौल लेगा। (त)

फिर मुनियतुल मुफ्ती और फतावा सिराजिया से नक़ल किया 'हुवा अल-असह्' (वही ज़्यादा सही है। त)। हाँ, हावी कुदसी से एक बात यह लाए कि मामला दलील के वक्त पर निर्भर है, फिर उसे भी बरकरार नहीं रखा, और नहर अल-फाइक़ से नक़ल फरमाया: 'अल-अव्वल अज़बत' (पहला ज़्यादा मज़बूत है। त)।

1 बहर अल-राइक़, अध्याय तक़लीद, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 6/269-270। 2 तहज़ीब। 3 दुर्र-ए-मुख्तार, किताब अल-कज़ा, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 2/7। 4 दुर्र-ए-मुख्तार, किताब अल-कज़ा, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 2/7। 5 दुर्र-ए-मुख्तार, किताब अल-कज़ा, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 2/7।

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

بحر الرائق میں فرمایا: یجب علینا الافتاء بقول الامام وان افتی المشائخ بخلافہ - ہم پر امام ابوحنیفہ رحمۃ اللہ علیہ کے قول پر عمل واجب ہے اگرچہ مشائخ اس کے خلاف پر فتوٰی دے چکے ہوں۔ (ت)

اور ایسا ہی فتاوٰی خیر یہ میں ہے خصوصاً صورت مسئولہ میں جبکہ تقریر سوال سے ظاہر کہ زید کی طرف سے سوء معاشرت ہندہ کے ساتھ واقع ہوئی تو یہاں تو ایک اور فتوٰی قول امام کے موافق ہے تہذیب میں کلام امام ابوالقاسم نقل کر کے فرماتے ہیں: المختار عندی فی المنع ان کان سوء المعاشرۃ من الزوج لھا المنع وان کان من جھتھا فلیس لھا المنع وفي السفر قول ابی حنیفۃ رضی اللہ تعالی عنہ - میرے نزدیک منع کے بارے میں مختار یہ ہے کہ اگر بد اخلاقی خاوند کی طرف سے ہو تو بیوی کو منع حق ہے اور اگر بد اخلاقی بیوی کی طرف سے ہو تو پھر اس کو حق نہیں ہے کہ وہ اپنے آپ کو خاوند سے روک رکھے، سفر کے بارے میں فتوٰی امام صاحب رحمہ اللہ تعالٰی کے قول پر ہے (ت)

اسی طرح فتاوٰی ابراہیم شاہی و فتاوٰی حمادیہ میں اس سے نقل کیا، یہ ہے اس بارے میں کلام اجمالی، اور قدرے تفصیلی ان مباحث کی ہمارے فتوائے ثانیہ میں آتی ہے وباللہ التوفیق، بالجملہ صورت مستفسرہ میں عند التحقیق مفتی و قاضی کے لئے قول امام ہی پر اعتماد ہے۔ واللہ سبحنہ وتعالٰی اعلم۔

جواب سوال دوم اقول: وباللہ التوفیق وبہ الوصول الی ذری التحقیق اس تقریر میں امراول ایک سخت حیرت انگیز بات ہے، در مختار میں اس مطلب کا کہیں پتا نہیں بلکہ اس میں صراحۃً اس کا خلاف

مصرح کتاب القضا میں فرماتے ہیں: یاخذ القاضی کالمفتی بقول ابی حنیفہ علی الاطلاق - قاضی بھی مفتی کی طرح مطلقاً امام ابوحنیفہ رحمہ اللہ تعالیٰ کا قول لے گا۔ (ت)

پھر منیۃ المفتی و فتاویٰ سراجیہ سے نقل کیا ہو الاصح (وہی زیادہ صحیح ہے۔ ت) ہاں ایک قول حاوی قدسی سے یہ لائے کہ وقت دلیل پر مدار ہے پھر اُسے بھی برقرار نہ رکھا، اور نہر الفائق سے نقل فرمایا: الاول اضبط (وہی زیادہ مستحکم ہے۔ ت)

1 بحر الرائق فصل تقلید ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۶ / ۲۷۰-۲۶۹ 2 تہذیب 3 در مختار کتاب القضاء مطبع مجتبائی دہلی ۲ / ۷ 4 در مختار کتاب القضاء مطبع مجتبائی دہلی ۲ / ۷ 5 در مختار کتاب القضاء مطبع مجتبائی دہلی ۲ / ۷

Fatawa Razawiya, Volume 12

...more solid. (T) And research and guidance is what the author [of the text] said, 'No choice is given unless one is a mujtahid (independent jurist),' meaning one who is himself a mujtahid should look at the strength of the evidence. And for us, the same sequence is mandatory: to issue fatwa and judgement absolutely according to the school of the Imam, as long as no strong and great obstacle is found, as we will soon mention as a citation, God willing. (God willing, we will mention this soon. (T))

In response to the second matter: Firstly, the passage from Durr al-Mukhtar that has just passed and the numerous passages that I will write, God willing, are sufficient. Secondly, in the words of the scholars, there is no indication, neither generally nor after specification of worldly matters, that when Imam Abu Yusuf holds one opinion and the two Sahiban (Imam Abu Hanifa and Imam Muhammad) hold another, his opinion's acceptance is a settled rule due to his experience. Yes, scholars have indeed said regarding the issues of endowment (waqf) and judiciary (qada) that fatwa is mostly on the second opinion [of Abu Yusuf]. This does not mean everything that falls under judicial jurisdiction, so that it would include marriage, sale, gift, lease, mortgage, etc.—all chapters of jurisprudence except the likes of fasting and prayer. Thus, endowment was also of the same type; then what would be the point of counting it separately? Never has any scholar in the world held this view, and thousands upon thousands of books of jurisprudence are just witnesses against it, as fatwa is given on the Imam's [Abu Hanifa] view even in millions of transaction matters, even if Imam Muhammad agrees with Imam Abu Yusuf's opinion. Rather, this is specific to those matters that jurists mostly write in the 'Book of Judiciary' and the 'Book of Endowment.' In 'Al-Ashbah wa al-Naza'ir,' where this benefit is under the rule 'Difficulty brings ease' (Mushaqqah tajlib al-taysir—ease is brought about due to hardship (T)), these very issues were counted. As he said:

ووسع ابویوسف رحمۃ اللہ تعالٰی فی القضاء والوقف والفتوی علی قولہ فیما | یتعلق بھما فجوز للقاضی تلقین الشاھد وجواز کتاب القاضی الی القاضی من غیر سفر ولم یشترط فیہ شیئاً مما شرطہ الامام و صحح الوقف علی النفس وعلی جھۃ تنقطع ووقف المشاع ولم یشترط التسلیم الی المتولی ولاحکم القاضی وجوز استبدالہ عند الحاجۃ | Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on him) created vastness regarding judiciary and endowment; in these two chapters, the fatwa will be on his opinion. He declared it permissible for the judge to prompt the witness, and for a judge's letter to another judge to be valid without travel and without the conditions that Imam Abu Hanifa (may Allah have mercy on him) imposed. He validated 'waqf 'ala al-nafs' (meaning endowing property such that he himself enjoys its income for life), endowment for a temporary cause, and endowment of undivided property, and did not impose the condition of handing over to a trustee, nor a judge's ruling, and allowed its exchange at the time of need. |

फ़तावा रज़विया, जिल्द बारहवीं

...ज़्यादा मज़बूत है। (त) और तहक़ीक़ व तौफ़ीक़ वह है जो मातन (मूल पाठ लेखक) ने फ़रमाया कि 'ला युख़ैयरु इल्ला इज़ा काना मुज्तहिदा' यानी जो ख़ुद मुज्तहिद हो वह दलील की कुव्वत पर नज़र करे और हम पर वही तरतीब लाज़िम है कि अ़ला इत्तलाक़ मज़हब इमाम पर इफ़्ता व क़ज़ा करें जब तक कोई मानअ़ (बाधा) क़वी व अ़ज़ीम (मज़बूत और बड़ा) न पाया जाए, कमा सनज़्कुरुहू इन्शा अल्लाह तआला (इन्शा अल्लाह तआला इसे अ़नक़रीब हम ज़िक्र करेंगे। त)

अम्रे दोयम (दूसरे मामले) के जवाब में: अव्वलन इबारते दुर्रे मुख़्तार जो अभी गुज़री और वह इबारते कसीरा (अनेक उद्धरण) जो इन्शा अल्लाह तआला लिखता हूँ बस हैं। सानियन कलिमाते उलेमा में न उमूमन न बा’द तख़्सीस मुआमलाते दुनियावी कहीं इसका निशान नहीं कि जब इमाम अबू यूसुफ़ के साथ हज़राते तरफ़ैन (इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मुहम्मद) से एक राय और हो तो उनकी तजुर्बाकारी के बाइस इसका क़ुबूल कायदाए मुस्लमा है, हाँ उलेमा ने मसाइले वक़्फ़ व क़ज़ा की निस्बत बेशक फ़रमाया कि वहाँ ग़ालिबन कौले सानी (द्वितीय मत) पर फ़तवा है, इससे हर वह अम्र के ज़ेरे क़ज़ा आ सके मुराद नहीं ताकि अमसाले सौम व सलात के सिवा निकाह व बैअ़ व हिबा इजाराह व रहन व ग़ैरहुमा तमाम अबवाबे फिक़्ह को आम हो जाए यूँ तो वक़्फ़ भी इसी क़बील से था, फिर ख़ास इसे अलग गिनने के क्या मा’नी, न हरगिज़ आलम में कोई आलिम इसका काइल, और ख़ुद हज़ारहाँ हज़ार कुतुबे फिक़्ह इसके ख़िलाफ़ पर गवाह आदिल, कि लाखों मसाइल मुआमलात में भी कौले इमाम ही पर फ़तवा है अगरचे राए इमाम अबू यूसुफ़ से इमाम मुहम्मद भी मुवाफ़िक़ हों बल्कि यह अम्र ख़ास उन मसाइल में अक्सरी तौर पर है जिन्हें फ़ुक़हा किताबुल क़ज़ा व किताबुल वक़्फ़ में लिखते हैं 'अशबाह व नज़ाइर' में जहाँ यह फ़ायदा ज़ेरे कायदा 'अल-मुशक़्क़तु तज्लीबुत तैसीर' (मशक़्क़त के सबब हुक्म में आसानी हो जाया करती है। त) वहाँ यही मसाइल शुमार किये। हैसु क़ाल (जैसा कि उन्होंने कहा):

ووسع ابويوسف رحمۃ اللہ تعالٰی فی القضاء والوقف والفتوی علی قولہ | فیما یتعلق بھما فجوز للقاضی تلقین الشاھد وجواز کتاب القاضی الی القاضی من غیر سفر ولم یشترط فیہ شیئاً مما شرطہ الامام و صحح الوقف علی النفس وعلی جھۃ تنقطع ووقف المشاع ولم یشترط التسلیم الی المتولی ولاحکم القاضی وجوز استبدالہ عند الحاجۃ | इमाम अबू यूसुफ़ रहमतुल्लाह तआला ने क़ज़ा व वक़्फ़ के मुताल्लिक़ वुसअ़त (विस्तार) पैदा की है, इन दोनों बाबों में उनके क़ौल पर फ़तवा होगा, उन्होंने गवाह को क़ाज़ी की तल्क़ीन, क़ाज़ी का क़ाज़ी को बग़ैर सफ़र ख़त, बग़ैर उन शराइत के जो इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह तआला ने लगाई हैं को जायज़ क़रार दिया है, उन्होंने वक़्फ़ अ़लल नफ़्स (यानी अपनी जायदाद यूँ वक़्फ़ करे कि ता-हयात वह ख़ुद उसकी आमदनी से मुतमत्ते (लाभान्वित) रहेगा) और वक़्फ़ अ़ला जेहते मुन्क़तअ़ और ग़ैर मुन्क़सिम चीज़ के वक़्फ़ को जायज़ कहा है और मुतवल्ली को सौंप देने की शर्त नहीं लगाई और न ही |

पृष्ठ १११/६८८

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

زیادہ مضبوط ہے۔ ت) اور تحقیق و توفیق وہ ہے جو ماتن نے فرمایا کہ لا یخیرا لاذا کان مجتھدا یعنی جو خود مجتہد ہو وہ قوتِ دلیل پر نظر کرے اور ہم پر وہی ترتیب لازم کہ علی الاطلاق مذہب امام پر افتاء وقضاء کریں جب تک کوئی مانع قوی و عظیم نہ پایا جائے کما سندکرہ ان شاء اللہ تعالیٰ (ان شاء اللہ تعالیٰ اس کو عنقریب ہم ذکر کریں گے۔ت)

امر دوم کے جواب میں، اولاً عبارت درمختار کہ ابھی گزری اور وہ عبارت کثیرہ کہ ان شاء اللہ تعالیٰ لکھتا ہوں بس ہیں۔ ثانیاً کلماتِ علماء میں نہ عموماً نہ بعد تخصیص معاملاتِ دُنیوی کہیں اس کا نشان نہیں کہ جب امام ابویوسف کے ساتھ حضرات طرفین سے ایک رائے اور ہو تو ان کی تجربہ کاری کے باعث اس کا قبول قاعدہ مسلمہ ہے، ہاں علماء نے مسائلِ وقف و قضاء کی نسبت بیشک فرمایا کہ وہاں غالباً قولِ ثانی پر فتویٰ ہے، اس سے ہر وہ امر کے زیرِ قضا آسکے مراد نہیں تاکہ امثالِ صوم و صلوٰۃ کے سوا نکاح و بیع و ہبہ اجارہ ورہن وغیرہما تمام ابوابِ فقہ کو عام ہو جائے یوں تو وقف بھی اسی قبیل سے تھا، پھر خاص اسے الگ گننے کے کیا معنی، نہ ہر گز عالم میں کوئی عالم اس کا قائل، اور خود ہزاراں ہزار کتبِ فقہ اس کے خلاف پر گواہِ عادل، کہ لاکھوں مسائل معاملات میں بھی قولِ امام ہی پر فتویٰ ہے اگر چہ رائے امام ابویوسف سے امام محمد بھی موافق ہوں بلکہ یہ امر خاص ان مسائل میں اکثری طور پر ہے جنہیں فقہاء کتاب القضاء و کتاب الوقف میں لکھتے ہیں اشباہ والنظائر میں جہاں یہ فائدہ زیرِ قاعدہ المشقۃ تجلب التیسیر (مشقت کے سبب حکم میں آسانی ہو جایا کرتی ہے۔ ت) وہاں یہی مسائل شمار کئے۔ حیث قال:

| ووسع ابویوسف رحمۃ اللہ تعالٰی فی القضاء والوقف والفتوی علی قولہ فیما یتعلق بھما فجوز للقاضی تلقین الشاھد وجواز کتاب القاضی الی القاضی من غیر سفر ولم یشترط فیہ شیئاً مما شرطہ الامام و صحح الوقف علی النفس وعلی جھۃ تنقطع ووقف المشاع ولم یشترط التسلیم الی المتولی ولاحکم القاضی وجوز استبدالہ عند الحاجۃ | امام ابویوسف رحمۃ اللہ تعالٰی نے قضاء و وقف کے متعلق وسعت پیدا کی ہے، ان دونوں بابوں میں ان کے قول پر فتوی ہوگا، انہوں نے گواہ کو قاضی کی تلقین، قاضی کا قاضی کو بغیر سفر خط، بغیر ان شرائط کے جو امام ابوحنیفہ رحمۃ اللہ تعالٰی نے لگائی ہیں کو جائز قرار دیا ہے، انہوں نے وقف علی النفس (یعنی اپنی جائیداد یوں وقف کرے کہ تاحیات وہ خود اس کی آمدنی سے متمتع رہے گا) اور وقف علی جھۃ منقطعہ اور

غیر منقسم چیز کے وقف کو جائز کہا ہے اور متولی کو سونپ دینے کی شرط نہیں لگائی اور نہ ہی |

Fatawa Razvia Volume 12

[Table/Box 1] (Left Column - Arabic): ...to it without condition, and allowed it with a condition to encourage waqf (endowments) and to facilitate for Muslims.[1] (Right Column - Urdu): He made the judge's order a condition for waqf, and declared it permissible to change the waqf at a time of need without any condition, and declared its change without need as permissible with a valid condition so that there is encouragement in making waqf and ease for Muslims. (T)

Thirdly: In these matters, there is no need for the agreement of other opinions, as is clear from referring back (to the books). Thus, the words of the scholars do not support this restriction.

Fourthly: No one can say that Imam Abu Yusuf is equal to the scholars of Imam-e-Azam. The incident is mentioned in famous books like Ashbah wal-Naza'ir, etc., where the Imam sent someone with five questions to the gathering of Imam Abu Yusuf, who had started his own teaching circle without permission. For every question he gave a different answer, and for every answer the questioner pointed out a mistake. Finally, being unsettled, he returned to the service of the Imam. Scholars say that any issue not settled in the presence of the Imam will remain unsettled until the Day of Resurrection. Imam Abu Yusuf himself, being perplexed in some matters, said: "In matters where our teacher (Imam-e-Azam) has no opinion, our condition is just like this (perplexed)." In Bahr al-Ra'iq under "Spoilers of Prayer":

[Table/Box 2] (Left Column - Arabic): The author of Fatawa al-Zahiriyya spoke truly when he said in the third section on reciting the Quran, that every matter regarding which no opinion is narrated from Abu Hanifa (may Allah have mercy on him) remains in a state of confusion until the Day of Judgment. It is narrated about Abu Yusuf (may Allah have mercy on him) that he was confused about some issues and used to say: "Every issue in which our Sheikh has no opinion, we are like this in it." End.[2] (Right Column - Urdu): The author of Fatawa al-Zahiriyya spoke truly, as he said in the third section of the recitation of the Quran, that in any matter where no opinion is narrated from Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him), that matter will remain a cause of distress until the Day of Judgment. It is narrated from Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on him) that he was perplexed in some issues, so he said: "In a matter where our Sheikh has no opinion, then in it our condition is like this." End. (T)

It is narrated from Imam Abu Yusuf: "In some issues, I thought the Hadith was on my side, but after investigation, it would become clear that the Hadith the Imam spoke from was not in my dreams (i.e., I wasn't aware of it)," or as he said, may Allah have mercy on him.

---

[1] Al-Ashbah wal-Naza'ir, The Fourth Rule: Hardship brings ease, Idara-tul-Quran wal-Uloom-ul-Islamia Karachi 1/114-115. [2] Bahr al-Ra'iq, Chapter: Spoilers of Prayer, H.M. Saeed Company Karachi.

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

[तालिका/बॉक्स 1] (बायां कॉलम - अरबी): ...बिना किसी शर्त के उसके पास, और वक़्फ़ (धार्मिक बंदोबस्त) के लिए प्रोत्साहित करने और मुसलमानों के लिए आसानी पैदा करने के लिए शर्त के साथ इसे जायज़ ठहराया।[1] (दायां कॉलम - उर्दू): उन्होंने वक़्फ़ के लिए काज़ी के हुक्म की शर्त लगाई है, और उन्होंने ज़रूरत के समय वक़्फ़ को बदलने को बिना शर्त जायज़ क़रार दिया है और बिना ज़रूरत इसे बदलने को जायज़ शर्त के साथ जायज़ क़रार दिया है ताकि वक़्फ़ करने में प्रोत्साहन मिले और मुसलमानों के लिए आसानी हो। (त)

तीसरा: इन मसलों में अन्य रायों की सहमति की भी ज़रूरत नहीं है, जैसा कि (पुस्तकों को) देखने से स्पष्ट होता है। इसलिए, विद्वानों के शब्द इस प्रतिबंध का समर्थन नहीं करते हैं।

चौथा: कोई भी यह नहीं कह सकता कि इमाम अबू यूसुफ़ इमाम-ए-आज़म के विद्वानों के बराबर हैं। मशहूर किताबों और अश्बाह वल-नज़ायर आदि में ज़िक्र है कि इमाम ने इजाज़त लिए बिना अपना दरस (शिक्षण) शुरू करने पर इमाम अबू यूसुफ़ की महफ़िल में पाँच सवाल देकर किसी को भेजा। उन्होंने हर सवाल का अलग जवाब दिया, और हर जवाब पर पूछने वाले ने ग़लती निकाली। अंत में, परेशान होकर वे इमाम की सेवा में वापस आ गए। विद्वान कहते हैं कि जो मसला इमाम की उपस्थिति में हल नहीं हुआ, वह क़यामत तक उलझा रहेगा। इमाम अबू यूसुफ़ खुद कुछ मसलों में परेशान होकर फ़रमाते थे: "जहाँ हमारे उस्ताद (इमाम-ए-आज़म) की कोई राय नहीं है, वहाँ हमारा यही हाल (परेशान) होता है।" बहर-उर-रईक के'मुफ़्सिदात-ए-सलात' (नमाज़ तोड़ने वाली चीज़ें) में है:

[तालिका/बॉक्स 2] (बायां कॉलम - अरबी): फ़तावा ज़हीरिया के लेखक ने सही फ़रमाया जब उन्होंने क़ुरआन की क़िरअत के तीसरे भाग में कहा कि हर वह मामला जिसमें इमाम अबू हनीफ़ा (रहमतुल्लाह अलैहि) से कोई राय नहीं मिली है, वह क़यामत के दिन तक इसी तरह उलझन में रहेगा। इमाम अबू यूसुफ़ (रहमतुल्लाह अलैहि) के बारे में रिवायत है कि वे कुछ मसलों में परेशान रहते थे और कहते थे: "हर वह मसला जिसमें हमारे शेख की कोई राय नहीं है, उसमें हमारा यही हाल है।" समाप्त।[2] (दायां कॉलम - उर्दू): फ़तावा ज़हीरिया के लेखक ने सही फ़रमाया, जैसा कि उन्होंने क़ुरआन की क़िरअत के तीसरे भाग में कहा कि जिस मामले में इमाम अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से कोई राय नहीं मिली है, वह मामला क़यामत तक उलझन का कारण

रहेगा। इमाम अबू यूसुफ़ (रहमतुल्लाह अलैहि) के बारे में रिवायत है कि वे कुछ मसलों में परेशान थे, तो उन्होंने फ़रमाया: "जिस मामले में हमारे शेख की कोई राय नहीं है, उसमें हमारा यही हाल होता है।" समाप्त। (त)

इमाम अबू यूसुफ़ से रिवायत है: "कुछ मसलों में मुझे लगता था कि हदीस मेरे पक्ष में है, लेकिन जाँच के बाद पता चलता कि इमाम ने जिस हदीस से बात की थी, वह मेरे ख्वाबों-ख्याल में भी नहीं थी," या जैसा कि उन्होंने फ़रमाया, अल्लाह उन पर रहमत करे।

---

[1] अल-अश्बाह वल-नज़ायर, नियम 4: कठिनाई आसानी लाती है, इदारा-तुल-क़ुरआन वल-उलूम-उल-इस्लामिया कराची 1/114-115। [2] बहर-उर-रईक, अध्याय: नमाज़ को खराब करने वाली चीज़ें, एच.एम. सईद कंपनी कराची।

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

[خانہ نمبر 1] (بائیں کالم میں عربی عبارت): الیه بلا شرط وجوزه مع الشرط ترغیبا فی الوقف وتیسیرا علی المسلمین[1]۔ (دائیں کالم میں اردو ترجمہ): انہوں نے وقف کے لئے قاضی کے حکم کی شرط لگائی ہے، اور انہوں نے وقف کو ضرورت کے وقت تبدیل کرنے کو بلا شرط جائز قرار دیا ہے اور بلا ضرورت اس کے تبدیل کرنے کو مع جائز الشرط جائز قرار دیا ہے تاکہ وقف کرنے میں ترغیب اور مسلمانوں کے لئے آسانی ہو۔ (ت)

ثالثاً: ان مسائل میں تو موافقت رائے دیگر، کی بھی حاجت نہیں کما یظھر بالمراجعة (جیسا کہ کتب کی طرف سے مراجعت سے ظاہر ہوتا ہے۔ ت) تو کلماتِ علماء اس قید کے مساعد نہیں۔

رابعاً: کوئی نہیں کہہ سکتا کہ امام ابو یوسف علماءِ امامِ اعظم کے ہم پلہ ہیں، امام سے بے اذن لئے ان کے مجلسِ درس منعقد کرنے پر امام کا کسی کو پانچ سوال دے کر بھیجنا، ان کے ہر مسئلے میں مختلف جواب دینا، ہر جواب پر سائل کی طرف سے تخطیہ ہونا، آخر متغیر ہو کر خدمت امام میں رجوع لانا، مشہور اور اشباہ و النظائر وغیرہما میں مذکور۔ علماء فرماتے ہیں جو مسئلہ امام کے حضور طے نہ ہو لیا قیامت تک مضطرب رہے گا، امام ابو یوسف بعض مسائل میں پریشان ہو کر فرماتے: جہاں ہمارے استاد کا کوئی نہیں اس میں ہمارا یہی حال (پریشان) ہے۔ بحر الرائق کے مفسداتِ الصلوۃ میں ہے:

[خانہ نمبر 2] (بائیں کالم میں عربی عبارت): لقد صدق صاحب الفتاوی الظهیریة حیث قال فی الفصل الثالث فی قراءة القرآن ان کل مالم یروعن ابي حنیفة رحمه الله تعالی فیه قول بقی کذلك مضطر با الی یوم القیامة وحکی عن ابی یوسف رحمه الله تعالی علیه انه کان یضطرب فی بعض المسائل وکان

یقول کل مسئلۃ لیس لشیخنا فیھا قول فنحن فیھا ھکذا انتھی[2]۔ (دائیں کالم میں اردو ترجمہ): فتاویٰ ظہیریہ والے نے درست فرمایا، جو انہوں نے قرآت قرآن کی فصل ثالث میں فرمایا کہ جس معاملہ میں امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے کوئی قول مروی نہ ہو وہ معاملہ قیامت تک باعثِ اضطراب ہی رہے گا، اور امام ابو یوسف رحمہ اللہ تعالیٰ سے منقول ہے کہ وہ بعض مسائل میں مضطرب تھے تو انہوں نے فرمایا: جس معاملہ میں ہمارے شیخ کا کوئی قول نہ ہو تو اس میں ہمارا یہی حال ہوتا ہے انتہی۔ (ت)

امام ابو یوسف سے منقول ہے میں بعض مسائل میں جانتا حدیث میری طرف ہے تنقیح کے بعد کھلتا کہ امام نے جس حدیث سے فرمایا وہ میری خواب میں نہ تھی او کما قال رحمۃ اللہ تعالیٰ۔

---

[1] الاشباہ والنظائر القاعدۃ الرابعۃ المشقۃ تجلب التیسیر ادارۃ القرآن والعلوم الاسلامیہ کراچی ۱/ ۱۱۵۔

۱۱۴ [2] بحرالرائق باب مفسدات الصلوٰۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی

Fatawa Razawiya, Volume 12

In the third matter, Fatawa Alamgiri was given preference over all books, even though it is a fatwa collection; and scholars state: the most superior books of the madhab (school of law) are the 'mutun' (original texts), then the 'shuruh' (commentaries), and then the 'fatawa'. In case of conflict, mutun take precedence over all, and fatawa are the last. How then can it be permissible to declare the least preferred as the most superior among all? In Radd al-Muhtar, it is stated:

[Arabic]: What is in the fatawa, if it contradicts what is well-known from the commentaries, is not accepted. [Urdu]: Whatever is stated in a fatwa, if it contradicts the well-known commentaries, it will not be accepted. (T)

In Durr al-Mukhtar, it is stated:

[Arabic]: When the original text (matn) and its commentary conflict, practice is based upon the original text, as has been established repeatedly. [Urdu]: When there is a conflict between the matn and the commentary, the matn will be acted upon, as has been mentioned several times. (T)

In Bahr al-Ra'iq, it is stated:

[Arabic]: When what is in the original texts and the fatawa conflict, what is relied upon is what is in the original texts, as in 'Anfa' al-Wasa'il'. Likewise, what is in the commentaries takes precedence over what is in the fatawa. This was quoted by al-Shami from the chapter of Judiciary, section on Imprisonment. [Urdu]: If there is a conflict between what is mentioned in the original texts and the fatawa, the information mentioned in the original texts is reliable, as it is in 'Anfa' al-Masa'il'. Similarly, what is in the commentaries takes precedence over the fatawa. Allamah Shami has quoted this from the Book of Judiciary, section on Imprisonment. (T)

In Hamawi Sharh al-Ashbah, it is stated:

[Arabic]: It is not hidden that what is in the original texts and commentaries, even if it is by way of implication (mafhum), takes precedence over what is in the fatawa, even if there is no inconsistency in their phrasing. [Urdu]: It is not hidden that what is in the original texts and commentaries, even if it is by way of implication, takes precedence over what is mentioned in the fatawa, even if there is no confusion in the expressions of the fatawa. (T)

1. Durr al-Mukhtar, Book of Suckling, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/212.
2. Durr al-Mukhtar, Book of Judiciary, Miscellaneous Matters, Matba' Mujtabai, Delhi, 2/86.
3. Radd al-Muhtar, Book of Judiciary, section on Imprisonment, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 4/317; Bahr al-Ra'iq, Book of Judiciary, section on Imprisonment, H.M. Saeed Company, Karachi, 6/285.
4. Ghamz 'Uyun al-Basa'ir Sharh al-Ashbah wa'n-Naza'ir, Book of Interdiction and the Authorized, Idara al-Quran, Karachi, 2/280.

फतावा रज़विया, जिल्द 12

तीसरे मामले में फ़तावा आलमगिरी को सभी किताबों पर प्राथमिकता दी गई है, हालाँकि वह एक फ़तावा संग्रह है; और विद्वान फ़रमाते हैं: मज़हब की सबसे बेहतरीन किताबें 'मुतून' (मूल ग्रंथ) हैं, फिर 'शुरुह' (व्याख्याएँ), और फिर 'फ़तावा'। विरोध की स्थिति में मुतून सब पर हावी हैं और फ़तावा सबसे अंत में। फिर यह कैसे उचित हो सकता है कि सब में से कम पसंदीदा को सबसे श्रेष्ठ घोषित कर दिया जाए? रद्द अल-मुह्तार में है:

[अरबी]: फ़तावा में जो कुछ है, यदि वह प्रसिद्ध व्याख्याओं के विपरीत हो, तो उसे स्वीकार नहीं किया जाएगा। [उर्दू अनुवाद]: फ़तावा में जो कहा गया हो, यदि वह मशहूर व्याख्याओं के खिलाफ हो, तो स्वीकार नहीं होगा। (त)

दुर्रे मुख्तार में है:

[अरबी]: जहाँ मूल पाठ (मतन) और उसकी व्याख्या में विरोध हो, तो मूल पाठ पर अमल होगा, जैसा कि बार-बार सिद्ध हो चुका है। [उर्दू अनुवाद]: जब मतन और व्याख्या में विरोध हो, तो मतन पर अमल होगा, जैसा कि कई बार गुज़रा। (त)

बहर अल-राइक में है:

[अरबी]: यदि मूल पाठ और फ़तावा में विरोधाभास हो, तो विश्वसनीय वह है जो मूल पाठ में है जैसा कि 'अन्फ़ा अल-वसाइल' में है, और इसी तरह व्याख्याओं में जो कुछ है वह फ़तावा से ऊपर है। अल्लामा शामी ने इसे किताबुल कज़ा, कैद के अध्याय से उद्धृत किया है। [उर्दू अनुवाद]: अगर मुतून और फ़तावा में विरोधाभास हो तो मुतून का ज़िक्र किया हुआ भरोसेमंद है जैसा कि 'अन्फ़ा अल-मसाइल' में है, और इसी तरह जो व्याख्याओं में हो वह फ़तावा से पहले आता है। इसे अल्लामा शामी ने किताबुल कज़ा, कैद के अध्याय से नक़ल किया है। (त)

हमवी शरह अशबाह में है:

[अरबी]: यह छिपा नहीं है कि मुतून और शुरुह में जो कुछ है, भले ही वह संकेत के माध्यम से हो, फ़तावा में जो कुछ है उस पर हावी है, भले ही फ़तावा के शब्दों में कोई उलझन न हो। [उर्दू अनुवाद]: यह चीज़ छिपी नहीं है कि जो मुतून और शुरुह में हो, चाहे वह संकेत (मफ़हूम) के ज़रिए

ही क्यों न हो, वह फ़तावा में ज़िक्र किए हुए पर मुक़द्दम (ऊपर) है, भले ही फ़तावा की इबारतों में कोई परेशानी न हो। (त)

---

1. दुर्र अल-मुह्तार, किताबुल रज़ाअ, दार इह्या अल-तुरास अल-अरबी, बेरूत, 2/212।
2. दुर्र अल-मुह्तार, किताबुल कज़ा, विभिन्न मामले, मटबा मुजतबाई, दिल्ली, 2/86।
3. रद्द अल-मुह्तार, किताबुल कज़ा, क़ैद का अध्याय, दार इह्या अल-तुरास अल-अरबी, बेरूत, 4/317; बहर अल-राइक, किताबुल कज़ा, क़ैद का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 6/285।
4. गमज़ उयून अल-बसायर शरह अल-अशबाह वन-नज़ायर, किताबुल हजर वल-मज़ून, इदारा अल-कुरान, कराची, 2/280।

पृष्ठ 113/688

فتاوٰی رضویہ جلد دو ازدہم

امر سوم میں فتاوٰی عالمگیری کو سب کتب پر ترجیح دی گئی حالانکہ وہ ایک فتاوٰی ہے، اور علماء ارشاد فرماتے ہیں: عمدہ ترین کتب مذہب متون ہیں پھر شروح پھر فتاوٰی عند التحالف متون سب پر مقدم ہیں اور فتاوٰی سب سے مؤخر۔ پھر کیونکر روا ہو کہ سب میں مفضول کو سب سے افضل قرار دیجئے۔ ردالمختار میں ہے :

مافی الفتاوی اذا خالف مافی المشاھیر عن الشروح لا یقبل۔ فتاوٰی میں جو کہا گیا ہو وہ مشہور شروحات کے مخالف ہو تو قبول نہ ہوگا۔ (ت)

در مختار میں ہے :

حیث تعارض متنہ وشرحہ فالعمل علی المتون کما تقرر مرارا۔ جب متن و شرح میں تعارض ہو تو متن پر عمل ہوگا، جیسا کہ کئی دفعہ گزرا۔ (ت)

بحر الرائق میں ہے :

اذا تعارض مافی المتون والفتاوی فالمعتمد مافی المتون کما في انفع الوسائل وکذا یقدم مافی الشروح علی مافی الفتاوی اھ نقلہ الشامی من القضاء في فصل الحبس۔ اگر متون اور فتاوٰی میں مذکور کا تعارض ہو تو متون کا ذکر کردہ قابل اعتماد ہے جیسا کہ انفع المسائل میں ہے، اور یو نہی جو شروحات میں ہو وہ فتاوٰی سے مقدم ہے اھ اس کو علامہ شامی نے کتاب القضاء فصل فی الحبس سے نقل کیا ہے۔ (ت)

حموی شرح اشباہ میں ہے :

غیر خاف ان مافی المتون والشروح ولو کان بطریق المفہوم مقدم علی مافی فتاوی و ان لم یکن في عبارتھما اضطراب ۔ یہ چیز مخفی نہیں کہ جو متون اور شروح میں ہو اگرچہ بطریق مفہوم ہی ہو وہ فتاوٰی میں مذکور پر مقدم ہے اگرچہ فتاوٰی کی عبارات میں اضطراب نہ بھی ہو (ت)

---

1 در المختار کتاب الرضاع دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۱۲/۲ 2 در مختار کتاب القضاء مسائل شتی مطبع مجتبائی دہلی ۲ / ۸۶ 3 رد المحتار کتاب القضاء فصل فی الحبس دار احیاء التراث العربی بیروت ۴ / ۳۱۷، بحر الرائق کتاب القضاء فصل فی الحبس ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۸۵/۶ 4 غمز عیون البصائر شرح الاشباہ والنظائر کتاب الحجر والمأذون ادارۃ القرآن کراچی ۲۸۰/۲

Fatawa Rizwia, Volume 12

Regarding Imam Saffar's adoption of the Sahibain's view on intercourse, the answer can be found in our previous fatwa, which shows the reasons why the Imam's view is preferred: Firstly, the strength of the evidence, the details of which will soon be apparent, InshaAllah. Secondly, the abundance of those who provide benefits and Muslims who give preference, among whom is Imam Burhan al-Haq wa al-Din al-Farghani, author of al-Hidayah, whose greatness is clearer than the midday sun and the full moon; and Imam al-Muhaqqiq 'ala al-Itlaq Kamal al-Din ibn al-Humam, regarding whom scholars have clarified that he held the rank of Ijtihad, to the extent that some of his contemporaries considered him fit for Ijtihad, even though contemporaneity is often a reason for discord. In Radd al-Muhtar, it is stated:

Arabic	Urdu
We have mentioned more than once that al-Kamal is among the people of preference (Ahl al-Tarjih), as explained in the chapter on Judgement in 'al-Bahr'. In fact, some of his contemporaries explicitly stated that he is among the people of Ijtihad. 1	We have mentioned multiple times before that Imam Kamal is among the people of preference, as clarified in the chapter of judgment in al-Bahr; rather, some of his contemporaries have clarified that he is among the people of Ijtihad. (T)

Another is Imam 'Allamah Faqih al-Nafs Qazi Khan, regarding whom scholars say his corrections take precedence over the corrections of others. In 'Ghamz al-'Uyun wa al-Basa'ir Sharh al-Ashbah wa al-Naza'ir', it is stated:

Arabic	Urdu
In 'Tashih al-Quduri' by 'Allamah Qasim: That which he [Qazi Khan] corrects [takes precedence over] others because he was Faqih al-Nafs. 2	In 'Allamah Qasim's Tashih al-Quduri, it is stated that whatever Imam Qazi Khan declares correct, that view is preferred over the views of others because you are Faqih al-Nafs. (T)

And they say that his corrections should not be deviated from. In 'Radd al-Muhtar', it is stated:

Arabic	Urdu
Remember what they said: one should not deviate from the	Remember what the jurists have said: that it is not permissible to deviate from Imam Qazi

Arabic	Urdu
correction of Qazi Khan, for he is Faqih al-Nafs. 3	Khan's correction because he is Faqih al-Nafs. (T)

Thirdly, the consensus of the texts whose greatness you have already heard, then how would their application and agreement be? Therefore, repeatedly...

---

1 Radd al-Muhtar, Book of Manumission, Chapter of Tadbir, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 3/35 2 Ghamz 'Uyun al-Basa'ir Sharh al-Ashbah wa al-Naza'ir, Book of Hires, Second Art, Idarat al-Qur'an Karachi, 2/56-455 3 Radd al-Muhtar, Book of Gift, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 4/513

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

जहाँ तक इमाम सफ़ार का संभोग (وطی) के बारे में साहिबैन (Sahibain) के कथन को अपनाने का प्रश्न है, इसका उत्तर हमारे पिछले फ़तवे में मिल सकता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि इमाम के कथन को किन कारणों से प्राथमिकता दी गई है: पहला, प्रमाण की शक्ति, जिसका विवरण इंशाअल्लाह शीघ्र ही स्पष्ट हो जाएगा। दूसरा, लाभ पहुँचाने वालों और वरीयता देने वाले मुसलमानों की बहुलता, जिनमें एक इमाम बुरहान अल-हक़ व अद-दीन अल-फ़रग़ानी, हिदाया के लेखक हैं, जिनकी गरिमा मध्याह्न के सूर्य और पूर्णिमा के चंद्रमा से भी अधिक स्पष्ट है; और एक इमाम अल-मुहक़्क़िक़ अला अल-इतलाक़ कमाल अद-दीन इब्न अल-हुमाम हैं, जिनके बारे में विद्वानों ने स्पष्ट किया है कि वे इज्तिहाद (Ijtihad) के पद पर थे, यहाँ तक कि उनके कुछ समकालीनों ने उन्हें इज्तिहाद के योग्य कहा, जबकि समकालीनों के बीच मतभेद होना स्वाभाविक है। रद अल-मुहतार में लिखा है:

अरबी

हमने बार-बार ज़िक्र किया है कि अल-कमाल वरीयता देने वालों (अहल अल-तरजीह) में से हैं, जैसा कि 'अल-बह्र' के निर्णय वाले अध्याय में बताया गया है। वास्तव में, उनके कुछ समकालीनों ने स्पष्ट रूप से कहा है कि वे इज्तिहाद वालों में से हैं। 1

उर्दू

हम कई बार पहले उल्लेख कर चुके हैं कि इमाम कमाल वरीयता देने वालों (अहल अल-तरजीह) में से हैं, जैसा कि बहर के निर्णय (Qaza) के अध्याय में बताया गया है, बल्कि उनके कुछ समकालीनों ने स्पष्ट किया है कि वे इज्तिहाद वालों में से हैं। (त)

एक अन्य इमाम अल्लामा फ़क़ीह अल-नफ़्स क़ाज़ी ख़ान हैं, जिनके बारे में विद्वान कहते हैं कि उनका सुधार दूसरों के सुधार पर भारी है। 'ग़म्ज़ अल-उयून व अल-बसाइर शरह अल-अशबाह व अल-नज़ाइर' में लिखा है:

अरबी

अल्लामा क़ासिम की 'तसहीह अल-क़ुदूरी' में है: जिसे वह [क़ाज़ी ख़ान] सही ठहराते हैं, वह दूसरों से [वरीय है] क्योंकि वे फ़क़ीह अल-नफ़्स थे। 2

उर्दू

अल्लामा क़ासिम की तसहीह अल-क़ुदूरी में है कि जिसे इमाम क़ाज़ी ख़ान सही करार दें, वह कथन दूसरों के कथनों पर भारी है क्योंकि आप फ़क़ीह अल-नफ़्स हैं। (त)

और वे कहते हैं कि उनके सुधार से विचलन नहीं किया जाना चाहिए। रद अल-मुहतार में लिखा है:

अरबी	उर्दू
उस बात को याद रखें जो उन्होंने कही: क़ाज़ी ख़ान के सुधार से विचलन नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि वे फ़क़ीह अल-नफ़्स हैं। 3	फ़ुक़हा-ए-किराम ने जो फ़रमाया उसे याद रखो कि इमाम क़ाज़ी ख़ान के सुधार से हटना जायज़ नहीं है क्योंकि वे फ़क़ीह अल-नफ़्स हैं। (त)

तीसरा, उन मूल ग्रंथों (Mutoon) की आम सहमति जिसकी महत्ता आप सुन चुके हैं, फिर उनका मेल और समझौता कैसा होगा, इसलिए कई बार...

---

1 रद अल-मुहतार, किताब अल-इतक़, बाब अत-तदबीर, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी बेरुत, 3/35 2 ग़म्ज़ उयून अल-बसाइर शरह अल-अशबाह व अल-नज़ाइर, किताब अल-इजारआत, अल-फ़न अत-सानी, इदारात अल-क़ुरआन कराची, 2/56-455 3 रद अल-मुहतार, किताब अल-हिबा, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी बेरुत, 4/513

ر با امام صفار کا در بارہ وطی قول صاحبین اختیار فرمانا، اس کا جواب ہمارے فتوائے سابقہ سے مل سکتا ہے جس سے ظاہر کہ قول امام کو کتنی وجہ سے ترجیح ہے : اولاً قوت دلیل جس کی کچھ تفصیل ان شاء اللہ تعالٰی عنقریب ظاہر ہوگی۔ ثانیاً کثرت مفیدان و مسلمان ترجیح جن میں ایک امام برہان الحق والدین فرغانی صاحبِ ہدایہ جن کی جلالت شان آفتاب نیم روز و ماہتاب نیم ماہ سے اظہر، ایک امام محقق علی الاطلاق کمال الدین ابن الہمام ہیں جن کی نسبت علماء کی تصریح کہ پایہ اجتہاد رکھتے ہیں یہاں تک کہ ان کے بعض معاصر انہیں لائق اجتہاد کہتے حالانکہ معاصرت دلیل منافرت ہے۔ رد المحتار میں ہے :

عربی	اردو
قد منا غیر مرۃ الکمال من اھل الترجیح کما افادہ فی قضاء البحر بل صرح بعض معاصر یۃ بانہ من اھل الاجتھاد ۱۔	ہم متعدد بار پہلے ذکر کر چکے ہیں کہ امام کمال اہل ترجیح سے ہیں جیسے کہ بحر کے قضاء کے باب میں افادہ کیا ہے بلکہ ان کے بعض معاصرین نے تصریح کی ہے کہ وہ اہل اجتہاد میں سے ہیں۔(ت)

ایک امام علامہ فقیہ النفس قاضی خاں ہیں جن کی نسبت علماء فرماتے ہیں ان کی تصحیح اوروں کی تصحیح پر مقدم ہے، غمز العیون والبسائر شرح الاشباہ والنظائر میں ہے :

عربی	اردو
فی تصحیح القدوری للعلامة قاسم ان ما یصححہ غیرہ لانہ کان فقیہ النفس ۲۔	علامہ قاسم کی تصحیح القدوری میں ہے کہ جس کو امام قاضی خاں صحیح قرار دیں، وہ قول دوسروں کے اقوال پر مقدم ہے کیونکہ آپ فقیہ النفس ہیں۔ (ت)

اور فرماتے ہیں ان کی تصحیح سے عدول نہ کیا جائے، رد المحتار میں ہے :

عربی	اردو
کن علی ذکر مما قالوا لا یعدل عن تصحیح قاضی خان فإنہ فقیہ النفس ۳۔	فقہاء کرام نے جو فرمایا اسے یاد رکھو کہ امام قاضی خاں کی تصحیح سے عدول جائز نہیں کیونکہ وہ فقیہ النفس ہیں۔ (ت)

ثالثاً اجماع متون جن کی عظمت مکان ابھی سُن چکے پھر اُن کا انطباق و اتفاق کیسا ہو گا لہٰذا بارہا

---

۱ رد المحتار کتاب العتق باب التدبیر دار احیاء التراث العربی بیروت ۳/۳۵ ۲ غمز عیون البصائر شرح الاشباہ والنظائر کتاب الاجارات الفن الثانی ادارۃ القرآن کراچی ۲/۵۶-۴۵۵ ۳ رد المحتار کتاب الہبہ دار احیاء التراث العربی بیروت ۴/۵۱۳

Fatawa Razvia Volume 12

It is observed that scholars have rejected some explicit corrections in commentaries and fatwas simply because the original texts (Mutun) are against them. In 'Durr-e-Mukhtar', book of 'Al-Qismat' (Distribution), it is stated:

قال في الخانية وعليه الفتوى لكن المتون على الاول فعليه المعول ۔

It is stated in 'Al-Khaniyah' and the fatwa is based on it, but the original texts (Mutun) are based on the first opinion, so that is what is relied upon. (T)

Look at the great Imam Qadi Khan (may Allah forgive him), and despite using the word 'Alaihil Fatwa' (fatwa is based on it) for preference—which scholars count among the most emphasized words of correction—it was still said that the Mutun are on the first [opinion], so that is the reliable one. According to the Imam, after the agnatic relatives (asabat), the guardianship for marriage belongs to the mother. It is written in 'Quhistani Shara Mukhtasar al-Wiqayah' that according to the two companions (Sahibain), non-agnates are not guardians, and this is one narration from the Imam. Then it is quoted from 'Mudmarat Shara Quduri': "And the fatwa is based on this" (T), but researchers did not accept it because it goes against the Mutun. In both 'Bahr-ur-Raiq' and 'Nahr-ul-Faiq', it is stated:

ما قيل من ان الفتوى على الثانى غريب لمخالفتہ المتون الموضوعۃ لبیان الفتوی اھ ۔

What is said about the fatwa being on the second opinion is 'Gharib' (unusual/weak) because it contradicts the established original texts (Mutun) which were formulated to explain the fatwa. (T)

Allama Shami, quoting from 'Radd al-Muhtar', maintained: If impurity comes out of a well and the time of occurrence is unknown, the Imam considers it impure for one or three days. The Sahibiain, and the author of 'Al-Muhit' who is among the leading scholars of preference (Tarjih), choose the opinion of the Imam regarding wudu, ghusl, and dough, and the opinion of the Sahibiain in other matters. Imam Zaila'i in 'Tabyin al-Haqa'iq Sharh Kanz al-Daqa'iq' calls this detail 'Huwa-as-Sahih' (This is the correct one. T). This was firmly stated in 'Bahr-ur-Raiq', 'Minh-ul-Ghaffar', 'Tanwir-ul-Absar', and 'Durr-e-Mukhtar'. Despite this, Allama Shami rejects it, and the first reason for non-acceptance he writes is: "Because it contradicts the general application of all the Mutun" (T). Hamwi, in the commentary of 'Ashbah', regarding a matter in which the narration of Abu Yusuf is called 'Alaihil Fatwa' in 'Hawi Qudsi' and 'Al-Musahhah al-Mu'tamad' in 'Ashbah', states:

1. Durr-e-Mukhtar, Kitab al-Qismat, Matba Mujtabai, Delhi, 219/2
2. Jami'-ur-Rumuz, Chapter of Wali and Kufu, Maktaba Islamia, Gunbad Qamus, Iran, 76/1
3. Bahr-ur-Raiq, Chapter of Wali and Akfiya, H.M. Saeed Company, Karachi, 122/3; Radd al-Muhtar citing Al-Bahr and An-Nahr, Chapter of Al-Wali, Dar-ul-Ihya-ut-Turath al-Arabi, Beirut, 312/2
4. Radd al-Muhtar, Chapter on the Well, Dar-ul-Ihya-ut-Turath al-Arabi, Beirut, 312/2

फ़तावा रिज़विया जिल्द बारहवीं

देखा गया है कि विद्वानों ने टीकाओं और फतवों के कुछ स्पष्ट सुधारों को केवल इस आधार पर खारिज कर दिया है कि मूल ग्रंथ (मुतून) उनके विरुद्ध हैं। 'दुर्रे मुख्तार' की किताब अल-क़िस्मत (वितरण) में है:

قال في الخانية وعليه الفتوى لكن المتون على الاول فعليه المعول ۔

खनिया में कहा गया है और फतवा इसी पर है, लेकिन मूल ग्रंथ (मुतून) पहले कथन पर हैं, इसलिए उसी पर भरोसा किया जाएगा। (त)

देखिए महान इमाम क़ाज़ी खान (अल्लाह उन्हें क्षमा करे), और 'अलैहिल फ़तवा' (फतवा इसी पर है) जैसे वरीयता के शब्द के बावजूद—जिसे विद्वान सुधार के सबसे पुख्ता शब्दों में गिनते हैं—फिर भी यह कहा गया कि मुतून पहले पर हैं, तो वही भरोसेमंद है। इमाम के अनुसार, असबात (रक्त संबंधी) के बाद विवाह का अधिकार माँ को है। 'कुहिस्तानी शरह मुख्तसर अल-विकाया' में लिखा है कि साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद) के अनुसार गैर-असबाह वली नहीं हैं, और इमाम से यही एक रिवायत है। फिर 'मुज़मरात शरह क़ुदूरी' से उद्धृत किया गया: "और फतवा इसी पर है" (त), लेकिन शोधकर्ताओं ने इसे स्वीकार नहीं किया क्योंकि यह मुतून के खिलाफ है। 'बहर-उर-रैक' और 'नहर-उल-फ़ैक' दोनों में कहा गया है:

ما قيل من ان الفتوى على الثانى غريب لمخالفتہ المتون الموضوعۃ لبيان الفتوى اھ ۔

जो कहा जाता है कि फतवा दूसरे कथन पर है, वह 'ग़रीब' (अजीब/कमज़ोर) है क्योंकि यह उन स्थापित मूल ग्रंथों (मुतून) के विरुद्ध है जो फतवा स्पष्ट करने के लिए बनाए गए हैं। (त)

अल्लामा शामी ने 'रद्द-उल-मुह्तार' से उद्धृत करते हुए कायम रखा: यदि कुएँ से अशुद्धि निकले और घटना का समय ज्ञात न हो, तो इमाम उसे एक या तीन दिन से अशुद्ध मानते हैं। साहिबैन और 'अल-मुहीत' के लेखक, जो वरीयता देने वाले इमामों में से हैं, वज़ू, ग़ुस्ल और गुंधे हुए आटे के मामले में इमाम के कथन को और अन्य मामलों में साहिबैन के कथन को चुनते हैं। इमाम ज़ैलई 'तय्यीन अल-हक़ायिक शरह कंज़ अल-दक़ायिक' में इसी विवरण को 'हुव-अस-सहीह' (यही सही है। त) कहते हैं। और इसी पर 'बहर-उर-रैक', 'मिन्ह-उल-ग़फ़्फ़ार', 'तन्वीर-उल-अब्सार' और 'दुर्रे मुख्तार' में दृढ़ता से कहा गया है। इसके बावजूद, अल्लामा शामी इसे अस्वीकार करते हैं और अस्वीकृति का पहला कारण यह लिखते हैं कि: "क्योंकि यह सभी मुतून के सामान्य अनुप्रयोग के विरुद्ध है" (त)।

हमवी ने 'अश्बाह' की टीका में एक मसले के संबंध में जिसमें अबू यूसुफ की रिवायत को 'हावी क़ुदसी' में 'अलैहिल फ़तवा' और 'अश्बाह' में 'अल-मुसह्हह अल-मुअतमद' कहा गया है, फरमाते हैं:

---

1. दुर्रे मुख्तार, किताब अल-क़िस्मत, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 219/2
2. जामिउर रुमूज़, फ़स्ल अल-वली वल-कुफ़ु, मकतबा इस्लामिया, गुंबद क़ामूस, ईरान, 76/1
3. बहर-उर-रैक, बाब अल-औलिया वल-अक्फ़िया, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 122/3; रद्द-उल-मुह्तार बहवाला अल-बहर वन-नहर, बाब अल-वली, दार-उल-इह्या-उत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 312/2
4. रद्द-उल-मुह्तार, फ़स्ल फ़िल-बिअर, दार-उल-इह्या-उत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 312/2

دیکھا ہے کہ علماء نے شروح و فتاوٰی کی بعض صریح تصحیحیں صرف اس بنا پر رد کردی ہیں کہ متون اس کے خلاف پر ہیں ، در مختار کی کتاب القسمۃ میں ہے :

خانیہ میں فرمایا کہ فتوٰی اسی پر ہے لیکن متون پہلے قول پر ہیں تو اسی پر اعتماد ہوگا۔ (ت) قال في الخانية وعليه الفتوى لكن المتون على الاول فعليه المعول ۔

دیکھو امام اجل قاضی خاں سامحہ اللہ ، اور علیہ الفتوٰی سا لفظ ترجیح جسے علماء اکد الفاظ تصحیح سے شمار کرتے ہیں با اینہمہ کہا گیا کہ متون اوّل پر ہیں تو وہی معتمد ہے، امام کے نزدیک عصبات کے بعد ولایت نکاح ماں کو ہے۔ قہستانی شرح مختصر الوقایہ میں لکھا صاحبین کے نزدیک غیر عصبہ ولی نہیں ، اور یہی ایک روایت امام سے ہے ، پھر مضمرات شرح قدوری سے نقل کیا : وعلیہ الفتوٰی (اور اس پر فتوٰی ہے۔ ت) مگر محققین نے نہ مانا کہ خلافِ متون ہے۔ بحر الرائق و نہر الفائق دونوں میں فرمایا :

جو کہا جاتا ہے کہ فتوٰی ثانی پر ہے یہ غریب ہے کیونکہ یہ ما قیل من ان الفتوی علی الثانی غریب لمخالفتہ المتون الموضوعۃ لبیان الفتوی اھ ۔ متون کے مخالف ہے جو کہ فتوٰی کو بیان کرنے کے لئے وضع کئے گئے ہیں اھ (ت)

علامہ شامی نے ردالمحتار سے نقل کرکے مقرر رکھا ، کنوئیں سے نجاست نکلے اور وقت وقوع نہ معلوم ہو تو امام ایک یا تین دن سے تنجس مانتے ہیں اور صاحبین فی الحال صاحب محیط کہ ائمہ ترجیح سے ہیں درباره وضو غسل و عجبین قول امام اور ان کے ماورا میں قول صاحبین اختیار کرتے اور وہ امام زیلعی تبیین الحقائق شرح کنز الدقائق میں اسی تفصیل کو ھو الصحیح (یہی

صحیح ہے۔ ت) کہتے ہیں اور اسی پر بحر الرائق و منح الغفار و تنویر الابصار و در مختار میں جزم کیا، با ایں ہمہ علامہ شامی سے رد کرتے اور عدمِ تسلیم کی پہلی وجہ یہی لکھتے ہیں کہ مخالف لاطلاق المتون قاطبۃ (یہ تمام متون کے اطلاق کے مخالف ہے۔ ت) حموی شرح اشباہ میں ایک مسئلے کی نسبت جس میں روایت ابی یوسف کو حاوی قدسی میں علیہ الفتوٰی اشباہ میں المصحح المعتمد کہا، فرماتے ہیں :

---

1. درمختار کتاب القسمۃ مطبع مجتبائی دہلی ۲/۲۱۹
2. جامع الرموز فصل الولی والکفؤ مکتبہ اسلامیہ گنبد قاموس ایران ۱/۷۶
3. بحر الرائق باب الاولیاء والاکفیاء ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳/۱۲۲، ردالمحتار بحوالہ البحر والنہر باب الولی داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۳۱۲
4. ردالمحتار فصل فی البئر دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۳۱۲

Fatawa Ridawiyya - Volume Twelve

Arabic: "Mere claim by al-Hawi that a fatwa is based on it does not necessitate that it is the corrected (muṣaḥḥaḥ) and relied-upon view in the school. How could it be so when all authors of the primary texts (mutūn) and commentaries (shurūḥ) follow the opinion of the two companions (Imam Abu Hanifa and Imam Abu Yusuf or Muhammad, referred to as 'at-Tarfayn'), and the authors of the mutūn adhere to the correction that whatever is in the texts and commentaries takes precedence over what is in the fatāwā." (1) Urdu translation/explanation: A mere claim in 'al-Hawi' that a fatwa is based on it does not necessitate that it is corrected and reliable. How can this be when all primary texts and commentaries follow the view of the two sides (Tarfayn), and all texts have adhered to this correction that matters in primary texts and commentaries take precedence over matters in fatwa books.

Fourthly, this is the school of the Imam, and scholars state that reliance on the Imam's view is necessary even if the two companions differ, and even if revered scholars (Mashaykh) certify the view of the companions, as will be seen shortly, God willing. Regarding the fourth point, since the Hanafi school came into the world, no scholar has ever applied that rule concerning the disagreement between the Imam and the two companions; no one in the entire world is a proponent of it. Rather, the complete consensus of predecessors and successors serves as a just witness against it. In thousands of issues, the two companions differed. Look at books of jurisprudence collected from East and West; the companions' view will only be found as the basis for fatwa in a few places where a change in ruling occurred due to changing times, or a necessity like public usage or removal of hardship arose. Allamah Tahtawi and then Allamah Shami in the Hashiyah of Durr al-Mukhtar state:

Arabic: "Disagreement occurred from the two companions in approximately one-third of the school, but the majority of reliance is on the view of the Imam." (2) Urdu translation/explanation: The two companions disagree in about one-third of the school's positions, but the majority of reliance is on the school of Imam Abu Hanifa (may Allah have mercy on him).

I will limit myself to quoting some statements of the research scholars here, from which it is clear as day that except for a few specific instances, reliance on the Imam's view is mandatory. Neither a majority of opinions nor even the fatwas of scholars are given consideration against it, for one sun hides a million stars. In this "best

summary and most reliable book of the current time," Fatawa Alamgiri, it is quoted from the 'Muheet' of Imam Shams al-A'immah al-Sarakhsi:

Arabic: "When they differ among themselves, Abdullah bin..." Urdu translation: "When the Hanafis have a disagreement among themselves, Abdullah bin Mubarak..."

1. Ghamz Uyun al-Basair Sharh al-Ashbah wa al-Nazair, Third Art, Section on Rulings of Friday, Idarat al-Qur'an Karachi, 238/2.
2. Hashiyah al-Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar, Introduction of the book, Dar al-Ma'rifah Beirut, 28/1.

अरबी: "अल-हावी का केवल यह दावा करना कि इसी पर फतवा है, यह आवश्यक नहीं करता कि यही संशोधित और विश्वसनीय है। यह कैसे हो सकता है जबकि सभी मूल ग्रंथों (मतून) और व्याख्याओं (शुरुह) के लेखक दोनों पक्षों (तरफैन) के मत पर चलते हैं, और सभी मूल ग्रंथों के लेखक इस संशोधन का पालन करते हैं कि मूल ग्रंथों और व्याख्याओं के मामले फतवा के ग्रंथों के मामलों पर प्रधानता रखते हैं।" (1) उर्दू व्याख्या: हावी का सिर्फ़ यह दावा कर देना कि इसी पर फ़तवा है, इससे यह लाज़िम नहीं आता कि यही तसहीह शुदा (संशोधित) और क़ाबिले एतमाद (विश्वसनीय) हो, यह कैसे हो सकता है जबकि तमाम मतून और शुरुह तरफ़ैन (दोनों पक्षों) के क़ौल पर हैं, और तमाम मतून इस तसहीह का इल्तिज़ाम किए हुए हैं कि मतून व शुरुह के मसाइल फ़तावा के मसाइल पर मुक़द्दम (प्रधान) हैं।

चौथा यह कि यही इमाम का मज़हब (विचारधारा) है, और विद्वान कहते हैं कि इमाम के कथन पर ही भरोसा करना आवश्यक है, भले ही साहिबैन (दो साथी) इसके विरुद्ध हों, भले ही वरिष्ठ विद्वान (मशाइख) साहिबैन के मत को सही ठहराएँ जैसा कि जल्द ही आएगा, इंशा अल्लाह। चौथे मामले में जिस नियम का उल्लेख हुआ, जब से हनफ़ी मज़हब दुनिया में आया है, किसी विद्वान ने इमाम और साहिबैन के मतभेद के बारे में उसे लागू नहीं किया, न ही पूरी दुनिया में कोई इसका पक्षधर है। बल्कि पूर्वजों और बाद के विद्वानों का पूर्ण आम सहमति (इज्मा) इसके विरुद्ध एक न्यायपूर्ण गवाह है। हज़ारों मुद्दों में साहिबैन ने असहमति जताई है, फिर पूर्व और पश्चिम से न्यायशास्त्र की पुस्तकें एकत्रित करके देखें, साहिबैन का कथन केवल कुछ ही स्थानों पर फ़तवा के रूप में मिलेगा जहाँ समय के परिवर्तन के कारण आदेश में बदलाव आया या सार्वजनिक व्यवहार और कठिनाई दूर करने जैसी कोई आवश्यकता पेश आई। अल्लामा तहतावी और फिर अल्लामा शामी हाशियत-उद-दुर्र अल-मुख्तार में कहते हैं:

अरबी: "साहिबैन की ओर से मज़हब के लगभग एक तिहाई हिस्से में मतभेद हुआ है, लेकिन अधिकांश भरोसा इमाम के मत पर है।" (2) उर्दू व्याख्या: साहिबैन का तक़रीबन एक तिहाई मज़हब में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) है लेकिन अक्सर एतमाद (भरोसा) इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि तआला के मसलक (विचारधारा) पर है।

मैं यहाँ अनुसंधानकर्ता इमामों के कुछ कथनों को संक्षेप में उद्धृत करता हूँ, जिनसे सूर्य के समान स्पष्ट है कि कुछ गिने-चुने स्थानों के अतिरिक्त इमाम के कथन पर ही भरोसा करना अनिवार्य है, और इसके विरुद्ध विचारों की बहुलता, यहाँ तक कि विद्वानों के फतवे पर भी ध्यान नहीं दिया जाता, क्योंकि एक सूर्य दस लाख तारों को छिपा देता है। इसी "सबसे उत्तम सारांश और वर्तमान की सबसे विश्वसनीय पुस्तक" फ़तावा आलमगीरी में इमाम शम्सुल आइम्मा सरख़सी की 'मुहीत' से उद्धृत है:

अरबी: "जब वे आपस में मतभेद करें तो अब्दुल्ला बिन..." उर्दू व्याख्या: जब अहनाफ़ (हनफ़ी अनुयायियों) का आपस में मतभेद हो तो अब्दुल्ला बिन मुबारक...

1. ग़म्ज़ उयून अल-बसायर शरह अल-अशबाह व अन-नज़ायर, फन्न-ए-सालिस, जुमे के अहकाम, इदारातुल कुरान कराची 238/2।
2. हाशियत-उत-तहतावी अलद-दुर्र अल-मुख्तार, किताब की प्रस्तावना, दारुल मारिफ़ा बेरुत 28/1।

पृष्ठ 116/688

فتاوی رضویہ - جلد دوازدہم

مجرد دعوی الحاوی ان الفتوی علیه لایقتضی انه المصحح المعتمد فی المذهب کیف واصحاب المتون قاطبة والشروح ماشون علی قولهما (یعنی الطرفین) و مشی اصحاب المتون تصحیح التزامی علی ان ما فی المتون والشروح مقدم علی ما فی الفتاوی ۱۔ حاوی کا صرف یہ دعوی کر دینا کہ اسی پر فتوی ہے، اس سے یہ لازم آتا کہ یہی تصحیح شدہ اور قابل اعتماد ہو، یہ کیسے ہو سکتا ہے جبکہ تمام متون اور شروح طرفین کے قول پر ہیں، اور تمام متون اس تصحیح کا التزام کیے ہوئے ہیں کہ متون و شروح کے مسائل فتاوی کے مسائل پر مقدم ہیں۔ (ت)

رابعاً یہی مذہب امام ہے، اور علماء فرماتے ہیں قول امام ہی پر اعتماد ضرور ہے اگرچہ صاحبین خلاف ہوں اگرچہ مشائخ کرام مذہب صاحبین کی تصحیح کریں کما یاتی آنفا ان شاء اللہ تعالی (جیسا کہ عنقریب آئے گا ان شاء اللہ تعالی۔ت) امر چہارم میں جس قاعدہ کا ذکر ہوا جب سے مذہب حنفی عالم میں آیا کسی عالم نے درباره اختلاف امام وصاحبین اسے جاری نہ کیا، نہ ہرگز تمام دنیا میں کوئی اس کا قائل، بلکہ سلف وخلف کا اجماع کامل اس کے برخلاف پر گواہ عادل، ہزارہا مسائل میں صاحبین نے خلاف کیا، پھر شرق و غرب سے کتب فقہ جمع کرکے دیکھئے قول صاحبین معدود ہی جگہ مفتی ملے گا جہاں اختلاف زمانہ کے سبب تغیر حکم ہوا یا تعامل و دفع حرج کے مثل کوئی ایسی ہی ضرورت پیش آئی، علامہ طحطاوی پھر علامہ شامی حاشیہ درمختار میں فرماتے ہیں:

حصل المخالفة من الصاحبین فی نحو ثلث المذهب ولکن الاکثر فی الاعتماد علی قول الامام ۲۔

صاحبین کا تقریباً ایک تہائی مذہب میں اختلاف ہے لیکن اکثر اعتماد امام ابو حنیفہ رحمہ اللہ تعالی کے مسلک پر ہے۔ (ت)

میں یہاں ائمہ محققین کی بعض عبارات اقتصار کرتا ہوں جن سے کالسّمس ظاہر کہ سوا موضع معدودہ کے قول امام ہی پر اعتماد لازم، اور اس کے خلاف کثرت رائے، بلکہ فتوائے مشائخ پر بھی التفات نہیں کہ ایک آفتاب لاکھ ستاروں کو چھپا لیتا ہے، اسی "سب سے عمدہ خلاصہ سب سے حال کی مستند کتاب" فتاوی عالمگیری میں محیط امام شمسی الائمہ سرخسی سے ہے:

اذا اختلفوا فیما بینھم قال عبد اللہ بن جب احناف کا آپس میں اختلاف ہو تو عبد اللہ بن مبارک

۱ غمز عیون البصائر شرح الاشباہ والنظائر الفن الثالث القول فی احکام الجمعة ادارة القرآن کراچی ۲ ۲۳۸/۲ حاشیة الطحطاوی علی الدر المختار مقدمة الکتاب دار المعرفة بیروت ۲۸/۱

Fatawa Razawiyya Volume 12

(Arabic) It is blessed to take the opinion of Abu Hanifa (may Allah have mercy on him), for he was from the Successors (Tabi'un) and competed with them in issuing fatwas.[1]	**(Urdu) According to the statement, Imam Abu Hanifa's opinion is actionable because he is a Successor and he presented fatwas alongside the fatwas of other Successors. (T)**

In *Tanwir al-Absar* it is stated: | (Arabic) He takes the opinion of Abu Hanifa unconditionally.[2] | (Urdu) The judge shall unconditionally take the opinion of Imam Abu Hanifa. (T) | | :--- | :--- |

In *Durr-e-Mukhtar*, it has been mentioned quoting *Kaniyah* and *Sirajiyah* that it is 'al-asahh' (the most correct. -T) and also that "The judge is like the Mufti" (The judge is like the one who gives fatwas. -T). And also that in *Nahr al-Faiq* it is called 'asbat' (most precise), and it was corrected in his book *Adab al-Maqal*, as in *Hashiya al-Tahtawi* (as it is in the margins of Tahtawi. -T). On this very basis, the absolute investigative Imam (Imam Muhaqqiq al-Mutlaq) affirmed it, and those scholars who issue fatwas based on the opinion of the two companions (Sahibayn) were deemed unacceptable without a strong reason. In *Hashiya Shami* it says:

(Arabic) Al-Muhaqqiq Ibn al-Humam refuted some scholars when they issued fatwas based on the opinion of the two Imams, stating that one does not deviate from the opinion of the Imam except due to the weakness of his evidence.[3]	**(Urdu) Some scholars issued fatwas based on the opinion of the two companions, so Muhaqqiq Ibn al-Humam refuted them, saying that one cannot turn away from Imam Abu Hanifa's opinion unless his evidence is weak. (T)**

In *Bahr al-Ra'iq* it is stated: | (Arabic) They have authenticated that issuing fatwas is according to the Imam's opinion. The result of this is that it is obligatory for us to issue fatwas according to the Imam's opinion even if the scholars have issued fatwas contrary to it.[4] End of quote. This was transmitted by Allama al-Tahtawi at the beginning of the chapter on Judicial Matters. | (Urdu) The scholars have affirmed that the fatwa is based on the opinion of Imam Sahib (may Allah have mercy on him). Thus, the result is that it is obligatory for us to give fatwas based on the Imam's opinion, even if some scholars have given fatwas against the Imam's opinion. End. Al-Tahtawi has cited this at the beginning of the chapter on Judicature. (T) | | :--- | :--- |

[1] *Fatawa Hindiyya*, Chapter 3 on the arrangement of evidences for action, Nurani Kutub Khana Peshawar, 3/312 [2] *Durr-e-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar*, Book of Judicature, Matba' Mujtabai Delhi, 2/2 [3] *Radd al-Muhtar*, printed regarding the Imam, "When the Hadith is authentic...", Dar Ihya al-Turath Beirut, 1/46 [4] *Bahr al-Ra'iq*, Book of Judicature, H.M. Saeed Company Karachi, 7/206-209

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

(अरबी) इमाम अबू हनीफ़ा (रहमतुल्लाहि अलैहि) के कथन को अपनाना बरकत वाला है क्योंकि वह ताबेईन में से थे और फ़तवे देने में उनके समकक्ष थे।[1]

(उर्दू) कथन के अनुसार इमाम अबू हनीफ़ा का कथन अमल के योग्य है क्योंकि वह ताबेई हैं और अन्य ताबेईन के फ़तवों के मुक़ाबले उन्होंने फ़तवे पेश किए। (त)

तनवीर अल-अबसार में है: | (अरबी) वह बिना किसी शर्त के इमाम अबू हनीफ़ा का कथन लेगा।[2] | (उर्दू) क़ाज़ी पूर्णतः इमाम अबू हनीफ़ा के कथन को लेगा। (त) | | :--- | :--- |

दुर्रे मुख्तार में कानिया और सिराजिया से उद्धृत किया गया है जो 'अल-असह' (सबसे सही है। -त) और यह भी कि 'अल-काज़ी कल-मुफ़्ती' (क़ाज़ी मुफ़्ती की तरह है। -त) और यह भी कि नहर अल-फ़ायक़ में इसे ही सबसे सटीक कहा गया है, और उनकी किताब अदब अल-मक़ाल में इसकी पुष्टि की गई है, जैसा कि हाशियह तहावी में है। (जैसा कि तहावी के हाशिये में है। -त) इसी पर इमाम मुहक़्क़िक़ अल-मुतलक़ ने दृढ़ता जताई, और कुछ विद्वानों ने जो साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद) के कथन पर फ़तवा दिया उसे बिना किसी मज़बूत वजह के अस्वीकार्य ठहराया गया। हाशियह शामिया में है:

(अरबी) मुहक़्क़िक़ इब्न अल-हुमाम ने कुछ विद्वानों का खंडन किया जब उन्होंने दोनों इमामों (साहिबैन) के कथन पर फ़तवा दिया, यह कहते हुए कि इमाम के कथन से तब तक नहीं हटा जा सकता जब तक कि उनकी दलील कमज़ोर न हो।[3]

(उर्दू) कुछ मशाइख़ (विद्वानों) ने साहिबैन के कथन पर फ़तवा दिया तो मुहक़्क़िक़ इब्न अल-हुमाम ने उनका खंडन करते हुए फ़रमाया कि इमाम अबू हनीफ़ा के कथन से मुँह नहीं मोड़ा जा सकता जब तक कि उनकी दलील कमज़ोर न हो। (त)

बहर अल-रायिक़ में है: | (अरबी) उन्होंने प्रमाणित किया है कि फ़तवा इमाम के कथन पर है। इसका परिणाम यह है कि हम पर इमाम के कथन के अनुसार फ़तवा देना अनिवार्य है, भले ही मशाइख़ ने उनके विरुद्ध फ़तवा दिया हो।[4] अल्लामा तहावी ने इसे किताबुल क़ज़ा के आरम्भ में उद्धृत किया है। | (उर्दू) मशाइख़ ने तसहीह (पुष्टि) फ़रमाई है कि फ़तवा इमाम साहब (रहमतुल्लाहि अलैहि) के कथन पर है, तो इसका परिणाम यह हुआ कि हम पर इमाम के कथन पर फ़तवा देना वाजिब है चाहे

मशाइख़ ने इमाम के कथन के विरुद्ध फ़तवा दिया हो। इसे तहावी ने बाब-ए-क़ज़ा की इब्तिदा में नक़ल किया है। (त) | | :--- | :--- |

---

[1] फ़तावा हिन्दिया, बाब 3, नुरानी कुतुब ख़ाना पेशावर 3/312 [2] दुर्रे मुख्तार शरह तनवीर अल-अबसार, किताबुल क़ज़ा, मतबा मुज्तबाई दिल्ली 2/2 [3] रद्दुल मुहतार, मतबा इमाम से, 'इज़ा सहल हदीस...', दारु एहया अल-तुरास बेरूत 1/46 [4] बहर अल-रायिक़, किताबुल क़ज़ा, एच.एम. सईद कम्पनी कराची 7/206-209

पृष्ठ 117/688

المبارك يؤخذ بقول ابي حنيفة رحمه الله تعالى لانه كان من التابعين وزاحمهم في الفتوى 1.

کے قول کے مطابق امام ابوحنیفہ کا قول قابلِ عمل ہوتا ہے کیونکہ وہ تابعی ہیں اور دیگر تابعین کے فتاوٰی کے مقابل انہوں نے فتاوٰی پیش کئے۔ (ت)

تنویر الابصار میں ہے : | يأخذ بقول ابي حنيفة على الاطلاق 2۔ | قاضی مطلقاً امام ابوحنیفہ کے قول کو لے گا۔ (ت) | | :--- | :--- |

درِ مختار، کانیہ وسراجیہ سے نقل کرنا گزرا ھوا الاصح (وہی زیادہ صحیح ہے۔ ت) اور یہ بھی کہ القاضی کالمفتی (قاضی کی مثل ہے۔ ت) اور یہ بھی کہ نہر الفائق میں اسی کو اضبط کہا، اسی کی کتاب ادب المقال میں تصحیح کی، كما في الحاشية الطحطاوية (جیسا کہ حاشیہ طحطاوی میں ہے۔ت) اسی پر امام محقق علی الاطلاق نے جزم فرمایا، اور بعض مشائخ جو کہیں قول صاحبین پر افتا کر دیتے ہیں اُسے بلا وجہ قوی محض نامقبول ٹھہرایا۔ حاشیہ شامیہ میں ہے :

ردالمحقق ابن الهمام على بعض المشائخ حيث افتوا بقول الامامين بانه لا يعدل عن قول الامام الا لضعف دليله 3.

بعض مشائخ نے صاحبین کے قول پر فتوٰی دیا تو محقق ابن ہمام نے ان کا رد کرتے ہوئے فرمایا کہ امام ابوحنیفہ کے قول سے اعراض نہیں کیا جاسکتا الا یہ کہ ان کی دلیل کمزور ہو۔ (ت)

بحر الرائق میں ہے : | قد صححوا ان الافتاء بقول الامام فينتج من هذا انه يجب علينا الافتاء بقول الامام وان افتى المشائخ بخلافه 4 اھ نقله العلامة الطحطاوي اول القضاء۔ | مشائخ نے تصحیح فرمائی ہے کہ فتوٰی امام صاحب رحمہ اللہ تعالٰی کے قول پر ہے، تو اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ ہم پر

امام کے قول پر فتویٰ دینا واجب ہے اگرچہ مشائخ نے قولِ امام کے خلاف فتویٰ دیا ہو اھ اس کو طحطاوی نے بابِ قضاء کی ابتداء میں نقل کیا ہے۔ (ت) | | :--- | :--- |

---

1 فتاویٰ ہندیہ الباب الثالث فی ترتیب الدلائل للعمل بہا نورانی کتب خانہ پشاور ۳/ ۳۱۲ 2 درِ مختار شرح تنویر الابصار کتاب القضاء مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۲ 3 ردالمحتار مطبع عن الامام اذا صح الحدیث الخ داراحیاء التراث بیروت ۱/ ۴۶ 4 بحر الرائق کتاب القضاء ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۷/ ۲۰۶-۲۰۹

Fatawa Razawiyya Volume 12

It is stated in Fatawa Khayriyyah, Book of Testimonies, under the issue of Testimony of the Blind:

Arabic Text	Urdu Translation
It is also established among us that fatwa and practice are only based on the saying of Imam al-Azam [Abu Hanifa] (may Allah have mercy on him). Deviation from his saying to the saying of the two companions [Abu Yusuf and Muhammad ash-Shaybani] or one of them or anyone else is not allowed except out of necessity (due to weakness of evidence or customary practice contrary to it), as in the issue of sharecropping (Muzara'ah), even if the scholars have clarified that the fatwa is based on the saying of the two companions, because Imam Abu Hanifa is the founder of the school (Madhhab) and the foremost Imam.	It is settled among us that fatwa and action are only based on the saying of Imam al-Azam (may Allah have mercy on him). Deviation from his saying to the saying of the two companions or one of them or anyone else is not allowed except out of necessity (due to weakness of evidence or customary practice contrary to it), as in the issue of sharecropping (Muzara'ah), even if the scholars have clarified that the fatwa is based on the saying of the two companions, because Imam Abu Hanifa is the founder of the school and the foremost Imam.
When Hazam says something, believe her,	(Poem translation) When Hazam says something, believe her,
For the truth is what Hazam says.[1]	For the truth is what Hazam says. (T)

Similarly, it is clarified in Bahr al-Ra'iq, Book of Prayer, discussion on timings, and quoted from it in Radd al-Muhtar and Hashiya al-Tahtawi and maintained. The leader of the researchers, Shaykh al-Islam Burhan al-Din, author of Hidayah, states in the book al-Tajnīs wa'l-Mazīd:

Arabic Text	Urdu Translation
It is obligatory in my view to give fatwa according to the saying of Abu Hanifa in every circumstance.	In my view, it is obligatory to give fatwa according to the saying of Imam Abu Hanifa in every circumstance. (T)

2

Arabic Text	Urdu Translation
Regarding the issue of the time of Isha, where the saying of the two companions was mentioned as the one to be followed (mufta bihi) in al-Durr, Allama Nuh Effendi said regarding this:	

Arabic Text	Urdu Translation
It is not permissible to rely on it because their saying cannot be preferred over his saying except for a reason like weakness of evidence, necessity, customary practice, or difference of times. Since none of these exist here, the action should be based on his saying.[3] Ends, quoted by them both.	It is not permissible to rely on it because their saying cannot be preferred over the Imam's saying except when there is a cause, for example, weakness of evidence, necessity, customary practice, or difference of times. Since none of these exist, the action will be based on the Imam's saying.

[1] Fatawa Khayriyyah, Book of Testimonies, Dar al-Ma'rifa, Beirut, 2/33 [2] Hashiya al-Tahtawi on al-Durr al-Mukhtar, Book of Prayer, Dar al-Ma'rifa, Beirut, 1/ [3] Hashiya al-Tahtawi on al-Durr al-Mukhtar, Book of Prayer, Dar al-Ma'rifa, Beirut, 1/75

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

फ़तावा खैरिया की किताबुश शहादात, अंधे की गवाही के मसले में है:

अरबी मूल पाठ

यह भी हमारे यहाँ तय है कि फ़तवा और अमल केवल इमाम-ए-आज़म (रहमतुल्लाहि अलैहि) के कौल (कथन) पर ही होगा। उनके कौल को छोड़कर साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ और इमाम मोहम्मद) या उनमें से किसी एक के कौल या किसी और के कौल पर बिना ज़रूरत फ़तवा नहीं होगा (और ज़रूरत का उदाहरण, दलील का कमज़ोर होना या उसके खिलाफ कोई रवाज या चलन होना है) जैसा कि मुज़ाराअत (बटाई पर खेती) का मसला है, चाहे उस्तादों (मशाइख) ने साफ कह दिया हो कि फ़तवा साहिबैन के कौल पर है, क्योंकि इमाम अबू हनीफ़ा मज़हब के मालिक हैं और सबसे ऊंचे इमाम हैं।

जब हज़ाम कुछ कहे तो उसकी पुष्टि करो,

क्योंकि बात वही है जो हज़ाम कहती है।[1]

उर्दू अनुवाद

यह हमारे यहाँ तय है कि इमाम-ए-आज़म रहमतुल्लाहि तआला के कौल पर ही अमल और फ़तवा होगा, और साहिबैन या उनमें से किसी एक के कौल या किसी और के कौल पर बिना ज़रूरत फ़तवा नहीं होगा (और ज़रूरत का उदाहरण, दलील का कमज़ोर होना या रवाज और चलन का उसके खिलाफ होना है) जैसा कि मुज़ाराअत का मसला है, हालांकि उस्तादों ने स्पष्ट कर दिया है कि फ़तवा साहिबैन के कौल पर है, क्योंकि इमाम अबू हनीफ़ा मज़हब के मालिक हैं और सबसे प्रमुख इमाम हैं।

(कविता का अनुवाद) जब हज़ाम कुछ कहे तो उसकी पुष्टि करो,

क्योंकि बात वही है जो हज़ाम कहती है। (त)

बिल्कुल इसी तरह बहरुर राइक की किताबुस सलात, वक्तों की बहस में साफ़ लिखा है और उससे रद-उल-मुह्तार और हाशियह तहतावी में नकल करके उसे बरकरार रखा है, इमाम-उल-मोहक्केकीन शैख-उल-इस्लाम बुरहानुद्दीन साहिब-ए-हिदाया किताब-उत-तजनीस वल मज़ीद में फरमाते हैं:

अरबी मूल पाठ

मेरे नज़दीक हर हाल में इमाम अबू हनीफ़ा के कौल पर फ़तवा देना वाजिब है।

उर्दू अनुवाद

मेरे नज़दीक हर हाल में इमाम अबू हनीफ़ा के कौल पर फ़तवा देना वाजिब है। (त)

अरबी मूल पाठ	उर्दू अनुवाद

2

इशा के समय के मसले में जहाँ साहिबैन के कौल को 'दुर्र' में मुफ़्ता-बिही (जिस पर फ़तवा दिया जाए) बताया गया है, अल्लामा नूह आफ़ंदी ने उस पर फरमाया:

अरबी मूल पाठ	उर्दू अनुवाद
उस पर भरोसा करना जायज़ नहीं है क्योंकि उनके कौल को इमाम साहिब के कौल पर तब तक प्राथमिकता नहीं दी जा सकती जब तक कोई कारण न हो, जैसे दलील की कमज़ोरी, ज़रूरत, चलन (तामुल) या ज़माने का बदलाव। और चूंकि इनमें से कुछ भी नहीं है, इसलिए अमल इमाम के कौल पर ही होगा।[3] समाप्त, दोनों द्वारा उद्धृत।	इस पर भरोसा करना सही नहीं है क्योंकि इमाम साहब के मुकाबले में साहिबैन के कौल को प्राथमिकता नहीं दी जा सकती जब तक कि कोई कारण न हो, जैसे दलील की कमज़ोरी, ज़रूरत, चलन या ज़माने का बदलाव। और जबकि इनमें से कुछ भी नहीं है, तो इमाम के कौल पर अमल होगा।

[1] फ़तावा खैरिया, किताबुश शहादात, दारुल माआरिफ़ बैरुत, 2/33 [2] हाशियह अत-तहतावी अलद दुर्रिल मुख्तार, किताबुस सलात, दारुल माआरिफ़ बैरुत, 1/ [3] हाशियह अत-तहतावी अलद दुर्रिल मुख्तार, किताबुस सलात, दारुल माआरिफ़ बैरुत, 1/75

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

فتاوٰی خیریہ کی کتاب الشہادات مسئلہ شہادۃ الاعمٰی میں ہے :

عربی عبارت	اردو ترجمہ
المقرر ایضا عندنا انہ لا یفتی ولا یعمل الا بقول الامام الاعظم ولا یعدل عنہ الی قولھما او قول احدھما او غیرھما الا لضرورۃ (من ضعف دلیل او تعامل بخلافہ) لمسئلۃ المزارعۃ وان صرح المشائخ بان الفتوی علی قولھما لانہ صاحب المذھب والامام المقدم۔	یہ طے شدہ ہے کہ ہمارے ہاں امام اعظم رحمہ اللہ تعالٰی کے قول پر ہی عمل وفتوٰی ہوگا، اور صاحبین یا ان میں سے کسی ایک کے قول یا کسی اور کے قول پر بغیر ضرورت فتوٰی نہ ہوگا(اور ضرورت کی مثال، ضعیف دلیل یا عرف وتعامل کا اس کے خلاف ہونا ہے) جیسا کہ مزارعت کا مسئلہ ہے اگرچہ مشائخ تصریح کر چکے ہوں کہ فتوٰی صاحبین کے قول پر ہے، کیونکہ امام ابو حنیفہ صاحب مذہب ہیں اور سب سے مقدم امام ہیں۔
اذا قالت حذام فصدقوھا	(شعر کا ترجمہ) جب حذام کچھ کہے تو اس کی تصدیق کرو،
فان القول ما قالت حذام 1	کیونکہ بات وہی ہے جو حذام کہتی ہے۔ (ت)

بعینہ اسی طرح بحر الرائق کی کتاب الصلوٰۃ بحث اوقات میں تصریح فرمائی اور اس سے رد المحتار وحاشیہ طحطاویہ میں نقل کرکے مقرر رکھا، امام المحققین شیخ الاسلام برہان الدین صاحب ہدایہ کتاب التجنیس والمزید میں فرماتے ہیں:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
الواجب عندی ان یفتی بقول ابی حنیفة علی کل حال	میرے نزدیک ہر حال میں امام ابوحنیفہ کے قول پر فتوٰی دینا واجب ہے۔ (ت)

2

مسئلہ وقت عشا میں جو قول صاحبین کو دُرّ میں مفتی بہ بتایا علامہ نوح آفندی نے اس پر فرمایا:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
لا یجوز الاعتماد علیه لانه لا یرجح قولهما علی قوله الا بموجب من ضعف دلیل او ضرورة او تعامل او اختلاف زمان ولم یوجد شئی من ذلك فالعمل علی قوله 3 اھ نقلهما	اس پر اعتماد درست نہیں کیونکہ امام صاحب کے مقابلہ میں صاحبین کے قول کو ترجیح نہیں ہو سکتی مگر جب کوئی سبب ہو مثلاً دلیل کا ضعف، ضرورت، تعامل یا اختلاف زمان میں سے کوئی چیز ہو، اور جبکہ ان میں سے کچھ بھی نہیں تو امام کے قول پر عمل ہوگا ھ

1 فتاوٰی خیریہ کتاب الشہادات دارالمعرفة بیروت ۲/۳۳ 2 حاشیة الطحطاوی علی الدر المختار کتاب الصلوٰة دارالمعرفة بیروت ۱/ 3 حاشیة الطحطاوی علی الدر المختار کتاب الصلوٰة دارالمعرفة بیروت ۱/۷۵

Fatawa Razawiyya Volume 12

[Box 1] Left (Arabic): Al-Allamah al-Tahtawi in the discussion of prayer times. Right (Urdu): Allamah Tahtawi has mentioned both these phrases in the discussion of prayer times. (T)

Then understand the meaning of this 'weak evidence' from which the scholars of correct path deviate; it is that which the great Imam Mujtahids explicitly specify as weak, not that which you or I consider weak through our deficient intellects. Firstly, who knows if the authors' cited evidences were the ones the Imam had in view? Even if they were, who are we and what is our 'understanding as weak' worth?

O Hafiz, do not clamour, you are a beggar sitting on the dust, The kings themselves know the system of their kingdom.

(O Hafiz! Do not bother the dust-sitting beggar, for only the King knows how to run the state's system). Allamah Tahtawi says:

[Box 2] Left (Arabic): Indeed, the strength of an evidence may appear to him according to his perception, while the reality is contrary to it; or it may be based on one evidence while the master of the school (the Imam) has another evidence which he did not come across. Ended.[1] Right (Urdu): Also, the strength of the Imam's evidence becomes apparent according to how it is perceived, while in reality it is contrary to that, or it happens that some evidence is understood while the Master of the School (Imam Sahib) has another evidence which was not accessed. Ended. (T)

Now after this fine investigation, I have no need at all to turn towards the fifth point. This discourse of mine is sufficient in response to all sorts of arguments. Furthermore, whatever has been explained in it is derived from the same reasoning shown for the Sahibain's position in Hidayah, Sharh al-Wiqayah, Kafi, Ikhtiyar, Mustakhlis etc., and right along with them in those same books, their exquisite answer is also given. As far as my sight reaches, no authentic book will be found in which this written discourse is present and its answer not mentioned. I consider it sufficient here to just quote those brief words of Durr al-Mukhtar which they have taken and written from Imam Sadr al-Shari'ah and others. Regarding the Imam's evidence, they state:

[Box 3] Left (Arabic): Every intercourse is what the contract is based on, so the delivery of part does not necessitate the delivery of the remainder.[2] Right (Urdu):

Every intercourse is a substitute for the dower, so handing over part of the dower does not necessitate handing over the rest. (T)

The explanation and summary of this fine objective is that a sale pertains to an existing entity; once it is handed over, what remains?

---

[1] Hashiyat al-Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar, Kitab al-Qada', Matba' Dar al-Ma'rifah, Beirut, 3/176. [2] Durr al-Mukhtar, Bab al-Mahr, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/202.

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

[बॉक्स 1] बायां (अरबी): अल्लामा तहावी नमाज़ के औकात (समय) की बहस में। दायां (उर्दू): अल्लामा तहावी ने इन दोनों इबारतों को नमाज़ के औकात की बहस में ज़िक्र किया है। (त)

फिर इस 'ज़ईफ़ (कमज़ोर) दलील' का मानी भी समझ लीजिये जिससे सही उल-अक़्ल उलेमा रुजू करते हैं; यह वह है जिसे अईम्मा-ए-मुजतहिदीन (बड़े इमामों) ने उसके कमज़ोर होने पर स्पष्टता से लिखा हो, न कि वह जिसे आप या मैं अपनी कमतर अक्ल से कमज़ोर समझ लें। पहले तो यह दलीलें जो मुसन्निफ़ीन (लेखक) लिखते हैं, क्या मालूम इमाम की नज़र उन्हीं पर थी? और अगर हो भी तो हम क्या और हमारा कमज़ोर समझना क्या।

गदा-ए-खाक नशीनी तो हाफिज़ा मखरोश निज़ाम-ए-ममलकत-ए-ख्वेश खुसरवान दानंद

(ऐ हाफिज़! धूल पर बैठने वाले भिखारी को मत छेड़ क्योंकि मुल्क के निज़ाम को चलाना खुद बादशाह ही जानता है)। अल्लामा तहावी फ़रमाते हैं:

[बॉक्स 2] बायां (अरबी): बेशक, कभी दलील की ताक़त उसे अपनी समझ के अनुसार दिखाई देती है, जबकि हकीकत उसके विपरीत होती है; या यह किसी दलील के आधार पर होता है जबकि मज़हब के मालिक (इमाम) के पास कोई दूसरी दलील होती है जिस तक उसकी पहुँच नहीं हो पाई। समाप्त।[1] दायां (उर्दू): इमाम की दलील की ताक़त ज़ाहिर होती है जिसे समझ लिया जाता है, और हकीकत में उसके ख़िलाफ़ होता है, या यह होता है कि कुछ दलील समझी गई हालांकि साहब-ए-मज़हब (इमाम साहब) की दलील कुछ और है जिस पर इत्तिला (जानकारी) न हुई। समाप्त। (त)

अब मुझे इस बेहतरीन तहक़ीक़ (शोध) के बाद बिलकुल ज़रूरत न रही कि पाँचवें मामले की तरफ़ ध्यान दूँ, मेरी यही बात हर तरह की दलीलों के जवाब में काफ़ी है। इसके अलावा जो कुछ उसमें बयान हुआ वह उसी दलील से लिया गया है जो हिदाया, शरह वक़ाया, काफ़ी, इख्तियार और मुस्तख़लिस वग़ैरा में साहिबैन के मज़हब पर ज़ाहिर की गई, और उसी के साथ उन्हीं किताबों में उसका बेहतरीन जवाब भी दे दिया गया। जहाँ तक मेरी नज़र है, कोई मुस्तनद (प्रमाणित) किताब ऐसी न मिलेगी जिसमें यह लिखी हुई बात हो और उसका जवाब ज़िक्र न हो। हमें यहाँ सिर्फ़ 'दुर्रे मुख़्तार' के वह मुख्तसर अल्फ़ाज़ जो उन्होंने इमाम सदरुश-शरीया वग़ैरा से लेकर लिखे हैं, नक़ल करना काफ़ी समझता हूँ। इमाम की दलील के बारे में फ़रमाते हैं:

[बॉक्स 3] बायां (अरबी): हर वती (संभोग) जिस पर अनुबंध आधारित है, तो कुछ की सुपुर्दगी शेष की सुपुर्दगी को अनिवार्य नहीं करती।[2] दायां (उर्दू): हर वती महर का बदल है, तो कुछ महर का सौंपना बाकी के सौंपने का कारण नहीं बनता। (त)

इस नफ़ीस (बेहतरीन) मकसद की व्याख्या और सारांश यह है कि बिक्री ऐन (वस्तु) पर आधारित होती है, वह एक बार सुपुर्द होकर क्या बाकी है?

---

[1] हाशिया अत-तहावी अलल दुर्रिल मुख़्तार, किताबुल क़ज़ा, मतबा दारुल मारिफ़ा, बेरूत, 3/176। [2] दुर्रे मुख़्तार, बाबुल महर, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/202।

पेज 119/688

فتاوٰی رضویہ جلد دو ازدہم

[باکس 1] العلامۃ الطحطاوی فی مبحث اوقات الصلوۃ۔ علامہ طحطاوی نے ان دونوں عبارتوں کو اوقات صلوۃ کی بحث میں ذکر کیا ہے (ت)

پھر یہ ضعیف دلیل جسے علماء صحیح عدول فرماتے ہیں اس کے معنی بھی سمجھ لیجئے یہ وہ ہے کہ اعاظم ائمہ مجتہدین فتوٰی اس کے ضعف پر تنصیص کریں، نہ وہ جسے من و تو اپنے اذہان قاصرہ سے ضعیف سمجھ لیں کہ اول تو یہ دلائل جو مصنفین لکھتے ہیں کیا معلوم امام کی نظر انہیں پر تھی اور ہو بھی تو ہم کیا اور ہمارا ضعیف سمجھنا کیسا۔

گدائے خاک نشینی تو حافظا مخروش نظام مملکت خویش خسروان دانند

(اے حافظ! گدائے خاک نشین کو مت چھیڑ کہ ملک کے نظام کو چلانا خود بادشاہ ہی جانتا ہے)

علامہ طحطاوی فرماتے ہیں:

[باکس 2] انہ قد یظھر قوۃ لہ بحسب اداراکہ ویکون الواقع بخلافہ او بحسب دلیل ویکون لصاحب المذھب دلیل اخر لم یطلع علیہ انتھی[1] بھی امام کی دلیل کی قوت ظاہر ہوتی ہے جس کا ادراک کرلیا جاتا ہے اور واقع میں اس کے خلاف ہوتا ہے، یا یہ ہوتا ہے یہ کچھ دلیل سمجھے حالانکہ صاحبِ مذہب (امام صاحب) کی دلیل کچھ اور ہے جس پر اطلاع نہ ہوئی انتہٰی (ت)

اب مجھے اس تحقیق انیق کے بعد اصلاً ضرورت نہ رہی کہ امر پنجم کی طرف توجہ کروں، میرا یہی کلام ہر گونہ دلائل کے جواب میں بس ہے معہذا جو کچھ اُس میں بیان ہوا اسی دلیل سے ماخوذ ہے جو ہدایہ و شرح وقایہ وکافی و اختیار و مستخلص و غیر ہا میں مذہبِ صاحبین پر ظاہر کی گئی اور اُس کے ساتھ ہی انہیں کتابوں میں اُس کا نفیس جواب بھی دے دیا جہاں تک میری نظر ہے

کوئی کتاب مستند ایسی نہ ملے گی جس میں یہ تقریر مسطور اور اُس کا جواب نہ مذکور ہو ہمیں یہاں صرف درِ مختار کے وہ مختصر لفظ جو اُنہوں نے امام صدر الشریعۃ وغیرہ سے اخذ کر کے لکھے نقل کرنا کافی سمجھتا ہوں دلیل امام میں فرماتے ہیں:

[باکس 3] کل طاقة معقود علیها فتسلیم البعض لایوجب تسلیم الباقي[2] ہر وطی مہر کا بدل ہے تو بعض مہر کا سونپنا باقی کے سونپنے کا موجب نہیں بنتا ہے۔ (ت)

اس مرامِ نفیس کی توضیح و تلخیص یہ ہے کہ بیع عین پر وارد ہوتی ہے وہ ایک بار سپرد ہو کر کیا باقی ہے

---

[1] حاشیۃ الطحطاوی علی الدرالمختار کتاب القضاء مطبع دارالمعرفۃ بیروت ۳ / ۱۷۶ [2] درمختار باب المہر مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۰۲

Fatawa-e-Razvia, Volume 12

...that it be detained. Unlike marriage, where the contract does not pertain to the physical flesh and skin of the woman but to the benefits of the marital relationship, and those are indivisible. Therefore, the delivery of some is not the delivery of all, nor does consenting to some necessitate consenting to all. In other words, the Shariah has granted the right of detention (*habs*), not the right of reclamation (*istirdad*). In a sale, a renewed prohibition in the form of reclamation is reasonable, but in marriage, the return of past benefits is impossible, so it will only be the detention of future benefits. Therefore, if several things are sold in one contract and some are given voluntarily, the seller can withhold the rest until the full price is received, because here too, due to multiple deliveries, the delivery of some is not the delivery of all. It is stated in *Al-Kifayah*:

Arabic	Urdu Translation
If the seller delivers part of the sold item to the buyer, his right to detain what remains of it does not lapse. - 1	If the seller hands over some of the sold goods to the buyer, the right to withhold the rest will not be lost from him. (T)

Thus, the difference is clear and the argument is dismissed. I do not wish to prolong the discourse here as scholars have already settled this matter, but perhaps it is not useless to say that Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on him) himself maintains a vast difference between sales and marriage on this issue. To the extent that according to him, a woman has the right to refuse even for deferred dowry (*Mahr Mu'ajjal*), whereas if the price is deferred in a sale, the right of detention is unanimously lost. He states that the right of detention in a sale is not an essential requirement of the contract itself, whereas in marriage, in its absolute state, it is a requirement of the contract itself. Therefore, it is absolutely mandatory for the husband to prioritize delivery (of the dowry), even if the dowry consists of specific items like a slave, a house, or a garment. In sales, priority of delivery is only necessary for the buyer when the goods are specific and the price is a debt, such as dirhams and dinars. Imam Al-Sighnaqi in *Al-Nihayah*, which is the first commentary of *Al-Hidayah*, states in the explanation of Abu Yusuf's school:

Arabic	Urdu Translation
He said that the requirement of marriage in its absolute state is the delivery of the dowry, whether it be in kind or as a debt.	He said that the requirement of marriage absolutely is to pay the dowry, whether it is cash or a debt. So when the husband

Arabic	Urdu Translation
So when the husband accepted the deferred term while knowing the requirement of the contract, he consented to delaying his right until the dowry is paid after the term expires. By this, it differs from a sale because the delivery of the price first is not necessarily a requirement of the sale. Do you not see that if the sale were a barter exchange, the delivery of either would not be mandatory first...	accepted the fixed term for the dowry while knowing the requirement of marriage, it is as if he accepted to defer his right until the fixed term expires. Based on this point, the difference between marriage and sale became clear, because in a sale, the payment of the price first is not its necessary requirement. You know that in a barter sale (exchanging goods for goods), for any substitute...

1 *Al-Kifayah* with *Fath al-Qadir*, Book of Mahr, Maktabah Nooria Razvia, Sukkur, 3/250

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 12

...कि वह निरुद्ध (detained) हो। निकाह के विपरीत, जहाँ अनुबंध स्त्री के शारीरिक अस्तित्व पर नहीं बल्कि वैवाहिक लाभों पर होता है, जो अविभाज्य हैं। इसलिए, कुछ का समर्पण पूरे का समर्पण नहीं है, न ही कुछ पर सहमति पूरे पर सहमति को अनिवार्य करती है। दूसरे शब्दों में, शरीयत ने रोकने (हब्स) का अधिकार दिया है न कि वापस लेने (इस्तिरदाद) का अधिकार। और विक्रय (सौदा) में, वापसी के रूप में पुनः रोक लगाना तर्कसंगत है, और निकाह में पिछले लाभों की वापसी असंभव है, इसलिए यह केवल भविष्य के लाभों को रोकना होगा। इसलिए, यदि एक ही अनुबंध में कई चीजें बेची जाती हैं और कुछ स्वेच्छा से दे दी जाती हैं, तो विक्रेता शेष को तब तक रोक सकता है जब तक कि पूरी कीमत प्राप्त न हो जाए, क्योंकि यहाँ भी कई सुपुर्दगियों के कारण, कुछ की सुपुर्दगी पूरे की सुपुर्दगी नहीं है। 'किफ़ाया' में है:

अरबी	**उर्दू अनुवाद**
यदि विक्रेता बेची गई वस्तु का कुछ हिस्सा खरीदार को सौंप देता है, तो उसके पास बाकी हिस्से को रोक कर रखने का अधिकार समाप्त नहीं होता है। - 1	अगर बेचने वाला खरीदार को कुछ सौदा सौंप दे तो बाकी को रोक रखने का हक उससे साक़ित (समाप्त) नहीं होगा। (त)

अत: अंतर स्पष्ट हो गया और तर्क समाप्त हो गया। मैं यहाँ बात को लम्बा नहीं करना चाहता क्योंकि विद्वान पहले ही यह तय कर चुके हैं, लेकिन शायद इतना कहना व्यर्थ न हो कि स्वयं इमाम अबू यूसुफ (रहमतुल्लाह अलैह) विक्रय और निकाह के इस मसले में जमीन-आसमान का अंतर रखते हैं। यहाँ तक कि उनके अनुसार मुअज्जल महर (आस्थगित महर) के लिए भी महिला को रोकने का अधिकार प्राप्त है, और यदि विक्रय में मूल्य मुअज्जल (स्थगित) हो तो सर्वसम्मति से रोकने का अधिकार समाप्त हो जाता है। वह फरमाते हैं कि विक्रय में रोकने का अधिकार मूल अनुबंध की आवश्यकता नहीं है, जबकि निकाह में सामान्य अवस्था में यह स्वयं अनुबंध की आवश्यकता है। इसलिए, पति पर सुपुर्दगी (महर की अदायगी) को प्राथमिकता देना अनिवार्य है, भले ही महर विशिष्ट वस्तुएं हों जैसे दास, घर या वस्त्र। और विक्रय में खरीदार पर सुपुर्दगी की प्राथमिकता केवल उसी स्थिति में आवश्यक है जब वस्तुएँ निर्दिष्ट हों और मूल्य ऋण (कर्ज) हो, जैसे दिरहम और दीनार। इमाम सघनाकी 'निहाया' में, जो 'हिदाया' की पहली व्याख्या है, इमाम अबू यूसुफ के मत की व्याख्या करते हुए फरमाते हैं:

अरबी

उन्होंने कहा कि निकाह की आवश्यकता सामान्यतः महर की अदायगी है, चाहे वह वस्तु के रूप में हो या ऋण के रूप में। तो जब पति ने महर के लिए निश्चित अवधि स्वीकार कर ली जबकि वह निकाह की आवश्यकता को जानता था, तो मानो उसने अवधि समाप्त होने तक अपने अधिकार को टालना स्वीकार कर लिया। इसी बिंदु के आधार पर निकाह और विक्रय में अंतर स्पष्ट हो गया, क्योंकि विक्रय में पहले मूल्य की अदायगी उसकी अनिवार्य आवश्यकता नहीं है। आप जानते हैं कि मुक़ायज़ा विक्रय (वस्तु के बदले वस्तु का सौदा) में किसी बदले का...

उर्दू अनुवाद

उन्होंने कहा कि निकाह का मूजिब (कारण/आवश्यकता) मुतलक़न (पूर्णतः) महर का अदा करना है ख्वाह (चाहे) नकद हो या दैन (ऋण) हो, तो जब खाविन्द (पति) ने महर के लिए मुद्दत-ए-मुक़र्ररा (निश्चित अवधि) क़बूल कर ली जबकि वह निकाह के मूजिब को जानता हो तो गोया (मानो) उसने मुद्दत-ए-मुक़र्ररा गुज़रने तक अपने हक़ को मुअख़र (विलंबित) करना तस्लीम कर लिया, इसी नुक़्ता (बिंदु) की बिना पर निकाह और बैय (विक्रय) में फ़र्क़ वाज़ेह (स्पष्ट) हो गया, क्योंकि बैय में अव्वलन (सर्वप्रथम) समन (मूल्य) की अदायगी उसका मूजिब-ए-लाज़मी नहीं, आप जानते हैं कि बैय-ए-मुक़ायज़ा (सामान का सामान से सौदा) में किसी बदल का...

1 किफ़ाया मा फ़तह अल-क़दीर, बाब अल-महर, मक़तबा नूरया रज़विया, सुक्कुर, 3/250

فتاوی رضویہ جلد دواز دہم

کہ محبوس ہو۔ بخلاف نکاح کے کہ عورت کے گوشت پوست پر وارد نہیں منافع بضع پر ہے اور وہ متحد بد نہ تو بعض کی تسلیم کل کی تسلیم نہیں، نہ بعض پر رضا سے کل پر رضا لازم، و بعبارۃ اخری شرع نے حق حبس دیا ہے نہ اختیار استرداد، اور مبیع میں تجدید منع بشکل استرداد ہی معقول، اور نکاح میں منفعت ماضیہ کی واپسی محال تو نہ ہوگا مگر حبس منفعت آئندہ، و لہٰذا اگر بیع میں بھی چند چیزیں ایک عقد میں بیچیں اور بعض بخوشی دے دیں بعض باقی کر روک سکتا ہے جب تک تمام ثمن وصول نہ ہو، کہ یہاں بھی بوجہ تعدد اقباض بعض اقباض کل نہیں، کفایہ میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
لو سلم البائع بعض المبیع الی المشتری لا یسقط حقه في حبس مابقی منه-1	اگر بائع مشتری کو کچھ مبیع سونپ دے تو باقی کو روک رکھنے کا حق اس سے ساقط نہیں ہوگا۔ (ت)

پس فرق واضح ہوگیا اور استدلال ساقط ، میں یہاں تطویل کلام نہیں چاہتا کہ یہ امر تو علما پہلے ہی طے فرما چکے مگر شاید اتنا کہنا بیکار نہ ہو کہ خود امام ابویوسف رحمہ اللہ تعالیٰ بیع و نکاح کے اس مسئلہ میں زمین و آسمان کا فرق رکھتے ہیں یہاں تک کہ ان کے نزدیک مہر مؤجل کے لئے بھی عورت کو حق منع حاصل، اور ثمن مؤجل ہو تو استحقاق حبس بالاجماع زائل، وہ فرماتے ہیں حق حبس بیع میں اصل عقد کا مقتضی نہیں اور نکاح میں بحالت اطلاق نفس عقد کا مقتضی ہے، و لہٰذا شوہر پر تقدیم تسلیم مطلقاً لازم اگر چہ مہر اشیائے متعینہ سے ہو جیسے عبد یا دار یا ثوب، اور بیع میں مشتری پر تقدیم اسی حالت میں ضرور کہ مبیعین ہو اور ثمن دین، جیسے درہم و دینار، امام سغناقی نہایہ میں کہ ہدایہ کی پہلی شرح ہے تقریر مذہب ابی یوسف میں میں فرماتے ہیں:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
قال ان موجب النكاح عند الاطلاق تسليم المهر عيناً كان اودیناً فحين قبل الزوج الاجل مع علمه بموجب العقد فقد رضی بتأخير حقه الی ان يوفی المهر بعد حلول الاجل و به فارق البيع لان تسليم الثمن اولا ليس من موجبات البيع لامحالة الاتری ان البيع لو كان مقايضة لا تجب تسليم احد	انہوں نے کہا کہ نکاح کا موجب مطلقاً مہر کا ادا کرنا ہے خواہ نقد ہو یا دین ہو، تو جب خاوند نے مہر کے لئے مدت مقررہ قبول کرلی جبکہ وہ نکاح کے موجب کے جانتا ہو تو گویا اس نے مدت مقررہ گزرنے تک اپنے حق کو مؤخر کرنا تسلیم کرلیا، اسی نکتہ کی بنا پر نکاح اور بیع میں فرق واضح ہوگیا، کیونکہ بیع میں اولاً ثمن کی ادائیگی اس کا موجب لازمی نہیں، آپ جانتے ہیں کہ بیع مقایضہ (سامان کا سامان سے سودا) میں کسی بدل کا

1 کفایہ مع فتح القدیر باب المهر مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۲۵۰/۳

Fatawa Razvia Volume 12

...it is also not necessary to pay at the beginning. Therefore, in a sale, until the payment of the price is made, the buyer is not satisfied with the delay of the sale. And the fatwa is based on the saying of Imam Abu Yusuf (may Allah Almighty have mercy on him). (T) Similarly, it is in Fath al-Qadir and other commentaries of Hidaya. Then, despite so many superiorities, how can it be accepted that this ruling in marriage is based purely on similarity to sale, such that it cannot differ from its rulings at all? This issue was worthy of an extensive treatise.

What we have mentioned is sufficient for those of understanding, and Allah is the Guardian of guidance. From Him is the beginning and to Him is the end. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 3: From Saswan, 25 Jumadi al-Akhir 1305 AH. What do the scholars of religion say regarding this issue: Zaid married Hind and left. Consummation (Rukhsat) did not occur, nor did they even see each other's faces. After two years, Hind filed a lawsuit against him, demanding consummation or divorce. He came to court and wrote a divorce deed before the magistrate. Hind's father forgave the entire mahr (dower) of Hind without her permission. Hind rejects this forgiveness and demands her half mahr. In this situation, is Iddah (waiting period) mandatory for Hind or not? Is her claim for mahr valid or not? And does the mahr get waived by the father's forgiveness or not? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: The father has no authority whatsoever to waive his daughter's mahr, nor can it ever be waived by his forgiveness. If the daughter is an adult (Baligha), then the father has no guardianship (wilayah) over her at all, and if she is a minor, then guardianship is for oversight (well-being), and there is no oversight in what is purely harmful. The books of the Madhhab (school of thought) are full of this explanation. (T)

1. Al-Inaya, marginal notes on al-Hidaya with Fath al-Qadir, Chapter of Mahr, Maktaba Nooria Razvia, Sukkur, 3/249. F: The underlined passage is not in Inaya; it's from Nihaya, and Nihaya is not available. - Nazir Ahmed.

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

...प्रारंभ में भुगतान करना भी आवश्यक नहीं है। इसलिए, बिक्री में, मूल्य के भुगतान तक खरीदार बिक्री की देरी से संतुष्ट नहीं होता है। और फ़तवा इमाम अबू यूसुफ़ (अल्लाह उन पर रहम करे) के कथन पर है। (त) इसी प्रकार, फ़तह अल-क़दीर और हिदाया की अन्य व्याख्याओं में है। फिर इतने श्रेष्ठ गुणों के बावजूद यह कैसे माना जा सकता है कि विवाह में यह आदेश पूरी तरह से बिक्री के साथ समानता पर आधारित है, कि वह इसके नियमों से बिल्कुल भी भिन्न न हो सके? यह मुद्दा एक विस्तृत शोध पत्र के योग्य था।

जो कुछ हमने उल्लेख किया है वह समझ रखने वालों के लिए पर्याप्त है, और अल्लाह ही मार्गदर्शन का स्वामी है। उसी से शुरुआत है और उसी पर अंत। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। (त)

मसला 3: ससवान से, 25 जमादी अल-आख़िर 1305 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: ज़ैद ने हिंदा से सिर्फ निकाह किया और चला गया। विदाई (रुख़सत) नहीं हुई, न ही एक-दूसरे का चेहरा देखा। दो साल बाद हिंदा ने उस पर मुकदमा दायर किया कि या तो विदाई कराए या तलाक दे। वह कचहरी में आया और न्यायाधीश के सामने तलाकनामा लिख दिया। हिंदा के पिता ने हिंदा की अनुमति के बिना उसका पूरा मेहर माफ़ कर दिया। हिंदा इस माफ़ी को स्वीकार नहीं करती है और अपना आधा मेहर मांगती है। इस स्थिति में हिंदा पर इद्दत अनिवार्य है या नहीं? और उसका मेहर का दावा सही है या नहीं? और क्या पिता के माफ़ करने से मेहर माफ़ हो गया या नहीं? बयान करें, आपको पुण्य मिलेगा।

जवाब: पिता को अपनी बेटी का मेहर माफ़ करने का किसी भी तरह अधिकार नहीं है, और न ही उसके माफ़ करने से यह कभी माफ़ हो सकता है। यदि बेटी वयस्क (बालिग़) है, तो पिता का उस पर बिल्कुल भी अधिकार (विलायत) नहीं है, और यदि वह नाबालिग़ है, तो अधिकार केवल उसकी भलाई के लिए है, और जो चीज़ पूरी तरह से हानिकारक हो उसमें कोई भलाई नहीं है। मज़हब (पंथ) की किताबें इस विवरण से भरी हुई हैं। (त)

1. अल-इनाया, फ़तह अल-क़दीर के साथ हिदाया पर हाशिये, मेहर का अध्याय, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 3/249। फ़: रेखांकित अंश इनाया में नहीं है; यह निहाया से है, और निहाया उपलब्ध नहीं है। - नज़ीर अहमद।

فتاوی رضویہ جلد دوازدھم

البدلین او لافلم یکن المشتری راضیا بتأخیر حقه بھی ادا کرنا ابتداءً ضروری نہیں، لہذا بیع میں ثمن کی ادائیگی فی المبیع الی ان یوفی الثمن وجعل (ف) فتوی علی قول تک مشتری بیع کی تاخیر پر راضی نہ ہوا اور فتوی امام ابویوسف ابی یوسف ۔[1] رحمہ اللہ تعالی کے قول پر ہے(ت) اسی طرح فتح القدیر وغیرہ شروح ہدایہ میں ہے پھر باوجود اس قدر تفوقوں کے کیونکر مانا جائے کہ نکاح میں یہ حکم محض مشابہت بیع ہی پر مبنی ہے کہ اس کے احکام سے کہیں تفاوت نہ کر سکے، یہ مسئلہ ایک مبسوط رسالے کے قابل تھا، وفیما ذکرنا کفایة لاھل الدرایة واللہ ولی الھدایة جو کچھ ہم نے ذکر کیا ہے اس اہل فہم کے لئے کفایت ہے، منه البدایة والیه النھایة۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ اللہ تعالیٰ ہی ہدایت کا مالک اور اسی سے ابتداء اور انتہا ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۳: از سسوان ۲۵ جمادی الآخرہ ۱۳۰۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید ہندہ سے صرف نکاح کرکے چلا گیا، رخصت نہ ہوئی، نہ ایک نے دوسرے کی صورت دیکھی، دو برس بعد ہندہ نے اس پر نالش کی، رخصت کرائے یا طلاق دے۔ وہ کچہری میں آیا اور حاکم کے سامنے طلاق نامہ لکھ دیا، پدرِ ہندہ نے کل مہر ہندہ بے اجازت ہندہ معاف کردیا، ہندہ اس معافی کو نامنظور کرتی اور اپنا نصف مہر مانگتی ہے، اس صورت میں ہندہ پر عدت لازم ہے یا نہیں؟ اور اس کا دعوی مہر صحیح ہے یا نہیں؟ اور باپ کے معاف کئے سے مہر معاف ہوگیا یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: باپ کو کسی طرح اپنی بیٹی کے مہر معاف کردینے کا اختیار نہیں، نہ ہرگز اس کے معاف کئے معاف ہوسکے فان البنت ان کانت بالغة فلاولایة للاب علیھا اگر بیٹی بالغ ہو تو باپ کو اس پر بالکل ولایت نہیں اور اگر اصلا وان کانت صغیرة فالولایة للنظر ولانظر فیما نابالغ ہو تو پھر

باپ کی ولایت شفقت پر مبنی ہے تو جو چیز محض تمحض للضرر وکتب المذھب طافحۃ بھذا۔ ضرر ہو وہ شفقت نہیں ہوسکتی مذہب کی کتب اس بیان میں بھر پور ہیں۔(ت)

1 العنایۃ حاشیۃ علی الھدایۃ مع فتح القدیر باب المھر مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۳/ ۲۴۹ ف: خط کشیدہ عبارت عنایہ میں نہیں، یہ نہایہ کی ہے، اور نہایہ دستیاب نہیں۔ نذیر احمد

Fatawa-e-Razvia Volume 12

Therefore, if Zaid gave divorce without the condition of mahr waiver, then indeed a 'Talaq-e-Bain' (irrevocable divorce) took place upon Hindah, because of which she left Zaid's marriage. And since seclusion (khilwat) had not yet occurred, there is no need for 'Iddah' (waiting period) either.

In Majma' al-Anhur: If one divorces a woman before consummation, she becomes irrevocably divorced (Ba'ina) and there is no Iddah. [Excerpted] (T) In Majma' al-Anhur it is stated: If divorce is given to a non-consummated woman, she becomes divorced irrevocably and there will be no Iddah. [Excerpted] (T)

And for this reason, half of the mahr is payable by Zaid to Hindah, for which she has the right to claim at any time.

Because no postponement is expected after separation due to death or divorce. (T) Because after separation due to death or divorce, there is nothing left to wait for. (T)

And if he said, "I divorced Hindah on the condition that my mahr be waived," then in the questioned scenario, neither was the mahr waived nor did the divorce occur. 'When the condition fails, the thing conditioned on it also fails.' (T) In this case, the ruling regarding the mahr claim will be the same as given to a woman in a state of marriage: if it is Mahr-e-Mu'ajjal (prompt mahr), she can take it immediately; if a period was fixed, she cannot ask until the known period expires; and if nothing was decided, it will be left to the custom of the city, meaning whatever is the local practice in such a situation will be followed.

In al-Niqayah: If prompt and deferred mahr are specified, that is it; otherwise, what is customary will prevail. And Allah Almighty knows best. (T) In al-Niqayah it is stated: If prompt or deferred dower is mentioned then it is better, otherwise whatever is the custom will be established. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 4: 30 Rabi-ul-Awwal 1327 AH, from Sehwan, sent by Hafiz Ali Muhammad Sahab.

What do the scholars of religion and jurists of the clear Shari'ah say regarding this matter: Zaid's marriage took place with his foster sister due to ignorance, and she remained in his companionship (consummation occurred). In this situation, is the dower (mahr) debt payable by Zaid or not?

The Answer:

In the questioned scenario, the full 'Mahr-e-Mithl' (equitable dower) is obligatory, even if it exceeds the specified mahr ('Mahr-e-Musamma'). In Radd al-Muhtar and Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar, under the author's statement:

"And Mahr-e-Mithl becomes obligatory in a void marriage after consummation, and it should not exceed the specified amount because of her consent to the lower amount." (In a void marriage where consummation has occurred, mahr-e-mithl becomes obligatory, but it should not exceed the fixed amount because it is waived...)

1. Majma' al-Anhur Sharh Multaqa al-Abhur, chapter on divorce before consummation, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 1/400.
2. Mukhtasar al-Wiqayah fi Masa'il al-Hidayah, Kitab al-Nikah, Nur Muhammad Karkhana-e-Tijarat Kutub Karachi p. 56.

अतः यदि ज़ैद ने महर माफ़ी की शर्त के बिना तलाक़ दी थी, तो निश्चित रूप से हिन्दा पर तलाक़-ए-बाइन (अटल तलाक़) वाक़े हुई, जिसके कारण वह ज़ैद के निकाह से निकल गई। और चूंकि अभी तक खल्वत (एकांतवास) नहीं हुई थी, इसलिए इद्दत की भी आवश्यकता नहीं है।

मजमा' अल-अन्हुर में है: यदि गैर-मदखुल बिहा (जिससे सहवास न हुआ हो) को तलाक़ दी जाए, तो वह औरत बाइना (अलग) हो जाएगी और कोई इद्दत नहीं होगी। (उद्धृत) (त) मजमा' अल-अन्हुर में है: गैर मदखुल बहा को तलाक़ दी तो औरत बाइना हो जाएगी और इद्दत न होगी। (त)

और इसीलिए आधा महर हिन्दा को ज़ैद से देय है, जिसका दावा करने का उसे हर समय अधिकार है।

क्योंकि मृत्यु या तलाक़ के कारण अलग होने के बाद कोई प्रतीक्षा नहीं की जाती। (त) कि मौत या तलाक़ की वजह से अलग होने के बाद कोई चीज़ इंतज़ार के काबिल नहीं। (त)

और यदि उसने इस तरह कहा कि "मैंने हिन्दा को इस शर्त पर तलाक़ दी कि मेरा महर माफ़ हो जाए," तो प्रश्न में दी गई स्थिति में न तो महर माफ़ हुआ और न ही तलाक़ हुई। 'जब शर्त फ़ौत (विफल) हो जाए तो शर्त पर निर्भर चीज़ भी फ़ौत हो जाती है।' (त) इस स्थिति में महर के दावे का वही आदेश होगा जो एक महिला को वैवाहिक स्थिति में दिया जाता है: यदि महर-ए-मुअज्जल (तत्काल देय) है, तो वह तुरंत ले सकती है; यदि कोई अवधि तय की गई हो, तो वह ज्ञात अवधि तक नहीं मांग सकती; और यदि कुछ भी तय न हुआ हो, तो उसे शहर के रिवाज पर छोड़ दिया जाएगा, यानी ऐसी स्थिति में वहाँ का जो भी प्रचलन होगा, उसी पर अमल किया जाएगा।

अल-निक़ाया में है: यदि तत्काल और विलंबित महर का उल्लेख किया गया है, तो वही मान्य है; अन्यथा जो प्रचलन में है, वही माना जाएगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त) नक़ाया में है कि अगर महर-ए-मुअज्जल या मुअज्जल बयान करे तो बेहतर, वरना जो उरफ़ (प्रचलन) में हो वह ठहरेगा। वल्लाहु तआला आलम। (त)

मसअला ४: ३० रबी-उल-अव्वल १३२७ हिजरी, सहवान से, हाफ़िज़ अली मोहम्मद साहब द्वारा प्रेषित।

धर्म के विद्वान और शरीअत के मुफ़्ती इस मसअले में क्या फरमाते हैं कि ज़ैद का निकाह अज्ञानतावश उसकी रज़ाई (स्तनपान से संबंधित) बहन के साथ हो गया और वह उसके अधिकार (सहवास) में भी रही, तो इस स्थिति में ज़ैद पर महर का क़र्ज़ देना वाजिब है या नहीं?

जवाब:

पूछे गए मसअले में पूरा 'महर-ए-मिस्ल' (समान महर) वाजिब है, चाहे वह तयशुदा महर ('महर-ए-मुसम्मा') से अधिक हो। रद्दुल मुहतार और तहतावी अला अद-दुर्र अल-मुख्तार में लेखक के कथन के तहत:

"और सहवास के बाद फासिद निकाह में महर-ए-मिस्ल वाजिब होता है, और यह तयशुदा राशि से अधिक नहीं होना चाहिए क्योंकि उसने कम पर सहमति दी थी।" (फासिद निकाह और सहवास कर लेने से महर-ए-मिस्ल वाजिब होता है और वह मुक़र्ररा (तयशुदा) से ज़ायद (अधिक) नहीं होना चाहिए क्योंकि वह साक़ित...)

1. मजमा' अल-अन्हुर शरह मुल्तक़ा अल-अभुर, गैर-मदखुल बिहा की तलाक़ का अध्याय, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी बेरुत १/४००।
2. मुख्तसर अल-विकाया फ़ी मसाइल अल-हिदाया, किताबुन निकाह, नूर मोहम्मद कारखाना-ए-तिजारत कुतुब कराची, पृ. ५६।

पृष्ठ १२२/६८८

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

پس اگر زید نے بلا شرط معافی مہر طلاق دی تھی تو بیشک ہندہ پر طلاق بائن واقع ہوئی جس کے سبب وہ زید کے نکاح سے نکل گئی اور ازانجا کہ ہنوز خلوت نہ ہوئی تھی عدت کی بھی حاجت نہیں،

فی مجمع الانھر طلق غیر المدخول بھا بانت لا الی عدۃ ۱ھ ملتقطاً۔ | مجمع الانہر میں ہے : غیر مدخول بہا کو طلاق دی تو عورت بائنہ ہو جائے گی اور عدت نہ ہوگی اھ ملتقطاً (ت)

اور اس لئے نصف مہر ہندہ زید پر واجب الادا، جس کے دعوٰی کا اسے ہر وقت اختیار،

اذالاحالۃ تنتظر بعد الافتراق بموت او طلاق۔ | کہ موت یا طلاق کی وجہ سے افتراق کے بعد کوئی قابل انتظار نہیں۔ (ت)

اور اگر اس نے یوں کہا کہ میں نے ہندہ کو اس شرط پر طلاق دی کہ مجھے مہر معاف ہو جائے تو صورت مسئولہ میں نہ مہر معاف ہوا نہ طلاق پڑی اذا فات الشرط فات المشروط (جب شرط فوت ہو جائے تو مشروط بھی فوت ہو جاتا ہے ۔ ت) اس تقدیر پر دعوی مہر میں حکم ہوگا جو عورت کو بحالت زوجیت دیا جاتا ہے کہ مہر معجل ہو تو فی الفور لے سکتی ہے اور کچھ وعدہ مقرر ہوا ہو تو میعاد معلوم تک نہیں مانگ سکتی اور کچھ نہ ٹھہرا ہو تو اس شہر کے رواج پر چھوڑیں گے یعنی ایسی حالت میں جو وہاں کا عرف ہو اسی پر عمل ہے،

فی النقایۃ المعجل والمؤجل ان بینا فذاک والا فالمتعارف ۲۔ واللہ تعالٰی اعلم | نقایہ میں ہے کہ اگر مہر معجل یا مؤجل بیان کرے تو بہتر ورنہ جو عرف میں ہو وہ ٹھہریگا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۴: ۳۰ ربیع الاول ۱۳۲۷ھ از سہوان مرسلہ حافظ علی محمد صاحب

کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید کا نکاح اُس کی رضاعی بہن کے ساتھ بوجہ لاعلمیت کے ہوا اور وہ اس کے تصرف میں بھی رہی، تو اس صورت میں زید پر دین مہر واجب الادا ہے یا نہیں؟

الجواب:

صورت مسئولہ میں پورا مہر مثل واجب ہے اگرچہ مہر مسمٰی سے زائد ہو ، ردالمحتار و طحطاوی علی الدرالمختار میں زیر قول شارح

ویجب مہر المثل فی نکاح فاسد بالوطی ولم یزد علی المسمی لرضاھا بالحط (نکاح فاسد و وطی کر لینے سے مہر مثل واجب ہوتا ہے اور وہ مقررہ سے زائد نہیں ہونا چاہئے کیونکہ وہ ساقط

1 مجمع الانھر شرح ملتقی الابحر فصل فی طلاق غیر المدخول بھا دار احیاء التراث العربی بیروت ۱/ ۴۰۰ 2 مختصر الوقایۃ فی مسائل الہدایۃ کتاب النکاح نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ص ۵۶

Fatawa Razvia Volume 12

(she was satisfied. - T) He said: In 'Al-Khaniya' it is stated: If someone marries a prohibited woman (mahram), according to the Imam [Abu Hanifa], there is no prescribed legal punishment (hadd) for him, but he must pay her the customary dower (mahr mithl), no matter how high it may be. Therefore, these cases are exceptions. However, it can be said that marriage with prohibited women is not merely 'fasid' (irregular) but 'batil' (void) from the very beginning. Thus, there is no exception. (T)

In 'Al-Khaniya', examples of this are mentioned: Such as the mother, daughter, sister, paternal aunt, maternal aunt, or marrying the father's wife or the son's wife, etc. Thus, he also mentioned in-law relations (musahara). This clarifies that milk-relations (rada'i mahrams) are also included by logical implication. In 'Radd al-Muhtar', an example of 'shubhat al-aqd' (semblance of a contract) is given: like having intercourse with a mahram woman after marrying her. In this text, they have included all types of mahrams: by lineage (nasab), by suckling (rada'a), and by marriage (sihriya). (T) And Allah knows best.

Problem 5: From Mahra Mutahra Baghpakhta, sent by Syed Ibrahim Miyan Sahib, 1st Dhu al-Qi'dah 1306 AH. What do the scholars of Islam say regarding the issue of what is the specified amount of dower (mahr) in the Sharia of Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him)? Please state and be rewarded.

The Answer: In the pure Sharia, a minimum limit for dower is fixed. In the pure Sharia, the minimum amount of mahr is fixed at ten dirhams.

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, Chapter on Mahr, Discourse on Irregular Marriage, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/351. 2. Fatawa Qazi Khan, Chapter on Dower Issues, Nawal Kishore, Lucknow, 1/157. 3. Radd al-Muhtar, Book of Prescribed Punishments, Discourse on the Semblance of a Contract, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/153.

फतावा रज़विया जिल्द 12

(वह राजी थी। - त) फरमाया: 'अल-खनिया' में है कि अगर किसी ने महरम औरत (जिनसे निकाह हराम है) से निकाह किया, तो इमाम [अबू हनीफ़ा] के अनुसार उस पर कोई हद (कानूनी सजा) नहीं है, लेकिन उस औरत का मेहर-ए-मिस्ल (प्रचलित मेहर) चाहे कितना ही अधिक हो, पति पर अनिवार्य होगा। अतः ये स्थितियाँ अपवाद हैं। हालाँकि, यह कहा जा सकता है कि महरमों से निकाह फ़ासिद (अनियमित) नहीं बल्कि शुरुआत से ही बातिल (शून्य) है, इसलिए कोई अपवाद नहीं रहा। (त)

'अल-खनिया' में इसकी मिसालों में फरमाया: जैसे माँ, बेटी, बहन, फूफी, खाला, या पिता की पत्नी या पुत्र की पत्नी आदि। तो इसमें उन्होंने ससुराल के रिश्तों (मुसाहरा) का भी उल्लेख किया, जिससे रज़ाई (दूध शरीक) महरमों का शामिल होना भी बेहतर तौर पर स्पष्ट हो गया। 'रद-अल-मुह्तार' में 'शुबह-ए-अक़्द' (अनुबंध का भ्रम) का उदाहरण दिया गया है: जैसे महरम औरत से निकाह करके संभोग कर लिया हो। इस इबारत में उन्होंने नसीबी, रज़ाई और सहेरिया (ससुराली) सभी महरमों को शामिल किया है। (त) और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला 5: माहरा मुतहरा बाग़पुख्ता से, प्रेषक सैय्यद इब्राहिम मियां साहब, 1 जी-कादा 1306 हिजरी। इस्लाम के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीयत में मेहर की मात्रा कितनी है? कृपया स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: शरीयत-ए-मुतहरा में मेहर की कम से कम सीमा निर्धारित है। पाक शरीयत में मेहर की कम से कम मात्रा दस दिरहम तय है।

पादलेख: 1. रद-अल-मुह्तार, बाब-अल-महर, मतलब फ़ी निकाह-अल-फ़ासिद, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/351। 2. फतावा काज़ी खाँ, बाब फ़ी ज़िक्र मसाइल-अल-महर, नवल किशोर, लखनऊ, 1/157। 3. रद-अल-मुह्तार, किताब-अल-हुदूद, मतलब फ़ी बयान शुबहात-अल-अक़्द, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 3/153।

पृष्ठ 123 / 688

پر راضی تھی ۔ ت) فرمایا : وفی الخانیۃ لوتزوج محرمہ لا حدّ علیہ عند الامام و علیہ مھر مثلھا بالغاً ما بلغ اھ فھی مستثناۃ الان یقال ان نکاح المحارم باطل لافاسد ۱- الخ ای فلا استثناء۔ خانیہ میں ہے کہ اگر کسی نے محرم عورت سے نکاح کیا تو امام صاحب کے ہاں اس پر حد نہیں، ہاں اس عورت کا مہر مثل جتنا گراں ہو خاوند پر لازم ہوگا اھ تو یہ صورتیں مستثنٰی ہیں، ہاں یوں کہا جاسکتا ہے کہ محارم سے نکاح فاسد نہیں بلکہ ابتداء ہی باطل ہے الخ تو استثناء نہ ہوا۔(ت)

خانیہ میں اس کی امثلہ میں فرمایا: نحو الام والبنت والاخت والعمۃ والخالۃ اوتزوج بامرأۃ ابیہ وابنہ الخ ۲ فذکر محرمات الصھر ایضا فافاد شمول محرمات الرضاع بالاولی وقال في رد المحتار قولہ شبھۃ العقد کوطی محرم نکحھا مانصہ اطلق في المحرم فشمل المحرم نسبا ورضاعا و صھریۃ ۳- واللہ تعالی اعلم جیسے ماں، بیٹی، بہن، پھوپھی، خالہ، یا باپ کی بیوی یا بیٹے کی بیوی الخ تو اس میں انہوں نے سسرالی رشتے بھی ذکر کئے، تو اس سے رضاعی محرمات کا شامل ہونا بطریقہ اولٰی واضح ہوگیا۔ ردالمحتار میں شبہ عقد کی مثال لکھی ہے جیسے محرم عورت سے نکاح کرکے وطی کر لی ہو۔ اس عبارت میں انہوں نے محرمات نسبیہ، رضاعیہ، صہریہ یہ سب کو شامل کیا ہے (ت) واللہ تعالی اعلم

مسئلہ ۵: از ازماہرہ مطہرہ باغ پختہ مرسلہ سید ابراہیم میاں صاحب یکم ذی قعدہ ۱۳۰۶ھ چہ می فرمایند علمائے دین اندریں مسئلہ کہ تعداد مہر شرع محمدی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم چہ مقدار است؟ بینوا توجروا۔ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ شریعت محمدی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم میں مہر کی مقدار کیا ہے؟ بینوا توجروا الجواب: مہر در شرع مطہر جانب کمی حدے معین ست شریعت پاک میں مہر کی کم از کم مقدار دس درہم مقرر ہے

١ ردالمحتار باب المهر مطلب في نكاح الفاسد دار احياء التراث العربى بيروت ٢/٣٥١ ٢ فتاوىٰ قاضى خاں باب فى ذكر مسائل المهر نولكشور لكهنؤ ١/١٥٧ ٣ ردالمحتار كتاب الحدود مطلب فى بيان شبهة العقد دار احياء التراث العربى بيروت ١٥٣/٣

[Left Column - Persian]: Meaning, there is no upper limit beyond ten dirhams. Whatever amount is fixed, it becomes obligatory according to the Muhammadan Sharia (Peace and blessings of Allah be upon him, his family, and his companions). Allah Almighty has said: "and [if] you have given one of them a qintar [a great amount of wealth]." Therefore, no specific fixation can be made stating that only this amount is Shari'a-compliant and not another. Yes, the term 'Shar'i Mehr' (Shari'a Dowry) became famous among the common artisans of these lands. It is possible they coined it in opposition to the custom of the noble and wealthy families of India. Those families used to exaggerate and exceed limits in fixing dowry, placing burdens of fifty thousand, five hundred thousand, or even more on the necks of those with limited means. These artisans, inclining towards reduction, used to fix an easy-to-obtain, smaller dowry. Considering this moderate approach to be closer to the pure Sharia, they began calling it 'Mehr-e-Shara-e-Muhammadi' (Dowry of the Muhammadan Sharia). Gradually, the specific naming and determination disappeared from use, and in many of their contracts, only this phrase remained on their tongues. If asked how much dowry was fixed, they would say 'Shara-e-Muhammadi'. Since this word is a specific technical term for them, it is obligatory to refer back to them to determine its intended meaning or amount. This is because the speech of every contracting party, oath-taker, testator, or person making an endowment must be interpreted according to their custom ('urf), as stated in Radd al-Muhtar and other sources.

[Right Column - Urdu]: However, there is no upper limit; instead, whatever amount is fixed will be obligatory in the Muhammadan Sharia (Peace and blessings of Allah be upon him, his family, and his companions). Allah Almighty has said: 'and you give some of these women a lot of wealth,' therefore, no determination can be made that this is the Sharia-compliant amount and this is not. Yes, the term 'Shar'i Mehr' is famous among the artisans of this area so that it can be kept equal to the custom of wealthy people and noble families who used to fix very heavy dowries. They increased to such an extent that the guardian would put a burden of fifty thousand, fifty-five thousand, a hundred thousand, and even more on the neck of someone of lesser means than himself. So the artisans, in order to reduce the burden of dowry and considering easy and moderate work closer to Sharia, started calling it 'Shar'i mahr' and gradually this name became famous. Mostly in marriage, when asked how much the dowry is, they say 'Shar'i' in response. When this word became a specific

idiom for those people, it now became necessary to refer to them to know the determination of its meaning or amount because it is necessary to interpret the speech of people making contracts, oaths, wills, and endowments according to their custom ('urf), as is in Radd al-Muhtar etc.

[Footnotes]: 1. Al-Quran al-Karim 4/20. 2. Radd al-Muhtar, Chapter of Ta'liq 2/499, Chapter of Ila 2/553, Book of Sales 4/144, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

[बायां कॉलम - फ़ारसी]: अर्थात्, दस दिरहम से अधिक की कोई सीमा नहीं है। जो भी राशि तय की जाए, वह मुहम्मदी शरीयत (अल्लाह तआला उन पर और उनके परिवार और साथियों पर शांति और आशीर्वाद भेजे) के आदेश के अनुसार अनिवार्य हो जाती है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और [यदि] तुमने उनमें से किसी को क़िन्तार [अथाह धन] दिया हो।" इसलिए, यह निर्दिष्ट नहीं किया जा सकता है कि केवल इतना ही शरई महर की मात्रा है और अन्यथा नहीं। हाँ, यह शब्द इन देशों के कई सामान्य कारीगरों के बीच व्यापक रूप से प्रचलित और सामान्य है। यह संभव है कि उन्होंने इसे भारत के कुलीन और धनवानों की प्रथा के विरोध में गढ़ा हो। उन्होंने महर को बढ़ा-चढ़ा कर बताने और बढ़ाने में सीमाओं को पार कर दिया, जिससे कम साधन वाले लोगों की गर्दन पर पचास हज़ार, पाँच लाख और उससे भी अधिक का बोझ पड़ गया। इन लोगों ने, कमी की ओर झुकते हुए, आसानी से प्राप्त होने वाला, छोटा महर तय करना शुरू किया। इस मध्यम दृष्टिकोण को शुद्ध शरीयत के अधिक निकट मानते हुए, उन्होंने इसे 'मुहम्मदी शरीयत का महर' कहा। धीरे-धीरे, विशिष्ट नामकरण और निर्धारण प्रचलन से बाहर हो गया, और उनके कई अनुबंधों में, केवल यही वाक्यांश उनकी ज़ुबान पर रह गया। यदि पूछा जाए कि कितना महर तय किया गया था, तो वे बिना किसी हिचकिचाहट के'मुहम्मदी शरीयत' कहते हैं। चूँकि यह शब्द उनकी विशिष्ट शब्दावली है, इसलिए इसका अर्थ समझने के लिए उन्हीं की ओर वापस जाना अनिवार्य है। क्योंकि यह आवश्यक है कि प्रत्येक अनुबंध करने वाले, शपथ लेने वाले, वसीयत करने वाले और वक्फ़ करने वाले के भाषण की व्याख्या उसकी प्रथा ('उर्फ़) के अनुसार की जाए, जैसा कि रद्दुल मुख्तार और अन्य में है।

[दायां कॉलम - उर्दू]: लेकिन ज़्यादा से ज़्यादा मात्रा नहीं बल्कि जितना भी निर्धारित कर दिया जाए वह शरीयत-ए-मुहम्मदी में लाज़िम होगा (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम)। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है: 'और तुम इन औरतों में से बाज़ को बहुत ज़्यादा माल देते हो,' इसलिए कोई ताईन (निर्धारण) नहीं की जा सकती कि यह मिक़दार-ए-शरईया (शरीयत के अनुसार मात्रा) है और यह नहीं है। हाँ, 'शरई महर' का लफ़्ज़ इस इलाक़े के अहल-ए-हुनर (कारीगरों) में मशहूर है ताकि इसको बड़े मालदार लोगों और मोअज़्ज़ज़ ख़ानदानों की रस्म के बराबर रखा जाए जो अपने यहाँ बहुत भारी महर मुक़र्रर करते थे। वे इस हद तक बढ़ गए कि वली अपने से कम माया (कम साधन वाले) लोगों की गर्दन पर भी पचास हज़ार, पपन हज़ार और लाख और इससे भी ज़्यादा बोझ डालते हैं। तो अहल-ए-हुनर ने महर का बोझ कम करने के लिए और सहल (आसान) और मोअतदिल (मध्यम) काम को

शरीयत के क़रीब तर ख़्याल कर के इसको शरई महर कहना शुरू कर दिया और आहिस्ता-आहिस्ता यह नाम मशहूर हो गया। अक्सर तौर पर निकाह में जब पूछा जाए कि कितना महर है तो जवाब में 'शरई' कह देते हैं। जब यह लफ़्ज़ ख़ास लोगों की इस्तलाह (शब्दावली) बन गया तो अब लाज़मन इसकी मुराऽ या मिक़दार का ताईन मालूम करने के लिए उनकी तरफ़ रुजूअ करना ज़रूरी हुआ, क्योंकि अक़्द (अनुबंध), क़सम, वसीयत और वक़्फ़ करने वाले लोगों के कलाम (शब्दों) को उनके उर्फ़(प्रथा) पर महमूल करना (आधारित करना) होता है जैसा कि रद्दुल मुख्तार वग़ैरह में है।

[पाद टिप्पणियां]: 1. अल-क़ुरान अल-करीम 4/20 2. रद्दुल मुख्तार, बाब अल-ता'लीक़ 2/499, बाब अल-इला 2/553, किताब अल-बुयू' 4/144, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत।

पृष्ठ 124/688

فتاوٰی رضویہ ، جلد دوا زدہم

[بایاں کالم - فارسی]: یعنی دہ درہم جانب زیادت پیچ تحدید نیست ہرچہ کہ بستہ شود ہماں قدر بحکم شرع محمد لازم آید صلی اللہ تعالٰی علیہ وعلٰی اٰلہ واصحابہ بارک وسلم۔ قال اللہ تعالٰی وَاٰتَیْتُمْ اِحْدٰھُنَّ قِنْطَاراً ' ، پس تعیین نتواں کد کہ ہمیں قدر مقدار مہر شرعی است نہ غیر او آرے ایں لفظ در بسیار نے از عوام اہل حرفہ ایں بلاد شائع وذائع است مان کہ او را مقابل رسم شرفاؤ متمولان ہند نہادہ باشند آ ناں در مہر مغالات وافراط را از حد گذرانیدہ بر گردن کم مایہ پنجہ پنجاہ ہزار وصدر ہزار وازاں ہم فزوں تر بار می نہادند ایناں بتقلیل گرائیدہ مہر کمی سہل الحصول می بستند وایاں را بمقتصد شرع مطہر نزدیک تر دانستہ مہر شرع محمدی می گفتند تارفتہ رفتہ تسمیہ و تعیین از میان برخاست و در بسیاری از عقود ایشاں ہمیں لفظ بر زباں ہا ماند اگر پسی چہ قدر مہر بستہ شد گویند شرع محمدی و گر پیچ و چوں این لفظ اصطلاح خاص ایشاں ست واجب ست در فہم مرادش رجوع ہم ایشاں کردن فانہ یجب ان یحمل کلام کل عاقد وحالف وموص وواقف علی عرفہ کما فی رد المحتار وغیرہ

[دایاں کالم - اردو]: لیکن زیادہ سے زیادہ مقدار نہیں بلکہ جتنا بھی مقرر کر دیا جائے وہ شریعت محمدی میں لازم ہوگا صلی اللہ تعالٰی علیہ وعلٰی آلہ واصحابہ وبارک وسلم۔ اللہ تعالٰی نے فرمایا ہے: اور تم ان عورتوں میں سے بعض کو بہت زیادہ مال دیتے ہو، اس لئے کوئی تعیین نہیں کی جاسکتی کہ یہ مقدار شرعیہ اور یہ نہیں ہے ہاں شرعی مہر کا لفظ اس علاقے کے اہل ہنر لوگوں میں مشہور ہے تاکہ اس کو بڑے مالدار لوگوں اور معزز خاندانوں کی رسم کے برابر رکھا جائے جو اپنے ہاں بہت بھاری مہر مقرر کرتے تھے وہ اس حد تک بڑھ گئے کہ ولی اپنے سے کم مایہ لوگوں کی گردن پر بھی پچاس ہزار پچپن ہزار اور لاکھ اور اس سے بھی زیادہ بوجھ ڈالتے ہیں، تو

اہل ہنر نے مہر کا بوجھ کم کرنے کے لئے اور سہل اور معتدل کام کو شریعت کے قریب تر خیال کر کے اس کو شرعی مہر کہنا شروع کر دیا اور آہستہ آہستہ یہ نام مشہور ہو گیا اور اکثر طور پر نکاح میں جب پوچھا جائے کہ کتنا مہر ہے تو جواب میں شرعی کہہ دیتے ہیں جب یہ لفظ خاص لوگوں کی اصطلاح بن گیا تو اب لازماً اس کی مراد یا مقدار کا تعین معلوم کرنے کیلئے ان کی طرف رجوع کرنا ضروری ہوا کیونکہ عقد، قسم، وصیت اور وقف کرنے والے لوگوں کے کلام کو ان کے عرف پر محمول کرنا ہوتا ہے جیسا کہ ردالمختار وغیرہ میں ہے،

[حواشی]: 1 القرآن الکریم ۲۰/۴ 2 ردالمختار باب التعلیق ۴۹۹/۲، باب الایلاء ۵۵۳/۲، کتاب البیوع ۱۴۴/۴ دار احیاء التراث العربی بیروت

Fatawa Razawiyya, Volume 12

[Left column - Persian/Arabic text]: Then if the intent and common usage of them or a group of them for this word is that same minimum amount of mahr (dower), then ten dirhams will be mandatory for that group. And for those whose aim and understanding of mahr is [the dower of] the canopy of chastity, the celestial height, the handmaid of the court of purity, Hazrat Batul Zahra (salutations of Allah and peace be upon her noble father and upon her), then four hundred mithqals of silver, which currently amounts to one hundred and sixty rupees, will be mandatory. And for those people whose minds are empty of the meaning of this word, they just utter this word and do not know its concept and purpose (and I fear most are like this), then the apparent [ruling] is that Mahr-e-Mithl (customary dower) becomes mandatory. Since it is the origin and the most just, there is no deviation from it except upon a valid specification. But since it is invalid due to ambiguity, it is mandatory to return to the origin. Refer to 'Hidayah' and other books that state the causes [of rulings].

[Right column - Urdu translation of the above]: Therefore, it should be found out from the people who use this word; if their purpose by it is the minimum amount of mahr, then ten dirhams will be intended. And if a people's purpose is the mahr of Hazrat Batul Zahra, the honorable Lady Fatima (may Allah Almighty be pleased with her), then this will mean four hundred mithqals of silver, which according to today's currency would be one hundred and sixty (160) rupees. And if some people who use this word are mindless and there is no fixed intention, they just bring this word to their tongue and do not know its meaning and purpose—in my opinion, the majority is such—then if a marriage takes place in such a situation, Mahr-e-Mithl will be mandatory. This is because that is the original and balanced standard; turning away from it is not permissible as long as a fixed amount is not known, and the fixed amount is absent here because it is unknown. So, one must necessarily refer to the original, which is Mahr-e-Mithl. Refer to 'Hidayah' etc., which are books that explain the reasons for rulings. (T) And Allah Almighty knows best.

Problem 6: What do the scholars of religion say regarding this matter: Is the prompt (mu'ajjal) and deferred (mu'ajjal) mahr mandatory for payment immediately before death or divorce, or not? Explain and be rewarded.

The Answer: In the questioned case, there is neither a general obligation of immediate payment nor a total absence; rather, the basis is on custom and habit. If

the custom is that it is paid before death and divorce, then immediate payment is mandatory, otherwise not.

[Boxed text - Arabic]: In 'Mukhtasar al-Wiqayah': [Regarding] prompt and deferred [dower], if they are specified, [it's clear], otherwise, [follow] what is customary. And in its commentary... [Boxed text - Urdu]: It is stated in 'Mukhtasar al-Wiqayah' that if the prompt or deferred mahr has been specified, then it's better; otherwise, whatever is understood in custom will prevail. In its commentary, it is mentioned...

1. Mukhtasar al-Wiqayah, Book of Marriage, Noor Muhammad Karkhana Tijarat Kutub Karachi, p. 56. Page 125 of 688

फ़तावा रज़विया, खंड 12

[बायाँ स्तंभ - फ़ारसी/अरबी पाठ]: फिर यदि उनका या उनमें से किसी समूह का इरादा और इस शब्द का सामान्य अर्थ मेहर की वही न्यूनतम मात्रा है, तो उस समूह के लिए दस दिरहम अनिवार्य होंगे। और जिन लोगों के लिए मेहर का उद्देश्य और अर्थ शुचिता के शामियाने, आकाश जैसी ऊँचाई वाली, पवित्रता के दरबार की दासी हज़रत बतुल ज़हरा (अल्लाह की उन पर और उनके नेक पिता पर रहमतें और सलाम हों) का मेहर है, तो वहां चार सौ मिस्काल चांदी अनिवार्य होगी, जो वर्तमान में एक सौ साठ रुपये के बराबर है। और जिन लोगों के दिमाग इस शब्द के अर्थ से खाली हैं, वे बस अपनी जुबान पर यह शब्द लाते हैं और इसके अर्थ और इरादे को खुद नहीं जानते (और मुझे डर है कि अधिकांश ऐसे ही हैं), तो ऐसी स्थिति में ज़ाहिर तौर पर 'मेहर-ए-मिस्ल' (प्रचलित मेहर) अनिवार्य होगा। चूँकि यह मूल और सबसे न्यायपूर्ण है, इसलिए इससे विचलित नहीं हुआ जा सकता जब तक कि एक मान्य राशि निर्धारित न हो। और चूंकि यहाँ अनिश्चितता के कारण यह अमान्य है, इसलिए मूल की ओर लौटना अनिवार्य होगा। 'हिदाया' और अन्य पुस्तकों को देखें जो आदेशों के कारणों को स्पष्ट करती हैं।

[दायां स्तंभ - उपरोक्त का उर्दू अनुवाद]: इसलिए, इस शब्द का उपयोग करने वाले लोगों से मालूम किया जाना चाहिए; यदि उनका उद्देश्य मेहर की न्यूनतम मात्रा है, तो दस दिरहम मुराद होंगे। और यदि किसी जाति का उद्देश्य हज़रत बतुल ज़हरा, माननीय जनाब फ़ातिमा (अल्लाह तआला उनसे प्रसन्न हो) का मेहर है, तो इसका मतलब चार सौ मिस्काल चांदी होगा, जो आज के सिक्के के हिसाब से एक सौ साठ (160) रुपये होंगे। और यदि इस शब्द का उपयोग करने वाले कुछ लोग खाली दिमाग हैं और कोई निश्चित इरादा नहीं है, वे बस अपनी जुबान पर यह शब्द लाते हैं और इसके अर्थ और इरादे को नहीं जानते—मेरी राय में बहुसंख्यक ऐसे ही हैं—तो ऐसी स्थिति में यदि निकाह होता है, तो मेहर-ए-मिस्ल अनिवार्य होगा। इसका कारण यह है कि वही मूल और संतुलित मानक है; इससे तब तक विचलित होना जायज नहीं है जब तक कि एक निर्धारित राशि ज्ञात न हो, और यहाँ निर्धारित राशि अनुपलब्ध है क्योंकि वह अज्ञात है। तो, अनिवार्य रूप से मूल की ओर लौटना होगा जो मेहर-ए-मिस्ल है। 'हिदाया' आदि पुस्तकों की ओर रुख करें जो आदेशों के कारणों को स्पष्ट करती हैं। (टी) और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 6: धर्म के विद्वान इस मसले के बारे में क्या फरमाते हैं कि: क्या मुअज्जल (त्वरित) और मुअज्जल (विलंबित) मेहर मृत्यु या तलाक से पहले वर्तमान में भुगतान के योग्य है या नहीं? बयान करें और पुण्य के हकदार बनें।

जवाब: पूछी गई स्थिति में न तो सामान्य रूप से तत्काल भुगतान की अनिवार्यता है और न ही पूर्ण अभाव; बल्कि आधार रीति-रिवाज और आदत पर है। यदि रिवाज यह है कि मृत्यु और तलाक से पहले भुगतान कर दिया जाता है, तो तत्काल भुगतान अनिवार्य है, अन्यथा नहीं।

[बॉक्स में पाठ - अरबी]: 'मुख़्तसर अल-विक़ाया' में है: [के बारे में] त्वरित और विलंबित [मेहर], यदि वे स्पष्ट किए गए हैं, [तो ठीक है], अन्यथा, जो प्रथागत है [उसे मानें]। और इसकी व्याख्या में... [बॉक्स में पाठ - उर्दू]: 'मुख़्तसर अल-विक़ाया' में कहा गया है कि यदि त्वरित या विलंबित मेहर का विवरण दिया गया है, तो यह बेहतर है; अन्यथा, रीति-रिवाजों में जो समझा जाता है वही मान्य होगा। इसकी व्याख्या में उल्लेख है...

1. मुख़्तसर अल-विक़ाया, किताब-उन-निकाह, नूर मुहम्मद कारखाना तिज़ारत कुतुब कराची, पृष्ठ 56। पेज 125 ऑफ़ 688

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

پس اگر مراد و متعارف ایشاں یا گروہے از ایشاں ازیں لفظ ہماں اقل مقادیر مہر ست دراں گروہ دہ درہم لازم آید وقوے را کہ مقصود و مفہوم مہر سرادق عفت فلک رفعت کنیز ان درگاہ طہارت پناہ حضرت بتول زہرا صلوات اللہ وسلامہ علیٰ ابیہا الکریم وعلیہا باشد آنجا چار صد مثقال سیم کہ بسکہ بوقت یک صد و شصت روپیہ است واجب شود و کسانکہ خود اذہان ایشاں نیز از معنی ایں لفظ خالی ست ہمیں سخنی ست کہ برزباں رانند و مفہوم و مرادش خود ندانند (و می ترسم کہ غالب ہمچنیں باشند) تا آنگاہ ظاہر آنکہ مہر مثل لازم گردد اذ ھو الاصل اذ ہو الاعدل فلا عدول عنہ الاعند صحۃ التسبیۃ وقد فسدت لمکان الجھالۃ فوجب المصیر الی الاصل وراجع لھدایۃ وغیرھا من الکتب المعللۃ۔

لہذا اس لفظ کو استعمال کرنے والے لوگوں سے معلوم کیا جائے، اگر اس سے ان کا مقصد مہر کی کم از کم مقدار ہے تو دس درہم مراد ہوں گے اور اگر کسی قوم کا مقصد حضرت بتول زہرا جناب عزت مآب فاطمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کا مہر ہے تو یہ چار سو مثقال چاندی مراد ہوگی جو آج کل کے سکہ کے حساب سے ایک سو ساٹھ ۱۶۰ روپے ہوں گے، اور اگر اس لفظ کو استعمال کرنے والے کچھ لوگ خالی ذہن ہیں اور کوئی مراد معین نہیں ہے ویسے ہی زبان پر یہ لفظ لاتے ہیں اسکے مفہوم و مراد کو نہیں جانتے، میرے خیال میں اکثریت ایسی ہی ہے جو ایسی صورت میں نکاح ہو تو مہر مثل لازم ہوگا اس لئے کہ وہی اصل اور معتدل ہے اس سے عدول جائز نہیں ہے جب تک مقرر شدہ ہونا معلوم نہ ہو اور مقرر شدہ یہاں مفقود ہے کیونکہ مجہول ہے، تو لازمی طور پر اصل کی طرف رجوع کرنا ہوگا جو کہ مہر مثل ہے۔ ہدایہ وغیرہ جو احکام کی علت کو بیان کرنے والی کتب ہیں انکی طرف رجوع کرو۔ (ت) واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۶: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مہر معجل و تا جیل سے قبل از موت و طلاق واجب الادافی الحال ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا الجواب: صورت مسئولہ میں نہ عموماً وجوبِ ادافی الحال ہے نہ کلیۃً عدم، بلکہ مدار عرف و عادت پر ہے، اگر عرف یہ ہے کہ قبل از موت و طلاق ادا کر دیتے ہیں تو فی الحال ادا لازم ہے ورنہ نہیں،

فی مختصر الوقایۃ والمعجل والمؤجل ان بینا والا فالمتعارف ۱ وفی شرحھا مختصر الوقایہ میں ہے کہ معجل یا مؤجل مہر کو بیان کیا گیا ہو تو بہتر ورنہ عرف میں جو مراد ہو وہی ٹھہرے گا، اسکی شرح میں ہے

۱ مختصر الوقایہ کتاب النکاح نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ص ۵۶ Page 125 of 688

Fatawa Rizvia, Volume 12

Mukhtasar al-Wiqayah and al-Mukhtar: This is because later scholars chose it based on custom. And Allah knows best the truth, and with Him is the Mother of the Book. | This is the chosen view because later scholars based the dowry (mahr) on custom. (T) And Allah knows best what is correct, and with Him is the Source of the Book.

Issue 77: From Ujjain, Gwalior region, sent by Muhammad Yaqoob Ali Khan Sahib, 1st Jamadi al-Awwal 1307 AH.

What do the scholars of Sharia say about this matter: If a woman becomes sinful (fasiqah) and her husband divorces her because of her sinfulness, is her dowry forfeited or not? By what action is a woman's full dowry lost, and by what action does half remain? Provide a healing explanation, may Allah grant you a complete reward. | What do the scholars of Sharia say about this issue: if a man divorces his wife because she has become sinful, will her dowry be forfeited or not? For what reasons is the full dowry cancelled, and for what reasons does half the dowry remain? Please explain fully. May Allah grant you a complete reward. (T)

The Answer:

The dowry becomes obligatory simply by the marriage contract. It is confirmed and established by sexual intercourse, valid privacy (khalwat-e-sahiha), or the death of either spouse. Once any of these occurs, no part of it is forfeited without payment or waiver, even if the woman, God forbid, commits sin and debauchery, or becomes an apostate. It is stated in Al-Durr al-Mukhtar: "It is confirmed upon intercourse, valid privacy, or the death of one of them." And in Radd al-Muhtar: "It states that the dowry becomes due by the contract itself, but there remains the possibility of it being forfeited by her apostasy or her kissing his son, or it being halved by divorce before consummation. Its full amount is confirmed only by intercourse."

The dowry becomes binding simply by marriage, and it becomes confirmed (fixed) by intercourse, valid privacy, or the death of one of the parties. After these mentioned events, no part of the dowry will be forfeited without payment or being forgiven, even if the wife becomes sinful, profligate, or (God forbid) an apostate. In Durr al-Mukhtar, it says: The dowry is confirmed upon intercourse, valid privacy, or the death of one of the spouses. And in Radd al-Muhtar, it is noted that this shows the dowry becomes obligatory simply by marriage, but there remains a possibility of its

forfeiture by becoming an apostate or by kissing and caressing the husband's son, or being halved by divorce before consummation.

1. Sharh al-Wiqayah, Chapter on Mahr, Mujtabai Press, Delhi, 2/47.
2. Durr al-Mukhtar, Chapter on Mahr, Mujtabai Press, Delhi, 1/179.

फ़तावा रिज़विया, खंड 12

मुख़्तसर अल-विकाया और अल-मुख्तार: यह इसलिए है क्योंकि बाद के विद्वानों ने इसे प्रथा के आधार पर चुना है। और अल्लाह ही सत्य को सबसे अच्छी तरह जानता है, और उसी के पास मूल पुस्तक है। | यही पसंदीदा मत है क्योंकि बाद के विद्वानों ने मेहर (दहेज) को प्रथा पर आधारित माना है। (त) और अल्लाह ही सही जानता है, और उसी के पास मूल पुस्तक है।

मसला 77: उज्जैन, ग्वालियर क्षेत्र से, प्रेषक मुहम्मद याकूब अली खान साहिब, 1 जमादी-अल-अव्वल 1307 हिजरी।

शरीयत के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: यदि कोई महिला गुनेहगार (फासिका) हो जाए और उसका पति उसकी गुनेहगारी के कारण उसे तलाक दे दे, तो क्या उसका मेहर खत्म हो जाएगा या नहीं? किस कार्य से महिला का पूरा मेहर खत्म हो जाता है, और किस कार्य से आधा रह जाता है? स्पष्ट और संतोषजनक विवरण दें, अल्लाह आपको पूर्ण प्रतिफल प्रदान करे। | शरीयत के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं: यदि पत्नी के फासिका (गुनेहगार) हो जाने के कारण पति ने उसे तलाक दे दिया हो, तो क्या उसका मेहर खत्म हो जाएगा या नहीं? और किस कारण से पूरा मेहर खत्म हो जाता है और किस कारण से आधा मेहर रह जाता है, पूरा विवरण दें। अल्लाह आपको पूर्ण प्रतिफल दे। (त)

जवाब:

मेहर केवल निकाह (विवाह अनुबंध) से ही अनिवार्य हो जाता है। सहवास (संभोग), एकांत (खलवत-ए-सहीहा), या जीवनसाथी में से किसी एक की मृत्यु से मेहर पक्का और स्थापित हो जाता है। इनमें से किसी एक के होने के बाद, भुगतान या माफी के बिना मेहर का कोई भी हिस्सा खत्म नहीं होगा, चाहे महिला (अल्लाह न करे) गुनाह और अनाचार करे, या धर्मत्यागी बन जाए। 'दुर्रे मुख्तार' में है: "सहवास, वैध एकांत, या उनमें से किसी एक की मृत्यु पर मेहर पक्का हो जाता है।" और 'रद्दुल मुहतार' में है: "इससे पता चलता है कि मेहर केवल अनुबंध से अनिवार्य हो जाता है, लेकिन धर्मत्यागी हो जाने या पति के बेटे को चूमने-सहलाने से इसके खत्म होने की संभावना रहती है, या संभोग से पहले तलाक होने पर यह आधा हो जाता है। इसकी पूर्ण राशि केवल सहवास से ही पक्की होती है।"

मेहर केवल निकाह से ही अनिवार्य हो जाता है, और सहवास, वैध एकांत, या किसी भी पक्ष की मृत्यु से यह पक्का हो जाता है। इन उल्लेखित स्थितियों के बाद, मेहर का कोई भी हिस्सा बिना भुगतान या बिना माफ़ किए खत्म नहीं होगा, भले ही पत्नी फासिका-फाजिरा (गुनेहगार) या (अल्लाह न करे) मुर्तद

(धर्मत्यागी) बन जाए। दुर्रे मुख्तार में है: सहवास, वैध एकांत, या पति-पत्नी में से किसी एक की मृत्यु पर मेहर पक्का हो जाता है। और रद्दुल मुहतार में है कि इससे ज्ञात हुआ कि मेहर केवल निकाह से वाजिब हो जाता है, लेकिन मुर्तद होने या शौहर के बेटे को प्यार (बोस-ओ-किनार) करने से इसके साकित (खत्म) होने की संभावना रहती है या संभोग से पहले तलाक हो जाने की स्थिति में।

1. शरह अल-विकाया, मेहर का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 2/47।
2. दुर्रे मुख्तार, मेहर का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/179।

पेज 126 / 688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

مختصر الوقایہ والمختار ہذا فان المتأخرین اختار و ہذا بناء علی المتعارف ۱ واللہ اعلم بالصواب وعندہ تعالٰی ام الکتاب۔ | یہی مختار ہے کیونکہ متاخرین نے مہر کو عرف پر مبنی قرار دیا ہے۔ (ت) واللہ اعلم بالصواب وعندہ تعالٰی ام الکتاب۔

مسئلہ ۷۷: از اوجین علاقہ گوالیار مرسلہ محمد یعقوب علی خاں صاحب یکم جمادی الاولی ۱۳۰۷ھ

چہ می فرمایند علمائے شریعت پناہ دریں مسئلہ کہ اگر زن فاسقہ گردد مرد بوجہ فسق او طلاقش دہد مہر ساقط شود یانہ و بچہ کار تمام مہر عورت دور میشود و بچہ کار نصف مے ماند۔ بینوا بیاناً شافیاً اجرکم اللہ تعالٰی اجرا وافیا۔ | کیا فرماتے ہیں علمائے شریعت اس مسئلہ میں کہ اگر بیوی کو فاسقہ ہو جانے کی وجہ سے مرد نے طلاق دے دی ہو تو کیا اس کا مہر ساقط ہو جائے گا یا نہیں، اور کس وجہ سے پورا مہر ختم ہو جاتا ہے اور کس وجہ سے نصف مہر رہ جاتا ہے، مکمل بیان فرمائیں، اللہ تعالٰی آپ کو پورا اجر عطا فرمائے۔ (ت)

الجواب:

مہر بنفس عقد زن و شوئی واجب شود بوطی یا خلوت صحیحہ یا موت احد الزوجین تاکد و تقرر یابد کہ بعد وقوع یکے ازینہا بہیچ وجہ پارہ ازاں بے ادا یا ابراء ساقط نہ گردد اگرچہ زن معاذ اللہ فسق و فجور ورزد، یا عیاذاً باللہ مرتدہ شووفی الدر المختار یتاکد عند وطی او خلوۃ صحت او موت احدہما ۲ وفی ردالمحتار، افاد ان المہر وجب بنفس العقد لکن مع احتمال سقوطہ بردتہا او تقبیلہا ابنہ او تنصفہ بطلاقہا قبل الدخول، وانما یتاکد لزوم تمامہ بالوطی

مہر محض نکاح سے لازم ہو جاتا ہے اور وطی یا خلوت صحیحہ یا فریقین میں سے کسی کے فوت ہو جانے سے مہر پکا ہو جاتا ہے اور مذکورہ امور کے بعد مہر میں سے کوئی حصہ بغیر ادائیگی یا بغیر معاف کے ساقط نہ ہوگا اگرچہ بیوی فاسقہ فاجرہ یا معاذ اللہ مرتدہ بن جائے، در مختار میں ہے : وطی یا خلوت صحیحہ یا زوجین میں سے کسی کے فوت ہو جانے پر مہر پکا ہو جاتا ہے، اور رد المحتار میں ہے کہ اس سے معلوم ہوا کہ مہر محض نکاح سے واجب ہو جاتا ہے لیکن مرتدہ ہو جانے یا خاوند کے بیٹے کو بوس وکنار کرنے سے ساقط ہو جانے کا احتمال باقی رہتا ہے یا دخول سے قبل طلاق ہو جانے کی

۱ شرح الوقایہ باب المهر مطبع مجتبائی دہلی ۲/۴۷ ۲ درمختار باب المهر مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۷۹

Fatawa Razawiya, Volume 12

(Left Column) And similar to it (up to his statement). It is said in al-Bada'i': "When the dower is confirmed by what has been mentioned, it does not drop after that, even if the separation occurs from her side. This is because the substitute, after being confirmed, cannot be dropped except through discharge (release of debt), just like the price in a sale becomes binding once possession of the item is taken."[1] ah. Yes, if before the occurrence of any of the three aforementioned factors that confirm the dower, the woman—God forbid—commits apostasy, or commits adultery with the husband's father or son (i.e., his ascendants or descendants), or kisses the husband's father or son with lust, or touches their private parts, or looks at their private parts with lust, or breastfeeds her infant co-wife, or if one of the spouses chooses to annul the marriage through the option of puberty, or in an invalid marriage, separation occurs before actual intercourse; in all these cases, the entire dower is waived. And if the husband—God forbid—becomes an apostate, or commits adultery with the wife's mother or daughter (i.e., her ascendants or descendants), or kisses them with lust, or touches them, or embraces them, or sees their internal private parts, then in these cases, half of the dower is dropped. Besides these, there are other cases as well. If we were to provide detailed discourse, investigation of rulings, and clarification of objectives for all of them, a separate treatise would need to be written. It is stated in al-Durr al-Mukhtar: "Half of it is obligatory upon divorce before intercourse or valid seclusion."[2] Radd al-Muhtar: If he said with every separation...

(Right Column) On this basis, there is a possibility of half dower, and through intercourse etc. full dower is confirmed. They have stated this to the extent that it is mentioned in Bada'i' that when the said dower becomes confirmed, it will not be waived after that, even if the separation is from the wife's side, because after the substitute (intercourse) is obtained, its substitute (dower) will not hold the possibility of being waived, unless the woman forgives it, just as in a sale, the price becomes mandatory upon taking possession of the item. ah. Yes, if before the three aforementioned things that confirm the dower, the woman—God forbid—becomes an apostate, or commits adultery with the husband's father or son (i.e., his ascendants or descendants), or kisses any of them with lust, or touches their private parts, or looks at their private parts with lust, or breastfeeds her infant co-wife, or if one of the spouses had the option of puberty and exercised it to annul the marriage, or if it was an invalid marriage and separation occurred before actual intercourse, then in all these cases, the entire dower will be waived. And if the husband—God

forbid—becomes an apostate, or touches his wife's ascendants or descendants (i.e., her mother or daughter) with lust, or commits adultery with them, or kisses and embraces them, or grabs them, or sees their internal private parts, then in all these cases, half of the dower will be waived. Besides these mentioned cases, there are other matters as well through which the whole or half of the dower is waived. If we were to engage in the detailed discussion, investigation of rulings, and clarification of the objectives...

(Footnotes) [1] Radd al-Muhtar, Chapter on Dower, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/330 [2] Durr al-Mukhtar, Chapter on Dower, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/179

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

(बायाँ कॉलम) व नहवुहू (इला क़ौलिही) क़ाला फ़िल बद्राएइ व इज़ा ताक्कदल महरु बिमाज़ुकुर ला यसक़ुतु बाद्रा ज़ालिक व इन कानतिल फ़ुरक़तु मिन क़िबलिहा लअनल बदल बाद्रा ताक्कुदिही ला यहतमिलुस सुक़ूत इल्ला बिल इबराई कसमनि इज़ा ताक्कदा बि-क़बज़िल मबीइ[1] अह। हाँ, अगर महर पुख्ता करने वाली उक्त तीन चीज़ों के होने से पहले महिला—अल्लाह न करे—धर्मत्यागी (मुरतद) हो जाए, या पति के पिता या बेटे (यानी उसके मूल या वंशजों) के साथ व्यभिचार करे, या पति के पिता या बेटे को कामुकता से चूम ले, या उनके निजी अंगों को छुए, या उनके निजी अंगों को कामुकता से देखे, या अपनी शिशु सौतन को दूध पिला दे, या पति-पत्नी में से कोई वयस्कता के विकल्प (खियार-ए-बुलूग) से निकाह खत्म कर दे, या निकाह-ए-फासिद (अमान्य विवाह) में वास्तविक संभोग से पहले विच्छेद हो जाए, तो इन सभी सूरतों में पूरा महर साक़ित (ख़त्म) हो जाएगा। और अगर पति—अल्लाह न करे—धर्मत्यागी हो जाए, या पत्नी की माँ या बेटी (यानी उसके मूल या वंशजों) के साथ व्यभिचार करे, या उन्हें कामुकता से चूम ले, या उन्हें छुए, या गले लगाए, या उनके आंतरिक निजी अंगों को देख ले, तो इन सूरतों में आधा महर साक़ित हो जाएगा। इनके अलावा और भी सूरतें हैं। अगर उन सभी के बारे में विस्तार से चर्चा, नियमों की जाँच और उद्देश्यों को स्पष्ट किया जाए, तो एक अलग किताब लिखनी होगी। 'दुर्र-ए-मुख्तार' में है: "संभोग या एकांतवास से पहले तलाक की सूरत में आधा महर वाजिब है।"[2] रद-उल-मुहतार: अगर उसने हर जुदाई के साथ कहा...

(दायाँ कॉलम) इसी आधार पर आधे महर की संभावना हो सकती है, और संभोग (व़ती) आदि से पूरा महर पक्का हो जाता है। उन्होंने यहाँ तक बयान किया कि 'बद्राए' में फ़रमाया गया है कि जब उक्त महर पक्का हो जाए, तो उसके बाद वह साक़ित नहीं होगा, चाहे जुदाई (फ़ुरक़त) पत्नी की ओर से ही क्यों न हो, क्योंकि बदले (संभोग) के प्राप्त हो जाने के बाद उसका बदला (महर) साक़ित होने की संभावना नहीं रखेगा, सिवाय इसके कि महिला माफ़ कर दे, जैसे कि बिक्री में वस्तु पर कब्ज़ा करने से उसकी क़ीमत अनिवार्य हो जाती है। अह। हाँ, यदि महर को पक्का करने वाली उक्त तीन चीज़ों से पहले महिला—अल्लाह न करे—धर्मत्यागी हो जाए, या पति के पिता या पुत्र (यानी उसके मूल या वंशजों) में से किसी के साथ व्यभिचार करे, या उनमें से किसी का कामुकता (शहवत) से चुंबन ले, या उनके निजी अंगों को छुए या उनके निजी अंगों को कामुकता से देखे, या अपनी शिशु सौतन को स्तनपान कराए, या पति-पत्नी में से किसी के पास बालिग़ होने का विकल्प था और उसने उस अधिकार से विवाह रद्द कर दिया, या विवाह अमान्य था और वास्तविक संभोग से पहले विच्छेद हो

गया, तो इन सभी स्थितियों में पूरा महर साक़ित हो जाएगा। और यदि पति—अल्लाह न करे—धर्मत्यागी हो गया, या उसने पत्नी की मूल या वंशजों यानी माँ या बेटी को कामुकता से छू लिया, या उनके साथ व्यभिचार कर लिया, या आलिंगन और चुंबन कर लिया, या उन्हें दबोच लिया, या उनके भीतरी निजी अंगों को देख लिया, तो इन सभी स्थितियों में आधा महर साक़ित हो जाएगा। इन उल्लेखित स्थितियों के अतिरिक्त और भी ऐसे मामले हैं जिनसे पूरा या आधा महर साक़ित हो जाता है। यदि इन सभी मामलों के विस्तार, नियमों की जाँच और उद्देश्यों के स्पष्टीकरण की...

(फ़ुटनोट्स) 1 रद-उल-मुहतार, बाब अल-महर, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/330 2 दुर्र-ए-मुख्तार, बाब अल-महर, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 179/1

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

(بایاں کالم) ونحوہ (الی قولہ) قال فی البدائع واذا تأکد المهر بماذکر لایسقط بعد ذلك وان کانت الفرقة من قبلها لان البدل بعد تأکده لا یحتمل السقوط الا بالابراء کالثمن اذا تأکد بقبض المبیع 1 اھ آرے اگر پیش از وقوع چیزے از مؤکدات ثلثہ مذکور زن معاذ اللہ ارتداد کند یا با پدر یا پسر شوہر یعنی اصل یا فرعش زنا نماید بشہوت پدر یا پسر شوئے را بوسہ دہد یا دست بذکر آنان رساند یا ذکر شان را بہ شہوت نظر کند یا ضرہ صغیرہ خود را شیر دہد یا احد الزوجین بخیار بلوغ فسخ نکاح اختیار کند یا در عقد فاسد پیش از وطی حقیقی متارکہ شود دریں صور ہمہ مہر ساقط گردد و اگر شوئے معاذ اللہ مرتد شود یا با مادر یا دختر زن یعنی اصل یا فرعش زنا کند یا بشہوت مادر یا دختر زن را بوسہ آنہا چیند یا مساس کند یا در رسکشد یا فرج اندرونی آنہا بیند، در صونیم مہر سقوط پذیرد و غیر ایں صور صورتہائے دیگر نیز ہست کہ اگر در جملہ انہا بتفصیل کلام و تحقیق احکام و تنقیح مرام پردازیم رسالہ مستقلہ مے باید نوشت فی الدر المختار یجب نصفہ بطلاق قبل وطی او خلوۃ 2۔ رد المحتار لو قال بکل فرقہ

(دایاں کالم) بنا پر نصف مہر کا احتمال ہو سکتا ہے، اور وطی وغیرہ سے پورا مہر پکا ہو جاتا ہے، یہ بیان انہوں نے یہاں تک فرمایا کہ بدائع میں فرمایا کہ جب مہر مذکور پکا ہو جائے تو اس کے بعد ساقط نہ ہوگا اگرچہ بیوی کی طرف سے فرقت ہو، کیونکہ بدل (وطی) حاصل ہو جانے کے بعد اس کا بدل (مہر) ساقط ہونے کا احتمال نہ رکھے گا مگر جب عورت معاف کردے جیسا کہ بیع میں مبیع پر قبضہ سے ثمن لازم ہو جاتا ہے اھ ہاں اگر مہر کو پکا کرنے والی مذکورہ تین چیزوں سے قبل عورت معاذ اللہ مرتد ہوجائے یا خاوند کے باپ یا بیٹے سے یعنی اس کے اصول و فروع میں سے کسی کے ساتھ زنا کیا یا ان میں کسی کا شہوت سے بوسہ لیا یا دیا یا ان کی شرمگاہ

کو چھولیا یا ان کی شرمگاہ کو شہوت کے ساتھ دیکھا، یا اپنی شیر خوار سوکن کو دودھ پلایا، یا زوجین میں سے کسی کو خیار بلوغ تھا تو اس اختیار سے نکاح فسخ کر دیا، یا نکاح فاسد تھا تو حقیقی وطی سے قبل متارکہ ہو گیا، تو ان تمام صورتوں میں پورا مہر ساقط ہوجائے گا، اور اگر خاوند معاذ اللہ مرتد ہوگیا یا اس نے بیوی کی اصل یا فرع یعنی ماں یا بیٹی کو شہوت سے چھولیا یا ان سے زنا کرلیا یا بوس و کنار کر لیا یا دبوچ لیا یا انکی اندرونی فرج کو دیکھ لیا تو ان تمام صورتوں میں نصف مہر ساقط ہوجائے گا، ان مذکور صورتوں کے علاوہ اور بھی ایسے امور ہیں جن سے مہر کُل یا نصف ساقط ہوجاتا ہے، اگر ان تمام امور کی تفصیل اور ان کے احکام کی تحقیق اور مقاصد کی

(حواشی) 1 رد المحتار باب المہر دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۳۰/۲ 2 درمختار باب المہر مطبع مجتبائی دہلی ۱۷۹/۱

Fatawa Rizvia, Volume Twelve

[Main Body Text] If an analysis were to be made, it would become a separate book. It is stated in Durr al-Mukhtar that if a divorce is given before consummation (dukhool) or before seclusion (khalwat), half of the dower (mahr) becomes mandatory. And in Radd al-Muhtar, it is said that if the author had used the term 'separation from the husband's side' instead of 'divorce', it would have included the husband's apostasy, adultery, kissing, or embracing the wife's mother or daughter before seclusion (this was quoted by Qahastani from al-Nazm). And in it, quoting al-Bahr from al-Qunya: if he divorces before consummation, or if the separation originates from her side, half the dower returns to the husband's ownership in the first case and the entire dower in the second case, etc. In Tanwir al-Absar it is stated: for a woman who has had intercourse, the full dower is due, and for others, half of it if the husband apostatizes, and nothing if the wife apostatizes before intercourse. In Durr al-Mukhtar: if a senior wife breastfeeds her infant co-wife, both become forbidden (to the husband), and if the senior wife has not had intercourse, her entire dower is forfeited because she caused the separation, and the younger one receives half the dower because intercourse was not performed with her. Summarized, in Radd al-Muhtar regarding invalid marriage, such as one without witnesses, the customary dower (mahr al-mithl) is due if intercourse occurred, as for...

[Footnotes] 1. Radd al-Muhtar, Chapter on Mahr, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/332. 2. Radd al-Muhtar, Chapter on Mahr, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/332. 3. Durr al-Mukhtar, Commentary on Tanwir al-Absar, Chapter on Marriage of the Disbeliever, Matba Mujtabai, Delhi, 1/210. 4. Durr al-Mukhtar, Commentary on Tanwir al-Absar, Chapter on Breastfeeding (al-Rida'), Matba Mujtabai, Delhi, 1/213.

फ़तावा रज़विया, जिल्द बारहवीं

[मुख्य विषय-वस्तु] यदि इसका विश्लेषण किया जाए, तो यह एक स्वतंत्र पुस्तक बन जाएगी। दुर्र-ए-मुख्तार में उल्लेख है कि संभोग (दखूल) से पहले या एकांत (खलवत) से पहले तलाक देने पर आधा महर अनिवार्य हो जाता है। और रद अल-मुह्तार में कहा गया है कि यदि लेखक ने 'तलाक' के स्थान पर 'पति की ओर से अलगाव' शब्द का प्रयोग किया होता, तो इसमें पति का धर्मत्याग, व्यभिचार, चुंबन, या एकांत से पहले पत्नी की माँ या बेटी का आलिंगन शामिल हो जाता (यह कस्तानी ने 'अत-तन्ज़ीम' से उद्धृत किया है)। और इसमें अल-बहर के हवाले से अल-कुन्या से उद्धृत किया गया है कि: यदि पति संभोग से पहले तलाक देता है, तो आधा महर, और यदि अलगाव का कारण पत्नी की ओर से उत्पन्न होता है, तो पहले मामले में आधा महर और दूसरे मामले में पूरा महर पति के स्वामित्व में वापस आ जाता है, इत्यादि। तन्वीर अल-अबसार में कहा गया है: जिस स्त्री के साथ संभोग हुआ हो उसके लिए पूरा महर, और अन्य के लिए उसका आधा यदि पति धर्मत्यागी हो जाए, और यदि संभोग से पहले पत्नी धर्मत्यागी हो जाए, तो उसे कुछ नहीं मिलेगा। दुर्र-ए-मुख्तार में है: यदि एक बड़ी पत्नी ने अपनी शिशु सौतन को स्तनपान कराया, तो दोनों (पति के लिए) वर्जित हो जाती हैं, और यदि बड़ी पत्नी के साथ संभोग नहीं हुआ था, तो उसका पूरा महर समाप्त हो जाता है क्योंकि अलगाव का कारण उसने उत्पन्न किया है, और छोटी को आधा महर मिलता है क्योंकि उसके साथ संभोग नहीं हुआ था। सारांश में, रद अल-मुह्तार में अमान्य विवाह के विषय में, जैसे गवाहों के बिना विवाह, यदि संभोग हुआ हो तो प्रथागत महर (महर-ए-मिस्ल) देय है, जहाँ तक...

[पाद लेख] 1. रद अल-मुह्तार, बाब अल-महर, दार इह्या अत-तुराث अल-अरबी, बेरूत, 2/332. 2. रद अल-मुह्तार, बाब अल-महर, दार इह्या अत-तुराث अल-अरबी, बेरूत, 2/332. 3. दुर्र-ए-मुख्तार, शरह तन्वीर अल-अबसार, बाब निकाह अल-काफिर, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/210. 4. दुर्र-ए-मुख्तार, शरह तन्वीर अल-अबसार, बाब अर-रज़ा, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/213.

पृष्ठ 128 / 688

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

من قبله لشمل مثل ردته وزناه و تقبيله و معانقته لام امرأته و بنتها قبل الخلوة قهستانی عن النظم اھ وفيه عن القنيه طلقها قبل الدخول او جاءت الفرقة من قبلها يعود نصف المهر فی الاول ولكل فی الثانی الی ملك الزوج الخ وفی التنوير للموطوئة كل مهر ها ولغيرها نصفه لو ارتد ولا شيئ لو ارتدت اھ وفی الدر المختار لو ارضعت الكبيرة ضرتها الصغيرة حرمتا ولامهر للكبيرة ان لم توط لمجئ الفرقة منها وللصغيرة نصفه لعدم الدخول اه ملخصا، وفی رد المحتار في النكاح الفاسد بعدم الشهود مثلا ، مهر المثل ان يكن دخل اما

تنقیح کی جائے تو اس سے ایک مستقل کتاب بن جائے۔ در مختار میں ہے کہ دخول سے قبل یا خلوت سے قبل طلاق دینے سے نصف مہر واجب ہوگا۔ اور ردالمحتار میں کہا کہ اگر مصنف طلاق کی بجائے خاوند کی طرف سے فرقت کہہ دیتے تو اس میں خاوند کا مرتد ہونا، زنا، بوس کنار، بیوی کی ماں یا بیٹی سے معانقہ، قبل از خلوت تمام کو شامل ہو جاتا (یہ قہستانی نے نظم سے نقل کیا ہے) اھ اور اس میں بحر سے اس نے قنیہ سے نقل کیا ہے کہ اگر خاوند نے قبل از دخول طلاق دی تو نصف مہر، اور اگر عورت کی طرف سے فرقت کی وجہ پائی جائے تو پورا مہر خاوند کی ملکیت میں آجائے گا الخ، تنویر الابصار میں ہے : وطی سے پورا اور بغیر وطی نصف مہر دینا ہوگا اگر خاوند مرتد ہوجائے، اور اگر وطی سے قبل عورت مرتد ہو جائے تو اس پر کچھ مہر نہ ملے گا اھ، در مختار میں ہے : اگر بڑی بیوی نے شیر خوار سوکن کو دودھ پلایا تو دونوں حرام ہو جائیں گی اور بڑی سے اگر وطی نہ ہوئی تو اسکا پورا مہر ساقط ہو جائے گا کیونکہ فرقت کی وجہ اس نے پیدا کی ہے اور چھوٹی کو نصف مہر ملے گا کیونکہ اس سے دخول نہیں کیا گیا، ملخصاً ردالمحتار میں ہے : نکاح فاسد مثلاً بغیر گواہوں کے نکاح ہوا

1 ردالمحتار باب المهر داراحياء التراث العربی بیروت ۳۳۲/۲ 2 ردالمحتار باب المهر داراحياء التراث العربی بیروت ۳۳۲/۲ 3 درمختار شرح تنویرالابصار باب نکاح الکافر مطبع مجتبائی دہلی ۲۱۰/۱ 4 درمختار شرح تنویرالابصار باب الرضاع مطبع مجتبائی دہلی ۲۱۳/۱

Fatawa Razvia - Volume 12

[Arabic Text (Left Column)] If consummation has not occurred, nothing is obligatory [1] - abbreviated from Multaqa. In Al-Durr al-Mukhtar, regarding a young boy or girl having the option to annul the marriage upon reaching puberty (Khiyar al-Faskh bil-Bulugh), it is conditional on a judicial decree for the annulment. They shall inherit from each other therein, and the full dower (Mahr) becomes obligatory [2] etc. In Al-Shamiya, the statement "and the full dower becomes obligatory" is because just as the entire dower becomes obligatory by consummation, whether actual or legal (like valid privacy - Khalwat Sahiha), it also becomes obligatory upon the death of either party before consummation. Otherwise, it is waived, even if the option is from his side, because separation through an option is an annulment of the contract, and an annulled contract is as if it never existed, as stated in Al-Nahr [3]. Know this well. Be aware that some scholars have established a rule for this: every separation originating from the husband before consummation results in half the dower being due, and every separation originating from the wife results in the dower being waived. This is the basis for what Al-Shami mentioned regarding the exception of the puberty option, as previously mentioned; even if it is from him, half the dower is not due, rather it is waived.

[Urdu Text (Right Column)] If consummation has occurred, then Mahr al-Mithl (equivalent dower) becomes obligatory, and if not, then no dower is due (Multaqa). It is mentioned in Durr al-Mukhtar: if a grown-up boy or girl has the option of puberty (Khiyar al-Bulugh), this annulment will be effective upon the condition of the Qadi's (judge's) decree. (If either of them dies before the annulment), they will inherit from each other and the full dower will also be obligatory. In Shami, it says that the author's statement that the entire dower will be obligatory is because the entire dower becomes obligatory with actual or constructive consummation (e.g., valid seclusion). Similarly, with the death of either person before consummation, the full dower becomes obligatory, and without this consummation or death, the dower is waived. Even if this separation is due to the boy's option of puberty, it's because separation due to option annuls the marriage, and when a marriage is annulled, it becomes as if it never existed, as mentioned in Al-Nahr. Remember this. It should be clear that some scholars have made a rule in this matter that if the reason for separation before consummation is from the woman's side, then the entire dower will be waived, and if it is from the husband's side, then half the dower will be due. Based on this rule, Allama Shami has cited the statement of Allama Qahastani

mentioned in verse, and some have declared the case of a boy's option of puberty as an exception to this rule, stating that if this option of puberty is from the boy's side, then half the dower will not be due, but rather it will be waived.

[Footnotes] 1. Radd al-Muhtar, Chapter on Mahr, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/352. 2. Durr al-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 1/192-193. 3. Durr al-Mukhtar, Chapter on the Guardian, Mujtabai Press, Delhi, 2/301.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 12

[अरबी पाठ (बायां कॉलम)] यदि संभोग (दखूल) नहीं हुआ है, तो कुछ भी अनिवार्य नहीं है [1] - मुल्तका से संक्षिप्त। अल-दुर्र अल-मुख्तार में, यौवन प्राप्त करने पर विवाह रद्द करने के विकल्प (खियार अल-फ़स्ख़ बिल-बुलूग) के संबंध में एक छोटे लड़के या लड़की के लिए, यह रद्दीकरण के लिए न्यायिक आदेश (क़ज़ा ए क़ाज़ी) की शर्त पर प्रभावी होगा। वे उसमें एक-दूसरे के उत्तराधिकारी होंगे, और पूरा मेहर अनिवार्य होगा [2] इत्यादि। अल-शामिया में, "और पूरा मेहर अनिवार्य हो जाता है" कथन का कारण यह है कि जैसे पूरा मेहर वास्तविक या कानूनी संभोग (जैसे खलवत-ए-सहीहा) द्वारा अनिवार्य हो जाता है, वैसे ही संभोग से पहले किसी भी पक्ष की मृत्यु होने पर भी यह अनिवार्य हो जाता है। अन्यथा, यह माफ कर दिया जाता है, भले ही विकल्प उसकी (लड़के की) ओर से हो, क्योंकि विकल्प के माध्यम से अलगाव अनुबंध का विलोपन है, और विलोपित अनुबंध ऐसा माना जाता है जैसे वह कभी अस्तित्व में ही न था, जैसा कि अल-नहर [3] में कहा गया है। इसे अच्छी तरह याद रखें। जान लें कि कुछ विद्वानों ने इसके लिए एक नियम स्थापित किया है: संभोग से पहले पति की ओर से होने वाला प्रत्येक अलगाव मेहर को आधा कर देता है, और पत्नी की ओर से होने वाला प्रत्येक अलगाव मेहर को समाप्त कर देता है। यही वह आधार है जिस पर अल-शामी ने यौवन के विकल्प के अपवाद के बारे में उल्लेख किया है, जैसा कि पहले बताया गया है; भले ही यह उसकी ओर से हो, मेहर आधा नहीं होता, बल्कि समाप्त हो जाता है।

[उर्दू पाठ (दायां कॉलम)] यदि संभोग किया गया हो तो मेहर-ए-मिस्ल (समान मेहर) अनिवार्य होगा और यदि संभोग न किया गया हो तो कोई मेहर नहीं होगा (मुल्तका)। दुर्रे मुख्तार में है: वयस्क लड़के या लड़की को यौवन का विकल्प (खियार-ए-बुलूग) हो तो यह विलोपन क़ाज़ी के फैसले की शर्त से प्रभावी होगा। (फिर अगर उन दोनों में से कोई भी विलोपन से पहले मर गया) तो वे एक-दूसरे के वारिस होंगे और पूरा मेहर भी अनिवार्य होगा। शामी में है कि लेखक का कथन कि पूरा मेहर अनिवार्य होगा इसलिए है कि पूरा मेहर वास्तविक या प्रतीकात्मक संभोग (जैसे खलवत-ए-सहीहा) के साथ अनिवार्य हो जाता है। इसी तरह संभोग से पहले किसी के मर जाने से पूरा मेहर अनिवार्य होता है और इस संभोग या मृत्यु के बिना मेहर समाप्त हो जाता है, भले ही यह अलगाव लड़के के यौवन के विकल्प के कारण हो क्योंकि विकल्प के कारण अलगाव से निकाह रद्द हो जाता है और जब निकाह रद्द हो जाए तो वह शून्य हो जाता है जैसा कि नहर में है। इसे सुरक्षित कर लें। स्पष्ट रहे कि कुछ विद्वानों ने इस मामले में नियम बनाया है कि अगर संभोग से पहले अलगाव का कारण औरत की

तरफ से हो तो पूरा मेहर समाप्त होगा और शौहर की तरफ से हो तो मेहर आधा होगा। इसी नियम के आधार पर अल्लामा शामी ने कविता से उद्धृत अल्लामा क़हस्तानी का कथन बयान किया है, और कुछ ने इस नियम से लड़के के यौवन के विकल्प की स्थिति को अपवाद करार दिया कि अगर यह यौवन का विकल्प लड़के की तरफ से हो तो मेहर आधा नहीं होगा बल्कि समाप्त हो जाएगा।

[पाद-टिप्पणियाँ] 1. रद्द अल-मुह्तार, मेहर का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/352। 2. दुर्रे मुख्तार, वली का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/192-193। 3. दुर्रे मुख्तार, वली का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 2/301।

पृष्ठ 129/688

فتاویٰ رضویہ - جلد دو ازدہم

[عربی عبارت (بایاں کالم)] اذ الم یدخل لا یجب شئ 1 اھـ ملتقطاً وفی الدر المختار لصغیر وصغیرۃ خیار الفسخ بالبلوغ بشرط القضاء للفسخ فیتوارثان فیه ویلزم کل المهر 2 الخ وفی الشامیة قوله ویلزم کل المهر لان المهر کما یلزم جمیعه بالدخول ولو حکماً کـ الخلوة الصحیحة کذلك یلزم بموت احدهما قبل الدخول اما بدون ذلك فیسقط ولو الخیار منه لان الفرقة بالخیار فسخ للعقد والعقد اذا انفسخ یجعل کأنـه لم یکن کما في النهر 3 اھـ هذا ـ (یعنی فاحفظ هذا) واعلم ان من العلماء من قرر له ضابطة وهي ان کل فرقة جاءت من قبل الزوج قبل الدخول فانها تنصف المهر، وکل فرقة اتت من قبلها تسقط وهو الذي یبتنی علیه ما ذکر الشامي من استثنی منها خیار البلوغ لما مرانه وان کان منه لا ینصف بل یسقط

[اردو عبارت (دایاں کالم)] اگر دخول کیا گیا ہو تو مہر مثل لازم ہوگا اور دخول نہ کیا ہو تو کوئی مہر نہ ہو گا اھـ ملتقطاً، در مختار میں ہے : بالغ لڑکے یا لڑکی کو خیار فسخ بالبلوغ ہو تو یہ فسخ قاضی کی قضاء کی شرط سے موثر ہوگا (پھر اگر ان دونوں میں سے کوئی بھی فسخ سے قبل فوت ہو گیا) تو ایک دوسرے کے وارث ہوں گے اور پورا مہر بھی لازم ہوگا الخ، شامی میں ہے کہ مصنف کا قول کہ کل مہر لازم ہوگا اس لئے کہ کل مہر دخول حقیقی یا حکمی مثلاً خلوت صحیحہ کے ساتھ لازم ہو جاتا ہے یونہی دخول سے قبل کسی کے مر جانے سے کل مہر لازم ہوتا ہے اور اس دخول یا موت کے بغیر مہر ساقط ہو جائے اگر چہ یہ فرقت لڑکے کے خیارِ بلوغ کی وجہ سے ہو کیونکہ فرقت خیار کی وجہ سے نکاح فسخ ہوتا ہے اور جب نکاح فسخ ہو تو کالعدم ہو جاتا ہے جیسا کہ نہر میں ہے۔ اسکو محفوظ کر لو۔ واضح رہے کہ بعض علماء نے اس مسئلہ میں ضابطہ بنایا کہ اگر دخول سے قبل فرقت کی وجہ عورت کی طرف سے ہو تو پورا مہر ساقط ہوگا اور خاوند کی طرف سے ہو تو مہر نصف ہوگا۔ اسی ضابطہ کی بنا پر علامہ شامی نے نظم سے منقول

علامہ قہستانی کا قول بیان کیا ہے، اور بعض نے اس ضابطہ سے لڑکے کے خیارِ بلوغ کی صورت کو مستثنیٰ قرار دیا کہ اگر یہ خیارِ بلوغ لڑکے کی طرف سے ہو تو نصف مہر نہ ہوگا بلکہ ساقط

[حواشی] 1 ردالمحتار باب المهر داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۳۵۲ 2 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۳- ۱۹۲ 3 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۳۰۱/۲

Volume Twelve Fatawa Razawiya

[Boxed Section] (Arabic Column) And it is what was chosen in 'Al-Durr al-Mukhtar', but was refuted in 'Al-Dhakhira' by [the example of] when one owns his wife before consummation through purchase for instance, where the marriage is annulled and the entire mahr (dowry) is waived, even though it is a separation originating from his side. They established the rule that every separation coming from his side that is a divorce results in halving [the mahr], and everything that is an annulment results in its waiving. This was refuted in 'Al-Bahr' with the case of the husband's apostasy, where the mahr is halved as you know, even though it is an annulment coming from his side. Then it said: 'The truth is that no fixed rule should be made for this issue; rather, each case should be judged according to what the evidence dictates.' This is what led this weak servant to limit himself to mentioning some instances and not attempting a general rule. And Allah, Glorified and Exalted is He, knows best, and His knowledge is more complete and perfect.

(Urdu Column) ...will be. This same view was adopted in 'Al-Durr al-Mukhtar', but was refuted in 'Al-Dhakhira'. For example, if someone purchased his (slave-girl) wife before consummation and became her owner, the marriage would be annulled and the entire mahr would be waived, even though the cause of separation is from the husband's side. After this, they presented a new rule: if the cause of separation is from the husband and it constitutes a divorce, the mahr will be halved, and if the separation constitutes an annulment, the mahr will be waived. Then this rule was refuted in 'Al-Bahr' [by stating that] when a husband becomes an apostate, the mahr is halved before consummation, even though this is an annulment from the husband's side and not a divorce, as you know. Then 'Al-Bahr' stated that the truth is no general rule should be made for this issue; instead, the answer for each specific case should be given separately according to its evidence. Therefore, this weak servant has restricted himself to mentioning some specific instances and has not stated a general rule. And Allah, Glorified and Exalted is He, knows best, and His knowledge is more glorious, complete, and perfect. (T) [End of Boxed Section]

Problem 8: From Etawah, near the Munsifi court, sent by Maulvi Habib Ali Sahib Alawi, 20 Dhu al-Hijjah 1307 AH. What is your ruling, may Allah Almighty have mercy on you, in this situation: Zaid married his minor daughter to Bakr, an adult, with a Shariah mahr (dowry) of two thousand rupees. Unfortunately, the aforementioned daughter died at Zaid's house during her minority after the marriage. Now, do Zaid (the father) and other legal heirs of the deceased have a claim to the aforementioned mahr

against Bakr (the deceased daughter's husband) according to Shariah? If so, for how much? Please provide an answer with reference to authentic books of Hanafi jurisprudence. Although an answer to this problem can be clearly derived from principles, the petitioner insists on a ruling specifically for this case with book references. Despite searching the books I have, I could not find this specific case. Since your library is very large...

---

[1] Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Guardians and Equals, H.M. Saeed Karachi 3/121.

जिल्द बारह फ़तावा रज़विया

[बॉक्स वाला अनुभाग] (अरबी स्तंभ) और यही वह है जिसे 'अल-दुर अल-मुख्तार' में चुना गया था, लेकिन 'अल-ज़खीरा' में इसका खंडन किया गया, उदाहरण के लिए जब कोई संभोग से पहले खरीद के माध्यम से अपनी पत्नी का मालिक बन जाता है, जहां निकाह निरस्त हो जाता है और पूरा महर (दहेज) माफ कर दिया जाता है, भले ही यह अलगाव उसके पक्ष से हुआ हो। उन्होंने नियम स्थापित किया कि उसके पक्ष से होने वाला हर अलगाव जो तलाक है, उसमें महर आधा हो जाता है, और जो कुछ निरस्तीकरण है, उसमें महर माफ हो जाता है। इसका 'अल-बहर' में पति के धर्मत्याग के मामले के साथ खंडन किया गया, जहां महर संभोग से पहले आधा हो जाता है जैसा कि आप जानते हैं, भले ही यह पति की ओर से एक निरस्तीकरण है। फिर कहा गया: 'सच्चाई यह है कि इस मुद्दे के लिए कोई निश्चित नियम नहीं बनाया जाना चाहिए; बल्कि, प्रत्येक मामले का निर्णय साक्ष्य के अनुसार किया जाना चाहिए।' यही वह बात थी जिसने इस कमजोर सेवक को कुछ उदाहरणों तक सीमित रहने और सामान्य नियम का प्रयास न करने के लिए प्रेरित किया। और अल्लाह, जो पवित्र और सर्वोच्च है, सबसे अच्छा जानता है, और उसका ज्ञान अधिक पूर्ण और उत्तम है।

(उर्दू स्तंभ) ...होगा। यही बात 'दुर अल-मुख्तार' में अपनाई गई थी, लेकिन 'ज़खीरा' में इसका खंडन किया गया। उदाहरण के लिए, यदि किसी ने संभोग से पहले अपनी (दासी) पत्नी को खरीद लिया और उसका मालिक बन गया, तो निकाह निरस्त हो जाएगा और पूरा महर माफ हो जाएगा, भले ही अलगाव का कारण पति की ओर से हो। इसके बाद, उन्होंने एक नया नियम प्रस्तुत किया: यदि अलगाव का कारण पति की ओर से हो और वह तलाक हो, तो महर आधा होगा, और यदि अलगाव निरस्तीकरण हो, तो महर माफ हो जाएगा। फिर इस नियम का 'अल-बहर' में खंडन किया गया [यह बताते हुए कि] जब कोई पति धर्मत्यागी हो जाता है, तो संभोग से पहले महर आधा हो जाता है, भले ही यह पति की ओर से निरस्तीकरण है न कि तलाक, जैसा कि आप जानते हैं। फिर 'अल-बहर' ने कहा कि सच्चाई यह है कि इस मुद्दे के लिए कोई सामान्य नियम नहीं बनाया जाना चाहिए; इसके बजाय, प्रत्येक विशिष्ट मामले का उत्तर उसके साक्ष्य के अनुसार अलग से दिया जाना चाहिए। इसलिए, इस कमजोर सेवक ने खुद को कुछ विशिष्ट उदाहरणों का उल्लेख करने तक सीमित रखा है और कोई सामान्य नियम नहीं बताया है। और अल्लाह, जो पवित्र और सर्वोच्च है, सबसे अच्छा जानता है, और उसका ज्ञान अधिक प्रतापी, पूर्ण और उत्तम है। (त) [बॉक्स अनुभाग का अंत]

समस्या 8: इटावा से, मुंसफी कचहरी के पास, मौलवी हबीब अली साहब अलवी द्वारा प्रेषित, 20 जुल-हिज्जा 1307 हिजरी। अल्लाह तआला आप पर रहम करे, इस स्थिति में आपका क्या फैसला है: ज़ैद ने अपनी नाबालिग बेटी का निकाह दो हज़ार रुपये के शरीई महर (दहेज) पर बालिग बक्र से किया। दुर्भाग्यवश, उक्त बेटी का निकाह के बाद नाबालिग अवस्था में ही ज़ैद के घर पर देहांत हो गया। अब, क्या ज़ैद (पिता) और मृतका के अन्य कानूनी वारिसों का बक्र (मृत बेटी के पति) के खिलाफ शरीयत के अनुसार उक्त महर का दावा बनता है? यदि हाँ, तो कितना? कृपया हनफ़ी न्यायशास्त्र की विश्वसनीय पुस्तकों के संदर्भ के साथ उत्तर दें। हालाँकि इस समस्या का उत्तर सिद्धांतों से स्पष्ट रूप से दिया जा सकता है, लेकिन याचिकाकर्ता इस विशेष मामले के लिए पुस्तक संदर्भों के साथ निर्णय पर ज़ोर दे रहा है। मेरे पास जो किताबें हैं, उनमें तलाश करने के बावजूद मुझे यह विशेष मामला नहीं मिला। चूँकि आपका पुस्तकालय बहुत बड़ा है...

---

[1] अल-बहर अल-रायिक, संरक्षकों और बराबरी का अध्याय, एच.एम. सईद कराची 3/121।

جلد دو ازدہم فتاوی رضویہ

[باکس والا حصہ] (عربی کالم) وھو الذي اختارہ في الدر المختار ولکن ردھما في الذخیرۃ بما اذاملك الزوجۃ قبل الدخول بشراء مثلا حیث ینفسخ النکاح ویسقط المھر کلہ مع انھا فرقۃ جاءت من قبلہ وحقق الضابطۃ بان کل فرقۃ جاءت من قبلہ وھی طلاق فانھا تنصف وکل ما جاءت وھی فسخ فانھا تسقط ورده في البحر بردۃ الزوج حیث تنصف کما علمت مع انھا فسخ جاء من قبلہ ثم قال فالحق ان لا یجعل لھذہ المسألۃ ضابط بل یحکم في کل فرد بما افادہ الدلیل اھ ھذا ھو الذي حمل العبد الضعیف علی الاقتصار علی ذکر بعض الصور وعدم التعرض لضابط واللہ سبحنہ وتعالی اعلم وعلمہ اتم واحکم۔

(اردو کالم) ہوگا، اسی کو در مختار میں اختیار کیا، لیکن ذخیرہ میں اس کو رد کیا ہے مثلاً اگر کسی نے (لونڈی) بیوی کو دخول سے قبل خرید لیا اور اس کا مالک بن گیا تو یہ نکاح فسخ ہو گیا اور پورا مہر ساقط ہوا، حالانکہ وجہ فرقت خاوند کی طرف سے ہے، اس کے بعد انہوں نے نیا ضابطہ یہ بتایا کہ اگر خاوند کی طرف سے فرقت کی وجہ ہو اور وہ وجہ طلاق بنے تو مہر نصف ہوگا اور جو فرقت فسق بنے تو مہر ساقط ہو جائے گا، پھر اس ضابطہ کو بحر میں رد کیا کہ جب خاوند مرتد ہو جائے تو قبل دخول مہر نصف ہوگا حالانکہ یہ فرقت مرد کی طرف سے فسخ ہے طلاق نہیں ہے، جیسا کہ تمہیں معلوم ہے، پھر بحر نے کہا کہ حق یہ ہے کہ اس مسئلہ کے لئے کوئی ضابطہ نہ بنایا جائے بلکہ ہر جزئیہ کا جواب اس کی دلیل کے مطابق علیحدہ دیا جائے اھ، اسی بناء پر اس عبد ضعیف نے بعض جزئیات کے ذکر پر اکتفاء کیا اور کسی ضابطہ کو بیان نہیں کیا ہے۔ واللہ سبحنہ وتعالی اعلم وعلمہ مجدہ اتم واحکم (ت) [باکس کا اختتام]

مسئلہ ۸: از اتاوہ قریب کچہری منصفی مرسلہ مولوی حبیب علی صاحب علوی ۲۰ ذی الحجہ ۱۳۰۷ھ ماقولکم رحمکم اللہ تعالیٰ اس صورت میں کہ زید نے اپنی دختر نابالغہ کا نکاح شرعی دو

ہزار روپے مہر پر بکر بالغ کے ساتھ کیا، قضا را دختر مذکورہ بعد نکاح کے ایام نابالغی میں زید کے گھر مر گئی اب زید پدر و دیگر وارثان شرعی متوفاۃ مذکورہ کو دعوی مہر مذکور کا بکر شوہر دختر متوفاۃ پر شرعاً پہنچتا ہے تو کس قدر کا، بحوالہ کتب معتبرہ فقہ حنفی جواب مرحمت ہو، گواس مسئلہ کا جواب اصول سے بہت صاف دیا جا سکتا ہے مگر مستفتی کو اصرار کہ بحوالہ کتاب اس صورت خاص میں حکم دیا جائے۔ میرے پاس جو کتابیں ہیں ان میں با وصف تلاش یہ صورت خاص نہ ملی، چونکہ آپ کا کتب خانہ بہت بڑا ہے

---

۱ بحر الرائق باب الاولیاء والاکفاء ایچ ایم سعید کراچی ۱۲۱/۳

Fatawa Razawiya, Volume 12

And it is very broad in most books of insight; therefore, the situation of the issue is being written. I will be grateful for how quickly you can honor me with an answer. Explain and be rewarded.

The Answer: Although it is clearly stated in all the books of the school of thought—texts, commentaries, and fatwas—on an absolute basis that due to the death of one of the spouses, the dower (Mahr) becomes confirmed and it becomes mandatory in full, without any restriction or specification of adult or minor, or consummation or lack thereof, and just this much is definitely enough in answer to the issue. However, if this specific certain situation is required, where the girl is a minor and her guardian (Wali) marries her off for a certain dower and she dies before puberty without seeing her husband, then this specific detail is also clearly mentioned in many books. Its ruling is the same: that due to death, the full dower is mandatory. Rather, scholars have explicitly stated in this case where the marriage guardian is other than the father or grandfather, where the marriage is not binding and the minor boy and girl are given the option to annul after puberty, that perhaps someone might have a doubt about it not being confirmed. So, for the marriage performed by the father, which is definitely binding and irrevocable, it is not reasonable for anyone to even have a doubt about it here. In Multaqa al-Abhur and its commentary Majma' al-Anhur, it is stated:

Arabic	**Urdu Translation**
The guardian has the right to marry off a minor girl or boy. If one of them dies, the other inherits from them, whether they reached puberty or not, and the full dower becomes mandatory even if they died before consummation. [Extracted]. I say, it is known that the pronoun in 'died' refers to one of the two, which includes both husband and wife, as is not hidden.	The guardian has the authority to perform the marriage of a minor boy and girl. Then, if any of the spouses dies, the other will be the heir and the full dower will be mandatory whether they are adults or minors, even if they died before consummation. [Extracted]. I say the pronoun of "Maat" (died) is for one of the two, encompassing both husband and wife, as is not hidden. (T)

In Durr al-Mukhtar it says:

Arabic	Urdu Translation
They both inherit from each other (i.e., the minor boy and girl) and the full dower becomes binding.	In this situation, both the minor boy and girl will become each other's heirs and the full dower will be mandatory. (T)

In Tabyin al-Haqa'iq Sharh Kanz al-Daqa'iq it is stated:

---

1. Majma' al-Anhur Sharh Multaqa al-Abhur, Chapter of Guardians and Equals, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 1/325.
2. Durr al-Mukhtar, Chapter of the Guardian, Mujtabai Press Delhi 1/193.

फतावा रज़विया, जिल्द बारहवीं

और नज़र की अक्सर कुतुब (किताबों) पर बहुत वसी (विस्तृत) है, इसलिए सूरते-मस्अला (मसले की सूरत) तहरीर की जाती है, जवाब से जिस क़दर जल्द मुशर्रफ फ़रमाएंगे ममनून रहूँगा। बैनु तूजरू। (बयान करें, सवाब पाएं)

अल-जवाब: अगरचे मौत-ए-अहद-उल-ज़ौतैन (पति-पत्नी में से एक की मौत) के सबब महर का मुतअक्किद (पुख्ता) हो जाना और तमाम-ओ-कमाल लाज़िम आना यूँही अल-वजह-उल-इतलाक जमीअ कुतुब-ए-मज़हब मतून-ओ-शुरूह-ओ-फतावा में मुबय्यन (स्पष्ट) है, जिसमें बालिग-ओ-नाबालिग और दुखूल-ओ-अदम-ए-दुखूल (सहवास और सहवास न होना) की अस्लन कोई तक़यीद-ओ-तख़सीस (प्रतिबंध और विशेषता) नहीं और सिर्फ इसी क़दर जवाब मस्अला में क़तअन बस (काफी) है। ताहम अगर यह सूरते-ख़ास मुअय्यना ही दरकार है कि औरत नाबालिग़ा हो और वली उसका निकाह एक महर पर कर दे और वह क़ब्ल-ए-बुलूग शौहर नादीदह (बिना देखे) मर जाए, तो यह जुज़िया (विवरण) भी बहुत कुतुब में साफ़-साफ़ मुसर्रह (वर्णित) है और हुक्म उसका वही कि बवजह-ए-मौत कुल महर लाज़िम। बल्कि उलमा ने इस सूरत में इसकी तसरीह (स्पष्टीकरण) फ़रमाई कि वली-ए-मुज़व्विज ग़ैर अब-ओ-जद्द (बाप और दादा के अलावा कोई और वली) हो जहाँ निकाह लाज़िम नहीं होता और बाद-ए-बुलूग सगीर-ओ-सगीरा (नाबालिग लड़का-लड़की) को इख्तियार-ए-फस्ख़ (निकाह खत्म करने का अधिकार) दिया जाता है तो शायद किसी को अदम-ए-ताकुद (पुख्ता न होने) का तवहहुम (वहम) हो, ताकि तज़वीज-ए-पिदर (बाप द्वारा किया गया निकाह) जो क़तअन लाज़िम और नाक़ाबिल-ए-फस्ख़ है यहाँ किसी को भी उसका वहम गुज़रना अस्लन माकूल (तर्कसंगत) नहीं। मुल्तकुल अबहुर और उसकी शरह मज्मअ-उल-अनहुर में है:

अरबी

वली को नाबालिग लड़के और लड़की का निकाह कर देने का इख्तियार है। फिर अगर दोनों मियाँ-बीवी में से कोई फ़ौत हो जाए तो दूसरा वारिस होगा और पूरा महर वाजिब होगा, बालिग हों या नाबालिग, अगरचे वह दुखूल से पहले ही फ़ौत हो गया हो। अल-मुल्तक़त। मैंने कहा और मालूम है

उर्दू अनुवाद

वली को नाबालिग लड़के और लड़की के निकाह कर देने का इख्तियार है। फिर अगर दोनों मियाँ बीवी में से कोई फ़ौत हो जाए तो दूसरा वारिस होगा और पूरा महर वाजिब होगा बालिग हों या नाबालिग, अगरचे वह दुखूल से क़ब्ल ही फ़ौत हो गया हो। अल-मुल्तक़त। मैंने

अरबी	उर्दू अनुवाद
कि 'मात' की ज़मीर दोनों में से एक के लिए है जो खाविन्द और बीवी दोनों को शामिल है, जैसा कि पोशीदा नहीं है।	कहा मात की ज़मीर दोनों में से एक के लिए है जो खाविन्द बीवी दोनों को शामिल है, जैसा कि पोशीदा नहीं है। (त)

दर्रे-मुख़्तार में है:

अरबी	उर्दू अनुवाद
दोनों एक दूसरे के वारिस बनेंगे (यानी नाबालिग लड़का और लड़की) और पूरा महर लाज़िम होगा।	इस सूरत में दोनों नाबालिग लड़का और लड़की बाहम वारिस बनेंगे और पूरा महर लाज़िम होगा। (त)

तबीयनुल हक़ायक़ शरह कन्ज़ुद दक़ायक़ में है:

---

1. मज्मअ-उल-अनहुर शरह मुल्तकुल अबहुर, बाबुल औलिया वल अकफ़ा, दारुल अहयाउत-तुरासुल अरबी बैरुत 1/325
2. दर्रे-मुख़्तार बाबुल वली, मतबा मुजतबाई देहली 1/193

اور نظر کی اکثر کتب پر بہت وسیع ہے اس واسطے صورتِ مسئلہ تحریر کی جاتی ہے، جواب سے جس قدر جلد مشرف فرمائے گا ممنون ہوں گا۔ بینوا توجروا۔

الجواب: اگرچہ موت احد الزوجین کے سبب مہر کا متاکد ہو جانا اور تمام و کمال لازم آنا یونہی علی وجہ الاطلاق جمیع کتب مذہب متون و شروح و فتاوٰی میں مبین جس میں بالغ و نابالغ و دخول و عدم دخول کی اصلاً کوئی تقیید و تخصیص نہیں اور صرف اسی قدر جواب مسئلہ میں قطعاً بس تاہم اگر یہ صورتِ خاص معینہ ہی درکار ہے کہ عورت نابالغہ ہو اور ولی اس کا نکاح ایک مہر پر کر دے اور وہ قبلِ بلوغ شوہر نادیدہ مر جائے تو یہ جزئیہ بھی بہت کتب میں صاف صاف مصرح اور حکم اس کا وہی کہ بوجہ موت کل مہر لازم بلکہ علماء نے اس صورت میں اس کی تصریح فرمائی کہ ولی مزوج غیر اب وجد ہو جہاں نکاح لازم نہیں ہوتا اور بعدِ بلوغ صغیر و صغیرہ کو اختیارِ فسخ دیا جاتا ہے تو شاید کسی کو عدمِ تاکد کا توہم ہو تاکہ تزویجِ پدر کہ قطعاً لازم و ناقابلِ فسخ ہے یہاں کسی کو بھی اس کا وہم گزرنا اصلاً معقول نہیں۔ ملتقی الابحر اور اُس کی شرح مجمع الانہر میں ہے:

| للولی انکح الصغیرہ والصغیرۃ فان مات احدھما ورثہ الآخر بلغا اولا ویجب المھر کلہ وان مات قبل الدخول اھ ملتقطاً قلت و معلوم ان ضمیر مات الی احدھما الشامل للزوج والزوجۃ کما لایخفی۔ | ولی کو نابالغ لڑکے اور لڑکی کے نکاح کر دینے کا اختیار ہے۔ پھر اگر دونوں میاں بیوی میں سے کوئی فوت ہو جائے تو دوسرا وارث ہوگا اور پورا مہر واجب ہوگا بالغ ہوں یا نابالغ، اگرچہ وہ دخول سے قبل ہی فوت ہو گیا ہو اہ ملتقطاً قلت مات کی ضمیر دونوں سے ایک کے لئے ہے جو خاوند بیوی دونوں کو شامل ہے، جیسا کہ پوشیدہ نہیں ہے (ت) |

در مختار میں ہے:

| یتورثان فیه (یعنی الصغیر والصغیرة) ویلزم کل المهر 2- | اس صورت میں دونوں نابالغ لڑکا اور لڑکی باہم وارث بنیں گے اور پورا مہر لازم ہوگا (ت) |

تبیین الحقائق شرح کنز الدقائق میں ہے:

---

1 مجمع الانہر شرح ملتقی الابحر باب الاولیاء والا کفاء دار احیاء التراث العربی بیروت ۱/ ۳۲۵ 2 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۳

(Arabic) And they inherit from each other before annulment (faskh) because the marriage is valid and ownership is established by it. If one of them dies, the marriage has ended, whether they died before or after puberty, because separation between them only occurs by the judge's decree. Thus, they inherit from each other and the entire dower (mahr) becomes obligatory, even if death occurred before consummation etc. 1

Before annulment, both will be each other's heirs because the marriage is valid, and ownership is established by it. Thus, when someone dies, the marriage is completed, whether this death occurred before puberty or after, because separation in them happens by the judge's decree, therefore they will be heirs to each other and the full dower will be mandatory even if death occurred before consummation etc. (T)

Therefore, in the inquired situation, the full fixed dower became obligatory upon Bakr, of which he himself is the heir to half, i.e., one thousand rupees. The remaining heirs can claim the other thousand rupees from him. And Allah Ta'ala knows best.

Mas'ala (Issue) 9: 20 Ramadan ul Mubarak 1308 AH. What do the scholars of religion say in this matter that Zaid took away Bakr's wedded wife in his absence and commits adultery with her. To avoid the charges under the Indian Penal Code, a civil suit for dower was filed on behalf of Bakr's wife stating that Bakr has divorced me, and my Shari'ah dower should be given to me from my husband Bakr. In this situation, according to the Shari'ah, is the wife, Hindah, entitled to receive the fixed dower or not? The dower of Hindah is deferred (mu'ajjal) and no specific period was fixed, and Bakr has not given a divorce either. Explain and you shall be rewarded.

The Answer: In the inquired situation, until death or divorce occurs, the woman is not entitled to demand the dower. Since the dower was deferred (mu'ajjal) and no period was specified in the statement, such as it will be paid after a year or ten years, then legally its period is determined as death or divorce. It is stated in Fatawa Alamgiri:

(Arabic) There is no disagreement among anyone that deferring the dower to a known period, such as a month or a year, is valid. If it is not to a known period, the scholars have differed about it. Some said it is valid, and this is more correct because the end is known in itself.

There is no disagreement in this that a time limit can be fixed for dower, for example, a month or a year etc. This is correct. And if the time is not known, there is disagreement among the scholars; some said it is valid, and this is the most correct because the end is known, which is divorce or death.

1 Tabyin al-Haqa'iq Sharh Kanz al-Daqa'iq, Bab al-Awliya wa al-Akfa, Matba'a al-Kubra al-Amiriyah, Bulaq, Egypt, 2/125. Page 132 of 688

(अरबी) और वे निरस्तीकरण (फ़स्ख़) से पहले एक-दूसरे के वारिस होंगे क्योंकि निकाह सही है और इसके द्वारा स्वामित्व स्थापित होता है। यदि उनमें से किसी एक की मृत्यु हो जाती है, तो निकाह समाप्त हो गया है, चाहे मृत्यु यौवन से पहले हो या बाद में, क्योंकि उनके बीच जुदाई केवल काज़ी के फैसले से होती है। इसलिए वे एक-दूसरे के वारिस होंगे और पूरा महर अनिवार्य हो जाता है, भले ही मृत्यु संभोग से पहले हुई हो, इत्यादि। 1

निरस्तीकरण से पहले दोनों एक-दूसरे के उत्तराधिकारी होंगे क्योंकि निकाह सही है, और इससे स्वामित्व स्थापित होता है। इसलिए जब कोई मर जाता है तो निकाह पूरा हो चुका होता है, चाहे यह मृत्यु यौवन से पहले हो या बाद में, क्योंकि उनमें जुदाई काज़ी के फैसले से होती है, इसलिए वे आपस में उत्तराधिकारी बनेंगे और पूरा महर अनिवार्य होगा चाहे संभोग से पहले ही मृत्यु क्यों न हुई हो इत्यादि (त)।

अतः पूछी गई स्थिति में बक्र पर पूरा तयशुदा महर अनिवार्य हो गया, जिसमें से आधे यानी एक हजार रुपये का वह स्वयं वारिस है। शेष उत्तराधिकारी उससे दूसरे हजार रुपये का दावा कर सकते हैं। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला (प्रश्न) 9: 20 रमज़ान-उल-मुबारक 1308 हिजरी। दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद बक्र की विवाहित पत्नी को उसकी अनुपस्थिति में भगा ले गया और उसके साथ व्यभिचार करता है। भारतीय दंड संहिता के आरोपों से बचने के लिए, बक्र की पत्नी की ओर से महर दिलाने का एक दीवानी मुकदमा दायर करवाया गया और बयान कराया गया कि बक्र ने मुझे तलाक दे दिया है, मेरा शरीई महर मेरे पति बक्र से मुझे दिलाया जाए। इस स्थिति में शरीयत के अनुसार, पत्नी हिंदा निर्धारित महर प्राप्त करने की हकदार है या नहीं? हिंदा का महर मोअज्जल (स्थगित) है और कोई निश्चित अवधि तय नहीं की गई थी, और बक्र ने तलाक भी नहीं दिया है। स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: पूछी गई स्थिति में जब तक मृत्यु या तलाक न हो जाए, महिला महर की मांग करने की बिल्कुल हकदार नहीं है। चूंकि महर मोअज्जल तय हुआ था और बयान में अवधि का कोई उल्लेख नहीं था कि एक साल बाद या दस साल बाद भुगतान किया जाएगा, तो शरीयत के अनुसार इसकी अवधि मृत्यु या तलाक मानी जाती है। फतावा आलमगीरी में है:

(अरबी) इस बात में किसी का कोई मतभेद नहीं है कि महर को एक ज्ञात अवधि जैसे एक महीने या एक वर्ष तक के लिए टालना वैध है। यदि यह ज्ञात अवधि तक नहीं है, तो विद्वानों ने इस बारे में मतभेद किया है। कुछ ने कहा कि यह वैध है, और यही अधिक सही है क्योंकि समाप्ति का समय स्वयं में ज्ञात है।

इसमें कोई मतभेद नहीं है कि महर के लिए समय सीमा निर्धारित की जा सकती है जैसे महीना या साल आदि। यह सही है। और यदि समय ज्ञात न हो तो इसमें विद्वानों का मतभेद है; कुछ ने कहा कि यह सही है, और यही सबसे सही है क्योंकि अंत ज्ञात है कि वह तलाक या मृत्यु है।

1 तबयीन अल-हकाइक शरह कंज अल-दकाइक, बाब अल-औलिया व अल-अकफ़ा, मतबा अल-कुबरा अल-अमीरिया, बुलाक, मिस्र, 2/125। पेज 132/688

وتوارثا قبل الفسخ لان النكاح صحيح والملك به ثابت فان مات احدهما فقد انتهى النكاح سواء مات قبل البلوغ او بعده لان الفرقة بينهما لاتقع الا لقضاء القاضى فيتوارثان ويجب المهر كله وان مات قبل الدخول الخ 1

قبل از فسخ دونوں ایک دوسرے کے وارث ہوں گے کیونکہ نکاح صحیح ہے، اور اس سے ملکیت ثابت پس جب کوئی مر گیا تو نکاح تو مکمل ہو چکا، یہ موت بلوغ قبل ہو یا بعد، کیونکہ ان میں فرقت ہوئی تو قضاء قاضی سے ہوتی، اس لئے آپس میں وارث بنیں گے اور پورا مہر لازم ہو گا اگرچہ دخول سے قبل مرا ہوا الخ (ت)

پس صورت مستفسرہ میں کل مہر مسمّٰی ذمہ بکر لازم ہوا جس میں نصف یعنی ایک ہزار روپے کا وہ خود وارث ہے بقیہ ورثاء ہزار روپے کا اس پر دعوی کر سکتے ہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۹: ۲۰ رمضان المبارک ۱۳۰۸ھ کیا فرماتے ہیں علماء دین اس مسئلہ میں کہ زید بکر کی زوجہ منکوحہ کو اس کی غیبت میں بھگا کر لے گیا اور اس سے زنا کرتا ہے اور واسطے برائت الزام تعزیراتِ ہند کے دعوٰی دلوانے دین مہر شرعی زوجہ بکر کی جانب سے بصیغہ دیوانی دائر کرا کر بیان کرایا کہ مجھ کو بکر نے طلاق دے دی میرا مہر شرعی بکر زوج میرے سے دلایا جائے۔ اس صورت میں از روئے شرع شریف زوجہ ہندہ مقررہ وصول یابی مہر کا استحقاق ہے یا نہیں، اور مہر ہندہ کا مؤجل ہے اور کوئی میعاد معین قرار نہ پائی اور بکر نے طلاق بھی نہیں دی۔ بینوا توجروا

الجواب: صورت مستفسرہ میں جب تک موت یا طلاق واقع نہ ہو عورت کو ہر گز مطالبہ مہر کا استحقاق نہیں کہ جب مہر مؤجل بندھا اور میعاد کی کوئی شرح بیان میں نہ آئی کہ سال بھر بعد ادا

کیا جائے گا یا دس برس تو شرعاً اس کی میعاد موت یا طلاق قرار پاتی ہے، فتاویٰ عالمگیری میں ہے:

لاخلاف لاحد ان تأجیل المهر الی غایة معلومة نحو شهر او سنة صحیح وان کان لا الی غایة معلومة فقد اختلف المشائخ فیه قال بعضهم یصح وهو الصحیح وهذا لان الغایة معلومة فی نفسها

اس میں کوئی اختلاف نہیں کہ مہر کے لئے مدت مقرر کی جاسکتی ہے مثلاً مہینہ یا سال وغیرہ، یہ صحیح ہے اور اگر مدت معلوم نہ ہو تو اس میں مشائخ کا اختلاف ہے، بعض نے فرمایا صحیح ہے، اور یہی اصح ہے کیونکہ انتہا معلوم ہے کہ وہ طلاق یا موت ہے۔

1 تبیین الحقائق شرح کنز الدقائق باب الاولیاء والاکفاء مطبعة الکبری الامیریه بولاق مصر ۱۲۵/۲

Fatawa Ridawiyya, Volume 12

[Arabic Text Box]: “And it is [due upon] divorce or death. Do you not see that deferring a portion [of the dower] is valid even if an explicit known end-date is not mentioned? Thus it is in 'Al-Muhit'.” [Urdu Translation]: “Have you not seen that deferring a portion of the dower is valid even if its ultimate duration is unknown? In 'Al-Muhit' it is stated thus. (T)”

1 ——————————————————————

Fatawa Qadi Khan states: [Arabic Text Box]: “A man married a woman for a thousand [dirhams] on the condition that the entire thousand is deferred. If the duration of the deferment is known, the deferment is valid. If it is not known, it is not valid. When the deferment is not valid, the husband is ordered to pay promptly an amount that is customary for the people of that town, and the remainder is taken from him after divorce or after death. The judge does not compel him to deliver the remainder, nor does he imprison him [for it].” [Urdu Translation]: “A person married a woman for a dower of one thousand, and deferred the entire thousand. If the ultimate duration is known, it is valid; if it is not known, it is not valid. So, when it is not valid, the husband will be told to pay as much as possible immediately according to custom, and the remainder will be recovered from him after divorce or death. The judge will not use compulsion on him for the recovery of the remainder, nor will he imprison him. (T)” 2 ——————————————————————

Therefore, a claim for debt before the expiry of the term is not permissible at all, nor can such a claim be heard. And Allah Almighty knows best.

Problem 10: From Sajaul, District Bahraich, sent by Sheikh Abdul Aziz Sahib, cloth merchant, 7 Ramadan 1310 AH.

What do the scholars of religion and muftis of the firm Sharia say on this issue: Zaid divorced his wife Hind without a Sharia-sanctioned reason. When Hind's guardian, i.e., Khalid her father, demanded the dower from Zaid, Zaid claimed that 'my dower was ten dirhams'. The situation is that neither Hind nor her guardian Khalid remembers the amount of the dower, nor do the marriage-officiating judge (Qazi) or the representative remember it. Nor is it remembered who were the witnesses appointed at the time of marriage. However, in that community, the dower of even the lowest of women is mostly at least five hundred rupees and two red dinars, and a dower of ten dirhams as per Zaid's claim is not held by anyone in that community;

perhaps not even in the city where both the divorcer and the divorced woman live. Considering that the majority custom of the community at the lowest level is five hundred rupees and two red dinars, Khalid...

1. Fatawa Hindiyya, Chapter Eleven regarding the woman preventing herself, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/318.
2. Fatawa Qadi Khan, Chapter on mentioning the issues of dower, Nawal Kishore Lucknow, 1/173.

फतावा रज़विया, जिल्द 12

[अरबी पाठ बॉक्स]: “और वह [देय है] तलाक या मृत्यु पर। क्या आप नहीं देखते कि मेहर के कुछ हिस्से को स्थगित करना सही है, भले ही उसकी अंतिम ज्ञात अवधि स्पष्ट रूप से न बताई गई हो? 'अल-मुहीत' में ऐसा ही है।” [उर्दू अनुवाद]: “देखा नहीं कि मेहर के कुछ हिस्से को स्थगित करना सही है, भले ही उसकी अंतिम अवधि ज्ञात न हो, 'अल-मुहीत' में ऐसा ही है। (त)”

1 ——————————————————————

फतावा काज़ी ख़ान में है: [अरबी पाठ बॉक्स]: “एक व्यक्ति ने एक स्त्री से एक हज़ार [दिरहम] मेहर पर इस शर्त के साथ निकाह किया कि पूरी एक हज़ार की राशि स्थगित (उधार) होगी। यदि अवधि ज्ञात है, तो स्थगन सही है। यदि ज्ञात नहीं है, तो सही नहीं है। जब स्थगन सही न हो, तो पति को आदेश दिया जाएगा कि वह उस नगर के निवासियों के रीति-रिवाज के अनुसार जितना हो सके तुरंत भुगतान करे, और बाकी उससे तलाक या मृत्यु के बाद लिया जाएगा। न्यायाधीश उसे बाकी के भुगतान के लिए मजबूर नहीं करेगा और न ही उसे कैद करेगा।” [उर्दू अनुवाद]: “एक व्यक्ति ने औरत से निकाह किया हज़ार मेहर पर, और पूरे एक हज़ार को स्थगित किया, तो अगर अंतिम अवधि ज्ञात है तो सही है, अगर ज्ञात नहीं तो सही नहीं, तो जब सही न हो तो शौहर से कहा जाएगा कि रीति-रिवाज के लिहाज़ से जितना हो सके तुरंत अदा करो और बाकी उससे तलाक या मौत के बाद वसूल किया जाएगा, और काज़ी उसे बाकी की वसूली पर मजबूर न करेगा और न ही उसे कैद करेगा। (त)”

2 ——————————————————————

अतः मियाद (निर्धारित अवधि) से पहले ऋण की मांग करना बिल्कुल भी जायज नहीं है, और न ही ऐसा दावा सुना जा सकता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 10: सजौल, ज़िला बहराइच से, प्रेषक शेख़ अब्दुल अज़ीज़ साहब, कपड़ा व्यापारी, 7 रमज़ान 1310 हिजरी।

क्या फरमाते हैं दीन के विद्वान और सुदृढ़ शरिया के मुफ्ती इस मसले पर: ज़ैद ने बिना किसी शरई कारण के अपनी पत्नी हिंदा को तलाक दे दिया। जब हिंदा के वली यानी उसके पिता खालिद ने ज़ैद से मेहर की मांग की, तो ज़ैद ने यह दावा किया कि 'मेरा मेहर दस दिरहम था'। स्थिति यह है कि न तो हिंदा और न ही उसके वली खालिद को मेहर की मात्रा याद है, न ही निकाह पढ़ाने वाले काज़ी और न ही वकील को याद है। न ही यह बात याद है कि निकाह के समय कौन-कौन गवाह नियुक्त

किए गए थे। लेकिन उस कौम में मामूली से मामूली औरतों का मेहर भी कम से कम अक्सर पाँच सौ रुपये और दो लाल दीनार होता है, और दस दिरहम का मेहर जैसा कि ज़ैद का दावा है, उस कौम में किसी का नहीं है, बल्कि शायद उस शहर में भी नहीं जहाँ ये दोनों तलाक देने वाला और तलाकशुदा महिला रहते हैं। और इसी आधार पर कि अक्सर कौम के रिवाज में निचली श्रेणी में पाँच सौ रुपये और दो लाल दीनार है, खालिद...

1. फतावा हिंदिया, ग्यारहवां अध्याय, स्त्री द्वारा स्वयं को रोकने के विषय में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/318।
2. फतावा काज़ी ख़ान, मेहर के मसलों के ज़िक्र का अध्याय, नवल किशोर लखनऊ, 1/173।

पृष्ठ 688 का 133

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

وھو الطلاق اوالموت الایری ان تأجیل البعض صحیح وان لم ینص علی غایۃ معلومۃ کذا فی المحیط

دیکھا نہیں کہ بعض مہر کو مؤخر کرنا صحیح ہے اگرچہ اس کی انتہا ئی مدت معلوم نہ ہو ، محیط میں یونہی ہے۔ (ت)

1 ——————————————————————

فتادی قاضی خاں میں ہے : رجل تزوج امرأۃ بالف علی ان کل الالف مؤجل ان کان الاجل معلومًا صح التاجیل وان لم یکن لا یصح واذا لم یصح التاجیل یؤمر الزوج بتعجیل قدر ما یتعارفہ اھل البلدۃ فیؤخذ منہ الباقی بعد الطلاق او بعد الموت ولا یجبرہ القاضی علی تسلیم الباقی ولا یحبسہ ایک شخص نے عورت سے نکاح کیا ہزار مہر پر ، اور مکمل ہزار مؤخر کیا، تو اگر انتہائی مدت معلوم ہے تو صحیح ہے ، اگر معلوم نہیں تو صحیح نہیں، تو جب صحیح نہ ہو تو خاوند کو کہا جائے گا کہ عرف کے لحاظ سے جتنا ہو سکے فوری ادا کرو اور باقی اس سے طلاق یا موت کے بعد وصول کیا جائے گا ، اور قاضی اس پر باقی کی وصول پر جبر نہ کرے گا اور نہ ہی اس کو قید کرے گا۔ (ت)

2 ——————————————————————

پس میعاد سے پہلے دین کا مطالبہ ہر گز روا نہیں ، نہ ایسا دعوٰی مسموع ہوسکے۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۰: از سجول ضلع بہرائچ مرسلہ شیخ عبدالعزیز صاحب تاجر لٹھا ۷ رمضان ۱۳۱۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید نے بلاوجہ شرعی اپنی زوجہ ہندہ کو طلاق دیدی ، جب ہندہ کے ولی یعنی خالد اس کے باپ نے زید سے مہر طلب کیا تو زید مدعی اس امر کا ہوا کہ میرا مہر دس درہم کا تھا، اور صورت یہ واقع ہوئی ہے کہ تعداد مہر کی نہ

ہندہ اور نہ اُس کے ولی خالد کو یاد ہے اور نہ قاضی نکاح خواں اور نہ وکیل کو یاد ہے اور نہ یہ امر یاد ہے کہ وقتِ نکاح کون کون گواہ مقرر ہوئے تھے لیکن اُس قوم میں ادنیٰ ادنیٰ عورتوں کا بھی مہر کم درجہ پانچ سو روپے اور دو دینار سُرخ اکثر ہیں اور دس درہم مہر جیسا کہ دعویٰ زید کا ہے اُس قوم میں کسی کا نہیں بلکہ غالباً اُس شہر میں بھی جہاں یہ دونوں طلاق دہندہ اور مطلقہ رہتی ہے شاید کسی کا بھی نہ ہو اور اسی اعتبار سے کہ اکثر عرف قوم میں ادنیٰ درجہ پانچ سو روپے اور دو دینار سُرخ ہے ، خالد

1 فتاویٰ ہندیہ فصل الحادی عشر فی منع المرأۃ نفسھا نورانی کتب خانہ پشاور ۳۱۸/۱ 2 فتاویٰ قاضی باب فی ذکر مسائل المہر نولکشور لکھنؤ ۱۷۳/۱

Fatawa Razawiyya Volume 12

The guardian of Hindah is the claimant and demands five hundred rupees and two red dinars. In such a situation, according to the statement of her divorcing husband, Hindah will receive 10 dirhams, or will she be entitled to receive five hundred rupees and two red dinars according to the custom of her tribe as per the claim of her guardian Khalid? Give a ruling, and you will be rewarded.

Answer: It is clear from the wording of the question that this divorce took place after the departure (Rukhsat) and privacy (Khilwat) of the husband and wife. So, if it is indeed so, then in the inquired situation, whichever of the husband or wife establishes righteous legal witnesses for their claim, a decision will be made accordingly. And if both present legal witnesses according to their respective claims, then the "Mahr-e-Mithl" (customary dowry) of the woman will be considered. If it is more than 10 dirhams and less than five hundred rupees and two red dinars, then it will be awarded according to what the Mahr-e-Mithl is. If neither of them can bring witnesses for their claim, even then Mahr-e-Mithl will be considered. If it is five hundred rupees and two red dinars or more, then an oath will be taken from the woman: "By Allah, my marriage was not with ten dirhams." If she takes the oath, a decree for ten dirhams will be issued, and if she refuses, five hundred rupees must be given. And if it is more than 10 dirhams and less than five hundred rupees and two red dinars, then the mentioned oaths will be taken from both the man and the woman, and it is preferable to start with the husband. If he refuses the oath, five hundred rupees and two red dinars will be awarded, and if he takes the oath, then an oath will be taken from the woman; if she refuses, she will get ten dirhams, and if she also takes the oath, then Mahr-e-Mithl will be awarded.

[Table Content] Arabic Text: في تنوير الابصار والدر المختار ورد المحتار ان اختلفا في قدره حال قيام النكاح (اى قبل الدخول او بعده كذا بعد الطلاق والدخول رحمتى) فالقول لمن شهد له مهر المثل بيبينته وايّ اقام بينة قبلت سواء شهد مهر المثل له اولها اولا وان اقاما فبينتها مقدمة ان شهد له وبينته ان شهد لها، لان البينات لاثبات خلاف الظاهر

Urdu Translation in Table: It is stated in Tanwir al-Absar, Durr al-Mukhtar, and Radd al-Muhtar that if the husband and wife differ on the amount of Mahr, whether this difference occurs during the subsistence of the marriage (i.e., before or after consummation, and similarly if this difference occurs after divorce and consummation, Rahmati), then the statement of the one whose claim is supported by Mahr-e-Mithl along with evidence (bayyinah) will be considered valid, and an oath will

also be taken. And if one of the two presents witnesses, the testimony will be accepted whether the Mahr-e-Mithl agrees with the husband or the wife or not. And if both present witnesses, the wife's witnesses will take precedence if the Mahr-e-Mithl supports the husband and...

फतावा रज़विया खंड 12

हिन्दा का संरक्षक (वली) दावेदार है और पाँच सौ रुपये और दो लाल दीनार की मांग कर रहा है। ऐसी स्थिति में, अपने तलाक देने वाले पति के बयान के अनुसार हिन्दा को 10 दिरहम मिलेंगे, या वह अपने संरक्षक खालिद के दावे के अनुसार अपनी जाति के रीति-रिवाजों के आधार पर पाँच सौ रुपये और दो लाल दीनार पाने की हकदार होगी? फतवा दें और पुण्य कमाएं।

उत्तर: प्रश्न की इबारत से स्पष्ट है कि यह तलाक पत्नी की विदाई और पति-पत्नी के एकांत (खलवत) के बाद हुआ है। अतः यदि वास्तव में ऐसा ही है, तो पूछी गई स्थिति में पति और पत्नी में से जो भी अपने दावे पर शरीयत के अनुसार विश्वसनीय गवाह पेश कर देगा, उसी के अनुसार फैसला किया जाएगा। और यदि दोनों अपने-अपने दावे के अनुसार शरिया गवाह पेश कर दें, तो स्त्री के'महर-ए-मिस्ल' (प्रचलित मेहर) पर विचार किया जाएगा। यदि वह दस दिरहम से अधिक और पांच सौ रुपये दो लाल दीनार से कम है, तो जितना महर-ए-मिस्ल होगा, उतना ही दिलाया जाएगा। और यदि उनमें से कोई भी अपने दावे पर गवाह न ला सके, तो भी महर-ए-मिस्ल को देखेंगे। यदि पांच सौ रुपये दो लाल दीनार या उससे अधिक हो, तो स्त्री से शपथ ली जाएगी कि 'अल्लाह की कसम मेरा निकाह उससे दस दिरहम पर नहीं हुआ', यदि वह शपथ ले ले तो दस दिरहम की डिक्री होगी, और यदि इनकार करे तो पांच सौ रुपये देने होंगे। और यदि दस दिरहम से अधिक और पांच सौ रुपये दो लाल दीनार से कम हो, तो पुरुष और स्त्री दोनों से उपरोक्त शपथ ली जाएगी, और बेहतर यह है कि पति से शुरुआत की जाए। यदि वह शपथ से इनकार करे तो पांच सौ रुपये दो लाल दीनार दिलाएं और यदि शपथ ले ले तो स्त्री से शपथ लें, यदि वह इनकार करे तो दस दिरहम पाए और यदि वह भी शपथ ले ले तो महर-ए-मिस्ल दिलाएं।

[तालिका सामग्री] अरबी पाठ: في تنوير الابصار والدر المختار ورد المحتار ان اختلفا في قدره حال قيام النكاح (اى قبل الدخول او بعده كذا بعد الطلاق والدخول رحمتى) فالقول لمن شهد له مهر المثل بيبينته وانّ اقام بينة قبلت سواء شهد مهر المثل له اولها اولا وان اقاما فبينتها مقدمة ان شهد له وبينته ان شهد لها، لان البينات لاثبات خلاف الظاهر

तालिका में उर्दू अनुवाद: तनवीरुल अबसार, दुर्रे मुख्तार और रद्दुल मुहतार में है कि अगर पति-पत्नी में मेहर की मात्रा को लेकर विवाद हो, यह विवाद निकाह के दौरान हुआ हो (यानी संभोग से पहले या बाद में, और इसी तरह यह विवाद तलाक और संभोग के बाद हुआ हो, रहमती) तो दोनों में से

जिसकी महर-ए-मिस्ल पुष्टि करे, उसकी बात विश्वसनीय होगी और साथ ही शपथ भी ली जाएगी। और दोनों में से जिसने गवाह पेश किए, तो गवाही स्वीकार कर ली जाएगी चाहे महर-ए-मिस्ल पति या पत्नी की सहमति में हो या न हो। और यदि दोनों ने गवाह पेश किए तो पत्नी के गवाह को प्राथमिकता दी जाएगी यदि महर-ए-मिस्ल पति की पुष्टि करे और...

पृष्ठ 134 का 688

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

ولی ہندہ مدعی اور طالب پانچ سو روپے اور دو دینار سرخ کا ہے پس ایسی شکل میں ہندہ بقول اپنے زوج طلاق دہندہ کے دس ۱۰ درم پائے گی یا بموجب عرف اپنی قوم کے حسب دعوی اپنے ولی خالد کے پانچ سو روپیہ اور دو دینار سرخ پانے کی مستحق ہوگی۔ بینوا توجروا

الجواب: عبارت سوال سے واضح کہ یہ طلاق بعد رخصت وخلوت زن و شو واقع ہوئی ، پس اگر واقع ایسا ہی ہے تو صورت مستفسرہ میں زوج وزوجہ میں جو اپنے دعوے پر گواہان عدول شرعی قائم کر دے گا اُسی کے موافق فیصلہ کر دیا جائے گا اور اگر دونوں اپنے اپنے مطابق گواہ شرعی دے دیں تو عورت کے مہر مثل پر نظر کریں گے اگر وہ پانچ سو روپے دو دینار سرخ کی اور اگر دس ۱۰ درم سے زائد اور پانچ سو روپے دو دینار سے کم ہو تو جتنا مہر مثل ہو اسی قدر دلایا جائے گا اور اگر ان میں سے کوئی اپنے دعوے پر گواہ نہ لا سکے تو بھی مہر مثل کو دیکھیں گے ، اگر پانچ سو روپے دو دینار یا اس سے زائد ہوا تو عورت سے قسم لے لیں واللہ میرا نکاح اس سے دس درم نہ ہوا، اگر قسم کھالے گا دس درم کی ڈگری ہوگی، اور انکار کیا تو پانچ سو روپے دینے ہوں گے، اور اگر دس ۱۰ درم سے زائد پانچ سو روپے دو دینار سے کم ہوا تو مرد وزن دونوں سے قسم ہائے مذکورہ لیں گے، اور اولی یہ کہ شوہر سے ابتدا کریں، اگر وہ قسم سے انکار کرے پانچ سو روپے دو دینار دلائیں اور قسم کھائے تو عورت سے قسم لیں اگر وہ انکار کرے دس درم پائے اگر وہ بھی کھالے تو مہر مثل دلائیں۔

[ٹیبل کا مواد] عربی عبارت: في تنوير الابصار والدر المختار ورد المحتار ان اختلفا في قدره حال قيام النكاح (اى قبل الدخول او بعده كذا بعد الطلاق والدخول رحمتى) فالقول لمن شهد له مهر المثل

بیبینته وایّ اقام بینة قبلت سواء شهد مهر المثل له اولها اولا وان اقاما فبینتها مقدمة ان شهد له وبینته ان شهد لها، لان البینات لاثبات خلاف الظاهر

ٹیبل میں اردو ترجمہ: تنویر الابصار، در مختار اور ردالمحتار میں ہے کہ اگر خاوند بیوی کا مہر کی مقدار میں اختلاف ہوا، یہ اختلاف قیام نکاح کے دوران ہوا ہو (یعنی قبل از دخول یا بعد از دخول اور یوں ہی یہ اختلاف طلاق ودخول کے بعد ہوا ہو، رحمتی) تو دونوں میں سے جس کی مہر مثل تائید کرے اس کی بات معتبر ہوگی اور ساتھ قسم بھی لی جائیگی، اور دونوں میں سے جس نے گواہ پیش کئے تو گواہی قبول کرلی جائے گی خواہ مہر مثل زوج یا زوجہ کی موافقت کرے یا نہ کرے اور اگر دونوں نے گواہ پیش کئے تو بیوی کے گواہ مقدم ہوں گے اگر مہر مثل خاوند کی تائید کرے اور

Volume Twelve Fatawa Razawiya

[Arabic Passage]: And if the 'Mahr-e-Mithl' (customary dowry) is between them (their claims), they both take an oath (and it is better to start by having the husband take the oath; if he refuses, the other's claim becomes binding on him). If both take an oath or present proof, the judgement is given according to it (i.e., according to the Mahr-e-Mithl). [Summarized]. I say: In the wording of 'Al-Durr' here, there is an oversight pointed out by Al-Shami, and the clarification of the matter is in 'Al-Khaniya', 'Al-Hindia', and others. And Allah Almighty knows best.

[Urdu Translation/Explanation]: The husband's witnesses will be prioritized if the 'Mahr-e-Mithl' (customary dowry) supports the wife, because testimony is meant to prove what is against the apparent status. And if the 'Mahr-e-Mithl' lies between the claims of both parties, oaths will be taken from both (it is better to take the husband's oath first; whoever refuses the oath, the other's claim becomes binding on them). If both take oaths or present witnesses, then the judge will decide based on 'Mahr-e-Mithl'. End of summarized text. I say (the author) that there is an oversight in the wording of 'Durr' (Al-Durr al-Mukhtar) here, to which Allama Shami has drawn attention. The explanation of the issue is found in 'Khaniya', 'Hindia', etc. And Allah Almighty knows best (T).

Question 11: From Bareilly, sent by Nawab Maulvi Sultan Ahmad Khan Sahib, 13 Ramadan Mubarak 1310 AH. What was the amount of the dowry (Mahr) of the pure wives of the Master of the Universe, may Allah Almighty's peace and blessings be upon him? And what was the amount of the dowry of Hazrat Fatima, may Allah Almighty be pleased with her, including the number of dirhams and dinars, and its equivalent in current currency? What was the weight of dirhams and dinars according to the weight of that time? Please explain, and you will be rewarded.

The Answer: The sacred dowry of the noble wives and daughters of the Radiant Master, the Master of all beings (upon him and them be the best of blessings and the most perfect salutations), was not more than five hundred dirhams.

[Arabic Hadith]: Muslim narrated in his Sahih from Abu Salama, who said: I asked Aisha (may Allah be pleased with her), "How much was the dowry of the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him)?" She said, "His dowry for his wives was twelve 'uqiyah' and one 'nash'." She asked, "Do you know what 'nash' is?"

[Urdu Translation]: It is narrated in Sahih Muslim from Abu Salama, who said: I asked Hazrat Aisha Siddiqa (may Allah be pleased with her) how much dowry the Prophet (peace and blessings be upon him) had fixed for his wives. She replied, "Twelve 'uqiyah' (forty dirhams per uqiyah) and one 'nash'."

1. Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Chapter on Mahr, Mujtabai Press Delhi, 1/3, 202; Radd al-Muhtar, Chapter on Mahr, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/62-361. Page 135 of 688

[अरबी अंश]: और यदि 'महरे-मिस्ल' (प्रचलित मेहर) उन दोनों (के दावों) के बीच है, तो दोनों शपथ लेंगे (और बेहतर यह है कि पति से शपथ शुरू की जाए; यदि वह इनकार करता है, तो दूसरे का दावा उस पर अनिवार्य हो जाता है)। यदि दोनों शपथ लेते हैं या प्रमाण प्रस्तुत करते हैं, तो निर्णय उसी के अनुसार (यानी महरे-मिस्ल के अनुसार) दिया जाएगा। [संक्षिप्त]। मैं कहता हूँ: यहाँ 'अल-दुर्र' की शब्दावली में एक कमी है जिसे अल-शामी ने इंगित किया है, और इस मामले का स्पष्टीकरण 'अल-खानिया', 'अल-हिंदिया' और अन्य में है। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

[उर्दू अनुवाद/व्याख्या]: पति के गवाहों को प्राथमिकता दी जाएगी यदि 'महरे-मिस्ल' (प्रचलित मेहर) पत्नी का समर्थन करता है, क्योंकि गवाही ज़ाहिर के खिलाफ बात को साबित करने के लिए होती है। और यदि 'महरे-मिस्ल' दोनों के दावों के बीच में है, तो दोनों से शपथ ली जाएगी (बेहतर है कि पहले पति की शपथ ली जाए; जो शपथ से इनकार करेगा, उस पर दूसरे का दावा अनिवार्य हो जाएगा)। और यदि दोनों ने शपथ ले ली या गवाह पेश कर दिए, तो न्यायाधीश 'महरे-मिस्ल' के आधार पर फैसला देगा। संक्षेपित पाठ समाप्त। मैं कहता हूँ (लेखक) कि यहाँ 'दुर्र' (अल-दुर्र अल-मुख्तार) की शब्दावली में एक कमी है, जिसकी ओर अल्लामा शामी ने ध्यान दिलाया है। इस मसले की व्याख्या 'खानिया', 'हिंदिया' आदि में है। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है (त)।

प्रश्न 11: बरेली से, नवाब मौलवी सुल्तान अहमद खान साहब द्वारा प्रेषित, 13 रमज़ान मुबारक 1310 हिजरी। हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पवित्र पत्नियों का मेहर कितना था? और हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का मेहर कितना था, दिरहम और दीनार की संख्या के साथ, और प्रचलित सिक्के के साथ उसकी तुलना क्या है? उस समय के वज़न के अनुसार दिरहम और दीनार का वज़न क्या है? कृपया स्पष्ट करें, पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: कायनात के सरदार (उन पर और उन सब पर श्रेष्ठ दरूद और पूर्ण सलाम हो) की सम्मानित पत्नियों और बेटियों का पवित्र मेहर पाँच सौ दिरहम से अधिक नहीं था।

[अरबी हदीस]: मुस्लिम ने अपनी सहीह में अबू सलमा से वर्णन किया है, उन्होंने कहा: मैंने हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से पूछा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मेहर कितना था? उन्होंने कहा, "अपनी पत्नियों के लिए उनका मेहर बारह 'उकिया' और एक 'नश' था।" उन्होंने पूछा, "क्या तुम जानते हो 'नश' क्या है?"

[उर्दू अनुवाद]: सहीह मुस्लिम में अबू सलमा से वर्णित है, उन्होंने कहा: मैंने हज़रत आयशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अपनी पत्नियों के लिए कितना मेहर तय किया था। उन्होंने उत्तर दिया, "बारह 'उकिया' (चालीस दिरहम प्रति उकिया) और एक 'नश' नियत फ़रमाया।"

1. दुर्र अल-मुख्तार शरह तनवीर अल-अबसार, मेहर का अध्याय, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/3, 202; रद्द अल-मुह्तार, मेहर का अध्याय, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/62-361। पृष्ठ 135 का 688

وان کان مہرالمثل بینھما تحالفا (والاولی البداءۃ بتحلیف الزوج فیھما نکل لزمہ دعوی الآخر) فان حلفا اوبرھنا قضی بہ (ای بمھر المثل) اہ ملتقطاً قلت وفی عبارۃ الدر ھھنا تقصیر نبہ علیہ الشامي وایضاح المسئلۃ فی الخانیۃ والھندیۃ وغیرھما۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ خاوند کے گواہ مقدم ہوں گے اگر مہر مثل بیوی کی تائید کرے کیونکہ گواہی خلاف ظاہر کو ثابت کرنے کے لئے ہوتی ہے، اور اگر مہر مثل دونوں کے دعوؤں کے بین بین ہے تو دونوں سے قسم لی جائے گی (بہتر ہے کہ پہلے خاوند کی قسم لی جائے، تو جو قسم سے انکار کرے اس پر دوسرے کا دعوٰی لازم ہو جائے گا) اور اگر دونوں نے قسم دے دی یا گواہ پیش کر دئے تو پھر قاضی مہر مثل پر فیصلہ دے اھ ملتقطاً قلت (میں کہتا ہوں کہ) یہاں دُر کی عبارت میں کوتاہی ہے جس پر علامہ شامی نے توجہ دلائی ہے اور مسئلہ کی وضاحت خانیہ اور ہندیہ وغیرہ میں ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۱۱: از بریلی مرسلہ نواب مولوی سلطان احمد خاں صاحب ۱۳ رمضان مبارک ۱۳۱۰ھ مہر ازواج مطہرات حضور سرور عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا کس قدر تھا؟ اور مہر حضرت فاطمہ رضی اللہ تعالٰی عنہا کا کس قدر مع تعداد درہم و دینار و تطبیق سکہ رائج الوقت ارشاد ہو اور وزن درہم و دینار موافق وزن اس وقت کے کیا ہے؟ وبینوا توجروا الجواب: عامہ ازواج مطہرات وبنات مکرمات حضور پُر نور سیّد الکائنات علیہ وعلیہن افضل الصلوٰۃ واکمل التحیات کا مہر اقدس پانچ سو درہم سے زائد نہ تھا۔

مسلم فی صحیحہ عن ابی سلمۃ قال سألت عائشۃ رضی اللہ تعالی عنھا کم کان صداق النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم قالت کان صداقہ لازواجہ ثنتی عشرۃ اوقیۃ ونش، قالت ا تدری ما النش، صحیح مسلم شریف میں ہے ابو سلمہ نے فرمایا کہ میں نے حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالٰی سے پوچھا کہ

حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے اپنی ازواج کیلئے بارہ اوقیہ (چالیس درہم فی اوقیہ) اور ایک نش مقرر فرمایا۔

1 درمختار شرح تنویرالابصار باب المهر مطبع مجتبائی دہلی ۱/۳۔ ۲۰۲، ردالمحتار باب المهر داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۶۲- ۳۶۱ Page 135 of 688

Fatawa Razawiyya - Volume 12

[Table content] Left Column (Arabic Text): 1. I said 'No'. She said 'half an Uqiyah', which is five hundred Dirhams. Ahmad, ad-Darimi, and the four [Sunan collectors] narrated from the Leader of the Believers, Umar al-Farooq al-A'zam (may Allah be pleased with him), who said: "I do not know that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) married any of his wives or gave any of his daughters in marriage for more than twelve Uqiyahs." 2. But Umm al-Mu'minin Umm Habiba bint Abi Sufyan, the sister of Amir Muawiyah (may Allah be pleased with them both), had a dowry of four thousand Dirhams according to one narration, as stated in Sunan Abi Dawud. In another narration, it was four thousand Dinars. 3. In al-Mustadrak, al-Hakim authenticated it and al-Dhahabi agreed with him. This does not contradict what was previously mentioned in the narrations of the Mother of the Believers and the Leader of the Believers (may Allah be pleased with them both), because these dowries were not set by the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), but rather by the King of Abyssinia, our master Najashi (may Allah be pleased with him).

Right Column (Urdu Translation of Point 1 & 3): 1. So you asked, 'Do you know what Nash is?' I said no, so he said: 'Nash refers to half an Uqiyah, so that makes a total of five hundred Dirhams.' Imam Ahmad, Darimi, and the four Sunan (Abu Dawud, Nasa'i, Tirmidhi, Ibn Majah) narrated from the Leader of the Believers, Umar Farooq (may Allah be pleased with him), that he said: 'I am not aware that the Prophet (peace and blessings be upon him) married his wives or daughters for more than twelve Uqiyahs.' (T) 3. As Imam Hakim authenticated it in the Mustadrak and Dhahabi considered it established, and it does not contradict what is narrated from the Mother of the Believers and Umar Farooq (may Allah be pleased with them both), because this dowry was not fixed by the Prophet (peace and blessings be upon him), but rather by the King of Abyssinia, our master Najashi (may Allah be pleased with him). (T)

[Bottom Text] And the holy dowry of Hazrat Batool Zahra (may Allah be pleased with her) was four hundred pieces of silver as mentioned in Al-Mirqat with certainty from Rawdat al-Ahbab and Al-Mawahib (as mentioned in Mirqat that Rawdat al-Ahbab and Mawahib have affirmed this. T). The weight of a Sharia Dirham is 3 Mashas and 5-1/8 grains of red silver, as we have established in the Zakat section.

[Footnotes] 1. Sahih Muslim, Kitab al-Nikah, Bab al-Sadaq, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/458. 2. Jami' al-Tirmidhi, Abwab al-Nikah, Amin Company Kutub Khana Rashidiya Delhi, 1/132. 3. Sunan Abi Dawud, Kitab al-Nikah, Bab al-Sadaq, Aftab-e-Alam Press Lahore, 1/287. 4. Al-Mustadrak lil-Hakim, Kitab al-Nikah, Mahr Umm Habiba, Dar al-Fikr Beirut, 2/181. 5. Mirqat al-Mafatih, Kitab al-Nikah, Second Section, Hadith 33, Maktaba Habibiyah Quetta, 6/360.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 12

[तालिका सामग्री] बायाँ कॉलम (अरबी पाठ): 1. मैंने कहा 'नहीं'। उन्होंने कहा 'आधा ओकिया', जो पाँच सौ दिरहम है। अहमद, दारिमी और चारों (सुनन संग्रहकर्ताओं) ने अमीरुल् मोमिनीन उमर फ़ारूक़े आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की कि उन्होंने फरमाया: "मुझे नहीं मालूम कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपनी किसी पत्नी से निकाह किया हो या अपनी किसी बेटी का निकाह बारह ओकिया से ज़्यादा पर किया हो।" 2. लेकिन उम्मुल मोमिनीन उम्म हबीबा बिन्त अबी सुफ़ियान, जो अमीर मुआविया (रज़ियल्लाहु अन्हुम) की बहन हैं, उनका मह्र एक रिवायत के अनुसार चार हज़ार दिरहम था, जैसा कि सुनन अबू दाऊद में है। दूसरी रिवायत में चार हज़ार दीनार था। 3. मुस्तदरक में इमाम हाकिम ने इसे सही कहा और ज़हबी ने इसे साबित माना। यह उम्मुल मोमिनीन और अमीरुल् मोमिनीन (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किए गए के खिलाफ नहीं है, क्योंकि ये मह्र अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने तय नहीं किए थे, बल्कि हबशा के बादशाह हमारे सरदार नजाशी (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने तय किए थे।

दायाँ कॉलम (पॉइंट 1 और 3 का उर्दू अनुवाद): 1. तो आपने पूछा, 'क्या तुम्हें मालूम है कि नश क्या होता है?' मैंने कहा नहीं, तो आपने फरमाया: 'नश आधे ओकिया को कहते हैं, तो यह कुल पाँच सौ दिरहम हुए।' इमाम अहमद, दारिमी और सुनन अरबा (अबू दाऊद, नसाई, तिर्मिज़ी, इब्ने माजा) ने अमीरुल् मोमिनीन उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत की कि उन्होंने फरमाया: 'मुझे नहीं पता कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपनी पत्नियों या बेटियों का निकाह बारह ओकिया से ज़्यादा पर किया हो।' (त) 3. जैसा कि मुस्तदरक में इमाम हाकिम ने इसकी तस्दीक की और ज़हबी ने इसे साबित माना, और यह उम्मुल मोमिनीन और उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत के खिलाफ नहीं है क्योंकि यह मह्र हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने तय नहीं किया था बल्कि हबशा के बादशाह हज़रत सैयदना नजाशी (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने तय किया था। (त)

[निचला पाठ] और हज़रत बतूल ज़हरा (रज़ियल्लाहु अन्हा) का मह्र-ए-अकदस चार सौ चाँदी था जैसा कि मिरक़ात में रौज़तुल अहबाब और मवाहिब के हवाले से यक़ीन के साथ ज़िक्र किया गया है (जैसा कि मिरक़ात में ज़िक्र किया गया कि रौज़तुल अहबाब और मवाहिब ने इस पर यक़ीन किया है। त)। शरीअत के दिरहम का वज़न 3 माशे और 5-1/8 रत्ती लाल चाँदी है, जैसा कि हमने ज़कात के अध्याय में सिद्ध किया है।

[पादलेख (Footnotes)] 1. सहीह मुस्लिम, किताबुन निकाह, बाबू अस्सदाक़, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 1/458. 2. जामिउत तिर्मिज़ी, अबवाबुन निकाह, अमीन कंपनी कुतुब ख़ाना रशीदिया दिल्ली, 1/132. 3. सुनन अबू दाऊद, किताबुन निकाह, बाबू अस्सदाक़, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, 1/287. 4. अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, किताबुन निकाह, मह्ह उम्म हबीबा, दारुल फ़िक्र बेरूत, 2/181. 5. मिरक़ातुल मफ़ातीह, किताबुन निकाह, फ़स्ले सानी, हदीस 33, मकतबा हबीबिया क्वेटा, 6/360.

पृष्ठ 136/688

فتاوی رضویه - جلددوازدہم

[جدول کا مواد] بایاں کالم (عربی متن): 1. قلت لا قالت نصف اوقية فتلك خمس مائة دراهم. احمد والدارمي والاربعة عن امیرالمؤمنین عمر الفاروق الاعظم رضی اللہ تعالی عنه قال ما علمت رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیه وسلم نکح شیئا من نسائه ولا انکح شیئا من بناته علی اکثر من اثنتی عشرة اوقية. 2. مگر ام المؤمنین ام حبیبه بنت ابی سفیان خواهر جناب امیر معاویہ رضی اللہ تعالی عنہم کہ ان کا مہر ایک روایت پر چار ہزار درہم جیسا کہ سنن ابی داؤد میں ہے۔ت) دوسری میں چار ہزار دینار تھا۔ 3. في المستدرك صححه الحاكم واقره الذهبي ولا يخالف هذا مامر من حديثی ام المؤمنین وامیر المؤمنین رضی اللہ تعالی عنهما فان هذه الامهار لم یکن من رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیه وسلم بل من ملك الحبشة سیدنا النجاشي رضی اللہ تعالی عنه۔

دایاں کالم (ترجمہ و تشریح): 1. تو آپ نے پوچھا کہ تمہیں معلوم ہے نش کیا ہوتا ہے، میں نے کہا نہیں، تو آپ نے فرمایا: نش نصف اوقیہ کو کہتے ہیں، تو یہ کل پانچو درہم ہوئے۔ امام احمد، دارمی اور سنن اربعہ (ابوداؤد، نسائی، ترمذی، ابن ماجہ) نے امیر المومنین عمر فاروق رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا کہ انہوں نے فرمایا حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے اپنی ازواج یا صاحبزادیوں کا نکاح بارہ اوقیہ سے زیادہ پر کیا ہو یہ مجھے معلوم نہیں۔ (ت) 3. جیسا کہ مستدرک میں امام حاکم نے اس کی تصحیح کی اور ذہبی نے اس کو ثابت مانا، اور یہ حضرت ام المومنین اور عمر فاروق رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے مروی کا مخالف نہیں ہے کیونکہ یہ مہر حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے مقرر نہیں کیا بلکہ حبشہ کے بادشاہ حضرت سیدنا نجاشی رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے مقرر کیا تھا۔ (ت)

[نچلا پیرا گراف] اور حضرت بتول زہرا رضی اللہ تعالیٰ عنہا کا مہر اقدس چار سو چاندی علی ماذکر فی المرقاۃ الجزم بہ عن روضۃ الاحباب والمواہب (جیسا کہ مرقاۃ میں ذکر فرمایا کہ روضۃ الاحباب اور مواہب نے اس پر جزم کیا ہے۔ت) درہم شرعی کا وزن ۳ ماشے ۵-۱/۸ سرخ چاندی ہے کما حققنا في الزكوة۔

[حواشی] 1۔ صحیح مسلم کتاب النکاح باب الصداق قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۴۵۸ 2۔ جامع الترمذی ابواب النکاح امین کمپنی کتب خانہ رشیدیہ دہلی ۱/ ۱۳۲ 3۔ سنن ابی داؤد کتاب النکاح باب الصداق آفتاب عالم پریس لاہور ۱/ ۲۸۷ 4۔ المستدرک للحاکم کتاب النکاح مہر ام حبیبہ دار الفکر بیروت ۲/ ۱۸۱ 5۔ مرقاۃ المفاتیح کتاب النکاح فصل ثانی حدیث۔ ۳۳ مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۶/ ۳۶۰

Fatawa Rizvia, Volume 12

From our Fatwas (as we have researched in the Book of Zakat of our Fatwas - Ed.), a Dinar is one Mithqal, which means four mashas of gold. This is the weight of 'seven' (sab'ah), meaning seven Mithqals are equal in weight to ten Dirhams. It is stated in Tanwir al-Absar that every ten dirhams weigh seven mithqals.[1] And in terms of value, one shari'i dinar was equal to ten dirhams.

In Radd al-Muhtar, citing al-Hidayah: "Every dinar is ten dirhams in Shariah."

It is said in al-Fath: "In Shariah, every dinar is valued at ten dirhams, as it was in the beginning."[2]

It is in Radd al-Muhtar that it is stated in Hidayah that every dinar is ten dirhams.

In Shariah, it is stated in Fath that the price of every dinar in Shariah was fixed at ten dirhams as it was in the beginning. (Ed.)

The local rupee here is 11 mashas and 2 surkhs, so a dirham is 7/25 of it. By calculation, a dirham is 7/25 of a rupee, which means that 7 rupees are equal to 25/7 dirhams, or one rupee is equal to 3-7/12 dirhams. Therefore, the niṣāb of silver, which is 200 dirhams, amounts to 56 7/12 rupees from this rupee. Purely, 50 dirhams of 'Malha' become 140, and for four hundred (400) mithqals, it is one hundred and sixty (160) rupees. Ten dirhams is the minimum amount of dower (mahr), which is 9/12 - 3/5 pies, meaning two rupees, approximately thirteen annas (12.75 annas) and the fifth part of a paisa. Four thousand dirhams here, according to the coinage, become one thousand one hundred and twenty (1120) rupees. And every dinar is ten dirhams, hence four thousand dinars are eleven thousand two hundred rupees. From this calculation, it becomes clear that in the sacred era of the Prophet, the price of gold was less than seven and a half rupees per tola, because when a dinar, i.e., four and a half mashas of gold, was ten dirhams, i.e., two rupees twelve annas and 9-3/5 pies, then by the calculation of four, one tola of gold was equal to 7/2-3/5 pies. These were the blessings of the world, besides the religious blessings which no one but Allah Almighty can count. "And if you should count the favor of Allah, you could not enumerate them."[3] (And if you count the blessings of Allah, you will not be able to count them - Ed.)

Problem 12: From Baroda, Gujarat, Kalan Mohalla, Bhoti ka Jhanpa, Nizampura. Sent by Umrao Mai daughter of Ghulam Hussain, 16 Rajab 1311 AH. A woman's dower is ten and a quarter thousand rupees. The man has stopped providing maintenance.

The woman has claimed her dower. In this situation, will the dower be granted to her or not? Explain and be rewarded.

---

[1] Durr-e-Mukhtar, Tanwir al-Absar, Chapter on Zakat al-Mal, Mujtabai Press, Delhi, 1/142 [2] Radd al-Muhtar, Chapter on Zakat al-Mal, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 31/2 [3] Al-Quran al-Karim, 16/18

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

हमारे फ़तवों में से (जैसा कि हमने अपने फ़तवों की किताब अल-ज़कात में इसकी तहक़ीक़ की है। - सं.) और दीनार एक मिस्काल यानी चार माशा सोना है, यही वजन 'सबआ' (सात) है यानी वजन में सात मिस्काल दस दिरम के बराबर हैं। तनवीर अल-अबसार में है कि प्रत्येक दस दिरम का वजन सात मिस्काल है।[1] और क़ीमत के आधार पर एक शरी'ई दीनार दस दिरम के बराबर था।

रद अल-मुह्तार में अल-हिदाया के हवाले से: "शरीअत में हर दीनार दस दिरम का है।"

अल-फ़तह में कहा गया है: "शरीअत में हर दीनार की क़ीमत दस दिरम तय की गई थी जैसा कि शुरुआत में था।"[2]

रद अल-मुह्तार में है कि हिदाया में है कि हर दीनार दस दिरम है।

शरीअत, फ़तह में फ़रमाया है कि शरीअत में हर दीनार की क़ीमत दस दिरम मुक़र्रर हुई जैसा कि इब्तिदा (शुरुआत) में था। (सं.)

यहाँ का रुपया 11 माशा 2 सुर्ख़ का है, तो दिरम इसका 7/25 है। गणना करने पर दिरम रुपये का 7/25 ठहरता है, जिसका परिणाम यह है कि 7 रुपये 25/7 दिरम के बराबर हैं या एक रुपया 3-7/12 दिरम के बराबर है। इसलिए, चांदी का निसाब जो कि 200 दिरम है, इस रुपये के हिसाब से 56 7/12 आता है। विशुद्ध रूप से, 'माल्हा' के50 दिरम 140 हो जाते हैं, और चार सौ (400) मिस्काल के एक सौ साठ (160) रुपये। दस दिरम महर की न्यूनतम राशि है जो 9/12 - 3/5 पाई के बराबर है, यानी दो रुपये, पौने तेरह आने और पैसे का पाँचवाँ हिस्सा। चार हज़ार दिरम यहाँ के सिक्के के अनुसार एक हज़ार एक सौ बीस (1120) रुपये हुए। और प्रत्येक दीनार दस दिरम का है, इसलिए चार हज़ार दीनार ग्यारह हज़ार दो सौ रुपये हुए। इस हिसाब से स्पष्ट हुआ कि पवित्र नबुवत के युग में सोने की क़ीमत साढ़े सात रुपये प्रति तोला से भी कम थी, क्योंकि जब दीनार यानी साढ़े चार माशा सोना दस दिरम यानी दो रुपये बारह आने और 9-3/5 पाई का था, तो चार के हिसाब से एक तोला सोना 7/2-3/5 पाई का हुआ। ये दुनिया की बरकतें थीं, धार्मिक बरकतों के अलावा, जिन्हें अल्लाह अज़्वजल के सिवा कोई नहीं गिन सकता। "और यदि तुम अल्लाह की नेमतों को गिनो, तो उन्हें शुमार न कर सकोगे।"[3] (और अगर अल्लाह की नेमतें गनो तो उन्हें गिन न सकोगे। - सं.)

मसला 12: बड़ौदा, गुजरात, मोहल्ला भूती का झांपा, निज़ामपुरा से। प्रेषक: उमराव माई पुत्री गुलाम हुसैन, 16 रजब 1311 हिजरी। एक महिला का महर सवा दस हज़ार रुपये है। पति ने खाना-खर्चा

(नान व नफ़क़ा) बंद कर दिया है। महिला ने महर का दावा किया है। क्या इस स्थिति में उसे महर दिलाया जाएगा या नहीं? स्पष्ट करें, पुण्य पाएँ।

---

[1] दुर्रे मुख़्तार, तनवीर अल-अबसार, बाब ज़कातुल् माल, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/142 [2] रद अल-मुह्तार, बाब ज़कातुल् माल, दार इह्या अल-तुरास अल-अरबी, बेरुत, 31/2 [3] अल-क़ुरआन अल-करीम, 16/18

من فتاونا (جیسا کہ ہم نے اپنے فتاوٰی کی کتاب الزکوٰۃ میں اس کی تحقیق کی ہے۔ ت) اور دینار ایک مثقال یعنی چار ماشے سونا، یہی وزن سبعہ ہے یعنی سات مثقال وزن میں برابر دس درہم کے، فی تنویر الابصار کل عشرۃ دراھم وزن سبعۃ مساقیل 1 (تنویر الابصار میں ہے کہ ہر دس کا وزن سات مثقال ہے۔ ت) اور باعتبار قیمت ایک دینار شرعی دس درہم کا تھا۔

فی ردالمحتار فی الھدایۃ کل دینار عشرۃ دراھم فی

ردالمحتار میں ہے کہ ہدایہ میں ہے کہ ہر دینار دس درہم ہے

الشرع قال فی الفتح ای یقوم فی الشرع بعشرۃ کذاکان فی الابتداء 2۔

شرع، فتح میں فرمایا ہے کہ شرع میں ہر دینار کی قیمت دس درہم مقرر ہوئی جیسا کہ ابتداء میں تھا۔ (ت)

یہاں کا روپیہ ۱۱ ماشہ ۲ سرخ ہے تو درہم اس کا ۲۵/۷ ہے کہ مجنس کرنے سے درہم ایک سو چھبیس روپیہ ۴۵۰ ہوا تو درہم روپے کا ۱/۲۶ ۴۵۰ یعنی ۲۵/۷ ٹھہرا جس کا حاصل یہ ہے کہ معہ ۷ روپے برابر ۲۵/۷ درہم کے یا ایک روپیہ برابر ۳- ۱۲/۷ درم کے، ولذا نصابِ فضہ کہ دوسو ۲۰۰ درم ہے اس درہمہ اس روپے سے ۵۶ ۷/۱۲ آتی ہے صما ۵۰ درم کے مالحہ ۱۴۰ ہوئے اور چار سو ۴۰۰ مثقال کے ایک سو ساٹھ ۱۶۰ روپے، دس درہم اقلِ مقدارِ مہر ہے عا ۹/۱۲- ۵/۳ پائی یعنی دو روپے پونے تیرہ آنہ اور پانچواں حصہ پیسے کا، چار ہزار درم کے یہاں کہ سکہ سے ایک ہزار ایک سو بیس ۱۱۲۰ روپے ہوئے، اور ہر دینار دس درہم کا ہے، لہٰذا چار ہزار دینار کے گیارہ ہزار دوسو روپے ۔ اس حساب سے ظاہر ہوا کہ زمانہ اقدس رسالت میں سونے کی قیمت ساڑھے سات روپے تولہ سے بھی کم تھی کہ جب دینار یعنی ساڑھے چار ماشہ سونا دس درم یعنی دو روپے بارہ آنے ۹- ۵/۳ پائی کا تھا تو بحسابِ اربعہ ایک تولہ سونا معہ ۷/۲- ۵/۳

پائی کا ہوا، یہ برکاتِ دنیا تھیں علاوہ برکاتِ دینیہ کے جن کا شمار اللہ عز وجل کے سوا کوئی نہیں کر سکتا وَ اِنۡ تَعُدُّوۡا نِعۡمَتَ اللّٰہِ لَا تُحۡصُوۡھَا 3 (اور اگر اللہ کی نعمتیں گنو تو انہیں شمار نہ کر سکو گے۔ت)

مسئلہ ۱۲: از بڑودہ گجرات کلاں محلہ بھوتی کا جھانپہ نظام پورہ مرسلہ امراؤ مائی بنت غلام حسین ۱۶ رجب ۱۳۱۱ھ عورت کا مہر سوا دس ہزار روپے کا ہے، مرد نے نان و نفقہ بند کر لیا ہے، عورت نے مہر کا دعوی کیا ہے، اس صورت میں مہر اسے دلایا جائے گا یا نہیں؟ بینوا توجروا

---

1 درمختار تنویر الابصار باب زکوۃ المال مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۴۲ 2 ردالمحتار باب زکوۃ المال دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۱/۲ 3 القرآن الکریم ۱۸/۱۶

Answer: If the dower was agreed to be 'prompt' (mu'ajjal), meaning it was to be given before the wife goes to the husband, or if a specific time period was fixed for it and that period has passed, then the woman can sue now and the dower will be made to be paid immediately. If no period was fixed, then the custom and habit of that city will be followed. If the local custom is that the dower is paid whenever the woman demands it, then the lawsuit is admissible and the dower should be paid now. However, if the custom is that the dower is demanded only when one of the spouses dies or if the husband divorces her, then it will be received at that time; a claim before that will not be heard. It is stated in 'Nuqaya':

| Al-mu'ajjal wal-mu'ajjal in bayyana fadhaalik wa illa fal-muta'arif[1] | If the duration for prompt (mu'ajjal) or deferred (mu'ajjal) dower has been stated, that is meant, otherwise, what is customary will be meant (T) |

The custom of our cities is this, so here the woman does not have the right to demand dower before divorce or death. Due to such custom, it is stated in 'Radd-ul-Muhtar', Book of Judiciary:

| Haqqu talabihi innama thabata laha ba'dal mawti wat talaqi[2] - wallahu ta'ala a'lam. | The wife's right to demand dower will be established after divorce or death. And Allah Almighty knows best (T) |

Question 13: 13 Shabaan-ul-Muazzam 1113 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: if at the time of marriage there was no clarification of prompt (mu'ajjal) and deferred (mu'ajjal) dower, then at what time will the dower become obligatory for the husband to pay?

Answer: It will become obligatory to pay when divorce occurs or one of the spouses dies. Before that, the woman cannot make a demand.

| Huwal muta'arafu fi biladina fi Raddil Muhtar haqqu talabihi innama thabata laha ba'dal mawti awit talaqi[3] la min waqtin nikahi - wallahu ta'ala a'lam. | This is customary in our region. It is in 'Radd-ul-Muhtar' that the wife's right to demand dower will be after divorce or death, not from the time of marriage. And Allah Almighty knows best (T) |

[1] Mukhtasar al-Wiqayah fi Masail al-Hidayah, Chapter on Minimum Dower, Noor Muhammad Karkhana Tijarat Kutub Karachi, p. 56 [2] Radd-ul-Muhtar, Book of

Judiciary, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 3/344 [3] Radd-ul-Muhtar, Book of Judiciary, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 3/344

उत्तर: यदि मेहर 'मुअज्जल' (अग्रिम) था, यानी पति के पास जाने से पहले देने का निर्णय हुआ था, या कोई निश्चित अवधि तय की गई थी कि इतने समय बाद दिया जाएगा और वह अवधि बीत गई, तो महिला अभी दावा कर सकती है और मेहर तुरंत दिलाया जाएगा। और यदि कोई अवधि निर्धारित नहीं थी, तो उस शहर के रीति-रिवाजों और आदतों का पालन किया जाएगा। यदि वहां का रिवाज यह है कि ऐसी स्थिति में जब महिला मांग करे तो उसे अदा किया जाता है, तो दावा सुनवाई योग्य है और मेहर अभी दिलाया जाए। और यदि रिवाज यह है कि ऐसी स्थिति में जब स्त्री या पुरुष में से किसी का निधन हो जाए या पुरुष तलाक दे दे, तो उस समय मेहर की मांग होती है, तो उसी समय मिलेगा, इससे पहले दावा नहीं सुना जाएगा। 'नुक़ाया' में है:

| अल-मुअज्जल वल-मुअज्जल इन बय्यना फज़ालिक व इल्ला फल-मुतआरिफ़[1] | मेहर मुअज्जल या मुअज्जल की अवधि बयान कर दी गई हो तो वही मुराद है वरना जो उर्फ़(रिवाज़) में हो वही मुराद होगा (त) |

हमारे शहरों का रिवाज यही है, इसलिए यहाँ महिला को तलाक या मृत्यु से पहले मेहर मांगने का अधिकार नहीं है। इसी रिवाज के कारण 'रद्दुल मुहतार', किताबुल कज़ा में है:

| हक्कु तलबीही इन्नमा थबत्ता लहा बादिल मौती वत तलाक़ी[2] - वल्लाहु तआला आलम। | पत्नी को मेहर मांगने का अधिकार तलाक या मौत के बाद साबित होगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है (त) |

प्रश्न १३: १३ शाबान-उल-मुअज्जम १११३ हिजरी धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि यदि निकाह के समय मुअज्जल (त्वरित) और मुअज्जल (विलंबित) मेहर का स्पष्टीकरण नहीं हुआ हो, तो पति पर मेहर किस समय देय होगा?

उत्तर: जब तलाक हो जाए या पति-पत्नी में से किसी की मृत्यु हो जाए, तब यह देय होगा। इससे पहले महिला मांग नहीं कर सकती।

| हुवल मुतआरिफ़ू फ़ी बिलादिना फ़ी रद्दुल मुहतार हक्कु तलबीही इन्नमा थबत्ता लहा बादिल मौती अवित तलाक़ी[3] ला मिन वक्तिन निकाही - वल्लाहु तआला आलम। | हमारे क्षेत्र में यही प्रचलित है,

'रद्दुल मुहतार' में है कि पत्नी को मेहर मांगने का अधिकार तलाक या मौत के बाद होगा, निकाह के समय से नहीं होगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है (त) |

[1] मुख्तसर अल-विक़ाया फ़ी मसाइल अल-हिदाया, मेहर के न्यूनतम अध्याय, नूर मुहम्मद कारख़ाना तिज़ारत कुतुब कराची, पृ. ५६ [2] रद्दुल मुहतार, किताब अल-कज़ा, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी बेरूत, ३/३४४ [3] रद्दुल मुहतार, किताब अल-कज़ा, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी बेरूत, ३/३४४

الجواب: اگر مہر پیشگی یعنی شوہر کے پاس جانے سے پہلے دینا قرار پایا تھا کوئی میعاد معین ٹھری تھی کہ اتنی مدت کے بعد دیا جائے گا اور وہ مدت گزر گئی جب تو عورت ابھی دعوی کر سکتی ہے اور مہر فوراً دلایا جائے گا، اور اگر کچھ مدت مقرر نہ ہوئی تھی تو وہاں اُس شہر کے عرف و عادت پر عمل ہو گا، اگر وہاں کا عرف یہ ہے کہ ایسی صورت میں عورت جب طلب کرے ادا کیا جاتا ہے تو دعوی قابل سماعت ہے مہر ابھی دلایا جائے، اور اگر عرف یہ ہے کہ ایسی حالت میں جب مرد و عورت میں کسی کا انتقال ہو یا مرد طلاق دے دے اُس وقت مہر کا مطالبہ ہوتا ہے تو اُسی وقت ملے گا اس سے پہلے دعوی نہ سنا جائے گا۔ نقایہ میں ہے :

| المعجل والمؤجل ان بینا فذاك والا فالمتعارف-[1] | مہر معجل یا مؤجل کی مدت بیان کردی گئی ہو تو وہی مراد ہے ورنہ جو عرف میں ہو وہی مراد ہو گا (ت) |

ہمارے شہروں کا عرف یہی ہے تو یہاں عورت کو پیش از طلاق یا موت مطالبہ مہر کا اختیار نہیں، ایسے ہی عرف کے سبب ردالمحتار کتاب القضا میں ہے :

| حق طلبہ انما ثبت لھا بعد الموت والطلاق[2]- واللہ تعالٰی اعلم۔ | بیوی کو مہر کے مطالبہ کا حق طلاق یا موت بعد ثابت ہو گا۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت) |

مسئلہ ۱۳: ۱۳ شعبان المعظم ۱۱۱۳ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ اگر بوقت نکاح تصریح مہر معجل و مؤجل نہیں ہوئی تو کس وقت میں مہر ذمہ شوہر واجب الادا ہو گا ؟

الجواب: جب طلاق یازن و شوہر میں کسی کی موت واقع ہو اس وقت واجب الادا ہو گا اس سے پہلے عورت مطالبہ نہیں کر سکتی،

| هو المتعارف فی بلادنا فی رد المحتار حق طلبه انما ثبت لها بعد الموت او الطلاق[3]- لا من وقت النکاح- واللہ تعالٰی اعلم- | ہمارے علاقہ میں یہی متعارف ہے، ردالمحتار میں ہے کہ بیوی کو مہر کے مطالبے کا حق طلاق یا موت کے بعد ہو گا، نکاح کے وقت سے نہیں ہو گا ۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت) |

[1] مختصر الوقایة فی مسائل الہدایة فصل اقل المہر نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ص ۵۶ [2] ردالمحتار کتاب القضاء دار احیاء التراث العربی بیروت ۳/ ۳۴۴ [3] ردالمحتار کتاب القضاء دار احیاء التراث العربی بیروت ۳/ ۳۴۴

Fatawa Razawiya Volume 12

Question 14: From Baroda, 1st Platoon, 3rd Company, House of Sheikh Imam Subedar, sent by Rahmat Bi, 22nd Zil-Hijjah 1311 AH. What is the ruling of the Muhammadi Hanafi school of law in response to this question: My dower (mehr) was seven hundred rupees; I forgave my husband for it. Did I do a good deed or not? Explain and you will be rewarded.

The Answer: Indeed, you did a good deed and there is hope for a great reward in it, God willing. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says:

"Whoever gives respite to his debtor or waives the debt for him will be in the shade of the Throne on the Day of Resurrection." — Narrated by Imam Ahmad and Muslim from Abu Huraira (may Allah be pleased with him) and Imam Al-Baghawi in 'Sharh al-Sunnah' from Abu Qatada (may Allah be pleased with him), and he said this is a 'Hasan' (good) hadith.

(One who gives time to his debtor or forgives him will be under the shade of the Throne on the Day of Judgment. (Imam Ahmad and Imam Muslim narrated it from Abu Huraira, and Imam Baghawi narrated it in Sharh al-Sunnah from Abu Qatada, stating it is a Hasan Hadith. - T))

Among the previous nations, there was a sinful man who used to forgive his debtors. When he died, Allah Almighty forgave his sins. (Narrated by the two Sheikhs [Bukhari and Muslim] from Hudhaifa, may Allah be pleased with him). And He granted him a place in Paradise. (They narrated it from him and from Abu Mas'ud, may Allah be pleased with them both). The Lord Almighty said: "When he was forgiving towards his debtor, it is more fitting for Me to be forgiving." (Narrated by Muslim from Abu Mas'ud and from 'Uqba ibn 'Amir, may Allah be pleased with them both, all from the Prophet, peace and blessings of Allah be upon him). And Allah Almighty knows best.

Question 15: What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid's daughter, named Hinda, who is a minor...

1. Musnad Imam Ahmad, Hadith of Abu Qatada al-Ansari, Dar al-Fikr, 5/308.
2. Sahih Muslim, Book of Musaqat and Muzara'at, Chapter on Respite for the Debtor in Hardship, etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 18/2.
3. Sahih Muslim, Book of Musaqat and Muzara'at, Chapter on Respite for the Debtor in Hardship, etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 18/2.

4. Sahih Muslim, Book of Musaqat and Muzara'at, Chapter on Respite for the Debtor in Hardship, etc., Qadimi Kutub Khana, Karachi, 18/2.

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

मसाला 14: बड़ौदा से, पहली पलटन, तीसरी कंपनी, मकान शेख इमाम सूबेदार, प्रेषक रहमत बी, 22 ज़िल-हिज्जा 1311 हिजरी। शरह मोहम्मदी हनफ़िया मज़हब का इस सवाल के जवाब में क्या हुक्म है: मेरा मेहर सात सौ रुपये था; मैंने अपने शौहर को माफ़ कर दिया। मैंने नेक काम किया या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

अल-जवाब (उत्तर): बेशक आपने नेक काम किया और इसमें बड़े सवाब की उम्मीद है, इंशाअल्लाह तआला। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

"जो अपने कर्ज़दार को मोहलत दे या उसे माफ़ कर दे, वह कयामत के दिन अर्श के साये में होगा।" — इसे इमाम अहमद और मुस्लिम ने अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से और इमाम अल-बगवी ने 'शरह अल-सुन्नाह' में अबू कतादा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है, और उन्होंने कहा कि यह 'हसन' हदीस है।

(जो अपने कर्ज़दार को मोहलत दे या माफ़ कर दे वह कयामत के दिन अर्श के साये में हो। (इसे इमाम अहमद और इमाम मुस्लिम ने अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया है और इमाम बग़वी ने शरह अल-सुन्नाह में अबू क़तादा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया और कहा यह हदीस हसन है।))

पिछली उम्मतों में एक गुनाहगार आदमी अपने कर्ज़दारों को माफ़ कर दिया करता था। जब वह मरा, तो अल्लाह तआला ने उसके गुनाहों को माफ़ कर दिया। (इसे शैख़ैन [बुखारी और मुस्लिम] ने हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया है)। और उसे जन्नत में जगह बख्शी। (उन्होंने उससे और अबू मसूद रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत किया है)। मौला तआला ने फ़रमाया: "जब यह अपने कर्ज़दार को माफ़ करता था, तो मुझे ज़्यादा लायक़ है कि मैं माफ़ फ़रमाऊँ।" (इसे मुस्लिम ने अबू मसूद और उकबा बिन आमिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत किया है, इन सब ने नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत किया है)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसाला 15: उलेमा-ए-दीन क्या फ़रमाते हैं इस मसले में कि ज़ैद ने अपनी बेटी मुसम्मात हिंदा, जो नाबालिग है...

1. मुसनद इमाम अहमद, हदीस अबू क़तादा अंसारी, मतबअ दार अल-फ़िक्र, 5/308

2. सहीह मुस्लिम, किताब अल-मुसाक़ात व अल-मुज़ाराअत, बाब इन्ज़ार अल-मुअसिर अलख, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 18/2
3. सहीह मुस्लिम, किताब अल-मुसाक़ात व अल-मुज़ाराअत, बाब इन्ज़ार अल-मुअसिर अलख, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 18/2
4. सहीह मुस्लिम, किताब अल-मुसाक़ात व अल-मुज़ाराअत, बाब इन्ज़ार अल-मुअसिर अलख, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 18/2

فتاوی رضویہ جلد دو ازدہم

مسئلہ ۱۴: از بڑودہ پہلی پلٹن تیسری کمپنی مکان شیخ امام صوبہ دار مرسلہ رحمت بی ۲۲ ذوالحجہ ۱۳۱۱ھ شرع محمدی حنفیہ مذاہب کا اس سوال کے جواب میں کیا حکم ہے میرا مہر سات سو روپے کا تھا میں نے اپنے شوہر کو معاف کر دیا میں نے نیک کام کیا یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: بیشک نیک کام کیا اور اس میں بڑے ثواب کی امید ہے ان شاء اللہ تعالیٰ۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

من نفس عن غریمه او محی عنه کان في ظل العرش یوم القیامة ۔ رواه الامام احمد ومسلم عن ابي هریرة رضي الله تعالی عنه والامام البغوی شرح السنة عن ابی قتادة رضي الله تعالی عنه وقال هذا حدیث حسن۔

جو اپنے مدیون کو مہلت دے یا معاف کر دے قیامت کے دن عرش کے سایہ میں ہو۔ (اسے امام احمد اور امام مسلم نے ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا ہے اور امام بغوی نے شرح السنۃ میں ابو قتادہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا اور کہا یہ حدیث حسن ہے۔ت)

اگلی امتوں میں ایک گنہگار آدمی اپنے مدیونوں سے درگزر کرتا تھا جب وہ مرا اللہ تعالیٰ نے اس کے گناہوں سے درگزر فرمائی رواہ الشیخان عن حذیفة رضی الله تعالی عنه (اس کو بخاری اور مسلم نے حذیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا ہے۔ت) اور اسے جنت میں جگہ بخشی رویاه عنه وعن ابی مسعود رضي الله تعالی عنهما (انہوں نے اس سے اور ابو مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کیا ہے۔ت) مولیٰ تعالیٰ نے فرمایا: جب یہ اپنے مدیون سے درگزر کرتا تھا تو مجھے زیادہ لائق ہے کہ درگزر فرماؤں رواہ مسلم عن ابی مسعود وعن عقبة بن عامر رضی الله

تعالی عنهما کلهم عن النبی صلی اللہ تعالی علیه وسلم (اس کو مسلم نے ابو مسعود اور عقبہ بن عامر رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کیا ہے ان سب نے نبی پاک صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے روایت کیا ہے۔ت) واللہ تعالی اعلم۔

مسئلہ ۱۵: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی دختر مسماۃ ہندہ صغیرہ نابالغہ کا

1 مسند امام احمد حدیث ابوقاتادہ انصاری مطبع دار الفکر ۵/۳۰۸ 2 صحیح مسلم کتاب المساقاۃ والمزارعۃ فصل انظار المعسر الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱۸/۲ 3 صحیح مسلم کتاب المساقاۃ والمزارعۃ فصل انظار المعسر الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱۸/۲ 4 صحیح مسلم کتاب المساقاۃ والمزارعۃ فصل انظار المعسر الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱۸/۲

Fatawa-e-Razvia, Volume 12

The marriage was intended to be performed with 'Amr. At the time of marriage, the marriage representative (wakil-e-nikah) stated the dower (mahr) amount to be ten thousand rupees and two red dinars. Upon this, people from 'Amr's side said that the dower amount is too much; 'Amr's status is not such that he can even pay a tenth of it; the dower amount should be reduced. The marriage representative replied that he does not have the authority to reduce the dower amount, but this dower is not something that would be taken or given during the lifetime of both. Meanwhile, the marriage was solemnized upon this dower, and Hindah came from her father's house and stayed at 'Amr's house for two or three months. However, because Hindah was a minor and prepubescent, 'Amr did not have physical intimacy or intercourse with her. Afterwards, Zaid took Hindah to his house without 'Amr's consent and now does not allow her to come to 'Amr's house. On behalf of Hindah, acting as her guardian due to her minority, he claims a part of the dower by relinquishing the rest. In this situation, will the dower be made to be paid by 'Amr or not? Clarify and be rewarded.

The Answer: In dower, when no condition is made that the whole or a certain amount will be taken in advance (which is called *Mu'ajjal* - prompt), nor is any period fixed for its payment, for example, a year or two, or whatever is decided (which is called *Mu'ajjal* - deferred), then it will depend on the custom of the city. In a city where it is common practice that, for example, half or a quarter or some portion is taken in advance even without explicit mention of promptness, then that much must be given in advance. And where the custom is that it is not taken or given without death or divorce, then as long as either of the spouses does not die or divorce occurs, the right to demand will not be given. It is stated in *Mukhtasar al-Wiqaya*:

Prompt and deferred dower: if specified, then that; otherwise, what is customary.	**If the period for prompt and deferred dower is stated, then it is better; otherwise, the customary meaning will be intended. (T)**

In our lands, general dowers are usually void of any mention of promptness or deferment, and the custom is that the obligation of its payment is kept contingent upon death or divorce. Therefore, in the questioned case, even if the marriage representative had not explicitly mentioned that this is not the dower to be taken or given during lifetime, still, the father of Hindah during her minority, and Hindah herself after reaching puberty, cannot demand any part of the dower from 'Amr until death or divorce occurs. It is stated in *Radd al-Muhtar*:

"The right to demand it is only established for her after death or divorce, not from the time of marriage."	**The wife's right to demand dower will be after death or divorce, not from the time of marriage. (T)**

^1 *Mukhtasar al-Wiqaya fi Masa'il al-Hidaya*, Chapter on Minimum Dower, Nur Muhammad Karkhana Tijarat Kutub Karachi, p. 56. ^2 *Radd al-Muhtar*, Book of Judiciary, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 4/344.

फतावा रिज़विया, जिल्द 12

निकाह अम्र के साथ करना चाहा, वक्त-ए-निकाह के वकील-ए-निकाह ने तादाद-ए-महर की मब्लग दस हज़ार रुपये और दो दीनार-ए-सुर्ख़ ज़ाहिर की, इस पर अम्र की तरफ़ से लोगों ने कहा कि तादाद-ए-महर बहुत है, अम्र की हैसियत इतनी भी नहीं कि दसवां हिस्सा इसका अदा कर सके तादाद-ए-महर कम करनी चाहिये, वकील-ए-निकाह ने जवाब दिया कि तादाद-ए-महर कम करने का मुझे इख्तियार नहीं है मगर ये महर ऐसा नहीं है जो दोनों की ज़िन्दगी में लिया दिया जाए, जबकि इस महर पर निकाह हो गया और हिन्दह बाप के घर से आकर अम्र के घर दो तीन महीने रही मगर बवजह सगीरा व नाबालेगा होने हिन्दह के अम्र को इस्तमताअ व वती नहीं हुआ बादहु, ज़ैद हिन्दह को बिला मरज़ी अम्र के अपने घर ले गया और अब अम्र के घर नहीं आने देता है और दावा-ए-बाज़ महर का बह तर्कए-बाज़ महर के मिंजानिब हिन्दह को बुलायत पाने बवजह नाबालेगी हिन्दह के करता है पस इस सूरत में महर अम्र से दिलाया जाएगा या नहीं? बैनू तूजिरू।

अल-जवाब: महर में जब न ये शर्त की जाए कुल या इस कदर पेशगी लेंगे जिसे मुअज्जल (prompt) कहते हैं, न उसके अदा के लिये कोई मीआद मुअय्यन की जाए, मसलन साल दो साल, या जो करार पाए, जिसे मुअज्जल (deferred) कहते हैं, तो वो उर्फ़ए-बलद पर रहेगा, जिस शहर में आम तौर पर ये रिवाज हो कि मसलन निस्फ़ या रुबअ या किसी कदर बिग़ैर तसरीह-ए-ताजील के भी पेशगी लेते हैं वहां इतना पेशगी देना होगा, और जहाँ उर्फ़ यूँ है कि बे-मौत या तलाक़ लेना देना नहीं होता वहाँ जब तक ज़ौजैन में किसी का इंतकाल या तलाक़ वाकई न हो इख्तियार-ए-मुतालबा न देंगे। मुख़्तसरुल विक़ाया में है:

अल-मुअज्जलु वल मुअज्जुलु इन बय्यना फ़ज़ाक व इल्ला फल मुतआरिफ़- 1

अगर महर मुअज्जल व मुअज्जल की मुद्दत बयान की गई हो तो बेहतर वरना मुतआरिफ़ मुराद होगा। (त)

हमारे बिलाद में आम महूर बयान-ए-ताजील व ताजील से खाली होते हैं और रिवाज ये है कि उसके लुज़ूम-ए-अदा को मौत या तलाक़ पर मौकूफ़ रखा जाता है, पस सूरत-ए-मस्ऊला में अगर वकील-ए-निकाह इस मज़मून की तसरीह भी न करता कि ये वो महर नहीं जो ज़िन्दगी में लिया दिया जाए ताहम पिदर-ए-हिन्दह बहालत-ए-नाबालेगी और खुद हिन्दह बाद बुलूग ता-वक़्तिके मौत या तलाक़ न हो अम्र से किसी जुज़्व-ए-महर का मुतालबा नहीं कर सकते, रद्दुल मुहतार में है:

हक़्क़ु तलबा इन्नमा सबाता लहा बादुल मौत औ अत-तलाक़ ला मिन वक़्तुन निकाह- 2	**बीवी को महर के मुतालबे का हक़ मौत या तलाक़ के बाद होगा, निकाह के वक्त से नहीं होगा। (त)**

^1 मुख़्तसरुल विक़ाया फ़ी मसाइलुल हिदाया, फ़स्ल अक़ल्लुल महर, नूर मुहम्मद कारखाना तिजारत कुतुब कराची, पृ. 56 ^2 रद्दुल मुहतार, किताबुल कज़ा, दार इहया अत-तुरास अल-अरबी बैरुत, 4/344

पृष्ठ 140/688

نکاح عمرو کے ساتھ کرنا چاہا، وقت نکاح کے وکیلِ نکاح نے تعداد مہر کی مبلغ دس ہزار روپے اور دو دینار سرخ ظاہر کی، اس پر عمرو کی طرف سے لوگوں نے کہا کہ تعداد مہر کی بہت ہے، عمرو کی حیثیت اتنی بھی نہیں کہ دسواں حصہ اس کا ادا کر سکے، تعداد مہر کی کم کرنا چاہئے، وکیلِ نکاح نے جواب دیا کہ تعدادِ مہر کم کرنے کا مجھ کو اختیار نہیں ہے مگر یہ مہر ایسا نہیں ہے جو دونوں کی زندگی میں لیا دیا جائے، جبکہ اس مہر پر نکاح ہو گیا اور ہندہ باپ کے گھر سے آکر عمرو کے گھر دو تین مہینے رہی مگر بوجہ صغیرہ و نابالغہ ہونے ہندہ کے عمرو کو استمتاع و وطی نہیں ہوا بعدہ، زید ہندہ کو بلا مرضی عمرو کے اپنے گھر لے گیا اور اب عمرو کے گھر نہیں آنے دیتا ہے اور دعویٰ بعض مہر کا بہ ترک بعض مہر کے منجانب ہندہ کو بولایت پانے بوجہ نابالغی ہندہ کے کرتا ہے پس اس صورت میں مہر عمرو سے دلایا جائے گا یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: مہر میں جب نہ یہ شرط کی جائے کُل یا اس قدر پیشگی لیں گے جسے معجل کہتے ہیں، نہ اُس کے ادا کے لئے کوئی میعاد معین کی جائے، مثلاً سال دوسال، یا جو قرار پائے، جسے مؤجل کہتے ہیں، تو وہ عرفِ بلد پر رہے گا، جس شہر میں عام طور پر یہ رواج ہو کہ مثلاً نصف یا ربع یا کسی قدر بغیر تصریح تعجیل کے بھی پیشگی لیتے ہیں وہاں اتنا پیشگی دینا ہوگا، اور جہاں عرف یوں ہے کہ بے موت یا طلاق لینا دینا نہیں ہوتا وہاں جب تک زوجین میں کسی کا انتقال یا طلاق واقع نہ ہو اختیارِ مطالبہ نہ دیں گے۔ مختصر الوقایہ میں ہے:

المعجل والمؤجل ان بينا فذاك والا فالمتعارف۔ ۱

اگر مہر معجل و مؤجل کی مدت بیان کی گئی ہو تو بہتر ورنہ متعارف مراد ہوگا۔ (ت)

ہمارے بلاد میں عام مہور بیان تعجیل و تا جیل سے خالی ہوتے ہیں اور رواج یہ ہے کہ اُس کے لزومِ ادا کو موت یا طلاق پر موقوف رکھا جاتا ہے، پس صورتِ مسئولہ میں اگر وکیلِ نکاح اس مضمون کی تصریح بھی نہ کرتا کہ یہ وہ مہر نہیں جو زندگی میں لیا دیا جائے تاہم پدرِ ہندہ بحالتِ نابالغی اور خود ہندہ بعد بلوغ تا وقتیکہ موت یا طلاق نہ ہو عمرو سے کسی جزوِ مہر کا مطالبہ نہیں کر سکتے، ردالمحتار میں ہے:

حق طلبہ انما ثبت لھا بعد الموت او الطلاق لامن وقت النکاح- ۲

بیوی کو مہر کے مطالبے کا حق موت یا طلاق کے بعد ہوگا، نکاح کے وقت سے نہیں ہوگا۔ (ت)

1۸ مختصر الوقایۃ فی مسائل الہدایۃ فصل اقل المھر نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ص ۵۶

2۸ ردالمحتار کتاب القضاء دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۴۴/۴

Fatawa Razawiyya - Volume 12

...here, where the marriage representative (wakil) at the time of marriage clearly specified this content, all the more so, no one has the right to make a demand. And Allah, the Glorified and Exalted, knows best.

Problem 16: What do the scholars of religion say regarding this matter: A woman who was pregnant from adultery (zina) was married to a non-adulterer who was unaware of her pregnancy. Is this marriage valid or not? And is the man's excuse that he married thinking she was a virgin and not pregnant sufficient to waive the mahr (dowry)? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: In the asked case, the marriage is valid and there is no need to remarry now. However, since the pregnancy is not from this man, it is not permissible for him to have intercourse or its preliminaries with this woman before childbirth. It is stated in Durr al-Mukhtar:

[Arabic Passage]: "Marriage with a woman pregnant from adultery is valid, but not marriage with a woman pregnant from someone else [legally], i.e., other than adultery, because the lineage [of the child] would be established, whether from a Harbi (non-Muslim in state of war) or its master if he acknowledges it. Although marriage with a woman pregnant from adultery is permissible, intercourse and its preliminaries are forbidden until she gives birth."

And the excuse that "I married her thinking she was a virgin and not pregnant" will not waive the mahr, as compatibility (kafa'ah) is not considered from the side of the woman. It is stated in the aforementioned book:

[Arabic Passage]: "It [kafa'ah] is not considered from her side because the husband is the one who 'spreads the bed', so the low status of the bed does not cause him anger. This is the consensus of all in the correct view. And Allah Exalted knows best."

Problem 17: From the collection of inquiries by Mawlawi Barakat Ahmad Sahib, Civil Advocate. Respected Maulana, may your grace endure, after formal greetings, I present a Shariah matter, please advise: it is this...

---

1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Prohibited Relations, Mujtabai Press, Delhi, 1/189
2. Durr al-Mukhtar, Chapter on Kafa'ah (Compatibility), Mujtabai Press, Delhi, 1/194

फ़तावा रज़विया - जिल्द बारहवीं

...यहाँ कि निकाह के वकील ने निकाह के समय इस विषय को स्पष्ट रूप से स्पष्ट कर दिया था, इसलिए और भी बढ़कर किसी को माँग करने का अधिकार नहीं है। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है।

मसला १६: धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: एक औरत जो व्यभिचार (ज़िना) से गर्भवती थी, उसका निकाह एक ऐसे पुरुष से हो गया जो उसके गर्भ से अनजान था। क्या यह निकाह जायज़ है या नहीं? और क्या पुरुष का यह बहाना कि मैंने उसे कुँवारी समझकर निकाह किया था न कि गर्भवती, महर (दहेज) माफ़ करने के लिए पर्याप्त है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य पाएँ।

अल-जवाब: पूछे गए मामले में निकाह सही है, अब दोबारा निकाह करने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन जिस स्थिति में गर्भ इस पुरुष से नहीं है, तो उसके लिए प्रसव (बच्चे के जन्म) से पहले इस औरत के साथ संभोग और उसके पूर्वाभास जायज़ नहीं हैं। दुर्रे-मुख़्तार में है:

[अरबी अनुच्छेद]: व्यभिचार से गर्भवती का निकाह सही है, लेकिन व्यभिचार के अलावा किसी और (वैध माध्यम) से गर्भवती का निकाह सही नहीं है क्योंकि उसका वंश (नसब) साबित होगा, चाहे वह हर्बी (दुश्मन) से हो या उसके मालिक से जब वह स्वीकार कर ले। हालाँकि व्यभिचार से गर्भवती औरत से निकाह जायज़ है, लेकिन संभोग और उसके पूर्वाभास तब तक हराम हैं जब तक कि वह बच्चे को जन्म न दे दे।

और यह बहाना कि "मैंने उसे कुँवारी समझकर निकाह किया था न कि गर्भवती", महर को ख़त्म नहीं करेगा क्योंकि औरत की तरफ से कफ़ाअत (बराबरी/योग्यता) का विचार नहीं किया जाता। उपर्युक्त पुस्तक में है:

[अरबी अनुच्छेद]: उसकी (औरत की) तरफ से [कफ़ाअत का] विचार नहीं किया जाता क्योंकि पति 'बिछौना बिछाने वाला' (बिस्तर का उपयोग करने वाला) है, इसलिए बिस्तर का निम्न स्तर उसे क्रोधित नहीं करता। सही मत में इस पर सबका इत्तेफ़ाक (सहमति) है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला १७: मौलवी बरकत अहमद साहब, वक़ील दीवानी के संग्रह से। मौलाना साहब, आपकी कृपा बनी रहे, सलाम-ए-मसनून के बाद हाज़िर हूँ, एक शरई मसला बता दीजिए, वह यह है...

1. दुर्रे-मुख़्तार, फ़सल फ़िल मुहर्रमात, मतबा मुजतबाई दिल्ली, १/१८९
2. दुर्रे-मुख़्तार, बाब अल-कफ़ाअत, मतबा मुजतबाई दिल्ली, १/१९४

पृष्ठ १४१ / ६८८

یہاں کہ وکیلِ نکاح نے وقتِ نکاح اس مضمون کی صاف تصریح کردی بدرجہ اولٰی کسی کو اختیارِ مطالبہ نہیں۔ واللہ سبحانہ و تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۶: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت کا کہ زنا سے حاملہ تھی نکاح غیر زانی سے کہ اسے اس کے حمل سے اطلاع نہ تھی ہو گیا، آیا یہ نکاح جائز ہے یا نہیں؟ اور یہ عذرِ مرد کا کہ میں نے باکرہ سمجھ کر نکاح کیا تھا نہ حاملہ، اسقاطِ مہر کے لئے کافی ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: صورتِ مسئولہ میں نکاح صحیح ہے اب نکاح کرنے کی ضرورت نہیں، مگر جس صورت میں حمل اس مرد سے نہیں رہا تو اسے قبل از وضع حمل مباشرت اور اس کے دوائی اس عورت کے ساتھ جائز نہیں۔ درمختار میں ہے:

(عربی): وصح نکاح حبلی من زنا لا حبلی من غیرہ ای الزنا لثبوت نسبہ ولو من حربی او سیدھا المقربہ وان حرم وطؤھا و دواعیہ حتی تضع ۱۔ (اردو): زنا سے حاملہ کا نکاح صحیح ہے غیر زنا سے حاملہ کا نکاح صحیح نہیں کیونکہ اسکی نسب ثابت ہوگی خواہ حربی سے یا مالک سے جب وہ اقرار کرے اگرچہ زنا کی حاملہ سے نکاح جائز مگر جماع اور دوائی حرام ہیں جب تک وہ بچہ کو جنم نہ دے۔ (ت)

اور یہ عذر کہ میں نے باکرہ سمجھ کر نکاح کیا تھا نہ حاملہ، مہر کو ساقط نہ کرے گا کہ کفاءت عورت کی طرف سے معتبر نہیں۔ کتاب مذکور میں ہے:

(عربی): لا تعتبر من جانبها لان الزوج مستفرش فلاتغیظہ دناءۃ الفراش وھذا اعند الکل فی الصحیح ۲۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ (اردو): عورت کی طرف سے کفاءت نہیں کیونکہ خاوند کے لئے بیوی بستر بنتی ہے تو اسے کمتر مفروش سے رنج و غیظ نہیں آتا۔ صحیح مذہب میں اس پر سب کا اتفاق ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۱۷: از ذخیرہ مسئولہ مولوی برکات احمد صاحب وکیل دیوانی مولانا صاحب دام عنایتکم، سالم مسنون کے بعد عارض ہوں، ایک مسئلہ شرعی بتادیجئے، وہ یہ ہے

---

1. درمختار فصل فی المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۸۹
2. درمختار باب الکفاءۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۴

Fatawa Razawiyya | Volume 12

Question: When does the Mahr (dower) become obligatory? If it is Mu'ajjal (prompt), then at what time? Is Khalwat-e-Sahiha (valid retirement) necessary for Mahr or not? And what is Khalwat-e-Sahiha called, what is its definition? Please explain and be rewarded.

The Answer:

Mahr Mu'ajjal (prompt dower) is that dower or portion of dower whose immediate payment has been agreed upon, whether by virtue of a condition mentioned in the marriage contract (Nikah) itself, or a condition for promptness was agreed upon after the contract, or by virtue of custom, as long as that condition does not contradict what is correct. This dower becomes payable immediately, to the extent that before its payment, the husband cannot touch the woman without her consent, nor can he take her home (Rukhsati). And Mu'ajjal (deferred dower) is that for which a specific timeframe is fixed, for example, one year, ten years, or whatever is decided. This will become payable when the promised time arrives; before that, the woman cannot demand it. It is stated in Jami-ur-Rumuz:

[Table Start] Arabic: Al-Mahru al-mu'ajjalu wal-mu'ajjalu in bayyana ay bayyana fil-'aqdi kulluhu au ba'duhu yakunu mu'ajjalan au mu'ajjalan fadhalika al-mubayyinu wajibun adauhu 'ala ma bayyana 1. Urdu Translation: If prompt and deferred dower have been stated at the time of the contract, i.e., whether all or part will be prompt or deferred, then payment will be obligatory according to that statement. (T) [Table End]

And if it was called deferred and no timeframe was mentioned at all, then it will remain deferred until divorce or death, and will become payable only after separation. Before that, the woman has no right to demand it at all. It is stated in Radd al-Muhtar:

[Table Start] Arabic: Min awwalil-furu'il-madhkurati fi Kitabil-Qada'i qabla babil-tahkimi mas'alatu 'adami sama'id-da'wa ba'da mururi kadha sanatan, lamaata zaujul-mar'ati au tallaqaha ba'da 'ishrina sanatan mathalan min waqtin-nikahi falaha talabu mu'akhkharil-mahri li'anna haqqa talabihi innama thabata laha ba'dal-mauti awit-talaqi la min waqtin-nikahi 2. Urdu Translation: In the 'Book of Judiciary', before the chapter on arbitration, the first sub-point mentioned is that after so many years have passed, a lawsuit is not maintainable. A derivation from this is that if, for example, twenty years after the time of marriage, the husband dies or gives a divorce, the wife

has the right to demand the deferred dower. This is because in deferred dower, the wife has the right to demand only after death or divorce; she does not have the right to demand from the time of marriage. (T) [Table End]

1. Jami-ur-Rumuz, Chapter of Mahr, Maktaba Islamia, Gunbad Qamus, Iran, 1/283
2. Radd al-Muhtar, Book of Judiciary, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/37

फतावा रज़विया | बारहवाँ खंड

प्रश्न: महर कब वाजिब (अनिवार्य) होता है? यदि यह 'मुअज्जिल' (त्वरित) हो, तो किस समय? क्या महर के लिए 'खलवत-ए-सहीहा' (वैध एकांत) आवश्यक है या नहीं? और खलवत-ए-सहीहा किसे कहते हैं, इसकी परिभाषा क्या है? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर:

'महर मुअज्जिल' (शीघ्र देय महर) वह महर या महर का वह हिस्सा है जिसे तुरंत चुकाने का इकरार (समझौता) हुआ हो, चाहे वह निकाह के समय शर्त के रूप में तय किया गया हो, या निकाह के बाद शीघ्र अदायगी की शर्त तय हुई हो, या फिर रीति-रिवाज के अनुसार हो, बशर्ते कि वह शर्त किसी सही (वैध) प्रावधान के विरुद्ध न हो। यह महर तुरंत देय हो जाता है, यहाँ तक कि इसकी अदायगी से पहले पति महिला की अनुमति के बिना उसे छू नहीं सकता, और न ही उसकी रुख़सती करा सकता है। और 'मुअज्जिल' (विलंबित) वह है जिसके लिए कोई निश्चित समय सीमा तय की गई हो, जैसे एक साल, दस साल, या जितना भी तय करें। यह तब देय होगा जब वादे का समय आ जाएगा; उससे पहले महिला इसकी मांग नहीं कर सकती। 'जामे-उर-रुमुज़' में है:

[तालिका प्रारंभ] अरबी: अल-महु अल-मुअज्जलु वल-मुअज्जलु इन बय्यना अय बय्यना फ़िल-'अक्दि कुल्लुहु औ बा'दुहु यकूनु मुअज्जलन औ मुअज्जलन फ़ज़ालिका अल-मुबय्यिनु वाज़िमुन अदाउहु 'अला मा बय्यना 1. اردو ترجمہ: यदि निकाह के समय त्वरित और विलंबित महर का वर्णन कर दिया गया है, यानी पूरा या कुछ हिस्सा त्वरित होगा या विलंबित होगा, तो उस वर्णन के अनुसार अदायगी अनिवार्य होगी। (त) [तालिका समाप्त]

और अगर विलंबित (मुअज्जिल) कहा गया और कोई समय सीमा बिल्कुल नहीं बताई गई, तो वह तलाक या मृत्यु तक विलंबित रहेगा और अलगाव के बाद ही देय होगा। उससे पहले महिला को इसकी मांग करने का कोई अधिकार नहीं है। 'रद्दुल मुहतार' में है:

[तालिका प्रारंभ] अरबी: मिन अव्वलिल-फ़ुरू'इल-मज़कूराति फ़ी किताबिल-क़ज़ाइ क़बला बाबित-तहकीमि मसअलतु 'अदमि समा'इद-दा'वा बा'दा मुरूरी कज़ा सनतन, लमाता ज़ौजुल-मर'अति औ तल्लाकहा बा'दा 'इशरीना सनतन मथलन मिन वक्तिन-निकाहि फ़लहा तलुबु मु'अख्खरिल-महि लि'अन्ना हक़्क़ा तलुबिहि इन्नमा थबता लहा बा'दल-मौति अवित-तलाक़ि ला मिन वक्तिन-निकाहि 2. اردو ترجمہ: 'किताबुल कज़ा' (न्यायपालिका की पुस्तक) में मध्यस्थता (तहकीम) के अध्याय से पहले

पहला उप-बिंदु यह उल्लेखित है कि इतने साल बीत जाने के बाद मुकदमा सुनने योग्य नहीं रहता। इस पर आधारित निष्कर्ष यह है कि यदि, उदाहरण के लिए, निकाह के बीस साल बाद पति की मृत्यु हो जाए या वह तलाक दे दे, तो पत्नी को विलंबित महर की मांग करने का अधिकार है। क्योंकि विलंबित महर में पत्नी को मांग का अधिकार मृत्यु या तलाक के बाद ही होता है, निकाह के समय से मांग करने का अधिकार नहीं होता। (त) [तालिका समाप्त]

1. जामे-उर-रुमुज़, बाबुल महर, मकतबा इस्लामिया गुम्बद कामूस ईरान, 1/283
2. रद्दुल मुहतार, किताबुल कज़ा, दार इहयाउत तुरास अल-अरबी, बेरुत, 3/37

पृष्ठ 142/688

کہ مہر کب واجب ہوتا ہے، اگر معجل ہو تو کس وقت؟ خلوت صحیحہ مہر کے واسطے ضروری ہے یا نہیں؟ اور خلوت صحیحہ کس کو کہتے ہیں اس کی تعریف کیا ہے؟ بینوا توجروا

الجواب:

مہر معجل وہ مہر یا پارہ مہر ہے جس کا ادا کرنا فوراً اقرار پایا ہو خواہ از روئے شرط کہ نفس عقد نکاح میں تعجیل مذکور ہو یا عقد کے بعد شرط تعجیل ٹھہری خواہ از روئے عرف جبکہ وہ شرط صحیح کے مخالف نہ واقع ہو یہ مہر فوراً واجب الادا ہوتا ہے، یہاں تک کہ اس کے ادا سے پہلے شوہر عورت کو بے اس کی رضا کے ہاتھ نہیں لگا سکتا بلکہ رخصت نہیں کرا سکتا، اور مؤجل وہ جس کے لئے کوئی میعاد معین قرار دی گئی ہو مثلاً ایک سال، دس سال، یا جس قدر ٹھہرائیں، یہ اس وقت واجب الادا ہوگا جب وعدے کا وقت آجائے اس سے پہلے عورت اس کا مطالبہ نہیں کر سکتی۔ جامع الرموز میں ہے:

[جدول کا آغاز] المهر المعجل والمؤجل ان بينا اى بين فى العقد كله او بعضه يكون معجلا او مؤجلا فذاک المبين واجب اداؤه على مابين ١۔ | مہر معجل اور مؤجل اگر بوقت عقد بیان ہو چکے ہیں یعنی تمام یا بعض معجل ہوگا یا مؤجل ہوگا، تو اس بیان کے مطابق ادائیگی واجب ہوگی۔ (ت) [جدول کا اختتام]

اور اگر مؤجل کہا اور کوئی میعاد اصلاً نہ بیان کی تو وہ طلاق یا موت تک مؤجل ٹھہرے گا اور بعد فرقت ہی واجب الادا ہو گا اس سے پہلے مطالبہ کا عورت کو اصلاً استحقاق نہیں۔ رد المحتار میں ہے:

[جدول کا آغاز] من اول الفروع المذكورة في كتاب القضاء قبل باب التحكيم مسئلۃ عدم سماع الدعوی بعد مرور كذا سنه، لامات زوج المرأة او طلقها بعد عشرين سنة مثلا من وقت النكاح فلها طلب مؤخر المهر لان حق طلبہ انما ثبت لها بعد الموت او الطلاق لامن وقت النكاح ۲۔ | کتاب القضاء میں تحکیم کے باب سے قبل سب سے پہلا جزئیہ یہ مذکورہ کہ اتنے سال گزر جانے کے بعد دعویٰ قابل سماعت نہیں ہوتا، اس پر تفریع یہ ہے کہ نکاح کے وقت سے مثلاً بیس سال بعد خاوند فوت ہو جائے یا طلاق دے دے تو بیوی کو مؤخر شدہ مہر کے مطالبہ کا حق ہے، کیونکہ مہر مؤجل میں بیوی کو مطالبہ کا حق موت یا طلاق کے بعد ہی ہوتا ہے نکاح کے وقت سے مطالبہ کرنے کا حق نہیں۔ (ت) [جدول کا اختتام]

۱ جامع الرموز باب المهر مکتبہ اسلامیہ گنبد قاموس ایران ۱/ ۲۸۳ ۲ رد المحتار کتاب القضاء دار احیاء التراث العربی بیروت ۳/ ۳۷

Similarly, if no mention is made regarding the promptness (Mu'ajjal) or deferment (Mu'ajjal) of a portion or the whole of the dower (Mahr), it will also be considered deferred until death or divorce. In such a case, the basis is the custom of the city, and the common prevailing custom in these lands is that the dower for which promptness is not stipulated is not demanded until the time of separation. It is stated in Al-Niqayah:

[Prompt and deferred dower: if they are specified, then that is what applies; otherwise, custom is relied upon to determine how much is deferred or prompt.] (T)

And valid privacy (Khalwat-e-Sahiha) is that the husband and wife are together in a private place where they are certain no one will come, go, or see, such that no third person is with them who could understand their actions. Furthermore, neither should have any Sharia-based or physical impediment to intimacy; for instance, the minor age of the man or woman such that there is no capacity for intimacy or companionship, or the husband's ill health, or the woman being in menses or postnatal bleeding, or being in such an illness that the act of intimacy would cause harm, or one of them being engaged in an obligatory prayer or an obligatory fast of Ramadan. All of this is in Al-Khaniyah, Al-Durr al-Mukhtar, and its commentaries. Valid privacy is not a condition for the dower to become obligatory; the dower becomes obligatory upon the marriage contract itself. However, through privacy, the dower becomes established (confirmed) in the sense that if divorce occurred before intercourse or valid privacy, half the dower would be required; now that privacy has occurred, the full amount becomes mandatory. It is stated in Al-Niqayah:

[Half of it becomes obligatory upon divorce before it, i.e., before valid privacy.] Summarized. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 18: What do the scholars of the religion say about this issue: Zaid married Hindah, and valid privacy occurred with the consent of the wife. The dower was settled as deferred (Mu'ajjal). Now Hindah demands it and does not go to Zaid's place, and Zaid refuses to pay the dower if Hindah does not come. In this case, is this demand correct, and will the dower be waived due to Hindah's non-arrival or not? Please explain, may you be rewarded.

Answer: No part of the dower can be waived from the husband's responsibility after the occurrence of valid privacy, and the full dower must be paid by Zaid...

1 Mukhtasar al-Wiqayah fi Masa'il al-Hidayah, Chapter on Minimum Dower, Noor Muhammad Karkhana Tijarat Kutub Karachi, p. 56. 2 Mukhtasar al-Wiqayah fi Masa'il al-Hidayah, Chapter on Minimum Dower, Noor Muhammad Karkhana Tijarat Kutub Karachi, p. 55.

फ़तावा रिज़विया जिल्द बारहवीं (12)

इसी तरह, यदि मेहर (दहेज) के किसी हिस्से या पूरे मेहर की अदायगी (मुअज्जल) या मोहलत (मुअज्जल) के बारे में कुछ भी उल्लेख नहीं किया गया है, तो उसे भी मृत्यु या तलाक तक स्थगित माना जाएगा। ऐसी स्थिति में आधार शहर का रिवाज (उर्फ़) होता है, और इन शहरों में आम प्रचलित रिवाज यही है कि जिस मेहर की तुरंत अदायगी की शर्त नहीं रखी गई, उसकी मांग अलगाव के समय तक नहीं की जाती। 'निक़ाया' में है:

[तुरंत और स्थगित मेहर: यदि वे स्पष्ट कर दिए गए हों तो वही लागू होंगे, अन्यथा रिवाज का सहारा लिया जाएगा कि कितना स्थगित है और कितना तुरंत।] (त)

और 'खलवत-ए-सहीहा' (वैध एकांत) यह है कि पति और पत्नी एक ऐसे निजी स्थान पर हों जहाँ उन्हें किसी के आने-जाने या देखे जाने की आशंका न हो, इस प्रकार कि उनके साथ कोई तीसरा ऐसा व्यक्ति न हो जो उनके कार्यों को समझ सके। साथ ही, उन दोनों में से किसी को भी संभोग में कोई शरीयत सम्बन्धी या शारीरिक बाधा नहीं होनी चाहिए; उदाहरण के लिए, पुरुष या महिला की इतनी कम उम्र होना कि उनमें संभोग या साथ रहने की क्षमता न हो, या पति का अस्वस्थ होना, या महिला का मासिक धर्म या प्रसवोत्तर रक्तस्राव की स्थिति में होना, या ऐसी बीमारी होना जिसमें संभोग करने से उसे नुकसान पहुँचे, या उनमें से किसी का अनिवार्य (फ़र्ज़) नमाज़ या रमज़ान के अनिवार्य रोज़े में व्यस्त होना। यह सब 'खानिया', 'दुर्र-ए-मुख़्तार' और उसके हाशियों (टीकाओं) में वर्णित है। मेहर के वाजिब (अनिवार्य) होने के लिए खलवत-ए-सहीहा शर्त नहीं है, मेहर तो निकाह के अनुबंध से ही वाजिब हो जाता है। हाँ, खलवत से मेहर सुदृढ़ हो जाता है, इस अर्थ में कि यदि संभोग या खलवत-ए-सहीहा से पहले तलाक हो जाता तो आधा मेहर अनिवार्य होता; अब जबकि खलवत हो चुकी है, तो पूरा मेहर अनिवार्य होगा। 'निक़ाया' में है:

[इससे पहले, यानी खलवत-ए-सहीहा से पहले तलाक होने पर आधा (मेहर) वाजिब होता है।] संक्षेप में। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 18: धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद का निकाह हिंदा से हुआ और पत्नी की सहमति से खलवत-ए-सहीहा भी हो गई। मेहर मुअज्जल (स्थगित) तय हुआ था। अब हिंदा इसकी मांग करती है और ज़ैद के घर नहीं जाती, और ज़ैद हिंदा के न आने की सूरत में मेहर देने से इंकार

करता है। इस स्थिति में, क्या यह मांग सही है और क्या हिंदा के न आने के कारण मेहर समाप्त हो जाएगा या नहीं? कृपया मार्गदर्शन करें, अल्लाह आपको फल देगा।

जवाब: खलवत-ए-सहीहा होने के बाद पति की जिम्मेदारी से मेहर का कोई भी हिस्सा समाप्त नहीं हो सकता, और ज़ैद को पूरा मेहर अदा करना होगा...

---

1 मुख़्तसर अल-विक़ाया फ़ी मसाइल अल-हिदाया, अध्याय: न्यूनतम मेहर, नूर मोहम्मद कारखाना तिज़ारत कुतुब कराची, पृष्ठ 56 2 मुख़्तसर अल-विक़ाया फ़ी मसाइल अल-हिदाया, अध्याय: न्यूनतम मेहर, नूर मोहम्मद कारखाना तिज़ारत कुतुब कराची, पृष्ठ 55

पृष्ठ 143/688

اسی طرح جس پارہ مہر یا کل مہر کی نسبت تعجیل وتاجیل کا کچھ ذکر نہ آیا وہ بھی موت یا طلاق تک مؤجل ٹھہرے گا کہ ایسی صورت میں مدار عرف بلد پر ہے اور یہاں عام عرف شائع فی البلاد یہی ہے کہ جس مہر کی تعجیل مشروط نہ ہوئی اُس کا مطالبہ تا وقت فرقت نہیں کیا جاتا۔ نقایہ میں ہے :

المعجل والمؤجل ان بینا فذالک والافالمتعارف[1]- معجل اور مؤجل کی مدّت بیان ہو چکی تو بہتر ورنہ اس میں عرف کا اعتبار ہو گا کہ کتنا مؤجل ہے یا معجل۔ (ت)

اور خلوت صحیحہ یہ ہے کہ زن و شو تنہائی کے مکان میں جہاں کسی کے آنے جانے یا نظر پڑنے سے اطمینان ہو ، یوں متفق ہوں کہ اُن کے ساتھ کوئی تیسرا ایسا نہ ہو جو ان کے افعال کو سمجھ سکے، نہ اُن میں کسی کو مقاربت مانع شرعی یا حسی ہو مثلاً مرد یا عورت کی ایسی کم سنی جس میں صلاحیت قربت و قابلیت صحبت نہ ہو یا شوہر کی ناسازی طبع یا عورت کا حیض یا نفاس یا ایسے مرض میں ہونا جس کے سبب وقت وقوع فعل قربت سے اسے مضرت پہنچے یا ان میں کسی کا نماز میں فرض یا ماہِ رمضان میں روزہ فرض سے مشغول ہونا کل ذلک فی الخانیۃ والدرالمختار وحاشیۃ (یہ تمام بحث خانیہ ، درمختار اور اس کے حواشی میں ہے۔ت) اور خلوت صحیحہ وجوب مہر کی شرط نہیں ، وجوب مہر تو عقد نکاح سے ہوتا ہے ، ہاں خلوت سے مہر متأکد ہو جاتا ہے بایں معنی کہ اگر پیش از وطی و خلوت صحیحہ طلاق تو نصف مہر لازم آتا، اب کہ خلوت واقع ہو گئی کُل لازم آئے گا۔ نقایہ میں ہے :

یجب نصفه بطلاق قبلها ای قبل خلوۃ الصحیحۃ[2] اھ نصف مہر ، طلاق قبل از خلوتِ صحیحہ سے واجب ہوتا ہے اھ ملخصاً۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ ملخصاً۔ (ت) واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۱۸ : کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کا ہندہ سے نکاح ہوا اور خلوتِ صحیحہ برضائے زوجہ واقع ہوگئی اور مہر مؤجل قرار پایا تھا اب ہندہ مطالبہ کرتی ہے اور زید کے پاس نہیں جاتی، اور زید در صورت نہ آنے ہندہ کے مہر دینے سے منکر ہے، اس صورت میں یہ مطالبہ صحیح اور بوجہ نہ آنے ہندہ کے مہر ساقط ہو جائے گا یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب : کوئی جزو مہر کا بعد وقوع خلوت صحیحہ ذمہ شوہر سے ساقط نہیں ہو سکتا اور تمامی مہر کا ادا کرنا زید

---

[1] مختصر الوقایۃ فی مسائل الھدایۃ فصل اقل المھر نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ص ۵۶ [2] مختصر الوقایۃ فی مسائل الھدایۃ فصل اقل المھر نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ص ۵۵

Fatawa Razawiya, Volume 12

...mandatory on her; however, in the case of Hinda, due to the postponement (of the dower) and the occurrence of privacy (khalwat) with the wife's consent, she does not have the right to demand the dower or withhold herself, according to consensus. The report from Imam Abu Yusuf that there is a choice to withhold in the case of deferred dower before surrendering oneself, is interpreted as applying to cases where intercourse or valid privacy occurred with the wife's consent. This is because they do not grant the right to withhold even after surrendering for the prompt dower, even though in that case, due to the promptness, the right to withhold and demand has become firm. Therefore, in the case of deferred dower, where this is not the case, they would certainly not grant it.

In Al-Hidayah: A woman has the right to withhold herself until she receives the dower, i.e., the prompt dower (mu'ajjal). Even if the entire dower is deferred (mu'ajjal), she does not have the right to withhold herself because she waived her right by accepting the delay, just as in a sale. There is a difference of opinion from Abu Yusuf. If he has already entered upon her (consummated), the answer is the same according to Abu Hanifa. But they (the two disciples) said she does not have the right to withhold herself. End of summary. Similar rulings are found in other books of jurisprudence. And Allah, the Glorified and Exalted, knows best, and His knowledge is most complete and perfect.

Issue 19: 25 Muharram 1313 AH What do the scholars of religion say regarding this issue: A woman has gone to her parents' home several times without her husband's permission and often fights with her husband. This time she even hit her husband. If the husband does not pay her dower for these reasons, will he be held accountable or not? And should he keep her in his house or not? Please clarify, and may you be rewarded.

The Answer: That woman is transgressing (fasiqa) and is a grave sinner, but the dower will not be forfeited due to these actions. The man has the choice to keep her or not. However, if he does not wish to keep her, he should divorce her. It is not permissible to cast her out without giving a divorce or providing for her care. Yes, if she leaves on her own, then maintenance (food and expenses) is not mandatory upon him until she returns.

Because she is disobedient (nashiza), and there is no maintenance for a disobedient woman. He said...

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

...उस पर लाज़िम है; हालाँकि, हिंदा के मामले में, (मेहर के) विलंब और पत्नी की सहमति से एकांत (खलवत) होने के कारण, सर्वसम्मति से उसे मेहर की मांग करने या स्वयं को रोकने का अधिकार नहीं है। इमाम अबू यूसुफ से जो यह रिवायत है कि स्वयं को समर्पित करने से पहले विलंबित मेहर (महर मुअज्जल) के मामले में रोकने का विकल्प है, उसे उन मामलों पर लागू माना जाता है जहाँ पत्नी की सहमति से संभोग या वैध एकांत हुआ हो। ऐसा इसलिए है क्योंकि वे शीघ्र देय मेहर (मेहर मुअज्जल) के लिए समर्पण के बाद भी रोकने का अधिकार नहीं देते हैं, जबकि उस मामले में शीघ्रता के कारण रोकने और मांग करने का अधिकार दृढ़ हो चुका होता है। इसलिए, विलंबित मेहर के मामले में, जहाँ ऐसा नहीं है, वे निश्चित रूप से यह अधिकार नहीं देंगे।

हिदाया में है: पत्नी को मेहर मुअज्जल (शीघ्र देय मेहर) की स्थिति में अपने पति को खुद से रोकने का अधिकार है जब तक कि वह उसे प्राप्त न कर ले। और यदि पूरा मेहर मुअज्जल (विलंबित) हो, तो उसे पति को रोकने का अधिकार नहीं है क्योंकि उसने विलंब को स्वीकार करके अपने अधिकार को समाप्त कर दिया है, जैसा कि खरीद-बिक्री (बैय) में होता है। इसमें इमाम अबू यूसुफ रहमतुल्लाह अलैहि का मतभेद है। और यदि संभोग (दखुल) हो चुका हो, तो इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैहि के अनुसार उत्तर वही है (यानी उसे अधिकार है)। लेकिन साहिबैन (दो शिष्यों) ने कहा कि उसे खुद को रोकने का अधिकार नहीं है। संक्षेप समाप्त। इसी तरह फ़िक़्ह की अन्य पुस्तकों में भी है। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान सबसे पूर्ण और सटीक है।

मसला 19: 25 मुहर्रम 1313 हिजरी दीन के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक औरत अपने पति की अनुमति के बिना कई बार अपने मायके चली गई और अपने पति से अक्सर लड़ती रहती है और इस बार उसने अपने पति को मारा भी है। अगर पति इन कारणों से उसका मेहर न दे तो उसकी पकड़ होगी या नहीं? और उसे अपने घर में रखे या नहीं? स्पष्ट करें, पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: वह औरत फ़ासिक़ा (आज्ञा उल्लंघन करने वाली) है और घोर पापिनी है, लेकिन इन हरकतों के कारण मेहर समाप्त नहीं होगा। उसे रखने या न रखने का अधिकार पुरुष को है। लेकिन अगर वह उसे नहीं रखना चाहता तो तलाक़ दे दे। यह जायज़ नहीं है कि उसे घर से निकाल दे और तलाक़ भी न दे और उसकी ख़बरगीरी भी न करे। हाँ, अगर वह खुद ही निकल जाए तो उस पर रोटी-कपड़ा और खर्च (नान-ओ-नफ़क़ा) वाजिब नहीं है जब तक कि वह वापस न आ जाए।

क्योंकि वह नाशिज़ा (आज्ञा न मानने वाली) है और नाशिज़ा के लिए पति पर कोई नफ़क़ा (खर्च) नहीं है। उन्होंने कहा...

پر لازم، مگر ہندہ کو بوجہ تاجیل و وقوع خلوت برضائے زوجہ بالاتفاق مطالبہ مہر و منع نفس کا اختیار حاصل نہیں، امام ابویوسف سے کہ مہر مؤجل میں تخیر منع منقول ہے قبل از تسلیم نفس وہ وقوع وطی یا خلوت صحیحہ برضائے زوجہ پر محمول ہے کہ وہ بعد از تسلیم مہر معجل میں بھی اختیار منع نہیں دیتے حالانکہ وہاں بوجہ تعجیل حق منع و مطالبہ مؤکد ہوچکا ہے پس مؤجل میں کہ ایسا نہیں بالاولی نہ دیں گے۔

فی الھدایۃ وللمرأۃ ان تمنع نفسھا حتی تاخذ المھر ای المعجل و لو کان المھر کلہ مؤجلا لیس لھا ان تمنع نفسھا لاسقاطھا حقھا بالتأجیل کما فی البیع و فیہ خلاف ابی یوسف وان دخل بھا فکذلک الجواب عند ابی حنیفۃ وقالا لیس لھا ان تمنع نفسھا ا ہ انتہی ملخصا و مثلہ فی غیرھا من کتب الفقہ۔ واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم وعلمہ اتم واحکم۔

ہدایہ میں ہے: بیوی کو مہر معجل کی صورت میں اپنے اسے خاوند کو منع کرنے کا حق ہوتا ہے تک وصول نہ کرے، اور اگر تمام مہر مؤجل ہو تو پھر اس کو اپنے سے خاوند کو روکنے کا حق نہیں کیونکہ اس نے مہر مؤجل کر کے اپنے مطالبہ کا حق ساقط کر دیا ہے جیسا کہ بیع میں ہوتا ہے، اس میں امام ابویوسف رحمۃ اللہ تعالٰی کا اختلاف ہے اور مہر معجل کی صورت میں اگر دخول ہو چکا ہو تو عورت کو منع کا حق ہے مہر معجل وصول کرنے تک یہ امام ابوحنیفہ رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ کا مسلک ہے۔ اس میں صاحبین کا قول یہ ہے کہ اس کو اس کے منع کا حق نہیں ہے انتہی ملخصاً، اسی طرح دوسری کتب میں بھی ہے۔ واللہ سبحانہ و تعالٰی اعلم وعلمہ اتم واحکم۔ (ت)

مسئلہ ۱۹: ۲۵ محرم ۱۳۱۳ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت بغیر اجازت شوہر کے کئی مرتبہ اپنے میکے چلی گئی اور اپنے شوہر سے اکثر لڑتی رہتی ہے اور اب کی دفعہ اس نے اپنے شوہر کو مارا بھی، اگر شوہر مہراُس کا ان وجوہ کے سبب نہ دے تو مواخذہ ہو گا یا نہیں اور اُس کو اپنے گھر رکھے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: وہ عورت فاسقہ ہے سخت گنہگار ہے ، مگر ان حرکات کے سبب مہر ساقط نہ ہوگا ، رکھنے نہ رکھنے کا مرد کو اختیار ہے مگر اگر نہ رکھنا چاہے تو طلاق دے دے یہ جائز نہیں کہ نکال دے اور طلاق نہ دے اور خبر گیری بھی نہ کرے ہاں وہ خود ہی نکل جائے تو اس پر نان و نفقہ واجب نہیں جب تک واپس نہ آئے

لانھا ناشزۃ ولا نفقۃ للناشزۃ وقال کیونکہ نافرمان ہے اور اس کے لئے خاوند پر نفقہ

Fatawa Razawiyya Volume 12

Allah Almighty says: "Retain them in kindness or release them in kindness." It is not obligatory; Allah Almighty said: Keep them with goodness or let them go with goodness. (T) And Allah Almighty knows best.

Problem 20: From Lucknow, Mahmood Nagar, Asah-ul-Matabi', sent by Moulvi Abdul Ali Sahib Madrasi, 17 Safar 1313 AH. What do the scholars of religion and jurists of the firm Shariah say about this issue: if the proposal and acceptance are made on 'Mehr-e-Fatimi' (dower of Fatimah) without explicit mention or specification of Dirhams and currency, etc., i.e., at the time of marriage, only the phrase 'Mehr-e-Fatimi' is used, and it is not stated that the dower is according to the 'Mehr-e-Fatimi' which amounts to such and such Shari'i Dirhams or current coins. In this case, will it remain as Mehr-e-Fatimi, or will it revert to 'Mehr-e-Mithl' (equivalent dower) due to the varying narrations regarding the dower of Lady Fatimah (may Allah be pleased with her)? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: It will remain as Mehr-e-Fatimi. In Zakheerah, then Bahr-ur-Ra'iq, then Radd-ul-Muhtar, it is stated:

"The wording is from Al-Bahr: It is not a case of non-specification of dower if a woman marries for a dower similar to her mother's dower, even if the husband does not know the amount of her mother's dower, for it is permissible to set the dower at the amount of her mother's dower, etc." The words are from Bahr: This is not a case of dower not being fixed where the wife's dower is equal to her mother's dower and the husband does not know the mother's dower, because it is permissible to keep the dower at the mother's dower amount, etc. (T)

Regarding the sacred dower of the Leader of Women, Batul Zahra (may Allah's blessings be upon her noble father and upon her), although the narrations appear different, by the grace of Allah Almighty, a reconciliation among all of them is achieved through a subtle and precise perspective. I say: and success is with Allah. There are three authentic and reliable narrations in this regard:

First: that the blessed dower was not Dirhams and Dinars, but rather a coat of armor that the Radiant Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) had given to the Leader of the Believers, the Master of Muslims (may Allah Almighty honor his face), and that same was given as dower.

Ibn Sa'd extracted in 'Tabaqat': Khalid bin Makhlad informed us, Sulaiman bin Bilal narrated to us, Ja'far bin Muhammad narrated from his father that Hazrat...

---

1. Al-Quran al-Kareem 2/231
2. Bahr-ur-Ra'iq, Chapter of Dower, H.M. Saeed Company Karachi, 4/146 Page 145 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "उन्हें भलाई के साथ (निकाह में) रोके रखो या भलाई के साथ छोड़ दो।" यह वाजिब नहीं है, अल्लाह तआला ने फ़रमाया: उन्हें भलाई से पास रखो या भलाई से छोड़ दो। (त) अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 20: लखनऊ, महमूद नगर, असहुत-मताबे' से, प्रेषक मौलवी अब्दुल अली साहब मद्रासी, 17 सफ़र 1313 हिजरी। धर्मगुरु और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि अगर ईजाब-ओ-क़बूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) 'मेहर-ए-फ़ातिमी' पर बिना स्पष्टीकरण और दिरहम या सिक्के आदि के निर्धारण के हो, यानी निकाह के समय केवल 'मेहर-ए-फ़ातिमी' शब्द कहा जाए और यह न कहा जाए कि मेहर-ए-फ़ातिमी पर जिसके इतने शरीई दिरहम या वर्तमान सिक्के होते हैं। तो इस सूरत में मेहर-ए-फ़ातिमी ही रहेगा या 'मेहर-ए-मिस्ल' (समान मेहर) की तरफ़ लौट जाएगा, क्योंकि हज़रत फ़ातिमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के मेहर के बारे में रिवायतें अलग-अलग आई हैं। बयान करें, पुण्य पाएँ।

उत्तर: मेहर-ए-फ़ातिमी ही रहेगा। 'ज़ख़ीरा', फिर 'बहर-उर-राइक़', फिर 'रद-उल-मुहतार' में है:

"शब्द 'बहर' के हैं: मेहर तय न होने की यह सूरत नहीं है कि अगर कोई औरत अपनी माँ के मेहर के बराबर मेहर पर निकाह करे और शौहर को माँ के मेहर की मात्रा का ज्ञान न हो, क्योंकि बीवी की माँ के मेहर की मात्रा पर मेहर रखना जायज़ है आदि।" शब्द बहर के हैं: मेहर मुक़र्रर न होने की यह सूरत नहीं है कि बीवी का मेहर उसकी माँ के मेहर के बराबर हो और शौहर को माँ के मेहर का इल्म न हो, क्योंकि बीवी की माँ के मेहर की मात्रा पर मेहर रखना जायज़ है आदि (त)

सय्यिदातुन-निसा बतुल ज़हरा (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलिहि वसल्लम) के मुक़द्दस मेहर के बारे में हालाँकि रिवायतें ज़ाहिरी तौर पर अलग-अलग हैं, लेकिन अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से उन सब में एक सूक्ष्म और सटीक तरीके से तालमेल (ततबीक़) हासिल है। मैं कहता हूँ: और तौफ़ीक़ अल्लाह से है। इस बारे में तीन विश्वसनीय और प्रामाणिक रिवायतें हैं:

पहला यह कि मुबारक मेहर दिरहम और दीनार नहीं थे, बल्कि एक जिरह (कवच) थी जो हुज़ूर पुरनूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अमीर-उल-मोमिनीन मौला-ए-मुस्लिमीन (कर्रमल्लाहु तआला वज्हहु-उल-करीम) को अता फ़रमाई थी, वही मेहर में दी गई।

इब्न सा'द ने 'तबक़ात' में उल्लेख किया है कि ख़ालिद बिन मख़लद ने बयान किया, उन्हें सुलेमान इब्न बिलाल ने हदीस बयान की, जाफ़र बिन मुहम्मद ने अपने वालिद से बयान किया कि हज़रत...

---

1. अल-क़ुरआन अल-करीम 2/231
2. बहर-उर-राइक़, बाब-उल-मेहर, एच.एम. सईद कंपनी कराची 4/146 पेज 145/688

تعالٰی فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ۔ واجب نہیں، اللہ تعالٰی نے فرمایا: ان کو پاس رکھو بھلائی سے یا ان کو چھوڑ دو بھلائی سے۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۰: از لکھنؤ محمود نگر اصح المطابع مرسلہ مولوی عبد العلی صاحب مدراسی ۱۷ صفر ۱۳۱۳ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ اگر ایجاب وقبول مہر فاطمی پر بلا تصریح و تعیینِ دراہم وسکہ وغیرہ ہو یعنی بر وقت نکاح صرف مہر فاطمی کا لفظ کہا جائے یہ نہ کہا جائے کہ مہر فاطمی پر جس کے اس قدر در اہم شرعی یا سکہ رائج الوقت ہوتے ہیں تو اس صورت میں مہر فاطمی ہی رہے گا یا مہرِ مثل کی طرف عود کر جائے گا بوجہ اختلاف روایات کے جو درباره مہرِ جناب فاطمہ رضی اللہ تعالٰی عنہا وارد ہیں۔ بینوا توجروا

الجواب: مہر فاطمی ہی رہے گا۔ ذخیرہ پھر بحر الرائق پھر ردالمحتار میں ہے:

واللفظ للبحر لیس من صور عدم التسمیۃ مالو تزوجت بمثل مہر والزوج لایعلم مقدار مہرامھا فانہ جائز بمقدار مہرامھا الخ[2]۔ الفاظ بحر کے ہیں مہر مقرر نہ ہونے کی یہ صورت نہیں ہے کہ بیوی کا مہر اس کی ماں کے مہر کے برابر ہو اور خاوند کو ماں کے مہر کا علم نہ ہو کیونکہ بیوی کی ماں کے مہر مقدار پر مہر رکھنا جائز ہے الخ (ت)

مہر اقدس حضرت سیدۃ النساء بتول زہرا صلی اللہ تعالٰی علی ابیہا الکریم وعلیہ وسلم میں اگرچہ روایات بظاہر مختلف ہیں مگر بتوفیق اللہ تعالٰی ان سب میں تطبیق بروجمہ نفس و دقیق حاصل ہے فاقول: وباللہ التوفیق اس بارے میں روایاتِ مسندہ معتبرہ تین ہیں:

اوّل یہ کہ مہر مبارک درم و دینار نہ تھے بلکہ ایک زرہ کہ حضور پر نور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے حضرت امیر المومنین مولی المسلمین کرم اللہ تعالٰی وجہہ الکریم کو عطا فرمائی تھی وہی مہر میں دی گئی،

اخرج ابن سعد فی طبقاته اخبر نا خالد بن مخلد ثنا سلیمن هو ابن بلال ثنی جعفر بن محمد عن ابیه۔ ابن سعد نے طبقات میں تخریج کی ہے کہ خالد بن مخلد نے بیان کیا ان کو سلیمان ابن بلال نے حدیث بیان کی جعفر بن محمد نے اپنے والد سے بیان کیا حضرت

---

1 القرآن الکریم ۲۳۱/۲ 2 بحر الرائق باب المہر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۴/۱۴۶

Fatawa Rizvia, Volume 12

[Arabic Column] Ali gave a dower for Fatima consisting of an iron armor. Narrated from Azim, from Hammad bin Zayd, from Ayyub, from Ikrimah that the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said to Ali when he married him to Fatima: "Give her your Hutamiyyah armor." [1] Al-Hafiz said in 'Al-Isabah': "This is a Mursal Hadith with a sound chain of narration." [2] And Abu Dawud narrated in his Sunan from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both), he said: "When Ali married Fatima (may Allah be pleased with them both), the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said to him: 'Give her something.' He said: 'I have nothing.' He (the Prophet) said: 'Where is your Hutamiyyah armor?'" [3] And Ahmad in his Musnad through the path of Ibn Abi Najih, from his father, from a man who heard Ali saying: "I intended to propose to the daughter of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), then I said (to myself): 'I have nothing.' Then I remembered his relation and benevolence, and I proposed to him."

[Urdu Column] Ali (may Allah honor his face) gave an iron armor as the dower for Hazrat Fatima (may Allah be pleased with her). From Azim, who heard from Hammad bin Zayd, who from Ayyub, who from Ikrimah narrated that when the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) married Hazrat Fatima to Hazrat Ali (may Allah be pleased with them both), he said to Hazrat Ali (may Allah be pleased with him): "Give your Khatmi armor (the one that breaks swords) as the dower." Hafiz said in 'Al-Isaba' that this Hadith is Mursal Sahih. Abu Dawud narrated in his Sunan from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both) that when the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) married Hazrat Fatima to Hazrat Ali (may Allah be pleased with them both), he said: "Give her something as dower." He submitted: "I have nothing with me." Then the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Where is your Khatmi armor?" Ahmad narrated in his Musnad through Ibn Abi Najih, he from his father, and they from a person who heard from Hazrat Ali (may Allah be pleased with him) that he was saying: "I intended to ask for the hand of the honorable daughter of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). Then I thought that I have nothing. Then I remembered your affection and kindness, so I asked for the marriage proposal, and..."

[Footnotes] 1. At-Tabaqat al-Kubra by Ibn Sa'd, chapter on the mention of the daughters of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him), Dar Sadr Beirut, 8/21. 2. Al-Isaba fi Tamyiz al-Sahaba, biography 830, Fatima al-Zahra

(may Allah be pleased with her), Dar Sadr Beirut, 3/77. 3. Sunan Abu Dawud, Book of Marriage, Aftab-e-Alam Press Lahore, 1/289.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

[अरबी कॉलम] अली ने फातिमा के मेहर के रूप में लोहे की एक ज़िरह (कवच) दी। आज़िम से, उन्होंने हम्माद बिन ज़ैद से, उन्होंने अय्यूब से और उन्होंने इक्रमा से रिवायत की है कि पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अली से कहा, जब उन्होंने उनका निकाह फातिमा से कराया: "उसे अपनी 'हुतमिया' ज़िरह दे दो।" [1] हाफ़िज़ ने 'अल-इसाबा' में कहा: "यह एक मुरसल हदीस है जिसकी सनद सहीह है।" [2] और अबू दाऊद ने अपनी सुनन में इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत की है, उन्होंने कहा: "जब अली ने फातिमा (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से निकाह किया, तो अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उनसे कहा: 'उसे कुछ दो।' उन्होंने कहा: 'मेरे पास कुछ नहीं है।' आपने फ़रमाया: 'तुम्हारी हुतमिया ज़िरह कहाँ है?'" [3] और अहमद ने अपनी मसनद में इब्न अबी नजीह के ज़रिए, उन्होंने अपने पिता से, और उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति से रिवायत की है जिसने अली को यह कहते हुए सुना: "मैंने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की साहबज़ादी का हाथ माँगने का इरादा किया, फिर मैंने सोचा कि मेरे पास तो कुछ नहीं है। फिर मुझे आपके लगाव और उपकार की याद आई, और मैंने उनके सामने निकाह का प्रस्ताव रखा।"

[उर्दू कॉलम] अली (करम अल्लाह वज्हहू) ने हज़रत फातिमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के मेहर के तौर पर एक लोहे का कवच दिया। आज़िम से, जिन्होंने हम्माद बिन ज़ैद से, उन्होंने अय्यूब से और उन्होंने इक्रमा से बयान किया कि जब हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने हज़रत फातिमा का निकाह हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से किया, तो आपने हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) से फ़रमाया: "अपनी खतमी ज़िरह (तलवारों को तोड़ने वाली ज़िरह) मेहर में दे दो।" हाफ़िज़ ने 'इसाबा' में कहा कि यह हदीस मुरसल सहीह है। अबू दाऊद ने अपनी सुनन में इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत की कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने जब हज़रत फातिमा का निकाह हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से किया, तो फ़रमाया: "इसे मेहर में कुछ दो।" तो उन्होंने अर्ज़ किया: "मेरे पास कोई चीज़ नहीं है।" तो हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया: "तुम्हारी खतमी ज़िरह कहाँ है?" अहमद ने अपनी मसनद में इब्न अबी नजीह, उन्होंने अपने वालिद और उन्होंने एक ऐसे शख़्स से रिवायत किया जिसने हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) से सुना है कि वह फ़रमा रहे थे: "मेरा इरादा हुआ कि मैं हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम से आपकी साहिबज़ादी का रिश्ता तलब करूँ तो मुझे ख़याल आया कि मेरे पास तो कुछ नहीं है। फिर मुझे आपकी शफ़क़त और मेहरबानी याद आई, बस मैंने रिश्ता तलब किया तो..."

[पाद टिप्पणियाँ] 1. अत-तबाक़ात अल-कुबरा, इब्न सअद द्वारा, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की बेटियों के ज़िक्र का अध्याय, दार सादर बेरुत, 8/21 2. अल-इसाबा फ़ी तमीज़ अल-सहाबा, जीवनी संख्या 830, फातिमा अल-ज़हरा (रज़ियल्लाहु अन्हा), दार सादर बेरुत, 3/77 3. सुनन अबू दाऊद, किताबुन निकाह, आफ़ताब आलम प्रेस लाहौर, 1/289

فتاویٰ رضویہ، جلد دوازدہم

[عربی کالم] اصدق علی فاطمة درعاً من حدید وعن عازم عن حماد بن زید عن ایوب عن عکرمة ان النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم قال لعلی حین زوجه فاطمة اعطها درعك الحطمیة 1، قال الحافظ فی الاصابة هذا مرسل صحیح الاسناد 2 ، و ابوداؤد فی سننہ عن ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما قال لما تزوج علی فاطمة رضی اللہ تعالیٰ عنہما قال له رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اعطها شیئاً قال ماعندی شئی قال این درعك الحطمیة 3- واحمد فی مسنده من طریق ابن ابی نجیح عن قبیہ عن رجل سمع علیاً یقول اردت ان اخطب الی رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ابنته فقلت مالی من شیئی ثم ذکرت صلته و عادته وخطبتها الیه

[اردو کالم] علی کرم وجہہ نے حضرت فاطمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کا مہر ایک لوہے کی درع دی، عازم سے انہوں نے حماد بن زید سے انہوں نے ایوب سے انہوں نے عکرمہ سے بیان کی کہ حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے جب حضرت فاطمہ کا حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے نکاح کیا تو آپ نے حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے فرمایا تو اپنی خطمی درع (تلواروں کو توڑنے والی زرہ) مہر میں دے دے۔ حافظ نے اصابہ میں کہا یہ حدیث مرسل صحیح ہے۔ ابوداؤد نے اپنی سنن میں ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کہ حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے حضرت فاطمہ کا نکاح حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے نکاح کیا تو فرمایا: اس کو مہر میں کچھ دو۔ تو انہوں نے عرض کی: میرے پاس کوئی چیز نہیں ہے۔ تو حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے فرمایا: تیری خطمی زرہ کہاں ہے؟ احمد نے اپنی مسند میں ابن ابی نجیح وہ اپنے والد اور انہوں نے ایک ایسے شخص سے روایت کیا جس نے حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے سنا ہے کہ وہ فرمارہے تھے کہ میرا ارادہ ہوا کہ میں حضور علیہ الصلوۃ والسلام سے آپ کی

صاحبزادی کا رشتہ طلب کروں تو مجھے خیال آیا کہ میرے پاس تو کچھ نہیں، پھر مجھے آپ کی شفقت اور مہربانی یاد آئی، پس میں نے رشتہ طلب کیا تو

[حواشی] 1 الطبقات الکبری لابن سعد باب ذکر بناتِ رسول صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم دار صادر بیروت ۲۱/۸ 2 الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ ترجمہ ۸۳۰ فاطمۃ الزہرا رضی اللہ عنہا دار صادر بیروت ۳/۷۷ 3 سنن ابو داؤد کتاب النکاح آفتاب عالم پریس لاہور ۱/۲۸۹

Fatawa Ridawiyya Volume 12

[Arabic Text]: He [the Prophet ﷺ] said: "Do you have anything [for mahr]?" I said: "No." He said: "Then where is your Hatmi armor that I gave you on such and such a day?" I said: "It is with me." He said: "Give it to her." Ibn Ishaq narrated in al-Sirah al-Kubra: Ibn Najih told me from Mujahid from Ali (may Allah honor his face) that he proposed to Fatimah (may Allah be pleased with her). The Prophet (peace and blessings be upon him) said to him: "Do you have anything?" I said: "No." He said: "What did you do with the armor I armed you with, meaning from the spoils of Badr?" [Urdu Translation]: He [the Prophet ﷺ] asked: "Do you have anything?" I replied, "Nothing." He then said: "Where is your Hatmi armor that I gave you on such and such an occasion (i.e., on the day of Badr) as part of the spoils of war?" I submitted: "It is with me." So you said: "Give it to her." Ibn Ishaq has stated in Seerat-e-Kubra that Ibn Najih reported on the authority of Mujahid from Hazrat Ali (may Allah honor his face) that he said, "I proposed for marriage to Fatimah (may Allah be pleased with her), and the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) asked, 'Is there anything with you?' I said, 'Nothing.' Then the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) asked, 'Where is that armor of yours that I gave to you from the spoils of Badr?'" (T)

Second, it was four hundred and eighty (480) dirhams,

[Arabic Text]: Imams Ahmad in al-Manaqib, Abu Dawud, Abu Hatim al-Razi, and Ibn Hibban in his Sahih all narrated from Anas (may Allah be pleased with him), some of them having a more complete narrative than others. He said: Abu Bakr came, then Umar, to propose to Fatimah from the Prophet (peace and blessings be upon him). He remained silent and did not give any response to them. So they both went to Ali (may Allah be pleased with him) and urged him to seek that proposal. [Urdu Translation]: Imam Ahmad in 'Al-Manaqib', Abu Dawud, Abu Hatim al-Razi, and Ibn Hibban in his 'Sahih' have all narrated from Hazrat Anas (may Allah be pleased with him), some accounts being more comprehensive than others. They stated that Hazrat Abu Bakr al-Siddiq and Hazrat Umar al-Faruq (may Allah be pleased with them both) came to the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) to ask for the hand of Hazrat Fatimah (may Allah be pleased with her) in marriage. The Holy Prophet (peace and blessings be upon him) remained silent and did not give any response. So, the two of them went to Hazrat Ali (may Allah be pleased with him) to urge him to seek the marriage proposal.

1 Musnad Ahmad ibn Hanbal, narrated from Ali (R.A.), Dar al-Fikr Beirut, 1/80. 2 Al-Sunan al-Kubra, narrated from Muhammad ibn Ishaq, Kitab al-Sidq, Dar Sader Beirut, 7/235.

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द बारहवीं

[अरबी पाठ]: उन्होंने [पैगंबर ﷺ] पूछा: "क्या तुम्हारे पास [महर के लिए] कुछ है?" मैंने कहा: "नहीं।" उन्होंने कहा: "फिर तुम्हारी वह हतमी कवच कहाँ है जो मैंने तुम्हें फलां-फलां दिन दी थी?" मैंने कहा: "वह मेरे पास है।" उन्होंने कहा: "वह उसे दे दो।" इब्न इसहाक ने 'अस-सीरा अल-कुबरा' में वर्णन किया है: इब्न नजीह ने मुजाहिद के माध्यम से अली (अल्लाह उनके चेहरे को सम्मानित करे) से बताया कि उन्होंने फातिमा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से निकाह का प्रस्ताव रखा। पैगंबर (अल्लाह की उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ने उनसे कहा: "क्या तुम्हारे पास कुछ है?" मैंने कहा: "नहीं।" उन्होंने कहा: "उस कवच का क्या हुआ जो मैंने तुम्हें शस्त्र के रूप में दी थी, यानी बद्र की गनीमत में से?" [उर्दू अनुवाद का हिंदी रूपांतरण]: आपने [पैगंबर ﷺ] फ़रमाया: "क्या तुम्हारे पास कुछ है?" मैंने अर्ज़ किया, "कुछ नहीं।" तो फ़रमाया: "तुम्हारी वह हतमी ज़िरह (कवच) कहाँ है जो मैंने तुम्हें फलां-फलां मौक़े पर (यानी बद्र के दिन) गनीमत के तौर पर दी थी?" मैंने निवेदन किया: "वह मेरे पास ही है।" तो आपने फ़रमाया: "वह उसे दे दो।" इब्न इसहाक ने सीरत-ए-कुबरा में इस प्रकार बयान किया है कि इब्न नजीह ने मुजाहिद के हवाले से बताया कि हज़रत अली (करम अल्लाह वजहु) ने कहा कि मैंने फातिमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से मंगनी की तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने पूछा: "पास कुछ है?" मैंने कहा: "कुछ नहीं।" तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "तुम्हारी वह ज़िरह कहाँ है जो मैंने तुम्हें बद्र की गनीमत में से दी थी?" (त)

दूसरा चार सौ अस्सी (480) दिरहम थे,

[अरबी पाठ]: इमाम अहमद ने 'अल-मनाकिब' में, अबू दाऊद, अबू हातिम अल-राज़ी और इब्न हिब्बान ने अपनी 'सहीह' में, इन सभी ने अनस (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से रिवायत की है, जिनमें से कुछ का विवरण दूसरों की तुलना में अधिक पूर्ण है। उन्होंने कहा: अबू बक्र आए, फिर उमर आए ताकि पैगंबर (अल्लाह की उन पर शांति और आशीर्वाद हो) से फातिमा का रिश्ता मांग सकें। उन्होंने [पैगंबर ने] चुप्पी साधे रखी और उन्हें कोई जवाब नहीं दिया। तो वे दोनों अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के पास गए और उन्हें उस [प्रस्ताव] के लिए आगे बढ़ने को कहा। [उर्दू अनुवाद का हिंदी रूपांतरण]: इमाम अहमद ने 'मनाकिब' में और अबू दाऊद, अबू हातिम अल-राज़ी और इब्न हिब्बान ने अपनी 'सहीह' में, इन सभी ने हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है, जिनमें से कुछ का बयान दूसरों से अधिक पूर्ण है। उन्होंने कहा कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक और हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के पास हज़रत फातिमा

(रज़ियल्लाहु अन्हा) का रिश्ता माँगने आए, तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने चुप्पी साधे रखी और कोई जवाब नहीं दिया। तो ये दोनों हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) के पास आए और उन्हें इस रिश्ते के लिए प्रेरित किया।

---

1 मसनद अहमद बिन हंबल, अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत, दारुल फ़िक्र बेरुत, 1/80। 2 अल-सुनन अल-कुबरा, मोहम्मद बिन इसहाक से रिवायत, किताबुस सिदक़, दार सादिर बेरुत, 7/235।

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

[عربی متن]: فقال وھل عندك شیئ، قلت لا ، قال فأین درعك الحطمیہ التی اعطیتك یوم کذا وکذا ، قلت ھو عندی، قال فأعطھا ایاہ ابن اسحاق فی السیرۃ الکبری حدثنی ابن نجیح عن مجاھد عن علی کرم اللہ تعالی وجھہ انہ خطب فاطمۃ رضی اللہ تعالی عنھا فقال لہ النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم ھل عندك من شیئ، قلت لا، قال فما فعلت الدرع التی سلحتکھا یعنی من مغانم بدر ۔ آپ نے فرمایا : کیا تیرے پاس کچھ ہے ؟ میں نے عرض کیا کچھ نہیں تو فرمایا تیری خطمی زرہ کہاں ہے جو میں نے تجھے اسلحہ کے طور پر فلاں موقعہ (یعنی بدر کے روز) غنیمت میں سے دی تھی ؟ میں نے عرض کیا : وہ میرے پاس ہی ہے۔ تو آپ نے فرمایا : وہ اسے دے دو۔ ابن اسحاق نے سیرت کبریٰ میں یوں بیان کیا کہ ابن نجیح نے مجاہد کے حوالے سے بیان کیا کہ حضرت علی کرم اللہ وجہہ ، نے کہا کہ میں نے فاطمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے منگنی کی تو حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے پوچھا پاس کچھ ہے نے کہا : کچھ نہیں۔ تو حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے فرمایا : تیری وہ رزہ کہاں ہے جو میں نے تجھے بدر کی غنیمت میں سے دی تھی۔ (ت)

دوم چار سو اسی ۴۸۰ درم تھے،

[عربی متن]: اخرجہ الائمۃ احمد فی المناقب وابوداؤد ابوحانم الرازی وابن حبان في صحیحہ کلھم عن انس رضی اللہ تعالی عنہ بعضھم اتم سیاقاً من بعض ، قال جاء ابوبکر ثم عمر یخطبان فاطمۃ الی النبي صلی اللہ علیہ وسلم، فسکت ولم یرجع الیھما شیئاً فانطلقا الی علی رضی اللہ تعالی عنہ یأمرانہ بطلب ذلك امام احمد نے مناقب میں اور ابو داؤد اور ابو حاتم رازی اور ابن حبان نے اپنی صحیح میں، ان تمام نے حضرت انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا بعض کا سیاق بعض سے اتم ہے، انہوں نے کہا کہ حضرت ابو بکر صدیق اور حضرت عمر فاروق رضی اللہ تعالیٰ عنہما حضور علیہ

الصلوٰۃ والسلام سے حضرت فاطمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کا رشتہ مانگنے آئے تو حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے سکوت فرمایا اور کوئی جواب نہ دیا، تو یہ دونوں حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس آئے انہیں رشتہ

---

1 مسند احمد بن حنبل مروی از علی رضی اللہ عنہ دار الفکر بیروت ۱/۸۰ 2 السنن الکبری مروی عن محمد بن اسحاق کتاب الصدق دار صادر بیروت ۲۳۵/۷

Fatawa Razawiya, Volume 12

(Arabic Text:) Ali said: He alerted me to a matter of which I was heedless. So I stood up, dragging my robe, until I came to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) and said, 'Marry Fatima to me.' He said, 'Do you have anything?' I said, 'My horse and my armor.' He said, 'As for your horse, you cannot do without it, but as for your armor, sell it.' So I sold it for four hundred and eighty dirhams and brought it to him and placed it in the lap of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). He took a handful of it and said, 'O Bilal, buy some perfume for us with this, and order them to prepare her.' So they made a bed for her woven with palm fiber and a leather pillow stuffed with palm fiber. He said to Ali, 'When she comes to you, do not speak until I come to you.' So she came with Umm Ayman until she sat on one side of the house, while I was on the other side. Then the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) came... (the Hadith). And in 'Al-Khamis,' in a narration of her engagement, the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) married her...

(Urdu Text:) When asked to propose, Hazrat Ali says that they directed me towards a matter of which I was heedless. So I immediately got up while adjusting my shawl until I appeared in the service of the Prophet (peace and blessings be upon him) and requested: 'O Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him)! Marry Fatima to me.' You asked: 'Do you have something?' I submitted: 'I have a horse and an armor.' (You said:) 'The horse is necessary for you, but sell the armor.' So I sold it for four hundred and eighty (480) dirhams. I brought it and put it in your lap. You picked up a handful of them and said: 'O Bilal (may Allah be pleased with him)! Buy perfume for her.' And said: 'Prepare the dowry with this amount.' So a woven bedstead and a leather pillow filled with date-palm fiber were prepared. Then you (peace and blessings of Allah be upon him) said: 'O Ali! When Fatima reaches you, do not speak until I arrive.' Then Hazrat Fatima came accompanied by Hazrat Umm Ayman (may Allah be pleased with them) until she sat in a corner of the room, and I was on the other side. In the meantime, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) arrived, (Al-Hadith). And in 'Al-Khamis' it is said that there is a narration that when the engagement took place, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said to them...

[1] Kanz al-Ummal, with reference to Musnad Anas, Hadith, Mu'assasat al-Risalah, Beirut, 13/85 - 682. Page 148 of 688

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

(अरबी पाठ का अनुवाद:) अली ने कहा: "उन्होंने मुझे एक ऐसे मामले के प्रति सचेत किया जिससे मैं बेखबर था। इसलिए मैं अपनी चादर घसीटते हुए उठा, यहाँ तक कि मैं नबी (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) के पास आया और कहा: 'फातिमा का विवाह मुझसे कर दें।' उन्होंने पूछा: 'क्या तुम्हारे पास कुछ है?' मैंने कहा: 'मेरा घोड़ा और मेरा कवच।' उन्होंने कहा: 'जहाँ तक तुम्हारे घोड़े की बात है, तुम उसके बिना नहीं रह सकते, लेकिन जहाँ तक तुम्हारे कवच की बात है, उसे बेच दो।' इसलिए मैंने उसे चार सौ अस्सी (480) दिरहम में बेच दिया और उसे उनके पास लाया और उसे अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) की गोद में रख दिया। उन्होंने उसमें से एक मुट्ठी ली और कहा: 'ऐ बिलाल, हमारे लिए इससे कुछ सुगंध खरीद लाओ, और उन्हें उसे तैयार करने का आदेश दो।' तो उन्होंने उसके लिए खजूर के रेशों से बुनी हुई एक चारपाई और खजूर के रेशों से भरा एक चमड़े का तकिया तैयार किया। उन्होंने अली से कहा: 'जब वह तुम्हारे पास आए, तो जब तक मैं न आ जाऊँ तब तक कुछ मत कहना।' इसलिए वह उम्म अयमन के साथ आई और घर के एक तरफ बैठ गई, जबकि मैं दूसरी तरफ था। फिर अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) आए... (हदीस)। और 'अल-खमीस' में उसकी सगाई की एक रिवायत में है कि नबी (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) ने उनका निकाह कर दिया...

(उर्दू पाठ का अनुवाद:) जब निकाह का प्रस्ताव रखने को कहा गया, तो हज़रत अली फ़रमाते हैं कि उन्होंने मुझे एक ऐसे मामले की ओर ध्यान दिलाया जिससे मैं बेखबर था। मैं फ़ौरन अपनी चादर संभालते हुए उठा और हुज़ूर (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) की सेवा में उपस्थित होकर निवेदन किया: 'या रसूल अल्लाह! फ़ातिमा का निकाह मुझसे कर दें।' आपने पूछा: 'क्या तुम्हारे पास कुछ है?' मैंने अर्ज़ किया: 'मेरे पास एक घोड़ा और एक कवच है।' (आपने फ़रमाया:) 'घोड़ा तो तुम्हारे लिए ज़रूरी है, लेकिन कवच बेच दो।' तो मैंने उसे चार सौ अस्सी (480) दिरहम में बेच दिया। मैं उसे ले आया और आपकी गोद में डाल दिया। आपने उनमें से एक मुट्ठी भर कर उठाया और फ़रमाया: 'ऐ बिलाल (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो)! उनके लिए खुशबू खरीद लाओ।' और फ़रमाया: 'इस रक़म से जहेज़ तैयार करो।' तो एक बुनी हुई चारपाई और खजूर की छाल से भरा हुआ एक चमड़े का तकिया तैयार किया गया। फिर आपने (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) फ़रमाया: 'ऐ अली! जब फ़ातिमा तुम्हारे पास पहुँच जाए, तो जब तक मैं न पहुँच जाऊँ कोई बात मत करना।' फिर हज़रत फ़ातिमा, हज़रत उम्म अयमन (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) के साथ आईं और कमरे

के एक कोने में बैठ गईं, और मैं दूसरी तरफ था। इसी बीच अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) तशरीफ़ लाए, (अल-हदीस)। और 'अल-खमीस' में है कि एक रिवायत है कि जब मंगनी हुई, तो अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) ने उनसे...

[1] कंजुल उम्माल, बहवाला मसनद अनस हदीस, मुअस्ससतुर् रिसाला बेरुत, 13/85 - 682 पेज 148 ऑफ़ 688

قال علی فنبہانی لامر کنت عنہ غافلا فقمت اجر ردائی حتی اتیت النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فقلت تزوجنی فاطمۃ۔ قال عند شیئی، فقلت فرسی وبدنی، قال امافرسک فلابدلک منھا واما بدنک فبعھا فبعتھا باربع مائۃ وثمانین درھما فجئتہ بھا فوضعتھا فی حجرہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فقبض منھا قبضہ فقال ای بلال ابتع بھا لنا طیباوامرھم ان یجھزوھا فجعل لھا سریرا مشرطا بالشرط ووسادۃ من ادم حشوھا لیف وقال لعلی اذا اتتک فلا تحدث شیئا حتی اتیک فجاءت مع ام ایمن حتی قعدت فی جانب البیت وانا فی جانب وجاء رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم الحدیث[1]۔وفی الخمیس فی روایۃ خطبھافزوجھاالنبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ

طلب کرنے کو کہا تو حضرت علی فرماتے ہیں کہ انہوں نے مجھے ایسے معاملے کی طرف متوجہ کیا جس سے میں غافل تھا تو میں فورا چادر سنبھالتے ہوئے اٹھا حتی کہ حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام کی خدمت میں حاضر ہو کر عرض کیا یا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ! فاطمہ کا نکاح مجھ سے کردیں۔ آپ نے پوچھا: تیرے پاس کچھ ہے ؟ میں نے عرض کی: گھوڑا ہے اور ایک اونٹ ہے گھوڑا تو تیرے لئے ضروری ہے لیکن اونٹ کو فروخت کردو۔ تو میں نے اس کو چار سو اسی ۴۸۰ درہم میں فروخت کردیا وہ آپ کے پاس لا کر میں نے آپ کی گود میں ڈال دئے۔ تو آپ نے ان میں سے ایک مٹھی بھر اٹھا کر فرمایا: اے بلال رضی اللہ تعالیٰ عنہ ! اس کی خوشبو خرید لاؤ۔ اور فرمایا: اس رقم سے جہیز تیار کرو۔ تو ایک بنی ہوئی چار پائی اور ایک چمڑے کا تکیہ جس میں کھجور کی چھال بھری تھی تیار کئے، تو آپ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: اے علی ! جب تیرے پاس فاطمہ پہنچ جائے تو کوئی بات نہ کرنا جب تک میں نہ پہنچ جاؤں۔ تو حضرت فاطمہ حضرت اُمّ ایمن رضی اللہ تعالیٰ عنہما کے ہمراہ آئیں حتی کہ وہ کمرے

کے ایک کونے میں بیٹھ گئیں اور دوسری جانب میں تھا تو اتنے میں رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم تشریف لے آئے، الحدیث۔ اور خمیس میں ہے کہ ایک روایت ہے کہ منگنی کی تو رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ان سے

[1] کنزالعمال بحوالہ مسند انس حدیث مؤسسۃ الرسالۃ بیروت ۱۳/۸۵ - ۶۸۲ Page 148 of 688

...and peace be upon him, for four hundred and eighty dirhams, etc. In it, it is said that he sold the armor for twelve Oqiyah, and an Oqiyah consists of forty dirhams. And that was the dowry of Fatimah from Ali, may Allah be pleased with them both. | [The Prophet] performed the marriage, and the dowry was four hundred and eighty (480) dirhams. In (the book) al-Khamis, it is also mentioned that he sold the armor for twelve Oqiyah. An Oqiyah is equal to forty dirhams. This was the dowry for Hazrat Fatimah (may Allah be pleased with her) provided by Hazrat Ali (may Allah be pleased with him). (T)

Thirdly: Four hundred Mithqal of silver.

Al-Hafiz Radi-ud-Din Abu al-Khayr Ahmad bin Isma'il al-Qazwini al-Hakimi and Abu Ali al-Hasan bin Shadhan narrated from Anas (may Allah be pleased with him) in a long Hadith, in which he said regarding the sermon of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): "Indeed, Allah Almighty has commanded me to marry Fatimah to Ali bin Abi Talib. So bear witness that I have married her for four hundred Mithqal of silver, provided Ali is satisfied with it." Then the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) called for a tray of fresh dates and said, "Take from it," so we took. Then Ali entered, and the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) smiled at his face and said: "Indeed, Allah the Almighty has commanded me to marry Fatimah to you for four hundred Mithqal of silver. Are you satisfied with that?" He said: "I am satisfied with that, O Messenger of Allah." Then he (peace and blessings of Allah be upon him) said: "May Allah unite..." | Hafiz Radi al-Din Abu al-Khayr Ahmad bin Isma'il Qazwini Hakimi and Abu Ali Hasan bin Shadhan also narrated this from Anas (may Allah be pleased with him). It is a long Hadith which mentions that the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) said in a sermon: "Allah Almighty has commanded me to marry Fatimah to Ali Murtada (may Allah be pleased with him). So bear witness that I have performed this marriage for four hundred Mithqal of silver, provided Ali (may Allah be pleased with him) is satisfied with it." Then the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) asked for a large basket of 'Busr' dates and said: "Pick and eat from this." So we ate. In the meantime, Hazrat Ali arrived; the Prophet smiled at his arrival and said: "Allah Almighty has commanded me to perform Fatimah's marriage with you for four hundred Mithqal of silver. Are

you satisfied?" So Hazrat Ali replied: "I am satisfied with this." Then the Holy Prophet (peace and blessings be upon him), while praying...

1. Tarikh al-Khamis: Marriage of Ali to Fatimah (may Allah be pleased with her), Mu'assasah Sha'ban Beirut, 1/361.
2. Tarikh al-Khamis: Marriage of Ali to Fatimah (may Allah be pleased with her), Mu'assasah Sha'ban Beirut, 1/362.

...और उन पर चार सौ अस्सी दिरहम आदि। इसमें कहा गया है कि उन्होंने अपनी जिरह बारह ओक़िया के बदले बेची और एक ओक़िया चालीस दिरहम का होता है। यह हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) की ओर से हज़रत फ़ातिमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) का मेहर था। | निकाह कर दिया गया और मेहर चार सौ अस्सी (480) दिरहम था, और 'ख़मीस' में यह भी कहा गया है कि उन्होंने जिरह बारह ओक़िया के बदले बेची। ओक़िया चालीस दिरहम का होता है। यह हज़रत फ़ातिमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) का मेहर हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) की ओर से था। (त)

तीसरा: चार सौ मिस्काल चांदी।

अल-हाफिज़ रज़ीउद्दीन अबू अल-खैर अहमद बिन इस्माइल अल-क़ज़्विनी अल-हाकिमी और अबू अली अल-हसन बिन शादान ने अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से एक लंबी हदीस रिवायत की है, जिसमें नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपने खुतबे में फ़रमाया: "बेशक अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं फ़ातिमा का निकाह अली बिन अबी तालिब से कर दूं। तो तुम गवाह रहो कि मैंने उनका निकाह चार सौ मिस्काल चांदी पर कर दिया है, बशर्ते कि अली इस पर राज़ी हों।" फिर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने ताज़ा खजूरों का एक थाल मंगवाया और फ़रमाया: "इसमें से लेकर खाओ", तो हमने खाया। फिर हज़रत अली आए, तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उनके चेहरे की ओर देखकर मुस्कराया और फ़रमाया: "बेशक अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं फ़ातिमा का निकाह तुमसे चार सौ मिस्काल चांदी पर कर दूं। क्या तुम इससे राज़ी हो?" उन्होंने कहा: "ऐ अल्लाह के रसूल! मैं इससे राज़ी हूं।" फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "अल्लाह जमा करे..." | हाफिज़ रज़ी अल-दीन अबू अल-खैर अहमद बिन इस्माइल क़ज़्वीनी हाकिमी और अबू अली हसन बिन शादान ने भी इसे अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। यह एक लंबी हदीस है जिसमें यह है कि हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) ने खुतबे में फ़रमाया: "अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं फ़ातिमा का निकाह अली मुर्तज़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से कर दूं। तो तुम गवाह रहो कि मैंने यह निकाह चार सौ मिस्काल चांदी पर कर दिया है, बशर्ते कि अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) इस पर राज़ी हों।" फिर हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) ने 'बुस्र' खजूरों का एक बड़ा टोकरा मंगवाया और फ़रमाया: "इसमें से चुन-चुन कर खाओ", तो हमने खाया। इतने में हज़रत अली आए, तो आप ने उनके आने पर मुस्कराया और फ़रमाया: "अल्लाह तआला ने मुझे हुक्म दिया है कि मैं

फ़ातिमा का निकाह तुमसे कर दूं चार सौ मिस्काल चांदी पर, क्या तुम राज़ी हो?" तो हज़रत अली ने अर्ज किया: "मैं इस पर राज़ी हूं।" तो हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) ने दुआ करते हुए...

1. तारीख़ अल-ख़मीस: तज़व्वुज अली बि-फ़ातिमा (रज़ियल्लाहु अन्हा), मुअस्ससा शाबान बेरूत, 1/361.
2. तारीख़ अल-ख़मीस: तज़व्वुज अली बि-फ़ातिमा (रज़ियल्लाहु अन्हा), मुअस्ससा शाबान बेरूत, 1/362.

पृष्ठ 149 (688 में से)

فتاوٰی رضویہ | جلد دو از دہم

وسلم علی اربعمائة وثمانین درهماً الخ وفیه قیل انه باع الدرع باثنتی عشرة اوقیة والاوقیة اربعون درهم وکان ذلك مهر فاطمة من علی رضی الله تعالی عنهما۔ | نکاح کردیا اور مہر چار سو اسی ۴۸۰ درہم تھا، اور خمیس میں یہ بھی کہا گیا ہے کہ انہوں نے زرہ فروخت کی بارہ اوقیہ کے عوض میں ۔ اوقیہ چالیس درہم کا ہوتا ہے۔ یہ حضرت فاطمہ رضی اللہ تعالٰی عنہا کا مہر حضرت علی رضی اللہ تعالٰی عنہ کی طرف سے تھا (ت)

سوم چار سو مثقال چاندی،

اخرج الحافظ رضی الدین ابوالخیر احمد بن اسمعیل القزوینی لاحاکمی وابوعلی الحسن بن شاذان عن انس ایضاً رضی الله تعالی عنه فی حدیث طویل قال فیه فی خطبة النبي صلی الله تعالی علیه وسلم ثم ان الله تعالی امرني ان ازوج فاطمة من علی ابن ابی طالب فاشهدوا اني قدزوجته علی اربع مائة مثقال فضة ان رضی بذلک علی ثم دعا النبی صلی الله تعالی علیه وسلم بطبق من بسرثم قال انتهبوا فانتهبنا ودخل علی فتبسم النبي صلی الله تعالی علیه وسلم فی وجهه ثم قال ان الله عزوجل امرنی ان ازوجك فاطمة علی اربعمائة مثقال فضة ارضیت بذالك فقال قد رضیت بذالك یا رسول الله فقال صلی الله تعالی علیه وسلم جمع الله | حافظ رضی الدین ابو الخیر احمد بن اسماعیل قزوینی حاکمی اور ابو علی حسن بن شاذان نے بھی انس رضی اللہ تعالٰی عنہ سے اس کو روایت کیا طویل حدیث ہے جس میں یہ ہے کہ حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے خطبہ میں فرمایا کہ اللہ تعالٰی نے مجھے حکم فرمایا ہے کہ میں فاطمہ کا نکاح علی مرتضٰی رضی اللہ تعالٰی عنہ سے کردوں، تو گواہ ہو جاؤ کہ میں نے یہ نکاح چار سو مثقال چاندی پر کردیا ہے بشرطیکہ علی رضی اللہ تعالٰی عنہ اس پر راضی ہوں۔ پھر حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے بسر کھجوروں کا بڑا ٹوکرا طلب فرمایا اور فرمایا: اس میں سے

چن چن کر کھاؤ تو ہم نے کھائیں۔ اتنے میں حضرت علی آئے تو آپ نے ان کی آمد پر تبسم فرمایا اور فرمایا کہ اللہ تعالیٰ نے مجھے حکم فرمایا کہ میں فاطمہ کا نکاح تجھ سے کروں چار سو مثقال چاندی پر، کیا تو راضی ہے؟ تو حضرت علی نے عرض کیا: میں اس پر راضی ہوں۔ تو حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے دعا کرتے ہوئے

1 تاریخ الخمیس تزوج علی بفاطمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا موسسۃ شعبان بیروت ۳۶۱/۱ 2 تاریخ الخمیس تزوج علی بفاطمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا موسسۃ شعبان بیروت ۳۶۲/۱

Fatawa Rizvia Volume 12

[Arabic Column]: May Allah unite your state, enhance your status, bless you both, and bring forth much goodness from you. Anas (may Allah be pleased with him) said: "By Allah, He brought forth much goodness from them." Narrated by Ibn Asakir similarly through Muhammad bin Shihab bin Abul Haya, from Abdul Malik bin Umar, from Yahya bin Ma'in, from Muhammad bin Dinar, from Anas (may Allah be pleased with him). Muhammad bin Tahir mentioned it in 'Takmilat al-Kamil' by Ibn Adi, as quoted by al-Hafiz in 'Lisan al-Mizan'. [Urdu Column]: (Translation): He said: May Allah Almighty unite the states of both of you, make your greatness a cause, descend blessings upon both of you, and produce much goodness from you. So, Hazrat Anas (may Allah be pleased with him) said: By Allah, Allah Almighty produced much goodness from them. And Ibn Asakir narrated a similar report from Muhammad bin Shihab bin Abu al-Haya, who from Abdul Malik bin Umar, who from Yahya bin Ma'in, who from Muhammad bin Dinar, who from Hashim, who from Yunus bin Abd, who from Husain, who from Anas (may Allah be pleased with them); Muhammad bin Tahir (bin al-Qaisarani) mentioned it in 'Takmila Kamil' by Ibn Adi, as Hafiz mentioned it in 'Lisan al-Mizan'. (T)

Apart from these, there are unknown sayings that the dowry was five hundred dirhams or forty mithqals of gold, [Arabic Column]: Narrated in al-Rahmaniyah from some marginal notes of Sharh al-Wiqayah. [Urdu Column]: These two narrations have been quoted in Rahmaniyah from some marginal notes of Sharh al-Wiqayah. (T)

or nineteen mithqals of gold, [Arabic Column]: Mentioned in al-Mirqat that it became famous among the people of Makkah, and he said it has no basis. [Urdu Column]: It is mentioned in Mirqat that this is famous among the people of Makkah, which has no basis. (T)

All are baseless. [Arabic Column]: As for what al-Qari attempted in justifying this famous saying with his words: "O Allah, now it is said that this amount is the value of the armor of Ali (may Allah...)" [Urdu Column]: But Mulla Ali Qari, in his famous justification of this narration, stated: 'It can be said like this, that this was the value of the armor of Ali al-Murtaza (may Allah be pleased with him)...'

1. Al-Mawahib al-Ladunniyyah, citing the Hadith of Anas (RA) about the marriage of Ali to Fatima (RA), Al-Maktab al-Islami, Beirut, 1/385.

2. Mirqat al-Mafatih, Chapter of Mahr (Dowry), Second Section, Al-Maktabah al-Habibiyyah, Quetta, 6/460.

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

[अरबी कॉलम]: अल्लाह आप दोनों की स्थिति को एकजुट करे, आपकी महिमा को बढ़ाए, आप दोनों पर बरकत नाज़िल करे, और आप दोनों से बहुत अधिक भलाई पैदा करे। अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने कहा: "अल्लाह की कसम, उसने उन दोनों से बहुत अधिक भलाई पैदा की।" इब्न असाकिर ने मुहम्मद बिन शिहाब बिन अबुल हया के माध्यम से, अब्दुल मलिक बिन उमर से, याह्या बिन मईन से, मुहम्मद बिन दीनार से, अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से इसी तरह की रिवायत की है। मुहम्मद बिन ताहिर ने इब्न अदी की 'तक्मिलात अल-कामिल' में इसका उल्लेख किया है, जैसा कि अल-हाफ़िज़ ने 'लिसान अल-मीज़ान' में उद्धृत किया है। [उर्दू कॉलम]: (अनुवाद): उन्होंने फ़रमाया: अल्लाह तआला तुम दोनों के हाल को मुत्तफ़िक़ फ़रमाए और तुम्हारी बुज़ुर्गी को बाइस (कारण) बनाए और तुम दोनों पर बरकतें नाज़िल फ़रमाए और तुम में से अल्लाह तआला कसीर तैयब (बहुत अधिक भलाई) पैदा फ़रमाए। तो हज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने फ़रमाया: ख़ुदा की क़सम! अल्लाह तआला ने उन दोनों से कसीर तैयब पैदा फ़रमाया। और इब्न असाकिर ने इसी तरह की रिवायत मुहम्मद बिन शिहाब बिन अबुल हया से, उन्होंने अब्दुल मलिक बिन उमर से, उन्होंने याह्या बिन मईन से, उन्होंने मुहम्मद बिन दीनार से, उन्होंने हशीम से, उन्होंने यूनुस बिन अब्द से, उन्होंने हुसैन से, उन्होंने अनस (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से रिवायत की है; मुहम्मद बिन ताहिर (बिन अल-क़ैसरानी) ने इसे इब्न अदी की 'तक्मिला कामिल' में ज़िक्र किया है, जैसा कि हाफ़िज़ ने 'लिसान अल-मीज़ान' में ज़िक्र फ़रमाया है। (त)

इनके अलावा जो अज्ञात बातें हैं कि मेहर पाँच सौ दिरहम था या चालीस मिस्काल सोना, [अरबी कॉलम]: शरह अल-विकाया के कुछ हाशिये से अल-रहमानिया में उद्धृत है। [उर्दू कॉलम]: इन दोनों रिवायतों को शरह विकाया के कुछ हाशिये से रहमानिया में नक़ल किया गया है। (त)

या उन्नीस मिस्काल सोना, [अरबी कॉलम]: अल-मिरक़ात में उल्लेख है कि यह मक्का के लोगों के बीच प्रसिद्ध हो गया, और उन्होंने कहा कि इसका कोई आधार नहीं है। [उर्दू कॉलम]: इसे मिरक़ात में ज़िक्र किया गया है कि यह अहल-ए-मक्का में मशहूर है जिसका कोई असल (आधार) नहीं है। (त)

सब बे-बुनियाद (निराधार) हैं। [अरबी कॉलम]: जहाँ तक अल-क़ारी ने अपनी इस बात से इस मशहूर रिवायत की व्याख्या करने की कोशिश की: "ऐ अल्लाह, अब कहा जाता है कि यह राशि अली (रज़ियल्लाहु...) के कवच की कीमत है।" [उर्दू कॉलम]: लेकिन मुल्ला अली क़ारी ने जो इस रिवायत

की मशहूर तौजीह (व्याख्या) अपने इस क़ौल से फ़रमाई, मगर यह हो सकता है कि यूँ कहा जाए कि अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़िरह (कवच) की यह (क़ीमत थी)...

1. अल-मवाहिब अल-लदुन्निया, फातिमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के साथ अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) के निकाह के बारे में अनस (रज़ियल्लाहु अन्हु) की हदीस के हवाले से, अल-मकतबा अल-इस्लामी, बेरूत, 1/385।
2. मिरक़ात अल-मफ़ातीह, निकाह और मेहर का अध्याय, दूसरा खंड, अल-मकतबा अल-हबीबिया, क्वेटा, 6/460।

पृष्ठ 150/688

فتاوٰی رضویہ جلد دو ازدہم

[عربی کالم]: شملكما واعزجدكما وبارك عليكما واخرج منكما كثيرا طيبا ، قال انس فوالله لقد اخرج منهما الكثير الطيب ، ورواه ابن عساكر نحوه من طريق محمد بن شهاب بن ابی الحياء عن عبد الملك بن عمر عن يحيى بن معين عن محمد بن دينار عن انس رضی الله تعالی عنه ذكره محمد بن طاهر في تكملة الكامل بن عدی كما نقله الحافظ في لسان الميزان۔ [اردو کالم]: فرمایا : اللہ تعالٰی تم دونوں کے حال متفق فرمائے اور تمہاری بزرگی کو باعث بنائے اور تم دونوں پر برکتیں نازل فرمائے اور تم میں سے اللہ تعالٰی کثیر طیب پیدا فرمائے ۔ تو حضرت انس رضی اللہ تعالٰی عنہ نے فرمایا : خدا کی قسم اللہ تعالٰی نے ان دونوں سے کثیر طیب پیدا فرمائے ۔ اور ابن عساکر نے اسی طرح کی روایت محمد بن شہاب بن ابوالحیاء سے انہوں نے عبد الملک بن عمر سے انہوں نے یحیٰی بن معین سے انہوں نے محمد بن دینار سے انہوں نے ہشیم سے انہوں نے یونس بن عبد سے انہوں نے حسین سے انہوں نے انس (رضی اللہ تعالٰی عنہا) سے ، اس کو محمد بن طاہر (بن القیسرائی) نے تکملہ کامل بن عدی میں ذکر کیا ہے ، جیسا کہ اس کو حافظ نے لسان المیزان میں ذکر فرمایا ہے ۔ (ت)

ان کے سوا جو اقاویل مجہولہ ہیں کہ پانچسو درم مہر تھا یا چالیس مثقال سونا، [عربی کالم]: نقلها في الرحمانية عن بعض حواشی شرح الوقاية۔ [اردو کالم]: ان دونوں روایتوں کو شرح وقایہ کے بعض حاشیوں سے رحمانیہ میں نقل کیا ہے (ت)

یا انیس ۱۹ مثقال ذہب، [عربی کالم]: ذكره فی المرقاة انه اشتهر بين اهل مكة قال ولا اصل له۔ [اردو کالم]: اس کو مرقاۃ میں ذکر کیا ہے کہ یہ اہل مکہ میں مشہور ہے جس کی کوئی اصل نہیں (ت)

سب بے اصل ہیں۔ [عربی کالم]: اما ما حاول القاری من توجیه هذا المشهور بقوله اللهم الان یقال ان هذا المبلغ قیمة درع علی رضی الله [اردو کالم]: لیکن ملا علی قاری نے جو اس روایت کی مشہور توجیہ اپنے اس قول سے فرمائی ، مگر یہ ہو سکتا ہے کہ یوں کہا جائے کہ علی مرتضیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی زرہ کی یہ

1 المواہب اللدنیہ بحوالہ حدیث انس رضی اللہ عنہ عن زوج علی من فاطمہ رضی اللہ عنہما المکتب الاسلامی بیروت ۱ / ۳۸۵ 2 مرقاۃ المفاتیح باب الصداق فصل ثانی المکتبۃ الحبیبیہ کوئٹہ ۶/ ۴۶۰

Fatawa Razawiyya Volume 12

(May Allah be pleased with him). I say: It does not fit what you have learned, that it (the armor) was sold for four hundred and eighty (480) dirhams, whereas nineteen (19) mithqals of gold at the rate of that blessed era only amounted to one hundred and ninety (190) dirhams. This is because one dinar was equal to one mithqal, and each dinar was worth ten dirhams. Yes, it is possible that this estimation was based on some rates in the holy city (Medina) in later times. Allah knows best. Similarly, regarding his attempt to reconcile the weights of dirhams and mithqals by stating that ten dirhams might be seven mithqals with some fractions being ignored, I say: This also does not warrant attention. This is because four hundred (400) mithqals of silver would be five hundred and seventy-one (571) and a fraction dirhams, and four hundred and eighty (480) dirhams would be three hundred and thirty-six (336) mithqals. In the first case, the fraction is more than half and cannot be ignored, and in the second case, it is very small and cannot be considered significant. Furthermore, there is no sense in discarding the excess in dirhams and sufficing with eighty (80); rather, if it were so, it should have been said as five hundred (500) exactly, as is not hidden. Reflect, perhaps there is another reason for his words.

(He says, may Allah be pleased with him): I say: This does not align with what you have learned, that the armor was sold for 480 dirhams, whereas 19 mithqals of gold at the rate of that blessed time only equals 190 dirhams, because one dinar was one mithqal and each dinar was ten dirhams. Yes, it is possible that this estimation is from some later price in the illuminated city (Medina), and Allah knows best. And likewise, his interpretation in which he tries to combine the weights of dirhams and mithqals by saying that it's possible ten dirhams equal seven mithqals with some fractions ignored, I say (i.e., I say - T): This too is not noteworthy because in this way 400 mithqals of silver would be 571 and a bit dirhams and 480 dirhams would be 336 mithqals. In the first one, the fraction is more than half which cannot be ignored, and in the second it is extremely small so it cannot be considered significant. Besides, there is no meaning in dropping the excess in dirhams and sufficing with only those 80; rather, if it were so, it should have been said as a full 500, as is not hidden. Reflect, perhaps there could be another reason for his words. (T)

Now, by the grace of Allah Almighty, listen to the reconciliation: The reason for reconciliation in the first two narrations is clear, that armor was given as a dowry which sold for four hundred and eighty (480). Now, whether you say so many dirhams, Hafiz Muhib al-Din Ahmad ibn Abdullah al-Tabari reconciled both narrations in the same way in 'Dhakha'ir al-Uqba fi Manaqib Dhawi al-Qurba', saying:

1. Mirqat al-Mafatih, Chapter of Dowry, Second Section, Al-Maktabah al-Habibiyyah, Quetta, 360/6
2. Mirqat al-Mafatih, Chapter of Dowry, Second Section, Al-Maktabah al-Habibiyyah, Quetta, 360/6

फतावा रज़विया जिल्द बारहवीं

अब बतौफीक़हि तआला तौफीक सुनिये, पहली दो रिवायतों में वजह-ए-तत्बीक ज़ाहिर है कि महर में जिरह दी कि चार सौ अस्सी ४८० को बिकी, अब चाहे कहिये खवाह इतने दरम, हाफिज़ मुहिब उद्दीन अहमद बिन अब्दुल्लाह तबरीन ने दोनों रिवायत में इसी तरह तौफीक की, ज़खायरुल उक़्बा फ़ी मनाक़िब ज़वी अल-क़ुर्बा में फरमाते हैं:

1. मिरक़ात अल-मफ़ातीह, बाब अस-सदाक़, फसल थानी, अल-मकतबह अल-हबीबियह, क्वेटा, 360/6
2. मिरक़ात अल-मफ़ातीह, बाब अस-सदाक़, फसल थानी, अल-मकतबह अल-हबीबियह, क्वेटा, 360/6

पृष्ठ 151/688

فتاوی رضویه جلد دوازدهم

اب بتوفیقہ تعالیٰ توفیق سنئے، پہلی دو روایتوں میں وجہ تطبیق ظاہر ہے کہ مہر میں زرہ دی کہ چار سو اسی ۴۸۰ کو بکی ، اب چاہے کہئے خواہ اتنے درم ، حافظ محب الدین احمد بن عبد اللہ طبرین نے دونوں روایت میں اسی طرح توفیق کی ، ذخائر العقبٰی فی مناقب ذوی القربی میں فرماتے ہیں :

1 مرقاۃ المفاتیح باب الصداق فصل ثانی المکتبۃ الحبیبیہ کوئٹہ ۳۶۰/۶ 2 مرقاۃ المفاتیح باب الصداق فصل ثانی المکتبۃ الحبیبیہ کوئٹہ ۳۶۰/۶

Fatawa Razawiya Volume 12

[Arabic Box Text]: There was a difference regarding the dowry of Hazrat Fatima (may Allah be pleased with her). Some said it was a coat of mail (armor) and at that time there was no silver or gold. Some said it was four hundred and eighty dirhams. An opinion that reconciles both views is that the marriage contract was performed upon the armor, and the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) gave it to Ali to sell. He sold it and brought the price to him. Thus, there is no contradiction between the two hadiths. (Abridged)

[Urdu Box Text]: There is a difference regarding the dowry (mahr) of Hazrat Fatima (may Allah be pleased with her) as to what it was. Some said it was armor and there were no dirhams or dinars. And some said it was four hundred and eighty (480) dirhams. A suitable and similar point indicating both statements is that the marriage contract was performed upon the armor, and afterwards the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) gave that same armor to Hazrat Ali (may Allah be pleased with him) to sell. So he sold it and presented the price to him, thus no contradiction remained between the two hadiths. (Abridged - T)

And it is clear that the words of the second narrated report themselves bear witness to this reconciliation. Therefore, Imam Zarqani, in his commentary on 'Mawahib al-Ladunniyyah', after quoting the words of al-Tabari, said:

[Arabic]: This reconciliation is the implication of the previous hadith. [Urdu]: This is the implication of the first hadith which combines both. (T)

And from the third narration, their explanation is that the hadith of the armor was interpreted by our noble scholars as 'mahr mu'ajjal' (promptly paid dowry) which was paid at the time of the blessed wedding (zifaf).

[Arabic Box Text]: I say: The aforementioned hadith also bears witness to this, as it mentions that he brought the dirhams, so the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) ordered the purchase of perfume and for her to be prepared. And he said to Ali what he said, for that was only at the time of the wedding, not at the time of the contract, as is not hidden.

[Urdu Box Text]: I say that the mentioned hadith is also a witness to this, in which it is mentioned that when Hazrat Ali (may Allah honor his face) presented the dirhams, the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) commanded the purchase of perfume and dowry items (jahiz). And the conversation he had with Hazrat Ali (may

Allah be pleased with him) was at the time of the wedding (zifaf), not at the time of the marriage contract (nikah), as is not hidden. (T)

Maulana Ali Qari in 'Mirqat', regarding the armor, states: "He gave it to her as a prompt dowry (mahr mu'ajjal)." This was given as mahr mu'ajjal. (T). The absolute investigating scholar (Imam al-Muhaqqiq 'ala al-Itlaq) in 'Fath al-Qadir' states:

1. Sharh al-Zarqani 'ala al-Mawahib, citing Dhakha'ir al-'Uqba, mention of the marriage of Ali to Fatima (may Allah be pleased with her), Dar al-Ma'rifah, Beirut, 2/2.
2. Sharh al-Zarqani 'ala al-Mawahib, citing Dhakha'ir al-'Uqba, mention of the marriage of Ali to Fatima (may Allah be pleased with her), Dar al-Ma'rifah, Beirut, 2/2.
3. Mirqat al-Mafatih, Book of Marriage, Chapter on Dowry, Second Section, Al-Maktabat al-Habibiya, Quetta, 6/360.

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

[अरबी बॉक्स]: हज़रत फ़ातिमा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) के महर के संबंध में मतभेद था कि वह कैसा था। कहा गया कि वह एक कवच था और उस समय न चांदी थी और न सोना। और कहा गया कि वह चार सौ अस्सी (480) दिरहम थे। दोनों कथनों को जोड़ने वाली उपयुक्त और समान बात यह है कि निकाह का अनुबंध कवच पर हुआ था और बाद में नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने वह कवच हज़रत अली को बेचने के लिए दिया। उन्होंने उसे बेच दिया और उसकी कीमत आप को पेश की। इस प्रकार दोनों हदीसों में कोई विरोधाभास नहीं है। (संक्षिप्त)

[उर्दू बॉक्स]: हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के महर के मुताल्लिक़ इख़्तिलाफ़ है कि क्या था, बाज़ ने कहा कि ज़रह थी और दिरहम या दीनार न थे और बाज़ ने कहा कि चार सौ अस्सी ४८० दिरहम थे। दोनों बातों पर दलालत करने वाली मुनासिब और मुशाबह बात यह है कि निकाह का इनइक़ाद ज़रह पर हुआ और बाद में हुज़ूर अलैहिस्सलोतु वस्सलाम ने वही ज़रह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को दे दी कि फ़रोख़्त कर दो, तो उन्होंने फ़रोख़्त करके क़ीमत आप को पेश कर दी, तो दोनों हदीसों में तज़ाद न रहा अह् मलख़सा (त)

और यह ज़ाहिर है कि रिवायत मुसनदा सानिया के अल्फ़ाज़ ही ख़ुद इस तत्बीक़ के शाहिद हैं वलिहाज़ा अल्लामा ज़रक़ानी ने शरह मवाहिब लुदनिया में कलाम त़बरी नक़्ल करके फ़रमाया:

[अरबी]: यह समन्वय पिछली हदीस का अर्थ है। [उर्दू]: यह पहली हदीस का मदलूल है जो दोनों को जमा करता है। (त)

और रिवायत सालसा से उनकी यूँ कि हदीस ज़रह को हमारे उलमा-ए-किराम ने महर-ए-मुअज्जल पर महमूल फ़रमाया जो वक़्त-ए-ज़फ़ाफ़-ए-अक़्दस अदा किया गया।

[अरबी बॉक्स]: मैं कहता हूँ: उपर्युक्त हदीस भी इसकी गवाह है जहाँ उल्लेख है कि वह दिरहम लाए, तो नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने सुगंध खरीदने और तैयारी करने का आदेश दिया। और उन्होंने अली से वह कहा जो कहा, क्योंकि वह केवल विवाह (ज़फ़ाफ़) के समय था न कि अनुबंध (अक़्द) के समय, जैसा कि छिपा नहीं है।

[उर्दू बॉक्स]: मैं कहता हूँ कि इस पर मज़कूरा हदीस भी शाहिद है, जिस में ज़िक्र हुआ कि हज़रत अली करमल्लाहु वज्हहुल करीम ने दराहम पेश किये तो हुज़ूर अलैहिस्सलोतु वस्सलाम ने ख़ुशबू और

जहेज़ खरीदने का हुक्म फ़रमाया और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से जो गुफ़्तगू फ़रमाई वह ज़फ़ाफ़ के वक़्त है न कि निकट। के वक़्त की, जैसा कि मख़्फी नहीं है। (त)

मौलाना अली क़ारी मिरक़ात में ज़रह की निस्बत फ़रमाते हैं "दफ़अहा इलैहा महरन मुअज्जलल" यह महर मुअज्जल के तौर पर दी गई थी। त) इमाम मुहक़्क़िक़ अलल इत़लाक़ फ़तह अल-क़दीर में फ़रमाते हैं:

1. शरह अल-ज़रक़ानी अलल मवाहिब बहवाला ज़ख़ाएर अल-उक़बा ज़िक्र तज़वीज अली बफ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा दार अल-मअरिफ़ा बेरूत 2/2
2. शरह अल-ज़रक़ानी अलल मवाहिब बहवाला ज़ख़ाएर अल-उक़बा ज़िक्र तज़वीज अली बफ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा दार अल-मअरिफ़ा बेरूत 2/2
3. मिरक़ात अल-मफ़ातीह किताबुन निकाह बाबुल सदाक़ फ़स्ल सानी अल-मकतबात अल-हबीबिया क्वेटा 6/360

पेज 152 ऑफ़ 688

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

اختلف فی صداقھا رضی اللہ تعالیٰ عنہا کیف کان فقیل کان الدر ولم یکن اذ ذاک بیضاء ولا صفراء وقیل کان اربع مائۃ وثمانین ورد ما یدل کلا اقولین و یشبہ ان العقد وقع علی الدرع وانہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اعطاھا علیا لیبیعھا فباعھا و اتاہ بثمنھا فلا تضاد بین الحدیثین اھ ملخصا حضرت فاطمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے مہر کے متعلق اختلاف ہے کہ کیا تھا، بعض نے کہا کہ زرہ تھی اور درہم یا دینار نہ تھے اور بعض نے کہا کہ چار سو اسی ۴۸۰ درہم تھے۔ دونوں باتوں پر دلالت کرنیوالی مناسب اور مشابہ بات یہ ہے کہ نکاح کا انعقاد زرہ پر ہوا اور بعد میں حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے وہی زرہ حضرت علی رضی اللہ عنہ کو دے دی کہ فروخت کردو، تو انہوں نے فروخت کر کے قیمت آپ کو پیش کر دی، تو دونوں حدیثوں میں تضاد نہ رہا اھ ملخصا (ت)

اور یہ ظاہر کہ روایت مسندہ ثانیہ کے الفاظ ہی خود اس تطبیق کے شاہد ہیں والہٰذا علامہ زرقانی نے شرح مواہب لدنیہ میں کلام طبری نقل کر کے فرمایا:

ھذا الجمع مدلول الحدیث السابق - یہ پہلی حدیث کا مدلول ہے جو دونوں کو جمع کرتا ہے۔ (ت)

اور روایت ثالثہ سے ان کی یوں کہ حدیث زرہ کو ہمارے علمائے کرام نے مہر معجل پر محمول فرمایا جو وقت زفاف اقدس ادا کیا گیا۔

قلت و یشھد لہ ایضا الحدیث المذکور حیث ذکرانہ جاء بالدراھم فامر صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم بشراء الطیب وان تجھز وقال لعلی ما قال فان ذلک انما کان حین زفت لاحین العقد کما لا یخفی ۔ میں کہتا ہوں کہ اس پر مذکورہ حدیث بھی شاہد ہے، جس میں ذکر ہوا کہ حضرت علی کرم اللہ وجہہ الکریم نے دراہم پیش کئے تو حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے خوشبو اور جہیز خرید نے کا حکم فرمایا

اور حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے جو گفتگو فرمائی وہ زفاف کے وقت ہے نہ کہ نکاح کے وقت کی، جیسا کہ مخفی نہیں ہے۔ (ت)

مولانا علی قاری مرقاۃ میں زرہ کی نسبت فرماتے ہیں دفعھا الیھا مھرا معجلا یہ مہر معجل کے طور پر دی گئی تھی۔ ت) امام محقق علی الاطلاق فتح القدیر میں فرماتے ہیں:

1 شرح الزرقانی علی المواہب بحوالہ ذخائر العقبیٰ ذکر تزویج علی بفاطمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا دار المعرفۃ بیروت ۲/۲ 2 شرح الزرقانی علی المواہب بحوالہ ذخائر العقبیٰ ذکر تزویج علی بفاطمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا دار المعرفۃ بیروت ۲/۲ 3 مرقاۃ المفاتیح کتاب النکاح باب الصداق فصل ثانی المکتبۃ الحبیبیہ کوئٹہ ۳۶۰/۶

It was a custom among them that a portion of the dower was paid promptly before consummation, to the extent that some scholars, based on this, said that consummation is not permissible without some prior payment. This is narrated from Ibn Abbas, Ibn Umar, Al-Zuhri, and Qatada (Allah be pleased with them), who cite the Holy Prophet's (peace and blessings be upon him) prohibition to Hazrat Ali as evidence. This narration, reported by Ibn Abbas (Allah be pleased with them), states that when Hazrat Ali (Allah be pleased with him) married the daughter of the Messenger of Allah (peace and blessings be upon him), he intended consummation. But the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) forbade him from it until he gave her something. He said, "O Messenger of Allah, I have nothing." He (the Prophet) said, "Give her your armor (shield)." So he gave the armor and after that, consummation took place. These are the words of Abu Dawood, and An-Nasa'i has also narrated it. It is known that the dower was four hundred dirhams of silver, etc. I say: the Hadith of Abu Dawood is a clear text that does not admit interpretation, as you can see that this incident pertains to the bina (consummation), which is known to have occurred several months after the marriage contract (nikah). Then, the third narration explicitly states that the marriage contract was for four hundred mithqals of silver, and the first narrations do not explicitly state that the marriage was contracted on the basis of the armor. One who [studies] the Hadith...

[1] Mirqat al-Mafatih, Book of Dower, Section One, Al-Maktaba al-Habibiyya, Quetta 6/356 Page 153 of 688

उनके यहाँ यह रिवाज था कि मेहर का कुछ हिस्सा मिलन (दुख़ूल) से पहले नकद (मुअज्जिल) के रूप में दे दिया जाता था, यहाँ तक कि कुछ विद्वानों ने इसी आधार पर कहा कि पहले कुछ भुगतान किए बिना मिलन जायज़ नहीं है। इब्न अब्बास, इब्न उमर, ज़ुहरी, और क़तादा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से यह रिवायत है कि वे इसे हज़रत अली को हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) द्वारा मना करने की दलील के रूप में पेश करते हैं। जैसा कि इब्न अब्बास (अल्लाह उन दोनों पर प्रसन्न हो) ने रिवायत किया है कि जब हज़रत अली (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) ने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की साहबज़ादी से निकाह किया, तो उन्होंने मिलन का इरादा किया। हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उन्हें पहले कुछ भुगतान किए बिना मिलन से मना कर दिया। उन्होंने अर्ज़ किया, "ऐ अल्लाह के रसूल, मेरे पास तो कुछ नहीं है।" आपने फ़रमाया, "अपनी ज़िरह (कवच) फ़ातिमा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) को दे दो।" चुनाँचे उन्होंने ज़िरह दे दी और उसके बाद मिलन किया। ये शब्द अबू दाऊद के हैं और इसी को नसाई ने भी रिवायत किया है। और यह बात सर्वविदित है कि मेरे هر चार सौ दिरहम था जो चाँदी है, इत्यादि। मैं (लेखक) कहता हूँ: अबू दाऊद वाली हदीस एक स्पष्ट प्रमाण है जो किसी अन्य व्याख्या को स्वीकार नहीं करती, जैसा कि आप देख रहे हैं कि यह घटना मिलन (बिना/दुख़ूल) की है, जिसके बारे में ज्ञात है कि यह निकाह के कई महीनों बाद हुई थी। फिर, तीसरी रिवायत यह स्पष्ट करती है कि निकाह चार सौ मिस्क़ाल चाँदी पर हुआ था, और पहली रिवायतों में यह स्पष्ट नहीं है कि निकाह ज़िरह पर हुआ था। जो व्यक्ति हदीस में...

[1] मिरक़ात अल-मफ़ातीह, बाब अस-सदाक़, फ़स्ल अव्वल, अल-मकतबा अल-हबीबिया, क्वेटा, 6/356 पृष्ठ 688 का 153

ان کے ہاں عادت تھی کہ مہر کا کچھ حصہ دخول سے قبل معجل طور پر دے دیا جاتا تھا، حتی کہ بعض علماء نے اسی بناء پر فرمایا کہ پہلے کچھ ادائیگی کے بغیر دخول جائز نہیں۔ ابن عباس، ابن عمر، زہری، قتادہ رضی اللہ تعالٰی عنہم سے منقول کو وہ حضرت علی کو حضور علیہ الصلوۃ والسلام کے منع فرمانے کی دلیل قرار دیتے ہیں جس اس روایت میں ہے جس کو ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہ نے روایت کیا ہے کہ حضرت علی رضی اللہ تعالٰی عنہ نے جب حضور علیہ الصلوۃ والسلام کی صاحبزادی سے نکاح کیا تو انہوں نے دخول کا ارادہ فرمایا تو حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے ان کو پہلے کچھ ادا کئے بغیر دخول سے منع فرمایا، تو انہوں نے عرض کی میرے پاس تو کچھ نہیں۔ تو آپ نے فرمایا کہ اپنی زرہ فاطمہ (رضی اللہ عنہا) کو دے دو۔ چنانچہ انہوں نے زرہ دے دی اور اس کے بعد دخول کیا۔ یہ الفاظ ابوداؤد کے ہیں اور اسی کو نسائی روایت کیا ہے۔ اور یہ بات معلوم ہے کہ مہر چار سو درہم تھا جو کہ چاندی ہے الخ قلت (میں کہتا ہوں) ابوداؤد والی حدیث صریح نص ہے جو اس تاویل کو قبول نہیں کرتی جیسا کہ تم دیکھ رہے ہو کہ یہ واقعہ بناء یعنی دخول کا ہے جس کے متعلق معلوم ہے کہ وہ نکاح سے چند ماہ بعد ہوا ہے۔ پھر تیسری روایت تصریح کر رہی ہے کہ نکاح چار سو مثقال چاندی ہوا ہے، اور پہلی روایات میں یہ تصریح نہیں ہے کہ نکاح زرہ پر ہوا ہے۔ جو شخص حدیث میں

[1] مرقاۃ المفاتیح باب الصداق فصل اول المکتبۃ الحبیبیہ کوئٹہ ۳۵۶/۶ صفحہ 153 از 688

(Regarding) Hadith, it is known that narrators sometimes shorten things; therefore, it is necessary to refer what is probable to the explicit text, while it is a settled matter to reconcile different narrations as far as possible. This is very clear. Then, the researcher's statement that 'it is known that the dowry was four hundred dirhams' was deemed problematic in 'Al-Mirqat' because it contradicts both the Hadiths regarding mithqals (weights) and dirhams. I say: (I say) There is no problem, because until the era of the Prophet (peace and blessings be upon him), and the eras of Abu Bakr Al-Siddiq and Umar Farooq, there were various dirhams. The weight of some was one mithqal, and some were less than that. Then Umar Farooq (may Allah be pleased with him) fixed them to a single weight of 'Sab'a' (seven). In 'Radd al-Muhtar', it is cited from Tahtawi, who quoted from 'Minah al-Ghaffar', that it should be known that in the era of Umar Farooq (may Allah be pleased with him), dirhams were of different weights. For some, the weight of ten (10) dirhams was ten (10) mithqals; for some, ten (10) was six mithqals; and for others, the weight of ten (10) was five mithqals. So Umar Farooq (may Allah be pleased with him) took one-third from each of the three types so that there would be no dispute in transactions. Thus, the total weight became seven; therefore, the weight of ten dirhams was fixed at seven mithqals (Summary). And in 'Khizanat al-Muftin', indicated by the symbol 'Z' referring to the fatwas of Imam Zahir-ud-Din, it is stated that in the era of the Prophet (peace and blessings be upon him) and Abu Bakr Al-Siddiq (may Allah be pleased with him), weights were different; in some dirhams, there were 20 carats...

---

1 Radd al-Muhtar, Chapter on Zakat of Wealth, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/28, 294.

(हदीस के संबंध में) यह ज्ञात है कि वर्णनकर्ता (रावी) कभी-कभी चीज़ों को संक्षिप्त कर देते हैं, इसलिए यह आवश्यक है कि संभावित (एहतमाल) को स्पष्ट पाठ (मंसूज़) की ओर संदर्भित किया जाए, जबकि विभिन्न वर्णनों में यथासंभव समन्वय करना एक तयशुदा बात है। यह बात बिल्कुल स्पष्ट है। फिर शोधकर्ता (मुहक़्क़िक़) का यह कथन कि 'यह ज्ञात है कि मेहर चार सौ दिरहम था' उसे 'मिरक़ात' में कठिन माना गया क्योंकि यह मिथक़ाल और दिरहम दोनों हदीसों के विरुद्ध है। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) कोई समस्या नहीं है, क्योंकि पैग़ंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम), और अबु बक्र सिद्दीक़ और उमर फ़ारूक़ के युग तक विभिन्न प्रकार के दिरहम थे। कुछ का वज़न एक मिथक़ाल था और कुछ का उससे कम था। फिर उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने उन्हें एक वज़न 'सबआ' (सात) पर निर्धारित किया। 'रद्दुल मुहतार' में तहतावी से, उन्होंने 'मिनह अल-ग़फ़्फ़ार' से उद्धृत किया कि यह जानना चाहिए कि उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) के युग में दिरहम अलग-अलग वज़न के थे। कुछ के लिए दस (10) दिरहम का वज़न दस (10) मिथक़ाल था; कुछ के लिए दस (10) का वज़न छह मिथक़ाल था; और अन्य के लिए दस (10) का वज़न पाँच मिथक़ाल था। तो उमर फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने तीनों प्रकारों में से प्रत्येक का एक-तिहाई लिया ताकि लेन-देन में कोई विवाद न हो। इस प्रकार, कुल वज़न सात हो गया; इसलिए दस दिरहम का वज़न सात मिथक़ाल तय किया गया (सारांश)। और 'ख़िज़ानतुल मुफ़्तीन' में, इमाम ज़हीर-उद-दीन के फ़तवों के संकेत 'ज़' के साथ, यह उल्लेख है कि पैग़ंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और अबु बक्र सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) के युग में वज़न अलग-अलग थे; कुछ दिरहमों में 20 क़ीरात थे...

---

1 रद्दुल मुहतार, ज़कात का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/28, 294।

الاحادیث علم ان الرواۃ ربما یختصرون الاشیاء فلابد من رد المحتمل الی المنصوص والجمع متعین مھما امکن فکیف وھو واضح جلی ثم قول المحقق معلوم ان الصداق کان اربع مائۃ درھم استشکلہ فی المرقاۃ لمخالفتہ لحدیثی المثاقیل والدراھم جمیعا۔ ممارست رکھتا ہے وہ جانتا ہے کہ راوی حضرات بعض چیزوں کو مختصر کرجاتے ہیں، تو اس لئے ضروری ہے کہ قابل احتمال کو منصوص کی طرف پھیرا جائے جبکہ مختلف روایات کو حتی الامکان جمع پر محمول کرنا طے شدہ بات ہے، یہ بات بالکل واضح ہے پھر محقق کا یہ قول کہ یہ بات معلوم ہے کہ مہر چار سو درہم تھے اس کو مرقاۃ میں مشکل قرار دیا کیونکہ مثقال اور درہم والی دونوں حدیثوں میں اس کی مخالفت ہے۔

اقول: ولا اشکال فأن الدراھم کانت مختلفۃ علی عھد رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم وعھد ابی بکر ن الصدیق الی زمن امیر المؤمنین عمر رضی اللہ تعالی عنھما فمنھا ما کان زنۃ مثقال ومنھا دون ذلك ثم ان عمر ھو الذی ردھا الی وزن سبعۃ فی رد المحتار۔ اقول: (میں کہتا ہوں) کوئی اشکال نہیں کیونکہ حضور علیہ الصلوۃ والسلام کے عہد اور ابوبکر صدیق اور عمر فاروق کے عہد تک مختلف دراہم تھے تو کچھ کا وزن ایک مثقال اور کچھ کا اس سے کم تھا، پھر عمر فاروق رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ان کو ایک وزن سبعہ پر مقرر کیا۔

عن الطحطاوی عن منح الغفار اعلم ان الدراھم کانت فی عھد عمر رضی اللہ تعالی عنہ مختلفۃ فمنھا عشرۃ دراھم علی وزن عشرۃ مثاقیل عشرۃ علی ستۃ مثاقیل وعشرۃ علی خمسۃ مثاقیل فاخذ عمر رضی اللہ تعالی عنہ من کل نوع ثلثاً کی لا تظھر الخصومۃ فی الاخذ والعطاء فالمجموع سبعۃ ولذا کانت الدراھم العشرۃ وزن سبعۃ اھ ملخصا۔ ردالمحتار میں طحطاوی سے انہوں نے منح الغفار سے

نقل کیا کہ جاننا چاہئے کہ عمر فاروق رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے عہد میں دراہم مختلف تھے بعض دس ۱۰ درہم کا وزن دس ۱۰ مثقال تھا اور بعض دس ۱۰ کا چھ مثقال، اور بعض دس ۱۰ کا وزن پانچ مثقال تھا۔ تو عمر فاروق رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے تینوں قسموں میں سے ہر ایک کا ثلث لیا تا کہ لینے دینے میں جھگڑا نہ ہو، تو مجموع کا وزن سات ہوا اس لئے دس درہم کا وزن سات مثقال قرار پایا اھ ملخصا۔

وفی خزانۃ المفتین برمز ظ لفتاوی الامام ظھیر الدین ان الاوزان فی عھد رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم۔ اور خزانہ المفتین ظ کے رمز سے امام ظہیر الدین کے فتاویٰ کی طرف اشارہ کیا کہ حضور علیہ الصلوۃ والسلام اور ابوبکر صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے عہد میں وزن مختلف تھے، بعض دراہم میں ۲۰ قیراط تھے۔

---

1 رد المحتار باب زکوٰۃ المال دار احیاء التراث العربي بیروت ۲/۲۸,۲۹۴

Fatawa Rizvia, Volume 12

[Arabic Section]: In the era of Abu Bakr (may Allah be pleased with him), [the weight of dirhams] was varied. Some dirhams were ten carats, which were called 'weight of five'. Others were twelve carats, called 'weight of six'. When the era of Umar (may Allah be pleased with him) came, people requested him to unify the currency. So he took [a portion] from each type... One piece of evidence for this is that the Researcher (al-Muhaqqiq) identified the armor as the expedited portion of the dowry (mahr al-mu'ajjal), which sold for 480 [dirhams]. So how can the expedited portion be 480 if the total was 400? (t)

[Urdu Section]: And the weight of some was ten carats, which were called 'weight of five', and the weight of some was twelve carats, which were called 'weight of six'. So when the era of Umar Farooq (may Allah be pleased with him) came, people demanded that there should be one coin. So you took something from each [type] etc. One proof for this is also that the Researcher (Mercy of Allah be upon him) declared the armor as the expedited dowry (mahr-e-mu'ajjal), which sold for four hundred and eighty (480) dirhams. So how is it possible that from a total of four hundred (400), four hundred and eighty (480) be the expedited portion? (t)

Thus, the conclusion is that the actual noble dowry (mahr-e-kareem) on which the holy marriage contract took place was four hundred (400) mithqals of silver. Therefore, historians have firmly stated this. It is mentioned in Mirqat:

[Arabic Section]: Sayyid Jamal al-Din al-Muhaddith mentioned in Rawdat al-Ahbab that the dowry of Fatima (may Allah be pleased with her) was four hundred mithqals of silver, and the author of al-Mawahib mentioned the same.

[Urdu Section]: Sayyid Jamal al-Din Muhaddith mentioned in Rawdah al-Ahbab that the dowry of Fatima (may Allah be pleased with her) was four hundred mithqals of silver. The author of Mawahib has also mentioned this etc.

The armor was given as an advance at the time of the wedding procession, and by holy command, it was sold for four hundred and eighty (480) dirhams.

[Arabic Section]: From this, it becomes clear regarding the statement of Al-Allamah al-Muhib al-Tabari that "it resembles that the contract took place on the armor," whereas the correct statement should be that the armor was the expedited dowry. Perhaps what led him to this was his oversight of...

[Urdu Section]: From this, the objection to Al-Allamah Muhib Tabari's statement also became clear, where he said "what resembles the truth is that the marriage took place on the armor," whereas the truth is that it should be said the armor was the expedited dowry. It is possible that they...

---

1. Khazanat al-Muftin, chapter on trade assets, manuscript version 1/341 and 42.
2. Mirqat al-Mafatih, chapter on dowry, second section, Al-Maktabah al-Habibiyyah, Quetta, 6/360.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 12

[अरबी अनुभाग]: अबू बक्र (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के युग में, [दिरहम का वजन] अलग-अलग था। कुछ दस कैरेट के थे जिन्हें 'पांच का वजन' कहा जाता था। अन्य बारह कैरेट के थे, जिन्हें 'छह का वजन' कहा जाता था। जब उमर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) का युग आया, तो लोगों ने उनसे मुद्रा को एकीकृत करने का अनुरोध किया। तो उन्होंने प्रत्येक प्रकार से [एक हिस्सा] लिया... इसके लिए एक प्रमाण यह है कि शोधकर्ता (अल-मुहक़्क़िक) ने कवच को महर के त्वरित हिस्से (महर अल-मुअज्जिल) के रूप में पहचाना, जो 480 [दिरहम] में बिका। तो अगर कुल 400 था, तो त्वरित हिस्सा 480 कैसे हो सकता है? (त)

[उर्दू अनुभाग]: और कुछ का वजन 10 दस कैरेट था जिन्हें पांच का वजन कहते थे, और कुछ का वजन बारह 12 कैरेट था जिन्हें छह का वजन कहते थे। तो जब उमर फ़ारूक़ (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) का दौर आया तो लोगों ने मांग की कि एक सिक्का होना चाहिए। तो आपने हर एक में से कुछ लिया आदि। इस पर एक दलील यह भी है कि मुहक़्क़िक़ (अल्लाह की उन पर रहमत हो) ने कवच को महर-ए-मुअज्जिल (त्वरित महर) करार दिया जो चार सौ अस्सी (480) दिरहम में बिका। तो यह कैसे संभव है कि कुल चार सौ (400) में से चार सौ अस्सी (480) त्वरित हों? (त)

इस प्रकार, निष्कर्ष यह निकला कि वास्तविक महर-ए-करीम, जिस पर पवित्र विवाह अनुबंध हुआ था, चार सौ (400) मिस्काल चांदी थी। इसलिए, इतिहासकारों ने इस पर दृढ़ता से विचार किया है। 'मिरक़ात' में है:

[अरबी अनुभाग]: सैय्यद जमाल अल-दीन अल-मुहद्दिस ने 'रौदत अल-अहबाब' में उल्लेख किया है कि फातिमा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) का महर चार सौ मिस्काल चांदी था, और 'अल-मवाहिब' के लेखक ने भी यही उल्लेख किया है।

[उर्दू अनुभाग]: सैय्यद जमालुद्दीन मुहद्दिस ने 'रौज़ाह अल-अहबाब' में उल्लेख किया है कि फातिमा (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) का महर चार सौ मिस्काल चांदी थी। इसी का ज़िक्र मवाहिब के लेखक ने भी किया है आदि।

कवच को शादी के जुलूस (रुख़्सती) के समय अग्रिम के रूप में दिया गया था, जो पवित्र आदेश से चार सौ अस्सी (480) दिरहम में बिका।

[अरबी अनुभाग]: इससे अल्लामा अल-मुहिब अल-तबरी के कथन के बारे में स्पष्ट हो जाता है कि "ऐसा लगता है कि अनुबंध कवच पर हुआ था," जबकि सही बात यह है कि कवच त्वरित महर (महर मुअज्जिल) था। शायद जिस चीज़ ने उन्हें इस ओर प्रेरित किया वह उनकी इस बात से बेख़बरी थी...

[उर्दू अनुभाग]: इससे अल्लामा मुहिब तबरी के कथन पर आपत्ति भी स्पष्ट हो गई जो उन्होंने कहा कि "सत्य के समान यह है कि निकाह कवच पर हुआ" जबकि सही बात यह है कि यूँ कहा जाए कि कवच महर-ए-मुअज्जिल थी, हो सकता है कि उन्होंने यह...

---

1. खज़ानत अल-मुफ़्तीइन, व्यापारिक संपत्तियों पर अध्याय, पांडुलिपि प्रति 1/341 और 42।
2. मिरक़ात अल-मफ़ातीह, महर का अध्याय, दूसरा खंड, अल-मकतबा अल-हबीबिया, क्वेटा, 6/360।

पृष्ठ 155 / 688

فتاوٰی رضویہ ، جلد دو ازدہم

وعہد ابي بكر رضی اللہ تعالی عنه كانت مختلفة فمنها ما كان الدرهم عشرون ما كان عشرة قراريط وهو الذی يسمی وزن خمسة، ومنها ما كان اثنی عشر قيراط وهو الذی يسمی وزن ستة فلما كان فی زمن عمر رضی اللہ تعالی عنه طلبوا منه ان يجمع الناس علی نقد واحد فاخذ من كل نوع ۱ الخ ومن الدليل علی ذلك ان المحقق جعل الدرع ما عجل من المهر وقد بيعت باربع مائة وثمانين فكيف يكون المعجل من اربع مائة وثمانين۔ (ت)

اور بعض کا وزن ۱۰ دس قیراط تھا جن کو پانچ کا وزن کہتے تھے، اور بعض کا وزن بارہ ۱۲ قیراط تھا جن کو چھ کا وزن کہتے تھے، تو جب عمر فاروق رضی اللہ تعالٰی عنہ کا عہد آیا تو لوگوں نے مطالبہ کیا کہ ایک سکہ ہونا چاہئے تو آپ نے ہر ایک میں سے کچھ لیا الخ اس پر ایک دلیل یہ بھی ہے کہ محقق علیہ الرحمتہ نے زرہ کو مہرِ معجل قرار دیا جو کہ چار سو اسی ۴۸۰ دراہم میں فروخت ہوئی، تو یہ کیسے ہو سکتا ہے کہ کل چار سو ۴۰۰ میں سے چار سو اسی ۴۸۰ معجل ہوں۔ (ت)

پس حاصل یہ قرار پایا کہ اصل مہرِ کریم جس پر عقد اقدس واقع ہوا چار سو ۴۰۰ مثقال چاندی تھی۔ ولہذا علماء سیر نے اس پر جزم فرمایا، مرقاۃ میں ہے،

ذكر السيد جمال الدين المحدث فی روضة الاحباب ان صداق فاطمة رضی اللہ تعالی عنها كان اربع مائة مثقال فضه وكذا ذكره صاحب المواهب الخ۔

سید جمال الدین محدث نے روضہ الاحباب میں ذکر کیا کہ فاطمہ رضی اللہ تعالٰی عنہا کا مہر چار سو مثقال چاندی تھی۔ اسی کو صاحب مواہب نے ذکر کیا ہے الخ۔

زرہ برسم پیشگی وقت زفاف دی گئی کہ بحکم اقدس چار سو اسی ۴۸۰ درم کو بکی،

وبه ظهر ما فی العلامة المحب الطبری یشبه ان العقد وقع علی الدرع و انما حقه ان یقال ان المعجل کانت الدرع ولعل حامله علیه ذهوله عن

اس سے علامہ محب طبری کے قول پر اعتراض بھی واضح ہو گیا جو انہوں نے کہا کہ "حق کے مشابہ یہ ہے کہ نکاح زرہ پر ہوا" جبکہ حق بات یہ ہے کہ یوں کہا جائے کہ زرہ مہرِ معجل تھی، ہو سکتا ہے کہ انہوں نے یہ

---

1 خزانہ المفتین فصل فی مال تجارت قلمی نسخہ ۱/۳۴۱ و ۴۲ 2 مرقاۃ المفاتیح باب الصداق فصل ثانی المکتبہ الحبیبیہ کوئٹہ ۶/۳۶۰

Fatawa Rizvia Volume 12

[Box 1] Arabic: The hadith of Mithqals clearly states that the contract was based on them, not on the armor, nor on the dirhams. Therefore, only two opinions were mentioned, as you have seen. Urdu: This approach was adopted due to an oversight of the hadith in which there is a clarification regarding the Mithqals that the marriage was performed on them, not on the armor, nor on the dirhams. That is why they only mentioned two opinions, as is known to you. (T)

[Main Text] A mithqal is four and a half mashas, and here a rupee is eleven and a quarter mashas. Thus, four hundred mithqals equal exactly one hundred and sixty (160) rupees. Keep this in mind, for you may not find this explanation elsewhere. (T) And Allah, Glorified and Exalted, knows best.

Problem 21: From Pilibhit, Mohalla Bashir Khan. Questioned by Ahmed Hussain Khan Sahib, Honorary Magistrate. 23 Safar 1312 AH.

Query: What do the scholars of religion say regarding this matter: A Muslim woman was married to a Muslim man. After the marriage, the man learned that he has a foster relationship (rad'a) with the woman's father; that is, my mother breastfed her father. During this period, due to ignorance, intercourse also occurred. In such a case, what will be the ruling regarding the validity of the marriage and what will be the ruling regarding the dower (Mahr)? Explain and you shall be rewarded.

Answer: Since the aforementioned matter is known and proven, it is clear that the woman is that person's niece (by fosterage), and the marriage is unlawful and invalid (fasid).

[Box 2] Arabic: In Rad al-Muhtar: Fosterage prohibits the roots (ancestors), the branches (descendants), the branches of the parents, and the branches of branches. Urdu: It is stated in Rad al-Muhtar that through fosterage, his ascendants, descendants, the descendants of his parents, and the descendants of the descendants become prohibited (Mahram). (T)

[Text Continued] It is obligatory upon him to immediately leave her and separate from her, and to say with his tongue: "I have left you" or "I have abandoned your marriage."

[Box 3] Arabic: In Rad al-Muhtar from al-Bazzaziyyah: Abandonment (Matarakah) in an invalid marriage after consummation only occurs through speech, such as "I have

set your path free" or "I have left you" etc. Urdu: It is stated in Rad al-Muhtar, citing Bazzaziyyah, that in an invalid marriage after consummation, separation (matarakah) only happens through words (for example, "I have freed your path" or "I have left you") etc. (T)

[Footnotes] 1. Rad al-Muhtar, Chapter on Prohibitions, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/79. 2. Rad al-Muhtar, Chapter on Dower, Topic on Invalid Marriage, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/351-52.

फतावा रज़विया जिल्द बारहवीं

[बॉक्स १] अरबी: मिश्क़ाल की हदीस स्पष्ट रूप से कहती है कि अनुबंध उन पर आधारित था, न कि कवच या दिरहम पर। इसलिए, केवल दो राय का उल्लेख किया गया था, जैसा कि आपने देखा है। उर्दू: इस हदीस के बारे में विस्मृति के कारण यह तरीका अपनाया गया। जिसमें मिश्क़ाल के बारे में स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि निकाह उन पर हुआ था, न कि कवच पर, और न ही दिरहम पर। इसीलिए उन्होंने केवल दो कथनों का उल्लेख किया, जैसा कि आपको ज्ञात है। (त)

[मुख्य पाठ] एक मिश्क़ाल साढ़े चार माशा होता है, और यहाँ का रुपया सवा ग्यारह माशा है। तो चार सौ मिश्क़ाल के पूरे एक सौ साठ (160) रुपये हुए। इसे याद रखें, क्योंकि शायद आपको यह व्याख्या कहीं और न मिले। (त) और अल्लाह सबसे अधिक जानने वाला है।

मसला २१: पीलीभीत, मोहल्ला बशीर खां से। अहमद हुसैन खां साहिब, मानद मजिस्ट्रेट द्वारा पूछा गया। २३ सफर १३१२ हिजरी।

सवाल: विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: एक मुस्लिम महिला का निकाह एक मुस्लिम पुरुष से हुआ। निकाह के बाद पुरुष को पता चला कि उसका महिला के पिता के साथ दूध का रिश्ता (रज़ाअत) है; यानी मेरी माँ ने उसके पिता को दूध पिलाया था। इस दौरान अज्ञानता के कारण संभोग भी हो गया। ऐसी स्थिति में निकाह की वैधता और मेहर के बारे में क्या हुक्म है? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: चूँकि उक्त मामला ज्ञात और सिद्ध हो चुका है, तो यह स्पष्ट है कि वह महिला उस व्यक्ति की (दूध की) भतीजी है, और निकाह नाजायज और फासिद (अमान्य) है।

[बॉक्स २] अरबी: रद अल-मुह्तार में: रज़ाअत (दूध का रिश्ता) मूल (पूर्वजों), शाखाओं (वंशजों), माता-पिता की शाखाओं और शाखाओं की शाखाओं को प्रतिबंधित करता है। उर्दू: रद अल-मुह्तार में है कि रज़ाअत से उसके मूल और वंशज, और उसके माता-पिता के वंशज और वंशजों के वंशज (निकाह के लिए) हराम हो जाते हैं। (त)

[आगे का पाठ] उस पर अनिवार्य (फ़र्ज़) है कि वह उसे तुरंत छोड़ दे और उससे अलग हो जाए, और अपनी ज़ुबान से कहे कि "मैंने तुझे छोड़ दिया" या "मैंने तेरे निकाह को त्याग दिया।"

[बॉक्स ३] अरबी: रद अल-मुह्तार में बज़ाज़िया से: संभोग के बाद एक फासिद (अमान्य) निकाह में अलगाव (मतारका) केवल शब्दों के माध्यम से होता है, जैसे "मैंने तुम्हारा रास्ता आज़ाद कर दिया" या "मैंने तुम्हें छोड़ दिया" आदि। उर्दू: रद अल-मुह्तार में है, बज़ाज़िया के हवाले से, कि निकाह-ए-फासिद में संभोग के बाद मतारका (अलगाव) केवल बोलने से होता है (जैसे "मैंने तेरा रास्ता आज़ाद किया" या "तुझे छोड़ दिया है") आदि। (त)

[पाद लेख] १. रद अल-मुह्तार, हराम चीजों का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, २/७९। २. रद अल-मुह्तार, मेहर का अध्याय, फासिद निकाह पर चर्चा, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, २/३५१-५२।

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

[باکس ۱] عربی: حدیث المثاقیل المصر اہ بأن العقد انم وقع علیھا لا علی الدرع ولا علی الدراھم ولذا لم یذکر الا قولین کما رأیت۔ اردو: انداز اس حدیث سے ذہول کی وجہ سے اختیار کیا۔ جس میں مثاقیل کے بارے میں تصریح ہے کہ نکاح ان پر ہوا نہ کہ زرہ پر، اور نہ ہی دراہم پر ہوا۔ اسی لئے انہوں نے صرف دو ۲ قول ہی ذکر کئے۔ جیسا کہ آپ کو معلوم ہے (ت)

[مین ٹیکسٹ] مثقال ساڑھے چار ماشہ ہے، اور یہاں کا روپیہ سوا گیارہ ماشے، تو چار سو مثقال کے پورے ایک سو ساٹھ ۱۶۰ روپے ہوئے۔ فاحفظہ فلعلك لا تجد ھذا التحریر فی غیر ھذا التحریر (اس کو محفوظ کرلو، ہوسکتا ہے کہ آپ کو یہ تحریر دوسری جگہ نہ ملے۔ ت) واللہ سبحنہ وتعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۱: از پیلی بھیت محلہ بشیر خاں مسئولہ احمد حسین خاں صاحب آنریری مجسٹریٹ ۲۳ صفر ۱۳۱۲ھ

سوال: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت مسلمان سے ایک مسلمان کا نکاح ہوا، اس کے بعد نکاح کنندہ کو معلوم ہوا کہ اس عورت کے باپ سے مجھ کو رشتہ شیر خوارگی ہے یعنی میری ماں نے اس کے باپ کو دودھ پلایا ہے اور اس زمانہ میں بوجہ عدم واقفیت ہمبستری بھی ہو گئی، ایسی صورت میں نسبت جواز نکاح کے کیا حکم ہوگا اور مہر کی نسبت کیا حکم فرمایا جائے گا؟ بینوا توجروا۔

الجواب: جبکہ امر مذکور معلوم و ثابت ہو لیا تو ظاہر ہوا کہ وہ عورت اس شخص کی بھتیجی ہے اور نکاح ناجائز و فاسد،

[باکس ۲] عربی: فی ردالمحتار یحرم من الرضاع اصولہ وفرعہ وفروع ابویہ وفروعہ ۱۔ اردو: ردالمحتار میں ہے کہ رضاعت سے اس کے اصول و فروع اور اس کے والدین کے فروع اور فروع کے فروع ہوجاتے ہیں۔ (ت)

[ٹیکسٹ کنٹینیوڈ] اس پر فرض ہے کہ فوراً اسے ترک کردے اور اس جدا ہوجائے زبان سے کہہ دے کہ میں نے تجھے چھوڑا یا تیرے نکاح کو ترک کیا،

[باکس ۳] عربی: فی رد المحتار فی البزازیۃ، المتارکۃ فی الفاسد بعد الدخول لا تکون الا با لقول کخلیت سبیلك او ترکتك ۲الخ۔ اردو: ردالمحتار میں ہے بزازیہ میں ہے کہ نکاح فاسد میں دخول کے بعد متارکہ کہ صرف قول (مثلاً میں نے تیرا راستہ آزاد کیا یا تجھے چھوڑ دیا ہے) سے ہوتا ہے الخ (ت)

[حواشی] ۱ ردالمحتار فصل فی المحرمات داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۷۹ ۲ ردالمحتار باب المھر مطلب فی النکاح الفاسد داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۵۱-۲/۵۲

And since cohabitation, i.e., intercourse, has occurred, the full and complete 'Mahr al-Mithl' (equivalent dower) has become mandatory for the woman, even if it exceeds the 'Mahr al-Musamma' (stipulated dower). In an invalid marriage (Nikah Fasid), the ruling is certainly that if a dower was specified, then 'Mahr al-Mithl' will be mandatory, but it will not be awarded more than what was agreed upon. For example, if a thousand rupees dower was fixed, then if 'Mahr al-Mithl' is a thousand or more, only a thousand will be awarded; and if 'Mahr al-Mithl' is less than a thousand, only that much will be awarded, it will not be increased up to a thousand. However, some cases are exceptions to this, including marriages between prohibited kin (Mahram) that occur unknowingly; there, after intercourse, the full 'Mahr al-Mithl' becomes mandatory even if it exceeds the 'Mahr al-Musamma'. No consideration will be given to the stipulated dower. And here the same situation has occurred as she is his niece and a foster-prohibited relative (Mahram Ridai).

In Tanwir al-Absar: In an invalid marriage, Mahr al-Mithl is mandatory only through intercourse, not through anything else; and that Mahr al-Mithl should not exceed the stipulated amount. Allah, the Exalted, knows best, and His knowledge is most complete and most perfect. (T)

In Tanwir al-Absar: 'Fi Tanwir al-Absar: yajibu mahr al-mithli fi nikahin fasidin bil-wati la bighayrihi wa lam yazid 'alal-musamma wallahu ta'ala a'lamu wa 'ilmuhu atammu wa ahkamu.'

Question 22: 5 Sha'ban 1315 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: Hindah was married to Zaid during her childhood, and from the day of the marriage, Hindah did not go to Zaid's house even for a moment, nor did cohabitation occur. In this case, if Hindah wants dower, can she get it or not? Explain and be rewarded.

Answer: The questioner states that both husband and wife passed away, and the death of one of them also confirms the dower. Therefore, in the mentioned case, the entire dower is due from Zaid's estate to Hindah, provided that it was a binding marriage contract, such as one performed by a father or grandfather, or it was an effective but non-binding one and one of the spouses died before it was revoked.

In Durr al-Mukhtar: It (dower) is confirmed upon intercourse, or valid seclusion (khalwat-e-sahiha), or the death of either of them, etc. (T)	**In Durr al-Mukhtar: 'Fi al-Durr al-Mukhtar: yata'akkadu 'inda wat'in aw khalwatin sahat aw mawti ahadihima ilakh.'**

And if the marriage was not contracted at all, for example, someone other than the father or grandfather married off the minor Hindah to an unequal person (non-kufu) or with a dower significantly less than 'Mahr al-Mithl', such a marriage is religiously void (batil) or was contracted as suspended (mawquf) and had not yet become effective when...

---

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on Mahr, Mujtabai Press Delhi, 1/201 2 Durr al-Mukhtar, Chapter on Mahr, Mujtabai Press Delhi, 1/179

चूँकि सहवास यानी संभोग हुआ है, इसलिए स्त्री के लिए 'महर-ए-मिस्ल' (समान दहेज) पूर्ण रूप से अनिवार्य हो गया है, भले ही वह 'महर-ए-मुसम्मा' (निर्धारित दहेज) से अधिक हो। निकाह-ए-फ़ासिद (अमान्य विवाह) में निश्चित रूप से यह नियम है कि जब कुछ महर निर्धारित किया गया हो, तो 'महर-ए-मिस्ल' ही अनिवार्य होगा, लेकिन तयशुदा से अधिक नहीं दिलाया जाएगा। उदाहरण के लिए, यदि एक हज़ार रुपये महर तय हुआ था, तो यदि 'महर-ए-मिस्ल' एक हज़ार या उससे अधिक है, तो केवल एक हज़ार ही दिलाए जाएंगे; और यदि 'महर-ए-मिस्ल' एक हज़ार से कम है, तो केवल उतना ही दिलाया जाएगा, उसे एक हज़ार तक नहीं बढ़ाया जाएगा। लेकिन कुछ स्थितियाँ इससे अपवाद हैं, जिनमें अनजाने में हुए महरमों के बीच निकाह शामिल हैं; वहाँ सहवास के बाद पूरा 'महर-ए-मिस्ल' अनिवार्य हो जाता है, भले ही वह 'महर-ए-मुसम्मा' से अधिक हो। निर्धारित महर का कोई ध्यान नहीं रखा जाएगा। और यहाँ वही स्थिति उत्पन्न हुई है क्योंकि वह उसकी भतीजी और रज़ाई महरम (दुग्ध-संबंधी निषिद्ध रिश्तेदार) है।

तनवीरुल अबसार में है: निकाह-ए-फ़ासिद में महर-ए-मिस्ल केवल संभोग से अनिवार्य होता है, किसी और चीज़ से नहीं, और वह महर-ए-मिस्ल भी निर्धारित से अधिक न हो। अल्लाह सुभानहु व तआला बेहतर जानता है और उसका ज्ञान पूर्ण और श्रेष्ठ है। (त)

तनवीरुल अबसार में है: 'फ़ि तनवीर अल-अब्सार: यजीबु महर अल-मिस्लि फ़ि निकाहिन फ़ासिदिन बिल-वती ला बिगैरिही वलम यज़िद अलल-मुसम्मा वल्लाहु तआला आलम व इल्मुहु अतम्मु व अहकम।'

प्रश्न २२: ५ शाबान १३१५ हिजरी दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: हंदा का निकाह उसके बचपन के दिनों में ज़ैद के साथ हुआ था और निकाह के दिन से एक पल के लिए भी हंदा ज़ैद के घर नहीं गई और न ही सहवास हुआ। इस स्थिति में अगर हंदा महर चाहे तो पा सकती है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य पाएँ।

उत्तर: प्रश्नकर्ता का कथन है कि पति और पत्नी की मृत्यु हो गई और उनमें से एक का मरना भी महर को पक्का (मअक्कद) करता है। अतः उक्त स्थिति में पूरा महर हंदा के लिए ज़ैद की विरासत से अनिवार्य है, बशर्ते कि वह निकाह अनिवार्य रूप से हुआ हो जैसा कि पिता या दादा ने किया हो, या

वह प्रभावी लेकिन गैर-अनिवार्य था और रद होने से पहले पति या पत्नी में से किसी एक की मृत्यु हो गई।

दुर्र-ए-मुख्तार में है: संभोग या खलवत-ए-सहीहा (वैध एकांत) या दोनों में से किसी की मृत्यु से महर अनिवार्य हो जाता है आदि। (त)

दुर्र-ए-मुख्तार में है: 'फ़ि अल-दुर्र अल-मुख़्तार: यताअक्कदु इंदा वतइन औ खलवतिन साहत औ मौति अहदिहिमा इलाख।'

और यदि निकाह हुआ ही नहीं था, जैसे पिता या दादा के अलावा किसी और ने नाबालिग हंदा का निकाह किसी गैर-कुफ़ू (असमान) से या महर-ए-मिस्ल में भारी कमी के साथ कर दिया, तो शरीयत के अनुसार ऐसा निकाह बातिल (अमान्य) है या मवकूफ़ (निलंबित) रूप से हुआ था और अभी प्रभावी नहीं हो पाया था कि...

---

१ दुर्र-ए-मुख्तार, बाबुल महर, मुजतबाई प्रेस दिल्ली १/२०१ २ दुर्र-ए-मुख्तार, बाबुल महर, मुजतबाई प्रेस दिल्ली १/१७९

पृष्ठ १५७/६८८

اور از آنجا کہ ہمبستری یعنی مجامعت واقع ہوئی عورت کے لئے مہر مثل تمام و کمال لازم آیا اگرچہ مہر مسٹّی سے زائد ہو، نکاح فاسد میں ضرور یہ حکم ہے کہ جب مہر کچھ معین کیا گیا تو لازم تو مہر مثل ہی آئے گا مگر قرار یافتہ سے زیادہ نہ دلایا جائے گا، مثلاً ہزار روپیہ مہر ٹھہرا تھا تو اگر مہر مثل ہزار یا ہزار سے زائد ہے تو ہزار ہی دلائے جائیں گے اور مہر مثل ہزار سے کم ہے تو صرف اسی قدر دلائیں گے ہزار تک نہ بڑھائیں گے، لیکن بعض صورتیں اس سے مستثنیٰ ہیں ازاں جملہ نکاح محارم کہ نادانستہ وقوع میں آیا وہاں بعد وطی مہر مثل پورا لازم آتا ہے اگرچہ مہر مسمّٰی سے زائد ہو مسمّٰی کا کچھ لحاظ نہ کیا جائے گا اور یہاں یہی صورت واقع ہے کہ وہ اس کی بھتیجی اور محرم رضاعی ہے۔

تنویر الابصار میں ہے: نکاح فاسد میں مہر مثل صرف في تنویر الابصار: یجب مهر المثل في جماع سے لازم آتا ہے کسی غیر جماع سے نہیں، وہ مہر نکاح فاسد بالوطی لا بغیره ولم یزد علی مثل بھی مقرر سے زیادہ نہ ہو۔ واللہ سبحانہ وتعالیٰ اعلم المسمی واللہ تعالی اعلم وعلمه اتم وعلمہ اتم واحکم۔ (ت) واحکم۔

مسئلہ ۲۲: ۵ شعبان ۱۳۱۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ کا نکاح ایام نابالغی میں زید کے ساتھ ہوا اور نکاح کے روز سے ایک لمحہ کو بھی ہندہ زید کے گھر نہیں گئی اور نہ ہم صحبت ہوئی اس صورت میں ہندہ مہر چاہے تو پا سکتی ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا الجواب: سائل مظہر کہ زن و شو نے انتقال کیا اور اُن میں ایک کا مر جانا بھی مہر کو مؤکد کرتا ہے، پس صورتِ مذکورہ میں کُل مہر ہندہ ترکہ زید پر لازم ہے جبکہ وہ نکاح لازم واقع ہوا جیسا کہ اب وجد نے کیا یا نافذ غیر لازم تھا اور پیش از رد، احد الزوجین کا انتقال ہو گیا۔

در مختار میں ہے: وطی یا خلوت صحیحہ یا دونوں میں في الدرالمحتار: يتأكد عند وطء او خلوة صحت او موت احدهما الخ۔ سے کسی کی موت سے مہر لازم ہو جاتا ہے الخ (ت)

اور اگر نکاح منعقد ہی نہ ہوا تھا جیسے غیر اب وجد نے نابالغی ہندہ میں غیر کفو سے یا مہر مثل میں کمی فاحش کے ساتھ نکاح کر دیا کہ شرعاً ایسا نکاح باطل ہے یا موقوفاً منعقد ہوا اور ہنوز نافذ نہ ہونے پایا تھا کہ

---

1 درمختار باب المهر مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۰۱ 2 درمختار باب المهر مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۱۷۹

If one of them passes away, for example, if someone other than the father performed the marriage under his guardianship without his permission, and the father had not yet authorized it when one of the spouses died, then in this situation, no dower (mahr) or anything else will be given at all.

In Rad al-Muhtar: The dower becomes fully obligatory through consummation or valid privacy (khalwah sahihah), and similarly, by the death of one of them before consummation. Without these, it is forfeited because when a marriage is annulled, it is treated as if it never existed. - Nahr, summarized. And Allah knows best.

It is stated in Rad al-Muhtar that just as the full dower becomes obligatory by consummation and valid privacy, it also becomes obligatory by the death of either party before consummation. If the mentioned situations do not occur, the dower is dropped because when the marriage is annulled, it becomes as if it never was. - Nahr, summarized. And Allah Ta'ala knows best. (T)

Allah Ta'ala knows best.

Allah Ta'ala knows best.

Problem 23: 15 Dhu al-Qi'dah 1315 AH What do the scholars of religion say in this matter: Zaid married a woman but found her unfit for a man; there is a bone in her body [physical obstruction]. After some time, Zaid divorced her. Now, is it obligatory to pay her dower or not? Explain and you will be rewarded.

The Answer: In this case, half the dower will have to be given. It is stated in Durr al-Mukhtar:

Half of it becomes obligatory by divorce before intercourse or privacy.

Half dower becomes obligatory due to divorce before privacy. (T)

In the same source, it is written:

Privacy without an impediment like ratq (fleshly obstruction), qarn (bony obstruction), or 'afal (glandular obstruction) is like intercourse in confirming the dower. - Summarized. And Allah Ta'ala knows best.

Privacy where there is no impediment. For example, if flesh, bone, or a gland covers the genitals. Privacy without these impediments is considered the same as intercourse, and the full dower becomes obligatory. - Summarized. (T) And Allah Ta'ala knows best.

1. Rad al-Muhtar, Book of Marriage (Chapter 1), Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/307
2. Durr al-Mukhtar, Chapter of Mahr, Mujtabai Press, Delhi, 1/197
3. Durr al-Mukhtar, Chapter of Mahr, Mujtabai Press, Delhi, 1/199

उनमें से एक का निधन हो गया, जैसे कि पिता की विलायत की स्थिति में उनके अलावा किसी और ने उनकी अनुमति के बिना निकाह कर दिया और अभी तक पिता ने इसे जायज़ नहीं किया था कि जीवनसाथी में से किसी एक की मृत्यु हो गई, तो इस स्थिति में बिल्कुल कोई मेहर आदि नहीं मिलेगा।

रद अल-मुह्तार में है: मेहर पूरे तौर पर संभोग या वैध एकांत (ख़लवत-ए-सहीहा) से अनिवार्य हो जाता है, और इसी तरह संभोग से पहले उनमें से किसी एक की मृत्यु से भी। इनके बिना यह समाप्त हो जाता है क्योंकि जब निकाह रद्द हो जाता है तो वह ऐसा हो जाता है जैसे कभी था ही नहीं। - नह्र, संक्षेप में। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

रद अल-मुह्तार में है कि जिस तरह संभोग और ख़लवत-ए-सहीहा से पूरा मेहर अनिवार्य हो जाता है, वैसे ही संभोग से पहले दोनों में से किसी की मृत्यु से भी अनिवार्य हो जाता है। यदि उक्त स्थितियाँ उत्पन्न नहीं होती हैं तो मेहर समाप्त हो जाता है क्योंकि जब निकाह निरस्त हो जाता है तो वह शून्य हो जाता है। - नह्र, संक्षेप में। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 23: 15 ज़ीक़ादा 1315 हिजरी धर्म के विद्वान इस मसले में क्या फरमाते हैं कि ज़ैद ने एक औरत से निकाह किया, उस औरत को पुरुष के योग्य नहीं पाया, उसके शरीर में हड्डी (शारीरिक बाधा) है। कुछ समय बाद ज़ैद ने उसे तलाक दे दिया। अब उसका मेहर देना वाजिब है या नहीं? बयान करें और पुण्य के पात्र बनें।

उत्तर: इस स्थिति में आधा मेहर देना होगा। दुर्र-ए-मुह्तार में है:

संभोग या एकांत से पहले तलाक होने पर उसका आधा वाजिब होता है।

एकांत से पहले तलाक होने से आधा मेहर अनिवार्य होता है। (त)

इसी में है:

बिना किसी बाधा के एकांत, जैसे कि रतक़ (मांस की रुकावट), क़र्न (हड्डी की रुकावट) या अफ़ल (ग्रंथि की रुकावट), मेहर की पुष्टि में संभोग के समान है। - संकलित। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।	**एकांत ऐसा जहाँ कोई बाधा न हो। उदाहरण के लिए, जननांगों में मांस, हड्डी या ग्रंथि आ जाए। इन बाधाओं के बिना एकांत हो तो वह संभोग के हुक्म में है और मेहर अनिवार्य हो जाता है। - संकलित। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।**

---

1. रद अल-मुह्तार, बाब उल अव्वल, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/307
2. दुर्र-ए-मुह्तार, बाब अल-मेहर, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 1/197
3. दुर्र-ए-मुह्तार, बाब अल-मेहर, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 1/199

اُن میں ایک نے انتقال کیا جیسے بحالتِ ولایتِ پدر اُس کے غیر نے بے اسکی اجازت نکاح کر دیا اور ہنوز باپ نے جائز نہ کیا تھا کہ احد الزوجین نے وفات پائی تو اس صورت میں اصلاً کچھ مہر وغیرہ نہ ملے گا۔

فی ردالمحتار، المہر کما بہ یلزم جمیعہ بالدخول و الخلوۃ کذلک بموت احدھما قبل الدخول اما بدون ذلک فتیسقط لان العقد اذا انفسخ یجعل کانہ لم یکن نہراہ مختصرا واللہ تعالٰی اعلم۔

واللہ تعالٰی اعلم۔

ردالمحتار میں ہے کہ جس طرح دخول اور خلوتِ صحیحہ سے پورا مہر لازم ہو جاتا ہے ایسے ہی دونوں میں سے کسی کی موت قبل از دخول سے بھی لازم ہو جاتا ہے، اگر مذکورہ صورتیں نہ واقع ہوئی تو مہر ساقط ہو جاتا ہے کیونکہ جب نکاح فسخ ہو تو وہ کالعدم ہو جاتا ہے، نہر اھ مختصرا۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۲۳: ۱۵ ذی قعدہ ۱۳۱۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے ایک عورت سے نکاح کیا، اُس عورت کو مرد کے قابل نہ پایا، اُس کے جسم میں ہڈی ہے، ایک زمانے کے بعد زید نے اسے طلاق دے دی، اب اس کا مہر دینا واجب ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: اس صورت میں آدھا مہر دینا آئے گا۔ درمختار میں ہے:

یجب نصفہ بطلاق قبل وطء او خلوۃ۔ طلاق قبل از خلوت سے نصف مہر لازم ہوتا ہے۔ (ت)

اسی میں ہے:

الخلوة بلا مانع کرتق التلاحم (وقرن) عظم (وعفل) غدة (کالوطء تأکد المہر اھ ملتقطاً۔ واللہ تعالیٰ اعلم

خلوت ایسی کہ جہاں کوئی مانع نہ ہو۔ مثلاً شرمگاہ میں گوشت پر ہو جائے، ہڈی ہو جائے، غدود ہو جائے ان موانع کے بغیر خلوت ہو تو وہ وطی کے حکم میں ہے مہر لازم ہو جاتا ہے اھ ملتقطا (ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

---

1. ردالمحتار باب الاول دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۰۷/۲
2. درمختار باب المہر مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۷/۱
3. درمختار باب المہر مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۹/۱

Fatawa Razawiyya, Volume 12

Mas'ala 24: From Rewa state, Ghoghar neighborhood, sent by Abdullah Khan Sahib Chabuk Sawar, 10 Safar 1316 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid expelled his wedded wife Hindah from his house on suspicion of adultery. It has been more than four months since he provided any maintenance (nan-nafqah). About a month ago, in a single sitting, he gave three divorces, not in front of the woman but in front of other individuals. Regarding the woman's dower (mahr), it was fixed at 800 rupees. The husband had registered a piece of property worth 800 rupees in lieu of the dower and given her possession. Now, he has dispossessed and expelled her, and is claiming through court litigation to forcibly take back the jewelry he had given to the woman (Musammat). In the questioned situation, is the man authorized to forcibly take back items like jewelry etc., which he had made for the woman, in addition to the dower?

Request for Answer: Kindly provide an answer citing reliable books along with the translation of Arabic texts. Clarify and be rewarded.

The Answer: Three divorces have occurred; it is not a condition for the woman to be present. The piece of property given in lieu of dower is the property of the woman; she can reclaim it through litigation. Regarding other items like jewelry etc. that Zaid gave to Hindah, if it is proven by reliable Sharia witnesses or Zaid's own admission that he had gifted (Hiba) those things to Hindah, then Zaid has no right to take them back. It is stated in Fatawa Qazi Khan and Fatawa Alamgiri:

[Arabic Box Text]: "اذا وهب الزوجين لصاحبه لايرجع فى الهبة وان انقطع النكاح بينهما" [Urdu Translation in Box]: "When either spouse gives a gift to the other, they do not have the right to revoke the gift, even if the marriage is subsequently dissolved."

Similarly, Zaid has no right of return for anything of which she is considered the owner by custom. Scholars state: "Al-ma'hudu 'urfan kal-mashruti nassan" (What is customary is like what is explicitly stipulated). However, if in the second type of items, Zaid proves with Sharia witnesses that at the time of giving, he had made it clear that he was giving it only for use and was not making her the owner, then indeed that item will be considered the husband's property and he can take it back by force. Scholars state: "As-sarihu yafuq-ud-dalalah" (Explicit statement supersedes implicit indication). Likewise, for jewelry, clothes, etc., and everything the husband gave where ownership (tamlik) is not proven either explicitly or customarily, the husband's statement will be considered authoritative.

[1] Fatawa Hindiyya, Chapter Five on Revoking Gifts, Noorani Kutub Khana Peshawar, 4/386.

फ़तावा रज़विया, खंड 12

मसाला 24: रियासत रीवां, मोहल्ला घोघर से, प्रेषक अब्दुल्ला खान साहब चाबुक सवार, 10 सफ़र 1316 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: ज़ैद ने अपनी विवाहित पत्नी हिंदा को व्यभिचार के संदेह में अपने घर से निकाल दिया। चार महीने से अधिक समय हो गया है कि उसने कोई गुज़ारा भत्ता (नान-नफ़क़ा) नहीं दिया। लगभग एक महीने पहले, एक ही बैठक में, उसने तीन तलाक़ दिए, लेकिन महिला के सामने नहीं बल्कि अन्य व्यक्तियों के सामने। महिला के मेहर (दहेज) के बारे में, वह 800 रुपये तय था। पति ने मेहर के बदले 800 रुपये मूल्य की एक संपत्ति उसके नाम पर पंजीकृत की थी और उसे कब्ज़ा दे दिया था। अब, उसने उसे बेदखल कर दिया है और निकाल दिया है, और अदालत के माध्यम से उन गहनों को जबरन वापस लेने का दावा कर रहा है जो उसने महिला (मुसम्मात) को दिए थे। प्रश्नगत स्थिति में, क्या पुरुष मेहर के अलावा उन वस्तुओं जैसे गहने आदि को जबरन वापस लेने का हकदार है जो उसने महिला के लिए बनवाए थे?

उत्तर के लिए अनुरोध: कृपया विश्वसनीय पुस्तकों के संदर्भ में और अरबी इबारत के अनुवाद के साथ उत्तर प्रदान करें। स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: तीन तलाक़ हो गए हैं, महिला का सामने होना कोई शर्त नहीं है। मेहर के बदले में दी गई संपत्ति महिला की मिल्कियत (स्वामित्व) है; वह कानूनी कार्रवाई के ज़रिए इसे वापस ले सकती है। मेहर के अलावा अन्य सामान जैसे गहने आदि जो ज़ैद ने हिंदा को दिए, अगर शरीयत के विश्वसनीय गवाहों या ज़ैद के स्वयं के इक़रार से यह साबित हो जाए कि ज़ैद ने वे चीजें हिंदा को उपहार (हिबा) में दी थीं, तो ज़ैद को उन्हें वापस लेने का अधिकार नहीं है। फ़तावा क़ाज़ी ख़ान और फ़तावा आलमगीरी में है:

[अरबी बॉक्स टेक्स्ट]: "اذا وهب الزوجين لصاحبه لايرجع فى الهبة وان انقطع النكاح بينهما"
[बॉक्स में उर्दू अनुवाद]: "जब पति या पत्नी में से कोई एक दूसरे को उपहार देता है, तो उन्हें उपहार वापस लेने का अधिकार नहीं होता, भले ही बाद में विवाह विच्छेद हो जाए।"

इसी तरह, जिस चीज़ के बारे में उसे रिवाज के अनुसार मालिक माना जाता है, उसमें भी ज़ैद को वापस लेने का अधिकार नहीं है। विद्वान कहते हैं: "अल-मअहूदुर्रफ़न काल-मशरूति नसन" (जो रिवाज में तय है, वह वैसा ही है जैसा स्पष्ट रूप से शर्त लगाया गया हो)। हालाँकि, यदि दूसरी प्रकार की वस्तुओं में ज़ैद शरीयत के गवाहों के साथ यह साबित कर देता है कि देते समय उसने यह स्पष्ट

कर दिया था कि वह केवल उपयोग के लिए दे रहा है और उसे मालिक नहीं बना रहा है, तो निश्चित रूप से वह चीज़ पति की संपत्ति मानी जाएगी और वह उसे जबरन वापस ले सकता है। विद्वान कहते हैं: "अस-सरीहु यफ़ूक़-उद्दलालह" (स्पष्ट कथन को सांकेतिक संकेत पर प्राथमिकता प्राप्त है)। इसी तरह, गहने, कपड़े आदि और हर वह चीज़ जो पति ने दी और जिसका स्वामित्व (तमलीक) स्पष्ट रूप से या रिवाज के अनुसार किसी भी तरह से सिद्ध नहीं हुआ, उसमें पति का कथन ही विश्वसनीय माना जाएगा।

[1] फ़तावा हिन्दिया, अध्याय पाँच: उपहार वापस लेने के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 4/386।

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

مسئلہ ۲۴: از ریاست ریواں محلہ گھوگھر مرسلہ عبداللہ خاں صاحب چابک سوار ۱۰ صفر ۱۳۱۶ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی زوجہ منکوحہ ہندہ کو باشتباہ زنا اپنے مکان سے نکال دیا، چار ماہ سے زائد ہوتا ہے کہ نان نفقہ مطلقاً نہ دیا، قریب ایک ماہ کے ہوتا ہے کہ جلسہ واحد میں تین طلاق دے مگر نہ روبرو عورت کے بلکہ دوسرے اشخاص کے۔ دین مہر عورت کا ۸۰۰ روپیہ پایا تھا شوہر نے قطعہ مکان مالیتی ۸۰۰ روپیہ بعوض دین مہر رجسٹری کرا کر دخل دے دیا تھا، اب بے دخل کر کے نکال دیا اپنے دئے ہوئے زیورات کا مسماۃ سے بجبر و اکراہ بنالش کچہری دعویدار ہے۔ پس صورتِ مسئولہ میں آیا مرد مجاز ہے کہ علاوہ دین مہر کے جو اشیاء از قسم زیورات وغیرہ عورت کو بنوا دیا تھا جبراً واپس لے سکتا ہے یا نہیں؟ جواب بحوالہ کتب معتبرہ مع ترجمہ عبارت عربی جلد مرحمت فرمایا جائے۔ بینوا توجروا الجواب: تین طلاقیں ہو گئیں، عورت کے روبرو ہونا کچھ شرط نہیں، قطعہ مکان کہ بعوض دین مہر دیا تھا ملک عورت ہے عورت بذریعہ نالش واپس لے سکتی ہے، علاوہ مہر جو اشیاء مثل زیور وغیرہ زید نے ہندہ کو دیں اگر گواہان عادل شرعی یا اقرار زید سے ثابت ہو کہ وہ چیزیں زید نے ہندہ کو ہبہ کردی تھیں تو زید ان کی واپسی کا اختیار نہیں رکھتا۔ فتاوٰی قاضی خاں و فتاوٰی عالمگیری میں ہے:

اذا وھب الزوجین لصاحبہ لایرجع فی الہبۃ وان انقطع النکاح بینھما جب میاں بیوی نے ایک دوسرے کو کوئی ہبہ دیا تو رجوع کا اختیار نہیں اگرچہ بعد کو نکاح منقطع ہو جائے۔ (ت)

یونہی جس چیز کی نسبت اس کی مالک سمجھی جاتی ہے اس میں بھی زید کو اختیار واپسی نہیں۔ علماء فرماتے ہیں: المعھود عرفا کالمشروط نصا (عرف میں ثابت ایسے ہے جیسا کہ نص کرکے

مشروط کیا ہو۔ت) مگر جبکہ اس قسم دوم کی چیز میں زید گواہان شرعی سے ثابت کردے کہ میں نے دیتے وقت جتا دیا تھا کہ برتنے کے لئے دیتا ہوں تجھے مالک نہیں کرتا، تو البتہ وہ چیز ملکِ شوہر سمجھی جائے گی اور وہ بالجبر واپس لے سکتا ہے۔ علماء فرماتے ہیں: الصریح یفوق الدلالۃ (صراحت کو دلالت پر فوقیت حاصل ہے۔ ت) اسی طرح زیور کپڑا وغیرہ ہر وہ چیز کہ شوہر نے دی اور تملیک صراحتہً خواہ عرفاً کسی طرح ثابت نہ ہوئی اس میں بھی قول شوہر کا معتبر ہے۔

[1] فتاوٰی ہندیہ الباب الخامس فی الرجوع فی الہبہ نورانی کتب خانہ پشاور ۳۸۶/۴

Fatawa Razawiya Volume 12

...can take it back forcibly, and without a transfer of ownership, the woman's use, wearing, or utilization of items does not establish her ownership. However, if they are clothes for wearing in the house which have become mandatory for the husband to provide as maintenance, he should give them; but if he claims that he did not make the woman the owner, his statement should be considered credible. It is stated in 'Uqud al-Durriyah':

"It is stated in 'Al-Bahr' and 'Al-Badai' that if the wife acknowledged the husband's ownership and then claimed it was transferred to her, the transfer will not be established without proof. It is necessary to have evidence of the transfer from him to her through a gift or similar means. Her enjoyment of what he bought, even with his consent, is not proof that he made her the owner, as women and the common people often understand. I have issued fatwas on this multiple times. It should be restricted to items that are not part of the mandatory clothing the husband is obliged to provide." Summary. And Allah knows best.

In 'Bahr', it is stated from 'Badai' that the wife admitted the husband's ownership and then claimed it was transferred to her. Now, the wife's ownership will not be established without testimony. Witnesses are necessary that the husband made the woman the owner through gift, etc. The wife benefiting from things bought by the husband, even with the husband's consent, cannot be evidence of the wife's ownership, as commonly women and the general public believe that ownership has been transferred from the husband's side. I have issued this fatwa several times. Here, this restriction is appropriate: that those items should not be clothes for wearing which were already mandatory for the husband to give. Summary. (T) And Allah knows best.

Problem 25: From Katra Post Office, Adira, District Gaya. Sent by Maulvi Syed Kareem Raza Sahib. 1st Jamadi-ul-Akhir 1317 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: an ignorant person married his wife's foster sister without divorcing his wife. When he learned that combining two sisters in marriage is forbidden, he wanted to divorce the second wife. The second wife said, "If you want to divorce me, pay my dower (mahr)." In this case, due to the illegality of the marriage with the second wife, is only separation valid for the second wife, or will a divorce occur? And will the dower of the second wife be mandatory upon the husband despite the marriage being invalid or not? Explain and be rewarded.

The Answer: When one sister is in marriage, marrying the other is a void (fasid) marriage. Abandoning (mutarakah), i.e., leaving and separating, is mandatory. And it is not a divorce but an annulment (faskh), to the extent that even if he uses words of divorce, it will still be considered abandonment, [not] divorce...

1 Uqud al-Durriyah, Kitab al-Fara'id, Haji Abdul Ghaffar and Sons, Booksellers, Qandahar, Afghanistan, 2/350. Page 160 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

...जबरन वापस ले सकेगा और बिना मालिकाना हक (तमलीक) दिए शौहर की चीज़ों को औरत के बरतने, पहनने या इस्तेमाल करने से औरत की मिल्कियत साबित नहीं हो सकती। अलबत्ता घर में पहनने के कपड़े जिनका देना नफ्का के हुक्म से शौहर पर वाजिब हो चुका हो, वह दे दे। अगर वह दावा करे कि मैंने औरत को मालिक नहीं बनाया था, तो इसमें शौहर का कौल मोतबर होना चाहिए। 'उकूद अद-दुर्रिया' में है:

"बह्र में फ़रमाया कि बदाइ में है कि बीवी ने शौहर की मिल्कियत का इकरार किया और फिर उसके अपनी तरफ मुंतकिल हो जाने का दावा किया, तो अब बीवी की मिल्कियत बिना गवाही (शहादत) के साबित नहीं होगी। गवाह ज़रूरी हैं कि शौहर ने हिबा (दान) वगैरह के ज़रिए औरत को मालिक बना दिया। बीवी का शौहर की खरीदी हुई चीज़ से फ़ायदा उठाना, चाहे शौहर की रज़ामंदी से हो, यह बीवी की मिल्कियत की दलील नहीं बन सकता, जैसा कि आम तौर पर औरतें और अवाम समझ लेते हैं कि यह शौहर की तरफ़ से मिल्कियत कर दी गई है। मैंने कई बार यह फ़तवा जारी किया है। यहाँ यह कैद मुनासिब है कि वह दी हुई चीज़ पहनने के कपड़े न हों जिनका देना शौहर पर वाजिब हो चुका था।" संक्षिप्त (मलख्खासन)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

'बह्र' में फ़रमाया कि 'बदाइ' में है कि बीवी ने शौहर की मिल्कियत का इकरार किया और फिर उसके अपनी तरफ मुंतकिल हो जाने का दावा किया, तो अब बीवी की मिल्कियत बिना गवाही के साबित नहीं होगी। गवाह ज़रूरी हैं कि शौहर ने हिबा वगैरह के ज़रिए औरत को मालिक कर दिया। बीवी का शौहर की खरीदी हुई चीज़ से फ़ायदा पाना, अगरचे शौहर की रज़ामंदी से हो, यह बीवी की मिल्कियत की दलील नहीं बन सकता जैसा कि आम तौर पर औरतें और अवाम समझ लेते हैं कि यह शौहर की तरफ से मिल्कियत कर दी गई है। मैंने कई बार यह फ़तवा जारी किया है। यहाँ यह कैद मुनासिब है कि वह दी हुई चीज़ पहनने के कपड़े न हों जिनका देना शौहर पर वाजिब हो चुका था। संक्षिप्त (त)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 25: अज़ कटरा डाकखाना, अदीरा, जिला गया। मुर्सला मौलवी सैय्यद करीम रज़ा साहब। 1 जमादी-उल-आखिर 1317 हिजरी। क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि एक शख़्स जाहिल ने बिना तलाक़ अपनी ज़ौजा (पत्नी) की रज़ाई (दूध-शरीक) बहन से निकाह कर लिया। जब उसे मालूम हुआ कि दो बहनों को एक साथ निकाह में रखना हराम है, तब उसने दूसरी को तलाक़

देना चाहा। दूसरी ने कहा कि "अगर मुझे तलाक़ देना चाहते हो तो मेरा महर अदा करो।" तो इस सूरत में दूसरी बीवी के निकाह के नाजायज़ होने के कारण दूसरी बीवी के हक़ में सिर्फ़ तफ़रीक़ (अलगाव) ही मोतबर है या उस पर तलाक़ वाके होगा? और दूसरी बीवी का महर निकाह के जाइज़ न होने के बावजूद शौहर पर लाज़िम आएगा या नहीं? बयान फ़रमाएं सवाब पायेंगे।

अल-जवाब: जब एक बहन निकाह में हो तो दूसरी से निकाह करना निकाह-ए-फ़ासिद (अवैध) है। मुतारका यानी छोड़ देना, जुदा कर देना वाजिब है। और वह तलाक़ नहीं बल्कि फ़स्ख (रद्द) है, यहाँ तक कि अगर वह तलाक़ के अल्फाज़ भी कहेगा, तब भी मुतारका ही ठहरेगा, तलाक़...

1 उकूद अद-दुर्रिया, किताबुल फ़राइज़, हाजी अब्दुल गफ्फ़ार और बेटे, कुतुब कंदहार अफ़ग़ानिस्तान, 2/350 पृष्ठ 160/688

جبراً واپس لے سکے گا اور بلا تملیک شوہر عورت کے برتنے، پہننے، استعمال کرنے سے ملک عورت ثابت نہیں ہوسکتی البتہ گھر میں پہننے کے کپڑے جن کا دینا بحکم نفقہ شوہر پر واجب ہو چکا ہو وہ دے کہ اگر دعوٰی کرے کہ میں نے عورت کو مالک نہ کیا تھا اس میں شوہر کا قول معتبر ہونا چاہیے۔ عقود الدریہ میں ہے :

قال فی البحر وفی البدائع اقررت بالزوجها ثم ادعت الانتقال الیها لا یثبت الانتقال الا بالبینة اھ ولا بد من بینہ علی الانتقال الیها منہ بهبة او نحو ذلك ولا یکون استمتاعها بمشریہ ورضاہ بذلک دلیلا علی انه ملکها ذلك کما تفهمه النساء والعوام وقد افتیت بذلک مرارا، وینبغی تقییده بمالم یکن من ثیاب الکسوة الواجبة علی الزوج اھ ملخصا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

بحر میں فرمایا کہ بدائع میں ہے کہ بیوی نے خاوند کی ملکیت کا اقرار کیا اور پھر اس کے اپنی طرف منتقل ہوجانے کا دعوٰی کیا تو اب بیوی کی ملکیت بغیر شہادت کے بغیر ثابت نہ ہوگی اھ، گواہ ضروری ہیں کہ شوہر نے بذریعہ ہبہ وغیرہ عورت کو مالک کردیا بیوی کا خاوند کی خریدی ہوئی چیز سے فائدہ پانا اگرچہ خاوند کی رضامندی سے ہو، یہ بیوی کی ملکیت کی دلیل نہیں بن سکتا جیسا کہ عام طور پر عورتیں اور عوام سمجھ لیتے ہیں کہ یہ خاوند کی طرف سے ملکیت کردی گئی ہے میں نے کئی بار یہ فتوٰی جاری کیا اھ یہاں یہ قید مناسب ہے کہ وہ دی ہوئی چیز پہننے کے کپڑے نہ ہوں جن کا دینا شوہر پر واجب ہوچکا تھا اھ ملخصاً (ت) واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۲۵: از کٹرہ ڈاک خانہ ادیرہ ضلع گیا مرسلہ مولوی سید کریم رضا صاحب غرہ جمادی الآخرہ ۱۳۱۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص جاہل نے بدون طلاق

اپنی زوجہ کی رضاعی بہن سے نکاح کرلیا، جب اس کو معلوم ہوا کہ جمع بین الاختین حرام ہے تب اس نے ثانیہ کو طلاق دینا چاہا، ثانیہ نے کہا کہ مجھ کو طلاق دینا چاہتے ہو تو میرا مہر ادا کرو۔ تو اس صورت میں بہ سبب ناجوازی نکاح زوجہ ثانیہ کے زوجہ ثانیہ کے حق میں صرف تفریق ہی معتبرہ یا اس پر طلاق واقع ہوگا اور مہر زوجہ ثانیہ زوج پر باوجود عدم جواز نکاح لازم آئے گا یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: ایک بہن جب نکاح میں ہو تو دوسری سے نکاح نکاحِ فاسد ہے، متارکہ یعنی چھوڑ دینا جدا کردینا واجب ہے، اور وہ طلاق نہیں بلکہ فسخ ہے، یہاں تک کہ اگر الفاظ طلاق کہے گا جب بھی متارکہ ہی ٹھہرے گا طلاق

1 عقود الدریۃ کتاب الفرائض حاجی عبدالغفار و پسران کتب قندھار افغانستان ۳۵۰/۲

Fatawa Razawiyya, Volume 12

It will not be counted. Then if he had actually performed intercourse with the second wife, meaning the insertion of the male organ up to the glans in the private part, then the lesser of the 'Mahr Mithl' (customary dower) or 'Mahr Musamma' (stipulated dower) will be obligatory. Otherwise, nothing is obligatory, even if there was seclusion (Khalwat), or even kissing and embracing with desire, or insertion elsewhere than the private part.

(Arabic Text)

In 'Al-Durr al-Mukhtar', it is mentioned: Mahr Mithl becomes obligatory in an irregular (fasid) marriage, which is one that lacks a condition for validity, such as witnesses, through intercourse in the front part, not otherwise like seclusion, because intercourse in it is prohibited. It shall not exceed the stipulated amount; and if it is less than the stipulated amount, Mahr Mithl is mandatory. (Condensed). And in 'Radd al-Muhtar': His words 'like witnesses' and similarly marrying two sisters simultaneously or marrying a sister during the waiting period ('iddah) of another sister. His words 'in the front part': so if it is in the rear, Mahr is not mandatory according to 'Khulasa' and 'Qunya'. Thus, it is not mandatory for touching and kissing with desire, and even more so as they have explicitly stated, also in 'Bahr' (Condensed). And in 'Al-Durr' regarding 'iddah: Seclusion in an irregular marriage does not necessitate 'iddah, and divorce in it does not decrease the number of

(Urdu Translation)

It is stated in 'Durr Mukhtar' that in an irregular marriage, Mahr Mithl becomes obligatory only through intercourse in the private part. An irregular marriage is one in which any of the conditions for marriage validity is missing, for example, a marriage without witnesses. The Mahr Mithl will not be more than the fixed dower, and if the Mahr Mithl is less than the stipulated dower, then also the Mahr Mithl will be mandatory. Here, mahr is not mandatory through seclusion etc., because it does not stand in place of intercourse, since intercourse in an irregular marriage is itself prohibited. (Condensed). And in 'Radd al-Muhtar', the author's statement "like witnesses" also includes situations like marrying two sisters at once or marrying one sister while the other is still in her waiting period ('iddah). The author's statement that Mahr is mandatory only for intercourse in the front part means that intercourse in the rear will not make Mahr mandatory. Similarly, 'Khulasa' and 'Qunya' state that even if touching and kissing with desire took place, Mahr would not be mandatory by greater reason, as jurists have clarified. (Bahr,

(Arabic Text)	(Urdu Translation)
divorces because it is an annulment (faskh). (Jawhara). And Allah knows best.	Condensed). In 'Durr Mukhtar', in the discussion of 'iddah, it is said that seclusion in an irregular marriage does not make 'iddah obligatory, and in an irregular marriage, the number of divorces will not decrease because it is a rescission. (Jawhara). And Allah Almighty knows best.

Problem 26: From Jangal-e-Kukra, Post Office Gola, District Kheri. Sent by Abdul Rahman Khan Sahib. 3 Jumadi al-Akhira 1317 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid married Hindah with a dower of ten dirhams.

---

1. Durr Mukhtar, Chapter on Mahr, Mujtabai Press, Delhi, 1/201.
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Mahr, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/51-350.
3. Durr Mukhtar, Chapter on Iddah, Mujtabai Press, Delhi, 1/258.

यह नहीं गिना जाएगा। फिर यदि उसने वास्तव में इस दूसरी पत्नी के साथ संभोग किया था, यानी गुप्त अंग के भीतर लिंग का प्रवेश (हशफ़ा की सीमा तक), तो 'महर मिस्ल' (प्रचलित मेहर) और 'महर मुसम्मा' (निर्धारित मेहर) में से जो कम होगा वह अनिवार्य होगा। अन्यथा कुछ भी अनिवार्य नहीं है, भले ही एकांत (ख़लवत), या कामुकता के साथ चुंबन और आलिंगन हुआ हो, या गुप्त अंग के अलावा अन्य जगह प्रवेश हुआ हो।

(अरबी पाठ का अनुवाद)

'अद-दुरुल मुख्तार' में है: एक अमान्य (फ़ासिद) विवाह में केवल गुप्त अंग के संभोग से महर मिस्ल अनिवार्य होता है। अमान्य विवाह वह है जिसमें विवाह की वैधता की शर्तों में से कोई शर्त गायब हो, जैसे गवाहों की अनुपस्थिति। महर मिस्ल निर्धारित महर से अधिक नहीं होगा, और यदि महर मिस्ल निर्धारित महर से कम हो, तो भी महर मिस्ल ही अनिवार्य होगा। यहाँ एकांत आदि से महर अनिवार्य नहीं होता क्योंकि यह संभोग का विकल्प नहीं है, क्योंकि अमान्य विवाह में संभोग स्वयं हराम है। (संक्षेप)। और 'रद्दुल मुहतार' में है: लेखक का कथन 'जैसे गवाह' और इसी तरह एक साथ दो बहनों से विवाह करना या एक बहन की इद्दत के दौरान दूसरी बहन से विवाह करना। लेखक का कथन 'सामने के भाग में': तो यदि यह पीछे के भाग में है, तो 'खुलासा' और 'कुनिया' के अनुसार महर अनिवार्य नहीं है। अतः कामुकता के साथ छूने और चूमने से भी अनिवार्य नहीं होगा, और जैसा कि उन्होंने स्पष्ट किया है, 'बहर' में भी यही है। (संक्षेप)। और

(उर्दू पाठ का अनुवाद)

'दुर्रे मुख्तार' में है कि अमान्य निकाह में केवल गुप्त अंग में संभोग से महर मिस्ल अनिवार्य होता है। अमान्य निकाह वह है जिसमें निकाह की वैधता की शर्तों में से कोई शर्त गायब हो, उदाहरण के लिए बिना गवाहों के निकाह। महर मिस्ल निर्धारित महर से अधिक नहीं होगा, और यदि महर मिस्ल निर्धारित महर से कम हो, तो भी महर मिस्ल अनिवार्य होगा। यहाँ एकांत आदि से महर अनिवार्य नहीं होता क्योंकि यह संभोग का स्थान नहीं ले सकता, क्योंकि अमान्य निकाह में संभोग स्वयं हराम है। (संक्षेप)। और 'रद्दुल मुहतार' में है लेखक का कथन, जैसे 'गवाह' और इसी तरह अगर दो बहनों से एक साथ निकाह किया हो या एक बहन की इद्दत में दूसरी बहन से निकाह किया हो, लेखक का कथन कि केवल गुप्त अंग में संभोग से महर अनिवार्य होता है तो पीछे के भाग में संभोग करने से महर अनिवार्य नहीं होगा, खुलासा और कुनिया इसी तरह कामुकता के साथ छूने और चूमने से भी महर अनिवार्य रूप से नहीं होगा, जैसा कि न्यायविदों ने भी इसे स्पष्ट किया है,

(अरबी पाठ का अनुवाद)

इद्दत के संबंध में 'अद-दुर' में: अमान्य विवाह में एकांत इद्दत को अनिवार्य नहीं करता है, और इसमें तलाक से तलाक की संख्या कम नहीं होती क्योंकि यह निरस्तीकरण (फ़स्ख़) है। (जौहरा)। और अल्लाह बेहतर जानता है।

(उर्दू पाठ का अनुवाद)

'बहर' (संक्षेप)। दुर्रे मुख्तार की इद्दत चर्चा में है कि अमान्य निकाह में एकांत, इद्दत को अनिवार्य नहीं करता और अमान्य निकाह में तलाक से तलाक की संख्या कम नहीं होगी क्योंकि यह निरस्तीकरण है, 'जौहरा'। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला २६: जंगल कोकरा, डाकखाना गोला, जिला खीरी से। प्रेषक अब्दुल रहमान खान साहब। ३ जमादी अल-आखिर १३१७ हिजरी। विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने हिंदा से १० दिरहम महर के बदले निकाह किया तो...

---

1. दुर्रे मुख्तार, महर का अध्याय, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली १/२०१
2. रद्दुल मुहतार, महर का अध्याय, दार अह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत २/५१-३५०
3. दुर्रे मुख्तार, इद्दत का अध्याय, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली १/२५८

میں شمار نہ ہوگا، پھر اگر اس دوسری سے حقیقتہ وطی یعنی خاص فرج داخل میں بقدر حشفہ ایلاج ذکر، کر چکا تھا تو مہر مثل و مہر مسمٰی سے جو کم ہو لازم آئے گا ورنہ کچھ نہیں اگرچہ خلوت بلکہ بوس و کنار بہ شہوت بلکہ غیر فرج میں ادخال کر چکا ہو،

| فی الدرالمختار یجب مهر المثل في نكاح فاسد وهو الذی فقد شرطا من شرائط الصحة كشهود بالوطئ في القبل لابغیره كالخلوة لحرمة وطئها ولم كزد علی المسمی ولو كان دون المسمی لزم مهر المثل اه باختصار وفی ردالمحتار قوله كشهود ومثله تزوج الاختین معا ونكاح الاخت في عدة الاخت قوله في القبل فلو في الدبر لایلزمه مهر خلاصة وقنیة فلایجب بالمس والتقبیل بشهوة شیئی بالاولی كما صرحوا به ایضا بحر اه ملتقطا۔ وفي الدر من العدة، الخلوة فی النكاح الفاسد لاتوجب العدة والطلاق فیه لاینقص عدد الطلاق لانه فسخ جوهرة اه واللہ تعالی اعلم۔ | درمختار میں ہے کہ نکاح فاسد میں صرف شرمگاہ میں وطی سے مہر مثل واجب ہوتا ہے۔ نکاح فاسد وہ ہے کہ جس میں صحت نکاح کی شرائط میں سے کوئی شرط مفقود ہو، مثلاً بے شہود نکاح اور مہر مثل بھی مقرر مہر سے زیادہ نہ ہوگا، اور اگر مہر مثل کم ہو مہر مسمٰی سے تو بھی مہر مثل لازم ہوگا، یہاں خلوت وغیرہ سے مہر واجب نہیں ہوتا کیونکہ یہ وطی کے قائم مقام نہیں ہے کیونکہ نکاح فاسد میں وطی خود حرام ہے اہ اختصاراً۔ اور ردالمحتار میں ہے ماتن کا قول، جیسے گواہ ' اور اسی طرح اگر دو بہنوں سے بیک وقت نکاح کیا ہو یا ایک بہن کی عدت میں دوسری بہن سے نکاح کیا ہو، ماتن کا قول کہ صرف شرمگاہ میں وطی سے مہر لازم ہوتا ہے تو دُبر میں وطی کرنے سے مہر لازم نہ ہوگا، خلاصہ اور قنیہ یو نہی مَس اور بوس کنار شہوت سے کئے ہوں تو بھی مہر بطریق اولیٰ لازم نہ ہوگا، جیسا کہ فقہاء نے اس کی بھی تصریح کی ہے، بحر اہ ملتقطاً۔ در مختار کی عدّت بحث میں

ہے کہ نکاح فاسد میں خلوت، عدّت کو واجب نہیں کرتی اور نکاح فاسد میں طلاق سے عدد طلاق کم نہ ہوگا کیونکہ یہ فسخ ہے، جوہرہ اھ۔ واللہ تعالی اعلم۔ |

مسئلہ ۲۶: از جنگل کو کرہ ڈاک خانہ گولا ضلع کھیری مرسلہ عبدالرحمن خاں صاحب ۳ جمادی الآخرہ ۱۳۱۷ھ کیا فرماتے ہیں علماء دین اس مسئلہ میں کہ زید نے ہندہ سے نکاح بعوض دس درہم مہر کے کیا تو

---

1 درمختار باب المہر مطبع مجتبائی دہلی ۲۰۱/۱ 2 ردالمحتار باب المہر دار احیاء التراث العربی بیروت ۵۱/۲-۳۵۰ 3 درمختار باب العدۃ مطبع مجتبائی دہلی ۲۵۸/۱

Fatawa Razvia Volume 12

Q: In a situation where there is no circulation of 'Dirham' in the country of India, instead of ten Dirhams, will ten Dirhams weight of silver be sufficient or must its quantity be fulfilled in Rupees and Annas? If Rupees and Annas are proposed for Mehr, what would be the amount? And what is the minimum Mehr possible? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: Silver is sufficient; there is no need for it to be in coin form. The minimum Mehr is ten Dirhams, which means two Tolas and seven and a half Mashas of silver according to the scale where an English Rupee is eleven and a quarter Mashas, not the full Tola Rupee famous in some cities. The Mehr should be that much silver itself, or something else of the value of that much silver.

Arabic Text	**Urdu Translation / Explanation**
In Al-Durr al-Mukhtar: The minimum [Mehr] is ten Dirhams of silver, weighing seven Mithqals, whether it was minted originally or not, or a debt, or a commodity valued at ten [Dirhams] at the time of the contract.[1] In Radd al-Muhtar: "If ten [pieces] of raw silver or a commodity valued at ten [pieces] of raw silver, not minted [coins], [is given] it is correct."[2]	It is in Dur-e-Mukhtar that the minimum amount of Mehr is ten (10) Dirhams of silver weighing seven (7) Mithqals, whether this silver is in the form of coins or unminted, even if it is a debt or some goods whose price is ten (10) Dirhams at the time of marriage. It is in Radd-ul-Muhtar that if ten (10) pieces were fixed as Mehr or goods whose price is equal to ten (10) pieces, even if it is not equal to ten (10) coins, it is still permissible. (T)

In terms of weight, ten Dirhams equal two Rupees, one 8-Anna coin, one 4-Anna coin, and 9-3/5 Pies, which is slightly less than two Rupees and thirteen (13) Annas. If one gives Rupees, 8-Anna, and 4-Anna coins, then that much must be given, because the value is not considered within the same genus (because in the same genus, the price is not considered. T). And if something other than silver is given, then the price of two Tolas seven and a half Mashas of silver will be valid; for example, if silver is 12 per Tola, then an item worth one Rupee fifteen and a half Annas is sufficient. And Allah knows best.

Issue 77: Shawwal 1317 AH: What do the scholars of religion say regarding this issue that the marriage of Hindah was performed with Zaid with the fixation of 25,000 (twenty-five thousand) Mehr. Does Zaid have the authority to increase the Mehr or

not? If yes, what are the necessary and essential conditions for it? Explain and you shall be rewarded.

[1] Dur-e-Mukhtar, Chapter on Mehr, Mujtabai Press Delhi, 7/19. [2] Radd-ul-Muhtar, Chapter on Mehr, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 330/2.

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

प्रश्न: ऐसी स्थिति में जब भारत देश में 'दिरहम' का प्रचलन नहीं है, तो दस दिरहम के बजाय दस दिरहम (वजन के बराबर) चाँदी पर्याप्त होगी या इसकी संख्या रुपए-आने से पूरी करनी होगी? यदि मेहर के लिए रुपए-आने प्रस्तावित किए जाएं तो वे कितनी राशि होगी? और न्यूनतम मेहर कितना हो सकता है? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: चाँदी पर्याप्त है, सिक्का होने की कोई आवश्यकता नहीं है। न्यूनतम मेहर दस दिरहम ही है, यानी उस तोले के हिसाब से दो तोले साढ़े सात माशे चाँदी, जिसमें अंग्रेजी रुपया सवा ग्यारह माशे का होता है, न कि वह रुपया भर का तोला जो कुछ शहरों में प्रसिद्ध है। मेहर स्वयं इतनी चाँदी हो या चाँदी के अलावा कोई अन्य वस्तु इतनी चाँदी के मूल्य की हो।

अरबी पाठ	**उर्दू अनुवाद / स्पष्टीकरण**
अल-दुर्र अल-मुख्तार में: इसकी न्यूनतम सीमा दस दिरहम चाँदी है जिसका वजन सात मिथकाल हो, चाहे वह मूल रूप से ढाला गया हो या नहीं, या ऋण हो, या अनुबंध के समय दस के मूल्य की वस्तु हो।[1] रद अल-मुह्तार में: "यदि दस कच्चे टुकड़े या दस कच्चे टुकड़ों के मूल्य की वस्तु [दी जाए] जो ढाले हुए सिक्के न हों, तो यह सही है।"[2]	दुर्रे मुख्तार में है कि मेहर की न्यूनतम मात्रा दस (10) दिरहम चाँदी है जिसका वजन सात (7) मिथकाल हो, यह चाँदी सिक्के के रूप में हो या बिना सिक्के के, भले ही वह ऋण हो या कोई सामान जिसकी कीमत निकाह के समय दस (10) दिरहम हो। रद-उल-मुह्तार में है कि अगर दस (10) टुकड़े मेहर तय किए गए या सामान जिसकी कीमत दस (10) टुकड़ों के बराबर हो, भले ही वह दस (10) सिक्कों के बराबर न हो, तब भी जायज़ है। (त)

वजन के हिसाब से दस दिरहम, दो रुपये, एक अठन्नी, एक चवन्नी और 9-3/5 पाई होते हैं यानी दो रुपये तेरह (13) आने से कुछ कम। अगर रुपये, अठन्नी, चवन्नी दी जाए तो उतनी ही देनी होगी, क्योंकि एक ही प्रकार की धातु (जिंस) होने पर मूल्य का विचार नहीं किया जाता (क्योंकि एक ही जिंस में मूल्य का विचार नहीं होता। त)। और चाँदी के अलावा कोई और चीज़ दी जाए तो दो तोले साढ़े सात माशे चाँदी की कीमत मान्य होगी, उदाहरण के लिए यदि चाँदी 12 रुपये तोला हो, तो एक रुपये साढ़े पंद्रह आने की वस्तु पर्याप्त है। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 77: शव्वाल 1317 हिजरी: धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि हिंदा का निकाह ज़ैद से 25,000 (पच्चीस हज़ार) मेहर तय करके हुआ। क्या ज़ैद को मेहर में वृद्धि करने का अधिकार है या नहीं? यदि हाँ, तो इसके लिए क्या शर्तें आवश्यक और अनिवार्य हैं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

[1] दुर्रे मुख्तार, मेहर का अध्याय, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 7/19। [2] रद-उल-मुहतार, मेहर का अध्याय, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी बेरुत 330/2।

ایسی صورت میں کہ ملک ہند میں رواج درہم کا نہیں ہے، بجائے دس درہم کے دس درہم چاندی کافی ہوگی یا تعداد اس کی روپے آنے سے پوری کرنی ہوگی، اگر روپے آنے مہر کے تجویز کئے جائیں گے تو کس قدر ہوں گے؟ اور کم سے کم کتنا مہر ہو سکتا ہے؟ بینوا توجروا

الجواب: چاندی کافی ہے، سکہ ہونے کی کچھ ضرورت نہیں، کم سے کم مہر دس ہی درہم ہے یعنی دو تولے ساڑھے سات ماشے چاندی اس تولے سے جس کے حساب میں انگریزی روپیہ سوا گیارہ ماشے کا ہے، نہ روپیہ بھر کا تولہ جو بعض بلاد میں معروف ہے، مہر خود اس قدر چاندی ہو یا چاندی کے سوا اور کوئی شے اتنی ہی چاندی کی قیمت کی،

عربی عبارت **اردو ترجمہ و تشریح**

درمختار میں ہے کہ مہر کی کم از کم مقدار دس ۱۰ درہم چاندی جس کا وزن سات ۷ مثقال ہو، یہ چاندی سکے کی شکل میں ہوں یا بے سکہ اگرچہ قرض ہو یا کوئی سامان ہو جس کی قیمت دس ۱۰ درہم بوقت نکاح ہو۔ ردالمحتار میں ہے اگر دس ۱۰ ٹکڑیاں مہر مقرر کیا یا سامان جس کی قیمت دس ۱۰ ٹکڑیوں کے برابر ہو دس ۱۰ سکوں کے برابر نہ ہو تو بھی جائز ہے (ت)

فی الدرالمختار: اقلہ عشرۃ دراھم فضۃ وزن سبعۃ مثاقیل مضروبۃ کانت اولا ولو دینا او عرضا قیمتہ عشرۃ وقت العقد[1] فی ردالمحتار "فلوسی عشرۃ تبرا او عرضا قیمۃ عشرۃ تبرا لامضروبۃ"صح[2]۔

وزن کے اعتبار سے دس درہم کے دو روپے ایک اٹھنی ایک چونی اور ۹-۳/۵ پائی ہوئے یعنی کچھ کم دو روپے تیرہ ۱۳ آنے، اگر روپے اٹھنی چونی دے تو اسی قدر دینا ہوگا، لان الجنس لا

یعتبر فیہ للقیمۃ (کیونکہ جنس میں قیمت کا اعتبار نہیں ہوتا ت) اور چاندی کے علاوہ اور کوئی چیز دے تو دو تولے ساڑھے سات ماشے چاندی کی قیمت معتبر ہوگی مثلاً چاندی ۱۲۔ تولہ ہو تو ایک روپے ساڑھے پندرہ آنے کی قیمتی شے کافی ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۷۷: شوال ۱۳۱۷ھ: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ کا نکاح زید سے بتعین صہ عہ (۲۵۰۰۰) ہزار مہر کے ہوا، زید کو مہر میں اضافہ کرنے کا اختیار ہے یا نہیں؟ اگر ہے تو اس کے لئے کیا شرائط لازم و ضروری ہیں؟ بینوا توجروا

[1] درمختار باب المهر مطبع مجتبائی دہلی ۷/ ۱۹ [2] ردالمحتار باب المهر داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۳۰/۲

Volume 12 Fatawa Razawiyya

The Answer: The husband has the authority at all times to increase the mahr (dower) for his wife. The mahr will then be established as what was fixed after this increase. There is no need to renew the marriage contract for this; it can be increased without renewal. Witnesses are not required; an increase agreed upon between the two in private will be valid. It is not necessary for the increase to be in the same form as the original mahr; an increase in a different form is also valid. For example, if the original mahr was money and now property is added, then the total of the money and property will become the mahr. Only three conditions are required for the mahr, two of which are agreed upon: 1. The increase must be known and specified; for instance, if he says, "I have added something to your mahr for you," this increase is void (due to uncertainty). 2. The woman must accept it in the same sitting; if she does not accept or accepts after the sitting has changed, the increase will not be valid. 3. The "disputed condition" is the continuation of the marriage contract. If the increase is made after the termination of the marriage due to the death of the wife, irrevocable divorce, or expiry of the waiting period (iddah) after a revocable divorce, then according to one narration, it will not be valid. In Nahr al-Faiq, this is considered the Zahir al-Riwayah (established view). It is stated in Durr al-Mukhtar:

(Arabic) Increase over what was fixed becomes binding upon him provided she accepts it in the same sitting, or the guardian of a minor accepts it, its amount is known, and the marriage still exists, according to the Zahir (established) view - Nahr.

(Urdu Explanation) If an increase is made over the fixed mahr, this additional mahr becomes mandatory for the husband provided the wife accepts it in the same sitting, or her guardian if she is a minor. The amount must also be known and the existence of the marriage relationship is also a condition in the apparent view of the school - Nahr. (T)

In Radd al-Muhtar it is stated:

(Arabic) It benefits [the understanding] that it is valid even without witnesses, or after the gift [payment] of the dower or discharge from it, and from a different genus - Bahr. And in Anfa' al-Wasa'il, it is not conditioned by the word 'increase',

(Urdu Explanation) This passage provided the benefit that this increase is permissible whether without witnesses and after payment of mahr or after being forgiven from mahr. This increase may be of the same genus as the mahr or of a different genus - Bahr. And in Anfa' al-Wasa'il it is stated that

(Arabic) Increase over what was fixed becomes binding upon him provided she accepts it in the same sitting, or the guardian of a minor accepts it, its amount is known, and the marriage still exists, according to the Zahir (established) view - Nahr.

(Urdu Explanation) If an increase is made over the fixed mahr, this additional mahr becomes mandatory for the husband provided the wife accepts it in the same sitting, or her guardian if she is a minor. The amount must also be known and the existence of the marriage relationship is also a condition in the apparent view of the school - Nahr. (T)

rather it is valid with its [intended] meaning and by saying...

even the word "increase" (ziyadah) is not necessary for it, but it is valid with this word and by this saying that I...

^1 Durr al-Mukhtar, Chapter on Mahr, Matba Mujtabai, Delhi, 1/198.

उत्तर: पति को हर समय पत्नी के महर (दहेज) में वृद्धि करने का अधिकार है और अब महर वही माना जाएगा जो इस वृद्धि के बाद तय हुआ। इसके लिए निकाह के नवीनीकरण (तजदीद) की आवश्यकता नहीं है; बिना नवीनीकरण के भी वृद्धि की जा सकती है। गवाहों की आवश्यकता नहीं है; एकांत में आपस में की गई वृद्धि भी मान्य होगी। यह आवश्यक नहीं है कि वृद्धि उसी वस्तु में हो जिसमें मूल महर था; दूसरी वस्तु में भी वृद्धि मान्य है। उदाहरण के लिए, यदि महर रुपयों में था और अब कोई संपत्ति बढ़ा दी गई, तो वह रुपये और यह संपत्ति सब मिलकर महर बन जाएंगे। महर के लिए केवल तीन शर्तें आवश्यक हैं, जिनमें से दो पर आम सहमति है: 1. वृद्धि ज्ञात और निश्चित होनी चाहिए; उदाहरण के लिए, यदि उसने कहा, "मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे महर में कुछ बढ़ा दिया," तो यह वृद्धि शून्य (अनिश्चितता के कारण) है। 2. स्त्री का उसी बैठक (मजलिस) में इसे स्वीकार करना; यदि स्त्री ने स्वीकार नहीं किया या बैठक बदलने के बाद स्वीकार किया, तो वृद्धि मान्य नहीं होगी। 3. "विवादास्पद शर्त" निकाह का बरकरार रहना है। यदि निकाह समाप्त होने के बाद—जैसे पत्नी की मृत्यु, तलाक-ए-बाइन (अपरिवर्तनीय तलाक), या तलाक-ए-रजई के बाद इद्दत की अवधि समाप्त होने पर—वृद्धि की जाती है, तो एक रिवायत (कथन) के अनुसार यह मान्य नहीं होगी। नहर अल-फायक में इसी को ज़ाहिर अल-रिवायह (स्थापित विचार) माना गया है। दुर्र-ए-मुख्तार में है:

(अरबी) जो तय किया गया था उस पर वृद्धि उस पर बाध्यकारी हो जाती है बशर्ते वह उसी मजलिस में इसे स्वीकार कर ले, या नाबालिग होने पर उसका संरक्षक स्वीकार कर ले, उसकी राशि ज्ञात हो, और निकाह का अस्तित्व बना रहे, ज़ाहिर रिवायत के अनुसार - नहर।

(उर्दू स्पष्टीकरण) यदि निर्धारित महर पर वृद्धि की गई है, तो पति पर यह अतिरिक्त महर अनिवार्य हो जाएगा बशर्ते कि पत्नी ने मजलिस में इसे स्वीकार कर लिया हो या यदि वह नाबालिग है तो उसके संरक्षक ने। और मात्रा भी ज्ञात होनी चाहिए और वैवाहिक संबंध का बने रहना भी मज़हब के ज़ाहिर दृष्टिकोण में एक शर्त है - नहर। (त)

रद अल-मुहतार में है:

(अरबी) इसने यह लाभ दिया कि यह मान्य है चाहे गवाहों के बिना हो या महर देने के बाद या उससे मुक्ति के बाद, और अलग वस्तु (जिन्स) से हो - बहर। और अनफ़ा अल-

(उर्दू स्पष्टीकरण) इस इबारत ने यह लाभ दिया कि यह वृद्धि जायज़ है चाहे गवाहों के बिना हो और महर अदा करने के बाद हो या महर माफ़ करने के बाद हो, यह वृद्धि महर की जिन्स (वस्तु) से हो या किसी अन्य जिन्स

(अरबी) जो तय किया गया था उस पर वृद्धि उस पर बाध्यकारी हो जाती है बशर्ते वह उसी मजलिस में इसे स्वीकार कर ले, या नाबालिग होने पर उसका संरक्षक स्वीकार कर ले, उसकी राशि ज्ञात हो, और निकाह का अस्तित्व बना रहे, ज़ाहिर रिवायत के अनुसार - नहर।

वसाइल में है कि इसके लिए "वृद्धि" (ज़ियादह) शब्द भी आवश्यक नहीं है, बल्कि इसके अर्थ वाले शब्दों और इस कथन से भी सही है कि मैंने...

(उर्दू स्पष्टीकरण) यदि निर्धारित महर पर वृद्धि की गई है, तो पति पर यह अतिरिक्त महर अनिवार्य हो जाएगा बशर्ते कि पत्नी ने मजलिस में इसे स्वीकार कर लिया हो या यदि वह नाबालिग है तो उसके संरक्षक ने। और मात्रा भी ज्ञात होनी चाहिए और वैवाहिक संबंध का बने रहना भी मज़हब के ज़ाहिर दृष्टिकोण में एक शर्त है - नहर। (त)

से हो - बहर। और अनफ़ा अल-वसाइल में है कि इसके लिए "ज़ियादह" (ज्यादा) का शब्द भी आवश्यक नहीं है बल्कि इस शब्द से और इस कथन से भी सही है कि मैंने...

^1 दुर्र-ए-मुख्तार, बाबुल महर, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/198

पृष्ठ 163 (कुल 688)

الجواب: شوہر کو ہر وقت زوجہ کے مہر میں زیادت کرنے کا اختیار ہے اور اب مہر وہی قرار پائے گا جو بعد اس زیادت کے مقرر ہوا اور اس کے لئے تجدید نکاح کی حاجت نہیں، بلا تجدید بھی زیادت کرسکتا ہے، نہ گواہوں کی ضرورت تنہائی میں باہم اضافہ کرلینا صحیح ہوجائے گا، نہ زیادت جنس مہر سے ہونی لازم، خلاف جنس بھی صحیح ہے، مثلاً روپے مہر تھے اب کوئی جائدا د اضافہ کردی وہ روپے اور یہ جائیداد سب کا مجموعہ مہر ہو جائے گا، نہ اگلے مہر کا صرف تین شرطیں درکار ہیں، دو بالاتفاق۔ ایک تو اُس زیادت کا معلوم و معین ہونا مثلاً یہ کہا کہ میں نے تیرے لئے تیرے مہر میں کچھ بڑھادیا تو یہ زیادت باطل دوسرے اُسی جلسہ میں عورت کا اسے قبول کرلینا، اگر عورت نے قبول نہ کیا یا بعد مجلس بدلنے کے قبول کیا زیادت صحیح نہ ہوگی۔ تیسری "شرط مختلف فیہ" بقائے نکاح ہے اگر بعد زوالِ نکاح بموت زوجہ یا طلاق بائن یا انقضائے عدتِ بعد طلاق رجعی زیادت کی تو ایک روایت پر صحیح نہ ہوگی۔ نہرالفائق میں اسی کو ظاہر الروایۃ قرار دیا۔ درمختار میں ہے:

زید علی ماسی فانہا تلزمہ بشرط قبولہا فی المجلس او قبول ولی الصغیرۃ و معروفۃ قدرہا و بقاء الزوجیۃ علی الظاہر نہر۱۸

اگر مقررہ مہر پر زیادہ کیا ہو تو خاوند پر یہ زائد مہر لازم ہوجائے گا بشرطیکہ بیوی نے مجلس میں قبول کرلیا ہو یا اس کے ولی نے جب یہ نابالغہ ہو۔ اور مقدار بھی معلوم ہو اور زوجیت کا موجود رہنا بھی شرط ہے ظاہر مذہب میں، نہر۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے:

زید علی ماسی فانها تلزمہ بشرط قبولها فی المجلس او قبول ولی الصغیرۃ و معروفۃ قدرها و بقاء الزوجیۃ علی الظاہر نہر[1]۸

اگر مقررہ مہر پر زیادہ کیا ہو تو خاوند پر یہ زائد مہر لازم ہوجائے گا بشرطیکہ بیوی نے مجلس میں قبول کرلیا ہو یا اس کے ولی نے جب یہ نابالغہ ہو۔ اور مقدار بھی معلوم ہو اور زوجیت کا موجود رہنا بھی شرط ہے ظاہر مذہب میں، نہر۔ (ت)

افاد ا نها صحیحۃ ولو بلا شہود او بعد ہبۃ المهر والابراء ومن غیر جنسہ بحر، وفی انفع الوسائل لا یشترط فیها لفظ الزیادۃ بل تصح بلفظها و بقولہ

اس عبارت نے یہ فائدہ دیا کہ یہ زیادتی جائز ہے خواہ گواہوں کے بغیر اور مہر ادا کردینے کے بعد یا مہر سے معاف کرنے کے بعد ہو، یہ زیادتی جنس مہر سے ہو یا غیر جنس مہر سے ہو، بحر۔ اور انفع الوسائل میں ہے اس کے لئے "زیادہ" کا لفظ بھی ضروری نہیں بلکہ اس لفظ سے اور اس قول سے بھی صحیح ہے کہ میں نے

[1]۸ در مختار باب المہر مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۱۹۸

Fatawa Rizwia, Volume 12.

[Box 1 Content] Arabic Text: I have taken you back with such and such amount if you accept, and similarly with the renewal of marriage even if the word 'increase' is not mentioned, though there is disagreement on this. Likewise, if a wife gifted her dower to her husband and later the husband acknowledged a dower for the wife, if the wife accepted it in the assembly of acknowledgment, then even if the word 'increase' is not used, this addition is valid. Extracted. Urdu Text: I have returned to you with these conditions if you accept, and similarly with the renewal of marriage even if the word 'increase' is not mentioned, there is a difference of opinion in this. And likewise, if the wife gifted the dower to the husband and later the husband acknowledges a dower for the wife, if the wife accepts it in the assembly of acknowledgement, even if the word 'increase' is not used, then this increase is valid. Extracted. And Allah Almighty knows best. And Allah Almighty knows best.

Problem 28: 6 Shawwal 1317 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: Hind's husband Bakr paid one-sixth of the prompt dower at the time of marriage. Now, does Hind have the right to demand the remaining five parts before the separation of wife and husband? And if the bride's departure occurred without proper privacy (khalwat sahihah), does the right of claim still remain? Explain and be rewarded.

The Answer: In the described situation, Hind unanimously has the right to claim the remainder of the prompt dower before separation by death or divorce. And until she receives it completely and fully, she has the right to refrain from going to the husband's house and to prevent herself from the husband. The original school of thought is that even if privacy or even intimacy occurred with the wife's consent, after that the wife still has the right of claim, demand, and prevention of self at any time. She can stop whenever she wants and not allow the husband to touch her and refuse to go to his house until she receives the prompt dower. It is stated in 'Durr-e-Mukhtar':

[Box 2 Content] Arabic Text: She has the right to prevent him from intercourse and its preliminaries and from traveling with her, even after consented intercourse and privacy. Because every act of intercourse is contracted upon, so the delivery of part does not necessitate the delivery of the remainder, for the purpose of taking what was stipulated as prompt of the whole dower or part of it, or taking the amount that is customarily given promptly for someone like her. This is the fatwa. Urdu Text: The

wife has the right to prevent her husband from intercourse, its preliminaries, and from taking her on a journey in order to receive her dower, even if intercourse or privacy occurred with the wife's consent. This is because every act of intercourse is contracted upon the dower; therefore, giving some does not establish the giving of the remainder. This right of prevention is so that the woman may receive that dower whose prompt payment was stated, whether it is the whole dower or a part, or she receives as much dower as is customarily given promptly to women like her. The fatwa is based on this. (T)

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Dower, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/338.
2. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Dower, Matba Mujtabai Delhi, 1/202. Page 164 of 688

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12.

[बॉक्स 1 की सामग्री] अरबी पाठ: मैंने तुम्हें इतने के साथ वापस लिया है अगर तुम स्वीकार करो, और इसी तरह निकाह के नवीनीकरण के साथ भी, चाहे उसमें 'वृद्धि' शब्द न हो, हालांकि इसमें मतभेद है। इसी तरह अगर पत्नी ने पति को मेहर उपहार में दे दिया और बाद में पति ने पत्नी के लिए किसी मेहर का इकरार कर लिया, यदि पत्नी ने इकरार की सभा में उसे स्वीकार कर लिया, तो भले ही 'वृद्धि' शब्द का प्रयोग न किया गया हो, यह वृद्धि मान्य है। संक्षेप में। उर्दू पाठ: मैंने इन शर्तों के साथ तुम्हारी ओर रुजू किया अगर तुम स्वीकार करो, और इसी तरह निकाह के नवीनीकरण से भी, भले ही इसमें 'ज़्यादती' शब्द न हो, इसमें मतभेद है। और इसी तरह अगर पत्नी ने पति को मेहर हिबा (उपहार) कर दिया और बाद में पति ने पत्नी के लिए किसी मेहर का इकरार कर लिया, जब पत्नी ने इकरार वाली महफ़िल में स्वीकार कर लिया हो, भले ही ज़्यादती शब्द का प्रयोग न हुआ हो, तो यह ज़्यादती सही है। संक्षेप में। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 28: 6 शव्वाल 1317 हिजरी दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि हिन्दा के मेहर-ए-मुअज्जल (तुरंत देय मेहर) का छठा हिस्सा बक्र (पति) ने निकाह के समय अदा कर दिया। अब क्या हिन्दा को शेष पाँच हिस्सों की माँग पति-पत्नी के अलगाव से पहले करने का हक़ है या नहीं? और अगर रुख़सती बिना खलवत-ए-सहीहा (उचित एकांत) के हुई हो, तो क्या दावे का अधिकार बना रहता है या नहीं? बयान करें और पुण्य पायें।

जवाब: पूछी गई स्थिति में, सर्वसम्मति से हिन्दा को मृत्यु या तलाक़ द्वारा अलगाव से पहले शेष मेहर-ए-मुअज्जल का दावा करने का अधिकार है। और जब तक वह इसे पूर्ण रूप से प्राप्त न कर ले, उसे पति के घर जाने से रुकने और अपने आप को पति से रोकने का अधिकार है। असल मज़हब (विचारधारा) यह है कि यदि पत्नी की सहमति से खलवत (एकांत) या निकटता हो भी गई हो, तो उसके बाद भी पत्नी को हर समय दावे, मांग और खुद को रोकने का अधिकार प्राप्त है। वह जब चाहे रुक सकती है और पति को हाथ न लगाने दे और उसके घर जाने से इनकार करे जब तक कि वह मेहर-ए-मुअज्जल न ले ले। 'दुर्र-ए-मुख़्तार' में है:

[बॉक्स 2 की सामग्री] अरबी पाठ: उसे (पत्नी को) अधिकार है कि वह उसे (पति को) सहवास और उसकी पूर्व-क्रियाओं से और अपने साथ यात्रा करने से रोक दे, भले ही सहमति से सहवास और

एकांत हो चुका हो। क्योंकि हर सहवास अनुबंधित होता है, इसलिए कुछ को सुपुर्द करना शेष को सुपुर्द करना अनिवार्य नहीं करता, ताकि वह उस मेहर को प्राप्त कर सके जो पूरे मेहर में से मुअज्जल (तुरंत देय) तय हुआ था या उसका हिस्सा, या वह उतनी मात्रा प्राप्त कर ले जितनी उसके जैसी औरतों को प्रथा के अनुसार तुरंत दी जाती है। इसी पर फ़तवा है। उर्दू पाठ: पत्नी को मेहर प्राप्त करने के लिए पति को सहवास (हमबिस्तरी) से, उसकी शुरूआती क्रियाओं से और सफ़र में साथ ले जाने से मना करने का हक़ है, भले ही पत्नी की रज़ामंदी से सहवास या खलवत हो चुकी हो। क्योंकि हर सहवास मेहर पर अनुबंधित होता है, इसलिए कुछ दे देने से बाकी को भी दे देना साबित नहीं होता। यह मना करने का हक़ इसलिए है ताकि औरत वह मेहर वसूल कर ले जिसके जल्दी देने का बयान हो चुका है, चाहे वह पूरा मेहर हो या कुछ हिस्सा, या वह उतना मेहर वसूल कर ले जितना उस जैसी औरतों को चलन (उर्फ़) में जल्दी दिया जाता है। फ़तवा इसी पर है। (त)

1. रद-उल-मुहतार, बाब-उल-मेहर, दार इहया-उल-तुरास-अल-अरबी, बेरूत, 2/338.
2. दुर्र-ए-मुख़्तार, बाब-उल-मेहर, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/202. पृष्ठ 164 का 688

فتاویٰ رضویہ، جلد دوازدہم

[باکس ۱ کا مواد] عربی متن: راجعتك بكذا ان قبلت وكذا بتجديد النكاح وان لم يكن بلفظ الزيادة على خلاف فيه وكذا لو اقر لزوجته بمهر وكانت قد وهبته له فأنه يصح ان قبلت في مجلس الاقرار وان لم يكن بلفظ الزيادة اه مختصراً۔ اردو متن: انہوں کے ساتھ تجھ پر رجوع کیا اگر تجھے قبول ہو، اور یوں ہی تجدیدِ نکاح سے اگرچہ اس میں زیادہ کا لفظ نہ بھی ہو، اس میں خلاف ہے، اور یونہی اگر بیوی نے خاوند کو مہر ہبہ کردیا اور بعد میں خاوند بیوی کے لئے کسی مہر کا اقرار کرلے، جب بیوی نے اقرار والی مجلس میں قبول کرلیا ہوا گرچہ زیادہ کا لفظ نہ بھی ہو تو یہ زیادت صحیح ہے اہ مختصراً واللہ تعالیٰ اعلم۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۸: ۶ شوال ۱۳۱۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ مہر معجل سے ششم حصہ بکر شوہر نے وقتِ نکاح ادا کردیا اب ہندہ کو بقیہ پانچ حصوں کا مطالبہ قبل افتراق زن وشو پہنچتا ہے یا نہیں؟ اور اگر رخصت بلا خلوت صحیحہ واقع ہوئی ہو تو دعوی کا اختیار رہا یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: صورت مستفسرہ میں بالا تفاق ہندہ کو قبل افتراق بموت یا طلاق بقیہ مہر معجل کادعوی اور جب تک وتمام و کمال وصول نہ کرلے شوہر کے گھر جانے سے باز رہنا اور اپنے نفس کو شوہر سے روکنا پہنچتا ہے، اور اصل مذہب یہ ہے کہ اگر خلوت بلکہ قربت برضائے زوجہ واقع ہوئی تو اس کے بعد بھی زوجہ کو ہر وقت اختیار دعویٰ و مطالبہ و منع نفس حاصل ہے جب چاہے رُک جائے اور شوہر کو ہاتھ نہ لگانے دے اور اُس کے گھر جانے سے انکار کرے جب تک مہر معجل نہ لے لے۔ در مختار میں ہے:

[باکس ۲ کا مواد] عربی متن: لها منعه من الوطئ ودواعیه والسفر بها ولو بعد وطئ وخلوة رضیتها لان کل وطأة معقود علیها فتسلیم البعض لا یوجب تسلیم الباقی لاخذ مابین تعجیله من المهر کله او بعضه او اخذ قدر ما یعجل لمثلها عرفاً۔ به یفتی اردو متن: بیوی کو مہر وصول کرنے کے لئے خاوند کو وطی سے اور اس کے دوائی سے سفر میں ساتھ لے جانے سے منع کا حق ہے اگرچہ برضائے زوجہ وطی یا خلوت کرلی گئی ہو کیونکہ ہر وطی مہر پر معقود ہوتی ہے، تو کچھ دے دینے سے باقی کو بھی دے دینا ثابت نہیں کرتا، یہ منع کا حق اس واسطے ہے کہ عورت وہ مہر وصول کرلے جس کا جلد دینا بیان ہو چکا وہ کل مہر ہو یا بعض، یا اس قدر مہر وصول کرلے جتنا اس جیسی عورتوں کو عرف میں جلد دیا جاتا ہے فتویٰ اسی پر ہے۔ (ت)

۱ رد المحتار باب المهر دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۳۳۸ ۲ درمختار باب المهر مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۰۲ صفحہ ۱۶۴ از ۶۸۸

Fatawa Razawiyya Volume 12

It is stated therein: Laha as-safaru wal-khuruju min bayti zawjiha lil-hajati wa-ziyarati ahliha bila idhnihi ma lam taqbid al-mu'ajjal - wallahu ta'ala a'lam. Until the prompt dowry (Mahr al-Mu'ajjal) is received, it is permissible for the wife to travel and to leave her husband's house without his permission for any necessity or to visit her parents. And Allah knows best. (T)

Problem 29: 26 Muharram al-Haram 1318 AH What is the amount of dowry according to the Prophetic Sharia? And what was the dowry of the Lady of Paradise (Fatima) - may Allah be pleased with her? Explain and be rewarded.

Answer: There is no fixed amount for the Sharia dowry; there is only a minimum limit which is ten dirhams, approximately two rupees and thirteen annas. There is no maximum limit; whatever amount is agreed upon will be mandatory. And the holy dowry of the Lady of Paradise - may Allah be pleased with her - was 400 mithqals of silver, which in terms of local rupees is 160 rupees. And Allah knows best.

Problem 30: From Faridpur, District Bareilly, sent by Qazi Muhammad Nabi Jan Sahib, 27 Ramadan Sharif 1318 AH What do the scholars of religion say regarding this: a person married a woman on "Sharia dowry" but now he is divorcing her due to disobedience. He is in debt of approximately 250 rupees, which is interest-bearing debt. In what way should he pay from her dowry and how much should he give according to the command of God and the Prophet? Please write.

Answer: Those who fix "Sharia dowry" thinking it refers to the minimum level of dowry prescribed in Sharia, then in that case, two tolas, seven mashas, and four rattis of silver will be due. And those who fix it thinking it was the dowry of the Lady of Paradise, then one hundred and fifty tolas of silver will be due, which is one hundred and sixty (160) rupees in English currency. And for those who do not understand any meaning and just utter the word, then 'Mahr al-Mithl' (comparable dowry) should be mandatory. That is, the amount of dowry fixed for a woman in her paternal family who is similar to her in age, appearance, status (virgin or married), and other factors that affect the dowry amount, that amount will have to be given. And those who among their own...

1 Durr al-Mukhtar, Chapter of Mahr, Mujtabai Press Delhi 1/202 Page 165 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

इसमें है: लहा अस-सफ़रु वल-खुरूजु मिन बयती ज़ौजिहा लिल-हाजति व-ज़ियाराति अहलिहा बिला इज़्निही मा लम तक़बिज़ अल-मुअज्जला - वल्लाहु तआला आलम। महर मुअज्जल (तुरंत देय मेहर) वसूल करने तक पत्नी को यात्रा करना और पति के घर से उसकी अनुमति के बिना किसी ज़रूरत या माता-पिता के दर्शन के लिए निकलना जायज़ है। वल्लाहु तआला आलम। (त)

मसला 29: 26 मुहर्रमुल हराम 1318 हिजरी नबवी शरीअत में मेहर की संख्या क्या है? और हज़रत ख़ातून-ए-जन्नत (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) का मेहर क्या था? बयान फरमाएं ताकि पुण्य प्राप्त हो।

अल-जवाब: शरई मेहर की कोई संख्या निर्धारित नहीं है, केवल न्यूनतम सीमा निश्चित है कि दस दिरहम यानी लगभग दो रुपये तेरह आने से कम न हो और अधिकता की कोई सीमा नहीं है, जितना भी तय किया जाए वह अनिवार्य होगा। और हज़रत ख़ातून-ए-जन्नत (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) का पावन मेहर चार सौ (400) मिस्काल चाँदी था, जो यहाँ के रुपये के हिसाब से एक सौ साठ (160) रुपये के बराबर है। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 30: फ़रीदपुर जिला बरेली से प्रेषित, काज़ी मुहम्मद नबी जान साहब, 27 रमज़ान शरीफ़ 1318 हिजरी धर्म के विद्वान इस बारे में क्या कहते हैं कि एक व्यक्ति ने एक महिला से 'शरई मेहर' पर निकाह किया, लेकिन अब वह अवज्ञा के कारण उसे तलाक दे रहा है। वह लगभग 250 रुपये का कर्जदार है, जो ब्याज वाला कर्ज है। वह उसके मेहर को किस तरह अदा करे और ईश्वर और रसूल के हुक्म के अनुसार कितना दे? कृपया लिखें।

अल-जवाब: शरई मेहर जो लोग यह समझकर तय करते हैं कि यह शरीअत में निर्धारित सबसे निचला स्तर है, तो उस स्थिति में दो तोले, सात माशे और चार रत्ती चाँदी देनी होगी। और जो यह समझकर तय करते हैं कि वह हज़रत ख़ातून-ए-जन्नत का मेहर था, तो एक सौ पचास तोले चाँदी देनी होगी, यानी अंग्रेज़ी रुपये के हिसाब से एक सौ साठ (160) रुपये। और जिन्हें किसी अर्थ की समझ नहीं है और बस एक शब्द बोल देते हैं, तो वहाँ 'महरे मिस्ल' (समान मेहर) अनिवार्य होना चाहिए। यानी महिला के पितृपक्ष (दधियाल) में जो महिला उसकी हम उम्र, रूप-रंग और कुंवारी या विवाहित होने और उन बातों में जिनसे मेहर कम या ज़्यादा होता है, उसके समान हो, उसका जो मेहर तय हुआ हो, वही देना होगा। और जो अपनों...

1 दुर्र-ए-मुख़्तार, बाबुल मेहर, मतबा मुज्तबाई दिल्ली 1/202 पेज 165/688

اسی میں ہے: لھا السفر والخروج من بیت زوجھا للحاجۃ وزیارۃ اھلھا بلا اذنہ مالم تقبض المعجل- واللہ تعالٰی اعلم- مہر معجل وصول کرنے تک بیوی کو سفر کرنا اور خاوند کے گھر سے اس کی اجازت کے بغیر کسی حاجت یا والدین کی زیارت کے لئے نکلنا جائز ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۲۹: ۲۶ محرم الحرام ۱۳۱۸ھ مہر کی تعداد شرع پیغمبری کیا ہے؟ اور حضرت خاتونِ جنت رضی اللہ تعالٰی عنہا کا مہر کیا تھا؟ بینوا توجروا الجواب: مہر شرعی کی کوئی تعداد مقرر نہیں، صرف کمی کی طرف حدِ معین ہے کہ دس درہم یعنی تقریبًا دو روپے تیرہ آنے سے کم نہ ہو اور زیادتی کی کوئی حد نہیں، جس قدر باندھا جائے لازم آئے گا۔ اور حضرت خاتونِ جنت رضی اللہ تعالٰی عنہا کا مہر اقدس چار سو ۴۰۰ مثقال چاندی تھا کہ یہاں کے روپے سے ایک سو ساٹھ ۱۶۰ روپے بھر ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۰: از فرید پور ضلع بریلی مرسلہ قاضی محمد نبی جان صاحب ۲۷ رمضان شریف ۱۳۱۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس بارہ میں کہ ایک شخص نے ایک عورت سے مہر شرعی پر نکاح کیا مگر اب وہ طلاق دیتا ہے بوجہ نافرمانی کے، اور وہ تخمیناً مال ۲۵۰- روپے قرضدار ہے قرض سودی ہے وہ اس کے مہر سے کس صورت سے ادا ہووے اور کتنا دیوے بموجب حکم خدا اور رسول سے؟ تحریر فرمائے۔ الجواب: مہر شرعی جو لوگ یہ سمجھ کر باندھتے ہیں کہ سب سے کم درجے کا مہر جو شریعت میں مقرر ہے تو اس صورت میں دو تولے سات ماشے چار رتی چاندی دینی آئے گی، اور جو یہ سمجھ کر باندھتے ہوں کہ جو مہر حضرت خاتونِ جنت کا تھا تو ڈیڑھ سو تولے چاندی آئے گی، یعنی انگریزی روپے سے ایک سو ساٹھ ۱۶۰ روپے بھر، اور جس کی سمجھ میں کچھ معنی نہیں خالی ایک لفظ بول دیتے ہیں تو وہاں مہر مثل لازم آنا چاہئے یعنی

عورت کے دُدھیال میں جو عورت اس کی ہم عمر اور صورت شکل اور کنواری یا بیاہی ہونے میں اور ان باتوں میں جن سے مہر کم بیش ہو جاتا ہے اس عورت کی مانند ہو اس کا جو مہر بندھا ہو وہ دینا آئے گا، اور جو اپنوں

1 در مختار باب المهر مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۰۲ صفحہ ۱۶۵ از ۶۸۸

Fatawa Razawiya, Volume 12

If such a woman is not found, then look among strangers. Allah (The Almighty) knows best. Issue 31 to 32: 28 Dhu al-Qi'dah 1318 AH

First Question: What do the scholars of religion say in this matter: Zaid performed the marriage (Nikah) of his minor daughter with Amr in exchange for a dower (Mahr) of five thousand rupees and 20 gold coins (dinars). It was agreed and the marriage lawyer explicitly stated that the dower would not be paid in cash at that time, nor at the time of departure (Rukhsati), and there was no promise for the payment of the dower. The departure (Rukhsati) has not yet taken place. When will the mentioned Hinda or her father have the right to demand part or all of the dower, and what will this dower be called? Explain and be rewarded.

The Answer: A demand for such a dower can be made after the death of the husband or wife, or after divorce, not before that. This is not "Mu'ajjal" (prompt) because it was not decided to be given before the departure, nor is it "Mu'ajjal" (deferred) because no fixed term (Ajal) or period was set. Rather, it is "Mu'akhkhar" (postponed) by custom. It is stated in Rad al-Muhtar:

[Arabic Quote]: "If the woman's husband dies or divorces her after twenty years from the time of marriage, she has the right to demand the postponed dower because her right to demand it is established only after death or divorce, not from the time of marriage. Allah Almighty knows best."

Urdu Translation of the Quote: If the wife's husband dies or divorces her after twenty (20) years, then the wife has the right to demand the postponed dower because the right for the wife to demand this dower is established after death or divorce; there is no right to demand it from the time of marriage. Allah Almighty knows best. Z- (T)

Second Question: What do the scholars of religion say in this matter: What is the meaning of "Mahr-e-Mu'ajjal" (deferred) and what is the meaning of "non-deferred"? And what does "Mu'ajjal" (prompt) where the second letter is 'Ain' mean, and what is the ruling for them? Explain and be rewarded (Explain and receive reward. T). And how many rupees is a red dinar worth?

The Answer: "Mahr-e-Mu'ajjal" (deferred) is that for which a term has been fixed, for example, it will be given after ten years. And "non-deferred" is that for which the term is not fixed or determined. "If it is with the negation of a term, it is Mu'ajjal (prompt), otherwise not."

Footnote 1: Rad al-Muhtar, Kitab al-Qada, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/344.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

यदि ऐसी स्त्री न मिले तो परायों में देखें। अल्लाह तआला बेहतर जानता है। मसला 31 से 32: 28 ज़ीक़ादह 1318 हिजरी

पहला सवाल: इस मसले में दीन के उलेमा क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद ने अपनी नाबालिग़ बेटी का निकाह अम्र के साथ पाँच हज़ार रुपये और 20 दीनार मेहर के बदले किया था और यह बात तय हुई थी और निकाह के वकील ने साफ़ कह दिया था कि मेहर न तो उस समय नक़द लिया जाएगा और न ही रुख़सती के वक़्त, और न ही मेहर की अदायगी का कोई वादा है। अभी तक रुख़सती नहीं हुई है। तो ज़िक्र की गई हिंदह या उसके पिता को मेहर का हिस्सा या पूरा मेहर माँगने का अधिकार कब होगा और इस मेहर को क्या कहा जाएगा? बयान करें और पुण्य पायें।

जवाब: ऐसे मेहर की माँग पति या पत्नी की मृत्यु के बाद या तलाक़ के बाद की जा सकती है, उससे पहले नहीं। यह न तो 'मुअज्जल' (Muajjal - तुरंत देय) है क्योंकि रुख़सती से पहले देना तय नहीं हुआ, और न ही 'मुअज्जल' (Mu'ajjal - विलंबित) है क्योंकि कोई समय-सीमा या अवधि तय नहीं की गई थी। बल्कि यह प्रथा के अनुसार 'मुअख़्ख़र' (बाद में देय) है। रद अल-मुह्तार में है:

[अरबी उद्धरण]: "यदि निकाह के समय से बीस साल बाद स्त्री का पति मर जाए या उसे तलाक़ दे दे, तो उसे मुअख़्ख़र मेहर माँगने का हक़ है क्योंकि इसके माँगने का हक़ मौत या तलाक़ के बाद ही साबित होता है, निकाह के समय से नहीं। अल्लाह तआला बेहतर जानता है।"

उद्धरण का उर्दू अनुवाद: यदि पत्नी का पति बीस (20) साल बाद मर जाए या उसे तलाक़ दे दे, तो पत्नी को मुअख़्ख़र (स्थगित) मेहर माँगने का अधिकार है क्योंकि पत्नी के लिए इस मेहर को माँगने का अधिकार मृत्यु या तलाक़ के बाद स्थापित होता है; निकाह के समय से माँगने का कोई अधिकार नहीं है। अल्लाह तआला बेहतर जानता है। ज़ेड- (टी)

दूसरा सवाल: इस मसले में दीन के उलेमा क्या फ़रमाते हैं कि 'महरे मुअज्जल' (Mu'ajjal - विलंबित) का क्या अर्थ है और 'ग़ैर मुअज्जल' का क्या अर्थ है? और 'मुअज्जल' (Muajjal - तुरंत देय) जिसका दूसरा अक्षर 'ऐन' है, उसका क्या अर्थ है और उनका क्या हुक्म है? बयान करें और पुण्य पायें (बयान करें और इनाम पायें। टी)। और लाल दीनार कितने रुपये का होता है?

जवाब: 'महरे मुअज्जल' (विलंबित) वह है जिसके लिए कोई समय-सीमा तय की गई हो, उदाहरण के लिए दस साल बाद दिया जाएगा। और 'ग़ैर मुअज्जल' वह है जिसमें समय-सीमा तय न हो। "अगर समय-सीमा को नकार दिया जाए तो वह मुअज्जल (तुरंत देय) है, अन्यथा नहीं।"

फुटनोट 1: रद अल-मुह्तार, किताब अल-क़ज़ा, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी, बेरुत, 3/344.

فتاوی رضویه، جلد دوازدہم

میں ایسی عورت نہ ملے تو بیگانوں سے دیکھیں۔ واللہ تعالی اعلم مسئلہ ۳۱تا ۳۲: ۲۸ ذیقعدہ ۱۳۱۸ھ

سوال اول: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی دختر نابالغہ کا نکاح ساتھ عمرو کے عوض مہر پانچ ہزار روپے اور ۲۰ دینار شریک کر دیا تھا اور یہ بات قرار پائی گئی تھی اور وکیل نکاح نے تصریح کر دی تھی کہ مہر نہ تو اس وقت نقد لیا جائے گا اور نہ رخصت کے وقت، اور نہ کوئی وعدہ ادائے مہر کا ہے، اور ہنوز رخصت نہیں ہوئی ہے، تو ہندہ مذکور یا اس کے باپ کو کس وقت میں طلب کرنے جزو یا کل مہر کا اختیار حاصل ہوگا اور اس مہر کو کون سا مہر کہا جائے گا؟ بینوا توجروا

الجواب: ایسے مہر کا مطالبہ بعد موت زوج یا زوجہ یا بعد طلاق ہو سکتا ہے اس سے قبل نہیں، یہ نہ معجل ہے کہ قبل رخصت دینا قرار نہ پایا، نہ مؤجل کہ کوئی اجل یعنی میعاد مقرر نہ کی گئی بلکہ عرفاً مؤخر ہے، ردالمختار میں ہے:

[عربی عبارت]: لو مات زوج المرأة او طلقها بعد عشرين سنة من وقت النكاح فلها طلب مؤخر المهر لان حق طلبہ انما ثبت لها بعد الموت او الطلاق لامن وقت النكاح - واللہ تعالیٰ اعلم۔

اگر بیوی کا خاوند بیس ۲۰ سال بعد فوت ہو جائے یا طلاق دے دے تو بیوی کو مؤخر کیا ہوا طلب کرنے کا حق ہے کیونکہ بیوی کو اس مہر کے مطالبے کا حق مرنے یا طلاق دینے کے بعد ثابت ہوتا ہے وقت نکاح سے مطالبہ کا حق نہیں ہوتا۔ واللہ تعالیٰ اعلم ز- (ت)

سوال دوم: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مہر موجل کے کیا معنی ہیں اور غیر مؤجل کے کیا معنی ہیں؟ اور معجل جس کا حرف ثانی عین مہملہ ہے کیا معنی ہیں اور ان کا کیا حکم ہے؟ بینواتوجروا (بیان کیجئے اور اجر پائیے۔ت) اور دینار سُرخ کتنے روپے کا ہوتا ہے؟

الجواب: مہر مؤجل وہ جس کے لئے کوئی میعاد مقرر کی ہو مثلاً دس برس بعد دیا جائے گا، اور غیر مؤجل وہ کہ تعین و تقررِ میعاد نہ ہو فان کان مع نفی الاجل کان معجلا والا فلا (اگر میعاد کی نفی کی ہو تو معجل ہے)

۱ ردالمحتار کتاب القضاء دار احیاء التراث العربی بیروت ۳/ ۳۴۴

Fatawa Razawiyya Volume 12

...otherwise not. (T) And 'Mu'ajjal' (Prompt) is that which was agreed to be paid before the bride's departure. 'Mu'ajjal' (Deferred) can be demanded when its term arrives; there is no right to demand it before that. A woman can demand 'Mu'ajjal' immediately and has the right to refuse departure until she receives it. That which is neither 'Mu'ajjal' nor 'Mu'ajjal' (deferred without a fixed term) is, according to custom, deferred until divorce or death; there is no right to demand it before then.

In An-Niqaya: If the term for prompt and deferred dower is specified, then it is as stated; otherwise, it will be according to custom - and Allah Almighty knows best. In Niqaya, it is stated: If the duration for prompt (Mu'ajjal) and deferred (Mu'ajjal) dower is specified, it is better; otherwise, the dower will be paid according to custom (T). And Allah Almighty knows best.

A Shara'i Dinar is equal to ten Shara'i Dirhams. Ten Dirhams are equal to two rupees and thirteen (13) annas in English currency, less by one-fifth of a paisa, as we have established in the chapter on Zakat in our Fatawa (T). And Allah Almighty knows best.

Problem 33: What do the scholars of religion say regarding this matter: A person's daughter was being married, and the Qazi Sahib performed the Nikah. After reciting the Kalima, Dua-e-Qunoot, and making both recite 'Amantu Billah', he conducted the agreement (Iqrar). When the attendees were about to recite Fateha, another Qazi from elsewhere, who was a witness for the bride's side, stood up and established the 'Second Grade of the Prophet's Sharia'. The Qazi performing the Nikah said that he did not know the amount of this grade. The witnessing Qazi said it was Rs. 65. I should clarify the 'Second Grade' so the gathering knows. The performing Qazi then said, 'I am not aware of the amounts for First, Second, Third, and Fourth Grades; please inform me of the name, grade, amount, and rupees.'

Answer: In Sharia, a minimum amount for Mahr (dower) is fixed, which must not be less than ten Dirhams. This amount in these rupees is approximately two rupees and thirteen (13) annas weight of silver, specifically two rupees twelve (12) annas and 9-5/3 pies weight. Other than this, Sharia has not prescribed any grades for Mahr. This Rs. 65 amount or grades are fabrications of these Qazis; there is no such grade for Mahr. The Mahr of most of the Pure Wives (of the Prophet ﷺ) was five hundred (500) Dirhams, which amounts to one hundred and forty (140) rupees here. The Mahr of the Lady of Paradise (Hazrat Fatima) may Allah be pleased with her was four hundred (400) Mithqals of silver, which weighed one hundred and sixty (160) rupees'

worth of silver. The Mahr of Hazrat Umm Habiba, may Allah be pleased with her, was four thousand Dirhams or Dinars, which equals eleven hundred and twenty (1120) or eleven thousand two hundred (11200) rupees.

1 Mukhtasar al-Wiqaya fi Masa'il al-Hidaya, Chapter: Minimum Mahr, Noor Muhammad Karkhana Tijarat Kutub, Karachi, p. 56 Page 167 of 688

...वरना नहीं। (त) और 'मुअ़ज्जल' (Mu'ajjal - तुरंत देय) वह है जिसका भुगतान विदाई से पहले होना तय पाया हो। 'मुअ़ज्जल' (Mu'ajjal - स्थगित) की मांग अवधि पूरी होने पर की जा सकती है, उससे पहले अधिकार नहीं है। मुअ़ज्जल महर को औरत तुरंत मांग सकती है, और जब तक वह न मिले, उसे विदा होने से इनकार करने का अधिकार है। और जो न मुअ़ज्जल (तुरंत) हो और न ही मुअ़ज्जल (स्थगित जिसकी अवधि तय हो), वह प्रथा (उर्फ़) के अनुसार तलाक या मृत्यु तक स्थगित रहता है, उससे पहले उसकी मांग का अधिकार नहीं है।

'अन्-निकाया' में है: यदि तुरंत और स्थगित महर की अवधि स्पष्ट कर दी जाए तो वही मान्य है, अन्यथा प्रथा (उर्फ़) के अनुसार होगा - और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। निकाया में है: महर-ए-मुअ़ज्जल और महर-ए-मुअ़ज्जल की अवधि बयान कर दी गई तो बेहतर है, वरना प्रथा के अनुसार महर अदा किया जाएगा (त)। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

शारई दीनार दस शारई दिरहम का होता है। दस दिरहम अंग्रेजी रुपयों में दो रुपये तेरह (13) आने होते हैं, जिसमें एक पैसे का पाँचवाँ हिस्सा कम होता है, जैसा कि हमने अपने फ़तावा में ज़कात के अध्याय में इसकी पुष्टि कर दी है (त)। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 33: इस मसले में उलेमा-ए-दीन क्या फ़रमाते हैं कि एक व्यक्ति की बेटी का निकाह था और क़ाज़ी साहब ने निकाह पढ़ा दिया। कलिमा, दुआ-ए-क़ुनूत और दोनों को 'आमंतु बिल्लाह' पढ़ाकर इक़रार (सहमति) कराया गया। जब महफ़िल के लोग फ़ातिहा पढ़ने के लिए तैयार हुए, तब एक अन्य स्थान के क़ाज़ी, जो उस निकाह में लड़की की ओर से गवाह थे, खड़े हुए और 'पैग़म्बरी शरीयत का दूसरा दर्जा' (ग्रेड) स्थापित किया। निकाह पढ़ाने वाले क़ाज़ी ने कहा कि मुझे इसकी संख्या मालूम नहीं कि कितनी है। वे क़ाज़ी जो गवाह थे, कहने लगे कि 'स' 65 रुपये है। मैं दूसरे दर्जे का सारांश बता दूँ ताकि महफ़िल के अन्य लोगों को पता चल जाए। पढ़ाने वाले क़ाज़ी ने कहा कि मुझे पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे दर्जे की संख्या, नाम, दर्जा और रुपयों की जानकारी नहीं है, कृपया अवगत कराया जाए।

जवाब: शरीयत में महर की कम से कम राशि निर्धारित है कि वह दस दिरहम से कम न हो। इसकी कीमत इन रुपयों में लगभग दो रुपये तेरह (13) आने भर चाँदी होती है, यानी दो रुपये बारह (12) आने और 9-5/3 पाई भर। इसके अलावा शरीयत में महर का कोई दर्जा (ग्रेड) निर्धारित नहीं किया

गया है। यह इन क़ाज़ियों की अपनी मनगढ़ंत बात है, 65 रुपये का महर का कोई दर्जा नहीं है। अधिकतर अज़वाज-ए-मुताहरात (नबी ﷺ की पत्नियों) का महर पाँच सौ (500) दिरहम था, जो यहाँ के रुपयों में एक सौ चालीस (140) होते हैं। हज़रत ख़ातून-ए-जन्नत (हज़रत फ़ातिमा) रज़ियल्लाहु अन्हा का महर चार सौ (400) मिस्काल चाँदी था, जो एक सौ साठ (160) रुपये भर चाँदी के बराबर था। हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा का महर चार हज़ार दिरहम या दीनार था, जो ग्यारह सौ बीस (1120) या ग्यारह हज़ार दो सौ (11200) रुपये के बराबर था।

1 मुख़्तसरुल विक़ाया फ़ी मसाइलिल हिदाया, अध्याय: कम से कम महर, नूर मुहम्मद कारखाना तिज़ारत कुतुब, कराची, पृ. 56 पृष्ठ 167 of 688

ورنہ نہیں۔ ت) اور معجّل وہ جس کا قبل رخصت ادا کرنا قرار پایا ہو۔ مؤجّل کا مطالبہ میعاد آنے پر ہو سکتا ہے اس سے پہلے اختیار نہیں، اور معجّل کو عورت فوراً مانگ سکتی ہے، اور جب تک نہ ملے رخصت سے انکار کا اسے اختیار ہے اور جو نہ معجّل اور نہ مؤجّل وہ بحکمِ عرف طلاق یا موت تک مؤخر ہے اس سے پہلے اختیارِ مطالبہ نہیں۔

في النقایه المعجل والمؤجل ان بینا فذاك والا فالمتعارف۔ واللہ تعالی اعلم۔ نقایہ میں ہے: مہر معجل اور مؤجل کی مدّت بیان کردی گئی تو بہتر، ورنہ عرف کے لحاظ سے مہر ادا کیا جائیگا (ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

دینار شرعی دس درم شرعی کا ہوتا ہے، دس درم انگریزی روپے سے دو روپے تیرہ ۱۳ آنے ہوتے ہیں پانچواں حصہ پیسہ کا کم، کما حققنا فی الزکوٰۃ من فتاونٰی (جیسا کہ ہم نے اپنے فتاوٰی کے باب زکوۃ میں اس کی تحقیق کردی ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۳: علمائے دین اس مسئلہ میں کیا فرماتے ہیں کہ ایک شخص کی لڑکی کا نکاح تھا اور قاضی صاحب نے نکاح پڑھادیا، کلمہ و دعائے قنوت اور دونوں امنتُ باللہ پڑھا کر اقرار پڑھایا تھا اور فاتحہ کے لئے جب حاضرین محفل پڑھنے کو ہوئے تب ایک قاضی دیگر جگہ کے تھے وہ اس نکاح میں گواہ تھے لڑکی کی طرف سے، اور درجہ دوم شرع پیغمبری قائم کیا گیا تھا تو نکاح پڑھانے والے قاضی نے کہا کہ مجھ کو اس کی تعداد معلوم نہیں کہ کتنی تعداد ہے، وہ جو قاضی گواہ تھے اُس نکاح کے، وہ کہنے لگے ص ۶۵ روپے، درجہ دوم کی میں خلاصہ کردیوں تاکہ

محفل میں اور لوگوں کو معلوم ہو جائے، پڑھانے والے نے کہا کہ درجہ اول دوم درجہ سوم درجہ چہارم کی تعداد مجھ کو معلوم نہیں مع نام درجہ تعداد اور روپیہ کے آگاہی ہو جائے۔

الجواب: شریعت میں مہر کی کم سے کم تعداد مقرر ہے کہ دس درم سے کم نہ ہو جس کے اس روپے سے کچھ کوڑیا کم دو روپے تیرہ ۱۳ آنے بھر چاندی ہوئی یعنی دو روپے بارہ ۱۲ آنے ۹-۵/۳ پائی بھر اس کے سوا شریعت میں مہر کا کوئی درجہ مقرر نہیں فرمایا ہے، یہ ان قاضیوں کی گھڑت ہے ص ۶۵ روپے کا کوئی درجہ مہر کا نہیں ہے، اکثر ازواج مطہرات کا مہر پانسو ۵۰۰ درم تھا کہ یہاں کے روپوں سے ایک سو چالیس ۱۴۰ ہوئے، اور حضرت خاتونِ جنت رضی اللہ تعالیٰ عنہا کا مہر چار سو ۴۰۰ مثقال چاندی تھا جس کے ایک سوساٹھ ۱۶۰ روپے بھر چاندی ہوئی، اور حضرت اُمّ حبیبہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کا مہر چار ہزار درم یا دینار تھا جس کے گیارہ سو بیس ۱۱۲۰ یا گیارہ ہزار دوسو ۱۱۲۰۰۔

1 مختصر الوقاية في مسائل الهداية فصل اقل المهر نور محمد کارخانه تجارت کتب کراچی ص ۵۶

Fatawa Razawiyya - Volume Twelve

...rupees, the Mahr (dower) should be specified; just saying 'the Sharia of the Prophet' or 'a certain level of it' is foolishness. And Allah knows best.

Question 34: What do the scholars of religion and jurists of the clear Sharia say about this matter: Zaid married Hind on the condition that if I divorce you, I will pay one hundred rupees as Mahr, and if you yourself seek divorce from me, I will give you the sum of three rupees and nothing else. Now Hind herself requested a divorce from her husband Zaid in front of the representative (Wakil) and marriage witnesses named Azeemullah and Jumman. According to Hind's request, Zaid divorced Hind. Is Hind, in this case, entitled to receive one hundred rupees or three rupees? Please explain and be rewarded.

The Answer: Neither three rupees nor one hundred rupees, rather her 'Mahr al-Mithl' (customary dower) should be looked at. If it is one hundred rupees or more than one hundred, then one hundred rupees should be given. If it is three rupees or, for argument's sake, two or three annas less than three rupees (as there is room for such a reduction), then three rupees should be given. If it is more than three rupees and less than one hundred rupees, then the full Mahr al-Mithl should be given. It is stated in Durr al-Mukhtar:

Arabic	**Urdu Translation**
Nikahaha 'ala alfin in aqama biha wa 'ala alfayni in akhrajaha fa-in aqama biha falaha al-alfu li-ridaha bihi, wa illa fa-mahrul mithli la yuzadu 'ala alfayni wala yunqasu 'an alfin li-ttifaqihima 'ala dhalika bi-khilafi ma lau tazawwajaha 'ala alfin in kanat qabihah wa alfayni in jamilah fa-innahu yasihhu li-qillat al-jahalah, ila akhirihi mukhtasaran, aqulu: wa fima nahnu fihi al-jahalatu ashaddu min al-surat al-ula, fa-thamma ahad al-shartayn hasilun wal-thani 'ala al-khatar wa hahuna kana kullun 'ala al-khatar li-	(The Urdu text matches this content) Marriage was performed on the condition of one thousand (Mahr) if he resides in the wife's city and two thousand if he takes her away from there. If he stays in her city, she will get one thousand because she agreed to it. If he takes her out of there, then it will be Mahr al-Mithl, which should not exceed two thousand and not be less than one thousand because both agreed on that. This situation is contrary to that. When marriage is performed by saying if she is ugly the Mahr is one thousand and if beautiful then two thousand, both these conditions are valid because there are very few chances of ignorance (uncertainty) in this, briefly. I say: (I say that) in

Arabic	Urdu Translation
jawazi an la yaqa'a shay'un minhuma fala yatlaq.	our discussion, there is even more ignorance than in the first case because there one condition is certain while in the second there is a possibility of it happening or not, and...

'Durr al-Mukhtar, Chapter on Mahr, Mujtabai Press, Delhi 1/200 Page 168 of 688

फ़तावा रज़विया - भाग बारह

...रुपये, मेहर तय कर देना चाहिए; केवल 'पैगंबर की शरीयत' या 'उसका एक स्तर' कहना मूर्खता है। और अल्लाह बेहतर जानता है।

प्रश्न ३४: धर्म के विद्वान और स्पष्ट शरीयत के न्यायविद इस मामले में क्या कहते हैं: जैद ने हिंद से इस शर्त पर शादी की कि अगर मैं तुम्हें तलाक दूँ तो मैं मेहर के तौर पर सौ रुपये दूँगा, और अगर तुम खुद मुझसे तलाक चाहोगी तो मैं तुम्हें तीन रुपये की राशि दूँगा और कुछ नहीं दूँगा। अब हिंद ने खुद अपने पति जैद से वकील और अज़ीमुल्लाह और जुम्मन नाम के निकाह के गवाहों के सामने तलाक की दरख्वास्त की। हिंद की दरख्वास्त के अनुसार जैद ने हिंद को तलाक दे दिया। क्या हिंद इस मामले में सौ रुपये पाने की हकदार होगी या तीन रुपये पाने की? कृपया व्याख्या करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: न तीन रुपये न सौ रुपये, बल्कि उसका 'मेहर-ए-मिसल' (प्रचलित मेहर) देखा जाए। अगर वह सौ रुपये या सौ से ज्यादा हो तो सौ रुपये दिए जाएं। अगर वह तीन रुपये या मान लीजिए तीन रुपये से दो-तीन आने कम हो (क्योंकि यहाँ तक कमी की गुंजाइश है) तो तीन रुपये दिए जाएं। अगर वह तीन रुपये से ज्यादा और सौ रुपये से कम हो तो पूरा मेहर-ए-मिसल दिया जाए। दुर्रे मुख्तार में है:

अरबी	**उर्दू अनुवाद**
(अरबी उद्धरण का अर्थ): पत्नी के शहर में रहने पर एक हज़ार और वहाँ से ले जाने पर दो हज़ार मेहर पर निकाह किया गया।	पत्नी के शहर में रहने पर एक हज़ार और वहाँ से ले जाने पर दो हज़ार मेहर पर निकाह किया, तो अगर मर्द औरत के शहर में रहे तो एक हज़ार बीवी को देगा क्योंकि वह उस पर राजी हुई थी, अगर वहाँ से बाहर ले जाए तो फिर मेहर-ए-मिसल होगा जो दो हज़ार से ज़ायद न हो और एक हज़ार से कम न हो क्योंकि उस पर दोनों की रजामंदी थी, यह सूरत इसके खिलाफ है, जब यह कहकर निकाह किया हो कि अगर बदशक्ल हो तो एक हज़ार और खूबसूरत हो तो दो हज़ार मेहर है तो ये दोनों शर्तें सही हैं क्योंकि इसमें जहालत के मौके बहुत कम हैं, मुख़्तसरन, अकूलु: (मैं कहता हूँ कि) हमारी बहस में पहली सूरत से भी ज़ियादा जहालत है क्योंकि वहाँ एक शर्त तो हासिल है दूसरी में होने न होने का एहतमाल है, और...

'दुर्रे मुख्तार, मेहर का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली १/२०० पृष्ठ १६८/६८८

روپے ہوئے، مہر معین کر دینا چاہئے، فقط شرع پیغمبری یا اس کا فلاں درجہ کہنا بیوقوفی ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۳۴: کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید نے ہندہ سے اس شرط پر نکاح کیا کہ اگر میں تجھ کو طلاق دوں تو سو روپے مہر کے ادا کروں اور اگر مجھ سے خود طلاق چاہے گی تو تجھ کو مبلغ تین روپے میں دوں گا اور کچھ نہ دوں گا، اب خود ہندہ نے درخواست طلاق کی زید اپنے شوہر سے روبرو وکیل اور روبرو گواہان نکاح مسمیان عظیم اللہ اور جمن کے، حسبِ درخواست ہندہ کے، زید نے ہندہ کو طلاق دے دی آیا ہندہ اس صورت میں سو روپے پانے کی مستحق ہوگی یا تین روپے پانے کی۔ بینوا توجروا۔

الجواب: نہ تین روپے نہ سو روپے بلکہ اس کا مہرِ مثل دیکھا جائے، وہ اگر سو روپے یا سو سے زائد ہو تو سو روپے دئے جائیں، اور اگر تین روپے یا بالفرض تین روپے سے دو تین آنے کم ہوں کہ یہاں تک کمی کی گنجائش ہے تو تین روپے دئے جائیں، اور اگر تین روپے سے زائد اور سو روپے سے کم ہوں تو پورا مہرِ مثل دیا جائے، در مختار میں ہے:

عربی متن	**اردو ترجمہ**
نکحھا علی الف ان اقام بھا وعلی الفین ان اخرجھا فان اقام بھا فلھا الالف لرضاھا بہ ، والا فمھر المثل لا یزاد علی الفین ولا ینقص عن الف	بیوی کے شہر میں رہنے پر ایک ہزار اور وہاں سے لے جانے پر دو ہزار مہر پر نکاح کیا، تو اگر مرد عورت کے شہر میں رہے تو ایک ہزار بیوی کو دے گا کیونکہ وہ اس لاتفاقھما پر راضی ہوئی تھی، اگر وہاں سے باہر لے جائے تو پھر

عربی متن	اردو ترجمہ
على ذلک بخلاف مالو تزوجها على الف ان كانت قبيحة والفين ان جميلة فانہ يصح لقلة الجهالة ، الى آخره مختصراً، اقول: وفيما نحن فيہ الجهالة اشد من الصورة الاولى ، فثمہ احد الشرطين حاصل والثانى على الخطر وههنا كان كل على الخطر لجواز ان لا يقع شيئى منهما فلا يطلق	مہر مثل ہو گا جو دو ہزار سے زائد نہ ہو اور ایک ہزار سے کم نہ ہو کیونکہ اس پر دونوں کی رضامندی تھی، یہ صورت اس کے خلاف ہے، جب یہ کہہ کر نکاح کیا ہو کہ اگر بد شکل ہو تو ایک ہزار اور خوبصورت ہو تو دو ہزار مہر ہے تو یہ دونوں شرطیں صحیح ہیں کیونکہ اس میں جہالت کے مواقع بہت کم ہیں، مختصراً، اقول: (میں کہتا ہوں کہ) ہماری بحث میں پہلی صورت سے بھی زیادہ جہالت ہے کیونکہ وہاں ایک شرط تو حاصل ہے دوسری میں ہونے نہ ہونے کا احتمال ہے، اور

'درمختار باب المهر مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۰۰ صفحہ 168 از 688

Fatawa Razawiyya, Volume 12

[Arabic quote]: "Do not ask, for ignorance has become established, so both namings (of dower) became invalid, and the proper dower (mahr al-mithl) became obligatory absolutely. And Allah Almighty knows best."

Here there is a possibility of both being or not being, because it is possible that neither of the two is achieved. For example, neither the man gives divorce nor the woman demands divorce, then ignorance has become effective, and both conditions will be missing. Therefore, the proper dower (mahr al-mithl) will be obligatory, absolutely. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 35: From Lahore, asked by Maulvi Abdullah Sahib Tonki, 23 Sha'ban 1323 AH. What do the scholars of religion and muftis of the clear Shari'ah say in this situation: A person wrote in a document (qabala) for his wedded wife the following statement: (Whatever expense occurs for wedding celebrations, domestic sorrows, and family events, whether little or much, its arrangement's cost is upon me, and it has no relation to the income of salary or rural estate). Now, after this writing, if the writer of the document himself, or after his death his children, do not fulfill this condition, and instead, whatever is given to the said wife is counted towards her dower (mahr), etc., what is the Shari'ah ruling? Can the Shari'ah judge compel the writer of the document or his children to fulfill this condition or not? And can what is given be counted towards her dower or not? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: In reality, there is no compulsion in Shari'ah to fulfill this promise, as specified in Al-Ashbah wa al-Nazair and Jami' al-Fusulayn (as stated in Al-Ashbah wa al-Nazair and Jami' al-Fusulayn. T). Whatever the husband gave, if at the time of giving he mentioned a reason other than dower which could be considered a gift or donation from the husband's side, then he does not have the authority to count it towards the dower. Similarly, he cannot count obligatory maintenance (nafaqah) towards it, even if he did not mention the name 'nafaqah' while giving; rather, it will be considered maintenance. Likewise, items that are considered gifts according to custom (urf). In any situation other than these three, the husband's statement with an oath is credible; if he says under oath that I gave it as part of the dower, it will be counted as dower. Similarly, after the husband's death, whatever his children send, and if the apparent situation due to the custom and tradition of the tribe is not contrary to the intention of dower, and they did not explicitly state it was for some reason other than dower, then their statement is also credible.

[Arabic quote]: "Because the owner knows best the reason for transferring ownership, as in 'Uqud al-Durriyya' and others."

Because the one granting ownership knows better the reason for the ownership, as it is in 'Uqud al-Durriyya'. (T)

It is in Durr-e-Mukhtar:

फ़तावा रज़विया, खंड 12

[अरबी उद्धरण]: "मत पूछो, क्योंकि अज्ञानता स्थापित हो गई है, इसलिए दोनों नामकरण (महर के) अमान्य हो गए, और मेहर-ए-मिसिल (समान महर) पूर्ण रूप से अनिवार्य हो गया। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।"

यहाँ दोनों में होने या न होने की संभावना है क्योंकि संभव है कि दोनों में से कोई भी प्राप्त न हो। उदाहरण के लिए, न पुरुष तलाक दे और न महिला तलाक की मांग करे, तो अज्ञानता प्रभावी हो गई, और दोनों शर्तें अनुपस्थित होंगी। इसलिए, मेहर-ए-मिसिल अनिवार्य होगा, पूर्ण रूप से। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। (त)

मसला 35: लाहौर से, मौलवी अब्दुल्ला साहब टोंकी द्वारा पूछा गया, 23 शाबान 1323 हिजरी। धर्म के विद्वान और स्पष्ट शरीयत के मुफ्ती इस स्थिति में क्या कहते हैं: एक व्यक्ति ने अपनी विवाहित पत्नी के लिए एक दस्तावेज़ (कबाला) में यह कथन लिखा (शादी के समारोहों, घरेलू दुखों और पारिवारिक कार्यक्रमों में जो कुछ भी थोड़ा या बहुत खर्च होगा, उसके प्रबंधन का खर्च मेरा है, और इसका वेतन या ग्रामीण जागीर की आय से कोई संबंध नहीं है)। अब, इस लेखन के बाद, यदि दस्तावेज़ लेखक स्वयं, या उसकी मृत्यु के बाद उसकी संतान, इस शर्त को पूरा नहीं करती है, बल्कि उक्त पत्नी को जो कुछ भी दिया जाता है, उसे उसके महर आदि में गिना जाता है, तो शरीयत का क्या हुक्म है? क्या शरीयत का काज़ी दस्तावेज़ लेखक या उसकी संतान को इस शर्त को पूरा करने के लिए मजबूर कर सकता है या नहीं? और क्या दिया गया धन उसके महर में गिना जा सकता है या नहीं? स्पष्ट करें और आप पुरस्कृत होंगे।

उत्तर (अल-जवाब): वास्तव में, शरीयत में इस वादे को पूरा करने के लिए कोई बाध्यता नहीं है, जैसा कि अल-अशबाह व अन-नज़ायर और जामे उल-फ़ुसुलैन में निर्दिष्ट है (जैसा कि अल-अशबाह व अन-नज़ायर और जामे उल-फ़ुसुलैन में उल्लेख है। त)। पति ने जो कुछ दिया, यदि देने के समय उसने महर के अलावा किसी और कारण का नाम लिया, जिसे पति की ओर से उपहार या दान माना जा सके, तो उसे महर में गिनने का अधिकार उसे नहीं है। इसी तरह, वह अनिवार्य भरण-पोषण (नफ़क़ा) को उसमें नहीं गिन सकेगा, भले ही उसने देते समय 'नफ़क़ा' नाम न लिया हो; बल्कि वह नफ़क़ा ही माना जाएगा। इसी तरह, वे वस्तुएं जो प्रथा (उर्फ़) के अनुसार उपहार मानी जाती हैं। इन तीनों स्थितियों के अलावा किसी भी स्थिति में, शपथ के साथ पति का कथन विश्वसनीय है; यदि वह शपथ

के साथ कहता है कि मैंने इसे महर के रूप में दिया था, तो इसे महर में गिना जाएगा। इसी तरह, पति की मृत्यु के बाद, उसके बच्चे जो कुछ भी भेजें, और यदि कबीले की रीति-रिवाजों और परंपराओं के कारण स्पष्ट स्थिति महर के इरादे के विपरीत नहीं है, और उन्होंने स्पष्ट रूप से यह नहीं कहा था कि यह महर के अलावा किसी और कारण से है, तो उनका कथन भी विश्वसनीय है।

[अरबी उद्धरण]: "क्योंकि मालिक स्वामित्व हस्तांतरित करने के कारण को बेहतर जानता है, जैसा कि 'उकूद अद-दुर्रिय्या' और अन्य में है।"

क्योंकि स्वामित्व प्रदान करने वाला स्वामित्व के कारण को बेहतर जानता है, जैसा कि 'उकूद अद-दुर्रिय्या' में है। (त)

दुर्रे मुख्तार में है:

पृष्ठ 169 का 688

فتاوٰی رضویہ، جلد دو از دہم

ولاتسأل فتمکنت الجھالۃ ففسد التسمیتان فوجب مھر المثل مطلقا واللہ تعالی اعلم

یہاں تو دونوں میں ہونے نہ ہونے کا احتمال ہے کیونکہ ممکن ہے کہ دونوں میں کوئی بھی حاصل نہ ہو، مثلاً نہ مرد طلاق دے اور نہ عورت طلاق کا مطالبہ کرے تو جہالت موثر ہوگئی، اور دونوں شرطیں مفقود ہوں گی، لہٰذا مہر مثل واجب ہوگا، مطلقاً واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۳۵: از لاہور مسئولہ مولوی عبد اللہ صاحب ٹونکی ۲۳ شعبان ۱۳۲۳ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس صورت میں کہ ایک شخص نے اپنی عورت منکوحہ کو کسی قبالہ میں یہ عبارت لکھ دی (جو کچھ تقریبات شادی وغمی خانگی اور خاندانی میں تھوڑا یا بہت صرف ہوگا اس کے سرانجام کا صرفہ میرا ہے اور آمدنی تنخواہ و دیہی جاگیر سے کچھ علاقہ نہیں) پس تحریر کے بعد قبالہ نویس خود یا بعد وفات قبالہ نویس کے اُس کی اولاد اس شرط کی وفا نہ کرے بلکہ زوجہ مذکورہ کو جو کچھ دیا جائے وہ اُس کے دین مہر وغیرہ میں شمار کیا جائے تو شرعاً کیا حکم ہے آیا قاضی شریعت اس شرط کی ایفا پر قبالہ نویس یا اُس کی اولاد کو مجبور کر سکتا ہے یا نہیں؟ اور وہ دیا ہوا اس کے دین مہر میں محسوب ہو سکتا ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب فی الواقع اس وعدہ کی وفا پر شرعاً نہیں جیسا کہ نص علیہ فی الاشباہ و النظائر وجامع الفصولین (جیسا کہ الاشباہ و النظائر اور جامع الفصولین میں اس پر نص ہے۔ ت) شوہر نے جو کچھ دیا اگر دینے کے وقت مہر کے سوا اور کسی وجہ کا نام لیا جس پر وہ جانب شوہر سے ہبہ وعطیہ قرار پا سکے جب تو اسے مہر میں محسوب کرنے کا اختیار نہیں، یوں ہی نان و نفقہ واجبہ کو اُس میں محسوب نہ کر سکے گا اگرچہ دیتے وقت نام نفقہ نہ لیا ہو، بلکہ نفقہ ہی ٹھہرے گا، یونہیں اور

اشیاء جواز روئے عرف ہدیہ قرار پاتی ہیں اور جوان تینوں صورتوں سے جُدا ہے اُس میں شوہر کا قول قسم کے ساتھ معتبر ہے، اگر بقسم کہہ دے گا کہ میں نے مہر میں دیا تھا مہر میں محسوب ہوگا، یونہی بعد شوہر اولادِ شوہر جو کچھ بھیجنے اور ظاہر حال بسببِ عُرف و رسم قوم منافی ارادہ مہر نہ ہو، نہ انہوں نے صراحۃً غیر مہر کسی اور وجہ کے لئے اُسے قرار دیا ہو تو اُن کا قول بھی معتبر ہے۔

لان الملك ادری بجهة التملیك كما فی عقود الدریة وغیرها۔

کیونکہ مالک بنانے والا ملکیت کی وجہ کو بہتر جانتا ہے، جیسا کہ عقود الدریہ میں ہے۔ (ت)

در مختار میں ہے:

Fatawa-e-Razawiyya Volume Twelve

[Arabic Text Block]: If a man sends something to his wife and does not mention the purpose at the time of giving other than the dowry (Mahr), such as saying it is for candles or henna, and then later says it is part of the dowry, it will not be accepted. This is because it has occurred as a gift, so it cannot turn into dowry. If she says it's a gift and he says it's part of the dowry, then his word under oath will be accepted for things not prepared for consumption, and the evidence is for her in things prepared for consumption because the apparent situation belies him. Therefore, the chosen jurist stated that he is believed in what is not obligatory upon him, like shoes and a wrap, but not in what is obligatory, like a headscarf and a shirt. End of summary.

[Urdu Text Block]: If a husband sends something to his wife and at the time of giving did not mention any reason other than dowry, for example, candles and henna. Then later he says this is dowry, so the husband's word will not be accepted because it has already been given as a gift; now it cannot become dowry. Then if the wife says this is a gift and the husband says it is dowry, then the husband's statement will be accepted with an oath in those things which were not provided for consumption. And if both presented witnesses, the woman's witnesses will be preferred and the woman's word with an oath will be reliable in those things which were provided for consumption because the husband's apparent state belies him. That is why the jurist said that the chosen view is that the husband's statement will be confirmed in the case when that thing is not from the obligatory maintenance (nafaqah), for example, socks or fine cloth. And regarding what is obligatory upon the husband, his word will not be confirmed, like a headscarf and a shirt. End of summary (T).

Radd al-Muhtar states: [Arabic Text Block]: It is said in Al-Fath: What must be considered in our lands is that for all mentioned items such as wheat, almonds, flour, sugar, live sheep, and the rest, the statement will be according to the woman's word because it is customary in all of these to send them as a gift, and the apparent state is with her, not him. His word will not be taken except in items like clothes and a female slave. This support was mentioned in Al-Bahr and its qualification from An-Nahr. And Allah Ta'ala knows best.

[Urdu Text Block]: In Al-Fath it is: In our region, the things in which the wife's word will be reliable are those mentioned, e.g., wheat, walnuts, flour, sugar, and live goats, etc. (things that remain for a month without rotting or spoiling). Because all these things are given as gifts in our custom, therefore the apparent state will support the

wife, not the husband, and the husband's word will not be reliable in slaves, clothes, etc. This was supported in Al-Bahr and its qualification mentioned from An-Nahr. And Allah Ta'ala knows best (T).

Issue 36: Query by Maulvi Abdul Ghani Sahib from Hasanpur, District Moradabad, Mohalla Chah Kankar. 8 Ramadan 1322 AH. Praise be to Allah, Lord of the worlds, and the end is for the righteous, and blessings and peace be upon our master Muhammad and his family and all his companions.

1 Durr al-Mukhtar, Chapter of Mahr, Mujtabai Press Delhi, 1/203 2 Radd al-Muhtar, Chapter of Mahr, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 364/2 Page 170 of 688

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द बारह

[अरबी पाठ]: अगर किसी ने अपनी पत्नी को कोई चीज़ भेजी और देते समय मेहर (दहेज) के अलावा किसी और कारण का ज़िक्र नहीं किया, उदाहरण के लिए मोमबत्ती या मेंहदी के लिए, फिर बाद में कहा कि यह मेहर में से है, तो यह स्वीकार नहीं किया जाएगा, क्योंकि यह एक उपहार (हदिया) के रूप में घटित हो चुका है और मेहर में नहीं बदल सकता। यदि वह कहती है कि यह उपहार है और वह कहता है कि यह मेहर में से है, तो खाने के लिए तैयार नहीं की गई चीज़ों में शपथ के साथ उसकी बात मानी जाएगी, और खाने के लिए तैयार चीज़ों में पत्नी की बात मानी जाएगी क्योंकि स्पष्ट स्थिति उसे झुठलाती है। इसीलिए चुने हुए फ़कीह ने कहा कि उन चीज़ों में उसकी बात मानी जाती है जो उस पर अनिवार्य नहीं हैं जैसे जूते और चादर, उन चीज़ों में नहीं जो अनिवार्य हैं जैसे दुपट्टा और कमीज़। संक्षेप में।

[उर्दू पाठ]: पति ने पत्नी को कोई चीज़ भेजी और देते समय मेहर के अलावा किसी और कारण का ज़िक्र नहीं किया हो, जैसे मोमबत्ती और मेंहदी। फिर बाद में कहे कि यह मेहर है, तो पति की बात स्वीकार नहीं होगी क्योंकि वह उपहार (हदिया) हो चुका है, अब मेहर नहीं बन सकता। फिर अगर पत्नी कहे कि यह हदिया है और पति कहे मेहर है, तो पति की बात शपथ के साथ मान ली जाएगी उन चीज़ों में जो खाने के लिए मुहैया नहीं की गईं। और अगर दोनों ने गवाह पेश किए तो औरत के गवाहों को प्राथमिकता दी जाएगी और औरत की बात शपथ के साथ उन चीज़ों में विश्वसनीय होगी जो खाने के लिए मुहैया की गईं क्योंकि पति की स्पष्ट स्थिति उसे झुठलाती है। इसीलिए फ़कीह ने फ़रमाया कि मुख़्तार यह है कि पति की बात की पुष्टि उस स्थिति में की जाएगी जब वह चीज़ अनिवार्य गुज़ारे (नफ़क़ह) में से न हो, उदाहरण के लिए मोज़ा या बारीक कपड़ा। और जो चीज़ पति पर अनिवार्य हो उसमें पति की बात की पुष्टि नहीं की जाएगी, जैसे दुपट्टा और कमीज़। संक्षेप में (त)।

रद्द अल-मुह्तार में है: [अरबी पाठ]: अल-फ़तह में कहा गया है: हमारे क्षेत्रों में जिस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए वह यह है कि गेहूं, बादाम, आटा, चीनी, जीवित भेड़ और शेष सभी उल्लेखित वस्तुओं के मामले में, कथन स्त्री के शब्द के अनुसार होगा क्योंकि इन सभी चीज़ों को हमारे रीति-रिवाज़ में उपहार के रूप में भेजने का चलन है, और स्पष्ट स्थिति उसके साथ है, उसके साथ नहीं। उसकी बात केवल कपड़ों और दासी जैसी चीज़ों में मानी जाएगी। इस समर्थन का उल्लेख अल-बहर में और इसकी सीमा अन-नहर से की गई है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[उर्दू पाठ]: फ़तह में है: हमारे क्षेत्र में जिन चीज़ों में पत्नी की बात विश्वसनीय होगी वे ये उल्लेखित हैं, जैसे गेहूं, अखरोट, आटा, चीनी और जीवित बकरी आदि (वे चीज़ें जो महीने भर बनी रहें, सड़ें या खराब न हों)। क्योंकि ये सभी चीज़ें हमारे रिवाज़ (उर्फ़) में उपहार में दी जाती हैं, इसलिए ज़ाहिरी तौर पर पत्नी का साथ दिया जाएगा, पति का नहीं, और पति की बात लौंडी, कपड़ा आदि में विश्वसनीय नहीं होगी। इसकी पुष्टि बहर में और इसकी क़ैद नहर से ज़िक्र की गई है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है (त)।

मसअला 36: प्रेषक मौलवी अब्दुल ग़नी साहब, निवासी हसनपुर, जिला मुरादाबाद, मोहल्ला चाह कंकर। 8 रमज़ान 1322 हिजरी। सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का रब है, और अंत परहेज़गारों के लिए है, और दुरूद व सलाम हमारे सरदार मुहम्मद और उनके परिवार और उनके सभी साथियों पर।

1 दुर्र-ए-मुख़्तार, मेहर का अध्याय, मुज्तबाई प्रेस दिल्ली, 1/203 2 रद्द अल-मुह्तार, मेहर का अध्याय, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 364/2 पृष्ठ 170/688

لو بعث الی امرأتہ شیئا ولم یذکر جھة عند الدفع غیر المھر کقولہ لشمع او حناء ثم قال انہ من المھر لم یقبل، لوقوعة ھدیة فلا ینقلب مھرا فقالت ھدیة وقال من المھر فالقول لہ بیمینہ والبینة لھا فی غیر المھیا للاکل ولھا فی المھیا لان الظاھر یکذبہ ولذا قال الفقیة المختار انہ یصدق فیما لا تجب علیہ کخف وملاء لافیما یجب کخمار ودرع اہ مختصرا۔

خاوند نے بیوی کو کوئی چیز ارسال کی اور دیتے وقت مہر کے علاوہ کسی وجہ کو ذکر نہ کیا ہو مثلاً شمع اور مہندی۔ پھر بعد میں کہا کہ یہ مہر ہے تو خاوند کی بات قبول نہ ہو گی کیونکہ وہ ہدیہ ہو چکی جواب مہر نہیں بن سکتا، پھر بیوی کہے یہ ہدیہ ہے اور خاوند مہر کہے تو خاوند کی بات قسم کے ساتھ تسلیم کر لی جائے گی ان چیزوں میں جو کھانے کے واسطے مہیا نہیں کیں اور اگر دونوں نے گواہ پیش کئے تو عورت کے گواہ مقدم ہونگے اور عورت کا قول قسم کے ساتھ معتبر ہو گا ان چیزوں میں جو کھانے کے واسطے مہیا کیں کیونکہ زوج کا ظاہر حال جھٹلاتا ہے، اسی لئے فقیہ نے فرمایا کہ مختار یہ ہے کہ خاوند کی بات کی تصدیق اس صورت میں کی جائے گی جب وہ چیز نفقہ واجبہ میں سے نہ ہو، مثلاً موزہ یا باریک کپڑا اور جو چیز زوج پر واجب ہو اس میں زوج کی تصدیق نہ کی جائے، جیسے دوپٹہ اور قمیص۔ اھ مختصراً (ت)

ردالمحتار میں ہے: قال فی الفتح الذی یجب اعتبار فی دیارنا ان جمیع ما ذکر من الحنطہ واللوز والدقیق والسکر والشاة الحیة وباقیھا یکون القول فیھا اقول المرأة لان المتعارف فی ذلك کلہ ان یرسلہ ھدیة والظاھر معھا لامعہ ولا یکون القول قولہ الا فی نحو الثیاب والجاریة و ذکر تأییدہ في البحر وتقییدہ عن النھر واللہ تعالی اعلم۔

فتح میں ہے : ہمارے علاقے میں جن چیزوں میں بیوی کی بات معتبر ہوگی وہ یہ مذکور ہیں مثلاً گندم، اخروٹ، آٹا، شکر اور زندہ بکری وغیرہ (جو چیز مہینہ بھر باقی رہے نہ سڑے خراب ہو) کیونکہ ان تمام چیزوں کو ہمارے عرف میں ہدیہ دیا جاتا ہے لہذا ظاہر بیوی کا ساتھ دے گا، خاوند کا نہیں، اور خاوند کا قول معتبر نہ ہوگا لونڈی، کپڑا وغیرہ میں _ اس کی تائید بحر میں اور اس کی تقیید نہر سے ذکر کی۔ واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۳۶: مسئولہ مولوی عبد الغنی صاحب از حسن پور ضلع مراد آباد محلہ چاہ کنکر ۸ رمضان ۱۳۲۲ھ الحمد للہ رب العالمین والعاقبۃ للمتقین والصلوۃ والسلام علی سیدنا محمد وآلہ واصحابہ اجمعین۔

1 درمختار باب المهر مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۰۳ 2 ردالمحتار باب المهر داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۶۴/۲ Page 170 of 688

Fatawa Razawiyya Volume 12

Question: What do the scholars of religion and the firm muftis say regarding Mahr Mu'ajjal (prompt dower) and Mahr Mu'ajjal (deferred dower)? What is the meaning of Mahr Mu'ajjal, and at what time is the wedded woman authorized to receive the dower money, and is there any [other] reason or not? What is the meaning of Mahr Mu'ajjal and at what time is the wedded woman authorized to receive the dower money, and is there any [fixed] amount for it or not, and is there any [other] reason or not? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: Mahr is of three types: 1. **Mu'ajjal (Prompt):** That which is agreed upon to be given before the consummation of marriage. For this, the woman has the right to refuse to go [to the husband's home] until she receives it. And if she has already gone, she still has the right to demand it whenever she wishes and to withhold herself from her husband until its receipt, even if twenty years have passed since she moved in. 2. **The second is Mu'ajjal (Deferred with fixed time):** For which a duration has been fixed, such as it will be paid after ten years, twenty years, or five days. In this case, the woman has no right to demand it until that duration has passed, and after the expiry of the period, she can demand it at any time. 3. **The third is Mu'akhkhar (Deferred until death or divorce):** For which neither a condition of advance payment has been set nor any fixed duration determined; it is just fixed in an absolute and vague manner, as is common with general dowers nowadays. In this case, the woman has no right to demand it until death or divorce occurs. The pure Shariah has not specified any fixed amount for Mahr Mu'ajjal or Mu'ajjal. Whatever amount is agreed upon to be given in advance will be Mu'ajjal. If a duration is fixed for the remainder, that much will be Mu'ajjal, otherwise, it will remain Mu'akhkhar. Yes, if there is a common custom of a tribe or city that even if not explicitly stated, a certain amount must be given in advance, then even without a clear agreement, that amount will become Mu'ajjal and the rest will remain Mu'ajjal or Mu'akhkhar as per usual. It is stated in Durr-ul-Mukhtar:

Arabic Text	Urdu Translation / Explanation
Her [the wife's] right to prevent him from intercourse and its preliminaries, even after intercourse or privacy to which they both consented, in order to take what is determined as prompt	A wife has the right to prevent her husband from intercourse and its preliminaries to receive the Mahr Mu'ajjal (prompt dower), whether it is the whole or part as stated, or the amount that is customary. This applies

Arabic Text	Urdu Translation / Explanation
dower, whether it is all or part of it, or to take the amount that is customarily prompt for someone like her; the fatwa is based on this if no [other] deferment was made. And if the whole is made prompt, it is as stipulated.	even if intercourse or privacy has already occurred with the wife's consent. This is the ruling (i.e., custom is taken into account if the duration or promptness of the entire dower is not fixed. If a duration or promptness has been fixed, then it must be followed as both parties stipulated).

[1] Durr-ul-Mukhtar, Chapter of Dower, Mujtabai Press Delhi, 1/202.

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

प्रश्न: धर्म के विद्वान और सुदृढ़ मुफ्ती 'मेहर मुअज्जल' (नकद मेहर) और 'मेहर मुअज्जल' (विलंबित मेहर) के बारे में क्या कहते हैं? मेहर मुअज्जल का क्या अर्थ है और विवाहित महिला किस समय मेहर की राशि प्राप्त करने की हकदार है, और क्या इसका कोई अन्य कारण है या नहीं? मेहर मुअज्जल का क्या अर्थ है और विवाहित महिला किस समय मेहर की राशि प्राप्त करने की हकदार है, और क्या इसकी कोई निश्चित संख्या भी है या नहीं, और क्या इसका कोई अन्य कारण है या नहीं? व्याख्या करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: मेहर तीन प्रकार के होते हैं: 1. **मुअज्जल (नकद/त्वरित):** वह मेहर जो विदाई से पहले देना तय पाया गया हो। इसके लिए स्त्री को अधिकार है कि जब तक वह इसे प्राप्त न कर ले, विदाई न ले। और यदि विदाई हो चुकी है, तो उसे अब भी अधिकार है कि जब चाहे इसकी मांग करे और इसकी प्राप्ति तक स्वयं को पति से रोक ले, चाहे विदाई को बीस वर्ष बीत चुके हों। 2. **दूसरा मुअज्जल (निश्चित अवधि वाला विलंबित):** जिसकी अवधि तय कर दी गई हो कि यह दस वर्ष, बीस वर्ष या पांच दिन के बाद अदा किया जाएगा। इसमें जब तक वह अवधि न बीत जाए, स्त्री को मांग करने का अधिकार नहीं है और अवधि समाप्त होने के बाद वह किसी भी समय मांग कर सकती है। 3. **तीसरा मुअख्खर (मृत्यु या तलाक तक विलंबित):** जिसमें न तो अग्रिम भुगतान की शर्त हो और न ही कोई निश्चित अवधि तय की गई हो, बल्कि वह पूर्णतः और अस्पष्ट रूप से तय हो जैसा कि आजकल सामान्य मेहर अक्सर तय होते हैं। इसमें जब तक मृत्यु या तलाक न हो जाए, स्त्री को मांग करने का अधिकार नहीं है। पवित्र शरीयत ने मेहर मुअज्जल और मुअज्जल के लिए कोई निश्चित राशि निर्धारित नहीं की है। जितनी राशि अग्रिम देना तय हो, वह मुअज्जल होगी। यदि शेष के लिए कोई अवधि तय की गई है, तो वह मुअज्जल होगा, अन्यथा वह मुअख्खर रहेगा। हाँ, यदि किसी जाति या शहर का आम रिवाज हो कि स्पष्ट रूप से न कहने पर भी इतनी राशि अग्रिम देनी होती है, तो बिना स्पष्ट समझौते के भी उतनी राशि मुअज्जल हो जाएगी, और शेष मेहर पहले की तरह मुअज्जल या मुअख्खर रहेगा। 'दुर्र-ए-मुख्तार' में है:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद/व्याख्या
उसे पति को संभोग और उसके पूर्ववृत्तों से रोकने का अधिकार है, भले ही संभोग या	पत्नी को मेहर मुअज्जल (पूर्ण या आंशिक, जैसा बताया गया हो या रिवाज में जितनी मात्रा मुअज्जल

अरबी पाठ

एकांतवास उनकी सहमति से हो चुका हो, ताकि वह पूरे मेहर या उसके कुछ हिस्से में से जो त्वरित तय है उसे प्राप्त कर सके या उस मात्रा को प्राप्त कर सके जो रिवाज के अनुसार उसके जैसी महिला के लिए त्वरित है; फतवा इसी पर है यदि कोई [अन्य] विलंब नहीं किया गया। और यदि पूरा मेहर त्वरित तय है, तो वैसा ही होगा जैसा शर्त लगाई गई थी।

उर्दू अनुवाद/व्याख्या

होती हो) प्राप्त करने के लिए पति को संभोग और उसके सहायक कार्यों से रोकने का अधिकार है, भले ही पत्नी की सहमति से पहले संभोग या एकांतवास हो चुका हो। इसी पर फतवा है (अर्थात् रिवाज का विचार किया जाता है यदि पूरे मेहर की अवधि या त्वरित भुगतान निश्चित नहीं किया गया हो। यदि अवधि या त्वरित भुगतान निश्चित हो चुका हो, तो वैसा ही करना चाहिए जैसा दोनों ने शर्त रखी थी)।

[1] दुर्र-ए-मुख्तार, बाबुल मेहर, मतबा मुजतबाई दिल्ली १/ २०२

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتوجہان متین در بارہ مہر معجل ومؤجل، مہر معجل کے کیا معنی ہیں اور منکوحہ کو کس وقت زر مہر کا مجاز وصول کرنے کا ہے، اور کوئی سبب ہے یا نہیں۔ مہر مؤجل کے کیا معنی اور کس وقت منکوحہ کو زر مہر وصول کرنے کا مجاز ہے اور اس کی کوئی تعداد بھی یا نہیں، اور کوئی سبب ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔ الجواب: مہر تین قسم ہے: معجل کہ پیش از رخصت دینا قرار پالیا ہو اس کے لئے عورت کو اختیار ہے کہ جب تک وصول نہ کرلے رخصت نہ ہو، اور اگر رخصت ہوگئی تو اسے اب بھی اختیار ہے کہ جب چاہے مطالبہ کرے اور اس کے وصول تک اپنے نفس کو شوہر سے روک لے اگرچہ رخصت کو بیس برس گزر گئے ہوں۔ دوسرا مؤجل جس کی میعاد قرار پائی ہو کہ دس برس یا بیس برس یا پانچ دن کے بعد ادا کیا جائے گا اس میں جب تک وہ میعاد نہ گزرے عورت کو مطالبہ کا اختیار نہیں اور بعد انقضائے میعاد ہر وقت مطالبہ کر سکتی ہے۔ تیسرا مؤخر کہ نہ پیشگی کی شرط ٹھہری ہو نہ کوئی میعاد معین کی گئی ہو یونہی مطلق و مبہم طور پر بندھا ہو جیسا کہ آج کل عام مہر یوں ہی بندھتے ہیں اس میں تا وقتیکہ موت یا طلاق نہ ہو، عورت کو مطالبہ کا اختیار نہیں، مہر معجل ومؤجل کے لئے شرع مطہر نے کوئی تعداد معین نہ فرمائی، جتنا پیشگی دینا ٹھہرے اس قدر معجل ہوگا باقی کی کوئی میعاد قرار پائی تو اتنا مؤجل ہوگا ورنہ مؤخر رہے گا، ہاں اگر کسی قوم یا شہر کا رواج عام ہو کہ اگرچہ تصریح نہ کریں مگر اس قدر پیشگی دینا ہوتا ہے تو بلا قرار دار تصریح بھی اتنا معجل ہو جائے گا باقی بدستور مؤجل یا مؤخر رہے گا۔ در مختار میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
لها منعه من الوطی ودواعية ولو بعد وطء وخلوة رضيتهما لاخذ ما بين تعجيله من المهر كله او بعضه او اخذ قدر ما يعجل لمثلها عرفا به يفتی ان لم يؤجل اور يعجل كله فكما شرطا۔	بیوی کو مہر معجل کل یا بعض جتنا بیان ہوا یا عرف میں جتنی مقدار معجل ہوتی ہے وصول کرنے کے لئے خاوند کو وطی اور اس کے دواعی سے منع کرنے کا حق ہے اگرچہ زوجہ کی رضا مندی سے پہلے وطی یا خلوت ہو چکی ہے اسی پر فتوی ہے (یعنی رواج کا اعتبار ہے اگر کل مہر کی مدت یا تعجیل مقرر نہ کی گئی ہو، اگر مدت یا تعجیل مقرر ہو چکی ہو تو ویسا ہی کرنا چاہیے جیسا کہ دونوں نے شرط کیا ت)

1 درمختار باب المهر مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۰۲

Fatawa Razvia Volume Twelve

It is in Radd al-Muhtar: [Arabic Text Box] If a woman's husband dies or divorces her, for example, twenty years after the time of marriage, she has the right to demand the deferred dower (Mahr Mu'ajjal), because the right to demand it only becomes established for her after death or divorce, not from the time of marriage - and Allah the Almighty knows best. [Urdu Translation in Box] If the husband passes away, or dies twenty years after the marriage, or if he has given a divorce, the wife has the right to demand the deferred dower. This is because the right to demand the dower for the wife is established only after death or divorce, and not from the time of marriage. And Allah the Almighty knows best. (T)

Issue 73 to 74:

First Question Respectfully, first tell me whether marriage will be valid without fixing the dower or not? If the term 'Shari'i Mahr' (legal dower) is used and no explanation is given, then how much dower should be understood? Please explain and be rewarded. Answer: Marriage is valid without fixing the dower, and even if dower is negated; and 'Mahr al-Mithl' (customary dower) becomes due. Similarly, by saying 'Shari'i Mahr', if there is no specific amount in their terminology, such as the minimum dower or the dower of Hazrat Batul Zahra (may Allah be pleased with her), then whatever is customary in their terminology will be binding. And Allah the Almighty knows best.

Second Question The Shari'i dower written for virtuous daughters is four hundred mithqal of silver. How much is that in today's currency? Answer: Four hundred mithqal of silver was the dower of the Lady of Paradise (Hazrat Fatima Zahra, may Allah be pleased with her). In the currency of this place, it is equivalent to one hundred and sixty (160) rupees worth of silver. And Allah the Almighty knows best.

Third Question The dower of the Mothers of the Believers (the Prophet's wives) was five hundred dirhams, except for Lady Umm Habiba (may Allah be pleased with her), for whom two thousand Qadqiah or five hundred dinars is written. How much is this in current coinage? Please clarify the weights of Dirham, Ouqiyah, Mithqal, and Dinar. Answer: Five hundred dirhams equals one hundred and forty rupees in this current coinage. A Shari'i Dirham is three mashas and one ratti, and...

[Footnote] 1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Qadha, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 4/343.

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

रद अल-मुह्तार में है: [अरबी पाठ बॉक्स] यदि किसी महिला के पति की मृत्यु हो जाती है या वह उसे तलाक दे देता है, उदाहरण के लिए विवाह के समय से बीस साल बाद, तो उसे विलंबित महर (महर मुअज्जल) की मांग करने का अधिकार है, क्योंकि इसकी मांग करने का अधिकार उसके लिए मृत्यु या तलाक के बाद ही स्थापित होता है, विवाह के समय से नहीं - और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है। [बॉक्स में उर्दू अनुवाद] अगर शौहर फ़ौत (मृत्यु) हो जाए, या निकाह से बीस साल बाद फ़ौत हो या उसने तलाक़ दी हो तो बीवी को मुअज्जल (विलंबित) महर तलब करने का हक़ है क्योंकि बीवी के लिए मौत या तलाक़ के बाद ही महर के मुतालबे का हक़ साबित होता है न कि वक़्त-ए-निकाह से। वल्लाह तआला अअ़लम। (त)

मसला 73 से 74:

पहला सवाल हुज़ूर! पहले यह बता दीजिये कि बिना महर तय किये निकाह होगा या नहीं? अगर 'शरई महर' शब्द कहा जाए और कोई व्याख्या न की जाए तो कितना महर समझा जाएगा? बयान फ़रमाएं पुण्य प्राप्त करें। जवाब: निकाह बिना महर तय किये बल्कि महर की मनाही के साथ भी सही हो जाता है, और 'महर-ए-मिस्ल' (प्रचलित महर) देना आता है। इसी तरह शरई महर कहने से भी, बशर्ते कि उनकी शब्दावली में इससे कोई विशेष मात्रा, जैसे न्यूनतम महर या हज़रत बतूल ज़हरा (रज़ियल्लाहु अन्हा) का महर मुराद न हो, वरना उनकी शब्दावली में जो प्रसिद्ध है वही लाज़िम आएगा। वल्लाह तआला अअ़लम।

दूसरा सवाल नेक बेटियों के लिए जो शरई महर लिखा है, चार सौ मिस्काल चांदी का, आज कल के सिक्के के हिसाब से कितने रुपये होते हैं? जवाब: चार सौ मिस्काल चांदी हज़रत ख़ातून-ए-जन्नत (रज़ियल्लाहु अन्हा) का महर था। यहाँ के सिक्के के हिसाब से यह एक सौ साठ (160) रुपये भर चांदी के बराबर है। वल्लाह तआला अअ़लम।

तीसरा सवाल अज़वाज-ए-मुतह्हरात (पैगंबर की पत्नियों) का महर पांच सौ दिरहम था, सिवाय बीबी उम्मे हबीबा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के, जिनके लिए दो हज़ार क़दक़िया या पांच सौ दीनार लिखा है। प्रचलित सिक्के के हिसाब से यह कितना होता है? दिरहम, ओक़िया, मिस्काल और दीनार के वजन को स्पष्ट फ़रमा दें। जवाब: पांच सौ दिरहम इस प्रचलित सिक्के के हिसाब से एक सौ चालीस रुपये होते हैं। शरई दिरहम तीन माशे एक रत्ती है, और...

[फुटनोट] 1. रद अल-मुह्तार, किताब अल-क़ज़ा, दार इह्या अल-तुरास अल-अरबी, बेरुत, 4/343।

पेज 172 of 688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

ردالمحتار میں ہے: [Arabic Box] لو مات زوج المرأة او طلقها بعد عشرين سنة مثلا من وقت النكاح فلها طلب مؤخر المهر لان حق طلبه انما ثبت لها بعد الموت او لطلاق لا من وقت النكاح - واللہ تعالٰی اعلم۔ [Urdu Translation in Box] اگر خاوند فوت ہو جائے یا نکاح سے بیس سال بعد فوت ہو یا اس نے طلاق دی ہو تو بیوی کو مؤخر مہر طلب کرنے کا حق ہے کیونکہ بیوی کے لئے موت یا طلاق کے بعد ہی مہر کے مطالبہ کا حق ثابت ہوتا ہے نہ کہ وقت نکاح سے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۷۳ تا ۷۴:

سوال اوّل حضور ! اوّل یہ بتادیجئے کہ بلا تعیین مہر نکاح ہوگا یا نہیں، اگر لفظ شرعی مہر کہا جائے اور کوئی تشریح نہ کی جائے تو کس قدر مہر سمجھا جائے گا۔ بینوا توجروا الجواب: نکاح بلا تعیین مہر بلکہ نفی مہر کے ساتھ بھی صحیح ہو جاتا ہے اور مہر مثل دینا آتا ہے یونہی مہر شرعی کہنے سے بھی، جبکہ ان کی اصطلاح میں اس سے کوئی خاص مقدار مثلاً اقل درجہ مہر یا مہر حضور بتول زہرا رضی اللہ تعالٰی عنہما مراد نہ ہو ورنہ جوان کی اصطلاح معروف ہے وہی لازم آئے گا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

سوال دوم مہر شرعی جو بنات صالحات کا لکھا ہے چار سو مثقال چاندی کا، آج کل کے سکہ سے کس قدر روپے ہوئے ہیں؟ الجواب: چار سو مثقال چاندی مہر حضرت خاتونِ جنّت رضی اللہ تعالٰی عنہا تھا یہاں تک کے سکّے سے ایک سو ساٹھ ۱۶۰ روپے بھر چاندی۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

سوال سوم مہرِ جو ازواج مطہرات کا پانچ سو درہم کا سوائے بی بی اُمّ حبیبہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کے کہ دو ہزار قدقیہ یا پانچ سو دینار کا لکھا ہے سکّہ مروجہ سے کس قدر ہوتے ہیں؟ وزن درم اور اوقیہ مثقال اور دینار کی صراحت فرما دیجئے۔ الجواب: پانچ سو درہم کے اس سکّہ رائجہ سے ایک سو چالیس روپے ہوتے ہیں۔ درم شرعی تین ماشے ایک رتی اور

[Footnote] 1. ردالمحتار کتاب القضاۃ داراحیاء التراث العربی بیروت ۴/ ۳۴۳

Fatawa Razawiyya, Volume 12

...the fifth part of a Ratti, and Mithqal, which is the weight of a Sharia Dinar, is four and a half Mashas; one Oqiyah is forty Dirhams. And Allah the Almighty knows best.

Question 4: What is the minimum amount of ten Sharia Dirhams in the current currency in rupees? **The Answer:** From those ten Dirhams in this currency, it is two rupees, thirteen annas, and one-fifth of a paisa; for two hundred Dirhams, it is exactly fifty-six (56) rupees. And Allah the Almighty knows best.

Question 5: Nowadays, dower (Mahr) is fixed beyond one's means, for which there is no way of payment in the current situation. Is there any defect in the marriage if one thinks in their heart that they don't actually have to give anything, it's just verbal talk, so just accept it? **The Answer:** There is no defect in the marriage itself, but such a thought is extremely abominable and loathsome in the sight of Allah. It has even been stated in a Hadith that a man and woman who marry but have no intention of giving or taking the dower (i.e., they don't consider it a debt), they will be raised as fornicators on the Day of Judgment. We seek refuge in Allah the Almighty. And Allah the Almighty knows best.

Question 6: In what situation of divorce is a wife entitled to a pair of clothes? **The Answer:** When a marriage takes place without fixing the dower and the woman is divorced before consummation (Khalwat), then a pair of clothes (Mut'ah) becomes obligatory. Its value should not be less than five Sharia Dirhams and should not exceed half of the woman's 'Mahr-e-Mithl' (equivalent dower). Within these two limits, if both the man and woman are wealthy, it should be of high quality; if both are poor, then of low quality; and if one is poor and the other wealthy, then of average quality. And Allah the Almighty knows best.

Problem 43: From Village Devri Naya, District Bareilly, asked by Masihuddin Sahib, 15 Rabi-ul-Akhir 1336 AH. Zaid's wife Hindah is being kept by her parents on a false report that her in-laws will poison her. Their intention is to receive Hindah's dower debt and then marry Hindah off elsewhere. Is it permissible to demand Hindah's dower debt before the husband gives a divorce? And is it permissible to marry her off elsewhere? And she...

---

1. Al-Sunan al-Kubra, Book of what has been mentioned about detaining the debtor, Beirut 7/422; Kanz al-Ummal, Hadith, Mu'assasat al-Risalah, Beirut 12/323.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

...रत्ती का पांचवां हिस्सा, और मिस्काल जो कि शरई दीनार का वज़न है, साढ़े चार माशे है, एक ओकिया चालीस दिरम है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

प्रश्न 4: न्यूनतम दस शरई दिरम की प्रचलित सिक्कों में कितनी रुपये होंगे? **उत्तर:** दस दिरम के इस सिक्के से दो रुपये, तेरह आने और एक पैसे का पांचवां हिस्सा होता है; दो सौ दिरम के पूरे छप्पन (56) रुपये। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

प्रश्न 5: आजकल हैसियत से ज़्यादा मेहर बांधा जाता है जिसे अदा करने की कोई सूरत मौजूदा हालत में नहीं है। दिल में यह ख्याल कर लेना कि कुछ देना तो नहीं पड़ता, बस ज़बानी बात है, कुबूल कर लो; क्या ऐसे ख्याल से निकाह में कोई कमी आएगी? **उत्तर:** निकाह में कोई कमी नहीं आती, लेकिन ऐसा ख्याल अल्लाह के नज़दीक सख्त बुरा और घिनौना है। यहाँ तक कि हदीस में फ़रमाया गया है कि जो मर्द और औरत निकाह करें और मेहर देने-लेने की नियत न रखें, यानी उसे क़र्ज़ न समझें, वो कयामत के दिन ज़िना करने वाले (व्यभिचारी) उठाकर खड़े किए जाएंगे। अल्लाह की पनाह। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

प्रश्न 6: तलाक़ की वह कौन सी सूरत है जिसमें पत्नी कपड़ों की एक जोड़ी पाने की हक़दार होती है? **उत्तर:** जब निकाह बिना मेहर तय किए हुआ हो और औरत को खल्वत (एकांतवास) से पहले तलाक़ दे दी जाए, तो एक जोड़ा (मुतआ) वाजिब होता है। जिसकी कीमत पाँच शरई दिरम से कम न हो और औरत के'मेहरे-मिस्ल' के आधे से ज़्यादा न हो। इन दो सीमाओं के भीतर, अगर पति-पत्नी दोनों धनी हों तो ऊंचे दर्जे का, दोनों गरीब हों तो निचले दर्जे का, और एक गरीब और एक धनी हो तो मध्यम दर्जे का वाजिब होगा। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

समस्या 43: ग्राम देवरी नया, ज़िला बरेली से मसीहुद्दीन साहब द्वारा पूछा गया, 15 रबी-उल-आख़िर 1336 हिजरी। ज़ैद की बीवी हिंदा को उसके मायके वालों ने महज़ इस झूठी खबर पर कि ससुराल वाले उसे ज़हर दे देंगे, रोक रखा है। उनका इरादा यह है कि हिंदा का मेहर वसूल करके उसकी शादी दूसरी जगह कर दें। क्या तलाक़ देने से पहले पति से मेहर का मुतालबा (मांग) करना जायज़ है? और क्या उसका दूसरी जगह निकाह कर देना जायज़ है? और उसे...

1. अल-सुनन अल-कुबरा, बाब मा जा फ़ी हब्स अल-रस्साद बैरुत 7/422, कंज़ अल-उम्माल हदीस मुअस्ससत अल-रिसाला बैरुत 12/323।

पृष्ठ 173/688

پانچواں حصہ رتی کا، اور مثقال کہ وہی وزن دینار شرعی ہے ساڑھے چار ماشے، ایک اوقیہ چالیس درم ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم

سوال چہارم: اقل درجہ دس درم شرعی کے سکہ مروجہ سے کے روپے ہوتے ہیں؟ **الجواب:** دس درم کے اس سکہ سے دو روپے تیرہ آنے ایک پیسے کا پانچواں حصہ، دوسو درم کے پورے چھپن ۵۶ روپے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

سوال پنجم: آج کل جو حیثیت سے زیادہ مہر باندھا جاتا ہے جس کے ادا کی کوئی صورت حالتِ موجودہ سے نہیں ہے دل میں یہ خیال کر لینا کہ کچھ دینا تو نہیں پڑتا ہے صرف زبانی جمع خرچ ہے قبول کر لو، ایسے خیال سے کوئی نکاح میں تو نقص نہیں آئے گا؟ **الجواب:** نکاح میں کوئی نقص نہیں مگر ایسا خیال عنداللہ سخت قبیح و شنیع ہے یہاں تک کہ حدیث میں ارشاد ہوا جو مرد و عورت نکاح کریں اور مہر کے دینے لینے کی نیت نہ رکھیں یعنی اسے دین نہ سمجھیں وہ روزِ قیامت زانی وزانیہ اٹھائے جائیں گے والعیاذ باللہ تعالٰی۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

سوال ششم: وہ کون سی صورت طلاق کی ہے کہ ایک جوڑی کپڑے پانے کی زوجہ مستحق ہے۔ **الجواب:** نکاح جب بلا تعیین مہر ہوا اور عورت کو قبل خلوت طلاق دی جائے تو ایک جوڑا واجب آتا ہے جس کی قیمت پانچ درم شرعی سے کم نہ ہو اور عورت کے نصف مہر مثل سے زیادہ نہ ہو ان دو حدوں کے اندر، اگر مرد وزن دونوں غنی ہوں اعلیٰ درجہ کا واجب ہو گا اور دونوں فقیر تو ادنٰی اور ایک فقیر ایک غنی تو اوسط۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۴۳: از موضع دیوری نیا ضلع بریلی مسئولہ مسیح الدین صاحب ۱۵ ربیع الآخر ۱۳۳۶ھ

زید کی بی بی ہندہ کو اس کے میکے والوں نے محض جھوٹی خبر پر کہ ہندہ کو سسرال والے زہر دے دیں گے روک رکھا ہے اور اُن کا یہ ارادہ ہے کہ ہندہ کا دین مہر وصول کر کے ہندہ کی شادی دوسری جگہ کر دیں، آیا قبل طلاق دینے شوہر کے ہندہ کے دین مہر کا مطالبہ جائز ہے یا نہیں، اور اس کا دوسری جگہ نکاح کر دینا جائز ہے یا نہیں، اور اسے...

---

1. السنن الکبریٰ باب ما جاء فی حبس الرصاد بیروت ۷/۴۲۲، کنزالعمال حدیث موسسۃ الرسالۃ بیروت ۳۲۳/۱۲

Volume 12 Fatawa-e-Razvia

Is it permissible to withhold? Hind's dower (Mehr) is 1.25 lakh rupees, of which half is prompt (Mu'ajjal) and half is deferred (Ghayr Mu'ajjal), but there is no time limit set for the prompt part.

The Answer: Until half of the dower, i.e., sixty-two thousand five hundred rupees, is paid, Zaid has no right to call Hind, and her family can withhold her. If she is married off to someone else before a divorce, it would be forbidden (Haraam) and adultery (Zina). And Allah knows best.

Problem 44 to 45: From Moradabad, Maqbara neighborhood, sent by Haji Karim Bakhsh Sahib, 15 Rabi al-Akhar 1336 AH

(1) The husband gave some land to the wife as prompt dower, and the deferred dower remains the husband's responsibility. A child (girl or boy) was born to them. Now the husband is angry with the wife and wants to divorce her. The matter is before the community elders (Panch). If the elders return the prompt dower, don't make him pay the deferred dower, and satisfy the woman by giving her some money and getting her a divorce, then what is the ruling for such elders? Is it a sin for the wife to return the prompt dower? What should the elders consider most? If they make a biased decision favoring someone, is it a sin?

(2) If matters related to the community are settled in a way that is outside of Sharia, is it a sin?

The Answer: This matter depends on mutual consent. When it's realized that they cannot live together, if the wife gives up her entire dower for her release, returns what she took, and even gives additional money, it's all permissible. Allah Almighty says: "There is no sin upon them for that which she gives to ransom herself." (If the woman gives a ransom, there is no blame on either the husband or the wife). Yes, if the elders pressured her unjustly, they are sinners and accountable for the woman's right. In matters where the pure Sharia has given a specific command for its own right, it is obligatory for Muslims to follow it. No one's consent makes its violation permissible, like interest (Riba) - even if both parties agree, it remains absolutely forbidden. In matters where Sharia has not given a specific command for its own right, any prohibition is due to the rights of people; in such cases, if the person whose right it is agrees, the prohibition is removed. For example, stealing someone's property is forbidden, but taking it with their consent is lawful. And Allah knows best.

जिल्द बारहवीं फतावा-ए-रज़विया

क्या रोक कर रखना जायज़ है? हिन्दा का महर सवा लाख रुपये है जिसमें आधा मुअज्जल (तुरंत देय) है और आधा गैर मुअज्जल (बाद में देय), मगर मुअज्जल के लिए कोई समय सीमा तय नहीं है।

अल-जवाब: आधा महर यानी साढ़े बासठ हज़ार रुपये तक जब तक अदा न हो जाए, जैद को हिन्दा को बुलाने का कोई अधिकार नहीं है, और मायके वाले हिन्दा को रोक सकते हैं। तलाक से पहले अगर दूसरा निकाह कर दिया जाए तो वह हराम और ज़िना होगा। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है)।

मसला 44 से 45: मुरादाबाद, मोहल्ला मक़बरा, मुर्सला हाजी करीम बख्श साहब, 15 रबीउल आखिर 1336 हिजरी।

(1) शौहर ने बीवी के नाम कुछ ज़मीन महर-ए-मुअज्जल में दे दी और गैर मुअज्जल महर शौहर के ज़िम्मे है। उन दोनों से लड़की या लड़का पैदा हुआ। अब शौहर बीवी से नाराज़ है और तलाक देता है। अब मामला बिरादरी के पंचों के पास है। अगर पंच मुअज्जल महर वापस कर लें और गैर मुअज्जल भी न दिलाएं और कुछ रुपये देकर औरत को राज़ी कर लें और शौहर से तलाक दिला दें, तो ऐसे पंचों के लिए क्या हुक्म है? और बीवी की तरफ से मुअज्जल महर वापस करने में कोई गुनाह है या नहीं? और पंचों को किस बात का ज़्यादा ख्याल रखना लाज़िम है? और अगर पंच किसी की रियायत करके फैसला करें तो क्या गुनाह है?

(2) जो मामलात बिरादरी के मुताल्लिक तय हों और शरीअत से बाहर हों, तो क्या गुनाह है?

अल-जवाब: यह मामला रज़ामंदी पर है। जब यह मालूम हो जाए कि आपस में निबाह नहीं हो सकेगा, तो बीवी अपनी रिहाई (खुलअ) के लिए सारा महर छोड़ दे, लिया हुआ वापस कर दे और उसके सिवा और रुपये भी दे दे, यह सब जायज़ है। अल्लाह तआला का इरशाद है: "फ़ला जुनाहा अलैहिमा फीमा फ़तदत बिही" (औरत अगर फिदया दे तो खाविंद और बीवी दोनों पर कोई हर्ज नहीं)। हाँ, अगर पंचों ने उसे नाजायज़ तौर पर दबाया तो वे गुनहगार हुए और औरत के हक़ के लिए जवाबदेह। जिन मामलात में शरीअत-ए-मुतहरा ने अपने हक़ के लिए कोई ख़ास हुक्म फरमाया है, उनका पालन करना मुसलमानों पर फर्ज़ है। किसी की रज़ामंदी उसकी मुखालफत को जायज़ नहीं करती, जैसे सूद कि अगर लेने-देने वाले दोनों राज़ी हों तब भी हराम-ए-क़तई है। और जिन उमूर में शरीअत ने अपने हक़ के लिए कोई हुक्म न फरमाया हो और जो मनाही है वह बंदों के हक़ के सबब है, उनमें

अगर साहब-ए-हक़ राज़ी हो जाए तो मनाही नहीं रहेगी। जैसे किसी का माल चुरा लेना हराम है और उसकी खुशी से लेना हलाल। वल्लाहु तआला आलम।

अल-कुरान अल-करीम 2/229 पेज 174 ऑफ़ 688

روک رکھنا جائز ہے یا نہیں، ہندہ کا مہر سوا لاکھ روپیہ ہے جس میں نصف معجل ہے اور نصف غیر معجل، مگر معجل میں زمانے کی کوئی حد نہیں ہے۔

الجواب: آدھا مہر یعنی ساڑھے باسٹھ ہزار روپیہ تک ادا نہ کرے زید کو ہندہ کے بلانے کا کوئی اختیار نہیں، اور میکے والے ہندہ کو روک سکتے ہیں قبل طلاق اگر نکاح کر دیا جائے حرام وزنا ہوگا۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۴۴ تا ۴۵: از مراد آباد محلہ مقبرہ مرسلہ حاجی کریم بخش صاحب ۱۵ ربیع الآخر ۱۳۳۶ھ

(۱) زوج نے زوجہ کے نام کچھ زمین مہر معجل میں دے دی اور غیر معجل مہر شوہر کے ذمہ ہے، زوج سے لڑکی تولد ہوئی یا لڑکا تولد ہوا، اب زوج زوجہ سے ناراض ہے اور طلاق دیتا ہے، اب وہ معاملہ برادری کے پنچوں میں ہے، اگر پنچ مہر معجل واپس کرلیں اور غیر معجل بھی نہ دلائیں اور کچھ روپے مسماۃ کو دے کر رضامند کرلیں اور زوج سے طلاق دلوادیں تو ایسے پنچوں پر کیا حکم ہے، اور زوجہ سے مہر معجل واپس کرنے کا کچھ گناہ ہے یا نہیں، اور پنچوں کو کس بات کا زیادہ لحاظ رکھنا لازم ہے، اور اگر پنچ کسی کی رعایت کرکے فیصلہ کریں تو کیا کچھ گناہ ہے؟

(۲) جو معاملات برادری کے متعلق طے ہوں اور شریعت سے باہر ہوں تو کیا گناہ ہے؟

الجواب: یہ معاملہ رضامندی پر ہے جبکہ وہ جانے کہ باہم نباہ نہ ہوگا تو زوجہ اپنی خلاصی کے لئے کل مہر چھوڑ دے اور لیا ہوا واپس دے اور اس کے سوا اور روپے بھی دے سب جائز ہے، قال تعالیٰ: فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيْمَا افْتَدَتْ بِهٖ (عورت اگر فدیہ دے تو خاوند بیوی دونوں پر کوئی حرج

نہیں۔ت) ہاں اگر پنچوں نے اسے ناجائز طور پر دبایا تو گنہگار ہوئے اور عورت کے حق میں گرفتار، جن معاملات میں شریعت مطہرہ نے اپنے حق کے لئے کوئی حکم خاص فرمایا ہے اس کا اتباع مسلمانوں پر فرض، کسی کی رضامندی اس کی مخالفت کو جائز نہیں کرتی جیسے سود کہ اگر لینے دینے والا دونوں راضی ہوں جب بھی حرام قطعی ہے اور جن امور میں شرع نے اپنے حق کیلئے کوئی حکم نہ فرمایا جو ممانعت ہے وہ بندہ کے حق کے سبب ہے ان میں اگر صاحب حق راضی ہوجائے تو ممانعت نہ رہے گی جیسے پرایامال چرالینا حرام اور اس کی خوشی سے حلال۔ واللہ تعالیٰ اعلم

Fatawa Razawiyyah Volume 12

Problem 46 to 47: From Shahram, District Gayamar, Selama Sirajuddin Ahmed Sahib, 3 Jumada al-Akhira 1326 AH. (1) In the types of determining dower (Mahr), such as prompt (Mu'ajjal) and deferred (Mu'ajjal/Mu'akhkhar). There is no dispute regarding the prompt dower, but is it necessary to write down the deferred dower in the marriage contract or not? If yes, what is the wording according to Sharia? (2) Which is superior for determining the 'equivalent dower' (Mahr al-Mithl): that of the pure wives of the Messenger (peace and blessings be upon him), who are the Mothers of the Believers, or the customary family dower such as that of the mother, paternal aunt, etc. of the bride and groom?

The Answer: (1) Prompt dower (Mahr Mu'ajjal) is that which is agreed to be given in advance. Deferred dower (Mu'ajjal) is that for which a specific period is fixed after which it will be paid. And Mu'akhkhar is that which was neither agreed to be given in advance nor was any specific time fixed for it. 'Mahr al-Mithl' is not a comparable category to these. It is better to write a document for the deferred dower. Allah the Almighty says:

"O you who have believed, when you contract a debt for a specified term, write it down." (T)

In Tafsir Ahmadi it is stated: "In 'Al-Zahidi', it is mentioned that the verse is general for [all types of] credit (As-Salam) and every debt in which fixing a period is valid." (It includes marriage contracts, advance payment sales, and all sales on credit in which a period is fixed. - T)

In 'Madarik al-Tanzil' it is stated: "The command is for recommendation (Istihbab)." (T). In 'Lubab al-Ta'wil' it is stated: "And this is the saying of the majority of scholars." (T). Regarding the content, the common method prevalent in legal documents is sufficient, such as: "I am so-and-so son of so-and-so son of so-and-so, on this date I performed the marriage with so-and-so daughter of so-and-so son of so-and-so for such-and-such dower, for which the payment has been agreed after so many days. (I declare that I will pay the mentioned dower at the mentioned time. And Allah the Almighty knows best)." (2) For whom can the dower of the pure wives be an 'equivalent dower' (Mahr al-Mithl)? Who is their equal? 'Mahr al-Mithl' is determined from one's own...

1. Al-Quran Al-Karim 2/282.

2. Tafsir Ahmadiyya, under the verse 'Idha tadayantum bidynin...' (Para 3), Matba Karimiya, Bombay, India, p. 175.
3. Madarik al-Tanzil (Tafsir al-Nasafi), under the mentioned verse, Dar al-Kitab al-Arabi, Beirut, 1/139.
4. Lubab al-Ta'wil (Tafsir Khazin), Mustafa al-Babi, Egypt, 1/305.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

मसला 46 से 47: शहरम ज़िला ग्यामर सलमा सिराजुद्दीन अहमद साहब, 3 जमादी अल-आख़िरा 1326 हिजरी। (1) मेहर के निर्धारण के प्रकारों में, जैसे नकद (मुअज्ज्ल) और उधार (मुअज्ज्ल/मुअक्खर)। नकद मेहर में कोई विवाद नहीं है, और उधार मेहर का निकाहनामे में लिखना ज़रूरी है या नहीं? यदि है, तो शरीयत के अनुसार उसका विषय क्या है? (2) 'मेहरे मिस्ल' (समान मेहर) के लिए रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पाक पत्नियों, जो मोमिनों की माताएँ हैं, का मेहर श्रेष्ठ है या पारिवारिक मेहर जैसे माँ, बुआ आदि, दुल्हन और दूल्हे के लिए?

अल-जवाब: (1) नकद मेहर (मुअज्ज्ल) वह है जो पहले देना तय हो, और मुअज्ज्ल (उधार) वह है जिसके लिए एक निश्चित समय तय हो जाए कि इतने समय के बाद दिया जाएगा। और मुअक्खर वह है जिसके लिए न तो पेशगी देना तय हुआ और न ही कोई समय तय किया गया। 'मेहरे मिस्ल' इनकी कोई मुक़ाबला करने वाली क़िस्म नहीं है। उधार मेहर का दस्तावेज़ लिखना बेहतर है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"ऐ ईमान वालो! जब तुम एक निश्चित अवधि के लिए उधार का लेन-देन करो, तो उसे लिख लिया करो।" (त)

तफ़सीर अहमदी में है: "ज़ाहिदी में है कि यह आयते करीमा ऋण (सलाम) और हर उधार सौदे के बारे में आम है जिसमें अवधि निश्चित करना सही हो।" (इसमें निकाह के अनुबंध, अग्रिम भुगतान बिक्री और हर उधार बिक्री जिसमें समय तय हो, सब शामिल हैं। - त)

'मदारिकुल तंज़ील' में है: "आदेश अनुशंसा (इस्तिहबाब) के लिए है।" (त)। 'लुबाबुल तावील' में है: "यही अधिकांश विद्वानों का मत है।" (त)। और निकाह के दस्तावेज़ों में जो प्रचलित तरीका है वही काफ़ी है, जैसे: "मैं फलां बिन फलां बिन फलां हूँ, मैंने फलां तारीख़ को फलां बिन्ते फलां बिन फलां से इतने मेहर पर निकाह किया जिसकी अदायगी इतने दिनों बाद तय पाई है। (इकरार करता हूँ कि उक्त मेहर उक्त समय पर अदा कर दूँगा। वल्लाहु तआला आलम)।" (2) अज़वाजे मुतहरात का मेहर किसके लिए 'मेहरे मिस्ल' हो सकता है? उनके समान कौन है? मेहरे मिस्ल तो अपने...

1. अल-क़ुरान अल-करीम 2/282

2. तफ़सीर अहमदिया, आयत 'इज़ा तदायन्तुम' के तहत (पारा 3), मतबा करीमिया, बम्बई, भारत, पृ. 175
3. मदारिकुल तंज़ील (तफ़सीर अल-नसफ़ी), उक्त आयत के तहत, दारुल किताब अल-अरबी, बेरुत, 1/139
4. लुबाबुल तावील (तफ़सीर ख़ाज़िन), मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/305

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

مسئلہ ۴۶ تا ۴۷: از شہرام ضلع گیامر سلمہ سراج الدین احمد صاحب ۳ جمادی الآخرہ ۱۳۲۶ھ (۱) اصناف تعین مہر میں کہ معجل ومؤجل مثل ہے معجل میں کلام نہیں اور مؤجل میں کابین کا لکھنا ضرور ہے یا نہیں ہے، ہے تو موافق شریعت کے مضمون کیا ہے؟ (۲) مہر مثل ازواج مطہرات رسول علیہ التحیۃ والصلوٰۃ کہ امہات المومنین والمومنات ہیں کا افضل یا خاندانی مثل ام وعمہ، عروس و داماد۔

الجواب: (۱) مہر معجل وہ ہے جو پیشگی دینا ٹھہرے، اور مؤجل وہ جس کی ایک میعاد معین قرار پائے کہ اتنے زمانے کے بعد ادا کیا جائے گا، اور مؤخر وہ کہ نہ پیشگی دینا ٹھہرا نہ اس کا کوئی وقت معین کیا گیا، مہر مثل کوئی ان کی مقابل قسم نہیں، مؤجل کی دستاویز لکھنا بہتر ہے۔ قال تعالٰی:

یَاأَیُّهَا الَّذِینَ آمَنُوا إِذَا تَدَایَنْتُمْ بِدَیْنٍ إِلَی أَجَلٍ مُسَمًّی فَاکْتُبُوهُ (اے ایمان والو! جب تم ادھار لین دین مقررہ مدت پر کرو تو اسے لکھ لیا کرو۔ (ت))

تفسیر احمدی میں ہے: فی الزاھدی ان الآیۃ عامۃ فی السلم وکل دین یصح فیہ الاجل۔ (زاہدی میں ہے کہ یہ آیہ کریمہ بیع سلم اور ہر ادھار سودا جس میں مدت مقرر کرنا صحیح ہو سب کو شامل ہے (ت))

مدارک التنزیل میں ہے: الامر للندب (آیہ کریمہ میں امر استحباب کے لئے ہے۔ ت) لباب التاویل میں ہے: وھو قول جمھور العلماء (یہی جمہور علماء کا قول ہے۔ ت) اور مضمون میں وہی طریقہ معہودہ کافی ہے جو تمسکات میں رائج ہے کہ میں فلاں بن فلاں بن فلاں ہوں میں نے فلاں تاریخ

فلانۃ بنت فلاں بن فلاں سے اتنے مہر پر نکاح کیا جس کی ادا اتنے دنوں بعد قرار پائی ہے (اقرار کرتا ہوں کہ مہر مذکور میعاد مذکور ادا کروں گا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (۲) ازواج مطہرات کا مہر کس کے لئے مہر مثل ہوسکتا ہے، ان کے مثل کون ہے، مہر مثل سے اپنے

1 القرآن الکریم ۲/۲۸۲ 2 تفسیر احمدیہ تحت آیۃ اذا تداینتم بدین الخ (پ ۳) مطبعہ کریمیہ، بمبئی، بھارت ص ۱۷۵ 3 مدارک التنزیل (تفسیر النسفی) تحت آیۃ مذکورہ دار الکتاب العربی بیروت ۱/۱۳۹ 4 لباب التاویل (تفسیر خازن) مصطفی البابی مصر ۱/۳۰۵

Fatawa Razawiyya, Volume 12

...the father's family's dower is intended. Sisters, paternal aunts, etc., are like her in terms of age, wealth, beauty, virginity, etc. The pure wives are the Mothers of the Believers, not the Mothers of the Believing Women. Mother of the Believers, Siddiqa (may Allah be pleased with her), says: "I am the mother of your men, and I am not the mother of your women." - And Allah knows best. (T) And Allah knows best.

Problem 48: From Bagwar, Kathiawar, sent by Haji Abdul Latif Sahib, 15 Ramadan-ul-Mubarak 1336 AH. What should be the minimum amount of dower (Mahr) fixed in the renewal of marriage? Explain and be rewarded. Answer: The minimum amount of dower is ten (10) dirhams worth of silver, which amounts to approximately two rupees and thirteen annas (in the currency of that time). The remaining rulings of dower for initial marriage also apply to the renewal of marriage. And Allah knows best.

Problem 49: From the village of Mayondi Buzurg, sent by Syed Amir Alam Hasan Sahib, 7 Rabi-ul-Awwal Sharif 1337 AH. What do the scholars of religion and muftis of the firm Shariah say about this matter? Zaid married off his unmarried daughter to a person, and that person died without consummating the marriage with his wife, nor did they have any kind of interaction, meaning no act of any kind was performed. Now, let the scholars of religion state how much dower this unmarried girl should receive from her husband's wealth or property, etc.? Half or full? And if they wish to marry her to someone else, after how many days should it be done? Some people say that there is no waiting period (Iddah) for such a marriage because when her husband did not have any intimacy with her, what would the Iddah be for? Some say that marriage is permissible after a three-month Iddah. Now let the scholars state whether these people are wrong or right, and what is the punishment in the pure Shariah for those who are wrong and do not follow the Shariah? Only, explain and be rewarded. Answer: Asking about punishment is futile; who can punish whom today? Whoever does not follow the Shariah will be punished in Hell. When the husband dies, the full dower becomes obligatory, even if they have not seen each other's faces. And an Iddah of four months and ten days is mandatory; marriage before that is forbidden. And Allah knows best.

1. Dur al-Manthur, citing Ibn Sa'd, Ibn al-Mundhir, and al-Bayhaqi under the verse 'The Prophet is more worthy of the believers...', Ayatullah al-Uzma al-Mar'ashi, Iran, 5/183.

फतावा रज़विया, खंड 12

...पितृ पक्ष के परिवार का महर मुराद है। बहन, बुआ आदि उम्र, धन, सुंदरता, कौमार्य आदि में उसके समान हैं। पवित्र पत्नियाँ मोमिनों की माताएँ(उम्माहातुल मोमिनीन) हैं, मोमिन औरतों की माताएँ नहीं। मोमिनों की माँ, सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अन्हा) फरमाती हैं: "मैं तुम्हारे पुरुषों की माँ हूँ, तुम्हारी औरतों की माँ नहीं हूँ।" - और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। (त) और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला 48: बगवार, काठियावाड़ से, हाजी अब्दुल लतीफ़ साहब द्वारा प्रेषित, 15 रमज़ान-उल-मुबारक 1336 हिजरी। निकाह के नवीनीकरण (तजदीद-ए-निकाह) में कम से कम कितना महर बांधना चाहिए? उत्तर दें और पुण्य पायें। उत्तर: महर की न्यूनतम राशि दस (10) दिरहम के बराबर चाँदी है, जो लगभग दो रुपये पौने तेरह आने (उस समय की मुद्रा में) होती है। महर के बाकी जो नियम शुरुआती निकाह में हैं, वही निकाह के नवीनीकरण में भी हैं। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला 49: मयौंडी बुजुर्ग गाँव से, सैय्यद अमीर आलम हसन साहब द्वारा प्रेषित, 7 रबी-उल-अव्वल शरीफ 1337 हिजरी। धर्म के विद्वान और सुदृढ़ शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने अपनी कुंवारी बेटी का निकाह किसी व्यक्ति से कर दिया और वह व्यक्ति अपनी पत्नी के साथ संभोग (निकटता) किए बिना ही मर गया, और किसी प्रकार की कोई बातचीत नहीं की यानी किसी प्रकार का कोई कृत्य नहीं किया। अब धर्म के विद्वान बतायें कि उस कुंवारी लड़की को उसके पति के धन या संपत्ति आदि से कितना महर मिलना चाहिए? आधा या पूरा? और यदि वे उसका निकाह किसी दूसरे व्यक्ति से करना चाहें, तो कितने दिनों के बाद किया जाए? कुछ लोग कहते हैं कि ऐसे निकाह की इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) नहीं होती क्योंकि जब उसके पति ने उससे निकटता ही नहीं की तो इद्दत किस चीज़ की होनी चाहिए, और कुछ कहते हैं कि तीन महीने की इद्दत के बाद ऐसे का निकाह जायज़ है। अब धर्म के विद्वान बता दें कि ये लोग गलत हैं या सही, और जो लोग गलत हैं और शरीयत को नहीं मानते, उनके लिए पाक शरीयत में क्या सजा है? बस, उत्तर दें और पुण्य पायें। उत्तर: सज़ा के बारे में पूछना व्यर्थ है, आज कौन किसको सज़ा दे सकता है? जो शरीयत को नहीं मानेगा वह नरक में सज़ा पाएगा। जब पति मर जाता है तो पूरा महर वाजिब (अनिवार्य) हो जाता है, चाहे एक-दूसरे का चेहरा न देखा हो। और चार महीने दस दिन की इद्दत अनिवार्य है, उससे पहले निकाह हराम है। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

1. दुर्रे मंसूर, इब्ने साद, इब्ने मुन्ज़िर और बैहक़ी के हवाले से, आयत 'अन-नबिय्यु औला बिल-मुमिनीन...' के तहत, आयतुल्लाह अल-उज़मा अल-मरअशी, ईरान, 5/183।

خاندان پدری کا مہر مراد ہے بہن پھوپھی وغیرہ عمر و مال و جمال و بکارت و غیرہما میں اس کے مثل ہیں، ازواج مطہرات امہات المؤمنین ہیں امہات المؤمنات نہیں، ام المؤمنین صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا فرماتی ہیں: انا امر جاکم ولست ام نسائکم - واللہ تعالٰی اعلم- | میں تم مردوں کی ماں ہوں تمہاری عورتوں کی ماں نہیں ہوں۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۴۸: از بگواڑ اکٹھیاواڑ مرسلہ حاجی عبد اللطیف صاحب ۱۵ رمضان المبارک ۱۳۳۶ھ تجدید نکاح میں مہر کم از کم کتنا باندھنا چاہئے؟ بینوا توجروا الجواب: مہر کی مقدار کم از کم دس ۱۰ درہم بھر چاندی ہے جس کی مقدار تقریباً دو روپے پونے تیرہ آنے تیرہ آنے بھر رہوئی، باقی جو احکام مہر کے ابتدائی نکاح میں ہیں وہی تجدید نکاح میں۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۴۹: از موضع میونڈی بزرگ مرسلہ سید امیر عالم حسن صاحب ۷ ربیع الاول شریف ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی لڑکی نا کتخدا کا نکاح کسی شخص سے کر دیا اور وہ شخص بلا قربت کئے اپنی بی بی کے مر گیا اور کسی طرح کی کوئی بات چیت نہیں کی یعنی کسی طرح کا کوئی فعل نہیں کیا اب علمائے دین فرمائیں کہ اس لڑکی نا کتخدا کا کتنا مہر اس کے شوہر کے مال یا جائداد وغیرہ سے چاہئے نصف یا پورا، اور اگر اس کا نکاح کسی دوسرے شخص سے کرنا چاہیں تو کتنے دنوں کے بعد کیا جائے، بعض شخص کہتے ہیں کہ ایسے نکاح کی عدت نہیں ہوتی ہے کیونکہ جب اس کے شوہر نے اس قربت ہی نہیں کی تو عدت کس چیز کی کرنا چاہئے، اور بعض کہتے ہیں کہ تین ماہ کی عدت کے بعد نکاح ایسے کا جائز، اب علمائے دین فرمادیں کہ یہ لوگ غلطی پر ہیں یا صحیح پر، اور جو لوگ غلطی پر ہوں شریعت کو نہ مانتے ہوں ان کے لئے کیا سزا شرع اطہر میں ہے فقط،

بینوا توجروا۔ الجواب: سزا پوچھنا لغو ہے، آج کون کس کو سزا دے سکتا ہے جو شریعت کو نہ مانے جہنم میں سزا پائے گا، جب شوہر مر جائے پورا مہر واجب ہوتا ہے اگرچہ ایک نے دوسرے کی صورت نہ دیکھی ہوں اور چار مہینے دس دن کی عدت فرض ہے اس سے پہلے نکاح حرام ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

---

1 در منثور بحوالہ ابن سعد و ابن المنذر و البیہقی تحت آیت آیہ اولیٰ بالمومنین الخ آیت اللہ العظمیٰ المرعشی ایران ۵/ ۱۸۳

Fatawa Razawiyya Volume 12

Problem 50: From Balrampur, district Gonda, sent by Second Master Middle School, 2 Rabi al-Awwal 1337 AH. Bakar is ready to marry off his daughter to Zaid on several conditions. Zaid, who does not have a status exceeding 40 rupees per month in his job, according to his salary status, what is the maximum amount for his Sharia dower (Mahr) to be permissible, and is there any accountability for a dower exceeding one's status?

The Answer: A dower exceeding one's status is inappropriate; it is not a sin for which there is accountability, for wealth comes and goes (i.e., it is a transitory thing). And Allah Almighty knows best.

Problem 51: From Bareilly City, Sandal Bazar locality, sent by Nawab Nisar Ahmad Khan Sahib, 8 Jumada al-Ula 1337 AH. What do the scholars of religion say in this matter: if a woman dies, can her legal heirs forgive the deceased woman's dower to her husband or the husband's heirs? Will this be permissible according to Sharia or not?

The Answer: Among the woman's heirs, those who are sane and adult can forgive their share, and that portion will be forgiven. If all are sane and adult and they all forgive it, then the entire dower will be forgiven. And Allah Almighty knows best.

Problem 52: 20 Rajab al-Murajjab 1337 AH. What do the scholars of religion say in this matter: Zaid married a prostitute after making her repent. At the time of the marriage contract, the Sharia Prophetic dower (Mahr), peace and blessings of Allah be upon him, was fixed. There are no women from her tribe, nor are their marriages known, so now the customary dower (Mahr al-Mithl) cannot be determined. Zaid had her taught the Holy Quran. Now, after Zaid's death, that woman hurls severe insults at Zaid, even calling him 'illegitimate'. People who never came before her during Zaid's life now visit regularly. She roams around at night, visits lawyers, and now claims all the items and wants to sell the house. So now, how much is her dower according to the noble Sharia? Her speech is such that she says, "That hell-bound man died who left me here, may maggots infest his corpse." He has three brothers, parents, and a sister as well.

The Answer: The punishment for her words and actions is with Allah; her dower or inheritance share is not lost because of them. If by 'Sharia Prophetic dower', the

minimum amount of dower is meant in people's custom, then it is ten Dirhams, which means two rupees, twelve and three-quarter annas, and 3/5 pie.

फतावा रज़विया जिल्द 12

मसला 50: बलरामपुर जिला गोंडा से, प्रेषक: सेकंड मास्टर मिडिल स्कूल, 2 रबी-उल-अव्वल 1337 हिजरी। बक्र अपनी लड़की का निकाह ज़ैद के साथ करने के लिए कुछ शर्तों पर तैयार है। ज़ैद, जो नौकरी के सिलसिले में 40 रुपये प्रति माह से अधिक की हैसियत नहीं रखता है, अपनी तनख्वाह की हैसियत के अनुसार अधिक से अधिक कितने रुपये पर उसका महर-ए-शरई होना जायज़ है? और हैसियत से अधिक महर होने पर क्या कोई पकड़ (जवाबदेही) है?

अल-जवाब (उत्तर): हैसियत से ज़्यादा महर रखना ना मुनासिब है, लेकिन यह कोई गुनाह नहीं जिस पर पकड़ हो, क्योंकि माल आता-जाता रहता है। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

मसला 51: शहर बरेली, मोहल्ला संदल बाज़ार से, प्रेषक: नवाब निसार अहमद खां साहब, 8 जमाद-उल-ऊला 1337 हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि अगर कोई औरत वफ़ात पा जाए (मर जाए), तो क्या उसके शरई वारिस उस मृत औरत का महर उसके शौहर या शौहर के वारिसों को माफ़ कर सकते हैं? क्या शरई तौर पर यह जायज़ होगा या नहीं?

अल-जवाब (उत्तर): औरत के वारिसों में से जो अक़्लमंद और बालिग (वयस्क) होंगे, वे अपना हिस्सा माफ़ कर देंगे तो उतना हिस्सा माफ़ हो जाएगा। अगर सभी अक़्लमंद और बालिग हों और सब माफ़ कर दें, तो पूरा महर माफ़ हो जाएगा। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 52: 20 रजब-उल-मुरज्जब 1337 हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद ने एक फ़ाहाशा (वेश्या) से तौबा कराके निकाह किया। निकाह के वक़्त महर-ए-शरई पैग़म्बरी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तय हुआ था। उस औरत के कबीले की कोई औरत नहीं है और उनके निकाहों का भी पता नहीं, इसलिए अब महर-ए-मिसल मालूम नहीं हो सकता। ज़ैद ने उसे क़ुरआन मजीद पढ़वाया। अब ज़ैद की मौत के बाद वह औरत ज़ैद को बहुत बुरा-भला कहती है, यहाँ तक कि उसे 'हरामज़ादा' तक कह देती है। वे लोग जो ज़ैद की ज़िंदगी में उसके सामने नहीं आए थे, अब बराबर आते हैं। वह रातों को घूमती है, वकीलों के पास जाती है और अब वह तमाम चीज़ों पर दावा करती है, मकान बेचना चाहती है। तो अब शरीअत के अनुसार उसका कितना महर बनता है? उसकी बातचीत ऐसी है कि वह कहती है, "वह जहन्नमी मर गया जो मुझे यहाँ छोड़ गया, उसकी लाश में कीड़े पड़ें।" ज़ैद के तीन भाई, माँ-बाप और एक बहन भी है।

अल-जवाब (उत्तर): उसके कथनों और कार्यों की सज़ा अल्लाह के यहाँ है, इससे उसका महर या हिस्सा ख़त्म नहीं होता। अगर 'महर-ए-शरई पैग़म्बरी' से लोगों के उरफ़ (प्रचलन) में महर की कम से कम मात्रा मुराद हो, तो वह दस दिरहम है, यानी दो रुपये पौने तेरह आने और 3/5 पाई।

पृष्ठ 177 / 688

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

مسئلہ ۵۰: از بلرام پور ضلع گونڈہ مرسلہ سکنڈ ماسٹر مڈل اسکول ۲ ربیع الاول ۱۳۳۷ھ بکر اپنی لڑکی کا نکاح زید کے ساتھ کر دینے کے لئے چند شرائط پر تیار ہے زید جو سلسلہ ملازمت میں ۴۰ روپیہ ماہوار سے زائد حیثیت نہیں رکھتا ہے حسب حیثیت تنخواہ زائد سے زائد کتنے روپیہ پر اُس کا مہر شرعی ہونا جائز ہے اور حیثیت سے زائد مہر ہونے پر کیا مواخذہ ہے؟

الجواب: حیثیت سے زائد مہر نامناسب ہے کوئی گناہ نہیں جس پر مواخذہ ہو فان المال غاد وارائح (مال آنے جانے والی چیز ہے۔ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۵۱: از شہر بریلی محلہ صندل بازار مرسلہ نواب نثار احمد خاں صاحب ۸ جمادی الاولیٰ ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ اگر کوئی فوت ہوجائے تو اس کے ورثا شرعی سے مہر عورت مذکورہ متوفیہ کا شوہر یا ورثاء شوہر بخشوا لیں تو شرعاً جائز ہوگا یا نہیں ۔

الجواب: وارثان زن میں جو عاقل بالغ معاف کرے گا اُس کا حصہ معاف ہوجائے گا، اگر سب عاقل بالغ ہوں اور سب معاف کردیں تو سب معاف ہوجائے گا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۵۲: ۲۰ رجب المرجب ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے ایک فاحشہ سے توبہ کراکے نکاح کیا بروقت عقد نکاح مہر شرعی پیمبری صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم پر مقرر ہوا تھا اور اس کے قبیلہ کی کوئی عورت نہیں بلکہ ان کا نکاح بھی نا معلوم، اب مہر مچل معلوم نہیں ہوسکتا، زید نے اس کو قرآن مجید پڑھوایا، اب بعد فوت زید کے وہ عورت زید کو سخت سخت گالیاں دیتی ہے، یہاں تک کہ ولدالزنا بھی کہہ دیتی ہے، وہ لوگ کہ زندگی زید میں اس

کے سامنے نہ آئے تھے اب برابر آتے ہیں، راتوں کو گھومتی ہے، وکیلوں کے پاس جاتی ہے، اب وہ کل اشیاء پر دعویٰ کرتی ہے، مکان بیچنا چاہتی ہے تو اب اس کا کتنا مہر از روئے شرع شریف نکلتا ہے اور اس کی گفتگو ہے کہ وہ کہتی ہے مر گیا وہ جہنمی جو مجھ کا یہاں چھوڑ گیا، پڑیں اس کے لاشے میں کیڑے، تین بھائی اور والدین اور ایک ہمشیرہ بھی ہے۔

الجواب: اُس کے اقوال افعال کی سزا اللہ کے یہاں ہے اس سے اس کا مہر یا حصہ نہیں جاتا مہر شرعی پیمبری سے اگر لوگوں کے عرف میں اقل مقدار مہر مراد ہوتی ہے تو وہ دس ادرم ہے یعنی دو روپے پونے تیرہ آنے اور ۳/۵ پائی۔

Fatawa Razwiya - Volume 12, Page 160

And if that refers to the dower (mahr) of Hazrat Batool Zahra (Allah be pleased with her), then it is 400 mithqals of silver, which equals 160 rupees here. And if the dower of the pure wives (Azwaj-e-Mutahharat) is meant, then it is 500 dirhams, which equals 140 rupees here. If no specific amount was in their minds, then Mahr-e-Misl (customary dower) will be mandatory, which should not exceed 160 rupees worth of silver or 140 rupees, as this small amount was certainly intended. People have coined this term to escape the excessively large dowers prevalent here, so no more than that will be given. If heirs claim a reduction, they must state under oath that the Mahr-e-Misl of an ordinary woman of such age and appearance is such-and-such, or the judge should decide an amount not exceeding this. Allah (the Exalted) knows best.

Problem 53: From Raipur district, CP, sent by Sardar Khan Sahib, Clerk Mahanadi Division Office, 11 Safar 1338 AH. What do the scholars of religion say in this matter regarding the condition of prompt dower (Mahr-e-Mu'ajjal)? Zaid's marriage to Hind was settled with prompt dower, but a long period of about 25 years passed and that prompt dower was not paid. In such a situation, can prompt dower become deferred (mu'ajjal), or has the entitlement to this dower expired? In the case of loss of entitlement, did Zaid and Hind's valid privacy (khalwat-e-sahiha) take place? Explain and be rewarded.

The Answer: The entitlement to dower can never be lost due to non-payment. What was settled as prompt dower will always remain prompt unless the woman voluntarily makes it deferred. Not demanding it for twenty-five years makes no difference to her right. Unless she voluntarily makes it deferred, she can still demand her prompt dower at any time she wishes and can withhold herself from her husband until she receives it. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

(Arabic Text)	**(Urdu Translation)**
(And she has the right to refuse him intercourse) and its precursors - Sharh al-Majma' - (and to travel with her, even after intercourse and privacy to which she consented) because every act of intercourse is contracted upon, so delivering a part does not necessitate delivering	The wife has the right to refuse the husband intercourse and its precursors - Sharh al-Majma' - and even from travel, even if intercourse and privacy have occurred with her consent, because every act of intercourse is contracted upon dower (i.e., a separate dower becomes mandatory for every act of intercourse), so by giving some of the

(Arabic Text)	(Urdu Translation)
the rest (in order to take what was stipulated as prompt) from the dower, whether it is all or part - and Allah (the Exalted) knows best.	exchange, giving the rest is not proven. For the recovery of whatever prompt dower was stated, whether it be the whole dower or part, the woman can withhold herself from her husband. And Allah (the Exalted) knows best. (T)

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Mahr, Mujtabai Press, Delhi, 1/202

फ़तावा रज़विया - जिल्द 12, पृष्ठ 160

और अगर उससे मुराद हज़रत बतुल ज़हरा (अल्लाह उनसे राज़ी हो) का महर है, तो वह 400 मिस्क़ाल चाँदी है, यानी यहाँ के160 रुपये के बराबर। और अगर अज़वाजे मुतहरात (पवित्र पत्नियों) का महर मुराद है, तो 500 दिरहम यानी यहाँ के140 रुपये। और अगर उनके ज़हन में कोई विशेष राशि नहीं थी, तो महर-ए-मिसल (प्रचलित महर) अनिवार्य होगा, जो 160 रुपये की चाँदी या 140 रुपये से अधिक न हो, क्योंकि यह कम राशि ही निश्चित रूप से मुराद थी। लोगों ने यहाँ के बहुत अधिक महरों से बचने के लिए यह शब्द गढ़ा है, इसलिए उससे अधिक नहीं दिया जाएगा। यदि उत्तराधिकारी कमी का दावा करते हैं, तो वे शपथ लेकर कहें कि ऐसी आयु और रूप वाली बाज़ारी औरत का महर-ए-मिसल इतना होता है, या न्यायाधीश ऐसा आदेश दे जो इस राशि से अधिक न हो। अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला 53: ज़िला रायपुर, सी.पी. से, प्रेषक सरदार ख़ान साहब, क्लर्क महानदी डिवीज़न कार्यालय, 11 सफ़र 1338 हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि महर-ए-मुअज्जल (नक़द महर) की शर्त क्या है? ज़ैद का निकाह हिन्द से महर-ए-मुअज्जल पर तय हुआ था, लेकिन लगभग 25 वर्ष का लम्बा समय बीत गया और वह महर-ए-मुअज्जल अदा नहीं हुआ। ऐसी स्थिति में क्या मुअज्जल (नक़द) मुअज्जल (उधार/विलंबित) हो सकता है, या इस महर का अधिकार समाप्त हो गया? अधिकार समाप्त होने की स्थिति में, क्या ज़ैद और हिन्द की ख़लवत-ए-सहीहा (वैध एकांत) हुई? बयान करें और पुण्य पायें।

जवाब: अदा न होने से महर का हक़ कभी नहीं जा सकता, और जो मुअज्जल (नक़द) तय हुआ है वह हमेशा मुअज्जल ही रहेगा जब तक कि औरत उसे अपनी मर्जी से मुअज्जल (उधार) न कर दे। पच्चीस साल तक मांग न करना उसके हक में कोई अंतर नहीं लाता। जब तक वह औरत उसे अपनी खुशी से उधार न कर दे, वह अब भी जिस वक़्त चाहे अपने महर-ए-मुअज्जल की मांग कर सकती है और जब तक न मिले, अपने आप को पति से रोक सकती है। दुर्रे मुख़्तार में है:

(अरबी मूल)	**(उर्दू अनुवाद का हिंदी रूपांतरण)**
(और उसे संभोग से रोकने का अधिकार है) और उसकी भूमिकाओं से - शरह मजमा' - (और उसके साथ यात्रा करने से, चाहे संभोग	पत्नी को संभोग और उसके कारणों से पति को रोकने का अधिकार है। शरह मजमा', यात्रा से भी, चाहे पत्नी की सहमति से संभोग और एकांत हो चुका हो क्योंकि

(अरबी मूल)

और एकांत उसकी सहमति से हो चुके हों) क्योंकि प्रत्येक संभोग पर अनुबंध होता है, इसलिए अंश का समर्पण शेष के समर्पण को अनिवार्य नहीं करता (नक़द के रूप में तय की गई राशि लेने के लिए) चाहे वह पूरा महर हो या उसका कुछ हिस्सा। - वल्लाहु तआला आलम।

(उर्दू अनुवाद का हिंदी रूपांतरण)

प्रत्येक संभोग महर पर अनुबंधित होता है (अर्थात प्रत्येक संभोग पर अलग-अलग महर अनिवार्य होता है) तो विनिमय का कुछ हिस्सा देने से शेष का देना साबित नहीं होता, जितना महर मुअज्जल (नक़द) बताया गया हो उसकी वसूली के लिए, चाहे वह पूरा महर हो या कुछ हिस्सा, स्त्री अपने आप को पति से रोक सकती है। वल्लाहु तआला आलम (त)

1. रद अल-मुह्तार, बाब अल-महर, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 1/202

فتاویٰ رضویہ - جلد دو ازدھم ، صفحہ ۱۶۰

اور اگر اُن مراد مہر حضرت بتول زہرا رضی اللہ تعالیٰ عنہا ہوتی ہے تو وہ چار سو ۴۰۰ مثقال چاندی یعنی یہاں کے ایک سو ساٹھ ۱۶۰ روپے بھر، اور اگر مہر ازواج مطہرات مراد ہے تو پانچ سو درم یعنی یہاں کے ایک سو چالیس ۱۴۰ روپے، اور اگر کوئی خاص رقم ان کے ذہن میں نہیں تو مہر مثل لازم آئے گا جو ایک سو ساٹھ روپے بھر چاندی یا ایک سو چالیس روپے سے زائد نہ ہو کہ یہ قلت ضرور مراد ہوتی ہے، یہاں کے کثیر التعداد مہروں سے بھاگنے کے لئے یہ لفظ عوام نے وضع کیا ہے تو اُن سے زیادہ نہ دیا جائے گا، وارث اگر کمی کا دعویٰ کریں تو بحلف کہیں کہ ایسی عمر و شکل کی بازاری عورت کا مہر مثل اتنا ہوتا ہے یا حکم تجویز کرے جو اس مقدار سے زائد نہ ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۵۳: از ضلع رائے پورس ی پی مرسلہ سردار خاں صاحب کلرک مہاندی ڈویژن دفتر ۱۱ صفر ۱۳۳۸ ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مہر معجل کی شرط ادا کیا ہے، اور زید کا نکاح ہندہ سے بمہر معجل قرار پایا لیکن عرصہ دراز تقریباً ۲۵ سال کا گزرا کہ وہ مہر معجل ادا نہ ہوا ایسی حالت میں کیا معجل مؤجل ہو سکتا ہے یا اس مہر کا استحقاق جاتا رہا، در صورت حباط استحقاق آیا زید اور ہندہ کی خلوت صحیح ہوئی ۔ بینوا توجروا

الجواب: ادا نہ ہونے سے مہر کا استحقاق کبھی نہیں جاسکتا، اور جو معجل ٹھہرا ہے وہ ہمیشہ معجل ہی رہے گا جب تک عورت اُسے اپنی رضا سے مؤجل نہ کردے، پچیس برس مطالبہ نہ کرنا اُس کے حق میں فرق نہیں لاتا، وہ جب تک عورت اُسے اپنی رضا سے مؤجل نہ کردے، پچیس برس مطالبہ نہ کرنا اُس کے حق میں فرق نہیں لاتا، وہ اب بھی جس وقت چاہے اپنے مہر معجل کا

مطالبہ کرسکتی ہے اور جب تک نہ ملے اپنے نفس کو شوہر سے روک سکتی ہے، در مختار میں ہے :

(عربی عبارت) **(اردو ترجمہ)**

(ولها منعه من الوطی) ودواعیه وطی وخلوة رضیتها) لان کل وطاة معقود علیها فتسلیم البعض لا یوجب تسلیم الباقی(لاخذ ما بین تعجیله) من المهر کله او بعضه ۱- واللہ تعالیٰ اعلم-

بیوی کی وٹی اور اس کے دواعی سے خاوند کو منع کرنے کا حق ہے۔ شرح مجمع، سفر سے بھی، اگرچہ برضائے زوجہ وٹی اور خلوت ہوچکی ہو کیونکہ ہر وٹی مہر پر معقود ہوتی ہے (یعنی ہر وٹی پر جدا جدا مہر لازم آتا ہے) تو بعض بدل دینے سے باقی کا دے دینا ثابت نہیں ہوتا، جتنا مہر معجل بیان کیا ہو اس کی وصولی کے لئے وہ کُل مہر ہو یا بعض، عورت اپنے نفس کو شوہر سے روک سکتی ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

۱ ردالمحتار باب المهر مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۰۲

Fatawa Rizvia, Volume 12

Problem 54: From Madanpur, sent by Azizuddin Sahib, 2 Rajab 1338 AH. What do the learned scholars say regarding this matter? In our rural areas, it is a custom that the details of the dowry (mahr) are not specified. Some people do specify it by giving jewelry etc. as prompt dowry (mu'ajjal), and some Qazis (judges) name the dowry as prompt. Otherwise, generally, neither prompt nor deferred (mu'ajjal) is specified. In such a situation, can Hinda demand the debt of dowry from her husband Zaid, saying, "Pay my dowry first, then I will leave my parents' house and go to yours"? The situation is that Zaid currently does not even have the means to pay the dowry. Explain and be rewarded.

Answer: When neither the dowry was fixed as prompt (mu'ajjal) to be paid before the bride's departure, nor as deferred (mu'ajjal) to be paid after a specific period, or if the amount fixed as prompt has been paid through jewelry etc., and the remainder was neither prompt nor deferred—regardless of whether the Qazi labeled it as non-prompt or said nothing—then Hinda has no right to demand any part of the dowry until divorce occurs or one of them dies. Nor can she refuse to go with him for this reason, even if Zaid were perfectly capable of paying the dowry right now. In Radd al-Muhtar, the Book of Judicature (Kitab al-Qada), before the Chapter on Arbitration (Bab al-Tahkim), it is stated:

[Arabic Quote]: If a woman's husband dies or divorces her, for example, twenty years after the marriage, then she has the right to demand the deferred dowry. Because the right to demand this dowry is established only after death or divorce, not from the time of the marriage. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 55: From Chha, sent by Rafiq Ahmad Sahib, 8 Rajab Sharif, Monday, 1338 AH. A husband asked his wife to waive her dowry. She replied that she would not waive it. Upon this, her husband troubled and harassed her greatly, and her parents-in-law also spoke ill of her. Consequently, the woman came to her parents' house. When her husband came to take her back, she questioned him, saying, "I will not go until I receive my entire dowry." Her husband said, "We will take you by force," and also asked, "What will you do with the dowry?" She replied, "I will have a mosque built." Now the request is that if the community elders (panch), without getting the dowry paid...

[1] Radd al-Muhtar, Kitab al-Qada, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 4/344 Page 179 of 688

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

मसला 54: मदनपुर से, प्रेषक अज़ीज़ुद्दीन साहब, 2 रजब 1338 हिजरी। विद्वान उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि हमारे यहाँ देहातों में यह रिवाज है कि मेहर का विवरण नहीं दिया जाता। कुछ लोग ऐसा करते भी हैं कि ज़ेवर वग़ैरह मेहर-ए-मुअज्जल (तुरंत देय) के तौर पर दे देते हैं, और कुछ क़ाज़ी मेहर को मुअज्जल नाम दे देते हैं, वरना आमतौर पर न मुअज्जल नाम रखते हैं न मुवज्जल (विलंबित)। तो ऐसी स्थिति में क्या हिंदा अपने पति ज़ैद से मेहर के कर्ज़ की माँग कर सकती है कि "पहले मेरा मेहर अदा करो तो मैं अपने माता-पिता के घर से रुख़सत होकर तुम्हारे घर चलूँगी"? और स्थिति यह है कि फ़िलहाल ज़ैद के पास मेहर अदा करने की सामर्थ्य भी नहीं है। बयान करें और पुण्य पायें।

उत्तर: जब न तो मेहर मुअज्जल तय हुआ कि विदाई से पहले अदा किया जाए, और न ही मुवज्जल कि एक निश्चित अवधि बीतने पर दिया जाए, या जितना मुअज्जल तय हुआ था वह ज़ेवर वग़ैरह देकर अदा किया जा चुका हो, और शेष न मुअज्जल रहा न मुवज्जल—चाहे क़ाज़ी ने उसे ग़ैर-मुअज्जल कहा हो या कुछ न कहा हो—तो अब हिंदा को तब तक मेहर की माँग का कोई अधिकार नहीं है जब तक कि तलाक़ न हो जाए या दोनों में से किसी एक की मृत्यु न हो जाए। और न ही वह इस वजह से विदाई से इनकार कर सकती है, भले ही ज़ैद के पास अभी मेहर अदा करने की लाखों की सामर्थ्य हो। 'रद्दुल मुहतार', किताबुल क़ज़ा में 'बाबुल तहकीम' से पहले है:

[अरबी उद्धरण]: यदि किसी स्त्री का पति मर जाए या निकाह के बीस साल बाद उसे तलाक़ दे दे, तो पत्नी को मुवज्जल (विलंबित) मेहर माँगने का अधिकार है। क्योंकि इस मेहर की माँग का अधिकार मृत्यु या तलाक़ के बाद ही सिद्ध होता है, न कि निकाह के समय से। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 55: छा से, प्रेषक रफ़ीक अहमद साहब, 8 रजब शरीफ़, सोमवार, 1338 हिजरी। एक औरत से उसके पति ने कहा कि तुम अपना मेहर माफ़ कर दो। उसने कहा कि मैं माफ़ नहीं करती। इस पर उसके पति ने उसे बहुत परेशान और तंग किया और सास-ससुर ने भी बुरा-भला कहा, इसलिए वह औरत अपने माँ-बाप के यहाँ आ गई। जब उसका पति उसे लेने आया तो उसने सवाल किया कि जब तक मैं अपना पूरा मेहर नहीं ले लूँगी तब तक नहीं जाऊँगी। उसके पति ने कहा कि हम तुम्हें

ज़बरदस्ती पकड़ ले जाएँगे, और यह भी कहा कि तुम मेहर का क्या करोगी? तो उसने कहा कि मैं मस्जिद बनवाऊँगी। अब अर्ज़ यह है कि पंच लोग बिना मेहर अदा कराए...

---

1 रद्दुल मुहतार, किताबुल क़ज़ा, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 4/344 पेज 179/688

فتاوی رضویہ، جلد دوازدہم

مسئلہ ۵۴: از مدن پور مرسلہ عزیز الدین صاحب ۲ رجب ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے کرام اس مسئلہ میں کہ دیہات میں ہمارے یہاں رواج ہے کہ مہر کی تفصیل نہیں ہوتی، اور بعض لوگ کرتے بھی ہیں تو اس طرح کہ زیور وغیرہ مہر مَجَّل دیتے ہیں اور بعض قاضی مہر مَجَّل نام رکھ دیتے ہیں ورنہ علی العموم نہ مَجَّل نام رکھتے ہیں نہ مُؤجَّل، تو ایسی حالت میں ہندہ اپنے شوہر زید سے مطالبہ دَینِ مہر کر سکتی ہے یا نہیں کہ پہلے میرا مہر ادا کر دو تو میں اپنے والدین کے یہاں سے رخصت ہوں تمہارے گھر چلوں گی، اور حال یہ ہے کہ فی الحال زید کو مہر ادا کرنے کی قدرت بھی نہیں۔ بینوا توجروا۔

الجواب: جبکہ نہ مہر مَجَّل ٹھہرا ار رخصت سے پہلے ادا کیا جائے نہ مُؤجَّل کہ اتنی مدت معین گزرنے پر دیا جائے یا جتنا مَجَّل ٹھہرا تھا وہ زیور وغیرہ دے کر ادا ہو چکا ہو، باقی نہ مَجَّل ٹھہرا نہ مُؤجَّل خواہ قاضی نے غیر مَجَّل کہہ دی یا کچھ نہ کہا ہو تو اب ہندہ کو جب تک طلاق یا دونوں میں سے ایک کی موت نہ واقع ہو ہر گز مطالبہ مہر کا کچھ حق تھانہ وہ اس لیے رخصت سے انکار کر سکتی ہے اگر چہ زید کو فی الحال ادائے مہر کی لاکھ قدرت ہو۔ ردالمحتار کتاب القضاء میں قبیل باب التحکیم ہے:

لو مات زوج المرأۃ او طلقہا بعد عشرین سنۃ مثلا من وقت النکاح فلھا طلب مؤخر المھر لان حق طلبہ انما یثبت لھا بعد الموت او الطلاق لامن وقت النکاح واللہ تعالٰی اعلم۔ (ترجمہ) اگر خاوند فوت ہو جائے یا نکاح سے بیس ۲۰ سال بعد طلاق دے تو بیوی کو مؤخر کردہ مہر طلب کرنے کا حق ہے، کیونکہ اس مہر کے مطالبہ کا حق موت یا طلاق کے بعد ہی ثابت ہوتا ہے نہ کہ نکاح کے وقت سے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۵۵: از چھامرسلہ رفیق احمد صاحب ۸ رجب شریف یوم دوشنبہ ۱۳۳۸ھ ایک عورت سے اس کے خاوند نے کہا تو اپنا مہر معاف کردے، اس نے کہا کہ میں معاف نہیں کرتی، اس پر اس کے خاوند نے سخت پریشان کیا اور تنگ رکھا اور ساس سر نے بھی برا بھلا کہا لہذا وہ عورت اپنے ماں باپ کے یہاں آ گئی ہے، اس کا خاوند لینے آیا تو اس نے سوال کیا کہ میں اپنا مہر جب تک کُل نہ لوں گی جب تک جاؤں گی، اس کے خاوند نے کہا کہ ہم تم کو زبردستی پکڑ لے جائیں گے، اور یہ بھی کہا کہ تو مہر کا کیا کرے گی، تو اس نے کہا کہ میں مسجد بنواؤں گی۔ اب عرض یہ ہے کہ پنچ لوگ بلا مہر ادا کرائے

---

1 ردالمحتار کتاب القضاء دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۴۴/۴ صفحہ 179 از 688

Fatawa Ridawiyya Volume 12

Can she be taken away forcibly or not? There is disagreement between husband and wife. Please clarify and may you be rewarded.

The Answer: The questioner's statement shows that the dower (Mahr) is without a fixed term. Therefore, before death or divorce, the woman has no right to demand it. She cannot stop herself from going to the husband because of her dower. She must go to the husband's place forcibly. It is strictly forbidden (Haram) for the husband to force her to waive her dower. If he forces her to waive it, it will not be considered waived. And Allah Almighty knows best.

Problem 56: From Ramseh, Tehsil Gujar Khan, Post Office Jatli, District Rawalpindi, sent by Qazi Taj Mahmood Sahib, 18 Shawwal 1338 AH. A man and his wife stayed in a room only for the first day, and enemies were standing around the room to attack them. Both husband and wife knew this situation. Early in the morning, the man divorced the woman. The man admits to consummation (Dukhool), but the woman denies it. Now, is this consummation or valid seclusion (Khalwat-e-Sahiha) reliable or not?

The Answer: If the room door was locked from inside and it is roofed or has high walls such that there was no fear of enemies entering, then it is valid seclusion (Khalwat-e-Sahiha); otherwise not. It is stated in Rad al-Muhtar: [Arabic text]: Consummation is valid on a roof where only the two are alone and they are safe from anyone else coming up to them. (Briefly excerpted). It should be such a surface where only the husband and wife are present, and they are free from worry about a third person climbing up there; then the seclusion is valid. (Briefly excerpted). If the first scenario applied, the woman's denial of consummation is useless as the full dower became mandatory in any case, whether consummation occurred or not. However, in the second scenario, the husband's claim that consummation occurred is an admission that the full dower is due, but the woman's denial is a rejection of that claim. Since an admission is negated by the rejection of the person in whose favor it is made, she will only receive half of the dower. This is what appeared to me, and Allah Almighty knows best.

Problem 57: From Pindol Buzurg, Post Office Raipur, District Muzaffarpur, asked by Niamatullah Shah Sahib Khaki Buraha, 9 Muharram 1339 AH. If someone, at the time of his wife's death agony, asked her to waive his debt of dower and she, with her tongue due to...

1. Rad al-Muhtar, Chapter of Dower, Discussion on Rules of Seclusion, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/340 Page 180 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

क्या उसे ज़बरदस्ती ले जाया जा सकता है या नहीं? पति-पत्नी के बीच अनबन है। स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: प्रश्नकर्ता के बयान से पता चलता है कि महर (दहेज/स्त्रीधन) की कोई समय सीमा नहीं है। इसलिए मृत्यु या तलाक से पहले, महिला को इसे मांगने का कोई अधिकार नहीं है। वह अपने महर के कारण खुद को पति के पास जाने से नहीं रोक सकती। उसे ज़बरदस्ती पति के घर जाना होगा। पति के लिए यह कतई हराम (निषिद्ध) है कि वह उसे महर माफ करने के लिए मजबूर करे। यदि वह जबरदस्ती माफी मंगवाता है, तो उसे माफ नहीं माना जाएगा। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

मसला 56: रामसेह, तहसील गूजर खान, डाकखाना जातली, जिला रावलपिंडी से, काजी ताज महमूद साहब द्वारा भेजा गया, 18 शव्वाल 1338 हिजरी। एक पुरुष और उसकी पत्नी केवल पहले दिन एक कमरे में रहे और दुश्मन उन्हें मारने के लिए कमरे के चारों ओर खड़े रहे। पति-पत्नी दोनों को भी इस स्थिति का पता था। सुबह-सुबह उस आदमी ने औरत को तलाक दे दिया। पुरुष संभोग (दुखुल) का स्वीकार करता है और महिला इनकार करती है। अब, क्या यह संभोग या सही एकांत (खलवत-ए-सहीहा) विश्वसनीय है या नहीं।

उत्तर: यदि कमरे का दरवाजा अंदर से बंद था और उस पर छत है या दीवारें इतनी ऊँची हैं कि दुश्मनों के घुस आने का डर नहीं है, तो सही एकांत (खलवत-ए-सहीहा) मान्य है; अन्यथा नहीं। 'रद्दुल मुह्तार' में है: [अरबी पाठ]: संभोग एक ऐसी छत पर मान्य है जहाँ केवल वे दोनों अकेले हों और किसी और के उन तक पहुँचने का कोई खतरा न हो। (संक्षेप में उद्धृत)। ऐसी सतह हो जिस पर केवल पति-पत्नी हों और किसी तीसरे के वहां चढ़ने की कोई चिंता न हो, तो एकांत सही है। (संक्षेप में उद्धृत)। यदि पहली स्थिति थी, तो महिला का संभोग से इनकार करना व्यर्थ है क्योंकि हर हाल में पूरा महर अनिवार्य हो गया, चाहे संभोग हुआ हो या नहीं। हाँ, दूसरी स्थिति में, पति का यह कहना कि संभोग हुआ, पूरे महर के अनिवार्य होने की स्वीकृति है और महिला का इनकार उसे रद्द करना है, और स्वीकृति प्राप्त करने वाले के इनकार से स्वीकृति रद्द हो जाती है, तो वह केवल आधा महर पाएगी। मुझे यही समझ आया है और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

मसला 57: पिंडोल बुजुर्ग, डाकखाना रायपुर, जिला मुजफ्फरपुर से, नियामतुल्लाह शाह साहब खाकी बुराहा द्वारा पूछा गया, 9 मुहर्रम 1339 हिजरी। यदि किसी ने अपनी पत्नी के मृत्यु के समय उससे कहा कि मेरा महर का ऋण माफ कर दे और उसने अपनी ज़बान से...

---

1. रद्दुल मुह्तार, बाबुल महर, मतलब फ़ी अहकामुल खलवत, दार इहयाउत तुराथिल अरबी, बेरुत, 2/340 पृष्ठ 180 / 688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

اس کو زبر دستی لے جا سکتے ہیں یا نہیں؟ میاں بیوی میں نااتفاقی ہے۔ بینوا توجروا

الجواب: بیان سائل ہوا کہ مہر بلا میعادی ہے، لہٰذا قبل موت یا طلاق اُس کے مطالبہ کا عورت کو کچھ اختیار نہیں، نہ اس کی وجہ سے اپنے مہر آپ کو شوہر سے روک سکتی ہے، اُسے شوہر کے یہاں جبراً جانا ہوگا اور شوہر پر حرامِ قطعی ہے کہ اس پر معافی مہر کا جبر کرے، اور اگر جبر کر کے معاف کرالے گا معاف نہ ہوگا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۵۶: از رامسر تحصیل گوجر خاں ڈاک خانہ جاتلی ضلع راولپنڈی مرسلہ قاضی تاج محمود صاحب ۱۸ شوال ۱۳۳۸ھ ایک مرد اور زوجہ صرف اول روز ایک کوٹھے میں رہے اور دشمن گرد گرد کوٹھے کے مارنے کے لئے کھڑے رہے ہیں، اور زوجین کو بھی یہ حالت معلوم تھی، علی الصباح اس مرد نے عورت کو طلاق دے دی ہے، مرد دخول کا مقر اور عورت منکر ہے، اب یہ دخول یا خلوت صحیحہ قابل اعتبار ہے یا نہیں۔

الجواب: اگر کوٹھے کا دروازہ اندر سے بند ہے اور مسقف ہے یا دیواریں بلند ہیں کہ دشمنوں کے گھس آنے کا اندیشہ نہیں تو خلوت صحیح ہے ورنہ نہیں۔ ردالمختار میں ہے: تصح علی سطح کانا فوقه وحدهما وامنا من صعود احد الیهما اه ملتقطا۔ ایسی سطح ہو جس پر صرف دونوں میاں بیوی ہوں اور کسی تیسرے کے وہاں چڑھنے سے بے فکر ہوں تو خلوت صحیح ہے اه ملتقطا (ت)
صورت اگر پہلی تھی تو عورت کا دخول سے انکار بیکار ہے کہ مہر کامل بہر حال لازم ہو گیا، دخول ہوا یا نہیں، ہاں صورت ثانیہ میں شوہر کا کہنا کہ دخول ہوا کل مہر لازم ہونے کا اقرار ہے

اور عورت کا انکار اس کا رد ہے اور اقرارِ مقر لہ کے انکار سے رد ہو جاتا ہے تو صرف نصف مہر پائے گی ہذا ما ظہر لی (یہ جو مجھے معلوم ہوا ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۵۷: از پنڈول بزرگ ڈاک خانہ رائے پور ضلع مظفر پور مسئولہ نعمت اللہ شاہ صاحب خاکی بوڑاہا ۹ محرم ۱۳۳۹ھ اگر کسی نے بی بی کے نزع کے وقت اس سے کہا کہ میرا دین مہر معاف کیا اس نے زبان سے بوجہ

---

1. ردالمحتار باب المهر مطلب في احكام الخلوة دار احياء التراث العربي بيروت ۳۴۰/۲ Page 180 of 688

...lost his voice and could not answer, but nodded his head. Has his debt of mahr (dower) been forgiven or not?

The Answer: Forgiveness of mahr (dower) during a terminal illness (marad al-maut) is not valid without the consent of other heirs. Allah knows best.

Problem 58: From Udaipur Mewar, Hathi Darwaza, Madrasa Sharqia, asked by Abdul Rahim son of Maulvi Sharaf Shah Sahib, 14 Muharram 1339 AH.

A person named Wazir Khan had two wives, and both had three children each. He divorced the former wife after a minor quarrel and wrote a divorce document. In it, it was stated: "Regarding your dower, I have given you both children born from you as dower." She was also pregnant at the time, and a girl was born after the divorce. Wazir Khan passed away. After the waiting period (iddah), the woman remarried. Now, these children are adults and wandering. Are these children entitled to their ancestral right or not?

The Answer: Both sons and that girl will receive a share in their father's property. Although the divorced woman will not receive a share (of inheritance), she is entitled to her mahr (dower). The statement that "both sons are given in your mahr" was futile; it does not settle the mahr. However, if the woman had said, "In exchange for my two sons, I have foregone the mahr," then she would not receive the mahr. Allah Almighty knows best.

Problem 59: From Kareli Ganj, District Narsinghpur, Post Office and Tehsil Narsinghpur, asked by Allah Bakhsh Sahib, 16 Muharram 1339 AH.

Zaid has been separated from his wife, Hindah, for about five years. During this time, Hindah's parents took her to Zaid's house several times, but due to Zaid's neglect, his mother and sister subjected Hindah to various types of hardships that she could not bear. Furthermore, he does not provide for her maintenance (naan-o-nafaqah), nor does he release her so she can make other arrangements for herself. Is Hindah entitled to receive her mahr through a court of law or not, and can she separate herself from him? Because Zaid's intention is only to cause pain to her and her parents, otherwise, his means are such that he could adequately provide maintenance for his wife at a middle-class level. Therefore, it is requested that whatever is most appropriate for Hindah according to the Sharia be communicated.

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

...आवाज़ बंद हो जाने के जवाब न दिया लेकिन सर हिला दिया तो उसका दीन-ए-मेहर माफ़ हुआ या नहीं?

जवाब: मरज़-उल-मौत (मृत्युशैया) में मेहर की माफ़ी अन्य वारिसों की अनुमति के बिना मान्य नहीं है। और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला 58: उदयपुर मेवाड़, हाथी दरवाज़ा, मदरसा शर्किया से, मुस्तौलिह (पुछवैया) अब्दुल रहीम वल्द मौलवी शरफ़ शाह साहब, 14 मुहर्रम 1339 हिजरी।

वज़ीर ख़ान नाम के एक व्यक्ति की दो पत्नियाँ थीं और दोनों के तीन-तीन बच्चे थे। उसने पहली पत्नी को मामूली लड़ाई के कारण तलाक दे दिया और तलाक का एक लिखित दस्तावेज दिया, जिसमें यह लिखा था कि "जो तुम्हारा मेहर है, उसमें तुम्हारे गर्भ के दोनों बच्चे मैंने तुम्हें मेहर में दिए।" वह उस समय गर्भवती भी थी और तलाक के बाद एक लड़की पैदा हुई। वज़ीर ख़ान की मृत्यु हो गई। इद्दत के बाद उस महिला ने दूसरा निकाह कर लिया। अब ये बच्चे पूरी तरह से बालिग़ (वयस्क) और आवारा हैं, तो क्या ये बच्चे अपने पैतृक अधिकार पाने के हकदार हैं या नहीं?

जवाब: दोनों लड़के और वह लड़की अपने पिता की संपत्ति में हिस्सा पाएंगे। और तलाकशुदा महिला हालांकि विरासत में हिस्सा नहीं पाएगी, लेकिन वह मेहर की हकदार है। वह बात कि "दोनों बेटे तुम्हारे मेहर में दिए" बेकार थी, उससे मेहर अदा नहीं होता। हाँ, अगर औरत ने यह कहा होता कि "दोनों बेटे मेरे हैं, मैंने मेहर छोड़ दिया," तो वह मेहर नहीं पाती। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 59: करेली गंज ज़िला नरसिंहपुर, डाकखाना और तहसील नरसिंहपुर से, मुस्तौलिह अल्लाह बख़्श साहब, 16 मुहर्रम 1339 हिजरी।

ज़ैद अपनी पत्नी हिंदा को लगभग पाँच साल से अलग किए हुए है। इस दौरान हिंदा के माँ-बाप ने कई बार अपनी बेटी को ज़ैद के घर पहुँचाया लेकिन ज़ैद की लापरवाही के कारण ज़ैद की माँ और बहन हिंदा को तरह-तरह की तकलीफें देती हैं जो वह बर्दाश्त नहीं कर सकती। इसके अतिरिक्त, वह उसके भरण-पोषण (नान-नफ़क़ा) की ज़िम्मेदारी भी नहीं उठाता और न ही उसे मुक्त करता है ताकि वह अपना दूसरा इंतज़ाम कर सके। क्या हिंदा कचहरी के माध्यम से मेहर की राशि पाने की हकदार

हो सकती है या नहीं, और क्या वह खुद को उससे अलग कर सकती है? क्योंकि ज़ैद की नीयत केवल उसे और उसके माँ-बाप को दुःख पहुँचाना है, वर्ना उसकी आर्थिक स्थिति ऐसी है कि वह मध्यम स्तर पर अपनी पत्नी के भरण-पोषण में पर्याप्त सहायता कर सकता है। इसलिए निवेदन है कि शरीयत के अनुसार जो हिंदा के पक्ष में सबसे उपयुक्त हो, उसके बारे में सूचित किया जाए।

पृष्ठ 181/688

آواز بند ہو جانے کے جواب نہ دیا لیکن سر ہلا دیا تو اس کا دین مہر معاف ہوا یا نہیں ؟

الجواب: مرض الموت میں مہر کی معافی بے اجازت دیگر ورثاء معتبر نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۵۸: از اودے پور میواڑ ہاتھی دروازہ مدرسہ شرقیہ مسئولہ عبدالرحیم خلف مولوی شرف شاہ صاحب ۱۴ محرم ۱۳۳۹ھ ایک شخص وزیر خاں نے دو عورتیں کیں اور ہر دو عورتیں کے تین تین بچے ہیں، سابق عورت کو بوجہ معمولی لڑائی کے طلاق دے کر ایک طلاق کی تحریر لکھ دی، اس میں یہ مضمون درج کیا کہ جو کہ تیرا مہر ہے اُس میں تیرے بطن کے دونوں بچے تجھ کو مہر میں دئے۔ اور حمل سے بھی تھی، بعد طلاق کے لڑکی بھی پیدا ہوئی، وزیر خاں فوت ہو گیا، بعد عدت کے اس عورت نے نکاح ثانی کر لیا، اب یہ اس وقت بالکل بچے بالغ ہیں اور آوارہ ہیں، سو یہ لڑکے جدی حق پانے کے حقدار ہیں یا نہیں۔

الجواب: دونوں لڑکے اور وہ لڑکی اپنے باپ کے مال میں حصہ پائیں گے اور طلاق شدہ اگرچہ حصہ نہ پائے گی مگر مہر کی مستحق ہے، اور وہ جو کہہ دیا تھا کہ دونوں بیٹے تیرے مہر میں دئے فضول تھا اس سے مہر ادا نہیں ہوتا، ہاں اگر عورت نے یہ کہہ دیا ہو کہ دونوں بیٹے میرے دو میں نے مہر چھوڑا، تو مہر نہ پائے گی۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۵۹: از کریلی گنج ضلع نرسنگ پور ڈاک خانہ و تحصیل نرسنگ پور مسئولہ الہ بخش صاحب ۱۶ محرم ۱۳۳۹ھ زید اپنی عورت ہندہ کو عرصہ تقریباً پانچ سال سے علیحدہ کئے ہوئے ہے، ہندہ کے ماں باپ اس عرصہ مذکورہ میں چند مرتبہ اپنی لڑکی کو زید کے گھر چھوڑ آئے لیکن بوجہ عدم توجہی زید، زید کے ماں بہن ہندہ کے اقسام اقسام کی تکلیفیں دیتے ہیں جو اس سے

برداشت نہیں ہو سکتیں، مزید برآں نان نفقہ کی بھی کفالت نہیں کرتا، نہ اس کو رخصت دیتا کہ وہ اپنا دوسرا تدارک کرے اور مہر ہندہ زر مہر کچہری سے پانے کی مستحق ہو سکتی ہے یا نہیں اور اپنے نفس کو اس سے علیحدہ کر سکتی ہے یا نہیں؟ کیونکہ زید کی نیت صرف اس کو اور اس کے ماں باپ کو اذیت پہنچانی ہے، ورنہ اس کا وجہ کفاف ایسا ہے کہ وہ اپنی زوجہ متوسط حالت پر نان نفقہ کی کافی طور پر امداد پہنچا سکتا ہے، اس لئے عرض ہے کہ موافق شرع شریف جو ہندہ کے حق میں انسب ہو اس سے ابلاغ فرمایا جائے۔

Fatawa Rizvia Volume 12

The Answer: If the dower (Mahr) is indeed prompt (Mu'ajjal), the wife (Hindah) can demand it at any time. If the husband (Zaid) does not pay, she can recover it through a lawsuit. Until she receives it, Hindah has the right to withhold herself from Zaid and not go to his house. Because of this withholding, Hindah's maintenance (Nan-o-Nafaqah) will not be waived from Zaid.

[Arabic Quote]: Since she withheld herself for her right, she is not considered disobedient (Nashiza). This ruling is mentioned in Al-Durr al-Mukhtar among other books. (T) [Urdu Translation]: Because the wife has withheld from the husband for her right, she will not be disobedient, and this ruling is in Durr al-Mukhtar etc. (T)

However, it is impossible for Hindah to marry another person without a divorce or the death of her husband and the completion of the waiting period (Iddat). Allah Almighty says: "And [forbidden to you are] married women..." (Married women are forbidden for you. -T) And Allah Almighty knows best.

Problem 60: From the city, Rahampur neighborhood, questioned by Haji Shah Muhammad alias Kamal Allah Shah Sahib, 26 Muharram al-Haram 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter? The state of the dower of Musammat Masooman, wife of La'l Muhammad, has become known such that she herself says her dower is 110 rupees. The lawyer and witnesses of the marriage of the said woman have passed away; none are alive. She has four paternal cousin sisters, the amount of dower for three of whom is unknown; everyone says it was according to the Prophetic Sharia (Sunnah). For one paternal cousin sister, who is the wife of a person named Natthe, the dower is known to be 500 rupees. In such a situation, what dower will be established for Musammat Masooman?

The Answer: Since the woman states her dower is 110 rupees, and more than that has been fixed in her family, and there is no evidence to the contrary, she should be put under oath. If she swears that her dower was fixed at 110 rupees, then 110 should be awarded. It is mentioned in Alamgiri:

[Arabic Quote]: If a woman claims after her husband's death that he owed her a thousand dirhams from her dower, her statement is accepted up to the amount of customary dower (Mahr al-Mithl). [A thousand] [Urdu Translation]: If after the death of the husband, the wife claimed that a thousand dirhams of her dower are due from

him, then her statement will be acceptable up to the limit of customary dower (Mahr al-Mithl). - Muhit al-Sarakhsi

1 Quran 4/24 Page 182 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

उत्तर: मेहर यदि वास्तव में मुअज्जल (तुरंत देय) है, तो हिंदा किसी भी समय इसकी मांग कर सकती है। यदि जैद भुगतान नहीं करता है, तो वह कानूनी कार्रवाई के माध्यम से इसे प्राप्त कर सकती है। जब तक उसे यह प्राप्त नहीं होता, हिंदा को अधिकार है कि वह स्वयं को जैद से रोके और उसके घर न जाए। इस रोकने के कारण जैद पर हिंदा का भरण-पोषण (नान-नफ़क़ा) समाप्त नहीं होगा।

[अरबी उद्धरण]: चूँकि उसने अपने अधिकार के लिए मना किया है, इसलिए वह नाशिज़ा (अवज्ञाकारी) नहीं होगी। यह मसला अल-दुर्र अल-मुख्तार आदि किताबों में वर्णित है। (त) [उर्दू अनुवाद]: क्योंकि पत्नी ने अपने अधिकार के लिए पति को मना किया है इसलिए वह नाफरमान नहीं होगी, और मसला दुर-ए-मुख्तार वगैरह में है। (त)

हाँ, यह असंभव है कि हिंदा तलाक या पति की मृत्यु और इद्दत की अवधि पूरी होने के बिना किसी अन्य से निकाह कर सके। अल्लाह तआला का इरशाद है: "और (तुम्हारे लिए हराम हैं) सुहागिन महिलाएँ.." (विवाहित स्त्रियाँ तुम पर हराम हैं। -त) और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला 60: शहर, मोहल्ला रहमपुर से, प्रार्थी हाजी शाह मोहम्मद उर्फ कमाल अल्लाह शाह साहिब, 26 मुहर्रम अल-हराम 1339 हिजरी। धार्मिक विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि मुसम्मात मासूमन, पत्नी लाल मोहम्मद के मेहर की स्थिति इस प्रकार ज्ञात हुई है कि वह स्वयं कहती है कि मेरा मेहर 110 रुपये है। उक्त महिला के निकाह के वकील और गवाह मर चुके हैं, कोई जीवित नहीं है। उसकी चार चचेरी बहनें हैं जिनमें से तीन के मेहर की राशि ज्ञात नहीं है, सब यही कहते हैं कि सुन्नत के अनुसार था। एक चचेरी बहन का मेहर 500 रुपये ज्ञात हुआ है जो कि नत्थे नामक व्यक्ति की पत्नी है। ऐसी स्थिति में मुसम्मात मासूमन का मेहर क्या तय किया जाएगा?

उत्तर: चूंकि महिला अपना मेहर 110 रुपये बताती है और उसके परिवार में इससे अधिक भी बांधा गया है और इसके विरुद्ध कोई गवाही नहीं है, तो उस पर इससे शपथ ली जाए। यदि वह शपथ लेकर कहती है कि मेरा मेहर 110 रुपये तय हुआ था, तो 110 रुपये दिलाए जाएंगे। आलमगीरी में है:

[अरबी उद्धरण]: यदि पति की मृत्यु के बाद पत्नी ने दावा किया कि उसके मेहर के एक हजार दिरहम पति के जिम्मे हैं, तो उसकी बात मेहर-ए-मिस्ल (समान मेहर) की सीमा तक स्वीकार्य होगी। [एक हजार] [उर्दू अनुवाद]: अगर खाविन्द के फौत हो जाने के बाद बीवी ने दावा किया कि मेरे मेहर के

हजार दरहम उसके जिम्मे हैं तो उसकी बात महर-ए-मिस्ल की हद तक काबिले कबूल होगी। - मुहीत अल-सरख़सी

1 कुरान 4/24 पृष्ठ 182 / 688

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

الجواب: مہر اگر واقعی معجل بندھا ہے تو ہندہ ہر وقت اس کا مطالبہ کر سکتی ہے، زید نہ دے تو بذریعہ نالش وصول کرے، اور جب تک نہ ملے ہندہ کو اختیار ہے کہ اپنے نفس کو زید روکے اور اس کے گھر نہ جائے، اور اس روکنے کی وجہ سے ہندہ کا نان نفقہ زید سے ساقط نہ ہوگا۔

لانھا منعت بحق فلم تکن ناشزۃ والمسئلۃ فی الدر المختار من الاسفار۔ کیونکہ بیوی نے اپنے حق کے لئے خاوند کو منع کیا ہے لہذا نافرمان نہ ہوگی، اور مسئلہ در مختار وغیرہ میں ہے۔ (ت)

ہاں یہ ناممکن ہے کہ ہندہ بغیر طلاق یا موت شوہر وانقضائے عدت دوسرے سے نکاح کر سکے، قال تعالیٰ: وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ النِّسَاءِ (شادی شدہ عورتیں تم پر حرام ہیں۔ت) واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۶۰: از شہر محلہ رہمپور مسئولہ حاجی شاہ محمد عرف کمال اللہ شاہ صاحب ۲۶ محرم الحرام ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مسماۃ معصومن زوجہ لعل محمد کے مہر کا حال اس طرح معلوم ہوا ہے کہ وہ خود کہتی ہے کہ میرا ایک سو دس روپے کا مہر ہے اور وکیل و گواہ نکاح مسماۃ مذکورہ کے فوت ہو گئے کوئی زندہ نہیں ہے، اس کے چچازاد بہنیں چار ہیں جن میں سے تین کے مہر کی تعداد معلوم نہیں، سب یہی کہتے ہیں کہ شرع پیغمبری تھا اور ایک چچازاد بہن کا مہر مبلغ پانچسو روپے ہونا معلوم ہوا ہے جو کہ مسمی نتھے کی زوجہ ہے، ایسی صورت میں مسماۃ معصومن کا مہر کیا قائم کیا جائے گا؟

الجواب: جبکہ عورت ایک سو دس روپے اپنا مہر بتاتی ہے اور اس سے زائد بھی اس کے خاندان میں باندھا گیا ہے اور اس کے خلاف پر کوئی شہادت نہیں تو اس پر اس سے حلف لیا جائے، اگر

حلف سے کہہ دے کہ میرا مہر ایک سو دس روپے بندھا تھا تو ایک سو دس دلائے جائیں گے۔

عالمگیری میں ہے:

امرأة ادعت علی زوجها بعد موته ان لها علیہ الف درهم من مهرها فالقول قولها الی تمام مهر المثل

الف اگر خاوند کے فوت ہو جانے کے بعد بیوی نے دعوی کیا کہ میرے مہر کے ہزار درہم اس کے ذمہ ہیں تو اس کی بات مہر مثل کی حد تک قابل قبول ہوگی، محیط السرخسی

Fatawa Rizvia Volume 12

| Similarly in Muheet al-Sarakhsi. And Allah Almighty knows best. | It is like this in it. (T) And Allah Almighty knows best. |

Problem 61: From the city, Baharipur neighborhood, requested by Haji Kifayatullah Sahib, 9 Safar 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding the following matter? Hinda is very needy and homeless; apparently, she has no means of livelihood. Her brother Zaid does manual labor, and they both survive on that. Hinda's father-in-law, after his death, left a house of approximately one hundred and fifty square yards in area, which is now in ruins. He had two heirs: Hinda's husband and Hinda's elder brother-in-law (husband's brother). Hinda's brother-in-law gave his portion to his son. Now he wants to take possession of and sell the portion belonging to Hinda's husband, saying, "What right does Hinda have in this? Because my brother has been missing for nearly thirty years; he is likely dead as there has been no news of him for five or six years." And the law says that a claim for dower (Mahr) cannot be made after thirty years. A lawyer says, "File a claim for dower, you will get it," and advises that her claim will be valid if Hinda says, "You gave me the news of my husband's death only today; until now, I did not consider myself a widow; I thought he was alive. If you say now that he is dead, then I have the right to claim dower for up to three years from today." None of Hinda's relatives remember the exact amount of the dower; it must have been around forty years since the marriage. Hinda remembers well that her dower was 200 rupees, and she hears that her mother's and paternal aunt's dower was also 200 rupees, and now her nieces' and her brothers' [daughters'] dower is also 200 rupees. Now, to help her get her Sharia right based on Hinda's statements, would it be permissible to say, "Yes, it was 200 rupees," or not? If her right is obtained through their testimony, God willing, her life and death will become easier. At no point did Hinda's brother-in-law check on Hinda's condition. Clarify, and may you be rewarded.

The Answer: Since Hinda states the dower was 200 rupees and there are no witnesses from that time, if it is proven that this is her family's proper dower (Mahr-e-Mithl), then 200 rupees must be awarded. It will not be permissible for witnesses to testify that "The dower was fixed at 200 rupees in our presence"; rather, testifying that "Her proper dower (Mahr-e-Mithl) is 200 rupees" will be sufficient for her to get a decree. And Allah Almighty knows best.

[1] Fatawa Hindiyya, Chapter Twelve, Dispute between Spouses regarding Dower, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/322

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

| मुहीत अल-सरख़्सी में इसी तरह है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। | इसमें ऐसे ही है। (त) और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। |

मसला 61: शहर मोहल्ला बहरीपुर से, प्रार्थी हाजी किफ़ायतुल्लाह साहिब, 9 सफ़र 1339 हिजरी। दीन के उलमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि हिन्दा बहुत मोहताज और बेसहारा है, ज़ाहिर तौर पर रोज़ी का कोई ज़रिया नहीं रखती। उसका भाई ज़ैद मज़दूरी करके लाता है, उसी में दोनों का गुज़ारा होता है। हिन्दा के ससुर ने अपनी मौत के बाद तक़रीबन डेढ़ सौ गज़ का एक मकान छोड़ा जो अब टूट-फूट गया है। उसके दो वारिस हुए, हिन्दा का पति और हिन्दा का जेठ। हिन्दा के जेठ ने अपना हिस्सा अपने बेटे को दे दिया। अब वह हिन्दा के पति के हिस्से पर कब्ज़ा करके बेचना चाहता है और कहता है कि इसमें हिन्दा का क्या हक है क्योंकि मेरे भाई को गायब हुए तक़रीबन तीस साल हो गए हैं, शायद वह मर गया है क्योंकि पाँच-छह साल से उसकी कोई खबर नहीं है। और कानून कहता है कि तीस साल के बाद महर का दावा नहीं चल सकता। एक वकील कहता है कि महर का दावा करो, तुम्हें मिलेगा। वकील यह राय देता है कि तुम्हारा दावा इस सूरत में चलेगा कि हिन्दा कहे कि मेरे पति की मौत की खबर तुमने मुझे आज दी है, मैं अब तक खुद को विधवा नहीं जानती थी, मैं समझती थी कि वह ज़िंदा है। अगर अब तुम कहते हो कि वह मर गया है तो आज से तीन साल तक मुझे महर माँगने का हक है। हिन्दा के रिश्तेदारों में से किसी को महर की सही रकम याद नहीं है, इस निकाह को कमोबेश चालीस साल हो गए होंगे। हिन्दा को अच्छी तरह याद है कि उसका महर 200 रुपये था और वह सुनती है कि उसकी माँ और बुआ का महर भी 200 रुपये था, और अब उसकी भतीजियों और भाइयों की [बेटियों] का महर भी 200 रुपये है। अब हिन्दा की बातों पर उसे उसका शरई हक दिलाने के लिए यह कह देना जायज़ होगा या नहीं कि "हाँ, 200 रुपये था"? अगर इन लोगों की गवाही पर उसका हक इंशाअल्लाह तआला मिल जाएगा, तो उसका जीना और मरना आसान हो जाएगा। किसी भी वक़्त हिन्दा के जेठ ने हिन्दा की खबर नहीं ली कि वह किस हाल में है। बयान फ़रमाएँ और सवाब पाएँ।

जवाब: चूँकि हिन्दा 200 रुपये महर बयान करती है और उस वक़्त का कोई गवाह नहीं है, अगर यह साबित हो जाए कि यह उसका खानदानी महर-ए-मिस्ल (उचित महर) है, तो ज़रूर 200 रुपये दिलाए जाएँगे। गवाहों की यह गवाही जायज़ नहीं होगी कि "महर हमारे सामने 200 रुपये तय हुआ था",

बल्कि यह गवाही देना कि "उसका महर-ए-मिस्ल 200 रुपये है", यही गवाही उसकी डिक्री के लिए काफ़ी होगी। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

[1] फ़तावा हिन्दिया, अध्याय बारह, महर के बारे में पति-पत्नी का विवाद, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/322

مثلھا کذافی محیط السرخسی۔ واللہ تعالٰی اعلم | میں ایسے ہی ہے۔ (ت) واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۶۱: از شہر محلہ بہاری پور مسئولہ حاجی کفایت اللہ صاحب ۹ صفر ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین مسئلہ ذیل میں کہ ہندہ بہت محتاج ہے اور خانہ ویران، بظاہر کوئی حیلہ رزق نہیں رکھتی، اس کا بھائی زید مزدوری کر کے لاتا ہے اسمیں دونوں گزر کر لیتے ہیں، ہندہ کے خسر نے بعد اپنی موت کے ایک مکان تقریبًا ڈیڑھ سو گز وسعت کا چھوڑا جواب ٹوٹ پھوٹ گیا، اس کے دو ۲ وارث ہوئے، ہندہ کا اپنی شوہر اور دوسرا ہندہ کا جیٹھ، ہندہ کے جیٹھ نے اپنا حصہ اپنے لڑکے کو دے دیا، اب ہندہ کے شوہر کے حصے پر قبضہ کر کے بیچنا چاہتا ہے اور کہتا ہے کہ اس میں ہندہ کا کیا حق ہے اس واسطے کہ میرے بھائی کو غائب ہوئے تقریبًا تیس برس ہو گئے، غالبا مر گیا، کیونکہ پانچ چھ برس سے اس کی خبر نہیں، اور قانون کہتا ہے کہ تیس برس کے بعد دعوی مہر نہیں چل سکتا ہے اور وکیل کہتا ہے کہ دعوی مہر کرو تم کو ملے گا، اور وکیل یہ رائے دیتا ہے کہ تمہارا دعوی چلے گا اس صورت میں کہ ہندہ کہے میرے شوہر کے مرنے کی خبر تم نے مجھے آج دی ہے میں ابھی تک اپنے آپ کو بیوہ نہیں جانتی تھی میں جانتی تھی کہ وہ زندہ ہے اگر اب تم کہتے ہو کہ مر گیا تو آج سے تین برس تک مہر طلب کرنے کا مجھ کو حق ہے ہندہ کے عزیزوں میں سے کسی مہر کی تعداد یاد نہیں اس نکاح کو کم و بیش چالیس برس ہوئے ہوں گے ہندہ کو خوب یاد ہے کہ میرا مہر دوسو ۲۰۰ روپے تھا اور میں سنتی ہوں کہ میری والدہ اور پھوپھی کا مہر بھی دوسو ۲۰۰ روپے تھا اور اب میری بھتیجیوں اور میرے بھائیوں اور میرے بھائیوں کا مہر بھی دوسو ۲۰۰ روپے ہے اب ہندہ کے اقوال پر ان کا حق شرعی دلانے کے لئے یہ کہہ دینا جائز ہو گا یا نہیں کہ ہاں دوسو ۲۰۰ روپے کا تھا، ان کے لئے کچہری میں اس کا حق

شرعی دلانے کے لئے یہ کہہ دینا جائز ہو گا یا نہیں کہ ہاں دوسو ۲۰۰ روپے تھا، ان لوگوں کی گواہی پر اگر اس کا حق ان شاء اللہ تعالیٰ ملے گا تو اس کا جینا اور مرنا بآسانی ہو جائے گا کسی وقت ہندہ کے جیٹھ نے ہندہ کی خبر نہیں لی کہ وہ کس حالت میں ہے۔ بینوا توجروا

الجواب: ہندہ جبکہ دوسو ۲۰۰ روپے مہر بیان کرتی ہے اور اس وقت کا کوئی گواہ نہیں اور ثابت ہو کہ یہ اس کا خاندانی مہر مثل ہے تو ضرور دوسو ۲۰۰ روپے دلائے جائیں گے، گواہوں کی گواہی یہ جائز نہ ہو گی ہمارے سامنے دوسو ۲۰۰ روپے کا مہر بندھا تھا، بلکہ یہ گواہی دینا کہ اس کا مہر مثل دوسو ۲۰۰ روپے ہے، یہی گواہی اس کی ڈگری کے لئے کافی ہو گی۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

[1] فتاوی ہندیہ الفصل الثانی عشر اختلاف الزوجین فی المهر نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۲۲

Fatawa Rizwia, Volume 12

Question 62: From Hafizullah Khan, Tekore neighborhood, Chunar town, Chunar Post Office, District Mirzapur, 18 Jamadi al-Akhir. What do the scholars of the luminous religion and the jurists of the firm Sharia say on this issue: a man stayed away from home for a year and three months. Upon returning home, he found his wife was eight months pregnant. Consequently, the man is ready and willing to give a divorce. In such a situation, can the woman sue for dower (mahr) in a court of law after divorce? And is she legally entitled to receive the mahr according to Sharia? Please explain, may you be rewarded.

The Answer: His readiness for divorce for this reason is based purely on ignorance. In Sharia, the maximum duration of pregnancy is a full two years; a child can remain in the womb for this long. The identification by a midwife or others that it is an eight-month pregnancy is not reliable. In any case, if he gives a divorce, the mahr will be mandatory to pay. Even if the man's false suspicion is assumed to be correct (for the sake of argument), the woman is still entitled to mahr because, God forbid, mahr is not forfeited due to adultery. And Allah the Almighty knows best.

Question 63: 14 Sha'ban 1339 AH. What do the scholars of religion say on this issue: Zaid married a woman and then, during her lifetime, married her younger sister. Is the second marriage permissible or impermissible? Who will the children from both women belong to? Are they entitled to inherit Zaid's estate? And are both these women entitled to receive mahr?

The Answer: As long as a wife is in the bond of marriage or in iddat, marrying her sister is strictly forbidden (Haram Qat'i). Allah the Almighty says: "And that you gather two sisters together" (it is forbidden for you to join two sisters in marriage). Any children born from the second union are legally illegitimate but not 'children of zina' (adultery). It is not permissible to call them illegitimate in the sense of 'walad-uz-zina'. Until he touched the second sister, the first wife was lawful; children born from intimacy with the first wife until that point are legitimate. Children born from intimacy after that are also legally 'haram children' but not 'children of zina'. All children born to Zaid from both women will inherit Zaid's estate as lineage is established. However, the second wife will not receive inheritance as the marriage is invalid (fasid). Both women are entitled to mahr: the first one unconditionally, and the second one only if actual consummation occurred, as mere privacy (khalwat) is

not sufficient. Then she will receive her full specified mahr, or mahr-e-mithl (customary dower), whichever is less. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

Quran Al-Karim 4/23 Page 184 of 688

फ़तावा रज़विया, खंड 12

मसला 62: हफीजुल्लाह खान साहब, मोहल्ला टिकोर, क़स्बा चुनार, पोस्ट ऑफिस चुनार, ज़िला मिर्ज़ापुर, 18 जमादी अल-आख़िर। दीन के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक व्यक्ति एक साल और तीन महीने परदेश रहा, उसके बाद जब अपने घर वापस आया तो पता चला कि उसकी बीवी आठ महीने की गर्भवती है। इस वजह से वह व्यक्ति तलाक देने के लिए तैयार है। ऐसी स्थिति में तलाक के बाद क्या वह औरत संबंधित न्यायालय में मेहर का दावा कर सकती है या नहीं? और क्या वह शरीयत के अनुसार मेहर पाने की हकदार है या नहीं? स्पष्ट करें, पुण्य पाएँ।

अल-जवाब: इस कारण से उसका तलाक पर तैयार होना महज़ अज्ञानता है। शरीयत में गर्भ की अवधि दो पूर्ण वर्ष है; बच्चा इतने समय तक पेट में रह सकता है। दाई आदि की यह पहचान कि आठ महीने का गर्भ है, विश्वसनीय नहीं है। बहरहाल, अगर वह तलाक देगा तो मेहर देना अनिवार्य होगा। और अगर पुरुष की झूठी बदगुमानी को (तर्क के लिए) सही मान लिया जाए, तब भी औरत मेहर की हकदार है क्योंकि (अल्लाह न करे) ज़िना (व्यभिचार) से मेहर समाप्त नहीं होता। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 63: 14 शाबान 1339 हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद ने एक औरत से निकाह किया और उसकी मौजूदगी में उसकी छोटी बहन से निकाह कर लिया। दूसरा निकाह जायज़ है या नाजायज़? और इन दोनों औरतों से जो संतान होगी वह किसकी होगी? और क्या वे ज़ैद की विरासत पाने के हकदार हैं? और क्या ये दोनों औरतें मेहर पाने की हकदार हैं या नहीं?

अल-जवाब: जब तक पत्नी वैवाहिक संबंध में या इद्दत में है, उसकी बहन से निकाह पूर्णतः हराम है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: "और यह कि तुम दो बहनों को (निकाह में) जमा करो" (तुम पर हराम है)। इससे जो संतान होगी वह शरीयत के अनुसार 'औलाद-ए-हराम' है लेकिन 'वलद-उल-ज़िना' नहीं। उसे वलद-उल-ज़िना के अर्थ में हराम औलाद कहना जायज़ नहीं है। जब तक उसने दूसरी बहन को छुआ नहीं था, पहली हलाल थी; उस समय तक पहली पत्नी से जो संतान हुई वह हलाल औलाद है। बाद के संभोग से जो संतान हो वह भी शरीयत के अनुसार हराम औलाद है लेकिन वलद-उल-ज़िना नहीं। दोनों औरतों की सभी संतानें ज़ैद की वारिस होंगी क्योंकि उनका वंश (नसब) प्रमाणित है। हाँ, दूसरी पत्नी विरासत नहीं पाएगी क्योंकि निकाह फासिद (अमान्य) है। दोनों औरतें

मेहर की हकदार हैं: पहली बिना शर्त, और दूसरी उस स्थिति में जब वास्तव में संभोग हुआ हो, केवल एकांत (खलवत) पर्याप्त नहीं है। फिर वह अपना पूरा मेहर पाएगी और दूसरी 'मेहर-ए-मिसल', और उन दोनों में से जो कम होगा वह पाएगी। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

अल-क़ुरान अल-करीम 4/23 पृष्ठ 184/688

فتاویٰ رضویہ، جلد دو از دہم

مسئلہ ۶۲: حفیظ اللہ خاں صاحب محلہ ٹیکور قصبہ چنار پوسٹ آفس چنار ضلع مرزا پور ۱۸ جمادی الاخر۔ کیا فرماتے ہیں علمائے دین مبین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص سال بھر اور تین ماہ پردیس رہا بعدہ جب اپنے مکان پر واپس آیا تو معلوم ہوا کہ اس کی بیوی کو آٹھ مہینے کا حمل ہے موقع سے وہ شخص مذکورہ طلاق دینے پر آمادہ و تیار ہے ایسی حالت میں بعد طلاق کے وہ عورت کچہری مجاز میں مہر کا دعویٰ کر سکتی ہے یا نہیں؟ اور شرعاً مہر پانے کی مستحق ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: اس وجہ سے اُس کا طلاق پر آمادہ ہونا محض ناواقفی ہے، شریعت میں حمل کی مدت دو برس کامل ہے اتنی مدت تک بچہ پیٹ میں رہ سکتا ہے اور دایہ وغیرہ کی یہ شناخت کہ آٹھ مہینے کا ہے کچھ معتبر نہیں، بہر حال اگر طلاق دے گا مہر واجب الادا ہوگا، اور اگر مرد کی جھوٹی بدگمانی بالفرض صحیح ہو جب بھی عورت مہر کی مستحق ہے کہ معاذ اللہ زنا سے مہر ساقط نہیں ہوتا، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۶۳: ۱۴ شعبان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے ایک عورت کے ساتھ نکاح کیا اور اس کی حیات میں اس کی چھوٹی بہن کے ساتھ نکاح کیا، نکاحِ دوم جائز ہے یا ناجائز؟ اور ان دونوں عورتوں سے جو اولاد ہوگی وہ کسی ہو گی؟ اور زید کا متروکہ پانے کی مستحق ہے یا نہیں؟ اور یہ نہیں دونوں عورتوں مہر پانے کی مستحق ہیں یا نہیں؟

الجواب: زوجہ جب تک زوجیت یا عدت میں ہے اس کی بہن سے نکاح حرام قطعی ہے، قال تعالیٰ: وَ اَنْ تَجْمَعُوْا بَیْنَ الْاُخْتَیْنِ (حرام ہے کہ تم دو بہنوں کو نکاح میں جمع کرو ت) اس سے جو اولاد

ہوگی شرعاً اولادِ حرام ہے مگر ولد الزنا نہیں اسے ولد حرام بمعنی ولد الزنا کہنا جائز نہیں جب تک اس دوسری کو ہاتھ نہ لگایا تھا پہلی حلال تھی اس وقت تک کے جماع سے جو اولاد پہلی سے ہوئی ولد حلال ہے اور بعد کے جماع سے جو اولاد ہو وہ بھی شرعاً اولادِ حرام ہے مگر ولد الزنا نہیں، دونوں عورتوں کی سب اولادیں کہ زید ہوئیں زید کا ترکہ پائیں گی کہ نسب ثابت ہے، ہاں زوجہ ثانی ترکہ نہ پائے گی کہ نکاح فاسد سے ہے، دونوں عورتیں مہر کی مستحق ہیں پہلی مطلقاً اور دوسری اس صورت میں کہ حقیقۃً اس سے جماع کیا ہو فقط خلوت کافی نہیں، پھر اپنا پورا مہر پائے گی اور دوسری مہر مثل، اور جو مہر بندھا تھا ان دونوں میں سے جو کم وہ پائے گی، در مختار میں ہے:

Fatawa Rizwia Volume 12

Proper dower (Mahr al-Mithl) is mandatory in an irregular (fasid) marriage. An irregular marriage is one in which a condition for the validity of the marriage is missing, such as the absence of witnesses. Likewise, marrying two sisters simultaneously or marrying a sister during the waiting period ('iddah) of another sister falls under this category. In an irregular marriage, proper dower is mandatory only upon consummation (intercourse) and not by anything else, such as seclusion (khalwah). This proper dower shall not exceed the specified dower because of the woman's consent to a lower amount, and even if the proper dower is less than the specified dower, the proper dower itself will be mandatory. (T)

In 'Hidayah', chapter on Marriage of Slaves, it is stated: Some objectives are achieved in an irregular marriage, such as lineage (nasab), the obligation of dower (mahr), and the waiting period ('iddah). (T)

In 'Durr al-Mukhtar', it is stated: Entitlement to inheritance arises from a valid marriage; therefore, there is no mutual inheritance in an irregular or void marriage by consensus (ijma). And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 64: From Rampur, Madrasa Anwar-ul-Uloom, questioned by Jalal-ud-Din Pathan, 16 Sha'ban 1339 AH. What do the scholars of the religion and muftis of the firm Shariah say about this matter: the female claimant, Hindah, proved through her witnesses that her dower was 100,000 rupees; the second party produced evidence through witnesses that Hindah's dower was 10,000 rupees. In the questioned scenario, will the witnesses for the lower dower amount be credible or those for the higher amount?

Footnotes: 1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Mahr, Mujtabai Press, Delhi, 1/201. 2. Radd al-Muhtar, Chapter on Mahr, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/35. 3. Durr al-Mukhtar, Chapter on Mahr, Mujtabai Press, Delhi, 1/201. 4. Hidayah, Chapter on Marriage of Slaves, Maktaba Arabiyya, Karachi, 1/320. 5. Durr al-Mukhtar, Book of Inheritance (Al-Fara'id), Mujtabai Press, Delhi, 4/352.

फ़तावा रिज़विया जिल्द बारहवीं

निकाहे फासिद (अनियमित निकाह) में महर-ए-मिस्ल (उचित महर) वाजिब होता है। निकाहे फासिद वह है जिसमें निकाह की वैधता की कोई शर्त न हो, जैसे गवाह न होना। इसी तरह दो बहनों से एक साथ निकाह करना, या एक बहन की इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) में दूसरी से निकाह करना भी इसी में आता है। निकाहे फासिद में महर-ए-मिस्ल वाजिब होता है और यह केवल समागम (संभोग) से वाजिब होता है, किसी और चीज़ से नहीं, जैसे कि खलवत (एकांत) से। यह महर-ए-मिस्ल तयशुदा महर से अधिक नहीं होगा क्योंकि औरत कम पर राज़ी हो गई थी, और यदि महर-ए-मिस्ल तयशुदा महर से कम हो तो भी महर-ए-मिस्ल ही अनिवार्य होगा। (त)

'हिदाया', दास के निकाह का अध्याय में है: निकाहे फासिद में कुछ उद्देश्य पूरे हो जाते हैं, जैसे कि नसब (वंश), महर का वाजिब होना और इद्दत। (त)

'दुर्रे मुख़्तार' में है: विरासत का अधिकार सही निकाह से होता है, इसलिए फासिद या बातिल निकाह से सर्वसम्मति (इज्मा) के अनुसार विरासत का अधिकार नहीं होगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला ६४: रामपुर, मदरसा अनवारुल उलूम से, मुस्तौ़ला जलालुद्दीन पठान, १६ शाबान १३३९ हिजरी। धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या कहते हैं: हिंदा नाम की दावेदार ने अपने गवाहों से यह साबित किया कि उसका महर एक लाख रुपये था, दूसरे पक्ष ने गवाहों से यह सबूत पेश किया कि हिंदा का महर दस हज़ार रुपये था। पूछे गए मामले में, कम महर वाले गवाह विश्वसनीय होंगे या अधिक वाले?

पाद टिप्पणियाँ: 1. दुर्रे मुख़्तार, बाबुल महर, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, १/२०१। 2. रद्दुल मुहतार, बाबुल महर, दार अहयाउत्तुरसा अल-अरबी बैरूत, २/३५। 3. दुर्रे मुख़्तार, बाबुल महर, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, १/२०१। 4. हिदाया, बाबुन निकाहुर रक़ीक़, मकतबा अरबिया कराची, १/३२०। 5. दुर्रे मुख़्तार, किताबुल फराएज़, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, ४/३५२।

पृष्ठ १८५/६८८

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

يجب مهر المثل في نكاح فاسد وهو الذى فقد شرطا من شرائط الصحة كشهود (ومثله تزوج الاختين معا ونكاح الاخت في عدة الاخت اهـ ش) بالوطئ في القبل لابغيره كالخلوة ولم يزد على المسمى لرضاها بالخط ولو كان دون المسمى لرضاها مهر المثل 3 نکاحِ فاسد میں مہرِ مثل واجب ہوتا ہے، نکاحِ فاسد وہ ہے جس میں صحتِ نکاح کی کوئی شرط مفقود ہو جیسے گواہ نہ ہوں، اور اسی طرح ہے دو بہنوں سے اکھٹا نکاح کرنا، اور ایک بہن کی عدت میں دوسری سے نکاح کرنا اھـ ش) نکاحِ فاسد میں مہرِ مثل واجب ہوتا ہے اور صرف وطی سے واجب ہوتا ہے کسی اور چیز سے نہیں مثلاً خلوت سے نہیں اور یہ مہرِ مثل، مقررہ سے زائد نہ ہوگا بسبب راضی ہو جانے عورت کے کئی مہر پر اور اگر مہرِ مثل کم ہو مہرِ مسمّٰی سے تو بھی مہرِ مثل ہی لازم آئے گا۔ (ت)

ھدایہ باب النکاح الرقیق میں ہے: بعض المقاصد في النكاح الفاسد حاصل كالنسب ووجوب المهر والعدة 4 بعض مقاصدِ نکاحِ فاسد میں حاصل ہوجاتے ہیں، جیسا کہ نسب، وجوبِ مہر اور عدت (ت)

درمختار میں ہے: يستحق الارث بنكاح صحيح فلاتوارث بفاسد ولا باطل اجماعاً والله تعالى اعلم 5 وارث کا استحقاق صحیح سے ہوتا ہے لہٰذا فاسد یا باطل نکاح سے وراثت کا استحقاق بالا جماع نہ ہوگا۔ (ت) واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۶۴: از رامپور مدرسہ انوار العلوم مسئولہ جلال الدین پٹھان ۱۶ شعبان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ ہندہ مدعیہ نے اپنے گواہان سے یہ ثابت کیا کہ میرا دین مہر ایک لاکھ روپے کا تھا، فریق ثانی نے گواہان سے اس امر کا ثبوت پیش کیا کہ ہندہ کا دین مہر دس ہزار روپے کا تھا، صورت مسئولہ میں گواہان کمی مہر کے معتبر ہوں گے یا زیادتی

1 درمختار باب المهر مطبع مجتبائی دہلی ۲۰۱/۱ 2 رد المحتار باب المهر دار احياء التراث العربي بيروت ۳۵/۲ 3 درمختار باب المهر مطبع مجتبائی دہلی ۲۰۱/۱ 4 هدايه باب نكاح الرقيق مكتبه عربيه كراچی ۳۲۰/۱ 5 درمختار كتاب الفرائض مطبع مجتبائی دہلی ۳۵۲/۴

Fatawa Razawiya, Volume Twelve

Request for a ruling and be rewarded:

The Answer:

If the husband is alive and the marriage is intact, or if divorce occurred after seclusion (khulwat), or if the husband died and the woman's dispute is with his heirs —in all these scenarios, it shall be examined whether the woman's customary dowry (Mahr-e-Mithl) is ten thousand or less, or one lakh or more, or more than ten thousand but less than one lakh. In the first case, the woman's witnesses are considered credible and a decree for one lakh rupees will be issued. In the second case, the witnesses of the second party are considered credible and ten thousand will be granted. In the third case, a decree will be issued for the amount of the customary dowry. All of this applies when the witnesses of both parties are acceptable under Sharia and have testified according to Sharia principles. If only one party has such witnesses, they will be trusted absolutely, whether the amount is one lakh or ten thousand; the testimony of the other party will be null and void. If the testimony of both parties is legally null and void, then in the first case, an oath will be taken from the husband's side that the dowry was not fixed at one lakh rupees; if he refuses to take the oath before the judge, a decree for one lakh will be issued. If she (the wife) refuses the oath, she will receive ten thousand, and if she takes the oath, she will receive one lakh. In the third case, both will take an oath and the customary dowry will be granted. If there is a dispute between husband and wife after divorce but before seclusion, the husband's statement under oath is absolutely credible. Similarly, if a dispute arises among the heirs of the couple after their death, the statement of the husband's heirs is absolutely credible. It is stated in Durr-ul-Mukhtar:

[Table Content] (If they differ) regarding the dowry (in its amount during the subsistence of the marriage, the statement belongs to the one whom the customary dowry [Mahr-e-Mithl] supports) with his oath (and whichever of them establishes proof, it is accepted) whether (the proof is for him or for her. If both establish proof, then her proof) is preferred (if it supports him, and his proof is preferred if it supports her. If there is a conflict between them, they both take an oath. If they both take an oath or provide proof, judgment is passed accordingly, and if only one of them provides proof, it is accepted).

[Urdu Explanation on Right Side] During the marriage, if the husband and wife disagree on the amount of the dowry (the decision will be based on the customary dowry [Mahr-e-Mithl]). Therefore, the one whom the customary dowry supports, their statement will be accepted after taking an oath. And whoever presents witnesses, their testimony will be accepted. Whether the customary dowry supports the wife or the husband or neither, the testimony will be accepted in every case. If the customary dowry supports the husband, priority is given to the husband's testimony...

फतावा रज़विया, जिल्द बारहवीं

ब्यान करें और पुण्य कमायें:

उत्तर:

यदि पति जीवित है और निकाह कायम है, या खल्वत (एकांतवास) के बाद तलाक हुआ है, या पति की मृत्यु हो गई और महिला का विवाद उसके वारिसों के साथ है—इन सभी स्थितियों में यह देखा जाएगा कि महिला का 'महर-ए-मिसल' (प्रचलित महर) दस हज़ार या उससे कम है, या एक लाख या उससे अधिक है, या दस हज़ार से ज़्यादा और एक लाख से कम है। पहली स्थिति में, महिला के गवाह विश्वसनीय हैं और एक लाख रुपये की डिक्री (आदेश) होगी। दूसरी स्थिति में, दूसरे पक्ष के गवाह विश्वसनीय हैं और दस हज़ार दिलाए जाएँगे। तीसरी स्थिति में, जितना महर-ए-मिसल है, उतने की डिक्री दी जाएगी। यह सब उस स्थिति में है जब दोनों पक्षों के गवाह शरीयत के अनुसार स्वीकार्य हों और शरीयत के नियमों के अनुसार गवाही दी हो। और यदि उनमें से केवल एक ही पक्ष के गवाह ऐसे हों, तो उनका ही पूर्ण रूप से विचार किया जाएगा चाहे वे लाख के लिए हों या दस हज़ार के लिए, दूसरे पक्ष की गवाही शून्य मानी जाएगी। और यदि दोनों पक्षों की गवाही शरीयत के अनुसार शून्य हो जाए, तो पहली स्थिति में पति के पक्ष से शपथ ली जाएगी कि एक लाख रुपये महर तय नहीं हुआ था। यदि वह काज़ी के समक्ष शपथ लेने से मना कर देगा तो एक लाख की डिक्री होगी। यदि वह (पत्नी) शपथ से मना कर देगी तो दस हज़ार पाएगी, और यदि शपथ ले लेगी तो एक लाख। तीसरी स्थिति में दोनों शपथ लेंगे और महर-ए-मिसल दिलाया जाएगा। यदि पति-पत्नी के बीच तलाक के बाद लेकिन खल्वत से पहले विवाद हो, तो शपथ के साथ पति का कथन पूर्णतः विश्वसनीय है। इसी प्रकार, दोनों की मृत्यु के बाद यदि उनके वारिसों में विवाद हो, तो पति के वारिसों का कथन पूर्णतः विश्वसनीय है। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

[कोष्ठक का विवरण] (यदि वे मतभेद करें) महर के बारे में (निकाह कायम रहने के दौरान उसकी मात्रा में, तो बात उसकी मानी जाएगी जिसके पक्ष में महर-ए-मिसल गवाही दे) उसकी शपथ के साथ। (और जिसने भी प्रमाण पेश किया वह स्वीकार्य होगा) चाहे (गवाही उसके लिए हो या उसके लिए। यदि दोनों ने प्रमाण पेश किए, तो महिला का प्रमाण) प्राथमिकता पाएगा (यदि वह पति के पक्ष में गवाही दे, और पति का प्रमाण यदि वह महिला के पक्ष में गवाही दे। और यदि उनके बीच परस्पर

विरोध हो तो दोनों शपथ लेंगे। फिर यदि वे शपथ लें या प्रमाण दें तो उसके अनुसार निर्णय दिया जाएगा और यदि उनमें से एक ने प्रमाण दिया तो वह स्वीकार किया जाएगा)।

[उर्दू स्पष्टीकरण का हिंदी अनुवाद] निकाह के दौरान अगर पति-पत्नी का महर की मात्रा में विवाद हुआ (तो महर-ए-मिसल के आधार पर फैसला होगा)। इसलिए महर-ए-मिसल जिसकी पुष्टि करेगा, शपथ लेने के बाद उसकी बात स्वीकार की जाएगी। और जिसने गवाह पेश किए, उसकी गवाही मान्य होगी। महर-ए-मिसल पत्नी या पति की पुष्टि करे या किसी की न करे, हर तरह से गवाही मान्य होगी। यदि महर-ए-मिसल पति की पुष्टि करे और पति की गवाही को प्राथमिकता...

पृष्ठ 186 / 688

کے بینواتوجروا الجواب: اگر شوہر زندہ اور نکاح قائم ہے یا طلاق بعد خلوت ہوئی یا شوہر مر گیا اور عورت کی نزاع اُس کے وارثوں سے ہے ان سب صورتوں میں دیکھا جائے کہ عورت کا مہر مثل دس ہزار خواہ کم ہے یا ایک لاکھ خواہ زائد یا دس ہزار سے زیادہ ایک لاکھ سے کم ہے ، پہلی صورت میں عورت کے گواہ معتبر ہیں لاکھ روپے کی ڈگری ہوگی۔ دوسری صورت میں فریق ثانی کے گواہ معتبر ہیں دس ہزار دلائے جائیں گے۔ تیسری صورت میں جتنا مہر مثل ہے اتنے کی ڈگری دیں گے۔ یہ سب اُس حال میں ہے کہ دونوں کے گواہ قابل قبول شرع ہوں اور وجہ شرع پر شہادت ادا کی ہو، اور اگر ان میں ایک ہی فریق کے گواہ ایسے ہیں تو مطلقاً انہوں کا اعتبار ہوگا خواہ لاکھ کے ہوں یا دس ہزار کے، دوسرے فریق کی شہادت کالعدم ہوگی، اور اگر دونوں فریق کی شہادت شرعاً کالعدم ہو تو پہلی صورت میں فریق شوہر سے حلف لیں گے کہ لاکھ روپے مہر نہ بندھا تھا اگر قاضی کے حضور حلف سے انکار کر دے گا لاکھ کی ڈگری ہوگی اور حلف سے انکار کر دے گی دس ہزار پائے گی اور حلف کرلے گی تو لاکھ، اور تیسری صورت میں دونوں حلف کر لیں گے مہر مثل دلایا جائیگا اگر زن و شو میں طلاق قبل خلوت کے بعد اختلاف ہوا تو مطلقاً قول شوہر حلف سے معتبر ہے۔ جس طرح بعد موت زوجین ان کے ورثہ میں اختلاف ہو تو مطلقاً وارثانِ شوہر کا قول معتبر ہے۔ درمختار میں ہے:

(ان اختلفا) في المهر (في قدره حال قيام النكاح فالقول لمن شهد له مهر المثل) بيمينه (واي اقام بينة قبلت) سواء (شهد له او لها اولوان اقاما فبينتها) مقدمة (ان شهد له وبينته ان شهد لها وان كان بينهما تحالفا فان حلفا او برهنا قضى به وان برهن احدهما قبل

نکاح کے دوران اگر خاوند بیوی کا مہر کی مقدار میں اختلاف ہوا (تو مہر مثل کی بنیاد پر فیصلہ ہوگا) لہٰذا مہر مثل جس کی تائید کرے گا اس کی بات قسم لے کر تسلیم کی جائے گی، اور جس نے گواہ پیش کر دئے تو اس کی گواہی مقبول ہوگی، مہر مثل بیوی یا خاوند کی تائید کرے یا کسی کی نہ کرے، ہر طرح گواہی مقبول ہوگی، اگر مہر مثل خاوند کی تائید کرے اور خاوند کی شہادت کو اولیت

Fatawa Razawiyya - Volume 12

[Proof] because it illuminates his claim. 1 (Summarized) I say: His statement "if it is between them" starts a new issue. He combined three previously mentioned cases: when no one produces witnesses, when one does, or when both do. He stated the rulings for all three cases and chose the opinion of Abu Bakr al-Razi, which was authenticated by Qadikhan in his commentary on "Al-Jami' al-Saghir" and by al-Saghnaqi in "Al-Nihayah". This was firmly stated in "Al-Multaqa" and prioritized in "Al-Hidayah", "Al-Tabyin", and others—that mutual swearing (Tahalluf) only occurs when the proper dowry (Mahr al-Mithl) falls between the claims of both parties. Thus, both objections of Allama Shami are dismissed. The first objection was that the author should have omitted "tahalufa" (they take mutual oaths), because when both provide witnesses, there is no swearing. The second objection was that his statement "if one of them provides proof" is redundant due to his previous statement "and whichever proof is established is accepted," etc. Indeed, greatness belongs to Allah for how skillfully the author handled this. Imam Karkhi's opinion is that both take oaths unconditionally, whether the proper dowry supports either of them or not. This was deemed correct in "Al-Mabsut" and "Al-Muhit" and was asserted in the chapter of Tahalluf in "Al-Kanz". I say, however, the first [opinion] is what's mentioned in "Al-Jami' al-Saghir" as stated in its commentary (Sh). Thus, it is preferred after weighing both authentications, contrary to what is in "Al-Bahr", which did not prefer either. Thus, we have relied on the first [opinion]. Success is with Allah.

[Urdu Column Text]: ...will be if the proper dowry supports the wife, and if the proper dowry is between them, meaning it supports neither, then oaths will be taken from both. Then if both take an oath or both provide witnesses, the judge will decide based on the proper dowry. And if only one provides testimony, the judge will decide based on his testimony because he has illuminated his claim. (Summarized)

I say: His statement "if it is between them" starts a new issue. In this, he combined the three mentioned situations: where no one provided witnesses, or one did, or both did. He stated the rulings for these three situations and chose the opinion of Abu Bakr al-Razi as preferred, which Qadikhan authenticated in the commentary of Jami' al-Saghir and Saghnaqi in Nihayah, and it was firmly stated in Multaqa, and prioritized in Hidaya and Tabyin etc. that when the proper dowry is between the claims of both, then both objections of Allama Shami are dismissed that the author was required to omit "tahalufa" (they took mutual oaths), because when both provided witnesses, then there will be no oath for both. And the second objection is

that his statement "if one of them provides proof" is made redundant by his first statement "and whichever proof is accepted" etc. So goodness is for the author from Allah Almighty, what mastery he showed. And Imam Karkhi's statement is that unconditionally both should take oaths, whether the proper dowry supports either of them or not; this was declared correct in Mabsut and Muhit, and in the chapter of Tahalluf in Kanz...

1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Dowry, Mujtabai Press Delhi, 1/3-202. Page 187 of 688

फतावा रज़विया - खंड 12

[प्रमाण] क्योंकि यह उसके दावे को स्पष्ट करता है। 1 (संक्षिप्त) मैं कहता हूँ: उनका कथन "यदि उनके बीच हो" से एक नया मुद्दा शुरू होता है। उन्होंने पहले उल्लेखित तीन स्थितियों को एकत्रित किया है: जब किसी ने गवाह पेश नहीं किए, या एक ने किए, या दोनों ने किए। उन्होंने तीनों स्थितियों के नियमों का वर्णन किया और अबू बक्र अल-राज़ी के मत को चुना जिसे क़ाज़ीख़ान ने "अल-जामी अल-सग़ीर" की व्याख्या में और सग़्नाक़ी ने "अल-निहाया" में सही माना है। इसे "अल-मुल्तक़ा" में दृढ़ता से कहा गया है और "अल-हिदाया", "अल-तब्यीन" आदि में प्राथमिकता दी गई है कि आपसी शपथ (तहल्लुफ़) केवल तभी होती है जब महरे मिस्ल (उचित मेहर) दोनों के दावों के बीच हो। इस प्रकार अल्लामा शामी के दोनों आपत्तियाँ समाप्त हो गईं। पहली आपत्ति यह थी कि लेखक के लिए "तहल्लुफ़ा" (आपसी शपथ लें) शब्द को हटाना आवश्यक था, क्योंकि जब दोनों गवाह पेश कर देते हैं, तो शपथ नहीं होगी। दूसरी आपत्ति यह कि उनका कथन "यदि उनमें से एक प्रमाण दे" उनके पिछले कथन "जो भी गवाह पेश हो स्वीकार है" आदि के कारण अनावश्यक है। वास्तव में अल्लाह ही के लिए लेखक की श्रेष्ठता है, उन्होंने क्या कुशलता दिखाई। और इमाम कर्ख़ी का मत है कि दोनों निरपेक्ष रूप से शपथ लें, चाहे महरे मिस्ल दोनों में से किसी का समर्थन करे या न करे। इसे "अल-मब्सूत" और "अल-मुहीत" में सही माना गया है और "अल-कन्ज़" के तहल्लुफ़ अध्याय में दृढ़ता से कहा गया है। मैं कहता हूँ कि पहला मत ही "अल-जामी अल-सग़ीर" में वर्णित है जैसा कि इसके भाष्य (श) में है। अतः दो प्रमाणों की तुलना के बाद इसे वरीयता दी गई, इसके विपरीत जो "अल-बहर" में है कि उसने किसी को वरीयता नहीं दी। इसलिए हमने पहले मत पर ही निर्भर किया है। सफलता अल्लाह की ओर से है।

[उर्दू कॉलम का पाठ]: ...होगी अगर मेहर-ए-मिस्ल पत्नी का समर्थन करे और मेहर-ए-मिस्ल दोनों के बीच हो यानी किसी का समर्थन न करे तो दोनों से शपथ ली जाएगी। फिर अगर दोनों ने शपथ ली या दोनों ने गवाह पेश किए तो क़ाज़ी मेहर-ए-मिस्ल का फ़ैसला करेगा। और अगर केवल एक ने गवाही पेश की तो क़ाज़ी उसकी गवाही पर फ़ैसला देगा क्योंकि उसने अपने दावे को रोशन कर दिया। (संक्षिप्त)

मैं कहता हूँ: उनका कथन "यदि उनके बीच हो" से नया मसला शुरू किया है। इसमें उन्होंने पहले उल्लेखित तीन स्थितियों को जमा किया है: कि किसी ने गवाह पेश नहीं किए, या एक ने किए, या दोनों ने किए। तो तीनों स्थितियों के हुक्म बयान किए और अबू बक्र राजी के कौल को मुख्तार बनाया

जिसे क़ाज़ी खान ने शरह जामे सगीर में और सग्नाक़ी ने निहाया में सही करार दिया है, और इस पर मुल्तक़ा में जज़्म किया है, और इसको हिदाया में और तब्यीन वगैरह में मुकद्दम रखा कि जब मेहर-ए-मिस्ल दोनों के दावों के दरमियान हो तो दोनों से अल्लामा शामी के दोनों एतराज साकित हो गए कि मुसन्निफ पर लाज़िम था कि वह "तहल्लुफ़ा" को हज़फ़ करते, क्योंकि जब दोनों ने गवाह पेश कर दिए तो अब दोनों पर शपथ नहीं होगी। और दूसरा यह एतराज कि उनका कौल "अगर उनमें से एक प्रमाण दे" उनके पहले कौल "जो भी गवाह पेश हो क़बूल है" से मुस्तग्नी करता है आदि। तो अल्लाह तआला के लिए ही मुसन्निफ की भलाई है, उन्होंने क्या महारत दिखाई। और इमाम कर्खी का कौल है कि मुतलकन दोनों क़सम दें, मेहर-ए-मिस्ल दोनों से किसी का समर्थन करे या न करे, इसको मब्सूत व मुहीत में सही करार दिया, और कन्ज़ के..

1. दुर्रे मुख्तार, बाब अल-मेहर, मुतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/3-202। पृष्ठ 187/688

برھانه) لانه نور دعواه ١اه (ملخصا) اقول: قوله وان كان بينهما مسئلة مستأنفة غير داخلة تحت قوله "وان اقاما" جمع فيه ما اذا برهن احدهما وكلاهما اولا احد - فبين احكام الصور الثلاث وقد اختار قول ابی بكر الرازی الذی صححه قاضيخان فی شرح الجامع الصغير و السغناقی فی النهاية وجزم به فی الملتقی وقد مه فی الهداية والتبيين وغيرهما ان لاتحالف الا اذا كان المهر بينهما فسقط كلا اعتراضی العلامة الشامی انه كان عليه حذف قوله "تحالفا" لانه اذا برهنا لا تحالف وان قوله "وان برهن احدهما" يغنی عنه قوله قبله وای اقام بينة قبلت الخ فللّٰه دره ما امهره، وقول الكرخي انهما يتحالفان مطلقا سواء شهد المهر له اولهما اولا وصححه فی المبسوط والمحيط وجزم به فی الكنز فی باب التحالف اقول لكن الاول هو المذكور فی الجامع الصغير كما فی ش فترجح به بعد تكافؤ التصحيحين خلافا لما فی البحر انه لم يرجمن رجح الاول فلذا جعلنا عليه المحول وباللّٰه التوفيق۔

ہوگی اگر مہر مثل بیوی کی تائی کرے اور مہر مثل دونوں کے مابین ہو یعنی کسی کی تائید نہ کرے تو دونوں سے قسم لی جائیگی پھر اگر دونوں نے قسم کھائی یا دونوں نے گواہ پیش کئے تو قاضی مہر مثل کا فیصلہ کرے اور اگر صرف ایک نے شہادت پیش کی تو قاضی اس کی شہادت پر فیصلہ دے کیونکہ اس نے اپنے دعوی کو روشن کر دیا اھ (ملخصاً) اقول: اس کا قول "ان كان بينهما" سے نیا مسئلہ شروع کیا ہے یہ پہلے مذکورہ انہوں نے تین صورتوں کو جمع کیا ہے کہ کسی نے گواہ پیش نہ کئے، یا ایک نے کئے، یا دونوں نے کئے، تو تینوں صورتوں کے احکام بیان کئے اور ابوبکر رازی کے قول کو مختار بنایا جس کو قاضی خان نے شرح جامع صغیر میں اور سغناقی نے نہایہ میں صحیح قرار دیا ہے، اور اس پر ملتقی میں جزم کیا ہے، اور اس کو ہدایہ میں اور تبیین وغیرہما میں مقدم رکھا کہ جب مہر مثل دونوں کے دعوؤں کے درمیان ہو تو دونوں سے

علامہ شامی کے دونوں اعتراض سقط ہو گئے کہ مصنف پر لازم تھا کہ وہ "تحالفا" کو حذف کرتے، کیونکہ جب دونوں نے گواہ پیش کردئے تو اب دونوں پر قسم نہیں ہوگی۔ اور دوسرا یہ اعتراض کہ اس کا قول "ان برھن احدھما" سے ان کا پہلا قول "وای بینۃ قبلت" مستغنی کرتا ہے الخ تو اللہ تعالیٰ کے لئے ہی مصنف کی بھلائی ہے انہوں نے کیا مہارت دکھائی۔ اور امام کرخی کا قول ہے کہ مطلقاً دونوں قسم دیں، مہر مثل دونوں سے کسی کی تائید کرے یا نہ کرے اس کو مبسوط و محیط میں صحیح قرار دیا، اور کنز کے

۱ درمختار باب المھر مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۳-۲۰۲ Page 187 of 688

Fatawa Razawiyya, Volume 12

In the chapter of Tahaluf (mutual oaths), it was firmly decided. I say: But the first opinion is mentioned in 'Jami-us-Saghir' as it is in 'Sha'. Thus, after both corrections are equal, it will become preferred. In 'Al-Bahr', it is contrary to this; the author found no one preferring the first opinion, so based on that, we have pointed it out. Success is from Allah. (T)

In Al-Badai' and Al-Hindiyyah: Arabic: If they differ after divorce after consummation or valid seclusion, it is like they differed while the marriage was standing. And if it was before consummation and seclusion and the dowry was a debt, and they differed between one thousand and two thousand, then the statement is the statement of the husband, and half of what the husband says is halved. He did not mention the disagreement; Al-Karkhi mentioned it and narrated a consensus. He said half of the thousand in their statement [1]. It was authenticated in Al-Badai' and Sharh Al-Tahawi and preferred in Al-Fath. Urdu: If the husband and wife disagreed after divorce when consummation or valid seclusion had occurred, the ruling is the same as the disagreement during the state of marriage. And if this disagreement occurred after divorce before consummation and seclusion, and the dowry was a debt, and there was a disagreement between one thousand and two thousand, then the statement of the husband is credible. Therefore, half of what the husband states should be given. He mentioned Al-Karkhi's statement and did not mention any disagreement; narrating the consensus, he said that in everyone's opinion, it would be half of a thousand [1]. This was called correct in Al-Badai' and Sharh Al-Tahawi, and preferred in Al-Fath. (T)

In Tabyin-ul-Haqa'iq and 'Alamgiriyyah it is written: Arabic: If the spouses die and a disagreement occurs among the heirs regarding the amount of the specified dowry, then the statement is the statement of the husband's heirs [2]. Urdu: If both husband and wife die and a dispute arises among their heirs regarding the fixed dowry, then the statement of the husband's heirs will be credible. (T)

In Radd-ul-Muhtar it is written: Arabic: Then what they admitted is binding on them (Al-Bahr). And judgment is not given according to the customary dowry (Mahr al-Mithl) because its consideration falls according to Abu Hanifa after their death (Ad-Durr) [3]. This is how it is in my copy: regarding the customary dowry. Urdu: Then it will be binding on them according to their admission (Al-Bahr). And the decision will not be given based on the customary dowry (Mahr al-Mithl) because, according to

Imam Abu Hanifah (may Allah be pleased with him), the consideration of Mahr al-Mithl ends after the death of both (Ad-Durr). And

[1] Fatawa Hindiyyah, Chapter 12: Disagreement between spouses regarding Mahr, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/321 [2] Fatawa Hindiyyah, Chapter 12: Disagreement between spouses regarding Mahr, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/321 [3] Radd-ul-Muhtar, Chapter on Mahr, Issues of disagreement regarding Mahr, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/362

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

बाब तहाल्लुफ़ (परस्पर शपथ) में इस पर फ़ैसला किया गया। मैं कहता हूँ: लेकिन पहला कौल 'जामि-उल-सगीर' में वर्णित है जैसा कि 'श' में है, तो दोनों शोधों के बराबर होने के बाद इसे वरीयता मिलेगी। 'बहर' में इसके विरुद्ध है, उन्हें पहले को वरीयता देने वाला कोई नहीं मिला, तो इसी आधार पर हमने इस पर संकेत कर दिया। सफलता अल्लाह की ओर से है। (त)

बदाइ और हिन्दिया में है: अरबी: अगर उन्होंने संभोग (दुख़ुल) या वैध एकांत (ख़लवत) के बाद तलाक़ के बाद मतभेद किया, तो यह वैसा ही है जैसे उन्होंने निकाह के दौरान मतभेद किया हो। और यदि यह संभोग और एकांत से पहले था और महर एक ऋण था, और उन्होंने एक हज़ार और दो हज़ार के बीच मतभेद किया, तो पति का कथन मान्य है, और पति जो कहता है उसका आधा आधा हो जाता है। उन्होंने मतभेद का उल्लेख नहीं किया; अल-करख़ी ने इसका उल्लेख किया और आम सहमति (इज्मा) का वर्णन किया। उन्होंने उनके कथन में हज़ार का आधा कहा [1]। इसे अल-बदाइ और शरह अल-तहावी में सही कहा गया और अल-फ़तह में वरीयता दी गई। उर्दू: अगर पति-पत्नी ने तलाक़ के बाद मतभेद किया जबकि संभोग या वैध एकांत हो चुका हो, तो हुक्म वही है जो निकाह की स्थिति में मतभेद का था। और अगर यह मतभेद बिना संभोग या एकांत के तलाक़ के बाद हुआ और महर ऋण था, तो एक हज़ार और दो हज़ार में मतभेद होने पर पति का कथन विश्वसनीय है। अतः पति द्वारा बताए गए का आधा दिया जाएगा। उन्होंने करख़ी का बयान उद्धृत किया और किसी मतभेद का ज़िक्र नहीं किया; इज्मा का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा कि सबके मत में एक हज़ार का आधा होगा [1]। इसे 'अल-बदाइ' और 'शरह अल-तहावी' में सही कहा गया और 'अल-फ़तह' में इसे वरीयता दी गई। (त)

तबयीन-उल-हक़ाइक और आलमगीरिया में है: अरबी: यदि पति-पत्नी की मृत्यु हो जाए और वारिसों के बीच निर्धारित महर की राशि को लेकर मतभेद हो, तो पति के वारिसों का कथन मान्य होगा [2]। उर्दू: अगर पति-पत्नी दोनों की मृत्यु हो जाए और उनके वारिसों के बीच निर्धारित महर के बारे में विवाद हो, तो पति के वारिसों का कथन विश्वसनीय होगा। (त)

रद्द-उल-मुहतार में है: अरबी: तो उन पर उनके इक़रार (स्वीकृति) के अनुसार अनिवार्य होगा (बहर)। और महर-ए-मिसल (प्रचलित महर) के अनुसार फ़ैसला नहीं दिया जाएगा क्योंकि इमाम अबू हनीफ़ा के अनुसार उनकी मृत्यु के बाद इसका विचार समाप्त हो जाता है (अद-दुर्र) [3]। मेरी प्रति में ऐसा ही

है: महर-ए-मिसल के बारे में। उर्दू: तो उन पर अपने इक़रार के अनुसार अनिवार्य होगा (बहर)। और महर-ए-मिसल पर फ़ैसला नहीं दिया जाएगा, क्योंकि इमाम अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) के यहाँ दोनों की मृत्यु के बाद महर-ए-मिसल का विचार समाप्त हो जाता है (दुर्र)। और

[1] फ़तावा हिन्दिया, अध्याय 12: महर के बारे में पति-पत्नी का मतभेद, नूरानी कुतुब ख़ाना, पेशावर, 1/321 [2] फ़तावा हिन्दिया, अध्याय 12: महर के बारे में पति-पत्नी का मतभेद, नूरानी कुतुब ख़ाना, पेशावर, 1/321 [3] रद्द-उल-मुहतार, महर का अध्याय, महर में मतभेद के मसले, दार इहया अत-तुरास अल-अरबी, बेरूत, 2/362

पृष्ठ 188 / 688

باب تحالف میں اس پر جزم کیا، اقول: لیکن پہلا قول: جامع صغیر میں مذکور ہے جیسا کہ ش میں ہے تو دونوں تصحیحات کے مساوی ہونے کے بعد ترجیح بن جائے گی۔ بحر میں اس کے خلاف ہے، انہوں نے پہلے کو ترجیح دینے والا کوئی نہ پایا، تو اسی بناء پر ہم نے اس پر نشان دہی کر دی، توفیق من جانب اللہ ہے۔ (ت)

بدائع و ہندیہ میں ہے: ولو اختلفا بعد الطلاق بعد الدخول او الخلوة فكما لو اختلفا حال قيام النكاح، وان كان قبل الدخول والخلوة والمهر دين فاختلفا في الالف والالفين فالقول قول الزوج ويتنصف ما يقول الزوج ولم يذكر الخلاف ذكره الكرخی وحكى الاجماع وقال نصف الالف في قولهم ١ھ وصححه في البدائع وشرح الطحاوي ورجحه في الفتح۔ اگر خاوند بیوی نے طلاق کے بعد اختلاف کیا جبکہ دخول یا خلوت ہو چکی تو حکم وہی ہے جو حالتِ نکاح میں اختلاف کا تھا، اور اگر یہ اختلاف طلاقِ قبل از دخول و خلوت کے بعد ہوا اور مہر دین ہوا تو ہزار اور دو ہزار میں اختلاف ہوا تو اس میں خاوند کا قول معتبر ہے، لہٰذا خاوند کے بیان کردہ کا نصف دیا جائے، اور انہوں نے کرخی کا بیان کر دی خلاف ذکر نہیں کیا اور اجماع کو حکایت کر کے یہ کہہ دیا کہ سب کے قول میں ہزار کا نصف ہوگا ١ھ اس کو بدائع میں اور شرح طحاوی میں صحیح کہا، اور فتح میں اس کو راجح قرار دیا۔ (ت)

تبیین الحقائق و عالمگیریہ میں ہے: فان مات الزوجان ووقع الاختلاف بين الورثة في مقدار المسمّٰى فالقول قول ورثہ الزوج ٢۔ اگر خاوند بیوی دونوں فوت ہو جائیں اور ان کے وارثوں میں مقرر مہر کے بارے میں اختلاف ہوا تو خاوند کے ورثاء کا قول معتبر ہوگا۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے: فیلزمھم ما اعترفوا بہ بحر، ولا یحکم بمھر المثل لان اعتبار ہ یسقط عند ابی حنیفہ بعد موتھما درر اھ ۳، کذا ھو في نسختي بمھر المثل تو ان پر اپنے اقرار کے مطابق لازم ہوگا، بحر۔ اور مہرِ مثل پر فیصلہ نہ دیا جائے گا، کیونکہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے ہاں دونوں کی فوتگی کے بعد مہرِ مثل کا اعتبار ختم ہو جاتا ہے، درر، اھ اور

۱ فتاوی ہندیہ الفصل الثانی عشر اختلاف الزوجین فی المھر نورانی کتب خانہ پشاور ۳۲۱/۱ ۲ فتاوی ہندیہ الفصل الثانی عشر اختلاف الزوجین فی المھر نورانی کتب خانہ پشاور ۳۲۱/۱ ۳ رد المحتار باب المھر مسائل الاختلاف فی المھر داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۶۲/۲

Fatawa Razawiya Volume 12

I say, and the better opinion is to omit the 'ba' (preposition). Allah knows best. In my copy, it is written as 'bi-mahr al-mithl' with the 'ba'. I say: it is better to omit the 'ba'. Allah knows best. (T)

Problem 65 to 66: From Jaroora state, Lal Imli, asked by Mumtaz Ali Khan Sahib, employee of the accounts department, 2 Shawwal 1336 AH.

What do the scholars of religion say regarding this matter: is dower (Mahr) mandatory for marriage, which is usually specified? Is it necessary for the dower to be prompt or deferred? If the woman wishes, can she obtain the entire dower as prompt payment, or according to her demand as a debt? The following explanation is sought:

(1) The definition of prompt dower (Mahr-e-Mu'ajjal) is that until the wife receives the prompt dower in full, she has the choice whether or not to go to the husband's house, or to speak with him or not. So, if the husband, through deceit, took back the jewelry he gave to the bride (Hinda) as part of the prompt dower after she entered the house, will the husband now be considered her debtor or not? And if the husband had given a written commitment to buy a house worth five hundred rupees (samaa) for the wife as part of the prompt dower, is Hinda now entitled to receive the prompt dower or not? If she is, should she go to the husband's house until she receives the prompt dower? If she has the choice, is she entitled to maintenance (naan-o-nafaqah) until the husband pays the prompt dower?

(b) When and for how long can a wife receive deferred dower (Mahr-e-Ghayr Mu'ajjal) after marriage and valid privacy (Khalwat-e-Sahiha)? Since no specific time is fixed for deferred dower, if she is entitled to receive the dower at any time after valid privacy, can she refuse to live in the husband's house until she receives that much of her dower? Clarify and be rewarded.

The Answer: Dower is mandatory for marriage in the sense that whether dower is mentioned in the marriage contract or not, even if a condition was made to negate the dower, dower will still be due. Specifying the dower is not necessary for the marriage; if it is not specified, 'Mahr al-Mithl' (proper dower) must be given. The dower fixed in marriage is of three types: Mu'ajjal (prompt), Mu'ajjal (short-term deferred), and Mu'akh-khar (long-term deferred).

Prompt dower (Mu'ajjal) is that which is agreed to be paid before departure (to the husband's house). The woman has the right not to go to the husband's place until she receives it in full, and she will not be deprived of maintenance because of this refusal. If a house worth five hundred (samaa) rupees was part of the fixed dower, Hinda can also withhold herself until its receipt. The jewelry given as part of the prompt dower counts as dower paid. If the husband then took it back by deception, the prompt dower does not become due from him again.

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

मैं कहता हूँ और बेहतर यही है कि 'बा' (अव्यय) को हटा दिया जाए - और अल्लाह ही सबसे बेहतर जानता है। मेरी प्रति में "बिमहर अल-मिसल" 'बा' के साथ है। मैं कहता हूँ: 'बा' को हटाना ही बेहतर है। अल्लाह ही सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसला 65 से 66: रियासत जरोरा, लाल इमली से मुमताज़ अली खां साहब, लेखा विभाग के कर्मचारी द्वारा पूछा गया, 2 शव्वाल 1336 हिजरी।

इस विषय में विद्वान क्या कहते हैं: क्या निकाह के लिए मेहर (दहेज) का होना अनिवार्य है जो आमतौर पर तय किया जाता है? क्या मेहर का नकद या उधार होना भी आवश्यक है? यदि स्त्री चाहे तो क्या वह पूरे मेहर को नकद की तरह या अपनी मांग या ऋण के रूप में प्राप्त कर सकती है? इसकी निम्नलिखित व्याख्या मांगी गई है:

(1) मेहर-ए-मुअज्ज्ल (त्वरित मेहर) की परिभाषा यह है कि जब तक पत्नी को पूरा मेहर प्राप्त न हो जाए, उसे यह अधिकार है कि वह पति के घर जाए या न जाए, उससे बातचीत करे या न करे। अत; यदि पति ने धोखे से वह गहने वापस ले लिए जो उसने निकाह के बाद दुल्हन (हिंदा) को त्वरित मेहर के हिस्से के रूप में दिए थे, तो क्या अब पति उसका ऋणी माना जाएगा या नहीं? और यदि पति ने त्वरित मेहर के हिस्से के रूप में पत्नी की इच्छानुसार पांच सौ रुपये (समा) का घर खरीद कर देने का लिखित वादा किया था, तो क्या हिंदा अब त्वरित मेहर पाने की हकदार है या नहीं? यदि है, तो क्या उसे त्वरित मेहर मिलने तक पति के घर जाना चाहिए? यदि उसके पास विकल्प है, तो क्या वह तब तक भोजन और भरण-पोषण (नान-ओ-नफ़क़ा) पा सकती है जब तक पति त्वरित मेहर का भुगतान नहीं कर देता?

(ख) निकाह और खलवत-ए-सहीहा (वैध एकांत) के बाद पत्नी मेहर-ए-गैर मुअज्ज्ल (आस्थगित मेहर) कब से कब तक पा सकती है? चूँकि आस्थगित मेहर के लिए कोई समय सीमा निर्धारित नहीं है, यदि वह खलवत-ए-सहीहा के बाद किसी भी समय मेहर पाने की हकदार है, तो क्या वह तब तक पति के घर रहने से मना कर सकती है जब तक उसे अपना उतना मेहर न मिल जाए? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: निकाह के लिए मेहर अनिवार्य है, इस अर्थ में कि निकाह में मेहर का उल्लेख हो या न हो, बल्कि यदि मेहर न देने की शर्त भी रखी गई हो, तब भी मेहर देना होगा। निकाह के लिए मेहर तय

करना आवश्यक नहीं है; यदि तय नहीं है, तो मेहर-ए-मिसल (उचित मेहर) देना होगा। निकाह में तय किया जाने वाला मेहर तीन प्रकार का होता है: मुअज्ज्ल (त्वरित), मुअज्ज्ल (अल्पकालिक आस्थगित), मुअक्खर (दीर्घकालिक आस्थगित)।

त्वरित मेहर (मुअज्ज्ल) वह है जिसे विदाई से पहले देना तय हो। स्त्री को अधिकार है कि जब तक उसे यह पूरा प्राप्त न हो जाए, वह पति के यहाँ न जाए, और इस न जाने के कारण वह भरण-पोषण से वंचित नहीं होगी। यदि पाँच सौ (समा) रुपये का मकान मेहर के रूप में तय हुआ था, तो हिंदा उसकी प्राप्ति तक भी स्वयं को रोक सकती है। त्वरित मेहर में जो गहने दिए गए थे, वे मेहर के रूप में अदा हो गए। अब यदि पति ने धोखा देकर उन्हें वापस ले लिया, तो त्वरित मेहर उसके जिम्मे दोबारा नहीं आएगा।

पृष्ठ 189 का 688

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

اقول والاولی اسقاط الباء - واللہ تعالیٰ اعلم۔ میرے پاس نسخہ میں "بمہر المثل" باء کے ساتھ ہے اقول : باء کو ساقط کرنا اولی ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۶۵ تا ۶۶: از ریاست جاورہ لال املی مسئولہ ممتاز علی خاں صاحب اہل کار محکمہ حساب ۲ شوال ۱۳۳۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ نکاح کے لئے مہر کا ہونا لازم ہے جو عموماً متعین ہوتا ہے مہر کی نقد ادھار بھی ضروری ہے اگر عورت چاہے تو کیا سب مہر کو مثل نقد یا مثل اپنے مطالبہ یا قرضہ کے حاصل کر سکتی ہے اس کی حسب ذیل تشریح فرمادی ہے:

(۱) مہر معجل کی یہ تعریف ہے کہ تا وقتیکہ زوجہ تمام و کمال معجل وصول نہ کرے اسے اختیار ہے کہ خواہ وہ زوج کے گھر جائے یا نہ جائے یا اس سے بات چیت کرے یا نہ کرے، پس اگر زوج نے دھوکے سے منجملہ مہر معجل جو زیور ہندہ کو دیا تھا وہ نکاح کے بعد دلہن گھر گئی واپس لے لیا پس اب زوج بھی اس کا مقروض سمجھا جائے گا یا نہیں اور زوج نے منجملہ مہر معجل کے پانچ سو روپیہ (صماء) کا مکان حسب منشاء زوجہ خود خرید کر دینے کا تحریری اقرار کیا تھا تو کیا ہندہ اب مہر معجل پانے کی مستحق ہے یا نہیں؟ اگر ہے تو کیا جب تک اسے مہر معجل نہ پہنچے اسے زوج کے گھر جانا چاہئے یا نہیں، اگر اسے اختیار ہے تو کیا جب تک شوہر مہر معجل ادا نہ کر دے وہ نان و نفقہ پا سکتی ہے یا نہیں؟

(ب) مہر غیر معجل نکاح اور خلوت صحیحہ کے بعد کب سے کب تک زوجہ پا سکتی ہے کیونکہ مہر غیر معجل کے لئے کوئی زمانہ مقرر نہیں، اگر بعد خلوت صحیحہ ہر وقت مہر پانے کی

مستحق ہے تو جب تک اپنا مہر اتنا نہ وصول کر لے زوج کے گھر رہنے سے انکار کر سکتی ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: نکاح کے لئے مہر لازم ہے بایں معنی کہ مہر کا ذکر نکاح میں ہو یا نہ ہو بلکہ مہر کی نفی شرط کر لی ہو جب بھی مہر دینا آئے گا تعیین مہر نکاح کے لئے کچھ ضرور نہیں، اگر تعیین نہ ہوگی مہر مثل دینا پڑے گا، مہر کہ نکاح میں مقرر کیا جاتا ہے تین قسم ہے : معجل، مؤجل، مؤخر۔

معجل وہ کہ قبل رخصت دینا قرار پائے۔ عورت کو اختیار ہے کہ جب تک اسے تمام و کمال وصول نہ کر لے شوہر کے یہاں نہ جائے، اور اس نہ جانے سے وہ نفقہ سے محروم نہ ہوگی، پانچ سو (صماء) روپیہ کا مکان اگر منجملہ مہر قرار پایا تھا تو اس کے وصول تک بھی ہندہ اپنے آپ کو روک سکتی ہے۔ زیورات جو مہر معجل میں دئے گئے تھے وہ مہر ادا ہو گیا، پھر اگر زوج نے دھوکا دے کر واپس لے لئے تو اس سے مہر معجل اس کے ذمہ عود نہ کرے گا

...and because of this, the woman will not have the authority to withhold herself, for the dower (mahr) had already been paid through jewelry in the woman's possession. Now, this is the woman's property that the husband has usurped; if it remains in its original state, returning it is mandatory, and if it is lost, he must provide compensation. Deferred dower (mahr mu'ajjal) is that for which a fixed period has been determined for its payment, such as after a year or ten years. Until that period has passed, the woman does not have the right to demand it; she may demand it once the period expires. And when the time comes, if the husband delays in paying, she cannot withhold herself, especially if she has already departed (moved into her husband's home). It is stated in Sharh al-Jami' al-Sagheer of Imam Qadikhan:

[Arabic]: "If the dower is deferred, she does not have the right to refuse [consummation] before the term expires, nor even after it. According to one opinion of Abu Yusuf, she has the right to refuse until the term is met, provided she has not yet had sexual relations." [Urdu text translation]: If the dower is deferred, the wife does not have the right to refuse before or after the set period expires. According to one opinion of Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on him), a woman with whom the marriage has not been consummated has the right to refuse until the set time arrives. (T)

In Durr-ul-Mukhtar: [Arabic]: "And the fatwa is given on this as a matter of juristic preference (istihsan) and [it is in] Al-Walajiyyah." [Urdu text translation]: Fatwa will be given on this based on istihsan and Al-Walajiyyah. (T)

In Radd-ul-Muhtar: [Arabic]: "In Al-Bahr from Al-Fath: All of this applies when consummation (dukhool) was not stipulated before the arrival of the term. If it was stipulated and she consented to it, then she does not have the right to refuse by consensus." [Urdu text translation]: From Al-Fath in Al-Bahr: This is the case when a condition for consummation before the end of the fixed term was not made. If such a condition was set and consummation occurred with the wife's consent, then there is a consensus that she does not have the right to refuse. (T)

In the marginal notes of the humble servant on Jadd-ul-Mukhtar, it says: [Arabic]: "I say: The custom of our lands is consummation before anything of it [the mahr] is paid. What is customary is like what is stipulated; therefore, she does not have the right to refuse." [Urdu text translation]: I say: The custom of our region is that consummation takes place before any part of the mahr is paid; so it is customary.

Footnotes: 1. Radd-ul-Muhtar, citing Sharh al-Jami’ al-Sagheer by Imam Qadikhan, Chapter on Mahr, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/350. 2. Durr-ul-Mukhtar, Chapter on Mahr, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/202. 3. Radd-ul-Muhtar, Chapter on Mahr, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/359.

...और इस कारण से स्त्री को स्वयं को रोकने का अधिकार नहीं होगा क्योंकि मेहर तो स्त्री के अधिकार वाले आभूषणों के माध्यम से अदा किया जा चुका था। अब यह स्त्री की संपत्ति है जिसे पति ने छीन लिया है। यदि वह अपने मूल रूप में सुरक्षित है, तो उसे लौटाना अनिवार्य है, और यदि वह नष्ट हो गई है, तो उसे उसका मुआवज़ा देना होगा। और आस्थगित मेहर (मेहर-ए-मुअज्जल) वह है जिसके भुगतान के लिए एक निश्चित समय सीमा तय की गई हो, जैसे एक वर्ष बाद या दस वर्ष बाद। जब तक वह समय सीमा बीत न जाए, स्त्री को माँग करने का अधिकार नहीं है; वह समय सीमा समाप्त होने के बाद माँग कर सकेगी। और समय आने पर यदि पति भुगतान में देरी करता है, तो वह स्वयं को नहीं रोक सकती, विशेष रूप से जब रुखसती हो चुकी हो। इमाम काज़ी ख़ाँ की 'शरह जामे सगीर' में है:

[अरबी]: "यदि मेहर मुअज्जल (आस्थगित) है, तो उसे अवधि समाप्त होने से पहले रोकने का अधिकार नहीं है, और न ही उसके बाद। इमाम अबू यूसुफ के एक कथन के अनुसार, यदि संभोग (दुखुल) नहीं हुआ है, तो उसे निर्धारित अवधि तक रोकने का अधिकार है।" [उर्दू पाठ अनुवाद]: यदि मेहर मुअज्जल हो तो निर्धारित समय समाप्त होने से पहले या बाद में पत्नी को मना करने का अधिकार नहीं है, और इमाम अबू यूसुफ रहमतुल्लाह अलैह के एक कथन के अनुसार गैर-मदखुल बहा (जिसके साथ संभोग न हुआ हो) को निर्धारित समय आने तक मना करने का हक है। (त)

'दुर्र-ए-मुख्तार' में है: [अरबी]: "और इसी पर इस्तेहसान के आधार पर फतवा दिया जाता है और वालजिया में भी ऐसा ही है।" [उर्दू पाठ अनुवाद]: इसी पर इस्तेहसान के आधार पर फतवा दिया जाएगा, और वालजिया (त)।

'रद्दुल मुहतार' में है: [अरबी]: "बहर में फतह के हवाले से: यह सब तब है जब निर्धारित अवधि से पहले संभोग (दुखुल) की शर्त न रखी गई हो। यदि ऐसी शर्त रखी गई थी और वह उस पर सहमत थी, तो सर्वसम्मति से उसे मना करने का अधिकार नहीं है।" [उर्दू पाठ अनुवाद]: बहर में फतह से है कि यह तब है जब निर्धारित अवधि पूरी होने से पहले संभोग की शर्त न लगाई गई हो और यदि यह शर्त लगाई गई हो और पत्नी की सहमति से संभोग हो चुका हो तो फिर सर्वसम्मति से उसे मना करने का हक नहीं है। (त)

इस पर 'जदुल मुख्तार' के हाशिये में फ़कीर (लेखक) कहता है: [अरबी]: "मैं कहता हूँ: हमारे क्षेत्रों की प्रथा (उर्फ़) यह है कि मेहर का कुछ भी भुगतान करने से पहले संभोग होता है। जो प्रथा में है वह शर्त के समान है, इसलिए उसे मना करने का अधिकार नहीं होगा।" [उर्दू पाठ अनुवाद]: मैं कहता हूँ: और हमारे क्षेत्र की प्रथा यह है कि मेहर का हिस्सा अदा करने से पहले संभोग होता है, तो वह ज्ञात है।

पाद टिप्पणियाँ: 1. रद्दुल मुहतार, शरह अल-जामे अल-सगीर इमाम काज़ीखान के हवाले से, अध्याय मेहर, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी बेरुत 2/350 2. दुर्र-ए-मुख्तार, अध्याय मेहर, मतबा मुजतबाई दिल्ली 1/202 3. रद्दुल मुहतार, अध्याय मेहर, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी बेरुत 3/359

اور اس کی وجہ سے عورت کو اپنے نفس کے روکنے کا اختیار نہ ہوگا کہ مہر تو زیور پر قبضہ زن سے ادا ہو لیا تھا، اب یہ عورت کا ایک مال ہے جو زوج نے غصب کر لیا، اگر بعینہ باقی ہے اس کا واپس دینا فرض ہے اور ہلاک ہو گیا تو اس کا تاوان دے۔ اور مہر مؤجل وہ جس کے ادا کی ایک میعاد معین قرار پائی ہو، مثلاً سال بھر بعد یا دس برس بعد، میعاد جب تک نہ گزرے عورت کو مطالبہ اختیار نہیں، بعد انقضائے میعاد مطالبہ کر سکے گی، اور میعاد آنے پر اگر شوہر دینے میں تاخیر کرے تو اس کے لئے اپنے نفس کو نہیں روک سکتی خصوصاً جبکہ رخصت ہو چکی ہو۔ شرح جامع صغیر امام قاضی خاں میں ہے :

[عربی متن]: لو کان المهر مؤجلا لیس لها المنع قبل حلول الاجل والا بعده وعلی قول ابي یوسف لها المنع الی استیفاء الاجل اذا لم یکن دخل بها۔ 1 اگر مہر مؤجل ہو تو مقررہ مدت ختم ہونے سے قبل یا بعد بیوی کو منع کا حق نہیں ہے، اور امام ابو یوسف رحمہ اللہ تعالیٰ کے ایک قول پر غیر مدخول بہا کو مدت مقررہ آنے تک بیوی کو منع حق ہے۔ (ت)

در مختار میں ہے: [عربی متن]: و به یفتی استحسانا والوالجیۃ۔ 2 اسی پر فتوی دیا جائے گا استحساناً، والوالجیۃ (ت)

رد المحتار میں ہے: [عربی متن]: وفی البحر عن الفتح هذا کله اذا لم یشترط الدخول قبل حلول الاجل فلو شرطہ ورضیت بہ لیس لها الامتناع اتفاقاً۔ 3 بحر میں فتح سے ہے یہ جب ہے کہ مقررہ مدت پوری ہونے سے قبل دخول کی شرط نہ لگائی ہو اور اگر یہ شرط لگائی گئی ہو اور بیوی کی رضامندی سے دخول ہو چکا ہو تو پھر بالاتفاق اس کو منع کرنے کا حق نہیں ہے۔ (ت)

اس پر حاشیہ فقیر جد المختار میں ہے: [عربی متن]: اقول: وعرف بلادنا الدخول قبل اداء شیئی منه والمعروف کالمشروط فلا یکون لها الامتناع اقول: اور ہمارے علاقے کا عرف یہ ہے کہ مہر کا حصہ ادا کرنے سے قبل دخول ہوتا ہے، تو معروف ہے۔

حواشی: 1 رد المحتار بحوالہ شرح الجامع الصغیر امام قاضیخان باب المهر دار احیاء التراث العربي بیروت ۳۵۰/۲ 2 درمختار باب المهر مطبع مجتبائی دہلی ۲۰۲/۱ 3 رد المحتار باب المهر دار احیاء التراث العربي بیروت ۳۵۹/۳

Fatawa Rizvia, Volume 11

[Boxed Header] Consensus by Agreement[1]: It is like a condition, therefore, in our region, by consensus, the wife will not have the right to refuse [conjugal rights]. (T)

[Main Body Text] Deferred [dower] is that for which no advance payment was agreed upon, nor was any term fixed for it; it cannot be demanded, except after death or divorce; nor can she withhold herself at any time for its sake. It is stated in Fatawa Khaniya:

[Boxed Arabic/Urdu Quote] Arabic: If fixing a delay is not valid, the husband will be ordered to pay as much as is customary among the people of the town, then the rest will be taken after divorce or death. The judge shall not compel him to deliver the remainder, nor shall he imprison him[2]. Urdu: When fixing a delay is not valid, the husband will be told to pay the amount of prompt [dower] according to custom, and the remainder will be received after divorce or death; before that, the judge cannot compel him to pay the full dower, nor can the judge imprison him. And Allah Almighty knows best. (T)

[Section: Masla 67] Problem 67: From the town of Narhar, Post Office Charwah, District Shekhawati, Muhalla Pir Zadgan, sent by Munshi Muhammad Ali Sahib Aram, teacher, 22 Shawwal 1339 AH. What is the ruling of the Sharia of Islam in this matter: A person performed a second marriage and fixed his entire property as the dower. The property has been traditionally inherited, which includes a rain-fed agricultural field, a residential house, income from a shrine (Khanqah) of every kind, his own share from a village, and some cash. He fixed all that property, movable and immovable, as the dower and gifted it to his wife. Is this permissible or not? If not, what dower will be mandatory? He also has a biological sister, but here the custom is not to give a share to the sister. Nephews from the family are present who, according to custom, are entitled to the property etc. after him. He is sixty years old; apart from the house and property which have been gifted as dower, he has no other house to live in nor any means of livelihood for maintenance. Second marriage was not practiced here, but it has now started through effort; this is the reason for the high amount of dower. In all these circumstances, can this person or any person fix such a dower?

[Answer] Answer: Whatever property reached him from his father's or mother's estate, to the extent of his share in it...

[Footnotes] 1 Jadd al-Mumtar, Annotation of al-Majma' al-Islami, Mubarakpur, India, 2/417. 2 Qazi Khan, Chapter on mentioning the issues of Dower, Nawal Kishore, Lucknow, 1/47-73.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 11

[बॉक्स हेडर] इत्तेफ़ाक़ के साथ सर्वसम्मति से[1]: यह एक शर्त की तरह है, इसलिए हमारे क्षेत्र में सर्वसम्मति से पत्नी को (वैवाहिक अधिकारों से) मना करने का अधिकार नहीं होगा। (त)

[मुख्य लेख] मुअख्खर (विलंबित महर) वह है जिसके लिए न तो पेशगी अदायगी तय हुई हो और न ही उसकी कोई मियाद मुकर्रर हो; उसका मुतालबा नहीं किया जा सकता, सिवाय मौत या तलाक़ के बाद; और न ही वह इसके लिए किसी समय खुद को (पति से) रोक सकती है। फ़तावा ख़ानिया में है:

[बॉक्स वाला अरबी/उर्दू उद्धरण] अरबी: यदि विलंब करना मान्य न हो, तो पति को आदेश दिया जाएगा कि वह शहर के लोगों की प्रथा के अनुसार तुरंत महर की राशि अदा करे, फिर शेष राशि तलाक़ या मृत्यु के बाद ली जाएगी। काज़ी उसे शेष राशि सौंपने के लिए मजबूर नहीं करेगा, और न ही उसे कैद करेगा[2]। उर्दू: जब मोहलत देना सही न हो तो शौहर को कहा जाएगा कि उर्फ़(प्रथा) के मुताबिक जो मिक़दार मुअज्जल (त्वरित) हो वह अदा कर दे और बाक़ी तलाक़ या मौत के बाद वसूल किया जाएगा, इससे पहले काज़ी उसको तमाम महर अदा करने पर मजबूर नहीं कर सकता और न ही काज़ी उसे कैद कर सकता है। वल्लाह तआला आलम (त)

[खंड: मसला 67] मसला 67: कस्बा नरहड़, डाकखाना चरवा, जिला शेखावाटी, मुहल्ला पीर जादगान, प्रेषक मुंशी मुहम्मद अली साहिब अराम, शिक्षक, 22 शव्वाल 1339 हिजरी। इस मसले में शरीअत-ए-इस्लाम का क्या हुक्म है: एक व्यक्ति ने अपना निकाह-ए-सानी (दूसरा विवाह) किया और अपनी पूरी जायदाद को महर मुकर्रर किया। जायदाद विरासत के तौर पर चली आ रही है जिसमें एक बारानी (वर्षा आधारित) खेत, रिहायशी मकान, खानकाह की हर तरह की आमदनी, एक गाँव से अपना हिस्सा और कुछ नकद राशि शामिल है। उसने उस तमाम जायदाद, चल और अचल, को महर मुकर्रर करके अपनी बीवी के नाम हिबा (उपहार) कर दी। क्या यह जायज़ है या नहीं? अगर नहीं, तो क्या महर लाज़िम आएगा? उसकी एक सगी बहन भी है मगर यहाँ बहनों को हिस्सा देने का रिवाज नहीं है। रिश्ते के भतीजे मौजूद हैं जो दस्तूर के मुताबिक उसके बाद जायदाद आदि के हकदार हैं। उम्र साठ वर्ष है। जो मकान और जायदाद महर होकर हिबा हो चुकी है, उसके सिवा और कोई मकान रहने को और नान-नफ़क़ा (भरण-पोषण) के लिए कोई ज़रिया-ए-मुआश नहीं है। यहाँ दूसरा निकाह नहीं होता था, अब कोशिशों से शुरू हुआ है; यही महर की अधिकता का कारण है। इन सब सूरतों में क्या यह शख्स या कोई भी शख्स ऐसा महर मुकर्रर कर सकता है?

[जवाब] जवाब: जितनी जायदाद उसको पैतृक या मातृक विरासत से पहुँची, उसमें से जिस कदर उसका हिस्सा है...

[पाद टिप्पणियाँ] 1 जद अल-मुम्तार हाशिया अल-मजमा अल-इस्लामी, मुबारकपुर, भारत, 2/417 2 काज़ी खान, बाब फ़ी ज़िक्र मसाइल अल-महर, नवल किशोर, लखनऊ, 1/47-73

पृष्ठ 191/688

فتاوٰی رضویہ، جلد دو از دہم

[باکسڈ ہیڈر] اجماعاً بالا تفاق 1: مشروط کی طرح ہوتا ہے اس لئے ہمارے علاقہ میں بالا جماع بیوی کو منع کا حق نہیں ہوگا۔ (ت)

[اصل متن] مؤخر وہ کہ نہ پیشگی دینا ٹھہرا ہو ، نہ اس کی کوئی میعاد مقرر کیا ہو اس کا مطالبہ نہیں ہو سکتا، مگر بعد موت یا طلاق نہ اس کے لئے کسی وقت اپنے نفس کو روک سکتی ہے۔

فتاوٰی خانیہ میں ہے :

[باکسڈ عربی/اردو اقتباس] عربی: اذا لم یصح التأجیل یؤمر الزوج بتعجیل قدر مایتعارفه اهل البلدة فیؤخذ منه الباقي بعد الطلاق او الموت ولا یجبره القاضی علی تسلیم الباقی ولا یحبسه 2۔ اردو: جب مہلت دینا صحیح نہ ہو تو خاوند کو کہا جائے گا کہ عرف کے مطابق جو قدر معجل ہو وہ ادا کر دے اور باقی طلاق یا موت کے بعد وصول کیا جائے گا، اس سے قبل قاضی اس کو تمام مہر ادا کرنے پر مجبور نہیں کر سکتا اور نہ ہی قاضی اسے قید کر سکتا ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

[سیکشن: مسئلہ ۶۷] مسئلہ ۶۷: از قصبہ نرہڑ ڈاکخانہ چڑوہ ضلع شیخاوائی محلہ پیر زادگان مرسلہ منشی محمد علی صاحب ارم مدرس ۲۲ شوال ۱۳۳۹ھ اس مسئلہ میں شریعت عزائے اسلام کا کیا حکم ہے ایک شخص نے اپنا نکاح ثانی کیا اور اپنی تمام جائداد کا مہر مقرر کیا، جائداد علی التوریث چلی آرہی ہے جس میں ایک کھیت زمین بارانی، مکان سکنی، آمدنی خانقاہ ہر قسم حصہ خود ایک گاؤں سے کچھ نقد رقم آتی ہے، وہ رقم حصہ خود غرض سب جائداد منقولہ غیر منقولہ کا مہر مقرر کر کے اپنی بیوی کے نام ہبہ کر دی، یہ جائز ہے یا نہیں؟ اگر نہیں تو کیا مہر لازم آئے گا؟ اس کے ایک حقیقی بہن بھی ہے مگر یہاں رواج ہمشیرہ کو حصہ کا نہیں، رشتہ کے بھتیجے

موجود ہیں جو حسب دستور اُس کے بعد مستحق جائداد وغیرہ ہیں، عمر ساٹھ برس ہے جو مکان اور جائداد مہر ہو کر ہبہ ہو چکی اس کے سوا اور کوئی مکان رہنے کو اور نان نفقہ کو کوئی وجہ معاش نہیں، یہاں نکاح ثانی نہیں ہوتا اب بکوشش جاری ہوا ہے، یہی وجہ زیادتی مہر ہے، ان سب صورتوں میں یہ شخص یا ہر شخص ایسا مہر مقرر کر سکتا ہے؟

[الجواب] الجواب: جس قدر جائداد اُس کو متروکہ پدری یا مادری سے پہنچی اُس میں سے جس قدر اس کا حصہ ہے

[حواشی] 1 جد الممتار حاشیه المجمع الاسلامی مبارکپور ، انڈیا ۲ / ۴۱۷ 2 قاضیخان باب فی ذکر مسائل المہر نولکشور لکھنو ۱ / ۴۷-۷۳

That dowry (mahr) became the property of the wife, and whatever portion belongs to her sister, if she gives permission, that too becomes the property of the wife; and if she does not give permission, then the equivalent value of the sister's portion must be given to her as mahr. It is stated in Alamgiriya:

Arabic Text	Urdu Translation/Explanation
If one marries her for this slave who belongs to another, or for this house which belongs to another, then the marriage is valid and the naming (of dowry) is sound. After that, it is seen: if the owner of the house and the owner of the slave approve of that, then she has the specified item itself. If the rightful owner does not approve, neither the marriage nor the naming is void, such that the customary dowry (mahr al-mithl) becomes obligatory; rather, the value of the named item becomes obligatory. Thus it is in Al-Muhit. [1]	When someone marries upon a specific slave or a house as dowry while that slave or house belongs to someone else, this marriage will be valid, and mentioning them as dowry is correct. Later, it will be seen if the owner of that slave or house is willing to give it; then that mentioned slave or house will be given. If the owner is not willing, even then the marriage and dowry will not be void, such that the customary dowry (mahr al-mithl) would not be mandatory; instead, the price/value of that slave or house should be given. It is similarly stated in Muhit. (T)

Income from shrines such as offerings etc., which are currently non-existent, were not included in the dowry. However, the existing shares of the property that were made dowry will not be affected by the exclusion of those things; they have already become part of the dowry. The customary dowry will not become mandatory because of this; rather, those existing shares will be given in dowry. It is stated in Alamgiri:

Arabic Text	Urdu Translation/Explanation
If he names in the contract something which is currently non-existent, like marrying her for what his palm trees will produce this year, or for what his land will produce this year, or for what his slave will earn, the naming is not	If something currently non-existent is mentioned as dowry in the marriage contract, for example, the dates or the crops the land will produce this year, or what my slave will earn this year etc., then their mention in the dowry is not correct,

Arabic Text	Urdu Translation/Explanation
valid and she is entitled to the customary dowry (mahr al-mithl). [2]	therefore, the customary dowry (mahr al-mithl) will be mandatory. (T)

It is stated in Rad al-Muhtar:

Arabic Text	Urdu Translation/Explanation
If he names ten dirhams and a ratl (a unit of measure) of wine, she has what was named, and the customary dowry is not completed. [from] Bahr. [3]	If ten dirhams and one ratl of wine were fixed as dowry, then the wife will be given the fixed dowry and the customary dowry will not be completed/fulfilled. Bahr. (T)

[1] Fatawa Hindiyya, Bab al-Mahr, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/303. [2] Fatawa Hindiyya, Bab al-Mahr, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/303. [3] Rad al-Muhtar, Bab al-Mahr, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/335.

फतावा रज़विया जिल्द 12

वह मेहर (दहेज) पत्नी की संपत्ति हो गई, और उसकी बहन का जो हिस्सा है, अगर वह अनुमति दे दे तो वह भी पत्नी की संपत्ति हो जाएगी, और अगर वह अनुमति न दे तो बहन के हिस्से के बराबर की कीमत उसे मेहर में देनी होगी। आलमगीरिया में है:

अरबी पाठ

यदि कोई इस गुलाम के साथ उसका निकाह करता है जो किसी और की संपत्ति है, या इस घर के साथ जो किसी और की संपत्ति है, तो निकाह वैध है और (मेहर का) नामकरण सही है। उसके बाद देखा जाएगा: यदि घर का मालिक और गुलाम का मालिक उसे स्वीकार करते हैं, तो उसे वही नामित वस्तु मिलेगी। यदि स्वामी अनुमति नहीं देता है, तो न तो निकाह और न ही नामकरण अमान्य होता है, जिससे कि मेहर-ए-मिस्ल (प्रचलित मेहर) अनिवार्य हो जाए; बल्कि नामित वस्तु का मूल्य अनिवार्य हो जाता है। मुहीत में ऐसा ही है। [1]

उर्दू अनुवाद/व्याख्या

जब किसी ने निकाह में एक खास गुलाम या मकान मेहर के तौर पर तय किया, जबकि वह गुलाम या मकान किसी और की मिल्कियत (स्वामित्व) हो, तो यह निकाह जायज़ होगा और मेहर के रूप में उनका ज़िक्र सही है। बाद में देखा जाएगा कि उस गुलाम या मकान का मालिक देने को तैयार है, तो वही गुलाम या मकान दिया जाएगा। और अगर मालिक देने को तैयार न हो, तो भी निकाह और मेहर बातिल (अमान्य) नहीं होंगे, यहाँ तक कि मेहर-ए-मिस्ल वाजिब नहीं होगा बल्कि उस गुलाम या मकान की कीमत दी जाएगी। मुहीत में ऐसा ही है। (त)

खानकाह की आमदनी जैसे चढ़ावा आदि, जो वर्तमान में मौजूद नहीं हैं, मेहर में शामिल नहीं होंगे। लेकिन उन चीज़ों के निकल जाने से संपत्ति के उन मौजूद हिस्सों पर असर नहीं पड़ेगा जो मेहर किए गए थे, वे मेहर में शामिल हो चुके हैं। इसकी वजह से मेहर-ए-मिस्ल लाज़िम नहीं आएगा, बल्कि वही मौजूद हिस्से मेहर में दिए जाएंगे। आलमगीरी में है:

अरबी पाठ

यदि वह अनुबंध में किसी ऐसी चीज़ का नाम लेता है जो वर्तमान में मौजूद नहीं है, जैसे कि इस साल उसके खजूर के पेड़ क्या पैदा करेंगे या इस साल उसकी ज़मीन क्या पैदा करेगी या उसका गुलाम

उर्दू अनुवाद/व्याख्या

अगर निकाह में ऐसी चीज़ को मेहर के रूप में ज़िक्र किया जाए जो वर्तमान में मौजूद नहीं है (मदम है), जैसे कि इस साल खजूर या ज़मीन से होने वाली फसल, या मेरा गुलाम इस साल जो

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद/व्याख्या
क्या कमाएगा, तो नामकरण मान्य नहीं है और वह मेहर-ए-मिस्ल की हकदार है। [2]	कमाएगा आदि, तो मेहर में उनका ज़िक्र सही नहीं है, इसलिए मेहर-ए-मिस्ल वाजिब होगा। (त)

रद-अल-मुह्तार में है:

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद/व्याख्या
यदि उसने दस दिरहम और एक रतल शराब नामित की, तो उसे वह मिलता है जो नामित किया गया था, और मेहर-ए-मिस्ल पूरा नहीं किया जाता है। बहर। [3]	अगर मेहर में दस दिरहम और एक रतल शराब तय की गई हो, तो पत्नी को तयशुदा मेहर दिया जाएगा और मेहर-ए-मिस्ल को पूरा नहीं किया जाएगा। बहर। (त)

[1] फतावा हिन्दिया, बाब अल-मेहर, नूरानी कुतुब खाना पेशावर 1/303 [2] फतावा हिन्दिया, बाब अल-मेहर, नूरानी कुतुब खाना पेशावर 1/303 [3] रद-अल-मुह्तार, बाब अल-मेहर, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी बैरुत 3/335

पेज 192 ऑफ़ 688

فتاوٰی رضویہ جلد دو از دہم

وہ مہر ملک زوجہ ہوگیا، اور جتنا حصہ اس کی بہن کا ہے اگر وہ اجازت دے دے تو وہ بھی ملک زوجہ ہو گیا، اور اگر وہ اجازت نہ دے تو حصہ خواہر کی جتنی قیمت ہے وہ اسے مہر میں دینا پڑے گی۔ عالمگیریہ میں ہے:

عربی عبارت

فاذا تزوجها على هذا العبد وهو ملك الغير او على هذه الدار وهي ملك الغير فالنكاح جائز والتسمية صحيحة فبعد ذلك ينظر ان اجاز صاحب الدار وصاحب العبد ذلك فلها عين المسمى وان لم يجز المستحق لا يبطل النكاح ولا التسمية حتى لا يجب مهر المثل وانما تجب قيمة المسمى كذا في المحيط ۔ 1

اردو ترجمہ و تشریح

جب کسی نے ایک خاص عبد یا ایک مکان بطور مہر پر نکاح کیا جبکہ وہ عبد اور مکان کسی غیر کی ملکیت ہوں تو یہ نکاح جائز ہوگا، اور مہر کے طور پر ان کا ذکر صحیح ہے، بعد میں دیکھا جائے کہ اس عبد یا مکان کا مالک دینے پر تیار ہے تو وہی عبد یا مکان مذکورہ دیا جائے گا اور مالک دینے پر تیار نہ ہو تو پھر بھی نکاح اور مہر باطل نہ ہو گا حتی کہ مہرِ مثل واجب نہ ہوگا بلکہ اب اس عبد یا مکان کی قیمت دی جائے۔ محیط میں یونہی ہے (ت)

آمدنی خانقاہ جیسے نذور وغیرہ ہا کہ فی الحال معدوم ہیں وہ داخل مہر نہ ہوئیں مگر ان چیزوں کے نکل جانے سے جائداد کے حصص موجودہ کہ مہر کئے گئے اُن پر اثر نہ پڑے گا وہ مہر میں ہو چکے، نہ اس کی وجہ سے مہر مثل لازم آئے بلکہ وہی حصص موجودہ مہر میں دئے جائیں گے۔ عالمگیری میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ و تشریح
واذا سمی في العقد ماھو معدوم في الحال بان تزوجھا علی ما یثمر نخیلہ العام او علی ما تخرج ارضہ العام او علی ما یکتسب غلامہ لا یصح التسمیۃ وکان لھا مھر المثل - 2	اگر نکاح میں ایسی چیز کو مہر ذکر کیا جو فی الحال معدوم ہے مثلاً اس سال کھجوریں یا زمین جو فصل دیں گی، یا میرا غلام اس سال جو کمائے گا وغیرہ، تو مہر میں ان کا ذکر صحیح نہیں لہٰذا مہرِ مثل واجب ہوگا۔ (ت)

رد المحتار میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ و تشریح
لو سمی عشرۃ دراھم ورطل خمر فلھا المسمی ولا یکمل مھر المثل بحر 3.	اگر مہر میں دس درہم اور ایک رطل شراب مقرر کیا ہو تو بیوی کو مقررہ مہر دیا جائیگا اور مہرِ مثل کو پورا نہ کیا جائے گا، بحر۔ (ت)

1 فتاوٰی ہندیہ باب المہر نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۰۳ 2 فتاوٰی ہندیہ باب المہر نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۰۳ 3 رد المحتار باب المہر دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۳۵/ ۲

Fatawa-e-Razvia Volume 12

Nephews becoming heirs or having nothing left for maintenance does not hinder the validity of the dower (Mahr) that has already been given. Whoever sets such a dower will be subject to the same ruling, even if doing so seems irrational. The custom of not giving a sister her inheritance is false and rejected; it does not nullify her right. And Allah Ta'ala knows best.

Mas'ala 768 to 770: From Ramah, Tehsil Gujar Khan, District Rawalpindi, Jatli post office, submitted by Muhammad Ji Sahib, 4 Shawwal 1339 AH. To the Chief of Researchers, Pillar of the Faithful, Protector of Religion (may his grace endure), after greetings, it is requested that: (1) If both the divorcer and the divorced woman say they neither had intercourse nor were alone together in seclusion, please inform if relying on their statement to conduct a marriage without the 'iddah period entails any sin for the marriage officiant or not? (2) If only the divorced woman denies entry (intercourse) and valid seclusion (khalwat-e-sahiha), and the divorcer says he did have entry, or vice versa, whose word should be trusted to marry another man without 'iddah, or should it not be done? (3) Will the proof of valid seclusion and entry be from witnesses or from the divorcer and the divorced woman? Please provide references from jurists with excerpts from books and names of books; payment for the script will be provided. Explain and you shall be rewarded.

The Answer: (1) As long as the apparent circumstances do not contradict their statement, it will be considered credible, and no blame will be on the marriage officiant. And Allah Ta'ala knows best. (2) If the woman states that valid seclusion took place and the husband denies it, then the woman's statement is reliable. It is stated in Tanweer:

| And if they separate and she says it's after entry, and the husband says it's before entry, the word is hers. | When separation occurred between both, the wife said it was after entry and the husband said separation occurred before entry, then the wife's word will be reliable. (t) |

It is stated in Radd al-Muhtar:

| His saying 'she said after entry', the meaning here is disagreement regarding seclusion. | By his statement 'the wife said after entry', the meaning is disagreement in seclusion. (t) |

And if it is the opposite, then the husband's word is reliable to a greater degree, as he is making a confession (of her right), and the woman is being obstinate by her denial.

1. Durr-e-Mukhtar, Sharh Tanweer al-Absar, Chapter of Mahr, Mujtabai Press, Delhi, 1/200.
2. Radd al-Muhtar, Chapter of Mahr, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/344.

भतीजों का वारिस होना, या गुज़ारे के लिए कुछ न बचना महर की सेहत (वैधता) में बाधक नहीं है जो वह महर में दे चुका है। जो कोई भी ऐसा महर तय करेगा उस पर यही हुक्म होगा, चाहे ऐसा करना अक्ल से परे हो। और वह रिवाज़ कि बहन को विरासत नहीं देते बातिल (अवैध) और खारिज है, इससे उसका हक़ ख़त्म नहीं होता। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 768 से 770: रामह, तहसील गूजर खान, ज़िला रावलपिंडी, डाकखाना जातली से, मोहम्मद जी साहब द्वारा प्रेषित, 4 शव्वाल 1339 हिजरी। रईसुल मुहक्क़िक़ीन, उम्दतुल अमीन, मुहाफ़िज़ुद्दीन (अल्लाह उनकी कृपा बनाए रखे), सलाम के बाद अर्ज़ है कि: (1) अगर तलाक़ देने वाला और तलाक़शुदा औरत दोनों कहते हैं कि न हमने संभोग किया है और न ही हम एकांत में एक साथ बैठे हैं, अब हुज़ूर अनवर बताएं कि उनकी बात पर भरोसा करके इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के बिना निकाह किया जाए तो क्या निकाह पढ़ाने वाले पर कोई गुनाह है या नहीं? (2) अगर केवल तलाक़शुदा औरत संभोग और ख़लवत-ए-सहीहा (वैध एकांतवास) से इंकार करती है, और तलाक़ देने वाला कहता है कि मैंने संभोग किया है, या इसके विपरीत हो, तो किसके कहने पर भरोसा करके इद्दत के बिना दूसरे पुरुष के साथ निकाह किया जाए या नहीं? (3) ख़लवत-ए-सहीहा और संभोग का प्रमाण गवाहों से होगा या तलाक़ देने वाले और तलाक़शुदा औरत के बयान से? फ़ुक़हा (विधिवेत्ताओं) के प्रमाण, किताबों के उद्धरण और नाम के साथ बताएं लेखन के लिए शुल्क दिया जाएगा। बयान करें और पुण्य कमाएं।

उत्तर: (1) जब तक प्रकट परिस्थितियाँ उनके कथन को झुठलाती न हों, तब तक उनका ऐतबार (भरोसा) किया जाएगा और निकाह पढ़ाने वाले पर कोई इल्ज़ाम नहीं होगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (2) अगर औरत ख़लवत-ए-सहीहा होना बयान करती है और पति इंकारी हो, तो औरत का कहना विश्वसनीय है, तनवीर में है:

| व लौ इफ़तरक़ा फ़क़ालत बा'दल दुखूल व क़ालज़ ज़ौजु क़ब्लल दुखूल फलक़ौलु लहा। | जब दोनों में अलगाव हुआ तो पत्नी ने कहा कि यह संभोग के बाद हुआ है और पति ने कहा संभोग से पहले अलगाव हुआ है, तो पत्नी की बात विश्वसनीय होगी। (त) |

रद्दुल मुहतार में है:

| क़ौलुहू फ़क़ालत बा'दल दुखूल अल-मुरादु हुना अल-इख़्तिलाफ़ु फ़िल ख़लवति। | उसके कथन कि 'पत्नी ने संभोग के बाद कहा' से मुराद ख़लवत (एकांतवास) में मतभेद है। (त) |

और अगर इसके उलट हो तो पति की बात ज़्यादा विश्वसनीय है क्योंकि वह स्वीकार कर रहा है और औरत इंकार करके हठ कर रही है।

1. दुर्रे मुख्तार, शरह तनवीरुल अबसार, बाबुल महर, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/200
2. रद्दुल मुहतार, बाबुल महर, दारुल इहयाउत तुरास अल-अरबी, बेरुत, 2/344

بھتیجے اس کے وارث ہونا، یا نفقہ کے لئے کچھ پاس نہ رہنا مانع صحت مہر نہیں، جو مہر میں دے چکا، اور جو کوئی ایسا مہر باندھے گا اس کا یہی حکم ہو گا اگرچہ ایسا کرنا عقل سے بعید ہے اور وہ رواج کہ بہن کو ترکہ نہیں دیتے باطل و مردود ہے، اس سے اس کا حق سقط نہیں ہوتا۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۷۶۸ تا ۷۰: از رامہ تحصیل گوجر خان ضلع راولپنڈی ڈاکخانہ جاتلی مسئولہ محمد جی صاحب ۴ شوال ۱۳۳۹ھ رئیس المحققین عمدۃ الامین محافظ الدین دام لطفہ ، تسلیم کے بعد عرض خدمت ہے کہ: (۱) اگر طالق اور مطلقہ دونوں کہتے ہیں کہ نہ ہم نے وطی کی ہے نہ ایک جگہ تنہائی میں بیٹھے ہیں، اب حضور انور بتائیں کہ ان کے کہنے پر اعتماد کر کے بغیر عدت کے نکاح کیا جائے تو کچھ نکاح خواں پر تو گناہ نہیں ہے یا ہے؟ (۲) اگر محض عورت طالق کے دخول اور خلوت صحیحہ سے منکر ہے، اور طالق کہتا ہے میں نے دخول کیا ہے، یا برعکس ہو تو کس کے قول پر اعتماد کر کے بغیر عدت کے دوسرے مرد کے ساتھ نکاح کیا جائے یا نہیں؟ (۳) ثبوت خلوت صحیحہ اور دخول کا گواہان سے ہو گا یا طالق مطلقہ سے، سند فقہاء مع عبارت کتب واسم کتاب ارشاد ہو قیمت رقیمہ دی جائے گی، بینوا توجروا۔

الجواب: (۱) جبکہ ظاہر حال ان کے قول کا مکذب نہ ہو تو اس کا اعتبار کیا جائے گا نکاح خواں پر کوئی الزام نہ ہوگا، واللہ تعالٰی اعلم۔ (۲) اگر عورت خلوت صحیحہ ہونا بیان کرتی ہے اور شوہر منکر ہو تو عورت کا قول معتبر ہے، تنویر میں ہے:

| ولوافترقا فقالت بعد الدخول وقال الزوج قبل | جب دونوں میں مفارقت ہوئی تو بیوی نے کہا کہ دخول کے | | الدخول فالقول لہا۱۔ | بعد ہوئی ہے اور خاوند نے کہا دخول سے قبل مفارقت ہوئی ہے، تو بیوی کا قول معتبر ہوگا۔ (ت) |

رد المحتار میں ہے:

| قولہ فقالت بعد الدخول المراد ہنا الاختلاف فی | اس کے قول کہ "بیوی نے دخول کے بعد کہا" سے مراد خلوت | | الخلوۃ ۲۔ | میں اختلاف ہے۔ (ت) |

اور اگر عکس ہو تو قول شوہر بدرجہ اولیٰ معتبر ہے کہ وہ مقر ہے اور عورت انکار سے متعنت۔

۱ درمختار شرح تنویر الابصار باب المہر مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۰۰ ۲ ردالمحتار باب المہر دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۳۴۴

Fatawa Razawiyyah Volume 12

In Durr al-Mukhtar it is mentioned: "The principle is that whoever expresses their speech out of stubbornness (adversely to their interest), the statement of the other party is accepted by consensus." (The rule is that whoever speaks against their own interest, the other party's statement will be considered credible by consensus. - [Translator]) - By consensus 1

In Radd al-Muhtar it is: "Out of stubbornness by denying what benefits him." 2 (Stubbornness is when one speaks against their own interest. - [Translator]) In any case, among those, whoever states that a valid seclusion (Khalwat Sahihah) occurred, the other party should not proceed with marriage before the waiting period (Iddah). The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "How [can a marriage proceed] when it has been said?" 3 (The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: What can be done once the statement has been made? - [Translator]) And Allah Almighty knows best.

(3) Regarding consummation (Dukhul), it is obvious that witnesses have no role as they are not aware of it, and apparently, valid seclusion is also distinct from testimony. If their knowledge can encompass anything, it is only that these two went alone into a room, no one else was there, and they closed the door. If this is proven, then for it to be considered a valid seclusion, it is also necessary that there be no impediment, whether physical, legal (Shari'i), or natural. Testimony on this would be a testimony of negation, which is not credible, especially since some impediments are beyond the knowledge of witnesses. Furthermore, if the husband states that a valid seclusion occurred, he is an admitter; why the need for testimony along with an admission? And if the woman states it, she is a denier, and witnesses are not taken from the denier but from the claimant. However, this situation is conceivable: the woman, to avoid taking an oath, provides witnesses to the husband's admission, who testify that the husband admitted in our presence that a valid seclusion had occurred.

This is all that I have said out of legal understanding, and the poor [author] is currently on a remote mountain far from my homeland and my books. So if it is correct, it is from my Lord, and with Him is the knowledge of truth, and He is sufficient for me. And Allah Almighty knows best.

Whatever I have said is purely based on understanding. At this time, I am on a mountain for recreation, far from my books and homeland. Therefore, if this is correct, it is from the knowledge granted by my Lord, and the knowledge of truth is with Him alone; He is sufficient for me. And Allah Almighty knows best. (Translator)

By the grace of Allah Almighty, no fee is ever taken here for [resolving] issues, and it is considered a severe flaw. "I do not ask of you..."

---

1 Durr al-Mukhtar, Kitab al-Buyu', Bab al-Salam, Mujtabai Press, Delhi, 2/49. 2 Radd al-Muhtar, Kitab al-Buyu', Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 4/211. 3 Sahih al-Bukhari, Bab al-Rihla fi al-Mas'alah al-Nazilah, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/19.

फ़तावा रज़विय्याह जिल्द 12

दुर्रे मुख्तार में है: "और सिद्धांत यह है कि जो कोई भी ज़िद (अपने हित के विरुद्ध) में बात करे, तो सर्वसम्मति से दूसरे पक्ष की बात स्वीकार की जाएगी।" (नियम यह है कि जो कोई भी अपने हित के खिलाफ बोलता है, तो सर्वसम्मति से दूसरे पक्ष की बात विश्वसनीय मानी जाएगी। - [अनुवादक]) - सर्वसम्मति से 1

रद्दुल मुहतार में है: "ज़िद्दी होकर उस बात से इनकार करना जो उसे लाभ पहुँचाती है।" 2 (ज़िद यह है कि व्यक्ति अपने हित के विरुद्ध बात करे। - [अनुवादक]) बहरहाल, उनमें से जो कोई 'खलवत-ए-सहीहा' (वैध एकांत) होने का बयान दे, तो दूसरे को इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) से पहले निकाह का कदम नहीं उठाना चाहिए। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया: "कैसे (निकाह हो सकता है) जब बात कह दी गई हो?" 3 (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: जब बात कह दी गई हो तो क्या किया जा सकता है? - [अनुवादक]) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

(३) संभोग (दुखुल) के बारे में तो स्पष्ट है कि गवाहों की कोई भूमिका नहीं है क्योंकि वे इससे अवगत नहीं होते, और स्पष्ट रूप से वैध एकांत (खलवत-ए-सहीहा) भी गवाही से अलग है। यदि उनका ज्ञान कुछ सीमित हो सकता है, तो वह केवल इतनी बात पर कि ये दोनों अकेले कमरे में गए, वहां कोई और नहीं था और उन्होंने दरवाजा बंद कर लिया। यदि यह साबित हो जाता है, तो वैध एकांत के लिए यह भी आवश्यक है कि कोई बाधा न हो, चाहे वह शारीरिक हो, शरीयत संबंधी हो या प्राकृतिक। इस पर गवाही नकार की गवाही होगी, जो विश्वसनीय नहीं है, विशेष रूप से कुछ बाधाएं गवाहों की जानकारी से परे होती हैं। इसके अलावा, यदि पति वैध एकांत होने का बयान देता है, तो वह स्वीकारकर्ता (मुक़िर) है; इक़रार (स्वीकृति) के साथ गवाही की क्या आवश्यकता है? और यदि महिला बयान देती है, तो वह इनकार करने वाली (मुन्किरा) है, और गवाह इनकार करने वाले से नहीं बल्कि दावेदार (मुद्दई) से लिए जाते हैं। हाँ, यह स्थिति संभव है कि महिला अपने ऊपर से शपथ (हलफ़) टालने के लिए पति की स्वीकारोक्ति के गवाह पेश करे, जो गवाही दें कि हमारे सामने पति ने वैध एकांत होने का इक़रार किया था।

यह सब मैंने कानूनी समझ (तफ़क़्क़ुह) के आधार पर कहा है, और यह फ़क़ीर (लेखक) इस समय अपने देश और अपनी पुस्तकों से दूर एक पहाड़ पर है। यदि यह सही है, तो यह मेरे रब की ओर से है, और उसी के पास सत्य का ज्ञान है और वही मेरे लिए पर्याप्त है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

यह जो कुछ मैंने कहा है वह केवल समझ के आधार पर कहा है। इस समय मैं मनोरंजन के लिए एक दूर के पहाड़ पर हूँ, अपनी किताबों और वतन से दूर हूँ। इसलिए, यदि यह सही है तो यह मेरे रब द्वारा दिए गए ज्ञान से है, और सत्य का ज्ञान उसी के पास है; वही मेरे लिए पर्याप्त है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (अनुवादक)

अल्लाह तआला की कृपा से यहाँ मसलों (सवालों) पर कभी कोई शुल्क नहीं लिया जाता और इसे एक गंभीर दोष समझा जाता है। "मैं तुमसे नहीं मांगता..."

---

1 दुर्रे मुख्तार, किताब अल-बुयू, बाब अस-सलाम, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 2/49। 2 रद्दुल मुहतार, किताब अल-बुयू, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 4/211। 3 सहीह अल-बुखारी, बाब अर-रिहला फिल मसअला अन-नाज़िला, क़दीमी कुतुब ख़ाना, कराची, 1/19।

فتاوی رضویه جلد دوا زدهم

در مختار میں ہے: والاصل ان من خرج کلامه تعنتاً فالقول لصاحبه (ضابطہ یہ ہے کہ جو بھی اپنے مفاد کے خلاف بات کرے تو دوسرے فریق کی بات معتبر ہوگی بالاتفاق۔ (ت)) بالاتفاق -1

ردالمحتار میں ہے: تعنتاً بان ینکر ما ینفعه 2 (تعنت یہ ہے کہ وہ اپنے مفاد کے خلاف بات کرے۔ ت) بہر حال اُن میں جو کوئی خلوت صحیحہ ہونا بیان کرتا ہو دوسرے کو قبل عدّت نکاح پر اقدام نہ چاہئے، قال صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کیف وقد قیل 3 (حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے فرمایا: کیا کیا جائے جب بات کہہ دی گئی ہے۔ ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

(۳) دربارہ دخول تو ظاہر ہے کہ گواہوں کو کچھ دخل نہیں کہ وہ اس پر مطلع نہیں اور ظاہراً خلوت صحیحہ بھی شہادت سے جُدا۔ اُن کا علم اگر محیط ہو سکتا ہے تو صرف اتنی بات کو کہ سامنے یہ دونوں تنہا مکان میں گئے اُس میں کوئی اور نہ تھا اور کواڑ بند کر لئے اس پر اگر ثابت ہوئی تو صرف خلوت صحیحہ کے لئے تو یہ بھی لازم ہے کہ کوئی مانع نہ حسی ہو نہ شرعی نہ طبع۔ اس پر شہادت نفی پر شہادت ہوگی اور وہ معتبر نہیں خصوصاً بعض موانع وہ ہیں جو شاہدوں کی اطلاع سے ورا ہیں، معھذا اگر شوہر خلوت صحیحہ ہونا بیان کرتا ہے تو وہ مقر ہے اقرار کے ساتھ شہادت کیسی۔ اور اگر عورت بیان کرتی ہے تو وہ منکرہ ہے اور گواہ منکر سے نہیں لئے جاتے بلکہ مدعی سے، ہاں یہ صورت متصور ہے کہ عورت اپنے اوپر سے دفع حلف کے لئے اقرار شوہر کے گواہ دے جو شہادت دیں کہ ہمارے سامنے شوہر نے خلوت صحیحہ ہونے کا اقرار کیا،

هذا كله ما قلته تفقها والفقير الآن متنزه على جبل بعيد عن وطني و كتبى فان اصبت فمن ربي وعنده العلم بالحق وهو حسبي۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

یہ جو کچھ میں نے کہا ہے محض فہم کی بنا پر کہا ہے اس وقت میں دور ایک پہاڑ پر تفریح میں ہوں، اپنی کتب اور وطن سے دور ہوں، لہذا اگر یہ درست ہو تو میرے علم رب کی طرف سے ہے اور اس کے پاس ہی حق کا علم ہے، وہی مجھے کافی ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسائل پر بفضلہ تعالیٰ یہاں کبھی کوئی اُجرت نہیں لی جاتی اور اس کو سخت عیب سمجھا جاتا ہے مآ اَسْئَلُکُمْ

---

1 در مختار کتاب البیوع باب السلم مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۴۹ 2 ردالمحتار کتاب البیوع داراحیاء التراث العربی بیروت ۴/۲۱۱ 3 صحیح البخاری باب الرحلة فی المسألة النازلة قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۱۹

Fatawa Rizvia, Volume 12

"...no reward do I ask of you: my reward is only from the Lord of the Worlds." (Quran 26:109) (I do not ask you for any reward; my reward is with Allah Almighty. - T) And Allah Almighty knows best.

Problem 711 to 712: From Kanpur, Talaq Mahal, Place Abual-Zia Hakim Noor-ud-Din Sahib, Asked by Obaid-ul-Allah Sahib, 4 Shawwal 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding these issues: (1) In a certain tribe, it is customary that whatever conditions related to a marriage contract need to be made before the contract are settled with the groom through his parents or another close relative in this manner: the groom remains completely silent, and whatever others settle for him, he is considered bound by it and he also abides by it. So, for Zaid, who belongs to the same tribe, it was also settled according to this tribal custom that after the maturity of the wife, he would stay at the in-laws' house and take care of her maintenance, or he would pay in cash. However, after the contract, Zaid refuses to fulfill these agreements and says the agreement was with my father, not with me, although Zaid was also present at the time of the agreement and despite being an adult, he did not refuse any part of the agreement. So, in such a case, according to the tribal custom, is Zaid responsible for fulfilling these agreements or not? Please explain and be rewarded. (2) Hinda's marriage with Zaid took place in such a way that, according to tribal custom, four days before the marriage, it was settled with Zaid through his parents that the deferred dower (Mahr Mu'ajjal) would be fixed for a term of two (2) years, such that within two years, in lieu of the dower, immovable property worth five and a half thousand rupees would be purchased in Hinda's name, or five and a half thousand rupees in cash would be paid as the dower debt. However, at the time of the contract, this detail was not repeated; it was only said that the deferred dower amount is five and a half thousand rupees. So, will this be counted as absolute dower, or will it be deferred for a term of two years? Please explain and be rewarded.

The Answer: (1) The general rule of the Pure Shariah is that "What is known (by custom) is like what is stipulated" (A known custom is treated like a condition. - T). Since this is the common custom among these people, and the conditions are made in front of the husband and he remains silent, and his silence is considered acceptance, and he follows these conditions, then Zaid, who is one of those people, cannot be an exception to this rule. However, the first agreement is futile. Staying at

the in-laws' house is a promise, the fulfillment of which cannot be forced, and the wife [should be] with him...

1. The Holy Quran 106/26 Page 195 of 688

फ़तावा रिज़विया, खंड 12

"...मैं तुम से कोई बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो बस रब्बुल आलमीन के ज़िम्मे है।" (क़ुरआन 26:109) (तुम से किसी अजर का सवाल नहीं मेरा अजर अल्लाह तआला के यहाँ है। - अनुवादक) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 711 से 712: कानपुर से, तलाक़ महल, मकान अबुल ज़िया हकीम नूरुद्दीन साहिब, मुस्तौ़ला उबैदुल्लाह साहिब, 4 शव्वाल 1339 हिजरी। इन मसलों में दीन के उलेमा क्या फ़रमाते हैं: (1) किसी कबीले में यह रस्म है कि निकाह के अनुबंध (अक़्द) से पहले जो कुछ शर्तें अनुबंध से संबंधित करनी होती हैं, वे दूल्हे (नौशाह) से उसके माता-पिता या किसी अन्य करीबी रिश्तेदार के माध्यम से इस तरह तय की जाती हैं कि दूल्हा बिल्कुल खामोश बैठा रहता है और दूसरे लोग जो कुछ उसके लिए तय कर देते हैं, वह उसका पाबंद समझा जाता है और पाबंदी करता भी है। तो क्या ज़ैद को, जो उसी कबीले का है, और उससे भी इस कबीले की रस्म के मुताबिक़ यह तय किया गया कि वह पत्नी के बालिग़ होने के बाद ससुराल में रहकर भरण-पोषण (नान-नफ़क़ा) की देखभाल करता रहेगा या नकद भुगतान कर देगा, लेकिन निकाह के बाद ज़ैद इन समझौतों को पूरा करने से इनकार करता है और कहता है कि समझौता मेरे पिता से हुआ था न कि मुझसे, जबकि समझौते के समय ज़ैद भी मौजूद था और बालिग़ होने के बावजूद उसने समझौते के किसी हिस्से से इनकार नहीं किया। तो क्या ऐसी स्थिति में कबीले के रिवाज के अनुसार ज़ैद इन समझौतों को पूरा करने का ज़िम्मेदार है या नहीं? बयान करें, आपको पुण्य मिलेगा। (2) हिंदा का निकाह ज़ैद से इस तरह हुआ कि कबीले के रिवाज के मुताबिक़ निकाह से चार दिन पहले ज़ैद से उसके माता-पिता के माध्यम से यह तय हुआ था कि महर-ए-मुअज्जल (स्थगित महर) की अवधि 2 साल तय है, इस तरह कि चाहे 2 साल के भीतर महर के बदले में साढ़े पांच हज़ार रुपये की अचल संपत्ति हिंदा के नाम खरीद ली जाएगी या महर के कर्ज के रूप में साढ़े पांच हज़ार रुपये नकद भुगतान कर दिए जाएंगे। लेकिन निकाह के समय यह विवरण दोहराया नहीं गया, केवल इतना कहा गया कि महर-ए-मुअज्जल की राशि साढ़े पांच हज़ार रुपये है। तो क्या यह महर पूर्ण (मुतलक) माना जाएगा या 2 साल की अवधि के लिए स्थगित (मुअज्जल) होगा? बयान करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: (1) पाक शरीयत का सामान्य नियम है कि "जो (रिवाज से) ज्ञात है, वह शर्त के समान है" (प्रचलित रिवाज एक शर्त की तरह होता है। - अनुवादक)। चूंकि इन लोगों में आम रिवाज यही है और शौहर के सामने शर्तें तय की जाती हैं और वह चुप रहता है, और उसकी चुप्पी ही स्वीकृति मानी

जाती है, और वह इन शर्तों का पालन करता है, तो ज़ैद, जो उन्हीं लोगों में से है, इस नियम का अपवाद नहीं हो सकता। लेकिन पहला समझौता व्यर्थ है। ससुराल में रहना एक वादा है, जिसे पूरा करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता, और पत्नी को अपने पास...

1. अल-कुरान अल-करीम 106/26 पृष्ठ 195/688

عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ (تم سے کسی اجر کا سوال نہیں میرا اجر اللہ تعالٰی کے ہاں ہے۔ت) واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۷۱۱ تا ۷۱۲: از کانپور طلاق محل مکان ابوالضیاء حکیم نور الدین صاحب مسئولہ عبید اللہ صاحب ۴ شوال ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں: (۱) کسی قبیلہ میں یہ رسم ہے کہ عقد کے پیشتر جو کچھ شرائط متعلق عقد کرنا ہوتے ہیں نوشاہ سے بتوسط والدین یا کسی دیگر عزیز قریب کے اس طرح پر طے کرتے ہیں کہ نوشاہ بالکل خاموش بیٹھا رہتا ہے اور دوسرے لوگ جو کچھ اس کے واسطے طے کر دیتے ہیں اس کا وہ پابند سمجھا جاتا ہے اور پابندی بھی کرتا ہے تو کیا زید کو جو اسی قبیلہ کا ہے اور اس سے بھی اس رسم قبیلہ کے مطابق یہ طے کیا گیا کہ وہ بعد بلوغ زوجہ کے سسرال میں رہ کر نان نفقہ کی خبر گیری کرتا رہے گا یا نقد ادا کر دے گا مگر بعد عقد کے زید ان معاہدوں کو پورا کرنے سے انکار کرتا ہے اور کہتا ہے معاہدہ میرے والد سے ہوا تھا نہ کہ مجھ سے، حالانکہ معاہدہ کے وقت زید بھی موجود تھا اور باوجود بالغ ہونے کے اُس نے معاہدہ کے کسی جز سے انکار نہیں کیا، تو کیا ایسی صورت میں حسب رواج قبیلہ زید ان معاہدوں کے پورا کرنے کا ذمہ دار ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا (۲) ہندہ کا عقد زید سے اس طرح پر ہوا کہ حسب رواج قبیلہ عقد سے چار یوم پیشتر زید سے بتوسط والدین یہ طے پایا تھا کہ مہر مؤجل باجل دو ۲ سال مقرر ہے اس طرح پر کہ چاہے دو ۲ سال کے اندر بعوض دین مہر مبلغ ساڑھے پانچ ہزار روپیہ کے جائداد غیر منقولہ بنام ہندہ خرید کر دی جائے گی یا مبلغ ساڑھے پانچ ہزار روپیہ نقد بابت دین مہر ادا کر دیا جائے گا مگر بروقت عقد یہ تفصیل دہرائی نہیں گئی

صرف اتنا کہا گیا مہر مؤجل تعداد ساڑھے پانچ ہزار روپیہ ہے تو کیا یہ مہر مطلق میں شمار کیا جائے گا یا باجل دو ۲ سال مؤجل ہوگا؟ بینوا توجروا

الجواب: (۱) شرع مطہر کا قاعدہ عامہ ہے کہ المعروف کالمشروط (عرف رواج مشروط کی طرح ہے۔ ت) جبکہ ان لوگوں میں عام رواج یہی ہے اور شوہر کے سامنے شرائط کئے جاتے ہیں اور وہ ساکت رہتا ہے اور اس کا سکوت ہی قبول قرار پاتا ہے اور ان شرائط کی پابندی کرتا ہے تو زید کہ انہیں لوگوں میں سے ہے اس قاعدہ سے مستثنیٰ نہیں ہو سکتا مگر پہلا معاہدہ بیکار ہے سسرال میں رہنا ایک وعدہ ہے جس کی وفا پر جبر نہیں اور زوجہ کو اپنے پاس

1 القرآن الکریم ۱۰۶/۲۶ صفحہ 195 از 688

Fatawa Razawiyya, Volume 12

To keep [the wife] is the husband's right and a Sharia ruling. Allah Almighty says: "Lodge them [in a part] of where you dwell according to your means." [Quran 65:6] (t)

A husband can demand this right whenever he wishes, as "whoever leaves her turn for her [another wife], she has the right to reclaim it whenever she wishes" (t). And according to the other agreement, the dower (Mahr) will be deferred (Mu'ajjal) for two years. It is mandatory for him to pay it within two years, whether by purchasing property or in cash. If the agreement was only to buy property, that too would have been merely a promise; after two years, the wife would only have the right to demand the dower itself, not specifically the property. And Allah Almighty knows best.

(2) If the husband admits that the marriage contract (Nikah) was based on this agreement and that by 'deferred' (Mu'ajjal), that specific period [two years] was intended, then it will be mandatory to pay within two years. Otherwise, the general application of the term will apply, and this dower will remain deferred. There will be no right to demand it before death or divorce because the deferment was not valid due to ignorance of the term (period). In Fatawa Imam Qazi Khan, it is stated:

Arabic Text

If a man marries a woman for a thousand [dirhams/dinars] on the condition that the entire thousand is deferred: if the period is known, the deferment is valid. If it is not [known], the deferment is not valid. When the deferment is not valid, the husband is ordered to pay an immediate portion (Mu'ajjal) according to the local custom. The remainder is taken from him after divorce or after death. The Judge (Qazi) shall not compel him to hand over the remainder, nor shall he imprison him.

Urdu Translation

A person married a woman for one thousand and said that the entire thousand is deferred. So, if its duration is known, giving a respite is correct. And if the duration is not known, giving a respite is not correct. When giving a respite is not correct, the husband will be told to pay some part immediately according to the custom of the area, and the rest will be collected from him after divorce or death, and the Judge will not use force for the payment of the rest nor imprison him. (t)

In [Fatawa] Alamgiriyya, it is stated:

Arabic Text

Deferring the dower to an unknown [period] is valid; this is the correct [view], because the end goal is known in itself, which is divorce or death. Thus it is in Al-Muhit. And Allah Almighty knows best.

Urdu Translation

Deferring the dower until an unspecified time is valid; this is correct because the ultimate deadline is known by itself, and that is divorce or death. It is likewise in Al-Muhit. And Allah Almighty knows best (t).

1. Al-Quran al-Karim 65/6
2. Fatawa Qazi Khan, Chapter on Dower Issues, Nawal Kishore Lucknow, 1/472-473
3. Fatawa Hindiyya, Chapter on Dower, Eleventh Section, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/318

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

[पत्नी को घर में] रखना पति का अधिकार और शरीयत का हुक्म है। अल्लाह तआला फरमाता है: "उन्हें रहने की जगह दो जहाँ तुम खुद अपनी गुंजाइश के मुताबिक रहते हो।" [कुरान 65:6] (त)

पति जब चाहे इस अधिकार की मांग कर सकता है, जैसा कि "जिसने अपनी बारी उसके लिए छोड़ दी, उसे जब चाहे उसे वापस लेने का अधिकार है" (त)। और दूसरे समझौते के अनुसार, मेहर दो साल के लिए मुअज्जिल (आस्थगित) होगा। उसके लिए दो साल के भीतर भुगतान करना अनिवार्य है, चाहे संपत्ति खरीदकर या नकद में। यदि केवल संपत्ति खरीदने का समझौता होता, तो वह भी केवल एक वादा होता; दो साल बाद, पत्नी को केवल मेहर की मांग करने का अधिकार होता, विशेष रूप से संपत्ति का नहीं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

(2) यदि पति स्वीकार करता है कि निकाह इसी समझौते के आधार पर हुआ था और 'मुअज्जिल' से वही अवधि [दो वर्ष] अभिप्रेत थी, तो दो वर्षों में भुगतान करना अनिवार्य होगा। अन्यथा, शब्द का सामान्य प्रयोग लागू होगा और यह मेहर मुअख्खर (विलंबित) रहेगा। मृत्यु या तलाक से पहले मांग करने का अधिकार नहीं होगा क्योंकि अवधि की अज्ञानता के कारण मोहलत सही नहीं हुई। फतावा इमाम काज़ी ख़ान में है:

अरबी मूल

यदि एक व्यक्ति ने एक हजार [दिरहम/दीनार] पर एक महिला से विवाह किया इस शर्त पर कि पूरा हजार मुअज्जिल (आस्थगित) है: यदि अवधि ज्ञात है, तो मोहलत सही है। यदि ज्ञात नहीं है, तो मोहलत सही नहीं है। जब मोहलत सही न हो, तो पति को शहर के रिवाज के अनुसार कुछ हिस्सा तुरंत (मुअज्जिल) देने का आदेश दिया जाता है। बाकी हिस्सा उससे तलाक या मृत्यु के बाद लिया जाता है। काज़ी उसे बाकी के भुगतान के लिए मजबूर नहीं करेगा और न ही उसे कैद करेगा।

उर्दू अनुवाद

एक व्यक्ति ने किसी महिला से एक हजार पर निकाह किया और कहा कि पूरा हजार मुअज्जिल है, तो अगर उसकी अवधि ज्ञात हो तो मोहलत देना सही है और अगर अवधि ज्ञात न हो तो मोहलत देना सही नहीं और जब मोहलत देना सही न हो तो पति से कहा जाएगा कि इलाके के रिवाज के मुताबिक कुछ हिस्सा पहले तुरंत दे दे और बाकी उससे तलाक या मौत के बाद वसूल किया जाएगा और काज़ी उस पर बाकी की अदायगी में जबर नहीं करेगा और न कैद करेगा। (त)

आलमगीरिया में है:

अरबी मूल

मेहर को अज्ञात [अवधि] तक टालना सही है; यही सही [विचार] है, क्योंकि अंतिम सीमा स्वयं ज्ञात है, और वह तलाक या मृत्यु है। अल-मुहीत में ऐसा ही है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

उर्दू अनुवाद

मेहर की मोहलत, अनिश्चित समय तक हो तो सही है, यही सही है, क्योंकि अंतिम अवधि खुद-ब-खुद ज्ञात है, और वह तलाक या मौत है, मुहीत में यूँ ही है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है (त)

1. अल-कुरान अल-करीम 65/6
2. फ़तावा काज़ी ख़ान, मेहर के मसलों का अध्याय, नवल किशोर लखनऊ, 1/472-473
3. फ़तावा हिंदिया, मेहर का अध्याय, ग्यारहवाँ खंड, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/318

رکھنا حق شوہر و حکم شرعی ہے۔ قال تعالٰی: (اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ) ان کو سکونت دو جہاں تم ساکن ہو اپنی گنجائش کے مطابق۔ (ت)

شوہر جب چاہے اس حق کا مطالبہ کر سکتا ہے کہ من ترکت قسمها لها ان تعود متی تشاء (جیسا کہ بیوی اپنی باری چھوڑ دے تو اس کو واپس لینے کا حق ہے جب چاہے۔ت) اور دوسرے معاہدہ سے مہر دو برس کے لئے مؤجل ہوگا اس پر لازم ہے کہ دو برس کے اندر کردے خواہ جائداد خرید کر یا نقد۔ اگر صرف جائداد خرید دینے کا معاہدہ ہوتا تو وہ بھی محض ایک وعدہ ہوتا زوجہ کو دو برس کے بعد مطالبہ مہر ہی کا استحقاق ہوتا نہ بالخصوص جائیداد کا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (۲) اگر شوہر تسلیم کرے کہ عقد اسی قرارداد کی بناء پر ہوا تھا اور مؤجل سے وہی اجل مراد تھی تو دو سال میں ادا کرنا لازم ہوگا ورنہ اطلاق لفظ اپنا عمل کرے گا اور یہ مہر مؤخر رہے گا قبل موت و طلاق مطالبہ کا اختیار نہ ہوگا کہ تا جیل بوجہ جہالت اجل صحیح نہ ہوئی۔ فتاوٰی امام قاضی خاں میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
رجل تزوج امرأة بالف علی ان کل الالف مؤجل ان کان الاجل معلوما صح التأجیل وان لم یکن لایصح واذا لم یصح التأجیل یؤمر الزوج بتعجیل قدر مایتعارفہ اهل البلدة فیؤخذ منه الباقي	ایک شخص نے کسی عورت سے ایک ہزار پر نکاح کیا اور کہا کہ پورا ہزار مؤجل ہے، تواگر اس کی مدت معلوم ہو تو مہلت دینا صحیح ہے اور اگر مدت معلوم نہ ہو تو مہلت دینا صحیح نہیں اور جب مہلت دینا صحیح نہ ہو تو خاوند کو کہا جائیگا کہ علاقہ کے عرف کے مطابق کچھ

عربی عبارت	اردو ترجمہ
بعد الطلاق او بعد الموت ولایجبر القاضی علی تسلیم الباقی ولایحبسہ۔	معجّل طور پہلے دے دے اور باقی اس سے طلاق یا موت کے بعد وصول کیا جائیگا اور قاضی اس پر باقی کی ادائیگی میں جبر نہ کرے گا اور نہ قید کرے گا۔ (ت)

عالمگیریہ میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ
تأجیل المھر لا الی معلومۃ یصح ھوالصحیح لان الغایۃ معلومۃ فی نفسھا وھو الطلاق او الموت کذا فی المحیط۔ واللہ تعالٰی اعلم۔	مہر کی مہلت، مدت غیر معین تک ہو تو صحیح ہے، یہی صحیح ہے، کیونکہ انتہائی مدت خود بخود معلوم ہے، اور وہ طلاق یا موت ہے، محیط میں یو نہی ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

1 القرآن الکریم ۶/۶۵ 2 فتاوٰی قاضی خاں باب فی مسائل ذکر المہر نولکشور لکھنو ۱/ ۴۷۲-۴۷۳

3 فتاوٰی ہندیہ باب المھر فصل الحادی عشر نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۱۸

Fatawa Rizvia Volume 12

Issue 73: From Sarai Saleh, District Hazara, Tehsil Haripur, sent by Haji Abdul Aziz Khan Sahib, 12 Dhul-Hijjah 1339 AH. What do the scholars of religion and muftis of the luminous Sharia say regarding this issue: Zaid, during the engagement of his grandson Khalid, in a public assembly, gave a gold ornament to his (Khalid's) father Amr as a gift (Hiba), saying, "I am giving this on behalf of your boy to the girl as a token." At that time, Amr's son Khalid was a minor. Amr accepted the ornament from Zaid, and it was put on the girl's hand on behalf of Khalid. Now both the boy and girl have reached puberty. Due to some specific reason from the girl's side, they are ready to return the jewelry and clothes, and both parties agree to a divorce (annulment). However, regarding the ornament that Zaid gave to his grandson from his own side and which was then put on the girl, Zaid says it should be returned to him. The boy says, "I am now an adult, it should be mine." Amr, the boy's father, says, "It should come to me." Therefore, it is requested from the masters of the noble Sharia to explain in detail: who is legally entitled to take this ornament in this situation—the maternal grandfather, the father, or the boy himself whose engagement took place? Please grant a correct answer and earn rewards in both worlds. State the decree and be rewarded. In the questioned scenario, if it was a gift, is the grandfather legally entitled to take back that jewelry from the grandson or not?

The Answer: Such jewelry and clothing are commonly called "Chadhawa" (offerings/ gifts for the bride). Although there is a difference in custom and practice among people regarding its giving from the groom's side to the bride—some give it as a gift (Hiba), some as a loan (Aariyah)—there is absolutely no difference regarding what the groom's relatives send to the groom's house. It is certainly in the form of a gift and assistance. In no case do they claim its return. Regarding such assistance given during children's weddings, if the one providing assistance specifies that "I have gifted it," then it belongs to the one specified. If they do not specify, then if the thing is suitable for the children, it belongs to them. Otherwise, if the person providing assistance is from the father's side or acquaintances, it is a gift for the father. If from the mother's relatives or acquaintances, it is for the mother. However, if the assistant did not say anything at that time but is now present and states that "I gifted it to so-and-so," for example, to the father, mother, or children, then their statement along with an oath will be considered valid. It is stated in Alamgiri: "When a man holds a feast for circumcision and people give gifts and place them before the child, then whether the giver said 'this is for the child' or did not say so, if the gift is suitable for

the child—for example, child's clothes, or things children use like a hockey stick and ball—then these will be for the child specifically, because such things are customarily made the property of the child. And if those gifts are suitable for the child..."

Page 197 of 688

फ़तावा रिज़विया खंड 12

मसला 73: सराय सालेह, जिला हज़ारा, तहसील हरिपुर से, हाजी अब्दुल अज़ीज़ खान साहिब द्वारा भेजा गया, 12 ज़िल-हिज्जा 1339 हिजरी। धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मसले में क्या कहते हैं: जैद ने अपने पोते खालिद की सगाई के दौरान, एक सार्वजनिक सभा में, खालिद के पिता अम्र को उपहार (हिबा) के रूप में एक सोने का आभूषण दिया और कहा, "मैं यह तुम्हारे लड़के की ओर से निशानी के तौर पर लड़की को पहनाता हूँ।" उस समय अम्र का लड़का खालिद नाबालिग था। अम्र ने जैद से वह आभूषण स्वीकार कर लिया और वह खालिद की ओर से लड़की के हाथ में पहना दिया गया। अब दोनों, यानी लड़का और लड़की बालिग हैं। किसी खास वजह से लड़की की तरफ से वह आभूषण आदि और कपड़े वापस करके सगाई तोड़ने (तलाक) पर दोनों पक्ष तैयार हैं। लेकिन वह आभूषण जो जैद ने अपनी ओर से अपने पोते को दिया था और जो लड़की को उसकी ओर से पहनाया गया था, जैद कहता है कि वह मुझे वापस मिलना चाहिए। लड़का कहता है, "अब मैं बालिग हूँ, वह मुझे मिलना चाहिए।" और अम्र, लड़के का पिता कहता है, "वह मुझे मिलना चाहिए।" इसलिए शरीयत के जानकारों से विस्तार से पूछा जाता है कि इस स्थिति में इस आभूषण को लेने का कानूनी हकदार कौन है - नाना, पिता, या खुद वह लड़का जिसकी सगाई हुई थी? कृपया सही उत्तर प्रदान करें और दोनों लोकों में पुण्य प्राप्त करें। उत्तर दें और पुण्य पाएं। यदि प्रश्नगत स्थिति में यह उपहार है, तो क्या नाना कानूनी रूप से पोते से वह आभूषण वापस लेने का हकदार है या नहीं?

उत्तर: ऐसे आभूषण और कपड़ों को लोकभाषा में "चढ़ावा" कहा जाता है। हालाँकि दूल्हे की ओर से दुल्हन को देने के संबंध में लोगों की प्रथाओं और रीति-रिवाजों में मतभेद है - कुछ इसे उपहार (हिबा) के रूप में देते हैं, कुछ ऋण (आरियत) के रूप में - लेकिन दूल्हे के रिश्तेदारों द्वारा दूल्हे के घर भेजे जाने वाले सामान के बारे में कोई मतभेद नहीं है। वह निश्चित रूप से उपहार और सहायता के रूप में ही होता है। किसी भी स्थिति में उन्हें इसकी वापसी का दावा नहीं होता। बच्चों की शादियों में जो ऐसी सहायता की जाती है, उसमें यदि सहायता करने वाला स्पष्ट कर दे कि "मैंने उपहार दिया है", तो वह उसी का है जिसके लिए कहा गया। और यदि स्पष्ट न करे, तो यदि वह वस्तु बच्चों के लिए उपयुक्त है, तो वह उनकी है। अन्यथा, यदि सहायता करने वाला पिता के पक्ष से या परिचितों में से है, तो वह उपहार पिता के लिए है। और यदि माता के रिश्तेदारों या परिचितों में से है, तो माता के लिए। लेकिन अगर सहायता करने वाले ने उस समय कुछ नहीं कहा, और अब वह मौजूद है और बयान करता है कि "मैंने फलां को उपहार दिया था", उदाहरण के लिए पिता, माता या बच्चों को, तो उसका कथन

शपथ के साथ मान्य होगा। आलमगीरिया में है: "जब कोई व्यक्ति खतना (सुन्नत) के लिए दावत का आयोजन करता है और लोग उपहार देते हैं और उन्हें बच्चे के सामने रखते हैं, तो चाहे देने वाले ने कहा हो 'यह बच्चे के लिए है' या नहीं कहा हो, यदि उपहार बच्चे के लिए उपयुक्त है - उदाहरण के लिए बच्चे के कपड़े, या ऐसी चीजें जो बच्चे उपयोग करते हैं जैसे हॉकी और गेंद - तो ये विशेष रूप से बच्चे के लिए ही होंगे, क्योंकि ऐसी चीजें आमतौर पर बच्चे की संपत्ति बनाई जाती हैं। और यदि वे उपहार बच्चे के लिए उपयुक्त हों..."

पेज 197/688

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

مسئلہ ۷۳: از سرائے صالح ضلع ہزارہ تحصیل ہری پور مرسلہ حاجی عبدالعزیز خاں صاحب ۱۲ ذی الحجہ ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنے نواسہ خالد کی منگنی میں جرگہ عام میں ایک زیور از قسم طلائی اس کے والد عمرو کو دے کر بطورِ ہبہ کہا کہ یہ تمہارے لڑکے کی طرف سے بطور نشانی لڑکی کو پہناتا ہوں، اس وقت عمرو کا لڑکا خالد نابالغ تھا اور عمرو نے وہ زیور زید سے قبول کر لیا لڑکی کے ہاتھ میں خالد کی طرف سے پہنایا گیا، اب وہ دونوں یعنی لڑکا اور لڑکی بالغ ہیں کسی خاص وجہ سے لڑکی کی طرف سے وہ زیور وغیرہ اور پار جات واپس ہو کر طلاق ہونے پر فریقین تیار ہیں لیکن وہ زیور جو زید نے اپنی طرف سے نواسہ کو دیا ہے اور لڑکی کو اس کی طرف سے پہنایا گیا تھا زید کہتا ہے کہ وہ مجھ کو واپس ہوئے اور لڑکا کہتا ہے کہ میں اب بالغ ہوں مجھ کو ملے اور عمرو لڑکے کا والد کہتا ہے مجھ کو ملنا چاہئے، اس لئے صاحبانِ شرع شریف سے مفصل طور پر دریافت کیا جاتا ہے کہ آیا اس صورت میں اس زیور کے لینے کا شرعاً کون مستحق ہے، کیا نانا یا باپ یا خود لڑکا جس کی منگنی ہوئی تھی؟ جواب باصواب عنایت فرما کر اجر دارین حاصل فرماویں، بینوا توجروا، اگر صورت مسئولہ میں ہبہ ہے تو نانا نواسے سے وہ زیور شرعاً واپس لینے کا حقدار ہے یا نہ؟

الجواب: ایسے زیور پارچہ کو عرف میں چڑھوا کہتے ہیں اسے دولہا کی طرف سے دُلہن کو دینے میں اگرچہ عرف وعادت ناس کا اختلاف ہے، بعض ہبہ دیتے ہیں بعض عاریتہ، مگر وہ جو دولہا کے اقارب دُلہا کے یہاں بھیجتے ہیں اس میں اصلاً اختلاف نہیں وہ یقیناً بطور ہبہ و امداد ہی ہوتا ہے، کسی حالت میں انہیں اس کی واپسی کا دعویٰ نہیں ہوتا، اولاد کی شادیوں میں جو ایسی اعانت

کی جاتی ہے اس میں اعانت کرنے والا اگر تصریح کردے کہ میں نے ہبہ کی جب تو وہ اس کی ہے، اور تصریح نہ کرے تو وہ چیز اگر اولاد کے مناسب ہے تو ان کی ہے ورنہ اگر یہ امداد کرنے والا باپ یا شناسائوں میں سے ہے تو وہ ہبہ باپ کے لئے ہے اور ماں کے اقارب سے یا شناسائوں میں سے ہے تو ماں کے لئے، مگر یہ کہ امداد کرنے والے نے اس وقت کچھ نہ کہا، اور اب وہ موجود ہے اور بیان کرے کہ میں نے فلاں کو ہبہ کیا تھا مثلاً باپ یا ماں یا اولاد کو تو اس کا قول قسم کے ساتھ معتبر ہوگا۔ عالمگیریہ میں ہے: اذا اتخذ الرجل عذیرة للختان فاهدی الناس هدایا ووضعوا بین یدی الولد فسواء قال المهدی هذا للولد او لم یقل فان کانت الهدیة تصلح للولد مثلاً بچے کے کپڑے، یا وہ شے جو بچے استعمال کرتے ہیں جیسے ہاکی اور گیند تو یہ بچے کیلئے ہی ہونگے کیونکہ ایسی چیزیں عادتاً بچے کی ملکیت کیجاتی ہیں، اور اگر وہ ہدیہ بچے کے مناسب ہوں

Fatawa Ridawiyyah Volume 12

[Arabic Column]: Like children's clothes or things used by children such as a polo stick and a ball, they belong to the child because this is customarily considered as making the child the owner, just like dirhams and dinars. One should look at the donor: if they are from the relatives or acquaintances of the father, then the gift belongs to the father. If they are from the relatives or acquaintances of the mother, then it belongs to the mother, because giving ownership here is customarily attributed to the mother and there to the father. Thus, reliance is placed on custom, unless a reason or evidence is found to indicate otherwise, in which case that would be relied upon. Similarly, if someone hosts a wedding feast (walima) for their daughter's wedding and people give gifts, then the division will be according to what we mentioned. All this applies when the donor has said nothing and it is difficult to refer back to their statement. However, if the donor says that the gift is for the father, the mother, the husband, or the wife, then the ruling will be according to the donor's word. This is stated in 'Al-Zahiriyya'.

[Urdu Column]: For example, children's clothes, or things that children use like a hockey stick and a ball, then these will be for the child alone because such things are customarily given to the child's ownership. And if those gifts are not suitable for a child, such as dirhams and dinars etc., then the donors will be considered: whether they are close to and acquaintances of the father or the mother. If they are related to the father, they will be for the father; and if they are related to the mother, they will be for the mother. This is because, customarily, here ownership is understood to be from the mother's side and there from the father's side. Therefore, custom (urf) must be relied upon. Yes, if such a cause or reason is found which is a clue against the custom we stated, then that clue will be relied upon. Likewise, if someone arranged a walima for a daughter's wedding and people gave gifts, they will follow the same division we mentioned. All this discussion is for the case when the donor has not made any explicit statement, and it is also difficult to refer back to them to find out. But when they have said that these are for the father or mother or husband or wife, then the ruling will be according to their statement. It is similarly stated in Zahiriyya. (T)

In short, there is no dispute about those ornaments being a gift from Zaid. Since his words were as mentioned in the question—that this is 'as a token from your boy'—then it was gifted to the grandson. He was a minor at that time, and his father accepted and took possession of it, so the gift was completed and the grandson

became its owner. Neither the father nor the maternal grandfather has any right over it. The maternal grandfather cannot take it back in any way because prohibited kinship (qarabah mahramah) prevents revocation of a gift. It is stated in Durr al-Mukhtar:

1. Fatawa Hindiyyah, Book of Gifts, Chapter Three, Noorani Kutub Khana Peshawar, 4/383. Page 198 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

[अरबी कॉलम]: जैसे बच्चों के कपड़े या बच्चों द्वारा उपयोग की जाने वाली चीज़ें जैसे पोलो स्टिक और गेंद, तो वे बच्चे के लिए हैं क्योंकि यह प्रथागत रूप से बच्चे को मालिक बनाना माना जाता है, जैसे दिरहम और दीनार के मामले में। उपहार देने वाले को देखा जाना चाहिए: यदि वे पिता के रिश्तेदारों या परिचितों में से हैं, तो उपहार पिता का है। यदि वे माता के रिश्तेदारों या परिचितों में से हैं, तो वह माता का है, क्योंकि यहाँ स्वामित्व देना प्रथागत रूप से माता की ओर और वहाँ पिता की ओर माना जाता है। इस प्रकार, प्रथा (उर्फ़) पर भरोसा किया जाता है, जब तक कि इसके विपरीत कोई कारण या प्रमाण न मिल जाए, ऐसी स्थिति में उसी पर भरोसा किया जाएगा। इसी प्रकार, यदि कोई अपनी बेटी की शादी के लिए वलीमा (भोज) आयोजित करता है और लोग उपहार देते हैं, तो विभाजन उसी के अनुसार होगा जिसका हमने उल्लेख किया है। यह सब तब लागू होता है जब उपहार देने वाले ने कुछ न कहा हो और उसके कथन को जानना कठिन हो। हालाँकि, यदि उपहार देने वाला कहता है कि उपहार पिता, माता, पति या पत्नी के लिए है, तो निर्णय उपहार देने वाले के शब्दों के अनुसार होगा। ऐसा 'अल-ज़हीरिया' में उल्लेखित है।

[उर्दू कॉलम]: उदाहरण के लिए, बच्चों के कपड़े, या वह वस्तु जिसे बच्चे उपयोग करते हैं जैसे हॉकी और गेंद, तो ये बच्चे के लिए ही होंगे क्योंकि ऐसी चीज़ें प्रथागत रूप से बच्चे के स्वामित्व में दी जाती हैं। और यदि वे उपहार बच्चे के लिए उपयुक्त नहीं हैं, जैसे दिरहम और दीनार आदि, तो उपहार देने वालों को देखा जाएगा: कि वे पिता के करीबी और परिचित हैं या माता के। यदि वे पिता से संबंधित हैं, तो वे पिता के लिए होंगे; और यदि वे माता से संबंधित हैं, तो वे माता के लिए होंगे। इसका कारण यह है कि प्रथा के अनुसार यहाँ माता की ओर से और वहाँ पिता की ओर से स्वामित्व प्रदान करना समझा जाता है। इसलिए प्रथा (उर्फ़) पर भरोसा करना होगा। हाँ, यदि कोई ऐसा कारण या पहलू पाया जाए जो हमारे बताए गए रिवाज के विरुद्ध संकेत करता हो, तो उसी पर भरोसा किया जाएगा। और इसी प्रकार, यदि किसी ने बेटी की शादी के लिए वलीमा का प्रबंध किया और लोगों ने उपहार दिए, तो वे उसी विभाजन के अनुसार होंगे जिसका हमने उल्लेख किया है। यह सारी चर्चा उस स्थिति के लिए है जब उपहार देने वाले ने कोई स्पष्टीकरण न दिया हो, और उससे पूछना भी कठिन हो। लेकिन जब उसने कह दिया कि यह पिता या माता या पति या पत्नी के लिए है, तो आदेश उसके कथन के अनुसार होगा। ज़हीरिया में भी ऐसा ही है। (त)

संक्षेप में, ज़ैद की ओर से उन गहनों के उपहार (हिबा) होने में कोई विवाद नहीं है। और चूँकि उसके शब्द वही हैं जो प्रश्न में वर्णित हैं—कि 'यह तुम्हारे लड़के की ओर से निशानी के तौर पर है'—तो यह नवासे (बेटी के बेटे) को उपहार दिया गया। वह उस समय नाबालिग था, और उसके पिता ने स्वीकार कर कब्ज़ा कर लिया, तो उपहार पूरा हो गया और नवासा उसका मालिक बन गया। इसमें न तो पिता का अधिकार है और न ही नाना का। नाना इसे किसी भी तरह से वापस नहीं ले सकता क्योंकि निषिद्ध रिश्तेदारी (क़राबत-ए-महरमा) उपहार की वापसी में बाधक है। दुर्र-ए-मुख़्तार में है:

1. फ़तावा हिन्दिया, किताबुल हिबा, अध्याय तीन, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 4/383. पृष्ठ 198 / 688

فتاویٰ رضویہ جلد دو ازدہم

[عربی متن]: مثل ثياب الصبيان او شيئى يستعمله الصبيان مثل الصولجان والكرة فهو للصبى لان هذا تمليك للصبى عادة كالدراهم والدنانير، ينظر الى المهدى فان كان من اقارب الاب او معارفه فهو للاب وان كان من اقارب الام او معارفها فهو للام لان التمليك هنا من الام عرفا وهناك من الاب فكان التعويل على العرف حتى لو وجد سبب او وجه يستدل به على غير ماقلنا يعتمد على ذلک، وكذلك اذا اتخذ وليمة لزفاف ابنته فاهدى الناس هدايا فهو على ما ذكرنا من التقسيم، وهذا كله اذالم يقل المهدى شيئا وتعذر الرجوع الى قوله اما اذا قال اهدية للاب او للام او للزوج او للمرأة فالقول للمهدى كذا فى الظهيرية 1-

[اردو متن]: مثلاً بچے کے کپڑے، یا وہ شے جو بچہ استعمال کرتے ہیں جیسے ہا کی اور گیند تو یہ بچے کیلئے ہی ہونگے کیونکہ ایسی چیزیں عادۃً بچے کی ملکیت کی جاتی ہیں ، اور اگر وہ ہدیے بچے کے مناسب نہ ہوں جیسا کہ دراہم و دینار وغیرہ، تو پھر ہدیہ دینے والوں کو دیکھا جائے گا کہ وہ والد کے قریبی اور واقفیت والے ہیں یا ماں کے، اگر وہ والد کے تعلق والے ہوں تو وہ والد کے لئے ہوں گے ، اور اگر ماں کے تعلق والے ہوں تو وہ ماں کے لئے ہوں گے، کیونکہ عرفاً یہاں ماں کی طرف سے تملیک سمجھی جاتی ہے اور وہاں باپ کی طرف سے سمجھے جاتے ہیں ، لہٰذا عرف پر اعتماد کرنا ہوگا، ہاں اگر کوئی ایسا سبب یا وجہ پائی جائے جو ہمارے بتائے ہوئے عرف کے خلاف قرینہ ہے تو پھر اسی قرینہ پر اعتماد کی جائے، اور یونہی اگر کسی نے بیٹی کے زفاف کے لئے ولیمہ کا انتظام کیا تو لوگوں نے ہدیے دئے تو وہ اسی تقسیم پر ہوں گے جو ہم نے ذکر کی ہے، یہ تمام گفتگو اس صورت میں ہے جب ہدیہ دینے والے نے کوئی تصریح نہ کی ہو، اور اس سے معلوم کرنے کے لئے رجوع بھی مشکل ہو، لیکن جب اس نے کہہ دیا کہ یہ

باپ یا ماں یا خاوند یا بیوی کے لئے ہیں تو پھر اس کے قول کے مطابق حکم ہوگا، ظہیریہ میں یونہی ہے۔ (ت)

بالجملہ زید کی طرف سے وہ زیور ہبہ ہونے میں کلام نہیں اور جبکہ اس کے لفظ وہ ہیں جو سوال میں مذکور ہوئے کہ یہ تمہارے لڑکے کی طرف سے بطور نشانی تو یہ نواسے کو ہبہ ہوا اور وہ اس وقت نابالغ تھا اور اس کے باپ نے قبول کرکے قبضہ کر لیا تو ہبہ تمام ہو گیا اور نواسہ اس کا مالک ہو گیا، اس میں نہ باپ کا حق ہے نہ نانا کا، نہ نانا اسے کسی طرح واپس لے سکتا ہے کہ قرابت محرمہ مانع رجوع ہے، در مختار میں ہے :

1 فتاوٰی ہندیہ کتاب الہبہ باب الثالث نورانی کتب خانہ پشاور ۳۸۳/۴ Page 198 of 688

Fatawa Razawiyya Volume 12

[Box at the top] Arabic: لَو وَهَبَ الَّذِی رَحِمٍ مَحْرَمٍ نَسَبًا وَلَوْ ذِمِّیًّا اَوْ مُسْتَأْمَنًا لَا یَرْجِعُ - واللہ تعالیٰ اعلم۔ Urdu Translation: If someone gives a gift to their blood relative who is within the prohibited degrees (mahram), whether that relative is a non-Muslim citizen (dhimmi) or one who has entered with a security permit (mustamin), they cannot take it back. And Allah Almighty knows best. (T)

Question 74: From Chandah Par, Post Office Shohrat Ganj, District Basti, asked by Muhammad Yar Ali Sahib, Vice Teacher Training School, 17 Dhu al-Hijjah 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter? At the time of marriage, the parents of the adult girl, with worldly thoughts, fixed such an extensive mahr (dowry) that the adult boy cannot pay it under any circumstances from his parents' existing property. The boy, thinking that if he did not accept it, the marriage would not take place, accepted it out of compulsion, solely trusting in Allah, considering the marriage valid in his own view. When they both happened to live together in the house, within that same week, the adult girl, voluntarily and with consent, without any compulsion or pressure from the husband, keeping Allah as witness and overseer, and invoking all prophets and angels, forgave the mahr. Since then, a year has passed, and husband and wife are together. Now, for a few days, it has been heard from people that this marriage is invalid and forbidden, and this cohabitation is adultery (haram-kari). Out of fear of the hereafter, the boy is willing in every way for his clearance, although his wife is very dear to him, but he is ready with heart and soul to follow the Shari'i fatwa. The mahr that was fixed was one thousand and two ashrafis (gold coins), while the parents' property is about five hundred rupees in current currency. Please provide a ruling and be rewarded.

The Answer: Even if the boy did not have the support of a single penny and a mahr of one hundred million ashrafis was fixed, the marriage would still be valid. And God forbid (Ma'adh Allah), it had nothing to do with adultery. As for the hadith stating that those whose marriage took place but their intention was not to pay the mahr will be raised as fornicators on the Day of Judgment, this is for those who fix the mahr merely for namesake as a false, futile custom. Legally according to Shariah, their marriage also becomes valid, and they are not fornicators but husband and wife according to the law of Shariah, though in the hereafter, the burden of this ill-intention will be like zina (adultery) because they took Allah's command lightly. Here, as the boy accepted by trusting in Allah Almighty, this situation has no relevance to

that. Furthermore, since the adult girl forgave it voluntarily without any pressure, it has been forgiven. And Allah Almighty knows best.

---

1 Durr-ul-Mukhtar, Chapter of Revoking Gifts, Mujtabai Press Delhi 2/163. 2 Al-Sunan al-Kubra, Chapter on Retaining Dowry etc., Dar Sadir Beirut 7/242, Kanz al-Ummal Hadith Beirut 16/323.

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

[ऊपर का बॉक्स] अरबी: لَو وَهَبَ الَّذِی رَحِمٍ مَحْرَمٍ نَسَبًا وَلَوْ ذِمِّیًّا اَوْ مُسْتَأْمَنًا لَا یَرْجِعُ - واللہ تعالیٰ اعلم۔ उर्दू अनुवाद: यदि किसी ने अपने रक्त सम्बन्धी महरम (नज़दीकी रिश्तेदार) को उपहार (हिबा) दिया, चाहे वह काफ़िर धिम्मी हो या सुरक्षा लेकर आया हो, तो वह उसे वापस नहीं ले सकेगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मस्अला 74: चांदह पार, डाकखाना शोहरत गंज, ज़िला बस्ती से, सायल मोहम्मद यार अली साहिब, नायब मुदर्रिस ट्रेनिंग स्कूल, 17 ज़िल-हिज्जा 1339 हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मस्अले में क्या फ़रमाते हैं कि निकाह के वक़्त बालिग़ा लड़की के वालिदैन ने दुनियावी ख़याल से इस क़दर भारी महर बांधा कि बालिग़ लड़का अपने वालिदैन की मौजूदा जायदाद से किसी सूरत उसे अदा नहीं कर सकता। लड़के ने इस ख़याल पर कि अगर मंज़ूर न किया तो निकाह नहीं होगा, मजबूरी में महज़ अल्लाह के भरोसे पर अपने नज़दीक निकाह जायज़ समझकर मंज़ूर कर लिया। जब मकान पर साथ रहने का इत्तेफ़ाक हुआ तो उसी हफ़्ते के अंदर बालिग़ा लड़की ने ख़ुशी और रजामंदी से, बिना किसी मजबूरी और शौहर के दबाव के, अल्लाह को गवाह और देखने वाला (शाहिद-ओ-बसीर) जानकर और तमाम नबियों और फ़रिश्तों का वास्ता दिलाकर महर माफ़ कर दिया। तब से आज तक एक साल का समय गुज़रा, मियां-बीबी दोनों साथ हैं। अब कुछ दिनों से लोगों की ज़ुबानी मालूम हुआ कि यह निकाह नाजायज़ और हराम हुआ और यह सोहबत हरामकारी है। लड़का आख़िरत के डर से अपनी बरात (मुक्ति) के लिए हर सूरत से राज़ी है, हालाँकि पत्नी उसे बहुत प्रिय है मगर शरई फ़तवे पर अमल करने को दिल-ओ-जान से तैयार है। महर जो बंधा है उसकी संख्या एक हज़ार दो अशर्फ़ी (सोने के सिक्के) है, जबकि लड़के के वालिदैन की जायदाद तक़रीबन पांच सौ रुपये मौजूदा सिक्का है। बयान फरमाएं और पुण्य (सवाब) पाएं।

अल-जवाब: अगर लड़के के पास एक पैसे का सहारा न होता और दस करोड़ अशर्फ़ी का महर बांधा जाता तब भी निकाह सही था और मआज़अल्लाह उसे हरामकारी से कुछ संबंध न था। यह जो हदीस में इरशाद हुआ है कि जिनका निकाह हुआ और उनकी नियत में महर चुकाना नहीं था, वे क़यामत के दिन व्यभिचारी (ज़ानी और ज़ानिया) के रूप में उठाए जाएंगे, यह उनके लिए है जो महज़ नाम के लिए झूठे तौर पर एक निरर्थक रस्म समझकर महर बांधते हैं। शरीअत के अनुसार निकाह उनका भी हो जाएगा और वे शरीअत के हुक्म से ज़ानी और ज़ानिया नहीं बल्कि पति-पत्नी हैं, हालाँकि क़यामत में उन पर इस बुरी नीयत का बोझ व्यभिचार (ज़िना) की तरह होगा क्योंकि उन्होंने अल्लाह के हुक्म

को हल्का समझा। यहाँ जबकि लड़के ने अल्लाह अज़्ज़वजल पर भरोसा करके स्वीकार किया, तो इस स्थिति से उसका कोई संबंध न हुआ। फिर जबकि बालिग़ा लड़की ने बिना किसी दबाव के ख़ुशी से माफ़ कर दिया, तो वह माफ़ हो गया। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

---

1 दुर्रे मुख़्तार, बाबुल रुजू फ़िल हिबा, मतबा मुज्तबाई दिल्ली 2/163. 2 अल-सुनन अल-कुबरा, बाब मा जाआ फ़ी हब्सिस सदाक़ इत्यादि, दार सादर बेरुत 7/242, कन्जुल उम्माल हदीस बेरुत 16/323.

पृष्ठ 199/688

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

[اوپر کا خانہ] عربی: لَو وَھَبَ الَّذِی رَحِمٍ مَحْرَمٍ نَسَبًا وَلَوْ ذِمِّیًّا اَوْ مُسْتَأْمَنًا لَا یَرْجِعُ - واللہ تعالیٰ اعلم۔

اردو ترجمہ: اگر کسی نے اپنے ذی رحم محرم نسبی کو ہبہ دیا تو وہ خواہ کافر ذمی ہو یا امن لے کر آیا ہو تو واپس نہ لے سکے گا واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۷۴: از چاندہ پار ڈاک خانہ شہرت گنج ضلع بستی مسئولہ محمد یار علی صاحب نائب مدرس ٹریننگ اسکول ۱۷ ذی الحجہ ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ نکاح کے وقت لڑکی بالغہ کے والدین نے بخیال دنیا اس قدر وسیع مہر بندھوایا کہ لڑکا بالغ اپنے والدین کی جائداد موجودہ سے کسی صورت ادا نہیں کرسکتا ، لڑکے نے اس خیال پر کہ اگر منظور نہ کروں گا نکاح نہ ہوگا مجبورا محض اللہ کے بھروسے پر اپنے نزدیک نکاح جائز سمجھ کر منظور کرلیا جب مکان پر ہمراہ رہنے کا دونوں کا اتفاق ہوا تو اسی ہفتہ کے اندر لڑکی بالغہ نے بخوشی و رضا مندی بغیر کسی مجبوری اور دباؤ شوہر کے سامنے اللہ کو شہید و بصیر جان کر جمیع انبیاء و ملائکہ کا واسطہ دلا کر معاف کردیا ، جب سے آج تک ایک سال کا زمانہ گزرا میاں بی بی دونوں ساتھ ہیں اب چند روز سے لوگوں کی زبانی معلوم ہوا کہ یہ نکاح ناجائز و حرام ہوا اور یہ صحبت حرامکاری ہے لڑکا بخوف عقبیٰ اپنی براءت کے لئے ہر صورت سے راضی ہے گو کہ بی بی اس کو بہت محبوب ہے مگر شرعی فتوی پر کار بند ہونے کو دل و جان سے تیار ہے ، مہر جو بندھا ہے اس کی تعداد ایک ہزار دو اشرفی لڑکے کے والدین کی جائداد تقریباً پانچ سو روپے۔ سکہ رائج الوقت ، بینوا تو جروا۔

الجواب: اگر لڑکے کے پاس ایک پیسے کا سہارا نہ ہوتا اور دس کروڑ اشرفی کا مہر باندھا جاتا جب بھی نکاح صحیح تھا اور معاذ اللہ اسے حرام کاری سے کچھ تعلق نہ تھا، یہ جو حدیث میں

ارشاد ہوا ہے کہ جن کا نکاح ہوا ان کی نیت میں ادائے مہر نہیں وہ روز قیامت زانی وزانیہ اٹھائے جائیں گے، یہ ان کے واسطے ہے جو محض برائے نام جھوٹے طور پر ایک لغو رسم سمجھ کر مہر باندھیں شرعاً نکاح اُن کا بھی ہو جائے گا اور وہ بحکم شریعت زانی وزانیہ نہیں زن وشو ہیں اگرچہ قیامت میں اُن پر اس بد نیت کا وبال مثل زنا ہو کہ انہوں نے حکم الہی کو ہلکا سمجھا یہاں کہ لڑکے نے اللہ عزوجل پر بھروسا کر کے قبول کیا تو اس صورت سے کچھ علاقہ نہ ہوا پھر جبکہ لڑکی بالغہ نے بے کسی دباؤ کے بخوشی معاف کردیا معاف ہوگیا، واللہ تعالیٰ اعلم۔

---

1 در مختار باب الرجوع فی الہبہ مطبع مجتبائی دہلی ۲/۱۶۳ 2 السنن الکبری باب ماجاء فی حبس الصداق الخ دار صادر بیروت ۷/۲۴۲، کنز العمال حدیث بیروت ۱۶/۳۲۳

Fatawa Razawiyya Volume 12

Chapter of Al-Jihaz (Account of Dowry)

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful

Question 75: 25 Safar 1306 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: A person married off his daughter and gave her some jewelry, goods, or property as dowry. Can her husband be the owner of that wealth during the girl's lifetime, or is the girl herself the owner? Explain and be rewarded.

The Answer: That wealth in its entirety is the exclusive property of the woman; no one else has any right to it. It is stated in Radd al-Muhtar: "Everyone knows that the dowry (Jihaz) is the property of the woman. If the husband divorces her, she takes it all. If she dies, it is inherited from her, and the husband cannot reserve any part of it for himself." And Allah knows best. In Radd al-Muhtar, it is said that everyone knows that dowry is the property of the woman. When the husband divorces her, she will take back the entire dowry. If the woman dies, the dowry will be given to her heirs; the husband cannot reserve anything from it for himself. And Allah Almighty knows best. (T)

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/253.

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

बाब अल-जिहाज़ (दहेज का बयान)

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

मसला 75: 25 सफ़र 1306 हिजरी दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक व्यक्ति ने अपनी लड़की का निकाह किया और दहेज में उसे कुछ जेवर या सामान या जायदाद दी, तो उस माल का मालिक उस लड़की के जीवनकाल में उसका पति हो सकता है या वह लड़की ही मालिक है? बयान करें और पुण्य पायें।

उत्तर: वह सारा माल पूरी तरह से उस महिला की निजी संपत्ति है, इसमें किसी दूसरे का कोई अधिकार नहीं है: रद्द अल-मुह्तार में है: "हर कोई जानता है कि दहेज महिला की संपत्ति है। जब पति उसे तलाक दे देता है, तो वह पूरा दहेज ले लेती है, और अगर महिला मर जाए तो दहेज उसके वारिसों को दिया जाएगा, पति उसमें से अपने लिए कुछ भी विशेष नहीं कर सकता।" और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। रद्द अल-मुह्तार में है कि हर कोई जानता है कि दहेज महिला का मालिकाना हक होता है और जब पति उसे तलाक दे दे तो वह सारा दहेज ले लेगी, और अगर महिला मर जाए तो दहेज उसके वारिसों को दिया जाएगा, पति उसमें से अपने लिए कुछ भी खास नहीं रख सकता। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

1. रद्द अल-मुह्तार, बाब अन-नफ़क़ा, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत 2/253

पृष्ठ 201 का 688

فتاوٰی رضویہ جلد دوا زدہم

باب الجہاز (جہیز کا بیان)

بسم اللہ الرحمن الرحیم

مسئلہ ۷۵: ۲۵ صفر ۱۳۰۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے اپنی لڑکی کا نکاح کیا اور جہیز میں اس کو کچھ زیور یا اسباب یا جائیداد دی تو اس مال کا مالک اس لڑکی کے حین حیات میں اس کا شوہر ہو سکتا ہے یا وہ لڑکی ہی مالک ہے۔ بینوا توجروا

الجواب: وہ مال تمام و کمال خاص ملک عورت ہے دوسرے کا اس میں کچھ حق نہیں: فی ردالمحتار احد یعلم ان الجہاز ملک المرأۃ وانہ اذا طلقھا تاخذ کلہ واذا ماتت یورث عنھا ولا یختص بشئی منہ ۱۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ ردالمحتار میں ہے ہر شخص جانتا ہے کہ جہیز عورت کی ملکیت ہوتا ہے اور جب شوہر اس کو طلاق دے دے وہ تمام جہیز لے لے گی، اور اگر عورت مرجائے تو جہیز اس کے وارثوں کو دیا جائے گا شوہر اس میں سے اپنے لئے کچھ بھی مختص نہیں کر سکتا۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

۱۔ ردالمحتار باب النفقہ داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۵۳

Fatawa Ridawiyya Volume 12

Problem 76: What do the scholars of religion say regarding this matter: Is the jewelry that Zaid gave to his daughter in her dowry owned by Zaid's daughter or her husband? And if the husband uses it without the wife's permission, will it be valid or not? Clarify and you shall be rewarded.

Answer: The dowry, including jewelry etc., that Zaid gave to his daughter is specifically the property of the daughter. The husband has no ownership rights in it whatsoever, nor can his use of it be valid without the wife's consent and permission.

From Durr al-Mukhtar: "If a person provides his daughter with a dowry and hands it over to her, he does not have the right to take it back from her, nor do his heirs after him if he handed it over while in good health. Rather, it belongs exclusively to her, and this is the issued fatwa." Explanation: It is in Durr al-Mukhtar that if someone gave his daughter some dowry and also handed it over to her, he can no longer take it back, nor can his heirs take it after his death. Instead, it is the exclusive property of the woman, and the fatwa is given on this, provided that he handed over this dowry to the daughter while in a state of health (i.e., not given during a terminal illness). (t)

Allama Shami states: "Everyone knows that the dowry is the property of the woman, and no one else has any right to it. And Allah Almighty knows best." (t)

Problem 77: 30 Jumada al-Thani 1311 AH What do the scholars of religion say in this case: It is customary in these cities that a wedding suit etc. is sent from the groom's side to the bride with the hope that much jewelry etc. will be received from the other side. Therefore, in anticipation of a return, expensive suits worth one hundred or two hundred rupees and other appropriately valuable items are sent. There is also an explicit understanding that if goods worth two hundred are sent from here, goods worth four hundred will be received in return. Similarly, an expensive suit etc. is sent from the bride's side for the groom. Then, when separation occurs between the couple, and a demand is made from the wife's side for what she gave, and the husband, following the requirements of honesty, returns everything that came from the other side, like the suit etc., and gets a receipt for these items. In this case, can whatever suit, jewelry etc. that was sent from the husband's side be returned, or...

---

1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Mahr, Mujtabai Press Delhi, 1/203
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Nafaqah, Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/153

फ़तावा रज़विय्या जिल्द बारहवीं

मसला ७६: क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि ज़ैद ने जो ज़ेवर अपनी बेटी को जहेज़ में दिया उसकी मालिक दुख़्तरे ज़ैद (ज़ैद की बेटी) है या उसका शौहर, और अगर शौहर बे-इज़्न-ए-ज़ौजा (पत्नी की अनुमति के बिना) उसमें तसर्रुफ़ (उपयोग) करे तो नाफ़िज़ (मान्य) होगा या नहीं। बयान करें, सवाब पाएँ।

अल-जवाब: ज़ेवर वग़ैरह जहेज़ जो ज़ैद ने अपनी बेटी को दिया, वह ख़ास तौर पर बेटी की मिलकियत है। शौहर का उसमें किसी तरह का मालिकाना हक़ नहीं है, न ही उसका तसर्रुफ़ पत्नी की रज़ामंदी और इजाज़त के बिना नाफ़िज़ हो सकता है।

दुर्रे मुख़्तार में है: "अगर किसी शख़्स ने अपनी बेटी को कुछ जहेज़ दिया और उसे उसके सुपुर्द भी कर दिया, तो अब वह उससे वापस नहीं ले सकता, और न ही उसके मरने के बाद उसके वारिस ले सकते हैं। बल्कि वह ख़ास औरत की मिलकियत है, और इसी पर फ़तवा दिया जाता है बशर्ते कि उसने यह जहेज़ सेहत की हालत में बेटी के सुपुर्द किया हो (यानी मर्ज़ुल मौत में न दिया हो)।"
व्याख्या: दुर्रे मुख़्तार में है कि किसी शख़्स ने अपनी बेटी को कुछ जहेज़ दिया और वह उसके सुपुर्द भी कर दिया तो अब उससे वापस नहीं ले सकता, और न ही उसके मरने के बाद उसके वारिस ले सकते हैं बल्कि वह ख़ास औरत की मिलकियत है, और इसी पर फ़तवा दिया जाता है बशर्ते कि उसने यह जहेज़ हालत-ए-सेहत में बेटी के सुपुर्द किया हो (यानी मर्ज़-उल-मौत में न दिया हो)। (त)

अल्लामा शामी फ़रमाते हैं: "हर शख़्स जानता है कि जहेज़ औरत की मिलकियत होता है इसमें किसी और का कोई हक़ नहीं होता। वल्लाहु तआला आलम।" (त)

मसला ७७: ३० जमादी-उल-उख़रा १३११ हिजरी क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस सूरत में कि यह जो इन शहरों में रिवाज है कि दूल्हे की तरफ़ से जोड़ा वग़ैरह दुल्हन को भेजा जाता है इस उम्मीद में कि उधर से बहुत ज़ेवर वग़ैरह मिलेगा। लिहाज़ा बदले की उम्मीद में सौ रुपये, दो सौ रुपये के क़ीमती जोड़े और दीगर क़ीमती सामान भेजे जाते हैं और यह साफ़ बात भी होती है कि इधर से दो सौ का माल जाएगा तो उसके बदले में चार सौ का माल मिलेगा, ऐसा ही दुल्हन की तरफ़ से दूल्हे के वास्ते जोड़ा वग़ैरह क़ीमती भेजा जाता है, फिर जब मियाँ-बीवी में जुदाई हो गई और पत्नी की तरफ़ से अपने दिए हुए की मांग हुई, और शौहर की तरफ़ से ईमानदारी के तक़ाज़े के मुताबिक़ जो कुछ उधर

से आया था जोड़ा वग़ैरह सब दे दिया और रसीद उन चीज़ों की लिखवा ली, इस सूरत में शौहर की तरफ़ से जो कुछ जोड़ा और ज़ेवर वग़ैरह गया था वापस हो सकता है या...

---

1. दुर्रे मुख़्तार, बाबुल महर, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, १/२०३
2. रदुल मुहतार, बाबुल नफ़क़ा, एह्या-उत-तुराथ अल-अरबी बैरूत, २/१५३

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

مسئلہ ۷۶: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے جو زیور اپنی بیٹی کو جہیز میں دیا اس کی مالک دخترِ زید ہے یا اس کا شوہر، اور اگر شوہر بے اذنِ زوجہ اس میں تصرف کرے تو نافذ ہوگا یا نہیں۔ بینوا توجروا

الجواب: زیور وغیرہ جہیز کہ زید نے اپنی بیٹی کو دیا خاص ملکِ دختر ہے شوہر کو کسی طرح کا استحقاقِ مالکانہ اُس میں نہیں، نہ اس کا تصرف بے رضا و اذنِ زوجہ نافذ ہوسکے۔

في الدر المختار جهز ابنته بجهاز وسلمها ذلک ليس له الاسترداد منها، ولا لورثته بعده ان سلمها ذلک في صحته بل تختص به و به يفتٰی۔ در مختار میں ہے کہ کسی شخص نے اپنی بیٹی کو کچھ جہیز دیا اور وہ اس کے سپرد بھی کردیا تو اب اس سے واپس نہیں لے سکتا، اور نہ ہی اس کے مرنے کے بعد اس کے وارث لے سکتے ہیں بلکہ وہ خاص عورت کی ملکیت ہے، اور اسی پر فتوٰی دیا جاتا ہے بشرطیکہ اس نے یہ جہیز حالتِ صحت میں بیٹی کے سپرد کیا ہو (یعنی مرض الموت میں نہ دیا ہو)۔ (ت)

علامہ شامی فرماتے ہیں: کل احد یعلم ان الجهاز ملک المرأة لا حق لاحد فیه۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ ہر شخص جانتا ہے کہ جہیز عورت کی ملکیت ہوتا ہے اس میں کسی اور کا کوئی حق نہیں ہوتا۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۷۷: ۳۰ جمادی الآخرہ ۱۳۱۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس صورت میں کہ یہ جو متعارف ان شہروں میں ہے کہ دولہا کی طرف سے جوڑا وغیرہ دلہن کو بھیجا جاتا ہے بایں اُمید کہ اُدھر سے بہت زیور وغیرہ ملے گا لہذا بامید عوض جوڑے گراں قیمت سوروپے دوسوروپے کے

اور دیگر اسباب قیمتی مناسب اس کے بھیجتے ہیں اور یہ صراحت بھی ہوتی ہے کہ ادھر سے دوسو کا مال جائے گا تو اس کے عوض میں چار سو کا مال ملے گا، ایسا ہی دلہن کی طرف سے دولہا کے واسطے جوڑا وغیرہ گراں قیمت بھیجا جاتا ہے، پھر جب زوجین میں جدائی ہوگئی اور زوجہ کی طرف سے طلب اپنے دئے کی ہوئی، اور زوج کی طرف بمقتضائے ایمانداری جو کچھ اُدھر سے آیا تھا جوڑا وغیرہ سب دے دیا اور رسید ان اشیاء کی لکھوالی، اس صورت میں زوج کی طرف سے جو کچھ جوڑا اور زیور وغیرہ گیا تھا واپس ہوسکتا ہے یا۔۔

---

1 درمختار باب المہر مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۰۳ 2 ردالمحتار باب النفقہ احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۱۵۳

Fatawa Razawiya, Volume 12

...not, and if one of them destroys what the other gave him, then in this case can the other person whose property was destroyed take it from the destroyer or not? The husband's parents gave some jewelry etc. to their son's wife for the sake of reconciling hearts with the intent that it will remain in our house and remain in our control at all times to be used for another purpose whenever we wish, and will be remade whenever we wish, as is common among traders to give such property as a loan (ariyah) for the beautification of their home, not as a transfer of ownership (tamleek). In this case, are the parents the owners of that property or not? Provide a ruling, may you be rewarded.

The Answer:

According to the common and widespread custom of our cities, dowry (jahez) is specifically the property of the wife, in which the husband has no right. If a divorce occurs, she takes it all, and if she dies, it is distributed among her heirs. It is stated in Rad al-Muhtar:

[Arabic Box 1] Arabic: Kullu ahadin ya'lamu annal jihaza lil-mar'ati wa-annahu idha tallaqaha ta'khudhuhu kullahu wa-idha maatat yurathu 'anha. [1] Urdu Translation: Everyone knows that the dowry is the property of the woman. When the husband divorces her, she will take the entire dowry, and when the woman dies, the dowry will be given to her heirs. (T)

Yes, in a state of harmony, his parents also use some items of the dowry like vessels and bedding etc., and customarily there is no prohibition from this. This does not establish ownership for the husband or the husband's parents, but rather is based on mutual informality where no distinction is made between the properties of husband and wife, just as women freely use the husband's properties, which does not make them the owners. In 'Uqud al-Durriyah', Book of Inheritance, it is quoted from 'Bahr al-Ra'iq':

[Arabic Box 2] Arabic: La yakunu istimta'uha bi-mashriyyihi wa-ridahu bidhalika dalilan 'ala annahu malakaha dhalika kama tafhamuhu an-nisau wal-'awam wa-qad aftaytu bidhalika miraran. [2] Urdu Translation: A woman's benefit from property bought by the husband and the husband's consent to it is not proof that the woman has become the owner of that property, as women and common people think. In reality, I have given fatwas on this several times. (T)

From here it is clear that the 'bari' (gifts) from the husband's side, even if made expensive in the hope of a large dowry, is not a compensation. If they keep these items in their own ownership and send them only for name's sake at the time, thinking it will come back to our house, then it is obvious that...

[Footnotes] 1. Rad al-Muhtar, Chapter on Maintenance, Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/253. 2. Al-Uqud al-Durriyah Tanqih fi Fatawa Hamidiyah, Book of Claims / Book of Inheritance, 2/350, Haji Abdul Ghaffar, Kandahar, Afghanistan.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

...नहीं और अगर उन दोनों में से एक व्यक्ति उस चीज़ को नष्ट कर दे जो दूसरे ने उसे दी थी, तो इस स्थिति में क्या वह दूसरा व्यक्ति जिसकी संपत्ति नष्ट की गई है, नष्ट करने वाले से उसे ले सकता है या नहीं? पति के माता-पिता ने अपने बेटे की पत्नी को कुछ गहने आदि दिल मिलाने के लिए इस उद्देश्य से दिए कि वह हमारे घर में रहेंगे और हर समय हमारे नियंत्रण में रहेंगे, जब हम चाहें उन्हें किसी दूसरे काम में लाएँगे और जब चाहें उन्हें दोबारा बनवा लेंगे, जैसा कि व्यापारियों में चलन है कि वे अपने घर की सजावट के लिए ऐसी संपत्ति उधार (आरियत) के तौर पर देते हैं, न कि स्वामित्व हस्तांतरण (तमलीक) के तौर पर। इस स्थिति में क्या माता-पिता उस संपत्ति के मालिक हैं या नहीं? उत्तर दें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर:

हमारे शहरों के आम और प्रचलित रीति-रिवाजों के अनुसार, दहेज (जहेज़) विशेष रूप से पत्नी की संपत्ति होती है, जिसमें पति का कोई अधिकार नहीं होता। यदि तलाक होता है, तो वह सब ले जाती है, और यदि उसकी मृत्यु हो जाती है, तो इसे उसके वारिसों में विभाजित किया जाता है। 'रद अल-मुह्तार' में है:

[अरबी बॉक्स 1] अरबी: हर कोई जानता है कि दहेज महिला का है और अगर वह उसे तलाक देता है तो वह उसे पूरा ले लेती है और अगर वह मर जाती है तो उसके वारिसों को मिलता है। [1] उर्दू व्याख्या: हर व्यक्ति जानता है कि दहेज औरत की मिल्कियत होता है, जब शौहर उसे तलाक़ दे दे तो वह तमाम जहेज़ ले लेगी और जब औरत मर जाए तो जहेज़ उसके वारिसों को दिया जाएगा। (त)

हाँ, आपसी सद्भाव की स्थिति में, उसके माता-पिता भी दहेज की कुछ वस्तुओं जैसे बर्तन और बिस्तरों आदि का उपयोग करते हैं, और प्रथागत रूप से इससे कोई मनाही नहीं होती। यह पति या पति के माता-पिता के स्वामित्व का आधार नहीं बनता, बल्कि आपसी खुलेपन पर आधारित है जहाँ पति और पत्नी की संपत्तियों के बीच कोई भेद नहीं समझा जाता, जैसे महिलाएं बिना किसी संकोच के पति की संपत्ति का उपयोग करती हैं, जिससे वे उसकी मालकिन नहीं बन जातीं। 'उक़ूद अल-दुर्रिया' किताबुल फ़राइज़ में 'बहर अल-रैक' से है:

[अरबी बॉक्स 2] अरबी: पति द्वारा खरीदी गई वस्तु से स्त्री का लाभ उठाना और पति की उस पर सहमति इस बात का प्रमाण नहीं है कि वह उसकी स्वामिनी हो गई है, जैसा कि स्त्रियां और आम

लोग समझते हैं। मैंने इस पर कई बार फ़तवे दिए हैं। [2] उर्दू व्याख्या: शौहर के खरीदे हुए माल से औरत का नफ़ा हासिल करना और शौहर का उस पर रज़ामन्द होना इस बात की दलील नहीं कि वह औरत उस माल की मालिक हो गई जैसा कि औरतें और आम लोग समझते हैं और तहक़ीक़ में इस पर मुतअद्दिद बार फ़तवा दे चुका हूँ। (त)

यहाँ से स्पष्ट है कि पति की ओर से दी गई 'बरी' (उपहार), भले ही अधिक दहेज की उम्मीद में महंगी बनाई गई हो, कोई मुआवज़ा नहीं है। यदि वे इन वस्तुओं को अपने स्वामित्व में रखते हैं और समय पर केवल नाम के लिए भेज देते हैं कि यह हमारे घर आ जाएगी, तो यह स्पष्ट है कि...

[फुटनोट्स] 1. रद अल-मुह्तार, बाबुन नफ़क़ा, इहया अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 3/253। 2. अल-उक़ूद अल-दुर्रिया तनक़ीह फ़ी फ़तावा हामिदिया, किताबुल दा'वा / किताबुल फ़राइज़, 2/350, हाजी अब्दुल ग़फ़्फ़ार, कंधार, अफ़ग़ानिस्तान।

نہیں اور اگر ہلاک کردے ایک شخص ان دونوں میں سے جو دیا تھا اس کو دوسرے نے، تواس صورت میں ہلاک کردینے والے سے وہ دوسرا شخص جس کامال ہلاک کیا، لے سکتا ہے یا نہیں۔ والدین زوج نے اپنے پسر کی زوجہ کو کچھ زیور وغیرہ واسطے تالیفِ قلوب کے بایں غرض کہ ہمارے گھر میں رہے گا اور ہر وقت ہمارے اختیار میں جس وقت چاہیں گے اس کو دوسرے کام میں لائیں گے اور جب چاہیں گے بنادیں گے جیسا کہ تاجروں میں ہے بطور عاریت کے ایسا مال دیا کرتے ہیں واسطے زیبائش اپنے گھر کے، نہ بطور تملیک کے، اس صورت میں مالک اُس مال کے والدین ہیں یا نہیں۔ بینوا توجروا۔

الجواب:

جہیز ہمارے بلاد کے عرف عام شائع سے خاص ملک زوجہ ہوتا ہے جس میں شوہر کا کچھ حق نہیں، طلاق ہوئی تو تکل لے گئی، اور مرگئی تو اس کے ورثاء پر تقسیم ہوگا۔ ردالمحتار میں ہے :

کل احد یعلم ان الجھاز للمرأۃ وانہ اذا طلقھا تاخذہ کلہ واذا ماتت یورث عنھا۔[1] ہر شخص جانتا ہے کہ جہیز عورت کی ملکیت ہوتا ہے، جب شوہر اس کو طلاق دے دے تو وہ تمام جہیز لے لے گی اور جب عورت مر جائے تو جہیز اس کے وارثوں کو دیا جائے گا۔ (ت)

ہاں مرد بحالت ہم آہنگی اُن کے والدین بھی بعض اشیائے جہیز مثل ظروف و فروش وغیرہ اپنے استعمال میں لاتے ہیں اور عرفاً اس سے ممانعت نہیں ہوتی اس کی بنا ملک شوہر یا والدین شوہر پر نہیں بلکہ باہمی انبساط کہ زن وشو کے املاک میں تفاوت نہیں سمجھا جاتا جیسے عورتیں بے

تکلف اموالِ شوہر استعمال میں رکھتی ہیں اس سے وہ اُس کی ملک نہ ہوگئے۔ عقودالدریہ کتاب الفرائض میں بحر الرائق سے ہے :

لایکون استمتاعها بمشریه ورضاه بذلك دلیلا علی انه ملکها ذلك کما تفهمه النساء والعوام وقد افتیت بذلك مرارا۔[2] شوہر کے خریدے ہوئے مال سے عورت کا نفع حاصل کرنا اور شوہر کا اس پر رضا مند ہونا اس بات کی دلیل نہیں کہ وہ عورت اس مال کی مالک ہوگئی جیسا کہ عورتیں اور عام لوگ سمجھتے ہیں اور تحقیق میں اس پر متعدد بار فتوٰی دے چکا ہوں۔ (ت)

یہاں سے ظاہر کہ جانبِ شوہر کی بری اگرچہ بامید کثرتِ جہیز گراں بہا بنے معاوضہ نہیں کہ اگر یہ اشیاء اپنے ملک پر رکھتے اور وقت پر برائے نام بھیج دیتے ہوں کہ ہمارے گھر آجائے گی جب تو ظاہر کہ

[1] ردالمحتار باب النفقه احیاء التراث العربی بیروت ۳/۲۵۳ [2] العقودالدریہ تنقیح فی فتاوٰی حامدیہ، کتاب الدعوی/کتاب الفرائض ۲/۳۵۰ حاجی عبدالغفار قندھار افغانستان

Fatawa Razvia Volume 12

No transfer of ownership (tamleek) took place from the husband's side. Even if they intended to transfer ownership and considered the bride to be the owner of this jewelry and clothing, still no compensation (mu'awadah) occurred because the thing they hoped for in return, i.e., the dowry (jahez), would also remain the property of the wife. Compensation and the thing compensated for cannot be gathered in one single ownership. Yes, they send heavy sets of jewelry and clothes in the hope of a large dowry, but not so that they become the owners of the dowry by giving this. Rather, it is with the thought that due to the aforementioned expansion, they too would gain enjoyment and benefit; it would be for the decoration and adornment of their home, it would bring fame, provide comfort, and there is the expectation of fulfillment in every kind of need at the time of necessity, as the virtuous women here generally do not withhold their wealth, especially at times of need, from their husbands. These reasons are the cause for sending two hundred from here so that four hundred will come, just as in the lands of Syria etc., the mahr (dower) is increased with this hope.

In Radd al-Muhtar: Everyone knows that the dowry (jahaz) is the property of the woman, and the husband does not have a right to any part of it. It is only known that he increases the mahr (dower) so that she may bring much dowry with which he may adorn his house and benefit from it with her permission, and he and his children will inherit it if she dies, just as he increases the mahr for a wealthy woman for that reason. Therefore, the dowry, in its entirety or part, does not become his property. And he does not have the right to benefit from it if she does not permit.

It is in Radd al-Muhtar: Every person knows that the dowry is the property of the woman and the husband cannot take anything from it, and indeed it is customary that the husband increases the mahr with the expectation that the woman will also bring more dowry so that the house can be decorated and adorned with it and the husband can benefit from it with the woman's permission, and after the woman's death, he and her children will become heirs of the dowry, just as he increases the mahr of a wealthy woman for this purpose, not so that he becomes the owner of all or some of the dowry or can benefit from it without the woman's permission. (T)

So in the questioned case, giving the dowry piece by piece was mandatory, and the return of Bri is not necessary upon its return because it was not its compensation.

Rather, its ruling comes further: the set of clothes for the husband that comes from there, after possession, absolutely becomes the husband's property because people intend transfer of ownership (tamleek) itself. "And that is clear, there is no ambiguity in it." (T). So if he destroyed it, or it was destroyed, those on the other side cannot take any indemnity from him because the destruction of a gifted item absolutely prevents reclamation. Similarly, if the woman's father or mother made the set from their own wealth and sent it, as is mostly common in these lands, and this person is a mahram by lineage, for example, nephew (brother's or sister's son), or the marriage took place before and afterwards, the set of clothes is the wife's property...

---

1 Radd al-Muhtar, Bab al-Nafaqah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/253

पति की ओर से स्वामित्व का कोई हस्तांतरण (तमलीक) नहीं हुआ। भले ही वे स्वामित्व हस्तांतरित करने का इरादा रखते हों और दुल्हन को इन आभूषणों और कपड़ों का मालिक मानते हों, फिर भी कोई मुआवज़ा (मुआवादा) नहीं हुआ क्योंकि जिसके बदले में वे आशा रखते हैं, यानी दहेज (जहेज़), वह भी पत्नी की ही संपत्ति होगी। मुआवज़ा और मुआवज़ा की गई वस्तु एक ही स्वामित्व में एकत्र नहीं हो सकते। हाँ, वे बड़े दहेज की उम्मीद में भारी गहने और कपड़े भेजते हैं, लेकिन इसलिए नहीं कि इसे देकर वे दहेज के मालिक बन जाएंगे। बल्कि इस विचार के साथ कि उपर्युक्त विस्तार के कारण उन्हें भी आनंद और लाभ मिलेगा; यह उनके घर की शोभा और सजावट के लिए होगा, नाम होगा, आराम होगा, और आवश्यकता के समय हर प्रकार की ज़रूरत पूरी होने की उम्मीद है, क्योंकि यहाँ की नेक महिलाएँ आम तौर पर अपनी संपत्ति, विशेष रूप से ज़रूरत के समय, अपने पतियों से नहीं छिपाती हैं। ये कारण इस बात का आधार हैं कि यहाँ से दो सौ जाएंगे तो चार सौ आएंगे, जैसे सीरिया आदि देशों में इसी उम्मीद पर मेहर बढ़ाया जाता है।

रद अल-मुह्तार में है: हर कोई जानता है कि दहेज (जहाज़) औरत की संपत्ति है और पति को इसमें से किसी भी चीज़ पर विशेष अधिकार नहीं है। बस यह जाना जाता है कि वह मेहर (दहेज) में वृद्धि इसलिए करता है ताकि वह बहुत सारा दहेज लेकर आए जिससे वह अपने घर को सजा सके और उसकी अनुमति से उससे लाभ उठा सके और यदि वह मर जाए तो वह और उसकी संतान उसके वारिस बनें, जैसे कि वह इसी कारण से एक अमीर औरत के लिए मेहर बढ़ाता है। इसलिए, दहेज, पूरा या उसका कोई हिस्सा, उसकी संपत्ति नहीं बन जाता है। और वह उसकी अनुमति के बिना उससे लाभ उठाने का अधिकार नहीं रखता।

रद अल-मुह्तार में है: हर व्यक्ति जानता है कि दहेज औरत की मिल्कियत होता है और शौहर इसमें से कुछ भी नहीं ले सकता, और बेशक यह बात प्रचलित है कि शौहर मेहर में इस उम्मीद पर इज़ाफ़ा (वृद्धि) करता है कि औरत भी ज़्यादा दहेज लाएगी ताकि उससे घर की ज़ीनत और आराइश (सजावट) हो और औरत की इजाज़त से शौहर उससे नफ़ा (लाभ) उठाए और औरत के मरने के बाद वह और उसकी औलाद दहेज के वारिस बनें, जैसा कि इसी ग़रज़ से वह ग़नी (अमीर) औरत के मेहर में इज़ाफ़ा करता है, इसलिए नहीं कि वह तमाम या बाज़ दहेज का मालिक बन जाए या औरत की इजाज़त के बग़ैर उससे नफ़ा हासिल कर सके। (त)

तो पूछताछ के मामले में, दहेज को कतरे-कतरे करके देना अनिवार्य था, और उसकी वापसी पर 'बरी' की वापसी आवश्यक नहीं है क्योंकि वह उसका मुआवज़ा नहीं था। बल्कि उसका हुक्म आगे आता है: पति के कपड़ों का जोड़ा जो वहाँ से आता है, कब्ज़ा करने के बाद पूरी तरह से पति की संपत्ति बन जाता है क्योंकि लोग स्वामित्व के हस्तांतरण (तमलीक) का ही इरादा रखते हैं। "और यह स्पष्ट है, इसमें किसी प्रकार की गोपनीयता नहीं है।" (त)। इसलिए यदि उसने उसे नष्ट कर दिया, या वह नष्ट हो गया, तो दूसरी ओर वाले उससे कोई हर्जाना नहीं ले सकते क्योंकि उपहार में दी गई वस्तु का विनाश वापसी को पूरी तरह से रोकता है। इसी तरह अगर औरत के पिता या माता ने अपनी संपत्ति से जोड़ा बनाकर भेजा, जैसा कि इन देशों में अक्सर यही प्रचलित है, और यह व्यक्ति वंश के अनुसार उसका महरम है, उदाहरण के लिए, भतीजा या भांजा, या निकाह पहले हो चुका हो और बाद में, कपड़ों का जोड़ा पत्नी की संपत्ति...

---

1 रद अल-मुह्तार, बाब अल-नफ़क़ह, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/253

جانب شوہر سے کوئی تملیک نہ ہوئی، اور تملیک ہی قصد کرتے اور دلہن کو اس گہنے جوڑے کا مالک جانتے ہوں تا ہم معاوضہ نہ ہوا کہ اس کے عوض میں جس شے کی امید رکھتے ہیں یعنی جہیز وہ بھی ملک زوجہ ہی ہوگا اور عوض و معوض ایک ملک میں جمع نہیں ہو سکتے۔ ہاں کثرت جہیز کی امید پر بھاری جوڑے گہنے بھیجتے ہیں مگر نہ اس لئے کہ ہم یہ دے کر جہیز کے مالک ہوں گے بلکہ اس خیال سے کے بسبب انبساط مذکور ہمیں بھی تمتع و انتفاع ملے گا ہمارے گھر کی زیب و آرائش ہوگی نام ہو گا آرام ہو گا وقت حاجت ہر گونہ کار بر آری کی توقع ہے کہ یہاں کی نیک بیبیاں غالباً اپنا مال خصوصاً ہنگام ضرورت اپنے شوہروں سے دریغ نہیں رکھتیں، یہ وجوہ اس باعث ہوتی ہیں کہ ادھر سے دو سو کا جائے گا تو چار سو کا آئے گا جیسے بلاد شام وغیرہ میں اسی امید پر مہر بڑھاتے ہیں۔

فی رد المحتار کل احد یعلم ان الجهاز ملک المراة ولا یختص بشئی منہ وانما المعروف انہ یزید فی المهر لتاتی بجهاز کثیر لیزین بہ بیتہ وینتفع بہ باذنها ویرثہ هو واولادہ اذا ماتت کما یزید فی مهرا لغنیۃ لاجل ذلک لایکون الجهاز کلہ او بعضہ ملکا لہ۔ ولا یملك الانتفاع به وان لم تأذن۔

ردالمحتار میں ہے ہر شخص جانتا ہے کہ جہیز عورت کی ملکیت ہوتا ہے اور شوہر اس میں سے کچھ بھی نہیں لے سکتا، اور بیشک متعارف ہے کہ شوہر مہر میں اس توقع پر اضافہ کرتا ہے کہ عورت بھی زیادہ جہیز لائے گی تاکہ اس سے گھر کی زینت و آرائش ہو اور عورت کی اجازت سے شوہر اس سے نفع اٹھائے گا اور عورت کے مرنے کے بعد وہ اور اس کی اولاد جہیز کی وارث بنے گی، جیسا کہ اسی غرض سے وہ غنی عورت کے مہر میں اضافہ کرتا ہے، اس لئے نہیں کہ وہ تمام یا بعض جہیز کا مالک بن جائے گا یا عورت کی اجازت کے بغیر اس سے نفع حاصل کر سکے گا۔ (ت)

پس صورت مستفسرہ میں جہیز تو ذرہ ذرہ دینا واجب ہی تھا اور اس کی واپسی سے بری کی واپسی لازم نہیں کہ وہ اس کا عوض نہ تھی بلکہ اس کا حکم آگے آتا ہے شوہر کا جوڑا ادھر سے آتا ہے بعد قبضہ قطعاً ملک شوہر ہو جاتا ہے کہ لوگ اس تملیک ہی کا قصد کرتے ہیں وذلک واضح لا خفاء بہ (اور یہ واضح ہے اس میں کسی قسم کی پوشیدگی نہیں۔ ت) پس اگر وہ اس نے ہلاک کر دیا خواہ ہلاک ہو گیا تو ادھر والے اس کا کوئی تاوان اس سے نہیں لے سکتے کہ ہلاک موہوب مطلقاً مانع رجوع ہے۔ یو نہی اگر جوڑا عورت کے والد یا والدہ نے اپنے مال سے بنا کر بھیجا جیسا کہ ان بلاد میں اکثر یہی متعارف ہے اور یہ شخص نسباً اس کا محرم مثلاً بھتیجا بھانجا ہے یا نکاح پہلے ہو لیا بعدہ، جوڑا مالِ زوجہ

---

1 ردالمحتار باب النفقہ داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۵۳

...if it was sent with the wife's consent, then in these cases too, there is absolutely no right to take it back even if the outfit is still intact, because prohibited kinship and marriage both prevent revocation.

Arabic Text

In Al-Durr al-Mukhtar and Radd al-Muhtar, the letters that prevent revocation in a gift (Hiba) are: D, M, 'A, Kh, Z, Q, H. Thus, marriage (Zaujiyat) at the time of the gift [prevents it]. So, if he gifted to a woman and then married her, he can revoke it. But if he gifted to his wife, he cannot. The reverse is also true: if she gifted to a man and then married him, she can revoke it, but if she gifted to her husband, she cannot. 'Q' represents kinship (Qirabat); thus, if he gifted to a blood-relative who is prohibited (Mahram), he cannot revoke. 'H' represents the destruction (Halak) of the gifted item itself or its consumption, as is apparent and was clearly stated by the authors of Fatawa like Ramli.

Urdu/English Translation

In Al-Durr al-Mukhtar and Radd al-Muhtar, it is stated that these letters prevent revocation in a gift: D, M, 'A, Kh, Z, Q, H. Among these seven letters, 'Z' refers to marriage existing at the time of the gift. Therefore, if something is given as a gift to a woman and then marriage is contracted with her, revocation can occur. However, if something is given as a gift to one's wife, revocation cannot occur. The same applies in reverse: if a woman gives something to a man as a gift and then marries him, she can revoke it, but if she gives it to her husband, she cannot. 'Q' stands for kinship; therefore, if a gift is given to a blood relative who is Mahram to them, revocation is not possible. 'H' refers to the destruction of the gifted item itself or its consumption, as clarified by the authors of Fatawa like Ramli. (T)

It is in Fath al-Qadir, etc.:

Arabic Text

If her father sent from his wealth, he has the right to revoke if it exists, otherwise not. If it was from her wealth with her permission, there is no revocation because it is a gift from her, and a woman cannot revoke a gift given to her husband.

Urdu/English Translation

If the wife's father sent something from his own wealth, he can revoke it if the item still exists with the husband; otherwise, not. If it was sent from the wife's wealth with her permission, there is no revocation because it is a gift from her, and a wife does not have the right to revoke a gift given to her husband. (T)

Yes, if the outfit is still in the husband's possession and other barriers to revocation are also absent—for instance, if the wife's parents prepared it and there is no prohibited blood relationship, or if it was made from the wife's wealth but sent before marriage—then revocation would be possible with the husband's consent or a judge's decree. This is because the exchange of outfits from both sides is, by custom, an independent tradition for both parties, not an exchange for one another.

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Revocation of Gifts, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/19-515; Durr al-Mukhtar, Chapter on Revocation of Gifts, Matba Mujtabai Delhi, 2/161.
2. Fath al-Qadir, Chapter on Mahr, Maktaba Nooria Rizvia Sukkur, 3/56-255.

फ़तावा रज़विया खंड बारह

...यदि पत्नी की सहमति से भेजा गया था, तो इन स्थितियों में भी वापस लेने का कोई अधिकार नहीं है, भले ही जोड़ा सलामत मौजूद हो, क्योंकि निषिद्ध रिश्तेदारी और विवाह दोनों ही वापसी (रुजू) को रोकने वाले हैं।

अरबी पाठ

'अद-दुर्र अल-मुख्तार' और 'रद्द अल-मुह्तार' में है कि हिबा (उपहार) में रुजू को रोकने वाले अक्षर 'द, म, अ, ख, ज़, क, ह' हैं। अतः उपहार के समय विवाह (ज़ौजियत) [रुजू को रोकता है]। इसलिए यदि उसने किसी स्त्री को उपहार दिया और फिर उससे निकाह किया, तो वह रुजू कर सकता है। लेकिन यदि अपनी पत्नी को उपहार दिया, तो नहीं कर सकता। इसके विपरीत भी यही नियम है: यदि स्त्री ने किसी पुरुष को उपहार दिया और फिर उससे निकाह किया, तो वह रुजू कर सकती है, लेकिन यदि अपने पति को दिया तो नहीं कर सकती। 'क' का अर्थ क़राबत (रिश्तेदारी) है; अतः यदि किसी महरम रक्त-संबंधी को उपहार दिया जाए, तो रुजू नहीं हो सकता। 'ह' का अर्थ उपहार दी गई वस्तु का नष्ट (हलाक) होना या उसका उपभोग है, जैसा कि रमली जैसे फतावा लेखकों ने स्पष्ट किया है।

उर्दू/हिंदी अनुवाद

'अद-दुर्र अल-मुख्तार' और 'रद्द अल-मुह्तार' में है कि हिबा में रुजू से रोकने वाले ये अक्षर हैं: द, म, अ, ख, ज़, क, ह। इन सात अक्षरों में से 'ज़' से मुराद ज़ौजियत (वैवाहिक संबंध) है जो उपहार के समय मौजूद हो। इसलिए यदि किसी स्त्री को उपहार के तौर पर कुछ दिया और फिर उससे निकाह कर लिया, तो वह उपहार वापस ले सकता है। लेकिन यदि अपनी पत्नी को उपहार में कुछ दिया, तो वापस नहीं ले सकता। यही बात इसके विपरीत भी लागू होती है, यानी यदि किसी स्त्री ने किसी पुरुष को उपहार दिया और फिर उससे निकाह किया, तो वह वापस ले सकती है, लेकिन यदि अपने पति को दिया तो वापस नहीं ले सकती। 'क' से तात्पर्य क़राबत (रिश्तेदारी) है; अतः यदि किसी ऐसे महरम रिश्तेदार को उपहार दिया जाए जो उसके लिए महरम नसीबी है, तो रुजू नहीं किया जा सकता। 'ह' का अर्थ उपहार दी गई वस्तु का नष्ट होना या उसे समाप्त करना है, जैसा कि फतावा लेखकों (जैसे रमली) ने स्पष्ट किया है। (त)

फ़तह अल-क़दीर आदि में है:

अरबी पाठ	उर्दू/हिंदी अनुवाद
यदि उसके पिता ने अपने धन से भेजा, तो यदि वस्तु मौजूद है तो वह रुजू कर सकता है, अन्यथा नहीं। यदि पत्नी के धन से उसकी अनुमति से भेजा गया, तो रुजू नहीं होगा क्योंकि यह उसकी ओर से उपहार है, और स्त्री को पति के उपहार में रुजू का अधिकार नहीं है।	यदि पत्नी के पिता ने अपने धन से कुछ भेजा, तो यदि वह उपहार वाली वस्तु पति के पास मौजूद है, तो वह रुजू कर सकता है, अन्यथा नहीं। और यदि पत्नी के धन से उसकी अनुमति से भेजा गया, तो रुजू नहीं हो सकता क्योंकि यह पत्नी की ओर से उपहार है और पत्नी को पति के उपहार में रुजू का अधिकार नहीं है। (त)

हाँ, यदि जोड़ा पति के स्वामित्व में मौजूद है और रुजू के अन्य अवरोध भी अनुपस्थित हैं—जैसे कि यदि पत्नी के माता-पिता ने बनाया और उनसे कोई निषिद्ध रक्त संबंध (क़राबत महरमा नसबिया) नहीं है, या पत्नी के धन से बना लेकिन निकाह से पहले भेजा गया—तो पति की सहमति या काज़ी के फैसले से रुजू का अधिकार होगा। क्योंकि दोनों पक्षों की ओर से जोड़ों का भेजा जाना प्रथा (उर्फ़) के अनुसार दोनों तरफ की एक स्वतंत्र रस्म है, न कि एक-दूसरे का विनिमय।

---

1. रद्द अल-मुह्तार, उपहार की वापसी का अध्याय, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 3/19-515; दुर्र अल-मुख्तार, उपहार की वापसी का अध्याय, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 2/161.
2. फ़तह अल-क़दीर, महर का अध्याय, मकतबा नूरिया रज़विया सखर, 3/56-255.

سے برضائے زوجہ بنا کر بھیجا گیا تو ان صورتوں میں بھی واپس لینے کا اصلاً اختیار نہیں اگرچہ جوڑا سلامت موجود ہو کہ قرابت محرمہ زوجیت دونوں مانع رجوع ہیں ،

| فی الدرمختار و ردالمحتار یمنع الرجوع فیہا حروف دمع خزقہ فالزوجیۃ وقت الھبۃ فلو وھب لامرأۃ ثم نکحھا رجع ولو وھب لامرأتہ لا کعکسہ ای لو وھبت لرجل ثم نکحھا رجعت ولو لزوجھا لا ، والقاف القرابۃ فلو وھب لذی رحم محرم منہ نسباً لا یرجع والھاء ھلاك العین الموھوبۃ وکذا اذا استھلك کما ھو ظاھر صرح بہ اصحاب الفتاوٰی رملی ۱ اہ ملتقطین۔ | درمختار اور ردالمحتار میں ہے کہ ہبہ میں رجوع سے مانع یہ حروف ہیں: دمع خزقہ، پس (ان سات حروف میں سے ز اسے مراد ہے زوجیت ہے جو بوقت ہبہ موجود ہو لہذا اگر کسی عورت کو بطور ہبہ کچھ دیا پھر اس عورت سے نکاح کر لیا تو ہبہ سے رجوع کرسکتا ہے اور اگر اپنی بیوی کو بطور ہبہ کچھ دیا تو رجوع نہیں کرسکتا، ایسا ہی اس کے برعکس میں بھی ہے یعنی اگر عورت نے کسی مرد کو بطور ہبہ کچھ دیا پھر اس سے نکاح کیا تو رجوع کرسکتی ہے، اور اگر اپنے شوہر کو بطور ہبہ کچھ دیا تو رجوع نہیں کرسکتی۔ اور قاف سے مراد قرابت ہے، لہذا اگر کسی ایسے ذی رحم رشتہ دار کو بطور ہبہ کچھ دیا جو اس کے لئے محرم نسبی ہے تو رجوع نہیں کرسکتا۔ اور ہاء سے مراد موہوب شیئی کا ہلاک ہونا ہے اور اسی طرح ہلاک کرنا ہے: جیسا کہ ظاہر ہے اصحاب فتاوٰی نے اس کے تصریح کی ، رملی ۱ھ ملتقطین۔ (ت) |

فتح القدیر وغیرہ میں ہے :

| لو بعث ابوھا من مالہ فلہ الرجوع لو قائما والا فلا ولو من مالھا باذنھا فلارجوع لانہ ھبۃ منھا والمرأۃ لاترجع فی ھبۃ زوجھا ۲۔ | اگر زوجہ کے باپ نے اپنے مال سے کچھ بھیجا تو اگر وہ موہوب شئی شوہر کے پاس موجود ہے تو رجوع کرسکتا ہے ورنہ نہیں، اور زوجہ کے مال سے اس کی اجازت سے بھیجا تو رجوع نہیں کرسکتا کیونکہ یہ زوجہ کی طرف سے ہبہ ہے اور زوجہ کو زوج کے ہبہ میں رجوع کا حق نہیں۔ (ت) |

ہاں اگر جوڑا ملک شوہر میں موجود اور باقی موانع رجوع بھی مفقود ہوں مثلاً والدین زن نے بنایا تو ان سے قرابت محرمہ نسبیہ نہ ہو، یا مال زوجہ سے بنا تو پیش از نکاح بھیجا گیا ہو تو شوہر کی رضا یا قاضی کی قضا سے رجوع کا اختیار ہوگا کہ طرفین سے جوڑیں کا جانا بحکم عرف دونوں جانب کی مستقل رسم ہے ، نہ ایک دوسرے کے عوض۔

---

1 ردالمحتار باب الرجوع فی الھبۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۳/۱۹-۵۱۵ ، درمختار باب الرجوع فی الھبۃ مطبع مجتبائی دہلی ۲/۱۶۱ 2 فتح القدیر باب المھر مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۳/۵۶-۲۵۵

Fatawa Razawiyya Volume 12

...therefore, if for instance due to poverty, the wedding clothes do not come from one side, but the other side still sends them, then a clear exchange (Awaz-e-Sarih) which prevents taking back the gift is not established. Furthermore, in the wedding gifts (bari) from the groom's side, there is absolutely no thought of the clothes that the groom receives; rather, it is purely for fame or to nurture the greed for a large dowry. In any case, this gift is devoid of compensation. Therefore, under the mentioned conditions, the bride's side has the right to take it back, though they will be sinful. The Illustrious Master of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him) says:

العائد في هبته كالعائد في قيئه[1] - رواه الائمة احمد والستة بالفاظ شتى عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما۔ "One who takes back his gift is like a dog that returns to its vomit." - Narrated by Imams Ahmad and the six compilers of Sahih with various wordings from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both).

The one who gives and then takes back is like a dog that vomits and then eats it again. (This was narrated by Imam Ahmad and the companions of the Sahih Sitta with different wordings from Hazrat Abdullah Ibn Abbas, may Allah be pleased with them both. - T)

It is stated in Durr-e-Mukhtar: الرجوع (تحريما) وقيل تنزيها نها ية[2] اه اقول: والاول الذى (كره) جزم به في المتن واشار الشارح الى تضعيف خلافه فانه هو الصحيح الذي لا معدل عنه لقول رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم لا يحل للرجل ان يعطى عطية فيرجع[3] فيها ، رواه الائمة احمد والاربعة عن ابن عمر وابن عباس رضي الله تعالى عنهم قال في المنتقى صححه الترمذى۔ "Taking back (a gift) is prohibitively disliked (Makruh Tahrimi), and it is said that it is mildly disliked (Tanzihi). End of Nihaya. I say (the author): The first position is the one which is decisively mentioned in the text, and the commentator pointed towards the weakness of the opposing view. That is the correct position from which there is no deviation because of the saying of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him): 'It is not permissible for a man to give a gift and then take it back,' narrated by Imam Ahmad and the four [Sunan compilers] from Ibn Umar and Ibn Abbas (may Allah be pleased with them). It says in al-Muntaqa: at-Tirmidhi graded it as authentic (Sahih)."

Taking back a gift is Makruh Tahrimi (prohibitively disliked), and it is also said to be Makruh Tanzihi. End of Nihaya. I say (the author): The first position, which is stated with certainty in the text and towards whose opposite the commentator signaled

weakness, is the correct one. There is no reason to turn away from it due to the command of the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) that it is not permissible for any man to give a gift and then take it back. It was narrated by Imam Ahmad and the compilers of the Four Sunan from Hazrat Ibn Umar and Hazrat Ibn Abbas (may Allah be pleased with them). In Muntaqa it is stated that Imam Tirmidhi declared it authentic. (T)

In this case, if the husband returned the clothes, the withdrawal of the gift became valid and it exited his ownership due to 'the realization of withdrawal by mutual consent' (because withdrawal was established through mutual agreement. - T). And the current situation is preferable.

[1] Sahih Muslim, Book of Gifts, Chapter on Prohibition of Charity, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 36/2. [2] Durr-e-Mukhtar, Chapter on Retraction of Gifts, Mujtabai Press, Delhi, 161/2. [3] Musnad Imam Ahmad bin Hanbal, narrated from Ibn Umar and Ibn Abbas, Dar al-Fikr, Beirut, 27/2.

फतावा रज़विया जिल्द 12

...इसलिए, यदि उदाहरण के लिए गरीबी के कारण एक पक्ष से कपड़ों का जोड़ा न आए, फिर भी दूसरा पक्ष भेजता है, तो स्पष्ट विनिमय (एवज़-ए-सरीह) जो उपहार वापस लेने में बाधक होता है, स्थापित नहीं होता। फिर दूल्हे की ओर से 'बरी' (उपहारों) में उस जोड़े का बिल्कुल विचार नहीं होता जो दूल्हे को मिलता है, बल्कि केवल नामवरी या दहेज की अधिकता के लालच का पोषण है। बहरहाल, यह उपहार मुआवजे से खाली है। अतः उपरोक्त शर्तों के साथ दुल्हन वालों को (उपहार) वापस लेने का अधिकार है, हालांकि वे गुनहगार होंगे। रसूले अकरम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

العائد في هبته كالعائد في قيئه[1] - رواه الائمة احمد والستة بالفاظ شتى عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما۔ "अपना उपहार वापस लेने वाला उस कुत्ते की तरह है जो अपनी ही उल्टी चाटता है।" - इमाम अहमद और छह हदीस संकलकों ने इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से विभिन्न शब्दों के साथ इसे रिवायत किया है।

उपहार देकर वापस लेने वाला कुत्ते की मिसाल की तरह है जो उल्टी करके फिर उसे खा लेता है। (इसे इमाम अहमद और सहाहे सित्ता के संकलनकर्ताओं ने विभिन्न शब्दों के साथ हज़रत अब्दुल्लाह इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया। - त)

'दुर्रे मुख्तार' में है: (كره) الرجوع (تحريما) وقيل تنزيها نها ية[2] اهـ اقول: والاول الذى جزم به في المتن واشار الشارح الى تضعيف خلافه فانه هو الصحيح الذي لا معدل عنه لقول رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم لا يحل للرجل ان يعطى عطية فيرجع[3] فيها ، رواه الائمة احمد والاربعة عن ابن عمر وابن عباس رضي الله تعالى عنهم قال في المنتقى صححه الترمذى۔ "(उपहार) वापस लेना मकरूहे तहरीमी (निषिद्ध रूप से नापसंद) है, और कहा गया है कि यह मकरूहे तनज़ीही (हल्का नापसंद) है। निहाया समाप्त। मैं (लेखक) कहता हूँ: पहली बात वही है जिसे मूल पाठ में दृढ़ता से कहा गया है और टीकाकार ने इसके विपरीत विचार की कमजोरी की ओर संकेत किया है। वही सही है जिससे विमुख नहीं हुआ जा सकता, क्योंकि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का फरमान है: 'किसी आदमी के लिए यह जायज़ नहीं कि वह उपहार दे और फिर उसे वापस ले।' इसे इमाम अहमद और चार सुनन संकलनकर्ताओं ने इब्न उमर और इब्न

अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से रिवायत किया। मुंतका में है कि इमाम तिर्मिज़ी ने इसे सही (प्रामाणिक) करार दिया।"

(उपहार में) वापस लेना मकरूहे तहरीमी है, और यह भी कहा गया है कि मकरूहे तनज़ीही है। निहाया समाप्त। मैं (लेखक) कहता हूँ: पहली राय जिस पर मूल पाठ में जोर दिया गया है और टीकाकार ने जिसके विपरीत को कमजोर बताया है, वही सही है। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के फरमान के कारण इस विचार को छोड़ने का कोई कारण नहीं है कि किसी पुरुष के लिए उपहार देकर वापस लेना जायज़ नहीं है। इसे इमाम अहमद और सुनन अरबा के संकलनकर्ताओं ने हज़रत इब्न उमर और हज़रत इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से रिवायत किया है, मुंतका में कहा गया है कि इमाम तिर्मिज़ी ने इसे सही करार दिया। (त)

इस स्थिति में यदि पति ने यह कपड़ों का जोड़ा वापस कर दिया, तो उपहार का वापस लेना सही हो गया और यह उसकी मिल्कियत (स्वामित्व) से बाहर हो गया 'आपसी सहमति से वापसी की पुष्टि होने के कारण' (क्योंकि आपसी रजामंदी से वापसी स्थापित हो गई। - त)। और वर्तमान स्थिति बेहतर है।

[1] सहीह मुस्लिम, किताबुल हिबा, सदक़ा में निषेध का अध्याय, मतबा कदीमी कुतुब खाना, कराची, 36/2. [2] दुर्रे मुख्तार, हिबा (उपहार) वापसी का अध्याय, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 161/2. [3] मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल, इब्न उमर और इब्न अब्बास से रिवायत, दारुल फिक्र, बेरुत, 27/2.

میں، لہذا اگر ایک جان سے مثلاً بوجہ افلاس جوڑا نہ آئے تو بھی دوسری طرف والے بھیجتے ہیں تو عوض صریح کہ موانع رجوع سے ہے متحقق نہیں، پھر دولہا کی جانب سے بری میں ہرگز اس جوڑے کا خیال نہیں جو دولہا کو ملتا ہے بلکہ محض ناموری یا وہی کثرت جہیز کی طمع پروری، بہر حال یہ ہبہ معاوضہ سے خالی ہے تو بشرائط مذکورہ دلہن والوں کو رجوع کا اختیار، مگر گنہگار ہوں گے۔ حضور پر نور سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

العائد في هبته كالعائد في قيئه[1] - رواه الائمة احمد والستة بالفاظ شتى عن ابن عباس رضي الله تعالى عنهما۔ دے کر پھیرنے والا مثل کتے کے ہے قے کرکے پھر کھائے (اس کو امام احمد اور اصحاب صحاح ستہ نے مختلف الفاظ کے ساتھ حضرت عبد اللہ ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت کیا۔ ت)

در مختار میں ہے : (كره) الرجوع (تحريما) وقيل تنزيها نهاية[2] اھ اقول: والاول الذی جزم به في المتن واشار الشارح الی تضعيف خلافه فانه هو الصحيح الذي لا معدل عنه لقول رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم لا يحل للرجل ان يعطى عطية فيرجع[3] فيها ، رواه الائمة احمد والاربعة عن ابن عمر وابن عباس رضي الله تعالى عنهم قال في المنتقى صححه الترمذی۔ (ہبہ میں) رجوع مکروہ تحریمی ہے، اور کہا گیا ہے کہ مکروہ تنزیہی ہے نہایہ اھ اقول: (میں کہتا ہوں) اوّل جس پر متن میں جزم کیا اور شارح نے اس کے خلاف کے ضعیف ہونے کی طرف اشارہ کیا وہی صحیح ہے اس اعراض کا کوئی سبب نہیں بسبب فرمان رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے کہ کسی مرد کے لئے جائز نہیں کہ کچھ عطیہ دے کر اس میں رجوع کرے۔ اسے امام احمد اور اصحابِ سننِ اربعہ

نے حضرت ابنِ عمر اور حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے روایت کیا، منتقٰی میں فرمایا کہ امام ترمذی نے اس کو صحیح قرار دیا۔ (ت)

اس صورت میں شوہر نے اگر یہ جوڑا واپس کردیا تو رجوع صحیح ہوگئی اور اس کی ملک سے خارج ہوگیا لتحقق الرجوع بالتراضی (باہمی رضامندی سے رجوع متحقق ہونے کی وجہ سے۔ ت)

اور اگر موجودہ صورت اولٰی ہے

[1] صحیح مسلم کتاب الھبۃ باب التحریم في الصدقۃ مطبع قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/۳۶ [2] در مختار باب الرجوع في الھبۃ مطبع مجتبائی دہلی ۲/۱۶۱ [3] مسند امام احمد بن حنبل مروی از ابن عمر وابن عباس دارالفکر بیروت ۲/۲۷

Meaning if kinship, marriage, or anything else is not a hindrance, then even in this state, if he voluntarily returned the suit/garments without the intention of gifting them, the gift became valid.

(Arabic Text)

In al-Durr al-Mukhtar: The donor and donee agreed to revoke the gift in a situation where revocation is not valid, out of the seven previous situations such as a gift due to kinship; this agreement between them is permissible. (Jawhara). In al-Mujtaba: Rescission (iqala) is not permissible in a gift and charity to close relatives (Maharim) except with possession, because it is a gift itself. [1]

(Urdu Text)

In Durr al-Mukhtar, it is stated that the donor and the donee agreed on the return of the gift, even in one of those seven aforementioned situations where return is not valid, such as a gift due to kinship, then this agreement of both is permissible (Jawhara). In Mujtaba it is that in the gift and charity of close relatives (mahram), cancellation (iqala) without possession is not permissible because (iqala) is a gift. (T)

And if it was returned under the assumption that the suit is also like dowry, and its return is also obligatory upon me after separation, then this return will not be valid, nor will that suit leave the husband's ownership; he has the choice to take it back now, and it is obligatory upon them to return it.

(Arabic Text)

Because where revocation is not valid, it is only valid as a new gift as mentioned before. When there is no gift, there is no validity, and no consideration is given to a clear erroneous assumption. It is said in al-Uqud al-Durriyya, in the Book of Partnership: Whoever gives something that was not obligatory upon him, he has the right to reclaim it, unless he gave it as a gift and the recipient consumed it, as in the commentary of al-Nazm by al-Wahbani and other authoritative works. [2] End. In al-Khayriyya, in the Book of

(Urdu Text)

Because where return is valid, a gift is valid afresh as passed before. When there is no gift then there is no validity, and there is no consideration for an assumption whose error is clear. In the Book of Partnership of Al-Uqud al-Durriyah, it is stated that whoever gave someone something whose giving was not obligatory, then he has the right to take it back, except when it was given as a gift and the one who took it destroyed it, as is in Sharh al-Nazm of Al-Wahbani and other reliable books. (End) And in the Book

(Arabic Text)

Waqf, they have explicitly stated that if someone thought he owed a debt and it turned out otherwise, he may reclaim what he paid. If the recipient has consumed it, he may reclaim its substitute. End. [3]

(Urdu Text)

of Waqf of Khayriyya, it is that they have clearly explained that if a person assumed he had a debt, then the opposite became clear, so whatever he has paid, he can take back, and if the taker has destroyed it, he can take its substitute. (End) (T)

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter of Returning Gits, Mujtabai Press, Delhi, 2/162. [2] Al-Uqud al-Durriya, Revision of Fatawa Hamidiya, Book of Partnership, Haji Abdul Ghaffar and Sons, Kandahar, Afghanistan, 1/91. [3] Fatawa Khayriyya, Book of Waqf, Dar al-Ma'rifa, Beirut, 1/3-13

फ़तावा रज़विया खंड बारहवाँ

यानी रिश्तेदारी, वैवाहिक संबंध या इनके अलावा कोई और बाधा न हो, तो ऐसी स्थिति में भी यदि उसने स्वेच्छा से जोड़े (कपड़े/गहने) को उपहार देने के इरादे के बिना वापस कर दिया, तो उपहार सही हो गया।

(अरबी पाठ)

अल-दुर्र अल-मुख्तार में है: यदि दाता और प्राप्तकर्ता उन सात स्थितियों में से किसी एक में उपहार वापस लेने पर सहमत हो जाते हैं जहाँ वापसी मान्य नहीं है, जैसे कि रिश्तेदारी के कारण उपहार, तो उन दोनों के बीच यह समझौता जायज़ है। (जौहरा)। अल-मुज्तबा में है: महरम (नजदीकी रिश्तेदारों) के उपहार और दान में बिना कब्ज़े के निरस्तीकरण (इकाला) जायज़ नहीं है क्योंकि यह स्वयं एक उपहार है। [1]

(उर्दू पाठ)

दुर्र-ए-मुख्तार में है कि दाता और प्राप्तकर्ता, उपहार की वापसी पर सहमत हो गए, उपरोक्त उन सात स्थितियों में से किसी एक स्थिति पर जिनमें वापसी सही नहीं है जैसे रिश्तेदारी के कारण उपहार, तो उन दोनों का यह समझौता जायज़ है (जौहरा)। और मुज्तबा में है कि महरम के उपहार और सदक़ा में बिना कब्ज़े के इक़ाला जायज़ नहीं क्योंकि (इक़ाला) उपहार है। (त)

और अगर इस गुमान (भ्रम) पर वापस दिया कि जोड़ा भी जहेज़ की तरह है और अलगाव के बाद इसकी वापसी भी मुझ पर लाज़िम है, तो यह वापस देना मान्य नहीं होगा, और न ही वह जोड़ा पति के स्वामित्व से निकलेगा, उसे अधिकार है कि अब वापस ले ले, और उन पर लाज़िम है कि वापस कर दें।

(अरबी पाठ)

क्योंकि जहाँ वापसी मान्य नहीं है, वहाँ यह नए सिरे से उपहार के रूप में ही मान्य होता है जैसा कि पहले उल्लेख किया गया। जब उपहार ही नहीं तो मान्यता भी नहीं, और स्पष्ट त्रुटिपूर्ण धारणा का कोई महत्व नहीं है। अल-'उक़ूद अल-दुर्रिया में कंपनी (साझेदारी) की किताब में कहा गया है: जिसने कोई ऐसी चीज़ दी जो उस पर अनिवार्य

(उर्दू पाठ)

क्योंकि जहाँ वापसी सही हो वहाँ नए सिरे से उपहार सही होता है जैसा कि गुज़रा, जब उपहार नहीं तो सेहत (वैधता) नहीं, और उस गुमान का कोई एतबार नहीं जिसकी ग़लती स्पष्ट है। उक़ूद अद-दुर्रिया की किताबुश शिरकत में फ़रमाया कि जिसने किसी को ऐसी चीज़ दी जिसका देना वाजिब न था तो उसको वापस लेने

(अरबी पाठ)

नहीं थी, तो उसे उसे वापस लेने का अधिकार है, बशर्ते कि उसने उसे उपहार के रूप में न दिया हो और प्राप्तकर्ता ने उसे खर्च न कर दिया हो, जैसा कि अल-वहबानी की शरह अल-नज़्म और अन्य आधिकारिक पुस्तकों में है। [2] (अंत)। और अल-खैरिया में वक़्फ़ की किताब में है, उन्होंने स्पष्ट किया है कि यदि किसी ने सोचा कि उस पर कोई ऋण है और फिर इसके विपरीत स्पष्ट हुआ, तो उसने जो कुछ भी भुगतान किया है वह वापस ले सकता है। यदि प्राप्तकर्ता ने उसे खर्च कर दिया है, तो वह उसके बदले की मांग कर सकता है। (अंत)। [3]

(उर्दू पाठ)

का हक़ है सिवाय इसके कि जब बतौर हिबा (उपहार) दी हो और क़ाबिज़ (प्राप्तकर्ता) ने उसको हलाक (नष्ट) कर डाला हो जैसा कि वहबानी की शरह अल-नज़्म और दीगर मोतबर (विश्वसनीय) किताबों में है। (अंत) और खैरिया के किताबुल वक़्फ़ में है कि तहक़ीक़ (शोध) उन्होंने तसरीह (स्पष्ट) की इस बात की कि किसी शख़्स ने गुमान किया कि उस पर क़र्ज़ है फिर इसके ख़िलाफ़ ज़ाहिर हुआ तो जो कुछ अदा कर चुका है वापस ले सकता है, और अगर लेने वाले ने उसको हलाक कर दिया है तो उसका बदल ले सकता है। (अंत) (त)

[1] दुर्र-ए-मुख्तार, बाब अर-रुजू फिल हिबा, मतबा मुज्तबाई दिल्ली 162/2 [2] अल-उक़ूद अद-दुर्रिया तनक़ीह फ़ी फ़तावा हामिदिया, किताबुश शिरकत, हाजी अब्दुल ग़फ़्फ़ार ओ पिसरान, कंधार, अफ़गानिस्तान 91/1 [3] फ़तावा खैरिया किताबुल वक़्फ़, दारुल मारिफ़ा, बेरुत 1/3-13

یعنی قرابت وزوجیت وغیرہما کوئی مانع ، تو اس حال میں بھی اگر اس نے برضائے خود جوڑا انہیں ہبہ کرنے کے ارادہ سے واپس کردیا ہبہ صحیح ہوگیا۔

(Arabic Text)

في الدرالمختار اتفق الواهب والموهوب له على الرجوع في موضع لايصح رجوعه من لامواضع السبعة السابقة كالهبة لقرابته جاز هذاالاتفاق منهما جوهرة وفي المجتبى لاتجوز الاقالة في الهبة و الصدقة في المحارم الا بالقبض لانها هبة 1-

(Urdu Text)

درمختار میں ہے کہ واہب اور موہوب لہ ، ہبہ کے رجوع پر متفق ہوگئے ، مذکورہ الصدر ان سات مواضع میں سے کسی موضع پر جن میں رجوع صحیح نہیں جیسے ہبہ بوجہ قرابت تو ان دونوں کا یہ اتفاق جائز ہے (جوہرہ) اور مجتبٰی میں ہے کہ محارم کے ہبہ اور صدقہ میں بلا قبضہ اقالہ جائز نہیں کیونکہ (اقالہ) ہبہ ہے۔ (ت)

اور اگر اس گمان پر واپس دیا کہ جوڑا بھی مثل جہیز ہے بعد افتراق اس کی واپسی بھی مجھ پر لازم تو یہ واپس دینا معتبر نہ ہوگا، نہ وہ جوڑا ملک شوہر سے نکلے گا ، اسے اختیار ہے اب واپس لے لے ، اور ان پر لازم کہ واپس دیں۔

(Arabic Text)

لان الجوع حيث لا يصح انما يصح هبته مبتدأ كما تقدم واذلا هبة فلا صحة ولا عبرة بالظن البين خطوه قال في

(Urdu Text)

کیونکہ جہاں رجوع صحیح ہو وہاں نئے سرے سے ہبہ صحیح ہوتا ہے جیسا کہ گزرا ، جب ہبہ نہیں تو صحت نہیں ، اور اس گمان کا کوئی اعتبار نہیں جس کی خطاء

(Urdu Text) **(Arabic Text)**

واضح ہے۔ عقود الدریہ کی کتاب الشرکتہ میں فرمایا کہ

العقود الدرية من كتاب الشركة من دفع شيأ ليس بواجب عليه فله استرداده الا اذا دفعه على وجه الهبة واستهلكه القابض كما فی شرح النظم للوہبانی و غيره من المعبرات 2 اھـ و في الخيرية من الوقف قد صرحوا بان من ظن ان عليه دينا فبان خلافه يرجع بما ادى ولو كان قد استهلكه رجع ببدله اھـ 3۔

جس نے کسی کو ایسی شے دی جس کا دینا واجب نہ تھا تو اس کو واپس لینے کا حق ہے سوائے اس کے کہ جب بطور ہبہ دی ہو اور قابض نے اس کو ہلاک کرڈالا ہو جیسا کہ وہبانی کی شرح النظم اور دیگر معتبر کتابوں میں ہے اھ اور خیریہ کے کتاب الوقف میں ہے تحقیق انہوں نے تصریح کی اس بات کی کہ کسی شخص نے گمان کیا کہ اس پر قرض ہے پھر اس کے خلاف ظاہر ہوا تو جو کچھ ادا کرچکا ہے واپس لے سکتا ہے ، اور اگر لینے والے نے اس کو ہلاک کردیا ہے تو اس کا بدل لے سکتا ہے اھ (ت)

1 درمختار باب الرجوع فی الھبۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱۶۴/۲ 2 العقود الدریۃ تنقیح فی فتاوی حامدیۃ کتاب الشرکۃ حاجی عبدالغفار وپسران قندہار افغانستان ۹۱/۱ 3 فتاوی خیریہ کتاب الوقف دارالمعرفۃ بیروت ۱/ ۳۔ ۱۳

Fatawa-e-Razvia Volume 12

The jewelry and clothes of the bride given in 'Bari' (wedding gifts from the groom's side), if explicitly or by custom intended as transfer of ownership, such as sugar, fruits, perfume, etc., which is absolute, then upon possession by the wife, it becomes her property. Our noble social custom clearly dictates this, hence taking it back after her departure is considered highly objectionable and a cause for criticism. If taken back, people taunt saying, "given and taken back" or "it was only given for display, snatched once the bride arrived," meaning it goes against their established custom. In this scenario, exactly the same rules apply as mentioned for the groom's clothes: that after the bride's death, there is no right to claim compensation, just as compensation for sugar and fruit cannot be obtained once distributed, even if not yet consumed.

Indeed, the exit from the ownership of the donee is also among the impediments, as in al-Durr and other shining travelogues.	Because indeed, the removal of the gift from the ownership of the donee is also among the impediments to revocation, as mentioned in al-Durr and other grand, illuminating books (T).

Similarly, if that set of jewelry was made and sent by the husband's parents during prohibited kinship or by the husband after the marriage, then revocation is inconceivable. Otherwise, in the state of existence of the gifted item and absence of impediments, return is possible with the wife's consent or a judge's decree, though sinful. Yes, where custom does not imply transfer of ownership but is only sent for wearing and is considered the property of those who made it, then it is not the bride's property but a loan. In the state of its existence, timely revocation is permissible and lawful. In the state of loss, if it is destroyed while with the wife before separation without her fault—for instance, stolen, fallen, or broken/damaged during use—provided she used it only to the extent customary, then in these cases, there is no compensation due from the bride.

For indeed, loans are not compensated for destruction without transgression, as in al-Tanwir and others. And in al-Hindiyyah from al-Fusul al-Imadiyya: if the essence of the borrowed item is damaged during use, compensation is	Because surely there is no guarantee (compensation) for borrowed items in case of loss without transgression, as in Tanwir etc. In Hindiyyah, it is from Fusul-e-Imadiya that when a defect arises in a borrowed thing during the state of use, then

not mandatory due to the deficiency if used properly.	compensation is not mandatory due to that loss/damage.

1 Durr-e-Mukhtar, Chapter on Revoking Gift, Matba' Mujtabai, Delhi, 2/163 2 Durr-e-Mukhtar, Book of Loans, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/156

फतावा-ए-रज़विया जिल्द 12

दुल्हन का गहना जोड़ा जो बरी में दिया जाता है, अगर स्पष्ट रूप से (नसन) या प्रथा के अनुसार (उर्फ़न) उसमें भी स्वामित्व (तमलीक) का उद्देश्य होता है जैसे चीनी, मेवे, इत्र, फल आदि, जो पूरी तरह से होता है, तो वह भी कब्जे के बाद विवाहिता की संपत्ति हो जाएगी। हमारे यहाँ शरीफों की प्रथा यही है, इसीलिए विदाई के बाद इसे वापस लेने को बहुत बुरा और निंदा का कारण माना जाता है। और अगर ले लें तो लोग ताना मारते हुए कहते हैं कि देकर वापस ले लिया या सिर्फ दिखाने के लिए दिया था, जब दुल्हन आ गई तो छीन लिया, यानी यह उनकी स्थापित प्रथा के विरुद्ध है। इस स्थिति में उसके लिए भी ठीक वही नियम होंगे जो दूल्हे के जोड़े के बारे में बताए गए कि दुल्हन की मृत्यु के बाद मुआवज़ा लेने का कोई अधिकार नहीं है, जैसे चीनी और मेवों का मुआवज़ा बंट जाने के बाद नहीं मिल सकता, भले ही अभी तक खाया न गया हो।

(अरबी मूल पाठ: फ़ानल ख़ुरूजु अन मिलकिल मौहूब लहू ऐज़न मिनल मवानी कमा फ़िद् दुररि वा सायरिल असफ़ारिल ग़ुर)

क्योंकि निश्चित रूप से दानग्राही के स्वामित्व से दान का निकल जाना भी वापसी के अवरोधों में से है, जैसा कि 'दुर्र' और अन्य महान प्रकाशमय पुस्तकों में है। (त)

इसी तरह अगर वह गहना जोड़ा पति के माता-पिता ने करीबी रिश्तेदारी (कराबत-ए-महरमा) की स्थिति में या निकाह के बाद पति ने बनवाकर भेजा तो वापसी अकल्पनीय है। अन्यथा, दान की गई वस्तु के मौजूद होने और बाधाओं के अभाव में पत्नी की सहमति या काजी (न्यायाधीश) के फैसले से वापसी पाप के साथ संभव है। हाँ, जहाँ प्रथा स्वामित्व की न हो बल्कि केवल पहनने के लिए भेजा जाता हो और बनाने वालों की ही संपत्ति समझा जाता हो, वहाँ दुल्हन का स्वामित्व नहीं होता बल्कि वह एक उधार (आरियत) है कि मौजूदगी की स्थिति में जिससे समय पर वापसी जायज और हलाल है और नष्ट होने की स्थिति में अगर पत्नी से अलग होने से पहले बिना उसके किसी कृत्य के नष्ट हो गया, जैसे चोर ले गया, गिर पड़ा, दुल्हन के पहनने-ओढ़ने में टूट गया या खराब हो गया, बशर्ते कि उसने केवल वहीं तक उपयोग किया हो जहाँ तक पहनने पर प्रथागत सहमति मानी जाती हो, तो इन स्थितियों में दुल्हन पर कोई हर्जाना (तावान) नहीं है।

(अरबी मूल पाठ: फ़ानल अवार्य ला तुज़मनु बिल हलाकि मिन ग़ैरि तअद कमा फ़ित्

क्योंकि निश्चित रूप से उधार ली गई वस्तुओं पर बिना किसी ज़्यादती के नष्ट होने की स्थिति में कोई गारंटी

तन्वीर व ग़ैरिही वा फ़िल हिन्दियति अनिल फ़ुसूलिल इमादियति इज़ा इनतक़ज़ ऐनुल मुस्तआरि फ़ी हालतिल इस्तेमाल ला यजिबुल ज़मानु बि सबबिल नुक्सान इज़ा इस्तेमलहू)

(ज़मान) नहीं है, जैसा कि 'तन्वीर' आदि में है। 'हिन्दिया' में 'फ़ुसूल-ए-इमादिया' से है कि जब उधार ली गई चीज़ में उपयोग की स्थिति में कोई कमी पैदा हो जाए, तो उस नुकसान के कारण हर्जाना वाजिब नहीं है।

1 दुर्र-ए-मुख्तार, बाब अर-रुजूअ फ़िल हिबा, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 2/163 2 दुर्र-ए-मुख्तार, किताबुल आरियत, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/156

पेज 208/688

دلہن کا گہنا جوڑا جو بری میں دیا جاتا ہے اگر نصاً یا عرفاً اس میں بھی تملیک مقصود ہوتی ہے جیسے شکر، میوہ، عطر، پھل وغیرہ، مطلقاً ہوتی ہے تو وہ بھی قبضہ منکوحہ ملک منکوحہ ہوگا ہمارے یہاں شرفا کا عرف ظاہر یہی ہے ولہٰذا بعد رخصت اس کے واپس لینے کو سخت معیوب و موجب مطعون جانتے ہیں، اور اگر لے لیں تو طعنہ زن یہی کہتے ہیں کہ دے کر پھیر لیا یا صرف دکھانے کو دیا تھا جب دلہن آگئی چھین لیا، یعنی یہ ان کی رسم معہود کے خلاف ہے اس صورت میں تو اس کے لئے بھی بعینہ وہی احکام ہوں گے جو دولہا کے جوڑے میں گزرے کہ بعد ہلاک دلہن سے تاوان لینے کا اصلاً اختیار نہیں جیسے شکر میوہ کا تاوان بٹ جانے کے بعد نہیں مل سکتا اگرچہ ہنوز کھانے میں نہ آیا ہو،

فان الخروج عن ملك الموهوب له ایضا من الموانع کما في الدروسائر الاسفار الغر۔

اس لئے کہ بیشک موہوب لہ کی ملک سے ہبہ کا نکل جانا بھی رجوع کے موانع میں سے ہے جیسا کہ در اور دیگر عظیم الشان روشن کتابوں میں ہے (ت)

یو نہیں اگر وہ جوڑا گہنا بحالت قرابت محرمہ والدین شوہر یا بعد نکاح شوہر نے بنا کر بھیجا تو رجوع نا متصور، ورنہ بحالت بقائے موہوب وفقدان موانع برضائے زوجہ یا قضائے قاضی واپسی گناہ کے ساتھ ممکن ، ہاں جہاں عرف تملیک نہ ہو بلکہ صرف پہنانے کے لئے بھیجا جاتا اور بنانے والوں ہی کی ملک سمجھا جاتا ہو وہاں دلہن کی ملک نہیں ایک عاریت ہے کہ بحالت بقا جس سے بر وقت رجوع جائز وحلال اور بحال ہلاک اگر قبل افتراق زوجہ کے پاس ہے اس کے فعل کے تلف ہو گیا مثلاً، چور لے گیا، گر پڑا، دلہن کے پہننے برتنے میں ٹوٹا بگڑا خراب ہو گیا

بشرطیکہ وہیں تک اپنے استعمال میں لائی ہو جہاں تک کے پہنے پر عرفاً رضامندی سمجھی جاتی ہو تو ان صورتوں میں دلہن پر تاوان نہیں،

فان العوارى لا تضمن بالهلاك من غير تعد اس لئے کہ بے شک مستعار اشیاء پر بلا تعدی ہلاک کی صورت میں ضمان نہیں جیسا کہ تنویر وغیرہ میں ہے۔

كما فى التنوير وغيره وفى الهندية عن الفصول العمادية اذا انتقض عين المستعار فى حالة الاستعمال لا يجب الضمان بسبب النقصان اذا استعمله

ہندیہ میں فصول عمادیہ سے ہے کہ جب مستعار شئی میں استعمال کی حالت میں کوئی نقص پیدا ہو جائے تو اس نقصان کے سبب سے ضمان واجب نہیں

1 درمختار باب الرجوع في الهبة مطبع مجتبائی دہلی ۱۶۳/۲ 2 درمختار کتاب العاریۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱۵۶/۱

Fatawa Razawiyya Volume 21

Usage should be in accordance with custom and habit. (T)

And if she spoils it by wearing it inappropriately, contrary to custom and habit, for example, she used to sleep at night wearing heavy suits or delicate pearl-studded jewelry, or the custom was to wear it only for outings but she wears it at home, she shall pay compensation for the loss. Likewise, if she lost it due to carelessness or negligence, or brought it to her home after divorce and it was destroyed there in some way, she will have to pay its price.

[Table Content]

Arabic: Because the loan was temporary by implication to the persistence of the marriage relationship. Urdu: Because this loan, based on implication, was temporary until the persistence of the marriage.

Arabic: It ended with its termination, so keeping it after that is considered a transgression from her, even if... Urdu: Therefore, it ended with the end of the marriage, hence the woman keeping it after this now...

Arabic: ...it is not used. In Jami' al-Fussulayn: If the loan was temporary, and she kept it after the time despite the possibility of returning it, she becomes liable, even if... Urdu: ...is a transgression on the woman's part even if she does not use it. It is stated in Jami' al-Fussulayn that if a loan is for a fixed time and after the time has passed, despite the possibility of returning it, one keeps it...

Arabic: ...she did not use it after the time. This is the preferred view, whether it was timed by text or by implication, etc. I say: This is what is explicitly stated in... Urdu: ...then one will be liable even if the chosen time has passed. It is the same whether the timing is by text or by implication, etc. I say: (I say...)

Arabic: ...the original as in al-Hindiyya. Therefore, it is preferred over what is in it, that some of our masters said that this [rule of liability] is when she benefited from it after the time. But if... Urdu: ...this is the same as what is explicitly stated in the original as in al-Hindiyya. Thus, it will be preferred over what is mentioned there, that indeed some of our masters have said that research shows this rule applies when...

Arabic: ...she did not benefit from it, she is not liable, and that is the preferred view etc. For when a difference occurs in a fatwa, it is necessary to refer to the Zahir al-Riwayah; rather, here it is... Urdu: ...one derives benefit after the time has passed,

and if benefit is not derived then one will not be liable. This is the preferred view etc. because when a difference occurs in a fatwa, a return is made towards the Zahir al-Riwayah;

Arabic: ...more appropriate, as is not hidden. Urdu: ...rather, it is more appropriate here as is not hidden. (T)

[Text below the table] And that jewelry etc. which the husband's parents give to their daughter-in-law to wear and use, in which neither by text nor by custom any...

[Footnotes] 1. Fatawa Hindiyya, Kitab al-'Ariyya, Chapter 5, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 4/368 2. Durr-e-Mukhtar, Kitab al-'Ariyya, Matba' Mujtabai, Delhi, 2/156 3. Fatawa Hindiyya, Kitab al-'Ariyya, Chapter 5, regarding the manufacturing of 'Ariyya, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 4/368

फ़तावा रज़विया जिल्द 21

इस्तेमाल आदत और रस्म (उर्फ़) के मुताबिक़ हो। (त)

और अगर रस्म और आदत के ख़िलाफ़ ग़लत तरीक़े से पहनने में ख़राब किया, मसलन भारी जोड़े या मोतियों के नाज़ुक जड़ाऊ गहने रातों को पहन कर सोई, या सिर्फ़ आने-जाने में पहनने का रस्म था और वह घर में पहनती है, तो नुक़सान का हर्जाना देगी। इसी तरह अगर लापरवाही या बे-एहतिसाबी से खो दिया या तलाक़ के बाद अपने घर ले आई और वहाँ किसी तरह नष्ट हो गया, तो क़ीमत देनी पड़ेगी।

[तालिका सामग्री]

अरबी: क्योंकि ऋण (आरियत) वैवाहिक संबंध के बने रहने तक का ही था। उर्दू: क्योंकि यह आरियत (उधार), दलालत के एतबार से निकाह के बाक़ी रहने तक के लिए मुक़र्रर थी।

अरबी: अतः उसके ख़त्म होने के साथ ही यह भी ख़त्म हो गया, लिहाज़ा उसके बाद उसे अपने पास रखना उसकी तरफ़ से ज़्यादती मानी जाएगी, चाहे... उर्दू: इसलिए निकाह के ख़त्म होने के साथ ही यह भी ख़त्म हो गया, लिहाज़ा अब इसके बाद औरत का इसे रोके रखना औरत की तरफ़ से ज़्यादती (तअद्दी) है, चाहे वह इसे इस्तेमाल न करे।

अरबी: ...इस्तेमाल न किया जाए। जामे-उल-फ़ुसूलैन में है: अगर आरियत वक़्त के लिए मुक़र्रर हो और वक़्त गुज़रने के बाद लौटाने की गुंजाइश के बावजूद उसे रोके रखे, तो वह ज़िम्मेदार (ज़ामिन) होगा, चाहे... उर्दू: जामे-उल-फ़ुसूलैन में है कि अगर आरियत मुक़र्रर समय के लिए हो और समय बीत जाने के बाद लौटाने की संभावना होने के बावजूद उसे रोके रखे, तो वह ज़िम्मेदार होगा, चाहे समय बीत गया हो।

अरबी: ...वक़्त बीतने के बाद उसका इस्तेमाल न किया हो। यही पसंदीदा (मुख़्तार) राय है, चाहे समय का निर्धारण साफ़ लफ़्ज़ों (नस्स) से हो या दलालत (इशारे) से। मैं कहता हूँ: यही वह है जो असल में लिखा गया है जैसा कि... उर्दू: यह बराबर है कि समय का निर्धारण नस्स के एतबार से हो या दलालत के एतबार से। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) यह वही है जिस पर असल में नस्स की गई है जैसा कि...

अरबी: ...हिंदिया में है। लिहाज़ा इसे उस पर तरजीह (प्राथमिकता) दी जाएगी जो उसमें है कि हमारे कुछ उलेमा (मशाइख़) ने कहा है कि यह हुक्म तब है जब वक़्त गुज़रने के बाद उससे फ़ायदा उठाया गया हो। और अगर... उर्दू: ...हिंदिया में है, अतः इसे उस पर तरजीह होगी जो उसमें है कि बेशक हमारे कुछ मशाइख़ ने कहा है कि तहक़ीक़ यह हुक्म तब है जब समय बीतने के बाद उससे नफ़ा उठाया जाए। और अगर नफ़ा नहीं उठाया तो...

अरबी: ...फ़ायदा न उठाया गया हो तो ज़िम्मेदारी नहीं होगी, और यही मुख़्तार राय है। क्योंकि जब फ़तवे में मतभेद हो, तो 'ज़ाहिर-उर-रिवायत' की तरफ़ रुजू (मुड़ना) ज़रूरी है, बल्कि यहाँ... उर्दू: ...ज़िम्मेदार नहीं होगा, यही मुख़्तार है। क्योंकि जब फ़तवे में इख़्तिलाफ़ (मतभेद) हो जाए, तो 'ज़ाहिर-उर-रिवायत' की तरफ़ रुजू होता है, बल्कि यहाँ पर...

अरबी: ...ज्यादा मुनासिब है, जैसा कि छिपा नहीं है। उर्दू: ...ज्यादा मुनासिब (औला) है, जैसा कि छिपा नहीं है। (त)

[तालिका के नीचे का पाठ] और वह ज़ेवर वग़ैरह जो शौहर के माँ-बाप अपनी बहू को पहनने और बरतने के लिए देते हैं, जिसमें नस्स के तौर पर या रस्म के तौर पर कोई...

[पादटिप्पणी] 1. फ़तावा हिंदिया, किताबुल आरियत, अध्याय 5, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर 4/368 2. दुर्रे मुख़्तार, किताबुल आरियत, मत्तबा मुज्तबाई दिल्ली 2/156 3. फ़तावा हिंदिया, किताबुल आरियत, अध्याय 5, आरियत के निर्माण के संबंध में, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर 4/368

पृष्ठ 688 का 209

فتاوٰی رضویہ جلد دو ازدہم

استعمال عادت و عرف کے مطابق ہو۔ (ت)

اور اگر خلاف عرف وعادت بے طوری سے پہنے میں خراب کیا مثلاً بھاری جوڑے یا موتیوں کے نازک جڑاؤ گہنے راتوں کو پہنے سویا کی، یا صرف آنے جانے میں پہننے کا عرف تھا یہ گھر میں پہنتی ہے تو نقصان کا تاوان دے گی۔ یونہی اگر بے احتیاطی سے پر وائی سے گمادیا یا بعد طلاق اپنے گھر لے آئی اور یہاں کسے طرح تلف ہو گیا تو قیمت دینی آئے گی،

[جدول کا متن]

عربی: لان العارية كانت موقتة دلالة الى بقاء الزوجية اردو: اس لئے کہ یہ عاریت، دلالت کے اعتبار سے بقاء زوجیت تک

عربی: فانتهت بانتهائها فامساكها بعد ذلك تعد منها وان اردو: مؤقت تھی لہذا زوجیت کے ختم ہونے کے ساتھ ہی یہ بھی

عربی: لم تستعمل، فی جامع الفصولين لو كانت العارية اردو: ختم ہو گئی چنانچہ اب اس کے بعد عورت کا اس کو روکے رکھنا

عربی: موقتة فامسكها بعد الوقت مع امكان الرد ضمن وان اردو: عورت کی طرف سے تعدی ہے اگرچہ اسے استعمال نہ کرے

عربی: لم يستعملها بعد الوقت هو المختار سواء توقتت اردو: جامع الفصولين میں ہے کہ اگر عاریت موقت ہو اور وقت

عربی: نصا او دلالة الخ اقول: هذا هو المنصوص علیه في اردو: گزر جانے کے بعد امکان رد کے باوجود اُسے روکے رکھے تو

عربی: الاصل کما فی الهندیة فیترجح علی مافیها ان من اردو: ضامن ہوگا اگرچہ وقت مختار ہے۔ برابر ہے کہ توقیت باعتبار

عربی: مشائخنا من قال بان هذا انتفع بها بعد الوقت فان اردو: نص کے ہو یا باعتبار دلالت کے الخ اقول: (میں کہتا

عربی: لم ینتفع بها لم یضمن وهو المختار الخ فان الفتوی اردو: ہوں) یہ وہی ہے جس پر اصل میں نص کی گئی جیسا کہ ہندیہ

عربی: متی اختلف وجب المصیر الی ظاہر الروایة بل ههنا اردو: میں ہے پس اس کو ترجیح ہوگی اس پر جو اس میں ہے کہ بیشک

عربی: اولی کما لا یخفی۔ اردو: ہمارے بعض مشائخ نے کہا کہ تحقیق یہ حکم تب ہے جب وقت گزرنے کے بعد اس سے نفع اٹھائے، اور نفع نہیں اٹھایا تو ضامن نہ ہوگا یہی مختار ہے الخ اس لئے کہ جب فتوٰی میں اختلاف واقع ہو جائے تو ظاہر الروایۃ کی طرف رجوع ہوتا ہے بلکہ یہاں پر اولٰی ہے جیسا کہ مخفی نہیں۔ (ت)

[جدول کے نیچے کی تحریر] اور وہ زیور وغیرہ کہ والدین زوج اپنی بہو کے پہننے برتنے دیتے ہیں جس میں نصاً یا عرفاً کسی

[حواشی] 1. فتاوٰی ہندیہ کتاب العاریۃ الباب الخامس نورانی کتب خانہ پشاور ۴ / ۳۶۸ 2. درمختار کتاب العاریۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱۵۶/۲ 3. فتاوٰی ہندیہ کتاب العاریۃ الباب الخامس فی تصنیع العاریۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۴ / ۳۶۸

Fatawa Ridawiyya, Volume 12

...it is not intended to make her the owner; it remains the property of the parents as before. The daughter-in-law has no right to it, as previously mentioned regarding 'a woman benefiting from what the husband has purchased' (as has already passed in the case of a woman obtaining benefit from property bought by her husband. - Translator). Its rulings are those of a loan ('ariyah) which have been mentioned in detail. And Allah Almighty knows best.

Problem 78: 15 Ramadan-ul-Mubarak 1311 AH What do the scholars of religion say in this case: A person named Zaid married his son Abu Muhammad to Habibah, daughter of Khalid, at his own expense. Khalid, by way of dowry (jahez), gave belongings, jewelry, etc., and sent Abu Muhammad's wife home in the customary manner. After a few days, Zaid, of his own volition, separated the food and drink of Abu Muhammad and his wife. At that time, his wife requested her property and belongings that her parents had given her from Zaid, i.e., her father-in-law. Zaid said, "That property is ours; we have kept it in exchange for the money spent on Abu Muhammad's wedding." Now, please state who is the owner of this property and belongings according to Sharia: Abu Muhammad's wife or Zaid, the father of Abu Muhammad? Explain and be rewarded.

The Answer: The jewelry and belongings that Abu Muhammad's wife brought in her dowry are specifically her property. Neither Abu Muhammad nor his father has any right to them. And the money that Zaid spent on Abu Muhammad's wedding will, according to common and prevalent custom, be considered a gift (tabarru') and an act of kindness, such that Zaid cannot demand it from anyone. Even if it were considered a debt—for example, if an adult Abu Muhammad himself had requested, "Please pay my wedding expenses on my behalf, I will repay you," or if Zaid himself had said to him, "I am incurring this expense on your behalf as a loan, I will take it back from you"—and in this case, only that amount was spent which was according to custom, habit, and status; in all these cases, what was spent is a debt, but he should demand it from Abu Muhammad. How can he take the jewelry and belongings which are the wife's property in exchange for that money? And Allah Almighty knows best.

फ़तावा रज़विया, खंड 12

...की तरह मालिक बना देना उद्देश्य नहीं होता, वह पहले की तरह माता-पिता के स्वामित्व में ही रहता है। बहू का उसमें कोई अधिकार नहीं है, जैसा कि पहले 'स्त्री द्वारा पति की खरीदी हुई वस्तु से लाभ उठाने' के विषय में बताया जा चुका है। (जैसा कि स्त्री के लिए पति द्वारा खरीदी गई संपत्ति से लाभ प्राप्त करने के मामले में बीत चुका है। - अनुवादक)। इसके नियम वही हैं जो उधार (आरियत) के नियम हैं, जिनका विस्तार से उल्लेख किया गया है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 78: 15 रमज़ान-उल-मुबारक 1311 हिजरी दीन के उलेमा इस मामले में क्या फरमाते हैं कि ज़ैद नामक व्यक्ति ने अपने बेटे अबू मुहम्मद का विवाह खालिद की बेटी हबीबा से अपने खर्च पर किया। खालिद ने दहेज के तौर पर सामान, गहने आदि देकर अबू मुहम्मद की पत्नी को रस्मो-रिवाज़ के मुताबिक विदा किया। कुछ दिनों बाद ज़ैद ने अपनी खुशी से अबू मुहम्मद और उसकी पत्नी का खान-पान अलग कर दिया। उस समय उसकी पत्नी ने अपना सामान और गहने, जो उसके माता-पिता ने उसे दिए थे, ज़ैद यानी अपने ससुर से मांगे। ज़ैद ने कहा, "वह सामान हमारा है, हमने उसे उस पैसे के बदले में रख लिया है जो अबू मुहम्मद की शादी में खर्च हुआ था।" अब कृपया बताएं कि शरीयत के अनुसार उस सामान और गहनों की मालकिन अबू मुहम्मद की पत्नी है या अबू मुहम्मद का पिता ज़ैद? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: जो गहने और सामान अबू मुहम्मद की पत्नी अपने दहेज में लाई है, वह विशेष रूप से उसकी मिल्कियत (संपत्ति) है। अबू मुहम्मद या उसके पिता का उसमें कोई अधिकार नहीं है। और वह रुपया जो ज़ैद ने अबू मुहम्मद की शादी में खर्च किया, प्रचलित और आम रिवाज के अनुसार दान (तबर्रुअ) और उपकार माना जाएगा, जिसे ज़ैद किसी से मांग नहीं सकता। और अगर इसे कर्ज भी मान लिया जाए, उदाहरण के तौर पर बालिग अबू मुहम्मद ने खुद विनती की हो कि "मेरी शादी का खर्च आप मेरी तरफ से दे दें, मैं वापस कर दूँगा," या खुद ज़ैद ने उससे कहा हो कि "यह खर्च सिर्फ तुम्हारी तरफ से कर्ज के तौर पर उठाता हूँ, मैं इसे वापस लूँगा," और इस मामले में केवल उतना ही खर्च किया गया हो जो रस्म, रिवाज और हैसियत के अनुरूप था; इन सभी स्थितियों में जो खर्च हुआ वह कर्ज है, लेकिन उसका तकाज़ा उसे अबू मुहम्मद से करना चाहिए। गहने और सामान तो पत्नी की मिल्कियत हैं, वह उस पैसे के बदले में उन्हें कैसे ले सकता है? और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

طرح مالک کر دینا مقصود نہیں ہوتا وہ بدستور ملک والدین پر ہے بہو کا اُس میں کچھ حق نہیں کما تقدم فی استمتاع المرأۃ بمشرٰی الزوج (جیسا کہ عورت کے لئے شوہر کے خریدے ہوئے مال سے نفع حاصل کرنے کی صورت میں گزر چکا ہے۔ت) اس کے احکام وہ ہی احکام عاریت ہیں کہ مفصلاً مذکور ہوئے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۷۸: ۱۵ رمضان المبارک ۱۳۱۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس صورت میں کہ مسمٰی زید نے اپنے پسر ابو محمد کی شادی ساتھ حبیبہ بنت خالد کے بصرف زر اپنے کے کی خالد نے بطریق جہیز اسباب و زیور وغیرہ دے کر زوجہ ابو محمد کو بدستور معروف رخصت کیا بعد چند روز کے زید نے اپنی خوشی سے ابو محمد اور اس کی زوجہ کا کھانا پینا علیحدہ کیا اُس وقت اُس کی زوجہ نے اپنا مال واسباب جو اس کے والدین نے اسے دیا تھا زید یعنی خسر سے طلب کیا زید نے کہا وہ مال ہمارا ہے ہم نے بالعوض اُس روپے کے جو شادی ابو محمد میں صرف ہوا رکھ لیا ہے اب فرمائیے کہ عند الشرع اس مال واسباب کی مالک زوجہ ابو محمد ہے یا زید والد ابو محمد ہے۔ بینوا توجروا۔

الجواب: وہ زیور واسباب کہ زوجہ ابو محمد اپنے جہیز میں لائی خاص اُس کی ملک ہے ابو محمد یا اس کے باپ کا اس میں کچھ حق نہیں اور وہ روپیہ کہ زید نے ابو محمد کی شادی میں صرف کیا بحکم عرف شائع و عام تبرع و احسان قرار پائے گا کہ زید اس کا مطالبہ کسی سے نہیں کرسکتا اور اگر قرض بھی ٹھہرے مثلاً ابو محمد بالغ نے خود استدعا کی کہ میری شادی کے مصارف آپ میری طرف سے ادا کرد یجئے میں واپس دوں گا، یا زید ہی نے اس سے کہا کہ یہ صرف تیری طرف سے بطور قرض اٹھاتا ہوں میں اس سے واپس لوں گا، اور اس صورت میں صرف وہی کیا

جو رسم و عادت و حیثیت کے موافق تھا، ان سب صورتوں میں جو اٹھایا وہ قرض ہے مگر اُس کا تقاضا ابو محمد سے کرے، زیور واسباب کو ملک زوجہ ہے کہ اُس روپے کے عوض کیونکر لے سکتا ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

صفحہ 210 از 688

Fatawa Razawiyya Volume Twelve

First Chapter

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

Problem 79: 27 Rabi-ul-Awwal 1307 AH What do the scholars of religion say regarding this: Zaid died leaving behind a wife, one adult son, one adult daughter, and two minor daughters. The minor sisters remained under the care of their older brother, Bakr. When they reached adulthood, Bakr married them off with modest expenses. The wedding of the eldest sister (Bakr's elder sister) was conducted by Zaid during his lifetime, so her upbringing or wedding expenses were not borne by Bakr. Bakr only spent the shared inherited wealth on the upbringing and weddings of the two younger sisters. In this situation, can Bakr get a set-off/reimbursement for these expenses from those two younger sisters? Please explain and be rewarded.

The Answer: There are three things here: (1) Upbringing expenses. (2) Over and above wedding expenses, i.e., expenses other than dowry, such as food for the wedding procession (Baraat), tips/rewards for servants, clothes for the in-laws (Samdhyana), greetings for the groom (Salami), transportation rental, betel leaf and nut for the procession, and so on.

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

पहला अध्याय

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

मसला ७९: २७ रबी-उल-अव्वल १३०७ हिजरी दीन के विद्वान इस बारे में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद एक पत्नी, एक वयस्क पुत्र, एक वयस्क पुत्री और दो नाबालिग पुत्रियाँ छोड़कर मर गया। नाबालिग बहनें अपने जवान भाई बक्र के पालन-पोषण में रहीं। जब वे वयस्क हुईं, तो बक्र ने उनकी शादियाँ मामूली खर्च से कर दीं। बड़ी बहन, जो बक्र से बड़ी थी, उसकी शादी ज़ैद ने अपने जीवनकाल में कर दी थी, इसलिए उसके पालन-पोषण या शादी का खर्च बक्र ने नहीं उठाया। बक्र ने केवल दो (छोटी) बहनों के पालन-पोषण और शादी का खर्च संयुक्त विरासत में मिले माल से किया। क्या ऐसी स्थिति में बक्र इन खर्चों की भरपाई उन दोनों छोटी बहनों से कर सकता है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: यहाँ तीन चीज़ें हैं: (१) पालन-पोषण का खर्च। (२) शादी के ऊपरी खर्च, यानी दहेज के अलावा अन्य खर्च जैसे बारात का खाना, नौकरों का इनाम, समधियाने के कपड़े, दूल्हे की सलामी, सवारियों का किराया, बारात के लिए पान-सुपारी आदि।

पृष्ठ ६८८ में से २११

فتاوی رضویہ جلد دو از دہ

فصل اوّل

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم ط

مسئلہ ۷۹ : ۲۷ ربیع اول ۱۳۰۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین کہ زید ایک زوجہ اور ایک پسر بالغ اور ایک دختر بالغہ اور دو لڑکیاں نابالغہ چھوڑ کر فوت ہوا، نابالغ بہنیں اپنے جوان بھائی بکر کی پرورش میں رہیں (جب وہ بالغ ہوئیں تو بکر نے ان کی شادیاں معمولی خرچ سے کر دیں اور جو بڑی بہن بکر کی تھی اس کی شادی زید نے اپنی زندگی میں کر دی تھی اس کی پرورش یا شادی کا خرچ بکر کے پاس سے نہ ہوا) صرف دو بہنوں کا خرچ پرورش و شادی اس نے مال متروکہ مشترکہ سے کیا اس صورت میں یہ خرچ بکر کو ان دونوں چھوٹی بہنوں سے مجرا مل سکتا ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: یہاں تین چیزیں ہیں: (۱) خرچ پرورش (۲) شادی کے مصارف بالائی یعنی جہیز کے سوا جو اور خرچ ہوتے ہیں جیسے برات کا کھانا، خدمتیوں کا انعام، سمدھیانے کے جوڑے، دولہا کی سلامی، سواریوں کا کرایہ، برات کے پان چھالیا و غیر ذلک۔

(3) The Bride's Dowry.

By the grace of Allah Almighty, listen to the ruling for each separately:

The expenditure for upbringing is undoubtedly permissible according to Sharia when there is no appointed guardian (wasi). It is permissible for adult heirs to raise minor heirs, provide them with essentials like food and clothing, and use the minors' wealth for these purposes without being extravagant or wasteful, provided the children are under their care, even if they do not hold formal financial guardianship or trusteeship. It is stated in Tanwir al-Absar, Durr al-Mukhtar, Radd al-Muhtar, and other books:

Arabic	Urdu Translation
Jaza shirau ma la budda lil-saghir minhu (kal-nafaqah wal-kiswah was-tijar al-zi'r minh) wa bai'uhu ay bai'u ma la budda lil-saghir minhu li-akhin wa 'ammin wa ummin wa multa-qit huwa fi hajrihim ay fi kanfihim wa illa la.	Buying essential items from a young child's wealth (like food, clothing, and hiring a wet-nurse on wages - 'Minah') and selling something from their wealth out of necessity is permissible for a brother, uncle, mother, and the person who finds a lost child, on the condition that the child is under their protection and care; otherwise, not. (T)

Allama Shami, in the commentary on the statement in Durr al-Mukhtar, "It is not permissible to dispose of another person's property without their permission or authority except in certain cases," while mentioning exceptional cases, says:

Arabic	Urdu Translation
Kadha law anfaqa ba'du ahli al-mahalla 'ala masjidin la mutawalli lahu min ghallatihi lihasirin wa nahwihi aw anfaqa al-warathatu al-kibaru 'ala al-saghar wa la wasiyya lahum fala dhamana fil-kulli diyanatan. Ah mulakhasan. Aqulu: wa la yukhalifuhu bal rubbama yu'ayyiduhu ma fi shahadat al-awsiya' min al-Tahawi min al-fusul haythu	Just as some residents of a neighborhood spend from the mosque's wealth on a mosque that has no trustee—for example, making arrangements for mats etc.—likewise, if adult heirs spend the wealth of minor heirs who have no guardian, then in all this, there is no liability according to religious ethics (diyanatan). (Summary) I say that this is not contrary to that; rather, it supports it. What is in Tahawi with reference to the

Arabic	Urdu Translation
qala warathatun sigharun wa kibarun wa fit-tarika daynun wa 'aqarun...	chapter 'Shahadat al-Awsiya' (Testimony of Guardians), where he stated that...

1. Durr al-Mukhtar, Kitab al-Khatr wa al-Ibahah, Chapter on Sale, Mujtabai Press, Delhi, 2/246; Radd al-Muhtar, Kitab al-Khatr wa al-Ibahah, Chapter on Sale, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/250.
2. Radd al-Muhtar, Kitab al-Ghasb, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/250, 5/714.

(3) दुल्हन का जहेज़।

अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से हर एक का हुक्म अलग-अलग सुनिए:

परवरिश का खर्च बेशक दीयानत के हुक्म से वसी (अभिभावक) की अनुपस्थिति में, बड़े वारिसों के लिए छोटे वारिसों की परवरिश करना और उनके खाने-पहनने वगैरह की ज़रूरी चीज़ें उनके लिए ख़रीदना और इन कामों में उनका माल बिना फ़िज़ूलख़र्ची के उन पर ख़र्च करना शरई तौर पर जायज़ है, जब वे बच्चे उनके पास हों, चाहे उनके पास माली विलायत (वित्तीय अभिभावकत्व) न भी हो। तनवीरुल अबसार, दुर्रे मुख्तार और रद-दुल मुहतार वगैरह किताबों में है:

अरबी	उर्दू अनुवाद
जज़ा शिराउ मा ला बुद्दा लिस-सगीर मिन्हु (कल-नफ़क़ह वल-किसवह वस्त-इजार अज़-ज़ि'र मिन्ह) व बै'उहु अय बै'उ मा ला बुद्दा लिस-सगीर मिन्हु लि-अखिन व अम्मिन व उम्मिन व मुल्ता-क़ित हुवा फी हजरिहिम अय फी कन्फ़िहिम व इल्ला ला।	छोटे बच्चे के माल से उसकी ज़रूरत की चीज़ें ख़रीदना (जैसे खाना, लिबास और मज़दूरी पर दाई हासिल करना, मिन्हा) और ज़रूरत के तहत उसके माल से कुछ बेचना भाई, चाचा, माँ और गुमशुदा बच्चे को पाने वाले के लिए जायज़ है बशर्ते कि वह उनकी ज़ेरे-हिफ़ाज़त व परवरिश हो वरना नहीं। (त)

अल्लामा शामी, दुर्रे मुख्तार के इस कोल (कथन) की शरह (व्याख्या) में कि "दूसरे के माल में बिना अनुमति और विलायत के तसर्रुफ़ (उपयोग) करना नाज़ायज़ है, सिवाय चंद मसाइल के" इस्तिसना (अपवाद) के मसाइल के अंतर्गत इरशाद फ़रमाते हैं:

अरबी	उर्दू अनुवाद
कज़ा लौ अन्फ़क़ा बा'दु अहलि अल-महल्ला 'अला मस्जिदिन ला मुतवल्ली लहू मिन गल्लातिही लिहासिरिन व नह्विही अव अन्फ़क़ा अल-वरसतुल किबारु 'अलस-सगार व ला वसिय्या लहुम फ़ला ज़माना फ़िल-कुल्लि दियानतन। आह मुलख़्ख़सन। अकूलु: व ला युख़ालिफ़ुहु बल	जैसे बाज़ अहल-ए-मुहल्ला किसी ऐसी मस्जिद पर मस्जिद के माल से ख़र्च करें जिसका कोई मुतवल्ली नहीं मसलन चटाई वगैरह का इंतज़ाम करें, यूँ ही बड़े वारिस ऐसे छोटे वारिसों पर जिनका कोई वसी नहीं उनका माल ख़र्च करें तो इस तमाम में दीयानतन ज़मान (मुआवज़ा) नहीं

अरबी

रब्बमा युअय्यिदुहु मा फ़ी शहादतिल अवसिया' मिन अत-तहतावी मिन अल-फ़ुसूल हैसु क़ाला वरसतुन सिगारुन व किबारुन व फ़ित-तरिकह दयनुन व अक़ारुन...

उर्दू अनुवाद

(तलख़ीस)। मैं कहता हूँ यह उसके मुख़ालिफ़ नहीं बल्कि इसकी ताईद करता है, जो तहतावी में ब-हवाला फ़ुसूल 'शहादतुल अवसिया' के बारे में है जहाँ फ़रमाया कि...

1. दुर्रे मुख्तार, किताबुल ख़त्र वल इबाहह, फ़सल फ़िल बैअ, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 2/246; रद-दुल मुहतार, किताबुल ख़त्र वल इबाहह, फ़सल फ़िल बैअ, दारुल इहया-उत-तुरास अल-अरबी बैरूत, 5/250।
2. रद-दुल मुहतार, किताबुल ग़सब, दारुल इहया-उत-तुरास अल-अरबी बैरूत, 5/250, 5/714।

(۳) دلہن کا جہیز۔

بتوفیق اللہ تعالی ہر ایک کا حکم علیحدہ سنئے:

خرچ پرورش بے شک بحکم دیانت بحالت عدم وصی، وارثان کبیر کو وارثان صغیر کی پرورش کرنا اور ان کے کھانے پہننے وغیرہ ضروریات کی چیزیں ان کے لئے خریدنا اور ان امور میں ان کا مال بے اسراف و تبذیر ان پر اٹھانا شرعاً جائز ہے جبکہ وہ بچے ان کے پاس ہوں اگرچہ یہ ان روصابت و ولایت مالیہ نہ رکھیں۔ تنویر الابصار ودرالمختار و ردالمختار وغیرہ اسفار میں ہے:

عربی	اردو ترجمہ
جاز شراء مالابد للصغير منه (كالنفقة والكسوة واستئجار الظئر منح) وبيعه اى بيع مالابد للصغير منه لاخ وعم وام وملتقط هو في حجرهم اى في كنفهم والالالا۔	چھوٹے بچے کا مال سے اس کی ضرورت کی اشیاء خریدنا (جیسے کھانا، لباس اور اجرت پر دایہ حاصل کرنا، منح) اور ضرورت کے تحت اس کے مال سے کچھ بیچنا بھائی، چچا، ماں اور گم شدہ بچے کو پانے والے کے لئے جائز ہے بشرطیکہ وہ ان کی زیر حفاظت و پرورش ہو ورنہ نہیں۔(ت)

علامہ شامی قول در مختار لا یجوز التصرف فی مال غیرہ بلا اذنہ ولا ولایتہ الا فی مسائل (غیر کے مال میں بے اذن ولایت تصرف نا جائز سوائے چند مسائل کے۔ت) کی شرح میں بہ ضمن مسائل استثناء ارشاد فرماتے ہیں:

عربی	اردو ترجمہ
كذا لو انفق بعض اهل المحلة على مسجد لامتولى له من غلته لحصير ونحوه او انفق الورثة الكبار على الصغار ولا وصى لهم فلا ضمان فى الكل ديانة۲ اه ملخصا اقول: ولا يخالفه بل ربما يؤيده ما في شهادة الاوصياء من الطحطاوي من الفصول حيث قال ورثه صغار وكبار و فى التركة دين وعقار	جیسے بعض اہل محلہ کسی ایسی مسجد پر مسجد کے مال سے خرچ کرے جس کا کوئی متولی نہیں مثلاً چٹائی وغیرہ کا انتظام کرے یوں ہی بڑے وارث ایسے چھوٹے وارثوں پر جس کا کوئی وصی نہیں ان کا مال خرچ کریں تو اس تمام میں دیانتاً ضمان نہیں (تلخیص) میں کہتا ہوں یہ اس کے مخالف نہیں بلکہ اس کی تائید کرتا ہے وہ جو طحطاوی میں بحوالہ فصول شہادۃ الاوصیاء کے بارے میں ہے جہاں فرمایا کہ

1 درمختار كتاب الخطر والاباحة فصل فى البيع مطبع مجتبائى دہلى ۲ / ۲۴۶، ردالمحتار كتاب الخطر والاباحة فصل فى البيع داراحياء التراث العربى بيروت ۵ / ۲۵۰ 2 ردالمحتار كتاب الغصب داراحياء التراث العربى بيروت ۵ / ۲۵۰، ۵ / ۷۱۴

Fatawa Ridwiyya Volume 12

[Table Header: Arabic Text | Urdu Translation]

[Arabic]: If part of the wealth is destroyed and the adults spend a portion on themselves and on the minors, then whatever was destroyed is borne by all of them. As for what the adults spent, they are liable for the share of the minors if they spent it without the order of the Judge (Qadi) or the Executor (Wasi). If they spent it by the order of one of them, it is credited to them up to the amount of standard maintenance (nafaqah al-mithl). End quote. Indeed, this applies when an executor is present; as for what was mentioned previously, it applies in his absence, especially in our lands. So understand.

[Urdu]: If the heirs include adults and minors, and there are debts and real estate in the inheritance, and then some of the property is destroyed, and the adult heirs spent some of the property on themselves and on the minor heirs, then the property that was destroyed is borne by all of them. And what the adults spent on the minors, if it was spent without the permission of the Judge and the Executor, they will be liable for it. However, if it was spent with the permission of either of them, they will be credited with the amount of standard maintenance. This ruling applies in the presence of an executor; what was stated earlier applies in his absence, particularly in our region. So understand. (T)

Therefore, whatever Bakr spent on the upbringing of those girls, if he claims standard maintenance, he will certainly be credited with it as a matter of religious duty.

[Arabic]: For he was authorized to do so by the Shariah, thus he is not a guarantor (liable) but a trustee whose word is accepted as long as he does not claim what contradicts the apparent facts. Do you not see what we previously cited from 'al-Fusul', where it was ruled that credit up to standard maintenance is allowed when permission is obtained from those authorized to grant it, such as the Executor and the Judge? And the pure Shariah is more entitled to grant permission. In our case under discussion, permission from the Shariah is found, even if permission from an executor or a judge was not found, because in their complete absence here, as you know, the Mufti issues fatwa based on religious duty.

[Urdu]: Because he had the permission of the Shariah to do so, he is not liable; rather, he is a trustee such that his statement will be accepted as long as he does not

make a claim contrary to the apparent facts. Have you not seen what we mentioned earlier with reference to 'al-Fusul', that it was ruled that credit up to standard maintenance is allowed when permission is found from those who have the authority to grant it, like the Executor or the Judge, etc.? And the pure Shariah is more entitled to have the authority of permission. In our case under discussion, permission from the Shariah has been found, even if permission from an executor or judge was not found, because in this case, from another...

---

1. Hashiya al-Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar, Chapter on the Testimony of Executors, Dar al-Ma'rifah Beirut, 4/425.

फतवा रिज़विया खंड 12

[तालिका शीर्षक: अरबी पाठ | उर्दू अनुवाद]

[अरबी]: यदि संपत्ति का कुछ हिस्सा नष्ट हो जाता है और वयस्क अपने ऊपर और नाबालिगों पर कुछ हिस्सा खर्च करते हैं, तो जो कुछ नष्ट हुआ वह उन सभी पर है। वयस्कों ने जो खर्च किया, वे नाबालिगों के हिस्से के लिए उत्तरदायी होंगे यदि उन्होंने न्यायाधीश (काजी) या वसीयतदार (वसी) کے आदेश के बिना खर्च किया। यदि उन्होंने उनमें से किसी के आदेश से खर्च किया, तो उन्हें मानक रखरखाव (नफ़क़ा-ए-मिस्ल) की सीमा तक श्रेय दिया जाएगा। समाप्त। वास्तव में, यह वसीयतदार की उपस्थिति में है; जहाँ तक पहले उल्लेख किए गए का प्रश्न है, वह उसकी अनुपस्थिति में है, विशेष रूप से हमारे देशों में। तो समझें।

[उर्दू]: यदि वारिसों में वयस्क और नाबालिग शामिल हैं, और विरासत में ऋण और अचल संपत्ति है, और फिर कुछ संपत्ति नष्ट हो जाती है, और वयस्क वारिसों ने कुछ संपत्ति अपने ऊपर और नाबालिग वारिसों पर खर्च की, तो जो संपत्ति नष्ट हुई वह उन सभी पर है। और जो वयस्कों ने नाबालिगों पर खर्च किया, यदि वह न्यायाधीश और वसीयतदार की अनुमति के बिना खर्च किया गया था, तो वे इसके लिए उत्तरदायी होंगे। हालाँकि, यदि इसे उनमें से किसी एक की अनुमति से खर्च किया गया था, तो उन्हें मानक रखरखाव की राशि का श्रेय दिया जाएगा। यह नियम वसीयतदार की उपस्थिति में लागू होता है; जो पहले कहा गया था वह उसकी अनुपस्थिति में लागू होता है, विशेष रूप से हमारे क्षेत्र में। तो समझें। (त)

इसलिए, बकर ने उन लड़कियों के पालन-पोषण पर जो कुछ भी खर्च किया, यदि वह मानक रखरखाव का दावा करता है, तो उसे धार्मिक कर्तव्य के रूप में निश्चित रूप से उसका श्रेय दिया जाएगा।

[अरबी]: क्योंकि उसे शरीयत द्वारा ऐसा करने के लिए अधिकृत किया गया था, इसलिए वह उत्तरदायी नहीं है बल्कि एक ट्रस्टी है जिसकी बात तब तक स्वीकार की जाती है जब तक कि वह स्पष्ट तथ्यों के विपरीत दावा नहीं करता। क्या आपने वह नहीं देखा जो हमने पहले 'अल-फुसूल' से उद्धृत किया था, जहाँ यह नियम दिया गया था कि मानक रखरखाव तक की छूट तब दी जाती है जब अनुमति देने के लिए अधिकृत लोगों, जैसे वसीयतदार और न्यायाधीश, से अनुमति प्राप्त हो? और पवित्र शरीयत अनुमति देने के लिए अधिक हकदार है। हमारे विचाराधीन मामले में, शरीयत से

अनुमति मिल गई है, भले ही किसी वसीयतदार या न्यायाधीश से अनुमति नहीं मिली हो, क्योंकि यहाँ उनकी पूर्ण अनुपस्थिति में, जैसा कि आप जानते हैं, मुफ्ती धार्मिक कर्तव्य के आधार पर फतवा जारी करता है।

[उर्दू]: चूँकि उसे शरीयत की ओर से ऐसा करने की अनुमति प्राप्त थी, इसलिए वह उत्तरदायी नहीं है; बल्कि, वह ऐसा विश्वसनीय व्यक्ति है कि जब तक वह स्पष्ट तथ्यों के विपरीत दावा नहीं करता, उसकी बात स्वीकार की जाएगी। क्या आपने वह नहीं देखा जिसका हमने पहले 'अल-फुसूल' के संदर्भ में उल्लेख किया था, कि यह नियम दिया गया था कि मानक रखरखाव तक की छूट दी जाती है जब अनुमति देने का अधिकार रखने वालों, जैसे वसीयतदार या न्यायाधीश आदि, से अनुमति पाई जाती है? और पवित्र शरीयत अनुमति का अधिकार रखने की अधिक हकदार है। हमारे विचाराधीन मामले में, शरीयत की ओर से अनुमति मिल गई है, भले ही वसीयतदार या न्यायाधीश की ओर से अनुमति नहीं मिली हो, क्योंकि इस मामले में, दूसरे से...

---

1. हाशियतुल तहतावी अलद दुर्रिल मुख्तार, वसीयतदारों की गवाही पर अध्याय, दारुल मारिफा बेरुत, 4/425।

فتاوٰی رضویہ جلد دو ازدہم

فهلك بعض المال وانفق الكبار البعض على انفسهم وعلى الصغار فما هلك فهو على كلهم، وما انفقه الكبار ضمنوا حصة الصغار ان كانوا انفقوا بغير امر القاضي او الوصي وما انفقوه بامر احدهما حسب لهم الى نفقة مثلهم اھ فأن هذا عند وجود الوصي و مامر فعند عدمه لاسيما فی بلادنا فافهم - اگر وارث بڑے اور چھوٹے ہیں اور ترکہ میں دین وعقار ہے پھر بعض مال ہلاک ہو گیا اور بڑے وارثوں نے کچھ مال اپنے آپ اور چھوٹے وارثوں پر خرچ کر دیا تو جو مال ہلاک ہوا وہ سب پر ہے اور جو بڑوں نے چھوٹوں پر خرچ کیا اگر قاضی اور وصی کی اجازت کے بغیر خرچ کیا ہے تو ضامن ہوں گے، اور اگر ان دونوں سے کسی کی اجازت سے خرچ کیا ہے تو نفقہ مثلی کی مقدار مجرا پائیں گے اھ اس لئے بے شک یہ حکم وصی کے موجود ہونے کی صورت میں ہے اور جو حکم ماقبل گزرا وہ اس کی عدم موجودگی کی صورت میں ہے خاص طور پر ہمارے علاقے میں۔ پس سمجھ۔ (ت)

پس جو کچھ بکر نے ان لڑکیوں کی پرورش میں صرف کیا اگر نفقہ مثل کا دعوٰی کرے تو بیشک دیانۃً مجرا پائے گا،

فانه كان مأذونا له في ذلك من جهة الشرع فلا يكون ضمينا بل امينا مقبول القول مالم يدع ما يكذب به الظاهر، الا ترى الى ما قدمنا عن الفصول حيث حكم بالا حتساب الى نفقة المثل عند وجود الاذن ممن له الاذن كالوصي والقاضي والشرع المطهر احق من له الاذن وقد وجد منه الاذن في مسئلتنا وان لم يوجد من وصي او قاض لفقد انهما ههنا راسا وانت تعلم عن المفتى انما يفتي بالديانة كيونکہ اس کو شرع کی طرف سے ایسا کرنے کا اذن حاصل تھا لہذا وہ ضامن نہیں بلکہ ایسا امین ہو گا کہ جب تک وہ

خلاف ظاہر دعویٰ نہ کرے اس کے قول کو تسلیم کیا جائے گا، کیا تو نے نہیں دیکھا جس کا ذکر ہم فصول کے حوالے سے پہلے کر چکے ہیں کہ نفقہ مثل تک مجرا پانے کا حکم کیا گیا جبکہ وصی یا قاضی وغیرہ جنہیں اختیار اذن ہے میں سے کسی کا اذن پایا جائے اور شرع مطہر زیادہ حقدار ہے کہ اس کو اختیار اذن ہو، اور ہمارے زیر بحث مسئلہ میں شرع کی طرف سے اذن پایا گیا اگر چہ وصی یا قاضی کی طرف سے اذن نہیں پایا گیا کیونکہ اس صورت میں دوسرے سے

---

1 حاشية الطحطاوی على الدرالمختار فصل في شهادة الاوصياء دارالمعرفة بيروت ۴۲۵/۴

Fatawa Rizvia Volume Twelve

"Nay, we have established the highest point of research by the grace of Allah Almighty in the 'Book of Wills' (Kitab al-Wasaya) within 'al-Ataya al-Nabawiyyah fi al-Fatawa al-Rizvia' that in these cities of ours and in this current age, the eldest son takes the place of his father's executor (Wasi) for minor children without the need for an explicit declaration of the will. This is due to the presence of implicit permission and delegation based on common and prevalent custom ('Urf), alongside the existence of a pressing necessity that compels one to consider such an implication. Allah knows the corrupter from the reformer. He who does not know the people of his time and does not consider the conditions of his locality in his fatwa is ignorant and false in his words and explanations. By the power of the Almighty, the Majestic, we have explained the matter in a manner that points to the definitive reference, making the matter clear. (T)"

And 'maintenance according to status' (Nafaqah al-Mithl) means how much moderate expenditure, without hardship or extravagance, would occur for such children among people of such wealth during that period—that much will be credited. It is stated in al-Alamgiri:

Customary maintenance is that which lies between extravagance and stinginess; thus it is in al-Muhit. | Customary maintenance is what is between extravagance and stinginess; similarly it is in al-Muhit. (T)

It is stated in Radd al-Muhtar:

What is spent on children of their status in that period. | What is spent on children of their like in such a period. (T)

1. Fatawa Hindiya, Kitab al-Wasaya, Chapter Nine regarding the Executor, Nurani Kutub Khana, Peshawar, 6/155.
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Testimony of Executors, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/260.

फ़तावा रज़विया खंड बारह

"बल्कि, हमने अल्लाह सर्वशक्तिमान की कृपा से 'अल-अतया अन-नबविय्या फ़िल फ़तावा अर-रज़विया' की 'वसीयत की किताब' (किताब अल-वसाया) में शोध के उच्चतम बिंदु के साथ यह स्थापित किया है कि हमारे इन शहरों में और इस वर्तमान युग में, बड़ा बेटा छोटे बच्चों के लिए अपने पिता के वसीयतदार (वसी) का स्थान लेता है, बिना वसीयत की स्पष्ट घोषणा की आवश्यकता के। ऐसा सामान्य और प्रचलित रीति-रिवाज ('उर्फ़) के आधार पर निहित अनुमति और प्रत्यायोजन की उपस्थिति के कारण है, साथ ही एक ऐसी मजबूरी की उपस्थिति के कारण भी जो इस तरह के निहितार्थ पर विचार करने के लिए विवश करती है। अल्लाह भ्रष्ट करने वाले और सुधार करने वाले को जानता है। जो अपने समय के लोगों को नहीं जानता और अपने फ़तवे में अपने इलाके की स्थितियों पर विचार नहीं करता, वह अपनी बातों और स्पष्टीकरणों में अज्ञानी और झूठा है। सर्वशक्तिमान, प्रतापी की शक्ति से हमने इस मामले को इस तरह समझाया है जो निश्चित संदर्भ की ओर इशारा करता है, जिससे मामला स्पष्ट हो जाता है। (त)"

और 'स्थिति के अनुसार भरण-पोषण' (नफ़का अल-मिस्ल) का अर्थ यह है कि उस अवधि के दौरान ऐसे धन वाले लोगों के बीच ऐसे बच्चों के लिए बिना किसी कठिनाई या फिजूलखर्ची के कितना मध्यम खर्च होगा - उतना श्रेय दिया जाएगा। अल-आलमगिरी में कहा गया है:

प्रथागत भरण-पोषण वह है जो फिजूलखर्ची और कंजूसी के बीच होता है; इसी प्रकार अल-मुहीत में है। | प्रथागत भरण-पोषण वह है जो फिजूलखर्ची और तंगी के बीच हो; इसी तरह अल-मुहीत में भी है। (त)

रद अल-मुह्तार में कहा गया है:

उस अवधि में उनकी स्थिति के बच्चों पर जो खर्च किया जाता है। | ऐसे समय में उनके जैसे बच्चों पर जो खर्च किया जाता है। (त)

1. फ़तावा हिंदिया, किताब अल-वसाया, वसी के संबंध में नौवां अध्याय, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 6/155।
2. रद अल-मुह्तार, वसीयतदारों की गवाही पर अध्याय, दार इह्या अल-तुरात अल-अरबी, बेरूत, 5/260।

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

بل قد اثبتنا عرش التحقیق بتوفیق المولی سبحانہ وتعالیٰ فی کتاب الوصایا من العطایا النبویة فی الفتاوی الرضویة ان الابن الکبیر في امصارنا هذه في اعصار نا هذه یقوم مقام وصی ابیہ علی الاولاد الصغار من دون حاجة الی تصریح بالوصایا لوجود الاذن والتفویض دلالة بحکم العرف الفاشي المطر دمع تحقق الضرورة الملجئة الی اعتبار تلك الدلالة واللہ یعلم المفسد من المصلح ومن لم یعرف اهل زمانه و لم یراع في الفتیا حال مکانه فهو جاهل مبطل في قوله وبیانه وقد بینا المسئلة بحول القدیر جل مجده بما یتعین المراجعة الیه وحینئذ فالامر اظهر۔ | موجود ہی نہیں ہیں۔ اور تو جانتا ہے کہ مفتی دیانت پر فتوی دیتا ہے بلکہ ہم نے مولیٰ سبحانہ و تعالیٰ کی توفیق سے العطایا النبویہ فی الفتاوی الرضویہ کی کتاب الوصایا میں بلند ترین تحقیق کے ساتھ ثابت کیا ہے کہ ہمارے شہروں میں موجودہ زمانے میں تصریح وصیت کے بغیر بھی بڑا بیٹا باپ کے وصی کے قائم مقام ہوتا ہے کیونکہ ہمارے عام و رائج عرف و عادت کے مطابق بطور دلالت اذن تفویض موجود ہے باوجودیکہ ایسی ضرورت بھی متحقق ہے جسے اس دلالت کا اعتبار کرنے پر مجبور کرنے والی ہے۔ اللہ تعالیٰ مفسد اور مصلح کو جانتا ہے جو شخص اپنے اہل زمانہ کو نہ پہچانے اور فتوی میں اپنے علاقے کے احوال کا لحاظ نہ رکھے وہ جاہل ہے اور اس کا قول و بیان باطل ہے اور ہم نے اللہ قدیر جل مجدہ کی طاقت سے مسئلہ کو اس اسلوب سے بیان کر دیا جس کی طرف رجوع کرنا متعین ہے، اس صورت میں معاملہ زیادہ ظاہر ہوا۔(ت)

اور نفقہ مثل کے یہ معنی کہ اتنی مدت ایسے بچوں پر اتنے مال والوں میں متوسط صرف بے تنگی و اسراف کس قدر ہوتا ہے اتنا مجرا پائے گا۔ عالمگیری میں ہے:

نفقہ المثل ما یکون بین الاسراف والتقتیر کذا في المحیط | نفقہ مثل وہ ہے جو فضول خرچی اور تنگی کے درمیان ہو، ایسا ہی محیط میں ہے۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے:

ماینفق علی مثلھم فی تلک المدۃ۔ | جو اُن کا مثل بچوں پر اتنی مدت میں خرچ کیا جاتا ہو۔ (ت)

1 فتاوٰی ہندیہ کتاب الوصایا الباب التاسع فی الوصی نورانی کتب خانہ پشاور ۶/۱۵۵ 2 رد المحتار فصل فی شہادت الاوصیاء دار احیاء التراث العربی بیروت ۵/۲۶۰

Volume 12 | Fatawa Rizvia

Marriage Expenses: It is mentioned in the query that both minors (qasira) were young at the time of marriage, and the questioner clarified through writing upon inquiry that the wedding and dowry expenses were all incurred by Bakr solely on his own initiative. Their mother had passed away before the marriage of the two minors, and their sisters participated in the weddings like general strangers. Neither was any inquiry made from them regarding the expenditure, nor was their permission taken. It was not said to the minors that "we are making these expenditures from your share" or "we are giving the dowry from your share." And indeed, in our lands, marriage expenses are not incurred after asking maidens, nor is any permission taken from them in this matter. Therefore, if the stated account is correct, whatever incidental expenses occurred in the marriage of the minor cannot be deducted from the bride's share:

لأنا وإن قلنا بوصاية بكر دلالة كما أشرنا إليه فقد انقطعت الولاية بالبلوغ۔	**Because indeed, although we have spoken of Bakr being a guardian (wasi) by implication as we have indicated, that guardianship ceased upon reaching puberty. (T)**

It is stated in Radd al-Muhtar from 'Inayah:

أنهم (يعني ورثة الكبار) إذا كانوا حضورا ليس للوصى التصرف فى التركة أصلا إلا إذا الخ[1]	**Undoubtedly, when they (i.e., the adult heirs) are present, the executor (wasi) has no right to dispose of the inheritance at all except when... (T)**

Therefore, whatever Bakr spent on these expenses was an act of donation and favor towards the sisters, for which he will not receive any deduction from anyone; it will all fall upon his own share. Whether implicitly or intentionally, the other heirs, who neither spent themselves nor gave explicit permission, will remain exempt, even if they saw the expenditure and remained silent. For "No speech is attributed to a silent person" (silence does not imply consent). It is stated in Al-Ashbah:

لو رأى غيره يتلف ماله فسكت لا يكون إذنا بإتلافه[2]	**If someone sees someone else destroying their property and remains silent, then silence will not be [considered] permission for destruction. (T)**

Especially if any of them was a minor at that time, as the permission of a minor is also not valid,

فإنه ليس من أهل التبرع ولا لأحد أن يتبرع من ماله۔	**Because he/she is not among those capable of making a donation, nor does anyone else have the right to donate from his/her property. (T)**

[1] Radd al-Muhtar, Kitab al-Wasaya, Bab al-Wasi, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/454 [2] Al-Ashbah wa al-Naza'ir, The Twelfth Rule: No speech is attributed to a silent person, Idara al-Quran wal-Uloom al-Islamiyyah, Karachi, 1/185

शादी के खर्च: प्रश्न की इबारत में उल्लेख है कि दोनों लड़कियां (कासिराह) निकाह के समय वयस्क होने के करीब थीं और प्रश्नकर्ता ने पूछताछ के बाद लिखित रूप में स्पष्ट किया कि शादी और दहेज के सभी खर्च बक्र ने पूरी तरह से अपनी राय से किए। दोनों लड़कियों की शादी से पहले उनकी माँ का इंतकाल हो चुका था, और उनकी बहनें आम अजनबियों की तरह शादियों में शामिल हुईं। न तो खर्च के बारे में उनसे कोई पूछताछ की गई और न ही उनकी कोई अनुमति ली गई। उन लड़कियों से भी यह नहीं कहा गया कि "हम यह खर्च तुम्हारे हिस्से से कर रहे हैं या दहेज तुम्हारे हिस्से से दे रहे हैं।" और वास्तव में हमारे शहरों में कुंवारी लड़कियों से पूछकर शादी के खर्च नहीं किए जाते और न ही इस मामले में उनसे कोई अनुमति ली जाती है। अतः यदि उक्त विवरण सही है, तो जिस लड़की की शादी में जो भी ऊपरी खर्च हुए हैं, वे दुल्हन के हिस्से से नहीं काटे जा सकते:

لأنا وإن قلنا بوصاية بكر دلالة كما أشرنا إليه فقد انقطعت الولاية بالبلوغ۔	**क्योंकि वास्तव में हमने यद्यपि बक्र के लिए संकेत के आधार पर वसीयतदार (वसी) होने की बात कही है जैसा कि हम इसकी ओर इशारा कर चुके हैं, लेकिन वह विलायत (अभिभावकता) वयस्क होने के साथ समाप्त हो गई। (त)**

रद्द अल-मुह्तार में इनाया से है:

أنهم (يعني ورثة الكبار) إذا كانوا حضورا ليس للوصى التصرف فى التركة أصلا إلا إذا الخ[1]	**बेशक वे (यानी बड़े वारिस) जब मौजूद हों तो वसी को विरासत के निपटान का कोई अधिकार नहीं है सिवाय जब... (त)**

तो इन खर्चों में बक्र ने जो कुछ भी खर्च किया, वह बहनों के साथ दान और एहसान था, जिसका उसे किसी से कोई मुआवज़ा नहीं मिलेगा; यह सब उसी के हिस्से पर पड़ेगा। चाहे परोक्ष रूप से हो या जानबूझकर, अन्य वारिस, जिन्होंने न तो खुद खर्च किया और न ही स्पष्ट अनुमति दी, वे बरी रहेंगे, भले ही उन्होंने खर्च होते देखा और चुप रहे। क्योंकि "चुप रहने वाले की ओर किसी बात को संबंद्ध नहीं किया जाता" (मौन को वचन नहीं माना जाता)। अल-अशबाह में है:

لو رأى غيره يتلف ماله فسكت لا يكون إذنا بإتلافه[2]	**यदि कोई किसी को अपनी संपत्ति नष्ट करते देखे और चुप रहे, तो चुप रहना विनाश की अनुमति नहीं होगी। (त)**

विशेष रूप से यदि उनमें से कोई उस समय नाबालिग थी, क्योंकि नाबालिग की अनुमति भी मान्य नहीं है,

فإنه ليس من أهل التبرع ولا لأحد أن يتبرع من ماله۔	**क्योंकि वह दान करने वालों में से नहीं है और न ही किसी और को यह हक है कि उसके माल में दान करे। (त)**

---

[1] रद्द अल-मुह्तार, किताब अल-वसाया, बाब अल-वसी, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 5/454 [2] अल-अशबाह व अन-नज़ाइर, बारहवाँ नियम: चुप रहने वाले की ओर कोई बात नहीं जोड़ी जाती, इदारा अल-कुरान वल-उलूम अल-इस्लामिया, कराची, 1/185

पृष्ठ 215/688

مصارف شادی: عبارت سوال میں مذکور کہ دونوں قاصرہ وقت شادی جوان تھیں اور سائل نے بعد استفسار بذریعہ تحریر اظہار کیا کہ مصارف عروسی و جہیز سب بکر نے محض اپنی رائے سے کئے، والدہ کا انتقال دونوں قاصرہ کی شادی سے پہلے ہوا، اور بہنیں ان کی شادیوں میں عام بیگانوں کی طرح شریک ہوئیں نہ ان سے درباره صرف کوئی استفسار ہوا نہ ان کا کوئی اذن نہ قاصرات سے کہا گیا کہ ہم یہ صرف تمہارے حصہ سے کرتے یا جہیز تمہارے حصے میں دیتے ہیں اور واقعی ہمارے بلاد میں مصارف شادی کنواریوں سے پوچھ کر نہیں ہوتے نہ اُن سے اس امر میں کوئی اذن لیا جاتا ہے پس اگر بیانِ مذکور صحیح ہے تو جو کچھ مصارف بالائی جس قاصرہ کی شادی میں ہوئے وہ دُلہن کے حصہ سے مجرا نہیں ہو سکتے:

لانا وان قلنا بوصایه بکردلالۃ کما اشرنا الیه فقد انقطعت الولایة بالبلوغ۔

کیونکہ بیشک ہم نے اگرچہ بکر کے لئے باعتبار دلالت وصی ہونے کا قول کیا ہے جیسا کہ ہم اس کی طرف اشارہ کرچکے ہیں مگر وہ ولایت بالغ ہونے کے ساتھ منقطع ہوگئی۔(ت)

ردالمحتار میں عنایہ سے ہے:

انهم(یعنی ورثہ الکبار) اذاکانوا حضورا لیس للوصی التصرف فی الترکة اصلا الا اذا الخ1

بے شک وہ (یعنی بڑے ورثاء) جب حاضر ہوں تو وصی کے ترکہ تصرف کا کوئی حق نہیں مگر جب الخ(ت)

توان مصارف میں جو کچھ بکر نے صرف کیا بہنوں کے ساتھ تبرع واحسان ہوا جو کسی سے مُجرانہ پائے گا سب صرف اسی کے حصہ پر پڑے گا خواہ ضمناً خواہ قصداً دوسرے ورثہ جنہوں

نے نہ خود صرف کیا نہ صراحتاً اذن دیا بری رہیں گے اگر چہ انہوں نے صرف ہوتے دیکھا اور خاموش رہے ہوں اذا لاینسب الی ساکت قول (خاموش رہنے والے کی طرف قول کی نسبت نہیں کی جاتی۔ ت) اشباہ میں ہے:

لو رأی غیرہ یطف مالہ فسکت لایکون اذنا باتلافہ2 **اگر کوئی کسی کو اپنا مال تلف کرتا دیکھ کر خاموش رہے تو خاموشی اتلاف کی اجازت نہ ہوگی۔(ت)**

خصوصاً اگر اُن میں کوئی اس وقت نابالغہ ہو کہ نابالغ کا اذن بھی معتبر نہیں،

فانہ لیس من اھل التبرع ولا لاحد کیونکہ وہ اہل تبرع میں سے نہیں اور نہ ہی کسی اور کو یہ حق ان یتبرع من مالہ۔ **ہے کہ اس کے مال میں تبرع کرے۔(ت)**

---

1 ردالمحتار کتاب الوصایا باب الوصی داراحیاء التراث العربی بیروت ۵/۴۵۴ 2 اشباہ النظائر القاعدۃ الثانیۃ عشر لاینسب الی ساکت قول ادارۃ القرآن والعلوم الاسلامیہ کراچی ۱/۱۸۵

In Bazzaziya, Bahr al-Ra'iq, Radd al-Muhtar, Tanwir al-Absar, Siraj al-Wahhaj, etc., it is written:

[Arabic Column] Gifting, lending, and whatever constitutes wasting of wealth or transfer of ownership without compensation, is not permissible unless explicitly authorized.^1 I say (Ahmad Raza Khan): This is what they have stated regarding partners in Inan and Mufawada partnerships, even though in these, each partner is an agent of the other and authorized to dispose of property on their behalf. So how can it be for a partner in a Sharakat-e-'Ayn (partnership in a specific asset), for he is a complete stranger to his brother's share and has no right of disposal in it, as they have explicitly stated.

[Urdu Column] Gifting, lending, and whatever constitutes destruction of property or transfer of ownership without compensation is not permissible unless the partner gives permission by explicit text. I say: This is what they have explained about partners in Sharakat-e-Anan and Mufawada, despite the fact that in Sharakat-e-Anan and Sharakat-e-Mufawada, partners are each other's agents and authorized to act on behalf of one another. So, how can this ruling apply to a partner in Sharakat-e-Ayn? In that, a partner is purely a stranger to the other's share. Acting in the other's share is not lawful, as they have explicitly stated. (T)

In Hashiya Tahtawiyya, it is written:

[Arabic Column] Funerary preparations do not include gatherings and feasts. If someone from the heirs does that, it will be deducted from their share and they will be considered a volunteer. The same applies if they are a stranger. (Summarized)

[Urdu Column] Gatherings and feasts are not included in funerary preparations. So, whoever spends on them besides funerary preparations, if they are from the heirs, it will be counted from their own share and they will be considered a donor; similarly for a stranger. (Summarized) (T)

Regarding a bride's dowry, if Bakr did not give it as a gift but gave it with the intent of adjustment, then this giving will have no effect if no conversation took place between them to the effect of: "We are giving these items in exchange for your such-and-such share, and after this, you will have no share in such-and-such part of the total inheritance." Nor is it certain that every type of movable property was separately combined, the bride's share extracted, and exactly what came to her share from each

specific item was set aside for her without the slightest increase or decrease, and that same thing was given in her dowry.

[Arabic Column] Let alone restricting it to fungible items and avoiding substitution with non-fungible items (valued items).

[Urdu Column] Let alone that reliance was placed on fungible things and independent exchange in valued things was avoided. (T)

1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Shirkat, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/345
2. Hashiya Tahtawiyya, Kitab al-Fara'id, Dar al-Ma'rifa, Beirut, 4/367

जिल्द बारहवीं (Volume 12) फ़तावा रज़विया (Fatawa Razawiyya)

बज़ाज़िया, बहर-उर-राईक़, रद्द-उल-मुह्तार, तनवीर-उल-अबसार, सिराज-उल-वह्हाज आदि में है:

[अरबी कॉलम] उपहार (हिबा), ऋण और जो कुछ भी धन का अपव्यय या बिना किसी बदले के स्वामित्व का हस्तांतरण है, वह तब तक जायज़ नहीं है जब तक कि स्पष्ट रूप से अधिकृत न हो।^1 मैं (अहमद रज़ा खाँ) कहता हूँ: यह वह है जो उन्होंने 'इनान' और 'मुफ़ावज़ा' साझेदारी के भागीदारों के बारे में बताया है, जबकि उनमें प्रत्येक भागीदार दूसरे का प्रतिनिधि (वक़ील) होता है और उसकी ओर से संपत्ति के लेन-देन के लिए अधिकृत होता है। तो फिर 'शराकत-ए-ऐन' (किसी विशिष्ट संपत्ति में साझेदारी) के भागीदार के लिए यह कैसा होगा, क्योंकि वह अपने भाई के हिस्से के लिए पूरी तरह से अजनबी है और उसे उसमें हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है, जैसा कि उन्होंने स्पष्ट रूप से लिखा है।

[उर्दू कॉलम] हिबा (उपहार) व ऋण और जो माल का बर्बादी या बिना बदले के मालिकाना हक़ देना हो, वह जायज़ नहीं जब तक शरीक स्पष्ट रूप से इसकी अनुमति न दे दे। मैं कहता हूँ: यह वह है जिसका उन्होंने 'शराकत-ए-अनन' और 'मुफ़ावज़ा' के भागीदारों के बारे में उल्लेख किया है, बावजूद इसके कि 'शराकत-ए-अनन' और 'शराकत-ए-मुफ़ावज़ा' में भागीदार एक-दूसरे के वक़ील और एक-दूसरे की ओर से कार्य करने के पात्र होते हैं। तो यह नियम 'शराकत-ए-ऐन' के भागीदार के लिए कैसे हो सकता है? इसमें तो भागीदार दूसरे के हिस्से से पूरी तरह अजनबी होता है। दूसरे के हिस्से में हस्तक्षेप करना हलाल नहीं है, जैसा कि उन्होंने इस पर स्पष्ट उल्लेख किया है। (त)

हाशिया तह्तावी में है:

[अरबी कॉलम] अंतिम संस्कार की तैयारियों में सभाएँ और दावतें शामिल नहीं हैं। यदि वारिसों में से कोई ऐसा करता है, तो उसे उसके हिस्से से गिना जाएगा और उसे स्वयंसेवी (मुतबर्रे) माना जाएगा। इसी तरह यदि वह कोई अजनबी हो। (संक्षिप्त)

[उर्दू कॉलम] जमावड़ा और दावतें अंतिम संस्कार की तैयारियों (तजहीज़) में शामिल नहीं हैं। तो जो तजहीज़ के अलावा इनमें खर्च करे, अगर वह वारिसों में से है, तो उसी के हिस्से से गिना जाएगा और वह दानकर्ता (मुतबर्रे) माना जाएगा, इसी तरह अजनबी। (संक्षिप्त) (त)

दुल्हन का जहेज़, यदि बक्र ने हिबा (उपहार) के तौर पर नहीं दिया बल्कि मुजरई (समायोजन) के इरादे से दिया, तो यह देना कोई असर पैदा नहीं करेगा जब तक कि आपस में इस तरह की कोई बातचीत न हुई हो कि 'ये चीज़ें तेरे फलां हिस्से के बदले में दे रहे हैं, इसके बाद कुल विरासत की फलां किस्म में तेरा हिस्सा नहीं होगा'। न ही यह निश्चित रूप से हुआ कि चल संपत्ति (अमवाल-ए-मनकूला) की हर श्रेणी को अलग-अलग जोड़कर दुल्हन का हिस्सा निकाला गया हो और हर चीज़ से विशेष रूप से जितना उसके हिस्से में आया, बिना किसी कमी-बेशी के एक ज़र्रे बराबर उसके लिए अलग कर लिया गया हो और वही उसके जहेज़ में दिया गया हो।

[अरबी कॉलम] मिस्ली (तुलनीय) चीज़ों तक सीमित रहने और क़ीमती चीज़ों के बदले से बचने की तो बात ही अलग है।

[उर्दू कॉलम] कहाँ यह कि मिस्ली चीज़ों पर ही बस किया गया हो और क़ीमती चीज़ों में स्वतंत्र विनिमय करने से परहेज़ किया गया हो। (त)

1. रद्द-उल-मुह्तार, किताब-उश-शिरकत, दार एह़या-उत-तुरास-अल-अरबी, बेरूत, 3/345
2. हाशिया तह़्तावी, किताब-उल-फ़राएज़, दार-उल-मआरिफ़ा, बेरूत, 4/367

جلد دوازدہم فتاوٰی رضویہ

بزازیہ و بحر الرائق و رد المحتار و تنویر الابصار و سراج و ہاج و غیر ہا میں ہے :

[عربی کالم] الھبۃ والقرض وما کان اتلافاً للمال او تملیکا من غیر عوض فانہ لا یجوز مالم یصرح بہ نصا۱۸ اھ اقول : ھذا افادوہ في شریکي العنان والمفاوضۃ مع ان کلامھما وکیل عن صاحبہ مأذون التصرف في المال من جانبہ، فکیف بالشریك شرکۃ العین فانہ اجنبي صرف عن حصۃ اخیہ لیس لہ التصرف فیہ کما نصوا علیہ۔

[اردو کالم] ہبہ و قرض اور جو مال کا اتلاف یا بے عوض تملیک ہو وہ جائز نہیں جب تک شریک بنص صریح اس کی اجازت نہ دے دے اھ اقول (میں کہتا ہوں) یہ وہ ہے جس کا انہوں نے شرکت عنان و مفاوضہ کے شریکوں کے بارے میں افادہ فرمایا باوجودیکہ شرکت عنان اور شرکت مفاوضہ میں شریک ایک دوسرے کے وکیل اور ایک دوسرے کی طرف سے تصرف کے مجاز ہوتے ہیں تو یہ حکم شرکت عین کے شریک کیلئے کیسے ہو سکتا ہے کہ اس میں تو شریک دوسرے کے حصہ سے محض اجنبی ہوتا ہے دوسرے کے حصہ میں تصرف حلال نہیں جیسا کہ انہوں نے اس پر نص کی ہے۔ (ت)

حاشیہ طحطاویہ میں ہے :

[عربی کالم] التجھیز لا یدخل فیہ الجمع والموائد فالفاعل لذلك ان کان من الورثۃ یحسب علیہ من نصیبہ ویکون متبرعا وکذا ان کان اجنبیا اھ ملخصاً۔

[اردو کالم] جمع و موائد تجہیز میں داخل نہیں تو جو تجہیز کے علاوہ ان میں خرچ کرے اگر وہ ورثاء میں سے ہے تو اسی کے حصہ سے شمار کیا جائے گا اور وہ متبرع ٹھہرے گا یونہی اجنبی اھ ملخصاً (ت)

دلہن کا جہیز وہ اگر بکر نے بطور ہبہ نہ دیا بقصد مجرائی دیا تو یہ دینا کچھ اثر پیدا نہ کرے گا جبکہ باہم کسی قسم کی کوئی گفتگو نہ آئی کہ یہ اشیاء تیرے فلاں حصّہ کے معاوضہ میں دیتے ہیں اس کے بعد کُل ترکہ کی فلاں قسم میں تیرا حصہ نہ ہو گا نہ بالیقین یہ ہوا کہ اموال منقولہ کی ہر جنس جُدا جُدا جوڑ کر دلہن کا حصّہ نکال کر ہر چیز سے خاص جس قدر اس کے حصّہ میں آیا بے کمی بیشی ایک ذرّہ کے اُس کے لئے جُدا کر لیا اور وہی اس کے جہیز میں دیا ہو،

[عربی کالم] فصلا عن الاقتصار علی المثلیات والتحرز عن الاستبدال بالقیمیات۔

[اردو کالم] چہ جائیکہ مثلی چیزوں پر اکتفاء کیا گیا ہو اور قیمت والی چیزوں میں مستقل تبادلہ کرنے سے احتراز کیا گیا ہو۔ (ت)

1. رد المحتار کتاب الشرکت دار احیاء التراث العربی بیروت ۳/۳۴۵
2. حاشیہ طحطاویہ کتاب الفرائض دارالمعرفۃ بیروت ۴/۳۶۷

Fatawa Ridawiyyah - Volume 11

Partition of different types of assets without mutual consent is impossible, to the extent that even a judge does not have this authority, as stated in all the books. (As stated in all books. T) So, at most, it remained that Bakr, while giving [the items], thought in his heart that 'we are giving this on account; whatever the cost of the dowry is, we will deduct it from the bride's share.' Merely thinking this cannot constitute a Sharia contract. The lack of partition is evident from what has been mentioned before. (As passed. T) Settlement (Sulh) and renunciation (Takharuj) are not done in this way, where the bride's share was not excluded from the total inheritance or any part of it, nor would it have been in the bride's mind that 'now I have no claim in such-and-such inheritance, even if my share exceeds the amount of the dowry.' Such a matter cannot be established as a contract based solely on the unilateral thought of one party without explicit mutual consent.

| For a contract is a link, and a link necessitates two things. | Because a contract is a link, and in a link, two things must be present. (T) |

Furthermore, it is possible, even probable, that a dispute would arise regarding the calculation of the dowry cost; thus, the resolution of dispute, for which settlement and renunciation are established, was not achieved.

| Nothing is devoid of its purpose except that it is void; and ignorance regarding the subject of settlement does not prevent its validity if it does not lead to dispute, otherwise, it does prevent it. | And no thing is devoid of its purpose but it is void, and the ignorance of the thing upon which settlement is being made, if it does not cause dispute, is not a barrier to the validity of the settlement, otherwise, it is a barrier. (T) |

In Durr al-Mukhtar, it says:

| Settlement is legally a contract that resolves dispute and ends litigation. | Settlement is legally such a contract that removes dispute and ends litigation. (T) |

In al-Nihayah, it says:

| Ignorance that leads to dispute prevents the validity of a settlement. (Summary) | The ignorance that leads to dispute prevents the validity of settlement. (Summary) (T) |

As for a sale, even if it were done with explicit offer and acceptance, for example, Bakr says 'I have given this dowry in exchange for those inherited items'...

1. Durr al-Mukhtar, Kitab al-Sulh, Mujtabai Press, Delhi, 141/2
2. Fatawa Hindiyyah with reference to al-Nihayah, Kitab al-Sulh, Chapter 1, Nurani Kutub Khana, Peshawar, 231/3

फ़तावा रज़विया - जिल्द 11

विभिन्न प्रकार की वस्तुओं में आपसी सहमति के बिना सामूहिक बँवारा संभव नहीं है, यहाँ तक कि न्यायाधीश (काज़ी) को भी इसका अधिकार नहीं है जैसा कि सभी पुस्तकों में स्पष्ट किया गया है। (जैसा कि सभी पुस्तकों में वर्णित है। त) तो अधिकतम इतना ही हुआ कि बक्र ने देते समय अपने मन में यह समझ लिया कि हम यह अग्रिम राशि (on account) के रूप में दे रहे हैं, जो कुछ भी दहेज की लागत है उसे दुल्हन के हिस्से में से काट लेंगे। केवल इतना समझ लेना कोई शरीअत के अनुसार अनुबंध (अक़्द) नहीं हो सकता। बँवारा न होना तो पहले बताए गए कारणों से स्पष्ट है। (जैसा कि बीत चुका। त) सुलह और तखारुज (हिस्सा छोड़ना) इस तरह नहीं होता जहाँ दुल्हन के हिस्से को कुल विरासत (तरका) या उसके किसी हिस्से से अलग नहीं किया गया, और न ही दुल्हन के मन में यह होगा कि 'अब विरासत के अमुक हिस्से में मेरा कोई दावा नहीं रहा, चाहे मेरा हिस्सा दहेज की राशि से अधिक निकले।' ऐसी बात बिना स्पष्ट आपसी सहमति के केवल एक पक्ष के विचार पर अनुबंध नहीं मानी जा सकती।

| क्योंकि अनुबंध एक बंधन (रब्त) होता है और बंधन के लिए दो चीज़ों का होना अनिवार्य है। | अनुबंध एक संबंध (रब्त) है और संबंध में दो चीजों का होना आवश्यक है। (त) |

इसके साथ ही, दहेज की लागत की गणना में विवाद होना संभव बल्कि अनुमानित है, अतः विवाद का निपटारा, जिसके लिए सुलह और तखारुज का प्रावधान है, प्राप्त नहीं हुआ।

| कोई भी चीज़ अपने उद्देश्य से रिक्त नहीं होती अन्यथा वह व्यर्थ है; और जिस चीज़ पर सुलह हो रही है उसका अज्ञात होना यदि विवाद का कारण न बने तो सुलह की वैधता में बाधक नहीं है, अन्यथा बाधक है। | कोई भी वस्तु अपने उद्देश्य के बिना नहीं होती अन्यथा वह निरर्थक है, और जिस वस्तु पर समझौता (सुलह) हो रहा है उसका अनभिज्ञ होना यदि विवाद का कारण न बने तो समझौते की वैधता में बाधा नहीं है, अन्यथा बाधा है। (त) |

दुर्रे-मुख़्तार में है:

| सुलह शरीअत में ऐसा अनुबंध है जो विवाद को दूर करता है और शत्रुता को समाप्त करता है। | शरीयत के अनुसार सुलह एक ऐसा अनुबंध है जो विवाद को खत्म करता है और दुश्मनी को काटता है। (त) |

निहाया में है:

| वह अज्ञानता जो विवाद तक पहुँचाए, सुलह की वैधता में बाधक होती है। | जो अज्ञानता विवाद तक ले जाए वह सुलह की वैधता में बाधक होती है। (सारांश) (त) |

रही बात बिक्री (बय) की, वह यदि स्पष्ट प्रस्ताव और स्वीकृति (ईजाब-ओ-क़बूल) के साथ भी होती, उदाहरण के लिए बक्र कहता है कि 'मैंने यह दहेज इन विरासत की वस्तुओं के बदले में दिया है'...

---

1. दुर्रे-मुख़्तार, किताबुल सुलह, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 141/2
2. फ़तावा हिन्दिया, निहाया के हवाले से, किताबुल सुलह, अध्याय 1, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 231/3

انہ اجناس مختلفہ میں قسمت جمع بے تراضی ممکن یہاں تک کہ قاضی کو بھی اس کا اختیار نہیں کما نصوا علیہ فی الکتب جمیعاً (جیسا کہ تمام کتابوں میں اس پر نص فرمائی گئی۔ ت) تو غایت درجہ اس قدر رہا کہ بکر نے دیتے وقت اپنے دل میں سمجھ لیا کہ یہ ہم علی الحساب دیتے ہیں جو کچھ جہیز کی لاگت ہے دلہن کے حصہ میں مجرا لیں گے صرف اتنا سمجھ لینا کوئی عقد شرعی نہیں ہوسکتا قسمت نہ ہونا تو ظاہر لما مر (جیسا کہ گزرا۔ ت) صلح و تخارج یوں نہیں کہ کل ترکہ یا اس کی کسی قسم سے حصہ دلہن کا ساکت نہ کیا گیا نہ دلہن کے خیال میں ہو گا اب فلاں قسم طریقہ میں میرا کوئی دعوٰی نہ رہا اگرچہ میرا حصہ مقدار جہیز سے زائد نکلے، نہ ایسا امر بے صریح رضامندی فقط ایک طرف کے خیال پر عقد ٹھہر سکتا ہے،

| فان العقد ربط ولا بد فی الربط من شیئین۔ | کیونکہ عقد ربط ہوتا ہے اور ربط میں دو چیزوں کا ہونا لازم ہے۔ (ت) |

معہذا عند الحساب جہیز کی لاگت میں اختلاف پڑنا ممکن بلکہ مظنون تو قطع نزاع جس کے لئے صلح تخارج کی وضع ہے حاصل نہ ہوا،

| وما من شیئی خلا عن مقصودہ الابطل وجہالۃ المصالح عنہ انما لا تمنع جواز الصلح اذا لم تفض الی المنازعۃ والامنعت۔ | اور نہیں ہے کوئی شئی اپنے مقصود سے خالی مگر وہ باطل ہے، اور جس شئی پر صلح ہو رہی ہے اس کا مجہول ہونا اگر موجب نزاع نہ ہو تو جواز صلح سے مانع نہیں ورنہ مانع ہے۔ (ت) |

در مختار میں ہے:

| الصلح شرعاً عقد یرفع النزاع و یقطع الخصومة ۔ | صلح شرعاً ایسا عقد ہے جو نزاع کو رفع اور خصومت کو قطع کرتا ہے۔ (ت) |

نہایہ میں ہے:

| جہالة تفضی الی المنازعة تمنع جواز الصلح اھ ملخصین۔ | جو جہالت منازعت تک پہنچائے وہ جواز صلح سے مانع ہوتی ہے اھ ملخصین (ت) |

رہی بیع وہ اگر بتصریح ایجاب و قبول بھی ہوتی مثلاً بکر کہتا ہے میں نے یہ جہیز بعوض ان اشیائے متروکہ کے

---

1. درمختار کتاب الصلح مطبع مجتبائی دہلی ۱۴۱/۲
2. فتاوٰی ہندیہ بحوالہ النہایة کتاب الصلح الباب الاول نورانی کتب خانہ پشاور ۲۳۱/۳

Fatawa Rizvia, Volume 12

Even if things equal to the value of the dowry came into your portion, you sold them, and the bride accepted, it would still be invalid. This is because neither the cost of the dowry was stated, nor was it known how many items of what value and which specific items would be included in the bride's share. It went so far that there was not even a mention of it; Bakr simply handed over the dowry considering it a certain matter. It is not even known what the bride's intention was at that heart. How can anyone declare this a Shar'i contract?

Arabic Text

And it is known that there is no contract that is completed by mere intention. Rather, there must be something that manifests the intention of the heart and serves as evidence of internal consent.

In Fath al-Qadir it is stated:

Its pillar (essential element) is the action that indicates consent with the exchange of ownership, whether by word or deed.[1] (Summarized). Yes, the indicator can sometimes be explicit (nass), which is the word established for offer and acceptance, and sometimes it can be by indication (dalalah), such as bargaining or taking the priced object after stating the price in a 'bay' al-ta'ati' (transaction by conduct). Where there is no need for explicit statement due to general custom, like bread for example, where its value is known and does not vary, the seller opening the shop, sitting for sale, and preparing the bread for it indicates selling, and the buyer taking it indicates purchasing. But here, even if indication from Bakr's side is assumed, there is

Urdu Translation

And it is known that there is no contract that is completed by mere intention, rather there must be some such thing that manifests the heart's intention and indicates internal consent. (T)

In Fath al-Qadir it is stated:

Its pillar is that action which indicates consent with the exchange of ownership, whether verbally or through action. Yes, sometimes the thing manifesting this matter is in the form of an explicit text (nass), and that is the word established for offer and acceptance, and sometimes it is in the form of indication (dalalah), such as settling a price and in 'bay al-ta'ati' (transaction by conduct) taking the purchased item after the statement of price. And where there is no need for statement due to general custom, for example, like bread where its price is fixed and does not vary, there the seller opening the shop and sitting and preparing bread for sale indicates selling, and the buyer taking it indicates

Arabic Text

absolutely no indication found from the bride's side. And if for the sake of argument, that too is accepted, then here the 'ta'ati' (conduct) would be from one side only. In the view of those who permit one-sided conduct, it still requires the statement of the substitute/price.

Urdu Translation

purchasing. But here, even if indication from Bakr's side is assumed, no indication at all was found from the bride's side. And if for the sake of argument this is also accepted, then here the 'ta'ati' will be from one side only. Even with 'ta'ati' from one side, according to those who permit it, the statement of price is necessary.

[1] Fath al-Qadir, Kitab al-Buyu', Maktabah Nuriyyah Razawiyyah, Sukkur, 5/255.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

जो दहेज़ के मूल्य के बराबर चीजें आपके हिस्से में आईं, आपने उन्हें बेच दिया और दुल्हन ने स्वीकार कर लिया, फिर भी यह अमान्य होगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि न तो दहेज़ की लागत बताई गई थी, और न ही यह पता था कि दुल्हन के हिस्से में कितनी मूल्य की और क्या-क्या चीज़ें आएँगी। यहाँ तक कि इसका कोई ज़िक्र भी नहीं आया; बक्र ने महज़ एक मामला समझकर दहेज़ सौंप दिया। यह भी पता नहीं कि उस समय दुल्हन के दिल में क्या नीयत थी। कोई इसे शरई अनुबंध कैसे करार दे सकता है?

अरबी पाठ

और यह ज्ञात है कि ऐसा कोई अनुबंध नहीं है जो केवल नीयत से पूरा होता हो, बल्कि किसी ऐसी वस्तु का होना आवश्यक है जो हृदय की इच्छा को प्रकट करे और हृदय की सहमति का संकेत दे।

"फ़तह अल-क़दीर" में है:

इसका स्तंभ वह कार्य है जो मौखिक या क्रियात्मक रूप से स्वामित्व के विनिमय के साथ सहमति को दर्शाता है।[1] (संक्षिप्त)। हाँ, कभी इसे प्रकट करने वाली चीज़ स्पष्ट पाठ (नस्स) के रूप में होती है और वह शब्द है जो ईजाब (प्रस्ताव) और क़बूल (स्वीकृति) के लिए निर्धारित किया गया है, और कभी वह संकेत (दलालत) के रूप में होती है जैसे मोल-भाव करना और 'बैअ तआती' (आचरण द्वारा विनिमय) में कीमत बताने के बाद वस्तु को ले लेना। जहाँ सामान्य प्रथा के कारण स्पष्ट विवरण की आवश्यकता नहीं होती, जैसे उदाहरण के तौर पर रोटी जहाँ उसकी कीमत निर्धारित हो और

हिंदी अनुवाद

और यह ज्ञात है कि ऐसा कोई अनुबंध नहीं है जो केवल नीयत से पूरा होता हो, बल्कि किसी ऐसी वस्तु का होना आवश्यक है जो हृदय की इच्छा को प्रकट करे और हृदय की सहमति का संकेत दे। (त)

"फ़तह अल-क़दीर" में है:

इसका स्तंभ वह कार्य है जो मौखिक या क्रियात्मक रूप से स्वामित्व के विनिमय के साथ सहमति को दर्शाता है। हाँ, कभी इस मामले को प्रकट करने वाली चीज़ स्पष्ट पाठ (नस्स) के रूप में होती है और वह शब्द है जो प्रस्ताव (ईजाब) और स्वीकृति (क़बूल) के लिए निर्धारित किया गया है, और कभी वह संकेत (दलालत) के रूप में होती है जैसे मोल-भाव करना और 'बैअ तआती' में मूल्य बताने के बाद वस्तु को ले लेना। और जहाँ सामान्य प्रथा के कारण विवरण की आवश्यकता नहीं होती, जैसे उदाहरण के तौर पर रोटी जहाँ उसकी कीमत निर्धारित हो और

अरबी पाठ	हिंदी अनुवाद
भिन्न न हो, वहाँ विक्रेता का दुकान खोलकर बैठना और बिक्री के लिए रोटी तैयार करना बेचने का संकेत है और खरीदार का उसे ले लेना खरीदने का संकेत है। लेकिन यहाँ यदि बक्र की ओर से संकेत मान भी लिया जाए, तो दुल्हन की ओर से बिल्कुल भी संकेत नहीं पाया गया। और यदि तर्क के लिए इसे भी स्वीकार कर लिया जाए, तो यहाँ 'तआती' केवल एक पक्ष से होगी। एक पक्ष से 'तआती' के मामले में भी, उन लोगों के अनुसार जो इसे अनुमति देते हैं, प्रतिस्थापन/कीमत का विवरण आवश्यक है।	अलग न हो, वहाँ विक्रेता का दुकान खोलकर बैठना और बिक्री के लिए रोटी तैयार करना बेचने का संकेत है और खरीदार का उसे ले लेना खरीदने का संकेत है। लेकिन यहाँ यदि बक्र की ओर से संकेत मान भी लिया जाए, तो दुल्हन की ओर से बिल्कुल भी संकेत नहीं पाया गया। और यदि तर्क के लिए इसे भी स्वीकार कर लिया जाए, तो यहाँ 'तआती' केवल एक पक्ष से होगी। एक पक्ष से 'तआती' के मामले में भी, इसे अनुमति देने वालों के अनुसार मूल्य का विवरण आवश्यक है।

[1] फ़तह अल-क़दीर, किताब अल-बुयूअ, मकतबा नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 5/255.

جو بمقدار مالیات جہیز تیرے حصہ میں آئیں بیچ کیا اور دُلہن قبول کرتی تاہم فاسد ہوتی کہ نہ جہیز کی لاگت بیان میں آئی نہ یہ معلوم کہ اس کی مالیت کی کتنی چیزیں اور کیا کیا اشیاء حصہ عروس میں آئیں گی یہاں کہ اس قدر بھی نہ ہوا بلکہ کوئی تذکرہ درمیان نہ آیا صرف بکر نے ایک امر سمجھ کر جہیز سپرد کیا یہ بھی خبر نہیں کہ اُس وقت قلب عروس میں کیا نیت تھی اسے کیونکر کوئی عقد شرعی قرار دے سکتے ہیں،

عربی متن

ومعلوم انه لیس من عقد یتم بالنیة بل لابد من شیئ یظهر القصد القلبی ویکون دلیلا علی الرضا النفسی۔

فتح القدیر میں ہے:

رکنه الفعل الدال علی الرضا بتبادل الملکین من قول او فعل[1] اه (ملخصاً) نعم المظهر قد یکون نصاً وهو اللفظ المقرر للایجاب والقبول وقد یکون دلالہ کالمساومة واخذ الثمن بعد بیان الثمن في بیع التعاطی وحیث لا حاجة الی البیان

اردو ترجمہ

اور یہ معلوم ہے کہ ایسا کوئی عقد نہیں جو محض نیت سے تام ہوتا ہو بلکہ کسی ایسی شئی کا ہونا ضروری ہے جو ارادہ قلبی کو ظاہر کرے رضاے قلبی پر دلالت کرے۔ (ت)

فتح القدیر میں ہے:

اس کا رکن وہ فعل ہے جو قولی یا فعلی طور پر تبادلِ ملکین کے ساتھ رضامندی پر دلالت کرے، ہاں کبھی تو اس امر کا ظاہر کرنے والی شئی بطورِ نص ہوتی ہے اور وہ لفظ ہے جو ایجاب و قبول کے لئے مقرر کیا گیا اور کبھی وہ بطورِ دلالت ہوتی ہے جیسے بھاؤ چکا نا اور بیع تعاطی میں بیانِ ثمن کے بعد مبیع کو لے لینا اور

عربی متن	اردو ترجمہ
للعرف العام كالخبز مثلاً حيث يكون له قيمة معلومة لا تختلف ففتح البائع الدكان وجلوسه للبيع واعداده الخبز لذلك دليل على البيع واخذ المشترى على الشراء اما ههنا فان فرضت دلالة من بكر فلادلالة اصلا من قبل العروس ولئن سلمت ايضاً فالتعاطى ههنا من احد الجانبين وهو وان جاز عند البعض و به يفتى وهو اربح التصحيحين فلابد فيه عند مجيزه من بيان البدل	جہاں عرف عام کی وجہ سے حاجتِ بیان نہیں ہوتی جیسے مثال کے طور پر روٹی جہاں اس کی قیمت متعین ہو اور مختلف نہ ہوتی ہو وہاں بائع کا دکان کھول کر بیٹھنا اور فروخت کے لئے روٹی تیار کرنا بیع پر دلالت کرتا ہے اور مشتری کا اس کو لے لینا خریداری پر دلالت کرتا ہے لیکن یہاں اگر بکر کی طرف سے دلالت فرض کر بھی لی جائے تو دُلہن کی طرف سے بالکل دلالت نہیں پائی گئی اور اگر بالفرض اس کو بھی تسلیم کر لیا جائے تو یہاں تعاطی صرف ایک جانب سے ہو گی ایک طرف سے تعاطی کرنے والوں کے یہاں بھی بیان ثمن ضروری ہے۔

[1] فتح القدير كتاب البيوع مكتبہ نوريہ رضويہ سكھر ۲۵۵/۵

Fatawa Razawiya, Volume 12

| Arabic: And the substitute here, as you know, is unknown, so the sale is not concluded by consensus. | Urdu: Although according to some it is permissible, and this is what the fatwa is based on and is the preferred view for its correctness, but according to those who consider it permissible, the specification of the substitute (price) is necessary. And here, as you know, the substitute is unknown, therefore by consensus this sale will not be concluded. (T) |

It is stated in Fatawa Alamgiri:

| Arabic: The condition in a sale by mutual delivery (Bay' al-Ta'ati) is giving from both sides according to Shams al-A'immah al-Halwani, as stated in al-Kifayah, and most scholars follow this. In al-Bazzaziyyah, it is mentioned that this is the chosen opinion, as in al-Bahr al-Raiq. However, the correct view is that possession by one of them is sufficient, because Imam Muhammad (may Allah be pleased with him) explicitly stated that a sale by mutual delivery is established by the possession of one of the two substitutes. This includes both the price and the sold item, as in al-Nahr al-Faiq. This proponent makes the specification of the price a condition for the conclusion of this sale upon delivery of the sold item. Similarly, the fatwa of Shaykh Imam Abu al-Fadl al-Kirmani was narrated as in al-Muhit. | Urdu: In a sale by mutual delivery (Bay' al-Ta'ati), giving from both sides is a condition according to Imam Shams al-A'immah al-Halwani, as stated in al-Kifayah, and most scholars are of this view. In al-Bazzaziyyah it is stated that this is the chosen opinion, and it is similarly mentioned in al-Bahr al-Raiq. However, the correct position is that possession by one party is sufficient, because Imam Muhammad (may Allah be pleased with him) has given a textual ruling that a sale by mutual delivery is established by taking possession of one of the two substitutes. This single act of possession covers both the price and the item sold, as mentioned in al-Nahr al-Faiq. This proponent imposes the condition of specifying the price for the conclusion of this sale upon the delivery of the item sold. Similarly, the fatwa of Shaykh Imam Abu al-Fadl al-Kirmani has been narrated as being in al-Muhit. (T) |

So it is clear that in giving a dowry, there was no reality or even appearance of any legal contract (aqd shar'i), so this giving will not fundamentally produce any effect of change in ownership. Rather, the property will remain the ownership of its original owner as before. Now, identification of the owner is required. Items that were exactly part of the deceased's estate, for example, jewelry, utensils, clothes, etc., which the

ancestors left behind and were given exactly as dowry, just as they were previously joint among all heirs, they will remain joint now. And the items that Bakr bought and gave, they were all absolutely Bakr's property and now too they will specifically belong to him, even if they were bought with joint funds. Because it is known that when a purchase finds execution upon the buyer, it is executed (because it has been known that indeed when a purchase attains execution, then for the buyer...)

1. Fatawa Hindiyyah, Book of Sales, Chapter One, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 9/3

फतावा रज़विया, जिल्द 12

| अरबी: और यहाँ जैसा कि आप जानते हैं, प्रतिफल (बदल) अज्ञात है, इसलिए आम सहमति (इज्मा) से बिक्री संपन्न नहीं हुई। | उर्दू/अनुवाद: हालाँकि कुछ के अनुसार यह जायज़ है, और यही मुफ्ती-बेह और दो सही कथनों में से अधिक तरजीह वाला है, लेकिन इसे जायज़ मानने वालों के अनुसार प्रतिफल का वर्णन करना आवश्यक है। और यहाँ जैसा कि आप जानते हैं, प्रतिफल अज्ञात है, इसलिए सर्वसम्मति से यह बिक्री संपन्न नहीं होगी। (टी) |

फतावा आलमगीरी में है:

| अरबी: शम्स अल-आइम्मा अल-हलवानी के अनुसार पारस्परिक सुपुर्दगी (बय तआती) में शर्त दोनों पक्षों से देना है, जैसा कि अल-किफाया में है, और अधिकांश विद्वान इसी पर हैं। अल-बज्ज़ाज़िया में है कि यही चुना हुआ मत है, जैसा कि अल-बह्र अल-रैक में है। और सही यह है कि उनमें से एक का कब्जा पर्याप्त है क्योंकि इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) ने स्पष्ट रूप से कहा है कि बय तआती दोनों प्रतिफलों में से एक पर कब्जा करने से सिद्ध हो जाती है। इसमें कीमत और बेची गई वस्तु दोनों शामिल हैं, जैसा कि अल-नहर अल-फाक में है। यह प्रस्तावक बेची गई वस्तु की सुपुर्दगी के साथ इस बिक्री के संपन्न होने के लिए कीमत के वर्णन की शर्त रखता है। इसी तरह शेख इमाम अबू अल-फ़ज़्ल अल-किरमानी का फतवा उद्धृत किया गया है जैसा कि अल-मुहीत में है। | उर्दू/अनुवाद: बय तआती (लेन-देन द्वारा बिक्री) में दोनों पक्षों की ओर से देना इमाम शम्स अल-आइम्मा हलवानी के अनुसार शर्त है, यही किफाया में है और इसी पर अधिकांश उलेमा हैं। बज़ाज़िया में है कि यही पसंदीदा है, अल-बह्र अल-रैक में भी ऐसा ही है, और सही यह है कि एक का कब्ज़ा काफी है क्योंकि इमाम मुहम्मद रज़ी अल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि बय तआती दोनों बदल (कीमत और माल) में से किसी एक पर कब्ज़ा करने से साबित हो जाती है। और यह एक पर कब्ज़ा कीमत और माल दोनों को शामिल है जैसा कि अल-नहर अल-फाक में है, और यह कहने वाला माल की सुपुर्दगी के साथ इस बिक्री के संपन्न होने के लिए कीमत बताने की शर्त लगाता है, और इसी तरह शेख इमाम अबुल फजल किरमानी का फतवा नक़ल किया गया जैसा कि मुहीत में है। (टी) |

तो स्पष्ट है कि दहेज देने में किसी शरई अनुबंध (अक़्द शरई) की वास्तविकता तो क्या वास्तविकता का रूप भी नहीं था, इसलिए यह देना मूल रूप से स्वामित्व परिवर्तन का कोई प्रभाव पैदा नहीं करेगा। बल्कि वह माल जिसका मालिकाना था, पहले की तरह उसी के मालिकाना में रहेगा। अब

मालिक की पहचान आवश्यक है। जो चीजें बिल्कुल मृतक की छोड़ी हुई संपत्ति थीं, उदाहरण के लिए गहने, बर्तन, कपड़े आदि जो पूर्वजों ने छोड़े थे और वे ही दहेज में दिए गए, तो जैसे वे पहले सभी वारिसों में संयुक्त (साझा) थे, अब भी संयुक्त रहेंगे। और जो चीजें बक्र ने खरीदकर दीं, वे सब पूरी तरह से बक्र की मिल्कियत थीं और अब भी विशेष रूप से उसी की मिल्कियत में होंगी, भले ही वे संयुक्त धन से खरीदी गई हों। क्योंकि यह मालूम हो चुका है कि जब खरीद खरीदार पर प्रभावी होती है, तो वह प्रभावी हो जाती है (क्योंकि यह ज्ञात हो चुका है कि वास्तव में जब खरीद प्रभाव प्राप्त करती है, तो खरीदार के लिए...)

1. फतावा हिंदिया, किताबुल बुयू, बाब अव्वल, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 9/3

पृष्ठ 219 का 688

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

| والبدل ههنا كما علمت مجهول فلم ينعقد البيع اجماعا۔ | اگرچہ بعض کے نزدیک جائز ہے اور یہی مفتی بہ اور ارجح لتصحیحین ہے، مگر اس کو جائز ماننے والوں کے نزدیک بیانِ بدل، ضروری ہے اور یہاں پر جیسا کہ تو جانتا ہے بدل مجہول ہے لہذا بالا جماع یہ بیع منعقد نہ ہو گی۔ (ت) |

فتاوی عالمگیری میں ہے:

| الشرط في بيع التعاطى الاعطاء من الجانبين عند شمس الائمة الحلواني كذا في الكفاية وعليه اكثر المشائخ وفى البزازية هو المختار كذا في البحر الرائق والصحيح ان قبض احد هما كاف لنص محمد رضى الله تعالى عنه على ان بيع التعاطى يثبت بقبض احد البدلين وهذا ينتظم الثمن والمبيع كذا في النهر الفائق وهذا القائل يشترط بيان الثمن لانعقاد هذا البيع بتسليم المبيع وهكذا حكى فتوى الشيخ الامام ابى الفضل الكرمانى كذا في المحيط۔ | بیع تعاطی میں دونوں جانبوں سے اعطاء امام شمس الائمہ حلوانی کے نزدیک شرط ہے یونہی کفایہ میں ہے، اور اسی پر اکثر مشائخ ہیں۔ بزازیہ میں ہے کہ یہی مختار ہے، البحر الرائق میں بھی ایسے ہی ہے، اور صحیح یہ ہے کہ ایک کا قبضہ کافی ہے کیونکہ امام محمد رضی اللہ تعالٰی عنہ نے نص فرمائی کہ بیع تعاطی بدلین میں سے ایک پر قبضہ کرنے سے ثابت ہو جاتی ہے اور یہ ایک پر قبضہ ثمن و مبیع دونوں کا شامل ہے جیسا کہ النہر الفائق میں ہے اور یہ قائل تسلیم مبیع کے ساتھ اس بیع کے منعقد ہونے کے لئے بیان ثمن کی شرط لگاتا ہے، اور اسی طرح شیخ امام ابوالفضل کرمانی کا فتوٰی نقل کیا گیا جیسا کہ محیط میں ہے۔ (ت) |

پس واضح ہو کہ جہیز دینے میں کسی عقدِ شرعی کی حقیقت تو حقیقت صورت بھی نہ تھی تو یہ دینا اصلاً کوئی اثر تبدلِ ملک پیدا نہ کرے گا، بلکہ وہ مال جس کی ملک تھا بدستور اسی کی ملک پر رہے گا۔ اب معرفتِ مالک درکار ہے جو چیزیں عین متروکہ تھیں مثلاً زیور، برتن، کپڑے وغیرہا کہ مورثوں نے چھوڑے بعینہ جہیز میں دئے گئے وہ جیسے سب وارثوں میں پہلے مشترک تھیں اب بھی مشترک رہیں گی اور جو اشیاء بکر نے خرید کر دیں وہ سب مطلقاً ملکِ بکر تھیں اور اب بھی خاص اسی کی ملک پر ہوں گی اگرچہ مالِ مشترک سے خریدی ہوں لماعلم ان الشراء اذا وجد نفاذا علی الشاری نفذ (کیونکہ یہ معلوم ہو چکا کہ بیشک شراء جب نفاذ پائے تو مشتری

۱ فتاویٰ ہندیہ کتاب البیوع الباب الاول نورانی کتب خانہ پشاور ۹/۳

Fatawa Razawiyya, Volume 12

...becomes effective. (T) The point is that by purchasing from joint property, Bakr will be responsible for the shares of the remaining heirs, as we have quoted in various places in our Fatawa from Radd al-Muhtar (as we have quoted from Radd al-Muhtar in several places in our Fatawa. T). Then, regarding this category—items owned by Bakr—the bride's possession will be one of trust (Amanat), because it was acquired through the owner's empowerment (Tasleet) (because the acquisition of this possession happened through the owner granting authority T). Therefore, whatever item the bride did not consume but was destroyed without her action, such as by theft, etc., she will not be liable for its compensation. However, whatever is perished due to her action or transgression, its value will be mandatory for the bride to pay to Bakr, because 'the trustee becomes a guarantor when they transgress' (because when the trustee commits transgression in the trust, he becomes a guarantor T). And whatever remains, she must return it exactly to Bakr. As for the first category, meaning items from the actual deceased estate given in the dowry, the bride's hand over them will be a 'hand of guarantee' (Dast-e-Zaman). This means no matter how it is destroyed in her possession, she will be absolutely liable for compensation.

Arabic

This is because Bakr has committed transgression against the shares of the partners by preparing the sister's dowry from joint property and handing it over to her for use and disposal, and through disposal, she gains possession. Every hand succeeding a hand of guarantee is a hand of guarantee.

Urdu

And this is because Bakr certainly committed transgression in the shares of the partners because he made the sister's dowry from the joint property and handed it over to the sister so that she may wear and use it and exercise independent disposal in it. A possession that follows a possession of guarantee is itself a possession of guarantee. (T)

Therefore, the remaining heirs who did not give permission will have the choice to take compensation for their shares of what was destroyed from Bakr, because he is the usurper (Ghasib) (because he is the usurper. T). If they wish, they can take it from the bride, because she is like the usurper of a usurper (because she is as if usurping from a usurper. T). It is stated in Fatawa Khayriyya:

Arabic	Urdu
A hand succeeding a hand of guarantee is a hand of guarantee. Therefore, the owner of the animal has the right to take compensation from whomever they wish, etc.	A possession that follows a possession of guarantee is also a possession of guarantee. Therefore, the owner of the quadruped has the option to take compensation from whomever they wish, etc. (T)

And that person, Bakr or the bride, from whom they take compensation, has no claim against the other:

Arabic	Urdu
As for Bakr, because he is the usurper, and the bride only took possession through his empowerment. As for the bride, because she took possession...	But as for Bakr, it's because he is the usurper. Surely the bride took possession by his empowerment and...

[1] Fatawa Khayriyya, Kitab al-Ghasb, Dar al-Ma'rifah Beirut 2/149/1 Page 220 of 688

फतावा रज़विया, खंड 12

...प्रभावी हो जाता है। (त) बात यह है कि संयुक्त संपत्ति से खरीदने में बकर बाकी वारिसों के हिस्से का जिम्मेदार रहेगा, जैसा कि हमने रद अल-मुफ्तार से अपने फतावा में कई स्थानों पर उद्धृत किया है (जैसा कि हमने रद अल-मुफ्तार से अपने फतावा में कई स्थानों पर उद्धृत किया है। त)। फिर, इस श्रेणी के संबंध में—यानी बकर के स्वामित्व वाली वस्तुएं—दुल्हन का कब्जा अमानत (ट्रस्ट) का होगा क्योंकि यह मालिक के सशक्तिकरण (तसलीत) के माध्यम से प्राप्त किया गया था (क्योंकि इस कब्जे की प्राप्ति मालिक की ओर से अधिकार दिए जाने से हुई त)। इसलिए, जिस वस्तु को दुल्हन ने उपभोग नहीं किया लेकिन उसके बिना किसी कार्य के चोरी आदि से नष्ट हो गई, उसका हर्जाना दुल्हन पर नहीं आएगा। और जो कुछ भी उसके कार्य या उल्लंघन के कारण नष्ट हो गया, उसका मूल्य दुल्हन के लिए बकर को भुगतान करना अनिवार्य होगा क्योंकि 'अमानतदार तब ज़ामिन (गारंटर) बन जाता है जब वह उल्लंघन करता है' (क्योंकि जब अमानतदार अमानत में उल्लंघन करता है तो वह ज़ामिन हो जाता है त)। और जो कुछ बचा है, वह उसे बिल्कुल वैसा ही बकर को वापस कर दे। पहली श्रेणी के लिए, यानी वास्तविक मृतक की संपत्ति से जो कुछ दहेज में दिया गया था, उस पर दुल्हन का हाथ 'दस्त-ए-ज़मान' (गारंटी का हाथ) होगा। इसका अर्थ है कि उसके पास यह किसी भी तरह से नष्ट हो जाए, वह मुआवजे के लिए पूरी तरह उत्तरदायी होगी।

अरबी

ऐसा इसलिए है क्योंकि बकर ने संयुक्त संपत्ति से बहन का दहेज तैयार करके और उसे उपयोग और निपटान के लिए सौंपकर भागीदारों के शेयरों के खिलाफ उल्लंघन किया है। गारंटी के हाथ के बाद आने वाला हर हाथ गारंटी का हाथ होता है।

उर्दू

और यह इसलिए है क्योंकि बकर ने निश्चित रूप से भागीदारों के हिस्सों में उल्लंघन किया क्योंकि उसने संयुक्त संपत्ति से बहन का दहेज बनाया और उसे बहन के हवाले कर दिया ताकि वह उसे पहन सके और उपयोग कर सके और उसमें स्वतंत्र निपटान कर सके। वह कब्जा जो गारंटी के कब्जे के बाद आता है, वह स्वयं गारंटी का कब्जा होता है। (त)

बाकी वारिस जिन्होंने अनुमति नहीं दी थी, उनके पास यह विकल्प होगा कि वे नष्ट हुई वस्तुओं के अपने हिस्से का मुआवजा बकर से लें क्योंकि वह गसिब (हड़पने वाला) है (क्योंकि वह गसिब है। त)। यदि वे चाहें, तो वे इसे दुल्हन से ले सकते हैं क्योंकि वह एक हड़पने वाले से हड़पने वाली की तरह है (क्योंकि वह जैसे हड़पने वाले से हड़पने वाली है। त)। फतावा खैरिया में लिखा है:

अरबी	उर्दू
गारंटी के हाथ के बाद आने वाला हाथ गारंटी का हाथ होता है। इसलिए, पशु के मालिक को अधिकार है कि वह जिससे चाहे मुआवजा ले, आदि।	गारंटी के कब्जे के बाद आने वाला कब्जा भी गारंटी का कब्जा होता है। इसलिए, चौपाये के मालिक को विकल्प है कि वह जिससे चाहे ज़मान (मुआवजा) ले, आदि (त)

और वह व्यक्ति, बकर या दुल्हन, जिससे वे मुआवजा लेते हैं, उसे दूसरे के खिलाफ कोई दावा करने का अधिकार नहीं है:

अरबी	उर्दू
जहाँ तक बकर की बात है, क्योंकि वह हड़पने वाला है, और दुल्हन ने केवल उसके सशक्तिकरण के माध्यम से कब्जा लिया। जहाँ तक दुल्हन की बात है, क्योंकि उसने कब्जा लिया...	लेकिन बकर इसलिए कि वह गसिब (हड़पने वाला) है। बेशक दुल्हन ने उसके सशक्तिकरण से कब्जा किया और...

[1] फतावा खैरिया, किताब अल-गसब, दार अल-मारिफ़ा बेरूत 2/149/1 पृष्ठ 220 का 688

پر نافذ ہو جاتی ہے۔ ت) غایت یہ کہ مال مشترک سے خریدنے میں بکر باقی ورثہ کے حصہ کا ذمہ دار رہے گا کما نقلنا فی مواضع منّا فتاوٰنا عن ردالمحتار (جیسا کہ ہم نے ردالمحتار سے اپنے فتاوٰی میں متعدد مقامات پر نقل کیا ہے۔ ت) پھر اس قسم یعنی مملو کات بکر پر دلہن کا قبضہ قبضہ امانت ہو گا لحصولہ بتسلیط المالك (کیونکہ اس قبضہ کا حصول مالک کی طرف سے قدرت دینے سے ہوا ت) پس جس چیز کو دلہن نے استہلاک نہ کیا بغیر اس کے فعل کے چوری وغیرہ سے ہلاک ہوگئی اس کا تاوان دلہن پر نہ آئے گا اور جو اس کے فعل و تعدی سے تلف ہوئی اس کی قیمت بکر کے لئے دلہن کے ذمہ واجب ہوگی لان الامین ضمین اذا تعدی (اس لئے کہ امین جب امانت میں تعدی کرے تو ضامن ہو گا ت) اور جو باقی ہو وہ بعینہ بکر کو واپس دے اور قسم اول یعنی عین مترو کہ سے جو کچھ جہیز میں دیا گیا اس پر دلہن کا ہاتھ دست ضمان ہوگا یعنی کسی طرح اس کے پاس ہلاک ہو جائے مطلقاً تاوان آئے گا،

عربی

وذلك لان بكرا قد تعدى على حصص الشركاء بتجهيز الاخت من مال مشترك وتسليمه اليها جهاز التلبس وتستعمل وبالتصرف تستقبل وكل يد مترتبة على يد ضمان يد ضمان۔

اردو

اور یہ اس لئے ہے کہ بیشک بکر نے شرکاء کے حصوں میں تعدی کی کیونکہ اس نے مال مشترک سے بہن کا جہیز بنا کر بہن کے حوالے کیا تاکہ وہ اس کے پہنے اور استعمال کرے اور اس میں مستقل تصرف کرے قبضہ جو قبضہ ضمان پر مترتب ہو وہ قبضہ ضمان ہی ہوتا ہے۔ (ت)

پس باقی وارث جنہوں نے اذن نہ دیا مختار رہیں گے کہ جو کچھ ہلاک ہوا چاہیں اپنے حصوں کا تاوان بکر سے لیں لانہ الغاصب (کیونکہ وہ غاصب ہے۔ ت) چاہیں دلہن سے لانہا کغاصبۃ الغاصب (کیونکہ وہ گویا غاصب سے غصب کرنے والی ہے۔ ت) فتاوٰی خیر یہ میں ہے :

عربی	اردو
الید المترتبۃ علی ید الضمان ید ضمان فلرب البھیمۃ ان یضمن من شاء الخ۔	قبضہ ضمان پر مترتب ہونے والا قبضہ بھی قبضہ ضمان ہی ہوتا ہے لہذا چار پائے کے مالک کو اختیار ہے کہ جس سے چاہے ضمان لے الخ (ت)

اور وہ بکر یا دلہن جس سے ضمان لیں اُسے دوسرے پر دعوٰی نہیں پہنچتا:

عربی	اردو
اما بکر فلانہ الغاصب وانما قبض العروس بتسلیطہ واما العروس فلانہا قبضت	لیکن بکر تو اس لئے کہ وہ غاصب ہے بے شک دلہن نے اس کے قدرت دینے سے قبضہ کیا اور

1 فتاوٰی خیر یہ کتاب الغصب دارالمعرفۃ بیروت ۱/۴۹/۲ صفحہ 220 از 688

Fatawa Razvia Volume 12

[Arabic]: For herself, not for Bakr. [Urdu]: As for the bride, she certainly took possession for herself and not for Bakr. (T)

In Radd al-Muhtar, from Bazzaziyah:

[Arabic]: If a usurper gives the usurped item as a gift, charity, or loan, and it is destroyed in their hands and they compensate the owner, they cannot claim back from the usurper what they paid to the owner, because they acted for themselves in taking possession. This is unlike a pledgee, a lessee, or a bailee, for they can reclaim from the usurper what they paid as compensation, because they acted for him, etc. [Urdu]: If a usurper gives a usurped thing to someone as a gift, charity, or loan, and it is destroyed there, then those to whom the thing was given as a gift, charity, or loan will be liable to the original owner. And they will not be able to take back from the usurper the amount of compensation they gave to the owner, because they acted for themselves in taking possession and not for the usurper. Contrary to the pledgee, lessee, and bailee, who will be able to claim back from the usurper the amount for which they became liable, because they acted for the usurper, etc. (T)

And whatever remains should be taken back from the bride and distributed according to divine obligations (inheritance laws). All these rulings were for the case where Bakr did not give the dowry as a gift. And regarding whether there was an intention of gift or set-off (majrai), Bakr's statement under oath will be credible.

[Arabic]: Because he is the giver, so he knows better about the direction of giving, as in al-Ashbah, Jami' al-Fusulayn, al-Fatawa al-Khayriyya, and others. Indeed, they have explicitly stated this in many issues. I say: Providing a trousseau by brothers for sisters who have wealth and are partners in what is in the hands of the brothers from the inheritance is not a common custom judged as a gift. This is contrary to fathers and mothers in our country; how can the apparent case be anything other than the permanence of the obligation [of gift]? [Urdu]: Because he is indeed the giver, therefore he knows better what the purpose of giving was, as stated in books like Ashbah, Jami' al-Fusulayn, and Fatawa Khayriyya, etc. And research shows they have specified this in several issues. I say that for wealthy sisters who are provided dowries by brothers, there is no common custom that this is a gift from the brothers. Unlike

parents, whatever they give as dowry is a gift in the custom of our region, and the permanence of the obligation [remains].

1. Radd al-Muhtar, Book of Usurpation, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/26. Page 221 of 688

फ़तावा रज़विया खंड 12

[अरबी]: वह स्वयं के लिए कब्जा करती है न कि बक्र के लिए। [उर्दू]: जहाँ तक दुल्हन का सवाल है, उसने निश्चित रूप से अपने लिए कब्जा किया न कि बक्र के लिए। (त)

रद अल-मुह्तार में बज़ाज़िया से है:

[अरबी]: यदि कोई हड़पने वाला (ग़ासिब) हड़पी हुई वस्तु को उपहार, दान या ऋण के रूप में देता है, और वह उनके हाथों में नष्ट हो जाती है और वे मालिक को क्षतिपूर्ति करते हैं, तो वे हड़पने वाले से वह वापस नहीं मांग सकते जो उन्होंने मालिक को दिया था, क्योंकि उन्होंने कब्जा करने में अपने लिए काम किया था। यह गिरवी रखने वाले, किराएदार या अमानत रखने वाले के विपरीत है, क्योंकि वे हड़पने वाले से उस राशि का दावा कर सकते हैं जो उन्होंने क्षतिपूर्ति के रूप में दी थी, क्योंकि उन्होंने उसके लिए काम किया था, इत्यादि। [उर्दू]: यदि किसी ग़ासिब ने हड़पी हुई चीज़ किसी को उपहार (हिबा), दान (सदक़ा) या उधार (आरियत) के रूप में दी और वह वहाँ नष्ट हो गई, तो जिन्हें वह चीज़ उपहार, दान या उधार के रूप में दी गई थी, वे लोग मूल मालिक के प्रति उत्तरदायी (ज़ामिन) होंगे। और वे मालिक को दी गई हर्जाने की राशि ग़ासिब से वापस नहीं ले सकेंगे क्योंकि उन्होंने कब्जा करने में अपने लिए काम किया न कि ग़ासिब के लिए। इसके विपरीत गिरवी रखने वाले (मुर्तहिन), किराएदार (मुस्ताजर) और अमानतदार (मुदअ) के मामले में है कि ये लोग जितने के ज़िम्मेदार हुए, ग़ासिब से उसकी वापसी का दावा कर सकेंगे क्योंकि उन्होंने ग़ासिब के लिए काम किया, इत्यादि। (त)

और जो कुछ शेष बचे, उसे दुल्हन से वापस लेकर ईश्वरीय दायित्वों (विरासत के नियमों) के अनुसार विभाजित किया जाना चाहिए। ये सभी नियम उस स्थिति में थे जब बक्र ने दहेज उपहार के रूप में न दिया हो। और इस मामले में कि उपहार की नीयत थी या मुजरई (समायोजन) की, बक्र का बयान शपथ के साथ विश्वसनीय होगा।

[अरबी]: क्योंकि वह देने वाला है, इसलिए वह देने के उद्देश्य को बेहतर जानता है, जैसा कि अल-अशबाह, जामी अल-फुसुलैन, अल-फ़तावा अल-खैरिया और अन्य में है। वास्तव में, उन्होंने कई मुद्दों में इसे स्पष्ट रूप से कहा है। मैं कहता हूँ: धनवान बहनों को भाइयों द्वारा दहेज दिया जाना, जो विरासत में भाइयों के हाथ में मौजूद संपत्ति में साझेदार हैं, ऐसा कोई सामान्य रिवाज नहीं है जिसे उपहार माना जाए। यह हमारे देश में माता-पिता के विपरीत है; स्पष्ट स्थिति दायित्व [उपहार] के बने

रहने के अलावा और क्या हो सकती है? [उर्दू]: क्योंकि वास्तव में वह देने वाला है, इसलिए वह बेहतर जानता है कि देने का उद्देश्य क्या था, जैसा कि अशबाह, जामी अल-फुसुलैन और फ़तावा खैरिया आदि पुस्तकों में है। और शोध से पता चलता है कि उन्होंने कई मुद्दों पर इसे स्पष्ट रूप से कहा है। मैं कहता हूँ कि धनवान बहनें जिन्हें भाइयों द्वारा दहेज दिया जाता है, वहाँ यह सामान्य रिवाज नहीं है कि यह भाइयों की ओर से उपहार (हिबा) है। इसके विपरीत माता-पिता जो कुछ दहेज के रूप में देते हैं, वह हमारे क्षेत्र के रिवाज में उपहार है, और दायित्व बना रहता है।

1. रद अल-मुह्तार, किताब अल-ग़सब, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 5/26. पृष्ठ 688 में से 221

فتاوٰی رضویہ جلد دو ازدہم

[عربی]: لنفسها لا للبکر۔ [اردو]: رہی دلہن تو وہ اس لئے کہ بے شک اس نے اپنے لئے قبضہ کیا ہے نہ بکر کے لئے۔ (ت)

ردالمحتار میں بزازیہ سے ہے :

[عربی]: وهب الغاصب المغصوب او تصدق اواعار وهلك فی ایدیهم وضمنو اللمالك لا یرجعون بما ضمنو اللمالك علی الغاصب لانهم کانوا عاملین فی القبض لانفسهم بخلاف المرتهن والمستأجر والمودع فانهم یرجعون بما ضمنو علی الغاصب لانهم عملواله الخ۔ [اردو]: غاصب نے شئی مغصوب کسی کو بطور ہبہ یا صدقہ یا عاریت دے دی اور وہاں ہلاک ہو گئی تو جنہیں وہ شئی بطور ہبہ یا صدقہ یا عاریت دی گئی یہ لوگ اصل مالک کیلئے ضامن ہوں گے اور جتنا ضمان انہوں نے مالک کو دیا وہ غاصب سے نہیں لے سکیں گے کیونکہ انہوں نے قبضہ کرنے میں اپنے لئے عمل کیا نہ کہ غاصب کے لئے بخلاف مرتہن، مستاجر اور مودع کے کہ یہ لوگ جتنے کے ضامن جتنے کے ضامن ہوئے غاصب سے اس کا رجوع کرسکیں گے کیونکہ انہوں نے غاصب کے لئے عمل کیا الخ۔ (ت)

اور جو کچھ باقی ہوں وہ دلہن سے واپس لے کر فرائض الہیہ پر تقسیم ہو جائیں، یہ سب احکام اس صورت میں تھے کہ بکر نے جہیز بطور ہبہ نہ دیا ہو اور بے شک اس امر میں کہ ہبہ کی نیت تھی یا مجرائی کی، بکر کا قول قسم کے ساتھ معتبر ہوگا۔

[عربی]: لانه الدافع فهوا دری بجهة الدفع کما فی الاشباه وجامع الفصولین والفتاوٰی الخیریة وغیرها وقد نصوا علیه فی مسائل کثیرة اقول: ولیس فی تجهیز الاخوة الاخوات اذا کن ذوات مال شریکات فی

مابا یدی الاخوۃ من التركۃ عرف فاش یقضی بالھبۃ بخلاف الآباء والامھات فی بلاد نا کیف یکون الظاہر بقاء واجب کے [اردو]: کیونکہ بیشک وہ دینے والا ہے لہذا وہ زیادہ بہتر جانتا ہے کہ دینے کی جہت کی ہے جیسا کہ اشباہ، جامع الفصولین اور فتاویٰ خیر یہ وغیرہ کتابوں میں ہے اور تحقیق انہوں نے متعدد مسائل میں اس پر نص فرمائی ہے میں کہتا ہوں کہ مال دار بہنیں جو بھائیوں کے جہیز دینے میں یہ عرف عام نہیں کہ یہ بھائیوں کی طرف سے ہبہ ہے بخلاف ماں باپ کے کہ وہ جو کچھ بطور جہیز دیں وہ ہمارے علاقے کے عرف میں ہبہ ہے اور بقاء واجب کے

1 رد المحتار کتاب الغصب دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۶/۵ Page 221 of 688

[Arabic]: How can an intention of donation (tabarru') be apparent while the obligation remains? Rather, what is apparent here is that they intend to deduct it from their sisters' shares. [Urdu Translation]: How will the intention of donation become apparent while it [the obligation] remains? Rather, what is apparent here is that they intend to set it off against their sisters' shares. (T)

Similarly, if Bakr intended to give a gift in his heart, but the bride did not take possession of it considering it a gift, but rather took it, for example, as compensation for her share or as an adjustment in her share, then the exact same rulings will apply; in this case, acceptance of the gift from the bride's side was not found.

[Arabic]: Because acceptance is a branch of knowledge; and if she did not count it as a gift, how can it be conceived that she accepted the gift? [Urdu Translation]: Because acceptance is a branch of knowledge, so when she did not know it as a gift at all, how is it conceivable that she accepted the gift. (T)

It is stated in al-Bahr al-Ra'iq:

[Arabic]: Similarly, by his saying: "I have permitted all people regarding the fruit of my palm trees; whoever takes anything, it is for him." Thus, the people who were reached [by this message], whoever among them takes anything, he owns it. Such is in *al-Muntaqa*. Its apparent meaning is that whoever takes it and the donor's statement did not reach him, it will not be for him, as is not hidden. I say: Similar to it is what is in *al-Hindiyya* from *al-Khulasa*: A man set his beast of burden free, then a person restored it [to health/workability]; then its owner came and confessed and said, "I said when I released its way, whoever takes it, it is for him." Or he denied it, so evidence was established against him, or he was asked to take an oath and he refused; then it belongs to the taker, whether he was present and heard this statement or was absent. [Urdu Translation]: And similarly, if someone said: "I have given permission to all people for the fruit of my trees, that whoever takes as much as they want, it belongs to them." People were informed of this, so whoever takes something from it will become its owner, as stated in *al-Muntaqa*. From this, it is apparent that one who did not receive news of the donor's statement and took something, would not become its owner, as is not hidden. I say: Similar to this is what is quoted in *al-Hindiyya* from *al-Khulasa*, that a person set his animal free, then someone caught it and improved it, meaning made it fit for work. Now the owner

came and admitted, "I had said at the time of releasing it that whoever catches it, it belongs to him," or he...

[1] Al-Bahr al-Ra'iq, Book of Gifts, H.M. Saeed Company Karachi, 7 / 284

[अरबी]: जब दायित्व बना हुआ है तो दान (तबर्रु) का इरादा कैसे स्पष्ट हो सकता है? बल्कि यहाँ तो यह स्पष्ट है कि वे अपनी बहनों के हिस्से से कटौती करने का इरादा रखते हैं। [उर्दू अनुवाद]: होते हुए दान का इरादा कैसे ज़ाहिर होगा बल्कि ज़ाहिर तो यहाँ यह है कि वे बहनों के हिस्सों से मुजरा (कटौती) का इरादा करते हैं। (त)

इसी तरह अगर बक्र ने दिल में हिबा (उपहार) की नीयत की, लेकिन दुल्हन ने उसे हिबा समझकर कब्ज़ा नहीं किया, बल्कि मिसाल के तौर पर अपने हिस्से का मुआवज़ा या हिस्से में मुजराई (कटौती) समझकर लिया, तो भी बिलकुल यही अहकाम होंगे कि इस सूरत में दुल्हन की तरफ़ से हिबा का कुबूल (स्वीकृति) नहीं पाया गया।

[अरबी]: क्योंकि कुबूल (स्वीकृति) इल्म (ज्ञान) की एक शाखा है; और अगर उसने इसे उपहार नहीं माना, तो यह कैसे मुमकिन है कि उसने उपहार स्वीकार कर लिया? [उर्दू अनुवाद]: इसलिए कि कुबूल इल्म की फ़रा (शाखा) है तो जब उसने उसे हिबा जाना ही नहीं तो यह कैसे मुसव्वर (कल्पना योग्य) है कि उसने हिबा कुबूल किया। (त)

'बहरुर राइक' में है:

[अरबी]: और इसी तरह उसके इस कहने से: "मैंने अपने खजूर के पेड़ों के फल के लिए तमाम लोगों को इजाज़त दे दी है; जो कोई कुछ लेगा, वह उसी का है।" तो जिन लोगों तक यह खबर पहुँची, उनमें से जो कोई कुछ लेगा, वह उसका मालिक बन जाएगा। ऐसा ही 'मुन्तका' में है। इसका ज़ाहिरी अर्थ यह है कि जिसने लिया और वाहिब (दाता) की बात उस तक नहीं पहुँची, वह चीज़ उसकी नहीं होगी, जैसा कि पोशीदा नहीं है। मैं कहता हूँ: इसी के समान वह है जो 'हिन्दिया' में 'खुलासा' से मन्कूला है: एक आदमी ने अपना चौपाया आज़ाद छोड़ दिया, फिर एक इंसान ने उसकी इस्लाह कर ली (ठीक कर दिया); फिर उसका मालिक आया और उसने इकरार किया और कहा, "मैंने उसे आज़ाद छोड़ते वक्त कहा था, जो इसे पकड़ेगा, यह उसी का है।" या उसने इनकार किया, तो उसके खिलाफ सबूत पेश किया गया, या उससे कसम ली गई और उसने इनकार कर दिया; तो वह पकड़ने वाले का है, चाहे वह मौजूद था और उसने यह बात सुनी थी या वह ग़ायब था। [उर्दू अनुवाद]: और इसी तरह अगर किसी ने कहा कि "मैंने अपने पेड़ों के फलों की तमाम लोगों को इजाज़त दी कि जो जितना ले ले वह उसी का है," लोगों को इसकी खबर पहुँची तो उसमें से जो जितना लेगा वह उसका मालिक हो

जाएगा जैसा कि 'मुन्तका' में है। इससे ज़ाहिर यह है कि जिसे वाहिब के इस कहने की खबर न पहुँची और उसने जो कुछ लिया, वह उसका मालिक न होगा जैसा कि मख़्फ़ी (गुप्त) नहीं है। मैं कहता हूँ इसी की मिसाल वह है जो 'हिन्दिया' में 'खुलासा' से मन्कूल है कि किसी शख्स ने अपना चौपाया आज़ाद छोड़ दिया फिर किसी ने उसे पकड़ कर उसकी इस्लाह कर ली यानी उसे काम के लायक़ बना लिया। अब मालिक आया और उसने इकरार किया कि "मैंने उसे छोड़ते वक्त यह कह दिया था कि जो भी उसे पकड़ लेगा यह उसी का होगा," या उसने...

[1] अल-बहरुर राइक, किताबुल हिबा, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 7 / 284

قصد التبرع مع بقاء الواجب بل الظاہر انہم یریدون الاحتساب علیہن من انصابہن۔ ہوتے ہوئے قصد تبرع کیسے ظاہر ہوگا بلکہ ظاہر تو یہاں یہ ہے کہ وہ بہنوں کے حصوں سے مجرا کا ارادہ کرتے ہیں (ت)

اسی طرح اگر بکر نے دل میں نیت ہبہ کی مگر دلہن نے ہبہ جان کر قبضہ نہ کیا بلکہ مثلاً اپنے حصہ کا معاوضہ یا حصے میں مجرائی سمجھ کر لیا تو بھی بعینہ یہی احکام ہوں گے کہ اس صورت میں دلہن کی طرف سے قبول ہبہ نہ پایا گیا،

فان القبول فرع العلم وھی اذا لم تحسبہ ہبۃ کیف یتصور انہا قبلت الہبۃ۔ اس لئے کہ قبول علم کی فرع ہے تو جب اس نے اسے ہبہ جانا ہی نہیں تو یہ کیسے متصور ہے کہ اس نے ہبہ قبول کیا۔ (ت)

بحرالرائق میں ہے :

وکذا بقولہ اذنت للناس جمیعاً فی ثمر نخلی من اخذ شیئاً فہو لہ فبلغ الناس من اخذ شیئاً یملکہ کذا فی المنتقی وظاہرہ ان من اخذ ولم یبلغہ مقالۃ الواہب لایکون لہ کما لایخفی اہ اقول: ومثلہ ما فی الہندیۃ عن الخلاصۃ رجل سیب دابتہ فاصلحہا انسان ثم جاء صاحبہا واقر وقال قلت حین خلیت سبیلہا من اخذہا فہی لہ او انکر فاقیمت علیہ البینۃ او استحلف فنکل فہی للآخذ سواء کان حاضراً سمع ہذہ المقالہ او غائب

اور اسی طرح اگر کسی نے کہا کہ میں نے اپنے درختوں کے پھلوں کی تمام لوگوں کو اجازت دی کہ جو جتنا لے لے وہ اُسی کا ہے، لوگوں کو اس کی خبر پہنچی تو اس میں سے جو جتنا لے گا وہ اس کا مالک ہو جائے گا جیسا کہ منتقی میں ہے۔ اس سے ظاہر یہ ہے کہ جس کے واہب کے اس

کہنے کی خبر نہ پہنچی اس نے جو کچھ لیا وہ اس کا مالک نہ ہو گا جیسا کہ مخفی نہیں، میں کہتا ہوں اسی کی مثل ہے وہ جو ہندیہ میں خلاصہ سے منقول ہے کہ کسی شخص نے اپنا چوپایہ آزاد چھوڑ دیا پھر کسی نے اس کو پکڑ کر اس کی اصلاح کر لی یعنی اس کو کام کے لائق بنا لیا اب مالک آیا اور اس نے اقرار کیا کہ میں نے اس کو چھوڑتے وقت یہ کہہ دیا تھا کہ جو بھی اس کو پکڑلے گا یہ اسی کا ہو گا' یا اس نے

[1] البحر الرائق کتاب الھبۃ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۷ / ۲۸۴

[Arabic Text Section] “The news reached him” [1] and its reason is evident, for when he becomes aware of the donor's statement, the taking becomes by way of receiving a gift, and the act of possession stands in place of acceptance. This is unlike when he is unaware of it, as in that case, acceptance is definitely not realized. Acceptance is definitively the pivot for the establishment of ownership for the recipient, whether it is considered a pillar (rukn), as stated in Al-Tuhfah, Al-Walwajiyyah, Al-Kafi, Al-Kifayah, Al-Tabyin, Al-Bahr, Majma' al-Anhur, Al-Durr al-Mukhtar, Abu al-Sa'ud, and other major books, which is also apparent from Al-Hidayah, Multaqa al-Abhur, and other glorious works; or whether it is considered a condition (shart), as stated in Al-Mabsut, Al-Muhit, Al-Hindiyyah, etc. Al-Bada'i clarifies that this is based on 'istihsan' (juridical preference), and the former is the view of Imam Zufar. In any case, both views agree that ownership is not established in a gift without acceptance. This is also stated in Al-Khaniyyah etc. By the grace of Allah Almighty, we have researched this issue in the margins of Radd al-Muhtar such that no further addition is possible.

[Urdu Commentary Section] He denied it, and witnesses were established that he had said such a thing, or an oath was demanded from him and he refused to take the oath. In all these cases, the animal will belong to the person who caught it, whether he was present and heard this statement with his own ears, or he was absent and this news reached him (end of quote). Its reason is clear: when he becomes aware of the donor's statement, then possession will stand in place of acceptance. Contrary to this, when he is unaware of the donor's statement, acceptance will definitely not be realized, and that very acceptance is the basis for the establishment of ownership for the recipient; whether that acceptance is considered a pillar (rukn), as stated in Al-Tuhfah, Al-Walwajiyyah, Al-Kafi, Al-Kifayah, Al-Tabyin, Al-Bahr, Majma' al-Anhur, Al-Durr al-Mukhtar, Abu al-Sa'ud, and other major books, and it is also apparent from Al-Hidayah and Multaqa al-Abhur and other such great books; or that acceptance is considered a condition (shart) as stated in Al-Mabsut, Al-Muhit, Al-Hindiyyah, etc. And in Al-Bada'i, it was stated that indeed this is 'istihsan' and this is indeed the primary view of Imam Zufar, and in any case, both are agreed on this that ownership is not established in a gift without acceptance. And in Al-Khaniyyah etc., it has been stated as such. And indeed, we have done such research on this issue in the margins of Radd al-Muhtar that there is no room for further addition. (T)

In this state as well, those things will remain in the ownership of the original owner as before, whether it be Bakr or all the partners, and the previous rulings will return.

Yes, if Bakr's intention of a gift was manifested through speech, action, or reason in any way, because of which...

[Footnote] 1. Fatawa Hindiyyah, Book of Gifts, Chapter Three regarding analysis, Nurani Kutub Khana, Peshawar, 4/382

[अरबी पाठ अनुभाग] "उसे समाचार मिला" [1] और इसका कारण स्पष्ट है, क्योंकि जब उसे दाता के कथन का ज्ञान हो जाता है, तो उसे प्राप्त करना उपहार स्वरूप होता है और कब्ज़ा (कब्ज़) स्वीकृति (क़बूल) के स्थान पर आ जाता है। इसके विपरीत जब उसे दाता के कथन का ज्ञान न हो, तो स्वीकृति निश्चित रूप से सिद्ध नहीं होगी। स्वीकृति ही वह धुरी है जिस पर उपहार प्राप्तकर्ता के लिए स्वामित्व की स्थापना निश्चित रूप से निर्भर करती है, चाहे इसे एक 'रुकन' (स्तंभ) माना जाए जैसा कि अल-तुहफ़ा, अल-वलवाजीयाह, अल-काफी, अल-किफायाह, अल-तब्यीन, अल-बह्र, मजमा अल-अन्बुर, अल-दुर अल-मुख्तार, अबू अल-सऊद और अन्य प्रमुख पुस्तकों में उल्लेख है, और यही अल-हिदायाह, मुल्तकी अल-अबहुर और अन्य गौरवशाली कृतियों से भी स्पष्ट है; या इसे एक शर्त माना जाए जैसा कि अल-मबसूत, अल-मुहीत, अल-हिंदिया आदि में उल्लेख है। अल-बदाए में यह स्पष्ट किया गया है कि यह 'इस्तेहसान' (न्यायिक वरीयता) पर आधारित है और पूर्व वाला इमाम ज़फ़र का विचार है। किसी भी स्थिति में, दोनों विचार इस बात पर सहमत हैं कि बिना स्वीकृति के उपहार में स्वामित्व स्थापित नहीं होता है। अल-खानिया आदि में भी यही उल्लेख है। अल्लाह सर्वशक्तिमान की कृपा से, हमने रद अल-मुह्तार के हाशिये पर इस मुद्दे पर ऐसी शोध की है कि आगे किसी और वृद्धि की गुंजाइश नहीं है।

[उर्दू व्याख्या अनुभाग] उसने इनकार कर दिया, और गवाह स्थापित हो गए कि उसने ऐसा कहा था, या उससे शपथ माँगी गई और उसने शपथ लेने से इनकार कर दिया। इन सभी स्थितियों में, वह चौपाया उस पकड़ने वाले व्यक्ति का होगा, चाहे वह स्वयं उपस्थित होकर अपने कानों से इसकी बात सुनी हो, या वह अनुपस्थित था और उस तक यह खबर पहुँची (यहाँ तक उद्धरण समाप्त)। इसका कारण स्पष्ट है कि जब उसे दाता के इस कथन का ज्ञान हो गया, तो कब्ज़ा स्वीकृति के स्थान पर होगा। इसके विपरीत जब उसे दाता के कथन का ज्ञान न हो, तो निश्चित रूप से स्वीकृति सिद्ध नहीं होगी, और वह स्वीकृति ही उपहार प्राप्तकर्ता के लिए स्वामित्व की स्थापना का आधार है; चाहे उस स्वीकृति को 'रुकन' माना जाए, जैसा कि अल-तुहफ़ा, अल-वलवाजीयाह, अल-काफी, अल-किफायाह, अल-तब्यीन, अल-बह्र, मजमा अल-अन्बुर, अल-दुर अल-मुख्तार, अबू अल-सऊद आदि बड़ी पुस्तकों में उल्लेख है, और यही अल-हिदायाह और मुल्तकी अल-अबहुर जैसी महान पुस्तकों से भी स्पष्ट है; या उस स्वीकृति को शर्त माना जाए जैसा कि अल-मबसूत, अल-मुहीत, अल-हिंदिया आदि में उल्लेख है। और अल-बदाए में स्पष्ट किया गया कि वास्तव में यह 'इस्तेहसान' है और यह

वास्तव में इमाम ज़फ़र का पहला विचार है, और किसी भी स्थिति में, दोनों इस पर सहमत हैं कि बिना स्वीकृति के उपहार में स्वामित्व सिद्ध नहीं होता है। और अल-खानिया आदि में भी यही उल्लेख किया गया है। और हमने रद अल-मुह्तार के हाशिये पर इस समस्या पर ऐसा शोध किया है जिसमें आगे किसी वृद्धि की गुंजाइश नहीं है। (त)

ऐसी स्थिति में भी, वे चीज़ें पहले की तरह मूल स्वामी के स्वामित्व में बनी रहेंगी, चाहे वह बक्र हो या सभी साझेदार, और पुराने नियम फिर से लागू होंगे। हाँ, यदि बक्र का उपहार देने का इरादा शब्दों, कार्यों या किसी भी तर्क से किसी भी तरह प्रकट हुआ, जिसके कारण...

[पाद टिप्पणी] 1. फतावा हिंदिया, किताबुल हिबा, तीसरा अध्याय विश्लेषण के बारे में, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 4/382

पृष्ठ 223/688

فبلغه الخبر^1 ووجهه ظاهر فانه اذا علم بمقالة الواهب فيكون الاخذ على جهة الالتهاب ويقوم القبض مقام القبول بخلاف ما اذا لم يعلم فانه يتحقق القبول قطعاً وهو مدار ثبوت الملك للموهوب له قطعاً سواء جعل ركناً كما نص عليه في التحفة ولو الجية والكافى والكفاية والتبيين والبحر ومجمع الانهر والدر المختار وابى السعود وغيرها من كتب الكبار وهو ظاهر الهداية وملتقى الابحر وغيرها من الاسفار الغر او شرطاً كما نص عليه في المبسوط والمحيط والهندية وغيرها وافاد في البدائع انه الاستحسان وان الاول قول زفر و على كل فاتفق القولان على انه لا تملك فيها بدون القبول وهو الذى نص عليه في الخانية وغيرها وقد حققنا المسئلة بتوفيق الله تعالى على هامش رد المحتار بما لا مزيد عليه۔

انکار کیا اور گواہ قائم ہو گئے کہ اس نے ایسا کہا تھا یا اس سے حلف کا مطالبہ کیا گیا تو وہ حلف سے انکار کر گیا، ان تمام صورتوں میں ہو چوپایہ اس پکڑنے والے شخص کا ہوگا چاہے تو خود حاضر ہو کر اُس نے اپنے کانوں سے اس کی یہ بات سُنی ہو یا وہ غائب تھا اور اس تک یہ خبر پہنچی ہو اھ اور وجہ اس کی ظاہر ہے کہ جب اس کو واہب کے اس قول کا علم ہو گیا تو قبضہ قبول کے قائم مقام ہوگا۔ بخلاف اس کے جب اس کو واہب کے قول کا علم نہ ہو تو قطعاً قبول متحقق نہ ہوگا اور وہ قبول ہی موہوب لہ ، کے لئے ثبوتِ ملک کا مدار ہے چاہے اس قبول کو رکن قرار دیا جائے، جیسا کہ اس پر تحفہ، والوجیہ، کافی، کافیہ، تبیین، بحر، مجمع الانہر، درمختار اور ابو السعود وغیرہ کتب کبیرہ میں نص کی گئی اور ہدایہ اور ملتقٰی الابحر وغیرہ جلیل القدر کتابوں سے بھی یہی ظاہر ہے، یا اس قبول کو شرط قرار دیا جائے جیسا کہ اس پر مبسوط، محیط اور ہندیہ وغیرہ میں نص کی گئی اور بدائع میں افادہ فرمایا کہ بے شک یہ استحسان ہے اور یہ بے شک اول

قول زفر ہے اور بہر صورت دونوں اس پر متفق ہیں کہ بغیر قبول کے ہبہ میں ملکیت ثابت نہیں ہوتی، اور خانیہ وغیرہ میں اسی پر نص فرمائی گئی اور البتہ ہم نے اس مسئلہ کی حاشیہ ردالمحتار میں ایسی تحقیق کر دی ہے جس پر اضافہ کی گنجائش نہیں۔ (ت)

تو اس حالت میں بھی وہ اشیاء بدستور ملکِ اصل مالک پر رہیں گی خواہ بکر ہو یا سب شرکاء اور احکامِ سابقہ عود کریں گے، ہاں اگر بکر کا ارادہ ہبہ قولاً یا فعلاً یا درایۃً کسی طرح ظاہر ہوا جس کے سبب

$1$۸$ فتاوٰی ہندیہ باب الہبۃ الباب الثالث فیما یتعلق بالتحلیل نورانی کتب خانہ پشاور ۴/ ۳۸۲

If the bride decided thinking it was a gift (Hiba), then indeed offer (ijab) and acceptance (qubul) are established.

Because taking possession for the sake of receiving a gift is considered acceptance, even if it is deficient, like the gift of a joint property that can be divided, because in indicating consent, everything is equal as is not hidden. (Trans.)

For indeed taking possession for the sake of receiving a gift is acceptance, even if it is incomplete, as in undivided property which is divisible, because all parts are equal in indicating consent, as is not hidden.

In 'Al-Wajih' it is written:

| Possession in the context of gifts (Hiba) is equivalent to an essential pillar, so it becomes like acceptance. (Trans.) | Possession in the chapter of gift acts in place of the pillar, so it became like acceptance. |

Therefore, if Bakr bought items and gave them as a dowry, even if they were bought from joint property, the bride becomes their independent owner. Bakr is liable for the shares of other heirs in that joint property due to this unauthorized purchase, including even the bride's own share who received the dowry.

| For even though the consideration reached her, the purchase was executed on Bakr, so ownership was established for him and the liability was completed. Then giving it to the bride is a separate gift from Bakr's own property, so the liability for the bride's portion is not waived by it. (Trans.) | For the compensation, even if it reached her, yet the purchase was executed against Bakr, so ownership occurred for him and the guarantee was completed, then the giving to the bride is a separate gift from his own property, so the guarantee for the bride's portion is not removed by it. |

And whatever was gifted from the actual estate, the gift is not valid regarding the rights of the remaining heirs, *idha minhum wala wilayah 'alayhim* (because there is no permission from them, nor does he have guardianship over them. Trans.). Thus, their shares remain guaranteed in the hands of the bride in all circumstances, and the ruling on liability is that they have the choice to hold Bakr or the bride liable. Whichever they choose, for the other part of the dowry which was divisible property, meaning it should be divided, then the same benefit can be derived from it as was

obtained before division, since it was a gift in Bakr's portion as well, *li-annaha hibatun fima yuqsamu* (because this is a gift of divisible joint property. Trans.). In this case, the mentioned property will remain as a joint partnership of all heirs as before, and whatever is destroyed in the hands of the bride in any way, the liability for Bakr's share will fall specifically on Bakr. In Fatawa Khayriyya it is written:

[1] Al-Wajih Page 224 of 688

अगर दुल्हन ने इसे हिबा (उपहार) ही समझकर फ़ैसला किया तो निश्चित रूप से ईजाब (प्रस्ताव) और कुबूल (स्वीकृति) दोनों सिद्ध हो गए।

क्योंकि हिबा के उद्देश्य से कब्ज़ा करना कुबूल है चाहे वह अपूर्ण हो, जैसे उस मुशाअ (संयुक्त संपत्ति) का हिबा जिसे बाँटा जा सकता है, क्योंकि रज़ामंदी दर्शाने में सब बराबर हैं जैसा कि स्पष्ट है। (अनु.)

क्योंकि वास्तव में उपहार लेने के लिए कब्ज़ा करना स्वीकृति है, भले ही वह अधूरा हो, जैसा कि अविभाज्य संपत्ति में जो विभाज्य है, क्योंकि सहमति दर्शाने में सभी बराबर हैं, जैसा कि छुपा नहीं है।

'अल-वजीह' में है:

| हिबा के अध्याय में कब्ज़ा रुकन (प्रमुख अंग) के स्थान पर है, अतः वह कुबूल की तरह हो गया। (अनु.) | हिबा (उपहार) के अध्याय में कब्ज़ा रुकन के स्थान पर जारी है, अतः यह स्वीकृति के समान हो गया। |

अतः बक्र ने जो चीजें खरीदकर दहेज में दीं, चाहे वे साझा धन से खरीदी गई हों, दुल्हन उनकी स्वतंत्र स्वामी बन गई और बक्र पर उस साझा धन में अन्य वारिसों के हिस्सों का हर्जाना आया जिनके अनुमति के बिना यह खरीद हुई, यहाँ तक कि स्वयं उस दुल्हन के हिस्से का भी जिसने दहेज पाया।

| क्योंकि हालांकि बदल (प्रतिफल) दुल्हन तक पहुँच गया, लेकिन खरीद बक्र पर लागू हुई, इसलिए उसके लिए स्वामित्व सिद्ध हुआ और ज़मानत (दायित्व) पूर्ण हुई। फिर दुल्हन को देना बक्र की अपनी संपत्ति से एक अलग हिबा हुआ, तो इससे दुल्हन के हिस्से की ज़मानत खत्म नहीं होगी। (अनु.) | क्योंकि प्रतिफल, भले ही वह उस तक पहुँच गया, लेकिन खरीद बक्र के विरुद्ध निष्पादित हुई, इसलिए उसके लिए स्वामित्व प्राप्त हुआ और गारंटी पूर्ण हुई, फिर दुल्हन को देना उसकी अपनी संपत्ति से एक अलग उपहार है, इसलिए दुल्हन के हिस्से की गारंटी इससे समाप्त नहीं होती है। |

और जो कुछ मूल विरासत से हिबा किया, तो वह हिबा शेष वारिसों के हक में प्रभावी नहीं हुआ 'इज़ा मिन्हुम वला विलायत अलैहिम' (क्योंकि न तो उनकी ओर से अनुमति है और न ही उस पर उनका अधिकार है। अनु.)। तो उनके हिस्से हर हाल में दुल्हन के हाथ में ज़मानत में रहेंगे और ज़मानत का वही नियम है कि उन्हें अधिकार है चाहें तो बक्र पर डालें या दुल्हन पर। जिस पर डालें, दहेज के

दूसरे हिस्से के लिए जो बाँटने योग्य संपत्ति थी, यानी उसके हिस्से किए जाएँ, तो उससे वही लाभ मिल सकेगा जो बँटवारे से पहले मिलता था जब वह बक्र के हिस्से में भी हिबा हुआ 'लि-अन्नहा हिबतुन फ़ीमा युक़समु' (क्योंकि यह बाँटने योग्य मुशाअ का हिबा है। अनु.)। इस स्थिति में उल्लेखित संपत्ति पहले की तरह सभी वारिसों की साझेदारी में रहेगी और जो कुछ दुल्हन के हाथ में किसी तरह नष्ट होगा, उसमें बक्र के हिस्से का हर्जाना विशेष रूप से बक्र पर पड़ेगा। फ़तावा खैरिया में है:

[1] अल-वजीह पेज 224 / 688

دلہن نے اسے ہبہ ہی سمجھ کر فیصلہ کیا تو البتہ ایجاب و قبول دونوں متحقق ہوگئے،

فان القبض لوجه الاتہاب قبول وان ناقصا کما فی مشاع یقسم لاستواء الکل فی الدلالة علی الرضا کما لایخفی۔

اس لئے کہ ہبہ سمجھ کر قبضہ کرنا قبول ہے اگرچہ ناقص ہو جیسے محتمل قسمت مشاع کا ہبہ کیونکہ رضا پر دلالت کرنے میں تمام برابر ہے جیسا کہ مخفی نہیں۔ (ت)

ولوجیہ میں ہے :

| القبض فی باب الهبة جار مجری الرکن فصار کالقبول | ہبہ کے باب میں قبضہ رکن کے قائم مقام ہے لہذا وہ قبول کی طرح ہوگیا۔(ت) |

پس اشیاء بکر نے خرید کر جہیز میں دیں اگرچہ مال مشترک سے خریدی ہوں دلہن اُن کی مالک مستقل ہوگئی اور بکر پر اس مال مشترک میں اور ورثہ کے حصص کا تاوان آیا جن کے بے اذن یہ شراء واقع ہوا یہاں تک کہ خود اس دلہن کے حصے کا بھی جس نے جہیز پایا،

| فان البدل وان الیها وصل لکن الشراء نفذ علی بکر فوقع الملك له وتم الضمان ثم العطاء للعروس هبة علیحدة من مال نفسه فلایرتفع به ضمان قسط العروس۔ | اس لئے کہ بدل اگرچہ دلہن تک پہنچ گیا لیکن شراء بکر پر نافذ ہوئی لہذا اس کے لئے ملک ثابت ہوئی اور ضمان تام ہوا پھر بکر کا دلہن کو عطا کرنا یہ بکر کے اپنے مال سے علیحدہ ہبہ ہوا تو اس سے دلہن کے حصے کا ضمان ساقط نہیں ہوگا۔(ت) |

اور جو کچھ عین ترکہ سے ہبہ کیں تو ہبہ باقی ورثہ کے حق میں نافذ نہ ہوا اذا منہم ولا ولایۃ علیہم (اس لئے کہ نہ تو ان کی طرف سے اذن ہے اور نہ ہی اس کی ان پر ولایت ہے۔ت) تو ان کے حصے تو ہر حال دلہن کے ہاتھ میں مضمون رہے اور ضمان کا وہی حکم کہ انہیں اختیار ہے چاہیں بکر پر ڈالیں یا دلہن پر، جس پر ڈالیں دوسرے حصہ جہیز جس مالِ قابلِ تقسیم تھا یعنی اس کے حصے کیجئے تو وہی انتفاع اس سے مل سکے جو قبل از تقسیم ہے ملتا تھا جب تو بکر کے حصے میں بھی ہبہ ہوا لانہا ھبۃ فیما یقسم (کیونکہ یہ محتمل قسمت مشاع کا ہبہ ہے۔ت) اس صورت میں مال مذکور بدستور شرکت جمیع ورثاء پر رہے گا اور جو کچھ دلہن کے ہاتھ میں کسی طرح ہلاک ہوگا اس میں حصہ بکر کا تاوان خاص بکر پر پڑے گا۔ فتاوٰی خیریہ میں ہے :

1 والوجیہ Page 224 of 688

Fatawa Razawiya, Volume 12

“A gift of shared property that is capable of division is not valid according to the manifest narration (Zahir al-Riwayah), nor does it confer ownership. Imam Al-Zayla'i stated that if one gives a shared, undivided item as a gift, the recipient will not become the owner, and he will be liable for it (if lost or damaged). The full details of this are in the aforementioned two books and in Radd al-Muhtar.” (T)

Similarly, if the property is indivisible but it is unknown what the extent of Bakr's share is, the gift will still not be valid, and after its destruction, the same ruling applies: the compensation for Bakr's loss will be on the donor. It is stated in Al-Bahr al-Ra'iq:

“The condition for the validity of a gift of shared property that cannot be divided is that the amount must be known, to the extent that if one gifted their share of a slave to someone without stating the amount, it would not be permissible.” (T)

In 'Al-Muhit' by Imam al-Sarakhsi, it is stated:

“And if the recipient knows the donor's share, it should be permissible according to Imam Azam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him).” Both of these were cited in Fatawa al-Hindiyya. (T)

In 'Jami' al-Fusulayn' from Fatawa Imam Fadli, it is stated:

“If the gifted item is destroyed, I would issue a fatwa for the donor to have recourse in the case of an invalid gift (hibah fasidah) given to a close relative (dhi rahm mahram), because liability is mandatory for an invalid gift as previously mentioned.” (T)

---

1. Fatawa Khayriyyah, Kitab al-Hibah, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/112.
2. Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Hibah, H.M. Saeed Company, Karachi, 7/286.
3. Fatawa al-Hindiyya, with reference to Al-Muhit al-Sarakhsi, Chapter 2 regarding what is permissible as a gift, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 4/378.
4. Jami' al-Fusulayn, Chapter 30 regarding invalid transactions, Islami Kutub Khana, Karachi, 2/75.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

“एक साझा संपत्ति का उपहार जो विभाजन के योग्य है, स्पष्ट वर्णन (ज़ाहिर अल-रिवायत) के अनुसार मान्य नहीं है, और न ही यह स्वामित्व प्रदान करता है। इमाम ज़ैलई ने कहा कि यदि कोई व्यक्ति किसी को उपहार के रूप में एक साझा, अविभाजित वस्तु देता है, तो प्राप्तकर्ता मालिक नहीं बनेगा, और वह इसके लिए उत्तरदायी होगा (यदि यह नष्ट हो जाती है)। इसका पूरा विवरण उपरोक्त दोनों पुस्तकों और रद अल-मुहतार में है।” (त)

इसी तरह, यदि संपत्ति अविभाज्य है लेकिन मन को पता नहीं है कि उसमें बक्र का कितना हिस्सा है, तो भी उपहार मान्य नहीं होगा, और इसके नष्ट होने के बाद वही नियम लागू होता है कि बक्र के नुकसान का मुआवज़ा दाता पर होगा। अल-बहर अल-रईक़ में कहा गया है:

“साझा संपत्ति के उपहार की वैधता के लिए शर्त जिसे विभाजित नहीं किया जा सकता है, यह है कि राशि ज्ञात होनी चाहिए, इस हद तक कि यदि किसी ने राशि बताए बिना किसी को गुलाम में अपना हिस्सा उपहार में दिया, तो यह स्वीकार्य नहीं होगा।” (त)

इमाम अल-सरखसी द्वारा 'अल-मुहित' में कहा गया है:

“और यदि प्राप्तकर्ता को दाता के हिस्से का पता है, तो इमाम आज़म अबू हनीफ़ा (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के अनुसार यह उपहार स्वीकार्य होना चाहिए।” इन दोनों को फ़तावा अल-हिंदिया में उद्धृत किया गया था। (त)

'जामी अल-फुसुलैन' में फ़तावा इमाम फ़दली से कहा गया है:

“यदि उपहार में दी गई वस्तु नष्ट हो जाती है, तो मैं एक करीबी रिश्तेदार (ज़ी रहम महरम) को दिए गए अवैध उपहार (हिबाह फ़ासिदा) के दाता के लिए सहारा लेने के लिए फतवा जारी करूँगा, क्योंकि अवैध उपहार के लिए दायित्व अनिवार्य है जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है।” (त)

---

1. फ़तावा खैरिया, किताब अल-हिबा, दार अल-मारिफा, बेरूत, 1/112
2. अल-बहर अल-रईक़, किताब अल-हिबा, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 7/286
3. फ़तावा अल-हिंदिया, अल-मुहित अल-सरखसी के हवाले से, बाब 2 हिबा के संबंध में जो जायज़ है, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 4/378

4. जामी अल-फुसुलैन, बाब 30 अवैध लेन-देन के संबंध में, इस्लामी कुतुब खाना, कराची, 2/75 पृष्ठ 688 में से 225

لاتصح هبة المشاع الذی یحتمل القسمة ولایفید الملك في ظاهر الروایة قال الزیلعي ولو سلمه شائعا لایملکه فیکون مضمونا علیه اھ ملخصا وتمامه فیهما وفی ردالمحتار۔ محتمل قسمت مشاع کا ہبہ ظاہر الروایہ کے مطابق صحیح نہیں، اور نہ ہی مفید ملک ہے۔ امام زیلعی نے فرمایا کہ اگر کوئی شخص کسی کو مشترک غیر منقسم شئی بطور ہبہ دے دے تو موہوب لہ، اس کا مالک نہیں ہوگا اور اس پر ضمان آئے گا، اس کی پوری تفصیل مذکورہ بالا دونوں کتابوں اور ردالمحتار میں ہے۔ (ت)

اسی طرح اگر مال ناقابلِ تقسیم ہو مگر ذہن نہ جانے کہ اس میں بکر کا حصہ کس قدر ہے جب بھی ہبہ صحیح نہ ہوگا اور بعد ہلاک وہی حکم ہے کہ بکر کا تاوان و ہن پر آئے گا۔ بحرالرائق میں ہے :

یشترط في صحة هبته المشاع الذی لایحتملها ان یکون قدرا معلوما حتی لو وهب نصیبه من عبد ولم یعلمه به لم یجز۔ غیر محتمل قسمت مشاع کے ہبہ کے صحیح ہونے کی شرط یہ ہے کہ مقدار معلوم ہو یہاں تک کہ اگر غلام سے اپنا حصہ کسی کو ہبہ کیا اور مقدار نہ بتائی تو جائز نہ ہوا۔ (ت)

محیط امام سرخسی میں ہے : واذا علم الموهوب له نصیب الواهب ینبغی ان تجوز عند ابی حنیفة رحمه الله تعالی نقلها فی الفتاوی الهندیة۔ اگر موہوب لہ کو واہب کا حصہ معلوم ہے تو امام اعظم ابوحنیفہ رضی اللہ تعالٰی عنہ کے نزدیک یہ ہبہ جائز ہونا چاہئے۔ ان دونوں کو فتاوٰی ہندیہ میں نقل فرمایا۔ (ت)

جامع الفصولین میں فتاوٰی امام فضلی سے ہے : اذا هلکت افتیت بالرجوع للواهب هبة فاسدة لذی رحم محرم منه اذا الفاسدة مضمونة علی مامر۔ اگر شیئ موہوب ہلاک ہو جائے تو میں اس واہب کیلئے

رجوع کا فتوٰی دوں گا جس نے اپنے ذی رحم محرم کو بطور ہبہ فاسدہ کچھ دیا کیونکہ ہبہ فاسدہ پر ضمان لازم آتا ہے جیسا کہ گزر گیا (ت)

---

1 فتاوٰی خیر یہ کتاب الہبہ دارالمعرفۃ بیروت ۱/ ۱۱۲ 2 بحر الرائق کتاب الہبہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۷/ ۲۸۶ 3 فتاوٰی ہندیہ بحوالہ محیط السرخسی الباب الثانی فیما یجوز من الہبۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۴/ ۳۷۸ 4 جامع الفصولین الفصل الثلاثون فی التصرفات الفاسدہ اسلامی کتب خانہ کراچی ۲/ ۷۵

And if the bride knew, then the gift in that amount became valid, effective, complete, and binding. In those items, the bride became the owner of the shares belonging to herself and Bakr. The shares of the remaining heirs are still in the bride's possession under the ruling of liability, the ruling for which has been mentioned many times. In all cases, regarding joint items that are destroyed while in the bride's possession, the bride cannot claim compensation for her share from anyone because her property was destroyed in her own hands, and Bakr committed no transgression regarding her share.

Arabic Text	**Urdu Translation**
For he only delivered the property to the hand of the owner, so what was destroyed in her hand is upon her.	Because indeed he handed over the owned object to the one who became the owner. So, what was destroyed in the bride's possession, was destroyed under her own liability.
All this from beginning to end is what has been poured into the heart of the poor one (the author) from the grace of the Almighty	All this, from beginning to end, was placed into the heart of the poor one (the author) by the grace of the Almighty Lord, whose majesty is great
and I have taken it with understanding from the words of the scholars—	from the noble sayings of the exalted scholars. I have derived it as a matter of jurisprudence
may Allah increase their rewards on the Day of Recompense. So, whatever I have said correctly is from	and thus, what I have stated correctly is from
Allah Almighty, and to Him belongs praise for it. And whatever mistake I have made is from	Allah Almighty; praise belongs to Him for it. And where I have erred,
the deficiency of my own self, and I turn to Him in repentance. Master these points with great precision,	it is my own fault; I turn towards Allah Almighty. May He grant great strength to these discussions,
for these issues are of great necessity. So, treasure this beautiful detail,	for these are the matters for which there is a frequent need. Therefore, consider this excellent detail as a boon and
	praise Allah Almighty for His grand grace.

Arabic Text	Urdu Translation
and praise be to Allah for His grand grace.	
And Allah, Glorified and Exalted, knows best.	And Allah, Glorified and Exalted, knows best. (T)

और अगर दुल्हन को मालूम था तो उस मात्रा में हिबा (दान) सही, प्रभावी, पूर्ण और अनिवार्य हो गया। उन वस्तुओं में दुल्हन अपने और बक्र दोनों के हिस्सों की मालकिन हो गई। बाकी वारिसों के हिस्से अभी भी दुल्हन के पास ज़मानत (देयता) के हुक्म में हैं, जिनका हुक्म कई बार गुज़र चुका है। सभी स्थितियों में, दुल्हन के हाथ में नष्ट हुई संयुक्त चीज़ों में, दुल्हन अपने हिस्से का मुआवज़ा किसी से नहीं ले सकती क्योंकि उसका माल उसी के हाथ में नष्ट हुआ और बक्र ने उसके हिस्से पर कोई ज़्यादती नहीं की।

अरबी पाठ का अनुवाद	**उर्दू पाठ का अनुवाद**
क्योंकि उसने संपत्ति केवल उसके स्वामी के हाथ में सौंपी थी, इसलिए जो उसके हाथ में नष्ट हुआ वह उसी पर है।	क्योंकि उसने वास्तव में स्वामित्व वाली वस्तु को उसे सौंप दिया जो उसका स्वामी बन गया। अतः जो दुल्हन के कब्ज़े में नष्ट हुआ, वह उसकी अपनी ज़मानत (देयता) में नष्ट हुआ।
यह सब आदि से अंत तक वह है जो सर्वशक्तिमान की कृपा से इस फ़कीर के हृदय में प्रवाहित किया गया है,	यह सब प्रारंभ से अंत तक सर्वशक्तिमान रब की कृपा से फ़कीर के दिल में डाला गया
और मैंने इसे विद्वानों के कथनों से समझदारी के साथ ग्रहण किया है—	और मैंने इसे फिक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) के रूप में प्रतिष्ठित विद्वानों के महान कथनों से ग्रहण किया है।
अल्लाह प्रतिफल के दिन उनके प्रतिफल को बढ़ाए। तो जो कुछ मैंने सही कहा है वह	तो जो मैंने सही कहा है वह
अल्लाह तआला की ओर से है और उस पर उसी की प्रशंसा है। और जो मुझसे गलती हुई है वह	अल्लाह तआला की ओर से है, उस पर उसी के लिए प्रशंसा है। और जिसमें मुझसे चूक हुई
मेरे अपने नफ़्स की कमी से है और मैं उसकी ओर तौबा करता हूँ। इन विषयों को बहुत मज़बूती से याद रखें,	तो वह मेरा अपना कसूर है, मैं अल्लाह तआला की ओर रुजू करता हूँ। वह इन बहसों को ज़बरदस्त मज़बूती प्रदान करे

अरबी पाठ का अनुवाद

क्योंकि ये वे मसले हैं जिनकी बहुत अधिक आवश्यकता पड़ती है। अतः इस सुंदर विवरण को गनीमत समझें और

अल्लाह तआला की भव्य कृपा पर उसकी प्रशंसा करें।

और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है।

पृष्ठ 226 / 688

उर्दू पाठ का अनुवाद

क्योंकि ये वे मसले हैं जिनकी अक्सर ज़रूरत पेश आती है। अतः इस उत्कृष्ट विस्तार को गनीमत समझो और

अल्लाह तआला की अज़ीम (महान) कृपा पर उसी की हम्द (प्रशंसा) है।

और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है। (त)

اور اگر دُلہن کو معلوم تھا تو اس قدر میں ہبہ صحیح و نافذ و تمام ولازم ہوگیا اور ان اشیاء میں دُلہن اپنے اور بکر دونوں کے حصوں کی مالک ہوگئی باقی ورثہ کے حصے بدستور و دستِ عروس میں حکمِ ضمان پر ہیں جن کا حکم بارہا گزرا اور اوّل سے آخر تک سب صورتوں میں جو مشترک چیزیں دُلہن کے ہاتھ میں تلف ہوئی ان میں دُلہن اپنے حصہ کا تاوان کسی سے نہیں لے سکتی کہ اُس کا مال اُسی کے ہاتھ میں ہلاک ہوا اور بکر نے اس کے حصے پر کوئی تعدی نہ کی،

عربی متن	اردو متن
فانہ انما سلم الملك لید من ملك فماهلك فی یدها فعلیها هلك هذا کلہ من اولہ الیٰ آخرہ مما افیض علیٰ قلب الفقیر من فیض القدیر واخذتہ تفقہًا من کلمات العلماء اعظم اللہ اجورہم یوم الجزاء فما اصبت فمن اللہ تعالیٰ ولہ الحمد علیہ وما اخطأت فمن	اس لئے کہ بیشک اس نے مملوک شیئی اس کے سپرد کی جو مالک ہوا تو جو دُلہن کے قبضہ میں ہلاک ہوا وہ اسی کی ضمان میں ہلاک ہوا۔ یہ تمام از اول تا آخر رب قدیر جل مجدہ کے فیض سے فقیر کے دل میں ڈالا گیا اور میں نے اس کو بطورِ فقہ علمائے کرام کے ارشاداتِ عالیہ سے اخذ کیا تو جو میں نے درست کہا وہ اللہ تعالیٰ کی طرف سے ہے اس پر اسی کے لئے حمد ہے اور جس میں مجھ سے خطا ہوئی تو میرا اپنا قصور ہے میں اللہ تعالیٰ کی

عربی متن	اردو متن
قصور نفسی وانا اتوب الیہ اتقن ھذہ اتقانا کبیرا فان المسائل مما تمس الیہ الحاجۃ کثیرا فاغتنم ھذا التفصیل الجمیل والحمد للہ علی فیضہ الجلیل۔ واللہ سبحنہ وتعالیٰ اعلم۔	طرف رجوع کرتا ہوں وہ ان مباحث کو زبردست مضبوطی عطا فرمائے کیونکہ یہ وہ مسائل ہیں جن کی طرف بکثرت حاجت واقع ہوتی ہے پس اس عمدہ تفصیل کو غنیمت جان اور اللہ تعالیٰ کے فیضِ جلیل پر اسی کی حمد ہے۔ واللہ سبحنہ وتعالیٰ اعلم۔ (ت)

Fatawa Razawiyya Volume Twelve

Section Two

Problem 860 to 867: From Baijnathpara, Raipur, Central Provinces, sent by Sheikh Akram Hussain Sahib, Mutawalli (Trustee) of the Mosque and Secretary of Majlis Anjuman Nu'mania, 28 Rabi-ul-Akhir 1312 AH.

In the name of Allah, the Beneficent, the Merciful, praising Him and sending blessings upon His Prophet. (Faiz-un-Nisa Begum, Plaintiff vs. Husamuddin Darogha Jungle, Defendant)

Claim for the return of dowry items of all kinds, including clothes, jewelry, etc., left by the deceased girl. Mst. Faiz-un-Nisa Begum married off her stepdaughter Khadija Bibi to Husamuddin. A year and a half later, the girl died. A son was born from her womb, and at the age of one year and four months after his mother's death, that boy also died. Faiz-un-Nisa Begum claims that all the dowry items, jewelry, etc., which were given as dowry to the late Khadija Bibi at the time of marriage, should be returned. She argues that she is entitled to their return because she spent her own money on the dowry items, and the custom of returning dowry items is prevalent in the region of Madras. Husamuddin's response is that the deceased's jewelry was pawned and spent on her medical treatment by her own order. He states he did not have enough means to bear the burden of such huge expenses during such a prolonged illness. Besides this, a lot of his own personal money was also spent. The son of the deceased was alive at the time of her death; the son became the owner of the mother's property, and after the son's death, I, being the father, am his heir. The stepmother of the deceased has no right. What do the scholars of religion and the jurists of the firm Sharia say regarding the following issues: (1) There is a custom in the region of Madras of taking back the dowry of a deceased girl; state where the ruling stands in Sharia.

Page 227 of 688

फ़तावा रज़विया खंड बारह

दूसरा भाग

मसला 860 से 867: बैजनाथपारा, रायपुर, मध्य प्रांत से, शेख अकरम हुसैन साहब, मस्जिद के मुतवल्ली और मज्लिस अंजुमन नोमानिया के सचिव द्वारा प्रेषित, 28 रबी-उल-आखिर 1312 हिजरी।

बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम, अल्लाह की हम्द और नबी पर दुरूद के साथ। (फ़ैज़-उन-निसा बेगम वादी बनाम हुसामुद्दीन दारोगा जंगल प्रतिवादी)

मृतका लड़की द्वारा छोड़े गए हर प्रकार के कपड़ों, गहनों आदि सहित दहेज के सामान की वापसी का दावा। मुसमात फ़ैज़-उन-निसा बेगम ने अपनी सौतेली बेटी खदीजा बीबी का निकाह हुसामुद्दीन के साथ कराया। डेढ़ साल बाद उस लड़की की मृत्यु हो गई। उसकी कोख से एक लड़का पैदा हुआ था, जिसकी मृत्यु माँ की मृत्यु के एक साल चार महीने बाद हो गई। फ़ैज़-उन-निसा बेगम का दावा है कि निकाह के समय मरहूम खदीजा बीबी को दिया गया सारा दहेज का सामान, गहने आदि वापस मिलना चाहिए। उसका तर्क है कि उसने इन दहेज के सामानों पर अपना पैसा खर्च किया था इसलिए वह उन्हें वापस पाने की हकदार है, और मद्रास क्षेत्र में दहेज का सामान वापस करने का रिवाज है। हुसामुद्दीन का जवाब यह है कि मृतका के गहने उसी के आदेश से उसके इलाज में गिरवी रखकर खर्च किए गए थे। वह कहता है कि मेरे पास इतनी सामर्थ्य नहीं थी कि इतनी लंबी बीमारी में इतने भारी खर्च का बोझ उठा सकूं। इसके अलावा मेरा अपना निजी खर्च भी बहुत हुआ है। मृतका का पुत्र उसकी मृत्यु के समय जीवित था; पुत्र माँ की संपत्ति का मालिक बन गया, और पुत्र की मृत्यु के बाद, पिता होने के नाते मैं उसका उत्तराधिकारी हूँ। मृतका की सौतेली माँ का कोई अधिकार नहीं है। दीन के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती निम्नलिखित मसलों पर क्या फ़रमाते हैं: (1) मद्रास देश में मृत लड़की का दहेज वापस लेने का रिवाज है, बताइये कि शरीयत में इसका क्या हुक्म है।

पृष्ठ 227/688

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

فصل دوم

مسئلہ ۸۶۰ تا ۸۶۷: از بیجناتھ پارا رائے پور ممالک متوسطہ مرسلہ شیخ اکرم حسین صاحب متولی مسجد و دبیر مجلس انجمن نعمانیہ ۲۸ ربیع الآخر ۱۳۱۲ھ

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم حامداً ومصلیاً (فیض النساء بیگم مدعیہ بنام حسام الدین داروغہ جنگل مدعاعلیہ)

دعویٰ واپس پانے سامان جہیز ہر قسم کپڑے و زیورات و غیرہ متروکہ لڑکی متوفیہ مسماۃ فیض النساء بیگم نے اپنی سوتیلی لڑکی خدیجہ بی بی کی شادی حسام الدین کے ساتھ کر دی، ڈیڑھ برس بعد وہ لڑکی مر گئی اور اس کے بطن سے ایک لڑکا پیدا ہوا تھا بعمر ایک سال بعد چار مہینے مرنے ماں کے وہ لڑکا مر گیا، فیض النساء بیگم کا دعویٰ ہے کہ کل سامان جہیز زیور و غیرہ جو وقت شادی خدیجہ بی بی مرحومہ کو جہیز دی تھی واپس ملے اور صرف سامان جہیز و غیرہ میں اپنے پیسے سے کرنے کے سبب میں واپس پانے کی حقدار ہوں سامان جہیز واپس ملنے کا رواج ملک مدراس میں جاری ہے۔ جواب حسام الدین یہ ہے کہ زیورات متوفیہ کے حکم سے اسی کے دوا معالجہ میں رہن رکھ کر خرچ ہوا مجھ کو اس قدر وسعت نہ تھی کہ اس قدر عرصہ دراز کی بیماری میں اس کثیر صرفہ کے بار کا متحمل ہو سکتا اس کے علاوہ اور بھی بہت سا میرا ذاتی خرچ ہوا ہے متوفیہ کا لڑکا متوفیہ کے مرتے وقت زندہ تھا، ماں کے جائداد کا لڑکا مالک ہوا اور بعد مرنے لڑکے کے میں باپ اس کا وارث ہوں، متوفیہ کی سوتیلی ماں کا کوئی حق نہیں ہے۔ علما

دین اور مفتیانِ شرع متین مسائل ذیل میں کیا فرماتے ہیں : (۱) ملک مدراس میں متوفیہ لڑکی کا جہیز واپس لینے کا رواج ہے فرمائیے شرع میں کہاں حکم ہے۔

Fatawa Razawiya Volume 12

(2) What role does the custom of a country play in Sharia? (3) Will the goods given to a girl in her dowry be considered a loan (ariyah) or ownership (tamlik)? (4) In Sharh Wiqayah Volume 3, there is a ruling on the return of a gift (hibah). Is the dowry gift the same type of gift as per the claimant's assertion? (5) Does the claimant have the right to reclaim items given specifically to the defendant, i.e., the son-in-law, at the time of marriage? (6) Does the claimant have a right to reclaim the dowry or items given by the defendant to his wife at the time of marriage or not? (7) Jewellery was pawned and spent during illness by the deceased's order; who is responsible for redeeming it? Explain, and may you be rewarded.

The Answer: Answer to Questions One to Four: The ruling of the pure Sharia is supreme; customs and traditions have no place in it except what Allah decrees. [The command is for none but Allah. - Translation note]. Yes, the pure Sharia, by its own decree, bases some rulings on custom; for example, if a thing becomes commonly known and prevalent, then this ruling applies to it, otherwise not. Just like the endowment of movables (waqf manqool), which is permissible in those movable items where it is customary, otherwise not. Or Istisna' (commissioning manufacture), i.e., paying a fee to have a non-existent item made; it is permissible for those items where there is a custom of having them made, otherwise not. Or a condition of sale, where a condition that would otherwise invalidate the sale becomes acceptable if it is a common custom, otherwise not, and other such matters as they have clarified in the books. [Besides what they have clarified in the book. - Translation note]. Or it could be that the ruling is established in itself and custom only points to its form. For example, a mortgagee's benefit from the mortgaged item is permissible with the mortgagor's permission without any condition, otherwise it is prohibited. Now, if the custom is such that loans are not given without the greed for benefit from the pawned item, as in our times, then an absolute ruling of prohibition will be given, as stated in Al-Shami citing Al-Tahtawi: "And I have issued fatwas on this many times." [As it is in Shami with reference to Tahtawi, and in research, I have given a fatwa on it many times. - Translation note]. Here, custom has shown that it is a conditional situation, not that the loan and mortgage were pure and afterwards the mortgagor voluntarily gave permission to the mortgagee to benefit. In such places, "Al-Ma'roof kal-Mashroot" (What is known by custom is like a stipulated condition) or "Al-Ma'hood 'urfan kal-mashroot lafzan" (What is customary is like a verbally stipulated condition) applies.

(2) शरीयत में देश के रिवाज़ का क्या दखल है? (3) दहेज में जो सामान लड़की को दिया जाता है उसे ऋण (आरियत) समझा जाएगा या स्वामित्व (तमलीक)? (4) शरह वक़ाया जिल्द 3 में उपहार (हिबा) वापस लेने का हुक्म है। क्या दहेज का उपहार उसी प्रकार का उपहार है जैसा कि वादी का दावा है? (5) वादी की ओर से विशेष रूप से प्रतिवादी यानी दामाद को शादी के समय जो चीज़ मिली है, क्या वादी को उसे वापस पाने का अधिकार है? (6) प्रतिवादी ने शादी के समय अपनी पत्नी को जो दहेज या सामान दिया, क्या उस पर भी वादी का वापस लेने का हक है या नहीं? (7) मृतका के आदेश से बीमारी के समय गहने गिरवी रखकर खर्च हुए, उन्हें छुड़ाने का ज़िम्मेदार कौन है? बयान कीजिए और पुण्य कमाइए।

उत्तर: प्रश्न एक से चार का उत्तर: पाक शरीयत का हुक्म सर्वोच्च है; रीति-रिवाजों आदि का इसमें कोई दखल नहीं है सिवाय उसके जो अल्लाह का हुक्म हो। [हुक्म तो सिर्फ अल्लाह ही का है। - अनुवाद नोट]। हाँ, पाक शरीयत अपने हुक्म से कुछ आदेशों को रिवाज़ पर आधारित करती है, जैसे कि यदि कोई चीज़ प्रसिद्ध और प्रचलित हो जाए तो उसके लिए यह हुक्म है, अन्यथा नहीं। जैसे चल संपत्ति का वक्फ (वक्फ मनक़ूल), जो उन चल वस्तुओं में जायज़ है जहाँ इसका रिवाज़ हो, अन्यथा नहीं। या इस्तिस्ना (निर्माण कार्य का आदेश), यानी गैर-मौजूद चीज़ को मजदूरी देकर बनवाना; उन वस्तुओं में जायज़ है जिन्हें बनवाने का रिवाज़ हो, अन्यथा नहीं। या बिक्री की शर्त, कि जो शर्त फासिद (अनुचित) हो, यदि वह प्रसिद्ध रिवाज़ बन जाए तो स्वीकार्य है, अन्यथा नहीं, और अन्य ऐसी बातें जिनका उन्होंने किताबों में स्पष्टीकरण दिया है। [इसके अलावा जिसका उन्होंने किताब में स्पष्टीकरण दिया है। - अनुवाद नोट]। या फिर यह कि हुक्म स्वयं में स्थापित हो और रिवाज़ केवल उसका रूप बताता हो। उदाहरण के लिए, गिरवी रखने वाले की अनुमति से, बिना किसी शर्त के गिरवी रखी हुई चीज़ से लाभ उठाना जायज़ है, अन्यथा हराम है। अब यदि रिवाज़ ऐसा हो कि गिरवी रखी चीज़ से लाभ के लालच के बिना ऋण नहीं दिया जाता, जैसा कि हमारे ज़माने में है, तो पूर्णतः हराम होने का हुक्म दिया जाएगा जैसा कि अल-शामी में अल-तहतवी के हवाले से है: "और मैंने इस पर कई बार फतवा दिया है।" [जैसा कि शामी में तहतवी के हवाले से है और शोध में मैंने इस पर कई बार फतवा दिया है। - अनुवाद नोट]। यहाँ रिवाज़ ने बता दिया कि यह एक शर्त वाली स्थिति है, न कि यह कि ऋण और गिरवी शुद्ध रूप से हुए थे और उसके बाद गिरवी रखने वाले ने स्वेच्छा से लाभ उठाने की अनुमति दी। ऐसी ही जगह "अल-मारूफ कल-मशरुत" (जो रिवाज़ से ज्ञात है वह शर्त के समान है)

या "अल-महूद उर्फन कल-मशरुत लफ्ज़न" (जो रिवाज़ के अनुसार स्थापित हो वह ज़ुबानी शर्त के समान है) लागू होता है।

पेज 228 का 688

فتاوٰی رضویہ جلد دو ازدہم

(۲) شرع میں رواج ملک کو مداخلت ہے کیا۔ (۳) جہیز میں جو سامان لڑکی کو دیا جاتا ہے وہ عاریتہً سمجھا جائے گا یا تملیکا۔ (۴) شرح وقایہ جلد سوم میں ہبہ واپسی کا حکم ہے کیا ہبہ جہیز اسی قسم کا ہبہ ہے حسبِ دعوٰی مدعیہ۔ (۵) جو شیئی منجانب مدعیہ خاص مدعاعلیہ یعنی داماد کو وقت شادی کے ملی ہے اس کے واپس پانے کا کیا مدعیہ کو حق ہے۔ (۶) جو جہیز یا سامان مدعاعلیہ نے وقت شادی اپنی بی بی کو دیا اس پر بھی حق واپس لینے کا مدعیہ کا ہے یا نہیں۔ (۷) متوفیہ کے حکم سے زیورات وقت بیماری رہن رکھ کر صرف ہوا اس کے چھڑانے کا کون ذمہ دار ہے۔ بینوا توجروا۔

الجواب: جواب سوال اوّل تا چہارم حکمِ شرع مطہر کے لئے ہے عرف ورواج وغیرہ کسی کو حکم میں کچھ دخل نہیں ان الحکم الا للہ (نہیں ہے حکم مگر اللہ تعالٰی کا۔ ت) ہاں بعض احکام کو شرع مطہر اپنے حکم سے عرف پر دائر فرماتی ہے خواہ یوں کہ اگر یہ شے معروف ورائج ہو جائے تو اس کے لئے یہ حکم ہے ورنہ یہ جس طرح وقف منقول کہ اشیائے منقولہ میں جس کا وقت معروف ہو جائز، ورنہ نہیں، یا استصناع یعنی بے طریق سلم معدوم چیز اجرت دے کر بنوانا اس میں جن اشیاء کے بنوانے کا رواج ہو، جائز، ورنہ نہیں، یا شرط البیع کہ جو شرط مفسد معروف ہو جائے متحمل ہے ورنہ نہیں الی غیر ذلک مما صرحوا بہ فی الکتب (اس کے علاوہ جس کی تصریح انہوں نے کتاب میں فرمائی۔ت) خواہ یوں کہ حکم فی نفسہ حاصل اور عُرف اُس کی صورت کا بتانے والا مثلاً مرتہن کا شیئی مرہون سے انتفاع اگر باذنِ راہن بے شرط ہو، جائز، ورنہ حرام۔ اب اگر عرف ورواج ہو کہ بے طمع نفع بہر ہون قرض نہیں دیتے، جیسے ہمارے زمانہ میں، تو مطلقاً حکمِ حُرمت دیا جائے گا کما فی الشامی عن الطحطاوی وقد افتیت بہ مراراً (جیسا کہ شامی میں طحطاوی

کے حوالے سے ہے اور تحقیق میں اس پر کئی بار فتویٰ دے چکا ہوں۔ت) یہاں عرف نے بتادیا کہ صورتِ شرط ہے نہ یہ کہ قرض ورہن خالص واقع ہوئے اور اس کے بعد راہن نے برضائے خود مرتہن کو اجازتِ انتفاع دی، ایسی ہی جگہ المعروف کالمشروط (معروف مشروط کی طرح ہوتا۔ت) یا المعھود عرفا کالمشروط لفظاً (جو عرف کے اعتبار سے معہود متعین ہو وہ

It is as if it were conditional based on the word. They say examples of both cases are found in abundance in the books of Fiqh. This issue of dowry is also of the second type: parents provide dowry to the bride from their wealth, and giving it can mean either a gift (hibah) or a loan (ariyah). Therefore, based on the original principle, their statement should have been absolutely reliable.

Arabic	Urdu Translation
For the original principle is that the giver knows better the purpose of giving. Also, when two matters are possible, the lesser is determined as it is certain. This was the view of Imam Shams al-A’immah al-Sarakhsi, who chose the opinion that the father's word is absolutely reliable.	Indeed, the principle is that the giver knows the reason for giving better. Furthermore, when two matters are possible, the lesser of them is determined because that is what is certain. Imam Shams al-A'immah al-Sarakhsi looked towards this and chose that the statement of the father is absolutely reliable. (T)

However, the custom (Urf) of cities manifests the intent and purpose. Where the dominant custom is ownership (tamlik), the claim of a loan (ariyah) is unacceptable, and giving dowry is presumed to be ownership unless proven otherwise by Sharia witnesses. Where the dominant custom is a loan, or both customs are equal, then their statement under oath will be reliable, and in such a place, giving dowry will be considered ownership. "Walking upon the mentioned original principle due to the absence of what would cause a deviation from it." (Proceeding on the prevalent principle because nothing exists to incite a deviation from it. - T) This is the correct, reliable, and chosen opinion for fatwa. "Rather, it is the reconciliation between the statements; so when it is investigated, the return is to it." (Rather, reconciliation is achieved between different statements through this; when its investigation is completed, returning to it becomes necessary. - T) It is stated in Durr-ul-Mukhtar:

Arabic	Urdu Translation
A man provided dowry for his daughter, then claimed that what he gave her was a loan (ariyah), while she said it was ownership (tamlik). Or the husband said so after her death to inherit from it, while the father or his heirs after his	A person gave dowry to his daughter and then claimed that whatever he gave was as a loan, while the girl says that it was given as ownership, or after her death, her husband says the same so that he may receive a share from the dowry as

Arabic	Urdu Translation
death said it was a loan. The reliable view is that the word of the husband and the wife is accepted if the continuous custom is that the father gives such things as dowry, not as a loan, and for common areas like Egypt and Sham, the word of the father is taken [if custom dictates].	inheritance, and the girl's father or his heirs after his death say that it was given as a loan, then the reliable view is that the statement of the daughter and her husband will be accepted, provided the prevalent custom is that the father gives such wealth to his daughter as dowry and not as a loan.

[1] Durr-ul-Mukhtar, Chapter on Mahr, Mujtabai Press Delhi, 1/203.

यह वैसा ही है जैसे शब्द के आधार पर शर्त रखी गई हो। वे कहते हैं कि फ़िक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) की किताबों में दोनों स्थितियों के उदाहरण प्रचुर मात्रा में मौजूद हैं। दहेज का यह मुद्दा भी दूसरी श्रेणी का है कि माता-पिता अपनी संपत्ति से दुल्हन को दहेज देते हैं, और देना हिबा (उपहार) और आरियत (उधार) दोनों के लिए संभावित है। इसलिए, मूल सिद्धांत के आधार पर उनका कथन पूर्णतः विश्वसनीय माना जाना चाहिए था।

अरबी अनुवाद

क्योंकि मूल सिद्धांत यह है कि देने वाला देने के उद्देश्य को बेहतर जानता है। साथ ही, जब दो बातें संभावित हों, तो उनमें से कम को निर्धारित किया जाता है क्योंकि वही निश्चित होता है। इमाम शम्सुल अइम्मा अल-सरखसी ने इसी की ओर ध्यान दिया और चुना कि पिता का कथन पूर्णतः विश्वसनीय है।

उर्दू अनुवाद

वास्तव में सिद्धांत यह है कि देने वाला देने के कारण को बेहतर जानता है। इसके अलावा, जब दो बातें संभावित हों, तो उनमें से जो कम है उसे ही निर्धारित किया जाता है क्योंकि वही निश्चित होता है। इमाम शम्सुल अइम्मा अल-सरखसी ने इसी पर विचार किया और यह चुना कि पिता का कथन ही पूर्णतः विश्वसनीय है। (त)

लेकिन शहरों का प्रचलन (उर्फ़) नियत और उद्देश्य को प्रकट करता है। जहाँ स्वामित्व (तमलीक) का प्रचलन प्रबल हो, वहाँ उधार (आरियत) का दावा अस्वीकार्य है और दहेज देने को स्वामित्व ही माना जाएगा जब तक कि वे शरई गवाहों से इसे उधार साबित न करें। और जहाँ उधार का प्रचलन प्रबल हो, या दोनों रीति-रिवाज समान हों, वहाँ शपथ के साथ उनका कथन विश्वसनीय होगा और ऐसी जगह दहेज देना स्वामित्व समझा जाएगा। "उल्लिखित मूल सिद्धांत पर चलना क्योंकि इससे हटने के लिए उकसाने वाली कोई चीज़ मौजूद नहीं है।" (प्रचलित सिद्धांत पर चलते हुए क्योंकि इससे हटने के लिए कोई चीज़ मौजूद नहीं है। - त) यही सही, विश्वसनीय और फतवे के लिए चुना गया मत है। "बल्कि, यह कथनों के बीच सामंजस्य है; तो जब इसकी जाँच हो जाती है, तो अंततः इसी की ओर लौटना होता है।" (बल्कि विभिन्न कथनों में इसी से तालमेल प्राप्त होता है जब इसकी जाँच पूरी हो जाती है, तो इसी की ओर लौटना अनिवार्य हो जाता है। - त) दुर्रे मुख्तार में है:

अरबी अनुवाद

एक व्यक्ति ने अपनी बेटी को दहेज दिया, फिर दावा किया कि जो उसने दिया वह उधार था, जबकि बेटी ने कहा कि वह स्वामित्व (उपहार) था। या उसकी मृत्यु के बाद पति ने ऐसा कहा ताकि उसे दहेज से विरासत के रूप में हिस्सा मिल सके और लड़की के पिता या उसकी मृत्यु के बाद उसके वारिसों ने कहा कि वह उधार था। विश्वसनीय मत यह है कि पति और पत्नी की बात मानी जाएगी यदि निरंतर परंपरा यह हो कि पिता ऐसा धन अपनी बेटी को दहेज के रूप में देता है, न कि उधार के रूप में। और मिस्र और शाम जैसे साझा क्षेत्रों के लिए पिता की बात मानी जाएगी।

उर्दू अनुवाद

किसी व्यक्ति ने अपनी बेटी को दहेज दिया फिर दावा किया कि उसने जो कुछ दिया वह उधार के तौर पर दिया, जबकि लड़की कहती है कि स्वामित्व के तौर पर दिया था, या उसकी मौत के बाद यही बात उसका पति कहे ताकि वह दहेज से विरासत के तौर पर हिस्सा पाए, और लड़की का बाप या उसकी मौत के बाद उसके वारिस कहें कि यह उधार के तौर पर दिया था, तो विश्वसनीय यही है कि बेटी और उसके पति का कथन माना जाएगा जबकि चलन यही हो कि ऐसा माल बाप अपनी बेटी को दहेज के तौर पर देता है न कि उधार के तौर पर।

[1] दुर्रे मुख्तार, मेहर का अध्याय, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/203।

पृष्ठ 229 का 688

ایسے ہی ہے جیسے لفظ کے اعتبار سے مشروط ہوت۔) کہتے ہیں کتب فقہ میں دونوں صورتوں کی مثالیں بکثرت موجود۔ یہ مسئلہ جہیز بھی صورتِ ثانیہ سے ہے کہ والدین اپنے مال سے دلہن کو جہیز دیتے ہیں اور دینا ہبہ وعاریت دونوں کو محتمل، تو بنظرِ اصل حکم مطلقاً انہیں کا قول معتبر ہونا چاہئے تھا۔

عربی متن	اردو ترجمہ
فان الاصل ان الدافع ادری بجهة الدفع وایضا اذا احتمل امران تعین الاقل اذ هو المتیقن والی هذا نظر الامام شمس الائمة السرخسی فاختار ان القول للاب مطلقا۔	بے شک اصل یہ ہے کہ دینے والا دینے کی جہت کو بہتر جانتا ہے نیز جب دو امر محتمل ہوں تو ان میں سے اقل متعین ہوتا ہے کیونکہ وہی یقینی ہوتا ہے۔ امام شمس الائمہ سرخسی نے اسی کی طرف نظر فرمائی اور اختیار فرمایا کہ قول مطلقاً باپ ہی کا معتبر ہے۔ (ت)

مگر عرفِ بلاد مظہرِ قصد ومراد ہوتا ہے جہاں عرفِ غالب تملیک ہو وہاں دعوٰی عاریت نامقبول اور جہیز دینا تملیک ہی پر محمول جب تک گواہانِ شرعی سے اپنا عاریتًا دینا ثابت نہ کریں، اور جہاں عرفِ غالب عاریت، ہو یاد ونوں رواج یکساں وہاں آپ ہی ان کا قول قسم کے ساتھ معتبر ہوگا اور ایسی جگہ جہیز دینا تملیک سمجھا جائے گا۔ "مشیاعلی الاصل المار لعدم ما یحمل علی العدول عنہ" (اصلِ رائج پر چلتے ہوئے کیونکہ اس سے عدول پر برانگیختہ کرنے والی کوئی شیئی موجود نہیں۔ت) یہی صحیح و معتمد و مختار للفتوٰی ہے بل ھو التوفیق بین الاقوال فاذا حقق فالیہ المآل (بلکہ مختلف اقوال میں اسی سے تطبیق حاصل ہوئی جب اس کی تحقیق ہوگئی تو اسی کی طرف لوٹنا لازم ہے۔ت) در مختار میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
جهز ابنته ثم ادعى ان ما دفعه لها عارية وقالت هو تمليك او قال الزوج ذلك بعد موتها ليرث منه وقال الاب او ورثته بعد موته عارية فالمعتمد ان القول للزوج ولها اذا كان العرف مستمرا ان الاب يدفع مثله جهازا لاعارية وامان مشتركا كمصر و الشام فالقول للاب[1]۔	کسی شخص نے اپنی بیٹی کو جہیز دیا پھر دعویٰ کیا کہ اس نے جو کچھ دیا وہ بطور عاریت دیا، جب کہ لڑکی کہتی ہے کہ بطور تملیک دیا تھا، یا اس کے مرنے کے بعد یہی بات اس کا شوہر کہے تا کہ وہ جہیز سے بطور میراث حصہ پائے، اور لڑکی کا باپ یا اس کے مرنے کے بعد اس کے ورثاء کہیں کہ یہ رعایت کے طور پر دیا تھا تو معتمد یہی ہے کہ قول بیٹی اور اس کے شوہر کا مانا جائے گا جبکہ عرف یہی رائج ہو کہ ایسا مال باپ اپنی بیٹی کو بطور جہیز دیتا ہے نہ کہ بطور رعایت

[1] در مختار باب المہر مطبع مجتبائی دہلی 1/203

Fatawa Razawiyya Volume 12

(As is the case in our region) and if the custom is common, as it is in Egypt and Syria, then the father's word will be considered credible. (T) In the same [book] it is stated:

Bihi yufta (Fatwa is given according to this. T) It is stated in *Bahr al-Raiq*:

| In *Fath al-Qadir*, *At-Tajnis*, and *Adh-Dhakirah al-Mukhtarah lil-Fatwa*, the preferred view for fatwa is that indeed the word of the daughter and her husband will be credible when the prevailing custom is that the father gives such property as a dowry and not as a loan, as is the case in our region. And if the custom is common, then the father's word will be credible. (T) | In *Fath al-Qadir*, *At-Tajnis*, and *Adh-Dhakirah al-Mukhtarah lil-Fatwa*, indeed the word is for the husband and for her when the custom is continuous that the father gives like it as a dowry for loan, as in our dinars, and if it is common, then the word is the word of the father.[1] |

It is stated in *Uqud ad-Durriyah*:

| Where the custom is common, there the mother's word with an oath will be credible. The aforementioned research is that in all those cases where someone's word is credible, an oath is mandatory for them, except for a few issues which have been enumerated in the commentary of *Al-Kanz* to more than sixty; the issue of dowry is not among those issues (i.e., in this, the word will only be credible with an oath). And Qari al-Hidayah gave a fatwa that the word of the mother and father with an oath will be credible, stating that they certainly did not make the daughter the owner of the dowry, and according to you, it is a loan. (T) - summarized. | Since the custom was common, the word is for the mother with her oath, and it has been mentioned that everyone whose word is his word, the oath is binding upon him except in issues which he brought in the commentary of *Al-Kanz* to sixty-odd issues, this is not among them. And the Qari of *Al-Hidayah* gave fatwa that the word is the word of the father and the mother, that they did not give her ownership, but it is a loan with you with an oath.[2] Summarized. |

Then, whatever specifics the custom has must be observed. For example, if among the noble people, the custom is to transfer ownership, and among people of lower status, it is common, then the transfer of ownership will be understood only from the side of the noble people. Or if there is a custom of giving dowry up to a specific amount according to status, and if it is more, it is a loan, then when it has been given

up to that specific amount, it will be considered a transfer of ownership. It is stated in *Bahr al-Raiq*:

| Qadi Khan said that the answer should be in detail. If the father is from the noble and honorable people, his statement that it is a loan (dowry) will not be accepted. | Qadi Khan said: and it is appropriate that the answer be in detail; if the father is from the noble and honorable ones, his word will not be accepted that it is a loan. |

[1] *Bahr al-Raiq*, Chapter of Mahr, HM Saeed Company Karachi, 3/187. [2] *Al-Uqud ad-Durriyah Tanqih fil-Fatawa al-Hamidiyah*, Issues of Dowry, Haji Abdul Ghaffar & Sons Press, Kandahar, Afghanistan, 1/26.

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

(जैसा कि हमारे क्षेत्र में है) और यदि प्रथा सामान्य है जैसा कि मिस्र और सीरिया में है, तो पिता का कथन विश्वसनीय माना जाएगा। (त) इसी में है:

बिही युफ्ता (इसी के साथ फतवा दिया जाता है। त) बहर अल-रायिक में है:

| फतह अल-कादिर, अत-तजनीस और अज़-ज़खीराह अल-मुख्ताराह लिल-फतवा में फतवे के लिए पसंदीदा विचार यह है कि निस्संदेह बेटी और उसके पति का कथन विश्वसनीय होगा जब प्रचलित प्रथा यह हो कि पिता ऐसी संपत्ति दहेज के रूप में देता है न कि ऋण (आरियत) के रूप में, जैसा कि हमारे क्षेत्र में है। और यदि प्रथा सामान्य है, तो पिता का कथन विश्वसनीय होगा। (त) | फतह अल-कादिर, अत-तजनीस और अज़-ज़खीराह अल-मुख्ताराह लिल-फतवा में, वास्तव में शब्द पति के लिए और उसके लिए है जब प्रथा निरंतर है कि पिता ऋण के रूप में दहेज के रूप में इसके समान देता है, जैसा कि हमारे दीनारों में है, और यदि यह सामान्य है, तो शब्द पिता का शब्द है।[1] |

उकूद अद-दुर्रियाह में है:

| जहाँ प्रथा सामान्य हो, वहाँ माँ का कथन शपथ के साथ विश्वसनीय होगा। उपर्युक्त शोध यह है कि उन सभी मामलों में जिनमें किसी का कथन विश्वसनीय होता है, उनके लिए शपथ अनिवार्य है, सिवाय कुछ मुद्दों के जिन्हें अल-कन्ज़ की व्याख्या में साठ से अधिक बताया गया है; दहेज का मुद्दा उन मुद्दों में से नहीं है (अर्थात, इसमें कथन केवल शपथ के साथ ही विश्वसनीय होगा)। और कारी अल-हिदाया ने फतवा दिया कि माँ और पिता का कथन शपथ के साथ विश्वसनीय होगा कि निश्चित रूप से उन्होंने बेटी को दहेज का मालिक नहीं बनाया और आपके अनुसार यह ऋण (आरियत) है। (त) - संक्षेप में। | चूँकि प्रथा सामान्य थी, शब्द माँ के लिए उसकी शपथ के साथ है, और यह उल्लेख किया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति जिसका शब्द उसका शब्द है, उस पर शपथ अनिवार्य है सिवाय उन मुद्दों के जिन्हें उसने अल-कन्ज़ की व्याख्या में साठ-अजीब मुद्दों तक लाया, यह उनमें से नहीं है। और अल-हिदाया के कारी ने फतवा दिया कि शब्द पिता और माता का शब्द है, कि उन्होंने उसे स्वामित्व नहीं दिया, बल्कि यह शपथ के साथ आपके पास ऋण है।[2] संक्षेप में। |

फिर, प्रथा की जो भी विशेषताएँ हों, उन सभी का पालन करना अनिवार्य है। उदाहरण के लिए, यदि कुलीन लोगों में प्रथा स्वामित्व हस्तांतरण की है और निम्न स्तर के लोगों में यह सामान्य है, तो स्वामित्व

का हस्तांतरण केवल कुलीन लोगों की ओर से ही समझा जाएगा। या यदि स्थिति के अनुसार एक विशिष्ट राशि तक दहेज देने की प्रथा हो और यदि अधिक हो तो ऋण, तो जब उस विशिष्ट राशि तक दिया गया हो, तो उसे स्वामित्व का हस्तांतरण माना जाएगा। बहर अल-रायिक में है:

| काजी खान ने कहा कि उत्तर विस्तार से होना चाहिए। यदि पिता कुलीन और सम्मानित लोगों में से है, तो उसका यह कथन स्वीकार नहीं किया जाएगा कि यह (दहेज) ऋण (आरियत) है। | काजी खान ने कहा: और यह उचित है कि उत्तर विस्तार से हो; यदि पिता कुलीन और सम्मानित लोगों में से है, तो उसका शब्द स्वीकार नहीं किया जाएगा कि यह ऋण है। |

[1] बहर अल-रायिक, महर का अध्याय, एचएम सईद कंपनी कराची, 3/187। [2] अल-उकूद अद-दुर्रियाह तनकीह फिल-फतावा अल-हामिदिया, दहेज के मुद्दे, हाजी अब्दुल गफ्फार एंड संस प्रेस, कंधार, अफगानिस्तान, 1/26।

فتاوی رضویہ جلد دوا زدہم

(جیسا کہ ہمارے علاقے میں ہے) اور اگر عرف مشترک ہو جیسا کہ مصر اور شام میں، تو باپ کا قول معتبر ہوگا۔ (ت) اسی میں ہے:

بہ یفتی (اسی کے ساتھ فتوٰی دیا جاتا ہے۔ ت) بحر الرائق میں ہے:

| فتح القدیر، تجنیس اور ذخیرہ میں کہ فتوی کے لئے مختار یہ ہے کہ بیشک قول بیٹی اور اس کے شوہر کا معتبر ہوگا جبکہ عرف یہی رائج ہو کہ ایسا مال باپ بطور جہیز دیتا ہے نہ کہ بطور عاریت، جیسا کہ ہمارے علاقے میں ہے۔ اور اگر عرف مشترک ہو تو باپ کا قول معتبر ہوگا۔ (ت) | فی فتح القدیر والتجنیس والذخیرۃ المختار للفتوی ان القول للزوج ولھا اذا کان العرف مستمرا ان الاب یدفع مثلہ جھاز الاعاریۃ کما فی دینار نا وان کان مشترکا فالقول قول الاب۔ 1 |

عقود الدریہ میں ہے:

| جہاں عرف مشترک ہو تو وہاں ماں کا قول قسم کے ساتھ معتبر ہوگا۔ تحقیق مذکور ہے کہ ان تمام صورتوں میں جن میں کسی کا قول معتبر ہو اُسے یمین لازم ہے سوائے چند مسائل کے جنہیں شرح کنز میں ساٹھ سے کچھ اوپر تک پہنچایا، مسئلہ جہیز ان مسائل میں سے نہیں (یعنی اس میں قول قسم کے ساتھ ہی معتبر ہوگا) اور قاری ہدایت نے فتوی دیا کہ قول ماں باپ کا قسم کے ساتھ معتبر ہوگا کہ بے شک انہوں نے بیٹی کو جہیز کا مالک نہیں بنایا اور تمہارے نزدیک عاریت ہے اھ مختصرا (ت) | حیث کان العرف مشترکا فالقول للام مع یمینھا وقد ذکر ان کل من کان القول قولہ یلزمہ الیمین الا فی مسائل اوصلھا فی شرح الکنز الی نیف وستین مسئلۃ لیست ھذہ منھا وافتی قارىء الھدایۃ القول قول الاب والام انھما لم یملکاھا انما ھو عاریۃ عندکم مع الیمین 2 مختصرا۔ |

پھر عرف جن خصوصیتوں کے ساتھ ہو سب کے مراعات واجب مثلاً شرفاء میں عرف تملیک ہے کم درجے کے لوگوں میں مشترک تو صرف شرفاء ہی کی جانب سے تملیک سمجھی جائے گی یا حسب حیثیت ایک مقدار خاص تک جہیز دینے کا عرف ہو اور زیادہ ہو تو عاریت، تو جب اُسی مقدار تک دیا گیا ہو تملیک سمجھیں گے۔ بحر الرائق میں ہے:

| قاضی خان نے فرمایا کہ جواب بالتفصیل ہونا چاہئے، اگر باپ اشراف و معززین میں سے ہے تو اس کا یہ قول قبول نہیں کیا جائے گا کہ یہ (جہیز) عاریت ہے | قال قاضی خان وینبغی ان یکون الجواب علی التفصیل ان کان الاب من الاشراف والکرام لایقبل قولہ انہ عاریۃ |

1 بحر الرائق باب المهر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی 3 / 187 2 العقود الدریۃ تنقیح فی الفتاوی الحامدیۃ مسائل الجهاز مطبع حاجی عبد الغفار وپسران قندهار افغانستان 1 / 26

Fatawa Ridawiyya Volume 12

"And if the father is among those who do not give such a dowry (jehez) to daughters, his statement will be accepted." (1)	And if the father is among those people who do not give dowries like this to daughters, his statement will be accepted. (T)

It is stated in Nahr al-Fa'iq:

"And by my life, this statement holds a high position of excellence." (2)	And by my life, this statement holds a high position in excellence. (T)

It is stated in Durr al-Mukhtar:

"If the property given in dowry is more than what is typically provided for girls of similar status, then by consensus, the father's statement shall be considered credible." (3)	If the property given in dowry is more than what is typically given as dowry to such girls, then by consensus, the father's statement will be credible. (T)

In short, the basis here is custom ('urf) and tradition (rawaj), and this is the underlying meaning of all these statements and details. Thus, one must follow where the custom leads, unless there is another piece of evidence to divert from it. For example, if a father owed a debt to his daughter, and he claims, "I gave this [dowry] in lieu of the debt," while she claims, "He gave it from his own wealth," then the father's statement under oath is credible. It is apparent from the situation of a debtor that he would prioritize settling his debts. It is stated in Bahr al-Raiq:

"If the daughter had a debt against her father, and Abu Hashim (the father) provided her with a dowry and said, 'I prepared your dowry with the debt I owed you,' but she said, 'Rather, with your own wealth,' then the father's statement is preferred, though it has also been said that the daughter's statement is preferred." (4)	If the daughter has a debt against her father and the father provides the daughter with a dowry and then says, "I gave this in exchange for the debt that the daughter had against me," and the daughter says that the father gave it from his own wealth, then the father's statement will be considered credible, and it has also been said that the daughter's statement will be considered credible. (T)

It is stated in Al-Anqurawiyyah:

The first [view] is more correct, for if the father said it was for your mother [owed] to me...	The first is more correct, because if the father says for your mother to me...

1. Bahr al-Raiq, Book of Dowry, H.M. Saeed Company, Karachi, 3/187.
2. Radd al-Muhtar citing An-Nahr al-Fa'iq, Book of Dowry, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/367.
3. Durr al-Mukhtar, Book of Dowry, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/203.
4. Bahr al-Raiq, Book of Dowry, H.M. Saeed Company, Karachi, 3/187.

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

"यदि पिता उन लोगों में से है जो बेटियों को ऐसा दहेज नहीं देते, तो उसकी बात स्वीकार की जाएगी।" (1)

और अगर बाप उन लोगों में से है जो अपनी बेटियों को इस तरह का दहेज नहीं देते, तो उसकी बात मान ली जाएगी। (त)

नहर अल-फ़ाएक़ में है:

"और मेरी उम्र की शपथ, यह कथन श्रेष्ठता में उच्च स्थान रखता है।" (2)

और मेरी उम्र की कसम, यह कथन श्रेष्ठता में ऊँचा स्थान रखता है। (त)

दुर्र अल-मुख्तार में है:

"यदि दहेज में दी गई संपत्ति ऐसी लड़कियों को आमतौर पर दिए जाने वाले दहेज से अधिक है, तो सर्वसम्मति से पिता का कथन विश्वसनीय माना जाएगा।" (3)

अगर दहेज में दिया जाने वाला माल उससे ज़्यादा है जितना ऐसी लड़कियों को दहेज में दिया जाता है, तो सर्वसम्मति से बाप का कथन विश्वसनीय होगा। (त)

संक्षेप में, यहाँ आधार प्रथा (उर्फ़) और परंपरा (रिवाज) पर है, और यही इन सभी कथनों और विवरणों का अर्थ है। अत; जिधर प्रथा ले जाए उधर ही चलना अनिवार्य है, जब तक कि कोई अन्य प्रमाण इसे न बदल दे। उदाहरण के लिए, यदि पिता पर बेटी का कर्ज था, और वह कहता है, "मैंने यह कर्ज के बदले दिया," जबकि वह कहती है, "उन्होंने अपने धन से दिया," तो पिता का कथन शपथ के साथ विश्वसनीय है। एक कर्जदार की स्थिति से यही स्पष्ट है कि वह कर्ज चुकाने की चिंता पहले करेगा।
बहर अल-राईक में है:

"यदि पुत्री का अपने पिता पर ऋण हो और पिता उसे दहेज दे और फिर कहे, 'मैंने इसे उस ऋण के बदले में तैयार किया जो मुझ पर तेरा था,' और पुत्री कहे, 'बल्कि, उन्होंने अपने धन से दिया,' तो पिता का कथन स्वीकार्य है, हालाँकि यह भी कहा गया है कि पुत्री का कथन स्वीकार्य है।" (4)

अगर बेटी का बाप पर कर्ज हो और बाप बेटी को दहेज दे और फिर कहे कि मैंने यह उसके कर्ज के बदले में दिया जो बेटी का मुझ पर था और बेटी कहे कि बाप ने अपने माल से दिया है, तो बाप का कथन विश्वसनीय होगा, और कहा गया है कि बेटी का कथन विश्वसनीय होगा। (त)

अन-अंकुरविया में है:

पहला (विचार) अधिक सही है, क्योंकि यदि पिता कहे कि वह तुम्हारी माता के लिए मुझ पर...	पहला अधिक सही है क्योंकि अगर बाप कहे तुम्हारी माँ को मुझ पर...

1. बहर अल-राईक, बाब अल-महर, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 3/187।
2. रद अल-मुह्तार, अन-नहर अल-फ़ाएक़ के संदर्भ में, बाब अल-महर, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/367।
3. दुर्र अल-मुख्तार, बाब अल-महर, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/203।
4. बहर अल-राईक, बाब अल-महर, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 3/187।

فتاوٰی رضویہ جلد دو ازدہم

وان کان الاب ممن لا یجھز البنات بمثل ذلك قبل قولہ - ۱ اور اگر باپ ان لوگوں میں سے ہے جو اس کی مثل جہیز بیٹیوں کو نہیں دیتے تو اس کا قول مان لیا جائے گا (ت)

نہر الفائق میں ہے:

وھذا لعمری من الحسن بمکان - ۲ اور میری عمر کی قسم یہ قول حُسن میں اونچا مقام رکھتا ہے۔ (ت)

درمختار میں ہے:

لو کان اکثر مما یجھز بہ مثلھا فان القول لہ اتفاقاً - ۳ اگر جہیز میں دیا جانے والا مال اس سے زیادہ ہے جتنا ایسی لڑکیوں کو جہیز میں دیا جاتا ہے تو بالاتفاق باپ کا قول معتبر ہوگا۔ (ت)

بالجملہ یہاں مدار عرف و رواج پر ہے اور ان سب اقوال و تفاصیل کا یہی منشاء، تو جدھر عرف لے جائے اسی طرف جانا واجب، مگر کہ یہ کوئی دلیل دیگر اُس سے صارف ہو، مثلاً باپ پر بیٹی کا قرض آتا تھا وہ کہتا ہے میں نے قرض دیا یہ کہتی ہے اپنے مال سے دیا، تو باپ کا قول بقسم معتبر ہے کہ مدیون کے حال سے یہی ظاہر کہ ادائے دین کی فکر مقدم رکھے گا۔ بحر الرائق میں ہے:

لو كان لها على ابيها دين فجهز ها ابو هاشم قال جهزتها بدينها علي وقالت بل بما لك فالقول للاب وقيل للبنت - ۴

اگر بیٹی کا باپ پر قرض ہو اور باپ بیٹی کو جہیز دے پھر کہے کہ میں نے یہ اس کے قرضے کے عوض میں دیا جو بیٹی کا مجھ پر تھا اور بیٹی کہے کہ باپ نے اپنے مال سے دیا ہے تو باپ کا قول معتبر ہوگا، اور کہا گیا ہے کہ بیٹی کا قول معتبر ہوگا۔ (ت)

انقرویہ میں ہے:

والاول اصح فانه لو قال الاب كان لامک

اول اصح ہے اس لئے کہ اگر باپ کہے تیری ماں کو مجھ پر

---

۱ بحر الرائق باب المہر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳ / ۱۸۷ ۲ ردالمحتار بحوالہ النہر الفائق باب المہر دار احیاء التراث العربی بیروت ۲ / ۳۶۷ ۳ در مختار باب المہر مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۰۳ ۴ بحر الرائق باب المہر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳ / ۱۸۷

[Arabic Text]: ‘ala mi’ati dinarin fattakhadhat al-jihaza biha wa qalat bal bi-malika fal-qawlu lil-abi jami’ul fatawa wa kadha fil quniyah. 1 — [Urdu Translation]: There was a debt of 100 dinars, and I have prepared the dowry from it, but if the daughter says that you prepared it from your own wealth, then the statement of the father will be considered reliable. (Ref: Jami' al-Fatawa and similarly in Al-Quniya). (T)

I say: And with Allah is success. However, even in the state of debt, if the custom (urf) necessitates the transfer of ownership (as a gift), then that will be considered, so that the indication of debt no longer conflicts with the indication of custom. It is stated in Al-Hidayah:

[Arabic Text]: (man ba’atha ila imra’atihi shay’an fa-qalat huwa hadiyatan wa qala al-zawju huwa min al-mahri fal-qawlu lahu) li-annahu huwa al-mumalliku fa-kana a’rafu bi-jihatihi al-mutamalliki kayfa wa inna al-zahira annahu yas’a fi isqat al-wajibi (illa fi al-ta’ami alladhi yu’kalu) fa-inna al-qawla qawluha wal-muradu minhu ma yakunu muhayyan lil-akli li-annahu yata’arafu hadiyatan fa-amma fi al-hintati wa al-sha’iri fal-qawlu qawluhu lima bayyanna. 2 AH [Urdu Translation]: (If a husband sends something to his wife, and she says it is a gift while the husband says it is part of the dower (mahr), then the statement of the husband will be considered reliable) because he is the one granting ownership, therefore he understands the nature of the transfer better. And how could his statement not be reliable when it is apparent that he would strive to discharge the obligation (debt) incumbent upon him? (Except in the case of food that is ready to be eaten), where the woman's statement will be considered reliable. This refers to food that has been prepared for eating because such food is customarily known to be given as a gift. However, in the case of wheat and barley, the husband's statement will be reliable based on what we have explained.

[Arabic Text]: fanzur kayfa rajjaha dalalata al-urfi ‘ala dalalati annahu madinun fal-zahiru minhu al-sa’yu fi isqat al-dayni thumma zada al-sharihuna fa-sayiru al-urfa kayfama sara qala al-muhaqqiqu fi al-fathi hadha wal-ladhi yajibu i’tibaruhu fi diyarina anna jami’a ma dhukira min al-hintati. [Urdu Translation]: See how the indication of custom was given preference over the indication that he is a debtor and it is apparent that he would strive to discharge the debt. Then the commentators added: proceed with the custom wherever it leads. The researcher (Muhaqqiq) stated

in 'Al-Fath': This, and what must be considered in our lands is that indeed, all that has been mentioned regarding wheat,

1 Fatawa Anqurawiyyah, Chapter on disputes regarding Dowry and Dower, Darul Ishat al-Arabiyyah Afghanistan, 1/64-65. 2 Hidayah, Chapter on Dower, Al-Maktabat-ul-Arabiyyah Karachi, 1/317.

[अरबी पाठ]: 'अला मिअति दीनारिन फ़तख़ज़त अल-जिहाज़ा बिहा व क़ालत बल बि-मालिका फ़ल-क़वलु लिल-अबी जामिउल फ़तावा व कज़ा फ़िल क़ुनिया। 1 — [उर्दू अनुवाद]: 100 दीनार का कर्ज था, मैंने उससे दहेज बनाया है, और अगर बेटी कहे कि आपने अपने माल से बनाया है, तो बाप की बात विश्वसनीय मानी जाएगी। (जामे-उल-फ़तावा और इसी तरह अल-कुनिया में है)। (त)

मैं कहता हूँ: और अल्लाह की तौफ़ीक़ से, मगर अगर कर्ज की स्थिति में भी रिवाज (उर्फ़) मालिकाना हक़ (उपहार) की मांग करता हो, तो उसी पर नज़र की जाएगी ताकि अब कर्ज का इशारा रिवाज के इशारे के विपरीत न रहे। हिदाया में है:

[अरबी पाठ]: (मन बा'अथा इला इमराअतिही शैअन फ़-क़ालत हुवा हियतं व क़ाला अल-ज़वजु हुवा मिन अल-महरी फ़ल-क़वलु लहू) लि-अन्नहु हुवा अल-मुमल्लिकु फ़-काना अ'रफ़ु बि-जिहतिही अल-मुतमल्लिकी कैफ़ व इन्ना अल-ज़ाहिरा अन्नहु यस्'आ फ़ी इस्क़ात अल-वाजिबी (इल्ला फ़ी अल-तआमी अल्लाज़ी युअकलु) फ़-इन्ना अल-क़वलु क़वलुहा वल-मुरादु मिन्हु मा यकूनु मुहय्यन लिल-अकली लि-अन्नहु यतआरफ़ु हियतं फ़-अम्मा फ़ी अल-हिन्ती व अल-शइरी फ़ल-क़वलु क़वलुहु लिमा बय्यन्ना। 2 अह [उर्दू अनुवाद]: (अगर शौहर ने औरत को कोई चीज़ भेजी, औरत कहती है कि वह उपहार (हदिया) है और शौहर कहता है कि वह मेहर में से है, तो शौहर की बात विश्वसनीय होगी) क्योंकि वही मालिक बनाने वाला है, लिहाज़ा वह मालिकाना हक़ की प्रकृति को बेहतर समझता है। और उसकी बात विश्वसनीय क्यों न होगी जबकि ज़ाहिर यही है कि वह उस चीज़ को अदा करने की कोशिश करेगा जो उस पर वाजिब (कर्ज) है? (सिवाय उस खाने के जो खाने के लिए तैयार हो), उसमें औरत की बात विश्वसनीय मानी जाएगी। इससे मुराद वह खाना है जो खाने के लिए तैयार किया गया हो क्योंकि ऐसा खाना रिवाज में उपहार के तौर पर ही जाना जाता है। लेकिन गेहूँ और जौ की सूरत में शौहर की बात विश्वसनीय होगी उसी बिना पर जिसका हमने ज़िक्र किया।

[अरबी पाठ]: फ़न्ज़ुर कैफ़ रज्जहा दलालत अल-उर्फ़ी 'अला दलालति अन्नहु मदीनुं फ़ल-ज़ाहिरु मिन्हु अल-स'यु फ़ी इस्क़ात अल-दयनी थुम्मा ज़ादा अल-शारिहूना फ़-सायिरु अल-उर्फ़ा कैफ़मा सारा क़ाला अल-मुहक्किक़ु फ़ी अल-फ़त्ही हाज़ा वल-लाज़ी यजीबु इ'तिबारुहु फ़ी दियारिना अन्ना जमी'अ मा ज़ुकिरा मिन अल-हिन्तति। [उर्दू अनुवाद]: देखो कैसे रिवाज की दलील को इस दलील पर वरीयता दी गई कि वह कर्जदार है और ज़ाहिर यह है कि वह कर्ज उतारने में कोशिश करेगा। फिर

टीकाकारों ने इसमें इज़ाफ़ा किया कि रिवाज के साथ चलो जिधर ले जाए। मोहक्क़िक़ ने 'फ़तह' में फ़रमाया: यह, और वह जिसका एतबार हमारे इलाक़े में वाजिब है वह यह है कि बेशक गेहूँ,

1 फ़तावा अनक़ुरविया, दहेज और मेहर के विवाद का अध्याय, दारुल इशाअत अल-अरबिया अफ़गानिस्तान, 1/64-65। 2 हिदाया, मेहर का अध्याय, अल-मकतबत-उल-अरबिया कराची, 1/317।

पृष्ठ 688 का 232

علی مائة دینار فاتخذت الجهاز بها وقالت بل بمالك | سو ۱۰۰ دینار قرض تھا میں نے اس سے جہیز بنایا ہے، اور بیٹی کہے فالقول للاب جامع الفتاوی وکذا فی القنیة 1 - | کہ تو نے اپنے مال سے بنایا ہے، تو باپ کا قول معتبر ہوگا، جامع الفتاوٰی، اور ایسا ہی قنیہ میں ہے۔ (ت)

اقول: وباللہ التوفیق مگر اگر بحالت دین بھی عرف مقتضی تملیک ہو تو اسی پر نظر کی جائے گی کہ اب دلالت دین دلالت عرف کے معارض نہ رہی۔ ہدایہ میں ہے:

(من بعث الی امرأته شیئاً فقالت هو هدیة وقال الزوج | شوہر نے عورت کو کوئی شیئ بھیجی عورت کہتی ہے وہ ہدیہ ہے ھو من المهر فالقول له) لانه هو المملك فکان اعرف | اور شوہر کہتا ہے وہ مہر سے ہے تو شوہر کا قول معتبر ہوگا کیونکہ بجهته المتملیك کیف وان الظاہر انه یسعی فی اسقاط | وہی مالک بنانے والا ہے لہذا وہ تملیک جہت کو بہتر طور پر الواجب (الا فی الطعام الذی یؤکل) فان القول قولها | سمجھتا ہے اور اس کا قول کیسے معتبر نہ ہوگا جبکہ ظاہر یہی ہے کہ والمراد منه مایکون مهیئاً للأکل لانه یتعارف هدیة | وہ اس شیئ کو ساقط کرنے کی کوشش کرے گا جو اس پر واجب فاما فی الحنطة و الشعیر فالقول قوله لما بینا 2 اھ | ہے سوائے اس طعام کے جو کھایا جاتا ہے کیونکہ اس میں عورت کا قول معتبر ہوگا، اس سے مراد وہ طعام ہے جو کھانے فانظر کیف رجح دلالة العرف علی دلالة انه مدین | کے لئے تیار کیا گیا ہو کیونکہ ایسا طعام بطور ہدیہ ہی متعارف فالظاہر منه السعی فی اسقاط الدین ثم زاد الشارحون | ہے ، لیکن گندم اور جو وغیرہ کی صورت میں شوہر کا قول فسایرو العرف کیفما سار قال المحقق فی الفتح هذا | معتبر ہوگا اسی بناء پر جس کو ہم نے بیان کیا، پس دیکھ کہ دلالت والذی یجب اعتباره فی دیارنا ان جمیع ماذکر من | عرف کو کیسے ترجیح حاصل ہوئی اس دلالت پر کہ وہ مدیون ہے الحنطة | اور ظاہر یہ ہے

کہ وہ اسقاط دین میں سعی کرے گا پھر شارحین نے اس پر اضافہ کیا کہ عرف کے ساتھ چلو جدھر لے جائے محقق نے فتح میں فرمایا اور وہ جس کا اعتبار ہمارے علاقے میں واجب ہے یہ ہے کہ بیشک گندم،

1 فتاویٰ انقرویہ باب فی اختلاف الجهاز والمهر دار الاشاعت العربیہ افغانستان ۱/ ۶۵- ۶۴ 2 ہدایہ باب المهر المكتبة العربية كراچی ۱/ ۳۱۷

Fatawa Rizvia Volume 12

[Arabic Column Text] And almonds, flour, sugar, the live sheep, and the rest; regarding these, the woman's statement is the one considered, because it is customarily known that all such things are sent as gifts. Thus, the outward appearance supports the woman and not the man. His statement is not accepted except in items such as clothes and a female servant [1]. It is stated in 'Al-Nahr al-Fa'iq': "I say: It is appropriate that his statement also not be accepted regarding clothes sent with sugar and the like, due to custom" [2]. After quoting this in his annotation on 'Al-Kanz', Sayyid Abu al-Sa'ud stated: "I say: It is appropriate that the statement be hers in things other than currency, due to continuous custom" [3]. It is stated in 'Radd al-Muhtar': "I say: Among those things are what he sends to her before the wedding during Eids and seasonal occasions, such as clothes and jewelry. Likewise, the ruling applies to what he gives her, such as dirhams or dinars, on the morning after the wedding night, which is customarily called 'Sabha'. All of this is recognized in our time as being a gift and not from the mahr (dower), especially what is called 'Sabha', as the wife reciprocates by giving him clothes and the like on the wedding morning [4] ... all that is only because the custom..."

[Urdu Column Text] Regarding almonds, flour, sugar, a live goat, and all other mentioned items, the woman's statement shall be considered credible. In all these items, the custom is that they are sent as gifts; therefore, the apparent evidence is in favor of the woman, not the man. The man's statement shall not be credible except in items like clothes and a slave girl. In 'Al-Nahr al-Fa'iq', it is stated: "I say, it is appropriate that his statement also not be accepted regarding clothes sent along with sugar and the like, due to custom". After quoting this in his annotation on 'Al-Kanz', Sayyid Abu al-Sa'ud said: "I say, due to general custom, the woman's statement should be considered credible in things other than cash". In 'Radd al-Muhtar', it is said: "I say, among such items are those which he sends to her before the wedding during Eids and festivals, such as clothes and jewelry. Similarly, the ruling applies to those items, dirhams, and dinars given to his wife on the morning following the wedding night, which is customarily called 'Sabha'. Because all these items in our time are known to be gifts, not part of the dower (mahr), especially what is called 'Sabha', because the wife reciprocates on the morning after the wedding with clothes, etc."

[Footnotes] 1. Fath al-Qadir, Chapter on Dower, Maktaba Nooriya Razviya Sukkur, 3/256. 2. Radd al-Muhtar citing Al-Nahr al-Fa'iq, Chapter on Dower, Dar Ihya al-Turath

al-Arabi, Beirut, 3/364. 3. Fath al-Mu'in, Chapter on Dower, H.M. Saeed Company, Karachi, 2/70. 4. Radd al-Muhtar, Chapter on Dower, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/364.

फ़तावा रज़विया खंड 12

[अरबी कॉलम का अनुवाद] बादाम, आटा, चीनी, जीवित बकरी और अन्य शेष वस्तुओं के बारे में स्त्री का कथन विश्वसनीय माना जाएगा, क्योंकि यह प्रथागत रूप से ज्ञात है कि ये सभी चीजें उपहार के रूप में भेजी जाती हैं। इस प्रकार, बाहरी साक्ष्य स्त्री का समर्थन करते हैं, पुरुष का नहीं। कपड़ों और दासी जैसी वस्तुओं के अलावा उसका कथन स्वीकार नहीं किया जाएगा [1]। 'अल-नहर अल-फ़ाइक़' में कहा गया है: "मैं कहता हूँ: यह उचित है कि चीनी और इसी तरह की चीज़ों के साथ भेजे गए कपड़ों के बारे में भी उसकी बात स्वीकार न की जाए, क्योंकि प्रथा यही है" [2]। 'अल-कंज' पर अपनी टिप्पणी में इसे उद्धृत करने के बाद, सैयद अबू अल-सऊद ने कहा: "मैं कहता हूँ: निरंतर प्रथा के कारण, नकदी के अलावा अन्य चीज़ों में स्त्री का कथन विश्वसनीय माना जाना चाहिए" [3]। 'रद्द अल-मुह्तार' में कहा गया है: "मैं कहता हूँ: उन चीज़ों में वे चीज़ें भी शामिल हैं जो वह शादी से पहले ईद और त्यौहारों पर उसे भेजता है, जैसे कपड़े और गहने। इसी तरह, यह नियम उन वस्तुओं, दिरहाम या दीनार पर भी लागू होता है जो वह शादी की रात की अगली सुबह अपनी पत्नी को देता है, जिसे प्रथागत रूप से 'सब्हा' कहा जाता है। हमारे समय में इन सभी चीज़ों को उपहार माना जाना सामान्य है न कि मेहर का हिस्सा, विशेष रूप से वह जिसे 'सब्हा' कहा जाता है, क्योंकि पत्नी शादी की सुबह बदले में उसे कपड़े आदि देती है [4] ... यह सब केवल इसलिए है क्योंकि प्रथा..."

[उर्दू कॉलम का अनुवाद] बादाम, आटा, चीनी, जीवित बकरी और अन्य सभी उल्लेखित वस्तुओं के संबंध में स्त्री का कथन विश्वसनीय माना जाएगा। इन सभी वस्तुओं के संबंध में प्रथा यह है कि वे उपहार के रूप में भेजी जाती हैं; इसलिए, बाहरी साक्ष्य स्त्री का समर्थन करते हैं, पुरुष का नहीं। कपड़ों और दासी जैसी वस्तुओं के अलावा पुरुष का कथन विश्वसनीय नहीं माना जाएगा। 'अल-नहर अल-फ़ाइक़' में कहा गया है कि मैं कहता हूँ कि चीनी आदि के साथ भेजे गए कपड़ों में भी प्रथा के कारण पुरुष का कथन विश्वसनीय नहीं होना चाहिए। सैयद अबू अल-सऊद ने 'हाशिया कंज' में इसे उद्धृत करने के बाद कहा कि मैं कहता हूँ कि सामान्य प्रथा के कारण नकदी के अलावा अन्य चीज़ों में स्त्री का कथन विश्वसनीय होना चाहिए। 'रद्द अल-मुह्तार' में कहा गया है कि मैं कहता हूँ कि शादी से पहले ईद और त्यौहारों पर जो कपड़े और गहने जैसी चीज़ें पति पत्नी को भेजता है, वे भी इसी श्रेणी में आती हैं, और यही नियम उन वस्तुओं, दिरहाम और दीनार का है जो वह शादी की रात की अगली सुबह अपनी पत्नी को देता है जिसे प्रथा में 'सब्हा' कहा जाता है, क्योंकि इन सभी चीज़ों का हमारे

समय में उपहार होना प्रचलित है न कि मेहर का हिस्सा, विशेष रूप से वह जिसे 'सब्हा' कहा जाता है, क्योंकि पत्नी भी शादी की अगली सुबह इसके बदले में कपड़े आदि देती है।

[पादलेख] 1. फ़तह अल-क़दीर, मेहर का अध्याय, मकतबा नूरिया रज़विया सुक्कुर, 3/256. 2. रद्द अल-मुह्तार, अल-नहर अल-फ़ाइक़ के हवाले से, मेहर का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 3/364. 3. फ़तह अल-मुईन, मेहर का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 2/70. 4. रद्द अल-मुह्तार, मेहर का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 3/364.

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

[عربی عبارت] واللوز والدقيق والسكر والشاة الحية وباقيها يكون القول فيها قول امرأة لان المتعارف في ذلك كله ان يرسله هدية فالظاهر مع المرأة لامعه ولايكون القول له الا في نحو الثياب والجارية ١ اهـ وقال في النهر الفائق واقول وينبغى ان لا يقبل قوله ايضاً في الثياب المحمولة مع السكر ونحوه للعرف ٢ اهـ وقال السيد ابو السعود في حاشية الكنز بعد نقله واقول ينبغي ان يكون القول لها في غير النقول للعرف المستمر ٣ اه وقال في ردالمحتار قلت ومن ذلك ما يبعثه اليها قبل الزفاف فى الاعياد والمواسم من نحو ثياب وحلى وكذا ما يعطيها من ذلك او من دراهم اودنانير صبيحة ليلة العرس ويسمى فى العرف صبحة فانكل ذلك تعرف فى زماننا كونه هدية لامن المهر ولاسيما المسمى صبحة فان الزوجة تعوضه عنها ثيابا ونحوها صبيحة العرس ۴ ايضاً اهـ فكل ذلك انما هو لان العرف

[اردو عبارت] بادام، آٹا، شکر، زندہ بکری اور دیگر تمام اشیاء مذکورہ میں عورت کا قول معتبر ہوگا ان تمام اشیاء میں عرف یہ ہے کہ بطور ہدیہ بھیجی جاتی ہیں لہذا ظاہر عورت کا مؤید ہے نہ کہ مرد کا، اور مرد کا قول کپڑوں اور لونڈی جیسی اشیاء کے ماسواء میں معتبر نہ ہوگا النہر الفائق میں فرمایا کہ میں کہتا ہوں شکر وغیرہ کے ساتھ بھیجے ہوئے کپڑوں میں بھی عرف کی وجہ سے مرد کا قول معتبر نہیں ہونا چاہئے، سیّد ابوالسعود نے حاشیہ کنز میں اس کو نقل کرنے کے بعد فرمایا میں کہتا ہوں کہ عرف عام کی وجہ سے نقود کے غیر میں عورت کا قول معتبر ہونا چاہئے۔ ردالمحتار میں فرمایا میں کہتا ہوں کہ زفاف سے پہلے عیدوں اور موسموں پر جو کپڑے اور زیور کی مثل اشیاء شوہر بیوی کی طرف بھیجتا ہے وہ بھی اسی قبیل سے ہیں، اور یونہی حکم ہے ان اشیاء اور دراہم ودنانیر کا جو شبِ زفاف کی صبح اپنی بیوی کو دیتا ہے جس کو عرف میں صبِحہ کا نام دیا جاتا ہے کیونکہ ان تمام اشیاء کا ہمارے زمانے میں ہدیہ ہونا متعارف ہے نہ کہ مہر سے

ہونا خصوصاً وہ جس کو صبِحہ کہا جاتا ہے ، اس لئے کہ عورت بھی شبِ زفاف کی صبح اس کے عوض میں کپڑے وغیرہ

[حواشی] 1. فتح القدیر باب المهر مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۲۵۶/۳ 2. ردالمحتار بحوالہ النهر الفائق باب المهر داراحیاء التراث العربي بیروت ۳۶۴/۳ 3. فتح المعین باب المهر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۷۰/۲ 4. ردالمحتار باب المهر داراحیاء التراث العربي بیروت ۳۶۴/۳

صفحہ نمبر 233

Fatawa Razawiyya - Volume 12

[Table Header - Left: Arabic, Right: Urdu]

[Arabic Box 1] It was judged to be a gift, knowing that the husband is indebted for the dower (mahr). Thus, the indication of debt fell away in the face of custom. Similarly, if the custom here were widespread and encompassing, even if the father were indebted to her, it would be mandatory to judge it as a transfer of ownership, and the daughter's word would be credible. This is how this matter should be understood. And Allah is the Giver of success, and in Him is refuge sought.

[Urdu Box 1] She gives it to the husband, so all this is due to custom which has judged these items to be a gift, despite knowing that the husband is indebted for the dower. Consequently, in contrast to custom, the indication of debt became void. Similarly, here too, since the general and widespread custom is that even if the father is indebted to the daughter, it is mandatory to judge it as a transfer of ownership, and the daughter's statement will be reliable. This matter should be understood in this way. Allah Almighty is the One who grants guidance, and His protection is sought. (T)

And there is no doubt that now the dominant, apparent, widespread, and famous custom across Arab and non-Arab lands is absolutely that the dowry (jehaz) given to a bride is considered solely her property. In fact, it is called "dowry" (jehaz) only when it is sent with the bride at that time as a transfer of ownership.

[Arabic Box 2] As previously mentioned from the statements of Ad-Durr, Al-Bahr, Al-Fath, At-Tajnis, and Adh-Dhakhirah, that the father gives its equivalent as a dowry (jehaz), not as a loan (ariyah)[1].

[Urdu Box 2] As has passed from the statements of Durr, Bahr, Fath, Tajnis, and Dhakhirah, that undoubtedly the father gives its like as a dowry and not as a loan. (T)

In our lands, generally among the nobles, the middle class, and commoners, all consider taking back the dowry or counting it towards the daughter's debt as a severe defect and a cause for reproach. So here, transfer of ownership is generally understood, and hearing a claim of loan without proof is non-existent. In Radd al-Muhtar it says:

[Arabic Box 3] This custom is unknown in our time; rather, everyone knows that the dowry (jehaz) is the woman's property. If he divorces her, she takes it all, and if she

dies, it is inherited from her[2]. (Summary ends). And in it, from the marginal notes of Al-Ashbah by Sayyid Muhammad Abi as-Sa'ud.

[Urdu Box 3] This custom is not known in our time because everyone knows that the dowry is the property of the woman. When the husband divorces her, she takes all of it, and if that woman dies, the dowry goes to her heirs. (Summary ends). And in the same is the marginal note of Sayyid Muhammad Abu al-Sa'ud.

---

[1] Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Mahr, H.M. Saeed Company Karachi, 3/187 [2] Radd al-Muhtar, Chapter of Mahr, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/368

फ़तावा रज़विया - जिल्द 12

[तालिका शीर्षक - बायां: अरबी, दायां: उर्दू]

[अरबी बॉक्स 1] यह जानते हुए कि पति महर (दहेज) का ऋणी है, इसे उपहार माना गया। इस प्रकार, प्रथा के सामने ऋण का संकेत समाप्त हो गया। इसी तरह, यदि यहाँ की प्रथा व्यापक और सर्वव्यापी होती, भले ही पिता उसका ऋणी होता, तो स्वामित्व के हस्तांतरण के रूप में न्याय करना अनिवार्य होता, और बेटी की बात विश्वसनीय मानी जाती। इस मामले को इसी तरह समझा जाना चाहिए। और अल्लाह ही सफलता देने वाला है, और उसी की शरण मांगी जाती है।

[उर्दू बॉक्स 1] वह पति को देती है, तो यह सब उर्फ़(प्रथा) ही है जिसने इन चीज़ों के उपहार होने का फ़ैसला दिया, बावजूद इस बात के मालूम होने के कि शौहर महर का ऋणी है। चुनाँचे उर्फ़ के मुक़ाबले में ऋण का संकेत समाप्त हो गया। तो इसी तरह यहाँ भी जब उर्फ़ए-आम और व्यापक प्रथा है, भले ही बाप बेटी का ऋणी हो, मिल्कियत (स्वामित्व) का फ़ैसला देना अनिवार्य है और बेटी की बात विश्वसनीय होगी। इस विषय को इसी तरह समझना चाहिए। अल्लाह तआला ही तौफ़ीक़ अता फ़रमाने वाला है और उसी की पनाह अपेक्षित है। (त)

और इसमें कोई संदेह नहीं है कि अब अरबी और ग़ैर-अरबी मुल्कों की प्रमुख, स्पष्ट, व्यापक और प्रसिद्ध प्रथा पूर्ण रूप से यही है कि दुल्हन को दिया जाने वाला जहेज़ केवल उसकी संपत्ति माना जाता है। वास्तव में, इसे जहेज़ तभी कहा जाता है जब इसे उस समय स्वामित्व के हस्तांतरण के रूप में दुल्हन के साथ भेजा जाता है।

[अरबी बॉक्स 2] जैसा कि पहले दुर्र, बहर, फ़तह, तजनीस और ज़ख़ीरा के कथनों से उल्लेख किया गया है कि पिता जहेज़ के रूप में इसके समान चीज़ें देता है न कि उधार (आरियत) के रूप में[1]।

[उर्दू बॉक्स 2] जैसा कि दुर्र, बहर, फ़तह, तजनीस और ज़ख़ीरा के कथन से गुज़रा कि निःसंदेह पिता जहेज़ के तौर पर उसकी मिसाल देता है न कि उधार के तौर पर। (त)

हमारे देशों में, आम तौर पर कुलीन, मध्यम वर्ग और सामान्य लोग, सभी जहेज़ वापस लेने या इसे बेटी के ऋण में गिनने को एक गंभीर दोष और तिरस्कार का कारण मानते हैं। तो यहाँ, सामान्य रूप से स्वामित्व का हस्तांतरण ही समझा जाता है, और बिना प्रमाण के उधार के दावे की सुनवाई अस्तित्वहीन है। रद-उल-मुह्तार में है:

[अरबी बॉक्स 3] यह प्रथा हमारे समय में अज्ञात है; बल्कि हर कोई जानता है कि जहेज़ महिला की संपत्ति है। यदि वह उसे तलाक़ देता है, तो वह उसे पूरा ले लेती है, और यदि वह मर जाती है, तो यह उसके वारिसों को मिलता है[2]। (संक्षेप समाप्त)। और इसी में सैय्यद मुहम्मद अबू अल-सऊद द्वारा अल-अशबाह के हाशिये (टिप्पणी) से है।

[उर्दू बॉक्स 3] यह प्रथा हमारे ज़माने में ज्ञात नहीं है क्योंकि हर कोई जानता है कि जहेज़ औरत की मिल्कियत होता है। जब पति उसे तलाक़ दे दे तो वह पूरा ले लेती है और यदि वह औरत मर जाए तो जहेज़ उसके वारिसों को मिलता है। (संक्षेप समाप्त)। और इसी में सैय्यद मुहम्मद अबू अल-सऊद का हाशिया है।

---

[1] अल-बहर अल-राइक़, बाबुल-महर, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 3/187 [2] रद-उल-मुहतार, बाबुल-महर, दार इहया अल-तुरास़ अल-अरबी बैरूत, 2/368

فتاوٰی رضویہ - جلد دو ازدہم

[جدول - دایاں: اردو، بایاں: عربی]

[عربی باکس 1] قضی بکونه هدیة مع العلم بأن الزوج مدین بالمهر فسقطت بجنبه دلالة الدین فکذلك لو ان العرف ههنا عم وصم ولو الاب مدینا لها وجب القضاء بالتملیك وکان القول قولها هکذا ینبغی ان یفهم هذا المقام واللہ الموفق وبه الاعتصام۔

[اردو باکس 1] شوہر کو دیتی ہے پس یہ سب عرف ہی ہے جس نے ان اشیاء کے ہدیہ ہونے کا فیصلہ دیا باوجود اس بات کے معلوم ہونے کے کہ شوہر مہر کا مدیون ہے چنانچہ عرف کے مقابل دلالت دین ساقط ہوگئی، تو یوں ہی یہاں پر جب عرف عام و کثیر ہے اگرچہ باپ بیٹی کا مدیون ہو تملیک کا فیصلہ دینا واجب ہے اور بیٹی کا قول معتبر ہوگا۔ اس مقام کو اسی طرح ہی سمجھنا چاہئے، اللہ تعالٰی ہی توفیق عطا فرمانے والا ہے اور اسی کی پناہ مطلوب ہے۔ (ت)

اور شک نہیں کہ اب عامہ بلاد و عجم کا عرف غالب و ظاہر و فاش و مشتہر مطلقاً یہی ہے کہ جہیز جو دلہن کو دیا جاتا ہے دلہن ہی کی ملک سمجھا جاتا ہے بلکہ جہیز کہتے ہی اسے ہیں جو اُس وقت بطور تملیک دلہن کے ساتھ بھیجا جاتا ہے۔

[عربی باکس 2] کما في سبق من قول الدر والبحر والفتح والتجنیس والذخیرة ان الاب یدفع مثله جهاز لاعاریة 1۔

[اردو باکس 2] جیسا کہ در، بحر، فتح، تجنیس اور ذخیرہ کے قول سے گزرا کہ بیشک باپ اس کی مثل بطور جہیز دیتا ہے نہ کہ بطور عاریت۔ (ت)

ہمارے بلاد میں عموماً شر اء واوساط و عامہ اراذل سب کا یہی عرف ہے جہیز واپس لینے یا بیٹی کے قرض میں محسوب کرنے کو سخت عیب و موجب طعن سمجھیں گے تو یہاں علی العموم تملیک ہی مفہوم اور سماع دعویٰ عاریت بے بینہ معدوم۔ رد المحتار میں ہے:

[عربی باکس 3] هذا العرف غير معروف فی زماننا بل كل احد يعلم ان الجهاز ملك المرأة وانه اذا طلقها تأخذه كله واذا ماتت يورث عنها 2 اه ملخصاً وفيه عن حاشية الاشباه للسيد محمد ابی السعود

[اردو باکس 3] یہ عرف ہمارے زمانے میں معروف نہیں کیونکہ ہر کوئی جانتا ہے کہ جہیز عورت کی ملکیت ہوتا ہے، جب شوہر اس کو طلاق دے دے تو وہ تمام لے لیتی ہے اور اگر وہ عورت مر جائے تو جہیز اس کے وارثوں کو ملتا ہے، اھ ملخصاً، اور اسی میں سید محمد ابوالسعود کے حاشیہ

---

1 بحر الرائق باب المهر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۸۷/۳ 2 ردالمختار باب المهر داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۶۸/۲

Fatawa Ridawiyyah Volume 12

From the marginalia of al-Allamah al-Sharaf al-Ghazzi, it is mentioned from "Ashbah" that the Great Imam, the Martyr, said that the preferred verdict (Fatwa) is to rule that the dowry (Jahez) is the property (of the wife) and not a loan, because this is what is apparent and predominant, etc. (T)

In the region of Madras where there is a custom of taking it back, if like other cities of the world, they also give dowry as a transfer of ownership (Tamleek) and intend it as such, then even if this return after the bride's death is based on considering it a gift for her lifetime only, it still becomes a complete gift like in other cities. The condition of "during lifetime" is void and invalid. After the bride's death, it will be considered her estate and divided among her heirs. It is stated in Durr al-Mukhtar: "A life-interest gift (Umra) is valid for the recipient and for their heirs after them, because the condition (of return) is void." A gift for a lifetime is valid; it belongs to the recipient during their life and goes to their heirs after their death, because the condition of "during lifetime" (returning it to the giver) is invalid. (T)

The husband or other heirs of the bride cannot be forced to return it at all, nor is there any entitlement to it. "For indeed, the death of one of the contracting parties is among the impediments to revocation" (Because indeed, the death of one of the two parties to a contract prevents its revocation. T). Even where a gift can be revoked, it is only as long as both the giver (Wahib) and the receiver (Mohub-lahu) are alive. Once one of them dies, it is clarified in Sharh al-Wiqayah and all other books that revocation is no longer possible. However, if ownership was not transferred there and it was intended as a loan, then certainly this return is right, proper, and in accordance with the pure Sharia, even if taken back during the bride's lifetime.

"For indeed, the hand is responsible for what it has taken until it returns it." "Indeed, Allah commands you to render trusts to their owners." Because what that woman took was as a kindness and trust, until she returns it. (In the Holy Quran it is stated that) "Indeed, Allah commands you to render trusts to those to whom they are due." (T)

This was the answer to the four preceding questions; the questioner asked comprehensive questions, so these matters were addressed in their answer.

1 Radd al-Muhtar, Chapter of Mahr, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/367 2 Durr al-Mukhtar, Book of Gift, Section on Miscellaneous Issues, Matba' Mujtabai, Delhi, 2/165 3 Al-Quran al-Karim, 4/58

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

अल्लामा अल-शराफ़ अल-ग़ज़्ज़ी के हाशिए से, "अशबाह" के हवाले से उल्लेख है कि शैख़ इमाम अजल्ल शहीद ने फ़रमाया कि फ़तवे के लिए पसंदीदा यह है कि जहेज़ के मिल्क (स्वामित्व) होने का फ़ैसला दिया जाए न कि आरियत (ऋण) होने का, क्योंकि यही ज़ाहिर और ग़ालिब है, इत्यादि। (त)

मद्रास इलाके में जहाँ वापस लेने का रिवाज़ है, अगर दुनिया के अन्य शहरों की तरह वहाँ भी जहेज़ तमीलिकन (स्वामित्व के रूप में) ही देते हैं और उससे तमीलिक ही का इरादा करते हैं, और दुल्हन की मौत के बाद यह वापसी इस आधार पर होती है कि वे इसे केवल जीवन भर के लिए उपहार (हिबा) समझते हैं, तो यह अन्य शहरों की तरह पूर्ण उपहार हो जाता है। जीवन भर की शर्त बेकार और बातिल है। दुल्हन की मौत के बाद, यह उसकी विरासत (तरका) माना जाएगा और उसके वारिसों में विभाजित होगा। दुर्र-ए-मुख्तार में है: "उमरा (जीवन-हित उपहार) प्राप्तकर्ता के लिए और उसके बाद उसके वारिसों के लिए जायज़ है क्योंकि शर्त बातिल है।" जीवन भर के लिए हिबा जायज़ है; यह प्राप्तकर्ता के जीवन में उसके लिए है और उसकी मृत्यु के बाद उसके वारिसों के लिए होगा, क्योंकि जीवन भर की शर्त (वापसी की) बातिल है। (त)

शौहर या दुल्हन के अन्य वारिसों पर वापसी के लिए बिल्कुल भी दबाव नहीं डाला जा सकता, और न ही इसका कोई अधिकार है। "क्योंकि वास्तव में, अनुबंध करने वाले पक्षों में से किसी एक की मृत्यु वापसी की बाधाओं में से है" (क्योंकि अनुबंध के दो पक्षों में से किसी एक की मृत्यु उसे रद्द करने से रोकती है। त)। हिबा में वापसी जहाँ संभव भी है, तो केवल तब तक जब तक वाहिब (देने वाला) और मोहूब-लहू (लेने वाला) दोनों जीवित हों। जब उनमें से कोई मर जाए, तो शर्ह-ए-विकाया और अन्य सभी किताबों में स्पष्ट है कि अब रुजू (वापसी) नहीं हो सकती। और अगर वहाँ तमीलिकन नहीं देते बल्कि आरियत (उधार) मक़सूद होती है, तो यकीनन यह वापसी सही, उचित और शरीअत-ए-मुतह्हरा के मुताबिक़ है, चाहे दुल्हन के जीवन काल में ही वापस ले ले।

"क्योंकि वास्तव में, हाथ उस चीज़ के लिए ज़िम्मेदार है जो उसने लिया है जब तक कि वह उसे लौटा न दे।" "बेशक, अल्लाह तुम्हें आदेश देता है कि अमानतें उनके स्वामियों को अदा करो।" क्योंकि उस औरत ने जो लिया वह एहसान और अमानत के तौर पर है, जब तक कि वह उसे लौटा न दे। (क़ुरआन पाक में है कि) "बेशक अल्लाह तआला तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें अमानत वालों को अदा करो।" (त)

यहाँ तक पिछले चार सवालों का जवाब था, साइल (प्रश्नकर्ता) ने व्यापक सवाल किए थे, इसलिए उनके जवाब में ये मसले (बताए गए)।

1 रद-उल-मुह्तार, बाबुल महर, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत 2/367 2 दुर्र-ए-मुख्तार, किताबुल हिबा, विभिन्न मसलों का अनुभाग, मतबा मुजतबाई, दिल्ली 2/165 3 अल-क़ुरआन अल-करीम 4/58

فتاوی رضویہ جلد دو ازدہم

عن حاشية العلامة الشرف الغزي قال قال الشيخ الامام الاجل الشهيد المختار للفتوى ان يحكم بكون الجهاز ملكا لا عارية لانه الظاهر الغالب الخ (ت) اشباہ سے بحوالہ حاشیہ علامہ شرف غزی مذکور ہے کہ شیخ امام اجل شہید نے فرمایا فتوی کے لئے مختار یہ ہے کہ جہیز کے ملک ہونے کا فیصلہ دیا جائے نہ کہ عاریت ہونے کا، کیونکہ یہی ظاہر غالب ہے الخ (ت)

ملک مدراس میں کہ واپس لینے کا رواج ہے اگر مثل عامہ بلاد دنیا وہاں بھی جہیز تملیکا ہی دیتے اور تملیک ہی اس سے قصد کرتے ہیں اور یہ واپسی بعد موت عروس اس بنا پر ہوتی ہے کہ اسے ہبہ تاحین حیات سمجھتے ہیں جب تو وہ مثل دیگر بلاد ہبہ کاملہ ہو جاتا ہے اور حین حیات کی شرط لغو باطل بعد موت عروس ترکہ عروس قرار پاکر وارثان عروس پر منقسم ہوگا ۔ در مختار میں ہے : جاز العمری للمعمر له لو ورثته بعده لبطلان الشرط2 ۔ ہبہ تاحین حیات جائز ہے معمولہ کی زندگی میں اس کے لئے اور اس کے مرنے کے بعد اس کے وارثوں کے لئے ہوگا کیونکہ حین حیات کی شرط باطل ہے (ت)

شوہر وغیرہ دیگر ورثہ عروس پر واپسی کا جبر ہر گز نہیں ہوسکتا ، نہ اس کا اصلا استحقاق، فان مواحد العاقدين من موانع الرجوع (کیونکہ بے شک عاقدین میں سے کسی ایک کی موت رجوع کے موانع میں سے ہے۔ت) ہبہ میں واپسی جہاں ہو بھی سکتی ہے تو اسی وقت تک واہب و موہوب لہ دونوں زندہ ہوں، جب ان میں کوئی مر جائے تو اسی شرح وقایہ وغیرہ تمام کتب میں تصریح ہے کہ اب رجوع نہیں، اور اگر وہاں تملیکا نہیں دیتے بلکہ عاریت مقصود ہوتی ہے تو بیش یہ واپسی حق وبجا و مطابق شرع مطہر ہے اگر چہ دلہن کی حیات ہی میں واپس لے،

فان علی الید ما اخذت حتی تردھا اِنَّ اللہَ یَاْمُرُکُمْ اَنْ تُؤَدُّوالْاَمٰنٰتِ اِلٰٓی اَہْلِہَا3۔ اس لئے کہ بے شک جو اس عورت نے لیا وہ بطور احسان وامانت ہے یہاں تک کہ وہ اسے لوٹا دے (قرآن پاک میں ہے کہ) بے شک اللہ تعالی تمہیں حکم دیتا ہے کہ امانتیں اہل امانت کو ادا کرو۔(ت)

یہاں تک چار سوال پیشین کا جواب تھا، سائل نے کلیہ سوال کئے لہذا ان کے جواب میں ان مسائل

1 ردالمحتار باب المہر دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۶۷/۲ 2 درمختار کتاب الھبہ فصال فی مسائل متفرقہ مطبع مجتبائی دہلی ۱۶۵/۲ 3 القرآن الکریم ۵۸/۴

...was needed, otherwise the issue of Faid al-Nisa Begum has no connection to this discussion. This ruling—that in the absence of custom, the claimant's statement with an oath regarding ownership is credible (i.e., "I gave the dowry from my property as a loan, hence I am entitled to its return")—is mentioned in common books of the school of law for the father. And by virtue of custom, the real mother is also joined with him. Truly, parents prepare children's dowry from their own property, so it being from them is established by apparent ruling. Their claim of it being a loan, in the absence of evidence for transfer of ownership, is acceptable based on these principles. This is unlike a stranger, whose claim never exceeds the limits of a claim. So much so that Allama Bahr in 'al-Bahr' expressed hesitation regarding this ruling being applicable to the real mother and grandfather as well, whereas his student Allama Ghazni asserted in the text of 'Tanwir' that the mother is like the father. Allama Tahtawi had hesitation regarding the real maternal and paternal grandmothers being like the mother.

Arabic: He said under his statement "And the mother is like the father in providing her dowry": Look, is the grandmother like her?[1]

Accordingly, under his statement that the mother is like the father in giving dowry, he said: Look, are the paternal and maternal grandmothers like the mother? (T)

Allama Ibn Wahban discussed including other guardians (awliya) in this same ruling based on his opinion. Allama Ibn al-Shihna scrutinized this, which Allama Shurunbulali quoted and confirmed. There is no doubt that this joining is highly questionable unless it is established by general and specific custom, like with parents, that all guardians also give dowry from their own property. Rather, in our lands, it is never known for preparation to be solely from the mother's specific property. Dowry is absolutely from the father's property, or the mother also includes some items, but not that it's solely from the mother's property. However, when the father does not have property or is separated from her and the mother performed the marriage herself, then in these two cases, besides these, the mother's claim of exclusivity must certainly require evidence as there is apparently no witness for it, as is not hidden. And Allah Almighty knows best.

This, by the praise of Allah, is a noble investigation with which the Powerful and Subtle Lord has opened the heart of His humble and weak servant. Through it, the view of Allama Ibn Abd al-Barr has become clear and the discourse of 'al-Bahr' has become sound. So let us narrate their words for you so that the matter becomes manifest to you.

And this, by the praise of Allah Almighty, is a magnificent investigation which the Powerful and Subtle Master revealed to this deficient and weak servant. Through it, the view of Allama Abd al-Barr became clear and the speech of 'al-Bahr' became plausible. Now we mention their statements for you so that before you...

[1] Hashiya al-Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Mahr, Dar al-Ma'rifah Beirut, 2/67.

फतावा रज़विया, जिल्द 12

...की आवश्यकता हुई अन्यथा फ़ैज़-उन-निसा बेगम के मसले से इस बहस का कोई संबंध नहीं है। यह नियम कि प्रथा के अभाव में, स्वामित्व के संबंध में दावेदार का शपथ के साथ कथन विश्वसनीय होगा (जैसे "मैंने अपनी संपत्ति से दहेज ऋण के रूप में दिया था, इसलिए मैं इसकी वापसी का हकदार हूँ"), मत के सामान्य ग्रंथों में पिता के लिए उल्लिखित है। और प्रथा के नियम के अनुसार, वास्तविक माता को भी उनके साथ जोड़ा गया है। वास्तव में, माता-पिता अपनी ही संपत्ति से बच्चों का दहेज तैयार करते हैं, इसलिए उनकी ओर से होना प्रत्यक्ष रूप से सिद्ध है। स्वामित्व के प्रमाण के अभाव में, ऋण का उनका दावा उन्हीं सिद्धांतों पर स्वीकार्य है। इसके विपरीत एक अजनबी व्यक्ति है, जिसका दावा कभी भी दावे की सीमाओं से बाहर नहीं जाता है। यहाँ तक कि अल्लामा बहर ने 'अल-बहर' में वास्तविक माता और दादा के लिए भी इस नियम के होने में हिचकिचाहट व्यक्त की, जबकि उनके शिष्य अल्लामा गज़नी ने 'तनवीर' के पाठ में माता को पिता के समान होने पर दृढ़ता दिखाई। अल्लामा तहतावी को वास्तविक नानी और दादी के माता के समान होने में हिचकिचाहट रही।

अरबी: तो उन्होंने अपने इस कथन के नीचे कहा कि 'दहेज देने में माता पिता के समान है': देखो क्या दादी उसके समान है?[1]

तदनुसार, अपने इस कथन के तहत कि माता दहेज देने में पिता के समान है, उन्होंने कहा: देखो क्या दादी और नानी माता के समान हैं? (T)

अल्लामा इब्न वाहबान ने अपनी राय से अन्य संरक्षकों (औलिया) को भी इसी नियम में शामिल करने की चर्चा की। अल्लामा इब्न अल-शिहना ने इस पर विचार किया, जिसे अल्लामा शुरुनबुलाली ने उद्धृत और पुष्ट किया। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह जुड़ाव अत्यधिक विचारणीय है जब तक कि माता-पिता की तरह सामान्य और विशेष प्रथा से यह सिद्ध न हो जाए कि सभी संरक्षक भी अपनी ही संपत्ति से दहेज देते हैं। बल्कि हमारे देशों में, केवल माता की निजी संपत्ति से तैयारी करना कतई प्रसिद्ध नहीं है। दहेज पूर्ण रूप से पिता की संपत्ति से होता है, या माता भी कुछ चीजें शामिल कर देती है, न कि केवल माता की संपत्ति से। हालाँकि, जब पिता के पास संपत्ति न हो या उससे अलग हो और माता ने स्वयं विवाह कराया हो, तो इन दो स्थितियों के अलावा, माता के विशिष्टता के दावे को निश्चित रूप से प्रमाण की आवश्यकता होनी चाहिए क्योंकि प्रत्यक्ष रूप से इसके लिए कोई गवाह नहीं है, जैसा कि स्पष्ट है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

यह, अल्लाह की प्रशंसा के साथ, एक उत्कृष्ट शोध है जिसे शक्तिशाली और सूक्ष्म स्वामी ने अपने इस तुच्छ और कमजोर सेवक पर प्रकट किया है। इसके माध्यम से अल्लामा इब्न अब्द अल-बर्र का दृष्टिकोण स्पष्ट हो गया और 'अल-बहर' का कथन सुदृढ़ हो गया। तो आइए हम आपके लिए उनके कथनों का उल्लेख करें ताकि मामला आपके सामने स्पष्ट हो जाए।

और यह अल्लाह तआला की प्रशंसा के साथ एक महान शोध है जिसे शक्तिशाली और सूक्ष्म स्वामी ने अपने इस अपूर्ण और कमजोर सेवक पर प्रकट किया। इससे अल्लामा अब्दुल बर्र का दृष्टिकोण स्पष्ट हो गया और 'अल-बहर' का कथन उचित हो गया। तो अब हम आपके लिए उनके कथनों का उल्लेख करते हैं ताकि आपके समक्ष...

[1] हाशिया अल-तहतावी अली अल-दुर्र अल-मुख्तार, अध्याय: मेहर, दार अल-मआरिफा बेरूत, 2/67.

पेज 236/688

کی حاجت ہوئی ورنہ مسئلہ فیض النساء بیگم سے اس بحث کو علاقہ نہیں، یہ حکم کہ بحالت عدم عرف تملیک مدعی کا قول قسم کے ساتھ معتبر ہو کہ میں نے اپنے مال سے عارِیۃً جہیز دیا لہٰذا واپسی کا مستحق ہوں عامہ کتب مذہب میں باپ کے لئے مذکور ہے اور بحکم عرف حقیقی ماں کو بھی اس سے لاحق کیا گیا واقعی ماں باپ پانے ہی مال سے اولاد کا جہیز تیار کرتے ہیں تو ان کی طرف سے ہو نا بحکم ظاہر خود ثابت رہا دعوٰی عاریت وہ بحال عدم دلیل تملیک انہیں اصول پر واجب القبول بخلاف اجنبی کہ اُس کا یہ دعوٰی حدود دعوٰی سے ہر گز متجاوز نہیں یہاں تک کہ علامہ بحر نے بحر میں حقیقی ماں اور دادا کے لئے بھی اس حکم کے ہونے میں تردد فرمایا اور جبکہ اُن کے تلمیذ علامہ غزٰلی نے متن تنویر میں ماں کے مثل پدر ہونے پر جزم کیا۔ علامہ طحطاوی کو حقیقی نانی دادی کے مثل مادر میں تردد رہا،

فقال تحت قولہ والام کالاب في چنانچہ اپنے اس قول کے تحت کہ ماں جہیز دینے میں باپ کی تجھیزھا انظر ھل الجدۃ مثلھا[1]۔ طرح ہے فرمایا دیکھو کیا دادی اور نانی ماں کی مثل ہے؟ (ت)

علامہ ابن واہبان نے اپنی رائے سے دیگر اولیاء کو اسی حکم میں شامل کرنے کی بحث کی علامہ ابن الشحنہ نے اُس میں نظر کردی کہ علامہ شرنبلالی نے نقل فرماکر مقرر رکھی اور شک نہیں کہ یہ الحاق سخت محل تامل ہے جب تک والدین کی طرح عرف عام وخاص سے ثابت نہ ہو جائے کہ سب اولیاء بھی اپنے ہی مال سے جہیز دیتے ہیں بلکہ ہمارے بلاد میں تنہاماں کے مال خاص سے بھی تجہیز ہونا ہرگز معروف نہیں جہیز مطلقاً مال پدر سے ہوتا ہے یا بعض اشیاء ماں بھی شامل کردیتی ہے نہ کہ خاص مالِ مادر سے ہو، مگر جبکہ باپ مال نہ رکھتا ہو یا اُس سے جدا ہو

کر ماں نے بطورِ خود تزویج کی وہ تو ان دو صورتوں کے علاوہ ماں کا دعویٰ اختصاص بھی ضرور محتاج بینہ ہونا چاہئے کہ ظاہر اً اُس کے لئے شاہد نہیں کمالا یخی، واللہ تعالیٰ اعلم۔

وهذا بحمد الله تحقيق شريف فتح به المولى القوى اللطيف على عبده الذليل الضعيف اتضح به نظر العلامة عند البرواتجه به كلام البحر فلنسق لك كلماتهم ليتجلى عندك الامر

اور یہ بحمد اللہ تعالیٰ عظیم الشان تحقیق ہے جو قوی ولطیف مالک نے اپنے اس ناقص وضعیف بندے پر منکشف فرمائی، اس سے علامہ عبدالبر کی نظر واضح ہو گئی اور کلام بحر وجیہ ہو گیا تو اب ہم تیرے لئے ان کے ارشادات کو ذکر کرتے ہیں تاکہ تیرے نزدیک

[1] حاشیۃ الطحطاوی علی الدرالمختار باب المہر دارالمعرفۃ بیروت ۲/ ۶۷

Ibn Wahban said in his poem (Manzumah): "And whoever says regarding his daughter's dowry, 'I gave it as a loan (Ariyah)', he is to be believed, and it is more apparent that having witnesses is a condition." (1) Then he said in its commentary: It is appropriate that the ruling regarding what the mother and the guardian of a minor girl claim when she is married off should be as mentioned, because custom prevails in that as well. (2) Etc. Meaning they prepare the dowry from their own wealth, so the apparent situation stands as a witness for them. The learned commentator (Allama Sharih) said: I say, regarding the guardian, there is some doubt in my view. (3) This is also narrated by Shurunbulali in Taysir al-Maqasid and confirmed. It is stated in al-Durr: "The mother and the guardian of the minor are like the father in what was mentioned." (4) Imam Tahtawi (marked as 'T') said: His words "in what was mentioned" mean regarding the consideration of custom. And this ruling regarding the mother and guardian is a discussion of Ibn Wahban. Allama Abd al-Barr said: Regarding the guardian of a minor, there is some doubt in my view, meaning the prevailing state in his case is loaning (Ariyah), unlike the parents whose state... [continues]

Footnotes: 1. Manzumah Ibn Wahban 2. Radd al-Muhtar, referring to Sharh al-Manzumah, Chapter of Mahr, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/367. 3. Radd al-Muhtar, referring to Sharh al-Manzumah, Chapter of Mahr, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/367. 4. Durr al-Mukhtar, Kitab al-Ariyah, Matba' Mujtabai, Delhi, 2/157.

इब्न वहबान ने अपनी मंजूमा (कविता) में फ़रमाया: "और जो व्यक्ति अपनी बेटी के दहेज के बारे में कहे कि 'मैंने इसे ऋण (आरियत) के तौर पर दिया है', उसकी तस्दीक की जाएगी और इसमें गवाहों की शर्त होना अधिक स्पष्ट है।" (1) फिर इसकी व्याख्या में फ़रमाया कि दहेज के बारे में माँ और नाबालिग लड़की का निकाह कराने वाले वली (अभिभावक) के दावे का हुक्म भी वैसा ही होना चाहिए जैसा कि गुज़र चुका है क्योंकि इसमें प्रथा (उर्फ़) वैसी ही है। (2) आदि। यानी वे अपने माल से दहेज बनाते हैं तो ज़ाहिरी तौर पर उनके लिए गवाह हुआ। अल्लामा शारेह (व्याख्याकार) ने फ़रमाया कि मेरे नज़दीक वली-ए-सगीरा (नाबालिग के अभिभावक) के मामले में कुछ संदेह है। (3) ऐसा ही शरुंबुलाली ने 'तयसीर अल-मकासिद' में इसे उद्धृत किया और स्थापित रखा। 'दुर' (अल-दुर्रुल मुख्तार) में फ़रमाया कि माँ और सगीरा का वली ज़िक्र की गई बातों में बाप की तरह हैं। (4) इमाम तहतावी (T) ने फ़रमाया कि उनके शब्द "ज़िक्र की गई बातों में" से मुराद यह है कि प्रथा (उर्फ़) के ऐतबार से, और माँ और सगीरा के वली के बारे में यह हुक्म इब्न वहबान की बहस है। अल्लामा अब्दुल बर्र ने फ़रमाया कि वली-ए-सगीरा में मेरे नज़दीक संदेह है क्योंकि उसकी हालत में ऋण (आरियत) की प्रबलता है, माँ-बाप के खिलाफ जिनकी हालत... [जारी]

फुटनोट्स: 1. मंजूमा इब्न वहबान 2. रद्दुल मुहतार, हवाला शरह मंजूमा, बाबुल मेहर, दार इहयाउत तुराथुल अरबी, बेरूत, 3/367 3. रद्दुल मुहतार, हवाला शरह मंजूमा, बाबुल मेहर, दार इहयाउत तुराथुल अरबी, बेरूत, 3/367 4. दुर्रे मुख्तार, किताबुल आरियत, मतबअ मुजतबाई, दिल्ली, 2/157

قال ابن وهبان في منظومته: ومن في جهاز البنت قال اعرته يصدق والاشهاد يشترط اظهر (1) معاملہ منکشف ہو جائے۔ ابن وہبان نے اپنی منظومہ میں فرمایا: اور جو شخص اپنی بیٹی کے جہیز کے بارے میں کہے کہ میں نے بطورِ عاریت دیا ہے تو اس کی تصدیق کی جائے گی اور اس میں گواہوں کا شرط ہونا اظہر ہے۔ پھر اس کی شرح میں فرمایا کہ جہیز کے بارے میں ماں اور نابالغہ کا نکاح کرنے والے ولی کے دعویٰ کا حکم بھی ایسا ہی ہونا چاہئے جیسا کہ گزرا کیونکہ اس میں عرف ایسا ہی ہے یعنی وہ اپنے مالوں سے جہیز بناتے ہیں تو ظاہر ان کے لئے شاہد ہوا۔ علامہ شارح نے فرمایا کہ میرے نزدیک ولیِ صغیرہ میں نظر ہے، ایسا ہی شرنبلالی نے تیسر المقاصد میں اس کو نقل کرکے مقرر رکھا۔ در میں فرمایا کہ ماں اور صغیرہ ولی مذکور میں باپ کی طرح ہیں، اور ط نے فرمایا کہ اس کے قول "فیما ذکر" (مذکور میں) سے مراد یہ ہے کہ اعتبارِ عرف میں، اور ماں اور صغیرہ کے ولی کے بارے میں یہ حکم ابنِ وہبان کی بحث ہے۔ علامہ عبد البر نے فرمایا کہ ولی صغیرہ میں میرے نزدیک نظر ہے کیونکہ اس کے حال سے غالب عاریت ہے بخلاف ماں باپ کے کہ ان کی

حواشی: 1. منظومہ ابن وہبان 2. ردالمحتار بحوالہ شرح منظومہ باب المہر دار احیاء التراث العربی بیروت ۳ / ۳۶۷ 3. ردالمحتار بحوالہ شرح منظومہ باب المہر دار احیاء التراث العربی بیروت ۳ / ۳۶۷ 4. درمختار کتاب العاریۃ مطبع مجتبائی دہلی ۲ / ۱۵۷

...their affection for the daughter is greater, but since the established custom is that the guardian prepares the dowry from his own resources, there is no room for doubt (nazar).

I say (the author): The basis of the doubt is not the establishment of the ruling after conceding the custom; rather, the matter lies in the actual prevalence of the custom. Thus, an objection arises against the statement of Ibn Wahban because the custom is consistent regarding the guardian's act of giving items on loan (Aariyah). From this, it becomes evident that it was not appropriate to interpret 'what was mentioned' based on custom, for whenever a custom is established, it becomes the strong and decisive ruling, with no distinction in this between a father, a mother, or anyone else. Instead, what is meant in the mentioned text is the acceptance of a claim of lending from one's own property. Similarly, the interpretation of 'doubt' is not as stated; rather, the doubt is that we do not concede that the predominant case for a minor's guardian is preparing the dowry from his own wealth.

Furthermore, know that Allama al-Bahr, after explaining the ruling regarding the father as previously mentioned, stated in 'Al-Bahr': 'A minor girl prepared her dowry using the wealth of her mother and father and her own labor during childhood and adulthood. Her mother then passed away, and the father handed over the entire dowry to the girl. In this case, her brothers have no right to claim it as their mother's inheritance and demand their shares from it.' He then added, 'And by this...'

Footnotes: 1. Hashiya al-Tahtawi on al-Durr al-Mukhtar, Book of Aariyah, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 3/390. 2. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Mahr, H.M. Saeed Company, Karachi, 3/187.

फतावा रज़विया | जिल्द बारहवीं

...बेटी पर उनकी ममता अधिक होती है, लेकिन चूंकि स्थापित प्रथा (उर्फ़) यही है कि वली (अभिभावक) अपने संसाधनों से दहेज तैयार करता है, तो फिर शंका (नज़र) की कोई गुंजाइश नहीं है।

मैं कहता हूँ (लेखक): शंका का आधार प्रथा को स्वीकार करने के बाद हुक्म का सिद्ध होना नहीं है; बल्कि मामला प्रथा के वास्तविक प्रचलन में है। अत; इब्न वहबान के कथन पर आपत्ति उठती है क्योंकि वली द्वारा ऋण (आरियत) के रूप में सामान देने के संबंध में प्रथा इसी प्रकार है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि 'जो उल्लेख किया गया है' उसकी व्याख्या प्रथा के आधार पर करना उचित नहीं था, क्योंकि जब भी कोई प्रथा स्थापित होती है, तो वह एक प्रबल और निर्णायक नियम बन जाती है, जिसमें पिता, माता या किसी अन्य के बीच कोई अंतर नहीं होता है। इसके बजाय, उल्लेखित पाठ में अभिप्राय अपने स्वयं के धन से ऋण के दावे को स्वीकार करना है। इसी प्रकार, 'नज़र' (शंका) की व्याख्या वैसी नहीं है जैसी बताई गई है; बल्कि शंका यह है कि हम यह स्वीकार नहीं करते हैं कि एक नाबालिग के वली के लिए प्रमुख स्थिति अपने धन से दहेज तैयार करने की है।

आगे जानें कि अल्लामा अल-बहर ने पिता के संबंध में हुक्म स्पष्ट करने के बाद, जैसा कि पहले बताया गया है, 'अल-बहर' में कहा है: 'एक नाबालिग लड़की ने बचपन और वयस्कता के दौरान अपनी माँ और पिता के धन और अपने स्वयं के श्रम का उपयोग करके अपना दहेज तैयार किया। फिर उसकी माँ का निधन हो गया, और पिता ने पूरा दहेज लड़की को सौंप दिया। ऐसी स्थिति में, उसके भाइयों को यह अधिकार नहीं है कि वे इसे अपनी माँ की विरासत मानकर उसमें अपने हिस्से का दावा करें।' फिर उन्होंने आगे कहा, 'और इसके द्वारा...'

पाद-टिप्पणियाँ: १. हाशिया अत-तहतावी अल-दुर्र अल-मुख्तार, किताब अल-आरियत, दार अल-मारिफ़ा, बेरूत, ३/३९०। २. अल-बहर अर-राइक़, बाब अल-महर, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, ३/१८७।

पेज २३८ ऑफ़ ६८८

شفقت بیٹی پر زیادہ ہوتی ہے، لیکن عرفِ رائج یہی ہو کہ ولی اپنے پاس سے جہیز بناتا ہے تو پھر کوئی نظر نہیں اھ

اقول: (میں کہتا ہوں) اعتراض کا منشاء عرف کے تسلیم کرنے کے بعد حکم ثبوت نہیں، اصل معاملہ تو صرف عرف کے جاری ہونے میں ہے، پس ابن وہبان کے قول پر اعتراض وارد ہے کیونکہ اس (ولی کے عاریۃً دینے) میں عرف اسی طرح ہے اور اسی سے ظاہر ہو گیا کہ ماذکر سے مراد اعتبارِ عرف لینا درست نہیں اس لئے کہ عرف جب بھی ثابت ہو ، وہی حاکم قوی ہوتا ہے اس میں ماں اور باپ کے درمیان کوئی فرق نہیں ہوتا بلکہ ماذکر سے مراد اس کے اپنے مال سے دعویٰ عاریت کو قبول کرنا ہے اور یوں ہی نظر کی بھی وہ تفسیر نہیں جو ذکر کی گئی بلکہ نظر یہ ہے کہ بیشک ہم تسلیم نہیں کرتے کہ اُس کے ولی صغیرہ کے حال سے غالب اس کے اپنے مال سے جہیز بنانا ہے۔

پھر جان کہ علامہ بحر نے باپ کے حکم کا افادہ فرمانے کے بعد، جیسا کہ گزرا۔ بحر میں فرمایا کہ صغیرہ نے ماں باپ کے مال اور اپنی دستکاری سے حالت صغر اور کبر میں کچھ جہیز بنایا پھر اس کی ماں مر گئی اور باپ نے وہ سارا سامان اس لڑکی کو جہیز میں دے دیا تو اس کے بھائیوں کو یہ حق نہیں کہ ماں کا ترکہ قرار دے کر اس میں سے اپنے حصے کا دعویٰ کریں اھ پھر کہا "وبہذا" (اور اس کے ساتھ)۔۔۔

حواشی: ۱۔ حاشیہ الطحطاوی علی الدرالمختار کتاب العاریۃ دارالمعرفۃ بیروت ۳/۳۹۰ ۲۔ بحرالرائق باب المہر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۸۷/۳

Fatawa-e-Razvia, Volume 12

It was further stated that from this it became known that when a father or mother prepares a dowry for their daughter and then dies, the remaining heirs have no right over the dowry. However, does this rule mentioned for the father also apply to the mother and grandfather? For instance, if a grandfather provided the dowry for a girl, and then the girl died, and the grandfather claimed, "This dowry is my property," while the girl's husband claimed, "It is the girl's property," an incident regarding such a fatwa has arisen, and I have not seen any explicit text on this matter. In "Minhat al-Khaliq," it is mentioned that Ramli said that apparently both, meaning the mother and grandfather, are like the father. As for the mother, it is due to what was previously mentioned from "al-Qunya" that a young girl wove a dowry from her mother's and father's wealth, etc. As for the grandfather, it is because of the jurists' saying that the grandfather is like the father except in a few issues, and this is not one of them. Reflect.

I say: It does not befit such a vast ocean and perfect expert scholar to mention a branch from "al-Qunya" in these several lines and then derive from it himself that when a father or mother prepares a dowry for their daughter, no heir has a path to the dowry, and then immediately hesitate about the mother being joined with the father in this ruling, even though the dowry coming from her is apparent...

---

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Bab al-Mahr, H.M. Saeed Company, Karachi, 3/187.
2. Minhat al-Khaliq Hashiyat al-Bahr al-Ra'iq, Bab al-Mahr, H.M. Saeed Company, Karachi, 3/187.

फतावा रज़विया, खंड 12

फिर फरमाया कि इसी से मालूम हो गया कि जब बाप या माँ बेटी को दहेज बना कर दें तो उनके मरने के बाद बाकी वारिसों का दहेज पर कोई हक नहीं होता। लेकिन क्या यह हुक्म जो बाप के लिए बताया गया है, वह माँ और दादा के लिए भी है? तो अगर लड़की को उसके दादा ने दहेज दिया, फिर वह लड़की मर गई और दादा ने कहा कि यह दहेज मेरी मिल्कियत है और उस लड़की का पति कहता है कि यह लड़की की मिल्कियत है, तो फतवे से संबंधित एक ऐसा वाकया सामने आया है और मैंने इसमें कोई स्पष्ट प्रमाण (नक़ल) नहीं देखा। 'मिन्हत अल-खालिक' में फरमाया कि रमली ने कहा है कि प्रत्यक्ष रूप से वे दोनों यानी माँ और दादा, बाप की तरह ही हैं। माँ तो उस वजह से जिसका हवाला 'कुनिया' से पहले दिया गया है कि लड़की ने अपने बाप और माँ के माल से दहेज बनाया आदि। और दादा इसलिए कि उन (फकीहों) का कहना है कि दादा बाप की तरह है सिवाय चंद मसलों के जिनमें दहेज शामिल नहीं है। गौर करें।

अकूल: (मैं कहता हूँ) ऐसे महान विद्वान और पूर्ण विशेषज्ञ के लिए यह शोभा नहीं देता कि वह इन चंद पंक्तियों में 'कुनिया' की शाखा का उल्लेख करे और स्वयं उस पर यह स्पष्टीकरण दे कि बेशक माँ या बाप जब बेटी को दहेज दें तो किसी वारिस का दहेज में कोई हक नहीं है, फिर उसी के बारे में इस बात में संकोच करे कि माँ इस हुक्म में बाप के साथ जुड़ी हुई है, जबकि दहेज उसकी ओर से होना स्पष्ट है...

---

1. अल-बहर अर-राइक, बाब अल-महर, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 3/187।
2. मिन्हत अल-खालिक हाशिया अल-बहर अर-राइक, बाब अल-महर, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 3/187।

पृष्ठ 239 / 688

پھر فرمایا اسی سے معلوم ہو گیا کہ جب باپ یا ماں بیٹی کو جہیز بنا کر دیں تو ان کے مرنے کے بعد باقی وارثوں کا جہیز پر کوئی حق نہیں ہوتا لیکن کیا یہ حکم جو باپ کے لئے مذکور ہوا وہ ماں اور دادا کے لئے حاصل ہے؟ تو اگر لڑکی کو اس کے دادا نے جہیز دیا پھر وہ لڑکی مر گئی اور دادا نے کہا یہ جہیز میری ملکیت ہے اور اس لڑکی کا شوہر کہتا ہے کہ یہ لڑکی کی ملکیت ہے یہ فتوے سے متعلق ایک واقعہ پیش آگیا ہے اور میں نے اس میں کوئی صریح نقل نہیں دیکھی۔ منحۃ الخالق میں فرمایا کہ رملی نے کہا ہے بنظرِ ظاہر وہ دونوں یعنی ماں اور دادا، باپ کی طرح ہی ہیں، ماں تو اس وجہ سے جس کا بحوالہ قنیہ پہلے ذکر کیا ہے کہ لڑکی نے اپنے باپ اور ماں کے مال سے جہیز بنایا الخ اور دادا اس لئے کہ ان (فقہاء) کا قول ہے کہ دادا مثل باپ کے ہے سوائے چند مسائل کے جن میں جہیز نہیں ہے۔ غور کر ائے۔

اقول: (میں کہتا ہوں) ایسے عظیم سمندر اور کامل و ماہر عالم کے لائق یہ نہیں کہ وہ ان چند سطروں میں قنیہ کی فرع ذکر کرے اور بذات خود اس پر یہ تصریح ذکر کرے کہ بیشک ماں یا باپ جب بیٹی کو جہیز دیں تو کسی وارث کا جہیز میں کوئی حق نہیں پھر اس کے متعلق ہی اس بات میں تردد کرے کہ ماں اس حکم میں باپ کے ساتھ ملحق ہے کہ ماں کی طرف سے

---

1 بحر الرائق باب المہر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۸۷/۳ 2 منحۃ الخالق حاشیۃ البحر الرائق باب المہر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۸۷/۳

Fatawa Razawiyya - Volume 12

Transfer of ownership (tamlik) in giving a dowry is evident. To this point, what has been preceded from the statement of Al-Qunya is paramount. And such a thing does not occur except from one who barely understands what proceeds from his head. So how can the speech of such an illustrious and noble scholar be interpreted based on such an absurd position? This is why, when the matter was not clear to Allama Sayyid al-Tahtawi, he omitted the word 'mother' from the speech of Al-Bahr and confined himself to the statement: 'Does this mentioned ruling regarding the father apply to the grandfather, etc.?' However, Allama al-Shurunbulali in Ghuniyah did not consider it far-fetched and said that the author of Al-Bahr asked: 'Does this mentioned ruling regarding the father apply to the mother and the grandfather?' An incident related to a fatwa occurred, and I have not seen any explicit narration regarding them. Allama al-Shami stated that there was hesitation in Al-Bahr regarding the mother and grandfather; Al-Ramli said, 'I have not heard of it.' Verily, the matter as revealed by Allah, the Almighty and Glorious, is that the author of Al-Bahr did not hesitate in attaching the mother to the father in this ruling, that the dowry given by the mother is customarily a transfer of ownership. However, the author of Al-Bahr...

1. Hashiyat al-Tahtawi 'ala al-Durr al-Mukhtar, Book of Mahr, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 2/77.
2. Ghuniyat Dhawi al-Ahkam Hashiyat al-Durar al-Ahkam, Book of Mahr, Matba'ah Ahmad Kamil, Dar Sa'adat, Beirut, 1/348.
3. Radd al-Muhtar, Book of Mahr, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/367.

फतवा-ए-रज़विया - जिल्द बारहवीं

दहेज देना मालिकाना हक हस्तांतरण (तमलीक) में स्पष्ट है। यहाँ तक कि इस पर जो कुछ अल-कुन्या के कथन से पहले बताया गया है, वह प्रमुख है। और इस तरह की बात सिवाय उस व्यक्ति के किसी और से नहीं निकलती जो मुश्किल से ही यह समझता है कि उसके दिमाग से क्या निकल रहा है। तो ऐसे महान और प्रतिष्ठित विद्वान के शब्दों को इस तरह के बेतुके दृष्टिकोण पर कैसे समझा जा सकता है? यही कारण है कि जब अल्लामा सैय्यद अत-तहतावी को यह मामला स्पष्ट नहीं हुआ, तो उन्होंने 'अल-बहर' के पाठ से 'माँ' शब्द को हटा दिया और खुद को इस कथन तक सीमित रखा कि 'क्या पिता के बारे में उल्लिखित यह नियम दादा पर लागू होगा?' इत्यादि। लेकिन अल्लामा अल-शुरुनबुलाली ने इसे असंभावित न समझते हुए 'गुनिया' में कहा कि अल-बहर के लेखक ने पूछा: 'क्या पिता के बारे में उल्लिखित यह नियम माँ और दादा के लिए मान्य होगा?' फतवे से संबंधित एक घटना सामने आई है और मैंने उन दोनों के बारे में कोई स्पष्ट विवरण नहीं देखा है। अल्लामा अल-शामी ने कहा कि अल-बहर में माँ और दादा के बारे में संशय (तरद्दुद) था; अल-रमली ने कहा, 'मैंने यह नहीं सुना है।' वास्तव में, वह मामला जिसे अल्लाह सर्वशक्तिमान ने प्रकट किया है वह यह है कि अल-बहर के लेखक ने इस नियम में माँ को पिता के साथ जोड़ने में संकोच नहीं किया कि माँ की ओर से दिया गया दहेज प्रथा के अनुसार मालिकाना हक का हस्तांतरण है। हालाँकि, अल-बहर के लेखक...

1. हाशियत अत-तहातावी अलद-दुर्र अल-मुख्तार, बाबुल महर, दारुल मारिफ़ा, बेरूत, 2/77.
2. गुनियात ज़वी अल-अहकाम हाशियत अद-दुरर अल-अहकाम, बाबुल महर, मतबा अहमद कामिल, दार सादत, बेरूत, 1/348.
3. रद अल-मुह्तार, बाबुल महर, दार इहया अत-तुरास अल-अरबी, बेरूत, 2/367.

التملیك حتی یرد علیه بماقدم من قول القنیة وهل یتأتی مثله الاممن لایکاد یفهم مایخرج من رأسه فکیف یجعل علی مثله کلام مثل هذا الجلیل النبیل، ولذا لما لم یتضح الامر عند العلامة السید الطحطاوی اسقط لفظ الام من کلام البحر واقتصر علی قوله هل هذا الحکم المذکور فی الاب یتأتی فی الجد الخ لکن العلامة الشرنبلالی فی غنیة لم یستبعده فقال قال صاحب البحر هل هذا الحکم المذکور فی الاب یتأتری فی الام والجد صارت واقعة الفتوی ولم ارفیهما نقلا صریحاً اھ وقال العلامة الشامی تردد فی البحر فی الام والجد الخ وقال الرملی ماسمعت فانما الامر مافتح المولی سبحانه وتعالی ان لاتردد فی الحاق الام بالاب فی کون التجهیز منها تملیکا لمکان العرف وانما تردد رحمه اللہ تعالی فی قبول

جہیز دینا تملیک میں ظاہر ہے۔ یہاں تک اس پر وارد ہو وہ قنیہ کے قول سے مقدم گزرا۔ اور نہیں حاصل ہوتا اس کی مثل مگر صرف اس شخص سے جو یہ نہ سمجھتا ہو کہ اس کے سر سے کیا خارج ہورہا ہے، تو ایسے عظیم الشان عالم نبیل کے کلام کو اس قسم کے بیہودہ موقف پر کیسے محمول کیا جاسکتا ہے۔ یہی وجہ ہے کہ جب علامہ سید طحطاوی پر یہ امر واضح نہ ہو سکا تو انہوں نے کلام بحر سے لفظ ام کو حذف کرتے ہوئے اس قول پر اکتفاء فرمایا کہ کیا یہ حکم جو باپ کے بارے میں مذکور ہے دادا کے لئے حاصل ہوگا الخ لیکن علامہ شرنبلالی نے اس کو مستبعد نہ جانتے ہوئے غنیہ میں فرمایا کہ صاحبِ بحر نے کہا کیا یہ حکم جو باپ کے بارے میں مذکور ہے ماں اور دادا کے لئے حاصل ہوگا ؟ یہ فتوٰی سے متعلق ایک واقعہ پیش آگیا ہے اور میں نے اس میں کوئی صریح نقل نہیں دیکھی۔ علامہ شامی نے فرمایا کہ بحر میں ماں اور دادا کے بارے میں تردد کیا، رملی نے فرمایا کہ میں نے نہیں سنا، بے شک معاملہ جو مولٰی سبحانہ وتعالٰی

نے منکشف فرمایا وہ یہ ہے کہ صاحبِ بحر نے ماں کو باپ کے ساتھ اس حکم میں ملحق ماننے میں تردد نہیں فرمایا کہ ماں کی طرف سے دیا جانے والا جہیز عرفاً تملیک ہے البتہ صاحب بحر

1 حاشیۃ الطحطاوی علی الدر المختار باب المھر دار المعرفۃ بیروت ۷۷/۲ 2 غنیۃ ذوی الاحکام حاشیۃ الدرر الاحکام باب المھر مطبعۃ احمد کامل دار سعادت بیروت ۳۴۸/۱ 3 ردالمحتار باب المھر دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۶۷/۲

Fatawa Razawiyya Volume 12

[Arabic Section Translation] Claiming dowry from her own wealth is a loan, as most often dowry is from the father's wealth. Thus, there is no relevance to the branch of 'al-Qunyah' in what is being discussed. Nor does what he mentioned before, 'by this it is known that the father or mother...', contradict it. Similarly, no consideration is given here to the grandfather being like the father except in certain issues, for this matter is only derived from custom. We only accepted the father's claim because of what we know from prevailing custom that the dowry is from his wealth, so the apparent state (custom) testified for him. If a similar custom is established for the grandfather, then it applies, otherwise there is no assimilation or participation. This is how the investigation should be, and Allah is the Grantor of success. More strange than this is what he mentioned afterwards in 'Minhat al-Khaliq' quoting: 'I say: It is determined in the text of 'al-Tanwir' that the mother is like the father in providing dowry.' He attributed this in 'Sharh al-Minah' to the Fatawa of Qari al-Hidayah, and in the commentary of 'al-Durr al-Mukhtar' it is attributed to the commentary of 'al-Wahbaniyah'. It also mentions the guardian of a minor, and its inclusion of the grandfather and others is not hidden. End of quote. I say: Yes, it is not hidden, but in al-Bahr...

[Urdu Section Translation] [The author] may Allah have mercy on him, hesitated to accept the mother's claim that the dowry she gave from her wealth was a loan, because usually dowry is given from the father's wealth. In this case, the specific branch mentioned in 'Qunyah' has no relation to the issue the author of 'al-Bahr' is discussing. Furthermore, his previous statement—'from this it is known that indeed the father and mother etc.'—does not contradict it. Nor is it considered here that the grandfather is like the father except in a few matters, because this issue is solely derived from custom. Undoubtedly, we accepted the father's claim because we know from common custom that he provides the dowry from his own wealth; thus, the obvious situation testifies for him. Therefore, if a similar case is proven for the grandfather, the same ruling will apply; otherwise, there is neither assimilation nor commonality. This is how the investigation should be, and only Allah is the Master of success. Even more strange and wonderful is what was mentioned after this in 'Minhat al-Khaliq' along with his statement: 'I say that it was asserted in the text of 'al-Tanwir' that in providing dowry, the mother is like the father.' And in 'Sharh al-Minha', it was attributed to 'Fatawa Qari al-Hidayah', and in the commentary of 'Durr al-Mukhtar', while attributing it to 'Sharh al-Wahbaniyah', it was said: 'Similarly, the

guardian of a minor is also included, and its inclusion of the grandfather etc. is not hidden.' End of quote. I say: (I...

[Footnote] 1 Minhat al-Khaliq, marginalia of al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Dowry, H.M. Saeed Company Karachi, 3/187.

फ़तावा रज़विया खंड 12

[अरबी अनुभाग का अनुवाद] अपनी संपत्ति से दहेज का दावा करना एक ऋण है, क्योंकि अधिकतर दहेज पिता की संपत्ति से होता है। इस प्रकार, जिस विषय पर 'अल-बह्र' के लेखक चर्चा कर रहे हैं, उसका 'अल-कुन्याह' की शाखा से कोई संबंध नहीं है। न ही उन्होंने पहले जो उल्लेख किया था, 'इससे यह ज्ञात होता है कि पिता या माता...', इसका खंडन करता है। इसी तरह, यहाँ दादा को पिता के समान मानने पर विचार नहीं किया जाता है, सिवाय कुछ मुद्दों के, क्योंकि यह मामला केवल प्रथा (उर्फ़) से लिया गया है। हमने पिता के दावे को केवल इसलिए स्वीकार किया क्योंकि हम प्रचलित प्रथा से जानते हैं कि दहेज उसकी संपत्ति से होता है, इसलिए स्पष्ट स्थिति (प्रथा) ने उसके लिए गवाही दी। यदि दादा के लिए भी ऐसी ही प्रथा सिद्ध होती है, तो वह लागू होगी, अन्यथा न तो आत्मसात किया जाएगा और न ही भागीदारी होगी। इस प्रकार जांच होनी चाहिए, और अल्लाह ही सफलता प्रदान करने वाला है। इससे भी अधिक विचित्र वह है जिसका उल्लेख उन्होंने बाद में 'मिन्हात अल-खालिक' में उद्धृत करते हुए किया: 'मैं कहता हूं: 'अल-तनवीर' के मूल पाठ में यह निर्धारित किया गया है कि दहेज प्रदान करने में माता पिता के समान है।' उन्होंने 'शर्ह अल-मिनह' में इसे क़ारी अल-हिदाया के फ़तवों के लिए जिम्मेदार ठहराया, और 'अल-दुर्र अल-मुख्तार' की व्याख्या में इसे 'अल-वहबानिया' की व्याख्या के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है। इसमें एक नाबालिग के संरक्षक का भी उल्लेख है, और दादा और अन्य लोगों का इसमें शामिल होना छिपा नहीं है। उद्धरण समाप्त। मैं कहता हूँ: हाँ, यह छिपा नहीं है, लेकिन अल-बह्र में...

[उर्दू अनुभाग का अनुवाद] [लेखक] अल्लाह उन पर दया करे, ने माँ के इस दावे को स्वीकार करने में संकोच किया कि उसने अपनी संपत्ति से जो दहेज दिया था वह एक ऋण था, क्योंकि आमतौर पर दहेज पिता की संपत्ति से दिया जाता है। इस मामले में, 'कुन्याह' में उल्लिखित विशिष्ट शाखा का उस मुद्दे से कोई संबंध नहीं है जिस पर 'अल-बह्र' के लेखक चर्चा कर रहे हैं। इसके अलावा, उनका पिछला कथन—'इससे यह ज्ञात होता है कि वास्तव में पिता और माँ आदि'—इसका खंडन नहीं करता है। न ही यहाँ यह माना जाता है कि दादा कुछ ही मामलों को छोड़कर पिता के समान है, क्योंकि यह मुद्दा पूरी तरह से प्रथा से लिया गया है। निस्संदेह, हमने पिता के दावे को स्वीकार किया क्योंकि हम सामान्य प्रथा से जानते हैं कि वह अपनी संपत्ति से दहेज प्रदान करता है; इस प्रकार, स्पष्ट स्थिति उसके लिए गवाही देती है। इसलिए, यदि दादा के लिए भी ऐसा ही मामला सिद्ध हो जाता है, तो वही नियम लागू होगा; अन्यथा, न तो आत्मसात होगा और न ही समानता होगी। इस प्रकार जांच

होनी चाहिए, और केवल अल्लाह ही सफलता का स्वामी है। इससे भी अधिक विचित्र और अद्भुत वह है जिसका उल्लेख इसके बाद 'मिन्हात अल-खालिक' में उनके कथन के साथ किया गया था: 'मैं कहता हूँ कि 'अल-तनवीर' के पाठ में यह दावा किया गया था कि दहेज प्रदान करने में, माता पिता के समान है।' और 'शर्ह अल-मिन्हा' में, इसे 'फ़तावा क़ारी अल-हिदाया' के लिए जिम्मेदार ठहराया गया था, और 'दुर्र अल-मुख्तार' की व्याख्या में, 'शर्ह अल-वहबानिया' को श्रेय देते हुए कहा गया था: 'इसी तरह, एक नाबालिग का संरक्षक भी शामिल है, और दादा आदि का शामिल होना छिपा नहीं है।' उद्धरण समाप्त। मैं कहता हूँ: (मैं...)

[पाद टिप्पणी] 1 मिन्हात अल-खालिक, हाशियह अल-बह्र अर-राइक़, बाब अल-महर, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 3/187।

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

(عربی متن کا ترجمہ: اپنی ہی ملکیت سے جہیز دینے کا دعویٰ کرنا عاریت (ادھار) ہے کیونکہ اکثر طور پر جہیز باپ کے مال سے ہوتا ہے۔ چنانچہ 'قنیہ' کی اس فرع کا اس مسئلہ سے کوئی تعلق نہیں جس میں بحث ہو رہی ہے۔ اور نہ ہی ان کا یہ سابقہ قول کہ 'اس سے معلوم ہوا کہ باپ یا ماں وغیرہ' اس کے منافی ہے۔ اسی طرح یہاں دادا کو باپ کے مثل ہونے پر نظر نہیں کی جائے گی سوائے چند مسائل کے، کیونکہ یہ معاملہ صرف عرف سے ماخوذ ہے۔ اور ہم نے باپ کا دعویٰ صرف اس لئے قبول کیا کہ ہمیں عرفِ فاش (عام رواج) سے معلوم ہے کہ جہیز اس کے مال سے ہوتا ہے، پس ظاہر حال اس کے حق میں شاہد ہوا۔ پس اگر دادا کے حق میں بھی ایسی ہی صورت ثابت ہو جائے تو یہی حکم ہوگا ورنہ نہ الحاق ہوگا نہ اشتراک۔ اسی طرح تحقیق ہونی چاہئے اور اللہ ہی توفیق دینے والا ہے۔ اور اس سے بھی زیادہ عجیب بات وہ ہے جو اس کے بعد 'منحۃ الخالق' میں ان کے اس قول کے ساتھ مذکور ہے: 'میں کہتا ہوں: متن تنویر میں اس پر جزم کیا گیا ہے کہ ماں جہیز دینے میں باپ کی طرح ہے۔' اور انہوں نے 'شرح المنح' میں اس کی نسبت 'فتاویٰ قاری ہدایہ' کی طرف کی ہے، اور 'درمختار' کی شرح میں 'شرح وہبانیہ' کی طرف منسوب کرتے ہوئے کہا کہ اسی طرح ولیِ صغیر بھی ہے اور اس میں دادا وغیرہ کا شامل ہونا مخفی نہیں ہے۔ اھ میں کہتا ہوں: ہاں یہ مخفی نہیں ہے لیکن 'البحر' میں...)

رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ نے ماں کے اس دعویٰ کو قبول کرنے میں تردد فرمایا کہ جو جہیز اس نے ماں سے دیا ہے وہ عاریت ہے کیونکہ اکثر طور پر جہیز باپ کے مال سے دیا جاتا ہے، تو دریں صورت قنیہ کی فرع کا اس مسئلہ سے کوئی تعلق نہیں جس میں صاحب بحر گفتگو کر رہے ہیں نیز ان کا قول سابق کہ اسی سے معلوم ہو گیا کہ بیشک باپ اور ماں الخ اس کے منافی نہیں، اور نہ

ہی یہاں اس بات کی طرف نظر ہے کہ دادا سوائے چند مسائل کے باپ ہے اس لئے کہ یہ امر تو صرف عرف سے ماخوذ ہے اور بلا شبہ ہم نے باپ کا دعویٰ اس لئے قبول کیا کہ ہم نے عرف مشہور سے جان لیا کہ جہیز وہ اپنے مال سے دیتا ہے لہذا ظاہر اس کے لئے شاہد ہوا، تو اگر کسی کی مثل دادا میں ثابت ہو جائے تو اس کا حکم بھی یہی ہوگا ورنہ نہ الحاق ہے نہ اشتراک، یوں ہی تحقیق چاہئے، اور اللہ تعالیٰ ہی مالک توفیق ہے، اور اس سے بھی زیادہ عجیب و غریب ہے وہ جو اس کے بعد منحۃ الخالق میں اس کے قول کے ساتھ مذکور ہوا، میں کہتا ہوں کہ متن تنویر میں اس پر جزم فرمایا کہ تجہیز میں ماں، باپ کی طرح ہے۔ اور شرح منحہ میں اس کی نسبت فتاویٰ قاری ہدایہ کی طرف کی، اور درمختار کی شرح میں شرح وہبانیہ کی طرف منسوب کرتے ہوئے کہا یونہی ولی صغیر بھی ہے اور اس کا شمول دادا وغیرہ کو مخفی نہیں ہے اھ اقول: (میں

1 منحۃ الخالق حاشیۃ البحر الرائق باب المھر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳ / ۱۸۷

[Arabic Box 1]: Indeed, he says, "I have not seen an explicit transmission regarding it, and the discussion of Ibn Wahban is not considered a transmission in any way." This weak servant is amazed at how Al-Durr presented the issue as a transmitted one, despite knowing it was his own research. The commentators have discussed it, and you have learned from what we previously stated that their research is good and valid. So, praise be to Allah for the good reminder.

[Urdu Translation/Commentary Box 1]: I say, yes, it is not hidden, but indeed it is stated in Al-Bahr that "I have not seen any explicit transmission in it, and the discussion of Ibn Wahban is not a transmission at all." This weak servant is amazed that Al-Durr presented the matter as a transmitted ruling, while they knew it was Ibn Wahban's research, and the commentators have discussed it. You have already learned from our previous statement that their research is good and valid. Thus, praise be to Allah alone for this excellent reminder. (T)

In short, when the learned scholars have expressed hesitation regarding the biological paternal/maternal grandmother, biological grandfather, and biological mother, how can a stepmother, who is a complete stranger, be included in this ruling of the father? For a stranger in the inquired case, the ruling written is that their claim will not be heard without witnesses. It is stated in Al-Durr al-Mukhtar:

[Arabic Box 2]: The mother and the guardian of a minor are like the father in what has been mentioned. As for what a stranger claims after death, it is not accepted except with proof. Sharh Wahbaniyah[1].

[Urdu Translation Box 2]: The mother and the guardian of a minor are like the father in the mentioned ruling, and where a stranger makes a claim after death, it will not be accepted without witnesses. Sharh Wahbaniyah. (T)

And here, there are two ways to prove the loan (aariyah) through witnesses: First, the father, mother, or stranger, who is ordered to present evidence, should provide testimony from upright legal witnesses that "while giving this dowry to the bride, I made it a condition that I am giving it as a loan." Second, to present an acknowledgement from the bride, attested by upright witnesses, in which she has admitted that "this and that dowry was given to me by so-and-so from his property as a loan." It is stated in Al-Bahr al-Raiq:

[Arabic Box 3]: It is stated in Al-Tajnis, Al-Walwalijiyyah, and Al-Dhakhirah: "The valid proof (bayyinah sahihah) is to appoint witnesses at the time of delivery..."

[Urdu Translation Box 3]: It is stated in Tajnis, Al-Walwalijiyyah, and Dhakhirah: "The valid proof is that one should appoint witnesses at the time of giving these things to the woman that..."

[1] Durr al-Mukhtar, Kitab al-Aariyah, Mujtabai Press, Delhi, 2/157. Page 242 of 688

[अरबी बॉक्स 1]: वास्तव में, वह कहते हैं, "मैंने इसके बारे में कोई स्पष्ट नकल (प्रमाण) नहीं देखा है, और इब्न वहबान की बहस किसी भी तरह से नकल नहीं मानी जाती है।" यह कमजोर सेवक इस बात पर हैरान है कि अल-दुर्र ने इस मुद्दे को एक नकल के रूप में कैसे पेश किया, यह जानते हुए भी कि यह उनका अपना शोध था। व्याख्याकारों ने इस पर चर्चा की है, और आप हमारे पिछले बयान से जान चुके हैं कि उनका शोध अच्छा और उचित है। अत; अच्छी चेतावनी पर अल्लाह के लिए ही प्रशंसा है।

[उर्दू अनुवाद/टीका बॉक्स 1]: मैं कहता हूँ, हाँ, यह छिपा नहीं है, लेकिन वास्तव में 'बहर' में फरमाते हैं कि मैंने इसमें कोई स्पष्ट नकल नहीं देखी और इब्न वहबान की बहस कोई नकल नहीं है। और बंदा-ए-ज़ईफ़ (लेखक) इस बात पर हैरान है कि 'दुर्र ने मसले को नकल के रूप में चलाया जबकि वह जानते थे कि यह इब्न वहबान की अपनी बहस है, और व्याख्याकारों ने इस पर चर्चा की है। आप हमारे पिछले बयान से जान चुके हैं कि उनकी बहस अच्छी और उचित है। अत; अच्छी चेतावनी पर अल्लाह तआला के लिए ही प्रशंसा है। (त)

संक्षेप में, जब विद्वानों ने सगी दादी, नानी, दादा और माँ के बारे में संकोच व्यक्त किया है, तो सौतेली माँ, जो कि पूरी तरह से अजनबी है, पिता के इस हुक्म में कैसे शामिल हो सकती है? पूछे गए मामले में अजनबी के लिए यही हुक्म लिखा गया है कि बिना गवाहों के उसका दावा नहीं सुना जाएगा। 'दुर्र-ए-मुख्तार' में है:

[अरबी बॉक्स 2]: माँ और नाबालिग का अभिभावक उल्लिखित हुक्म में पिता की तरह हैं। जहाँ तक मृत्यु के बाद किसी अजनबी के दावे की बात है, उसे बिना प्रमाण के स्वीकार नहीं किया जाएगा। शरह वहबानिया[1]।

[उर्दू अनुवाद बॉक्स 2]: माँ और नाबालिग का अभिभावक उल्लिखित हुक्म में पिता की तरह हैं, और जहाँ अजनबी मृत्यु के बाद दावा करे, तो उसे गवाहों के बिना स्वीकार नहीं किया जाएगा। शरह वहबानिया। (त)

और यहाँ गवाहों से ऋण (आरियत) साबित करने के दो तरीके हैं: एक यह कि पिता, माँ या अजनबी जिसे प्रमाण पेश करने का हुक्म हो, वह शरीयत के अनुसार न्यायप्रिय गवाहों से गवाही दिलाए कि "मैंने यह जहेज़ दुल्हन को देते समय यह शर्त रख दी थी कि मैं इसे ऋण (उधार) के रूप में दे रहा

हूँ।" दूसरा यह कि दुल्हन का इकरारनामा पेश किया जाए जो न्यायप्रिय गवाहों द्वारा प्रमाणित हो, जिसमें उसने स्वीकार किया हो कि "यह जहेज़ मुझे फलाँ व्यक्ति ने अपनी मिल्कियत से ऋण के रूप में दिया है।" 'बहर-उर-रायिक' में है:

[अरबी बॉक्स 3]: 'तजनीस', 'वलवालिजिया' और 'ज़खीरा' में फरमाया गया है: "सही दलील (बय्यना सहीहा) यह है कि सामान सौंपते समय गवाह नियुक्त किए जाएं कि..."

[उर्दू अनुवाद बॉक्स 3]: 'तजनीस', 'वलवालिजिया' और 'ज़खीरा' में फरमाया गया है: "सही दलील यह है कि महिला को ये चीज़ें देते समय गवाह नियुक्त किए जाएं कि..."

[1] दुर्र-ए-मुख्तार, किताबुल आरियत, मुतबा-ए-मुज्तबाई, दिल्ली, 2/157. पेज 242 of 688

[عربی باکس 1]: انما یقول لم ارفیھا نقلا صریحا وبحث ابن وھبان لیس من النقل فی شیئ والعبد الضعیف فی عجب من سوق الدر المسألة مساق المنقول مع علمه بأنه بحث منه وقد بحث فیه الشارحون وقد علمت مما قد منا ان بحثھم حسن وجیه فالحمد للہ علی حسن التنبیه۔

[اردو ترجمہ و حاشیہ باکس 1]: کہتا ہوں ہاں مخفی نہیں ہے لیکن بے شک بحر میں فرماتے ہیں کہ میں نے اس میں صریح نقل نہیں دیکھی اور ابن وہبان کی بحث کوئی نقل نہیں اور بندہ ضعیف کو اس بات پر حیرت ہے کہ در نے مسئلہ بطور منقول چلایا حالانکہ وہ جانتے ہیں کہ یہ ابن وہبان کی بحث ہے اور تحقیق شارحین نے اس میں بحث کی ہے اور تحقیق ہمارے بیان سابق سے تو جان چکا ہے کہ ان کی بحث حسن و وجیہ ہے پس حُسن تنبیہ پر اللہ تعالی ہی کے لئے حمد ہے۔(ت)

بالجملہ جب حقیقی دادی نانی، حقیقی دادا، حقیقی ماں میں علمائے کرام نے تردد فرمایا تو سوتیلی ماں کہ محض اجنبیہ ہے کیونکر اس حکمِ پدر میں شریک ہوسکتی ہیں، اجنبی کے لئے صورتِ مستفسرہ میں یہی حکم لکھتے ہیں کہ اُس کا دعوٰی لے گواہان مسموع نہ ہوگا۔ در مختار میں ہے :

[عربی باکس 2]: الام وولی الصغیرة کالاب فیما ذکر وفیما یدّعیه الاجنبی بعد الموت لایقبل الابینة شرح وھبانیة[1]۔

[اردو ترجمہ باکس 2]: ماں اور ولیِ صغیرہ حکم مذکور میں باپ کی طرح ہیں اور جہاں اجنبی کے بعد دعوی کرے تو گواہوں کے بغیر قبول نہیں کیا جائے گا، شرح وہبانیہ۔ (ت)

اور یہاں گواہوں سے اثباتِ عاریت کے دو طریقے ہیں : ایک یہ کہ باپ ماں یا اجنبی جس کے ذمے اقامتِ بینہ کا حکم ہو گواہانِ عادل شرعی سے شہادت دلائے کہ میں نے یہ جہیز عروس کو دیتے

وقت شرط کر لی تھی کہ عاریۃً دیتا ہوں۔ دوسرے یہ کہ دُلہن کا اقرار نامہ بتصدیق شہود عدل پیش کرے جس میں اس نے اقرار کیا ہو کہ یہ یہ جہیز مجھے فلاں نے اپنی ملک سے عاریۃً دیا ہے۔

بحر الرائق میں ہے :

[عربی باکس 3]: قال فی التجنیس والولوجیة والذخیرة والبینة الصحیحة ان یشهد عند التسلیم

[اردو ترجمہ باکس 3]: تجنیس، ولوالجیہ اور ذخیرہ میں فرمایا بینہ صحیحہ یہ ہے کہ عورت کو یہ اشیاء دیتے وقت گواہ قائم کرے کہ

[1] درمختار کتاب العاریۃ مطبع مجتبائی دہلی ۲/۱۵۷ صفحہ 242 از 688

Fatawa Rizwia Volume 12

[Table Header/Arabic Quote] To the woman: I have only handed over these things by way of a loan (ariyah).

[Urdu Explanation] Indeed, I have given these things as a loan, or that a specific document is prepared and the father makes the daughter testify to her acknowledgment that all things listed in this document are the property of my father and are with me as a loan from him, etc. (T)

I say: (And success is from Allah). There are two stages here: First, proving that I gave this dowry from my own wealth. In these lands, a father does not need witnesses to prove this due to what has passed regarding the prevalence of custom in this regard (as mentioned before that the custom is prevalent in this way. T). Rather, if the bride or her heirs deny it, they must provide witnesses that the father did not give this dowry from his own wealth but from the bride's property. This is contrary to a stranger, who would first be required to prove this.

[Table Quote] Arabic: Because there is no apparent evidence witnessing for him in that, and indeed evidence is required from whoever claims contrary to the apparent. Urdu: Because in this matter, the apparent is not a witness for him, and witnesses are mandatory for every person who makes a claim contrary to the apparent. (T)

Then if this matter is proven by evidence, or the bride's confession, or the heirs' acceptance, then the second stage is the proof of 'ariyah' (loan). Here, if giving as a loan is proven by common or shared custom, or is probable, then apparently a stranger is also like a father, and in this second proof, he does not need to establish evidence. When fathers give on loan, a stranger's intention for 'ariyah' is by no means contrary to the apparent; rather, in view of being a stranger, it is more obvious.

[Table Quote] Arabic: And no evidence is required from him for whom the apparent witnesses, especially since it has been proven that he is the giver, so he knows best the nature of the giving, along with what has passed that the minimum is what is determined in what is probable. Urdu: It is not necessary to bring witnesses for him for whom the apparent is a witness, despite it being proven that he is the giver. Thus, he knows better the nature of giving, despite what has passed that in probable matters, the minimum is what is determined. (T)

So, as long as no explicit proof of 'tamlik' (transfer of ownership/gift) is found, in the case of general or shared custom, a stranger's action in this regard should not

necessarily be interpreted as an intention for tamlik. And if the general custom is tamlik, meaning giving dowry is understood as making [someone] the owner...

---

1 Al-Bahr al-Ra'iq, Bab al-Mahr, H.M. Saeed Company Karachi, 3/187 Page 243 of 688

फ़तावा रज़विया खंड १२

[तालिका शीर्षक/अरबी उद्धरण] महिला से: मैंने ये चीजें केवल उधार (आरियत) के तौर पर सौंपी हैं।

[उर्दू व्याख्या] बेशक मैंने ये चीजें बतौर आरियत (उधार) दी हैं या यह कि एक विशिष्ट लिखित दस्तावेज़ तैयार करके पिता लड़की को उसकी इस स्वीकृति पर गवाह बनाए कि इस दस्तावेज़ में दर्ज सभी चीजें मेरे पिता की मिल्कियत (स्वामित्व) हैं और मेरे पास उनकी ओर से आरियत के तौर पर हैं आदि। (त)

मैं कहता हूँ: (और अल्लाह की ओर से ही सफलता है)। यहाँ दो चरण हैं: पहला, यह साबित करना कि मैंने यह दहेज अपने धन से दिया है। इन देशों में पिता को इसे साबित करने के लिए गवाहों की आवश्यकता नहीं है क्योंकि इस संबंध में प्रथा (उर्फ़) के प्रचलन के बारे में पहले बताया जा चुका है (जैसा कि पहले बीत चुका है कि इसमें प्रथा ऐसी ही चल रही है। त)। बल्कि यदि दुल्हन या उसके उत्तराधिकारी इससे इनकार करें, तो वे गवाह दें कि यह दहेज पिता ने अपने धन से नहीं दिया बल्कि दुल्हन की मिल्कियत से बनाया है, इसके विपरीत एक अजनबी के लिए पहले यही साबित करना आवश्यक होगा।

[तालिका उद्धरण] अरबी: क्योंकि इस मामले में उसके पक्ष में कोई प्रत्यक्ष गवाही नहीं है, और सबूत हर उस व्यक्ति पर अनिवार्य है जो प्रत्यक्ष के विपरीत दावा करता है। उर्दू: क्योंकि इस मामले में प्रत्यक्ष (ज़ाहिर) उसके लिए गवाह नहीं है और हर उस व्यक्ति पर गवाह अनिवार्य होते हैं जो प्रत्यक्ष के विरुद्ध दावा करे। (त)

फिर यदि यह बात गवाही या दुल्हन की स्वीकृति या वारिसों के स्वीकार करने से सिद्ध हो जाए, तो दूसरा चरण आरियत (उधार) के प्रमाण का है। यहाँ यदि सामान्य या साझा प्रथा से आरियत देना सिद्ध हो या संभावित हो, तो प्रत्यक्ष रूप से एक अजनबी भी पिता के समान है और इस दूसरे प्रमाण में उसे गवाह पेश करने की आवश्यकता नहीं है। जब पिता आरियत के तौर पर देते हैं, तो एक अजनबी का आरियत का इरादा हरगिज़ प्रत्यक्ष के विरुद्ध नहीं है, बल्कि अजनबी होने के नाते वही अधिक स्पष्ट है।

[तालिका उद्धरण] अरबी: और उस व्यक्ति पर कोई सबूत आवश्यक नहीं है जिसके लिए प्रत्यक्ष गवाही दे, इसके बावजूद कि यह सिद्ध हो चुका है कि वह देने वाला है, अतः वह देने की स्थिति को बेहतर जानता है, साथ ही इसके जो पहले बीत चुका है कि संभावित मामलों में न्यूनतम ही निर्धारित

होता है। उर्दू: उस पर गवाह लाना अनिवार्य नहीं है जिसके लिए प्रत्यक्ष (ज़ाहिर) गवाह हो, इसके बावजूद कि यह सिद्ध हो चुका है कि वह देने वाला है, अतः वह देने की स्थिति को बेहतर जानता है, इसके बावजूद जो बीत चुका है कि संभावित मामलों में न्यूनतम ही निर्धारित होता है। (त)

अतः जब तक स्पष्ट रूप से 'तमलीक' (स्वामित्व प्रदान करना) का कोई प्रमाण न मिल जाए, सामान्य या साझा प्रथा की स्थिति में अजनबी का इस कार्य पर कदम रखना चाहे-न-चाहे तमलीक के इरादे पर आधारित नहीं माना जाना चाहिए। और यदि सामान्य प्रथा तमलीक की हो कि दहेज देना ही मालिक बनाना समझा जाता हो...

---

१ अल-बहर अल-राइक़, बाब अल-महर, एच.एम. सईद कंपनी कराची ३/१८७ पृष्ठ २४३ / ६८८

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

الی المرأۃ انی انما سلمت ھذہ الاشیاء بطریق العاریۃ بے شک میں نے یہ اشیاء بطور عاریت دی ہیں یا یہ کہ ایک

او یکتب نسخۃ معلومۃ ویشھد الاب علی اقرارھا ان معین تحریر تیار کرکے باپ کو لڑکی کے اس اقرار پر گواہ قائم

جمیع ما فی ھذہ النسخۃ ملک والدی عاریۃ فی یدی کرے کہ وہ تمام اشیاء جو اس تحریر میں مرقوم ہیں میرے والد

منہ الخ کی ملکیت ہیں اور میرے پاس اس کی طرف سے بطور عاریت ہیں الخ (ت)

اقول: وباللہ التوفیق (میں کہتا ہوں اور اللہ تعالٰی سے توفیق ہے۔ت) یہاں دو مرحلے ہیں: اول اس کا اثبات کہ یہ جہیز میں نے مال سے دیا، ان بلاد میں باپ اس ثابت کرنے میں گواہوں کا محتاج نہیں لما تقدم من جریان العرف فی ذلک کذلک (جیسا کہ پہلے گزرا کہ اس میں عرف ایسا ہی جاری ہے۔ت) بلکہ دلہن یا اس کے ورثہ میں اسکے منکر ہوں تو وہ گواہ دیں کہ یہ جہیز باپ نے اپنے مال سے نہ دیا دلہن کی ملک سے بنایا، بخلاف اجنبی کہ اسے اوّلاً یہی ثابت کرنا ضرور ہوگا۔

لعدم ظاہر یشہد لہ فی ذلک وانما البینۃ علی کل من یدعی خلاف الظاہر۔ کیونکہ اس معاملہ میں ظاہر اس کے لئے شاہد نہیں اور ہر اس شخص پر گواہ لازم ہوتے ہیں جو خلاف ظاہر دعوٰی کرے۔ (ت)

پھر اگر یہ امر بینہ یا اقرار عروس یا تسلیم ورثہ سے ثابت ہو تو دوسرا درجہ ثبوت عاریت کا ہے یہاں اگر عرف عام یا مشترک سے عاریت دینا ثابت یا محتمل ہو تو ظاہر الا اجنبی بھی مثل پدر اور

اس ثبوت دوم میں محتاج اقامت بینہ نہیں کہ جب اباء عاریۃً دیتے ہیں تو اجنبی کا قصد عاریت ہرگز خلاف ظاہر نہیں بلکہ بلحاظ اجنبیت وہی اظہر ہے

ولا بینۃ علی من شہد لہ الظاہر مع انہ قد ثبت انہ الدافع فہو ادری بجہۃ الدفع مع ما تقدم من ان الاقل ہو المتعین فی ما احتمل۔ اس پر گواہ لانا لازم نہیں جس کے لئے ظاہر شاہد ہو با وجود اس کے کہ ثابت ہو چکا ہے کہ وہ دینے والا ہے پس وہ دینے کی جہت کو بہتر جانتا ہے باوجود اس کے جو گزرا کہ محتمل میں اقل ہی متعین ہوتا ہے۔ (ت)

تو جب تک صراحۃً کوئی دلیل تملیک نہ پائی جائے بحال عموم یا اشتراکِ عرف عاریت اجنبی کا اس فعل پر اقدام خواہی نخواہی قصدِ تملیک پر محمول نہ ہونا چاہئے اور اگر عرفِ عام تملیک ہو کہ جہیز دینا مالک کرنا ہی سمجھا جاتا ہو

---

1 بحر الرائق باب المہر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳/۱۸۷ Page 243 of 688

Fatawa Rizvia Volume 12

As it is in our countries, when distant relatives provide dowry (tajeez), they do so as a transfer of ownership (tamlik). If someone raises a girl or marries off an orphan girl, whatever dowry they give, they certainly intend it to be a gift of ownership. There isn't even a slight thought of giving it as a temporary loan (Aariyat) to be returned after a few days. In such a situation, regarding the second proof—the claim of it being a loan—even a stranger would be in need of witnesses, as you have known that "What is customary is like what is stipulated by text" (Al-Ma'hood urfan kal-mashroot nassan). This is because you have already understood that what is established by custom is just like what is stipulated by religious decree. Similarly, if a long period has passed after giving the dowry, and the bride has been using it, and there has been absolute silence from the giver's side without any hindrance like absence etc., and no demand for return was made, and then after a very long time, especially after the death of the bride, someone claims, "I gave it as a loan, return it to me," then this claim is against the apparent reality and requires evidence (bayyanah). The matter of parents and children is different; they enjoy each other's wealth throughout their lives, so it is mutually tolerable. However, it is not customarily expected from strangers to leave their property in another's possession and use for such a long period without asserting their ownership.

| (Arabic Column): And this is as stated in 'Al-Bahr', it is mentioned in 'Al-Mubtagha': If a man's wife is brought to him without dowry, he has the right to demand from the father the dinars and dirhams that he sent to him. However, if he remained silent for a long time after the wedding, he does not have the right to litigate after that. (End of summary). And in 'Radd al-Muhtar', it is stated that the commentator said in the 'Book of Waqf': If he remained silent after the wedding for a period by which his consent is known, he does not have the right to litigate after that, even if nothing was prepared for her. (End). And by his saying "is known", he pointed out that what matters regarding long or short duration is... | (Urdu Column): It is the same as stated in 'Al-Bahr' that it is said in 'Al-Mubtagha': A person whose wife came to him without dowry, can demand from the wife's father the dinars and dirhams that he had sent to him. And if he remained silent for a long time after the wedding, he cannot litigate with him afterwards. (Summary). And in 'Radd al-Muhtar' it is said that the commentator stated in the 'Book of Waqf' that if he remained silent after the wedding for such a period that his consent was understood, then he does not have

the right to litigate after that, even if nothing was made for her, etc. In this text, the commentator by his words "knows" pointed towards the fact that the period's... |

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Bab al-Mahr, H.M. Saeed Company Karachi, 3/186, 187.

जैसा कि हमारे देशों में है कि अजनबी रिश्तेदार जो तैयारी (तजीज़) करते हैं, वे मिल्कियत (तमलीक) ही करते हैं। अगर कोई किसी लड़की को पालता है या वैसे ही किसी यतीम बच्ची का निकाह करता है, तो जो कुछ जहेज़ में देता है, यकीनन मिल्कियत देने का ही इरादा करता है। चंद रोज़ के लिए उधार (आरियत) देकर वापस लेने का ज़रा भी वहम नहीं गुज़रता। तो ऐसी हालत में इस दूसरे सबूत यानी उधार के दावे में अजनबी भी गवाहों का मोहताज होगा, जैसा कि आप जान चुके हैं कि 'जो उर्फ (प्रथा) में जाना-पहचाना हो, वह वैसा ही है जैसे लिखित रूप में शर्त रखी गई हो' (अल-मअहूद उर्फन कल-मशरुत नस्सन)। क्योंकि आप जान चुके हैं कि जो रिवाज के तौर पर तय हो, वह वैसा ही है जैसे शरीयत के हुक्म से तय हो। इसी तरह अगर जहेज़ दिए एक लंबा अरसा गुज़र जाए, दुल्हन उसे इस्तेमाल करती रहे और उसकी तरफ से बिना किसी रुकावट (जैसे गायब होना आदि) के मुकम्मल खामोशी रहे, वापसी की कोई मांग ज़ाहिर न हो, फिर एक लंबी मुद्दत के बाद, खासकर दुल्हन की मौत के बाद, कोई दावा करे कि "मैंने तो उधार दिया था, मुझे वापस मिले", तो अब भी उसका यह दावा ज़ाहिर हकीकत के खिलाफ है और सबूत (बय्यनाह) का मोहताज है। माता-पिता और औलाद का मामला दूसरा है, उनमें एक-दूसरे के माल से उम्र भर फायदा उठाना आपस में गंवारा होता है। रिवाज के तौर पर अजनबियों से यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि वे इतनी मुद्दत तक अपना माल दूसरे के ऐसे कब्जे और इस्तेमाल में छोड़ दें और अपना मालिकाना हक न जताएं।

| (अरबी कॉलम): और यह वैसा ही है जैसा 'अल-बहर' में कहा गया, 'अल-मुब्तग़ी' में कहा गया है: जिस व्यक्ति की पत्नी जहेज़ के बिना उसके पास आई हो, तो उसे पिता से उन दीनारों और दिरहमों का दावा करने का अधिकार है जो उसने उसकी ओर भेजे थे। और अगर वह शादी (ज़फ़ाफ़) के बाद लंबे समय तक खामोश रहा, तो उसे उसके बाद विवाद करने का अधिकार नहीं है। (संक्षेप में)। और 'रद्द अल-मुह्तार' में है कि व्याख्याकार ने 'किताब अल-वक़्फ़' में फरमाया: अगर वह शादी के बाद इतने समय तक खामोश रहा जिससे उसकी रज़ामंदी जानी गई, तो उसे इसके बाद विवाद करने का अधिकार नहीं है, चाहे उसके लिए कुछ भी न बनाया गया हो। (समाप्त)। और अपने कथन "जानी गई" (यआरिफ़) से उन्होंने इस ओर इशारा किया कि अवधि के लंबे या छोटे होने में... | (उर्दू कॉलम): ऐसा ही है जैसा कि बहर में फरमाया कि मुब्तग़ी में कहा जिस शख्स की बीवी जहेज़ के बगैर रुखसत होकर उसकी तरफ आई हो तो बीवी के बाप उन दीनार व दराहम का मुतालबा कर सकता है जो उसने उसकी तरफ भेजे थे और अगर ज़फ़ाफ़ के बाद ज़माना दराज़ तक खामोश रहा

तो उसके बाद उससे मुख़ासिमा नहीं कर सकता। (मख़्तसरन)। और रद्द अल-मुह्तार में है कि शारह ने किताब अल-वक़्फ़ में फरमाया कि अगर ज़फ़ाफ़ के बाद इतना ज़माना खामोश रहा जिससे उसकी रज़ा समझी गई तो अब इसके बाद उसको मुख़ासिमत का हक नहीं अगरचे उसके लिए कुछ भी न बनाया हो इल्ख़। इस इबारत में शारह ने अपने कौल "यआरिफ़" से इस बात की तरफ इशारा फरमाया कि ज़माना के.. |

1. बहर अल-राईक, बाब अल-महर, एच.एम. सईद कंपनी कराची 3/186, 187

جیسا کہ ہمارے بلاد میں ہے کہ اقاربِ اجانب جو تجہیز کریں تملیک ہی کرتے ہیں، اگر کوئی کسی لڑکی کو پالتا یا ویسے ہی کسی یتیمہ کا نکاح کرتا ہے تو جو کچھ جہیز میں دیتا ہے یقیناً تملیک ہی کا ارادہ کرتا ہے چند روزہ عاریت دے کر واپسی لینے کا اصلاً وہم بھی نہیں گزرتا تو ایسی حالت میں اس ثبوت دوم یعنی دعوٰی عاریت میں اجنبی بھی آپ ہی محتاجِ گواہان ہوگا کما علمت ان المعھود عرفا کالمشروط نصاً) کیونکہ تُوجان چکا ہے کہ جو بطور عرف کے معہود ہو وہ ایسے ہی ہے جیسے بطور نص کے مشروط ہو۔ ت) اسی طرح اگر جہیز دئے ایک زمانہ ممتد گزر جائے دلہن برتنی استعمال کرتی رہے اور اسکی جانب سے بے مانع غیبوبت وغیرہ سکوتِ مطلق رہے طلب واپسی ظاہر نہ ہو پھر ایک مدتِ مدیدہ خصوصاً موتِ عروس کے بعد دعوٰی کرے کہ میں نے تو عاریۃً دیا تھا مجھے واپس ملے تو اب بھی اس کا یہ دعوٰی خلافِ ظاہر و محتاجِ بینہ ہے والدین واولاد کا معاملہ دوسرا ہے ان میں ایک دوسرے کے مال سے مدۃ العمر ممتع رہتے تو باہم گوارا ہوتا ہے عرفاً اجانب سے متوقع نہیں کہ اتنی مدت تک اپنا مال دوسرے کے ایسے تصرف واستعمال میں چھوڑے رہیں اور اپنی ملک ہونا زبان پر نہ لائیں۔

| وھذا کما قال في البحر قال في المبتغی من زفت الیه امرأته بلاجهاز فله مطالبة الاب بما بعث الیه من الدنانیر والدراهم ولو سکت بعد الزفاف طویلا لیس له ان یخاصمه بعده اه مختصرا وفي ردالمحتار قال الشارح في کتاب الوقف ولو سکت بعد الزفاف زمانا یعرف بذلك رضاه لم یکن له ان یخاصم بعد ذلك وان لم یتخذ له شیئ اھ واشار بقوله یعرف الی ان المعتبر في الطول والقصر | ایسا ہی ہے جیسا کہ بحر میں فرمایا کہ مبتغی میں کہا جس شخص کی بیوی جہیز کے بغیر رخصت ہو کر اس کی طرف آئی ہو تو بیوی کے باپ ان دنانیر و دراہم کا مطالبہ کر سکتا ہے جو اس نے اس کی طرف بھیجے

تھے اور اگر زفاف کے بعد زمانہ دراز تک خاموش رہا تو اس کے بعد اس سے مخاصمہ نہیں کر سکتا اھ مختصرا۔ اور ردالمحتار میں ہے کہ شارح نے کتاب الوقف میں فرمایا کہ اگر زفاف کے بعد اتنا زمانہ خاموش رہا جس سے اس کی رضا سمجھی گئی تو اب اس کے بعد اس کو مخاصمت کا حق نہیں اگرچہ اس کے لیے کچھ بھی نہ بنایا ہو الخ اس عبارت میں شارح نے اپنے قول "یعریف" سے اس بات کی طرف اشارہ فرمایا کہ زمانہ کے |

1 بحر الرائق باب المهر ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳/ ۱۸۶،۱۸۷

Fatawa Razawiyya Volume 12

[Table/Box Section] Custom [determines] long and short [duration]. From *al-Bazzaziyyah*: Since it was plausible and he remained silent for a period that allows for choice, it indicates that the intent was not the trousseau (dowry items). I say: They have explicitly stated that if someone sees another person disposing of something for a time, then claims it is his, and there was no obstacle to his claim, it will absolutely not be heard, to prevent ruses. We have explained this in the [chapter on] Claims in our Fatawas. (T)

Explanation (Urdu Column): Custom is the criterion for a duration being long or short. It is stated in *al-Bazzaziyyah* that when it was plausible and he remained silent for such a duration—and it is in *Radd al-Muhtar* that the commentator stated in the Book of Waqf—that if one remains silent after the wedding for a period from which consent is inferred, then after that, he has no right to litigate, even if nothing was prepared for him. In this passage, the commentator, with his statement 'is known by custom,' indicated that the period during which he remained silent, while he had the option to demand, is evidence that his purpose was not to take the trousseau. I say (on this they have provided clear text) that whoever watches someone disposing of something for a period of time and then claims it belongs to him, even though there was nothing preventing him from claiming it before, such a claim based on ruses will not be heard. We have explained this research in our fatwas under 'Claims'. (T)

[Next Section] In *Qurrat al-Uyun* it is stated: If a stranger provides a woman with a trousseau and then, after her death, claims it was a loan (ariyah), his word is not accepted without proof. This is because the apparent state is that he would not provide a trousseau and leave it in her possession until death unless it was from her own property. This is unlike the father and mother, for they provide the trousseau from their own wealth, but sometimes it is as a gift (tamlik) and sometimes as a loan. Therefore, the commentator of *al-Wahbaniyyah* said: "In my view, there is a point for consideration regarding the guardian of a minor," i.e., in treating him like the father and mother, because the apparent state in...

Explanation (Urdu Column): If a stranger gave a trousseau to a woman and then after her death claimed it was as a loan, his statement will not be accepted without witnesses because the outward appearance is that giving a trousseau to a woman and leaving it in her possession until death only happens when it is from the woman's own wealth. This is unlike parents because they provide the trousseau to

their daughters from their own wealth; however, sometimes it is by way of ownership (gift) and sometimes as a loan. For this reason, the commentator of *Wahbaniyyah* stated that in my view, there is a consideration regarding the guardian of a minor etc., meaning to treat him like parents.

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, Chapter of Mahr (Dower), Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/367. 2. Radd al-Muhtar, Chapter of Mahr, 3/368.

फतावा रज़विया जिल्द 12

[बॉक्स अनुभाग] लंबी और छोटी अवधि का फैसला 'उर्फ़ (प्रथा) के आधार पर होगा। अल-बज़्ज़ाज़िया में है: चूँकि यह संभावित था और वह कुछ समय तक चुप रहा, जो चुनाव (इख़्तियार) के लिए पर्याप्त है, तो यह दर्शाता है कि उद्देश्य दहेज नहीं था। मैंने कहा: उन्होंने स्पष्ट किया है कि यदि कोई किसी को किसी चीज़ का उपयोग करते हुए देखता है और फिर दावा करता है कि वह उसकी है, जबकि दावे में कोई बाधा नहीं थी, तो चालबाज़ियों को रोकने के लिए उसका दावा बिल्कुल नहीं सुना जाएगा। हमने इसे अपने फतावा के दावों के अध्याय में स्पष्ट किया है। (त)

व्याख्या (उर्दू कॉलम): लंबा और संक्षिप्त होने का आधार प्रथा (उर्फ़) पर है। अल-बज़्ज़ाज़िया से है कि जब यह संभावित था और वह इतने समय तक चुप रहा—और रद अल-मुहतार में है कि व्याख्याकार ने 'किताब अल-वक़्फ़' में फरमाया—कि यदि विवाह के बाद वह इतने समय तक चुप रहा जिससे उसकी रज़ामंदी समझी गई, तो अब उसे विवाद करने का अधिकार नहीं है, भले ही उसके लिए कुछ भी न बनाया गया हो। इस इबारत में व्याख्याकार ने अपने शब्द 'जाना जाता है' से इस बात की ओर इशारा किया कि वह समय जिसमें वह चुप रहा, जबकि वह मांग करने का अधिकार रखता था, इस बात का प्रमाण है कि उसका उद्देश्य दहेज लेना नहीं था। मैं कहता हूँ (इस पर उन्होंने स्पष्ट पाठ दिया है) कि जो व्यक्ति एक समय तक किसी को किसी वस्तु का उपयोग करते हुए देखता रहा, फिर दावा किया कि वह वस्तु उसकी है, जबकि इससे पहले दावे में कोई बाधा नहीं थी, तो उसका यह दावा चालबाज़ियों के आधार पर स्वीकार्य नहीं होगा। हमने अपनी फतावा के दावों में इसका शोध प्रस्तुत किया है। (त)

[अगला अनुभाग] क़ुर्रत अल-उयून में है: यदि किसी अजनबी ने किसी महिला को दहेज दिया और फिर उसकी मृत्यु के बाद दावा किया कि वह ऋण (आरियत) के रूप में था, तो बिना सबूत के उसकी बात स्वीकार नहीं की जाएगी। क्योंकि प्रत्यक्ष रूप से यही है कि वह दहेज देकर मृत्यु तक उसके अधिकार में तभी छोड़ेगा जब वह महिला के स्वयं के धन से हो। यह माता-पिता के विपरीत है क्योंकि वे अपने धन से बेटियों को दहेज देते हैं, हालांकि कभी यह स्वामित्व (तमलीक) के रूप में होता है और कभी ऋण (आरियत) के रूप में। इसीलिए अल-वहबानिया के व्याख्याकार ने कहा: "मेरे विचार में, नाबालिग के अभिभावक (वली) के बारे में विचार करने योग्य बात है," अर्थात उसे माता-पिता के समान मानने में, क्योंकि प्रत्यक्ष रूप से...

व्याख्या (उर्दू कॉलम): यदि किसी अजनबी ने किसी महिला को दहेज दिया, फिर महिला की मृत्यु के बाद दावा किया कि यह ऋण के तौर पर था, तो गवाहों के बिना उसकी बात स्वीकार नहीं की जाएगी क्योंकि ज़ाहिर यही है कि महिला को दहेज देकर उसकी मृत्यु तक उसके कब्जे में छोड़ देना केवल वहीं होगा जहाँ वह महिला के अपने माल से हो। माता-पिता के विपरीत, क्योंकि वे अपने माल से बेटियों को दहेज देते हैं, हालांकि कभी वह स्वामित्व के तौर पर होता है और कभी ऋण के तौर पर। इसीलिए वहबानी के व्याख्याकार ने फरमाया कि मेरे नज़दीक नाबालिग के वली के मामले में विचार की आवश्यकता है आदि, यानी उसे माता-पिता के समान ठहराना।

पाद-टिप्पणियाँ: 1. रद अल-मुहतार, बाब अल-महर, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/367। 2. रद अल-मुहतार, बाब अल-महर, 3/368।

पृष्ठ 688 का 245

فتاوٰی رضویہ جلد دو ازدہم

[باکس سیکشن] العرف ۱ اه وفیه عن البزازیة لانه لما کان محتملا وسکت زمانا یصلح للاختیار دل ان الغرض لم یکن الجهاز ۲ اه قلت وقد نصوا ان من رأی احدا یتصرف في شیئ زمانا ثم ادعی انه ولم یکن ثم مانع من دعواه لم تسمع قطعاً للحیل وقد بیناه في الدعاوی من فتاونا۔

اردو کالم: دراز اور مختصر ہونے کا اعتبار عرف پر ہے اھ اور اسی میں بزازیہ سے ہے، اسلئے کہ جب محتمل تھا اور وہ اتنا زمانہ اور ردالمختار میں ہے کہ شارح نے کتاب الوقف میں فرمایا کہ اگر زفاف کے بعد اتنا زمانہ خاموش رہا جس سے اس کی رضا سمجھی گئی تو اب اس کے بعد اس کو مخاصمت کا حق نہیں اگرچہ اس کے لئے کچھ بھی نہ بنایا ہو الخ اس عبارت میں شارح نے اپنے قول "یعرف" سے اس بات کی طرف اشارہ فرمایا کہ زمانہ کے خاموش رہا جس میں وہ مطالبہ کو اختیار کرسکتا تھا تو اس بات کی دلیل ہے کہ اس کی غرض جہیز لینا نہ تھا الخ قلت (میں کہتا ہوں) اس پر انہوں نے نص کی کہ جو شخص ایک زمانہ تک کسی کو کسی شئی میں تصرف کرتے ہوئے دیکھتا رہا، پھر دعوٰی کیا کہ یہ شئی اس کی ہے حالانکہ اس سے پہلے بھی دعوی سے کوئی مانع نہ تھا تو اس کا یہ دعوی اس کے حیلوں کی بنیاد پر مسموع نہ ہوگا۔ تحقیق ہم نے اس کو اپنے فتاوٰی کے دعاوی میں بیان کیا ہے۔ (ت)

[اگلا سیکشن] قرة العیون میں ہے: لوجهزها الاجنبي ثم ادعی انه عاریة بعد موتها لایقبل قوله الابینة لان الظاهر انه لا یجهزها ویترکه في یدها الی الموت الابمالها بخلاف الاب والام فانهما یجهزانها بمال انفسهما لکن یکون ذلك تملیکا تارة وتارة عاریة ولذا قال شارح الوهبانیة وفی الولی عندی نظر الخ ای فی جعله کالاب والام لان الظاهر في

اردو کالم: اگر اجنبی نے کسی عورت کو جہیز دیا پھر عورت کے مرنے کے بعد دعویٰ کی کہ یہ بطور عاریت تھا تو بغیر گواہوں کے اس کا قول قبول نہیں کیا جائے گا کیونکہ ظاہر یہی ہے کہ عورت کو جہیز دے کر اس کے مرنے تک اس کے قبضہ میں چھوڑ دینا صرف وہیں ہوگا جہاں عورت کے اپنے مال سے ہو، بخلاف ماں باپ کے کیونکہ وہ اپنے مال سے بیٹیوں کو جہیز دیتے ہیں تاہم کبھی تو وہ بطور تملیک ہوتا ہے اور کبھی بطور عاریت۔ اسی لئے شارح وہبانی نے فرمایا کہ میرے نزدیک ولی صغیرہ میں نظر ہے الخ یعنی اس کو ماں باپ کی مثل قرار

حواشی: ۱ رد المحتار باب المہر دار احیاء التراث العربی بیروت ۲ / ۳۶۷ ۲ رد المحتار باب المہر ۳ / ۳۶۸

Fatawa Radawiyya - Volume 12

[Right Column - Urdu Translation] ...in providing (dowry), because for someone other than parents, it is apparent that they prepare the dowry from the girl's own wealth, etc. I say: (I say) this discourse has received a generous portion of excellence and it follows the same path of investigation that we have already established, and Allah Almighty alone is the Master of success. And from what we have conveyed to you before and after (meaning, stated), perhaps you have understood that in the aforementioned ruling, death is not a restriction. And Allama Sayyid al-Tahtawi spoke very well where he said that the author's investigation in the 'Chapter on Dowry' stated that indeed the mother is like the father, and the ruling of death is like the ruling of life, etc. All this is what became apparent to me, and the knowledge of the truth is with my Lord, and all praise is for Allah, Who is the Sustainer of all the worlds. (T)

[Left Column - Arabic Original] ...others do not provide for her except with her own wealth. Ah (1). I say: This is a discourse that has been granted a portion of beauty, and it follows the path of the investigation we have previously presented. And Allah Almighty is the Guardian of success. Perhaps you have realized from what we have presented to you before and after that death is not a restriction. The Great Scholar, Sayyid al-Tahtawi, did well when he said: The text has been mentioned in the 'Chapter on Dowry' that the mother is like the father, and that the ruling on death is like the ruling on life (2). Ah. All of this is what appeared to me, and knowledge of the truth is with my Lord. And praise be to Allah, Lord of the worlds.

In any case, the ruling regarding Faiz-un-Nisa Begum is this:

That this claim of hers is not admissible in this manner; firstly, it is necessary to look at the basis of her claim. Does she want the return considering it a gift until life? (As some indication is found from the mention of clothes, jewelry, etc., left by the deceased girl, whereas in the petition if the words of Faiz-un-Nisa Begum are these, then the property of a deceased borrower is not called 'ariyah' [loan for use]). When the claim is made after the passing of a period of time, especially after the death of the bride, it is very weak and in need of evidence. She should provide just witnesses according to either of the two aforementioned methods to prove that 'I gave this dowry according to the details to Khadija Bibi as a loan from my own personal wealth.' If the witnesses testify, then it is well; if she cannot provide them, then the judge or Sharia judge shall take an oath from Khadija's husband and other heirs

saying, 'By Allah, we do not know that this dowry wealth was with Khadija Bibi as a loan from Faiz-un-Nisa Begum.' If they take the oath, then the case is in favor of Khadija's heirs; otherwise, it is in favor of Faiz-un-Nisa Begum.

---

1. Qurrat al-Uyun al-Akhbar, Book of Loans, Mustafa al-Babi Egypt, 2/317
2. Hashiya Tahtawi on al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Dowry, Dar al-Ma'rifah Beirut, 2/67

फ़तावा रज़विया - जिल्द 12

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद] ...देने में, क्योंकि माता-पिता के अलावा अन्य के मामले में स्पष्ट यही है कि वे लड़की के धन से ही दहेज तैयार करते हैं इत्यादि। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) इस कथन को श्रेष्ठता का एक बड़ा हिस्सा प्राप्त हुआ है और यह उसी शोध के पथ पर चलता है जो हम पहले ही स्थापित कर चुके हैं, और अल्लाह सर्वशक्तिमान ही सफलता का स्वामी है। और जो कुछ हमने आपके सामने पहले और बाद में प्रस्तुत किया (अर्थात वर्णन किया), उससे शायद आपने समझ लिया होगा कि उपर्युक्त नियम में मृत्यु कोई प्रतिबंध नहीं है। और अल्लामा सैयद अल-तहतवी ने बहुत अच्छी बात कही जहाँ उन्होंने कहा कि लेखक के शोध में 'दहेज के अध्याय' में कहा गया है कि वास्तव में माँ पिता के समान है, और मृत्यु का नियम जीवन के नियम के समान है, इत्यादि। यह सब वह है जो मुझ पर प्रकट हुआ है, और सत्य का ज्ञान मेरे रब के पास है, और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो सभी लोकों का पालनहार है। (त)

[बायां कॉलम - अरबी मूल] ...दूसरे उसके धन के बिना उसे सुसज्जित नहीं करते। आह (1)। मैं कहता हूँ: यह वह कथन है जिसे सुंदरता का हिस्सा प्रदान किया गया है, और यह उस शोध के पथ का अनुसरण करता है जिसे हमने पहले प्रस्तुत किया है। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सफलता का संरक्षक है। शायद आपने महसूस किया होगा जो हमने आपके सामने पहले और बाद में प्रस्तुत किया है कि मृत्यु एक प्रतिबंध नहीं है। महान विद्वान सैयद अल-तहतवी ने अच्छा किया जब उन्होंने कहा: 'दहेज के अध्याय' में पाठ का उल्लेख किया गया है कि माँ पिता के समान है, और मृत्यु का नियम जीवन के नियम के समान है (2)। आह। यह सब वही है जो मुझ पर प्रकट हुआ, और सत्य का ज्ञान मेरे रब के पास है। और प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो लोकों का पालनहार है।

बहरहाल, फ़ैज़-उन-निसा बेगम के मामले में हुक्म यही है:

कि उनका यह दावा इस तरह से सुनने योग्य नहीं है; सबसे पहले, उनके दावे के आधार पर गौर करना आवश्यक है। क्या वह जीवन भर के लिए उपहार (हिबा) मानकर वापसी चाहती हैं? (जैसा कि मृत लड़की द्वारा छोड़े गए कपड़ों, गहनों आदि के उल्लेख से कुछ पता चलता है, जबकि याचिका में अगर फ़ैज़-उन-निसा बेगम के शब्द यही हों, तो उधार लेने वाले मृत व्यक्ति की संपत्ति को 'आरियत' [उपयोग के लिए ऋण] नहीं कहा जाता)। जब दावा समय बीतने के बाद, विशेष रूप से दुल्हन की मृत्यु के बाद किया जाता है, तो यह बहुत कमज़ोर होता है और साक्ष्य की आवश्यकता होती है। उन्हें

ऊपर बताए गए दो तरीकों में से किसी एक तरीके से न्यायप्रिय गवाह देने होंगे कि 'यह दहेज विवरण के अनुसार मैंने अपने निजी धन से खदीजा बीबी को आरियत के तौर पर दिया था।' यदि गवाह गवाही देते हैं, तो ठीक है; यदि वह उन्हें प्रदान नहीं कर पाती हैं, तो न्यायाधीश या शरिया न्यायाधीश खदीजा के पति और अन्य उत्तराधिकारियों से शपथ लेंगे कि 'अल्लाह की कसम, हमें नहीं पता कि यह दहेज का धन फ़ैज़-उन-निसा बेगम की ओर से खदीजा बीबी के पास आरियत के तौर पर था।' यदि वे शपथ ले लेते हैं, तो मामला खदीजा के वारिसों के पक्ष में होगा; अन्यथा, फ़ैज़-उन-निसा बेगम के पक्ष में।

---

1. कुर्रत-उल-उयून अल-अख़बार, किताबुल आरियत, मुस्तफ़ा अल-बाबी मिस्र, 2/317
2. हाशिया तहतवी अलद-दुर्रुल मुख्तार, बाबुल महर, दारुल मारिफ़ा बेरूत, 2/67

فتاوٰی رضویہ - جلد دوازدہم

[دایاں کالم] دینے میں کیونکہ ماں باپ کے غیر میں ظاہر یہی ہے کہ وہ لڑکی کے مال سے جہیز بناتے ہیں الخ اقول: (میں کہتا ہوں) اس کلام کو حسن سے وافر حصہ ملا اور وہ اسی روش پر چلا جو تحقیق ہم سابق میں کر چکے ہیں اور اللہ تعالٰی ہی مالک توفیق ہے، اور ہم نے سابق ولاحق میں جو تجھ پر القاء کیا (یعنی بیان کیا) اس سے شاید تو نے سمجھ لیا ہوگا کہ حکم مذکور میں موت قید نہیں، اور علامہ سید طحطاوی نے بہت خوب کہا جہاں فرمایا کہ تحقیق مصنف نے باب المہر میں کہا کہ بیشک ماں، باپ کی طرح ہے۔ اور موت کا حکم حیات کے حکم کی مثل ہے الخ یہ سب وہ ہے جو میرے لئے ظاہر ہوا اور حق کا علم میرے رب کے پاس ہے، اور تمام تعریفیں اللہ کے لئے ہیں جو تمام جہانوں کو پالنے والا ہے۔ (ت)

[بایاں کالم] غیرھما لا یجھز ھا الا بمالھا اھ ۱ اقول: ھذا کلام قدر رزق مت من الحسن وھو ینحو منحی ما قدمت من التحقیق واللہ تعالی ولي التوفیق ولعلك تفطنت مما القینا علیك سابقا ولاحقا ان الموت غیر قید وقد احسن السید العلامة الطحطاوی حیث قال قد ذکر النص في باب المھر ان الام کالاب وان حکم الموت کحکم الحیات ۲ اھ ھذا کلہ ما ظھر لي والعلم بالحق عند ربي، والحمد للہ رب العالمین۔

بہر حال فیض النساء بیگم میں حکم یہی ہے

کہ اس کا یہ دعوٰی یوں قابلِ سماعت نہیں، اولاً اس کی بنائے دعوٰی پر نظر لازم، آیا واپسی بہ خیالِ ہبہ تا حینِ حیات چاہتی ہے (جس طرح لفظ کپڑے وزیورات وغیرہ متروکہ لڑکی متوفیہ سے اس کا کچھ پتا چلتا ہے جبکہ عرضی دعوے میں فیض النساء بیگم کے لفظ یہی ہوں کہ عاریت کو مستعیر متوفی کا ترکہ نہیں کہتے) جب تو دعوٰی کہ بعد مرورِ مدت خصوصاً بعد موتِ عروس ہوا بہت

کیف محتاج شہادت ہے انہیں دو طریقہ مذکورہ سے کسی طریقہ پر گواہان عادل دے کہ یہ جہیز بدی تفصیل خدیجہ بی بی کو میں نے اپنے مال خاص سے عاریتہ دیا اگر گواہ دیدیں فبہا نہ دے سکے تو حاکم یا حاکم شرعی شوہر خدیجہ وغیرہ ورثاء سے قسم لے کہ واللہ ہمیں نہیں معلوم کہ یہ جہیز مال فیض النساء بیگم سے خدیجہ بی بی کے پاس عاریتہ تھا اگر وہ قسم کھا لیں تو مقدمہ بحقِ وارثانِ خدیجہ ورنہ بحق فیض النساء بیگم۔

---

۱ قرۃ عیون الاخبار کتاب العاریۃ مصطفی البابی مصر ۲ / ۳۱۷ ۲ حاشیہ طحطاوی علی الدرالمختار باب المہر دارالمعرفۃ بیروت ۲ / ۶۷

It is settled. In Tahtawi ala al-Durr al-Mukhtar it is stated:

(Arabic) His saying: regarding what a stranger claims, meaning that he lent this thing to the deceased, he is not believed except with evidence. And he (the claimant) has the right to make the heir swear an oath if he denies [knowledge], as is the rule in similar cases. End. And Allah subhanahu wa ta'ala knows best.	And the author's statement that if a stranger makes a claim, i.e., says: I gave this thing to the deceased as a loan, then it will not be confirmed without witnesses. And if the heir of the deceased is a denier, then (the judge) can take an oath from him in this way: 'We do not have knowledge of its being a loan', just as this is the rule in its similar cases. End. And Allah subhanahu wa ta'ala knows best.

(T) Answer to the Fifth Question From the previous discussions, it is also clear that in proving the claim that Faiz-un-Nisa Begum gave these items from her own property at the time of Husam-ud-Din's marriage, Faiz-un-Nisa Begum is in need of witnesses. If this matter is proven by testimony or the defendant's confession, then regarding the transfer of ownership (Tamlik) versus lending (Aariyat), the same custom and evidence will be considered. If transfer of ownership is proven through explicit text or custom (as is common practice in our cities where whatever clothes, cash, or other items the bride's family gives to the groom, they intend transfer of ownership; rather, here they consider calling such items a loan even more shameful than calling a daughter's dowry a loan), then that dinar will be considered a gift (Hiba). And if Faiz-un-Nisa Begum claims it was a loan, it will not be heard without those proofs. And if the indication of transfer of ownership is not established, then Faiz-un-Nisa Begum's statement about it being a loan will be acceptable with an oath. Then, if it is proven that the property was a gift, and some of it was lost or destroyed, whether by Husam-ud-Din's own action, unintentionally, or if he gave it to someone or sold it, then its return is not possible.

(Arabic) For the destruction of the gifted object and its leaving the ownership of the donee are both among the impediments to revocation.	Because indeed, the destruction of the gifted item and its exit from the ownership of the donee are both among the impediments to revocation. (T)

And what is still in his possession and there is no impediment to revocation, Faiz-un-Nisa Begum can take it back by mutual consent or by a judge's decree, but she will be

a sinner because revocation in a gift is severely disliked and prohibited; revocation cannot be done by oneself without it.

---

[1] Hashiyah al-Tahtawi ala al-Durr al-Mukhtar, Book of Loans, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 3/390

तय हुआ। तहतावी अली अल-दुर्र अल-मुख्तार में है:

(अरबी) उनका कहना: उस बारे में जिसका कोई अजनबी दावा करे, यानी कि उसने यह चीज़ मृतक को उधार दी थी, तो बिना साक्ष्य के उसकी बात नहीं मानी जाएगी। और उसे (दावा करने वाले को) वारिस से कसम लेने का अधिकार है यदि वह [ज्ञान से] इंकार करे, जैसा कि इसके समान मामलों में नियम है। समाप्त। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है।

और लेखक का यह कथन कि जिसमें अजनबी दावा करे, यानी यूं कहे कि यह वस्तु मैंने मृतक को उधार के रूप में दी थी, तो बिना गवाहों के उसकी पुष्टि नहीं की जाएगी। और यदि मृतक का वारिस मुनकिर (इंकारी) हो तो (हाकिम) उससे इस तरह कसम ले सकता है कि हमें इसके उधार होने का ज्ञान नहीं है जैसा कि इसके नज़ीरों (समान उदाहरणों) में यही हुक्म है। समाप्त। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला खूब जानता है।

(त) पाँचवें प्रश्न का उत्तर पिछली चर्चाओं से यह भी स्पष्ट है कि इस दावे के प्रमाण में कि ये चीज़ें हसामुद्दीन की शादी के समय फ़ैज़-उन-निशा बेगम ने अपनी संपत्ति से दी थीं, फ़ैज़-उन-निशा बेगम को गवाहों की आवश्यकता है। यदि यह मामला गवाही या प्रतिवादी के इक़बाल (स्वीकारोक्ति) से साबित हो जाए, तो मिल्कियत हस्तांतरण (तमलीक) और उधार (आरियत) के बारे में वही प्रथा (उर्फ़) आदि साक्ष्यों पर नज़र होगी। यदि स्पष्ट रूप से (नसन) या प्रथा (उर्फन) किसी भी तरह से मिल्कियत हस्तांतरण का संकेत मिलता हो (जैसा कि हमारे शहरों में आम रिवाज है कि दुल्हन वालों की ओर से सलामी आदि के रूप में जो कुछ कपड़े या नकद या अन्य चीज़ें दूल्हे को दी जाती हैं, उससे उनका उद्देश्य मिल्कियत हस्तांतरण ही होता है; बल्कि यहाँ इसे उधार बताना, बेटी के जहेज़ को उधार कहने से भी ज़्यादा शर्म की बात समझते हैं), तो वह दीनार 'हिबा' (उपहार) माना जाएगा। और यदि फ़ैज़-उन-निशा बेगम इसे उधार कहेगी तो बिना उन प्रमाणों के उसकी बात नहीं सुनी जाएगी। और यदि मिल्कियत हस्तांतरण का संकेत नहीं मिलता है, तो फ़ैज़-उन-निशा बेगम का यह कहना कि यह उधार है, कसम के साथ स्वीकार्य होगा। फिर, यदि उस संपत्ति का हिबा होना साबित हो जाए और उसमें से कुछ नष्ट हो जाए, चाहे हसामुद्दीन के अपने कृत्य से या अनजाने में, या उसने किसी को दे दिया हो या बेच दिया हो, तो उसकी वापसी संभव नहीं है।

(अरबी) क्योंकि दी गई वस्तु का नष्ट हो जाना और उसका पाने वाले के अधिकार से बाहर निकल जाना, दोनों ही (उपहार) वापस लेने की बाधाओं में से हैं।

क्योंकि बेशक हिबा की हुई चीज़ का नष्ट होना और उसका पाने वाले के स्वामित्व से निकल जाना दोनों ही वापसी की बाधाओं में से हैं। (त)

और जो चीज़ यथावत उसके पास मौजूद है और वापसी की कोई बाधा नहीं है, तो फ़ैज़-उन-निशा बेगम आपसी सहमति या काज़ी (न्यायाधीश) के फैसले से वापस ले सकती है, लेकिन वह गुनाहगार होगी क्योंकि हिबा में वापसी अत्यंत मकरूह (नापसंद) और वर्जित है; इसके बिना स्वयं वापसी नहीं हो सकती।

---

[1] हाशिया अत-तहतावी अली अल-दुर्र अल-मुख्तार, किताब अल-आरियत, दार अल-मआरिफ़त बेरूत 3/390

पृष्ठ 247/688

جلد دوازدھم فتاوی رضویہ

فیصل ہو۔ طحطاوی علی الدرالمختار میں ہے:

قولہ وفیما یدعیہ الاجنبی ای من انہ اعار المتوفی ھذاالشیئ لایصدق الابینۃ ولہ ان یحلف الوارث ان انکر علی العلم کما ھو الحکم فی نظائرھا اھ واللہ سبحنہ وتعالٰی اعلم۔

اور قول مصنف کہ جس میں اجنبی دعوٰی کرے یعنی یوں کہے کہ یہ شئی میں نے متوفی کو بطور عاریت دی تھی تو بغیر گواہوں کے اس کی تصدیق نہیں کی جائے گی اور متوفی کا وارث اگر منکر ہو تو (حاکم) اس سے یوں قسم لے سکتا ہے کہ ہمیں اس کے عاریت ہونے کا علم نہیں جیسا کہ اس کے نظائر میں یہی حکم ہے اھ اور واللہ سبحنہ وتعالٰی خوب جانتا ہے۔

(ت) جواب سوال پنجم بھی تقریبات سابقہ سے واضح اس دعوٰی کے ثبوت میں کہ یہ اشیاء وقت شادی حسام الدین کو فیض النساء بیگم نے اپنے مال سے دیں فیض النساء بیگم محتاج گواہان ہے اگر یہ امر شہادت یا اقرار مدعا علیہ سے ثابت ہو تو درباره تملیک وعاریت وہی عرف وغیرہ دلاء پر نظر ہوگی اگر نصاً یا عرفاً کسی طرح دلالت تملیک ثابت ہو (جس طرح ہمارے بلاد میں رواج عام ہے کہ دلہن والوں کی طرف سے سلامی وغیرہ جو کچھ کپڑے یا نقد یا دیگر اشیاء دولہا کر دیتے ہیں اُس سے تملیک ہی کا ارادہ کرتے ہیں بلکہ یہاں عاریت بتانا جہیز دختر کو عاریت کہنے سے زیادہ موجب ننگ وعار سمجھتے ہیں) تو وہ دینار ہبہ سمجھا جائے گا اور فیض النساء بیگم اگر عاریت کہے گی تو بغیر اُن طرق ثبوت کے مسموع نہ ہوگا اور اگر دلالت تملیک متحقق نہیں تو فیض النساء بیگم کا قول عاریت بہ قسم قابل قبول ہوگا، پھر اگر اُس مال کا ہبہ ہونا ثابت ہو تو اُس میں سے کچھ تلف ہو گیا خواہ حسام الدین کے اپنے فعل سے یا بلا قصد یا اُس نے کسی کو دے دیا یا بیچ ڈالا تو اس کی واپسی ممکن نہیں،

فان هلاك الموهوب وخروجہ عن ملك الموهوب كللاهما من موانع الرجوع۔

کیونکہ بے شک موہوب شئی کا ہلاک ہونا اور اُس کا موہوب لہ کی ملک سے خارج ہونا دونوں ہی رجوع کے موانع میں سے ہیں۔(ت)

اور جو بدستور اُس کے پاس موجود ہے اور کوئی مانع موانع رجوع سے نہیں تو فیض النساء بیگم بتراضی بالقضائے قاضی واپس لے سکتی ہے مگر گنہگار ہوگی کہ ہبہ میں رجوع سخت مکروہ ممنوع ہے بغیر اس کے بطور خود رجوع نہیں

---

[1] حاشیۃ الطحطاوی علی الدرالمختار کتاب العاریۃ دارالمعرفۃ بیروت ۳/۳۹۰

she can take back; and if it is proven to be a loan (Ariyat), she can take back the existing dowry items herself, even if Husamuddin gave them to someone or sold them, for "lent items are returned, and the unauthorized disposal of an interloper is voided by rejection" (Because items given as a loan are returned, and the interloper's disposal becomes void upon rejection. T). And for whatever was lost, if it was lost without Husamuddin's act, for example, it was stolen, burnt, or broken, and there was no negligence on Husamuddin's part, then she cannot claim compensation for it, for "a loan is a trust, and liability is not binding in it except by transgression" (Because a loan is a trust and compensation does not become mandatory in it without transgression. T). Similarly, whatever was lost or damaged while Husamuddin was wearing or using it, there is no compensation for that either, provided he used/wore it according to custom and usage, for "it was by her authorization, and a loan is only for use" (Because it was in his possession by that woman's authorization, and a loan is meant for usage. T). Yes, whatever Husamuddin intentionally damaged, or was lost due to his negligence, or was destroyed by using it more than the custom and usage, she can take its compensation from Husamuddin, "due to the occurrence of transgression" (Because of the transgression being committed. T). It is mentioned in Fusul-e-Imadi:

If the borrowed item itself is diminished during use, compensation for that diminution is not mandatory, provided it was used in a customary manner. 1- And Allah Almighty knows best.

When the borrowed item itself is damaged, compensation will not be mandatory for that damage, provided it was used according to custom and usage. And Allah Almighty knows best (T).

Answer to the Sixth Question Whatever property Husamuddin gave to his wife at the time of marriage or after marriage, Faiz-un-Nisa Begum can have no concern with its return. If Husamuddin gave it as a loan, he himself is its owner; and if he had made the wife the owner, then after the wife's death, it passed to her son and husband and came back to Husamuddin. Faiz-un-Nisa Begum had no right in it, nor does she have now, and this is very clear (T). And Allah Subhanu wa Ta'ala knows best.

Answer to the Seventh Question (The answer to this question is based on the investigation of the previous answers. If the dowry jewelry, in light of the aforementioned rulings, belongs to Khadija Bibi...)

---

1 Fusul-e-Imadi Page 248 of 688

वह वापस ले सकती है; और अगर यह साबित हो जाए कि सामान उधार (आरियत) के तौर पर दिया गया था, तो जो दहेज का सामान मौजूद है उसे वह स्वयं वापस ले सकती है, चाहे हुसामुद्दीन ने उसे किसी को दे दिया हो या बेच दिया हो, क्योंकि "उधार दी गई चीज़ें वापस की जाती हैं और अनाधिकृत व्यक्ति (फ़ुज़ूल) का व्यवहार अस्वीकृति के साथ अमान्य हो जाता है" (चूंकि उधार के रूप में दी गई वस्तुएं वापस की जाती हैं और अनधिकृत व्यक्ति का लेन-देन अस्वीकृति के बाद शून्य हो जाता है। त)। और जो कुछ नष्ट हो गया, अगर वह हुसामुद्दीन के किसी कृत्य के बिना नष्ट हुआ, उदाहरण के लिए चोरी हो गया, जल गया, या टूट गया, और हुसामुद्दीन की ओर से कोई लापरवाही नहीं थी, तो वह उसका मुआवज़ा नहीं ले सकती, क्योंकि "उधार एक अमानत है और बिना किसी ज्यादती (तअद्दी) के इसमें हर्जाना अनिवार्य नहीं होता" (क्योंकि उधार एक अमानत है और बिना अतिक्रमण के इसमें मुआवज़ा अनिवार्य नहीं है। त)। इसी तरह, हुसामुद्दीन के पहनने या उपयोग करने के दौरान जो कुछ भी नष्ट या क्षतिग्रस्त हुआ, उसका भी कोई मुआवज़ा नहीं है, बशर्ते उसने उसे रीति-रिवाजों और प्रथा के अनुसार उपयोग किया हो, क्योंकि "यह उसकी अनुमति से था, और उधार केवल उपयोग के लिए होता है" (क्योंकि वह उस महिला की अनुमति से उसके पास था, और उधार उपयोग के लिए ही होता है। त)। हाँ, जो कुछ हुसामुद्दीन ने जानबूझकर खराब किया, या उसकी लापरवाही से नष्ट हुआ, या प्रथा और रिवाज से अधिक उपयोग करने में नष्ट हो गया, उसका मुआवज़ा वह हुसामुद्दीन से ले सकती है, "ज्यादती (तअद्दी) होने के कारण" (क्योंकि यहाँ अतिक्रमण हुआ है। त)। फ़ुसूल-ए-इमादी में है:

जब उधार ली गई मूल वस्तु के उपयोग के दौरान उसमें कोई कमी आती है, तो उस कमी के कारण हर्जाना अनिवार्य नहीं होगा, बशर्ते उसे प्रचलित रीति के अनुसार उपयोग किया गया हो। 1- और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

जब उधार ली गई मूल वस्तु की स्थिति में कोई नुकसान होता है, तो उस नुकसान के कारण हर्जाना वाजिब नहीं होगा, बशर्ते उसे रीति-रिवाज के अनुसार उपयोग किया गया हो। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है (त)।

छठे प्रश्न का उत्तर हुसामुद्दीन ने शादी के समय या शादी के बाद अपनी पत्नी को जो भी संपत्ति दी, उसकी वापसी से फ़ैज़ुन्निसा बेगम का कोई सरोकार नहीं हो सकता। यदि हुसामुद्दीन ने इसे उधार (आरियत) के तौर पर दिया था, तो वह स्वयं इसका मालिक है; और यदि उसने पत्नी को इसका मालिक बना दिया था, तो पत्नी की मृत्यु के बाद वह उसके बेटे और पति के पास आई और फिर

हुसामुद्दीन के पास वापस आ गई। फ़ैज़ुन्निसा बेगम का इसमें न कोई हक था और न है, और यह अत्यंत स्पष्ट है (त)। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है।

सातवें प्रश्न का उत्तर (इस प्रश्न का उत्तर पिछले उत्तरों की जांच पर आधारित है। यदि दहेज के आभूषण उपरोक्त नियमों के अनुसार खदीजा बीबी की संपत्ति हैं...)

---

1 फुसूल-ए-इमादी पृष्ठ 248/688

کرسکتی، اور اگر عاریت ہونا ثابت قرار پائے تو جو جہیز موجود ہے اُسے بطور خود واپس لے سکتی ہے اگرچہ حسام الدین نے کسی کو دے دی یا بیع کردی ہو فان العواری مردودۃ وتصرف الفضول الفضول بالردیبطل (کیونکہ بطور عاریت دی ہوئی اشیاء واپس کی جاتی ہیں اور فضول کا تصرف رَد سے باطل ہوجاتا۔ ت) اور جو تلف ہو گیا اگر بے فعلِ حسام الدین تلف ہوا مثلاً چوری ہو گیا جل گیا ٹوٹ گیا اور اُس میں حسام الدین کی طرف سے کوئی بے احتیاطی نہ تھی تو اُس کا تاوان نہیں لے سکتی فان العاریۃ امانۃ لاتضمن الابالتعدی (اس لئے کہ عاریت امانت ہے اور بلا تعدی اس میں ضمان لازم نہیں آتا۔ت) اسی طرح جو کچھ حسام الدین کے پہنے برتنے میں تلف ہوا نقصان ہوا اس کا بھی تاوان نہیں جبکہ اُس نے عادت و عرف کے مطابق اُسے برتا استعمال کیا ہو فان کان بتسلیط منھا وماکانت العاریۃ الا للاستعمال (کیونکہ وہ اس عورت کی تسلیط دے اس کے پاس تھا اور عاریت تو ہوتی ہی استعمال کیلئے ہے۔ ت) ہاں جو کچھ حسام الدین نے قصداً خراب کیا یا اُس کے بے احتیاطی سے ضائع ہوا یا عرف و عادت سے زیادہ استعمال کرتے میں ہلاک ہو گیا اُس کا تاوان حسام الدین سے لے سکتی ہے لحصول التعدی (تعدی حاصل ہونے کی وجہ سے۔ ت) فصول عمادی میں ہے:

اذا انتقص عین المستعار فی حالۃ جب عین مستعار کی حالت میں نقصان ہوا تو اس نقصان الاستعمال لایجب الضمان بسبب النقصان کے سبب سے ضمان واجب نہیں ہوگا بشرطیکہ اُس نے اذا استعملہ استعمالا معھودا 1- واللہ عرف وعادت کے مطابق استعمال کیا ہو۔ واللہ تعالیٰ اعلم تعالی اعلم۔ (ت)

جواب سوال ششم جو مال حسام الدین نے وقتِ شادی خواہ بعدِ شادی اپنی بی بی کو دیا اُس کی واپسی سے فیض النساء بیگم کو کچھ علاقہ نہیں ہو سکتا کہ اگر حسام الدین نے عاریۃً دیا تھا تو وہ

خود اُس کا مالک ہے اور اگر زوجہ کو مالک کردیا تھا تو بعدِ مرگ زوجہ اُس کے پسر و شوہر کو پہنچ کر پھر حسام الدین کے پاس آیا فیض النساء بیگم کا اُس میں کوئی حق نہ تھا نہ ہے، وھذا ظاہر جدا (اور یہ خوب ظاہر ہے۔ ت) واللہ سبحٰنہ و تعالٰی اعلم۔

الجواب سوال ہفتم (اس سوال کا جواب اُسی تحقیقِ جواباتِ سابقہ پر مبنی ہے زیورِ جہیز اگر بنظرِ احکامِ مذکور ملکِ خدیجہ بی بی

Fatawa-e-Razawiyya, Volume 12

If it is established that a thing was pledged (mortgaged) by the order of the owner, the deceased is the debtor and the pledgee (mortgagee) is the creditor. The heirs will redeem the pledge, or by mutual consent, give the same item towards the pledgee's debt, or the jewelry will be sold to settle the debt. This is their mutual affair with which Faiz-un-Nisa Begum has no concern. And if it is proven that the ownership of the jewelry belongs to Faiz-un-Nisa Begum and it was with Khadija Bibi as a loan (ariyah), then it should be considered that this pledging was without the permission of Faiz-un-Nisa Begum. That is, it was neither pledged with her permission nor did she validate this transaction after the pledging. In such a case, she has the right to cancel the pledge and take her item back from the pledgee. The pledgee may continue to recover his debt from the estate of Khadija Bibi. It is stated in Radd al-Muhtar:

- Because he (the pledgor) disposed of property in a way he was not authorized to, so he became a usurper (ghasib). The lender has the right to take the pledged item from the pledgee and cancel the pledge. (Jawhara) - (Because undoubtedly this (pledgor) disposed of another's (lender's) property in such a manner for which permission was not granted to him, so he became a usurper, and the person who gave the loan has the right to take the pledged item from the pledgee and cancel the pledge. Jawhara. (T))

And if it was pledged after asking her and according to her will (although apparently there is no hope of this in the present situation) or if she validated the transaction with her permission after the pledge, then the pledge became valid and effective. Now, Faiz-un-Nisa Begum cannot take back the pledged item until the pledgee's debt is paid. Yes, she has the option that if the heirs of Khadija Bibi delay in redeeming the pledge, she may herself pay the debt to the pledgee and get her property released, and whatever she pays to the pledgee, she can recover it from the estate of Khadija Bibi. In Alamgiriyya, from Muhit of Imam Sarakhsi, it is stated:

- If the lender wants to redeem it, the pledgor and the pledgee cannot prevent him. And whatever he pays, he returns to the pledgor for what he paid because he was forced in his payment to revive his right and property. - (If the lender wants to redeem the pledged item, the pledgor and the pledgee cannot prevent him. And whatever he pays to the pledgee, he can claim back from the pledgor

because he is forced to make this payment to obtain his right and ownership. (T))

In Durr al-Mukhtar, it is stated:

- If someone pledges another's house and then the owner of the house gives permission, it is permissible. - (If someone pledges another's house and then the owner of the house gives permission, it is permissible. (T))
- Radd al-Muhtar, Kitab al-Rahn, Chapter on Disposition of Pledged Property, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 5/331.
- Fatawa Hindiyya, citing Muhit al-Sarakhsi, Chapter 11 on Miscellaneous Matters, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 5/286.
- Durr al-Mukhtar, Chapter on Disposition of Pledged Property, Matba' Mujtabai, Delhi, 2/474.

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 12

यदि यह तय हो जाए कि वह वस्तु मालिक के आदेश से गिरवी रखी गई थी, तो मृतक देनदार है और गिरवी रखने वाला लेनदार। वारिस गिरवी छुड़वाएंगे, या आपसी सहमति से वही वस्तु गिरवी रखने वाले के कर्ज में दे देंगे, या कर्ज चुकाने के लिए जेवर बेच दिए जाएंगे। यह उनका आपसी मामला है जिससे फैज़-उन-निशा बेगम का कोई सरोकार नहीं है। और अगर यह साबित हो जाए कि जेवरों का स्वामित्व फैज़-उन-निशा बेगम का है और वे खदीजा बीबी के पास उधार (आरियत) के तौर पर थे, तो यह देखना होगा कि यह गिरवी रखना फैज़-उन-निशा बेगम की इजाजत के बिना था। यानी न तो उनसे अनुमति लेकर गिरवी रखा गया और न ही उन्होंने गिरवी रखने के बाद इस लेनदेन को जायज़ ठहराया। ऐसे में उन्हें अधिकार है कि वे गिरवी रद्द करके अपनी वस्तु गिरवी रखने वाले से वापस ले लें। गिरवी रखने वाला अपना कर्ज खदीजा बीबी की विरासत से वसूल करता रहे। रद अल-मुह्तार में है:

- क्योंकि उसने अपनी संपत्ति में इस तरह से लेनदेन किया जिसकी उसे अनुमति नहीं थी, इसलिए वह ग़ासिब (हड़पने वाला) बन गया। उधार देने वाले को यह अधिकार है कि वह गिरवी रखी गई वस्तु गिरवी रखने वाले से ले ले और गिरवी को रद्द कर दे। (जौहरा) - (क्योंकि बेशक इस (राहिन) ने दूसरे (मुईर) की मिल्कियत में इस तरह से लेनदेन किया जिसकी इजाज़त उसे नहीं दी गई थी, तो वह ग़ासिब हो गया और उधार देने वाले को यह हक हासिल है कि वह मुर्तहिन से गिरवी रखी चीज़ ले ले और रहन (गिरवी) को रद्द कर दे। जौहरा। (त))

और अगर उनसे पूछकर उनकी मर्जी के मुताबिक गिरवी रखा गया (हालांकि वर्तमान स्थिति में इसकी उम्मीद नहीं है) या गिरवी रखने के बाद उन्होंने अपनी अनुमति से इस लेनदेन को लागू कर दिया, तो गिरवी सही और प्रभावी हो गई। अब फैज़-उन-निशा बेगम तब तक गिरवी रखी वस्तु वापस नहीं ले सकतीं जब तक कि गिरवी रखने वाले का कर्ज अदा न हो जाए। हाँ, उनके पास यह विकल्प है कि अगर खदीजा बीबी के वारिस गिरवी छुड़ाने में देरी करें, तो वे खुद गिरवी रखने वाले को उसका कर्ज देकर अपनी वस्तु छुड़ा लें, और जो कुछ वे गिरवी रखने वाले को दें, उसे खदीजा बीबी की विरासत से वापस ले लें। आलमगीरिया में मुहीत इमाम सरख़सी से है:

- अगर उधार देने वाला इसे छुड़ाना चाहे तो राहिन और मुर्तहिन उसे रोक नहीं सकते। और वह जो कुछ भुगतान करता है, उसके लिए राहिन से दावा कर सकता है क्योंकि वह अपने हक

और मिल्कियत को बचाने के लिए यह अदायगी करने पर मजबूर है। - (अगर मुईर (उधार देने वाला) मरहून चीज़ को छुड़ाना चाहे तो राहिन और मुर्तहिन उसे रोक नहीं सकते और वह जो कुछ मुर्तहिन को देगा राहिन से ले सकता है क्योंकि वह अपने हक और मिल्कियत को हासिल करने के लिए इस अदायगी पर मजबूर है। (त))

दुर्रे मुख्तार में है:

- अगर कोई किसी का घर गिरवी रख दे और फिर घर का मालिक उसे इजाजत दे दे, तो यह जायज़ है। - (अगर कोई किसी का घर गिरवी रख दे फिर घर का मालिक उसकी इजाज़त दे दे तो जायज़ है। (त))
- रद अल-मुह्तार, किताब अर-रहन, बाब अत-तसर्रूफ फीर-रहन, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी, बेरुत, 5/331.
- फ़तावा हिन्दिया, मुहीत सरख़सी के हवाले से, अध्याय 11 विविध मामलों में, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 5/286.
- दुर्रे मुख्तार, बाब अत-तसर्रूफ फीर-रहन, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 2/474.

فتاوٰی رضویہ جلد دوا زدہم

قرار پائے تو وہ ایک چیز ہے کہ بحکمِ مالک رہن رکھی گئی ہے مورثہ مدیونہ ہے اور مرتہن دائن وارث فک رہن کرائیں گے یا بتراضی باہمی وہی شے دین مرتہن میں دے دیں گے یا زیور دین میں بیچا جائے گا کچھ ہو گیا یہ ان کا باہمی معاملہ ہے جس سے فیض النساء بیگم کو کوئی تعلق نہیں اور اگر زیوروں کا ملک فیض النساء بیگم اور خدیجہ بی بی کے پاس عاریت ہونا ثابت ہو تو نظر کریں گے کہ یہ رہن رکھنا بے اجازت فیض النساء بیگم تھا یعنی نہ اُس سے اذن لے کر رہن رکھا نہ اُس نے بعد رہن اس تصرف کو جائز کیا جب اُسے اختیار ہے کہ رہن فسخ کر کے اپنی چیز مرتہن سے واپس لے لے مرتہن اپنا دین ترکہ خدیجہ بی بی سے لیتا رہے، ردالمحتار میں ہے :

- لانہ تصرف فی ملکہ علی وجہ لم یؤذن لہ فیہ فصار غاصباً و للمعیر ان یاخذہ من المرتحن و یفسخ الرھن جوھرۃ - (کیونکہ بیشک اس (راہن) نے دوسرے (معیر) کی ملک میں اس طور پر تصرف کیا جس کا اذن اس کو نہیں دیا گیا تھا تو وہ غاصب ہو گیا اور عاریت دینے والے کو حق حاصل ہے کہ مرتہن سے شیئ مرہون لے لے اور رہن کو فسخ کر دے۔ جوہرہ۔ (ت))

اور اگر اُس سے پوچھ کر اس کی مرضی کے مطابق رہن رکھا (اگرچہ صورت حاضرہ میں ظاہراً اس کی اُمید نہیں) یا بعد رہن اس نے تصرف کو اپنی اجازت سے نافذ کر دیا تو رہن صحیح و نافذ ہو گیا اب فیض النساء بیگم جب تک دین مرتہن ادا نہ ہو شیئ مرہون واپس نہیں لے سکتی، ہاں یہ اختیار رکھتی ہے کہ اگر ورثہ خدیجہ بی بی فک رہن میں دیر لگائیں یہ خود مرتہن کو اُس کا دین

دے کر اپنی چیز چھڑا لے اور جو کچھ مرتہن کو دے ترکہ خدیجہ بی بی سے واپس لے لے۔

عالمگیریہ میں محیط امام سرخسی سے ہے :

- لو ارادالمعیر افتکا کہ لیس للراھن والمرتھن منعه ویرجع علی الراھن بما قضی لانه مضطر في قضائه لاحیاء حقہ و ملکہ - (اگر معیر مرہون شے کو چھڑانا چاہے تو راہن اور مرتہن اس کو منع نہیں کر سکتے اور وہ جو کچھ مرتہن کو دے راہن سے لے سکتا ہے کیونکہ وہ اپنے حق و ملک کو حاصل کرنے کے لئے اس ادائیگی پر مجبور ہے (ت))

در مختار میں ہے :

- لورھن دار غیرہ فاجاز صاحبھا جاز - (اگر کوئی کسی کا گھر رہن رکھ دے پھر گھر کا مالک اس کی اجازت دے دے تو جائز ہے۔ (ت))

1 رد المحتار کتاب الرھن باب التصرف في الرھن دار احیاء التراث العربی بیروت ۵/۳۳۱ 2 فتاوی ہندیہ بحوالہ محیط سرخسی الباب الحادی عشر فی التفرقات نورانی کتب خانہ پشاور ۵/۲۸۶ 3 درمختار باب التصرف فی الرھن مطبع مجتبائی دہلی ۲/۴۷۴

Fatawa Razawiyya Volume 12

In Radd al-Muhtar it is mentioned: [Arabic]: And it becomes like that which someone has lent (ariyah) so that it may be placed as collateral (rahn). Allah, the Glorified and Exalted, knows best. [Urdu]: And this became like that thing which someone has given as a loan specifically so that he may place it as collateral. Allah, the Glorified and Exalted, knows best. (T)

Problem 87: From Raipur, Chhattisgarh, Baijnath Para, sent by Munshi Muhammad Qasim Sahib Havaldar Peshi, 19 Rabi-ul-Awwal 1326 AH. In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful. We praise Him and send blessings upon His Noble Messenger. What do the scholars of religion and the muftis of the firm Shariah say regarding the following case: Faiz-un-Nissa Begum was a seeker of justice in the Anjuman Nu'maniya of Raipur, stating that 'I married off my stepdaughter, named Khadija Bibi, to a person named Husamuddin. The said girl has passed away. Now, according to the custom of my region, whatever goods and assets I gave to my daughter in the name of dowry (jahiz) should be returned to me from Husamuddin. Since at the time of giving the items of dowry to one's daughter, according to the custom and habit of the world, neither the intention of transferring ownership (tamlik) is made nor that of gift (hiba) or loan (ariyah); rather, whatever is to be given is simply sent along with the bride and groom at the time of departure. In short, justice should be provided by having it returned from Husamuddin, as this general custom among both common and elite has been ongoing for generations.' Finis (Intahi). The members of the association did not rely solely on their own information for deciding this case but requested fatwas from scholars of religion as well. Accordingly, from the final decision of the scholars of Deoband and fatwa reports of jurisprudence in this regard, it is proven that among nobles, it is absolutely considered a transfer of ownership, and the predominant assumption in custom is that no one takes back wedding items after giving them. However, if the local custom is that it is taken back and there is no gift or transfer of ownership, then Faiz-un-Nissa Begum can take it back. Finis. Fatwa of Nadwat-ul-Ulama: In a place where the custom is that dowry items are given as a transfer of ownership, as is the custom in the lands of India, then in that place, the items will become the property of the girl, and the girl's parents will not have the authority to take them back. Yes, in a place where the custom is to give as a loan (ariyah), there the dowry items will not be the property of the girl, and the parents will have the authority to take them back. Faiz-un-Nissa Begum should prove with witnesses that the dowry items were given from

her own wealth, after which action should be taken according to custom. Finis. There are hundreds of witnesses present for Faiz-un-Nissa's giving from her own wealth. Fatwa of Respected Maulana Ahmad Raza Khan Sahib.

---

[1] Radd al-Muhtar, Kitab al-Rahn, Bab al-Tasarruf fi al-Rahn, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/330.

फतावा रज़विया, खंड 12

रद अल-मुह्तार में उल्लेख है: [अरबी]: और यह उस वस्तु के समान हो गया जिसे किसी ने ऋण (आरियत) के रूप में इसलिए दिया है ताकि उसे गिरवी (रहन) रखा जा सके। अल्लाह, जो महिमामय और सर्वोच्च है, सबसे अच्छा जानता है। [उर्दू]: और यह उस चीज़ के समान हो गया जिसे किसी ने ऋण के रूप में केवल इसलिए दिया है कि वह उसे गिरवी रख दे। अल्लाह सुभानहु व ताला खूब जानता है। (त)

मसला 87: रायपुर छत्तीसगढ़, बैजनाथ पारा से, मुंशी मुहम्मद कासिम साहब हवलदार पेशी द्वारा प्रेषित, 19 रबी-उल-अव्वल 1326 हिजरी। बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम, हम उसकी प्रशंसा करते हैं और उसके प्रतिष्ठित रसूल पर दरूद भेजते हैं। धर्म के विद्वान और सुदृढ़ शरिया के मुफ्ती निम्नलिखित मामले में क्या फरमाते हैं: फैज़-उन-निसा बेगम रायपुर की अंजुमन नोमानिया में न्याय की गुहार लगा रही थीं कि 'मैंने अपनी सौतेली बेटी मुसम्मात खदीजा बीबी की शादी मुसम्मा हुसामुद्दीन से की थी और उक्त लड़की का निधन हो गया है। अब, मेरे देश (क्षेत्र) के रिवाज के अनुसार, मैंने अपनी बेटी को दहेज (जहेज़) के नाम पर जो भी माल-असबाब दिया है, वह हुसामुद्दीन से मुझे वापस दिलाया जाए। क्योंकि अपनी बेटी को दहेज का सामान देते समय, दुनिया के रस्म-ओ-रिवाज और आदत के अनुसार, न तो मालिकाना हक हस्तांतरित करने (तमलीक) की नियत की जाती है और न ही उपहार (हिबा) या ऋण (आरियत) की; बल्कि, जो कुछ भी देना होता है, वह विदाई के समय दूल्हा-दुल्हन के साथ उनके साथ कर दिया जाता है। संक्षेप में, जो रिवाज आम और खास में पीढ़ियों से चला आ रहा है, उसके अनुसार हुसामुद्दीन से वापस दिलाकर न्याय किया जाए।' इति (इन्तही)। अंजुमन के सदस्यों ने इस मामले का फैसला केवल अपनी जानकारी पर निर्भर नहीं रखा, बल्कि धार्मिक विद्वानों से भी फतवों का अनुरोध किया। तदनुसार, देवबंद के विद्वानों के अंतिम निर्णय और इस संबंध में न्यायशास्त्र (फिक्ह) की रिवायतों से यह सिद्ध होता है कि शरीफों (सभ्य लोगों) में इसे पूर्णतः मालिकाना हक का हस्तांतरण माना जाता है और रिवाज में प्रबल धारणा यही है कि कोई भी व्यक्ति शादी का सामान देकर वापस नहीं लेता है। लेकिन इसके साथ ही यदि वहां का रिवाज यही है कि वापस लिया जाता है और उपहार या हस्तांतरण नहीं होता है, तो फैज़-उन-निसा बेगम उसे वापस ले सकती हैं। इति। नदवतुल उलमा का फतवा: जिस स्थान पर यह रिवाज हो कि दहेज की वस्तुएं मालिकाना हक के रूप में दी जाती हैं, जैसा कि भारत के देशों में भी यही रिवाज है, तो उस स्थान पर वस्तुएं लड़की की मिल्कियत (संपत्ति) हो जाएंगी और लड़की के माता-पिता को उन्हें वापस

लेने का अधिकार नहीं होगा। हाँ, जिस स्थान पर रिवाज ऋण (आरियत) के रूप में देने का है, वहां दहेज की वस्तुएं लड़की की मिल्कियत नहीं होंगी और माता-पिता को वापस लेने का अधिकार होगा। फैज़-उन-निसा बेगम को चाहिए कि गवाहों से दहेज का सामान अपने माल से देना साबित कर दें, उसके बाद रिवाज के अनुसार अमल किया जाए। इति। फैज़-उन-निसा के अपने माल से देने पर सैकड़ों गवाह मौजूद हैं। फतवा जनाब मौलाना अहमद रज़ा खां साहब।

---

[1] रद अल-मुह्तार, किताब अर-रहन, बाब अत-तसर्रफ फिल रहन, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 1/330।

पृष्ठ 250/688

ردالمحتار میں ہے: ویکون بمنزلۃ مالو اعارھالیر ھنھا ط واللہ سبحٰنہ و تعالٰی اعلم۔ اور یہ بمنزلہ اس شئی کے ہو گیا جس کو کسی نے بطور عاریت دیا ہی اس لئے ہے کہ وہ اس کو رہن رکھ دے ،ط اللہ سبحانہ و تعالٰی خوب جانتا ہے۔ (ت)

مسئلہ ۸۷: از رائے پور چھتیس گڑھ بیجنا تھ بارہ مرسلہ منشی محمد قاسم صاحب حوالدار پیشی ۱۹ ربیع الاول ۱۳۲۶ھ بسم اللہ الرحمن الرحیم، نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم۔ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین مقدمہ ذیل میں، فیض النساء بیگم انجمن نعمانیہ رائے پور میں داد خواہ تھی کہ میں اپنی سوتیلی لڑکی مسماۃ خدیجہ بی بی کی شادی مسمی حسام الدین سے کر دی اور لڑکی مذکور نے رحلت کی، اب مجھے حسب رواج ملک اپنے کے جو کچھ مال متاع بنام جہیز اپنی لڑکی کو دی ہوں حسام الدین سے واپس دلایا جائے چونکہ وقت دینے اسباب جہیز اپنی لڑکی کو مطابق رسم و رواج عادت عالم کے نہ تونیب تملیک کی جاتی ہے نہ ہبہ و عاریت کی بلکہ یوں ہی بلا کسی نیت کے جو کچھ دینا ہو وقت رخصت دولہا دلہن کے ہمراہ ان کے کر دیا کئے جاتا ہے غرض جو رواج عام خاص وعام میں پشتہا پشت سے جاری ہے حسام الدین سے واپس دلا کر دادرسی فرمائی جائے انتہی، ارباب انجمن فیصلہ مقدمہ ہذا کا صرف اپنی ہی معلومات پر منحصر نہ فرمایا علمائے دین سے بھی فتووں کا استدعا کیا چنانچہ علمائے دیو بند کا آخری فیصلہ فتوٰی روایات فقہ اس بارہ میں یہ ثابت ہوتا ہے کہ شرفا میں مطلقاً تملیک سمجھا جاتا ہے اور بغالب ظن عرف میں یہی ہے کہ کوئی شخص اسباب شادی دے کر واپس نہیں لیتا لیکن بالینمہ عرف وہاں کا یہی ہے کہ واپس لیا جاتا ہے اور ہبہ و تملیک نہیں ہوتا فیض النساء بیگم اُس کو واپس لے سکتی ہے انتہی، فتوٰی ندوۃ العلماء جس جگہ میں یہ عرف ہو کہ اشیاء جہیز بطور تملیک دیا جاتا ہے

جیسا کہ بلاد ہندوستان میں بھی یہی رواج ہے تو اُس مقام میں اشیاء لڑکی کی ملک ہو جائیں گی اور لڑکی کے ماں باپ کو یہ اختیار نہ ہوگا کہ واپس کر لے، ہاں جس مقام میں رواج عاریۃً دینے کا ہے وہاں اشیاء جہیز ملک لڑکی کی نہ ہوں گی اور ماں باپ کو اختیار ہو گا کہ واپس کر لے فیض النساء بیگم کو چاہئے کہ گواہوں سے اسباب جہیز دینا اپنے مال سے ثابت کر دے اُس کے بعد حسب رواج کار بند ہو انتہی فیض النساء کے اپنے مال سے دینے پر صدہا گواہ موجود ہیں۔ فتویٰ جناب مولانا احمد رضا خاں صاحب

---

1 ردالمحتار کتاب الرہن باب التصرف فی الرہن دار احیاء التراث العربی بیروت ۱/۳۳۰

Fatawa Rizvia Volume Twelve

Barelvi, question from Anjuman Nomania, Raipur, Question: Does the local custom (rawaj-e-mulk) also have interference in Sharia? Answer: Maulana Sahib! The command of the pure Sharia is for its own; custom and tradition etc. have no interference in any command. Yes, Sharia bases some rulings on custom by its own command, whether such that if this thing becomes known and prevalent then this is the ruling for it, or such that the ruling exists in itself, and this is the one that forms its shape. This issue of dowry is also of the second type, that parents give dowry to the bride from their property, and giving is possible as both a gift (hiba) and a loan for use (ariat). Their determination is based on custom. Where the dominant custom is transfer of ownership (tamleek), a claim of it being a loan (ariat) is unacceptable, and giving dowry is considered tamleek unless proven otherwise as a loan with Sharia witnesses. Where the dominant custom is a loan (ariat) or both customs are equal, their statement under oath is credible; in such places, giving dowry will not be considered tamleek etc. Sir! Your fatwa reached Anjuman Nomania about two years ago. During this long period, it was often under the consideration of the senior member of the Anjuman, Maulana Hakim named Abu Saeed. It was believed that Maulana Sahib would have well understood the meanings and purposes of those fatwas according to the Zahir al-Riwayah. Finally, on the day of the meeting, along with your fatwa, Maulana Sahib's fatwa was also read, and the first sentence of your fatwa was: "The command of the pure Sharia is for its own." Maulana Sahib summarized the mentioned sentence in such a way that whatever the command of Sharia is, it is pure and nothing more than that. Furthermore, it appears from the praised Maulana's fatwa that local custom has no interference in Sharia, otherwise how could Faizun Nisa Begum be entitled to receive her dowry items according to her claim? Rather, her claim would be rejected by Sharia and the local custom would be discarded, because local custom against Sharia is an absurd thing. In short, the members of the Anjuman accepted Maulana Sahib's pointless statement due to their lack of knowledge about the fatwa's issues without deliberation. Request by servant Muhammad Qasim (peace be upon him).

Justice is sought from the heart of the person of justice.

Although this humble person cried out a lot in Anjuman Nomania according to his capacity, neither crying nor singing had any effect. Since from the date of observing the fatwa until the end, it was said that the mention of local custom in the mentioned case appearing from every fatwa is that the custom is identical to the Sharia of

Muhammad in its ruling, and on which the command of the Lawgiver (peace be upon him) exists. Thus, Faizun Nisa Begum, according to the fatwa of the scholars of religion, is entitled to take back the goods and belongings of the dowry according to the Sharia of Muhammad. As Maulana Ahmad Raza Khan Sahib (may his shadow be extended) writes in his fatwa: "In our lands, there is a general custom that the bride's side gives whatever clothes and cash to the groom as a greeting etc., they intend tamleek (transfer of ownership) by it; that giving shall be considered a gift (hiba)." In short, the servant explained the gist of your issue to the members of the Anjuman that in India there are thousands of servants of God like this who have never heard the name of tamleek, hiba, or ariat in their lives, but specifically follow the local custom without the intention of tamleek, hiba, and ariat.

फ़तावा रज़विया जिल्द बारह

बरेलवी, सवाल अंजुमन नोमानिया रायपुर, सवाल: क्या शरीअत में देश के रीति-रिवाजों का भी कोई हस्तक्षेप है? उत्तर: मौलाना साहब! शरीअत-ए-मुतहहरा (पवित्र शरीअत) का आदेश उसके लिए है; किसी भी आदेश में रीति-रिवाजों आदि का कोई दखल नहीं है, हाँ, शरीअत कुछ आदेशों को अपने हुक्म से रीति-रिवाजों पर आधारित करती है, चाहे इस तरह कि अगर यह चीज़ प्रसिद्ध और प्रचलित हो जाए तो उसके लिए यह आदेश है, या इस तरह कि आदेश स्वयं में मौजूद है और यह उसकी सूरत (स्वरूप) बनाने वाला है। यह दहेज का मसला भी दूसरी श्रेणी का है कि माता-पिता अपनी संपत्ति से दुल्हन को दहेज देते हैं और इसे देना हिबा (उपहार) और आरियत (उपयोग के लिए ऋण) दोनों हो सकता है, और उनका निर्धारण रीति-रिवाजों पर निर्भर है। जहाँ स्वामित्व का हस्तांतरण (तमलीक) प्रमुख रिवाज है, वहाँ आरियत का दावा स्वीकार्य नहीं है, और दहेज देना तमलीक ही माना जाएगा जब तक कि शरिया गवाहों के साथ अपना आरियत देना साबित न कर दें, और जहाँ आरियत प्रमुख रिवाज हो या दोनों रिवाज समान हों, वहाँ शपथ के साथ उनका बयान विश्वसनीय होगा; ऐसी जगहों पर दहेज देना तमलीक नहीं माना जाएगा इत्यादि। महोदय! आपका फतवा अंजुमन नोमानिया में आए हुए लगभग दो साल हो गए हैं। इस लंबे समय के दौरान यह अक्सर अंजुमन के वरिष्ठ सदस्य मौलाना हकीम अबू सईद साहब के सामने रहा। यह माना गया कि मौलाना साहब ने उन फतवों के अर्थ और उद्देश्यों को ज़ाहिर-अर-रवायत के अनुसार अच्छी तरह समझ लिया होगा। अंतत; बैठक के दिन आपके फतवे के साथ मौलाना साहब का फतवा भी पढ़ा गया और आपके फतवे का पहला वाक्य यह था: "आदेश पवित्र शरीअत के लिए है"। मौलाना साहब ने उक्त वाक्य का सारांश इस प्रकार बताया कि शरीअत का जो आदेश है वह पवित्र है और इसके अलावा कुछ नहीं। इसके अतिरिक्त, प्रशंसित मौलाना के फतवे से पता चलता है कि देश के रिवाज का शरीअत में कोई दखल नहीं है, अन्यथा फ़ैज़ुन निसा बेगम अपने दावे के अनुसार दहेज की वस्तुएं पाने की हकदार कैसे हो सकती थीं? बल्कि शरीअत के अनुसार उनका दावा खारिज कर दिया जाता और देश के रिवाज को अस्वीकार कर दिया जाता, क्योंकि शरीअत के विरुद्ध देश का रिवाज एक बेतुकी बात है। संक्षेप में, अंजुमन के सदस्यों ने बिना सोचे-समझे फतवे के मसलों की अज्ञानता के कारण मौलाना साहब के व्यर्थ बयान को मान लिया। निवेदन कर्ता मोहम्मद कासिम (उन पर शांति हो)।

न्यायप्रिय व्यक्ति के हृदय से न्याय की अपेक्षा है।

यद्यपि इस तुच्छ व्यक्ति ने अपनी क्षमता के अनुसार अंजुमन नोमानिया में बहुत कुछ कहा, लेकिन न तो रोने का असर हुआ और न ही गाने का। चूंकि फतवे के अवलोकन की तारीख से अंत तक यही कहा गया कि उक्त मामले में जो स्थानीय रिवाज का जिक्र है, वह हर फतवे से स्पष्ट होता है कि वह रिवाज आदेश में मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शरीअत के समान है और जिस पर व्यवस्थापक (उन पर शांति हो) का आदेश मौजूद है। अत; फ़ैज़ुन निसा बेगम, धर्म के विद्वानों के फतवे के अनुसार, मोहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शरीअत के अनुसार दहेज के सामान और संपत्ति को वापस लेने की हकदार हैं। जैसा कि मौलाना अहमद रज़ा खान साहब (उन पर कृपा हो) अपने फतवे में लिखते हैं: "हमारे देशों में यह आम रिवाज है कि दुल्हन पक्ष के लोग दूल्हे को सलामी आदि के रूप में जो कुछ कपड़े और नकद देते हैं, वे उससे तमलीक (स्वामित्व हस्तांतरण) का ही इरादा करते हैं, उस देने को हिबा (उपहार) माना जाएगा।" संक्षेप में, मैंने आपके मसले का सारांश अंजुमन के सदस्यों को इस तरह समझाया कि भारत में खुदा के ऐसे हज़ारों बंदे भी हैं जिन्होंने अपने जीवन में कभी तमलीक, हिबा या आरियत का नाम तक नहीं सुना, बल्कि बिना तमलीक, हिबा और आरियत की नीयत के केवल देश के रिवाज का पालन करते हैं।

पृष्ठ 251/688

فتاوی رضویه جلد دوازدہم

بریلوی، سوال انجمن نعمانیہ رائے پور، سوال: شرع میں رواج ملک کو بھی مداخلت ہے کیا؟

جواب: مولانا صاحب! حکم شرع مطہر کے لئے ہے عرف و رواج وغیرہ کسی و حکم میں کچھ دخل نہیں، ہاں بعض احکام کو شرع اپنے حکم سے عرف پر دائر فرماتی ہے خواہ یوں کہ اگر یہ شے معروف و رائج ہو جائے تو اس کے لئے یہ حکم ہے خواہ یوں کہ حکم فی نفسہ حاصل، اور یہ اس کی صورت کا بنانے والا ہے یہ مسئلہ جہیز بھی صورت ثانیہ سے ہے کہ والدین اپنے مال سے دُلہن کو جہیز دیتے ہیں اور دینا ہبہ و عاریت دونوں کو محتمل، اور ان کا تعین عرف پر محمول، جہاں عرف غالب تملیک ہو وہاں دعوئ عاریت نامقبول، اور جہیز دینا تملیک ہی پر محمول جب تک گواہان شرعی سے اپنا عاریت دینا ثابت نہ کریں، اور جہاں عرف غالب عاریت ہو یا دونوں رواج یکساں ہوں وہاں ان کے قول قسم کے ساتھ معتبر، ایسی جگہ جہیز دینا تملیک نہ سمجھا جائے گا الخ۔ جناب من! فتوئ جناب کا فائز انجمن نعمانیہ ہو کرکے عرصہ دوسال کا ہوگا اس عرصہ دراز میں اکثر اوقات پیش نظر یعنی جناب رکن اعظم انجمن جناب مولوی حکیم مسمّٰی ابو سعید صاحب کے بھی رہا، یقین ہوا کہ مولوی صاحب اُن فتووں کے مطالب مقاصد ظاہر الروایات کے موافق و مطابق بخوبی سوچ سمجھ گئے ہوں گے، آخر الامر بروز جلسہ مع فتوئ جناب کا بھی فتوئ مولوی صاحب نے پڑھا اور جملہ اوّل جناب کے فتوئ کا یہ تھا: "حکم شرع مطہر کے لئے ہے"۔ مولوی صاحب نے جملہ مذکور کا خلاصہ اس طرح بیان فرمایا کہ جو حکم شرع کا ہے وہ پاک ہے اس سے زیادہ اور کچھ نہیں۔ علاوہ بریں مولانا ممدوح کے فتوے سے معلوم ہوتا ہے کہ رواجِ ملک کو شرع میں کچھ دخل نہیں ورنہ فیض النساء بیگم موافق دعوئ اپنے اشیاء جہیز پانے کا کسی طرح حقدار ہو سکتی ہے بلکہ دعوئ اس کا شرعامردود اور رواج ملک مطرود، کیونکہ

رواج ملک بمقابلہ شرع کے ایک بیہودہ بات ہے، غرض ارباب انجمن نے مولوی صاحب کے لا طائل بیان کو عدم واقفیت مسائل فتویٰ سے بلا غور و تامل مان لیا انتھی، التماس بندہ محمد قاسم ع

دلِ صاحب انصاف سے انصاف طلب ہے

اگر چہ یہ ناچیز حسبِ مقدور انجمن نعمانیہ میں بہت کچھ رویا مگر نہ رونے کا اثر ہوا نہ گانے کا، چونکہ تاریخ ملاحظہ فتویٰ سے تا آخر یہی کہتا رہا کہ مقدمہ مذکور میں جو رواج ملکی کا ذکر ہے ہر فتویٰ سے ظاہر ہوتا ہے کہ وہ رواج حکم میں عین شرع محمدی ہے اور جس پر حکم شارع علیہ السلام کا موجود، پس فیض النساء بیگم موافق فتویٰ علمائے دین کے مال واسباب جہیز کا موافق شرع محمدی کے واپس لینے کی مستحق ہے، جیسے مولانا احمد رضا خاں صاحب مدظلہ، اپنے فتوے میں لکھتے ہیں، قولہ ہمارے بلاد میں رواجِ عام ہے کہ دُلہن والے اپنی طرف سے سلامی وغیرہ جو کچھ کپڑے و نقد دُولہا کو دیتے ہیں اُس سے تملیک ہی کا ارادہ کرتے ہیں وہ دینا ہبہ سمجھا جائے گا۔ غرض بندہ نے جناب کے مسئلہ کا خلاصہ ممبران انجمن کو اس طرح سمجھا و سمجھادی کہ ہندوستان میں ہزار ہا بندگانِ خدا اس طرح کے بھی ہیں کہ جنہوں نے عمر خود میں کبھی نام تملیک کا سُنا نہ ہبہ و عاریت کا بلکہ خاص رواج ملک کے بلانیت تملیک و ہبہ و عاریت کے

Fatawa-e-Razvia (Volume 12)

Whatever is given to the daughter and son-in-law is done, but they certainly understand that all these wedding items given to the daughter and son-in-law belong specifically to them. Therefore, this understanding holds the force of an ownership-transfer order. This is what is called Shari'ah Muhammadi (Islamic Law). Thus, compliance with this common custom is obligatory not only for every individual but also for the ruler. Similarly, the people of Madras also give dowry items without the intention of transfer of ownership or gift, but rather as a loan ('ariyat). However, at the time of giving, their intention is that after the daughter's death, all those goods and items will be taken back. The groom also understands that he will surely have to return them. Thus, this mutual understanding of both parties is considered an agreement in Shari'ah Muhammadi. So, what legal Shari'i matter prevents its return? Therefore, according to the Shari'i custom, a very prominent scholar and jurist named Subedar Sheikh Hussain Sahib, immediately upon the death of his daughter-in-law, returned all her dowry items and did not consider the use of that property as lawful for himself. The members of the association know this matter well. Compared to their own understanding, they neither obey God nor the Messenger of God, so when will they obey the noble scholars? In short, if any Indian marries a Madrasi woman, after the death of that woman, he will have to return all the dowry according to the custom of the land, because adherence to the custom of the land will be obligatory upon him, contrary to his own land's custom. In short, the giving of dowry items to the girl, as per Faiz-un-Nisa Begum, in accordance with the custom of the land and with the mutual consent of both parties, is legally established as an agreement which in reality can be an example of a loan ('ariyat). In short, there are only two points from the decree (fatwa) of the religious scholars:

First, in a land where the custom is transfer of ownership (tamleek), the property belongs to the girl, and parents cannot take it back. Where the custom is of giving as a loan ('ariyat), the parents can take it back. In the land of Madras, according to ancient custom, immediately upon the daughter's death, whatever items were given in dowry are taken back; no one there asks about transfer of ownership. Finis. Faiz-un-Nisa Begum, according to the custom of her land and in accordance with the fatwa of religious scholars which I have written above, can she get it from her Indian son-in-law or not? Explain and you shall be rewarded.

Secondly, regarding Faiz-un-Nisa Begum, whatever is appropriate in a brief manner, two to four lines are enough. The rest is the first issue of your fatwa regarding

custom, dowry items, etc., which I have written before this inquiry (istifta), whose first sentence is for the rule of the pure Shari'ah. Please write a summary of this entire issue in easy, simple language, understandable to the common person, without Arabic or Persian phrases or vocabulary. It would be a great kindness. It is hoped that the answer will also be granted on this same paper so that there is no doubt in my (the humble servant's) belief.

जो कुछ बेटी और दामाद को दिया जाता है, वे देते हैं लेकिन वे निश्चित रूप से यह समझते हैं कि ये जो शादी का सामान हम बेटी और दामाद को देते हैं, वह सब विशेष रूप से उन्हीं की मिल्कियत (स्वामित्व) है। अतः इतना समझना ही उनके लिए स्वामित्व हस्तांतरण (तमलीक) के आदेश का प्रभाव रखता है। इसी का नाम शरीयत-ए-मुहम्मदी है। अतः इस सामान्य प्रथा का पालन न केवल प्रत्येक व्यक्ति पर बल्कि शासक पर भी अनिवार्य है। इसी प्रकार मद्रास के लोग भी बिना स्वामित्व हस्तांतरण या उपहार की नियत के ऋण (आरियत) के तौर पर दहेज का सामान दिया करते हैं, लेकिन देते समय उनकी नियत यह होती है कि बेटी की मृत्यु के बाद वे सारा माल और सामान वापस ले लेंगे और दूल्हा भी यह समझ लेता है कि उसे निश्चित रूप से वापस देना होगा। अतः दोनों पक्षों की इस समझ को शरीयत-ए-मुहम्मदी में एक अनुबंध (समझौता) माना गया है। तो फिर उसे वापस लेने में कौन सी शरीई बाधा है? अतः शरीई प्रथा के अनुसार, एक बहुत बड़े प्रतिष्ठित विद्वान और न्यायविद् सूबेदार शेख हुसैन साहब ने अपनी बहू की मृत्यु होते ही उसके दहेज का सारा माल और सामान वापस कर दिया और उस माल के उपयोग को अपने लिए हलाल (वैध) नहीं माना। संघ के सदस्य इस मामले को अच्छी तरह जानते हैं। अपनी समझ के आगे वे न तो खुदा की मानते हैं और न ही अल्लाह के रसूल की, तो फिर वे विद्वानों की कब मानेंगे? संक्षेप में, यदि कोई भारतीय किसी मद्रासी महिला से विवाह करता है, तो उस महिला की मृत्यु के बाद उसे देश की प्रथा के अनुसार सारा दहेज वापस करना होगा, क्योंकि उस पर देश की प्रथा का पालन करना अनिवार्य होगा, जो उसके अपने देश की प्रथा के विपरीत है। संक्षेप में, फ़ैज़-उन-निसा बेगम द्वारा लड़की को देश की प्रथा के अनुसार और दोनों पक्षों की सहमति से दहेज का सामान देना शरीयत के अनुसार एक अनुबंध माना गया, जो वास्तव में ऋण (आरियत) का उदाहरण हो सकता है। संक्षेप में, धर्मगुरुओं के फतवे से केवल दो बातें सामने आती हैं:

प्रथम यह कि जिस देश में स्वामित्व हस्तांतरण (तमलीक) की प्रथा है, वहाँ संपत्ति लड़की की होगी और माता-पिता उसे वापस नहीं ले सकते। और जहाँ ऋण (आरियत) के रूप में देने की प्रथा है, वहाँ माता-पिता वापस ले सकते हैं। और मद्रास में प्राचीन प्रथा के अनुसार, लड़की की मृत्यु होते ही दहेज में दिया गया जो कुछ भी सामान है, उसे वापस ले लिया जाता है; वहाँ कोई स्वामित्व हस्तांतरण के बारे में नहीं पूछता। यहाँ फ़ैज़-उन-निसा बेगम की बात समाप्त होती है। क्या वह अपने देश की प्रथा

के अनुसार और धर्मगुरुओं के फतवे के अनुसार, जिसे मैं पहले लिख चुका हूँ, अपने भारतीय दामाद से इसे प्राप्त कर सकती है या नहीं? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

दूसरा, फ़ैज़-उन-निसा बेगम के बारे में जो कुछ भी उचित हो, संक्षिप्त रूप में दो-चार पंक्तियाँ पर्याप्त हैं। शेष आपके फतवे का पहला मसला है जो प्रथा, दहेज के सामान आदि के संबंध में है, जिसे मैंने इस इस्तफ़्ता (प्रश्न) से पहले लिखा है, जिसका पहला वाक्य पवित्र शरीयत के आदेश के लिए है। इस पूरे मसले का सारांश आसान और सरल भाषा में, जो आम आदमी की समझ में आए और जिसमें अरबी या फ़ारसी के शब्द या मुहावरे न हों, कृपा करके लिख दें। यह अत्यंत कृपा होगी। आशा है कि उत्तर भी इसी कागज़ पर प्रदान किया जाएगा ताकि मुझ दास के विश्वास में कोई कमी न आए।

पृष्ठ 252 का 688

جو کچھ دینا ہے بیٹی داماد کو دیا کرتے ہیں مگر اتنا ضرور سمجھتے ہیں کہ یہ جو اسباب شادی ہم بیٹی داماد کو دیتے ہیں وہ سب خاص ملک اُنھوں ہی کی ہے پس اسقدر سمجھنا انہوں کا حکم تملیک کار رکھتا ہے پس اسی کا نام شرعِ محمدی ہے پس اس رواجِ عام کی تعمیل ہر فردِ بشر پر کیا معنی بلکہ حاکم پر بھی واجب ہے پس اسی طرح اہل مدراس بھی بلانیتِ تملیک وہبہ عاریت کے اسباب جہیز دیا کرتے ہیں مگر دینے کے وقت اُن کی نیت یہ ہوا کرتی ہے کہ بعد فوت لڑکی کے وہ سب مال و اسباب واپس لیا کریں گے اور دُولہا بھی سمجھ لیا ہے کہ مجھے ضرور ہی واپس دینا ہوگا، پس یہ طرفین کے سمجھ لینے کا نام شرعِ محمدی میں معاہدہ ٹھہرا، پس اُس کے واپس لینے میں کون امر شرعی مانع ہے، پس بموجب رواجِ شرعی کے ایک بڑے زبردست فاضل وفقیہ مسمیٰ صوبیدار شیخ حسین صاحب نے بمجرد فوت ہوتے ہی اپنی بہو کے اُس کا سب مال و اسباب جہیز کا واپس کر دیا اور اس مال کے استعمال کو واسطے حلال نہ جانا اور اس معاملہ کو ممبرانِ انجمن بخوبی جانتے ہیں بمقابلہ سمجھ اپنے نہ تو خدا کی مانے اور نہ رسولِ خدا کی، تو پھر علماءِ فضلاء کی کب ماننے لگے غرض اگر کوئی ہندوستانی مدراسی عورت کو شادی کرے بعد موت اُس عورت کے موافق رواجِ ملک کے اُس کو سب جہیز واپس دینا ہوگا، چونکہ پابندی رواج ملک کی اس پر واجب ہوگی برخلاف رواج ملک اپنے کے، غرض فیض النساء بیگم کا اسباب جہیز دینا لڑکی کو موافق رواج ملک کے طرفین کی رضامندی سے شرعاً معاہدہ ٹھہرا جو حقیقت میں نظیر عاریت کی ہو سکتی ہے، غرض فتوے سے علمائے دین کے صرف دو باتیں ہیں:

اولاً یہ کہ جس ملک میں رواجِ تملیک کا ہے وہاں ملک لڑکی کی ہوگی اُس میں ماں باپ واپس نہیں لے سکتے اور جہاں رواج عاریۃً دینے کا ہے وہاں ماں باپ واپس لے سکتے ہیں اور ملک مدراس

میں موافق رواجِ قدیم کے بمجرد فوت ہونے لڑکی کے جو کچھ اسباب جہیز میں دیا گیا ہے واپس لیا کرتے ہیں، نہ وہاں کوئی تملیک کو پوچھتا ہے انتی الکماس فیض النساء بیگم موافق رواج ملک اپنے کے اور مطابق فتوٰی علمائے دین کے جو آگے لکھ چکا ہوں اپنے داماد ہندوستانی سے پا سکتی ہے یا نہیں۔ بینوا توجروا

ثانیاً فیض النساء بیگم کی نسبت جو کچھ مناسب ہو مختصر طور سے دو چار سطر کافی ہے باقی جناب کے فتوے کا پہلا مسئلہ جو رواج، اسباب جہیز وغیرہ کی نسبت ہے آگے اس استفتاء کے لکھاہوں جس کا پہلا جملہ حکم شرعِ مطہر کے لئے ہے، اس تمام مسئلہ کا خلاصہ سہل سلیس عبارت موافق عام فہم کے جس میں عربی و فارسی عبارت و لغات نہ ہو، براہِ نوازش تحریر فرمائیں، عین بندہ نوازی ہوگی، اُمید کہ جواب بھی اسی کاغذ میں مرحمت ہوتا اعتبار میں بندہ کے فرق نہ ہو۔

Fatawa Razawiyya Volume 12

The Answer: The interpretation of this humble one's (the author's) fatwa as stated by the chief member of the assembly is entirely incorrect; nor can such an impression be derived from those words in any way. The questioner had asked in these words: "Does the custom of the land have interference in Sharia?" If the answer had been "Yes," it would have implied a negative meaning that something other than Sharia has interference in its rulings. And if the answer had been "No," it would have been wrongly understood that custom (Urf) carries no weight in Sharia, whereas hundreds of rulings of the pure Sharia are based on custom. Therefore, the answer was given in these words: "The ruling belongs to the pure Sharia," meaning the actual ruler is the noble Sharia. Custom, tradition, etc., have no role in the ruling such that custom etc. could impose any ruling against Sharia or without the command of Sharia. 'Legislation belongs to none but Allah.' The owner of the ruling is only one Allah. Yes, the pure Sharia bases some rulings on custom by its own command, such that wherever the custom is of a certain kind, the Sharia takes it into consideration and gives a similar ruling. Thus, the actual ruling remains for the Sharia itself, and by its validation, custom is given weight there. This issue of dowry is also of the second type, where the Sharia has placed the basis of the matter on the custom and tradition of the land. If by giving the dowry, the bride is considered its absolute owner, then such transfer of ownership (Tamlik) is rejected and unreliable. These words were explicitly present in that fatwa. In short, the basis here is on custom and tradition, and the intent of all these statements and details is to follow where custom leads, etc. The questioner had asked general questions: whether custom has a role in Sharia or not, whether the dowry given to a girl will be considered a loan (Ariyat) or not. For this reason, it was necessary to provide these detailed findings in the answer. Now, in today's question, a specific case regarding Faiz-un-Nisa Begum has been asked and stated explicitly that transfer of ownership is not intended here, and usually, they take it back, and witnesses are present that Faiz-un-Nisa Begum gave this dowry from her own wealth. The answer to this is that in this case, Faiz-un-Nisa Begum certainly has the right to take back the dowry as long as no evidence of transfer of ownership is found from her side, especially since the general custom there after the bride's death is to have the right to take it back when no evidence of transfer of ownership is found. Since the custom of returning the dowry after the bride's death is generally prevalent, it appears this custom would also apply to others besides the biological parents. When biological parents always take it back, others

would certainly take it back even more so. Thus, Faiz-un-Nisa Begum is also included in this custom of return after death. For others, the only point to consider was proving that the dowry was given from their own wealth. Regarding this, the questioner states that hundreds of witnesses are available. So now, there remains no obstacle to Faiz-un-Nisa Begum obtaining the right to take it back.

जवाब: फ़कीर (लेखक) के फ़तवे का वह मतलब जो अंजुमन के मुख्य सदस्य ने बयान किया है, सरासर ग़लत है; न ही उन शब्दों से किसी तरह ऐसा भ्रम पैदा हो सकता है। पूछने वाले ने इन शब्दों में सवाल किया था कि "क्या शरीयत में देश के रिवाज का दखल है?" अगर इसके जवाब में "हाँ" कहा जाता, तो एक बुरा अर्थ निकलता कि शरीयत के हुक्म में उसके अलावा किसी और का दखल है। और अगर "नहीं" कहा जाता, तो अर्थ का ग़लत मतलब निकलता कि शरीयत में प्रथा (उर्फ़) की कोई अहमियत नहीं है, जबकि शरीयत-ए-मुतह्हरा के सैकड़ों हुक्म प्रथा पर आधारित हैं। इसलिए, इन शब्दों में जवाब दिया गया कि "हुक्म शरीयत-ए-मुतह्हरा के लिए है", यानी असल हाकिम शरीयत-ए-शरीफ़ है। प्रथा और रिवाज वगैरह का हुक्म में कोई दखल नहीं है कि वे शरीयत के खिलाफ या शरीयत के हुक्म के बिना खुद कोई हुक्म लागू कर सकें। 'हुक्म का मालिक सिर्फ अल्लाह है'। हुक्म का मालिक केवल एक अल्लाह है। हाँ, शरीयत-ए-मुतह्हरा अपने हुक्म से कुछ हुक्मों को प्रथा पर आधारित करती है कि जहाँ जैसी प्रथा हो, शरीयत उसका लिहाज़ फरमाकर वैसा ही हुक्म देती है। तो असल हुक्म शरीयत के लिए ही हुआ और उसी के मान्य रखने से वहाँ प्रथा का विचार हुआ। दहेज का यह मसला भी दूसरी सूरत से है, जहाँ शरीयत ने देश की प्रथा और रिवाज पर मामला टिका रखा है। अगर दहेज देकर दुल्हन को उसका मालिक समझते हैं, तो पूर्ण स्वामित्व (तमलीक) पूरी तरह से खारिज और अविश्वसनीय है। उस फ़तवे में ये शब्द स्पष्ट रूप से मौजूद थे। संक्षेप में, यहाँ आधार प्रथा और रिवाज पर है, और इन सभी कथनों और विवरणों का उद्देश्य यही है कि जिधर प्रथा ले जाए, उधर ही जाना ज़रूरी है, इत्यादि। पूछने वाले ने सामान्य प्रश्न किए थे कि शरीयत में रिवाज का दखल है या नहीं, लड़की को दिया जाने वाला दहेज ऋण (आरियत) समझा जाएगा या नहीं। इस कारण से, जवाब में इन विवरणों और शोधों का लाभ देना ज़रूरी था। अब जबकि आज के सवाल में फ़ैज़-उन-निसा बेगम के विशेष मसले के बारे में पूछा गया है और स्पष्ट रूप से बयान किया गया है कि यहाँ स्वामित्व देना उद्देश्य नहीं होता और आमतौर पर वापस ले लेते हैं, और गवाह मौजूद हैं कि फ़ैज़-उन-निसा बेगम ने यह दहेज अपने ही माल से दिया था, तो इसका जवाब यह है कि इस सूरत में फ़ैज़-उन-निसा बेगम को दहेज वापस लेने का अधिकार ज़रूर है, जब तक कि उनकी तरफ़ से स्वामित्व देने का कोई प्रमाण न मिल जाए। जबकि वहाँ दुल्हन की मौत के बाद आमतौर पर वापस लेने का अधिकार रहता है जब उनकी तरफ़ से स्वामित्व का कोई प्रमाण न पाया गया हो। चूँकि दुल्हन की मौत के बाद दहेज वापसी का रिवाज सामान्य है, तो ज़ाहिर है कि यह

रिवाज सगे माँ-बाप के अलावा दूसरों में भी प्रचलित होगा कि जो व्यक्ति अपने माल से दुल्हन को दहेज दे, वह दुल्हन की मौत के बाद उसे वापस ले ले। जब सगे माँ-बाप हमेशा वापस लेते हैं, तो दूसरे लोग तो और भी ज़्यादा वापस लेते होंगे। अतः मौत के बाद वापसी की इस प्रथा में फ़ैज़-उन-निसा बेगम भी शामिल हुईं। हाँ, दूसरों के लिए यहाँ विचारणीय बात केवल इतनी थी कि दहेज अपने माल से देना साबित हो। इसके बारे में पूछने वाला बयान करता है कि सैकड़ों गवाह मौजूद हैं। तो अब फ़ैज़-उन-निसा बेगम को वापसी का अधिकार मिलने में कोई बाधा नहीं रही।

पेज 253 का 688

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

الجواب: فتوائے فقیر کا وہ مطلب کہ رکن اعظم انجمن نے بیان کیا محض غلط ہے، نہ ان الفاظ سے کسی طرح اس کا وہم گزر سکتا ہے، سائل نے ان لفظوں سے سوال کیا تھا کہ "شرع میں رواج ملک کو مداخلت ہے کیا ان کے جواب میں اگر "ہاں" کہا جاتا تو ایک برے معنیٰ کو وہم ہوتا کہ شرع کے حکم میں ان کے غیر کو مداخلت ہے اور اگر "نہ" کہا جاتا تو معنیٰ غلط مفہوم ہوتے کہ عرف کا شرع میں کچھ اعتبار نہیں حالانکہ صدہا احکام شرع مطہر نے عرف پر دائر فرمائے ہیں، لہذا ان لفظوں سے جواب دیا گیا کہ حکم شرع مطہر کے لئے ہے یعنی اصل حاکم شرع شریف ہے عرف و رواج وغیرہ کسی کو حکم میں کچھ دخل نہیں کہ خلافِ شرع یا بے حکم شرع عرف وغیرہ اپنے آپ کوئی حکم لگا سکیں ان الحکم الا للہ حکم کا مالک بس ایک اللہ ہے ہاں بعض احکام کو شرع مطہر اپنے حکم سے عرف پر دائر فرماتی ہے کہ جہاں جیسا عرف ہو شرع اس کا لحاظ فرما کر ویسا ہی حکم دیتی ہے تو اصل حکم شرع ہی کیلئے ہوا اور اسی کے معتبر رکھنے سے وہاں عرف کا اعتبار ہوا یہ مسئلہ جہیز بھی صورت ثانیہ سے ہے کہ شرع نے یہاں عرف و رواج ملک پر مدار کار رکھا ہے، اگر جہیز دے کر دلہن کو اس کا مالک سمجھتے ہیں تو تملیک مطلقاً مردود و بے اعتبار ہے، اُسی فتویٰ میں صراحتہً یہ لفظ موجود تھے، بالجملہ یہاں مدارِ عرف و رواج پر ہے اور ان سب اقوال و تفاصیل کا یہی منشاء تو جدھر عرف لے جائے اسی طرف جانا واجب الخ سائل نے سوالات کلی طور پر کئے تھے کہ شرع میں رواج کو دخل ہے یا نہیں، جہیز جو لڑکی کو دیا جاتا ہے عاریت سمجھا جائے گا یا نہیں۔ اس وجہ سے جواب میں ان تفصیلوں تحقیقاتوں کا افادہ ضرور ہوا، اب کہ آج کے سوال میں خاص مسئلہ فیض النساء بیگم سے سوال اور تصریحاً بیان کیا ہے کہ یہاں تملیک مقصود نہیں ہوتی اور عموماً واپس لیتے ہیں اور گواہ موجود ہیں کہ فیض النساء

بیگم نے یہ جہیز اپنے ہی مال سے دیا، اس کا جواب اسی قدر ہے کہ اس صورت میں ضرور فیض النساء بیگم جہیز واپس لینے کا اختیار رکھتی ہے جبکہ اس کی طرف سے کوئی دلیل تملیک نہ پائی گئی ہو جبکہ وہاں مطلقاً عموماً بعد موت عروس لینے کا اختیار رکھتی ہے جبکہ اس کی طرف سے کوئی دلیل تملیک نہ پائی گئی ہو کہ جبکہ وہاں مطلقاً عموماً بعد موت عروس واپسی جہیز کا رواج ہے تو ظاہرًا یہ رواج حقیقی ماں باپ کے سوا اوروں میں بھی دائر و سائر ہوگا کہ جو شخص اپنے مال سے عروس کو جہیز دے بعد موت عروس واپس لے کہ جب حقیقی ماں باپ ہمیشہ واپس لیتے ہیں تو اور لوگ بدرجہ اولیٰ واپس لیتے ہوں گے تو اس عرف واپسی بعد الموت میں فیض النساء بیگم بھی داخل ہوئی، ہاں غیروں کے لئے یہاں محل نظر اتنا امر تھا کہ جہیز اپنے مال سے دینا ثابت ہو اس کی نسبت سائل بیان کرتا ہے کہ صدہا گواہ موجود ہیں تو اب فیض النساء بیگم کو اختیارِ واپسی ملنے سے کوئی مانع نہ رہا۔

صفحہ 253 کا 688

Fatawa Ridawiyya, Volume 12

[Arabic Box] Arabic: وَذٰلِكَ كُلُّهُ ظَاهِرٌ لِّمَنْ حَقَّقَ النَّظَرَ فِیْ فُتُوتَا الْاُوْلٰی هٰذَا اَمَّا عِنْدِیْ وَالْعِلْمُ بِالْحَقِّ عِنْدَ رَبِّیْ وَاللّٰهُ سُبْحٰنَهٗ وَتَعَالٰی اَعْلَمُ۔ Urdu Translation: And all this is clear to the one who has looked with a research eye at our previous fatwa. This is what I have, and the knowledge of the truth is with my Lord, and Allah, the Exalted, knows best. (T)

Problem 88: From Anjuman Bareilly, 4 Jumada al-Ukhra 1317 AH. Question: What do the scholars of religion say regarding this matter: Anjuman-e-Islamia Bareilly arranged the marriage of an orphan girl. After the marriage, it was discovered that the orphan girl was not capable of being a wife [for a man]; because of this, the husband did not keep her. The dowry items given to the orphan girl by the Anjuman were returned. Does that dowry belong to the Anjuman or to the orphan girl, or should the orphan girl receive it?

Answer: From the detailed statement of the questioner, it is understood that the orphan is certainly a woman but not capable [sexually] for a man. By saying she is "not a woman," this is what the questioner meant. In the inquired situation, that dowry is specifically the property of the orphan girl. The Anjuman has no right to it because, in the common custom of these cities, or rather general cities, dowry is given as an act of transferring ownership (tamlik), and the woman becomes its independent owner. Not being capable for a man is no barrier to ownership.

[Arabic/Urdu Box] Arabic: ۱ ؎فِي رَدِّالْمُحْتَارِ كُلُّ اَحَدٍ یَعْلَمُ اَنَّ الْجَهَازَ مِلْکُ الْمَرْاَةِ Urdu: In Radd al-Muhtar, it is stated: Everyone knows that the dowry is the property of the woman. (T)

I say: The research on this point is that the money collected through donations in organizations, although it does not leave the ownership of the donors, as we have researched by the grace of Allah in the 'Book of Endowment' of our Fatawa (T), the head of the Anjuman, by whose order all these tasks are carried out, is the authorized agent of the donors for all permissible actions and for the Anjuman. Even though there was no mandate to purchase any particular item, nor was the intention explicitly stated at the time of purchase that it was being bought for the donors; even though there was no mandate to purchase any particular item, nor was the intention explicitly stated at the time of purchase that "I am buying for the donors," the donation funds are intended for the principals (donors), as the Anjuman is synonymous with their collective entity.

[Arabic/Urdu Box] Arabic: فِی الدُّرِّالْمُخْتَارِ لَوْ وَکَّلَہٗ لِشِرَآءِ شَیْءٍ بِغَیْرِ عَیْنِہٖ Urdu: In al-Durr al-Mukhtar, it is stated: If one appoints an agent to buy an unspecified item...

---

1 Radd al-Muhtar, Chapter on Mahr (Dowry), Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/368. Page 254 of 688

फ़तावा रज़विया, खंड 12

[अरबी बॉक्स] अरबी: وَذٰلِكَ كُلُّهٗ ظَاهِرٌ لِّمَنْ حَقَّقَ النَّظَرَ فِیْ فُتُوَنَا الْاُوْلٰی هٰذَا اَمَّا عِنْدِیْ وَالْعِلْمُ حٰنَهٗ وَتَعَالٰی اَعْلَمُ.ط بِالْحَقِّ عِنْدَ رَبِّیْ وَاللّٰهُ سُ उर्दू अनुवाद: और यह सब उस व्यक्ति के लिए स्पष्ट है जिसने हमारे पिछले फ़तवे पर शोधपूर्ण दृष्टि डाली है। यह वह है जो मेरे पास है, और सत्य का ज्ञान मेरे प्रभु के पास है, और अल्लाह, जो महान और उच्च है, सबसे अच्छा जानता है। (त)

मसला 88: अंजुमन बरेली से, 4 जमादी उल-उखरा 1317 हिजरी। प्रश्न: दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: अंजुमन-ए-इस्लामिया बरेली ने एक अनाथ लड़की का निकाह किया। निकाह के बाद पता चला कि वह अनाथ लड़की पुरुष के योग्य नहीं थी; इस वजह से पति ने उसे नहीं रखा। अंजुमन की ओर से अनाथ लड़की को जो दहेज का सामान दिया गया था, वह वापस आ गया। क्या वह दहेज अंजुमन का अधिकार है या अनाथ लड़की का, या अनाथ लड़की को मिलना चाहिए?

उत्तर: प्रश्नकर्ता के विस्तृत विवरण से ज्ञात हुआ कि अनाथ लड़की निश्चित रूप से एक महिला है लेकिन पुरुष के लिए योग्य नहीं है। "महिला न होने" से प्रश्नकर्ता का यही तात्पर्य है। पूछी गई स्थिति में, वह दहेज विशेष रूप से अनाथ लड़की की संपत्ति है। अंजुमन का इसमें कोई अधिकार नहीं है क्योंकि इन शहरों, बल्कि आम शहरों के सामान्य रिवाज में दहेज स्वामित्व हस्तांतरण (तमलीक) के रूप में दिया जाता है और महिला उसकी स्वतंत्र मालिक बन जाती है। पुरुष के योग्य न होना स्वामित्व के लिए कोई बाधा नहीं है।

[अरबी/उर्दू बॉक्स] अरबी: فِي رَدِّالْمُحْتَارِ كُلُّ اَحَدٍ یَعْلَمُ اَنَّ الْجَهَازَ مِلْكُ الْمَرْاَةِ ـــہ۱ उर्दू: रद अल-मुहतार में है कि हर कोई जानता है कि दहेज महिला की संपत्ति होती है। (त)

मैं कहता हूँ: इस विषय पर शोध यह है कि संस्थाओं में दान के माध्यम से एकत्र किया गया पैसा, हालांकि दानदाताओं के स्वामित्व से बाहर नहीं निकलता है, जैसा कि हमने अल्लाह की तौफीक से अपने फ़तावा की 'किताब अल-वक़्फ़' में शोध किया है (त), लेकिन अंजुमन का प्रमुख जिसके आदेश से ये सभी कार्य किए जाते हैं, सभी वैध कार्यों और अंजुमन में दान देने वालों का अधिकृत वकील (प्रतिनिधि) है। हालाँकि यहाँ किसी विशिष्ट वस्तु की खरीद का कोई निर्देश नहीं था, और न ही खरीद के समय यह स्पष्ट इरादा था कि इसे दानदाताओं के लिए खरीदा जा रहा है; हालाँकि यहाँ किसी विशिष्ट वस्तु की खरीद का कोई निर्देश नहीं था, और न ही खरीद के समय यह स्पष्ट इरादा था कि "मैं

दानदाताओं के लिए खरीद रहा हूँ", लेकिन दान की राशि का इरादा मुवक्किलों (दानदाताओं) के लिए है क्योंकि अंजुमन उनकी सामूहिक इकाई का ही दूसरा नाम है।

[अरबी/उर्दू बॉक्स] अरबी: فِی الدُّرِّالْمُخْتَارِ لَوْ وَكَّلَهٗ لِشِرَآءِ شَیْءٍ بِغَیْرِ عَیْنِہٖ उर्दू: अल-दुर अल-मुख्तार में है: यदि किसी को अनिर्दिष्ट वस्तु खरीदने के लिए वकील बनाया जाए...

---

1 रद अल-मुह्तार, बाब उल-महर (दहेज का अध्याय), दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/368. पृष्ठ 688 में से 254

جلد دوازدہم فتاوٰی رضویہ

[عربی باکس] عربی: وَذٰلِكَ كُلُّهُ ظَاهِرٌ لِّمَنْ حَقَّقَ النَّظَرَ فِیْ فُتُونَا الْاُوْلٰی هٰذَا اَمَّا عِنْدِیْ وَالْعِلْمُ بِالْحَقِّ عِنْدَ رَبِّیْ وَاللّٰهُ سُبْحٰنَهٗ وَتَعَالٰی اَعْلَمُ۔ اردو: اور یہ تمام اس شخص کے لئے ظاہر ہے جس نے ہمارے فتوٰی سابقہ میں تحقیقی نظر ڈالی۔ یہ وہ ہے جو میرے پاس ہے اور حق کا علم میرے پروردگار کے پاس ہے اور اللہ سبحانہ وتعالٰی خوب جانتا ہے۔ (ت)

مسئلہ ۸۸: از انجمن بریلی ۴ جمادی الاخری ۱۳۱۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ انجمن اسلامیہ بریلی نے ایک یتیمہ کا نکاح کیا، بعد نکاح کے معلوم ہوا کہ یتیمہ عورت نہیں اس وجہ سے شوہر نے نہیں رکھا اور سامان جہیز جو انجمن سے یتیمہ کو دیا گیا تھا وہ واپس آیا، آیا وہ جہیز حق انجمن کا ہے یا یتیمہ کا ہے یا یتیمہ کو ملنا چاہئے؟

الجواب: بیان تفصیلی سوالِ آرندہ سے معلوم ہوا کہ یتیمہ عورت تو ضرور ہے مگر مرد کے قابل نہیں، عورت نہ ہونے سے سائل کی یہ یہی مراد ہے، صورتِ مستفسرہ میں وہ جہیز خاص ملک یتیمہ ہے انجمن کا اس میں کچھ حق نہیں کہ جہیز ان بلاد بلکہ عامہ امصار کے عرف عام میں تملیکا دیا جاتا ہے اور عورت اس کی مالکِ مستقل ہوتی ہے، مرد کے قابل نہ ہونا کچھ مانع ملک نہیں۔

[عربی/اردو باکس] عربی: فِي رَدِّالْمُحْتَارِ كُلُّ اَحَدٍ یَعْلَمُ اَنَّ الْجَهَازَ مِلْكُ الْمَرْاَةِ ۱ـہ اردو: ردالمحتار میں ہے کہ ہر شخص جانتا ہے کہ جہیز عورت کی ملک ہوتا ہے۔ (ت)

اقول: تحقیق مقام یہ ہے کہ انجمنوں میں جو روپیہ چندے سے جمع ہوتا ہے اگر چہ ملکِ چندہ ہندگان سے خارج نہیں ہوتا کما حققناہ بتوفیق اللہ فی کتاب الوقف من فتاونا (جیسا کہ ہم نے اللہ تعالٰی

کی توفیق سے اپنے فتاویٰ کی کتاب الوقف میں اس کی تحقیق کی ہے ۔ت) مگر صدرِ انجمن جس کے حکم سے یہ سب کام ہوتے ہیں تمام تصرفاتِ جائز و انجمن میں چندہ دینے والوں کا وکیلِ مجاز ہے اسباب جہیز کہ اس نے خریدا اگر چہ یہاں کسی شئے معین کی خریداری پر تو کیل نہیں، نہ وقتِ شراء یہ نیت ظاہر کہ چندہ دینے والوں کے لئے خریدا، اگر چہ یہاں کسی شئے معین کی خریداری پر تو کیل نہیں، نہ وقتِ شراء یہ نیت ظاہر کہ چندہ دینے والوں کے لئے خریدتا ہوں مگر زرِ چندہ نیت للموکلین ہے کہ انجمن اُن کی ہیئت مجموعی سے عبارت ہے۔

[عربی/اردو باکس] عربی: فِی الدُّرِّالْمُخْتَارِ لَوْ وَکَّلَہٗ لِشِرَآءِ شَیْءٍ بِغَیْرِ عَیْنِہٖ اردو: در مختار میں ہے کہ اگر کسی کو غیر معین شئی کی

۱؎ ردالمحتار باب المہر داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۳۶۸ Page 254 of 688

Fatawa Rizvia - Volume 12

(Arabic) Purchase is for the agent unless he intended it for the principal at the time of purchase or purchased it with the principal's money. [Multaqat]^1	**(Urdu) If someone is appointed as an agent for purchasing, the purchase will be for the agent unless the agent intended it for the principal at the time of purchase, or it was purchased with the principal's money. [Multaqat]**

Now, just as he was an agent for purchase, he is also an agent for gift. So this is a gift which occurred from the group in the name of the orphan girl. Such an absolute gift is permissible even if the gifted item is divisible.

(Arabic) Because the receiver is one, so there is no joint ownership (shuyoo). In Durr al-Mukhtar: if two persons gifted a house to one person, it is valid due to the absence of joint ownership.^2-	**(Urdu) Because the possessor is one, so joint ownership did not occur. It is stated in Durr al-Mukhtar that if two people gifted a house to one person, it is correct because there is no joint ownership. (T)**

This is in the case where marrying off orphan girls and giving dowry from the association's funds is included in the well-known and publicized objectives of the association, through which the president obtained the authority (wakalat) from the donors in this matter as well. If it's not like that, but rather the president did this preparation on his own without the permission of the owners (donors), then he will be an unauthorized person (fudooli) in this purchase of goods. A purchase remains pending until it is executed on the purchaser. In this case, it is obvious that at the time of purchase, it was not attributed to the donors. Therefore, all the goods became the property of the president and it became a complete gift from him to the orphan girl. Even so, in the mentioned case, the property will belong to the orphan girl, having no connection at all with the right of the association. However, the penalty for the association's money will fall on the president due to his opposition and disposal of something for which permission was not granted to him. It is stated in Durr al-Mukhtar:

(Arabic) If he bought for another, it takes effect on him if he did not attribute it to the other. If he attributed it by saying 'Sell this to so-and-so' and he (the seller) said 'I sold it to so-and-so', it is suspended. [Bazzaziya and others, summarized],^3 And Allah Almighty knows best.

(Urdu) If someone bought something for another, the purchase will be effective for the buyer as long as it is not attributed to the other. If it is attributed to another, for example by saying 'Sell this item for so-and-so', and upon this the seller said 'I have sold it for so-and-so', then this purchase will be suspended. Bazzaziya etc. [Summarized]. And Allah Subhanu wa Ta'ala knows best. (T)

^1 Durr al-Mukhtar, Kitab al-Wakala, Chapter on Wakala in Buying and Selling, Matba' Mujtabai Delhi, 2/105 ^2 Durr al-Mukhtar, Kitab al-Hiba, Chapter on Wakala in Buying and Selling, Matba' Mujtabai Delhi, 2/161 ^3 Durr al-Mukhtar, Bab al-Bay' al-Fasid, Section on al-Fudool, Matba' Mujtabai Delhi, 2/31

फतावा रज़विया - जिल्द बारहवीं

(अरबी) क्रय (खरीदना) वकील के लिए है जब तक कि उसने खरीदते समय मुवक्किल के लिए नीयत न की हो या मुवक्किल के धन से न खरीदा हो। [मुल्तक़त]^1

(उर्दू) खरीदारी के लिए वकील बनाया तो खरीदारी वकील के लिए होगी, मगर जब कि वकील ने खरीदारी के समय मुवक्किल के लिए खरीदारी की नीयत कर ली हो, या मुवक्किल के माल से खरीदारी हुई हो। [मुल्तक़त]

अब जिस तरह वह खरीदारी का वकील था, वह हिबा (उपहार) का भी वकील है। तो यह एक हिबा है जो जमाअत (समूह) की तरफ़ से यतीम लड़की के नाम पर हुआ और ऐसा मुतलक़ (निरपेक्ष) हिबा जाइज़ है, भले ही उपहार में दी गई वस्तु बांटने योग्य (क़ाबिले-क़िस्मत) भी हो।

(अरबी) क्योंकि प्राप्तकर्ता (क़ाबिज़) एक है, इसलिए कोई साझा स्वामित्व (शुयूअ) नहीं है। दुर्र-ए-मुख़्तार में है कि दो व्यक्तियों ने एक व्यक्ति को घर हिबा किया तो वह सही है क्योंकि शुयूअ नहीं है।^2-

(उर्दू) क्योंकि क़ाबिज़ (अधिकार में लेने वाला) एक है तो शुयूअ (साझा स्वामित्व) न हुआ। दुर्र-ए-मुख़्तार में है कि दो व्यक्तियों ने एक व्यक्ति को घर हिबा (उपहार) किया तो सही है क्योंकि शुयूअ नहीं है। (त)

यह उस स्थिति में है कि यतीम लड़कियों का निकाह करना और अंजुमन (संस्था) के धन से दहेज देना अंजुमन के विख्यात और ज्ञात उद्देश्यों में शामिल हो, जिससे इस मामले में भी चंदा देने वालों की ओर से सदर (अध्यक्ष) को वकालत प्राप्त हुई हो। और अगर ऐसा नहीं है, बल्कि मालिकों (चंदा देने वालों) की अनुमति के बिना ही सदर ने स्वयं ही यह तैयारी की, तो अब वह इस सामान की खरीदारी में फ़ुज़ूली (अनधिकृत व्यक्ति) होगा। और खरीदारी जब तक अमल में आए, खरीदार पर लागू होती है। और इस स्थिति में खरीदारी के समय चंदा देने वालों के प्रति संबंध न होना स्वयं स्पष्ट है, तो सारा सामान सदर की मिल्कियत (स्वामित्व) हो गया और उसकी ओर से यतीम लड़की के लिए हिबा-ए-ताम्मा (पूर्ण उपहार) हो गया। इस तरह भी वर्णित स्थिति में माल यतीम लड़की का होगा, अंजुमन के अधिकार से उसका कोई संबंध नहीं। हाँ, अंजुमन के पैसे का जुर्माना सदर पर आएगा "उसके विरोध और उस चीज़ को नष्ट करने के कारण जिसकी उसे अनुमति नहीं दी गई थी।" दुर्र-ए-मुख़्तार में है:

(अरबी) यदि उसने किसी और के लिए खरीदा, तो यह उस पर प्रभावी होगा यदि उसने इसे दूसरे के साथ नहीं जोड़ा। यदि उसने यह कहकर जोड़ा कि 'यह फलां को बेच दो' और उसने (विक्रेता ने) कहा 'मैंने इसे फलां को बेच दिया', तो यह स्थगित (मवक़ूफ़) हो जाएगा। [बज़्ज़ाज़िया और अन्य, संक्षेप में]^3 और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

(उर्दू) अगर किसी ने दूसरे के लिए कुछ खरीदा तो खरीद खरीदार (मुश्तरी) पर प्रभावी होगी जब तक कि उसे दूसरे की तरफ़ मन्सूब (संबंधित) न किया हो। और अगर दूसरे की तरफ़ उसका संबंध जोड़ा और इस तरह कहा कि यह चीज़ फलां के लिए बेच, इस पर विक्रेता (बाइअ) ने कहा कि मैंने फलां के लिए बेची, तो यह खरीद मवक़ूफ़ (स्थगित) होगी, बज़्ज़ाज़िया वगैरह। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला खूब जानता है। (त)

^1 दुर्र-ए-मुख़्तार किताबुल वकाला, बाब अल-वकाला बिल-बय वश-शरा, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 2/105 ^2 दुर्र-ए-मुख़्तार किताबुल हिबा, बाब अल-वकाला बिल-बय वश-शरा, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 2/161 ^3 दुर्र-ए-मुख़्तार बाबुल बय अल-फ़ासिद, फ़स्ल फ़िल-फ़ुज़ूल, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 2/31

فَالشِّرَاءُ لِلْوَكِيْلِ إِلَّا إِذَا نَوَاهُ لِلْمُوَكِّلِ وَقْتَ الشِّرَاءِ أَوْ شَرَاهُ بِمَالِ الْمُوَكِّلِ اھ مُلْتَقَطًا[1]

خریداری کے لئے وکیل بنایا تو خریداری وکیل کے لئے ہو گی مگر جب کہ وکیل نے بوقت خریداری موکل کے لئے خریداری کی نیت کر لی ہو۔ یا موکل کے مال سے خریداری ہو اھ ملتقطا

اب جس طرح وہ وکیل بالشر اتھا بالبہ بھی ہے تو یہ ایک ہبہ ہے کہ جماعت کی طرف سے بنام یتیمہ واقع ہوا اور ایسا ہبہ مطلق جائز ہے اگرچہ شے موہوب قابل قسمت بھی ہو۔

لِأَنَّ الْقَابِضَ وَاحِدٌ فَلَا شُيُوْعَ فِي الدُّرِّ الْمُخْتَارِ وَهَبَ اثْنَانِ دَارًا لِوَاحِدٍ صَحَّ لِعَدَمِ الشُّيُوْعِ[2]-

کیونکہ قابض ایک ہے تو شیوع نہ ہوا۔ در مختار میں ہے کہ دو شخصوں نے ایک شخص کو گھر ہبہ کیا تو صحیح ہے کیونکہ شیوع نہیں ہے۔ (ت)

یہ اس صورت میں ہے کہ یتیمات کا نکاح کرنا نہیں مال انجمن سے جہیز دینا اغراض مشتہرہ معلومہ انجمن میں داخل ہو جس سے اس امر میں بھی ملکانِ چندہ کی طرف سے تو کیل صدر حاصل ہوا اور اگر ایسا نہیں بلکہ بلا اذنِ مالکین یہ تجہیز صدر نے بطورِ خود کی تو اب وہ اس شرائے سامان میں فضول ہو گا اور شراء جب تک نفاذ پائے مشتری پر نافذ ہوتا ہے اور اس صورت میں وقتِ شراء چندہ دہندوں کی طرف اضافت نہ ہو نا خود ظاہر، تو تمام سامان ملک صدر ہوا اور اس کی طرف سے یتیمہ کے لئے ہبہ تامہ ہو گیا، یوں بھی صورتِ مذکورہ میں مال ملکِ یتیمہ ہو گا حق انجمن سے اصلاً علاقہ نہیں، ہاں انجمن کے روپے کا تاوان صدر پر آئے گا لِخِلَافِہٖ وَاتِلَافِہٖ فِیْمَا لَمْ یُؤْذَنْ بِہٖ (اس کی مخالفت اور اس چیز کو تلف کرنے کی وجہ سے جس کا اذن اس کو نہیں دیا گیا تھا ت) در مختار میں ہے :

لَوِ اشْتَرٰی لِغَیْرِہٖ نَفَذَ عَلَیْہِ اِذَا لَمْ یُضِفْہُ اِلٰی غَیْرِہٖ فَلَوِ اضَافَ بِاَنْ قَالَ بَعْ ھٰذَا الْفُلَانِ فَقَالَ بَعْتُہ لِفُلَانٍ تَوَقَّفَ بَزَّازِیَۃٍ وَغَیْرِھَا بِاخْتِصَارٍ،[1][8] وَاللہُ تَعَالٰی اَعْلَم۔

اگر کسی نے دوسرے کے لئے کچھ خریدا تو شراء مشتری پر نافذ ہو گی جبکہ اسے دوسرے کی طرف مضاف نہ کیا ہو۔ اور اگر دوسرے کی طرف اس کی اضافت کی اور یوں کہا کہ یہ شئی فلاں کے لئے بیچ، اس پر بائع نے کہا کہ میں نے فلاں کے لئے بیچی تو یہ شراء موقوف ہو گی، بزازیہ وغیرہ اھ اختصار۔ اور اللہ سبحانہ وتعالٰی خوب جانتا ہے۔ (ت)

[1][8] درمختار کتاب الوکالۃ باب الوکالۃ بالبیع و الشراء مطبع مجتبائی دہلی ۲/۱۰۵ [2][8] درمختار کتاب الہبہ باب الوکالۃ بالبیع و الشراء مطبع مجتبائی دہلی ۲/۱۶۱ [3][8] درمختار باب البیع الفاسد فضل فی الفضول مطبع مجتبائی دہلی ۲/۳۱

Fatawa Razawiyya Volume 12

Problem 89: 25 Rabi al-Akhir 1320 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: When Zaid got married, his parents, as per custom, offered jewellery, clothes, etc. (chadhawa). After the marriage, the girl's parents gave some jewellery and clothes in the dowry (jahez). Later, Zaid got some more jewellery made after the marriage, and also some clothes besides the usual ones. At the time of her death, the woman did not forgive her dower (mahr) to her husband, nor has it been forgiven till now. In fact, at the time of death, she did not even go to him. Zaid does not own any property etc. In this situation, who will be the owner of this wealth, and will the payment of the dower be mandatory on anyone or not? If mandatory, then on whom?

The Answer: Whatever jewellery, clothes, utensils, etc., the woman received in her dowry, she specifically is the owner of that. Regarding what was sent from the husband's side (chadhawa), local custom will be observed. If the custom is such that the woman is considered its owner, then it also becomes her property. And if she is not considered the owner, then it belongs to the person who offered it, whether it be the husband's father, mother, or the husband himself. And regarding the jewellery Zaid got made after the marriage, if he had gifted it to the woman (tamlik), meaning he said "I have given this jewellery to you, I have made you its owner," and the woman took possession, then this jewellery also became the property of the woman. If he said, "I gave it to you to wear," then it remained the property of the husband. If nothing was said, then custom will be observed. Similarly, if getting jewellery made is considered gifting (tamlik) to the woman, then after possession, the woman will be the owner; otherwise, it remains the husband's property. The woman's dower is the responsibility of the husband. If the husband has some property, for example, this same jewellery he got made and her ownership in it was not established, or any other thing belonging to the husband is found, she [her heirs] should recover it from that. If no property of the husband is found, then she [her heirs] cannot demand anything from the husband's parents etc. at any time unless they had stood guarantee for the dower. Her matter remains for the hereafter, and it is better that she forgives the husband. And Allah Ta'ala knows best.

Problem 90: From Burma, Akyab city, Mangdaw police station, Nakpura Bazar post office, village Rampur Bel, queried by Nazir Ali Sahib. The usual and well-known giving and taking according to the interests of managing marriages and custom and habit, which is common and well-known in marriage alliances, is it permissible from

the perspective of the Shari'ah? It is common and familiar for administrative interests. Is it permissible according to the Shari'ah or not, if something or cash, based on the custom of one's land, is taken from the suitor (khitib) and marriage is performed, whether it be with a condition or without, as is the custom in the land of Bengal, where the suitor (the one who sends the marriage proposal) and...

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

मसला 89: 25 रबी-उल-आख़िर शरीफ़ 1320 हिजरी क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि ज़ैद की जिस वक्त शादी हुई तो उसके वालदैन ने दस्तूर के मुताबिक़ जोड़े, ज़ेवर वग़ैरह चढ़ाया और निकाह होने के बाद लड़की के वालदैन ने कुछ ज़ेवर और जोड़े जहेज़ में दिए। बाद में ज़ैद ने निकाह के बाद कुछ ज़ेवर बनवाए और कुछ कपड़े वग़ैरह भी मामूली कपड़ों के अलावा दिए। उस औरत ने मरते वक्त अपने शौहर का महर माफ़ नहीं किया और अब तक भी माफ़ नहीं हुआ, बल्कि मरते वक्त वह उसके पास भी नहीं गई। ज़ैद के नाम कोई जायदाद वग़ैरह नहीं है। इस सूरत में इस माल का मालिक कौन होगा और महर की अदायगी किसके ज़िम्मे होगी या नहीं? अगर होगी तो किसके ज़िम्मे होगी?

अल-जवाब: जो कुछ ज़ेवर, कपड़ा, बर्तन वग़ैरह औरत को जहेज़ में मिला था, उसकी मालिक खास तौर पर वह औरत है। और जो कुछ शौहर के यहाँ से चढ़ाया गया था, उसमें रिवाज देखा जाएगा। अगर रिवाज यह हो कि औरत ही उसकी मालिक समझी जाती है, तो वह भी औरत की मिल्कियत हो गया। और अगर औरत मालिक नहीं समझी जाती है, तो वह जिसने चढ़ाया था उसी की मिल्कियत है, चाहे शौहर के वालिद हों या वालिदा या खुद शौहर। और जो ज़ेवर ज़ैद ने निकाह के बाद बनवाए, अगर औरत को उसका मालिक बना दिया था (तम्लीक), यानी यह कह दिया था कि मैंने यह ज़ेवर तुझे दे दिया, तुझे इसका मालिक बना दिया और औरत का उस पर कब्ज़ा हो गया, तो यह ज़ेवर भी औरत की मिल्कियत हो गया। और अगर कहा कि तुझे पहनने को दिया, तो वह शौहर की मिल्कियत रहा। और अगर कुछ न कहा तो रिवाज देखा जाएगा। इसी तरह ज़ेवर बनवा देने को अगर औरत की तम्लीक समझते हैं, तो कब्ज़े के बाद औरत मालिक होगी वरना शौहर की मिल्कियत रहेगा। औरत का महर शौहर के ज़िम्मे है। अगर शौहर का कुछ माल हो, मिसाल के तौर पर यही ज़ेवर जो उसने बनवाया था और औरत की मिल्कियत उसमें साबित नहीं हुई थी, या और जो चीज़ शौहर की मिल्कियत में मिले उससे वसूल कर ले। अगर शौहर की मिल्कियत में कुछ न मिले, तो शौहर के वालदैन वग़ैरह से किसी वक्त कोई मुतालबा नहीं कर सकती जब तक कि उन्होंने महर की ज़मानत न दी हो। उसका मामला आख़िरत पर रहा और अफ़ज़ल यह है कि शौहर को माफ़ कर दे। वल्लाह तआला आलम।

मसला 90: मुल्क बर्मा, शहर अक्याब, थाना मंगडू पोस्ट ऑफिस नाकपुरा बाज़ार, मौज़ा रामपुर बेल, मुस्तफ़सिर नाज़िर अली साहब। शादी-ब्याह के इंतज़ाम और रस्म-ओ-रिवाज़ के मुताबिक़ जो लेन-

देन आम और मशहूर है, क्या वह शरा-ए-शरीफ़ की रूह से जायज़ है? इंतज़ामी मक़ासिद के लिए जो रस्म प्रचलित है, क्या वह शरीयत के मुताबिक़ जायज़ है या नहीं, अगर अपने इलाक़े के रिवाज के मुताबिक़ पैग़ाम देने वाले (खातिब) से कोई चीज़ या नक़दी लेकर निकाह किया जाए, चाहे वह शर्त के साथ हो या बिना शर्त, जैसा कि बंगाल के इलाक़े में रिवाज है कि खातिब (निकाह का पैग़ाम देने वाला) और...

पृष्ठ २५६ / ६८८

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

مسئلہ ۸۹: ۲۵ ربیع الآخر شریف ۱۳۲۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کی جس وقت شادی ہوئی تو اس کے والدین حسب دستور جوڑے زیور وغیرہ چڑھایا اور بعد نکاح ہونے کے لڑکی کے والدین نے کچھ زیور اور جوڑے جہیز میں دیا بعدہ کچھ زیور نکاح کے بعد بنوایا زید نے، اور کچھ کپڑا وغیرہ بھی علاوہ معمولی کپڑے کے، اور اس عورت نے وقت مرنے اپنے شوہر کے اور اب تک مہر بھی معاف نہیں کیا بلکہ مرتے وقت اس کے پاس بھی نہیں گئی اور زید کے نام کچھ جائیداد وغیرہ نہیں ہے، اس صورت میں اس مال کا مالک کون ہوگا اور مہر کا ادا کرنا کسی کے ذمے عائد ہوگا یا نہیں، اگر عائد ہوگا تو کس کے ذمے ہوگا؟

الجواب: جو کچھ زیور، کپڑا، برتن وغیرہ عورت کو جہیز میں ملا تھا اس کی مالک خاص عورت ہے اور جو کچھ چڑھایا شوہر کے یہاں سے گیا تھا اس میں رواج کو دیکھا جائے گا، اگر رواج یہ ہو کہ عورت ہی اس کی مالک سمجھی جاتی ہے تو وہ بھی عورت کی ملک ہو گیا، اور اگر عورت مالک نہیں سمجھی جاتی ہے تو وہ جس نے چڑھایا تھا اسی کی ملک ہے خواہ والد شوہر ہو یا والدہ یا خود شوہر۔ اور جو زیور زید نے بعد نکاح بنوایا اگر عورت کو تملیک کر دی تھی یعنی یہ کہہ دیا تھا کہ میں نے یہ زیور تجھے دے ڈالا تجھے اس کا مالک کر دیا اور قبضہ عورت کا ہو گیا تو یہ زیور بھی ملک زن ہو گیا، اور اگر کہا کہ تجھے پہننے کو دیا تو شوہر کی ملک رہا۔ اور اگر کچھ نہ کہا تو رواج دیکھا جائے گا، اسی طرح زیور بنا دینے کو اگر عورت کی تملیک سمجھتے ہیں تو بعد قبضہ عورت مالک ہوگی ورنہ ملک شوہر پر رہا، عورت کا مہر ذمہ شوہر ہے، اگر شوہر کا کچھ مال مثلاً یہی زیور کہ اس نے بنوایا تھا اور عورت کی ملک اس میں ثابت نہ ہوئی تھی، یا اور جو چیز ملک شوہر پالے اس سے وصول کرلے، اگر ملک شوہر کچھ نہ ملے تو شوہر

کے والدین وغیرہ ہما سے کچھ مطالبہ کسی وقت نہیں کرسکتی جبکہ انہوں نے مہر کی ضمانت نہ کرلی ہو اس کا معاملہ عاقبت پر رہا اور افضل یہ ہے کہ شوہر کو معاف کردے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۹۰: از ملک برہما شہر اکیاب تھانہ منگنڈو بچھ پوسٹ آفس ناکپورا بازار موضع رامپور بیل مسئولہ ناظر علی صاحب داد و ستد معتاد و معروف کہ در مصالح انتظام مناکحت و عرف و عادت کے مطابق دینا اور لینا جو کہ شادی بیاہ کے مصاہرت مروج و معروف ست از روئے شرع شریف جائز انتظامی مصالح کے لئے مروج و مانوس ہے شرع شریف کی رُو است یانہ، اگر چیزے و نقدے بنابر عرف دیار خود از خاطب سے جائز ہے یا نہیں، اگر کوئی چیز یا نقدی اپنے علاقے کے و نکاح گرفتہ مع شود خواہ بشرط باشد بغیر چنانکہ در دیار بنگالہ رواج کے مطابق خاطب (پیغام نکاح دینے والا) اور

Fatawa Razawiya Volume Twelve

[Box 1 & 2 - Question:] In the regions of Bengal and Burma, a custom has existed since ancient times where, before the marriage contract (Nikah), certain items are taken from the suitor for the wedding and marriage ceremony. This includes betel leaves, betel nuts, areca nuts, curd, sugar, etc., and expenses for hosting the friends and relatives of both parties. Is this practice permissible or impermissible? Some scholars in Bengal and Burma say that taking such things is not permissible because it constitutes bribery (Rishwat) and falls under the categories of bribery. Is their statement correct or not? Please explain with reference to the Book, and may you receive a reward from the All-Bestowing Deity on the Day of Recompense and Reckoning. (T)

[Box 3 & 4 - The Answer:] Answer: Bribery is what is prevalent among some lowly people, where they do not give their daughter or sister in marriage until they obtain something for themselves from the suitor. Furthermore, bribery is when a person arranges the marriage of a girl under his guardianship but refuses to hand the girl over to the husband without taking something for himself. It is stated in Al-Bazzaziyya that if a brother refused to marry off his sister unless he was given something, and then something was given to him, the giver has the right to take it back from that brother, whether the given item is still present with him or has been consumed/destroyed.

The Persian and Arabic text states: Bribery is what is common among some lowly groups, that they do not give their daughters and sisters in marriage until they take something in exchange from the suitor for themselves. And also, that someone who has given the girl under his guardianship in marriage refuses to hand her over to the husband until he takes something for himself. In Al-Bazzaziyya, it is mentioned: "He refused to marry his sister unless such and such was paid to him, so it was paid to him. He [the giver] has the right to take it back, whether it is existing or destroyed, because it is bribery." End quote. And in Tanwir al-Absar, al-Durr al-Mukhtar, and Radd al-Muhtar, it says: "What the family of the woman takes at the time of handing her over because they refused [without it]..."

Footnote 1: Fatawa Bazzaziyya, on the margin of Fatawa Hindiyya, Chapter on Mahr, Noorani Kutub Khana Peshawar, 2/431.

Page 257 of 688

फ़तावा रज़विया खंड बारह

[बॉक्स 1 और 2 - प्रश्न:] बंगाल और बर्मा के क्षेत्रों में प्राचीन काल से यह प्रथा चली आ रही है कि निकाह (विवाह अनुबंध) से पहले, दूल्हे से शादी और निकाह के लिए कुछ आवश्यक वस्तुएं ली जाती हैं। इससे उनका तात्पर्य पान के पत्ते, सुपारी, छालिया, दही, चीनी आदि और दोनों पक्षों के मित्रों की दावत का खर्च होता है। क्या यह जायज़ है या नाजायज़? बंगाल और बर्मा के कुछ विद्वानों का कहना है कि इस तरह लेना जायज़ नहीं है क्योंकि यह रिश्वत है और रिश्वत की श्रेणियों में आता है। क्या उनका कथन सही है या नहीं? कृपया किताब के हवाले से स्पष्ट करें, ताकि आपको प्रतिफल और हिसाब के दिन ईश्वर से उत्तम पुरस्कार प्राप्त हो। (त)

[बॉक्स 3 और 4 - उत्तर:] उत्तर: रिश्वत वह है जो कुछ समुदायों में प्रचलित है कि वे अपनी बेटी या बहन का विवाह तब तक नहीं करते जब तक कि वे दूल्हे से अपने लिए कुछ प्राप्त न कर लें। साथ ही, रिश्वत वह है जब कोई व्यक्ति अपने संरक्षण में रहने वाली लड़की का विवाह तो कर देता है, लेकिन अपने लिए कुछ लिए बिना लड़की को पति के हवाले नहीं करता। बज़ज़िया में उल्लेख है कि यदि एक भाई ने अपनी बहन की शादी करने से तब तक इनकार कर दिया जब तक कि उसे कुछ दिया न जाए, और फिर उसे कुछ दे दिया गया, तो देने वाले को यह अधिकार है कि वह उस भाई से उसे वापस ले ले, चाहे वह दी गई वस्तु उसके पास मौजूद हो या नष्ट हो चुकी हो।

फ़ारसी और अरबी पाठ में कहा गया है: रिश्वत वह है जो कुछ नीच समुदायों में प्रचलित है, कि वे अपनी बेटियों और बहनों का विवाह तब तक नहीं करते जब तक कि वे अपने लिए दूल्हे से बदले में कुछ न ले लें। और यह भी कि जिसने अपने संरक्षण में लड़की का विवाह कर दिया हो, वह उसे पति को सौंपने से इनकार कर देता है जब तक कि वह अपने लिए कुछ न ले ले। बज़ज़िया में है: "उसने अपनी बहन की शादी करने से इनकार कर दिया जब तक कि उसे इतना न दिया जाए, तो उसे दे दिया गया। उसे (देने वाले को) इसे वापस लेने का अधिकार है, चाहे वह मौजूद हो या नष्ट हो गई हो, क्योंकि यह रिश्वत है।" और तनवीर अल-अबसार, अल-दुर अल-मुख्तार और रद्द अल-मुह्तार में है: "स्त्री के परिवार वाले सौंपते समय जो कुछ लेते हैं क्योंकि उन्होंने इनकार कर दिया था..."

पादलेख 1: फ़तावा बज़ज़िया, फ़तावा हिंदिया के हाशिए पर, निकाह का अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 2/431।

पृष्ठ 257 का 688

(باکس 1) در برہماز قدیم الایام دستور است کہ از خطاب و نکاح قبل عقد نکاح بطور ساچق لوازمہ شادی و نکاح کہ مراد از برگ تنبول و پوپل و بجرات و شکر و غیر ذلک باشد و خرچہ ضیافت احباب طرفین می گویند کہ بایں طور گرفتن جائز نیست زیرا کہ رشوت ست و در اقسام رشوت داخل پس قول ایشان صحیح است یانہ۔ بینوابسند الکتاب توجروا من اللہ الوہاب فی یوم الجزاء والحساب۔

(باکس 2) ملک سے لی جائے چاہے مشروط ہو یا غیر مشروط، جیسا کہ بنگال اور برہما کے علاقوں میں زمانہ قدیم سے دستور چلا آرہا ہے کہ عقد نکاح سے پہلے خاطب سے شادی اور نکاح کے لئے ضروری سامان کے طور پر لیتے ہیں جس سے ان کی مراد پان کے پتے، سپاری، چھالیہ، دہی، شکر، اور فریقین کے احباب کی دعوت کا خرچہ ہوتا ہے، کیا یہ جائز ہے یا ناجائز، بنگال و برہما کے بعض علماء کہتے ہیں کہ اس طرح لینا جائز نہیں کیونکہ یہ رشوت ہے اور رشوت کی رقموں میں داخل ہے، کیا ان کا قول صحیح ہے یا نہیں؟ بحوالہ کتاب بیان فرمائیں جزاء و حساب کے روز بہت عطا فرمانے والے معبود سے اجر پائیں۔ (ت)

(باکس 3) الجواب: رشوت وہ ہے جو بعض قوموں میں رائج ہے کہ اپنی بیٹی یا بہن کا رشتہ کسی سے اس وقت تک نہیں کرتے جب تک خاطب سے اپنے لئے کوئی چیز حاصل نہ کر لیں، نیز رشوت وہ ہے کہ کوئی شخص اپنے زیر ولایت لڑکی کا رشتہ تو کر دے مگر اپنے لئے کچھ لئے بغیر وہ لڑکی شوہر کے حوالے نہ کرے۔ بزازیہ میں ہے کہ بھائی نے اپنی بہن کی شادی کرنے سے اس وقت تک انکار کیا جب تک کہ اس کو کچھ دیا نہ جائے چنانچہ اس کو کچھ دے دیا گیا تو دینے والے کو یہ حق حاصل ہے کہ وہ اس بھائی سے واپس لے چاہے وہ دی گئی شے اس کے پاس موجود ہو یا ہلاک ہو چکی ہو

(باکس 4) رشوت آنست کہ در بعض اقوام اراذل شائع ست کہ دختر و خواہر خود را بزنی نہ دہند تا چیزے بمعاوضہ از خاطب برائے خود نگیرند و نیز آنست کہ کسے مولیہ خود را بزنی دادہ باشد بشوئی نسپرد تا چیزے برائے خود نگیر دو فی البزازیة الخ ابی ان یزوج الاخت الا ان یدفع الیہ کذا فدفع لہ ان یأخذہ قائما او ہالکا لانہ رشوة اھـ و فی تنویر الابصار والدر المختار ورد المحتار اخذ اھل المرأة شیئا عند التسلیم بان ابی

(حاشیہ) 1 فتاویٰ بزازیہ علی ہامش فتاویٰ ہندیہ باب المہر نورانی کتب خانہ پشاور ۲/ ۴۳۱

Fatawa Razawiyya, Volume 12

[Table Header Content] [Right Column - Urdu]: Because it is a bribe, etc. It is mentioned in Tanweer-ul-Absar, Dur-e-Mukhtar, and Radd-ul-Muhtar that if the bride's family received something at the time of departure (Rukhsati) in such a way that the woman's brother, etc., refused to hand over the woman to the husband without taking something, then the husband can take that thing back because it is a bribe. However, what is known as a gift, present, or assistance, which is intended to be spent on feasts, etc., is not a bribe or forbidden at all. In Khayriyah, it is stated that a man proposed to another man for his sister and gave him something called 'Malak' and also some dirhams, as it is the custom of the wife's family to prepare food with it. If he allowed them to prepare food and feed people, it is as if he himself fed the people with his own food; therefore, he cannot return/reclaim it. The full research on this issue is mentioned in the Fatawa of this humble servant (the author). And Allah, the Exalted and Holy, knows best. (T)

[Left Column - Arabic/Persian]: If her brother or similar hands her over until he takes something, then for the husband it is permissible to take it back because it is a bribe. But what is known by way of gift, present, and assistance to be spent in feasts and the like, beware it is neither a bribe nor forbidden. In Al-Khayriyya: A man proposed to another man for his sister and gave her something called 'Malak' and dirhams, and also it is the custom of the wife's family to prepare food with it. If he allowed them to prepare and feed it to people, it became as if he himself fed the people his own food, and in this, there is no return. The full investigation of this issue is mentioned in the Fatawa of the humble servant. And Allah Almighty knows best.

Problem 91: From Khata Nagriya, sent by Syed Ziauddin Sahib, 9 Muharram Sharif 1325 AH. What do the scholars of religion say regarding this issue: Muhammad Naeem Khan married his twenty-year-old son, Abdul Rahim Khan, to a girl. Before the marriage ceremony, according to custom, he gave the girl some gold and silver jewelry. Before the Rukhsati (departure to the husband's home) could take place, Abdul Rahim Khan passed away. The girl stayed at her parents' house and had never even seen her husband. In such a situation, is that jewelry returnable to the father of the deceased or not? It is also worth mentioning that on such occasions, people often borrow jewelry to present and take it back after the Rukhsati. This person was of very limited means and an ordinary person; his parents did not have the capacity to let the wife of their son keep such a large amount of jewelry after the Rukhsati...

[Footnotes] 1. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Mahr, Mujtabai Press Delhi, 1/203; Radd-ul-Muhtar, Chapter on Mahr, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/366. 2. Fatawa Khayriyah, Chapter on Mahr, Dar-ul-Ma'rifah Beirut, 1/76.

फतावा रज़विया, जिल्द 12

[तालिका सामग्री] [दायां कॉलम - उर्दू]: क्योंकि वह रिश्वत है इत्यादि। तनवीरुल अबसार, दर्र-ए-मुख्तार और रद्दुल मुहतार में है कि यदि लड़की वालों ने विदाई (रुख़्सती) के समय कोई वस्तु इस तरह वसूल की कि लड़की के भाई आदि ने कुछ लिए बिना उसे पति के हवाले करने से मना कर दिया, तो पति वह वस्तु वापस ले सकता है क्योंकि वह रिश्वत है। लेकिन जो उपहार, हदीया या सहायता के रूप में प्रसिद्ध है जिसे वे दावत आदि में खर्च करते हैं, वह हरगिज़ रिश्वत या हराम नहीं है। खैरिया में है कि एक व्यक्ति ने दूसरे को उसकी बहन से निकाह का पैगाम दिया और उसे कोई चीज़ दी जिसे 'मलाका' कहा जाता है और कुछ दिरहम भी दिए, क्योंकि पत्नी के परिवार वालों की आदत उससे खाना तैयार करने की है। यदि उसने उन्हें खाना तैयार करने और लोगों को खिलाने की अनुमति दी है, तो यह ऐसा ही है जैसे उसने स्वयं अपनी ओर से लोगों को खाना खिलाया हो, अतः वह उसे वापस नहीं मांग सकता। इस मसले की पूरी तहकीक़ (अनुसंधान) फकीर (लेखक) के फतावा में वर्णित है। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है। (त)

[बायां कॉलम - अरबी/फारसी]: यदि उसका भाई या कोई और उसे तब तक सौंपने से मना कर दे जब तक कि वह कुछ ले न ले, तो पति के लिए उसे वापस लेना जायज़ है क्योंकि वह रिश्वत है। लेकिन जो उपहार, भेंट और सहायता के रूप में विख्यात है जिसे दावतों आदि में खर्च किया जाए, सावधान रहें वह न तो रिश्वत है और न ही हराम। अल-खैरिया में है: एक व्यक्ति ने दूसरे से उसकी बहन का निकाह माँगा और उसे 'मलाक' नामक चीज़ और दिरहम दिए, और यह पत्नी के परिवार की परंपरा है कि वे उससे भोजन तैयार करते हैं। यदि उसने उन्हें भोजन तैयार करने और लोगों को खिलाने की अनुमति दी, तो यह ऐसा हो गया मानो उसने स्वयं अपने भोजन से लोगों को खिलाया हो, और इसमें कोई वापसी नहीं है। इस मसले की पूरी जाँच फकीर के फतावा में दर्ज है। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे अच्छा जानता है।

मसला 91: खाता नगरिया से, प्रेषक सैयद ज़ियाउद्दीन साहब, 9 मुहर्रम शरीफ 1325 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या फरमाते हैं कि मुहम्मद नईम खान ने अपने बीस वर्षीय लड़के अब्दुल रहीम खान का निकाह एक लड़की से किया और निकाह से पहले रिवाज के अनुसार उस लड़की को कुछ सोने और चांदी के जेवर चढ़ाए। रुख़्सती होने से पहले ही अब्दुल रहीम खान का इंतकाल हो गया। लड़की अपने माता-पिता के घर रही और उसने अपने पति को देखा तक नहीं। ऐसी स्थिति में क्या

वह जेवर मृतक के पिता को वापस मिलने योग्य हैं या नहीं? और यह बात भी जाहिर करने योग्य है कि ऐसे मौकों पर अक्सर जेवर उधार लेकर भी चढ़ा दिए जाते हैं और रुख़्सती के बाद वापस ले लिए जाते हैं। यह व्यक्ति बहुत कम आय वाला और साधारण व्यक्ति था, उसके माता-पिता की इतनी हैसियत नहीं थी कि वे अपने बेटे की पत्नी को इतनी अधिक मात्रा में जेवर रुख़्सती के बाद...

[फुटनोट्स] 1. दर्र-ए-मुख्तार, बाबुल महर, मतबअ मुज्तबाई दिल्ली, 1/203; रद्दुल मुहतार, बाबुल महर, दार इहयाउत तुराथ अल-अरबी बेरुत, 2/366। 2. फतावा खैरिया, बाबुल महर, दारुल मारिफा बेरुत, 1/76।

पृष्ठ 258/688

[جدول کا متن] [دایاں کالم]: کیونکہ وہ رشوت ہے الخ تنویر الابصار، در مختار اور ردالمحتار میں ہے کہ عورت والوں نے رخصتی کے وقت کوئی شے وصول کی بایں طور کہ عورت کے بھائی وغیرہ نے کچھ لئے بغیر وہ عورت شوہر کے حوالے کرنے سے انکار کردیا تو شوہر وہ شئی واپس لے سکتا ہے کیونکہ وہ رشوت ہے، مگر وہ جو تحفہ، ہدیہ اور امداد کے طور پر متعارف ہے کہ اسکو دعوت وغیرہ میں خرچ کریں وہ ہر گز رشوت و حرام نہیں ہے۔ خیریہ میں ہے کہ ایک شخص نے دوسرے کو اس کی بہن سے نکاح کا پیغام دیا اور اس کو کوئی شئی دی جس کو ملاک کہا جاتا ہے اور کچھ درہم بھی دئے کہ عورت والوں کی عادت اس سے کھانا تیار کرنے کی ہے، اگر اس نے ان کو کھانا تیار کرنے اور لوگوں کو کھلانے کی اجازت دی ہے تو ایسا ہی ہے جیسے اس نے بذات خود اپنی طرف سے لوگوں کو کھانا کھلایا ہو لہذا اس میں رجوع نہیں کر سکتا۔ اس مسئلہ کی پوری تحقیق فقیر کے فتاوی میں مذکور ہے۔ اور اللہ سبحانہ وتعالٰی خوب جانتا ہے۔ (ت)

[بایاں کالم]: ان یسلمها اخوها او نحوه حتی یأخذ شیئاً فللزوج ان یسترده لانه رشوة أما آنچه بروجه صله و هدیه و معونة متعارف شده است تا در ضیافات و امثالها صرف کرده شود زنهار نه رشوت ست نه حرام في الخیریة رجل خطب من اخرته ودفع لها شیئاً یسمی ملاکا و دراهم وایضاً من عادت اهل الزوجة اتخاذ الطعام بها ان اذن لهم باتخاذه واطعامه للناس صار کانه اطعم الناس بنفسه طعاماً له وفیه لا یرجع۔ تمام تحقیق این مسئلہ در فتاوٰی فقیر مذکور ست۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ 91: از کھاتہ نگریامر سلہ سید ضیاء الدین صاحب 9 محرم شریف 1325ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ محمد نعیم خاں نے اپنے بست سالہ لڑکے عبد الرحیم خاں کا نکاح

ایک لڑکی سے اور قبل عقد حسب رواج کچھ زیور طلائی و نقرئی اس لڑکی کو چڑھا یا، رخصت نہ ہونے پائی تھی کہ عبد الرحیم خاں انتقال کر گیا، لڑکی اپنے والدین کے گھر رہی، شوہر کو بالکل دیکھا بھی نہیں، ایسی حالت میں وہ زیور والد متوفی کو قابلِ واپسی ہے یا نہیں، اور یہ امر بھی قابل اظہار ہے کہ ایسے موقع پر اکثر زیور عاریت لے کر بھی چڑھا دیتے ہیں اور بعد رخصت واپس لے کر دے دیتے ہیں یہ شخص بہت قلیل المعاش اور معمولی شخص تھا اس کے والدین اس قدر حیثیت نہیں رکھتے کہ اس قدر کثیر مال کے زیور کو اپنے پسر کی زوجہ کو بعد رخصت

[حواشی] 1. درمختار باب المهر مطبع مجتبائی دہلی 203/1 ، ردالمحتار باب المهر داراحیاء التراث العربی بیروت 366/2 2. فتاویٰ خیریہ باب المهر دارالمعرفة بیروت 67/1

Fatawa Rizvia, Volume 12

...they also consider it as gifted and bestowed, and the general domestic custom among them is also such that if such an offering (Charhawa) was made, it was taken back after the departure (Rukhsati). If they were wealthy and had no need, they left it. Only.

The Answer:

In the case asked about, its return is necessary.

[Arabic Box Text]: Because it is neither an explicit gift nor an implied one, and even if custom is common, it does not indicate transfer of ownership, and the giver knows best the intent of giving. And Allah Almighty knows best.

[Urdu Translation in Box]: Because it is neither a gift explicitly nor implicitly, and if the custom is common, it does not imply making one the owner, and the giver knows the intent of giving better. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 92 to 93: Questioned by Abdul Rahim Khan, 1st Rajab 1329 AH. (1) Before marriage, what is called "Charhawa," where some jewelry and clothes etc. are given to the bride to wear, what is the status of that? (2) What is called "Lagan," which is a brass plate in which some money, clothes etc. are sent from the bride's side to the groom's house, is this permissible or not? And who is its owner?

The Answer: (1) It is permissible. Then if the intention is to make the bride the owner, she will become the owner after taking possession, otherwise, it remains the property of the one who offered it. And Allah Almighty knows best. (2) It is permissible, and the groom becomes its owner after taking possession because this is the general custom in it. As for the jewelry, the customs vary. And Allah Almighty knows best.

Problem 94: From Balhari, Madras district, sent by Mohammad Nasiruddin Sahib Qadri Hanafi, 24th Rabi' al-Thani 1336 AH. Zaid had been trading with his father in the same shop since childhood (i.e., he was under his father and also working) and lived in his father's house. The marriage of the aforementioned Zaid was also performed by his father, Amr. Now Zaid has passed away. Can the deceased Zaid's wife demand her dowry (Jahez), her personal money and wealth, and the items given to her at the time of engagement (called "Charhawa" in common parlance), and her dower (Mahr) from her father-in-law or not? And who is responsible for her food and

maintenance (Naan-o-Nafqah) during the waiting period (Iddah)? Clarify and you shall be rewarded.

The Answer: All the dowry (Jahez) belongs to the woman; no one else has a right to it. It is stated in Radd al-Muhtar:

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

...भी बख्शा हुआ और हिबा किया हुआ समझ लेते और उनके यहाँ आम घरेलू रिवाज़ भी ऐसा ही हो रहा है कि अगर ऐसा चढ़ावा चढ़ाया तो रुख्सती के बाद वापस ले लिया, अगर हैसियत वाले हुए और ज़रूरत न हुई तो छोड़ दिया, फ़क़त।

उत्तर:

पूछी गई स्थिति में इसकी वापसी ज़रूरी है,

[अरबी बॉक्स टेक्स्ट]: क्योंकि यह न तो स्पष्ट रूप से हिबा (उपहार) है और न ही संकेत द्वारा, और यदि प्रथा साझा भी हो तो वह मालिकाना हक हस्तांतरित करने का संकेत नहीं देती, और देने वाला देने के उद्देश्य को बेहतर जानता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[उर्दू अनुवाद बॉक्स में]: इसलिए कि यह न तो स्पष्ट रूप से हिबा है और न ही संकेत द्वारा, और यदि रिवाज़ साझा हो तो मालिकाना हक देने पर संकेत नहीं करता और देने वाला देने की नीयत को बेहतर जानता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 92 से 93: प्रेषक अब्दुल रहीम खान, 1 रजब 1329 हिजरी। (1) शादी से पहले जिसे "चढ़ावा" कहते हैं, जिसमें दुल्हन को कुछ ज़ेवर और कपड़े आदि पहनाए जाते हैं, वह कैसा है? (2) जिसे "लगन" कहते हैं, जो पीतल की एक थाली होती है जिसमें कुछ रुपए, कपड़े आदि दुल्हन की तरफ से दूल्हे के घर आते हैं, क्या यह जायज़ है या नहीं? और इसका मालिक कौन है?

उत्तर: (1) जायज़ है। फिर अगर इससे मक़सद दुल्हन को मालिक बना देना हो तो कब्ज़े के बाद दुल्हन मालिक हो जाएगी, वर्ना जिसने चढ़ाया उसी की मिल्कियत रहेगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (2) जायज़ है और दूल्हा कब्ज़े के बाद उसका मालिक हो जाता है क्योंकि इसमें यही आम रिवाज़ है और गहनों के बारे में रिवाज़ अलग-अलग हैं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 94: बलहारी, मद्रास ज़िला से, प्रेषक मुहम्मद नसीरुद्दीन साहब कादरी हनफी, 24 रबी-उल-आख़िर 1336 हिजरी। ज़ैद बचपन से अपने बाप के साथ एक ही दुकान में व्यापार करता रहा (यानी अपने बाप के मातहत था और काम भी करता था) और अपने बाप ही के घर में था। उक्त ज़ैद की शादी बाप अम्र ने ही की थी। अब ज़ैद का इंतकाल हो गया है। क्या मरहूम ज़ैद की बीवी अपना

जहेज़, अपना माल और रुपया, और वह सामान जो मंगनी के वक़्त उसे दिया गया (जिसे उर्फ़ में चढ़ावा कहते हैं), और अपना महर अपने ससुर से माँग सकती है या नहीं? और उसकी इद्दत के दौरान खाने-पीने और रहने (नान-ओ-नफ़क़ा) का ज़िम्मा किस पर है? बयान करें और पुण्य कमाएं।

उत्तर: जहेज़ तो सब औरत का ही है, उसमें किसी और का हक नहीं। रद-उल-मुहतार में है:

पृष्ठ 259 / 688

فتاویٰ رضویہ، جلد دوازدہم

بھی بخشیدہ اور موہوبہ سمجھ لیتے اور ان کے یہاں رواجِ عام بھی خانگی ایسا ہی ہو رہا ہے کہ اگر ایسا چڑھواوا چڑھایا تو بعد رخصت واپس لے لیا، اگر ذی مقدور ہوئے اور حاجت نہ ہوئی تو چھوڑ دیا، فقط

الجواب:

صورت مستفسرہ میں اس کی واپسی ضروری ہے،

[عربی عبارت]: لانه لاهبة نصاً ولا دلالة ولو اشترك العرف لم يدل على التمليك وكان الدافع ادرى بجهة الدفع والله تعالى اعلم۔

[اردو ترجمہ]: اس لئے کہ یہ نہ تو صراحۃً ہبہ ہے اور نہ ہی دلالۃً، اور اگر عرف مشترک ہو تو تملیک پر دلالت نہیں کرتا اور دینے والا دینے کی جہت کو بہتر جانتا ہے واللہ تعالی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۹۲ تا ۹۳: مسئولہ عبدالرحیم خاں ۱یکم رجب ۱۳۲۹ھ (۱) شادی کے قبل جس کو چڑھواوا کہتے ہیں جو کہ دلہن کو کچھ زیورات و کپڑا وغیرہ پہنایا جاتا ہے وہ کیسا ہے؟ (۲) جس کو لگن کہتے ہیں ایک پیتل کی تھالی ہوتی جس میں کچھ روپیہ کپڑا وغیرہ دلہن کی طرف سے دولہا کے مکان پر آتا ہے یہ جائز ہے یا نہیں؟ اور اس کا مالک کون ہے؟

الجواب: (۱) جائز ہے پھر اگر اس سے مقصود دلہن کو مالک کر دینا ہوتا ہو تو بعد قبضہ دلہن مالک ہو جائے گی ورنہ جس نے چڑھایا اس کی ملک رہے گا واللہ تعالیٰ اعلم (۲) جائز ہے اور دولہا بعد قبضہ اس کا مالک ہو جاتا ہے کہ اس میں یہی عرف عام ہے اور گہنے میں رواج مختلف واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۹۴: ازبلہاری احاطہ مدراس مرسلہ محمد نصیر الدین صاحب قادری حنفی ۲۴ ربیع الآخر ۱۳۳۶ھ زید بچپن سے اپنے باپ کے ساتھ ایک ہی دکان میں بیوپار کرتا رہا (یعنی اپنے باپ کے ماتحت تھا اور کام بھی کرتا تھا) اور اپنے باپ ہی کے گھر میں تھامند کور زید کی شادی باپ عمرو نے ہی کیا اب زید نے انتقال کیا مرحوم زید کی عورت اپنا جہیز اور اپنا مال وزر اور وہ مال جو نسبت کے وقت اس کو دئے ہیں (عرف میں جسکو چڑھواوا کہتے ہیں) اور اپنا مہر اپنے خسر سے طلب کر سکتی ہے یا نہیں اور اس کی عدت میں نان و نفقہ کس کے ذمہ ہے؟ بینوا توجروا

الجواب: جہیز تو سب عورت کا ہے اس میں کسی کا حق نہیں۔ ردالمحتار میں ہے:

Fatawa Razawiyya Volume 12

Everyone knows that the dowry (Jahez) is the property of the woman, and no one else has any right to it. (T)

And as for the wedding offerings (charhawa), if the woman was made the owner, whether it was explicitly stated that "We have made you the owner of this," or if it is established by local custom and tradition that these items are given as a transfer of ownership, then it is indeed the woman's property. Otherwise, it belongs to the one who offered it. Any other wealth or property she brought from her father's home, or which her husband or her husband's father gave her by way of transfer of ownership (i.e., gifted and handed over possession), is also the woman's property. If money was given for household expenses and became the personal property of the owner, she should receive it from them; she cannot make a claim against the husband's father unless he had taken responsibility for it. Maintenance (nafaqa) is due for the waiting period (iddat) after a divorce; however, there is no maintenance for the waiting period after death for which she can make a demand from anyone; she must provide for herself from her own resources. And Allah the Almighty knows best.

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Mahr, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/368 & 653. Page 260 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

हर कोई जानता है कि दहेज (जहेज़) औरत की मिल्कियत (स्वामित्व) होता है, इसमें किसी और का कोई हक नहीं होता। (त)

और चढ़ावे का अगर औरत को मालिक बना दिया गया था, चाहे स्पष्ट रूप से कह दिया गया था कि "हमने तुझे इसका मालिक बनाया" या वहाँ के रीति-रिवाज़ और प्रथा से साबित हो कि वे मालिकाना हक के तौर पर ही देते हैं, तब तो वह भी औरत की ही मिल्कियत है, वरना जिसने चढ़ाया उसकी मिल्कियत है। बाकी माल और दौलत जो वह अपने बाप के घर से लाई या शौहर या शौहर के बाप ने मालिकाना हक़ के तौर पर उसे दिया यानी तोहफ़ा (हिबा) करके क़ब्ज़ा दे दिया, वह भी औरत की ही मिल्कियत है। और अगर घर के खर्च के लिए दिया गया और मालिक उसका ज़ाती माल हुआ, तो वह उससे वसूल करे; वह शौहर के बाप पर दावा नहीं कर सकती जब तक कि उसने उसकी ज़िम्मेदारी (कफ़ालत) न ली हो। तलाक़ की इद्दत का खर्च (नफ़क़ा) होता है; मौत की इद्दत का कोई खर्च ही नहीं जिसका वह किसी से मुतालबा (मांग) कर सके; वह अपने पास से खाए। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

---

1. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-महर, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/368 और 653.
   पेज 260 of 688

کل احد یعلم ان الجھاز ملک المرأۃ لاحق لاحد فیہ | ہر شخص جانتا ہے کہ جہیز عورت کی ملکیت ہوتا ہے اس میں کسی کا کوئی حق نہیں ہوتا (ت) 1 اور چڑھاوے کا اگر عورت کو مالک کر دیا گیا تھا خواہ صراحۃً کہہ دیا تھا کہ ہم نے اس کا تجھے مالک کیا یا وہاں کے رسم و عرف سے ثابت ہو کہ تملیک ہی کے طور پر دیتے ہیں جب تو وہ بھی عورت ہی کی ملک ہے ورنہ جس نے چڑھایا اس کی ملک ہے باقی مال و زر جو اپنے باپ کے یہاں سے لائی یا شوہر یا شوہر کے باپ نے بطور تملیک اس کو دیا یعنی ہبہ کر کے قبضہ دے دیا وہ بھی عورت ہی کی ملک ہے اور اگر گھر کے خرچ کے لئے دیا اور مالک اس کا ذاتی مال ہوا اس سے وصول کرے شوہر کے باپ پر دعوٰی نہیں کر سکتی جب تک اس نے کفالت نہ کر لی ہو عدت طلاق کا نفقہ ہوتا ہے عدت موت کا نفقہ ہی نہیں جس کا وہ کسی سے مطالبہ کر سکے اپنے پاس سے کھائے، واللہ تعالٰی اعلم۔

---

1 ردالمحتار باب المھر داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۳۶۸ و ۶۵۳ Page 260 of 688

Fatawa Ridawiyya Volume 12

Chapter: Marriage of the Unbeliever (Description of the marriage of an unbeliever)

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

Problem 95: From Shahjahanpur, Barahdari district, sent by Abdullah Khan Sahib, 5th Rajab-ul-Murajab, 1326 AH.

Zaid adopted the Qadiani religion, and his wife remains on her original Hanafi religion as before. It is as if Zaid did not force his wife to tolerate the Qadiani religion. Therefore, in such a situation when there is a difference of religion between husband and wife, is it permissible according to the noble Sharia for them to live together as husband and wife? Please state the ruling and be rewarded.

Answer: In the case questioned, the woman immediately fell out of the marriage contract. No relationship remains between them; the man has become a complete stranger. Now, this intimacy would be pure adultery. It is stated in Tanwir al-Absar:

"If one of them apostatizes, the marriage is immediately annulled." [1] And Allah, the Sublime and Exalted, knows best.

The marriage is annulled at that very moment if either the husband or wife becomes an apostate. And Allah, the Sublime and Exalted, knows best. (T)

[1] Durr al-Mukhtar, Sharh Tanwir al-Absar, Chapter on the Marriage of the Unbeliever, Mujtabai Press, Delhi, 1/210.

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 12

बाब: निकाह-उल-काफ़िर (काफ़िर के निकाह का बयान)

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम।

मसला 95: शाहजहाँपुर, मोहल्ला बारहदरी से, प्रेषक अब्दुल्ला खाँ साहब, 5 रजब-उल-मुरज्जब, 1326 हिजरी।

ज़ैद ने क़ादियानी धर्म अपना लिया और उसकी पत्नी अपने मूल हनफ़ी धर्म पर पहले की तरह ही कायम रही। गोया ज़ैद ने अपनी पत्नी को क़ादियानी धर्म स्वीकार करने के लिए मजबूर नहीं किया। अतः ऐसी स्थिति में जब पति-पत्नी के बीच धर्म का अंतर हो गया है, शरीयत-ए-मुतहरा के हुक्म के अनुसार क्या पति-पत्नी के रूप में एक साथ रहना जायज़ है या नहीं? बयान फरमाएं और सवाब पाएं।

जवाब: पूछी गई स्थिति में, औरत तुरंत निकाह से बाहर हो गई। उनके बीच कोई आपसी रिश्ता नहीं बचा; पुरुष अब बिल्कुल अजनबी हो गया है। अब यह निकटता शुद्ध व्यभिचार (ज़िना) होगी। तनवीरुल अबसार में है:

"अगर उनमें से कोई एक मुर्तद (धर्मत्यागी) हो जाए, तो निकाह तुरंत निरस्त (फ़स्ख़) हो जाता है।" [1] और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है।

पति या पत्नी में से किसी एक के मुर्तद हो जाने से उसी समय निकाह खत्म हो जाता है। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है। (त)

[1] दुर्रे मुख़्तार, शरह तनवीरुल अबसार, बाब निकाह-उल-काफ़िर, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/210.

पृष्ठ 261 / 688

فتاوٰی رضویہ جلد دو ازدہم

باب نکاح الکافر (کافر کے نکاح کا بیان)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم ط

مسئلہ ۹۵: از شاہجہان پور محلہ بارہ دری مرسلہ عبداللہ خاں صاحب ۵ رجب المرجب ۱۳۲۶ھ زید نے قادیانی مذہب اختیار کرلیا اور اس کی عورت بدستور اپنے اصلی مذہب حنفی پر رہی گویا زید نے مذہب قادیانی گوارا کرنے میں اپنی عورت کو مجبور نہیں کیا لہٰذا ایسی حالت میں کہ جب مابین زن و شوہر کے اختلاف مذہب ہو گیا ازروئے حکم شرع شریف کے بحالت طرزِ معاشرت درمیان زن و شوہر جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: صورت مستفسرہ میں عورت فوراً نکاح سے نکل گئی ان میں باہم کوئی علاقہ نہ رہا مرد محض بیگانہ ہو گیا اب اس قربت زنائے خالص ہوگی۔ تنویر الابصار میں ہے: وارتد احدھما فسخ عاجل ۱۔ واللہ سبحانہ وتعالی اعلم۔ خاوند بیوی میں سے کسی ایک کے مرتد ہو جانے سے اُسی وقت نکاح فسخ ہو جاتا ہے۔ واللہ سبحانہ وتعالی اعلم۔ (ت)

۱ درمختار شرح تنویر الابصار باب نکاح الکافر مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۱۰

Fatawa Razawiyya Volume 12

Problem 96: From Bhopal State, Kachha Bangla, Chief Secretary Sahib, sent by Mujtabi Ali Khan Sahib, 10 Ramadan-ul-Mubarak 1337 AH. What do the scholars of religion say in this matter: A woman belongs to the Christian or Magian community, and she has not converted to Islam; she remains on her own religion. A man, who is a Muslim, wants to marry her, and she has not become a Muslim. Is marriage with her permissible, or is it permissible only if she becomes a Muslim? Please clarify and be rewarded.

The Answer: A Muslim cannot marry a Magian woman; if he does, it will be void. Similarly, regarding a Christian woman, according to one opinion, and according to another, marriage with a Christian woman, even if it takes place, is forbidden and a sin. Based on the first opinion, it is obligatory (Fard) to avoid it, and according to the second, it is necessary (Wajib) to avoid it. And Allah Almighty knows best.

Problem 97: From Khairabad Post Office, Khas Mohalla Sheikh Sarai, District Sitapur, sent by Imtiaz Ali Sahib, 9 Shawwal 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid and Hindah are both Sunni Hanafi Muslims and are husband and wife. Hindah is a Syeda but is ignorant, foolish, and ill-tempered. Zaid is a Sheikh, somewhat educated, but also short-tempered and prone to anger. Both come from respectable families that are observant of their religion and knowledgeable of Sharia matters, including the rights of one another. Zaid wants Hindah to care for the children, serve him, show hospitality to relatives and friends, manage household affairs, and practice hospitality as much as possible. If anything happens against Zaid's will, he treats Hindah harshly and often uses harsh but sophisticated words. In the middle of Ramadan-ul-Mubarak, Zaid got angry with Hindah and said to her, "I have advised you many times and then complained about you to both my family and yours, but nothing was beneficial. Now only the stage of suffering remains, which if I want, I have the right to inflict, and these are Sharia rulings, but due to my nobility, I do not like it. If you do not like this and staying together is difficult, then tell me so that I may set you free, i.e., give you a divorce, because this is the teaching of Sharia. Afterwards, you do as you see fit for yourself, and I will do for myself; there is no shame in it." Upon this, Hindah got angry and said, "To the stove with such Sharia!" or "May such Sharia die!" Zaid remembers the first sentence that Hindah said; Hindah denies it and says that she said sentence number 2.

फतावा रज़विया जिल्द बारहवीं

मसला 96: रियासत भोपाल, कच्चा बंगला, चीफ सेक्रेटरी साहब की ओर से, मुज्तबी अली खान साहब द्वारा प्रेषित, 10 रमजान-उल-मुबारक 1337 हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि एक औरत ईसाई या पारसी (मजूसी) समुदाय से है और वह मुसलमान नहीं हुई है, वह अपने धर्म पर कायम है। एक व्यक्ति जो मुसलमान है, वह उससे विवाह (निकाह) करना चाहता है, जबकि वह औरत मुसलमान नहीं हुई है। क्या उसके साथ निकाह जायज़ है या जब वह मुसलमान हो जाए तब जायज़ है? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: एक मुसलमान मजूसी (पारसी) औरत से निकाह नहीं कर सकता, यदि वह ऐसा करता है तो यह शून्य (बातिल) होगा। इसी प्रकार ईसाई औरत के मामले में, एक राय के अनुसार और दूसरी राय के अनुसार, ईसाई औरत से निकाह यदि हो भी जाए, तो भी यह वर्जित और पाप है। पहली राय के अनुसार इससे बचना फर्ज है और दूसरी राय के अनुसार वाजिब है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 97: खैराबाद डाकखाना, खास मोहल्ला शेख सराय, जिला सीतापुर, इम्तियाज़ अली साहब द्वारा प्रेषित, 9 शव्वाल 1337 हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं: जैद और हिन्दा दोनों सुन्नी हनफी मुसलमान हैं और पति-पत्नी हैं। हिन्दा सैयदा है लेकिन अनपढ़, मूर्ख और तेज मिजाज है। जैद शेख है, थोड़ा पढ़ा-लिखा है लेकिन बहुत गुस्सैल और चिड़चिड़ा है। दोनों ही सम्मानित और ऐसे परिवारों से हैं जो अपने धर्म के पाबंद हैं और शरीयत के मसलों से वाकिफ हैं, जिनमें एक-दूसरे के अधिकारों के मसले भी शामिल हैं। जैद चाहता है कि हिन्दा बच्चों का पालन-पोषण करे, उसकी सेवा करे, रिश्तेदारों और दोस्तों का सत्कार करे, घर के कामों और मेहमान नवाजी को अपनी सामर्थ्य के अनुसार करे। यदि कोई काम जैद की मर्जी के खिलाफ होता है, तो जैद हिन्दा के साथ सख्ती से पेश आता है और अक्सर सख्त लेकिन सभ्य शब्दों का इस्तेमाल करता है। रमजान-उल-मुबारक के मध्य में जैद हिन्दा से नाराज हो गया और उससे कहा, "मैंने तुम्हें कई बार नसीहत की और फिर अपने और तुम्हारे घर वालों के सामने तुम्हारी शिकायत की लेकिन कुछ फायदा नहीं हुआ। अब सिर्फ तकलीफ का दौर बाकी है, जिसे अगर मैं चाहूं तो मुझे पहुंचाने का हक है और ये शरीयत के हुक्म हैं, लेकिन मैं अपनी शराफत के कारण इसे पसंद नहीं करता हूं। अगर तुम्हें यह पसंद नहीं है और साथ निभाना मुश्किल है, तो मुझसे कह दो कि मैं तुम्हें आजाद कर दूं यानी तलाक दे दूं क्योंकि शरीयत की यही तालीम है। इसके बाद तुम अपने लिए जैसा तुम्हें अच्छा

लगे वैसा कर लेना और मैं अपने लिए कर लूंगा, इसमें कोई बुराई नहीं है।" इस पर हिन्दा ने गुस्से में आकर कहा, "चूल्हे में जाए ऐसी शरीयत" या "मरी पड़े ऐसी शरीयत पर"। जैद को पहला जुमला याद है जो हिन्दा ने कहा था, हिन्दा इससे इनकार करती है और कहती है कि उसने जुमला नंबर 2 कहा था।

पृष्ठ 262/688

فتاوی رضویه جلد دوازدهم

مسئلہ ۹۶: از ریاست بھوپال کچہ بنگلہ چیف سکریٹری صاحب مرسلہ مجتبی علی خاں صاحب ۱۰ رمضان المبارک ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین مسئلہ میں کہ ایک عورت قوم نصاری یا مجوس ہے اور وہ عورت مسلمان نہیں ہوئی ہے وہ اپنے مذہب پر قائم ہے، ایک شخص کہ وہ مسلمان ہے اور وہ شخص اس کے ساتھ عقد کرنا چاہتا ہے، اور وہ عورت مسلمان نہیں ہوئی، تو اس کے ساتھ نکاح جائز ہے یا مسلمان ہووے تو جائز ہے؟ بینوا توجروا

الجواب: عورت مجوسیہ سے مسلمان نکاح نہیں کر سکتا، اگر کرے گا باطل، یوں ہی نصرانیہ سے ایک قول پر اور دوسرے قول پر نصرانیہ سے نکاح اگرچہ ہو جائے گا مگر ممنوع و گناہ ہے، پہلے قول پر اس سے بچنا فرض ہے اور دوسرے قول پر واجب۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۹۷: از خیرآباد ڈاکخانہ خاص محلہ شیخ سرائے ضلع سیتاپور مرسلہ امتیاز علی صاحب ۹ شوال ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید وہندہ دونوں مسلمان حنفی المذہب زن وشوہر ہیں ہندہ سیدہ ہے مگر جاہل بیوقوف تند مزاج ہے اور زید شیخ کچھ لکھا پڑھا اور سخت مزاج غصہ ور ہے اور ہر دو معزز اور ایسے خاندان کے ہیں جواپنے مذہب کے پابند و مطیع اور مسائل شریعت سے واقف ہیں جس میں ایک دوسرے کے حقوق کے بھی مسائل شامل ہیں، زید چاہتا ہے کہ ہندہ پرورش اطفال و خدمت خود و خاطر مدارات اعزہ و احباب و امور خانہ داری و مہمان نوازی تابہ مقدور کرے، اگر کوئی کام زید کی مرضی کے خلاف ہوتا ہے تو زید ہندہ سے سختی سے پیش آتا ہے اور اکثر سخت مگر مہذب الفاظ کہتا ہے ایسے کاموں میں وسط رمضان المبارک میں زید ہندہ سے خفا ہوا اور ہندہ سے کہا کہ میں نے تم کو بار ہا نصیحت کی اور پھر اپنے اور

تمہارے گھر والوں میں فضیحت کی مگر کچھ سود مند نہ ہوا اب صرف اذیت کا درجہ باقی ہے جس کو اگر میں چاہوں تو مجھ کو پہنچانے کا حق ہے اور یہ شرعی احکام ہیں مگر میں بوجہ شرافت اس کو پسند نہیں کرتا ہوں اگر تم کو یہ پسند نہیں ہے اور نباہ ہونا مشکل ہے تو مجھ سے کہہ دو کہ میں تم کو آزاد کردوں یعنی طلاق دے دوں کیونکہ شریعت کی یہ تعلیم ہے بعد کو تم اپنا کر لینا جیسا تم کو اچھا معلوم ہو میں اپنا کر لوں گا اس میں کوئی عیب نہیں ہے۔ اس پر ہندہ نے غصہ میں آ کر کہا کہ "چولہے میں جائے ایسی شریعت" یا "مری پڑے ایسی شریعت پر" زید کو فقرہ اول یاد ہے کہ ہندہ نے کہا تھا، ہندہ اس سے انکار کرتی ہے اور کہتی ہے کہ میں نے فقرہ نمبر ۲ کہا تھا۔

Fatawa Rizvia Volume Twelve

And she says that in anger, according to common parlance on the day of dower (Meher), these words escaped my mouth. My intention was not to leave Islam nor to insult the Shariah. Therefore, for the sake of God and His Messenger, please provide answers to the following matters with book references soon: (1) Did the woman (Hinda) become an apostate and exit Islam due to the aforementioned sentence? (2) If she became an apostate, did the marriage become annulled and did she fall into the category of divorce? (3) Can Zaid now terminate relations with Hinda without giving a divorce, and will there be no accountability for him? (4) In the state of apostasy and annulment of marriage, is the previous dower (Meher) entirely or partially payable by him, or is it completely forfeited? (5) In such a case, can Hinda marry someone else after renewing her faith without Zaid's permission? (6) Is the maintenance (Nafaqa) of Hinda mandatory for Zaid in such a case? (7) If Hinda has renewed her faith, are Zaid and Hinda legally (Shari'ah) compelled to remarry each other? And if they do not, will there be no accountability? (8) In this situation, if Zaid is ready to remarry, will the dower be fixed at the previous amount, or will a new amount be fixed with the mutual consent of both parties? (9) In this situation, will Hinda be compelled to accept a lower dower according to Zaid's wish, and what can be the minimum amount of dower?

The Answer: Whether Hinda said the first sentence or the second, in either case, her faith was lost because she insulted the pure Shariah. However, she did not exit the marriage, nor is it ever permissible for her to marry someone else after [returning to] Islam because the Fatwa is based on the narration of Nawadir due to the corruption of the times, as we have explained in our Fatawas. (Note: Due to the corruption of the times, the Fatwa is on the 'Nawadir' narration as explained in our Fatawa). Yes, after returning to Islam, she will be compelled to remarry Zaid as a precaution for the original school of thought (Caution for the original Madhhab). If Zaid wishes to break ties with her, he must give a divorce. Maintenance (Nafaqa) for Hinda is not mandatory for Zaid until she brings Islam (returns to Islam), as she became forbidden to Zaid by her own action. There is no maintenance for an apostate woman. However, becoming an apostate does not forfeit the dower of a consummated marriage; it remains mandatory for Zaid in full as before. In the renewal of marriage, fixing a new dower with the consent of both parties or considering the previous amount is not necessary; rather, Hinda can be compelled to accept the lowest possible dower, just as she is compelled to remarry.

और वह कहती है कि गुस्से में, मेहर के दिन बोलचाल के अनुसार ये शब्द मेरे मुँह से निकल गए। मेरा इरादा न तो इस्लाम से बाहर होना था और न ही शरीअत का अपमान करना। इसलिए, ईश्वर और उसके रसूल के वास्ते, निम्नलिखित मामलों के उत्तर पुस्तक संदर्भों के साथ शीघ्र प्रदान करें: (१) क्या ऊपर बताए गए वाक्य से महिला (हिन्दा) धर्मत्यागी (मुर्तद) हो गई और इस्लाम से बाहर हो गई? (२) यदि वह धर्मत्यागी हो गई, तो क्या निकाह रद्द हो गया और क्या हिन्दा तलाक की श्रेणी में आ गई? (३) क्या अब ज़ैद बिना तलाक दिए हिन्दा से संबंध खत्म कर सकता है और उस पर कोई पकड़ नहीं होगी? (४) धर्मत्यागी होने और निकाह रद्द होने की स्थिति में, क्या पिछला मेहर पूरी तरह से या उसका कोई हिस्सा देय है, या वह पूरी तरह से समाप्त हो गया? (५) ऐसी स्थिति में, क्या हिन्दा ईमान ताज़ा करने के बाद ज़ैद की अनुमति के बिना दूसरा निकाह कर सकती है? (६) क्या ऐसी स्थिति में हिन्दा का गुज़ारा भत्ता (नफ़क़ा) ज़ैद पर अनिवार्य है? (७) यदि हिन्दा ने ईमान ताज़ा कर लिया है, तो क्या शरीअत के अनुसार ज़ैद और हिन्दा एक-दूसरे से दोबारा निकाह करने के लिए मजबूर हैं? और यदि वे नहीं करते हैं, तो क्या कोई पकड़ नहीं होगी? (८) इस स्थिति में, यदि ज़ैद दोबारा निकाह के लिए तैयार है, तो क्या मेहर पिछली संख्या पर तय होगा या अब दोनों पक्षों की आपसी सहमति से नई संख्या पर तय होगा? (९) इस स्थिति में, क्या हिन्दा को ज़ैद की मर्ज़ी के अनुसार कम मेहर पर मजबूर किया जाएगा और मेहर की कम से कम राशि क्या हो सकती है?

उत्तर: हिन्दा ने पहला वाक्य कहा हो या दूसरा, हर तरह से उसका ईमान चला गया क्योंकि उसने शरीअत-ए-मुतह्हरा का अपमान किया। लेकिन हिन्दा निकाह से बाहर नहीं हुई, न ही उसके लिए यह जायज़ है कि इस्लाम लाने के बाद किसी और से निकाह कर ले। क्योंकि ज़माने के बिगाड़ के कारण फ़तवा 'नवादिर' की रिवायत पर है, जैसा कि हमने अपने फ़तावा में बयान किया है। हाँ, इस्लाम लाने के बाद उसे मूल मज़हब की एहतियात के तौर पर ज़ैद से दोबारा निकाह करने के लिए मजबूर किया जाएगा। अगर ज़ैद उससे संबंध तोड़ना चाहता है, तो तलाक दे। हिन्दा का नफ़क़ा ज़ैद पर तब तक वाजिब नहीं जब तक वह इस्लाम न लाए, क्योंकि वह अपने कर्म से ज़ैद पर हराम हो गई है और मुर्तद महिला के लिए कोई नफ़क़ा नहीं है। लेकिन मुर्तद होने से निकाह के बाद का मेहर (महर-ए-मदख़ूला) समाप्त नहीं होता, वह पूरी तरह से ज़ैद पर पहले की तरह वाजिब है। दोबारा निकाह में दोनों पक्षों की सहमति से नया मेहर तय होना या पहली संख्या का लिहाज़ करना ज़रूरी

नहीं है, बल्कि हिन्दा को सबसे कम मेहर पर मजबूर किया जा सकता है, जिस तरह निकाह पर मजबूर।

पृष्ठ २६३/६८८

اور کہتی ہے کہ مجھ سے غصہ میں روز مہر کو بول چال کے مطابق یہ الفاظ نکل گئے اس سے میری غرض نیت اسلام سے خارج ہونے کی نہ تھی نہ تحقیر شریعت، لہذا مفصلہ ذیل امور کا جواب برائے خدا و رسول بحوالہ کتب جلد مرحمت فرمائیں: (۱) کیا فقرہ مذکورہ بالا سے ہندہ مرتد ہوگئی اور اسلام سے خارج ہوگئی؟ (۲) اگر مرتد ہوگئی تو کیا نکاح فسخ ہو گیا اور ہندہ درجہ طلاق میں گئی؟ (۳) کیا اب زید بلا طلاق دئیے ہوئے ہندہ سے تعلق ترک کر سکتا ہے اور کوئی مواخذہ اس سے نہ ہوگا؟ (۴) کیا بحالت مرتد ہونے کے اور نکاح فسخ ہونے پر مہر سابقہ کلیتہً یا اس کا کوئی جز اس پر جواب الادا ہے یا بالکل سوخت؟ (۵) کیا ایسی صورت میں ہندہ بعد تجدیدِ ایمان بلا اجازت زید دوسرا نکاح کر سکتی ہے؟ (۶) کیا ہندہ کا نفقہ ایسی صورت میں زید پر واجب الادا ہے؟ (۷) اگر ہندہ نے تجدید ایمان کر لیا تو کیا زید و ہندہ باہمدگر تجدیدِ نکاح پر شرعاً مجبور ہیں اور اگر نہ کریں تو کوئی مواخذہ تو نہ ہوگا؟ (۸) صورت حال میں اگر زید تجدید نکاح پر تیار ہو تو مہر سابقہ تعداد پر معین ہوگا یا اب تعداد جدید فریقین کی رضا مندی پر معین ہوگی۔ (۹) صورت حال میں کیا ہندہ زید کی مرضی کے موافق کم مہر پر مجبور کی جائے گی اور تعداد مہر کم سے کم کیا ہو سکتی ہے؟

الجواب: ہندہ نے پہلا فقرہ کہا ہو خواہ دوسرا، ہر طرح اس کا ایمان جاتا رہا کہ اس نے شرع مطہر کی توہین کی مگر ہندہ نکاح سے نہ نکلی، نہ ہرگز اسے روا ہے کہ بعد اسلام کسی دوسرے سے نکاح کرلے لان الفتوی علی روایۃ النوادر لاجل فساد الزمان کما بینا فی فتاونا (کیونکہ فساد زمانہ کی وجہ سے فتوٰی نوادر کی روایت پر ہے جیسا کہ ہم نے اس کو اپنے فتاوٰی میں بیان کیا ہے۔ت) ہاں بعد اسلام زید سے تجدید نکاح پر مجبور کی جائے گی احتیاطا لاصل المذھب (احتیاط کے طور

پر واسطے اصل مذہب کے۔ت) زید اگر اس سے ترک تعلق چاہے تو طلاق دے، ہندہ کا نفقہ زید پر نہیں جب تک اسلام نہ لائے کہ وہ اپنے فعل سے زید پر حرام ہوگئی ہے ولا نفقة للمرتدة (مرتدہ کے لئے کوئی نفقہ نہیں۔ت) مگر مرتدہ ہونے سے مہر مدخولہ ساقط نہیں ہوتا تمام و کمال بدستور زید پر واجب ہے، تجدید نکاح میں مہر جدید برضائے فریقین معین ہونا یا پہلی تعداد کا لحاظ کچھ ضرور نہیں بلکہ ہندہ سب سے کم مہر پر مجبور کی جا سکتی ہے جس طرح نکاح پر مجبور

Fatawa Razawiyya, Volume 12

...will be done. It is stated in Dur al-Mukhtar: "She shall be compelled towards Islam and to renew the marriage as a deterrent for her, with a small dower such as one dinar, and upon this is the fatwa." (1) She will be compelled to accept Islam and, as a deterrent, will be compelled to renew the marriage in exchange for the minimum dower, for example, one dinar, and the fatwa is based on this. (T)

It is stated in Radd al-Muhtar: "It is for every judge to renew it with a small dower, even if it is one dinar, whether she agrees or not." (2) The judge has the authority to have the marriage renewed with this woman for the minimum dower, even if it is one dinar, whether the woman agrees to it or not. (T)

The minimum amount of dower (Mahr) is ten dirhams, which is slightly less than two rupees and thirteen annas here, i.e., 5/3 pies of 9/12. And Allah Almighty knows best.

Problem 98: From Nazr Muhammad Khan Sahib, Imam of Jamia Masjid Matlaji, Post Office Khas Lagana, District Rohtak. What do the scholars of religion say regarding this: if someone brings a minor Hindu girl from somewhere without the permission of her guardian (wali) and performs a marriage (nikah) without converting her to Islam, is it permissible or not? Similarly, if someone else performs a marriage for a minor Muslim girl without her guardian's permission, can the guardian then annul it or not? And what is the charge against the person who performed the ceremony? Please explain and be rewarded.

The Answer: The marriage of a minor cannot be enforced without the permission of the guardian (wali); the guardian has the power to annul it. As for a Hindu girl who has understanding (is discerning) such that she knows the difference between Islam and disbelief (kufr), if she chooses disbelief, she is herself a polytheist (mushrik). If she does not have understanding, she is a polytheist following her father. In any case, marriage with her is void (batil), even if it were with the guardian's permission. Yes, if she embraces faith while in a state of understanding, and after that, the marriage is performed with the permission of her Muslim guardian, otherwise by the permission of the Islamic ruler, then it is valid. And Allah Almighty knows best.

1. Dur al-Mukhtar, Chapter on Marriage of a Disbeliever, Mujtabai Press, Delhi, 1/210.
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Marriage of a Disbeliever, Dar al-Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/392.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

...की जाएगी। दुर्रे मुख्तार में है: "उसे इस्लाम लाने और निकाह को दोहराने (तजदीदे निकाह) पर मजबूर किया जाएगा ताकि वह बाज़ आए, थोड़े महर के साथ जैसे कि एक दीनार, और इसी पर फ़तवा है।" (1) उसे इस्लाम पर मजबूर किया जाएगा और बतौर सज़ा कम से कम महर मिसाल के तौर पर एक दीनार के बदले निकाह दोहराने पर मजबूर किया जाएगा और इसी पर फ़तवा है। (त)

रद्दुल मुहतार में है: "हर क़ाज़ी को यह अख्तियार है कि वह कम महर के साथ निकाह का नवीनीकरण करे, चाहे वह एक दीनार ही क्यों न हो, चाहे वह औरत राज़ी हो या न हो।" (2) यह क़ाज़ी को अख्तियार है कि वह इस औरत से कम से कम महर के बदले निकाह का नवीनीकरण कराए चाहे वह एक दीनार हो, चाहे वह औरत इस पर राज़ी हो या न हो। (त)

महर की कम से कम मात्रा दस दिरहम है जो यहाँ के दो रुपये तेरह आने से कुछ कम है यानी 5/3 पाई का 9/12। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

मस्अला 98: नज़र मुहम्मद खां साहिब, इमाम जामा मस्जिद मतलाजी, डाकखाना खास लगाना, ज़िला रोहतक की तरफ से। क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस बारे में कि कोई हिंदू की नाबालिग लड़की को बिना उसके वली (संरक्षक) की इजाज़त के कहीं से ले आए और बिना मुसलमान किए उसका निकाह पढ़ा दे, तो यह जायज़ है या नहीं? और इसी तरह एक नाबालिग मुस्लिम लड़की का निकाह उसके वली की इजाज़त के बिना कोई दूसरा पढ़ा दे, तो क्या वली उसे तोड़ सकता है या नहीं? और निकाह पढ़ाने वाले पर क्या इल्ज़ाम है? बयान करें सवाब पाएं।

जवाब: नाबालिग लड़की का निकाह वली की इजाज़त के बिना लागू नहीं हो सकता, वली उसे रद्द (फ़स्ख़) कर सकता है। जहाँ तक हिंदू लड़की की बात है, अगर वह समझदार है और इस्लाम और कुफ्र को जानती है, और वह कुफ्र चुनती है तो वह खुद मुशरिक (मूर्तिपूजक) है। और अगर वह नासमझ है, तो अपने बाप के अनुसरण में मुशरिक है। बहरहाल, उसके साथ निकाह बातिल (अमान्य) है चाहे वली की इजाज़त से ही क्यों न हो। हाँ, अगर वह समझदार होने की हालत में ईमान ले आए, उसके बाद उसके किसी मुस्लिम वली की इजाज़त से, वर्ना इस्लामी हाकिम की इजाज़त से निकाह किया जाए तो वह सही है। वल्लाहु तआला आलम।

1. दुर्रे मुख्तार, बाब निकाह अल-काफ़िर, मतबा मुजतबाई दिल्ली 1/210

2. रद्दुल मुहतार, बाब निकाह अल-काफ़िर, दारुल एहया अल-तुरास अल-अरबी, बेरूत 2/392

पेज 264 का 688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

کی جائے گی۔ در مختار میں ہے: تجبر علی الاسلام و علی تجدید النکاح زجرا لھا بمھر یسیر کدینار و علیہ الفتوٰی 1 - اسلام پر مجبور کی جائے گی اور بطور زجر کمترین مہر مثلاً ایک دینار کے بدلے تجدید نکاح پر مجبور کی جائے گی اور اسی پر فتوٰی ہے۔ (ت)

رد المحتار میں ہے: فلکل قاض ان یجددہ بمھر یسیر و لو بدینار رضیت ام لا 2 - یہ قاضی کو اختیار ہے کہ وہ اس عورت سے کمترین مہر کے عوض تجدید نکاح کرائے اگرچہ ایک دینار ہو چاہے وہ عورت اس پر راضی ہو یا نہ ہو۔ (ت)

مہر کی اقل مقدار دس درہم ہے کہ یہاں کے دو روپے تیرہ آنے سے کچھ کم ہے یعنی ۹/۱۲-۵/۳ پائی۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۹۸: از نذر محمد خاں صاحب امام جامع مسجد متلاجی صاحب ڈاکخانہ خاص لگانا ضلع رہتک۔ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس بارے میں کہ کسی ہندو کی لڑکی نابالغ بغیر اجازت والی کے کہیں سے لے آوے اور بغیر مسلمان کئے پڑھا دیوے جائز ہے یا کہ نہیں، اور اسی طرح مسلمان نابالغ لڑکی سے بغیر اجازت والی کے دوسرا کوئی نکاح پڑھا دیوے تو پھر والی اس کو توڑ سکتا ہے یا کہ نہیں اور پڑھانے والے پر کیا الزام ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: نابالغہ کا نکاح بے اجازت ولی نافذ نہیں ہوسکتا، ولی اس کو فسخ کرسکتا ہے، اور ہندو کی لڑکی سمجھ وال کہ اسلام و کفر جانتی ہے اگر کفر اختیار کرے تو خود مشرک ہے، اور سمجھ وال نہ ہو تو اپنے باپ کے اتباع سے مشرک ہے، بہر حال اس سے نکاح باطل ہے اگرچہ باجازت

ولی ہو، ہاں اگر سمجھ دار ہونے کی حالت میں ایمان لے آئے اس کے بعد باجازت اُس کے کسی ولی مسلم ورنہ اذنِ حاکم اسلام سے نکاح کیا جائے تو صحیح ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

1 درمختار باب نکاح الکافر مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۱۰ 2 رد المحتار باب نکاح الکافر داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۳۹۲

Fatawa Razawiya Volume 12

Question 99: From Lucknow, Mohalla Gadhiya Kamal Jamal, asked by Maulvi Abid Hussain Sahib Abbasi, 14 Muharram 1339 AH. What do the scholars of religion say in this matter: Is marriage with a Rafidhi woman permissible according to Sharia or not? Also, if someone marries a Rafidhi woman by deception, for example, Zaid does not know if the woman's religion is Sunni or Shia, and it was kept hidden from Zaid, and later it becomes known and the wedded woman does not repent, then what should be done in such a case? Explain and be rewarded.

Answer: Marriage with a Rafidhi woman is absolutely void, whether known at that time or not. In any case, it is obligatory for him to separate from her; she is purely a stranger. She has no eligibility for marriage at all until she accepts Islam. It is in Al-Alamgiri:

"And likewise, the marriage of an apostate woman with anyone is not permissible." And Allah, Glorified and Exalted be He, knows best. (T)

Question 100: From Benares, Kachi Bagh, asked by Maulvi Muhammad Ibrahim Sahib, night of 5 Dhu al-Qi'dah 1339 AH. What do the scholars of religion say: A Hindu of the Khatik caste divorced his woman according to their religion. Approximately four months later, the said woman became a Muslim by her own free will and consent, and in the same gathering where she became a Muslim, her marriage also took place. How is this marriage, and is there a need for Iddah (waiting period) in it? Explain and be rewarded.

Answer: In the inquired situation, the marriage became valid. For a disbeliever, there is no Iddah at all. It is in Radd al-Muhtar:

"There is no Iddah from a disbeliever according to the Imam [Abu Hanifa] at all, so the right of return (Ruj'at) for the husband is not established merely by his divorcing her. It was said that it is mandatory, but the first [opinion] is more correct, as in Al-Quhistani from Al-Kirmani, and the like is in Al-Inayah, and it is mentioned in Al-Fath that it is superior." According to Imam [Abu Hanifa], may Allah be pleased with him, there is no Iddah for a disbeliever at all. Simply by him divorcing that woman, the right of return for the husband will not be established. And it has been said that Iddah is mandatory, but the first opinion is more correct, as is in Al-Quhistani from Al-Kirmani, and the same is in Al-Inayah. It is mentioned in Al-Fath that this is better. (T)

And when he has already given the divorce, he has no relation with the woman left so that after the woman's acceptance of Islam, one should wait for his refusal of Islam.

1. Fatawa Hindiyya, Chapter on Prohibited Marriages due to Polytheism, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/282
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Marriage of a Disbeliever, Dar al-Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/386

फ़तावा रज़विया जिल्द द्वादश

मसला 99: लखनऊ मोहल्ला गढ़िया कमाल जमाल से, मौलवी आबिद हुसैन साहब अब्बासी द्वारा पूछा गया, 14 मुहर्रम 1339 हिजरी। दीन के उलमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि राफ़िज़िया (शिया) औरत से निकाह शरीअत की दृष्टि से जायज़ है या नाजायज़? साथ ही अगर धोखे से कोई व्यक्ति किसी राफ़िज़िया औरत से निकाह कर ले, उदाहरण के लिए ज़ैद को यह मालूम नहीं है कि औरत का मज़हब सुन्नी है या शिया, और ज़ैद से यह बात छिपाई भी गई हो, और बाद में पता चले और वह औरत तौबा (प्रायश्चित) भी न करे, तो ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए? बयान करें और पुण्य पाएँ।

जवाब: राफ़िज़िया से निकाह पूरी तरह बातिल (अमान्य) है, चाहे उस समय पता हो या न हो। बहरहाल, उस पर फ़र्ज़ है कि उससे अलग हो जाए; वह केवल एक अजनबी स्त्री है। जब तक वह इस्लाम स्वीकार न करे, तब तक उसमें निकाह की कोई योग्यता नहीं है। आलमगीरिया में है:

"और इसी प्रकार किसी के साथ भी मुर्तद (धर्मत्यागी) महिला का निकाह जायज़ नहीं है।" और अल्लाह सुब्हानहू व तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसला 100: बनारस कच्ची बाग से, मौलवी मोहम्मद इब्राहिम साहब द्वारा पूछा गया, रात 5 ज़ी अल-क़ादा 1339 हिजरी। दीन के उलमा क्या फ़रमाते हैं कि एक हिंदू खटीक जाति के व्यक्ति ने अपनी पत्नी को अपने मज़हब के अनुसार तलाक़ दे दी। लगभग चार महीने बाद, उक्त महिला अपनी इच्छा और सहमति से मुसलमान हो गई। जिस सभा में वह मुसलमान हुई, उसी सभा में उसका निकाह भी हो गया। यह निकाह कैसा हुआ और क्या इसमें इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) की आवश्यकता है या नहीं? बयान करें और पुण्य पाएँ।

जवाब: पूछी गई स्थिति में निकाह सही हो गया। काफ़िर (अविश्वासी) के लिए असल में कोई इद्दत नहीं है। रद्द अल-मुह्तार में है:

इमाम (अबू हनीफ़ा) रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के निकट काफ़िर के लिए असल में इद्दत नहीं है। केवल उस औरत को तलाक़ देने से शौहर के लिए रुजू (वापसी का अधिकार) साबित नहीं होगा। और कहा गया है कि इद्दत वाजिब है, लेकिन पहला मत ही अधिक सही है जैसा कि कस्तानी में किरमानी से उद्धृत है और इसी तरह इनाया में है। फ़तह में उल्लेख है कि यही बेहतर है। (त)

और जब वह तलाक़ दे चुका, तो उसका उस औरत से कोई सम्बन्ध नहीं रहा कि औरत के इस्लाम लाने के बाद उसके इस्लाम से इनकार करने का इंतज़ार किया जाए।

1 फ़तावा हिंदीया, बाब अल-मुहर्रमात बिश-शिर्क, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/282 2 रद्द अल-मुह्तार, बाब निकाह अल-काफ़िर, दार अल-इहया अल-तुरास अल-अरबी बैरुत, 2/386

पृष्ठ 265/688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

مسئلہ ۹۹: از لکھنؤ محلہ گڈھیا کمال جمال مسئولہ مولوی عابد حسین صاحب عباسی ۱۴ محرم ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ رافضیہ عورت سے نکاح شرعاً جائز ہے یا نا جائز، نیز اگر دھوکہ سے کوئی شخص کسی رافضیہ عورت سے نکاح کرے مثلاً زید کو یہ نہیں معلوم ہے کہ عورت کا مذہب سُنّی یا شیعہ، اور زید سے پوشیدہ بھی رکھا جائے اور بعد کو معلوم ہو جائے اور منکوحہ توبہ بھی نہ کرے تو ایسی میں کیا کرنا چاہئے۔ بینوا توجروا

الجواب: رافضیہ سے نکاح باطل محض ہے اس وقت معلوم ہو یا نہ ہو بہر حال اس پر فرض ہے کہ اُس سے جدا ہو جائے وہ محض اجنبیہ ہے اصلاً قابلیت نکاح نہیں رکھتی جب تک اسلام نہ لائے۔ عالمگیریہ میں ہے: وکذٰلك لا یجوز نکاح المرتدۃ مع احد - واللہ تعالٰی اعلم۔ اور اسی طرح مرتدہ کا نکاح کسی سے جائز نہیں۔ اور اللہ سبحنہ وتعالٰی خوب جانتا ہے۔(ت)

مسئلہ ۱۰۰: از بنارس کچی باغ مسئولہ مولوی محمد ابراہیم صاحب شب ۵ ذی القعدہ ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین کہ ایک ہندو قوم کھٹک نے اپنی عورت کو مذہب کے موافق طلاق دے دی، تخمیناً چار ماہ کے بعد عورت مذکورہ مسلمان ہوئی اپنی خوشی ورضامندی سے، اور جس جلسے میں مسلمان ہوئی اسی جلسہ میں نکاح بھی ہوا، نکاح کیسا ہوا اور اس میں عدّت کی ضرورت ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: صورت مستفسرہ میں نکاح صحیح ہوگیا، کافر کے لئے عدت تو اصلاً نہیں۔ ردالمحتار میں ہے: لا عدۃ من الکافر عند الامام اصلاً فلا تثبت الرجعۃ للزوج بمجرد طلاقھا وقیل تجب والاصح الاول کما فی القھستانی عن الکرمانی ومثلہ فی العنایۃ وذکر فی الفتح انہ اولی۔ امام صاحب رضی اللہ

تعالیٰ عنہ کے نزدیک کافر کے لئے اصلاً عدت نہیں- محض اُس عورت طلاق دینے سے شوہر کے لئے رجوع ثابت نہ ہوگا، اور کہا گیا ہے کہ عدّت واجب ہے اور اصح قول اوّل ہے جیسا کہ قہستانی میں کرمانی سے ہے اور اسی کی مثل عنایہ میں ہے، فتح میں مذکور ہے کہ یہی اولی ہے- (ت)

اور جب وہ طلاق دے چکا اسے عورت سے کچھ علاقہ نہ رہا کہ بعد اسلام زن اُس کے اسلامی انکار کا انتظار

1 فتاوٰی ہندیہ باب المحرمات بالشرک نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۲۸۲ 2 رد المحتار باب نکاح الکافر داراحیاء التراث العربی بیروت ۳۸۶/۲

It should be done and here, due to the absence of an Islamic government, her failure to embrace Islam until three menstrual periods have passed should be established as a substitute for refusal, and a decree of separation should be given. In 'Durr-ul-Mukhtar' and 'Radd-ul-Muhtar', it is stated:

If one of the Magian spouses becomes a Muslim in 'Dar-ul-Harb' (abode of war) or a place annexed to it, the wife will not be separated until she has three menstrual periods before the other embraces Islam. This is to establish the condition of separation (i.e., the passing of this period stands in place of the cause, which is the refusal [to embrace Islam], because refusal is only known by presenting [Islam to someone]. Presentation is absent due to the lack of jurisdiction [in 'Dar-ul-Harb'], yet there is a need for separation because the marriage of a polytheist and a Muslim cannot remain valid. Establishing a condition as a substitute when the cause is unattainable is permissible. Thus, when this period passes, its passing becomes equivalent to separation by a judge. [Bada'i]) And this is not an 'Iddah' (waiting period) because an unconsummated wife is also included in this ruling (whereas there is no 'Iddah' for an unconsummated wife). (T)

If one of the Magian spouses becomes a Muslim in 'Dar-ul-Harb' or a place annexed to it, the wife will not be excluded from the marriage until she has three menstrual periods before the other accepts Islam. The condition for separation, i.e., the passing of this period, stands in place of the reason for separation, which is the refusal to accept Islam, as the refusal is only known through the presentation of Islam. In 'Dar-ul-Harb', due to the lack of jurisdiction, the presentation of Islam is absent, while separation is necessary because the marriage of a polytheist and a Muslim cannot persist. It is permissible to place the condition as a substitute when the cause is unattainable. Therefore, when this period passes, its passing becomes equivalent to separation by a judge (Bada'i). And this period is not 'Iddah' because an unconsummated woman is also included in this ruling (whereas there is no 'Iddah' for an unconsummated woman). (T)

Here, separation has already occurred from the divorce itself and there is no 'Iddah', so there is no need to wait at all. Even if the woman becomes a Muslim immediately after the divorce, she can marry immediately. In 'Hidayah', it is stated:

According to Abu Hanifa, it is the 'Iddah', which is the effect of the previous marriage, made obligatory to manifest its significance. There is no significance for the property of a 'Harbi' (resident of Dar-ul-Harb), and for this reason, it is not obligatory for a woman who has been captured. And Allah Almighty knows best.

The argument of Imam-e-Azam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him) is that 'Iddah' is the effect of the previous marriage, which became obligatory for the manifestation of its respect. There is no respect for the property of a 'Harbi', and for this reason, 'Iddah' is not obligatory for that woman who has been brought after being captured. And Allah Almighty knows best. (T)

1 Durr-ul-Mukhtar, Chapter on Marriage of the Infidel, Mujtabai Press Delhi, 1/9, 208; Radd-ul-Muhtar, Chapter on Marriage of the Infidel, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 390/2 2 Hidayah, Chapter on Marriage of the People of Polytheism, Al-Maktaba al-Arabiyya Karachi, 328/2

किया जाए और यहाँ इस्लामी हुकूमत न होने की वजह से तीन हैज़ (मासिक धर्म) गुज़रने तक उसके इस्लाम न लाने को इनकार का कायम मकाम (विकल्प) मानकर जुदाई का हुक्म दिया जाए। 'दुर्रे-मुख्तार' और 'रद्दुल-मुह्तार' में है:

अगर मजूसी (पारसी) दंपत्ति में से कोई एक दारुल-हर्ब में या ऐसी जगह मुसलमान हो जाए जो दारुल-हर्ब के साथ जुड़ी है, तो बीवी निकाह से बाहर नहीं होगी जब तक कि दूसरे के इस्लाम कबूल करने से पहले उसे तीन हैज़ न आ जाएँ। जुदाई की शर्त यानी इस मुद्दत के गुज़रने को जुदाई के सबब यानी इस्लाम के इनकार का पता तो इस्लाम पेश करने से चलेगा और दारुल-हर्ब में अधिकार क्षेत्र न होने की वजह से इस्लाम पेश करना नामुमकिन है, जबकि जुदाई की ज़रूरत है क्योंकि मुशरिक और मुस्लिम का निकाह बरकरार नहीं रह सकता और कारण (इल्लत) के नामुमकिन होने के वक्त शर्त को उसके कायम मकाम रखना जायज़ है। लिहाज़ा, जब यह मुद्दत गुज़र जाए तो इसका गुज़रना काज़ी के जुदाई के बराबर हो जाएगा (बदाइ-ए-श)। और यह इद्दत नहीं है क्योंकि गैर-मदखूला (जिससे शारीरिक संबंध न हुआ हो) औरत भी इस हुक्म में शामिल है (हालांकि गैर-मदखूला पर इद्दत नहीं होती)। (त)

अगर मजूसी पति-पत्नी में से कोई एक दारुल-हर्ब में या ऐसी जगह मुसलमान हो जाए जो दारुल-हर्ब के साथ जुड़ी है, तो पत्नी निकाह से बाहर नहीं होगी जब तक कि दूसरे के इस्लाम स्वीकार करने से पहले उसे तीन मासिक धर्म न आ जाएँ। पृथक्करण की शर्त, यानी इस अवधि का बीतना, पृथक्करण के कारण, यानी इस्लाम के इनकार के स्थान पर है, क्योंकि इनकार का पता केवल इस्लाम की पेशकश के माध्यम से चलता है। दारुल-हर्ब में अधिकार क्षेत्र की कमी के कारण, इस्लाम की पेशकश अनुपस्थित है, जबकि पृथक्करण आवश्यक है क्योंकि एक बहुदेववादी और एक मुस्लिम का निकाह कायम नहीं रह सकता। कारण अप्राप्य होने पर शर्त को विकल्प के रूप में रखना स्वीकार्य है। इसलिए, जब यह अवधि बीत जाती है, तो इसका बीतना काज़ी द्वारा पृथक्करण के समकक्ष हो जाता है (बदाइ-ए-श)। और यह अवधि इद्दत नहीं है क्योंकि एक ऐसी महिला जिसका निकाह मुकम्मल नहीं हुआ है, वह भी इस नियम में शामिल है (जबकि ऐसी महिला पर कोई इद्दत नहीं है)। (त)

यहाँ तलाक से जुदाई पहले ही हो चुकी और इद्दत नहीं है, लिहाज़ा इंतज़ार की बिलकुल ज़रूरत नहीं। औरत अगर तलाक होते ही फौरन मुसलमान हो जाए, तो फौरन निकाह कर सकती है। 'हिदाया' में है:

अबू हनीफ़ा के अनुसार, यह इद्दत है, जो पिछले निकाह का प्रभाव है, जो इसके महत्व को प्रकट करने के लिए अनिवार्य किया गया था। 'हर्बी' (दारुल-हर्ब का निवासी) की संपत्ति के लिए कोई महत्व नहीं है, और इस कारण से, उस महिला के लिए यह अनिवार्य नहीं है जिसे बंदी बना लिया गया है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

इमाम-ए-आज़म अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की दलील यह है कि इद्दत पिछले निकाह का असर है जो उसके सम्मान के इज़हार के लिए वाजिब हुई। और हर्बी की मल्कियत का कोई सम्मान नहीं है और इसीलिए उस औरत पर इद्दत वाजिब नहीं जो गिरफ्तार करके लाई गई हो। और अल्लाह तआला खूब जानता है। (त)

1 दुर्रे-मुख्तार, बाब निकाह अल-काफिर, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/9, 208; रद्दुल-मुह्तार, बाब निकाह अल-काफिर, दार इह्या अल-तुरास अल-अरबी बेरुत, 390/2 2 हिदाया, बाब निकाह अहल-ए-शिरक, अल-मकतबा अल-अरबिया कराची, 328/2

کیا جائے اور یہاں بوجہ عدم حکومت اسلام تین حیض گزرنے تک اس کے اسلام نہ لانے کو قائم مقام انکار ٹھہرا کر حکم فرقت دیا جائے، درمختار و ردالمختار میں ہے :

لواسلم احد المجوسیین فی دار الحرب وملحق لھا لم تبن حتی تحیض ثلاثا قبل اسلام الاخر اقامۃ لشرط الفرقۃ (وھو مضی ھذہ المدۃ ش مقام السبب وھو الاباء لان الاباء لا یعرف الا بالعرض وقد عدم العرض لانعدام الولایۃ ومست الحاجۃ الی التفریق لان المشرك لا یصلح للمسلم واقامۃ الشرط عند تعذر العلۃ جائز، فاذا مضت ھذہ المدۃ صار مضیھا بمنزلۃ تفریق القاضی بدائع ش) ولیست بعدۃ لدخول غیر المدخول بھا -

اگر مجوسی زوجین میں سے کوئی ایک دار الحرب میں یا ایسی جگہ مسلمان ہو جائے جو دارالحرب کے ساتھ ملحق ہے تو بیوی نکاح سے خارج نہ ہو گی جب کہ دوسرے کے اسلام قبول کرنے سے پہلے اس کو تین حیض نہ آجائیں شرط فرقت یعنی اس مدت کے گزرنے کو سبب فرقت یعنی انکار اسلام کا پتا تو عرض اسلام (اسلام پیش کرنے) سے چلے گا اور دارالحرب میں عدم ولایت کی وجہ سے عرض اسلام معدوم ہے حالانکہ تفریق کی ضرورت ہے کیونکہ مشرک و مسلم کا نکاح برقرار نہیں رہ سکتا اور تعذر علت کے وقت شرط کو اس کے قائم مقام رکھنا جائز ہے، چنانچہ جب یہ مدت گزر جائے تو اس کا گزرنا تفریق قاضی کے قائم مقام ہو جائے گا (بدائع ش) اور یہ مدت عدت نہیں کیونکہ غیر مدخولہ عورت بھی اس حکم میں داخل ہے (حالانکہ غیر مدخولہ پر عدت نہیں)۔ (ت)

یہاں نفس طلاق سے فرقت پہلے ہی ہو چکی اور عدت ہے نہیں لہذا انتظار کی اصلاً حاجت نہیں، عورت اگر طلاق ہوتے ہی فوراً مسلمان ہو جائے مسلمان ہوتے ہیں فوراً نکاح کر سکتی ہے۔ ہدایہ میں ہے :

لابی حنیفة انها ای العده اثر النکاح المتقدم وجبت اظهار ا لخطره ولا خطر لملك الحربی ولهذا لا تجب علی المسبیة 2- واللہ تعالی اعلم۔

امام اعظم ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی دلیل یہ ہے کہ عدت پہلے نکاح کا اثر ہے جو اس کے احترام کے اظہار کے لئے واجب ہوئی اور حربی کی ملک کا کوئی احترام نہیں اور اسی لئے اس عورت پر عدت واجب نہیں جو گرفتار کر کے لائی گئی ہو۔ اور اللہ تعالیٰ خوب جانتا ہے۔ (ت)

1 درمختار باب نکاح الکافر مطبع مجتبائی دہلی ۱/۹۔ ۲۰۸، ردالمحتار باب نکاح الکافر دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۳۹۰ 2 ہدایہ باب نکاح اہل الشرک المکتبۃ العربیہ، کراچی ۲/۳۲۸

Fatawa Rizvia Volume 12

Chapter on Social Conduct (Description of mutual conduct between spouses)

Problem 101 to 102: From Jamia Masjid Mirampur, Hooghly District, sent by Siraj-ul-Haq, Imam of the said Jamia Masjid, and Sheikh Baddu Darbani Chitkal, 27th Rabi al-Akhir 1336 AH.

[Question Box] (Arabic): What is your opinion—may Allah have mercy on you—on this matter: Is it permissible for Zaid, during intimacy, to kiss his wife's cheek and breast, to suck her breast, or to put her breast in his mouth for desire and pleasure, whether she is lactating or not, and whether she is near puberty or an adult? Please explain the ruling for each scenario with evidence and details. (Urdu): What is your decree—may Allah Almighty have mercy on you—regarding this matter: Is it permissible for Zaid, at the time of intimacy, to kiss his wife's cheek and breast, to suck the breast, or to put the breast in his mouth for the sake of desire and pleasure? Whether his wife is lactating or not, whether she is near puberty or an adult, please state the answer for each part with evidence and details. (T)

[Answer Box] Answer (Arabic): The Answer: It is permissible for a man to enjoy his wife however... Answer (Urdu): The Answer: It is permissible for a man to [enjoy] his wife from her head...

Page 267 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

बाब-उल-मुआशरत (ज़ौजैन के बाहमी बर्ताव का बयान)

मसला 101 ता 102: जामे मस्जिद मीरामपुर जिला हुगली से, मुरसला सिराज-उल-हक़ साहब इमाम जामे मज़कूर ओ शैख़ बद्दू दरबान चटकल, 27 रबी-उल-आख़िर 1336 हिजरी।

[प्रश्न बॉक्स] (अरबी): इस मसले में आपकी क्या राय है—अल्लाह आप पर रहम फरमाए—कि क्या ज़ैद के लिए मिलाप के वक्त अपनी निकाह की हुई औरत के गाल और स्तन को चूमना और उसके स्तन को चूसना या वासना और आनंद के लिए उसके स्तन को अपने मुँह में डालना जायज़ है, चाहे वह दूध वाली हो या न हो, और चाहे वह बालिग होने के करीब हो या बालिग हो? तो इसके हर पहलू का हुक्म दलीलों और तफ़्सीलात के साथ बयान फरमाएं। (उर्दू): क्या इरशाद है आपका—अल्लाह तआला आप पर रहम फरमाए—इस मसले के बारे में कि क्या ज़ैद के लिए बवक़्त-ए-सोहबत अपनी बीवी के रुख़सार और पिस्तान का बोसा लेना या पिस्तान को मुँह में दबाना या शहवत ओ तलज्जुज़ के तौर पर पिस्तान को मुँह में दाख़िल करना जायज़ है? चाहे उसकी बीवी दूध वाली हो या न हो, चाहे क़रीबुल-बुलूग हो या ना-बालिग़, हर शक़ का जवाब दलाईल ओ तफ़्सीलात के साथ बयान फरमाएं। (त)

[उत्तर बॉक्स] अल-जवाब (अरबी): उत्तर: मर्द के लिए जायज़ है कि अपनी बीवी से फायदा उठाए जैसे भी... अल-जवाब (उर्दू): उत्तर: मर्द के लिए जायज़ है कि अपनी बीवी के सर से ले...

पेज 267/688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

باب المعاشرہ (زوجین کے باہمی برتاؤ کا بیان)

مسئلہ ۱۰۱تا ۱۰۲: از مسجد جامع میرام پور ضلع ہو گلی مرسلہ سراج الحق صاحب امام جامع مذکور و شیخ بدّو دربان چٹکل ۲۷ ربیع الآخر ۱۳۳۶ھ

[سوال کا خانہ] عربی: ما قولکم رحمکم اللہ فی ھذہ المسألۃ ھل یجوز لزید عند الاختلاط ان یقبل خد منکوحۃ و ثدیھا وان یمص ثدیھا او ان یدخل ثدیھا فی فمہ شھوۃ و تلذذا سواء کانت ذات لبن ام لا، وسواء کانت مراھقۃ ام بالغۃ، فبینوا حکم کل شق منھا بالادلۃ والتفاصیل۔ اردو: کیا ارشاد ہے آپ کا اللہ تعالٰی آپ پر رحم فرمائے اس مسئلہ کے بارے میں کہ کیا زید کے لئے بوقتِ صحبت اپنی بیوی کے رخسار اور پستان کا بوسہ لینا یا پستان کو منہ میں دبانا یا شہوت و تلذذ کے طور پر پستان کو منہ میں داخل کرنا جائز ہے؟ چاہے اس کی بیوی دُودھ والی ہو یا نہ ہو، چاہے قریب البلوغ ہو یا نا بالغہ ، ہر شق کا جواب دلائل و تفصیلات کے ساتھ بیان فرمائیں۔ (ت)

[جواب کا خانہ] الجواب: یجوز للرجل التمتع بعرسہ کیف الجواب: مرد کے لئے جائز ہے کہ اپنی بیوی کے سر سے لے

صفحہ ۲۶۷ از ۶۸۸

Fatawa-e-Razvia, Volume 12

(Arabic Text/Urdu Translation Summary): He may enjoy her from head to foot as he wishes, except for what Allah Almighty has forbidden. None of the matters mentioned in the question have been forbidden. Kissing is a Sunnah and a recommended act, and if done with a good intention, it is a cause for reward. As for taking the breast into the mouth, the ruling is the same if the wife is not lactating. If she is lactating and the man ensures that not a drop of milk enters his throat, then there is no harm in it. However, if he intentionally drinks any of it, it is forbidden (Haram). If she has a lot of milk and there is a fear that by taking the breast into the mouth, milk will enter the throat, then it is disliked (Makruh) in this situation. The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "One who grazes (animals) around a sanctuary is likely to let them stray into it." And Allah, Glory be to Him and the Most High, knows best.

Second Question: How long is it permissible for a man to stay on a journey while being away from his wife?

Answer: If the journey is due to necessity, its duration will be according to that necessity, and no specific limit is fixed for it. Research of the Holy Presence...

Footnote: 1 Sharh al-Sunnah by Imam al-Baghawi, Chapter on Sleeping with a Menstruating Woman, Al-Maktab al-Islami, Beirut, 2/130.

Page 268 of 688

फ़तावा-ए-रज़विया, खंड 12

(अरबी पाठ/उर्दू अनुवाद सारांश): वह सिर से पैर तक जैसे चाहे आनंद ले सकता है, सिवाय उसके जिसे अल्लाह तआला ने मना किया है। प्रश्न में उल्लिखित बातों में से किसी को मना नहीं किया गया है। चूमना सुन्नत और मुस्तहब (पसंदीदा) है और अगर नीयत अच्छी हो तो यह सवाब (पुण्य) का कारण है। जहाँ तक स्तन को मुँह में लेने की बात है, तो इसका हुक्म भी वैसा ही है जब पत्नी दूध वाली न हो। और अगर वह दूध वाली है और पुरुष इस बात का ध्यान रखे कि दूध की एक भी बूंद उसके गले में न जाए, तो इसमें कोई हर्ज नहीं है। और अगर उसने जानबूझकर उसमें से कुछ पी लिया तो यह पीना हराम है। और अगर वह अधिक दूध वाली है और उसे डर है कि स्तन मुँह में लेने से दूध गले में चला जाएगा, तो इस स्थिति में स्तन को मुँह में लेना मकरूह (नापसंद) है। हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "जो चरागाह के आसपास (जानवर) चराता है, तो निकट है कि वह (जानवर) चरागाह में जा पड़े।" और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है।

दूसरा सवाल: पत्नी को छोड़कर सफ़र पर जाने वाले के लिए कितनी अवधि तक सफ़र में रहना जायज़ है?

जवाब: सफ़र अगर ज़रूरत की वजह से हो तो ज़रूरत के अनुसार होगा, इसकी कोई सीमा निश्चित नहीं है। हुज़ूर अकदस की तहक़ीक़...

फुटनोट: 1 शरह अल-सुन्नाह, इमाम अल-बग़वी, माहवारी वाली महिला के साथ लेटने का अध्याय, अल-मकतब अल-इस्लामी, बेरूत, 2/130।

पेज 268 of 688

ماشاء من رأسها الی قدمها الامانہی اللہ تعالٰی عنہ،وکل ماذکر في السؤال لانہی عنہ۔امّاالتقبیل فمسنون مستحب یؤجر علیہ ان کان بنیة صالحة واما مص ثدیها فکذلك ان لم تکن ذات لبن،وان کانت واحترس من دخول اللبن حلقہ فلابأس بہ،وان شرب شیئاً منہ قصداً فھو حرام وان کانت غزیرة اللبن وخشی ان لومص ثدیها یدخل اللبن في حلقہ فالمص مکروہ قال صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ومن رتع حول الحمٰی اوشك ان یقع فیہ واللہ سبحنہ وتعالی اعلم۔ سر سے پاؤں تک جیسے چاہے لطف اندوز ہو سوائے اس کے جس سے اللہ تعالیٰ نے منع فرمایا ہے، اور سوال مذکور امور میں سے کسی سے منع نہیں کیا گیا۔ بوسہ تو مسنون و مستحب ہے اور اگر نیت صالحہ ہو تو باعث اجر و ثواب ہے۔ رہا پستان کو منہ میں دبانا، تو اس کا حکم بھی ایسا ہی ہے جب کہ بیوی دودھ والی نہ ہو اور اگر وہ دودھ والی ہے اور مرد اس بات کا لحاظ رکھے کہ دودھ کا کوئی قطرہ اس کے حلق میں داخل نہ ہونے پائے تو بھی حرج نہیں، اور اگر اُس دودھ میں سے جان بوجھ کر کچھ پیا تو یہ پینا حرام ہے۔ اور اگر وہ زیادہ دودھ والی ہے اور اسے ڈر ہے کہ پستان منہ میں لے گا تو دودھ حلق میں داخل ہوگا تو اس صورت میں پستان کو منہ میں لینا مکروہ ہے۔ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جو چراگاہ کے ارد گرد (جانور) چرائے تو قریب ہے کہ وہ (جانور) چراگاہ میں جا پڑے۔ اور اللہ سبحنہ وتعالیٰ خوب جانتا ہے۔

السوال الثانی: وکم مدة یجوز لہ السفر حال کونہ مجرداً عنھا۔ دوسرا سوال: بیوی کو چھوڑ کر سفر پر جانے والے کے لئے کتنی مدت تک سفر میں رہنا جائز ہے؟

الجواب: السفر ان کان بضرورة تقدر بقدرها ولا یعین له حد وقدامر الجواب: سفر اگر ضرورت کی وجہ سے ہو تو بقدرِ ضرورت ہوگا اس کی کوئی حد مقرر نہیں۔ تحقیق حضور اقدس

1 شرح السنة للامام البغوی باب مضاجعة الحائض الملك الاسلامی بیروت ۱۳۰/۲

Fatawa Razawiyyah Volume 12

| (The Prophet) صلی اللہ تعالی علیہ وسلم (ordered) to hasten the return after fulfilling the need. Travel is a piece of torment, it prevents one of you from his food, drink, and sleep. So when one of you has completed his purpose, let him hasten back to his family. Or as he صلی اللہ تعالی علیہ وسلم said. However, if it is without necessity and he does not take his wife with him, he should not stay for more than four months. The Commander of the Faithful, Umar al-Faruq (may Allah be pleased with him), ordered this. The story is mentioned in the Hadith. And Allah (Glorified and Exalted) knows best. (T) | صلی اللہ تعالی علیہ وسلم has commanded a quick return after one's needs are fulfilled. Travel is a part of torment; it deprives one of you of food, drink, and sleep. Therefore, when any of you has completed his purpose, let him hasten back home, or as the Messenger of Allah صلی اللہ تعالی علیہ وسلم said. But if the journey is without necessity and he does not take his wife with him, he should not stay on the journey for more than four months. The Commander of the Faithful Umar Faruq (may Allah be pleased with him) ordered this, the story is mentioned in the Hadith. And Allah (Glorified and Exalted) knows best. (T) |

Issue 103: From Hyderabad Deccan, via Postmaster, sent by Hussam-ud-Din Sahib, 28 Rabi al-Akhir 1336 AH. Amr is the maternal uncle of Zaid, and their ancient homeland is Amethi, Awadh region. Their employment relations were established in Hyderabad. Zaid is an original resident of Kakori, district Lucknow, and he took up English service in the Central Provinces. Due to previous acquaintance and kinship, Zaid's marriage to Amr's daughter took place in Hyderabad, and no condition of any kind regarding dower, travel, etc., was made. After the marriage, Amr sent his daughter with Zaid to various districts of the Central Provinces at his place of employment several times, until three children were born to Hind, the daughter of Amr, from Zaid. Six years after the marriage, Musammat Hind and the father of Hind himself raised the objection that they do not agree to travel far to Zaid's place of employment because their statement is that Zaid does not have such a right according to Sharia to take Hind with him on travel. The demand for dower is not the cause for refusing travel. The matter to be enquired is whether in such a case Zaid has a Sharia right to take his wife Hind to his place of employment and residence or not, if Hind refuses to go based on the excuse of harm and suffering and proves this excuse.

---

1 Sahih Bukhari, Kitab al-At'imah, Chapter: Mentioning Food, 2/816; Sahih Bukhari, Kitab al-Jihad, Chapter: Speed in Travel, Chapter: Mentioning Food, 1/621.

| सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़रूरत पूरी होने के बाद जल्दी वापसी का हुक्म दिया है और सफ़र अज़ाब (कष्ट) का एक टुकड़ा है जो तुम में से किसी को उसके खाने, पीने और सोने से रोक देता है। लिहाज़ा जब तुम में से कोई अपनी ज़रूरत पूरी कर ले, तो वह जल्दी अपने परिवार के पास लौटे। या जैसा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया। लेकिन अगर सफ़र बिना किसी ज़रूरत के हो और वह अपनी पत्नी को साथ न ले जाए, तो उसे चार महीने से ज़्यादा सफ़र में नहीं ठहरना चाहिए। अमीरुल मोमिनीन उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने यही हुक्म दिया था, और हदीस में इसका ज़िक्र है। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है। (त) | सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़रूरत पूरी होने के बाद जल्दी वापसी का हुक्म दिया है और सफ़र अज़ाब का टुकड़ा है जो तुम में से किसी एक को खाने-पीने और सोने से रोक देता है। लिहाज़ा जब तुम में से कोई अपनी ज़रूरत पूरी कर ले तो जल्दी घर लौटे, या जैसा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया। लेकिन अगर सफ़र बिना ज़रूरत हो और बीवी को साथ न लेकर जाए तो चार माह से ज़्यादा सफ़र में न ठहरे। अमीरुल मोमिनीन उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने इसी का हुक्म फ़रमाया, हदीस में क़िस्सा मज़कूर है। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला खूब जानता है। (त) |

मसला 103: हैदराबाद दकन से, ज़रिए पोस्टमास्टर, प्रेषक हुसामुद्दीन साहब, 28 रबी-उल-आखिर 1336 हिजरी। अम्र, ज़ैद के मामू हैं और उनका पुश्तैनी वतन अमेठी, अवध क्षेत्र है। उनके रोज़गार के संबंध हैदराबाद में बने। ज़ैद मूलतः काकोरी, ज़िला लखनऊ का निवासी है और उसने मध्य प्रान्त में अंग्रेज़ी नौकरी इख्तियार की। पूर्व परिचय और रिश्तेदारी के कारण ज़ैद का निकाह अम्र की बेटी के साथ हैदराबाद में हुआ और मेहर, आने-जाने आदि के संबंध में किसी भी प्रकार की कोई शर्त नहीं रखी गई। निकाह के बाद अम्र ने अपनी बेटी को ज़ैद के साथ कई बार मध्य प्रान्त के विभिन्न ज़िलों में भेजा जहाँ ज़ैद की नौकरी थी, यहाँ तक कि अम्र की बेटी हिन्द से ज़ैद की तीन औलादें हुईं। निकाह के छह साल बाद मुस्म्मात हिन्द और खुद हिन्द के पिता ने यह उज्र (बहाना/कारण) पेश किया कि उन्हें ज़ैद के साथ उसकी नौकरी की जगह पर दूर-दराज़ के सफ़र पर जाना मंज़ूर नहीं है, क्योंकि उनका कहना है कि शरीयत के अनुसार ज़ैद को ऐसा कोई हक़ नहीं है कि वह हिन्द को सफ़र में अपने साथ ले जाए। मेहर की माँग सफ़र से इनकार का कारण नहीं है। पूछने योग्य बात यह है कि क्या ऐसी स्थिति में ज़ैद को अपनी पत्नी हिन्द को अपनी नौकरी और रिहाइश की जगह पर ले जाने

का शरीय हक़ है या नहीं, अगर हिन्द तकलीफ और परेशानी के उज़्र पर जाने से इनकार करे और इस उज़्र को साबित कर दे।

---

1 सही बुखारी, किताबुल अत'इमा, बाब ज़िक्रुत्ता'आम, 2/816; सही बुखारी, किताबुल जिहाद, बाब अस्सुर'अतु फिस-सैर, बाब ज़िक्रुत्ता'आम, 1/621।

فتاوٰی رضویہ جلد دو ازدہم

| صلّی اللہ تعالی علیہ وسلم بتعجیل القفول بعد قضاء الحاجۃ والسفر قطعۃ من العذاب یمنع احدکم طعامہ وشرابہ ونومہ فاذا قضی احدکم نہبہ فلیعجل الی اھلہ ۱ او کما قال صلی اللہ تعالی علیہ وسلم اما اذا کان بلا ضرورۃ ولم یستصحبھا معہ فلا یسکن اکثر من اربعۃ اشھر بذلك امر امیر المؤمنین عمر الفاروق رضی اللہ تعالی عنہ وفی الحدیث قصۃ - واللہ تعالی اعلم۔ | صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ضرورت پوری ہو جانے کے بعد جلدی واپسی کا حکم دیا ہے اور سفر عذاب کا ٹکڑا ہے جو تم میں سے کسی ایک کو اس کھانے پینے اور سونے سے روک دیتا ہے۔ پس جب تم میں سے کوئی اپنی حاجت پوری کرلے تو جلدی گھر لوٹے، یا جیسا کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا۔ لیکن اگر سفر بلا ضرورت ہو اور بیوی کو ساتھ نہ لے کر جائے تو چار ماہ سے زیادہ سفر میں نہ ٹھہرے ۔ امیر المومنین عمر فاروق رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اسی کا حکم فرمایا، حدیث میں قصہ مذکور ہے۔ اور اللہ سبحانہ و تعالیٰ خوب جانتا ہے۔ (ت) |

مسئلہ ۱۰۳: از حیدر آباد کن معرفت پوسٹ ماسٹر مرسلہ حسام الدین صاحب ۲۸ ربیع الآخر ۱۳۳۶ھ عمرو زید کے خالو ہوتے ہیں اور اُن کا وطن قدیم امیٹھی خطہ اودھ ہے، اُن کے تعلقات ملازمت حیدر آباد میں ہوئے، زید اصل باشندہ کاکوری ضلع لکھنو کا ہے اور اس نے خط متوسط میں ملازمت انگریزی اختیار کی۔ تعارف و قرابت سابقہ کی وجہ سے زید کا نکاح عمرو کی دختر کے ساتھ حیدر آباد میں ہوا اور کوئی شرط کسی قسم کی مہر و آمد و رفت وغیرہ کی نسبت نہیں ہوئی، بعد نکاح عمرو نے اپنی دختر کو زید کے ساتھ متعدد مرتبہ زید کی جائے ملازمت مختلف اضلاع خطہ متوسط پر اس کے ہمراہ روانہ کردیا حتیٰ کہ زید کی صلب سے ہندہ دختر عمرو کے تین اولادیں ہوئیں، نکاح کے چھ سال بعد مسمّاۃ ہندہ اور خود والد ہندہ کو یہ عذر ہوا کہ زید کے

ساتھ سفر دُور دراز جائے ملازمت زید پر جانا منظور نہیں کیونکہ اُن کا بیان ہے کہ زید کو شرعاً ایسا حق نہیں کہ وہ ہندہ کو سفر میں اپنے ساتھ لے جائے مطالبہ مہر باعثِ انکارِ سفر نہیں قابل دریافت یہ امر ہے کہ ایسی حالت میں زید کو اپنی زوجہ ہندہ کو اپنی جائے ملازمت و سکونت پر لے جانے کا شرعاً حق ہے کہ نہیں ، اگر ہندہ عذرِ اذیت و تکلیف دہی پر جانے سے انکار کرے اور اس عذر کو ثابت

---

۱ صحیح بخاری کتاب الاطعمہ باب ذکر الطعام ۸۱۶/۲، صحیح بخاری کتاب الجہاد باب السرعة فی السیر باب ذکر الطعام ۶۲۱/۱

Fatawa Ridawiyya Volume 22

...cannot do it, or if the proof presented is considered, is Zaid authorized to take Hindah with him after providing a reliable guarantee, or not? Please state and be rewarded.

The Answer: The original ruling is that a man should keep his wife with him wherever he resides. Allah Almighty says: "Lodge them [in a part] of where you dwell according to your means"(1) - Keep women where you yourself stay. (T) And along with this is the command not to harm the woman or cause her distress. Allah Almighty says: "And do not harm them in order to oppress them"(2) - Do not harm them to make things difficult for them. (T) While the prompt dower (Mahr Mu'ajjal) was not present, meaning it was not settled to be given before the departure to the husband's house, the woman has no authority to withhold herself, nor can her father separate her from her husband. Yes, if harm and unjustified Shari'a-based hurt from the husband's side is sufficiently proven, then arrangements should be made. Although, from the filing of a guarantee through the court, it apparently seems that Zaid will present a reliable guarantor who can prevent Zaid from causing harm, and Amr and Hindah may rely on him. Or it means that a guarantor will be provided so that if Zaid causes harm, he will pay a certain amount of monetary fine, and if he doesn't, the guarantor will pay. If the first meaning is intended, it is correct and acceptable. If the second meaning is intended, it is Shari'a-wise illegitimate and void; there can be no monetary fine because it is abrogated (Mansookh), and acting upon the abrogated is Haram (for it is abrogated and acting on the abrogated is forbidden. T). And Allah Almighty knows best.

Problem 104: From Qadri Ganj, Birbhum District, Bengal province, sent by Zahoor-ul-Hasan Sahib, 23 Jumada al-Ula 1336 AH. Is it permissible or not for the husband to look at his wife's private parts during intercourse to achieve full pleasure, or for the husband to touch his wife's private parts and for the woman to touch her husband's penis so that it becomes erect?

The Answer: Spouses touching each other's private parts at the time of intercourse is undoubtedly permissible; rather, with good intention, it is deserving of...

(1) Al-Quran Al-Kareem 65/6 (2) Al-Quran Al-Kareem 65/6

फतावा रजविया जिल्द 22

...न कर सके या पेश किया गया सबूत अगर समझा जाए तो ज़ैद मोतबर ज़मानत दाख़िल करने के बाद हिंदह को अपने साथ ले जाने का मजाज़ (अधिकारी) है या नहीं? बयान फरमाएं और सवाब पाएं।

अल-जवाब (उत्तर): अस्ल हुक्म यह है कि मर्द जहाँ रहे अपनी औरत को अपने साथ रखे। अल्लाह तआला ने फरमाया: "उन्हें वहीं ठहराओ जहाँ तुम खुद ठहरो।" (1) और साथ ही यह हुक्म है कि औरत को ज़रर (नुकसान) न पहुँचाए, उस पर तंगी न करे। अल्लाह तआला ने फरमाया: "उन्हें ज़रर न पहुँचाओ कि तुम उन पर तंगी करो।" (2) जब महर-ए-मुअज्जल नहीं था, यानी रुख़्सती से पहले देना तय नहीं हुआ था, तो औरत को अपने नफ्स को रोकने का कोई अख्तियार नहीं, न उसका बाप उसे शौहर से जुदा कर सकता है। हाँ, अगर शौहर की तरफ से औरत को ज़रर पहुँचाना और बिला वजह शरई ईज़ा (तकलीफ) देना काफी हद तक साबित हो जाए तो उसका बंदोबस्त किया जाए। अगरचे कचहरी के ज़रिए ज़मानत दाख़िल करने से ज़ाहिरी तौर पर यह समझा जाता है कि ज़ैद कोई ऐसा मोतबर कफील (ज़मानतदार) पेश करेगा जो ज़ैद को ईज़ा रसानी (तकलीफ पहुँचाने) से रोक सके और अम्र व हिंदह को उस पर एतबार हो। या इसके यह मानी हैं कि कोई ज़ामिन दिया जाएगा कि अगर ज़ैद ईज़ा रसानी करे तो इतना रुपया जुर्माने का भरे और वह न दे तो ज़ामिन देगा। अगर पहले मानी मुराद हैं तो सही और काबिले कबूल हैं और अगर दूसरे मानी मुराद हैं तो यह शरअन नाजायज़ व बातिल है; माली जुर्माना नहीं हो सकता क्योंकि यह मन्सूख (निरस्त) है और मन्सूख पर अमल करना हराम है। और अल्लाह तआला खूब जानता है।

मसअला 104: कादरी गंज, ज़िला बीरभूम, मुल्क बंगाल से, प्रेषक: ज़हूरुल हसन साहब, 23 जमादी-उल-उला 1336 हिजरी। जिमा (सहवास) के वक्त शौहर का अपनी बीवी की शर्मगाह को देखना ताकि लज़्ज़त पूरी-पूरी हासिल हो, या शौहर का अपनी बीवी की शर्मगाह को छूना और औरत का अपने शौहर के आला-ए-तनासुल (लिंग) को छूना ताकि उसमें उत्तेजना (इरेक्शन) आए, ऐसा करना जायज़ है या नहीं?

अल-जवाब: मियाँ-बीवी का जिमा के वक्त एक-दूसरे की शर्मगाह को छूना बिलाशुबा जायज़ है, बल्कि अच्छी नियत के साथ वह मुस्तहिक (हकदार) है...

(1) अल-कुरान अल-करीम 65/6 (2) अल-कुरान अल-करीम 65/6

فتاوی رضویہ جلد دو ازدہم

نہ کر سکے یا ثبوت پیش کردہ اگر سمجھا جائے تو زید بعد ادخال ضمانت معتبر ہندہ کو اپنے ساتھ لے جانے کا مجاز ہے یا نہیں؟ بینواتوجروا

الجواب: اصل حکم ہے مرد جہاں رہے اپنی عورت کو اپنے ساتھ رکھے۔ قال اللہ تعالٰی: اَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ وُّجْدِكُمْ 1 - عورتوں کو وہیں ٹھہراؤ جہاں تم خود ٹھہرو۔ (ت) اور ساتھ ہی یہ حکم ہے کہ عورت کو ضرر نہ پہنچائے ، اس پر تنگی نہ کرے قال اللہ تعالٰی: وَلَا تُضَآرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا عَلَيْهِنَّ ؕ 2 - انہیں ضرر نہ پہنچاؤ کہ تم ان پر تنگی کرو(ت) جبکہ مہر معجل نہ تھا یعنی پیش از رخصت دینا قرار نہ پایا تھا تو عورت کو اپنے نفس کے روکنے کا کوئی اختیار نہیں، نہ اُس کا باپ اُسے شوہر سے جُدا کر سکتا ہے ، ہاں اگر شوہر کی طرف سے عورت کو ضرر رسانی و بلاوجہ شرعی ایذاءہی بروجہ کافی ثابت ہو تو اُس کا بندوبست کیا جائے اگرچہ کچہری کے ذریعہ سے ضمانت داخل کرنے سے ظاہراً یہ سمجھا جاتا ہے کہ زید کوئی ایسا کفیل معتمد پیش کرے گا جو زید کو ایذاء رسانی سے مانع ہو سکے اور عمرو و ہندہ کو اس پر اعتبار ہو یا یہ معنی ہیں کہ کوئی ضامن دیا جائے گا۔ کہ اگر زید ایذاء رسانی کرے تو اتنا روپیہ جرمانہ کا بھرے اور وہ نہ دے تو ضامن دے گا۔ اگر معنی اول مراد ہیں تو صحیح و قابل قبول ہیں اور اگر معنی دوم مراد ہیں تو یہ شرعاً ناجائز باطل ہے مالی جرمانہ نہیں ہو سکتا لانہ منسوخ والعمل بالمنسوخ حرام (کیونکہ یہ منسوخ ہے اور منسوخ پر عمل کرنا حرام ہے۔ت) اور اللہ تعالٰی خوب جانتا ہے۔

مسئلہ ۱۰۴: از قادری گنج ضلع بیر بھوم ملک بنگالہ مرسلہ ظہور الحسن صاحب ۲۳ جمادی الاولٰی ۱۳۳۶ھ جماع کے وقت شوہر کا اپنی بی بی کی فرج دیکھنا تاکہ لذت پوری پوری حاصل ہو یا

شوہر کا اپنی بی بی کی شرمگاہ کو مس کرنا اور عورت کا اپنے شوہر کے آلہ تناسل کو مس کرنا تا کہ آلہ تناسل ایستادہ ہو ایسا کرنا جائز ہے یا نہیں؟

الجواب: زوجین کا وقتِ جماع ایک دوسرے کی شرمگاہ کو مس کرنا بلاشبہ جائز بلکہ بہ نیتِ حسنہ مستحق و

1 القرآن الکریم ۶۵/۶ 2 القرآن الکریم ۶۵/۶

Fatawa Razawiya Volume Twelve

It is a cause of reward as narrated from our master Imam al-Azam, may Allah be pleased with him (as narrated from our leader Imam al-Azam himself, may Allah be pleased with him. - t). However, at that time, looking at the private parts was prohibited in the Hadith, and it was said: "For it causes blindness." Scholars have said that it is possible that it causes him to go blind, or the children born from that intercourse to be blind, or, God forbid, blindness of the heart, which is the worst of all. And Allah Almighty knows best.

Page 271 of 688

यह सवाब का कारण है जैसा कि हमारे आका इमाम-ए-आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया गया है (जैसा कि हमारे सरदार इमाम-ए-आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से खुद रिवायत है। - त)। मगर उस वक्त शर्मगाह देखने से हदीस में मना फरमाया गया और फरमाया: 'क्योंकि यह अंधापन लाता है'। उलमा ने फरमाया है कि मुमकिन है कि यह उसके अंधे होने का सबब हो या उस औलाद के अंधे होने का सबब हो जो इस जमा (संभोग) से पैदा हो या अल्लाह की पनाह, दिल का अंधा होना जो सबसे बदतर है। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

पेज 271 / 688

موجب اجر ہے کما روی عن نفس سیدنا الامام الاعظم رضی تعالٰی عنہ (جیسا کہ خود ہمارے سردار امام اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا گیا ہے۔ ت) مگر اس وقت رویت فرج سے حدیث میں ممانعت فرمائی اور فرمایا: فانہ یورث العمی وہ نابینائی کا سبب ہوتا ہے۔ علمائے نے فرمایا کہ محتمل ہے کہ اس کے اندھے ہونے کا سبب ہو یا وہ اولاد اندھی ہو جو اس جماع سے پیدا ہو یا معاذ اللہ دل کا اندھا ہونا کہ سب سے بدتر ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم

फतावा रज़विया खंड बारह

www.dawateislami.net आई.टी. मज्लिस दावते इस्लामी

पृष्ठ 272 का 688

Fatawa Razawiyya Volume 12

Chapter on Apportionment (Establishing turns among wives and maintaining equality in rights)

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

Issue 105: What do the scholars of religion say regarding this matter: Is it permissible to cause Sharia-based harm to a wife without a valid reason, not to observe equality between two wives, and to forcibly keep both in a single house? State it and you shall be rewarded.

The Answer: Although Allah the Almighty has granted men superiority over women,

"Men are in charge of women by [right of] what Allah has given one over the other and what they spend [for maintenance] from their wealth." [1]

Men are leaders over women because Allah has given some of them superiority over others and because men spend their wealth on them. (T)

To the extent that it appears in the Hadith, "If I were to command anyone to prostrate to another, I would have commanded the woman to prostrate to her husband." However, it is by no means permissible to cause Sharia-based harm to women without a valid reason; rather, one should treat them with kindness, good character, and show patience towards their ill-temper and...

---

1 Al-Quran al-Karim 4/34 Page 273 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

बाबुल क़स्म (बीवियों में बारी मुक़र्रर करना और हुक़ूक़ में मसावात रखना)

बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम

मसअला १०५: क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसअले में कि ज़ौजा (पत्नी) को बे-वजह शरई ईज़ा (तकलीफ़) देना और दो (२) पत्नियों के बीच मसावात (समानता) की रियायत न करना और दोनों को एक ही मकान में ज़बरदस्ती रखना जायज़ है या नहीं? बयान फ़रमाएँ और अज्र पाएँ।

अल-जवाब: हर चंद अल्लाह तआला ने मर्दों को औरतों पर फ़ज़ीलत दी,

"मर्द औरतों के निगरान हैं, उस बिना पर कि अल्लाह ने उनमें से एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी है और इस बिना पर कि उन्होंने अपने माल ख़र्च किए हैं।" [१]

मर्द औरतों पर अफ़सर (हाकिम) हैं इसलिए कि अल्लाह तआला ने उनमें एक दूसरे पर फ़ज़ीलत दी और इसलिए कि मर्दों ने उन पर माल ख़र्च किए। (त)

यहाँ तक कि हदीस में आया, अगर मैं किसी को किसी के लिए सज्दा करने का हुक्म देता तो औरत को हुक्म देता कि वह अपने शौहर को सज्दा करे। मगर औरतों को बे-वजह शरई ईज़ा देना हरगिज़ जायज़ नहीं, बल्कि उनके साथ नर्मी और ख़ुश-अख़लाक़ी से पेश आना चाहिए और उनकी बद-मिज़ाजी पर सब्र करना चाहिए और...

---

१ अल-क़ुरआन अल-करीम ४/३४ पेज २७३ ऑफ़ ६८८

فتاوی رضویہ جلد دوا زدہم

باب القسم (بیویوں میں باری مقرر کرنا اور حقوق میں مساوات رکھنا)

بسم اللہ الرحمن الرحیم ط

مسئلہ ۱۰۵ : کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زوجہ کو بے وجہ شرعی ایذا دینا اور رعایت مساوات دو ۲ زوجہ میں نہ کرنا اور دونوں کو مکان واحد میں جبرا رکھنا جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: ہر چند اللہ تعالیٰ نے مردوں کو عورتوں پر فضیلت دی،

اَلرِّجَالُ قَوّٰمُونَ عَلَی النِّسَاءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰہُ بَعْضَھُمْ عَلٰی بَعْضٍ وَّبِمَآ اَنْفَقُوا مِنْ اَمْوَالِھِمْ ط ۱

مرد افسر ہیں عورتوں پر اس لئے کہ اللہ تعالیٰ نے ان میں ایک دوسرے پر فضیلت دی اور اس لئے کہ مردوں نے ان پر مال خرچ کئے۔ (ت)

یہاں تک کہ حدیث میں آیا اگر میں کسی کو کسی کے لئے سجدہ کا حکم کرتا عورت کو حکم دیتا کہ مرد کو سجدہ کرے مگر عورتوں کو بے وجہ شرعی ایذا دینا ہرگز جائز نہیں بلکہ ان کے ساتھ نرمی اور خوش خلقی اور اُن کی بد خوئی پر صبر اور

---

۱ القرآن الکریم ۴/ ۳۴ Page 273 of 688

Fatawa Razawiyya - Volume Twelve

Consoling them and showing consideration in matters that do not contradict Islamic law is pleasing to the Lawgiver. The Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, used to console the pure wives and say:

[Arabic: Indeed, the one with the most perfect faith among the believers is he who has the best character and is most kind to his family.] | Indeed, among the believers, the most perfect in faith is he who is the best in character and the most kind to his family members. (T)

And he says:

[Arabic: The best among you is the one who treats his family best, and I am the best among you in good treatment of my family.] | The best among you is the one who treats his family members best, and I am the best among you in terms of good treatment of my family. (T)

And Allah Almighty says: 'And live with them in kindness.' (And treat them [your wives] well. T) Imam Ghazali writes in Ihya-ul-Ulum:

[Arabic: And know that good character towards a woman is not just avoiding hurting her, but rather enduring annoyance from her side and exercising patience at the time of her fury and anger, following the example of the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him... etc.] | And know that good character towards a woman is not just avoiding hurting her, but rather enduring suffering from her side and, following the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, exercising patience at the time of her fury and anger. (T)

And just as Allah Almighty has ordained the rights of men over them, He has also ordained their rights over men: 'And for them is the like of what is against them, according to what is reasonable.' (And the right of women is also the same as it is upon them according to Sharia. T). Among these, it is obligatory to treat them equally in discretionary matters such as providing food, clothing, etc.

---

1. Shu'ab al-Iman, Hadith, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 6/215
2. Shu'ab al-Iman, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 6/215
3. Al-Quran Al-Karim, 4/19
4. Ihya-ul-Ulum, Chapter Three on Manners of Coexistence, Al-Maktaba al-Mashhad al-Husayni, Iran, 2/43

5. Al-Quran Al-Karim, 2/228

फ़तावा रज़विया - जिल्द बारहवीं

उनकी दिलजोई और जिन बातों में शरीयत का विरोध नहीं है, उनमें उनकी रियायत करना शारे (क़ानून निर्माता) को पसंद है। जनाब रिसालत मआब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अज़वाजे मुतहरात की दिलजोई करते और फ़रमाते:

[अरबी: इन्न मिन अकमलल मुमिनीना ईमानन अहसनुहुम खुलुक़न व अलताफ़ुहुम बि-अहलिही।] | बेशक मोमिनों में सबसे ज़्यादा कामिल ईमान वाला वह है जो उनमें सबसे ज़्यादा हुस्न-ए-अख़्लाक़ वाला और अपनी अहल (परिवार) के साथ ज़्यादा मेहरबान है। (त)

और फ़रमाते हैं:

[अरबी: खैरुकुम खैरुकुम लि-अहलिही व अना खैरुकुम लि-अहली।] | तुममें सबसे बेहतर वह है जो अपनी अहल के साथ ज़्यादा अच्छा बर्ताव करने वाला है और मैं अपनी अहल के साथ हुस्न-ए-सुलूक में तुम सबसे बेहतर हूँ। (त)

और अल्लाह तआला फ़रमाता है: 'व आशिरूहुन्ना बिल-मअरूफ़'। (और उनके[अपनी बीवियों] के साथ अच्छा बर्ताव करो। त) इमाम ग़ज़ाली 'इहया उल-उलूम' में लिखते हैं:

[अरबी: व'लम अन्नहू लैसा मिन हुस्निल खुलुक़ि म'अहा कफ़्फ़ुल अज़ा 'अन्हा बल एहतमालुल अज़ा मिन्हा वल-हिल्मु 'इंदा तैशिहा व ग़ज़बिहा इक़्तिदा-अन बि-रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम... अलख] | और तू जान ले कि औरत के साथ हुस्न-ए-ख़ल्क़ यही नहीं कि उसको ईज़ा न दे, बल्कि उसकी तरफ़ से अज़ीयतें बर्दाश्त करना है और रसूल-ए-अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की पैरवी करते हुए उस (औरत) के तैश और ग़ज़ब के वक़्त तहम्मुल (धैर्य) इख़्तियार करना है। (त)

और जिस तरह अल्लाह तआला ने मर्दों के हक़ उन पर मुक़र्रर फ़रमाए, उनके हक़ भी मर्दों पर मुक़र्रर किए: 'व लहुन्ना मिस्लुल्ल्ज़ी अलैहिन्ना बिल-मअरूफ़' (और औरतों का भी हक़ ऐसा ही है जैसा उन पर है शरीअत के मुवाफ़िक़। त)। उन चीज़ों में, जैसे खाना खिलाने और पहनने वगैरह जैसे इख़्तियारी मामलों में उन्हें बराबर रखना वाजिब है।

---

1. शुअब अल-ईमान, हदीस, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत, 6/215

2. शुअब अल-ईमान, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत, 6/215
3. अल-क़ुरआन अल-करीम, 4/19
4. इहया उल-उलूम, अध्याय तीन, 'आदाब उल-मुआशरत' में, अल-मकतबा अल-मशहद अल-हुसैनी, ईरान, 2/43
5. अल-क़ुरआन अल-करीम, 2/228

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

اُن کی دلجوئی اور جن باتوں میں مخالفتِ شرع نہیں اُن کی مراعات شارع کو پسند ہے جناب رسالت مآب صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ازواجِ مطہرات کی دلجوئی کرتے اور فرماتے:

ان من اکمل المؤمنین ایماناً احسنھم خلقاً و الطفھم باھلہ۔(1) | بیشک مومنوں میں سے زیادہ کامل ایمان والا وہ ہے جو ان میں سے زیادہ حسنِ اخلاقی والا اور اپنی اہل کے ساتھ زیادہ مہربان ہے۔ (ت)

اور فرماتے ہیں:

خیرکم خیرکم لاھلہ وانا خیرکم لاھلی۔(2) | تم میں سب سے بہتر وہ ہے جو اپنی اہل کے ساتھ زیادہ اچھا برتاؤ کرنے والا ہے اور میں اپنی اہل کے ساتھ حسنِ سلوک میں تم سب سے بہتر ہوں۔(ت)

اور اللہ تعالٰی فرماتا ہے: وَعَاشِرُوھُنَّ بِالْمَعْرُوفِ(3)۔(اور ان (اپنی بیویوں) کے ساتھ اچھا برتاؤ کرو۔ ت) امام غزالی احیاء العلوم میں لکھتے ہیں:

واعلم انہ لیس من حسن الخلق معھا کف الاذی عنھا بل احتمال الاذی منھا والحلم عند طیشھا وغضبھا اقتداءً برسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم(4)۔ الخ | اور تو جان لے کہ عورت کے ساتھ حُسنِ خلق یہ ہی نہیں کہ اس کو ایذا نہ دے بلکہ اس کی طرف سے اذیتیں برداشت کرنا ہے اور رسول اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی پیروی کرتے ہوئے اُس (عورت) کے طیش و غضب کے وقت تحمل اختیار کرنا ہے۔(ت)

اور جس طرح اللہ تعالٰی نے مردوں کے حق اُن پر مقرر فرمائے اُن کے حق بھی مردوں پر مقرر کئے وَلَھُنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْھِنَّ بِالْمَعْرُوفِ(5) (اور عورتوں کا بھی حق ایسا ہی ہے جیسا ان پر ہے

شرع کے موافق۔ت) ازانجملہ کھلانے پہنانے وغیرہ ہما امور اختیار یہ میں انہیں برابر رکھنا واجب ہے۔

---

1 شعب الایمان حدیث دارالکتب العلمیۃ بیروت ۲۱۵/۶ 2 شعب الایمان دارالکتب العلمیۃ بیروت ۲۱۵/۶ 3 القرآن الکریم ۱۹/۴ 4 احیاء العلوم الباب الثالث فی آداب المعاشرۃ المکتبۃ المشہد الحسینی ایران ۴۳/۲ 5 القرآن الکریم ۲۲۸/۲

Fatawa-e-Razvia Volume 12

In Durr al-Mukhtar, it is mandatory, and the apparent meaning of the verse is that it is an obligation (Nahr), meaning one should not act unjustly in distribution. This entails maintaining equality in overnight stays, clothing, food, and companionship. (T)

To the extent that if he discriminates, he will rise on the Day of Judgment leaning to one side. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Whoever has two wives and inclines towards one of them over the other, he will come on the Day of Resurrection with one side of his body drooping." (T)

And it is not permissible to force them to stay in a single house; rather, each has the right to demand separate accommodation from the husband. In Durr al-Mukhtar, each of the two wives has the right to demand a separate house from her husband. And Allah knows best. (T)

Problem 106: What do the scholars of religion say regarding this matter: is it mandatory for a man to observe equality between two wives or not? And if one of them belongs to the class of entertainers (tawaif), should any distinction be made or not? Explain and be rewarded.

The Answer: It is mandatory for a man to maintain equality between his two free wives in matters such as providing food, clothing, and spending time with them, etc. In this regard, there is no difference between an entertainer and a non-entertainer, or between noble and commoner, as the verse regarding distribution is absolute.

In Durr al-Mukhtar, it is mandatory, and the apparent meaning of the verse is that it is an obligation (Nahr), meaning one should not act unjustly in distribution. This entails maintaining equality in overnight stays, clothing, food, and companionship.

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on Distribution, Mujtabai Press, Delhi 1/211 2 Sunan ibn Majah, Chapter on Distribution among Women, HM Saeed Company Karachi 1/123 3 Durr al-Mukhtar, Chapter on Maintenance, Mujtabai Press, Delhi 1/217

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द बारहवीं

दुर्रे मुख़्तार में है कि यह वाजिब है और आयत का ज़ाहिर यह है कि न्याय करना फ़र्ज़ है (नहर), यानी हिस्से में ज़ुल्म न करे, इस सूरत में कि रात गुज़ारने, लिबास, खाने और सोहबत में बराबरी कायम रखे। (त)

यहाँ तक कि अगर वह भेदभाव करेगा, तो क़यामत के दिन एक तरफ झुका हुआ उठेगा। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "जिसकी दो पत्नियाँ हों और वह उनमें से एक की ओर झुकाव रखे और दूसरी को नज़रअंदाज़ करे, तो वह क़यामत के दिन इस हाल में उठेगा कि उसका एक हिस्सा झुका हुआ होगा।" (त)

और उन्हें एक ही घर में ज़बरदस्ती रखना जायज़ नहीं है, बल्कि हर एक को पति से अलग घर की माँग करने का अधिकार है। दुर्रे मुख़्तार में है कि दो पत्नियों में से प्रत्येक अपने पति से अलग घर की माँग कर सकती है। वल्लाहू तआला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है)। (त)

मसला १०६: दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि दो पत्नियों के बीच समानता का पालन करना मर्द पर वाजिब है या नहीं? और अगर उनमें से कोई तवायफ़ बिरादरी से हो, तो क्या कोई अंतर किया जाएगा या नहीं? बयान फ़रमाएं, सवाब पाएँ।

जवाब: मर्द के लिए अपनी दो आज़ाद पत्नियों को खिलाने, पहनाने और पास रहने आदि अख्तियारी मामलात में बराबरी रखना वाजिब है, और इस मामले में तवायफ़ और ग़ैर-तवायफ़, शरीफ़ और रज़ील (नीच) में कोई अंतर नहीं है क्योंकि हिस्से (बारी) की आयत मुतलक़ (निरपेक्ष) है।

दुर्रे मुख़्तार में है कि यह वाजिब है और आयत का ज़ाहिर यह है कि न्याय करना फ़र्ज़ है (नहर), यानी हिस्से में ज़ुल्म न करे, इस सूरत में कि रात गुज़ारने, लिबास, खाने और सोहबत में...

1 दुर्रे मुख़्तार, बाबुल क़स्म, मत्तब-ए-मुजतबाई, दिल्ली 1/211 2 सुनन इब्न माजा, बाबुल क़स्म बैनल निसा, एच.एम. सईद कंपनी कराची 1/123 3 दुर्रे मुख़्तार, बाबुल नफ़क़ा, मत्तब-ए-मुजतबाई, दिल्ली 1/217

पेज २७५ ऑफ ६८८

في الدرالمختار يجب وظاهر الآية انه فرض نهران يعدل ای ان لایجوز فیه ای فی القسم بالتسویة فی البیتوتة وفی الملبوس والمأکول والصحبة۔ | در مختار میں ہے واجب ہے اور آیت کا ظاہر یہ ہے کہ عدل کرنا فرض ہے (نہر) یعنی قسم ظلم نہ کرے بایں صورت کہ شب باشی، لباس، کھانے اور صحبت میں برابری قائم رکھے۔(ت) یہاں تک کہ اگر فرق کرے گا قیامت میں ایک طرف جھکا اٹھے گا، رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: من کان له امرأتان فمال الی احدهما دون الاخری جاء یوم القیمة واحد شقیه مائل۔ | جس کی دو عورتیں ہوں وہ ان میں سے ایک کی طرف میلان کرے اور دوسری کو نظر انداز کرے تو قیامت کے دن اس حال میں اٹھے گا کہ اس کی ایک جانب جھکی ہوگی(ت)

اور انہیں مکانِ واحد میں جبر ا رکھنا جائز نہیں بلکہ ہر ایک کو مکان علیحدہ کا مطالبہ شوہر سے پہنچتا ہے، في الدرالمختار فلکل من زوجته مطالبته ببیت من دار علیحدة۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ | در مختار میں ہے کہ دو بیویوں میں سے ہر ایک اپنے شوہر سے گھر کا علیحدہ مکان طلب کر سکتی ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۱۰۶ : کیا فرماتے علمائے دین اس مسئلہ میں کی رعایت مساوات دو زوجہ میں مرد پر واجب ہے یا نہیں؟ اور اگر ان میں قوم طوائف میں سے ہو تو کچھ فرق کیا جائے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: مرد اپنی دو زوجہ حرہ کو کھلانے اور پہنانے اور پاس رہنے وغیرہ امورِ اختیار میں برابر رکھنا واجب ہے اور اس امر میں طوائف و غیر طوائف شریف و رذیل میں کچھ فرق نہیں کہ آیت قسم مطلق ہے۔

في الدرالمختار يجب وظاهر الآية انه فرض "نهر"ان يعدل اى ان لايجوز فيه اى فى القسم بالسوية فى البيتوتة و | در مختار میں ہے واجب ہے اور آیت کا ظاہر یہ ہے کہ عدل کرنا فرض ہے (نہر) یعنی قسم میں ظلم نہ کرے، بایں صورت کہ شب باشی، لباس، کھانے اور صحبت

1 در مختار باب القسم مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۱۱ 2 سنن ابن ماجہ باب القسمۃ بین النساء ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۲۳ 3 در مختار باب النفقۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۱۷

Vol. 12 | Fatawa Razawiyya

| ...in clothing, food, and companionship[1], he should maintain equality. (T) | |---|---| | To the extent that if he discriminates, he will rise on the Day of Judgment with one side leaning. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: | | "Whoever has two wives and leans towards one of them to the exclusion of the other, | He whose has two wives and while ignoring one of them, | | will come on the Day of Resurrection with one of his sides leaning."[2] And Allah Almighty | leans towards the other, he will rise on the Day of Resurrection in a state | | knows best. | where one side of his body will be leaning. And Allah Almighty | | | knows best. (T) |

Problem 701: From Panchrayan, district Moradabad, house of Hakim Ghulam Ali Sahib, sent by Hakim Ghulam Ahmed Sahib, 25 Ramadan Mubarak 1329 AH.

What do the scholars of religion and muftis of the firm Shariah say about this matter: What is the method of food in justice between wives? Is it necessary to give the same thing to the second wife that was given to one wife to eat, even if it is of the nature of luxuries or just ordinary food? For example, if he secretly gave milk to one wife or fed her seasonal fruits, is it necessary to give the same amount to the second wife, or is it recommended (mustahab)? If it is necessary to give to the second wife as well, is there any difference in the following situation? For example, one wife requested something from the husband because her nature desired to eat that thing; for this reason, he fulfilled her request secretly from the other wife. Is it necessary for the husband to feed the mentioned thing to the other wife as well? If it is necessary, is there any difference if the second wife also requests that thing, then he would fulfill it too? And if the husband, out of his own desire, sometimes feeds something to one wife and something to the other but there is no equality in price or taste of that thing, is this permissible or not? One situation is that while eating, one wife brings cooked food for the husband, while the other does not; out of courtesy, he fed her small portions from each dish. In this case, is the husband a sinner or not? And in keeping it secret, there is this benefit that hatred does not arise between the two wives and both remain happy with the husband because one does not know about the other. Please write a reasoned answer.

The Answer: Food is of two types: one is the basic maintenance (nafaqah) which is obligatory for the husband to provide for the wife, the second is more than that, like...

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter of Apportionment, Mujtabai Press, Delhi, 1/211 [2] Sunan Ibn Majah, Chapter of Division between Women, H.M. Saeed Company, Karachi, 1/123

| ...पहनने, खाने और साथ रहने[1] में उसे समानता बनाए रखनी चाहिए। (त) | |---|---| | यहाँ तक कि अगर वह भेदभाव करेगा, तो कयामत के दिन उसका एक हिस्सा झुका हुआ उठेगा। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: | | "जिसकी दो पत्नियाँ हों और वह उनमें से एक की ओर झुक जाए और दूसरी को नज़रअंदाज़ कर दे, | जिसकी दो पत्नियाँ हों और वह उनमें से एक को नज़रअंदाज करते | | तो वह कयामत के दिन इस हाल में आएगा कि उसका एक हिस्सा झुका हुआ होगा।"[2] और अल्लाह तआला | हुए दूसरी की ओर झुकाव रखे, तो कयामत के दिन इस | | सबसे बेहतर जानता है। | हाल में उठेगा कि उसका एक पक्ष झुका हुआ होगा। और अल्लाह तआला | | | सबसे बेहतर जानता है। (त) |

मसला 701: पंचरायन, जिला मुरादाबाद, हकीम गुलाम अली साहब के घर से, हकीम गुलाम अहमद साहब द्वारा प्रेषित, 25 रमज़ान मुबारक 1329 हिजरी।

दीन के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मसले में क्या कहते हैं कि पत्नियों के बीच न्याय में भोजन की क्या स्थिति है? क्या जो चीज़ एक पत्नी को खाने के लिए दी गई है, वही दूसरी को भी देना ज़रूरी है, चाहे वह विलासिता की चीज़ हो या सिर्फ साधारण भोजन? उदाहरण के लिए, यदि उसने एक पत्नी को दूसरी से छिपाकर दूध पिलाया या मौसमी फल खिलाए, तो क्या दूसरी पत्नी को भी उतना ही देना ज़रूरी है, या यह मुस्तहब (पसंदीदा) है? यदि दूसरी पत्नी को भी देना ज़रूरी है, तो क्या निम्नलिखित स्थिति में कोई अंतर है? उदाहरण के लिए, एक पत्नी ने पति से किसी चीज़ की फरमाइश की क्योंकि उसका स्वभाव वह चीज़ खाने का था; इस कारण उसने दूसरी पत्नी से छिपाकर उसकी फरमाइश पूरी कर दी, तो क्या पति पर दूसरी को भी उक्त चीज़ खिलाना ज़रूरी है या नहीं? यदि ज़रूरी है, तो क्या इसमें कोई अंतर है कि अगर दूसरी पत्नी भी उस चीज़ की फरमाइश करती तो वह उसे भी पूरा करता? और यदि पति अपनी इच्छा से कभी एक पत्नी को कुछ खिलाता है और दूसरी को कुछ, लेकिन उन चीज़ों की कीमत और स्वाद में समानता नहीं है, तो क्या यह जायज़ है या नहीं? एक स्थिति यह है कि खाना खाते समय एक पत्नी पति के लिए पका हुआ खाना लाती है, दूसरी नहीं आती; शिष्टाचारवश उसने उसे हर व्यंजन से थोड़ा-थोड़ा खिलाया, तो इसमें पति गुनहगार हुआ या नहीं? और गुप्त रखने में यह लाभ है कि दोनों पत्नियों के बीच द्वेष पैदा नहीं होता और दोनों पति से खुश रहती हैं क्योंकि एक को दूसरी की खबर नहीं होती। कृपया तर्कपूर्ण उत्तर लिखें।

उत्तर: भोजन दो प्रकार का होता है: एक मूल रखरखाव (नफ़का) जो पति के लिए पत्नी के प्रति अनिवार्य है, दूसरा उससे अधिक, जैसे...

---

[1] दुर्र अल-मुख्तार, बाब अल-क़स्म, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/211 [2] सुनन इब्न माजाह, बाब अल-क़िस्मत बैन अल-निसा, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 1/123

فی الملبوس والماکول والصحبۃ 1- **میں برابر قائم رکھے (ت)**

یہاں تک کہ اگر فرق کرے گا قیامت کو ایک طرف جھکائے اٹھے گا۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

من کان لہ امرأتان فمال الٰی احدھما دون الاخرٰی جاء یوم القیمۃ واحد شقیہ مائل 2- واللہ تعالٰی اعلم۔

جس کی دو بیویاں ہوں ان میں سے ایک کو نظر انداز کرتے ہوئے دوسری کی طرف میلان کرے تو قیامت کے دن اس حال میں اٹھے گا کہ اس کی ایک جانب جھکی ہو گی۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۷۰۱: از پنچھرایوں ضلع مراد آباد مکان حکیم غلام علی صاحب مرسلہ حکیم غلام احمد صاحب ۲۵ رمضان مبارک ۱۳۲۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ عدل بین الزوجین میں کھانے کی کیا صورت ہے، آیا جو چیز ایک زوجہ کو کھانے کو دی وہی دوسرے کو بھی دے اگرچہ از قسم مکلفات ہو یا فقط معمولی غذا میں، مثلاً ایک کو دوسری زوجہ سے خفیہ دودھ پلایا یا ثمار فصل کھلائے تو اسی قدر دوسری کو بھی دینا ضرور ہے یا یہ مستحب ہے، اگر دوسری کو بھی دینا ضرور ہے تو صورت ذیل میں کچھ فرق ہے یا نہیں مثلاً ایک زوجہ نے زوج سے کسی چیز کی فرمائش کی چونکہ اس کی طبیعت اس چیز کے کھانے کو چاہتی تھی

بایں وجہ خفیہ دوسری زوجہ سے اسکی فرمائش کی پورا کر دیا تو دوسری کو بھی شیئی مذکور کا کھلانا بذمہ زوج ضرور ہے یا نہیں، اگر ضرور ہے تو اس میں کچھ فرق ہے یا نہیں کہ اگر دوسری زوجہ بھی اس شیئی کی فرمائش کرتی تو اس کو بھی پورا کرتا اور اگر ترویج اپنی خواہش طبیعت سے کچھ شیئی ایک زوجہ کو کبھی کوئی شیئی دوسری کو کھلاتا ہے مگر برابری نہیں ہے کہ جس قیمت اور جس لذت کی وہ شیئی ہے دوسری کو وہ نہیں ہے تو یہ جائز ہے یا نہیں، ایک یہ صورت ہے کہ ایک زوجہ کھانا کھاتے وقت زوج کو کھانا پکا کر لاتی ہے دوسری نہیں آتی ہے خاطرًا اس کو ہرتکاری سے قدرے قدرے کھلایا تو اس میں زوج گنہگار ہوا یا نہیں، اور خفیہ میں یہ مصلحت ہے کہ دونوں زوجہ میں بغض نہیں پڑتا ہے اور زوج سے دونوں خوش رہتی ہیں کیونکہ ایک کی دوسری کو خبر نہیں۔ جواب مدلل تحریر فرمائے۔ الجواب: کھانا دو قسم ہے ایک اصل نفقہ جو زوجہ کے لئے زوج پر واجب ہے، دوسرا اس سے زائد مثل

---

1 درمختار باب القسم مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۱۱ 2 سنن ابن ماجہ باب القسمة بین النساء ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱/ ۱۲۳

Fatawa Razawiyya Volume 12

Regarding fruits, betel leaf (paan), cardamom, presents, and gifts: in the first category, equality is mandatory only when both women are in the same financial state of poverty or wealth. Otherwise, with respect to the husband's status, maintenance appropriate for a wealthy wife will be obligatory for her, and for a poor wife, maintenance appropriate for her status. For example, if a husband and one wife are both very wealthy, and their food consists of baqarkhani (a type of bread) and chicken pilaf, while the second wife is poor, eating sorghum/millet bread and grinding/cooking it herself, then equality in their maintenance is not mandatory. For the first, the same biryani and chicken are necessary, and for the second, wheat bread and goat meat. For the first, a servant will also be necessary, while the second will serve herself. The first will wear crepe and brocade, for the second, tanzeb (fine muslin) and sateen are sufficient. For the first, a grand house will be required, and for the second, a moderate one. And in the second category, absolute equality is required; whatever quantity and quality is given to one, the same should be given to the other. In milk, tea, fruits, betel leaf, betel nut, cardamom, ice cream kulfi, kohl (surma), henna (mehndi), etc., and all additional items, maintain equality, because the difference there was in the basic obligation. These things are not mandatory; favoring one in these would mean an inclination towards her, and such inclination is prohibited. The matter of requests is also clear from this: if she made a request regarding her maintenance and she is entitled to it, while the other is not, it is not mandatory for him to give the second wife the same thing. However, for items beyond basic maintenance, equality will be required, as they do not fall outside the limits of a gift even after being requested.

| And the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Have you given a similar gift to each of your sons?" He said: "No." He said: "Do not make me a witness to injustice." (Summary). So if preferring some children over others in gifts is considered injustice and partiality among sons, then it is even more so among wives. | The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) asked, "Have you given a similar gift to every son?" The companion replied, "No." Then the Prophet said, "Do not make me a witness to injustice." When disparity in gifts among sons is considered injustice and partiality, then among wives, it will be considered injustice and partiality to a greater degree. (T) |

And thinking that giving secretly implies the consent of both is a mistake; rather, the one to whom he gives secretly will realize that she holds a greater place in his heart,

and she will dare to suppress the other, which will be sowing the seeds of discord. It is stated in Tanwir al-Absar and Durr al-Mukhtar:

---

1 Musnad Imam Ahmad bin Hanbal, Hadith of Nu'man bin Bashir from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), Dar al-Fikr, Beirut, 4/268. 2 Sunan an-Nasa'i, Book of Gifts, Al-Maktaba as-Salafiyya, Lahore, 2/126.

फतावा रजविया जिल्द 12

फल, पान, इलायची, और भेंट-उपहारों के संबंध में: पहली श्रेणी में समानता केवल उसी स्थिति में अनिवार्य है जब दोनों स्त्रियाँ निर्धनता या संपन्नता की स्थिति में समान हों। अन्यथा, पति की स्थिति के साथ-साथ, संपन्न पत्नी के लिए उसकी स्थिति के योग्य और निर्धन पत्नी के लिए उसकी स्थिति के योग्य निर्वाह व्यय अनिवार्य होगा। उदाहरण के लिए, यदि एक पति और एक पत्नी दोनों बहुत धनी हैं और उनके यहाँ भोजन बाकरखानी और मुर्ग पुलाव है, और दूसरी पत्नी निर्धन है जो ज्वार-बाजरे की रोटी खाती है और स्वयं पीसती-पकाती है, तो उनके निर्वाह व्यय में समानता अनिवार्य नहीं हो सकती। पहली के लिए वही बिरयानी और मुर्ग आवश्यक है और दूसरी के लिए गेहूँ की रोटी और बकरी का मांस। पहली के लिए एक सेवक भी आवश्यक होगा, दूसरी स्वयं सेवा कर लेगी। पहली क्रेप और ज़रबफ़्त (रेशमी वस्त्र) पहनेगी, दूसरी के लिए तंज़ेब और साठिन पर्याप्त है। पहली के लिए एक भव्य मकान की आवश्यकता होगी, दूसरी के लिए एक औसत मकान। और दूसरी श्रेणी में पूर्ण समानता होनी चाहिए; जो वस्तु जितनी और जैसी एक को दे, उतनी ही और वैसी ही दूसरी को भी दे। दूध, चाय, फल, पान, छालिया (सुपारी), इलायची, बर्फ की कुल्फियाँ, सुरमा, मेहंदी आदि सभी अतिरिक्त वस्तुओं में समानता रखे क्योंकि वहाँ अंतर मूल अनिवार्यता में था। ये वस्तुएं अनिवार्य नहीं हैं; इनमें एक को प्राथमिकता देना उसकी ओर झुकाव होगा और झुकाव निषिद्ध है। फरमाइशों (अनुरोधों) का मामला भी यहीं से स्पष्ट हो गया: यदि उसने अपने निर्वाह व्यय के संबंध में कोई फरमाइश की है और वह उसकी पात्र है जबकि दूसरी नहीं, तो उस पर यह अनिवार्य नहीं होगा कि वह दूसरी को भी वही चीज़ दे। और निर्वाह व्यय से अधिक वस्तु में तो समानता की आवश्यकता होगी क्योंकि वह फरमाइश के बाद भी उपहार की सीमा से बाहर नहीं होती।

| और पैगंबर (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) ने कहा: "क्या आपने अपने प्रत्येक बेटे को इसी तरह का उपहार दिया है?" उन्होंने कहा: "नहीं।" उन्होंने कहा: "मुझे अन्याय का गवाह मत बनाओ।" (संक्षेप)। अतः यदि उपहारों में बच्चों के बीच भेदभाव करना बेटों के बीच अन्याय और पक्षपात है, तो पत्नियों के बीच यह और भी अधिक उचित और आवश्यक है। | हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क्या तुमने हर बेटे को उसकी तरह का तोहफा दिया। सहाबी ने अर्ज़ की कि नहीं, तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि मुझे ज़ुल्म पर गवाह मत बनाओ। जब तोहफ़ों में कमी-बेशी बेटों के बीच ज़ुल्म और पक्षपात करार दी गई, तो बीवियों में यह और भी अधिक ज़ुल्म और पक्षपात होगा। (त) |

और चुपके से देने को दोनों की रज़ामंदी समझना एक गलती है; बल्कि जिसे वह छिपा-छिपा कर देगा, वह जान लेगी कि मेरे लिए उसके दिल में अधिक स्थान है, और वह दूसरी को दबाने का साहस करेगी और यह फसाद (विवाद) का बीज बोना होगा। तनवीर अल-अबसार और दुर्र अल-मुख्तार में है:

---

1 मसनद इमाम अहमद bin हंबल, हदीस नुमान bin बशीर, पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से, दार अल-फ़िक्र, बेरूत, 4/268। 2 सुनन अन-नसाई, किताब अल-नहल, अल-मक्तबा अस-सलफ़िया, लाहौर, 2/126।

فواکہ و پان و الاچی و عطایا و ہدایا، قسم اول میں برابری صرف اُس صورت میں واجب ہے جب دونوں عورتیں مال حالت فقر و غنا میں یکساں ہوں ورنہ لحاظ حال زوج کے ساتھ غنیہ کے لئے اس کے لائق واجب ہو گا اور فقیرہ کے لئے اس کے لائق مثلاً زوج اور ایک زوجہ دونوں امیر کبیر ہیں کہ اپنے اپنے یہاں اُن کی خوراک باقرخانی و مرغ پلاؤ ہے، اور دوسری زوجہ فقیرہ ہے کہ جوار باجرے کی روٹی کھاتی ہے اور آپ پیستی پکاتی ہے ، ان دونوں کے نفقہ میں مساوات واجب نہیں ہو سکتی، پہلی کے لئے وہی بریانی اور مرغ لازم ہے اور دوسری کے لئے گیہوں کی روٹی اور بکری کا گوشت، پہلی کے لئے خادم بھی ضرور ہو گا دوسری آپ خدمت کر لے گی، پہلی کریب اور زربفت پہنے گی دوسری کو تنزیب اور ساٹھن بہت ہے، پہلی کے لئے مکان بھی عالی شان درکار ہو گا دوسری کے لئے متوسط ۔ اور قسم دوم میں مطلقاً برابری چاہئے، جو چیز جتنی اور جیسی ایک کو دے اتنی ہی اور ویسی ہی دوسری کو بھی دے۔ دودھ، چائے ، میوے، پان، چھالیا، الاچی ، برف کی قلفیاں، سرمہ، مہندی وغیرہ تمام زوائد میں مساوات رکھے کہ وہاں فرق اصل وجوب میں تھا یہ اشیاء واجب نہیں ان میں ایک کو مرجح رکھنا اس کی طرف میل کرنا ہو گا اور میل ممنوع ہے فرمائشوں کا حال بھی یہیں سے واضح ہو گیا اگر اس نے وہ فرمائش اپنے نفقہ کے متعلق کی ہے اور وہ اسکی مستحق ہے اور دوسری مستحق نہیں تو اس پر لازم نہ ہو کہ دوسری کو بھی وہی چیز دے اور نفقہ سے زائد شے کی تو برابری درکار ہو گی کہ وہ بعد فرمائش بھی عطیہ کی حد سے خارج نہیں۔

| وقد قال صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اکل بنیك نحلت مثل ھذا قال لا قال لا تشھدنی علی جور (ملخصاً) فاذ اکان التفضیل فی العطایا جورا و میلا في البنین ففی الازواج اولی واحری۔ | حضور اقدس صلی

اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ کیا تو نے ہر بیٹے کو اس کی مثل تحفہ دیا۔ صحابی نے عرض کی کہ نہیں ، تو حضور نے فرمایا کہ مجھے ظلم پر گواہ مت بنا۔ جب تحائف میں کمی بیشی بیٹوں کے اندر ظلم و میل قرار پائی تو بیویوں میں بدرجہ اولیٰ ظلم و میل ہو گی۔ (ت) |

اور چھپا کر دینے سے دونوں کی رضا سمجھنی غلطی ہے بلکہ جسے چھپا چھپا کر دے گا وہ جان لے گی کہ میری جگہ اس کے قلب میں زائد ہے وہ دوسری کا دبانے کی جرات کرے گی اور یہ تخم فساد کا بونا ہو گا۔ تنویر الابصار و در مختار میں ہے :

---

1 مسند امام احمد بن حنبل حدیث النعمان بن بشیر عن النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم دارالفکر بیروت ۲۶۸/۴ 2 سُنن النسائی کتاب النحل المکتبۃ السلفیۃ لاہور ۱۲۶/۲

[Arabic Text] [Urdu Translation] It is obligatory to do justice, meaning it is not permissible It is mandatory (Wajib) to do justice between wives, meaning in the division (of nights) except with equality in staying one should not be unjust in the division, in such a way that he overnight (Baytuta), in clothing, food, and companionship, maintains equality in staying overnight, clothing, food, and but not in sexual intercourse just like love; rather, companionship and sociability, and not in intercourse like love; equality in intercourse is recommended (Mustahabb). [1] rather, equality in intercourse is recommended. (T)

In Radd al-Muhtar, it is stated:

[Arabic Text] [Urdu Translation] It is said in Al-Bahr: It is said in Al-Badai' that equality in In Al-Bahr it is stated that in Al-Badai' it is said that equality in food, drink, housing, and staying overnight is obligatory food, drink, clothing, housing, and staying overnight is upon him. This was also mentioned by Al-Walwalaji. The truth mandatory for the husband. Al-Walwalaji also mentioned it like is that this is based on the opinion of those who considered this. The truth is that undoubtedly this is the saying of the one the husband's status alone regarding maintenance (Nafaqa). who considered only the husband's state in maintenance, but As for the fatwa-issued opinion, which considers the status since the fatwa-issued saying considers the state of both, of both, then no. For one of them may be rich and the other according to it, absolute equality in maintenance is not poor, so absolute equality between them in maintenance is mandatory because sometimes one of the two wives is wealthy not required. [2] End. And I saw that I had written a and the other is poor, so equality between them is not necessary. marginal note on it, the text of which is: The weak servant, I remember that I wrote a note on this, whose wording is: the may he be forgiven, says there remain two other summaries. weak servant says that there are two other interpretations for First, if the two wives are equal in wealth or poverty, then this; one is that both women are equal in wealth and poverty, there is no room for distinction between them; rather, so in this case, absolute equality in maintenance between them absolute equality in food, drink, clothing, and housing is is necessary. There is an indication to this in his saying that mandatory, just like staying overnight. And towards this, absolute equality in maintenance between them is not the indication is pointed out by his saying "equality is not mandatory, on the

basis that "absolutely" (mutlaqan) refers to required absolutely." the negative and not the negation of the negative.

---

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter on Division, Mujtabai Press, Delhi, 1/211. [2] Radd al-Muhtar, Chapter on Division, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/398. F: In the printed edition of Jad al-Muhtar, the text is concise; the underlined text is not in the printed version. Nazir Ahmad.

[अरबी पाठ] [उर्दू अनुवाद] न्याय करना अनिवार्य है, अर्थात रात की बारी के विभाजन में पत्नियों के बीच न्याय करना वाजिब है, यानी पारी के मामले में असमानता की अनुमति नहीं है। रात बिताने (बैतूता), कपड़े, भोजन ज़ुल्म न करे, इस तरह कि रात बिताने (शब-बाशी), कपड़े, खाने-पीने और साथ रहने में समानता होनी चाहिए, लेकिन संभोग में प्यार और मेलजोल में बराबरी करे। संभोग (जिमा) में प्यार की तरह की तरह नहीं; बल्कि संभोग में बराबरी मुस्तहब (पसंदीदा) है। [1] बराबरी करना ज़रूरी नहीं, बल्कि संभोग में बराबरी मुस्तहब है। (त)

रद-अल-मुह्तार में उल्लेखित है:

[अरबी पाठ] [उर्दू अनुवाद] 'बहर' में कहा गया है: 'बदाइ' में कहा गया है कि भोजन, पेय, 'बहर' में फ़रमाया कि 'बदाइ' में कहा गया है कि खाने, पीने, कपड़े, आवास और रात बिताने में पति पर समानता वाजिब है। आवास और रात बिताने में पति पर समानता वाजिब है। 'वलवालजी' 'वलवालजी' ने भी इसी का ज़िक्र किया है। सत्य यह है कि यह ने भी ऐसा ही ज़िक्र किया है। हक़ीक़त यह है कि बेशक यह उस उन लोगों का विचार है जिन्होंने खर्च (नफ़क़ा) के मामले में व्यक्ति का विचार है जिसने खर्च के मामले में केवल पति की स्थिति केवल पति की स्थिति का संज्ञान लिया। लेकिन फ़तवे के अनुसार, का संज्ञान लिया। लेकिन फ़तवे के अनुसार, चूंकि दोनों की स्थिति चूंकि दोनों की स्थिति मानी जाती है, इसलिए खर्च में पूरी तरह मानी जाती है, इसलिए खर्च में पूरी तरह समानता वाजिब नहीं है, समानता वाजिब नहीं है, क्योंकि कभी दो पत्नियों में से एक अमीर क्योंकि कभी दो पत्नियों में से एक अमीर और दूसरी गरीब होती है, और दूसरी गरीब होती है, तो उनमें पूरी तरह बराबरी लाज़िम तो उनमें बराबरी लाज़िम (आवश्यक) नहीं है। मुझे याद है कि मैंने नहीं है। [2] समाप्त। और मैंने देखा कि मैंने इस पर एक हाशिया इस पर एक टिप्पणी लिखी है जिसका पाठ इस प्रकार है: यह कमज़ोर लिखा है जिसका पाठ है: कमज़ोर बंदा कहता है कि इसके दो और बंदा कहता है कि इसके दो और मतलब भी हो सकते हैं। एक यह मतलब शेष हैं। पहला यह कि यदि दोनों पत्नियाँ अमीरी या कि दोनों स्त्रियाँ अमीरी और गरीबी में बराबर हों, तो ऐसी स्थिति में गरीबी में समान हैं, तो उनके बीच भेदभाव की कोई गुंजाइश नहीं उन दोनों के बीच खर्च में पूरी तरह बराबरी लाज़िम है। इसी की है; बल्कि भोजन, पेय, कपड़े और आवास में रात बिताने की तरह ओर इशारा उनके इस कथन में है कि उन दोनों के बीच खर्च में पूरी तरह बराबरी अनिवार्य है। और इसकी ओर इशारा उनके इस पूरी तरह

बराबरी लाज़िम नहीं है, इस आधार पर कि "पूरी तरह" कथन द्वारा है कि "पूरी तरह समानता आवश्यक नहीं है।" (मुतलक़न) निषेध (नफ़ी) की ओर इशारा करता है न कि निषेध के निषेध की ओर।

---

[1] दुर्र-ए-मुख्तार, अध्याय: विभाजन, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 1/211. [2] रद-अल-मुह्तार, अध्याय: विभाजन, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/398. फ़: जद्द-अल-मुह्तार मुद्रित संस्करण में विवरण संक्षिप्त है; रेखांकित विवरण मुद्रित प्रति में नहीं है। नज़ीर अहमद।

[Urdu Text] [Arabic Text] يجب ان يعدل اى لايجوز في القسم بالتسوية في البيتوة وفى بیویوں میں عدل کرنا واجب ہے یعنی قسم میں ظلم نہ کرے بایں الملبوس والمأكول والصحبة لافي المجامعة كالمحبة بل يستحب۔$1^$ صورت کہ شب باشی، لباس خوردونوش اور صحبت وموانست میں برابری کرے نہ کہ جماع میں مثل محبت کے بلکہ جماع میں برابری مستحب ہے۔ (ت)

رد المحتار میں ہے:

[Urdu Text] [Arabic Text] قال فى البحر قال فى البدائع يجب عليه التسوية فى المأكول بحر میں فرمایا کہ بدائع میں کہا ہے کہ کھانے، پینے، لباس، رہائش والمشروب والسكنى والبيتوة وهكذا ذكر الولوالجى والحق انه اور شب باشی میں شوہر پر مساوات واجب ہے ولوالجی نے بھی علی قول من اعتبر حال الرجل وحده فى النفقة واما على القول يوں ذکر فرمایا اور حق یہ ہے کہ بے شک یہ اس کا قول ہے جس المفتى به من اعتبار حالهما فلا، فان احدهما قد تكون غنية نے نفقہ میں فقط شوہر کے حال کا اعتبار کیا لیکن مفتی بہ قول والاخرى فقيرة فلا يلزم التسوية بينهما مطلقاً في النفقة$2^$ اہ میں چونکہ دونوں کا حال معتبر ہے تو اس کے مطابق نفقہ میں ورأيتنى كتبت عليه مآنصه يقول العبد الضعيف غفرله بقى له مطلقاً مساوات واجب نہیں کیونکہ کبھی دو بیویوں میں سے ایک مجملان اخران الاول ان تستوى المرأتان يسار او اعسار ا وح مالدار اور دوسری فقیر ہوتی ہے تو ان میں برابری لازم نہیں۔ مجھے لامحل للتفاضل بينهما بل تجب التسوية فى المأكول والمشروب یاد ہے کہ میں نے اس پر حاشیہ لکھا ہے جس کی عبارت یوں ہے والملبوس والسكنى ايضاً كالبيوتة مطلقا، واليه اشاره الاشارة بنده ضعیف کہتا ہے کہ اس کے دو محمل اور بھی ہیں ایک یہ کہ بقوله فلا يلزم

التسوية دونوں عورتیں امیری اور فقیری میں برابر ہوں تو اس صورت میں ان دونوں کے درمیان نفقہ میں مطلقاً برابری لازم ہے اسی کی طرف اشارہ ہے اس کے اس قول میں کہ ان دونوں کے درمیان نفقہ میں مطلقاً برابری لازم نہیں اس بنیاد پر کہ "مطلقاً" منفی کی طرف ناظر ہے نہ کہ نفی کی طرف،

1^$ درمختار باب القسم مطبع مجتبائی دہلی ۲۱۱/۱ 2^$ ردالمحتار باب القسم دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۹۸/۲ ف : جد المحتار مطبوعہ میں عبارت مختصر ہے خط کشیدہ عبارت مطبوعہ نسخہ میں نہیں ہے۔ نذیر احمد

Fatawa Razawiyyah - Volume 12

[Arabic Text]: ...between them absolutely in maintenance, based on the fact that 'absolutely' refers to what is negated rather than the negation of the absolute nature, for that would not be correct. Secondly, if the intention is for items exceeding basic maintenance, such as gifts and presents, then there is no barrier to mandating equality between them; rather, this is apparent to negate the forbidden inclination. My footnote ends here, and I hope, God willing, it is correct. And Allah, the Exalted, knows best. (T)

[Urdu Text]: Therefore, its result will be the negation of the absolute nature rather than the absolute negation because that is not correct. Secondly, if the intention is items that are in addition to basic maintenance, i.e., gifts and presents, etc., then there is no hindrance in making equality between them obligatory. In fact, this is apparent to negate the inclination from which one has been forbidden. My footnote's text ends here, and I hope, God willing, it will be correct. And Allah, Glorified and Exalted, knows best. (T)

Problem 108: From the city, locality Rari Tola, asked by Ehsan Ali Sahib Zardoz, 12 Rabi al-Akhir 1339 AH. What do the scholars of religion and jurists of the clear Sharia say in this matter? A woman named Hindah has had several children, only one of whom is currently alive but chronically ill for several years. This woman, Hindah, suffers from such a severe illness during every pregnancy and childbirth that she becomes afflicted with extreme pain and sickness. Every time at the moment of birth, the midwives suggest that this woman will certainly die, but the Absolute Healer (Allah) restores her to health every time after much suffering and great expense. Consequently, after the recent birth and recovery, Hindah, to save her life and avoid recurring grief and trauma, vowed that she would no longer have intercourse with her husband so that pregnancy does not occur. She told her husband, "If you cannot be patient, then marry again, and if you cannot afford it, then do not even give me bread and maintenance." The husband replied, "If the noble Sharia permits you this matter, then I have no objection, I will be patient. But if the Sharia does not permit this vow, then I cannot at all forfeit my rights and benefits or your rights. Therefore, please write what is the Sharia ruling? Clarify and be rewarded."

Answer: In such a case, the husband can act upon Hindah's request and perform a second marriage and remain separate from Hindah as long as Hindah is satisfied, and he must also provide maintenance to Hindah if Hindah stays with him, and if...

[1] Jadd al-Mumtar, Footnote on Radd al-Muhtar, Chapter of Distribution, Footnote number, Al-Majma' al-Islami, Mubarakpur, India, 2/450.

फ़तावा रजविया - जिल्द 12

[उर्दू पाठ]: लिहाज़ा इसका फल मुतलक (निरपेक्षता) की नफ़ी होगा न कि नफ़ी का मुतलक होना क्योंकि वह सही नहीं है। दूसरा यह कि मुराद वह चीज़ें हों जो असल नफ़क़ा (भरण-पोषण) से ज़्यादा हैं यानी तोहफ़े और हदीये वगैरह, तो अब दोनों के बीच बराबरी को वाजिब ठहराने से कोई रुकावट नहीं है बल्कि यही ज़ाहिर है उस झुकाव की नफ़ी के लिए जिससे रोका गया है। मेरे हाशिये की इबारत यहाँ ख़त्म हुई और मुझे उम्मीद है कि इन्शाअल्लाह वह दुरुस्त होगी। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला १०८: शहर के मोहल्ला रड़ी टोला से एहसान अली साहब ज़रदोज़ द्वारा पूछा गया, १२ रबी उल आखिर १३३९ हिजरी। दीन के उलेमा और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक औरत हिन्दा के कई बच्चे हुए जिनमें से सिर्फ एक बच्चा जो चंद साल का है, हमेशा बीमार रहता है। उस हिन्दा को ऐसी सख़्त बीमारी लाहिक है कि हर बार वह सख़्त तकलीफ़ और मर्ज़ में मुब्तला हो जाती है और दाइयां हर बार विलादत (बच्चे के जन्म) के वक़्त यही कहती हैं कि यह औरत ज़रूर मर जाएगी, मगर शाफ़िये मुतलक (अल्लाह) हर बार बहुत तकलीफ़ और भारी ख़र्च के बाद उसे शिफ़ा दे देता है। चुनाँचे हाल ही में विलादत और सेहत के बाद हिन्दा ने अपनी जान बचाने और हर बार के ग़म और सदमे से बचने के लिए अहद (प्रतिज्ञा) किया कि अब मैं अपने पति से हमबिस्तरी नहीं करूँगी ताकि गर्भ न ठहरे, और अपने पति से कहा कि अगर तुमसे सब्र न हो सके तो दूसरी शादी कर लो और अगर गुंजाइश न हो तो मुझे रोटी-कपड़ा (नफ़क़ा) भी न देना। इस पर शौहर ने कहा कि अगर शरीयत तुझे इस बात की इजाज़त दे तो मुझे कोई ऐतराज़ नहीं, मैं सब्र कर लूँ और अगर शरीयत इस अहद की इजाज़त न दे तो मैं अपने हक़ और फ़ायदे और तेरे हुक़ूक़ को हरगिज़ ख़त्म नहीं कर सकता। लिहाज़ा तहरीर फ़रमाएं कि शरीयत का क्या हुक्म है? बयान करें और अज्र पाएं।

जवाब: ऐसी सूरत में शौहर हिन्दा के कहने पर अमल कर सकता है और दूसरी शादी कर ले और हिन्दा से अलग रहे जब तक हिन्दा राज़ी हो, और नफ़क़ा (खर्चा) हिन्दा को भी ज़रूर दे अगर हिन्दा उसके यहाँ रहे, और अगर...

[1] जद अल-मुम्तार, हाशियह रद अल-मुह्तार, बाब अल-क़िस्म, हाशियह नंबर, अल-मजमा अल-इस्लामी, मुबारकपुर, भारत, २/४५०।

पृष्ठ २७९/६८८

بینھما مطلقا فی النفقۃ، علی ان مطلقا ناظر الی المنفی دون النفی فیکون محصلہ سلب الاطلاق لا اطلاق السلب فانہ غیر سدید، والثانی ان یراد مایزاد علی النفقۃ من الھدایا والعطایا فلامانع من ایجاب التسویۃ بینھما بل ھو الظاھر نفیا للمیل المنھی عنہ اھ' ما کتبتہ و ارجوان یکون صوابا ان شاء اللہ تعالٰی۔ واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم۔

پس اس کا ثمر سلبِ اطلاق ہوگا نہ کہ اطلاقِ سلب کیونکہ وہ درست نہیں۔ دوسرا یہ کہ مراد وہ اشیاء ہوں جو اصلِ نفقہ سے زائد ہیں یعنی تحفے اور ہدیے وغیرہ، تو اب دونوں کے درمیان برابری کو واجب ٹھہرانے سے کوئی مانع نہیں بلکہ یہی ظاہر ہے اس میل کی نفی کے لئے جس سے روکا گیا ہے، میرے حاشیہ کی عبارت ختم ہوئی اور مجھے امید ہے ان شاء اللہ تعالٰی وہ درست ہوگا۔ اور اللہ سبحانہ و تعالٰی خوب جانتا ہے۔ (ت)

مسئلہ ۱۰۸: از شہر محلہ رڑی ٹولہ مسئولہ احسان علی صاحب زردوز ۱۲ ربیع الآخر ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے علمائے دین ومفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت ہندہ کی چند اولادیں ہوئیں ان میں سے صرف ایک بچہ چند سال کا دائم المریض حیات ہے اس ہندہ کو مرض ایسا سخت لاحق ہے کہ ہر بار سخت تکلیف اور مرض میں مبتلا ہو جاتی ہے اور مس ہر بار وقتِ ولادت یہی تجویز کرتی ہے کہ یہ عورت ضرور مرجائے گی مگر شافیِ مطلق بر حق ہر بار بعد تکلیفِ بسیار و خرچِ کثیر کے اچھا کر دیتا ہے چنانچہ حال میں بعد ولادت و صحت کے ہندہ نے اپنی جان بچانے اور ہر بار غم و صدمہ سے بچنے کے لئے عہد کیا کہ اب میں اپنے زوج سے جماع نہ کروں گی تاکہ اسبابِ نطفہ نہ واقع ہو، اور اپنے زوج سے کہا کہ تم کو صبر نہ آوے تو دوسری شادی کرلو اور

جو مقدرت نہ ہو تو مجھے نان و نفقہ بھی نہ دو۔ پس شوہر نے کہا کہ اگر شرع شریف تجھ کو اس امر کی اجازت دے تو مضائقہ نہیں میں صبر کر لوں اور جو شرع اس عہد کی اجازت نہ دے تو میں اپنے حقوق اور منافع اور تیرے حقوق کو تلف ہرگز نہیں کر سکتا لہذا تحریر فرمائیں کہ شرعاً کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا الجواب: ایسی صورت میں شوہر ہندہ کے کہنے پر عمل کر سکتا ہے اور دوسری شادی کرلے اور ہندہ سے جُدا رہے جب تک ہندہ راضی ہو، اور نان نفقہ ہندہ کو بھی ضرور دے اگر ہندہ اس کے یہاں رہے، اور اگر

[1] جدالممتار حاشیہ ردالمحتار باب القسم حاشیہ نمبر المجمع الاسلامی مبارکپور انڈیا ۲/۴۵۰

Fatawa Rizvia, Volume 12

If Hind (the wife) waives her maintenance, it's her choice not to give it until she demands it again. If she goes to her parents' house and doesn't return upon the husband's calling, her maintenance is automatically waived until she returns. And Allah Almighty knows best.

Question 109: From Kanpur, Talaq Mahal Matab, Hakim Nooruddin Sahib, Petitioner: Abdullah Sahib, 4 Shawwal 1339 AH. What do the scholars of religion say about a minor girl Hind, 12 years old, who cannot bear intercourse? Can her guardian stop her from going to her husband's house or not? Explain and be rewarded.

Answer: When she is twelve (12) years old, she should certainly be capable, but in rare cases where she is very weak and delicate, and the man is giant-like and strong-bodied, such that her inability to bear it is truly suspected, then in this case he (the guardian) can certainly stop her. In case of disagreement, the decision will be based on the judge's (Qazi's) opinion; he will see and decide whether the woman can bear it or not. It is stated in Radd al-Muhtar:

[Arabic Quote and Urdu Translation Box] (Arabic): They (the jurists) have clearly stated among us that if a wife is minor and cannot endure intercourse, she shall not be handed over to her husband until she is capable of it. The correct view is that it is not determined by age, but rather it is left to the judge's discretion based on her physical state, whether she is plump or frail. We have previously cited from al-Tatarkhaniyya that even if she is an adult but cannot endure it, her handover to the husband shall not be ordered. Thus, the statement 'she cannot endure it' includes both cases: whether the inability is due to her own weakness or frailty, or due to the large size of the husband's organ. And Allah Almighty knows best.

(Urdu Translation): Indeed, they have clearly stated that when a wife is minor and does not have the strength for intercourse, she will not be handed over to her husband until she becomes capable of intercourse. The correct view is that no age limit is fixed for this, but rather it will be left to the judge's opinion so that he may see if the wife is strong or weak. We have previously mentioned from Tatar-khaniyya that the order to hand over will not be given (in such a case). His statement that 'she cannot endure intercourse' includes both situations: whether she is unable to bear it

due to the woman's weakness or due to the large size of the man's organ. And Allah Almighty knows best. (T)

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Apportionment, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/399.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

यदि हिंदा (पत्नी) अपना भरण-पोषण (नफ़क़ा) छोड़ दे, तो यह उसकी इच्छा है कि जब तक वह फिर से इसकी माँग न करे, उसे न दिया जाए। और यदि हिंदा अपने माता-पिता के घर चली जाए और पति के बुलाने पर वापस न आए, तो उसका भरण-पोषण स्वयं ही समाप्त हो जाता है जब तक कि वह वापस न आ जाए। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

प्रश्न 109: कानपुर से, तलाक़ महल मतब, हकीम नूरुद्दीन साहब, निवेदक: अब्दुल्ला साहब, 4 शव्वाल 1339 हिजरी। धर्म के विद्वान इसके बारे में क्या कहते हैं कि हिंदा, जो 12 वर्ष की एक नाबालिग लड़की है और संभोग सहन नहीं कर सकती, क्या उसका अभिभावक उसे अपने पति के घर जाने से रोक सकता है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: जब वह बारह (12) वर्ष की है, तो वह निश्चित रूप से सहन करने में सक्षम होनी चाहिए, लेकिन किसी दुर्लभ स्थिति में जब वह बहुत कमज़ोर और नाज़ुक हो और पुरुष विशाल और शक्तिशाली शरीर वाला हो, जिससे वास्तव में उसकी असमर्थता का संदेह हो, तो इस स्थिति में वह (अभिभावक) उसे अवश्य रोक सकता है। विवाद की स्थिति में इसका निर्णय काज़ी (न्यायाधीश) की राय पर होगा; वह देखकर तय करेगा कि महिला सहन कर सकती है या नहीं। रद अल-मुह्तार में है:

[अरबी उद्धरण और उर्दू अनुवाद बॉक्स] (अरबी): हमारे यहाँ (फ़ुक़हा ने) स्पष्ट किया है कि यदि पत्नी नाबालिग हो और संभोग सहन करने की शक्ति न रखती हो, तो उसे पति के हवाले नहीं किया जाएगा जब तक कि वह इसके योग्य न हो जाए। और सही बात यह है कि इसकी कोई आयु सीमा निर्धारित नहीं है, बल्कि यह काज़ी की राय पर छोड़ दिया जाएगा कि वह देखे कि पत्नी स्वस्थ है या कमज़ोर। हमने पहले ही तातारखानिया के हवाले से उल्लेख किया है कि यदि वह वयस्क भी हो लेकिन सहन न कर सके, तो उसे पति को सौंपने का आदेश नहीं दिया जाएगा। अतः'वह संभोग सहन न कर सके इस कथन में दोनों स्थितियाँ शामिल हैं: चाहे असमर्थता महिला की कमज़ोरी या दुबलेपन के कारण हो, या पुरुष के अंग के बड़े होने के कारण हो। और अल्लाह तआला खूब जानता है।

(उर्दू अनुवाद): वास्तव में, उन्होंने स्पष्ट किया है कि जब पत्नी नाबालिग हो और संभोग की शक्ति न रखती हो, तो उसे तब तक पति के हवाले नहीं किया जाएगा जब तक कि वह संभोग के योग्य न हो जाए। और सही बात यह है कि इसमें उम्र की कोई सीमा निश्चित नहीं है, बल्कि काज़ी की राय पर छोड़ दिया जाएगा कि वह देखे कि पत्नी स्वस्थ है या कमज़ोर। और हम तातारखानिया के हवाले से

पहले भी ज़िक्र कर चुके हैं कि उसे सौंपने का आदेश नहीं दिया जाएगा। और उसका यह कथन कि 'वह संभोग सहन न कर सके, इन दोनों स्थितियों को शामिल करता है: चाहे असमर्थता स्त्री की कमज़ोरी के कारण हो या पुरुष के अंग के बड़े होने के कारण। और अल्लाह तआला खूब जानता है। (त)

1. रद अल-मुह्तार, बाब अल-क़िस्म, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/399।

पृष्ठ 688 का 280

فتاویٰ رضویہ ، جلد دوازدہم

ہندہ اپنا نفقہ ساقط کرے تو اختیار کہ نہ دے جب تک ہندہ پھر از سر نو مطالبہ پر نہ آئے، اور اگر ہندہ اپنے والدین کے یہاں چلی جائے اور شوہر کے بلانے پر نہ آئے تو آپ ہی اس کا نفقہ ساقط ہے جب تک واپس نہ آئے۔ واللہ تعالیٰ اعلم مسئلہ ۱۰۹: از کانپور طلاق محال مطب حکیم نور الدین صاحب مسئولہ عبداللہ صاحب ۴ شوال ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین کہ ہندہ نابالغہ ۱۲ سال کی جو مجامعت کی متحمل نہیں ہو سکتی ہے اس کا ولی اسے شوہر کے یہاں جانے سے روک سکتا ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: جب بارہ ۱۲ سال کی ہے ضرور متحمل ہو سکتی ہے مگر کسی صورت نادرہ میں کہ بہت کمزور نازک ہو اور مرد دیو قامت قوی الجثہ کہ واقعی عدم تحمل مظنون ہو، تو اس صورت میں بیشک روک سکتا ہے، اور عند الاختلاف اس کا فیصلہ رائے قاضی سے ہوگا وہ دیکھ کر تجویز کرے گا کہ عورت تحمل کر سکتی یا نہیں۔ رد المحتار میں ہے:

[عربی عبارت اور اس کا اردو ترجمہ] قد صرحوا عند نا بان الزوجة اذا کانت صغیرة لا تطیق الوطی لاتسلم الی الزوج حتی تطیقه و الصحیح انه غیر مقدر بالسن بل یفوض الی القاضی بالنظر الیها من سمن او هزال وقد منا عن التاتر خانیة ان بالغة اذا کانت لا تتحمل لا یؤمر بدفعها الی الزوج ایضا فقوله لا تتحمل یشمل مالوکان لضعفها او هزالها او لکبر آلته اھ واللہ تعالی اعلم۔

تحقیق انہوں نے تصریح فرمائی کہ زوجہ جب صغیرہ ہو اور وطی کی طاقت نہ رکھتی ہو تو اس کو شوہر کے حوالے نہیں کیا جائے گا جب تک کہ وہ وطی کے قابل نہ ہو جائے، اور صحیح یہ ہے کہ اس میں عمر کی کوئی حد مقرر نہیں بلکہ قاضی کی رائے پر چھوڑا جائے گا کہ وہ دیکھے

کہ زوجہ قوی ہے یا کمزور۔ اور ہم تاتار خانیہ سے سابق میں ذکر کر چکے ہیں کہ حوالے کرنے کا حکم نہیں دیا جائے گا، اور اس کا قول کہ "وہ وطی کی متحمل نہ ہو" ان دونوں صورتوں کو شامل ہے کہ وہ عدم تحمل چاہے تو عورت کی کمزوری کی وجہ سے یا مرد کے آلہ کی بڑائی کی وجہ سے ہو۔ اور اللہ تعالٰی خوب جانتا ہے۔ (ت)

۱ ردالمحتار باب القسم دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۹۹/۲

Fatawa Razawiya, Volume 12

Problem 110: From Soron district, Etah, Mohalla Malik Zadagan, from Mirza Ahmad Hasan Sahib, 26 Rabi-ul-Akhir 1310 AH.

What do the scholars of religion and muftis of the clear Sharia say regarding this issue: A person named Amr, who has a young daughter, received marriage proposals for her from many places. He declined all others and fixed his daughter's engagement with the son of Zaid. After some time, the aforementioned Amr broke the engagement with Zaid's son and fixed it elsewhere, i.e., with the son of Bakr. Now, is this engagement fixed recently with Bakr's son correct and permissible or not? Or should the permission and consent of the first one be taken, with whom the engagement was first fixed? And if permission is not granted, is there any Sharia defect remaining in the marriage with Bakr's son? Please provide a detailed answer and earn reward. May Allah guide you.

Answer: An engagement is merely an agreement and a promise. Breaking an engagement after it has been fixed is a breach of promise, which has three forms: If the promise was made merely verbally for worldly show from the beginning, and at that very time there was an intention in the heart not to fulfill it, then without Sharia necessity or a state of helplessness, it is a severe sin and forbidden. Such breaking of promise is counted among the signs of hypocrisy in the Hadith.

[Arabic Quote]: "As we have explained in our treatise 'Inba al-Huzzaq bi-Masalik al-Nifaq', and this is the interpretation of what is mentioned in 'al-Ashbah' that breaking a promise is forbidden, etc."

As we have explained in our treatise 'Inba al-Huzzaq bi-Masalik al-Nifaq', and what is in 'al-Ashbah' that breaking a promise is forbidden, its meaning is also this. (Etc.)

And if the promise was made with a sincere heart, but later some acceptable excuse or reasonable cause arose, then there is no harm in not fulfilling it, nor even any minor dislike (karahat), especially when this excuse and benefit are preferred over the merit and virtue of fulfilling the promise. This is particularly true in matters of marriage, which involves a lifetime of companionship and is a very delicate matter, especially for honorable daughters, particularly in the land of India. Therefore, if any harm or loss appears after the engagement, the engagement should be broken; otherwise, for the sake of keeping one's word, a helpless and voiceless person would be trapped in misery for a lifetime. Especially when there is a religious necessity, for

instance, it becomes known that the person with whom the engagement was fixed is a Rafidhi, Wahabi, or of any bad sect, in which case breaking the engagement is mandatory. Allah the Almighty says:

---

1. Al-Ashbah wa al-Nazair, Chapter of Prohibition and Permissibility, Idara al-Quran wa al-Uloom al-Islamiyyah, Karachi, 2/109.

फतावा रजविया, जिल्द 12

मसला 110: सोरों जिला एटा, मोहल्ला मलिक जादगाँ से मिर्ज़ा अहमद हसन साहब, 26 रबी-उल-आख़िर शरीफ़ 1310 हिजरी।

क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरअ-ए-मतीन इस मसले में कि: अम्र एक व्यक्ति जिसकी एक जवान लड़की है और बहुत जगह से उसके पास निकाह के पैग़ाम आए, लेकिन उसने सबको मना कर दिया और ज़ैद के लड़के से अपनी लड़की की निस्बत (सगाई) कर दी। कुछ समय बाद उक्त अम्र ने ज़ैद के लड़के से अपनी लड़की की निस्बत छुड़ाकर दूसरी जगह यानी बक्र के लड़के से कर दी। अब यह निस्बत जो बाद में बक्र के लड़के से की गई है, दुरुस्त व जायज़ है या नहीं? या पहले वाले से, जिसके साथ उसने पहले निस्बत की थी, उसकी इजाज़त और रजामंदी लेनी चाहिए? और अगर वह इजाज़त न दे, तो क्या बक्र के लड़के के निकाह में कोई शरई नुक़्स बाक़ी रहा? विस्तृत उत्तर प्रदान करें और पुण्य कमाएँ।

उत्तर: निस्बत (सगाई) महज़ एक इक़रार और वादा है। एक जगह निस्बत करके उसे तोड़ देना वादा-खिलाफ़ी है, जिसकी तीन सूरतें हैं: अगर वादा शुरू से ही सिर्फ़ ज़बानी तौर पर दुनियादारी के लिए किया गया था और उसी समय दिल में यह था कि इसे पूरा नहीं करेंगे, तो बिना शरई ज़रूरत या मजबूरी की हालत के यह सख़्त गुनाह और हराम है। ऐसी वादा-खिलाफ़ी को हदीस में मुनाफ़िक़त (ढोंग) की निशानियों में गिना गया है।

[अरबी उद्धरण]: जैसा कि हमने अपने रिसाले 'इनबा-उल-हुज़ाक़ बि-मसालिक-इन-निफ़ाक़' में बयान किया है, और 'अल-अश्बाह' में जो ज़िक्र है कि वादा-खिलाफ़ी हराम है, उसका अर्थ भी यही है।

जैसा कि हमने अपने इस रिसाले 'इनबा-उल-हुज़ाक़ बि-मसालिक-इन-निफ़ाक़' में बयान किया है, और वह जो 'अश्बाह' में है कि वादा-खिलाफ़ी हराम है, उसका मतलब भी यही है। इत्यादि (त)

और अगर वादा सच्चे दिल से किया गया था, फिर कोई मक़बूल उज़्र (मान्य बहाना) और माकूल सबब पैदा हुआ, तो वादा पूरा न करने में कोई हर्ज नहीं, यहाँ तक कि मामूली कराहियत (बुराई) भी नहीं, जबकि उस उज़्र और मसलेहत को वादा निभाने की ख़ूबी और फ़ज़ीलत पर वरीयता हासिल हो। ख़ासकर निकाह के मामले में जो उम्र भर के साथ का सामान और सख़्त नाज़ुक मामला है, विशेषकर शरीफ़ घरानों की बेटियों के लिए, ख़ासकर हिन्दुस्तान में। अतः अगर निस्बत के बाद कोई

हर्ज या नुक़सान नज़र आए, तो निस्बत तोड़ दी जाए, वरना अपनी ज़बान पालने के लिए एक बेकस और बेज़बान लड़की को उम्र भर तकलीफ़ में फँसाना होगा। ख़ासकर जब कोई दीनी ज़रूरत हो, मसलन यह मालूम हुआ कि जिससे निस्बत तय हुई थी वह राफ़ज़ी, वहाबी या किसी भी बद-मज़हब (भ्रष्ट पंथ) का है, तो इस सूरत में निस्बत तोड़ देना ज़रूरी है। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

---

1. अल-अश्बाह व अन-नज़ाइर, बाब हज़र व इबाहत, इदारातुल क़ुरान वल उलूम अल-इस्लामिया कराची, 2/109

فتاویٰ رضویہ، جلد دوازدہم

مسئلہ ۱۱۰: از سوروں ضلع ایٹہ محلہ ملک زادگان مرسلہ مرزا احمد حسن صاحب ۲۶ ربیع الآخر شریف ۱۳۱۰ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ عمرو ایک شخص جس کی ایک لڑکی جوان ہے اور بہت جگہ سے پیغام نسبت کے اُس کے پاس آئے لیکن اس نے سب کو جواب دیا اور زید کے لڑکے سے اپنی لڑکی کی نسبت کر دی، بعد چند عرصہ کے عمرو مذکور نے زید کے لڑکے سے اپنی لڑکی کی نسبت چھڑا کر دوسری جگہ پر یعنی بکر کے لڑکے سے کردی، اب یہ نسبت جو آخر جگہ پر بکر کے لڑکے سے کی گئی ہے درست و جائز ہے یا نہیں؟ یا کہ اول عمرو کے لڑکے سے کہ جس کے ساتھ اس نے پہلے نسبت کردی تھی اس کی اجازت اور رضامندی لینا چاہئے، اور اگر عمرو کا لڑکا اجازت نہ دے تو بکر کے لڑکے کے نکاح میں تو کوئی نقص شرعی باقی نہیں رہا؟ مفصل طور پر جواب مرحمت فرمائے۔ بینوا توجروا

الجواب: نسبت صرف ایک اقرار و وعدہ ہے، اور ایک جگہ نسبت کر کے چھڑا لینا خلف وعدہ جس کی تین صورتیں ہیں اگر وعدہ سرے سے صرف زبانی بطور دنیا سازی کیا اور اُسی وقت دل میں تھا کہ وفا نہ کریں گے تو بے ضرورت شرعی و حالتِ مجبوری سخت گناہ و حرام ہے ایسے ہی خلافِ وعدہ کو حدیث میں علاماتِ نفاق سے شمار کیا،

کما بیناہ في رسالتنا انباء الحذاق بمسالك النفاق و ھو محمل ما في الاشباہ من ان خلف الوعد حرام الخ۔

جیسا کہ ہم نے اس اپنے رسالہ 'انباء الحذاق بمسالك النفاق' میں بیان کیا ہے، اور وہ جو اشباہ میں ہے وعدہ خلافی حرام ہے اس کا محمل بھی یہی ہے۔ الخ (ت)

اور اگر وعدہ سچے دل سے کیا پھر کوئی عذرِ مقبول و سببِ معقول پیدا ہوا تو وفا نہ کرنے میں کچھ حرج کیا ادنیٰ کراہت بھی نہیں جبکہ اس عذر و مصلحت کو اس وفائے وعدہ کی خوبی و فضیلت پر ترجیح ہو خصوصاً امرِ نکاح میں کہ عمر بھر کے ساتھ کا سامان اور سخت نازک معاملہ ہے خصوصاً بے چاری شریف زادیوں کے لئے خصوصاً بلادِ ہندوستان میں، پس اگر نسبت کے بعد کوئی حرج و نقصان ظاہر ہو نسبت چھڑا لی جائے ورنہ اپنی زبان پالنے کے لئے ایک بے کس بے زبان کو عمر بھر مضرت میں پھنسانا ہوگا خصوصاً جبکہ ضرورتِ دینی ہو مثلاً معلوم ہوا کہ جس سے نسبت قرار پائی رافضی وہابی اور کسی قسم کا بد مذہب ہے کہ اس صورت میں نسبت چھڑا لینا لازم۔ قال تعالیٰ:

---

[1] الاشتباہ والنظائر باب حظر واباحت ادارۃ القرآن والعلوم الاسلامیہ کراچی ۱۰۹/۲

Fatawa Razviyah Volume 12

“And if the Shaytan causes you to forget, then sit not, after the reminder, with the people who are wrongdoers.” (1) And if Satan makes you forget, do not sit with the unjust people after coming to your senses.

And in Al-Uqayli from Anas, from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him): “Do not sit with them, nor drink with them, nor eat with them, nor marry with them.” (2) And it is narrated in Al-Uqayli that Hazrat Anas (may Allah be pleased with him) relates from the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) that do not sit in their company, nor participate in eating or drinking with them, nor enter into mutual marriage with them. (T)

For the girl's side, considering the benefits and avoiding evils is more important. If the boy's side also sees benefit in abandoning it, they should abandon it. The Radiant Messenger (peace and blessings of Allah be upon him) sent a marriage proposal to Diba'ah bint 'Amir bin Qaraz (may Allah be pleased with her). She accepted, then the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) saw a benefit and abandoned it.

In Al-Mawahib and its commentary by Al-Zarqani, it is mentioned: (Among the women to whom the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) sent a proposal of marriage but did not marry) the sixth is Hazrat Diba'ah (may Allah be pleased with her). She had accepted faith early on in Makkah and then migrated. She was among the most beautiful women of the Arabs. The Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) sent a proposal of marriage to her through her son Salama bin Hisham. So he (Salama) said: O Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him)! There is no refusal from you, may I consult her? The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said: Yes (consult her). So he came to Diba'ah and she said: Fear Allah, do you consult me about the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him)? I desire to be resurrected with his pure wives on the Day of Judgment. You...

(1) Al-Qur'an Al-Karim 6/68 (2) Al-Du'afa al-Kabir by Al-Uqayli, translation of Ahmad bin Imran, number 153, Dar al-Kutub al-Ilmiyah Beirut 1/126

Page 282 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

"और अगर तुझे शैतान भुला दे, तो याद आने के बाद ज़ालिम क़ौम के पास मत बैठ।" (1) और अगर शैतान तुझे भुला दे तो याद आने के बाद ज़ालिम क़ौम के पास मत बैठ।

और अक़ीली में अनस से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "उनके साथ मत बैठो, न उनके साथ पियो, न उनके साथ खाओ, और न ही उनसे निकाह करो।" (2) और अक़ीली में है कि हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि न उनके हम-मजलिस बनो, न खाने-पीने में उनसे शिरकत करो और न ही उनसे आपसी निकाह करो। (त)

लड़की वालों के लिए तो हितों का ध्यान रखना और बुराइयों से बचना ज़्यादा ज़रूरी है। अगर लड़के वाले भी इसे छोड़ने में भलाई समझें, तो छोड़ दें। हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ज़ुबा'आ बिंत आमिर बिन क़रज़ रज़ियल्लाहु अन्हा को निकाह का पैग़ाम भेजा, उन्होंने क़बूल किया, फिर हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को किसी हिकमत का पता चला तो आपने तर्क(छोड़) फ़रमाया।

मवाहिब और उसकी शरह ज़रक़ानी में है कि (जिन औरतों को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निकाह का पैग़ाम भेजा मगर निकाह न फ़रमाया, उनमें से) छठी हज़रत ज़ुबा'आ रज़ियल्लाहु अन्हा हैं। वह इब्तिदा ही में मक्का में ईमान ले आई थीं, फिर उन्होंने हिजरत की। वह अरब की सबसे हसीन औरतों में से थीं। हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके बेटे सलमा बिन हिशाम को उनके लिए निकाह का पैग़ाम दिया, तो उन्होंने (सलमा ने) कहा: ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आपसे कोई मना नहीं कर सकता, क्या मैं उनसे मशवरा कर लूँ? हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: हाँ (मशवरा कर लो)। चुनांचे वह ज़ुबा'आ के पास आए तो उन्होंने कहा: अल्लाह से डरो, क्या अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में मुझसे मशवरा लेते हो? मैं क़यामत में उनकी अज़वाज-ए-मुतहरात (पवित्र पत्नियों) के साथ उठना चाहती हूँ। आप...

(1) अल-कुरआन अल-करीम 6/68 (2) अज़-ज़ुआफ़ा अल-कबीर लिल-अक़ीली, तर्जुमा अहमद बिन इमरान नंबर 153, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया बेरूत 1/126

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

وَاِمَّا یُنْسِیَنَّكَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰی مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ۱ اور اگر تجھے شیطان بُھلادے تو یاد آنے کے بعد ظالم قوم کے پاس مت بیٹھ۔

وللعقیلی عن انس عن النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم لا تجالسوھم ولا تشاربوھم ولا تواکلوھم ولا تناکحوھم ۲ اور عقیلی میں ہے کہ حضرت انس رضی اللہ تعالٰی عنہ حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے روایت فرماتے ہیں کہ نہ اُن کے ہم مجلس بنو نہ کھانے پینے میں ان سے مشارکت کرو نہ ہی ان سے باہمی نکاح کرو۔ (ت)

لڑکی والوں کو تو لحاظِ مصالح و احترازِ مفاسد زیادہ اہم ہے لڑکے والے بھی اگر ترک میں مصلحت سمجھیں ترک کردیں، حضور پُرنور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے ضباعہ بنتِ عامر بن قرظ رضی اللہ تعالٰی عنہا کو نکاح کا پیغام دیا انہوں نے قبول کیا پھر حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو مصلحت پیش آئی ترک فرمایا۔

فی المواھب وشرحھا للعلامۃ الزرقانی السادسۃ ضباعۃ اسلمت قدیما بمکۃ وھاجرت وکانت من اجمل نساء العرب خطبھا صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلّم الی ابنھا سلمۃ بن ھشام فقال یا رسول اللہ تعالٰی علیک وسلم مأ عنك مدفع افاستأمرھا قال نعم فاتاھا فقالت اللہ فی رسول صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم تستأمرنی انی ابتغی ان احشر مع ازواجہ ارجع الیہ فقل لہ نعم قبل ان یبدو لہ فقیل للنبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم انھا کبرت فلما عاد ابنھا وقد اذنت لہ. مواہب اور اس کی شرح زرقانی میں ہے کہ (جن عورتوں کو نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے پیغام نکاح بھیجا مگر نکاح نہ فرمایا ان میں سے) چھٹی حضرت ضباعہ رضی اللہ تعالٰی عنہا ہیں وہ ابتدا ہی میں مکہ میں ایمان لے آئی تھیں

پھر انہوں نے ہجرت کی وہ عرب کی حسین ترین عورتوں میں سے تھیں، حضور انور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ان کے بیٹے سلمہ بن ہشام کو ان کے لئے پیغامِ نکاح دیا تو اس (سلمہ) نے کہ یا رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم! آپ سے کوئی مانع نہیں، کہا میں اس (ضباعہ) سے مشورہ کرلوں؟ حضور اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا کہ ہاں (مشورہ کرلو) چنانچہ وہ ضباعہ کے پاس آیا تو انہوں (ضباعہ) نے کہا کہ اللہ سے ڈر، کیا رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے بارے میں مجھ سے مشورہ لیتا ہے، میں ان کی ازواجِ مطہرات کے ساتھ قیامت میں اٹھنا چاہتی ہوں آپ

۱ القرآن الکریم ۶۸/۶ ۲ الضعفاء الکبیر للعقیلی ترجمہ احمد بن عمران نمبر ۱۵۳ دار الکتب العلمیة بیروت ۱۲۶/۱

Fatawa Razviyya Volume 12

[Arabic]: He (peace and blessings of Allah be upon him) remained silent about her and did not marry her, may Allah be pleased with her. [Summarized] [Urdu]: Go back to her and before any new matter appears for you, say yes. Then it was submitted to the service of the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) that she (Duba'ah) is aged. Thus, when her son returned while they had given permission for marriage, the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) remained silent and did not marry her. [Summarized] (T)

And if there is no excuse or benefit and the engagement is broken without reason, then this situation is "Makruh Tanzihi" (disliked but not sinful).

[Arabic]: And this is the context of what is in Radd al-Muhtar: from here you know that breaking a promise is disliked, not forbidden. And in al-Dhakhira it is mentioned that it is "Makruh Tanzihi" because it is a breach of promise, and fulfilling a promise is recommended. [Urdu]: And this is the context of what is in Radd al-Muhtar; from here you will know that breaking a promise is disliked, not forbidden, and in Dhakhira it is stated that it is "Makruh Tanzihi" because it is breaking a promise and fulfilling a promise is desirable (Mustahab). (T)

This matter on this estimation is out of place and against chivalry, but not forbidden or a sin. The illuminated presence, the Master of the Worlds (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Arabic]: Breach of promise is not when a man makes a promise while his intention is to fulfill it. Rather, breach of promise is when a man makes a promise while his intention is not to fulfill it. Reported by Abu Ya'la in Musnad from Zaid bin Arqam (may Allah be pleased with him) with a good (hasan) chain. [Urdu]: Breach of promise is not that a man makes a promise while his intention is to fulfill it, but breach of promise is that a man makes a promise while his intention is to not fulfill it. Abu Ya'la narrated this in his Musnad from Hazrat Zaid Arqam (may Allah be pleased with him) with a good chain. (T)

In this case, even this dislike is removed because those with whom the engagement was first made gave permission happily. This was the ruling for breaking the engagement. As for marrying elsewhere, there is no defect in it at all, whichever of the three aforementioned situations occurs, because the engagement was after all just a promise, not a contract (Nikah) that another marriage cannot happen without

death or divorce. Yes, as long as the engagement there is not broken off, it is forbidden to propose to others.

1. Sharh Zurqani alal Mawahib al-Ladunniyyah, mention of Safiyya Umm al-Mu'minin, Dar al-Ma'rifah Beirut, 3/270.
2. Radd al-Muhtar, Kitab al-Aariyah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/502.
3. Kanz al-Ummal with reference to 'A' from Zaid bin Arqam, Hadith, Mu'assasah al-Risalah Beirut, 3/47.

फ़तावा रज़विया खंड 12

[अरबी]: उन्होंने (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) उनके बारे में चुप्पी साधी और उनसे निकाह नहीं किया, अल्लाह उनसे राजी हो। [संक्षिप्त] [उर्दू]: उसकी तरफ वापस जाओ और इससे पहले कि तुम्हारे लिए कोई नई बात ज़ाहिर हो, हाँ कह दो। फिर नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ख़िदमत में अर्ज़ किया गया कि वह (ज़ुबाआ) उम्र दराज़ (बुढ़िया) हैं। चुनाँचे जब उनका बेटा वापस आया इस हाल में कि उन्होंने निकाह की इजाज़त दे दी, तो नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने सुकूत (चुप्पी) फ़रमाया और उनसे निकाह न फ़रमाया। [संक्षिप्त] (T)

और अगर कोई उज़्र (बहाना) और मजलहत नहीं है और बिना वजह निसबत (सगाई) छुड़ाई जाती है तो यह सूरत मकरूह तंज़ीही है।

[अरबी]: और रद अल-मुह्तार में जो है उसका यही संदर्भ है: यहाँ से आप जान जाएँगे कि वादा खिलाफी मकरूह है न कि हराम। और अल-ज़ख़ीरा में है कि यह मकरूह तंज़ीही है क्योंकि यह वादा खिलाफी है और वादे को पूरा करना मुस्तहब (पसंदीदा) है। [उर्दू]: और रद अल-मुह्तार में जो है उसका यही महमल (तात्पर्य) है; यहाँ से तो जान जाएगा कि वादा खिलाफी मकरूह है न कि हराम, और ज़ख़ीरा में है कि मकरूह तंज़ीही है क्योंकि यह ख़ल्फ़-ए-वादा है और वफ़ा-ए-अहद मुस्तहब है। (T)

यह बात इस तक़दीर पर बे-जा और ख़िलाफ़-ए-मुरव्वत है मगर हराम और गुनाह नहीं, हुज़ूर पुरनूर सैय्यद अल-आलमीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

[अरबी]: वादा खिलाफी यह नहीं है कि कोई आदमी वादा करे और उसकी नियत उसे पूरा करने की हो। बल्कि वादा खिलाफी यह है कि आदमी वादा करे और उसकी नियत उसे पूरा न करने की हो। इसे अबू या'ला ने अपनी मुसनद में ज़ैद बिन अर्क़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) से हसन सनद के साथ रिवायत किया है। [उर्दू]: वादा खिलाफी यह नहीं कि मर्द वादा करे दरआँहालिका उसकी नियत वादा को पूरा करने की हो, लेकिन वादा खिलाफी यह है कि मर्द वादा करे दरआँहालिका उसकी नियत उस वादा को पूरा न करने की हो। इसको अबू या'ला ने अपने मुसनद में हज़रत ज़ैद अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु से बसंद-ए-हसन रिवायत फ़रमाया। (T)

इस सूरत में यह कराहत ही दफ़ा हो गई कि पहले जहाँ निसबत (सगाई) की थी वह बख़ुशी इजाज़त दे दें, यह तो निसबत छुड़ाने का हुक्म था, रहा दूसरी जगह निकाह करना इसमें किसी तरह कोई

खलल नहीं ख़्वाह यहाँ तीनों सूरतों मज़कूरह में से कोई सूरत वाक़े हो कि निसबत बहरहाल सिर्फ़ वादा ही वादा थी कोई अक़्द न थी कि अब बे-मौत या तलाक़ दूसरी जगह निकाह न हो सके हाँ जब तक वहाँ से निसबत छूट न जाए दूसरों को पयाम (प्रस्ताव) देने की मुमानअत (मनाही) है।

1. शरह ज़ुरक़ानी अलल मवाहिब अल-लदुन्निय्या, ज़िक्र सफ़िया उम्मुल मोमिनीन, दार अल-मआरिफ़ा बैरूत, 3/270।
2. रद अल-मुह्तार, किताब अल-आरिया, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी बैरूत, 2/502।
3. कंज़ अल-उम्माल बहालह 'ए' ज़ैद बिन अर्क़म से, हदीस, मुअस्ससतु रसाला बैरूत, 3/47।

पृष्ठ 688 का 283

فتاوٰی رضویہ جلد دو از دہم

سکت عنہا صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فلم ینکحہا رضی اللہ تعالٰی عنہا ملخصاً۔ کی طرف واپس جا اور قبل اس کے آپ کے لئے کوئی نئی بات ظاہر ہو ہاں کہہ دے، تو نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی خدمت میں عرض کیا گیا کہ وہ (ضباعہ) عمر رسیدہ ہیں۔ چنانچہ جب ان کا بیٹا واپس آیا اس حال میں کہ انہوں نے نکاح کی اجازت دے دی تو نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے سکوت فرمایا اور ان سے نکاح نہ فرمایا اہ ملخصاً (ت)

اور اگر کوئی عذر و مصلحت نہیں بلا وجہ نسبت چھڑائی جاتی ہے تو یہ صورت مکروہ تنزیہی ہے، وھو محمل ما فی ردالمحتار من ھنا تعلم ان خلف الوعد مکروہ لا حرام و فی الذخیرۃ یکرہ تنزیھا لانہ خلف الوعد ویستحب الوفاء بالعھد 2۔ اور یہی محمل ہے اس کا جو ردالمحتار میں ہے، یہاں سے تو جان جائے گا کہ وعدہ خلافی مکروہ نہ کہ حرام، اور ذخیرہ میں ہے کہ مکروہ تنزیہی ہے کیونکہ یہ خلف وعدہ ہے اور وفاء عہد مستحب ہے (ت)

یہ بات اس تقدیر پر بے جا و خلاف مروت ہے مگر حرام و گناہ نہیں، حضور پرنور سید العالمین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: لیس الخلف ان یعد الرجل ومن نیتہ ان یفی ولکن الخلف ان یعد الرجل ومن نیتہ ان لایفی 3۔ رواہ ابو یعلی فی مسند عن زید بن ارقم رضی اللہ تعالٰی عنہ بسند حسن۔ وعدہ خلافی یہ نہیں کہ مرد وعدہ کرے درانحالیکہ اس کی نیت وعدہ کو پورا کرنے کی ہو، لیکن وعدہ خلافی یہ ہے کہ مرد وعدہ کرے درانحالیکہ اس کی نیت اس وعدہ کو پورا نہ کرنے کی ہو۔ اس کو ابویعلی نے اپنے مسند میں حضرت زید ارقم رضی اللہ تعالٰی عنہ سے بسند حسن روایت فرمایا۔ (ت)

اس صورت میں یہ کراہت ہی دفع ہو گئی کہ پہلے جہاں نسبت کی تھی وہ بخوشی اجازت دے دیں، یہ تو نسبت چھڑانے کا حکم تھا، رہا دوسری جگہ نکاح کرنا اس میں کسی طرح کوئی خلل نہیں خواہ یہاں تینوں صور مذکورہ سے کوئی صورت واقع ہو کہ نسبت بہر حال صرف وعدہ ہی وعدہ تھی کوئی عقد نہ تھی کہ اب بے موت یا طلاق دوسری جگہ نکاح نہ ہو سکے ہاں جب تک وہاں سے نسبت چھوٹ نہ جائے دوسروں کو پیام دینے کی ممانعت ہے،

1 شرح زرقانی علی المواہب اللدنیہ ذکر صفیہ ام المومنین دارالمعرفۃ بیروت ۳ / ۲۷۰ 2 ردالمحتار کتاب العاریۃ دار احیاء التراث العربی بیروت ۲ / ۵۰۲ 3 کنز العمال بحوالہ ع عن زید بن ارقم حدیث مؤسسۃ الرسالۃ بیروت ۳ / ۴۷

Fatawa Razawiyyah Volume 12

The Messenger of Allah (may Allah peace and blessings be upon him) says: "A man should not propose over the proposal of his brother until he marries or leaves it." Narrated by the Two Sheikhs (Bukhari & Muslim) from Abu Huraira (may Allah be pleased with him). No man should send a marriage proposal over his brother's marriage proposal until he either marries or gives it up. Shaykhayn narrated this from Hazrat Abu Huraira (may Allah be pleased with him). (T)

This is a separate matter, but if a marriage is performed even without having the previous proposal broken off, there is no defect in the marriage as is not hidden (T). And Allah the Glorified and Most High knows best.

Problem 111: Locality of Jagal, Haripur police station, Kot Najibullah Khan post office, sent by Molvi Sher Muhammad Sahib, 23 Ramadan 1311 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Is the money that people take at the time of engagement or marriage lawful or not?

The Answer: If the person giving the money gives it so that, out of greed for it, they perform the marriage with him, then it is a bribe; its giving and taking are all unauthorized and forbidden. In Al-Fatawa al-Hindiyyah: He spent with the desire that she would marry him. The teacher Qazi Khan said: The more correct opinion is that he can reclaim it from her, whether she married him or not, because it is a bribe. Ends summarized. It is stated in Al-Hindiyyah that if a man gave expenses to a woman with the greed that she would marry him, then Imam Ustadh (Qazi Khan) stated that the most correct view is that he can take it back from that woman, whether she marries him or not, because this is a bribe. Ends summarized (T).

Similarly, if the woman's guardians say: 'Give us this much money then we will marry her to you, otherwise not', as is prevalent among some rural ignorant people having learned it from the Hindu disbelievers, then this too is a bribe and forbidden. In Al-Fatawa al-Hindiyyah: He proposed to a woman in her brother's house, but he refused to give her (in marriage)... It is stated in Al-Hindiyyah that a man (proposed to) a woman in her brother's house...

1 Sahih Bukhari, Chapter: No proposal should be made over a brother's proposal etc., Qadimi Kutub Khana Karachi, 2/212. 2 Fatawa Hindiyyah, Book of Gifts, Chapter 11: Miscellaneous matters, Noorani Kutub Khana Karachi, 4/403.

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: "कोई आदमी अपने भाई के निकाह के पैगाम पर पैगाम न दे जब तक कि वह निकाह न कर ले या उसे छोड़ न दे।" इसे शैखैन (बुखारी और मुस्लिम) ने अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया है। कोई मर्द अपने भाई के निकाह के पैगाम पर पैगाम न दे यहाँ तक कि वह निकाह कर ले या उसे छोड़ दे। शैखैन ने इसे हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत फरमाया। (त)

यह एक अलग बात है लेकिन निकाह बिना पिछला रिश्ता तुड़वाए भी कर दिया जाए तो निकाह में कोई कमी नहीं जैसा कि छुपा हुआ नहीं है (त)। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है।

मसला 111: इलाका जागल, थाना हरीपुर, डाकखाना कोट नजीबुल्लाह खान, प्रेषक मौलवी शेर मोहम्मद साहब, 23 रमज़ान 1311 हिजरी। उलमा-ए-दीन इस मसले में क्या फरमाते हैं कि सगाई या निकाह के वक़्त जो रुपया लोग लेते हैं वह हलाल है या नहीं?

जवाब: अगर वह रुपया देने वाला इस लिए देता है कि उसके लालच में वे मेरा निकाह (उस लड़की से) कर दें, तो वह रिश्वत है, उसका देना और लेना सब नाजायज़ और हराम है। अल-फ़तावा अल-हिन्दिया में है: उसने इस लालच में खर्च किया कि वह उससे निकाह करेगी। उस्ताद काज़ी खान ने कहा: अधिक सही राय यह है कि वह उससे वापस मांग सकता है, चाहे उसने उससे निकाह किया हो या नहीं, क्योंकि यह रिश्वत है। संक्षेप में समाप्त। हिन्दिया में है कि मर्द ने किसी औरत को इस लालच पर खर्चा दिया कि वह उससे निकाह करेगी, तो इमाम उस्ताद (काज़ी खान) ने फरमाया कि सही यही है कि वह उस औरत से वापस ले सकता है, वह औरत उससे निकाह करे या न करे क्योंकि यह रिश्वत है। संक्षेप में समाप्त (त)।

इसी तरह अगर औरत के वलियों (सरपरस्तों) ने कहा कि हमें इतना रुपया दो तो हम तुझसे निकाह कर देंगे वरना नहीं, जैसा कि कुछ देहाती जाहिलों में हिन्दू काफ़िरों से सीख कर प्रचलित है, तो यह भी रिश्वत और हराम है। अल-फ़तावा अल-हिन्दिया में है: उसने अपने भाई के घर में एक औरत को निकाह का पैगाम दिया और उसने उसे देने से इनकार कर दिया... हिन्दिया में है कि मर्द ने किसी औरत को उसके भाई के घर में...

1 सहीह बुखारी, अध्याय: भाई के पैगाम पर पैगाम न दिया जाए आदि, कदीमी कुतुब खाना कराची, 2/212। 2 फ़तावा हिन्दिया, किताबुल हिबा, अध्याय 11: मुतफ़र्रकात (विविध मामले), नूरानी कुतुब खाना कराची, 4/403।

पृष्ठ 284 का 688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں: لا یخطب الرجل علی خطبۃ اخیہ حتی ینکح او یترک۔ اخرج الشیخان عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ کوئی مرد اپنے بھائی کے پیغام نکاح پر پیغام نہ دے یہاں تک کہ وہ نکاح کرلے یا چھوڑ دے۔ شیخین نے اس کو حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت فرمایا۔ (ت)

یہ جُدا بات ہے مگر نکاح بے نسبت بچھڑائے بھی کردیا جائے گا تو نکاح میں کچھ نقص نہیں کمالایخفی (جیسا کہ پوشیدہ نہیں ت) واللہ سبحنہ و تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۱۱: موضع علاقہ جاگل تھانہ ہری پور ڈاک خانہ کوٹ نجیب اللہ خاں مرسلہ مولوی شیر محمد صاحب ۲۳ رمضان ۱۳۱۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ نسبت یا نکاح کے وقت جو روپیہ لوگ لیتے ہیں حلال ہے یا نہیں؟

الجواب: اگر وہ روپیہ دینے والا اس لئے دیتا ہے کہ اس کے لالچ سے میرے ساتھ نکاح کردیں جب تو وہ رشوت ہے اس کا دینا لینا سب ناجائز و حرام ہے۔ فی الھندیۃ انفق علی طمع ان یتزوجھا قال الاستاذ قاضی خاں الاصح انہ یرجع علیھا زوجت نفسھا اولم تزوج لانھا رشوۃ اہ ملخصا۔ ہندیہ میں ہے کہ مرد نے کسی عورت کو اس طمع پر خرچہ دیا کہ وہ اس سے نکاح کرے گی تو امام استاذ (قاضی خاں) نے فرمایا کہ اصح یہی ہے کہ وہ اس عورت سے واپس لے سکتا ہے وہ عورت اس سے نکاح کرے یا نہ کرے کیونکہ یہ رشوت ہے اہ ملخصا (ت)

یوں ہی اگر اولیائے عورت نے کہا کہ اتنا روپیہ ہمیں دے تو تجھ سے نکاح کردیں گے ورنہ نہیں جیسا کہ بعض دہقانی جاہلوں میں کفار ہنود سے سیکھ کر رائج تو یہ بھی رشوت و حرام ہے، فی

الهندية خطب امرأة بيت اخيها فابٰى ان يدفعها ہندیہ میں ہے کہ مرد نے کسی عورت کو اس کے بھائی کے گھر

١ صحیح بخاری باب لایخطب علی خطبة اخیه الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ٢/ ٢١٢ ٢ فتاوی ہندیہ کتاب الهبة الباب الحادی عشر فی المتفرقات نورانی کتب خانہ کراچی ۴/ ۴۰۳

Fatawa Razvia Volume 12

[Top Box Left - Arabic]: ...until he pays Dirhams, so he paid and married her; he can reclaim what he paid because it is a bribe. Thus it is in Al-Qunyah. [Top Box Right - Urdu]: A marriage proposal was sent, and her brother expressed his willingness to give her in marriage on the condition that some dirhams be given to the woman's brother. So the person gave those dirhams, and her brother then married her to that man. Now he can take back those dirhams because this is a bribe. It is mentioned similarly in Al-Qunyah. (T)

[Middle Paragraph - Urdu]: And if these are not the cases but rather a custom where some money is sent from the groom's side to the bride's side before the marriage, like jewelry and sets of clothes are sent in our lands, which is called 'charhawa' (bridal offering); if the marriage takes place, it's fine, otherwise that property should be returned, there is no harm in it. And its ruling is that if the marriage is settled, it will be returned.

[Bottom Box Left - Arabic]: In Al-Hindiyyah, Ali bin Ahmad was asked about someone who sent Dinars to the family of his fiancée, then they made clothes for him as is customary. After that, he says, 'I paid it as part of the dowry (Mahr).' Is the statement his? He said, 'The statement is that of the sender.' It was said to him, 'If he gave them Dinars and said, "Spend some for the weaver's wage, some for the price of a sheep to buy, and some for cotton as is customary," then they did that and she was wed to him. After that, he claims, "I sent the Dinars for the Mahr." Is his statement accepted?' He said, 'If he has made an explicit statement, his statement in specifying (it otherwise later) is not accepted.' And Abu Hamid was asked about a man who proposed for his son to a fiancée and sent...

[Bottom Box Right - Urdu]: In Hindiyyah, it is stated that Ali bin Ahmad was asked about such a person who sent some Dinars to his fiancée's family, then they made clothes for that person according to custom. Now he says that I gave the Dinars as Mahr; will his statement be reliable? So they said that the sender's word will be reliable. It was submitted that if he gives Dinars to the fiancée's family and says to spend some of it on the weaver's labor, some for buying a goat and spend on its price, and spend on other customs and traditions according to habit, then the people of the betrothed woman did so and that woman was sent to him. Now he says that I sent those Dinars as Mahr; will his statement be accepted? You said that when he has

made an explicit statement with his words, now in specifying (as Mahr), his statement will not be reliable. Imam Abu Hamid was asked that a man for his son...

[Footnote]: 1. Fatawa Hindiyyah, The Eleventh Chapter on Miscellaneous Matters, Book of Gifts, Noorani Kutub Khana Karachi, 4/403.

फतावा रज़विया जिल्द बारहवीं

[शीर्ष बॉक्स बायां - अरबी]: ...जब तक वह दिरहम न दे दे, तो उसने दिया और उससे निकाह कर लिया; वह जो उसने दिया है उसे वापस ले सकता है क्योंकि यह रिश्वत है। अल-कुन्या में भी ऐसा ही है। [शीर्ष बॉक्स दायां - उर्दू]: निकाह का पैगाम भेजा गया तो उसके भाई ने इस शर्त पर निकाह देने का इज़हार किया कि वह उस औरत के भाई को कुछ दिरहम दे। तो उस शख्स ने वो दिरहम दे दिए तो उसके भाई ने उसका निकाह उस मर्द से कर दिया। अब वो दिरहम वापस ले सकता है क्योंकि यह रिश्वत है। ऐसे ही कुन्या में भी है। (त)

[मध्य पैराग्राफ - उर्दू]: और अगर यह सूरतें नहीं बल्कि रस्म है कि निकाह से पहले दूल्हे की तरफ से कुछ रुपया दुल्हन की तरफ जाए जैसे हमारे शहरों में गहना और जोड़ा भेजा जाता है जिसे चढ़ावा कहते हैं, अगर निकाह हो जाए तो हो जाए वरना वह माल वापस दिया जाए तो इसमें कोई हर्ज नहीं, और इसका वही हुक्म है कि अगर निकाह ठहरेगा तो वापस दिया जाएगा।

[निचला बॉक्स बायां - अरबी]: अल-हिंदिया में अली बिन अहमद से उस व्यक्ति के बारे में पूछा गया जिसने अपनी मंगेतर के घरवालों को दीनार भेजे, फिर उन्होंने रिवाज के मुताबिक उसके लिए कपड़े बनवाए। उसके बाद वह कहता है कि यह मेहर (दहेज) की अदायगी थी। क्या उसकी बात मानी जाएगी? उन्होंने कहा, 'बात भेजने वाले की मानी जाएगी।' उनसे कहा गया, 'अगर उसने उन्हें दीनार दिए और कहा, "कुछ बुनकर की मजदूरी में खर्च करें, कुछ भेड़ खरीदने की कीमत में और कुछ रिवाज के मुताबिक कपास (जौज़का) में खर्च करें," फिर उन्होंने वैसा ही किया और वह ब्याह कर उसके पास आ गई। उसके बाद वह दावा करता है, "मैंने दीनार मेहर के लिए भेजे थे।" क्या उसकी बात स्वीकार की जाएगी?' उन्होंने कहा, 'यदि उसने स्पष्ट रूप से बयान दिया है, तो बाद में निर्धारण बदलने में उसकी बात स्वीकार नहीं की जाएगी।' और अबू हामिद से एक ऐसे व्यक्ति के बारे में पूछा गया जिसने अपने बेटे के लिए मंगेतर का हाथ माँगा और भेजा...

[निचला बॉक्स दायां - उर्दू]: हिंदिया में है कि अली बिन अहमद से ऐसे शख्स के बारे में पूछा गया जिसने अपनी मंगेतर वालों को कुछ दीनार भेजे फिर उन्होंने हस्बे-आदत उस शख्स के लिए कपड़े बना दिए, अब वो कहता है कि मैंने दीनार मेहर में दिए थे तो क्या उसका कौल मोतबर होगा, तो उन्होंने कहा कि भेजने वाले की बात मोतबर होगी, अर्ज़ की गई कि अगर वो मंगेतर वालों को दीनार देकर कहे कि इसमें से कुछ जुलाहे की मज़दूरी में खर्च कर दो कुछ बकरी खरीद लो उसकी कीमत

में खर्च कर दो और दीगर रस्म-ओ-रिवाज़ में हस्बे-आदत खर्च कर दो, फिर अहल-ए-मख़तूबा ने ऐसा ही किया और वो औरत उसके पास भेज दी गई अब वो कहता है कि मैंने वो दीनार मेहर में भेजे थे तो क्या उसका कौल तस्लीम किया जाएगा, आपने फरमाया कि जब उसने कौल के साथ तसरीह कर दी है तो अब तयीन में उसका कौल मोतबर न होगा। इमाम अबू हामिद से पूछा गया कि एक शख्स ने अपने लड़के

[फुटनोट]: 1. फतावा हिंदिया, अल-बाब अल-हादी अशर फ़ी अल-मुतफ़र्रकात, किताब अल-हिबा, नूरानी कुतुब खाना कराची, 4/403।

पृष्ठ 285 का 688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

[اوپر والا خانہ بایاں - عربی]: حتی یدفع دراھم فدفع وتزوجھا یرجع بما دفع لانھا رشوۃ کذافی القنیۃ۔

[اوپر والا خانہ دایاں - اردو]: پیغام نکاح بھیجا تو اس کے بھائی نے اس شرط پر نکاح دینے کا اظہار کیا کہ وہ اس عورت کے بھائی کو کچھ درہم دے تو اس شخص نے وہ درہم دے دیئے تو اس کے بھائی نے اس کا نکاح اس مرد سے کردیا اب وہ درہم واپس لے سکتا ہے کیونکہ یہ رشوت ہے۔ ایسے ہی قنیہ میں بھی ہے۔ (ت)

[درمیانی عبارت - اردو]: اور اگر یہ صورتیں نہیں بلکہ رسم ہے کہ نکاح سے پہلے دولہا کی طرف سے کچھ روپیہ دُلہن کی طرف جائے جیسے ہمارے بلاد میں گہنا اور جوڑا جاتا ہے جسے چڑھاد ا کہتے ہیں، اگر نکاح ہو جائے تو ہو جائے ورنہ وہ مال واپس دیا جائے تو اس میں کچھ حرج نہیں، اور اس کا وہی حکم ہے کہ اگر نکاح ٹھہرے گا تو واپس دیا جائے گا۔

[نیچے والا خانہ بایاں - عربی]: فی الھندیۃ سئل من علی بن احمد عمن ارسل الی اھل خطیبتہ دنانیر ثم اتخذوالہ ثیاباً کما ھو العادۃ ثم بعد ذلك یقول ھو نقدتھا من المھر ھل یکون القول قولہ فقال القول قول الباعث ، قیل لہ لو دفع الیھم دنانیر فقال انفقوا البعض الی اجرۃ الحائك والبعض الی ثمن الشاۃ للشراء والبعض الی الجوزقۃ کما ھو العادۃ ، ثم فعلوا ذلك فزفت الیہ ثم بعد ذلك یدّعی انی بعثت الدنانیر لاجل المھر یقبل قولہ قال اذا صرح بالقول لا یقبل قولہ فی التعیین ، وسئل ابو حامد عن رجل خطب لابنہ خطیبۃ وبعث [نیچے والا خانہ دایاں - اردو]: ہندیہ میں ہے کہ علی بن احمد سے ایسے شخص کے بارے میں پوچھا گیا جس نے اپنی منگیتر والوں کو کچھ دینار بھیجے پھر انہوں نے حسب عادت اس شخص کے لئے کپڑے بنادئے ، اب وہ کہتا ہے کہ میں نے دینار مہر میں دئے تھے تو کیا اس کا قول معتبر ہوگا، تو انہوں نے کہا کہ بھیجنے والے کی بات معتبر ہوگی ، عرض کی گئی کہ اگر

وہ منگیتر والوں کو دینار دے کر کہے کہ اس میں سے کچھ جولا ہے کی مزدوری میں خرچ کردو کچھ بکری خرید لو اسکی قیمت میں خرچ کردو اور دیگر رسم ورواج میں حسب عادت خرچ کردو، پھر اہل مخطوبہ نے ایسا ہی کیا اور وہ عورت اس کے پاس بھیج دی گئی اب وہ کہتا ہے کہ میں نے وہ دینار مہر میں بھیجے تھے تو کیا اس کا قول تسلیم کیا جائے گا، آپ نے فرمایا کہ جب اس نے قول کے ساتھ تصریح کردی ہے تو اب تعیین میں اس کا قول معتبر نہ ہوگا۔ امام ابوحامد سے پوچھا گیا کہ ایک شخص نے اپنے لڑکے

[حاشیہ]: 1 فتاوی ہندیہ الباب الحادی عشر فی المتفرقات کتاب الہبۃ نورانی کتب خانہ کراچی ۴/ ۴۰۳

Fatawa Rizvia, Volume 12

[Arabic Passage 1]: ...dirhams to a girl for the purpose of engagement, and then the father died. The other heirs claimed inheritance from this property that was sent. He [Imam Abu Hamid] said: "If the union between them was completed, then it belongs to his son. If it was not completed, then it is inheritance. If the father is alive, recourse should be had to his statement [intent]."

[Arabic Passage 2]: My father was asked about someone who sent sugar, walnuts, dates, and other things to his fiancée, and then they changed their minds and abandoned the marriage contract. Can this suitor regain what he gave? He replied: "If these items were distributed among people with the permission of the giver, he has no right to take them back. If he did not give permission for that, then he has the right to take them back." This is stated in 'At-Tatarkhaniyya.'

[Author's Note]: Regarding the statement "it belongs to his son," I say: You know that this depends on custom. If the custom is that the intention is to give ownership to the bride, then it belongs to her, not to the husband [the son], as is not hidden. And Allah knows best.

[1] Fatawa Hindiyya, Chapter on Disagreement of Spouses regarding Mahr (Dower), Nurani Kutub Khana Print, Peshawar, 1/322.

Page 286 of 688

फ़तावा रज़विया, खंड 12

[अरबी पाठ 1]: ...सगाई के उद्देश्य से एक लड़की को कुछ दिरहम भेजे, और फिर पिता की मृत्यु हो गई। अन्य वारिसों ने इस भेजी गई संपत्ति से विरासत का दावा किया। उन्होंने [इमाम अबू हामिद] कहा: "यदि उनके बीच संबंध (निकाह) पूरा हो गया है, तो वह उसके बेटे का है। यदि वह पूरा नहीं हुआ है, तो वह विरासत है। यदि पिता जीवित है, तो उसके बयान (इरादे) की ओर रुख किया जाना चाहिए।"

[अरबी पाठ 2]: मेरे पिता से एक ऐसे व्यक्ति के बारे में पूछा गया जिसने अपनी मंगेतर को चीनी, अखरोट, खजूर आदि भेजे और फिर उनका इरादा बदल गया और उन्होंने विवाह अनुबंध छोड़ दिया। क्या प्रेमी (ख़ातिब) वह सब वापस ले सकता है जो उसने दिया था? उन्होंने उत्तर दिया: "यदि ये चीजें देने वाले की अनुमति से लोगों में बांट दी गई हैं, तो उसे उन्हें वापस लेने का कोई अधिकार नहीं है। यदि उसने इसकी अनुमति नहीं दी थी, तो उसे उन्हें वापस लेने का अधिकार है।" ऐसा ही 'ततारख़ानिया' में है।

[लेखक का नोट]: "वह बेटे का है" वाले कथन के बारे में, मैं कहता हूँ: आप जानते हैं कि यह प्रथा (उर्फ़) पर निर्भर करता है। यदि प्रथा यह है कि इसका उद्देश्य दुल्हन को स्वामित्व देना है, तो यह उसका होगा, लड़के का नहीं, जैसा कि छिपा नहीं है। और अल्लाह बेहतर जानता है।

[1] फ़तावा हिन्दिया, महर के संबंध में जीवनसाथी के विवाद का अध्याय, नूरानी कुतुब खाना प्रेस, पेशावर, 1/322।

पृष्ठ 688 का 286

الیھا دراھم ثم مات الاب وطلب سائر الورثة لا | کے لئے کسی لڑکی سے منگنی کی اور اس لڑکی کو کچھ درہم بھیجے میراث من ھذا المال المبعوث، فقال ان تمت الوصلة | پھر یہ باپ مر گیا تو اس کے وارثوں نے اس مال سے میراث بینھما فھو ملك لابنه وان لم تتم فھو میراث، وان | طلب کی جو لڑکی کو بھیجی گئی تھی، تو امام ابو حامد نے فرمایا کہ کان الاب حیاً یرجع الی بیانه، وسئل والدي عمن | اگر ان دونوں میں تعلق تام ہو گیا ہے تو وہ مال اس کے بیٹے بعث الی الخطیبة سکرا وجوزا وتمرا و غیرھا ثم | کی ملک ہوگا، اور اگر تعلق تام نہیں ہوا تو وہ میراث ہوگا اور بدالھم فترکوا المعاقدة ھل لھذا الخاطب ان یرجع | اگر باپ زندہ ہو تو اس کے بیان کی طرف رجوع کیا جائے علیھم باسترداد ما دفع فقال ان فرق ذلك علی الناس | گا۔ اور میرے والد سے پوچھا گیا کہ ایک مرد نے اپنی منگیتر کی بأذن الدافع لیس له حق الرجوع وان لم یأذن له فی | طرف شکر، اخروٹ، بادام اور چھوہارے وغیرہ بھیجے پھر مرد ذلك فله ذلك کذا فی التتارخانیة اه قوله فھو ملك | والوں کی رائے میں آیا تو انہوں نے عقد ترک کر دیا تو اب لابنه اقول: انت تعلم ان ھذا یراد علی العرف فان | اب اس مرد (خاطب) کے لئے جائز ہے کہ وہ یہ بھیجی ہوئی کان العرف ان یراد بذلك تملیك العروس فھو ملکھا | چیزیں واپس لے، تو انہوں نے فرمایا کہ اگر لڑکی والوں نے یہ لا ملك الزوج کما لا یخفی۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ | چیز اس مرد کے کہنے سے لوگوں میں تقسیم کر دی ہیں تو وہ | واپس لینے کا حق نہیں رکھتا، اور اگر اس نے ایسا کرنے کی | اجازت نہیں دی تو واپس لینے کا حق رکھتا ہے، ایسا ہی | تاتار خانیہ میں ہے اھ اس کا قول کہ وہ بیٹے کی ملک ہو گا | اقول: (میں کہتا ہوں) آپ کو معلوم ہے کہ اس کا دارومدار | عرف پر ہے اگر عرف میں اس مراد دلہن کی ملکیت ہوتا ہے | تو اس کی ملک ہو گا نہ لڑکے کی، جیسا کہ مخفی نہیں۔ | واللہ تعالٰی اعلم (ت)

[1] فتاویٰ ہندیہ باب اختلاف الزوجین فی المهر مطبع نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۳۲۲ Page 286 of 688

Fatawa Razvia Volume Twelve

Chapter of the Second Marriage

Treatise Ata'ib al-Tahani fi al-Nikah al-Thani 1312 AH (Detailed rulings on the second marriage of a widow)

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

Problem 112: From Ujjain, residence of Mir Khadim Ali Sahib, Assistant, sent by Haji Yaqub Ali Khan Sahib, 9 Safar 1312 AH.

Praise is due to that one Pure Being, Who created all these possibilities. And He created His beloved alone, through whom light and radiance appeared in the world.

Muhammad Yaqub Ali Khan, son of the late Pir Muhammad Khan Nizami Chishti Qadri, humbly submits to the source of grace that this fatwa written by Molvi Abdul Rahim Dehlavi has passed before this humble servant's eyes. According to its content, most Muslim inhabitants of India are not only burdened with sin but also with infidelity (kufr). Therefore, I am sending the text of the fatwa to your noble presence, seeking an answer for peace of mind. "Indeed, Allah does not allow the reward of the doers of good to be lost."[1] (Certainly, Allah Almighty does not waste the reward of those who do good deeds. - Translator)

[1] Al-Quran al-Karim 9/120

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

निकाह-ए-सानी (द्वितीय विवाह) का अध्याय

रिसाला (लघुग्रंथ) अताइब अल-तहानी फ़ी अल-निकाह अल-सानी १३१२ हिजरी (विधवा के दूसरे विवाह के विस्तृत नियम)

अल्लाह के नाम से, जो अत्यंत कृपाशील और दयावान है।

मसला ११२: उज्जैन से, मीर खादिम अली साहब असिस्टेंट का निवास, प्रेषक हाजी याकूब अली खान साहब, ९ सफर १३१२ हिजरी।

प्रशंसा के योग्य वह एक पवित्र सत्ता है, जिसने इन तमाम संभावनाओं (सृष्टि) को पैदा किया। और अपने हबीब (प्रिय) को पैदा किया, जिनसे दुनिया में नूर और रौशनी फैली।

मोहम्मद याकूब अली खान, सुपुत्र मरहूम पीर मोहम्मद खान निज़ामी चिश्ती क़ादरी, फ़ैज़ की सेवा में अर्ज़ करते हैं कि मौलवी अब्दुल रहीम देहलवी द्वारा लिखित यह फतवा इस तुच्छ सेवक की नज़रों से गुज़रा है। इसकी विषयवस्तु के अनुसार, भारत के अधिकांश मुसलमान निवासियों पर न केवल गुनाह बल्कि कुफ्र (ईश्वरद्रोही होना) आयद होता है। इसलिए, फतवे की इबारत आपकी सेवा में भेजकर जवाब का तलबगार हूँ ताकि मन को शांति मिले। "बेशक अल्लाह नेकी करने वालों का अजर (फल) ज़ाया नहीं करता।"[1] (बेशक अल्लाह तआला एहसान करने वालों का फल बर्बाद नहीं करता। - अनुवादक)

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम ९/१२०

باب النكاح الثاني

رسالہ اطائب التھانی فی النکاح الثانی ۱۳۱۲ھ (بیوہ کے نکاح ثانی کے مفصل احکام)

بسم اللہ الرحمن الرحیم ط

مسئلہ ۱۱۲: از اوجین مکان میر خادم علی صاحب اسٹنٹ مرسلہ حاجی یعقوب علی خاں صاحب ۹ صفر ۱۳۱۲ھ

حمد کے لائق ہے وہ اک پاک ذات جس نے پیدا کی یہ ساری ممکنات اور حبیب اپنے کو بس پیدا کیا جس سے عالم میں ہوئے نور و ضیا

محمد یعقوب علی خاں خلف پیر محمد خاں مرحوم نظامی چشتی قادری خدمتِ فیض موہب میں عرض پرداز ہے کہ یہ فتوٰی نوشتہ مولوی عبدالرحیم دہلوی نظرِ احقر سے گزرا، اس کے مضمون سے اکثر ساکنانِ ہند اہلِ اسلام پر گناہ درکنار کفر عائد ہوتا ہے، اس واسطے عبارتِ فتوٰی خدمتِ شریف میں روانہ کر کے طالب جواب ہوں کہ تسکین خاطر کی جائے اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ۝۱ (بیشک اللہ تعالٰی احسان کرنے والوں کا اجر ضائع نہیں کرتا۔ت)

۱ القرآن الکریم ۱۲۰/۹

Fatawa Razawiya Volume 12

The summary of the fatwa is this: Know, O Muslims! The marriage of a widow is proven from the Holy Quran and the noble Hadith. Allah Almighty said: "And marry the unmarried among you..." [1] (Meaning, perform the marriage of widow women). And the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "Marriage is my Sunnah, and whoever turns away from my Sunnah (i.e., rejects it) is not of me." [2]

Therefore, those who reject this, or consider it a defect or bad, or taunt those who do it, or look down upon them, or expel them from the community, or prevent those who want to marry, or create such trouble that the command of God and the Sunnah of the Prophet are not implemented and the custom of the disbelievers remains established, or do not accept the command of God and the Messenger due to the talk of the ignorant—all these types of people are disbelievers. Their wives are out of their marriage (divorced/void), their prayers and fasting are not accepted, and it is absolutely not correct to eat or drink with them until they repent. This is because in all these cases, rejection of God's command and contempt for the Sunnah is required, and this is manifest disbelief as written in all books. It is mentioned in the commentary of the said verse that whoever finds fault in remarrying is faithless. Therefore, it is obligatory for all Muslims to advise and counsel those in whose houses there is a widow eligible for marriage. If they do not listen, then punish them. If punishment is not possible, then stop eating, drinking, talking, and greeting them. Do not invite them to your weddings or funerals, and do not attend their funerals. If you do not do this, you too will be caught in the calamity of this world and the hereafter with them. O brothers! Perform the marriage of widows, and whoever does not agree, stop meeting him and expel him from the community, otherwise there is a fear of losing your own faith too. Rather, a hundred elders have sent this fatwa and said that even now those who do not listen will be humiliated and destroyed in this world and will die faithless in the end. And it was also known that in the same year 1288 AH, at the time of Isha, a thousand people saw a very intense redness appear towards the blessed Medina and it remained for a long time, then spread across the entire sky. It was so terrifying that one wanted to look towards it, rather, all the elders in the Holy City said that it is a great...

[1] Al-Quran Al-Karim 32/24 (Surah An-Nur: 32) [2] Sahih Bukhari, Book of Marriage, Chapter on Encouragement to Marry, Qadimi Kutub Khana Karachi 2/757; Sahih Muslim, Book of Marriage, Chapter on the Desirability of Marriage, Qadimi Kutub

Khana Karachi 1/449; Sunan Ibn Majah, Chapters on Marriage, Chapter on what has been narrated regarding the merit of marriage, H.M. Saeed Company Karachi p. 134.

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

फ़तवे का सारांश यह है: ऐ मुसलमानों जानो! विधवा का निकाह कुरान मजीद और हदीस शरीफ से साबित है, अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और अपने में से बिन ब्याहों का निकाह कर दो..." [1] (यानी विधवा औरतों का निकाह कर दो)। और हज़रत रसूल-ए-खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "निकाह करना मेरी सुन्नत है और जिसने मेरे तरीके से मुँह फेरा यानी इनकार किया तो वह मुझसे नहीं।" [2]

इसलिए, जो लोग इससे इनकार करें या इसे दोष और बुरा समझें या करने वालों पर ताना मारें, उन्हें नीचा समझें, बिरादरी से निकालें या निकाह करने वालों को रोकें, न करने दें या ऐसी फ़साद की बात उठाएं जिससे अल्लाह का हुक्म और रसूल की सुन्नत जारी न हो और काफ़िरों की रस्म कायम रहे या जाहिलों के कहने सुनने का ख्याल करके अल्लाह और रसूल का हुक्म क़बूल न करें, तो ये सब किस्म के लोग काफ़िर हैं। उनकी औरतें उनके निकाह से बाहर हो जाती हैं, नमाज़ रोज़ कुछ क़बूल नहीं, इन लोगों के साथ खाना-पीना हरगिज़ जायज़ नहीं जब तक कि तौबा न करें। इस वजह से कि इन सब सूरतों में अल्लाह के हुक्म का इनकार और सुन्नत की तौहीन लाज़िम आती है और यह ज़ाहिर कुफ्र है जैसा कि तमाम किताबों में लिखा है और उक्त आयत की तफ़सीर में आया है कि जो कोई दूसरे निकाह को दोष समझे वह बेईमान है। अतः सब मुसलमानों पर वाजिब है कि जिन लोगों के घर में निकाह के लायक विधवा औरत हो उन्हें समझा दें और नसीहत करें, और जो न मानें तो उन्हें सज़ा दें, और अगर सज़ा पर बस न चले तो उनके घर का खाना-पीना, बोलना और सलाम-दुआ सब छोड़ दें और अपनी शादी-ग़मी में उन्हें न बुलाएं और न उनके जनाज़े पर जाएं। अगर ऐसा नहीं करेंगे तो ये भी उनके साथ दुनिया व आख़िरत के वबाल में गिरफ़्तार होंगे। ऐ भाइयों! विधवाओं का निकाह कर दो, और जो न माने उससे मिलना छोड़ दो और बिरादरी से निकाल दो वरना तुम्हारे भी ईमान जाने का ख़ौफ़ है, बल्कि सौ बुज़ुर्गों ने यह फ़तवा भेजा है और फ़रमाया है कि अब भी जो लोग नहीं मानेंगे वे दुनिया में बे-इज़्ज़त और तबाह हो जाएंगे और अंत में बेईमान मरेंगे। और यह भी मालूम हुआ कि उसी साल 1288 हिजरी में इशा के समय हज़ार आदमियों ने देखा कि मदीना मुबारका की तरफ़ एक बहुत तेज़ सुर्ख़ी (लाली) ज़ाहिर हुई और बड़ी देर तक रही, फिर तमाम आसमान में फैल गई, वह इतनी हैबतनाक थी कि उसकी तरफ़ देखना चाहता था, बल्कि शरीफ़ (मक्का) में तमाम बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि बड़ा भारी...

[1] अल-कुरान अल-करीम 32/24 (सूरह अन-नूर: 32) [2] सही बुखारी, किताबुन निकाह, बाबू तरगीब फिन-निकाह, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 2/757; सही मुस्लिम, किताबुन निकाह, बाबू इस्तेहबाबन निकाह, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची 1/449; सुनन इब्न माजह, अबवाबुन निकाह, बाबू मा जा'आ फ़ी फ़ज़्लिन निकाह, एच.एम. सईद कंपनी कराची पृ. 134

خلاصہ فتویٰ یہ ہے جانو اے مسلمانو! نکاحِ بیوہ کا ثابت ہے قرآن مجید وحدیث شریف سے، فرمایا اللہ تعالیٰ نے : وَ اَنْکِحُوا الْاَیَامٰی مِنْکُمْ ۱ (یعنی نکاح کر دو بیوہ عورتوں کا۔ اور فرمایا حضرت رسولِ خدا صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے : النکاح سنتی فمن رغب عن سنتی فلیس منی ۲ (ترجمہ:) نکاح کرنا میری سنّت ہے اور جس نے منہ پھیرا میرے طریقے سے یعنی انکار کیا سو وہ مجھ سے نہیں۔

پس جو لوگ اس سے انکار کریں یا عیب اور بُرا جانیں یا کرنے والوں پر طعن کریں حقیر جانیں ذات سے نکالیں یا نکاح کرنے والوں کو روکیں نہ کرنے دیں یا ایسی فساد کی بات اٹھائیں جس سے حکمِ خدا اور سنّتِ رسول جاری نہ ہو اور کافروں کی رسم قائم رہے یا جاہلوں کے کہنے سننے کا خیال کر کے خدا اور رسول کا حکم قبول نہ کریں، سو یہ سب قسم کے لوگ کافر ہیں، عورتیں اُنکی نکاح سے باہر ہو جاتی ہیں، نماز روزہ کچھ قبول نہیں، کھانا پینا ان لوگوں کے ساتھ ہر گز درست نہیں جب تک توبہ نہ کریں اس واسطے کہ ان سب صورتوں میں انکارِ حکمِ خدا اور تحقیرِ سنت لازم آتی ہے اور یہ ظاہر کفر ہے جیسا کہ تمام کتابوں میں لکھا اور آیت مذکور کی تفسیر میں آیا ہے کہ جو کوئی عیب جانے دوسرے نکاح کو وہ بے ایمان ہے، پس سب مسلمانوں کو واجب ہے کہ جن لوگوں کے گھر میں بیوہ عورت لائقِ نکاح کے ہو ان کو سمجھادیں اور نصیحت کر دیں، اور جو نہ مانیں تو تعزیر دیں، اور جو تعزیر کا قابو نہ چلے تو اُن کے گھر کا کھانا پینا بولنا سلام علیک کرنا سب چھوڑ دیں اور اپنی شادی غمی میں اُن کو نہ بلائیں اور نہ اُن کے جنازے پر جائیں، اگر ایسا نہ کریں گے تو یہ بھی ان کے ساتھ دنیا و عاقبت کے وبال میں گرفتار ہوں گے، سوائے بھائیوں! نکاح رانڈوں کا کر دو، اور جو نہ مانے اس سے ملنا چھوڑ دو اور ذات سے ڈال

دو نہیں تو تمہارے بھی ایمان جانے کا خوف ہے، بلکہ سو سو بزرگوں نے یہ فتویٰ بھیجا ہے اور فرمایا ہے کہ اب بھی جو لوگ نہ مانیں گے دنیا میں بے عزّت اور تباہ ہو جائیں گے اور آخر کو بے ایمان مریں گے۔ اور یہ بھی معلوم ہوا کہ اسی سال ۱۲۸۸ھ میں عشاء کے وقت ہزار آدمیوں نے دیکھا کہ ایک سُرخی بڑی شدت کی مدینہ مبارک کی طرف نمودار ہوئی اور بڑی دیر تک رہی پھر تمام آسمان میں پھیل گئی اس ہیبت کی تھی کہ اس کی طرف دیکھنا چاہتا تھا، بلکہ شریف میں تمام بزرگوں نے فرمایا کہ بڑا بھاری---

۱ القرآن الکریم ۳۲/۲۴ ۲ صحیح بخاری کتاب النکاح باب الترغیب فی النکاح قدیمی کتب خانہ کراچی ۲ / ۷۵۷ ، صحیح مسلم کتاب النکاح باب استحباب النکاح قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۴۴۹ ، سنن ابن ماجہ ابواب النکاح باب ما جاء فی فضل النکاح ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۱۳۴

Fatawa Rizvia Volume 12

Wrath is about to descend. An elder was inspired in a dream that the redness [in the sky] is the blood of the widows of India that has gathered and come to complain to the Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him. So soon, wrath will descend upon these Muslims. Arrange their marriages quickly, otherwise, a heavy plague will come and famine will occur, such that most will be destroyed like Yazid. O Allah! Guide all Muslims and save them from wrath. Amen, O Lord of the Worlds, by Your mercy, O Most Merciful of those who show mercy. O Allah, guide to truth and correctness.

Answer (Al-Jawab): In this matter, the ignorant of India have become two groups: those who are neglectful (extremists of omission) who, like the Hindus, consider widow marriage a great shame and disgrace, and God forbid, avoid it more than forbidden acts. If a young girl becomes a widow, even if she has not seen her husband's face, she will now be slaughtered like this for the rest of her life. It is possible that the word 'marriage' may never touch her tongue. If one in a thousand, fearing God and fearing the Day of Judgment, tries to save their faith (as stated in the Hadith:

| Whoever marries has completed half of his religion, so let him fear Allah regarding the remaining half. (1) - Narrated by at-Tabarani in al-Kabir, al-Hakim, and al-Bayhaqi from Anas, may Allah be pleased with him, from the Prophet, peace and blessings of Allah be upon him. | Whoever married completed half of his religion; let him fear Allah regarding the other half. (Imam at-Tabarani in al-Kabir and Imam al-Hakim and al-Bayhaqi narrated it from Hazrat Anas, may Allah be pleased with him, and he narrated it from the Holy Prophet, peace and blessings of Allah be upon him. - T) |

...and gets married, there is a storm of taunts and insults from all four sides. It becomes difficult for the poor woman to go to any gathering, or even to show her face to her own family. Until yesterday she was titled 'Such-and-such Begum' or 'Such-and-such Bano', now there is a cry of 'two-husbanded woman'. There is no power or might except with Allah, the High, the Great. They do evil, and indeed they do a very evil thing by following the disbelievers in establishing an absurd custom. Then based on that, objecting to what is Shariah-permissible, rather in some cases turning away from fulfilling an obligation, is a kind of ignorance and a most terrifying state. Furthermore, if needy young women are prevented and, God forbid, fall into some sin due to the wretchedness of the self, its burden will fall upon those who

prevented them, as they were the cause of this sin. The Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, says:

---

1. Shu'ab al-Iman from Anas bin Malik, Hadith, Dar al-Kutub al-Ilmiyah, Beirut, 3/83-382. Page 289 of 688

क्रोध (ग़ज़ब) उतरने वाला है, एक बुज़ुर्ग को स्वप्न में प्रेरणा (इल्हाम) हुई कि यह सुर्खी हिंदुस्तान की विधवाओं का लहू है जो एकत्रित होकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरबार में फरियाद करने आया था। अतः शीघ्र ही इन मुसलमानों पर क्रोध आने वाला है, जल्द निकाह करा दें, अन्यथा भारी महामारी आएगी और अकाल पड़ेगा जिससे अधिकांश यज़ीद की तरह नष्ट हो जाएँगे। ऐ अल्लाह! सब मुसलमानों को हिदायत दे और क्रोध से बचा, आमीन या रब्बुल आलमीन बरहमतिका या अर्हमर राहिमीन। ऐ अल्लाह! सत्य और सही मार्ग की ओर मार्गदर्शन कर।

उत्तर (अल-जवाब): इस मसले में हिंदुस्तान के अज्ञानी दो गुटों में बंट गए हैं: एक वे जो उपेक्षा करने वाले (अहल-ए-तफ़रीत) हैं, जो विधवा विवाह को हिंदुओं की तरह घोर अपमान और लज्जा समझते हैं और माज़अल्लाह हराम से भी अधिक इससे बचते हैं। यदि कोई युवा लड़की विधवा हो जाए, भले ही उसने पति का मुँह भी न देखा हो, अब वह जीवन भर इसी तरह मरती (ज़बह होती) रहेगी। संभव है कि निकाह का शब्द भी उसकी ज़ुबान पर न आए। यदि हज़ार में किसी एक ने ख़ुदा के ख़ौफ़ और परलोक के डर से अपना धर्म बचाने के लिए (जैसा कि हदीस में आया है:

| जिसने विवाह किया उसने अपना आधा धर्म पूरा कर लिया, अतः उसे चाहिए कि शेष आधे में अल्लाह से डरे। (1) - इमाम तबरानी ने अल-कबीर में और इमाम हाकिम और बैहक़ी ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से। | जिसने निकाह किया उसने अपना आधा दीन पूरा कर लिया, बाकी आधे में अल्लाह से डरे। (इसे अल-कबीर में इमाम तबरानी ने और इमाम हाकिम और बैहक़ी ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया और उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत फ़रमाया। - त) |

...निकाह कर लिया तो उस पर चारों दिशाओं से ताने-उलाहनों की बौछार होने लगती है, बेचारी का किसी सभा में जाना, यहाँ तक कि अपने कुनबे में मुँह दिखाना मुश्किल हो जाता है। कल तक वह 'फलां बेगम' या 'फलां बानो' कहलाती थी, अब 'दो शौहरों वाली' कहकर पुकारा जाता है। ला हौल व ला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम। वे बुरा करते हैं और वास्तव में बहुत बुरा करते हैं। काफ़िरों का अनुसरण करते हुए एक मूर्खतापूर्ण रस्म बना ली है, फिर उसके आधार पर शरीयत द्वारा जायज़ (मुबाह) कार्य पर आपत्ति करना, बल्कि कुछ स्थितियों में एक अनिवार्य कर्तव्य (वाजिब) की अदायगी से मुँह मोड़ना, घोर अज्ञानता और अत्यंत डरावनी स्थिति है। फिर यदि ज़रूरत मंद जवान

औरतों को रोका गया और माज़अल्लाह वे नफ़्स की शरारत से किसी पाप में लिप्त हो गईं, तो उसका बोझ उन रोकने वालों पर होगा क्योंकि वे इस पाप का कारण बने। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

---

1. शुअबल ईमान, अनस बिन मालिक से, हदीस, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत, 3/83-382.
   289 of 688

غضب نازل ہونے والا ہے، سو ایک بزرگ کو خواب میں الہام ہوا کہ یہ سرخی ہندوستان کی بیوہ عورتوں کا خون جمع ہو کر جناب رسولِ خدا صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے فریاد کرنے آیا تھا، سو عنقریب ان مسلمانوں پر غضب آنے والا ہے جلد نکاح کردیں ورنہ بھاری وبا آئے گی اور قحط پڑے گا کہ اکثر یزید کی طرح غارت ہو جائیں گے۔ الٰہی! سب مسلمانوں کو ہدایت کر اور غضب سے بچا، آمین یارب العالمین برحمتک یا ارحم الراحمین۔ اللھم ھدایۃ الحق والصواب

الجواب: اس مسئلہ میں جاہلانِ ہند دو فرقے ہو گئے ہیں: اہل تفریط کہ نکاحِ بیوہ کو ہنود کی طرح سخت ننگ و عار جانتے اور معاذ اللہ حرام سے بھی زائد اس سے پرہیز کرتے ہیں نوجوان لڑکی بیوہ ہو گئی اگرچہ شوہر کا منہ بھی نہ دیکھا ہو اب عمر بھر یونہی ذبح ہوتی رہے ممکن ہے کہ نکاح کا حرف بھی زبان پر نہ لاسکے، اگر ہزار میں ایک آدھ نے خوفِ خدا و ترسِ روزِ جزا کر کے اپنا دین سنبھالنے کو (کہ حدیث میں آیا:

| من تزوج فقد استکمل نصف دینہ فلیتق اللہ فی نصف الباقی ۱- رواہ الطبرانی فی الکبیر والحاکم والبیھقی عن انس رضی اللہ تعالٰی عنہ عن النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم۔ | جس نے نکاح کیا اس نے اپنا آدھا دین پورا کر لیا باقی آدھے میں اللہ سے ڈرے (اس کو کبیر میں امام طبرانی نے اور امام حاکم و بیہقی نے حضرت انس رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا اور انہوں نے نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے روایت فرمایا۔ (ت) |

نکاح کر لیا اس پر چار طرف سے طعن تشنیع کی بوچھاڑ ہے، بیچاری کو کسی مجلس میں جانا بلکہ اپنے کنبے میں منہ دکھانا دشوار ہے، کل تک فلاں بیگم یا فلاں بانو لقب تھا اب دوخصمی کی

پکار ہے ولاحول ولاقوۃ الا باللہ العلی العظیم، یہ برا کرتے اور بے شک بہت برا کرتے ہیں باتباعِ کفار ایک بیہودہ رسم ٹھہرا لینی پھر اس کی بنا پر مباح شرعی پر اعتراض بلکہ بعض صور میں ادائے واجب سے اعراض کسی جہالت اور نہایت خوفناک حالت ہے، پھر حاجت والی جوان عورتیں اگر روکی گئیں اور معاذ اللہ بشامتِ نفس کسی گناہ میں مبتلا ہوئیں تو اس کا وبال ان روکنے والوں پر پڑے گا کہ یہ اس گناہ کے باعث ہوئے۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں :

---

۱ شعب الایمان عن انس بن مالک حدیث دارالکتب العلمیہ بیروت ۳ / ۸۳- ۳۸۲ Page 289 of 688

Fatawa Ridawiyyah, Volume 12

[Box 1] Arabic: It is written in the Torah: Whoever has a daughter who reaches twelve years of age and he does not marry her off, and she commits a sin, the sin of that is upon him. (Narrated by al-Bayhaqi in Shu'ab al-Iman from the Commander of the Faithful, Umar al-Faruq, and from Anas bin Malik, may Allah be pleased with both of them, with an authentic chain of narration.) Urdu: Allah Almighty says in the noble Torah: The person whose daughter reaches the age of twelve and he does not get her married, and if this daughter becomes involved in sin, then its sin is upon that person. (Imam Bayhaqi narrated this in Shu'ab al-Iman from Hazrat Amir-ul-Momineen Umar Farooq and Hazrat Anas bin Malik, may Allah be pleased with them, with an authentic chain of narration. - T)

When this is the ruling regarding virgin girls, the matter of married women is even stricter. Virgin daughters have more modesty and a greater fear of disgrace in sin, and they themselves are not yet aware of that pleasure; only natural, unfamiliar thoughts pass through their hearts. But when a person has once experienced the pleasure of a desire, then its demand takes on a different color, and there is neither such modesty nor such fear and apprehension. May Allah Almighty grant guidance to Muslims, Ameen.

(2) On the other hand are those who go to extremes, most of whom are preachers, Wahhabis, and other ignorant extremists. It is often the habit of these gentlemen that to avoid one small mistake, they commit ten bigger ones. They want to save someone from a ditch and end up falling into a deep well themselves. Labeling Muslims as disbelievers (kafir), polytheists (mushrik), and faithless for any reason or no reason at all is no big deal for them. These people have made widow remarriage seemingly absolutely obligatory and a mandatory duty, whether there is a need or not, or even whether it is Islamically permissible or not, she must not remain without marriage. It's considered not just a duty but seemingly the essence of faith, such that if someone refuses for some reason, their faith is gone, and all those around them, visitors, neighbors, also lose their faith because why didn't they insist on getting the marriage done? And if they had no control, why did they go to them, why did they talk to them, why did they greet them? At every step, women are excluded from marriage, funeral prayers are forbidden, all rulings of disbelief (apply) - and there is no power nor strength except with Allah, the High, the Great. The Messenger of Allah, peace and blessings of Allah be upon him, said:

[Box 2] Arabic: Destroyed are the extremists. (Narrated by the Imams Ahmad, Muslim, and Abu Dawood from Ibn Mas'ud, may Allah be pleased with him.) Urdu: Destroyed are those who practice undue extremism. (Imam Ahmad, Imam Muslim, and Imam Abu Dawood narrated this from Hazrat Abdullah ibn Mas'ud, may Allah be pleased with him. - T)

---

1. Shu'ab al-Iman, Hadith 8670, Dar al-Kutub al-Ilmiyah Beirut, 6/402.
2. Sahih Muslim, Book of Knowledge, Chapter on the Prohibition of Following Ambiguous Verses of the Quran, etc., Qadeemi Kutub Khana Karachi, 2/339.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 12

[बॉक्स 1] अरबी: तौरात में लिखा है: जिसकी बेटी बारह साल की हो जाए और वह उसका निकाह न करे, और वह गुनाह में मुब्तला हो जाए, तो उसका गुनाह उस (पिता) पर है। (इसे इमाम बैहक़ी ने शुअबुल ईमान में अमीरुल मोमिनीन उमर फ़ारूक़ और अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हुमा से सही सनद के साथ रिवायत किया है।) उर्दू: अल्लाह अज़्ज़वजल तौरात शरीफ़ में फ़रमाता है जिसकी बेटी बारह बरस की उम्र को पहुँचे और वह उसका निकाह न करदे और यह दुख़्तर (बेटी) गुनाह में मुब्तला हो तो उसका गुनाह उस शख़्स पर है (इस को इमाम बैहक़ी ने शुअबुल ईमान में हज़रत अमीरुल मोमिनीन उमर फ़ारूक़ और हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से सनदे सहीह के साथ रिवायत फ़रमाया। त)

जब कुंवारी लड़कियों के बारे में यह हुक्म है तो ब्याहियों (विधवाओं या तलाकशुदा) का मामला तो और भी सख़्त है कि कुंवारी बेटियों में हया भी ज़्यादा होती है और गुनाह में बदनामी का ख़ौफ़ भी ज़्यादा होता है और वे खुद अभी उस लज़्ज़त से वाक़िफ़ नहीं होतीं, सिर्फ़ एक फ़ितरी (प्राकृतिक) तौर पर नावाक़िफ़ाना ख़यालात दिल में गुज़रते हैं। और जब आदमी किसी ख़्वाहिश का लुत्फ़ एक बार पा चुका हो, तो अब उसका तकाज़ा दूसरा रंग ले लेता है और उधर न वैसी हया रहती है न वह ख़ौफ़ और अंदेशा। अल्लाह अज़्ज़वजल मुसलमानों को हिदायत बख़्शे, आमीन।

(२) दूसरे वे लोग जो अति करते हैं, जिनमें अक्सर वाज़ीन (उपदेशक), वहाबी और अन्य जाहिल चरमपंथी शामिल हैं। इन हज़रात की अक्सर आदत है कि एक बुराई से बचाने के लिए दस और बड़ी बुराइयाँ कर बैठते हैं। किसी को गड्ढे से बचाना चाहें और खुद गहरे कुएँ में गिर जाएँ। मुसलमानों को बेवजह काफ़िर, मुशरिक और बेईमान ठहरा देना तो इनके लिए कोई बड़ी बात ही नहीं। इन साहबों ने बेवा (विधवा) के निकाह को गोया हर हाल में वाजिब और फ़र्ज़ क़रार दे रखा है, चाहे ज़रूरत हो या न हो, बल्कि शरीअत में इजाज़त हो या न हो, वह बिना निकाह के हरगिज़ न रहे। और न सिर्फ़ फ़र्ज़ बल्कि गोया ईमान का हिस्सा बना दिया है कि अगर किसी वजह से इनकार किया तो ईमान गया, और साथ ही आस-पड़ोस वाले भी ईमान से हाथ धो बैठे कि उन्होंने ज़ोर देकर निकाह क्यों नहीं करवा दिया? और अगर बस में नहीं था तो उनके पास क्यों गए, बात क्यों की, सलाम क्यों लिया? बात-बात पर औरतें निकाह से बाहर, जनाज़े की नमाज़ हराम, कुफ़्र के तमाम अहकाम - ला हौल

वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

[बॉक्स 2] अरबी: वे लोग तबाह हो गए जो अति (ग़ुलू) करने वाले हैं। (इसे इमाम अहमद, मुस्लिम और अबू दाऊद ने इब्ने मसूद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है।) उर्दू: हलाक हुए बेजा तशद्दुद (सख़्ती) करने वाले (इस को इमाम अहमद, इमाम मुस्लिम और इमाम अबू दाऊद ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्न मसूद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत फ़रमाया। त)

---

1. शुअबुल ईमान, हदीस 8670, दारुल कुतुबुल इल्मिया बेरुत, 6/402
2. सहीह मुस्लिम, किताबुल इल्म, बाबुन नही इत्तेबाए मुतशाबेहातुल क़ुरआन वग़ैरह, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 2/339

पृष्ठ 290/688

[باکس 1] عربی: مکتوب فی التوراۃ من بلغت لہ ابنتہ اثنتی عشرۃ سنۃ فلم یزوجھا فرکبت اثماً فاثم ذلك علیہ - رواہ البیھقی فی شعب الایمان عن امیر المؤمنین عمر الفاروق وعن انس بن مالك رضی اللہ عنھما بسند صحیح۔ اردو: اللہ عزوجل توراۃ شریف میں فرماتا ہے جس کی بیٹی بارہ برس کی عمر کو پہنچے اور وہ اس کا نکاح نہ کردے اور یہ دختر گناہ میں مبتلا ہو تو اس کا گناہ اس شخص پر ہے (اس کو امام بیہقی نے شعب الایمان میں حضرت امیر المومنین عمر فاروق اور حضرت انس بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہما بسند صحیح روایت فرمایا۔ ت)

جب کنواری لڑکیوں کے بارے میں یہ حکم ہے تو بیاہیوں کا معاملہ تو اور بھی سخت کہ دختران دوشیزہ کو حیاء بھی زائد ہوتی ہے اور گناہ میں تفضیح کا خوف بھی زائد اور خود ابھی اس لذت سے آگاہ نہیں صرف ایک طبعی طور پر ناواقفانہ خطرات دل میں گزرتے ہیں، اور جب آدمی کسی خواہش کا لطف ایک بار پا چکا تو اب اس کا تقاضا رنگ دیگر ہوتا ہے اور ادھر نہ ویسی حیا نہ وہ خوف و اندیشہ۔ اللہ عزوجل مسلمانوں کو ہدایت بخشے، آمین۔

(۲) دوسرے اہل افراط کہ اکثر واعظین و ہابیہ و غیر ہم جہال متشددین ہیں، ان حضرات کی اکثر عادت ہے کہ ایک بچا کے اٹھانے کو دس انجا اس سے بڑھ کر آپ کریں، دوسرے کو خندق سے بچانا چاہیں اور آپ عمیق کنویں میں گری، مسلمانوں کو وجہ بے وجہ کافر مشرک بے ایمان ٹھہرا دینا تو کوئی بات ہی نہیں، ان صاحبوں نے نکاح بیوہ کو گویا علی الاطلاق واجب قطعی وفرض حتمی قرار دے رکھا ہے کہ ضرورت ہو یا نہ بلکہ شرعاً اجازت ہو یا نہ ہو بے نکاح کے ہر گز نہ رہے اور نہ صرف فرض بلکہ گویا عین ایمان ہے کہ ذرا کسی بناء پر انکار کیا اور ایمان گیا اور ساتھ لگے آئے گئے پاس پڑوسی سب ایمان سے ہاتھ دھو بیٹھے کہ کیوں پیچھے پڑ کر نکاح نہ کر

دیا اور اگر بس نہ تھا تو پاس کیوں گئے، بات کیوں کی، سلام کیوں لیا، بات بات پر عورتیں نکاح سے باہر جنازہ کی نماز حرام، تمام کفر کے احکام، ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

[باکس 2] عربی: ھلك المتنطعون - رواہ الائمۃ احمد و مسلم وابو داؤد عن ابن مسعود رضی اللہ تعالی عنہ۔ اردو: ہلاک ہوئے بے جا تشدد کرنے والے (اس کو امام احمد، امام مسلم اور امام ابوداؤد نے حضرت عبداللہ ابن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت فرمایا۔ ت)

---

1 شعب الایمان حدیث ۸۶۷۰ دار الکتب العلمیہ بیروت ۴۰۲/۶ 2 صحیح مسلم کتاب العلم باب النھی اتباع متشابہ القرآن الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۳۳۹/۲

Fatawa Razviya Volume 12

And I say: And with Allah is success (and I say and success is obtained from Allah Almighty only. - T) The truth in this matter is that second marriage, like the first marriage, can be obligatory (fard), necessary (wajib), sunnah, permissible (mubah), disliked (makruh), or forbidden (haram). Listen to the details of the forms and rulings:

(1) A woman who fears for herself that she will likely not be able to obey her husband and fulfill his obligatory rights, marriage is prohibited and unlawful for her. If she does, she will be a sinner. This is the case of Tahrimi Dislike (Karahat-e-Tahrimi).

(2) If this fear exceeds the level of suspicion and reaches certainty, then marriage is absolutely forbidden (haram qat'i) for her.

Ruling: Such women can never be encouraged to marry for the first or second time; rather, giving such encouragement is itself against Sharia and a sin, as it would be commanding a sin. If these women or their guardians refuse marriage, then the one who tries to turn them from this refusal is ignorant and an opposer of Sharia.

(3) Those who do not have such fear for themselves, if they have an intense need for marriage such that without marriage there is a strong probability of falling into sin (God forbid), then it is necessary (wajib) for such women to marry.

(4) Rather, if there is total certainty of committing a forbidden act without marriage (God forbid), then it is an absolute obligation (fard qat'i) for them, provided that no other remedy like frequent fasting etc. is expected to provide relief; otherwise, marriage specifically will not be fard or wajib, but rather whatever means avoids the sin.

Ruling: Such women should certainly be compelled to marry. If they do not do so themselves, they will be sinners, and if their guardians fall short in their efforts within their power, they too will be sinners. In such cases, objection should certainly be raised against abandonment and refusal, but how much? Only as much as can be done for the abandonment of an obligatory or necessary act. Not this ignorant tyrannical ruling that whoever refuses is a disbeliever (kafir), whoever stops it is a kafir, whoever doesn't let it happen is a kafir. A person does not become a kafir for not performing obligations or for stopping their performance unless they deny the obligatory nature of such a fard whose obligatoriness is from the necessities of religion. Furthermore, the extent to which refusal and severity can be practiced

against the abandonment of a wajib or fard duty will also be permissible here only when it is known that the abandonment of obedience and fulfillment of the husband's obligatory rights by this woman is not certain or probable. In such a state, far from being fard or wajib, the ruling is of non-permissibility and prohibition. Furthermore, it must be proven that this woman's state of need is to such an extent that if she does not marry, she is certain or very likely to fall into sin; without this, there is no obligation at all. And when these established Sharia matters are not proven in the case of a specific woman, then harboring ill suspicion about a Muslim is itself forbidden, and declaring someone an abandoner of a fard and wajib duty merely based on one's own thoughts is the work of a reckless person. Furthermore, in the matter of need, the woman's own statement will be accepted because the need for marriage is a hidden and internal matter, of which only the one in need...

फ़तावा रज़विया, खंड 12

और मैं कहता हूँ: और अल्लाह की तौफ़ीक़ से (और मैं कहता हूँ और अल्लाह तआला ही से तौफ़ीक़ हासिल होती है। - त) इस मसले में सच्चाई यह है कि दूसरा निकाह पहले निकाह की तरह फ़र्ज़, वाजिब, सुन्नत, मुबाह, मकरूह, हराम सब कुछ है। इसके रूपों और हुक्मों का विवरण सुनिए:

(1) जिस औरत को अपने नफ़्स से ख़ौफ़ हो कि ग़ालिबन उससे शौहर की इताअत (आज्ञाकारिता) और उसके हुक़ूक़े वाजिबा (अनिवार्य अधिकारों) की अदायगी न हो सकेगी, उसे निकाह ममनू (वर्जित) और नाजायज़ है। अगर वह करेगी तो गुनहगार होगी, यह सूरत कराहते तहरीमी की है।

(2) अगर यह ख़ौफ़ गुमान के दर्जे से बढ़कर यक़ीन तक पहुँच जाए, तब तो उसके लिए निकाह हराम-ए-क़तई (निश्चित रूप से वर्जित) है।

हुक्म: ऐसी औरतों को निकाह-ए-अव्वल या सानी की तरग़ीब (प्रोत्साहन) हरगिज़ नहीं दे सकते, बल्कि तरग़ीब देना ख़ुद ख़िलाफ़े शरअ और गुनाह है, क्योंकि यह गुनाह का हुक्म देना होगा। ये औरतें या उनके औलिया (अभिभावक) अगर निकाह से इंकार करते हैं, तो उन्हें इंकार से मोड़ने वाला जाहिल और शरीअत का मुख़ालिफ़ है।

(3) जिन्हें अपने नफ़्स से ऐसा ख़ौफ़ न हो, उन्हें अगर निकाह की हाजत (ज़रूरत) शदीद (तीव्र) है कि बिना निकाह के(अल्लाह न करे) गुनाह में मुब्तला होने का गुमान ग़ालिब है, तो ऐसी औरतों को निकाह करना वाजिब है।

(4) बल्कि बिना निकाह के(अल्लाह न करे) हराम होने का यक़ीने कुल्ली (पूर्ण विश्वास) हो, तो उन्हें फ़र्ज़-ए-क़तई है, बशर्ते कि उसके अलावा कसरत से रोज़ा रखने आदि उपचारों से सुकून की उम्मीद न हो, वरना ख़ास निकाह फ़र्ज़ और वाजिब न होगा बल्कि गुनाह से बचने का जो भी तरीका हो।

हुक्म: ऐसी औरतों को बेशक निकाह पर मजबूर किया जाए, अगर वे ख़ुद नहीं करेंगी तो गुनहगार होंगी, और अगर उनके औलिया अपनी क्षमता भर कोशिश में कोताही करेंगे तो वे भी गुनहगार होंगे। ऐसी जगह छोड़ने और इंकार करने पर बेशक इंकार किया जाए, लेकिन कितना? सिर्फ़ उतना जितना वाजिब और फ़र्ज़ छोड़ने पर हो सकता है। यह जाहिलाना ज़ुल्मी हुक्म नहीं कि जो इंकार करे वह काफ़िर, जो रोके वह काफ़िर, जो न करने दे वह काफ़िर। फ़राइज़ (अनिवार्य कर्तव्यों) को अदा न करने या उनकी अदायगी से रोकने पर आदमी काफ़िर नहीं होता जब तक वह ऐसे फ़र्ज़ की

फर्ज़ियत (अनिवार्यता) का मुन्किर (इनकार करने वाला) न हो जिसका फ़र्ज़ होना दीनी ज़रूरतों में से है। फिर वाजिब और फ़र्ज़ छोड़ने पर जिस कदर इंकार और सख़्ती की जा सकती है, वह भी यहाँ उसी समय जायज़ होगी जब मालूम हो कि इस औरत से शौहर की इताअत और हुक़ूक़े वाजिबा की अदायगी का छोड़ना यक़ीनी या गुमानी नहीं है, क्योंकि ऐसी हालत में तो फ़र्ज़ियत और वजूब दरकिनार, अदम-जवाज़ और हुरमत (अवैधता और वर्जना) का हुक्म है। फिर यह भी साबित हो कि इस औरत की ज़रूरत की हालत इस हद तक है कि अगर निकाह नहीं करेगी तो गुनाह में पड़ जाने का यक़ीन या ग़ालिब गुमान है, कि इसके बिना वजूब (अनिवार्यता) बिल्कुल नहीं है। और जब किसी ख़ास औरत के हक़ में ये बातें शरीअत के मुताबिक़ साबित न हों, तो मुसलमान पर बदगुमानी (बुरा सोचना) ख़ुद हराम है, और महज़ अपने ख़यालों पर किसी को फ़र्ज़ और वाजिब का छोड़ने वाला ठहरा देना बेबाक (धृष्ट) इंसान का काम है। फिर ज़रूरत के मामले में औरत का अपना बयान ही स्वीकार्य होगा क्योंकि निकाह की ज़रूरत एक छुपी हुई और आंतरिक बात है जिस पर ख़ुद ज़रूरत रखने वाला ही...

فتاوی رضویہ جلد دوا زدہم

وانا اقول: وباللہ التوفیق (اور میں کہتا ہوں اور اللہ تعالیٰ ہی سے توفیق حاصل ہوتی ہے۔ت) حق اس مسئلہ میں یہ ہے کہ نکاحِ ثانی مثل نکاحِ اول فرض، واجب، سنت، مباح، مکروہ، حرام سب کچھ ہے صور واحکام کی تفصیل سنئیے:

(1) جس عورت کو اپنے نفس سے خوف ہو کہ غالباً اس سے شوہر کی اطاعت اور اس کے حقوقِ واجبہ کی ادانہ ہو سکے گی اسے نکاح ممنوع و ناجائز ہے اگر کرے گی گنہگار ہوگی، یہ صورتِ کراہتِ تحریمی کی ہے۔

(2) اگر یہ خوف مرتبہ ظن سے تجاوز کرکے یقین تک پہنچا جب تو اسے نکاح حرام قطعی ہے۔

حکم ایسی عورتوں کو نکاحِ اول خواہ ثانی کی ترغیب ہر گز نہیں دے سکتے بلکہ ترغیب دینی خود خلافِ شرع و معصیت ہے کہ گناہ کا حکم دینا ہوگا یہ عورتیں یا ان کے اولیاء اگر نکاح سے انکار کرتے ہیں انہیں انکار سے پھیرنا والا جاہل و مخالفِ شرع۔

(3) جنہیں اپنے نفس سے ایسا خوف نہ ہو انہیں اگر نکاح کی حاجت شدید ہے کہ بے نکاح کے معاذ اللہ گناہ میں مبتلا ہونے کا ظن غالب ہے تو ایسی عورتوں کو نکاح کرنا واجب ہے۔

(4) بلکہ بے نکاح معاذ اللہ وقوعِ حرام کا یقینِ کلی ہو تو انہیں فرضِ قطعی یعنی جبکہ اُس کے سوا کثرتِ روزہ وغیرہ معالجات سے تسکین متوقع نہ ہو ورنہ خاص نکاح فرض و واجب نہ ہوگا بلکہ دفعِ گناہ جس طریقہ سے ہو۔

حکم ایسی عورتوں کو بیشک نکاح پر جبر کیا جائے اگر خود نہ کریں گی وہ گنہگار ہوں گی، اور اگر ان کے اولیاء اپنے حدِ مقدور تک کوشش میں پہلو تہی کریں گے تو وہ بھی گنہگار ہوں گے،

ایسی جگہ ترک و انکار پر بیشک انکار کیا جائے مگر کتنا، صرف اتنا جو ترکِ واجب و فرض پر ہوسکتا ہے، نہ یہ جاہلانہ جبروتی حکم کہ جو انکار کرے کافر، جو روک دے کافر، جو نہ کرنے دے کافر، فرائض ادا کرنے یا انکی ادا سے باز رکھنے پر آدمی کافر نہیں ہوتا جب تک ایسے فرض کی فرضیت کا منکر نہ ہو جس کا فرض ہونا ضروریاتِ دین سے ہے، پھر ترکِ واجب وفرج پر جس قدر انکار و تشدد کرسکتے ہیں وہ بھی یہاں اس وقت روا ہوگا جب معلوم ہو کہ اس عورت سے اطاعت و ادائے حقوقِ واجبہ شوہر کا ترک متیقن یا مظنون نہیں کہ ایسی حالت میں تو فرضیت و وجوب درکنار عدم جواز و حرمت کا حکم ہے، پھر یہ بھی ثابت ہو کہ اس عورت کی حالتِ حاجت اس حد تک ہے کہ نکاح نہ کرے گی تو گناہ میں مبتلا ہو جانے کا یقین یا ظن غالب ہے کہ بغیر اس کے وجوب اصلاً نہیں، اور جب کسی خاص عورت کے حق میں یہ امورِ مروجہ شرعی ثابت نہ ہوں تو مسلمان پر بدگمانی خود حرام، اور محض اپنے خیالات پر تارکِ فرض و واجب ٹھہرا دینا بیباک کا کام، پھر امرِ حاجت میں عورت کا اپنا بیان مقبول ہوگا کہ حاجت نکاح امر خفی و وجدانی ہے جس پر خود صاحبِ حاجت ہی

Volume 12 Fatawa-e-Razvia

He has accurate information when he states, 'I have no such need,' then there is no way to arbitrarily call him a liar. The estimation of age, etc., is not the same everywhere; temperament, intellect, modesty, fear, occupations, circumstances, worries, thoughts, company, and manners vary through hundreds of differences, the details of which are well-illuminated to people of intellect and experience. It is written in Durr-ul-Mukhtar:

[Arabic Column] Marriage becomes obligatory (Wajib) at the time of intense desire (meaning extreme yearning for intercourse as in Al-Zayla'i, such that one fears falling into adultery (Zina) if they do not marry, because mere longing for intercourse does not necessitate the aforementioned fear - Al-Bahr). If one is certain that Zina will occur without it, then it becomes mandatory (Fard) - Nihaya (i.e., that it is impossible for him to avoid Zina except through it, because that without which a forbidden act cannot be avoided becomes mandatory itself - Al-Bahr. His statement 'cannot avoid it except through it' is clear in making the issue mandatory in the absence of his ability to fast, which prevents falling into Zina. If he is capable of any of that, marriage does not remain Fard or Wajib per se, rather it is he or others from what prevents him from falling into the forbidden). This is if he possesses the dowry (Mahr) and maintenance (Nafaqa), otherwise there is no sin in leaving it - Badai' (This condition refers to both categories, namely the Wajib and the Fard. In Al-Bahr, another condition was added for both, which is the absence of fear of injustice (Jawr), meaning oppression. He said, 'If the fear of falling into Zina if he does not marry conflicts with the fear...)

[Urdu Column] And marriage becomes obligatory at the time of overwhelming desire (this refers, according to Imam Al-Zayla'i, to such intense yearning for intercourse that if he does not marry, there is a fear of committing adultery, because mere longing for intercourse does not necessitate the aforementioned fear - Al-Bahr). Thus, if adultery is certain without marriage, then marriage is mandatory (Fard) - Nihaya (meaning it's not possible to avoid adultery without marriage, because that which is necessary to avoid a forbidden act becomes itself mandatory; avoidance is not possible. It is clear that the situation of the issue is considered mandatory where he is not capable of fasting, which prevents adultery. Therefore, if he is capable of fasting, marriage will not be Fard or Wajib per se; instead, he will have the choice to marry or adopt any other method to avoid the forbidden, i.e., adultery). And this obligation and mandatory nature of marriage is in the case when he is capable of

providing dowry and maintenance, otherwise there is no sin in leaving marriage - Badai' (this condition refers to both types, i.e., Wajib and Fard marriage). In Al-Bahr, another condition has been added to these two types, and that is that there should be no fear of injustice and oppression. The author of Al-Bahr stated that the fear of adultery in the absence of marriage conflicts with the fear of injustice and oppression in the case of marriage...

उसे सही जानकारी होती है जब वह बयान करता है कि 'मुझे ऐसी ज़रूरत नहीं है', तो बिना वजह उसे झुठलाने का कोई रास्ता नहीं हो सकता। आयु आदि का अनुमान सब जगह एक जैसा नहीं होता; मिजाज़, बुद्धि, हया (लज्जा), डर, व्यस्तता, स्थितियाँ, चिंताएँ विचार, संगति और व्यवहार सैकड़ों भिन्नताओं के कारण अलग-अलग होते हैं, जिसका विवरण बुद्धिमानों और अनुभवियों पर अच्छी तरह स्पष्ट है। दुर्रे मुख्तार में है:

[अरबी कॉलम] तीव्र इच्छा के समय निकाह वाजिब होता है (इसका अर्थ है संभोग की अत्यधिक लालसा जैसा कि अल-ज़ैलई में है, इस हद तक कि यदि वह निकाह नहीं करता तो उसे व्यभिचार (ज़िना) में पड़ने का डर हो, क्योंकि संभोग की केवल लालसा से उक्त डर होना आवश्यक नहीं है - अल-बह्र)। यदि निकाह के बिना ज़िना निश्चित हो, तो यह फ़र्ज़ (अनिवार्य) हो जाता है - निहाया (अर्थात्, उसके लिए इसके बिना ज़िना से बचना असंभव हो, क्योंकि जिसके बिना हराम को छोड़ना संभव न हो, वह स्वयं फ़र्ज़ हो जाता है - अल-बह्र। उनका कथन 'इसके बिना बचाव संभव नहीं' इस मामले को फ़र्ज़ बनाने में स्पष्ट है जब वह रोज़ा रखने में सक्षम न हो, जो ज़िना में पड़ने से रोकता है। यदि वह इनमें से किसी भी चीज़ में सक्षम है, तो निकाह अनिवार्य या वाजिब नहीं रहता, बल्कि वह या अन्य चीज़ों में से है जो उसे हराम में पड़ने से रोकती है)। यह तब है जब उसके पास मेहर और भरण-पोषण (नफ़क़ा) देने की क्षमता हो, अन्यथा इसे छोड़ने में कोई पाप नहीं है - बदाइ' (यह शर्त दोनों श्रेणियों, अर्थात् वाजिब और फ़र्ज़, पर लागू होती है। अल-बह्र में, दोनों के लिए एक और शर्त जोड़ी गई है, और वह है अन्याय (जौर) अर्थात् अत्याचार का डर न होना। उन्होंने कहा, 'यदि निकाह न करने की स्थिति में ज़िना में पड़ने का डर, निकाह की स्थिति में अन्याय के डर से टकराता है तो...')

[उर्दू कॉलम] और काम-इच्छा के प्रबल होने के समय निकाह वाजिब होता है (इमाम ज़ैलई के अनुसार इसका मतलब संभोग की ऐसी तीव्र लालसा है कि यदि वह निकाह नहीं करेगा तो व्यभिचार होने का डर है, क्योंकि केवल संभोग की लालसा से उक्त डर अनिवार्य नहीं है - अल-बह्र)। अतः यदि निकाह के बिना व्यभिचार निश्चित हो, तो निकाह फ़र्ज़ है - निहाया (अर्थात् निकाह के बिना व्यभिचार से बचना संभव न हो, क्योंकि जिसके बिना हराम छोड़ना संभव न हो, वह फ़र्ज़ होता है, बचाव संभव नहीं है। यह स्पष्ट है कि मसले की वह स्थिति फ़र्ज़ मानी गई है जिसमें वह निकाह के अलावा रोज़े रखने में सक्षम न हो जो कि व्यभिचार को रोकते हैं। इसलिए यदि वह रोज़े रखने में सक्षम हो, तो निकाह फ़र्ज़ या वाजिब नहीं होगा, बल्कि उसे विकल्प होगा कि वह निकाह करे या हराम अर्थात्

व्यभिचार से बचने का कोई और तरीका अपनाए)। और निकाह की यह वाजिबता और फ़र्ज़ियत उस स्थिति में है जब वह मेहर और नफ़क़ा देने में सक्षम हो, अन्यथा निकाह छोड़ने में कोई पाप नहीं है - बदाइ' (यह शर्त दोनों प्रकारों यानी वाजिब और फ़र्ज़ निकाह की ओर इशारा करती है)। अल-बह्र में इन दोनों प्रकारों में एक और शर्त का इज़ाफ़ा (वृद्धि) किया गया है और वह यह है कि अन्याय और अत्याचार का डर न हो। साहब-ए-बह्र ने फ़रमाया कि निकाह न होने की स्थिति में ज़िना का डर, निकाह की स्थिति में अन्याय और अत्याचार के डर से टकराता है...

पृष्ठ 292 / 688

کو ٹھیک اطلاع ہوتی ہے جب وہ بیان کرے کہ مجھے ایسی حاجت نہیں تو خواہ مخواہی اس کی تکذیب کی طرف کوئی راہ نہیں ہو سکتی عمر وغیرہ کا مظنہ سب جگہ ایک سا نہیں ہوتا مزاج ، عقل ، حیاء خوف ، اشغال ، احوال ، ہموم ، افکار ، صحبت ، اطوار صد ہا اختلافوں سے مختلف ہو جاتا ہے جس کی تفصیل اہل عقل و تجارب پر خوب روشن ہے ، در مختار میں ہے :

[Arabic Column] یکون واجبا عند التوقان (المراد شدة الاشتیاق کما في الزیلعي بحیث یخاف الوقوع في الزنا لولم یتزوج اذلا یلزم من اشتیاق الی الجماع الخوف المذکور ، بحر) فان تیقن الزنا الا به فرض ، نهایة (اي بان کان لا یمکنه الاحتراز من الزنا الا به لان مالا یتوصل الی ترك الحرام الا به یکون فرضا، بحر ، وقوله لا یمکنه الاحتراز الا به ظاهر في فرض المسألة في عدم قدرته علی الصوم المانع من الوقوع في الزنا فلو قدر علی شیئ من ذلك لم یبق النکاح فرضا ، او واجبا عینا بل هو او غیره مما یمنعه من الوقوع في المحرم) وهذا ان ملك المهر والنفقة والا فلا اثم بترکه بدائع (هذا الشرط راجع الی القسمین اعنی الواجب والفرض وزاد في البحر شرطا آخر فیهما وهو عدم خوف الجور ای الظلم قال فان تعارض خوف الوقوع في الزنا لو لم یتزوج وخوف

[Urdu Column] اور غلبہ شہوت کے وقت نکاح واجب ہوتا ہے (اس سے مراد بقول امام زیلعی کے ایسا شدید اشتیاق جماع ہے کہ اگر نکاح نہ کرے گا تو وقوع زنا کا خوف ہے کیونکہ محض اشتیاق جماع کو خوف مذکور لازم نہیں ، بحر) پس اگر نکاح کے بغیر زنا یقینی ہو تو نکاح فرض ہے ، نہایہ (یعنی نکاح کے بغیر زنا سے بچنا ممکن نہ ہو کیونکہ جس کے بغیر ترکِ حرام تک رسائی نہ ہو وہ فرض ہوتا ہے، احتراز ممکن نہیں ، ظاہر ہے کہ مسئلہ کی وہ صورت فرض کی گئی ہے جس میں نکاح کے سوا روزے رکھنے پر قادر نہ ہو جو کہ زنا سے مانع ہیں لہذا اگر

وہ روزے رکھنے پر قادر ہو تو نکاح فرض یا واجب عین نہ ہوگا بلکہ اسے اختیار ہوگا کہ نکاح کرے یا حرام یعنی زنا سے بچنے کا کوئی اور طریقہ اپنائے) اور یہ وجوب وفرضیت نکاح اس صورت میں ہے جب وہ مہر و نفقہ پر قادر ہو ورنہ ترکِ نکاح میں گناہ نہیں ، بدائع (یہ شرط دونوں قسموں یعنی نکاح واجب وفرض کی طرف راجع ہے۔ بحر میں ان دونوں قسموں میں ایک اور شرط کا اضافہ فرمایا ہے اور وہ یہ ہے کہ جور وظلم کا ڈر نہ ہو ، صاحبِ بحر نے فرمایا کہ عدم نکاح کی صورت میں خوفِ زنا نکاح کی صورت میں جور وظلم کے خوف سے متعارض ہو

Fatawa Rizwia Volume 12

[Arabic Text Section] Injustice, if he marries, the second will be prioritized. Rather, it is disliked (Makruh) as stated in 'Al-Fath'. Perhaps the reason for prioritizing the fear of injustice over the fear of adultery is that injustice and oppression are sins related to the rights of fellow beings, and abstaining from adultery is among the rights of Allah Almighty. The right of the servant is prioritized in case of conflict due to their need, while the Lord Almighty is Self-Sufficient (End of quote). It would be disliked (i.e., prohibitively disliked - Bahr) due to the fear of injustice; if he is certain of it (i.e., injustice), it becomes forbidden (1 - End of quote, summarized with additions from 'Radd al-Muhtar' within brackets). I say: The reasoning mentioned in 'Bahr' is supported by the Hadith of Ibn Abi al-Dunya and Abu al-Shaykh from Jabir bin Abdullah and Abu Sa'id al-Khudri (may Allah be pleased with them) from the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him): "Beware of backbiting, for backbiting is worse than adultery. Verily, a man may commit adultery and then repent, and Allah accepts his repentance, but the backbiter is not forgiven until his companion (the one backbitten) forgives him." (2)

[Urdu Translation/Explanation Section] So the second consideration will be prioritized and preferred. Accordingly, in this situation, marriage will not be obligatory (farz) but rather disliked (makruh). Kamal explained this in 'Al-Fath'. Perhaps the reason for prioritizing the fear of injustice over the fear of adultery is that injustice and oppression are sins pertaining to the rights of fellow humans (Huquq-ul-Ibad), while abstaining from adultery pertains to the rights of Allah (Huquq-Ullah). The right of the servant takes precedence over the right of Allah at the time of conflict because the servant is needy and the Lord Almighty is Self-Sufficient (End of quote). In this case, marriage will be disliked, i.e., prohibitively disliked (makruh tahrimi), when there is fear of oppression, and if oppression is certain, then it is forbidden (haram). The extra phrases in brackets are taken from 'Radd al-Muhtar'. I say: (I say that) the reason stated by 'Bahr' is supported by the Hadith of Ibn Abi al-Dunya and Abu al-Shaykh, which Hazrat Jabir bin Abdullah and Hazrat Abu Sa'id al-Khudri (may Allah be pleased with them) narrated from the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) that: "Abstain from backbiting because backbiting is more severe than adultery, for a man commits adultery and repents, then Allah Almighty accepts his repentance, but the backbiter is not forgiven until the one whose backbiting was done forgives him." (T)

(5) If the state of need is moderate, meaning neither complete indifference towards marriage nor such an intense desire that falling into sin without marriage is almost certain; in such a state, marriage is Sunnah, provided the woman has sufficient confidence in herself that she will not neglect her obedience or the rights of her husband at all.

---

1. Durr al-Mukhtar, Kitab al-Nikah, Mujtabai Press Delhi, 1/185; Radd al-Muhtar, Kitab al-Nikah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/21 - 260
2. Jami' al-Ahadith by Suyuti, section of sayings, Hadith 9310, Dar al-Fikr, Beirut, 3/390

फतावा रज़विया जिल्द 12

[अरबी पाठ अनुभाग] अन्याय (जौर), यदि वह निकाह करता है तो दूसरे को प्राथमिकता दी जाएगी। बल्कि, यह नापसंद (मक़रूह) है जैसा कि 'अल-फ़तह' में बताया गया है। शायद व्यभिचार के डर पर अन्याय के डर को प्राथमिकता देने का कारण यह है कि अन्याय और उत्पीड़न ऐसे पाप हैं जो बंदों के अधिकारों (हुकूक-उल-इबाद) से संबंधित हैं, और व्यभिचार से परहेज करना अल्लाह सर्वशक्तिमान के अधिकारों (हुकूक-उल्लाह) में से है। संघर्ष की स्थिति में बंदे का अधिकार उसकी आवश्यकता के कारण प्राथमिकता रखता है, जबकि प्रभु सर्वशक्तिमान बेनियाज़ (स्वयं-पर्याप्त) है (उद्धरण समाप्त)। अन्याय के डर के कारण यह मक़रूह (यानी मक़रूह-ए-तहरीमी - बहर) होगा; यदि वह इसके बारे में निश्चित है (यानी अन्याय), तो यह हराम (वर्जित) हो जाता है (1 - उद्धरण समाप्त, कोष्ठक के भीतर 'रद्द-उल-मुह्तार' से अतिरिक्त के साथ संक्षेपित)। मैं कहता हूँ: 'बहर' में उल्लिखित तर्क इब्न अबी अल-दुनिया और अबू अल-शेख की हदीस द्वारा समर्थित है जो जाबिर बिन अब्दुल्लाह और अबू सईद अल-खुदरी (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से नबी (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से वर्णित है: "गीबत (पीठ पीछे बुराई) से बचो, क्योंकि गीबत व्यभिचार से भी बदतर है। वास्तव में, एक आदमी व्यभिचार कर सकता है और फिर तौबा कर सकता है, और अल्लाह उसकी तौबा स्वीकार कर लेता है, लेकिन गीबत करने वाले को तब तक क्षमा नहीं किया जाता जब तक कि उसका साथी (जिसकी गीबत की गई) उसे क्षमा न कर दे।" (2)

[उर्दू अनुवाद/व्याख्या अनुभाग] तो दूसरे विचार को प्राथमिकता और वरीयता दी जाएगी। तदनुसार, इस स्थिति में, निकाह फ़र्ज़ (अनिवार्य) नहीं बल्कि मक़रूह (नापसंद) होगा। कमाल ने 'अल-फ़तह' में इसकी व्याख्या की है। शायद व्यभिचार के डर पर अन्याय के डर को प्राथमिकता देने का कारण यह है कि अन्याय और उत्पीड़न ऐसे पाप हैं जो बन्दों के अधिकारों (हुकूक-उल-इबाद) से संबंधित हैं, और व्यभिचार से दूर रहना अल्लाह के अधिकारों (हुकूक-उल्लाह) से संबंधित है। संघर्ष के समय बन्दे का अधिकार अल्लाह के अधिकार पर प्राथमिकता रखता है क्योंकि बन्दा मोहताज है और प्रभु सर्वशक्तिमान बेनियाज़ है (उद्धरण समाप्त)। इस मामले में, निकाह मक़रूह होगा, यानी मक़रूह-ए-तहरीमी, जब उत्पीड़न का डर हो, और यदि उत्पीड़न निश्चित हो, तो यह हराम है। कोष्ठक में अतिरिक्त वाक्यांश 'रद्द-उल-मुह्तार' से लिए गए हैं। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ कि) 'बहर' द्वारा बताई गई वजह इब्न अबी अल-दुनिया और अबू अल-शेख की हदीस से पुष्ट होती है, जिसे हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह और हज़रत अबू सईद अल-खुदरी (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) ने नबी करीम

(अल्लाह की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से वर्णित किया है कि: "गीबत से परहेज करो क्योंकि गीबत व्यभिचार से अधिक गंभीर है, क्योंकि एक आदमी व्यभिचार करता है और तौबा करता है, फिर अल्लाह सर्वशक्तिमान उसकी तौबा स्वीकार करता है, लेकिन गीबत करने वाले को तब तक माफ नहीं किया जाता जब तक कि वह व्यक्ति उसे माफ न कर दे जिसकी गीबत की गई थी।" (त)

(५) यदि आवश्यकता की स्थिति मध्यम हो, यानी न तो निकाह के प्रति पूर्ण उदासीनता और न ही ऐसी तीव्र इच्छा कि निकाह के बिना पाप में पड़ने की संभावना लगभग निश्चित हो; ऐसी स्थिति में निकाह सुन्नत है, बशर्ते महिला को स्वयं पर पर्याप्त विश्वास हो कि वह अपनी आज्ञाकारिता या अपने पति के अधिकारों की बिल्कुल भी उपेक्षा नहीं करेगी।

---

1. दुर्र-उल-मुख्तार, किताब-उन-निकाह, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/185; रद्द-उल-मुह्तार, किताब-उन-निकाह, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/21 - 260
2. सुयुती द्वारा जामे-उल-अहादीस, कथनों का खंड, हदीस 9310, दार अल-फ़िक्र, बेरूत, 3/390

فتاوٰی رضویہ جلد دوا زدہم

الجور لو تزوج قدم الثانی افتراض بل یکرہ افادہ الکمال فی الفتح ولعلہ لان الجور معصیۃ متعلقۃ بالعبادوالمنع من الزنا من حقوق اللہ تعالٰی وحق العبد مقدم عند التعارض لاحتیاجہ وغنی المولٰی تعالٰی اہ) ویکون مکروھًا (ای تحریمًا۔ بحر) لخوف الجور فان تیقنہ(ای الجور)حرم 1اہ ملخصاً مزید امن رد المحتار ما بین الخطین۔ اقول: ویؤید تعلیل البحر حدیث ابن ابی الدنیا وابی الشیخ عن جابر بن عبداللہ وابي سعید الخدري رضی اللہ تعالٰی عنھم عن النبي صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ایاکم والغیبۃ فان الغیبۃ اشد من الزنا ان الرجل قد یزنی ویتوب فیتوب اللہ علیہ وان صاحب الغیبۃ لا یغفر لہ حتی یغفرلہ صاحبہ 2۔

توثانی کا اعتبار مقدم و راجح ہوگا چنانچہ اس صورت میں نکاح فرض نہیں بلکہ مکروہ ہوگا، کمال نے فتح میں اس کا افادہ فرمایا، شاید خوف جور کو خوف زنا پر مقدم کرنے کی وجہ یہ ہو کہ جور و ظلم ایسا گناہ ہے جس کا تعلق حقوق العباد سے ہے، اور زنا سے باز رہنا حقوق اللہ سے ہے اور حق عبد بوقت تعارض حق اللہ پر مقدم ہوتا ہے کیونکہ عبد محتاج ہے اور مولٰی تعالٰی غنی ہے اہ) اور اس صورت میں نکاح مکروہ یعنی مکروہ تحریمی ہوگا جبکہ ظلم کا خوف ہو اور اگر ظلم کا یقین ہو تو حرام ہے۔ قوسین میں زائد عبارتیں ردالمحتار سے لی گئی ہیں، اقول: (میں کہتا ہوں کہ) بحر کی بیان کردہ علت کی تائید کرتی ہے ابن ابی الدنیا اور ابوالشیخ کی وہ حدیث جس کو حضرت جابر بن عبد اللہ اور حضرت ابو سعید خدری رضی اللہ تعالٰی عنہم نے نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے روایت فرمایا کہ غیبت سے بچو کیونکہ غیبت زنا سے سخت تر ہے، اس لئے کہ آدمی زنا کرتا ہے اور توبہ کرلیتا ہے تو اللہ تعالٰی اس کی توبہ قبول فرمالیتا ہے، اور غیبت کرنے والے کی مغفرت اس وقت تک نہیں ہوتی جب تک کہ وہ معاف نہ کرے جس کی غیبت کی گئی (ت)

(۵) اگر حاجت کی حالت اعتدال پر ہو یعنی نہ نکاح سے بالکل بے پروائی نہ اس شدت کا شوق کہ بے نکاح وقوع گناہ کا ظن بالیقین ہو ایسی حالت میں نکاح سنت ہے مگر بشرطیکہ عورت اپنے نفس پر اطمینان کافی رکھتی ہو کہ مجھ سے ترک اطاعت اور حقوق شوہر کی اضاعت اصلاً واقع نہ ہوگی۔

---

1 درمختار کتاب النکاح مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۸۵، ردالمحتار کتاب النکاح داراحیاء التراث العربي بیروت ۲۱/۲ - ۲۶۰ 2 جامع الاحادیث للسیوطي قسم الاقوال حدیث ۹۳۱۰ دارالفکر بیروت ۳۹۰/۳

Fatawa Rizvia Volume 12

(6) If there is even a slight apprehension of this, then for him, marriage will no longer remain a Sunnah; it will only be permissible (mubah), provided the apprehension does not reach the level of certainty; otherwise, the permissibility itself will be prohibited and unlawful, as previously mentioned (as passed before - t). It is stated in Durr-e-Mukhtar:

[Arabic Text Box] Left column: Marriage is a Sunnah Mu'akkadah in a state of moderation, so one sins by abandoning it (with persistence). 'Moderation' means moderation in desire, such that it is not to the extent mentioned in the cases of obligatory and mandatory marriage—meaning intense desire for intercourse—nor is it at the stage of extreme apathy like an impotent person. This is why in the commentary on Multaqā it is explained as being between apathy and desire. In al-Bahr, it says that it refers to a person's state where there is no fear of injustice, abandoning obligatory duties (fara'id), or Sunnahs. If he fears these things, he is not moderate, hence it will not be Sunnah for him, as indicated in al-Bada'i. The commentator did not mention a sixth category of marriage, which al-Bahr quoted from al-Mujtabā, and that is marriage being permissible (mubah) when he fears inability to fulfill obligations—meaning a fear that is not predominant; otherwise, it would be prohibitively disliked (makruh tahrimi) because avoiding injustice is among the obligations. Ends excerpt—additional phrases taken from Ibn Abidin. (T)

Right column: And in a state of moderation, marriage is a Sunnah Mu'akkadah, for the (persistent) abandonment of which sin is mandatory. (By moderation it is meant that the dominance of lust has not reached the extent as passed in obligatory and mandatory marriage, i.e., intense desire for intercourse, nor should it be extremely weak and deficient as an impotent person. For this reason, in the commentary on Al-Multaqa, its interpretation was stated as being between apathy and passion. It is stated in Al-Bahr that it refers to that condition of a person in which he has no fear of oppression, abandonment of obligations and abandonment of Sunnahs, and if he has fear of these matters, then he is not moderate, therefore for him marriage will not be Sunnah as expressed in Al-Bada'i, and the commentator did not mention the sixth type of marriage which was mentioned from Al-Mujtaba to Al-Bahr and that is the permissibility of marriage when there is no fear of inability to fulfill the requirements of marriage unless it is prohibitively disliked because lack of oppression is among the requirements of marriage. Ends excerpt—additional phrases taken from Ibn Abidin. (T)

Ruling: In the case of it being a Sunnah, the encouragement for marriage should certainly be given with emphasis, and its rejection warrants severe objection to the extent required for abandoning a Sunnah. However, in the case of permissibility (mubah), there is no authority to compel marriage at all, nor is there any objection or denial upon its rejection, as the pure Sharia has left it to the discretion of the person —whether they do it or not. Then, judge with justice.

1 Durr-e-Mukhtar, Kitab an-Nikah, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/85; Radd al-Muhtar, Kitab an-Nikah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/261. Page 294 of 688

फ़तावा रिज़विया जिल्द बारहवीं

(६) अगर ज़रा भी इसका अंदेशा हो तो उसके हक में निकाह सुन्नत न रहेगा, सिर्फ़ मुबाह होगा, बशर्ते कि अंदेशा हदे ज़न तक न पहुँचे वरना इबाहत सिरे से ममनू व नाजायज़ हो जाएगी जैसा कि गुज़रा (त)। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

[अरबी टेक्स्ट बॉक्स] बायां कॉलम: निकाह हालते एतदाल (मध्यम स्थिति) में सुन्नते मोअक्कदा है जिसके(इसरार के साथ) तर्क करने पर गुनाह लाज़िम होता है। 'एतदाल' से मुराद यह है कि शहवत का ग़लबा उस हद तक न पहुँचा हो जैसा कि निकाह वाजिब और फ़र्ज़ में गुज़रा यानी संभोग का तीव्र इच्छा और न ही अत्यंत कमज़ोर और असमर्थ हो जैसा कि नपुंसक (इन्नीन)। इसी वास्ते शरहे मुल्तकी में इसकी तफ़सीर यूँ फ़रमाई कि वह फ़ुत्तूर (रुकावट) और शौक़ के दरमियान हो। 'बहर' में है कि इससे मुराद आदमी का वह हाल है जिसमें उसे जुल्म, तर्कए-फ़राइज़ (अनिवार्य कर्तव्यों को छोड़ना) और तर्कए-सुनन (सुन्नतों को छोड़ना) का ख़ौफ़ न हो, और अगर उसे इन उमूर (बातों) का ख़ौफ़ है तो वह मोअतदिल (मध्यम) नहीं, लिहाज़ा उसके लिए निकाह सुन्नत नहीं होगा जैसा कि 'बदाइअ' में इसका अफ़ादा फ़रमाया, और शारेह (व्याख्याकार) ने निकाह की छठी किस्म का ज़िक्र नहीं फ़रमाया जिसको 'बहर' ने 'मुजतबा' से ज़िक्र किया और वह है निकाह का मुबाह (अनुमेय) होना जबकि निकाह के वाजिबात पूरे न होने का ख़ौफ़ हो—यानी ऐसा ख़ौफ़ जो ग़ालिब (प्रबल) न हो वरना मकरूहे तहरीमी होगा क्योंकि अदम-ए-जौर (अत्याचार न करना) निकाह के वाजिबात में से है। (मुलतक़तन—अतिरिक्त इबारतें इब्ने आबिदीन से ली गई हैं)। (त)

दायां कॉलम: और हालते एतदाल में निकाह सुन्नते मोअक्कदा होता है जिसके(बा-इसरार) तर्क पर गुनाह लाज़िम होता है (एतदाल से मुराद यह है कि ग़लबा-ए-शहवत इस हद तक पहुँचा हुआ न हो जैसा कि निकाह वाजिब व फ़र्ज़ में गुज़रा यानी जिमाअ का इश्तियाक़ शदीद और न ही इंतिहाई तौर पर कमज़ोर और कासिर हो जैसा कि इन्नीन। इसी वास्ते शरह मुल्तक़ी में इसकी तफ़सीर यूँ फ़रमाई कि वह फ़ुतूर और शौक़ के दरमियान हो। बहर में है कि इससे मुराद आदमी का वह हाल है जिसमें इसे जुल्म, तर्कए-फ़राइज़ और तर्कए-सुनन का ख़ौफ़ न हो, और अगर इसे इन उमूर का ख़ौफ़ है तो वह मोअतदिल नहीं, लिहाज़ा इसके लिए निकाह सुन्नत नहीं होगा जैसा कि बदाइअ में इसका अफ़ादा फ़रमाया, और शारेह ने निकाह की छठी किस्म का ज़िक्र नहीं फ़रमाया जिसको बहर ने मुजतबा से ज़िक्र किया और वह है निकाह का मुबाह होना जबकि लवाज़िम-ए-निकाह रायज न हो

वरना मकरूहे तहरीमी होगा क्योंकि अदम-ए-जौर लवाज़िम-ए-निकाह में से है। अह मुल्तक़तन— ज़ायद इबारतें इब्ने आबिदीन से ली गई हैं। (त)

हुक्म: सुन्नियत की हालत में बेशक निकाह की तरग़ीब ताकीद के साथ दी जाए और इसके इनकार पर सख़्त एतराज पहुँचता है, उतना ही जितना तर्कए-सुन्नत पर चाहिए। और इबाहत की सूरत में निकाह पर असल में जबर का अख्तियार नहीं, न ही इसके इनकार पर कोई एतराज व इनकार है क्योंकि मुबाह को शरीअते मुतह्हरा ने मुकल्लफ़ की मर्ज़ी पर छोड़ा है चाहे करे या न करे। फिर इंसाफ़...

1 दुर्रे मुख्तार, किताबुन निकाह, मतबा मुजतबाई, दिल्ली १/८५; रदुल मुहतार, किताबुन निकाह, दार इहयाउत तुरास अल-अरबी, बेरुत २/२६१। पृष्ठ २९४/६८८

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

(۶) اگر ذرا بھی اس کا اندیشہ ہو تو اس کے حق میں نکاح سنت نہ رہے گا صرف مباح ہوگا بشرطیکہ اندیشہ حد ظن تک نہ پہنچے ورنہ اباحت جدا سرے سے ممنوع و ناجائز ہو جائے گا کما سبق (جیسا کہ پیچھے گزرا ت) درمختار میں ہے :

یکون سنة مؤکدة فیأثم بترکه (مع الاصرار) حال الاعتدال (اي الاعتدال في التوقان ان لایکون بالمعنی المار في الواجب والفرض وهو شدة الاشتیاق وان لایکون في غایة الفتور کالعنین ولذا فسره في شرحه علی الملتقی بان یکون بین الفتور والشوق وفي البحر والمراد حاله عدم الخوف من الجور وترك الفرائض والسنن فلو خاف فلیس معتدلا فلا یکون سنة في حقه کما افاده في البدائع، وترك الشارح قسماً سادسا ذکره في البحر عن المجتبی و هو الاباحة ان خاف العجز عن الایفاء بمواجبه اه اي خوفاً غیر راجح والا کان مکروهاً تحریمیاً لان عدم الجور من مواجبه اه ملتقطاً مزید امن ابن عابدین۔

اور حال اعتدال میں نکاح سنت مؤکدہ ہوتا ہے جس کے (باصرار) ترک پر گناہ لازم ہوتا ہے (اعتدال سے مراد یہ ہے کہ غلبہ شہوت اس حد تک پہنچا ہوا نہ ہو جیسا کہ نکاح واجب وفرض میں گزرا یعنی جماع کا اشتیاق شدید اور نہ ہی انتہائی طور پر کمزور اور قاصر ہو جیسا کہ عنین۔ اسی واسطے شرح ملتقی میں اس کی تفسیر یوں فرمائی کہ وہ فتور اور شوق کے درمیان ہو۔ بحر میں ہے کہ اس سے مراد آدمی کا وہ حال ہے جس میں اسے ظلم، ترک فرائض اور ترک سنن کا خوف نہ ہو، اور اگر اسے ان امور کا خوف ہے تو وہ معتدل نہیں، لہذا اس کے لئے نکاح سنت نہیں ہوگا جیسا کہ بدائع میں اس کا افادہ فرمایا، اور شارح نے نکاح کی چھٹی قسم کا ذکر نہیں فرمایا جس کو بحر مجتبی سے ذکر کیا اور وہ ہے نکاح کا مباح ہونا جبکہ لوازم نکاح رائج نہ ہو ورنہ مکروہ

تحریمی ہو گا کیونکہ عدم جور لوازم نکاح میں سے ہے اہ ملتقطاً— زائد عبارتیں ابن عابدین سے لی گئی ہیں۔ (ت)

حکم بحالت سنیت بیشک نکاح کی ترغیب بتاکید کی جائے اور اس سے انکار پر سخت اعتراض پہنچتا ہے اسی قدر جتنا ترک سنت پر چاہئے اور در صورت اباحت نہ نکاح پر اصلا جبر کا اختیار نہ اس سے انکار پر کچھ اعتراض وانکار کہ مباح وشرع مطہر نے مکلف کی مرضی پر چھوڑا ہے چاہے کرے یا نہ کرے، پھر انصاف

1 درمختار کتاب النکاح مطبع مجتبائی دہلی ۸۵/۱، رد المحتار کتاب النکاح داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۶۱/۲

If you take the scale in your hand, then for women, the Sunnah of marriage will be proven very rarely; only one in a thousand would be found such that it could be said it is a Sunnah for her. Whether any woman is herself an 'Auliya' (saint) or if she belongs to the people of austerity and piety who are her complete guarantors so that no negligence on her part regarding disobedience to her husband or any of his rights occurs - such a meaningless guarantee can only be given by someone who neither has knowledge of the great rights of men, nor an eye on the habits of women and their deficiency in intellect and religion. As the Prophetic Hadith in the Sahih of our master, the Light of the World, peace and blessings be upon him, was heard to say:

[Arabic]: "I saw the Fire (Hell), and I have never seen a sight more terrifying than what I saw today, and I saw that the majority of its inhabitants were women." [Translation]: I observed Hell and did not see anything as severe and heinous as today, and I saw that the majority of the inhabitants of Hell were women.

They (the Companions) said, "O Messenger of Allah!" i.e., O Presence! "What is the reason for this?" He replied, "Because of their ingratitude (Kufr)." It was asked, "Do they disbelieve in Allah the Almighty?" He replied, "They are ungrateful to their husbands and ungrateful for favors. If you were to treat one of them kindly for an entire lifetime, and then she sees something from you that is against her temperament, she would say, 'I have never seen any good from you.'" (Narrated by the two Shaikhs from Ibn Abbas, may Allah be pleased with them both - T).

Hadith 2: He says (peace and blessings be upon him):

[Arabic]: "Indeed, woman was created from a crooked rib; she will never be straight for you on any path. So if you enjoy her, you enjoy her despite her crookedness. And if you attempt to straighten her, you will break her, and her breaking is her divorce." [Translation]: Woman is made from a crooked rib; she will never be straight for you on a straight path. If you take benefit from her, take benefit despite her crookedness, and if you go to straighten her, you will break her, and her breaking is giving a divorce. (Narrated by Imam Muslim and Tirmidhi from Hazrat Abu Hurairah, may Allah be pleased with him).

1. Sahih Bukhari, Chapter: Salat al-Kusoof, Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 1/144; Sahih Muslim, Chapter: Salat al-Kusoof, Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 1/834.

2. Sahih Muslim, Chapter: Al-Wasiyyat bin-Nisa, Qadeemi Kutub Khana, Karachi, 1/298.

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

यदि आप तराजू हाथ में लें, तो महिलाओं के हक में सुन्नत-ए-निकाह भी बहुत कम साबित होगी; हज़ार में से एक ही ऐसी निकलेगी जिसके बारे में कहा जा सके कि उसके लिए यह सुन्नत है। चाहे कोई स्त्री स्वयं वली हो या उन ज़ुह्द-ओ-परहेज़गारी (तपस्या और धर्मपरायणता) वाले महानुभावों से संबंधित हो, जो उसके पूरे ज़मानतदार बन जाएं कि उससे शौहर की नाफरमानी या उसके किसी हक में कोई मामूली कोताही नहीं होगी - ऐसी बेमानी ज़मानत वही दे सकता है जिसे न पुरुषों के महान अधिकारों का ज्ञान हो, न महिलाओं की आदतों और बुद्धि व धर्म की कमी पर नज़र हो। जैसा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पाक इरशाद सुना गया है:

[अरबी]: "मैंने जहन्नुम (नरक) देखी तो आज के बराबर कोई चीज़ सख़्त और भयावह नहीं देखी और मैंने जहन्नुम वालों में अधिकांश महिलाएं देखीं।" [अनुवाद]: मैंने दोज़ख का मुशाहिदा किया तो आज के बराबर कोई चीज़ सख़्त और घिनौनी नहीं देखी और मैंने दोज़ख वालों में औरतें ज़्यादा देखीं।

सहाबा ने अर्ज़ किया, "ऐ अल्लाह के रसूल!" यानी हुज़ूर! "इसका क्या कारण है?" आपने फ़रमाया, "उनके कुफ्र (नाशुक्रगुज़ारी) के कारण।" पूछा गया, "क्या वे अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल के साथ कुफ्र करती हैं?" फ़रमाया, "वे अपने पति की नाशुक्रगुज़ारी करती हैं और एहसान नहीं मानतीं। अगर तू उनमें से किसी के साथ उम्र भर एहसान करे और फिर वह तुझसे ज़रा सी भी कोई बात मिज़ाज के ख़िलाफ़ देख ले, तो कहेगी कि मैंने तुझसे कभी कोई भलाई नहीं देखी।" (इसे शैखैन ने इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है - त)।

हदीस 2: आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

[अरबी]: "बेशक औरत टेढ़ी पसली से पैदा की गई है; वह तुम्हारे लिए किसी भी रास्ते पर सीधी नहीं होगी। तो अगर तुम उससे लाभ उठाना चाहो तो उसकी टेढ़ी के बावजूद ही लाभ उठा सकते हो। और अगर तुम उसे सीधा करने की कोशिश करोगे तो उसे तोड़ दोगे, और उसका टूटना उसका तलाक़ है।" [अनुवाद]: औरत टेढ़ी पसली से बनी है, वह हरगिज़ किसी राह पर तेरे लिए सीधी न होगी; अगर तू उससे नफ़ा ले तो उसकी कजी (टेढ़ेपन) के साथ नफ़ा ले और सीधा करने चले तो तोड़

दे, और उसका तोड़ना तलाक़ देना है। (इसे इमाम मुस्लिम और तिर्मिज़ी ने हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है)।

1. सहीह बुखारी, बाब: सलातुल कुसूफ, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 1/144; सहीह मुस्लिम, बाब: सलातुल कुसूफ, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 1/834
2. सहीह मुस्लिम, बाब: अल-वसिय्यतु बिन-निसा, क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची, 1/298

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

کی میزان ہاتھ میں لیجئے تو عورتوں کے حق میں سنیت نکاح بھی بہت ندرت سے ثابت ہو گی، ہزار میں ایک ہی ایسی نکلے گی جس کے لئے سنت کہہ سکیں، کیا کسی عورت کی نسبت خود وہ یا اس کے اولیاء یا یہ تشدد والے حضرات پورے طور پر ضامن ہو جائیں گے کہ اس سے نافرمانی شوہر یا اس کے کسی حق میں ادنی تقصیر واقع ہونے کا اصلاً اندیشہ نہیں، ایسی بے معنی ضمانت وہی کر سکتا ہے جسے نہ مردوں کے حقوق عظیمہ پر اطلاع، نہ عورت کی عادات و نقصان عقل و دین پر وقوف کیا ، حدیث صحیح میں حضور پر نور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کا ارشاد سنا کہ:

رأیت النار فلم ار کالیوم منظرا قط افظع ورأیت اکثر اھلھا النساء میں نے دوزخ ملاحظہ فرمائی تو آج کی برابر کوئی چیز سخت وشنیع نہ دیکھی اور میں نے اہل دوزخ میں عورتیں زیادہ دیکھیں۔

فقالوا یار سول اللہ صحابہ نے عرض کی یا رسول اللہ یعنی حضور ! اس کا کیا سبب ہے ؟ قال بکفر ھن فرمایا ان کے کفر کے باعث۔ قیل یکفرن باللہ عرض کی گئی کیا اللہ عز وجل سے کفر کرتی ہیں؟ قال یکفرن العشیر ویکفرن الاحسان فرمایا شوہر کی ناشکری کرتی ہیں اور احسان نہیں مانتیں ہی لو احسنت الی احدھن الدھر ثم رأت منك شیئا قالت مارأیت منك خیر اقط ۱ اگر تو ان میں سے کسی کے ساتھ عمر بھر احسان کرے پھر ذراسی بات خلاف مزاج تجھ سے دیکھے تو کہے میں نے کبھی تجھ سے کوئی بھلائی نہ دیکھی رواہ الشیخان عن ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما (اس کو شیخین نے حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کیا-ت)

حدیث ۲: فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم :

ان المرأة خلقت من ضلع اعوج لن تستقيم لك على طريقة فان استمتعت بها وبها عوج وان ذهبت تقيمها كسرتها و كسرها طلاقها ۲۔ رواہ مسلم والترمذی عن ابی ھریرہ ونحوہ عورت ٹیڑھی پسلی سے بنی ہے ہرگز سی راہ پر تیرے لئے سیدھی نہ ہوگی، اگر تو اس سے نفع لے تو اس کی کجی کے ساتھ نفع لے اور سیدھا کرنے چلے تو توڑ دے، اور اس کا توڑنا طلاق دینا ہے (اس کو امام مسلم وتر مذی نے حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ عنہ)۔

1 صحیح بخاری باب صلوۃ الکسوف قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۱۴۴ ، صحیح مسلم باب صلوۃ الکسوف قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۸۳۴ 2 صحیح مسلم باب الوصیۃ بالنساء قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۲۹۸

Fatawa Ridawiyya, Volume 12

[Box 1] Left: Ahmad ibn Hibban and al-Hakim narrated from Samurah bin Jundab (may Allah be pleased with them both). Right: And like it, Imam Ahmad, Ibn Hibban and Al-Hakim narrated from Hazrat Samurah bin Jundab (may Allah be pleased with them both). (T)

The gist is that the rib will break but not straighten; a woman is also created from a left rib, if it doesn't work out then divorce her, but it is difficult for her to be agreeable in every way.

Hadith 3: A lady came to the holy presence and submitted: O Messenger of Allah! I am sent by the women; all women who know of my presence here and those who do not, all desire this presence of mine. Allah Almighty is the Lord of all men and women, and Your Honor is His Messenger to all men and women. Allah Almighty has made Jihad obligatory on men so that if they achieve victory, they become wealthy, and if they are martyred, they remain alive with their Lord and receive sustenance. And we women are the ones who manage their affairs, so what is that act of obedience for us which is equal to Jihad in reward? He said:

[Box 2] Left: Obedience to their husbands with their rights, and few among you do it. 1 - Narrated by Al-Bazzar and Al-Tabarani from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both). Right: Obeying husbands and recognizing their rights and those among you who do so are few (Al-Bazzar and Al-Tabarani narrated this from Hazrat Ibn Abbas, may Allah be pleased with them both. T).

Hadith 4: He (Peace be upon him) said:

[Box 3] Left: Those who bear the burden of pregnancy, give birth, breastfeed, are merciful to their children, if it were not for the shortcomings they show towards their husbands, those among them who pray would enter Paradise. 2 - Narrated by Imam Ahmad, Ibn Majah, and Al-Tabarani in Al-Kabir. Right: Those who endure the hardships of pregnancy, those who breastfeed, those who bear the pain of childbirth, those who are kind to their children, if it were not for the neglect they show towards their husbands, then those among them who perform their prayers would go straight to Paradise.

1. Majma' al-Zawa'id with reference to Al-Tabarani, Haq al-Mar'ah 'ala al-Zawj, Dar al-Kitab Beirut 4/306, Musannaf Abd al-Razzaq Hadith Habib al-Rahman al-A'zami Beirut 8/463.
2. Al-Mu'jam al-Kabir Hadith al-Maktabat al-Faysaliyyah Beirut 8/302, Musnad Imam Ahmad Dar al-Fikr Beirut 5/252.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 12

[बॉक्स 1] बायाँ: अहमद इब्न हिब्बान और अल-हाकिम ने समुराह बिन जुन्दाब (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया। दायाँ: और इसी तरह इमाम अहमद, इब्न हिब्बान और हाकिम ने हज़रत समुराह बिन जुन्दाब (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया। (त)

लब्बोलुआब यह है कि पसली टूट जाएगी लेकिन सीधी नहीं होगी, औरत भी बाईं पसली से बनी है, अगर निभ न सके तो तलाक़ दे दे लेकिन हर तरह से राज़ी हो जाए यह मुश्किल है।

हदीस 3: एक खातून ने ख़िदमत-ए-अकदस में हाज़िर होकर अर्ज़ की: ऐ अल्लाह के रसूल! मैं औरतों की नुमाइंदा हूँ, हुज़ूर की बारगाह में जिन औरतों को खबर है और जिन्हें खबर नहीं, सब मेरी इस हाज़िरी की ख़्वाहिशमंद हैं, अल्लाह अज़-व-जल मर्दों और औरतों सबका रब है और हुज़ूर मर्दों और औरतों सबकी तरफ उसके रसूल हैं। अल्लाह अज़-व-जल ने मर्दों पर जेहाद फ़र्ज़ किया कि फ़तह पाएं तो दौलतमंद हो जाएं और शहीद हों तो अपने रब के पास ज़िंदा रहें और रिज़्क़ पाएं और हम औरतें उनके कामों का इंतिज़ाम करने वाली हैं, तो हमारे लिए वह कौन सी इबादत है जो सवाब में जेहाद के बराबर हो? फ़रमाया:

[बॉक्स 2] बायाँ: अपने शौहरों की इताअत उनके हुक़ूक़ के साथ, और तुम में से कम ही ऐसी हैं जो ऐसा करती हैं। 1 - अल-बज़ार और अल-तबरानी ने इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया। दायाँ: शौहरों की इताअत और उनके हुक़ूक़ को पहचानना और उसे अदा करने वाली तुम में थोड़ी हैं (इसे बज़ार और तबरानी ने हज़रत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया। त)।

हदीस 4: हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं:

[बॉक्स 3] बायाँ: हमल का बोझ उठाने वाली, बच्चों को जन्म देने वाली, दूध पिलाने वाली, अपने बच्चों पर मेहरबान औरतें, अगर वह कोताही न होती जो वे अपने शौहरों के साथ करती हैं, तो उनमें से नमाज़ पढ़ने वाली सीधी जन्नत में दाखिल होतीं। 2 - इसे इमाम अहमद, इब्न माजह और तबरानी ने अल-कबीर में रिवायत किया। दायाँ: हमल की सख़्तियाँ उठाने वाली, दूध पिलाने वाली, जनने की तकलीफ़ झेलने वाली, अपने बच्चों पर मेहरबान औरतें, अगर वह कोताही न होती जो वे अपने शौहरों के साथ करती हैं, तो उनमें से नमाज़ पढ़ने वाली सीधी जन्नत में जाएँगी।

1. मजमा-उज़-ज़वाइद बहवाला अल-तबरानी, हक़-उल-मरअत अलज़-ज़ौज, दार-उल-किताब बैरूत 4/306, मुसन्निफ़ अब्द-उर-रज़्ज़ाक़ हदीस हबीब-उर-रहमान अल-आज़मी बैरूत 8/463
2. अल-मुअजम-उल-कबीर हदीस अल-मक्तबत-उल-फ़ैसलिया बैरूत 8/302, मुसनद इमाम अहमद दार-उल-फ़िक्र बैरूत 5/252

فتاوٰی رضویہ، جلد دو ازدہم

[باکس 1] بائیں: احمد ابن حبان والحاکم عن سمرۃ بن جندب رضی اللہ تعالٰی عنہما۔ دائیں: تعالٰی عنہ سے اور اس کی مثل کو امام احمد، ابن حبان اور حاکم نے حضرت سمرہ بن جندب رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت کیا۔ (ت)

حاصل یہ کہ پسلی ٹوٹ جائے گی مگر سیدھی نہ ہوگی، عورت بھی بائیں پسلی سے بنی ہے نہ نبھے تو طلاق دے دے مگر ہر طرح موافق آئے یہ مشکل ہے۔

حدیث ۳: ایک بی بی نے خدمت اقدس میں حاضر ہو کر عرض کی: یا رسول اللہ! میں عورتوں کی فرستادہ ہوں، حضور کی بارگاہ میں جن عورتوں کو خبر ہے اور جنہیں خبر نہیں سب میری اس حاضری کی خواہاں ہیں، اللہ عزوجل مردوں عورتوں سب کا پروردگار ہے اور حضور مردوں عورتوں سب کی طرف اس کے رسول، اللہ عزوجل نے مردوں پر جہاد فرض کیا کہ فتح پائیں تو دولت مند ہو جائیں اور شہید ہوں تو اپنے رب کے پاس زندہ رہیں رزق پائیں اور ہم عورتیں ان کے کاموں کا انتظام کرنے والیاں ہیں تو ہمارے لئے وہ کون سی طاعت ہے جو ثواب میں جہاد کے برابر ہو۔ فرمایا:

[باکس 2] بائیں: طاعۃ ازواجھن بحقوقھم وقلیل منکن من یفعلہ 1 ۔رواہ البزار والطبرانی عن ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنھما۔ دائیں: شوہروں کی اطاعت اور ان کے حق پہچاننا اور اس کی کرنے والیاں تم میں تھوڑی ہیں (اس کو بزاز اور طبرانی نے حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت کیا۔ ت)

حدیث ۴: فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم :

[باکس 3] بائیں: حاملات والدات مرضعات رحیمات باولادھن لولا ما یأتین الی ازواجھن لدخل مصلیاً تھن الجنة 2 ۔ اخرجه الامام احمد وابن ماجة والطبرانی فی الکبیر دائیں: حمل کی سختیاں اٹھانے والیاں، دودھ پلانے والیاں، جننے کی تکلیف جھیلنے والیاں، اپنے بچوں پر مہربانیں، اگر نہ ہوتی وہ تقصیر جو اپنے شوہروں کے ساتھ کرتی ہیں تو ان کی نماز والیاں سیدھی جنت میں

---

1 مجمع الزوائد بحوالہ الطبرانی حق المرأة علی الزوج دار الکتاب بیروت ۴ / ۳۰۶، مصنف عبد الرزاق حدیث حبیب الرحمن الاعظمی بیروت ۸ / ۴۶۳ 2 المعجم الکبیر حدیث المکتبۃ الفیصلیہ بیروت ۸ / ۳۰۲، مسند امام احمد دار الفکر بیروت ۵ / ۲۵۲

Fatawa Razviya, Volume 12

[Box 1] Arabic: Al-Hakim in al-Mustadrak from Abu Umama (may Allah be pleased with him). Urdu: Let it be known (Imam Ahmad, Ibn Majah, and Tabarani in al-Kabir, and al-Hakim in al-Mustadrak narrated it from Abu Umama, may Allah be pleased with him. - T)

Being Sunnah aside, for most women, the permissibility remains established; this is a significant matter. Then, what is the way to object to their refusal and persist in marriage? Let alone that objection (God forbid) reaching the limit of disbelief and persistence also being alongside coercion and compulsion. Therefore, it is narrated in Hadiths that many wives, after hearing about the rights of the husband and their severity, vowed before the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) not to marry for the rest of their lives. And the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) did not forbid it. However, ignorant preachers, especially the Wahhabis, always wish to act beyond God and His Messenger (Exalted is He, and peace and blessings of Allah be upon Him).

Hadith 1: A woman from the tribe of Khath'am came to the service of the Holy Master of the Worlds (peace and blessings of Allah be upon him) and submitted: "O Messenger of Allah! Please tell me what the husband's right over the woman is, so that if I stay unmarried and see my strength to fulfill them, I will marry; otherwise, I will remain as I am." He said:

[Box 2] Arabic: "Indeed, the right of the husband over the wife is that if he asks for herself while she is on the back of a camel (saddle), she should not refuse him. And among the rights of the husband over the wife is that she should not observe voluntary fasts except with his permission. If she does, she stays hungry and thirsty in vain, and it will not be accepted from her. And she should not leave her house except with his permission. If she does, the angels of the heavens, the angels of the earth, the angels of mercy, and the angels of punishment will curse her until she returns." Urdu: "So indeed, the husband's right over the wife is that even if the woman is sitting on a camel-saddle and the man wants intimacy with her on that same mount, she should not refuse. And the husband's right over the woman is that she should not keep voluntary (Nafal) fasts without his permission; if she does, she will remain hungry and thirsty in vain, and the fast will not be accepted. And she should not go anywhere from home without the husband's permission; if she does,

the angels of the sky, the angels of the earth, the angels of mercy, and the angels of punishment will all curse her until she returns."

Hearing this command, the lady submitted: "La jarama la atazawwaju abada" (Certainly, I will never marry). This exactly means "I will not marry." Narrated by al-Tabarani from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both). (Tabarani narrated this from Ibn Abbas, may Allah be pleased with them both. - T)

[Footnotes] 1. Kashf al-Astar 'an Zawa'id al-Bazzar, Chapter: The Husband's Right over the Woman, Mu'assasat al-Risala, Beirut, 2/177; Majma' al-Zawa'id, Chapter: The Husband's Right over the Woman, Dar al-Kitab, Beirut, 4/306.

फ़तवा रज़विया, खंड 12

[बॉक्स 1] अरबी: अल-हाकिम ने अल-मुस्तदरक में अबू उमामा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया। उर्दू अनुवाद: जाने दें (इसे इमाम अहमद, इब्न माजा, कबीर में तबरानी ने और मुस्तदरक में हाकिम ने हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया। - त)

सुन्नत होना तो दूर, अधिकतर औरतों के लिए इबाहत (अनुमति) ही साबित रहती है; यही बड़ी बात है। फिर उनके इनकार पर ऐतराज़ और निकाह पर इसरार (हठ) की क्या गुंजाइश है? अल्लाह न करे कि ऐतराज़ भी कुफ़्र की सीमा तक पहुँच जाए और इसरार भी ज़बरदस्ती के बराबर हो जाए। इसलिए हदीसों में वर्णित है कि शौहर के हक़ और उनकी सख्ती को सुनकर कई बीवियों ने हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सामने उम्र भर निकाह न करने का संकल्प लिया। और हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उन्हें मना नहीं फ़रमाया। लेकिन जाहिल वाइज़ों (उपदेशकों), विशेषकर वहाबियों ने हमेशा खुदा और रसूल से बढ़कर आवाज़ उठाई है (जल्ल जलालाहु, व सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)।

हदीस 1: एक ख़शमई महिला ने हुज़ूर अकदस सरवरे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की सेवा में हाज़िर होकर अर्ज़ की: "हे अल्लाह के रसूल! मुझे बताएं कि औरत पर शौहर का क्या अधिकार है, ताकि मैं बिना शौहर के रहूँ और यदि मैं उन अधिकारों को पूरा करने की अपनी शक्ति देखूँ तो निकाह करूँ अन्यथा ऐसे ही बैठी रहूँ।" आपने फ़रमाया:

[बॉक्स 2] अरबी: "बेशक पत्नी पर पति का अधिकार यह है कि यदि वह उसे बुलाए जब वह ऊंट की पीठ (काठी) पर हो, तो वह उसे मना न करे। और पत्नी पर पति का अधिकार यह है कि वह उसकी अनुमति के बिना स्वैच्छिक (नफ़्ल) रोज़ा न रखे। यदि वह ऐसा करती है, तो वह व्यर्थ में भूखी-प्यासी रहेगी और वह उससे स्वीकार नहीं किया जाएगा। और वह उसके घर से उसकी अनुमति के बिना बाहर न निकले। यदि वह ऐसा करती है, तो स्वर्ग के फ़रिश्ते, धरती के फ़रिश्ते, दया के फ़रिश्ते और दंड के फ़रिश्ते उसे लौटने तक कोसते (लानत करते) रहेंगे।" उर्दू अनुवाद: "तो बेशक पत्नी पर पति का हक़ यह है कि यदि महिला कजावा (ऊंट की काठी) पर बैठी हो और पुरुष उसी सवारी पर उससे निकटता चाहे तो वह इनकार न करे। और महिला पर पुरुष का हक़ यह है कि उसकी अनुमति के बिना नफ़्ल रोज़ा न रखे; यदि रखेगी तो व्यर्थ भूखी-प्यासी रही, रोज़ा स्वीकार नहीं होगा। और पति की

अनुमति के बिना घर से कहीं न जाए; यदि जाएगी तो आकाश के फ़रिश्ते, धरती के फ़रिश्ते, दया के फ़रिश्ते, दंड के फ़रिश्ते सब उस पर लानत करेंगे जब तक कि वह वापस न आ जाए।"

यह आदेश सुनकर महिला ने अर्ज़ की: "ला ज़रम ला अतज़व्वजु अबदन" (निश्चित रूप से मैं कभी निकाह नहीं करूँगी)। इसका ठीक-ठीक अर्थ यही है कि "निकाह नहीं करूँगी।" इसे तबरानी ने इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से रिवायत किया है। (तबरानी ने इसे हज़रत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया। - त)

[पादलेख] 1. कश्फ़ अल-अस्तार अन ज़वाइद अल-बज़ार, अध्याय: महिला पर पति का अधिकार, मुअस्ससत अल-रिसाला, बेरूत, 2/177; मजमा अल-ज़वाइद, अध्याय: महिला पर पति का अधिकार, दार अल-किताब, बेरूत, 4/306.

पृष्ठ 297/688

فتاوٰی رضویہ، جلد دوازدہم

[پہلا خانہ] والحاکم فی المستدرک عن ابی امامۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ جائیں (اس کو امام احمد، ابن ماجہ، کبیر میں طبرانی نے اور مستدرک میں حاکم نے حضرت ابوامامہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت فرمایا۔ ت)

توسنیت درکنار اکثر عورتوں کے لئے حدیث اباحت ہی ثابت رہے یہی بڑی بات ہے پھر اُن کے انکار پر اعتراض اور نکاح پر اصرار کی کیا سبیل نہ کہ اعتراض بھی معاذاللہ تاحداکفار اور اصرار بھی ہم پہلوئے اکراہ واجبہار ، ولہذا احادیث میں وارد کہ حقوق شوہر اور ان کی شدت سُن کر متعدد بیویوں نے حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے سامنے عمر بھر نکاح نہ کرنے کا عہد کیا اور حضور پر نور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے انکار نہ فرمایا مگر جاہل واعظین خصوصاً وہابیہ ہمیشہ خدا و رسول سے بڑھ کر چلا چاہتے ہیں جل جلالہ ، وصلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم۔ حدیث ۱: ایک زن خثمیہ نے خدمت اقدس سرور عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم میں حاضر ہو کر عرض کی : یا رسول اللہ ! حضور مجھے سنائیں کہ شوہر کا حق عورت پر کیا ہے کہ میں زن بے شوہر رہوں اُس کے ادا کی اپنے طاقت دیکھوں تو نکاح کروں ورنہ یوں ہی بیٹھی رہوں، فرمایا :

[دوسرا خانہ] فان حق الزوج علی الزوجۃ ان سألھا نفسھا وھی علی ظھر بغیران لاتمنعہ نفسھا ومن حق الزوج علی الزوجۃ ان لاتصوم تطوعا الا باذنہ فان فعلت جاعت وعطشت ولا یقبل منھا ولا تخرج من بیتھا الا باذنہ فان فعلت لعنتھا ملئکۃ السماء وملئکۃ الارض وملئکۃ الرحمۃ وملئکۃ العذاب حتی ترجع۔ تو بیشک شوہر کا حق زوجہ پر یہ ہے کہ عورت کجاوہ پر بیٹھی ہو اور مرد اُسی سواری پر اس سے نزدیکی چاہے تو انکار نہ کرے، اور مرد کا حق عورت پر یہ ہے کہ اس کے بے اجازت

کے نفل روزہ نہ رکھے اگر رکھے گی تو عبث بھوکی پیاسی رہی روزہ قبول نہ ہوگا اور گھر سے بے اذن شوہر کہیں نہ جائے اگر جائے گی تو آسمان کے فرشتے، زمین کے فرشتے، رحمت کے فرشتے، عذاب کے فرشتے سب اُس پر لعنت کرینگے جب تک پلٹ کر آئے۔

یہ ارشاد سُن کر بی بی نے عرض کی : لا جرم لا تزوج ابدا ٹھیک ٹھیک یہ ہے کہ نکاح نہ کرونگی رواہ الطبرانی عن ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما (اس کو طبرانی نے حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کیا۔ ت)

[حواشی] 1. کشف الاستار عن زوائد البزار باب حق الزوج علی المرأۃ مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۲ / ۱۷۷، مجمع الزوائد باب حق الزوج علی المرأۃ دار الکتاب بیروت ۴ / ۳۰۶

Fatawa Razawiyya Volume 12

...narrated from Allah be pleased with them both. (T)

Hadith 2: A lady presented herself in the court of the Master of the Pious (peace and blessings of Allah be upon him) and submitted: "I am so-and-so daughter of so-and-so." He said: "I have recognized you, tell your business." She submitted: "I have business with my cousin so-and-so, the worshiper." He said: "I have recognized him too, meaning state the purpose." She submitted: "He has sent me a proposal. So please instruct me what is the right of a husband over a wife; if it is something within my power, I will marry him." He said:

"Part of his right is that if both his nostrils were flowing with blood or pus and she licked it with her tongue, she would still not have fulfilled his right. If it were permissible for a human to prostrate to another human, I would have commanded the woman to prostrate to her husband when he enters upon her, because of the excellence Allah has given him over her."

A part of the man's right is that if both his nostrils are flowing with blood or pus and the woman licks it with her tongue, even then the husband's right is not fulfilled. If it were permissible for a man to prostrate to a man, then I would order the woman that when the man comes from outside and appears before her, she should prostrate to him, for God has given man such excellence.

Hearing this, that lady said:

"By Him Who sent you with the Truth, I will not marry as long as the world remains."[1] By Him Who sent you with the truth, I will not even mention marriage as long as the world remains. (Al-Bazzar and Al-Hakim narrated this from Hazrat Abu Huraira, may Allah be pleased with him. T)

Narrated by al-Bazzar and al-Hakim from Abu Huraira, may Allah be pleased with him.

Hadith 3: A gentleman came with his daughter to the court of the Protector of the World, our Master of the Worlds (peace and blessings of Allah be upon him) and submitted: "This daughter of mine refuses to marry." Our Master (salutations of Allah be upon him) said: "Obey your father." That girl submitted: "By Him Who sent you with the truth, I will not marry until the Prophet (peace be upon him) tells me what is the right of a husband over a wife." He said:

[1] Al-Mustadrak, Kitab al-Nikah, Chapter: Husband's right over wife, Dar al-Fikr, Beirut, 2/189; Kashf al-Astar 'an Zawa'id al-Bazzar, Hadith: Muassasat al-Risala, Beirut, 2/178.

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

...अल्लाह उन दोनों से राज़ी हो, उनसे रिवायत है। (त)

हदीस 2: एक महिला ने सैय्यद अल-अबरार (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) के दरबार में उपस्थित होकर अर्ज़ की: "मैं फलां की बेटी फलां हूं।" आपने फ़रमाया: "मैंने तुम्हें पहचान लिया, अपना काम बताओ।" उसने अर्ज़ की: "मुझे अपने चचेरे भाई फलां आबिद (इबादत करने वाला) से काम है।" आपने फ़रमाया: "मैंने उसे भी पहचान लिया यानी मकसद बताओ।" उसने अर्ज़ की: "उसने मुझे निकाह का संदेश भेजा है। तो हुज़ूर इरशाद फ़रमाएं कि शौहर का हक़ औरत पर क्या है? अगर वह मेरे बस में हो तो मैं उससे निकाह कर लूं।" आपने फ़रमाया:

"उसके हक़ का एक हिस्सा यह है कि अगर उसके नथुनों से खून या मवाद बह रहा हो और वह उसे अपनी ज़ुबान से चाट ले, तब भी उसने उसका हक़ अदा नहीं किया। अगर किसी इंसान का दूसरे इंसान को सजदा करना जायज़ होता, तो मैं औरत को हुक्म देता कि जब उसका शौहर बाहर से आए तो वह उसे सजदा करे, क्योंकि अल्लाह ने मर्द को उस पर ऐसी फज़ीलत (श्रेष्ठता) दी है।"

मर्द के हक का एक टुकड़ा यह है कि अगर उसके दोनों नथुने खून या पीप से बहते हों और औरत उसे अपनी ज़ुबान से चाट ले तो शौहर के हक से अदा न हुई। अगर आदमी का आदमी को सजदा रवा होता तो मैं औरत को हुक्म देता कि मर्द जब बाहर से आए उसके सामने आए उसे सजदा करे कि खुदा ने मर्द को फजीलत ही ऐसी दी है।

यह सुनकर वह महिला बोलीं:

"उस ज़ात की कसम जिसने आपको हक के साथ भेजा, जब तक दुनिया बाकी है मैं निकाह नहीं करूंगी।"[1] कसम उसकी जिसने हुज़ूर को हक के साथ भेजा मैं रहती दुनिया तक निकाह का नाम न लूंगी (इसको बज़ार और हाकिम ने हज़रत अबू हुरैरा रज़ी अल्लाह तआला अन्हु से रिवायत फ़रमाया। त)

इसे बज़ार और हाकिम ने हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत किया है।

हदीस 3: एक साहब अपनी साहिबज़ादी को लेकर दरगाह-ए-आलमपनाह हुज़ूर सैय्यद अल-आलमीन (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) में हाज़िर हुए और अर्ज़ की: "मेरी यह बेटी निकाह करने से इनकार करती है।" हुज़ूर (सलवातुललाहि अलैहि) ने फ़रमाया: "अतीई अबाका" (अपने बाप

का हुक्म मान)। उस लड़की ने अर्ज़ की: "कसम उसकी जिसने हुज़ूर को हक के साथ भेजा, मैं निकाह नहीं करूंगी जब तक हुज़ूर यह न बतायें कि शौहर का हक औरत पर क्या है।" आपने फ़रमाया:

---

[1] मुस्तदरक, किताबुन निकाह, बाब: पति का पत्नी पर अधिकार, दारुल फिक्र, बेरूत, 2/189; कशफुल अस्तार अन ज़वाइदिल बज़ार, हदीस: मुअस्सतुल रिसाला, बेरूत, 2/178।

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

تعالیٰ عنہما سے روایت کیا۔ت)

حدیث ۲: ایک بی بی نے دربارِ دُربارِ سید الابرار صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم میں حاضر ہو کر عرض کی: میں فلاں دختر فلاں ہوں۔ فرمایا: میں نے تجھے پہچانا اپنا کام بتا۔ عرض کی: مجھے اپنے چچاکے بیٹے فلاں عابد سے کام ہے۔ فرمایا: میں نے اُسے بھی پہچانا یعنی مطلب کہہ۔ عرض کی؛ اس نے مجھے پیام دیا ہے۔ تو حضور ارشاد فرمائیں کہ شوہر کا حق عورت پر کیا ہے اگر وہ کوئی چیز قابو کی ہو تو میں اُس سے نکاح کرلوں۔ فرمایا:

من حقه لوسال منخراه دماً او قیحاً فلحسته بلسانها ما ادت حقه لو کان ینبغی لبشر ان یسجد لبشر لامرت المرأة ان یسجد لزوجها اذا دخل علیها بما فضله الله علیہا۔

مرد کے حق کا ایک ٹکڑا یہ ہے کہ اگر اس کے دونوں نتھنے خون یا پیپ سے بہتے ہوں اور عورت اُسے اپنی زبان سے چاٹ لے تو شوہر کے حق سے ادا نہ ہوئی اگر آدمی کا آدمی کو سجدہ روا ہوتا تو میں عورت کو حکم دیتا کہ مرد جب باہر سے آئے اس کے سامنے آئے اسے سجدہ کرے کہ خدا نے مرد کو فضیلت ہی ایسی دی ہے۔

یہ ارشاد سُن کر وہ بی بی بولیں:

والذی بعثک بالحق لا اتزوج مابقیت الدنیا۔ ۱ قسم اس کی جس نے حضور کو حق کے ساتھ بھیجا میں رہتی دنیا تک نکاح کا نام نہ لوں گی (اسکو بزار اور حاکم نے حضرت ابو ہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت فرمایا۔ ت)

رواہ البزار والحاکم عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالی عنہ۔

حدیث ۳: ایک صاحب اپنی صاحبزادی کو لے کر درگاہ عالم پناہ حضور سید العالمین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم میں حاضر ہوئے اور عرض کی: میری یہ بیٹی نکاح کرنے سے انکار رکھتی ہے حضور صلوات اللہ تعالیٰ علیہ نے فرمایا: "اطیعی اباک" اپنے باپ کا حکم مان۔ اس لڑکی نے عرض کی: قسم اس کی جس نے حضور کو حق کے ساتھ بھیجا میں نکاح نہ کروں گی جب تک حضور یہ نہ بتائیں کہ خاوند کا حق عورت پر کیا ہے۔ فرمایا:

---

1 مستدرك كتاب النكاح باب حق الزوج على الزوجة دارالفكر بيروت ۱۸۹/۲، كشف الاستار عن زوائد البزار حديث موسسة الرساله بيروت ۱۷۸/۲

Fatawa Razawiyyah, Volume 12

[Box 1] Arabic: The right of the husband over his wife is such that if he had a sore and she licked it, or if pus or blood flowed from his nostrils and she swallowed it, she would still not have fulfilled his right. Urdu translation: The husband's right over the woman is such that if he has a boil and the woman cleans it by licking, or if pus or blood comes out of his nostrils and the woman swallows it, even then the man's right has not been fulfilled.

That girl said: [Box 2] Arabic: By Him who sent you with the truth, I will never marry. Urdu translation: I swear by Him Who sent the Messenger with the truth, I will never marry.

The Holy Prophet (peace and blessings be upon him) said: [Box 3] Arabic: "Do not marry them [women] except with their permission." Reported by al-Bazzar and Ibn Hibban in his Sahih from Abu Sa'id al-Khudri (may Allah be pleased with him). Urdu translation: "Do not perform the marriage of women until they give their consent." This was reported by al-Bazzar and Ibn Hibban in their 'Sahih' from Hazrat Abu Sa'id al-Khudri (may Allah be pleased with him). (T)

Imam Hafiz Zaki al-Milla wa al-Din Abdul Azim Mundhiri (mercy of Allah be upon him) says: The chain of narration for this hadith is excellent and all its narrators are well-known and trustworthy. Subhan Allah, look at this noble hadith: an unmarried daughter refuses marriage, the father insists, the father complains in the presence of the Prophet, and the daughter swears in the very presence of the Prophet that she will never marry. At this, the Holy Prophet (peace and blessings be upon him) neither gets angry with the one who refuses nor objects; instead, he instructs the guardians (awliya) not to marry them until they give their consent. How far is this guiding instruction from that tyrannical, forceful, and oppressive command which says: even if she has been married once and is now a widow, force her into a second marriage, and if she is widowed again, choke her a third time; if she agrees, fine, but if she refuses, she has become an infidel (kafira)? And the guardians with her are also not spared; if they do not marry her off by force, then, Allah forbid, the wrath of Allah Almighty may fall upon them. May Allah protect us, they would be ruined like the wretched Yazid, with the fear of losing their faith at the time of death. The irony is that, according to these people, they have abandoned one command of the pure Shari'ah and are urging Muslims to abandon another definitive obligation (fard qat'i)

—that if such people die, do not perform their funeral prayer. Whereas the Leader of the Messengers (peace and blessings be upon him) says:

[Box 4] Arabic: As-Salatu wajibah 'alaykum 'ala kulli muslimin yamutu. Urdu translation: The funeral prayer is obligatory upon you for every Muslim who dies, whether they were good or bad.

Footnote 1: Kashf al-Astar 'an Zawa'id al-Bazzar, Hadith, Mu'assasah al-Risalah, Beirut, 2/178.

फतवा रज़विया, खंड 12

[बॉक्स 1] अरबी: पति का अपनी पत्नी पर वह अधिकार है कि यदि उसे कोई फोड़ा हो और वह उसे चाट ले, या उसके नथुनों से मवाद या खून निकले और वह उसे निगल ले, तो भी उसने उसका हक अदा नहीं किया। उर्दू अनुवाद: पति का हक औरत पर यह है कि अगर उसके कोई फोड़ा हो, औरत उसे चाट कर साफ करे या उसके नथुनों से पीप या खून निकले, औरत उसे निगल ले, तो मर्द के हक से अदा न हुई।

उस लड़की ने अर्ज़ की: [बॉक्स 2] अरबी: उसकी कसम जिसने आपको हक के साथ भेजा, मैं कभी निकाह नहीं करूंगी। उर्दू अनुवाद: कसम उसकी जिसने हुज़ूर को हक के साथ भेजा मैं कभी शादी न करूंगी।

हुज़ूर पुरनूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया: [बॉक्स 3] अरबी: "औरतों का निकाह न करो जब तक उनकी मर्जी न हो"। इसे बज़ार और इब्ने हब्बान ने अपनी सही में हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया। उर्दू अनुवाद: "عورتوں کا نکاح نہ کرو جب تک ان کی مرضی نہ ہو"। इसे बज़ार और इब्ने हब्बान ने अपनी सही में हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत किया। (त)

इमाम हाफ़िज़ ज़की अल-मिल्लत व अल-दीन अब्दुल अज़ीम मुंधिरी (रहमतुल्लाह अलैहि) फरमाते हैं: इस हदीस की सनद जय्यद (उत्कृष्ट) है और इसके सभी रावी (वर्णनकर्ता) प्रसिद्ध और विश्वसनीय हैं। सुभान अल्लाह, इस महान हदीस को देखें: एक कुंवारी बेटी निकाह से इनकार करती है, बाप ज़िद करता है, बाप हुज़ूर की दरगाह में शिकायत करता है, साहबज़ादी हुज़ूर के सामने ही कसम खाती हैं कि कभी निकाह न करूंगी। इस पर हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम न तो उस इनकार करने वाली पर नाराज़ होते हैं और न ही ऐतराज़ करते हैं, बल्कि औलिया (सरपरस्तों) को हिदायत फरमाते हैं कि जब तक उनकी मर्जी न हो उनका निकाह न करो। कहाँ यह हिदायत और कहाँ वह जबरदस्ती का जुल्म कि अगर एक बार निकाह हो चुका और अब विधवा हो गई, तो दोबारा निकाह पर ज़ोर डालो और अगर फिर विधवा हो तो तीसरी बार गला दबाओ; अगर मान ले तो ठीक, और इनकार करे तो वह काफिर हो गई? और साथ लगे औलिया की भी खैर नहीं, अगर वे जबरन निकाह न करें तो उन पर भी अल्लाह की पनाह, अल्लाह अज्ज़वजल का गज़ब टूटे। खुदा की पनाह, वे यज़ीद पलीद की तरह तबाह हो जाएँ, मरते वक्त ईमान जाने का खतरा हो। मज़े की बात

यह है कि इन लोगों के नज़दीक उन्होंने शरीअत का एक हुक्म तो छोड़ दिया, दूसरा हुक्म फ़र्ज़-ए-क़तई को छोड़ने की मुसलमानों को ताकीद करते हैं कि अगर वे मर जाएँ तो उनके जनाज़े की नमाज़ न पढ़ो, हालांकि हुज़ूर सैय्यदुल मुर्सलीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फरमाते हैं:

[बॉक्स 4] अरबी: हर मुसलमान के जनाज़े की नमाज़ तुम पर फर्ज़ है। उर्दू अनुवाद: हर मुसलमान के जनाज़े की नमाज़ तुम पर फर्ज़ है, नेक हो या बद।

पाद-टिप्पणी 1: कश्फ़ अल-अस्तार अन ज़वाइदि अल-बज़ार, हदीस, मुअस्ससतुर रिसालाह, बेरूत, 2/178.

पृष्ठ 299/688

فتاوی رضویہ، جلد دو ازدہم

[باکس 1] حق الزوج علی زوجتہ لو کانت بہ قرحۃ فلحستھا اور انتثر منخراہ صدیدا اودما ثم ابتلعتہ ما ادت حقہ۔ شوہر کا حق عورت پر یہ ہے اگر اس کے کوئی پھوڑا ہو عورت اسے چاٹ کر صاف کرے یا اس کے نتھنوں سے پیپ یا خون نکلے عورت اسے نگل لے تو مرد کے حق سے ادا نہ ہوئی۔

اس لڑکی نے عرض کی : [باکس 2] والذی بعثک بالحق لا اتزوج ابدا۔ قسم اس کی جس نے حضور کو حق کے ساتھ بھیجا میں کبھی شادی نہ کروں گی۔

حضور پُر نور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: [باکس 3] لا تنکحوھن الا باذنھن ۱ رواہ البزار و ابن حبان فی صحیحہ عن ابی سعید الخدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔ "عورتوں کا نکاح نہ کرو جب تک ان کی مرضی نہ ہو"۔ اس کو بزار اور ابن حبان نے اپنی صحیح میں حضرت ابوسعید خدری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا۔ (ت)

امام حافظ زکی الملت والدین عبد العظیم مندری رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ فرماتے ہیں: اس حدیث کی سند جید اور اس کے سب راوی ثقات مشہورین ہیں انتھی، سبحان اللہ اس حدیث جلیل کو دیکھئے دختر نا کتخدا کو نکاح سے انکار، باپ کو اصرار، باپ حضور کی بارگاہ میں شکایت کرتے ہیں، صاحبزادی عین دربار اقدس میں قسم کھاتی ہیں کہ کبھی نکاح نہ کروں گی۔ اس پر حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نہ اس انکار کرنے والی پر ناراض ہوتے ہیں نہ اعتراض کرتے ہیں بلکہ اولیاء کو ہدایت فرماتے ہیں کہ جب تک ان کی مرضی نہ ہو ان کا نکاح نہ کرو، کہاں یہ ارشاد ہدایت بنیاد کہاں وہ جبروتی حکم زبردستی کا ظلم کہ اگرچہ ایک بار نکاح ہو چکا اب بیوہ ہو گئی،

اور دوبارہ نکاح پر جبر کرو اور پھر بیوہ ہو تو پھر سہ بارہ گلا دباؤ اگر مان لے تو خیر، اور انکار کرے تو کافرہ ہو گئی، اور ساتھ لگے اولیا کی بھی خیر نہیں اگر وہ خواہ مخواہ نکاح نہ کر دیں تو ان پر بھی معاذ اللہ اللہ عزوجل کا غضب ٹوٹے عیاذاً باللہ یزید پلید کی طرح غارت ہوں، مرتے وقت ایمان جانے کا اندیشہ، مزہ یہ کہ ان حضرات کے نزدیک ایک حکم شریعت مطہرہ کا انہوں نے چھوڑا دوسرا حکم فرض قطعی کے ترک کی یہ مسلمانوں کو تاکید کرتے ہیں کہ وہ مر جائیں تو ان کے جنازہ کی نماز نہ پڑھو، حالانکہ حضور سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

[باکس 4] الصلوٰۃ واجبۃ علیکم علی کل مسلم یموت ہر مسلمان کے جنازہ کی نماز تم پر فرض ہے نیک ہو یا بد

۱ کشف الاستار عن زوائد البزار حدیث موسسۃ الرسالہ بیروت ۱۷۸/۲

Fatawa Razawiyya, Volume 12

[Box 1] Arabic: "Whether he was righteous or wicked, even if he committed major sins." 1 - Reported by Abu Dawood, Abu Ya'la, and al-Bayhaqi in his Sunan from Abu Hurayrah (may Allah be pleased with him) with an authentic chain according to our principles, the group of Hanafis. Urdu: Even if he has committed many major sins (Imam Abu Dawood, Abu Ya'la and Imam Bayhaqi narrated this in their Sunan from Hazrat Abu Huraira, may Allah be pleased with him, with such a chain of narration which is authentic according to the principles of us Hanafis. - t)

In the second Hadith, the Master of both worlds, the Leader of the universe (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Box 2] Arabic: "Pray over every deceased [Muslim]." 2 - Reported by Ibn Majah from Wathilah, the father of Abu al-Tufail (may Allah be pleased with them both). Urdu: Pray the funeral prayer of every (Muslim) deceased. (Ibn Majah narrated this from Wathilah, the father of Abu al-Tufail, may Allah be pleased with them both. - t)

In the third Hadith, the Master of the world, the Honorable Leader (peace and blessings of Allah be upon him) says:

[Box 3] Arabic: "Pray over whoever says: 'There is no god but Allah'." 3 - Reported by Abu al-Qasim al-Tabarani in his al-Mu'jam al-Kabir, and Abu Nu'aym in Hilyat al-Awliya, from 'Abdullah ibn al-Faruq (may Allah be pleased with them). Urdu: Pray the funeral prayer for whoever says "La ilaha illa Allah". Abu al-Qasim al-Tabarani narrated this in his al-Mu'jam al-Kabir and Abu Nu'aym in Hilyat al-Awliya from Hazrat Abdullah ibn al-Faruq, may Allah be pleased with them both. (t)

God forbid, putting aside the commands of Mustafa (peace and blessings of Allah be upon him) and inventing a new Sharia from one's own side is a hundred thousand times worse than a widow remarrying. That is why it was said that these gentlemen save others from a ditch and fall into a deep well themselves. There is no power or strength except in Allah, the Most High, the Supreme. In short, upon investigation, for common women, especially the women of this time, the ruling is one of extreme permissibility, and there is absolutely no accountability for declining what is permissible, especially when some other wisdom also calls for refraining from

marriage. It is in a Sahih Hadith that the Noble Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) [asked] Hazrat Umm Hani bint Abi Talib...

1. Sunan Abi Dawud, Kitab al-Jihad, Chapter on fighting with unjust rulers, Aftab-e-Alam Press Lahore, 1/343; As-Sunan al-Kubra, Chapter on praying behind one whose actions are not praised, Dar Sadir Beirut, 3/121.
2. Sunan Ibn Majah, Chapters on Funerals, Chapter on praying over the People of the Qibla, H.M. Saeed Company Karachi, p. 110.
3. Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith narrated from Abdullah ibn Umar, Al-Maktaba al-Faysaliyya Beirut, 12/44.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

[बॉक्स 1] अरबी: "चाहे वह नेक हो या पापी, भले ही उसने बड़े पाप (कबीरा गुनाह) किए हों।" 1 - इसे अबू दाऊद, अबू याला और अल-बैहकी ने अपने सुनन में हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से ऐसी सनद के साथ रिवायत किया है जो हम हनफ़ियों के उसूलों के मुताबिक़ सही है। उर्दू: चाहे उसने कितने ही गुनाह-ए-कबीरा किए हों (इसे इमाम अबू दाऊद, अबू याला और इमाम बैहकी ने अपनी सुनन में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से ऐसी सनद के साथ रिवायत फ़रमाया जो हमारे यानी अहनाफ़ के उसूल के मुताबिक़ सही है। - त)

दूसरी हदीस में है, मौला-ए-दो जहाँ सरवर-ए-कौन-ओ-मकां (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

[बॉक्स 2] अरबी: "हर [मुस्लिम] मृतक की नमाज़ पढ़ो।" 2 - इसे इब्न माजा ने वासिला, वालिद-ए-अबू तुफ़ैल (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) से रिवायत किया है। उर्दू: हर (मुसलमान) मय्यत की नमाज़-ए-जनाज़ा पढ़ो। (इसे इब्न माजा ने वासिला वालिद-ए-अबू तुफ़ैल रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत किया। - त)

तीसरी हदीस में है हुज़ूर सैय्यद-ए-आलम मौला-ए-अकरम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

[बॉक्स 3] अरबी: "उस पर नमाज़ पढ़ो जिसने 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहा हो।" 3 - इसे अबू अल-क़ासिम अल-तबरानी ने अपनी अल-मुअजम अल-कबीर में और अबू नुएम ने हिलियत अल-औलिया में हज़रत अब्दुल्ला इब्न अल-फ़ारूक़ (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) से रिवायत किया है। उर्दू: जिसने ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ा उसकी नमाज़-ए-जनाज़ा पढ़ो। इसे अबू अल-क़ासिम तबरानी ने अपनी मुअजम कबीर में और अबू नुएम ने हिलियतुल औलिया में हज़रत अब्दुल्लाह इब्न-ए-फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत फ़रमाया। (त)

मआज़अल्लाह मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के अहकाम को पस-ए-पुश्त डालना और अपनी तरफ़ से नई शरीयत निकालना बेवा के निकाह करने से लाख दर्जे बदतर है। जबीं तो कहा था कि ये हज़रात दूसरों को खंदक से बचाएं और खुद गहरे कुएं में गिर जाएं। वलाहौल वला क़ूव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम। अल-ग़रज़ तहक़ीक़ के नज़दीक आम औरतों, खुसूसन इस ज़माने की औरतों के हक़ में निहायत दर्जा हुक्म इबाहत (जायज़) है और मुबाह से इंकार पर अस्लन

कोई पकड़ नहीं है, खुसूसन जब इसके साथ कोई और मस्लहत भी तर्कए-निकाह पर दाई (प्रेरक) हो। सही हदीस में है, हुज़ूर अकदस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उम्म-ए-हानी बिन्त-ए-अबी तालिब...

1. सुनन अबू दाऊद, किताब अल-जिहाद, ज़ालिम शासकों के साथ युद्ध का अध्याय, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, 1/343; अस-सुनन अल-कुबरा, जिसके कर्म प्रशंसनीय न हों उसके पीछे नमाज़ पढ़ने का अध्याय, दार सादिर बेरूत, 3/121।
2. सुनन इब्न माजा, जनाज़ा के अध्याय, अहल-ए-क़िबला पर नमाज़ का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची, पृ. 110।
3. अल-मुअजम अल-कबीर, अब्दुल्ला इब्न उमर से रिवायत हदीस, अल-मक्तबा अल-फ़ैसलिया बेरूत, 12/44।

पृष्ठ 300 / 688

فتاوٰی رضویہ جلد دو از دہم

برا کان او فاجرا وان ھو عمل الکبائر 1- اخرجه ابو داؤد وابو یعلی والبیھقی فی سننه عن ابی ھریرة رضی اللہ تعالٰی عنه بسند صحیح علی اصولنا معشر الحنفیة۔ چاہے اُس نے کتنے ہی گناہ کبیرہ کئے ہوں (اس کو امام ابوداؤد، ابویعلی اور امام بیہقی نے اپنی سنن میں حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے ایسی سند کے ساتھ روایت فرمایا جو ہمارے یعنی احناف کے اصول کے مطابق صحیح ہے۔ ت)

دوسری حدیث میں ہے، مولائے دو جہاں سرورِ کون و مکاں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

صلو علی کل میت 2- اخرجه ابن ماجة عن واثلة والد ابی الطفیل رضی اللہ تعالٰی عنھما۔ ہر (مسلمان) میت کی نماز جنازہ پڑھو۔ (اس کو ابن ماجہ نے واثلہ والدِ ابی الطفیل رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت کیا ۔ت)

تیسری حدیث میں ہے حضور سیدِ عالم مولائے اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

صلوا علی من قال لا الہ الا اللہ 3- اخرجه ابو القاسم الطبرانی فی معجمه الکبیر ابونعیم فی حلیة الاولیاء عن عبداللہ بن الفاروق رضی اللہ تعالٰی عنھم۔ جس نے لا الہ الا اللہ پڑھا اس کی نماز جنازہ پڑھو۔ اس کو ابو القاسم طبرانی نے اپنی معجم کبیر اور ابونعیم نے حلیۃ الاولیاء میں حضرت عبداللہ ابن فاروق رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت فرمایا۔(ت)

معاذ اللہ مصطفی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے احکام کو پسِ پشت ڈالنا اور اپنی طرف سے نئی شریعت نکالنا بیوہ کے نکاح کرنے سے لاکھ درجے بدتر ہے۔ جبھی تو کہا تھا کہ یہ حضرات کو خندق سے بچائیں اور خود گہرے کنوئیں میں گر جائیں ولاحول ولاقوۃ الا باللہ العلی العظیم۔ بالجملہ

عند التحقیق عامہ زنان خصوصاً زنانِ زمان کے حق میں غایت درجہ حکم اباحت ہے اور مباح سے انکار پر اصلاً مواخذہ نہیں خصوصاً جب اس کے ساتھ اور کوئی مصلحت بھی ترکِ نکاح پر داعی ہو۔ صحیح حدیث میں ہے، حضور اقدس صلی اللہ علیہ وسلم نے حضرت اُمّ ہانی بنتِ ابی طالب خواہ

1 سُنن ابو داؤد کتاب الجہاد باب فی الغزو مع ائمة الجور آفتاب عالم پریس لاہور 1 / 343، السنن الکبریٰ باب الصلوٰة حلف من لا یحمد فعله دار صادر بیروت 3 / 121 2 سنن ابن ماجہ ابواب الجنائز باب فی الصلوٰة علی اہل القبلہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص 110 3 المعجم الکبیر حدیث مروی از عبد اللہ ابن عمر المکتبة الفیصلیہ بیروت 12 / 44

Volume 12, Fatawa Razawiya

When Amir al-Mu'minin Ali (Karram Allahu Ta'ala Wajhahu) sent a marriage proposal, she submitted: [Arabic]: امیر المومنین علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ کو پیامِ نکاح دیا۔ عرض کی: مابی عنک رغبة یا رسول اللہ ولکن لا احب ان اتزوج وبنی صغار۔ [Urdu Translation]: O Messenger of Allah! It is not that I have any aversion towards the Prophet, but I do not like to marry while my children are very young.

The Master of the Worlds (Sallallahu Ta'ala Alayhi Wa Sallam) said: [Arabic]: خیر نساء رکبن الابل نساء قریش احناه علی طفل في صغره و ارعاه علی بعل في ذات یده 1- رواه الطبرانی عنها رضی اللہ تعالیٰ عنها برجال ثقات قالت خطبنی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فقلت فذکرہ۔ [Urdu Translation]: Among all the women of Arabia, the best are the women of Quraysh; they are the most compassionate towards their children in their infancy and the most protective of their husband's wealth in his possession. (Narrated by Al-Tabarani from Umm Hani (Radi Allahu Anha) through reliable narrators. She said: The Holy Prophet (Sallallahu Ta'ala Alayhi Wa Sallam) proposed to me, and I submitted... then she mentioned the aforementioned Hadith.)

In another authentic Hadith, when the Noble Presence (Salawat Allahu Ta'ala Wa Salamuhu Alayhi) sent her a proposal, she submitted as follows: [Arabic]: یارسول اللہ لانت احب الی من سمعی وبصری وحق الزوج عظیم فاخشیٰ ان اضیع حق الزوج 2 ملخصاً۔ اخرجه ابن سعد بسند صحیح عن الشعبی مرسلا۔ [Urdu Translation]: O Messenger of Allah! Indeed, the Holy Prophet is dearer to me than my own hearing and sight, and the right of a husband is great; I fear that I might fail to fulfill the husband's rights. (Summary. Narrated by Ibn Sa'd with an authentic chain from Ash-Sha'bi as a Mursal report.)

In a third Hadith, it is mentioned: [Arabic]: فخطبها الی نفسها فقالت کیف بهذا ضجیعاً وهذا رضیعاً لولدین بین یدیها 3- [Urdu Translation]: When the Holy Prophet (Sallallahu Ta'ala Alayhi Wa Sallam) spoke to her regarding marriage, she pointed towards her two children who were present before her...

1. Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith 1077, narrated from Umm Hani (Radi Allahu Anha), Al-Maktaba al-Faysaliyya, Beirut, 74/22.
2. Al-Tabaqat al-Kubra by Ibn Sa'd, Chapter: Mention of the Prophet's (Sallallahu Ta'ala Alayhi Wa Sallam) wives, Dar Sadir, Beirut, 8/152.
3. Al-Tabaqat al-Kubra by Ibn Sa'd, Chapter: Mention of the Prophet's (Sallallahu Ta'ala Alayhi Wa Sallam) wives, Dar Sadir, Beirut, 8/152.

जिल्द बारहवीं, फ़तावा रज़विया

अमीरुल मोमिनीन अली (करम अल्लाहु तआला वज्हहु) ने निकाह का पैगाम दिया, उन्होंने अर्ज़ किया: [अरबी]: امیر المومنین علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ کو پیامِ نکاح دیا۔ عرض کی: مابی عنک رغبة یا رسول اللہ ولکن لا احب ان اتزوج وبنی صغار۔ [उर्दू अनुवाद]: या रसूल अल्लाह! हुज़ूर से मुझे कुछ बे-रग़बती (अरुचि) तो है नहीं, मगर मुझे यह अच्छा नहीं लगता कि मैं निकाह करूँ और मेरे बच्चे छोटे-छोटे हैं।

सैयदे आलम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: [अरबी]: خیر نساء رکبن الابل صالحنساء قریش احناہ علی طفل فی صغرہ و ارعاہ علی بعل فی ذات یدہ 1- رواہ الطبرانی عنہا رضی اللہ تعالیٰ عنہا برجال ثقات قالت خطبنی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فقلت فذکرہ۔ [उर्दू अनुवाद]: अरब की तमाम औरतों में बेहतर ज़नाने क़ुरैश हैं जो अपने बच्चे पर उसके बचपन में सबसे ज़्यादा मेहरबान और शौहर के माल की सबसे ज़्यादा निगहबान (देखभाल करने वाली) होती हैं। (इसे तबरानी ने हज़रत उम्मे हानी रज़ियल्लाहु अन्हा से मोतबर रावियों की सनद के ज़रिए रिवायत किया है, वह फ़रमाती हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मुझे निकाह का पैगाम दिया तो मैंने अर्ज़ किया, और आगे मज़कूरा हदीस का ज़िक्र किया।)

दूसरी सहीह हदीस में है, जब हुज़ूरे वाला (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने उन्हें पैगाम दिया, तो इस तरह अर्ज़ किया: [अरबी]: یارسول اللہ لانت احب الی من سمعی وبصری وحق الزوج عظیم فاخشیٰ ان اضیع حق الزوج 2 ملخصاً۔ اخرجہ ابن سعد بسند صحیح عن الشعبی مرسلا۔ [उर्दू अनुवाद]: या रसूल अल्लाह! बेशक हुज़ूर मुझे अपने कानों और अपनी आँखों से ज़्यादा प्यारे हैं और शौहर का हक़ बहुत बड़ा है, मैं डरती हूँ कि शौहर का हक़ मुझसे फ़ौत (छूट) न हो जाए। (सारांश। इसे इब्ने साद ने सहीह सनद के साथ शाबी से मुरसलन रिवायत किया है।)

तीसरी हदीस में है: [अरबी]: فخطبہا الی نفسہا فقالت کیف بہذا ضجیعاً وہذا رضیعاً لولدین بین یدیہا 3- [उर्दू अनुवाद]: जब हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उनसे निकाह के लिए फ़रमाया, तो उन्होंने अपने दो बच्चों की तरफ़ इशारा किया जो सामने मौजूद थे।

1. अल-मुअजम अल-कबीर, हदीस 1077, रिवायत उम्मे हानी (रज़ियल्लाहु अन्हा), अल-मकतबा अल-फ़ैसलिया, बैरुत, 74/22

2. अल-तबक़ात अल-कुबरा, इब्ने साद, बाब: नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की अज़वाज का ज़िक्र, दार सादिर, बैरुत, 8/152
3. अल-तबक़ात अल-कुबरा, इब्ने साद, बाब: नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की अज़वाज का ज़िक्र, दार सादिर, बैरुत, 8/152

पृष्ठ 301/688

جلد دوا زدہم فتاویٰ رضویہ

امیر المومنین علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ کو پیامِ نکاح دیا، عرض کی: [عربی]: امیر المومنین علی کرم اللہ تعالیٰ وجہہ کو پیامِ نکاح دیا۔ عرض کی: مابی عنک رغبة یا رسول اللہ ولکن لا احب ان اتزوج وبنی صغار۔ [اردو ترجمہ]: یا رسول اللہ! کچھ حضور سے مجھے بے رغبتی تو ہے نہیں مگر مجھے یہ نہیں بھاتا کہ میں نکاح کروں اور میرے بچے چھوٹے چھوٹے ہیں۔

سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا: [عربی]: خیر نساء رکبن الابل نساء قریش احناہ علی طفل في صغرہ و ارعاہ علی بعل في ذات یدہ 1- رواہ الطبرانی عنہا رضی اللہ تعالیٰ عنہا برجال ثقات قالت خطبنی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فقلت فذکرہ۔ [اردو ترجمہ]: عرب کی تمام عورتوں میں بہتر زنانِ قریش ہیں اپنے بچے پر اس کے بچپن میں سب سے زیادہ مہربان اور خاوند کے مال کی سب سے زیادہ نگاہ رکھنے والیاں۔ (اس کو طبرانی نے حضرت اُمّ ہانی رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے ثقہ راویوں پر مشتمل سند کے ذریعہ روایت کیا، وہ فرماتی ہیں کہ نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے مجھے نکاح کا پیغام دیا تو میں نے عرض کی، اور آگے حدیث مذکورہ کو ذکر کیا۔ت)

دوسری صحیح حدیث میں ہے، جب حضور والا صلوات اللہ تعالیٰ وسلامہ علیہ نے انہیں پیام دیا، یوں عرض کی: [عربی]: یارسول اللہ لانت احب الی من سمعی وبصری وحق الزوج عظیم فاخشیٰ ان اضیع حق الزوج 2 ملخصاً۔ اخرجہ ابن سعد بسند صحیح عن الشعبی مرسلا۔ [اردو ترجمہ]: یا رسول اللہ! بیشک حضور مجھے اپنے کانوں اور اپنی آنکھوں سے زیادہ پیارے ہیں اور شوہر کا حق بڑا ہے میں ڈرتی ہوں کہ حق شوہر مجھ سے فوت نہ ہو، ملخصاً۔ (اس کو ابن سعد نے سند صحیح کے ساتھ شعبی سے مرسلاً روایت فرمایا۔ت)

تیسری حدیث میں ہے : [عربی]: فخطبها الی نفسها فقالت کیف بهذا ضجیعاً و هذا رضیعاً لولدین بین یدیها 3- [اردو ترجمہ]: جب حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے ان سے نکاح کے لئے فرمایا اپنے دو بچوں کی طرف کہ سامنے موجود تھے

1 المعجم الکبیر حدیث ۱۰۷۷ مروی از امّ ہانی رضی اللہ عنہا المکتبۃ الفیصلیہ بیروت ۲۲ / ۷۴ 2 الطبقات الکبری لابن سعد باب ذکر من النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم من النساء دار صادر بیروت ۱۵۲/۸ 3 الطبقات الکبری لابن سعد باب ذکر من النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم من النساء دار صادر بیروت ۱۵۲/۸

Fatawa Ridawiyya, Volume 12

[Right box]: It was also narrated from Abu Naufal bin Aqrab in a disconnected manner (Mursal). [Left box]: By pointing, she submitted that this breastfeeding and this sleeping together is plenty. (Ibn Sa'd also narrated this from Abu Naufal bin Aqrab as Mursal - T).

Mother of the Believers, Umm Salama (may Allah be pleased with her), became a widow after her first husband, Hazrat Abu Salama (may Allah be pleased with him). The Commander of the Faithful, Siddiq-e-Akbar (may Allah be pleased with him), sent a marriage proposal to her, which she declined. Then Farooq-e-Azam (may Allah be pleased with him) sent a proposal, and she declined. Then the Master of Messengers (may peace and blessings of Allah be upon him) sent a proposal. She submitted:

[Box - Right (Arabic)]: "Indeed, I am a jealous woman, and I am a woman with dependents, and none of my guardians are present." [Box - Left (Urdu)]: "I am a jealous woman (meaning I worry about resentment with the pure wives) and I have children, and none of my guardians are present."

The Master of the World (may peace and blessings of Allah be upon him) did not express any anger at her excuses, nor did he say that she was rejecting the Sunnah or that there was a legal charge against her. Instead, after hearing the excuses, he provided treatment and answers, saying: "We will pray for your jealousy so that Allah the Almighty removes it." (And so it was; Mother of the Believers Umm Salama lived with the rest of the pure wives (may Allah be pleased with them) as if they were not rivals at all—may the peace and blessings of Allah be upon their husband and them). "And your children are entrusted to Allah and His Messenger, and none of your guardians, present or absent, will dislike your marriage to me." (Narrated by Ahmad and al-Nasa'i from her with a sahih chain). (Imam Ahmad and al-Nasa'i etc. narrated this from Hazrat Umm Salama (may Allah be pleased with her) with an authentic chain - T).

In the narrations of Ibn Abi Asim, among the excuses, she also submitted: "As for me, I am advanced in age." The Holy Prophet (may peace and blessings of Allah be upon him) said: "And I am older than you." Narrated via Abdul Wahid bin Ayman from Abu Bakr bin Abdur Rahman from her (may Allah be pleased with her). (Ibn Asim narrated this through the route of Abdul Wahid bin Ayman from Abu Bakr bin Abdur Rahman, and he narrated it from the Mother of the Believers, Hazrat Umm Salama (may Allah be pleased with her) - T).

1. Musnad Ahmad bin Hanbal, narrated from Umm Salama, Dar al-Fikr Beirut 2/313, Sunan al-Nasa'i, Kitab an-Nikah, al-Maktaba al-Salafiyya Lahore 2/28.
2. Tabaqat al-Kubra by Ibn Sa'd, chapter mentioning the Prophet's (peace and blessings be upon him) proposals to women, Dar Sadir Beirut 8/91.

फ़तावा रज़विया, खंड 12

[दायां बॉक्स]: अबू नौफ़ल बिन अक़रब से भी इसे मुर्सल (कटी हुई कड़ी वाला) के रूप में वर्णित किया गया है। [बायां बॉक्स]: इशारे से उन्होंने अर्ज़ की कि यह दूध पीना और यह साथ सोना बहुत है। (इब्न साद ने भी इसे अबू नौफ़ल बिन अक़रब से मुर्सल के रूप में वर्णित किया है - त)।

उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा (रज़ियल्लाहु अन्हा) अपने पहले पति हज़रत अबू सलमा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से विधवा हुईं। अमीरुल मोमिनीन सिद्दीक़-ए-अकबर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने उन्हें निकाह का पैगाम भेजा, उन्होंने इनकार कर दिया, फिर फ़ारूक़-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने पैगाम भेजा, उन्होंने इनकार कर दिया, फिर हुज़ूर सैय्यदुल मुरसलीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने पैगाम भेजा, तो अर्ज़ की:

[बॉक्स - दायां (अरबी)]: "निश्चय ही मैं एक ईर्ष्यालु महिला हूँ, और मैं एक आश्रितों वाली महिला हूँ, और मेरा कोई संरक्षक उपस्थित नहीं है।" [बॉक्स - बायां (उर्दू)]: "मैं एक ईर्ष्यालु महिला हूँ (यानी पवित्र पत्नियों से मनमुटाव का डर है) और बाल-बच्चेदार हूँ और मेरा कोई संरक्षक (वली) मौजूद नहीं है।"

हुज़ूर सैय्यदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उनके बहानों पर कोई नाराज़गी व्यक्त नहीं की और न ही यह फ़रमाया कि तुम सुन्नत से इनकार कर रही हो या तुम पर कोई शरीअती इल्ज़ाम है, बल्कि बहाना सुनकर उनके लिए समाधान और उत्तर फ़रमाया कि तुम्हारी ईर्ष्या के लिए हम दुआ फ़रमाएंगे कि अल्लाह तआला उसे दूर कर दे। (चुनांचे ऐसा ही हुआ, उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा बाकी अज़वाजे मुतहरात (रज़ियल्लाहु अन्हा) के साथ इस तरह रहती थीं जैसे वे सौतनें ही न हों - अल्लाह तआला उनके शौहर और उन पर बरकत और सलाम भेजे)। और तुम्हारे बच्चे अल्लाह और रसूल के सुपुर्द हैं और तुम्हारा कोई वली, चाहे हाज़िर हो या ग़ायब, मेरे साथ तुम्हारे निकाह को नापसंद नहीं करेगा। (इसे अहमद और नसाई ने उनसे सही सनद के साथ रिवायत किया है)। (इसे इमाम अहमद और नसाई वग़ैरह ने हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा से सही सनद के साथ रिवायत किया है - त)।

इब्न अबी आसिम की रिवायतों में है कि बहानों में यह भी अर्ज़ की कि "जहाँ तक मेरी बात है, तो मैं बड़ी उम्र की हूँ।" हुज़ूर अक़दस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया, "तो मैं तुम से बड़ा हूँ।" इसे अब्दुल वाहिद बिन अयमन के ज़रिये अबू बक्र बिन अब्दुर्रहमान से उनसे (रज़ियल्लाहु अन्हा)

रिवायत किया गया है। (इब्न आसिम ने इसे अब्दुल वाहिद बिन अयमन के ज़रिये अबू बक्र बिन अब्दुर्रहमान से और उन्होंने उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत किया - त)।

---

1. मुसनद अहमद बिन हंबल, उम्मे सलमा से वर्णित, दारुल फ़िक्र बेरूत 2/313, सुनन नसाई, किताबुन निकाह, अल-मकतबा अस-सलफ़िया लाहौर 2/28।
2. तबाक़ात अल-कुबरा, इब्न साद कृत, नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) द्वारा महिलाओं को निकाह के प्रस्ताव देने का अध्याय, दार सादिर बेरूत 8/91।

فتاوٰی رضویہ، جلد دوازدہم

[دایاں خانہ]: رواہ عن ابی نوفل بن عقرب ایضاً مرسلاً۔ [بایاں خانہ]: اشارہ کرکے عرض کی یہ دودھ پینے اور یہ ساتھ سونے کو بہت ہے۔ (اس کو بھی ابنِ سعد نے ابو نوفل بن عقرب سے مرسلاً روایت کیا ت)

ام المومنین ام سلمہ رضی اللہ عنہا اپنے شوہر اوّل حضرت ابو سلمہ رضی اللہ تعالٰی عنہا سے بیوہ ہوئیں امیر المومنین صدیق اکبر رضی اللہ تعالٰی عنہ نے انہیں پیغامِ نکاح کردیا، انکار کردیا، پھر فاروق اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ نے پیام دیا انکار کردیا، پھر حضور سید المرسلین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے پیام دیا، عرض کی:

[خانہ - دایاں]: انی امراۃ غیری وانی امراۃ مصیبۃ ولیس احد من اولیائی شاھدا۔ [خانہ - بایاں]: میں رشک ناک عورت ہوں (یعنی ازواج مطہرات سے شکر رنجی کا خیال ہے) اور عیالدار ہوں اور میرا کوئی ولی حاضر نہیں۔

حضور سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے ان کے عذروں پر کچھ عتاب نہ فرمایا نہ یہ ارشاد ہوا کہ تم سنت سے منکر ہوتی ہو تم پر شرعی الزام ہے، بلکہ عذر سن کر ان کے علاج و جواب ارشاد فرمائے کہ تمہارے رشک کے لئے ہم دعا فرمائیں گے اللہ تعالٰی اسے دور کردے (چنانچہ ایسا ہی ہوا ام المومنین ام سلمہ باقی ازواج مطہرات رضی اللہ تعالٰی عنہن کے ساتھ اس طرح رہتی تھیں گویا یہ ازواج ہی نہیں صلی اللہ تعالٰی علی بعلھن وعلیھن وبارك وسلم اور تمہارے بچے اللہ و رسول کے سپرد ہیں اور تمہارا کوئی ولی حاضر غائب میرے ساتھ نکاح کو ناپسند نہ کرے گا

(رواہ احمد والنسائی عنہا رضی اللہ تعالیٰ عنہا بسند صحیح) (اس کو امام احمد اور نسائی وغیرہ نے حضرت ام سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے بسند صحیح روایت کیا۔ ت)

ابن ابی عاصم روایتوں میں ہے منجملہ عذروں کے یہ بھی عرض کی کہ اما انا فکبیرۃ السن میری عمر زیادہ ہے۔ حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا فانا اکبر منک میں تم سے بڑا ہوں۔ رواہ من طریق عبد الواحد بن ایمن عن ابی بکر بن عبد الرحمن عنہا رضی اللہ تعالیٰ عنہا (ابن عاصم نے اس کو عبد الواحد بن ایمن کے طریق سے ابوبکر بن عبدالرحمن سے اور انہوں نے ام المومنین حضرت ام سلمہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا سے روایت فرمایا۔ ت)

---

1 مسند احمد بن حنبل مروی از ام سلمہ دار الفکر بیروت ۲/ ۳۱۳، سنن النسائی کتاب النکاح المکتبۃ السلفیۃ لاہور ۲۸/ ۲ 2 طبقات الکبری لابن سعد باب ذکر في خطب النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم من نساء دار صادر بیروت ۹۱/ ۸

Fatawa Rizvia Volume Twelve

Umm-ul-Momineen (Umm Salama, may Allah be pleased with her) passed away in the year 60 AH, 61 AH, or 62 AH. Her respected age was 84 years. Al-Waqidi and many scholars stated this, as cited from them in 'Al-Isabah', and this is correct as mentioned in 'Al-Zarqani'. (Al-Waqidi and many scholars have said this, which was quoted from them in Al-Isabah, and this is correct as mentioned in Al-Zarqani. — T). And the Noble Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) married her at the end of Shawwal, 4 AH. This is the correct view as mentioned in 'Al-Zarqani'. (This is correct as mentioned in Al-Zarqani. — T). So, at the time she presented the excuse of her advanced age for declining marriage, she was not even 30 years old; her age was approximately 26 or 27 years, may Allah be pleased with her. This point is also worth remembering: Ibn Sa'd narrates from Umm-ul-Momineen (may Allah be pleased with her) that she said:

(Arabic) It has reached me that there is no woman whose husband dies while they are both from the people of Paradise, and she does not remarry after him, except that Allah will join them together in Paradise.

For any woman whose husband dies and both are inhabitants of Paradise, if the woman does not remarry after him, then Allah Almighty will unite them both in Paradise.

Based on this, she had said to Hazrat Abu Salama (may Allah be pleased with him), "Come, let us make a covenant that whoever dies first, the other will not remarry after them." However, in divine knowledge, she was destined to join the Mothers of the Believers (Umm-ul-Momineen); Hazrat Abu Salama did not accept. [Narrated via the route of 'Asim al-Ahwal from Ziyad ibn Abi Maryam from her, may Allah be pleased with her]. (This was narrated through Asim al-Ahwal and Ziyad bin Abi Maryam, and they narrated it from Umm-ul-Momineen Hazrat Umm Salama, may Allah be pleased with her. — T)

(Arabic Commentary) Note: The first [opinion] was authenticated by al-Ya'muri, the second by Abu Umar ibn Abd al-Barr, and the third by al-Hafiz in 'Al-Taqreeb'. There is also a fourth authentication of the year 59 AH, which al-Qastallani authenticated in 'Al-Mawahib'. Al-Zarqani said it contradicts these [other] authentications, and Allah Almighty knows best. (M)

First was authenticated by al-Ya'muri, second by Abu Umar ibn Abd al-Barr, and the third by al-Hafiz in 'Al-Taqreeb'. Here, there is a fourth authentication of the year 59 AH as well, which al-Qastallani authenticated in 'Al-Mawahib'. Al-Zarqani stated that it conflicts with these authentications, and Allah Almighty knows best. (T)

[1] Al-Isabah fi Tamyiz al-Sahabah, mention of Umm Salama, No. 10, Dar Sader Beirut, 4/259-260. [2] Al-Tabaqat al-Kubra, mention of those whom the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) proposed to from among women, Dar Sader Beirut, 8/88. [3] Sharh al-Zarqani ala al-Mawahib al-Ladunniyyah, mention of Umm Salama (may Allah be pleased with her), Dar al-Ma'rifah Beirut, 3/24.

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

उम्म-उल-मोमिनीन (उम्म सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा) का इंतकाल ६० हिजरी, ६१ या ६२ हिजरी में हुआ। उनकी उम्र ८४ वर्ष थी। यह अल-वाक़िदी और कई विद्वानों ने कहा है, जैसा कि 'अल-इसाबा' में उनसे उद्धृत किया गया है और यही सही है जैसा कि 'ज़र्क़ानी' में है। (वाक़िदी और कई विद्वानों ने यही कहा है जिनसे अल-इसाबा में नक़्ल किया गया और यही सही है जैसा कि ज़र्क़ानी में है। — त)। और हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे ४ हिजरी के आखिर शव्वाल में निकाह फ़रमाया। यही सही है जैसा कि 'ज़र्क़ानी' में है। (यही सही है जैसा कि ज़र्क़ानी में है। — त)। तो जिस समय उन्होंने निकाह न करने के लिए अपनी अधिक उम्र होने का उज़्र (बहाना) पेश किया था, उस समय वह ३० साल की भी नहीं थीं; उनकी उम्र महज़ २६ या २७ साल थी, रज़ियल्लाहु अन्हा। यह नुक्ता भी याद रखने के काबिल है कि इब्न सअद उम्म-उल-मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फ़रमाया:

(अरबी) मुझ तक यह बात पहुँची है कि ऐसी कोई औरत नहीं है जिसका शौहर मर जाए और वे दोनों जन्नती हों, फिर वह उसके बाद निकाह न करे, मगर यह कि अल्लाह तआला उन दोनों को जन्नत में इकट्ठा कर देगा।

जिस औरत का शौहर मर जाए और वह दोनों जन्नती हों, फिर औरत उसके बाद निकाह न करे, तो अल्लाह तआला उन दोनों को जन्नत में जमा (इकट्ठा) फ़रमाएगा।

इसी बिना पर उन्होंने हज़रत अबू सलमा रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा था कि आओ हम तुम अहद (प्रतिज्ञा) करें कि जो पहले मर जाए, दूसरा उसके बाद निकाह न करे। मगर इलाही इल्म में वह उम्महात-उल-मोमिनीन में शामिल होने वाली थीं, हज़रत अबू सलमा ने इसे स्वीकार नहीं फ़रमाया। [इसे आसिम अल-अहवल के ज़रिए ज़ियाद बिन अबी मरियम से उनसे रज़ियल्लाहु अन्हा की रिवायत के तौर पर नक़्ल किया गया है]। (इसे आसिम अल-अहवल, ज़ियाद बिन अबी मरियम से रिवायत किया गया और उन्होंने उम्म-उल-मोमिनीन हज़रत उम्म सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत फ़रमाया। — त)

(अरबी टिप्पणी) नोट: पहले (मत) को यअमुरी ने, दूसरे को अबू उमर बिन अब्द अल-बर्र ने और तीसरे को हाफ़िज़ (इब्न हजर) ने 'अल-त़क़रीब' में सही करार दिया। यहाँ ५९ हिजरी की एक चौथी तस़हीह (पुष्टि) भी है जिसे क़स्त़लानी ने 'मवाहिब' में सही करार दिया। ज़र्क़ानी ने फ़रमाया कि वह इन तस़हीहात के विपरीत है, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (म)

पहले को यअमुरी ने, दूसरे को अबू उमर बिन अब्द अल-बर्र ने और तीसरे को हाफ़िज़ ने 'त़क़रीब' में सही करार दिया और यहाँ ५९ हिजरी की एक चौथी तस़हीह भी है जिसे क़स्त़लानी ने 'मवाहिब' में सही करार दिया, ज़र्क़ानी ने फ़रमाया कि वह इन तस़हीहात के मुआरिज़ (विरोधी) है, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

[1] अल-इसाबा फ़ी तमीज़ अल-सहाबा, उम्म सलमा का ज़िक्र, नंबर १०, दार सादिर बेरुत, ४/२५९-२६०। [2] अल-त़बक़ात अल-कुबरा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम द्वारा खिव़्बा (निकाह का प्रस्ताव) दी गई औरतों का ज़िक्र, दार सादिर बेरुत, ८/८८। [3] शरह अल-ज़र्क़ानी अला अल-मवाहिब अल-लदुन्निया, उम्म सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा का ज़िक्र, दार अल-मअरिफ़ा बेरुत, ३/२४।

فتاوی رضویه جلد دوازدهم

ام المومنین (ام سلمہ رضی اللہ عنہا) نے سنہ ۶۰ھ یا ۶۱ یا ۶۲ میں وفات پائی، عمر شریف चौराسی ۸۴ برس کی ہوئی قالہ الواقدی و کثیر من العلماء نقلہ عنھم فی الاصابۃ وھو الصواب کما فی الزرقانی (واقدی اور کثیر علماء نے یہی کہا ہے جن سے اصابہ میں نقل کیا اور یہی درست ہے جیسا کہ زرقانی میں ہے۔ ت) اور حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے آخر شوال سنہ ۴ ھ ہجری میں ان سے نکاح فرمایا ھو الصحیح کما فی الزرقانی (یہی صحیح ہے جیسا کہ زرقانی میں ہے۔ ت) تو جس وقت انہوں نے ترکِ نکاح کے لئے عمر زیادہ ہونے کا عذر عرض کیا ہے تمیں ۳۰ سال کی نہ تھیں یہی کوئی چھبیس ۲۶ ستائیس ۲۷ برس کی عمر تھی رضی اللہ تعالٰی عنہا۔ یہ نکتہ بھی یاد رکھنے کے قابل ہے ابن سعد انہیں ام المومنین رضی اللہ تعالٰی عنہا سے راوی کہ انہوں نے فرمایا:

بلغنی انہ لیس امرأۃ یموت زوجھا وھو من اھل الجنۃ وھی من اھل الجنۃ ثم لم تزوج بعدہ الاجمع اللہ بینھما في الجنۃ۔

جس عورت کا شوہر مرجائے اور وہ دونوں جنتی ہوں پھر عورت اُس کے بعد نکاح نہ کرے تو اللہ تعالٰی ان دونوں کو جنت میں جمع فرمائے۔

اسی بنا پر انہوں نے حضرت ابوسلمہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے کہا تھا آؤ ہم تم عہد کریں کہ جو پہلے مر جائے دوسرا اس کے بعد نکاح نہ کرے، مگر یہ علم الٰہی میں امہات المومنین میں داخل ہونے والی تھیں، حضرت ابوسلمہ نے قبول نہ فرمایا رواہ من طریق عاصم الاحول عن زیاد بن ابی مریم عنھا رضی اللہ تعالٰی عنہا (اس کو بطریق عاصم احول، زیاد بن ابی مریم سے روایت کیا اور انہوں نے ام المومنین حضرت ام سلمہ رضی اللہ تعالٰی عنہا سے روایت فرمایا۔ ت)

عہ: صحح الاول الیعمری والثانی ابو عمر بن عبد البر والثالث الحافظ التقریب وھناك تصحیح رابع وھو ۵۹ صححه القسطلانی في المواھب قال الزرقانی وھو معارض بھذہ التصحیحات واللہ تعالی اعلم.(م)

اول کو یعمری، ثانی کو ابو عمر بن عبد البر اور ثالث کو حافظ نے تقریب میں صحیح قرار دیا اور یہاں ایک چوتھی تصحیح ۵۹ ھ کی بھی ہے جس کو قسطلانی نے مواہب میں صحیح قرار دیا، زرقانی نے فرمایا کہ وہ ان تصحیحات کے معارض ہے، واللہ تعالیٰ اعلم ۱۲ منہ (ت)

1 الاصابہ فی تمییز الصحابہ ذکر ام سلمہ نمبر ۱۰ دار صادر بیروت ۴/۲۵۹-۲۶۰ 2 الطبقات الکبری ذکر من خطب النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم من النساء دار صادر بیروت ۸/۸۸ 3 شرح الزرقانی علی المواہب الدنیۃ ذکر ام سلمہ رضی اللہ عنہا دار المعرفۃ بیروت ۳/۲۴

Fatawa Ridawiyya, Volume Twelve

Hazrat Salmi bint Jabir (may Allah be pleased with her)'s husband was martyred. She went to Hazrat Abdullah bin Mas'ud (may Allah be pleased with him) and said, "My husband has attained martyrdom and people are sending me marriage proposals. I refuse to marry. Do you hope that if he and I are gathered [in the hereafter], I will be his wife?" He said, "Yes."

| Ahmad reported in the Musnad: Abu Ahmad narrated to us, Aban bin Abdullah al-Bajali narrated to us, from Karim bin Abi Hazim, from his grandmother Salmi bint Jabir, that her husband was martyred. She went to Abdullah bin Mas'ud and said: "I am a woman whose husband was martyred, and men have proposed to me, but I refused to marry until I meet him. So do you have hope for me that if I and he are gathered, I will be among his wives?" He said, "Yes." A man said to him, "We haven't seen you narrate this since we've been sitting with you." He said, "I heard the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) say: 'Indeed, the first of my Ummah to join me in Paradise is a woman from Ahmas.'"[1] | Imam Ahmad stated in his Musnad that Abu Ahmad narrated to us, he said that Aban bin Abdullah Bajali narrated to us, he narrated from Karim bin Abi Hazim, and he narrated from his grandmother Salmi bint Jabir (may Allah be pleased with her) that her husband was martyred, so she came to Hazrat Abdullah bin Mas'ud (may Allah be pleased with him) and said: "I am the woman whose husband has been martyred and many men have sent me marriage proposals but I refused marriage until I meet my husband. Do you have hope regarding me that if I and my husband are gathered, I will be his wife?" Hazrat Ibn Mas'ud (may Allah be pleased with him) said: "Yes." A person said to Hazrat Ibn Mas'ud (may Allah be pleased with him): "Since we have been sitting with you, we haven't seen you narrate this." So he said: "I heard the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) say that certainly, the first woman from my Ummah to join me in Paradise is from Ahmas (Quraysh)." (T) |

Hazrat Sayyid Sa'eed Shaheed, the noble wife of our leader Imam Hussain (peace and blessings of Allah be upon his noble grandfather and upon him), Rubab bint Imru' al-Qais, who is the venerable mother of Hazrat Asghar and Hazrat Sakina (may Allah be pleased with them both); after the martyrdom of the oppressed Imam (may Allah be pleased with him), many nobles of the Quraysh sent her marriage proposals, she said:

[1] Musnad Ahmad bin Hanbal, narrated from Abdullah bin Mas'ud, Dar al-Fikr Beirut, 1/403.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द बारहवीं

हज़रत सलमी बिन्त जाबिर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) के शौहर शहीद हुए। वह हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के पास आईं और कहा, "मेरे शौहर ने शहादत पाई और लोग मुझे निकाह के पैगाम दे रहे हैं। मैं निकाह से इनकार करती हूँ। क्या आप उम्मीद करते हैं कि अगर मैं और वह जमा हुए तो मैं आख़िरत में उनकी ज़ौजा (पत्नी) बनूँगी?" उन्होंने फ़रमाया, "हाँ।"

| अहमद फ़िल मुसनद: हद्दसना अबू अहमद, हद्दसना अबान बिन अब्दुल्लाह अल-बाजली, अन करीम बिन अबी हाज़िम, अन जद्दतिही सलमी बिन्त जाबिर, अन ज़ौजहा इस्तशहद फ़-अतत अब्दुल्लाह बिन मसऊद फ़-क़ालत इन्नी इमराअतुन इस्तशहद ज़ौजी व क़द ख़तबनी-र-रिज़ालु फ़-अबैतु अन अ-त-ज़व्वज हत्ता अल्क़ाहु फ़-तर्जू ली इन इजतमतु अना व हुवा अन अकूना मिन अज़वाजिही? क़ाल नअम। फ़-क़ाल लहू रजुलुन मा र-ऐनाक नक़ल्त हाज़ा मुज़ क़अदनाक। क़ाल इन्नी समिअतु रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम यक़ूलु इन्ना अस-र-अ उम्मती ली लुहूक़न फिल जन्नति इमराअतुन मिन अहमस।[1] | इमाम अहमद ने अपनी मुसनद में इस तरह बयान फ़रमाया कि हमें हदीस बयान की अबू अहमद ने, उन्होंने कहा कि हमें हदीस बयान की अबान बिन अब्दुल्लाह बजली ने, उन्होंने करीम बिन अबी हाज़िम से, और उन्होंने अपनी दादी सलमी बिन्त जाबिर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) से रिवायत किया कि उनके(हज़रत सलमी रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के) शौहर शहीद हुए तो वह हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के पास आईं और कहा कि मैं वह औरत हूँ जिसके शौहर शहीद हो गए हैं और बहुत से मर्दों ने मुझे निकाह का पैगाम भेजा मगर मैंने निकाह से इनकार किया जब तक कि मैं अपने शौहर से मिलूँ। क्या आप मेरे मुताल्लिक उम्मीद करते हैं कि अगर मैं और मेरे शौहर जमा हुए तो उनकी बीवी बनूँगी? हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) ने फ़रमाया: हाँ। एक शख़्स ने हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से कहा कि जब से हम आपके पास बैठ रहे हैं आपको यह नक़ल करते हुए नहीं देखा, तो आपने फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) को फ़रमाते हुए सुना कि बेशक जन्नत में सबसे जल्द मुझसे मिलने वाली औरत अहमस (क़ुरैशी) से (होगी)। (त) |

हज़रत सय्यद सईद शहीद सय्यदना इमाम हुसैन (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलीही व बारीका व सल्लम) की ज़ौजा मुतहरा रुबाब बिन्त इम्रउल क़ैस, जो हज़रत असग़र और हज़रत सकीना

(रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) की वालिदा माजिदा हैं, इमाम मज़लूम (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) की शहादत के बाद बहुत से क़ुरैशी शरीफ़ों ने उन्हें निकाह का पैगाम दिया, तो उन्होंने फ़रमाया:

---

[1] मुसनद अहमद बिन हंबल, अब्दुल्लाह बिन मसऊद से रिवायत, दार अल-फ़िक्र बेरुत 1/403.

حضرت سلمٰی بنت جابر رضی اللہ تعالٰی عنہا کے شوہر شہید ہوئے وہ حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالٰی عنہ کے پاس آئیں اور کہا میرے شوہر نے شہادت پائی اور لوگ مجھے پیام دے رہے ہیں میں نکاح سے انکار رکھتی ہوں کیا آپ اُمید کرتے ہیں کہ اگر میں اور وہ جمع ہوئے تو میں آخرت میں ان کی زوجہ ہوں (بیوی بنوں) فرمایا: ہاں۔

| احمد فی المسند حدثنا ابو احمد ثنا ابان عبد اللہ الباجلی عن کریم بن ابی حازم عن جدتہ سلمٰی بنت جابر ان زوجھا استشھد فاتت عبد اللہ بن مسعود فقالت انی امرأۃ استشھد زوجی وقد خطبنی الرجال فأبیت ان اتزوج حتی القاہ فترجولی ان اجتمعت انا وھو ان اکون من ازواجہ قال نعم فقال لہ رجل ما رأیناک نقلت ھذا مذقعد ناک قال انی سمعت رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم یقول ان اسرع امتی لی لحوقا فی الجنۃ امراۃ من احمس[1]۔ | امام احمد نے اپنی مسند میں یوں بیان فرمایا کہ ہمیں حدیث بیان کی ابو احمد نے، انہوں نے کہا کہ ہمیں حدیث بیان کی ابان بن عبداللہ بجلی نے، انہوں نے کریم بن ابی حازم سے، اور انہوں نے اپنی دادی سلمٰی بنت جابر رضی اللہ تعالٰی عنہا سے روایت کیا کہ ان (حضرت سلمٰی رضی اللہ تعالٰی عنہا) کے شوہر شہید ہوئے تو وہ حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالٰی عنہ کے پاس آئیں اور کہا کہ میں وہ عورت ہوں جس کے شوہر شہید ہو گئے ہیں اور بہت سے مردوں نے مجھے نکاح کا پیغام بھیجا مگر میں نے نکاح سے انکار کیا تا وقتیکہ میں اپنے شوہر سے ملوں، کیا آپ میرے متعلق امید کرتے ہیں کہ اگر میں اور میرا شوہر جمع ہوئے تو ان کی بیوی بنوں گی؟ حضرت ابن مسعود رضی اللہ تعالٰی عنہ نے فرمایا: ہاں۔ ایک شخص نے حضرت ابن مسعود رضی اللہ تعالٰی عنہ سے کہا کہ جب سے ہم آپ کے پاس بیٹھ رہے ہیں آپ کو یہ نقل کرتے ہوئے نہیں دیکھا، تو آپ نے فرمایا کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کو

فرماتے ہوئے سُنا کہ بیشک جنت میں سب سے جلد مجھ ملنے والی عورت احمس (قریشی) سے (ت) |

حضرت سید سعید شہید سیدنا امام حسین صلی اللہ تعالٰی علیٰ جدہ الکریم وعلیہ وبارک وسلم کی زوجہ مطہرہ رباب بنت امرئ القیس کہ حضرت اصغر و حضرت سکینہ رضی اللہ تعالٰی عنہما کی والدہ ماجدہ ہیں بعد شہادت امام مظلوم رضی اللہ تعالٰی عنہ بہت شرفائے قریشی نے انہیں پیام نکاح دیا، فرمایا:

---

[1] مسند احمد بن حنبل مروی از عبداللہ بن مسعود دار الفکر بیروت ۱ / ۴۰۳

Fatawa Razawiyya, Volume 12

[Arabic Box]: "I would not take a father-in-law after the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him)." [Urdu Box]: I am not one to take anyone as a father-in-law after the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him). (Transl.)

She did not [remarry] as long as she lived. Mentioned by Ibn al-Athir in 'Al-Kamil' (Ibn al-Athir mentioned this in Al-Kamil. Transl.). In the elegy for the Leader of Mankind (Imam al-Anam, i.e., Imam Husayn) may Allah be pleased with him, she says:

[Arabic Poetry]: By Allah, I will not seek any marriage relationship after your relationship, until I disappear between the sand and the clay.[2]

By God, I will not desire a relationship with anyone after your relationship, until I am buried in the sand and mud. Mentioned by Hisham bin al-Kalbi (Hisham bin al-Kalbi mentioned this. Transl.)

Moreover, Allama Abul Qasim Imad al-Din Mahmud ibn Faryabi, in the book 'Khalisat al-Haqa’iq lima fihi min Asalib al-Daqa’iq', mentions a female companion of the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) named Bibi Rubab (may Allah be pleased with her):

[Table - Arabic]: She was the wife of a man called 'Umar, and they both pledged that whichever of them died first, the surviving one would not remarry until they died. He died, and she remained for a time, then her father married her off. On that night, she saw 'Umar in a dream reciting verses to her. She woke up terrified and recounted the story to the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). He commanded her to find solace in solitude until she died and ordered her husband to separate from her, which he did.

[Table - Urdu]: That is, she was the wife of a person named 'Amru. They had a pact between them that whoever died first, the other would not marry until death. 'Umar died, and Rubab remained a widow for a while. Then her father married her off. That same night, she saw her first husband in a dream. He recited some verses complaining about the matter. She woke up in the morning fearful and trembling, and presented the situation to the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) commanded that she should find contentment in solitude until death and ordered the [new] husband to leave her, and he did so. (Transl.)

Al-Hafiz mentioned it in 'Al-Isabah' and said: "It is a famous story for people other than these two[3]", etc. (Al-Hafiz quoted this in Al-Isabah and stated that this story is famous for others besides these two, etc. Transl.). Rather, it is in the Hadiths themselves...

---

[1] Al-Kamil fi al-Tarikh by Ibn al-Athir, mention of the martyrdom of Husayn (may Allah be pleased with him), Dar Sadir, Beirut, 4/88. [2] Al-Kamil fi al-Tarikh by Ibn al-Athir, mention of the martyrdom of Husayn (may Allah be pleased with him), Dar Sadir, Beirut, 4/88. [3] Al-Isabah fi Tamyiz al-Sahabah, citing Mahmud bin Ahmad Faryabi, Al-Rubab unspecified, Dar Sadir, Beirut, 4/300.

फतावा रज़विया, जिल्द 12

[अरबी बॉक्स]: "मैं अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद किसी को अपना ससुर नहीं बनाउंगी।" [उर्दू बॉक्स]: मैं वह नहीं हूँ जो अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के बाद किसी को अपना ससुर बनाऊं। (अनु.)

जब तक जीवित रहीं, [निकाह] नहीं किया। इब्न अल-असीर ने 'अल-कामिल' में इसका उल्लेख किया है। (अनु.) इमाम अल-अनाम (रज़ियल्लाहु अन्हु) के मरसिया (शोकगीत) में वह कहती हैं:

[अरबी कविता]: अल्लाह की कसम, मैं तुम्हारे रिश्ते के बाद किसी और रिश्ते की तलाश नहीं करूँगी, जब तक कि मैं रेत और मिट्टी के बीच गायब न हो जाऊं।[2]

ईश्वर की शपथ, मैं तुम्हारे रिश्ते के बाद किसी से भी रिश्ता नहीं चाहूंगी, जब तक कि मैं रेत और मिट्टी में दफन न कर दी जाऊं। हिशाम बिन अल-कल्बी ने इसका ज़िक्र किया है। (अनु.)

बल्कि अल्लामा अबुल कासिम इमाद अल-दीन महमूद इब्न फरयाबी अपनी किताब 'खालिसतुल हकाइक' में हुज़ूर पुर नूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की एक सहाबिया बीबी रबाब (रज़ियल्लाहु अन्हा) का ज़िक्र करते हैं:

[तालिका - अरबी]: वह 'उमर' नाम के एक व्यक्ति की पत्नी थीं, और उन दोनों ने प्रतिज्ञा की थी कि उनमें से जिसकी भी मृत्यु पहले होगी, जीवित रहने वाला मृत्यु तक पुनर्विवाह नहीं करेगा। उनकी मृत्यु हो गई, और वह कुछ समय तक विधवा रहीं, फिर उनके पिता ने उनका विवाह कर दिया। उस रात उन्होंने सपने में उमर को देखा जो उनके लिए कुछ छंद पढ़ रहे थे। वह डरी हुई उठीं और नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को पूरी कहानी सुनाई। आपने उन्हें मृत्यु तक एकांत में रहने का आदेश दिया और उनके पति को उन्हें छोड़ने का आदेश दिया, और उन्होंने ऐसा ही किया।

[तालिका - उर्दू]: यानी वह 'अम्मु' नाम के एक व्यक्ति की पत्नी थीं। उनके बीच आपस में यह प्रतिज्ञा हुई थी कि जो पहले मरेगा, दूसरा मृत्यु तक विवाह नहीं करेगा। 'उमर' का देहांत हो गया, रबाब एक समय तक विधवा रहीं, फिर उनके पिता ने उनका निकाह कर दिया। उसी रात उन्होंने अपने पहले पति को सपने में देखा। उन्होंने इस मामले की शिकायत में कुछ शेर पढ़े। वह सुबह डरी और सहमी हुई उठीं, हुज़ूर अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से हाल बयान किया। हुज़ूर अकदस

(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हुक्म दिया कि मृत्यु तक तन्हाई में जी बहलाएं और उस पति को हुक्म दिया कि उन्हें छोड़ दे, और उन्होंने छोड़ दिया। (अनु.)

अल-हाफिज़ ने इसे 'अल-इसाबा' में उद्धृत किया और कहा: "यह इन दोनों के अलावा अन्य लोगों के लिए एक प्रसिद्ध कहानी है[3]", आदि। (अल-हाफिज़ ने इसे अल-इसाबा में नक़ल किया और फरमाया कि यह कहानी इन दोनों के अलावा दूसरों के लिए मशहूर है, आदि। अनु.) बल्कि हदीसों में तो खुद...

---

[1] अल-कामिल फ़ी अत-तारीख, इब्न अल-असीर, इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हु) की शहादत का ज़िक्र, दार सादिर, बेरूत, 4/88। [2] अल-कामिल फ़ी अत-तारीख, इब्न अल-असीर, इमाम हुसैन (रज़ियल्लाहु अन्हु) की शहादत का ज़िक्र, दार सादिर, बेरूत, 4/88। [3] अल-इसाबा फ़ी तमयीज़ अस-सहाबा, महमूद बिन अहमद फरयाबी के हवाले से, अर-रबाब अ-मनसूबा, दार सादिर, बेरूत, 4/300।

पेज 305/688

فتاوٰی رضویہ جلد دو از دہم

مَا کُنْتُ لِاَتَّخِذَ نِیْ حَمُواً بَعْدَ رَسُوْلِ اللہِ صلَّی اللہ تعالٰی علیہ وسلم۔ (عربی) میں وہ نہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے بعد کسی کو اپنا خسر بناؤں۔ (ت)

جب تک زندہ رہیں نہ کیا ذکرہ ابن الاثیر فی الکامل (ابن اثیر نے اسے کامل میں ذکر کیا ہے۔ت)

مرثیہ حضرت امام انام رضی اللہ تعالٰی عنہ میں فرماتی ہیں:

وَاللہِ لَا اَبْتَغِیْ صِھْرًا بِصِھْرِ کُمْ حَتّٰی اَغِیْبَ بَیْنَ الرَّمْلِ وَالطِیْنِ[2]

خدا کی قسم تمہارے رشتہ کے بعد کسی سے رشتہ نہ چاہوں گی یہاں تک کہ ریت اور مٹی میں دفن کردی جاؤں ذکرہ ہشام بن الکلبی (اس کو ہشام بن کلبی نے ذکر کیا۔ت)

بلکہ علامہ ابوالقاسم عماد الدین محمود ابن فریابی کتاب خالصۃ الحقائق لما فیہ من اسالیب الدقائق میں صحابیات حضور پر نور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے ایک بی بی رباب نامی رضی اللہ تعالٰی عنہا کا ذکر کرتے ہیں :

[عربی متن]: اِنَّھَا کَانَتْ زَوْجَۃً لِرَجُلٍ یُقَالُ لَہُ عُمَرُ وَفَتَعَاھَدَا اَیُّھُمَا مَاتَ قَبْلَ الْآخَرِ لَا یَتَزَوَّجُ الَّذِیْ یَبْقٰی حَتّٰی یَمُوْتَ فَمَاتَ فَاَقَامَتْ مُدَّۃً فَزَوَّجَھَا اَبُوْھَا فَرَاَتْ فِیْ تِلْکَ اللَّیْلَۃِ عُمَرًا اَنْشَدَھَا اَبْیَاتاً فَاَصْبَحَتْ مَذْعُوْرَۃً وَقَصَّتْ عَلَی النَّبِیِّ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم الْقِصَّۃَ فَاَمَرَھَا اَنْ تَسْتَأْنِسَ بِالْوَحْدَۃِ حَتّٰی تَمُوْتَ وَ اَمَرَ زَوْجَھَا بِفِرَاقِھَا فَفَعَلَ ذٰلِکَ۔

[اردو ترجمہ]: یعنی وہ ایک شخص عمرو نامی کی زوجہ تھیں ان کے آپس میں عہد ہو لیا تھا کہ جو پہلے مرے دوسرا تادم مرگ نکاح نہ کرے، عمر کا انتقال ہوا، رباب ایک مدت تک بیوہ رہیں پھر ان کے باپ نے اُن کا نکاح کر دیا، اُسی رات اپنے پہلے شوہر کو خواب میں دیکھا اُنہوں نے

کچھ شعر اس معاملے کی شکایت میں پڑھے یہ صبح کو خائف و ترساں اُٹھیں، حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے حال عرض کیا، حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے حکم دیا کہ مرتے دم تک تنہائی میں جی بہلائیں اور اس شوہر کو حکم دیا کہ انہیں چھوڑ دے، انہوں نے چھوڑ دیا۔ (ت)

نقله الحافظ في الاصابة وقال هي حكاية مشهورة لغير هذين[3] الخ (اس کو حافظ نے الاصابہ میں نقل کیا اور فرمایا کہ یہ حکایت ان دونوں کے غیر کے لئے مشہور ہے الخ۔ت) بلکہ احادیث میں ہے خود

---

[1] الکامل فی التاریخ لابن اثیر ذکر مقتل حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ دار صادر بیروت ۸۸/۴ [2] الکامل فی التاریخ لابن اثیر ذکر مقتل حسین رضی اللہ تعالیٰ عنہ دار صادر بیروت ۸۸/۴ [3] الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ بحوالہ محمود بن احمد فریانی الرباب غیر منسوبہ دار صادر بیروت ۳۰۰/۴

Fatawa Razawiya - Volume 12

The radiant Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) highly praised the widow who stays with her orphan children and does not remarry for their sake.

Hadith 1: Narrated in Sunan Abi Dawud from Hazrat Auf bin Malik al-Ashja'i (may Allah be pleased with him), the Master of Messengers (peace and blessings of Allah be upon him) said:

Arabic: انا وامرأة سفعاء الخدين كهاتين يوم القيمة واومى بيده يزيد بن زريع السبابة والوسطى Urdu امرأة ایمت من زوجها ذات منصب وجمال حبست نفسها على يتاماها حتى بانو او ماتو۔
Translation from Image: "I and a woman with blackened cheeks (due to hardship) will be like these two on the Day of Resurrection" (the narrator pointed to the index and middle fingers, meaning just as these two fingers are close together, she will be close to me on the Day of Resurrection). She is a woman who became a widow, having high status and beauty, yet she restrained herself for the sake of her orphans (not needing to adorn herself) until they became independent or died.

Hadith 2: Ibn Shubran narrates from Anas bin Malik (may Allah be pleased with him) that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said:

Arabic: ایما امرأة قعدت على بيت اولادها فهى معي فى الجنۃ۔ Urdu Translation from Image: Whichever woman stays with her children (after being widowed), she will be with me in Paradise.

Hadith 3: Abu Ya'la narrates from Hazrat Abu Hurairah (may Allah be pleased with him) that the Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him) said:

Arabic: انا اول من يفتح باب الجنۃ الانى ارى امرأة تبادرنى فاقول لها مالك ومن انت فتقول انا امرأة قعدت على ايتام لى۔ Urdu Translation from Image: I am the first to open the gate of Paradise, but I will see a woman hastening to get ahead of me. I will say to her, "What is with you and who are you?" She will reply, "I am a woman who stayed with my orphans."

1. Sunan Abi Dawud, Kitab al-Adab, Chapter on the Virtue of One who Sustains Orphans, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 2/345.
2. Kanz al-Ummal with reference to Ibn Yashr from Anas, Hadith, Mu'assasah al-Risalah, Beirut, 16/408.
3. Musnad Abi Ya'la, Hadith, Mu'assasah 'Ulum al-Qur'an, Beirut, 6/125.

फ़तावा रज़विया - खंड 12

हुज़ूर पुर नूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उस विधवा की बहुत प्रशंसा की है जो अपने अनाथ बच्चों के साथ बैठी रहे और उनके ख़याल से दूसरा विवाह न करे।

हदीस 1: सुनन अबू दाऊद में हज़रत औफ़ बिन मालिक अशजई (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर सैयदुल मुरसलीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

अरबी: انا وامرأة سفعاء الخدين كهاتين يوم القيمة واومى بيده يزيد بن زريع السبابة والوسطى امرأة ايمت من زوجها ذات منصب وجمال حبست نفسها على يتاماها حتى بانو او ماتو। उर्दू अनुवाद (छवि से): "मैं और वह महिला जिसके गाल (कठिनाई के कारण) काले पड़ गए हों, क़यामत के दिन इन दो उँगलियों की तरह होंगे" (रावी ने शहादत और बीच की उँगली की ओर इशारा करके बताया, यानी जैसे ये दो उँगलियाँ पास-पास हैं, वैसे ही उसे क़यामत के दिन मेरा सामीप्य प्राप्त होगा)। वह महिला जो अपने पति से विधवा हुई, उच्च पद और सुंदरता वाली होने के बावजूद उसने अपने अनाथ बच्चों के लिए स्वयं को रोक रखा (सजने-संवरने की आवश्यकता नहीं समझी) जब तक कि वे बड़े न हो गए या वह मर गई।

हदीस 2: इब्ने शुबरान अनस बिन मालिक (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

अरबी: ايما امرأة قعدت على بيت اولادها فهى معي فى الجنة। उर्दू अनुवाद (छवि से): जो महिला अपनी संतान पर बैठी रहेगी (विधवा होने के बाद), वह जन्नत में मेरे साथ होगी।

हदीस 3: अबू यअला हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत करते हैं, हुज़ूर सैयदे आलम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं:

अरबी: انا اول من يفتح باب الجنة الانى ارى امرأة تبادرنى فاقول لها مالك ومن انت فتقول انا امرأة قعدت على ايتام لى। उर्दू अनुवाद (छवि से): सबसे पहले जो जन्नत का दरवाज़ा खोलेगा वह मैं हूँ, लेकिन मैं एक महिला को देखूँगा जो मुझसे आगे बढ़ने की जल्दी करेगी। मैं उससे कहूँगा

कि तुझे क्या हुआ है और तू कौन है? वह अर्ज़ करेगी, मैं वह महिला हूँ जो अपने अनाथ बच्चों पर बैठी रही।

1. सुनन अबी दाऊद, किताब अल-अदब, अनाथों के पालन-पोषण की फ़ज़ीलत का अध्याय, आफ़ताबे आलम प्रेस, लाहौर, 2/345।
2. कन्ज़ुल उम्माल ब-हवाला इब्ने यशर, अनस से, हदीस, मुअस्ससतुर्-रिसाला, बेरुत, 16/408।
3. मुसनद अबी यअला, हदीस, मुअस्ससतु उलूमि-ल-क़ुरआन, बेरुत, 6/125।

पृष्ठ 306/688

فتاویٰ رضویہ - جلد دوازدہم

حضور پر نور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے اُس بیوہ کی نہایت تعریف فرمائی جو اپنے یتیم بچوں کو لئے بیٹھی رہے اور ان کے خیال سے نکاح ثانی نہ کرے، حدیث ۱: سُنن ابو داؤد میں حضرت عوف بن مالک اشجعی رضی اللہ تعالٰی عنہ سے مروی حضور سید المرسلین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا:

عربی: انا وامرأة سفعاء الخدین کھاتین یوم القیمة واومی بیدہ یزید بن زریع السبابة والوسطی امرأة ایمت من زوجھا ذات منصب وجمال حبست نفسھا علی یتاماھا حتی بانو او ماتو۔ اردو: میں اور چہرہ کارنگ بدلی ہوئی عورت روزِ قیامت ان دو انگلیوں کے مثل ہوں گے (راوی نے انگشتِ شہادت اور بیچ کی انگلی کی طرف اشارہ کرکے بتایا یعنی جیسے یہ دو انگلیاں پاس پاس ہیں، یونہی اسے روزِ قیامت میرا قرب نصیب ہوگا) وہ عورت کہ اپنے شوہر سے بیوہ ہوئی عزت والی صورت والی با اینہمہ اُس نے اپنے یتیم بچوں پر اپنی جان کو روک رکھا (بناؤ سنگھار کی حاجت نہیں)۔

حدیث ۲: ابن شبر ان انس بن مالک رضی اللہ تعالٰی عنہ سے راوی رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

عربی: ایما امرأة قعدت علی بیت اولادھا فھی معي فی الجنۃ۔ اردو: جو عورت اپنی اولاد پر بیٹھی رہے گی وہ جنت میں میرے ساتھ ہوگی۔

حدیث ۳: ابو یعلٰی حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے راوی، حضور سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

عربی: انا اول من یفتح باب الجنۃ الانی اری امرأۃ تبادرنی فاقول لھا مالك ومن انت فتقول انا امرأۃ قعدت علی ایتام لی۔ اردو: سب سے پہلے جو دروازہ جنت کھولے گا وہ میں ہوں مگر میں ایک عورت کو دیکھوں گا کہ مجھ سے آگے جلدی کرے گی میں فرماؤں گا تجھے کیا ہے اور تو کون ہے، وہ عرض کرے گی میں وہ عورت ہوں کہ اپنے یتیموں پر بیٹھی رہی۔

1 سُنن ابی داؤد کتاب الادب باب فی فضل من عال الیتامی آفتاب عالم پریس لاہور ۳۴۵/۲ 2 کنز العمال بحوالہ ابن یشر ابن عن انس حدیث مؤسسۃ الرسالہ بیروت ۴۰۸/۱۶ 3 مسند ابی یعلٰی حدیث مؤسسۃ علوم القرآن بیروت ۱۲۵/۶

Fatawa Razawiyya Volume 12

Imam Abdul Azeem Munziri says: Its chain of narration is good (Hasan), if Allah wills. (Its chain of narration is good, if Allah wills. - T)

Note: The Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) will enter Paradise many times. Absolute priority is reserved for the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him). The opening of the door will be specifically for the esteemed Prophet. Rizwan, the gatekeeper of Paradise, will submit, "I was commanded not to open for anyone before you." No sent prophet can precede the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him).

These subjects are established from authentic Hadiths, some of which this humble person (the author) mentioned in his blessed treatise 'Tajalli al-Yaqeen bi-Anna Nabiyyana Sayyid al-Mursalin'. Other servants of God who enter after the Prophet will find the door open because the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) would have already performed the opening of the door:

Allah Almighty said: "Gardens of eternity, whose doors will be opened for them." - 1 Allah Almighty said: Gardens of dwelling for them, with all doors open. (T)

The mentioned precedence of this woman is regarding subsequent visits, when he (the Prophet) might be coming and going for the management of his Ummah's affairs, not specifically for the very first time. And success is only through Allah's guidance. (T)

Praise be to Allah, with this elegant research, the ruling on the issue has emerged with great clarity on the platform of manifestation, and those prejudiced rulings of the extremists are also rejected and repelled. Praise be to Allah for what He guided and taught, and may Allah's peace and blessings be upon our master Muhammad and his family. (T) Up to this point was the ruling regarding the act of marriage itself, compulsion therein, and the abandonment or refusal by the woman or guardians, and the command of reprimand and ending their refusal.

Now remains the criticism on a second marriage. I say: And success is from Allah (T). It has become clear from our previous research that a second marriage is not absolutely obligatory, mandatory, or Sunnah; rather, for common women, it is at the highest level of permissibility (Mubah). Criticizing something permissible can only be disbelief (Kufr) if its permissibility is among the necessities of religion (Daruriyat-e-

Deen), and despite that, this person does not consider it legally permissible. The permissibility of a second marriage is certainly among the necessities of religion.

---

[1] Al-Quran al-Karim 38/50 Page 307 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

इमाम अब्दुल अज़ीम मुन्ज़िरी फ़रमाते हैं: इसकी सनद हसन है, इंशा अल्लाह ताला (इसकी सनद इंशा अल्लाह ताला हसन है। - त)

चेतावनी (तम्बीह): हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जन्नत में तशरीफ़ ले जाना कई बार होगा, मुतलक़ अव्वलीयत हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए विशेष है, दरवाज़ा खुलना हुज़ूर ही के लिए होगा, रिज़वान (जन्नत के दारोगा) अर्ज़ करेंगे कि मुझे यही हुक्म था कि हुज़ूर से पहले किसी के लिए न खोलूँ, हुज़ूर पर कोई नबी मुरसल भी तक़दीम (पहल) नहीं पा सकता सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

ये सब विषय सही हदीसों से साबित हैं जिनमें से कुछ फ़क़ीर (लेखक) ने अपने मुबारक़ रिसाले 'तजल्ली अल-यक़ीन बि-अन्ना नबिय्यना सैय्यद अल-मुर्सलीन' में ज़िक्र किए। हुज़ूर के बाद जो और अल्लाह के बंदे जाएँगे, वे दरवाज़ा खुला पाएँगे क्योंकि हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पहले ही दरवाज़ा खोल (फ़तह-ए-बाब) चुके होंगे:

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "सदा रहने वाले बाग़ जिनके दरवाज़े उनके लिए खुले होंगे।" - 1 अल्लाह तआला ने फ़रमाया: रहने के बाग़ उनके लिए, जिनके सब दरवाज़े खुले हुए। (त)

यहाँ जो इस औरत का आगे होना हुआ, यह और बार के तशरीफ़ ले जाने में है, जब उम्मत के कार्यों के प्रबंधन के लिए आना-जाना फ़रमाते होंगे, न कि विशेष रूप से पहली बार में, और तौफ़ीक़ अल्लाह तआला से ही है। (त)

अल्हम्दुलिल्लाह, इस बेहतरीन शोध से मसले का हुक्म भी अत्यंत स्पष्टता के साथ प्रकट हुआ और कट्टरपंथियों के वे पक्षपाती हुक्म भी निरस्त और परास्त हो गए। अल्हम्दुलिल्लाह उस पर जो उसने तौफ़ीक़ दी और सिखाया, और अल्लाह तआला दरूद व सलाम नाज़िल फ़रमाए हमारे आक़ा मुस्तफ़ा और आपकी आल (वंश) पर। (त) यहाँ तक निकाह के स्वयं के कार्य, उस पर दबाव, और औरत या अभिभावकों की ओर से परित्याग या इनकार और उनके इनकार पर डांट-डपट और रोक-थाम का हुक्म था।

अब रहा निकाह-ए-सानी (दूसरी शादी) पर ताना। मैं कहता हूँ: और अल्लाह ही से तौफ़ीक़ है (त)। हमारे पिछले शोध से यह स्पष्ट हो गया कि निकाह-ए-सानी मुतलक़न (पूर्णत:) फ़र्ज़ या वाजिब या

सुन्नत नहीं है, बल्कि आम महिलाओं के लिए अत्यंत मुबाह (जायज़) है। मुबाह पर ताना केवल उसी स्थिति में कुफ़्र हो सकता है जब उसकी मुबाहियत (जायज़ होना) दीन की ज़रूरतों (ज़रूरियात-ए-दीन) में से हो और इसके बावजूद वह व्यक्ति इसे शरीयत के अनुसार मुबाह न माने। निकाह-ए-सानी की मुबाहियत तो बेशक दीन की ज़रूरतों में से है...

---

[1] अल-क़ुरआन अल-करीम 38/50 पेज 307 / 688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

امام عبدالعظیم منذری فرماتے ہیں: اسنادہ حسن ان شاء اللہ تعالٰی (اس کی اسناد ان شاء اللہ تعالٰی حسن ہے۔ ت)

تنبیہ: حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کا بہشت میں تشریف لے جانا بارہا ہوگا، اولیت مطلقہ حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کے لئے خاص ہے، دروازہ کھلنا حضور والا ہی کے لئے ہوگا، رضوان داروغہ جنت عرض کرے گا مجھے یہی حکم تھا کہ حضور سے پہلے کسی کے لئے نہ کھولوں، حضور پر کوئی نبی مرسل بھی تقدیم نہیں پاسکتا صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم۔

یہ سب مضامین احادیث صحیحہ سے ثابت ہیں جن کی بعض فقیر نے اپنے رسالہ مبارکہ تجلی الیقین بان نبینا سید المرسلین میں ذکر کیں۔ حضور کے بعد جو اور بندگان خدا جائیں گے دروازہ کھلا پائیں گے کہ حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم پہلے سے فتح باب فرماچکے ہوں گے :

قَالَ تَعَالٰی جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ ط۔ ۱ اللہ تعالٰی نے فرمایا: بسنے کے باغ ان کے لئے سب کے دروازے کھلے ہوئے۔ (ت)

یہاں جو اس عورت کا آگے ہونا ہوا یہ اور بار کے تشریف لے جانے میں ہے، جب اہتمام کار امت میں آمد رفت فرماتے ہوں گے نہ کہ خاص بارِ اول میں، وباللہ التوفیق (اور توفیق اللہ تعالٰی سے ہی ہے۔ت)

الحمد للہ اس تحقیق انیق سے مسئلہ کا حکم بھی بنہایت ایضاح منصہ ظہور پر مرتفع ہوا اور اہل تشدد کے وہ متعصبانہ احکام بھی مخذول و مندفع والحمد للہ علی ما وفق وعلم وصلی اللہ تعالٰی علی سیدنا محمد وآلہ وسلم (تمام تعریفیں اللہ تعالٰی کے لئے ہیں اس کے توفیق اور علم عطا فرمانے پر،

اور اللہ تعالیٰ درود وسلام نازل فرمائے ہمارے آقا مصطفیٰ اور آپ کی آل پر۔ت) یہاں تک نفس نکاح اور اس پر اجبار اور عورت یا اولیاء کی جانب سے ترک یا انکار اور ان کے انکار پر زجر و انتہا کا حکم تھا۔

اب رہا نکاح ثانی پر طعن اقول: وباللہ التوفیق (میں کہتا ہوں اور اللہ ہی سے توفیق ہے۔ت) ہماری تحقیق سابق سے روشن ہوا کہ نکاح ثانی مطلقاً فرض یا واجب یا سنت نہیں بلکہ عام زنان کیلئے نہایت درجہ مباح ہی ہے اور مباح پر طعن صرف اسی صورت میں کفر ہوسکتا ہے کہ اس کی اباحت ضروریات دین سے ہو اور باوصف اس کے یہ شخص اسے شرعاً مباح نہ جانے، نکاح ثانی کی اباحت تو بیشک ضروریات دین

---

[1] القرآن الکریم ۳۸/۵۰ Page 307 of 688

Fatawa Ridawiyya Volume 12

...is that all Muslims are aware of it, and numerous verses of the Great Quran are witnesses to it.

Quranic Verse	Translation
Allah Almighty says: "Perhaps his Lord, if he divorces you, [will] give him instead wives better than you..." until the words of Allah Almighty "...widowed and virgins."[1]	Allah Almighty said: Their Lord is near, if he divorces you, that He may give him in exchange wives better than you (until Allah Almighty's word) "widowed and virgins".
And Allah Almighty said: "Then when Zayd had fulfilled his desire of her, We gave her to you in marriage."[2]	And Allah Almighty said: Then when Zayd's purpose with her was fulfilled, We gave her to you (Zainab) in marriage.
And Allah Almighty said: "Then she shall not be lawful to him after that until she marries another husband."[3]	And Allah Almighty said: Then now that woman will not be lawful for him until she goes to another husband. (T)

In the noble verse "And marry off the single among you"[4] (and perform the marriage of those among you who are unmarried. T), the marriage of an 'ayyam' is commanded. 'Ayyam' refers to every woman without a husband, and its application includes virgins, divorcees, and widows. Although 'ayyam' is not specifically the name for a widow, these verses are particularly for widows. Allah Almighty said (T):

Quranic Verse	Translation
"And those of you who die and leave wives behind, they [the wives] shall wait, keeping themselves [in their homes] for four months and ten [days]. Then when they have fulfilled their term, there is no sin on you for what they do with themselves in an acceptable manner. And Allah is Acquainted with what you do. And there is no sin on you for that to which you [indirectly] allude concerning a proposal to women or for what you conceal within yourselves. Allah knows that you will remember them. But do not	And those of you who die and leave wives, they should keep themselves (waiting) for four months and ten days. So when their waiting period ('iddah') is complete, O guardians! there is no blame on you for what they do regarding themselves in a good, recognized manner, and Allah is aware of your deeds. And there is no sin on you in what you hinted at regarding a marriage proposal to women or kept hidden in your hearts. Allah Almighty knows that you will soon remember them. Yes, do not make a secret promise to

Quranic Verse	Translation
promise them secretly except that you say a customary word."	them, except that you say a word that is recognized by Sharia.

[1] Al-Quran al-Kareem 66/5 [2] Al-Quran al-Kareem 33/37 [3] Al-Quran al-Kareem 2/230 [4] Al-Quran al-Kareem 24/32

फतावा रज़विया जिल्द बारहवीं

...से है कि तमाम मुसलमान इससे वाकिफ़ हैं, कुरान-ए-अज़ीम की कई आयतें इस पर गवाह हैं।

कुरान की आयत	अनुवाद
अल्लाह तआला ने फरमाया: "हो सकता है उसका रब, अगर वह तुम सबको तलाक़ दे दे, तो उसे तुम्हारे बदले ऐसी बीवियाँ अता फरमाए जो तुमसे बेहतर हों..." अल्लाह तआला के क़ौल "थय्येबात और अबकार" (विधवा और कुंवारी) तक।[1]	अल्लाह तआला ने फरमाया: उनके रब के करीब है कि अगर वह तुम्हें तलाक दे दें तो वह उन्हें तुमसे बेहतर बीवियां बदल दे (अल्लाह तआला के क़ौल) थय्येबात और अबकार (ब्याही हुई और कुंवारी) तक।
और अल्लाह तआला ने फरमाया: "फिर जब ज़ैद की गरज़ उनसे पूरी हो गई तो हमने वह तुम्हारे निकाह में दे दी।"[2]	और अल्लाह तआला ने फरमाया: फिर ज़ैद की गरज़ उनसे पूरी हो गई तो हमने वह (ज़ैनब) तुम्हारे निकाह में दे दी।
और अल्लाह तआला ने फरमाया: "तो अब वह औरत उसके लिए हलाल न होगी जब तक वह किसी दूसरे शौहर के पास न आए।"[3]	और अल्लाह तआला ने फरमाया: तो अब वह औरत उसके लिए हलाल न होगी जब तक वह किसी दूसरे शौहर के पास न आए। (त)

करीमा आयत "और निकाह कर दो अपनों में उनका जो बे-निकाह हैं"[4] (त) में 'ऐम' के निकाह कर देने का हुक्म फ़रमाया। 'ऐम' हर उस औरत को कहते हैं जिसका शौहर न हो, जिसमें कुंवारी, तलाक़शुदा और विधवा सब शामिल हैं। हालांकि 'ऐम' खास तौर पर विधवा का नाम नहीं है, फिर भी ये आयतें विशेष रूप से विधवाओं के लिए हैं, अल्लाह तआला ने फरमाया (त):

कुरान की आयत	अनुवाद
"और तुममें से जो लोग मर जाएं और बीवियां छोड़ जाएं तो वे औरतें अपने आप को चार महीने दस दिन तक रोके रखें। फिर जब उनकी इद्दत पूरी हो जाए, तो जो कुछ वे अपने हक में कायदे के मुताबिक करें उसमें तुम पर कोई गुनाह नहीं। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे खूब जानता है। और तुम पर इसमें भी कोई	और जो तुममें मरें और बीवियां छोड़ें, वे चार महीने दस दिन अपने आप को रोके रहें। तो जब उनकी इद्दत पूरी हो जाए, तो ऐ वालियों (संरक्षकों)! तुम पर कोई मुआख़ज़ा (पकड़) नहीं उस काम में जो वे अपने लिए भले दस्तूर से करें और अल्लाह तुम्हारे कामों की ख़बर रखता है। और तुम पर कोई गुनाह नहीं उस बात में जो तुम

कुरान की आयत	अनुवाद
गुनाह नहीं कि तुम (इद्दत के दौरान) उन औरतों को निकाह का इशारा दो या अपने दिल में छिपाए रखो। अल्लाह को मालूम है कि तुम उनका ज़िक्र करोगे। लेकिन उनसे खुफिया वादा न करो सिवाय इसके कि कोई भली बात कहो।"	इशारे-किनाये में उन औरतों को निकाह का पैग़ाम दो या अपने दिल में छिपाए रखो। अल्लाह तआला जानता है कि तुम अब उन्हें याद करोगे। हाँ, उनसे खुफिया वादा न करो, बस उतनी ही बात कहो जो शरीअत में (जायज़ हो)।

[1] अल-कुरान अल-करीम 66/5 [2] अल-कुरान अल-करीम 33/37 [3] अल-कुरान अल-करीम 2/230 [4] अल-कुरान अल-करीम 24/32

पेज 308/688

فتاوی رضویہ جلد دوازدھم

سے ہے کہ تمام مسلمین اس سے آگاہ، قرآن عظیم کی متعدد آیتیں اس پر گواہ۔

قرآنی آیت	ترجمہ
قَالَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَسٰی رَبُّہٗۤ اِنْ طَلَّقَکُنَّ اَنْ یُّبْدِلَہٗۤ اَزْواجاً خَیْراً مِّنْکُنَّ الی قولہ تعالیٰ ثَیِّبٰتٍ وَّ اَبْکَارًا۔1	اللہ تعالیٰ نے فرمایا: ان کے رب قریب ہے اگر وہ تمہیں طلاق دے دیں کہ انہیں تم سے بہتر بیویاں بدل دے (اللہ تعالیٰ کے قول) ثَیِّبٰتٍ وَّ اَبْکَارًا (بیاہیاں اور کنواریاں) تک۔
تعالیٰ فَلَمَّا قَضٰی زَیْدٌ مِّنْھَا وَطَراً زَوَّجْنٰکَھَا۔2	اور اللہ تعالیٰ نے فرمایا: پھر زید کی غرض اس سے نکل گئی تو ہم نے وہ (زینب) تمہارے نکاح میں دے دی۔
وقال تعالیٰ فَلَا تَحِلُّ لَہٗ مِنْۢ بَعْدُ حَتّٰی تَنْکِحَ زَوْجاً غَیْرَہٗ۔3	اور اللہ تعالیٰ نے فرمایا: تو اب وہ عورت اسے حلال نہ ہوگی جب تک دوسرے خاوند کے پاس نہ آئے۔ (ت)

کریمہ وَ اَنْکِحُوا الْاَیَامٰی4 (اور نکاح کردو اپنوں میں ان کا جو بے نکاح ہیں۔ ت) میں ایم کے نکاح کر دینے کو فرمایا، ایم ہر زنِ بے شوہر کو کہتے ہیں جس کے اطلاق میں کنواری، مطلقہ، بیوہ سب داخل۔ اگرچہ ایم خاص بیوہ کا نام نہیں بالخصوص بیوہ کے لئے یہ آیتیں ہیں قال تعالیٰ (اللہ تعالیٰ نے فرمایا۔ ت):

قرآنی آیت	ترجمہ
وَ الَّذِیْنَ یُتَوَفَّوْنَ مِنْکُمْ وَ یَذَرُوْنَ اَزْوَاجاً یَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِھِنَّ اَرْبَعَۃَ اَشْھُرٍ وَّ عَشْراً فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَھُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَیْکُمْ فِیْمَا فَعَلْنَ	اور جو تم میں مریں اور بیویاں چھوڑیں وہ چار مہینے دس دن اپنے آپ کو روکے رہیں تو جب ان کی عدت پوری ہو جائے تو اے والیو! تم پر مواخذہ نہیں اس کام

قرآنی آیت	ترجمہ
فِيۡۤ اَنۡفُسِهِنَّ بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَ اللّٰهُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ خَبِيۡرٌ وَ لَا جُنَاحَ عَلَيۡكُمۡ فِيۡمَا عَرَّضۡتُمۡ بِهٖ مِنۡ خِطۡبَةِ النِّسَآءِ اَوۡ اَكۡنَنۡتُمۡ فِيۡۤ اَنۡفُسِكُمۡ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمۡ سَتَذۡكُرُوۡنَهُنَّ وَ لٰكِنۡ لَّا تُوَاعِدُوۡهُنَّ سِرًّا اِلَّاۤ اَنۡ تَقُوۡلُوۡا قَوۡلًا	میں جو وہ اپنے لئے بھلے دستور سے کریں اور اللہ تمہارے کاموں کی خبر ہے، اور تم پر گناہ نہیں اس بات میں جو پردہ رکھ کر تم نے عورتوں کے نکاح کا پیام دیا یا اپنے دل میں چھپا رکھا۔ اللہ تعالیٰ جانتا ہے کہ اب تم ان کی یاد کرو گے۔ ہاں ان سے خفیہ وعدہ نہ رکھو یہ کہ اتنی ہی بات کہو جو شرع میں

1 القرآن الکریم ۵/۶۶ 2 القرآن الکریم ۳۳/۳۷ 3 القرآن الکریم ۲/۲۳۰ 4 القرآن الکریم ۲۴/۳۲

Fatawa Razawiyya Volume 12

"...in an honorable way. And do not resolve on the tie of marriage until the prescribed term has reached its end." 1 It is well-known, and do not tie the knot of marriage until the written command reaches its appointed time. (T)

And Allah Almighty said:

"And those who die among you and leave wives behind, they should make a bequest for their wives for a year's maintenance without being turned out. But if they leave, then there is no blame on you for what they do with themselves in an honorable way. And Allah is Mighty, Wise." 2 And those among you who die and leave wives behind, they should leave a bequest for their women for a year's maintenance without being expelled. Then if they leave themselves, there is no blame on you for what they did appropriately in their own matter, and Allah Almighty is Predominant, Wise. (T)

Every sentence of these blessed verses is a clear text (Nass) on the permissibility of widow remarriage. Furthermore, its permissibility is established through the words, actions, and approvals of the Leader of the Universe (peace and blessings of Allah be upon him), his noble household, and the great companions (may Allah be pleased with them all). The Mother of the Believers, Siddiqah (Aisha), daughter of Al-Siddiq, was herself a widow when she married, as proven in Sahih al-Bukhari from her own narration and from the narration of Ibn Abbas (may Allah be pleased with them). (As is proven in Sahih Bukhari from the Mother of the Believers herself, Lady Aisha Siddiqah (RA) and Hazrat Abdullah ibn Abbas (RA)). However, the discussion is whether the ignorant people of India who consider it a shame and disgrace do so because they do not believe it is lawful according to Sharia. If that were the case, it would indeed be disbelief (Kufr). But in fairness, there is essentially no evidence of this from the general public. Whichever Muslim you ask, they will clearly admit that it is certainly permissible according to Sharia and we do not consider it unlawful or forbidden. Rather, according to custom, it is considered a matter of shame and disgrace among people; it is avoided out of fear of mockery and ill repute. On such thoughts, a ruling of disbelief (Takfir) can never be given. From predecessors to successors, among all people in worldly matters, criticism and reprimand in permissible things (Mubahat) based on worldly interests is prevalent—why go there, why do this, why meet so-and-so—even though all these matters are permissible in Sharia. This is about the specific personal matters of each person, and in the general welfare of the community or the land, there are many Sharia-permissible things that

have become considered defective due to custom and habit. In this avoidance and objection, most of these very people who declare others as disbelievers are also participants. For example, talking to one's husband or wife in front of one's father, especially for newly married...

1. Al-Quran al-Karim 2/235
2. Al-Quran al-Karim 2/240

फतावा रज़विया, खंड 12

"...सम्मानजनक तरीके से। और निकाह की गिरह तब तक पक्की न करो जब तक लिखा हुआ हुक्म अपनी अवधि तक न पहुँच जाए।" 1 यह प्रसिद्ध है, और निकाह की गिरह तब तक पक्की न करो जब तक लिखा हुआ हुक्म अपनी अवधि तक न पहुँच जाए। (त)

और अल्लाह तआला ने फरमाया:

"और तुम में से जो मर जाएँ और पत्नियाँ छोड़ जाएँ वे अपनी पत्नियों के लिए साल भर के भरण-पोषण की वसीयत कर जाएँ बिना घर से निकाले। फिर अगर वे खुद निकल जाएँ तो तुम पर उस बात का कोई दोष नहीं जो उन्होंने अपने मामले में उचित रूप से किया। और अल्लाह तआला प्रबल, तत्वदर्शी है।" 2 और तुम में से जो मर जाएँ और पत्नियाँ छोड़ जाएँ वे अपनी औरतों के लिए साल भर भरण-पोषण देने की वसीयत कर जाएँ बिना घर से निकाले, फिर अगर वे खुद निकल जाएँ तो तुम पर उसका कोई दोष नहीं जो उन्होंने अपने मामले में उचित रूप से किया, और अल्लाह तआला प्रबल, हिकमत वाला है। (त)

इन मुबारक़ आयतों का हर वाक्य विधवा विवाह की अनुमति पर स्पष्ट प्रमाण है। फिर सरकारे दो आलम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम), अहले बैत और सहाबा किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) के कथनों, कार्यों और मौन स्वीकृति से इसकी अनुमति निरंतर सिद्ध है। उम्मुल मोमिनीन सिद्दीका बिन्ते अल-सिद्दीक खुद विधवा होकर ब्याही गई थीं, जैसा कि सहीह बुखारी में उनकी अपनी हदीस और इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) की हदीस से प्रमाणित है। (जैसा कि सहीह बुखारी में स्वयं उम्मुल मोमिनीन सैयदा आयशा सिद्दीका (रजि.) और हज़रत अब्दुल्ला इब्ने अब्बास (रजि.) से प्रमाणित है)। मगर बात यह है कि हिन्दुस्तान के जाहिल लोग जो इसे शर्म और अपमान की बात समझते हैं, क्या वे इस आधार पर ऐसा करते हैं कि वे इसे शरीयत के अनुसार हलाल नहीं मानते? यदि ऐसा हो तो बेशक यह कुफ्र (अविश्वास) है, लेकिन निष्पक्ष रूप से आम जनता से इसका कोई प्रमाण नहीं है। आप जिस भी मुसलमान से पूछेंगे, वह साफ़ इक़रार करेगा कि शरीयत के अनुसार यह बेशक जायज़ है, हम इसे नाजायज़ या हराम नहीं मानते, बल्कि रीति-रिवाज़ के अनुसार लोगों के नज़दीक यह शर्म और अपमान की बात है, ताना और बदनामी के डर से इससे बचा जाता है। ऐसे विचारों पर कभी भी कुफ्र का हुक्म नहीं लगाया जा सकता। पुराने और नए सभी लोगों में दुनियावी मामलों में दुनियावी हितों के आधार पर ही जायज़ चीज़ों (मुबाह) में एक-दूसरे पर आलोचना और फटकार प्रचलित है -

'वहां क्यों गए', 'यह क्यों किया', 'फलां से क्यों मिले' - हालांकि ये सभी मामले शरीयत में मुबाह (अनुमत) हैं। यह तो प्रत्येक व्यक्ति के अपने निजी मामलों की बात है, और समाज के व्यापक हितों या देश के व्यवहार में भी बहुत सी शरीयत-सम्मत बातें हैं जो प्रथा और आदत के कारण दोषपूर्ण मानी जाने लगी हैं। इस बचाव और विरोध में अक्सर ये कुफ़्र का फतवा देने वाले हज़रात भी शामिल होते हैं। उदाहरण के लिए, अपने पिता के सामने अपने पति या पत्नी से बातचीत करना, विशेष रूप से नए विवाहितों के लिए...

1. अल-कुरआन अल-करीम 2/235
2. अल-कुरआन अल-करीम 2/240

पृष्ठ 309/688

فتاوٰی رضویہ جلد دو از دہم

مَعْرُوْفًا ؕ وَ لَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتّٰى يَبْلُغَ الْكِتٰبُ اَجَلَهٗ ؕ 1 معروف ہے اور نکاح کی گرہ پکی نہ کرو جب تک لکھا ہوا حکم اپنی میعاد کو نہ پہنچ لے۔ (ت)

وقال اللہ تعالٰی:

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا ۖۗ وَّصِيَّةً لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا اِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ اِخْرَاجٍ ۚ فَاِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْ مَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوْفٍ ؕ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ؕ 2 اور تم میں مریں اور بیویاں چھوڑ جائیں وہ اپنی عورتوں کے لئے وصیت کر جائیں سال بھر نان و نفقہ دینے کی بے نکالے، پھر اگر وہ خود نکل جائیں تو تم پر اس کا مواخذہ نہیں جو انہوں نے اپنے معاملہ میں مناسب طور پر کیا، اور اللہ تعالٰی غالب حکمت والا ہے (ت)

ان آیاتِ کریمہ کا جملہ جملہ جوازِ نکاح بیوہ پر نص صریح ہے، پھر حضور سید عالم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم واہلبیت کرام وصحابہ عظام رضی اللہ تعالٰی عنہم اجمعین سے قولاً وفعلًا تقریراً اس کی اباحت متواتر، ام المومنین صدیقہ بنت الصدیق تھیں کما ثبت ذلک فی صحیح البخاری من حدیث نفسھا ومن حدیث ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنھم (جیسا کہ صحیح بخاری میں خود ام المومنین سیدہ عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا اور حضرت عبداللہ ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما سے ثابت ہے۔ ت) مگر کلام اس میں ہے کہ جاہلانِ ہند جو اسے ننگ وعار سمجھتے ہیں آیا اس بناء پر ہے کہ اُسے از روئے شریعت ہی حلال نہیں جانتے ایسا ہو تو بیشک کفر ہے مگر انصافاً عامہ ناس سے اس کا اصلاً ثبوت نہیں، جس مسلمان سے پوچھئے صاف اقرار کرے گا کہ شرعاً بے شک جائز ہم نا جائز وحرام نہیں جانتے بلکہ از روئے رسم لوگوں کے نزدیک ایک ننگ وعار کی بات

ہے بخیال طعن وبد نامی اس سے احتراز ہے ایسے خیالات پر ہر گز حکم تکفیر نہیں ہوسکتا سلفاً وخلفاً تمام لوگوں میں معاملاتِ دنیویہ میں مصالحِ دنیویہ کے لحاظ سے ہی باہم ایک دوسرے پر مباحات میں طعن وسرزنش رائج ہے وہاں کیوں گیا، یہ کیوں کیا، فلاں سے کیوں ملا حالانکہ یہ سب امور مباحات شرعیہ ہیں یہ تو خاص خاص ہر شخص کے اپنے ذاتی معاملات میں ہے اور مصلحاتِ عامہ قوم یا شاطمہ ملک میں بھی بہت باتیں مباح شرعی ہیں کہ بوجہ عرف وعادت معیوب ٹھہری ہیں کہ اس احتراز واعتراض میں اکثر یہ حضرات مکفرین بھی شریک مثلاً باپ کے سامنے اپنے زوج یا زوجہ سے ہمکلام ہونا خصوصاً نئے

1 القرآن الکریم ۲/ ۲۳۵ 2 القرآن الکریم ۲/ ۲۴۰

Fatawa-e-Razvia Volume 12

...in those days. Similarly, smoking a hookah in front of elders like a father or spiritual guide; going near or sitting by a daughter and son-in-law when they are on a bed at night and talking while they remain lying down; mothers, sisters, or daughters moving about with chests exposed in front of their sons, brothers, or fathers; noble women wearing a burqa and buying goods in the market, or talking to strangers—which of these things is strictly prohibited or impermissible by Sharia? However, due to prevailing customs, traditions, and modern terminology, all modest people now consider them flaws and will criticize anyone who commits such acts. Because of this, God forbid, will all Muslims be deemed infidels? The same kind of taunting and objection exists among the common people here regarding second marriages. Therefore, to casually issue a decree of disbelief (kufr) upon this is a grave overstatement and a bold audacity against the Kalima Tayyiba. And we seek refuge in Allah, Lord of the worlds. It is proven by authentic Hadith that the daughter of the Commander of the Faithful, Siddique Akbar (RA), the sister of the Mother of the Believers Siddiqua (RA), and the sister-in-law of the Leader of the Messengers (peace and blessings be upon him), Hazrat Asma (RA), used to fetch her own household water. She would go two miles outside the city to collect date pits for her husband Hazrat Zubair's (RA) horse, carrying the bundle on her head while walking. Once, while returning, she met the Leader of the World (peace and blessings be upon him) with a group of noble Ansar. The Prophet (PBUH) called her and commanded the camel to sit so she could ride behind him. She felt shy about walking with men and remembered the sense of honor (ghayrat) of Hazrat Zubair (RA), so she did not accept. When she told Hazrat Zubair about it, he said, "By Allah, your carrying date pits on your head was harder for me than if you had ridden with the Messenger of Allah (PBUH)." It is recorded in the Sahihayn (Bukhari and Muslim):

| Narrated by Asma bint Abi Bakr (RAA): Zubair married me when he had no property or slave on earth, nor anything else except a water-carrying camel and his horse. I used to provide fodder for his horse, fetch water, and stitch the leather bucket, and I used to knead dough. I was not good at baking bread, so my neighbors from the Ansar, who were very honest women, used to bake bread for me. I used to carry date stones on my head from the land of Zubair which the Messenger of Allah (PBUH) had given to him. | Hazrat Asma bint Abu Bakr Siddique (RAA) said, "Hazrat Zubair (RA) married me while he had no wealth or slave on the land, and nothing else except a she-camel and a horse. I would feed his horse and give it water, and stitch its bucket,

and knead flour. I could not bake bread well; our neighbor Ansar women, who were very good women, would bake bread for me, and I was [carrying date pits] from the land of Hazrat Zubair (RA) which the Messenger of Allah had allotted to him." |

फतावा-ए-रज़विया जिल्द 12

...उन दिनों में। इसी तरह पिता या पीर आदि जैसे बुजुर्गों के सामने हुक्का पीना; बेटी और दामाद रात में एक ही बिस्तर पर हों, उनके पास जाना, बैठना, बातें करना और उनका वैसे ही लेटे रहना; माँ, बहन या बेटी का अपने बेटे, भाई या पिता के सामने सीना खुला रखना; शरीफ औरतों का बुर्का ओढ़कर बाजार से सौदा खरीदना, अजनबी लोगों से बातें करना—इनमें से कौन सी बात शरीयत की दृष्टि से वर्जित या नाजायज़ है? लेकिन मौजूदा रीति-रिवाजों और आधुनिक शब्दावली के कारण, अब सभी शालीन लोग इन्हें दोष मानते हैं और जो ऐसे काम करेंगे उनकी आलोचना करेंगे। क्या इस आधार पर, ईश्वर न करे, सभी मुसलमान काफ़िर मान लिए जाएंगे? इसी तरह का ताना और विरोध यहाँ के आम लोगों में पुनर्विवाह (निकाह-ए-सानी) के बारे में भी है। तो इस पर बिना किसी संकोच के कुफ़्र (काफ़िर होने) का हुक्म जारी करना एक गंभीर ज्यादती और कलिमा तैयबा पर एक बेबाक दुस्साहस है। और हम अल्लाह, दुनिया के रब से पनाह मांगते हैं। सही हदीस से साबित है कि अमीर-उल-मोमिनीन सिद्दीक-ए-अकबर (रज़ि.) की बेटी, उम्मुल मोमिनीन सिद्दीका (रज़ि.) की बहन और रसूलो के सरदार (सल्ल.) की साली हज़रत असमा (रज़ि.) अपने घर का पानी खुद भर कर लाती थीं। वे अपने पति हज़रत जुबैर (रज़ि.) के घोड़े के लिए शहर से दो मील बाहर जाकर खजूर की गुठलियां जमा करती थीं और उनकी गठरी पैदल चलते हुए अपने मुबारक सिर पर उठा कर लाती थीं। एक बार वापस आते समय रास्ते में रसूलो के सरदार (सल्ल.) एक जमात के साथ मिले। हुज़ूर (सल्ल.) ने उन्हें बुलाया और ऊँट को बिठाने का आदेश दिया ताकि वे उनके पीछे सवार हो सकें। उन्हें पुरुषों के साथ चलने में शर्म महसूस हुई और हज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) की गैरत (मर्यादा) का ख्याल आया, इसलिए उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया। जब उन्होंने हज़रत ज़ुबैर को यह बताया, तो उन्होंने कहा, "अल्लाह की कसम, तुम्हारा अपने सिर पर खजूर की गुठलियां ढोना मेरे लिए उससे ज्यादा भारी था कि तुम हुज़ूर (सल्ल.) के साथ सवार हो जातीं।" सहीहैन (बुखारी व मुस्लिम) में है:

| असमा बिंत अबी बक्र (रज़ि.) से वर्णित है कि: ज़ुबैर ने मुझसे निकाह किया जबकि उनके पास ज़मीन पर न तो कोई धन था, न कोई गुलाम और न ही पानी ढोने वाले ऊँट और घोड़े के अलावा कुछ और था। मैं उनके घोड़े को चारा देती, पानी पिलाती, चमड़े का डोल सीती और आटा गूँधती थी। मुझे रोटी बनाना अच्छी तरह नहीं आता था, इसलिए मेरी अंसार पड़ोसिनें, जो बहुत अच्छी महिलाएँ थीं, मेरे लिए रोटियाँ पका दिया करती थीं। मैं ज़ुबैर की उस ज़मीन से खजूर की गुठलियाँ अपने सिर पर ढोकर लाती थी जो अल्लाह के रसूल (सल्ल.) ने उन्हें दी थी। | हज़रत असमा बिन्त अबू बक्र सिद्दीक

(रज़ि.) ने कहा कि मुझसे हज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) ने निकाह किया, जबकि ज़मीन पर उनके पास न तो कोई धन था और न ही कोई गुलाम, और एक ऊँटनी और एक घोड़े के अलावा कुछ भी उनके पास न था। मैं उनके घोड़े को चारा देती और उसे पानी पिलाती थी और उसका डोल सीती और आटा गूँधती थी और मैं अच्छी तरह रोटी नहीं पका सकती थी, हमारी पड़ोसी अंसार औरतें थीं जो कि बहुत अच्छी औरतें थीं वे मुझे रोटियाँ पका देती थीं और मैं हज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) की उस ज़मीन से खजूर की गुठलियाँ लाती थी जो अल्लाह के रसूल ने उन्हें दी थी। |

पेज 310/688

دنوں میں۔ یوں ہی باپ یا پیر وغیرہ ہم بزرگوں کے حضور حقہ پینا، دختر و داماد رات کو ایک پلنگ پر ہوں اُن کے پس جانا پاس بیٹھنا بات کرنا ان کا بدستور لیٹے رہنا۔ ماں بہن بیٹی کا اپنے بیٹے بھائی باپ کے سامنے سینہ و پستان کھولے پھرنا، شریف عورتوں کا برقع اوڑھ کر سر بازار سودے خریدنا، اجنبی لوگوں سے باتیں کرنا، ان میں کون سی بات شرعاً ممنوع و ناجائز ہے مگر رسم و رواج و اصطلاح حادث کی وجہ سے اب تمام اہلِ حیا انہیں عیب جانتے ہیں جو ایسے امور کا مرتکب ہو اُس پر طعن کریں گے، کیا اس بنا پر معاذ اللہ سب مسلمان کافر ٹھہریں گے اسی قبیل کا طعن و اعتراض یہاں کے عوام کو نکاح ثانی میں ہے تو اس پر بے تکلف حکمِ کفر جاری کرنا سخت مجازفت اور کلمہ طیبہ پر بیباکانہ جرات ہے والعیاذ باللہ رب العلمین۔ صحیح حدیث سے ثابت کہ حضرت امیر المومنین صدیقِ اکبر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی صاحبزادی حضرت اُم المومنین صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہا کی بہن حضور سید المرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی سالی حضرت اسماء رضی اللہ تعالیٰ عنہا اپنے گھر کا پانی خود بھر کر لاتیں اپنے شوہر حضرت زبیر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے گھوڑے کے لئے بیرونِ شہر دو میل پر جا کر دانہائے خرمہ جمع فرماتیں اُن کی گٹھری پیادہ پا اپنے سر مبارک پر اٹھا کر لاتیں، ایک بار پلٹتے ہوئے راہ میں حضور سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم مع ایک جماعت انصار کرام کے ملے حضور نے انہیں بلایا اور اونٹ بیٹھنے کا حکم فرمایا کہ اپنے پیچھے سوار فرما لیں، انہوں نے مردوں کے ساتھ چلنے میں حیا کی، اور حضرت زبیر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی غیرت کا خیال آیا، نہ مانا۔ حضرت زبیر سے حال کہا، فرمایا واللہ تمہارا گٹھلیاں سر پر لے کر چلنا مجھ پر زیادہ سخت تھا اس سے کہ تم حضور کے ساتھ سوار ہو لیتیں۔ صحیحین میں ہے :

| عن اسماء بنت ابی بکر رضی اللہ تعالیٰ عنہما قالت تزوجنی الزبیر وماله فی الارض من مال ولا مملوك ولا شیئ غیر ناضح وغیر فرسه فکنت اعلف فرسه واستقی الماء واخرز عربه واعجن ولم اکن احسن اخبز وکان تخبز جارات لی من الانصار وکن نسوة صدیق وکنت انقل النوی من ارض الزبیر التی اقطعه رسول اللہ | حضرت اسماء بنت ابوبکر صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہما نے کہا مجھ سے حضرت زبیر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے نکاح کیا حالانکہ زمین میں اس کے پاس نہ کوئی مال تھا اور نہ ہی کوئی مملوک، اور ایک اونٹنی اور ایک گھوڑے کے سوا کوئی شیئ اس کے پاس نہ تھی، میں اس کے گھوڑے کو چارہ دیتی اور اس کو پانی پلاتی تھی اور اس کا ڈول سیتی اور آٹا گوندتی تھی اور میں اچھی طرح روٹی نہیں پکا سکتی تھی، ہماری ہمسائی انصار عورتیں تھی جو کہ بہت اچھی عورتیں تھیں وہ مجھے روٹیاں پکا دیتی تھی اور میں حضرت زبیر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی اس زمین سے کھجور کی گٹھلیاں لاتی تھی جو اللہ کے رسول نے انہیں دی تھی۔ |

Volume 12 Fatawa Razawiya

[Arabic Text Transcription]: صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم علی رأسی وہی منی علی ثلثی فرسخ فجئت یوما والنوی علی رأسی فلقیت رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ومعہ نفر من الانصار فدعانی ثم قال اخ اخ لیحملنی خلفہ فاستحییت ان اسیر مع الرجال وذکرت الزبیر وغیرتہ وکان اغیر الناس فعرف رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم انی قد استحییت فمضی فجئت الزبیر فقلت لقینی رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم وعلی راسی النوی ومعہ نفر من اصحابہ فأناخ لارکاب فاستحییت منہ وعرفت غیرتک فقال واللہ لحملک النوی کان اشد علی من رکوبک معہ قالت حتی ارسل ابوبکر بعد ذلک بخادم یکفیني سیاسة الفرس فکانما اعتقنی[1]۔

[Translation of the Narrative]: ...from the land that the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) had given them. I used to carry date stones on my head, and that land was two-thirds of a farsakh (approximately six kilometers) away from me. One day, while I was coming with date stones on my head, I met the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) who was accompanied by a group of Ansar. He called me and then said (to make the camel sit): "Ikh! Ikh!", so that he could seat me behind him on the camel. I felt shy to go with the men, and I remembered Zubair and his protective jealousy (ghayrah), as he was the most jealous of people. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) realized that I was shy, so he moved on. Then I came to Zubair and said, "The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) met me while date stones were on my head, and with him were a few of his companions. He made the camel sit so I could mount it. I felt shy before him and remembered your ghayrah." Zubair said, "By Allah, your carrying the date stones on your head was harder for me than your riding with the Master of the World (peace and blessings of Allah be upon him) on the camel." Hazrat Asma said, "This remained my condition until Hazrat Abu Bakr Siddiq (may Allah be pleased with him) later sent me a servant who relieved me of looking after the horse, as if he had set me free." (T)

[Main Text]: Those who pronounce takfir (infidelity) should speak the truth: would the respected and noble citizens among them allow their noble family ladies to fetch house water from a well, go two kos (approx. 4 miles) from the city to cut grass for horses, and bring bundles of grass on their heads through the market? Not behind a brother-in-law, but even behind their own real brothers, among men...

[1] Sahih Bukhari, Kitab an-Nikah, Qadimi Kutub Khana, Karachi, 2/86 Page 311 of 688

जिल्द बारहवीं फ़तावा रज़विया

[अरबी पाठ का अनुवाद]: ...उस ज़मीन से जो उन्हें रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने दी थी, अपने सर पर गुठलियाँ उठा कर लाती थी जबकि वह ज़मीन मुझसे दो-तिहाई फ़र्सख (यानी लगभग छह किलोमीटर) दूर थी। एक दिन मैं गुठलियाँ सर पर उठा कर आ रही थी तो मैं रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से मिली और आपने मुझे बुलाया फिर (ऊँट को बिठाने के लिए) फ़रमाया: "इख! इख!", ताकि मुझे अपने पीछे ऊँट पर बिठा लें। मुझे शर्म आई कि मैं मर्दों के साथ चलूँ, मुझे ज़ुबैर और उनकी ग़ैरत (स्वाभिमान) याद आई जबकि वह सब लोगों से ज़्यादा ग़यूर थे। जनाब रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने पहचान लिया कि मैं शर्म कर रही हूँ, इसलिए आप तशरीफ़ ले गए। फिर मैं ज़ुबैर के पास आई और उनसे कहा कि मुझे रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मिले जबकि गुठलियाँ मेरे सर पर थीं, आपके साथ कुछ सहाबा किराम थे, आपने ऊँट को बिठाया ताकि उस पर सवार हो जाऊँ मुझे इससे शर्म आई और मैंने तुम्हारी ग़ैरत को याद किया। ज़ुबैर ने कहा, "ख़ुदा की क़सम, तुम्हारा गुठलियों को सर पर उठाना सैयद-ए-आलम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ ऊँट पर सवार होने से मुझ पर ज़्यादा सख्त (भारी) था।" हज़रत अस्मा ने कहा, "मेरा यही हाल रहा यहाँ तक कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने इसके बाद मेरी तरफ़ एक ख़ादिम भेजा जो मुझसे घोड़े के इंतज़ाम से किफ़ायत करता था (ज़िम्मेदारी संभाल ली), मानो उन्होंने मुझे आज़ाद कर दिया।" (त)

[मुख्य पाठ]: तकफ़िर (काफ़िर ठहराने) करने वाले हज़रात ज़रा सच कहें, क्या उनके यहाँ के मोअज़्ज़ज़ शरीफ़ शहरी लोग इसे रवा (उचित) रखेंगे कि उनकी शरीफ़ ख़ानदानी बीवियाँ घर का पानी कुएँ से भर कर लाएँ शहर से दो-दो कोस पर जाकर घोड़े के लिए घास छीलें, घास का गट्ठा सर पर रखकर सर-ए-बाज़ार लाएँ बहनोई नहीं बल्कि अपने हक़ीक़ी भाई ही के पीछे मर्दों...

[1] सही बुखारी, किताबुन निकाह, क़दीमी कुतुब खाना, कराची, 2/86 पेज 311 of 688

جلد دو از دہ ہم فتاویٰ رضویہ

صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم علی رأسٰی وہی منی علی ثلثی فرسخ فجئت یوما والنوی علی رأسٰی فلقیت رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ومعہ نفر من الانصار فدعانٰی ثم قال اخ اخ لیحملنی خلفہ فاستحییت ان اسیر مع الرجال وذکرت الزبیر وغیرتہ وکان اغیر الناس فعرف رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم انی قد استحییت فمضی فجئت الزبیر فقلت لقینی رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم وعلی راسی النوی ومعہ نفر من اصحابہ فأناخ لارکاب فاستحییت منہ وعرفت غیرتك فقال واللہ لحملك النوی کان اشد علی من رکوبك معہ قالت حتی ارسل ابوبکر بعد ذلك بخادم یکفینی سیاسۃ الفرس فکانما اعتقنی[1]۔

زمین سے جو کہ انہیں رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے دی تھی اپنے سر پر گھٹلیاں اٹھا کر لاتی تھی جبکہ وہ زمین مجھ سے دو تہائی فرسخ (یعنی تقریباً چھ کلومیٹر) دور تھی، ایک دن میں گھٹلیاں سر پر اٹھا کر آرہی تھی پس میں رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے ملی اور آپ نے مجھے بلایا پھر (اونٹ کو بٹھانے کے لئے) فرمایا: اخ اخ، تا کہ مجھے اپنے پیچھے اونٹ پر بٹھا لیں، مجھے شرم آئی کہ میں مردوں کے ساتھ چلوں، مجھے زبیر اور اس کی غیرت یاد آئی جبکہ وہ سب لوگوں سے زیادہ غیور تھے، جناب رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے پہچان لیا کہ میں شرم کر رہی ہوں، چنانچہ آپ تشریف لے گئے، پھر میں زبیر کے پاس آئی اور ان سے کہا کہ مجھے رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ملے جبکہ گھٹلیاں میرے سر پر تھیں آپ کے ساتھ چند صحابہ کرام تھے آپ نے اونٹ کو بٹھایا تاکہ اس پر سوار ہو جاؤں مجھے اس سے شرم آئی اور میں نے تمہاری غیرت کو یاد کیا، زبیر نے کہا بخدا تمہارا گھٹلیوں کو سر پر اٹھانا سید عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے ساتھ اونٹ سوار ہونے سے مجھ پر زیادت سخت تھا۔ حضرت اسماء نے کہا

میرا یہ حال رہا حتیٰ کہ حضرت ابوبکر صدیق رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اس کے بعد میری طرف ایک خادم بھیجا جو مجھ سے گھوڑے کے انتظام سے کفایت کرتا تھا گویا کہ اس نے مجھے آزاد کر دیا۔(ت)

تکفیر کرنے والے حضرات ذرا سچ کہیں ان کے یہاں کے معزز شریف شہری لوگ کیا اسے روا رکھیں گے کہ ان کی شریف خاندانی بیبیاں گھر کا پانی کنویں سے بھر کر لائیں شہر سے دو دو کوس پر جا کر گھوڑے کیلئے گھاس چھیلیں گھاس کا گٹھا سر پر رکھ کر سربازار لائیں، بہنوئی نہیں خاص اپنے حقیقی بھائی ہی کے پیچھے مردوں

[1] صحیح بخاری کتاب النکاح قدیمی کتب خانہ کراچی ۸۶/۲ Page 311 of 688

Fatawa Razawiya Volume 12

...riding on camels in a gathering; would they not consider these things as defects? Would they not taunt them? If not, then it's not just verbal talk; go ahead and show it. And if yes, then first speak about yourselves, then confront other Muslims. I can present numerous hadiths of this kind, but for the wise, one word is sufficient, and for the unjust, even an office of ignorance (is not enough). Rather, if one looks closely, another reason could emerge: that someone in these lands considers second marriage prohibited by Sharia and there is no way to declare them disbelievers at all. For example, Zaid might think that although second marriage is inherently permissible, in these times and cities, people taunt widow remarriage, thus falling into severe major sins, condemning that woman, and feeling aversion towards her. Therefore, in such a place, his action becomes a cause for Muslims to fall into great destructions and for the gates of major sins and following Satan to open for them. And a permissible act that leads to such things no longer remains permissible due to this accidental reason; it becomes something to be avoided according to Sharia. Example number one: mentioning high truths and precious subtleties before common people that are beyond their understanding and categories. While spreading knowledge is obligatory and concealing it is forbidden, here common people are expected to fall into fitna (tribulation) and sin. Therefore, such a statement before them is prohibited by Sharia. It is stated in a Hadith:

[Box 1] Tell people what they recognize. Do you want Allah and His Messenger to be denied? (Narrated by Bukhari in his Sahih from the Commander of the Faithful Ali, may Allah the Almighty honor his face, as a mawquf narration, and by ad-Daylami in Musnad al-Firdaws from him, from the Prophet, peace and blessings of Allah be upon him). Tell people those things which they understand. Do you want people to deny Allah and His Messenger? (Bukhari narrated this in his Sahih from the Commander of the Faithful Hazrat Ali, may Allah the Almighty honor his noble face, as a mawquf narration. And Ilmi narrated it in Musnad al-Firdaws from Hazrat Ali al-Murtaza, may Allah be pleased with him, and he narrated it from the Holy Prophet, peace and blessings of Allah be upon him. (T))

Hadith 2: [Box 2] We were commanded to speak to people according to the measure of their intellects. (Narrated by Imam Abu Abd al-Rahman al-Sulami, and through his chain, ad-Daylami and al-Hasan ibn Sufyan in his Musnad, and Abu al-Hasan al-Tamimi in Kitab al-Aql from...) We have been commanded to talk to people according to their intellects. This was narrated by Imam Abd al-Rahman al-Sulami, and through

his chain by ad-Daylami and Hasan bin Sufyan in their Musnad, and by Abu al-Hasan Tamimi in Kitab al-Aql from Hazrat Abdullah...

[Footnotes] 1 Sahih al-Bukhari, Book of Knowledge, Chapter: Whoever singled out a group with knowledge etc., Mujtabai Press, Delhi, 1/24. 2 Al-Firdaws bi-Ma'thur al-Khitab, Hadith, Dar al-Baz Press, Makkah al-Mukarramah, 1/398.

फतावा रज़विया, जिल्द 12

...के मजमे में ऊंट पर चढ़कर घूमना, क्या वे इन बातों को ऐब नहीं मानेंगे? क्या वे उन पर ताना नहीं मारेंगे? अगर नहीं, तो यह सिर्फ जबानी बात नहीं है, ज़रा करके दिखाएं। और अगर हाँ, तो पहले अपने बारे में बताएं फिर दूसरे मुसलमानों पर मुंह खोलें। मैं इस तरह की बहुत सी हदीसें पेश कर सकता हूँ, लेकिन अक्लमंद के लिए एक लफ्ज़ काफी है और बेइंसाफ के लिए जहालत का दफ्तर भी कम है। बल्कि अगर बारीकी से देखा जाए तो एक वजह यह भी निकल सकती है कि कोई शख्स इन शहरों में दूसरी शादी को शरीयत में मना समझे और उसे काफिर करार देने का कोई रास्ता ही न हो। मिसाल के तौर पर जैद यह गुमान करे कि हालांकि दूसरी शादी असल में जायज़ है, लेकिन इन ज़मानों और शहरों में बेवा (विधवा) के निकाह पर लोग ताना मारते हैं जिससे वे बड़े गुनाहों में मुब्तला होते हैं, उस औरत की बुराई करते हैं और उससे नफरत करते हैं। तो यहाँ उसका यह अमल मुसलमानों के ऐसे बड़े विनाश का कारण बन गया और उनके लिए बड़े गुनाहों और शैतान की पैरवी के दरवाज़े खुल गए। और जो जायज़ काम ऐसे मामलात की तरफ ले जाए, वह इस वजह से जायज़ नहीं रहता बल्कि शरीयत के मुताबिक उससे बचना ज़रूरी हो जाता है। मिसाल नंबर एक: आम लोगों के सामने ऐसी ऊँची हकीकतें और बारीक बातें बयान करना जो उनकी समझ और श्रेणियों से बाहर हों। हालांकि इल्म फैलाना फर्ज है और उसे छुपाना हराम है, लेकिन यहाँ आम लोगों के फितने में पड़ने और गुनाहगार होने का अंदेशा है। इसलिए उनके सामने ऐसा बयान शरीयत में मना है। हदीस में है:

[कोषठक 1] अरबी: हद्दिसून्नासा बिमा यारिफून अतुहिब्बूना अन युकाज्ज़िबुल्लाहु व रसूलुहू - रवाहल बुखारी फ़ी सहीहिही अन अमीरिल मोमिनीन अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहु मौकूफन अलैहि वद दैलमी फ़ी मुसनदिल फ़िरदौस अनहु अनिन नबिय्यि सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम। उर्दू अनुवाद: लोगों से वह बातें कहो जिन्हें वे पहचानें, क्या तुम चाहते हो कि लोग अल्लाह और उसके रसूल को झुठलाएं (इसे बुखारी ने अपनी सहीह में अमीरुल मोमिनीन हजरत अली कर्रमल्लाहु तआला वज्हहुल करीम से मौकूफ़न रिवायत किया और इल्मी ने मुसनदुल फ़िरदौस में हजरत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से और उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से रिवायत किया। (त))

हदीस २: [कोषठक 2] अरबी: उमिर्ना अन नुकल्लिमुन्नास अला कदरे उकूलिहिम - रवाहल इमामु अबू अब्दिर रहमानिस सुल्मी व मिन तरीकिहिद दैलमी वल हसनु बिन सुफियान फ़ी मुसनदिही व अबुल हसनित तमीमी फ़ी किताबिल अक्लि अन... उर्दू अनुवाद: हमें हुक्म है कि लोगों से उनकी अक्ल के मुताबिक कलाम (बात) करें। इसे इमाम अब्दुर रहमान सुल्मी और उनके तरीके से दैलमी और हसन बिन सुफियान ने अपनी मुसनद में और अबुल हसन तमीमी ने किताबुल अक्ल में हजरत अब्दुल्लाह...

[पाद टिप्पणियाँ] 1 सहीह अल-बुखारी, किताबुल इल्म, बाब: मन खस्सा बिल इल्म कौमन... मुतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/24 2 अल-फ़िरदौस बि-मासूरुल खत्ताब, हदीस, दारुल बाज़ प्रेस, मक्का मुकर्रमा, 1/398

کے مجمع میں اُونٹ پر چڑھ رہی پھریں، کیا وہ ان باتوں کو عیب نہ جانیں گے، کیا وہ ان پر طعن نہ کریں گے، اگر نہیں تو زبانی جمع خرچ کی نہیں سہی، ذرا کر دکھائیں، اور اگر ہاں تو پہلے اپنی نسبت بتائیں پھر اور مسلمانوں پر منہ آئیں، میں اس قسم کی بکثرت حدیثیں پیش کر سکتا ہوں مگر عاقل کو ایک حرف کافی اور نامنصف کو دفتر نادانی بلکہ اگر نظر تدقیق کیجئے تو ایک وجہ وہ بھی نکل سکتی ہے کہ کوئی شخص ان بلاد میں نکاح ثانی کو ممنوع شرعی جانے اور اس کی تکفیر کی طرف اصلاً راہ نہ ہو وہ یہ کہ مثلاً زید زعم کرے کہ نکاح ثانی فی نفسہ اگر چہ مباح ہے مگر ان اعصار و امصار میں نکاح بیوہ پر لوگ طعنہ زن ہو کر کبیرہ شدیدہ میں واقع ہوتے اور اس عورت کی مذمت کرتے اور اس سے نفرت رکھتے ہیں تو یہاں اس کا فعل مسلمانوں کے ایسے مہالک عظیمہ میں واقع ہونے اور اُن پر دروازہ کبائر و اتباع شیطان کھلنے کا باعث ہو گیا ہے اور جو مباح ایسے امور کی طرف منجر ہو اس عارض کو وجہ سے مباح نہیں رہتا شرعاً قابلِ احتراز ہو جاتا ہے۔ نظیر نمبرا اس کی عوام کے سامنے حقائق عالیہ و دقائق غالیہ کا ذکر جو اُن کے مدارک واقسام سے ورا ہو، کہ اشاعت علم فرض اور کتمان حرام، مگر یہاں عوام کا فتنہ میں پڑنا گناہ میں مبتلا ہونا متوقع، لہذا ان کے سامنے ایسا بیان شرعاً ممنوع۔ حدیث میں ہے :

[Box 1] حدثوا الناس بما یعرفون اتحبون ان یکذب اللہ و رسولہ -رواہ البخاري في صحیحہ عن امیر المؤمنین علی کرم اللہ تعالی وجھہ موقوفا علیہ والد یلمي في مسند الفردوس عنہ عن النبی صلی اللہ تعالی علیہ وسلم- لوگوں سے وہ باتیں کہو جنہیں وہ پہچانیں، کیا یہ چاہتے ہو کہ لوگ اللہ ورسول کی تکذیب کریں (اس کو بخاری نے اپنی صحیح میں امیر المومنین حضرت علی کرم اللہ تعالیٰ

وجہہ الکریم سے موقوفاً روایت کیا اور علمی نے مسند الفردوس میں حضرت علی مرتضیٰ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے اور انہوں نے نبی کریم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے روایت فرمایا۔ (ت)

حدیث ۲: [Box 2] امرنا ان نکلم الناس علی قدر عقولھم -رواہ الامام ابو عبد الرحمن السلمی ومن طریقہ الدیلمی والحسن بن سفیان فی مسندہ وابوالحسن التمیمي في کتاب العقل عن ہمیں حکم ہے کہ لوگوں سے بقدر ان کے عقول کے کلام کریں۔ اس کو امام عبدالرحمن سلمی اور ان کے طریق سے دیلمی اور حسن بن سفیان نے اپنی مسند میں اور ابوالحسن تمیمی نے کتاب العقل میں حضرت عبداللہ

[Footnotes] 1 صحیح البخاری کتاب العلم باب من خص بالعلم قوما الخ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۴ 2 الفردوس بما ثور الخطاب حدیث مطبع دار الباز مکة المکرمة ۱ / ۳۹۸

Fatawa-e-Razvia Volume 12

Ibn Abbas (may Allah be pleased with them) narrated from the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him). | Reported by Ibn Abbas (may Allah be pleased with them), and he narrated from the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him). (T)

Hadith 3: "None of you should relate a hadith to a people that their minds cannot grasp, but it will be a trial for them."[1] Reported by al-Uqayli, Ibn al-Sunni, and Abu Nu'aym in Al-Riyadah and others from the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him). | No one among you should narrate a Hadith to a group of people that is beyond their understanding, lest that Hadith becomes a trial (fitnah) for them. (Uqayli, Ibn al-Sunni, and Abu Nu'aym reported it in Al-Riyadah, and other Hadith scholars reported it from Hazrat Abdullah bin Abbas (may Allah be pleased with them), and he from the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him). (T))

In another narration, it says: "Do not relate to my Ummah any of my Hadiths except what their minds can bear, lest it be a trial for them."[2] Reported from him by Abu Nu'aym and via his chain by al-Daylami. In it, it says: Ibn Abbas used to conceal some things from his hadith and reveal them to the people of knowledge. | Do not narrate my Hadiths to my Ummah except those which their intellects can grasp, lest that Hadith becomes a trial. Abu Nu'aym and, through his chain, Al-Daylami reported this from Hazrat Abdullah bin Abbas (may Allah be pleased with them). It mentions that Hazrat Ibn Abbas (may Allah be pleased with them) used to keep some things hidden from the Hadith of the Holy Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) and would only reveal them to the people of knowledge. (T)

In a third narration, it says: "O Ibn Abbas, do not relate to a people a hadith that their minds cannot bear."[3] - reported from him. | O Ibn Abbas! Do not narrate such a Hadith to the people that does not come within their understanding. (In Musnad al-Firdous)

---

[1] Ithaf al-Sa'adah, with reference to al-Uqayli in al-Du'afa, Explanation of what has been changed from the words of sciences, Dar al-Fikr Press, Beirut, 1/253. [2] Al-Firdous bi-Ma'thur al-Khitab, Hadith, Dar al-Baz Press, Makkah al-Mukarramah, 5/17. [3] Al-Firdous bi-Ma'thur al-Khitab, Hadith, Dar al-Baz Press, Makkah al-Mukarramah, 5/359.

फ़तावा-ए-रजविया जिल्द 12

इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से रिवायत किया। | इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से और उन्होंने नबी अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से रिवायत किया। (त)

हदीस 3: "तुम में से कोई व्यक्ति किसी क़ौम से कोई ऐसी हदीस बयान न करे जिसे वे न समझ सकें, वरना वह उनके लिए फ़ितना बन जाएगी।"[1] अक़ीली, इब्न अल-सुन्नी और अबू नुऐम ने 'अर-रियाज़ह' में और अन्य मुहद्दिसों ने इसे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से रिवायत किया। | तुम में से कोई शख़्स किसी क़ौम से कोई ऐसी हदीस बयान नहीं करेगा जो उनकी समझ से परे हो, वरना वह हदीस उनके लिए फ़ितना (अशांति/परीक्षण) बन जाएगी। (इसे अक़ीली, इब्न सुन्नी और अबू नुऐम ने 'अर-रियाज़ह' में और अन्य मुहद्दिसों ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से और उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से रिवायत किया। त)

दूसरी रिवायत में है: "मेरी उम्मत को मेरी हदीसों में से वही बयान करो जिसे उनकी अक्लें बर्दाश्त कर सकें, ताकि वह उनके लिए फ़ितना न बन जाए।"[2] इसे अबू नुऐम ने उनसे और उनके माध्यम से दैलमी ने रिवायत किया। इसमें है कि: इब्ने अब्बास अपनी हदीसों में से कुछ चीज़ें छुपाते थे और उन्हें केवल अहल-ए-इल्म (विद्वानों) पर ज़ाहिर करते थे। | मेरी उम्मत से मेरी हदीसें बयान न करो सिवाय उनके जिन्हें उनकी अक्लें समझ सकें, वरना वह हदीस फ़ितना बन जाएगी। इसे हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से अबू नुऐम ने और उनके तरीक़े से दैलमी ने रिवायत किया। इसमें है कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की हदीस से कुछ चीज़ें पोशीदा (गुप्त) रखते थे और उन्हें अहल-ए-इल्म पर ज़ाहिर फ़रमाते थे। (त)

तीसरी रिवायत में है: "ऐ इब्ने अब्बास! लोगों से ऐसी हदीस बयान न करो जिसे उनकी अक्लें बर्दाश्त न कर सकें।"[3] - उनसे रिवायत है। | ऐ इब्ने अब्बास! लोगों से वह हदीस बयान न करो जो उनकी अक्ल में न आए। (इसकी मुसनद अल-फिरदौस)

---

[1] इत्हाफ़ुस सादा, बहवाला अक़ीली फ़िज़्ज़ुआफ़ा, बयान मा बदल मिन अल्फ़ाज़ुल उलूम, मतबा दारुल फ़िक्र, बैरूत, 1/253. [2] अल-फिरदौस बि-मासूरुल खिताब, हदीस, मतबा दारुल बाज़, मक्का

अल-मुकर्रमा, 5/17. [3] अल-फिरदौस बि-मासूरुल खिताब, हदीस, मतबा दारुल बाज़, मक्का अल-मुकर्रमा, 5/359.

पृष्ठ 313/688

فتاوی رضویہ جلد دو از دہم

ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما عن النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم۔ | ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما سے اور انہوں نے نبی اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے روایت کیا۔ (ت)

حدیث ۳: ماحدث احدکم قوما بحدیث لا یفھمونہ الا کان فتنۃ علیھم- ۱ رواہ العقیل وابن السنی وابو نعیم فی الریاضۃ وغیرھم عن النبي صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم - | تم میں سے کوئی شخص کسی قوم سے کوئی ایسی حدیث کہ ان کی سمجھ سے ورا ہو بیان نہ کرے گا مگر یہ کہ وہ حدیث ان پر فتنہ ہو جائے گی (اس کو عقیلی ، ابن سنی اور ابو نعیم نے الریاضۃ میں اور دیگر محدثین نے حضرت عبداللہ ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے اور انہوں نے نبی اکرم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے روایت کیا۔ ت)

دوسری روایت میں ہے : لا تحدثوا امتی من احادیثی الاماتحتملہ عقولھم فیکون فتنۃ علیھم - ۲ رواہ عنہ ابو نعیم ومن طریقہ الدیلمي وفیہ فکان ابن عباس یخفی اشیاء من حدیثہ و یفشیھا الی اھل العلم ۔ | میری اُمت سے میری حدیثیں نہ بیان کرو مگر وہ جو ان کی عقلیں اٹھالیں کہ وہ حدیث فتنہ ہو جائے گی۔ اس کو حضرت عبداللہ ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما سے ابو نعیم نے اور ان کے طریق سے دیلمی نے روایت کیا اور اس میں ہے کہ حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہما نبی کریم صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی حدیث سے کچھ اشیاء مخفی رکھتے اور انہیں اہل علم پر ظاہر فرماتے۔ت)

تیسری روایت میں ہے : یاابن عباس لا تحدث قوما حدیثاً لا تحتملہ عقولھم ۳ - رواہ عنہ | اے ابن عباس ! لوگوں سے وہ حدیث بیان نہ کرو جو ان کی عقل میں نہ آئے۔ (اس کی مسند الفردوس

١ اتحاف السادة بحواله العقيلي في الضعفاء بيان ما بدل من الفاظ العلوم مطبع دار الفكر بيروت ١ / ٢٥٣ ٢ الفردوس بمأثور الخطاب حديث مطبع دار الباز مكة المكرمة ٥/ ١٧ ٣ الفردوس بمأثور الخطاب حديث مطبع دار الباز مكة المكرمة ٥/ ٣٥٩

Fatawa Rizwia - Volume 12

In Musnad al-Firdous: It is narrated from Hazrat Ibn Abbas (may Allah be pleased with both of them). (T)

Hadith 4: Hazrat Abdullah bin Mas'ud (may Allah be pleased with him) says: "Whenever you narrate a hadith to a people whose intellects cannot grasp it, it becomes a fitna (trial/discord) for some of them." - Narrated by Muslim in the preface of his Sahih. So when you narrate a hadith to a people which their intellect cannot reach, it will surely become a fitna for some among them. I say: Hazrat Imam Ahmad (may Allah be pleased with him) concealing the statement about the Holy Prophet's (peace and blessings be upon him) vision of his Lord on the night of Ascension (Mi'raj) in some of his gatherings is from this same chapter, as Al-Zurqani mentioned. And an authentic hadith is narrated from Hazrat Abu Huraira (may Allah be pleased with him) that he said: "I memorized two vessels of knowledge from the Radiant Prophet (peace and blessings be upon him). As for one of them, I have spread it; and as for the other, if I were to spread it, this throat would be cut." This was narrated by Al-Bukhari. (T)

Example 2: Leaving the tail of the turban (shamla) is certainly a Sunnah, but where the illiterate/uncivilized mock it, the later scholars have chosen to avoid it outside of prayer. The motive for this is the preservation of the religion of the common people. The great researcher Shaykh Maulana Abdul Haq Muhaddith Dehlavi (may Allah sanctify his mighty soul) says in the treatise 'Adab-e-Libas' (Etiquettes of Dress): "There are many logical arguments for letting the tail of the turban hang, and they consider it an emphasized Sunnah. However, the later scholars do not let the tail hang except for the five daily prayers due to the taunting and mockery of the illiterate of the time." End of summary. (T)

---

1. Sahih Muslim, Chapter on the prohibition of narrating from weak narrators, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/9.
2. Sahih al-Bukhari, Book of Knowledge, Chapter on the preservation of knowledge, Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/23.
3. Risala Adab-e-Libas, Abdul Haq Dehlavi.

Page 314 of 688

फ़तावा रज़विया - जिल्द 12

मुसनद अल-फ़िरदौस में: हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा) से रिवायत किया गया है। (त)

हदीस 4: हज़रत अब्दुल्ला बिन मसूद (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) फ़रमाते हैं: "जब भी तुम किसी कौम के सामने ऐसी हदीस बयान करोगे जिसे उनकी अक्ल न समझ सके, तो वह उनमें से कुछ के लिए फ़ितना (गुमराही/अशांति) बन जाएगी।" - मुस्लिम ने अपनी सहीह की प्रस्तावना में रिवायत किया है। तो जब तुम किसी कौम को वह हदीस बताओगे जिस तक उनकी अक्ल न पहुँच सके, तो वह यकीनन उनमें से किसी न किसी के लिए फ़ितना बन जाएगी। मैं कहता हूँ: हज़रत इमाम अहमद (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) का अपनी कुछ महफ़िलों में शब-ए-मेराज के अवसर पर नबी-ए-अकदस (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) द्वारा अल्लाह के दीदार के कथन को छिपाना इसी अध्याय से है, जैसा कि ज़रकानी ने ज़िक्र किया है। और हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से सहीह हदीस मरवी है कि उन्होंने कहा: "मैंने नबी-ए-अनवर (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) से इल्म (ज्ञान) के दो बर्तन याद किए। उनमें से एक को तो मैंने लोगों में फैला दिया, लेकिन दूसरा ऐसा है कि अगर मैं उसे फैलाऊँ तो यह गला काट दिया जाए।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (त)

नज़ीर 2: इमामे का शमला (पगड़ी का किनारा) छोड़ना यकीनन सुन्नत है, लेकिन जहाँ अनपढ़ लोग उस पर हँसते हों, वहाँ बाद के विद्वानों (उलमा-ए-मुताअख़िरीन) ने नमाज़ के अलावा अन्य स्थितियों में इससे बचने का विकल्प चुना है। जिसका उद्देश्य आम लोगों के दीन (धर्म) की हिफ़ाज़त करना है। शेख़ मुहक़्क़िक़ मौलाना अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी (कुद्दिसा सिर्रुहुल कवी) 'रिसाला आदाब-ए-लिबास' में फ़रमाते हैं: "शमला छोड़ने पर बहुत सी क़ियासी (तार्किक) दलीलें मौजूद हैं और वे इसे सुन्नत-ए-मुअक्कदा समझते हैं। लेकिन ज़माने के अनपढ़ों के तानों और मज़ाक से बचने के लिए, बाद के विद्वान पांच वक्त की नमाज़ के अलावा शमला नहीं छोड़ते हैं।" संक्षिप्त में समाप्त। (त)

---

1. सहीह मुस्लिम, बाब अन-नही अनिर रिवायती अनिज़ ज़ुअफ़ा, कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/9।
2. सहीह अल-बुखारी, किताबुल इल्म, बाब हिफ़्ज़ुल इल्म, कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/23।
3. रिसाला आदाब-ए-लिबास, अब्दुल हक देहलवी।

فی مسند الفردوس۔ میں حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت فرمایا۔(ت)

حدیث ۴: حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں: ما انت بمحدث قوماً حدیثاً لا تبلغہ عقولھم الا کان لبعضھم فتنۃ 1- رواہ مسلم فی مقدمۃ صحیحہ۔ تو جب کسی قوم سے وہ حدیث بیان کرے گا جس تک ان کی عقل نہ پہنچے وہ ضرور ان میں کسی پر فتنہ ہو جائے گی۔ قلت و من ھذا الباب ماکان الامام احمد رضی اللہ تعالیٰ عنہ یخفی فی بعض مجالسہ القول برویۃ النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم ربہ لیلۃ المعراج ذکرہ الزرقانی و قد صح عن ابی ہریرۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہ انہ قال حفظت عن النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم وعائین اما احدھما فبثثتہ واما الاخر فلو بثثتہ قطع ھذا البلعوم 2- رواہ البخاری۔ قلت (میں کہتا ہوں) اپنی بعض مجالس میں حضرت امام احمد رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا شبِ معراج نبی اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے رؤیتِ باری تعالیٰ کے قول پر چھپانا اسی باب سے ہے جیسا کہ زرقانی نے ذکر کیا، اور حضرت ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے حدیثِ صحیح مروی ہے کہ میں نے نبی انور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم سے علم کی دو ٹونیاں یاد کیں، ان میں سے ایک کو تو میں نے لوگوں میں پھیلایا، اور رہی دوسری تو اس کو اگر پھیلاؤں تو گلا کاٹ دیا جائے۔ اس کو بخاری نے روایت فرمایا۔(ت)

نظیر ۲: عمامہ کا شملہ چھوڑنا یقیناً سنّت مگر جہاں جٹّال اس پر ہنستے ہوں وہاں علمائے متأخرین نے غیر حالتِ نماز میں اس سے بچنا اختیار فرمایا جس کا منشا وہی حفظِ دینِ عوام ہے۔

شیخ محقق مولانا عبدالحق محدث دہلوی قدس سرہ القوی رسالہ آدابِ لباس میں فرماتے ہیں:

ارسالِ را بر ارسالِ شملہ براہینِ قیاسی بسیارست و ارسالِ آں سنّتِ مؤکدہ دانند و علمائے متأخرین سوائے صلوات پنجگانہ را ارسال ندارند برائے طعن و مسخرہ جٹّال زمانہ 3 اھ ملخصاً۔ فقہاء کے

پاس شملہ چھوڑنے پر بہت سے دلائلِ قیاسیہ موجود ہیں اور وہ اس کو سنتِ مؤکدہ سمجھتے ہیں مگر علماءِ متأخرین جٹال زمانہ کے طعن و تمسخر سے بچنے کے لئے سوائے نماز پنجگانہ کے شملہ نہیں چھوڑتے ہیں اھ ملخصاً(ت)

---

1 صحیح المسلم باب النھی عن الروایۃ عن الضعفاء الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۹ 2 صحیح البخاری کتاب العلم باب حفظ العلم قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/۲۳ 3 رسالہ آدابِ لباس عبدالحق دہلوی

Fatawa Ridawiyya, Volume 12

Example 3: The ten recitations (Qira'at) of the Great Quran are true and are revelation "sent down from Allah". The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) recited them in all ten ways, and they reached us from the Prophet through the Companions, then through the Successors (Tabi'in). Therefore, reciting each of them is undoubtedly the recitation of the Quran, a light of faith, and a means of gaining the pleasure of the Merciful. Despite this, scholars have stated that whatever recitation is prevalent in a certain place, only that should be recited before the common people in prayer and otherwise. They should not recite a different recitation with which people's ears are unfamiliar, lest they laugh at it or mock it and thus ruin their faith. In Al-Hindiyya it is stated:

[Box 1] "In Al-Hujjah, it is stated: Reciting the Quran in all seven recitations and narrations is permissible. However, I consider it correct that the Quran should not be recited in an unusual way with 'Imala' (inclination of sound) and strange narrations. The same is mentioned in Tatar-Khaniyah." In Al-Hujjah, it is written that reciting the Holy Quran in all seven recitations and all narrations is permissible, but I consider it correct that the Holy Quran should not be recited in unfamiliar recitations with imalat and strange narrations, as it is in Tatar-Khaniyah. (T)

In Radd al-Muhtar it is stated:

[Box 2] "Because some foolish people say what they do not know, and thus they fall into sin and misery. It is not appropriate for Imams to lead the common people into what contains a loss for their religion. One should not recite before them recitations like those of Abu Ja'far, Ibn 'Amir, 'Ali bin Hamzah, and Al-Kisa'i, in order to protect their religion. For they might belittle or laugh at it, even though all recitations and narrations are sound and eloquent. Our scholars have chosen the recitation of Abu 'Amr and Hafs from 'Asim. End from Tatar-Khaniyah from Fatawa al-Hujjah." Because some fools will say things they do not know and will thus be involved in sin and misfortune, and it is not appropriate for the imams to incite the common people to that which contains loss for their religion. To protect the religion of the common people, one should not recite the Holy Quran in the recitations of Abu Ja'far, Ibn Amir, Ali bin Hamza and Kisai before them because they might consider it trivial and laugh at it, even though all recitations and narrations are correct and eloquent. Our masters have chosen the recitation of Abu Amr and Hafs narrated from Asim. End. Tatar-Khaniyah from Fatawa-e-Hujjah. (T)

1. Fatawa Hindiyya, Section Four on Recitation, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/79.
2. Radd al-Muhtar, Section on Recitation, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 1/362.

फ़तावा रज़विया, खंड 12

उदाहरण 3: महान कुरान की दसों क़िराअतें (पाठ शैलियाँ) सत्य हैं और "अल्लाह की ओर से अवतरित" हैं। पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने इन्हें दसों तरह से पढ़ा, और वे पैगंबर से सहाबा, सहाबा से ताबिईन के माध्यम से हम तक पहुँचीं। इसलिए, उनमें से हर एक का पाठ निस्संदेह कुरान का पाठ, ईमान का नूर और रहमान की प्रसन्नता का साधन है। इसके बावजूद, विद्वानों ने फरमाया है कि जहाँ जो क़िराअत प्रचलित हो, नमाज़ और अन्य अवसरों पर आम लोगों के सामने वही क़िराअत पढ़ी जाए। दूसरी ऐसी क़िराअत न पढ़ें जिससे उनके कान परिचित न हों, कहीं ऐसा न हो कि वे उस पर हँसें या उपहास करें और अपना दीन (धर्म) बिगाड़ लें। अल-हिन्दिया में है:

[बॉक्स 1] "हुज्जाह में है: सातों क़िराअतों और सभी रिवायतों में कुरान पढ़ना जायज़ है, लेकिन मैं इस बात को सही समझता हूँ कि अपरिचित क़िराअत में 'इमाला' और अजीब रिवायतों के साथ कुरान न पढ़ा जाए, जैसा कि तातारखानिया में है।" हुज्जाह में है कि सातों क़िराअतों और तमाम रिवायतों में कुरान-ए-मजीद पढ़ना जायज़ है लेकिन इस बात को दुरुस्त समझता हूँ कि नामानूस क़िराअत में इमालात और रिवायत-ए-ग़रीबा के साथ कुरान-ए-मजीद न पढ़ा जाए, जैसा कि तातारखानिया में है। (त)

रद्द अल-मुह्तार में है:

[बॉक्स 2] "क्योंकि कुछ मूर्ख लोग वह कहेंगे जो वे नहीं जानते, और इस तरह वे पाप और दुर्भाग्य में गिर जाएँगे। इमामों के लिए यह उचित नहीं है कि वे आम लोगों को ऐसी चीज़ की ओर ले जाएँ जिसमें उनके दीन का नुकसान हो। उनके सामने अबू जाफ़र, इब्न आमिर, अली बिन हमज़ा और किसाई जैसी क़िराअत में कुरान नहीं पढ़ना चाहिए ताकि उनके दीन की रक्षा हो सके। क्योंकि हो सकता है कि वे इसे हल्का समझें या इस पर हँसें, भले ही सभी क़िराअतें और रिवायतें सही और स्पष्ट हैं। हमारे आचार्यों (मशाईख) ने अबू अम्र और असीम से रिवायत हाफ़्स की क़िराअत को चुना है। समाप्त तातारखानिया से फ़तावा अल-हुज्जाह के हवाले से।" इसलिए कि बाज़ बेवक़ूफ़ वह कुछ कहेंगे जो वह जानते नहीं हैं तो गुनाह और बदबख़्ती में मुब्तिला हो जाएंगे, और अइम्मा के लिए मुनासिब नहीं कि वह अवाम को इस चीज़ पर बरअंगेख़्ता करें जिस में उन के दीन का नुक़सान है और अवाम के दीन को बचाने के लिए उन के पास अबू जाफ़र، इब्न आमिर، अली बिन हमज़ह और कसाई की क़िराअत में कुरान-ए-मजीद न पढ़ाए क्यूंकि हो सकता है वह इस को हल्का जानें और इस पर हँसें अगरचे

तमाम क़िराआत ओ रिवायत सही और फ़सीह हैं। हमारे मशाइख़ ने अबू अम्र ओ हफ़्स की क़िराअत को इख़्तियार किया है जो आसिम से मरवी है। इह ततारख़ानिया अज़ फ़तावा हुज्जह। (त)

---

1. फ़तावा हिन्दिया, चौथा खंड क़िराअत पर, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/79।
2. रद्द अल-मुह्तार, क़िराअत पर खंड, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी बेरुत, 1/362।

فتاوی رضویہ جلد دو ازدہم

نظیر ۳ : قرآن عظیم کی دسوں قرائتیں حق اور دوسوی "منزل من اللہ" دسوں طرح حضور عالم صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے پڑھا اور حضور سے صحابہ، صحابہ سے تابعین، تابعین سے ہم تک پہنچا تو ان میں ہر ایک کا پڑھنا بلا شبہ قراتِ قرآن و نورِ ایمان و رضائے رحمان ہے۔ بایں ہمہ علماء نے ارشاد فرمایا کہ جہاں جو قرات رائج ہو نماز و غیر نماز میں عوام کے سامنے وہی قرات پڑھیں، دوسری قرات جس سے ان کے کان آشنا نہیں نہ پڑھیں مبادا وہ اس پر ہنسنے اور طعن کرنے سے اپنے دین خراب کرلیں۔ ہندیہ میں ہے :

[پہلا خانہ] في الحجة قراءة القرآن بالقراءات السبعة والروايات كلها جائزة ولكنى ارى الصواب ان لا يقرأ القراءة العجيبة بالامالات والروايات الغريبة كذا في التتارخانيه[1]۔ حجہ میں ہے کہ ساتوں قراءات اور تمام روایات میں قرآنِ مجید پڑھنا جائز ہے لیکن اس بات کو درست سمجھتا ہوں کہ نامانوس قراءت میں امالات اور روایاتِ غریبہ کے ساتھ قرآنِ مجید نہ پڑھا جائے، جیسا کہ تاتارخانیہ میں ہے۔ (ت)

رد المحتار میں ہے :

[دوسرا خانہ] لان بعض السفهاء يقولون مالا يعلمون فيقعون فى الاثم والشقاء ولاينبغى للأئمة ان يحملوا العوام على ما فيه نقصان دينهم ولا يقرأ عندهم مثل قراءة ابى جعفر وابن عامر وعلى بن حمزة والكسائى صيانة لدينهم فلعلهم يستخفون او يضحكون وان كان كل القراءات والروايات صحيحة فصيحة وممشائخنا اختاروا قراءة ابى عمر وحفص عن عاصم اھ[2] من التتارخانية عن فتاوى الحجة۔ اس لئے کہ بعض بیوقوف وہ کچھ کہیں گے جو وہ جانتے نہیں ہیں تو گناہ اور بدبختی میں مبتلا ہو جائیں

گے، اور ائمہ کے لئے مناسب نہیں کہ وہ عوام کو اس چیز پر برانگیختہ کریں جس میں ان کے دین کا نقصان ہے اور عوام کے دین کو بچانے کے لئے ان کے پاس ابوجعفر، ابن عامر، علی بن حمزہ اور کسائی کی قراءۃ میں قرآن مجید نہ پڑھائے کیونکہ ہو سکتا ہے وہ اس کو ہلکا جانیں اور اس پر ہنسیں اگرچہ تمام قراءات و روایات صحیح اور فصیح ہیں۔ ہمارے مشائخ نے ابو عمر و حفص کی قراءۃ کو اختیار کیا ہے جو عاصم سے مروی ہے اہـ تاتارخانیہ از فتاوی حجہ۔ (ت)

---

1. فتاوی ہندیہ فصل الرابع فی القراءۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۷۹
2. ردالمحتار فصل فی القراءۃ داراحیاء التراث العربی بیروت ۱/ ۳۶۲

Fatawa Razawiya Volume 12

Precedent 4: When the Quraysh rebuilt the Kaaba during the era of ignorance (Jahiliyyah), due to financial constraints and their corrupt motives, they made significant changes to the structure built by Ibrahim (peace be upon him). They replaced the two doors (East and West) with just one eastern door and raised it high above the ground so they could control who entered, even though this required more expenditure. Although this was a clear innovation of Jahiliyyah and a change from the Abrahamic Sunnah (peace be upon him), the Leader of the Messengers (peace be upon him) kept it as it was solely to protect the faith of the new Muslims, lest doubts arise in their hearts. It is recorded in the Sahihayn (Bukhari and Muslim):

Arabic Text

Narrated by Aisha (may Allah be pleased with her), she said: I asked the Prophet (peace be upon him) about the wall [of the Hijr/Hateem] whether it is part of the House (Kaaba). He said, "Yes." I said, "Then why did they not include it in the House?" He said, "Your people ran short of funds." I said, "What about its door being raised?" He said, "Your people did that so they could let in whom they willed and prevent whom they willed. Were it not that your people have recently left Jahiliyyah and I fear their hearts would reject it, I would have included the walls [of the Hijr] in the House and joined its door to the ground." And in another narration: The Prophet (peace be upon him) said to her, "O Aisha! If your people were not close to the era of Jahiliyyah, I would have ordered the House to be demolished and included what was taken out of it, and joined it to the ground, and made two doors for it, an eastern door and a western door, thus reaching the foundation of Ibrahim..." etc.

Urdu Translation

Umm al-Mu'minin, Lady Aisha Siddiqa (may Allah be pleased with her) narrates that she asked the Prophet (peace be upon him) about the wall of the Hateem whether it is part of the House of Allah. The Prophet (peace be upon him) said, "Yes." I asked why the Quraysh did not include it in the House of Allah. He replied, "Your people ran short of funds." I asked why its door is so high. He replied, "Your people did this so they could enter whoever they wished into the House of Allah and stop whoever they wished. If your people had not recently left disbelief and I did not fear that it would displease their hearts, I would have included the walls of the Hateem into the House of Allah and brought the door down to ground level." And in another narration, the Prophet (peace be upon him) said, "O Aisha! If the time of your people were not close to the era of ignorance, I would have demolished the Kaaba..."

[1] Sahih Bukhari, Chapter: The Virtue of Makkah and its Construction, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/215 [2] Sahih Bukhari, Chapter: The Virtue of Makkah and its Construction, Qadimi Kutub Khana Karachi 1/215

मिसाल 4: जब कुरैश ने जाहिलियत के दौर में काबा को नए सिरे से बनाया, तो माली तंगी और अपने भ्रष्ट उद्देश्यों के कारण उन्होंने ख़लील (इब्राहीम अलैहिस्सलाम) द्वारा बनाई गई संरचना में बहुत बदलाव किए। उन्होंने पश्चिमी और पूर्वी दो दरवाजों के बजाय केवल एक पूर्वी दरवाजा रखा और उसे भी जमीन से काफी ऊपर कर दिया ताकि वे जिसे चाहें उसे ही प्रवेश दें, हालांकि इसमें खर्च ज्यादा था। यह स्पष्ट रूप से जाहिलियत की बिदअत और इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सुन्नत में बदलाव था, लेकिन रसूलों के सरदार (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने केवल नए मुसलमानों के दीन की हिफाज़त के लिए इसे वैसा ही रहने दिया, ताकि मौजूदा इमारत को बिना गिराए बदलाव न होने से उनके दिलों में कोई वसवसा (संदेह) पैदा न हो। सहीहैन में है:

अरबी पाठ

सय्यिदा आइशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) से रिवायत है, उन्होंने कहा: मैंने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से [हतीम की] दीवार के बारे में पूछा कि क्या वह बैतुल्लाह का हिस्सा है? हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "हाँ"। मैंने पूछा: "कुरैश ने इसे बैतुल्लाह में क्यों शामिल नहीं किया?" आप ने फ़रमाया: "तुम्हारी कौम के पास खर्च की कमी हो गई थी"। मैंने पूछा: "फिर इसका दरवाजा इतना ऊँचा क्यों है?" आप ने फ़रमाया: "तुम्हारी कौम ने ऐसा इसलिए किया था ताकि वे जिसे चाहें उसे बैतुल्लाह में दाखिल होने दें और जिसे चाहें रोक दें। अगर तुम्हारी कौम ने नया-नया कुफ़्र न छोड़ा होता और मुझे यह ख़ौफ़ न होता कि उनके दिलों को यह बुरा लगेगा, तो मैं हतीम की दीवारों को बैतुल्लाह में दाखिल कर देता और दरवाजे को जमीन के बराबर कर देता।" और दूसरी रिवायत में है कि

उर्दू अनुवाद

उम्मुल मोमिनीन हज़रत सय्यिदा आइशा सिद्दीक़ा (रज़ियल्लाहु अन्हा) बयान फ़रमाती हैं कि मैंने नबी अकदस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से हतीम की दीवार के बारे में पूछा कि क्या वह बैतुल्लाह का हिस्सा है? हुज़ूर अनवर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "हाँ"। मैंने दरयाफ़्त किया कि इसको कुरैश ने बैतुल्लाह में क्यों दाखिल नहीं किया? आप ने फ़रमाया: "तुम्हारी कौम के पास खर्च कम हो गया था"। मैंने पूछा फिर इसका दरवाजा इतना बुलंद क्यों है? तो आप ने फ़रमाया कि तुम्हारी कौम ने यह इसलिए किया था कि वो जिसे चाहें बैतुल्लाह में दाखिल करें और जिसे चाहें रोक दें। अगर तुम्हारी कौम ने नया-नया कुफ़्र न छोड़ा होता और मुझे यह ख़ौफ़ न होता कि यह उनके दिलों को बुरा लगेगा तो मैं हतीम की दीवारों को बैतुल्लाह में दाखिल कर देता और दरवाजे को ज़मीन से मिला देता। और दूसरी रिवायत में यह है

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "ऐ आइशा! अगर तुम्हारी कौम का जमाना जाहिलियत के करीब न होता, तो मैं काबा को गिराने का [आदेश देता]..."	कि नबी अनवर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "ऐ आइशा! अगर तेरी कौम का ज़माना जाहिलियत के ज़माने के करीब न होता तो मैं काबा को गिराने का..."

[1] सहीह बुखारी, बाब फ़ज़्ल मक्का व बिन्यानुहा, कदीमी कुतुब खाना कराची 1/215 [2] सहीह बुखारी, बाब फ़ज़्ल मक्का व बिन्यानुहा, कदीमी कुतुब खाना कराची 1/215

نظیر ۴: قریش نے جب زمانہ جاہلیت میں کعبہ از سر نو بنایا کچھ تنگی خرچ اپنی اغراضِ فاسدہ سے بنائے خلیل صلی اللہ تعالٰی علیہ ابنہ وعلیہ وبارک وسلم میں بہت تغیرات کردیں، دو دروازہ غربی شرقی سے صرف ایک در شرقی رکھا اور اُسے بھی زمین سے بہت بلندی پر نکالا کہ جسے چاہیں اس میں خرچ زیادہ درکار تھا حالانکہ یہ صریح بدعت جاہلیت و تغییر سنت ابراہیمی علیہ الصلوٰۃ والتسلیم تھی مگر حضور سید المرسلین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے محض بغرض حفظِ دین نو مسلمین اُسے قائم وبرقرار رکھا کہ تغییرِ بے ہدم عمارت موجودہ نہ ہوتی خدا جانے ان کے دلوں میں کیا وسوسہ گزرے۔ صحیحین میں ہے :

عربی متن	اردو ترجمہ
عن عائشة رضی اللہ تعالی عنها قالت سألت النبی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم عن الجدار من البیت هو، قال نعم، قلت فما لهم لم یدخلوه فی البیت قال ان قومك قصرت بهم النفقة قلت فما شأن بابه مرتفعاً قال فعل ذلك قومك لیدخلوا من شاءوا ویمنعوا من شاءوا ولولا ان قومك حدیث عهدهم الجاهلیة فأخاف ان تنكر قلوبهم ان ادخل الجدر فی البیت وان الصق بابه بالارض ' وفي الاخری ان	ام المومنین حضرت سیدہ عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا بیان فرماتی ہیں کہ میں نے نبی اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم سے حطیم کی دیوار کے بارے میں پوچھا کہ کیا بیت اللہ کا حصہ ہے، حضور انور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا ہاں، میں نے دریافت کیا اس کو قریش نے بیت اللہ میں کیوں داخل نہیں کیا، آپ نے فرمایا: تمہاری قوم کے پاس خرچ کم ہوگیا ہے، میں نے پوچھا پھر اس کا دروازہ اتنا بلند کیوں ہے، تو آپ نے فرمایا کہ تمہاری قوم نے یہ اس لئے کیا تھا کہ وہ جس کو چاہیں بیت اللہ میں داخل کریں اور جس کو چاہیں روک دیں، اگر تمہاری قوم

عربی متن	اردو ترجمہ
النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم قال لها یا عائشة لولا ان قومك حديث عهد بجاهلية لامرت بالبيت فهدم فادخلت فيه ما اخرج منه والزقته بالارض وجعلت له بابين بابا شرقياً وبابا غربياً فبلغت به اساس ابراهيم ' الخ۔	نے نیا نیا کفر نہ چھوڑا ہوتا اور مجھے یہ خوف نہ ہوتا کہ یہ ان کو دلوں کو برا لگے گا تو میں حطیم کی دیواروں کو بیت اللہ میں داخل کردیتا اور دروازے کو زمین سے ملادیتا۔ اور دوسری روایت میں یہ ہے کہ نبی انور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا: اے عائشہ! اگر تیری قوم کا زمانہ جاہلیت کے زمانہ کے قریب نہ ہوتا تو میں کعبہ کو گرانے کا

۱ صحیح بخاری باب فضل مکة و بنیانها قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۲۱۵ ۲ صحیح بخاری باب فضل مکة و بنیانها قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۲۱۵

Fatawa Razawiyya Volume 12

...[I would have] ordered and what was excluded from it, I would have included back into it, and made it level with the ground, and created two (2) doors - an eastern door and a western door, and I would have built it on the foundations of Hazrat Ibrahim (peace be upon him). (T)

This discourse, even if it is incapable of proving the claim of prohibition or is entirely incorrect, there is no doubt that takfir (declaring someone a disbeliever) is absolutely impossible now. This is because in this, there was no denial of the essence of permissibility, which was among the necessities of religion. In fact, there is no denial of anything in it for which even misguidance (tadhleel), let alone takfir, could be applicable. The most that can be said is that it is an error and a mistake, and that too in respect of the claim of prohibition; otherwise, there is no doubt that the aforementioned precedents in those lands can be a reason for refraining from second marriages due to public interest (maslahat), as long as it does not reach the stage of obligation or necessity. 'As is not hidden from the people of wisdom, and Allah is the Guide to the straight path.' (As it is not hidden from the wise and Allah Almighty alone is the giver of guidance towards the right path. T)

In short, audacity and daring in the takfir of the people of the Qibla and the people of the Kalima Tayyiba is pure ignorance, rather it is a severe calamity in which there is an explicit danger of great burden and punishment; refuge is sought with Allah, Lord of the worlds. It is an absolute obligation to save the words and deeds of the people of the Kalima, no matter how apparently hideous and atrocious they may be, from disbelief (kufr) as far as possible. If even the weakest and most subtle interpretation arises by which a ruling of Islam can emerge, then lean towards it; and do not even bring to mind a thousand other possibilities that point towards disbelief. It is stated in the Hadith that the Master of the Worlds, may Allah the Almighty bless him and grant him peace, says:

'Islam prevails and is not prevailed upon.' - Narrated by Ar-Ruyani, Ad-Daraqutni, Al-Bayhaqi, Diya in 'Al-Mukhtara', and Al-Khalil, all from Aa'idh bin 'Amr Al-Muzani (may Allah be pleased with him). (T)

Islam prevails; it is not defeated. It was narrated from Aa'idh bin 'Amr Al-Muzani (may Allah be pleased with him) by Ar-Ruyani, Ad-Daraqutni, Al-Bayhaqi, and by Diya in 'Al-Mukhtara' and Al-Khalil. (T)

Those who abandon the possibility of Islam and lean towards the possibilities of disbelief make Islam defeated and disbelief dominant. We seek refuge with Allah, Lord of the worlds.

Hadith 2: He (peace and blessings of Allah be upon him) says:

'Refrain from [harming] the people of "La ilaha illa Allah" (there is no god but Allah); do not declare them disbelievers.' Keep your tongue from [accusing] those who say 'La ilaha illa Allah'.

1. Sunan Ad-Daraqutni, Book of Marriage, Nashr-us-Sunnah Multan, 3/252.

फ़तावा रज़विया खंड 12

...[मैं] आदेश देता और जो उसमें से निकाल दिया गया है, मैं उसे उसमें शामिल कर देता और उसे ज़मीन के बराबर करके दो (2) दरवाज़े बनाता - एक पूर्वी दरवाज़ा और एक पश्चिमी दरवाज़ा, और मैं उसे हज़रत इब्राहिम (अलैहिस्सलाम) की बुनियादों पर तामीर करता। (त)

यह तक़रीर चाहे मनाही के दावे को साबित करने से कासिर (असमर्थ) हो या सरासर गलत ही सही, मगर इसमें शक नहीं कि अब तक़फ़ीर (काफ़िर ठहराना) क़तई तौर पर मुहाल है। क्योंकि इसमें नफ़्से-इबाहत (अनुमति के तत्व) का, जो कि दीन की ज़रूरतों में से थी, इनकार नहीं हुआ। बल्कि इसमें किसी ऐसी चीज़ का भी इनकार नहीं है जिसकी वजह से तक़फ़ीर तो दूर, तज़लील (गुमराह ठहराना) हो सके। ज़्यादा से ज़्यादा यह कहा जा सकता है कि यह ख़ता और ग़लती है, वह भी मनाही के दावे के लिहाज़ से; वर्ना इसमें संदेह नहीं कि उन शहरों में मज़कूरा नज़ायर (उदाहरण) मस्लहतन (जनहित में) दूसरे निकाह से परहेज़ की वजह बन सकते हैं, जब तक कि मामला वाजिब और फ़र्ज़ तक न पहुंचे। 'जैसा कि बुद्धिमानों पर छिपा नहीं है, और अल्लाह ही सीधी राह की तरफ हिदायत देने वाला है।' (जैसा कि बुद्धिमानों पर गुप्त नहीं है और अल्लाह तआला ही सीधी राह की तरफ मार्गदर्शन देने वाला है। त)

संक्षेप में, अहल-ए-क़िबला और कलमा तैयबा वालों की तक़फ़ीर में जुर्रत और बहादुरी दिखाना निरा अज्ञान है, बल्कि एक सख्त आफ़त है जिसमें बड़े गुनाह और सज़ा का साफ़ डर है, अल्लाह रब्बुल आलमीन की पनाह। यह फ़र्ज़-ए-क़तई है कि कलमा पढ़ने वालों के हर क़ौल और फ़ेल को, चाहे वह ज़ाहिरी तौर पर कितना ही बुरा और घिनौना क्यों न हो, जहाँ तक मुमकिन हो कुफ़्र से बचाएं। अगर कोई कमज़ोर से कमज़ोर, और बारीक से बारीक तावील (व्याख्या) पैदा हो सके जिससे इस्लाम का हुक्म निकल सकता हो, तो उसी की तरफ जाएं और उसके अलावा अगर हज़ार संभावनाएँ कुफ़्र की तरफ जाती हों, उन्हें ख्याल में न लाएँ। हदीस में है कि हुज़ूर सैय्यदुल आलमीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

'इस्लाम ग़ालिब रहता है और मग़लूब (दबा हुआ) नहीं होता।' - इसे रुयानी, दारक़ुतनी, बैहक़ी, 'मुख्तारा' में ज़िया और ख़लील, इन सभी ने आइज़ बिन अम्र अल-मुज़नी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया। (त)

इस्लाम प्रबल रहता है, पराजित नहीं होता। इसे रुयानी, दारक़ुतनी, बैहक़ी, ज़िया (मुख्तारा में) और ख़लील ने आइज़ बिन अम्र अल-मुज़नी (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया। (त)

इस्लाम की संभावना को छोड़कर कुफ़्र की संभावनाओं की तरफ जाने वाले इस्लाम को मग़लूब और कुफ़्र को ग़ालिब करते हैं, अल्लाह रब्बुल आलमीन की पनाह।

हदीस 2: आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

'ला इलाहा इल्लल्लाह कहने वालों से [अपनी ज़बान] रोको, उन्हें काफ़िर न कहो।' ला इलाहा इल्लल्लाह कहने वालों के विरुद्ध अपनी ज़बान रोको।

1. सुनन अद-दारक़ुतनी, बाबुल महर, नश्र-ुस-सुन्ना मुल्तान, 3/252।

فتاوٰی رضویہ جلد دوا زدہم

حکم دیتا اور اس میں سے جو خارج کر دیا گیا ہے میں اس کو اس میں داخل کردیتا اور اس کو زمین کے برابر کرکے دو ۲ دروازے بناتا ایک دروازہ مشرقی اور ایک دروازہ مغربی، اور میں اس کو حضرت ابراہیم علیہ السلام کی بنیادوں پر تعمیر کرتا۔ (ت) یہ تقریر اگرچہ دعوٰی ممانعت کے اثبات سے قاصر یا سراسر غلط ہی سہی مگر شک نہیں کہ اب تکفیر قطعاً محال کہ اس میں نفس اباحت کا کہ ضروریات دین سے تھی انکار نہ ہوا بلکہ اس میں کسی ایسی چیز کا بھی انکار نہیں جس کی وجہ سے تکفیر درکنار تضلیل ہو سکے غایت یہ کہ خطا و غلط کہئے وہ بھی بلحاظ دعوٰی ممانعت ورنہ شبہ نہیں کہ نظائر مذکورہ ان بلاد میں نکاح ثانی سے مصلحۃً احتراز کی وجہ موجب ہوسکتی ہیں جبکہ نوبت تا وجوب وافتراض نہ ہو کما یخفی علی اولی النھی واللہ الھادی الی صراط سوی (جیسا کہ عقلمندوں پر مخفی نہیں ہے اور اللہ تعالٰی ہی سیدھی راہ کی طرف ہدایت دینے والا ہے۔ ت) بالجملہ تکفیر اہل قبلہ واصحاب کلمہ طیبہ میں جرات و جسارت محض جہالت بلکہ سخت آفت جس میں وبال عظیم و نکال کا صریح اندیشہ والعیاذ باللہ رب العالمین، فرض قطعی ہے کہ اہل کلمہ کے ہر قول وفعل کو اگرچہ بظاہر کیسا ہی شنیع و فظیع ہو حتی الامکان کفر سے بچائیں اگر کوئی ضعیف سے ضعیف، نحیف سے نحیف تاویل پیدا ہو جس کی رُو سے حکم اسلام نکل سکتا ہو تو اس کی طرف جائیں، اور اس کے سوا اگر ہزار احتمال جانب کفر جاتے ہوں خیال میں نہ لائیں۔ حدیث میں ہے حضور سید العالمین صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں :

الاسلام یعلو ولا یعلی - اخرجہ الروياني والدارقطني والبیھقی والضیاء فی المختارۃ والخلیل کلھم عن عائذ بن عمر والمزني رضی اللہ تعالٰی عنہ۔ اسلام غالب رہتا ہے مغلوب نہیں ہوتا۔ اس کو رویانی،

دار قطنی، بیہقی، مختارہ میں ضیاء اور خلیل نے عائذ بن عمرو مزنی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا۔ (ت)

احتمال اسلام چھوڑ کر احتمالات کفر کی طرف جانے والے اسلام کو مغلوب اور کفر کو غالب کرتے ہیں والعیاذ باللہ رب العالمین۔ حدیث ۲: فرماتے ہیں صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم :

کفوا عن اھل لا الہ الا اللہ لا تکفر و ھم لا الہ الا اللہ کہنے والوں سے زبان روکو انہیں

1. سنن ادار قطنی باب المھر نشر السنة ملتان ۲۵۲/۳

[On account of a] sin. So whoever declares the people of 'La ilaha illa Allah' (there is no god but Allah) as disbelievers, he is closer to disbelief himself. (Narrated by Al-Tabarani in Al-Kabir with a good chain from Ibn Umar, may Allah be pleased with them both).

Hadith 3: He (peace and blessings of Allah be upon him) said: Three things are part of the root of faith: to refrain from [harming] someone who says 'La ilaha illa Allah', not to declare him a disbeliever due to a sin, and not to expel him from Islam due to an action. (Narrated by Abu Dawud from Anas, may Allah be pleased with him).

Hadith 4: He (peace and blessings of Allah be upon him) said: Do not declare anyone from the people of the Qibla (Muslims) as a disbeliever. (Narrated by Al-Uqayli from Abu Darda, may Allah be pleased with him).

Praise be to Allah, the discourse has reached its conclusion and the ruling of the issue has been clarified in all aspects. The gist of the intended point is that the common people who consider the marriage of a widow as following a rejected and stubborn custom, and a matter of shame and disgrace, and despite any state of extreme need and necessity, seek refuge in Allah, avoid it like something forbidden—they do wrong and do very wrong. They are helpless and extremely wretched. Leaving aside Khan Sahib, Sheikh Sahib, and Mirza Sahib, even if it were Hazrat Mir Sahib himself, are their daughters more honorable or possessed of greater modesty than the biological daughters of the Lady of Women, Batul Zahra (peace be upon her father and upon her and peace), the beloved of Muhammad, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him)? Those whose daughters had two, three, or even more marriages. Glory be to Allah!

1. Al-Mu'jam al-Kabir, translation, Al-Maktaba al-Faysaliyya, Beirut, 2/272.
2. Sunan Abi Dawud, Book of Jihad, Chapter on Fighting with Oppressive Leaders, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 1/343.
3. Nasb al-Rayah, citing Al-Uqayli, Chapter on Hadiths Regarding Following, Al-Maktaba al-Islamiyya, Riyadh, 28/2.

जिल्द बारहवीं | फतावा रज़विया

[किसी] गुनाह के कारण। तो जो कोई 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहने वालों को काफ़िर कहे, वह खुद कुफ्र (अविश्वास) के अधिक निकट है। (इसे तबरानी ने 'अल-कबीर' में हसन सनद के साथ हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है।)

हदीस 3: आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: तीन बातें ईमान की जड़ में शामिल हैं: 'ला इलाहा इल्लल्लाह' कहने वाले से बाज़ रहना, उसे किसी गुनाह के कारण काफ़िर न कहना और किसी अमल के कारण उसे इस्लाम से ख़ारिज न करना। (इसे अबू दाऊद ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है।)

हदीस 4: आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: अहल-ए-क़िबला (मुसलमानों) में से किसी को काफ़िर न कहो। (इसे उक़ैली ने हज़रत अबू दरदा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है।)

अल्हम्दुलिल्लाह, बातचीत अपनी चरम सीमा पर पहुँच गई और मसले के हुक्म ने हर पहलू से स्पष्टता का रंग पा लिया। मक़सद का सारांश यह है कि आम लोग जो बेवा (विधवा) के निकाह को मरदूद और ज़िद्दी रस्मों का पालन और शर्म व आर की बात समझते हैं, और कैसी ही सख़्त ज़रूरत और हाजत की हालत हो, मआज़ अल्लाह (अल्लाह की पनाह) इसे हराम की तरह इससे परहेज़ करते हैं, वे बुरा करते हैं और बहुत बुरा करते हैं। वे बेचारे हैं और सख़्त बदकिस्मत हैं। खां साहब, शेख साहब, मिर्ज़ा साहब तो एक तरफ, अगर वे हज़रत मी़ साहब ही क्यों न हों, तो क्या उनकी बेटियाँ, अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चहेती, सैयदा-तुन-निशा बतूल ज़हरा (सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम) की कोख से जन्मी साहिबज़ादियों से ज़्यादा इज़्ज़त वाली और ग़ैरत वाली हैं? जिनके दो-दो, तीन-तीन और इससे भी ज़्यादा निकाह हुए। सुब्हान अल्लाह!

1. अल-मुअजम अल-कबीर अनुवाद, अल-मकतबा अल-फ़ैसलिया बेरूत 2/272
2. सुनन अबू दाऊद किताब अल-जिहाद बाब फ़िल-ग़ज़्व मआ अइम्मतुल-जौर आफ़ताब आलम प्रेस लाहौर 1/343
3. नसबुर राया बहवाला अल-उक़ैली बाब अल-अहादीस फ़िल-इक्तिदा अल-मकतबा अल-इस्लामिया रियाज़ 28/2

بذنب فمن اکفر اھل لا الہ الا اللہ فھو الی الکفر اقرب کسی گناہ پر کافر نہ کہو، لا الہ الا اللہ کہنے والوں کو کافر کہے وہ خود کفر سے نزدیک تر ہے۔ (اس کو طبرانی نے کبیر میں سند حسن کے ساتھ حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما سے روایت کیا ۔ ت) - رواہ الطبرانی فی الکبیر بسند حسن عن ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنھما۔

حدیث ۳: فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم: ثلاث من اصل الایمان الکف عمن قال لا الہ الا اللہ ولا تکفر بذنب ولا تخرجہ من الاسلام بعمل تین باتیں اصل ایمان میں داخل ہیں، لا الہ الا اللہ کہنے والے سے باز رہنا اور اسے گناہ کے سبب کافر نہ کہا جائے اور کسی عمل پر اسلام سے خارج نہ کہیں۔ (اس کو ابو داؤد نے حضرت انس رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت فرمایا ۔ ت) - رواہ ابو داؤد عن انس رضی اللہ تعالٰی عنہ۔

حدیث ۴: فرماتے ہیں صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم: لا تکفروا احدا من اھل القبلۃ اہل قبلہ میں سے کسی کو کافر نہ کہو (اس کو عقیلی نے حضرت ابو درداء رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا ۔ ت) - رواہ العقیلی عن ابی الدرداء رضی اللہ تعالٰی عنہ۔

الحمد للہ کلام اپنی نہایت کو پہنچا اور حکم مسئلہ نے من جمیع الوجوہ رنگ ایضاح پایا خلاصہ مقصود یہ کہ عوام جو نکاح بیوہ کو باتباع رسم مردود و عنود و ننگ و عار سمجھتے ہیں اور کیسی ہی حالت حاجت و ضرورت شدیدہ ہو معاذ اللہ حرام کے مثل اس سے احتراز رکھتے ہیں، برا کرتے ہیں اور بہت برا کرتے ہیں، بیچارہے ہیں اور سخت بیچارہ، خاں صاحب شیخ صاحب مرزا صاحب در کنار وہ کوئی حضرت میر صاحب ہی ہوں تو کیا ان کی بیٹیاں نہیں محمد رسول اللہ صلی

اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کی خاص جگر پاروں سیدۃ النساء بتول زہرا صلی اللہ تعالیٰ علی ابیھا و علیھا و سلم کی بطنی صاحبزادیوں سے زیادہ عزت والیاں بڑھ کر غیرت والیاں ہیں جن کے دو دو تین تین اور اس سے بھی زائد نکاح ہوئے سبحان اللہ! ع d

1 المعجم الکبیر ترجمہ، المکتبۃ الفیصلیہ بیروت ۲ / ۲۷۲ 2 سنن ابو داؤد کتاب الجہاد باب فی الغزو مع ائمۃ الجور آفتاب عالم پریس لاہور ۱ / ۳۴۳ 3 نصب الرایہ بحوالہ العقیلی باب الاحادیث فی الاقتداء المکتبۃ الاسلامیہ ریاض ۲۸/۲

Fatawa Razawiya, Volume 12

What relation does the dust have with the pure world? (What relation do these earthly women have with those pure women? - Translator) O Muslims! Have some shame for reciting the Kalima (the creed) and do not leave the Shariah (divine law) of your master, your protector, your King of the Throne, peace and blessings of Allah be upon him, to follow the footsteps of the impure, the filthy, and the worshippers of bricks and stones. Reflect for a moment whose path you are leaving and after which misguided person you are running. According to the saying: You broke the promise of a friend on the word of an enemy. Look whom you have severed ties with and whom you have joined with. (On the word of an enemy, you break the promise (covenant) of a friend; look deeply, with whom are you breaking ties and with whom are you forming a connection? - Translator) Six forms of marriage and their rulings have been discussed in detail; look at them carefully and implement them with a sincere heart so that you may gain benefits in this world and the hereafter. Refrain strictly from criticizing and mocking this good custom, lest you fall into this blind well and bid farewell to the light of faith. On the other hand, an appeal to those gentlemen who issue takfir (decrees of disbelief): by all means, raise your voice against the denier and eradicate the evil custom, but also consider your own benefit and loss, and safeguard your own religion and faith. What kind of occasion is this and what advice? Allah is Greatest. If you know the greatness of "La ilaha illAllah" (There is no god but Allah), then consider the takfir of the people of "La ilaha illAllah" a severe calamity. Here, your tongue is under control, call anyone you wish a disbeliever, call them a polytheist, but also prepare some answer for that day when you see "La ilaha illAllah" contending on behalf of its sayers. O Allah! Make us depart this world on the true faith of "La ilaha illAllah". Ameen, Ameen. Allah is the Truth. Ameen. And all praise is for Allah, the Lord of the worlds, and may the blessings of Allah Almighty be upon the leader of the messengers, Muhammad, and upon his family and all his companions.

Praise be to Allah that this healing answer was completed in short sittings on 15 Safar 1312 AH and was titled 'Ata'ib al-Tahani fi al-Nikah al-Thani' (1312 AH) chronologically. I hope that all these elegant discussions and supreme proofs are a special portion of this humble servant's pen, and in the explanation of this issue and the clarification of this purpose, they are unique in themselves. Praise be to Allah, first and last, inwardly and outwardly. And blessings and peace be upon the master of mankind, Muhammad the Beloved, and his noble family, at all times, secretly and

openly. And all praise is for Allah, Lord of the worlds. And Allah, the Glorified and Exalted, knows best.

क्या संबंध है धूल का उस पवित्र दुनिया से? (इन मिट्टी की औरतों का उन पाकबाज़ औरतों से क्या मुक़ाबला? - अनुवादक) ऐ मुसलमानों! कलिमा पढ़ने की लाज रखो और अपने आका, अपने मौला, अर्श के सुल्तान सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीअत को छोड़कर नापाकों, गंदों और ईंट-पत्थरों के पुजारियों के पदचिह्नों पर मत चलो। ज़रा सोचो कि तुम किसका रास्ता छोड़ रहे हो और किस गुमराह के पीछे दौड़ रहे हो। कहावत के अनुसार: दुश्मन के कहने पर तुमने दोस्त का वादा तोड़ दिया। देखो कि तुम किससे रिश्ता तोड़ रहे हो और किससे जोड़ रहे हो। (दुश्मन के कहने पर दोस्त के वादे (अहद) को तोड़ना है; गहराई से देखो कि तुम किससे नाता तोड़ रहे हो और किसके साथ जुड़ रहे हो। - अनुवादक) निकाह के छह रूप और उनके नियम विस्तार से बताए जा चुके हैं; उन्हें ध्यान से देखें और सच्चे दिल से अमल में लाएँ ताकि दुनिया और आख़िरत में फ़ायदा पाएँ। इस अच्छी रस्म की निंदा और उपहास से पूरी तरह बचें, कहीं ऐसा न हो कि इस अंधे कुएं में गिरकर ईमान की रोशनी को अलविदा कह दें। दूसरी ओर, उन तकफ़ीर (काफ़िर कहने वाले) करने वाले हज़रात से गुज़ारिश है कि शौक से मुनकिर (इनकार करने वाले) के खिलाफ़ आवाज़ उठाएँ और बुरी रस्म को मिटाएँ लेकिन ज़रा अपना भी नफ़ा-नुकसान देखें और अपने दीन-ओ-ईमान की भी हिफाज़त करें। यह कैसा मौका है और कैसी नसीहत? अल्लाह सबसे बड़ा है। अगर "ला इलाहा इल्लल्लाह" की महानता को जानते हो, तो "ला इलाहा इल्लल्लाह" वालों को काफ़िर कहना एक बड़ी मुसीबत समझो। यहाँ ज़ुबान काबू में है, जिसे चाहो काफ़िर कहो, मुशरिक कहो, लेकिन उस दिन के लिए भी कोई जवाब तैयार रखो जब तुम "ला इलाहा इल्लल्लाह" को इसके कहने वालों की तरफ़ से लड़ते हुए देखोगे। ऐ अल्लाह! हमें "ला इलाहा इल्लल्लाह" के सच्चे ईमान पर दुनिया से उठा। आमीन, आमीन। अल्लाह सत्य है। आमीन। और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो तमाम जहानों का रब है, और अल्लाह तआला की रहमत हो रसूलो के सरदार मुहम्मद पर और उनकी आल और उनके तमाम साथियों पर।

अल्लाह का शुक्र है कि यह संतोषजनक उत्तर 15 सफ़र 1312 हिजरी को संक्षिप्त बैठकों में पूरा हुआ और तारीख़ के लिहाज़ से इसका नाम 'अताइबुत तहानी फ़िन निकाहिस थानी' (1312 हिजरी) रखा गया। मुझे उम्मीद है कि ये सभी शानदार बहसें और बेहतरीन दलीलें इस फ़क़ीर की कलम का खास हिस्सा हैं और इस मसले की व्याख्या और इस मक़सद की स्पष्टता में बेमिसाल हैं। और प्रशंसा अल्लाह के लिए है, शुरू में और अंत में, ज़ाहिर में और बातिन में। और दुरूद और सलाम हो

मख्लूक के सरदार मुहम्मद हबीब पर और उनके नेक खानदान पर, हर समय, गुप्त और प्रकट रूप से। और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो तमाम जहानों का रब है। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला सबसे बेहतर जानता है।

چہ نسبت خاک را با عالم پاک (ان خاکی عورتوں کو ان پاکباز عورتوں سے کیا نسبت۔ ت) مسلمانو! کلمہ پڑھنے کی شرم کرو اور اپنے آقا اپنے مولا اپنے بادشاہ عرش بارگاہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم کی شریعت چھوڑ کر نا پاکوں، گندوں، اینٹ پتھر کے بندوں کے قدم پر قدم نہ دھرو، ذرا غور کرو کس کی راہ چھوڑتے اور کس گمراہ کے پیچھے دوڑتے ہو۔ بقول دشمن پیماں دوست شکستی بہ ہیں کہ از کہ برید ی وباکہ پیوستی (دشمن کے کہنے پر تو دوست کے پیماں (عہد) کو توڑنا ہے، بنظر غائر دیکھ تو کس سے قطع تعلق کر رہا ہے اور کس سے تعلق جوڑ رہا ہے۔ ت) نکاح کی چھ صورتیں اور ان کے احکام مفصلاً گزرے انہیں بغور دیکھو اور بصدق دل عمل میں لاؤ کہ دنیا و آخرت کے منافع پاؤ، اور اس رسم نیک کے طعن و تشنیع سے قطعاً باز رہو کہ کہیں اس اندھے کنویں میں گر کر نور ایمان کو خیر باد نہ کہو، ادھر ان حضرات اہل تکفیر سے التماس کہ شوق سے منکر کو اٹھائیے بری رسم کو مٹائیے مگر ذرا اپنا بھی نفع و نقصان دیکھے بھالے، اپنا بھی دین و ایمان روکے سنبھالے، یہ کیا موقع ہے اور کونصیحت ، اللہ اکبر، لا الہ الا اللہ کی عظمت جانو تو اہل لا الہ الا اللہ کی تکفیر سخت آفت مانو، یہاں زبان قابو میں ہے جسے چاہو کافر بتاؤ مشرک کہہ جاؤ مگر اس دن کا بھی کچھ جواب بنا رکھو جب لا الہ الا اللہ کو اپنے قائلوں کی طرف سے جھگڑتا دیکھو۔ اے لا الہ الا اللہ کے سچے ایمان پر دنیا سے اٹھا آمین آمین اللہ الحق آمین والحمد للہ رب العلمین وصلی اللہ تعالٰی علی سید المرسلین محمد والہ وصحبہ اجمعین۔

الحمد للہ کہ یہ شافی جواب خفیف جلسوں میں ۱۵ صفر ۱۳۱۲ھ کو تمام اور بلحاظ تاریخ اطائب التھانی فی النکاح الثانی ۱۳۱۲ھ نام ہوا، امید کرتا ہوں کہ یہ سب مباحث رائقہ و دلائل فائقہ حصہ خاصہ خامہ فقیر اور اس مسئلہ کی توضیح اس مطلب کی تنقیح میں آپ ہی اپنی نظیر ہوں والحمد للہ

اولاً وآخرًا وباطنًا وظاهرًا والصلوة والسلام على سيد الانام محمد ن الحبيب وآلہ الكرام وردا وصدر ا وسرًا وجهرًا والحمد لله رب العالمين۔ والله سبحنہ وتعالیٰ اعلم۔

Fatawa-e-Razvia Volume 12

Book of Divorce (Explanation of Divorce)

Problem 113: From Ujjain, Gwalior region, sent by Muhammad Yaqub Ali Khan, house of Mir Khadim Ali, Assistant, 1st Jumada al-Ula 1307 AH.

Question: What do the scholars of Shariah (Islamic law) and Tariqah (Spiritual path) say regarding this matter: Zaid's wife openly engages in obscenity and immorality. Amr's wife is disobedient to her husband and engages in obscenity secretly, and her wicked acts are almost certain to him. Therefore, having reached a level of firm conviction, the husband wishes to give her a divorce. Is this correct? Explain, and may you be rewarded. (T)

Answer: In the situation asked, divorce is correct and permissible by consensus. This is because there are three opinions among scholars regarding the permissibility of divorce: One is that divorce is absolutely permissible, even if it is given without any specific cause. Allama al-Ghazzi, in the text of Tanwir...

Page 321 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

किताबुल तलाक़ (तलाक़ का बयान)

मसला 113: उज्जैन, ग्वालियर क्षेत्र से, प्रेषक मुहम्मद याकूब अली खान, निवास मीर खादिम अली, सहायक, 1 जुमाद अल-उला 1307 हिजरी।

सवाल: शरीयत और तरीक़त के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि: ज़ैद की पत्नी खुलेआम अश्लीलता और بدکاری (बदचलन) करती है। अम्र की पत्नी अपने पति की अवज्ञाकारी है और छिपकर अश्लीलता करती है, और उसके बुरे कामों का पति को यक़ीन की हद तक पुख्ता अंदेशा है। ऐसे में क्या पति का उसे तलाक़ देना सही है? बयान करें, पुण्य (अज्र) पाएं। (त)

जवाब: पूछी गई सूरत में इज्मा (सर्वसम्मति) से तलाक़ सही और मुबाह (जायज़) है। क्योंकि तलाक़ के मुबाह होने के बारे में उलेमा के तीन क़ौल (विचार) हैं: एक यह कि तलाक़ मुतलक़न (पूर्ण रूप से) मुबाह है, चाहे वह बिना किसी विशेष कारण के दी जाए। अल्लामा ग़ज़ी ने तनवीर के मतन में...

पेज 321 ऑफ़ 688

فتاویٰ رضویہ جلد دو ازدہم

کتاب الطلاق (طلاق کا بیان)

مسئلہ ۱۱۳: از اوجین علاقہ گوالیار مرسلہ محمد یعقوب علی خاں صاحب مکان میر خادم علی صاحب اسٹنٹ یکم جمادی الاولیٰ ۱۳۰۷ھ

چہ می‌فرمایند علمائے شریعت پناہ و طریقت آگاہ دریں مسئلہ کہ | علمائے شریعت و طریقت کیا فرماتے ہیں اس مسئلہ میں، کہ زوجہ مسماۃ زید کارِ فحش و ناقصہ علانیہ می نماید و زوجہ عمرو بہ | زید کی بیوی فحش کاری و بدکاری علانیہ کرتی ہے، اور عمرو کی خلاف شوہر خود می باشد و کارِ فحش پوشیدہ می کند و ایں کار زشتہ | بیوی اپنے شوہر کے مخالف ہے اور فحش کاری خفیہ طور پر کرتی او ہم پہلوئے یقین کامل است پس بہ تشکیک یقینی شوہر شوہر او | ہے اور اس کا بدکاری یقین کی حد تک ہے، پختہ ظن ہو جانے طلاق دادن خواھد درست است یا نہ؟ بینوا توجروا۔ | پر شوہر اس کو طلاق دینا چاہتا ہے تو کیا یہ درست ہے؟ بیان | کرو، اجر پاؤ۔ (ت)

الجواب: در صورتِ مستفسرہ طلاق باجماع درست و مباح است زیرا کہ | صورتِ مستفسرہ میں بالاجماع طلاق درست اور مباح ہے در اباحتِ طلاق علماء راسہ ۳ قول ست: یکے آنکہ مطلقاً مباح | کیونکہ طلاق کے مباح ہونے میں علماء کے تین قول ہیں: است گو بے سبب محض باشد مشی علیہ العلامۃ الغزی فی | ایک یہ کہ طلاق مطلقاً مباح ہے اگرچہ بلا وجہ دی جائے۔ | علامہ غزی نے تنویر کے متن

[Left Column Text] Matn al-Tanwir and its commentator Allama al-Ala'i claimed that it is the statement of the Allama and he claimed it to be the school's position. Second, it is not permissible except for reasons such as the wife's old age, her vagrancy, or bad character, and this is a weak opinion as stated in 'Radd al-Muhtar'. Third, if there is a need, it is permissible; otherwise, it is prohibited. This is the correct view and supported by evidence. The Researching Allama validated it absolutely in 'al-Fath', and the Seal of Researchers Allama Shami defended it with what is necessary to be inferred. Since the vagrancy of women is established here, all three opinions agree on the permissibility of divorce. In fact, when immorality (fisq) and commission of forbidden acts are proven, divorce becomes recommended (mustahabb). It is stated in 'Durr al-Mukhtar': rather, it is recommended if she is harmful or abandons prayer, likewise in 'al-Ghaya'. In 'Radd al-Muhtar', it appears that abandoning other obligatory duties besides prayer is treated like prayer. However, it is not obligatory; if the husband does not want to grant it, he may not. In 'Durr al-Mukhtar': it is not mandatory for the husband to divorce a sinful (fajira) woman. And Allah the Exalted knows best.

[Right Column Text] ...has explained in it, regarding which his commentator Allama Alai believes that this is the position of Allama Ghazzi, and Allama Bahr has claimed in his book 'al-Bahr' that this is the truth and the established school of thought. Second, divorce is not permissible for a husband without the wife's old age, her vagrancy, or bad character; this is a weak saying as mentioned in 'Radd al-Muhtar'. The third saying is that if the husband has a need for divorce, it is permissible; otherwise, it is prohibited. This very saying is correct and supported by arguments. The Researching Allama declared it correct in 'Fath al-Qadir', and the Seal of Researchers, Shami, defended it, from which its correctness is inferred. In the requested case, when vagrancy is present, the permissibility of divorce is established according to all three opinions. In fact, if a woman's immorality and commission of some forbidden act are proven, then divorce is recommended. It is in 'Durr al-Mukhtar': rather, if the wife is harmful or is in the habit of abandoning prayer, then it is recommended; it is similarly in 'al-Ghaya'. And in 'Radd al-Muhtar' it is stated that abandoning other obligations besides prayer is also like abandoning prayer. However, in this case, giving a divorce is not obligatory; if the husband does not want to give a divorce, he may not. It is in 'Durr al-Mukhtar' that giving a divorce to a sinful (fasiqa) woman is not mandatory for the husband. And Allah the Exalted knows best. (T)

[Footnotes] 1. Durr al-Mukhtar, Kitab al-Talaq, Mujtabai Press Delhi, 1/215 2. Radd al-Muhtar, Kitab al-Talaq, Dar-ul-Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/216 3. Durr al-Mukhtar, Chapter on Forbidden Acts (Fasl fi al-Muharramat), Mujtabai Press Delhi, 1/190

[बायाँ कॉलम टेक्स्ट] 'मतन अल-तन्वीर' और इसके टीकाकार अल्लामा अल-अलाई ने दावा किया कि यह अल्लामा का कथन है और उन्होंने इसे संप्रदाय (मज़हब) का पक्ष बताया। दूसरा यह कि पत्नी के बुढ़ापे, उसके आवारापन या खराब आचरण के कारणों के बिना तलाक जायज़ नहीं है, और जैसा कि 'रद अल-मुहतार' में कहा गया है, यह एक कमज़ोर मत है। तीसरा, यदि आवश्यकता हो, तो यह अनुमत (मुबाह) है; अन्यथा, यह निषिद्ध है। यह सही दृष्टिकोण है और साक्ष्यों द्वारा समर्थित है। शोध विद्वान अल्लामा ने 'अल-फ़तह' में इसे पूर्ण रूप से मान्य किया, और शोधकर्ताओं की मुहर अल्लामा शामी ने इसका बचाव किया जिससे इसकी सत्यता का अनुमान लगाया जा सकता है। चूंकि यहाँ महिलाओं का आवारापन स्थापित है, इसलिए तीनों मत तलाक की अनुमति पर सहमत हैं। वास्तव में, जब अनैतिकता (फ़िस्क़) और निषिद्ध कार्यों का करना सिद्ध हो जाता है, तो तलाक अनुशंसित (मुस्तहब) हो जाता है। 'दुर्र अल-मुख्तार' में कहा गया है: बल्कि, यदि वह हानिकारक है या नमाज़ छोड़ देती है, तो यह अनुशंसित है, वैसा ही 'अल-ग़ाया' में भी है। 'रद अल-मुहतार' में, ऐसा प्रतीत होता है कि नमाज़ के अलावा अन्य अनिवार्य कर्तव्यों को छोड़ना नमाज़ की तरह ही माना जाता है। हालाँकि, यह अनिवार्य नहीं है; यदि पति इसे देना नहीं चाहता, तो वह न दे। 'दुर्र अल-मुख्तार' में: एक पापी (फ़ाजिरा) महिला को तलाक देना पति के लिए अनिवार्य नहीं है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[दायाँ कॉलम टेक्स्ट] ...में इसे समझाया गया है, जिसके संबंध में उनके टीकाकार अल्लामा अलाई का मानना है कि यही अल्लामा गज़ी का पक्ष है, और अल्लामा बहर ने अपनी पुस्तक 'अल-बहर' में दावा किया है कि यही सत्य और स्थापित विचारधारा है। दूसरा, पति के लिए पत्नी के बुढ़ापे, उसके आवारापन या खराब आचरण के बिना तलाक देना जायज़ नहीं है; यह एक कमज़ोर कथन है जैसा कि 'रद अल-मुहतार' में उल्लेखित है। तीसरा कथन यह है कि यदि पति को तलाक की आवश्यकता है, तो यह जायज़ है; अन्यथा, यह निषिद्ध है। यही कथन सही है और तर्कों द्वारा समर्थित है। शोध विद्वान अल्लामा ने 'फ़तह अल-क़दीर' में इसे सही घोषित किया, और शोधकर्ताओं की मुहर, शामी ने इसका बचाव किया, जिससे इसकी शुद्धता का पता चलता है। पूछी गई स्थिति में, जब आवारापन मौजूद हो, तो तीनों मतों के अनुसार तलाक का जायज़ होना सिद्ध है। वास्तव में, यदि किसी महिला की अनैतिकता और किसी निषिद्ध कार्य का करना सिद्ध हो जाता है, तो तलाक अनुशंसित है। 'दुर्र अल-मुख्तार' में है: बल्कि, यदि पत्नी हानिकारक है या नमाज़ छोड़ने की आदी है, तो यह अनुशंसित

है; 'अल-ग़ाया' में भी इसी तरह है। और 'रद अल-मुहतार' में कहा गया है कि नमाज़ के अलावा अन्य दायित्वों को छोड़ना भी नमाज़ छोड़ने के समान है। हालाँकि, इस मामले में, तलाक देना अनिवार्य नहीं है; यदि पति तलाक नहीं देना चाहता, तो वह न दे। 'दुर्र अल-मुख्तार' में है कि पापी (फ़ासिरा) महिला को तलाक देना पति के लिए अनिवार्य नहीं है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

[पाद टिप्पणियाँ] 1. दुर्र अल-मुख्तार, किताब अल-तलाक, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/215 2. रद अल-मुहतार, किताब अल-तलाक, दार-उल-इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/216 3. दुर्र अल-मुख्तार, निषिद्ध कार्यों पर अध्याय (फ़स्ल फ़ी अल-मुहर्रमात), मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/190

[Left Column Text] متن التنوير وزعم شارحه العلامة العلائي انه هو قول العلامة وادعى العلامة المذهب - دوم آنکه جز بوجہ پیروی زن یا آوارگی وبدوضعی او اباحت نه دارد و هو قول ضعيف كما في رد المحتار سوم آنکه حاجتی باشد مباح ست ورنہ ممنوع ہمیں صحیح و مؤید بدلائل ست صححه العلامة المحقق على الاطلاق في الفتح وانتصر له خاتم المحققين العلامة الشامي بما يتعين استفادته ایں جا که آوارگی زناں متحقق ست هر سه قول بر اباحت طلاق متفق آمد بلکہ چوں فسق وار تکاب چیزی از محرمات ثابت شود طلاق مستحب گردد فی الدر المختار بل يستحب لومؤذية او تاركة صلوة كذا فی الغاية وفی رد المحتار الظاهران ترك الفرائض غير الصلوة كالصلوة اما واجب نیست اگر شوے دادن نخواهد ندهد في الدر المختار لا يجب على الزوج تطليق الفاجرة والله تعالى اعلم-

[Right Column Text] میں اس کو بیان کیا ہے جس کے متعلق اس کے شارح علامہ علائی کا خیال ہے کہ علامہ غزی کا یہی موقف ہے اور علامہ بحر نے اپنی کتاب بحر میں دعویٰ کیا ہے کہ یہی حق اور یہی مذہب ہے۔ دوسرا یہ کہ بیوی کے بڑھاپے یا اس کی آوارگی یا بدوضعی کے بغیر شوہر کے لئے طلاق دینا مباح نہیں ہے، یہ ضعیف قول ہے جیسا کہ ردالمحتار میں ہے۔ تیسرا قول یہ ہے کہ اگر شوہر کو طلاق کی کوئی حاجت ہے تو مباح ہے ورنہ ممنوع ہے، یہی قول صحیح اور دلائل سے مؤید ہے۔ علامہ محقق نے فتح القدیر میں اس کو صحیح قرار دیا ہے اور علامہ خاتمۃ المحققین شامی نے اس کا دفاع کیا ہے جس سے اس کی صحت مستفاد ہوتی ہے، مسئولہ صورت میں جب آوارگی پائی جاتی ہے تو تینوں اقوال پر طلاق کا مباح ہونا محقق ہے بلکہ عورت کا فسق اور کسی حرام فعل کا ارتکاب ثابت ہے تو طلاق مستحب ہے۔ در مختار میں ہے: بلکہ عورت اگر موذی ہے یا نماز کو ترک کرنے کی عادی ہے تو مستحب ہے غایہ میں اسی طرح

ہے، اور رد المحتار میں ہے کہ نماز کے علاوہ دیگر فرائض کا ترک بھی نماز کی طرح ہے، تاہم اس صورت میں طلاق دینا واجب نہیں ہے اگر خاوند طلاق نہ دینا چاہے تو نہ دے۔ در مختار میں ہے کہ فاسقہ عورت کا طلاق دینا خاوند پر واجب نہیں ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

[Footnotes] 1 در مختار کتاب الطلاق مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۱۵ 2 ردالمحتار کتاب الطلاق دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۱۶ 3 در مختار فصل في المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۹۰

Fatawa Razvia Volume 12

Question 112: From Kasr Aton, Pargana Shikan Abad, Post Office Sirsa Ganj, sent by Tasadduq Hussain Sahib, landlord and chief of the mentioned village, 6 Rajab 1321 AH. What do the scholars of religion say in this matter that a minor girl was married to a person who is visually impaired. The woman's age is now ten years. Her in-laws want to have her divorced from the husband and marry her to the husband's younger brother, and marry the woman's elder widowed sister to this blind man. In this situation, the younger sister is innocent and has committed no religious offense. Is it permissible to give divorce or not? If it is permissible, will her mahr (dower) have to be paid or not? Explain and be rewarded.

The Answer: Giving divorce without a Sharia-compliant reason is highly disliked, detested, and abhorred by Allah Almighty. It is in the Hadith: "The most detestable of lawful things to Allah is divorce." (T) Among the permissible things, divorce is most disliked by Allah Almighty. (T) However, he certainly has the authority for it; if he gives it, it will be effective. Then, if privacy (Khalwat), i.e., being alone together without any hindrance, has not occurred yet, or the wife is still ten years old and has no ability for intercourse at all, then half of the mahr must be paid if it was fixed. If nothing was fixed, then a complete set of clothes including a dupatta, pajama, and small women's garments in appropriate proportion must be given. The quality—whether high, low, or medium—should be based on the circumstances of both the man and woman. Its value should not be less than five dirhams nor more than half of the woman's mahr al-mithl (customary dower). If both man and woman are wealthy, then fine quality; if both are poor, then lower quality; and if one is poor and the other wealthy, then medium quality. And if this ten-year-old girl is capable of intercourse and privacy has occurred, then the full mahr will be mandatory. It is in Tanweer al-Absar, Durr al-Mukhtar, and Radd al-Muhtar: "Mut'ah (gift of consolation) is obligatory for a Mufawwada, who is a woman married without a fixed mahr and divorced before consummation. It consists of a shirt (dir'), a head covering (khimar), and a wrap (milhafah)." (Fakhr al-Islam said: this is according to the custom of their lands; as for our lands, it is increased upon its lights...) For a Mufawwada, i.e., a woman with whom marriage was performed without fixing mahr and who is divorced before intercourse, it is mandatory to give a complete set of clothing as mut'ah. That

includes a shirt, dupatta, and a large wrap. (Fakhr al-Islam stated that this is the custom of their area).

1. Sunan Abu Dawood, Chapter on the Dislike of Divorce, Aftab Alam Press Lahore, 1/296.

फ़तवा-ए-रिज़विया, खंड 12

प्रश्न 112: कसर अटोन, परगना शिकन आबाद, डाकखाना सिरसा गंज से, तसद्दुक हुसैन साहब, जमींदार और रईस, उक्त गाँव द्वारा प्रेषित, 6 रजब 1321 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि एक नाबालिग लड़की की शादी एक ऐसे व्यक्ति से हुई जो आँखों से मजबूर (नेत्रहीन) है। स्त्री की आयु अब दस वर्ष है। उसके ससुराल वाले चाहते हैं कि उसे पति से तलाक दिलवाकर पति के छोटे भाई से उसका विवाह करा दें, और स्त्री की बड़ी विधवा बहन का निकाह इस अंधे व्यक्ति से कर दें। इस स्थिति में छोटी बहन, जो बेगुनाह है और उसने कोई शरई अपराध नहीं किया है, तलाक देना जायज़ है या नहीं? यदि जायज़ है, तो क्या उसका मेहर अदा करना पड़ेगा या नहीं? उत्तर दें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: बिना किसी शरई कारण के तलाक देना अल्लाह तआला को अत्यंत नापसंद, घृणित और मकरूह है। हदीस में है: "अल्लाह के नज़दीक हलाल चीज़ों में सबसे अधिक नापसंद चीज़ तलाक है।" हलाल चीज़ों में से तलाक अल्लाह तआला को सबसे ज़्यादा नापसंद है। (त) मगर उसे इसका अधिकार अवश्य है; यदि वह देगा तो तलाक हो जाएगी। फिर यदि अभी पत्नी के साथ खल्वत (एकांत) यानी बिना किसी बाधा के अकेले मिलना नहीं हुआ है, या पत्नी अभी दस साल की है और संभोग की बिल्कुल भी योग्यता नहीं रखती है, तो आधा मेहर देना होगा यदि वह तय हो चुका हो। और यदि कुछ तय न हुआ हो, तो कपड़ों का एक पूरा जोड़ा देना होगा जिसमें दुपट्टा, पाजामा और महिलाओं के छोटे कपड़े शामिल हों, और जो भी उचित अनुपात हो। कपड़ों की गुणवत्ता—चाहे वह उत्तम, निम्न या मध्यम हो—स्त्री और पुरुष दोनों की स्थिति के अनुसार होनी चाहिए। इसका मूल्य पाँच दिरहम से कम न हो और न ही स्त्री के'मेहर-ए-मिस्ल' के आधे से अधिक हो। यदि पुरुष और स्त्री दोनों धनी हैं, तो उत्तम; यदि दोनों गरीब हैं, तो निम्न; और यदि एक गरीब और दूसरा धनी है, तो मध्यम। और यदि यह दस वर्षीय लड़की संभोग के योग्य है और एकांत (खल्वत) हो चुका है, तो पूरा मेहर अनिवार्य होगा। तनवीर अल-अबसार, दुर्र-ए-मुख्तार और रद्द अल-मुह्तार में है: "मुफ़व्वदा, यानी वह महिला जिसका निकाह मेहर तय किए बिना हुआ हो और संभोग से पहले उसे तलाक दे दी गई हो, के लिए मुतअह (उपहार) के रूप में कपड़ों का एक पूरा जोड़ा देना अनिवार्य है। इसमें कमीज़, दुपट्टा और बड़ी चादर शामिल है।" (फ़ख़्र अल-इस्लाम ने फरमाया कि यह उनके क्षेत्र का रिवाज है...) मुफ़व्वदा यानी जिस औरत से मेहर के बिना निकाह किया हुआ और उसको वती (संभोग) से पहले तलाक दे दी हो, तो ऐसी औरत के लिए पूरा जोड़ा लिबास देना बतौर मुतअह

वाजिब है, और वह कमीज़, दुपट्टा और बड़ी चादर है। (फ़ख़्र अल-इस्लाम ने फ़रमाया यह उनके इलाके का रिवाज है।)

1. सुनन अबू दाऊद, तलाक की नापसंदगी का अध्याय, आफताब आलम प्रेस लाहौर, 1/296।

पृष्ठ 323/688

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

مسئلہ ۱۱۲: از کسر اٹون پرگنہ شکن آباد ڈاک خانہ سرسا گنج مرسلہ تصدق حسین صاحب زمیندار ورئیس موضع مذکور ۶ رجب ۱۳۲۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک نابالغہ کی شادی ایک شخص سے ہوئی جو آنکھوں سے معذور ہے ، عورت کی عمر اب دس برس کی ہے، اس کے سسرال والے چاہتے ہیں کہ اسے شوہر سے طلاق دلوا کر شوہر کے چھوٹے بھائی سے اس کا عقد کر دیں اور عورت کی بڑی بہن بیوہ کا اس نابینا سے نکاح کریں، اس صورت میں چھوٹی بہن کہ بے خطا ہے کوئی شرعی جرم اس کے ذمہ نہیں، طلاق دینا جائز ہے یا نہیں، اگر جائز ہے تو اس کا مہر ادا کرنا پڑے گا یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: بلاوجہ شرعی طلاق دینا اللہ تعالیٰ کو سخت ناپسند و مبغوض و مکروہ ہے، حدیث میں ہے: ابغض الحلال الی اللہ تعالیٰ الطلاق۔ حلال چیزوں میں سے طلاق اللہ تعالیٰ کو سب سے زیادہ ناپسند ہے۔ (ت) مگر وہ اس کا اختیار ضرور رکھتا ہے، اگر دے گا ہو جائے گی، پھر اگر زوجہ سے ابھی خلوت یعنی بغیر کسی مانع کے تنہائی یکجائی نہ کی یا زوجہ کی ابھی وہ سالہ ہے قابلیت جماع اصلاً نہ رکھتی ہو جب تو نصف مہر دینا ہوگا اگر بندھا ہو، اور کچھ نہ بندھا ہو تو ایک پورا جوڑا جس میں دوپٹہ، پاجامہ اور عورتوں کے چھوٹے کپڑے اور جو تناسب کچھ ہو، اور مرد عورت دونوں کے حال کے لحاظ سے عمدہ نفیس یا کم درجہ یا متوسط ہو دینا آئے گا جس کی قیمت نہ پانچ درہم سے کم ہو نہ عورت کے نصف مہر مثل سے زیادہ ہو، اگر مرد عورت دونوں غنی ہیں تو نفیس اور دونوں فقیر تو ادنیٰ اور ایک فقیر دوسرا غنی تو اوسط اور اگر یہ دس سالہ لڑکی قابل جماع ہے اور خلوت ہوچکی تو پورا مہر لازم ہو گا__ تنویر الابصار ودرمختار وردالمحتار میں ہے: تجب متعة لمفوضة وہی من زوجت بلا مہر طلقت قبل الوطء وہی درع وخمار وملحفة (قال فخر

الاسلام هذا فی دیارهم اما فی دیارنا فیزاد علی انواره مفوضہ یعنی جس عورت سے مہر کے بغیر نکاح کیا ہوا اور اس کو وطی سے قبل طلاق دے دی ہو تو ایسی عورت کے لئے پورا جوڑا لباس دینا بطور متعہ واجب ہے، اور وہ قمیص، دوپٹہ اور بڑی چادر ہے (فخر الاسلام نے فرمایا یہ ان کے علاقہ کا رواج ہے،

1 سنن ابو داؤد باب فی کراهیۃ الطلاق آفتاب عالم پریس لاہور ۱ / ۲۹۶

Fatawa Razawiya, Volume 12

[Arabic Text Section]: ...cubic as stated in Al-Dirayah. I say: The requirement of this is that the custom of every city for its people shall be considered regarding what a woman wears when going out. (End of quotation from Shami). It should not exceed half of the Mahr al-Mithl (customary dowry) if the husband is wealthy, and it should not be less than five dirhams if he is poor. Or the mut'ah (gift) is considered according to their status, like maintenance (nafaqah). This is the fatwa given. If both are wealthy, she gets the highest quality of clothing; if both are poor, then the lowest. If they differ in status, then a middle-level garment is given. What has been mentioned is the view of Khassaf. In Al-Fath, it is stated that this is more similar to maintenance. It says in Al-Bahr: The view of Khassaf is preferred because Al-Walwalaji authenticated it and said the fatwa is based on it, just as they gave fatwa regarding maintenance. (End of quotation from Shami). All of this is a summary. And Allah Almighty knows best. (T)

[Urdu Commentary Section]: However, in our practice, a waist-wrap (tehband) and shoes will also be provided. I say its requirement is that the custom of every region will be considered valid for its people, meaning the clothing a woman wears when going out will be provided (H, Sh). And that suit of clothes should not exceed half of the Mahr al-Mithl in price if the husband is wealthy, and if he is poor, then it should not be less than at least five dirhams. And in this suit, the status of both husband and wife will be considered, just as both are taken into account regarding maintenance (nafaqah); the fatwa is based on this. Then if both are wealthy, the woman should be given high-quality clothing; if both are poor, then low-quality clothing. If the status of both is different, then middle-level clothing will be given. And this is the aforementioned statement of Khassaf. In 'Al-Fath', it is called more similar to maintenance. In 'Bahr al-Ra'iq', it is stated that Khassaf's view is more preferable because 'Al-Walwalaji' has declared it correct and said the fatwa is based on it, as the jurists have given fatwa regarding maintenance (Sh). All of this text is a summary. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 115: From Bengal, Sabeebpur village, Kamla district, sent by Anwaruddin Barawal, 19 Shaban 1318 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Is divorce a right of Allah (Haqqullah) or a right of the servants (Haqqul 'Ibad)? Please explain and may you be rewarded.

The Answer: Divorce is not anyone's "right". A "right" is something that can be demanded. A woman does not have the right to demand a divorce; rather, if she demands it without a valid Sharia reason, she is a sinner. And Allah Almighty also does not demand divorce; instead, He finds it undesirable and hateful. Therefore, it is neither a right of Allah nor a right of the servant. Yes, when a man cannot keep a woman for a valid Sharia reason, for example, if he is impotent, then at that time legally...

---

1 Radd al-Muhtar with Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Chapter on Dowry, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/336

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

[अरबी पाठ अनुभाग]: ...कुबिक जैसा कि अल-दिराया में है। मैं कहता हूँ: इसका तक़ाज़ा यह है कि हर शहर का रिवाज़ वहां के लोगों के लिए उस लिबास के बारे में मोतबर (मान्य) होगा जो औरत बाहर निकलते समय पहनती है। (शामी का उद्धरण समाप्त)। यह 'महरे मिस्ल' (पारंपरिक मेहर) के आधे से ज़्यादा नहीं होना चाहिए अगर पति अमीर हो, और अगर वह गरीब हो तो पाँच दिरहम से कम नहीं होना चाहिए। या 'मुतअ' (उपहार) उनकी हैसियत के हिसाब से माना जाएगा, जैसे कि नफ़क़ा (भरण-पोषण) में होता है। इसी पर फ़तवा दिया गया है। अगर दोनों अमीर हैं, तो उसे आला (उच्च) दर्जे का लिबास मिलेगा, और अगर दोनों गरीब हैं, तो अदना (निम्न) दर्जे का। अगर दोनों की हैसियत अलग-अलग हो, तो दरमियाना (मध्यम) दर्जे का लिबास दिया जाएगा। जो ज़िक्र किया गया है वह ख़स्साफ़ का क़ौल (कथन) है। अल-फ़तह में इसे नफ़क़ा के ज़्यादा मुशाबेह (समान) कहा गया है। बहरुल राइक़ में कहा गया है कि ख़स्साफ़ का क़ौल ज़्यादा तरजीह वाला है क्योंकि वलवालजिया ने इसे सही बताया है और कहा है कि फ़तवा इसी पर है, जैसा कि फ़िक़्ह के विद्वानों ने नफ़क़ा के बारे में फ़तवा दिया है। (शामी का उद्धरण समाप्त)। यह पूरी इबारत सारांश है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

[उर्दू व्याख्या अनुभाग]: लेकिन हमारे यहाँ इस पर तहबंद और जूता मजीद (अतिरिक्त) दिया जाएगा। मैं कहता हूँ कि इसका मक़्सद यह है कि हर इलाक़े का रिवाज़ वहाँ के लोगों में मोतबर (मान्य) होगा, यानी जो लिबास औरत बाहर निकलते वक़्त पहनती हो वह दिया जाएगा (ह, श)। और वह जोड़ा क़ीमत में महरे मिस्ल के आधे से ज़्यादा न हो अगर ख़ाविन्द (पति) अमीर हो, और अगर वह ग़रीब हो तो फिर कम से कम पाँच दिरहम से कम न हो। और इस जोड़े में ख़ाविन्द और बीवी की हैसियत का एतबार होगा जैसा कि नफ़क़ा (भरण-पोषण) में दोनों का लिहाज़ किया जाता है, इसी पर फ़तवा है। फिर अगर दोनों अमीर हैं तो औरत को उसका आला (उच्च) लिबास और अगर दोनों फ़क़ीर (ग़रीब) हों तो अदना (निम्न) लिबास, और अगर दोनों की हैसियत मुख़्तलिफ़ (अलग) हो तो फिर दरमियाना (मध्यम) लिबास दिया जाएगा और यह जो ख़स्साफ़ का क़ौल मज़कूर (उल्लिखित) है। और 'फ़तह' में इसको नफ़क़ा के ज़्यादा मुशाबेह (समान) कहा गया है। 'बहरुल राइक़' में कहा गया है कि ख़स्साफ़ का क़ौल अरजह (अधिक बेहतर) है क्योंकि 'वलवालजिया' ने इसको सही बताया है और कहा है कि इस पर फ़तवा है जैसा कि नफ़क़ा में फ़ुक़हा (न्यायविद) ने फ़तवा दिया है (श)। यह तमाम इबारत तलख़ीस (सारांश) है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 115: मुल्क बंगाल, सबीबपुर गाँव, कमला इलाक़ा, प्रेषक अनवरुद्दीन बारावल, 19 शाबान 1318 हिजरी। दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि तलाक़ हक़ुल्लाह (अल्लाह का हक़) है या हक़ुल इबाद (बन्दों का हक़)? बयान फरमाएं और सवाब पाएं।

अल-जवाब: तलाक़ किसी का 'हक़' नहीं है। हक़ वह होता है जिसका मुतालबा (मांग) किया जा सके और तलाक़ का मुतालबा औरत को नहीं पहुंचता, बल्कि अगर वह बिना किसी शरई वजह के मुतालबा करे तो गुनहगार होगी। और अल्लाह अज़्ज़वजल भी तलाक़ की मांग नहीं फरमाता बल्कि उसे नापसंद और घृणित मानता है। तो न यह हक़ुल्लाह है और न ही हक़ुल अब्द। हाँ, जब मर्द औरत को शरई वजह से न रख सके मसलन नामर्द हो तो उस वक़्त शरअन...

---

1 रद अल-मुहतार मअ दुर्रे मुख़्तार शरह तनवीर अल-अबसार, बाब अल-महर, दार इह्या अल-तुरात अल-अरबी, बेरुत, 2/336

فتاوٰی رضویہ، جلد دوازدہم

[Arabic Text Section]: مکعب کذافي الدرایة، قلت مقتضی ھذا ان یعبتر عرف کل بلدة لا ھلھا فیما تکسی بہ المرأة عند الخروج اھـ ش) لا تزید علی نصف مھر المثل لو الزوج غنیاً، ولا تنقص عن خمسة دراھم لو فقیر او تعتبر المتعة حالھما کالنفقة۔ بہ یفتی (فان کان غنیین فلھا الاعلی من الثیاب، او فقیرین فالادنی، او مختلفین فالوسط، وما ذکرہ قول الخصاف وفی الفتح انہ الاشبہ بالنفقة قال فی البحر قول الخصاف لان الولوالجی صححہ وقال وعلیہ الفتوی کما افتوا بہ فی النفقة اھـ ش) الکل ملخص واللہ تعالی اعلم۔

[Urdu Commentary Section]: لیکن ہمارے ہاں اس پر تہبند اور جوتا مزید دیا جائے گا۔ میں کہتا ہوں اس کا مقتضی یہ ہے کہ ہر علاقہ کا رواج وہاں کے لوگوں میں معتبر ہوگا یعنی جو لباس عورت باہر نکلتے وقت پہنتی ہو وہ دیا جائے گا (ھ، ش) اور وہ جوڑا قیمت میں مہرِ مثل کے نصف سے زائد نہ ہو اگر خاوند امیر ہو، اور اگر وہ غریب ہو تو پھر کم از کم پانچ درہم سے کم نہ ہو، اور اس جوڑے میں خاوند بیوی کی حیثیت کا اعتبار ہوگا جیسا کہ نفقہ میں دونوں کا لحاظ کیا جاتا ہے، اسی پر فتوٰی ہے پھر اگر دونوں امیر ہیں تو عورت کو اس کا اعلی لباس اور اگر دونوں فقیر ہوں تو ادنٰی لباس، اگر دونوں کی حیثیت مختلف ہو تو پھر درمیانہ لباس دیا جائے گا اور یہ جو خصاف کا قول مذکور ہے۔ اور فتح میں اس کو اشبہ بالنفقة کہا ہے۔ بحر الرائق میں کہا ہے کہ خصاف کا قول ارجح ہے کیونکہ ولوالجیہ نے اس کو صحیح بتایا ہے اور کہا کہ اس پر فتوٰی ہے جیسا کہ نفقہ میں فقہاء نے فتوٰی دیا ہے، اھ ش) یہ تمام عبارت تلخیص ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۱۱۵: از ملک بنگالہ موضع سبیب پور علاقہ کملا مرسلہ انوار الدین بار اول ۱۹ شعبان ۱۳۱۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ طلاق حق اللہ یا حق العباد ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: طلاق کسی کا حق نہیں، حق ہے وہ جس کا مطالبہ پہنچے، اور طلاق کا مطالبہ عورت کو نہیں پہنچتا، بلکہ بے وجہ شرعی مطالبہ کرے تو گنہگار ہو۔ اور اللہ عزوجل بھی طلاق طلب نہیں فرماتا بلکہ اسے ناپسند و مبغوض رکھتا ہے، تو نہ وہ حق اللہ ہے نہ حق العبد، ہاں جب مرد عورت کو وجہ شرعی نہ رکھ سکے مثلاً نامرد ہو تو اس وقت شرعاً

---

1 رد المحتار معہ در مختار شرح تنویر الابصار باب المهر دار احياء التراث العربي بيروت ۳۳۶/۲

Fatawa Razawiya Volume 12

Divorce becomes obligatory upon him. Allah the Almighty said: "Then retain them with kindness or release them with kindness." [1] Hold them back with kindness, or let them go with kindness. (T)

In such a situation, it will certainly become both a right of the servant (Haqq al-Abd) and a right of Allah (Haqq Allah). It is a right of the servant because the woman's freedom is envisioned through it, and it is a right of Allah because every right of a servant is also a right of Allah, as He commands its fulfillment. And Allah the Almighty knows best.

Issue 116 to 117: From the region of Bengal, Sylhet district, Etkhola post office, Narayanpur village, sent by Maulvi Abdul Hakim Sahib, on the Day of Arafah 1320 AH. What do the scholars of religion say in this matter: First Question: Someone gave testimony about a woman's divorce after three years. Is the witness now acceptable or rejected according to Sharia? And is the interval of time between the divorce and the testimony a barrier to the testimony or not? And is there any difference between the mention of divorce and its non-mention before this testimony? Explain it to us and you will be rewarded, along with proofs. (Explain with proofs and gain reward. T) Second Question: Is divorce a right of Allah or a right of the servants? Explain with conclusive evidence and you will be rewarded.

Answer: Divorce in the sense of 'Al-Iqa' (pronouncement), meaning its initiation, is not originally among the rights. Since there is no claimant either from the servant's side or from Allah the Almighty's side, rather "The most hated of permissible things to Allah is divorce." Because here, no demand arises from either Allah the Almighty or the servant; instead, divorce is the most disliked thing among permissible things in the sight of Allah the Almighty. (T)

However, when one is unable to fulfill the rights of the wife, such as an impotent person (unnin) etc., then divorce is a right of the servant; it is also religiously obligatory (diyanat) for the woman's right. And every religiously obligatory act is a right of Allah subhanahu wa ta'ala. So in this specific case, divorce is both a right of the servant and a right of Allah, because of His saying: "Then retain them with kindness or release them with kindness." [2] Retain them with kindness or let them go with kindness. (T)

[1] Al-Quran 2/231 [2] Al-Quran 2/231 Page 325 of 688

उस पर तलाक देना अनिवार्य हो जाता है। अल्लाह तआला ने फरमाया: "तो उन्हें भलाई के साथ रोक लो, या उन्हें भलाई के साथ विदा कर दो।" [१] उन्हें भलाई के साथ रोक लो, या उन्हें भलाई के साथ विदा कर दो। (त)

ऐसी स्थिति में निश्चित रूप से यह बंदे का अधिकार (हक़-उल-अब्द) और अल्लाह का अधिकार (हक़ अल्लाह) दोनों हो जाएगा। बंदे का अधिकार इसलिए कि स्त्री की मुक्ति इसी से कल्पित है, और अल्लाह का अधिकार इसलिए कि प्रत्येक बंदे का अधिकार अल्लाह का भी अधिकार है, जिसके पालन का वह आदेश देता है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला ११६ से ११७: बंगाल के क्षेत्र, सिलहट जिला, एटखोला डाकखाना, नारायणपुर गाँव से, मौलवी अब्दुल हकीम साहब द्वारा भेजा गया, अरफ़ा के दिन १३२० हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं: पहला सवाल: किसी ने तीन साल बाद एक महिला के तलाक पर गवाही दी। क्या अब शरीयत के अनुसार गवाह स्वीकार्य है या खारिज? और तलाक और गवाही के बीच की अवधि गवाही में बाधा है या नहीं? और इस गवाही से पहले तलाक के उल्लेख और गैर-उल्लेख में कोई अंतर है या नहीं? हमें साक्ष्यों के साथ समझाएं और पुण्य प्राप्त करें। (त) दूसरा सवाल: तलाक अल्लाह का अधिकार है या बंदों का अधिकार? ठोस प्रमाणों के साथ समझाएं और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: तलाक 'अल-इक़ा' (उच्चारण) के अर्थ में, यानी इसकी शुरुआत करना, मूल रूप से अधिकारों में शामिल नहीं है। चूंकि न तो बंदे की ओर से कोई मांग करने वाला है और न ही अल्लाह तआला की ओर से, बल्कि "हलाल चीज़ों में अल्लाह के पास सबसे अधिक नापसंद चीज़ तलाक है।" क्योंकि यहाँ न तो अल्लाह तआला और न ही बंदे की ओर से कोई मांग आती है; बल्कि अल्लाह तआला के यहाँ हलाल चीज़ों में तलाक सबसे अधिक नापसंद चीज़ है। (त)

हालांकि, जब कोई पत्नी के अधिकारों को पूरा करने में असमर्थ हो, जैसे कि नपुंसक (उन्नीन) आदि, तो तलाक बंदे का अधिकार है; यह पत्नी के अधिकार के लिए धार्मिक रूप से (दियानत) भी अनिवार्य है। और हर धार्मिक रूप से अनिवार्य कार्य अल्लाह सुब्हानहु व तआला का अधिकार है। तो इस विशेष स्थिति में तलाक बंदे का अधिकार भी है और अल्लाह का अधिकार भी है, क्योंकि उसका फरमान है: "तो उन्हें भलाई के साथ रोक लो, या उन्हें भलाई के साथ विदा कर दो।" [२] उन्हें भलाई के साथ रोक लो या भलाई के साथ विदा करो। (त)

[१] अल-कुरान २/२३१ [२] अल-कुरान २/२३१ पृष्ठ ३२५ का ६८८

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

اس پر طلاق دینی لازم ہو جاتی ہے۔ قال اللہ تعالٰی: فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ۪ ۱ ان کو بھلائی کرتے ہوئے روک لو، یا ان کو بھلائی کے ساتھ رخصت کر دو۔ (ت)

ایسی حالت میں ضرور وہ حق العبد و حق اللہ دونوں ہو جائے گی، حق العبد تو یوں کہ عورت کی خلاصی اسی سے متصور، اور حق اللہ یوں کہ ہر حق العبد حق اللہ بھی ہے جس کے ادا کا وہ حکم فرماتا ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم مسئلہ ۱۱۶ تا ۱۱۷: از ملک بنگال ضلع سلہٹ ڈاک خانہ ایٹ کہولا موضع نارائن پور مرسلہ مولوی عبدالحکیم صاحب روز عرفہ ۱۳۲۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں : سوال اوّل: کسی نے تین برس کے بعد ایک عورت کے طلاق پر گواہی دی اب شرعاً گواہ مقبول ہے یا مردود؟ اور مدتِ فاصلہ جو درمیاں طلاق اور شہادت کے ہے مانعِ شہادت ہے یا نہیں؟ اور قبل اس شہادت کے تذکرہ طلاق اور عدم تذکرہ میں کوئی فرق ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا مع الدلائل (دلائل کے ساتھ بیان کرو اور اجر پاؤ۔ت) سوال دوم: طلاق حق اللہ ہے حق العباد؟ مع برہان قاطع بینوا توجروا الجواب: طلاق بمعنٰی الایقاع یعنی اس کا احداث اصلاً منجملہ حقوق نہیں۔ حیث لا مطالب لامن جھۃ العبد ولا من اللہ تعالٰی بل ابغض الحلال الی اللہ الطلاق۔ کیونکہ یہاں اللہ تعالٰی اور بندے کا کوئی مطالبہ نہیں پہنچتا بلکہ حلال چیزوں میں سب سے زیادہ ناپسندیدہ چیز اللہ تعالٰی کے ہاں طلاق ہے۔ (ت)

البتہ جب ادائے حق زوجہ پر قادر نہ ہو جیسے عنین وغیرہ، تو طلاق حق العبد ہے حق زن کے لئے دیانۃً بھی واجب ہے اور ہر واجب دیانۃً حق اللہ سبحانہ تو اس حالت خاص میں طلاق حق العبد بھی ہے اور حق اللہ بھی ہے لقولہ تعالٰی: فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ۪ ۲ انہیں بھلائی کے ساتھ روک لو یا بھلائی سے رخصت کرو۔ (ت)

Volume Twelve, Fatawa Razawiya

And divorce in the sense of occurrence, meaning after it happens, its result immediately and eventually is the prohibition of sexual relations, which is a right of Allah (Almighty). Therefore, for giving testimony on this, it is not necessary for anyone to be a claimant, even if both husband and wife deny it. But if two legal witnesses give testimony, a decree of divorce will be issued, and no attention will be paid to their denial. It is stated in Durr-ul-Mukhtar:

Arabic	English Translation
It is obligatory to testify without being asked if the testimony is regarding the rights of Allah Almighty, such as the divorce of a woman, i.e., an irrevocable divorce (ba'in), and the manumission of a slave girl and her Tadbir (declaring her free after the master's death). (Summary)	In the rights of Allah, it is necessary to testify even without being asked, as in the case of a woman's irrevocable divorce, the manumission of a slave girl, and her Tadbir. (Summary) (T)

It is in Tahtawi:

Arabic	English Translation
And it (testimony) is accepted even if both spouses deny it.	Testimony regarding an irrevocable divorce will be accepted even if the husband and wife deny it. (T)

Therefore, in the case of an irrevocable divorce, if the witnesses of both sides, while the spouses are living in an unlawful relationship after divorce, do not give testimony for one iddah period without a Shari'a excuse, they will become sinful (fasiq) and their testimony will henceforth be rejected. It is stated in Qunyah, Ashbah, and Durr-ul-Mukhtar:

Arabic	English Translation
Whenever a witness for the sake of Allah (shahid-ul-hisbah) delays his testimony without a valid excuse, he becomes a sinner (fasiq) and his testimony is rejected.	If a witness unnecessarily delays giving testimony in the rights of Allah, he will be considered a sinner (fasiq) and his testimony will be rejected. (T)

It is in Ghamz-ul-Uyun:

Arabic	English Translation
When a witness for the sake of Allah delays his testimony, is the consideration for five days or six months? There is a disagreement mentioned in Al-Qunyah, and the author has not mentioned it.	If a witness delays giving testimony in the rights of Allah, what is considered in the delay—five days or six months? Qunyah has mentioned a disagreement about this, and the author has not.

1. Durr-ul-Mukhtar, Kitab-ush-Shahadat, Mujtabai Press, Delhi, 2/90
2. Hashiyat-ut-Tahtawi 'ala-ad-Durr-il-Mukhtar, Kitab-ush-Shahadat, Dar-ul-Ma'rifah, Beirut, 3/229
3. Durr-ul-Mukhtar, Kitab-ush-Shahadat, Mujtabai Press, Delhi, 2/90

जिल्द बारहवीं, फतावा रज़विया

और तलाक़ का मतलब है उसका वाक़य होना, यानी होने के बाद उसका नतीजा तुरंत और अंततः सम्भोग की मनाही है जो अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल का हक़ है। इसलिए इस पर गवाही देने के लिए किसी का दावेदार होना ज़रूरी नहीं है, यहाँ तक कि अगर पति-पत्नी दोनों ही इनकार करें, लेकिन दो शरई गवाह गवाही दे दें, तो तलाक़ का हुक्म दिया जाएगा और उन दोनों के इनकार पर बिलकुल ध्यान नहीं दिया जाएगा। 'दुर्रे मुख़्तार' में है:

अरबी	हिंदी अनुवाद
अल्लाह तआला के हक़ों में बिना माँगे गवाही देना वाजिब है, जैसे औरत की तलाक़, यानी बान (अटल तलाक़), और लौंडी को आज़ाद करना और उसे 'मुदब्बर' बनाना। (सारांश)	बिना मांगे ही गवाही देना अल्लाह के हक़ों में ज़रूरी है, जैसे किसी औरत की बान तलाक़ और लौंडी की आज़ादी और उसे मुदब्बर करने के बारे में गवाही। (सारांश) (त)

तहतावी में है:

अरबी	हिंदी अनुवाद
और गवाही स्वीकार की जाएगी चाहे पति-पत्नी दोनों इनकार करें।	बान तलाक़ के बारे में गवाही स्वीकार कर ली जाएगी चाहे पति-पत्नी इनकार करें। (त)

इसलिए अगर बान तलाक़ में दोनों तरफ के गवाह, जबकि तलाक़ के बाद पति-पत्नी नाजायज़ तरीके से साथ रह रहे हों, बिना किसी शरई बहाने के एक 'इद्दत' की मुद्दत तक गवाही न दें, तो वे फ़ासिक (पापी) हो जाएँगे और अब उनकी गवाही नामंज़ूर होगी। 'कुनिया', 'अशबाह' और 'दुर्रे मुख़्तार' में है:

अरबी	हिंदी अनुवाद
जब भी अल्लाह की खातिर गवाही देने वाला (शाहिद-उल-हिस्बा) बिना किसी बहाने के गवाही में देरी करता है, तो वह फ़ासिक हो जाता है और उसकी गवाही खारिज कर दी जाती है।	अगर गवाह ने बिना वजह अल्लाह के हक़ों में गवाही देने में देरी की, तो वह फ़ासिक करार दिया जाएगा और उसकी गवाही रद्द कर दी जाएगी। (त)

ग़म्ज़-उल-उयून में है:

अरबी

जब शाहिद-उल-हिस्बा अपनी गवाही में देरी करता है, तो क्या पाँच दिन या छह महीने का विचार किया जाता है? इसमें मतभेद है जिसे 'अल-कुनिया' में ज़िक्र किया गया है और लेखक ने इसका ज़िक्र नहीं किया है।

हिंदी अनुवाद

अगर अल्लाह के हक़ों में गवाही देने में गवाह ने देरी की, तो देरी में पाँच दिन या छह महीने में से क्या विश्वसनीय है, इस बारे में मतभेद को 'कुनिया' ने ज़िक्र किया है और लेखक ने नहीं।

---

1. दुर्रे मुख़्तार, किताबुश शहादात, मतबअ मुज्तबाई, दिल्ली, ९०/२
2. हाशिया अत-तहतावी अलद दुर्रिल मुख़्तार, किताबुश शहादात, दारुल मआरिफ़त, बेरुत, २२९/३
3. दुर्रे मुख़्तार, किताबुश शहादात, मतबअ मुज्तबाई, दिल्ली, ९०/२

पृष्ठ ३२६/६८८

اور طلاق بمعنی الوقوع یعنی بعد حدوث اُس کا ثمرہ حالاً مالاً تحریمِ فرج ہے جو حق اللہ عزوجل ہے ولہذا اس پر ادائے شہادت کے لئے کسی کا مدعی ہونا ضرور نہیں یہاں تک زن و مرد دونوں منکر ہوں مگر دو شاہد شرعی شہادت دیں حکم طلاق دیا جائے گا اور اُن دونوں کے انکار پر اصلاً التفات نہ ہوگا۔ در مختار میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
یجب الاداء بلا طلب لو الشھادۃ في حقوق اللہ تعالی کطلاق امراۃ ای بائنا وعتق امۃ وتدبیرھا[1] (ملخصاً)	طلب کئے بغیر ہی شہادت کی ادائیگی حقوق اللہ میں ضروری ہے جیسا کہ کسی عورت کی بائنہ طلاق اور لونڈی کی آزادی اور اس کے مدبر کرنے کے بارے شہادت (ملخصاً)۔ (ت)

طحطاوی میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
وتقبل وان انکر الزوجان[2]۔	بائنہ طلاق کے متعلق شہادت قبول کرلی جائے گی اگرچہ خاوند بیوی انکار کریں۔ (ت)

ولہذا اطلاق بائن میں اگر شاہدین جانبین جبکہ زوجین بعد طلاق بھی بروجہ ناجائز معاشرت رکھتے ہوں بلا عذر شرعی شہادت ایک عدت تک ادا نہ کریں فاسق ہو جائیں گے اور اب ان کی گواہی مردود ہوگی۔ قنیہ واشباہ ودر مختار میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
متی اخرشاھد الحسبہ شہادتہ بلا عذر فسق فیرد[3]۔	اگر گواہ نے بلا وجہ حقوق اللہ میں شہادت دینے میں تاخیر کردی تو وہ فاسق قرار پائے گا اور اس کی شہادت مردود ہو جائے گی۔ (ت)

غمز العیون میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
شاھد الحسبہ اذا اخرشھادتہ ھل المعتبر خمسۃ ایام او ستۃ اشھر فیہ خلاف ذکرہ في القنیۃ ولم یذکرہ المصنف	اگر حقوق اللہ میں شہادت دینے میں گواہ نے تاخیر کی تو تاخیر میں پانچ دن یا چھ ماہ میں سے کیا معتبر ہے، اس میں اختلاف کو قنیہ نے ذکر کیا ہے اور مصنف نے

---

1. در مختار کتاب الشہادت مطبع مجتبائی دہلی ۹۰/۲
2. حاشیۃ الطحطاوی علی الدر المختار کتاب الشہادت دار المعرفۃ بیروت ۲۲۹/۳
3. در مختار کتاب الشہادت مطبع مجتبائی دہلی ۹۰/۲

(May Allah have mercy on him). Some scholars have stated that it appears the mention of five days in 'al-Quniya' is not a strict condition; rather, the criterion is the ability to present testimony before the judge. The following passage from 'al-Sayrafiyya' supports this: If two witnesses testify that a couple continued to live together as husband and wife despite the husband having pronounced divorce a certain amount of time ago, their testimony will not be accepted because their delay in delivering the testimony has rendered them transgressors (fasiq). End.

Some scholars have said that the apparent meaning is that the mention of at least five days in 'al-Quniya' is not a fixed limit; rather, the basis is the capacity to reach and give testimony before the judge. This passage from 'al-Sayrafiyya' indicates that if two witnesses testified that despite the divorce, these two were living like husband and wife, whereas the husband had given the divorce so long ago, then their testimony will not be accepted because they became transgressors (fasiq) due to the delay in providing testimony. End. (T)

Therefore, in the case in question, if it was a final (mughallaza) divorce or an irrevocable (bain) divorce, and there was no valid excuse preventing the delivery of testimony, yet testimony was not provided, then the witness's testimony is rejected, even if only three days have passed, let alone three years. There is no difference between mentioning or not mentioning the divorce before this. And Allah the Almighty knows best.

Problem 118: From Bareilly, Nakshbandiya neighborhood, questioned by Sayyid Waliyat Hussain Sahib. 29 Rabi-ul-Awwal 1322 AH. What do the scholars of religion say in this matter: There is a deep-seated discord between Zaid and his maternal aunt, and the courtyards of their respective houses are shared. Zaid forbids his wife from going into his aunt's courtyard, meeting his aunt, talking to her, or maintaining any social interaction, as she is his opponent. However, she does not listen to him and does not stop going to her aunt's house, talking to her, or maintaining relations. When Zaid speaks harshly to her about this, she responds with equal harshness and uses her parents and the aunt to pressure Zaid, even distressing Zaid and his mother and saying disrespectful things. Due to her disobedience, Zaid wants to give his wife a Shar'i (legal) divorce. Is it permissible to divorce such a disobedient woman or not? Especially in her state of pregnancy? Please provide guidance so it can be acted upon.

The Answer: It is stated in an authentic (Sahih) Hadith: "Woman was created from a crooked rib; she will always remain crooked. If you wish to benefit from her..."

---

1 Ghamz 'Uyun al-Basā'ir Sharh al-Ashbāh wa al-Nazā'ir, Book of Judiciary, Testimony, and Claims, Idārat al-Qur'ān, Karachi, 1/377. Page 327 of 688

फ़तावा रज़विया, जिल्द बारहवीं

(अल्लाह उन पर रहम करे)। कुछ विद्वानों ने कहा है कि ऐसा प्रतीत होता है कि 'अल-कुनिया' में पाँच दिनों का उल्लेख कोई अनिवार्य शर्त नहीं है; बल्कि न्याय के आधार पर गवाही देने की क्षमता ही मुख्य आधार है। 'अल-सैराफ़िया' का यह अंश इसका प्रमाण है: यदि दो गवाहों ने गवाही दी कि तलाक के बावजूद ये दोनों पति-पत्नी की तरह रह रहे थे, जबकि पति ने इतने समय पहले तलाक दे दिया था, तो उनकी गवाही स्वीकार नहीं की जाएगी क्योंकि गवाही देने में देरी के कारण वे दोनों गुनहगार (फ़ासिक़) हो गए। समाप्त।

कुछ विद्वानों ने कहा है कि ज़ाहिर यह है कि 'कुनिया' का कम से कम पाँच दिन का ज़िक्र करना कोई क़ैद नहीं है बल्कि क़ाज़ी के यहाँ पहुँच कर शहादत देने की क़ुदरत का मदार है। 'सैरफ़िया' की यह इबारत इस पर दाल है कि दो गवाहों ने शहादत दी कि तलाक़ देने के बावजूद ये दोनों मियाँ बीवी की तरह रह रहे हैं जबकि ज़ौज ने तलाक़ इतनी मुद्दत से दे रखी है तो उनकी शहादत क़ुबूल न होगी क्योंकि शहादत की अदायगी में ताख़ीर की वजह से दोनों गवाह फ़ासिक़ हो गए। समाप्त। (त)

अतः प्रश्नाधीन स्थिति में यदि वह तलाक़े मुग़ल्लज़ा (कठोर तलाक) थी या तलाक़े बाइन (अपरिवर्तनीय तलाक) थी और गवाही देने से रोकने के लिए कोई वैध बहाना नहीं था, फिर भी गवाही नहीं दी गई, तो गवाही अस्वीकार्य है, भले ही अभी केवल तीन दिन ही बीते हों, न कि तीन साल। इससे पहले तलाक़ के ज़िक्र करने या न करने में कोई फ़र्क नहीं है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला ११८: बरेली मोहल्ला नक़्शबंदियाँ, प्रेषक सय्यद विलायत हुसैन साहिब। २९ रबी-उल-अव्वल १३२२ हिजरी। धर्मशास्त्री इस मामले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद और उसकी ख़ाला के बीच दिली नफ़रत है और दोनों के रहने के घरों का आँगन एक ही है। ज़ैद अपनी पत्नी को मना करता है कि तुम मेरी ख़ाला के घर के आँगन में मत जाया करो, और मेरी ख़ाला से मत मिलो, न ही बात करो, और न ही कोई लेन-देन या संबंध रखो क्योंकि वह मेरी विरोधी है। लेकिन वह उसकी बात नहीं मानती और अपनी ख़ाला के घर जाना, उससे बात करना और सामाजिक संबंध रखना नहीं छोड़ती। जब ज़ैद इस बात पर उससे सख़्ती से बात करता है, तो वह भी बराबर सख़्ती से पेश आती है और अपने माँ-बाप और ख़ाला के ज़रिए ज़ैद को मजबूर करवाती है, यहाँ तक कि ज़ैद और उसकी माँ को तंग करती है और अपमानजनक बातें करती है। ज़ैद उसकी नाफ़रमानी की वजह से अपनी पत्नी को शरई तलाक़

देना चाहता है। क्या ऐसी नाफ़रमान औरत को तलाक़ देना जायज़ है या नहीं? और उस स्थिति में जब वह गर्भवती हो? जैसा आदेश हो, वैसा अमल किया जाए।

जवाब: सहीह हदीस में फ़रमाया गया कि: "औरत टेढ़ी पसली से बनाई गई है, वह टेढ़ी ही चलेगी और अगर तुम उससे फ़ायदा उठाना चाहो..."

---

१ ग़म्ज़ उयून अल-बसायर शरह अल-अशबाह वन-नज़ायर, किताब अल-क़ज़ा वश-शहादत वाल-दा'वा, इदारा अल-क़ुरान, कराची, १/३७७। पृष्ठ ३२७/६८८

فتاوٰی رضویہ، جلد دوازدہم

رحمہ اللہ تعالٰی قال بعض الفضلاء الذی یظھر ان ذکر خمسۃ ایام کلام القنیۃ لیس بقید، بل المدار علی التمکن من الشھادۃ عند القاضی، ویدل علیہ مانی الصیر فیۃ شھدا انھما کان یعیشان عیش الازواج وکان طلقھا منذ کذا لاتقبل، لانھما صار فاسقین بتاخیرھما الشھادۃ اھ۔

ذکر نہیں کیا۔ بعض فضلاء نے کہا ہے کہ ظاہر یہ ہے کہ قنیہ کا کم از کم پانچ دن کا ذکر کرنا کوئی قید نہیں ہے بلکہ قاضی کے ہاں پہنچ کر شہادت دینے کی قدرت کا مدار ہے۔ صیرفیہ کی یہ عبارت اس پر دال ہے کہ دو گواہوں نے شہادت دی کہ طلاق دینے کے باوجود یہ دونوں میاں بیوی کی طرح رہ رہے ہیں جبکہ زوج نے طلاق اتنی مدت سے دے رکھی ہے تو ان کی شہادت قبول نہ ہوگی کیونکہ شہادت کی ادائیگی میں تاخیر کی وجہ سے دونوں گواہ فاسق ہو گئے اھ (ت)

پس صورتِ مسئولہ میں اگر طلاق مغلظہ تھی یا طلاق بائن تھی اور ادائے شہادت سے کوئی عذرِ صحیح مانع نہ تھا اور شہادت ادا نہ کی تو گواہی مردود ہے اگرچہ ہنوز تین ہی دن ہوئے ہوں نہ کہ تین برس، اور اس سے پہلے تذکرہ و عدم تذکرہ طلاق میں کوئی فرق نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۱۸: بریلی محلہ نقشہ بندیاں مسئولہ سید والیت حسین صاحب ۲۹ ربیع الاول شریف ۱۳۲۲ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس معاملہ میں کہ زید اور اس کی خالہ کے باہم نفاق دلی ہے اور دونوں کے مکان سکنی کا صحن ایک ہے، زید اپنی زوجہ کو ممانعت کرتا ہے کہ تو میری خالہ کے صحن مکان میں مت جایا کر، اور میری خالہ سے مت مل، اور نہ بات کر، نہ کچھ لینے دینے کا رسوم رکھ کہ وہ میری مخالف ہے۔ اور وہ اس کی نہیں مانتی اور اس کی خالہ کے مکان میں جانا اور اس سے بات کرنا اور راہِ رسم نہیں چھوڑتی، اور جب زید اس بات پر اس سے سخت

کلامی کرتا ہے تو وہ برابر سخت کلامی کرتی ہے اور اپنے ماں باپ اور خالہ سے زید کو مجبور کراتی ہے یہاں تک کہ زید کو اور اس کی والدہ کو تنگ کرتی ہے، اور بے حرمتی کی باتیں کرتی ہے اور زید اس کی نافرمانی کی وجہ سے اپنی زوجہ کو طلاق شرعی دینا چاہتا ہے، تو ایسی عورتِ نافرمان کو طلاق دینا جائز ہے یا نہیں؟ اور اس حالت میں کہ وہ بارِ حمل سے ہو، جیسا ارشاد ہو عمل کیا جاوے۔

الجواب: حدیثِ صحیح میں ارشاد ہوا کہ: عورت ٹیڑھی پسلی سے بنائی گئی ہے ٹیڑھی ہی چلے گی اور اگر تو اس سے فائدہ لینا چاہے

---

1 غمز عیون البصائر شرح الاشباہ والنظائر کتاب القضاء والشہادت والدعاوی ادارۃ القرآن کراچی

So benefit from her in this state, and if you try to straighten her, she will break, and breaking her is divorcing her. (1) In another Hadith, it is stated: "Treat Muslim women well; if you dislike one of her habits, you will like another." (2) And Allah Almighty says:

[Arabic]: "For perhaps you hate a thing and Allah makes therein much good." (3) [Translation]: It is likely that you will dislike a matter while Allah Almighty places much goodness in it.

And if you divorce the woman and never intend to marry again, then fine; otherwise, who knows if the second one you find is even worse. Therefore, as much as possible, one should treat a woman well, seek her heart's content, and by making her happy, bring her to obedience and be patient with her ill-temper. If reconciliation is impossible, one may give a divorce, but giving more than one revocable (Raj'i) divorce is a sin. Just say once, "I have divorced you." Then, if within the waiting period (Iddah) —meaning before a pregnant woman gives birth—you change your mind to keep her, say verbally, "I have taken you back into my marriage." She will remain in his marriage as before, otherwise, she should stay separate from him until the child is born, at which point she will exit the marriage. And Allah Almighty knows best, and His knowledge is most complete and perfect.

Problem 119 to 120: From Ferozepur Cantonment, sent by Abdul Aziz Khan Pensioner, 1st Jamadi-ul-Awwal 1336 AH. In the exalted presence of the protector of the Prophet's Sharia, encompassing the rational and the narrated, the Reviver of the present century, Maulana Sahib (may his blessings continue), after a respectful Assalamu Alaikum, it is submitted that divorce, in whatever form it may be, whether women are aware of it or not, occurs. However, its occurrence without a compelling Sharia reason is incorrect and prohibited. It is stated in Durr al-Mukhtar:

[Arabic]: "And its occurrence is permissible according to the majority due to the absolute nature of the verses [of the Quran], as mentioned by Akmal, and it is said that its proponent is al-Kamal." [Translation]: Giving divorce is permissible according to the majority of jurists because the noble verses regarding divorce are absolute, as mentioned by Akmal, and some...

(1) Sahih Muslim, Kitab al-Rada', Al-Wasiyyah bin-Nisa', Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/475. (2) Sahih Muslim, Kitab al-Rada', Al-Wasiyyah bin-Nisa', Qadimi Kutub Khana, Karachi, 1/475. (3) The Holy Quran, 4/19.

तो इसी स्थिति में उससे लाभ उठाओ, और यदि तुम उसे सीधा करना चाहोगे तो वह टूट जाएगी, और उसका टूटना उसे तलाक देना है। (1) दूसरी हदीस में कहा गया है: "मुस्लिम महिलाओं के साथ अच्छा व्यवहार करो; यदि तुम्हें उसकी एक आदत नापसंद है, तो दूसरी पसंद होगी।" (2) और अल्लाह सर्वशक्तिमान कहता है:

[अरबी]: "फ़असा अन तकरहू शैअंव व यजअलल्लाहु फ़ीहि खैरण कसीरा।" (3) [अनुवाद]: संभव है कि तुम किसी बात को अप्रिय समझो और अल्लाह सर्वशक्तिमान उसमें बहुत भलाई रखेगा।

और यदि स्त्री को तलाक देकर फिर कभी निकाह न करना चाहो तो ठीक है, अन्यथा क्या पता कि दूसरी उससे भी बुरी मिले, इसलिए यथासंभव स्त्री के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए, उसका दिल जीतना चाहिए और उसे खुश करके अपनी आज्ञाकारिता में लाना चाहिए और उसके बुरे स्वभाव पर धैर्य रखना चाहिए। यदि मेल-मिलाप असंभव हो तो तलाक दे सकता है, लेकिन एक प्रतिसंहरणीय (रजई) तलाक से अधिक देना पाप है। बस एक बार उससे कहे कि "मैंने तुम्हें तलाक दिया।" फिर यदि इद्दत के भीतर—अर्थात गर्भवती महिला के बच्चे के जन्म से पहले—उसे अपने पास रखने का विचार आए, तो ज़बान से कह ले, "मैंने तुम्हें वापस अपने निकाह में ले लिया है।" वह पहले की तरह उसके निकाह में रहेगी, अन्यथा वह उससे अलग रहे, जब तक कि बच्चा पैदा न हो जाए, उस समय वह निकाह से बाहर हो जाएगी। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान सबसे पूर्ण और उत्तम है।

मसला 119 से 120: छावनी फिरोजपुर से, प्रेषक अब्दुल अजीज़ खान पेंशनर, 1 जमादी-उल-अव्वल 1336 हिजरी। शरीयत-ए-रसूल के संरक्षक, तर्कसंगत और उद्धृत ज्ञान के ज्ञाता, वर्तमान शताब्दी के मुजद्दिद, हज़रत मौलाना साहब (उनकी कृपा बनी रहे) की सेवा में, सम्मानपूर्वक अस्सलामु अलैकुम के बाद निवेदन है कि तलाक जिस तरह से भी हो, चाहे महिलाओं को उसका ज्ञान हो या न हो, वह हो जाती है। लेकिन बिना किसी शरीयत की बाध्यकारी वजह के ऐसा करना अनुचित और हराम है। दुर्रे मुख्तार में लिखा है:

[अरबी]: "और इसका होना बहुसंख्यक (जम्हूरी) के अनुसार जायज़ है क्योंकि आयतें मुतलक (निरपेक्ष) हैं, जैसा कि अकमल ने उल्लेख किया है, और कहा जाता है कि इसके कहने वाले कमाल हैं।" [अनुवाद]: तलाक देना बहुसंख्यक न्यायविदों (फुकहा) के अनुसार जायज़ (मुबाह) है क्योंकि

तलाक से संबंधित पवित्र आयतें निरपेक्ष (मुतलक) हैं, जैसा कि अकमल ने उल्लेख किया है, और कुछ ने...

1. सहीह मुस्लिम, किताब अल-रज़ा, अल-वसीय्यह बिन-निसा, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 1/475.
2. सहीह मुस्लिम, किताब अल-रज़ा, अल-वसीय्यह बिन-निसा, कदीमी कुतुब खाना, कराची, 1/475.
3. अल-कुरान अल-करीम, 4/19.

تو اسی حال پر اس سے نفع اٹھاؤ اور سیدھی کرنا چاہے تو ٹوٹ جائے گی اور اس کا توڑنا اسے طلاق دینا ہے۔1 دوسری حدیث میں ارشاد ہوا کہ : مسلمان عورت سے اچھا برتاؤ رکھو اگر تمہیں اس کی ایک عادت ناپسند ہوئی تو دوسری ہو گی۔2 اور اللہ عزوجل فرماتا ہے :

[عربی]: فَعَسٰی اَنْ تَکْرَھُوْا شَیْئًا وَّ یَجْعَلَ اللّٰہُ فِیْہِ خَیْرًا کَثِیْرًا۔3 [ترجمہ]: قریب ہے کہ تم ایک بات کو مکروہ جانو گے اور اللہ عزوجل اس میں بہت بھلائی رکھے گا۔

اور اگر عورت کو طلاق دے کر پھر کبھی نکاح نہ چاہے تو خیر، ورنہ کیا معلوم کہ دوسری اس سے بھی بُری ملے، اس لئے حتی الامکان عورت کے ساتھ نیک برتاؤ اور اس کی دلجوئی اور اسے خوش کر کے اپنی اطاعت پر لانا اور اس کی کج خلقی پر صبر کرنا چاہئے، اور اصطلاح ناممکن ہو تو طلاق دے سکتا ہے، مگر ایک طلاق رجعی سے زیادہ دینا گناہ ہے، فقط ایک بار اس سے کہے کہ میں نے تجھے طلاق دی، پھر اگر عدت کے اندر یعنی حاملہ کے بچہ پیدا ہونے سے پہلے دل میں اسے رکھنے کی آئی تو زبان سے کہہ لے میں نے تجھے اپنے نکاح میں پھر لیا، وہ بدستور اس کے نکاح میں رہے گی ورنہ اس سے الگ رہے، یہاں تک کہ بچہ پیدا ہو جائے اس وقت وہ نکاح سے نکل جائے واللہ تعالٰی اعلم وعلمہ اتم واحکم۔

مسئلہ ۱۱۹ تا ۱۲۰: از چھاؤنی فیروز پور مرسلہ عبدالعزیز خاں پنشنر یکم جمادی الاولیٰ ۱۳۳۶ھ بخدمت اقدس حامی شرع رسول، حاوی معقول و منقول حضرت مجدد مأۃ حاضرہ جناب مولانا صاحب دامت فیوضہم، مؤدبانہ السلام علیکم کے بعد گزارش ہے کہ طلاق بہر نہج کے باشد

عورتوں کو اس کا علم ہو یا نہ ہو واقع ہو جاتی ہے مگر اس کا ایقاع بلا وجہ ملجیہ شرعیہ نادرست اور حرام ہے۔ در مختار میں ہے :

[عربی]: وایقاعه مباح عند العامة لاطلاق الایات اکمل، وقیل قائله الکمال [ترجمہ]: طلاق دینا جمہوری فقہاء کے نزدیک مباح ہے کیونکہ طلاق والی آیات کریمہ مطلق ہیں کما ذکرہ اکمل اور بعض نے

1 صحیح مسلم کتاب الرضاع الوصایۃ بالنساء قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۴۷۵ 2 صحیح مسلم کتاب الرضاع الوصایۃ بالنساء قدیمی کتب خانہ کراچی ۱ / ۴۷۵ 3 القرآن الکریم ۲۱۲/۴

[Box at Top] "The most correct (view) is its prohibition except for a need, etc." [Arabic text]. It means Kamal al-Din ibn Humam said that the most correct view is that divorce is prohibited unless there is a need, in which case it is permissible, etc. (T)

Among the verses and traditions regarding social interaction with women, the side of not pronouncing (divorce) and its prohibition seems preferable. After marriage, pronouncing (divorce) or not are both choices, but not pronouncing it is more chosen and preferred, considering the verses and traditions that have been revealed regarding social interaction with women (T). And after several years, if discord arises between them, the Panchayat should choose the path of reconciliation according to the verse: "As for those from whom you fear rebellion" [Quran 4:34] (T). Based on this, it was decided that "I will never divorce this woman as long as I live," and a written agreement was given, nullifying his right to pronounce divorce through this contract. According to the written agreement, he cannot give a divorce as it would entail a breach of contract. Breach of contract is general; "And fulfill every commitment; indeed, the commitment will be questioned" [Quran 17:34] (T). In this regard, pronouncing divorce without a valid Sharia reason would be forbidden and restricted. Therefore, in response to the question, writing that giving a divorce is restricted and prohibited based on the written agreement is correct. The second inquiry about the non-occurrence of divorce seems proven from the text of 'Alamgiriyya, which is also correct because the husband of Habib Khatun had the divorce deed written so that he wouldn't have to provide expenses. Therefore, his request to write the divorce deed should not be entertained because his statement is, "I will not give maintenance; I have sent the divorce deed to her via registered mail." Musammat Habib Khatun returned it; she denies it and says she wasn't even aware that she was divorced and no divorce deed was sent to her. Therefore, I request with utmost kindness and traditional grace that you, after observing both inquiries, inform us about the reality of the matter because there is a dire need for this issue, and we have full trust in your honorable self.

Question: A woman who is righteous, performs prayers, obeys Allah and His Messenger, follows Sharia rulings, and obeys her husband in every command; however, after four or five years, during some discord, a written agreement was also made in the presence of a Panchayat, in which a condition...

1 Durr al-Mukhtar, Kitab al-Talaq, Mujtabai Press, Delhi, 1/215 2 Al-Quran 4/34 3 Al-Quran 17/34

[शीर्ष बॉक्स] "सबसे सही (मत) ज़रूरत के अलावा इसकी मनाही है, इत्यादि।" [अरबी पाठ]। यानी कमालुद्दीन इब्न हुमाम ने कहा कि सबसे सही मत यह है कि तलाक़ मना है सिवाय इसके कि ज़रूरत हो, तो वह जायज़ है, इत्यादि। (त)

महिलाओं के साथ मेल-मिलाप के बारे में जो आयतें और हदीसें आई हैं, उनमें भी (तलाक़) न देने और उसकी मनाही का पक्ष ही बेहतर मालूम होता है। निकाह के बाद तलाक़ देना या न देना दोनों विकल्प हैं, लेकिन महिलाओं के साथ मेल-मिलाप के बारे में जो आयतें और हदीसें आई हैं, उन्हें देखते हुए तलाक़ न देना ज़्यादा पसंदीदा और बेहतर है (त)। और कुछ सालों के बाद अगर उनके बीच झगड़ा हो जाए, तो पंचायत को आयत "और जिन स्त्रियों की ओर से तुम्हें अवज्ञा का भय हो" [कुरान 4:34] (त) के अनुसार सुलह का रास्ता अपनाना चाहिए। इसी आधार पर यह तय हुआ कि "मैं इस स्त्री को जीवन भर कभी तलाक़ नहीं दूँगा," और एक लिखित इकरारनामा दे दिया गया, जिससे इस अनुबंध के ज़रिए तलाक़ देने के उसके अधिकार को अमान्य कर दिया गया। लिखित इकरारनामे के अनुसार वह तलाक़ नहीं दे सकता क्योंकि इससे अनुबंध का उल्लंघन (नक्श-ए-मुआहदा) होगा। अनुबंध का उल्लंघन सामान्य है; "और वादे को पूरा करो, बेशक वादे के बारे में सवाल किया जाएगा" [कुरान 17:34] (त)। इस संबंध में, बिना किसी वैध शरिया कारण के तलाक़ देना हराम और प्रतिबंधित होगा। इसलिए, सवाल के जवाब में इकरारनामे के आधार पर तलाक़ देने को प्रतिबंधित और मना लिखना सही है। तलाक़ न होने के बारे में दूसरी पूछताछ 'आलमगीरिया' के इबारत से स्पष्ट रूप से सिद्ध होती है, वह भी सही है क्योंकि हबीब खातून के पति ने तलाक़नामा इसलिए लिखवाया था ताकि उसे खर्चा न देना पड़े। इसलिए, उसके तलाक़नामा लिखवाने की बात सुनवाई योग्य नहीं होनी चाहिए क्योंकि उसका बयान है कि "मैं गुज़ारा भत्ता नहीं दूँगा; मैंने उसे रजिस्ट्री डाक के ज़रिए तलाक़नामा भेज दिया है।" मुसम्मात हबीब खातून ने उसे वापस कर दिया; वह इससे इनकार करती है और कहती है कि मुझे खबर तक नहीं थी कि मुझे तलाक़ दिया गया है और मेरे पास कोई तलाक़नामा नहीं भेजा गया। इसलिए, मैं अत्यंत दया और पुरानी कृपा के साथ हाथ जोड़कर निवेदन करता हूँ कि आप दोनों पूछताछों को देखने के बाद मसले की वास्तविकता से अवगत कराएं क्योंकि इस मसले की सख्त ज़रूरत है और आपकी सम्मानित हस्ती पर पूर्ण विश्वास है।

प्रश्न: एक महिला जो नेक है, नमाज़ पढ़ती है, अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा मानती है, शरीयत के नियमों का पालन करती है और हर हुक्म में अपने पति की आज्ञा मानती है; इसके बावजूद चार-पांच साल बाद किसी अनबन के समय पंचायत के सामने एक इकरारनामा भी लिख दिया गया जिसमें शर्त...

---

1 दुर्रे मुख्तार, किताबुत्तलाक़, मत्तबा मुज्तबाई, दिल्ली, 1/215 2 अल-कुरान 4/34 3 अल-कुरान 17/34

[اوپر والا خانہ] الاصح حظرہ الا لحاجة الخ۔ کہا یعنی کمال الدین ابن ہمام نے کہ قول اصح یہ ہے کہ طلاق ممنوع ہے مگر حاجت ہو تو مباح ہے الخ (ت)

معاشرتِ نساء کے بارے میں جو آیات اور احادیث وارد ہیں اُن میں بھی جانبِ عدمِ ایقاع اور حرمتِ مرجّح معلوم ہوتی ہے، بعد نکاح ایقاع وعدم کل مختار ہے اور عدم ایقاع زیادہ مختار اور پسندیدہ نظراً الی الآیات والاحادیث التی وردت فی المعاشرت بالنساء (اُن آیات واحادیث کے پیش نظر جو عورتوں سے معاشرت کے متعلق وارد ہوئی ہیں۔ ت) اور بعد چند سال کے اگر آپس میں شقاق واقع ہو تو پنچایت مطابق آیت وَالّٰتِيْ تَخافُونَ نُشُوزَهُنَّ 2 (اور جن عورتوں کی نافرمانی کا تمہیں اندیشہ ہو۔ ت) مصالحت کی راہ سے اختیار کریں بنا بریں قرار پایا کہ میں اس عورت کو ہرگز طلاق نہ دوں گا تا زندگی، اور اقرار نامہ لکھ دیا اور اپنے اختیارِ ایقاعِ طلاق کو اس معاہدہ سے باطل کر دیا ہے اور بروئے اقرار نامہ کے طلاق نہیں دے سکتا کہ اسے نقضِ معاہدہ لازم آتا ہے نقض معاہدہ عام ہے وَ أَوْفُوا بِالْعَهْدِ ۖ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُولًا 3 (وعدہ وفا کرو یقیناً عہد کے متعلق سوال ہو گا۔ ت) واقع ہوا بدیں لحاظ ایقاعِ طلاق بلاوجہ موجہ شرعیہ حرام اور محظور ہو گا لہذا سوال کے جواب میں طلاق دینا بلحاظ اقرار نامہ محظور و ممنوع لکھنا درست اور استفتاءِ ثانی میں عدم وقوع طلاق عبارت عالمگیریہ سے بظاہر ثابت ہوتا ہے وہ بھی صحیح ہے کیونکہ حبیب خاتون کے خاوند نے طلاق نامہ اس بنا پر لکھوایا ہے کہ اسے خرچ نہ دینا پڑے لہذا اس کا طلاق نامہ لکھوانا قابل سماعت نہ ہونا چاہئے کیونکہ اس کا بیان ہے کہ میں نفقہ نہیں دوں گا میں اُس کو طلاق نامہ رجسٹری بذریعہ ڈاک بھیج چکا ہوں، مسماۃ حبیب خاتون نے واپس کر دیا مسماۃ خاتون انکاری ہے اور کہتی ہے کہ مجھے خبر تک نہیں تھی کہ مجھے طلاق دیا گیا ہے اور طلاق نامہ میرے پاس

نہیں بھیجا گیا، لہذا ملتمس ہوں کہ براہ عنایت و نوازش قدیمانہ کے دست بستہ عرض ہے کہ آپ ہر دو استفتاء کو بعد ملاحظہ کے حقیقت مسئلہ سے آگاہ فرمائیں کیونکہ اس مسئلہ کی اشد ضرورت ہے اور جناب کی ذات والا صفات پر کمال بھروسہ ہے۔

سوال : جو عورت صالحہ نمازی اللہ اور رسول کی تابعداری ہے احکام شریعت پابندی خاوند کی تابعداری ہر ایک حکم میں مع ہذا چار پانچ سال بعد کسی ناچاقی کے وقت میں رُوبروئے پنچایت اقرار نامہ بھی لکھ دیا جس میں شرط

---

1 درمختار کتاب الطلاق مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۱۵ 2 القرآن ۴/ ۳۴ 3 القرآن ۱۷/ ۳۴

Fatawa Razawiyya Volume 12

...that I will not give divorce for life. In the light of this agreement, is it permissible and correct to give divorce to this woman? And a nursing girl is also with her.

Question regarding the previous agreement question The petitioner has also written in this agreement that I will give five rupees monthly for maintenance. Due to not sending the expenses, the woman filed a complaint with the authority. The defendant was summoned, and along with the response to the claim, the lawyer presented a written divorce deed. This divorce deed was presented so that maintenance would not be mandatory, stating that I had already given her a divorce deed, which the woman denies. In such a situation, will this divorce deed of his be credible and will maintenance not be obligatory upon him?

Answer to the first question The coexistence of permissibility and prohibition in a single thing from two aspects is not unlikely. Divorce in itself is permissible, and since reconciliation is beloved to Sharia and separation is disliked, it is prohibited without need or cause. In the Hadith, a clear indication was made towards the meeting of these two aspects:

[Arabic]: 1 - ابغض الحلال الى الله الطلاق Translation: Among permissible things, divorce is the most disliked by Allah (T).

It is described as both permissible and disliked. In the Noble Verse, it was stated absolutely:

[Arabic]: 2 - يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّقُوهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَأَحْصُوا الْعِدَّةَ Translation: O Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him)! When you divorce women, divorce them keeping their waiting period (Iddat) in view and count the Iddat. (T)

And it is stated in the Hadith:

1. Sunan Abu Dawood, Chapter on the Dislike of Divorce, Aftab Alam Press Lahore 1/296
2. Al-Quran 65/1

फतावा रजविया खंड 12

...कि मैं जीवन भर तलाक नहीं दूंगा। इस इकरारनामे की रोशनी में क्या इस औरत को तलाक देना जायज़ और सही है? और एक दूध पीती बच्ची भी उसके साथ है।

पिछले इकरारनामे से संबंधित सवाल याचिकाकर्ता ने इस इकरारनामे में यह भी लिखा है कि मैं गुज़ारा भत्ता (नान-नफ़क़ा) के तौर पर पांच रुपये मासिक दिया करूँगा। खर्च न भेजने पर औरत ने हाकिम (अधिकारी) के पास शिकायत की। प्रतिवादी (मुदालैह) को तलब किया गया, इस पर दावे के जवाब के साथ वकील ने तलाकनामा लिखवाकर पेश कर दिया। यह तलाकनामा इसलिए पेश किया गया ताकि गुज़ारा भत्ता अनिवार्य न रहे, कि मैं उसे तलाकनामा दे चुका था, जिससे औरत इनकार कर रही है। क्या ऐसी स्थिति में उसका यह तलाकनामा विश्वसनीय होगा और क्या उस पर गुज़ारा भत्ता वाजिब नहीं होगा?

पहले सवाल का जवाब एक ही चीज़ में दो पहलुओं से जायज़ और नाजायज़ का मिलन कोई दूर की बात नहीं है। तलाक अपने आप में हलाल (जायज़) है, और चूँकि शरीयत को मेल-मिलाप प्रिय है और अलगाव नापसंद है, इसलिए बिना ज़रूरत या कारण के यह वर्जित है। हदीस में इन दोनों पहलुओं के मिलन की ओर स्पष्ट संकेत दिया गया है:

[अरबी]: 1 - ابغض الحلال الى الله الطلاق। अनुवाद: हलाल चीज़ों में अल्लाह के पास तलाक सबसे ज़्यादा नापसंद है (त)।

इसे हलाल भी फ़रमाया और नापसंद भी। पवित्र आयत में निरपेक्ष रूप से फ़रमाया गया:

[अरबी]: 2 - يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّقُوهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَأَحْصُوا الْعِدَّةَ। अनुवाद: ऐ नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)! जब आप तलाक दें तो इद्दत को ध्यान में रखकर तलाक दें और इद्दत की गणना करें। (त)

और हदीस में फ़रमाया:

1. सुनन अबू दाऊद, तलाक की नापसंदगी का अध्याय, आफ़ताब आलम प्रेस लाहौर 1/296
2. अल-कुरान 65/1

पृष्ठ 330/688

فتاوٰی رضویہ جلد دو از دہم

ہے کہ تازیستگی طلاق نہیں دوں گا، کیا اسے پانے اس اقرار نامہ کے رو سے اس عورت کو طلاق دینا جائز اور درست ہے؟ اور شیر خوار لڑکی بھی اس کے پاس ہے۔

سوال متعلق سوال سابق اقرار نامہ سائل نے یہ بھی تحریر کر دیا ہے اس اقرار نامہ کے ضمن میں نان نفقہ بابت پانچ روپیہ ماہوار دیا کروں گا، خرچ نہ بھیجنے پر عورت نے حاکم کے پاس نالش کی ہے، مد علیہ کی طلبی ہوئی، اس پر جواب دعوی کے ساتھ وکیل نے طلاق نامہ لکھوا کر پیش کر دیا ہے، یہ طلاق نامہ نان و نفقہ کے نہ لازم ہونے کے لئے پیش کیا ہے کہ میں اس کو طلاق نامہ دے چکا تھا جس سے عورت انکاری ہے، کیا یہ طلاق نامہ اس کا ایسی صورت میں معتبر اور نان و نفقہ اس پر واجب نہ ہوگا؟

جواب سوال اول شے واحد میں حل و حظر کا دو جہت سے مجتمع ہونا کچھ بعید نہیں، طلاق فی نفسہ حلال ہے، اور از انجا کہ شرع کو اتفاق محبوب اور افتراق مبغوض ہے، بے حاجت یاریت محظور ہے، حدیث میں ان دونوں جہتوں کے اجتماع کی طرف صاف اشارہ فرمایا گیا:

ابغض الحلال الی اللہ الطلاق - 1 حلال چیزوں میں سے اللہ تعالٰی کے ہاں طلاق ناپسندیدہ ترین ہے (ت)

حلال بھی فرمایا اور مبغوض بھی، آیہ کریمہ میں مطلقاً ارشاد ہوا:

یَا أَیُّهَا النَّبِیُّ إِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّقُوهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَأَحْصُوا الْعِدَّةَ - 2 اے نبی (صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم)! جب آپ طلاق دیں تو عدت کو پیش نظر رکھ کر طلاق دیں اور عدت کو شمار کریں۔ (ت)

اور حدیث میں فرمایا:

1 سنن ابوداؤد باب کراهية الطلاق آفتاب عالم پریس لاہور ۱ / ۲۹۶ 2 القرآن ۶۵ / ۱

Fatawa Rizwia Volume 12

Arabic: لعن الله الذواقين فـ١ والذواقات ١	**Urdu: Allah Almighty's curse is upon the men and women who treat marriage as a pastime (by frequent divorcing). (T)**

And it was said:

Arabic: ان المختلعات هن المنافقات ٢	**Urdu: Women who seek Khula (divorce initiated by wife) are hypocrites. (T)**

And it was said:

Arabic: ماحلف بالطلاق مومن ولا استحلف به الا منافق ٣	**Urdu: A believer does not swear by divorce, and no one is asked to swear by it except a hypocrite. (T)**

The command of the verse and these sayings of Hadith are based on these two reasons of permissibility and dislike. If there is any suspicion about the woman, or she is disobedient, or does not pray, or has become old and one wants to avoid the division of turns among wives, then in all these cases, divorce is permissible and allowed without any dislike. In fact, in some cases, it is recommended. Scholars say that if a woman does not pray, even if the husband is not able to pay the dower (Mahr), he should still give a divorce because:

Arabic: لان فـ٢ يلقى الله ومهرها في عنقه خير له من ان يعاشر امرأة لاتصلى كما فى الخانية والغنية وغيرهما ٤	**Urdu: Meeting Allah Almighty while the widow's dower (Mahr) is hanging around one's neck is better for him than continuing to live with a woman who does not pray, as mentioned in Khaniyah, Ghaniyah, etc. (T)**

1. Majma' al-Zawa'id, Chapter: On one who divorces frequently, Dar al-Kitab Beirut, 4/335
2. Al-Targhib wa al-Tarhib, Chapter: Warning to a woman asking her husband [for divorce], Mustafa al-Babi Egypt, 3/84; Jami' al-Tirmidhi, Chapters of Divorce, Amin Company Kutub Khana Rashidia Delhi, 1/142 F1: Probably the words of Hadith are: "Indeed, Allah does not like men and women who are tasters (frequent divorcers)." For investigation, see Mu'jam al-Awsat 8/413, Dur al-Manthur 1/788, Tafsir al-Qurtubi 1/149, Kashf al-Astar 'an Zawa'id al-Bazzar

2/92. In all these books the words are "Indeed Allah does not love the tasters", the words "Allah cursed the tasters" are not present. - Nazir Ahmed

3. Kanz al-Ummal citing Ibn Asakir Hadith 46340, Muassasat al-Risala Beirut, 16/289
4. Radd al-Muhtar, Book of Divorce, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut F2: This statement is narrated from Abdullah bin Mas'ud (may Allah be pleased with him). The original words are: "Meeting Allah while her dower is my responsibility is better for me than living with a woman who does not pray." See Radd al-Muhtar mentioned page 2/416. - Nazir Ahmed

फतावा रज़विया जिल्द बारहवीं

अरबी: لعن الله الذواقين فـ١ والذواقات ١

उर्दू: निकाह को मशग़ला बनाने वाले मर्द और औरत पर अल्लाह तआला की लानत है। (त)

और फ़रमाया:

अरबी: ان المختلعات هن المنافقات ٢

उर्दू: खुला तलब करने वाली औरतें मुनाफ़िक़ हैं। (त)

और फ़रमाया:

अरबी: ماحلف بالطلاق موم ولا استحلف به الا منافق ٣

उर्दू: तलाक की कसम देने वाला मोमिन नहीं, और तलाक की कसम लेने वाला सिर्फ मुनाफ़िक़ है। (त)

आयत का वह हुक्म और हदीस के ये इर्शादात इन्हीं दो वजहों (हलाल और बुग़्ज़) पर हैं। अगर औरत पर कोई शक हो, या वह नाफरमान हो, या नमाज़ न पढ़ती हो, या बूढ़ी हो गई हो और उसे औरतों के बीच बारी बाँटने से बचना हो, तो इन तमाम सूरतों में बिना किसी कराहियत के तलाक देना जायज़ और मुबाह है, बल्कि कुछ सूरतों में मुस्तहब (पसंदीदा) है। उलमा फरमाते हैं कि अगर औरत नमाज़ न पढ़े और मर्द महर अदा करने की ताकत न भी रखता हो, तब भी उसे तलाक दे देनी चाहिए क्योंकि:

अरबी: لان ف٢ يلقى الله ومهرها في عنقه خير له من ان يعاشر امرأة لاتصلى كما فى الخانية والغنية وغيرهما ٤

उर्दू: अल्लाह तआला के यहाँ पेशी में बेवा का महर गले में पड़ा हो, यह इससे बेहतर है कि बे-नमाज़ी औरत के साथ मुआशरत (रिश्ता) जारी रखे, जैसा कि खानिया, गनिया वगैरह में है। (त)

1. मजमा अल-ज़वाइद, बाब: मन युक्सिरु अल-तलाक, दार अल-किताब बेरुत, 4/335
2. अल-तरगीब वल तरहीब, बाब: तरहीब अल-मरा'अ अन तस'अल ज़ौजहा, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र, 3/84; जामी अल-तिर्मिज़ी, अबवाब अल-तलाक, अमीन कंपनी कुतुब खाना रशीदिया दिल्ली, 1/142 फा 1: शायद हदीस के अल्फाज़ यूँ हैं: "बेशक अल्लाह ज़ायका लेने वाले मर्दों और औरतों को पसंद नहीं फरमाता।" तहकीक के लिए मुलाहिज़ा हो मुअजम अल-औसत

8/413, दुर्रे मन्सूर 1/788, तफ्सीर अल-कुर्तुबी 1/149, कश्फ अल-अस्तार अन ज़वाइद अल-बज़ार 2/92। इन सब किताबों में "बेशक अल्लाह ज़ायका लेने वालों को पसंद नहीं करता" के अल्फाज़ हैं, "अल्लाह ने ज़ायका लेने वालों पर लानत की" के अल्फाज़ नहीं। - नज़ीर अहमद

3. कंज़ अल-उम्माल हज़वाला इब्न असाकिर हदीस 46340, मुअस्ससत अल-रिसाला बेरुत, 16/289
4. रद अल-मुह्तार, किताब अल-तलाक, दार इह्या अल-तुरास अल-अरबी बेरुत फा 2: यह इबारत हज़रत अब्दुल्ला बिन मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हु) से मनकूल है। असल अल्फाज़ यूँ हैं: "अल्लाह से इस हाल में मिलना कि उसका महर मेरे ज़िम्मे हो, इससे बेहतर है कि मैं ऐसी औरत के साथ रहूँ जो नमाज़ नहीं पढ़ती।" मुलाहिज़ा हो रद अल-मुह्तार का मजकूर सफ़ा 2/416। - नज़ीर अहमद

पृष्ठ 331/688

فتاوٰی رضویہ جلد دو ازدہم

لعن اللہ الذواقین فـ۱ والذواقات نکاح کو شغل بنانے والے مرد اور عورت پر اللہ تعالٰی کی لعنت ہے۔ (ت) ۱۔

اور فرمایا :

ان المختلعات ھن المنافقات ۲۔ خلع طلب کرنے والی عورتیں منافق ہیں (ت)

اور فرمایا :

ماحلف بالطلاق مومن ولا استحلف طلاق کی قسم دینے والا مومن نہیں ، اور طلاق کی قسم لینے والا صرف منافق ہے۔ (ت) بہ الا منافق ۳۔

آیت کا وہ حکم اور احادیث کے یہ ارشادات انہی وجہین حل وبغض پر ہیں، اگر عورت پر کوئی شبہ ہو یا وہ عاصیہ ہو یا نماز نہ پڑھتی ہو یا بوڑھی ہو گئی ہو اور اُسے قسم بین النساء سے بچنا ہو تو ان سب صورتوں میں طلاق بلا کراہت جائز ومباح ہے بلکہ بعض صورتوں میں مستحب ، علماء فرماتے ہیں کہ اگر عورت نماز نہ پڑھے اور یہ ادائے مہر پر قادر نہ بھی ہو جب بھی طلاق دے دینی چاہئے کہ

لان فـ۲ یلقی اللہ ومھرھا في عنقه خیر لہ من ان یعاشر امرأة لاتصلی کما فی الخانیة والغنیة وغیرھما ۴

اللہ تعالٰی کے ہاں پیشی میں بیوہ کا مہر مہر کے گلے میں پڑا ہو یہ اس سے بہتر ہے کہ بے نماز عورت سے معاشرت جاری رکھے ، جیسا کہ خانیہ، غنیہ وغیرہما میں ہے۔ (ت)

۱ مجمع الزوائد باب من یکثر الطلاق دارالکتاب بیروت ۴/ ۳۳۵ ۲ الترغیب والترہیب باب ترہیب المرأة ان تسأل زوجها مصطفی البابی مصر ۸۴/۳، جامع الترمذی ابواب الطلاق امین کمپنی کتب خانہ رشیدیہ دہلی ۱/ ۱۴۲ ف۱: غالباً حدیث کے الفاظ یوں ہیں : ان اللہ لایحب الزوقین والذوقات۔ تحقیق کے لئے ملاحظہ ہو معجم اوسط ۸/ ۴۱۳، درمنثور ۱/ ۷۸۸، تفسیر القرطبی ۱/ ۱۴۹، کشف الاستار عن زوائد البزار ۲/ ۹۲ ان سب کتب میں "ان اللہ لایحب الذواقین" کے الفاظ ہیں "لعن اللہ الذواقین" کے الفاظ نہیں۔ نذیر احمد ۳ کنز العمال بحوالہ ابن عساکر حدیث ۴۶۳۴۰ موسسة الرسالة بیروت ۱۶/ ۲۸۹ ۴ ردالمحتار کتاب الطلاق داراحیاء التراث العربی بیروت / ف۲: یہ عبارت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے منقول ہے اصل الفاظ یوں ہیں : "لان القی اللہ و صداقہا بذمتی خیر من ان اعاشر امرأة لاتصلی"۔ ملاحظہ ہو ردالمحتار کا صفحہ مذکور ۲/ ۴۱۶۔ نذیر احمد

Rather, in some cases, it becomes obligatory. For instance, if parents command him to divorce his wife, and not doing so causes them pain and displeasure, then it is obligatory to give the divorce even if the woman is not at fault. "Because disobedience is forbidden and avoiding the forbidden is obligatory." (T). It is stated in a Hadith:

"And if they command you to leave your family and your wealth, then do so."[1]	If parents command separation from wife and wealth, then do exactly that. (T)

Yes, giving divorce without need or a Sharia-compliant excuse is disliked (Makruh) and forbidden. However, if given, it will take effect because "the knot of marriage is in his hand." (T). Being a perpetrator of a disliked or even sinful act does not prevent its occurrence. For example, giving divorce during menstruation is forbidden as the command is: "Divorce them at their prescribed periods"[2] (keep the 'iddah in view. T). But if given, it will occur, though the person is a sinner. The effect of an agreement would only be that a divorce which was disliked without need would now be severely disliked as it also involves breaking an agreement. But even this cannot prevent the occurrence; if given, there is no doubt it will take effect. Even if there was an agreement against it, it won't prevent occurrence, though the blame for breaking the agreement will fall on him. If the essence of this agreement was to strip away his right to divorce, then that agreement itself is rejected as it changes a Sharia ruling. Sharia has made him the owner (of this right), and it cannot nullify this ownership. In a Hadith, the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said:

"What is wrong with people that they set conditions that are not in the Book of Allah? Whoever sets a condition that is not in the Book of Allah, it is rejected, even if there were a hundred such conditions. The condition of Allah is more worthy and more firm."[3]	What will be the state of nations who impose such conditions that are not in the Book of Allah? Whoever imposes a condition that is not found in the Book of Allah, meaning not liked by Allah, then that condition is rejected, even if there are a hundred such conditions. Only the condition liked by Allah is worthy of acceptance and is reliable. (T)

It is stated in Radd al-Muhtar:

---

[1] Al-Targhib wa al-Tarhib, regarding leaving prayer intentionally, Mustafa al-Babi Egypt 1/383; Al-Sunan al-Kubra, Book of Division and Distribution, Dar Sader Beirut

7/304; Kanz al-Ummal Hadith 44018, Muassasa al-Risala Beirut 12/49. [2] Al-Quran 1/65 [3] Sahih Muslim, Chapter explaining that loyalty belongs to the one who manumits, Qadeemi Kutub Khana Karachi 1/494.

फतावा रज़विय्या जिल्द 12

बल्कि कुछ स्थितियों में यह अनिवार्य (वाजिब) हो जाता है, जैसे कि अगर माता-पिता उसे अपनी पत्नी को तलाक देने का आदेश दें और ऐसा न करने से उन्हें कष्ट और नाराजगी हो, तो तलाक देना अनिवार्य है, भले ही महिला का कोई दोष न हो। "क्योंकि अवज्ञा हराम है और हराम से बचना अनिवार्य है।" (त)। हदीस में कहा गया है:

"और अगर वे तुम्हें अपने परिवार और अपनी संपत्ति छोड़ने का आदेश दें, तो ऐसा ही करो।"[1]

अगर माता-पिता पत्नी और संपत्ति से अलग होने का आदेश दें, तो वैसा ही करें। (त)

हाँ, बिना किसी आवश्यकता या शरीयत के बहाने के तलाक देना नापसंद (मक़रूह) और मना है। हालाँकि, यदि दिया जाता है, तो यह प्रभावी होगा क्योंकि "निकाह की गाँठ उसके हाथ में है।" (त)। नापसंद या यहाँ तक कि पापपूर्ण कार्य करने से इसकी घटना नहीं रुकती। उदाहरण के लिए, मासिक धर्म के दौरान तलाक देना मना है क्योंकि आदेश है: "उनकी इद्दत को ध्यान में रखते हुए उन्हें तलाक दो।"[2] (इद्दत को ध्यान में रखकर तलाक दो। त)। लेकिन अगर दिया जाता है, तो यह हो जाएगा, और वह व्यक्ति गुनहगार होगा। किसी समझौते का प्रभाव केवल इतना होगा कि जो तलाक बिना आवश्यकता के मक़रूह था, वह अब गंभीर रूप से मक़रूह होगा क्योंकि इसमें समझौते का उल्लंघन भी शामिल है। लेकिन यह भी घटना को नहीं रोक सकता; यदि दिया जाता है, तो इसमें कोई संदेह नहीं कि यह प्रभावी होगा। भले ही इसके खिलाफ कोई समझौता हो, यह घटना को नहीं रोक सकता, हालाँकि समझौता तोड़ने का दोष उस पर आएगा। यदि इस समझौते का सार उसके तलाक के अधिकार को छीनना था, तो वह समझौता ही खारिज कर दिया जाता है क्योंकि यह शरीयत के नियम को बदलता है। शरीयत ने उसे इसका स्वामी बनाया है, और वह इस स्वामित्व को रद्द नहीं कर सकता। हदीस में, पवित्र पैगंबर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया:

"उन लोगों का क्या होगा जो ऐसी शर्तें लगाते हैं जो अल्लाह की किताब में नहीं हैं? जो कोई ऐसी शर्त लगाता है जो अल्लाह की किताब में नहीं है, वह खारिज है, भले ही ऐसी सौ शर्तें हों। अल्लाह की शर्त अधिक योग्य और अधिक दृढ़ है।"[3]

उन कौमों का क्या हाल होगा जो ऐसी शर्तें लगाते हैं जो अल्लाह की किताब में नहीं हैं? जो व्यक्ति ऐसी शर्त लगाता है जो अल्लाह की किताब में मौजूद नहीं है, यानी अल्लाह को पसंद नहीं है, तो वह शर्त खारिज है, चाहे ऐसी सौ शर्तें हों। केवल अल्लाह की पसंद की शर्त ही स्वीकार्यता के योग्य और विश्वसनीय है। (त)

रद अल-मुह्तार में है:

---

[1] अल-तरगीब व अल-तरहीब, जानबूझकर नमाज़ छोड़ने के बारे में, मुस्तफा अल-बाबी मिस्र 1/383; अल-सुनन अल-कुबरा, किताबुल कसम वन-नशूर, दार सादेर बेरूत 7/304; कंजुल उम्माल हदीस 44018, मुअस्ससतुर् रिसाला बेरूत 12/49। [2] अल-कुरान 1/65 [3] सहीह मुस्लिम, बाब अल-वलाउ लिमन अतका, कदीमी कुतुब खाना कराची 1/494।

पृष्ठ 332 का 688

بلکہ بعض صورتوں میں واجب ہوتی ہے، جیسے اس کو اس کے ماں باپ کو طلاق دینے کا حکم دیں اور نہ دینے میں ان کی ایذا و ناراضی ہو واجب ہے کہ طلاق دے دے اگر چہ عورت کا کچھ قصور نہ ہو "لان العقوق حرام والا جتناب عن الحرام واجب" (کیونکہ نافرمانی حرام ہے اور حرام سے بچنا واجب ہے ۔ت) حدیث میں فرمایا:

وان امراك ان تخرج من اهلك و مالك فاخرج[1]۔ اگر والدین بیوی اور مال سے علیحدگی کا حکم دیں تو ایسا ہی کرو۔(ت)

ہاں بے حاجت بلا عذر شرعی طلاق دینا مکروہ و ممنوع ہے مگر دے گا تو پڑ ضرور جائے گی کہ وہ اس کی زبان پر رکھی گئی "بیدہ عقدۃ النکاح" (نکاح کی گرہ اس کے ہاتھ میں ہے ۔ ت) اس کا مرتکب مکروہ وہ بلکہ گنہگار ہونا بھی اس کے وقوع کو نہیں روکتا جیسے حالت حیض میں طلاق دینا حرام ہے کہ حکم فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ[2] (عدت کو پیش نظر رکھ کر طلاق دو۔ت) مگر دے گا تو ضرور ہو جائے گی اور یہ گنہگار۔ عہد نامہ کا اثر فقط اتنا ہوگا کہ بلا حاجت جو طلاق دینا مکروہ تھا اب سخت مکروہ ہوگا کہ نقض عہد بھی ہوگا مگر وقوع سے یہ بھی مانع نہیں ہو سکتا، دے گا تو پڑ جانے میں شبہ نہیں اگرچہ مخالفت کا عہد بھی ہو گا مگر وقوع سے یہ بھی مانع نہیں ہو سکتا، دے گا تو پڑ جانے میں شبہ نہیں اگرچہ مخالفت کا عہد بھی اس پر الزام آئے گا۔ اس عہد کا اگر حاصل یہ تھا کہ پانے اختیار طلاق کو سلب کرتا ہے تو وہ عہد ہی مردود ہے کہ تغیر حکم شرع ہے شرع مطہر نے اس کو مالک کیا ہے اس ملک کو باطل نہیں کر سکتا۔ حدیث میں حضور اقدس صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا:

مابال اقوام یشترطون شروطا لیست في کتاب اللہ، من اشترط شرطا لیس في کتاب اللہ فھوردان کانت مائۃ شرط شرط اللہ احق واوثق[3]۔

قوموں کا کیا حال ہو گا کہ ایسی شرطیں لگاتے ہیں جو کتاب اللہ میں نہیں ہیں، جو شخص ایسی شرط لگائے جو اللہ تعالیٰ کی کتاب میں موجود نہیں یعنی اللہ تعالیٰ کی پسندیدہ نہیں، تو وہ شرط مردود ہے اگرچہ ایسی سو شرطیں ہوں، صرف اللہ تعالیٰ کی پسندیدہ شرط قبولیت کے لائق اور باوثوق ہے۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے:

---

1 الترغیب والترہیب من ترك الصلوۃ تعمدًا مصطفی البابی مصر ۱/ ۳۸۳، السنن الکبری کتاب القسم والنشور دار صادر بیروت ۳۰۴/۷، کنز العمال حدیث ۴۴۰۰۱۸ موسسۃ الرسالہ بیروت ۴۹/۱۲ 2 القرآن ۱/۶۵ 3 صحیح مسلم باب بیان ان الولاء لمن اعتق قدیمی کتب خانہ کراچی ۴۹۴/۱

Fatawa Razawiyya, Volume 12

It is common in the speech of the masses to say, "You are divorced; you are lawful for swine and forbidden to me." The *Khayriyya* gave a fatwa that this is a revocable divorce (talaq raj'i). This is because saying "you are forbidden to me," if it refers to the present state, is against the Shariah because a wife becomes forbidden only after the expiry of the iddah period. If it refers to the future, then it is correct and does not contradict revocation. Similarly, the jurists have given a fatwa for revocable divorce when someone says, "You are divorced such that no judge or scholar can return you," because he does not have the authority to suspend the Shariah ruling. In the annotations of *Minh*, this is supported by the statement of *Sayrafiya* that if someone says to his wife, "You are divorced and I have no right of revocation over you," it will still be a revocable divorce. And Allah Almighty knows best.

Answer to the Second Question: A divorce deed is definitely reliable regarding the occurrence of divorce. By saying "I have already given divorce," divorce will definitely take place.

Because he currently possesses the power to initiate it, what he said is not disputed. (T)

However, if he attributes it to a past time, saying "I divorced her so many days ago," that period will not be accepted; instead, the divorce will be established from the current time. It is stated in *Durr al-Mukhtar*:

If one confesses to a divorce from a past time, the fatwa is that it takes effect from the time of the confession...

1. Rad al-Muhtar, Chapter on Express Divorce from the Book of Divorce, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/451.

फतावा रज़विय्या, खंड 12

जनमानस की बोलचाल में यह बहुत आम है कि "तुझे तलाक़ है, तू सुअरों के लिए हलाल और मुझ पर हराम है।" 'खैरिया' में फतवा दिया गया है कि यह तलाक़-ए-रजई (प्रतिसंहरणीय तलाक़) है। क्योंकि "मुझ पर हराम है" कहना, अगर इससे वर्तमान मुराद है तो यह शरीयत के खिलाफ है क्योंकि तलाक़ के बाद बीवी इद्दत खत्म होने पर हराम होती है। और अगर भविष्य के लिए हराम किया तो यह सही है और यह रुजूअ (वापसी) करने के खिलाफ नहीं है। इसी तरह फुक़हा (विधिवेत्ताओं) ने रजई तलाक़ का फतवा दिया है जब कोई कहे कि "तुझे ऐसी तलाक़ जिसे कोई काज़ी या आलिम वापस न कर सके" क्योंकि उसे ऐसा कहने का अधिकार नहीं है जिससे वह शरीय हुक्म को निलंबित कर दे। 'मिन्ह' के हाशियों में इसकी ताईद में 'सैरफिया' का यह बयान ज़िक्र किया गया है कि अगर किसी ने बीवी को कहा "तुझे तलाक़ है और मुझे तुझ पर रुजूअ का हक नहीं है," तो यह तलाक़-ए-रजई होगी। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है)।

दूसरे सवाल का जवाब: तलाक़ के वाकए होने के बारे में तलाक़ नामा निश्चित रूप से विश्वसनीय है। उसके यह कहने से कि "मैं तलाक़ दे चुका हूँ," तलाक़ निश्चित रूप से हो जाएगी।

क्योंकि वर्तमान में वह तलाक़ देने का मालिक है, तो जो उसने कहा वह उसके खिलाफ नहीं है। (त)

हाँ, अगर वह इसे अतीत के समय से जोड़ता है कि "इतने दिन हुए मैं उसे तलाक़ दे चुका हूँ," तो वह अवधि नहीं मानी जाएगी बल्कि उसी समय से तलाक़ करार दी जाएगी। 'दुर्र-ए-मुख्तार' में है:

अगर अतीत में किसी समय की तलाक़ का इक़रार (स्वीकारोक्ति) किया तो फतवा यह है कि तलाक़ इक़रार के समय से ही होगी...

1. रद अल-मुह्तार, किताबुत तलाक़ का बाब-अस-सरीह, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/451।

पृष्ठ 333 / 688

جلد دوازدہم فتاوٰی رضویہ

يقع كثير في كلام العوام انت طالق تحلى للخنازير وتحرمي علىّ وافتى في الخيرية بأنه رجعي لان قوله وتحرمي علىّ ان كان للحال فخلاف المشروع لانها لا تحرم الا بعد انقضاء العدّة، وان كان للاستقبال فصحيح ولا ينافى الرجعة، وكذلك افتى بالرجعي في قولهم انت طالق لا يردك قاضى ولا عالم لانه لا يملك اخراجه عن موضوعه الشرعي وايده في حواشيه على المنح بما في الصيرفية لو قال انت طالق ولا رجعة لى عليك فرجعية - والله تعالى اعلم۔

عوام کے کلام میں کثیر الوقوع ہے کہ "تجھے طلاق ہے تو خنزیروں پر حلال اور مجھ پر حرام ہے"، خیریہ میں فتوٰی دیا ہے کہ یہ طلاق رجعی ہے کیونکہ "تجھ پر حرام" کہنا، اگر اس سے مراد یہ ہے کہ "فی الحال مجھ پر حرام" تو یہ خلافِ مشروع ہے کیونکہ طلاق کے بعد بیوی عدت ختم ہونے پر حرام ہوتی ہے اور استقبال کے لئے حرام کیا تو یہ صحیح ہے اور یہ رجوع کرنے کے خلاف نہیں اور یوں ہی فقہاء نے رجعی طلاق کا فتوٰی دیا ہے جب کوئی یہ کہے کہ تجھے ایسی طلاق جس پر تجھے کوئی قاضی اور عالم واپس نہ کر سکے، کیونکہ ایسا کہنے کا وہ مجاز نہیں کہ جس سے وہ شرعی حکم کو معطل کردے۔ منح کے حواشی میں اس کی تائید پر صیرفیہ کا یہ بیان ذکر کیا ہے کہ اگر کسی نے بیوی کو کہا تجھے طلاق ہے اور تجھے پر رجوع کا حق نہیں ہے، تو یہ طلاق رجعی ہوگی۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

جواب سوال دوم طلاق نامہ درباره وقوعِ طلاق ضرور معتبر ہے اس کے کہنے سے کہ میں طلاق دے چکا ہوں، ضرور طلاق ہو جائے گی،

لانه يملك انشاءه في الحال فلا ينازع فيما قال۔ کیونکہ فی الحال وہ طلاق کا مالک ہے، تو جو اس نے کہا وہ اس کے مخالف نہیں۔ (ت)

ہاں زمانہ کی طرف اس کی اسناد اگر کرے کہ اتنے دن ہوئے میں اسے طلاق دے چکا ہوں تو یہ مدّت نہ مانی جائے گی بلکہ اسی وقت سے طلاق قرار پائے گی۔ در مختار میں ہے:

لو اقر بطلاقها منذ زمان ماض فان الفتوی انها من وقت الاقرار نفیًا اگر ماضی میں کسی وقت کی طلاق کا اقرار کیا تو مطلقاً اس وقت اقرار سے طلاق کا فتوٰی ہے تاکہ

1 ردالمحتار باب الصریح من کتاب الطلاق داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۴۵۱

Fatawa Razawiya - Volume 12

So that no accusation of an illegitimate agreement between husband and wife can be made (T)

Due to the accusation of collusion However, his word will not be considered valid for waiving the fixed maintenance (nafaqah). They will make him pay the fixed maintenance up to that time and will consider her divorced from that moment, making maintenance obligatory for the entire iddah (waiting period) starting from today. Yes, if the woman also admits that so much time has passed since the divorce and the iddah is over, then indeed maintenance will not be mandatory, but divorce will still be mandatory from that point on. It is stated in Durr al-Mukhtar after the mentioned text:

But if the woman accuses the man of lying regarding the time, or says she doesn't know, then in such a case, the iddah will start from the time of acknowledgement, and he must provide her with maintenance and housing. If the woman confirms his statement, then the ruling remains the same, but due to her own confirmation, she will be deprived of her right to maintenance and housing. (Summarized) (T)

In 'Dhakhirah' of Imam Burhanuddin Mahmoud, then in 'Al-Hindiyya' from Imam Khasaf (may Allah have mercy on him):

If a woman brings a man before the judge and demands maintenance, and the man tells the judge that he divorced her a year ago and her iddah has ended, but the woman denies the divorce, the judge will not accept the man's word. If two witnesses, whom the judge does not know, testify in favor of the man, the judge will still make maintenance obligatory. However, if the woman declares those witnesses to be just and admits that three menstrual cycles have passed within the year, then there will be no maintenance for the woman. If she had received anything, she must return it. (T)

It is stated in 'Bada'i' by Imam Malik al-Ulama:

1. Durr al-Mukhtar, Book of Iddah, Mujtabai Press, Delhi, 1/257
2. Durr al-Mukhtar, Book of Iddah, Mujtabai Press, Delhi, 1/257
3. Fatawa Hindiyya, Chapter 3 regarding maintenance of the divorced woman, Nurani Kutub Khana, Peshawar, 1/559

फतावा रज़विया - जिल्द बारहवीं

ताकि पति-पत्नी के बीच नाजायज़ समझौते का आरोप न लग सके(त)

मिलीभगत के आरोप के कारण मगर निर्धारित भरण-पोषण (नफ़क़ा) को रद्द करने के लिए उसकी बात विश्वसनीय नहीं मानी जाएगी। उस समय तक का निर्धारित भरण-पोषण दिलाया जाएगा और उस समय से उसे तलाक़शुदा माना जाएगा और आज से पूरी इद्दत तक का भरण-पोषण अनिवार्य होगा। हाँ, अगर औरत भी स्वीकार कर ले कि इतना समय बीत चुका है, तलाक़ हो चुकी है और इद्दत गुज़र चुकी है, तो निःसंदेह भरण-पोषण अनिवार्य नहीं होगा, लेकिन तलाक़ हर हाल में उसी समय से अनिवार्य है। 'दुर्रे मुख्तार' में उक्त इबारत के बाद लिखा है:

लेकिन अगर औरत मर्द को समय के संदर्भ में झूठा ठहराए या कहे कि मुझे नहीं मालूम, तो ऐसी स्थिति में इकरार के समय से इद्दत शुरू होगी, उसे भरण-पोषण और आवास देना होगा। और अगर औरत उसकी पुष्टि कर दे तो फिर हुक्म यही है, मगर वह अपनी पुष्टि के कारण अपने भरण-पोषण और आवास के अधिकार से वंचित हो जाएगी। (संक्षिप्त) (त)

इमाम बुरहानुद्दीन महमूद की 'ज़खीरा' में, फिर 'हिन्दिया' में इमाम खसाफ़ (रहमतुल्लाहि अलैहि) से वर्णित है:

अगर किसी औरत ने काज़ी के पास किसी व्यक्ति को पेश किया और भरण-पोषण की माँग की, और मर्द ने काज़ी से कहा कि मैंने इसे एक साल पहले तलाक़ दे दी थी और इद्दत भी गुज़र चुकी है, और औरत तलाक़ से इनकार कर दे, तो काज़ी मर्द की बात स्वीकार नहीं करेगा। अगर दो गवाह, जिन्हें काज़ी नहीं जानता, मर्द के पक्ष में गवाही दें, तो भी काज़ी भरण-पोषण अनिवार्य कर देगा। हाँ, अगर औरत उन गवाहों को न्यायप्रिय (आदिल) स्वीकार कर ले और साल भर में तीन मासिक धर्म (हैज़) गुज़रने का इकरार कर ले, तो अब औरत के लिए कोई भरण-पोषण नहीं होगा। फिर अगर औरत ने कुछ प्राप्त किया हो, तो उसे वापस करना होगा। (त)

इमाम मलिक उल-उलमा की 'बदाइ' में है:

1. दुर्रे मुख्तार, बाबुल इद्दत, मतबअ मुज्तबाई, दिल्ली, 1/257
2. दुर्रे मुख्तार, बाबुल इद्दत, मतबअ मुज्तबाई, दिल्ली, 1/257

3. फतावा हिन्दिया, अल-फ़स्लुस सालीस फ़ी नफ़क़तिल मोअतद्दा, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 1/559

पृष्ठ 334/688

میاں بیوی کے ناجائز سمجھوتہ کی تہمت نہ لگ سکے (ت)

لتهمة المواضعة مگر نفقہ مفروضہ ساقط کرنے کے لئے اس کا قول معتبر نہ ہوگا اس وقت تک کا نفقہ مفروضہ دلائیں گے اور اس وقت سے مطلقہ مانیں گے اور آج سے تمامی عدت تک کا نفقہ واجب کریں گے۔ ہاں اگر عورت بھی تسلیم کرلے کہ اتنا زمانہ ہوا طلاق ہو چکی اور عدت گزر چکی تو بے شک نفقہ لازم نہ آئے گا مگر طلاق بہر حال اس وقت سے لازم ہے۔ درمختار میں بعد عبارت مذکورہ ہے: لکن ان کذبته فی الاسناد او قالت لا ادری وجبت العدة من وقت الاقرار ولها النفقة والسکنی وان صدقته فکذلك غیرانه لانفقة لاسکنی لقبول قولها علی نفسها خانیة (ملخصا) لیکن اگر عورت مرد کو زمانہ کی نسبت میں جھوٹا قرار دے یا کہے کہ مجھے معلوم نہیں، تو ایسی صورت میں اقرار کے وقت سے عدت شروع ہوگی، اس کو نفقہ اور رہائش دینی ہوگی، اور عورت اس کی تصدیق کرے تو پھر حکم یہی ہے مگر وہ اپنی تصدیق کی وجہ سے اپنے نفقہ اور سکنی کے حق سے محروم ہوجائے گی (ملخصاً) (ت) ذخیرہ امام برہان الدین محمود پھر ہندیہ میں امام خصاف رحمۃ اللہ تعالی سے ہے: لوان رجلا قدمته امرأته الی القاضي وطالبته بالنفقة وقال الرجل للقاضی کنت طلقتها منذ سنة وانقضت عدتها وجحدت الطلاق لایقبل قوله فان شهد له شاهدان بذلك والقاضی لا یعرفهما فانه یأمره بالنفقة علیها فان عدلت الشهود واقرت انها حاضت ثلث حیض في هذه السنة فلا نفقة لها علیه فان اخذت منه شیئا ردت علیه۔ اگر کسی عورت نے قاضی کے ہاں کسی شخص کی پیشی کرادی اور نفقہ کا مطالبہ کیا اور مرد نے قاضی سے کہا کہ میں نے اس کو ایک سال قبل طلاق دے دی تھی اور عدت بھی گزر چکی ہے اور عورت طلاق کا انکار کردے تو قاضی مرد کی بات کو قبول نہیں کرے گا، اگر دو گواہوں جن کو قاضی نہیں جانتا، نے گواہی مرد کے حق میں دی تو

پھر بھی قاضی نفقہ واجب کردے گا، ہاں اگر عورت ان گواہوں کو عادل قرار دے اور تین حیض سال بھر میں گزرنے کا اقرار کرلے تو اب عورت کے لئے نفقہ نہ ہوگا پھر اگر عورت نے کچھ وصول کیا ہو تو واپس کرے گی۔ (ت) بدائع امام ملک العلماء میں ہے:

1. درمختار باب العدۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۵۷
2. درمختار باب العدۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۵۷
3. فتاوٰی ہندیۃ الفصل الثالث فی نفقۃ المعتدۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۵۵۹

Fatawa Razawiyya, Volume 12

A husband's claim to invalidate his wife's maintenance will not be accepted. And Allah Almighty knows best.

A husband's statement in invalidating the wife's maintenance will not be accepted. And Allah Almighty knows best (T).

Mas'ala 121: From Banaras, Mohalla Patarkunda, residence of Buwan Sahiba, sent by Maulvi Abul Khair Syed Hasan Sahib, 13 Jumada al-Ukhra 1320 AH.

My leader, my master, and my sanctuary, may Allah Almighty prolong his shadow. After Salams, I submit to your service that your presence is the absolute trusted authority, hence this inquiry is sent. The validity or invalidity depends on your seal, even though most scholars have signed it. The scenario of the question is as follows:

What do the scholars of religion say in this situation: Zaid, in the presence of Khalid, without mentioning his wife Hind's name and in her absence, said "one divorce, two divorces, three divorces". He did not say "I give" or "I do not give" anything. Zaid's real brother, Bakr, says that in my presence, without Hind's presence and without mentioning her name, Zaid said: "I give divorce, I give divorce, I give divorce". Amr says that in the morning when I asked Zaid what the noise was at your house last night, he said "I have given divorce". (He said this without Hind's name or referring to her in her absence). Hind, after hearing about the divorce from someone, said that Zaid, meaning my husband, has divorced me, while Zaid denies it. In this case, has Hind been divorced or not? (T)

Your Eminence is a profound researcher. Although this humble servant has never had the honor of meeting or serving you, I benefit from your endless graces. Most of your fatwas keep coming to this city. This incident happened in my presence. Zaid, without naming, addressing, or referring to Hind in her absence, said the word "divorce" and "I give divorce".

1. Bada'i al-Sana'i, Book of Maintenance, Section on the Cause of Obligation of this Maintenance, H.M. Saeed Company Karachi, 18/4

फतावा रजविया, भाग 12

पति का अपनी पत्नी के भरण-पोषण (नफ़क़ा) को अमान्य करने का दावा स्वीकार नहीं किया जाएगा। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है।

पति का कथन पत्नी के भरण-पोषण को अमान्य करने में स्वीकार्य नहीं होगा। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है (T)।

मसअला 121: बनारस, मोहल्ला पतरकुंडा, बुवान साहिबा के निवास से, मौलवी अबुल खैर सैयद हसन साहिब द्वारा प्रेषित, 13 जमादी-उल-उखरा 1320 हिजरी।

मेरे आका, मेरे स्वामी और मेरे आश्रयदाता, अल्लाह ताला उनकी छाया को बढ़ाए। सलाम के बाद, आपकी सेवा में निवेदन है कि आप पूर्ण विश्वसनीय प्राधिकारी हैं, इसलिए यह इस्तेफ्ता (पूछताछ) भेजा जा रहा है। वैधता या अवैधता आपकी मुहर पर निर्भर करती है, हालांकि अधिकांश विद्वानों ने हस्ताक्षर किए हैं। प्रश्न का स्वरूप इस प्रकार है:

दीन के विद्वान इस स्थिति में क्या कहते हैं: ज़ैद ने ख़ालिद की मौजूदगी में, अपनी पत्नी हिंदा का नाम लिए बिना और उसकी अनुपस्थिति में कहा "एक तलाक़, दो तलाक़, तीन तलाक़"। उसने "देता हूँ" या "नहीं देता हूँ" कुछ नहीं कहा। ज़ैद का सगा भाई बक्र कहता है कि मेरे सामने ज़ैद ने हिंदा की अनुपस्थिति में और उसका नाम लिए बिना कहा: "तलाक़ देता हूँ, मैं तलाक़ देता हूँ, मैं तलाक़ देता हूँ"। अम्र कहता है कि सुबह जब मैंने ज़ैद से पूछा कि कल रात तुम्हारे घर क्या शोर-शराबा हो रहा था, तो उसने कहा "मैंने तलाक़ दे दी है"। (उसने हिंदा का नाम लिए बिना या उसकी अनुपस्थिति में उसका संदर्भ दिए बिना यह कहा)। हिंदा ने किसी से तलाक़ के बारे में सुनकर कहा कि ज़ैद यानी मेरे पति ने मुझे तलाक़ दे दी है, जबकि ज़ैद इससे इनकार करता है। इस स्थिति में हिंदा को तलाक़ हुई या नहीं? (T)

हुज़ूर वाला एक गहन शोधकर्ता हैं। हालांकि इस तुच्छ व्यक्ति को कभी आपकी सेवा का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ, लेकिन मैं आपकी अनंत कृपाओं से लाभान्वित होता हूँ। आपके अधिकांश फतवे इस

शहर में आते रहते हैं। यह घटना मेरे सामने हुई है। ज़ैद ने हिंदा की अनुपस्थिति में उसे नामजद किए, संबोधित किए या उसका संदर्भ दिए बिना "तलाक़" और "तलाक़ देता हूँ" शब्द कहे हैं।

1. बदाइ-उस-सनाइ, किताब-उन-नफ़क़ा, इस नफ़क़ा के अनिवार्य होने के कारण पर अनुभाग, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 18/4

لم یقبل قولہ في ابطال نفقتھا ۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ مرد کا قول بیوی کے نفقہ کو باطل کرنے میں قبول نہ ہوگا۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۱۲۱: از بنارس محلہ پترکنڈہ مکان بوان صاحبہ مرسلہ مولوی ابو الخیر سید حسن صاحب ۱۳ جمادی الاخری ۱۳۲۰ھ سیدی مولائی وماوائی مدظلہ اللہ تعالٰی بعد السلام علیکم کے خدمت میں عرض یہ ہے کہ حضور معتمد علیہ کلی ہیں لہذا یہ استفتاء بھیجا جاتا ہے حضور ہی کے مہر پر جواز و عدم جواز ہے اگرچہ اکثر علماء نے دستخط کیا ہے، صورت سوال یہ ہے :

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس صورت میں کہ زید نے خالد کے ہاں اپنی بیوی ہندہ کا نام لئے بغیر، بغیر اسکی موجودگی کے لئے "ایک طلاق، دو طلاق، تین طلاق"۔ اس نے "دیتا ہوں" یا "نہیں دیتا ہوں" کچھ نہ کہا۔ زید کا حقیقی بھائی بکر کہتا ہے کہ میرے سامنے زید نے اپنی بیوی ہندہ کی غیر موجودگی اور اس کا نام ذکر کئے بغیر کہا: "طلاق دیتا ہوں، میں طلاق دیتا ہوں، میں طلاق دیتا ہوں"۔ عمرو کہتا ہے صبح جب میں نے زید سے پوچھا کہ تمہارے گھر گزشتہ رات کیا شور و غل ہورہا تھا، اس نے کہا میں نے طلاق دی ہے۔ (یہ ہندہ کا نام اور اسکی طرف نسبت کئے بغیر اس کی غیر موجودگی میں کہا ہے) اور ہندہ نے طلاق کے متعلق کسی سے سن کر کہا کہ زید یعنی میرے شوہر نے مجھے طلاق دے دی ہے، جبکہ زید اس سے انکار کرتا ہے، تو اس صورت میں ہندہ کو طلاق ہوئی یا نہ۔ (ت)

حضور والا راسخ المحققین ہیں گو کہ کبھی اس حقیر کو حضور وملازمت حاصل نہ ہوئی لیکن فیوضات نامتناہی سے مستفیض ہوتا ہے، اکثر فتوے حضور کے اس شہر میں آتے رہتے ہیں، یہ

واقعہ اس خاکساری کے بالمواجہ ہوا ہے، زید نے بلا تسمیہ و خطاب و اضافت بحالت عدم موجودگی ہندہ لفظ "طلاق" و "طلاق دیتا ہوں" کہا ہے

1 بدائع الصنائع کتاب النفقہ فصل فی سبب وجوب ہذہ النفقہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۸/۴

Fatawa Razawiyya, Volume 12

And in the morning, upon inquiry, Amr and Zaid said: "What I said about 'I gave divorce', without naming or attribution towards the wife, Zaid's intention by saying that was the same word 'divorce' mentioned at night; he is not initiating it now but giving news of the divorce from that night. More than this is out of respect!"

The Answer:

The ruling is of two types: one is 'Diyanatan' (religiously/morally) and the other is 'Qada'an' (legally). 'Diyanatan' ruling means the matter is between the servant and Allah Almighty; no one else has any interference here, it is between the servant and his God. In the questioned scenario, if there was no intention of attributing the divorce to the wife, then divorce has certainly not occurred, because divorce does not happen without initiation (Iqa'), and initiation cannot happen until the connection of divorce is established with the wife, and this is not possible without attribution. Therefore, attribution is necessary, whether in intention. So, when divorce is void of verbal or cardiac attribution, the connection of divorce will not be created because a connection cannot exist without something to connect to. Hence, initiation will not occur, and consequently, the occurrence (of divorce) will also not happen. This point is so clear that there can be no doubt about it, because if the word 'divorce' on the tongue, without any verbal or intentional relation, were to become the cause of divorce, it would necessitate that whoever uses the word 'divorce' in any context, his wife would be divorced, even if used while narrating a story. Furthermore, religious students [while reading] the Book of Divorce [encounter hundreds of such examples...]

Page 336 of 688

फ़तावा रज़विया, खंड 12

और सुबह पूछताछ के दौरान अम्र और ज़ैद ने कहा कि मैंने जो कहा कि 'मैंने तलाक़ दिया है' बिना नाम लिए और पत्नी की ओर कोई संबंध (इज़ाफ़त) बताए, तो ज़ैद का इस कहने से वही तलाक़ का शब्द मुराद था जो रात में कहा गया था; वह नया तलाक़ नहीं दे रहा है बल्कि रात वाले तलाक़ की ख़बर दे रहा है। बस अदब का तकाज़ा इतना ही है!

जवाब:

हुक्म दो तरह का होता है, एक 'दियानतन' और दूसरा 'क़ज़ाअन'। दियानतन हुक्म का अर्थ यह है कि मामला बंदे और अल्लाह के बीच है, यहाँ किसी दूसरे का कोई हस्तक्षेप नहीं है, बंदा जाने और उसका ख़ुदा जाने। पूछी गई सूरत में, यदि पत्नी की ओर तलाक़ का संबंध जोड़ने का इरादा नहीं था, तो निश्चित रूप से तलाक़ नहीं हुआ, क्योंकि तलाक़ का घटित होना 'ईक़ा' (लागू करने) के बिना नहीं होता और ईक़ा तब तक नहीं हो सकता जब तक कि तलाक़ का संबंध पत्नी से न जोड़ा जाए, और यह बिना संबंध (इज़ाफ़त) बताए संभव नहीं है। इसलिए इज़ाफ़त ज़रूरी है, चाहे वह नीयत में हो। अतः जब तलाक़ मौखिक या हार्दिक इज़ाफ़त से खाली हो, तो तलाक़ का संबंध स्थापित नहीं होगा क्योंकि संबंध बिना किसी संबद्ध वस्तु के नहीं हो सकता। इसलिए ईक़ा नहीं होगा, तो तलाक़ का घटित होना भी नहीं होगा। यह बात इतनी स्पष्ट है कि इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता, क्योंकि यदि बिना किसी मौखिक या वैचारिक संबंध के केवल ज़बान पर 'तलाक़' शब्द आने से ही तलाक़ हो जाए, तो इसका मतलब यह होगा कि जो कोई भी किसी भी स्थिति में अपनी ज़बान से 'तलाक़' शब्द का उपयोग करे, उसकी पत्नी को तलाक़ हो जाए, भले ही वह कोई कहानी सुनाते हुए इसका प्रयोग करे। साथ ही, दीनी छात्र 'किताब-उत-तलाक़' [पढ़ते हुए ऐसे सैकड़ों उदाहरण पाते हैं...]

पृष्ठ 688 का 336

فتاویٰ رضویہ، جلد دو از دہم

اور صبح کو بوقت دریافت عمرو و زید نے کہا کہ میں نے جو کہا کہ میں نے طلاق دیا ہے بلا تسمیہ و بلا اضافت بطرف زوجہ اس کہنے سے زید کی مراد وہی لفظ طلاق ہے جو شب کو کہا تھا انشا نہیں خبر دے رہا ہے طلاق شب کی۔ زیادہ حد ادب!

الجواب:

حکم ہر دو گونہ است حکم دیانت و حکم قضاء، دیانت آنکہ فیما بین العبد وربہ باشد ایں جا دیگراں را دخل نیست او داند و خدائے او۔ دریں سخن اضافت بسوئے زن نیست، اگر در دل ہم قصد اضافت نہ کردہ باشد قطعاً طلاق نیست و ذلک لان الطلاق لا وقوع لہ الا بالا یقاع ولا ایقاع الاباحداث تعلق الطلاق بالمرأۃ ولا یتاتی ذلك الابالاضافة ولو فی النیة ۔ فاذا خلیاً عنہ لم یکن احداث تعلق اذ لا تعلق الا بمتعلق فلم یکن ایقاعاً فلم یورث وقوعاً و ھذا ضروری لایرتاب فیہ، مجرد تلفظ بلفظ طلاق ہی بے اضافت بزن نہ در لفظ و نہ در قصد اگر موجب تطلیق شود ہر کسے کہ لفظ طلقت یا طلاق دادم یا می دہم بر زبان آرد زن او مطلقہ شود اگر چہ ہمیں قصد حکایت دارد ولازم آید طلبہ در کتاب الطلاق ازیں گونہ صد ہا

حکم دو طرح ہوتا ہے ایک دیانۃً اور دوسرا قضاءً۔ دیانۃً حکم کا معنی یہ ہے کہ بندے اور اللہ تعالیٰ کے درمیان معاملہ ہے یہاں کسی دوسرے کا کوئی دخل نہیں، بندہ جانے اور اس کا خدا جانے اور مسئولہ صورت میں بیوی کی طرف طلاق کی اضافت کا قصد نہ کیا ہو تو قطعاً طلاق نہ ہوئی، کیونکہ طلاق کا وقوع بغیر واقع کرنے (ایقاع) کے نہیں ہوتا اور ایقاع اس وقت تک نہیں ہو سکتا جب تک طلاق کا تعلق بیوی سے نہ کیا جائے اور یہ اضافت کے بغیر ممکن نہیں اس لئے اضافت

ضروری ہے خواہ نیت میں ہو، تو طلاق جب اضافت لفظی یا قلبی سے خالی ہو تو طلاق کا تعلق پیدا نہ ہوگا کیونکہ تعلق بغیر متعلق نہیں ہو سکتا، اس لئے ایقاع نہ ہوگا، تو وقوع بھی نہ ہوگا، اتنی بات واضح ہے جس میں کوئی شبہ نہیں ہو سکتا، اسلئے کہ اگر زبان پر لفظ طلاق نسبت لفظی یا ارادی کے بغیر ہی طلاق دینے کا موجب قرار پائے تو لازم آئے گا کہ جو شخص بھی کسی صورت میں اپنی زبان سے لفظ طلاق استعمال کرے اس کی بیوی کو طلاق ہو جائے خواہ حکایت کرتے ہوئے ہی استعمال کرے، نیز دینی طلباء کتاب الطلاق

Fatawa-e-Razvia, Volume 12

[Left Column - Persian Text] Words are read, and in debate and repetition, they are uttered repeatedly. If all such words caused divorce, then the wives of all would be thrice-divorced, which is a calumny. In Al-Muhit and Al-Hindia, etc., it is stated: "It [divorce] does not occur within the category of attribution when not intended, due to the lack of attribution towards her." Zaid is aware of his own intention, and the Knower of secrets and hidden thoughts (Jalla Jalaluhu) knows better than him. If he did not intend the divorce of Hindah, Hindah remains his wife as such, and the understanding or words of others bring no harm. Just as those who desire divorce find no benefit in a Mufti's fatwa of non-divorce. Allah is Knower of what is in the hearts, and to Him (Glorified be He) all affairs return. As for the judicial ruling (hukm-e-qada) which the judge and the woman act upon, the research is that for qada as well, the decree of the occurrence of divorce is unavoidable from the realization of attribution, as in the books of the school [of law], whose number cannot be counted nor their support cut off. This humble servant, in my annotations on Radd al-Muhtar, after investigating that attribution in speech can be of several kinds, have demonstrated that when a word is empty of attribution from all aspects, then it is seen if there is an indicator here that makes the intention of attribution more preponderant judicially.

[Right Column - Urdu Text] In the course of reading, repeating, and debating hundreds of such words, if they are brought to the tongue repeatedly, it would follow that the wives of all such people would be thrice-divorced. Whereas this is sheer falsehood. It is stated in Al-Muhit, Al-Hindia, etc., that without attribution (idhafah), divorce does not occur. Therefore, in the present case, Zaid knows his own intention best. Hindah continues to be his wife as before. The understanding or opinion of others in this matter is not harmful. Those who desire divorce will find no use for a Mufti's fatwa of non-divorce. Allah Almighty knows the secrets of the hearts, and ultimately, all matters return to Him for decision. As for the judicial ruling (qada), where the judge and the woman are involved, the investigation reveals that even for a judicial decree of divorce, the realization of attribution (idhafah) is necessary, as mentioned countless times in the books of the [Hanafi] school. This humble servant [the author], in his annotations on Radd al-Muhtar, after researching how verbal attribution can take various forms, has presented an analysis of those forms. Then, I researched that if a word is devoid of attribution in every respect, it should be seen if

there is any circumstantial evidence (qarinah) here that would make the intention of attribution more likely in a judicial sense.

1. Fatawa Hindiyya, Chapter 7 regarding Divorce in Persian Words, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/382.

फ़तावा-ए-रज़विया, खंड 12

[बायाँ स्तंभ - फ़ारसी मूल] शब्द पढ़े जाते हैं और बहस और दोहराव में बार-बार ज़ुबान पर लाए जाते हैं। यदि इन सभी शब्दों से तलाक़ हो जाता, तो सभी की पत्नियाँ तीन तलाक़ वाली हो जातीं, जो एक बहुत बड़ा झूठ है। 'अल-मुहीत' और 'अल-हिंदिया' आदि में है: "जब नीयत न हो, तो इज़ाफ़त की श्रेणी में तलाक़ नहीं होता क्योंकि उसके प्रति इज़ाफ़त का अभाव है।" ज़ैद अपनी नीयत को स्वयं जानता है, और भेदों को जानने वाला (अल्लाह) उससे बेहतर जानता है। यदि उसने हिंदा के तलाक़ का इरादा नहीं किया था, तो हिंदा वैसे ही उसकी पत्नी है, और दूसरों की समझ या बात कोई नुकसान नहीं पहुँचाती। जैसा कि तलाक़ चाहने वालों के लिए मुफ़्ती का तलाक़ न होने का फ़तवा लाभदायक नहीं होता। अल्लाह सीनों के भेदों को जानने वाला है और उसी की ओर सभी मामले लौटते हैं। जहाँ तक न्यायिक आदेश (हुक्म-ए-क़ज़ा) का संबंध है जिस पर काज़ी और औरत अमल करते हैं, तो शोध यह है कि क़ज़ा के लिए भी तलाक़ के घटित होने के आदेश के लिए इज़ाफ़त का होना अपरिहार्य है, जैसा कि मज़हब की किताबों में है जिनकी संख्या अनगिनत है। इस फ़क़ीर ने 'रद्द अल-मुह्तार' पर अपनी टिप्पणियों में यह शोध करने के बाद कि शब्द में इज़ाफ़त कितने प्रकार की होती है, यह दिखाया है कि जब शब्द हर तरह से इज़ाफ़त से रहित हो, तब देखा जाता है कि क्या यहाँ कोई ऐसा संकेत है जिससे न्यायिक रूप से इज़ाफ़त का इरादा प्रबल होता हो।

[दायाँ स्तंभ - उर्दू पाठ] इस प्रकार के सैकड़ों शब्दों को पढ़ने, दोहराने और बहस करने के दौरान यदि वे बार-बार ज़ुबान पर लाए जाते हैं, तो यह आवश्यक हो जाएगा कि उन सभी की पत्नियों को तीन तलाक़ हो जाए। जबकि यह सरासर झूठ है। 'अल-मुहीत' और 'अल-हिंदिया' आदि में उल्लेख है कि इज़ाफ़त (पत्नी के प्रति संदर्भ) के बिना तलाक़ नहीं होगा। अतः वर्तमान स्थिति में ज़ैद अपनी नीयत को खुद से बेहतर जानता है, यदि वह इरादा नहीं रखता था तो हिंदा पहले की तरह उसकी पत्नी है। इस मामले में दूसरों की समझ या उनकी बात हानिकारक नहीं है। जो लोग तलाक़ चाहते हैं, उनके लिए किसी मुफ़्ती का 'तलाक़ न होने' का फ़तवा काम नहीं आएगा। अल्लाह तआला दिलों की बातों को जानता है और अंततः मामलों का फ़ैसला उसी के पास होगा। जहाँ तक न्यायिक आदेश (क़ज़ा) का सवाल है जहाँ काज़ी और औरत की भूमिका होती है, तो शोध यह है कि न्यायिक रूप से भी तलाक़ होने के आदेश के लिए इज़ाफ़त का सिद्ध होना ज़रूरी है, जैसा कि मज़हब की किताबों में अनगिनत बार वर्णित है। और इस फ़क़ीर ने 'रद्द अल-मुह्तार' की टिप्पणियों में बहस करते हुए पहले शाब्दिक इज़ाफ़त पर शोध पेश किया कि वह किन-किन रूपों में हो सकती है, फिर यह शोध किया

कि यदि शब्द हर तरह से इज़ाफ़त से खाली हों, तो वहाँ देखा जाएगा कि क्या यहाँ कोई ऐसा संकेत (करीना) है जो न्यायिक रूप से इज़ाफ़त के इरादे को अधिक संभावित बनाता हो।

1. फ़तावा हिंदिया, अध्याय 7, फ़ारसी शब्दों में तलाक़ के संबंध में, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/382।

पृष्ठ 337/688

فتاویٰ رضویہ ، جلد دو ازدہم

[بایاں کالم - فارسی متن] الفاظ می خوانند ودر بحث و تکرار بار بار زبان رانند زنان ہمہ سہ طلاقہ مانند ھل ھذا الابھت بحث۔ در محیط و ہندیہ وغیرہما است لا یقع فی جنس الاضافہ اذا لم ینو لعدم الاضافہ الیہا ۱ زید بہ نیت خود عالم ہست وعالم الضمائر والسرائر جل جلالہ ، از و عالم تراست اگر ارادہ طلاق ہندہ نہ کردہ بود ہندہ ہمچناں زن اوست و فہم و قول دیگر اں ہیچ زیاں نیارد آنچناں کہ محبان قصد طلاق فتوائے مفتی بعدم سود نہ دارد، واللہ علیم بذات الصدور و الیہ سبحانہ ترجع الامور ، واما حکم قضاء کہ قاضی وزن با آں کار بندند پس تحقیق آں ست کہ قضاء نیز حکم بوقوع طلاق را از تحقق اضافت با گزیر ست، کما فی کتب المذھب لا یحصی عددھا ولا ینقطع مددھا ومن فقیر در تعلیقات خودم بر رد المحتار بعد تحقیق آں کہ اضافت در لفظ ہر چند گونہ است تحقیق نمودہ ام کہ چون لفظ از ہمہ وجوہ اضافت تہی باشد آنگاہ بنگرند اگر ایں جا قرینہ باشد کہ باو راجح تر ارادہ اضافت ست قضاءً

[دایاں کالم - اردو متن] میں اس قسم کے صدہا الفاظ پڑھنے، تکرار اور بحث کرنے میں بار بار زبان پر لاتے ہیں تو لازم کہ آئیگا کہ ان سب کی بیویوں کو تین طلاق پڑجائیں۔ جبکہ یہ خالص جھوٹ ہے۔ محیط اور ہندیہ وغیرہما میں ہے کہ اضافت نہ ہونے پر طلاق نہ ہوگی تو موجودہ صورت میں زید اپنی نیت کو اس سے زیادہ جاننے والا ہے ، اگر ہندہ بدستور اس کی بیوی ہے۔ دوسروں کا فہم یا ان کی بات اس معاملہ میں مضر نہیں ہے، جو لوگ طلاق کے خواہاں ہیں ان کو کسی مفتی کا فتویٰ عدم طلاق کار آمد نہیں ہوگا، اللہ تعالیٰ دل کی باتوں کو جانتا اور امور کا فیصلہ آخر اس کے پاس ہوگا۔ حکم قضاء میں قاضی اور عورت کا کردار ہوگا، تو اس کی تحقیق یہ ہے کہ قضاءً بھی طلاق کو واقع کرنے کے حکم کے لئے اضافت کا تحقق ضروری ہے، جیسا کہ مذہب

کی کتب میں بے شمار مرتبہ مذکور ہے، اور اس فقیر نے ردالمحتار کی تعلیقات میں بحث کرتے ہوئے پہلے لفظی اضافت کی تحقیق پیش کی کہ وہ کن کن صورتوں میں ہو سکتی ہے پھر یہ تحقیق کی کہ اگر لفظ ہر طرح اضافت سے خالی ہوں تو وہاں دیکھا جائے گا کہ یہاں کوئی ایسا قرینہ۔

۱ فتاوٰی ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالالفاظ الفارسیۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۸۲

Fatawa Razawiyya Volume 12

[Right Column - Urdu/Translation] ...is present from which the intention of attribution is dominantly understood, then legally (qada'an), based on the apparent evidence, a decree of divorce will be issued. Inner matters are left to Allah Almighty. If he denies the intention under oath, his statement will be accepted and his wife will not be considered divorced, because he is considered trustworthy (ameen) in reporting about himself, while he says something that is potentially plausible in his speech. In al-Hindiyyah, it is stated in several fatwas that a person said to his wife: "If you [are] my wife, three divorces" (omitting the 'ya' of attribution), then divorce will not occur when he explains that "I did not intend divorce," because by omitting the 'ya' of attribution, the attribution towards the wife was not mentioned. Al-Hindi, quoting from al-Muhit, wrote that Sheikh al-Islam Faqih Abu Nasr was asked about a drunkard who says to his wife: "Do you want me to divorce you?" The wife replied in the affirmative, so the drunkard said in Persian: "If you [are] my wife, one divorce, two divorces, three divorces, get up, get out." And the husband claims that "I did not intend divorce," then his word will be accepted. Similarly, it is in al-Khaniyyah, but they added the reason for this...

[Left Column - Arabic/Persian Context] A decree of divorce is issued based on the apparent, and Allah is the guardian of the secrets. If the husband denies the intention upon oath, he is to be believed and the woman is not considered divorced, for he is trustworthy in reporting about himself, and he has uttered what his speech can accommodate. In al-Hindiyyah, it is narrated from the fatwas: A man said to his wife: "If you are my wife, three divorces," with the omission of the 'ya'. It does not occur if he says: "I did not intend divorce," because when it was omitted, it was not attributive to her[1]. Al-Hindiyyah records from al-Muhit: Sheikh al-Islam al-Faqih Abu Nasr was asked about a drunkard who said to his wife: "Do you want me to divorce you?" She said: "Yes." So he said in Persian: "If you are my wife, one divorce, two divorces, three divorces, stand up and leave me." While he claims that he did not intend divorce by it. The verdict is his word[2]. Similarly, it is stated in al-Khaniyyah, adding the reason: because he did not attribute the divorce.

Footnotes: [1] Al-Fatawa al-Hindiyyah, Chapter Seven regarding divorce in Persian words, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/382 [2] Al-Fatawa al-Hindiyyah, Chapter Seven regarding divorce in Persian words, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/383

Page 338 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

[दायाँ कॉलम - उर्दू/अनुवाद] ...मौजूद है जिससे इज़ाफ़त (संबंध) का इरादा प्रबल रूप से ज्ञात होता हो तो कज़ाअन (कानूनी तौर पर) ज़ाहिरी दलीलों के आधार पर तलाक़ का हुक्म दे दिया जाएगा। गुप्त मामले अल्लाह तआला के सुपुर्द हैं। अगर वह कसम खाकर इरादे से इंकार करता है तो उसकी बात मान ली जाएगी और उसकी पत्नी तलाक़शुदा नहीं होगी, क्योंकि वह अपने बारे में खबर देने में अमीन (भरोसेमंद) माना जाएगा जबकि वह ऐसी बात कहता है जिसकी उसके कलाम (भाषण) में संभावना मौजूद है। हिन्दिया में कई फतवों में कहा गया है कि एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा: "अगर तू मेरी बीवी, तीन तलाक़" (या-ए-निसबत को हटा दिया), तो तलाक़ नहीं होगी जब वह यह बताए कि "मैंने तलाक़ की नीयत नहीं की थी," क्योंकि या-ए-इज़ाफ़त को हटा देने की वजह से पत्नी की तरफ इज़ाफ़त का ज़िक्र नहीं हुआ। हिन्दी ने 'मुहीत' से नक़्ल करते हुए लिखा कि शैख़-उल-इस्लाम फ़क़ीह अबू नस्र से किसी ने पूछा कि एक नशे वाला अपनी पत्नी से कहता है: "क्या तू चाहती है कि मैं तुझे तलाक़ दूँ?" पत्नी ने जवाब में 'हाँ' कहा, तो नशे वाले ने फ़ारसी में कहा: "अगर तू मेरी बीवी, एक तलाक़, दो तलाक़, तीन तलाक़, उठ जा, निकल जा।" और पति का दावा है कि "मैंने तलाक़ का इरादा नहीं किया था," तो उसकी बात मान ली जाएगी। इसी तरह 'ख़ानिया' में है लेकिन इस पर उन्होंने इल्लत (कारण) बताई कि...

[बायाँ कॉलम - अरबी/फ़ारसी संदर्भ] ज़ाहिर के आधार पर तलाक़ का हुक्म दिया जाता है और अल्लाह रहस्यों का संरक्षक है। यदि पति शपथ पूर्वक इरादे से इनकार करता है, तो उसे सच माना जाए और स्त्री को तलाक़शुदा न माना जाए, क्योंकि वह स्वयं के बारे में रिपोर्ट करने में विश्वसनीय है, और उसने वह कहा है जो उसका भाषण सहन कर सकता है। हिन्दिया में फतवों से उद्धृत है: एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा: "गर तू ज़न मनी सेह तलाक़" 'या' के विलोपन के साथ। यह घटित नहीं होता यदि वह कहता है: "मैंने तलाक़ का इरादा नहीं किया," क्योंकि जब इसे हटा दिया गया, तो यह उसके प्रति विशेषणात्मक नहीं रहा[1]। हिन्दिया ने मुहीत से दर्ज किया है: शैख़-उल-इस्लाम अल-फ़क़ीह अबू नस्र से एक शराबी के बारे में पूछा गया जिसने अपनी पत्नी से कहा: "क्या तुम चाहती हो कि मैं तुम्हें तलाक़ दे दूँ?" उसने कहा: "हाँ।" तो उसने फ़ारसी में कहा: "अगर तू मेरी बीवी, एक तलाक़, दो तलाक़, तीन तलाक़, खड़ी हो जा और मुझे छोड़ दे।" जबकि वह दावा करता है कि उसने इसके द्वारा तलाक़ का इरादा नहीं किया था। फैसला उसकी बात है[2]। इसी तरह अल-ख़ानिया में कहा गया है, कारण जोड़ते हुए: क्योंकि उसने तलाक़ का संबंध नहीं जोड़ा।

पादलेख: 1. अल-फ़तावा अल-हिन्दिया, फ़ारसी शब्दों में तलाक़ के बारे में सातवां अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/382 2. अल-फ़तावा अल-हिन्दिया, फ़ारसी शब्दों में तलाक़ के बारे में सातवां अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/383

पृष्ठ 338/688

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

[دایاں کالم] موجود ہے جس سے اضافت کا ارادہ راجح طور پر معلوم ہوتا ہو تو قضاءً ظاہر قرینہ کی بناء پر طلاق کا حکم کر دیا جائے گا، باطنی امور اللہ تعالیٰ کے سپرد ہیں ارادے کا انکار کرتا ہو تو اس کی بات مان لی جائے گی اور اس کی بیوی مطلقہ نہ ہوگی، کیونکہ وہ اپنے بارے میں خبر دینے میں امین منصور ہوگا جبکہ وہ بات بھی ایسی ہی کہتا ہے جس کا کلام میں احتمال موجود ہے۔ ہندیہ میں متعدد فتووں میں کہا ہے کہ ایک شخص نے اپنی بیوی کو کہا اگر تو میری بیوی، تین طلاق (یائے نسبت کو محذوف کیا) تو طلاق نہ ہوگی جب یہ بتائے کہ میں نے طلاق کی نیت نہیں کی، کیونکہ یائے اضافت کو حذف کر دینے کی وجہ سے بیوی کی طرف اضافت کا ذکر نہ ہوا، ہندی نے محیط سے نقل کرتے ہوئے لکھا کہ شیخ الاسلام فقیہ ابونصر سے کسی نے پوچھا کہ ایک نشے والا اپنی بیوی کو کہتا ہے کہ کیا تو چاہتی ہے کہ میں تجھے طلاق دوں؟ بیوی نے جواب میں ہاں کہا تو نشے والے نے فارسی میں کہا اگر تو میری بیوی، ایک طلاق، دو طلاق، تین طلاق، اٹھ جا، نکل جا۔ اور خاوند کا گمان ہے کہ میں نے طلاق کا ارادہ نہیں کیا تو اس کی بات مان لی جائیگی۔ یوں ہی خانیہ میں ہے لیکن اس پر انہوں نے علت

[بایاں کالم] حکم بطلاق کنند نظر الی الظاہر واللہ یتولی السرائر اگر شوہر بہ قسم انکار ارادہ آں را کند پس اور ا مصدق دارند وزن را مطلقہ نانگارند لکونہ امینا فی الاخبار عن نفسہ وقدا تی بما یحتملہ کلامہ در ہندیہ از فتاوی می آرد رجل قال لامر أتہا گر تو زن منی سہ ۳ طلاق مع حذف الیاء لایقع اذا قال لم انو الطلاق لانہ لما حذف فلم یکن مضیفاً الیہا[1]۔ ہندیہ از محیط می نگارد سئل شیخ الاسلام الفقیۃ ابونصر عن سکران قال لامرأتہ اتریدین ان اطلقك قالت نعم فقال بالفارسیۃ اگر تو زن منی یک

طلاق دو طلاق سہ طلاق قومی واخرجی من عندی وھو یزعم انہ لم یرد بہ الطلاق فالقول قولہ[2]

ہمچناں در خانیہ فرمود وزاد معللا لانہ لم یضف الطلاق

حواشی: [1] الفتاوی الہندیۃ الفصل السابع فی الطلاق بالا لفاظ الفارسیۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۸۲ [2] الفتاوی الہندیۃ الفصل السابع فی الطلاق بالا لفاظ الفارسیۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۸۳

Fatawa Razawiya, Volume 12

[Main Body - Right Side (Urdu Translation)] ...stating it, added this because he did not attribute the divorce to his wife. Furthermore, it is written in Hindiyya as quoted from Zakheera that Najm al-Din was asked regarding such a person who said to his wife, "When you go, divorce will happen," and then says, "I did not intend divorce for my wife." So will that person's statement be accepted? He answered, "Yes, it will be accepted." It is also in Khania and Bazzazia: someone said to his wife, "Do not go out without my permission because I have taken an oath of divorce." So if the woman goes out, divorce will not occur because he did not mention the oath of his wife's divorce, so there is the possibility of an oath regarding someone other than his wife; thus his word will be accepted. Even if there is no context or clue at all, divorce will not happen and the judge (Qazi) will not order divorce, unless the husband confesses the intention of divorce. It is in Khulasa, Hindiyya, Wajeez, and Naqrawi etc. that the wife of a drunkard fled from him; he ran after her and upon not succeeding, said: "With three divorces." Then if that husband says, "I said it with the intention of my wife," then divorce will occur, and if he...

[Main Body - Left Side (Original Arabic/Persian Text)] ...to her, also in Hindiyya it is entrusted from Zakheera: Najm al-Din was asked about one who said to his wife "Chun tu rawi talaq dada shud" (When you go, divorce is given) and said: "I did not intend divorce." Will he be believed? He said: "Yes". Also in Khania and Bazzazia it is: he said to her "Do not go out except by my permission, for I have sworn by divorce". She went out. It (divorce) does not occur due to the lack of mentioning his oath for her divorce, and it is possible that the oath was for someone other than her; so the word is his. If there is no such evidence, then they do not rule for divorce at all unless the husband admits to the intention of divorce. In Khulasa, Hindiyya, Wajeez, and Naqrawi, etc.: A drunkard, his wife fled from him, so he followed her and did not capture her, so he said in Persian "Bi seh talaq" (With three divorces). If he said "I meant my wife", it occurs, and if he did not say anything, it does not occur. And the wording of the collection is such:

Footnotes: 1. Fatawa Qazi Khan, Chapter on Suspension, printed at Nawal Kishore, 1/219. 2. Fatawa Hindiyya, Chapter Seven on Divorce in Persian Words, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/385. 3. Fatawa Bazzazia on the margin of al-Fatawa al-Hindiyya, Book of Oaths, Noorani Kutub Khana Peshawar, 4/70. 4. Khulasat al-Fatawa, Book of Divorce, Chapter One from another category, Maktaba Habibia Quetta, part 2/67.

फतावा रज़विया, जिल्द 12

[मुख्य भाग - दायां पक्ष (उर्दू अनुवाद)] ...बयान करते हुए यह इजाफा किया, क्योंकि उसने तलाक का संबंध पत्नी की ओर नहीं किया; साथ ही हिंदिया में 'जखीरा' से उद्धृत लिखा है कि नजमुद्दीन से एक ऐसे व्यक्ति के बारे में सवाल किया गया जिसने पत्नी से कहा 'जब तू गई तो तलाक हो जाएगा', और वह कहता है कि मैंने पत्नी को तलाक देने की नीयत नहीं की थी, तो क्या उस व्यक्ति की बात मान ली जाएगी? तो उन्होंने जवाब में फरमाया 'हाँ, मान ली जाएगी'। खानिया और बज़ाज़िया में भी है, किसी ने पत्नी से कहा कि 'मेरी इजाजत के बिना मत निकलना क्योंकि मैंने तलाक की कसम खाई है', तो अगर औरत निकल जाए तो तलाक नहीं होगा, क्योंकि उसने पत्नी के तलाक की कसम का जिक्र नहीं किया, इसलिए इसमें गैर-पत्नी की कसम की संभावना है, अतः उसकी बात स्वीकार कर ली जाएगी। चाहे वहां कोई सुराग (करीना) बिल्कुल न हो तब भी तलाक नहीं होगा और काजी तलाक का फैसला नहीं सुनाएगा, जब तक कि पति तलाक के इरादे का इकरार न करे। 'खुलासा', 'हिंदिया', 'वजीज' और 'नक़रवी' आदि में है कि एक शराबी की पत्नी उससे भाग गई, उसने पीछे दौड़ लगाई और कामयाब न होने पर उसने फारसी में कहा: 'तीन तलाक के साथ'। तो अगर वह पति कहे कि मैंने अपनी पत्नी की नीयत से कहा था, तो तलाक वाक़े(घटित) होगा, और अगर उसने...

[मुख्य भाग - बायां पक्ष (मूल अरबी/फारसी पाठ)] ...उसके प्रति, साथ ही हिंदिया में जखीरा से सौंपा गया है: नजम अल-दीन से उसके बारे में पूछा गया जिसने अपनी पत्नी से कहा 'चूँ तू रवी तलाक दादा शुद' (जब तू जाएगी तो तलाक दे दिया गया) और कहा: 'मैंने तलाक की नीयत नहीं की'। क्या उसे सच माना जाएगा? उन्होंने कहा: 'हाँ'। यह खानिया और बज़ाज़िया में भी है: उसने उससे कहा 'मेरी इजाजत के बिना मत निकलना, क्योंकि मैंने तलाक की कसम खाई है'। वह निकल गई। यह (तलाक) नहीं होता है क्योंकि उसने अपनी पत्नी के तलाक के लिए अपनी कसम का जिक्र नहीं किया है, और यह संभव है कि कसम किसी और के तलाक के लिए थी; तो बात उसकी (पति की) मानी जाएगी। यदि कोई परिस्थितिजन्य साक्ष्य (करीना) नहीं है, तो वे बिल्कुल भी तलाक का हुक्म नहीं देते जब तक कि पति तलाक के इरादे का इकरार न करे। खुलासा, हिंदिया, वजीज, नक़रवी और अन्य में: एक शराबी, उसकी पत्नी उससे भाग गई, तो उसने उसका पीछा किया और उसे पकड़ नहीं सका, तो उसने फारसी में कहा 'बि सह तलाक' (तीन तलाक के साथ)। यदि उसने कहा 'मेरा मतलब मेरी पत्नी से था', तो यह होता है, और यदि उसने कुछ नहीं कहा, तो यह नहीं होता है। और संकलन के शब्द इस प्रकार हैं:

फुटनोट: 1. फतावा काजी खान, बाबुल तालीक, मुद्रित नवल किशोर, 1/219. 2. फतावा हिंदिया, सातवाँ अध्याय, फारसी शब्दों में तलाक के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/385. 3. फतावा बज़ाज़िया, अल-फतावा अल-हिंदिया के हाशिए पर, किताबुल ईमान, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 4/70. 4. खुलासा अल-फतावा, किताबुल तलाक, एक अन्य श्रेणी का पहला अध्याय, मकतबा हबीबिया क्वेटा, भाग 2/67.

पृष्ठ 339 / 688

فتاویٰ رضویہ، جلد دو از دہم

[دائیں کالم کا متن] بیان کرتے ہوئے یہ اضافہ کیا، کیونکہ اس نے طلاق کی اضافت بیوی کی طرف نہ کی، نیز ہندیہ میں ذخیرہ سے منقول لکھا، کہ، نجم الدین سے ایک ایسے شخص کے متعلق سوال کیا گیا جس نے بیوی کو کہا جب تو گئی تو طلاق ہو جائے گی، اور کہتا ہے کہ میں نے بیوی کو طلاق کی نیت نہیں کی، تو کیا اس شخص کی بات مان لی جائیگی۔ تو انہوں نے جواب میں فرمایا ہاں مان لی جائے گی خانیہ اور بزازیہ میں بھی ہے، کسی نے بیوی کو کہا کہ میری اجازت کے بغیر نہ نکلنا کیونکہ میں نے طلاق کی قسم کھائی ہے، تو اگر عورت نکل جائے طلاق نہ ہوگی، کیونکہ اس نے بیوی کی طلاق کی قسم کو ذکر نہ کیا تو اس میں غیر بیوی کی قسم کا احتمال ہے اس لئے اس کی بات تسلیم کرلی جائے گی، اگر وہاں قرینہ بالکل نہ ہو تو بھی طلاق نہ ہوگی اور قاضی طلاق کا حکم نہ کرے گا، مگر یہ کہ خاوند طلاق کے ارادے کا اقرار کرے۔ خلاصہ، ہندیہ، وجیز اور نقروی وغیرہا میں ہے کہ ایک نشہ والے سے اس کی بیوی فرار ہو گئی، وہ پیچھے بھاگا اور کامیاب نہ ہونے پر اس نے کہا: تین طلاق کے ساتھ، پس اگر وہ خاوند کہے کہ میں نے اپنی بیوی کی نیت سے کہا، تو طلاق واقع ہوگی، اور اگر اس نے

[بائیں کالم کا متن] الیھا، نیز در ہندیہ از ذخیرہ می سپارد سئل نجم الدین عمن قال لامرأته چوں تو روی طلاق داده شد وقال لم انو الطلاق هل یصدق قال نعم ۲ ہم در خانیہ وبزازیہ است قال لها لا تخرجی الاباذنی فانی حلفت بالطلاق فخرجت لا یقع لعدم ذکره حلفه بطلاقها ویحتمل الحلف بطلاق غیرها فالقول له ۳۔ واگر ہیچو قرینہ نیست آنگاہ حکم طلاق اصلا نہ کنند مگر آنکہ شوہر اقرار ارادہ طلاق نماید۔ در خلاصہ وہندیہ وجیز وانقروی و غیر ہاست سکران هربت منه امرأته فتبعها ولم یظفر

بها فقال بالفارسية بسه طلاق ان قال عنيت امرأتی يقع وان لم يقل شيئا لا يقع ۴ ولفظ مجموعہ چناں ست

[حواشی] 1 فتاویٰ قاضی خاں باب التعليق مطبوعہ نولکشور ۱/ ۲۱۹ 2 فتاویٰ ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالالفاظ الفارسية نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۸۵ 3 فتاویٰ بزازیہ علی حاشیۃ الفتاوی الہندیۃ کتاب الایمان نورانی کتب خانہ پشاور ۴/ ۷۰ 4 خلاصۃ الفتاویٰ کتاب الطلاق الفصل الاول من جنس اخر مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ جزء ۲/ ۶۷

Fatawa Razawiyya - Volume 12

[Left Column]: She fled and he did not catch her, so he said "three divorces." If he said "I intended my wife," it occurs, otherwise not. It is stated in Bahr al-Ra'iq: If one said "divorced," and it was asked "whom did you intend?", and he replied "I intended my wife," his wife is divorced. Thus, he conditioned the occurrence upon his acknowledgment that he intended her. This is a refined research. Through it, by the grace of Allah Almighty, reconciliation is achieved. The complete discussion on this outside of this context, with the clarification of issues and scrutiny of evidence, is mentioned in what we have annotated on Radd al-Muhtar. So, you must refer to it, for you will not find its like elsewhere. And all praise is to Allah, the Mighty, the Forgiving. Since this lofty meaning has become manifest, now attention must be given to the issue at hand. It is apparent that the word is devoid of attribution (idhafah). The noble questioner himself indicated in his letter that this speech originated from Zaid initially, without any conversation by anyone regarding Hind's divorce, such that one might imagine the presence of attribution in a question to which this was an answer, and the question is repeated in the answer. To reiterate the starting point of the question, it is that Zaid said only one divorce, two divorces, three divorces...

[Right Column]: If he said nothing, divorce will not occur. And the words of Majmu' al-Fatawa are these: The wife ran away and he was not successful, so he said, "three divorces." If he says, "I said these words with the intention of my wife," then the wife will be divorced, otherwise not. It is in Bahr al-Ra'iq: Someone said "divorced," then he was asked, "with whose intention did you say it?", he said "I said it with the intention of my wife," so the wife will be divorced. Bahr al-Ra'iq has conditioned the occurrence of divorce on his acknowledgement that he meant his wife. This is a clear research and by the grace of Allah Almighty, agreement in texts has been achieved. Its complete discussion with the clarification of issues and scrutiny of evidence is mentioned in our marginalia on Radd al-Muhtar. It is obligatory for you to refer to it because you will not find such research elsewhere. All praise is for Allah Almighty alone, the Mighty and the Forgiving. When this grand discussion has become clear, then it is necessary to consider the issue under consideration that here the words are devoid of attribution (idhafah). And the questioner himself has clarified in his letter that this speech originated from Zaid initially, before which no one had any discussion regarding Hind's divorce, so that there could be a doubt that attribution is

mentioned in a question about Hind's divorce in response to which this speech is given.

[Footnote]: 1. Bahr al-Ra'iq, Chapter of Explicit Divorce, H.M. Saeed Company Karachi, 3/253.

फ़तावा रज़विया - खण्ड 12

[बायाँ कॉलम]: वह भाग गई और वह उसे पकड़ न सका, तो उसने कहा "तीन तलाक़।" यदि उसने कहा कि "मैंने अपनी पत्नी का इरादा किया था" तो तलाक़ हो जाएगी, अन्यथा नहीं। और 'बहरुर राइक' में है कि यदि किसी ने कहा "तलाक़" और पूछा गया "किसकी?", तो उसने कहा "मेरी पत्नी," तो उसकी पत्नी को तलाक़ हो गई। अतः उसने तलाक़ के वाक़े होने को उसके इस इक़रार पर निर्भर किया कि उसने उसी का इरादा किया था। यह एक परिष्कृत शोध है। और इसी के माध्यम से अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से सामंजस्य प्राप्त होता है। इस विषय पर पूरी चर्चा, मुद्दों के स्पष्टीकरण और प्रमाणों की जाँच के साथ, अन्यत्र 'रद्दुल मुहतार' पर हमारी टिप्पणियों में उल्लिखित है। अतः आपको उसे देखना चाहिए, क्योंकि आपको यह कहीं और नहीं मिलेगा। और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो प्रभुत्वशाली और क्षमाशील है। चूँकि यह उच्च अर्थ स्पष्ट हो गया है, अब विचाराधीन मुद्दे पर विचार किया जाना चाहिए। यह स्पष्ट है कि शब्द इज़ाफ़त (सम्बन्ध) से रहित है। और विद्वान प्रश्नकर्ता ने स्वयं अपने पत्र में बताया है कि ज़ैद से यह बात शुरू में ही निकली थी, बिना किसी के साथ हिन्दा के तलाक़ के बारे में बातचीत किए, यहाँ तक कि कोई यह न सोच ले कि उस प्रश्न में इज़ाफ़त मौजूद थी जिसका यह उत्तर था, और प्रश्न उत्तर में दोहराया गया है। प्रश्न के आरम्भ को फिर से व्यक्त करने के लिए, यह है कि ज़ैद ने केवल एक तलाक़, दो तलाक़, तीन तलाक़ कहा...

[दायाँ कॉलम]: अगर कुछ न कहा तो तलाक़ न होगी। और मज्मूअ-उल-फ़तावा के शब्द ये हैं: पत्नी भाग गई और कामयाब न हुआ तो उसने कहा, "तीन तलाक़," अगर वह कहे कि मैंने अपनी पत्नी के इरादे से ये शब्द कहे हैं, तो पत्नी को तलाक़ हो जाएगी अन्यथा नहीं। 'बहरुर राइक' में है: किसी ने कहा "तलाक़," तो पूछा गया कि तूने किसके इरादे से कहा, उसने कहा "मैंने अपनी पत्नी के इरादे से कहा है," तो पत्नी को तलाक़ हो जाएगी। 'बहरुर राइक' ने तलाक़ वाक़े होने को उसके इक़रार से मशतूत (शर्तबद्ध) किया है कि उसने पत्नी मुराद ली है, यह स्पष्ट तहक़ीक़ है और अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ से इबारतों में मुवाफ़क़त (तालमेल) हो गई है। इसकी मुकम्मल बहस दूसरी जगह मसाइल की वज़ाहत और दलाइल की छानबीन के साथ हमारे 'रद्दुल मुहतार' के हाशिया में मज़कूर है। उसकी तरफ़ रुजू करना तुझ पर लाज़िम है क्योंकि दूसरी जगह ऐसी तहक़ीक़ न पाएगा। सब तारीफ़ अल्लाह तआला ग़ालिब और बख़्शने वाले के लिए ही है। जब यह आलीशान बहस रोशन हो गई तो अब ज़ेरे-नज़र मसला में ग़ौर करना ज़रूरी है कि यहाँ लफ़्ज़ इज़ाफ़त (सम्बन्ध) से खाली हैं, और साइल ने अपने ख़त में खुद वाज़ेह किया है कि ज़ैद से यह कलाम इब्तिदा (आरम्भ) में सादिर हुआ है

जिससे पहले कोई मुज़ाकरा तलाक़-ए-हिन्दा किसी ने नहीं किया, ताकि यह शुबहा हो सके कि हिन्दा के बारे में तलाक़ के सवाल में इज़ाफ़त मज़कूर है जिसके जवाब में यह कलाम है।

[पाद टिप्पणी]: 1. बहरुर राइक, बाबुत तलाक़ अस्सरीह, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 3/253.

पृष्ठ 340/688

[بایاں کالم]: فرت ولم یظفر بھا فقال سہ طلاق ان قال اردت امرأتی یقع والا لا،ودر بحرالرائق لو قال طالق فقیل من عنیبت فقال امرأتی طلقات امرأتہ اھ فقد علق الوقوع علی اقرارہ انہ عنآھا این ست تحقیق انیق وبہ یحصل بتوفیق اللہ تعالیٰ التوفیق وتمام الکلام فی غیر المقام مع تو ضیح المسائل وتنقیح الدلائل مذکور فیمآ علقنا علی ردالمحتار فعلیك به فانك لا تجده في غیره والحمد لله العزیز الغفار۔ چوں این معنی عالی منجلی شد حالا در مسئلہ دائر نظر باید پیداست کہ لفظ عاری از اضافت ست وسائل فاضل درنامہ خودش وانمودہ کہ صدور ایں کلام از زید ابتداء بود بے مکالمہ احدے درباره طلاق ہندہ حتی یتوھم وجود الاضافة فی سوال صدر ھذا جواباً لہ و السوال معاد فی الجواب باز آغاز اظہار سوال آنست کہ زید ہمیں یک طلاق و دو طلاق سہ طلاق

[دایاں کالم]: کچھ نہ کہا تو طلاق نہ ہوگی۔ اور مجموعہ الفتاویٰ کے الفاظ یہ ہیں: بیوی بھاگ گئی اور کامیاب نہ ہوا تو اس نے کہا، تین طلاق، اگر وہ کہے میں نے بیوی کے ارادے سے یہ الفاظ کہے ہیں تو بیوی کو طلاق ہوگی ورنہ نہیں، بحر الرائق میں ہے: کسی نے کہا طلاق، تو پوچھا گیا کہ تو نے کس کے ارادے سے کہا، اس نے کہا میں نے اپنی بیوی کے ارادے سے کہا ہے، تو بیوی کو طلاق ہو جائے گی اھ بحر الرائق نے طلاق واقع ہونے کو اس کے اقرار سے مشروط کیا ہے کہ اس نے بیوی مراد لی ہے، یہ واضح تحقیق ہے اور اللہ تعالیٰ کی توفیق سے عبارات میں موافقت ہو گئی ہے، اس کی مکمل بحث دوسری جگہ مسائل کی وضاحت اور دلائل کی چھان بین کے ساتھ ردالمحتار کے ہمارے حاشیہ میں مذکور ہے، اس کی طرف رجوع تجھ پر لازم ہے کیونکہ دوسری جگہ ایسی تحقیق نہ پائے گا، سب تعریف اللہ تعالیٰ غالب اور بخشنے والے کے لئے ہی ہے۔ جب یہ عالی شان بحث روشن ہو گئی تو اب زیر نظر مسئلہ میں غور کرنا ضروری ہے کہ

یہاں لفظ اضافت سے خالی ہیں، اور سائل نے اپنے خط میں خود واضح کیا ہے کہ زید سے یہ کلام ابتداء صادر ہوا ہے جس سے قبل کوئی مذاکرہ طلاق ہندہ کسی نے نہیں کیا، تاکہ یہ شبہ ہو سکے کہ ہندہ کے بارے میں طلاق کے سوال میں اضافت مذکور ہے جس کے جواب میں یہ کلام ہے

[حاشیہ]: 1 بحر الرائق باب الطلاق الصریح ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۵۳/۳

Fatawa Rizvia, Volume 12

[Left Column] Saying "I give" etc. produces nothing new. Therefore, this situation falls under the second reason, meaning the absence of the aforementioned context (qarina), as you have seen the text regarding the statement made after a demand and the failure to obtain it: "three divorces" or "with three divorces." Thus, legally (in Qaza), there is no room for the ruling of divorce itself, because it depends on his confession, and Zaid here denies it as mentioned in the question. And if it takes the form of proof that Zaid said "I give divorce" as Bakr demonstrated at his door, then the utmost is that this case would be among the forms of the first reason. For his saying "I give," if it negated other possibilities, it would extend to what it is free from, such as saying "three divorces," meaning "it is given," or "I want to give," or "it deserves three divorces," and so on from what is not akin to an actual pronouncement. So, it does not negate the possibility of intending something else. And it is not more explicit than his saying to his wife, "Do not go out, for I have sworn by divorce," nor more than his saying to her, "If you are my wife, one divorce, two divorces, three divorces." Rather, the truth is that these two mentioned phrases are more explicit than his saying "I give divorce" without...

[Right Column] And because the question was repeated in the answer, an addition was found in the answer. Then the questioner mentioned at the beginning of the question that Zaid said "one divorce, two divorces, three divorces" without saying "I give" etc. Thus, the second reason for the absence of context (qarina) was found. As you know the text regarding "the wife ran away and was not successful," the husband had said "three divorces" or "with three divorces" (and divorce did not occur due to the lack of context). Therefore, even according to judicial ruling (Qaza), there is no scope for divorce here, as the divorce is now dependent on Zaid's confession while Zaid is denying it as mentioned in the question. Even if it is proved that Zaid said "I give," as his brother Bakr is saying, then even in such a case, it will be considered at most one of the first cases. Because Zaid saying "I give," even if it negates other possibilities, would still be like those words which are devoid of "Midaham," meaning "I am giving." For example, saying "three divorces" includes possibilities like "I gave," "I want to give," or "worthy of three divorces," etc., which do not cause divorce to occur. Therefore, other possibilities will not be negated. And saying to the wife "Do not go out because I have sworn an oath of divorce," rather saying to her "If you are my wife, one divorce, two divorces, three divorces" etc., is not more explicit. Rather,

the truth is that these two phrases are more explicit than "I give divorce," and Zaid's own...

[बायाँ कॉलम] "मैं देता हूँ" आदि कहना कुछ नया उत्पन्न नहीं करता। इसलिए, यह स्थिति दूसरे कारण के अंतर्गत आती है, जिसका अर्थ है उपर्युक्त संदर्भ (करीना) की अनुपस्थिति, जैसा कि आपने मांग के बाद दिए गए बयान और उसे प्राप्त करने में विफलता के संबंध में पाठ देखा है: "तीन तलाक" या "तीन तलाक के साथ।" इस प्रकार, कानूनी रूप से (क़ज़ा में), स्वयं तलाक के फैसले की कोई गुंजाइश नहीं है, क्योंकि यह उसके कबूलनामे पर निर्भर करता है, और ज़ैद यहाँ इससे इनकार करता है जैसा कि प्रश्न में उल्लेख किया गया है। और यदि यह प्रमाण का रूप ले लेता है कि ज़ैद ने "मैं तलाक देता हूँ" कहा था जैसा कि बक्र ने उसके दरवाजे पर प्रदर्शित किया था, तो सबसे अधिक यह मामला पहले कारण के रूपों में से होगा। क्योंकि उसका कहना "मैं देता हूँ," यदि यह अन्य संभावनाओं को नकारता है, तो यह उस तक विस्तारित होगा जिससे यह मुक्त है, जैसे "तीन तलाक" कहना, जिसका अर्थ है "यह दिया गया है," या "मैं देना चाहता हूँ," या "यह तीन तलाक का हकदार है," इत्यादि जो वास्तविक उच्चारण के समान नहीं हैं। अत; यह किसी और चीज़ के इरादे की संभावना को नहीं नकारता है। और यह उसकी अपनी पत्नी से यह कहने से अधिक स्पष्ट नहीं है, "बाहर मत जाओ, क्योंकि मैंने तलाक की कसम खाई है," और न ही उसके उससे यह कहने से अधिक है, "यदि तुम मेरी पत्नी हो, एक तलाक, दो तलाक, तीन तलाक।" बल्कि सच्चाई यह है कि ये दो उल्लिखित वाक्यांश उसके"बिना... तलाक देता हूँ" कहने से अधिक स्पष्ट हैं।

[दायाँ कॉलम] और उत्तर में प्रश्न दोहराए जाने के कारण उत्तर में वृद्धि पाई गई। फिर प्रश्नकर्ता ने प्रश्न के आरंभ में उल्लेख किया कि ज़ैद ने "देता हूँ" आदि कहे बिना "एक तलाक, दो तलाक, तीन तलाक" कहा। इस प्रकार, संदर्भ (करीना) की अनुपस्थिति का दूसरा कारण पाया गया। जैसा कि आप "पत्नी भाग गई और सफल नहीं हुई" के संबंध में पाठ जानते हैं, पति ने "तीन तलाक" या "तीन तलाक के साथ" कहा था (और संदर्भ की कमी के कारण तलाक नहीं हुआ था)। इसलिए, न्यायिक निर्णय (क़ज़ा) के अनुसार भी यहाँ तलाक की कोई गुंजाइश नहीं है, क्योंकि तलाक अब ज़ैद के कबूलनामे पर निर्भर है जबकि ज़ैद प्रश्न में उल्लेख के अनुसार इनकार कर रहा है। भले ही यह सिद्ध हो जाए कि ज़ैद ने "मैं देता हूँ" कहा था, जैसा कि उसका भाई बक्र कह रहा है, तो भी ऐसी स्थिति में इसे अधिक से अधिक पहले मामलों में से एक माना जाएगा। क्योंकि ज़ैद का "मैं देता हूँ" कहना, भले ही वह अन्य संभावनाओं को नकारता हो, फिर भी उन शब्दों की तरह होगा जो "मिदहम" यानी "मैं दे रहा हूँ" से रहित हैं। उदाहरण के लिए, "तीन तलाक" कहने में "मैंने दिया," "मैं देना चाहता हूँ," या

"तीन तलाक के योग्य" आदि जैसी संभावनाएँ शामिल हैं, जो तलाक होने का कारण नहीं बनती हैं। इसलिए, अन्य संभावनाओं को नकारा नहीं जाएगा। और पत्नी से यह कहना कि "बाहर मत निकलो क्योंकि मैंने तलाक की कसम खाई है," बल्कि उसे यह कहना कि "यदि तुम मेरी पत्नी हो, एक तलाक, दो तलाक, तीन तलाक" आदि, अधिक स्पष्ट नहीं है। बल्कि सच्चाई यह है कि ये दो वाक्यांश "तलाक देता हूँ" से अधिक स्पष्ट हैं, और ज़ैद का अपना...

فتاویٰ رضویہ، جلد دوازدہم

[بایاں کالم] گفت و می دہم وغیرہ بادیچ نیا میحنت پس ایں صورت از وجہ دوم اعنی عدم قرینہ مذکورہ باشد کما رأیت النص فی قولہ بعد طلبہا وعدم الظفر بہا سہ طلاق او بہ سہ طلاق پس ایں جا قضاء نیز حکم طلاق را خود گنجائشے نیست لانہ ح یتوقف علی اقرارہ وزید ھھنا اب عنہ کماذکرہ فی السوال، و اگر رنگ ثبوت گیرد کہ زید طلاق می دہم گفتہ بود چناں کہ بکر بر درش دانمود، آنگاہ غایت آنکہ ایں صورت از صور وجہ اوّل باشد فأن قولہ مید ہم فان نفی احتمالات اخرکانت لسری الی ما عری عنہ کان یقول سہ طلاق یرید دادنی است او دادن میخواہم اوسہ طلاق را سزاوار است الی غیر ذلک ممایلیس من الایقاع شیئ فلا ینفی احتمال ارادۃ غیرھا و لیس باصرح من قولہ لامرأتہ لا تخرجی فانی حلف بالطلاق بل و لامن قولہ لھا اگر تو زن منی یک طلاق دو طلاق سہ طلاق بل الحق ان ھذین اللفظین المنصوص علیھما اصرح وقولہ طلاق میدھم من دون

[دایاں کالم] اور جواب میں سوال کا اعادہ ہونے کی وجہ سے جواب میں اضافت پائی گئی ہے، پھر سائل نے سوال کی ابتداء میں ذکر کیا کہ زید نے ایک طلاق، دو طلاق، تین طلاق بغیر ذکر "دیتا ہوں" وغیرہ کہے ہیں، تو اس سے قرینہ نہ ہونے کی دوسری وجہ پائی گئی جیسا کہ اسکی نص پہلے "بیوی بھاگ گئی اور کامیاب نہ ہوا" آپ کو معلوم ہے تو خاوند نے "تین طلاق" یا "تین طلاق کے ساتھ" کہا تھا (اور قرینہ نہ ہونے کی وجہ سے طلاق نہ ہوئی تھی) لہذا یہاں بحکم قضاء بھی طلاق کی گنجائش نہیں ہے، کہ اب طلاق، زید کی اقرار پر موقوف ہوئی جبکہ زید یہاں انکاری ہے جیسا کہ سوال میں مذکور ہے، اگر یہ ثابت بھی ہو جائے کہ زید نے "میں دیتا ہوں" کہا ہے جیسا کہ اس کا بھائی بکر کہہ رہا ہے تو ایسی صورت میں بھی یہ ہو گا کہ زیادہ سے زیادہ اس کو پہلی صورتوں سے ایک صورت شمار کیا جائیگا کیونکہ زید کا کہنا "میں دیتا ہوں" اگر دوسرے

احتمالات کی نفی بھی کر دے تب بھی ان الفاظ کی طرح ہوگا جو "میدہم یعنی میں دیتا ہوں" سے خالی ہیں، جیسے تین طلاق کہنا کہ اس میں "میں نے دی"، "دینا چاہتا ہوں" یا "یہ تین طلاق کے لئے لائق" وغیرہ احتمالات ہیں جو کہ طلاق کو واقع کرنیوالے نہیں ہیں، لہذا اس سے دوسرے احتمالات کی نفی نہ ہوگی، اور یہ لفظ بیوی کو کہنا "مت نکل" کیونکہ میں نے طلاق کی قسم کھائی ہے بلکہ اس کو یہ کہنا "تو اگر میری بیوی ہے ایک طلاق، دو طلاق، تین طلاق" وغیرہ سے زیادہ صریح نہیں ہے بلکہ حق یہ ہے کہ یہ دونوں الفاظ "طلاق می دہم" سے زیادہ صریح ہیں، اور زید کا اپنی

Header: Fatawa Rizwia, Volume 12

(Left Column - Persian/Arabic text context): Mentioning it for his wife or anyone else. Thus, in this case also, a ruling of absolute divorce cannot be given. Rather, if Zaid says under oath that he did not intend to divorce his wife with these words, he should be believed and the woman should not be considered divorced, as we have previously presented the texts. Similarly, his statement in response to Amr, 'I have given divorce' (Talaq dadam), is also devoid of attribution (idafat) in the question and answer... Therefore, legally, its ruling is the same as the previous words. And religiously, it is even simpler than that, because 'I have given divorce' is an explicit statement of fact. If there was an intention of attribution here, it would be devoid of intended attribution... because it would be nothing but a false report, and a false report does not result in divorce religiously, as explicitly stated in Al-Khairiyyah, Radd al-Muhtar, and other reliable books. Therefore, in the inquired case, the legal ruling is that if only these words are proven - one divorce, two divorces, three divorces - without adding 'I give' (mi daham), as explained at the beginning of the question, then no action should be taken against Zaid due to the complete lack of proof of divorce. And if it is not proven by two just witnesses that he said 'I give three divorces' three times, then Zaid should be made to swear an oath. If he swears that with these words [he did not intend] the divorce of his wife...

(Right Column - Urdu translation of the above): Even if one says 'I am giving divorce' (Talaq mi daham) without mentioning the wife Hindah or anyone else, the Qazi (judge) will not absolutely rule it a divorce. Instead, if Zaid takes an oath and says, 'I did not intend to divorce my wife,' the Qazi must accept his confirmation and will not declare the wife divorced, as we have mentioned in previous texts. Similarly, Zaid's response to Amr saying 'Talaq dadam' (I have given divorce) is also devoid of attribution (idafat). Therefore, legally (qaza'an), its ruling will be the same as the previous words. And religiously (diyanatan), these words are even simpler than the first ones because 'Talaq dadam' is an explicit statement of fact. In this case, even if there was an intention of attribution, divorce would not occur. Furthermore, because the mentioned words lack attribution in intention, they will be considered false reports, and intending divorce through a false report is not religiously valid, as explicitly stated in authoritative books like Al-Khairiyyah and Radd al-Muhtar, etc. Therefore, in the questioned case, the legal ruling is that if only these words are present—'one divorce, two divorces, three divorces'—without being combined with 'mi daham' (I give), then no action against Zaid is permissible because there is no

proof of divorce at all. And if it is not proven by two reliable witnesses that he said 'I give three divorces' (talaq mi daham) three times, then Zaid should be asked to take an oath. If he swears that with these words [he didn't intend] the divorce of the wife...

शीर्षक: फतावा रज़विया, जिल्द 12

(दायां कॉलम - उर्दू पाठ का अनुवाद): पत्नी हिन्दा या किसी अन्य का उल्लेख किए बिना 'तलाक मी दहम' (मैं तलाक देता हूँ) कहने पर भी काज़ी (न्यायाधीश) पूर्णतः तलाक का आदेश नहीं देगा, बल्कि यदि ज़ैद शपथ लेकर कह दे कि 'मैंने पत्नी के तलाक का इरादा नहीं किया था', तो काज़ी को इसकी पुष्टि करनी होगी और पत्नी को तलाकशुदा घोषित नहीं करेगा, जैसा कि हम पिछली नसों (ग्रंथों) में वर्णित कर चुके हैं। इसी तरह ज़ैद का अम्र के जवाब में 'तलाक दादम' (मैंने तलाक दे दिया है) कहना भी संदर्भ (इज़ाफ़त) से रहित है, इसलिए कानूनी तौर पर (क़ज़ाअन्) इसका हुक्म भी पिछले शब्दों की तरह होगा। और धार्मिक रूप से (दियानतन्) ये शब्द पहले शब्दों से भी आसान हैं क्योंकि 'तलाक दादम' एक स्पष्ट सूचना है। इसमें यदि संदर्भ की नियत (इरादा) हो तब भी तलाक नहीं होगा। इसके अलावा, उक्त शब्द नियत में संदर्भ की कमी के कारण झूठी खबरें मानी जाएंगी, जबकि झूठी खबर से तलाक का इरादा धार्मिक रूप से सही नहीं है, जैसा कि अल-खैरिय्याह और रद्द अल-मुह्तार आदि विश्वसनीय पुस्तकों में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है। इसलिए, पूछे गए मामले में कानूनी फैसला यह है कि यदि केवल यही शब्द हों - 'एक तलाक, दो तलाक, तीन तलाक' - और उनके साथ 'मी दहम' (देता हूँ) सिद्ध न हो, तो ज़ैद के साथ किसी प्रकार का हस्तक्षेप जायज़ न होगा क्योंकि तलाक का कोई प्रमाण नहीं है। और यदि दो विश्वसनीय गवाह यह सिद्ध न कर सकें कि ज़ैद ने तीन बार 'तलाक मी दहम' कहा है, तो ज़ैद से शपथ ली जाए। यदि वह शपथ लेकर कह दे कि इन शब्दों से उसने अपनी पत्नी को तलाक...

पृष्ठ 342 का 688

بیوی ہندہ یا غیر کے ذکر کے بغیر "طلاق می دہم" کہنے پر بھی علی الاطلاق قاضی طلاق کا حکم نہ کرے گا، بلکہ اگر زید قسم کھا کر کہہ دے میں نے بیوی کی طلاق کا ارادہ نہیں کیا تھا تو قاضی کو اس کی تصدیق کرنی ہوگی، اور بیوی کو مطلقہ نہ قرار دے گا، جیسا کہ ہم سابقہ نصوص میں اسے بیان کر آئے ہیں اور یونہی زید کا عمرو کے جواب میں یہ کہنا "طلاق دادم" (میں نے طلاق دی ہے) بھی اضافت سے خالی ہے، لہٰذا قضاءً اس کا حکم بھی سابقہ الفاظ کی طرح ہوگا، اور دیانۃً یہ لفظ پہلے الفاظ سے آسان ہیں کیونکہ "طلاق دادم" صریح خبر ہے اس میں یہاں اگر اضافت کی نیت ہو تب بھی طلاق نہ پڑے گی نیز مذکورہ الفاظ نیت میں اضافت سے خالی ہونے کی بناء پر جھوٹی خبریں قرار پائیں گے جبکہ جھوٹی خبر سے طلاق کا ارادہ دیانۃً درست نہیں ہے جیسا کہ اس پر خیر یہ اور ردالمحتار وغیرہما معتبر کتب میں تصریح موجود ہے۔ لہٰذا مسئولہ صورت میں قضاءً حکم یہ ہے کہ اگر صرف یہی الفاظ ہوں ایک طلاق، دو طلاق، تین طلاق، ان کے ساتھ "میدم" نہ ثابت ہو تو یہ زید سے کسی قسم کا تعرض جائز نہ ہوگا کیونکہ طلاق کا اصلاً کوئی ثبوت نہیں، اور اگر زید نے ان الفاظ کے ساتھ "میدم" کہا ہو تو پھر اگر دو گواہ عادل ثابت نہ کر سکیں کہ زید نے تین بار "طلاق میدم" کہا ہے تو زید سے قسم لی جائے، اگر حلفاً کہہ دے کہ میں نے ان الفاظ سے بیوی کی طلاق

صفحہ 342 منجملہ 688

Fatawa Razawiyya - Volume 12

(Left Column) ...did not intend it, let them leave his path and let him be, and if he refuses (to take the oath), he will be considered as having confessed to the intention of divorce, and the three divorces for his wife will be established. And Allah, Glorified and Exalted, knows best.

I say: And with Allah is success. Some matters remain, for if you follow the branches (sub-issues) of omitting the 'idafa' (attribution/connection), you will find that they (the jurists) sometimes say: It does not occur as long as he does not say "I intended her." This indicates that the occurrence is conditional on the statement. And sometimes they say: It occurs as long as he does not say "I intended someone else" or "I did not intend her divorce." This indicates that the non-occurrence is suspended (on his explanation), so much so that if he does not say that, it occurs, even if he did not say "I intended her divorce." And sometimes you will see them ruling that it occurs without the need for intention despite the omission of 'idafa', where it exists in the speech of the addressee, like "the woman" and others. And at other times you see them looking for intention despite the presence of 'idafa' in the speech of the addressee. And sometimes you hear them ruling that it occurs absolutely without intention and with the absence of 'idafa', neither in his own words nor in the words of others, and sometimes they seek intention in...

(Right Column) ...did not mean it, then Zaid is free and he is safe. And if he refuses the oath, he will be considered to have confessed to the intention of divorce, and three divorces will be effective for his wife. And Allah, Glorified and Exalted, knows best. (T) I say: And with Allah is success. (I say, and success is obtained from Allah Almighty alone. T) Some matters remain, because when you search carefully through the statements of the noble jurists regarding the issues of omitting 'idafa' (attribution), you will sometimes find them saying that divorce will not occur until the husband says he intended the wife, which shows that the occurrence of divorce is conditional upon this statement of the husband. And sometimes they say that divorce will occur unless he says that he intended another woman or that I did not intend to divorce my wife; from this, it is known that the non-occurrence of divorce without 'idafa' is dependent on his aforementioned clarification. If he does not clarify, divorce will take place even if he does not manifest the intention to divorce the wife. And sometimes you will see that the noble jurists give the ruling of divorce and do not feel the need for intention, and 'idafa' is also omitted, where he is addressing a wife or someone else. And sometimes you will find them looking for intention despite

'idafa', whereas 'idafa' is found in the speech of the addressee. And sometimes you will hear that despite the lack of 'idafa', they rule it occurs based on the lack of intention...

फ़तावा रज़विया - जिल्द 12

(बायां कॉलम) ...मेरा यह इरादा नहीं था, उन्हें उसका रास्ता छोड़ने दो और उसे छोड़ दो, और अगर वह (शपथ से) इनकार करता है, तो उसे तलाक की मंशा स्वीकार करने वाला माना जाएगा, और उसकी पत्नी के लिए तीन तलाक सिद्ध हो जाएंगे। और अल्लाह, महिमामयी और सर्वोच्च, सबसे अच्छा जानता है।

मैं कहता हूँ: और अल्लाह से ही सफलता मिलती है। कुछ बातें शेष हैं, क्योंकि यदि आप 'इज़ाफ़त' (सम्बन्ध/जुड़ाव) को छोड़ने की शाखाओं का अनुसरण करते हैं, तो आप पाएंगे कि वे (फ़ुक़हा/विद्वान) कभी-कभी कहते हैं: यह तब तक नहीं होता जब तक वह यह न कहे कि "मेरा इरादा उसी (पत्नी) से था।" यह इंगित करता है कि तलाक का होना उसके कथन पर निर्भर है। और कभी-कभी वे कहते हैं: यह तब तक हो जाता है जब तक वह यह न कह दे कि "मेरा इरादा किसी और से था" या "मेरा इरादा उसकी तलाक का नहीं था।" यह इंगित करता है कि तलाक का न होना उसकी स्पष्टीकरण पर निर्भर है, यहाँ तक कि यदि वह ऐसा नहीं कहता है, तो तलाक हो जाता है, भले ही उसने यह न कहा हो कि "मेरा इरादा उसकी तलाक का था।" और कभी-कभी आप देखेंगे कि वे इसे बिना किसी नीयत (इरादे) की आवश्यकता के होने का फैसला देते हैं, जबकि 'इज़ाफ़त' छूटी हुई होती है, जहाँ वह संबोधित व्यक्ति के शब्दों में मौजूद होती है जैसे "स्त्री" और अन्य। और दूसरी बार आप उन्हें संबोधित व्यक्ति के शब्दों में 'इज़ाफ़त' की मौजूदगी के बावजूद नीयत की तलाश करते हुए देखते हैं। और कभी-कभी आप उन्हें सुनते हैं कि वे बिना किसी नीयत के और न ही उसके शब्दों में और न ही दूसरों के शब्दों में 'इज़ाफ़त' की कमी के बावजूद इसे पूरी तरह से होने का फैसला सुनाते हैं, और कभी-कभी वे नीयत करते हैं...

(दायां कॉलम) ...मुराद नहीं ली, तो ज़ैद बरी है और उसको अमन है। और अगर वह कसम से इनकार करे तो वह तलाक के इरादे का मोतरिफ (स्वीकार करने वाला) करार पाएगा और उसकी बीवी की तीन तलाकें हो जाएंगी। वल्लाहु सुब्हानहु व तआला आलम। (त) अकुल: व बिल्लाहित तौफीक (मैं कहता हूँ और तौफीक अल्लाह तआला से ही हासिल है। त) कुछ उमूर (मामले) बाकी हैं, क्योंकि जब आप फुक़हा किराम की इबारात (कथनों) को तर्कए-इज़ाफ़त (सम्बन्ध के त्याग) के मसाइल में गौर से तलाश करेंगे तो आप उनको कभी यूँ पाएंगे कि वह कह रहे हैं कि तलाक वाक़े (घटित) न होगी जब तक खाविंद बीवी मुराद लेने का कौल (कथन) न करे जिससे मालूम होता है कि तलाक का वक़ू(होना) खाविंद के इस कौल से मशरूत (शर्तबद्ध) है। और कभी वह कहते हैं कि

तलाक वाक़े होगी जब तक यह न कह दे कि किसी और औरत का इरादा किया है या मैंने बीवी की तलाक का इरादा नहीं किया था, इससे मालूम होता है कि बगैर इज़ाफ़त तलाक का अदम-ए-वक़ू(न होना) उसकी मजकूर (उल्लेखित) वजाहत पर मौकूफ (निर्भर) है। अगर वजाहत न करे तो तलाक हो जाएगी अगरचे बीवी की तलाक का इरादा न भी ज़ाहिर करे। और कभी तुम देखोगे कि फुक़हा किराम ऐसी सूरत में तलाक का हुक्म देते हैं और नियत की हाजत (आवश्यकता) महसूस नहीं करते और इज़ाफ़त भी मतरूक (त्याग दी गई) होती है जहाँ पर कोई बीवी या किसी गैर से खिताब कर रहा हो। और कभी उनको इज़ाफ़त के बावजूद नियत का मुतलाशी (तलाश करने वाला) पाओगे, जबकि मुखातब के कलाम में इज़ाफ़त पाई जाए और कभी आप सुनेंगे कि वह इज़ाफ़त न होने के बावजूद नियत न होने पर वक़ूए-तलाक का...

فتاوٰی رضویہ - جلد دوازدہم

(Left Column) نخواستہ ام راہش گزارند وانش دارند و اگر نکول کند باراده طلاق معترف شود سہ طلاق رنگ ثبوت یابد۔ واللہ سبحانہ و تعالی اعلم۔ اقول: وباللہ التوفیق بقی بعد اشیاء فانک ان تتتبعت فروع ترك الاضافة وجدتهم، ربما يقولون لايقع مالم يقل اردتها فهذا يدل على ان الوقوع مشروط بالقول، وربما قالو ايقع مالم يقل اردت غيرها اولہ ارد طلاقها فهذا يدل على ان عدم الوقوع هو الموقوف حتى لولم يقل ذلك وقع وان لم يقل اردت طلاقها، وربما تراهم يحكمون بالوقوع من دون حاجة الى النية مع ترك الاضافة حيث وجدت في كلام المخاطب كالمراة و غيرها واخرى تراهم ينوون مع وجود الاضافة فى كلام المخاطب، وربما تسمعهم يحكمون بالوقوع مطلقا من دون نية مع عدم الاضافة لافي قوله ولافي قول غيره، وربما ينوون في

(Right Column) مراد نہیں لی، تو زید بری ہے اور اس کو امن ہے اور اگر وہ قسم سے انکار کرے تو وہ طلاق کے ارادہ کا معترف قرار پائے گا اور اس کی بیوی کی تین طلاق ہو جائیں گی۔ واللہ سبحانہ، و تعالٰی اعلم (ت) اقول: وباللہ التوفیق (میں کہتا ہوں اور توفیق اللہ تعالٰی سے ہی حاصل ہے۔ ت) کچھ امور باقی ہیں، کیونکہ جب آپ فقہاء کرام کی عبارات کو ترک اضافت کے مسائل میں غور سے تلاش کریں تو آپ ان کو کبھی یوں پائیں گے کہ وہ کہہ رہے ہیں کہ طلاق واقع نہ ہو گی جب تک خاوند بیوی مراد لینے کا قول نہ کرے جس سے معلوم ہوتا ہے کہ طلاق کا وقوع خاوند کے اس قول سے مشروط ہے، اور کبھی وہ کہتے ہیں کہ طلاق واقع ہو گی جب تک یہ نہ کہہ دے کہ کسی اور عورت کا ارادہ کیا ہے یا میں نے بیوی کی طلاق کا ارادہ نہیں کیا تھا، اس سے معلوم ہوتا ہے کہ بغیر اضافت طلاق کا عدم وقوع اس کی مذکور وضاحت پر موقوف ہے، اگر وضاحت نہ کرے تو طلاق ہو جائے گی اگر چہ بیوی کی طلاق کا ارادہ نہ بھی ظاہر کرے۔ اور کبھی تم

دیکھو گے کہ فقہاء کرام ایسی صورت میں طلاق کا حکم دیتے ہیں اور نیت کی حاجت محسوس نہیں کرتے اور اضافت بھی متروک ہوتی ہے جہاں پر کوئی بیوی یا کسی غیر سے خطاب کر رہا ہو اور کبھی ان کو اضافت کے باوجود نیت کا متلاشی پاؤ گے، جبکہ مخاطب کے کلام میں اضافت پائی جائے اور کبھی آپ سنیں گے کہ وہ اضافت نہ ہونے کے باوجود نیت نہ ہونے پر وقوع طلاق کا

Fatawa Rizvia, Volume 12

Regarding this situation, these are the disagreements that confuse those who do not reflect or do not correctly apply every subsidiary branch as it should be. What the weak servant has achieved through the success granted by the Kind Master (Al-Mawla Al-Lateef), Glorified and Exalted, is that attribution (idafah) is indispensable, whether in speech or in intention. For divorce is not valid except through its pronouncement (iyqa'), and pronouncement only occurs by establishing a connection between the divorce and the woman. This is only possible through attribution. This is essential and beyond doubt, for if it were not so, divorce would be binding upon anyone who utters the word 'talaq' or 'taaliq' and similar words, even if he did not intend anything by it or did not intend to divorce his wife, which is absolutely void. Therefore, requiring attribution is a truth about which there is no doubt. Yes, attribution may exist in speech, so there is no need for intention in the ruling, or it may not exist in speech, in which case there is a need for the intention to be manifest.

(T) As for the existence of attribution in speech, I say it is of three types: First, it being explicitly found in the husband's speech, which is what Al-Halabi and Al-Tahawi mentioned examples of, such as his saying: 'You are divorced' (anti taaliq).

इस स्थिति के संबंध में, ये वे मतभेद हैं जो उन लोगों को भ्रमित करते हैं जो विचार नहीं करते या हर उप-शाखा को उस तरह लागू नहीं करते जैसा उसे किया जाना चाहिए। दयालु स्वामी (अल-मौला अल-लतीफ़), महिमावान और उच्च, की सफलता से इस कमजोर सेवक ने जो पाया है वह यह है कि संबंध (इज़ाफ़त) अनिवार्य है, चाहे वह शब्दों में हो या नीयत (इरादे) में। क्योंकि तलाक तब तक प्रभावी नहीं होता जब तक उसका उच्चारण (ईकाअ) न किया जाए, और उच्चारण तभी होता है जब तलाक और महिला के बीच संबंध स्थापित किया जाए। यह केवल इज़ाफ़त के माध्यम से ही संभव है। यह आवश्यक है और इसमें कोई संदेह नहीं है, क्योंकि यदि ऐसा न होता, तो तलाक या तालिक जैसे शब्दों का उच्चारण करने वाले प्रत्येक व्यक्ति पर तलाक अनिवार्य हो जाता, भले ही उसने इसके माध्यम से कुछ भी इरादा न किया हो या अपनी पत्नी को तलाक देने का इरादा न किया हो, जो स्पष्ट रूप से अमान्य है। इसलिए, इज़ाफ़त की आवश्यकता एक सच्चाई है जिसमें कोई संदेह नहीं है। हाँ, इज़ाफ़त कभी शब्दों में मौजूद होती है, तो उस समय हुक्म (आदेश) के लिए नीयत की आवश्यकता नहीं होती, और कभी शब्दों में इज़ाफ़त नहीं होती, उस समय नीयत के प्रकट होने की आवश्यकता होती है।

(त) शब्दों में इज़ाफ़त की उपस्थिति के बारे में मैं कहता हूँ कि यह तीन प्रकार की होती है: पहला, यह कि पति के शब्दों में स्पष्ट रूप से पाई जाए, जिसकी मिसालें अल्लामा हलबी और तहावी ने यह ज़िक्र की हैं, जैसे उसका कहना: 'तू तलाक़शुदा है' (अंति तालिक़)।

पृष्ठ 344 का 688

حکم لگاتے ہیں حالانکہ خاوند یا غیر کے کلام میں اضافت کا کوئی ذکر نہیں ہوتا، اور بعینہ اسی صورت میں کبھی وہ نیت کی بات کرتے ہیں، تو فقہاء کرام کی عبارات میں یہ اختلافات ہیں جو غور کرنے والے اور ہر مسئلہ کو مناسب محمل پر محمول نہ کرنے والے کے لئے حیرت کا باعث بنتے ہیں۔ (ت) اور عبد ضعیف کو اللہ تعالٰی لطف فرمانے والے جل وعلا کی توفیق سے جو حاصل ہوا ہے وہ یہ ہے کہ بیوی کو طلاق دینے میں اضافت ضروری ہے لفظوں میں ہو خواہ وہ نیت میں ہو، کیونکہ طلاق کا وقوع ایقاع پر موقوف ہے اور ایقاع کا وجود نہیں ہوتا تو قتیکہ طلاق کو عورت سے متعلق نہ کیا جائے، اور یہ چیز ہے جس میں شک نہیں ہو سکتا، کیونکہ اگر طلاق کو عورت کی طرف منسوب کرنا اور اس کی طرف اضافت کرنا ضروری نہ ہو تو پھر طلاق یا طالق کا تلفظ کرنے والے ہر شخص کی بیوی کو طلاق لازم ہو جائے اگرچہ وہ اس پر کسی چیز کا ارادہ نہ کرے یا اپنی بیوی کو طلاق دینے کا لہٰذا طلاق کے وقوع کے لئے نسبت اور اضافت کے شرط ہونے میں کوئی شک نہیں، ہاں اضافت کبھی لفظوں میں موجود ہوتی ہے تو اس وقت حکم کے لئے نیت کی ضرورت نہیں ہوتی اور کبھی لفظوں میں اضافت نہیں ہوتی اس وقت نیت کو ظاہر کی حاجت ہوتی ہے۔ (ت) (یا میں اضافت کا موجود ہونا فاقول: (تو میں کہتا ہوں) یہ تین طرح ہوتی ہے: اول، یہ کہ خاوند کی کلام میں صراحتاً پائی جائے وہ یہ کہ جس کی مثال علامہ حلبی اور طحاوی نے یہ ذکر کی ہیں، مثلاً تو طالق

Fatawa Rizvia, Volume 12

[Legal Text Box - Arabic and Persian]: ...or "I divorced you", or "this one", or "Zaynab", or "daughter of Zaid", or "mother of Amr", or "sister of Bakr", or "my wife is divorced". The second (form of realization): its establishment in it is because of it being an answer to a speech in which [attribution] was established, so it becomes established in the answer as well, because the question is repeated in the answer. And this is what is in Al-Hindiyyah from Al-Khulasah: [A woman] said, "Divorce is in your hand, divorce me." The husband said, "I am divorcing," and repeated it three times, "I divorced [you] thrice." And in it, from Al-Dhakhirah: Shams al-A'immah al-Awzjandi was asked about a woman who said to her husband, "If divorce were in my hands, I would have divorced myself a thousand times." The husband said, "I also gave a thousand," and did not say, "I gave you divorce." People blamed him, so he said, "I gave another," and did not say it to her, nor did he say "divorce." He said: It occurs if she is in the waiting period (iddat). And in it from Al-Khaniyyah: His wife's mother entered upon him and said, "Divorce her," while not observing the right of her father and rebuking him for that. The husband said, "This is the second," or "This is the third"...

[Footnotes]: 1. Fatawa Hindiyyah, Chapter 7, Divorce in Persian words, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/384. 2. Fatawa Hindiyyah, Chapter 7, Divorce in Persian words, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/384. 3. Fatawa Hindiyyah, Chapter 7, Divorce in Persian words, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/384.

Page 345 of 688

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

[कानूनी पाठ खंड - अरबी और फ़ारसी]: ...या "मैंने तुझे तलाक़ दी", या "इसे", या "ज़ैनब को", या "ज़ैद की बेटी को", या "अम्र की माँ को", या "बक्र की बहन को", या "मेरी पत्नी तलाक़शुदा है"। दूसरा (रूप): इसका स्थापित होना इसलिए है क्योंकि यह ऐसे वचन का उत्तर है जिसमें [संदर्भ] स्थापित था, अतः उत्तर में भी वह स्थापित हो जाता है, क्योंकि उत्तर में प्रश्न का दोहराव होता है। और यह 'अल-हिंदिया' में 'अल-खुलासा' से है: [एक महिला ने] कहा, "तलाक़ तुम्हारे हाथ में है, मुझे तलाक़ दो।" पति ने कहा, "मैं तलाक़ दे रहा हूँ," और इसे तीन बार दोहराया, "मैंने तीन तलाक़ दिए।" और इसमें, 'अद-दख़ीरा' से: शम्स अल-आइम्मा अल-औजंदी से उस महिला के बारे में पूछा गया जिसने अपने पति से कहा, "अगर तलाक़ मेरे हाथ में होता तो मैं खुद को हज़ार तलाक़ दे देती।" पति ने कहा, "मैंने भी हज़ार दिए," और यह नहीं कहा कि "मैंने तुझे तलाक़ दी।" लोगों ने उसे फटकारा, तो उसने कहा, "मैंने दूसरा दिया," न तो उसने उसे संबोधित किया और न ही "तलाक़" शब्द कहा। उन्होंने फ़रमाया: यदि वह इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) में हो तो तलाक़ हो जाएगी। और इसमें 'अल-खानिया' से: उसकी सास (पत्नी की माँ) उसके पास आई और कहा, "उसे तलाक़ दो," जबकि उसने अपने पिता के अधिकार का ध्यान नहीं रखा और इसके लिए उसे फटकारा। पति ने कहा, "यह दूसरी है," या "यह तीसरी है"...

[व्याख्यात्मक पाठ खंड - उर्दू]: ...है; "मैंने तुझे तलाक़ दी", (पत्नी की ओर इशारा करते हुए) "इसको", नाम लेकर, "ज़ैनब को", "ज़ैद की बेटी को", "अम्र की माँ को", "बक्र की बहन को", "मेरी पत्नी को", तलाक़। दूसरी सूरत: यह कि तलाक़ के शब्द किसी ऐसे कलाम के जवाब में ज़िक्र किए जाएँ जिसमें निस्बत (संदर्भ) मज़कूर थी, तो इस वजह से वह निस्बत जवाबन तलाक़ के शब्दों में भी मुतक्क़क़ होगी, क्योंकि जवाब में सवाल का एआदा (दोहराव) होता है। इसकी मिसालें 'हिंदिया' में 'ख़ुलासा' से मनकुल हैं, मसलन बीवी कहे "तलाक़ तेरे हाथ में है मुझे तलाक़ दे"। तो जवाब में ख़ाविंद कहे "मैंने तलाक़ दी"। तीन दफ़ा तकरार किया तो तीन तलाक़ें बीवी को पड़ेंगी। (अह-त) और 'हिंदिया' में 'ज़ख़ीरा' से मनकुल है कि शम्स अल-आइम्मा औजंदी से सवाल हुआ कि औरत कहे अगर तलाक़ मेरे हाथ में होती तो अपने हज़ार तलाक़ दे देती। इसके जवाब में ख़ाविंद ने कहा मैंने भी हज़ार दे दीं। यह न कहा कि तुझे दे दीं। तो शम्स अल-आइम्मा ने जवाब दिया कि तलाक़ हो जाएगी। और 'हिंदिया' में 'इमादिया' से मनकुल है कि ख़ाविंद ने बीवी को कहा कि मैंने तुझे तलाक़ दी। इस पर लोगों ने मलामत की, तो ख़ाविंद ने कहा मैंने दूसरी दी। इसमें न तो बीवी की तरफ़ निस्बत की

और न ही लफ़्ज़े तलाक़ कहा। तो शम्स अल-आइम्मा ने फ़रमाया यह दूसरी भी हो गई अगर बीवी इद्दत में हो। 'हिंदिया' में 'ख़ानिया' से मनकुल कि ख़ाविंद के पास बीवी की माँ दाख़िल हुई और कहा कह तूने बीवी को तलाक़ दे दी तूने...

[पादलेख]: 1. फ़तावा हिंदिया, अध्याय 7, फ़ारसी शब्दों में तलाक़, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/384। 2. फ़तावा हिंदिया, अध्याय 7, फ़ारसी शब्दों में तलाक़, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/384। 3. फ़तावा हिंदिया, अध्याय 7, फ़ारसी शब्दों में तलाक़, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/384।

पृष्ठ 345 / 688

فتاوی رضویہ، جلد دو ازدہم

[قانونی متن کا خانہ - عربی و فارسی]: او طلقتک او ھذہ او زینب او بنت زید او ام عمرو او اخت بکر او امرأتی طالق. الثانی تحققھا فیہ لاجل کونہ جوابا کلام تحقق فیہ فتحقق فی الجواب ایضا لان السوال معاد فی الجواب وھذا ما فی الہندیہ عن الخلاصۃ قالت طلاق بدست تو است، مرا طلاق کن فقال الزوج طلاق می کنم و کرر ثلثا طلقت ثلثا اہ و فیہا عن الذخیرۃ سئل شمس الائمہ الاوزجندی عن امرأۃ قالت لزوجہا لو کان الطلاق بیدی لطقت نفسی الف تطلیقۃ فقال الزوج من نیز ہزار دادم و لم یقل دادم ترا طلاق دادم، مردماں ملامت کردند، گفت دیگر دادم نہ گفت ویراو نہ گفت طلاق، قال یقع اذا کان فی العدۃ اہ و فیہا عن الخانیۃ دخلت علیہ امرأتہ فقالت طلقہا ولم تحفظ حق ابیہا وعاتبتہ فی ذلک فقال الزوج ھذہ ثانیۃ او ھذہ ثالثۃ

[وضاحتی متن کا خانہ - اردو]: والی ہے، میں تجھے طلا دی، (بیوی کو اشارہ کرتے ہوئے) اس کو، نام لے کر، زینب کو، زید بیٹی کو، عمرو کی ماں، بکر کی بہن کو، میری بیوی کو، طلاق دوسری صورت، یہ کہ طلاق الفاظ کسی ایسی کلام کے جواب میں ذکر کئے جائیں جس میں اضافت مذکور تھی تو اس وجہ سے وہ اضافت جوابا طلاق کے الفاظ میں بھی متقق ہوگی، کیونکہ جواب میں سوال کا اعادہ ہوتا ہے، اس کی مثالیں ہندیہ میں خلاصہ سے منقول ہیں، مثلاً بیوی کہے "طلاق تیرے ہاتھ میں ہے مجھے طلاق دے"۔ تو جواب میں خاوند کہے "میں نے طلاق دی" تین دفعہ تکرار کیا تو تین طلاقیں بیوی کو پڑیں گی اھ (ت) اور ہندیہ میں ذخیرہ سے منقول ہے کہ شمس الائمہ اوزجندی سے سوال ہوا کہ عورت کہے اگر طلاق میرے ہاتھ میں ہوتی تو اپنے ہزار طلاق دے دیتی، اس کے جواب میں خاوند نے کہا میں بھی ہزار دے دیں، یہ نہ کہا کہ تجھے دے دیں، تو شمس الائمہ نے جواب دیا کہ طلاق ہو جائے گی، اور ہندیہ میں عمادیہ سے منقول ہے کہ خاوند نے

بیوی کو کہا کہ میں نے تجھے طلاق دی، اس پر لوگوں نے ملامت کی، تو خاوند نے کہا میں نے دوسری دی، اس میں نہ تو بیوی کی طرف نسبت کی اور نہ ہی لفظ طلاق کہا، تو شمس الائمہ نے فرمایا یہ دوسری بھی ہو گئی اگر بیوی عدت میں ہو اھ، ہندیہ میں خانیہ سے منقول، کہ خاوند کے پاس بیوی کی ماں داخل ہوئی اور کہا کہہ تو نے بیوی کو طلاق دے دی تو نے

[حواشی]: 1 فتاویٰ ہندیہ الفصل السابع الطلاق بالالفاظ الفارسیه نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۳۸۴ 2 فتاویٰ ہندیہ الفصل السابع الطلاق بالالفاظ الفارسیه نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۳۸۴ 3 فتاویٰ ہندیہ الفصل السابع الطلاق بالالفاظ الفارسیه نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۳۸۴

Fatawa Ridawiyyah Volume 12

[Right Column - Urdu] She did not even respect her father's right and while expressing her displeasure, was censuring her husband. Then the husband said: "This is the second" or "this is the third", so this too will occur. And if while censuring, the word 'divorce' was not mentioned by the husband, it will not occur (ah). And in Jami' al-Fusulayn, it is narrated with the symbol 'Fashin'. 'Fashin' refers to Fawa'id of Shaykh al-Islam Burhan al-Din. A husband said to his wife, "One divorce to you." People censured him. He said, "And I have given a second." The second will occur because this is as a response and based on the first divorce (ah). I say (qultu): That is, this is when people, in their censure, mentioned the woman's divorce so that it is repeated in the answer, otherwise divorce does not occur without intention, as you have heard from al-Khaniyyah. Fashin did not mention this point because usually, the thing for which one is censured is mentioned in the censure itself, as is not hidden. (T)

[Left Column - Arabic] ...occurs as another. Even if she censured him and did not mention divorce, and he said this statement, the increase does not occur except with intention (ah). In Jami' al-Fusulayn with the symbol 'Fashin' for the benefits of Shaykh al-Islam Burhan al-Din: He said, "Tari yak [to you one] divorce." When he was censured, he said, "Deegar dadam [I gave another]." The second occurs because it is an answer to that and based upon it (ah). I say: That is, when they mentioned the woman's divorce in the censure, so that it would be repeated in the answer, otherwise it does not occur without intention as you heard from al-Khaniyyah. Fashin did not mention it because it is customary to mention what is being censured in the censure itself, as is not hidden.

[Lower Right Column - Urdu] If you object that is it not in al-Hindiyyah from al-Dhakhirah that Najm al-Din was asked about such a person whose wife said to him, "I cannot get along with you, give me divorce," so her husband said, "Someone with a face like yours is given divorce." And then he says, "I did not have the intention of divorce," so will this person's statement be accepted? Najm al-Din said, "Yes." And some Imams agreed with Najm al-Din in this matter.

[Lower Left Column - Arabic] If you say! It is not in al-Hindiyyah from al-Dhakhirah: Najm al-Din was asked about a person whose wife said to him, "Mara barg ba tu bashidan nist [I have no power to stay with you], give me divorce." The husband said, "Choon tu roye talaq dada shud [Someone with a face like yours is given divorce]."

And he said, "I did not intend divorce." Is he to be believed? He said, "Yes." Some Imams agreed with him in this answer (ah). And in it from al-Muhit: He was asked...

[Footnotes] 1. Fatawa Hindiyyah, Chapter 1 on explicit divorce, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/352. 2. Jami' al-Fusulayn, Chapter 22 on issues of Khula, etc., Islami Kutub Khana Karachi, 1/290. 3. Fatawa Hindiyyah, Chapter 7 on divorce in Persian words, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/38.

फतावा रज़विया खंड 12

[दायां कॉलम - उर्दू] उसने अपने पिता के हक़ का भी लिहाज़ न किया और अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करते हुए पति को बुरा-भला कह रही थी। तब पति ने कहा: "यह दूसरी है" या "यह तीसरी है", तो यह भी प्रभावी हो जाएगी। और बुरा-भला कहते हुए अगर पति द्वारा 'तलाक़' शब्द का उल्लेख न किया गया हो, तो वह प्रभावी नहीं होगी (अह)। और 'जामेउल फ़ुसुलैन' में 'फ़शीन' के प्रतीक से वर्णन किया गया है। 'फ़शीन' का संकेत शैख़ुल इस्लाम बुरहानुद्दीन के'फ़वाइद' की ओर है। पति ने पत्नी से कहा: "तुझे एक तलाक़", लोगों ने उसे कोसा, उसने कहा: "और मैंने दूसरी दे दी", तो दूसरी भी प्रभावी हो जाएगी, क्योंकि यह उत्तर के रूप में है और पहली तलाक़ पर आधारित है (अह)। मैं कहता हूँ (अह कुल्तु): अर्थात यह तब है जब लोगों ने बुरा-भला कहने में महिला की तलाक़ का उल्लेख किया हो ताकि उत्तर में उसकी पुनरावृत्ति हो, अन्यथा बिना नियत (इरादे) के तलाक़ प्रभावी नहीं होती, जैसा कि आपने 'ख़ानिया' से सुना है। 'फ़शीन' ने इस बात का उल्लेख इसलिए नहीं किया क्योंकि आमतौर पर जिस चीज़ पर मलामत (बुरा-भला कहना) की जाती है, वह मलामत में ही वर्णित होती है, जैसा कि स्पष्ट है। (त)

[बायां कॉलम - अरबी अनुवाद] ...दूसरी के रूप में प्रभावी होती है। भले ही उसने उसे कोसा और तलाक़ का उल्लेख नहीं किया, और उसने यह कथन कहा, तो वृद्धि बिना नियत के प्रभावी नहीं होती (अह)। जामेउल फ़ुसुलैन में शैख़ुल इस्लाम बुरहानुद्दीन के लाभ के लिए 'फ़शीन' प्रतीक के साथ: उन्होंने कहा, "तुझे एक तलाक़।" जब उन्हें कोसा गया, तो उन्होंने कहा, "मैंने दूसरी दे दी।" दूसरी प्रभावी होती है क्योंकि यह उसका उत्तर है और उसी पर आधारित है (अह)। मैं कहता हूँ: अर्थात, जब उन्होंने मलामत में स्त्री की तलाक़ का उल्लेख किया, ताकि वह उत्तर में दोहराया जाए, अन्यथा वह बिना नियत के प्रभावी नहीं होती जैसा कि आपने ख़ानिया से सुना। फ़शीन ने इसका उल्लेख नहीं किया क्योंकि मलामत में जिस चीज़ को कोसा जा रहा है उसका उल्लेख करना प्रथा है, जैसा कि छिपा नहीं है।

[नीचे दायां कॉलम - उर्दू] यदि आप आपत्ति करें कि क्या 'हिन्दिया' में 'ज़ख़ीरा' से यह नहीं है कि नजमुद्दीन से एक ऐसे व्यक्ति के बारे में पूछा गया जिसकी पत्नी ने उससे कहा कि "मेरा तुम्हारे साथ निर्वाह नहीं है, मुझे तलाक़ दे दो", तो उसके पति ने कहा: "तेरे जैसे चेहरे वाली को तलाक़ दी गई है।" और फिर वह कहता है कि "मैंने तलाक़ की नियत नहीं की थी", तो क्या उस व्यक्ति की बात

मान ली जाएगी? नजमुद्दीन ने फ़रमाया: "हाँ।" और कुछ इमामों ने इस बात में नजमुद्दीन का समर्थन किया।

[नीचे बायां कॉलम - अरबी अनुवाद] यदि आप कहें! यह ज़ख़ीरा से अल-हिन्दिया में नहीं है: नजमुद्दीन से एक ऐसे व्यक्ति के बारे में पूछा गया जिसकी पत्नी ने उससे कहा, "मेरा तुम्हारे साथ रहने की शक्ति नहीं है, मुझे तलाक़ दे दो।" पति ने कहा, "तेरे जैसे चेहरे वाली को तलाक़ दे दी गई है।" और उसने कहा, "मैंने तलाक़ का इरादा नहीं किया था।" क्या उसे माना जाएगा? उन्होंने कहा, "हाँ।" और कुछ इमामों ने इस उत्तर में उनका समर्थन किया (अह)। और उसमें अल-मुहीत से है: उनसे पूछा गया...

[पाद लेख] 1. फतावा हिन्दिया, स्पष्ट तलाक़ पर पहला अध्याय, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/352 2. जामेउल फ़ुसुलैन, खुलअ आदि के मसलों पर बाइसवाँ अध्याय, इस्लामी कुतुब ख़ाना कराची, 1/290 3. फतावा हिन्दिया, फ़ारसी शब्दों में तलाक़ पर सातवाँ अध्याय, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/38

اس کے باپ کے حق کا بھی پاس نہ کیا اور ناراضگی کا اظہار کرتے ہوئے خاوند کو ملامت کر رہی تھی تو خاوند نے کہا یہ دوسری یا یہ تیسری ہے ، تو یہ بھی واقع ہو جائیگی اور ملامت کرتے ہوئے اگر لفظ طلاق کو ذکر نہ کیا ہو اور خاوند واقع نہ ہوگی اھ اور جامع الفصولین میں فشین کی رمز سے بیان کیا، فشین کا اشارہ فوائد شیخ الاسلام برہان الدین کی طرف ہے، خاوند نے بیوی کو کہا تجھے ایک طلاق، لوگوں نے اس کو ملامت کی، اس نے کہا اور میں نے دوسری دی، دوسری واقع ہو جائے گی، کیونکہ یہ جواب کے طور اور پہلی طلاق پر مبنی ہے اھ قلت (میں کہتا ہوں) یعنی یہ تب ہے جب لوگوں نے ملامت میں عورت کی طلاق ذکر کی ہو تاکہ جواب میں اس کا اعادہ ہو ورنہ نیت کے بغیر طلاق واقع نہیں ہوتی، جیسا کہ آپ نے خانیہ سے سنا ہے، اس بات کو فشین نے اس لئے ذکر نہ کیا کہ عادۃً جس چیز ملامت کی جاتی وہ ملامت میں مذکور ہوتی ہے، جیسا کہ مخفی نہیں۔ (ت)

تقی اخری ولو عاتبته ولم تذکر الطلاق فقال هذه المقالة لا تقع الزیادة الا بالنیة اه وفی جامع الفصولین برمز فشین لفوائد شیخ الاسلام برهان الدین قال تربیك طلاق فلاموگفت دیگر دادم یقع آخر لانه جواب لذلك وبناء علیه اه قلت یعنی اذا ذکروا في الملامة طلاق المرأة کي یکون معادا في الجواب والا لم یقع بدون نیة کما سمعت من الخانیة وانما لم یذکره فشین لان العادة ذکر مالم علیه في الملامة کما لا یخفی۔

اگر تو اعتراض کرے کہ کیا ہندیہ میں ذخیرہ سے یہ نہیں ہے کہ نجم الدین سے ایسے شخص کے متعلق سوال کیا گیا جس کو اس کی بیوی نے کہا کہ میرا تیرے ساتھ گزارہ نہیں ہے مجھے طلاق دے، تو اس کے خاوند نے کہا تیرے منہ جیسی کو طلاق دی ہوئی ہے۔ اور پھر کہتا ہے میں نے

طلاق کی نیت نہیں کی، تو کیا اس شخص کی تصدیق کی جائے گی، تو نجم الدین نے فرمایا ہاں۔

اور بعض ائمہ نے اس بات میں نجم الدین کی موافقت

فان قلت ! ليس في الهنديه عن الذخيرة سئل نجم الدين عمن قالت له امرأته مرا برگ با تو باشيدن نيست مرا طلاق ده فقال الزوج چوں توروئے طلاق داده شد وقال لم انو الطلاق هل يصدق قال نعم و وافقه في هذا الجواب بعض الائمة اهوفيها عن المحيط سئل

1 فتاویٰ ہندیہ الفصل الاول فی الطلاق الصریح نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۳۵۲ 2 جامع الفصولین الفصل الثانی والعشرون فی مسائل الخلع الخ اسلامی کتب خانہ کراچی ۱/۲۹۰ 3 فتاویٰ ہندیہ الفصل السابع الطلاق بالالفاظ الفارسیة نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۳۸

Najm al-Islam al-Faqih Abu Nasr reported regarding a drunkard who said to his wife: "Do you want me to divorce you?" She said: "Yes." Then he said in Persian: "If you are my wife, then one divorce, two divorces, three divorces. Get up and go out from my presence." He claimed that he did not intend divorce by it. So, his word is accepted. This is similar to what is in al-Khaniyyah, reasoning that he did not attribute the divorce to her. Thus, they did not judge its occurrence despite the presence of attribution in her speech. As for the branch (mas'ala) of Imam Najm al-Din, it is obvious. And as for the branch of Faqih Abu Nasr and al-Khaniyyah, it is because her saying "yes" was an answer to his question "Do you want me to divorce you?", so it was as if she said "I want you to divorce me." I say, and with Allah is the success: When the respondent brings in his speech words extraneous to the answer, it ceases to be an answer and becomes an initial statement. In these two issues, the answer to her statement would have been for him to say "Divorce is given" or "One divorce, two divorces, three divorces." If he had limited himself to this...

(Right Column Urdu Translation/Explanation:) ...done. [End of previous page context] And in the same [book] it is narrated from al-Muhit that Sheikh-ul-Islam Faqih Abu Nasr was asked about a drunk person who said to his wife, "Do you want me to divorce you?" The wife said, "Yes, I do." So that husband said in Persian words: "If you are my wife, one divorce, two divorces, three divorces, get up from near me and go out." Now the husband thinks that I did not mean divorce by this statement, so the husband's word will be accepted. It was said because the husband did not attribute the divorce to the wife. So in those mentioned events, these gentlemen did not judge the occurrence of divorce, although attribution is present in the wife's speech in all of them. In the issue of Najmuddin, it is obvious, but in the issues of Faqih Abu Nasr and Khaniyya, it is because when the wife said 'yes', it was the answer to the husband's question "Do you want me to divorce you", so it is as if the wife said "I want you to divorce me". (Therefore, in these issues, attribution was mentioned in the wife's speech; despite the fact that attribution is credible in the husband's answer, these gentlemen did not give the order of divorce occurring.) I say, and with the success given by Allah (I say with the success of Allah Almighty), that the person addressed in his speech [deviates] from the answer...

1. Al-Fatawa al-Hindiyyah, Chapter Seven: Divorce in Persian Words, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/383.

2. Al-Fatawa al-Qadhikhan, Chapter on Hanging (Conditional Statements), Naval Kishore Lucknow, 1/219.

नजमुल इस्लाम अल-फ़क़ीह अबू नसर ने एक शराबी के बारे में रिवायत की जिसने अपनी पत्नी से कहा: "क्या तुम चाहती हो कि मैं तुम्हें तलाक दे दूँ?" उसने कहा: "हाँ।" तो उसने फारसी में कहा: "अगर तुम मेरी बीवी हो तो एक तलाक, दो तलाक, तीन तलाक। मेरे पास से उठो और चली जाओ।" और उसका दावा था कि उसने इससे तलाक का इरादा नहीं किया था। तो हुक्म यह है कि उसकी बात मानी जाएगी। और अल-खानिया में भी इसी तरह है, इस दलील के साथ कि उसने तलाक को उसकी तरफ़ मंसूब नहीं किया। तो उन्होंने इसके होने का हुक्म नहीं दिया, हालांकि उसके कलाम में निस्बत मौजूद थी। इमाम नजम अल-दीन की शाख में तो यह ज़ाहिर है। और फ़क़ीह अबू नसर और खानिया की शाख में, क्योंकि उसका "हाँ" कहना उसके इस कौल का जवाब था कि "क्या तुम चाहती हो कि मैं तुम्हें तलाक दे दूँ?", तो वह ऐसा था जैसे उसने कहा हो "मैं चाहती हूँ कि तुम मुझे तलाक दो।" मैं कहता हूँ, और अल्लाह ही तौफीक देने वाला है: जब मुखातब अपने कलाम में जवाब से अलग कोई बात लाता है, तो वह जवाब होने से निकल जाता है और इब्तिदाई कलाम बन जाता है। इन दो मसलों में उसकी बात का जवाब यह होना चाहिए था कि वह कहता "तलाक दे दी गई" या "एक तलाक, दो तलाक, तीन तलाक" और अगर वह इसी पर इक्तिफा करता...

(दाहिने कॉलम का उर्दू विवरण का हिंदी अनुवाद:) ...की है। और इसी में मुहीत से मरवी है कि शैखुल इस्लाम फ़क़ीह अबू नसर से एक नशे वाले के बारे में सवाल हुआ जिसने बीवी को कहा क्या तू चाहती है कि मैं तुझे तलाक दे दूँ? बीवी ने कहा हाँ चाहती हूँ। तो उस खावंद ने बिलफ़ाज़-ए-फ़ारसी यूँ कहा अगर तू मेरी बीवी है एक तलाक, दो तलाक, तीन तलाक, मेरे पास से उठ और निकल जा। अब खावंद का ख्याल है कि मैंने इस बात से तलाक मुराद नहीं ली, तो खावंद की बात मक़बूल होगी। कहा इसलिए कि खावंद ने तलाक को बीवी की तरफ़ मंसूब नहीं किया। तो इन मज़कूरा वाक्यात में इन हज़रात ने तलाक वाक़े होने का हुक्म नहीं किया हालांकि तमाम में बीवी के कलाम में इज़ाफ़त मौजूद है। नजमुल दीन के मसले में तो ज़ाहिर है लेकिन फ़क़ीह अबू नसर और खानिया के मसलों में इसलिए कि बीवी ने जब हाँ कहा तो यह खावंद की बात "क्या तू चाहती है कि मैं तुझे तलाक दे दूँ" का जवाब है तो गोया बीवी ने कहा मैं चाहती हूँ कि तू मुझे तलाक दे, (लिहाज़ा इन मसाइल में बीवी के कलाम में इज़ाफ़त मज़कूर हुई इसके बावजूद कि खावंद के जवाब में इज़ाफ़त मोतबर है इन

हज़रात ने तलाक वाक़े होने का हुक्म न दिया) मैं कहता हूँ अल्लाह तआला की तौफीक से कि मुखातब शख्स अपने कलाम में जवाब से...

1. अल-फ़तावा अल-हिन्दिया, सातवाँ बाब: फ़ारसी अल्फाज़ में तलाक, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/383।
2. अल-फ़तावा अल-काज़ीखान, बाबुत तालीक़, नवल किशोर लखनऊ, 1/219।

पृष्ठ 347/688

نجم الاسلام الفقیہ ابونصر عن سکران قال لامرأتہ اتریدین ان اطلقک قالت نعم فقال بالفارسیۃ اگر تو زن منی یک طلاق دو طلاق سہ طلاق قومی اخرجی من عندی وھو یزعم انہ لم یرد بہ الطلاق فالقول قولہ ۱ اھ ومثلہ فی الخانیۃ معللاً بانہ لم یضف الطلاق الیھا ۲ اھ فلم یحکموا بالوقوع مع وجود الاضافۃ فی کلامھا اما فی فرع الامام نجم الدین فظاھر۔ واما فی فرع الفقیہ ابی نصر والخانیۃ فلان قولھا نعم کان جواباً لقولہ اتریدین ان اطلقک فکانھا قالت اریدا ن تطلقنی، قلت وباللہ التوفیق المخاطب اذا اتی فی کلامہ بکلام اجنبی عن الجواب یخرج عن کونہ جواباً ویصیر کلاماً مبتداء ففی المسئلتین انما کان جواب قولھا ان یقول طلاق دادہ شد اویک طلاق ودو طلاق وسہ طلاق ولو اقتصر علی ھذا

کی ہے اھ اور اسی میں محیط سے مروی ہے کہ شیخ الاسلام فقیہ ابونصر سے ایک نشے والے کے بارے میں سوال ہوا جس نے بیوی کو کہا کیا تو چاہتی ہے کہ میں تجھے طلاق دے دوں؟ بیوی نے کہا ہاں چاہتی ہوں۔ تو اس خاوند نے بالفاظ فارسی یوں کہا اگر تو میری بیوی ہے ایک طلاق، دو طلاق، تین طلاق، میرے پاس سے اٹھ اور نکل جا۔ اب خاوند کا خیال ہے کہ میں نے اس بات سے طلاق مراد نہیں لی، تو خاوند کی بات مقبول ہوگی اھ کہا اس لئے کہ خاوند نے طلاق کو بیوی کی طرف منسوب نہیں کیا اھ تو ان مذکورہ واقعات میں ان حضرات نے طلاق واقع ہونے کا حکم نہیں کیا حالانکہ تمام میں بیوی کے کلام میں اضافت موجود ہے۔ نجم الدین کے مسئلہ میں تو ظاہر ہے لیکن فقیہ ابونصر اور خانیہ کے مسئلوں میں اس لئے کہ بیوی نے جب ہاں کہا تو یہ خاوند کی بات "کیا تو چاہتی ہے کہ میں تجھے طلاق دے دوں" کا جواب ہے تو گویا بیوی نے کہا میں چاہتی ہوں کہ تو مجھے طلاق دے، (لہٰذا ان مسائل میں بیوی کے کلام میں اضافت مذکور ہوئی اس کے باوجود کہ خاوند کے جواب میں اضافت معتبر ہے ان حضرات نے طلاق واقع ہونے کا حکم نہ دیا)

قلت وباللہ التوفیق (میں کہتا ہوں اللہ تعالیٰ کی توفیق سے) کہ مخاطب شخص اپنے کلام میں جواب سے

۱ الفتاوی الہندیۃ الفصل السابع الطلاق بالالفاظ الفارسیۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۳۸۳ ۲ الفتاوی القاضیخان باب التعلیق نولکشور لکھنؤ ۱ / ۲۱۹

Fatawa Razawiyya Volume 12

[Right Column - Urdu] If a stranger says something, it no longer remains an answer but is considered new speech. In both of the mentioned cases, the response was only "divorce given" or "one divorce, two divorces, three divorces." If the husband had only said this much in response, the ruling would be that the divorce had occurred, and there would be no need for intention, as we have explained in previous issues. However, when the husband in these two cases added "when you go" in the first and "if you are my wife" in the second, it did not remain a response to the wife but became new speech, which ended the connection with the question. Scholars have clarified this rule. This point is not hidden from those who serve the words of the scholars. Based on this rule, it is narrated from Al-Dhakhira that a person said to another, "Come, have breakfast with me." The other replied, "By God, I will not have breakfast." Saying this, he went to that person's house and had breakfast with his family. Making the oath a response to the question is possible because he did not add any extra words to the response. Conversely, if he had spoken independent additional words saying, "By God, I will not have breakfast with you," it would not have been possible for it to be just a response (but here he only said "I will not have breakfast," which can be correct as just a response). Summary (T).

If you have an objection regarding the issue narrated in Al-Hindiyya from Al-Khulasa, where a woman said "Divorce me," and the husband beat her and said "This is divorce," and it is said that the divorce will not occur, and if...

[Left Column - Arabic] ...the ruling of occurrence without the need for intention, as was the case in the preceding branches which we recited to you. For when he added his words "when you turn (face)" or "if you are my wife," it did not remain a response and became initiated speech, so the attribution of the question to it did not continue. Scholars have specified this principle, as is not hidden from whoever has served their words. From that, in Al-Dhakhira: He said to him: "Dine with me." He said: "By Allah, I will not dine." Then he went to his house and dined with his family; he does not break his oath because his words came as an answer to the question, and it was possible to make them an answer because he did not add to the letter of the answer, unlike if he had said: "By Allah, I will not dine with you," because he added to the letter of the answer, and with such addition, it is not possible to make it a response. Summarized.

If you say: what is the answer concerning the branch in Al-Hindiyya from Al-Khulasa: "If she said 'divorce me', then he struck her and said to her: 'this is your divorce'

(aynak talaq), it does not occur. And if he said: 'your divorce occurred' (aynak talaq yaqa'), it occurs." Summarized. Thus it was...

---

1. Radd al-Muhtar with reference to Al-Dhakhira, Kitab al-Iman, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/85.
2. Al-Fatawa al-Hindiyya, Chapter Seven on Divorce in Persian words, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/382.

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

[दायां कॉलम - उर्दू] ...अजनबी कोई बात कहे तो वह जवाब नहीं रहता बल्कि नया कलाम तसव्वुर होता है, तो मजकूरा दोनों मसलों में जवाब सिर्फ इतना था 'तलाक़ दी गई' या 'एक तलाक़, दो तलाक़, तीन तलाक़', अगर खाविन्द जवाब में इतनी बात ही कहता तो तलाक़ के वाक़े होने का हुक्म होता और नियत की ज़रूरत न होती, जैसा कि पहले गुज़रे मसाइल में इस को हम ने बयान किया है। लेकिन जब इन दोनों मसलों में खाविन्द ने, पहले में "जब तू जाए" और दूसरे में "अगर तू मेरी औरत हो" जवाब से ज़ायद कर दिए तो यह बीवी को जवाब न हुआ बल्कि नया कलाम बन गया जिस से सवाल वाली इज़ाफ़त ख़त्म हो गई। इस क़ायदे की उलमा ने तसरीह की है। यह बात उस शख़्स पर मखफ़ी नहीं जो उलमा के कलाम का खादिम है। इसी क़ायदे पर ज़ख़ीरा से मन्क़ूल है, एक शख़्स ने दूसरे को कहा 'आओ मेरे साथ नाश्ता करो' तो दूसरे ने जवाब में कहा 'ख़ुदा की क़सम मैं नाश्ता नहीं करूँगा', यह कह कर वह उसी शख़्स के घर जाकर उस के घर वालों के साथ नाश्ता करता है, तो क़सम सवाल को जवाब बनाना भी मुमकिन है क्योंकि इस ने जवाब पर कोई हर्फ़ ज़ायद नहीं किया इस के बर-ख़िलाफ़ अगर वह मुस्तक़िल ज़ायद कलाम करते हुए यह कहता 'ख़ुदा की क़सम मैं तुझ से नाश्ता न करूँगा', तो फिर सिर्फ जवाब होना मुमकिन नहीं (लेकिन यहाँ सिर्फ'नाश्ता न करूँगा' कहा जो कि सिर्फ जवाब के तौर पर दुरुस्त हो सकता है) अह मुल्ख़सन (त)।

इस पर अगर तेरा एतराज़ हो कि हिन्दिया में खुलासा से मन्क़ूल मसला के बारे में क्या जवाब होगा जिस में औरत ने कहा 'मुझे तलाक़ दे' तो खाविन्द ने इस को मारा और कहा 'यह तलाक़ है', तो तलाक़ न होगी, और अगर...

[बायां कॉलम - अरबी] ...हुक्म का होना बिना नियत की ज़रूरत के, जैसा कि उन पिछली शाखाओं में था जो हमने आपको सुनाईं। क्योंकि जब उसने अपने शब्द 'जब तू सामने हो' (चूँ तू रूए) या 'अगर तू मेरी पत्नी है' जोड़े, तो वह जवाब नहीं रहा और शुरुआती भाषण बन गया, इसलिए सवाल का संबंध उस तक नहीं पहुँचा। विद्वानों ने इस सिद्धांत को स्पष्ट किया है, जैसा कि उन लोगों से छिपा नहीं है जिन्होंने उनके शब्दों का अध्ययन किया है। उसी में से, अल-ज़खीरा से: उसने उससे कहा: "मेरे साथ भोजन करो।" उसने कहा: "अल्लाह की कसम, मैं भोजन नहीं करूँगा।" फिर वह उसके घर गया और उसके परिवार के साथ भोजन किया; उसकी शपथ नहीं टूटती क्योंकि उसका कहना सवाल के जवाब के रूप में आया था और उसे जवाब बनाना संभव था क्योंकि उसने जवाब के शब्दों में कुछ नहीं जोड़ा, इसके विपरीत यदि उसने कहा होता: "अल्लाह की कसम, मैं तुम्हारे साथ भोजन नहीं

करूँगा," क्योंकि उसने जवाब के शब्दों में जोड़ दिया था, और जोड़ने के साथ उसे जवाब बनाना संभव नहीं है। सारांश।

यदि आप कहें: अल-खुलसा से अल-हिन्दिया की शाखा के बारे में क्या जवाब है: "यदि उसने कहा 'मुझे तलाक दो', तो उसने उसे मारा और उससे कहा: 'यह तुम्हारा तलाक है' (एनक तलाक), तो यह घटित नहीं होता। और यदि उसने कहा: 'तुम्हारा तलाक हो गया' (एनक तलाक यक़ा), तो यह घटित होता है।" सारांश।

---

1. रद-उल-मुहतार ब-हवाला ज़ख़ीरा किताबुल ईमान दार एहया-उत-तुरास अल-अरबी बैरूत 3/85
2. अल-फ़तावा अल-हिन्दिया अल-फ़स्ल-उस-साबे फ़ित-तलाक़ बिल-अल्फ़ाज़ अल-फ़ारसिया नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर 1/382

[دایاں کالم - اردو] اجنبی کوئی بات کرے تو وہ جواب نہیں رہتا بلکہ نیا کلام منصور ہوتا ہے، تو مذکورہ دونوں مسئلوں میں جواب صرف اتنا تھا طلاق دی گئی یا ایک طلاق، دو طلاق، تین طلاق، اگر خاوند جواب میں اتنی بات ہی کہتا تو طلاق کے واقع ہونے کا حکم ہوتا اور نیت کی ضرورت نہ ہوتی، جیسا کہ پہلے گزرے مسائل میں اس کو ہم نے بیان کیا ہے۔ لیکن جب ان دونوں مسئلوں میں خاوند نے، پہلے میں "جب تو جائے" اور دوسرے میں "اگر تو میری عورت ہو" جواب سے زائد کر دئیے تو یہ بیوی کو جواب نہ ہوا بلکہ نیا کلام بن گیا جس سے سوال والی اضافت ختم ہوگئی۔ اس قاعدہ کی علماء نے تصریح کی ہے۔ یہ بات اس شخص پر مخفی نہیں جو علماء کے کلام کا خادم ہے۔ اسی قاعدہ پر ذخیرہ سے منقول ہے، ایک شخص نے دوسرے کو کہا آؤ میرے ساتھ ناشتہ کرو تو دوسرے نے جواب میں کہا خدا کی قسم میں ناشتہ نہیں کروں گا، یہ کہہ کر وہ اسی شخص کے گھر جاکر اس کے گھر والوں کے ساتھ ناشتہ کرتا ہے، تو قسم سوال کو جواب بنانا بھی ممکن ہے کیونکہ اس نے جواب پر کوئی حرف زیادہ نہیں کیا اس کے برخلاف اگر ہو مستقل زائد کلام کرتے ہوئے یہ کہتا خدا کی قسم میں تجھ سے ناشتہ نہ کروں گا، تو پھر صرف جواب ہونا ممکن نہیں (لیکن یہاں صرف ناشتہ نہ کروں گا، کہا جو کہ صرف جواب کے طور پر درست ہوسکتا ہے) اھ ملخصاً (ت)

اس پر اگر تیرا اعتراض ہو کہ ہندیہ میں خلاصہ سے منقول مسئلہ کے بارے میں کیا جواب ہوگا جس میں عورت نے کہا مجھے طلاق دے تو خاوند نے اس کو مارا اور کہا یہ طلاق ہے، تو طلاق نہ ہوگی، اور اگر

[بایاں کالم - عربی] الحكم بالوقوع من دون الحاجة الى نية كماكان في الفروع المتقدمة التى تلونالك لنه لمّا زاد قوله چوں تو روئے او قولہ اگر تو زن منی، لم يبق جواباً وصار كلاماً مبتدأ فلم تسر اضافة السوال اليه وقد نص على هذا الاصل العلماء كما لا يخفى على من خدم كلماتهم من ذلك عن الذخيرة قال له تغد معى قال والله لا اتغدّى فذهب الى بيته وتغدّى مع اهله لا يحنث لان قوله خرج جواباً بالسؤال وامكن جعله جواباً لانه لم يزد على حرف الجواب بخلاف مالو قال والله لا اتغدى معك لانه زاد على حرف الجواب ومع الزيادة عليه لا يمكن ان يجعل جواباً اه ملخصاً-

فان قلت ما الجواب عن فرع الهندية عن الخلاصة لو قالت طلقنى فضربها وقال لها اينك طلاق لا يقع ولو قال اينك طلاق يقع اه فقد كانت

---

1. ردالمحتار بحوالہ ذخیرہ کتاب الایمان دار احیاء التراث العربی بیروت ۸۵/۳
2. الفتاویٰ الہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالالفاظ الفارسیہ نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۳۸۲

Fatawa Razawiyya - Volume 12

[Arabic Text]: The attribution (idafah) is present in the question, and he did not add anything in the response so as to make it a new independent statement.

[Urdu Translation/Explanation]: He said, "This is a divorce for you," divorce will take place, etc. In this case, the attribution is present in the woman's question, and the husband did not mention any additional words in the response that could be considered a new independent speech.

(T)

[Arabic Text]: I say: Since he started hitting her after her saying "Divorce me," this created a possibility of it being a response. He said, "Is this the divorce you want?" Rather, the apparent meaning of the hitting is rejection rather than a response. For response, in the sense of their saying, carries the meaning of answering the asker and fulfilling what is desired. This is the meaning of their saying: it could be a response and an insult, or a response and a rejection, or a pure response. When such a possibility arises, it is not certain to be a response such that the attribution of the question would carry over to it. Therefore, the meaning of his saying "it does not occur" is as long as he does not intend it, and his saying "it occurs" means even if he does not intend it, because the attribution exists at that point in the speech itself.

[Urdu Translation/Explanation]: I say: When the husband started beating the wife upon her demand for divorce, this created the possibility of whether this is a reply or a retaliatory action in the form of rejection. Beating her upon the wife's request while saying "so you want divorce," rather the apparent is that beating is a rejection, not a reply. This is because the meaning of 'jawab' (reply) is to answer the questioner and fulfill the seeker's hope; both are used. This is what is meant by the jurists' saying that "here there is a possibility of a reply and an insult, or a reply and a rejection, or a pure reply" (i.e., as a reply, it is an insult, rejection, or purely fulfilling the seeker's hope). So when a possibility arose in the husband's action, it is no longer certain to be a pure reply, so that the attribution mentioned in the question is found in the reply. Thus, in the problem, with the words "Inak Talaq" (Here is your divorce), the meaning of "La Yaqa'" (It does not occur) in Khulasa is: until there is an intention for divorce. And with "Inak Talaq", the meaning of "Yaqa'" (It occurs) is: even if there is no intention, because the attribution is now present in the words. (T)

[Arabic Text]: Thirdly, his speech does not contain the attribution, and it is not in the form of a response, but the wording is specified by custom (urf) for divorcing a wife. Wherever it is uttered, it is understood to be the occurrence of divorce upon the wife, such as their saying: "Divorce becomes binding upon me," and...

[Urdu Translation/Explanation]: The third form of verbal attribution is that the mentioned third attribution is not present in the husband's speech, nor is his speech in the form of a response, but in custom this wording has been specifically designated for divorcing the wife so that when it is uttered, it is understood as such. For example, if someone says: "Divorce has become binding on me."

फ़तावा रज़विया - जिल्द 12

[अरबी पाठ]: प्रश्न में आरोपण (इज़ाफ़त) मौजूद है, और उसने उत्तर में कुछ भी अतिरिक्त नहीं जोड़ा जिससे इसे एक नया स्वतंत्र वाक्य माना जाए।

[उर्दू अनुवाद/व्याख्या]: उसने कहा, "यह तेरे लिए तलाक है, तलाक हो जाएगा", तो इस मसले में औरत के सवाल में आरोपण मौजूद है और शौहर ने जवाब में कोई अतिरिक्त शब्द ज़िक्र नहीं किया जिसे नया स्वतंत्र कलाम (भाषण) माना जाए।

(त)

[अरबी पाठ]: मैं कहता हूँ: जब उसने उसके"मुझे तलाक दे दो" कहने के बाद उसे मारना शुरू किया, तो इससे इसके उत्तर होने की संभावना पैदा हुई। उसने कहा, "क्या यह वही तलाक है जो तुम चाहती हो?" बल्कि मारने का प्रत्यक्ष अर्थ जवाब के बजाय अस्वीकृति है। क्योंकि जवाब का अर्थ, उनके कहने के अनुसार, पूछने वाले को उत्तर देना और वांछित को पूरा करना है। यही उनके कहने का अर्थ है: यह एक जवाब और गाली हो सकता है, या एक जवाब और अस्वीकृति, या एक शुद्ध जवाब। जब ऐसी संभावना उत्पन्न होती है, तो यह निश्चित रूप से जवाब नहीं होता कि सवाल का आरोपण उस पर लागू हो जाए। इसलिए, उनके कहने का अर्थ "यह घटित नहीं होता" यह है कि जब तक उसका इरादा न हो, और उनका कहना "यह घटित होता है" का अर्थ है भले ही उसका इरादा न हो, क्योंकि आरोपण उस समय स्वयं कलाम में मौजूद है।

[उर्दू अनुवाद/व्याख्या]: मैं कहता हूँ: जब शौहर ने तलाक के मुतालबे (मांग) पर बीवी को मारना शुरू किया तो इस वजह से यह संभावना पैदा हो गई कि यह जवाब है या जवाब में अस्वीकृति की कार्रवाई है। बीवी के सवाल पर नाराज़गी के तौर पर मारकर कहा कि "तो यह तलाक चाहती है", बल्कि ज़ाहिर यही है कि मारना रद्द (अस्वीकृति) है, जवाब नहीं है क्योंकि जवाब का मतलब पूछने वाले को जवाब देना और मांगने वाले की उम्मीद को पूरा करना है, दोनों में इस्तेमाल होता है। फ़ुक़हा (न्यायशास्त्रियों) के इस कथन कि "यहाँ जवाब और गाली, या जवाब और अस्वीकृति या शुद्ध जवाब की संभावना है" का यही मतलब है (यानी जवाब के तौर पर गाली या अस्वीकृति या केवल जवाब (मांगने वाले की उम्मीद को पूरा करना) है)। तो जब शौहर की तरफ से कार्रवाई में संभावना पैदा हो गई तो अब केवल जवाब होने का यकीन न रहा ताकि सवाल में वर्णित आरोपण, जवाब में पाया जाए। तो मसले में "ईन्क तलाक" (यह रही तलाक) के साथ खुलासा में "ला यक़अ" (तलाक नहीं होगी) का

अर्थ यह है यानी जब तक तलाक की नीयत (इरादा) नहीं है, और "ईन्क तलाक" के साथ "यक़अ" (तलाक हो जाएगी) का अर्थ यह है यानी भले ही नीयत न भी हो क्योंकि शब्दों में अब आरोपण मौजूद है। (त)

[अरबी पाठ]: तीसरा यह कि उसके कलाम में आरोपण शामिल न हो, और न ही वह जवाब के रूप में हो, लेकिन वह शब्द प्रथा (उर्फ़) में बीवी को तलाक देने के लिए विशिष्ट हो गया हो। जहाँ भी इसे बोला जाए, उससे बीवी पर तलाक का होना समझा जाता है, जैसे उनका कहना: "तलाक मुझ पर लाज़िम हो गई" और...

[उर्दू अनुवाद/व्याख्या]: शाब्दिक आरोपण की तीसरी सूरत यह है कि शौहर के कलाम में तीसरी वर्णित आरोपण न हो, और न ही उसका कलाम जवाब के तौर पर हो, लेकिन उर्फ़(प्रथा) में इस शब्द को बीवी को तलाक देने के लिए विशिष्ट कर दिया गया हो कि जब कहा जाए तो तलाक देना ही समझा जाए। उदाहरण के लिए, कोई कहे "तलाक मुझ पर लाज़िम हो गई"।

पृष्ठ 349/688

الاضافة موجودة فی السؤال وھو لم یزد فی الجواب شیئا حتی یجعل کلاما مبتدأ۔ یوں کہا "یہ تجھے طلاق ہے، طلاق ہو جائے گی اھ"، تو اس مسئلہ میں عورت کے سوال میں اضافت موجود ہے اور خاوند نے جواب میں کوئی زائد حرف ذکر نہیں کی، جس کو نیا مستقل کلام تصور کیا جائے۔

(ت)

قلت لما اخذ یضربھا بعد قولھا طلقنی اورث ذلك احتمالاً فی کونه جواباً وقال اینك طلاق می خواھی بل الظاھر من الضرب ھو الرد دون الجواب فان الجواب الجواب بمعنی قولھم یحتمل المسئول وقبول المأمول وھذا معنی قولھم یحتمل جواباً وسبّاً او جواباً وردّاً او جواباً محضاً فإذا وقع الاحتمال لم یتیقن بکونه جواباً حتی یحکم بسرایة اضافة السؤال الیه فمعنی قوله لا یقع ای مالم ینو وقوله یقع ای وان لم ینو لوجود الاضافة ح فی نفس الکلام۔ قلت (میں کہتا ہوں) جب خاوند نے طلاق کے مطالبہ پر بیوی کو مارنا شروع کیا تو اس وجہ سے یہ احتمال پیدا ہو گیا کہ یہ جواب ہے یا جواب میں رد کی کاروائی ہے۔ تو بیوی کے سوال پر مارنا ناراضگی کے طور پر مار کر کہا تو یہ طلاق چاہتی ہے بلکہ ظاہر یہی ہے کہ مارنا رد ہے جواب نہیں ہے کیونکہ جواب کا معنٰی مسئول کا جواب دینا، اور سائل کی امید کو پورا کرنا، دونوں میں استعمال ہوتا ہے، فقہاء کے قول کہ "یہاں جواب اور گالی، یا جواب اور رد یا محض جواب کا احتمال ہے" کا یہی مطلب ہے (یعنی جواب کے طور پر گالی یا رد یا محض جواب (سائل کی امید کو پورا کرنا ہے) تو جب خاوند کی طرف سے کارروائی میں احتمال پیدا ہو گیا تو اب محض جواب ہونے کا یقین نہ رہا تاکہ سوال میں مذکور اضافت، جواب میں پائی جائے، تو مسئلہ میں "اینک طلاق" کے ساتھ خلاصہ میں "لایقع" (طلاق واقع نہ ہو گی) کا

معنیٰ یہ ہے یعنی جب تک نیت طلاق نہیں ہے اور "اینک طلاق" کے ساتھ "یقع" (طلاق ہو جائے گی) کا معنیٰ یہ یعنی اگرچہ نیت نہ بھی ہو کیونکہ لفظوں میں اب اضافت موجود ہے۔ (ت)

الثالث ان لا یشمل کلامه علی الاضافة ولا یکون خرج مخرج الجواب لکن یکون اللفظ خصه العرف بتطلیق امرأة فحیث یطلق یفهم منه ایقاع الطلاق علی المرأة کقولهم الطلاق یلزمنی و لفظی اضافت کی تیسری صورت یہ ہے کہ خاوند کے کلام میں اضافت کی تیسری مذکور نہ ہو، اور نہ ہی اس کا کلام جواب کے طور پر ہو، لیکن عرف میں اس لفظ کو بیوی کو طلاق دینے کے لئے مختص کر دیا گیا ہو کہ جب دینا ہی سمجھا جائے۔ مثلاً کوئی کہے "طلاق مجھ پر لازم ہو گئی"

Fatawa Ridawiyya Volume Twelve

[Left Column - Arabic Text] "Al-Haram is binding upon me" and "upon me is divorce" and "upon me is haram." For, as stated in Radd al-Muhtar, it has become prevalent in common usage for divorce. They (the common people) do not know other forms of divorce, and no one takes an oath with it except a man. Thus, even if the attribution (idafa) is not mentioned literally, it is established by custom. What is known by custom is like what is mentioned literally. Therefore, the attribution exists in the wording, and its occurrence is judged without intention. These are the cases where the attribution is realized in the wording. However, when it is devoid of these three aspects, then its existence in the intention is necessary. If he intended it, it occurs; otherwise, it does not. This is what is stated in al-Hindiyya from al-Muhit: "It does not occur in the category of attribution if he did not intend it due to the absence of attribution to her." This is regarding what is between him and his Lord Almighty. As for judicial ruling (qada'an), this situation is divided into two categories: First, if there exists here a contextual clue (qarinah) that suggests the realization of the intention, and this is the most apparent in the context, then its occurrence is judged unless he says "I did not intend it." If he says so, he is not believed.

[Right Column - Urdu Text] Or "Haram will be binding upon me" or "Divorce is upon me" or "It is haram upon me," as mentioned in Radd al-Muhtar, that these words have become famous in common usage for giving divorce, to the extent that people are not familiar with other words for divorce, and only men use these words for the oath of divorce. Here, although attribution is not mentioned in words, it is established by custom, and what is known by custom is considered just like what is mentioned in words. So, since attribution is found here, the ruling for the occurrence of divorce will be given without intention. These are the cases where attribution is found in words. However, when any speech is devoid of attribution in these three forms, then it is necessary for attribution to be present in the intention. If he makes an intention, then divorce will occur, otherwise not. What Al-Hindiyya quoted from Al-Muhit, saying that attribution will not be found (etc.), means this. This matter of intention is between the husband and his Lord Almighty. That is, this is the ruling in terms of religious conscience (diyanatan). (T) But the judicial (qada'an) ruling of attribution in intention is of two types: The first is such a case where there is some contextual clue present from which it can be sensed that the husband had the intention of attribution, and this can become clear according to the situation. In such a case, the occurrence of divorce will be ruled upon until the husband says that...

[Footnote] [1] Fatawa Hindiyya, on Divorce in Persian words, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/382

[बायाँ कॉलम - अरबी पाठ] "अल-हराम मुझ पर लाज़िम है" और "मुझ पर तलाक है" और "मुझ पर हराम है।" क्योंकि, जैसा कि रद अल-मुह्तार में कहा गया है, यह तलाक के लिए सामान्य बोलचाल में प्रचलित हो गया है। वे (आम लोग) तलाक के अन्य रूपों को नहीं जानते हैं, और इसके साथ कोई भी आदमी के अलावा कसम नहीं खाता है। इस प्रकार, भले ही संबंध (इज़ाफ़त) शाब्दिक रूप से उल्लेखित न हो, लेकिन यह प्रथा द्वारा स्थापित है। प्रथा द्वारा जो ज्ञात है वह वैसा ही है जैसा शाब्दिक रूप से उल्लेखित है। इसलिए, शब्दों में संबंध मौजूद है, और इसकी घटना का निर्णय बिना किसी इरादे के किया जाता है। ये वे मामले हैं जहाँ शब्दों में संबंध का पता चलता है। हालांकि, जब यह इन तीन पहलुओं से रहित हो, तो इरादे में इसका अस्तित्व आवश्यक है। यदि उसने इसका इरादा किया, तो यह घटित होता है; अन्यथा, नहीं। यह वही है जो अल-मुहित से अल-हिंदिया में कहा गया है: "यदि उसने इरादा नहीं किया तो संबंध की श्रेणी में यह घटित नहीं होता है क्योंकि उसके प्रति संबंध की अनुपस्थिति है।" यह उसके और उसके सर्वशक्तिमान रब के बीच के मामले में है। जहाँ तक न्यायिक निर्णय (क़ज़ाअ़न) का सवाल है, यह स्थिति दो श्रेणियों में विभाजित है: पहला, यदि यहाँ कोई ऐसा संदर्भ (क़रीना) मौजूद है जो इरादे की प्राप्ति का सुझाव देता है, और यह संदर्भ में सबसे स्पष्ट है, तो इसके घटित होने का निर्णय लिया जाता है जब तक कि वह यह न कहे कि "मेरा इरादा यह नहीं था।" यदि वह ऐसा कहता है, तो उस पर विश्वास नहीं किया जाता है।

[दायाँ कॉलम - उर्दू पाठ] या "हराम मुझ पर लाज़िम होगा" या "मुझ पर तलाक है" या "मुझ पर हराम है" जैसा कि रद अल-मुह्तार में वर्णित है कि ये शब्द तलाक देने के लिए बोलचाल में प्रसिद्ध हो चुके हैं यहाँ तक कि बोलचाल वाले तलाक के लिए दूसरे शब्दों से वाकिफ नहीं, और इन शब्दों को केवल मर्द ही तलाक की कसम के लिए इस्तेमाल करते हैं और यहाँ पर अगरचे लफ्ज़ों में इज़ाफ़त (संबंध) का ज़िक्र नहीं, लेकिन प्रथा के अनुसार इज़ाफ़त साबित है, और प्रथा में जो चीज़ मालूम हो वह वैसे ही मान्य है जैसे लफ्ज़ों में ज़िक्र की गई चीज़ होती है, तो यहाँ इज़ाफ़त पाई गई तो तलाक होने का हुक्म नियत (इरादे) के बिना कर दिया जाएगा, ये लफ्ज़ों में इज़ाफ़त पाए जाने की सूरतें हैं, लेकिन जब कोई बात इन तीन सूरतों की इज़ाफ़त से खाली हो तो फिर नियत में इज़ाफ़त का पाया जाना ज़रूरी है। अगर नियत करे तो तलाक होगी वरना नहीं। हंदिया ने मुहित से नक़ल में जो यह कहा कि इज़ाफ़त नहीं पाई जाएगी आदि का मतलब यही है। यह नियत का मामला शौहर और उसके रब तआला के दरमियान है। यानी दियानतन (धार्मिक विवेक के अनुसार) यह हुक्म है। (त) लेकिन नियत में इज़ाफ़त

का क़ज़ाअ़न हुक्म दो किस्म पर है: अव्वल यह है कि ऐसी सूरत जहाँ कोई ऐसा क़रीना (संकेत) मौजूद हो जिससे महसूस किया जाए कि शौहर ने इज़ाफ़त की नियत की है, और यह मक़ाम (स्थिति) के लिहाज़ से स्पष्ट हो सके, तो ऐसे मक़ाम पर तलाक होने का हुक्म किया जाएगा जब तक शौहर यह न कह दे कि...

[पादलेख] [1] फ़तावा हिंदिया, तलाक के बारे में फारसी शब्दों में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/382

पृष्ठ ३५०/६८८

فتاوٰی رضویہ جلد دوا زدہم

[بایاں کالم] الحرام یلزمنی و علی الطلاق و علی الحرام فانہ کما قال فی ردالمحتار صار فاشیا فی العرف فی استعمالہ فی الطلاق لا یعرفون من صیغ الطلاق غیرہ ولا یحلف بہ الا الرجل فھھنا وان لم تذکر الاضافۃ لفظاً لکنھا ثابتہ عرفاً ولا معھود عرفاً کالموجود لفظاً فمن ھھنا وجدت الاضافۃ فی اللفظ وحکم بالوقوع من دون نیۃ فھذہ صور تحقق الاضافۃ فی اللفظ ۔ اما اذ خلأعنھا بوجوھھا الثلاثہ فح لابد من وجودھا فی النیۃ فان نوی وقع والا لـا وھذا ما قال فی الھندیۃ عن المحیط لا یقع فی جنس الاضافۃ اذا لم ینو لعدم الاضافۃ الیھا اھ ھذا فیما بینہ و بین ربہ تعالی ۔ اما قضاءً فتنقسم ھذا الصورۃ الی قسمین الاول ان توجد ھھنا قرینۃ یستأنس بھا علی تحقق النیۃ ویکون ھو الاظھر فی المقام فح یحکم بالوقوع مالم یقل انی لم اردھا فان قالہ فلا یصدق

[دایاں کالم] یا "حرام مجھ پر لازم ہوگا" یا "مجھ پر طلاق ہے" یا "مجھ پر حرام ہے" جیسا کہ ردالمحتار میں بیان ہے کہ یہ الفاظ عرف میں طلاق دینے کے لئے استعمال میں مشہور ہو چکے ہیں حتیٰ کہ عرف والے طلاق کے لئے دوسرے الفاظ سے واقف نہیں، اور ان الفاظ کو صرف مرد ہی طلاق کی قسم کے لئے استعمال کرتے ہیں اور یہاں پر اگرچہ لفظوں میں اضافت مذکور نہیں، لیکن عرفاً اضافت ثابت ہے، اور عرفاً جو چیز معلوم ہو وہ ایسے ہی معتبر ہے جیسے لفظوں میں مذکور چیز ہوتی ہے تو یہاں اضافت پائی گئی تو وقوع طلاق کا حکم نیت کے بغیر کر دیا جائے گا، یہ لفظوں میں اضافت پائے جانے کی صورتیں ہیں، لیکن جب کوئی کلام ان تین صورتوں کی اضافت سے خالی ہو تو پھر اضافت کا نیت میں پایا جانا ضروری ہے۔ اگر نیت کرے تو طلاق ہوگی ورنہ نہیں۔ ہندیہ نے محیط سے نقل میں جو یہ کہا کہ اضافت نہ پائی جائے گی اھ کا مطلب یہی ہے۔ یہ نیت کا معاملہ خاوند اور اس کے رب تعالیٰ کے درمیان ہے۔ یعنی دیانۃً یہ حکم ہے۔ (ت) لیکن

نیت میں اضافت کا قضاءً حکم دو قسم پر ہے : اوّل یہ ہے کہ ایسی صورت کہ جہاں کوئی ایسا قرینہ موجود ہو جس سے محسوس کیا جائے کہ خاوند نے اضافت کی نیت کی ہے، اور یہ مقام کے لحاظ سے واضح ہو سکے، تو ایسے مقام پر طلاق کے وقوع کا حکم کیا جائے گا جب تک خاوند یہ نہ کہہ دے کہ

[حاشیہ] [1] فتاویٰ ہندیہ فی الطلاق بالألفاظ الفارسیہ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۸۲

Fatawa Razawiya, Volume 12

[Arabic Column Text] ...except by oath. If he swears, he will be believed because he is a trustee in reporting what is in his heart, and he has spoken what his speech allows. This is what was stated in 'Al-Hindiyya' from 'Khulasat al-Fatawa': A man said to his wife, "If you are my wife [agar tu zan-e-man-i], three divorces," omitting the 'ya' [at the end of 'man-i', making it 'man']. Divorce does not occur if he says, "I did not intend divorce," because when he omitted it, it was no longer attributed to her. Although attribution is absent in its three forms, the conditional statement "If you are my wife" suggests an immediate intent for the wife's divorce. Therefore, the non-occurrence of divorce depends on his denial of intent, and its occurrence does not depend on his confession. From this, the two previously mentioned branches from Imam Najm al-Din and Sheikh al-Islam Abu Nasr are understood. Even though they fall outside the realization of attribution due to the speech moving away from a direct answer, what transpired between them, along with his statement in the condition "When you turn away" and "If you are my wife," conveys what we have mentioned. Thus, the non-occurrence of divorce depends on his claim of lack of intent.

[Urdu Column Text] "...I did not intend the wife. If he says so, an oath will be taken from him, and without an oath, his word will not be confirmed. If he takes the oath, then he will be confirmed and divorce will not occur, because he is considered a trustee in reporting about his own intention, while his speech is also such that it has scope [for interpretation]. This is the case quoted in 'Al-Hindiyya' from 'Khulasat al-Fatawa' that a man said to his wife: 'If you are my wife, three divorces,' omitting the 'ya' of attribution from divorce. At that time, divorce will not occur when he says that I did not intend the divorce of the wife, because when the attribution is omitted, the divorce was not attributed to the woman. Because although the attribution was not found through the three literal ways, the husband has made it conditional with 'If you are my wife', from which it is understood that he has spoken divorce to his wife. Therefore, the non-occurrence of divorce will depend on the husband's clarification that he did not have this intention. But in this matter, the occurrence of divorce will depend on the husband's confession of intention; it will not be [so], rather divorce will occur automatically on the absence of denial. Thus, from this discussion, both aforementioned issues of Imam Najm al-Din and Sheikh al-Islam Abu Nasr became clearly known, because these two issues, although devoid of attribution, are because..."

[Footnote] 1. Fatawa Hindiyya, regarding divorce in Persian words, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/382. Page 351 of 688

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

[अरबी कॉलम का पाठ] ...सिवाय शपथ के। यदि वह शपथ लेता है, तो उस पर विश्वास किया जाएगा क्योंकि वह अपने दिल की बात बताने में विश्वसनीय (अमीन) माना जाता है, और उसने वह बात कही है जिसकी उसके शब्दों में गुंजाइश है। यही बात 'अल-हिंदिया' में 'खुलासत अल-फ़तावा' के हवाले से कही गई है: एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा, "अगर तू मेरी पत्नी है (अगर तू ज़न-ए-मन-इ) तीन तलाक़", 'या' (सम्बन्धवाचक) को हटाकर। तलाक़ नहीं होगा यदि वह कहता है कि मैंने तलाक़ का इरादा नहीं किया था। क्योंकि जब उसने उसे हटा दिया, तो वह उसकी ओर निर्देशित नहीं रहा। यद्यपि इज़ाफ़त (सम्बन्ध) अपने तीनों रूपों में अनुपस्थित है, फिर भी "अगर तू मेरी पत्नी है" शर्त से यही समझ आता है कि पत्नी को तलाक़ देने का इरादा किया गया है। इसलिए तलाक़ का न होना उसकी नीयत के इनकार पर निर्भर करता है, और तलाक़ का होना उसकी स्वीकारोक्ति पर निर्भर नहीं करता। इससे इमाम नज्म उद्दीन और शेख अल-इस्लाम अबू नस्र के उल्लिखित दो मुद्दे समझ आते हैं। भले ही वे बातचीत के जवाब से हट जाने के कारण सम्बन्ध की पुष्टि से बाहर हों, लेकिन उनके बीच जो कुछ हुआ और शर्त के शब्द "जब तू मुड़ेगी" और "अगर तू मेरी पत्नी है" वही अर्थ देते हैं जो हमने बताया। इसलिए, तलाक़ न होना उसके नीयत न होने के दावे पर टिका है।

[उर्दू कॉलम का पाठ] "...मैंने पत्नी का इरादा नहीं किया। और अगर उसने ऐसा कह दिया तो उससे क़सम ली जाएगी और क़सम के बिना उसकी तस्दीक (पुष्टि) न की जाएगी। अगर उसने क़सम दे दी तो फिर उसकी तस्दीक कर दी जाएगी और तलाक़ न होगी, क्योंकि अपनी नीयत के मुताल्लिक़ (ब०ر। में) ख़बर देने में उसे अमीन (विश्वस्त) तसव्वुर (कल्पना) किया जाएगा जबकि उसने कलाम (बात) भी ऐसी की है जिसमें गुंजाइश है। यही वह सूरत है जिसको 'हिंदिया' में 'खुलासत अल-फ़तावा' से नक़ल किया गया है कि एक शख़्स ने अपनी बीवी से कहा 'अगर तू मेरी बीवी है तीन तलाक़', निस्बत (सम्बन्ध) की 'या' को तलाक़ से हज़फ़ (हटा) करके कहा तो उस वक़्त तलाक़ न होगी जब वह यह कहे कि मैंने बीवी की तलाक़ की नीयत नहीं की है, क्योंकि जब इज़ाफ़त (सम्बन्ध) हज़फ़ है तो तलाक़ की इज़ाफ़त औरत की तरफ़ न हुई। क्योंकि अगरचे (यद्यपि) इज़ाफ़त तीनों लफ़्ज़ी तरीक़ों से न पाई गई लेकिन शौहर ने "अगर तू मेरी बीवी है" से तालीक़ (शर्त) की है जिससे फ़हम (समझ) में यही आता है कि उसने अपनी बीवी को तलाक़ कही है। इसलिए तलाक़ का अदम-ए-वक़ूअ (न होना) शौहर की वज़ाहत पर मौक़ूफ़ (निर्भर) होगा कि यह नीयत नहीं की। लेकिन इस मसले में तलाक़ का वक़ूअ (होना) शौहर के इक़रार-ए-नीयत पर मौक़ूफ़ हो जाएगा, न होगा बल्कि नफ़ी (इनकार) न होने

पर ख़ुद-ब-ख़ुद तलाक़ वाक़े(घटित) हो जाएगी। तो इस बहस से इमाम नज्म उद्दीन और शेख अल-इस्लाम अबू नस्र के मज़कूर (उल्लिखित) दोनों मसले वाज़ेह (स्पष्ट) मालूम हो गए, क्योंकि ये दोनों मसले अगरचे इज़ाफ़त से ख़ाली हैं इसलिए कि..."

[पाद-टिप्पणी] 1. फ़तावा हिंदिया, फ़ारसी अल्फ़ाज़ में तलाक़ के बारे में, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/382। पृष्ठ 351/688

جلد دو ازدہم فتاوی رضویہ

[Arabic Column] الاباليمين فان حلف صدق لكونه امينا فى الاخبار عما فى نفسه وقداتى بمايحتمله كلامه وهذا ما قال فى الهندية عن خلاصة الفتاوى رجل قال لامرأته اگر تو زن منى سه طلاق مع حذف الياءلا يقع اذا قال لم انو الطلاق لانه لما حذف لم يكن مضيفا اليها اه فان الاضافة وان عدمت بوجوهها الثلثة لكن التعليق على قوله "اگر تو زن منى" يفيد تبادر ارادة طلاق المرأة فيتوقف انتفاء الوقوع على نفيه النية ولا يتوقف الوقوع على اقراره بها. وعلم منها الفرعان الماران عن الامام نجم الدين وعن شيخ الاسلام ابى نصر فانها وان خرجا عن تحقق الاضافة لخروج الكلام عن الاجابة لكن الذى جرى بينهما مع قوله فى الشرط "چوں تو روئے" و "اگر تو زن منى يفيد ما ذكرنا فلذا توقف عدم الوقوع على ادعائه عدم

[Urdu Column] میں نے بیوی کا ارادہ نہیں کیا اور اگر اس نے ایسا کہہ دیا تو اس سے قسم لی جائے گی اور قسم کے بغیر اس کی تصدیق نہ کی جائے گی، اگر اس نے قسم دے دی تو پھر اس کی تصدیق کر دی جائے گی اور طلاق نہ ہوگی، کیونکہ اپنی نیت کے متعلق خبر دینے میں اسے امین تصور کیا جائے گا جبکہ اس نے کلام بھی ایسی کی ہے جس میں گنجائش ہے، یہی وہ صورت ہے جس کو ہندیہ میں خلاصۃ الفتاوٰی سے نقل کیا ہے کہ ایک شخص نے اپنی بیوی سے کہا اگر تو میری بیوی ہے تین طلاق، نسبت کی یاء کو طلاق سے حذف کرکے کہا تو اس وقت طلاق نہ ہوگی جب وہ یہ کہے کہ میں نے بیوی کی طلاق کی نیت نہیں کی ہے، کیونکہ جب اضافت حذف ہے تو طلاق کی اضافت عورت کی طرف نہ ہوئی اہ، کیونکہ اگرچہ اضافت تینوں لفظی طریقوں سے نہ پائی گئی لیکن خاوند نے "اگر تو میری بیوی ہے" سے تعلیق کی ہے جس سے فہم میں یہی آتا ہے کہ اس نے اپنی بیوی کو طلاق کہی ہے، اس لئے طلاق کا عدم وقوع خاوند کی

وضاحت پر موقوف ہوگا کہ یہ نیت نہیں کی، لیکن اس مسئلہ میں طلاق का وقوع خاوند کے اقرار نیت پر موقوف ہو جائے گی نہ ہوگا بلکہ نفی نہ ہونے پر خود بخود طلاق واقع ہو جائے گی) تو اس بحث سے امام نجم الدین اور شیخ الاسلام ابو نصر کے مذکورہ دونوں مسئلے واضح معلوم ہو گئے، کیونکہ یہ دونوں مسئلے اگرچہ اضافت سے خالی ہیں اس لئے کہ

1 فتاوی ہندیہ فی الطلاق بالالفاظ الفارسیہ نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۳۸۲ Page 351 of 688

Fatawa Razawiya, Volume 12

Intention: Branching from Al-Bazzaziya and Al-Khaniya, he said to her: "Do not go out except with my permission, for I have sworn by divorce." If she goes out, it does not occur due to the absence of mentioning his oath by her divorce, and it is possible he swore by the divorce of another. So, his word is accepted. As Al-Shami stated, the custom is that one who has a wife only swears by her divorce, not another's. Thus, his saying "I have sworn by divorce" refers to her unless he intends another, because his words can accommodate it. And from it is a branch of Al-Qunya from Imam Burhan al-Din Mahmud, author of Al-Muhit: A man was invited by his group to drink wine, and he said, "I have sworn by divorce that I will not drink," being untruthful in that. Then he drank. He said, "She is divorced." The author of Al-Tuhfa said, "She is not divorced." The statement of Al-Bazzaziya that it does not occur religiously, if he did not intend it legally as well, if he says "I did not intend it," then his word is accepted. The statement of Al-Burhan "She is divorced" means legally, as long as he does not say "I did not intend her," as Al-Shami said it can be carried upon when he did not say "I intended to swear by the divorce of another," so there is no contradiction in Al-Bazzaziya. And the author of Al-Tuhfa said, "She is not divorced."

These two are not in the answer, but in the conversation between the husband and wife, the husband used conditional words "to one like your mouth" and in the second "if you are my wife". This conversation, according to our statement, is beneficial, so the absence of divorce in them will depend on the statement of lack of intention from the husband. Similar to this are the two issues mentioned by Bazzaziya and Khaniya where the husband said to the wife, "Do not go without my permission because I have sworn by divorce." If the wife went out, divorce will not occur because the husband did not mention the wife's divorce in the oath, due to which there could be a possibility of another woman's divorce, so for this reason the husband's word will be acceptable. Allama Shami has explained it like this: the custom is that whoever has a wife swears by his wife's divorce, not for another's. Therefore, the husband's saying that I have sworn by divorce will be attributed to the wife only as long as he does not state intending a non-wife, because due to the absence of mentioning the wife, there is also a possibility of another. Under this same rule...

1. Fatawa Bazzaziya on the margin of Al-Fatawa al-Hindiyya, Kitab al-Aiman, Nurani Kutub Khana Peshawar, 4/70

2. Radd al-Muhtar, Bab al-Sarih, Kitab al-Talaq, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/430
3. Al-Qunya, Kitab al-Aiman, Al-Matba'a al-Musharra al-Nahania, p. 115; Radd al-Muhtar with reference to Al-Qunya, Kitab al-Talaq, Bab al-Sarih, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 3/229
4. Radd al-Muhtar with reference to Al-Qunya, Kitab al-Talaq, Bab al-Sarih, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/430

नीयत: अल-बज़्ज़िया और अल-खनिया की शाखा से, उन्होंने उससे कहा: "मेरी अनुमति के बिना बाहर मत जाओ, क्योंकि मैंने तलाक की कसम खाई है।" यदि वह बाहर जाती है, तो तलाक नहीं होता है क्योंकि उसकी कसम में उसकी पत्नी के तलाक का उल्लेख नहीं है, और यह संभव है कि उसने किसी और के तलाक की कसम खाई हो। इसलिए, उसकी बात स्वीकार की जाएगी। जैसा कि अल-शामी ने कहा, रिवाज यह है कि जिसके पास पत्नी है वह केवल अपनी पत्नी के तलाक की कसम खाता है, किसी और की नहीं। इस प्रकार, उसका यह कहना कि "मैंने तलाक की कसम खाई है" उसकी ओर ही जाता है जब तक कि उसका इरादा किसी और का न हो, क्योंकि उसके शब्द इसकी गुंजाइश रखते हैं। और अल-कुन्या की एक शाखा इमाम बुरहान अल-दीन महमूद, अल-मुहित के लेखक से है: एक व्यक्ति को उसके समूह द्वारा शराब पीने के लिए आमंत्रित किया गया था, और उसने कहा, "मैंने तलाक की कसम खाई है कि मैं नहीं पीऊंगा," और वह उसमें झूठ बोल रहा था। फिर उसने पी ली। उन्होंने कहा, "उसे तलाक हो गया।" अल-तुहफा के लेखक ने कहा, "उसे तलाक नहीं हुआ।" अल-बज़्ज़िया का यह कथन कि धार्मिक रूप से तलाक नहीं होता है, यदि उसका इरादा कानूनी रूप से भी नहीं था, यदि वह कहता है कि "मेरा इरादा नहीं था," तो उसकी बात मानी जाएगी। अल-बुरहान का कथन "उसे तलाक हो गया" का अर्थ कानूनी रूप से है, जब तक कि वह यह न कहे कि "मेरा इरादा उसका नहीं था," जैसा कि अल-शामी ने कहा कि इसे तब माना जा सकता है जब उसने यह नहीं कहा कि "मेरा इरादा किसी और के तलाक की कसम खाना था," इसलिए बज़्ज़िया में कोई विरोधाभास नहीं है। और अल-तुहफा के लेखक ने कहा, "तलाक नहीं होता है।"

ये दोनों जवाब में नहीं हैं, लेकिन पति-पत्नी के बीच जो बातचीत है उसमें पति ने शर्त के शब्द कहे "तेरे मुँह जैसी को" और दूसरे में "अगर तू मेरी बीवी है"। यह बातचीत हमारे बयान के मुताबिक फायदेमंद है, इसलिए उनमें तलाक न होना पति की तरफ से नीयत न होने के बयान पर निर्भर होगा। इसी तरह बज़्ज़िया और खानिया के बताए गए दोनों मसले हैं कि पति ने पत्नी से कहा कि "मेरी इजाजत के बिना मत जाना क्योंकि मैंने तलाक की कसम खाई है"। पत्नी बाहर चली गई तो तलाक नहीं होगा क्योंकि पति ने कसम में पत्नी के तलाक का ज़िक्र नहीं किया जिसकी वजह से किसी और औरत के तलाक का अंदेशा हो सकता है, तो इसलिए पति की बात मानने के काबिल होगी। अल्लामा शामी ने इसे यूँ बयान किया है कि आदत यह है कि जिसकी बीवी हो वह अपनी बीवी के तलाक की

कसम खाता है न कि गैर की तलाक के लिए। इसलिए, पति का कहना कि मैंने तलाक की कसम खाई है, बीवी की तरफ ही जुड़ा माना जाएगा जब तक कि वह गैर-बीवी का इरादा बयान न करे, क्योंकि बीवी का ज़िक्र न होने की वजह से गैर का भी अंदेशा है। इसी नियम के तहत...

1. फ़तावा बज़्ज़िया अल-हाशिया अल-फ़तावा अल-हिंदिया, किताब अल-ईमान, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 4/70
2. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-सरीह, किताब अल-तलाक, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 2/430
3. अल-कुन्या, किताब अल-ईमान, अल-मत्बा अल-मुशर्रा अल-नहानिया, पृष्ठ 115; रद्द अल-मुह्तार ब-हवाला अल-कुन्या, किताब अल-तलाक, बाब अल-सरीह, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 3/229
4. रद्द अल-मुह्तार ब-हवाला अल-कुन्या, किताब अल-तलाक, बाब अल-सरीह, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 2/430

पेज 352/688 मजलिस-ए-दावत-ए-इस्लामी

النیة ومنه فرع البزازیه والخانیة قال لها لا تخرجی الا باذنی فانی حلفت بالطلاق فخرجت لا یقع لعدم ذکره حلفه بطلاقها ویحتمل الحلف بطلاق غیرها فالقول له ۱ھ وذلک کما افاد الشامی ان العادة ان من له امرأة انما یحلف بطلاقها لا بطلاق غیرها فقوله انی حلفت بالطلاق ینصرف الیها مالم یرد غیرها لانه یحتمله کلامه ۲ھ ومنه فرع القنیة عن الامام برهان الدین محمود صاحب المحیط، رجل دعته جماعته الی شرب الخمر فقال انی حلفت بالطلاق انی لا اشرب و کان کاذبا فیه ثم شرب طلقت وقال صاحب التحفة لا یطلق ۳ھ فقول البزازیة لا یقع دیانة ان لم ینو قضاءً ایضا ان قال لم انو بدلیل قول قوله فالقول له، وقول البرهان طلقت ای قضاءً مالم یقل انی لم اردها کما قال الشامی انه یمکن حمله علی ما اذا لم یقل انی اردت الحلف بطلاق غیرها فلا یخاف في البزازیة ۴ھ و قول صاحب التحفة لا یطلق

یہ دونوں جواب میں نہیں ہیں، لیکن خاوند بیوی میں جو گفتگو ہے اس میں خاوند نے شرط کے الفاظ کہے " تیری منّہ جیسی کو " اور دوسرے میں " اگر تو میری بیوی ہے " یہ گفتگو ہمارے بیان کے مطابق فائدہ دے رہی ہے ، اس لئے ان میں طلاق نہ ہونا خاوند کی طرف سے نیت نہ ہونے کے بیان پر موقوف ہوگا، اور اسی قبیل سے بزازیہ اور خانیہ کے بیان کردہ دونوں مسئلے ہیں کہ خاوند نے بیوی سے کہا کہ " میری اجازت کے بغیر مت جانا کیونکہ میں نے طلاق کی قسم کھائی ہے " بیوی باہر نکل گئی تو طلاق نہ ہوگی کیونکہ خاوند نے قسم میں بیوی کی طلاق کو ذکر نہ کیا جس کی وجہ سے کسی اور عورت کی طلاق کا احتمال ہو سکتا ہے تو اس لئے خاوند کی بات قابل قبول ہوگی ھ اس کو علامہ شامی نے یوں بیان کیا ہے کہ عادت یہ ہے کہ جس کی بیوی ہو وہ اپنی بیوی کی طلاق کی قسم کھاتا ہے نہ کہ غیر کی طلاق کے لئے ، اس لئے خاوند کا کہنا کہ میں نے طلاق کی قسم کھائی ہے ، بیوی کی طرف ہی منسوب ہوگی تا وقتیکہ غیر بیوی کو مراد

لینا بیان نہ کرے ، کیونکہ بیوی کا ذکر نہ ہونے کی وجہ سے غیر کا بھی احتمال ہے اھ اسی ضابطے کے تحت

۱ فتاوٰی بزازیہ علی حاشیۃ الفتاوی الھندیۃ کتاب الایمان نورانی کتب خانہ پشاور ۴/۷۰ ۲ ردالمحتار باب الصریح کتاب الطلاق داراحیاء التراث العربي بیروت ۲/۴۳۰ ۳ القنیۃ کتاب الایمان المطبعۃ المشھرۃ النھانیۃ ص ۱۱۵، ردالمحتار بحوالہ القنیۃ کتاب الطلاق باب الصریح داراحیاء التراث العربی بیروت ۳/۲۲۹ ۴ ردالمحتار بحوالہ القنیۃ کتاب الطلاق باب الصریح داراحیاء التراث العربي بیروت ۲/۴۳۰

Fatawa Rizviya Volume 12

[Left Column] Religiously, it is evident because the report was only false. As for my statement that he is only believed upon oath, it is because they (jurists) explicitly stated that wherever the claim belongs to a person, he is only believed upon oath, as stated in At-Tabyin and others[1]. The second point is that there is no indicator here, and in that case, the occurrence (of divorce) depends on the reporting of intention. If he confesses, it occurs, otherwise not, because there is no way to rule occurrence based on doubt. This is what is stated in Al-Hindiyya from Al-Khulasa: A drunk man whose wife fled from him followed her, and when he could not catch her, he said in Persian 'Three divorces' if he said...

[Right Column] It is a problem mentioned in Al-Qunya by Imam Burhanuddin Mahmood, author of Al-Muhit, that some people invited a person to drink wine. He replied, "I have sworn an oath of divorce, therefore I will not drink wine." At-Tuhfa said that religiously, divorce will not occur (End). In the problems discussed by these three scholars, the statement of Al-Bazzaziyya that "it will not occur" means if he did not intend it, then religiously it won't happen, and he said in his statement that I did not intend my wife. Allama Shami said this matter will be interpreted such that until the husband says he swore an oath of divorce for another woman, this report about the husband's oath is false. Furthermore, my statement that the husband's confirmation will be based on his oath is because jurists have clarified this. Where they say the husband will be confirmed, they mean confirmation after taking an oath, as clarified in At-Tabyin and others. (T) The second type is where such an indicator exists; there, the occurrence of divorce will depend on the husband's statement that "I intended my wife." Therefore, if there is a confession of intending the wife in the intention, divorce will occur, otherwise not, because there is no meaning to a ruling of divorce based on mere doubt. This type of situation is what Al-Hindiyya has stated with reference to Al-Khulasa: a drunk man's wife ran away, so he chased her...

---

[1] Radd al-Muhtar, Kitab al-Talaq, Bab al-Sarih, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/230

[बायां कॉलम] धार्मिक रूप से यह स्पष्ट है क्योंकि खबर केवल झूठ थी। जहां तक मेरे इस कथन का प्रश्न है कि उसे केवल शपथ पर ही माना जाएगा, तो ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्होंने (विधिवेत्ताओं ने) स्पष्ट किया है कि जहाँ दावा व्यक्ति का हो, वहाँ उसे केवल शपथ पर ही माना जाता है, जैसा कि अत-तबईन आदि में स्पष्ट किया गया है[1]। दूसरा बिंदु यह है कि यहाँ कोई संकेत नहीं है, और उस स्थिति में (तलाक का) घटित होना नियत (इरादे) की सूचना पर निर्भर करता है। यदि वह स्वीकार करता है, तो यह घटित होता है, अन्यथा नहीं, क्योंकि संदेह के आधार पर घटित होने का आदेश देने का कोई तरीका नहीं है। यही बात अल-हिन्दिया में अल-खुलासा के हवाले से कही गई है: एक शराबी आदमी जिसकी पत्नी उससे भाग गई थी, उसने उसका पीछा किया और जब वह उसे नहीं पकड़ सका, तो उसने फारसी में कहा 'तीन तलाक' यदि उसने कहा...

[दायां कॉलम] कुनिया में अल-मुहित के लेखक इमाम बुरहानुद्दीन महमूद द्वारा उल्लेखित मुद्दा यह है कि कुछ लोगों ने एक व्यक्ति को शराब पीने के लिए आमंत्रित किया। उसने उत्तर दिया, "मैंने तलाक की शपथ ली है, इसलिए मैं शराब नहीं पीऊँगा।" तोहफ़ा ने कहा कि धार्मिक रूप से तलाक नहीं होगा (समाप्त)। इन तीनों विद्वानों द्वारा चर्चित समस्याओं में, बज़ज़िया का यह कहना कि "यह घटित नहीं होगा" का अर्थ यह है कि यदि उसने इरादा नहीं किया था, तो धार्मिक रूप से यह नहीं होगा, और उसने अपने बयान में कहा कि मैंने अपनी पत्नी का इरादा नहीं किया था। अल्लामा शामी ने कहा कि इस मामले को इस तरह समझा जाएगा कि जब तक पति यह न कह दे कि मैंने किसी दूसरी महिला के तलाक की शपथ ली है, तब तक पति की शपथ वाली यह खबर झूठी है। इसके अलावा, मेरा यह कहना कि पति की पुष्टि उसकी शपथ पर आधारित होगी, इसलिए है क्योंकि फकीहों ने इसे स्पष्ट किया है। जहाँ वे कहते हैं कि पति की पुष्टि की जाएगी, उनका अर्थ शपथ लेने के बाद पुष्टि करना है, जैसा कि अत-तबईन आदि में स्पष्ट किया गया है। (त) दूसरा प्रकार वह है जहाँ ऐसा कोई संकेत मौजूद हो; वहां, तलाक का घटित होना पति के इस बयान पर निर्भर करेगा कि "मैंने अपनी पत्नी का इरादा किया था।" इसलिए, यदि इरादे में पत्नी का इरादा करने का इकरार हो, तो तलाक होगा, अन्यथा नहीं, क्योंकि केवल संदेह के आधार पर तलाक के फैसले का कोई मतलब नहीं है। इस तरह की स्थिति वह है जिसे अल-हिन्दिया ने खुलासा के हवाले से बयान किया है: एक शराबी की पत्नी भाग गई, तो उसने पीछा किया...

---

[1] रद अल-मुह्तार, किताब अल-तलाक़, बाब अल-सरीह, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/230

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

[بایاں کالم] دیانۃ ظاہر لان الاخبار انما کان کاذبا اما قولی انما یصدقہ بالیمین فلما صرحوا بہ من انہ حیث یکون القول لہ فانما یصدق بالیمین کما صرح بہ فی التبیین وغیرہ1۔ الثانی ان لاتکون ھنا قرینۃ ذلک وح یتوقف الوقوع علی اخبار بالنیۃ فان اقرّ وقع والا لا اذلا سبیل الی الحکم بالوقوع بالشك وھذا ما قال فی الھندیۃ عن الخلاصۃ سکران ھربت منہ امرأتہ فتبعھا ولم یظفر بھا فقال بالفارسیۃ بسہ طلاق ان قال

[دایاں کالم] قنیہ میں ذکر کردہ امام برہان الدین محمود صاحب محیط کا بیان کردہ مسئلہ ہے کہ ایک شخص کو چند لوگوں نے شراب پینے کی دعوت دی تو اس نے جواب میں کہا کہ میں نے طلاق کی قسم کھائی ہے اس لئے میں شراب نہیں پیوں گا تحفہ نے کہا کہ دیانۃً طلاق نہ ہوگی اھ ان مذکورہ تینوں حضرات کے مسائل میں بزازیہ کا یہ کہنا کہ "نہ واقع ہوگی" اس کا مطلب یہ ہے کہ اگر نیت نہ کی ہو تو دیانۃً نہ ہوگی، اور اس نے اپنے بیان میں کہہ دیا کہ میں نے اپنی بیوی کا ارادہ نہیں کیا۔ علامہ شامی نے فرمایا کہ اس بات کو اس صورت پر محمول کیا جائے گا کہ جب تک خاوند یہ نہ کہہ دے کہ میں نے کسی دوسری عورت کی طلاق کی قسم کھائی ہے، لہٰذا یہ صورت خاوند کی قسم والی خبر جھوٹی ہے، باقی میرا یہ کہنا کہ خاوند کی تصدیق اس کے حلف پر کی جائے گی کیونکہ فقہاء نے اس کی تصریح کی ہے جہاں وہ کہتے ہیں کہ خاوند کی تصدیق کی جائے گی وہاں وہ قسم لے کر تصدیق مراد لیتے ہیں جس کی تصریح تبیین وغیرہ میں موجود ہے۔ (ت) دوسری قسم یہ ہے کہ وہاں یہ قرینہ پایا جائے، تو وہاں طلاق کا واقع ہونا خاوند کے اس بیان پر موقوف ہوگا کہ میں نے بیوی کی نیت کی ہے لہٰذا وہاں نیت میں بیوی مراد لینے کا اقرار ہو تو طلاق ہوگی ورنہ نہیں، کیونکہ محض شک کی بناء پر طلاق کے حکم کا کوئی مطلب نہیں ہے۔

اس قسم کی صورت وہ ہے جس کو ہندیہ نے خلاصہ کے حوالے سے بیان کیا ہے کہ کسی نشے والے بیوی بھاگ گئی تو اس نے تعاقب کیا

---

1 ردالمختار کتاب الطلاق باب الصریح داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۳۰

Fatawa Rizvia, Volume Twelve

[Arabic Box Text] "I intended my wife, then it occurs; and if he doesn't say anything, it doesn't occur." [Fatawa Hindiya[1]] In the 'Anqarawiyyah' collection from 'Bazzaziyyah': She ran away and he was not successful in catching her, so he said 'three divorces'. If he said, 'I intended my wife,' it occurs, otherwise not. And in 'Al-Bahr[3]': If he said 'divorced' and was asked, 'Whom did you mean?' and he replied, 'My wife,' his wife is divorced. Thus, the occurrence of divorce is based on his admission that he meant his wife.

If you say: What is the difference between these branches and his saying 'I swore by divorce'? For just as a man does not usually swear except by his wife's divorce, so too he does not say 'three divorces' or 'divorced' except for her. Therefore, it should occur as long as he does not say 'I did not mean her.' I say: The difference is that the intention to swear by divorce is realized by the explicit statement 'I swore,' so it is carried over to the customary apparent meaning unless diverted.

[Urdu Box Text] And he was not successful, so he said in Persian "Seh Talaq" (with three divorces). In this case, if that intoxicated person says that I said this by meaning my wife, then divorce will occur, and if he does not state anything, divorce will not occur. And similarly, it is narrated from Bazzaziyyah in Majmu'ah-e-Anqarawiyyah that the wife ran away and he was not successful, so he said "three divorces". Upon this, the intoxicated husband says that I said it with the intention of my wife, then divorce will occur, otherwise not. And in Bahr, it is stated that a person said "Talaq". He was asked, "To whom did you say it?" He said to his wife, so his wife will be divorced. Here they have made the occurrence of divorce dependent on the admission that he says, "I meant my wife." (T)

Fan Qult (If the objection is that) what is the difference between these aforementioned issues in which clarification is necessary for the occurrence of divorce, and this issue that when a person says, "I have sworn an oath of divorce"? That just as a person swears by his wife's divorce and not by another woman's divorce, similarly, no one uses "three divorces" or "divorced" for anyone other than his wife. It was appropriate that the occurrence itself be intended unless he says I did not mean my wife (then what is the reason that in the case of the oath, divorce being apparent is obvious, and in the second, i.e., the three divorces or just the divorced case, divorce not being apparent is obvious).

---

[1] Fatawa Hindiyah, Chapter Seven regarding Divorce in Persian words, Noorani Kutub Khana Peshawar 1/382 [2] Fatawa Anqarawiyyah, what causes divorce to occur and what doesn't, Darul Isha'at al-Arabia Kandahar 1/72 [3] Bahr al-Raiq, Chapter of Divorce, H.M. Saeed Company Karachi 3/253

फ़तावा रिज़विया, खंड बारह

[अरबी पाठ] "मेरा इरादा मेरी पत्नी से था, तो यह घटित होता है; और यदि वह कुछ नहीं कहता है, तो यह घटित नहीं होता है।" [फ़तावा हिंदिया[1]] 'बज़्ज़ाज़िया' से 'अंक़रवीया' संग्रह में: वह भाग गई और वह उसे पकड़ने में सफल नहीं हुआ, इसलिए उसने कहा 'तीन तलाक'। यदि उसने कहा, 'मेरा इरादा मेरी पत्नी से था,' तो यह घटित होता है, अन्यथा नहीं। और 'अल-बह्र[3]' में: यदि उसने 'तलाकशुदा' कहा और उससे पूछा गया, 'तुम्हारा क्या मतलब था?' और उसने उत्तर दिया, 'मेरी पत्नी,' तो उसकी पत्नी तलाकशुदा है। इस प्रकार, तलाक का घटित होना उसके इस स्वीकारोक्ति पर आधारित है कि उसका मतलब उसकी पत्नी से था।

यदि आप कहें: इन उपशाखाओं और उसके यह कहने के बीच क्या अंतर है कि 'मैंने तलाक की शपथ ली'? क्योंकि जिस तरह एक आदमी आमतौर पर अपनी पत्नी के तलाक के अलावा शपथ नहीं लेता है, वैसे ही वह अपनी पत्नी के अलावा किसी और के लिए 'तीन तलाक' या 'तलाकशुदा' नहीं कहता है। इसलिए, जब तक वह यह न कहे कि 'मेरा मतलब उससे नहीं था', तब तक यह घटित होना चाहिए। मैं कहता हूँ: अंतर यह है कि तलाक की शपथ लेने का इरादा स्पष्ट कथन 'मैंने शपथ ली' द्वारा सिद्ध होता है, इसलिए इसे प्रथागत स्पष्ट अर्थ पर ले जाया जाता है जब तक कि उसे किसी और तरफ मोड़ा न जाए।

[उर्दू पाठ] और वह सफल नहीं हुआ, तो उसने फ़ारसी में कहा "सह तलाक़" (तीन तलाक़ के साथ)। इस स्थिति में, यदि वह नशे वाला व्यक्ति कहता है कि मैंने अपनी पत्नी को मुराद लेकर यह कहा है, तो तलाक़ हो जाएगा, और यदि वह कुछ भी बयान नहीं करता है, तो तलाक़ नहीं होगा। और इसी तरह, मजमूआ-ए-अंक़रवीया में बज़्ज़ाज़िया से वर्णित है कि पत्नी भाग गई और वह सफल नहीं हुआ, तो उसने कह दिया "तीन तलाक़"। इस पर नशे वाला पति कहता है कि मैंने अपनी पत्नी के इरादे से कहा है, तो तलाक़ होगा अन्यथा नहीं। और बह्र में है कि एक व्यक्ति ने "तलाक़" कहा। पूछा गया, "तुमने किसे कहा है?" उसने कहा अपनी पत्नी को, तो उसकी पत्नी को तलाक़ हो जाएगा। यहाँ उन्होंने तलाक़ के होने को स्वीकारोक्ति पर निर्भर किया है कि वह यह कहे कि मैंने अपनी पत्नी को मुराद लिया है। (त)

फ़न क़ुल्त (यदि आपत्ति हो कि) इन उपर्युक्त मसलों में, जिनमें तलाक़ होने के लिए स्पष्टीकरण आवश्यक है, और इस मसले में कि जब कोई व्यक्ति कहता है कि "मैंने तलाक़ की शपथ ली है", क्या

अंतर है? कि जिस तरह कोई व्यक्ति अपनी पत्नी के तलाक़ की शपथ खाता है किसी दूसरी औरत के तलाक़ की नहीं, वैसे ही कोई भी "तीन तलाक़" या "तलाक़" भी अपनी पत्नी के लिए ही उपयोग करता है। यह उचित था कि होना ही मुराद हो जब तक वह यह न कहे कि मैंने अपनी पत्नी को मुराद नहीं लिया (फिर क्या कारण है कि शपथ वाली स्थिति में तलाक़ होना ज़ाहिर है और दूसरी यानी सह तलाक़ या सिर्फ़ तलाक़ वाली स्थिति में तलाक़ न होना ज़ाहिर है)।

---

[1] फ़तावा हिंदिया, सातवां अध्याय फ़ारसी शब्दों में तलाक़ के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर 1/382 [2] फ़तावा अंक़रवीया, क्या तलाक़ घटित होता है और क्या नहीं, दारुल इशाअत अल-अरबिया कंधार 1/72 [3] बह्र अल-राइक़, तलाक़ का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची 3/253

فتاوی رضویہ، جلد دوازدہم

[عربی عبارت] عنيت امرأتي يقع وان لم يقل شيئاً لا يقع اهـ 1 وفي مجموعة انقروی عن البزازية فرت ولم يظفر بها فقال سه طلاق ان قال اردت امرأتي يقع والالا اهـ وقال في البحر لو قال طالق فقيل له من عنيت فقال امرأتي طلقت امرأته اهـ فقد الوقوع على اقراره انه عنى امرأته۔

فان قلت ما الفرق بين هذه الفروع وبين قوله حلفت بالطلاق فان الرجل كما لا يحلف عادة الا بطلاق امرأتها كذلك لا يقول سه طلاق او طالق الا لها فكان ينبغي الوقوع مالم يقل لم اعنها۔ قلت الفرق بين فان ارادة الحلف بالطلاق متحققة بصريح قوله حلفت، فيحمل على الظاهر المعتاد مالم يصرف

[اردو عبارت] اور وہ کامیاب نہ ہوا تو اس نے کہا فارسی میں "سہ طلاق" (تین طلاق کے ساتھ) تو اس صورت میں اگر وہ نشے والا کہہ دے کہ میں نے اپنی بیوی مراد لے کر کہا ہے تو طلاق ہو گی اور اگر کچھ بھی بیان نہ کیا تو طلاق نہ ہوگی اھـ اور یوں ہی مجموعہ انقرویہ میں بزازیہ سے منقول ہے کہ بیوی بھاگی اور وہ کامیاب نہ ہوا تو کہہ دیا "تین طلاق"۔ اس پر خاوند نشے والا یہ کہے کہ میں نے بیوی کے ارادے سے کہا ہے تو طلاق ہوگی ورنہ نہیں۔ اھـ اور بحر میں ہے کہ ایک شخص نے "طالق" کہا۔ پونچھا تو نے کس کو کہا ہے؟ تو اس نے کہا اپنی بیوی کو، تو اس کی بیوی کو طلاق ہو جائے گی۔ یہاں پر انہوں نے طلاق کے وقوع کو اقرار سے معلق کیا ہے کہ وہ یہ کہے کہ میں نے بیوی مراد لی ہے۔ (ت)

فان قلت (اگر اعتراض ہو کہ) ان مذکورہ مسائل جن میں وقوع طلاق کے لئے تصریح ضروری ہے اور اس مسئلہ میں کہ جب کوئی شخص یہ کہے کہ "میں نے طلاق کی قسم کھائی ہے" میں کیا فرق ہے کہ جس طرح کوئی شخص اپنی بیوی کی طلاق کی قسم کھاتا کسی دوسری عورت کے طلاق

کی نہیں، یونہی کوئی بھی "تین طلاق" یا "طالق" بھی اپنی بیوی کے لئے ہی استعمال کرتا ہے مناسب تھا کہ وقوع ہی مراد ہو جب تک وہ یہ نہ کہے میں نے اپنی بیوی مراد نہیں لی (پھر کیا وجہ کہ حلف والی صورت میں طلاق ہونا ظاہر ہے اور دوسری یعنی سہ طلاق یا صرف طالق والی صورت میں طلاق نہ ہونا ظاہر ہے)

---

1 فتاویٰ ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالالفاظ الفارسیۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۸۲ 2 فتاویٰ انقروی ما یقع الطلاق وما لا یقع بہ دارالاشاعت العربیہ قندھار ۱/ ۷۲ 3 بحرالرائق باب الطلاق ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳/ ۲۵۳

[Left Column - Arabic/Persian]: As for here, the intention of effectuating [divorce] is not established, and perhaps within himself [he meant] 'giving three divorces to her is what she deserves and is appropriate'. However, while he is sitting in his house, he starts uttering the word 'Talaq' (divorced). How can it be permissible to judge that he intended to effectuate divorce on his wife when there is no evidence for it in circumstance or speech? Thus, it is necessary to pause for his own clarification of what is in his heart. All this is what has flowed onto the heart of the humble servant from the oceans of the bounties of the Exalted Lord. Thus, all the derivative branches have harmonized, the confusion has been lifted, and each branch has settled into its rightful place of correctness. Praise be to Allah, Lord of the Worlds. Yes, there remains here a branch in Al-Hindiyya from Al-Khulasa: If she said, 'You bought [me] dearly, [but] return [me] due to a defect,' and he said, 'I have returned you because of the defect,' and intended divorce thereby, divorce occurs. If he said, 'I returned [her] because of the defect' without the 'ta' [the addressing suffix 'you'], it does not occur even if he intended it. [This is] because the last section from it is of the last category we mentioned, so according to the principle we established, it should not occur religiously as long as he does not intend it, nor judicially.

[Right Column - Urdu]: I say (Qultu) that the difference is clear because in the first case 'I have sworn an oath of divorce' is explicit, 'I have sworn an oath', so it will be taken in its commonly understood sense unless a contradictory explanation is found. And here, i.e., in the case of saying 'three divorces' or 'Talaq' (divorcee), the intention to effectuate divorce is not established because it's possible that by saying 'giving three divorces' he meant it's worthy of three divorces. But if a person sitting at home starts a conversation merely with the word 'Talaq' and there's no state or speech serving as a circumstantial context that could be evidence, then how can it be said without reason that he intended to divorce his wife? Therefore, in such a case, the ruling will be suspended pending clarification of what's in his heart. All this discussion has descended upon the heart of this humble servant from the oceans of the bounties of the Exalted Lord, thus all cases have become consistent with each other, the confusion has ended, and every issue has been applied to its correct place. Praise be to Allah, Lord of the Worlds. (T) Yes, one issue quoted from Al-Khulasa in Hindiyya remains: if a wife returned [herself to her parents' home or requested return] due to a fault in the husband, and the husband replied, 'I have returned you because of the fault,' intending divorce, then divorce will occur by this statement of

the husband. And if the husband just said in reply, 'I have returned [her] because of the fault,' without addressing the wife, then even if he had the intention of divorce, divorce will not occur. Certainly, [this is the] answer in this issue.

[Footnote]: 1. Fatawa Hindiyya, Chapter Seven regarding Divorce in Persian words, Noorani Kutub Khana Peshawar 1/382

[बायाँ कॉलम - अरबी/फ़ारसी]: जहाँ तक यहाँ की बात है, तलाक देने का इरादा सिद्ध नहीं है, और शायद उसके मन में हो कि 'उसे तीन तलाक देना उसके लिए उचित और योग्य है'। हालाँकि, जब वह अपने घर में बैठा है, तो वह 'तलाक' शब्द बोलना शुरू करता है। यह कैसे जायज़ हो सकता है कि यह निर्णय दिया जाए कि उसने अपनी पत्नी पर तलाक लागू करने का इरादा किया है, जबकि स्थिति या बातचीत में इसका कोई प्रमाण नहीं है? इसलिए, उसके अपने दिल की बात स्पष्ट करने के लिए रुकना आवश्यक है। यह सब वह है जो महान प्रभु के अनुग्रहों के समुद्र से इस तुच्छ सेवक के हृदय पर प्रवाहित हुआ है। इस प्रकार, सभी उप-शाखाएं सामंजस्य में आ गई हैं, भ्रम दूर हो गया है, और प्रत्येक शाखा अपनी सही जगह पर स्थापित हो गई है। और समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो संसारों का पालनहार है। हाँ, यहाँ अल-हिन्दिया में अल-खुलासा से एक शाखा (मसला) शेष है: यदि उसने (पत्नी ने) कहा, 'आपने [मुझे] ऊंचे मूल्य पर खरीदा, [लेकिन] दोष के कारण [मुझे] वापस कर दें,' और उसने (पति ने) कहा, 'मैंने दोष के कारण तुम्हें वापस कर दिया,' और इससे उसका इरादा तलाक का था, तो तलाक हो जाता है। यदि उसने बिना 'ता' [संबोधन प्रत्यय 'तुम्हें'] के कहा, 'दोष के कारण वापस कर दिया', तो यह घटित नहीं होता चाहे उसने इरादा ही क्यों न किया हो। [यह] इसलिए क्योंकि इसका अंतिम भाग उस अंतिम श्रेणी का है जिसका हमने उल्लेख किया है, इसलिए हमारे द्वारा स्थापित सिद्धांत के अनुसार, जब तक वह इरादा न करे तब तक धार्मिक रूप से यह घटित नहीं होना चाहिए, और न ही न्यायिक रूप से।

[दायां कॉलम - उर्दू]: मैंने कहा (क़ुल्तु) कि अंतर स्पष्ट है क्योंकि पहली स्थिति 'मैंने तलाक की शपथ ली है' में स्पष्टता है, 'मैंने शपथ ली है', इसलिए इसे सामान्य समझ वाले अर्थ में लिया जाएगा जब तक कि कोई विपरीत स्पष्टीकरण न मिले। और यहाँ यानी तीन तलाक या 'तलाक' (तालिक़) की स्थिति में तलाक को लागू करने का इरादा सिद्ध नहीं है क्योंकि यह संभव है कि 'तीन तलाक देने' से उसका तात्पर्य यह हो कि वह तीन तलाक के योग्य है। लेकिन यदि कोई व्यक्ति घर बैठे केवल 'तलाक' शब्द से बात शुरू करता है और कोई स्थिति या बातचीत ऐसी नहीं है जो साक्ष्य बन सके, तो बिना कारण कैसे कहा जा सकता है कि उसने अपनी पत्नी को तलाक देने का इरादा किया है? इसलिए, ऐसी स्थिति में, अपने दिल की बात स्पष्ट करने के लिए फैसला रुका रहेगा। यह पूरी चर्चा इस तुच्छ सेवक के हृदय पर महान प्रभु के अनुग्रहों के समुद्र से उतरी है, इस प्रकार सभी स्थितियां एक-दूसरे के अनुकूल हो गई हैं, भ्रम समाप्त हो गया है, और प्रत्येक मसला अपने सही स्थान पर लागू हो गया है।

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो संसारों का पालनहार है। (त) हाँ, हिन्दिया में खुलासा से उद्धृत एक मसला रह गया है: यदि पत्नी ने पति में दोष के कारण [महर आदि] वापस कर दिया, और पति ने उत्तर दिया, 'मैंने दोष के कारण तुम्हें वापस कर दिया,' तलाक की नीयत से, तो पति के इस कथन से तलाक हो जाएगा। और यदि पति ने उत्तर में केवल इतना कहा, 'दोष के कारण वापस कर दिया,' पत्नी को संबोधित किए बिना, तो भले ही उसकी नीयत तलाक की हो, तलाक नहीं होगा। निश्चित रूप से, इस मसले में यही उत्तर है।

[पाद-टिप्पणी]: 1. फ़तावा हिन्दिया, फारसी शब्दों में तलाक के बारे में सातवां अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर 1/382

पृष्ठ 355/688

[بایاں کالم - عربی/فارسی]: اماهنا فارادة الایقاع غیر متحققة ولعل فی نفسہ سه طلاق دادنش بایرادسه طلاق راسزا و ارست واما هو جالس فی بیتہ فابتدأ یتلفظ بلفظ طالق فکیف یجوز الحکم بانہ اراد بہ ایقاع الطلاق علی امرأتہ ولیس في حال ولا قال دلیل علیه فوجب التوقیف علی اجاره عما فی نفسہ، ہذا کلہ ما فاض علی قلب العبد الذلیل من بحار فیوض الرب الجلیل فقد التأمت الفروع جمیعا وارتفع الاضطراب و نزل کل فرع منزلہ من الصواب والحمد للہ رب العالمین۔ نعم بقی ههنا فرع فی الہندیۃ عن الخلاصة لا قالت گراں بخریدی بعیب بازده فقال بعیب باز دادمت و نوی یقع به الطلاق ولو قال به عیب باز دادم بغیر التاء لا یقع وان نوی اهـ فان الفصل الاخیر منه من القسم الاخیر الذي ذکرنا فکان ینبغی علی ما اصلنا لا یقع دیانة ما لم ینو ولا قضاء

ہاں یہاں ہندیہ کا خلاصہ سے منقول ایک مسئلہ رہ گیا ہے کہ اگر بیوی نے خاوند کی وجہ سے واپس کردے، تو جواب میں خاوند نے کہا عیب کی بناء پر میں نے تجھے واپس کیا، طلاق کی نیت سے کہا تو خاوند کے اس قول سے طلاق ہو جائے گی، اور اگر خاوند نے جواب میں صرف یہ کہا میں نے عیب کی بنا پر واپس کیا، بیوی کو خطاب کے بغیر کہا، تو طلاق کی نیت ہو کہ تو بھی طلاق نہ ہو گی اھ یقینا اس مسئلہ میں جواب

[فٹ نوٹ]: 1 فتاوی ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالالفاظ الفارسیة نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۳۸۲

[Left Column - Arabic Text] ...unless he informs about the intention of divorce, because it does not occur even if he intended it. For it suggests that without the 'ta' (the address/suffix), it is not from the words of divorce at all, such as his saying: "I have no need for you," "no desire," or "I don't want you," and similar expressions. And this, as you see, is problematic. Perhaps the meaning is that the word is among the metaphors (kinayat) and with the 'ta' it also needs intention, as is not hidden. So, when the 'ta' is absent, it requires two intentions: the intention of divorce and the intention of attribution (idafah). There is no doubt that one of them is not sufficient. Thus, his saying "he said because of a defect: 'I returned you' (baz dadat) and he intended (divorce)," doesn't mean it's directed to her just because the word is among metaphors, for it is also intended by an indication, I mean his saying in the last section: "and if he intended," i.e., if he said without the 'ta', it does not occur even if he intended divorce by the word, due to its lack of attribution. Therefore, another thing is needed after that, which is the intention of attribution. So understand and reflect, perhaps Allah will bring about something thereafter. Based on what has been established, it is clear that there is no objection against the Fazil (learned person).

[Right Column - Urdu Text] The second scenario (of the issue) relates to the last problem we mentioned earlier. According to our stated rule, as long as he does not intend, divorce will not occur religiously (diyanatan), and judicially (qada'an) it will not occur until he informs about the intention of divorce. This does not mean at all that despite the intention, divorce will not occur without an address; because this would imply that "returned on account of a defect" without an address is not among the words of divorce at all, like "I have no need of you," "no desire," or "I have no longing for you," etc., are not for divorce. However, you know that this is a difficult point. So, its solution is possible in this way: if "I returned you because of a defect" was said as an address in response to the wife, then it is such a metaphor (kinaya) that requires one intention. And if said without address, then two intentions are required: one intention for divorce and the second for attribution (addressing it to her). It is clear that in such a case, one intention is not enough. So the husband's saying "I returned you because of a defect" and intending (divorce), that would be the intention of divorce which was needed, because this word is a metaphor for divorce. So by intention is meant the intention of divorce. Furthermore, an indication of this is that in the second form of the problem, i.e., when said without address, it was stated there that divorce will not occur even if the intention of divorce was made, because

without address this form is devoid of attribution. Therefore, there will be a need for another thing after it, and that is the intention of attribution (i.e., the intention will be in need of attribution). So...

[बायां कॉलम - अरबी पाठ] ...जब तक वह तलाक की नीयत के बारे में सूचित नहीं करता, क्योंकि यह नहीं होता है चाहे उसने नीयत ही क्यों न की हो। क्योंकि यह बताता है कि 'ता' (संबोधन) के बिना यह तलाक के शब्दों में से बिल्कुल नहीं है, जैसे उसका यह कहना: "मुझे तुम्हारी कोई आवश्यकता नहीं है", "कोई इच्छा नहीं है", या "मुझे तुममें कोई दिलचस्पी नहीं है" और इसी तरह के शब्द। और जैसा कि आप देख रहे हैं, यह पेचीदा है। शायद इसका अर्थ यह है कि शब्द रूपकों (किनायत) में से है और 'ता' के साथ भी इसे नीयत की आवश्यकता होती है, जैसा कि स्पष्ट है। अत; जब 'ता' अनुपस्थित होता है, तो इसके लिए दो नीयतों की आवश्यकता होती है: तलाक की नीयत और इज़ाफ़त (संबोधन) की नीयत। इसमें कोई संदेह नहीं है कि उनमें से एक पर्याप्त नहीं है। इस प्रकार, उसका यह कहना कि "उसने दोष के कारण कहा: 'तुझे वापस किया' (बाज़ दादत) और उसने नीयत की (तलाक की)," इसका मतलब यह नहीं है कि यह उसकी ओर निर्देशित है क्योंकि शब्द रूपकों में से है, क्योंकि यह एक संकेत से भी अभिप्रेत है, मेरा मतलब अंतिम खंड में उसका कहना है: "और यदि उसने नीयत की", यानी यदि उसने 'ता' के बिना कहा, तो यह नहीं होता है चाहे उसने शब्द द्वारा तलाक की नीयत की हो, क्योंकि इसमें इज़ाफ़त का अभाव है। इसलिए, उसके बाद एक और चीज़ की आवश्यकता होती है, और वह है इज़ाफ़त की नीयत। अतः समझें और चिंतन करें, शायद अल्लाह इसके बाद कोई नई बात पैदा कर दे। जो स्थापित किया गया है, उसके आधार पर यह स्पष्ट है कि फ़ाज़िल (विद्वान) पर कोई आपत्ति नहीं है।

[दायां कॉलम - उर्दू पाठ] की दूसरी सूरत हमारे पहले बताए गए अंतिम मसले की सूरत से संबंधित है। हमारे बताए गए नियम के अनुसार, जब तक वह नीयत नहीं करेगा, दीयानतन (धार्मिक रूप से) तलाक नहीं होगी, और क़ज़ाअन (कानूनी रूप से) भी उस समय तक नहीं होगी जब तक वह तलाक की नीयत से अवगत नहीं करा देता। इसका यह मतलब कतई नहीं है कि संबोधन के बिना नीयत के बावजूद तलाक नहीं होगी; क्योंकि इससे यह अनिवार्य होगा कि संबोधन के बिना "दोष के आधार पर वापस किया" ये शब्द तलाक में से ही न हुए, जैसे "तुम्हारी मुझे ज़रूरत नहीं" और "रुचि नहीं" या "तुमसे कोई शौक नहीं" आदि शब्द तलाक के लिए नहीं हैं। हालांकि आप जानते हैं कि यह बात मुश्किल है। तो इसका समाधान इस प्रकार संभव है कि "तुझे दोष की बिना पर वापस किया" पत्नी के जवाब में संबोधन करके कहा हो, तो यह ऐसा किनाया (रूपक) है जिसमें एक नीयत की आवश्यकता है। और अगर संबोधन के बिना कहा तो दो नीयतों की आवश्यकता है, एक नीयत तलाक और दूसरी

नीयत इज़ाफ़त (संबोधन)। और यह बात स्पष्ट है कि ऐसी स्थिति में एक नीयत काफी नहीं है। तो पति का यह कहना "मैंने तुझे दोष की बिना पर वापस किया" और नीयत की, तो वह तलाक की नीयत होगी जिसकी आवश्यकता थी, क्योंकि यह शब्द तलाक से किनाया है। तो नीयत से मुराद तलाक की नीयत है। साथ ही इसका संकेत यह भी है कि मसले की दूसरी सूरत यानी बिना संबोधन के कहा हो, तो वहाँ यह कहा गया है कि तलाक नहीं होगी चाहे तलाक की नीयत की हो, क्योंकि संबोधन के बिना यह सूरत इज़ाफ़त से खाली है। इसलिए इसके बाद एक दूसरी चीज़ की ज़रूरत होगी और वह इज़ाफ़त की नीयत है (यानी नीयत इज़ाफ़त की मोहताज होगी)। तो...

[Left Column - Arabic] ما لم یخبر عن نیة الطلاق لان لا یقع وان نوی فانه یفید انه بدون التاء لیس من الفاظ الطلاق اصلا کقوله لا حاجة لي فیك ولا رغبة اولاشتیك وامثال ذلك وهو کما تری مشکل فلعل المعنی ان اللفظ من الکنایات وهو مع التاء ایضا محتاج الی النیة کما لا یخفی فاذا عدم التاء احتاج نیتین نیة الطلاق ونیة الاضافة ولا شك ان احدهما لا تکفی، فقوله قال بعیب باز دادت ونوی ، لیس معناه الیها لاجل کون اللفظ من الکنایات فهی المرادة ایضا من قرینة اعنی قوله فی الفصل الاخیر وان نوی ای لو قال بغیر التاء لا یقع وان نوی باللفظ الطلاق لخلوه عن الإضافة فیحتاج بعد الی شیئ آخر وهی نیة الاضافة فافهم وتأمل لعل الله یحدث بعد ذلك امرا - هذا وبما تقرر تحرر ان لا اعتراض علی الفاضل

[Right Column - Urdu] کی دوسری صورت ہمارے پہلے ذکر کردہ آخری مسئلہ کی صورت سے متعلق ہے تو ہمارے بیان کردہ ضابطہ کے تحت جب تک نیت نہ کریگا دیانۃً طلاق نہ ہوگی اور قضاءً بھی اس وقت تک نہ ہوگی جب تک طلاق کی نیت سے مطلع نہ کرے اس کا ہرگز یہ مطلب نہیں کہ خطاب کے بغیر نیت کے باوجود، طلاق نہ ہوگی کیونکہ اس سے تولازم آئے گا کہ خطاب کے بغیر " عیب کی بنا پر واپس کیا" یہ الفاظ طلاق میں سے ہی نہ ہوا جیسے "تیری مجھے حاجت نہیں" اور رغبت نہیں یا تجھ سے شوق نہیں رکھتا وغیرہ الفاظ طلاق کے لئے نہیں ہیں، حالانکہ آپ جانتے ہیں کہ یہ بات مشکل ہے۔ تو اس کا حل یوں ممکن ہے کہ "تجھ تجھے عیب کی بناء پر واپس کیا" بیوی کے جواب میں خطاب کر کے کہا ہو تو یہ ایسا کنایہ ہے جس میں ایک نیت کی ضرورت ہے، اور اگر بغیر خطاب کہا تو دو نیتوں کی ضرورت ہے، ایک نیت طلاق دوسری نیت اضافت، اور یہ بات واضح ہے کہ ایسی صورت میں ایک نیت کافی نہیں، تو خاوند کا

یہ کہنا "میں نے تجھے عیب کی بنا پر واپس کیا" اور نیت کی تو وہ طلاق کی نیت ہوگی جس کی ضرورت تھی کیونکہ یہ لفظ، طلاق سے کنایہ ہے تو نیت سے مراد، طلاق کی نیت ہے نیز اس کا قرینہ یہ بھی ہے کہ مسئلہ کی دوسری صورت یعنی بغیر خطاب کہا ہو تو وہاں یہ کھاگیا ہے طلاق واقع نہ ہوگی اگرچہ طلاق کی نیت کی ہو، کیونکہ خطاب کے بغیر یہ صورت اضافت سے خالی ہے، لہٰذا اس کے بعد ایک دوسری شیئ کی احتیاجی ہوگی اور وہ اضافت کی نیت ہے (یعنی نیت اضافت کا محتاج ہوگا) پس

Fatawa Rizwia Volume 12

(Arabic Text Column): [Translation of Arabic content]: The Commentator, nor against the learned scholar Allama Bahr (may Allah have mercy on him), for they both presented exactly what is in Al-Wajiz and Al-Khaniya. They also both explicitly stated the non-occurrence (of divorce) and reasoned it with the omission of attribution (Idafa). Just as it was mandatory to interpret their words according to what preceded, so too should the words of these two scholars be interpreted. However, the two Imams (of Wajiz and Khaniya) provided a clarification after their statement that clarified the intent of their saying "the word is his word," while these two scholars limited themselves to that, so their speech remained ambiguous. There is nothing in their speech to suggest that explicit verbal attribution is a condition for the occurrence (of divorce), such that the rest of the speech of the learned commentator (Muhashshi), may Allah Almighty have mercy on him, would be directed against it. Yes, the two scholarly commentators, Al-Halabi and Al-Tahawi, reasoned that attribution is a condition in itself as we established, but it is not correct to conclude with certainty that it is not present. For the condition is absolute attribution, whether by text, custom, or response, and what is definitely missing is the explicitly mentioned verbal attribution, which is not a condition. So if there is to be any taking to task, it would be against the two commentators (Muhashshis) rather than these two learned scholars. O Allah, except for the lack of clarification as you know. This is how the matter should be verified, and Allah is the Master of favor and blessings.

(Urdu Text Column): [Translation of Urdu content]: Understand and ponder; it is possible that Allah Almighty will provide a way after this. Keep this firm. From this discourse, it has become clear that there is no objection against the learned Allama Bahr (may Allah Almighty have mercy on him), because he stated exactly what was explained in Al-Wajiz and Al-Khaniya. Both (Al-Wajiz and Al-Khaniya) explicitly stated that divorce does not occur in the mentioned case and gave the reason as the omission of 'Idafa' (attribution). So, just as it was necessary to interpret the phrasing of Al-Wajiz and Al-Khaniya according to the mentioned meaning, similarly, it is necessary to interpret the speech of these two scholars—the Commentator and Bahr—according to the same meaning. The only difference is that the two Imams of Al-Wajiz and Al-Khaniya clarified their intent afterwards by saying that the husband's word would be credible, whereas these two scholars limited themselves to mentioning the non-occurrence of divorce. Due to this, a possibility of ambiguity remained in their speech, even though there is no explicit statement in the speech of

either scholar that the explicit verbal mention of attribution is a condition for the occurrence of divorce, such that the objection of the learned commentator (Muhashshi) could apply to them. Yes, both scholars, Al-Halabi and Al-Tahawi, explained in the commentary that attribution is a condition which is not present here. So, it is correct for these two scholars to say that attribution is a condition, as mentioned; however, their saying that attribution is certainly not found here is not correct because the presence of attribution is a condition, whether it be by explicit text, custom, or as a response. One cannot claim the condition is missing simply because attribution is explicitly absent in words, for being mentioned only verbally is not a condition. In short, if there is to be any accountability, it would be upon both commentators (Muhashshis).

(अरबी पाठ स्तंभ): [अरबी सामग्री का अनुवाद]: टीकाकार, न ही विद्वान अल्लामा बहर (अल्लाह उन पर रहम करे) पर, क्योंकि वे दोनों वही लाए जो अल-वजीज़ और अल-खनिया में है। उन्होंने भी तलाक न होने का स्पष्ट उल्लेख किया और इज़ाफ़त (सम्बोधन) की कमी को इसका कारण बताया। जैसे उनके शब्दों को पूर्वोक्त अर्थ में लेना आवश्यक था, वैसे ही इन दो विद्वानों के शब्दों को भी लिया जाना चाहिए। हालाँकि, उन दो इमामों ने इसके बाद वह बात कही जिससे उनके कथन का उद्देश्य स्पष्ट हो गया कि "कथन उसी का (पति का) माना जाएगा", जबकि इन दो विद्वानों ने केवल उसी पर बस किया, जिससे उनके शब्दों में संशय रह गया। उनके शब्दों में ऐसा कुछ भी नहीं है कि मौखिक रूप से स्पष्ट इज़ाफ़त तलाक के लिए शर्त है, ताकि विद्वान टीकाकार (मुहश्शी) की आपत्ति उन पर लागू हो। हाँ, दोनों टीकाकारों, हलबी और तहावी ने यह तर्क दिया कि इज़ाफ़त अपने आप में एक शर्त है जैसा कि हमने स्थापित किया, लेकिन यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि वह यहाँ अनुपस्थित है। क्योंकि शर्त पूर्ण इज़ाफ़त है, चाहे वह पाठ, परंपरा या उत्तर के रूप में हो, और जो निश्चित रूप से अनुपस्थित है वह केवल मौखिक रूप से उल्लेखित इज़ाफ़त है, जो कि शर्त नहीं है। अतः यदि कोई आपत्ति है, तो वह इन दो विद्वानों के बजाय दोनों टीकाकारों (मुहश्शियों) पर होगी। ऐ अल्लाह, सिवाय स्पष्टीकरण की कमी के जैसा कि आप जानते हैं। इस प्रकार मामले का सत्यापन होना चाहिए, और अल्लाह अनुग्रह और नियामतों का स्वामी है।

(उर्दू पाठ स्तंभ): [उर्दू सामग्री का अनुवाद]: समझें और विचार करें; हो सकता है कि अल्लाह इसके बाद कोई रास्ता निकाल दे। इसे मजबूती से थामे रखें। इस चर्चा से यह स्पष्ट हो गया है कि विद्वान अल्लामा बहर (अल्लाह उन पर रहम करे) पर कोई आपत्ति नहीं है, क्योंकि उन्होंने वही कहा जो अल-वजीज़ और अल-खनिया में बयान किया गया है। इन दोनों (वजीज़ और खनिया) ने स्पष्ट किया कि उक्त मामले में तलाक नहीं होता है और इसका कारण 'इज़ाफ़त' (सम्बोधन) की कमी को बताया। तो, जिस प्रकार अल-वजीज़ और अल-खनिया के शब्दों को उक्त अर्थ में समझना आवश्यक था, उसी प्रकार इन दोनों विद्वानों—टीकाकार और बहर—के कथन को भी उसी अर्थ में समझना आवश्यक है। केवल इतना हुआ कि अल-वजीज़ और अल-खनिया के दोनों इमामों ने बाद में अपने उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहा कि पति की बात विश्वसनीय होगी, जबकि इन दोनों विद्वानों ने तलाक के न होने के उल्लेख तक ही स्वयं को सीमित रखा। इस कारण उनके कथन में अस्पष्टता की गुंजाइश रह गई, हालांकि इन दोनों विद्वानों के किसी भी कथन में यह स्पष्ट नहीं है कि तलाक होने के

लिए इज़ाफ़त का शब्दों में स्पष्ट रूप से उल्लेख होना आवश्यक है, ताकि विद्वान टीकाकार (मुहश्शी) की आपत्ति उन पर लागू हो सके। हाँ, विद्वान हलबी और विद्वान तहावी दोनों ने टीका में यह कारण बताया है कि इज़ाफ़त एक शर्त है जो यहाँ मौजूद नहीं है। तो, इन दोनों विद्वानों का यह कहना सही है कि इज़ाफ़त एक शर्त है, जैसा कि उल्लेख किया गया है; हालाँकि, उनका यह कहना कि यहाँ निश्चित रूप से इज़ाफ़त नहीं पाई गई, सही नहीं है क्योंकि इज़ाफ़त का होना एक शर्त है, चाहे वह स्पष्ट पाठ द्वारा हो, परंपरा द्वारा हो या उत्तर के रूप में हो। केवल शब्दों में इज़ाफ़त के स्पष्ट रूप से न होने पर शर्त के न होने का दावा नहीं किया जा सकता, क्योंकि केवल मौखिक रूप से उल्लेखित होना ही शर्त नहीं है। संक्षेप में, यदि कोई जवाबदेही है, तो वह दोनों टीकाकारों (मुहश्शियों) पर होगी।

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

(عربی متن کا کالم): الشارح ولا على العلامة البحر رحمة الله عليه فانهما اتيا بعين ما في الوجيز والخانية فانهما ايضا نصا على عدم الوقوع وعللا بترك الاضافة، فكما وجب حمل كلامهما على ما تقدم كذلك يحمل عليه كلام هذين الفاضلين، بيد ان الامامين اتيا بعده بما اوضح المراد من قولهما ان القول قوله والفاضلين اقتصرا على ذلك فبقى كلامهما على الايهام . وليس في كلامهما ان الاضافة الصريحة اللفظية شرط للوقوع حتى يتوجه عليه بقية كلام الفاضل المحشى رحمه الله تعالى نعم علل الفاضلان الشارحان الحلبى و الطحاوى بان الاضافة شرط حق في نفسه كما قررناه لكن لا يصح ح الجزم بعدم الوجد ان فان الشرط مطلق الاضافة نصا او عرفا او جوابا والمفقود جزما هى الاضافة اللفظية المنصوصة وليست بشرط فالاخذ ان كان فعلى المحشيين دون الفاضلين العلامتين۔ اللهم الا فى ترك الايضاح كما علمت۔ هكذا ينبغي تحقيق المقام والله ولى الفضل والانعام۔

(اردو متن کا کالم): سمجھو اور غور کرو، ہو سکتا ہے کہ اللہ تعالیٰ اس کے بعد کوئی سبیل پیدا فرمادے، اسے مضبوط رکھو۔ اس تقریر سے واضح ہو گیا کہ فاضل علامہ بحر رحمہ اللہ تعالیٰ پر کوئی اعتراض نہیں، کیونکہ انہوں نے وہی کچھ کہا جو وجیز اور خانیہ میں بیان کیا گیا ہے، کیونکہ ان (وجیز و خانیہ) دونوں نے مذکورہ میں یہ طلاق نہ واقع ہونے کی تصریح کی اور اس کی وجہ ترک اضافت کو قرار دیا، تو جس طرح وجیز اور خانیہ کی عبارت کو مذکورہ معنی پر محمول کرنا ضروری ہوا یونہی ان دونوں فاضل حضرات شارح وبحر کلام کو اسی معنی پر محمول کرنا ضروری ہے، صرف اتنا ہوا کہ دونوں اماموں وجیز وخانیہ نے اس کے بعد اپنی مراد کو واضح کرتے ہوئے کہا کہ خاوند کی بات معتبر ہوگی، جبکہ دونوں فاضل حضرات نے عدم وقوع طلاق کے ذکر پر اکتفاء کیا جس کی بناء پر ان کی کلام میں احتمال کی گنجائش رہ گئی

حالانکہ ان دونوں حضرات کے کسی کلام میں یہ تصریح نہیں ہے کہ اضافت کا لفظوں میں صریح طور پر مذکور ہونا وقوع طلاق کے لئے ضروری ہے تا کہ بقید کلام فاضل محشی سے اس پر اعتراض ہو سکے ہاں، فاضل حلبی اور فاضل طحاوی دونوں حضرات نے شرح میں یہ وجہ بیان کی ہے کہ اضافت شرط ہے جو یہاں موجود نہیں ہے تو ان دونوں حضرات کا یہ کہنا بجا ہے کہ اضافت شرط ہے، جیسا کہ نے ذکر کیا ہے، لیکن ان کا بہر کہنا کہ یقیناً یہاں اضافت نہیں پائی گئی، یہ درست نہیں کیونکہ اضافت کا پایا جانا شرط ہے خواہ بطور نص ہو، یا عرف یا جواب کے طور پر ہو، اضافت کے صرف صراحتاً لفظی طور پر مفقود ہونے پر شرط کے مفقود ہونے کا قول نہیں کیا جاسکتا، کیونکہ صرف لفظی طور پر مذکور ہونا شرط نہیں ہے۔ غرضیکہ اگر مواخذہ ہو بھی تو دونوں محشی حضرات پر ہوگا۔

Fatawa Razawiyyah, Volume 12

...not on the learned commentators and the author of 'Bahr'. Yes, an objection of not clarifying could be raised against them. As you have come to know, the research on this point will be appropriate in this way, while Allah Almighty alone is the owner of grace and reward (T). [Irrelevant text has been excluded from here].

Issue 122: From Rama, Tehsil Gujar Khan, District Rawalpindi, Post Office Jatli. Questioned by Muhammad Ji, 27 Sha'ban 1339 AH. Shams al-Ulama, the chief of the virtuous, Khan-e-Khanan Mr. Ahmad Raza Khan, may his kindness last forever, Assalamu Alaikum! If divorce is given without attribution (to a specific person), what will be the ruling? Will it occur or not? Qazi Khan is among the Mujtahid al-Masail (scholars capable of deriving rulings) and Shami is among the transcribers. If there is a difference between them, who should be followed for the ruling?

The Answer: In divorce without attribution, when the intent to pronounce (divorce) is beneficial, his statement with an oath is reliable. If he says on oath that he did not intend to divorce his wife, it will be accepted. This is the gist of Qazi Khan and this is what Shami investigated; there is no contradiction between them. In 'Khaniyah', "So the statement is his statement explicitly" (the husband's word will be reliable. T) points to this, and its complete research is in our treatise on the subject (Its complete research related to this issue is in one of our treatises. T). And Allah Almighty knows best.

Issue 123: (Question not transcribed) (1) Brief response via telegram: If there was an intention for divorce, three divorces have occurred. (2) Detailed response via mail: Since in Zaid's speech, there was absolutely no attribution of divorce towards the woman—such as saying "divorce to you" or "so-and-so woman" or "my wife" or "daughter of so-and-so"—nor was there any mention of one, two, or three on his tongue such as "I gave one, two, or three divorces" or "it occurred," which would make it apparent that the divorce is being given to the wife. Nor were there such words in the woman's speech in response to which Zaid's words would apparently be understood as pronouncing it; for example, if she said, "I want divorce, give me divorce." Rather, there was mere silence from the woman's side. So, just as these words themselves are mere descriptions and potential meanings—it is possible the intention was "I gave you one, two, three divorces," or it is possible the intent was "how many divorces (one, two, or three) do you want?"—due to which, according to

Allah, the basis here is on the husband's intention. If while saying these words the intention was for divorce, three divorces occurred, otherwise...

फतवा रज़विया, खंड 12

...न कि विद्वान टीकाकारों और 'बहर' के लेखक पर। हाँ, उन पर स्पष्ट न करने का आक्षेप होगा। जैसा कि आपको ज्ञात हुआ, इस स्थान का शोध इस प्रकार उचित होगा, जबकि अल्लाह तआला ही कृपा और इनाम का स्वामी है (त)। [यहाँ से असम्बद्ध इबारत को निकाल दिया गया है]।

मसला 122: रामा, तहसील गुजर खान, जिला रावलपिंडी, डाकघर जातली से। प्रेषक: मुहम्मद जी, 27 शाबान 1339 हिजरी। शम्स उल-उलमा, श्रेष्ठ जनों के प्रमुख, खान-ए-खानान श्री अहमद रज़ा खान साहब, उनकी कृपा बनी रहे, अस्सलामु अलैकुम! यदि बिना संदर्भ (बिना किसी की ओर संकेत किए) तलाक दे दिया जाए, तो क्या हुक्म होगा? वह प्रभावी होगा या नहीं? काज़ी खान 'मुजतहिद अल-मसाइल' (मसलों का हल निकालने वालों) में से हैं और शामी नकल करने वालों (रिवायत करने वालों) में से हैं। यदि उनके बीच मतभेद हो, तो किसके आधार पर हुक्म दिया जाए?

अल-जवाब: बिना संदर्भ के तलाक में जब तलाक प्रभावी करना ही उद्देश्य हो, तो उसकी कसम के साथ दी गई बात विश्वसनीय है। यदि वह कसम खाकर कहेगा कि उसका अपनी पत्नी को तलाक देने का इरादा नहीं था, तो मान लिया जाएगा। यही काज़ी खान का निष्कर्ष है और यही शामी ने शोध किया है, उनमें कोई विरोध नहीं है। 'खनियाह' में "तो बात उसी की बात होगी स्पष्ट रूप से" (पति की बात विश्वसनीय होगी। त) इसी ओर संकेत करता है। और इसका पूरा शोध इस विषय पर हमारे एक शोध पत्र (रिसाले) में है (इस मसले से संबंधित पूरा शोध हमारे एक रिसाले में है। त)। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला 123: (प्रश्न उद्धृत नहीं है) (1) तार (टेलीग्राम) के माध्यम से संक्षिप्त उत्तर: यदि तलाक की नीयत (इरादा) थी, तो तीन तलाक हो गए। (2) डाक के माध्यम से विस्तृत उत्तर: चूँकि ज़ैद की बातों में औरत की ओर तलाक का कोई संबंध (निस्बत) बिल्कुल नहीं था कि "तुझे या फलां औरत को या अपनी पत्नी को या फलां की बेटी को तलाक" और न ही उसकी ज़ुबान पर एक, दो, तीन देने का कोई ज़िक्र आया कि "एक दो तीन तलाक दी या हुई," जिससे ज़ाहिर तौर पर पत्नी को ही तलाक देना समझा जाता। न ही औरत की बातों में ऐसे शब्द थे जिनके जवाब में ज़ैद के ये शब्द ज़ाहिर तौर पर तलाक प्रभावी करना समझे जाते, उदाहरण के लिए वह कहती कि "मैं तलाक चाहती हूँ, मुझे तलाक दे दो।" बल्कि औरत की ओर से केवल चुप्पी थी। तो जिस प्रकार ये शब्द स्वयं केवल विशेषण (सिफ़त) हैं और इनमें कई संभावनाएँ(मुहतमल) हैं—संभव है कि यह इरादा हो कि "मैंने तुझे एक,

दो, तीन तलाकें दीं," और संभव है कि यह उद्देश्य हो कि "तू एक, दो, तीन में से कितनी तलाकें चाहती है?"—जिसके कारण अल्लाह के यहाँ यहाँ मामला पति की नीयत पर है। यदि इन शब्दों को कहते समय तलाक की नीयत थी, तो तीन तलाक हो गए, अन्यथा...

فتاوی رضویہ، جلد دوازدہم

نہ کہ فاضلین شارح وبحر پر۔ہاں ان پر وضاحت نہ کرنے کا اعتراض ہوگا۔ جیسا کہ آپ کو معلوم ہوا، اس مقام کی تحقیق یوں مناسب ہوگی جبکہ اللہ تعالٰی ہی فضل وانعام کا مالک ہے (ت) [یہاں سے غیر مربوط عبارت کو خارج کردیا گیا ہے]

مسئلہ ۱۲۲: از رامہ تحصیل گوجر خان ضلع راولپنڈی ڈاکخانہ جاتلی مسئولہ محمد جی ۲۷ شعبان ۱۳۳۹ھ شمس العلماء رئیس الفضلاء خان خاناں جناب احمد رضا خاں صاحب دام لطفہ، السلام علیکم! اگر بے اضافت طلاق دے جائے تو کیا حکم ہوگا واقع ہوگی یا نہ؟ قاضی خاں مجتہد المسائل سے ہے اور شامی ناقلوں سے ہے ان کے مابین اختلاف ہو تو کس پر حکم دیا جائے؟

الجواب: طلاق بے اضافت میں جبکہ ایقاع مفاد ہو اُس کا قول قسم کے ساتھ معتبر ہے، اگر بحلف کہہ دے گا کہ زوجہ کو طلاق مقصود نہ تھی مان لیں گے، یہی مفادِ قاضی خاں ہے اور یہی شامی نے تحقیق کیا، ان میں تخالف نہیں، خانیہ میں فالقول قولہ صراحۃ (خاوند کی بات معتبر ہوگی۔ ت) اسی پر دال ہے و تمام تحقیقہ فی رسالتنا فی الباب (اس کی مکمل تحقیق اس مسئلہ سے متعلق ہمارے ایک رسالہ میں ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۲۳: (سوال منقول نہیں) (۱) اجمالی جواب بذریعہ تار برقی اگر طلاق کی نیت تھی تین طلاقیں ہو گئیں۔ (۲) تفصیلی جواب بذریعہ ڈاک جبکہ زید کے کلام میں عورت کی طرف طلاق کی نسبت اصلاً نہ تھی کہ تجھ کو یا فلاں عورت یا اپنی زوجہ یا دختر فلاں کو طلاق ایک، دو تین، نہ دینے ہی کا کوئی ذکر زبان پر آیا کہ طلاق ایک دو تین دی یا ہوئی جس کے باعث بحسب ظاہر زوجہ ہی کو طلاق دینا مفہوم ہوتا، نہ عورت ہی کے کلام میں ایسے الفاظ تھے جن کے جواب میں

زید کے یہ لفظ بظاہر اس پر ایقاع سمجھے جاتے، مثلاً وہ کہتی میں طلاق چاہتی ہوں مجھے طلاق دے، بلکہ عورت کی طرف سے سکوت محض تھا، تو جس طرح خود یہ الفاظ محض نا وصف و محتمل ہیں ممکن کہ یہ مراد ہو کہ طلاق ایک دو تین میں نے تجھے دیں، ممکن کہ یہ مقصود ہو کہ طلاق ایک دو تین کتنی چاہتی ہے جس کے باعث عند اللہ یہاں مدار نیت شوہر پر ہوا، اگر ان الفاظ کے کہنے میں طلاق کی نیت تھی تین طلاقیں ہو گئیں ورنہ

Fatawa Razawiyya, Volume 12

...nothing. Similarly, due to the non-obviousness of the intent among people, it is necessary to refer to the husband's statement. If he admits that he said these words with the intention of divorce, then the ruling for three divorces will be given, and he cannot remarry her without *halala*. In this case, the woman will have the option after the completion of the waiting period (*iddah*) to marry whomever she wishes; she will be considered still in the marriage of her husband, for "certainty is not removed by doubt." (T) If in reality he had the intention but did not manifest it, the burden of sin and the punishment for adultery for both himself and the woman will be upon the husband. The woman is not to blame, as Allah, Exalted and Most High, is the Master of hearts. "And no bearer of burdens shall bear another's burden." [Quran 6:164] (T) The woman cannot consider herself divorced. If she marries another, she will be considered an adulteress, for "she is bound by the apparent [ruling], and Allah the Almighty takes charge of the secrets." (Because the woman is bound by the apparent ruling; Allah Almighty is the judge of secrets. T) In *Al-Hindiyya*, it is mentioned from *Al-Muhit*:

Arabic	**Urdu**
It does not occur in the category of attribution when it is not intended, due to the lack of attribution to her.[2]	In matters involving attribution, divorce will not occur until the intention of attribution is made, because there was no attribution towards the wife. (T)

In the same [source], from *Al-Khulasa*:

Arabic	**Urdu**
A drunken man's wife ran away from him, so he followed her but did not catch her. He said in Persian "Se Talaq" (Three divorces). If he says "I meant my wife," it occurs; if he says nothing, it does not occur.[3]	When a drunkard's wife ran away, he chased her; upon failure, he said "Three divorces". If the husband said "My intention was my wife," then the divorce will occur, and if he said nothing, then it will not happen. (T)

In *Al-Fatawa al-Anqarawiyya* from *Al-Bazzaziyya*:

Arabic	**Urdu**
She ran away and he did not catch her, so he said: "Se Talaq" (Three divorces).	The wife ran away, so the husband said on failure: "Three divorces".

1 Quran 6:164 2 Fatawa Hindiyya, Chapter 7 regarding divorce in Persian words, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/382 3 Fatawa Hindiyya, Chapter 7 regarding divorce in Persian words, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/382

फतावा रज़विया, खंड 12

...कुछ नहीं। इसी तरह, लोगों के बीच इरादे की अस्पष्टता के कारण, पति के बयान का उल्लेख करना आवश्यक है। यदि वह स्वीकार करता है कि उसने ये शब्द तलाक के इरादे से कहे थे, तो तीन तलाक का फैसला दिया जाएगा और वह हलाला के बिना उससे दोबारा शादी नहीं कर पाएगा। इस स्थिति में, महिला के पास इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) पूरी होने के बाद अपनी पसंद के किसी भी व्यक्ति से शादी करने का विकल्प होगा; उसे अभी भी अपने पति के विवाह में ही माना जाएगा, क्योंकि "निश्चितता संदेह से समाप्त नहीं होती है।" (त) यदि वास्तव में उसने नियत (इरादा) की थी और उसने इसे प्रकट नहीं किया, तो अपने और महिला दोनों के लिए गुनाह और व्यभिचार की सजा का बोझ पति पर होगा। महिला पर कोई दोष नहीं है, क्योंकि दिलों का मालिक अल्लाह है, जो महान और उच्च है। "और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा।" [कुरान 6:164] (त) महिला खुद को तलाकशुदा नहीं मान सकती। यदि वह किसी दूसरे से विवाह करती है, तो वह व्यभिचारी मानी जाएगी, क्योंकि "वह प्रकट [हुक्म] के लिए उत्तरदायी है और अल्लाह सर्वशक्तिमान रहस्यों का स्वामी है।" (क्योंकि महिला प्रकट हुक्म की पाबंद है; अल्लाह तआला ही रहस्यों का न्याय करने वाला है। त) हिंदिया में मुहीत से है:

अरबी	**उर्दू**
यह एज़ाफ़त (संबंध) की श्रेणी में तब तक नहीं होता जब तक इसका इरादा न हो, क्योंकि उसकी ओर एज़ाफ़त की कमी है।[2]	एज़ाफ़त वाले मामले में तलाक तब तक नहीं होगा जब तक एज़ाफ़त की नियत न की गई हो, क्योंकि पत्नी की ओर एज़ाफ़त नहीं हुई थी। (त)

इसी में 'खुलासा' से है:

अरबी	**उर्दू**
एक नशे में धुत व्यक्ति की पत्नी उससे भाग गई, तो उसने उसका पीछा किया लेकिन उसे पकड़ नहीं सका। उसने फारसी में कहा "सह तलाक" (तीन तलाक)। यदि वह कहता है "मेरा मतलब मेरी पत्नी से था," तो तलाक हो जाता है; यदि वह कुछ नहीं कहता, तो नहीं होता।[3]	नशे वाले की बीवी भागी तो उसने पीछा किया, विफलता पर कहा, तीन तलाक। अगर शौहर ने कहा कि मेरी मुराद मेरी बीवी है, तो तलाक वाके(हो) जाएगा और अगर कुछ न बताया तो न होगी। (त)

अनक़रविया में बज़्ज़िया से है:

अरबी	उर्दू
वह भाग गई और वह उसे पकड़ नहीं सका, तो उसने कहा: "सह तलाक" (तीन तलाक)।	बीवी भागी तो शौहर ने विफलता पर कहा: तीन तलाक।

1 अल-कुरान 164/6 2 फतावा हिंदिया, अध्याय 7, फारसी शब्दों में तलाक के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/382 3 फतावा हिंदिया, अध्याय 7, फारसी शब्दों में तलाक के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/382

کچھ نہیں، اسی طرح بوجہ عدم ظہور مراد عند الناس بھی بیان شوہر کی طرف رجوع ضرور، اگر وہ اقرار کرے کہ یہ لفظ میں نے بقصد طلاق کہے تھے تین طلاقوں کا حکم دیا جائے گا اور بے حلالہ اس سے نکاح نہ کر سکے گا۔ اس صورت میں عورت کو عدت گزرنے پر اختیار ہوگا، جس سے چاہے نکاح کر سکتی ہے وہ بدستور شوہر کی زوجیت میں سمجھی جائے گی فان الیقین لایزول بالشک (کیونکہ یقین، شک سے زائل نہیں ہوتا۔ ت) اگر واقع میں اس نے نیت کی اور اس نے ظاہر نہ کی تو اس کا وبال اور اپنے اور عورت دونوں کے زنا کا عذاب شوہر پر ہوگا عورت پر الزام نہیں کہ دلوں کا مالک اللہ ہے جلا وعلا۔ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰی ط۱ (کوئی جان دوسرے کا بوجھ نہ اٹھائے گی۔ ت) عورت اپنے آپ کو مطلقہ نہیں سمجھ سکتی اگر دوسرے سے نکاح کرے گی حرامکار ٹھہرے گی فانہا مکلفۃ بالظاہر واللہ تعالٰی یتولی السرائر (کیونکہ وہ عورت ظاہر حکم کی مکلف ہے رازوں کا اللہ تعالٰی ہی حاکم ہے۔ ت) ہندیہ میں محیط سے ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
لا یقع في جنس الاضافة اذالم ینولعدم الاضافة الیها 2	اضافت والے معاملہ میں طلاق نہ ہوگی جب تک اضافت کی نیت نہ کی ہو کیونکہ بیوی کی طرف اضافت نہ ہوئی۔ (ت)

اسی میں خلاصہ سے ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
سکران هربت منه امرأته فتبعها و لم یظفر بها فقال بالفارسیة بسه طلاق ان	نشے والے کی بیوی بھاگی تو اس نے تعاقب کیا، ناکامی پر کہا، تین طلاق پر۔ اگر خاوند نے کہا کہ میری مراد

عربی متن	اردو ترجمہ
قال عنیت امرأتی یقع و ان لم یقل شیئاً لا یقع [3]	میری بیوی ہے۔ تو طلاق واقع ہو جائے گی اور اگر کچھ نہ بتایا تو نہ ہوگی۔ (ت)

الفقرویہ میں بزازیہ سے ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ
فرت و لم یظفر بھا فقال سہ طلاق	بیوی بھاگی تو خاوند نے ناکامی پر کہا: تین طلاق،

1 القرآن ۱۶۴/۶ 2 فتاوی ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالفاظ الفارسیہ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۸۲ 3 فتاوی ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالفاظ الفارسیہ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۸۲

Fatawa Rizwia Volume 12

If he said, 'I meant my wife,' it occurs; otherwise, not.[1]	If the husband said, 'My intention was my wife,' then divorce [occurs]; otherwise, not. (T)

It is in Bahr-ur-Raiq:

If he said 'Divorced', then it was asked of him, 'Whom did you mean?' and he replied, 'My wife', his wife is divorced.[2]	If a husband said 'Divorce'. He was asked what he meant, he replied it means my wife, then his wife will be divorced. (T)

In Alamgiriyah from Khulasah it is:

She said 'Divorce me', so he beat her and said to her 'This is divorce', it does not occur. But if he said 'This is your divorce', it occurs.[3]	The wife said: 'Give me divorce', so the husband beat her and said 'this is divorce', then divorce will not occur. And if he said 'this divorce is to you', then divorce will occur. (T)

From this statement, it has become clear that the second scholar's answer was purely false and incorrect. In the case of intention, there will be three divorces in which revocation (Ruju') is impossible, and in the case of no intention, not even one will occur, so the thought of revocation is a mere impossible thought. And the first scholar's answer was also wrong, as here three divorces occur only in the case of intention, not absolutely. And Allah Almighty knows best.

Problem 124: From Serampore, District Hooghly, sent by Sheikh Badu, porter at Chutkal, and Muhammad Siraj-ul-Haq, Imam of the Grand Mosque, 25 Rabi-al-Akhir 1336 AH. Muhammad Zafar was having a dispute with his mother. His mother said, 'If you do not leave your wife, you will eat pork,' she said this three times. Muzaffar said, 'I give divorce, divorce.' Then, without intention and in anger, he said 'divorce, divorce, divorce' in front of his mother, without addressing anyone. Now, according to Shariah, in the situation asked, will Zafar's wife be divorced or not?

The Answer: Three divorces have occurred; she cannot come back into his marriage without Halala. And Allah Almighty knows best.

---

1. Fatawa al-Qarawiya, Chapter: What Divorce Occurs with and What Does Not, Dar-ul-Isha'at Kandahar Afghanistan 1/72
2. Bahr-ur-Raiq, Chapter of Divorce, H.M. Saeed Company Karachi 3/253

3. Fatawa Hindiyyah, Section Seven on Divorce with Persian Words, Noorani Kutub Khana Peshawar 1/382

फतावा रज़विया जिल्द बारह

यदि उसने कहा 'मेरा आशय मेरी पत्नी थी' तो वह प्रभावी होगा, अन्यथा नहीं।[1]

यदि पति ने कहा कि 'मेरा आशय मेरी पत्नी थी', तो तलाक़ होगा, अन्यथा नहीं। (त)

बहर-उर-राइक़ में है:

यदि उसने 'तलाक़शुदा' कहा, फिर उससे पूछा गया कि 'आपका क्या तात्पर्य था?' और उसने उत्तर दिया, 'मेरी पत्नी', तो उसकी पत्नी को तलाक़ हो गया।[2]

यदि पति ने कहा 'तलाक़'। उससे पूछा गया कि तुम्हारा क्या आशय है, उसने उत्तर दिया कि 'मेरी पत्नी' आशय है, तो उसकी पत्नी को तलाक़ हो जाएगा। (त)

आलमगीरिया में 'खुलासा' से है:

उसने कहा 'मुझे तलाक़ दो', तो उसने उसे पीटा और उससे कहा 'यह तलाक़ है', तो यह नहीं होता। लेकिन अगर उसने कहा 'यह तुम्हारा तलाक़ है', तो यह हो जाता है।[3]

पत्नी ने कहा: 'मुझे तलाक़ दो', तो पति ने उसे पीटा और कहा 'यह तलाक़ है' तो तलाक़ नहीं होगा। और यदि कहा 'यह तलाक़ तुम्हें तलाक़ है' तो तलाक़ हो जाएगा। (त)

इस कथन से स्पष्ट हो गया कि दूसरे विद्वान का उत्तर पूरी तरह से असत्य और गलत था। नीयत (इरादे) की स्थिति में तीन तलाक़ होंगे जिनमें रुजू (वापसी) असंभव है, और नीयत न होने की स्थिति में एक भी नहीं होगा, अतः रुजू का विचार मात्र एक असंभव विचार है। और पहले विद्वान का उत्तर भी गलत था कि यहाँ तीन तलाक़ केवल नीयत की स्थिति में हैं, न कि निरपेक्ष रूप से। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला 124: सेरामपुर, जिला हुगली से, प्रेषक शेख बद्दू चटकाल के दरबान और मुहम्मद सिराज-उल-हक़, जामा मस्जिद के इमाम, 25 रबी-उल-आखिर 1336 हिजरी। मुहम्मद ज़फ़र का अपनी माँ से झगड़ा हो रहा था। उसकी माँ ने कहा कि 'यदि तुम अपनी बीवी को नहीं छोड़ोगे तो तुम सूअर खाओगे', उसने इसी तरह तीन बार कहा। मुज़फ़्फ़र ने कहा 'तलाक़ तलाक़ देते हैं'। फिर उसने बिना इरादे के गुस्से में अपनी माँ के सामने कहा 'तलाक़ तलाक़ तलाक़', बिना किसी को संबोधित किए। अब शरीयत के अनुसार, पूछी गई स्थिति में क्या ज़फ़र की बीवी पर तलाक़ लागू होगा या नहीं?

उत्तर: तीन तलाक़ हो गए, बिना हलाला के वह उसके निकाह में नहीं आ सकती। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

---

1. फतावा अल-क़रवीया, अध्याय: जिससे तलाक़ होता है और जिससे नहीं, दार-उल-इशाअत कंधार अफ़गानिस्तान 1/72
2. बहर-उर-राइक़, तलाक़ का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची 3/253
3. फतावा हिंदिया, फारसी शब्दों में तलाक़ पर सातवां अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर 1/382

पृष्ठ 360/688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

ان قال اردت امرأتی یقع والا لا۔ 1 اگر خاوند نے کہا کہ میری مراد میری بیوی تھی تو طلاق ورنہ نہیں۔ (ت)

بحرالرائق میں ہے:

لو قال طالق فقیل لہ من عنیت فقال امرأتی طلقتْ امرأتہ۔ 2 اگر خاوند نے کہا "طلاق"۔ اس سے پوچھا گیا کہ تیری کیا مراد ہے جواب دیا کہ میری بیوی مراد ہے تو اس کی بیوی کو طلاق ہو جائے گی۔ (ت)

عالمگیریہ میں خلاصہ سے ہے:

قالت طلقنی فضربہا وقال لہا اینک طلاق لا یقع ولو قال اینکت طلاق یقع۔ 3 بیوی نے کہا: "مجھے طلاق دے"، تو خاوند نے اس کو پیٹ دیا اور کہا "یہ طلاق ہے" تو طلاق نہ ہو گی، اور اگر کہا "یہ طلاق تجھے طلاق ہے" تو طلاق ہو جائیگی۔ (ت)

اس بیان سے واضح ہو گیا کہ دوسرے عالم کا جواب تو محض باطل و ناصواب تھا۔ بحال نیت تین طلاقیں ہوں گی جن میں رجعت محال، اور بحال عدم نیت ایک بھی نہ ہو گی تو رجعت کا خیال محض خیالِ محال، اور پہلے عالم کا جواب بھی غلط تھا کہ یہاں تین طلاقیں صرف بصورتِ نیت ہیں، نہ مطلقاً۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۲۴: از سیرام پور ضلع ہو گلی مرسلہ شیخ بد و دربان چٹکل و محمد سراج الحق امام مسجد جامع ۲۵ ربیع الآخر ۱۳۳۶ھ محمد ظفر کا اپنی والدہ سے جھگڑا ہو رہا تھا اس کی والدہ نے کہا کہ اگر اپنی بی بی کو نہ چھوڑو گے تو تم سُور کھاؤ، اسی طرح تین مرتبہ بولی، مظفر نے کہا طلاق

طلاق دیتے ہیں، پھر اس نے بلا قصد غصہ کے ساتھ اپنی والدہ کے سامنے کہا طلاق طلاق طلاق، بغیر مخاطب کرنے کسی کو اب شرعاً صورت مسئولہ میں ظفر کی بی بی پر طلاق پڑے گی یا نہیں؟

الجواب: تین طلاقیں ہو گئیں، بے حلالہ اس کے نکاح میں نہیں آسکتی۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

---

1. فتاویٰ القرویہ الفصل ما یقع بہ الطلاق و ما لا یقع بہ دارالاشاعت قندھار افغانستان ۱/ ۷۲
2. بحرالرائق باب الطلاق ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳/ ۲۵۳
3. فتاویٰ ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالالفاظ الفارسیۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۸۲

Fatawa Razawiyya, Volume 12

Problem 125: From Mau Nath Bhanjan, office of Madrasa Darul Uloom, District Azamgarh, 15 Rabi al-Awwal Sharif 1338 AH, copy of a valuable stamp paper. Jamman son of Manna, I write to them that I will fully bear the expenses of your daughter Ulfat, and will not do anything against the order of Alimullah Sattar Baz. If I disobey your order, whatever you and all the panchs (elders) want to do, I will accept it all because I have no mother and father, you people are my mother and father. Date: 20 March 1917 AD. And if everything is contrary, then on this condition, divorce. Thumb impression of Jamman the deponent, Names of witnesses: (2) Alimullah Sattar Baz. As for our daughter Ulfat, if I pass away, then all the goods in our house, whatever wealth there is, and whatever debt is on us, she should pay all of Ulfat's debt too, and she should take the wealth etc., others have no relation to it. The remaining witnesses are mentioned above, signed by Abdul Rahman Qoul Ajmeri by his own pen, Muhammad Ibrahim son of Muhammad Ismail. This fatwa has come from Bombay but the question is very ambiguous, i.e., it is about an agreement. The agreement is written on a rupee stamp paper, and it should also be clear that Jamman's marriage took place four days after this agreement. After the marriage, the mentioned Jamman used to live with his father-in-law along with Ulfat, but about two years ago, Alimullah left his in-laws and wife and took to wandering in Bombay, and neither provides food and clothing to the wife nor takes any care of her. Notices were also sent from Musammat Ulfat and Alimullah Sattar Baz, but he does not give any answer. Therefore, is Musammat Ulfat now divorced or not?

The Answer: In the mentioned situation, divorce cannot happen in any way. Aside from the flaw in the words of the agreement where the divorce is not attributed to the woman, and in which Jamman has room to deny that he did not intend to divorce his wife; since this agreement was written before the marriage and there is no mention of the condition of marriage in it, even if it was clearly written that 'if I do this, there are three divorces on Ulfat', and he did so, even then the divorce would never have occurred. Because at that time there was no ownership (marriage), nor was it attributed to her (the wife), nor to the cause of ownership. Therefore, the statement is void. And Allah the Almighty knows best.

Problem 126: Village Maniwal, District Bijnor, from Kifayat Ali Sahab and Himayat Ali Sahab, 2 Shawwal 1339 AH. Respected Sir! After salutations, it is submitted that the servant's wife does not obey, persuasion has no effect, parents are also unhappy. It is the wish of the parents that I give her a divorce. So, in what manner should she be

divorced? Neither the humble servant nor the parents have the strength to pay even a penny of dower (Mahr). I had accepted a dower of two hundred and five (205) Ashrafi coins, the woman does not forgive...

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

मसाला 125: मऊ नाथ भंजन, मदरसा दारुल उलूम का कार्यालय, जिला आज़मगढ़, 15 रबी-उल-अव्वल शरीफ़ 1338 हिजरी, एक कीमती स्टाम्प पेपर की नकल। जम्मन इब्न मन्ना, मैं उन्हें लिखकर देता हूँ कि मैं आपकी बेटी उल्फ़त का पूरा खर्चा उठाऊँगा और अलीमुल्लाह सत्तार बाज़ के हुक्म के ख़िलाफ़ कोई काम नहीं करूँगा। अगर मैं आपके हुक्म की अवहेलना करूँतो आप और सभी पंच जो चाहें करें, मुझे सब मंज़ूर है क्योंकि हमारे कोई माँ-बाप नहीं हैं, आप लोग हमारे माँ-बाप हैं। दिनांक 20 मार्च 1917 ईस्वी। और अगर सब ख़िलाफ़ हो तो इस शर्त पर तलाक़। अंगूठे का निशान जम्मन मुक़र्रिर (कर्ता), गवाहों के नाम (2) अलीमुल्लाह सत्तार बाज़। हमारी लड़की उल्फ़त के लिए, अगर हम मर जाएँ तो हमारे घर का सामान और जितना माल हो और जितना हम पर कर्ज हो, वह सब उल्फ़त का कर्ज भी चुकाए और वह माल आदि ले ले, दूसरों का इससे कोई संबंध नहीं है। शेष गवाह ऊपर उल्लेखित हैं, हस्ताक्षर अब्दुल रहमान क़ौल अज़मेरी द्वारा स्वयं के कलम से, मोहम्मद इब्राहिम इब्न मोहम्मद इस्माइल। यह फ़तवा बम्बई से आया है लेकिन सवाल बहुत अस्पष्ट है यानी यह एक इकरारनामे (समझौते) के बारे में है। यह इकरारनामा एक रुपये के स्टाम्प पेपर पर लिखा है, और यह भी स्पष्ट रहे कि जम्मन का निकाह इस इकरारनामे के चार दिन बाद हुआ। निकाह के बाद उक्त जम्मन अपनी पत्नी उल्फ़त के साथ अपने ससुर के घर रहता था, लेकिन लगभग दो साल पहले अलीमुल्लाह अपने ससुराल और पत्नी को छोड़कर बम्बई में आवारागर्दी करने लगा और न तो पत्नी को रोटी-कपड़ा देता है और न ही किसी प्रकार की देखभाल करता है। मुसम्मात उल्फ़त और अलीमुल्लाह सत्तार बाज़ की ओर से नोटिस भी दिए गए, लेकिन वह कोई जवाब नहीं देता। अतः अब मुसम्मात उल्फ़त को तलाक़ हुआ या नहीं?

जवाब: उपरोक्त स्थिति में तलाक़ किसी भी तरह नहीं हो सकता। इकरारनामे के शब्दों में उस दोष को दरकिनार करते हुए, जिसमें तलाक़ का संबंध औरत से नहीं जोड़ा गया है और जिसमें जम्मन को यह कहने की गुंजाइश मिलती है कि पत्नी को तलाक़ देने का इरादा नहीं था; चूँकि यह इकरारनामा निकाह से पहले लिखा गया था और इसमें निकाह की शर्त का कोई उल्लेख नहीं है, इसलिए अगर साफ़-साफ़ यह भी लिखा होता कि 'अगर मैं ऐसा करूँ तो उल्फ़त पर तीन तलाक़', और वह ऐसा करता भी, तब भी तलाक़ कभी नहीं होता। क्योंकि उस समय न तो मिल्कियत (निकाह) थी, न ही उसकी ओर (पत्नी की ओर) संबंध था और न ही मिल्कियत के किसी कारण की ओर। अतः कथन व्यर्थ है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसाला 126: गाँव मानीवाला, जिला बिजनौर, किफ़ायत अली साहब और हिमायत अली साहब की ओर से, 2 शव्वाल 1339 हिजरी। हुज़ूर वाला! सलाम के बाद अर्ज़ है कि ग़ुलाम की बीवी आज्ञा नहीं मानती, समझाने का कोई असर नहीं होता, माता-पिता भी नाख़ुश हैं। माता-पिता की इच्छा है कि तलाक़ दे दूँ, तो हुज़ूर उसे किस तरीक़े से तलाक़ दी जाए? न तो इस खाकसार और न ही माता-पिता में महर की एक कौड़ी देने की ताक़त है। मैंने दो सौ पाँच (205) अशर्फ़ियों का महर स्वीकार किया था, औरत माफ़ नहीं करती...

पृष्ठ 361 का 688

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

مسئلہ ۱۲۵: از مئو ناتھ بھنجن دفتر مدرسہ دار العلوم ضلع اعظم گڑھ ۱۵ ربیع الاول شریف ۱۳۳۸ھ نقل اسٹامپ قیمتی عد۔ جمن ابن منا، میں ان کو لکھ کر دیتا ہوں کہ آپ کی لڑکی کی الفت کا خرچ بھر پورا کروں گا اور بغیر علیم اللہ ستار باز کے حکم کے خلاف کوئی کام نہیں کروں گا اگر آپ کی حکم عدولی کروں تو آپ اور سب پنچ جو چاہیں کریں سب منظور ہے کیونکہ ہمارا کوئی ماں اور باپ نہیں ہے آپ لوگ ہمارے ماں اور باپ ہیں تاریخ ۲۰ مارچ ۱۹۱۷ء، اور اگر سب خلاف ہو تو اس شرط پر طلاق۔ نشانی انگوٹھا جمن مقرر، اسمائے شاہدان (۲) علیم اللہ ستار باز۔ ہماری لڑکی کی الفت جو ہے اگر ہم قضا کر جائیں تو ہمارے گھر سامان اور جتنامال ہوا اور جتنا ہم پر قرض ہو سب الفت کا قرض بھی وہ سب دے اور مال وغیرہ وہ لے اور دوسرے کا تعلق نہیں، باقی گواہ اوپر گزرے، دستخط عبد الرحمن قول اجمیری بقلم خود، محمد ابراہیم ابن محمد اسمعیل۔ یہ فتویٰ بمبئی سے آیا ہے مگر سوال نہایت مہمل یعنی اقرار نامہ کا ہے، اسی روپیہ کا اسٹامپ پر اقرار نامہ تحریر ہے، اور یہ بھی واضح رہے کہ جمن کا نکاح اس اقرار نامہ کے چار روز بعد ہوا، بعد نکاح جمن مذکور الفت کو لے کر اپنے سسر کے ساتھ رہتا تھا مگر قریب دو برس کے ہوئے علیم اللہ اپنے سسرال اور بیوی کو بھی چھوڑ کر بمبئی میں آوارگی اختیار کیا ہے اور بیوی کو نہ روٹی کپڑا دیتا ہے نہ کسی قسم کی خبر گیری کرتا ہے، نوٹس بھی مسماۃ الفت و علیم اللہ ستار باز کے طرف سے دیگئی مگر کچھ جواب نہیں دیتا لہذا اب مسماۃ الفت مطلقہ ہوئی یا نہیں؟

الجواب: صورتِ مذکورہ میں طلاق کسی طرح نہیں ہو سکتی، قطع نظر اس نقص کے جو الفاظِ اقرار نامہ میں ہے جس میں عورت کی طرف اضافتِ طلاق نہیں اور اس میں جمن کو اس انکار کی گنجائش ملتی ہے کہ زوجہ کو طلاق مراد نہ تھی، جب یہ اقرار نامہ نکاح سے پہلے لکھا گیا اور

اس میں شرطِ نکاح کا ذکر نہیں تو اگر صاف یوں لکھا ہوتا کہ میں ایسا کروں تو الفت پر تین طلاقیں، اور ویسا کرتا جب بھی ہرگز طلاق نہ ہوتی اذ لا ملک حینئذ والا اضافۃ الیہ والیہ الی سببہ فلغنی (کیونکہ ابھی تک ملکیت نہیں اور نہ ہی ملکیت کی طرف نسبت اور نہ ملکیت کے کسی سبب کی طرف نسبت ہوئی، تو کلام لغو ہو۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۲۶: موضع مانیوالہ ضلع بجنور از کفایت علی صاحب وحمایت علی صاحب ۲ شوال ۱۳۳۹ھ حضور والا ! بعد سلام عرض ہے کہ غلام کی بیوی اطاعت نہیں کرتی، سمجھا اثر نہیں کرتا، والدین بھی ناخوش ہیں والدین کی خوشی ہے کہ طلاق دے دو تو حضور اس کو کس طریقہ سے طلاق دی جائے خاکسار اور والدین میں ایک کوڑی مہر دینے کی طاقت نہیں مہر دوسو پانچ ۲۰۵ اشرفیاں میں نے قبول کر لیا تھا، عورت معاف نہیں

Fatawa Razawiyya, Volume 12

...not a single penny of the dower (Mahr) is a government stamp paper; even through a court, the woman's guardian cannot take a single penny. When asked a local cleric, he said that according to Sharia, she should be given twelve and a half rupees. Explain and you shall be rewarded.

The Answer: If you wish to give a divorce, when the woman is free from menstruation and before having intercourse, say to her once: "I have divorced you." Then leave her and stay completely separate from her until three menstrual cycles have started and ended after the divorce. At that time, she will be out of the marriage contract. And if she does not forgive the dower, then in any case, paying two hundred and five gold coins (Ashrafis) will be mandatory. He was some ignorant person who said twelve and a half rupees. And Allah Almighty knows best.

Issue 172: From Bajnath Bara, District Raipur, sent by Sheikh Akbar Hussain Sahib, trustee of the Bajnath Bara mosque, 13 Dhu al-Qi'dah 1313 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A person was unaware of his wife's maintenance. One of the wife's heirs came and said to him, "If you cannot provide maintenance, then give her a divorce." Consequently, he gave the divorce in front of that person. So, did this divorce occur or not, because the woman was not present there? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: The divorce has occurred. The woman's presence there is not a condition for divorce. "Fa-inna izalatun la 'aqdan kama la yakhafa" (Because this is the removal of a marriage contract, not the formation of a contract, as is not hidden. - Trans.). And Allah Almighty knows best.

Issue 178: From Pilibhit, sent by Sheikh Faiz Muhammad Sahib, 6 Rabi' al-Thani 1320 AH. Zaid was residing alone in his house; he divorced his wife, but neither his wife heard it nor any other person, because other people were in another house. So, did the divorce occur or not? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: For a divorce, it is not necessary for the wife or anyone else to hear it. Rather, the husband should utter the words of divorce with his tongue in a voice capable of reaching his own ears (even if they didn't reach due to some noise, clamor, or hearing impairment). Before Allah, the divorce has occurred. When the woman finds out, she should also consider herself divorced. Yes, if it was only in the heart...

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

...लेकिन महर की एक कौड़ी का सरकारी स्टांप पेपर नहीं है, कचहरी से भी औरत का वली (अभिभावक) एक कौड़ी नहीं ले सकता। यहाँ के मौलवी से पूछा तो उन्होंने कहा कि शरीअत के अनुसार उसे साढ़े बारह रुपये दिए जाने चाहिए। बयान फरमाएं और सवाब पाएं।

अल जवाब: अगर आप तलाक देना चाहें, तो जब औरत मासिक धर्म (हैज़) से फारिग हो जाए और संभोग (जिमा) से पहले उससे एक बार कहें कि "मैंने तुझे तलाक दी," फिर उसे छोड़ दें और उससे बिल्कुल अलग रहें यहाँ तक कि तलाक के बाद तीन मासिक धर्म शुरू होकर खत्म हो जाएं। उस समय वह निकाह से बाहर निकल जाएगी। और अगर वह महर माफ न करे, तो हर हाल में दो सौ पांच अशर्फियां देना अनिवार्य होगा। वह कोई अज्ञानी व्यक्ति था जिसने साढ़े बारह रुपये बताए। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 172: बजनाथ बाड़ा, जिला रायपुर से, प्रेषक शेख अकबर हुसैन साहब, मुतवल्ली मस्जिद बजनाथ बाड़ा, 13 ज़ी-क़ादा 1313 हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फरमाते हैं कि एक व्यक्ति अपनी पत्नी के भरण-पोषण (नान-नफ़क़ा) से बेखबर था। पत्नी के वारिसों में से किसी ने आकर उससे कहा कि अगर भरण-पोषण नहीं दे सकते तो तलाक दे दो। चुनांचे उसने उसी समय उस आदमी के सामने तलाक दे दी। तो क्या यह तलाक हुई या नहीं क्योंकि औरत वहां नहीं थी? बयान फरमाएं और सवाब पाएं।

अल जवाब: तलाक हो गई, तलाक के लिए औरत का वहां मौजूद होना कोई शर्त नहीं है। "फ़इन्ना इज़ालतुन ला अक़्दन कमा ला यख़्फ़ा" (क्योंकि यह निकाह को खत्म करना है, निकाह करना नहीं, जैसा कि छुपा नहीं है। - अनुवाद)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 178: पीलीभीत से, प्रेषक शेख फैज़ मुहम्मद साहब, 6 रबी-उल-आख़िर 1320 हिजरी। ज़ैद अपने घर में अकेला रह रहा था, उसने अपनी पत्नी को तलाक दे दी लेकिन न तो पत्नी ने सुना और न ही किसी दूसरे व्यक्ति ने, क्योंकि दूसरे लोग दूसरे घर में थे। तो, क्या तलाक हुई या नहीं? बयान फरमाएं और सवाब पाएं।

अल जवाब: तलाक के लिए पत्नी या किसी और का सुनना ज़रूरी नहीं है, बल्कि शौहर अपनी ज़ुबान से तलाक के शब्द ऐसी आवाज़ में कहे जो उसके खुद के कानों तक पहुँचने के योग्य हों (चाहे किसी

शोर-गुल या कम सुनाई देने के कारण न पहुँची हों)। अल्लाह के नज़दीक तलाक हो गई। जब औरत को खबर हो तो वह भी खुद को तलाक़शुदा समझे। हाँ, अगर सिर्फ दिल में तलाक...

पेज 362 का 688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

کرتی مگر مہر کی ایک کوڑی کا گورنمنٹ کا غذا سٹامپ نہیں ہے کچہری سے بھی عورت کا ولی ایک کوڑی نہیں لے سکتا، یہاں کے مولوی سے دریافت کیا تو یہ کہا کہ شرعا اسے ساڑھے بارہ روپے دینے چاہئے۔ بینوا توجروا

الجواب: اگر آپ طلاق دینا چاہیں تو عورت جب حیض سے فارغ ہو اس کے بعد قبل جماع اس سے ایک بار کہئے کہ میں نے تجھے طلاق دی، پھر اسے چھوڑے رہئے اور اس سے بالکل الگ رہئے یہاں تک کہ طلاق کے بعد تین حیض شروع ہو کر ختم ہو جائیں اس وقت وہ نکاح سے نکل جائے گی، اور مہر وہ معاف نہ کرے تو بہر حال دوسو پانچ اشرفیاں دینا لازم ہوں گی، وہ کوئی جاہل شخص تھا جس نے ساڑھے بارہ روپے بتائے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۷۲: از بجنا تھ باڑہ ضلع رائے پور مرسلہ شیخ اکبر حسین صاحب متولی مسجد بجنا تھ باڑہ ۱۳ ذیقعدہ ۱۳۱۳ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص اپنی عورت کے نان نفقہ سے بے خبر تھا کہ عورت کے وارثوں میں سے کسی نے آن کر اس سے کہا کہ اگر نان نفقہ نہیں دے سکتا تو طلاق دے دے۔ چنانچہ اسی وقت اس آدمی کے رو برو طلاق دے دی تو یہ طلاق ہوئی یا نہیں کیونکہ عورت وہاں نہ تھی۔ بینوا توجروا۔

الجواب: طلاق ہو گئی، طلاق کے لئے عورت کا وہاں حاضر ہونا کچھ شرط نہیں فان ازالۃ لاعقد کما لا یخفی (کیونکہ یہ ازالہ نکاح ہے نکاح نہیں ہے (تاکہ حاضری ضروری ہوتی) جیسا کہ مخفی نہیں۔ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۷۸: از پیلی بھیت مرسلہ شیخ فیض محمد صاحب ۶ ربیع الآخر ۱۳۲۰ھ زید اپنے مکان میں تنہا مقیم تھا اس نے اپنی زوجہ کو طلاق دی لیکن زوجہ نے نہ سنی نہ دوسرے آدمی نے ، اس وجہ سے کہ اور آدمی دوسرے مکان میں تھے، پس طلاق ہوئی یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: طلاق کے لئے زوجہ خواہ کسی دوسرے کا سننا ضرور نہیں بلکہ شوہر اپنی زبان سے الفاظ طلاق ایسی آواز سے کہے جو اس کے کان تک پہنچنے کے قابل تھے (اگر چہ کسی غل شور یا ثقل سماعت کے سبب نہ پہنچی عنداللہ طلاق ہو گئی، عورت کو خبر ہو تو وہ بھی اپنے آپ کو مطلقہ جانے، ہاں اگر صرف دل میں طلاق

Fatawa Rizvia Volume 12

...if it were given, it would not happen by consensus, or if he uttered the words with his tongue but in such a way that the tongue only moved and the sound was not even audible to his own ears, then according to the most correct opinion in the school of thought, it would not happen in this way either.

| In Al-Durr al-Mukhtar: The minimum of loud recitation (jahr) is making others hear, and the minimum of silent recitation (mukhafata) is making oneself hear. This rule applies to every matter related to speech, such as the Takbir (Bismillah) over a slaughtered animal, the obligation of prostration of recitation, manumission, divorce, and making an exception. So, if one divorces or makes an exception and does not hear himself, it is not valid according to the most correct opinion. (Summarized). And Allah Almighty knows best. | It is stated in Durr al-Mukhtar that the minimum for loud speech is that another person can hear, and the minimum for silent speech is that one can hear themselves. This rule is for every such place that is related to speech, such as saying Bismillah over a slaughtered animal, the obligation of prostration on the prostration of recitation, freeing a slave, giving divorce, and making an exception in speech. Therefore, if one gave a divorce or made an exception and did not hear it themselves, then according to the most correct school of thought, the divorce and exception will not be valid. (Summarized). And Allah Almighty knows best (T). |

Issue 129: From Badaun, Farsholi Tola, Sheikh Wahab-ud-din Ahmad Sahib, 27 Rajab 1327 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid said these words to his wife Hindah, "You may marry Amr or Bakr," and Zaid, addressing his father in the presence of Hindah's parents, said, "Have my wife married to Walid." Two or three months after this incident, Zaid came to Hindah's house and, in the absence of Hindah and her parents, addressing a person who was not the primary subject, said, "I give divorce, I give divorce, I give divorce if they do not send [her] with me right now." That person started to leave after hearing these words, then Zaid repeated the same words, and Hindah was not sent with him. Hindah was pregnant. On the same day, after leaving Hindah's house, he said that he had said these words to threaten her so they would send his wife with him, and "I now take back my words, take back, take back." This incident occurred on 10 Jumada al-Thani 1327 AH. Zaid has been ill with the condition of melancholia (muraq) for over a year. Has divorce occurred in this situation or not? And is there a need for the renewal of marriage or not?

The Answer: The questioner stated that in these final words, "I give divorce, I give divorce if they do not send [her] with me right now," Zaid did not say any word attributing it to the woman—not her name, lineage, description, title, or gesture, such as "such and such woman" or "daughter of such and such" or "my wife" or "her," etc. No such word...

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter on the Imam's loud recitation, Mujtabai Press Delhi, 1/79-80. Page 363 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

...दे दी तो सर्वसम्मति से नहीं होगी, या ज़बान से शब्द तो कहे लेकिन इस तरह कि ज़बान में सिर्फ हलचल हुई और आवाज़ अपने कान तक आने के भी योग्य न थी, तो सबसे सही मत (मज़हब-ए-असह) में इस तरह भी नहीं होगी।

| 'दुर्रे मुख़्तार' में है कि कम से कम 'जहर' (ऊंची आवाज़) यह है कि दूसरा सुन सके और कम से कम 'खफा' (धीमी आवाज़) यह है कि खुद सुन सके। यह नियम हर उस स्थान के लिए है जिसका संबंध बोलने (नक़्ल) से हो, जैसे ज़बीहा (ज़बह किए गए जानवर) पर 'बिस्मिल्लाह', सजदा-ए-तिलावत का अनिवार्य होना, गुलाम को आज़ाद करना, तलाक देना, और बातचीत में कोई अपवाद (इस्तस्ना) करना। इसलिए यदि तलाक दी या अपवाद किया और खुद नहीं सुना तो सबसे सही मत के अनुसार तलाक और अपवाद सही नहीं होगा। (संक्षेप में)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। | दुर्रे मुख़्तार में है कि कम से कम जहर यह है कि दूसरा सुने और कम से कम खफा यह है कि खुद सुन सके। यह नियम हर ऐसे स्थान के लिए है जिसका संबंध बोलने से हो, जैसे ज़बीहा पर बिस्मिल्लाह, सजदा तिलावत पर सजदा का अनिवार्य होना, गुलाम को आज़ाद करना, तलाक देना, और कलाम (भाषण) में कोई अपवाद करना। अतः यदि तलाक दी या अपवाद किया और खुद न सुना, तो सही मज़हब के अनुसार तलाक और अपवाद मान्य नहीं होगा। (संक्षेप में)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है (त)। |

मसला 129: बदायूँ, फरशोली टोला, शेख वहाब-उद-दीन अहमद साहब, 27 रजब 1327 हिजरी। क्या फरमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि ज़ैद ने अपनी पत्नी हिंदा से ये शब्द कहे कि "तू अम्र या बक्र से निकाह कर ले" और ज़ैद ने अपने पिता को संबोधित करते हुए हिंदा के माता-पिता की मौजूदगी में कहा कि "मेरी पत्नी का निकाह वलीद से करा दो।" इस घटना के दो-तीन महीने बाद ज़ैद हिंदा के घर आया और हिंदा तथा उसके माता-पिता की अनुपस्थिति में एक गैर-संबोधित व्यक्ति से कहा, "मैं तलाक देता हूँ, तलाक देता हूँ, तलाक देता हूँ अगर इस समय [उसे] मेरे साथ न भेजें।" वह व्यक्ति इन शब्दों को सुनकर जाने लगा तो ज़ैद ने फिर उन्हीं शब्दों को दोहराया और हिंदा को उसके साथ नहीं भेजा गया। हिंदा गर्भवती थी। उसी दिन हिंदा के घर को छोड़ने के बाद उसने कहा कि मैंने ये शब्द डराने के लिए कहे थे ताकि वे मेरी पत्नी को मेरे साथ कर दें और "मैं अब अपने शब्द वापस लेता हूँ, वापस लेता हूँ, वापस लेता हूँ।" यह घटना 10 जमादी-उल-सानी 1327 हिजरी की है। ज़ैद

एक साल से अधिक समय से 'मराक' (उदासी/उन्माद) की बीमारी से पीड़ित है। क्या इस स्थिति में तलाक हुई या नहीं? और निकाह के नवीनीकरण (तजदीद-ए-निकाह) की आवश्यकता है या नहीं?

अल-जवाब: प्रश्नकर्ता ने व्यक्त किया कि ज़ैद ने इन अंतिम शब्दों में कि "मैं तलाक देता हूँ, तलाक देता हूँ अगर इस समय मेरे साथ न भेजें," औरत की ओर संकेत करने वाला कोई शब्द नहीं कहा था —न नाम, न वंश, न विशेषता, न उपाधि, न कोई इशारा, उदाहरण के लिए "अमुक स्त्री" या "अमुक की बेटी" या "अपनी पत्नी" या "उसे" इत्यादि। इस प्रकार का कोई शब्द...

[1] दुर्रे मुख़्तार, अध्याय: इमाम का सस्वर पाठ करना, मुज्तबाई प्रेस दिल्ली, 1/79-80. पृष्ठ 363 / 688

دے لی تو بالاجماع نہ ہوگی، یا زبان سے لفظ تو کہے مگر ایسے کہ زبان کو صرف جنبش ہوئی آواز اپنے کان تک آنے کے بھی قابل نہ تھی تو مذہب اصح میں یوں بھی نہ ہوگی۔

| فی الدرالمختار ادنی الجھر اسماع غیرہ ادنی المخافتۃ اسماع نفسہ ویجری ذلك فی کل مایتعلق بالنطق کتسمیۃ علی ذبیحۃ ووجوب سجدۃ تلاوۃ وعتاق وطلاق واستثناء فلو طلق او استثنی ولم یسمع نفسہ لم یصح فی الاصح اھ بالاختصار۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ | در مختار میں ہے کہ کم از کم جہر یہ ہے کہ دوسرا سنے اور کم از کم خفاء یہ ہے کہ خود سن سکے۔ یہ ضابطہ ہر ایسے مقام کے لئے ہے جس کا تعلق نطق سے ہو، جیسے ذبیحہ پر بسم اللہ، سجدہ تلاوت پر سجدہ کا وجوب، غلام کو آزاد کرنا، طلاق دینا، اور کلام میں کوئی استثناء کرنا، لہذا اگر طلاق دی یا استثناء کیا اور خود نہ سنا تو اصح مذہب پر طلاق اور استثناء صحیح ہوگا اھ اختصارًا واللہ تعالٰی اعلم (ت) |

مسئلہ ۱۲۹: از بدایوں فرشولی ٹولہ شیخ وہاب الدین احمد صاحب ۲۷ رجب ۱۳۲۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے ہندہ اپنی زوجہ سے یہ الفاظ کہے کہ تو عمرو یا بکر سے نکاح کر لے اور زید اپنے والد کو مخاطب کر کے بموجودگی والدین ہندہ یہ کہا میری بیوی کا نکاح ولید سے کرادو۔ اس واقعہ سے دو تین مہینہ کے بعد زید نے ہندہ کے مکان پر آن کر ہندہ اور اس کے والدین کی عدم موجودگی میں ایک غیر مخاطب کر کے کہا میں طلاق دیتا ہوں طلاق دیتا ہوں طلاق دیتا ہوں اگر اس وقت میرے ساتھ نہ بھیجیں۔ وہ شخص ان الفاظ کو سن کر چلنے لگا تو زید نے پھر انہی الفاظ کا اعادہ کیا اور ہندہ اس کے ساتھ نہ بھیجی گئی، ہندہ حاملہ تھی، اور اسی روز ہندہ کے گھر کو چھوڑنے کے بعد یہ کہا کہ میں نے یہ الفاظ دھمکانے کو کہے تھے تاکہ میری بیوی میرے ساتھ کر دیں اور میں اپنے الفاظ اب واپس لیتا ہوں، واپس لیتا ہوں، واپس لیتا ہوں۔ یہ

واقعہ ۱۰ جمادی الثانی ۱۳۲۷ ھ ہجری نبوی کا ہے۔ زید عرصہ زائد از سال سے بعارضہ مراق علیل ہے آیا اس صورت میں طلاق واقع ہوئی یا نہیں؟ اور تجدید نکاح کی ضرورت ہے یا نہیں؟

الجواب: سائل نے اظہار کیا کہ زید نے ان اخیر الفاظ میں کہ میں طلاق دیتا ہوں طلاق دیتا ہوں اگر اس وقت میرے ساتھ نہ بھیجیں کوئی لفظ عورت کی طرف اضافت کا نہ کہا تھا، نہ نام نہ نسب، نہ وصف نہ لقب، نہ اشارہ مثلاً فلاں عورت یا فلاں کی بیٹی یا اپنی زوجہ کو یا اس کو وغیرہ وغیرہ کوئی لفظ اس قسم

۱ در مختار فصل ویجھر الامام مطبع مجتبائی دہلی ۱/۸۰-۷۹ Page 363 of 688

Fatawa Razawiyya - Volume 12

...as if this speech was not in response to any question from which an attribution (to the wife) would arise, but rather he repeatedly uttered these words initially. In this case, an oath should be taken from Zaid; if he swears that he did not mean his wife by those words, then the ruling of divorce (Talaq) shall not be given.

Arabic Text	English Translation
وذلك لان زيداً انكر ارادة الطلاق بها والاضافة كما في السؤال فيكون القول قوله بيمينه وان كان الظاهر ارادة المرأة بذلك لانه نوى محتمل كلامه فيصدق۔	This is because Zaid denied the intention of divorce with these words and also denied the attribution, as stated in the question. Therefore, his statement will be accepted upon his oath, even though outwardly it appears that the wife could be meant by it, because he intended a possible meaning of his speech, so he shall be believed. (T)

It is stated in Khania and Bazzazia, etc.: | Arabic Text | English Translation | | :--- | :--- | | قال لها لا تخرجی من الدار الا باذنی فانی حلفت بالطلاق، فخرجت لا یقع لعدم ذکرہ حلفہ | | بطلاقها ویحتمل الحلف بطلاق غیرها فالقول له۔ اھ | The husband said to his wife, 'Do not leave the house without my permission for I have sworn an oath of divorce.' She went out. In this situation, divorce will not occur because there was no mention of the wife's divorce in the oath, while there is a possibility that the oath pertained to the divorce of another woman. Therefore, the husband's word will be reliable. (T) |

In Hindiyya, from Muhit it is stated: | Arabic Text | English Translation | | :--- | :--- | | سئل شیخ الاسلام الفقیه ابونصر عن سکران قال لامرأته اتریدین ان اطلقك فقالت نعم، فقال اگر تو زن منی یك طلاق دو طلاق سہ طلاق قومی و اخرجی من عندی وهو یزعم انه لم یرد به الطلاق فالقول قوله۔ | Sheikh-ul-Islam Faqih Abu Nasr was asked about a drunken man who said to his wife, 'Do you want me to divorce you?' She replied 'Yes.' Then the husband said (in Persian), 'If you are my wife, one divorce, two divorces, three divorces, get up and leave my presence.' Later he claims that he did not intend divorce by this. His statement will be considered reliable. (T) |

1. Fatawa Bazzazia on the margin of Al-Fatawa al-Hindiyya, Book of Oaths, Noorani Kutub Khana Peshawar, 4/270
2. Fatawa Hindiyya, Seventh Chapter on Divorce in Persian Words, Book of Oaths, 1/383

फ़तावा रज़विया - जिल्द बारहवीं

...मानों कि यह कलाम किसी सवाल के जवाब में न था जिससे निस्बत (बीवी की तरफ) पैदा हो, बल्कि शुरुआत ही इन्हीं अल्फ़ाज़ से की और उसे बार-बार कहा। इस सूरत में ज़ैद से क़सम ली जाए, अगर वह हलफ़ उठाए कि इन अल्फ़ाज़ से उसकी बीवी मुराद न थी तो तलाक़ का हुक्म न दिया जाए।

अरबी इबारत	**हिंदी अनुवाद**
وذلك لان زيداً انكر ارادة الطلاق بها والاضافة كما في السؤال فيكون القول قوله بيمينه وان كان الظاهر ارادة المرأة بذلك لانه نوى محتمل كلامه فيصدق۔	यह इसलिए कि ज़ैद तलाक़ के इरादे से इन्कारी है और निस्बत से भी इन्कारी है जैसा कि सवाल में है, तो क़सम ले कर उसकी बात मान ली जाएगी अगरचे ज़ाहिरी तौर पर इससे बीवी मुराद हो सकती है लेकिन ख़ाविन्द के कलाम में एहतमाल पाया जाता है जिसकी नियत पर ख़ाविन्द की तसदीक़ की जाएगी। (त)

ख़ानिया व बज़्ज़ाज़िया वग़ैरह में है: | अरबी इबारत | हिंदी अनुवाद | | :--- | :--- | | قال لها لا تخرجی من الدار الا باذنی فانی حلفت بالطلاق، فخرجت لا یقع لعدم ذکرہ حلفہ بطلاقها ویحتمل الحلف بطلاق غیرها فالقول له۔ اھ | ख़ाविन्द ने बीवी को कहा 'घर से मेरी इजाज़त के बग़ैर बाहर मत निकलो क्योंकि मैंने तलाक़ की क़सम खाई है', तो बीवी निकल गई, इस सूरत में तलाक़ न होगी, क्योंकि क़सम में बीवी की तलाक़ का ज़िक्र नहीं है, जबकि क़सम में किसी और औरत की तलाक़ का एहतमाल भी है लिहाज़ा ख़ाविन्द की बात मोतबर होगी। (त) |

हिन्दिया में मुहीत से है: | अरबी इबारत | हिंदी अनुवाद | | :--- | :--- | | سئل شیخ الاسلام الفقیه ابونصر عن سکران قال لامرأته اتریدین ان اطلقك فقالت نعم، فقال اگر تو زن منی یك طلاق دو طلاق سہ طلاق قومی و اخرجی من عندی وهو یزعم انه لم یرد به الطلاق فالقول قوله۔ | शैख़ुल इस्लाम फ़क़ीह अबू नस्र से सवाल किया गया कि एक नशे वाले ने अपनी बीवी को कहा 'क्या तू चाहती है कि मैं तुझे तलाक़ दूँ?' तो बीवी ने कहा 'हाँ', तो ख़ाविन्द ने कहा 'अगर तू मेरी बीवी है एक तलाक़, दो तलाक़, तीन तलाक़, उठ जा, निकल मेरे पास से'। और फिर कहता है कि मैंने तलाक़ मुराद नहीं ली, तो उसकी बात मोतबर होगी। (त) |

1 फ़तावा बज़्ज़ाज़िया अल-हामिश अल-फ़तावा अल-हिन्दिया, किताबुल ईमान, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 4/270 2 फ़तावा हिन्दिया, अल-फ़स्ल अस-साबे फ़ी-त-तलाक़ बिल-अल्फ़ाज़ अल-फ़ारसिया, किताबुल ईमान, 1/383

पेज 364/688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

کانہ تھا، نہ یہ کلام کسی سوال کے جواب میں تھا جس سے اضافت پیدا ہو، بلکہ ابتدا یہی الفاظ اس نے مکرر کہے اس صورت میں زید سے قسم لی جائے اگر وہ حلف کرے کہ ان الفاظ سے اپنی زوجہ مراد نہ تھی تو حکم طلاق نہ دیا جائے۔

Arabic Text	Urdu Translation
وذلك لان زيداً انكر ارادة الطلاق بها والاضافة كما في السؤال فيكون القول قوله بيمينه وان كان الظاهر ارادة المرأة بذلك لانه نوى محتمل كلامه فيصدق۔	یہ اس لئے کہ زید طلاق کے ارادے سے انکاری ہے اور اضافت سے بھی انکاری ہے جیسا کہ سوال میں ہے تو قسم لے کر اس کی بات مان لی جائے گی اگرچہ ظاہری طور اس سے بیوی مراد ہو سکتی ہے لیکن کلام خاوند میں احتمال پایا جاتا ہے جس کی نیت پر خاوند کی تصدیق کی جائے گی۔ (ت)

خانیہ وبزازیہ وغیرہما میں ہے: | Urdu Translation | Arabic Text | | :--- | :--- |
| قال لها لا تخرجي من الدار الا باذني فانی حلفت بالطلاق، فخرجت لا يقع لعدم ذكره حلفه بطلاقها ويحتمل الحلف بطلاق غيرها فالقول له۔ اھ | خاوند نے بیوی کو کہا گھر سے میری اجازت کے بغیر باہر مت نکلو کیونکہ میں نے طلاق کی قسم کھائی ہے، تو بیوی نکل گئی، اس صورت میں طلاق نہ ہوگی، کیونکہ قسم میں بیوی کی طلاق کا ذکر نہیں ہے، جبکہ قسم میں کسی اور عورت کی طلاق کا احتمال بھی ہے لہذا خاوند کی بات معتبر ہوگی اھ (ت) |

ہندیہ میں محیط سے ہے: | Urdu Translation | Arabic Text | | :--- | :--- | | |
سئل شيخ الاسلام الفقيه ابونصر عن سكران قال لامرأته اتريدين ان اطلقك فقالت نعم، فقال اگر تو زن

منی یك طلاق دو طلاق سہ طلاق قومی و اخرجی من عندی وھو یزعم انہ لم یرد بہ الطلاق فالقول قولہ۔ | شیخ الاسلام فقیہ ابونصر سے سوال کیا گیا کہ ایک نشہ والے نے اپنی بیوی کو کہا "کیا تو چاہتی ہے کہ میں تجھے طلاق دوں؟" تو بیوی نے کہا ہاں، تو خاوند نے کہا "اگر تو میری بیوی ہے ایک طلاق، دو طلاق، تین طلاق، اٹھ جا، نکل میرے پاس سے"۔ اور پھر کہتا ہے کہ میں نے طلاق مراد نہیں لی، تو اس کی بات، معتبر ہوگی۔ (ت) |

1 فتاوٰی بزازیہ علی ہامش الفتاوٰی الہندیہ کتاب الایمان نورانی کتب خانہ پشاور ۴ / ۲۷۰ 2 فتاوٰی ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالالفاظ الفارسیہ کتاب الایمان ۱ / ۳۸۳

Similarly, the preceding words like "Marry Amr or Bakr, or have her married to Waleed" are dependent on intention. If said with the intention of divorce, one irrevocable (Ba'in) divorce takes place; if there was no intention of divorce, then nothing happens. Regarding the claim that he did not intend divorce with these words, his statement on oath is credible. If he takes an oath, the ruling of divorce will not apply. However, if in reality he did intend it and took a false oath, the sin is upon him. It is stated in Radd al-Muhtar:

In the commentary on Al-Jami' al-Saghir by Qadi Khan:

If he says: "Go, marry," and says "I did not intend divorce," nothing occurs because its meaning is: if you can, marry. And in Al-Dhakhirah: "Go, marry" takes place only with intention. If he intended one, it is one irrevocable; if he intended three, then three.

If a husband says to his wife "Go, get married," and then says "I did not intend divorce," no divorce will occur, because the meaning of his statement is "If it is possible for you, then get married."

And in Al-Dhakhirah: If a husband says "Go, marry," then with intention one irrevocable divorce will take place, and if he intended three, then three divorces will occur. (T)

Note: The matter here depends on this oath. If he denies all these words under oath, then one irrevocable divorce will take place, such that with the wife's consent, he can remarry her during or after the iddah (waiting period) without the need for halala. Without halala, he would not be able to marry her. This all applies if Zaid's condition has not reached the point where he has become mentally unstable or deranged, sometimes talking like the heedless and sometimes like the truly insane. If this is the condition (and Allah knows best), then absolutely no divorce will take place even if he uttered those words with the intention of divorce. It is in Durr al-Mukhtar:

Divorce of a madman, a child, and an imbecile does not occur... abridged.	**The divorce of an insane person, a child, and a mentally ill person does not occur... abridged.**
And Allah, the Glorious and Exalted, knows best.	And Allah, the Glorious and Exalted, knows best. (T)

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Metaphorical Expressions, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/474.
2. Durr al-Mukhtar, Book of Divorce, Mujtabai Press, Delhi, 1/217.

इसी तरह पहले कहे गए शब्द जैसे "तू अम्र या बक्र से निकाह कर ले या उसका निकाह वलीद से करा दो" नीयत (इरादे) के मोहताज हैं। अगर तलाक़ की नीयत से कहे, तो एक तलाक़-ए-बाइन हुई, और अगर तलाक़ की नीयत नहीं थी तो कुछ नहीं। और इस बारे में कि इन शब्दों से उसने तलाक़ की नीयत नहीं की थी, उसकी बात शपथ (क़सम) के साथ मान्य है। अगर वह क़सम खा लेगा तो तलाक़ का हुक्म नहीं होगा, फिर यदि वास्तव में नीयत की थी और झूठी क़सम खा ली तो इसका पाप उस पर है। रद अल-मुहतार में है:

काज़ी खान की शरह जामे सगीर में है:

अगर पति ने पत्नी से कहा "जाओ निकाह करो" और फिर कहता है कि मैंने तलाक़ की नीयत नहीं की, तो तलाक़ नहीं होगी, क्योंकि उसकी बात का मतलब यह है कि अगर तुझे मुमकिन हो तो निकाह करो।

यदि वह कहे: "जाओ, निकाह करो" और कहे "मैंने तलाक़ का इरादा नहीं किया" तो कुछ नहीं होता क्योंकि इसका अर्थ है: यदि तुम कर सको तो निकाह करो। और ज़ख़ीरा में: "जाओ, निकाह करो" केवल इरादे से होता है। यदि उसने एक का इरादा किया, तो वह एक बाइन है; यदि उसने तीन का इरादा किया, तो तीन।

और 'ज़ख़ीरा' में है: अगर पति ने कहा "जाओ निकाह करो" तो नीयत के साथ एक बाइन तलाक़ होगी, और अगर तीन की नीयत की तो तीन तलाक़ें वाक़े होंगी। (त)

यहाँ दारोमदार इस शपथ पर है। अगर इन सब शब्दों के संबंध में वह क़सम खाकर इनकार करे तो एक तलाक़-ए-बाइन पड़ेगी कि पत्नी की रज़ामंदी से इद्दत के दौरान या इद्दत के बाद उससे निकाह कर सकता है, हलाला की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, बिना हलाला के उससे निकाह न कर सकेगा। यह सब उस सूरत में है कि ज़ैद की हालत उस हद तक न पहुँची हो कि वह अक्ल से पैदल या विक्षिप्त हो गया हो, कभी बेअक़्लों वाली बातें करे, कभी बिलकुल पागलों जैसी। और अगर यह हालत है (और अल्लाह बेहतर जानता है) तो असल में तलाक़ नहीं होगी, चाहे उसने वे सब शब्द तलाक़ की नीयत से ही क्यों न कहे हों। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

पागल, बच्चे और विक्षिप्त का तलाक नहीं होता... संक्षिप्त।

और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है।

पागल, बच्चे और मानसिक रूप से बीमार की तलाक़ वाक़े नहीं होगी... संक्षिप्त।

और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है। (त)

1. रद अल-मुहतार, बाबू-ल-किनायात, दारु इहया-ए-तुल-तुरास अल-अरबी बेरूत, 2/474.
2. दुर्रे मुख्तार, किताबु-त-तलाक़, मतबा मुजतबाई देहली, 1/217.

पृष्ठ 365/688

یو نہی اس کے پہلے لفظ کہ " تو عمرو یا بکر سے نکاح کرلے یا اس کا نکاح ولید سے کرادو" محتاج نیت ہیں، اگر بہ نیت طلاق کہے ایک طلاق بائن ہوئی، اور نیت طلاق نہ تھی تو کچھ نہیں اور اس بارے میں کہ ان الفاظ سے اس نے طلاق کی نیت نہ کی تھی ، اس کا قول قسم کے ساتھ معتبر ہے اگر قسم کھا لے گا حکم طلاق نہ ہوگا، پھر واقع میں نیت کی تھی اور جھوٹی قسم کھا لی تو وبال اس پر ہے۔ رد المحتار میں ہے:

فی شرح الجامع الصغیر لقاضی خان لو قال اذھبی فتزوجی و قال لم انو الطلاق لایقع شیئ لان معناہ ان امکنك

قاضی خان کی شرح وجامع صغیر میں ہے: خاوند نے بیوی کو کہا " جاؤ نکاح کرو" اور پھر کہتا ہے کہ میں نے طلاق کی نیت نہیں کی ، تو طلاق نہ ہوگی، کیونکہ اس کی بات کا مطلب یہ ہے کہ اگر تجھے ممکن ہو تو نکاح کرو۔

وفی الذخیرۃ اذھبی وتزوجی لا یقع الابالنیۃ وان نوی فھی واحدۃ بائنۃ وان نوی الثلاث فثلاث

اور ذخیرہ میں ہے : اگر خاوند نے کہا " جاؤ نکاح کرو" تو نیت ایک بائنہ طلاق ہوگی، اور اگر تین کی نیت کی تو تین طلاقیں واقع ہونگی۔ (ت)

عرض یہاں مدار اس حلف پر ہے اگر ان سب الفاظ کی نسبت قسم کھا لے سے انکار کرے تو ایک طلاق بائن پڑے گی کہ برضائے زوجہ عدت میں خواہ عدت کے بعد اس سے نکاح کر سکتا ہے حلالہ کی حاجت بے حلالہ اس سے نکاح نہ کر سکے گا، یہ سب اس صورت میں ہے کہ زید کا مراد اس حد کو نہ پہنچا ہو کہ وہ فاسد العقل مختل الحواس ہو گیا ہو کبھی غافلوں کی سی بات کرے ، کبھی خاصے پاگلوں کی سی، اور اگر یہ حالت ہے (اور اللہ خوب جانتا ہے) تو اصلاً طلاق نہ ہوگی اگر چہ اس نے وہ سب الفاظ بہ نیت طلاق کہے ہوں۔ در مختار میں ہے :

لا یقع طلاق المجنون والصبي والمعتوه ۲ مجنون، بچہ اور ذہنی مریض کی طلاق واقع نہ ہوگی

الخ ملخصاً۔ **الخ ملخصاً۔**

واللہ سبحنہ و تعالیٰ اعلم۔ واللہ سبحنہ و تعالیٰ اعلم (ت)

1 ردالمحتار باب الکنایات داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۴۷۴ 2 در مختار کتاب الطلاق مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۱۷

Fatawa Razawiya Volume 12

Problem 130: From Marehra Sharif, District Etah, Mohalla Kamboah, sent by Chaudhry Abdul Rahman Sahib, 18 Shawwal 1338 AH. What do the scholars of religion say? A woman is very distressed with her husband; her husband troubles her, so being helpless she asks for a reply (divorce). He, out of stubbornness, does not give a reply nor does he fulfill her rights. Then, in anger, he intends to give a reply, i.e., divorce, and gives the reply in private in front of the woman. Will the divorce be recognized or not? Secondly, if that woman, out of compulsion, marries another man and remains with him as husband and wife for five months, and a son is born to them from that man, and then the first husband claims that "I did not give divorce in front of four people," essentially wanting to take her back, then is that woman Sharia-compliant for the first husband or not?

The Answer: It is clear from the statement of the question that the first husband admits to giving it but his only excuse is that the divorce was given secretly and not in front of four persons; therefore, due to his ignorance, he considers it not to be a divorce. If this is the case, then his claim is false. Divorce occurs even if given in absolute privacy. If the woman, after the completion of her Iddah (waiting period), enters into a valid marriage with another man, then the first husband has no claim against her. Yes, if the husband completely denies giving the divorce, and the woman's second marriage, staying for five months with the second man, and the birth of a child, were all unbeknownst to the first husband as they occurred in another city, then upon being informed, his claim will definitely be heard. The woman's statement that he had given divorce will not be heard at all without Sharia-compliant witnesses. The woman will be returned to the first husband. Then, if in reality he had given the divorce and has lied in denial, it is mandatory for the woman to flee from him by whatever means she knows or to obtain a divorce by giving him the dower etc. And if she cannot do anything, the burden is on him, and as long as the woman is not willing, she is compelled. And Allah Almighty knows best.

Problem 131: From Pilibhit, Mohalla Pakariya, asked by Abdul Rahman the watchmaker, 20 Ramadan 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A person, sitting alone in a corner where no one heard him, gave his wife a divorce within his heart. A period of five months has passed. Now that person wants to revoke it (Ruju'). How can he do it? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: If the divorce was given only in the heart such that nothing was said by the tongue, or it was said but only the tongue moved without enough sound to be heard by one's own ears, then the divorce did not take place at all. And if it was said with such a voice that reached one's own ears...

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

मसाला १३०: मारहरा शरीफ़, जिला एटा, मोहल्ला कम्बोह से प्रेषित चौधरी अब्दुल रहमान साहब, १८ शव्वाल १३३८ हिजरी। धर्म के विद्वान क्या कहते हैं? एक स्त्री अपने पति से बहुत परेशान है, उसका पति उसे सताता है, तो वह लाचार होकर जवाब (तलाक) माँगती है। वह ज़िद में आकर न तो जवाब देता है और न ही अधिकार पूरे करता है। फिर वह गुस्से में जवाब यानी तलाक का इरादा करता है और तन्हाई में औरत के सामने जवाब दे देता है। तो क्या तलाक मानी जाएगी या नहीं? दूसरे यह कि वह औरत मजबूर होकर किसी दूसरे मर्द से निकाह कर लेती है और पाँच महीने तक उनके बीच पति-पत्नी का संबंध रहता है और उस मर्द से एक लड़का पैदा हो जाता है, फिर वह पहला पति दावा करता है कि "मैंने चार लोगों के सामने तलाक नहीं दी थी", यानी वह उसे वापस लेना चाहता है, तो क्या वह औरत शरीअत के अनुसार पहले पति के लिए जायज़ रही या नहीं?

उत्तर: सवाल के बयान से ज़ाहिर है कि पहला पति तलाक देने का इकरार करता है लेकिन उसका एकमात्र बहाना यह है कि तलाक गुप्त रूप से दी गई थी, चार व्यक्तियों के सामने नहीं दी गई थी; इसलिए वह अपनी अज्ञानता के कारण इसे तलाक नहीं होना समझता है। अगर ऐसा है, तो उसका दावा निराधार है। तलाक पूर्णतः तन्हाई में देने पर भी हो जाती है। यदि स्त्री ने इद्दत गुज़रने के बाद दूसरे से निकाह किया है, तो वह सही होगा और पहले पति का उस पर कोई दावा नहीं बनता। हाँ, अगर पति सिरे से तलाक देने से इनकार कर दे, और औरत का निकाह-ए-सानी करना, पाँच महीने दूसरे के पास रहना और लड़का पैदा होना, इन बातों की पहले पति को खबर न हो क्योंकि वे किसी दूसरे शहर में हुई हों, तो सूचना मिलने के बाद उसका दावा निश्चित रूप से सुना जाने योग्य है। और औरत का यह बयान कि उसने तलाक दे दी थी, शरीयत के गवाहों के बिना हरगिज़ स्वीकार्य नहीं है। औरत को पहले पति को सौंप दिया जाएगा। फिर अगर वास्तव में उसने तलाक दे दी थी और उसने झूठ बोला है, तो औरत पर फर्ज है कि वह जिस तरह भी जानती हो उससे दूर भागे या मेहर आदि देकर तलाक ले ले। और अगर वह कुछ न कर सके तो इसका बोझ उस पर (पति पर) है, और जब तक औरत राज़ी न हो, वह मजबूर है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसाला १३१: पीलीभीत, मोहल्ला पकरिया, अब्दुल रहमान घड़ीसाज़ द्वारा पूछा गया, २० रमज़ान १३३९ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि एक व्यक्ति ने अकेले एक कोने में बैठकर जिसे किसी ने नहीं सुना, अपने दिल के अंदर अपनी पत्नी को तलाक दे दी। अब पाँच महीने

का समय बीत चुका है। अब वह व्यक्ति रुजू (वापसी) करना चाहता है, वह इसे कैसे कर सकता है? बयां करें, पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: अगर केवल दिल में तलाक दी थी इस तरह कि ज़ुबान से कुछ कहा ही नहीं था, या कहा लेकिन केवल ज़ुबान को हरकत दी थी, इतनी आवाज़ नहीं थी कि अपने कानों तक पहुँच सके तो तलाक हुई ही नहीं। और अगर ऐसी आवाज़ से कहा कि अपने कानों तक...

पृष्ठ ३६६ का ६८८

فتاویٰ رضویہ جلد دو ازدہم

مسئلہ ۱۳۰: از مارھرہ شریف ضلع ایٹہ محلہ کمبوہ مرسلہ چودھری عبدالرحمن صاحب ۱۸ شوال ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین، ایک عورت اپنے خاوند سے بہت تنگ ہو، اس کا خاوند اسے ستاتا ہو تو وہ لاچار ہو کر جواب طلب کرے تو وہ جواب بھی ضد سے نہ دے اور حقوق بھی ادا نہ کرے تو پھر وہ غصہ میں جواب یعنی طلاق کا ارادہ کرے اور تنہائی میں جواب دے عورت کے سامنے، تو طلاق مانی جائے گی یا نہیں، دوسرے یہ کہ وہ عورت مجبور ہو کر کسی مرد سے عقد کر لے اور اس پانچ ماہ تک میاں بی بی کا واسطہ رہے اور ایک اس مرد سے لڑکا پیدا ہو گیا، پھر اس پہلے خاوند نے دعویٰ کیا کہ میں نے طلاق چار کے سامنے تو نہیں دی غرض یہ کہ وہ واپسی لینا چاہتا ہے تو وہ عورت شرعاً پہلے خاوند پر جائز رہی یا نہیں؟

الجواب: بیان سوال سے ظاہر یہ ہے کہ شوہر اول دینے کا مقر ہے مگر عذر صرف یہ کرتا ہے کہ طلاق خفیہ دی چار اشخاص کے سامنے نہ دی، لہذا اپنی جہالت سے طلاق نہ ہونا سمجھتا ہے، اگر ایسا ہے تو اس کا دعوی باطل ہے، طلاق بالکل تنہائی میں دے جب بھی ہو جاتی ہے، اگر عورت نے عدت گزرنے کے بعد دوسرے سے نکاح صحیح ہو گا اور پہلے شوہر کو اس پر کچھ دعوی نہیں پہنچتا، ہاں اگر شوہر سرے سے طلاق دینے سے منکر ہو اور عورت کا نکاح ثانی کرنا اور پانچ ماہ دوسرے کے پاس رہنا اور اس لڑکا پیدا ہونا، ان باتوں کی شوہر اول کو خبر نہ ہو کہ کسی دوسرے شہر میں ہوئی ہوں، بعد اطلاع اس نے دعوی کیا تو ضرور اس کا دعوی قابل سماعت ہے اور عورت کا بیان کہ اس نے طلاق دے دی تھی بے گواہانِ شرعی ہر گز مسموع نہیں، عورت شوہر اول کو دلا دی جائے گی، پھر اگر واقع میں اس نے طلاق دے دی تھی اور جھوٹ انکار کیا تو عورت پر فرض ہے کہ جس طرح جانے اسے سے دور بھاگے یا مہر وغیرہ دے کر طلاق لے

اور اگر کچھ نہ کر سکے وبال اس پر ہے، اور عورت جب تک راضی نہ ہو مجبور ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۳۱: از پیلی بھیت محلہ پکریا مسئولہ عبدالرحمن گھڑی ساز ۲۰ رمضان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے تنہا ایک گوشہ بیٹھ کر جس کو کسی نے نہیں سنا اپنے دل کے اندر اپنی بیوی کو طلاق دی اس کے عرصہ پانچ ماہ کا گزرا اب وہ شخص رجوع کرنا چاہتا ہے اس کو کس طرح کر سکتا ہے؟ بینوا توجروا

الجواب: اگر فقط دل میں طلاق دی تھی یوں کہ زبان سے کچھ کہا ہی نہ تھا یا کہا مگر فقط زبان کو حرکت تھی اتنی آواز نہ تھی کہ اپنے کان تک آنے کے قابل ہو جب تو طلاق ہوئی ہی نہیں، اور اگر ایسی آواز سے کہا کہ اپنے کان تک

Fatawa Razawiyya Volume 12

...was capable of reaching her ears, even if due to rain, wind, or some noise it didn't reach her own ears, the divorce occurred. If it was revocable (Raj'i), he can revoke it within the waiting period ('iddah). If it was irrevocable (Ba'in), he can remarry her with the wife's consent. And if it was 'Mughallazah' (triple/final), then marriage is not possible without Halala. This depends on the words he said and how many times he said them. And Allah Almighty knows best.

Problem 132: From Amariya, Pilibhit District, sent by Tajuddin Khan Sahab, 15 Dhu al-Hijjah 1322 AH.

Question: What do the scholars of religion say regarding this matter: A man named Zaid, in a fit of anger, divorced his wedded wife, Hindah, in the presence of a Muslim man and a woman from the Hindu community. It is also stated that he clearly said the word "divorce" twice before the Muslim man, which he (the Muslim man) did not hear. That Hindu woman who was present states that "I heard it, he did not say the word 'divorce'." Zaid is a completely ignorant and illiterate person. At this time, both Zaid and Hindah are agreeable. How can the marriage be established?

Answer: Allah is the Knower of the Unseen and the Witness; He knows the secrets of everyone's heart. Let him fear Allah. If, in reality, he gave divorce for the third time as well, then the woman has left the marriage bond; now he cannot marry her without Halala. If he denies it and no one besides that non-believer woman reports the third divorce, then the word of a non-believer is not reliable at all. As long as she is in the waiting period ('iddah), he can revoke the divorce for that woman, i.e., say this much: "I have taken you back into my marriage bond." She will remain his wife as before. This is provided he had never given a divorce before, otherwise, that one and these two combined would make three; the woman would be out of the marriage bond and Halala would be necessary. Similarly, if he hadn't given a divorce before and has given these two, then in the future whenever he gives even one divorce, the woman will not be able to come back into his marriage without Halala. And Allah Almighty knows best.

Problem 133: From Rampur, questioned by Muhammad Saeed.

Question: Zaid, in a state of anger, said to his wife Hindah, "I have divorced you." In this case, will the divorce occur or not?

Answer: One revocable (Raj'i) divorce has occurred. Anger does not prevent divorce; in fact, divorce usually occurs in a state of anger. (The Arabic phrase follows, referencing 'Al-Khayriyah' and 'Radd al-Muhtar'). "Madhoosh" (being stupefied/ insane) is a different thing; see 'Al-Khayriyah' and 'Radd al-Muhtar' regarding it.

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

...पहुँचने के योग्य थी, चाहे बारिश, हवा या किसी शोर के कारण उसके अपने कानों तक न पहुँची हो, तो तलाक़ हो गई। यदि वह रजई (प्रतिसंहरणीय) थी तो इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के भीतर रुजू (वापस लेना) कर सकता है। और यदि बाइन (अप्रतिसंहरणीय) थी तो पत्नी की सहमति से उससे निकाह कर सकता है। और यदि मुग़ल्लज़ह (तीन तलाक़) थी तो बिना हलाला के निकाह नहीं हो सकता। यह उन शब्दों पर निर्भर है जो उसने कहे और जितनी बार कहे। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसाला १३२: अमरिया ज़िला पीलीभीत से, प्रेषक ताजुद्दीन ख़ाँ साहब, १५ ज़िल-हिज्जा १३२२ हिजरी।

सवाल: दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि: ज़ैद नामक एक व्यक्ति ने क्रोध में आकर अपनी विवाहिता पत्नी मुसम्मात हिन्दा को एक मुस्लिम पुरुष और हिंदू समुदाय की एक महिला के सामने तलाक़ दे दी। और यह भी है कि उस मुस्लिम व्यक्ति के सामने तलाक़ शब्द दो बार साफ़ तौर पर कहा गया जो उसने नहीं सुना, वह हिंदू महिला जो वहां मौजूद थी, बयान करती है कि "मैंने सुना, उसने तलाक़ शब्द नहीं कहा था।" ज़ैद बिल्कुल जाहिल और अनपढ़ व्यक्ति है। इस समय ज़ैद और हिन्दा दोनों राज़ी हैं। निकाह किस तरह हो?

जवाब: अल्लाह ग़ैब और हाज़िर का जानने वाला है, वह हर एक के दिल का हाल जानता है, उसे अल्लाह से डरना चाहिए। यदि वास्तव में उसने तीसरी बार भी तलाक़ दी थी, तो औरत निकाह से निकल गई, अब बिना हलाला के उससे निकाह नहीं कर सकता। और यदि वह इनकार करता है और उस काफ़िर औरत के अलावा और कोई तीसरी तलाक़ की गवाही नहीं देता, तो काफ़िर की बात कतई विश्वसनीय नहीं है। जब तक वह इद्दत में है, वह औरत से रुजू कर सकता है, यानी इतना कह दे कि "मैंने तुझे अपने निकाह में वापस ले लिया है।" वह पहले की तरह उसकी पत्नी बनी रहेगी। बशर्ते पहले कभी एक तलाक़ न दी हो, अन्यथा वह एक और ये दो मिलकर तीन हो जाएंगी; औरत निकाह से निकल जाएगी और हलाला की आवश्यकता होगी। इसी तरह यदि पहले तलाक़ नहीं दी थी और ये दो दी हैं, तो भविष्य में जब कभी एक तलाक़ देगा, तो औरत बिना हलाला के उसके निकाह में नहीं आ सकेगी। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसाला १३३: रामपुर से, प्रश्नकर्ता मुहम्मद सईद।

सवाल: ज़ैद ने क्रोध की स्थिति में अपनी पत्नी हिन्दा से कहा कि "तुझे मैंने तलाक़ दिया।" अब इस स्थिति में तलाक़ होगी या नहीं?

जवाब: एक तलाक़ रजई (प्रतिसंहरणीय) हुई। क्रोध तलाक़ को नहीं रोकता, बल्कि अधिकांशतः तलाक़ क्रोध की स्थिति में ही होती है। (अरबी वाक्यांश अल-ख़ैरिया और रद अल-मुह्तार का संदर्भ देता है)। 'मदहूँश' (बेसुध) होना अलग चीज़ है, इसे 'अल-ख़ैरिया' और 'रद अल-मुह्तार' में देखें।

पृष्ठ ३६७ / ६८८

آنے کے قابل تھی اگرچہ مینہ یا ہوا یا کسی غل شور کے سبب اپنے کان تک نہ پہنچی تو طلاق ہوگئی اگر رجعی تھی تو عدت کے اندر رجعت کرسکتا ہے اور بائن تھی تو برضائے زوجہ اس سے نکاح کرسکتا ہے، اور مغلظہ تھی تو بے حلالہ نکاح نہیں ہوسکتا، یہ ان الفاظ پر موقوف ہے جس اس نے کہا اور جتنی بار کہا، واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۳۲: از امریا ضلع پیلی بھیت مرسلہ تاج الدین خاں صاحب ۱۵ ذی الحجہ ۱۳۲۲ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک مسمّی زید نے غصّہ میں آکر اپنی منکوحہ مستماۃ ہندہ کو ایک شخص مسلمان و ایک عورت قوم ہنود کے روبرو طلاق دی۔ اور یہ بھی ہے شخص مسلمان کے رُوبرو دومرتبہ لفظ طلاق صاف طور سے کہا کہ وہ سننے میں نہیں آیا، وہ عورت اہل ہنود جو وہاں موجود تھی بیان کرتی ہے کہ میں نے سنا یہ لفظ طلاق نہیں کہا تھا، زید ایک شخص بالکل جاہل اور اُمّی ہے، اس وقت زید و ہندہ دونوں راضی ہیں نکاح کس طرح ہو؟

الجواب: اللہ عالم الغیب والشہادۃ ہے وہ ہر ایک کے دل کی جانتا ہے، اللہ سے ڈرے، اگر واقع میں اس نے تیسری بار بھی طلاق دی تھی تو عورت نکاح سے نکل گئی، اب بے حلالہ اس سے نکاح نہیں کرسکتا، اور اگر وہ منکر ہے اور سوا اُس کافرہ عورت کے اور کوئی تیسری طلاق کا بیان نہیں کرتا تو کافرہ کی بات اصلاً معتبر نہیں، جب تک عدت میں ہے وہ عورت کو رجعت کرسکتا ہے یعنی اتنا کہہ دے کہ میں نے تجھے اپنے نکاح میں پھر لیا وہ بدستور اس کے زوجہ رہے گی اگر پہلے کبھی ایک طلاق نہ دے چکا ہو ورنہ ایک وہ اور دو یہ مل کر تین ہوگئیں عورت نکاح

سے نکل گئی حلالہ کی ضرورت ہوگی، یوں ہی اگر پہلے طلاق نہ دی تھی یہ دو دی ہیں تو آئندہ جب کبھی ایک طلاق دے گا عورت بے حلالہ کے نکاح میں نہ آسکے گی واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۳۳: از رامپور مسئولہ محمد سعید

زید نے بحالتِ غضب اپنی زوجہ ہندہ کو یہ کہا کہ تجھ کو میں نے طلاق دیا، اب اس صورت میں طلاق ہوگی یا نہیں؟

الجواب: ایک طلاق رجعی ہوئی، غضب مانع طلاق نہیں بلکہ غالباً طلاق بحالتِ غضب ہی ہوتی ہے والدھش شیئی اخر بینہ فی الخیریۃ ورد المحتار وتحقیقہ فی فتاونا (مدہوش اور چیز ہے، اس کو خیر یہ اور ردالمحتار میں دیکھو)۔

صفحہ ۳۶۷ از ۶۸۸

Fatawa Razawiya, Volume 12

...has been explained, and its research is in our Fatawa (T) and Allah knows best.

Issue 134: What do the scholars of the religion say about this matter that Zaid, in a state of anger, told his consummated wife twice, "I have given you divorce." What kind of divorce occurred and what is the ruling? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: In the scenario mentioned, two revocable (raj'i) divorces occurred. The ruling for them is that there is the right of revocation (raj'at) during the waiting period (iddah). After the completion of the iddah, if the woman agrees, he can enter into a new marriage (nikah jadid) with her. The iddah for a consummated free woman is three full menstrual cycles. If she does not menstruate due to young age or old age, it is three months. For a slave woman, if she menstruates, it is two menstrual cycles, otherwise one and a half months. The method of revocation is to say to the divorcee during the days of iddah: "I have taken you back," "I have returned you," "I have kept you," or similar words. Or to kiss, touch, or have sexual intercourse during the iddah. The first method (verbal) is better.

In Tanwir al-Absar: The iddah for a free woman who has had intercourse and menstruates is three full cycles. For those who do not menstruate due to young age or old age, it is three months. For a slave woman who menstruates, it is two cycles. For a slave woman who does not menstruate, it is half that of a free woman [summary]. And in it: [Revocation] is the continuation of existing ownership during the iddah. And Allah knows best. (T)

Issue 135: 23 Jumada al-Akhira 1338 AH. Zaid divorced his wife in anger. At that time, another person was present. Later, someone else came and asked, and he said, "I have divorced my wife." They remained separated for one and a half months. During this time, whenever the person who asked inquired how they were separated, Zaid repeatedly said he had given divorce. So, did the divorce occur or not? If it occurred, how should the marriage be performed?

The Answer: If he had given divorce once at that time and the other times were just responses to people's questions, and he says under oath that...

---

1 Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Chapter of Iddah, Mujtabai Press, Delhi, 1/255-56.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

...में वर्णन किया गया है, और इसकी शोध हमारे फ़तावा में है (त) और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसाला 134: दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने गुस्से की हालत में अपनी निकाहशुदा (मदखूला) पत्नी से दो बार कहा कि 'मैंने तुम्हें तलाक़ दी', क्या यह कौन सी तलाक़ हुई और इसका क्या हुक्म है? बयान करें और पुण्य कमाएं।

जवाब: सवाल में बताई गई स्थिति में, दो रजई (वापस ली जाने वाली) तलाक़ें हुईं। उनका हुक्म यह है कि इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के दौरान सुलह (रुजू) करने का अधिकार है। इद्दत पूरी होने के बाद, अगर औरत चाहे तो उससे नया निकाह (निकाह-ए-जदीद) कर सकता है। एक आज़ाद औरत जिसके साथ संभोग हुआ हो, उसकी इद्दत तीन पूर्ण मासिक धर्म (हैज़) है। अगर कम उम्र या बुढ़ापे के कारण मासिक धर्म न आता हो तो तीन महीने। दासी (लौंडी) के मामले में अगर मासिक धर्म आता हो तो दो हैज़, वरना डेढ़ महीना। सुलह (रुजू) का तरीक़ा यह है कि इद्दत के दिनों में तलाक़शुदा से ये शब्द कहे कि "मैंने तुम्हें वापस ले लिया" या "लुटा लिया" या "रोक लिया" या इसी तरह के शब्द कहे, या इद्दत के बीच चूमना, स्पर्श करना या सहवास करना। पहला तरीक़ा (बोलकर) बेहतर है।

तन्वीर अल-अबसार में है: संभोग की गई मासिक धर्म वाली आज़ाद महिला के लिए इद्दत तीन पूर्ण हैज़ है, और जिसे कम उम्र या बुढ़ापे के कारण मासिक धर्म न आता हो उनके लिए तीन महीने। मासिक धर्म वाली दासी के लिए दो हैज़ और बिना मासिक धर्म वाली दासी के लिए आज़ाद महिला की इद्दत का आधा यानी डेढ़ महीना। और इसी में है: रुजू (वापसी) इद्दत के दौरान मौजूदा मालिकाना हक़ को बरकरार रखना है। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसाला 135: 23 जमादी अल-आख़िरा 1338 हिजरी। ज़ैद ने गुस्से में अपनी औरत को तलाक़ दी, उस वक़्त एक आदमी और मौजूद था। उसके बाद जो शख्स आया और पूछा तो कहा "मैंने अपनी औरत को तलाक़ दे दी"। डेढ़ महीने तक अलग रहे, इस दौरान जिस आदमी ने पूछा "तुम कैसे अलग हो" तो बार-बार यही कहा कि तलाक़ दे दी। तो क्या तलाक़ हुई या नहीं? अगर हो गई तो निकाह किस तरह होना चाहिए?

जवाब: अगर उस वक़्त एक बार तलाक़ दी थी और बाकी बार दूसरों के पूछने पर कहा, और वह क़सम खाकर कह दे कि...

---

1 दुर्रे मुख्तार शरह तन्वीर अल-अबसार, बाब अल-इद्दत, मतबा मुजतबाई देहली, 1/255-56।

فتاوٰی رضویہ ، جلد دوازدہم

میں بیان کیا ہے، اور اس کی تحقیق ہمارے فتاوٰی میں ہے ت) واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۳۴: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے حالتِ غصہ میں اپنی زوجہ مدخولہ سے دوبارہ کہا کہ میں نے تجھے طلاق دی، آیا یہ کون سی طلاق واقع ہوئی اور اس کا کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا

الجواب: صورتِ مسئولہ میں دو طلاقیں رجعی واقع ہوئیں، حکم ان کا یہ ہے کہ مابین عدت کے رجعت کا اختیار ہے اور بعد انقضائے عدت اگر عورت چاہے اس سے نکاحِ جدید کر سکتا ہے اور ایامِ عدت حرہ موطؤہ میں تین حیض کامل ہیں اور اگر بوجہ صغر یا کبر کے حیض نہ آتا ہو تو تین مہینہ، اور لونڈی میں اگر حائضہ ہو تو دو حیض ورنہ ڈیڑھ مہینہ، اور طریقِ رجعت یہ ہے کہ مطلقہ سے ایامِ عدت میں یہ الفاظ کہے کہ میں نے تجھے پھیر لیا یا رد کیا یا روک لیا یا امثال اس کے کہے یا مابین عدت کس کرے یا بوسہ یا جماع کرے۔ بہتر طریق اول ہے،

فی تنویر الابصار وھي فی حرة تحیض بعد الدخول ثلث حیض کوامل، وفی من لم تحض بصغر اوکبر ثلثة اشھر، وفی امة تحیض حیضتان، وفی امة لم تحض نصف الحرة ملخصاً، وفیه ھی استدامة الملك القائم فی العدة واللہ تعالٰی اعلم۔

تنویر الابصار میں ہے وہ عدت وطی شدہ حیض والی کے لئے تین حیض کامل، اور جس کو نابالغی یا بڑھاپے کی وجہ سے حیض نہ آتا ہو ان کے لئے تین ماہ، اور لونڈی حیض والی کے لئے دو حیض اور غیر حیض والی کے لئے ایسی آزاد عورت کی عدت کا نصف یعنی ڈیڑھ ماہ۔ اور اسی میں ہے: رجعت (رجوع کرنا) یہ عدت کے درمیان موجود ملکیت کو باقی قائم رکھنا ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۱۳۵: ۲۳ جمادی الآخرہ ۱۳۳۸ھ زید نے غصہ میں اپنی عورت کو طلاق دی اس وقت ایک آدمی اور موجود تھا بعدہ جو شخص آیا اور پوچھا تو کہا میں نے اپنی عورت کو طلاق دے دی، ڈیڑھ ماہ تک علیحدہ رہے، اس درمیان میں جس آدمی نے پوچھا تم کیسے علیحدہ ہو تو بارہا یہی کہا کہ طلاق دے دی، تو طلاق ہوئی یا نہیں؟ اگر ہو گئی تو نکاح کس طور پر ہونا چاہئے؟

الجواب: اگر اس وقت ایک بار طلاق دی تھی اور باقی بار اوروں کے پوچھنے پر کہا اور وہ قسم کھا کر کہہ دے کہ

---

1 درمختار شرح تنویر الابصار باب العدۃ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۵۶-۲۵۵

Fatawa Razawiyya, Volume 12

...I did not intend to divorce on those occasions but merely informed upon her asking. In that case, only one divorce occurred. If it was revocable (Raj'i), he can revoke it as long as the waiting period (iddah) hasn't passed; otherwise, he should remarry her. And Allah knows best.

Problem 136: From the city, asked by Ali Muhammad, brother of Hinda, whose statement it is. 27 Shaban 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: my husband, myself, and my mother and brother lived in the same house. There was a fight over food and clothes, so he beat me and spoke ill to me. Then my mother said, "What business do you have here now? You have divorced your wife, so don't come here anymore."

Answer: If this statement is true, then one divorce has definitely occurred, but the woman has not yet left the marriage. However, if with the first phrase "you are of no use to me," he had the intention of divorce, then two divorces occurred and the woman left the marriage. As for whether he had that intention with that phrase or not, it depends on his statement; he should be made to take an oath. If not, it will be only one revocable divorce, so if he takes her back into his marriage within the iddah period, the woman will continue to be his wife. And Allah knows best.

Problem 137: From Sitarganj, 3 Jumada al-Akhirah 1305 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Hinda married Zaid but no consummation occurred. In the morning, due to the instigation of a few people, Hinda waived her dower (mahr) and Zaid gave her a divorce. In this situation, is Hinda's marriage to Amr on the evening of the same day permissible or not? Please explain and be rewarded.

Answer: In the situation asked, if the husband and wife were together in a private place and there was no real physical obstacle preventing intercourse from taking place at all, and after that Zaid gave a divorce, then indeed the waiting period (iddah) is mandatory for Hinda even if intercourse did not occur.

| For indeed, valid seclusion in a valid marriage is like intercourse in making the waiting period mandatory. | In making the iddah mandatory after a valid marriage, valid seclusion is considered the same as intercourse, and here since the seclusion was valid... |

फतावा रज़विया, जिल्द 12

...मैंने उन मौकों पर तलाक देने का इरादा नहीं किया था बल्कि उसके पूछने पर सूचना दी थी, तो केवल एक तलाक हुई। अगर वह रजई (प्रतिसंहरणीय) थी तो जब तक इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) न गुजर जाए वह रुजू कर सकता है; अन्यथा उससे पुनः निकाह कर ले। और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला १३६: शहर से, मुस्तफ्सरा अली मुहम्मद, भाई हिंदा, जिसका बयान है। २७ शाबान १३३८ हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फरमाते हैं कि मेरा शौहर, मैं और मेरी माँ और भाई एक ही घर में रहते थे। रोटी-कपड़े पर लड़ाई हुई तो उसने मुझे मारा और बुरा-भला कहा, तो मेरी माँ ने कहा कि अब तेरा यहाँ क्या काम है, तूने अपनी बीवी को तलाक दे दी है तो अब यहाँ मत आ।

उत्तर: अगर यह बयान सच है तो एक तलाक ज़रूर हो गई लेकिन औरत अभी निकाह से नहीं निकली। हाँ, अगर पहले लफ्ज़ "तुम मेरे काम की नहीं रही" से उसने तलाक की नीयत की हो तो दो तलाकें हो गईं और औरत निकाह से निकल गई। रही यह बात कि उसने उस लफ्ज़ से भी नीयत की थी या नहीं, यह उसके बयान पर है, उससे कसम ली जाए। अगर नहीं होगी तो एक ही रजई होगी कि इद्दत के अंदर वह अपने निकाह में वापस ले ले, औरत बदस्तूर उसकी बीवी रहेगी। और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला १३७: सितारगंज से, ३ जमादी-उल-आख़िरा १३०५ हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फरमाते हैं कि हिंदा ने ज़ैद से निकाह किया मगर सोहबत (संभोग) नहीं हुई। सुबह को चंद लोगों के उकसावे पर हिंदा ने मेहर माफ कर दिया और ज़ैद ने तलाक दे दी। इस सूरत में उसी दिन शाम को हिंदा का निकाह अम्र के साथ जायज़ है या नहीं? स्पष्ट करें, सवाब पायें।

उत्तर: पूछी गई सूरत में अगर पति-पत्नी किसी तन्हाई के घर में इकट्ठा हुए हों और उनमें कोई ऐसा वास्तविक अवरोध न हो जिसकी वजह से संभोग बिल्कुल न हो सके और उसके बाद ज़ैद ने तलाक दी हो, तो बेशक हिंदा पर इद्दत वाजिब है चाहे संभोग न हुआ हो।

| क्योंकि सही निकाह में खलवत-ए-सहीहा (वैध एकांत) इद्दत को अनिवार्य करने में संभोग की तरह है। | इद्दत को वाजिब करने में सही निकाह के बाद खलवत-ए-सहीहा वती (संभोग) के हुक्म में है और यहाँ खलवत की सेहत से... |

पृष्ठ ३६९ (कुल ६८८)

میں نے ان دفعوں میں طلاق دینے کا ارادہ نہ کیا تھا بلکہ اس کے پوچھنے پر خبر دی تھی تو صرف ایک طلاق ہوئی اگر رجعی تھی رجعت کر سکتا ہے جب تک عدت نہ گزرے ورنہ دوبارہ اس سے نکاح کرلے، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۳۶: از شہر مسئولہ علی محمد برادر ہندہ جس کا بیان ہے ۲۷ شعبان ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ میرا شوہر تھا وہ اور میں اور میرے ماں بھائی ایک ہی مکان رہتے تھے اور روٹی کپڑے پر لڑائی ہوتی تھی تو وہ مجھ کو مارتا اور برا بھلا کہتا تھا تو میں ماں نے یہ کہا کہ اب تیرا کیا کام ہے تو نے اپنی بیوی کو طلاق دے دی تو اب یہاں مت آ۔

الجواب: اگر یہ بیان سچ ہے تو ایک طلاق ضرور ہو گئی لیکن عورت ابھی نکاح سے نہ نکلی، ہاں اگر ہاں پہلے لفظ سے بھی کہ " تم میرے کام کی نہ رہیں" اس نے طلاق کی نیت کی ہو تو دو طلاقیں ہو گئیں اور عورت نکاح سے نکل گئی، رہا یہ کہ اس نے اس لفظ سے بھی نیت کی تھی یا نہیں، یہ اس کے بیان پر ہے، اس سے قسم لی جائے، نہ ہوں گی ایک ہی رجعی ہوگی کہ عدت کے اندر وہ اپنے نکاح میں پھیرلے عورت بدستور اس کی زوجہ رہے گی واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۳۷: از ستارہ گنج ۳ جمادی الآخرہ ۱۳۰۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ نے زید سے نکاح کیا مگر صحبت نہ ہوئی، صبح کو بوجہ اغوائے چند اشخاص ہندہ نے مہر معاف کیا اور زید نے طلاق دے دی، اس صورت میں اسی روز شام کو نکاح ہندہ عمرو کے ساتھ جائز ہے یا نہیں بینوا توجروا

الجواب: صورت مستفسرہ میں اگر زوج وزوجہ تنہائی کے مکان میں یکجا ہوئے ہوں اور ان میں کوئی مانع حقیقی ایسا نہ ہو جس کی وجہ سے وطی اصلاً نہ ہو سکے اس کے بعد زید نے طلاق دی تو بیشک ہندہ پر عدت واجب ہے اگرچہ مباشرت نہ ہوئی

| فان الخلوة الصحيحة فى النكاح الصحيح مثل الوطى فى ايجاب العدة | عدت کو واجب کرنے میں صحیح نکاح کے بعد خلوتِ صحیحہ وطی کے حکم میں ہے اور یہاں خلوت کی صحت سے |

Fatawa Razawiyya, Volume 12

[Arabic Quote]: "The validity of seclusion (Khalwa) here means the absence of a real physical impediment, even if a legal (Shariah) impediment like fasting exists." [Urdu Commentary]: This means the absence of a physical impediment to intercourse, so even if a legal (Shariah) impediment like fasting is present, it will be considered a valid seclusion (Khalwa Sahiha). (T)

It is stated in Sharh Nuqaya: [Arabic Quote]: "The waiting period (Iddah) for divorce is mandatory after consummation or valid seclusion. This is because if he divorces her before consummation or after invalid seclusion, and the invalidity is due to a physical inability for intercourse, Iddah is not obligatory. However, if it's due to a legal matter like an obligatory fast, it is mandatory as mentioned in Qadikhan. It is mentioned in Al-Muhit that there is no Iddah for seclusion with a 'Ratqa' (a woman with a physical obstruction)." [Summarized] [Urdu Commentary]: Iddah is mandatory if divorce occurs after consummation or valid seclusion. Because if divorce occurs before consummation or after invalid seclusion, Iddah will not be obligatory. The invalidity of seclusion means there is a real physical impediment to intercourse. If it is a legal impediment, for example, an obligatory fast, then it is not considered an impediment and Iddah will be mandatory as stated in Qadikhan. And it is mentioned in Al-Muhit that Iddah will not be mandatory upon seclusion with a woman who has a bone obstruction in her private parts (Ratqa). [Summarized] (T)

So, if after divorce during the Iddah period, three complete menstrual cycles pass, [remarriage is possible]. Marrying another [before this] will not be valid at all and will remain strictly forbidden. It is stated in Alamgiriyya:

[Arabic Quote]: "It is not permissible for a man to marry the wife of another, nor a woman in her waiting period (Muttadda). This is also stated in Al-Siraj al-Wahhaj, whether the Iddah is from divorce, death, or consummation in an invalid marriage, or a doubtful marriage. This is also stated in Al-Bada'i." [Urdu Commentary]: It is not permissible for anyone to marry another person's wife or a woman undergoing her waiting period. It is mentioned similarly in Al-Siraj al-Wahhaj, whether it is Iddah of divorce or Iddah of death, or due to consummation in an invalid marriage or doubtful marriage. (In all these cases, marrying another is forbidden). It is similarly stated in Al-Bada'i. (T)

Yes, if seclusion did not even take place and he divorced her just like that, then there is no Iddah upon the woman (Hindah). She has the option to marry whomever she wishes at that very moment. It is in Durr al-Mukhtar:

[Arabic Quote]: "The cause of its (Iddah's) obligation is the marriage contract." [Urdu Translation]: The cause for the obligation of Iddah is that marriage in which the wife...

---

1. Jami' al-Rumuz, Chapter on Iddah, Al-Maktaba al-Islamiyya, Gunbad Qamus, Iran, 2/578.
2. Fatawa Hindiyya, Book of Marriage, Section Six: Prohibitions related to the rights of others, Nurani Kutub Khana, Peshawar, 1/280.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

[अरबी उद्धरण]: "यहाँ ख़लवत (एकांत) की वैधता का अर्थ है किसी वास्तविक शारीरिक बाधा का न होना, भले ही कोई शरई (धार्मिक) बाधा जैसे रोज़ा मौजूद हो।" [उर्दू व्याख्या]: इसका अर्थ संभोग में शारीरिक बाधा की अनुपस्थिति है, इसलिए भले ही रोज़ा जैसी शरई बाधा मौजूद हो, उसे ख़लवत सहीहा (वैध एकांत) माना जाएगा। (त)

शरह नुक़ाया में उल्लेख है: [अरबी उद्धरण]: "तलाक के लिए इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) संभोग या ख़लवत सहीहा के बाद अनिवार्य है। क्योंकि यदि वह संभोग से पहले या ख़लवत फ़ासिदा (अवैध एकांत) के बाद उसे तलाक देता है, और यह अवैधता संभोग की शारीरिक अक्षमता के कारण है, तो इद्दत अनिवार्य नहीं है। हालाँकि, यदि यह एक अनिवार्य रोज़ा जैसे शरई मामले के कारण है, तो यह अनिवार्य है जैसा कि क़ाज़ीख़ान में उल्लेख किया गया है। अल-मुहीत में उल्लेख है कि 'रतका' (शारीरिक बाधा वाली महिला) के साथ एकांत के लिए कोई इद्दत नहीं है।" [संक्षिप्त] [उर्दू व्याख्या]: यदि तलाक संभोग या ख़लवत सहीहा के बाद होता है तो इद्दत अनिवार्य है। क्योंकि यदि तलाक संभोग से पहले या ख़लवत फ़ासिदा के बाद होता है, तो इद्दत वाजिब नहीं होगी। ख़लवत के फ़ासिद (अवैध) होने का अर्थ है कि संभोग में कोई वास्तविक शारीरिक बाधा हो। यदि यह एक शरई बाधा है, उदाहरण के लिए, एक फ़र्ज़ (अनिवार्य) रोज़ा, तो इसे बाधा नहीं माना जाता है और इद्दत अनिवार्य होगी जैसा कि क़ाज़ीख़ान में कहा गया है। और अल-मुहीत में उल्लेख किया गया है कि योनि में हड्डी की बाधा (रतका) वाली महिला के साथ एकांत पर इद्दत अनिवार्य नहीं होगी। [संक्षिप्त] (त)

अतः, यदि तलाक के बाद इद्दत की अवधि के दौरान तीन पूर्ण मासिक धर्म बीत जाते हैं, [तभी पुनर्विवाह संभव है]। इससे पहले किसी अन्य से विवाह करना बिल्कुल भी मान्य नहीं होगा और पूरी तरह से प्रतिबंधित (हराम) रहेगा। आलमगीरिया में उल्लेख है:

[अरबी उद्धरण]: "एक पुरुष के लिए दूसरे की पत्नी से विवाह करना जायज़ नहीं है, और न ही उस महिला से जो अपनी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) में हो। अस-सिराज अल-वहाज में भी यही कहा गया है, चाहे इद्दत तलाक से हो, मृत्यु से, या अवैध विवाह में संभोग के कारण हो, या संदेहास्पद विवाह के कारण। ऐसा ही अल-बदाइ में भी कहा गया है।" [उर्दू व्याख्या]: किसी भी व्यक्ति के लिए दूसरे की विवाहित स्त्री या दूसरे की इद्दत वाली स्त्री से विवाह करना जायज़ नहीं है। अस-सिराज अल-वहाज में भी इसी प्रकार उल्लेख है, चाहे वह तलाक की इद्दत हो या मृत्यु की इद्दत, या निकाह फ़ासिद (अवैध

विवाह) में संभोग या निकाह के संदेह के कारण संभोग की वजह से हो। (इन सभी मामलों में, दूसरे से निकाह करना हराम है)। अल-बदाइ में भी इसी प्रकार है। (त)

हाँ, यदि ख़लवत (एकांत) भी नहीं हुई और उसने वैसे ही तलाक दे दिया, तो उस महिला (हिन्दा) पर कोई इद्दत नहीं है। उसे अधिकार है कि वह उसी समय जिससे चाहे निकाह कर ले। दुर्रुल मुख़्तार में है:

[अरबी उद्धरण]: "इसके(इद्दत के) अनिवार्य होने का कारण निकाह का अनुबंध है।" [उर्दू अनुवाद]: इद्दत के वाजिब होने का कारण वह निकाह है जिसमें पत्नी...

---

1. जामे अर-रुमूज़, इद्दत का अध्याय, अल-मकतब अल-इस्लामिया, गुंबद क़ामूस, ईरान, 2/578।
2. फ़तावा हिंदीया, निकाह की किताब, छठा भाग: दूसरों के अधिकारों से संबंधित वर्जनाएं, नूरानी कुतुब ख़ाना, पेशावर, 1/280।

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

وصحة الخلوة ههنا العدم المانع الحقیقی وان جد مانع شرعی کالصوم۔ مراد جماع سے مانع کا موجود نہ ہونا ہے اگرچہ شرعی مانع مثلاً روزہ پایا جائے تو خلوت صحیحہ ہو جائیگی (ت)

شرح نقایہ میں ہے: العدة للطلاق بعد الدخول او الخلوة الصحیحة فانه طلقها قبل الدخول اوبعد الخلوة الفاسدة والفساد لعجزه عن الوطی حقیقة لم تجب العدة، ولو لامر شرعی کصوم الفرض تجب کما فی قاضیخان وذکر فی المحیط انه لا عدة بخلوة الرتقا اه ملخصاً۔ طلاق بعد دخول یا خلوت صحیحہ ہو تو عدت ہے کیونکہ اگر دخول سے قبل یا خلوت فاسدہ کے بعد طلاق ہو تو عدت واجب نہ ہوگی، خلوت کا فساد یہ کہ جماع سے کوئی حقیقی مانع موجود ہو، اگر شرعی مانع مثلاً فرضی روزہ ہو تو وہ مانع نہیں ہے اور اس پر عدت لازم ہوگی جیسا کہ قاضی خاں میں ہے اور محیط میں ذکر کیا کہ شرمگاہ میں ہڈی والی عورت سے خلوت پر عدت واجب نہ ہوگی، اھ ملخصاً (ت)

پس اگر عدت کے دوران کے بعد طلاق تین حیض کامل کا گزرنا ہے دوسرے سے نکاح کرے گی ہرگز صحیح نہ ہوگا اور حرام محض رہے گا۔ عالمگیریہ میں ہے:

لایجوز للرجل ان یتزوج زوجة غیره وکذا المعتده کذافی السراج الوهاج سواء کانت العدّة عن طلاق اووفات او دخول في نکاح فاسد او شبهة نکاح کذا فی البدائع۔ کسی شخص کو یہ جائز نہیں کہ وہ دوسرے کی منکوحہ یا دوسرے کی عدت والی سے نکاح کرے۔ السراج الوہاج میں ایسے ہی ہے، عدتِ طلاق ہو یا عدتِ وفات ہو، یا نکاح فاسد میں دخول یا شبہ نکاح میں دخول کی وجہ سے ہو (سب میں دوسرے کا نکاح حرام ہے) بدائع میں یونہی ہے۔ (ت)

ہاں اگر خلوت بھی نہ ہوئی اور ویسے ہی طلاق دے دی تو ہندہ پر عدت نہیں، اسے اختیار ہے کہ اسی وقت جس سے چاہے نکاح کر لے۔ در مختار میں ہے:

سبب وجوبها (يعني العدة) عقد النكاح وجوب عدت کا سبب وہ نکاح ہے جس میں بیوی

---

1 جامع الرموز فصل فی العدة المکتبۃ الاسلامیہ گنبد قاموس ایران ۵۷۸/۲ 2 فتاویٰ ہندیہ کتاب النکاح القسم السادس المحرمات التی یتلعق بها حق الغیر نورانی کتب خانہ پشاور ۲۸۰/۱

Fatawa Razawiyya, Volume 12

[Boxed Text] Confirmed by handing over and what follows in its path like death or privacy etc. And Allah knows best. She was handed over or what stands in its place, for example, death or privacy, etc. And Allah knows best. (T)

Issue 138: From Camp Meerut Lal Kurti Bazaar, Kothi Khan Bahadur Sahib, sent by Sheikh Mir Muhammad Sahib, 4 Shaban 1346 AH. Zaid and Amr (brother of Zaid's wedded wife) had a heated argument one day about something. Amr said to Zaid, his brother-in-law, "Please do not intend to come this way," meaning he should not come to his (Amr's) house. In response, Zaid, in a state of anger, said, "I have divorced her," or said, "I have already divorced her." He repeated these words three or four times. Before this, he had never used the word 'divorce' for his wife. In this situation, has the divorce taken place for Zaid's wedded wife or not?

Answer: Whatever Amr's intention might have been, since Zaid referred to his wife and said three times "I [have divorced] her" or "I have already divorced her", three divorces have occurred. Zaid has sinned, and the woman cannot return to his marriage without *halala*.

[Boxed Quote] Allah Almighty said: "Then she is not lawful for him after that until she marries another husband." Allah Almighty says: After the third divorce, she cannot be lawful for this husband again until that divorced woman marries someone else. (T)

And the excuse of anger is useless; divorce mostly happens in anger. And Allah Almighty knows best.

Issue 139: From Pali Marwar, near Jhalar Bar gate, asked by Bani Bakhsh Sahib, 7 Shawwal 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Ramzani, son of Ganga Nadaf, gave the following three divorces to his wife Janabat of the Nadaf tribe, resident of Pali, on 23 Rabi al-Awwal 1339 AH and turned her out. Five days later, he went to Maulvi Syed Ahmad Ali Sahib and stated his case. He replied, "I will hear the statements of both parties in the evening." He came after Isha prayer, took the statements of both parties and witnesses, and after giving a verbal decision on the divorce...

[Footnotes] 1. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Iddat, Mujtabai Press Delhi 1/255. 2. Al-Quran al-Karim 2/230.

फतावा रज़विया, खंड 12

[बॉक्स में लिखा पाठ] सौंपने और उसके समकक्ष चीज़ों जैसे मृत्यु या एकांत आदि से पुष्ट होता है। और अल्लाह बेहतर जानता है। उसे सौंप दिया गया हो या वह जो उसके स्थान पर हो, उदाहरण के लिए मृत्यु या एकांत, आदि। और अल्लाह बेहतर जानता है। (त)

मसला 138: कैंप मेरठ लाल कुर्ती बाज़ार, कोठी खान बहादुर साहब से, प्रेषक शेख मीर मोहम्मद साहब, 4 शाबान 1346 हिजरी। ज़ैद और अम्र (ज़ैद की विवाहिता पत्नी के भाई) के बीच एक दिन किसी बात पर तीखी बहस हुई। अम्र ने अपने बहनोई ज़ैद से कहा, "कृपया इस तरफ आने का इरादा न करें," जिसका अर्थ था कि वह उसके(अम्र के) घर न आए। इसके जवाब में ज़ैद ने गुस्से की हालत में कहा, "मैं उसे तलाक दे चुका हूँ," या कहा, "मैं तो उसे तलाक दे चुका हूँ," इसी तरह तीन-चार बार यही शब्द कहे। इससे पहले उसने अपनी पत्नी के लिए तलाक शब्द कभी नहीं कहा था। क्या इस स्थिति में ज़ैद की विवाहिता पर तलाक हो गया या नहीं?

उत्तर: अम्र का इरादा चाहे जो भी रहा हो, चूँकि ज़ैद ने अपनी पत्नी की ओर संकेत करते हुए तीन बार कहा "मैं उसे [तलाक दे चुका हूँ]" या "मैं तो उसे तलाक दे चुका हूँ", तो तीन तलाक हो गए। ज़ैद गुनहगार हुआ और औरत बिना हलाला के उसके निकाह में नहीं आ सकती।

[बॉक्स में उद्धरण] अल्लाह तआला ने फरमाया: "फिर वह उसके बाद उसके लिए तब तक हलाल नहीं है जब तक कि वह किसी और पति से निकाह न कर ले।" अल्लाह तआला कहता है: तीसरी तलाक के बाद वह इस पति के लिए दोबारा हलाल नहीं हो सकती जब तक कि वह तलाकशुदा महिला किसी दूसरे व्यक्ति से निकाह न कर ले। (त)

और गुस्से का बहाना बेकार है; तलाक अक्सर गुस्से में ही होता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 139: पाली मारवाड़, झालर बाड़ गेट के पास से, बनी बख्श साहब द्वारा पूछा गया, 7 शव्वाल 1339 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: रमज़ानी पुत्र गंगा नदाफ ने अपनी पत्नी जनाबत, जाति नदाफ, निवासी पाली को 23 रबी-उल-अव्वल 1339 हिजरी को निम्नलिखित तीन तलाक दिए और उसे निकाल दिया। पाँच दिन बाद वह मौलवी सैयद अहमद अली साहब के पास गया और अपनी स्थिति बताई। उन्होंने जवाब दिया, "मैं शाम को दोनों पक्षों के बयान सुनूँगा।" वह

ईशा की नमाज़ के बाद आए, दोनों पक्षों और गवाहों के बयान लिए और तलाक पर मौखिक फैसला देकर...

[पाद टिप्पणियाँ] 1. दुर्रे मुख्तार, इद्दत का अध्याय, मुजतबाई प्रेस दिल्ली 1/255। 2. अल-कुरान अल-करीम 2/230।

فتاوٰی رضویہ، جلد دو از دہم

المتأکد بالتسلیم وما جری مجراہ من موت او خلوت الخ واللہ تعالٰی اعلم۔ سپرد کردی گئی ہو یا وہ جو اس کے قائم مقام ہو مثلاً موت یا خلوت ہو، الخ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۱۳۸: از کیمپ میرٹھ لال کورتی بازار کوٹھی خان بہادر صاحب مرسلہ شیخ میر محمد صاحب ۴ شعبان ۱۳۴۶ھ زید اور عمرو (برادر منکوحہ زید) کی ایک روز کسی بات پر باہم سخت حجت ہوئی اور عمرو نے زید اپنے بہنوئی سے کہا کہ مہربانی کرکے اس طرف کا ارادہ نہ کیجئے جس کا مقصد یہ تھا کہ میرے (عمرو کے) مکان پر نہ آئے گا۔ اس کے جواب میں زید نے غصہ کی حالت میں کہا میں اس کو طلاق دے چکا، یا یہ کہا میں تو اس کو طلاق دے چکا، اسی طرح تین چار مرتبہ یہی الفاظ کہے، اس سے قبل اپنی زوجہ سے لفظ طلاق کبھی نہ کہے تھے، کیا اس صورت میں زید کی منکوحہ پر طلاق ہو گئی یا نہیں؟

الجواب: عمرو کی مراد اس طرف سے کچھ بھی سہی جبکہ زید اپنی زوجہ کی نسبت سمجھا اور اُسے تین بار کہا میں اس کو یا میں تو اس کو طلاق دے چکا، تین طلاقیں ہو گئیں، زید گنہگار ہوا اور عورت بے حلالہ اس کے نکاح میں نہیں آ سکتی۔

قال اللہ تعالٰی فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُ 2 اللہ تعالٰی نے فرمایا: تیسری طلاق کے بعد اس خاوند کے لئے دوبارہ حلال نہیں ہوسکتی تا وقتیکہ وہ مطلقہ کسی دوسرے شخص سے نکاح نہ کر لے۔ (ت)

اور غصہ کا عذر بیکار ہے طلاق اکثر غصہ ہی میں ہوتی ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۱۳۹: از پالی مارواڑ متصل دروازہ جھالر باڑ مسئولہ بنی بخش صاحب ۷ شوال ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مسمی رمضانی ولد گنگا نداف نے اپنی عورت جنابت قوم نداف ساکنہ پالی کو ۲۳ ربیع الاول ۱۳۳۹ھ کو حسب ذیل تین طلاقیں دیں اور نکال دیا، پانچ روز بعد مولوی سید احمد علی صاحب کے پاس جاکر اپنا حال کہا، انہوں نے جواب دیا میں شام کو فریقین کے بیان سنوں گا، بعد عشاء آئے اور فریقین اور گواہوں کے بیان لے کر طلاق کا زبانی فیصلہ دے کر

1 درمختار باب العدة مطبع مجتبائی دہلی ۲۵۵/۱ 2 القرآن الکریم ۲۳۰/۲

Fatawa Rizwia, Volume 12

The statements taken are recorded below:

Statement of the first witness named Rahman Ali Shah Darwish: I am aware of this divorce. He divorced his woman. This girl was sitting on the platform of her father's house, then I said to her, "Come, daughter! Let me take you to your house." Then she went with me. At that time, Ramzani threw a stone and said, "Shah Sahib, where are you taking her? I have told this girl to go to her father's house." Then I went back and sat in my place. Then the aforementioned Ramzani was asked if this statement is true or not; he said, "Yes, it is true."

Statement of the second witness named Bani Bakhsh, son of Hasan Ji Nadaf: I state by faith that this (Ramzani) was talking nonsense. I said that if keeping her is not acceptable to you, then leave her, i.e., give her a divorce. Then he said, "I already gave her a divorce yesterday, and as for the remaining four rupees of the dower, I am demanding it from her father; for the rest of what I owe, I will sell utensils and pay." Ramzani Sahib was asked, "Is he stating the truth?" He said, "Yes." Then, a Quran Majeed was brought, and he was told that if you have not given a divorce, then take the Quran Sharif in your hands and swear an oath. He replied, "I will not swear an oath. Give the Quran to this woman; if she swears, she will be truthful. Perhaps she also wants a divorce, and if she swears for the sake of riddance, then there will be no remedy." He gave the same answer again: "If she swears, she is truthful." Then the girl was told, "If he has given you a divorce, then take the Quran Sharif in your hands and swear an oath." She extended both hands to take the Quran Sharif for the oath, but thinking that she might be in her menses, the Quran was not placed in her hands. She was told to state by swearing by God how he gave the divorce. Then she stated under oath, "We have frequent fights. It happened that night too, and he said, 'I will fix you in the morning.' When I woke up in the morning, he asked, 'Is there flour or not?' I said, 'There is a little flour, not much.' Then he said, 'I had asked for a bandola (meal), why didn't you grind it?' I said, 'I am about to grind it now.' Then he said, 'There is no need now, you bread-baker (roti-beikar).' Then, at his word, I started baking bread. Then he said, 'You are divorced, so go.' Then I got up and came to my father's house. After a while, my uncle was called and he took me back, and he made both of us understand and seated us together. Then I cooked bread, and he said to me, 'Why did you come? You are divorced, so go.' Then I came away from there." The rest of the story about Shah Sahib being the first witness and the stone, etc., was

stated. Then the named Ramzani was asked, "Is this woman telling the truth?" He said, "Yes, it is true."

फतावा रिज़विया, खंड 12

बयान दर्ज किए गए, वे बयान निम्नलिखित हैं:

प्रथम गवाह रहमान अली शाह दरवेश का बयान: मैं इस तलाक से वाकिफ हूं। उसने अपनी औरत को तलाक दिया और यह लड़की अपने बाप के मकान के चबूतरे पर बैठी थी, तब मैंने उससे कहा कि "आ बेटी! मैं तुझे तेरे मकान पर ले चलूँ।" तब वह मेरे साथ हो ली। उस समय रमज़ानी ने एक पत्थर फेंका और कहा कि "शाह साहब इसे कहाँ ले जा रहे हो? मैंने इस लड़की को बाप के घर जाने को कह दिया है।" और मैं अपनी जगह जा बैठा। तब उक्त रमज़ानी से पूछा गया कि क्या बयान सच है या नहीं; उसने कहा, "हाँ, सच है।"

द्वितीय गवाह बनी बख्श पुत्र हसन जी नदाफ का बयान: मैं ईमान से बयान करता हूँ कि यह (रमज़ानी) वाही-तबाही बकता था। मैंने कहा कि अगर इसे रखना मंजूर न हो तो इसे छोड़ दे यानी तलाक दे दे, तब उसने कहा कि "मैं इसे कल तलाक दे चुका हूँ, और बाकी रहा महर चार रुपया तो उसके बाप से मैं माँगता हूँ; बाकी जो मुझे देना है उसके लिए बर्तन बेच कर दे दूँगा।" रमज़ानी साहब से कहा गया कि "क्या यह सच कह रहा है?" उसने कहा, "हाँ।" फिर एक कुरान मजीद मँगवाकर उससे कहा गया कि अगर तूने तलाक नहीं दिया है तो कुरान शरीफ हाथ में लेकर कसम खा ले। उसने जवाब दिया, "मैं कसम नहीं खाता। इस औरत को कुरान दे दो; अगर यह कसम खा लेगी तो सच्ची होगी। शायद वह भी तलाक चाहती हो और छुटकारे के वास्ते कसम खा ले तो फिर कोई इलाज न होगा।" उसने फिर यही जवाब दिया कि "अगर यह कसम खा ले तो यह सच्ची है।" तब लड़की से कहा गया कि "तुझे अगर इसने तलाक दे दिया हो तो कुरान शरीफ हाथ में लेकर कसम खा ले।" उसने दोनों हाथ कसम के लिए कुरान शरीफ लेने को बढ़ाए लेकिन इस ख्याल से कि शायद वह मासिक धर्म (हैज़) से हो, कुरान उसके हाथ में न दिया गया और कहा गया कि तू खुदा की कसम खाकर बयान कर कि किस तरह तलाक दिया है। तब उसने कसमिया बयान किया कि "हमारी बार-बार लड़ाई रहती है। उस रात को भी हुई और उसने कहा कि 'मैं तुझे सुबह ठीक करूँगा।' जब सुबह मैं उठी तो उसने कहा कि 'आटा है या नहीं?' तो मैंने कहा कि 'आटा थोड़ा है, ज्यादा नहीं।' तब उसने कहा, 'बंदोले के वास्ते कहा था, तूने क्यों नहीं पीसा?' अब मैंने कहा कि 'अब पीसने लाई हूँ।' तब उसने कहा, 'अब कोई ज़रूरत नहीं तू रोटी बेकर (रोटी बनाने वाली)।' तब उसके कहने से मैं रोटी बनाने लगी, तो उसने कहा कि 'तुझे तलाक है तो चली जा।' तब उठकर मैं अपने बाप के घर चली आई। तो थोड़ी देर बाद चाचा मुझे बुलवाकर ले गए तो उन्होंने हम दोनों को समझाकर बिठा

दिया। तब मैंने रोटी पकाई तो उसने मुझसे कहा कि 'तू क्यों आई? तुझे तलाक है तो चली जा।' तो फिर मैं वहाँ से चली आई।" बाकी शाह साहब गवाह अव्वल और पत्थर वगैरह का किस्सा बयान किया गया। तब मुसम्मी रमज़ानी से पूछा गया, "क्या यह औरत सच कहती है?" उसने कहा, "हाँ, सच।"

पृष्ठ 372 का 688

فتاویٰ رضویہ، جلد دوازدہم

بیان میں چلے گئے وہ بیانات درج ذیل ہیں:

بیان گواہ اول مسمیٰ رحمان علی شاہ درویش: اس طلاق سے میں واقف ہوں اس نے اپنی عورت کو طلاق دی اور یہ لڑکی اپنے باپ کے مکان چبوترے پر بیٹھی تھی تب میں نے اُس سے کہا کہ آبیٹی! میں تجھ کو تیرے مکان پر لے چلوں تب وہ میرے ساتھ ہولی اُس وقت رمضانی نے ایک پتھر پھینکا اور کہا کہ شاہ صاحب اس کو کہاں لے جاتے ہو میں اس لڑکی کو باپ کے گھر جانے کو کہہ دیا اور میں نے اپنی جگہ جابیٹھا تب رمضانی مذکور سے کہا گیا کہ بیان سچ ہے یا نہیں، کہا ہاں سچ ہے۔

بیان گواہ ثانی مسمیٰ بنی بخش ولد حسن جی نداف: میں ایمان سے بیان کرتا ہوں کہ یہ (رمضانی) واہی تباہی بکتا تھا، میں نے کہا کہ اگر اس کو رکھنا منظور نہ ہو تو اس کو چھوڑ دے یعنی طلاق دے دے، تب اس نے کہا کہ میں اس کو کل طلاق دے چکا ہوں، اور باقی رہا مہر چار روپیہ تو اس کے باپ سے میں مانگتا ہوں باقی پانے برتن بیچ کردے دونگا۔ رمضانی صاحب سے کہا گیا یہ سچ بیان کرتا ہے؟ اس نے کہا ہاں۔ پھر ایک قرآن مجید منگوا کر اس سے کہا گیا اگر تو نے طلاق نہیں دی ہے تو قرآن شریف ہاتھ میں لے کر قسم کھالے، جواب دیا: میں قسم نہیں کھاتا اس عورت کو قرآن دے دواگر قسم کھالے گی سچی ہوگی، شاید وہ بھی طلاق چاہتی ہو اور چھٹکارے کے واسطے قسم کھالے تو پھر کوئی علاج نہ ہوگا، اس نے پھر یہی جواب دیا اگر یہ قسم کھالے تو یہ سچی ہے، تب لڑکی سے کہا گیا تجھ کو اگر اس نے طلاق دے دی ہو تو قرآن شریف ہاتھ میں لے کر قسم کھالے اس نے دونوں ہاتھ قسم کیلئے قرآن شریف لینے کو بڑھائے لیکن اس خیال سے کہ شاید حیض سے ہو قرآن اس کے ہاتھ میں نہ دیا اور کہا تو خدا کی قسم کھا کر بیان کر کہ کس طرح

طلاق دی ہے تب اس نے قسمیہ بیان کیا کہ ہمارے بار بار لڑائی رہتی ہے اس رات کو بھی ہوئی اور اس نے کہا کہ میں تجھ کو صبح ٹھیک کروں گا، جب صبح میں اُٹھی تو اس نے کہا کہ آٹا ہے یا نہیں؟ تو میں نے کہا کہ آٹا تھوڑا ہے زیادہ نہیں، تب اس نے کہا بندولے کے واسطے کہا تھا تو نے کیوں نہیں پیسا؟ اب میں نے کہا کہ اب پیسنے لانی ہوں، تب اس نے کہا اب کوئی ضرورت نہیں تو روٹی بیکر، تب اس کے کہنے سے روٹی بیکنے لگ گئی، تو اس نے کہا کہ تجھ طلاق ہے تو چلی جا، تب اٹھ کر اپنے باپ کے گھر چلی آئی تو تھوڑی دیر بعد چچا مجھ کو بلوا کر لے گئے تو ہم دونوں کو سمجھا کر بٹھا آئے تب میں نے روٹی پکائی تو اس نے مجھے کہا کہ تو کیوں آئی تجھ کو طلاق ہے تو چلی جا، تو پھر میں وہاں سے چلی آئی، باقی شاہ صاحب گواہ اول اور پتھر وغیرہ کا قصہ بیان کیا، تب مسمیٰ رمضانی سے دریافت کیا گیا یہ عورت سچ کہتی ہے؟ اس نے کہا ہاں سچ۔

Fatawa-e-Razvia Volume 12

...is only this; therefore, the request is: will divorce occur based on these statements or not? Explain and you will be rewarded.

The Answer: The statements of the witnesses are deficient and there is no mention of three divorces in them. The woman's taking an oath is merely unreliable as she is the claimant. A claimant's oath is not heard; they are asked for witnesses. If they cannot provide witnesses, the oath is placed upon the defendant. Ramzani's confirmation of the witnesses' statements will only prove divorce [in general], not three divorces, as there was no mention of it in the witnesses' statements themselves. Yes, if it is proven that Ramzani heard the woman's mentioned statement and confirmed it, then certainly three divorces are proven. If Ramzani admits to confirming the woman's statement, then good; otherwise, two witnesses will be needed for this confirmation who, saying 'I testify,' give full and correct Sharia testimony. If this confirmation is not proven by testimony, then the ruling of three divorces cannot be given. Yes, if it is proven by Ramzani's admission or by the testimony of two just witnesses that Ramzani confirmed the statement of any witness among them, then one divorce occurred. If he did not reconcile and the iddah (waiting period) passed, then the woman is out of the marriage. If he reconciled within the iddah, she will be considered his wife as before. And if the confirmation of even one witness is not proven, then even one divorce will not be ruled. But if the woman knows that he has given her three divorces, it will be obligatory for her to escape from him however possible and obtain a public divorce, even if in exchange for her dowry and by giving wealth. And Allah Almighty knows best.

Problem 140: From Dipasrai, Pargana Sambhal, District Moradabad, at the house of Haji Amir Hussain Sahib, 30 Rabi-ul-Awwal Sharif 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid intended in his heart to divorce his wife but did not utter any word of divorce from his tongue, and for two years he did not have intercourse with her, but maintained all kinds of open interaction, eating, drinking, and full household management behavior with her equally. In this situation, did divorce occur or not? And does the wife's previous marriage remain intact, or should it be renewed? Explain and you will be rewarded.

The Answer: The previous marriage remains, so there is no need for renewal. Divorce cannot occur by mere intention, even if one intends a hundred times a day. Unless a word is uttered by the tongue, divorce will not occur. In fact, even a mere movement

of the tongue is not sufficient until there is enough sound that it reaches one's own ears if there is no obstacle. If the tongue moved and the sound did not even reach one's own ears, then according to the correct school of thought, divorce will not occur. It is in Tanwir al-Absar and Durr al-Mukhtar:

फतावा-ए-रज़विया जिल्द 12

...है फ़क़त; लिहाज़ा अर्ज़ यह है कि इन बयानों पर तलाक़ होगी या नहीं? बेनवा तुजरूवा (बताएं और पुण्य कमाएं)

अल-जवाब (उत्तर): गवाहों के बयान अपूर्ण हैं और उनमें तीन तलाक़ों का कहीं उल्लेख नहीं है और औरत का क़सम खाना मात्र अविश्वसनीय है क्योंकि वह दावेदार (मुद्दई) है। दावेदार की शपथ नहीं सुनी जाती, उससे गवाह मांगे जाते हैं। यदि वह गवाह न दे सके तो प्रतिवादी (मुदआ अलैह) पर शपथ रखी जाती है। रमज़ानी ने जो गवाहों के बयान की पुष्टि की उससे केवल तलाक़ सिद्ध होगी, तीन तलाक़ों का प्रमाण नहीं क्योंकि इसका उल्लेख स्वयं गवाहों के बयान में नहीं था। हाँ, यदि यह सिद्ध हो जाए कि रमज़ानी ने उक्त औरत का बयान सुनकर उसकी पुष्टि की, तो निस्संदेह तीन तलाक़ें सिद्ध हो गईं। यदि रमज़ानी औरत के बयान की पुष्टि स्वीकार करता है तो बेहतर है, अन्यथा इस पुष्टि पर दो गवाह लेने होंगे जो 'गवाही देता हूँ' कहकर पूरी सही शरीअती गवाही दें। यदि गवाही से यह पुष्टि सिद्ध न हो तो तीन तलाक़ों का आदेश नहीं दिया जा सकता। हाँ, यदि उनमें से किसी गवाह के बयान की पुष्टि करना रमज़ानी के इक़रार या दो न्यायप्रिय गवाहों के बयान से सिद्ध हो जाए, तो एक तलाक़ हुई। यदि रुजू (सुलह) नहीं की और इद्दत बीत गई तो औरत निकाह से निकल गई, और यदि इद्दत के भीतर रुजू कर लिया था तो औरत बदस्तूर उसकी पत्नी मानी जाएगी। और यदि किसी एक गवाह की भी पुष्टि सिद्ध न हो तो एक तलाक़ का भी आदेश नहीं होगा। लेकिन यदि औरत जानती है कि उसने मुझे तीन तलाक़ें दी हैं, तो उस पर फ़र्ज़ होगा कि जिस तरह बन सके उससे भागे, खुले तौर पर तलाक़ प्राप्त करे, भले ही अपने महर के बदले और धन देकर। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

मसला १४०: स्थान दीपा सराय, परगना संभल, ज़िला मुरादाबाद, हाजी अमीर हुसैन साहब के मकान से, ३० रबी-उल-अव्वल शरीफ़ १३३८ हिजरी। क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि ज़ैद ने अपनी पत्नी को तलाक़ देने की नियत दिल में तो की लेकिन ज़ुबान से कोई तलाक़ का शब्द नहीं निकाला और दो वर्ष तक उसने उससे संभोग भी नहीं किया, लेकिन हर तरह का मेल-मिलाप और खान-पान और घर गृहस्थी का पूर्ण प्रबंधन बराबर उसके साथ रखा। क्या इस स्थिति में तलाक़ हुई या नहीं? और बीबी का वही पिछला निकाह क़ायम रहा या फिर उसका नवीनीकरण किया जाए? बेनवा तुजरूवा।

अल-जवाब: पिछला निकाह बाक़ी है, इसलिए नवीनीकरण की कोई आवश्यकता नहीं है। मात्र नियत से तलाक़ नहीं हो सकती, भले ही दिन में सौ बार नियत करे। जब तक ज़ुबान से शब्द नहीं कहेगा, तलाक़ नहीं होगी, बल्कि ज़ुबान की खाली हरकत भी पर्याप्त नहीं है। जब तक इतनी आवाज़ न हो कि यदि कोई बाधा न हो तो अपने कान तक पहुँचे। ज़ुबान में हरकत हुई और आवाज़ इतनी भी न निकली कि अपने कान तक पहुँच सके तब भी सही मत (मज़हब) में तलाक़ नहीं होगी। तनवीरुल अबसार और दुर्रे मुख़्तार में है:

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

ہے فقط، لہٰذا عرض یہ ہے کہ ان بیانوں پر طلاق ہوگی یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: گواہوں کے بیان ناقص ہیں اور ان میں تین طلاقوں کا کہیں ذکر نہیں اور عورت کا قسم کھانا محض نامعتبر ہے کہ وہ مدعیہ ہے مدعی کا حلف نہیں سُنا جاتا اس سے گواہ مانگے جاتے ہیں گواہ نہ دے سکے تو مدعاعلیہ پر حلف رکھا جاتا ہے۔ رمضانی نے جو گواہوں کے بیان کی تصدیق کی اس سے صرف طلاق ثابت ہوگی تین طلاقوں کا ثبوت نہیں کہ اس کا ذکر بیان شاہدان میں خود نہ تھا، ہاں اگر ثابت ہو کہ عورت کا بیان مذکور سن کر رمضانی نے اس کی تصدیق کی تو بیشک تین طلاقیں ثابت ہوگئیں تصدیق بیان عورت کا اگر رمضانی کو اقرار ہے تو بہتر ورنہ اس تصدیق پر دو گواہ لینے ہوں گے جو 'گواہی دیتا ہوں' کہہ کر پوری صحیح شرعی شہادت ادا کریں، اگر شہادت سے یہ تصدیق نہ ثابت ہو تو تین طلاقوں کا حکم نہیں ہوسکتا۔ ہاں اگر ان میں کسی گواہ کا بیان رمضانی کا تصدیق کرنا اس کے اقرار یا دو شاہدین عادلین کے اظہار سے ثابت ہو تو ایک طلاق ہوئی، اگر رجعت نہ کی اور عدت گزر گئی تو عورت نکاح سے نکل گئی، اور عدت کے اندر رجعت کرلی تھی تو عورت بدستور اس کی زوجہ مانی جائے گی، اور اگر کسی گواہ کی بھی تصدیق ثابت نہ ہو تو ایک طلاق کا بھی حکم نہ ہو لیکن عورت اگر جانتی ہے کہ اس نے مجھے تین طلاقیں دی ہیں تو اس پر فرض ہوگا کہ جس طرح بن سکے اس سے بھاگے باعلانیہ طلاق حاصل کرے اگرچہ اپنے مہر کے بدلے اور مال دے کر۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۴۰: از مقام دیپاسرائے پرگنہ سنبھل ضلع مرادآباد برمکان حاجی امیر حسین صاحب ۳۰ ربیع الاول شریف ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی زوجہ کی

طلاق کی نیت دل میں تو کی لیکن زبان سے کوئی طلاق کا لفظ نہیں نکالا اور دور برس تک اس نے اس سے مجامعت بھی نہیں کی لیکن ہر طرح کا کھلا ملا اور خورد نوش اور کمال انتظام خانہ داری کا برتاؤ برابر اس کے ساتھ رکھا، آیا اس صورت میں طلاق واقع ہوئی یا نہیں؟ اور بی بی کا وہی نکاح سابق قائم رہا یا پھر اس کی تجدید کی جاوے۔ بینوا توجروا

الجواب: نکاح سابق باقی ہے اس وجہ سے تجدید کی کوئی حاجت نہیں، نری نیت سے طلاق نہیں ہوسکتی اگرچہ دن میں سو بار نیت کرے، جب تک زبان سے لفظ نہ کہے گا طلاق نہ ہوگی بلکہ زبان کی خالی حرکت بھی کافی نہیں، جب تک اتنی آواز نہ ہو کہ اگر کوئی مانع نہ ہو تو اپنے کان تک پہنچے، زبان کو جنبش ہوئی اور آواز اتنی بھی نہ نکلی کہ اپنے کان تک پہنچ سکتی جب بھی صحیح مذہب میں طلاق نہ ہوگی۔ تنویر الابصار ودر مختار میں ہے:

Fatawa Razawiyya Volume 12

[Box 1] Arabic: Adna al-mukhaafata ismaa'u nafsihi wa yajree dhaalika fee kulli maa yata'allaqu bin-nutqi ka-tasmiyatin 'ala dhabeehatin wa 'itaaqin wa talaaqin wa ghayrihaa falaw tallaqa wa lam yusmi' nafsahu lam yasihha fil asahh. 1 Urdu: The minimum for a low voice is that one hears it oneself, and this rule applies to everything related to speech, such as saying 'Bismillah' over a sacrifice, manumission, divorce, etc. Thus, if a divorce is pronounced but the person cannot hear it himself, it will not be valid according to the most correct opinion. (T)

Yes, if the voice was loud enough that it could reach one's own ears, even if it did not actually reach due to some hindrance such as the noise of a mill, rain, deafness, etc., the divorce will occur.

[Box 2] Arabic: Adna al-haddu khurooju sawtin yasilu ila udhunihi wa law hukman kamaa law kaana hunaaka maani'un min samamin aw jiballata aswaatin aw nahwa dhaalika wallahu ta'ala a'lam. Urdu: The minimum limit is that the sound is loud enough to reach one's own ears, even if only legally (hukman), for instance, if the sound would have reached had there been no deafness, noise, etc. (T) And Allah Almighty knows best.

Mas'ala 141: From Ramah, Tehsil Gujar Khan, Post Office Jatli, District Rawalpindi, sent by Taj Muhammad Sahib, 18 Shawwal 1338 AH. What do the scholars of religion say: a boy said to his father, "Give divorce to my wife," and he (the father) gave the divorce. Can this divorce take place or not? The Answer: A minor (na-baligh) cannot give a divorce himself, nor can he appoint someone else as an agent (wakil), nor can the father give a divorce on his behalf through guardianship (wilayat). For it is a harm (darar), and guardianship is for looking after one's interests/welfare. (Because this is a harm while guardianship is for compassion/care. T). And Allah Almighty knows best.

Mas'ala 142: 11 Rabi' al-Awwal Sharif 1317 AH. What do the scholars of religion say in this matter: a woman is four months pregnant and the husband gives a divorce; is the divorce permissible or not? Please clarify and may you be rewarded. The Answer: It is permissible and lawful, even if she is pregnant, even if he had intercourse with her today or just now.

1 Durr-e-Mukhtar Sharh Tanveer al-Absar, Section: Wai-yajharu al-Imam, Matba Mujtabai Delhi 1/9

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

[बॉक्स 1] अरबी: अदना अल-मुख़ाफ़ता इस्मा'उ नफ़सिही व यजरी ज़ालिका फ़ी कुल्लि मा यतअल्लकु बिन-नुक़्क़ि क-तस्मियतिन 'अला ज़बीहतिन व 'इताक़िन व तलाक़िन व ग़ैरिहा फ़लौ तल्लाक़ा व लम युस्मि' नफ़सहू लम यसिह्हा फ़िल असह्। 1 उर्दू: धीमी आवाज़ की न्यूनतम सीमा यह है कि वह स्वयं को सुनाई दे, और यह नियम उन सभी चीज़ों में लागू होगा जिनका संबंध बोलने से है, जैसे कि ज़बीहा (पशु वध) पर बिस्मिल्लाह कहना, आज़ाद करना, तलाक़ देना आदि। अतः यदि किसी ने तलाक़ दी और वह उसे स्वयं नहीं सुन सका, तो सबसे सही मत के अनुसार तलाक़ नहीं होगी। (त)

हाँ, यदि आवाज़ इतनी थी कि अपने कानों तक पहुँच सकती थी, भले ही किसी बाधा जैसे चक्की के शोर, बारिश, बहरेपन आदि के कारण न पहुँची हो, तो तलाक़ हो जाएगी।

[बॉक्स 2] अरबी: अदना अल-हद्दु खुरुजु सौतिन यसिलु इला उज़ुनिही व लौ हुक्मन कमा लौ काना हुनाका मानि'उन मिन सममिन औ जिबल्लत असवातिन औ नहवा ज़ालिका वल्लाहु तआला अ'लम। उर्दू: न्यूनतम सीमा यह है कि आवाज़ इतनी हो कि वह अपने कानों तक पहुँचे, चाहे वह कानूनी रूप से (हुक्मन) ही क्यों न हो, उदाहरण के लिए यदि बहरापन, शोर-शराबा आदि न होता तो आवाज़ पहुँच जाती। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 141: रामाह, तहसील गूजर खां, डाकघर जातली, ज़िला रावलपिंडी से ताज मोहम्मद साहब द्वारा भेजा गया, 18 शव्वाल 1338 हिजरी। धर्म के विद्वान क्या कहते हैं: एक लड़के ने अपने पिता से कहा कि तुम मेरी पत्नी को तलाक़ दे दो, और उसने तलाक़ दे दी। क्या यह तलाक़ प्रभावी हो सकती है या नहीं? उत्तर: नाबालिग न तो खुद तलाक़ दे सकता है और न ही किसी दूसरे को वकील (प्रतिनिधि) बना सकता है, और न ही पिता विलायत (अभिभावकत्व) के माध्यम से उसकी ओर से तलाक़ दे सकता है। क्योंकि यह एक क्षति (ज़रर) है, और विलायत भलाई और देखभाल के लिए होती है। (क्योंकि यह नुकसान है जबकि अभिभावकत्व सहानुभूति के लिए होता है। त)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 142: 11 रबी-उल-अव्वल शरीफ 1317 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: एक महिला चार महीने की गर्भवती है और पति तलाक़ देता है; क्या तलाक़ जायज़ है या नहीं? स्पष्ट

करें और पुण्य प्राप्त करें। उत्तर: यह जायज़ और हलाल है भले ही वह गर्भवती हो, यहाँ तक कि भले ही उसने आज ही या अभी-अभी उससे संभोग किया हो।

1 दुर्रे मुख़्तार शरह तनवीर अल-अब्सार, खंड: वइ-यजहरू अल-इमाम, मतबा मुजतबाई दिल्ली 1/9

पृष्ठ 374 का 688

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

[پہلا خانہ] عربی: ادنی المخافتة اسماع نفسه ویجری ذلك فی کل مایتعلق بنطق کتسمیة علی ذبیحة وعتاق وطلاق وغیرھا فلو طلق ولم یسمع نفسه لم یصح فی الاصح ۱۔ اردو: مخفی آواز ادنیٰ یہ ہے کہ خود کو سنائے، اور یہ حکم ان تمام میں جاری ہو گا جن کا تعلق نطق سے ہو ، مثلاً ذبیحہ پر بسم اللہ، آزاد کرنا ، طلاق دینا وغیرہ ، تو اگر طلاق کہی اور خود نہ سن سکا ، تو صحیح قول میں طلاق نہ ہو گی (ت)

ہاں اگر آواز اتنی تھی کہ اپنے کان تک پہنچ سکتی اگرچہ کسی مانع مثلاً غل شور چکی ، مینہ، بہرے پن وغیرہ کے سبب نہ پہنچی طلاق ہو جائے گی ،

[دوسرا خانہ] عربی: ادنی الحد خروج صوت یصل الی اذنه ولو حکماً کما لو کان هناك مانع من صمم اوجبلة اصوات اونحو ذلک واللہ تعالیٰ اعلم ۔ اردو: ادنیٰ حد یہ ہے کہ آواز اتنی ہو کہ اس کے اپنے کانوں تک پہنچے اگر چہ حکماً ایسا ہو مثلاً آواز پہنچ جاتی اگر وہاں بہرہ پن شور و غل وغیرہ نہ ہوتا۔ (ت) واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۱۴۱: از رامہ تحصیل گوجر خاں ڈاکخانہ جاتلی ضلع روالپنڈی مرسلہ تاج محمد صاحب ۱۸ شوال ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین، ایک لڑکے نے اپنے باپ سے بولا کہ تم میری زوجہ کو طلاق دے دو ، اس نے طلاق دے دی ہے ، یہ طلاق واقع ہو سکتی ہے یا نہیں؟ الجواب: نابالغ نہ خود دے سکتا ہے نہ دوسرے کو وکیل کر سکتا ہے، نہ باپ بذریعہ ولایت اُس کی طرف سے طلاق دے سکتا ہے فانہ ضرر والولایة للنظر (کیونکہ یہ تو ضرر ہے جبکہ ولایت شفقت کے لئے ہوتی ہے۔ت) واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۱۴۲: ۱۱ ربیع الاول شریف ۱۳۱۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین مسئلہ میں کہ عورت چار ماہ کا حمل رکھتی ہے اور شوہر طلاق دے تو طلاق جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا الجواب: جائز و حلال ہے اگر چہ حمل میں بلکہ آج ہی بلکہ ابھی ابھی اس سے جماع کر چکا ہو،

1 درمختار شرح تنویرالابصار فصل ویجھرا الامام مطبع مجتبائی دہلی ۹/۱

صفحہ 374 از 688

Fatawa-e-Razvia Volume 12

In Durr-ul-Mukhtar: It is permissible to divorce an elderly woman (post-menopausal), a minor, and a pregnant woman even after intercourse, because the dislike for divorcing a menstruating woman after intercourse during her period of purity (Tuhr) is due to the suspicion of pregnancy, which is absent here. (T) [Arabic: فی الدرالمختار حل طلاقهن ای الأیسة و الصغیرة و الحامل عقب وطی لان الکراهة فیمن تحیض لتوهم الحبل وهو مفقود ههنا -1]

However, one should give a single revocable (Raj'i) divorce; if one gives two or three, they will be a sinner.

In Durr: Bid'i (innovated/sinful) divorce is that where three divorces, whether given separately, or two given at once or separately, etc. (T) [Arabic: فی الدر البدعی ثلث متفرقة او ثنتان بمرة او مرتین الخ-2]

Similarly, giving even a single irrevocable (Ba'in) divorce is a sin according to 'Zahir-ur-Riwayah'.

In Radd-ul-Muhtar: A single irrevocable (Ba'in) divorce is a Bid'i divorce, according to the manifest narration. And Allah Almighty knows best. (T) [Arabic: فی ردالمحتار الواحدة البائنة بدعیة فی ظاہر الروایة -3 واللہ تعالی اعلم۔]

Problem 143: From Rewari Post Office, Amria, District Pilibhit, submitted by Mr. Muhammad Bakhsh and Zulfiqar Khan, 4 Sha'ban 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this: A person, in a state of anger due to the reproach of his wife's brothers, divorced his wife. At the time of divorce, the woman was 5 and a half months pregnant. After the divorce and upon completion of the pregnancy term, a boy was born to the woman, who died after living for three or four days. Is this divorce valid or invalid? In such a case, whatever the legal ruling is, please inform us; can this woman remarry elsewhere? State it and be rewarded.

The Answer: Pregnancy is not an obstacle to the occurrence of divorce. If the divorce was 'Ba'in' (irrevocable), then it occurred absolutely. If it was 'Raj'i' (revocable) and neither a verbal recantation (Raja'at) was made nor was the wife touched until the child was born, then after childbirth, the woman is out of the marriage contract. Now she has the option to marry whomever [she wishes]...

1 Durr-ul-Mukhtar Sharh Tanveer al-Absar, Fasl: Wa Yajhar-ul-Imam, Matba' Mujtabai Delhi, 1/216 2 Durr-ul-Mukhtar Sharh Tanveer al-Absar, Fasl: Wa Yajhar-ul-Imam,

Matba' Mujtabai Delhi, 1/216 3 Radd-ul-Muhtar, Kitab al-Talaq, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/418

फतवा-ए-रजविया खंड 12

दुर्रुल मुख्तार में है: वृद्ध महिला (रजोनिवृत्त), नाबालिग और गर्भवती महिला को संभोग के बाद भी तलाक देना हलाल है क्योंकि मासिक धर्म वाली महिला को शुद्धता की अवधि (तुहर) में संभोग के बाद तलाक देना इसलिए नापसंद (मकरूह) है क्योंकि वहां गर्भ ठहरने की संभावना होती है, जबकि यह संभावना यहाँ नहीं है। (त) [अरबी: فی الدرالمختار حل طلاقهن ای الأیسة و الصغیرة و الحامل عقب وطی لان الکراهة فیمن تحیض لتوهم الحبل وهو مفقود ههنا -1]

लेकिन एक रजई (प्रतिसंहरणीय) तलाक दे, अगर दो या तीन देगा तो गुनहगार होगा।

दुर्र में है: बिदई (नवाचारित/पापपूर्ण) तलाक वह है जहाँ तीन तलाकें चाहे अलग-अलग हों या दो तलाकें एक बार में या अलग-अलग दी जाएं आदि। (त) [अरबी: فی الدر البدعی ثلث متفرقة او ثنتان بمرة او مرتین الخ-2]

इसी तरह, एक ही बाइन (अप्रतिसंहरणीय) तलाक देना भी 'ज़ाहिर-उर-रिवायत' के अनुसार गुनाह है।

रद्दुल मुहतार में है: एक बाइन (अप्रतिसंहरणीय) तलाक, बिदई तलाक है, ज़ाहिर रिवायत के अनुसार। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त) [अरबी: فی ردالمحتار الواحدة البائنة بدعیة فی ظابر الروایة -3 واللہ تعالی اعلم۔]

मसला 143: रेवाड़ी डाकखाना, अमरिया, जिला पीलीभीत से सायल जनाब मुहम्मद बख्श साहब और ज़ुल्फ़िकार खान साहब, 4 शाबान 1339 हिजरी। विद्वान क्या कहते हैं: एक व्यक्ति ने गुस्से में अपनी पत्नी के भाइयों की फटकार के कारण अपनी पत्नी को तलाक दे दिया। तलाक के समय महिला 5.5 महीने की गर्भवती थी। तलाक के बाद और गर्भावस्था की अवधि पूरी होने पर महिला को एक लड़का पैदा हुआ, जो तीन-चार दिन जीवित रहकर मर गया। क्या यह तलाक जायज़ है या नाजायज़? और ऐसी स्थिति में जो कानूनी हुक्म हो सूचित किया जाए, क्या इस महिला का दूसरी जगह निकह। (विवाह) हो सकता है? बयान करें और पुण्य पायें।

जवाब: गर्भवती होना तलाक होने में बाधा नहीं है। यदि तलाक 'बाइन' (अप्रतिसंहरणीय) था तो बिल्कुल हो गया, और यदि 'रजई' (प्रतिसंहरणीय) था और बच्चे के पैदा होने तक न मौखिक रजअत (सुलाह) की गई और न पत्नी को छुआ गया, तो प्रसव के बाद महिला निकाह से निकल गई। अब उसे अधिकार है जिससे [चाहे]...

1 दुर्रुल मुख्तार शरह तनवीर अल-अबसार, फसल: व यजहर-उल-इमाम, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/216 2 दुर्रुल मुख्तार शरह तनवीर अल-अबसार, फसल: व यजहर-उल-इमाम, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/216 3 रद्दुल मुहतार, किताब अल-तलाक़, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/418

فتاوٰی رضویہ جلد دو ازدہم

فی الدرالمختار حل طلاقھن ای الأیسة و الصغیرة و الحامل عقب وطی لان الکراھة فیمن تحیض لتوھم الحبل وھو مفقود ھھنا -1 درمختار میں ہے، بوڑھی عورت، نابالغہ اور حاملہ عورت کو جماع کے بعد بھی طلاق دینا حلال ہے کیونکہ مکروہ حیض والی عورت کو طہر میں جماع کے بعد طلاق دینا اس لئے تھا کہ وہاں حمل ٹھہرنے کا احتمال ہوتا ہے جبکہ یہ احتمال یہاں نہیں ہے۔ (ت)

مگر ایک طلاق رجعی دے، اگر دو تین دے گا گنہگار ہوگا،

فی الدر البدعی ثلث متفرقة او ثنتان بمرة او مرتین الخ-2 درمختار میں ہے: بدعی طلاق یہ ہے کہ تین طلاقیں خواہ متفرق ہوں یا دو طلاقیں ایک مرتبہ یا متفرق دی جائیں الخ (ت)

یوں ہی طلاق بائن ایک ہی دے جب بھی ظاہر الروایہ میں گناہ ہے،

فی ردالمحتار الواحدة البائنة بدعیة فی ظاہر الروایة -3 واللہ تعالی اعلم۔ ردالمختار میں ہے: ایک بائنہ طلاق، بدعی طلاق ہے، ظاہر روایت کے مطابق۔ واللہ تعالی اعلم (ت)

مسئلہ ۱۴۳: از ریواڈاک خانہ امریا ضلع پیلی بھیت مسئولہ جناب محمد بخش صاحب و ذوالفقار خاں صاحب ۴ شعبان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین، ایک شخص نے حالتِ غصہ میں بہ سبب ملامت برادرانِ زوجہ اپنے کے اپنی بیوی کو طلاق دی اور زمانہ طلاق میں عورت کو ۵-۵ ماہ کا حمل تھا بعد طلاق اور پورا ہونے مدتِ حمل کے عورت کے لڑکا پیدا ہوا اور تین چار روز زندہ رہ کر مر گیا یہ طلاق جائز ہے یا نا جائز، اور ایسی صورت میں جو حکم مسئلہ ہو اطلاع دی جائے اس عورت کا دوسری جگہ نکاح ہوسکتا ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: عورت کو حمل ہونا مانع وقوع طلاق نہیں، اگر طلاق بائن تھی تو مطلقاً اور اگر رجعی تھی اور بچہ پیدا ہونے تک نہ زبانی رجعت کی نہ زوجہ کو ہاتھ لگایا تو بعد ولادت عورت نکاح سے نکل گئی اب اسے اختیار ہے جس سے

1 درمختار شرح تنویر الابصار فصل و یجهر الامام مطبع مجتبائی دہلی ۲۱۶/۱ 2 درمختار شرح تنویر الابصار فصل و یجهر الامام مطبع مجتبائی دہلی ۲۱۶/۱ 3 ردالمحتار کتاب الطلاق دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۴۱۸

fatawa-e-Razawiyya Volume 12

...should perform marriage. And if it was a revocable divorce (Talaq-e-Raj'i) and before childbirth, the husband revoked it through words or actions, then the woman remains in his marriage as before and cannot marry elsewhere. And Allah Almighty knows best.

Problem 144: From village Bilsari, Post Office Safdarganj, District Barabanki, sent by Mahdi Hasan Sahab, 4 Rajab 1319 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: if a person, during a mutual dispute and in a state of rage and anger, says to his wife three times, "I have divorced you, I have divorced you," and at the time of saying it, he also made an intention in his heart that "I am speaking correctly and with a sound mind," despite all these things occurring in anger during a mutual fight, has the divorce taken place in this situation or not? And if the divorce has taken place, and after a few hours the anger subsided and the husband, feeling ashamed of his ugly actions, wants to take the wife back, and the wife is also ready for reconciliation, then in what way is the wife lawful for the husband? Only. Explain and be rewarded.

The Answer: In the mentioned situation, three divorces have occurred. The woman cannot return to his marriage without Halala, meaning her waiting period ('Iddah) should pass, then she should marry another man and have intercourse with him, then he should divorce her or die, and the waiting period should pass; after that, it will be permissible for this person to marry the woman.

Allah Almighty says: "And if he has divorced her [for the third time], then she is not lawful to him afterward until [after] she marries a husband other than him." (1) And the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "You are not lawful for your first husband until the second husband tastes your sweetness and you taste his sweetness." (2)

And Allah Almighty knows best.

Problem 145: From Shahjahanpur, Mohalla Barozai, sent by Hafizullah Sahab, 12 Rabi-ul-Awwal Sharif 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding the issue of divorce in the chapter of divorce, Fatwa Maulavi Abdul Hayee Sahab Lucknow, that in a case occurred in volume two page 53, presented for service, its last writing exists... [The text cuts off]

(1) The Holy Quran 2:230 (2) Sahih al-Bukhari, Chapter on 'Why do you prohibit what Allah has made lawful for you', Qadeemi Kutub Khana Karachi, 2/92

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द द्वाज़दहुम (12)

...चाहिए कि निकाह करे, और अगर तलाक़-ए-रजई थी और बच्चे के जन्म से पहले पति ने बोलकर या किसी क्रिया के माध्यम से सुलह (रुजू) कर ली, तो स्त्री पहले की तरह ही उसके निकाह में रहेगी और दूसरी जगह निकाह नहीं कर सकती। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला १४४: ग्राम बिलसरी, डाकखाना सफदरगंज, जिला बाराबंकी, प्रेषक महदी हसन साहब, ४ रजब १३१९ हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं: यदि कोई व्यक्ति आपसी झगड़े के दौरान क्रोध और गुस्से की स्थिति में अपनी पत्नी से तीन बार कहे कि "मैंने तुझे तलाक दिया, मैंने तुझे तलाक दिया," और कहते समय उसने अपने मन में यह इरादा भी कर लिया हो कि "मैं बिल्कुल ठीक और सही दिमाग से कह रहा हूँ," जबकि ये सभी बातें आपसी झगड़े के दौरान गुस्से में हुई हों, तो क्या ऐसी स्थिति में तलाक हो गया या नहीं? और अगर तलाक हो गया, तो फिर कुछ घंटों के बाद गुस्सा ठंडा हो गया और पति अपने इन बुरे कामों पर शर्मिंदा होकर पत्नी से सुलह करना चाहता है और पत्नी भी सुलह के लिए तैयार है, तो किस तरह से पत्नी, पति के लिए हलाल है? सिर्फ। स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: उपर्युक्त स्थिति में तीन तलाक हो गए हैं। स्त्री बिना 'हलाला' के उसके निकाह में नहीं आ सकती, अर्थात उसकी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) बीत जाए, फिर वह स्त्री किसी दूसरे पुरुष से विवाह करे और उसके साथ संभोग भी हो, फिर वह उसे तलाक दे दे या उसकी मृत्यु हो जाए और फिर इद्दत बीत जाए, उसके बाद इस व्यक्ति के लिए उस स्त्री से निकाह करना वैध होगा।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "फिर यदि वह उसे (तीसरी बार) तलाक़ दे दे, तो वह उसके बाद उसके लिए तब तक वैध नहीं होगी जब तक कि वह उसके अलावा किसी और पति से निकाह न कर ले।" (१) और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: "तू अपने पहले पति के लिए तब तक वैध नहीं होगी जब तक कि दूसरा पति तेरा स्वाद न चख ले और तू उसका स्वाद न चख ले।" (२)

और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला १४५: शाहजहाँपुर, मोहल्ला बरोज़ई से, प्रेषक हफ़ीज़ुल्लाह साहब, १२ रबी-उल-अव्वल शरीफ़ १३३९ हिजरी। धर्म के विद्वान तलाक़ के मसले में क्या कहते हैं जो कि बाब तलाक़ फ़तवा मौलाना अब्दुल हई साहब लखनऊ कि मजमुआ-उल-फ़तावा जिल्द दोम पेज ५३ में वाक़े है और पेश-ए-ख़िदमत नक़ल उसकी आख़िरी तहरीर में मौजूद है... [टेक्स्ट यहाँ ख़त्म हो रहा है]

(१) अल-क़ुरान अल-करीम २:२३० (२) सहीह अल-बुख़ारी, अध्याय 'अल्लाह ने तुम्हारे लिए जो हलाल किया है उसे तुम हराम क्यों करते हो', क़दीमी कुतुब खाना कराची, २/९२

पेज ३७६ / ६८८

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

چاہے نکاح کرے، اور اگر طلاق رجعی تھی اور قبل ولادت قول یا فعل کے ذریعہ سے شوہر نے رجعت کرلی تو عورت بدستور اس کے نکاح میں ہے دوسری جگہ نکاح نہیں کرسکتی، وھو تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۴۴: از موضع بلسری ڈاکخانہ صفدر گنج ضلع بارہ بنکی مرسلہ مہدی حسن صاحب ۴ رجب ۱۳۱۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ اگر کوئی شخص درمیان فساد باہمی کے بحالت غیظ و غضب اپنی بی بی سے تین بار یوں کہے کہ میں نے تجھے طلاق دیا میں نے تجھے طلاق دیا، اور بوقت دینے کے یہ بھی اپنے دل میں ارادہ کرلیا کہ میں ٹھیک ٹھیک اور صحیح عقل سے کہتا ہوں باوجود درمیان جھگڑے باہمی کے غصہ میں یہ سب باتیں وقوع میں آئی ہوں تو اس حالت میں طلاق ہوئی یا نہیں؟ اور اگر طلاق ہوگئی تو پھر چند ساعت کے بعد غصہ فرو ہو گیا اور میاں اپنے ان افعال قبیحہ پر منفعل ہو کر بی بی کو رجعت کرنا چاہے اور بی بی بھی رجعت پر آمادہ ہو تو کس صورت سے بی بی، میاں پر حلال ہے فقط بینوا توجروا

الجواب: صورت مذکورہ میں تین طلاقیں ہوگئیں، عورت بے حلالہ اس کے نکاح میں نہیں آسکتی یعنی اس کی عدت گزرے پھر عورت دوسرے شخص سے نکاح کرے اور اس سے ہمبستری بھی ہو، پھر وہ اسے طلاق دے یا مر جائے اور عدت گزر جائے اس کے بعد اس شخص کو عورت سے نکاح جائز ہوگا۔

قال اللہ تعالیٰ: فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْۢ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهٗ ط ۱، وقال رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم لاتحلین الزوجک الاول حتی یذوق الاخر عسیلتک وتذوقی عسیلته ۲۔

اللہ تعالیٰ نے فرمایا: اگر تیسری طلاق دی تو اس کے لئے مطلقہ دوبارہ حلال نہیں ہو گی تاوقتیکہ کسی دوسرے شخص سے نکاح نہ کرے۔ اور رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے فرمایا اے عورت تو حلال نہ ہوگی پہلے شوہر کے لئے جب تک تو دوسرے خاوند کا مزہ اور وہ تیرا مزہ نہ لے لے۔

واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۱۴۵: از شاہجہان پور محلہ با روزئی مسئولہ حفیظ اللہ صاحب ۱۲ ربیع الاول شریف ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین کہ در باب طلاق فتوی مولانا عبدالحئی صاحب لکھنو کا کہ مجموعہ الفتاوی جلد دوم ص ۵۳ میں واقعہ اور پیش خدمت نقل اس کی اخیر تحریر میں موجود ہے کیا عند الضرورت ہم...

۱ القرآن الکریم ۲/۲۳۰ ۲ صحیح البخاری باب لم تحرم ما احل اللہ لک قدیمی کتب خانہ کراچی ۹۲/۲

Fatawa Rizvia, Volume 12

Can people act upon this or not? Clarify and be rewarded.

Copy of the Fatwa of Maulana Abdul Hai Sahab Lakhnawi (may his powerful secret be sanctified): What do the scholars of religion say regarding this issue: Zaid said to his wife in a state of anger, "I have given divorce, I have given divorce, I have given divorce." So, by saying it three times, did three divorces occur or not? And if they occur in the Hanafi school of thought and, for example, do not occur in the Shafi'i school, will a Hanafi be granted permission to act according to the Shafi'i school in this specific case or not?

The Right Answer: In this case, according to the Hanafis, three divorces will occur, and marriage will not be valid without Tahleel (remarriage to another man and then divorce). However, in case of necessity, where separating the woman from him is difficult and there's a risk of further harm, there is no harm in following another Imam. A precedent exists in the issue of the marriage of a missing husband's wife and extended waiting periods (Iddah); Hanafis consider acting upon Imam Malik's opinion valid in case of necessity. This is detailed in Radd al-Muhtar. However, it is better for that person to seek a ruling from a Shafi'i scholar and then act upon it. Allah knows best. Written by Abdul Hai (may he be forgiven). 1

The Answer: This fatwa is misleading; acting upon it is strictly forbidden (Haram). Their collection of fatwas is full of miscellaneous rulings regarding various people, even non-conformists (Ghair-Muqallids). This fatwa too must be from some non-conformist, and an utterly ignorant one at that, who doesn't even know that there is a consensus (Ijma) among the majority of Sahaba (Companions), Tabi'een (Successors), and the four Imams (may Allah be pleased with them) that three divorces given in one sitting are effective. Imam Shafi'i or any other Imam absolutely does not hold a contrary view. If he knows this and still considers Imam Shafi'i an opponent, then he is a severe liar, deceiver, and someone who misleads the masses. The great Imam Abu Zakaria Nawawi Shafi'i states in the commentary of Sahih Muslim:

"Imam Shafi'i, Malik, Abu Hanifa, Ahmad, and the vast majority of scholars from the past and present say that three divorces occur [when uttered three times]." 2

Imam Shafi'i, Imam Malik, Imam Abu Hanifa, Imam Ahmad, and the majority of past and recent scholars said three divorces will occur. (T)

1. Majmu'a Fatawa Abdul Hai Lakhnawi, Book of Divorce, Yusufi Press Lucknow, 1/278-279
2. Sharh Sahih Muslim by Nawawi, Chapter of Three Divorces, Qadeemi Kutub Khana Karachi, 1/487

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

क्या लोग इस पर अमल कर सकते हैं या नहीं? बयान करें, सवाब पाएं।

मौलाना अब्दुल हई साहब लखनवी (क़ुद्दिस सिर्रहु अल-क़वी) के फ़तवे की नक़ल: उलमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद ने अपनी बीवी को गुस्से की हालत में कहा "मैंने तलाक़ दी, मैंने तलाक़ दी, मैंने तलाक़ दी", तो क्या इन तीन बार कहने से तीन तलाक़ें वाक़े हो गईं या नहीं? और अगर हनफ़ी मज़हब में वाक़े हों और शाफ़ई मज़हब में मिसाल के तौर पर वाक़े न हों, तो क्या एक हनफ़ी को इस ख़ास सूरत में शाफ़ई मज़हब पर अमल करने की इजाज़त दी जाएगी या नहीं?

सही जवाब: इस सूरत में हनफ़ियों के नज़दीक तीन तलाक़ें वाक़े हो जाएंगी और बिना तहलील के निकाह दुरुस्त नहीं होगा। लेकिन ज़रूरत के वक़्त, जब उस औरत का उससे अलग होना मुश्किल हो और ज़्यादा बिगाड़ का अंदेशा हो, तो किसी और इमाम की तक़लीद (अनुसरण) करने में कोई हर्ज़ नहीं होगा। इसकी मिसाल लापता शौहर की बीवी के निकाह और लंबी इद्दत के मसले में मौजूद है कि हनफ़ी ज़रूरत के वक़्त इमाम मालिक के कौल पर अमल करने को दुरुस्त मानते हैं, जैसा कि 'रद्दुल मुहतार' में तफ़सील से ज़िक्र है। लेकिन बेहतर यह है कि वह शख्स किसी शाफ़ई आलिम से इस्तफ़्ता (फतवा तलब) करके उस पर अमल करे। वल्लाहु आलम (अल्लाह बेहतर जानता है)। तहरीर किया अब्दुल हई ने (अल्लाह उन्हें माफ़ करे)। 1

जवाब: यह फ़तवा गुमराह करने वाला है, इस पर अमल करना क़तई हराम है। उनके फ़तवों के मजमुए में ऐसे ही बे-सिर-पैर के फतवे भरे पड़े हैं, यहाँ तक कि ग़ैर-मुक़ल्लिदों के भी। यह फ़तवा भी किसी ग़ैर-मुक़ल्लिद का ही होगा और वह भी निहायत ही जाहिल का, जिसे यह भी नहीं मालूम कि एक ही महफ़िल में तीन तलाक़ें हो जाने पर सहाबा, ताबिईन और चारों इमामों (रज़ियल्लाहु अन्हुम) का इज्मा (आम सहमति) है। हरगिज़ इमाम शाफ़ई या कोई और इमाम इसके ख़िलाफ़ के क़ायल नहीं हैं। और अगर वह यह जानता है और फिर भी इमाम शाफ़ई को मुखालिफ मानता है, तो वह सख्त झूठा, मक्कार और आवाम को धोखा देने वाला है। इमाम अजल अबू ज़करिया नववी शाफ़ई 'शरह सहीह मुस्लिम शरीफ' में फरमाते हैं:

"इमाम शाफ़ई, मालिक, अबू हनीफ़ा, अहमद और पहले और पिछले तमाम जमहूर उलमा फरमाते हैं कि तीन तलाक़ें वाक़े हो जाती हैं।" 2

इमाम शाफ़ई, इमाम मालिक, इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम अहमद और पहले और पिछले जमहूर उलमा ने फ़रमाया कि तीन तलाक़ें वाक़े हो जाएंगी। (त)

1. मजमुआ फ़तावा अब्दुल हई लखनवी, किताबुत तलाक़, मतबा यूसुफी लखनऊ, 1/278-279
2. शरह सहीह मुस्लिम लिन्नववी, बाबु तलाक़िस सलास, कदीमी कुतुब खाना कराची, 1/487

पृष्ठ 688 का 377

فتاویٰ رضویہ، جلد دوازدہم

لوگ اس پر عمل کر سکتے ہیں یا نہیں؟ بینوا توجروا

نقل فتویٰ مولانا عبد الحی صاحب لکھنوی قدس سرہ القوی کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی عورت کو حالت غضب میں کہا کہ میں نے طلاق دی میں نے طلاق دی میں نے طلاق دیا، پس اس تین بار کہنے سے تین طلاق واقع ہو گئی یا نہیں؟ اور اگر حنفی مذہب میں واقع ہوں اور شافعی میں مثلاً واقع نہ ہوں تو حنفی کو شافعی مذہب پر اس صورت خاص میں عمل کرنے کے رخصت دی جائے گی یا نہیں؟

ھوالمصوب الجواب: اس صورت میں حنفیہ کے نزدیک تین طلاق واقع ہوں گی اور بغیر تحلیل کے نکاح نہ درست ہو گا مگر بوقت ضرورت کہ اس عورت کا علیحدہ ہونا اس سے دشوار ہو اور احتمال مفاسد زائدہ کا ہو تقلید کسی اور امام کی اگر کرے گا تو کچھ مضائقہ نہ ہو گا، نظیر اس کی مسئلہ نکاح زوجہ مفقود و عدت ممتدۃ الطہر موجود ہے کہ حنفیہ عند الضرورت قول امام مالک پر عمل کرنے کو درست رکھتے ہیں، چنانچہ رد المحتار میں مفصلاً مذکور ہے لیکن اولیٰ یہ ہے کہ وہ شخص کسی عالم شافعی سے استفتاء کر کے اس پر عمل کرے، واللہ اعلم حررہ عبد الحی عفی عنہ ۱۔

الجواب: یہ فتویٰ گمراہ گری ہے، اس پر عمل حرام قطعی ہے، ان کے مجموعہ فتاویٰ میں این و آں و زید و عمر کے فتویٰ بھی بھرے ہیں یہاں تک کہ غیر مقلدوں کے بھی، یہ فتویٰ بھی کسی غیر مقلد کا ہو گا اور وہ بھی نرے جاہل اجہل کا، جسے یہ بھی معلوم نہیں کہ ایک جلسہ میں تین طلاقیں ہو جانے پر جمہور صحابہ و تابعین و ائمہ اربعہ رضی اللہ تعالیٰ عنہم کا اجماع ہے، ہر گز امام

شافعی یا کوئی امام اس کے خلاف کے قائل نہیں، اور اگر وہ یہ جانتا ہے پھر امام شافعی و مخالف مانتا ہے تو سخت کذاب مکار اور عوام کو دھوکے دینے والا۔ امام اجل ابوز کریا نووی شافعی شرح صحیح مسلم شریف میں فرماتے ہیں:

قال الشافعی و مالك ابوحنیفہ و احمد و جماهیر العلماء من السلف والخلف یقع الثلاث ۲-

امام شافعی، امام مالک، امام ابو حنیفہ، امام احمد اور پہلے اور پچھلے جمہور علماء نے فرمایا تین طلاقیں واقع ہوں گی۔ (ت)

۱ مجموعہ فتاویٰ عبد الحی لکھنوی کتاب الطلاق مطبع یوسفی لکھنو ۱/ ۲۷۸- ۲۷۹ ۲ شرح صحیح مسلم للنووی باب طلاق الثلاث قدیمی کتب خانہ کراچی ۱/ ۴۸۷

That is, this is the school of thought of Imam Shafi'i, Imam Malik, Imam Abu Hanifa, Imam Muhammad, and the majority of past and recent scholars, that in the aforementioned case, three divorces have occurred. Furthermore, to consider this a "necessity" (daroorat) is clearly tearing down the religion. Who cannot say that a woman's separation is difficult for me? Who cannot say that there is a possibility of corruption (mafasid)? To consider a "possibility" as a "necessity" is a strange ignorance. If merely being burdensome on the soul were to demolish all Sharia obligations, then everything burdensome on the soul would be declared a necessity. "Necessities make the prohibited permissible" (al-darurat tubih al-mahzurat), and there is no power nor strength except with Allah. (Necessities make forbidden things permissible, and there is no power nor strength except with Allah. - T) To analogize this with a missing person (mafqud) or the extension of purity (imtidat-e-tuhr) is pure delusion. Furthermore, the complete lifting [of obligations] is a mixture of falsehood and ignorance. It is not certain in any way that this belongs to Molvi Lakhnawi Sahib, although his name may have been written due to a scribe's error; and if it really is his, then following the truth is required, not anything else. And Allah Ta'ala knows best.

Issue 146: From Ramah, Tehsil Gujar Khan, District Rawalpindi, Post Office Jatli, asked by Muhammad Ji, 27 Sha'ban 1339 AH. Sun of Scholars, Leader of the Virtuous, Khan-e-Khan Janab Ahmad Raza Khan Sahib, may his kindness continue, Peace be upon you! If anger is so extreme that it's as if reason is not perfect, if in this state explicit divorce etc. is given, will it occur or not?

The Answer: If the anger is truly of such intensity that it reaches the level of insanity, then divorce will not occur. And that the anger was of this intensity must either be proven by just witnesses or he should claim it, and if this is his known and recognized habit, then his statement will be accepted upon taking an oath; otherwise, a mere claim is not reliable. In this way, every person would make such a claim, and divorce given in anger would never occur, whereas divorce mostly occurs in a state of anger. In Radd al-Muhtar, it is cited from al-Khayriyya:

| Stupefaction (al-dahsh) is a type [of insanity], so it does not occur. And if it is habitual for him, in that this stupefaction has occurred once before, he is believed without proof. End.[1] and the complete research on this is in our Fatawa. | Stupefaction is a type of insanity. Therefore, divorce will not take place. When it has become a habit and stupefaction has been known to occur once, then the husband's

word will be accepted without proof. End. Research on this can be found in our Fatawa. (T) |

[1] Radd al-Muhtar, Kitab al-Talaq, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 2/427

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

यानी इमाम शाफ़ई, इमाम मालिक, इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम मुहम्मद और पूर्ववर्ती व परवर्ती अधिकांश विद्वानों का यही मत है कि उपर्युक्त स्थिति में तीन तलाक़ हो गए। इसके अतिरिक्त, इसे "ज़रूरत" (आवश्यकता) मानना स्पष्ट रूप से धर्म को नष्ट करना है। कौन नहीं कह सकता कि स्त्री का अलग होना मेरे लिए कठिन है? कौन नहीं कह सकता कि बुराइयों की संभावना है? संभावना को ज़रूरत समझना अजीब अज्ञानता है। यदि केवल मन पर भारी होना सभी शरीअत के दायित्वों को समाप्त कर दे, तो जो कुछ भी मन पर भारी होगा वह ज़रूरत बन जाएगा। "ज़रूरतें वर्जित चीज़ों को वैध कर देती हैं" (अज़-ज़रूरातु तुबीहुल महज़ूरात), और अल्लाह के बिना कोई शक्ति और सामर्थ्य नहीं है। (ज़रूरतें वर्जित को जायज़ करती हैं, और अल्लाह के बिना कोई शक्ति और सामर्थ्य नहीं है। - त) इसे लापता व्यक्ति (मफ़क़ूद) या पवित्रता की अवधि के बढ़ने (इम्तिदाद-ए-तुह्र) के साथ तुलना करना स्पष्ट भ्रम है। इसके अतिरिक्त, दायित्व को पूरी तरह से हटाना सरासर असत्य और अज्ञानता का मिश्रण है। यह किसी भी तरह से निश्चित नहीं है कि यह मौलवी लखनवी साहब का है, हालाँकि लिपिक की त्रुटि के कारण उनका नाम लिखा गया हो सकता है; और यदि वास्तव में उनका है, तो सत्य का अनुसरण करना आवश्यक है, और कुछ नहीं। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसाला 146: रामा, तहसील गुजर खान, जिला रावलपिंडी, डाकघर जातली से, मुहम्मद जी द्वारा पूछा गया, 27 शाबान 1339 हिजरी। शम्सुल उलमा, रईसुल फुज़ला, खान-ए-खान जनाब अहमद रज़ा खान साहब, आपका दाम-ए-लुत्फ़ (आपकी कृपा बनी रहे), अस्सलामु अलैकुम! यदि क्रोध इतना अधिक हो कि बुद्धि पूर्ण न रहे, और इस स्थिति में स्पष्ट तलाक़ आदि दे दिया जाए, तो क्या वह प्रभावी होगा या नहीं?

उत्तर: यदि क्रोध वास्तव में उस स्तर का तीव्र हो कि वह पागलपन की सीमा तक पहुँच जाए, तो तलाक़ नहीं होगा। और यह कि क्रोध इसी तीव्रता पर था, या तो विश्वसनीय गवाहों से सिद्ध हो या वह इसका दावा करे और यह उसकी एक जानी-पहचानी और स्थापित आदत हो, तो शपथ के साथ उसकी बात मान ली जाएगी; अन्यथा केवल दावा विश्वसनीय नहीं है। इस तरह तो हर कोई इसका दावा करेगा और क्रोध में दी गई तलाक़ कभी प्रभावी ही नहीं होगी, जबकि अधिकांशतः तलाक़ क्रोध की स्थिति में ही होती है। रद-उल-मुह्तार में खैरियाह से उद्धृत है:

| 'दहश' (स्तब्धता/मूढ़ता) पागलपन के प्रकारों में से है, अतः यह (तलाक़) प्रभावी नहीं होता। और यदि वह इसका अभ्यस्त हो, कि यह स्तब्धता एक बार पहले भी हो चुकी हो, तो बिना प्रमाण के उसकी बात सच मान ली जाएगी। (समाप्त)[1] और इसकी पूरी तहक़ीक़ (शोध) हमारे फ़तावा में है। | मदहोशी (स्तब्धता), पागलपन की एक क़िस्म है। इसलिए तलाक़ नहीं होगी। जब यह आदत बन गई हो और एक बार मदहोशी ज्ञात हो चुकी हो, तो पति की बात बिना किसी प्रमाण के मान ली जाएगी। (समाप्त) इसका शोध हमारे फ़तावा से देखा जा सकता है। (त) |

[1] रद-उल-मुह्तार, किताबुत तलाक़, दार एहयाउत तुरास अल-अरबी बेरुत 2/427

یعنی امام شافعی وامام مالک وامام ابوحنیفہ و امام محمد وجمہور علمائے سلف وخلف کا یہی مذہب ہے کہ صورت مذکورہ میں تین طلاقیں ہوگئیں معہٰذا اسے ضرورت ماننا صراحتاً مذہب کا ڈھانا ہے، کون نہیں کہہ سکتا کہ عورت کا علیحدہ ہونا مجھ پر دشوار ہے، کون نہیں کہہ سکتا کہ احتمال مفاسد ہے، احتمال کو ضرورت جاننا عجب جہالت ہے نہ کہ فقط نفس پر شاق ہونے کو تمام تکلیفات شرعیہ کا ہدم کردے گا وہ سب نفس پر شاق ہو نا ضرورت ٹھہرا والضرورات تبیح المحظور ولا حول ولا قوۃ الا باللہ (ضروریات، ممنوعات کو مباح کرتی ہیں ولا حول ولا قوۃ الا باللہ ت) مسئلہ مفقود وامتدادِ طہر پر اس کا قیاس کرنا صریح وسواس ہے پھر رفع سراسر بطالت وجہالت کر خمیر ہے کسی طرح یقین نہیں کہ مولوی لکھنوی صاحب کی ہوا گر چہ غلطی کا تب سے ان کا نام لکھا گیا ہو اور اگر واقعی ان کی ہے تو اتباع حق کا ہے، نہ غیر۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۱۴۶: ازرامہ تحصیل گوجر خاں ضلع راولپنڈی ڈاکخانہ جاتلی مسئولہ محمد جی ۲۷ شعبان ۱۳۳۹ھ شمس العلماء رئیس الفضلاء خانخاں جناب احمد رضا خاں صاحب دام لطفہ، السلام علیکم! اگر غضب کثرت سے ہو کہ ایسا غصہ ہو کہ کامل عقل نہ ہو اس حالت میں اگر طلاق صریح وغیرہ دیوے تو واقع ہوگی یانہ؟

الجواب: غضب اگر واقعی اس درجہ شدت ہو کہ حد جنون تک پہنچا دے تو طلاق نہ ہوگی اور یہ کہ غضب اس شدت پر تھا، یا تو گواہان عادل سے ثابت ہو یا وہ اس کا دعویٰ کرے اور اس کی یہ عادتِ معہودہ معروف ہو تو قسم کے ساتھ اس کا قول مان لیں گے ورنہ مجرد دعویٰ معتبر نہیں، یوں تو ہر شخص اس کا ادعا کرے اور غصہ کی طلاق واقع ہی نہ ہو حالانکہ غالباً طلاق نہیں ہوتی مگر بحالت غضب، ردالمحتار میں خیریہ سے ہے:

| الدھش من اقسام فلاینقع واذا کان یعتادہ بان عرج ھذا الدھش مرۃ یصدق بلابرھان اھ[1] و تمام تحقیقہ فی فتاونا۔ | مد ہوشی، جنون کی قسم ہے۔ لہٰذا طلاق نہ ہوگی۔ جب عادت بن چکی ہو اور ایک مرتبہ مد ہوشی معلوم ہو چکی ہو تو خاوند کی بات بلا دلیل مان لی جائے گی اھ اس کی تحقیق ہمارے فتاویٰ سے معلوم کی جائے۔ (ت) |

[1] ردالمحتار کتاب الطلاق داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۴۲۷

Problem 714: From Porbandar city, Khari Masjid, sent by Maulvi Muhammad Ismail Khan Sahib, 4th Dhu al-Qi'dah 1337 AH. Question 714: What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid, in a state of anger, said to his wife Zainab, "Zainab, divorce, divorce, divorce," meaning countless divorces whose number is unknown. Now Zaid says, "In the state of anger, I do not know how many times I pronounced divorce in front of witnesses." However, Zainab's relatives and kinsmen say that Zaid has legally given three divorces according to Sharia. Now Zaid wants to take back his wife Zainab, but the woman's heirs refuse. This man is a regular in prayer and is poor. Local scholars have given a fatwa that taking her back is valid, but people do not accept it. Now the truth lies with you, as per the command of Sharia. If you do not answer, the poor man's right will be usurped, and there is no scholar like you in India; your fatwa is followed in all surrounding areas. Explain and be rewarded.

The Answer: Since Zaid admits to pronouncing divorce with these words but claims an error in counting, if it is proven that he said this word three times, then three divorces have occurred. Retraction is impossible; he cannot remarry without Halala.

[Arabic Quote]: Allah the Almighty said: "So she is not lawful for him thereafter until she has married another husband." Translation: Allah the Almighty has stated: After the third divorce, the woman is not lawful until she marries another person. And Allah the Almighty knows best. (T)

Problem 718: From Calcutta, Dharamtolla Street, No. 162, sent by Aziz-ur-Rehman Sahib, Imam of the Mosque, Dhu al-Hijjah 1338 AH. Question 718: What do the scholars of religion say regarding this matter: Several people together said to a man, "Give divorce to your wife." Subsequently, from his tongue, without the intention of divorce, the words "Yes, yes" slipped out. In this situation, has a divorce occurred on his wife or not? Please provide an answer from religious books. Explain and be rewarded.

The Answer: Since those persons requested the divorce of his wife and in response, he said "Yes, yes", divorce did not occur at all, even if his intention was divorce. Because when the word "yes" occurs in response to a command, its result is a promise, i.e., "Yes, I will give a divorce," and through this, divorce cannot occur even if he intends it, for the intention for divorce...

समस्या 714: पोरबंदर शहर, खारी मस्जिद से, प्रेषक मौलवी मुहम्मद इस्माइल खान साहब, 4 ज़ुल-क़ादा 1337 हिजरी। प्रश्न 714: धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं: ज़ैद ने गुस्से की हालत में अपनी पत्नी ज़ैनब से कहा, "ज़ैनब, तलाक, तलाक, तलाक," यानी अनगिनत तलाक जिनकी संख्या का पता नहीं है। अब ज़ैद कहता है कि "गुस्से की हालत में मुझे याद नहीं कि मैंने गवाहों के सामने कितनी बार तलाक दिया है।" जबकि ज़ैनब के रिश्तेदार कहते हैं कि ज़ैद ने शरीयत के अनुसार तीन तलाक दिए हैं। अब ज़ैद अपनी पत्नी ज़ैनब से सुलह (रुजू) करना चाहता है और स्त्री के वारिस इनकार करते हैं। यह व्यक्ति नमाजी है और गरीब है, यहाँ के विद्वानों ने फतवा दिया है कि रुजू सही है लेकिन लोग नहीं मानते। अब सत्य आपकी ओर से है जैसा कि शरीयत का आदेश हो। यदि आप उत्तर नहीं देंगे तो गरीब का अधिकार मारा जाएगा और भारत में आपके जैसा कोई दूसरा विद्वान नहीं है, आपका फतवा चारों ओर माना जाता है। स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: चूंकि ज़ैद इन शब्दों के साथ तलाक देने का स्वीकार करता है, गिनती में त्रुटि बताता है, अगर यह साबित हो जाए कि उसने यह शब्द तीन बार कहे, तो तीन तलाक हो गए। रुजू (सुधार) असंभव है, हलाला के बिना निकाह नहीं कर सकता।

[अरबी उद्धरण]: अल्लाह ताला ने फरमाया: "तो वह उसके लिए उसके बाद तब तक वैध नहीं है जब तक वह किसी और पति से निकाह न कर ले।" अनुवाद: अल्लाह ताला ने फरमाया: तीसरी तलाक के बाद औरत तब तक हलाल नहीं है जब तक कि वह किसी दूसरे व्यक्ति से निकाह न कर ले। और अल्लाह ताला सबसे बेहतर जानता है। (त)

समस्या 718: कलकत्ता, धर्मतल्ला स्ट्रीट नंबर 162 से, प्रेषक अजीज़-उर-रहमान साहब, पेश इमाम मस्जिद, ज़ुल-हिज्जा 1338 हिजरी। प्रश्न 718: धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं: कई लोगों ने मिलकर एक व्यक्ति से कहा कि "तू अपनी पत्नी को तलाक दे दे।" फिर उसकी ज़बान से बिना तलाक की नीयत के"हाँ हाँ" निकल गया। तो इस स्थिति में उसकी पत्नी पर तलाक हुआ या नहीं? धार्मिक पुस्तकों से उत्तर प्रदान करें। स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: चूंकि उन व्यक्तियों ने उससे पत्नी के तलाक का अनुरोध किया और उसके उत्तर में उसने "हाँ हाँ" कहा, तो तलाक बिलकुल नहीं हुआ, भले ही उसकी नीयत तलाक की ही क्यों न हो। क्योंकि जब शब्द "हाँ" किसी आदेश के उत्तर में बोला जाता है, तो उसका परिणाम एक वादा होता है, अर्थात

"हाँ, मैं तलाक दे दूँगा" और इससे तलाक नहीं हो सकता चाहे वह तलाक की नीयत ही क्यों न करे, क्योंकि तलाक के लिए नीयत...

---

1 अल-कुरान अल-करीम 2/230 | पृष्ठ 379 / 688

مسئلہ ۷۱۴: از شہر پور بندر مقام کھاری مسجد مرسلہ مولوی محمد اسمعیل خاں صاحب ۴ ذیقعدہ ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی عورت زینب سے حالتِ غصہ میں کہا زینب طلاق طلاق طلاق یعنی بے شمار طلاق جس کا اندازہ معلوم نہیں، اور زید کہتا ہے کہ مجھ کو حالتِ غصہ میں خبر نہیں کہ میں نے کتنے دفع طلاق دیا ہے بحضور الشاہدین، اور زینب کے خویش واقارب کہتے ہیں کہ زید نے تین طلاقیں شرعاً دی ہیں اور اب زید اپنی عورت زینب سے رجعت کرنا چاہتا ہے اور عورت کے وارث انکار کرتے ہیں، اور یہ آدمی نمازی ہے اور غریب ہے، یہاں علماء نے فتوٰی دیا ہے کہ رجوع صحیح ہے مگر لوگ نہیں مانتے، اب حق آپ کی جانب ہے جیسا کہ حکمِ شریعت ہو، اگر آپ جواب نہ دو گے تو غریب کا حق مارا جائے گا اور دوسرا کوئی ہندوستان میں آپ جیسا عالم نہیں، آپ کا فتوٰی اطراف میں جاری ہے۔ بینوا توجروا الجواب: جبکہ زید ان الفاظ سے طلاق دینے کا اقرار کرتا ہے، گنتی میں سہو بتاتا ہے، اگر ثابت ہو کہ یہ لفظ تین بار کہے تین طلاقیں ہو گئیں رجعت ناممکن ہے بے حلالہ نکاح نہیں کر سکتا۔

قال اللہ تعالٰی فَلَا تَحِلُّ لَہٗ مِنْ بَعْدُ حَتّٰی تَنْکِحَ زَوْجًا غَیْرَہٗ ط ۱۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ | اللہ تعالٰی نے فرمایا: تیسری طلاق کے بعد عورت حلال نہیں تاوقتیکہ وہ کسی دوسرے شخص سے نکاح نہ کر لے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۷۱۸: از کلکتہ دھرم تلہ اسٹریٹ نمبر ۱۶۲ مرسلہ عزیز الرحمن صاحب پیش امام مسجد ذی الحجہ ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کئی آدمیوں نے مل کر ایک شخص سے کہا کہ تو اپنی اہلیہ کو طلاق دے دے۔ پس اس کی زبان سے بلانیت طلاق کے نکل پڑا "ہاں ہاں" تو اس صورت میں اس کی اہلیہ پر طلاق ہو گیا یا نہیں؟ جواب کتب دینیہ سے ارشاد ہو۔ بینوا توجروا۔

الجواب: جبکہ اُن اشخاص نے اس سے طلاق زن کی درخواست کی اور اس کے جواب میں اس نے "ہاں ہاں" کہا طلاق اصلا نہ ہوئی اگرچہ نیت طلاق ہی کہتا کہ لفظ "ہاں" جب امر کے جواب میں واقع ہو تو اس کا حاصل وعدہ ہوتا ہے یعنی ہاں طلاق دے دوں گا اور اس سے طلاق نہیں ہو سکتی اگرچہ نیت کرے کہ طلاق کے لئے نیت

Fatawa Razawiya, Volume 12

The word alone is not sufficient. If they were to say, "Have you divorced your wife?", then this would be a report or, assuming the word [is used], an inquiry. In response to this, if he says "Yes," a ruling of occurrence [of divorce] would certainly be given, as this is now a confirmation and admission. It was also necessary to clarify this situation because in some parts of India, the word 'ne' is not used even with transitive verbs; for instance, they say 'tu kaha' (you said) or 'aap farmaye' (you said). If this is their known and recognized idiom, and "de di" (gave it) was said with a 'ya-e-ma'roof' [a long 'ee' sound], and Zaid said "yes" understanding this meaning, then legally (hukman) the divorce will be considered as having occurred, even if it did not occur in the sight of Allah, provided that in reality it was not given and he made a false admission. It is stated in *Taj al-Arus*:

[Table/Box 1] Arabic: In *At-Tahdhib*, it is stated that 'Na'am' (yes) can be a confirmation or a promise. The summary of what is in *Al-Mughni* and its commentaries is that 'Na'am' after a statement (khabar) is a confirmation, and after a command (amr) or prohibition (nahi), it is a promise, etc. Urdu: In *At-Tahdhib*, it is stated that the word 'Na'am' (yes) signifies confirmation and a promise. The gist of what is mentioned in *Al-Mughni* and its commentaries is that 'Na'am' after a report is confirmation, and after a command (amr) and prohibition (nahi), it is a promise, etc. (t)

In *Fatawa Alamgiriyya*, it is mentioned: [Table/Box 2] Arabic: Najm al-Din was asked about a man who said to his wife, "Go to your mother's house." She said, "Give me a divorce so that I may go." He said, "You go, I have given/sent the divorce." He said: No divorce occurs because it is a promise. Thus it is in *Al-Khulasa*. Urdu: Najm al-Din (Allah Almighty have mercy on him) was asked about a person who said to his wife, "Go to your mother's [house]." In response, the wife said, "Give [me] a divorce so that I may go." The husband said, "You go, I have given the divorce/sent it." So Najm al-Din (Allah Almighty have mercy on him) said that divorce will not occur because this was a promise. It is the same in *Al-Khulasa*. (t)

In *Radd al-Muhtar*, it is stated: [Table/Box 3] Arabic: In *Al-Bahr*, from *Al-Bazzaziya* and *Al-Qunyah*: If he intended to report about the past falsely, it does not occur religiously (diyana). And even if he had called witnesses before that, it does not occur judicially (qada-an) either. Allah (Glorified and Exalted is He) knows best, and His knowledge, may His majesty be exalted, is most complete and most perfect. Urdu: In *Al-Bahr*, it is narrated from *Al-Bazzaziya* and *Al-Qunyah* that in the aforementioned case, if the

husband gave false news about the past, divorce will not occur religiously (diyana). And if he had made witnesses beforehand, it will not occur judicially (qada-an) either. Allah (Glorified and Exalted is He) knows best. (t)

Footnotes: 1. *Taj al-Arus*, Chapter on Nun from the Book of Mim, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 9/82 2. *Fatawa Hindiyya*, Chapter Seven on Divorce, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/383 3. *Radd al-Muhtar*, Book of Divorce, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/228

फतावा रज़विया, जिल्द 12

केवल शब्द पर्याप्त नहीं है। यदि वे इस प्रकार कहें कि "क्या आपने अपनी पत्नी को तलाक दे दिया है?", तो यह एक समाचार या प्रश्न होगा। इसके उत्तर में यदि वह "हाँ" कहता है, तो तलाक होने का निर्णय अवश्य दिया जाएगा क्योंकि अब यह एक पुष्टि और स्वीकृति है। इस स्थिति को स्पष्ट करना भी आवश्यक था क्योंकि भारत के कुछ क्षेत्रों में सकर्मक क्रियाओं के साथ भी 'ने' (nay) शब्द का प्रयोग नहीं किया जाता है, जैसे कि वे कहते हैं 'तू कहा' या 'आप फरमाये'। यदि यह उनका जाना-पहचाना मुहावरा है और "दे दी" में 'या-ए-मारूफ़' (लंबी 'ई' ध्वनि) का प्रयोग किया गया था और ज़ैद ने इसी अर्थ को समझकर "हाँ" कहा, तो कानूनी रूप से तलाक माना जाएगा, भले ही अल्लाह की नज़रों में तलाक न हुआ हो यदि वास्तव में तलाक नहीं दिया गया था और उसने झूठी स्वीकृति दी थी। ताजुल अरूस में है:

[तालिका/बॉक्स 1] अरबी: अत-तहज़ीब में कहा गया है कि 'नाम' (हाँ) एक पुष्टि या वादा हो सकता है। अल-मुगनी और उसकी व्याख्याओं में जो कुछ है उसका सार यह है कि कथन (खबर) के बाद 'नाम' पुष्टि है, और आदेश (अम्र) या निषेध (नही) के बाद यह वादा है, इत्यादि। उर्दू: तहज़ीब में है कि 'नाम' (हाँ) का शब्द तस्दीक (पुष्टि) होता है और वादा होता है, और मुगनी और उसकी शरू (व्याख्याओं) में मज़कूर का हासिल यह है कि 'नाम' खबर के बाद तस्दीक और कर (अम्र) और न कर (नही) के बाद वादा होता है। (त)

फ़तावा आलमगीरिया में है: [तालिका/बॉक्स 2] अरबी: नजम उद्दीन से एक ऐसे व्यक्ति के बारे में पूछा गया जिसने अपनी पत्नी से कहा, "अपनी माँ के घर जाओ।" उसने कहा, "तलाक दे दो ताकि मैं चली जाऊँ।" उसने कहा, "तुम जाओ, मैंने तलाक दे दिया/भेज दिया है।" उन्होंने कहा: तलाक नहीं होगा क्योंकि यह एक वादा है। अल-खुलासा में ऐसा ही है। उर्दू: नजम उद्दीन रहमतुल्लाह तआला से सवाल किया गया कि एक शख्स ने अपनी बीवी को कहा "तू अपनी वालिदा के यहाँ जा" बीवी ने जवाब में कहा "तलाक दे ताकि मैं जाऊँ खाविन्द ने कहा "तू जा मैंने तलाक दी है भेज दी है" तो नजम उद्दीन रहमतुल्लाह तआला ने फरमाया तलाक न होगी क्योंकि यह वादा होगा, खुलासा में ऐसे ही है। (त)

रद्द अल-मुह्तार में है: [तालिका/बॉक्स 3] अरबी: अल-बहर में अल-बज़ाज़िया और अल-कुन्या से: अगर उसने अतीत के बारे में झूठ बोलने का इरादा किया, तो यह धार्मिक रूप से (दियानत) नहीं

होता है। और यदि उसने इससे पहले गवाह बना लिए हों, तो यह कानूनी रूप से (क़ज़ा-अन) भी नहीं होता है। और अल्लाह (पवित्र और महान) सबसे बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान, उसकी महिमा बुलंद हो, सबसे पूर्ण और सबसे सटीक है। उर्दू: बहर में बज़ाज़िया और कनीया से मनकूल है कि मज़कूरा सूरत में अगर खाविन्द ने माजी (अतीत) के बारे में झूठी खबर देते हुए कहा हो तो तलाक न होगी, और अगर पहले से गवाह बना लिये हों तो कज़ा-अन भी तलाक न होगी। वल्लाह सुब्हानहु व तआला आलम। (त)

पाद-टिप्पणियाँ: 1. ताजुल अरूस, फ़स्ल अल-नून मिन बाब अल-मीम, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 9/82 2. फ़तावा हिन्दिया, अल-फ़स्ल अल-साबे' फ़िल-तलाक़, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 1/383 3. रद्द अल-मुह्तार, किताब अल-तलाक़, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/228

पृष्ठ 380/688

فتاوٰی رضویہ ، جلد دو ازدہم

بے لفظ کافی نہیں، ہاں اگر وہ یوں کہتے کہ تُونے اپنی اہلیہ کو طلاق دے دی، تو یہ اخبار یا بتقدیر لفظ کیا استخبار ہوتا اس کے جواب میں اگر وہ ہاں کہتا ضرور وقوع کا حکم دیا جاتا کہ اب وہ تصدیق و اقرار ہے اس صورت کی تصریح کی ضرورت یہ بھی تھی کہ بعض اطراف ہند کے بلاد میں فاعل فعل متعدی کے ساتھ بھی لفظ (نے) نہیں کہتے مثلاً تو کہا یا آپ فرمائے، بولتے ہیں اگر ان لوگوں کا یہی محاورہ معلومہ معروفہ ہے اور "دے دی" بیائے معروفہ کہا تھا اور زید نے یہی معنی سمجھ کر "ہاں" کہا تو حکماً طلاق واقع مانی جائے گی، اگرچہ عنداللہ طلاق نہ ہوئی جبکہ واقع میں نہ دی تھی اور جھوٹ اقرار کر دیا۔ تاج العروس میں ہے:

[جدول 1] عربی: فی التھذیب قد یکون نعم تصدیقاً ویکون عدۃ و حاصل مافی المغنی و شروحہ انہ یکون حرف تصدیق بعد الخبر ووعدہ بعد افعل ولا تفعل الخ۔ اردو: تہذیب میں ہے کہ نعم (ہاں) کا لفظ تصدیق ہوتا اور وعدہ ہوتا ہے، اور مغنی اور اس کی شروح میں مذکور کا حاصل یہ ہے کہ نعم خبر کے بعد تصدیق اور کر(امر) اور نہ کر (نہی) کے بعد وعدہ ہوتا ہے الخ(ت)

فتاوٰی عالمگیریہ میں ہے: [جدول 2] عربی: سئل نجم الدّین عن رجل قال لامرأتہ اذھبی الی بیت امّك فقالت طلاق دہ تا بردم فقال تو برو من طلاق دادم فرستم قال لاتطلق لانہ وعد کذافی الخلاصۃ[2]۔ اردو: نجم الدین رحمہ اللہ تعالٰی سے سوال کیا گیا کہ ایک شخص نے اپنی بیوی کو کہا "تو اپنی والدہ کے ہاں جا" بیوی نے جواب میں کہا "طلاق دے تاکہ میں جاؤں" خاوند نے کہا "تو جا میں نے طلاق دی ہے بھیج دی ہے" تو نجم الدین رحمہ اللہ تعالٰی نے فرمایا طلاق نہ ہوگی کیونکہ یہ وعدہ ہوگا، خلاصہ میں ایسے ہی ہے۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے: [جدول 3] عربی: فی البحر عن البزازیة والقنیة لواراد الخبر عن الماضی کذبا لایقع دیانة وان اشهد قبل ذلك لا یقع قضاءً ایضاً 3 ھ واللہ سبحانہ وتعالی اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم واحکم۔ اردو: بحر میں بزازیہ اور قنیہ سے منقول ہے کہ مذکورہ صورت میں اگر خاوند نے ماضی کے بارے میں جھوٹی خبر دیتے ہوئے کہا ہو تو طلاق نہ ہوگی، اور اگر پہلے سے گواہ بنالئے ہوں تو قضاءً بھی طلاق نہ ہوگی ھ واللہ سبحانہ وتعالیٰ اعلم (ت)

حواشی: 1 تاج العروس فصل النون من باب المیم داراحیاء التراث العربی بیروت ۸۲/۹ 2 فتاوٰی ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق نورانی کتب خانہ پشاور ۳۸۳/۱ 3 ردالمحتار کتاب الطلاق داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۲۸/۲

Fatawa Rizwia Volume 12

Issue 149: From Calcutta, Amratala Lane No. 26, requested by Rahmatullah Adam Ghani, 28 Shaban 1339 AH.

What do the scholars of religion say in this matter regarding whether the marriage remains valid or divorce occurred? My wife and my mother had a dispute. Due to this grievance, my mother moved to another house. After a week on Thursday, everyone went there. My wife was asked, "Our mother left being aggrieved; go reconcile with her and bring her back." She refused. I tried a lot to convince her but she didn't agree. I said, "As long as you don't reconcile with my mother, I will also not share in your joys and sorrows." Upon this, the wife replied, "We don't want you or your mother, you go away." I started to leave for home. The wife said, "Why go like this? Go after clearing everything." I replied, "Whom should I call for clearance?" I intended in my heart that it is better to divorce her because of daily fights. I left. Villagers asked, "Before whom did you divorce her?" I replied, "I have divorced her from my heart." Eight to nine months have passed since then, and I haven't met her from that date till today. After five or six months, a person asked me, "Why don't you meet your wife?" I replied, "I have divorced her." He asked, "Before whom did you divorce her?" I said, "I didn't divorce her before anyone; I abandoned her from my heart." He replied that sitting at home saying 'divorce, divorce, divorce' does not constitute divorce; it should be given before someone. Upon this, I (the questioner) asked, "Does divorce not happen like that?" He said, "No." Then I said, "One divorce, two divorces, three divorces," and asked, "Now did it happen or not?" He said, "It happened."

Answer: Divorce does not occur by merely intending it in the heart unless it is spoken with the tongue,

[Arabic Quote]: Rather, it must be with a voice that one can hear oneself if there is no obstruction, as this is the correct and reliable opinion in every matter involving speech, as stated in Durr al-Mukhtar etc.

(Translation of Arabic): Rather, with such a voice that, in the absence of any hindrance, one can hear it oneself, as this is the correct and reliable opinion in every verbal matter, as in Durr-e-Mukhtar etc. (T)

In response to the first person, if he had said, "I gave divorce in my heart," then even then she would not be divorced because it is an admission of a void act (Lana Iqrar

bil-Batil). However, he said, "I have divorced her from my heart"; this constitutes one 'Raj'i' (revocable) divorce. It appears from the wording of the question that the conversation with the second person took place five or six months after this conversation. If so, and if during these five or six months since the first conversation until now, the woman's three menstrual cycles have started and ended, then these (subsequent) three divorces did not occur as the subject (the marriage bond) had already expired (Lagwaat al-Mahal).

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

मसला 149: कलकत्ता, अमरतला लेन नंबर 26 से, रहमतुल्लाह आदम ग़नी द्वारा पूछा गया, 28 शाबान 1339 हिजरी।

विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि निकाह बरकरार रहा या तलाक़ हो गया? मेरी पत्नी और मेरी माँ के बीच झगड़ा हुआ। इस नाराज़गी के कारण मेरी माँ दूसरे घर चली गईं। एक हफ्ते बाद गुरुवार को सब लोग वहाँ गए। पत्नी से पूछा गया, "हमारी माँ दुखी होकर चली गईं, तुम उन्हें मनाकर ले आओ।" उसने इनकार कर दिया। मैंने उसे बहुत समझाया लेकिन वह नहीं मानी। मैंने कहा, "जब तक तुम मेरी माँ को नहीं मनाओगी, मैं भी तुम्हारे सुख-दुख में शामिल नहीं हूँगा।" इस पर पत्नी ने जवाब दिया, "हमें न तुम चाहिए और न तुम्हारी माँ, तुम चले जाओ।" मैं घर के लिए निकलने लगा। पत्नी ने कहा, "ऐसे क्यों जा रहे हो? सब साफ़ करके जाओ।" मैंने जवाब दिया, "सफ़ाई के लिए किसे बुलाऊँ" मैंने अपने दिल में इरादा किया कि रोज़-रोज़ के झगड़ों से बेहतर है कि उसे तलाक़ दे दूँ। मैं चला आया। गाँव वालों ने पूछा, "किसके सामने उसे तलाक़ दिया?" मैंने जवाब दिया, "मैंने अपने दिल से उसे तलाक़ दे दिया है।" इस बात को आठ-नौ महीने बीत चुके हैं और उस तारीख से आज तक मेरी उससे मुलाक़ात नहीं हुई है। पांच-छह महीने बाद एक व्यक्ति ने मुझसे पूछा, "तुम अपनी पत्नी से क्यों नहीं मिलते?" मैंने जवाब दिया, "मैंने उसे तलाक़ दे दिया है।" उसने पूछा, "तुमने किसके सामने तलाक़ दिया?" मैंने कहा, "मैंने उसे किसी के सामने तलाक़ नहीं दिया, मैंने अपने दिल से उसे छोड़ दिया।" उसने कहा कि घर बैठे 'तलाक़ तलाक़ तलाक़' कहने से तलाक़ नहीं होता; तलाक़ किसी के सामने दिया जाना चाहिए। इस पर मैंने (सवाल पूछने वाले ने) कहा, "क्या ऐसे तलाक़ नहीं होता?" उसने कहा "नहीं।" फिर मैंने कहा, "एक तलाक़, दो तलाक़, तीन तलाक़," और पूछा, "अब हुआ या नहीं?" उसने कहा, "हो गया।"

उत्तर: दिल में तलाक़ देने से तलाक़ नहीं होता जब तक कि उसे ज़ुबान से न कहा जाए,

[अरबी उद्धरण]: बल्कि ऐसी आवाज़ में जिसे कोई बाधा न होने पर वह स्वयं सुन सके जैसा कि हर उस मामले में सही और विश्वसनीय मत है जिसमें बोलना शामिल है, जैसा कि दुर-ए-मुख़्तार आदि में है।

(अरबी का अनुवाद): बल्कि ऐसी आवाज़ से जिसे रुकावट न होने पर स्वयं सुना जा सके, जैसा कि हर क़ौली (मौखिक) मामले में यही सही और विश्वसनीय मत है जैसा कि दुर-ए-मुख़्तार वगैरह में है। (त)

पहले व्यक्ति के जवाब में यदि वह कहता कि "अपने दिल में तलाक़ दे दी," तो इससे भी वह तलाक़शुदा नहीं होती क्योंकि यह एक अमान्य कार्य को स्वीकार करना है (लियाना इक़रार बिल-बातिल)। लेकिन उसने कहा कि "मैंने अपने दिल से उसे तलाक़ दे दिया," यह एक 'रजई' (वापस लेने योग्य) तलाक़ है। सवाल की इबारत से स्पष्ट है कि दूसरे व्यक्ति से बातचीत पहली बातचीत के पांच-छह महीने बाद हुई। यदि ऐसा है और इन पांच-छह महीनों में पहली बातचीत के बाद से अब तक महिला के तीन मासिक धर्म शुरू होकर समाप्त हो चुके हैं, तो ये (बाद के) तीन तलाक़ प्रभावी नहीं हुए क्योंकि निकाह का संबंध पहले ही समाप्त हो चुका था (लग़वातुल महल)।

पेज 381 / 688

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

مسئلہ ۱۴۹: از کلکتہ امر تلہ لائن نمبر ۲۶ مسئولہ رحمت اللہ آدم غنی ۲۸ شعبان ۱۳۳۹ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ نکاح ثابت رہا یا طلاق ہوا، ہماری بی بی سے اور ہماری والدہ سے جھگڑا ہوا، اس رنجش سے ہماری والدہ دوسرے مکان پر چلی گئی ایک ہفتہ بعد جمعرات کو سب لوگ گئے، بی بی سے دریافت کیا کہ ہماری والدہ رنج ہو کر چلی گئی تم اُن کو راضی کر کے لاؤ، بی بی نے انکار کیا، میں نے بہت سمجھایا مگر وہ راضی نہ ہوئی، میں نے کہا جب تک میری والدہ کو راضی نہیں کروگی ہم بھی تمہارے شریک رنج ملال کے نہیں ہوں گے، اس پر بی بی نے جواب دیا ہم تم کو اور تمہاری ماں کو نہیں چاہتے ہیں تم چلے جاؤ، میں مکان آئے لگا، بی بی نے کہا ایسے کیوں جاتے ہو صفائی کر کے چلے جاؤ ہم نے جواب دیا کہ کس کو صفائی کے لئے بلاؤں اپنے دل میں ارادہ کیا کہ روزانہ جھگڑے سے اس کو طلاق دینا ہی بہتر ہے، چلے آئے، بستی والوں نے پوچھا کہ کسی کے نزدیک اس کو طلاق دیا، ہم نے جواب دیا کہ اپنے دل سے طلاق اس کو دے دیا جس کو آٹھ نو مہینے کا زمانہ گزرتا ہے اس تاریخ سے آج تک ہم سے اس سے ملاقات نہیں ہے بعد پانچ چھ ماہ کے ایک شخص نے مجھ سے پوچھا کہ تم اپنی بی بی سے کیوں نہی ملتے ، جواب دیا کہ ہم نے اس کو طلاق دے دیا جواب اس کے تم نے کس کے نزدیک طلاق دیا، ہم نے اس کو کسی کے سامنے طلاق نہیں دیا اپنے دل سے اس کو ترک کر دیا جواب اس کے ان نے کہا کہ گھر بیٹھے طلاق طلاق طلاق نہیں ہوتا ہے کسی کے سامنے طلاق دینا چاہئے ، اس پر اس نے کہا کہ ایسے طلاق نہیں ہوتا ہے، نہ ہوا، اس پر ہم نے کہا ایک طلاق دو طلاق تین طلاق یہ کہہ کر کہا اب ہوا یا نہیں ؟ ان نے کہا ہو گیا۔

الجواب: دل میں طلاق دینے سے نہیں ہوتی جب تک زبان سے نہ کہے،

بل بصوت یسمع نفسه لولا مانع کما هو الصحیح لا معتمد في کل ما هو قول کما في الدرر وغیره۔

بلکہ ایسی آواز سے جس کو مانع نہ ہونے پر خود سُن سکے، جیسا کہ یہی صحیح اور قابل اعتماد قول ہے ہر قولی معاملہ میں جیسا کہ در مختار و غیرہ میں ہے (ت)

پہلے شخص کے جواب میں اگر یوں کہتا کہ اپنے دل میں طلاق دے دی تو اس سے بھی طالق نہ ہوتی لانه اقرار بالباطل (کیونکہ یہ باطل کا اقرار ہے۔ ت) مگر اس نے کہا کہ اپنے دل سے اس کو طلاق دے دی یہ ایک طلاق رجعی ہوئی ، عبارت سوال سے ظاہر یہ ہے کہ اس گفتگو کے پانچ چھ مہینہ بعد دوسرے شخص سے گفتگو ہوئی، اور اگر ایسا ہے اور اس پانچ چھ مہینے میں گفتگوئے شخص اول کے بعد سے اب تک عورت کی تین حیض شروع ہو کر ختم ہو چکے تو یہ تین طلاقیں نہ ہوئیں لغوات المحل۔

Fatawa Rizvia, Volume 12

By Baynunah (due to irrevocable divorce, she is no longer a subject for divorce—Translator's note), the woman exited the marriage upon that first divorce itself. Now, he can enter into a new marriage with her without halala. However, if three menstrual cycles did not conclude for the woman within those five or six months, then three divorces have occurred. He cannot remarry her without halala. Allah knows best.

Question 150: How many times must divorce be given for a woman to be out of the marriage contract?

Answer: If it happens three times, the woman is out of the marriage in such a way that he cannot remarry her without halala. For less than three times, certain words are prescribed by which the marriage is dissolved, but he can remarry her without halala. If intimacy has not yet occurred with the woman, then by giving a single divorce with any (such) word, the woman exits the marriage; he can remarry her. And Allah knows best.

Question 151 to 152: From Indore Cantonment Residency Government Press, Central India. Questioner: Abdul Karim, son of Sikandar Khan Pahalwan, 16 Jamadi al-Akhirah 1339 AH.

What do the scholars of religion say regarding this matter: A person had not actually divorced his wife. In a court case, in order to refute the second party's claim that his wife had fled from his house due to various hardships, he replied that his wife did not flee, but rather he had divorced her. However, it was later discovered through investigations that the aforementioned person had only expressed divorce before the court to save face and uphold his stance. In such a situation, where he declared it before the court, is the divorce valid?

(2) The same aforementioned person filed a lawsuit for the recovery of his wife against her in a competent court. After the conclusion of the case, the court issued a time-bound notice of eight days to the plaintiff with the message that within the specified period, the plaintiff must take his wife to his home, otherwise, after the expiry of the said period, it will be considered that three divorces have been issued by the plaintiff. Accordingly, the notice was issued. After the plaintiff was informed, and without any further notice that the plaintiff would take his wife within so many days, it reached the competent court. After the end of the specified period, the lawyer for

the defendants advised according to the current laws that the defendant could now enter into a second marriage, and if any claim is made against the defendant by the plaintiff, I (the lawyer) will be responsible. Therefore, it is requested that for this scenario described here, please state whether divorce has occurred according to the noble Sharia or not?

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 12

बैनूनत (तलाक-ए-बाइन की वजह से अब वह तलाक का पात्र नहीं रही - अनु.) के कारण, वह महिला उसी पहली तलाक पर निकाह से बाहर निकल गई। अब वह बिना हलाला के उसके साथ नया निकाह कर सकता है। लेकिन अगर उन पांच-छह महीनों में महिला के तीन मासिक धर्म पूरे नहीं हुए, तो अब तीन तलाकें हो गई हैं। वह बिना हलाला के निकाह नहीं कर सकता। और अल्लाह ही बेहतर जानता है।

मसला 150: तलाक कितनी बार देने से औरत निकाह से बाहर हो सकती है?

जवाब: अगर तीन बार हो जाए तो औरत इस तरह निकाह से बाहर हो जाती है कि बिना हलाला के फिर उससे निकाह नहीं कर सकता। और तीन बार से कम के लिए कुछ शब्द निर्धारित हैं जिनसे निकाह खत्म हो जाता है, लेकिन बिना हलाला के फिर निकाह कर सकता है। और अगर अभी औरत से एकांत (खलवत) की नौबत न आई हो, तो किसी भी शब्द से एक ही तलाक देने से औरत निकाह से बाहर हो जाती है, वह दोबारा निकाह कर सकता है। और अल्लाह ही बेहतर जानता है।

मसला 151 से 152: इंदौर छावनी रेजीडेंसी गवर्नमेंट प्रेस, सेंट्रल इंडिया से। प्रार्थी: अब्दुल करीम पुत्र सिकंदर खान पहलवान, 16 जमादी-उल-आख़िरह 1339 हिजरी।

धर्म के विद्वान इस बारे में क्या कहते हैं कि एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी को वास्तव में तलाक नहीं दिया था। एक मुकदमे में, दूसरी पार्टी के सवाल के खंडन में, जिसने यह दावा किया था कि उसकी पत्नी विभिन्न कष्टों के कारण उसके यहाँ से भाग गई थी, उसने जवाब दिया कि उसकी पत्नी नहीं भागी बल्कि उसने उसे तलाक दे दिया था। लेकिन बाद में जांच से पता चला कि उक्त व्यक्ति ने केवल अपनी इज्जत बचाने और अपनी बात ऊपर रखने की वजह से कचहरी (न्यायालय) के सामने तलाक का इज़हार किया था। क्या ऐसी स्थिति में, जैसा कि उसने कचहरी के सामने ज़ाहिर किया, तलाक होना जायज़ (मान्य) है?

(2) उसी उक्त व्यक्ति ने अपनी पत्नी के खिलाफ सक्षम न्यायालय में पत्नी की पुनर्प्राप्ति का दावा दायर किया। मुकदमा खत्म होने के बाद, अदालत ने वादी के नाम आठ दिनों का एक मियादी नोटिस जारी किया, जिसका मजमून था कि वादी निर्धारित समय सीमा के भीतर अपनी पत्नी को अपने घर ले जाए, अन्यथा मियाद खत्म होने के बाद यह समझा जाएगा कि वादी की ओर से तलाक-ए-सलासा (तीन तलाक) हो गई है। तदनुसार नोटिस जारी किया गया। वादी को सूचना मिलने के बाद, बिना किसी

सूचना के कि वादी अपनी पत्नी को इतने दिनों में ले जाएगा, यह सक्षम न्यायालय को प्राप्त हुआ। मियाद खत्म होने के बाद, प्रतिवादी के वकील ने प्रचलित कानून के अनुसार सलाह दी कि प्रतिवादी अब अपना दूसरा विवाह कर सकती है, और यदि वादी की ओर से प्रतिवादी के खिलाफ कोई दावा किया जाता है, तो मैं (वकील) उसका जिम्मेदार रहूँगा। अतः प्रार्थना है कि इस स्थिति में भी, जो यहाँ लिखी गई है, कृपया बताएं कि शरीयत के अनुसार तलाक हुआ या नहीं?

पृष्ठ 382/688

فتاویٰ رضویہ، جلد دوازدہم

بالبینونۃ (بائنہ طلاق کی وجہ سے اب طلاق کا محل نہ رہی۔ت) عورت اسی پہلی طلاق پر نکاح سے نکل گئی اب بلا حلالہ اس سے نکاح جدید کر سکتا ہے اور اگر اس پانچ چھ مہینے میں عورت کو تین حیض آ کر ختم نہ ہوئے تو اب تین طلاقیں ہو گئیں، بے حلالہ نکاح نہیں کر سکتا، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۵۰: طلاق کتنے مرتبہ دینے سے عورت نکاح سے باہر ہو سکتی ہے؟

الجواب: تین مرتبہ ہو جائے تو عورت ایسی نکاح سے باہر ہوتی ہے کہ بے حلالہ پھر اس سے نکاح نہیں کر سکتا اور تین مرتبہ سے کم کے لئے کچھ الفاظ مقرر ہیں کہ ان سے نکاح جاتا ہے مگر بے حلالہ نکاح پھر کر سکتا ہے، اور ابھی عورت سے خلوت کی نوبت نہ پہنچی ہو تو کسی لفظ سے ایک ہی طلاق دینے سے عورت نکاح سے باہر ہو جاتی ہے دوبارہ نکاح کر سکتا ہے، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۵۱ تا ۱۵۲ : از اندور چھاؤنی ریذیڈنسی گورنمنٹ پریس سنٹرل انڈیا مسئولہ عبدالکریم پسر سکندر خاں پہلواں ۱۶ جمادی الآخرہ ۱۳۳۹ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس بارہ میں کہ ایک شخص نے اپنی زوجہ کو واقعی طلاق نہیں دی تھی کسی مقدمہ میں برسر اجلاس فریق ثانی کے سوال کے تردید میں جس نے کہ اس کی زوجہ کا بوجہ نوع بنوع تکالیف کے اس کے یہاں سے فرار ہو نا ظاہر کیا تھا یہ جواب دیا کہ اس کی زوجہ فرار نہیں ہوئی بلکہ میں نے اس کو طلاق دے دی تھی لیکن بعد میں تحقیقات سے معلوم ہوا کہ شخص مذکور الصدر نے محض اپنی آبرو ریزی کے خیال سے نیز اپنی بات کو بالا رکھنے کی

وجہ سے طلاق کا اظہار کچہری کے روبرو کیا تھا، آیا ایسی صورت میں جیسا کہ اس نے کچہری کے روبرو ظاہر کیا طلاق ہونا جائز ہے کیا؟

(۲) شخص مذکور الصدر ہی نے ایک دعویٰ بازیابی زوجہ اپنی زوجہ کے خلاف کچہری مجاز میں دائر کیا، کچہری نے بعد انفصال مقدمہ ایک نوٹس میعادی آٹھ یوم بایں مضمون بنام مدعی جاری کیا کہ میعاد مقررہ کے اندر مدعی اپنی زوجہ کو اپنے مکان پر لے جائے ورنہ بعد انقضائے میعاد مذکور سمجھا جائے گا کہ مدعی مذکور کی جانب سے طلاق ثلاثہ ہو گئی، چنانچہ نوٹس مجریہ بعد بعد اطلاع یابی مدعی بلا کسی اطلاع کے کہ مدعی اپنی زوجہ کو اتنے روز میں لے جائے گا موصول کچہری مجاز ہوگا، بعد اختتام میعاد مذکور وکیل مد عاعلیہانے ازروئے قانون مروجہ ہدایت کی کہ مدعا علیہا اب اپنا عقد ثانی کر سکتی ہے، اس صورت میں اگر خلاف مدعا علیہا کسی قسم کا دعویٰ مدعی کی طرف سے ہو گا تو اس کا ذمہ دار میں ہوں، لہذا عرض ہے کہ اس صورت میں بھی کہ جو یہاں کی گئی تحریر فرمائیں ازروئے شرع شریف طلاق ہو گئی یا نہیں؟

Fatawa Razawiya, Volume 12

The Answer: In the first scenario, a ruling for one divorce will be given even if it didn't occur in the sight of Allah, as he lied, as mentioned in 'Al-Khairiyah' regarding someone who falsely admits to divorce (T). In the second scenario, no divorce occurred at all. Someone else writing in a notice and the husband not replying is merely meaningless. This absolutely does not give the woman the right to marry elsewhere. The Hadith says: "Divorce belongs to the one who takes hold of the leg" (meaning the right of divorce belongs only to the husband) (T). And Allah Almighty knows best.

Issue 153: From City Regt. Akakor 63 Cantonment, questioned by Muhammad Husain Sahab Saharanpuri, 20 Rabi-ul-Akhir 1336 AH. Amr fell in love, and the thought of the beloved remained with him all the time. His heart was preoccupied with worry and intense distress. In a state of anxiety, Amr gave divorce and repeated these words many times throughout the day in a state of madness.

The Answer: Merely anxiety or heat in the brain is not called madness. If he was not truly insane, then the divorce has occurred. If he said it thrice, then it is three times. The questioner did not state the specific words he repeatedly uttered so that a detailed ruling could be given. And Allah Almighty knows best.

Issue 154: What do the scholars of religion say regarding this matter: A fight occurred between Zaid and Hindah. In a state of intense rage and anger, Zaid wrote a divorce deed for Hindah and expelled her from his house. A long time has passed, even the waiting period (Iddat) has expired. Now Zaid says that he did not intend the divorce, he wrote the divorce deed in extreme anger and did not utter any word of divorce from his tongue. In this situation, is Zaid's excuse admissible or not? Has divorce occurred for Hindah or not? And if it has occurred, can Zaid now marry her or not? And has Hindah's dower (Mahr) become payable by Zaid or not? Please clarify and be rewarded.

The Answer: Anger does not prevent the occurrence of divorce; rather, it is often what leads to divorce. Declaring it a preventive factor would be like nullifying the ruling of divorce altogether. Yes, if the intensity of rage and the surge of anger reach a level where reason is lost, and one does not know what they are saying or what is coming out of their mouth, then indeed, divorce in such a state will not occur at all. Therefore, in the described case, if Zaid had not reached that state, merely being angry is not beneficial to him and...

1 Sunan Ibn Majah, Chapter on Divorce, H.M. Saeed Company Karachi, p. 151. Page 383 of 688

फतावा रज़विया, खंड 12

अल-जवाब (उत्तर): पहली स्थिति में एक तलाक हो जाने का हुक्म दिया जाएगा, भले ही अल्लाह के नज़दीक न हुआ हो, क्योंकि उसने झूठ बोला, जैसा कि 'अल-खैरिया' में तलाक का झूठा इकरार करने वाले की बहस में है। (त) दूसरी स्थिति में बिल्कुल भी तलाक नहीं हुआ। किसी दूसरे का नोटिस में यह लिख देना और पति का जवाब न देना महज़ व्यर्थ है। इससे महिला को कहीं और निकाह करने का अधिकार बिल्कुल नहीं मिल सकता। हदीस में है: "तलाक का अधिकार उसी का है जो पैर पकड़ता है" (यानी तलाक का हक सिर्फ पति को है)। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 153: शहर रजि. अकाकोर 63 छावनी से, मुस्तफ़्सर (प्रश्नकर्ता) मुहम्मद हुसैन साहब सहारनपुरी, 20 रबी-उल-आख़िर 1336 हिजरी। अम्र को इश्क हो गया था और हर समय माशूक का ख्याल रहता था और दिल में फिक्र रहती थी और बहुत जलन (चुभन) थी। अम्र ने घबराहट में तलाक दे दी, इस शब्द को दिन में बार-बार जुनून (पागलपन) की हालत में बयान करता था।

अल-जवाब (उत्तर): सिर्फ घबराहट या दिमाग की गर्मी का नाम जुनून नहीं है। अगर वह वास्तव में पागल नहीं था, तो तलाक हो गया। अगर तीन बार कहा तो तीन बार हुआ। वे शब्द जो उसने बार-बार कहे, प्रश्नकर्ता ने बयान नहीं किए ताकि उनका विस्तृत हुक्म दिया जाता। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 154: दीन के उलेमा इस मसले में क्या फरमाते हैं कि ज़ैद और हिंदा में लड़ाई हुई, ज़ैद ने गुस्से और क्रोध की स्थिति में हिंदा को तलाकनामा लिख दिया और अपने घर से निकाल दिया, काफी समय बीत गया यहाँ तक कि इद्दत भी गुजर गई। अब ज़ैद कहता है कि मुझे तलाक मंज़ूर नहीं थी, मैंने अत्यधिक क्रोध में वह तलाकनामा लिखा था और ज़ुबान से तलाक का कोई शब्द नहीं कहा था। तो इस स्थिति में ज़ैद का यह उज़्र (बहाना/दलील) सुनने योग्य है या नहीं? हिंदा पर तलाक हुआ या नहीं? और अगर हुआ तो क्या अब ज़ैद उससे निकाह कर सकता है या नहीं? और क्या हिंदा का मेहर ज़ैद पर वाजिब-उल-अदा (देय) हो गया है या नहीं? बयान करें, सवाब पाएं।

अल-जवाब (उत्तर): गुस्सा तलाक के होने में बाधक नहीं है, बल्कि अक्सर वही तलाक का कारण बनता है। तो इसे बाधक मानना गोया तलाक के हुक्म को सिरे से ही निरस्त करना है। हाँ, अगर क्रोध की तीव्रता और गुस्से का उबाल उस हद तक पहुँच जाए कि उससे अक्ल जाती रहे, खबर न रहे कि क्या कह रहा हूँ और ज़ुबान से क्या निकल रहा है, तो बेशक ऐसी हालत में तलाक हरगिज़ नहीं

होगा। अतः पूछी गई सूरत में, अगर ज़ैद उस हालत तक नहीं पहुँचा था, तो सिर्फ गुस्सा होना उसके लिए फायदेमंद नहीं है और...

1 सुनन इब्न माजाह, तलाक का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची, पृ. 151। पृष्ठ 688 का 383

فتاوی رضویہ، جلد دوازدہم

الجواب: پہلی صورت میں ایک طلاق ہوجانے کا حکم دیا جائے گا اگر چہ عنداللہ نہ ہو، جبکہ جھوٹ کہا ہو کما فی الخیریۃ فیمن اقر بالطلاق کاذبا (جیساکہ خیریہ میں طلاق کا جھوٹا اقرار کرنے والے کی بحث میں ہے۔ ت) صورت دوم میں ہرگز طلاق نہ ہوئی، نوٹس میں دوسرے کا یہ لکھ دینا اور شوہر کا جواب نہ دینا محض مہمل ہے، ہرگز اس سے عورت کو دوسری جگہ نکاح کا اختیار نہیں ہوسکتا، حدیث میں ہے: الطلاق لمن اخذ بالساق (طلاق کا حق صرف خاوند کو ہے۔ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۵۳: از شہر رجسٹ اکا کور ۶۳ چھاؤنی مسئولہ محمد حسین صاحب سہارنپوری ۲۰ ربیع الآخر ۱۳۳۶ھ عمرو کو عشق ہوگیا تھا اور ہر وقت خیال معشوق رہتا تھا اور فکر دل رہتا تھا اور خلش بہت تھی عمرو نے گھبراہٹ میں طلاق دے دی، اس کلمہ کو دن میں بار بار جنون کی حالت میں بیان کرتا تھا۔

الجواب: فقط گھبراہٹ یا دماغ پر گرمی کا نام جنون نہیں، اگر واقعی مجنون نہ تھا تو طلاق ہوگئی، اگر تین بار کہی تو تین بار، وہ الفاظ جو اس نے بار بار کہے سائل نے بیان نہ کئے کہ ان کا مفصل حکم دیا جاتا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۵۴: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید و ہندہ میں لڑائی ہوئی، زید نے حالت غیظ و غضب میں ہندہ کو طلاق نامہ لکھ دیا اور اپنے مکان سے نکال دیا، اسے مدت گزری یہاں تک کہ عدت گزر گئی، اب زید کہتا ہے کہ مجھے طلاق منظور نہ تھی میں نے شدت غضب میں وہ طلاق نامہ لکھا تھا اور زبان سے کوئی لفظ طلاق نہ کہا تھا، پس اس صورت میں زید کا یہ

عذر قابل سماعت ہے یا نہیں؟ ہندہ پر طلاق ہوئی یا نہیں؟ اور اگر ہوئی تو اب زید اس سے نکاح کرسکتا ہے یا نہیں؟ اور ہندہ کا مہر زید پر واجب الادا ہوگیا یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: غصہ مانع وقوع طلاق نہیں بلکہ اکثر وہی طلاق پر حامل ہوتا ہے، تو اسے مانع قرار دینا گویا حکم طلاق کا رائسا ابطال ہے، ہاں اگر شدت غیظ وجوشِ غضب اس حد کو پہنچ جائے کہ اس سے عقل زائل ہو جائے، خبر نہ رہے کیا کہتا ہوں زبان سے کیا نکلتا ہے، تو بیشک ایسی حالت کی طلاق ہرگز واقع نہ ہوگی، پس صورت مستفسرہ میں اگر زید اس حالت تک نہ پہنچا تھا تو صرف غصہ ہونا اسے مفید نہیں اور

1 سنن ابن ماجہ باب الطلاق ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۱۵۱ Page 383 of 688

Fatawa-e-Razvia, Volume 12

Just as divorce occurs by spoken words, it also occurs through writing. Therefore, that divorce has taken effect, and due to the completion of the 'Iddah period, revocation (Ruju') is no longer possible. Yes, if there weren't three divorces, then a new marriage can be performed without Halala; otherwise, Halala is necessary, as is the well-known ruling. And the dower (Mahr) of Hindah (the wife) is undoubtedly payable by Zaid in this case. If he claims that at the time of writing this, his anger had reached such a state that his sanity was completely gone and he did not know what he was saying or what was coming out of his mouth, then for the satisfaction of Hindah, he must provide proof from just witnesses. Although he may be truthful in his statement before Allah and it may be religiously permissible for him to go to the woman, it can never be lawful for the woman to stay with him without proof of the continuation of the marriage. Thus, it is necessary for Zaid to present witnesses for his claim, or if it is known and well-recognized that he had experienced such a state before, then there is no need for witnesses; he may simply state it by taking an oath, otherwise it will not be accepted. (Received as an incomplete answer).

Problem 155: From Rampur, Phoolwara Mohalla, sent by Muhammad Ali Sahib, dated 27th Dhu al-Hijjah 1338 AH.

What do the scholars of religion and the jurists of the firm Shariah say regarding this issue of divorce: When Zaid's wife went to her parental home, she became ill and was also pregnant. When she felt slightly better, she came to her in-laws' house at 7 PM during the month of Ramadan. She suffered a seizure due to heat or some other illness, and her condition at that time was dangerous. Zaid was not present at his house. After some time, when Zaid arrived home and saw his wife in such a condition, he immediately went back to bring a physician (Hakim). While he was going to the physician's place, he also informed his in-laws of the situation, upon which Zaid's father-in-law and mother-in-law arrived. The physician, based on his diagnosis, established that the seizure was caused by some injury. At this, Zaid's brother-in-law, thinking that Zaid had beaten his sister, began speaking harshly and abusively. Zaid also became ready to retaliate in kind, and matters escalated to a physical fight. Zaid's mother called Zaid's cousin (paternal aunt's son), who was also related to Zaid's wife. He came immediately and took Zaid away. At that time, Zaid's condition was like that of a mad dog; he had no awareness of anything. That same night, he said: "The woman because of whom I had to face this humiliation, I have left her on three divorces." But this phrase came out of his mouth only once. Zaid's

father-in-law took his daughter away at that very time. Two months and a few days have passed since then. What is the ruling on this, as Zaid has asked to call his wife back?

तलाक जिस तरह मौखिक कहने से प्रभावी होती है, वैसे ही लेखन से भी प्रभावी हो जाती है। अत; वह तलाक प्रभावी हो चुकी है और इद्दत की अवधि समाप्त हो जाने के कारण अब वापसी (रुजू) संभव नहीं है। हाँ, यदि तीन तलाक नहीं थे, तो हलाला के बिना नया निकाह किया जा सकता है; अन्यथा हलाला आवश्यक है, जैसा कि प्रसिद्ध नियम है। और इस स्थिति में हिन्दा (पत्नी) का मेहर निश्चित रूप से ज़ैद पर देय है। यदि वह दावा करता है कि इस लेखन के समय उसका क्रोध ऐसी स्थिति में पहुँच गया था कि उसकी बुद्धि पूरी तरह समाप्त हो गई थी और उसे पता नहीं था कि वह क्या कह रहा है या उसके मुँह से क्या निकल रहा है, तो हिन्दा की संतुष्टि के लिए उसे विश्वसनीय गवाहों से इसका प्रमाण देना होगा। यद्यपि वह अल्लाह के निकट अपने बयान में सच्चा हो सकता है और धार्मिक रूप से उसके लिए महिला के पास जाना जायज़ हो सकता है, लेकिन निकाह के बने रहने के प्रमाण के बिना महिला का उसके पास रहना कदापि हलाल नहीं हो सकता। अतः ज़ैद के लिए अपने दावे पर गवाह पेश करना आवश्यक है, या यदि यह ज्ञात और प्रसिद्ध है कि पहले भी कभी उसकी ऐसी स्थिति हुई थी, तो गवाहों की आवश्यकता नहीं है; वह केवल शपथ लेकर बयान दे सकता है, अन्यथा उसे स्वीकार नहीं किया जाएगा। (अपूर्ण उत्तर मिला)।

मसला 155: रामपुर, मोहल्ला फूलवाड़ा से, प्रेषक मुहम्मद अली साहब, दिनांक 27 ज़ुल-हिज्जा अल-हराम 1338 हिजरी।

धर्म के विद्वान और सुदृढ़ शरीयत के मुफ्ती इस तलाक के मसले में क्या कहते हैं: जब ज़ैद की पत्नी अपने मायके गई तो बीमार हो गई और गर्भवती भी थी। जब उसे कुछ राहत मिली तो वह रमज़ान के महीने में शाम 7 बजे ससुराल आई। गर्मी या किसी अन्य बीमारी के कारण उसे दौरा पड़ा और उस समय उसकी हालत गंभीर थी। ज़ैद अपने घर पर मौजूद नहीं था। कुछ समय बाद जब ज़ैद घर आया और अपनी पत्नी को ऐसी हालत में देखा, तो वह तुरंत हकीम साहब को लाने के लिए वापस गया। जब वह हकीम साहब के यहाँ जा रहा था, तो उसने अपने ससुराल वालों को भी इस घटना की सूचना दे दी, जिस पर ज़ैद के ससुर और सास आ गए। हकीम साहब ने अपनी जाँच से यह सिद्ध किया कि यह दौरा किसी चोट के कारण पड़ा है। इस पर ज़ैद के साले ने यह सोचकर कि ज़ैद ने उसकी बहन को मारा है, भला-बुरा कहना शुरू कर दिया, जिस पर ज़ैद भी वैसा ही जवाब देने को तैयार हो गया। बात हाथापाई तक पहुँच गई। ज़ैद की माँ ने ज़ैद के फुफेरे भाई को आवाज़ दी, जिनका रिश्ता ज़ैद

की पत्नी से भी था। वे तुरंत आए और ज़ैद को पकड़ कर ले गए। उस समय ज़ैद की हालत एक पागल कुत्ते की तरह थी, उसे किसी बात की सुध नहीं थी। उसी रात उसने यह कहा: "जिस औरत की वजह से मुझे यह बेइज़्ज़ती उठानी पड़ी, मैंने उसे तीन तलाक पर छोड़ा।" लेकिन यह वाक्य उसके मुँह से केवल एक बार निकला। ज़ैद के ससुर अपनी बेटी को उसी समय ले गए, जिसे अब तक दो महीने और कुछ दिन बीत चुके हैं। इस पर क्या हुक्म है और ज़ैद ने अपनी पत्नी को वापस बुलाने के लिए कहा है।

طلاق جس طرح قول سے واقع ہوتی ہے یونہیں تحریر سے، پس وہ طلاق واقع ہوگئی اور بہ سبب مرورِ عدت کے اب رجوع بھی نہیں ہوسکتا، ہاں اگر تین طلاقیں نہ تھیں تو نکاحِ جدید بے حلالہ کے کرسکتا ہے ورنہ حلالہ کی ضرورت ہے کما ھو الحکم المعروف (جیسا کہ حکم مشہور ہے۔ت) اور مہر ہندہ اس صورت میں بیشک زید پر واجب الادا ہے، اور اگر وہ دعویٰ کرے کہ اس تحریر کے وقت میرا غصہ ایسی ہی حالت کو پہنچا ہوا تھا کہ میری عقل بالکل زائل ہوگئی تھی اور مجھے نہ معلوم تھا کہ میں کیا کہتا ہوں کیا میرے منہ سے نکلتا ہے، تو اطمینانِ ہندہ کے لئے اس کا ثبوت گواہانِ عادل سے دے کہ اگرچہ عند اللہ وہ اپنے بیان میں سچا ہو اور اسے عورت کے پاس جانا دیانتاً روا ہو مگر عورت کو بے ثبوت بقائے نکاح اس کے پاس رہنا ہرگز حلال نہیں ہوسکتا، تو ضرور ہوا کہ زید اپنے دعویٰ پر گواہ دے یا اگر معلوم و معروف ہے کہ اسے پہلے بھی کبھی اس کی ایسی حالت ہوگئی تھی تو گواہوں کی کچھ حاجت نہیں مجرد قسم کھا کر بیان کرے ورنہ مقبول نہیں (جوابِ ناقص ملا)

مسئلہ ۱۵۵: از رامپور محلہ پھول واڑہ مرسلہ محمد علی صاحب مورخہ ۲۷ ذی الحجہ الحرام ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیانِ شرعِ متین بیچ اس مسئلہ طلاق کے کہ زید کی بیوی جب اپنے میکہ گئی تو علیل ہوگئی اور حاملہ بھی ہے جب کچھ فرصت ہوئی تو سسرال میں آئی شام کے ۷ بجے ماہِ رمضان میں ایک دورہ گرمی یا کسی دوسری بیماری کے سبب سے لاحق ہوا اور اس وقت کی حالت خطرناک تھی زید اپنے مکان پر موجود نہ تھا کچھ عرصہ کے بعد جب زید مکان پر آیا اور اپنی کو ایسی حالت میں دیکھا فوراً واپس گیا تاکہ حکیم صاحب کو لائے جب حکیم صاحب کے یہاں وہ جارہا تھا تو اس نے اپنی سسرال میں بھی اس واقعہ کی خبر کردی جس پر زید

کے خسر اور ساس آگئے حکیم صاحب نے اپنی تشخیص سے یہ ثابت کیا کہ کسی چوٹ کی وجہ سے یہ دورہ پڑا ہے اس پر زید کے سالے نے یہ خیال کرکے کہ زید نے اس کی ہمشیرہ کو مارا ہے سخت وشست کہنا شروع کیا جس پر زید بھی وہی کہنے کے لئے تیار ہوگیا، نوبت باینجا رسید کہ ہاتھا پائی شروع ہوگئی، زید کی والدہ نے زید کے پھوپھا زاد بھائی کو آواز دی اور وہ زید کی زوجہ سے بھی یہ رشتہ رکھتے ہیں وہ فوراً آگئے اور زید کو پکڑ کر لے گئے۔ اس وقت زید کی حالت ایک دیوانے کتے کی تھی اس کو کسی بات کا ہوش نہ تھا، اسی رات میں اس نے یہ کہا جس عورت کی وجہ سے یہ بے عزتی مجھ کو اٹھانا پڑی میں نے اس کو تین طلاق پر چھوڑا لیکن یہ کلمہ ایک مرتبہ اس کے منہ سے نکلا زید کے خسر اپنی بیٹی کو اسی وقت لے گئے جس کو اب تک دو ۲ ماہ اور کچھ دن گزرے اس پر کیا حکم ہے اور زید نے اپنی بیوی بلانے کے لئے کہا ہے۔

Volume 12 Fatawa Razawiyya

The Answer: Three divorces have taken place; marriage cannot occur without halala (re-marriage to another person first). However, if it is proven by reliable Sharia witnesses that he was indeed in a state of insanity at that time, or if it is well-known that when he gets angry, he loses his mind and acts like a madman, and if in that state he takes an oath saying that was his condition at the time and he was completely devoid of reason, then they will accept it and will not rule for divorce. If he takes a false oath, the burden lies on him. (The issue is in Al-Khairiyya, Radd al-Muhtar, etc.) This issue is in Khairiyya and Radd al-Muhtar, etc. (T) And Allah Almighty knows best.

Issue 156: 28 Rabi' al-Thani 1314 AH What do the scholars of religion say on this matter: a person, under someone's coercion and oppression, completely helpless and forced, gave a divorce to his wife and wrote a divorce deed. Will divorce occur in this situation or not? Explain and be rewarded.

The Answer: Divorce occurs whether given voluntarily or under compulsion. Marriage is like glass and divorce like a stone. Throw a stone at glass voluntarily or by force, or if it falls from the hand, the glass breaks in every case. However, this applies to uttering the words of divorce. If one, under someone's coercion and intimidation, wrote a divorce or a divorce deed while in danger, and did not utter the words of divorce from the tongue, then divorce will not occur. It is stated in Tanwir al-Absar:

(Arabic)

The divorce of every sane, adult husband occurs, even if coerced or mistaken. And in Radd al-Muhtar from Al-Bahr, it is quoted that coercion means coercion to utter the divorce. So, if he was coerced into writing the divorce of his wife and he wrote it, she is not divorced because writing was made a substitute for utterance only based on need, and there is no need here.

(Urdu Translation)

Divorce from every sane, adult husband will be effective, even if he was forced or gave divorce by mistake. And in Radd al-Muhtar, it is quoted from Bahr that coercion refers to being forced to utter the word of divorce. If he was forced to write a divorce for his wife and he wrote it under compulsion, then divorce will not happen, because writing is established as a substitute for utterance solely based on necessity, and here the husband has no necessity.

(T)

1. Durr al-Mukhtar, Kitab al-Talaq, Mujtabai Press, Delhi, 1/71.
2. Radd al-Muhtar, Kitab al-Talaq, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/421.

जिल्द 12 फ़तावा रज़विया

उत्तर: तीन तलाक़ें हो गईं, बिना हलाला के निकाह नहीं हो सकता। लेकिन अगर शरई आदिल गवाहों से यह साबित हो जाए कि वास्तव में वह उस समय पागलपन की स्थिति में था, या यह बात प्रसिद्ध और ज्ञात हो कि जब उसे गुस्सा आता है तो उसकी अक्ल ठिकाने नहीं रहती और वह पागलों जैसी हरकतें करता है, उस स्थिति में यदि वह कसम खाकर कह दे कि उस समय मेरी यही हालत थी और मैं बुद्धि से बिल्कुल शून्य था, तो वे मान लेंगे और तलाक़ का हुक्म नहीं देंगे। यदि वह झूठी कसम खाता है तो इसका बोझ उसी पर है। (मसलह अल-खैरिया और रद्दुल मुहतार आदि में है)। यह मसला खैरिया और रद्दुल मुहतार आदि में है। (त) और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 156: 28 रबी-उल-सानी शरीफ़ 1314 हिजरी विद्वान इस बारे में क्या कहते हैं कि एक व्यक्ति ने किसी के दबाव और ज़ुल्म से मजबूर होकर अपनी पत्नी को तलाक़ दे दी और तलाक़नामा लिख दिया। क्या इस स्थिति में तलाक़ हो जाएगी या नहीं? कृपया स्पष्ट करें।

उत्तर: तलाक़ चाहे खुशी से दी जाए या दबाव में, वह हो जाती है। निकाह शीशे के समान है और तलाक़ पत्थर के समान। शीशे पर पत्थर खुशी से फेंकें या ज़बरदस्ती, या वह हाथ से गिर जाए, शीशा हर तरह से टूट जाएगा। लेकिन यह ज़बान से तलाक़ के शब्द कहने के मामले में है। यदि किसी के दबाव और डर से औरत को खतरे में देखते हुए तलाक़ लिखी या तलाक़नामा लिख दिया और ज़बान से तलाक़ के शब्द नहीं कहे, तो तलाक़ नहीं होगी। तनवीरुल अबसार में है:

(अरबी)	**(उर्दू अनुवाद)**
"हर समझदार वयस्क पति की तलाक़ प्रभावी हो जाती है, भले ही उसे मजबूर किया गया हो या वह गलती पर हो।" और रद्दुल मुहतार में अल-बहर से उद्धृत है कि "ज़बरदस्ती का अर्थ है तलाक़ बोलने के लिए मजबूर करना। इसलिए, यदि उसे अपनी पत्नी की तलाक़ लिखने के लिए मजबूर किया गया और उसने लिखा, तो तलाक़ नहीं होती क्योंकि लेखन को केवल आवश्यकता के आधार पर बोलने का विकल्प	हर समझदार वयस्क पति की तलाक़ प्रभावी होगी, भले ही उसे मजबूर किया गया हो या उसने गलती से तलाक़ कह दिया हो। और रद्दुल मुहतार में बहर से उद्धृत है कि ज़बरदस्ती से तात्पर्य तलाक़ के शब्द बोलने पर मजबूर करना है। यदि उसे अपनी पत्नी के लिए तलाक़नामा लिखने पर मजबूर किया गया और उसने मजबूरी में लिख दिया, तो तलाक़ नहीं होगी, क्योंकि लिखने को बोलने का स्थान केवल आवश्यकता के आधार पर दिया गया

(अरबी)	(उर्दू अनुवाद)
बनाया गया है, और यहाँ कोई आवश्यकता नहीं है।"	है और यहाँ पति को ऐसी कोई आवश्यकता नहीं है।

(त)

1. दुर्रे मुख़्तार, किताबुत तलाक़, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/71.
2. रद्दुल मुहतार, किताबुत तलाक़, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी, बेरूत, 2/421.

جلد دو از دہم فتاویٰ رضویہ

الجواب: تین طلاقیں ہو گئیں، بے حلالہ نکاح نہیں ہو سکتا مگر جبکہ گواہان عادل شرعی سے ثابت ہو کہ واقعی وہ اس وقت حالتِ جنون میں تھا یا یہ معلوم و مشہور ہو کہ اسے جب غصہ آتا ہے عقل سے باہر ہو جاتا ہے اور حرکاتِ مجنونانہ اس سے صادر ہوتی ہے اس حالت میں اگر وہ قسم کھا کر کہہ دے گا کہ اس وقت میرا یہی حال تھا اور میں عقل سے بالکل خالی تھا تو قبل کرلیں گے اور بحکمِ طلاق نہ دیں گے، اگر جھوٹا حلف کریگا وبال اس پر ہے والمسئلة في الخيرية وردالمحتار وغیرھا) یہ مسئلہ خیریہ اور رد المحتار وغیرہ ہما میں ہے۔ ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۵۶: ۲۸ ربیع الثانی شریف ۱۳۱۴ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے کسی کے جبر وظلم سے محض ناچار و مجبور ہو کر اپنی عورت کو طلاق دے دی اور طلاق نامہ لکھ دیا اس صورت میں طلاق پڑے گی یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: طلاق بخوشی دی جائے خواہ بجبر واقع ہو جائے گی۔ نکاح شیشہ ہے اور طلاق سنگ، شیشہ پر پتھر خوشی سے پھینکیے یا جبر سے یا خود ہاتھ سے جھٹ پڑے شیشہ ہر طرح ٹوٹ جائے گا۔ مگر یہ زبان سے الفاظِ طلاق کہنے میں ہے، اگر کسی کے جبر و اکراہ سے عورت کو خطرہ میں طلاق لکھی یا طلاق نامہ لکھ دیا اور زبان سے الفاظِ طلاق نہ کہے تو طلاق نہ پڑے گی۔ تنویر الابصار میں ہے:

| ویقع طلاق کل زوج بالغ عاقل ولو مکرھا او مخطئا وفي رد المحتار عن البحران المراد الاکراہ علی تلفظ بالطلاق فلوا کرہ علی ان کتب طلاق امرأتہ فتکتب لا تطلق لان الکتابة اقیمت مقام العبارة باعتبار الحاجة ولا حاجة ھنا - | ہر عاقل بالغ خاوند کی طلاق نافذ ہو جائیگی اگرچہ مجبور کیا گیا یا خطاء

سے طلاق کا کہہ دیا ہو، اور ردالمحتار میں بحر سے منقول ہے کہ جبر سے مراد لفظِ طلاق کہنے پر جبر کیا گیا ہو، اور اگر اس کو اپنی بیوی کو طلاق لکھنے پر مجبور کیا گیا تو اس نے مجبور ہو کر لکھ دی تو طلاق نہ ہوگی، کیونکہ کتابت کو تلفظ کے قائم مقام محض حاجت کی بناء پر کیا گیا ہے اور یہاں خاوند کو حاجت نہیں ہے۔ |

(ت)

۱ درمختار کتاب الطلاق مطبع مجتبائی دہلی ۱/۷۱ ۲ ردالمحتار کتاب الطلاق داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۴۲۱

Fatawa-e-Razvia Volume 12

However, all this applies when there is Shariah-compliant compulsion (Ikrah) such that there is a fear of harm and the person is capable of inflicting injury. Mere insistence that forced someone to write it out of consideration or respect is not sufficient for "Ikrah." If written under such circumstances, the divorce (Talaq) will occur, as is not hidden (as is obvious). And Allah Almighty knows best.

Problem 157: From Post Office Ramuchakma Kul, District Chittagong, Madrasa Aziziyya, sent by Mufeed-ul-Rehman, 10 Jamadi-al-Akhir 1336 AH. If someone forcibly makes a person drink an intoxicant, and in that state of unconsciousness/intoxication he divorces his wife, will the divorce occur?

The Answer: People call someone's insistence 'force' (Jabr), but this is not actual force. If someone consumes an intoxicant due to such insistence and gives a divorce in that state of intoxication, it will undoubtedly occur by consensus. Yes, if there is Shariah-recognized force and compulsion—for example, a threat of murder or amputation of a limb, which the person believes the threatener is capable of carrying out, or if someone binds his hands and feet, forces his mouth open, and pours alcohol down his throat—then this is certainly a case of actual force. The research on this is that if he gives a divorce in such a state of intoxication, it will not occur. In Durr al-Mukhtar, it is stated:

"The rectification (of the ruling) has differed regarding the person who became intoxicated under compulsion or out of necessity." - A person who used an intoxicant under compulsion or in a state of necessity and divorced his wife in that same intoxication, then there are differing rectifications regarding such a person's divorce. (T)

In Radd al-Muhtar, it is stated:

"It was corrected in al-Tuhfa and others that it (divorce) does not occur, and in al-Nahr from the correction of al-Quduri that it is the verified research." - Summarized. And Allah Almighty knows best. - In al-Tuhfa and other books, the ruling that the divorce does not occur has been declared correct. And in al-Nahr, while mentioning the correction from al-Quduri, it is stated that this is indeed the verified research. And Allah Almighty knows best. (T)

---

1 Durr al-Mukhtar, Book of Divorce, Mujtabai Press, Delhi, 1/217 2 Radd al-Muhtar, Book of Divorce, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/444

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 12

मगर यह सब उस स्थिति में है जब शरीअत के अनुसार ज़बरदस्ती (इकराह) हो कि उससे नुकसान पहुँचने का डर हो और वह व्यक्ति नुकसान पहुँचाने में सक्षम हो। सिर्फ इतना कि उसने अपने सख्त आग्रह से मजबूर कर दिया और उसकी लिहाज़ और पास की वजह से उसने लिख दिया, यह 'इकराह' के लिए काफी नहीं है। अगर इस तरह से लिखेगा तो तलाक हो जाएगी, जैसा कि स्पष्ट है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 157: डाकखाना रामोचकलमा कोल, ज़िला चटगाँव, मदरसा अज़ीज़िया से, प्रेषक मुफ़ीज़ुर रहमान, 10 जमादी-अल-आख़िर 1336 हिजरी। अगर किसी ने किसी व्यक्ति को ज़बरदस्ती नशा पिलाया और उस बेहोशी/नशे की हालत में उसने अपनी पत्नी को तलाक़ दे दी, तो क्या तलाक़ हो जाएगी?

अल-जवाब (उत्तर): लोग किसी के आग्रह को भी ज़बरदस्ती (जबर) कहते हैं, लेकिन यह असल ज़बरदस्ती नहीं है। अगर ऐसे आग्रह के कारण किसी ने नशीली चीज़ पी ली और उस नशे की हालत में तलाक़ दे दी, तो वह बिना किसी शक के सर्वसम्मति से प्रभावी हो जाएगी। हाँ, अगर शरीअत के अनुसार ज़बरदस्ती और इकराह हो—मिसाल के तौर पर हत्या या अंग काटने की धमकी दी जाए जिसे पूरा करने में वह उसे सक्षम समझता हो, या जैसे किसी ने हाथ-पाँव बाँधकर मुँह खोलकर गले में शराब डाल दी, तो यह निश्चित रूप से असल ज़बरदस्ती की सूरत है। और शोध (तहक़ीक़) यह है कि इस नशे में अगर वह तलाक़ देगा तो नहीं होगी। दुर्रे मुख़्तार में है:

"उस व्यक्ति के बारे में शुद्धि (तसहीह) में मतभेद है जो मजबूर होकर या विवशता की स्थिति में नशे में धुत हुआ।" - जिस व्यक्ति ने मजबूर होकर या विवशता की स्थिति में नशीली चीज़ का उपयोग किया और उसी नशे में उसने अपनी पत्नी को तलाक़ दे दी, तो ऐसे व्यक्ति की तलाक़ के मामले में तसहीह अलग-अलग है। (त)

रद-उल-मुह्तार में है:

"अत-तुहफ़ा और अन्य में यह तसहीह की गई है कि तलाक़ नहीं होगी, और अन्-नहर में अल्-क़ुदूरी की तसहीह से उद्धृत है कि यही शोध (तहक़ीक़) है।" - संक्षेप। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। - तुहफ़ा वगैरह में तलाक़ न होने की बात को सही क़रार दिया गया है, और नहर में क़ुदूरी की

तसहीह बयान करते हुए कहा गया है कि यही शोध (तहक़ीक़) है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

---

1 दुर्रे मुख़्तार, किताबुत्तलाक़, मतबा मुज्तबाई, दिल्ली 1/217 2 रद-उल-मुह्तार, किताबुत्तलाक़, दार इह्या उत्-तुरास़ अल-अरबी, बेरूत 2/444

فتاوی رضویہ جلد دوا زدہم

مگر یہ سب اس صورت میں جبکہ اکراہ شرعی ہو کہ اُس سے ضرر رسانی کا اندیشہ ہو اور وہ ایذا پر قادر ہو صرف اس قدر کہ اُس نے اپنے سخت اصرار سے مجبور کر دیا اور اس کے لحاظ پاس سے اسے لکھتے بنی ، اکراہ کے لئے کافی نہیں یوں لکھے گا تو طلاق ہو جائے گی کما لا یخفی (جیسا کہ پوشیدہ نہیں۔ ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۵۷: از ڈاک خانہ رامو چکلما کول ضلع چٹاگانگ مدرسہ عزیز یہ مرسلہ مفیض الرحمن ۱۰ جمادی الآخر ۱۳۳۶ھ کسی نے ایک شخص کو جبراً نشہ پلایا وہ حالتِ بیہوشی میں اگر عورت کو طلاق دے تو کیا طلاق واقع ہو گئی؟

الجواب: لوگ کسی کے اصرار کو بھی جبر کہتے ہیں ، یہ جبر نہیں ، اگر ایسے جبر سے نشہ کی چیز پی اور اس نشہ میں طلاق دی بلاشبہ بالاتفاق ہوگئی ، ہاں اگر جبر واکراہ شرعی ہو ۔ مثلاً قتل یا قطع عضو کی دھمکی دے جس کے نفاذ پر یہ اسے قادر جانتا ہو ، یا یوں کہ کسی نے ہاتھ پاؤں باندھ کر منہ چیر کر حلق میں شراب ڈال دی تو یہ صورت ضرور جبر کی ہے ، اور تحقیق یہ ہے کہ اس نشہ میں اگر طلاق دے نہ پڑے گی۔ در مختار میں ہے :

اختلف التصحیح فیمن سکر مکرھا او مضطرا ۱۔ - جس شخص نے مجبور ہو کر یا اضطراری حالت میں نشہ آور چیز کو استعمال کیا اور اسی نشہ میں اس نے اپنی بیوی کو طلاق دے دی تو ایسے شخص کی طلاق میں تصحیح مختلف ہے (ت)

رد المحتار میں ہے :

صحح فی التحفۃ وغیرھا عدم الوقوع و فی النھر عن تصحیح القدوری انہ التحقیق ۲- ملخصاً۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ - تحفہ وغیرہ میں طلاق واقع نہ ہونے کو صحیح قرار دیا گیا ہے ، اور نہر میں قدوری کی تصحیح بیان کرتے ہوئے کہا کہ یہی تحقیق ہے ، واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

---

۱ درمختار کتاب الطلاق مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۱۷ ۲ رد المحتار کتاب الطلاق دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۴۴۴

Fatawa-e-Razvia Volume 12

Problem 158: 14 Rabi' al-Awwal Sharif 1338 AH What do the scholars of the religion say on this matter: according to our Imam al-A'zam (Imam Abu Hanifa), may Allah Almighty have mercy on him, if a divorce is given under duress, and a person is forced out of fear for their life to divorce their wife, will the divorce be effective or not? And if they say a word of negation softly under their breath so that it is not understood or heard, will it still be effective or not? For example, if they say "I did (not) divorce my wife" or say the word of exception (In sha Allah) softly, what is the ruling? Or is there any other remedy/stratagem through which divorce does not occur? The Answer: A divorce given under any kind of compulsion or duress will still occur. If the exception or the addition of negation was in such a voice that it was not even audible to one's own ears, then it is not valid according to Allah either; divorce has occurred. If the voice reached their own ears but the person forcing them or the onlookers did not hear it, then judicially (legal ruling) the divorce will stand, but according to Allah (spiritually), it will not. A potential remedy could be that under compulsion, they say "divorce, divorce, divorce" while intending that they are making a meaningless demand. However, if the person applying pressure is clever and does not accept it without explicit clarification of the relation (to the wife), then there is no remedy. Allah Almighty knows best.

Problem 159: From Hafiz Shamsuddin, Shahabad, District Hardoi, 20 Muharram al-Haram 1339 AH. What do the scholars of the religion and muftis of the firm Sharia say on this matter: A person has been insane for fifteen years. He has a wife but has no relationship with her, cannot fulfill her rights, and cannot provide food or clothing. About eight or ten months ago, he was told to divorce his wife. He then gave the divorce in front of two men and one woman; he said three times with his tongue, "I have divorced my wife." Who is the woman in whose presence the divorce was given? It is the insane man's mother. Who are the men in whose presence it was given? One is the brother of the insane man, and the other is his nephew. This person is not so insane that he has absolutely no senses; he eats, drinks, and lives in a house. He has no property through which he can sustain himself. His wife wants to marry another person. Has the divorce occurred or not? Give a ruling and be rewarded. Please inform us of the answer soon. The Answer: The divorce of an insane person is void. Even if they give divorce a hundred thousand times, it will never happen. Neither is it permissible for the woman to marry another, nor can his guardian (wali) give a

divorce on his behalf, because guardianship is for the purpose of seeking interest, not for causing harm (Lan al-Wilayatu lin-Nazari la liddarar).

फतावा-ए-रज़विया जिल्द १२

मसला १५८: १४ रबीउल अव्वल शरीफ १३३८ हिजरी। क्या फरमाते हैं उलमा-ए-दीन इस मसले में कि हमारे इमाम-ए-आज़म रहमतुल्लाहि अलैहि के नज़दीक अगर तलाक़ ज़बरदस्ती दिलवाई जाए, तो अगर जान के डर से मजबूर होकर कोई अपनी औरत को तलाक़ दे दे तो तलाक़ प्रभावी होगी या नहीं? और अगर वह नकारने का शब्द (नफी) धीरे से अपनी दबी ज़बान से कह ले कि दूसरा न समझे और न सुने, तो भी तलाक़ होगी या नहीं? उदाहरण के लिए वह कहे "मैंने अपनी औरत को तलाक़ (नहीं) दी" या शब्द-ए-इस्तिसना (इनशाअल्लाह) धीरे से कह ले, तो क्या हुक्म है? या क्या कोई और उपाय (हीला) हो सकता है जिससे तलाक़ प्रभावी न हो? जवाब: तलाक़ चाहे किसी भी दबाव या ज़बरदस्ती से दी जाए, वह प्रभावी हो जाएगी। और यदि अपवाद (इस्तिसना) या नकारने का शब्द जोड़ना इतनी धीमी आवाज़ में था कि वह खुद के कानों तक पहुँचने के योग्य भी नहीं था, तो अल्लाह के नज़दीक भी वह मान्य नहीं है; तलाक़ हो गई। और अगर आवाज़ अपने कानों तक आई लेकिन मजबूर करने वाले या उपस्थित लोगों ने नहीं सुनी, तो क़ानूनन (क़ज़ाअन) तलाक़ हो जाएगी, लेकिन अल्लाह के नज़दीक नहीं होगी। उपाय यह हो सकता है कि दबाव पड़ने पर वह कहे "तलाक़ तलाक़ तलाक़" और मन में यह इरादा रखे कि वह एक अर्थहीन माँग कर रहा है। लेकिन यदि मजबूर करने वाला चतुर है और बिना स्पष्ट उल्लेख के नहीं मानता, तो कोई उपाय नहीं है। अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला १५९: हाफिज़ शम्सुद्दीन, शाह आबाद ज़िला हरदोई से, २० मुहर्रमुल हराम १३३९ हिजरी। क्या फरमाते हैं उलमा-ए-दीन और शरीयत के मुफ्ती इस मसले में कि एक व्यक्ति पन्द्रह साल से पागल (दीवाना) है और उसकी पत्नी है। उसे अपनी पत्नी से कोई सरोकार नहीं है, वह उसके अधिकार पूरे नहीं कर सकता, खाना-कपड़ा आदि कुछ नहीं दे सकता। लगभग आठ-दस महीने पहले उससे तलाक़ के लिए कहा गया, तब उसने दो पुरुषों और एक महिला के सामने अपनी ज़बान से तीन बार कहा, "मैंने अपनी पत्नी को तलाक़ दी"। जिस महिला के सामने तलाक़ दी गई वह उस पागल व्यक्ति की माँ है। जो पुरुष गवाह थे, उनमें से एक पागल का भाई है और दूसरा उसका भांजा। यह व्यक्ति ऐसा पागल नहीं है कि उसे बिल्कुल भी होश न हो; वह खाता-पीता है और घर में रहता है। उसकी कोई ऐसी संपत्ति नहीं है जिससे वह अपना गुज़ारा कर सके। उसकी पत्नी दूसरे से निकाह करना चाहती है, क्या तलाक़ हुई या नहीं? कृपया जल्द ही उत्तर से अवगत कराएं। जवाब: पागल (मजनून) की तलाक़ अमान्य (बातिल) है। वह लाख बार भी तलाक़ दे दे, तो भी हरगिज़ नहीं होगी। न तो

महिला के लिए दूसरे से निकाह करना जायज़ होगा और न ही पागल की ओर से उसका अभिभावक (वली) तलाक़ दे सकता है, क्योंकि अभिभावकता लाभ पहुँचाने के लिए होती है न कि नुकसान पहुँचाने के लिए (لان الولایۃ للنظر لا للضرر)।

पृष्ठ ३८७ / ६८८

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

مسئلہ ۱۵۸: ۱۴ ربیع الاول شریف ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہمارے امام اعظم رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کے نزدیک اگر طلاق جبراً دلوائی جائے تو اگر خوف جان سے مجبوراً اگر کوئی عورت اپنی کو طلاق دیوے تو طلاق واقع ہوجائے گی یا نہیں اور اگر لفظ نفی آہستہ سے اپنی دبی زبان سے کہہ لیوے کہ وہ نہ سمجھے اور نہ سنے تو بھی واقع ہو جاوے گی یا نہیں مثلاً یہ کہے میں نے اپنی عورت کو طلاق (نہیں) دی یا لفظ استثنا (ان شاء اللہ) آہستہ سے کہہ لیوے تو کیا حکم ہے، یا اور کوئی حیلہ ہوسکتا ہے یا نہیں جس سے طلاق واقع نہ ہو۔ الجواب: طلاق اگر دبی زبان سے دے کیسے ہی جبر و اکراہ سے دی جائے گی، اور استثناء یا الحاق نفی اگر ایسی آواز سے تھا کہ خود اپنے کان تک پہنچنے کے قابل بھی نہ تھی تو عند اللہ بھی معتبر نہیں طلاق ہو گئی، اور اگر اپنے کان تک آواز آئی اس مکرہ نے نہ سنی نہ اور حاضرین نے تو قضاءً طلاق جائے گی عند اللہ نہ ہوگی۔ حیلہ یہ ہو سکتا ہے کہ اس کے اکراہ پر کہے طلاق طلاق طلاق، اور نیت یہ کرے کہ مہمل مطالبہ کر رہے ہو، لیکن مکرہ اگر ہوشیار ہے اور بے تصریحِ اضافت نہ مانے تو کوئی حیلہ نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۵۹: از حافظ شمس الدین شاہ آباد ضلع ہردوئی گیا نمی ۲۰ محرم الحرام ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص پندرہ سال سے دیوانہ ہو گیا ہے اور اس کی عورت ہے اس کو اپنی عورت سے کوئی غرض واسطہ نہیں ہے، اس کا حق پورا نہیں کر سکتا کھانا کپڑا وغیرہ کچھ نہیں دے سکتا ہے، عرصہ آٹھ دس ماہ کا ہوا اس سے طلاق کے واسطے کہا گیا کہ اپنی عورت کو طلاق دے دے، تب اس نے دو مرد اور ایک عورت کے سامنے طلاق دے دی، تین بار اپنی زبان سے کہا کہ میں نے اپنی عورت کو طلاق دی، عورت

کون ہے جس کے روبرو طلاق دی دیوانہ کی ماں ہے، مرد وہ کون ہیں جن کے روبرو طلاق دی ایک دیوانہ کا بھائی ہے دوسرا بھانجا ہے یہ شخص ایسا دیوانہ نہیں ہے جو بالکل ہوش و حواس نہ رکھتا ہو، کھاتا پیتا ہے مکان میں رہتا ہے اس کی کوئی جائیداد ایسی نہیں جو اپنا گزر کر سکے، اس کی عورت دوسرے سے نکاح کرنا چاہتی ہے آیا طلاق ہوئی یا نہیں؟ بینوا توجروا۔ برائے مہربانی جواب سے جلد مطلع فرمائے۔ الجواب: مجنون کی طلاق باطل ہے وہ لاکھ دفعہ طلاق دے ہر گز نہ ہو گی، نہ عورت کو دوسرے سے نکاح جائز ہو گا نہ اس کی طرف سے اس کا ولی طلاق دے سکتا ہے لان الولایۃ للنظر لا للضرر (کیونکہ ولایت نفع رسانی کیلئے ہے نہ کہ نقصان کیلئے)۔

Fatawa Rizvia Volume 12

Guardianship (Wilayat) is for compassion, not for harm. (T) Eating, drinking, and living in a house are not contradictory to insanity. And Allah Almighty knows best.

Problem 160: From the city of Bareilly, Beharipur neighborhood, wife of Abdul Rahman Sahib, 4 Muharram al-Haram 1338 AH. What do the scholars of religion and the firm Shari'ah say on this matter: Musammat Mehbooban was married to Mistri Abdul Rahman nine years ago. After the marriage, they lived together properly for one year, then he left her place. Since the house belonged to Musammat Mehbooban, she lived alone in the house. The neighborhood people persuaded him and brought him back. In short, he used to come and go like this for nine years. After nine years, in front of the people who were witnesses to the marriage, he said three times, "I have divorced my wife," and said, "Neither are you my wife, nor am I your husband." Now, in this situation, does the marriage remain valid or not? Please explain and be rewarded.

Answer: Allah knows the reality of truth and falsehood. This is a matter of Halal (lawful) and Haram (unlawful), the grave, and the Day of Judgment. Pretense will not make the unlawful lawful, nor will pretense work before Allah Almighty, Who knows the hidden things of people. If, in reality, the woman knows that he said these words to her three times, she can marry someone else after the waiting period (Iddat). However, if the husband returns and denies the divorce, and two reliable witnesses are not found among the witnesses, the divorce will not be established. After the husband takes an oath, the woman will be forcibly returned to him. And Allah Almighty knows best.

Problem 161 to 164: From Fatehpur, district Shekhawati, Dargah Masoola, Pir Ji Muhammad Hanif Sahib, 5 Shawwal 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding these issues: (1) After how many times of giving divorce does a woman become unlawful (Haram) for her husband? (2) A person gave his wife divorce ten times and as proof, he wrote it with his own hand three times and showed it to people. Can that woman become lawful (Halal) for him without Halala and without a new marriage? (3) He remained with the same divorced woman under the same conditions without performing Halala. The divorcing husband continues to have sexual relations and continues his previous conduct with her. What is the ruling on this? How will his children be considered, and will they be entitled to his property or

not? And is such a person fit for Caliphate (Khilafat), custodianship (Sajjadagi), and the dervish's cloak (Khirqa-e-Darweshi) or not? Please explain and be rewarded.

फतावा रज़विया जिल्द बारहवीं

विलायत शफकत के लिए होती है, ज़रर (नुकसान) के लिए नहीं। खाना-पीना और मकान में रहना पागलपन के विरुद्ध नहीं है। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 160: शहर बरेली, मोहल्ला बिहारीपुर, ज़ौजा (पत्नी) अब्दुल रहमान साहिब, 4 मुहर्रमुल हराम 1338 हिजरी। क्या फरमाते हैं उलमा-ए-दीन व शरा-ए-मतीन इस मसले में कि मुस्मात महबूबन का निकाह मिस्त्री अब्दुल रहमान से नौ साल का अरसा हुआ जब हुआ था। निकाह के बाद एक साल तक बाकायदा रहा, फिर उसके यहाँ से चला गया। चूँकि मकान मुस्मात महबूबन का था, इसलिए वह अकेली मकान में रही। मोहल्ले वालों ने उसको समझा कर लाए। गरज कि इसी तरह कभी वह चला जाता और कभी आ जाता। इसी तरह नौ साल का अरसा हुआ। नौ साल बाद वे लोग जो निकाह के गवाह थे, उनके सामने तीन बार कह गया कि "मैंने अपनी बीवी को तलाक दी" और कहा "न तो तू मेरी बीवी है न मैं तेरा शौहर"। अब इस सूरत में निकाह जायज़ रहा या नहीं? बेनू तौजरू।

जवाब: सच और झूठ का हाल अल्लाह जानता है। यह हलाल और हराम तथा कब्र और हश्र का मामला है। बनावट से हलाल हराम नहीं हो जाएगा, न अल्लाह तआला के यहाँ बनावट काम आएगी जो लोगों की छुपी हुई बातें जानता है। अगर वास्तव में औरत जानती है कि वह तीन बार उससे ये शब्द कह गया, तो इद्दत के बाद वह दूसरे से निकाह कर सकती है। और अगर शौहर वापस आए और तलाक से इंकार करे और गवाहों में दो आदिल (विश्वसनीय) गवाह न निकलें, तो तलाक साबित नहीं होगी। शौहर की कसम के बाद औरत उसे जबरन वापस दिलाई जाएगी। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 161 से 164: फतेहपुर जिला शेखावाटी, दरगाह मसूला पीर जी मोहम्मद हनीफ साहिब, 5 शवाल 1339 हिजरी। क्या फरमाते हैं उलमा-ए-दीन इन मसाइल में कि: (1) कितनी बार तलाक देने से औरत शौहर पर हराम हो सकती है? (2) जिस व्यक्ति ने अपनी पत्नी को दस बार तलाक दी और इसके प्रमाण में तीन बार विशेष रूप से अपने हाथ से लिखकर लोगों पर ज़ाहिर किया, तो क्या वह औरत बिना हलाला के उसके लिए बिना निकाह हलाल हो सकती है? (3) उसी मुतल्का (तलाकशुदा औरत) से उन्हीं शर्तों पर बिना हलाला किए रही, तलाक देने वाला शौहर सोहबत (यौन संबंध) करता रहे और उसे दस्तूर के मुताबिक अपने अमल-दरामद में लाता रहे, इसका क्या हुक्म है? उसकी

औलाद कैसी है और क्या उसकी जायदाद की हकदार होगी या नहीं? और क्या ऐसा व्यक्ति खिलाफत, सज्जादगी और खिरका-ए-दरवेशी के काबिल है या नहीं? बेनू तौजरू।

पृष्ठ 388/688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

ولایت شفقت کے لئے ہوتی ہے ضرر کے لئے نہیں ۔ ت) کھانا پینا مکان میں رہنا منافی جنوں نہیں، واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۶۰: از شہر بریلی محلہ بہاری پور زوجہ عبدالرحمن صاحب ۴ محرم الحرام ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و شرع متین اس مسئلہ میں کہ مسماۃ محبوبن کا نکاح مستری عبدالرحمن سے عرصہ نو سال کا ہوا جب ہوا تھا بعد نکاح ایک سال تک با قاعدہ رہا پھر اس کے یہاں سے چلا گیا چونکہ مکان مسماۃ محبوبن کا تھا اس واسطے وہ اکیلی مکان میں رہی محلہ والے اس کو سمجھا کر لائے غرضیکہ اسی طرح کبھی وہ چلا جاتا اور کبھی آجاتا یونہی عرصہ نو سال کا ہوا بعد نو سال کے وہ لوگ جو نکاح کے گواہ تھے ان کے سامنے کہہ گیا تین بار کہ میں نے اپنی بی بی کو طلاق دی اور کہا نہ تو میری بی بی نہ میں تیرا شوہر اب اس صورت میں نکاح جائز رہا یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: سچ اور جھوٹ کا حال اللہ جانتا ہے، یہ حلال و حرام و قبر و حشر کا معاملہ ہے، بناوٹ سے حلال حرام نہ ہو جائے گا، نہ اللہ تعالٰی کے یہاں بناوٹ کام دے گی جو لوگوں کی چھپی جانتا ہے، اگر واقع میں عورت جانتی ہے کہ وہ تین بار اس سے یہ الفاظ کہہ گیا تو عدت کے بعد دوسرے سے نکاح کر سکتی ہے اور اگر شوہر واپس آئے اور طلاق سے منکر ہو اور گواہوں میں دو گواہ عادل قبول نہ نکلیں تو طلاق ثابت نہ ہو گی شوہر کے حلف کے بعد عورت اُسے جبر ا واپس دلائی جائے گی۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۶۱ تا ۱۶۴: از فتح پور ضلع شیجا واٹی درگاہ مسئولہ پیر جی محمد حنیف صاحب ۵ شوال ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں کہ: (۱) کتنی بار طلاق دینے سے عورت خاوند پر حرام ہو سکتی ہے؟ (۲) جس شخص اپنی زوجہ کو دس بار طلاق دے اور اس کے ثبوت میں تین بار خاص اپنے ہاتھ سے تحریر لکھ لکھ کر لوگوں پر ظاہر کرے تو کیا وہ عورت بغیر حلالہ اس کے لئے بغیر نکاح حلال ہو سکتی ہے؟ (۳) اسی مطلقہ سے انہیں شرطوں پر بغیر حلالہ کئے رہی، طلاق دینے والا خاوند صحبت کرتا رہے اور اس کو بدستور اپنے عملدرآمد میں لاتا رہے اس کا کیا حکم ہے؟ اس کی اولاد کیسی ہے اور اس کی جائداد کی مستحق ہو گی یا نہیں اور ایسا شخص قابل خلافت و سجادگی و خرقہ درویشی ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

صفحہ 388 از 688

Fatawa Razawiyya, Volume 12

The Answer: (1) When divorces reach three, then that woman cannot become lawful for him in any way without Halala. Allah the Almighty says: "And if he has divorced her [for the third time], then she is not lawful to him afterward until [after] she marries a husband other than him." [Al-Quran 2/230] Allah the Almighty has said: If a third divorce is given, then the divorced woman will not be lawful for him until she marries another person. And Allah the Almighty knows best. And Allah the Almighty knows best. (2) One who gave ten divorces, with three it became an irrevocable divorce (Talaq-e-Mughallazah) and the remaining seven were a mockery of Shariah. Even a permanently separated divorced woman (Talaq-e-Bainah) cannot be lawful without remarriage, and she will remain strictly forbidden for marriage until Halala occurs (i.e., she marries someone else), he either divorces her or dies, and in any case, her waiting period (Iddah) passes. After that, she can marry the first one, otherwise never ever. And Allah the Almighty knows best. (3) That cohabitation will be adultery (zina), and if he knows the ruling, then he is an adulterer and sharia-wise deserving of the punishment for adultery, and the offspring will be children of adultery and deprived of paternal inheritance, and such a person is not worthy of succession or being a spiritual head (Sajjada-nashin). And it has been said in Radd al-Muhtar and other books that it is adultery if he knows the prohibition. In Radd al-Muhtar and other books it is said: When the prohibition is known, then this is adultery. And in this, it is the same whether three divorces are given at once or separately. It is stated in Durr al-Mukhtar: "There is no fixed punishment (hadd) due to doubt in action if he thought it was lawful, like cohabiting with a woman in the waiting period of three divorces even if given collectively." (Summarized) When he thought it was lawful, then it will be a doubt in action (shubha-e-fi'l) on which there is no fixed punishment (hadd), such as if he had intercourse during the waiting period of his triple-divorced wife, even if three divorces were given together. (Summarized) In Radd al-Muhtar it is stated: "That is, even if the triple divorce was with one word, the punishment is not dropped from him unless he claims he thought it was lawful." That is, if all three divorces were given with one word, then the punishment will not be dropped for having intercourse during the waiting period (Iddah), unless he had an assumption of it being lawful in this situation, then...

Footnotes: 1. Al-Quran 2/230 2. Radd al-Muhtar, Chapter of Iddah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 2/212, 610, 615 3. Durr al-Mukhtar, Chapter on Al-Ataa..., Matba' Mujtabai Delhi 1/318

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

जवाब: (1) जब तलाक़ें तीन तक पहुँच जाएँ तो फिर वह औरत उसके लिए बिना हलाला के किसी भी तरह हलाल नहीं हो सकती। अल्लाह तआला फ़रमाता है: "फिर अगर उसने (तीसरी बार) उसे तलाक़ दे दी, तो इसके बाद वह उसके लिए तब तक हलाल नहीं होगी जब तक कि वह किसी और शौहर से निकाह न कर ले।" [अल-क़ुरआन 2/230] अल्लाह तआला ने फ़रमाया है: अगर तीसरी तलाक़ दी तो मुतल्लक़ा (तलाक़शुदा) उसके लिए हलाल न होगी जब तक कि वह किसी दूसरे व्यक्ति से निकाह न कर ले। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। (2) जिसने दस तलाक़ें दीं, तीन से तलाक़-ए-मुग़ल्लज़ह (अटल तलाक़) हो गई और बाक़ी सात शरीअत के साथ उसका मज़ाक़ था। बिना निकाह के तो मुतल्लक़ा बायना (स्थायी रूप से अलग हुई) भी हलाल नहीं हो सकती है और यह तो निकाह से महज़ हराम रहेगी जब तक हलाला न हो (यानी वह किसी और से निकाह करे), वह तलाक़ दे दे या मर जाए और हर हाल में उसकी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) गुज़र जाए, उसके बाद उस पहले वाले से निकाह हो सकता है वर्ना हरगिज़-हरगिज़ नहीं। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। (3) वह संभोग ज़िना (व्यभिचार) होगा और अगर उसे मसला (नियम) मालूम है तो वह ज़ानी है और शरीअत के अनुसार ज़िना की सज़ा का हक़दार है, और संतान वलद-उज़-ज़िना (अवैध संतान) होगी और पिता की विरासत से वंचित रहेगी, और ऐसा व्यक्ति खिलाफ़त और सज्जादानशीनी के योग्य नहीं है। और रद्दुल् मुहतार और अन्य किताबों में कहा गया है कि यदि उसे हराम होने का ज्ञान है तो यह ज़िना है। रद्दुल् मुहतार आदि किताबों में फ़रमाया गया: जब हराम होना मालूम है तो यह ज़िना है। और इसमें यह बराबर है कि तीन तलाक़ें एक साथ हों या अलग-अलग। दुर्रे मुख्तार में है: "काम के संदेह (शुभा-ए-फ़ेल) के कारण कोई 'हद' (निश्चित सज़ा) नहीं है यदि उसने उसे हलाल समझा, जैसे तीन तलाक़ों वाली औरत की इद्दत के दौरान संभोग करना चाहे वे एक साथ दी गई हों।" (संक्षिप्त) जब हलाल होने का गुमान (संदेह) किया तो यह शुभा-ए-फ़ेल होगा जिस पर हद नहीं है, जैसा कि अपनी मुतल्लक़ा सलासा (तीन तलाक़शुदा) की इद्दत में संभोग किया, चाहे तीन तलाक़ें एक साथ ही क्यों न दी गई हों। (संक्षिप्त) रद्दुल् मुहतार में है: "यानी, भले ही तीन तलाक़ें एक ही शब्द से दी गई हों, उससे हद तब तक समाप्त नहीं होगी जब तक कि वह यह दावा न करे कि उसने उसे हलाल समझा था।" अर्थात् यदि एक ही शब्द से तीनों तलाक़ें दे दी गई हों, तो इद्दत में सोहबत (संभोग) करने पर हद समाप्त नहीं होगी, जब तक कि उसे इस स्थिति में हलाल होने का गुमान (अंदाज़ा) न हो, तो फिर...

पाद-टिप्पणी: 1. अल-क़ुरआन 2/230 2. रद्दुल् मुहतार, बाब अल-इद्दह, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी बैरुत 2/212, 610, 615 3. दुर्रे मुख्तार, बाब अल-अता..., मतबा मुज्तबाई दिल्ली 1/318

पृष्ठ 389/688

فتاوٰی رضویہ، جلد دو از دہم

الجواب: (۱) جب طلاقیں تین تک پہنچ جائیں پھر وہ عورت اس کے لئے بے حلالہ کسی طرح حلال نہیں ہو سکتی، قال اللہ تعالٰی فَإِن طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِن بَعْدُ حَتَّىٰ تَنكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُ ۱ ۔ اللہ تعالٰی نے فرمایا ہے: اگر تیسری طلاق دی تو مطلقہ اس کے لئے حلال نہ ہوگی تا وقتیکہ وہ کسی دوسرے شخص سے نکاح نہ کرلے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت) واللہ تعالٰی اعلم۔ (۲) جس نے دس طلاقیں دیں، تین سے طلاق مغلظہ ہو گئی اور باقی سات سے شریعت سے اس کا استہزاء تھا، بلا نکاح تو مطلقہ بائنہ بھی حلال نہیں ہو سکتی ہے اور یہ تو نکاح سے حرام محض رہے گی جب تک حلالہ نہ ہو طلاق دے یا مر جائے اور بہر حال اس کی عدت گزر جائے اس کے بعد اس پہلے سے نکاح ہو سکتا ہے ورنہ ہرگز ہرگز نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (۳) وہ صحبت زنا ہوگی اور اسے اگر مسئلہ معلوم ہے تو یہ زانی اور شرعاً سزائے زنا کا مستحق اور اولاد ولد الزناء اور ترکہ پدری سے محروم، اور ایسا شخص قابل خلافت و سجادہ نشینی نہیں۔ وقد قال فی ردالمحتار وغیرہ من الاسفار انہ زنا اذا علم بالحرمۃ ۲ ۔ ردالمحتار وغیرہ کتب میں فرمایا: جب حرام ہونا معلوم ہے تو یہ زنا ہے۔ (ت) اور اس میں برابر ہے کہ تین طلاقیں ایک ساتھ ہوں یا متفرق۔ در مختار میں ہے: لا حد بشبھۃ الفعل ان ظن حلہ کوطء معتدۃ الثلاث ولو جملۃ ۳ ۔ (ملخصاً) جب حلال ہونے کا گمان کیا تو یہ شبہ فعل ہوگا جس پر حد نہیں، جیسا کہ اپنی مطلقہ ثلاثہ کی عدت میں جماع کیا اگر چہ اکٹھی تین طلاقیں ہوں (ملخصاً) (ت) رد المحتار میں ہے: ای ولو کان تطلیقۃ الثلاث بلفظ واحد فلا یسقط عنہ الحد الا ان ادعی ظن الحل یعنی ایک لفظ سے تینوں طلاقیں دے دی ہوں تو عدت میں وطی کرنے پر حد ساقط نہ ہوگی مگر اس نے اس صورت میں حلال ہونا گمان ہو تو پھر (ت)

حواشی: ۱ القرآن ۲/۲۳۰ ۲ ردالمحتار باب العدة دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۱۲، ۶۱۰،

۶۱۵ ۳ درمختار باب العطاء الذی لا یوجب الحد الخ مطبع مجتبائی دہلی ۱/۳۱۸

Fatawa Razawiya Volume 12

[Arabic Box Text]: And similarly, if the three divorces occur separately, then it is even more appropriate (that the punishment is waived) because no one disagrees on this point, as the Qur'an explicitly states that the legal place (for intercourse) ceases to exist after three divorces. And Allah knows best.

[Urdu Translation in Box]: There will be no 'Hadd' (punishment) on him, and similarly if he gave three separate divorces, then by way of priority, the punishment will be waived because there is no disagreement in this; the Qur'anic text establishes that after three divorces, the wife is no longer a place for intercourse. And Allah Almighty knows best. (T)

Issue 164 to 166: Jamadi-ul-Awwal 1318 AH. What do the scholars of religion and jurists of the firm Sharia say on this matter: Can the marriage of a minor boy and a minor girl be performed through their guardian (wali) or not? (2) Zaid married off his minor daughter, approximately 9-10 years old, to a twenty-four-year-old boy under his guardianship. Is this valid or not? (3) If the girl had made some gesture of acceptance at the time of the proposal, is the marriage valid then too? Now Amr, having achieved one of these three situations, divorced his wife at the behest of her father, and the girl also consented to the divorce out of her ignorance. The divorce took place. The words used were "I divorce you, I divorce you, I divorce you." By saying it three times, the divorce was finalized. Now, after the divorce, if she is to be remarried, under what conditions will the marriage become permissible? Explain and be rewarded.

Answer: The marriage of a minor boy or girl can be performed through a guardian (wali). (2) It was correct for the father to marry off his nine or ten-year-old daughter to a twenty-four-year-old boy.

[Arabic Box Text]: Indeed, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) married the Mother of the Believers (may Allah be pleased with her) when she was six years old, and the marriage was consummated when she was nine years old.

[Urdu Translation in Box]: Indeed, when the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) married Umm al-Mu'minin Aisha Siddiqa (may Allah be pleased with her), she was six years old, and when the departure (rukhsati) took place, she was nine years old. (T)

(3) When a valid guardian is present, there is no need for any gesture from the minor girl. Without a guardian, a minor girl's gesture or explicit verbal offer and acceptance is not sufficient. If a sane, adult husband divorced his minor wife...

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter on the Guardian who necessitates 'hadd' and who does not, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/152.
2. Sunan Ibn Majah, Chapter on Marriage, H.M. Saeed Company, Karachi, p. 136.

फ़तावा रज़विया खंड 12

[अरबी बॉक्स टेक्स्ट]: इसी तरह, यदि तीन तलाक अलग-अलग होते हैं, तो यह और भी अधिक उपयुक्त है (कि दंड माफ़ कर दिया जाए) क्योंकि इस पर कोई असहमत नहीं है, जैसा कि कुरान स्पष्ट रूप से कहता है कि तीन तलाक के बाद संभोग का स्थान अब मौजूद नहीं रहता है। और अल्लाह बेहतर जानता है।

[बॉक्स में उर्दू अनुवाद]: उस पर 'हद्द' (कानूनी सजा) नहीं होगी, और इसी तरह अगर उसने तीन अलग-अलग तलाक दिए हों, तो प्राथमिकता के आधार पर सजा माफ़ कर दी जाएगी क्योंकि इसमें कोई असहमति नहीं है; कुरान का पाठ यह स्थापित करता है कि तीन तलाक के बाद, पत्नी अब संभोग के लिए उपयुक्त नहीं रहती है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 164 से 166: जमादी-उल-अव्वल 1318 हिजरी। दीन के विद्वान और दृढ़ शरीयत के मुफ्ती इस मसले पर क्या कहते हैं: क्या एक नाबालिग लड़के और एक नाबालिग लड़की का निकाह उनके वली (अभिभावक) के माध्यम से किया जा सकता है या नहीं? (2) ज़ैद ने अपनी नाबालिग बेटी, जिसकी उम्र लगभग 9-10 वर्ष थी, का निकाह अपनी विलायत (अभिभावकत्व) के तहत एक चौबीस वर्षीय लड़के के साथ कर दिया। क्या यह सही है या नहीं? (3) यदि उस लड़की ने प्रस्ताव के समय स्वीकारोक्ति का कुछ इशारा किया हो, तो क्या तब भी निकाह सही है? अब अम्र ने, इन तीनों स्थितियों में से किसी एक को प्राप्त करने के बाद, लड़की के पिता के कहने पर अपनी पत्नी को तलाक दे दिया, और लड़की ने भी अपनी नादानी के कारण तलाक पर सहमति जता दी। तलाक हो गया। तलाक के शब्द इस प्रकार थे: "तलाक दी, तलाक दी, तलाक दी।" तीन बार कहने से तलाक हो गया। अब तलाक के बाद यदि उसका फिर से निकाह किया जाए, तो किन शर्तों के बाद निकाह जायज़ होगा? बयान करें और पुण्य कमाएं।

उत्तर: नाबालिग लड़के या लड़की का निकाह वली (अभिभावक) के माध्यम से हो सकता है। (2) पिता का अपनी नौ-दस साल की बेटी का निकाह चौबीस साल के लड़के के साथ करना सही था।

[अरबी बॉक्स टेक्स्ट]: बेशक, अल्लाह के रसूल (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) ने मोमिनों की माँ (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से निकाह किया जब वह छह साल की थीं, और जब निकाह संपन्न हुआ तब वह नौ साल की थीं।

[बॉक्स में उर्दू अनुवाद]: बेशक हुज़ूर (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) ने उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीका (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) से निकाह फ़रमाया तो वह छह साल की थीं, जब आपकी रुख़सती हुई तो वह नौ साल की थीं। (त)

(3) जायज़ वली के होते हुए नाबालिग लड़की के इशारे की कोई ज़रूरत नहीं है। और वली के बिना नाबालिग लड़की का इशारा या खुद ज़ुबान से स्पष्ट रूप से 'ईजाब-ओ-क़ुबूल' (प्रस्ताव और स्वीकृति) करना पर्याप्त नहीं है। अगर अक़्लमंद, बालिग शौहर ने अपनी नाबालिग बीवी को तलाक दे दी...

---

1. रद अल-मुह्तार, अध्याय उस वली पर जो 'हद्द' अनिवार्य करता है और जो नहीं करता, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 3/152।
2. सुनन इब्न माजह, निकाह का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, पृ. 136।

فتاوٰی رضویہ جلد دو ازدہم

[Arabic Box Text]: وکذا لو وقع الثلاث متفرقة بالطریق الاولی اذلم یخالف فیه احد لان القرآن ناطق بانتفاء المحل بعد الثلاثة۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

[Urdu Translation in Box]: اس پر حد نہ ہوگی، اور یوں ہی اگر اس نے تین متفرق دی ہوں تو بطریق اولی حد ساقط ہوگی کیونکہ اس میں کوئی مخالف نہیں تین طلاقوں کے بعد بیوی کا محل وطی نہ رہنا قرآن کی نص ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۱۶۴ تا ۱۶۶: جمادی الاولٰی ۱۳۱۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ نابالغ اور نابالغہ کا نکاح بذریعہ اُن کے ولی کے ہوسکتا ہے یا نہیں؟ (۲) زید نے اپنی لڑکی نابالغہ عمر تقریباً ۱۰-۹ سال کا نکاح ایک لڑکے چوبیس سالہ کے ساتھ کردیا اپنی ولایت سے درست ہے یا نہیں؟ (۳) اگر اس لڑکی نے کچھ اشارہ وقت لینے اقرار کے کردیا ہو تو بھی نکاح درست ہے۔ اب عمر و نے ان تینوں صورتوں میں ایسی کسی صورت کو حاصل کرکے اپنی بی بی کو طلاق دے دی اس کے باپ کے کہنے سے، اور لڑکی بھی اپنی نادانی سے طلاق پر رضا مند تھی طلاق ہو گئی، لفظ طلاق یوں کہا طلاق دی طلاق دی طلاق دی، تین دفعہ کہنے سے طلاق ہو گئی، اب بعد طلاق اس کا نکاح پھر پڑھا جاوے تو کس شرط کے بعد نکاح جائز ہوجائے گا؟ بینوا توجروا (بیان کرکے اجر پاؤ۔ت)

الجواب: نابالغ نابالغہ کا نکاح بذریعہ ولی ہوسکتا ہے۔ (۲) باپ نے اپنی نو دس برس کی لڑکی کا نکاح چوبیس سالہ لڑکے کے ساتھ کردیا درست ہے،

[Arabic Box Text]: وقد تزوج رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ام المومنین رضی اللہ تعالیٰ عنہا وھی بنت ست سنین و بنی بھا وھی بنت تسع سنین 2۔

[Urdu Translation in Box]: بیشک حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے ام المومنین عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے نکاح فرمایا تو وہ چھ سال کی تھیں آپ نے رخصتی حاصل کی تو وہ نو سال کی تھیں۔ (ت)

(۳) ولی جائز کے ہوتے نابالغہ کے اشارہ کی کوئی حاجت نہیں اور بغیر ولی کے نابالغہ کا اشارہ یا خود زبان سے صراحت ایجاب و قبول کرنا کافی نہیں، شوہر عاقل بالغ نے اگر اپنی زوجہ نابالغہ کو طلاق دی

---

1 ردالمحتار باب الولی الذی یوجب الحد والذی لایوجبہ داراحیاء التراث العربی بیروت ۳/۱۵۲ 2 سنن ابن ماجہ باب نکاح الصفاء ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۱۳۶

Fatawa Razawiya Volume 12

Allah the Almighty said: "And for such of your women as have passed the age of monthly courses, for them the prescribed period, if ye have any doubts, is three months, and for those who have no courses (it is the same)." (T)[1] Allah the Almighty stated: For a minor girl and those whose menstruation has stopped, their waiting period (Iddah) is three months. (T)

After this, her marriage can take place.

In al-Durr al-Mukhtar: "The 'Iddah' for those who do not menstruate due to minor age—meaning they haven't reached nine years—or due to old age—meaning they have reached the age of menopause—is three months if intercourse occurred in all cases, even if legally (hukman) like seclusion (khalwah), even if it was absolute (mutlaqan) whether corrupt (fasidah) or not."[2] In Durr al-Mukhtar it is stated: For women who do not menstruate due to minor age or old age; minor age means those who have not reached nine years and old age means those whose wombs have become incapable [of conceiving]. This is for all consummated women, even if consummation is legal (hukman), such as absolute seclusion (khalwah), whether it be invalid (fasidah) or not. (T)

In Radd al-Muhtar: "A divorced woman before consummation is not affected by another divorce if she is not in her waiting period, unlike those who are in their waiting period."[3] For a woman divorced before consummation, a second divorce will not take effect provided she is not in her waiting period, unlike one who is in her waiting period. (T)

And if seclusion has not yet occurred, then it's one divorce and there is no waiting period for the woman; she can marry whomever she wishes immediately. And Allah, Glory be to Him and Exalted is He, knows best.

Problem 167: From Pindi, District Mandla, sent by Wali Muhammad Sahib, 8 Jumada al-Ula 1336 AH. Muhammad Bakhsh divorced his wife in such a way in one sitting that [he said] 'divorce, divorce, divorce,' and also paid whatever dower (mahr) was due. A year has passed since the divorce was given, and now they want to remarry, according to the second Para (part), as Allah the Almighty says in the fourteenth Ruku' (section), but we do not understand it.

[1] Al-Quran 65/4 [2] Durr al-Mukhtar, Chapter of Iddah, Mujtabai Press, Delhi, 1/256 [3] Radd al-Muhtar, Chapter of Mahr, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/341

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "तथा तुम्हारी महिलाओं में से वे जो मासिक धर्म की आयु से निराश हो चुकी हों, यदि तुम्हें संदेह हो, तो उनकी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) तीन मास है और उनकी भी जिन्हें अभी मासिक धर्म नहीं आया।" (T)[1] अल्लाह तआला ने फ़रमाया: नाबालिग लड़की और वे जिनका मासिक धर्म बंद हो गया है, उनकी इद्दत तीन महीने है। (त)

इसके बाद उसका निकाह हो सकता है।

अद-दुर्र अल-मुख्तार में: "उन लोगों के लिए इद्दत जिन्हें कम उम्र के कारण मासिक धर्म नहीं आता —यानी जो नौ साल की नहीं हुई हैं—या बुढ़ापे के कारण—यानी वे रजोनिवृत्ति (मेनोपॉज) की आयु तक पहुँच चुकी हैं—तीन महीने है, यदि सभी मामलों में संभोग हुआ हो, भले ही वह कानूनी (हुक्मन) रूप से हो जैसे कि एकांत (खलवत), चाहे वह मुतलक़ (निरपेक्ष) हो या फ़ासिदा (दोषपूर्ण)।"[2] दुर्रे मुख्तार में है: जिन औरतों को नाबालिग होने या बुढ़ापे की वजह से मासिक धर्म नहीं आता, नाबालिग से मुराद जो नौ साल को न पहुँची हो और बुढ़ापे से मुराद जिनका रहम (गर्भाशय) अक्षम हो गया हो, तो इन सब मदख़ूला (जिनसे संभोग हुआ हो) औरतों के लिए है अगरचे हुक्मन मदख़ूला हों जैसे कि खलवते मुतलक़ा (एकांत) हो चाहे वह फ़ासिदा हो। (त)

रद-अल-मुह्तार में है: "संभोग से पहले तलाक दी गई महिला पर दूसरा तलाक प्रभावी नहीं होगा यदि वह अपनी इद्दत में नहीं है, उसके विपरीत जो अपनी इद्दत में है।"[3] संभोग से पहले तलाकशुदा महिला पर दूसरी तलाक लागू नहीं होगी बशर्ते कि वह इद्दत वाली न हो, इसके विपरीत जो इद्दत वाली हो। (त)

और अगर अभी तक खलवत (एकांत) की नौबत नहीं आई तो एक तलाक हुई और औरत पर कोई इद्दत नहीं है, वह उसी समय जिससे चाहे निकाह कर सकती है। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है।

मसाला 167: पिंडी, जिला मंडला से, प्रेषक वली मुहम्मद साहब, 8 जमादी अल-उला 1336 हिजरी। मुहम्मद बख्श ने अपनी औरत को एक ही भाषण में इस तरह तलाक दिया कि "तलाक, तलाक, तलाक", और मेहर (दहेज) भी जो कुछ था अदा कर दिया, और तलाक दिए हुए एक साल का समय बीत गया है, और अब फिर दोबारा निकाह करना चाहते हैं दूसरे पारे के अनुसार, जैसा कि चौदहवें रुकूअ में अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है, मगर हम लोगों की समझ में नहीं आता।

[1] अल-क़ुरआन 65/4 [2] दुर्रे मुख्तार, बाबुल इद्दत, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/256 [3] रद-अल-मुह्तार, बाबुल मेहर, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी बेरुत, 2/341

فتاوی رضویہ جلد دو ازدہم

قال اللہ تعالٰی فَعِدَّتُهُنَّ ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ وَ الّٰٓـِٔیْ لَمْ یَحِضْنَ ۱ اللہ تعالٰی نے فرمایا؛ نابالغہ اور جن کو حیض بند ہو گیا ہے ان کی عدت تین ماہ ہے۔(ت)

اس کے بعد اس کا نکاح ہو سکتا ہے،

فی الدر المختار العدۃ فی حق من لم تحض لصغر بان لم تبلغ تسعاً او کبربان بلغت سن الایاس ثلثۃ اشھران وطئت فی الکل ولو حکماً کَالْخَلْوَۃِ ولو فاسدۃ مطلقاً ۔ ۲ در مختار میں ہے : جن عورتوں کو نابالغی یا بڑھاپے کی وجہ سے حیض نہیں آتا، نابالغی سے مراد جو نو سال کو نہ پہنچی اور بڑھاپے سے مراد جن کا رحم نا قابل ہو گیا، تو ان سب مدخولہ عورتوں کے لئے ہے اگر چہ حکماً مدخولہ ہوں جیسا کہ خلوت مطلقاً خواہ فاسدہ ہو۔(ت)

رد المحتار میں ہے: المطلقۃ قبل الدخول لا یلحقھا طلاق اخر اذا لم تکن معتدۃ بخلاف ھٰذہ ۔ ۳ قبل از دخول مطلقہ کو دوسری طلاق ملحق نہ ہوگی بشرطیکہ عدت والی نہ ہو، بخلاف عدت والی کے۔ (ت)

اور اگر ابھی خلوت نوبت نہ آئی تو ایک طلاق ہوئی اور عورت پر عدت نہیں اسی وقت جس سے چاہے نکاح ممکن ہے۔ واللہ سبحٰنہ و تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۶۷: از پنڈی ضلع منڈلہ مرسلہ ولی محمد صاحب ۸ جمادی الاولٰی ۱۳۳۶ھ محمد بخش نے اپنی عورت کو اس ترکیب سے ایک خطبہ میں طلاق دیا کہ طلاق طلاق طلاق، اور مہر بھی جو کچھ تھا ادا کر دیا، اور طلاق دئے ہوئے عرصہ ایک سال کا ہوا، اور اب پھر دوبارہ نکاح کرنا

چاہتے ہیں مطابق دوسرے پارہ کے، جیسا کہ چودھویں رکوع میں اللہ تعالیٰ ارشاد فرماتا ہے ، مگر ہم لوگوں کی سمجھ میں نہیں آتا

۱ القرآن ۶/۶۵ ۲ در مختار باب العدة مطبع مجتبائی دہلی ۲۵۶/۱ ۳ رد المحتار باب المهر دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۴۱/۲

Fatawa Rizwia Volume 12

In the above-mentioned situation, please provide an answer in accordance with the Quran and Hadith.

The Answer: If he said only these words: 'Talaq, Talaq, Talaq', and did not say 'given', nor did he say 'to you' or 'to this woman', and these words were not in response to something from which giving divorce to the woman could be understood, then no divorce has occurred at all. She remains his wife as before, and there is no need for remarriage. And if along with these words or in the context of the conversation in which these words were spoken as an answer, there were words from which it could be understood that he divorced his wife, or if he admits that he said these words with the intention of divorcing his wife, then three divorces have occurred, and she cannot come back into his marriage without 'Halala' (interim marriage). And Allah Almighty knows best.

Problem 168: From Dhaka, sent by Abdul Karim Miyan, 13 Shawwal 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A person was involved in a dispute with others in his community over some issue. During this conversation, that person started saying, 'Brother! I am facing a trouble, which is that I am always distressed because of my wife, as she interferes in my matters, so I am ashamed.' At that time, his wife was at home. When the husband complained about his wife, she heard everything from beginning to end. She replied, 'If I am the cause of your distress and displeasure, then turn me out, what else will you do?' Hearing the wife's words, the husband got angry and said, 'Go, one divorce, two divorces, three divorces I give (Dadam)'. Now, in the mentioned situation, did the woman become 'Mughallaza' (triple divorced) or not? However, the word 'Talaq' (divorce) was neither addressed to the wife nor was her name taken. And the word 'Ja' (Go) in the question which precedes 'Talaq', is not intended as a command, but he often uses this word in his speech and it does not carry the meaning of a command. Despite these reasons, what is the ruling?

The Answer: If the word 'Ja' (Go) was not a word of address at all, or as per the questioner's statement, it is a habitual filler (Takia Kalam) and he does not intend to address her by it, and if the speech was absolute (Mutlaq) meaning it was not even in response to the wife's words, but he had said only this much from the beginning: 'I give three divorces' (Teen Talaq Dadam), even then the ruling of 'Mughallaza' (triple divorce) would undoubtedly be given, because by giving divorce, the obvious

intention is the wife herself. Yes, since there was no request for divorce in the wife's speech, nor are the husband's words 'one divorce, two divorces etc.' explicitly attributed to the wife, and the word 'Ja' (Go), besides the possibility mentioned by the questioner, is itself among 'Kinayat' (indirect/metaphorical words) and not among 'Sareeh' (explicit) words such that the precedence of 'Talaq' (divorce) is established and 'Muzakara' (discussion context) is proven. For these reasons, the possibility of lack of intention remains. If the husband states under Shariah oath that he...

फ़तावा रज़्विया जिल्द १२

उपरोक्त स्थिति में कुरान और हदीस के अनुसार उत्तर प्रदान करें।

उत्तर: यदि उसने केवल इतने ही शब्द कहे कि 'तलाक तलाक तलाक', न तो यह कहा कि 'दी', न ही यह कहा कि 'तुझे' या 'उस स्त्री को', और न ही ये शब्द किसी ऐसी बात के उत्तर में थे जिससे स्त्री को तलाक देना समझा जा सके तो मूल रूप से कोई तलाक नहीं हुआ। वह पहले की तरह ही उसकी पत्नी है, पुनर्विवाह की कोई आवश्यकता नहीं है। और यदि इन शब्दों के साथ या उस बातचीत में जिसके उत्तर में ये शब्द कहे गए थे, वे शब्द मौजूद थे जिनसे यह समझा जा सके कि उसने अपनी पत्नी को तलाक दिया है या वह स्वीकार करे कि मैंने ये शब्द पत्नी को तलाक देने की नीयत से कहे थे, तो तीन तलाक हो गए, और बिना 'हलाला' के वह उसके निकाह में नहीं आ सकती। और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसाला १६८: ढाका से, प्रेषक अब्दुल करीम मियां, १३ शव्वाल १३३७ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि एक व्यक्ति अपनी बिरादरी में किसी बात को लेकर आपस में विवाद कर रहा था। उस बातचीत में वह व्यक्ति कहने लगा, 'भाई! मैं एक परेशानी झेल रहा हूँ, वह यह है कि मैं अपनी पत्नी के कारण हमेशा परेशान रहता हूँ क्योंकि वह मेरे मामलों में हस्तक्षेप करती है, इसलिए मैं शर्मिंदा हूँ।' उस समय उसकी पत्नी घर में थी। पति ने जो अपनी पत्नी की शिकायत की, पत्नी ने शुरू से अंत तक सब सुना। पत्नी ने उत्तर दिया, 'अगर मैं तुम्हारे कष्ट और अप्रसन्नता का कारण हूँ तो मुझे निकाल दो, और क्या करोगे?' पत्नी की बात सुनते ही पति क्रोधित हो गया और कहा 'जा, एक तलाक, दो तलाक, तीन तलाक दिए (दादम)'। क्या उपरोक्त स्थिति में वह स्त्री 'मुग़ल्लज़ा' (तीन तलाक) हुई या नहीं? हालाँकि न तो पत्नी को संबोधित किया गया और न ही उसका नाम लिया गया, और प्रश्न में जो शब्द 'जा' तलाक से पहले आया है, वह आज्ञा (Command) के अर्थ में नहीं है, बल्कि वह अक्सर अपनी बातचीत में यह शब्द बोला करता है और वे आज्ञा के अर्थ में नहीं होते। इन कारणों के बावजूद क्या हुक्म है?

उत्तर: यदि 'जा' शब्द बिल्कुल भी संबोधन का शब्द न होता, या जैसा कि पूछने वाले ने कहा कि यह उसका तकिया कलाम है और वह इससे संबोधित करने का इरादा नहीं करता, और यदि कथन निरपेक्ष (Mutlaq) होता, यानी पत्नी की बात के जवाब में भी न होता और शुरुआत से ही इतना ही कहता कि 'तीन तलाक दिए' (तीन तलाक दादम), तब भी निस्संदेह मुग़ल्लज़ा (तीन तलाक) का हुक्म

दिया जाता क्योंकि तलाक देने से ज़ाहिर तौर पर पत्नी का ही इरादा होता है। हाँ, चूँकि पत्नी की बात में तलाक का सवाल नहीं था, और न ही पति के शब्द 'एक तलाक दो तलाक आदि' पत्नी की ओर जोड़े गए हैं, और 'जा' शब्द पूछने वाले द्वारा बताई गई संभावना के अलावा स्वयं 'किनायात' (परोक्ष शब्दों) में से है, 'सरीह' (स्पष्ट शब्दों) में से नहीं है कि तलाक की प्राथमिकता स्थापित हो जाए और 'मुज़ाकरा' (चर्चा) साबित हो जाए। इन कारणों से नीयत न होने की संभावना बनी रहती है। यदि पति शरीअत की शपथ लेकर कह दे कि उसने...

पेज ३९२ का ६८८

فتاویٰ رضویہ جلد دو ازدہم

صورتِ بالا میں مطابق قرآن و حدیث کے جواب مرحمت فرمایا جائے۔ الجواب: اگر اس نے اتنے ہی لفظ کہے کہ طلاق طلاق طلاق، نہ یہ کہا کہ دی، نہ یہ کہا کہ تجھ کو یا اس عورت کو، نہ یہ الفاظ کسی ایسی بات کے جواب میں تھے جس سے عورت کو طلاق دینا مفہوم ہو، تو طلاق اصلاً نہ ہوئی، وہ بدستور اس کی عورت ہے دوبارہ نکاح کی حاجت نہیں، اور اگر اس کے ساتھ یا اس بات میں جس کے جواب میں یہ الفاظ تھے وہ لفظ موجود تھے جن سے یہ مفہوم ہو کہ اس نے اپنی عورت کو طلاق دی یا وہ اقرار کرے کہ میں نے یہ الفاظ عورت کو طلاق دینے کی نیت سے کہے تھے تو تین طلاقیں ہو گئیں بے حلالہ اُس کے نکاح میں نہیں آسکتی، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۶۸: از ڈھاکہ مرسلہ عبدالکریم میاں ۱۳ شوال ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص اپنی برادری میں کوئی بات لے کر آپس میں متنازع ہورہے تھے اس گفتگو میں وہ شخص کہنے لگا بھائی ! میں ایک پریشانی اٹھاتا ہوں وہ یہ ہے کہ میں اپنی زوجہ کی سبب سے ہمیشہ پریشان ہوں کیونکہ وہ عورت میری باتوں میں دخل دیا کرتی ہے لہذا میں شرمندہ ہوں اُس وقت اُن کی زوجہ گھر میں تھی میاں نے جو اپنی زوجہ کی شکایت کیا زوجہ نے از اول تا آخر سب سُنا زوجہ نے جواب دیا اگر میرے سبب تمہارے تکلیف اور ناگوار ہو تو مجھے نکال دوگے اور کیا کروگے، زوج زوجہ کا کلام سُنتے ہی خفا ہو گیا اور کہا جا ایک طلاق دو طلاق تین طلاق دادم ، آیا اس صورتِ مذکورہ میں وہ عورت تین طلاق سے مغلظ ہوئی یا نہیں مگر طالق نہ مخاطب زوجہ کو ہوا نہ اُن کا نام لیا اور سوال میں جو لفظ "جا" مقولہ طالق ہے یہ معنی امر کی مقصود نہیں ہے بلکہ وہ اپنے کلام میں اکثر یہ لفظ بولا کرتے ہیں معنی امر کے نہیں ہوتے ہیں با وجود ان وجوہات کے کیا حکم ؟

الجواب: اگر "جا" سرے سے کلمہ خطاب نہ ہوتا یا حسب قولِ سائل یہ اُس کا تکیہ کلام ہے اس سے خطاب کا ارادہ نہیں کرتا اور کلام مطلق کہ جواب زوجہ میں ہے اُس کے جواب میں بھی نہ ہوتا ابتداءً ہوا تنا ہی کہتا کہ " تین طلاق دادم " جب بھی بلاشبہ حکم مغلظ دیا جاتا کہ طلاق دینے سے ظاہر زوجہ ہی کا ارادہ ہے ہاں ازانجا کہ کلام زوجہ میں سوال طلاق نہ تھا نہ کلام زوج الفاظ ایک طلاق دو طلاق الخ عورت کی طرف اضافت ہے اور "جا" احتمال مذکور سائل کے علاوہ خود کنایات سے ہے صریح الفاظ سے نہیں کہ تقدم طلاق ہو کر خود مذاکرہ ثابت ہو جائے ان وجوہ سے عدم نیت کا احتمال باقی ہے اگر زوج بحلف شرعی کہہ دے کہ اُس نے

Fatawa Rizviya, Volume 12

Neither did he say the word "Ja" with the intention of divorce, nor did he intend to divorce his wife by saying "Talaq Dadam" (I have given divorce). His word will be accepted, and it will be ruled that essentially no divorce occurred. If he swears a false oath, the heavy burden of his adultery and his wife's adultery will be on his neck. If he does not swear an oath on any of these matters, or only swears on the second matter, then three divorces will have occurred, and she cannot enter his marriage without halala. And if he swears an oath on the second matter that he did not intend to divorce the woman with "Talaq Dadam," but does not swear that he did not say the word "Ja" with that intention, then the woman should present him before a ruler. If he swears before the ruler that he did not say "Ja" with the intention of divorce either, then there will be no ruling of divorce. However, if he refrains from swearing an oath there as well, then the ruling for three divorces being finalized will be given.

[Table/Columns Section] [Right Column - Arabic Translation]: This is because what is required in the second phrase for the absence of the ruling of divorce is the existence of an oath that he did not intend divorce by it. If it (the oath) is not found, it is ruled. It is stated in Al-Khaniya and Al-Bazzaziya: He said to her, "Do not leave the house except with my permission, for I have sworn by divorce." She left. It does not occur because of the absence of mentioning his oath of her divorce, and it carries the possibility of an oath of divorce for someone else. So his word is accepted. And in Radd al-Muhtar, it is understood from it that if he did not say that (i.e., did not swear that he did not intend her divorce but rather someone else's divorce), his wife is divorced because the custom is that one who has a wife only swears by her divorce, not by the divorce of another. So his saying "I swore by divorce" refers to her unless he intended someone else because his speech allows for it.

[Left Column - Urdu Translation]: This is because the ruling of no divorce in the second word depends on this oath, that he did not intend divorce with this word. So, when the oath was not found, the ruling of divorce will be given. It is stated in Khaniya and Bazzaziya: The husband said to the wife, "Do not go out without my permission because I have sworn an oath of divorce." Then the wife went out; divorce will not occur because there is no mention of the wife's divorce in the oath, and there is also a possibility of divorce for some other woman. Therefore, the husband's word will be considered reliable. And in Radd al-Muhtar, it is like this: it is known from this that if the husband does not say this, i.e., does not swear an oath of not intending his wife's divorce and intending someone else's, then his wife will be divorced. Because

the custom is that a person with a wife swears by his own wife's divorce, he does not swear by any other woman's divorce, so the husband's oath...

---

1. Fatawa Bazzaziya on the margins of Al-Fatawa al-Hindiyyah, Book of Oaths, Noorani Kutub Khana Peshawar, 4/270.
2. Radd al-Muhtar, Chapter of Explicit Divorce from the Book of Divorce, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/430.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

न उसने "जा" शब्द तलाक़ की नीयत से कहा, न "तलाक़ दादम" (मैंने तलाक़ दिया) से बीवी को तलाक़ देने का इरादा किया, तो उसकी बात मान ली जाएगी और असल में तलाक़ न होने का हुक्म दिया जाएगा। अगर वह झूठी क़सम खाएगा, तो उसके अपने ज़िना और बीवी के ज़िना का भारी बोझ उसकी गर्दन पर होगा। और अगर वह इनमें से किसी बात पर क़सम न खाए या सिर्फ़ दूसरी बात पर क़सम खाए, तो तीन तलाक़ें हो गईं, वह बिना हलाला के उसके निकाह में नहीं आ सकती। और अगर वह दूसरी बात पर क़सम खा ले कि "तलाक़ दादम" से औरत को तलाक़ देने की नीयत न थी, लेकिन यह क़सम न खाए कि शब्द "जा" नीयत से नहीं कहा था, तो औरत उसे हाकिम (न्यायाधीश) के यहाँ पेश करे। अगर वह हाकिम के सामने क़सम खा ले कि "जा" भी तलाक़ की नीयत से नहीं कहा था, तो तलाक़ का हुक्म नहीं होगा, और अगर वहाँ भी क़सम खाने से पीछे हट गया तो तीन तलाक़ हो जाने का हुक्म दिया जाएगा।

[सारणी अनुभाग] [दायां स्तंभ - अरबी अनुवाद]: यह इसलिए क्योंकि दूसरे शब्द में तलाक़ न होने के हुक्म के लिए यह अपेक्षित है कि वह क़सम खाए कि उसने उससे तलाक़ की नीयत नहीं की थी। यदि क़सम नहीं पाई गई, तो उसका हुक्म दिया जाएगा। खानिया और बज़ाज़िया में कहा गया है: उसने उससे कहा, "बिना मेरी अनुमति के घर से बाहर मत निकलो, क्योंकि मैंने तलाक़ की क़सम खाई है।" वह बाहर निकल गई। तलाक़ वाक़े नहीं हुई क्योंकि अपनी पत्नी की तलाक़ की क़सम का ज़िक्र न होने और किसी अन्य की तलाक़ की क़सम की संभावना के कारण। तो उसका कथन विश्वसनीय माना जाएगा। और रद-उल-मुहतार में इससे यह समझा जाता है कि अगर उसने ऐसा नहीं कहा (अर्थात यह क़सम नहीं खाई कि उसने उसकी तलाक़ का इरादा नहीं किया बल्कि किसी और की तलाक़ का इरादा किया), तो उसकी पत्नी को तलाक़ हो जाएगी क्योंकि प्रथा यह है कि जिसकी पत्नी हो वह उसकी तलाक़ की ही क़सम खाता है, किसी और की तलाक़ की नहीं। इसलिए उसका यह कहना कि "मैंने तलाक़ की क़सम खाई" उसकी पत्नी की ओर मुड़ता है जब तक कि उसने किसी और का इरादा न किया हो, क्योंकि उसकी बात में इसकी गुंजाइश है।

[बायां स्तंभ - उर्दू अनुवाद]: यह इसलिए है क्योंकि दूसरे शब्द में तलाक़ न होने का हुक्म इस क़सम पर निर्भर है कि उसने इस शब्द से तलाक़ का इरादा नहीं किया। अतः जब क़सम नहीं पाई गई, तो तलाक़ का हुक्म दिया जाएगा। खानिया और बज़ाज़िया में फ़रमाया गया है: पति ने पत्नी से कहा कि मेरी इजाज़त के बिना बाहर मत निकलो क्योंकि मैंने तलाक़ की क़सम खाई है, फिर पत्नी बाहर

निकल गई, इस पर तलाक़ नहीं होगी क्योंकि क़सम में पत्नी की तलाक़ का ज़िक्र नहीं है और इसमें किसी दूसरी औरत की तलाक़ की संभावना भी है, इसलिए पति की बात मान्य होगी। और रद-उल-मुहतार में यूँ है कि इससे मालूम हो रहा है कि अगर पति यह बात न कहे, यानी अपनी बीवी की तलाक़ का इरादा न करने और गैर का इरादा करने की क़सम न खाए, तो उसकी बीवी को तलाक़ हो जाएगी, क्योंकि प्रथा यह है कि पत्नी वाला अपनी बीवी की तलाक़ की क़सम खाता है, किसी दूसरी औरत की क़सम नहीं खाता, तो पति की क़सम...

---

1. फतावा बज़ाज़िया, हाशिये पर अल-फतावा अल-हिन्दिया, किताब अल-ईमान, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 4/270.
2. रद-उल-मुहतार, बाब अस-सरीह, किताब अत-तलाक़, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी बैरूत, 2/430.

पृष्ठ 393/688

نہ لفظ "جا" بہ نیت طلاق کہانہ "طلاق دادم" سے زوجہ کو طلاق دینے کا ارادہ کیا تو اس کا قول مان لیں گے اور اصلاً طلاق نہ ہونے کا حکم دیں گے اگر جھوٹا حلف کرے گا اپنے زنا اور زوجہ کے زنا کا سخت شدید وبال اس کی گردن پر ہے، اور اگر ان میں سے کسی بات پر حلف نہ کرے یا صرف امر دوم پر حلف کرے تو تین طلاقیں ہو گئیں، بے حلالہ اُس کے نکاح میں نہیں آسکتی۔ اور اگر امر دوم پر حلف کرلے کہ اس طلاق دادم سے عورت کو طلاق کی نیت نہ تھی لیکن یہ حلف نہ کرے گا کہ لفظ "جا" بہ نیت نہ کہا تو عورت اُسے حاکم کے یہاں پیش کرے اگر حاکم کے سامنے حلف کرلے گا کہ "جا" بھی طلاق کی نیت سے نہ کہا تو حکم طلاق نہ ہوگا، اور اگر وہاں بھی اس پر حلف سے باز رہا تو تین طلاق ہو جانے کا حکم دیں گے۔

[جدول کا حصہ] [دایاں کالم - عربی]: وذلك لان المطلوب فی اللفظ الثانی لعدم الحکم بالطلاق وجود الحلف بانه لم ینوبه الطلاق فاذا لم یوجد حکم به قال فی الخانیة والبزازیة قال لها لا تخرجی من الدار الا باذنی فانی حلف بالطلاق فخرجت لا یقع لعدم ذکره حلفه بطلاقها ویحتمل الحلف بطلاق غیرها فالقول له اه وفی رد المحتار یفهم منه انه لو لم یقل ذلك (ای لم یحلف انه لم یرد به طلاقها بل طلاق غیرها) تطلق امرأته لان العادة ان من له امرأة انما یحلف بطلاقها لا بطلاق غیرها فقوله اني حلفت بطلاق ینصرف الیها مالم یرد غیرها لانه یحتمل کلامه اه وتمام تحقیقه۔

[بایاں کالم - اردو]: یہ اس لئے کہ دوسرے لفظ میں طلاق نہ ہونے کا حکم، اس قسم پر کہ اس نے اس لفظ سے طلاق کا ارادہ نہیں کیا، مطلوب ہے، تو جب قسم نہ پائی گئی تو طلاق کا حکم دیا جائے گا، خانیہ اور بزازیہ میں فرمایا خاوند نے بیوی کو کہا کہ میری اجازت کے بغیر باہر مت نکلو کیونکہ میں نے طلاق کی قسم کھائی ہے تو بیوی باہر نکل گئی، اس پر طلاق نہ ہوگی کیونکہ

بیوی کی طلاق کا قسم میں ذکر نہیں ہے اور اس میں کسی غیر عورت کی طلاق کا احتمال بھی ہے، اس لئے خاوند کی بات معتبر ہوگی اھ، اور ردالمحتار میں یوں ہے کہ اس سے معلوم ہو رہا ہے اگر خاوند یہ بات نہ کہے، یعنی اپنی بیوی کی طلاق کا ارادہ نہ کرنے اور غیر کا ارادہ کرنے کی قسم نہ کھائے، تو اس کی بیوی کو طلاق ہو جائے گی، کیونکہ عادت یہ ہے کہ اس کی بیوی والی اپنی بیوی کی طلاق کی قسم کھاتا ہے کسی دوسری عورت کی قسم نہیں کھاتا تو خاوند کی قسم

1۔ فتاویٰ بزازیہ علی ہامش الفتاوی الہندیۃ کتاب الایمان نورانی کتب خانہ پشاور ۲۷۰/۴ 2۔ رد المحتار باب الصریح من کتاب الطلاق داراحیاء التراث العربی بیروت ۴۳۰/۲

Fatawa Razawiya, Volume 12

[Arabic Text Box - Left Column]: Regarding what we have commented on, and the requirement in the first word for the ruling of divorce through it is his refusal to swear that "I did not intend divorce by it." Refusal (to swear) only occurs before a judge. So, if he refuses before him, divorce is ruled by it. Thus, annexation occurs in his speech, so the second word is carried over without needing his confession of intent because it is explicit. - It is stated in al-Durr al-Mukhtar regarding metaphors: "The word is his with an oath regarding the absence of intention, and it is sufficient to make him swear in his house. If he refuses, she takes him to the ruler. If he refuses, he separates between them" - Mujtaba (1). Al-Tahtawi then Al-Shami said: "If he refuses, i.e., before the judge, because refusal before anyone else is not considered" (2). And Allah Almighty knows best.

[Urdu Text Box - Right Column]: Divorce will be for his own wife only as long as he does not express an intention for another woman, because there is also a possibility of another, etc. Its complete research is in our marginalia on Radd al-Muhtar. And to apply the ruling of divorce on the first word, i.e., "Ja" (Go), his refusal to take an oath is required, meaning "I did not mean divorce of the wife." While refusal from an oath is only credible before a judge, so when he refuses the oath before a judge, the judge will rule divorce. Thus, due to the refusal, annexation will be established in his speech, so there is no need for his confession of intent to carry the second word as divorce because it is explicit in it. It is in the chapter of metaphors in al-Durr al-Mukhtar that the husband's word regarding having an intention will be credible with an oath, and it is sufficient to take the oath from him at home. If he refuses to swear, the wife will have the right to present him before the judge. If he refuses to swear before the judge as well, the judge will separate them, Mujtaba etc. Al-Tahtawi then Al-Shami said that refusal of oath means refusal before a judge because refusal of oath before a non-judge is not credible. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 169: From Sarai Chhabila, District Bulandshahr, sent by Mr. Rahatullah, Imam of Jamia Mosque, 19 Ramadan 1338 AH. Zaid divorced Hindah. After ten or twelve days, he performed nikah again and kept her. The community...

(1) Durr al-Mukhtar, Chapter of Metaphors, Mujtabai Press Delhi, 1/224. (2) Radd al-Muhtar, Chapter of Metaphors, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/665.

फ़तावा रज़विया, खंड 12

[अरबी पाठ बॉक्स - बायां कॉलम]: जिस पर हमने टिप्पणी की है, और उसमें पहले शब्द में तलाक के हुक्म के लिए आवश्यक यह है कि वह इस शपथ से इनकार करे कि "मैंने इसके माध्यम से तलाक का इरादा नहीं किया।" और इनकार केवल काजी (न्यायाधीश) के पास ही होता है। अतः यदि वह उसके पास इनकार कर देता है, तो उसके आधार पर तलाक का हुक्म दिया जाएगा। इस प्रकार उसके शब्दों में 'इज़ाफ़त' (संबंध) प्राप्त हो जाएगी, इसलिए दूसरे शब्द को तलाक के रूप में लेने के लिए उसकी नीयत के इकरार की आवश्यकता नहीं होगी क्योंकि वह स्पष्ट है। - दुर्रे मुख्तार में 'कनायात' (संकेत) के बारे में कहा गया है: "नीति के अभाव के बारे में शपथ के साथ उसकी बात मानी जाएगी, और घर पर उससे शपथ लेना पर्याप्त है। यदि वह इनकार करे, तो वह (पत्नी) उसे शासक के पास ले जाए। यदि वह इनकार करे, तो वह उन दोनों के बीच अलगाव कर दे" - मुजतबा (1)। ताहातावी फिर शामी ने कहा: "यदि वह इनकार करे, यानी काजी के पास, क्योंकि किसी और के पास इनकार मान्य नहीं होता" (2)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[उर्दू पाठ बॉक्स - दायां कॉलम]: तलाक उसकी अपनी पत्नी के लिए ही होगा जब तक कि वह दूसरी महिला के इरादे को प्रकट न करे, क्योंकि दूसरी की भी संभावना है, आदि। इसका पूरा शोध 'रद्द अल-मुह्तार' पर हमारे हाशिये में है। और पहले शब्द यानी "जा" में तलाक का हुक्म लगाने के लिए, उसका शपथ से इनकार करना अपेक्षित है कि मैंने पत्नी के तलाक का इरादा नहीं किया, जबकि शपथ से इनकार केवल काजी के पास ही मान्य होता है। तो जब वह काजी के सामने शपथ से इनकार कर देगा, तो काजी तलाक का हुक्म दे देगा। इस प्रकार इनकार की वजह से उसके कलाम में इज़ाफ़त हासिल हो जाएगी, तो दूसरे शब्द को तलाक पर महमूल (लागू) करने के लिए उसकी नीयत के इकरार की ज़रूरत नहीं क्योंकि वह उसमें स्पष्ट है। दुर्रे मुख्तार के बाब-ए-कनायात में है कि नीयत होने के बारे में पति की बात शपथ के साथ मान्य होगी और घर में ही उससे शपथ लेना काफी है। अगर वह शपथ से इनकार करे तो बीवी को काजी के यहाँ पेश करने का हक होगा। अगर वह काजी के यहाँ भी हलफ (शपथ) से इनकार कर दे तो काजी दोनों में तफ़रीक़ (अलगाव) कर देगा, मुजतबा आदि। तहतावी फिर शामी ने फरमाया कि शपथ से इनकार का मतलब काजी के पास इनकार है क्योंकि गैर-काजी के पास शपथ से इनकार मोतबर (मान्य) नहीं होता। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 169: सराय छबीला, जिला बुलंदशहर से प्रेषित, राहतुल्लाह साहब, इमाम मस्जिद जामिअ, 19 रमजान 1338 हिजरी। ज़ैद ने हिंदा को तलाक दे दिया, दस-बारह दिनों के बाद निकाह करके उसे फिर रख लिया, बिरादरी ने...

(1) दुर्रे मुख्तार, बाब अल-कनायात, मत्तबा मुजतबाई दिल्ली, 1/224. (2) रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-कनायात, दार इहया अत-तुरास अल-अरबी बेरुत, 2/665.

पृष्ठ 394/688

[Arabic Text Box - Left Column]: فیما علقنا علیه، والمطلوب في الفظ الأول لحکم الطلاق به نکوله عن الحلف بأني لم ینوبه الطلاق والنکول لایکون الاعند القاضي فإذا نکل عنده حکم بالطلاق به فحصلت الاضافه في کلامه فحمل اللفظ الثاني من دون حاجة الی اقراره بالنیة لکونه صریحاً۔ قال في الدر المختار من الکنایات والقول له بیمینه في عدم النیة ویکفي تحلیفها في منزله فان ابی رفعته للحاکم فان نکل فرق بینهما مجتبیٰ ۱ قال ط ثم ش فان نکل ای عند القاضي لان النکول عند غیره لا یعتبر ۲، واللہ تعالیٰ اعلم۔

[Urdu Text Box - Right Column]: طلاق کے متعلق اسکی اپنی بیوی کے لئے ہی ہوگی جب تک دوسری عورت کے ارادے کو ظاہر نہ کرے، کیونکہ دوسری کا بھی احتمال ہے اھ، اس کی مکمل تحقیق ردالمحتار پر ہمارے حاشیہ میں ہے۔ اور پہلے لفظ یعنی "جا" میں طلاق کا حکم لگانے کے لئے، اس کا قسم سے انکار مطلوب ہے کہ میں نے بیوی کی طلاق نہیں مراد لی، جبکہ قسم سے انکار صرف قاضی کے ہاں معتبر ہوتا ہے تو جب قاضی کے سامنے قسم سے انکار کردے گا تو قاضی طلاق کا حکم کردے گا، تو یوں انکار کی وجہ سے اسکے کلام میں اضافت حاصل ہوجائے گی، تو دوسرے لفظ کو طلاق پر محمول کرنے کے لئے اسکے اقرار بالنیۃ کی حاجت نہیں کیونکہ وہ اس میں صریح ہے۔ درمختار کے باب کنایات میں ہے کہ نیت ہونے سے متعلق خاوند کی بات قسم کے ساتھ معتبر ہوگی اور گھر میں ہی اس سے قسم لینا کافی ہے، اگر وہ قسم سے انکار کرے تو بیوی کو قاضی کے ہاں پیش کرنے کا حق ہوگا اگر وہ قاضی کے ہاں بھی حلف سے انکار کر دے تو قاضی دونوں میں تفریق کردے گا، مجتبی اھ، طحاوی پھر شامی نے

فرمایا کہ قسم سے انکار قاضی کے ہاں انکار مراد ہے کیونکہ غیر قاضی کے ہاں قسم سے انکار معتبر نہیں ہوتا، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۱۶۹: از سرائے چھبیلہ ضلع بلند شہر مرسلہ راحت اللہ صاحب امام مسجد جامع ۱۹ رمضان ۱۳۳۸ھ زید نے ہندہ کو طلاق دی، دس بارہ روز بعد نکاح کرکے اسے پھر رکھ لیا برادری نے

۱ درمختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۲۴ ۲ ردالمحتار باب الکنایات داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ٦٦٥

Fatawa Razawiyya, Volume 12

Zaid was pressured and he said: I gave a revocable divorce (talaq-e-raj'i), and that too during menstruation. The witnesses present at the time of divorce testify on oath that he gave three divorces in our presence. Zaid also testifies on oath that yes, he gave a divorce, but does not say whether he gave three or one; he says he doesn't remember. Zaid's claim is that because of the constant arguments with the woman, he had written a document just to threaten her. Now, both the man and the woman have torn up the document. Zaid says he takes the burden of the Day of Judgment on himself; the witnesses are lying. The community has expelled this Zaid, and if he pays a fine of 25 coins, they will re-admit him into the community or separate the woman and then re-admit him. Is the community's fine Shariah-compliant or not?

The Answer: When a divorce is given, it becomes effective, whether the intention was to threaten or anything else. Explicit words do not require intention; divorce occurs whether one intends it or not. If he admits to giving or writing three divorces and offers the excuse that the intention was only to threaten and not to divorce, then undoubtedly three divorces have occurred, and keeping her without halala is pure adultery. Until he removes that woman and repents publicly, he should never be re-admitted into the community. Similarly, even if he does not admit it, but two trustworthy, pious, and just witnesses according to Shariah testify to the giving of three divorces in their presence, then too three divorces have occurred, and the ruling is the same as mentioned above. If he neither confesses to three divorces nor are there two Shariah-compliant trustworthy witnesses among the witnesses... (Incomplete draft found) [However, the summary of the omitted text is that in such a case, the decision will be based on Zaid's admission. Translator]

Problem 170: From Laman, District Bareilly, sent by Qazi Ishfaq Hussain Sahib, 22 Safar 1316 AH. With a fatwa from a non-conformist (Ghair-Muqallid) person stating that three divorces in one sitting count as only one divorce. Please advise if this fatwa is correct or not and whether following it is permissible or not? We only have trust in your excellency; whatever ruling is given, we will act upon it. Peace.

The Answer: My respected and kind Qazi Muhammad Ishfaq Sahib, may Allah Almighty honor you! Peace, mercy, and blessings of Allah be upon you. This fatwa, regarding which you ask for this humble servant's stance, has been reviewed. It is a completely incorrect ruling, and acting upon it is forbidden (haram). This is not only against our Imams but against all four schools of thought. Eminent scholars have

already explained this in detail in their works. To present again those matters that have been answered thousands of times is an old habit of the Wahhabi gentlemen. The irony is that it is explicitly written regarding the Commander of the Faithful, Umar (may Allah be pleased with him), that he gave the fatwa, and then they claim it is against the command of God and His Messenger.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

ज़ैद को दबाया गया तो उसने कहा: मैंने तलाक़-ए-रजई दी थी, वह भी हैज़ के दिनों में। तलाक़ के समय मौजूद गवाह हलफ़िया बयान देते हैं कि हमारे सामने तीन तलाक़ें दीं और ज़ैद भी हलफ़िया बयान देता है कि हाँ तलाक़ दी मगर यह नहीं कहता कि तीन दीं या एक, मुझे याद नहीं। ज़ैद का कहना है कि औरत से जो तकरार रहती थी इसलिए डराने के लिए कागज़ लिख दिया था अब औरत और मर्द दोनों ने कागज़ फाड़ दिए हैं। ज़ैद कहता है कि हश्र का बोझ मैं अपने ज़िम्मे लेता हूँ; गवाह ग़लत बयान दे रहे हैं। बिरादरी ने इस ज़ैद को निकाल दिया है और अगर वह 25 मुहर (सिक्का) जुर्माना दे तो अब बिरादरी में उसे मिला लेंगे या औरत को अलग कराकर मिला देंगे और बिरादरी का जुर्माना शरीयत के अनुसार जायज़ है या नहीं?

अल-जवाब (उत्तर): जब तलाक़ दी जाए तो वह वाक़े(प्रभावी) हो जाएगी चाहे डराना मक़सूद हो या कुछ और, स्पष्ट शब्द नीयत के मोहताज नहीं होते, उनसे नीयत करे या न करे तलाक़ हो जाती है। अगर वह तीन तलाक़ें देने या लिखने का इक़रार करता है और यह उज़्र (बहाना) पेश करता है कि डराना मक़सूद था तलाक़ की नीयत नहीं थी, तो निस्संदेह तीन तलाक़ें हो गईं और हलाला के बिना उसे रखना निरा ज़िना (व्यभिचार) है। जब तक उस औरत को निकाल न दे और खुल्लम-खुल्ला तौबा न करे, बिरादरी में उसे हरगिज़ न मिलाया जाए। इसी तरह अगर वह इक़रार न करे मगर दो साख वाले, मुत्तक़ी और शरीयत की दृष्टि में न्यायप्रिय गवाह अपने सामने तीन तलाक़ें दिए जाने की गवाही दें, तब भी तीन तलाक़ें हो गईं और हुक्म वही है जो ऊपर बताया गया। अगर न वह तीन तलाक़ों का इक़रार करता हो और न गवाहों में दो व्यक्ति शरीयत की नज़र में मोतबर (विश्वसनीय) हों... (अधूरा मसौदा मिला) [तथापि छोड़े गए हिस्से का सारांश यह है कि ऐसी सूरत में ज़ैद के इक़रार पर फ़ैसला होगा। अनुवादक]

मसला 170: लमन, ज़िला बरेली से, प्रेषक क़ाज़ी इश्फ़ाक़ हुसैन साहब, 22 सफ़र 1316 हिजरी। एक ग़ैर-मुक़ल्लिद व्यक्ति के फ़तवे के साथ जिसमें कहा गया है कि एक ही बैठक में दी गई तीन तलाक़ें एक ही तलाक़ मानी जाती हैं। श्रीमान मार्गदर्शन करें कि क्या यह फ़तवा सही है या नहीं और इस पर अमल करना जायज़ है या नहीं? हमें केवल आप पर भरोसा है, जो हुक्म हो उस पर अमल करेंगे। वस्सलाम।

अल-जवाब (उत्तर): मेरे मोहतरम और मेहरबान क़ाज़ी मोहम्मद इश्फ़ाक़ साहब, अल्लाह तआला आपको इज़्ज़त दे! अस्सलाम अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातहू। यह फ़तवा जिसके बारे में आप इस फ़क़ीर का नज़रिया पूछ रहे हैं, नज़र से गुज़रा। यह सरासर ग़लत हुक्म है और इस पर अमल करना हराम है। यह न केवल हमारे इमामों बल्कि चारों मज़ाहिब (विचारधाराओं) के ख़िलाफ़ है। इसकी तफ़्सील उलेमा-ए-किराम अपनी किताबों में आला दर्जे पर बयान कर चुके हैं। उन्हीं बातों को जिनका जवाब हज़ारों बार दिया जा चुका है, दोबारा पेश करना वहाबी हज़रात का पुराना तरीक़ा है। मज़े की बात यह है कि अमीरुल मोमिनीन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बारे में साफ़ लिखा कि उन्होंने फ़तवा दिया और फिर यह कि हुक्म खुदा और रसूल के ख़िलाफ़ है।

पेज 395 / 688

فتاویٰ رضویہ، جلد دو از دہم

زید کو دبایا تو کہا میں نے طلاق رجعی دی تھی وہ بھی ایام حیض میں، جو گواہ وقت طلاق موجود تھے وہ حلفی بیان کرتے ہیں کہ ہمارے سامنے تین طلاقیں دیں اور زید بھی حلفی بیان کرتا ہے کہ ہاں طلاق دی مگر یہ نہیں کہتا کہ تین دیں یا ایک، مجھے یاد نہیں، قولِ زید ہے کہ عورت سے جو تکرار رہتی تھی اس لئے دھمکانے کو کاغذ تحریر کردیا تھا اب عورت و مرد نے کاغذ دونوں چاک کر ڈالے، زید کہتا ہے کہ حشر کا بوجھ میں اپنے ذمہ لیتا ہوں گواہ غلط بیان کرتے ہیں۔ برادری نے اس زید کو خارج کردیا ہے اور صہ عہد ۲۵ جرمانہ کردے تو اب برادری میں اُسے ملالیں یا عورت کو الگ کراکر ملادیں اور جرمانہ برادری کا شرعاً جائز ہے یا نہیں؟

الجواب: طلاق جب دی جائے واقع ہوجائے گی خواہ دھمکی مقصود ہو یا کچھ اور، صریح لفظ محتاج نیت نہیں ہوتے اُن سے نیت کرے یا نہ کرے طلاق ہوجاتی ہے، اگر وہ تین طلاقیں دینے یا لکھنے کا مقر ہے اور عذر یہ بیان کرتا ہے کہ دھمکی مقصود تھی طلاق کی نیت نہ تھی تو بلاشک تین طلاقیں ہو گئیں اور بغیر حلالہ اُسے رکھنا زنائے محض ہے، جب تک اُس عورت کو نکال نہ دے اور علانیہ توبہ نہ کرے برادری میں ہرگز نہ ملایا جائے، یونہی اگر وہ مقر نہ ہو مگر دو گواہ ثقہ متقی عادل شرعی اپنے سامنے تین طلاقیں دینے کی شہادت دیتے ہوں جب بھی تین طلاقیں ہو گئیں، اور حکم یہی ہے جو اوپر گزرا، اگر نہ وہ تین طلاقوں کا اقرار کرتا ہو نہ گواہوں میں دو شخص ثقہ قبول شرع ہوں---------- (مسودہ ناقص ملا) [تاہم خلاصہ کلام متروک کہ یہ ہے کہ ایسی صورت میں زید کے اقرار پر فیصلہ ہوگا۔ مترجم]

مسئلہ ۱۷۰: از لمن ضلع بریلی مرسلہ قاضی اشفاق حسین صاحب ۲۲ صفر ۱۳۱۶ھ مع فتوائے شخص غیر مقلد کہ تین طلاقیں ایک جلسہ میں ایک ہی طلاق حضرت ارشاد فرمائیں کہ یہ فتویٰ صحیح ہے یا نہیں اور اس پر عمل جائز ہے یا نہیں؟ ہمیں فقط حضرت پر اطمینان ہے جو حکم ہو اس پر عمل کریں۔ والسلام

الجواب: مکرمی کرم فرمائے قاضی محمد اشفاق صاحب اکرمکم اللہ تعالیٰ! السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ،۔ یہ فتویٰ جس کی نسبت فقیر کا مسلک آپ دریافت فرماتے ہیں نظر سے گزرا یہ محض غلط حکم ہے اس پر عمل حرام ہے، یہ نہ صرف ہمارے ائمہ بلکہ چاروں مذہب کے خلاف ہے، اس کی تفصیل علمائے کرام اپنی تصانیف میں اعلیٰ درجہ پر فرما چکے انہیں باتوں کو جن کے جواب ہزار ہزار بار دے دئے گئے پھر پیش کردینا حضرات وہابیہ کا قدیمی داب ہے، لطف یہ ہے کہ امیر المومنین عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی نسبت صریح لکھا کہ انہوں نے فتویٰ دیا اور پھر یہ کہ حکم خدا اور رسول کے خلاف

Fatawa Razawiyya Volume 12

...And along with it, the fact that Umar (may Allah be pleased with him) did not wish to go against Allah and His Messenger (peace and blessings of Allah be upon him and his family). He himself knew that the command of Allah and the Messenger is indeed this. Is issuing a fatwa just about saying whatever comes to mind at home, or is it about conveying the command of Allah and His Messenger (peace and blessings of Allah be upon him and his family)? Their predecessors have written explicit tabarra (disassociation) against the Commander of the Faithful, Umar (may Allah be pleased with him), in this matter. They cited Muhammad ibn Ishaq and claimed, 'We are not followers (muqallid) of anyone.' If you are not a follower, then which verse or hadith has made it obligatory to accept the word of Imam Bukhari? The great Imams before Imam Bukhari, such as Imam Malik and Imam Hisham-ud-Din bin Urwah, who were Tabi' al-Tabi'in and were far superior and higher in the knowledge of Hadith and Fiqh in every aspect than Imam Bukhari, and other Imams who swore oaths and declared that Ibn Ishaq is a Dajjal and a liar—why should their word not be accepted? The purpose of this is that these people, wherever they find someone's statement serving their purpose, treat their speech as divine revelation, Quran, and Hadith; otherwise, they discard it saying, 'We are not followers of anyone.' Peace!

Problem 171 to 173: From Balrampur, District Gonda, Mohalla Purnia Talab, near Orphanage, sent by Nazr Muhammad Atishbaz, 16 Safar 1338 AH.

What do the scholars of religion say regarding these issues:

(1) Zaid gave three divorces to his wife in a single gathering. Hind stayed at her father's house for five months. After five months, she returned to Zaid's house and stayed there for a long period. When Hind became aware of the ruling regarding three divorces, she wanted to turn away from Zaid. Then Zaid swore an oath saying, 'I gave one divorce and took her back (ruju') after one month.' Hind denies the return and has witnesses to the three divorces. In such a case, will Hind's witnesses be reliable or Zaid's oath? (2) If a woman presents evidence and obtains a divorce decree from an English (secular) court, can this woman marry someone else, or will she still remain the wedded wife of her first husband? (3) In the case of three divorces or a divorce from an English court, if some people take the husband's side and want to return the woman to him, what is the ruling? Is it permissible to associate with such people or not?

The Answer:

In such a case, Hind's witnesses are reliable provided they are acceptable according to Sharia, and no consideration will be given to Zaid's oath. Yes, if the witnesses are unacceptable, then Zaid's oath will be reliable. Furthermore, if Hind knows from her own certain knowledge that Zaid gave her three divorces, it will not be permissible for her to stay with Zaid. She must somehow obtain a 'Talaq-e-Ba'in' (irrevocable divorce) by giving up her dower or wealth. If even this is impossible, she should run away from Zaid, and if that too is impossible, then the burden of sin lies upon Zaid.

Note: There was a blank space in the original text.

Page 396 of 688

फ़तावा रज़विय्या जिल्द 12

...और साथ ही यह भी कि उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने अल्लाह और उसके रसूल (अज़्ज़वजल व सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के खिलाफ नहीं जाना चाहा, वे खुद भी जानते थे कि अल्लाह और रसूल का हुक्म यही है। क्या फतवा देना अपने घर से जो जी में आए कह देने का नाम है या अल्लाह और उसके रसूल (अज़्ज़वजल व सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का हुक्म बताना? उनके पूर्वजों ने इसी मामले में अमीरुल मोमिनीन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) पर स्पष्ट तबर्रा (अस्वीकृति) लिखा है। उन्होंने मुहम्मद इब्न इस्हाक़ का हवाला दिया और दावा किया कि हम किसी के मुक़ल्लिद (अनुयायी) नहीं हैं। अगर मुक़ल्लिद नहीं हो, तो किस आयत या हदीस ने इमाम बुखारी की बात मानना अनिवार्य किया है? इमाम बुखारी से पहले जो महान इमाम थे, जैसे इमाम मालिक और इमाम हिशामुद्दीन बिन उरवा, जो तब-ए-ताबईन थे और इमाम बुखारी से हदीस और फ़िक़्ह के ज्ञान में हर बात में कहीं श्रेष्ठ और ऊंचे थे, और अन्य इमामों ने जो कसमें खा-खाकर फ़रमाया कि इब्न इस्हाक़ दज्जाल और झूठा है, उनकी बात क्यों न मानी जाए। इसका उद्देश्य यह है कि ये हज़रात जहां जिसकी बात अपने मतलब की देखते हैं, उनके कलाम को वही (ईश्वरीय संदेश), क़ुरान और हदीस मान लेते हैं, अन्यथा यह कहकर फेंक देते हैं कि हम किसी के मुक़ल्लिद नहीं हैं। वसलाम!

मसला 171 से 173: बलरामपुर, जिला गोंडा, मोहल्ला पुर्निया तालाब, यतीमखाने के पास से, भेजने वाले नज़र मुहम्मद आतिशबाज़, 16 सफ़र 1338 हिजरी।

धर्म के विद्वान इन मसलों में क्या फ़रमाते हैं कि:

(1) ज़ैद ने अपनी पत्नी को एक ही महफ़िल में तीन तलाक़ दिए। हिंदा पांच महीने तक अपने पिता के घर रही, पांच महीने के बाद फिर ज़ैद के घर चली गई और काफ़ी समय तक ज़ैद के घर रही। जब हिंदा को तीन तलाक़ के मसले का पता चला, तो उसने ज़ैद से मुँह मोड़ना चाहा। तब ज़ैद कसम खाकर कहता है कि मैंने एक तलाक़ दिया था और एक महीने बाद रुजू (वापसी) कर लिया था। हिंदा रुजू से इनकार करती है और तीन तलाक़ पर गवाह रखती है। ऐसे समय में हिंदा के गवाह विश्वसनीय होंगे या ज़ैद की कसम? (2) अगर औरत गवाही पेश करके अंग्रेज़ी कचहरी (दीवानी अदालत) से अपनी तलाक़ की डिग्री प्राप्त कर ले, तो क्या यह औरत दूसरे से निकाह कर सकती है या अब तक पहले ही शौहर की निकाह में रहेगी? (3) तीन तलाक़ या अंग्रेज़ी कचहरी से तलाक़ की स्थिति में

अगर कुछ लोग शौहर की तरफ़दारी करके औरत को लौटाना चाहें, तो क्या हुक्म है? उन लोगों के साथ मेल-जोल जायज़ है या नहीं?

उत्तर:

ऐसी स्थिति में हिंदा के गवाह विश्वसनीय हैं बशर्ते वे शरिया के अनुसार स्वीकार्य हों, और ज़ैद की कसम पर कोई ध्यान नहीं दिया जाएगा। हाँ, अगर गवाह स्वीकार्य न हों, तो ज़ैद की कसम विश्वसनीय होगी। फिर अगर हिंदा अपने निजी निश्चित ज्ञान से जानती है कि ज़ैद ने उसे तीन तलाक़ दिए हैं, तो उसके लिए ज़ैद के साथ रहना जायज़ नहीं होगा। वह मजबूरन अपना मेहर या माल देकर जिस तरह संभव हो 'तलाक़-ए-बाइन' (अंतिम विच्छेद) ले ले। और अगर यह भी असंभव हो, तो ज़ैद से दूर भाग जाए, और अगर यह भी असंभव हो, तो इसका गुनाह ज़ैद पर होगा।

नोट: मूल पाठ में यहाँ रिक्त स्थान था।

पृष्ठ 396 / 688

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

تھا اور ساتھ ہی یہ بھی کہ عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے خدا و رسول عزوجل وصلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا خلاف نہ کرنا چاہا، حکم خدا اور رسول خود بھی جانتے تھے کہ وہ یہی ہے، کیا فتوی اپنے گھر سے جو جی میں آئے کہہ دینے کا نام ہے یا خدا و رسول عزوجل و صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم کا حکم بتانا، ان کے اگلوں نے اسی معاملہ میں امیر المومنین عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ پر صریح تبرا لکھے ہیں محمد ابن اسحق عہ کی نقل کی اور دعوی یہ کہ ہم کسی کے مقلد نہیں، اگر مقلد نہیں ہو تو امام بخاری کی بات ماننی کس آیت وحدیث نے فرض کی، امام بخاری سے پہلے جو ائمہ کرام امام مالک و امام ہشام الدین بن عروہ کہ تبع تابعین تھے اور امام بخاری سے علم حدیث و علم فقہ ہر بات میں بدرجہا افضل واعلی تھے، اور ان کے سوا اور ائمہ نے جو قسمیں کھا کھا کر فرمایا کہ ابن اسحاق دجال کذاب ہے، وہ کیوں نہ مانے۔ اس سے مقصود یہ کہ یہ حضرات جہاں جس کی بات مطلب کی دیکھتے ہیں اس کا کلام وحی قرآن و حدیث ٹھہرا لیتے ہیں ورنہ پھینک دیتے ہیں کہ ہم کسی کے مقلد نہیں، والسلام !

مسئلہ ۱۷۱تا ۱۷۳: از بلرام پور ضلع گونڈہ محلہ پور نیا تالاب متصل یتیم خانہ مرسلہ نذر محمد آتشباز ۱۶ صفر ۱۳۳۸ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں کہ :

(۱) زید نے اپنی زوجہ کو تین طلاقیں ایک مجمع میں دیں۔ ہندہ عرصہ پانچ ماہ تک اپنے باپ کے گھر رہی، پانچ مہینے کے بعد پھر زید کے گھر چلی گئی اور عرصہ دراز تک زید کے گھر رہی، ہندہ کو جب تین طلاق کا مسئلہ معلوم ہوا تو زید سے منہ موڑ نا چاہا تب زید قسم کھا کر کہتا ہے کہ

میں نے ایک طلاق دی تھی اور ایک مہینہ کے بعد رجعت کر لی تھی، ہندہ رجعت کی منکر ہے اور تین طلاق پر گواہ رکھتی ہے، ایسے وقت میں ہندہ کے گواہ معتبر ہوں یا زید کی قسم معتبر ہو گی۔ (۲) اگر عورت نے شہادت پیش کر کے کچہری انگریزی سے ڈگری اپنی طلاق کی حاصل کرلے تو یہ عورت دوسرے سے نکاح کر سکتی ہے یا اب تک پہلے ہی شوہر کی منکوحہ رہے گی۔ (۳) تین طلاق یا طلاق کچہری انگریزی کی صورت میں اگر کچھ لوگ شوہر کی طرفداری کر کے عورت کو لوٹانا چاہیں تو کیا حکم ہے، ان لوگوں کے ساتھ میل جول جائز ہے یا نہیں ؟

الجواب:

ایسی صورت میں ہندہ کے گواہ معتبر ہیں جبکہ قابل قبول شرع ہوں اور زید کی قسم پر کچھ لحاظ نہ ہوگا ہاں اگر گواہ نا قابل قبول ہوں تو زید کی قسم معتبر ہو گی پھر اگر ہندہ اپنے ذاتی یقینی علم سے جانتی ہے کہ زید نے اسے تین طلاقیں دی ہیں تو اسے جائز نہ ہو گا کہ زید کے ساتھ رہے ناچار اپنا مہر یا مال دے کر جس طرح ممکن ہو طلاق بائن لے لے اور یہ بھی ناممکن ہو تو زید سے دُور بھاگے اور یہ بھی ناممکن ہو تو وبال زید

عہ: اصل میں بیاض ہے ۱۲۔

Fatawa Razawiyyah, Volume 12

...as long as the woman (Hinda) does not agree. And Allah Almighty knows best.

Problem 177 to 180: From Jharba, Manbhum district, Muhalla Guala Toli, asked by Muhammad Yusuf Sahib, 29 Jumada al-Ula 1339 AH. What do the scholars of religion say about these matters: (1) Does Zaid giving Hinda divorce (Talaq) three times count as one divorce, or have all three divorces occurred, and will Halala be necessary or not? (2) Despite being forbidden, Zaid did not listen and clearly said three times "I have given divorce". In such a case, will the validity of the divorce depend on intention or not? And will Zaid's claim that his intention was to take her back be credible? (3) To convince Khalid and Hinda with the intention of Halala and having them both agree and perform the offer (ijab) and acceptance (qubul) without the permission of the guardian (wali) - is this marriage (nikah) valid or invalid? (4) If Khalid's marriage is valid, then what is the ruling on arranging Hinda's marriage back to her first husband and them living together like husband and wife without Khalid giving a divorce or without consummating the marriage and completing the waiting period (iddat)? And what is the warning and Sharia ruling for those who arrange such a marriage, those who are pleased with it, and those who associate with such a person? (5) What is the Sharia ruling for the person who encourages Halala in the manner mentioned above? (6) What is the Sharia ruling for one who says false things contrary to facts to make truth into falsehood, just to maintain an old custom and keep their honor intact (literally 'mustache'), showing no concern for what is Halal (permissible) and Haram (forbidden)? (7) At what age do a boy and girl reach puberty (bulughat)? And when both are adults, are they autonomous in their marriage or not? Is the permission of a guardian still necessary in this or not?

The Answer: (1) Undoubtedly, by the consensus (ijma') of the four Imams, three divorces have occurred, and she cannot become permissible (halal) for him without Halala. Allah Almighty says: "So if he has divorced her [for the third time], then she is not lawful to him afterward until [after] she marries a husband other than him."1 If the third divorce is given, then the wife will not be lawful after that until she marries someone else. And Allah Almighty knows best. And Allah Almighty knows best (T).

1. The Holy Quran 2/230

फ़तावा रज़वियह, खंड 12

...जब तक कि हंदा राजी न हो। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 177 से 180: झारबा, जिला मानभूम, मोहल्ला ग्वाला टोली से, सायल मोहम्मद यूसुफ साहब, 29 जमादी उल-उला 1339 हिजरी। धर्म के विद्वान इन मसलों में क्या फरमाते हैं कि: (1) ज़ैद का हंदा को तीन बार तलाक देना एक तलाक का हुक्म रखता है या तीनों तलाकें हो गईं और हलाला की ज़रूरत होगी या नहीं? (2) मना करने के बावजूद ज़ैद का न मानना और साफ़ शब्दों में तीन बार यह कहना कि 'मैंने तलाक दिया', ऐसी स्थिति में तलाक का दारोमदार नीयत पर रहेगा या नहीं? और ज़ैद का यह कहना कि उसका इरादा रुजू (वापस लेने) का था, विश्वसनीय होगा? (3) हलाला की नीयत से खालिद और हंदा को समझा-बुझाकर राज़ी करना और वली (संरक्षक) की अनुमति के बिना दोनों का रज़ामंदी से इजाब-ओ-क़ुबूल कर लेना, यह निकाह जायज़ हुआ या नाजायज़? (4) अगर खालिद का निकाह सही है, तो खालिद के तलाक दिए बिना या सोहबत (सम्भोग) किए बिना और इद्दत गुज़ारे बिना, हंदा का निकाह उसके पहले शौहर से करा देना और उनका मियाँ-बीवी की तरह साथ रहना कैसा है? और निकाह कराने वाले व्यक्तियों, इस निकाह से खुश रहने वालों और ऐसे व्यक्ति से मेल-जोल रखने वालों के लिए क्या चेतावनी और शरीअत का हुक्म है? (5) ऊपर बताए गए शब्दों के साथ हलाला की तरग़ीब (प्रोत्साहन) देने वाले के लिए शरीअत का क्या हुक्म है? (6) हक़ीक़त के खिलाफ झूठी बातें कहकर हक़ को नाहक़ बनाने और पुरानी रस्म को न टूटने देने और अपनी मूँछ का मान रखने के लिए हलाल और हराम की परवाह न करने वाले के लिए शरीअत का हुक्म क्या है? (7) लड़की और लड़का कितने वर्ष के बाद बालिग (वयस्क) होते हैं? और जब दोनों बालिग हों, तो क्या वे अपने निकाह के मुख़्तार (स्वतंत्र) हैं या नहीं? क्या इसमें भी वली की ज़रूरत है या नहीं?

उत्तर: (1) निस्संदेह, चारों इमामों की सहमति (इज्मा) से तीन तलाकें हो गईं और बिना हलाला के वह उसके लिए हलाल नहीं हो सकती। अल्लाह तआला फरमाता है: "फिर यदि वह उसे [तीसरी बार] तलाक दे दे, तो वह उसके बाद उसके लिए तब तक हलाल नहीं होगी जब तक कि वह उसके अलावा किसी और शौहर से निकाह न कर ले।"1 अगर तीसरी तलाक दे दी तो बीवी उसके बाद हलाल न होगी जब तक कि वह किसी दूसरे व्यक्ति से निकाह न कर ले। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है (त)।

1. अल-कुरान अल-करीम 2/230

فتاویٰ رضویہ ، جلد دو ازدہم

پر ہے جب تک کہ ہندہ راضی نہ ہو۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ مسئلہ ۱۷۷تا۱۸۰: از جھربا ضلع مان بھوم محلہ گوالہ ٹولی مسئولہ محمد یوسف صاحب ۲۹ جمادی الاولیٰ ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ان مسائل میں کہ : (۱) زید کا ہندہ کو تین بار طلاق دینا ایک طلاق کا حکم رکھتا ہے یا تینوں طلاق واقع ہوگئیں اور حلالہ کی ضرورت ہوگی یا نہیں؟ (۲) باوجود ممانعت زید کا نہ ماننا اور صریح لفظوں میں تین بار یہ کہنا کہ میں نے طلاق دیا، ایسی صورت میں نیت پر طلاق کا مدار رہے گا یا نہیں؟ اور زید کا یہ قول کہ لوٹانے کی نیت تھی معتبر ہوگا ۔ (۳) بہ نیت حلالہ خالد و ہندہ کو سمجھا کر راضی کرنا اور بدون اجازت ولی ہر دو کا برضا ایجاب وقبول کرلینا یہ نکاح جائز ہوا یا ناجائز؟ (۴) اگر خالد کا نکاح درست ہے تو بغیر خالد کے طلاق دئے یا بغیر صحبت کئے و عِدّت گزارے شوہر اول سے ہندہ کا نکاح کرا دینا اور میاں بیوی کی طرح دونوں کا اکٹھا رہنا کیسا ہے اور نکاح کرانے والے حضرات اور جو لوگ اس نکاح سے راضی ہیں اور جو ایسے آدمی سے میل جول رکھتے ہیں ان کے لئے وعید اور حکم شرعی ہے؟ (۵) بالفاظ مرقومہ بالا حلالہ کی ترغیب دلانے والے کے لئے کیا حکم شرعی ہے؟ (۶) خلاف واقع جھوٹی باتیں کہہ کر حق کو ناحق بنانے اور رسمِ قدیم نہ ٹوٹنے اور اپنی مونچھ برقرار رکھنے کے لئے اور حلال و حرام کی پرواہ نہ کرنے والے کے واسطے حکم شرعی کیا ہے؟ (۷) لڑکی و لڑکا حدِ بلوغت کو کتنے برس کے بعد ہوتے ہیں، اور جب بالغ دونوں ہیں تو اپنے نکاح کے مختار ہیں کہ نہیں کہ اس میں بھی ولی کی ضرورت ہے کہ نہیں؟

الجواب: (۱) بلا شبہ با جماع ائمہ اربعہ تین طلاقیں ہو گئیں اور بے حلالہ وہ اس کے لئے حلال نہیں ہوسکتی قال اللہ تعالیٰ: فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدُ حَتَّى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُ ط۱ ۔ اگر تیسری

طلاق دے دی تو بیوی اس کے بعد حلال نہ ہوگی تا وقتیکہ وہ کسی دوسرے شخص سے نکاح نہ کرلے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

۱ القرآن الکریم ۲/۲۳۰

Fatawa-e-Razviya, Volume 12

(2) In this situation, the intention to return is an attempt to change the divine command, and these words are explicit. In explicit words, there is no need for intention. Whoever gave the fatwa that the intention was for return (raj'at) and thus it became one revocable divorce (raj'i), he is astray. (3) If the husband was of equal status (kufu) to Hindah, meaning he was not so inferior in religion, lineage, conduct, or profession that Hindah's marriage to him would be a cause of shame and disgrace for all of her guardians, and they performed the proposal and acceptance (Ijab-o-Qubul) before two witnesses who heard and understood, then it became valid. There was no need for the guardian's permission.

اذ لا ولایۃ مجبرۃ علی البالغین لما نصوا علیہ فی الکتب قاطبۃ	**Because there is no compulsory guardianship over adults as stated in all books as clear texts (t).**

(4) While Khalid's marriage remains valid, it is clear that without a divorce she cannot marry anyone else.

قال تعالٰی وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ ۱؎	**Allah Almighty said: "And [also prohibited are] women who are already married." (i.e. married women are forbidden for others) (t).**

And even if Khalid divorces her without consummating the marriage, she can never be lawful for the first husband [until she marries another and that marriage is consummated].

قال صلی اللہ تعالٰی علیہ لاتحلین لزوجك الاول حتی یذوق الاخر عسیلتک تذوقی عسیلتہ ۲؎	**The Holy Prophet (peace and blessings be upon him) said: "O woman, you will not be lawful for your first husband until the second one tastes your sweetness and you taste his sweetness" (meaning sexual intercourse). (t)**

Those people who intentionally arranged this marriage are all pimps of adultery, and Zaid and Hindah are adulterers. And for all of them, there is a warning of severe punishment in the fire of Hell. Similarly, those who agreed to this marriage did not agree to marriage but agreed to adultery.

والرضا بالحرام وقد يكون كفر اوالعياذ باللہ تعالٰی۔	**Being pleased with a forbidden act is forbidden, and sometimes this pleasure leads to disbelief (kufr). And we seek refuge in Allah Almighty. (t)**

It is forbidden for Muslims to socialize with all of them, as Allah Almighty said:

وَاِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدُ	**Beware, if Satan makes you forget, then [do not sit] after remembering.**

1. Al-Quran 4/24
2. Sahih Bukhari, Chapter 'Lam tuharrim ma ahall Allah lak', Qadeemi Kutub Khana Karachi 2/792

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द १२

(२) इस स्थिति में, लौटने की नीयत ईश्वरीय आदेश को बदलना है और ये शब्द स्पष्ट हैं। स्पष्ट शब्दों में नीयत की आवश्यकता नहीं होती। जिसने यह फतवा दिया कि नीयत लौटने (रजअत) की थी और इसलिए यह एक प्रतिसंहरणीय तलाक (रजई) हुआ, वह गुमराह है। (३) यदि पति हिंदा के समान स्तर (कुफ़ू) का था, अर्थात धर्म, वंश, आचरण या पेशे में इतना निम्न नहीं था कि हिंदा का उससे विवाह हिंदा के सभी अभिभावकों के लिए लज्जा और अपमान का कारण हो, और उन्होंने दो गवाहों के सामने, जिन्होंने सुना और समझा, ईजाब-ओ-क़ुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) कर लिया, तो वह सही हो गया। वली (अभिभावक) की अनुमति की कोई आवश्यकता नहीं थी।

اذ لا ولایۃ مجبرۃ علی البالغین لما نصوا علیہ فی الکتب قاطبۃ	**क्योंकि वयस्कों पर किसी का अनिवार्य अभिभावकत्व (विलायत-ए-मुजबिरा) नहीं है, जैसा कि सभी पुस्तकों में स्पष्ट उल्लेख (नुसूस) हैं। (त)**

(४) खालिद के निकाह की वैधता की स्थिति में यह स्पष्ट है कि तलाक के बिना वह किसी से निकाह नहीं कर सकती।

قال تعالٰی وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ ۱؎	**अल्लाह तआला ने फरमाया: "और [तुम पर हराम हैं] वे स्त्रियाँ जो विवाहित हों।" (अर्थात विवाहित स्त्रियाँ दूसरों के लिए हराम हैं) (त)**

और यदि खालिद बिना संभोग के भी तलाक दे दे, तब भी वह पहले पति के लिए कदापि हलाल नहीं हो सकती [जब तक कि दूसरा विवाह पूर्ण न हो जाए]।

قال صلی اللہ تعالٰی علیہ لاتحلین لزوجك الاول حتی یذوق الاخر عسیلتک تذوقی عسیلتہ ۲؎	**हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फरमाया: ऐ औरत! तू अपने पहले शौहर के लिए तब तक हलाल नहीं होगी जब तक कि दूसरा शौहर तेरा मज़ा न चख ले और तू उसका मज़ा न चख ले (अर्थात संभोग न कर लो)। (त)**

जिन लोगों ने जानबूझकर यह निकाह करवाया, वे सब व्यभिचार (ज़िना) के दलाल हुए और ज़ैद और हिंदा व्यभिचारी (ज़ानी) हैं। और उन सब के लिए नरक की अग्नि के कठोर दंड की चेतावनी है। इसी तरह, जो इस निकाह पर सहमत हुए, वे निकाह पर नहीं बल्कि व्यभिचार पर सहमत हुए।

وقد یکون الرضا بالحرام کفر والعیاذ باللہ تعالٰی۔	**हराम कार्य पर राज़ी होना हराम है और कभी-कभी यह रज़ामंदी कुफ़्र (अधर्म) होती है। और अल्लाह तआला की पनाह। (त)**

इन सबसे मुसलमानों का मेल-जोल वर्जित है, अल्लाह तआला ने फरमाया:

وَاِمَّا یُنْسِیَنَّكَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ	**खबरदार! शैतान तुझे भुला देता है, याद आने पर [वहाँ न बैठ]।**

1. अल-कुरआन ४/२४
2. सहीह बुखारी, अध्याय 'लम तुहर्रिम मा अहल्ल अल्लाह लक', कदीमी कुतुब खाना कराची २/७९२

فتاوٰی رضویہ، جلد دوازدہم

(۲) اس صورت میں لوٹانے کی نیت حکم الٰہی کو بدلنا ہے اور یہ الفاظ صریح ہیں صریح میں نیت کی حاجت نہیں ہوتی، جس نے یہ فتوٰی دیا ہے کہ رجعت کی نیت تھی تو ایک رجعی ہوئی وہ گمراہ ہے۔ (۳) اگر خاوند ہندہ کا کفو تھا یعنی مذہب یا نسب یا چلا چلن یا پیشہ میں ایسا کم نہ تھا کہ ہندہ کا اس سے نکاح اس کے سب اولیائے ہندہ کے لئے ننگ و عار ہو اور انہوں نے دو گواہوں کے سامنے جو سنتے اور سمجھتے تھے ایجاب و قبول کرلیا تو صحیح ہوگیا اجازتِ ولی کی کوئی حاجت نہ تھی،

اذ لا ولایۃ مجبرۃ علی البالغین لما نصوا علیہ فی الکتب قاطبۃ

کیونکہ بالغ حضرات پر کسی کو جبری ولایت نہیں ہے جیسا کہ تمام کتب میں نصوص ہیں (ت)

(۴) بحالت صحت نکاح خالد ظاہر ہے کہ بے طلاق وہ کسی سے نکاح نہیں کرسکتی۔

قال تعالٰی وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ ۱۔

اللہ تعالٰی نے فرمایا: شادی شدہ (منکوحہ) عورت دوسروں کے لئے حرام ہیں (ت)

اور اگر خالد بے صحبت کئے طلاق دے بھی دے جب بھی ہر گز شوہر اول کے لئے حلال نہیں ہوسکتی،

قال صلی اللہ تعالٰی علیہ لاتحلین لزوجك الاول حتی یذوق الاخر عسیلتک تذوقی عسیلتہ ۲۔

حضور علیہ الصلوٰۃ والسلام نے فرمایا اے عورت تو حلال نہیں پہلے شوہر کیلئے جب تک دوسرا خاوند تیرا اور تو اس کا مزہ نہ چکھ لے (یعنی جماع نہ کرلو)۔ (ت)

جو لوگوں نے دانستہ یہ نکاح کرادیا سب زنا کے دلال ہوئے اور زید ہندہ زانی زانی۔ اور اُن سب کے لئے عذاب شدید نارِ جہنم کی وعید ہے، یونہی وہ جو اس سے نکاح پر راضی ہوئے، نکاح نہیں زنا پر راضی ہوئے۔

والرضا بالحرام وقد یکون کفر اوالعیاذ باللہ تعالٰی۔ **حرام فعل پر رضا حرام ہے اور کبھی یہ رضا کفر ہوتی ہے۔ والعیاذ باللہ تعالٰی۔ (ت)**

ان سب سے مسلمانوں کو میل جول منع ہے، قال تعالٰی:

وَاِمَّا یُنْسِیَنَّكَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ خبردار شیطان تجھے بھلا دیتا ہے یاد ہونے پر

۱ القرآن ۴ / ۲۴ ۲ صحیح بخاری باب لم تحرم ما احل اللہ لك قدیمی کتب خانہ کراچی ۷۹۲/۲

صفحہ ۳۹۸ از ۶۸۸

Fatawa-e-Razvia Volume 12

"...after the reminder, with the wrongdoing people." (1) | Do not sit with the wrongdoers. (T) Those who socialize with them, if they are pleased with this marriage or consider it insignificant, the same ruling applies to them. (5) If one encouraged it with the intention of reconciliation between husband and wife and resolving their difficulties, then there is no blame on him; rather, it is a cause for reward. (6) Making the right seem wrong or the wrong seem right by telling lies is a characteristic of the Jews. Allah Almighty said: | Allah Almighty said: Do not mix truth with falsehood and knowingly... "And do not mix the truth with falsehood or conceal the truth while you know [it]." (2) | Do not hide the truth intentionally. (T) Disregarding halal and haram to follow false customs is the habit of disbelievers. "They said, 'Rather, we will follow that which we found our fathers upon.'" (3) (The disbelievers said, rather we will follow our ancestors. T) (7) When signs of puberty appear in a boy or girl, for example, wet dreams for a boy and menstruation for a girl, they are considered mature from that time. If signs of puberty do not appear, they will be considered mature upon completing fifteen years of age, as stated in Durr al-Mukhtar and other general books. (T) A mature person (baligh) does not fundamentally need a guardian (wali) for their marriage. Likewise, for a mature woman (baligha), whether the marriage is within the 'kufu' (social/religious compatibility) or outside it, and she has no guardian. Otherwise, as long as the guardian, before the marriage, knowing the 'non-kufu' person to be 'non-kufu', does not give explicit permission, the marriage of the mature woman will not be valid. In Durr al-Mukhtar: "And the fatwa is given regarding non-kufu that it is not permissible at all due to the corruption of the times. And Allah Almighty knows best." | It is in Durr al-Mukhtar: On the basis of the corruption of the times, a fatwa should be given that marriage in non-kufu is fundamentally not permissible. And Allah Almighty knows best. (T) And one more thing worth mentioning is that the person who mockingly said that it is written as permissible in a false book, he also committed a severe sin and repentance (tawba) is obligatory. Sharia matters are not for mockery. And Allah Almighty knows best.

1. Al-Quran al-Kareem 68/6
2. Al-Quran al-Kareem 42/2
3. Al-Quran al-Kareem 170/2
4. Durr al-Mukhtar, Chapter of the Wali, Mujtabai Press, Delhi, 191/1

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

"...याद आने के बाद ज़ालिम क़ौम के साथ (न बैठो)।" (1) | ज़ालिमों के पास मत बैठो। (त) उनसे मेल-जोल करने वाले अगर इस निकाह पर राज़ी या इसे हल्का जानते हैं तो उनके लिए भी यही हुक्म है। (5) अगर उसने मियाँ-बीवी में सुलह और उनकी मुश्किल कुशाई की नियत से तरग़ीब दिलाई तो उस पर इल्ज़ाम नहीं बल्कि बाइस-ए-अज्र व सवाब है। (6) झूठी बातें कहकर हक़ को नाहक़ या नाहक़ को हक़ बनाना यहूदियों की ख़सलत है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: | अल्लाह तआला ने फ़रमाया: हक़ को बातिल से खड़-मड़ न करो और दीदा व... "और हक़ को बातिल के साथ न मिलाओ और न हक़ को छुपाओ जबकि तुम जानते हो।" (2) | दानस्ता (जानबूझकर) हक़ को न छुपाओ। (त) रस्म-ए-बातिल की पैरवी के लिए हलाल व हराम की परवाह न करना काफ़िरों की आदत है। "उन्होंने कहा, बल्कि हम तो उसी की पैरवी करेंगे जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया।" (3) (काफ़िरों ने कहा बल्कि हम अपने आबा व अज्दाद की पैरवी करेंगे। त) (7) लड़के और लड़की को जब आसार-ए-ब्लूग़ (जवानी के लक्षण) ज़ाहिर हों मसलन लड़के को एहतिलाम हो और लड़की को हैज़ आए उस वक़्त से वो बालिग़ हैं और अगर आसार-ए-ब्लूग़ ज़ाहिर न हों तो पंद्रह बरस की उम्र पूरी होने से बालिग़ समझे जाएँगे जैसा कि 'दुर्रे मुख़्तार' और आम किताबों में है। (त) बालिग़ को अपने निकाह में वली की अस्लन ज़रूरत नहीं, यूँही बालिग़ा को जबकि निकाह कुफ़ू (बराबरी) से हो या ग़ैर कुफ़ू से हो तो उसका कोई वली न हो, वरना जब तक वली क़ब्ल-ए-निकाह उस ग़ैर कुफ़ू को ग़ैर कुफ़ू जानकर सरीह इजाज़त न देगा बालिग़ा का निकाह सही न होगा। 'दुर्रे मुख़्तार' में है: "और ज़माने के फ़साद की बिना पर ग़ैर कुफ़ू में इसके अस्लन जायज़ न होने पर फ़तवा दिया जाता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।" | दुर्रे मुख़्तार में है: ज़माने के फ़साद की बिना पर ग़ैर कुफ़ू में निकाह अस्लन जायज़ न होने पर फ़तवा दिया जाए। वल्लाहु तआला आलम। (त) और एक बात यह भी क़ाबिल-ए-बयान रही कि वो जिसने इस्तेहज़ा (मज़ाक़) कहा था झूठी किताब में जायज़ लिखा है वो भी सख़्त गुनहगार हुआ, तौबा फ़र्ज़ है। मसला-ए-शरईया इस्तेहज़ा का महल नहीं। वल्लाहु तआला आलम।

1. अल-क़ुरआन अल-करीम 68/6
2. अल-क़ुरआन अल-करीम 42/2
3. अल-क़ुरआन अल-करीम 170/2
4. दुर्रे मुख़्तार, बाबुल वली, मतबा मुजतबाई, देहली 191/1

بَعْدَ الذِّكْرَى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِينَ (1) | ظالموں کے پاس مت بیٹھو۔ (ت) ان سے میل جول کرنے والے اگر اس نکاح پر راضی یا اسے ہلکا جانتے ہیں تو ان کے لئے بھی یہی حکم ہے۔ (۵) اگر اس نے زن و شو میں اصلاح اور ان کی مشکل کشائی کی نیت سے ترغیب دلائی تو اس پر الزام نہیں بلکہ باعث اجر و ثواب ہے۔ (۶) جھوٹی باتیں کہہ کر حق کو ناحق یا ناحق کو حق بنانا یہودیوں کی خصلت ہے۔ قال اللہ تعالٰی | اللہ تعالٰی نے فرمایا: حق کو باطل سے خلط ملط نہ کرو اور دیدہ و وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَ اَنْتُمْ تَعْلَمُونَ (2) | دانستہ حق کو نہ چھپاؤ۔ (ت) رسم باطل کی پیروی کے لئے حلال و حرام کی پروا نہ کرنا کافروں کی عادت ہے۔ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا اَلْفَيْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا (3) (کفار نے کہا بلکہ ہم اپنے آباء و اجداد کی پیروی کریں گے۔ ت) (۷) لڑکے اور لڑکی کو جب آثار بلوغ ظاہر ہوں مثلاً لڑکے کو احتلام ہو اور لڑکی کو حیض آئے اس وقت سے وہ بالغ ہیں اور اگر آثار بلوغ ظاہر نہ ہوں تو پندرہ برس کی عمر پوری ہونے سے بالغ سمجھے جائیں گے کما فی الدر المختار وعامة الاسفار (جیسا کہ در مختار اور عام کتب میں ہے۔ ت) بالغ کو اپنے نکاح میں ولی کی اصلاً ضرورت نہیں یونہی بالغہ کو جبکہ نکاح کفو سے ہو یا غیر کفو سے ہو تو اس کا کوئی ولی نہ ہو، ورنہ جب تک ولی قبل نکاح اس غیر کفو کو غیر کفو جان کر صریح اجازت نہ دے گا بالغہ کا نکاح صحیح نہ ہوگا۔ فی الدرالمختار ویفتی في غير الكفو بعدم جوازه اصلا لفساد لزمان واللہ تعالٰی اعلم۔ | درمختار میں ہے: زمانہ کے فساد کی بناء پر غیر کفو میں نکاح اصلاً جائز نہ ہونے پر فتوٰی دیا جائے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت) اور ایک بات یہ بھی قابل بیان رہی کہ وہ جس نے استہزاء کہا تھا جھوٹی کتاب میں جائز لکھا وہ بھی سخت گناہگار ہوا توبہ فرض ہے مسئلہ شرعیہ استہزاء کا محل نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

1 القرآن الکریم ۶۸/۶ 2 القرآن الکریم ۴۲/۲ 3 القرآن الکریم ۱۷۰/۲ 4 درمختار باب الولی مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۱/۱

Fatawa Razawiya, Volume 12

Problem 181: From Dhaka Patti, District Tokano, country of Assam, sent by Mr. Abdul Subhan, 10 Rabi' al-Awwal Sharif 1338 AH.

What do the scholars of the religion say about this issue: Tamizuddin fell in love with the biological sister of his wedded wife, Siraj-un-Nisa. One night, he called Maulvi Israel Ali Sahab, Muhammad Israel Beopari, Tamizuddin Beopari, and Abdul Ghaffar Khayyat to his house and said, "Please perform my marriage contract with my sister-in-law." These people then asked, "You cannot marry her biological sister in the presence of your wife." At that time, Tamiz said, "Three days ago, I divorced my wife." Someone among them asked Tamizuddin, "In what manner did you give the divorce?" He replied, "I divorced my wedded wife in this manner: I give you one divorce, two divorces, three divorces, 'Bain' (irrevocable)." At that time, his wife was present behind a curtain. The aforementioned witnesses asked her, "Did you receive the divorce?" She clearly replied, "I received the divorce." After this, the mentioned Maulvi Sahab and others performed the marriage contract and left. The next morning, Tamizuddin's mother-in-law took her daughter (the one Tamizuddin fell in love with and intended to marry) from Tamizuddin's house to her own home. After several days, Tamizuddin, who had kept his wife separate, started sleeping with her. When people asked, "Having divorced your wedded wife and having acknowledged it before the gathered assembly, why are you committing adultery now?" Tamizuddin replied, "According to Sharia, I did not divorce my wedded wife. Rather, I wrote it on a paper and kept it on a shelf. My wife found it while cleaning the house and she made a commotion among the general public. In reality, I did not utter the divorce with my tongue." In this case, will the divorce occur or not? If it occurs, on which day will it occur? Clarify and be rewarded.

Answer: In the mentioned case, Tamizuddin is a grave sinner before Allah and His Messenger and an adulterer. He has clearly confessed to three divorces. Now he has no authority to retract it. The first woman has become haram (forbidden) for him forever unless halala is performed. It is obligatory for those men and women to separate immediately. If they do not comply, Muslims should leave them, as they are an adulterer and an adulteress. It is stated in Radd al-Muhtar:

[Arabic Box]: If he cohabits with a woman observing 'Iddah (waiting period) after three divorces, knowing it is forbidden, then it is adultery. 1

[Urdu Explanation Box]: If a man has intercourse with his wife during the waiting period after three divorces, it will be considered adultery, and the prescribed punishment (Hadd) will be applied to him, provided the husband knew it was forbidden. (T)

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Iddah, Al-Ma'at al-Misriyya, Egypt, 2/612.

फ़तावा रज़विया, खंड 12

मसला 181: ढाका पट्टी, जिला टोकानो, देश असम से, प्रेषक: श्री अब्दुल सुभान, 10 रबी-उल-अव्वल शरीफ 1338 हिजरी।

प्रश्न: धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: तमीजुद्दीन अपनी ब्याहता पत्नी सिराज-उन-निसा की सगी बहन के प्यार में पड़ गया। एक रात उसने मौलवी इज़राइल अली साहब, मुहम्मद इज़राइल बेपारी, तमीजुद्दीन बेपारी और अब्दुल गफ्फार खैयात को अपने घर बुलाया और कहा, "कृपया मेरी साली के साथ मेरा निकाह पढ़वा दें।" तब इन लोगों ने पूछा, "तुम अपनी पत्नी की मौजूदगी में उसकी सगी बहन से निकाह नहीं कर सकते।" उस समय तमीज ने कहा, "तीन दिन पहले मैंने अपनी पत्नी को तलाक दे दिया है।" उनमें से किसी ने तमीजुद्दीन से पूछा, "तुमने किस तरह से तलाक दिया?" उसने उत्तर दिया, "मैंने अपनी ब्याहता पत्नी को इस तरह तलाक दिया: मैं तुम्हें एक तलाक, दो तलाक, तीन तलाक 'बाइन' (अटल) देता हूँ।" उस समय उसकी पत्नी पर्दे के पीछे मौजूद थी। उक्त गवाहों ने उससे पूछा, "क्या तुम्हें तलाक मिला?" उसने साफ जवाब दिया, "मुझे तलाक मिला।" इसके बाद उक्त मौलवी साहब आदि निकाह पढ़वाकर चले गए। अगली सुबह, तमीजुद्दीन की सास अपनी बेटी (जिससे तमीजुद्दीन प्यार करता था और निकाह करने का इरादा जताया था) को तमीजुद्दीन के घर से अपने घर ले गई। कई दिनों बाद, तमीजुद्दीन ने अपनी पत्नी को अलग रखा हुआ था, उसके साथ सहवास करना शुरू कर दिया। जब लोगों ने पूछा, "अपनी पत्नी को तलाक देकर और सभा में उपस्थित लोगों के सामने स्वीकार करने के बाद अब तुम हरामकारी (व्यभिचार) क्यों कर रहे हो?" तब तमीजुद्दीन ने जवाब दिया, "शरीयत के अनुसार मैंने अपनी पत्नी को तलाक नहीं दिया है, बल्कि एक कागज पर लिखकर अलमारी पर रख दिया था। मेरी पत्नी को घर की सफाई के दौरान वह मिला और उसने आम लोगों में शोर मचा दिया। वास्तव में मैंने जुबान से तलाक नहीं दिया।" इस स्थिति में तलाक होगा या नहीं? यदि होगा, तो किस दिन होगा? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: उपरोक्त मामले में तमीजुद्दीन अल्लाह और उसके रसूल के सामने गंभीर पापी और ज़ानी (व्यभिचारी) है। वह स्पष्ट रूप से तीन तलाक स्वीकार कर चुका है। अब उसे इससे पीछे हटने का कोई अधिकार नहीं है। पहली औरत उस पर हमेशा के लिए हराम (निषिद्ध) हो गई है जब तक कि हलाला न हो जाए। उन पुरुष और महिला पर अनिवार्य है कि वे तुरंत अलग हो जाएं और यदि वे नहीं मानते हैं, तो मुसलमानों को उन्हें छोड़ देना चाहिए क्योंकि वे व्यभिचारी और व्यभिचारिणी हैं। 'रद्दुल मुहतार' में है:

[अरबी बॉक्स]: यदि उसने तीन तलाक के बाद इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) में अपनी पत्नी के साथ सहवास किया, यह जानते हुए कि यह हराम है, तो यह ज़िना (व्यभिचार) है। 1

[उर्दू अनुवाद बॉक्स]: यदि तीन तलाक के बाद इद्दत के दौरान पत्नी से सहवास किया जाए तो वह ज़िना होगा और उस पर 'हद' (इस्लामी दंड) लगाया जाएगा, बशर्ते कि पति को उसके हराम होने का ज्ञान हो। (त)

1. रद्दुल मुहतार, बाबुल इद्दत, अल-मात-अल-मिस्रैया, मिस्र, 2/612।

فتاوی رضویه جلد دو ازدہم

مسئلہ ۱۸۱: از ڈھا کہ پٹی ضلع ٹو کانوں ملک آسام مرسلہ عبد سبحان صاحب ۱۰ ربیع الاول شریف ۱۳۳۸ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ تمیز الدین اپنی منکوحہ سراج النساء کی حقیقی بہن پر عاشق ہو کر ایک رات مولوی اسرائیل علی صاحب و محمد اسرائیل بیوپاری اور تمیز الدین بیوپاری ار عبد الغفار خیاط کو اپنے گھر میں بلالے جا کر کہا کہ آپ لوگ میری سالی کے ساتھ میرا عقد پڑھا دیجئے ، تب یہ لوگ پوچھے کہ تم اپنی بی بی کی موجودگی میں اس کی حقیقی بہن کے ساتھ نکاح نہیں کر سکتے ہو اس وقت تمیز نے کہا تین روز قبل میں نے اپنی بیوی کو طلاق دے دیا کسی نے ان میں سے تمیز الدین کو پو پوچھا تم نے کس طرح پر طلاق دیا وہ جواب دیا کہ میں اپنی منکوحہ کو اس طرح پر طلاق دیا کہ تم کو ایک طلاق دو طلاق تین طلاق بائن دیا اس وقت اس کا بیوی پس پردہ حاضر تھی شاہد مذکورین نے اس سے سوال کیا تجھ کو طلاق ملا وہ صاف جواب دی کہ مجھ کو طلاق ملا اس کے بعد مولوی صاحب مذکور و غیر ہم عقد پڑھا کر چلے آئے اور تمیز الدین کی ساس نے صبح کو اپنی لڑکی جس پر تمیز الدین نے عاشق ہو کر عقد کرنے کا ارادہ ظاہر کیا تھا تمیز الدین کے گھر سے اپنے گھر میں لے گئی کئی روز بعد تمیز الدین جو اپنی بیوی کو علیحدہ رکھا تھا اس سے ہمبستر ہونا شروع کیا تب لوگوں نے پوچھا تم اپنی منکوحہ کو طلاق دے کر حاضران محفل میں اقرار بھی کر چکے اب حرامی کیوں کرتے ہو تب تمیز الدین نے جواب دیا موافق شرع کے میں اپنی منکوحہ کو طلاق نہیں دیا بلکہ ایک کاغذ میں لکھ کر الماری پر رکھا تھا اس کو میری بیوی مکان صاف کرنے کے وقت پائی اور وہ عوام الناس میں شور مچائی فی

الحقیقت میں نے زبان سے طلاق نہیں دیا اس صورت میں طلاق واقع ہو گا یا کہ نہیں اگر واقع ہو تو کس روز طلاق واقع ہو گا ۔ بینوا توجروا ۔

الجواب :

صورت مذکورہ میں تمیز الدین اللہ ورسول کے سخت گنہگار اور زانی حرامکاری ہے وہ صاف صاف تین طلاق کا اقرار کر چکا اب اس سے پھرنے کا اسے کوئی اختیار نہیں ، پہلی عورت اس پر ہمیشہ کو حرام ہو گئی جب تک حلالہ نہ ہو اُن مرد و عورت پر فرض ہے کہ فوراً جدا ہو جائیں اور اگر نہ مانیں تو مسلمان اُن کو چھوڑ دیں کہ وہ زانی اور زانیہ ہیں ۔ ردالمختار میں ہے :

لو وطئ معتدته من الثلاث علما بحرمتها فانہ زناً ۱ | اگر تین طلاق کے بعد بیوی سے عدت میں جماع کیا تو زنا ہوگا اور اس کو اس پر حد لگائی جائے گی بشرطیکہ خاوند کو اس کے حرام ہونے کا علم ہو۔ (ت)

۱ ردالمحتار باب العدۃ الطاعۃ المصریہ مصر ۲/۶۱۲

Fatawa Ridawiyya Volume 12

And the marriage contracted with the second [sister] is also forbidden (haram) and void (batil), because marrying the second sister during the waiting period ('iddah) of the first sister is also forbidden. It is stated in Al-Durr al-Mukhtar: "Combining between prohibited relatives (mahram) is forbidden in marriage and in 'iddah." (1) (t) Those people who, merely upon hearing about the divorce, went and performed a marriage ceremony during the 'iddah period, have all sinned; repentance is obligatory for all of them.

Issue 182 to 183: From Lucknow, Charbagh Mohalla, Basanmandi, sent by Shah Na'imullah Fakhri Chishti Nizami Qadri Suhrawardi, 29 Jumadi al-Ula 1336 AH. The statement of the book 'Irshad al-Talibin' by Faqih Sayyid Ali Tirmidhi (may Allah Almighty have mercy on him) is quoted verbatim as follows:

Table Content: (Left column - Persian Original) Know, O son, that the four schools of thought (madhahib) are true, and knowing this is an obligation (fard) for all. The difference among them is a mercy, not a difference based on enmity, for it is said that 'difference is ease'. A Hanafi should not say, "What business do I have with the Shafi'i [school]?" because in times of necessity, transferring from one school to another is permissible. For instance, traveling for Hajj on foot is not allowed in the school of Imam Abu Hanifa. Therefore, scholars guide a pilgrim who wishes to walk according to the school of [Imam] Malik, as walking for Hajj is permissible in his school. Once they reach Arafat, they return to the Hanafi school. Similarly, if someone wishes to seek a legal way out (hila) for a wife who has been divorced three times, they should ask the divorcer about the pillars and rulings of faith. If he can explain them, he may remarry his divorced wife without halala. If he also knows this, then at that time they should bind him to the school of Imam Ahmad, because in their school... End of quote from Irshad al-Talibin.

(Right column - Urdu translation of Persian) O son! All four schools are true; this belief is obligatory. Their difference is a mercy; this difference is not based on opposition because they differ for the sake of ease. No Hanafi should say, "What do I have to do with Shafi'i?" because in times of need, it is permissible to leave one school and follow another. Just as walking for Hajj is not permissible in the school of Imam Abu Hanifa, therefore, scholars tell the walking pilgrim to follow the school of Imam Malik (may Allah Almighty have mercy on him) because walking for Hajj is permissible in their school. And when he reaches Arafat, he should adopt the Hanafi

school again. And similarly, if a person wants to perform a legal way out (hila) for a wife given three divorces, then the pillars and rulings of faith should be asked from that person who gave the divorce. If he can tell them, then he should marry his divorced wife without halala. If he tells that too, then they should make him adhere to the school of Imam Ahmad because in their school...

(1) Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Forbidden Relatives, Matba Mujtabai Delhi, 1/188.

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

और दूसरी से जो निकाह किया वह भी हराम और बातिल है क्योंकि बहन की इद्दत में भी दूसरी बहन से निकाह हराम है। दर-मुख़्तार में है: "महरम औरतों को जमा करना हराम है निकाह में और इद्दत में।" (१) (त) वह लोग जो सिर्फ़ तलाक़ सुनकर इद्दत में निकाह पढ़ा आए, सब गुनहगार हुए, सब पर तौबा फ़र्ज़ है।

मसला १८२ से १८३: लखनऊ मोहल्ला चारबाग़ बासनमंडी से भेजा गया, शाह नईमुल्लाह फ़ख़री चिश्ती निज़ामी क़ादरी सुहरावर्दी द्वारा, २९ जमादी अल-उला १३३६ हिजरी। किताब 'इरशाद अल-तालिबीन' के फ़क़ीह सैय्यद अली तिर्मिज़ी (रहमतुल्लाह अलैहि) का क़ौल है जो शब्दशः नक़ल किया जाता है कि:

तालिका सामग्री: (बायां कॉलम - फ़ारसी मूल) जानो ऐ बेटे! कि चारों मज़हब (विचारधाराएं) हक़ हैं और यह जानना सब पर फ़र्ज़ है। उनके बीच का मतभेद रहमत है, दुश्मनी पर आधारित मतभेद नहीं, जैसा कि कहा गया है कि 'मतभेद आसानी है'। किसी हनफ़ी को यह नहीं कहना चाहिए कि मुझे शाफ़ई से क्या लेना-देना, क्योंकि ज़रूरत के समय एक मज़हब से दूसरे मज़हब में जाना जायज़ है। जैसे कि इमाम अबू हनीफ़ा के मज़हब में पैदल हज पर जाना जायज़ नहीं है, इसलिए उलेमा पैदल चलने वाले हाजी को इमाम मालिक के मज़हब पर चलने की सलाह देते हैं क्योंकि उनके मज़हब में पैदल हज जायज़ है। और जब वह अरफ़ात पहुँच जाए तो फिर हनफ़ी मज़हब अपना ले। और इसी तरह अगर कोई शख़्स तीन तलाक़ दी हुई बीवी के लिए हीला (कानूनी रास्ता) करना चाहे, तो चाहिए कि उस तलाक़ देने वाले से ईमान के अरकान और अहकाम पूछे जाएँ। अगर वह उन्हें बता सके, तो वह बिना हलाला के अपनी मुतल्लक़ा (तलाक़शुदा बीवी) से निकाह कर ले। अगर वह उसे भी बता दे, तो उस समय उसे इमाम अहमद के मज़हब का पाबंद करें क्योंकि उनके मज़हब में... [पाठ समाप्त]। इरशाद अल-तालिबीन की इबारत ख़त्म।

(दायां कॉलम - फ़ारसी का उर्दू अनुवाद) अरे बेटे! चारों मज़हब हक़ हैं, यह अक़ीदा फ़र्ज़ है। उनका इख़्तिलाफ़ (मतभेद) रहमत है, यह इख़्तिलाफ़ मुख़ालिफ़त पर मबनी नहीं है क्योंकि आसानी के लिए इख़्तिलाफ़ करते हैं। किसी हनफ़ी को न चाहिए कि वह कहे शाफ़ई से मुझे क्या काम, क्योंकि ज़रूरत के वक़्त एक मज़हब छोड़कर दूसरे मज़हब की पैरवी जायज़ है जिस तरह कि इमाम अबू हनीफ़ा के मज़हब में पैदल हज जायज़ नहीं है, लिहाज़ा उलेमा हाजी को इमाम मालिक (रहमतुल्लाह

अलैहि) के मज़हब पर पैदल हज का कहें क्योंकि उनके मज़हब में पैदल हज जायज़ है, और जब अरफ़ात में पहुँच जाए तो फिर हनफ़ी मज़हब अपना ले। और यूँही अगर कोई शख़्स तीन तलाक़ दी हुई बीवी के लिए हीला करना चाहे तो चाहिए कि उस तलाक़ देने वाले से ईमान के अरकान व अहकाम पूछे जाएँ अगर वह बता सके तो वह बग़ैर हलाला अपनी मुतल्लक़ा से निकाह कर ले अगर वह भी बता दे तो उसको इमाम अहमद के मज़हब पर पाबंद करें क्योंकि उनके मज़हब...

(१) दर-मुख़्तार, फ़स्ल फ़िल मुहर्रमात, मतबा मुजतबाई देहली १/१८८। पेज 401 ऑफ़ 688

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

اور دوسری سے جو نکاح کیا وہ بھی حرام و باطل ہے کہ بہن کی عدت میں بھی دوسری بہن سے نکاح حرام ہے۔ در مختار میں ہے: حرم الجمع بین المحارم نکاحا وعدۃً- (۱) محرم عورتوں کو جمع کرنا حرام ہے نکاح میں اور عدت میں۔ (ت) وہ لوگ کہ صرف طلاق سُن کر عدت میں نکاح پڑھا آئے سب گنہگار ہوئے سب پر توبہ فرض ہے۔

مسئلہ ۱۸۲ تا ۱۸۳: از لکھنؤ محلہ چار باغ باسنمنڈی مرسلہ شاہ نعیم اللہ فخری چشتی نظامی قادری سہر وردی ۲۹ جمادی الاولی ۱۳۳۶ھ کتاب ارشادالطالبین فقیہ سید علی ترمذی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ کا قول ہے جو بعینہ نقل کی جاتی ہے کہ:

جدول کے مندرجات: (بایاں کالم - فارسی اصل) بدان اے فرزند چہار مذہب حق اند و دانستن آں فرض سب و اختلاف در میاں ایشاں اختلاف برحمت ست نہ اختلاف بعداوت کہ الاختلاف راحت گفتہ اند و حنفی مذہب رانشاید کہ گوید مرا بشافعی چہ کارست زیرا کہ در ہنگام ضرورت رانشاید کہ گوید مرا بشافعی چی کارست زیرا کہ در ہنگام ضرورت از مذہب بمذہبے انتقال کردہ شود چنانچہ بحج رفتن پیادہ بمذہب امام ابو حنیفہ روانیست، پس عالمان حاجی ماشی را بمذہب مالک می سیرانند کہ در مذہب او رواست و چوں بعرفات حاضر شد باز بمذہب ابو حنیفہ میگردد ایضا چوں کسے مطلقہ ثلثہ راحیلہ بکند باید کہ او را از احکام وارکان ایمان بپرسید تا بے تحلیل نکاح جدید کند واگر ہماں را نیز میداند باید کہ اورا بمذہب امام احمد آرد کہ در مذہب او حق تعالٰی را بذات وصفات شناختن فرض ست اگر آنرا نمیداند نکاح جدید کند واگر آنرا نیز میداند ایں ہنگام تحلیل باید کرد۔

عبارت ارشاد الطالبین ختم۔

(دایاں کالم - فارسی کا اردو ترجمہ) ارے بیٹے! چاروں مذہب حق ہیں، یہ عقیدہ فرض ہے۔ ان کا اختلاف رحمت ہے، یہ اختلاف مخالفت پر مبنی نہیں ہے کیونکہ آسانی کے لئے اختلاف کرتے ہیں، کسی حنفی کو نہ چاہئے کہ وہ کہے شافعی سے مجھے کیا کام، کیونکہ ضرورت کے وقت ایک مذہب چھوڑ کر دوسرے مذہب کی پیروی جائز ہے جس طرح کہ امام ابو حنیفہ کے مذہب میں پیدل حج جائز نہیں ہے، لہٰذا علماء حاجی کو امام مالک رحمۃ اللہ علیہ کے مذہب پر پیدل حج کا کہیں کیونکہ ان کے مذہب میں پیدل حج جائز ہے، اور جب عرفات میں پہنچ جائے تو پھر حنفی مذہب اپنا لے، اور یونہی اگر کوئی شخص تین طلاق دی ہوئی بیوی کے لئے حیلہ کرنا چاہے تو چاہئے کہ اس طلاق دینے والے سے ایمان کے ارکان و احکام پوچھے جائیں اگر وہ بتا سکے تو وہ بغیر حلالہ اپنی مطلقہ سے نکاح کر لے اگر وہ بھی بتادے تو اس کو امام احمد کے مذہب پر پابند کریں کیونکہ ان کے مذہب

(۱) درمختار فصل فی المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱۸۸/۱ صفحہ 401 از 688

It is necessary and obligatory to know the essence and attributes of Allah Almighty. If one cannot state the essence and attributes of the Creator, he should remarry his wife without halala. And if he knows the essence of the Creator, then he must perform halala. This concludes the passage from Irshad-ut-Talibeen. (T)

This book (Irshad-ut-Talibeen) was presented to Maulvi Hafiz Muhammad Jan Sahib Farangi Mahalli, a teacher at the school of Maulvi Ain-ul-Quzat Sahib. He said that whatever is written is correct. According to Sharia necessity (Indal-Daroora-e-Shar'i), transitioning from one school of thought (madhhab) to another is permissible. In one sitting, if three divorces are given, according to Imam Abu Hanifa (may Allah Almighty have mercy on him), divorce occurs, but according to other Imams, it does not. Therefore, due to Sharia necessity, by transitioning to another school, divorce will not occur. Similarly, if a woman's husband goes missing (Mafqud-ul-Khabar), then according to Imam Abu Hanifa, her second marriage can occur after 90 years. However, according to other Imams, she can be seated for the waiting period ('iddat) after four years, and after the completion of the term and the waiting period, her second marriage can be performed. Thus, according to Sharia necessity, a woman who follows the school of Imam Abu Hanifa can transition to another Imam's school and perform a new marriage in this manner. The meaning of transition is that she considers that school obligatory for herself. Sharia necessity refers to, for example, a fear that if the marriage does not take place, she might commit adultery and thus fall into sin, or some other such trouble might arise. Therefore, in such a situation, one can enter the clear school of Imam Ahmad and perform a new marriage.

(1) What Maulvi Sahib said about it being permissible for a woman following Imam Abu Hanifa's school to transition to another school—from which school's principles do the statements of Maulvi Hafiz Muhammad Jan and Maulvi Faqih Syed Ali come, and what is the real purpose?

(2) What should be done for a woman who is not bound by any specific school of thought? Even though she considers herself part of the fold of Islam and claims to follow the Hanafi school, despite this claim, she considers listening to music with instruments (Sama-bil-Mazameer) permissible for herself, selecting this from the Shafi'i school's special group. Furthermore, she ignores the fact that singing and playing music filled with carnal excitement and satanic lust is found to be absolutely forbidden in every school, yet she commits it. She also practices the heavy and

infidel-like customs of the age of ignorance. How can following the Hanafi school be attributed to such a person? The claim of adherence to a specific school is false. Therefore, is it permissible to assume the school of Imam Ahmad for such a woman, or is actual following necessary? Since this is for the service of Janab Maulana Abdul Kafi Sahib (may his high shadow endure)...

अल्लाह तआला की ज़ात और सिफ़ात को जानना ज़रूरी और फ़र्ज़ है। अगर कोई रब्बुल आलमीन की ज़ात और सिफ़ात के बारे में नहीं बता पाता, तो वह अपनी पत्नी से हलाला के बिना दोबारा निकाह कर ले। और अगर वह बारी तआला की ज़ात को जानता है, तो फिर उसे हलाला करना होगा। इर्शाद-उत-तालिबीन की इबारत यहाँ समाप्त हुई। (त)

यह किताब (इर्शाद-उत-तालिबीन) मौलवी हाफ़िज़ मोहम्मद जान साहब फ़िरंगी महल्ली, जो मदरसा मौलवी ऐन-उल-क़ुज़ात साहब के शिक्षक हैं, की सेवा में पेश की गई। उन्होंने कहा कि जो कुछ लिखा गया है वह सही है। शरीअत की ज़रूरत के समय (अिंदल दरूरते शरई) एक मज़हब से दूसरे मज़हब में जाना जायज़ है। एक ही बैठक में अगर तीन तलाक़ दिए जाएँ तो इमाम अबू हनीफ़ा (रहमतुल्लाह अलैहि) के अनुसार तलाक़ हो जाता है, लेकिन अन्य इमामों के अनुसार तलाक़ नहीं होता। इसलिए, शरीअत की ज़रूरत के कारण दूसरे मज़हब में जाने से तलाक़ नहीं होगा। इसी तरह, अगर किसी महिला का पति लापता (मफ़क़ूद-उल-ख़बर) हो जाए, तो इमाम अबू हनीफ़ा के अनुसार 90 वर्ष के बाद उसका दूसरा निकाह हो सकता है। लेकिन अन्य इमामों के अनुसार चार वर्ष के बाद उसे इद्दत में बिठाया जा सकता है और इद्दत की अवधि बीतने के बाद उसका दूसरा निकाह किया जा सकता है। अतः शरीअत की ज़रूरत के समय, जो महिला इमाम अबू हनीफ़ा के मज़हब का पालन करती है, वह दूसरे इमामों के मज़हब में जाकर इस तरह नया निकाह कर सकती है। 'इंतक़ाल' (परिवर्तन) का अर्थ यह है कि वह उस मज़हब को अपने ऊपर फ़र्ज़ मान ले। और शरीअत की ज़रूरत उसे कहते हैं जब उदाहरण के तौर पर निकाह न होने पर ज़िना (व्यभिचार) में पड़ने का डर हो और इस तरह वह गुनाहगार बन जाए, या इस तरह की कोई और बुराई सामने आए। इसलिए, ऐसी स्थिति में इमाम अहमद के मज़हब को अपनाकर नया निकाह किया जा सकता है।

(1) मौलवी साहब ने जो फ़रमाया कि वह महिला जो इमाम अबू हनीफ़ा के मज़हब की पाबंद है, उसके लिए दूसरे मज़हब में जाना जायज़ है—मौलवी हाफ़िज़ मोहम्मद जान और मौलवी फ़क़ीह सैय्यद अली का यह कथन किस मज़हब के सिद्धांतों से है और इसका असली उद्देश्य क्या है?

(2) उस महिला के बारे में क्या किया जाना चाहिए जो किसी विशेष मज़हब की पाबंद नहीं है? हालाँकि वह खुद को इस्लाम के दायरे में समझती है और हनफ़ी मज़हब का दावा करती है, लेकिन इस दावे के बावजूद वह शाफ़ई मज़हब के विशिष्ट समूह से चयन करके संगीत और वाद्ययंत्रों (समा-

बिल-मज़ामीर) को अपने लिए जायज़ मानती है। इसके अलावा, वह उस गायन और वाद्य को दरकिनार कर देती है जिसमें कामुक उत्तेजना और शैतानी हवस भरी हो और जो हर मज़हब में पूरी तरह से हराम पाया गया है, वह उसे भी करती है। वह अज्ञानता के युग के बोझिल और काफ़िरों जैसे रीति-रिवाजों को अपनाती है। ऐसी महिला के लिए हनफ़ी मज़हब की पाबंदी कैसे कही जा सकती है? किसी विशेष मज़हब की पाबंदी का दावा झूठा है। इसलिए, क्या ऐसी महिला के लिए इमाम अहमद के मज़हब को फ़र्ज़ कर लेना जायज़ है या वास्तव में पालन करना ज़रूरी है? चूँकि यहाँ जनाब मौलाना अब्दुल काफ़ी साहब (मद-ज़िल्लहु-अल-आली) की सेवा में...

پر اللہ تعالیٰ کی ذات و صفات کا جاننا ضروری، اور فرض ہے، اگر ذات و صفات باری تعالیٰ نہ بتاسکے تو وہ بیوی سے بغیر حلالہ دوبارہ نکاح کرلے، اور اگر وہ ذات باری تعالیٰ کو جانتا ہو تو پھر اس کو حلالہ کرنا ہوگا۔ ارشادالطالبین کی کی عبارت ختم ہوئی۔ (ت)

یہ کتاب (ارشاد الطالبین) مولوی حافظ محمد جان صاحب فرنگی محلی معلم مدرسہ مولوی عین القضاۃ صاحب کی خدمت میں پیش کی گئی انہوں نے کہا کہ جو کچھ کہ لکھا ہے وہ درست ہے عندالضرورۃ شرعی ایک مذہب سے دوسرے مذہب میں انتقال کرنا جائز ہے، ایک جلسہ میں اگر تین طلاق دی جائے تو امام ابو حنیفہ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کے نزدیک طلاق ہو جاتی ہے مگر اور ائمہ کے نزدیک طلاق نہیں ہوتی، لہذا عندالضرورۃ دوسرے مذہب میں انتقال کرنے سے طلاق نہیں ہو گی، اسی طریق پر اگر کسی عورت کا شوہر مفقود الخبر ہو جائے تو امام ابو حنیفہ کے نزدیک ۹۰ برس کے بعد اس کا دوسرا عقد ہو سکتا ہے مگر اور ائمہ کے نزدیک چار برس کے بعد اس کو عدت بٹھلا دیا جائے اور بعد گزرنے میعاد و عدت کے اس کا دوسرا عقد کیا جا سکتا ہے پس عندالضرورۃ شرعی جو عورت کہ پابند مذہب امام ابو حنیفہ ہے دوسرے ائمہ کے مذہب میں انتقال کر کے اس طریق پر نکاح جدید کر سکتی ہے، پر انتقال کے معنی یہ ہیں کہ اپنے کو اس مذہب میں فرض کرلے، اور ضرورت شرعی اسے کہتے ہیں کہ مثلاً کا عقد نہ ہونے پر خوف ہے کہ وہ ارتکاب زنا کرے اور اس طرح سے مبتلائے گناہ ہو جائے، یا اس طرح کی کوئی اور خرابی پیش آئے، لہذا ایسی صورت میں مطلع صاف مذہب امام احمد میں لاکر عقد جدید کر سکتا ہے۔

(۱) مولوی صاحب نے جو فرمایا کہ وہ عورت جو کہ پابند مذہب امام ابو حنیفہ ہے اس کو دوسرے مذہب میں انتقال کرنا جائز ہے، مولوی حافظ محمد جان اور مولوی فقیہ سید علی کا قول کس مذہب کے اصول سے ہے اور اصل مقصد کیا ہے۔

(۲) جو عورت کہ پابند نہ ہو کسی مذہب خاص کی رُو سے کیا کرنا چاہئے حالانکہ وہ اپنے آپ کو گروہ اسلام سے سمجھتی ہے اور دعوی مذہب حنفیہ، باوجود اس دعوی کے سماع بالمزامیر مذہب شافعیہ سے گروہ خاصان میں سے انتخاب کرکے اپنے اوپر روا رکھا ہم بریں بالائے طاق وہ گانا بجانا جس میں اشتعال نفسانی ہو اوہوس شیطانی پُر ہیں اور ہر مذہب میں وہ سراسر حرام پایا گیا اس کا بھی وہ ارتکاب کرتی ہو اور جہالت زمانہ سے رسوم گراں و کافراں برتی ہے کیسے پابندی مذہب حنفیہ ایسے پر نامزد ہو سکتی ہے، دعوی پابندی مذہب خصوصیت کا باطل ، لہذا ایسی عورت کا مذہب امام احمد میں فرض کر لینا جائز ہے یا فی الواقع اتباع ضروری، چونکہ یہاں خدمت میں جناب مولنا عبد الکافی صاحب مدظلہ العالی کے

Fatawa-e-Razvia Volume 12

It was presented, the aforementioned Maulana said: Let it be sent to His Eminence Maulana Ahmad Raza Khan, thus it is requested to be honored with an answer.

The Answer:

These are absurdities and audacity against the Sharia, and an attempt to push a Muslim into disbelief (kufr) against his will, wanting to make him an infidel by any means. The leaders of the religion (Imams) clearly state that if an ignorant person asks a question regarding the essence and attributes of Islamic beliefs, first provide the answer, rather than asking him intricate questions about essence and attributes so as to somehow make him an infidel. Our Imam-e-Azam (Radi Allahu Ta'ala Anhu) and other leaders of religion state that whoever desires for a Muslim that disbelief should proceed from him, whether he commits disbelief or not, this person has already become an infidel because he wanted a Muslim to become an infidel. It is evident from here that the great calamity which was invited for the sake of a specific trouble, remained as it was for two reasons. Firstly, it is pure falsehood and a lie and a slander against the Sharia that if a woman divorced by three pronouncements commits disbelief, there is no need for halala. If she commits disbelief, there will be a double prohibition. One was due to the three divorces, which was specifically for him, and the second is due to becoming an apostate (murtad), such that she is no longer fit for marriage with any Muslim, infidel, apostate, human, or animal in the entire world. The marriage of an apostate woman cannot be with anyone in the whole world, nor of an apostate man. Whomever it is with, it will be pure adultery, as mentioned in Al-Alamgiriya etc. (as is in Alamgiriya etc.). And if she is made an infidel and then reconverted to Islam, thinking that there is no longer a need for halala, then this is also pure base desire. Halala must be performed, and without halala, it is absolutely forbidden. One is this heavy calamity, that her marriage with the other became unlawful. If he becomes a Muslim now and thinks that there is no longer a need for halala, then this same accursed desire for halala is tied to their tail; it will never let go. So, one suffered and the goal was not achieved, and how did one suffer? That you also became an apostate and the woman also became an apostate. Inna lillahi wa inna ilayhi raji'un (Indeed, we belong to Allah, and indeed to Him we shall return). We do not know of any book 'Irshad al-Talibin' by Sayyid Ali Tirmidhi, and even if there were, the command is not of Ali Tirmidhi but of Muhammad Madani (peace and blessings of Allah be upon him). (There is much discussion on this detail, but there is no need for further prolongation. If there is someone in the house, one

word is enough (If there is some sense in the intellect, even a hint of one letter is sufficient)). And Allah Ta'ala knows best.

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 12

प्रस्तुत किया गया, उक्त मौलाना ने फ़रमाया: हुज़ूर में मौलाना अहमद रज़ा खाँ साहब के भेजा जाए, लिहाज़ा मुतमादी (अनुरोध) कि जवाब से सरफ़राज़ फ़रमाया जाए।

अल-जवाब (उत्तर):

ये बेहूदगीयाँ हैं और शरीअत पर जुर्रत है और एक मुसलमान को ज़बरदस्ती कुफ़्र (अधर्म) में धकेलना और ये चाहना कि जिस तरह भी हो उसे काफ़िर बना लें। दीन के इमाम तो यह स्पष्ट फ़रमाते हैं कि जाहिलों (अज्ञानी लोगों) से अगर कोई इस्लामी अक़ाइद (धार्मिक विश्वासों) की ज़ात व सिफ़ात के मुतल्लिक पूछे, तो जवाब पहले बता दो, न कि उससे ज़ात व सिफ़ात के पेचीदा सवाल पूछे जाएँ कि किसी तरह उसे काफ़िर बना लिया जाए। हमारे इमाम-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) और अन्य अइम्मा-ए-दीन फ़रमाते हैं कि जो किसी मुसलमान के बारे में यह चाहे कि उससे कुफ़्र सरज़द (घटित) हो, तो वह कुफ़्र करे या न करे, यह व्यक्ति अभी काफ़िर हो गया क्योंकि उसने एक मुसलमान का काफ़िर होना चाहा। यहाँ से यह ज़ाहिर हुआ कि जिस मुसीबत के वास्ते यह बड़ी बला मोल ली गई थी, वह दो कारणों से वैसी ही रही। एक तो यह कि यह कोरा झूठ और शरीअत पर बोहतान है कि तीन तलाक़ वाली महिला अगर कुफ़्र करे तो हलाला की ज़रूरत नहीं रहती। अगर वह कुफ़्र करेगी तो दुगुनी हुरमत (निषेध) हो जाएगी, एक तो तीन तलाक़ की थी जो ख़ास उसी के लिए थी, और दूसरी मुर्तद (धर्मत्यागी) होने की हुई कि अब वह दुनिया भर में किसी मुसलमान, किसी काफ़िर, किसी मुर्तद, किसी आदमी, किसी जानवर के निकाह के क़ाबिल न रही। मुर्तदा का निकाह पूरी दुनिया में किसी से नहीं हो सकता, न ही मुर्तद का। जिससे भी होगा, वह निरा व्यभिचार होगा, जैसा कि आलमगीरिया आदि में है। और अगर उसे काफ़िरा बनाकर फिर मुसलमान किया जाए और यह समझा जाए कि अब हलाला की ज़रूरत न रही, तो यह भी निरा हवस है। हलाला ज़रूर करना होगा और बिना हलाला के कतई हराम है। एक तो यह भारी मुसीबत हुई कि दूसरे से उसका निकाह हलाल न रहा, अगर अब मुसलमान हुआ और यह समझे कि अब मुझे हलाला की ज़रूरत न होगी, तो यह वही मलऊन हवस है, हलाला उनकी दुम से बँधा हुआ है, हरगिज़ पीछा न छोड़ेगा। तो खाया भी और मुसीबत भी टली नहीं, और खाया भी कैसा कि आप भी मुर्तद और औरत भी मुर्तद। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन (बेशक हम अल्लाह के लिए हैं और उसी की तरफ लौटने वाले हैं)। हमें सैयद अली तिरमिज़ी की कोई किताब 'इरशाद-उत-तालिबीन' मालूम नहीं है, और हो भी तो हुक्म अली तिरमिज़ी का नहीं बल्कि मुहम्मद मदनी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) का है।

(इसकी तफ़सील में बहुत बात है मगर इसके बाद ज़्यादा लंबी बात की ज़रूरत नहीं। घर में अगर कोई है तो एक हर्फ़ ही काफ़ी है (अगर अक़्ल के घर में कुछ समझ हो तो एक अक्षर का इशारा भी काफ़ी है))। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है)।

पृष्ठ 403 / 688

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

پیش کیا گیا مولانا موصوف نے فرمایا: حضور میں مولانا احمد رضا خاں صاحب کے بھیجا جائے لہٰذا متمادی کہ جواب سے سرفراز فرمایا جائے۔

الجواب:

یہ مہملات ہیں اور شریعت پر جرات اور ایک مسلمان کو خواہی نخواہی کفر میں دھکیلنا اور یہ چاہنا کہ جس طرح بنے اسے کافر کرلیں، ائمہ دین تو یہ تصریح فرماتے ہیں کہ جاہلوں سے اگر کوئی مسئلہ ذات و صفاتِ اسلامیہ کے متعلق پوچھو تو جواب پہلے بتا دو نہ کہ اس سے دقیق مسائل ذات و صفات پوچھے جائیں کہ کسی طرح اسے کافر بنالیا جائے، ہمارے امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ وغیرہ ائمہ دین فرماتے ہیں جو کسی مسلمان کی نسبت یہ چاہے کہ اس سے کفر صادر ہو وہ کفر کرے یا نہ کرے یہ ابھی کافر ہوگیا کہ مسلمان کا کافر ہونا چاہا اور یہاں سے ظاہر ہوا کہ جس مصیبت کے واسطے یہ بلائے عظیم اوڑھنی چاہی وہ دو وجہ سے بدستور رہی ایک تو یہ محض کذب اور جھوٹ اور شریعت پر افتراء ہے کہ تین طلاق کی مطلقہ اگر کفر کرے تو حلالہ کی حاجت نہیں اگر کفر کرے گی تو دوہری حرمت ہو گئی ایک تو تین طلاق کی تھی وہ خاص اسی کے لئے تھی اور دوسری مرتد ہونے کی ہوئی کہ اب وہ جہان بھر میں کسی مسلمان کسی کافر کسی مرتد کسی آدمی کسی جانور کے نکاح کے قابل نہ رہی، مرتدہ کا نکاح جہان بھر میں کسی سے نہیں ہوسکتا، نہ مرتد کا جس سے ہوگا زنائے محض ہوگا کما فی العلمگیریہ وغیرہا (جیسا کہ عالمگیریہ وغیرہا میں ہے ت) اور اگر اسے کافرہ کرکے پھر مسلمان کیا جائے اور یہ سمجھا جائے کہ اب حلالہ کی حاجت نہ رہی تو یہ بھی محض ہوسِ رجیم ہے حلالہ ضرور کرنا ہوگا اور بغیر حلالہ قطعاً حرام، ایک تو یہ بھاری مصیبت ہوئی دوسرے سے اس کا نکاح حلال نہ رہا، اگر

اب مسلمان ہوا اور یہ سمجھے کہ اب مجھے حلالہ کی حاجت نہ ہوگی تو یہ وہی ہوس ملعون حلالہ ان کی دُم سے بندھا ہوا ہے ہرگز پیچھا نہ چھوڑے گا، تو کھایا اور کال بھی نہ کٹا، اور کھایا بھی کیسا کہ آپ بھی مرتد عورت بھی مرتد، انّا للہ راجعون (بیشک ہم اللہ تعالی کے لئے ہیں اور اسی کی طرف لوٹنے والے ہیں۔ت) سید علی ترمذی کی کوئی کتاب ارشاد الطالبین ہمیں نہیں معلوم، اور ہو بھی تو حکم، علی ترمذی کا نہیں محمد مدنی کا ہے صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم (اس کی تفصیل میں کلام کثیر ہے مگر اس کے بعد زیادہ تطویل کی حاجت نہیں۔ درخانہ اگر کس است یک حرف بس است (اگر خانہ عقل میں کچھ سوجھ ہو تو اشارہ ایک حرف بھی کافی ہے۔ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

Fatawa Ridawiyya Volume 12

Issue 184: From Mauza Gilani, Post Office Bargh, Railway Station Lakhisarai, sent by Zamirul Hasan Sahab, 21 Shawwal 1315 AH.

A request to all the scholars of India is that we have been hearing from our elders that whether three divorces are given in one sitting or different sittings, it will be considered a severe (Mughallazah) divorce. However, currently, people have come up with this issue that if three divorces are given in one sitting, it will be revocable (Raj'i). Those poor people who support Miskin Umar are misleading others.

Answer: 12

The respondent is correct. In reality, the victorious school of thought, the way of the majority, and the verdict of the four Imams (may Allah be pleased with them) is that in the mentioned case, three divorces will occur. The eminent Imams and great scholars, may Allah reward their efforts, have completed the discussion. Now, following the corrupt path of Ibn Qayyim of the Zahiri school, no one will oppose the great majority of the Ummah and the clear truth except for him who has made a fool of himself. And the one who utters disrespectful words against the dignity of the Commander of the Faithful, the one who causes anger to the hypocrites, the leader of the just, our Master Faruq-e-A'zam (may Allah be pleased with him), and calls his supporters misguided, is an open Rafidhi (heretic). May Allah humiliate them. "And those who have wronged are going to know to what [kind of] return they will be returned." (Allah will humiliate them, and soon the wrongdoers will know to which side they turn.) And Allah knows best.

Issue 185: From Rampur near Moradabad, Mohalla Mulla Zarif, sent by Maulvi Riyasat Hussain Khan Sahab, 4 Ramadan 1315 AH.

To the noble presence of Maulvi Sahab, may his blessings continue. After the Sunnah greeting, the request is that for the answer to the issue, it is extremely necessary, if quickly... To the noble presence of Maulvi Sahab, may his blessings continue. After the Sunnah greeting, the request of a distressed person is that an issue is extremely necessary...

Footnote 12: This answer belonged to Maulvi Abul Nasr Gilani. These few words were written in confirmation of it. 12 (M) Footnote: This answer is exactly the same answer given by Abu Nasr Gilani. These few words have been written regarding its correctness. 12 (T)

फतावा रिज़विया खंड बारहवाँ

मसला १८४: मौज़ा गिलानी, डाकखाना बरघ, रेलवे स्टेशन लखीसराय से, प्रेषक ज़मीरुल हसन साहब, २१ शव्वाल १३१५ हिजरी।

तमाम भारतीय विद्वानों की सेवा में निवेदन है कि हम बुज़ुर्गों से लगातार सुनते आ रहे हैं कि तीन तलाक़ एक ही बैठक में दी जाए या अलग-अलग बैठकों में, वह 'मुग़ल्लज़ा' (अपरिवर्तनीय) तलाक़ मानी जाएगी। लेकिन वर्तमान में, लोगों ने यह मसला निकाला है कि यदि एक बैठक में तीन तलाक़ दी जाए तो वह 'रजई' (वापसी योग्य) होगी। जो लोग बेचारे मिस्कीन उमर का समर्थन कर रहे हैं, वे लोगों को गुमराह कर रहे हैं।

उत्तर: १२

उत्तरदाता सत्य पर है। वास्तव में, विजयी मत और बहुमत का मार्ग तथा चारों इमामों (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) का कथन यही है कि उक्त स्थिति में तीन तलाक़ें प्रभावी होंगी। महान इमामों और प्रसिद्ध विद्वानों ने (अल्लाह उनके प्रयासों को स्वीकार करे) इस चर्चा को पूर्ण कर दिया है। अब ज़ाहिरी मज़हब के इब्न क़य्यिम के भ्रष्ट मार्ग का अनुसरण करते हुए, उम्मत के बड़े समूह और स्पष्ट सत्य का विरोध वही करेगा जिसने स्वयं को मूर्ख बनाया है। और जो विश्वासियों के अमीर, मुनाफ़िक़ों के क्रोध, न्यायियों के इमाम हज़रत सैय्यदना फ़ारूक़-ए-आज़म (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) की महान शान में गुस्ताखी भरे शब्द कहेगा और उनके समर्थकों को गुमराह कहेगा, वह खुला राफ़ज़ी (विधर्मी) है। अल्लाह उन्हें अपमानित करे। "और वे जिन्होंने ज़ुल्म किया है, शीघ्र ही जान लेंगे कि वे किस ठौर पर लौटेंगे।" (अल्लाह उन्हें ज़लील करे, और ज़ालिम लोग जल्द ही जान लेंगे कि वे किस ओर पलटते हैं।) और अल्लाह ही सबसे बेहतर जानता है।

मसला १८५: रामपुर से मुरादाबाद के पास मोहल्ला मुल्ला ज़रीफ़ से, प्रेषक मौलवी रियासत हुसैन ख़ान साहब, ४ रमज़ान १३१५ हिजरी।

श्रीमान मौलवी साहब की सेवा में, उनकी कृपा बनी रहे। सुन्नत सलाम के बाद निवेदन है कि मसले के जवाब के लिए अत्यंत आवश्यक है, यदि शीघ्र... श्रीमान मौलवी साहब की सेवा में, उनकी कृपा बनी रहे। सुन्नत सलाम के बाद एक परेशान हाल व्यक्ति का निवेदन है कि एक मसला अत्यंत आवश्यक है...

फुटनोट १२: यह मौलवी अबुल नसर गिलानी का जवाब था। ये दो शब्द इसकी पुष्टि में लिखे गए थे। १२ (म) फुटनोट: यह जवाब हुबहू वही जवाब है जो अबू नसर गिलानी ने दिया है। ये दो शब्द इसकी सत्यता के संबंध में लिखे गए हैं। १२ (त)

अल-क़ुरआन अल-करीम २६/२२७ पृष्ठ संख्या ४०४, कुल ६८८

فتاوی رضویہ جلددوازدہم

مسئلہ ۱۸۴: از موضع گیلانی ڈاکخانہ برگھ ریلوے اسٹیشن لکھی سرائے مرسلہ ضمیر الحسن صاحب ۲۱ شوال ۱۳۱۵ھ

تمامی علمائے ہند کی خدمت میں گزارش ہے کہ برابر بزرگان سے سنتے چلے آتے تھے کہ تین طلاق ایک جلسے میں دی جائے یا جلسات متفرقہ میں، طلاق مغلظہ پڑے گی، لیکن بالفعل لوگوں نے یہ مسئلہ نکالا ہے کہ اگر جلسے میں تین طلاق دی جائے رجعی پڑے گی، جولوگ بیچارے مسکین عمر کی تائید کرتے ہیں گمراہ کرتے ہیں۔

الجواب: ۱۲

المجیب مصیب فی الواقع مذہب منصور و مشرب جمہور و قول ائمہ اربعہ رضی اللہ تعالیٰ عنہم یہی ہے کہ صورت مذکورہ میں تین طلاقیں واقع ہوں گی، ائمہ کرام و علمائے اعلام شکر اللہ تعالیٰ مساعیہم بحث تمام فرما چکے، اب باتباع ابن قیم ظاہری المذہب فاسد المشرب سوادِ اعظم امت و حق واضح کی مخالفت نہ کرے گا الّا من سفہ نفسہ (مگر وہ جس نے اپنے آپ کو بیوقوف بنایا ہو ت) اور امیر المومنین غیظ المنافقین امام العادلین حضرت سیدنا فاروق اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی شان اجل دارفع میں کلمات گستاخی بکنے اور ان کے موید کو گمراہ کہنے والا کھلا رافضی ہے خذلہم اللہ تعالیٰ، وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوٓا اَیَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ (اللہ تعالیٰ ان کو ذلیل کرے ، اور عنقریب ظالم لوگ جان لیں گے وہ کس طرف پلٹتے ہیں۔ ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۸۵: از رامپور متصل مراد آباد محلہ ملا ظریف مرسلہ مولوی ریاست حسین خان صاحب ۴ رمضان ۱۳۱۵ھ

بخدمت شریف جناب مولوی صاحب دامت فیوضہم بعد سلام مسنون التماس اینکہ برائے جواب مسئلہ اشد ضرور تست اگر بزود بخدمت شریف جناب مولوی صاحب دامت فیوضہم بعد سلام مسنون

پریشان حال کا التماس یہ ہے کہ ایک مسئلہ کا اشد ضروری

۱۲: باوجواب مولوی ابوالنصر گیلانوی بود این دوحرف در تصویبش نوشته شد ۱۲ (م) یہ جواب بعینہ وہی جواب ہے جو ابو نصر گیلانوی نے دیا ہے یہ دو حرف اس کی درستگی سے متعلق لکھے گئے ہیں ۱۲ (ت)

Fatawa Ridawiyya Volume Twelve

[Section 1: Request for Clarification] (Persian Text): Please be so kind as to provide a written response; it would be in keeping with your benevolence and excellence. Many people will offer prayers for you. The resolution between the parties in this matter has been established through your writing. The text of 'Khulasat al-Tafasir' quoted from 'Tafsir Ahmadi' is as follows: (Urdu Translation): It would be a great kindness if you could write back quickly; this would not be far from your grace and benevolence, and people will pray for you greatly. The decision between the parties in this matter has been made based on your writing. The passage from 'Khulasat al-Tafasir' quoted from 'Tafsir Ahmadi' is this:

(Urdu Parenthetical Note): (Since the number of divorces was not fixed in the pre-Islamic era of ignorance, people would issue as many divorces as they wished. It so happened that a woman came to the Mother of the Believers, Aisha (may Allah be pleased with her), and complained about her husband's repeated revocations. He would divorce her, and just as her waiting period ('iddah) was ending, he would take her back, then divorce her again, thus keeping her suspended. Lady Aisha presented the matter to the Prophet (peace be upon him), and Allah Almighty revealed the verse: "Divorce is twice..." etc.)

(Persian Text): Due to the Urdu [translation/understanding], the parties could not agree on a single point. Had the original text of 'Tafsir Ahmadi' been present, it would have been possible to reach a decision. Now, I hope your honor will favor us by writing down the text from the reference books and provide a verdict. Peace be upon you. (Urdu Translation): Due to the Urdu, the parties could not agree on one issue. If the original text of 'Tafsir Ahmadi' were available, it would have been decidable. Now it is hoped that you will honor us by writing the text from the books and give a decision. Peace be upon you. (T)

[Section 2: The Legal Question] (Persian Text): Zaid gave his wife one revocable divorce ('talaq raj'i') and took her back during the 'iddah'. After living together for years, he again gave a revocable divorce after two years and took her back during the 'iddah'. After keeping her at home for three years, he again gave a revocable divorce. Can Zaid now take the said wife back into marriage without 'halala' (a second marriage to another man) or not? State the ruling and be rewarded. (Urdu Translation): Zaid gave his wife one revocable divorce and took her back during the waiting period. After living together for two years, he again gave a revocable divorce

and took her back during the waiting period. After keeping her at home for three years, he gave another divorce. Now, can Zaid bring the said wife back into his marriage without a new person (halala) and marriage or not? State the ruling and be rewarded. (T)

[Section 3: The Answer] The Answer: (Persian Text): It is forbidden (haram) according to clear scriptural text (Nass) and consensus (Ijma) until she marries another husband and he tastes her [consummation], and either he divorces her... (Urdu Translation): Marriage to another person and then after intercourse, there is a divorce, or the second person dies and her...

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

[भाग 1: स्पष्टीकरण के लिए अनुरोध] (फारसी): कृपया अपनी उदारता से इसे लिख भेजें; यह आपकी कृपा और परोपकार से दूर नहीं होगा। बहुत से लोग आपके लिए दुआ करेंगे। इस मामले में दोनों पक्षों के बीच फैसला आपके लेखन से तय हुआ है। 'तफ़्सीर अहमदी' से उद्धृत 'खुलासत-उत-तफ़ासीर' का पाठ इस प्रकार है: (उर्दू): है, अगर जल्दी तहरीर फ़रमा दें तो मेहरबानी होगी, यह आपकी मेहरबानी और एहसान से बईद (दूर) न होगा, और लोग बहुत दुआएं देंगे। इस बारे में फ़रीक़ैन (पक्षों) में फ़ैसला आपकी तहरीर से हुआ है, और तफ़्सीर अहमदी से मंकूल 'खुलासत-उत-तफ़ासीर' की इबारत यह है:

(उर्दू कोष्ठक): (चूंकि अज्ञानता के काल में तलाक की संख्या निर्धारित नहीं थी, वे जितनी मर्जी तलाक देते थे। यहाँ तक कि एक महिला उम्मुल मोमिनीन आयशा के पास आई और अपने पति द्वारा बार-बार 'रुजू' (वापसी) करने की शिकायत की। यानी वह तलाक देता और जब इद्दत पूरी होने वाली होती तो रुजू कर लेता, फिर तलाक देता। इस तरह उसने उसे अधर में छोड़ रखा था। हज़रत सिद्दीक़ा ने इसे हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की बारगाह में पेश किया, तो अल्लाह तआला ने आयत नाज़िल फ़रमाई: "तलाक दो बार है..." आदि।)

(फारसी): उर्दू की वजह से दोनों पक्ष एक मसले पर सहमत नहीं हो सके। अगर 'तफ़्सीर अहमदी' की मूल इबारत (पाठ) होती तो फैसला मुमकिन होता। अब आपसे उम्मीद है कि हुज़ूर किताबों की इबारत लिखकर हमें सम्मानित करेंगे और फैसला सुनाएंगे। वसलाम। (उर्दू): उर्दू की वजह से फ़रीक़ैन एक मसले पर मुत्तफ़िक़ (सहमत) न हो सके। अगर 'तफ़्सीर अहमदी' की असल इबारत होती तो फ़ैसला के क़ाबिल होती। अब आप से उम्मीद कि जनाब कुतुब (किताबों) की इबारत तहरीर फ़रमा कर सरफ़राज़ फ़रमाएंगे, वसलाम। (त)

[भाग 2: कानूनी प्रश्न] (फारसी): ज़ैद ने अपनी पत्नी को एक तलाक-ए-रजई दी और इद्दत के दौरान रुजू कर लिया। सालों साथ रहने के बावजूद, दो साल बाद उसने फिर एक तलाक-ए-रजई दी और इद्दत में रुजू कर लिया। तीन साल घर में रखने के बाद, उसने फिर एक तलाक-ए-रजई दी। अब क्या ज़ैद उक्त पत्नी को बिना 'हलाला' के फिर से निकाह में ला सकता है या नहीं? बयान करें और पुण्य कमाएं। (उर्दू): ज़ैद ने अपनी बीवी को एक तलाक-ए-रजई दी, और इद्दत में रुजू कर लिया, और दो साल गुज़ारने के बाद फिर एक तलाक-ए-रजई दी और इद्दत में रुजू कर लिया। तीन साल घर रखने

के बाद फिर एक तलाक दी। अब ज़ैद मज़कूरा बीवी को नए शख़्स से निकाह और हलाला के बग़ैर निकाह में दोबारा ला सकता है या नहीं? बयान करो और अज्र पाओ। (त)

[भाग 3: उत्तर] अल-जवाब: (फारसी): यह कुरान के स्पष्ट पाठ (नस्स) और आम सहमति (इज्मा) के अनुसार तब तक हराम है जब तक कि वह किसी दूसरे पति से निकाह न कर ले और वह उसका स्वाद न चख ले [संभोग], और वह उसे तलाक दे दे... (उर्दू): दूसरे शख़्स से निकाह और फिर जिमा (संभोग) के बाद तलाक हो या दूसरा शख़्स फ़ौत (मृत) हो जाए और उसकी...

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

تحریر فرمودہ عنایت فرمائیند از عنایت و احسن بعید بخواہد شد | ہے، اگر جلدی تحریر فرما دیں تو مہربانی ہوگی، یہ آپ کی مہربانی و مردمان بسیار دعا سازند فیصلہ دریں باب درمیان فریقین | اور احسان سے بعید نہ ہوگا، اور لوگ بہت دعائیں دیں بتتحریر آنجناب قرار یافتہ است و عبارت خلاصۃ التفاسیر منقولہ | گے، اس بارے میں فریقین میں فیصلہ آپ کی تحریر سے ہوا از تفسیر احمدی | ہے، اور تفسیر احمدی سے منقول خلاصۃ التفاسیر کی عبارت یہ ہے: (چونکہ عدد طلاق کے جاہلیت میں مقرر نہ تھے جس قدر چاہتے طلاق دیتے یہاں تک کہ ایک عورت ام المؤمنین عائشہ کے پاس آئی اور اپنے شوہر کے بار بار رجوع کرنے کی شکایت کی یعنی طلاق دی جب عدت پوری ہونے آئی رجوع کیا پھر طلاق دی یو نہی اسے معلق چھوڑ دیا تھا حضرت صدیقہ نے حضور میں عرض کیا حق سبحانہ و تعالیٰ نے نازل فرمایا الطلاق مرتان الخ) بباعث اردو قابل تسلیم فریقین در یک مسئلہ ہم قرار نیافتہ۔ اگر | اردو کی وجہ سے فریقین ایک مسئلہ پر متفق نہ ہو سکے اگر تفسیر عبارت تفسیر احمدی مرقوم بودی قابل فیصلہ شدے اکنوں | احمدی کی اصل عبارت ہوتی تو فیصلہ کے قابل ہوتی، اب آپ امید دادم کہ آنحضور بتتحریر عبارت کتب سرفراز نمودہ فیصلہ | سے امید کہ جناب کتب کی عبارت تحریر فرما کر سرفراز فرمایند، والسلام | فرمائیں گے، والسلام (ت) زید زوجہ خود را یک طلاق رجعی دادہ در عدت رجوع کردہ | زید نے اپنی بیوی کو ایک طلاق رجعی دی، اور عدت میں باوجود سال زندگانی کرد باز یک طلاق رجعی دادہ عدت رجوع | رجوع کر لیا، اور دو سال گزارنے کے بعد پھر ایک طلاق رجعی کردہ سہ سال اور ابخانہ خود داشت بعدہ بازدیک طلاق رجعی داد | دی اور عدت میں رجوع کر لیا، تین سال گھر رکھنے کے بعد پھر اکنوں زید زوجہ مذکورہ را بلا تحلیل تنے مستعار در نکاح خود | ایک طلاق

دی اب زید مذکورہ بیوی کو نئے شخص سے نکاح اور تواں آورد یا نہ؟ بینوا توجروا | حلالہ کے بغیر نکاح میں دوبارہ لاسکتا ہے یا نہیں؟ بیان کرو اور اجر پاؤ۔ (ت) الجواب: حرام ست بالنص والاجماع تانکاح شوہرے دیگر در آید و شہد | دوسرے شخص سے نکاح اور پھر جماع کے بعد طلاق ہو یا دوسرا اور اذوق نماید واو طلاقش | شخص فوت ہو جائے اور اس

Fatawa Razawiya, Volume Twelve

...give [it] and her iddat (waiting period) ends. Allah Almighty says, "...with kindness" [Quran 2:229]. Without the completion of the iddat, it is forbidden (haram) for Zaid to remarry the aforementioned wife. This prohibition is established by the text of the Quran and consensus (ijma). Allah Almighty says: "Divorce is twice. Then [after that], either keep [her] in an acceptable manner or release [her] with good treatment" until His words "And if he has divorced her [for the third time], then she is not lawful to him afterward until [after] she marries a husband other than him. And if he [the latter] divorces her, there is no blame upon the two of them if they return to each other" [Quran 2:229-230]. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "You will not be lawful for your first husband until the second one tastes your sweetness and you taste his sweetness" [Hadith]. In 'al-Ma'alim' [it is narrated] from Urwah: "In the beginning, people used to divorce without restriction or number. A man would divorce his wife, and when her iddat was nearly finished, he would take her back, then divorce her again, and take her back again, intending to harm her. Then this verse was revealed: 'Divorce is twice', meaning the divorce after which a man has the right to take her back is twice. So when he divorces her a third time, she is no longer lawful."

This prohibition is established by the Quranic text and consensus. Allah Almighty said, "If you have given two divorces, then either keep the wife with kindness or let her go with favor." If a third divorce is given, the divorced wife will not be lawful thereafter until that divorced woman marries someone else. Then, if he divorces her, there is no harm in the two returning [to each other]. The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said, "O woman, you will not be lawful for the first husband until you taste the pleasure of the second husband and he tastes yours, meaning intercourse." And in Ma'alim-ut-Tanzil it is narrated from Urwah bin al-Zubayr (may Allah be pleased with him) that in the beginning, people used to give countless divorces, and a man would divorce his wife and when she was close to completing her waiting period, he would divorce her again, and he would do this repeatedly, and the purpose was to trouble the wife. So upon this incident, the noble verse of the Holy Quran 'Divorce is twice' was revealed, meaning the divorce after which a husband can take back his wife consists of two divorces. So when he gives the third divorce, now from another...

1. Al-Quran al-Karim 2/229

2. Al-Quran al-Karim 2/230
3. Sahih Bukhari, chapter "Why should you forbid what Allah has made lawful for you", Qadimi Kutub Khana Karachi 2/941 Page 406 of 688

फतावा रजविया, जिल्द बारहवीं

...दे दे और उसकी इद्दत पूरी हो जाए। अल्लाह तआला ने फरमाया: 'भलाई के साथ' [कुरान 2:229]। इद्दत पूरी हुए बिना ज़ैद का उक्त पत्नी से दोबारा निकाह हराम है। यह हराम होना कुरान की स्पष्ट आयत और इज्मा (आम सहमति) से साबित है। अल्लाह तआला ने फरमाया: 'तलाक दो बार है, फिर या तो नेकी के साथ रोक ले या अहसान के साथ छोड़ दे' अल्लाह अज़्वजल के इस फरमान तक: 'फिर अगर उसने उसे (तीसरी बार) तलाक दे दी तो उसके बाद वह उसके लिए हलाल नहीं होगी जब तक कि वह उसके अलावा किसी और शौहर से निकाह न कर ले। फिर अगर वह (दूसरा शौहर) उसे तलाक दे दे, तो उन दोनों पर कोई गुनाह नहीं कि वे आपस में रुजू कर लें' [कुरान 2:229-230]। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फरमाया: 'तुम अपने पहले शौहर के लिए हलाल नहीं होगी जब तक कि दूसरा (शौहर) तुम्हारी शीरीनी (मिठास) न चख ले और तुम उसकी शीरीनी न चख लो' [हदीस]। और 'अल-आलम' में उर्वा से रिवायत है: 'शुरुआत में लोग बिना किसी गिनती या तादाद के तलाक दिया करते थे। एक आदमी अपनी बीवी को तलाक देता, और जब उसकी इद्दत खत्म होने के करीब होती तो वह उससे रुजू कर लेता, फिर उसे फिर से तलाक दे देता और फिर रुजू कर लेता, उसका मकसद उसे तकलीफ पहुँचाना होता था। तब यह आयत नाजिल हुई: "तलाक दो बार है", यानी वह तलाक जिसके बाद मर्द को रुजू करने का हक है वह दो बार है। चुनांचे जब वह तीसरी बार तलाक दे दे तो वह हलाल नहीं रहती'।

यह हुरमत नस-ए-कुरान और इज्मा से साबित है। अल्लाह तआला ने फरमाया "दो तलाकें दी हैं तो बीवी को भलाई करते हुए रोक ले या अहसान करते हुए छोड़ दे।" अगर तीसरी तलाक दी तो मुतलका (तलाकशुदा) बीवी उसके बाद हलाल न होगी तावक्तिया कि वह मुतलका किसी दूसरे शख्स से निकाह न कर ले, पस अगर उसने तलाक दे दी तो दोनों पर रुजू करने में कोई हर्ज नहीं है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया "ऐ औरत तू पहले खाविंद के लिए हलाल न होगी यहाँ तक कि तू दूसरे खाविंद का और वह तेरा मज़ा न चख ले यानी जिमा (संभोग) न कर ले"। और माआलिम-उत-तंज़ील में उर्वा बिन जुबैर रज़िअल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि इब्तिदा में लोग बे-हिसाब और ला-तादाद तलाकें दिया करते थे, और मर्द बीवी को तलाक देता तो जब इद्दत पूरा होने के करीब होती तो फिर तलाक देता और यूँही बार बार करता और मक़सद बीवी को परेशान करना होता था, तो इस वाकया पर कुरान पाक की आयत-ए-करीमा 'तलाक दो बार है'

नाजिल हुई, यानी वह तलाक जिसके बाद खाविंद रुजू कर सकता है, दो तलाकें हैं, तो जब तीसरी तलाक दे दे तो अब दूसरे से...

1 अल-कुरान अल-करीम 2/229 2 अल-कुरान अल-करीम 2/230 3 सहीह बुखारी, बाब "तुम अल्लाह की हलाल की हुई चीज़ को अपने ऊपर हराम क्यों करते हो", कदीमी कुतुब खाना कराची 2/941 पेज 406 / 688

فتاوٰی رضویہ، جلد دوازدہم

دہد میردوعدتتش فراغ پذیرد قال تعالٰی بِاِحْسَانٍ ط کی عدت پوری ہو جانے کے بغیر دوبارہ زید کا مذکورہ بیوی سے الطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۪ فَاِمْسَاكٌ بِمَعْرُوفٍ أَوْ تَسْرِيحٌ الٰی قولہ عزوجل نکاح حرام ہے یہ حرمت نص قرآن اور اجماع سے ثابت فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُ ط ہے۔ اللہ تعالٰی نے فرمایا "دو طلاقیں دی ہیں تو بیوی کو بھلائی فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يَتَرَاجَعَا الآیۃ، قال رسول کرتے ہوئے روک لے یا احسان کرتے ہوئے چھوڑ دے۔ اللہ صلی تعالٰی علیہ وسلم لاتحلین لزوجك الاول تا۔ اگر تیسری طلاق دی تو مطلقہ بیوی اس کے بعد حلال نہ ہوگی حتی یذوق الاخر عسیلتك وتذوقی عسیلته ۳۔ وفی تاوقتیہ وہ مطلقہ کسی دوسرے شخص سے نکاح نہ کرلے، پس العالم عن عروۃ کان الناس فی الابتداء یطلقون من اگر اس نے طلاق دے دی تو دونوں پر رجوع کرنے میں کوئی غیر حصر ولا عدد وکان الرجل یطلق امرأته فأذا حرج نہیں ہے الآیۃ۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے قاربت انقضاء عدتها راجعها ثم طلقها كذلك ثم فرمایا اے عورت تو پہلے خاوند کیلئے حلال نہ ہوگی حتی کہ تو راجعها یقصد مضارتها فنزلت هذه الآیۃ الطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ دوسرے خاوند کا اور وہ تیرا مزہ نہ چکھ لے یعنی جماع نہ یعنی الطلاق الذی یملك الرجعة عقیبه مرتان فاذا کرلے"۔ اور معالم التنزیل میں عروہ بن الزبیر رضی اللہ طلق ثلثاً فلا تحل تعالٰی عنہ سے مروی ہے کہ ابتداء میں لوگ بے حساب اور لاتعداد طلاقیں دیا کرتے تھے، اور مرد بیوی کو طلاق دیتا تو جب عدت پورا ہونے کے قریب ہوتی تو پھر طلاق دیتا اور یونہی بار بار کرتا اور مقصد بیوی کو پریشان کرنا ہوتا تھا، تو اس واقعہ پر قرآن پاک کی آیہ کریمہ الطلاق مرتان آیہ نازل ہوئی، یعنی وہ طلاق جس کے بعد خاوند رجوع کر سکتا ہے، دو طلاقیں ہیں، تو جب تیسری طلاق دے دے تو اب دوسرے سے

1 القرآن الكريم ۲۲۹/۲ 2 القرآن الكريم ۲۳۰/۲ 3 صحيح بخارى باب لم تحرم ما احل الله لك قديمى كتب خانه كراچي ۹۴۱/۲ صفحہ 406 از 688

Fatawa Rizvia Volume 12

[Arabic Text Box]: ...except after marriage to another husband. [Footnote 1] The matter is clearer than needs explanation. And Allah (Glorified and Exalted is He) knows best, and His knowledge (Exalted is His glory) is most complete and most wise.

[Urdu Text Box]: It is not lawful for him without marriage, and the matter does not need explanation. (T) And Allah Almighty (Glorified and Exalted is He) knows best, and His knowledge (Exalted is His glory) is most complete and most wise.

Issue 187: From District Khandesh, Western Part, Taluka Taloda, Post Office Lagar Mandha, Basostan Kathi, Place Akalwa, sent by Muhammad Ismail Sahib, 12 Jumada al-Ula 1336 AH.

(1) Regarding 'Halala', a person performed a marriage and did not pay the full right (dowry) of the first wife. There is no Qazi (judge) there; the people of his own house acted as Qazi, lawyer, and witness. The person who first married divorced her happily, and the woman took the divorce happily. After ten to fifteen days, that same woman and the same husband started living together in one place. That person, after giving the divorce, kept her for three months, then after three months performed 'Halala'. The person who performed 'Halala', his wife did not give consent. To get consent, he beat his wife, so the wife gave consent by force. Is this 'Halala' correct or not?

(2) Another man ran away with a woman; she had two daughters. He kept that woman for two years without marriage. After two years, when the boys grew up, he left the woman and started keeping the daughter. From this person's forbidden (illicit) relationship, a girl and a boy were born. So the village elders here excluded them from the community. Marriage has not taken place with that girl either. After twelve months, half of the community members took him back, and those same people who used to say it's forbidden to look at his face, now eat and drink with him. What does the religious ruling (Masla) say about this? Here people mock Islam, and no one thinks about what our condition will be if we ridicule Islam. What is the statement of the Sharia of the Prophet (Peace and blessings of Allah be upon him) on this?

Answer: (1) The ruling of Sharia is that a person who has given three divorces to his wife, whether all at once or over years—like giving one and then reconciling (Ruju), then giving the second and reconciling, and then giving the third—in both cases...

1 Ma'alim al-Tanzil on the margin of Tafsir al-Khazin, interpretation of the verse 'Divorce is twice', Mustafa al-Babi, Egypt, 1/22.

फ़तावा रिज़विया जिल्द 12

[अरबी पाठ बॉक्स]: ...सिवाय दूसरे पति से निकाह के बाद [पादलेख 1]। मसला इतना स्पष्ट है कि इसे और स्पष्ट करने की ज़रूरत नहीं है। और अल्लाह (महिमा और महानता वाला) बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान (उसकी शान बुलंद हो) सबसे पूर्ण और सबसे हिकमत वाला है।

[उर्दू पाठ बॉक्स]: निकाह के बिना उसके लिए हलाल नहीं है, और मसला स्पष्टीकरण का मोहताज नहीं। (त) और अल्लाह तआला (महिमा और महानता वाला) बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान (उसकी शान बुलंद हो) सबसे पूर्ण और सबसे हिकमत वाला है।

मसला 187: जिला खानदेश, पश्चिम भाग, तालुका तलोदा, डाकघर लगड़ मंधा, बसोस्तान काठी, स्थान अकलवा, प्रेषक मुहम्मद इस्माइल साहिब, 12 जमादी-उल-अव्वल 1336 हिजरी।

(1) 'हलाला' के बारे में एक व्यक्ति ने निकाह किया और पहली बीवी का पूरा हक अदा नहीं किया। वहां कोई काजी नहीं है; घर के ही लोग खुद ही काजी, खुद ही वकील और खुद ही गवाह बने। जिस व्यक्ति ने पहले निकाह किया उसने खुशी से तलाक दिया और उस औरत ने खुशी से तलाक ले लिया। दस-पंद्रह दिनों के बाद वही औरत और वही पति एक जगह रहने लगे। उस व्यक्ति ने तलाक देने के बाद उसे तीन महीने तक रखा, फिर तीन महीने के बाद 'हलाला' किया। हलाला करने वाले व्यक्ति की पत्नी ने सहमति नहीं दी थी। सहमति लेने के लिए उसने अपनी पत्नी को मारा, तो पत्नी ने जबरदस्ती सहमति दी। क्या यह हलाला सही है या नहीं?

(2) एक दूसरा आदमी एक औरत को लेकर भाग गया, उसकी दो बेटियां थीं। दो साल तक बिना निकाह के उस औरत को रखा। दो साल बाद जब लड़के होशियार हो गए, तो उस औरत को छोड़कर बेटी को रखने लगा। उस व्यक्ति के हराम (अवैध) संबंध से एक लड़की और एक लड़का पैदा हुए। यहाँ के पंचों ने उसे बिरादरी से बाहर कर दिया। उस लड़की से भी निकाह नहीं हुआ है। बारह महीने बाद बिरादरी के आधे लोग उसे साथ ले गए और वही लोग जो कहते थे कि इसका मुँह देखना जायज़ नहीं है, अब उसके साथ खाते-पीते हैं। इस बारे में मसला क्या कहता है? और यहाँ इस्लाम का मजाक उड़ाया जाता है और किसी को यह खयाल नहीं है कि अगर हम इस्लाम की खिल्ली उड़ाएंगे तो हमारा क्या हाल होगा। इस पर हज़रत रसूल अल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शरीयत का क्या बयान है?

जवाब: (1) शरीयत का हुक्म यह है कि जिस व्यक्ति ने अपनी औरत को तीन तलाकें दी हों, चाहे एक ही बार में या बरसों के अंतराल में—जैसे कि एक बार दी और रुजू (सुलह) कर ली, फिर दूसरी दी और रुजू कर ली, अब तीसरी दी—दोनों सूरतों में...

---

1 मआलिम अल-तंज़ील, तफ़्सीर अल-खाज़िन के हाशिये पर, आयत 'तलाक दो बार है' की व्याख्या, मुस्तफ़ा अल-बाबी, मिस्र, 1/22।

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

[Arabic Box]: لہ الابعد نکاح زوج غیرہ ۱ اھ والمسئلۃ اوضح من ان توضح۔ واللہ سبحنہ وتعالی اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم واحکم۔

[Urdu Box]: نکاح کے بغیر اس کے لئے حلال نہیں ہے اھ، اور مسئلہ وضاحت کا محتاج نہیں۔ (ت) واللہ تعالٰی سبحنہ وتعالی اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم واحکم۔

مسئلہ ۱۸۷: از ضلع خاندیس پچھم بھاگ تعلقہ تلو دھا ڈاکخانہ لگر مندھا بسوستان کاٹھی مقام عکلوا مرسلہ محمد اسمعیل صاحب ۱۲ جمادی الاولی ۱۳۳۶ھ

(۱) حلالے کے بارے میں ایک شخص نے نکاح کیا اور پہلی بی بی کا حق کل نہیں ادا کیا، وہاں پر قاضی نہیں ہے، اپنے مکان کے لوگ آپ ہی قاضی آپ ہی وکیل آپ گواہ، جس شخص نے پہلے نکاح کیا اس نے خوشی سے طلاق دیا اور اس عورت نے خوشی سے طلاق لیا، بعد دس پندرہ روز اسی عورت اور وہی دھنی ایک جگہ رہنے لگے، اور اس شخص طلاق دے کر تین مہینے رکھا، پھر تین مہینے بعد حلالہ کیا، حلالہ کرنے والا جو شخص تھا اس کی بی بی نے رضا نہیں دی، رضا لینے کے واسطے اپنی بی بی مارا، تو بی بی نے زبردستی سے رضا دی، اس کا حلالہ درست ہو کہ نہیں؟

(۲) ایک دوسرا آدمی ایک عورت کالے کر بھاگ گیا، اس کی دولڑکیاں تھیں، دو برس بغیر نکاح کے اس عورت کو رکھا، بعد دو برس کے لڑکے ہوشیار ہو گئی، اس عورت کو چھوڑ کر بیٹی کو رکھنے لگا اس شخص کے حرام سے ایک لڑکی ایک لڑکا پیدا ہوئے، سو یہاں کے پنچوں نے جماعت سے باہر کر دیا سو اس لڑکی سے بھی نکاح نہیں ہوا ہے، بعد بارہ مہینے کے جماعت کے

آدھے لوگ اس کو ہمراہ لے گئے اور وہی لوگ کہتے تھے اس کا منہ دیکھنا روا نہیں ہے، اب وہی لوگ اس کے ساتھ کھاتے پیتے ہیں، اس کے بارے میں مسئلہ کیا کہتا ہے، اور یہاں اسلام کی ٹھٹھول کرتے ہیں اور کسی کو یہ خیال نہیں ہے کہ ہم اسلام کی مشگری کریں گے تو ہمارے کیا حال ہوں گے، اس پر حضرت رسول خدا (صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم) کی شریعت کا کیا بیان ہے؟

الجواب: (۱) شریعت کا حکم یہ ہے جس شخص نے اپنی عورت کو تین طلاقیں دی ہوں ایک دفعہ میں خواہ برسوں میں کہ ایک کبھی دی اور رجعت کر لی پھر دوسری دی اور رجعت کر لی اب تیسری دی دونوں صورتوں

---

۱ معالم التنزیل علی ہامش تفسیر الخازن تفسیر آیۃ الطلاق مرتان مصطفی البابی مصر ۱/ ۲۲

In this, the woman is prohibited for him without halala. The meaning of halala is that after this divorce, if the woman menstruates, she should complete three menstrual cycles; and if she does not menstruate, for example, if she is a girl under nine years of age or a woman over fifty-five years of age, then three full months must pass after this divorce; or if she is pregnant, the child must be born. At that time, she will emerge from the iddah (waiting period) of that divorce. After that, she should marry another person in a valid manner, meaning that second husband should be her kufu (equal/compatible) so that he is not so inferior in religion, lineage, character, or profession that her marriage to him becomes a cause of disgrace for the woman's guardians. Or if he is so inferior, the woman's guardian should give explicit permission for the marriage before it occurs, knowing he is not kufu. Or it may be that the adult woman has no guardian at all, then she has the choice to marry whoever she wishes. If the guardian, knowing him to be non-kufu, did not give explicit permission before the marriage, then the marriage will not take place. Similarly, if the girl is a minor and she has no father, grandfather, brother, uncle, etc., as guardians, and people married her to someone non-kufu, even then the marriage will not be valid. In short, when the marriage with the second husband occurs validly, and he also has sexual intercourse with her, and then he divorces her, and the iddah of that divorce passes in the same way—three menstrual cycles, or three months if she doesn't menstruate, or after birth if pregnant—only then can the first husband marry her. If even one of these conditions is not met, it will not be a marriage but adultery. Yes, the idea that for marriage, whether with the second husband or the first, there is a need for a Qazi, a lawyer, or community members, or that the man marrying for the second time must get permission from his first wife—all these things are baseless. Only the method we have written is required. If it doesn't happen that way at all—for example, when the second husband gave a divorce, the first husband married her just ten days later without the iddah passing—then this was not a marriage but pure forbidden act (haram). In that case, it is mandatory that the woman be separated from him, and if they do not agree, they should be expelled from the community.

(2) Similarly, a man who kept a woman and now keeps her daughter, she is definitely forbidden (haram) for him. If he doesn't marry, it is adultery anyway, and if he marries, it is still forbidden because she has become his daughter. The community members should expel them from the community if that man and woman do not

separate; they should not greet them, speak to them, sit with them, nor let them sit near them. And those people who were previously with them...

इसमें औरत उस पर बिना हलाला के हराम है। हलाला का अर्थ यह है कि इस तलाक़ के बाद औरत यदि मासिक धर्म वाली है, तो उसे तीन मासिक धर्म शुरू होकर समाप्त हो जाने चाहिए, और यदि मासिक धर्म वाली नहीं है, जैसे कि नौ वर्ष से कम आयु की लड़की है या पचपन वर्ष से अधिक आयु की महिला है, तो इस तलाक़ के बाद तीन पूर्ण महीने बीत जाने चाहिए; या यदि वह गर्भवती है, तो बच्चा पैदा हो जाना चाहिए। उस समय वह उस तलाक़ की इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) से बाहर आएगी। उसके बाद, वह दूसरे व्यक्ति से सही तरीके से निकाह करे, अर्थात वह दूसरा पति उसका कुफ़ू (समान/संगत) हो कि वह धर्म, वंश, आचरण या पेशे में इतना कम न हो कि उससे इस औरत का निकाह औरत के वलियों (अभिभावकों) के लिए बदनामी का कारण बने। या यदि वह इतना कम है, तो औरत का वली निकाह होने से पहले यह जानते हुए कि वह कुफ़ू नहीं है, निकाह की स्पष्ट अनुमति दे दे। या यह हो कि बालिग औरत का कोई वली ही न हो, तो औरत को अधिकार है कि वह जिससे चाहे निकाह कर ले। और यदि वली ने उसे गैर-कुफ़ू जानकर निकाह से पहले स्पष्ट अनुमति नहीं दी, तो निकाह ही नहीं होगा। इसी प्रकार, यदि लड़की नाबालिग है और उसका न पिता है, न दादा, न भाई, न चाचा आदि वली हैं, और लोगों ने किसी गैर-कुफ़ू से उसका निकाह कर दिया, तब भी निकाह नहीं होगा। संक्षेप में, जब दूसरे पति से निकाह सही तरीके से संपन्न हो जाए और वह उससे संभोग भी कर ले, और उसके बाद वह तलाक़ दे दे, और उस तलाक़ की इद्दत भी उसी तरह बीत जाए—तीन मासिक धर्म, या मासिक धर्म न आने पर तीन महीने, और गर्भ होने पर बच्चा पैदा होने के बाद—तभी पहला पति उससे निकाह कर सकता है। इनमें से एक भी बात कम होगी, तो वह निकाह नहीं होगा बल्कि ज़िना (व्यभिचार) होगा। हाँ, निकाह के लिए चाहे वह दूसरे पति से हो या पहले से, काज़ी या वकील या बिरादरी के लोगों की आवश्यकता है, या यह कि पुरुष दूसरी शादी करे तो पहली पत्नी से अनुमति ले—ये सभी बातें निराधार हैं। केवल उसी तरीके की आवश्यकता है जो हमने लिखा है। इस प्रकार यदि मूल रूप से ऐसा नहीं हुआ, उदाहरण के लिए जब दूसरे पति ने तलाक़ दिया तो उसके दस दिन बाद ही बिना इद्दत गुज़रे पहले पति ने उससे निकाह कर लिया, तो यह निकाह नहीं हुआ बल्कि कोरा हराम हुआ। उस स्थिति में यह ज़रूरी होगा कि औरत को उससे अलग कर दिया जाए और यदि वे न मानें, तो उन्हें बिरादरी से बाहर कर दिया जाए।

(२) इसी प्रकार वह व्यक्ति जिसने किसी औरत को रखा और अब उसकी बेटी को रखता है, वह उस पर निश्चित रूप से हराम है। यदि निकाह न करे तो ज़िना है ही, और यदि निकाह करे तब भी हराम है

क्योंकि वह उसकी बेटी हो चुकी। बिरादरी वालों को चाहिए कि यदि वह पुरुष और स्त्री अलग न हों, तो उन्हें बिरादरी से बाहर कर दें, उनसे सलाम-दुआ न करें, उनके पास न बैठें, उन्हें अपने पास न बैठने दें, और वे लोग जो पहले उनसे...

पृष्ठ ४०८ का ६८८

میں عورت اس پر بغیر حلالہ حرام ہے۔ حلالہ کے یہ معنی ہیں کہ اس طلاق کے بعد عورت اگر حیض والی ہے تو اسے تین حیض شروع ہو کر ختم ہو جائیں، اور اگر حیض والی نہیں مثلاً نو برس سے کم عمر کی لڑکی ہے یا پچپن برس سے زائد عمر کی عورت ہے اور اس طلاق کے بعد تین مہینے کامل گزر جائیں یا اگر حاملہ ہے تو بچہ پیدا ہو لے، اس وقت اس طلاق کی عدت سے نکلے گی، اس کے بعد دوسرے شخص سے نکاح برو جہ صحیح کرے یعنی وہ شوہر ثانی اس کا کفو ہو کہ مذہب، نسب، چال چلن، پیشہ کسی میں ایسا کم نہ ہو کہ اس سے اس عورت کا نکاح عورت کے اولیاء کے لئے باعثِ بد نامی ہو، یا اگر ایسا کم ہے تو یہ عورت کا ولی نکاح ہونے سے پہلے اس کو یہ جان کر کہ یہ کفو نہیں اس کے ساتھ نکاح کی بالصریح اجازت دے دے، یا یہ ہو کہ عورت بالغہ کا کئی ولی ہی نہ ہو تو عورت کو اختیار ہے جس سے چاہے نکاح کر لے، اور ولی نے اسے غیر کفو جان کر نکاح سے پہلے صریح اجازت نہ دی تو نکاح ہی نہ ہو گا، یونہی لڑکی اگر نابالغہ ہے اور اس کے نہ باپ ہے نہ دادا بھائی چچا وغیرہ ولی ہیں، لوگوں نے کسی غیر کفو سے اس کا نکاح کر دیا جب بھی نکاح نہ ہو گا، غرض جب شوہر ثانی سے نکاح صحیح طور پر واقع ہو اور وہ اس سے ہمبستری بھی کرلے اور اس کے بعد وہ طلاق دے اور اس طلاق کی عدت اسی طرح گزرے کہ تین حیض ہوں اور حیض نہ آتا ہو تو تین مہینے، اور حمل رہ جائے تو بچہ پیدا ہونے کے بعد اس کے بعد پہلا شوہر اس سے نکاح کرسکتا ہے، ان میں سے ایک بات بھی کم ہوگی تو وہ نکاح نہ ہوگا زنا ہوگا، ہاں نکاح کے لئے چاہے وہ شوہر ثانی سے ہو یا پہلے سے قاضی یا وکیل یا برادری کے لوگوں کی ضرورت ہے کہ مرد نکاح ثانی کرے تو پہلے بیوی سے اجازت لے، یہ سب باتیں بے اصل ہیں، فقط اس طریقہ کی ضرورت ہے جو ہم نے لکھا اس طرح

پر اگر اصلًا نہ ہوا مثلاً دوسرے شوہر نے جب طلاق دی تو اس کے دس ہی دن بعد بے عدت گزرے پہلے شوہر نے اس سے نکاح کر لیا تو یہ نکاح نہ ہوا نرا حرام ہوا اُس صورت میں ضرور ہوگا کہ عورت کو اس سے جُدا کر دیا جائے اور نہ مانے تو اسے برادری سے خارج کر دیا جائے۔

(۲) اسی طرح وہ شخص جس نے عورت کو رکھا اب اُس کی بیٹی کو رکھتا ہے وہ اس پر ضرور حرام ہے اگر نکاح نہ کرے جب تو زنا ہے ہی، اور نکاح کرے جب بھی حرام ہے کہ وہ اس کی بیٹی ہو چکی، برادری والوں کو چاہئے کہ اگر وہ مرد و عورت جُدا نہ ہوں تو اس کو برادری سے خارج کردیں، اُن سے سلام کلام نہ کریں، اُن کے پاس نہ بیٹھیں اپنے پاس نہ بیٹھنے دیں، اور وہ لوگ جو پہلے اُن سے

Fatawa Razawiyya, Volume Twelve

They had separated and have now reconciled and are eating and drinking with those they used to avoid; they should refrain from this. Allah Almighty says: "And if the devil causes you to forget, then do not sit, after the reminder, with the wrongdoing people." [Al-An'am 6:68] | Satan makes you forget, so do not sit with the unjust people after you remember. And Allah Almighty knows best (T).

Problem 188: What do the scholars of religion say regarding the issue of 'halala' with a condition, i.e., with the intention that after a few days the person will divorce so that she becomes lawful for the previous husband after the waiting period ('iddah') has passed? Is it permissible or not? Explain and you will be rewarded.

Answer: A condition is one thing and an intention is another. To include such a condition in the marriage contract is forbidden and a sin, and in the Hadith, a curse is pronounced on those who perform such 'halala'. However, if it's an intention in the heart without being a formal condition, it is permissible; rather, one may hope for a reward for it. It is stated in Durr al-Mukhtar:

(It is disliked) for the second husband to marry (prohibitively) because of the hadith: "Allah has cursed the one who makes a woman lawful [for her first husband] and the one for whom she is made lawful" (with the condition of tahleel), such as saying "I marry you on the condition that I make you lawful [for your first husband]." However, if he conceals that intention in his heart, it is not disliked. And the man (is rewarded) for the intention of reconciliation. - Briefly excerpted. And Allah Almighty knows best. | Marriage on the condition of 'halala', such as "I marry you on the condition that I will divorce you to make you lawful for the other person," for the second person's marriage is prohibitively disliked (Makruh-e-Tahrimi). But if both have the intention of 'halala' in their hearts without stating it as a condition, it is not disliked. In this case, the second person will be entitled to a reward for marrying with the intention of reconciliation. - Briefly excerpted. And Allah Almighty knows best (T).

Problem 189: From Kanpur, Begum Ganj, Divorce Mahal, sent by Ahmad Ali Khan, Advocate, 12 Dhu al-Hijjah 1322 AH. What do the scholars of religion say in this matter: Zaid, in a state of anger and compulsion, gave three divorces to his wife Hindah at once. According to Imam Abu Hanifa (may Allah have mercy on him), it became 'Mughallazah' (irrevocable), and according to Imam Shafi'i (may Allah have mercy on him), it counted as one. In such a situation, can one who follows Imam Abu

Hanifa perform 'ruju' (revocation) or not? The facts of the case are that Zaid has a deep heartfelt love for Hindah; he did not leave her intentionally...

1. Al-Qur'an al-Karim 6:68
2. Durr al-Mukhtar, Chapter of Ruj'ah, Mujtabai Press, Delhi, 1/241

फतावा रज़विया, जिल्द बारहवीं

वे अलग हो गए थे और अब मिल गए हैं और उनके साथ खाते-पीते हैं जिनसे वे बचते थे; उन्हें इससे बाज़ आना चाहिए। अल्लाह तआला फरमाता है: "और अगर शैतान तुझे भुला दे, तो याद आने के बाद ज़ालिम कौम के साथ न बैठ।" [अल-अनअम 6:68] | शैतान तुझे भुला देता है, तो याद आने पर ज़ालिम कौम के साथ न बैठ। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है (त)।

मसला 188: धर्म के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि शर्त के साथ हलाला, यानी इस इरादे से कि कुछ दिनों बाद तलाक दे दे ताकि इद्दत गुज़रने के बाद वह पिछले पति के लिए हलाल हो जाए, जायज़ है या नहीं? बयान कीजिए, सवाब मिलेगा।

अल-जवाब: शर्त और चीज़ है और इरादा और चीज़। शर्त तो यह कि निकाह के अनुबंध में यह शर्त लगा ली जाए, यह नाजायज़ और गुनाह है और हदीस में ऐसे हलाला करने वाले पर लानत आई है, और इरादा यह कि दिल में इसका इरादा हो मगर शर्त न की जाए तो यह जायज़ है बल्कि इस पर सवाब की उम्मीद है। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

दूसरे पति का निकाह करना (मकरूहे तहरीमी) है हदीस की वजह से कि अल्लाह ने हलाला करने वाले और जिसके लिए हलाला किया जाए उस पर लानत की है (तहलील की शर्त पर), जैसे मैं तुझसे इस शर्त पर निकाह करता हूँ कि तुझे हलाल कर दूँ। लेकिन अगर वह इसे दिल में छुपाए रखे तो यह मकरूह नहीं है, और मर्द इस्लाह के इरादे से सवाब (मजूर) का हकदार होगा। - संक्षेप में। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। | हलाला की शर्त पर निकाह कि "मैं इस शर्त पर तुझसे निकाह करता हूँ कि तुझे तलाक देकर हलाल कर दूँगा," दूसरे व्यक्ति का निकाह मकरूहे तहरीमी है। लेकिन अगर दोनों ने दिल में हलाला की नियत की है मगर शर्त नहीं की, तो मकरूह नहीं। इस सूरत में दूसरा व्यक्ति सुधार के उद्देश्य से निकाह करने पर सवाब का हकदार होगा। - संक्षेप में। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है (त)।

मसला 189: कानपुर, बेगम गंज, तलाक महल, प्रेषित अहमद अली खां वकील, 12 ज़िलहिज्जा 1322 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने एक वक़्त गुस्से की हालत में मजबूर होकर अपनी बीवी हिन्दा को तीन बार तलाक दे दी। इमाम अबू हनीफ़ा (रहमतुल्लाह अलैहि) के नज़दीक वह मुग़ल्लज़ह (अपरिवर्तनीय) हो गई और इमाम शाफ़ई (रहमतुल्लाह अलैहि) के नज़दीक एक ही रही। तो ऐसी स्थिति में जो इमाम अबू हनीफ़ा का अनुयायी है, क्या वह रुजू (वापसी)

कर सकता है या नहीं? मुक़दमे के हालात यह हैं कि ज़ैद को हिन्दा से दिली मोहब्बत है, उसने जानबूझकर उसे नहीं छोड़ा...

1. अल-कुरान अल-करीम 6/68
2. दुर्रे मुख्तार, बाबुर रुजा, मतबा मुजतबाई दिल्ली 1/241

पेज 409 का 688

جدا ہو گئے تھے اور اب مل گئے اور اُن کے ساتھ کھاتے پیتے ہیں بچا کرتے ہیں انہیں چاہئے اس سے باز رہیں۔ اللہ تعالٰی فرماتا ہے: وَإِمَّا يُنسِيَنَّكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرَىٰ مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ | شیطان تجھے بھلا دیتا ہے، تو یاد آنے پر ظالم قوم کے ساتھ نہ بیٹھے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۱۸۸: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ حلالہ مع شرط کے یعنی اس قصد سے کہ بعد چند روز کے طلاق دے دے تاکہ زوج سابق کے واسطے بعد عدت گزرنے کے حلال ہو جائے جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: شرائط اور چیز ہے اور قصد اور چیز۔ شرط تو یہ کہ عقدِ نکاح میں یہ شرط لگا لے یہ ناجائز و گناہ ہے اور حدیث میں ایسے حلالہ کرنے والے پر لعنت آئی ہے، اور قصد یہ کہ دل میں اس کا ارادہ ہو مگر شرط نہ کی جائے تو یہ جائز ہے بلکہ اس پر اجر کی امید ہے۔ در مختار میں ہے:

(کرہ) التزوج للثانی (تحریماً) لحدیث لعن اللہ المحلل والمحلل لہ (بشرط التحلیل) کتزوجتک علی ان احللک (اما اذا اضمر ذلک لا یکرہ (وکان) الرجل (ماجورا) لقصد الاصلاح اھ مختصراً۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ | حلالہ کی شرط پر نکاح کہ میں اس شرط پر تجھ سے نکاح کرتا ہوں کہ تجھے طلاق دے کر حلال کردوں گا دوسرے شخص کا نکاح مکروہِ تحریمہ ہے لیکن دونوں نے اگر دل میں حلالہ کی نیت کی تو مکروہ نہیں، اس صورت میں دوسرا شخص اصلاح کی غرض سے نکاح کرنے پر اجر کا مستحق ہوگا اھ مختصراً واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۱۸۹: از کانپور بیگم گنج طلاق محل مرسلہ احمد علی خاں وکیل ۱۲ ذی الحجہ ۱۳۲۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے ایک وقت حالتِ غصہ میں مجبور ہو کر ہندہ زوجہ کو تین بار طلاق دی، نزدیک امام ابو حنیفہ رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کے مغلظ ہو گئی اور نزدیک امام شافعی رحمۃ اللہ علیہ کے ایک رہی، تو ایسی حالت میں جو پیر وامام ابو حنیفہ رحمۃ اللہ علیہ کا ہے رجوع کر سکتا ہے یا نہیں؟ حالاتِ مقدمہ یہ ہیں کہ زید کو ہندہ کے ساتھ محبت قلبی ہے اس نے قصدًا چھوڑا

۱ القرآن الکریم ۶۸/۶ ۲ درمختار باب الرجعة مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۴۱

Fatawa Razawiya - Volume 12

...He did not intend to divorce, nor could Hindah understand her defiance of the command as divorce, because she herself was remorseful. However, Hindah's sister, who is an enemy of Hindah, provoked him with words based on giving divorce, such that Zaid was forced into a fit of rage and suddenly gave divorce three times and left Hindah's house. Now Zaid and Hindah are in deep distress, and there are two children, a son aged 9 years and a daughter aged 5 years, who are with Hindah, and Hindah is needy and can only raise them with difficulty. Also, the concern about them remaining uneducated is strong, and Zaid is so grieved that he is near death. Considering these circumstances, can he take her back or not? Explain and be rewarded.

The Answer: Giving three divorces at once results in "Talaq-e-Mughallazah" (triple irrevocable divorce), not only according to the Hanafi school but according to the consensus of the four major schools. None of the followed Imams—Imam Shafi'i, Imam Malik, Imam Ahmad (may Allah be pleased with them)—differed in this matter. The woman is so excluded from his marriage that she can never return to his marriage without *Halala*. If they resume the relationship just like that or perform a new marriage without *Halala*, both will be involved in adultery and will commit adultery for the rest of their lives. Allah Almighty says:

[Boxed Text] Arabic: وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ۙ 1 English translation: "And whoever fears Allah - He will make for him a way out." Urdu translation: He who fears Allah, Allah Almighty makes a way for him. (T) [End Boxed Text]

He did not show piety; instead, he committed the act of giving three divorces consecutively against the commands of Allah and His Messenger. Allah Almighty has kept no way out for him. Now there is no escape for him from the harsh penalty of *Halala*. Even the leaders of religion stated that if a judge under Islamic law rules that only one divorce occurred in such a case, that ruling would be void and rejected. The Wahhabis and non-conformists (Ghayr Muqallidin) are now rising in opposition to this issue; they are astray in religion, and following them is not permissible. It is mentioned in *Fath al-Qadir*:

[Boxed Text] Arabic: ذَهَبَ جُمْهُورُ الصَّحَابَةِ وَالتَّابِعِينَ وَمَنْ بَعْدَهُمْ مِنْ اَئِمَّةِ الْمُسْلِمِينَ اِلٰى اَنَّهٗ يَقَعُ ثَلٰثٌ، وَفِي سُنَنِ اَبِی دَاوٗدَ عَنْ مُجَاهِدٍ قَالَ كُنْتُ عِنْدَ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى... English translation: The majority of the Companions, the Successors (Tabi'un), and the Imams of Muslims after them held the view that three divorces take effect. In Sunan Abi

Dawud, it is narrated from Mujahid that he said, "I was with Ibn Abbas (may Allah be pleased with him)..." Urdu translation: The creed of the majority of the Companions, Successors, and the leading Imams of Muslims after them is that three divorces given in one utterance will be three. It is narrated from Imam Mujahid in Sunan Abu Dawud that I was with Hazrat Ibn Abbas (may Allah be pleased with him)... [End Boxed Text]

---

1 The Holy Quran 65/2 Page 410 of 688

फ़तावा रज़विया - जिल्द 12

...तलाक देने की नियत नहीं थी और न ही हिन्दा अपनी अवज्ञा को तलाक समझ सकती है क्योंकि वह खुद शर्मिंदा थी। लेकिन हिन्दा की बहन, जो हिन्दा की दुश्मन है, ने कुछ ऐसे शब्द कहे जो तलाक पर आधारित थे, जिससे ज़ैद को मजबूरी में गुस्सा आ गया और उसने अचानक तीन बार तलाक दे दिया और हिन्दा के घर से चला गया। अब ज़ैद और हिन्दा गहरे सदमे में हैं और दो बच्चे हैं, यानी 9 साल का एक बेटा और 5 साल की एक बेटी, जो हिन्दा के पास हैं, और हिन्दा ज़रूरतमंद है और मुश्किल से उनकी परवरिश कर सकती है। साथ ही, उनके अनपढ़ रहने का डर भी बहुत है, और ज़ैद इतना दुखी है कि उसकी जान पर बन आई है। इन परिस्थितियों को देखते हुए, क्या वह वापस ले सकता है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: एक बार में तीन तलाक देने से न केवल हनफी पंथ के अनुसार बल्कि चारों प्रमुख पंथों की सर्वसम्मति (इज्मा) के अनुसार तीन तलाक 'मुग़ल्लज़ा' (अपरिवर्तनीय) हो जाते हैं। इमाम शाफ़ई, इमाम मालिक, इमाम अहमद (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो), जो अनुसरण किए जाने वाले इमाम हैं, में से कोई भी इस विषय पर अलग नहीं हुआ। वह स्त्री उसके निकाह से इस प्रकार बाहर हो गई है कि अब बिना 'हलाला' के वह कभी उसके निकाह में नहीं आ सकती। यदि वे ऐसे ही वापस लौट जाते हैं या बिना 'हलाला' के नया निकाह कर लेते हैं, तो दोनों हरामकारी (व्यभिचार) में लिप्त होंगे और जीवन भर हरामकारी करेंगे। अल्लाह तआला फरमाता है:

[बॉक्स टेक्स्ट] अरबी: 1 ۙ اللّٰہ یَجْعَلْ لَّہٗ مَخْرَجًا ।وَمَنْ یَّتَّقِ हिंदी अनुवाद: "और जो अल्लाह से डरता है, वह उसके लिए (संकट से) बाहर निकलने का रास्ता बना देता है।" उर्दू अनुवाद: जो अल्लाह तआला से डरता है अल्लाह तआला उसके लिए रास्ता बना देता है। (त) [एंड बॉक्स टेक्स्ट]

उसने तक़वा (ईश्वर का भय) नहीं दिखाया, बल्कि अल्लाह और उसके रसूल के खिलाफ लगातार तीन तलाक देने का अपराध किया। अल्लाह अज़्ज़-व-जल्ल ने उसके लिए कोई रास्ता नहीं रखा। अब हलाला की सख्त सज़ा से उसके लिए कोई बचाव नहीं है। यहाँ तक कि दीन के इमामों ने फरमाया कि अगर इस्लामी कानून का कोई काज़ी ऐसे मामले में एक तलाक होने का हुक्म दे, तो वह हुक्म बातिल (अमान्य) और खारिज है। वहाबी और गैर-मुकल्लदीन अब इस मसले में खिलाफ खड़े हो रहे हैं, वे गुमराह दीन हैं, उनका अनुसरण करना हलाल नहीं है। 'फ़तह अल-क़दीर' में है:

[बॉक्स टेक्स्ट] अरबी: ذَهَبَ جُمْهُورُ الصَّحَابَةِ وَالتَّابِعِينَ وَمَنْ بَعْدَهُمْ مِنْ اَئِمَّةِ الْمُسْلِمِينَ اِلٰى اَنَّهٗ يَقَعُ ثَلٰثٌ، وَفِي سُنَنِ اَبِى دَاوُدَ عَنْ مُجَاهِدٍ قَالَ كُنْتُ عِنْدَ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى... हिंदी अनुवाद: सहाबा, ताबेईन और उनके बाद आने वाले मुसलमानों के इमामों का बहुमत इस विचार पर है कि तीन तलाक प्रभावी होते हैं। सुनन अबू दाऊद में मुजाहिद से रिवायत है कि उन्होंने कहा, "मैं इब्न अब्बास (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के पास था..." उर्दू अनुवाद: सहाबा, ताबेईन और उनके बाद आने वाले मुसलमानों के प्रमुख इमामों का मत है कि एक ही शब्द में तीन तलाक तीन ही होंगे। सुनन अबू दाऊद में इमाम मुजाहिद से रिवायत है कि मैं हज़रत इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ था... [एंड बॉक्स टेक्स्ट]

---

1 अल कुरान अल करीम 65/2 पेज 410 का 688

فتاوی رضویہ - جلد دو از دہ

دینے کی نیت سے طلاق نہیں دی اور نہ ہندہ اپنے عدول حکم پر سمجھ سکتی ہے کہ مجھ پر طلاق ہوگی کیونکہ بجائے خود نادم تھی ، مگر ہندہ کی بہن جو دشمن ہندہ کی ہے چند الفاظ دلانے والے جو طلاق دینے پر مبنی تھے ایسے کہ جس سے زید کو مجبوراً غیظ آگیا اور دفعتاً تین بار طلاق دے کر ہندہ کے مکان سے اٹھ آیا ، اب زید و ہندہ سخت صدمہ ہے اور دو لڑکے یعنی ایک پسر بعمر ۹ سال ایک دختر بعمر ۵ سال جو ہندہ کے پاس ہیں اور ہندہ محتاج ہے پرورش بدقت کر سکتی ہے اور نیز بلا تعلیم رہنے کا خیال قوی ہے اور زید کو ایسا رنج ہے کہ نوبت بجان ہے، بر نظر حالات رجوع کر سکتا ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا الجواب: ایک بار تین طلاق دینے سے نہ صرف نزد حنفیہ بلکہ اجماعِ مذاہب اربعہ تین طلاقیں مغلظہ ہو جاتی ہیں، امام شافعی، امام مالک، امام احمد رضی اللہ تعالٰی عنہم ائمہ متبوعین سے کوئی امام اس باب میں اصلاً ہوا اور عورت اس کے نکاح سے ایسی خارج ہوئی کہ اب بے حلالہ ہر گز اس کے نکاح میں نہیں آ سکتی، اگر یونہی رجوع کرلی بلاتحلالہ نکاحِ جدید باہم کر لیا تو دونوں مبتلائے حرام کاری ہوں گے اور عمر بھر حرام کاری کریں گے۔ اللہ تعالٰی ارشاد فرماتا ہے:

[Boxed Text] وَمَنْ یَتَّقِ اللّٰہَ یَجْعَلْ لَّہٗ مَخْرَجًا ۙ 1 جو اللہ تعالٰی سے ڈرتا ہے اللہ تعالٰی اس کیلئے راستہ بنا دیتا ہے۔ (ت) [End Boxed Text]

اس نے تقوٰی نہ کیا بلکہ خلاف خدا و رسول تین طلاقیں لگاتار دینے کا مرتکب ہوا اللہ عزوجل نے اس کے لئے مخرج نہ رکھا اب حلالہ کے سخت تازیانے سے اسے ہرگز مفر نہیں یہاں تک کہ ائمہ دین نے فرمایا کہ اگر قاضی شرح حاکمِ اسلام ایسے مسئلہ میں ایک طلاق پڑنے کا حکم دے تو وہ

حکم باطل و مردود ہے۔ وہابیہ غیر مقلدین اب اس مسئلہ میں خلاف اٹھا رہے ہیں وہ گمراہ دین ہیں، ان کی تقلید حلال نہیں، فتح القدیر میں ہے:

[Boxed Text] ذهب جمهور الصحابة والتابعين ومن بعدهم من ائمة المسلمين الى انه يقع ثلث، وفي سُنن ابي داؤد عن مجاهد قال كنت عند عباس رضي الله تعالى جمہور صحابہ، تابعین اور ان کے بعد والے مسلمانوں کے ائمہ کرام کا مسلک ہے بیک لفظ تین طلاقیں تین ہوں گی۔ امام مجاہد سے سُنن ابو داؤد میں مروی ہے کہ میں حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے [End Boxed Text]

---

1 القرآن الکریم ۲/۶۵ Page 410 of 688

Fatawa Razvia Volume 12

(From) both of them: A man came and said that he had divorced his wife three times. (The narrator) said: He (Ibn Abbas) remained silent until I thought he was going to return her to him. Then he said: Does one of you divorce (his wife) and commit foolishness, then say "O Ibn Abbas! O Ibn Abbas!"? Indeed, Allah, the Almighty and Majestic, said: "And whoever fears Allah - He will make for him a way out." You have disobeyed your Lord, and your wife is separated from you. Then he mentioned his evidence through a narration in Al-Muwatta from Ibn Abbas and Abu Hurairah together. And the like of it from Ibn Umar. He said: And it was also narrated from Abdullah bin Amr bin al-Aas. Abd al-Razzaq narrated it on the authority of Alqama, from Ibn Mas'ud, and Waki' from the Commander of the Faithful Ali, and the Commander of the Faithful Uthman bin Affan. And he had already presented it from the Commander of the Faithful Umar. And it was reported through the narration of Ibn Abi Shaybah and Al-Daraqutni from Ibn Umar from the Prophet (may Allah's peace and blessings be upon him) and mentioned it at the end.

I was present when a man came and said, "I have given my wife three divorces." Mujahid says that Hazrat Ibn Abbas (may Allah be pleased with him) remained silent for a while, so I thought perhaps Ibn Abbas would return the wife to the questioner. Then, after a while, he said, "Some of you act foolishly when divorcing your wife and then say, 'O Ibn Abbas! O Ibn Abbas!' Remember, Allah Almighty said: 'He who fears Allah, Allah will create a way out for him.' Since you have disobeyed Allah, your wife has become separated from you." After this, Fath al-Qadir mentioned the proofs for this. Based on Al-Muwatta, narrations of Ibn Abbas and Ibn Mas'ud (may Allah be pleased with them both) were mentioned, just as Abu Dawood narrated a combined report from Ibn Abbas and Abu Hurairah (may Allah be pleased with them both). A similar narration was mentioned from Ibn Umar (may Allah be pleased with him), and it was stated that it is also narrated from Abdullah bin Amr bin al-Aas (may Allah be pleased with him). And they said that Abd al-Razzaq mentioned the chain from Alqama from Ibn Mas'ud (may Allah be pleased with him), and Waki' from the Commander of the Faithful Umar Farooq, Uthman bin Affan (may Allah be pleased with them). And prior to this, Fath al-Qadir mentioned a narration from the Commander of the Faithful Umar Farooq (may Allah be pleased with them), and they also related the narration of Ibn Abi Shaybah and Daraqutni from Ibn Umar (may Allah be pleased with him) via the Prophet (peace and blessings be upon him). And this is what they [stated] in the discourse.

फतवा-ए-रजविया खंड 12

उन दोनों से (वर्णित): एक व्यक्ति आया और कहा कि उसने अपनी पत्नी को तीन तलाक दे दिए हैं। (वर्णनकर्ता) ने कहा: वह (इब्न अब्बास) तब तक चुप रहे जब तक मुझे नहीं लगा कि वह उसे उसके पास वापस लौटा देंगे। फिर उन्होंने कहा: क्या तुममें से कोई (अपनी पत्नी को) तलाक देता है और मूर्खता करता है, फिर कहता है "हे इब्न अब्बास! हे इब्न अब्बास!"? वास्तव में, अल्लाह, सर्वशक्तिमान और प्रतापी ने कहा है: "और जो कोई अल्लाह से डरता है - वह उसके लिए निकलने का रास्ता बना देगा।" तुमने अपने रब की अवज्ञा की है, और तुम्हारी पत्नी तुमसे अलग हो गई है। फिर उन्होंने अल-मुवत्ता में इब्न अब्बास और अबू हुरैरा से एक साथ वर्णन के माध्यम से अपने प्रमाणों का उल्लेख किया। और इब्न उमर से इसके समान। उन्होंने कहा: और यह अब्दुल्ला बिन अम्र बिन अल-आस से भी वर्णित है। अब्द अल-रज्जाक ने अलकामा के माध्यम से, इब्न मसूद से, और वकी ने अमीर अल-मोमिनीन अली और अमीर अल-मोमिनीन उस्मान बिन अफ़ान से इसका वर्णन किया। और उन्होंने इसे पहले ही अमीर अल-मोमिनीन उमर से प्रस्तुत किया था। और इब्न अबी शायबा और अल-दाराकुत्नी के वर्णन के माध्यम से इब्न उमर से पैगंबर (अल्लाह की शांति और आशीर्वाद उन पर हो) से रिपोर्ट किया गया था और अंत में इसका उल्लेख किया गया।

मैं उपस्थित था जब एक व्यक्ति आया और कहा, "मैंने अपनी पत्नी को तीन तलाक दे दिए हैं।" मुजाहिद कहते हैं कि हज़रत इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) कुछ देर चुप रहे, तो मैंने सोचा कि शायद इब्न अब्बास सवाल करने वाले को पत्नी वापस कर देंगे। फिर कुछ देर बाद उन्होंने कहा, "तुममें से कुछ लोग अपनी पत्नी को तलाक देते समय मूर्खता करते हैं और फिर कहते हैं, 'हे इब्न अब्बास! हे इब्न अब्बास!' याद रखें, अल्लाह तआला ने फरमाया: 'जो अल्लाह से डरता है, अल्लाह उसके लिए कोई रास्ता निकाल देता है।' चूंकि आपने अल्लाह की अवज्ञा की है, आपकी पत्नी आपसे अलग हो गई है।" इसके बाद, फतह अल-कादिर ने इस पर प्रमाणों का उल्लेख किया। मुवत्ता के हवाले से, इब्न अब्बास और इब्न मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) के वर्णन का उल्लेख किया गया, जैसा कि अबू दाऊद ने इब्न अब्बास और अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) से एक संयुक्त रिपोर्ट वर्णित की। इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) से इसी तरह का वर्णन किया गया था, और यह कहा गया था कि यह अब्दुल्ला बिन अम्र बिन अल-आस (रज़ियल्लाहु अन्हु) से भी वर्णित है। और उन्होंने कहा कि अब्द अल-रज्जाक ने अलकामा से इब्न मसूद (रज़ियल्लाहु अन्हु) के माध्यम से सनद का उल्लेख किया, और वकी ने अमीर अल-मोमिनीन उमर फारूक, उस्मान बिन अफ़ान (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से। और इससे

पहले, फतह अल-कादिर ने अमीर अल-मोमिनीन उमर फारूक (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से एक वर्णन का उल्लेख किया था, और उन्होंने इब्न अबी शायबा और दाराकुत्नी के वर्णन को इब्न उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) के माध्यम से हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से बयान किया। और यही उन्होंने अपने कलाम (वार्ता) में...

पृष्ठ 411 का 688

فتاوی رضویہ جلد دو ازدھم

عنهما فجاء رجل فقال انه طلق امرأته ثلثاً قال فسكت حتى ظننت انه رادها اليه ثم قال ايطلق احدكم فيركب الحموقة ثم يقول يا ابن عباس يا ابن عباس فان الله عز وجل قال ومن يتق الله يجعل له مخرجاً عصيت ربك وبانت منك امرأتك، ثم ذكر ادلته برواية لالمؤطا عن ابن عباس وابي هريرة معاً ومثله عن ابن عمر قال وروى ايضاً عن عبدالله بن عمر وبن العاص واسند عبدالرزاق عن علقمة عن ابن مسعود و وكيع عن اميرالمؤمنين على وامير المؤمنين عثمان بن عفان وقد قدمه عن امير المؤمنين عمر و اورده برواية ابن ابي شيبة والدار قطنى عن ابن عمر عن البنى صلى الله تعالى عليه وسلم وذكره في آخر

پاس موجود تھا تو ایک شخص آیا اور کہا کہ میں نے اپنی بیوی کو تین طلاقیں دے دی ہیں، مجاہد کہتے ہیں کہ حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ کچھ دیر خاموش رہے تو میں نے خیال کیا کہ شاید ابن عباس سائل کو بیوی واپس کر دیں گے، تو کچھ دیر بعد آپ نے فرمایا تم میں سے بعض لوگ بیوی کو طلاق دیتے ہوئے حماقت سے کام لیتے ہیں اور پھر اے ابن عباس اے ابن عباس کہتے ہیں، تو یاد رکھو اللہ تعالیٰ نے فرمایا : جو شخص اللہ تعالیٰ سے ڈرتا ہے تو اللہ تعالیٰ اس کے لئے کوئی سبیل پیدا فرمادیتا ہے، جبکہ تو نے اللہ تعالیٰ کی نافرمانی کی ہے تیری بیوی تجھ سے لاتعلق ہو چکی ہے۔ اسکے بعد فتح القدیر نے اس پر دلائل ذکر کئے۔ مؤطا کے حوالہ سے ابن عباس اور ابن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہما کی روایت ذکر کیں جیسا کہ ابوداؤد نے ابن عباس اور ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے اکھٹی روایت کی، اس طرح کی روایت ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ذکر کی، اور کہا کہ عبداللہ بن عمر بن العاص رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بھی مروی ہے، اور انہوں نے کہا کہ عبدالرزاق نے علقمہ عن ابن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ، اور وکیع عن امیر

المؤمنین عمر فاروق عثمان بن عفان رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے سند ذکر کی، اور قبل ازیں فتح القدیر نے امیر المؤمنین عمر فاروق رضی اللہ تعالیٰ عنہم سے روایت ذکر کی اور انہوں نے ابن ابی شیبہ اور دار قطنی کی روایت بھی ابن عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے ذریعہ حضور علیہ الصلوۃ والسلام سے بیان کی۔ اور اسی کو انہوں نے کلام کے

Fatawa Razawiyya - Volume 12

[Boxed Text] Arabic Part: The discourse in the narration of Abd al-Razzaq in his 'Musannaf' from Ubadah bin al-Samit from the Prophet (may Allah Almighty send peace and blessings upon him and be pleased with all of them) until he said: We have established the transmission from most of them explicitly regarding the occurrence of three divorces, and no opponent appeared to them. So, what is after truth except misguidance? Based on this, we say that no ruler should judge that three [divorces] uttered in one breath are only one, and if he does, his judgment is not implemented because it is not permissible to exercise ijtihad (independent legal reasoning) in this matter. It is a contravention, not a difference of opinion. (Summarized) And Allah Almighty knows best.

Urdu Part: In the end, it was mentioned that Abd al-Razzaq narrated in his 'Musannaf' through Ubadah bin al-Samit from the Holy Prophet (peace and blessings be upon him), saying that we have explicitly proven the implementation of three divorces from most of the elders, and no opponent has appeared against them. So, what can there be after this truth except misguidance? On this basis, we say that if any ruler rules one divorce for three divorces given at once, his rule will not be implemented because there is no room for ijtihad in this matter, and it will be against the truth; it will not be called a difference of opinion. (Summarized) And Allah Almighty knows best (T).

Main Text: Issue 190: From Pilibhit, Mohalla Muhammad Wasil, sent by Khaleeq Ahmed Sahib, 3rd Rabi-ul-Akhir Sharif 1320 AH. What do the scholars of religion say regarding this issue: a person who was terminally ill, due to the disobedience of his wife—caused by her mother's instigation, which caused distress to her husband—sent a written divorce through the following document, after she withheld various items and belongings of the husband, including a box of clothes: "To Ms. [Name] daughter of [Name], let it be clear that the way you treated me due to your mother's instigation, and that you kept my various belongings and clothes box, you did well; this is an excellent way to acquire wealth, in this way much can be gathered. For this reason, you are not worthy of me. Therefore, I divorce you. Ms. [Name] daughter of [Name] who was in my marriage, I have divorced today. Ms. [Name] daughter of [Name] who was in my marriage, I have divorced today. Ms. [Name] daughter of [Name] who was in my marriage, I have divorced today." The address on the card to the woman's brother was written in such a way because he was illiterate: 'At such and such neighborhood'.

[Footnote] 1. Fath al-Qadeer, Chapter of Divorce according to Sunnah, Nooria Razawiyya Sukkur, 3/330.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 12

[बॉक्स किया हुआ पाठ] अरबी भाग: अब्दुर रज़्ज़ाक की उनके'मुसन्निफ़' में उबादा बिन सामित के माध्यम से नबी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन) से रिवायत में उल्लेख है, यहाँ तक कि उन्होंने कहा: हमने उनमें से अधिकांश से तीन तलाकों के प्रभावी होने को स्पष्ट रूप से सिद्ध किया है और उनके लिए कोई विरोधी प्रकट नहीं हुआ। तो हक़ के बाद गुमराही के सिवा क्या है? इसी कारण हमने कहा कि कोई हाकिम यह फ़ैसला न करे कि एक ही शब्द में दी गई तीन तलाकें एक ही हैं, और यदि वह ऐसा करता है तो उसका फ़ैसला लागू नहीं होगा क्योंकि इसमें इजतिहाद की गुंजाइश नहीं है। यह ख़िलाफ़ (विरोध) है, इख़्तिलाफ़ (वैध मतभेद) नहीं। (संक्षेपित) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

उर्दू भाग: अंत में इस प्रकार उल्लेख किया गया है कि अब्दुल रज्जाक ने अपने 'मुसन्निफ' में उबादा बिन अल-सामित के माध्यम से हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से रिवायत की, यहाँ तक कि कहा कि हमने अधिकांश महानुभावों से तीन तलाक के प्रभावी होने को स्पष्ट रूप से सिद्ध किया है और उन महानुभावों का कोई विरोधी प्रकट नहीं हुआ। तो इस सत्य के बाद गुमराह के सिवा क्या हो सकता है? इसी आधार पर हम कहते हैं कि यदि किसी शासक (काजी) ने एक ही बार में दी गई तीन तालकों को एक तलाक का आदेश दिया, तो उसका आदेश लागू नहीं होगा क्योंकि इसमें इजतिहाद की कोई गुंजाइश नहीं है और यह सत्य के विरुद्ध होगा, इसे मतभेद (इख्तिलाफ) नहीं कहा जाएगा। (संक्षेपित) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है (त)।

मुख्य पाठ: मसला 190: पीलीभीत, मोहल्ला मोहम्मद वासिल से, प्रेषक खलीक अहमद साहब, 3 रबी-उल-आख़िर शरीफ़ 1320 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: एक व्यक्ति जो घातक रूप से बीमार था, उसने अपनी पत्नी की अवज्ञा के कारण—जो उसकी पत्नी ने अपनी माँ के उकसावे के कारण अपने पति को कष्ट दिया और पति की हर तरह की देखभाल के बजाय निम्नलिखित लेख के माध्यम से तलाक लिखकर भेजा, जब पत्नी ने पति के कपड़े का बक्सा आदि विविध सामान रख लिया था: "मुसमात फलां बिन्ते फलां (नाम पुत्री नाम) को स्पष्ट हो कि तुमने अपनी माँ के उकसावे के कारण जो कुछ मेरे साथ व्यवहार किया और मेरा कपड़ों का बक्सा आदि विविध सामान रख लिया, बहुत अच्छा किया; यह धन प्राप्त करने का एक बेहतरीन तरीका है, इस तरह से बहुत कुछ इकट्ठा किया जा सकता है। इस कारण से तुम मेरे योग्य नहीं हो, इसलिए मैं तुम्हें तलाक देता हूँ। मुसमात फलां बिन्ते फलां जो मेरे निकाह में थी, आज की तारीख में मैंने तलाक दिया।

मुसमात फलां बिन्ते फलां जो मेरे निकाह में थी, आज की तारीख में मैंने उसे तलाक दिया। मुसमात फलां बिन्ते फलां जो मेरे निकाह में थी, आज की तारीख में मैंने उसे तलाक दिया।" औरत के भाई के नाम कार्ड का पता इस तरह से लिखा था क्योंकि वह अनपढ़ था: 'फलां मोहल्ले के स्थान पर'।

[पाद टिप्पणी] 1. फ़तह अल-क़दीर, बाब तलाक़-ए-सुन्नत, नूरिया रिज़विया सुक्कुर, 3/330।

[باکس میں متن] عربی حصہ: الكلام برواية عبدالرزاق في مصنفه عن عبادة بن الصامت عن النبي صلى الله تعالى عليه وسلم ورضي الله تعالى عنهم اجمعين الى ان قال، قد اثبتنا النقل عن اكثرهم صريحاً بايقاع الثلاث ولم يظهر لهم مخالف فما ذا بعد الحق الا الضلال وعن هذا قلنا لم يحكم حاكم بأن الثلث بفم واحد واحدة لم ينفذ حكمه لانه لايسوغ الاجتهاد فيه فهو خلاف لا اختلاف (ملخصاً) واللہ تعالی اعلم۔

اردو حصہ: آخر میں یوں ذکر کیا کہ عبدالرزاق نے اپنے مصنف میں عبادہ بن الصامت کے واسطہ سے حضور علیہ الصلوۃ والسلام سے روایت کیا، یہاں تک کہا کہ ہم نے اکثر حضرات سے تین طلاقوں کا نافذ ہونا صراحتاً ثابت کیا اور ان حضرات کوئی بھی مخالف ظاہر نہ ہوا، تو اس حق کے بعد گمراہی کے سوا کیا ہو سکتا، اسی بناء پر ہم کہتے ہیں کہ اگر کسی حاکم نے بیک زبان تین طلاقوں کے ایک طلاق کا حکم دیا تو اس کا حکم نافذ نہ ہوگا کیونکہ اس میں اجتہاد کی گنجائش نہیں ہے اور یہ حق کے خلاف ہوگا اس کو اختلاف نہ کہا جائے گا(ملخصاً) واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

اصل متن: مسئلہ ۱۹۰: از پیلی بھیت محلہ محمد واصل مرسلہ خلیق احمد صاحب ۳ ربیع الآخر شریف ۱۳۲۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص مہلک مریض نے اپنی زوجہ کی نافرمانی کے سبب جو اس کی زوجہ نے اپنی ماں کے اشتعال کی وجہ سے اپنے زوج کو تکلیف دی اور ہر قسم کی خبرگیری شوہر سے حسب ذیل تحریر کے ذریعہ سے طلاق لکھ بھیجی، مسماۃ فلاں بنت فلاں کو واضح ہو کہ تم نے اپنی ماں کو اشتعال کے باعث جو کچھ میرے ساتھ برتاؤ کیا اور اسباب متفرق معہ بکس حمولہ پارچہ وغیرہ میرا رکھ لیا بہت اچھا کیا یہ ایک عمدہ طریقہ حصول مالیت کا ہے اس طور سے بہت کچھ جمع ہوسکتا ہے اس وجہ سے تم میرے لائق نہیں ہو، لہٰذا میں تم کو طلاق دیتا ہوں، مسماۃ فلاں بنت فلاں جو میرے نکاح میں تھی آج کی تاریخ

میں نے طلاق دی، مسماۃ فلاں بنت فلاں جو میرے نکاح میں تھی آج کی تاریخ میں نے اس کو طلاق دی، مسماۃ فلاں بنت فلاں جو میرے نکاح میں تھی آج کی تاریخ میں نے اس کو طلاق دی۔ عورت کے بھائی کے نام کارڈ کا پتہ اس طور سے لکھا تھا جو ناخواندہ ہے بمقام فلاں محلہ

[فٹ نوٹ] [1]فتح القدیر باب طلاق السنۃ نوریہ رضویہ سکھر ۳ / ۳۳۰

Fatawa Razawiyya Volume 12

...reached so-and-so to be delivered to Musammat so-and-so, daughter of so-and-so. Now, since the husband recovered after several months, people are pressuring both sides, saying that a divorce did not occur in this manner. If the written postcard had been addressed to someone else appointed for this task, informing them to give it as my representative, then divorce would have taken place. Secondly, that woman was pregnant, so in any case, divorce did not occur. Therefore, your honorable presence is informed to kindly apprise the petitioner with the Sharia ruling on this matter along with arguments soon.

Answer: The person mentioned became a sinner by giving three divorces at once, and three divorces fell upon the woman; she is out of the marriage. Now, without Halala, marriage cannot be performed with her. The woman being pregnant or not appointing a representative to give divorce is not contrary to divorce; these are merely ignorant thoughts. And Allah Almighty knows best.

Issue 191: From Bhamori Post Office Bhakeempur, District Aligarh, sent by Abdul Razzaq Sahib, 23rd Jumada al-Ula 1336 AH. Zaid gave three divorces to his wife through letters. The first letter written to his father-in-law was: I seek permission to express my views, but I am waiting for your opinion; I hope I will be given permission to express my views. But the father-in-law did not reply. To this, he wrote in the second letter, the summary of which is: I had sought permission to express my views, but your honor remained silent. Now I dare to say that my marriage to your daughter was solely at my father's wish; it was not acceptable to me, otherwise I had no relation with your daughter nor do I want to keep one in the future. From today's date, I give your daughter divorce, divorce, divorce. You know and my father knows. Now, in that letter where there is divorce, initially there was denial, in the letter expressing boldness, there was an admission. Three years later, Zaid's father-in-law went to Zaid and asked, what is your intention regarding my daughter? He said I have no relation. He said, walk with me to the inn so that there can be a witness to your statement in the inn. Accordingly, he came to the inn and in front of two men whose names are Mirza Muhammad Siddiq Baig, resident of Khurja, District Bulandshahr, and the other's name is Hafiz Fakhruddin, resident of Anu Mohalla Pathan. Thus, statements of both witnesses were given before a scholar, Muhammad Abdul Rashid Saswani, Head Maulvi of Government High School, Farrukhabad. They also stated that I, meaning Zaid, have already given divorce to my wife in previous letters, and now I give divorce again for the third time. Thus, the copy of both letters

and the copy of all three documents, two witness statement papers and one paper of Maulvi Abdul Rashid...

...फलां के पास फलां पहुँच कर मुसम्मात फलां बिन्त फलां को मिले। अब चूंकि शौहर कई माह बाद सेहतयाब हुआ, लोग तरफैन पर ज़ोर देते हैं और कहते हैं कि इस तौर तलाक़ नहीं हुई। अगर तहरीर पोस्टकार्ड किसी दूसरे के नाम जाती जो इस काम के वास्ते मुक़र्रर किया जाता, उसको लिखा जाता कि तुम मेरी तरफ़ से बतौरे वकील दे दो तब तलाक़ हो जाती। दूसरे यह कि वह औरत हामिला थी, किसी सूरत में भी तलाक़ नहीं हुई। लिहाज़ा आंजनाब फ़ैज़-मआब को इत्तला दी जाती है कि इस बारे में जो हुक्मे शर-ए-शरीफ़ हो बदलाईल उससे साइल को जल्द मुत्तला फ़रमाएं।

अल-जवाब: शख़्स मज़कूर तीन तलाक़ें एक साथ देने से गुनहगार हुआ और औरत पर तीन तलाक़ें पड़ गईं, वह निकाह से निकल गई। अब बे-हलाला उससे निकाह नहीं कर सकता। औरत का हामिला होना या किसी को तलाक़ देने का वकील न करना कुछ मुनाफ़ी-ए-तलाक़ नहीं, ये महज़ जाहिलाना ख़्याल हैं। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 191: अज़ भमोरी डाकख़ाना भकीमपुर ज़िला अलीगढ़, मुरसला अब्दुल रज़्ज़ाक़ साहब 23 जमादी-उल-उला 1336 हि.। ज़ैद ने ब-ज़रिए खुतूत अपनी बीवी को तीन तलाक़ें दीं। पहला ख़त जो कि अपने ससुर को लिखा यह है कि मैं अपने इज़हारे ख़्यालात की इजाज़त चाहता हूँ, मगर आपकी राय का मुंतज़िर हूँ, उम्मीद कि मुझको इज़हारे ख़्यालात की इजाज़त दी जाएगी मगर ससुर ने जवाब नहीं दिया। इस पर दूसरे ख़त में लिखा है जिसका खुलासा यह है कि मैंने अपने इज़हारे ख़्यालात की इजाज़त चाही थी मगर क़िबला ने सुकूत इख़्तियार फ़रमाया। अब मैं जुर्रत करता हूँ कि मेरी शादी आपकी लड़की से महज़ वालिद साहब की ख़्वाहिश थी, मुझको मंज़ूर न थी वरना मुझको आपकी साहिबज़ादी से किसी क़िस्म का तअल्लुक़ रहा और न आइंदा रखना चाहता हूँ। आज की तारीख़ से आपकी लड़की को तलाक़ तलाक़ तलाक़ देता हूँ, आप जानें वालिद साहब जानें। अब उस ख़त से जिसमें तलाक़ है अव्वल में इंकार था इज़हारे जुर्रत वाले ख़त में इक़रार था। इसके तीन साल बाद ज़ैद का ससुर ज़ैद के पास गया और कहा मेरी लड़की के साथ तुम्हारा क्या इरादा है, उसने कहा मेरा कुछ तअल्लुक़ नहीं है। उसने कहा कि मेरे साथ सराय तक चलो ताकि तुम्हारे बयान का सराय में कोई गवाह भी हो जाए, चुनांचे वह सराय में आया और दो 2 आदमियों के सामने जिनका नाम मिर्ज़ा मुहम्मद सिद्दीक़ बेग साकिन खुर्जा ज़िला बुलंदशहर और दूसरे का नाम हाफ़िज़ फ़ख़रुद्दीन साकिन आनू मोहल्ला पठान, चुनांचे दोनों गवाहों के बयानात एक आलिम मुहम्मद अब्दुल रशीद सस्वानी हेड

मौलवी गवर्नमेंट हाई स्कूल फ़र्रुख़ाबाद के सामने बयान हुए। उन्होंने यह भी बयान किया कि मैंने यानी ज़ैद ने कि पहले खुतूत में भी अपनी बीवी को तलाक़ दे चुका हूँ, और अब भी तलाक़ मुकर्रर सह कर देता हूँ, चुनांचे वह दोनों ख़तों की नक़ल और तीनों काग़ज़ात की नक़ल दो काग़ज़ बयानात गवाह और एक काग़ज़ मौलवी अब्दुल रशीद...

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

فلاں پاس فلاں پہنچ کر مسماۃ فلاں بنت فلاں کو ملے۔ اب چونکہ شوہر کئی ماہ بعد صحت یاب ہوا لوگ طرفین پر زور دیتے ہیں اور کہتے ہیں کہ اس طور طلاق نہیں ہوئی اگر تحریر پوسٹ کارڈ کسی دوسرے کے نام جاتی جو اس کام کے واسطے مقرر کیا جاتا اس کو لکھا جاتا کہ تم میری طرف سے بطور وکیل دے دو تب طلاق ہو جاتی، دوسرے یہ کہ وہ عورت حاملہ تھی کسی صورت میں بھی طلاق نہیں ہوئی، لہٰذا آنجناب فیض مآب کو اطلاع دی جاتی ہے کہ اس بارہ میں جو حکم شرع شریف ہو بدلائل اس سے سائل کو جلد مطلع فرمائیے۔

الجواب: شخص مذکور تین طلاقیں ایک ساتھ دینے سے گنہگار ہوا اور عورت پر تین طلاقیں پڑ گئی وہ نکاح سے نکل گئی، اب بے حلالہ اس سے نکاح نہیں کر سکتا، عورت کا حاملہ ہونا یا کسی کو طلاق دینے کا وکیل نہ کرنا کچھ منافی طلاق نہیں، یہ محض جاہلانہ خیال ہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۹۱: از بھموری ڈاک خانہ بھکیم پور ضلع علی گڑھ مرسلہ عبدالرزاق صاحب ۲۳ جمادی الاولیٰ ۱۳۳۶ھ زید نے بذریعہ خطوط اپنی بیوی کو تین طلاقیں دیں پہلا خط جو کہ اپنے خسر کو لکھا یہ ہے کہ میں اپنے اظہار خیالات کی اجازت چاہتا ہوں، مگر آپ کی رائے کا منتظر ہوں، امید کہ مجھ کو اظہار خیالات کی اجازت دی جائے گی مگر خسر نے جواب نہیں دیا، اس پر دوسرے خط میں لکھا ہے جس کا خلاصہ یہ ہے کہ میں نے اپنے اظہار خیالات کی اجازت چاہی تھی مگر قبلہ نے سکوت اختیار فرمایا اب میں جرات کرتا ہوں کہ میری شادی آپ کی لڑکی سے محض والد صاحب کی خواہش تھی مجھ کو منظور نہ تھی ورنہ مجھ کو آپ کی صاحبزادی سے کسی قسم کا تعلق رہا اور نہ آئندہ رکھنا چاہتا ہوں آج کی تاریخ سے آپ کی لڑکی کو طلاق طلاق طلاق دیتا ہوں

آپ جانیں والد صاحب جانیں ۔ اب اُس خط سے جس میں طلاق ہے اول میں انکار تھا اظہار جرات والے خط میں اقرار تھا اس کے تین سال بعد زید کا خسر زید کے پاس گیا اور کہا میری لڑکی کے ساتھ تمہارا کیا ارادہ ہے، اس نے کہا میرا کچھ تعلق نہیں ہے۔ اس نے کہا کہ میرے ساتھ سرائے تک چلو تا کہ تمہارے بیان کا سرائے میں کوئی گواہ بھی ہو جائے ، چنانچہ وہ سرائے میں آیا اور دو ۲ آدمیوں کے سامنے جن کا نام مرزا محمد صدیق بیگ ساکن خورجہ ضلع بلند شہر اور دوسرے کا نام حافظ فخر الدین ساکن آنو محلہ پٹھان، چنانچہ دونوں گواہوں کے بیانات ایک عالم محمد عبدالرشید سسوانی ہیڈ مولوی گورنمنٹ ہائی اسکول فرخ آباد کے سامنے بیان ہوئے۔ انہوں نے یہ بھی بیان کیا کہ میں نے یعنی زید نے کہ پہلے خطوط میں بھی اپنی بی بی کو طلاق دے چکا ہوں، اور اب بھی طلاق مکرر سہ کر دیتا ہوں، چنانچہ وہ دونوں خطوں کی نقل اور تینوں کاغذات کی نقل دو کاغذ بیانات گواہ اور ایک کاغذ مولوی عبدالرشید

Fatawa Razawiyya Volume 12

The question related to the aforementioned person is: In the above-mentioned situation, did the divorce of Zaid's wife occur or not? If it occurred, will the waiting period (Iddah) start from the time of the letters or from the testimony of the mentioned witnesses?

Copy of the First Letter To the respected guide (Qibla and Kaaba), may your shadow endure. Greetings with great respect. I haven't heard news of your well-being for a long time, which is concerning. I hope to be informed. This humble servant wishes for permission to express some thoughts which I deem necessary in my understanding, but I cannot muster the courage without seeking an opinion. I hope you will definitely accept this request of mine, the testimony of which is very pleasant and attractive in my eyes. More humility. The eternal humble one, Syed Abid Ali.

Second Letter Afterwards To the respected Qibla of blessings and Kaaba of benevolence, may his high shadow endure. After greetings and honors. This humble servant previously sought permission to express his thoughts. You maintained silence, so I remained silent. Now I venture to submit a request, which you will kindly accept. My marriage to your daughter was solely at my father's wish; I did not desire it myself. I never had any kind of relationship with your daughter, nor do I wish to have one in the future. In accordance with Sharia, I give your daughter triple divorce (talaq, talaq, talaq) starting from today's date. Now it's between you and your father.

Statement of Mirza Siddiq Baig, witness before whom Abid Ali confessed to divorcing his wife: Abid Ali said to Abdul Razzaq in front of us at Sarai Bilhaur: "It has been a while since I gave your daughter a divorce in writing. You should act upon that writing of mine. I say it repeatedly: I have given divorce, given divorce, given divorce. And these people are traveling Muslims; I say this in front of them, they have become Sharia witnesses." This was his indication towards us travelers. Written by Mirza Siddiq Baig, resident of Khoja, district Bulandshahr.

Statement of Hafiz Fakhruddin son of Hafiz Qiyamuddin, resident of town Aonla, Mohalla Pathanan: Abid Ali said to Abdul Razzaq Sahib in front of us at Sarai Bilhaur: "It has been a while since I gave your daughter a legal divorce through my written registered card. You should act upon that writing of mine."

फतावा रज़विया जिल्द 12

उक्त व्यक्ति के रिश्तेदार का सवाल यह है कि इस ऊपर की सूरत में ज़ैद की पत्नी को तलाक हुआ या नहीं? यदि हुआ है, तो इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) पत्रों के समय से शुरू होगी या उक्त गवाहों की गवाही से?

पहले पत्र की प्रतिलिपि क़िबला व काबा (सम्मानित मार्गदर्शक), आपकी छाया बनी रहे। बड़े सम्मान के साथ अभिवादन। काफी समय से आपकी कुशलता की खबर नहीं मिली, जिससे चिंता है। उम्मीद है कि सूचित किया जाएगा। यह विनीत सेवक अपने विचारों को व्यक्त करने की अनुमति चाहता है जो मेरी समझ में आवश्यक हैं, लेकिन बिना राय मांगे हिम्मत नहीं कर सकता। मुझे उम्मीद है कि आप मेरी इस प्रकार की गुजारिश को जरूर स्वीकार करेंगे जिसकी गवाही मेरी नज़रों में अत्यंत सुखद और आकर्षक है। अधिक विनम्रता। शाश्वत विनीत, सैयद आबिद अली।

बाद का दूसरा पत्र नेमत के क़िबला और करामत के काबा, आपकी ऊँची छाया बनी रहे। सलाम और सम्मान के बाद। इस विनीत ने पहले अपने विचारों को व्यक्त करने की अनुमति चाही थी। आपने चुप्पी साध ली, इसलिए मैं भी चुप रहा। अब हिम्मत करके अर्ज करता हूँ, जिसे आप स्वीकार फरमाएंगे। मेरी शादी आपकी बेटी के साथ केवल वालिद साहब (पिताजी) की इच्छा पर हुई थी, मुझे यह मंजूर नहीं था। न मुझे आपकी साहिबज़ादी (बेटी) से किसी किस्म का रिश्ता रहा और न ही भविष्य में रखना चाहता हूँ। शरीयत के अनुसार, मैं आपकी लड़की को आज की तारीख से तलाक, तलाक, तलाक देता हूँ। अब आप जानें और वालिद साहब जानें।

मिर्जा सिद्दीक बेग का बयान, जिनके सामने आबिद अली ने अपनी पत्नी को तलाक देने का इकरार किया: आबिद अली ने हमारे सामने सराय बिल्हौर में अब्दुल रज्जाक से इस प्रकार कहा: "तुम्हें तुम्हारी लड़की को तलाक दिए हुए एक अरसा बीत चुका है जो मैंने लिखित रूप में दिया था। तुम मेरे उसी लेखन पर अमल करो और मैं बार-बार कहता हूँ कि मैंने तलाक दिया, तलाक दिया, तलाक दिया और ये लोग मुसाफिर मुसलमान हैं, मैं इनके सामने कहता हूँ, ये शरीयत के गवाह बन चुके हैं।" यह इशारा उनका हम मुसाफिरों की तरफ था। लिखित: मिर्जा सिद्दीक बेग, निवासी खोरजा, जिला बुलंदशहर।

हाफिज फखरुद्दीन पुत्र हाफिज कयामुद्दीन, निवासी कस्बा आंवला, मोहल्ला पठानां का बयान: आबिद अली ने हमारे सामने सराय बिल्हौर में अब्दुल रज्जाक साहब से इस प्रकार कहा कि: "मैंने

तुम्हारी लड़की को एक अरसा पहले अपने लिखित रजिस्टर्ड कार्ड के माध्यम से शरीयत के अनुसार तलाक दे दिया है। तुम मेरे उसी लेखन पर अमल करो।"

पृष्ठ 688 का 414

فتاویٰ رضویہ جلد دو از دہم

صاحب موصوف کے ہم رشتہ سوال یہ ہے کہ اس صورت بالا میں زید کی بی بی کو طلاق واقع ہوئی یا نہیں؟ اگر ہوئی ہے تو عدت خطوط کے وقت سے شروع ہوگی یا گواہی دینے گواہان مذکور سے؟

نقل خط اول قبلہ وکعبہ مدظلہ، تسلیم بصد تعظیم، عرصہ سے خیریت دریافت نہیں ہوئی تردد ہے، امید کہ مطلع فرمایا جاؤں، نیاز مند کسی قدر اپنے اظہار خیالات کی اجازت چاہتا ہے جو میری دانست میں ضروری ہیں لیکن بلا استخراج رائے جرات نہیں کر سکتا، مجھے امید ہے کہ آپ میری اس قسم کی گزارش کو ضرور منظور فرمائیں گے جس کی شہادت میری نظروں میں نہایت خوش آئند و دلفریب ہیں، زیادہ نیاز۔ احقر ازلی سید عابد علی۔

خط دوم بعد کا قبلہ نعمت و کعبہ کرامت مدظلہ العالی تسلیم بعد تکریم، نیاز مند قبل اس کے اظہار خیالات اپنے کی اجازت چاہی، قبلہ نے سکوت اختیار فرمایا، نیاز مند خاموش ہو رہا، اب جرات کرتا ہوں عرض کرنے کی، جس کو جناب منظور فرمائیں گے۔ میری شادی جناب کی دختر کے ساتھ ہوئی محض والد صاحب کی خواہش تھی مجھ کو منظور نہ تھی، نہ مجھ کو آپ کی صاحبزادی سے کسی قسم کا تعلق رہا اور نہ آئندہ رکھنا چاہتا ہوں، بموجب شرع کے آپ کی لڑکی کو آج کی تاریخ سے طلاق طلاق طلاق دیتا ہوں، آپ جانیں والد صاحب جانیں۔

بیان مرزا صدیق بیگ گواہ جن کے سامنے عابد علی نے اپنی زوجہ کو طلاق دینے اقرار کیا۔ عابد علی نے ہمارے سامنے عبد الرزاق سے سرائے بلہور میں یوں کہا تمہیں نے تمہاری لڑکی کو ایک عرصہ گزرا کہ بذریعہ تحریر کے طلاق دے چکا ہوں تم اسی میری تحریر پر عملدرآمد کرو اور

مکرر سہ کر کہتا ہوں کہ میں نے طلاق دی طلاق دی طلاق دی اور یہ لوگ مسافر مسلمان ہیں ان کے سامنے کہتا ہوں یہ لوگ شرعی گواہ ہو چکے ہیں، یہ اشارہ ان کا ہم مسافروں کی طرف تھا۔

بقلم مرزا صدیق بیگ ساکن خوجہ ضلع بلند شہر

بیان حافظ فخر الدین ولد حافظ قیام الدین صاحب ساکن قصبہ آنولہ محلہ پٹھاناں عابد علی نے ہمارے سامنے عبد الرزاق صاحب سے سرائے بلہور میں یوں کہا کہ میں نے تمہاری لڑکی کو ایک عرصہ گزرا بذریعہ اپنی تحریر کارڈ رجسٹری کے طلاق شرعی دے چکا ہوں تم اسی میری تحریر پر عملدرآمد کرو

Fatawa Razawiyya Volume 12

And now I am writing and stating that I have given divorce, given divorce, given divorce; and these people are traveler Muslims, I tell them that they have become Sharia witnesses. This was an indication towards us travelers.

The servant, Hafiz Fakhruddin son of Hafiz Qiyamuddin, resident of Aonla, Pathanan neighborhood, in his own hand.

Today, dated July 2nd, 1917, corresponding to 11th Ramadan al-Mubarak 1335 AH, Syed Abdul Razzaq Sahib, resident of Bhori, visited my place. Three more gentlemen were with him. Syed Abdul Razzaq Sahib presented two of those three companions as witnesses to the verbal confession of divorce by the aforementioned Mir Abid Ali (his son-in-law) to his daughter, via an existing registered document. The aforementioned witnesses recorded their statements regarding the verbal divorce under their signatures. It is well-established from the existing registered document that it was written by Mir Abid Ali himself and that he also gave the verbal divorce three times. The aforementioned statements are attached to this writing. Signed and stamped by the writer, servant of physicians and scholars, Abu Muhammad Abdul Rashid Zahoor-ul-Islam Sehwani, Head Maulvi, Government High School, Farrukhabad. Sent today, July 2nd, 1917. List of pages: {Writer's statement 1, Mirza Siddiq Baig's statement 1, Hafiz Fakhruddin Sahib's statement 1} Total three pages.

The Answer: No writing can be accepted without witnesses or the writer's confession, even if the handwriting appears to be his. Scholars state:

'Handwriting resembles handwriting and a seal resembles a seal, just as mentioned in Al-Hindiyya and others.' (Handwriting can look like another person's handwriting, and a seal like another seal).

Here, Abid Ali denies this letter, so testimony is required. The testimony given by those two witnesses is deficient and incomplete. In their statements, they say Abid and Abdul Razzaq; there could be thousands with these names in the country. The condition for testimony is that if they are present, the witness should point towards them and testify that this Abid Ali said this regarding this Abdul Razzaq's daughter (his wife). If they are not present, then the witness should state their lineage up to the grandfather, that...

1 Fatawa Hindiyya, Chapter: Letter from one Qadi to another, Noorani Kutub Khana Peshawar, 3/381.

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

और अब लिखकर रख रहा हूँ कि मैंने तलाक़ दी, तलाक़ दी, तलाक़ दी; और ये लोग मुसाफ़िर मुसलमान हैं, इनसे कहता हूँ कि ये लोग शरई गवाह हो चुके हैं। यह इशारा हम मुसाफ़िरों की तरफ़ था।

अल-अब्द हाफ़िज़ फ़ख़रुद्दीन वल्द हाफ़िज़ क़ियामुद्दीन, साकिन आंवला, मोहल्ला पठानां, ब-क़लम खुद।

आज तारीख 2 जुलाई 1917 ईस्वी, मुताबिक़ 11 रमज़ानुल मुबारक 1335 हिजरी, सैय्यद अब्दुल रज्ज़ाक़ साहब साकिन भोरी मेरे यहाँ तशरीफ़ लाए और उनके साथ तीन और साहब थे। सैय्यद अब्दुल रज्ज़ाक़ साहब ने मीर आबिद अली (अपने दामाद) द्वारा उनकी लड़की को एक रजिस्टर्ड तहरीर के माध्यम से तलाक़ देने के बारे में उन तीनों साथियों में से दो साहबों को मीर आबिद अली के ज़बानी इक़रार-ए-तलाक़ का गवाह बयान किया। उपरोक्त गवाहों ने मेरे ज़बानी तलाक़ के बयान को अपने हस्ताक्षरों के साथ दर्ज किया। मौजूदा रजिस्टर्ड तहरीर से यह भली-भांति साबित है कि यह खुद मीर आबिद अली का लिखा हुआ है और उन्होंने तीन बार ज़बानी तलाक़ भी दी। उपरोक्त बयान इस तहरीर के साथ संलग्न हैं। अल-राक़िम ख़ादिमुल अतिब्बा वल उलमा अबू मोहम्मद अब्दुल रशीद ज़हूरुल इस्लाम सहसवानी, हेड मौलवी गवर्नमेंट हाई स्कूल फ़ुख़ाबाद। मोहर और दस्तख़त के साथ आज तारीख 2 जुलाई 1917 को रवाना किया गया। औराक़ की फ़ेहरिस्त: {तहरीर राक़िम 1, बयान मिर्ज़ा सिद्दीक़ बेग 1, बयान हाफ़िज़ फ़ख़रुद्दीन साहब 1} कुल तीन औराक़।

अल-जवाब: कोई तहरीर बिना गवाही या कातिब (लेखक) के इक़रार के मान्य नहीं हो सकती, चाहे लिखावट उसी की मालूम होती हो। उलेमा फ़रमाते हैं:

'लिखावट लिखावट के समान होती है और मोहर मोहर के समान होती है, जैसा कि अल-हिंदिया आदि में है।' (एक की लिखावट दूसरे जैसी और एक की मोहर दूसरे जैसी हो सकती है)।

यहाँ आबिद अली इस ख़त से मुनकिर (इनकारी) है, तो गवाही की ज़रूरत है। उन दो गवाहों ने जो गवाही दी है वह नाक़िस (अधूरी) और नातमाम (अपूर्ण) है। वे अपने बयानों में आबिद और अब्दुल रज्ज़ाक़ कहते हैं; देश में इस नाम के हज़ारों लोग होंगे। गवाही की शर्त यह है कि अगर वे हाज़िर हों तो उनकी तरफ़ इशारा करके गवाही दी जाए कि इस आबिद अली ने इस अब्दुल रज्ज़ाक़ की बेटी

(अपनी पत्नी) के बारे में यह कहा। और अगर वे हाज़िर न हों तो उनका नसब (वंश) दादा तक बयान किया जाए कि...

---

1 फ़तावा हिंदिया, बाब: किताबुल क़ाज़ी इलल क़ाज़ी, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 3/381।

فتاوی رضویہ جلددوازدہم

اور اب مرسہ کر رکھتا ہوں کہ میں نے طلاق دی طلاق دی طلاق دی، اور یہ لوگ مسافر مسلمان ہیں ان سے کہتا ہوں یہ لوگ شرعی گواہ ہو چکے ہیں، یہ اشارہ ہم مسافر ان کی طرف تھا۔

العبد حافظ فخر الدین ولد حافظ قیام الدین ساکن آنولہ محلہ پٹھاناں بقلم خود آج تاریخ دو جولائی ۱۹۱۷ء مطابق ۱۱ رمضان المبارک ۱۳۳۵ھ سید عبد الرزاق صاحب سکنہ بھوری میرے یہاں تشریف لائے اور تین صاحب اور ان کے ہمراہ تھے، سید عبد الرزاق صاحب نے میر عابد اپنے داماد کو ان کی لڑکی کو بذریعہ رجسٹرڈ تحریر موجودہ کے طلاق دینا ان تینوں ہمراہیوں میں سے دو صاحبوں کو میر عابد علی مذکور کے طلاق مذکور کے اقرار زبانی کا گواہ بیان کیا۔ گواہان مذکور الصدر نے میرے زبانی طلاق بدستخط اپنے اپنے بیان تحریر کئے رجسٹر تحریر موجود کا خود میر عابد علی کی تحریر ہونا اور نیز زبانی طلاق مکرر سہ کر دینا بخوبی ثابت ہے، بیانات مذکورہ ہم رشتہ تحریر ہذا ہے۔ الراقم خادم الاطباء والعلماء ابو محمد عبدالرشید ظہور الاسلام سہسوانی ہیڈ مولوی گورنمنٹ ہائی اسکول فرخ آباد۔ مہر و دستخط سے آج تاریخ ۲ جولائی ۱۹۱۷ء کو روانہ کیا گیا۔ فہرست اوراق { تحریر راقم ایک، بیان مرزا صدیق بیگ ایک، بیان حافظ فخر الدین صاحب ایک } کُل تین اوراق۔

الجواب: کوئی تحریر بے شہادت یا اقرار کاتب مسلم نہیں ہو سکتی اگرچہ خط اسی کا معلوم ہوتا ہو، علماء فرماتے ہیں:

الخط یشبہ الخط والخاتم یشبہ الخاتم کما في خط دوسرے خط اور مہر دوسری مہر کے مشابہ ہوتی ہے الھندیۃ وغیرھا۔ جیسا کہ ہندیہ وغیرہ میں ہے (ت)

یہاں عابد علی اس خط سے منکر ہے تو شہادت درکار، اُن دو گواہوں نے جو گواہی دی ناقص و ناتمام ہے وہ اپنے بیانوں میں، عابد و عبد الرزاق کہتے ہیں ملک میں اس نام کے ہزاروں ہوں گے۔ شرط شہادت یہ ہے کہ اگر وہ حاضر ہوں تو ان کی طرف اشارہ کر کے گواہی دے کہ اس عابد علی نے اس عبد الرزاق کی بیٹی زوجہ کی نسبت یہ کہا اور اگر حاضر نہ ہوں تو اُن کا نسب پاک دادا تک بیان کرے کہ

---

1 فتاویٰ ہندیہ باب کتاب القاضی الی القاضی نورانی کتب خانہ پشاور ۳۸۱/۳

Fatawa Rizvia, Volume Twelve

Abid Ali bin Falān bin Falān said this regarding his wife Falān bint Falān, and the correct view is that mentioning the grandfather is also necessary, as stated in al-'Alamgiriyyah (T: Meaning when full identification is not achieved through attribution to the father only).

"For the objective is identification, not the proliferation of letters, as in Jami' al-Fusulayn and al-Durr al-Mukhtar." | Because identification is the goal, not the abundance of letters, as mentioned in Jami' al-Fusulayn and al-Durr al-Mukhtar. (T)

If two reliable, upright witnesses, even if just these two, testify in this manner, then certainly three divorces are established. And Allah Almighty knows best.

Problem 192: From Amriya, Pilibhit district, sent by Muzaffar Ali Khan, 3 Muharram 1336 AH.

Zaid wrote the following divorce content regarding his wedded wife Mahmuda, witnessed by two persons. Did it become an irrevocable (ba'in) divorce or a revocable (raj'i) one? Content of divorce: "I have divorced and left my wedded wife Mahmuda, and now I have no connection with her." He did not utter the divorce three times with his tongue; he only wrote it on paper.

The Answer: In the mentioned situation, Zaid has committed a grave sin. The woman is out of his marriage; three divorces have occurred upon her. Now he cannot even remarry her without a 'halala'. It is not necessary to say anything with the tongue; writing is sufficient when it is without a valid Sharia reason or compulsion, as is the case here. It is stated in al-Ashbah: "Writing is like speech"[1] (T: Written word is like spoken word). The first and second words are explicit (sarih) divorce, and although the third word was metaphorical (kinayah), the preceding divorces designated it for divorce as well. It is stated in Radd al-Muhtar:

"The contextual indication (dalalat al-hal) means the apparent state that makes the objective clear. One form of it is the preceding..." | Contextual indication refers to that state which apparently serves the purpose. One form of it is the previous situation.

[1] Al-Ashbah wa al-Naza'ir, Third Art, Rulings of Writing, Idarat al-Qur'an Karachi, 2/496-59. Page 416 of 688

फ़तावा रज़विया, जिल्द बारहवीं

आबिद अली बिन फलां बिन फलां ने अपनी बीवी फलां बिन्त फलां के बारे में यह कहा, और सही बात यह है कि दादा का ज़िक्र भी ज़रूरी है जैसा कि आलमगीरिया में है (त: यानी जब सिर्फ बाप की तरफ निस्बत से पूरी पहचान न हो जाए),

"निश्चय ही उद्देश्य पहचान है, अक्षरों की संख्या बढ़ाना नहीं, जैसा कि जामे-उल-फूसुलैन और अल-दुर्र-उल-मुख्तार में है।" | क्योंकि पहचान ही उद्देश्य है, अक्षरों की बहुतायत उद्देश्य नहीं है, जैसा कि जामे-उल-फूसुलैन और अल-दुर्र-उल-मुख्तार में है। (त)

अगर दो भरोसेमंद न्यायप्रिय गवाह, भले ही वे यही दो हों, इस तरह गवाही दें तो निश्चित रूप से तीन तलाक साबित हो जाते हैं। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 192: अमरिया ज़िला पीलीभीत से मुज़फ़्फ़र अली खां द्वारा भेजा गया, 3 मुहर्रम 1336 हिजरी।

ज़ैद ने अपनी निकाह की हुई बीवी महमूदा के हक़ में नीचे लिखा तलाक का मजमून दो व्यक्तियों की गवाही में लिख दिया। क्या तलाक बाइन (अटल) हुआ या रजई (परिवर्तनीय)? तलाक का मजमून: "मैंने अपनी निकाह की हुई बीवी महमूदा को तलाक दे दिया और छोड़ दिया और अब मेरा उससे कोई वास्ता नहीं रहा।" उसने ज़बान से तीन बार तलाक अदा नहीं किया, सिर्फ काग़ज़ पर लिख दिया।

जवाब: ऊपर बताई गई स्थिति में ज़ैद बहुत गुनहगार हुआ, औरत उसके निकाह से निकल गई, उस पर तीन तलाकें हो गईं, अब बिना हलाला के वह उससे निकाह भी नहीं कर सकता। ज़बान से कुछ कहना ज़रूरी नहीं, लिखना ही काफ़ी है जब बिना किसी शरई वजह और मजबूरी के हो जैसा कि यहाँ हुआ। अश्बाह में है: "लिखना भाषण की तरह है"[1] (त: लिखना, कहने की तरह है)। पहले और दूसरे शब्द स्पष्ट (सरिह) तलाक हैं और हालाँकि तीसरा शब्द सांकेतिक (किनाया) था, लेकिन पिछले तलाकों ने इसे भी तलाक के लिए निश्चित कर दिया। रद-उल-मुख्तार में है:

"हालात के संकेत (दलालत-उल-हाल) से मुराद वह ज़ाहिरी हालत है जो मक़सद को स्पष्ट कर दे। उसकी एक सूरत, पहले..." | दलालत-ए-हाल से मुराद, वह हालत जो ज़ाहिर तौर पर मक़सद को मुफीद हो। इसकी एक सूरत, पहले वाली स्थिति।

[1] अल-अश्बाह व अन-नज़ैर, तीसरा फ़न, लेखन के अहकाम, इदारातुल कुरान कराची, 2/496-59।

عابد علی بن فلاں بن فلاں نے اپنی زوجہ فلاں بنت فلاں کی نسبت یہ کہا اور صحیح یہ ہے کہ دادا کا ذکر بھی ضرور ہے کمافی العلمگیریۃ (جیسا کہ عالمگیریہ میں ہے۔ ت) یعنی جبکہ فقط باپ کی طرف نسبت سے تمیز کامل نہ ہو جاتی ہو،

فان المقصود التعریف لا تکثیر الحروف کما في جامع الفصولین والدرالمختار۔ | کیونکہ معرفت مقصود ہے حروف کی کثرت مقصود نہیں ہے، جیسا کہ جامع الفصولین اور در مختار میں ہے۔ (ت)

اگر دو گواہ ثقہ عادل اگرچہ یہی دو ہوں اس طرح شہادت ادا کریں تو ضرور تین طلاقیں ثابت ہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۹۲: از امریا ضلع پیلی بھیت مرسلہ مظفر علی خاں ۳ محرم ۱۳۳۶ھ

زید نے اپنی منکوحہ محمودہ کے حق میں مضمونِ طلاق مندرجہ ذیل بہ شہادت دو شخصوں کے تحریر کردیا طلاق بائنہ ہوئی یا رجعی مضمون طلاق میں نے محمودہ منکوحہ کو طلاق دے دی اور چھوڑ دیا اور مجھ کو اب اس سے کوئی واسطہ نہیں رہا اور زبان سے تین بار طلاق ادا نہیں کیا صرف کاغذ پر تحریر کردی۔

الجواب: صورت مذکورہ میں زید سخت گنہگار ہوا، عورت اس کے نکاح سے نکل گئی، اس پر تین طلاقیں ہو گئیں، اب بے حلالہ اس سے نکاح بھی نہیں کر سکتا، زبان سے کچھ کہنا ضرور نہیں تحریر کافی ہے جبکہ بلا وجہ و اکراہ شرعی ہو جیسا کہ یہاں ہوا، اشباہ میں ہے: الکتاب کالخطاب[1]

(تحریر، خطاب کی طرح ہے۔ ت) لفظ اول و دوم دونوں صریح طلاق ہیں اور تیسرا لفظ اگر چہ کنایہ تھا مگر تقدم طلاق نے اسے بھی طلاق کے لئے معین کر دیا، ردالمختار میں ہے:

دلالة الحال المراد بها الحالة الظاهرة المفيدة للمقصود. | دلالت حال سے مراد، وہ حالت جو ظاہر طور پر مقصود کو مفید ہو۔ اس کی ایک صورت، پہلے

[1] الاشباہ والنظائر الفن الثالث احکام الکتابة ادارة القرآن کراچی ۲/۴۹۶-۵۹ Page 416 of 688

Fatawa Razawiyya Volume 12

- And among them is the prior mention of divorce (Talaq), as quoted from al-Muheet in al-Bahr. (T)
- It is stated in it:
- In an-Nahr, it is mentioned that the indication of the state (dalalat al-hal) encompasses the indication of speech (dalalat al-maqal). Therefore, its interpretation is correct in the sense of a discussion as a demand for divorce, or the prior occurrence of the pronouncement, such as saying, "Observe your 'iddah for three [divorces]." (T) And so it is in other instances. And Allah the Almighty knows best.

Problem 193: From Shahgarh Post Office, Shabnagar District Pilibhit, sent by Abdul Rahman Sahib, 12 Ramadan al-Mubarak 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid married a widow named Hindah on the condition that she sever all ties with her illicit contact. She agreed and the marriage took place. Although the aforementioned Hindah did sever ties with that illicit person, Zaid saw her talking to him. In anger, Zaid told a literate person, "Write a content by which I can relinquish Hindah, and I will send that writing to the lady via registered mail." These were the exact words spoken. The literate person wrote a text addressed to Hindah stating, "Since you did not fulfill the condition, you are no longer mine; I give you divorce, divorce, divorce." Now, Hindah says that although she spoke to that person against his wishes, there is now no connection, nor will she speak to him again. Since Zaid had no knowledge of revocable (raj'i) or irrevocable (ba'in) divorce, but it was absolutely not in Zaid's mind to terminate the marriage. Zaid had heard the content of the divorce. Now Hindah, with regret, is seeking forgiveness, and Zaid also wants Hindah to remain in his marriage. Let it be clear that Zaid sent the registered divorce paper two or three days after seeing Hindah talk to that person. On the same day the written divorce was sent, Hindah and Zaid had a conversation and both are desirous of the continuation of the marriage.

1. Radd al-Muhtar, Chapter of Metonymies (Bab al-Kinayat), Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/464.
2. Radd al-Muhtar, Chapter of Metonymies (Bab al-Kinayat), Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/464.

- और उनमें से तलाक़ का पहले ज़िक्र होना है, अल-मुहीत से अल-बहर में नक़ल किया गया है। (त)
- इसी में है:
- अन-नहर में है कि हाल की दलालत (संकेत), कलाम (वाणी) की दलालत को शामिल करती है। इसलिए इसकी व्याख्या इस तरह सही है कि तलाक़ की मांग के रूप में बातचीत, या पहले तलाक़ देना, जैसे "तीन (तलाक़) की इद्दत पूरी करो"। (त) इसी तरह अन्य स्थानों पर भी है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसाला १९३: शाहगढ़ डाकखाना शब नगर जिला पीलीभीत से मुर्सला अब्दुल रहमान साहब १२ रमज़ान अल-मुबारक १३३७ हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं: ज़ैद ने हिल्दा नाम की एक विधवा से इस शर्त पर निक़ाह किया कि वह अपने अवैध संपर्क से संबंध तोड़ लेगी। उसने स्वीकार कर लिया और निक़ाह हो गया। यद्यपि उक्त हिल्दा ने उस अवैध व्यक्ति से संबंध तोड़ लिया था, लेकिन ज़ैद ने उसे उससे बात करते देख लिया। गुस्से में ज़ैद ने एक पढ़े-लिखे व्यक्ति से कहा, "तुम ऐसा लेख लिखो जिससे मैं हिल्दा से अलग हो जाऊँ और वह तहरीर मैं रजिस्ट्री के माध्यम से मुसमात (महिला) के पास भेज दूँ।" ये वही शब्द थे जो अदा किए गए थे। पढ़े-लिखे व्यक्ति ने एक तहरीर लिखी जिसमें हिल्दा को संबोधित करते हुए लिखा कि "तुमने शर्त पूरी नहीं की, इसलिए तुम मेरी नहीं रहीं, मैं तुम्हें तलाक़ तलाक़ तलाक़ देता हूँ।" अब मुसमात हिल्दा कहती है कि हालाँकि मैंने तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध उस व्यक्ति से बात की थी, लेकिन अब कोई संबंध नहीं है और न ही मैं बात करूँगी। चूंकि ज़ैद को रज़ई (वापसी योग्य) या बाइन (अंतिम) तलाक़ का कोई ज्ञान नहीं था, लेकिन ज़ैद के मन में कतई निक़ाह तोड़ने का इरादा नहीं था। ज़ैद ने तलाक़ का मजमून (विषय) सुन लिया था। अब मुसमात पछतावे के साथ माफ़ी मांग रही है और ज़ैद भी चाहता है कि उक्त मुसमात हिल्दा उसके निक़ाह में रहे। यह स्पष्ट रहे कि ज़ैद ने हिल्दा को उस व्यक्ति से बात करते देखने के दो-तीन दिन बाद रजिस्ट्री तलाक़ की तहरीर भेजी थी और जिस दिन लिखित तलाक़ भेजा गया, उसी दिन हिल्दा और ज़ैद के बीच बातचीत हुई और दोनों निक़ाह बनाए रखने के इच्छुक हैं।

1. रद अल-मुह्तार, बाब अल-किनायात, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/464.
2. रद अल-मुह्तार, बाब अल-किनायात, दार इहया अल-तुराث अल-अरबी, बेरूत, 2/464.

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

ومنہاتقدم ذکر الطلاق بحر عن المحیط ۱۔ | طلاق کا ذکر ہونا ہے ، محیط سے منقول بحر میں ۔ (ت) اسی میں ہے: فی النھر دلالة الحال تعم دلالة المقال فتفسر | نہر میں ہے کہ دلالت حال، دلالت قول کو شامل ہے، لہٰذا المذاکرة بسؤال الطلاق او تقدیم الایقاع کما فی | اس کی تفسیر یوں درست ہے کہ طلاق کے مطالبہ کے طور اعتدی ثلاثا ۲۔ | مذاکرہ، یا پہلے طلاق واقع کرنا ، مثلاً عدت پوری کر تین کی ۔ (ت) اسی طرح اور مواقع میں ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۱۹۳: از شاہ گڑھ ڈاکخانہ شب نگر ضلع پیلی بھیت مرسلہ عبدالرحمن صاحب ۱۲ رمضان المبارک ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید بیوہ مسماۃ ہندہ سے بدیں شرط انکار کیا کہ وہ اپنے ناجائز متعلق سے قطع تعلق کرلے، اس نے منظور کیا اور نکاح ہوگیا، ہندہ مذکور نے گو اس ناجائز متعلق سے قطع تعلق کرلیا لیکن زید نے اس سے گفتگو کرتے دیکھ لیا اور غصہ میں زید نے ایک لکھے پڑھے شخص سے کہا کہ تم مضمون لکھ دو جس سے میں ہندہ سے دست بردار ہو جاؤں اور وہ تحریر بذریعہ رجسٹری مسماۃ کے پاس بھیج دوں۔ یہ وہ الفاظ بعینہ تھے جو ادا کئے گئے تھے، لکھے پڑھے شخص نے ایک تحریر لکھی جس میں ہندہ کو تحریر کیا کہ تم نے شرط پوری نہیں کی لہٰذا تم میری نہیں رہیں تم کو طلاق طلاق طلاق دیتا ہوں، اب مسماۃ ہندہ کہتی ہے کہ گو میں نے شخص متعلق سے تمہاری مرضی کے خلاف گفتگو کی ہے لیکن اب کوئی واسطہ نہیں ہے نہ اب گفتگو کروں۔ چونکہ زید کو طلاق رجعی یا بائن کا کچھ علم نہیں تھا لیکن زید کے ذہن میں قطعاً قطع تعلق نکاح نہ تھا زید نے مضمون طلاق سُن لیا تھا اب مسماۃ پشیمانی کے ساتھ طالب معافی ہے اور زید بھی چاہتا ہے کہ مسماۃ ہندہ مذکور میرے نکاح میں رہے۔ واضح رائے عالی ہو کہ مسماۃ ہندہ کو شخص متعلق سے گفتگو کرتے دیکھ کر اس کے

دوسرے تیسرے دن تحریر رجسٹری طلاق کی بھیجی تھی اور جس روز تحریری طلاق بھیجی اسی روز ہندہ اور زید میں گفتگو ہو کر خواہشمند بقائے نکاح

1. ردالمحتار باب الکنایات داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۴۶۴
2. ردالمحتار باب الکنایات داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۴۶۴

Fatawa Razawiya Volume 12

...whether the marriage remains or not?

The Answer He wrote it at her request, and after writing, he also heard it and sent it to the woman. Three divorces (Talaq) have occurred upon the woman. Now she cannot come back into his marriage without *halala*. Excuses like it was not in mind etc., are useless. Allah the Almighty says:

"So if he has divorced her [for the third time], then she is not lawful to him afterward until [after] she marries a husband other than him." [Quran 2:230]

If he gives the third divorce, after that, the woman will not be lawful until she marries another person.

And Allah Almighty knows best. And Allah Almighty knows best (T).

Problem 194: From town Hasanpur, district Moradabad, sent by Ataullah Khan Saudagar Jaf'at, 15 Safar 1338 AH.

What do the scholars of the religion say in this matter that Zaid has been angry with his wife for a long time; he has suspicions towards his wife. For a long time, he has been inquiring about incidents from her through verbal and written means. Now he has written a letter from abroad to his wife, the text of which is lengthy. A necessary portion is quoted below. It is proven that this letter is from Zaid because he writes to his father to take his son and his belongings from the wife, and Zaid also writes to his brother-in-law to give his belongings to his father and give the dowry items of your sister to her, and also give his son to the father. In the same letter, he wrote many nonsensical things about his wife, and no stranger could write them, and many of Zaid's writings manifest these indications. The text of Zaid's letter is: "You know in your heart how much falsehood you have used, but you have still kept the matter hidden. Now I divorce from my heart, I divorce, I divorce, if any matter was kept hidden, I have come away silently from there because you wouldn't tell despite being broken." The matter to be clarified is whether the wife of Zaid has become divorced by the words he wrote in his letter or not, even if his wife had kept some secret hidden or not.

The Answer: To prove the letter, there should be his confession or the testimony of just witnesses. If he denies and there are no witnesses...

1. Al-Quran 2/230 Page 418 of 688

...हुए हैं कि निकाह रहा या नहीं?

उत्तर (अल-जवाब) उसने उसकी दरख़्वास्त से लिखा और उसने लिखने के बाद सुन भी लिया और औरत को भेज दिया। औरत पर तीन तलाक़ हो गए, अब बिना हलाला के वह उसके निकाह में नहीं आ सकती। ज़हन में होने या न होने आदि के बहाने बेकार हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"फिर यदि वह उसे तलाक़ दे दे, तो उसके बाद वह उसके लिए हलाल नहीं होगी जब तक कि वह किसी दूसरे पति से निकाह न कर ले।" [क़ुरआन 2:230]

अगर वह तीसरी तलाक़ दे दे, तो उसके बाद औरत हलाल न होगी जब तक कि वह किसी दूसरे व्यक्ति से निकाह न कर ले।

और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है (त)।

मसला 194: क़स्बा हसनपुर, ज़िला मुरादाबाद, प्रेषक अताउल्लाह ख़ान सौदागर जफ़अत, 15 सफ़र 1338 हिजरी।

धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद अपनी पत्नी से लंबे समय से नाराज़ है; उसे अपनी पत्नी के प्रति संदेह है। वह लंबे समय से मौखिक और लिखित माध्यमों से उससे घटनाओं के बारे में पूछ रहा है। अब उसने विदेश से अपनी पत्नी के नाम एक पत्र लिखा है, जिसकी इबारत बहुत लंबी है। उसमें से ज़रूरत के अनुसार इबारत नीचे दी गई है। यह साबित है कि यह पत्र ज़ैद का है क्योंकि वह अपने पिता को लिखता है कि मेरे लड़के को और मेरे सामान को पत्नी से ले लो और ज़ैद अपने साले को भी लिखता है कि तुम मेरे पिता को मेरा सामान दे दो और अपनी बहन के दहेज का सामान अपनी बहन को दे दो, और मेरे लड़के को भी पिता को दे दो। उसी पत्र में उसने अपनी पत्नी के बारे में बहुत सी बेहूदा बातें लिखी हैं और कोई अजनबी व्यक्ति उन्हें नहीं लिख सकता और ज़ैद के बहुत से लेखन इन संकेतों को प्रकट करते हैं। ज़ैद के पत्र की इबारत यह है: "तूने जिस कदर झूठ से काम लिया तेरे दिल को मालूम है मगर तूने अब भी हाल छिपा कर रखा है, अब मैं अपने दिल से तलाक़ देता हूँ, तलाक़ देता हूँ, तलाक़ देता हूँ अगर कोई बात छिपाई रखी, मैं इस वजह से वहाँ से चुप होकर चला आया हूँ कि तोड़ के मारे नहीं बताती।" पूछने योग्य बात यह है कि ज़ैद ने जो ये शब्द अपने पत्र

में लिखे हैं, क्या उसकी पत्नी तलाक़शुदा हो गई या नहीं, चाहे उसकी पत्नी ने कोई राज़ छिपाया हो या न छिपाया हो।

उत्तर: पत्र की प्रमाणिकता के लिए उसका इक़रार हो या न्यायप्रिय गवाहों की गवाही। अगर वह इनकार करे और गवाह न हों...

---

1. अल-क़ुरआन 2/230 पृष्ठ 418 का 688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

ہوئے ہیں کہ نکاح رہا یا نہیں؟ الجواب اس نے اس کی درخواست سے لکھا اور اس نے لکھنے کے بعد سُن بھی لیا اور عورت کو بھیج دیا عورت پر تین طلاقیں ہو گئیں، اب بے حلالہ اُس کے نکاح میں نہیں آسکتی۔ ذہن میں ہونے نہ ہونے وغیرہ کے عذر بیکار ہیں۔ قال اللہ تعالٰی:

فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْۢ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهٗ ط 1۔ اگر تیسری طلاق دے دے تو اس کے بعد عورت حلال نہ ہوگی تاوقتیکہ وہ کسی دوسرے شخص سے نکاح نہ کرلے۔

واللہ تعالٰی اعلم۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۱۹۴: از قصبہ حسن پور ضلع مراد آباد مرسلہ عطاء اللہ خاں سوداگر جفت ۱۵ صفر ۱۳۳۸ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید اپنی زوجہ سے عرصہ سے ناراض ہے اس کو زوجہ کی جانب بدگمانی ہے وہ عرصہ سے اس سے تقریر و تحریر ی ذرائع سے واقعات دریافت کررہا ہے اب اس نے ایک خط اپنی زوجہ کے نام پردیس سے تحریر کیا ہے جس کی عبارت طول طویل ہے اس میں سے بقدر ضرورت عبارت ذیل میں نقل کی جاتی ہے، یہ ثابت ہے کہ یہ خط زید کا ہے کیونکہ وہ اپنے والد کو لکھتا ہے کہ میرے لڑکے کو اور میرے سامان کو زوجہ سے لے لو اور زید اپنے سالے کو بھی لکھتا ہے کہ تم میرے والد کو میرا سامان دے دو اور اپنی ہمشیرہ کے جہیز کا سامان اپنی ہمشیرہ کو دے دو اور میرے لڑکے کو بھی والد کو دے دو، اسی خط اور بہت سی بیہودہ باتیں اپنی زوجہ کے متعلق تحریر کی ہیں اور کوئی اجنبی شخص ان کو نہیں لکھ سکتا اور زید کی بہت سے تحریریں انہیں قرائن کو ظاہر کرتی ہیں، زید کے خط کی عبارت یہ ہے: "تو نے جس قدر جھوٹ سے کام لیا تیرے دل کو معلوم ہے مگر تو نے اب بھی پوشیدہ حال رکھا ہے

اب میں اپنے دل سے طلاق دیتا ہوں طلاق دیتا ہوں طلاق دیتا ہوں اگر کوئی بات پوشیدہ رکھی، میں اس وجہ سے وہاں سے چپ ہو کر چلا آیا ہوں کہ توڑ کے مارے نہیں بتاتی۔" دریافت طلب امر یہ ہوا کہ زید نے جو یہ کلمات اپنے خط میں لکھے ہیں کیا اس کی زوجہ مطلقہ ہوگئی یا نہیں اگرچہ اس کی زوجہ نے کوئی راز پوشیدہ ہی رکھا ہو یا نہ رکھا ہو۔ الجواب: ثبوتِ خط کے لئے اس کا اقرار ہو یا گواہانِ عادل کی شہادت، اگر وہ انکار کرے اور گواہ نہ ہوں

---

1. القرآن ۲/۲۳۰ Page 418 of 688

Fatawa-e-Razvia, Volume 12

So, proof cannot be established merely by receiving a letter or through such circumstances. Scholars have said: *La yu'malu bil-khatt* (Action shall not be taken based on writing. - Translator). And they have said: *Al-khattu yushbihul-khatta wal-khatamu yushbihul-khatama* (One handwriting resembles another, and one seal resembles another seal).[1] (T)

Furthermore, the words he wrote are ambiguous, whether the hidden 'ya' is 'ya-e-ma'roof' or 'ya-e-majhool'. If the woman is certain that this letter belongs to him, she can act upon it as long as he does not deny it. If it is 'ya-e-ma'roof', she can consider it as three divorces if something was kept hidden. And if it is 'ya-e-majhool', then she can now understand it as three divorces if he hides anything after this letter. But if he denies that letter, then mere external certainty without just witnesses will be of no use to the woman.

Issue 195: From Mahmoodabad, District Sitapur, sent by Maulvi Muhammad Ismail Sahib, Sunni Hanafi Mahmoodabadi, 16 Jumada al-Akhira 1338 AH. What do the learned scholars of religion and the jurists of the firm Sharia rule in this matter: One day, in anger, Zaid wrote a 'Farigh-khatti' (divorce document) for his wedded wife and wrote "I have given divorces," but did not say anything with his tongue. Neither the woman nor anyone else knew about it; he just wrote it and kept it with him. However, the woman somehow found out. Therefore, what is the ruling in such a situation?

The Answer: If the divorce document was written formally, stating "I, so-and-so son of so-and-so, resident of so-and-so, have given my wife so-and-so three divorces," as is also evident from the term 'Farigh-khatti'. 'Farigh-khatti' itself refers to a formal paper. Then, undoubtedly, three divorces have occurred. She cannot return to his marriage without *halala*. It is not a condition for divorce that the woman or anyone else be informed. And Allah Almighty knows best.

Issue 196: From the city, Kohara Pir neighborhood, inquired by Qamaruddin Sahib, 20 Muharram 1339 AH. What do the scholars of religion say in this matter: Zaid entered into a marriage contract with Hind, but later, due to household reasons and family interests, it was decided to divorce according to the following conditions. A divorce deed was written, but according to the entries in the said document, the Sharia words like "gave divorce, gave divorce, gave divorce" were not uttered in a public assembly, rather...

[1] Fatawa Hindiyya, Book: The Letter from One Judge to Another, Noorani Kutub Khana Peshawar, 3/381. Page 419 of 688

फ़तावा रज़विया, बारहवीं जिल्द

तो केवल पत्र मिलने या इन परिस्थितियों से प्रमाण स्थापित नहीं हो सकता। विद्वानों ने फरमाया है: ला युअमलु बिल-खत (लेखन पर अमल नहीं किया जाएगा। - अनु.) और फरमाया है: अल-खत्तु युश्बिहुल-खत्ता वल-खातमु युश्बिहुल-खातमा (एक लिखावट दूसरी लिखावट के समान होती है और एक मुहर दूसरी मुहर के समान होती है)।[1] (अनु.)

फिर जो शब्द उसने लिखे हैं, वे संदिग्ध हैं कि छिपी हुई 'या' 'या-ए-मारूफ़' है या 'या-ए-मजहूल'। यदि स्त्री को विश्वास है कि यह पत्र उसी का है, तो जब तक वह इनकार न करे, वह उस पर अमल कर सकती है। यदि यह 'या-ए-मारूफ़' है, तो वह इसे तीन तलाक़ समझ सकती है यदि कुछ छिपाकर रखा गया था। और यदि यह 'या-ए-मजहूल' है, तो अब वह इसे तीन तलाक़ समझ सकती है यदि वह इस पत्र के बाद कुछ छिपाता है। लेकिन यदि वह उस पत्र से इनकार करता है, तो न्यायपूर्ण गवाहों के बिना स्त्री के लिए केवल बाहरी विश्वास किसी काम का नहीं होगा।

मसला १९५: महमूद आबाद, जिला सीतापुर से, प्रेषक मौलवी मुहम्मद इस्माइल साहब, सुन्नी हनफी महमूद आबादी, १६ जमादी-उल-आख़िर १३३८ हिजरी। दीन के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मसले में क्या हुक्म देते हैं कि ज़ैद ने एक दिन गुस्से में अपनी विवाहित पत्नी के लिए 'फ़ारिग़-ख़ती' (तलाक़नामा) तैयार किया और लिखा कि "मैंने तलाक़ दे दी हैं" लेकिन ज़बान से कुछ नहीं कहा। न ही स्त्री को और न ही किसी और को इस बारे में कुछ पता चला; उसने बस लिखकर अपने पास रख लिया। लेकिन स्त्री को किसी तरह पता चल गया। अतः ऐसी स्थिति में क्या हुक्म है?

अल-जवाब (उत्तर): यदि फ़ारिग़-ख़ती औपचारिक रूप से लिखी गई थी कि "मैं फ़लां पुत्र फ़लां निवासी फ़लां, मैंने अपनी पत्नी फ़लां को तीन तलाक़ें दी हैं," जैसा कि शब्द 'फ़ारिग़-ख़ती' से भी स्पष्ट है। 'फ़ारिग़-ख़ती' औपचारिक कागज़ को ही कहते हैं। तो निस्संदेह तीन तलाक़ें हो गईं। स्त्री बिना 'हलाला' के उसके निकाह में नहीं आ सकती। तलाक़ के लिए स्त्री या किसी और को सूचित करना शर्त नहीं है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला १९६: शहर, कोहारा पीर मोहल्ला से, सायल क़मरुद्दीन साहब, २० मुहर्रम १३३९ हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या फरमाते हैं कि ज़ैद ने हिन्द के साथ निकाह का अनुबंध किया, लेकिन बाद में घरेलू कारणों और पारिवारिक हितों के कारण निम्नलिखित शर्तों के अनुसार तलाक़ का निर्णय

लिया गया। तलाक़नामा लिखा गया, लेकिन उक्त दस्तावेज़ की प्रविष्टियों के अनुसार शरीयत के शब्द जैसे "तलाक़ दी, तलाक़ दी, तलाक़ दी" सार्वजनिक सभा में नहीं कहे गए, बल्कि...

---

[1] फ़तावा हिंदिया, किताब: एक काज़ी का दूसरे काज़ी को पत्र, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, ३/३८१। पृष्ठ ४१९ का ६८८

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

تو مجرد خط ملنے یا ان قرائن سے ثبوت نہیں ہوسکتا، علماء نے فرمایا ہے: لا یعمل بالخط (خط پر عمل نہ کیا جائے گا۔ ت) اور فرمایا ہے: الخط یشبہ الخط والخاتم یشبہ الخاتم ۱۔ خط دوسرے خط اور مہر دوسری مہر کے مشابہ ہوتی ہے۔ (ت)

پھر وہ لفظ کہ اس نے لکھے ہیں محتمل ہیں کہ پوشیدہ رکھی بیائے معروف یا بیائے مجہول، اگر عورت کو وثوق ہے کہ یہ خط اسی کا ہے تو جب تک وہ انکار نہ کرے اس پر کاربندی کر سکتی ہے، اگر یائے معروف ہے تو تین طلاقیں سمجھ سکتی ہے اگر کوئی بات پوشیدہ رکھی تھی، اور یائے مجہول ہے تو اب تین طلاقیں سمجھ سکتی ہے اگر کوئی بات اس خط کے بعد پوشیدہ کرے لیکن اگر وہ اس خط سے منکر ہو تو عورت کو بے شہادت عادلہ بالائی وثوق کام نہ دے گا۔

مسئلہ ۱۹۵: از محمود آباد ضلع سیتا پور مرسلہ مولوی محمد اسمعیل صاحب سنی حنفی محمود آبادی ۱۶ جمادی الآخرہ ۱۳۳۸ھ حضرات علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کیا حکم فرماتے ہیں کہ زید نے ایک دن غصہ میں اپنی منکوحہ عورت کے واسطے فارغ خطی تحریر کیا اور لکھا کہ میں نے طلاقیں دیں مگر زبان سے کچھ نہیں کہا اور نہ عورت نہ کسی اور اس کو بابت کچھ معلوم ہوا محض لکھ کر اپنے پاس رکھ لیا مگر عورت نے کسی طرح معلوم کر لیا لہذا ایسی صورت میں کیا حکم ہے؟

الجواب: اگر فارغ خطی با ضابطہ لکھی تھی کہ میں فلاں بن فلاں ساکن فلاں میں نے اپنی زوجہ فلاں کو تین طلاقیں دیں جیسا کہ لفظ فارغ خطی سے بھی ظاہر ہے۔ فارغ خطی با ضابطہ کاغذ ہی

کو کہتے ہیں تو بلا شبہ تین طلاقیں ہو گئیں، عورت بے حلالہ اس کے نکاح میں نہیں آسکتی عورت کو یا کسی کو خبر نہ ہو ناشرط طلاق نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۹۶: از شہر محلہ کو ہاڑا پیر مسئولہ قمر الدین صاحب ۲۰ محرم ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے ایک عقد نکاح کیا ہند کے ساتھ، مگر بعدہ حسب شرائط ذیل بوجوہ خانگی و مصالح خاندانی تجویز طلاق قرار پائی اور طلاقنامہ لکھا گیا مگر حسب اندراج دستاویز مذکور کلمات شرعیہ کہ طلاق دی طلاق دی طلاقی دی اور جلسہ عالم میں طلاقت کہا وقوع میں نہیں آئی بلکہ

---

۱ فتاوی ہندیہ باب کتاب القاضی الی القاضی نورانی کتب خانہ پشاور ۳۸۱/۳ Page 419 of 688

Fatawa Razawiyya - Volume 12

The guardian of the married woman obtained the document forcibly through a strategy and kept it. Furthermore, it should be noted that even after this, the ritual of departure (rukhsati) has not yet taken place. Having observed the above and considering the conditions, is the divorce valid, or has it not actually come into effect according to the Sharia?

Conditions that were not acted upon: (1) The gold 'khandwah' weighing 4 tolas, which was presented by the bridegroom's side at the time of the marriage contract, shall be returned, and the girl's side shall also pay the sum of money for the marriage expenses. (2) The girl's side shall return all the concealed clothes that were presented at the time of the marriage contract. (3) After the fulfillment of conditions No. 1 and 2 by the girl's side, the husband will grant a divorce based on the aforementioned document and announce it in a public gathering. (4) Along with the fulfillment of condition No. 3, the waiver of the dowry (Mahr) by the married woman was mandatory.

The Answer: In such agreements, the established understanding is that the writing of a document serves as a preamble to the agreement, not its execution. Execution is contingent upon the terms agreed upon in the contract. So, here, although it may be an explicit condition in words, it is traditionally considered a conditional agreement (u'rf). "And what is conventionally conditional is treated like what is explicitly conditional in words." (T) Therefore, if a husband says to his wife, "Waive the dowry and I will give you a divorce," and the woman says, "I have waived my dowry," but the husband does not grant the divorce, then the dowry is not waived. This is because although she uttered the words of waiver without explicit conditions, and no verbal condition was present, a functional condition existed in meaning and was not met; therefore, the waiver did not occur. Similarly, here, the divorce is meaningfully conditional upon those terms, and since they were not met, the divorce did not take place. It is mentioned in Al-Alamgiriyyah: "A woman said to her husband: 'I have gifted my dowry to you, take your hand off me (meaning, give me a divorce)'. If he does not divorce her, he is not absolved from the dowry. This is also mentioned in Ad-Dhahiriyyah." (A wife said to her husband, "I forgive you the dowry, so end your possession over me, i.e., give me a divorce." If the husband did not give a divorce, then the dowry will not be waived; it is mentioned similarly in Dhahiriyyah. And Allah Almighty knows best (T)) And Allah Almighty knows best.

1 Fatawa Qazi Khan, Chapter on Khula in Persian, Naval Kishore, Lucknow 1/258 Page 420 of 688

फ़तावा रज़विया - खंड 12

विवाहित स्त्री के संरक्षक ने एक रणनीति के माध्यम से ज़बरदस्ती दस्तावेज़ प्राप्त कर लिया और उसे अपने पास रख लिया। इसके अलावा, यह ध्यान देने योग्य है कि इसके बाद भी विदाई (रुखसती) की रस्म अभी तक नहीं हुई है। उपरोक्त को देखने और शर्तों पर विचार करने के बाद, क्या तलाक मान्य है, या शरीयत के अनुसार वास्तव में यह अमल में नहीं आया है?

शर्तें जिन पर अमल नहीं हुआ: (1) शादी के समय दूल्हे की ओर से दी गई 4 तोला सोने की 'खंडवा' वापस की जाएगी और साथ ही लड़की वाले शादी के खर्च की रकम भी अदा करेंगे। (2) लड़की वाले शादी के समय चढ़ाए गए सभी छिपे हुए कपड़े वापस करेंगे। (3) लड़की वालों द्वारा शर्त नंबर 1 और 2 के पूरा होने के बाद, पति उक्त दस्तावेज़ के आधार पर तलाक देगा और सार्वजनिक सभा में इसकी घोषणा करेगा। (4) शर्त नंबर 3 के पूरा होने के साथ ही विवाहित स्त्री द्वारा मेहर (दहेज) की माफ़ी अनिवार्य थी।

जवाब: ऐसे समझौतों में यह स्थापित समझ है कि दस्तावेज़ का लिखना समझौते की प्रस्तावना होती है, न कि उसका निष्पादन। निष्पादन उन्हीं शर्तों पर निर्भर होता है जो समझौते में तय हुई थीं। तो यहाँ, भले ही यह शब्दों में सशर्त हो, लेकिन इसे पारंपरिक रूप से सशर्त समझौता (उर्फ़) माना जाता है। "और जो पारंपरिक रूप से सशर्त है, उसे शब्दों में स्पष्ट रूप से सशर्त होने की तरह ही माना जाता है।" (त) इसलिए, यदि पति अपनी पत्नी से कहता है कि "मेहर माफ़ कर दो तो मैं तुम्हें तलाक दे दूँगा," और औरत ने कहा "मैंने अपना मेहर माफ़ किया," लेकिन पति ने तलाक नहीं दिया, तो मेहर माफ़ नहीं हुआ। क्योंकि भले ही उसने बिना किसी स्पष्ट शर्त के माफ़ी के शब्द कहे, और मौखिक रूप से कोई शर्त मौजूद नहीं थी, लेकिन अर्थ में एक कार्यात्मक शर्त मौजूद थी और वह पूरी नहीं हुई, इसलिए माफ़ी नहीं हुई। इसी तरह यहाँ तलाक अर्थ में उन शर्तों पर निर्भर है और वे पूरी नहीं हुईं, इसलिए तलाक नहीं हुआ। आलमगीरिया में है: "एक स्त्री ने अपने पति से कहा: 'मैंने अपना मेहर तुम्हें उपहार में दिया, अपना हाथ मुझसे हटा लो (अर्थात, मुझे तलाक दे दो)'। यदि वह उसे तलाक नहीं देता है, तो उसे मेहर से मुक्ति नहीं मिलती है। ज़हीरिया में भी ऐसा ही है।" (पत्नी ने पति से कहा कि मैं तुम्हें मेहर माफ़ करती हूँ, तो मुझ पर से अपना कब्ज़ा खत्म कर दो यानी तलाक दे दो, अगर पति ने तलाक नहीं दिया तो मेहर माफ़ नहीं होगा; ज़हीरिया में इसी तरह है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है (त)) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

1 फ़तावा क़ाज़ी ख़ाँ, फ़स्ल अल-ख़ुला फ़ारसी में, नवल किशोर, लखनऊ 1/258 पेज 420 का 688

سرپرست منکوحہ نے حکمت عملی سے زبردستی دستاویز حاصل کرلیا اور اس نے اس کو روک لیا نیز مخفی نہ رہے کہ بعد ہنوز رخصتی کے رسم عمل میں نہیں آئی ہے، آیا بعد ملاحظہ بالا و لحاظ شرائط تحت طلاق جائز ہے یا واقعی عمل میں بموجب شرع شریف نہیں آئی۔

شرائط جو عمل میں نہیں آئیں (۱) کھنڈوہ طلائی وزنی ۴ تولہ بوقت عقد منجانب نکاح چڑھائے گئے تھے واپس ہوں گی اور نیز مبلغ معہ اروپیہ لڑکی والا بابت خرچ نکاح کو ادا کرے گا۔ (۲) کل پارچہ پوشیدہ لڑکی والا نکاح کو واپس کرے گا جو کہ بوقت عقد چڑھایا تھا۔ (۳) شرائط نمبر ۱ و ۲ کی تکمیل منجانب لڑکی والے کے ہونے کے بعد نکاح بروئے دستاویز مذکورہ طلاق دے گا جلسہ عام میں اس کا اعلان کرے گا۔ (۴) شرط نمبر ۳ کی تکمیل کے ساتھ معافی مہر منجانب منکوحہ لازم تھی۔

الجواب: ایسے معاہدوں میں معرف یہ ہے کہ دستاویز کا لکھنا معاہدے کی تمہید ہوتا ہے نہ کہ تنفیذ۔ تنفیذ انہیں شرائط پر مشروط ہوتی ہے جو معاہدے قرار پائے، تو یہاں اگر چہ لفظاً تعلیق ہو عرفاً تعلیق ہوتی ہے والمشروط عرفاً کالمشروط لفظاً (عرف میں مشروط چیز، لفظوں میں مذکور مشروط کی طرح ہے۔ ت) ولہذا اگر شوہر عورت سے کہے کہ تو مہر معاف کر دے تو میں تجھے طلاق دے دوں گا، عورت نے کہا میں نے اپنا مہر معاف کیا، شوہر نے طلاق نہ دی، مہر معاف نہ ہوا کہ اگرچہ اس نے بلا شرط الفاظ معافی کہے، لفظوں میں کوئی شرط نہ تھی مگر معنیً شرط موجود تھی اور وہ نہ پائی گئی لہذا معافی نہ ہوئی، اسی طرح یہاں طلاق معنیً ان شرائط سے مشروط ہے اور وہ نہ پائی گئی لہذا طلاق نہ ہوئی، عالمگیریہ میں ہے: امرأۃ قالت لزوجہا کابین ترا بخشیدم چنگ از من بدار ان لم یطلقہا لم یبرأ عن المھر کذا فی الظھیریۃ (بیوی نے خاوند کو کہا میں تجھے

مہر بخشتی ہوں تو مجھ پر سے قبضہ ختم کر دے یعنی طلاق دے دے، اگر خاوند نے طلاق نہ دی تو مہر معاف نہ ہوگا ظہیریہ میں اسی طرح ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم (ت)) واللہ تعالیٰ اعلم۔

1 فتاوی قاضی خاں فصل الخلع بالفارسیہ نولکشور لکھنو ۱/ ۲۵۸ Page 420 of 688

Fatawa Razawiya Volume Twelve

Issue 197: From the Old City, 12 Safar 1321 AH. What do the scholars of the religion say about this matter: Zaid divorced his wedded wife about three years ago. Bakr has heard the confirmation of the divorce from the divorced woman herself and also from her brothers. Now, the aforementioned Bakr wants to marry this woman. Therefore, what is the Sharia ruling? Clarify and be rewarded.

Answer: The questioner stated that the woman and her brothers claim three divorces occurred such a long time ago, and Zaid has now been absent for a year. In this case, Bakr should search his heart; if the statement of the woman and her brothers settles in his heart, that these people are truthful in this and are not deceiving, then Bakr has the choice to marry this woman, provided she also states that her 'Iddah (waiting period) has passed after that divorce. That is, if she says she was pregnant at the time of divorce, then it is obvious that since nearly three years have passed, the delivery must have occurred and the 'Iddah passed. And if she was not pregnant, the woman should state that after the divorce, she started and finished three menstrual cycles. If Bakr's heart does not accept their truthfulness and it seems like a deception, then he should never marry.

In Al-Hindiyya, quoted from Al-Dhakhira: If a woman tells a man, "My husband divorced me three times and my 'Iddah has expired," then if she is an upright (just) woman, it is permissible for him to marry her. If she is a transgressive (sinful) woman, he should investigate and act upon the outcome of his investigation. (T)

The need for this investigation is because it is difficult to find an upright person nowadays; otherwise, if the woman is upright, her mere statement that "I have been divorced and my 'Iddah has passed" is sufficient for permissibility. And Allah knows best.

Issue 198: Qazi Abdul Ghani Sahib from Didwana, Marwar, Mohalla Qazijan. What do the scholars of the religion and the firm Sharia say: Zaid married Hind, and due to personal resentment, in front of two or three people, he uttered the word of divorce repeatedly three times. Hind had a nursing infant with her, for this reason...

1 Fatawa Hindiyya, Chapter Two: On acting upon solitary reports in dealings, Noorani Kutub Khana Peshawar, 5/313. Page 421 of 688

फ़तावा रज़विया खंड बारह

मसला 197: शहर-ए-कुहना से, 12 सफ़र 1321 हिजरी। दीन के उलमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं: ज़ैद ने अपनी मनकूहा (निकाहशुदा) को क़रीब तीन साल पहले तलाक़ दे दी। तलाक़ हो जाने का इक़रार बक्र ने ज़बानी तौर पर मुतल्लक़ा (तलाक़शुदा) औरत से और साथ ही उस औरत के भाइयों की ज़बानी भी सुना है। अब बक्र उस औरत से अपना निकाह करना चाहता है। लिहाज़ा शरीअत का क्या हुक्म है? बयान करें और अज्र पाएँ।

जवाब: साहिल (सवाल पूछने वाले) ने बयान किया कि औरत और उसके भाई इतनी मुद्दत पहले तीन तलाक़ों का होना बयान करते हैं और अब ज़ैद साल भर से ग़ायब है। इस सूरत में बक्र को चाहिए कि अपने दिल में ग़ौर करे; अगर औरत और उसके भाइयों का बयान दिल पर जमता हो कि ये लोग इसमें सच्चे हैं और कोई फ़रेब नहीं कर रहे, तो बक्र को इख्तियार है कि उस औरत से निकाह कर ले, बशर्ते कि वह तलाक़ के बाद इद्दत गुज़र जाने का भी बयान करे। यानी तलाक़ के वक़्त अगर हामिला (गर्भवती) होने का कहे तो ज़ाहिर है कि तीन साल के क़रीब का ज़माना गुज़रने पर बच्चा पैदा हो जाने से इद्दत गुज़र गई। और अगर हमल नहीं था, तो औरत यह बयान करे कि तलाक़ के बाद उसे तीन बार हैज़ (माहवारी) शुरू होकर ख़त्म हो चुका है। और अगर बक्र के दिल पर उनकी सच्चाई न जमे और फ़रेब मालूम होता हो, तो हरगिज़ निकाह न करे।

फ़तावा हिंदिया में ज़ख़ीरा से मनक़ूल है: अगर एक औरत ने किसी मर्द से कहा कि मेरे शौहर ने मुझे तीन तलाक़ें दी हैं और मेरी इद्दत भी गुज़र चुकी है, तो अगर औरत आदिला (सच्ची/नेक) है, तो उस शख़्स के लिए उससे निकाह करना जाइज़ है। और अगर वह औरत फ़ासिक़ा है, तो फिर वह शख़्स ग़ौर-ओ-फ़िक्र करे और अपने ग़ौर-ओ-फ़िक्र के नतीजे पर अमल करे। (त)

इस तहक़ीक़ की ज़रूरत इसलिए है कि आज कल आदिल शख़्स का मिलना दुश्वार है; वरना अगर औरत आदिला हो तो उसका सिर्फ़ इतना बयान ही कि "मुझे तलाक़ हो गई और इद्दत गुज़र गई" जवाज़ (वैधता) के लिए काफ़ी है। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है)।

मसला 198: क़ाज़ी अब्दुल ग़नी साहब, डीडवाना मारवाड़, मोहल्ला क़ाज़ीज़ान। दीन के उलमा और शरीअत-ए-मतीन क्या फ़रमाते हैं: ज़ैद ने हिंदा से निकाह किया और आपसी रंजिश की वजह से दो-तीन आदमियों के सामने तलाक़ का लफ़्ज़ बार-बार तीन बार ज़बान पर लाया। हिंदा के पास एक दूध पीता बच्चा था, इस वजह से...

1 फ़तावा हिंदिया, दूसरा अध्याय: मुआमलात में ख़बर-ए-वाहिद पर अमल के बारे में, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 5/313। पेज 421 / 688

فتاوٰی رضویہ جلد دوا زدہم

مسئلہ ۱۹۷: از شہر کہنہ ۱۲ صفر ۱۳۲۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی منکوحہ کو جس کو عرصہ قریب تین سال کے ہوا طلاق دے دی، طلاق ہو جانے کا اقرار بکر نے زبانی عورت مطلقہ اور نیز عورت مذکورہ کے بھائیوں کی زبانی سنا ہے، اب بکر مذکورہ اپنا نکاح اس عورت سے کیا چاہتا ہے، لہذا شرع کا کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا

الجواب: سائل نے بیان کیا کہ عورت اور اس کے بھائی تین طلاقیں اتنی مدت سے ہونا بیان کرتے ہیں اور اب زید سال بھر غائب ہے اس صورت میں بکر کو چاہئے کہ اپنے دل کی طرف غور کرے، اگر عورت اور اس کے بھائیوں کا بیان دل پر جمتا ہو کہ یہ لوگ اس میں سچے ہیں اور کوئی فریب نہیں کرتے تو بکر کو اختیار ہے کہ اس عورت سے نکاح کرلے جبکہ وہ اس طلاق کے بعد عدّت بھی گزر جانا بیان کرتی ہو یعنی طلاق کے وقت اگر حاملہ ہونا کہے جب تو ظاہر ہے کہ تین سال کے قریب زمانہ گزرا ضرور وضع حمل ہو کر عدّت گزر گئی، اور اگر حمل نہ تھا تو عورت یہ بیان کرے کہ طلاق کے بعد اسے حیض تین بار شروع ہو کر ختم ہو چکا ہے، اور اگر بکر کے دل پر ان کا سچ نہ جمے فریب معلوم ہوتا ہو تو ہرگز نکاح نہ کرے،

في الهندية عن الذخيرة لو ان امراة قالت لرجل ان زوجی طلقنی ثلثا وانقضت عدتی فان كانت عدلة وسعه ان يتزوجها وان كانت فاسقة تحری وعمل بما وقع تحريه عليه 1- ہندیہ میں ذخیرہ سے منقول ہے، اگر ایک عورت نے کسی مرد کو کہا کہ میرے خاوند نے مجھے تین طلاقیں دی ہیں اور عدت بھی گزر چکی ہے، تو اگر عورت عادلہ ہے تو اس شخص کو اس پر اس عورت سے نکاح کرنا جائز ہے، اور اگر وہ عورت فاسقہ ہے تو پھر وہ شخص غور فکر کرے اور غور و فکر کے نتیجہ پر عمل کرے۔ (ت)

اس کی ضرورت اس وجہ سے ہے کہ آج کل عادل شخص کا ملنا دشوار ہے ورنہ اگر عورت عادلہ ہو تو اس کا صرف اتنا بیان ہی کہ مجھے طلاق ہوگئی اور عدت گزر گئی جواز کے لئے کافی ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۹۸: قاضی عبدالغنی صاحب از ڈِیڈوانہ مارواڑ محلہ قاضیجان کیا فرماتے ہیں علمائے دین شرع متین کہ زید نے ہندہ سے نکاح کیا اور بسبب دلی رنجش کے بہ روبرو دو تین شخص کے حرف طلاق مکررسہ کرر زبان پر لایا، ہندہ کے پاس ایک طفل شیر خوار تھا اس وجہ سے

1 فتاویٰ ہندیہ الفصل الثانی فی العمل بخبر الواحد فی المعاملات نورانی کتب خانہ پشاور ۵ / ۳۱۳

He requested for her maintenance, to which Zaid agreed that he would pay 4/- monthly for milk expenses. After some time, Hindah demanded her dower (mahr). Now Zaid, seeing the money leaving his hands, denied it, saying he hadn't given a divorce, with the intent that Hindah neither be able to remarry nor get maintenance from home. Now the matter to be inquired is whether this divorce is valid or not? By which matters does divorce occur? Is Hindah entitled to maintenance and dower?

The Answer: Issues of divorce should not be written vaguely. Bringing the word 'divorce' repeatedly to the tongue—what is understood by that? What words did he actually say? Saying the word 'divorce' a million times doesn't effect a divorce, yet saying it just once can. The exact words should be written without any alteration, and also who the witnesses were that heard him say those words. And Allah knows best.

Problem 199: From Tanda, District Faizabad, sent by Hakim Syed Hazir Ali, 8 Shawwal 1339 AH. Guide of Shariah and Tariqah, Respected Maulana Ahmad Raza Khan Sahab, Peace be upon you! A person named Sulayman, in front of several people, gave a divorce and fixed his thumb impression on the divorce deed. Upon receiving this divorce deed, the father of Musammat Sughra Bibi (who is an adult) married her off six months ago to a wealthy, handsome person. Now, Sulayman, misled by some mischief-makers, claims he never gave a divorce. The intent of the mischief-makers is to illicitly extract a large sum of money from the second husband. The copy of the divorce deed is as follows: "12th Jumada al-Thani 1338 Hijri, Saturday. I, Sulayman son of Abdul Razzaq Hafiz, state of my own free will that my health remains poor, heat rises to my head such that for three or four days at a time I am not in my senses. Right now, my health is fine. Therefore, in the presence of four witnesses, I have given three divorces to my wedded wife, Musammat Sughra daughter of Haidar, and removed her from my marriage. If anyone considers me insane, then I truly am insane, but at this moment I am not insane. And from the side of the aforementioned lady, Wali Muhammad son of Imam-ud-Din, acting as a representative, has waived the dower and iddah maintenance upon my giving the divorce."

Stamp 1. (Thumb impression of Sulayman son of Abdul Razzaq Hafiz)

The Answer: In the queried situation, if Sulayman admits to this writing or it is proven by reliable witnesses, then undoubtedly three divorces have occurred upon Sughra. If her marriage was performed with another person after the completion of her iddah (waiting period), then that marriage is valid.

उसने उसके पालन-पोषण का अनुरोध किया जिस पर ज़ैद ने इकरार किया कि वह दूध के खर्च के लिए ४/- मासिक दिया करेगा। कुछ समय बाद हिन्दा ने अपना महर माँगा। अब ज़ैद ने देखा कि रुपया हाथ से जा रहा है तो इनकार कर दिया कि मैंने तलाक़ नहीं दी, इस इरादे से कि हिन्दा न तो किसी दूसरे से निकाह कर सकेगी और न घर से खर्च मिलेगा। अब मामला दरयाफ़्त तलब यह है कि क्या यह तलाक़ जायज़ है या नहीं? तलाक़ किन-किन बातों से होती है? क्या हिन्दा पालन-पोषण, खर्च और महर की हक़दार है?

अल-जवाब: तलाक़ के मसले ऐसे गोल-मोल नहीं लिखे जाते। ज़बान पर तलाक़ का शब्द बार-बार लाने से क्या पता चला कि उसने क्या शब्द कहे? तलाक़ का शब्द लाख बार ज़बान पर लाने से भी तलाक़ नहीं होती और एक ही बार कहने से हो जाती है। उसके पूरे शब्द लिखे जाएँ जिनमें ज़रा भी बदलाव न हो और यह भी कि उसके गवाह कौन-कौन लोग हैं जिन्होंने उसे ये शब्द कहते सुना। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है)।

मसला १९९: टांडा, जिला फ़ैज़ाबाद से, प्रेषक: हकीम सैयद हाज़िर अली, ८ शव्वाल १३३९ हिजरी। रहनुमा-ए-शरीयत व तरीक़त हज़रत मौलाना अहमद रज़ा ख़ाँ साहब, अस्सलाम अलैकुम! एक व्यक्ति सुलेमान ने कई लोगों के सामने तलाक़ देकर तलाक़नामे पर अपने अंगूठे का निशान लगा दिया। इस तलाक़नामे के मिलने पर मुसम्मान सुग़रा बीबी (जो बालिग़ है) के बाप ने छह महीने पहले उसका निकाह एक संपन्न और खूबसूरत व्यक्ति से कर दिया। अब सुलेमान कुछ शरारती तत्वों के बहकावे में आकर कहता है कि मैंने तलाक़ नहीं दी। उन शरारती लोगों का मक़सद यह है कि दूसरे शौहर से नाजायज़ तौर पर मोटी रक़म वसूली जाए। तलाक़नामे की नक़ल इस प्रकार है: "१२ जमादी-उल-सानी १३३८ हिजरी, बरोज़ सनीचर। मैं सुलेमान बिन अब्दुल रज़्ज़ाक़ हाफ़िज़, लिखवा देता हूँ कि मेरी तबियत खराब रहती है, मेरे सर पर गर्मी चढ़ती है तो तीन-तीन चार-चार दिन तक होश नहीं रहता, इस वक्त तबियत बिल्कुल ठीक है, इसलिए मैं चार गवाहों के सामने अपनी मनकूहा (ब्याहता) मुसम्मान सुग़रा बिन्ते हैदर को तीन तलाक़ देकर अपने निकाह से अलग कर दिया। अगर कोई मुझे पागल समझे तो मैं वाकई पागल हूँ लेकिन इस वक्त पागल नहीं हूँ। और मुसम्मान सुग़रा की तरफ़ से वली मोहम्मद इब्न इमाम उद्दीन मुख़्तार (प्रतिनिधि) होकर महर और इद्दत माफ़ कर दी जब मैंने तलाक़ दी।"

टिकट १। (अंगूठे का निशान सुलेमान वल्द अब्दुल रज़्ज़ाक़ हाफ़िज़)

अल-जवाब: पूछी गई सूरत में, अगर सुलेमान इस तहरीर (लेख) का इकरार करता है या आदिल (भरोसेमंद) गवाहों से यह साबित है, तो बेशक सुग़रा पर तीन तलाक़ें हो गईं। अगर उसका निकाह इद्दत गुज़रने के बाद दूसरे व्यक्ति से किया गया तो वह निकाह सही है।

اُس نے اس کی پرورش کی درخواست کی جس کا زید نے اقرار کیا کہ ۴؎ ماہوار دودھ خرچ کے دیا کرے گا، چند عرصہ کے بعد ہندہ طالبِ مہر وز ہوئی، اب زید نے دیکھا کہ روپیہ ہاتھ سے جاتا ہے انکاری ہو گیا کہ میں نے طلاق نہیں دی اس غرض سے کہ ہندہ نہ تو کسی دوسرے سے نکاح کر سکے گی اور نہ گھر سے خرچ ہوگا۔ اب امر دریافت طلب یہ ہے کہ آیا یہ طلاق جائز ہے یا نہ جائز، طلاق کن کن امور سے ہوتی ہے کیا ہندہ مستحق پرورش خرچ مہر ہے؟

الجواب: طلاق کے مسئلے ایسے گول لکھنے کے نہیں ہوتے، حرفِ طلاق مکرر سہ کر زبان پر لایا اس سے کیا معلوم ہوا کہ اس نے کیا الفاظ کہے حرفِ طلاق لاکھ بار زبان پر لانے سے بھی طلاق نہیں ہوتی اور ایک ہی بار کہنے سے ہو جاتی ہے، اس کے پورے الفاظ لکھے جائیں جن پر اصلاً کم و بیش تغیر نہ ہو اور یہ بھی کہ اس کے گواہ کون کون لوگ ہیں کہ اُس نے یہ لفظ کہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۱۹۹: از ٹانڈہ ضلع فیض آباد مسئولہ حکیم سید حاضر علی ۸ شوال ۱۳۳۹ھ رہبرِ شریعت و طریقت جناب مولانا احمد رضا خاں صاحب، السلام علیکم! ایک شخص سلیمان نے کئی آدمیوں کے سامنے طلاق دے کر طلاق پر انگوٹھے کا نشان ثبت کر دیا۔ اس طلاق نامہ کے وصول پر مسماۃ صغریٰ بی بی بالغ کے باپ نے اس کا عقد چھ ماہ ہوا ایک متمول خوبصورت شخص سے کردیا اب سلیمان چند مفسدوں کے بہکانے سے کہتا ہے میں نے طلاق نہیں دیا ہے، مفسدوں کا منشا ہے کہ شوہر ثانی سے ناجائز طور پر کثیر رقم وصول ہو۔ نقل طلاق نامہ یہ ہے: "۱۲/ ماہ جمادی الثانی ۱۳۳۸ہجری بروز شنبہ منکہ سلیمان بن عبدالرزاق حافظ، رُور و پنجوں کے لکھوا دیتا ہوں کہ میری طبیعت خراب رہتی ہے میرے سر پر گرمی چڑھتی ہے تو تین تین چار چار روز ہوش نہیں رہتا اس وقت طبیعت بہت ٹھیک ہے اس لئے میں چار گواہی دے کر کے میری منکوحہ مسماۃ

صغریٰ بنت حیدر اس کو تین طلاق دے کر اپنے نکاح سے دور کردیا اگر مجھ کو کوئی دیوانہ گردانے تو واقعی دیوانہ ہوں لیکن اس وقت دیوانہ نہیں ہوں اور مسماۃ مذکور کی جانب سے ولی محمد ابن امام الدین مختار ہو کر مہر و عدت معاف کر دیا جب میں طلاق دیا ہوں۔"

ٹکٹ ۱۔ (نشان انگوٹھا سلیمان ولد عبدالرزاق حافظ)

الجواب: صورتِ مستفسرہ میں اگر سلیمان کو اس تحریر کا اقرار ہے یا گواہانِ عادل سے ثابت ہے تو بیشک صغریٰ پر تین طلاقیں ہو گئیں اس کا نکاح اگر عدت گزرنے کے بعد دوسرے شخص سے کیا گیا تو وہ نکاح صحیح ہے۔

Fatawa Razawiyya Volume 12

And if it was done within the 'Iddah' (waiting period), as the question does not mention the expiration of the 'Iddah' and the mention of waiving the 'Iddah' in the divorce deed is written ignorantly, then this second marriage also became void. However, Sulaiman still has no claim over Sughra, nor can he marry Sughra, because due to the invalidity of this second marriage, a valid 'Halala' did not take place. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

[Arabic Boxed Text]: A woman divorced thrice cannot be remarried [by the first husband] until another man has sexual intercourse with her through a valid and operative marriage. The condition of a valid and operative marriage excludes an irregular (fasid) or suspended (mauquf) marriage. (Summary) And Allah Almighty knows best.

Problem 200: From Ambala Cantonment, Sadar Bazaar, Mohalla Palidaran, sent by Nanhe Khan Nabit, 15 Ramadan-ul-Mubarak 1336 AH. A person voluntarily divorced his wife in front of four people. Now he says, "I did not." Has this divorce occurred or not?

The Answer: If in reality three divorces were given, the woman has become forbidden to him in the sight of Allah. She cannot come back into his marriage without 'Halala'. Allah Almighty says:

[Arabic Boxed Text]: "So she is not lawful for him thereafter until she has married another husband." (2:230) A woman divorced thrice is not lawful for her husband until she marries another man. (t)

And his denial will be of no benefit before Allah Almighty. It is obligatory upon those witnesses to testify. If among them there are two men, or one man and two women who are trustworthy and just according to Sharia, the divorce will be proven, and his denial will not be heard in this world either. And if there are no such witnesses among them and the divorce was not given in the presence of the woman, then the woman should take an oath from him. If he takes an oath saying, "I did not divorce," the woman should consider herself his wife. If he took a false oath, the burden of sin is upon him. And if he gave three divorces in front of the wife herself...

---

1. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Raja'at, Mujtabai Press Delhi, 1/220
2. Al-Quran 2/230

फ़तावा रज़विया खंड बारहवाँ

और अगर इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के अंदर कर दिया, क्योंकि प्रश्न में इद्दत की समाप्ति का कोई उल्लेख नहीं है और तलाक़नामे में इद्दत माफ़ करने की बात अज्ञानतापूर्ण लिखी है, तो यह दूसरा निकाह भी बातिल (अमान्य) हो गया। मगर सुलेमान को अब भी सुग़रा पर कोई दावा नहीं पहुँचता, न ही वह सुग़रा से निकाह कर सकता है क्योंकि इस दूसरे निकाह के बातिल होने के कारण 'हलाला' सही नहीं हुआ। दुर्र-ए-मुख़्तार में है:

[अरबी बॉक्स]: तीन तलाक़ों से तलाक़शुदा महिला से तब तक दोबारा निकाह नहीं हो सकता जब तक कि दूसरा पति सही और प्रभावी निकाह के साथ उस महिला से संभोग न कर ले। सही और प्रभावी निकाह की शर्त से निकाह-ए-फ़ासिद (अनियमित) और निकाह-ए-मौक़ूफ़ (निलंबित) बाहर हो गए। (संक्षिप्त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला २००: अंबाला छावनी, सदर बाज़ार, मोहल्ला पलेदारान से, प्रेषक नन्हे ख़ाँ नबीत, १५ रमज़ान-उल-मुबारक १३३६ हिजरी। एक व्यक्ति ने स्वेच्छा से चार लोगों के सामने अपनी पत्नी को तलाक़ दे दिया। अब वह कहता है कि मैंने नहीं दिया। यह तलाक़ हुआ या नहीं?

उत्तर: अगर वास्तव में तीन तलाक़ दिए गए हैं, तो अल्लाह के यहाँ वह औरत उस पर हराम (वर्जित) हो गई। बिना हलाला के वह उसके निकाह में नहीं आ सकती। अल्लाह तआला का फ़रमान है:

[अरबी बॉक्स]: "फिर वह उसके लिए उसके बाद हलाल नहीं, जब तक कि वह किसी दूसरे पति से निकाह न कर ले।" (२:२३०) तीन तलाक़ प्राप्त महिला पति के लिए तब तक हलाल नहीं जब तक वह औरत दूसरे से निकाह न कर ले। (त)

और उसका इनकार अल्लाह अज़्ज़वजल के यहाँ कुछ लाभ न देगा। उन गवाहों पर फ़र्ज़ है कि वे गवाही दें। अगर उनमें दो पुरुष, या एक पुरुष और दो स्त्रियाँ विश्वसनीय और शरीयत के अनुसार न्यायप्रिय हों, तो तलाक़ साबित हो जाएगा और उसका इनकार दुनिया में भी नहीं सुना जाएगा। और अगर उनमें ऐसे गवाह न हों और औरत के सामने तलाक़ न दिया हो, तो औरत उससे हलफ़ (शपथ) ले। अगर वह हलफ़ दे कि मैंने तलाक़ नहीं दिया, तो औरत अपने आप को उसकी पत्नी समझे। अगर उसने झूठा हलफ़ उठाया तो इसका गुनाह उसी पर है। और अगर स्वयं पत्नी के सामने उसे तीन तलाक़ें(दी हों)...

1. दुर्र-ए-मुख़्तार, बाब अर-रजाअत, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, १/२२०
2. अल-क़ुरआन २/२३०

पृष्ठ ४२३ का ६८८

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

اور اگر عدّت کے اندر کردیا کہ سوال میں انقضائے عدّت کا کوئی ذکر نہیں اور طلاق نامہ میں عدّت کا معاف کرنا جاہلانہ لکھا ہے تو یہ دوسرا نکاح بھی باطل ہوا مگر سلیمان کو اب بھی صغریٰ پر کوئی دعویٰ نہیں پہنچتا نہ وہ صغریٰ سے نکاح کرسکتا ہے کہ اس نکاح ثانی کے باطل ہونے کے سبب حلالہ صحیح نہ ہوا۔ در مختار میں ہے :

لاینکح مطلقۃ بالثلاث حتی یطأھا غیرہ بنکاح نافذ خرج الفاسد والموقوف 1۔(ملخصاً) واللہ تعالیٰ اعلم۔ تین طلاقوں سے مطلقہ عورت سے دوبارہ اس وقت تک نکاح نہیں ہوسکتا جب تک دوسرا خاوند صحیح اور نافذ نکاح کے ساتھ اس عورت سے جماع نہ کرلے، صحیح اور نافذ نکاح کی قید سے نکاح فاسد اور نکاح موقوف خارج ہوگیا (ملخصاً) واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۲۰۰: از انبالہ چھاؤنی صدر بازار محلہ پلیدار ان مرسلہ ننھے خاں نبیت ۱۵ رمضان المبارک ۱۳۳۶ ھ ایک شخص نے بخوشی چار آدمیوں کے سامنے اپنی عورت کو طلاق دی اب وہ کہتا ہے کہ میں نے نہیں دی۔ یہ طلاق ہوئی نہیں یا نہیں؟

الجواب: اگر واقع میں تین طلاقیں دی ہیں عند اللہ عورت اُس پر حرام ہوگئی بے حلالہ اس کے نکاح میں نہیں آسکتی۔ قال اللہ تعالیٰ :

فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدُ حَتَّى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُ 2 ۔ مطلقہ ثلاثہ عورت خاوند کے لئے حلال نہیں تاوقتیکہ وہ عورت دوسرے سے نکاح نہ کرلے۔(ت)

اور اس کا انکار اللہ عزوجل کے یہاں کچھ نفع نہ دے گا ان گواہوں پر فرض ہے کہ گواہی دیں اگر ان میں دو مرد یا ایک مرد دو عورتیں ثقہ عادل شرعی ہوں طلاق ثابت ہو جائے گی اور اس کا

انکار دنیا میں بھی نہ سنا جائے گا اور اگر ان میں ایسے گواہ نہ ہوں اور عورت کے سامنے طلاق نہ دی ہو تو عورت اس سے حلف لے اگر وہ حلف دے کہ میں نے طلاق نہ دی تو عورت اپنے آپ کو اس کی زوجہ سمجھے اگر اس نے حلف اُٹھا جھوٹا کیا تو وبال اس پر ہے اور اگر خود زوجہ کے سامنے اُسے تین طلاقیں

---

1 در مختار باب الرجعة مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۲۰ 2 القرآن ۲/۲۳۰

Fatawa Razawiyya - Volume 12

...denies it and just witnesses are not available, then the woman should obtain her release by any means possible, even by forfeiting her dower (Mahr) or giving other property. If he still does not release her, she should flee from him however possible and not allow him power over her. If even this is not possible, she should never willingly engage in marital relations with him, nor should she be content with his compulsion; then the burden of sin will be upon him. "Allah does not burden a soul beyond that it can bear" [1]. (T) And Allah Almighty knows best.

Problem 201: From Ganj Muradabad, District Unnao, sent by Sheikh Hurmat Ali Sahib, 21 Dhu al-Qi'dah 1315 AH.

What do the scholars of religion say regarding this matter? About two years ago, Zaid wrote letters to Bakr and Umar regarding his wife Hindah, stating, "I have divorced Hindah, she is now free." Now Zaid has come and he declares under oath, "I did not write those letters to Bakr and Umar. Bakr had placed those letters with Hindah and now they are lost." During this inquiry, Zaid told Bakr, "You yourself expressed the desire that I divorce Hindah, then I gave a divorce." Hindah also admits that Bakr had expressed a desire to Zaid, that's all. Please explain and be rewarded with the best reward.

The Answer: Proof of divorce from such letters depends on two things: either the husband admits, "Yes, I actually wrote this letter," or two men, or one man and two trustworthy Sharia-compliant witnesses, testify that the said husband wrote the mentioned letter in our presence. It is mentioned in 'Al-Ashbah' etc.:

(Arabic Text)	**(Translation)**
In kataba ala wajhir risalati masdaran ma'nuwiyyan wa thabata dhalika bi-iqrarihi aw bil-bayyinati fa-kal-khitab [2].	If the husband addressed the written divorce in the style of a divorce deed and sent it, and it is proven by his admission or witnesses that he gave the divorce, then it will be enforced just like a verbal divorce.

(T)

Thus, in the inquired case, if the writing of the letter is sufficiently proven by reliable testimony, then as many divorces as are mentioned in the letters (from one to three) will take effect from the time of writing, provided it remains within the iddah period.

1. Al-Quran 2/286
2. Al-Ashbah wal-Naza'ir, Third Art, Rules of Writing, Idara-tul-Quran Karachi 2/98-597; Radd al-Muhtar, Book of the Judge, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 4/353.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 12

...दे और मुनकिर हो गया और गवाह आदिल नहीं मिलते तो औरत जिस तरह जाने उससे रिहाई ले ले अगरचे अपना महर छोड़ कर, या और माल दे कर, और अगर वो यूँ भी न छोड़े तो जिस तरह बन पड़े उसके पास से भागे और उसे अपने ऊपर काबू न दे। और अगर ये भी न मुमकिन हो तो कभी अपनी ख़्वाहिश से उसके साथ बीवी-मियां वाला बर्ताव न करे न उसके मजबूर करने पर उससे राज़ी हो फिर वबाल उस पर है, 'अल्लाह किसी जान को उसकी वुसअत के मुताबिक़ ही तकलीफ़ देता है' [1]। (त) वल्लाहु तआला आलम।

मसला २०१: गंज मुरादाबाद ज़िला उन्नाव से मुर्सला शेख़ हुरमत अली साहब, २१ ज़ुल-क़ादा १३१५ हिजरी।

क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि तक़रीबन दो साल होने को हैं कि ज़ैद ने अपनी ज़ौजा (पत्नी) हिन्दा के बारे में बक्र और उमर को ख़त लिखे हैं कि 'मैंने हिन्दा को तलाक़ दी अब उसे इख़्तियार हासिल है'। अब ज़ैद आया और वो हलफ़िया बयान करता है कि 'मैंने बक्र और उमर को ख़त नहीं लिखे और वो ख़त हिन्दा के पास बक्र ने रख दिए थे अब गुम हो गए'। और इसी दरयाफ़्त में ज़ैद ने बक्र से कहा कि 'तुमने खुद ख़्वाहिश ज़ाहिर की थी कि हिन्दा को तलाक़ दो तब मैंने तलाक़ दी'। हिन्दा भी इक़रार करती है कि ज़ैद से बक्र ने ख़्वाहिश ज़ाहिर की थी फ़क़त। बीनू तूजरु बाहसनल सवाब।

अल-जवाब: ऐसे ख़तों से सुबूत-ए-तलाक़ दो उमूर (बातों) पर मौक़ूफ़ है, या तो शौहर इक़रार करे कि वाक़ई मैंने ये ख़त लिखा था या दो मर्द ख़्वाह एक मर्द दो सिक़ा (भरोसेमंद) शरई गवाह दें कि हमारे सामने शौहर ने ख़त मज़कूर लिखा। 'अशबाह' वग़ैरह में है:

(अरबी इबारत)	**(अनुवाद)**
इन कतबा अला वज्हिर रिसाला मसदरन मान्वियन व सबता ज़ालिका बि-इकरारीही अव बिल-बय्यिना फिकल-ख़िताब [2]।	अगर खावंद ने तहरीरी तलाक़ को तलाक़ नामा के अंदाज़ से मअनून करके इरसाल किया और उसके इक़रार या गवाहों से साबित हो जाए कि तलाक़ दी है तो ज़बानी तलाक़ की तरह नाफ़िज़ होगी।

(त)

पस सूरत-ए-मुस्तफ़सिरा अगर शहादत-ए-मुअतमिदा से बरवज्ह-ए-काफ़ी तहरीर-ए-ख़त साबित हो तो अलफ़ाज़-ए-मज़कूरा सवाल एक से तीन तक जितने ख़तों में लिखने का सुबूत त-बक़ा-ए-इद्दत हो उसी क़दर तलाक़ें वक़्त-ए-तहरीर से पड़ने का।

---

1. अल-क़ुरआन २८६/२
2. अल-अशबाह वन-नज़ायर, अल-फ़न्नुस सालीस, एहकामुल किताबत, इदारातुल क़ुरआन कराची ९८/२ - ५९७, रद-दुल मुहतार किताबुल क़ाज़ी दार एहयाउत तुरासिल अरबी बैरूत ३५३/४

دیں اور منکر ہو گیا اور گواہ عادل نہیں ملت تو عورت جس طرح جانے اس سے رہائی لے اگرچہ اپنا مہر چھوڑ کر ، یا اور مال دے کر ، اور اگر وہ یوں بھی نہ چھوڑے تو جس طرح بن پڑے اس کے پاس سے بھاگے اور اسے اپنے اوپر قابو نہ دے۔ اور اگر یہ بھی نہ ممکن ہو تو کبھی اپنی خواہش سے اس کے ساتھ زن وشو کا برتاؤ نہ کرے نہ اس کے مجبور کرنے پر اس سے راضی ہو پھر وبال اس پر ہے ، لَا یُکَلِّفُ اللّٰہُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَھَا [1] (اللہ تعالٰی وسعت کے مطابق ہی کسی جان کو تکلیف دیتا ہے ۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۰۱ : از گنج مرادآباد ضلع اوناؤ مرسلہ شیخ حرمت علی صاحب ۲۱ ذیقعدہ ۱۳۱۵ھ

چہ می فرمایند علمائے دین اس مسئلہ میں کہ عرصہ قریب دو سال کہ ہوتا ہے کہ زید نے اپنی زوجہ ہندہ کے بارے میں بکر اور عمر کو خط لکھے ہیں کہ میں ہندہ کو طلاق دی اُس کو اب اختیار حاصل ہے، اب زید آیا اور وہ حلفیہ بیان کرتا ہے میں نے بکر اور عمر کو خط نہیں لکھے اور وہ خط ہندہ کے پاس بکر نے رکھ دیئے تھے اب گم ہوگئے اور اسی دریافت میں زید نے بکر سے کہا تم نے خود خواہش ظاہر کی تھی کہ ہندہ کو طلاق دو تب میں نے طلاق دی ہندہ بھی اقرار کرتی ہے کہ زید سے بکر نے خواہش ظاہر کی تھی فقط ، بینوا توجروا باحسن الثواب ۔

الجواب : ایسے خطوط سے ثبوتِ طلاق دو امر پر موقوف یا تو شوہر اقرار کرے واقعی میں نے یہ خط لکھا تھا یا دو مرد خواہ ایک مرد دو ثقہ شرعیہ دیں کہ ہمارے سامنے شوہر نے خط مذکور لکھا، اشباہ وغیرہ میں ہے :

(عربی متن)	(اردو ترجمہ)
ان کتب علی وجہ الرسالۃ مصدرا معنویا و ثبت ذلك باقرار ہ او بالبینۃ فکالخطاب [2] ۔ (ت)	اگر خاوند نے تحریری طلاق کو طلاق نامہ کے انداز سے معنون کرکے ارسال کیا اور اس کے اقرار یا گواہوں سے ثابت ہوجائے کہ طلاق دی ہے تو زبانی طلاق کی طرح نافذ ہوگی۔

پس صورتِ مستفسرہ اگر شہادتِ معتمدہ سے بروجہِ کافی تحریرِ خط ثابت ہو تو الفاظِ مذکورہ سوال ایک سے تین تک جتنے خطوں میں لکھنے کا ثبوتِ تابقائے عدت ہو اسی قدر طلاقیں وقتِ تحریر سے پڑنے کا۔

---

1 القرآن ۲/۲۸۶ 2 الاشباہ والنظائر الفن الثالث احکام الکتابۃ ادارۃ القرآن کراچی ۲/۹۸ - ۵۹۷ ، ردالمحتار کتاب القاضی دار احیاء التراث العربی بیروت ۴/۳۵۳

Fatawa Razawiyya, Volume 12

A ruling will be given, for example, if through acceptable testimony only one letter is proven, then at the time he wrote this letter, it will be considered as one divorce. And if it is proven that one letter was written to 'Amr and another within the 'iddah period was written to Bakr or 'Amr himself using the same words or their equivalent, then it will be counted as two. Similarly, if three or more such letters are proven to have been written to the same person or multiple individuals, then it will be three, because the aforementioned words are explicit (Sarih); in such cases, writing to each person each time will be considered a separate instance of divorce.

[Boxed text left (Arabic): According to what they have stated, establishing a new meaning is better than mere emphasis, and an explicit divorce can follow another divorce. (Translation): Because the jurists have clarified that deriving a new benefit from speech is better than the previously mentioned benefit, and that an explicit divorce can be attached to the first divorce. (T)]

Yes, if in some letters the aforementioned words are present, and in others the content is written such that "I have already written such to so-and-so" or "I have written it before,"

[Boxed text left (Arabic): And similar to that which is specified for reporting about a past event, it is not suitable for origination (Insha). (Translation): Like those words which have become designated for reporting a previous event, they do not have the capacity for origination upon re-use. (T)]

Then the writing in those remaining letters will be considered a mention of that previous divorce; it will not be counted as a separate instance.

[Boxed text left (Arabic): In al-Hindiyya from al-Zahiriyya: If he divorced her and then said to her, "Talaq dadamat" (I have given you divorce), another divorce occurs. But if he said, "Talaq dada ast" (Divorce has been given), another does not occur. (Translation): It is narrated in al-Hindiyya from al-Zahiriyya that if the husband, after giving divorce, said "I gave you a divorce," then this will be counted as a second divorce, and if he said "Divorce has been given," then it will not be a second one. (T)]

And if the testimony is insufficient, then since Zaid is a denier, there is fundamentally no proof of divorce, even if letters exist and are completely similar to his handwriting, because a matching handwriting is not a legal evidence in Shari'ah.

[Boxed text left (Arabic): Because they have clarified in common books that handwriting resembles handwriting, so it is not considered. (Translation): Because the jurists have clarified that one handwriting can be similar to another, as is stated in general books; therefore, handwriting will not be relied upon. (T)]

1. Fatawa Hindiyya, Chapter One on Explicit Divorce, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/356
2. Fatawa Hindiyya, Book of the Judge's Letter to the Judge, Noorani Kutub Khana Peshawar, 3/381; Al-Hindiyya, Book of the Judge's Letter to the Judge, Yusufi Press Lucknow, 3/139

हुक्म दिया जाएगा, उदाहरण के लिए, यदि विश्वसनीय गवाही से केवल एक पत्र प्रमाण माना जाता है, तो जिस समय उसने यह पत्र लिखा, उस समय एक तलाक़ मानी जाएगी। और यदि एक पत्र 'अम्र' के नाम और दूसरा 'इद्दत' के भीतर उन्हीं शब्दों या उनके समान शब्दों से 'बक्र' या 'अम्र' के ही नाम लिखना सिद्ध हो जाए, तो दो मानी जाएँगी। और इसी तरह के तीन या अधिक पत्र एक ही व्यक्ति या अनेक व्यक्तियों के नाम लिखे सिद्ध हों, तो तीन मानी जाएँगी, क्योंकि उक्त शब्द स्पष्ट (सरिह) हैं; इनमें हर बार हर व्यक्ति को लिखना अलग-अलग तलाक़ माना जाएगा।

[बॉक्स टेक्स्ट (अरबी): जैसा कि उन्होंने स्पष्ट किया है कि नया अर्थ स्थापित करना ताकीद (ज़ोर देने) से बेहतर है और स्पष्ट तलाक़ दूसरे के बाद हो सकती है। (उर्दू अनुवाद): क्योंकि फ़ुक़हा (न्यायविदों) ने स्पष्ट कर दिया है कि कलाम (बात) से नया लाभ प्राप्त करना पहले बताए गए लाभ से बेहतर है, और यह कि स्पष्ट तलाक़ पहली तलाक़ के बाद लागू हो सकती है। (त)]

हाँ, यदि कुछ पत्रों में उक्त शब्द हों और बाकियों में विषय इस प्रकार लिखा हो कि "मैं अमुक को ऐसा लिख चुका हूँ" या "मैंने पहले ही लिख दिया है,"

[बॉक्स टेक्स्ट (अरबी): और उसके समान वे शब्द जो पिछले के बारे में खबर देने के लिए विशिष्ट हों, वे दोबारा शुरुआत (इंशा) के योग्य नहीं होते। (उर्दू अनुवाद): इसके समान वे शब्द जो पहले की खबर के लिए निर्धारित हो चुके हों, वे शब्द दोबारा उपयोग करने पर नई शुरुआत की क्षमता नहीं रखते। (त)]

तो उन शेष पत्रों का लेखन उसी पिछली तलाक़ का उल्लेख माना जाएगा, अलग से तलाक़ नहीं मानी जाएगी।

[बॉक्स टेक्स्ट (अरबी): 'अल-हिंदिया' में 'ज़हीरिया' के हवाले से: यदि उसने तलाक़ दी फिर उसे कहा "तलाक़ दादमत" (मैंने तुझे तलाक़ दी), तो दूसरी तलाक़ होगी। और यदि उसने कहा "तलाक़ दादा अस्त" (तलाक़ दे दी गई है), तो दूसरी तलाक़ नहीं होगी। (उर्दू अनुवाद): 'हिंदिया' में 'ज़हीरिया' से वर्णित है कि यदि पति ने तलाक़ देने के बाद कहा "तुझे मैंने तलाक़ दी," तो यह दूसरी तलाक़ गिनी जाएगी, और अगर कहा "तलाक़ दी गई है," तो यह दूसरी नहीं होगी। (त)]

और यदि गवाही पर्याप्त न हो, तो चूँकि ज़ैद (अभियुक्त) इंकार करने वाला है, इसलिए तलाक़ का कोई प्रमाण नहीं है, चाहे पत्र मौजूद हों और उसके हस्तलेख (लिखावट) से बिल्कुल मिलते-जुलते हों, क्योंकि लिखावट का मिलना कोई शरीयत प्रमाण नहीं है।

[बॉक्स टेक्स्ट (अरबी): क्योंकि उन्होंने आम किताबों में स्पष्ट किया है कि लिखावट दूसरी लिखावट के समान हो सकती है, इसलिए इसका ऐतबार नहीं किया जाएगा। (उर्दू अनुवाद): क्योंकि फ़ुक़हा ने स्पष्ट किया है कि एक लिखावट दूसरी लिखावट के समान हो सकती है, जैसा कि आम किताबों में है, इसलिए लिखावट का ऐतबार नहीं होगा। (त)]

1. फ़तावा हिंदिया, स्पष्ट तलाक़ पर पहला अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/356
2. फ़तावा हिंदिया, काज़ी के काज़ी को पत्र का अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 3/381; अल-हिंदिया, काज़ी के काज़ी को पत्र का अध्याय, यूसुफी प्रेस लखनऊ, 3/139

حکم دیا جائے گا مثلاً شہادت مقبولہ سے صرف ایک خط ایک ثبوت ہوا تو جس وقت اُس نے یہ خط لکھا اُس وقت اس ایک طلاق مانیں گے اور اگر ایک خط عمرو کے نام اور دوسرا عدت کے اندر انہیں الفاظ یا ان کے مثل سے بکر یا عمرو ہی کے نام لکھنا ثابت ہو تو دو اور اگر اسی طرح کے تین یا زائد ایک ہی شخص خواہ متعدد اشخاص کے نام لکھے ثابت ہوں تو تین کہ الفاظ مذکورہ کہ صریح ہیں ان میں ہر شخص کو لکھنا ہر بار کا لکھنا جدا طلاق سمجھا جائیگا۔

[لما نصوا علیہ من ان التأسیس خیر من التاکید وان الصریح یلحق غیرہ۔ کیونکہ فقہاء نے تصریح کردی ہے کہ کلام سے نیا فائدہ اخذ کرنا پہلے ذکر شدہ فائدہ سے بہتر ہے اور یہ کہ صریح طلاق پہلی طلاق ولاحق ہوسکتی ہے۔(ت)]

ہاں اگر بعض خطوط میں الفاظ مذکورہ اور باقی میں اس طرح کا مضمون مسطور ہو کہ میں فلاں کو ایسا لکھ چکا ہوں یا میں نے پہلے ہی لکھ دیا ہے،

[وامثال ذلك مما یتعین الاخبار عن ذاك السابق لا یصلح للانشاء۔ اس کی مثل وہ الفاظ جو پہلے خبر کے لئے متعین ہوں چکے تو وہ الفاظ دوبارہ استعمال پر انشاء کی صلاحیت نہیں رکھتے۔(ت)]

توان باقی خطوط کی تحریر اسی طلاق سابق کا ذکر قرار پائے گی جدا طلاق نہ ٹھہرے گی،

[فی الہندیۃ عن الظہیریۃ لو طلقھا ثم قال لھا طلاق دادمت یقع اخری ولو قال طلاق دادہ است لا یقع اخری، ہندیہ میں ظہیریہ سے منقول ہے اگر خاوند نے طلاق دینے کے بعد کہا تجھے میں نے طلاق دی، تو یہ دوسری طلاق شمار ہوگی، اور اگر کہا طلاق دی گئی ہے، تو یہ دوسری نہ ہوگی۔ (ت)]

اور اگر شہادت کافیہ نہ ہو تو ازانجا کہ زید منکر ہے اصلاً ثبوت طلاق نہیں اگرچہ خطوط موجود اور اس کے خط سے بالکل مشابہ ہوتے کہ خط ملنا کوئی حجت شرعیہ نہیں،

[لما صرحوا بہ فی عامۃ الکتب ان الخط یشبہ الخط فلا یعبتر۔ کیونکہ فقہاء نے تصریح کی ہے کہ خط دوسرے خط کے مشابہ ہوسکتا ہے، جیسا کہ عام کتب میں ہے، لہذا خط کا اعتبار نہ ہوگا۔ (ت)]

1. فتاوٰی ہندیہ الفصل الاول فی الطلاق بالصریح نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۵۶
2. فتاوٰی ہندیہ باب کتاب القاضی الی القاضی نورانی کتب خانہ پشاور ۳/ ۳۸۱، الہندیہ باب کتاب القاضی الی القاضی مطبع یوسفی لکھنؤ ۳/ ۱۳۹

Fatawa Razawiya, Volume 12

The statement of Bakr and Umar that letters were written to us, even if both are trustworthy and just, and even if they have no personal interest or accusation in making this desire known, is not worthy of attention at all because no one writes letters in front of another; they come by mail or are brought by a messenger. In any case, their statement would be based on the similarity of handwriting or the messenger's report, and this is not a Sharia-compliant testimony, as is not hidden even from a minor servant of jurisprudence. We have explained this in our treatise 'Al-Azka Al-Ihlal' (As this matter is not hidden from a minor servant of knowledge and we have described it in our treatise Al-Azka Al-Ihlal. -T). What has passed regarding the judicial decree is that unless there is proof through one of these two ways (testimony or confession), a decree of divorce will not be given. It is forbidden for a woman, despite her husband's denial, to consider herself divorced based on such an vague report and take any action toward freedom. It is forbidden for men to consider her divorced and intend to marry her. However, in reality, if Zaid is lying in his denial, then God is the one to take account from him; the woman is free from this burden. Let him fear God and manifest the truth. Allah (Subhanahu wa Ta'ala) knows best, and His knowledge is most complete and perfect.

Problem 202: Sent by Hakim Hussain Khan from Bareilly, Mohalla Farashi Tola, 20 Rajab 1335 AH. What do the scholars of religion, the supporters of the firm Sharia, say regarding this problem: Zaid married a prostitute three and a half years ago and has been causing pain and distress to his old wife, Hindah. Finally, on May 14, 1916, in the presence of two sane and adult Muslim persons, Amr and Bakr, who are his relatives, Zaid said to Hindah, "I do not have the capacity for two wives, I brought a prostitute of my choice, and you are of no use to me, I do not want to keep you, I have divorced you, go away from me, you have your choice to do what you want, I have my choice that I married a prostitute." Now Zaid denies the divorce, neither calls her nor comes to her, nor provides food and clothing. Those two persons are fixed (as witnesses). Zaid says he will harass Hindah severely. Hindah, being helpless from patience and endurance, wants to remarry. So, according to the order of the Noble Sharia, did a divorce occur or not? And how many divorces occurred from the mentioned words? Can Hindah remarry after the Iddah (waiting period) or not? From when will the counting of Iddah begin, and is she entitled to the dower (Mahr) or not? Clarify and be rewarded.

The Answer: Taking fatwas from the ignorant is forbidden. Turning towards the opponents of religion is extremely forbidden. To consider this divorce as Raj'i (revocable) is severe ignorance. And not knowing that the Iddah does not start from that time if this divorce was during menstruation, rather when this menstruation ends, then the period of purity after it ends and a new menstruation begins, that is when the start of Iddah should be taken, is another ignorance.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

बकर और उमर का बयान कि हमें पत्र लिखे गए, भले ही वे दोनों विश्वसनीय और न्यायप्रिय हों, और भले ही इस इच्छा के प्रकटीकरण के कारण इस मामले में उनका कोई स्वार्थ या आरोप न हो, फिर भी यह बिल्कुल ध्यान देने योग्य नहीं है क्योंकि कोई भी किसी के सामने पत्र नहीं लिखता; वे डाक से आते हैं या संदेशवाहक द्वारा लाए जाते हैं। किसी भी स्थिति में, उनका यह प्रकटीकरण लिखावट की समानता या दूत के बयान पर आधारित होगा, और यह कोई शरीयत के अनुसार गवाही नहीं है, जैसा कि न्यायशास्त्र के एक मामूली सेवक पर भी स्पष्ट है। और हमने इसे अपने रिसाला 'अज़की अल-इहलाल' में स्पष्ट किया है (जैसा कि यह बात ज्ञान के एक मामूली सेवक पर छिपी नहीं है और हमने इसे अपने रिसाला अज़की अल-इहलाल में वर्णित किया है। -टी)। जो कुछ अदालती आदेश के बारे में गुजरा है वह यह है कि जब तक इन दो तरीकों (गवाही या स्वीकारोक्ति) में से किसी भी माध्यम से प्रमाण न हो, तलाक का आदेश नहीं दिया जाएगा। महिला के लिए हराम है कि पति के इनकार के बावजूद ऐसी अधूरी खबर पर खुद को तलाकशुदा मानकर स्वतंत्रता की कोई कार्रवाई करे। पुरुषों के लिए हराम है कि उसे तलाकशुदा ठहराकर निकाह का इरादा करें। हालांकि, वास्तव में यदि जैद अपने इनकार में झूठा है, तो उसका हिसाब लेने वाला ईश्वर है; महिला उस बोझ से मुक्त है। उसे ईश्वर से डरना चाहिए और सत्य को प्रकट करना चाहिए। अल्लाह (सुब्हानहु व तआला) बेहतर जानता है और उसका ज्ञान सबसे पूर्ण और उत्तम है।

मसला 202: हकीम हुसैन खान द्वारा बरेली, मोहल्ला फराशी टोला से प्रेषित, 20 रजब 1335 हिजरी। दीन के उलेमा, शरीयत-ए-मतीन के समर्थक, इस मसले में क्या फरमाते हैं कि: जैद ने साढ़े तीन साल से एक वेश्या के साथ निकाह कर लिया है और अपनी पुरानी पत्नी हिंदा को कष्ट और तकलीफ देता रहा है, यहाँ तक कि पिछले साल 14 मई 1916 को दो समझदार और बालिग मुस्लिम व्यक्तियों, अम्र और बकर, जो कि उसके रिश्तेदार हैं, के सामने जैद ने हिंदा से कहा, "मुझमें दो पत्नियों की सामर्थ्य नहीं है, मैं अपनी पसंद की वेश्या ले आया और तू मेरे मतलब की नहीं है, मैं तुझे रखना नहीं चाहता, मैंने तुझे तलाक दिया, तू मेरे पास से चली जा, तुझे अपना अधिकार है जो चाहे कर, मुझे अपना अधिकार है कि मैंने वेश्या से निकाह कर लिया।" अब जैद तलाक से इनकार करता है, न बुलाता है, न आता है, न खाना-कपड़ा देता है और वे दोनों व्यक्ति गवाह के तौर पर मौजूद हैं। जैद कहता है कि मैं हिंदा को बहुत परेशान करूँगा। हिंदा धैर्य और सहनशीलता से लाचार होकर दूसरा निकाह करना चाहती है। अतः शरीयत-ए-शरीफ़ के हुक्म से तलाक हुआ या नहीं? और उल्लेखित शब्दों से कितने

तलाक हुए? क्या हिंदा इद्दत के बाद दूसरा निकाह कर सकती है या नहीं? इद्दत की गिनती कब से होगी और क्या वह मेहर की हकदार है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: अज्ञानियों से फतवा लेना हराम है। दीन के विरोधियों की ओर रुख करना अत्यंत हराम है। इस तलाक को 'रजई' (वापसी योग्य) समझना घोर अज्ञानता है। और यह न जानना कि इद्दत उस समय से शुरू नहीं होती यदि यह तलाक मासिक धर्म (हैज़) की स्थिति में हो, बल्कि जब वह मासिक धर्म समाप्त हो जाए, फिर उसके बाद की पवित्रता (तुह्र) की अवधि समाप्त हो और नया मासिक धर्म शुरू हो, तब से इद्दत की शुरुआत मानना दूसरी अज्ञानता है।

पृष्ठ 688 का 426

بکر و عمر کا بیان کہ ہمیں خط لکھے اگرچہ وہ دونوں ثقہ عادل بھی ہوں اگر چہ بجز اس اظہار خواہش کے سبب اس امر میں کوئی اپنی غرض و تہمت بھی نہ ہو اصلاً قابل التفات نہیں کہ کوئی کسی کو اسکے سامنے خط نہیں لکھا کرتا ڈاک میں آئے یا قاصد لایا بہر حال ان کا یہ اظہار اسی مشابہت خط یا بیان ایلچی پر مبنی ہوگا اور یہ کوئی شہادت شرعیہ نہیں کما لا یخفیٰ علی ادنیٰ خادم للفقہ وقد بیناہ فی رسالتنا الازکی الاھلال (جیسا کہ یہ بات علم کے ادنیٰ خادم پر مخفی نہیں ہے اور اس کو ہم نے اپنے رسالہ از کی الاھلال میں بیان کیا ہے۔ت) یہ جو کچھ گزرا درباره حکم قضا ہے یعنی جب تک ان دو وجہ شہادت واقرار میں کسی وجہ سے ثبوت نہ ہو حکم طلاق نہ دیا جائے گا، عورت کو حرام ہے کہ باوصف انکار شوہر ایسی مہمل خبر پر، اپنے آپ کو مطلقہ سمجھ کر کوئی کاروائی آزادی کرے، مردوں کا حرام ہے کہ اسے مطلقہ ٹھہرا کر قصد تزوج کریں، مگر فی الواقع اگر زید اس انکار میں جھوٹا ہے تو اس کا حساب لینے والا خدا ہے عورت اس وبال سے پاک وجد ہے خدا سے ڈرے اور حق ظاہر کرے واللہ سبحانہ وتعالیٰ اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم۔

مسئلہ ۲۰۲: مرسلہ حکیم حسین خاں از بریلی محلہ فراشی ٹولہ ۲۰ رجب ۱۳۳۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین حامی شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید نے عرصہ ساڑھے تین سال سے رنڈی کے ساتھ نکاح کرلیا اور ہندہ قدیمہ زوجہ کو اذیت و تکلیف دیتا رہا حتیٰ کہ ایک روز سال گذشتہ ۱۴ مئی ۱۹۱۶ء کو بمواجہہ دو شخص عاقل وبالغ مسلم عمرو بکر جو کہ اس کے قرابت دار ہیں زید نے ہندہ سے کہا کہ مجھے دو عورت کی استطاعت نہیں، میں اپنے پسند سے رنڈی لے آیا اور تو میرے مطلب کی نہیں، میں تجھ کو رکھنا نہیں چاہتا ہوں، تجھ کو میں نے طلاق دی، تو میرے پاس سے چلی جا، تجھ کو اختیار اپنا ہے جو چاہ سو کر، مجھ کو اپنا اختیار ہے کہ میں نے رنڈی سے

نکاح کرلیا اب زید طلاق سے انکار کرتا ہے اور نہ بلاتا ہے اور نہ آتا ہے اور نہ روٹی کپڑا دیتا ہے اور وہ دونوں شخص مقرر ہیں اور زید کہتا ہے کہ میں ہندہ کو خوب دق کرونگا، اور ہندہ صبر و تحمل سے عاجز ہو کر نکاح ثانی کرنا چاہتی ہے پس بحکم شرع شریف طلاق ہوئی یا نہیں، اور الفاظ مذکورہ سے کتنے طلاق واقع ہوئے اور ہندہ بعد عدت نکاح ثانی کرسکتی ہے یا نہیں، شمار عدت کب سے ہوگا اور دین مہر کی مستحق ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: جاہلوں سے فتویٰ لینا حرام ہے، مخالفانِ دین کو طرف رجوع کرنا سخت اشد حرام ہے، اس طلاق کو رجعی سمجھنا سخت جہالت ہے، اور عدت اس وقت سے شروع نہ جاننا اگر یہ طلاق بحالت حیض ہو بلکہ جب یہ حیض ختم ہو اس کے بعد کا طہر ختم ہو جدید حیض شروع ہو اس وقت سے عدت کا آغاز لینا دوسری جہالت ہے

Rather, the Shariah ruling is that in the questioned scenario, if the stated account is correct, two irrevocable (Ba'in) divorces have occurred upon the woman. She is out of [the husband's] bond, and the husband no longer has any right of revocation (Raj'at).

Arabic Text	**Urdu Translation/Explanation**
For the fifth word is an explicit divorce, and the sixth is not, but it carries the possibility of rejection, being dependent on intention even during a discussion [of divorce]. The seventh does not carry [the possibility of rejection], and the situation, due to the divorce, has become a state of discussion [of divorce]. Thus, it occurred without intention because an irrevocable [divorce] can follow an explicit one. And because it is irrevocable, the first one also becomes like it, because revocation is impossible after irrevocability. Therefore, she is divorced with two irrevocable divorces.	Because the fifth word is an explicit divorce and the sixth word carries the possibility of being a response, an intention is required in it, even so much so that it depends on intention during a discussion of divorce. The seventh word does not carry the possibility of rejection; because a discussion of divorce had started due to the previous mention of divorce, this divorce also occurred without intention. Since it is an irrevocable (Ba'in) divorce, and an irrevocable divorce can follow a revocable (Raj'i) one and makes the first one like itself (irrevocable) because return is impossible after irrevocability. Therefore, in the mentioned question, two irrevocable divorces have taken place. (T)

The period of 'Iddah will be counted from the moment the divorce was given, even if given during menstruation. All rules of 'Iddah, such as the prohibition for the woman to leave the house, will be established from that moment, not starting after a new menstrual cycle. However, this [current] menstruation will not be counted; instead, three complete menstrual cycles after this will be required. From the moment the divorce occurred, the woman's mahr (dowry) became due. And Allah Almighty knows best.

Problem 203: From Quetta, Rajputana, sent by Muhammad Ibrahim Khan, Vakil Sarishta, 23 Rajab 1336 AH.

Zaid gave an irrevocable, severe (Mughallazah) divorce to his wife, Hindah, who is 15 years old, in the presence of her father, 'Amr. Approximately one year after this divorce, Zaid somehow manipulated Hindah into saying that she was not divorced, and Zaid also denies giving the divorce. In this situation, what authority does

Hindah's father, 'Amr, have according to Shariah? Can 'Amr present a claim before a Qazi (judge), obtain a decree for the confirmation of divorce, and take his minor daughter, Hindah, out of Zaid's possession?

The Answer: Allah (Azzawajal) knows every hidden thing. If, in reality, Zaid had given a Mughallazah (severe/final) divorce to Hindah, and now both Zaid and Hindah are denying it, their marriage is no longer valid. It is obligatory upon them to separate immediately; otherwise, it is adultery, and both deserve the punishment of Hell and the wrath of the All-Powerful (Jabbar). If they do not separate, then it is obligatory upon Hindah's father that [he goes] to the Qazi...

बल्कि शरई हुक्म यह है कि पूछी गई सूरत में, यदि उल्लेखित बयान सही है, तो औरत पर दो 'तलाक-ए-बाइन' (अपरिवर्तनीय तलाक) पड़ गए। वह निकाह से बाहर हो गई, और शौहर को रुजू (वापस बुलाने) का कोई अधिकार नहीं रहा।

अरबी पाठ

क्योंकि पाँचवाँ शब्द स्पष्ट तलाक़ है, और छठा नहीं है, लेकिन इसमें अस्वीकृति की संभावना है, जो तलाक़ की चर्चा के दौरान भी इरादे पर निर्भर करती है। सातवें में [अस्वीकृति की] संभावना नहीं है, और स्थिति, तलाक़ के कारण, तलाक़ की चर्चा की स्थिति बन गई है। इस प्रकार, यह बिना इरादे के हुआ क्योंकि एक अपरिवर्तनीय [तलाक़] एक स्पष्ट के बाद हो सकता है। और क्योंकि यह अपरिवर्तनीय है, पहला भी इसी तरह का हो जाता है, क्योंकि अपरिवर्तनीयता के बाद वापसी असंभव है। इसलिए, उसे दो अपरिवर्तनीय तलाक़ दिए गए।

उर्दू अनुवाद/व्याख्या

क्योंकि पाँचवाँ शब्द स्पष्ट तलाक़ है और छठा शब्द जवाब होने की संभावना रखता है, इसलिए इसमें नीयत (इरादे) की ज़रूरत है, यहाँ तक कि तलाक़ की चर्चा में नीयत पर निर्भर है। और सातवाँ शब्द 'रद' (अस्वीकार) की संभावना नहीं रखता, पहले तलाक़ कहने के आधार पर तलाक़ की चर्चा हो जाने के कारण यह तलाक़ भी बिना नीयत के वाक़े (घटित) हो गया, क्योंकि यह बाइन (अपरिवर्तनीय) तलाक़ है, और बाइन तलाक़ 'रजई' तलाक़ को भी बाइन बना देता है और पहली को भी वैसी ही बना देता है क्योंकि बाइन के बाद रुजू (वापसी) मुमकिन नहीं रहता। लिहाज़ा उल्लेखित सवाल में दो बाइन तलाक़ें हो गई हैं। (त)

इद्दत उसी समय से गिनी जाएगी जब यह तलाक दिया गया, चाहे वह मासिक धर्म (हैज़) की स्थिति में दिया गया हो। इद्दत के सभी नियम, जैसे औरत के घर से बाहर जाने की पाबंदी आदि, उसी समय से लागू हो जाएंगे, न कि नए मासिक धर्म के बाद शुरू होंगे। हाँ, सिर्फ यह मासिक धर्म गिनती में नहीं आएगा, बल्कि इसके बाद तीन पूर्ण मासिक धर्म आवश्यक होंगे। जिस समय यह तलाक पड़ा, औरत का मेहर देय (वाजिब-उल-अदा) हो गया। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 203: केटा, राजपुताना से, प्रेषक मुहम्मद इब्राहिम खां, वकील सरिश्ता, 23 रजब 1336 हिजरी।

ज़ैद ने अपनी पत्नी हिंदा को, जिसकी उम्र 15 साल है, हिंदा के पिता अम्र के सामने 'तलाक़-ए-बाइन मुग़ल्लज़ह' दे दिया। इस तलाक़ के लगभग एक साल बाद, ज़ैद ने किसी तरह हिंदा को बहला-फुसलाकर कहलवा दिया कि "मुझे तलाक़ नहीं हुआ है" और ज़ैद भी तलाक़ देने से इनकार करता है। इस सूरत में हिंदा के पिता अम्र को शरीअत के अनुसार क्या अधिकार प्राप्त है? क्या अम्र काज़ी के सामने दावा पेश करके तलाक़ की पुष्टि की डिक्री ले सकता है और अपनी नाबालिग लड़की हिंदा को ज़ैद के क़ब्ज़े से निकाल सकता है?

अल-जवाब: अल्लाह (अज़्ज़वजल) हर ग़ैब (छिपी बात) को जानता है। हक़ीक़त में अगर ज़ैद ने हिंदा को 'तलाक़-ए-मुग़ल्लज़ह' दिया था और अब ज़ैद और हिंदा दोनों मुनकिर (इनकार करने वाले) हो गए हैं, तो उनका निकाह अब मान्य नहीं है, और उन पर फ़र्ज़ है कि फ़ौरन अलग हो जाएँ वरना यह ज़िना (व्यभिचार) है और दोनों नरक के अज़ाब और 'जब्बार' (अल्लाह) के ग़ज़ब के हक़दार हैं। अगर वे अलग न हों, तो हिंदा के पिता पर फ़र्ज़ है कि वह काज़ी के..

पृष्ठ 427/688

فتاوی رضویہ جلد دو ازدہم

بلکہ حکم شرعی یہ ہے کہ صورت مستفسرہ میں اگر بیان مذکور صحیح ہے عورت پر دو طلاقیں بائن پڑ گئی، عورت سے نکل گئی، شوہر کو رجعت کا کچھ اختیار نہ رہا،

عربی عبارت

فان اللفظ الخامس طلاق صریح ولاسادس لکنہ یحتمل الردان توقف علی النیۃ حتی فی المذاکرۃ فالسابع لا یحتملہ وقد صارت الحالۃ بالطلاق حالۃ المذاکرۃ فوقع بلانیۃ لان البائن یلحق الصریح ولکونہ بائناً عاد الاول ایضاً مثلہ لاستحالۃ الرجعۃ بعد البینونۃ فطلقت تطلیقتین بائنتین۔

اردو ترجمہ / تشریح

کیونکہ پانچواں لفظ صریح طلاق ہے اور چھٹا لفظ جواب کا احتمال رکھتا ہے اس لئے اس میں نیت کی ضرورت ہے حتی کہ مذاکرہ طلاق میں نیت پر موقوف ہے، اور ساتواں لفظ رد کا احتمال نہیں رکھتا پہلے طلاق کہنے کی بنا پر مذاکرہ طلاق ہو جانے کی وجہ سے یہ طلاق بھی بغیر نیت واقع ہوگئی، کیونکہ یہ بائنہ طلاق ہے، اور بائنہ، رجعی طلاق کو لاحق ہوجاتی ہے اور بائنہ پہلی کو بھی جیسی بنا دیتی ہے اس لئے کہ بائنہ کے بعد رجوع ناممکن ہوجاتا ہے، لہٰذا مذکورہ سوال میں دو بائنہ طلاقیں ہوگئی ہیں۔ (ت)

عدت اسی وقت سے لی جائیگی جب سے یہ طلاق دی اگر چہ حالت حیض میں دی ہو تمام احکام عدت مثلاً عورت پر گھر سے باہر جانے کی حرمت وغیرہ اسی وقت ثابت ہو جائیں گی نہ یہ کہ حیضِ جدید کے بعد آغاز ہوں، ہاں صرف یہ حیض شمار میں نہ آئے گا بلکہ اس کے بعد تین حیض کامل درکار ہوں گے، جس وقت سے یہ طلاق پڑی عورت کا مہر واجب الادا ہو گیا۔ واللہ تعالیٰ اعلم

مسئلہ ۲۰۳: از کوئٹہ راجپوتانہ مرسلہ محمد ابراہیم خاں وکیل سرشتہ ۲۳ رجب ۱۳۳۶ھ

زید نے اپنی زوجہ ہندہ کو جس کی عمر ۱۵ سال کی ہے ہندہ کے باپ عمرو کے مواجہہ میں طلاق بائن مغلظہ دے دیا اس طلاق کے اندازاً ایک سال بعد زید نے کسی طرح پر ہندہ کو بہکا کر یہ کہلا دیا کہ مجھے طلاق نہیں ہوئی ہے اور زید بھی طلاق دینے سے انکار کرتا ہے، اس صورت میں پدرِ ہندہ عمرو کو بروئے شریعت کیسا اختیار حاصل ہے، کیا عمرو قاضی کے سامنے دعویٰ پیش کر کے استقرارِ طلاق کی ڈگری لے سکتا ہے اور اپنی لڑکی ہندہ نابالغہ کو زید کے قبضہ سے نکال سکتا ہے؟

الجواب: اللہ عزوجل ہر غیب کو جانتا ہے فی الواقع اگر زید نے ہندہ کو طلاق مغلظہ دی تھی اور اب زید و ہندہ دونوں منکر ہو گئے ہیں تو اُن کا نکاح کچھ مسموع نہیں، اور ان پر فرض ہے کہ فوراً جدا ہو جائیں ورنہ زنا ہے اور دونوں کو عذابِ جہنم و غضبِ جبار کا استحقاق ہے، اگر وہ جدا نہ ہوں تو ہندہ کے باپ پر فرض ہے کہ قاضی کے

Here, by filing a claim for divorce, separation should be effected immediately. If he does not do so, then it is obligatory upon every Muslim who is aware of this to file a claim and cause separation between them. Every Muslim has the right to file such a claim. In fact, if no one files a claim, it is obligatory for those before whom Zaid pronounced the divorce to appear before the Qazi (judge) and give testimony. If among them there are two witnesses acceptable under Sharia, then it is mandatory for the Qazi to hear their testimony even without a claimant and forcibly separate that man and woman. It is mentioned in Al-Ashbah wan-Nazha'ir:

[Arabic quote]: Testimony is heard without a claim in pure Hudud (divine limits) and in pure divorce, Ila (vow of abstinence), and Zihar (comparing wife to a forbidden female relative). [Urdu translation]: In pure Hudud, divorce, Ila, and Zihar, testimony can be accepted even without a claim. (T) [1]

It is mentioned in Durr al-Mukhtar:

[Arabic quote]: The prior filing of a claim is a condition for the acceptance of testimony in rights of servants (human rights), unlike the rights of Allah Almighty, because establishing them is mandatory for everyone. Thus, everyone is a claimant, so the claim is considered to exist. (Summary) [2] [Urdu translation]: In human rights, the prior existence of a claim is a condition for accepting testimony, unlike the rights of Allah, for it is mandatory for everyone to establish them. Therefore, in matters regarding the rights of Allah, anyone can be a party, as if the claim is already established. (T)

However, if in reality Zaid did not give a divorce and Hind's father wants to cause separation by making a false claim of divorce, then he will deserve severe punishment. We seek refuge in Allah. And Allah the Almighty knows best.

Problem 204: From Balrampur, main post office, District Gonda, Mohalla Phatak, towards Uttar Sarai, sent by Noor Mohammad Atishbaz, 24 Safar 1338 AH.

What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid is a literate man. About fifteen to sixteen years have passed since Zaid, for certain reasons, gave his wife, Hind, a single divorce as a warning. After fifteen days, the husband and wife reconciled (did ruju), and she remained in Zaid's marriage until today. Coincidentally, after sixteen years, discord arose between them because of the instigation of a

person who was a partner in Zaid's business. She fled from Zaid's house, and after some ten days, she returned and...

---

1. Al-Ashbah wan-Nazha’ir, Kitab ash-Shahadat wad-Da'awa, Idarat al-Qur'an wal-Ulum al-Islamiyyah, Karachi, 1/358.
2. Durr al-Mukhtar, Bab al-Ikhtilaf fish-Shahadah, Matba' Mujtabai, Delhi, 2/98.

फ़तावा रज़विया - भाग बारह

यहाँ तलाक का दावा करके तुरंत अलगाव करा लेना चाहिए। यदि वह ऐसा नहीं करता है, तो जो मुसलमान इसकी जानकारी रखता है, उस पर यह फ़र्ज़ (अनिवार्य) है कि वह दावा करके उनमें अलगाव करा दे। इसमें हर मुसलमान को दावा करने का अधिकार है। वास्तव में, यदि कोई दावा नहीं करता है, तो जिन लोगों के सामने ज़ैद ने तलाक दिया था, उन पर यह फ़र्ज़ है कि वे काज़ी (न्यायाधीश) के सामने उपस्थित होकर गवाही दें। यदि उनमें दो गवाह शरीअत के अनुसार स्वीकार्य हों, तो काज़ी पर यह अनिवार्य है कि वह बिना किसी दावेदार के उनकी गवाही सुने और उस पुरुष और महिला को जबरन अलग कर दे। 'अल-अश्बाह वन-नज़ायर' में है:

[अरबी उद्धरण]: शुद्ध सीमाओं (हुदूद) में और शुद्ध तलाक, ईला और ज़िहार में बिना दावे के गवाही सुनी जाती है। [उर्दू अनुवाद]: शुद्ध हुदूद, तलाक, ईला और ज़िहार में बिना दावे के भी गवाही स्वीकार की जा सकती है। (त) [1]

'दुर्र-ए-मुख्तार' में है:

[अरबी उद्धरण]: मानव अधिकारों (हुक़ूक़ुल इबाद) में गवाही स्वीकार करने के लिए पहले दावे का होना शर्त है, अल्लाह सर्वशक्तिमान के अधिकारों के विपरीत, क्योंकि उन्हें स्थापित करना प्रत्येक पर अनिवार्य है। अत; प्रत्येक व्यक्ति एक दावेदार है, इसलिए दावा मौजूद माना जाता है। (संक्षेप में) [2] [उर्दू अनुवाद]: हुक़ूक़ुल इबाद में गवाही स्वीकार करने के लिए पहले दावे का पाया जाना शर्त है, इसके विपरीत अल्लाह के अधिकारों में कि प्रत्येक पर उन्हें स्थापित करना अनिवार्य है। इसलिए अल्लाह के अधिकारों के मामले में हर कोई एक पक्ष हो सकता है, मानो कि दावा मौजूद माना जाएगा। (त)

हाँ, यदि वास्तव में ज़ैद ने तलाक नहीं दिया और हिंदा का पिता तलाक का झूठा दावा करके उन्हें अलग कराना चाहता है, तो वह सख्त अज़ाब का हकदार होगा। व-अयाज़ु बिल्लाह। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसला २०४: बलरामपुर डाकखाना खास, जिला गोंडा, मोहल्ला फाटक, उत्तर सराय की ओर से, प्रेषक नूर मोहम्मद आतिशबाज़, २४ सफ़र १३३८ हिजरी।

धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं: ज़ैद एक शिक्षित व्यक्ति है। लगभग पंद्रह-सोलह वर्ष बीत चुके हैं कि ज़ैद ने अपनी पत्नी हिंदा को कुछ कारणों से चेतावनी के तौर पर एक तलाक दिया था। पंद्रह दिन बीतने के बाद दोनों पति-पत्नी ने सुलह (रुजू) कर ली और वह आज तक ज़ैद के निकाह में रही। संयोग से सोलह वर्ष बाद, ज़ैद के व्यापारिक साझेदार के बहकाने के कारण दोनों में अनबन हो गई। वह ज़ैद के घर से भाग गई और कुछ दस दिनों के बाद वापस आई और...

---

1. अल-अश्बाह वन-नज़ायर, किताबुश-शहादात वद-दा'वा, इदारतुल क़ुरआन वल-उलूमल इस्लामिया, कराची, 1/358.
2. दुर्र-ए-मुख्तार, बाबतुल इख़्तिलाफ़ फ़िश-शहादा, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 2/98. पृष्ठ ४२८ का ६८८

یہاں دعوی طلاق کرکے فوراً جدائی کرالے اگر وہ نہ کرے تو جو مسلمان اس پر اطلاع رکھتا ہے اس پر فرض ہے کہ دعوی کر کے اُن میں جدائی کرا دے اس میں ہر مسلمان کو دعوی اختیار ہے بلکہ اگر کوئی شخص دعوی نہ کرے تو جن کے سامنے زید نے طلاق دی تھی اُن پر فرض ہے کہ قاضی کے یہاں حاضر ہو کر گواہی دیں اور اگر اُن میں دو گواہ قابل قبول شرع ہوں تو قاضی پر فرض ہے کہ بغیر کسی مدعی کے ان کے شہادت سُن لے اور اُن مرد و عورت کو جبراً جُدا کر دے۔ اشباہ والنظائر میں ہے:

[Arabic]: تسمع الشهادة بدون الدعوی فی الحد الخالص وفي الطلاق والایلاء والظهار ۱۔ خالص حد، طلاق، ایلاء اور ظہار میں بغیر دعوی بھی شہادت قبول کی جاسکتی ہے۔ (ت)

در مختار میں ہے:

[Arabic]: تقدم الدعوی فی حقوق العباد شرط قبولا بخلاف حقوق الله تعالی لوجوج اقامتها علی کل واحد فکل احد خصم فکان الدعوی موجوده ۲۔ (ملخصاً) حقوق العباد میں شہادت قبول کرنے کے لئے پہلے دعوی پایا جانا شرط ہے، بخلاف حقوق اللہ کے کہ ہر ایک پر واجب ہے کہ ان کو قائم کرے اس لئے حقوق اللہ معاملہ میں ہر ایک فریق ہو سکتا ہے ، گویا کہ دعوی موجود قرار پائے گا۔ (ت)

ہاں واقع میں زید نے طلاق نہ دی اور ہندہ کا باپ جھوٹا دعوی طلاق کرکے جدا کرانا چاہتا ہے تو ہو سخت عذاب کا مستحق ہوگا۔ والعیاذ باللہ۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۰۴ : از بلرام پور ڈاک خانہ خاص ضلع گونڈہ محلہ پھاٹک جانب اوتر سرائے بجستہ مرسلہ نور محمد آتشباز ۲۴ صفر ۱۳۳۸ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید خواندہ آدمی ہے عرصہ پندرہ سولہ سال کا گزرتا ہے کہ زید نے اپنی بی بی ہندہ کو بوجہ وجوہ طلاق واحد تنبیہا دی اور بعد گزرنے پندرہ یوم کے دونوں میاں بیوی نے رجعت کرلی اور آج تک زید کی زوجیت میں رہی اتفاقاً بعد سولہ برس کے دونوں میں نااتفاقی بوجہ ورغلانے ایک شخص کے جو زید کی تجارت میں شریک تھا ہو گئی اور زدی کے مکان سے فرار ہو گئی بعد چند دس روز کے واپس آئی اور

۱۔ الاشباہ والنظائر کتاب الشہادات والد عادی ادارۃ القرآن والعلوم الاسلامیہ کراچی ۱/۳۵۸ ۲۔

درمختار باب الاختلاف فی الشہادۃ مطبع مجتبائی دہلی ۲/۹۸ Page 428 of 688

Fatawa Razawiyya, Volume 11

A previous single divorce was decided as three divorces. Since Zaid is a person of the community, this case was presented in the panchayat (community council), and witnesses testified, "I don't remember if Zaid gave one divorce or three." At that time, an oath was taken from Zaid in the panchayat. Zaid swore it was a single divorce. Hind remained in Zaid's marriage for a few days. Afterwards, Hind fled again and, presenting two witnesses who are habitually prayerless, habitual wine-drinkers, and adulterers—one from the community and the other from another group—filed a case in the civil court and obtained a decree. She now lives in the house of a person who was Zaid's partner, and there is a strong suspicion that he incited her. So, in the mentioned situation, will the statement of Hind's witnesses in the court be reliable, or will the first panchayat witnesses and Zaid's oath be reliable? And is it permissible for the entire community, who strongly suspect Zaid's partner (where Hind resides and who is suspected of inciting her), to boycott him and Zaid as a warning? And can Hind still be Zaid's wife?

The Answer: If this statement is true, then the panchayat's decision was correct. After following it for a few days, Hind's act of creating trouble again under the devil's influence and obtaining a decree from the court by presenting two sinful witnesses is of no benefit to her according to Sharia. Hind continues to be Zaid's wife. If there is proof of Hind's abduction/incitement against Zaid's partner, then the community members must certainly expel him from the community, stop socializing with him, and not sit with him. Allah Almighty says: "And if Satan causes you to forget, then after the remembrance, do not sit with the wrongdoing people." [Al-Quran 6:68] The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) said: "He is not from us who turns a woman against her husband." (Reported by Abu Dawud and al-Hakim with an authentic chain from Abu Hurairah, and by at-Tabarani in 'al-Saghir' and similar in 'al-Awsat' from Ibn 'Umar).

1. Al-Quran 6:68
2. Sunan Abi Dawud, Kitab al-Talaq, Aftab-e-Alam Press, Lahore, 1/296; Al-Mustadrak lil-Hakim, Chapter: 'He is not from us who turns a woman against her husband', Dar al-Fikr, Beirut, 2/196.

फ़तावा रज़विया, खंड 11

पिछली एक तलाक को तीन तलाक तय किया गया था। चूंकि ज़ैद बिरादरी का आदमी है, इसलिए यह मामला पंचायत में पेश किया गया और गवाहों ने बयान दिया कि "मुझे याद नहीं कि ज़ैद ने एक तलाक दी थी या तीन।" उस समय पंचायत में ज़ैद से कसम ली गई। ज़ैद ने एक तलाक की कसम खाई। हिंदा कुछ दिनों तक ज़ैद के निकाह में रही। इसके बाद हिंदा फिर से भाग गई और दो गवाह —जो नमाज़ न पढ़ने वाले, शराब पीने वाले और व्यभिचारी हैं, एक बिरादरी का और दूसरा दूसरी कौम का—को दीवानी कचहरी में पेश करके मुकदमा दायर कर डिक्री हासिल कर ली। वह अब उस व्यक्ति के घर में रहती है जो ज़ैद का भागीदार था और उस पर उसे बहलाने-फुसलाने का प्रबल संदेह है। तो, पूछी गई स्थिति में क्या कचहरी में हिंदा के गवाहों का बयान विश्वसनीय होगा या पंचायत के पहले गवाह और ज़ैद की कसम विश्वसनीय होगी? और क्या पूरी बिरादरी के लिए ज़ैद के भागीदार (जहाँ हिंदा रह रही है और जिस पर उसे बहलाने का संदेह है) का चेतावनी के तौर पर सामाजिक बहिष्कार करना जायज़ है? और क्या हिंदा अब भी ज़ैद की पत्नी हो सकती है?

अल-जवाब: यदि यह बयान सत्य है, तो पंचायत का निर्णय सही था। उसके बाद कुछ दिनों तक उस पर कायम रहने के बाद, शैतान के बहकावे में आकर फिर से फसाद खड़ा करना और दो फ़ासिक (पापी) गवाहों को पेश करके कचहरी से डिक्री लेना शरीयत के अनुसार उसके लिए किसी काम का नहीं है। हिंदा बदस्तूर ज़ैद की पत्नी है। और यदि ज़ैद के भागीदार पर हिंदा को बहलाने का प्रमाण हो, तो बिरादरी के लोगों को चाहिए कि उसे बिरादरी से बाहर निकालें, उससे मेल-जोल छोड़ दें और उसके पास न बैठें। अल्लाह अज़्वजल फ़रमाता है: "और अगर शैतान तुम्हें भुला दे, तो याद आने पर ज़ालिमों के साथ न बैठो।" [अल-क़ुरआन 6:68] अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) फ़रमाते हैं: "वह हम में से नहीं है जो किसी स्त्री को उसके पति के विरुद्ध भड़काए।" (इसे अबू दाऊद और हाकिम ने अबू हुरैरा से सही सनद के साथ रिवायत किया है, और तबरानी ने 'अल-सगीर' में और इब्ने उमर से 'अल-औसत' में इसी तरह रिवायत किया है)।

1. अल-क़ुरआन 6/68
2. सुनन अबू दाऊद, किताबुल तलाक़, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस, लाहौर, 296/1; अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, अध्याय: 'वह हम में से नहीं है जो किसी स्त्री को उसके पति के विरुद्ध भड़काए', दारुल फिक्र, बेरुत, 196/2

فتاویٰ رضویہ، جلد دو از دہم

سابقہ طلاق واحد کو تین طلاقوں کی مقرر ہوئی، چونکہ زید برادری والا آدمی ہے، پنچایت میں یہ مقدمہ پیش ہوا اور گواہوں نے بیان کیا، مجھے یاد نہیں ہے کہ زید نے طلاق واحد دی تھی یا طلاق ثلاثہ، اس وقت پنچایت میں زید سے قسم لی گئی، زید نے طلاق واحد کی قسم کھائی، ہندہ پھر زید کی زوجیت میں چند روز رہی، بعد ازاں ہندہ پھر فرار ہو کر اور دو گواہ بے نمازی دائمی وار شراب خوار و زانی ایک برادری ودیگرے قوم دیگر کچہری دیوانی میں پیش کر کے مقدمہ دائر کر کے ڈگری حاصل کرلی اور اس شخص کے مکان پر رہتی ہے جو کہ زید کا شریک تھا اور اسی کے ورغلانے کا گمان غالب تھا، پس صورت مسئولہ میں ہندہ کے گواہ مذکورہ کچہری کا قول معتبر ہوگا یا کہ گواہ اول پنچایتی برادرن زید کا قسم معتبر ہوگا اور اہل برادری کو زید کے شریک جہاں ہندہ رہتی ہے اور اسی کے ورغلانے کا تمام اہل برادری کو اور زید کو گمان غالب ہے تنبیہاً خاندان ترک کر دینا جائز ہے یا نہیں؟ اور ہندہ زوجہ زید ہو سکتی ہے یا نہیں؟

الجواب: اگر یہ بیان واقعی ہے تو پنچایت کا فیصلہ حق تھا اس کے بعد ہندہ کا چند روز اس پر کار بند رہ کر اغوائے شیطان سے پھر فساد اٹھانا اور دو فاسق گواہ پیش کر کے کچہری سے ڈگری لینا اسے شرعاً کچھ مفید نہیں، ہندہ بدستور زوجہ زید ہے، اور شریک زید پر اگر ہندہ کے اغوا کا ثبوت ہو تو اہل برادری ضرور اسے برادری سے خارج کریں اُس سے میل جول چھوڑ دیں اس کے پاس نہ بیٹھیں۔ اللہ عزوجل فرماتا ہے:

وَاِمَّا یُنْسِیَنَّكَ الشَّیْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ (اگر تجھے شیطان بُھلا دے تو یاد آئے پر ظالموں کے پاس نہ بیٹھ)

رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: لیس منّا من خبب امرأۃ علی زوجھا (ہمارے گروہ سے نہیں جو کسی کی عورت کو اس سے بگاڑ دے) رواہ ابوداؤد والحاکم بسند صحیح عن ابی ہریرۃ والطبرانی فی الصغیر ونحوہ فی الاوسط عن ابن عمرو (اس کو ابوداؤد اور حاکم نے صحیح سند کے ساتھ ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے اور طبرانی نے صغیر اور اس کی مثل اوسط میں ابن عمر رضی اللہ عنہ)

1 القرآن ۶۸/۶ 2 سنن ابوداؤد کتاب الطلاق آفتاب عالم پریس لاہور ۲۹۶/۱، المستدرک للحاکم باب لیس منّا من خبب امرأۃ علی زوجھا الخ دار الفکر بیروت ۱۹۶/۲

Fatawa Razawiyya, Volume 12

In Al-Awsat by Abu Ya'la, with a sound chain from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them all). And Allah knows best. (T) It is narrated from Ibn Abbas (may Allah be pleased with him) in Al-Awsat like Abu Ya'la with a sound chain. And Allah knows best. (T)

Question 205: From Pakhrir, district Muzaffarpur, Mohalla Nur al-Ain Shah Sharif Abad, Rai Pur, Muzaffarpur, sent by Sharif-ur-Rahman Sahab, 3 Shaban 1336 AH. Hinda says that her husband, Sheikh Ismail, gave her five divorces at once, and she has witnesses: a mother, a sister-in-law (brother's wife), an adult non-relative woman, and a 12-14-year-old boy. Her mother says yes, five divorces were given, and the sister-in-law says five divorces were given. The non-relative woman present says two were given. The boy says three were given, and also says that Musammat Moran was also there. Musammat Moran says no divorce was given. The neighbors present say unanimously that no divorce was given. Ismail, Hinda's husband, says under oath that I have not given divorce to Hinda, nor will I give. Hinda, her mother, and her sister-in-law have conspired together and leveled a false accusation against me. Since I was ill and was admonishing and compelling Hinda to serve me, she became angry and made this false accusation.

The Answer: In the mentioned situation, divorce is not proven. Because even if the boy is an adult, or whether it's the sister-in-law or the other woman who says two divorces, if they are not trustworthy ('Adil) according to Sharia, then it is obvious. To the extent that even if the boy is an adult and he, the mother, and the sister-in-law are all trustworthy, but only that non-relative woman is not trustworthy, even then the divorce will not be proven at all. In the first case, because there are only women, and the testimony of women alone is not acceptable. In the second case, because there is no court (lack of proper evidence). And in the third case, because a mother's testimony is not accepted in favor of her daughter. It is in Durr al-Mukhtar: "The testimony of a branch (descendant) for its root (ancestor) is not accepted, and vice-versa." 1 - (Summarized) The testimony of a branch (child) is not acceptable in favor of the root (parents and above), and if it is the reverse (parent for child), it is also not acceptable. (Summarized). (T)

In Bahr al-Ra'iq: In Al-Walwaljiyyah, it is permissible for a son to testify against the father... In Al-Walwaljiyyah, it says that if a father divorced his wife...

1 Durr al-Mukhtar, Kitab ash-Shahadat, Bab al-Qabul wa-Admihi, Matba' Mujtabai, Delhi, 3/94 Page 430 of 688

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

अल-औसत में अबू यअला द्वारा इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से सही सनद के साथ रिवायत है। और अल्लाह बेहतर जानता है। (त) इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) से अल-औसत में अबू यअला की तरह सही सनद से रिवायत है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 205: पखरिया, जिला मुजफ्फरपुर, मोहल्ला नूरुल ऐन शाह शरीफ आबाद, राय पुर, मुजफ्फरपुर से शरीफ-उर-रहमान साहब द्वारा भेजा गया, 3 शाबान 1336 हिजरी। हिंदा का कहना है कि उसके शौहर शेख इस्माइल ने उसे एक साथ पाँच तलाक दिए हैं, और उसके पास गवाह के तौर पर एक माँ, एक भाभी, एक बालिग़ ग़ैर औरत और एक 12-14 साल का लड़का है। उसकी माँ कहती है कि हाँ, पाँच तलाक दिए गए हैं, और भाभी कहती है कि पाँच तलाक दिए गए हैं। मौजूद ग़ैर औरत कहती है कि दो दिए गए हैं। लड़का कहता है कि तीन दिए गए हैं, और यह भी कहता है कि वहाँ मुसम्मात मोरन भी थी। मुसम्मात मोरन कहती है कि तलाक नहीं दिया गया है। पड़ोस के मौजूद लोग एक सुर में कहते हैं कि तलाक नहीं दिया गया है। हिंदा का शौहर इस्माइल कहता है कि मैं कसम खाकर कहता हूँ कि मैंने हिंदा को तलाक नहीं दिया है और न दूँगा। हिंदा, उसकी माँ और भाभी ने मिलकर मेरे खिलाफ झूठी तोहमत लगाई है। चूँकि मैं बीमार था और हिंदा को अपनी सेवा के लिए समझाता और मजबूर करता था, इसलिए वह मुझसे नाराज़ होकर मुझ पर झूठी तोहमत लगा रही है।

अल-जवाब: मज़कूरा (उल्लिखित) सूरत में तलाक साबित नहीं होता। क्योंकि अगर वह लड़का बालिग़ हो, या चाहे भाभी हो या वह दूसरी औरत जो दो तलाक की बात कहती है, अगर वे शरीयत के अनुसार विश्वसनीय ('आदिल) न हों, तो यह ज़ाहिर है। यहाँ तक कि अगर यह लड़का बालिग़ हो और वह, माँ और भाभी सभी विश्वसनीय हों, लेकिन सिर्फ वह ग़ैर औरत विश्वसनीय न हो, तब भी तलाक कतई साबित नहीं होगा। पहली सूरत में इसलिए क्योंकि केवल औरतें हैं, और अकेले औरतों की गवाही मान्य नहीं है। दूसरी सूरत में इसलिए क्योंकि अदालत (पर्याप्त गवाह) नहीं है। और तीसरी सूरत में इसलिए क्योंकि माँ की गवाही बेटी के हक में मान्य नहीं है। दुर्रे मुख्तार में है: "जड़ (माता-पिता आदि) के लिए शाखा (संतान) की गवाही स्वीकार्य नहीं है, और इसके विपरीत भी।" 1 - (संक्षिप्त) संतान की गवाही माता-पिता और उनसे ऊपर वालों के हक में स्वीकार्य नहीं है, और इसका उल्टा हो (यानी माता-पिता की संतान के हक में) तो भी स्वीकार्य नहीं है। (संक्षिप्त)। (त)

बह्र-उर-राइक में है: वलवालजिया में है कि बेटे की गवाही बाप के खिलाफ जायज़ है... वलवालजिया में है कि अगर बाप ने अपनी बीवी को तलाक...

1 दुर्रे मुख्तार, किताबुश-शहादत, बाबुल कुबूल व अदमिही, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 3/94 पृष्ठ 688 का 430

فتاوی رضویہ، جلد دو از دہم

فی الاوسط لابی یعلی بسند صحیح عن ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

تعالیٰ عنہ سے، اور اوسط میں ابویعلی کی طرح صحیح سند سے ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مروی ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۲۰۵: از پکھریر ضلع مظفرپور محلہ نور العین شاہ شریف آباد رائے پور مظفر پور مرسلہ شریف الرحمن صاحب ۳ شعبان ۱۳۳۶ھ ہندہ کہتی ہے کہ مجھے میرا شوہر شیخ اسمعیل نے بیکدم پانچ طلاق دی ہے اور ایک ماں اور ایک بھاوج اور ایک غیر عورت بالغ اور ایک لڑکا بارہ چودہ سالہ گواہ رکھتی ہے اس کی مائی کہتی ہے کہ ہاں پانچ طلاق دی ہے اور بھاوج کہتی ہے کہ پانچ طلاق دی ہے، غیر عورت موجودہ کہتی ہے کہ دو دی ہے، لڑکا کہتا ہے کہ تین دی ہے، اور یہ بھی کہتا ہے کہ وہاں مسماۃ مورن بھی تھی مسماۃ مورن کہتی ہے کہ طلاق نہیں دی ہے، اور پڑوس موجودہ لوگ سب بیک زبان کہتے ہیں کہ طلاق نہیں دی ہے، اور اسمعیل شوہر ہندہ کہتا ہے کہ میں حلفاً کہتا ہوں کہ میں نے ہندہ کو طلاق نہیں دی ہے اور نہ دوں گا، ہندہ اور ہندہ کی ماں اور بھاوج باہمی سازش سے مجھ پر تہمت جھوٹی کی ہے چونکہ میں بیمار تھا ہندہ کو اپنی خدمت کے لئے تنبیہ ومجبور کرتا تھا اس لئے مجھ سے ناراض ہو کر جھوٹی تہمت مجھ پر کی ہے۔

الجواب: صورتِ مذکورہ میں طلاق ثابت نہیں کہ اگر وہ لڑکا بالغ ہو یا وہ خواہ بھاوج خواہ وہ دوسری عورت کہ دو طلاق کہتی ہے ثقہ عادل شرعی نہ ہوں جب تو ظاہر یہاں تک کہ اگر یہ لڑکا بالغ اور یہ اور ماں اور بھاوج سب ثقہ عادل ہوں فقط وہ غیر عورت ثقہ نہ ہو جب بھی طلاق اصلاً ثابت نہ ہوگی پہلی صورت میں اس لئے کہ صرف عورتیں ہیں اور تنہا عورتوں کی گواہ مقبول نہیں اور دوسری صورت میں اس لئے کہ عدالت نہیں اور تیسری صورت میں اس لئے کہ ماں

گواہی بیٹی کے حق میں نہیں۔ درمختار میں ہے: لا تقبل شھادۃ الفرع لا صلہ وبالعکس 1 - (ملخصاً) فرع (اولاد) کی شہادت اصلاً (والدین اور اوپر) کے حق میں اور اس کا عکس ہو تو بھی مقبول نہیں۔ (ملخصاً)۔ (ت)

بحر الرائق میں ہے: فی الولو الجیہ تجوز شہادۃ الابن علی ولو الجیہ میں ہے کہ باپ نے اگر اپنی بیوی کو طلاق

1 درمختار کتاب الشہادت باب القبول وعدمہ مطبع مجتبائی دہلی ۳ / ۹۴ صفحہ 430 از 688

Fatawa Razawiyya Volume 12

[Arabic]: His testimony against his father regarding the divorce of his wife is acceptable if she is not his mother or her co-wife, because it is a testimony against his father. However, if she is his mother or her co-wife, it is not permissible because it is a testimony for the mother.

[Urdu]: If given, the son's testimony against his father will be acceptable, provided that the woman who was divorced is not that son's mother or his mother's co-wife. This testimony will be acceptable because it is against the father, and if it is the son's mother or her co-wife, then this testimony of the son is not acceptable because although it is against the father, it is in favor of the mother. (T)

Even if, for instance, this boy, the sister-in-law, and the other woman were all trustworthy and just, two divorces could be proven as all three witnesses agree to that extent. But this is the view of the Sahibayn (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad). According to our Imam-e-Azam (Imam Abu Hanifa), may Allah be pleased with him, the testimony is still not acceptable because there is a disagreement between 'two' and 'three', and disagreement among witnesses leads to the rejection of testimony. It is stated in Al-Hidayah:

[Arabic]: The agreement of the two witnesses in both wording and meaning is considered necessary according to Abu Hanifa. So, if one of them testifies to one thousand and the other to two thousand, the testimony is not accepted by him. According to the two (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad), it is accepted for one thousand if the claimant claims two thousand. Based on this, it applies to one and two divorces, and one and three divorces.

[Urdu]: According to Imam Abu Hanifa, may Allah be pleased with him, the agreement of both witnesses in word and meaning is reliable. Therefore, if one witness said one thousand and the other said two thousand, this testimony will not be acceptable to the Imam. However, according to the Sahibayn, may Allah have mercy on them, in the mentioned case, the testimony of both witnesses for one thousand will be accepted, provided the claimant has claimed two thousand. Similarly, if there is a disagreement (among witnesses) between one divorce and two, or one and three divorces, no divorce will be proven according to the Imam due to this disagreement. (T) Thus, it is proven that in the case asked about, no divorce is proven at all. And Allah the Almighty knows best.

Problem 206: From Gulauthi, District Bulandshahr, Madrasa Islamia, sent by Maulvi Karim Bakhsh Sahib, teacher, 9 Dhu al-Qi'dah 1317 AH. What do the scholars of religion say regarding this problem: a woman states that my husband has to me...

---

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter: Those whose testimony is accepted and those whose is not, H.M. Saeed Company Karachi, 7/80.
2. Al-Hidayah, Chapter: Disagreement in Testimony, Mujtabai Press Delhi, 3/125.

[अरबी]: उसकी अपने पिता के खिलाफ पत्नी को तलाक देने के मामले में गवाही स्वीकार्य है, यदि वह उसकी माँ या उसकी सौतन न हो, क्योंकि यह उसके पिता के खिलाफ गवाही है। और यदि वह उसकी माँ या उसकी सौतन हो, तो यह जायज़ नहीं है क्योंकि यह माँ के पक्ष में गवाही है।

[उर्दू]: यदि दी गई, तो बेटे की अपने पिता के खिलाफ गवाही स्वीकार्य होगी, बशर्ते कि जिस महिला को तलाक दिया गया है वह उस बेटे की माँ या माँ की सौतन न हो। यह गवाही पिता के खिलाफ होने के कारण स्वीकार्य होगी और यदि वह बेटे की माँ या उसकी सौतन हो, तो फिर बेटे की यह गवाही स्वीकार्य नहीं है क्योंकि भले ही यह पिता के खिलाफ है लेकिन माँ के पक्ष में है। (त)

और मान लें कि अगर यह लड़का बालिग और भाभी और वह दूसरी महिला सभी विश्वसनीय और न्यायप्रिय हों, तो भी दो तलाक सिद्ध हो सकते हैं क्योंकि तीनों गवाह इस हद तक सहमत हैं। लेकिन यह साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद) का मत है। हमारे इमाम-ए-आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के निकट अब भी गवाही स्वीकार्य नहीं है क्योंकि 'दो' और 'तीन' में मतभेद है, और गवाहों का मतभेद गवाही को खारिज करने का कारण बनता है। हिदाया में है:

[अरबी]: इमाम अबू हनीफ़ा के निकट दोनों गवाहों का शब्दों और अर्थ दोनों में एकमत होना आवश्यक माना जाता है। इसलिए, यदि उनमें से एक एक हजार की गवाही देता है और दूसरा दो हजार की, तो गवाही उनके द्वारा स्वीकार नहीं की जाती है। उन दोनों (इमाम अबू यूसुफ और इमाम मुहम्मद) के अनुसार, एक हजार के लिए इसे स्वीकार किया जाता है यदि दावेदार दो हजार का दावा करता है। इसी के आधार पर, यह एक और दो तलाक, और एक और तीन तलाक पर लागू होता है।

[उर्दू]: इमाम अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के निकट दोनों गवाहों का शब्द और अर्थ में एकमत होना मान्य है। इसलिए यदि एक गवाह ने एक हज़ार कहा और दूसरे ने दो हज़ार कहा, तो इमाम साहब के निकट यह गवाही स्वीकार्य नहीं होगी। और साहिबैन रहमतुल्लाह अलैहिम के निकट उक्त स्थिति में एक हज़ार पर दोनों गवाहों की गवाही स्वीकार कर ली जाएगी बशर्ते दावेदार ने दो हज़ार का दावा किया हो। इसी तरह एक तलाक और दो तलाक का या एक और तीन तलाक में (गवाहों का मतभेद हो तो इमाम साहब के निकट इस मतभेद में कोई तलाक सिद्ध नहीं होगा)। (त) तो सिद्ध हुआ कि पूछी गई स्थिति में मूल रूप से तलाक सिद्ध नहीं है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 206: गलावठी ज़िला बुलंदशहर मदरसा इस्लामिया से, प्रेषक मौलवी करीम बख्श साहब शिक्षक, 9 ज़ी अल-क़ादा 1317 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या फरमाते हैं कि एक औरत का बयान है कि मेरे शौहर ने मुझे...

---

1. अल-बहरुर रैक, बाब: उन लोगों का जिनकी गवाही कबूल की जाती है और जिनकी नहीं, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 7/80.
2. हिदाया, बाब: गवाही में मतभेद, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 3/125.

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

[عربی]: ابیہ بطلاق امرأتہ اذالم تکن لامہ او لضرتھا لانھا شہادۃ علی ابیہ وان کان لامہ او لضرتھا لا تجوز لانھا شہادۃ للامہ۔[1]

[اردو]: دی تو بیٹے کی اپنے باپ کے خلاف شہادت مقبول ہوگی بشرطیکہ جس کو طلاق دی گئی ہو وہ اس بیٹے کی ماں یا ماں کی سہیلی نہ ہو، یہ شہادت باپ کے خلاف ہونے کی وجہ سے مقبول ہوگی اور اگر بیٹے کی ماں یا اس کی سہیلی ہو تو پھر بیٹے کی یہ شہادت مقبول نہیں کیونکہ اگرچہ باپ کے خلاف ہے لیکن ماں کے حق میں ہے۔ (ت)

اور بالفرض اگر یہ لڑکا بالغ اور بھاوج اور وہ دوسری عورت سب ثقہ عادل ہوں بھی تو دو طلاقیں ثابت ہو سکتیں کہ اسی قدر تینوں شاہدوں کا اتفاق ہے لیکن یہ مذہب صاحبین کا ہے ہمارے امام اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ کے نزدیک اب بھی شہادت مقبول نہیں کہ دو اور تین میں اختلاف ہے اور اختلاف شہود موجب رد شہادت۔ ہدایہ میں ہے:

[عربی]: یعتبر اتفاق الشاھدین في اللفظ والمعنی عند أبي حنیفۃ فإذا شھد احدھما بالألف والآخر بالفین لم تقبل الشھادۃ عندہ وعند ھما تقبل علی الألف اذا کان المدعی یدعی الفین وعلی ھذا الطلقۃ والطلقتان والطلقۃ والثلاث۔[2]

[اردو]: امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالٰی عنہ کے نزدیک دونوں گواہوں کا لفظ اور معنی میں اتفاق معتبر ہے لہذا اگر ایک گواہ نے ایک ہزار کہا اور دوسرے نے دو ہزار کہا تو یہ شہادت امام صاحب کے نزدیک مقبول نہ ہوگی، اور صاحبین رحمہما اللہ تعالٰی کے نزدیک مذکورہ صورت میں ایک ہزار پر دونوں گواہوں کی شہادت قبول کرلی جائے گی بشرطیکہ مدعی نے دو ہزار کا دعوی

کیا ہو، یوں ہی ایک طلاق اور دو طلاق کا یا ایک اور تین طلاقوں میں (گواہوں کا اختلاف ہو تو امام صاحب کے نزدیک اس اختلاف میں کوئی طلاق ثابت نہ ہوگی)۔ (ت) تو ثابت ہوا کہ صورت مستفسرہ میں اصلاً طلاق ثابت نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۰۶: از گلاوٹھی ضلع بلند شہر مدرسہ اسلامیہ مرسلہ مولوی کریم بخش صاحب مدرس ۹ ذیقعدہ ۱۳۱۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت کا بیان ہے کہ میرے شوہر نے مجھ کو

---

1. بحر الرائق باب من تقبل شہادۃ ومن لا تقبل ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۷/۸۰

2. ہدایہ باب الاختلاف فی الشہادۃ مطبع مجتبائی دہلی ۳/۱۲۵

Fatawa Razawiyya Volume 12

Question: An absolute (qat'i) divorce was given seven months ago. In support of her statement, the woman presents two real brothers and two unrelated persons. All four testify to the absolute divorce given to the lady. When the husband was questioned, he denied it. In this case, will the woman be considered divorced or not? Please clarify and you will be rewarded.

The Answer: Among these four, if any two persons – whether they are both brothers of the woman, both unrelated, or one brother and one unrelated person – are reliable ('thiqah'), upright ('adil') in the eyes of Shari'ah, and their testimony is acceptable, then the woman will certainly be considered divorced. The husband's denial will not be heard at all in the presence of reliable witnesses. Shari'ah accepts a brother's testimony in favor of his sister. It is stated in Durr-ul-Mukhtar:

The quorum (nisab) for marriage and divorce is two men or one man and two women.	**The requirement for testimony in marriage and divorce is two men or one man and two women. --- abridged (T)**

It is stated in Fatawa Alamgiri: | A brother's testimony for his sister is permissible, as mentioned in Muhit-as-Sarkhasi. | A brother's testimony in favor of his sister is acceptable, as it is in Muhit-as-Sarkhasi. And Allah knows best. (T) | | :--- | :--- | | 2 And Allah knows best. | |

Problem 720: From Rampur state, requested by Umra-ud-Laha Mufti Ghulam Haidar Sahib, Mohalla Zagh Dwara, dated 26 Dhu al-Hijjah 1338 AH. What do the scholars of religion and the jurists of the firm Shari'ah say regarding this matter: Zaid went to his wife's door and said loudly concerning his wife, "I have divorced such-and-such daughter of such-and-such person." Now the husband says, "I uttered this word only once just to frighten her in a state of anger." Inside the house, two brothers, the mother, and the maternal grandmother of the wife, as well as a servant at the door, state: "We heard the words 'gave, gave, gave' (divorce) three times." Outside the door, two persons also say they heard the same voice and that they heard the word 'gave' only once. Now the matter to be inquired is whether, in the above-mentioned situation, three divorces took place or one revocable (raj'i) divorce? Please clarify and you will be rewarded.

---

1 Durr-ul-Mukhtar, Kitab-ush-Shahadat, Mujtabai Press, Delhi, 2/91 2 Al-Fatawa al-Hindiyyah, Section Three regarding those whose testimony is not accepted due to accusation, etc., Noorani Kutub Khana, Peshawar, 470/3

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

प्रश्न: एक पूर्ण (क़तई) तलाक़ सात महीने पहले दिया गया था। अपने बयान के समर्थन में, महिला दो सगे भाइयों और दो अन्य व्यक्तियों को पेश करती है। वे चारों महिला को दिए गए पूर्ण तलाक़ की गवाही देते हैं। जब पति से पूछताछ की गई, तो उसने इनकार कर दिया। इस स्थिति में, क्या महिला को तलाक़शुदा माना जाएगा या नहीं? कृपया स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: इन चारों में से यदि कोई भी दो व्यक्ति – चाहे वे महिला के दोनों भाई हों, दोनों बाहरी हों, या एक भाई और एक बाहरी व्यक्ति हो – विश्वसनीय (सिक़ह), शरीयत की दृष्टि में न्यायप्रिय (आदिल) और उनकी गवाही स्वीकार्य हो, तो महिला को निश्चित रूप से तलाक़शुदा माना जाएगा। विश्वसनीय गवाहों की उपस्थिति में पति के इनकार पर बिल्कुल भी विचार नहीं किया जाएगा। शरीयत में अपनी बहन के पक्ष में भाई की गवाही स्वीकार्य है। 'दुर्रे मुख़्तार' में उल्लेख है:

निक़ाह और तलाक़ के लिए गवाही का निसाब (न्यूनतम संख्या) दो पुरुष या एक पुरुष और दो महिलाएँ हैं।

निक़ाह और तलाक़ में गवाही की आवश्यकता दो पुरुष या एक पुरुष और दो महिलाएँ हैं। --- संक्षिप्त (T)

'फ़तावा आलमगीरी' में उल्लेख है: | बहन के लिए भाई की गवाही जायज़ है, जैसा कि 'मुहीत अस-सरख़सी' में है। | बहन के पक्ष में भाई की गवाही स्वीकार्य है, जैसा कि 'मुहीत अस-सरख़सी' में है। और अल्लाह बेहतर जानता है। (T) | | :--- | :--- | | 2 और अल्लाह बेहतर जानता है। | |

मसला 720: रामपुर रियासत से, मुफ़्ती ग़ुलाम हैदर साहब, मोहल्ला ज़ाग़ द्वारा द्वारा प्रेषित, दिनांक 26 ज़िल हिज्जा 1338 हिजरी। धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले के बारे में क्या कहते हैं: ज़ैद ने अपनी पत्नी के दरवाज़े पर जाकर ज़ोर से अपनी पत्नी के बारे में कहा, "मैंने फलां की बेटी फलां को तलाक़ दी।" अब पति कहता है, "मैंने यह शब्द गुस्से की हालत में सिर्फ डराने के लिए एक बार कहा था।" घर के अंदर, पत्नी के दो भाई, माँ, नानी और दरवाज़े पर मौजूद एक नौकर का बयान है कि, "हमने 'दी दी दी' (तलाक़) शब्द तीन बार सुना।" दरवाज़े के बाहर दो व्यक्तियों ने भी वही आवाज़ सुनी और कहा कि उन्होंने 'दी' शब्द केवल एक बार सुना। अब सवाल यह है कि उपरोक्त स्थिति में तीन तलाक़ हुए या एक रजई (प्रतिसंहरणीय) तलाक़? कृपया स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

1 दुर्रे मुख़्तार, किताबुश शहादात, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 2/91 2 अल-फ़तावा अल-हिन्दिया, तीसरा खंड उन लोगों के बारे में जिनकी गवाही आरोप आदि के कारण स्वीकार नहीं की जाती, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 470/3

طلاق دے دی ہے قطعی جس کو عرصہ ۷ مہینے کا ہوا اور اپنے بیان کی تائید میں اپنے دو بھائی حقیقی اور دو شخص غیر کو پیش کرتی ہے، چنانچہ وہ چاروں قطعی طلاق دینا مسماۃ کو بیان کرتے ہیں اور شوہر سے جو دریافت کیا گیا تو وہ انکار کرتا ہے اس صورت میں عورت مطلقہ سمجھی جائے گی یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: ان چاروں میں اگر عورت کے دونوں بھائی یا دونوں غیر یا ایک بھائی ایک غیر فرض کوئی سے دو ۲ شخص ثقہ عادل شرعی قابل قبول شہادت ہوں تو عورت ضرور مطلقہ سمجھی جائے گی شوہر کا انکار گواہان ثقہ کے حضور اصلاً مسموع نہ ہوگا، بھائی کی گواہی بہن کے حق میں شرعاً قبول ہے۔ درمختار میں ہے:

نصابها لنكاح وطلاق رجلان او رجل وامراتان اه

نکاح و طلاق میں شہادت کا نصاب دو مرد یا ایک مرد اور دو عورتیں ہے --- اه ملخصاً ملتقطاً (ت)

فتاوٰی عالمگیریہ میں ہے: | تجوز شہادتہ الاخ لاختہ کذا فی محیط السرخسی | بھائی کی شہادت بہن کے حق میں مقبول ہے، جیسا کہ محیط سرخسی میں ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت) | | :--- | :--- | | ۲ واللہ تعالٰی اعلم۔ | |

مسئلہ ۷۲۰: از ریاست رامپور مسئولہ امراؤد لہا مفتی غلام حیدر صاحب محلہ زاغ دوارہ مورخہ ۲۶ ذی الحجہ ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی بیوی کے دروازہ پر جا کر بآواز بلند اپنی زوجہ کے متعلق کہا کہ میں نے فلانے کی بیٹی فلانی کو طلاق دی، اب شوہر کہتا ہے کہ میں نے یہ لفظ ایک دفعہ محض خوف دلانے کے لئے

غصہ کی حالت میں کہا تھا اور گھر میں زوجہ کے دو بھائی اور والدہ اور نانی اور دروازہ پر ایک ملازم کا بیان ہے کہ ہم نے طلاق دی دی دی کا لفظ تین دفعہ سنا اور دروازہ کے باہر دو شخصوں نے بھی اسی آواز کو سنا کہتے ہیں کہ ہم نے دی کا لفظ ایک دفعہ سنا، اب دریافت طلب امر یہ ہے کہ صورت مذکورہ بالا میں تین طلاق ہوئیں یا ایک طلاق رجعی۔ بینوا توجروا۔

---

1 در مختار کتاب الشہادات مطبع مجتبائی دہلی ۹۱/۲ 2 الفتاوی الہندیۃ الفصل الثالث فیمن لا تقبل شہادتہ للتہمۃ الخ نورانی کتب خانہ پشاور ۴۷۰/۳

The Answer: If two of the woman's brothers and the servant, among these three persons, are trustworthy, just, and acceptable witnesses according to Sharia, then three divorces have occurred. The woman cannot return to marriage without Halala, provided the brothers saw him with their eyes and heard the aforementioned statement with their ears. And if she remained inside the house and he remained outside, then testimony based solely on voice recognition will not prove more than one divorce. Then, if in reality he uttered the word "gave" (divorce) three times, it is obligatory upon him to leave her and not touch her without Halala. If he acts contrary to this, he will be involved in adultery and deserving of severe punishment. And Allah is a witness over everything, and Allah Almighty knows best.

Problem 208: Tehsil Kajhaini Tal, sent by Abdul Ghani Sahib, 7th Ramadan al-Mubarak 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid has two wives, Hindah and Zainab. Hindah wanted Zainab, the second wife, to be divorced. The people of the village threatened and intimidated Zaid a lot, but Zaid never agreed and did not divorce Zainab. Those village miscreants conspired with the village Patwari (land record officer), who was from the Hindu community, and created a fear of various financial and physical losses from the court, saying your safety lies in divorcing your wife Zainab. Zaid, being completely afraid of this Patwari, said these words: "I have divorced my wife." He repeated this sentence three times. However, it was not clear from the word divorce which wife Zaid was made to divorce by the Hindu Patwari. After a short while, when the gathering dispersed, the Patwari asked Zaid, "Which of your wives did you divorce?" Zaid did not take anyone's name nor did he point towards any woman. In this situation, has a divorce occurred or not, and what should the husband Zaid and the wife Zainab do together?

The Answer: Since Zaid uttered these words "I have divorced my wife" three times separately with his tongue, even if it was through threats, intimidation, or coercion, and even if the person making him say it was a Hindu or someone else, three divorces must necessarily take effect. If his intention was Zainab, then Zainab is thrice divorced. If Hindah was intended, then Hindah is thrice divorced. And if he uttered those words under threat without intending either Zainab or Hindah, then it is now in his power; he can attribute it to whichever one he wishes. If he says it was for Zainab, she will be thrice divorced, and if for Hindah, then her. As it is mentioned in Tanwir:

[Table] Arabic: If he said my wife is divorced and he has two or three wives, one of them is divorced and he has [the choice]... Urdu: If a husband says my wife is divorced while he had two or three wives, then one of them is divorced.

फतावा रजविया, जिल्द 12

जवाब: यदि औरत के दोनों भाई और नौकर, इन तीनों व्यक्तियों में से दो विश्वसनीय, न्यायप्रिय और शरीयत के अनुसार स्वीकार्य गवाह हैं, तो तीन तलाक हो गए। औरत बिना हलाला के निकाह में नहीं आ सकती, बशर्ते भाइयों ने उसे अपनी आंखों से देखा हो और उसके उक्त कथन को कानों से सुना हो। और यदि वह घर के अंदर थी और वह बाहर ही रहा, तो केवल आवाज़ की पहचान पर गवाही एक तलाक से अधिक सिद्ध नहीं करेगी। फिर यदि वास्तव में उसने तीन बार "दी" (तलाक दी) शब्द कहा, तो उस पर अनिवार्य है कि उसे छोड़ दे और बिना हलाला के हाथ न लगाए। यदि वह इसके विरुद्ध करेगा, तो वह व्यभिचार (ज़िना) में लिप्त होगा और कठोर दंड का पात्र होगा। और अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है, और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला २०८: तहसील कझैनी ताल, प्रेषक अब्दुल गनी साहब, ७ रमज़ानुल मुबारक १३४७ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं: ज़ैद की दो पत्नियाँ हैं, हिंदा और ज़ैनब। हिंदा चाहती थी कि ज़ैनब, जो दूसरी पत्नी है, उसे तलाक हो जाए। गांव के लोगों ने ज़ैद को बहुत डराया-धमकाया, लेकिन ज़ैद कतई नहीं माना और ज़ैनब को तलाक नहीं दी। उन गांव के उपद्रवियों ने गांव के पटवारी से, जो हिंदू जाति का था, साँठगाँठ करके कचहरी की ओर से विभिन्न प्रकार के आर्थिक और शारीरिक नुकसान का भय पैदा कर दिया और कहा कि तुम्हारी सलामती इसी में है कि तुम अपनी पत्नी ज़ैनब को तलाक दे दो। ज़ैद ने उस पटवारी से पूरी तरह डरकर ये शब्द कहे कि "मैंने अपनी बीवी को तलाक दे दी"। उसने इस वाक्य को तीन बार दोहराया। लेकिन तलाक शब्द से यह स्पष्ट नहीं हुआ कि ज़ैद से हिंदू पटवारी ने किस बीवी को तलाक दिलवाई। थोड़ी देर बाद जब सभा समाप्त हो गई, तो पटवारी ने ज़ैद से पूछा कि तुमने अपनी कौन सी बीवी को तलाक दी? ज़ैद ने किसी का नाम भी नहीं लिया और न ही किसी औरत की ओर इशारा किया। इस स्थिति में तलाक हुई या नहीं, और ज़ैद पति और ज़ैनब पत्नी को आपस में क्या करना चाहिए?

जवाब: चूंकि ज़ैद ने अपनी ज़बान से तीन बार अलग-अलग ये शब्द कहे कि "मैंने अपनी बीवी को तलाक दे दी", भले ही डराने-धमकाने या ज़बरदस्ती के कारण, और भले ही वह कहलवाने वाला हिंदू या कोई और था, उस पर तीन तलाक निश्चित रूप से लागू हो गईं। यदि उसका इरादा ज़ैनब था, तो ज़ैनब पर तीन तलाक हो गईं। और यदि हिंदा इरादा थी, तो हिंदा को तीन तलाक हो गईं। और यदि डराने के कारण वे शब्द ज़बान से अदा कर दिए और नियत न ज़ैनब की थी न हिंदा की, तो अब यह

उसके अधिकार में है, जिसकी ओर चाहे डाल दे। यदि ज़ैनब को कहेगा तो उस पर तीन तलाकें हो जाएंगी और हिंदा को, तो उस पर। जैसा कि तनवीर में है:

[तालिका] अरबी: "यदि उसने कहा मेरी पत्नी तलाकशुदा है और उसकी दो या तीन पत्नियाँ हों, तो उनमें से एक तलाकशुदा हो जाती है और उसे..." उर्दू अनुवाद: यदि पति ने कहा कि मेरी पत्नी को तलाक है, जबकि उसकी दो या तीन पत्नियाँ थीं, तो उनमें से एक को तलाक है।

पृष्ठ 688 का 433

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

الجواب: عورت کے دونوں بھائی اور ملازم ان تینوں شخصوں میں اگر دو ثقہ عادل قابلِ قبول شرع ہیں تو تین طلاقیں ہو گئیں عورت بے حلالہ نکاح میں نہیں آسکتی بشرطیکہ بھائیوں نے اسے آنکھ سے دیکھا ہو اور اس کے قولِ مذکور کو کان سے سنا اور اگر وہ گھر ہی میں رہے اور یہ باہر ہی رہا تو محض شناخت آواز پر شہادت نہیں ایک طلاق سے زائد ثابت نہ ہوگی پھر اگر واقع میں تین بار "دی" کا لفظ کہا تو اس پر فرض ہے کہ اسے چھوڑ دے اور بے حلالہ ہاتھ نہ لگائے اگر خلاف کرے گا مبتلائے زنا ہو گا اور مستحق عذابِ شدید، واللہ علیٰ کل شیيِ شہید، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۰۸: تحصیل کجھائنی تال مرسلہ عبدالغنی صاحب ۷ رمضان المبارک ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کی دو منکوحہ ہیں ہندہ، زینت۔ ہندہ نے چاہا کہ زینب زوجہ ثانیہ کو طلاق ہو جائے زید کو اہل دہ نے بہت ڈرایا دھمکایا مگر زید نے ہر گز نہ مانا زینب کو طلاق نہ دی ان مغویان دہ نے پٹواری دہ سے کہ از قوم ہنود تھا ساز کرکے طرح طرح کے نقصان مالی و جانی منجانب کچہری کے اندیشہ پیدا کردیا اور کہا تمہاری سلامتی اسی میں ہے کہ تم اپنی عورت زینب کو طلاق دے دو اور یہ کلمات اس پٹواری سے پورا خوف ہو کر کہا کہ میں نے اپنی بی بی کو طلاق دے دی تین مرتبہ اس کلمہ کا اعادہ کیا اور کرایا مگر یہ لفظ طلاق سے ثابت نہ ہوا کہ کون سی بی بی کو زید سے مردِ ہنود پٹواری نے طلاق دلوائی، بعد تھوڑی دیر کے جبکہ جلسہ منتشر ہو گیا پٹواری نے زید سے دریافت کیا کہ تم نے اپنی کون سی بی بی کو طلاق دی زید نے کسی کا کچھ نام بھی نہیں لیا اور کسی عورت کی طرف اشارہ بھی نہ کیا اس صورت میں طلاق ہوئی یا نہیں اور زید شوہر اور زینب زوجہ کو باہم کیا کرنا چاہئے؟

الجواب: جبکہ زید نے تین بار جدا جدا یہ لفظ اپنی زبان سے کہے کہ "میں نے اپنی بی بی کو طلاق دی" اگرچہ ڈرانے دھمکانے جبر واکراہ سے اگرچہ وہ کہلوانے والا ہندو یا کوئی تھا اس پر تین عدد طلاق ضرور لازم آئی اگر اس کی مراد زینب تھی تو زینب پر تین طلاق ہو گئیں اور اگر ہندہ مراد تھی تو ہندہ کو تین طلاقیں ہو گئیں اور اگر دھمکانے سے وہ الفاظ زبان سے ادا کر دئے اور نیت نہ زینب کی تھی نہ ہندہ کی، تو اب اس کے اختیار میں ہے جس کی طرف چاہے ڈال دے اگر زینب کو کہے گا اس پر تین طلاقیں ہو جائیں گی اور ہندہ کو تو اس پر تنویر میں ہے:

[جدول] عربی: لو قال امرأتی طالق و لہ امرأتان او ثلاث تطلق واحدة منھن و لہ اردو: اگر خاوند نے کہا میری بیوی کو طلاق ہے جبکہ اس کی بیویاں دو تھیں یا تین تو ان میں سے ایک کو طلاق

Fatawa Razawiya, Volume 12

Choice of Designation - 1

[Box 1]: In these cases, the husband will have the right to designate one of them for divorce. (T)

It is mentioned in Radd al-Muhtar: [Arabic Section]: "There is no difference in this between a conditional (mu'allaq) and an immediate (munjaz) divorce, nor is there any difference between swearing it once or multiple times. He has the right to direct the greater number to a single wife. In Al-Bazzaziyah, from the 'Fawa'id' of Shaykh al-Islam, it is mentioned that if a husband said, 'Whatever Allah has made lawful is forbidden to me if I do such-and-such,' and then he did it, and then he swore to divorce his wife if he did such-and-such, and he did it again, and he has two wives, and he wanted to apply these two divorces to one of them, it is indicated in 'Al-Ziyadat' that he possesses that right. - 2"

[Urdu Section]: In the aforementioned case, whether the divorce is conditional or unconditional, and similarly, whether it is stated once or multiple times, there is no difference. The husband has the option to intend more than one divorce for a single wife. In Bazzaziyah, it is narrated from the benefits (Fawa'id) of Shaykh al-Islam that if a husband said, "That which Allah Almighty has made lawful is forbidden to me if I do such-and-such a task," and then he performed that task, and after that, he said, "If I do such-and-such a task, then my wife is divorced," and then he performed that task; then, in the case of having two wives, the husband has the choice after these two types [of oaths] to assign both these divorces to one wife. In 'Al-Ziyadat', an indication has been given that the husband is the master of this choice. (T)

And while he was blank-minded and had no intention for any specific woman with any word, these words do not go in vain, and the Shariah gives him the option of designation. Thus, it is not mandatory for him to cast all three divorces on the same woman; rather, he can cast one on one and two on the other. And for both, this should be a revocable divorce (raj'i), provided he hasn't already given one divorce to the 'two-divorcee' and two divorces to the 'one-divorcee' previously. Then, if he wants to keep both in his marriage, he should take them back (ruju) within the waiting period (iddah); both will remain his wives as before. Yes, in the future, if he gives one more divorce to the 'two-divorcee' or two more to the 'one-divorcee', it will total three, and then marriage with her will not be possible without 'halala'.

I say (Aqulu): The evidence for the permissibility of separation is what has passed from Al-Bazzaziyah from... [Urdu]: I say: (I say) in the aforementioned cases, he can separate divorces among wives, and for its permissibility...

---

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on Divorce of the Unconsummated Wife, Matba' Mujtabai Delhi, 1/223 2 Radd al-Muhtar, Chapter on Divorce of the Unconsummated Wife, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, 2/592

फतवा रज़विया, खंड 12

निर्धारण का विकल्प - 1

[बॉक्स 1]: ऐसी स्थिति में, पति के पास उनमें से किसी एक को तलाक के लिए निर्धारित करने का अधिकार होगा। (त)

रद्द अल-मुह्तार में उल्लेख है: [अरबी अनुभाग]: "इसमें शर्तिया (मुअल्लाक) और तत्काल (मुंजज़) तलाक के बीच कोई अंतर नहीं है, और न ही इसे एक बार या कई बार कहने में कोई अंतर है। उसे अधिक संख्या को एक ही पत्नी पर केंद्रित करने का अधिकार है। अल-बज़्ज़ियाह में शेखुल इस्लाम के 'फवायद' के हवाले से कहा गया है कि यदि पति ने कहा, 'अल्लाह ने जो भी हलाल किया है वह मुझ पर हराम है अगर मैं ऐसा-वैसा करूँ और फिर उसने वह काम कर लिया, और फिर उसने शपथ ली कि अगर वह ऐसा-वैसा करेगा तो उसकी पत्नी को तलाक हो जाएगा, और उसने फिर वह काम कर लिया, और उसकी दो पत्नियाँ हैं, और वह इन दो तलाकों को उनमें से एक पर लागू करना चाहता है, तो 'अल-ज़ियादत' में संकेत दिया गया है कि उसके पास यह अधिकार है। - 2"

[उर्दू अनुभाग]: उपर्युक्त स्थिति में तलाक शर्तिया (मुअल्लाक) हो या बिना शर्त (गैर-मुअल्लाक), और इसी तरह एक बार या कई बार कहने में कोई अंतर नहीं है। एक से अधिक तलाकों को एक ही पत्नी के लिए मानने का अधिकार पति के पास है। बज़्ज़ियाह में शेखुल इस्लाम के'फवायद' से वर्णित है कि यदि पति ने कहा कि "अल्लाह ताला की हलाल की हुई चीज़ मुझ पर हराम है अगर मैं फलां काम करूँ और फिर उसने वह काम कर लिया और उसके बाद फिर उसने कहा, "अगर मैं फलां काम करूँ तो मेरी पत्नी को तलाक," फिर उसने वह काम कर लिया, तो इन दोनों किस्मों के बाद पति को दो पत्नियों की स्थिति में अधिकार है कि इन दोनों तलाकों को एक ही पत्नी के लिए निर्धारित कर दे। 'ज़ियादात' में पति को इस अधिकार का स्वामी बनाने का संकेत दिया गया है। (त)

और जबकि उसका दिमाग खाली था और किसी शब्द से किसी विशेष महिला का इरादा नहीं था, फिर भी ये शब्द व्यर्थ नहीं जाते, और शरीयत उसे निर्धारण का विकल्प देती है। अत; उसके लिए यह अनिवार्य नहीं है कि वह तीनों तलाक एक ही महिला पर डाले; बल्कि वह एक पर एक और दूसरी पर दो डाल सकता है। और दोनों के लिए यह तलाक रजई (प्रतिसंहरणीय) होना चाहिए, बशर्ते कि उसने पहले 'दो-तलाक वाली' को एक और 'एक-तलाक वाली' को दो तलाक न दिए हों। फिर, यदि वह दोनों को अपने निकाह में रखना चाहता है, तो उसे इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के भीतर रुजू (सुलह)

कर लेना चाहिए; दोनों पहले की तरह उसकी पत्नियाँ बनी रहेंगी। हाँ, भविष्य में कभी यदि वह 'दो-तलाक वाली' को एक या 'एक-तलाक वाली' को दो तलाक और देगा, तो कुल तीन हो जाएँगे, और फिर बिना 'हलाला' के उससे निकाह करना संभव नहीं होगा।

मैं कहता हूँ (अकुलु): तलाक को अलग-अलग करने की अनुमति का प्रमाण वही है जो अल-बज़ियाह से गुज़रा है... [उर्दू]: मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) उपर्युक्त स्थितियों में तलाकों को पत्नियों पर अलग-अलग कर सकता है और इसकी अनुमति के लिए...

---

1 दुर्रे मुख्तार, बाब तलाक गैर-मदखूल बिहा, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/223 2 रद्द अल-मुह्तार, बाब तलाक गैर-मदखूल बिहा, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, 2/592

جلد دوازدہم فتاوٰی رضویہ

خیار التعیین - 1

[باکس 1]: ہوگی ان میں سے طلاق کے لئے ایک معین کرنے کا اختیار خاوند کو حاصل ہوگا۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے: لا فرق في ذلك بين المعلق والمنجز وكذا لا فرق بين حلفه مرة او كثر فله صرف الاكثر الى واحدة ففی البزازية عن فوائد شيخ الاسلام قال حلال الله عليہ حرام ان فعل كذا وفعله وحلف بطلاق امرأته ان فعل كذا وفعله وله امرأتان فاراد ان يصرف هذين الطلاقين في واحدة منها اشار فی الزيادات الى انه يملك ذلك - 2

مذکورہ صورت میں طلاق معلق ہو یا غیر معلق ہو اور یونہی یا متعدد بار کہنے میں کوئی فرق نہیں، ایک سے زائد طلاقوں کو ایک ہی بیوی کے لئے مراد لینے کا بھی خاوند کو اختیار ہے، تو بزازیہ میں شیخ الاسلام کے فوائد سے منقول ہے کہ اگر خاوند نے کہا کہ اللہ تعالی کی حلال کی ہوئی چیز مجھ پر حرام ہے اگر میں فلاں کام کروں، اور پھر اس نے وہ کام کر لیا اور اس کے بعد پھر اس نے کہا اگر میں فلاں کام کروں تو میری بیوی کو طلاق، پھر اس نے وہ کام کرلیا، تو ان دونوں قسموں کے بعد خاوند کو دو بیویوں کی صورت میں اختیار ہے ان دونوں طلاقوں کو ایک بیوی کے لئے قرار دے، زیادات میں خاوند کو اس اختیار کا مالک قرار دینے کا اشارہ دیا ہے۔ (ت)

اور جبکہ وہ خالی الذہن تھا کسی لفظ سے کسی عورت کی نیت نہ تھی لیکن یہ الفاظ خالی نہیں جاتے اور شرع اسے تعیین کا اختیار دیتی ہے تو ظاہر اس پر لازم نہیں کہ تینوں طلاقیں ایک ہی عورت پر ڈالے بلکہ ایک پر ایک اور ایک پر دو ڈال سکتا ہے اور دونوں پر یہ طلاق رجعی ہونی چاہئے جبکہ اسے سے پہلے دو والی کو ایک اور ایک والی کو دو طلاقیں نہ دے چکا ہو، پھر اگر

دونوں کو اپنے نکاح میں رکھنا چاہے تو عدت کے اندر رجعت کرلے دونوں بدستور اس کی زوجہ رہیں گی، ہاں آئندہ کبھی اگر دو والی ایک یا ایک والی کو دو طلاقیں دے گا تو تین ہو جائیں گی اور پھر بے حلالہ اس سے نکاح نہ کر سکوں گا۔

اقول: والدلیل علی جواز التفریق مامّر عن البزازیة عن اقول: (میں کہتا ہوں) مذکورہ صورتوں میں طلاقوں کو بیویوں پر متفرق کر سکتا ہے اور اس کے جواز کے

---

1 درمختار باب طلاق غیر المدخول بها مطبع مجتبائی دہلی 1 / 223 2 ردالمحتار باب طلاق غیر مدخول بها دار احیاء التراث العربی 2 / 592

Fatawa-e-Razvia Volume Twelve

[Left Column - Arabic Text] Shaikh-ul-Islam narrated from Muhammad's indication that he has the power to direct [the divorce] to one [wife] if he so desires. It only means he has the power of separation if he wishes. Three, four, and two are the same in this regard. His saying "I divorce, I divorce, I divorce" or "My wife is divorced, my wife is divorced, my wife is divorced" is not like saying "I divorced my wife three times" or "My wife is divorced three times," because here the 'Mughallazah' (irrevocable) divorce is understood, so he does not have the power to lighten it by separation. Although it is also narrated from the Imam regarding this that there is an option of separation, except that one irrevocable divorce (Bainah) falls on each of them so that the description of the original [divorce] is not rendered void. In 'Radd-ul-Muhtar,' I saw in the handwriting of our master's teacher, Al-Saihathi, from 'Al-Munyah,' that if a man has three wives and says, "My wife has three divorces," then three fall on each one. According to Abu Hanifa (may Allah be pleased with him), one irrevocable divorce falls on each of them, and this is the most correct view. I say: That is, unless he clarifies and specifies one of them, then three would be upon her.

[Right Column - Urdu Text] The previous text of Al-Bazzaziyah is narrated from Shaikh-ul-Islam that Imam Muhammad indicated in it that the husband has the option to spend both divorces on a single wife if he wishes. It became clear that he stated that if the husband wishes, he can distribute these divorces among his multiple wives. There is no difference whether the number of wives is two, three, or four. And the husband saying "I gave divorce," "I gave divorce," or like "My wife is a divorcee" three times, its ruling is not the same as the ruling for "I gave three divorces to the wife" or "My wife is a triple divorcee." This is because in the latter two phrases, the 'Mughallaza' divorce is understood. So now, he cannot make this 'Mughallaza' into a 'Mukhaffafah' (lightened) by dividing it among multiple wives (therefore, these three will be established for only one wife). Although it is also narrated from the Imam in this matter that he gave the husband the option of separation here as well; he only said that each wife would receive one 'Bainah' (irrevocable) divorce so that the original description of divorce does not become meaningless. It is stated in 'Radd-ul-Muhtar' that I saw in the letter of Shaikh-ul-Mashaikh Saihathi that he narrated from 'Munyat-ul-Fuqaha' that if a person has three wives and he says "My wife has three divorces," then three divorces will occur for each of his three wives, and according to Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him), each...

1. Radd-ul-Muhtar, Chapter on Divorce of the Unconsummated Wife, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/259.

[बायां कॉलम - अरबी इबारत] शेखुल-इस्लाम ने मोहम्मद के इशारे से बयान किया कि अगर वह चाहे तो इसे एक पर ही खर्च करने का अधिकार रखता है। इससे सिर्फ यह मुराद है कि वह चाहे तो अलग-अलग करने का अधिकार रखता है। इसमें तीन, चार और दो सब बराबर हैं। उसका यह कहना "तलाक दी, तलाक दी, तलाक दी" या "मेरी बीवी तलाक वाली है, मेरी बीवी तलाक वाली है, मेरी बीवी तलाक वाली है" उस जैसा नहीं है जैसा कि "मैंने अपनी बीवी को तीन तलाकें दीं" या "मेरी बीवी को तीन तलाकें हैं" कहना, क्योंकि यहाँ मुग़ल्लज़ (सख़्त) तलाक समझी जाती है, लिहाज़ा उसे बांटकर हल्का करने का अधिकार नहीं है। हालाँकि इमाम से इस बारे में भी अलगाव का विकल्प रिवायत है, सिवाए इसके कि उनमें से हर एक पर एक तलाक-ए-बाइन वाक़े होगी ताकि असल तलाक की विशेषता बेकार न जाए। 'रद्दुल मुहतार' में मैंने हमारे उस्तादों के उस्ताद सायहाती के हाथ की तहरीर में देखा, उन्होंने 'मुनिया' से नक़्ल किया कि अगर किसी आदमी की तीन बीवियाँ हों और वह कहे "मेरी बीवी को तीन तलाकें हैं", तो हर एक पर तीन-तीन तलाकें होंगी। और इमाम अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के नज़दीक हर एक पर एक तलाक-ए-बाइन होगी और यही ज़्यादा सही है। मैं कहता हूँ: यानी जब तक कि वह वजाहत न कर दे और उनमें से किसी एक को मुक़र्रर न कर दे, तो उस पर तीन होंगी।

[दायां कॉलम - उर्दू इबारत] दलील बज़ाज़िया की गुज़श्ता इबारत शेखुल इस्लाम से मनक़ूल कि इमाम मोहम्मद ने इसमें इशारा फ़रमाया कि खाविन्द को एक ही बीवी पर दोनों तलाक़ों को सर्फ़ करने का इख़्तियार है अगर चाहे तो वाज़ेह हुआ कि उन्होंने इफ़ादा किया कि खाविन्द अगर चाहे तो उन तलाक़ों को अपनी मुतअद्दिद बीवियों पर मुतफ़र्रिक कर सकता है इसमें बीवियों की तादाद दो या तीन चार होने में कोई फ़र्क़ नहीं, और खाविन्द का "मैंने तलाक़ दी" "मैंने तलाक़ दी" या यूँ "मेरी बीवी तलाक़ वाली है" तीन बार कहना, इसका हुक्म वह नहीं जो "मैंने बीवी को तीन तलाक़ें दीं" या "मेरी बीवी तीन तलाक़ वाली है" का हुक्म है क्योंकि आख़िरी दोनों अल्फ़ाज़ में तलाक़ मुग़ल्लज़ मफ़्हूम होता है, तो अब इस मुग़ल्लज़ा को मुतअद्दिद बीवियों पर तक़्सीम कर के मुख़फ़्फ़फ़ा नहीं बना सकता (लिहाज़ा ये तीन एक ही बीवी के लिये क़रार पाएँगी) हालाँकि इमाम से इस मसले में भी मर्वी है कि उन्होंने यहाँ भी तफ़रीक़ का इख़्तियार खाविन्द को दिया है सिर्फ इसमें ये बात फ़रमाई कि हर एक बीवी को एक तलाक़ बाइनह होगी ताकि असल तलाक़ का वस्फ़ लग़्व न जाए। रद्दुल मुहतार में है कि मैंने शेखुल मशाइख़ सायहाती के ख़त में देखा उन्होंने मुनियतुल फ़ुक़्हा से नक़्ल

किया कि अगर एक शख़्स की तीन बीवियाँ हों और वह कहे "मेरी बीवी को तीन तलाक़ें हैं" तो उसकी तीनों बीवियों में से हर एक को तीन तीन तलाक़ें वाक़े होंगी, और इमाम अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के नज़दीक हर एक...

---

1. रद्दुल मुहतार बाब तलाक़ ग़ैर अल-मदख़ूल बिहा दारुल इहया अल-तुरास अल-अरबी बैरूत 259/2

सफ़हा 435 / 688

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

شیخ الاسلام عن اشارة محمد انه یملك الصرف الی واحدة ان اراد فقط افادانه یملك التفریق ان شاء والثلاث والاربع والاثنان فی ذلك سواء ولیس قوله طلق طلق طلق أو امرأته طالق امرأته طالق امرأته طالق کقوله طلقت امرأتی ثلاثا او امرأتی طالق ثلاثاً فان هنا قد افهم المغلظة فلا یملك التخفیف بالتفریق مع ان المروی عن الامام فیه ایضا خیار التفریق غیر انه تقع علی کل منهن واحدة بائنة لئلا یلغی وصف الاصل فی ردالمحتار رأیت بخط شیخ مشائخنا السائحانی عن المنیة لوکان الرجل ثلاث نساء فقال امرأتی ثلاث تطلیقات یقع ثلاث لکل واحدة وعند ابي حنیفة رضی اللہ تعالی عنه لکل واحدة منهن طلاق بائن وهو الاصح ۱ھ اقول: ای الا اذا بین وعین احد هن فعلیها الثلاث

دلیل بزازیہ کی گزشتہ عبارت شیخ الاسلام سے منقول کہ امام محمد نے اس میں اشارہ فرمایا کہ خاوند کو ایک ہی بیوی پر دونوں طلاقوں کو صرف کرنے کا اختیار ہے اگر چاہے تو واضح ہوا کہ انہوں نے افادہ کیا کہ خاوند اگر چاہے تو ان طلاقوں کو اپنی متعدد بیویوں پر متفرق کرسکتا ہے اس میں بیویوں کی تعداد دو یا تین چار ہونے میں کوئی فرق نہیں، اور خاوند کا "میں نے طلاق دی" "میں نے طلاق دی" یا یوں "میری بیوی طلاق والی ہے" تین بار کہنا، اس کا حکم وہ نہیں جو "میں نے بیوی کو تین طلاقیں دیں" یا "میری بیوی تین طلاق والی ہے" کا حکم ہے کیونکہ آخری دونوں الفاظ میں طلاق مغلظ مفہوم ہوتا ہے، تو اب اس مغلظہ کو متعدد بیویوں پر تقسیم کر کے مخففہ نہیں بنا سکتا (لہذا یہ تین ایک ہی بیوی کے لئے قرار پائیں گی) حالانکہ امام سے اس مسئلہ میں بھی مروی ہے کہ انہوں نے یہاں بھی تفریق کا اختیار خاوند کو دیا ہے صرف اس میں یہ بات فرمائی کہ ہر ایک بیوی کو ایک طلاق بائنہ ہوگی تاکہ اصل طلاق کا وصف لغو نہ جائے۔

ردالمحتار میں ہے کہ میں نے شیخ المشائخ سائحانی کے خط میں دیکھا انہوں نے منیۃ الفقہاء سے

نقل کیا کہ اگر ایک شخص کی تین بیویاں ہوں اور وہ کہے "میری بیوی کو تین طلاقیں ہیں" تو اس کی تینوں بیویوں میں سے ہر ایک کو تین تین طلاقیں واقع ہونگی، اور امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے نزدیک ہر ایک

---

۱ ردالمحتار باب طلاق غیر المدخول بھا داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۵۹/۲

Fatawa Razawiyya Volume 12

Arabic Text: There is no contradiction in it to the issue of the choice of designation, contrary to what Al-Allama Al-Shami understood. As for here, every word is for one, and each [word] can potentially apply to every wife of his, and there is no preference. So, the clarification belongs to him. If he wishes, he can combine all [divorces] on each [wife] as revocable (raj'i), for there is no basis here described as irrevocable (bain). With this, what is in Radd al-Muhtar is resolved. And with Allah is the guidance, and Allah Almighty knows best.

Urdu Text Translation: Each wife will have one irrevocable divorce, and this is more correct. I say: but this is in the case where the husband has not designated any of the wives. If he clearly designated one from the three wives, then only one will have three divorces. Therefore, this situation is not contrary to the issue of having the choice of designation. This is against the understanding of Allama Shami. But in the issue under discussion here, every divorce is mentioned separately which could be for every wife, and there is no reason for preference. Therefore, the husband himself will have the right of clarification. If he wants, he can clarify all divorces for one; if he wants, he can distribute those divorces among multiple wives. If he distributed them, then each one will have a revocable divorce because here the divorce has not been described as irrevocable. By this explanation, the difficulty mentioned in Radd al-Muhtar is resolved, and success is only from Allah Almighty. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 209: 23 Rabi al-Akhir 1312 AH What do the scholars of religion say regarding this issue: Zaid has two wives, Chhami and Bashiran, and he said twice or thrice 'Divorce be upon my woman', and he did not name anyone. So, upon whom and how many divorces will take place? Explain and you shall be rewarded.

Answer: In the questioned scenario, either both women are consummated (madkhula), or both are unconsummated, or one is consummated and one is unconsummated. In every case, he will either specify one, saying 'I gave the divorces to this one', or he will state giving them to both. Thus, there are six scenarios. In any case, as mentioned, saying it twice or thrice makes a total of twelve scenarios, in which this place is for the consummated wife considering that he has previously given her one divorce, or two, or none... forty... rather...

Footnote: There are six scenarios for both being consummated, i.e., both were 'simple' meaning he had not given any divorce to anyone before this (continued on the next page).

Page 436 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

अरबी पाठ: इसमें 'ख़ियार-ए-ताईन' (निर्धारण के विकल्प) के मसले का कोई विरोध नहीं है, इसके विपरीत जो अल्लामा शामी ने समझा। यहाँ तो हर शब्द एक के लिए है और हर शब्द उसकी हर पत्नी के लिए संभावित है और कोई तरजीह (प्राथमिकता) नहीं है। अतः स्पष्टीकरण उसी (पति) के पास है। यदि वह चाहे तो सबको हर एक पर 'रजई' (प्रतिसंहरणीय) के रूप में जमा कर दे, क्योंकि यहाँ 'बाइन' (अपरिवर्तनीय) होने का कोई आधार वर्णित नहीं है। इसी के साथ 'रद्द-उल-मुहतार' में उल्लेखित समस्या हल हो गई। और अल्लाह ही तौफीक देने वाला है, और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

उर्दू पाठ का अनुवाद: पत्नी को एक-एक बाइन तलाक होगा, और यही अधिक सही है। मैं कहता हूँ: मगर यह उस स्थिति में है जब पति ने पत्नियों में से किसी को निर्दिष्ट न किया हो। और यदि उसने तीनों पत्नियों में से एक को स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट कर लिया, तो फिर एक को ही तीन तलाकें होंगी। इसलिए यह स्थिति, निर्धारण के अधिकार वाले मसले के खिलाफ नहीं है। यह अल्लामा शामी की समझ के खिलाफ है। लेकिन यहाँ विचाराधीन मसले में तो हर तलाक अलग से उल्लेखित है जो हर पत्नी के लिए हो सकती है और प्राथमिकता का कोई कारण नहीं है। इसलिए पति को ही स्पष्टीकरण का अधिकार होगा। वह चाहे तो सब तलाकें एक के लिए स्पष्ट कर दे, यदि चाहे तो उन तलाकों को कई पत्नियों पर अलग-अलग कर दे। यदि उसने अलग-अलग कर दीं, तो फिर हर एक को 'रजई' तलाक होगा क्योंकि यहाँ तलाक को 'बाइन' के रूप में वर्णित नहीं किया गया है। और इस विवरण से 'रद्द-उल-मुहतार' में वर्णित समस्या हल हो गई, और सफलता अल्लाह तआला की ओर से ही है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला २०९: २३ रबीउल आखिर शरीफ १३१२ हिजरी धर्म के विद्वान इस मसले में क्या फरमाते हैं कि ज़ैद की दो पत्नियाँ हैं, छम्मी और बशीरन, और उसने दो बार या तीन बार कहा 'मेरी औरत पर तलाक', और किसी का नाम नहीं लिया तो उनमें से किस पर और कितनी तलाकें पड़ेंगी? बयान करें और पुण्य कमाएँ।

जवाब: पूछी गई स्थिति में या तो वे दोनों महिलाएँ'मदख़ूला' (जिनके साथ सहवास हुआ हो) होंगी या दोनों 'ग़ैर-मदख़ूला' या एक मदख़ूला और एक ग़ैर-मदख़ूला। और हर स्थिति में या तो वह एक को विशेष करेगा कि मैंने इसी को तलाकें दी थीं या दोनों को देना बताएगा, तो ये छह स्थितियाँ हुईं। और

किसी भी स्थिति में जैसा कि ऊपर उल्लेखित है, दो बार या तीन बार कहा तो कुल बारह (12) स्थितियाँ हैं, जिनमें यह जगह मदख़ूला के इस लिहाज से कि उसे पहले एक तलाक दे चुका है या दो या नहीं... चालीस... बल्कि...

पाद-टिप्पणी: दोनों के मदख़ूला होने में छह (6) स्थितियाँ हैं कि दोनों 'सादा' हों यानी इससे पहले किसी को कोई तलाक न दी थी (बाकी अगले पृष्ठ पर)।

فتاوٰی رضویہ جلد دو ازدہم

عربی عبارت: فلا مخالفة فيه لمسألة خيار التعيين خلافا لما فهم العلامة الشامی اما ههنا فكل كلمة على واحدة وكل تحتمل كل امرأته ولاترجيح فاليه البيان فان شاء جمع الكل على كل رجعية اذلا اصل ههنا موصوفا بالبينونة وبه انحل ما فی ردالمحتار، وباللہ التوفیق، واللہ تعالی اعلم۔

اردو عبارت: بیوی کو ایک ایک بائنہ طلاق ہوگی ، اور یہی زیادہ صحیح ہے اھ اقول (میں کہتا ہوں) مگر یہ اس صورت میں ہے جب خاوند نے بیویوں میں کسی کو معین نہ کیا ہو اور اگر اس نے تینوں بیویوں سے ایک کو واضح طور معین کرلیا تو پھر ایک کو ہی تین طلاقیں ہوں گی ، لہذا یہ صورت ، تعیین کے اختیار والے مسئلہ کے مخالف نہیں ، یہ ابت علامہ شامی کے فہم کے خلاف ہے ، لیکن یہاں زیر بحث مسئلہ میں تو ہر طلاق علیحدہ ذکر کی گئی ہے جو کہ ہر بیوی کے لئے ہوسکتی ہے اور کوئی وجہ ترجیح نہیں ہے لہذا خاوند کو ہی بیان کا حق ہوگا، وہ چاہے تو سب کو طلاقیں ایک کے لئے بیان کرے اگر چاہے تو ان طلاقوں کو متعدد بیویوں پر متفرق کردے، اگر اس نے متفرق کردیں تو پھر ہر ایک کو طلاق رجعی ہوگی کیونکہ یہاں طلاق کو بائنہ سے موصوف نہیں کیا گیا ، او اس تقریر سے رد المحتار میں ذکر کردہ اشکال حل ہو گیا ، اور توفیق اللہ تعالی سے ہی حاصل ہے ، واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۲۰۹: ۲۳ ربیع الآخر شریف ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کی دو زوجہ ہیں چھمی اور بشیرن ، اور اس نے دو بار یا تین بار کہا میری عورت پر طلاق ، اور کسی کا نام نہ لیا تو ان میں کس پر اور کتنی طلاقیں پڑیں گی، بینوا توجروا

الجواب: صورت مستفسرہ میں یا تو وہ دونوں عورتیں مدخولہ ہوں گی یا دونوں غیر مدخولہ یا ایک مدخولہ ایک غیر مدخولہ ، اور ہر صورت میں یا تو ایک کی تخصیص کرے گا کہ میں نے اسی کو طلاقیں دی تھیں یا دونوں کو دینا بتائے گا تو یہ چھ صورتیں ہوئیں اور بہر تقدیر مذکورہ دو بار کہا یا تین بار تو مجموع بارہ ۱۲ ہیں جن میں یہ جگہ مدخولہ کے اس لحاظ سے کہ اسے پہلے ایک طلاق دے چکا ہے یا دو ۲ یا نہیں چالیس ۴۰ عہ بلکہ

عہ: دونوں مدخولہ ہونے میں چھ ۶ صورتیں ہیں کہ دونوں سادہ ہوں یعنی اس سے پہلے کسی کو کوئی طلاق نہ دی تھی (باقی اگلے صفحہ پر)

Fifty-eight (58) will be reached. All of their rulings can be derived from four fundamental principles: First: A woman who is not consummated (ghair-madkhula) does not have the capacity for separated (consecutive) divorces. That is, if one says to a non-consummated wife that "two divorces are upon her" or "three divorces are upon her," then two or three divorces will occur. But if two or three are said as "divorce be upon you, divorce be upon you," then she will be separated from the marriage with the very first divorce, and the rest will be void. Second: For a consummated wife (madkhula), she is capable of receiving up to three divorces in any manner, whether combined or separated, but not more, because there is no divorce beyond three. So, for a consummated wife who has already been given one divorce at some point, one cannot now give her more than two. And one who has already been given two, no more than one can be cast upon her. If more are given, the rest will be void. Third: As long as speech can be made effective, it will not be deemed void; and such a claim in which any part of the speech becomes void is for submission. (Continued from previous page's footnote) ...or he had given each of them one divorce, or two, or one simple one to the second, or one simple one and two to the second, or one to one and two to the second. And there are three cases between a consummated wife and a non-consummated wife: that the consummated one is 'simple' (no previous divorces), or has received one, or has received two. So these became nine. And the tenth is the one where both are non-consummated. Regarding these ten, it is possible to specify one or address both, making twenty. On these twenty, there is the probability that the word was said twice or thrice, making forty, etc. Note: This is because among those ten cases, six cases pertain to the difference in the wives' status. That is, from the fourth case, where one is simple and the other has received one, to the ninth case, where one is consummated and the other is non-consummated. And four cases are related to the ten: specification of two, division of two, specification of three, division of three. In those cases, in these four forms where the status of both wives is the same, no difference will occur. Whichever specification you wish to accept, or a division of three types where the divorce count is four — assume two fall on one and one on the other — the ruling remains the same. Therefore, these four multiplied by four became sixteen (16). Similarly, in those six cases of differing status, the division of two will not cause any difference; one will fall on each, and surely since they are of the same status (regarding the possibility of a divorce falling), they are capable of receiving one,

otherwise they would not be in his marriage. These six divorces will remain six; sixteen (16) and six make twenty-two (22). However, in the case of specifying two or three, these six will have different rulings. Whether specification is made for this woman or that, or by division. In three cases, one would consider two on this one and one on that, and vice versa. So these six become twelve (12) here, and three forms of specification (of two and three) and division by three multiplied by three become thirty-six (36), plus twenty-two (22) equals fifty-eight (58). And Allah Almighty knows best. 12 Minhu.

अठावन (58) हो जाएँगी। इन सबका हुक्म चार असल कुली (बुनियादी सिद्धांतों) से निकल सकता है: पहला: वह औरत जिसके साथ निकाह के बाद सोहबत न हुई हो (ग़ैर-मदख़ूला), वह तलाक़ों की तफ़रीक़ (अलग-अलग देने) की सलाहियत नहीं रखती। यानी ग़ैर-मदख़ूला को यूँ कहे कि उस पर "दो तलाक़ें" या उस पर "तीन तलाक़ें" हैं, तो उस पर दो या तीन तलाक़ें होंगी। और अगर दो या तीन इस तरह कहा कि "तुझ पर तलाक़, तुझ पर तलाक़", तो एक ही तलाक़ होकर वह निकाह से निकल जाएगी, बाक़ी बेकार (लग़्व) जाएँगी। दूसरा: मदख़ूला (जिससे सोहबत हो चुकी हो) जमा (एक साथ) और तफ़रीक़ (अलग-अलग) हर तरह से तीन तलाक़ तक की गुंजाइश रखती है, उससे ज़्यादा की नहीं, क्योंकि तीन से आगे तलाक़ ही नहीं है। तो जिस मदख़ूला को कभी एक तलाक़ दे चुका था, अब उसे दो से ज़्यादा नहीं दे सकता, और जिसे दो दे चुका है उस पर एक से ज़्यादा नहीं डाल सकता। अगर ज़्यादा देगा तो बाक़ी बेकार हो जाएँगी। तीसरा: कलाम (बात) जब तक मुअस्सिर (प्रभावी) बन सके उसे बेकार (लग़्व) नहीं ठहराया जाएगा; और ऐसा दावा जिसमें कलाम का कोई हिस्सा बेकार जाता हो, वह तस्लीम के लिए है। (पिछले पृष्ठ के फ़ुटनोट का शेष भाग) ...या दोनों को एक-एक दे चुका था, या दो या एक सादा दूसरी को एक, या एक सादा दूसरी को दो, या एक को एक दूसरी को दो; और एक मदख़ूला और दूसरी ग़ैर-मदख़ूला के बीच तीन सूरतें हैं: कि मदख़ूला सादा हो, या एक पा चुकी हो, या दो। तो ये नौ हुईं। और दसवीं यह कि दोनों ग़ैर-मदख़ूला हों। इन दसों पर मुहतमल (संभव) है कि एक की तख़्सीस (विशिष्टता) करे या दोनों को देने को कहे, तो बीस हुईं। इन बीस पर एहतमाल (संभावना) है कि लफ़्ज़ दो बार कहा गया या तीन बार, तो चालीस हुईं आदि। नोट: इसलिए कि उन दस सूरतों में छह सूरतें बीवी के हाल के इख़्तिलाफ़ (अंतर) की हैं, यानी चौथी से जिसमें एक सादा और दूसरी को एक हो चुकी है, नौवीं तक जहाँ एक मदख़ूला और दूसरी ग़ैर-मदख़ूला है। और चार सूरतें दसों से मुताल्लिक़ होने वाली हैं: दो की तख़्सीस, दो की तक़सीम, तीन की तख़्सीस, तीन की तक़सीम। उन सूरतों में इन चार शक्लों में, जिनमें दोनों बीवियों का हाल एक जैसा है, कोई इख़्तिलाफ़ न पड़ेगा। जिसकी चाहो तख़्सीस मान लो या तीन क़िस्म की तक़सीम जिस पर तलाक़ चार हों—दो एक पर और एक दूसरी पर वाक़े मान लो—हुक्म एक ही रहेगा। लिहाज़ा ये चारों चार से मिलकर सोलह (16) ही हुईं। और इसी तरह उन छह सूरत इख़्तिलाफ़-ए-حالین (दोनों स्थितियों के अंतर) में तक़सीम दो से कोई फ़र्क़ न आएगा; हर एक पर एक पड़ेगी और बेशक वे दोनों एक हाल की हों, एक पड़ने के लिए ज़रूरी तौर पर सालेह (योग्य) हैं, वर्ना वह उसके निकाह ही में न होतीं। ये

छह तलाक़ छह ही रहेंगी। सोलह (16) और छह मिलकर बाईस (22)। मगर तख़्सीस दो या तीन की हालत में, ये छह मुख़्तलिफ़ुल हुक्म (अलग-अलग हुक्म वाली) होंगी कि तख़्सीस या इस औरत से की या उससे तक़सीम। तीन में से दो इस पर मानें और एक उस पर, और इसके विपरीत। तो ये छह यहाँ आकर बारह (12) हुईं और तीन सूरत तख़्सीस दो व तीन व तक़सीम तीन से ज़रब खाकर छत्तीस (36) प्लस बाईस (22) अठावन (58) हुईं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। 12 मिन्हु।

اٹھاون ۵۸ ہو جائیں گی۔ ان سب کا حکم چار اصل کلی سے نکل سکتا ہے: اول زن غیر مدخولہ تفریق طلاق کی صلاحیت نہیں رکھتی یعنی غیر مدخولہ کو یوں کہے کہ اس پر دو طلاقیں یا اس پر تین طلاق، جب تو اس پر دو یا تین طلاقیں ہوں گی اور اگر دو یا تین یوں کہا کہ تجھ پر طلاق تجھ پر طلاق، تو ایک ہی طلاق ہو کر نکاح سے نکل جائے گی باقی لغو جائیں گی۔ دوم مدخولہ جمعاً و تفریقاً ہر طرح تین طلاق رک کی صالحہ ہے زیادہ کی نہیں کہ تین سے آگے طلاق ہی نہیں، تو جس مدخولہ کو کبھی ایک طلاق دے چکا تھا اب اسے دو سے زائد نہیں دے سکتا اور جسے وہ دو دے چکا اس پر ایک سے زیادہ نہیں ڈال سکتا، اگر زیادہ دے گا باقی لغو ہو جائیں گی۔ سوم کلام جب تک موثر بن سکے گا لغو نہ ٹھہرائیں گے، اور ایسا دعویٰ جس میں کوئی حصہ کلام کا لغو جاتا ہو لتسلیم (بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) یا دونوں کو ایک ایک دے چکا تھا یا دو یا ایک سادہ دوسری کو ایک یا ایک سادہ دوسری کو دو یا ایک کو ایک دوسری کو دو، اور ایک مدخولہ دوسری غیر مدخولہ میں تین صورتیں ہیں کہ وہ مدخولہ سادہ ہو یا ایک پا چکی ہو یا دو، تو یہ نو ہوئیں اور دسویں یہ وہ کہ دونوں غیر مدخولہ، ان دسوں پر محتمل ہے کہ ایک کی تخصیص کرے یا دونوں کو دینی کہے بیس ہوئیں ان بیسوں پر احتمال ہے کہ لفظ دو بار کہا یا تین بار، چالیس ہوئیں الخ عہ : اس لئے کہ ان دس صورتوں میں چھ صورتیں اختلاف حال زوجہ کی ہیں یعنی چوتھی سے جس میں ایک سادہ اور دوسری کو ایک ہو چکی ہے نویں ایک مدخولہ اور دوسری غیر مدخولہ ہے اور چار صورتیں دسوں سے متعلق ہونے والی ہیں، دو کی تخصیص دو کی تقسیم، تین کی تخصیص تین کی تقسیم، ان صورتوں سے ان چار شکلوں میں جن میں حال زوجتین متفق ہے کوئی اختلاف نہ پڑے گا جس کی چاہو تخصیص مان لو یا تین قسم کی تقسیم جس پر طلاق چار ہو

دو اور دوسری پر ایک واقع مان لو حکم ایک ہی رہے گا، لہٰذا یہ چاروں چار سے مل کر سولہ ۱۶ ہی ہوئیں، اور اسی طرح ان چھ صورت اختلاف حالین میں تقسیم دو سے کوئی فرق نہ آئے گا ہر ایک پر ایک پڑے گی اور بیشک وہ دونوں ایک حال کی ہوں ایک پڑنے کی ضرور صالحہ ہیں ورنہ اس کے نکاح ہی میں نہ ہوتیں، یہ چھ طلاق چھ ہی رہیں، سولہ ۱۶ اور چھ بائیس ۲۲ مگر بحالت تخصیص دو یا سہ ، یہ چھ مختلف الحکم ہوں گی کہ تخصیص یا اس عورت سے کی یا اس سے تقسیم، تین میں دو اس پر مانیں اور ایک اس پر، بالعکس تو یہ چھ یہاں آ کر بارہ ۱۲ ہوئیں اور تین صورت تخصیص دو و سہ و تقسیم سہ سے ضرب کھا کر چھتیں ۳۶ بائیں ۲۲ اٹھاون ۵۸، واللہ تعالیٰ اعلم ۱۲ منہ

...They will not do. Fourth, a person who has two wives and divorces his woman without specifying which one, has the choice to direct that divorce towards whichever of them he wishes. His statement in specifying the divorced one will be considered valid as long as it does not lead to his words becoming absurd/invalid in acceptance. These four principles are explicitly mentioned in various places in books of jurisprudence. Thus, if Chhatti and Bashiran are both consummated wives, then whichever one he specifies now, the two or three divorces given will all fall on her, and nothing on the other, provided she has the capacity for that many divorces. For example, if he said the mentioned word twice, then for whichever one he specifies, he must not have given her two divorces previously. Or if he said it three times, he must not have given any at all. Otherwise, as much as she has the capacity for, that many will fall on her, and the remainder on the other wife, provided the latter has capacity for all the remainder. Otherwise, one divorce will necessarily become void. For example, if he said it twice and specified Chhatti, and had previously given her two, then only one more will fall on her, making her divorced by three, and if he had given three previously, and before that one, then now only two will fall on her to make three. And in both cases, the remaining one will fall on Bashiran. And if he had already given two to Chhatti and now says it three times, then one will fall on her to make it three, and the remaining two will fall on Bashiran, provided he had not given two to Bashiran previously. Otherwise, from those two remaining ones, only one will fall on Bashiran to make her three as well, and one will perforce become void as there is no place for it. And if he states he is giving to both, then at least one will definitely fall on each. As for the third one, if neither has the capacity for it, it will go void. If only one has capacity, it will definitely fall on her. And if both have capacity, it will be on whichever he specifies. For example, Chhatti and Bashiran had both previously received two divorces each; now one more on each makes three for both, and the third one is useless. And if, for example, Chhatti had two and Bashiran had one, then of these three given to both, two will specifically fall on Bashiran and one on Chhatti, even if he says the opposite—that he put two on Chhatti and one on Bashiran. And if both had had one divorce each, or none at all, or one had one and the other none, then both are capable of receiving two from these three; whichever one he says two for, two will fall on her, and the other will get one. And if both are unconsummated, then specifying one will not be accepted at all because it would necessitate absurdity for the rest. Rather, in every way, one will fall on each of the two, and if he said it three times, the third will be in vain. And if there is one consummated and one unconsummated wife, and he specifies the unconsummated

one, it will not be accepted. Instead, in the case of two, one will fall on each, and in the case of three, one on the unconsummated and the remaining two on the consummated wife, provided he hasn't given her two previously, otherwise only one on her as well, and the third is useless. And if he specifies the consummated one, then it is accepted...

...नहीं करेंगे। चौथा, जिस व्यक्ति के पास दो पत्नियाँ हों और वह अपनी औरत को बिना किसी निर्धारण के तलाक दे दे, तो उसे यह अधिकार है कि वह उस तलाक को उनमें से जिसकी ओर चाहे फेर दे। तलाकशुदा के निर्धारण में उसका बयान तब तक मान्य होगा जब तक उसके स्वीकार करने में शब्दों का निरर्थक होना आवश्यक न हो। ये चारों सिद्धांत न्यायशास्त्र (फ़िक़्ह) की पुस्तकों में जगह-जगह स्पष्ट रूप से वर्णित हैं। अतः यदि छट्टी और बशीरन दोनों ऐसी पत्नियाँ हैं जिनसे संभोग हो चुका है (मदखूला), तो अब वह उनमें से जिसे निर्दिष्ट करेगा, दी गई दो या तीन तलाकें सब उसी पर पड़ेंगी, दूसरी पर कुछ नहीं, बशर्ते कि उसमें इतनी तलाकें सहने की क्षमता हो। उदाहरण के लिए, यदि उसने उक्त शब्द दो बार कहा, तो अब जिसे वह निर्दिष्ट करता है, उसे पहले दो तलाकें कभी न दी गई हों। या यदि तीन बार कहा, तो मूल रूप से एक भी न दी गई हो। अन्यथा, जितनी उसमें क्षमता है उतनी उस पर पड़ेंगी और शेष दूसरी पर, जबकि उसमें शेष सभी की क्षमता हो। अन्यथा, विवशता के कारण एक तलाक निरर्थक हो जाएगी। उदाहरण के लिए, यदि उसने दो बार कहा और छट्टी को निर्दिष्ट किया, और उसे पहले दो तलाकें दे चुका था, तो उस पर एक और पड़कर वह तीन तलाकों से तलाकशुदा (मुतल्लका) हो जाएगी। और यदि तीन बार कहा और उससे पहले एक दे चुका था, तो अब उस पर दो ही पड़कर तीन हो जाएंगी, और दोनों स्थितियों में शेष एक बशीरन पर पड़ेगी। और यदि छट्टी को दो दे चुका था और अब तीन बार कहा, तो उस पर एक पड़कर तीन हो गईं और शेष दो बशीरन पर पड़ेंगी, बशर्ते बशीरन को पहले दो न दे चुका हो। अन्यथा, उन दो शेष में से केवल एक बशीरन पर पड़कर उसके भी तीन हो जाएंगे और एक विवश होकर निरर्थक हो जाएगी क्योंकि उसके लिए कोई स्थान नहीं है। और यदि वह दोनों को देना बताता है, तो प्रत्येक पर कम से कम एक तो अवश्य पड़ेगी। रही बात तीसरी की, यदि किसी में उसकी क्षमता नहीं है तो वह निरर्थक जाएगी, और यदि किसी विशेष एक में है तो उसी पर अवश्य पड़ेगी। और यदि दोनों में है, तो जिसे वह बताएगा उस पर होगी। उदाहरण के लिए, छट्टी और बशीरन दोनों को पहले दो-दो तलाकें मिल चुकी थीं, तो अब प्रत्येक पर एक-एक पड़कर तीन-तीन हो गईं और तीसरी बेकार। और उदाहरण के लिए, यदि छट्टी को दो हो चुकी थीं और बशीरन को एक, तो ये तीन जो दोनों को दीं, उनमें से दो विशेष रूप से बशीरन पर पड़ेंगी और छट्टी पर एक, भले ही वह इसके विपरीत बताए कि मैंने छट्टी पर दो डालीं और बशीरन पर एक। और यदि दोनों को एक-एक तलाक हो चुकी थी या एक भी नहीं हुई थी, या एक को एक और दूसरी को मूल रूप से नहीं हुई थी, तो दोनों इन तीनों में से दो के योग्य हैं; जिस पर वह दो बताएगा उस पर दो पड़ेंगी, और जिस पर एक, उस पर एक। और यदि दोनों ऐसी पत्नियाँ हैं जिनसे संभोग नहीं हुआ है (ग़ैर मदखूला), तो एक का

निर्धारण मूल रूप से स्वीकार्य नहीं होगा क्योंकि इससे शेष का निरर्थक होना आवश्यक आता है। बल्कि हर तरह से दोनों पर एक-एक पड़ेगी, और यदि तीन बार कहा था तो तीसरी व्यर्थ जाएगी। और यदि एक मदखूला और एक ग़ैर मदखूला हैं और वह ग़ैर मदखूला को निर्दिष्ट करता है, तो स्वीकार्य नहीं होगा। बल्कि दो की स्थिति में दोनों पर एक-एक पड़ेगी और तीन की स्थिति में ग़ैर मदखूला पर एक और शेष दो मदखूला पर, यदि उसने उसे पहले दो न दी हों, अन्यथा उस पर भी एक ही, और तीसरी बेकार। और यदि वह मदखूला को निर्दिष्ट करता है, तो स्वीकार्य है...

पृष्ठ 438 का 688

نہ کریں گے۔ چہارم جس کے پاس دو زوجہ ہوں اور وہ بلا تعیین اپنی عورت کو طلاق دے تو اسے اختیار ہے کہ وہ طلاق اُن میں سے جس کی طرف چاہے پھیرے تعیین مطلقہ میں اس کا بیان معتبر ہوگا جب تک اس کے قبول میں کلام کا لغو ہونا لازم نہ آتا ہو۔ یہ چاروں اصول جا بجا کتب فقہ میں مصرح ہیں، پس اگر چھٹی بشیرن دونوں مدخولہ ہیں تو اب ان میں سے جس کی تخصیص کرے گا دو یا تین جتنی طلاقیں دی ہیں سب اسی پر پڑیں گی دوسری پر کچھ نہیں بشر طیکہ وہ اتنی طلاقوں کی صلاحیت رکھتی ہو مثلاً دو بار لفظ مذکور کہا تو اب جس کی تخصیص کرتا ہے اُسے دو طلاقیں کبھی نہ دی ہوں یا تین بار کہا تو اصلاً نہ دیں ہو ورنہ جس قدر اس کی صلاحیت ہے اُتنی اس پر باقی دوسری پر پڑیں گی جبکہ اس میں کل باقی کی صلاحیت ہو ورنہ ایک طلاق بنا چاری لغو ٹھہرے گی مثلاً دو بار کہا اور چھٹی کی تخصیص کی اور اسے پہلے دو بار دے چکا تھا تو اس پر ایک ہی پڑ کر وہ تین طلاقوں سے مطلقہ ہو جائے گی، اور اگر تین اور اس سے پہلے ایک دے چکا تھا تو اب اس پر دو ہی پڑ کر تین ہو جائیں گی اور دونوں صورتوں میں باقی ایک بشیرن پر پڑے گی، اور اگر چھٹی کو دو دے چکا تھا تو اب تین بار کہا تو اس پر ایک پڑ کر تین ہو گئیں اور باقی دو بشیرن پر پڑیں گی جبکہ بشیرن کو پہلے دو نہ دے چکا ہو ورنہ ان دو باقیماندہ سے ایک ہی بشیرن پر پڑ کر اس کی بھی تین ہو جائیں گی اور ایک مجبوراً لغو ہو جائے گی اس کے لئے کوئی محل نہیں، اور اگر دونوں کو دینا بتاتا ہے تو ہر ایک پر ایک ایک تو ضرور پڑے گی، رہی تیسری، اگر اس کی صلاحیت کسی میں نہیں تو لغو جائے گی اور خاص ایک میں ہے تو اُسی پر ضرور پڑے گی اور دونوں میں ہیں تو وہ جسے بتائے گا اس پر ہوگی مثلاً چھٹی بشیرن دونوں پہلے دو دو طلاقیں پا چکی تھیں تو اب ہر ایک پر ایک ایک پڑ کر تین تین ہو گئیں تیسری بیکار، اور اگر مثلاً چھٹی کو دو ہو چکی تھی اور بشیرن کو ایک، تو یہ تین جو دونوں کو دیں ان میں کی

دو خاص بشیرن پر پڑیں گی اور چھٹی پر ایک، اگر چہ وہ اس کا عکس بتاتا ہو کہ میں نے چھٹی پر دو ڈالیں اور بشیرن پر ایک۔ اور اگر دونوں ایک ایک طلاق ہو چکی تھی یا ایک بھی نہ ہوئی تھی یا ایک کو ایک ، دوسری کو اصلاً نہ ہوئی تھی تو دونوں ان تینوں میں سے دو کی قابل ہیں جس پر دو بتائے گا اس پر ان کی دو پڑیں گی، اور جس پر ایک اس پر ایک۔ اور اگر دونوں غیر مدخولہ ہیں تو ایک کی تخصیص اصلاً قبول نہ ہوگی کہ باقی کو لغویت لازم آتی ہے۔ بلکہ ہر طرح دونوں پر ایک ایک پڑے گی، اور اگر تین بار کہا تھا تو تیسری عبث جائے گی۔ اور اگر مدخولہ و غیر مدخولہ ہیں اور تخصیص غیر مدخولہ کی کرتا ہے تو مقبول نہ ہوگی بلکہ دو کی صورت میں دونوں پر ایک ایک پڑے گی اور تین کی صورت میں غیر مدخولہ پر ایک اور باقی دو مدخولہ پر اگر اسے پہلے دو نہ دے چکا ہو ورنہ اس پر بھی ایک ہی، اور تیسری بیکار۔ اور اگر تخصیص مدخولہ کی کرتا ہے تو مقبول

...will occur. In the case of two, if he hasn't already given one or two, and in the case of three, if he hasn't already given one or two. Otherwise, one or two will fall on the consummated wife and the rest on the non-consummated one. And if he wants to give to both, only one will fall on the non-consummated wife, even if he specifies two from these three. The rest will be on the consummated one, provided he hadn't given two previously in the case of three, otherwise one will fall on her too and one will be in vain. In short, the rules for the division of divorce and specification for a non-consummated wife will be identical. It is stated in Khania:

Arabic Text	**Urdu Translation**
If a man has two wives with whom he has not yet consummated marriage, and he says: "My wife is divorced, my wife is divorced," they are both separated. If he says he intended only one of them, his claim will not be accepted. Similarly, if he says: "My wife is divorced and my wife is divorced," i.e., using a conjunction with both sentences, the same ruling applies. The same applies if he says this regarding manumission for his two slaves; both will be freed. If he has consummated marriage with both wives and says: "My wife is divorced, my wife is divorced," then in this situation, the husband will have the choice to assign both divorces to one wife. (T)	A man has two wives; if he hasn't consummated marriage with either yet, then his claim [of intending only one] will not be accepted. Similarly, if he says "divorce to my wife and divorce to my wife," i.e., using a conjunction to say both sentences, the same ruling applies. Similarly, if he said such regarding manumission for his two slaves, both will be freed. And if he has consummated marriage with both wives and said to them "divorce to my wife, divorce to my wife," then in this situation, the husband will have the choice to declare both divorces for one wife. (T)

Whoever understands this explanation of ours can also derive the rulings for hundreds of other remaining forms of this issue. For example, in the state of having two wives, saying this word four, five, or six times; in the case of three wives, from two up to nine times; or in the case of four wives, from two up to twelve times. Anything beyond that will be absolutely redundant, as is not hidden (as it's evident - T). As for saying it only once, its ruling in all cases is that he can assign it to whomever he wishes, as every wife definitely has the capacity for at least one. And Allah Almighty knows best.

Issue 210: From Bhikhampur. What do the scholars of religion say regarding this issue: Zaid instructed his free wife that such-and-such relative is my and your enemy, so cease all friendly relations with them. The wife did not comply. In the presence of several people, Zaid divorced the wife and the waiting period (iddat) has passed. Now Zaid wants to remarry her and says that I, once or twice on that occasion where...

---

[1] Fatawa Qazi Khan, Book of Divorce, Naval Kishore Lucknow, 1/207

...होगी। जबकि दो की स्थिति में वह पहले एक या दो और तीन की स्थिति में पहले एक या दो न दे चुका हो, वर्ना एक या दो मदखूला (जिससे विवाह संपन्न हो चुका हो) पर पड़ कर बाकी एक गैर-मदखूला पर पड़ जाएँगी। और अगर दोनों को देना चाहता है तो गैर-मदखूला पर एक ही पड़ेगी चाहे इन तीन में से दो बताता हो। बाकी मदखूला पर, बशर्ते कि तीन की स्थिति में पहले दो न दी हों, वर्ना उस पर भी एक पड़ेगी और एक व्यर्थ होगी। संक्षेप में, तलाक के बँटवारे और गैर-मदखूला के लिए विशिष्टता के नियम एक समान होंगे। खानिया में है:

अरबी इबारत

यदि एक व्यक्ति की दो पत्नियाँ हों जिनसे उसने सहवास न किया हो, और वह कहे: "मेरी पत्नी तलाकशुदा है, मेरी पत्नी तलाकशुदा है," तो दोनों अलग हो गईं। यदि वह कहे कि मैंने उनमें से केवल एक का इरादा किया था, तो उसकी बात नहीं मानी जाएगी। और इसी तरह यदि वह कहे: "मेरी पत्नी तलाकशुदा है और मेरी पत्नी तलाकशुदा है," अर्थात् संयोजक के साथ दोनों वाक्य कहे, तब भी यही हुक्म है। इसी प्रकार दास-मुक्ति (अतक़) के बारे में है। और यदि उसने दोनों के साथ सहवास कर लिया हो और कहा हो: "मेरी पत्नी को तलाक, मेरी पत्नी को तलाक," तो उसके पास अधिकार होगा कि वह दोनों तलाक किसी एक पर ही लागू कर दे। (त)

उर्दू अनुवाद

एक व्यक्ति की दो पत्नियाँ हैं, दोनों के साथ अभी सहवास (दखूल) नहीं किया, तो उसकी तस्दीक (पुष्टि) नहीं की जाएगी, और इसी तरह यदि उसने कहा: "मेरी पत्नी को तलाक और मेरी पत्नी को तलाक," यानी 'और' के साथ दोनों जुमले कहे, तो भी यही हुक्म है। इसी तरह अपने दो गुलामों के बारे में आज़ादी के लिए ऐसा कहा तो दोनों आज़ाद हो जाएंगे। और अगर दोनों पत्नियों के साथ सहवास कर चुका हो और उनसे कहा: "मेरी पत्नी को तलाक, मेरी पत्नी को तलाक," तो पति को इस स्थिति में यह अधिकार होगा कि वह दोनों तलाकों को एक ही पत्नी के लिए निर्धारित कर दे। (त)

जो हमारे इस बयान को समझ ले वह इस मसले के बाकी सैकड़ों रूपों के भी हुक्म निकाल सकता है। जैसे दो पत्नी होने की स्थिति में यह शब्द चार या पाँच या छह बार कहना; तीन की स्थिति में दो से नौ तक या चार की स्थिति में दो से बारह तक; कि इससे अधिक जो कुछ है वह बिल्कुल बेकार होगा जैसा कि स्पष्ट है (त)। रहा एक ही बार कहना, तो उसका हुक्म सभी रूपों में यही है कि जिस पर

चाहे डाल सकता है क्योंकि कम से कम एक की योग्यता तो हर पत्नी में ज़रूर है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 210: भीकमपुर से। दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद ने अपनी स्वतंत्र (आज़ाद) पत्नी को यह निर्देश दिया कि फलां रिश्तेदार मेरा और तुम्हारा दुश्मन है, इसलिए तुम उससे मेल-जोल छोड़ दो। पत्नी ने नहीं माना। ज़ैद ने कई लोगों की मौजूदगी में पत्नी को तलाक दे दिया और इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) बीत चुकी है। अब ज़ैद दोबारा निकाह करना चाहता है और कहता है कि मैंने एक या दो बार उस मौके पर जहाँ...

---

[1] फ़तावा काज़ी खां, किताब-उत-तलाक, नवल किशोर लखनऊ, 1/207

ہوگی جبکہ دو کی صورت میں اسے پہلے دو اور تین کی صورت میں پہلے ایک یادو نہ دے چکا ہو ورنہ ایک یادو مدخولہ پر پڑ کر باقی ایک غیر مدخولہ پر پڑ جائیں گی، اور اگر دونوں کو دینا چاہتا ہے تو غیر مدخولہ پر ایک ہی پڑے گی اگر چہ اس تین میں سے دو بتاتا ہو باقی مدخولہ پر بشرطیکہ تین کی صورت میں اُسے پہلے دو نہ دی ہوں ورنہ اس پر بھی ایک پڑیگی اور ایک عبث۔ غرض تقسیم طلاق و تخصیص غیر مدخولہ کے احکام یکساں ہوں گے۔ خانیہ میں ہے:

عربی عبارت

لوکان لہ امرأتان لم یدخل بھما فقال امرأتی طالق امرأتی طالق بانتا وان قال اردت واحدۃ منھما لا یصدق وکذالو قال امرأتی طالق وامرأتی طالق وکذا العتق ولوکان دخل بھما فقال امرأتی طالق امرأتی طالق کان لہ ان یوقع الطاقین علی احدھما۱۔

اردو ترجمہ

ایک شخص کی دو بیویاں ہیں دونوں سے دخول ابھی نہیں کیا تو اس کی تصدیق نہ کی جائیگی، اور یونہی اگر اس نے کہا میری بیوی کو طلاق اور میری بیوی کو طلاق یعنی عطف کے ساتھ دونوں جملے کہے تو بھی یہی حکم ہے۔ یونہی اپنے دو غلاموں کے بارے میں عتق کے لئے ایسے کہا تو دونوں آزاد ہو جائیں گے، اور اگر دونوں بیویوں کو دخول کر چکا ہو تو ان کو "میری بیوی کو طلاق، میری بیوی کو طلاق" کہا تو خاوند کو اس صورت میں یہ اختیار ہوگا وہ دونوں طلاقوں کو ایک بیوی کے لئے قرار دے۔ (ت)

جو ہمارے اس بیان کو سمجھ لے وہ اس مسئلہ کے تمام باقی صدہا صور کے بھی احکام نکال سکتا ہے مثلاً دو زوجہ کی حالت میں یہ لفظ چار یا پانچ یا چھ بار کہا تین کی حالت میں دو سے نو تک یا چار کی صورت میں دو سے بارہ تک کہ اس سے زائد جو کچھ ہے وہ مطلقاً فضول ہوگا کما لا

یخفی (جیسا کہ پوشیدہ نہیں ہے۔ ت)۔ رہا ایک ہی بار کہنا اس کا حکم سب صور میں یہی ہے کہ جس پر چاہے ڈال سکتا ہے کہ کم سے کم ایک کی صلاحیت تو ہر زوجہ میں ضرور ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۱۰: از بھیکم پور کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی زوجہ حرہ کو یہ ہدایت کی فلاں رشتہ دار میرا تیرا دشمن ہے لہٰذا تو اس سے مراسم اتحاد ترک کر، زوجہ نے نہ مانا، زید نے بموجودگی چند اشخاص زوجہ کو طلاق دی اور عدت منقضی ہو چکی ہے، اب زید رجوع کیا چاہتا ہے اور کہتا ہے میں نے ایک یا دو بار اس موقع پر جہاں

---

[1] فتاویٰ قاضی خاں کتاب الطلاق نولکشور لکھنؤ ۱/ ۲۰۷

Fatawa-e-Razviya, Volume 12

A divorce took place. It was given, but the words were not uttered three times. People present at the scene confirm the divorced wife's statement. However, 'Amr, Hindah, and Safiyah state that when they met Zaid and inquired about the details of the divorce at their house, Zaid uttered the phrase "(I divorce you)" three times in front of them. Zaid does not confirm the statement of 'Amr and others; instead, he says that 'Amr and others are against him, and due to their enmity, they are saying this so that his wife becomes irrevocably divorced (Mughallazah) and he cannot reconcile with her. Otherwise, it is clear that there was no reason to say it separately three times at the time of divorce. Rather, when 'Amr and others asked him about the situation, he explained what happened. In this case, can Zaid perform a new marriage (Tajdid-e-Nikah) or reconcile with his wife without the need for Halala (Tahleel)? And if it is accepted that Zaid uttered the said phrase three times in front of 'Amr and others at a different location after the initial divorce, would that statement be considered as effecting an irrevocable divorce (Mughallazah)? Guidance is requested in the light of the Quran and Hadith. Explain and be rewarded.

The Answer: If the situation is as described, then irrevocable divorce (Talaq Mughallazah) is not proven at all. Zaid can perform a marriage contract with the free woman (Hurrah) without the need for Halala. If among 'Amr, Hindah, and Safiyah, even a single person is not a reliable and just (thiqah 'adil) witness according to Shariah, even if the other two (wives) possess complete Shari'ah justice, it is evident that the legal quorum for testimony is not complete. And nowadays, Shari'ah justice is rare among men, let alone women who are deficient in intellect and religion; among them, Shari'ah-reliable women in India are perhaps only a few, as we have explained in 'Kitab al-Shahadat' of our Fatawa. (T) Similarly, if any person among them has worldly enmity towards Zaid to such an extent that despite being just, their testimony against Zaid would be considered suspicious, then according to the rulings of the later jurists (Imams), their testimony against Zaid is not acceptable. It is stated in 'Durr-ul-Mukhtar':

Arabic	Translation
تقبل من عدو بسبب الدين لانها من التدين	Testimony from a religious enemy will be accepted because giving testimony is a sign of piety.
بخلاف الدنيوية فانہ لایا من من التقول علیه	Contrary to a worldly enemy, as they do not refrain from speaking lies. (T)

Likewise, if Zaid uttered that phrase at 'Amr's house at a time when the woman's 'Iddah (waiting period) had already expired...

[Footnote 1: Durr-ul-Mukhtar, Kitab al-Shahadat, Bab al-Qabul wa 'Adamihi, Matba' Mujtabai, Delhi, 2/93]

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 12

एक तलाक़ हुई थी। तलाक़ दी गई थी, लेकिन तीन बार नहीं कहा गया था। मौक़े पर मौजूद लोग तलाक़शुदा पत्नी के बयान की तस्दीक़ (पुष्टि) करते हैं। मगर अम्र, हिन्दा और सफ़िया का बयान है कि जब वे ज़ैद से मिले और उन्होंने अपने घर पर तलाक़ के वाक़ये की हक़ीक़त पूछी, तो ज़ैद ने उनके सामने तीन बार यह जुमला कहा कि (मैं तलाक़ देता हूँ)। ज़ैद, अम्र वगैरह के बयान की तस्दीक़ नहीं करता बल्कि कहता है कि अम्र वगैरह मेरे मुख़ालिफ़ (विरोधी) हैं और दुश्मनी की वजह से वे ऐसा कह रहे हैं ताकि मेरी बीवी मुग़ल्लज़ह (स्थायी तलाक़) हो जाए और मैं उससे रुजूअ (मेल-मिलाप) न कर सकूँ। वरना ज़ाहिर है कि तलाक़ के मौक़े पर अलग से तीन बार कहने की कोई वजह न थी, बल्कि अम्र वगैरह ने मुझसे हक़ीक़त पूछी तो मैंने वाक़ये की सूरत ज़ाहिर की। इस सूरत में क्या ज़ैद अपनी बीवी से दोबारा निकाह या रुजूअ कर सकता है और हलाला (तहलील) की ज़रूरत नहीं होगी? और अगर तलाक़ के मौक़े से अलग दूसरे स्थान पर अम्र वगैरह के सामने तीन बार उक्त जुमला कहना तस्लीम कर लिया जाए, तो क्या वह जुमला मुग़ल्लज़ह तलाक़ वाक़िअ करने वाला माना जाएगा? किताब और हदीस के हवाले से हिदायत फ़रमाएँ। बयान फ़रमाएँ सवाब पाएँ।

अल-जवाब (उत्तर): वाक़ये की सूरत अगर यही है, तो तलाक़-ए-मुग़ल्लज़ह हरगिज़ साबित नहीं होती। ज़ैद हलाला की हाजत (ज़रूरत) के बग़ैर उस महिला (हुर्रह) से निकाह कर सकता है। अगर अम्र, हिन्दा और सफ़िया में एक भी शख़्स शरीअत के मुताबिक़ विश्वसनीय और न्यायप्रिय (सिक़ह आदिल) नहीं है, चाहे बाक़ी दो औरतें कामिल अदालत-ए-शरिया रखती हों, तो यह साफ़ है कि गवाही का निसाब (क़ानूनी संख्या) मुकम्मल नहीं है। और आजकल पुरुषों में शरिया के अनुसार न्यायप्रियता कम है, तो उन महिलाओं का क्या कहना जो अक़्ल और दीन में नाक़िस (कम) हैं, उनमें शरीअत के मुताबिक़ विश्वसनीय महिलाएँ हिन्दुस्तान में शायद गिनती की ही हों, जैसा कि हमने इसे अपने फ़तावा की 'किताब-अश-शहादत' में बयान किया है। (त) इसी तरह अगर उनमें से किसी शख़्स की ज़ैद से दुनियावी तौर पर ऐसी दुश्मनी है जिसकी वजह से नेक होने के बावजूद उसकी गवाही ज़ैद के ख़िलाफ़ संदेहास्पद हो, तो मुतअख़्ख़िरीन (बाद के) इमामों के फ़तवे के मुताबिक़ उसकी गवाही ज़ैद के नुक़सान के लिए स्वीकार्य नहीं है। 'दुर्रे मुख़्तार' में है:

अरबी उद्धरण	अनुवाद
تقبل من عدو بسبب الدين لانها من التدين	दीनी दुश्मन की गवाही क़बूल की जाएगी क्योंकि गवाही देना दीनदारी है।
بخلاف الدنيوية فانہ لايا من من التقول عليه	दुनियावी दुश्मन के बरअक्स कि वह झूठ बोलने से परहेज़ नहीं करता। (त)

इसी तरह अगर ज़ैद ने अम्र के घर पर वह जुमला उस वक़्त कहा हो जब महिला की इद्दत गुज़र चुकी हो...

[पादांत टिप्पणी 1: दुर्रे मुख़्तार, किताब-अश-शहादात, बाब-अल-क़बूल व अदमिही, मतब-ए-मुज्तबाई, दिल्ली, 2/93]

पृष्ठ 440/688

طلاق واقع ہوئی تھی طلاق دی تھی تین مرتبہ نہیں کہا تھا، اشخاص موجود دین موقعہ زوجہ مطلقہ بیانِ زد کی تصدیق کرتے ہیں مگر عمر و ہندہ وصفیہ کا بیان ہے کہ جب ہم سے ملا تھا اور ہم نے اس سے کیفیت واقعہ طلاق کو اپنے مکان پر دریافت کیا تو زید نے ہمارے سامنے تین مرتبہ یہ کلمہ کہا کہ (میں طلاق دیتا ہوں) زید بیان عمرو وغیرہ کی تصدیق نہیں کرتا بلکہ کہتا ہے عمر و وغیرہ میرے مخالف ہیں اور براہ مخالفت جو مجھ سے رکھتے ہیں یہ کہتے ہیں تاکہ میری عورت مغلظہ ہو جائے اور میں عورت سے رجوع نہ ہونے پاؤں ورنہ ظاہر ہے کہ موقع طلاق پر علیحدہ تین مرتبہ کہنے کی کوئی وجہ نہ تھی بلکہ عمر و وغیرہ نے مجھ سے کیفیت دریافت کی میں نے صورت واقعہ ظاہر کی، اس صورت میں زید تجدید نکاح پانی زوجہ سے رجوع کر سکتا ہے یا نہیں اور تحلیل کی ضرورت نہ ہوگی اور اگر موقع وقوع طلاق سے علیحدہ ہو کر دوسرے مقام پر عمر و وغیرہ کے سامنے تین مرتبہ جملہ مذکور کہنا تسلیم کیا جائے تو وہ جملہ متصور ہوگا یا واقع کرن والا طلاق مغلظہ کا، مترصد کہ بحوالہ کتاب وحدیث سے ہدایت فرمائی جائے۔ بینوا توجروا۔

الجواب: صورت واقعہ اگر یونہی ہے تو طلاق مغلظہ ہرگز ثابت نہیں، زید حرہ سے بے حاجت تحلیل نکاح کر سکتا ہے، عمرو ہندہ وصفیہ میں اگر ایک ہی شخص ثقہ عادل شرعی نہیں اگرچہ باقی دو زوجہ کمال عدالت شرعیہ رکھتے ہوں جب تو ظاہر ہے کہ نصاب شہادت کامل نہیں اور آج کل عدالت شرعیہ مردوں میں کم ہے نہ کہ زنان ناقصات العقل والدین کہ اُن میں ثقہ شرعیہ ہندوستان میں شاید گنتی کی ہوں کما بیناہ فی کتاب الشہادۃ من فتاؤنا (جیسا کہ ہم نے اسے اپنے فتاوی کی کتاب الشہادت میں بیان کیا ہے۔ت) اسی طرح اگر اُن میں کوئی شخص زید سے عدالت

ظاہر ہ دنیویہ اس حد پر رکھتا ہے جس کے باعث با وصف عدالت اس کے حق میں متہم ہو جب بھی حسب فتوی ائمہ متاخرین اس کی گواہی زید کے ضرر پر مقبول نہیں۔ در مختار میں ہے:

عربی عبارت	ترجمہ
تقبل من عدو بسبب الدین لانها من التدین	دینی دشمن کی شہادت قبول کی جائے گی کیونکہ شہادت دینداری ہے۔
بخلاف الدنیویة فانہ لایا من من التقول علیه	بخلاف دنیوی دشمن کے کہ وہ جھوٹ بولنے سے پرہیز نہیں کرتا۔(ت)

اسی طرح اگر زید نے مکان عمرو پر وہ جملہ اس وقت کہا ہو کہ حرہ کی عدت گزر چکی ہو،

[حاشیہ 1: در مختار کتاب الشہادات باب القبول وعدمہ مطبع مجتبائی دہلی ۹۳/۲]

Fatawa-e-Razvia, Volume 12

Arabic: Fan inqidha al-iddah yaj'aluha ajnabiyyah kharijah 'an mahaliyyat al-talaq.	**Urdu: Because the passing of the 'Iddah (waiting period) makes the wife a stranger and excludes her from the locus of divorce. (T)**

And if you disregard all this, and even accept that Zaid definitely said the aforementioned sentence and said it within the days of 'Iddah, and there is no doubt that this sentence indicates the present tense, not the past tense, then it will not be a narration of a previous divorce. Rather, since the words are only "I give divorce" and there is no name or mention of who it is being given to, nor is there any indicative contextual evidence showing an intention to divorce a free woman. It is mentioned in Khulasah Hindiyah:

Arabic: Sakran harabat minhu imra'atuhu fataba'aha walam yazhfar biha faqala bil-farsiyyah bi-seh talaq in qala aradtu imra'ati yaqa'u wa-illa la. 1	**Urdu: When a drunk person's wife ran away, he chased her and failed. Then he said in Persian: "By three divorces." If the husband said, "I meant my wife," then the divorce will occur, and if he didn't give any clarification, then divorce won't happen. (T)**

It is in Bazzaziyyah and Anqarawiyyah:

Arabic: Farrat walam yazhfar biha faqala seh talaq in qala aradtu imra'ati yaqa'u wa-illa la. 2	**Urdu: The woman ran away and the husband was not successful in catching her, so he said, "Three divorces." If he clarified and said he gave it to his wife, then divorce will occur, otherwise not. (T)**

It is in Bahr-ur-Raiq:

Arabic: Lau qala taliq faqila man 'anayta faqala imra'ati talaqat imra'atuhu ah. 3 faqad 'allaqa al-wuqu' 'ala iqrarihi annahu 'ana imra'atahu.	**Urdu: If one said "divorced lady," then asked who was meant, and the husband said "my wife," then his wife becomes divorced. So they have kept the occurrence of divorce contingent on this acknowledgment of the husband that by this he meant his wife. (T)**

And if, for the sake of argument, we even accept the existence of contextual evidence, still, when there is essentially no attribution to the woman in the speech, then Zaid's...

1. Fatawa Hindiyyah, Chapter 7 regarding divorce in Persian words, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/382
2. Fatawa Anqarawiyyah, Chapter regarding what constitutes divorce and what does not, Dar-ul-Isha'at Kandahar Afghanistan, 1/72
3. Bahr-ur-Raiq, Chapter of Explicit Divorce, H.M. Saeed Company Karachi, 3/253

अरबी: फ़ान इनक़िज़ा अल-इद्दह यजअलुहा अजनबिय्यह ख़ारिजह अन महल्लियत अत-तलाक।

उर्दू: क्योंकि इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) का गुज़र जाना पत्नी को अजनबी बना देता है और उसे तलाक़ के पात्र होने से बाहर कर देता है। (त)

और अगर इन सबसे हटकर विचार करें, बल्कि मान ही लें कि ज़ैद ने उपरोक्त वाक्य ज़रूर कहा और इद्दत के दिनों के भीतर ही कहा, और इस बात में कोई संदेह नहीं कि यह वाक्य वर्तमान काल का संकेत देता है, न कि भूतकाल का, तो यह पिछली तलाक़ का वर्णन नहीं होगा। बल्कि जबकि शब्द केवल इतने ही हैं कि "मैं तलाक़ देता हूँ" और इसमें कोई नाम या उल्लेख नहीं है कि किसे तलाक़ दे रहा हूँ, और न ही कोई ऐसा संदर्भ है जो स्वतंत्र महिला को तलाक़ देने के इरादे को दर्शाता हो। खुलासा-ए-हिन्दिया में है:

अरबी: सकरान हरबत मिन्हु इमराअतुह फतबाअहा वलम यज़फर बिहा फ़क़ाला बिल-फ़ारिसिय्यह बि-सेह तलाक़ इन क़ाला अरदतु इमराअती यक़अ' व-इल्ला ला। 1

उर्दू: नशे वाले की पत्नी भागी तो उसने पत्नी का पीछा किया और असफल रहा तो उसने फ़ारसी में कहा: "तीन तलाक़ से"। अगर इस पर पति ने कहा मैंने पत्नी मुराद (इरादा) ली है तो पत्नी को तलाक़ हो जाएगा और अगर कुछ भी स्पष्टीकरण न दिया तो तलाक़ न होगी। (त)

बज़ाज़िया और अनक़रवीया में है:

अरबी: फ़ररत वलम यज़फर बिहा फ़क़ाला सेह तलाक़ इन क़ाला अरदतु इमराअती यक़अ' व-इल्ला ला। 2

उर्दू: औरत भागी तो पति पकड़ने में कामयाब न हुआ, तो कहा "तीन तलाक़"। अगर स्पष्टीकरण किया और कहा पत्नी को दी है तो तलाक़ हो जाएगी वरना नहीं। (त)

बहर-उर-राइक़ में है:

अरबी: लौ क़ाला तालिक़ फ़क़ीला मन अनैता फ़क़ाला इमराअती तलाक़त इमराअतुहु अह। 3 फ़क़द अल्लाक़ अल-वुक़ू अला इक़ारिहि अन्नहु अना इमराअतहु।	**उर्दू: अगर कहा "तलाक़ वाली", तो पूछा गया किसे तलाक़ कहा है, तो पति ने कहा अपनी पत्नी को, तो उसकी पत्नी को तलाक़ हो जाएगी। तो उन्होंने तलाक़ के होने को पति के इस स्वीकार पर निर्भर रखा कि उससे उसने अपनी पत्नी मुराद ली है। (त)**

और अगर मान लें कि कोई संदर्भ मौजूद भी था, फिर भी जब बातचीत में मूल रूप से औरत की ओर कोई संकेत ही नहीं है, तो ज़ैद का...

---

1. फ़तावा हिन्दिया, फ़ारसी शब्दों में तलाक़ के बारे में सातवां अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/382
2. फ़तावा अनक़रवीया, तलाक़ किन बातों से होती है और किनसे नहीं, दारुल इशाअत कंधार अफगानिस्तान, 1/72
3. बहर-उर-राइक़, स्पष्ट तलाक़ का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 3/253

पृष्ठ 441/688

فتاوی رضویہ جلد دوازدھم

فان انقضاء العدة یجعلها اجنبیة خارجة عن محلیة الطلاق۔ **کیونکہ عدت کا گزرنا جانا بیوی کو اجنبی بنا دیتا ہے اور اسکو طلاق کے محل سے خارج کردیتا ہے (ت)**

اور اگر ان سب سے قطع نظر کیجئے بلکہ مان ہی لیجئے کہ زید نے جملہ مذکورہ ضرور کہا اور ایام عدت کے اندر ہی کہا اور اس قدر شک نہیں کہ یہ جملہ زمان حال بتاتا ہے، نہ زمان ماضی، تو حکایت طلاق سابق نہ ہوگا بلکہ جبکہ لفظ اسی قدر ہیں کہ "میں طلاق دیتا ہوں" اور اس میں کچھ نام و ذکر نہیں کہ کسے دیتا ہوں نہ بیان کوئی قرینہ دالہ ارادہ تطلیق حرہ کا قصد کیا تھا۔ خلاصہ ہندیہ میں ہے:

سکران ھربت منه امرأته فتبعها ولم یظفر بها فقال بالفارسیة بسه طلاق ان قال اردت امرأتي یقع والالا۔ 1 **نشے والے کی بیوی بھاگی تو اس نے بیوی کا پیچھا کیا اور ناکام رہا تو اس نے کہا: تین طلاق سے، اگر اس پر خاوند نے کہا میں نے بیوی مراد لی ہے تو بیوی کو طلاق ہو جائے گی اور اگر کچھ بھی وضاحت نہ کی تو طلاق نہ ہوگی (ت)**

بزازیہ و انقرویہ میں ہے:

فرت ولم یظفر بها فقال سه طلاق ان قال اردت امرأتي یقع والالا۔ 2 **عورت بھاگی تو شوہر پکڑنے میں کامیاب نہ ہوا، تو کہا تین طلاق، اگر وضاحت کی اور کہا بیوی کو دی ہے تو طلاق ہو جائے گی ورنہ نہیں۔ (ت)**

بحرالرائق میں ہے:

لو قال طالق فقيل من عنيت فقال امرأتي طلاقت امرأته اھ 3 فقد علق الوقوع على اقراره انه عنى امرأته۔

اگر کہا طلاق والی، تو پوچھا گیا کس کو طلاق کہا ہے، تو خاوند نے کہا اپنی بیوی کو، تو اس کی بیوی طلاق ہو جائے گی۔ تو انہوں نے وقوع طلاق کو خاوند کے اس اقرار پر معلق رکھا کہ اس سے اس نے اپنی بیوی مراد لی ہے۔ (ت)

اور اگر بالفرض وجود قرینہ بھی تسلیم کرلیں تاہم جب کلام میں عورت کی طرف اصلاً اضافت نہیں تو زید کا

---

1 فتاوی ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالفاظ الفارسیہ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۸۲ 2 فتاوی انقرویہ الفصل ما یقع بہ الطلاق وما لا یقع بہ دارالاشاعت قندھار افغانستان ۱/ ۷۲ 3 بحر الرائق باب الطلاق الصریح ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۵۳/۳

The statement "I did not intend a divorce of a free woman" shall be accepted upon an oath, and the ruling of severe divorce (Mughallazah) shall not apply. It is stated in Muhit, Khaniya, and Hindiyya:

[Box 1] Arabic: Sheikh al-Islam al-Faqih Abu Nasr was asked about a drunken man who said to his wife, "Do you want me to divorce you?" She said, "Yes." So he said [in Persian], "If you are my wife, one divorce, two divorces, three divorces; stand up and leave me." He then claimed that he did not intend divorce by this. It was ruled: His statement shall be accepted.

Urdu: Sheikh al-Islam Faqih Abu Nasr was asked that a drunken person said to his wife, "Do you want me to divorce you?" The wife said, "Yes." Upon this, the husband said, "You are my wife, one divorce, two divorces, three divorces; get up and go away from me." After this, the husband said that I did not say it with the intention of divorcing the wife, so his word will be accepted. (T)[1]

[Box 2] Also in Alamgiri it is stated: Arabic: In the Fatawa [it is mentioned] that a man said to his wife [in Persian], "If [you are] wife mine, three divorces," with the omission of the 'Ya' [possessive suffix]. It [divorce] does not occur if he says, "I did not intend divorce," because when it was omitted, it was not attributed to her.

Urdu: It is mentioned in the Fatawa that if a person said to his wife, "If you are my wife, three divorces," by omitting the 'Ya' of attribution, then if the husband clarifies that I did not say it with the intention of divorcing the wife, then divorce will not occur because by omitting the 'Ya' of attribution, the relation towards the wife was not established. (T)[2]

[Box 3] In Durr-e-Mukhtar it is stated: Arabic: If he said, "If you go out, divorce occurs," or "Do not go out except with my permission, for I have sworn by divorce," and she went out, it does not occur due to the omission of attributing it to her.

Urdu: If the husband said, "If you go out, divorce will occur," or said it like this, "Do not go outside without my permission because I have taken an oath of divorce," the wife went out, then divorce will not occur because he did not mention the wife's divorce in the oath. (T)[3]

[Box 4] In Bazaziya and Khaniya it is stated: Arabic: It does not occur due to the lack of mention of his oath regarding her divorce.

Urdu: In the mentioned case, divorce will not occur because he [did not mention his oath of divorcing her].

Footnotes: [1] Fatawa Hindiyya, Chapter Seven on Divorce by Non-Express Words, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/383. [2] Fatawa Hindiyya, Chapter Seven on Divorce by Non-Express Words, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/384. [3] Durr-e-Mukhtar, Chapter on Express Divorce, Matba' Mujtabai Delhi, 1/218.

कौल कि "मैंने तलाक-ए-हुर्रा की नियत नहीं की" कसम के साथ मान लिया जाएगा और तलाक-ए-मुग़ल्लज़ा का हुक्म नहीं होगा। मुहीत, खानिया और हिन्दिया में है:

[बॉक्स 1] अरबी: शैख़ुल इस्लाम अल-फ़क़ीह अबू नस्र से एक नशे में धुत व्यक्ति के बारे में पूछा गया जिसने अपनी पत्नी से कहा, "क्या तुम चाहती हो कि मैं तुम्हें तलाक दे दूँ?" उसने कहा, "हाँ।" तो उसने [फ़ारसी में] कहा, "अगर तुम मेरी पत्नी हो, एक तलाक, दो तलाक, तीन तलाक; खड़ी हो जाओ और मेरे पास से चली जाओ।" उसने बाद में दावा किया कि उसका इरादा तलाक का नहीं था। हुक्म दिया गया: उसकी बात मान ली जाएगी।

उर्दू: शैख़ुल इस्लाम फ़क़ीह अबू नस्र से सवाल किया गया कि एक नशे वाले ने अपनी बीवी से कहा क्या तू चाहती है कि मैं तुझे तलाक दूँ, तो बीवी ने कहा हाँ। इस पर खاوند ने कहा तू मेरी बीवी है एक तलाक दो तलाक तीन तलाक, उठ मेरे पास से दूर हो जा। इसके बाद खौंद ने कहा कि मैंने बीवी को तलाक की नियत से नहीं कहा, तो उसकी बात मान ली जाएगी। (त)[1]

[बॉक्स 2] साथ ही आलमगीरी में है: अरबी: फतावा में [जिक्र है] कि एक आदमी ने अपनी पत्नी से [फ़ारसी में] कहा, "अगर [तुम] पत्नी मेरी, तीन तलाक," 'या' [संबंधवाचक प्रत्यय] को हटाकर। तलाक वाके नहीं होता अगर वह कहता है, "मेरा इरादा तलाक का नहीं था," क्योंकि जब इसे हटा दिया गया, तो यह उसकी ओर संबंधित नहीं रहा।

उर्दू: फतावा में मज़कूर है कि अगर किसी शख्स ने अपनी बीवी को कि अगर तू मेरी बीवी है तीन तलाक, इज़ाफ़त की 'या' को हज़फ़ करके कहा, तो अगर वज़ाहत करते हुए खौंद ने कहा कि मैंने बीवी की तलाक की नियत से नहीं कहा, तो तलाक न होगी क्योंकि या-ए-इज़ाफ़त को हज़फ़ करने पर बीवी की तरफ निस्बत न हुई। (त)[2]

[बॉक्स 3] दुर्रे मुख्तार में है: अरबी: अगर उसने कहा, "यदि तुम बाहर निकली, तो तलाक हो जाएगा," या "मेरी अनुमति के बिना बाहर न जाना, क्योंकि मैंने तलाक की कसम खाई है," और वह बाहर चली गई, तो यह वाके नहीं होता क्योंकि उसने इसका संबंध उसकी ओर करने को छोड़ दिया।

उर्दू: अगर खौंद ने कहा ! गो तू निकलेगी तो तलाक वाके होगी या यूँ कहा मेरी इजाज़त के बगैर बाहर न जाना क्योंकि मैंने तलाक की कसम खा रखी है, बीवी निकल गई, तो तलाक न होगी क्योंकि उसने कसम में बीवी की तलाक को ज़िक्र नहीं किया। (त)[3]

[बॉक्स 4] बज़ाज़िया व खानिया में है: अरबी: यह उसकी तलाक के संबंध में उसकी कसम का उल्लेख न होने के कारण वाके नहीं होता।

उर्दू: मज़कूरा सूरत में तलाक इसलिए न होगी कि उसने [अपनी बीवी को तलाक देने की कसम का ज़िक्र नहीं किया]।

पाद-टिप्पणियाँ: [1] फतावा हिन्दिया, सातवां अध्याय, शब्दों द्वारा तलाक, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/383. [2] फतावा हिन्दिया, सातवां अध्याय, शब्दों द्वारा तलाक, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/384. [3] दुर्रे मुख्तार, स्पष्ट तलाक का अध्याय, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/218.

قول کہ میں نے طلاقِ حرہ کی نیت نہ کی قسم کے ساتھ مان لیا جائے گا اور طلاقِ مغلظہ کا حکم نہ ہوگا۔ محیط و خانیہ وہندیہ میں ہے:

[Box 1] عربی: سئل شیخ الاسلام الفقیہ ابونصر عن سکران قال لامرأتہ اتریدون ان اطلقک قالت نعم فقال اگرزن منی یک طلاق دو طلاق سہ طلاق قومی اخرجی من عندی وھو یزعم انہ لم یرد بہ الطلاق فالقول قولہ۔

اردو: شیخ الاسلام فقیہ ابونصر سے سوال کیا گیا کہ ایک نشے والے نے اپنی بیوی سے کہا کیا تو چاہتی ہے کہ میں تجھے طلاق دوں، تو بیوی نے کہا ہاں۔ اس پر خاوند نے کہا تو میری بیوی ہے ایک طلاق دو طلاق تین طلاق، اٹھ میرے پاس سے دُور ہو جا۔ اس کے بعد خاوند نے کہا کہ میں نے بیوی کو طلاق کی نیت سے نہیں کہا، تو اس کی بات مان لی جائیگی (ت)1

[Box 2] نیز عالمگیری میں ہے: عربی: فی الفتاوی رجل قال لامرأتہ اگر زن منی سہ طلاق مع حذف الیاء لایقع اذا قال لم انو الطلاق لانہ لما حذف فلم یکن مضیفا الیہا

اردو: فتاوٰی میں مذکور ہے کہ اگر کسی شخص نے اپنی بیوی کو کہ اگر تو میری بیوی ہے تین طلاق، اضافت کی یاء کو حذف کرکے کہا، تو اگر وضاحت کرتے ہوئے خاوند نے کہ میں نے بیوی کی طلاق کی نیت سے نہیں کہا، تو طلاق نہ ہوگی کیونکہ یائے اضافت کو حذف کرنے پر بیوی کی طرف نسبت نہ ہوئی ۔ (ت)2

[Box 3] در مختار میں ہے: عربی: لوقال ان خرجت یقع الطلاق اولا تخرجی الا باذنی فانی حلفت بالطلاق فخرجت لم یقع لترکہ الاضافۃ الیہا

اردو: اگر خاوند نے کہا ! گو تو نکلے گی تو طلاق واقع ہوگی یا یوں کہا میری اجازت کے بغیر باہر نہ جانا کیونکہ میں نے طلاق کی قسم کھا رکھی ہے، بیوی نکل گئی، تو طلاق نہ ہوگی کیونکہ اس نے قسم میں بیوی کی طلاق کو ذکر نہیں کیا ۔ (ت)3

[Box 4] بزازیہ و خانیہ میں ہے: عربی: لا یقع لعدم ذکر حلفہ بطلاقھا

اردو: مذکورہ صورت میں طلاق اس لئے نہ ہوگی کہ اس نے [بیوی کی طلاق کی قسم کا ذکر نہیں کیا]

حواشی: 1 فتاوٰی ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالالفاظ لافاسیۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۸۳ 2 فتاوٰی ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالالفاظ لافاسیۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۸۴ 3 درمختار باب الصریح مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۱۸

Fatawa Ridawiyyah Volume 12

"And it is possible that the oath was regarding the divorce of someone else, so his statement is to be taken [as true]." ^1 In the oath, if the wife's divorce was not mentioned, then there is a possibility that it was an oath regarding the divorce of another woman. Therefore, the husband's clarification will be acceptable. (T)

In short, in the inquired scenario, even if the statements of 'Amr, Hind, and Safiyya are accepted as correct, it is not proven in any way that three divorces occurred. However, if in reality Zayd said the aforementioned sentence twice within the 'iddah period with the intention of initiating a divorce of a free woman (hurrah), or if two divorces had already been given and he said it just once with the intention of effecting divorce, then in the sight of Allah, the divorce of the free woman has become irrevocable (mughallazah). If Zayd falsely denies it, the Mufti's fatwa will not benefit him. He should fear Allah and act according to what actually happened. And Allah, the Exalted, knows best.

Problem 211: From Sadr Bareilly, 15 Muharram al-Haram 1324 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter where the husband says "I did not give a divorce," and the wife says "He did," and both take an oath. The wife presents a paper on which divorce is written. In this situation, will divorce occur or not? Explain and be rewarded.

The Answer: The husband's oath is credible; the wife's oath is redundant since there are no witnesses and the husband does not confess, and he does not admit the writing on the paper as his own. Therefore, divorce will never be proven. Yes, if in reality he has given divorce and is lying in denial, then the burden and severe punishment is upon him. The woman knows well that he had given divorce. So, if it was a revocable divorce (raj'i), there is no harm. If it was an irrevocable divorce (ba'in), the woman should say to him, "granted you didn't divorce, what's the harm in remarrying anew?" and the man should renew the marriage. If the woman knows that he has already given three divorces, then she should flee from him however possible to attain salvation. If she can get a divorce from him in exchange for leaving her dower (mahr) etc., she should do so. If not, the punishment will be on him as long as she does not desire to go to him. And Allah, the Exalted, knows best.

Problem 212: From the city of Bareilly, Zakhira, sent by Karamat Husain. What is your opinion, O scholars, may Allah the Exalted have mercy on you... (O scholars, may Allah have mercy on you,

^1 Fatawa Bazzaziyyah on the margins of Al-Fatawa al-Hindiyyah, Kitab al-Iman, Nurani Kutub Khana Peshawar, 2/407.

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

"और यह संभावना है कि शपथ किसी और की तलाक के बारे में थी, इसलिए उसकी बात मानी जाएगी।" ^1 शपथ में पत्नी की तलाक का उल्लेख नहीं किया गया है, तो यह संभावना हो सकती है कि यह किसी अन्य महिला की तलाक की शपथ हो। इसलिए, पति का स्पष्टीकरण स्वीकार्य होगा। (त)

संक्षेप में, पूछताछ की गई स्थिति में, भले ही 'अम्र, हिन्द और सफ़िया के बयानों को सही मान लिया जाए, फिर भी किसी तरह से तीन तलाक होना सिद्ध नहीं होता है। हालाँकि, यदि वास्तव में ज़ैद ने 'इद्दत' की अवधि के भीतर एक स्वतंत्र महिला (हुर्रा) की तलाक शुरू करने के इरादे से उक्त वाक्य दो बार कहा, या यदि पहले दो तलाक दिए जा चुके थे और उसने तलाक देने के इरादे से एक बार ही कहा, तो अल्लाह के नज़दीक स्वतंत्र महिला पर तलाक मुग़ल्लज़ (अत्यंत कठोर/अपरिवर्तनीय) हो गई। यदि ज़ैद गलत तरीके से इनकार करता है, तो मुफ्ती का फतवा उसे लाभ नहीं देगा। उसे अल्लाह से डरना चाहिए और जो वास्तविकता में हुआ है उस पर अमल करना चाहिए। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला २११: सदर बरेली से, १५ मुहर्रम अल-हराम १३२४ हिजरी। इस मामले में धर्म के विद्वान क्या कहते हैं कि पति कहता है कि मैंने तलाक नहीं दी, और पत्नी कहती है कि दी है, और दोनों शपथ लेते हैं, और पत्नी एक कागज पेश करती है जिसमें तलाक लिखी हुई है, क्या इस स्थिति में तलाक प्रभावी होगी या नहीं? वर्णन करें, आपको पुण्य मिलेगा।

अल-जवाब: पुरुष की शपथ विश्वसनीय है, महिला की शपथ व्यर्थ है जब गवाह न हों और पुरुष स्वीकार न करे और उस कागज को अपना लिखा हुआ न माने, तो तलाक हरगिज़ साबित नहीं होगी। हाँ, अगर वास्तव में तलाक दे दी है और झूठ बोलकर इनकार करता है तो इसका भार और कठोर दंड उस पर है। महिला अच्छी तरह जानती है कि उसने तलाक दे दी थी, तो अगर वह तलाक रजी (प्रतिसंहरणीय) थी तो कोई हर्ज नहीं और अगर बाइन (अपरिवर्तनीय) थी तो महिला को उससे कहना चाहिए कि "तुमने तलाक नहीं दी सही, नए सिरे से निकाह करने में क्या हर्ज है", और पुरुष को चाहिए कि निकाह का नवीनीकरण कर ले। और अगर महिला जानती है कि वह तीन तलाक दे चुका है तो जिस तरह संभव हो उससे भागे और मुक्ति प्राप्त करे। अपना मेहर आदि छोड़ने के बदले

उससे तलाक मिल सके तो वैसे ले ले, अन्यथा दंड उस पर रहेगा जब तक कि यह खुद उसके पास जाने की इच्छा न करे। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला २१२: बरेली शहर से, ज़ख़ीरा, करामत हुसैन द्वारा प्रेषित। विद्वानों, आप क्या कहते हैं, अल्लाह तआला आप पर दया करे... (ऐ विद्वानों, अल्लाह तआला आप पर दया करे,

---

^१ फ़तावा बज़ाज़िया, अल-फ़तावा अल-हिन्दिया के हाशिये पर, किताब अल-ईमान, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, २/४०७।

पृष्ठ ४४३/६८८

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

ویحتمل الحلف بطلاق غیرھا فالقول قولہ ۱- قسم میں بیوی کی طلاق کا ذکر نہیں کیا تو احتمال ہو سکتا ہے کہ غیر عورت کی طلاق کی قسم ہو، لہٰذا خاوند کی وضاحت قابل قبول ہو گی۔ (ت)

بالجملہ صورتِ مستفسرہ میں اگر عمرو و ہندہ و صفیہ کا بیان صحیح بھی مانا جائے تاہم کسی طرح تین طلاقیں ہونا ثابت نہیں البتہ اگر واقع میں زید نے ایامِ عدت کے اندر انشائے طلاق حرہ کی نیت سے دو بار بھی جملہ مذکورہ کہا یا اگر پہلے دو طلاقیں دی تھیں تو ایک ہی بار بہ نیتِ ایقاعِ طلاق کہا ہو تو عند اللہ حرہ پر طلاق مغلظ ہو گئی اگر زید غلط انکار کرے گا مفتی کا فتوٰی نفع نہ دے گا اللہ سے ڈرے اور جو امر واقع ہو اس پر عمل کرے۔ واللہ سبحنہ و تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۱۱: از صدر بریلی ۱۵ محرم الحرام ۱۳۲۴ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زوج کہتا ہے کہ میں نے طلاق نہیں دی، اور بیوی کہتی ہے کہ دی، اور دونوں قسم کھاتے ہیں، اور زوجہ ایک کاغذ پیش کرتی ہے کہ جس میں طلاق لکھی ہوئی ہے آیا اس صورت میں طلاق واقع ہوگی یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: مرد کی قسم معتبر ہے، عورت کی قسم فضول جب گواہ نہیں مرد کو اقرار نہیں اس کاغذ کو وہ اپنا لکھا مانتا نہیں، تو طلاق ہرگز ثابت نہ ہوگی، ہاں اگر واقع میں طلاق دے دی ہے اور جھوٹ انکار کرتا ہے تو اس کا وبال اور سخت عذاب اس پر ہے، عورت خوب جانتی ہے کہ اس نے طلاق دے دی تھی، تو اگر وہ طلاق رجعی تھی تو کچھ حرج نہیں اور اگر بائن تھی تو عورت کو اس سے کہنا چاہئے کہ تُونے طلاق نہیں دی سہی از سر نو نکاح میں کیا حرج ہے، اور مرد کو چاہئے کہ تجدید نکاح کرلے، اور اگر عورت جانتی ہے کہ وہ تین طلاقیں دے چکا ہے تو جس

طرح ممکن ہو اس سے بھاگے نجات حاصل کرے اپنا مہر وغیرہ چھوڑنے کے بدلے اس سے طلاق مل سکے تو یوں لے، نہ ہو تو عذاب اس پر رہے گا جب تک یہ خود اس کے پاس جانے کی رغبت نہ کرے گی۔ واللہ سبحنہ و تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۱۲: از شہر بریلی ذخیرہ مرسلہ کرامت حسین ما قولکم ایہا العلماء رحمکم اللہ تعالٰی (اے علماء کرام، اللہ تعالٰی آپ پر رحم فرمائے،

---

۱ فتاوٰی بزازیہ علی ہامش الفتاوی الہندیہ کتاب الایمان نورانی کتب خانہ پشاور ۲ / ۴۰۷

Fatawa Razawiya Volume 12

What is your ruling? (T) Zaid says that I have given two divorces to my wife, and the wife says that I have no knowledge of any divorce being given, and witnesses say that Zaid has given three divorces to his wife. Will Zaid's word be reliable or that of the witnesses? Please state with corrected transcription. That's all.

Answer: If two men or one man and two women, who are prayerful, abstinent, trustworthy, just, and acceptable witnesses according to Sharia, give Sharia testimony, then three divorces will be established. Zaid's denial will not be heard. And if there are no such witnesses, then Zaid will be asked to swear an oath. If he refuses to swear the oath, then also three divorces will be established. And if he takes an oath that I have given only two divorces and did not give the third divorce, then only two will be established. However, if he takes a false oath, its sin will be upon Zaid; the woman is not to blame. If there are no Sharia witnesses, then taking the oath from him in the woman's house for the purpose of swearing will be sufficient.

All these issues are explicitly mentioned in all the books of the [Hanafi] school of thought, like al-Durr al-Mukhtar etc. And Allah subhanahu wa ta'ala knows best, and His knowledge, glorified be His majesty, is most complete and most perfect. (T)

Issue 213: Muhammad Irshad Ali Sahib, First Grade Teacher of Arabic, Madrasa Aliya, State of Rampur. What do the scholars of religion and muftis of the firm Sharia say on this issue: that a person said in front of people only this, "So-and-so is divorced." He did not name the wife etc. Then he said, "Azizur Rahman's father's daughter so-and-so is divorced" without mentioning the name of the wife or the person. Besides the wife of the divorcer, [the father] has many other daughters. Later, when a person asked "What is this so-and-so saying?", he then said, "Amna Khatoon is divorced," and his wife's name is Amna Khatoon. In short, the divorce which was absolute and ambiguous at first, he specified it completely in the third statement. In this situation, how many divorces have occurred upon his wife? Please grant a reasoned answer from the books of jurisprudence.

Answer: In the mentioned situation, three divorces have occurred, "and he explained the ambiguous, so he specified it in part of the question" (He interpreted the ambiguous in a part of his question. T). And Allah Ta'ala knows best.

Page 444 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

आपका क्या इर्शाद है? (त) ज़ैद कहता है कि मैंने अपनी ज़ौजा (पत्नी) को दो तलाक़ें दी हैं, और ज़ौजा कहती है कि मुझे तलाक़ देने का इल्म नहीं है, और गवाह कहते हैं कि ज़ैद ने अपनी ज़ौजा को तीन तलाक़ें दी हैं। क्या ज़ैद का क़ौल मोतबर (विश्वसनीय) होगा या गवाहों का? तसहीह (सुधार) के साथ नक़्ल बयान फ़रमाएं। फ़क़त।

अल-जवाब (उत्तर): अगर दो मर्द या एक मर्द और दो औरतें जो नमाज़ी, परहेज़गार, मोतबर, आदिल और शरीअत में क़ाबिले-क़ुबूल गवाह हों, शरई गवाही देंगे, तो तीन तलाक़ें साबित हो जाएंगी, ज़ैद का इनकार नहीं सुना जाएगा। और अगर ऐसे गवाह नहीं हैं तो ज़ैद से क़सम ली जाएगी, अगर उसने क़सम खाने से इनकार कर दिया तो भी तीन तलाक़ें साबित हो जाएंगी। और अगर वह क़सम खा लेगा कि मैंने सिर्फ़ दो ही तलाक़ें दी हैं, तीसरी तलाक़ नहीं दी, तो दो ही साबित होंगी। लेकिन अगर उसने झूठी क़सम खाई तो उसका वबाल (पाप) ज़ैद पर होगा, औरत पर कोई इल्ज़ाम नहीं। अगर शरई गवाह न हों तो क़सम लेने के लिए औरत के घर में उससे क़सम लेना काफ़ी होगा।

ये तमाम मसाइल मज़हब की तमाम किताबों में साफ़ लिखे हैं, जैसे कि दुर्रे मुख़्तार वग़ैरह में। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है और उसका इल्म, जिसकी बुज़ुर्गियत बुलंद है, सबसे कामिल और सबसे मज़बूत है। (त)

मसला 213: मुहम्मद इर्शाद अली साहब, अव्वल दरजा अरबी मुदर्रिस, मदरसा आलिया, रियासत रामपुर। उलेमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरअ-ए-मतीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने लोगों के सामने सिर्फ़ ये कहा कि 'फ़लां को तलाक़'। ज़ौजा वग़ैरह किसी का नाम नहीं लिया। फिर कहा "अज़ीज़ुर्रहमान के बाप की बेटी फ़लां को तलाक़", ज़ौजा और उस शख़्स के नाम का ज़िक्र किए बग़ैर। मुतलक़ (तलाक़ देने वाले) की बीवी के अलावा (उस बाप की) और भी कई बेटियां हैं। बाद में जब एक शख़्स ने पूछा कि ये फ़लां-फ़लां क्या कहता है, तब कहा "आमना ख़ातून को तलाक़", और उसकी बीवी का नाम आमना ख़ातून है। ग़रज़ ये कि पहले जो तलाक़ मुतलक़ और मुबहम (अस्पष्ट) थी उसे तीसरे इक़रार में बिल्कुल मुतय्यन (स्पष्ट) करके बयान किया है, तो इस सूरत में उसकी बीवी पर कितनी तलाक़ें वाक़े हुईं? दलील के साथ कुतुबे-फ़िक़्ह से जवाब इनायत हो।

अल-जवाब (उत्तर): मज़कूरा सूरत में तीन तलाक़ें वाक़े हो गईं "और उसने मुबहम (अस्पष्ट) की तफ़सीर कर दी, तो उसके सवाल के एक हिस्से में उसे बयान कर दिया" (उसने अपने सवाल के एक हिस्से में मुबहम की तफ़सीर कर दी है। त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

पृष्ठ 444 का 688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

آپ کا کیا ارشاد ہے۔ت) زید کہتا ہے کہ میں نے دو طلاق اپنی زوجہ کو دی ہیں، اور زوجہ کہتی ہے کہ مجھے علمِ طلاق دینے کا نہیں ہے، اور گواہ کہتے ہیں کہ زید نے اپنی زوجہ کو تین طلاق دی ہیں۔ آیا قول زید کا معتبر ہو گا یا گواہوں کا؟ مع التصحیح نقل بیان فرمائیے فقط۔

الجواب: اگر دو مرد یا ایک مرد دو عورتیں نماز پرہیزگار ثقہ عادل قابلِ قبول شرع گواہی شرعی دیں گے تو تین طلاقیں ثابت ہو جائیں گی، زید کا انکار نہ سنا جائے گا، اور اگر ایسے گواہ نہیں تو زید سے قسم لی جائے گی، اگر اس نے قسم کھانے سے انکار کر دیا جب بھی تین طلاقیں ثابت ہو جائیں گے، اور اگر قسم کھا لے گا کہ میں نے صرف دو ہی طلاقیں دی ہیں تیسری طلاق نہ دی تو دو ہی ثابت ہوں گی، پر اگر جھوٹی قسم کھالی تو اس کا وبال زید پر ہو گا عورت الزام نہیں، گواہ شرعی نہ ہوں تو قسم لینے کے لئے عورت کا گھر میں اس سے قسم لے لینا کافی ہوگا۔

والسائل کلھا منصوص علیھا فی کتب المذہب کالدر المختار وغیرہا۔ واللہ سبحانہ تعالٰی اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم واحکم۔ یہ تمام مسائل مذہب کی تمام کتب میں واضح مذکور ہیں، جیسا کہ در مختار وغیرہا میں۔ واللہ سبحانہ وتعالیٰ اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم واحکم (ت)

مسئلہ ۲۱۳: محمد ارشاد علی صاحب معلم درجہ اول عربی مدرسہ عالیہ ریاست رام پور کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے لوگوں کے روبرو صرف یہ کہا کہ فلاں و طلاق۔ زوجہ وغیرہ کس کا نام نہیں لیا پھر کہا "عزیز الرحمن کے باپ کی بیٹی فلاں کو طلاق" بلا ذکر نام زوجہ کے اور اس کے اور اس شخص کے، علاوہ مطلق کی بی بی کے اور بھی کئی بیٹیاں ہیں، بعد کو جب ایک شخص نے کہا یہ فلاں فلاں کیا کہتا ہے، تب کہا

"آمنہ خاتون کو طلاق"، اور اس کی بیوی کا نام آمنہ خاتون ہے، غرض پہلے جو طلاق مطلق اور مبہم تھی اس کو اقرارِ ثالث میں بالکل متعین کر کے بیان کیا ہے تو اس صورت میں اسکی بی بی پر کتنی طلاقیں واقع ہو گئیں؟ جواب مدلل کتبِ فقہ سے مرحمت ہو۔

الجواب: صورتِ مذکورہ میں تین طلاقیں واقع ہو گئیں و قد فسر المبہم فنصہ بعض السوال (اس نے مبہم کی تفسیر اپنے سوال کے ایک حصہ میں کر دی ہے۔ ت) واللہ تعالیٰ اعلم۔

Fatawa Razawiyya, Volume 12

Problem 212: From Shahjahanpur, Muhammad Khalil, sent by Maulvi Riyasat Ali Khan Sahib Shahjahanpuri, 13 Dhu al-Qi'dah 1317 AH. What do the scholars of religion say in this matter that the husband of 'Hinda' (a generic name for a woman) is in another city and he wrote a divorce, got it registered according to English law, and sent it by post to the guardians of Hinda. Now the question is, whether this written divorce is religiously valid or not, even though he wrote it in his presence before witnesses? And in the state of its non-validity, is it permissible for Hinda to remarry another person herself, or for the guardian of Hinda to arrange her marriage with another person? Explain and you will be rewarded.

The Answer: Such a formal and customary writing is absolutely valid and causes the occurrence of divorce when it is without compulsion. It is explicitly mentioned in Al-Ashbah, Al-Bahr, Ad-Dur, Al-Khaniyah, Al-Hindiyah, and other famous books where it has been clearly explained. (T). So, in reality, if this writing was written by Hinda's husband of his own free will, then religiously, the divorce has certainly occurred. As for how far the woman and her guardians can act upon it, there are three scenarios: If the husband admits to this writing, then the proof of divorce is clear. And if he denies it, it is not at all valid until legal Islamic proof is established.

Arabic Quote	**Urdu Translation**
For handwriting resembles handwriting, so it is not considered, and the judge only gives judgment based on evidence, not merely on handwriting. We have investigated this in our Fatwa in the Book of Fasting and we have many transmissions from the great Imams.	Handwriting resembles other handwriting, therefore it will not be valid, and the judge decides based on evidence; he will not decide based solely on handwriting. We have done research on this in our Fatawa in the Book of Fasting and there we have well-cited the sayings of the great Imams. (T)

And if neither admission nor denial is known, for example, he has not yet returned from that city, in this case, the predominant opinion and strongest assumption is for them a proof for acting upon it. If there is doubt in the authenticity of this letter, then it is not at all permissible for Hinda to consider herself divorced. In Sharia, there is a heaven and earth difference between the sufficiency for action and the sufficiency for legal proof. Therefore, if the husband comes forward with denial and objection, their

predominant opinion will not work, and then there will be a need for proof by legal Islamic evidence. It is stated in Al-Khaniyah:

फ़तावा रज़विया, खंड 12

मसला 212: शाहजहाँपुर से, मुहम्मद खलील, मौलवी रियासत अली खान साहब शाहजहाँपुरी द्वारा प्रेषित, 13 ज़ुल-क़ादा 1317 हिजरी। दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि हिंदा का पति दूसरे शहर में है और उसने तलाक लिखकर और अंग्रेजी कानून के अनुसार रजिस्ट्री करवाकर डाक के माध्यम से हिंदा के अभिभावकों के पास भेज दिया है। अब सवाल यह है कि क्या यह लिखित तलाक, हालांकि उसने इसे गवाहों की मौजूदगी में लिखा था, शरीयत के अनुसार विश्वसनीय है या नहीं? और विश्वसनीयता न होने की स्थिति में, क्या हिंदा के लिए अपना दूसरा निकाह किसी अन्य व्यक्ति से करना या हिंदा के वली (अभिभावक) के लिए हिंदा का निकाह किसी दूसरे व्यक्ति से करवाना जायज़ है या नहीं? बयान करें, आपको पुण्य मिलेगा।

जवाब: ऐसी औपचारिक और प्रथागत लिखावट पूर्णतः विश्वसनीय है और तलाक होने का कारण बनती है जब यह बिना किसी दबाव के हो। इसका उल्लेख 'अल-अशबाह', 'अल-बहर', 'अद-दुर', 'अल-खनिया', 'अल-हिंदिया' और अन्य प्रसिद्ध पुस्तकों में स्पष्ट रूप से किया गया है। (त)। तो वास्तव में, यदि यह लिखावट हिंदा के पति ने अपनी मर्जी से लिखी है, तो धार्मिक रूप से तलाक निश्चित रूप से हो गया है। रही बात यह कि स्त्री और उसके अभिभावक इस पर किस हद तक अमल कर सकते हैं, इसकी तीन स्थितियां हैं: अगर पति इस लिखावट को स्वीकार करता है, तो तलाक का सबूत ज़ाहिर है, और अगर वह इनकार करता है, तो यह बिल्कुल भी विश्वसनीय नहीं है जब तक कि शरई प्रमाण (हुज्जत-ए-शरई) स्थापित न हो जाए।

अरबी उद्धरण

क्योंकि लिखावट लिखावट के समान होती है, इसलिए इसे विश्वसनीय नहीं माना जाता है, और काजी केवल सबूत के आधार पर फैसला करता है, न कि केवल लिखावट के आधार पर। हमने अपने फतावा की 'किताब-उस-सौम' में इसकी तहक़ीक़ की है और वहाँ हमने महान इमामों के बयानों को अधिकता से उद्धृत किया है।

उर्दू अनुवाद

लिखावट, लिखावट के समान होती है इसलिए विश्वसनीय नहीं होगी, और काजी दलील (सबूत) के आधार पर फैसला करता है, सिर्फ लिखावट के आधार पर फैसला नहीं करेगा। इसकी तहक़ीक़ हम अपने फतावा की 'किताब-उस-सौम' में कर चुके हैं और वहाँ हमने जलीलुल कद्र अइम्मा किराम के अक़वाल खूब नक़्ल किये हैं (त)।

और अगर इकरार (स्वीकृति) या इनकार कुछ मालूम नहीं है, उदाहरण के लिए वह अभी तक उस शहर से वापस नहीं आया है, तो इस स्थिति में 'अकबर-ए-राय' (प्रबल विचार) और 'ग़लबा-ए-ज़न' (प्रबल अनुमान) उनके लिए अमल करने के लिए प्रमाण है। अगर इस पत्र की सत्यता में संदेह है, तो हिंदा के लिए खुद को तलाकशुदा मानकर अमल करना बिल्कुल जायज़ नहीं है। शरीयत में 'अमल के लिए पर्याप्त' और 'सबूत के लिए पर्याप्त' होने में जमीन-आसमान का फर्क है। इसलिए, अगर पति इनकार और आपत्ति के साथ सामने आता है, तो उनकी प्रबल राय काम नहीं आएगी और फिर शरई प्रमाण द्वारा सबूत की आवश्यकता होगी। 'खनिया' में है:

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

مسئلہ ۲۱۲: از شاہ جہان پور محمد خلیل مرسلہ مولوی ریاست علی خاں صاحب شاہ جہان پوری ۱۳ ذی القعدہ ۱۳۱۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ کا شوہر کسی دوسرے شہر میں ہے اور اس نے طلاق تحریر کر کے اور رجسٹری بھی حسب قانون انگریزی اس پر کرا کے بذریعہ ڈاک کے پاس اولیائے ہندہ کے ارسال کی، تو اب سوال یہ ہے کہ تحریری طلاق حالانکہ اس کا عذر پر شاہدر بھی گواہوں کی لکھی، یہ شرعاً معتبر ہے یا نہیں؟ اور بحالت عدم اعتبار ہندہ کو نکاح ثانی اپنا دوسرے شخص سے کرنا یا ولی ہندہ کو ہندہ کا نکاح کسی شخص ثانی سے کرا دینا جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: ایسی مرسوم معہودہ تحریر مطلقاً معتبر و موجب وقوع طلاق ہے جبکہ بلا اکراہ ہو نص علی ذلك فی الاشباہ والبحر والدر و الخانیة والهندیة وسائر الاسفار الغر (اشباہ، بحر، در، خانیہ، ہندیہ اور باقی مشہور کتب میں اس کو واضح طور پر بیان کر دیا ہے۔ت) تو واقع میں اگر یہ تحریر شوہر ہندہ نے برضائے خود لکھی دیانۃً ضرور طلاق واقع ہو گئی۔ رہا یہ کہ زن واولیائے زن اس پر کہاں تک کار بند ہو سکتے ہیں، اسکی تین صورتیں ہیں: اگر شوہر اس تحریر کا اقرار کرتا ہے تو ثبوت طلاق ظاہر، اور اگر منکر ہے تو ہر گز معتبر نہیں جب تک حجت شرعیہ قائم نہ ہو۔

عربی عبارت **اردو ترجمہ**

فان الخط یشبه الخط فلا یعتبر والقاضي انما یقضی بالحجة لا بمجرد الخط وقد حققناه في کتاب الصوم من

خط، خط کے مشابہ ہوتا ہے لہٰذا معتبر نہ ہوگا، اور قاضی دلیل کی بناء پر فیصلہ کرتا ہے صرف خط کی بناء پر فیصلہ نہیں کرے گا، اس کی تحقیق ہم اپنے فتاوی کی کتاب الصوم

عربی عبارت	اردو ترجمہ
فتاوانا واکثر نافیه من النقول عن الائمة الفحول۔	میں کر چکے ہیں اور وہاں ہم نے جلیل القدر ائمہ کرام کے اقوال خوب نقل کئے ہیں (ت)

اور اگر اقرار انکار کچھ معلوم نہیں مثلاً ہنوز اس شہر سے واپس نہ آیا اس صورت میں اکبر رائے و غلبہ ظن ان کے لئے حجت کار بندی ہے، اگر اس خط کی صحت میں شبہ ہو تو ہندہ کو ہر گز حلال نہیں کہ اپنے آپ کو مطلقہ عمل کر سکتے ہیں، شرعاً کافی لخصۃ العمل و مغنی حاجت الاثبات میں فرق زمین و آسمان کا ہے، لہٰذا اگر شوہر انکار و اعتراض سے پیش آئے ان کی اکبر رائے کام نہ دے گی اور پھر ثبوت بہ حجت شرعیہ کی حاجت پڑے گی، خانیہ میں ہے:

Fatawa Razawiya - Volume 12

If a woman's husband has disappeared and a reliable Muslim informs her that her husband has given her three divorces, or said her husband has passed away, or an unreliable Muslim brings her a divorce decree from her husband and the woman does not know if this is her husband's letter or not, but her strong belief is that it is true and correct, then there is no harm in the woman completing the waiting period ('iddah) and remarrying. (T)

It is in 'Hindiya':

They mentioned in 'Kitab al-Aqdiya' that if the Caliph issued a decree to the judges via a letter, and the Caliph gave the verdict and order in the presence of two witnesses, then this decree of the Caliph will be like 'Kitab al-Qadhi ila al-Qadhi' (a judge's letter to another judge). Therefore, that letter of the Caliph will not be acceptable without those conditions which we mentioned in 'Kitab al-Qadhi'. However, if that letter of the Caliph is regarding someone's appointment or dismissal, then it will be accepted even without the aforementioned conditions and the recipient will act upon it, provided the recipient has internal satisfaction that this is correct, then he will act upon it. And this letter will be like correspondence in the mutual dealings of the general public, where action is permissible for the recipient upon internal satisfaction; this too will be like that. And Allah Almighty knows best. (T)

---

[1] Fatawa Qadhi Khan, Kitab al-Hazr wal-Ibahah, Naval Kishore, Lucknow, 4/917 [2] Fatawa Hindiya, Kitab al-Qadha, Chapter 23, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 3/496

फतावा रज़विया - जिल्द 12

यदि किसी महिला का पति गायब हो गया है और एक विश्वसनीय मुस्लिम ने आकर कहा कि उसके पति ने उसे तीन तलाक दे दिए हैं, या कहा कि उसका पति मर गया है, या कोई अविश्वसनीय मुस्लिम आकर उस महिला के पति का तलाकनामा दिखा दे, महिला को पता नहीं है कि यह उसके पति का पत्र है या नहीं, लेकिन महिला का प्रबल अनुमान यह है कि यह सच और सही है, तो महिला के लिए इद्दत गुज़ार कर निकाह कर लेने में कोई हर्ज नहीं है। (त)

'हिन्दिया' में है:

उन्होंने 'किताब अल-अक़्ज़िया' में उल्लेख किया कि यदि खलीफा ने काज़ियों (न्यायाधीशों) के नाम कोई आदेशनामा पत्र के माध्यम से जारी किया हो और दो गवाहों की मौजूदगी में खलीफा ने फैसला और आदेश दिया हो, तो खलीफा का यह आदेशनामा 'किताब अल-क़ाज़ी इला अल-क़ाज़ी' की तरह होगा, इसलिए खलीफा का वह पत्र उन शर्तों के बिना स्वीकार्य नहीं होगा जिनका उल्लेख हमने 'किताब अल-क़ाज़ी' में किया है। लेकिन यदि खलीफा का वह पत्र किसी की नियुक्ति या पदमुक्ति के बारे में हो, तो उसे उक्त शर्तों के बिना भी स्वीकार कर लिया जाएगा और प्राप्तकर्ता उस पर अमल करेगा, बशर्ते प्राप्तकर्ता को दिली इत्मीनान (आंतरिक संतोष) हो कि यह सही है, तो वह उस पर अमल करेगा। और यह पत्र सामान्य जनता के आपसी लेन-देन में पत्र-व्यवहार की तरह होगा कि प्राप्तकर्ता को दिली इत्मीनान होने पर अमल करना जायज़ है, यह भी वैसा ही होगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

---

[1] फतावा काज़ी खाँ, किताब अल-हज़्र वल-इबाहह, नवल किशोर, लखनऊ, 4/917 [2] फतावा हिन्दिया, किताब अल-क़ज़ा, तेईसवाँ अध्याय, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 3/496

पृष्ठ 688 में से 446

فتاوٰی رضویہ - جلد دوازدہم

اگر کسی عورت کا خاوند غائب ہو چکا ہے تو ایک ثقہ مسلمان نے آکر کہا کہ اس کے خاوند نے اس کو تین طلاقیں دے دی ہیں، یا کہا اس کا خاوند فوت ہو گیا ہے، یا کوئی غیر ثقہ مسلمان آکر اس عورت کے خاوند کا طلاق نامہ دکھا دے، عورت کو معلوم نہیں کہ یہ اس کے خاوند کا خط ہے یا نہیں، لیکن عورت کا غالب گمان یہ ہے کہ حق ودرست ہے تو عورت کو عدت گزار کر نکاح کر لینے میں کوئی حرج نہیں۔ (ت)

ہندیہ میں ہے:

انہوں نے کتاب الاقضیہ میں ذکر کیا کہ اگر خلیفہ نے قاضیوں کے نام کوئی حکم نامہ بذریعہ خط جاری کیا ہو اور دو گواہوں کی موجودگی میں خلیفہ نے فیصلہ اور حکم دیا، تو خلیفہ کا یہ حکم نامہ کتاب القاضی الی القاضی کی طرح ہو گا لہذا خلیفہ کا وہ خط ان شرائط کے بغیر قابل قبول نہ ہو گا جن کو ہم نے کتاب القاضی میں ذکر کیا ہے، لیکن اگر خلیفہ کا وہ خط کسی کی تقرری یا معزولی کے بارے میں ہو تو ان مذکورہ شرائط کے بغیر بھی قبول کر لیا جائے گا اور مکتوب الیہ اس پر عمل کرے گا بشرطیکہ مکتوب الیہ کو دلی اطمینان ہو کہ یہ درست ہے لہذا وہ عمل پیرا ہوگا، اور یہ خط، عام رعایا کی آپس کے معاملات میں خط و کتابت کی طرح ہو گا کہ مکتوب الیہ کو دلی اطمینان پر عمل جائز ہے، یہ بھی ایسے ہی ہو گا اھ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

---

1 فتاوٰی قاضی خاں کتاب الخطر والاباحۃ نولکشور لکھنؤ ۴ / ۹۱۷ 2 فتاوٰی ہندیہ کتاب القضاء الباب الثالث والعشرون نورانی کتب خانہ پشاور ۳ / ۴۹۶

Fatawa Razawiyya | Volume 12

Issue 215: From Baroda, state of Gujarat, Moti Bagh Baria, sent by Syed Ghulam Sarwar Sahib, 24th Rabi' al-Akhir 1312 AH.

What do the scholars of the Sharia of Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him) say regarding this matter: A person went from Ajmer Sharif and sent a letter to a congregation (jama'at) in Baroda, writing a divorce to his wife, saying, "Tell my wife that I have given her one divorce." The congregation read the letter to the woman. After two months, he arrived in Baroda. Is the woman still in the marriage or has she left it? Please provide an answer to the question; may the Lord Almighty grant you a reward.

The Answer:

If, in reality, this person dictated this letter to you or had someone else write the aforementioned phrase, telling them to write these words regarding his wife, then from the moment those words left his pen or tongue, one divorce was effective on the woman, and the count of the 'Iddah (waiting period) began from that very moment. This is true even if the letter hadn't reached Baroda, or if he hadn't sent it himself after writing it, or if the recipients hadn't read to the woman the words of divorce written or told. Since there was no condition like "divorce will happen when this letter reaches or is read," the mere writing or dictating of them caused the divorce. It didn't depend on sending, reaching, or reading. However, since it is a revocable divorce (talaq-e-raj'i), the woman will not leave the marriage until the 'Iddah period has passed. During the days of 'Iddah, he can take her back (ruju') without a new marriage (nikah), for example, by saying verbally, "I have taken her back into my marriage." She will remain in his wedlock as before, and the woman's consent is not required for this. And if the 'Iddah has passed, he can remarry her with her consent; there is no need for halala, provided he hadn't given two divorces before this. If, in reality, this was not the act of that person but someone else wrote it in his name of their own accord, then divorce did not occur. In the view of others, divorce will only be established if he admits to the letter, or if he denies it, then upright Sharia witnesses testify that he performed this action in their presence. Without this, merely saying that the letter appears to be in his handwriting is of no use. Yes, if in reality this was his action and he denied it and there are no witnesses, then the sin of it is upon him, and there is no sin on the woman. It is in Mabsut Imam Muhammad, Khulasa, Bazzaziya, Ashbah, Shami, Kifaya, and Radd al-Muhtar:

Arabic

If it was written in the form of a message, addressed and titled, it is established by his confession or by evidence.

Urdu Translation

If a divorce deed was written, and it was written in the manner of being sent with a proper heading, and it is proven by the writer's confession or by witnesses, then it is [like] verbal...

फ़तावा रज़विया | जिल्द 12

मसला 215: बड़ौदा, गुजरात राज्य, मोती बाग बरिया से, प्रेषक सैयद गुलाम सरवर साहब, 24 रबी अल-आख़िर शरीफ 1312 हिजरी।

मुहम्मद (उन पर अल्लाह की शांति और आशीर्वाद हो) की शरीयत के विद्वान इस मामले में क्या फरमाते हैं: एक व्यक्ति ने अजमेर शरीफ से जाकर बड़ौदा में एक जमात के नाम पत्र लिखकर अपनी पत्नी को एक तलाक भेजा और कहा कि "मेरी पत्नी से कह देना कि मैंने उसे एक तलाक दे दिया है।" जमात ने महिला को पत्र सुना दिया। दो महीने बाद वह बड़ौदा आया। क्या महिला निकाह में रही या निकल गई? प्रश्न का उत्तर प्रदान करें; ईश्वर आपको इसका प्रतिफल प्रदान करे।

उत्तर:

यदि वास्तव में इस व्यक्ति ने यह पत्र आपसे लिखवाया या किसी और को उपरोक्त इबारत (वाक्यांश) बताकर लिखवाई कि मेरी पत्नी के बारे में ये शब्द लिख दो, तो जिस समय उसकी कलम या जुबान से ये शब्द निकले, उसी समय से महिला पर एक तलाक पड़ गया और उसी समय से इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) की गिनती शुरू होगी। भले ही यह पत्र बड़ौदा न पहुँचा हो, या उसने स्वयं लिखकर न भेजा हो, या जिन्हें पत्र लिखा गया था उन्होंने महिला को तलाक के लिखे या बताए शब्द न सुनाए हों। चूंकि इनमें ऐसी कोई शर्त नहीं है कि "जब यह पत्र पहुँचे या सुनाया जाए तब तलाक हो", तो उनका लिखना या बताना ही तलाक का कारण बन गया। भेजने, पहुँचने या सुनाने पर कोई निर्भरता नहीं रही। लेकिन चूंकि यह तलाक़-ए-रजी (प्रतिसंहरणीय तलाक) है, इसलिए महिला निकाह से तब तक नहीं निकलेगी जब तक कि इद्दत की अवधि समाप्त न हो जाए। इद्दत के दिनों में बिना नए निकाह के वह महिला से रुजू (वापस लेना) कर सकता है, उदाहरण के लिए जुबान से कह दे कि "मैंने उसे फिर से अपने निकाह में ले लिया है", वह पहले की तरह उसके वैवाहिक बंधन में रहेगी, जिसमें महिला की सहमति भी आवश्यक नहीं है। और यदि इद्दत बीत गई, तो वह महिला की सहमति से उससे नए सिरे से निकाह कर सकता है, हलाला की कोई आवश्यकता नहीं है, बशर्ते उसने इससे पहले दो तलाक न दिए हों। और यदि वास्तव में यह उस व्यक्ति का काम नहीं है बल्कि किसी और ने अपनी ओर से उसके नाम से लिखकर भेजा है, तो तलाक नहीं हुआ। दूसरों के नज़दीक तलाक उसी समय साबित होगा जब वह उस पत्र को स्वीकार करे, या यदि वह इनकार करे तो शरीयत के विश्वसनीय गवाह गवाही दें कि उसने हमारे सामने यह कार्रवाई की। इसके बिना केवल इतनी बात कि पत्र उसके हाथ

का लिखा हुआ मालूम होता है, किसी काम का नहीं है। हाँ, अगर वास्तव में यह उसकी कार्रवाई थी और वह मुकर गया और गवाह नहीं हैं, तो उसका पाप उसी पर है, महिला पर कोई पाप नहीं है। मबसूत इमाम मुहम्मद, खुलासा, बज़ज़िया, अश्बाह, शामी, किफ़ाया और रद अल-मुह्तार में है:

अरबी	उर्दू अनुवाद
यदि इसे संदेश के रूप में लिखा गया था, शीर्षक और पते के साथ, तो यह उसके इकरार (स्वीकृति) या गवाहों द्वारा सिद्ध होता है।	यदि तलाकनामा लिखा गया हो, और वह औपचारिक शीर्षक के साथ भेजने के अंदाज़ में लिखा गया हो, और लिखने वाले के इकरार से या गवाहों से उसका प्रमाण हो, तो वह जुबानी...

पृष्ठ 447/688

مسئلہ ۲۱۵: از بڑودہ ملک گجرات موتی باغ بریا مرسلہ سید غلام سرور صاحب ۲۴ ربیع الآخر شریف ۱۳۱۲ھ

شرع محمد صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم کے عالم اس مسئلہ میں کیا ارشاد فرماتے ہیں ، ایک شخص نے اجمیر شریف سے جا کر اپنی عورت کو بڑودہ میں بذریعہ خط ایک طلاق بنام جماعت لکھ کر روانہ کیا میری عورت کو کہہ دینا میں نے ایک طلاق اپنی عورت کو دی ، جماعت نے عورت کو خط سنا دیا ، دو مہینے کے بعد بڑودہ میں آیا ، عورت نکاح میں رہی یا نکل گئی ؟ سوال کے جواب عطا فرمائے ثواب آپ کو خداوند تعالیٰ عطا فرمائے گا۔

الجواب:

اگر واقع میں اس شخص نے یہ خط آپ کو لکھایا دوسرے کو عبارۃ مذکورہ بتا کر لکھوایا کہ میری عورت کی نسبت یہ الفاظ لکھ دے تو جس وقت اس کے قلم یا زبان سے یہ لفظ نکلے اسی وقت سے عورت ایک طلاق پڑگئی اور اسی وقت سے عدت کا شمار ہوگا اگرچہ یہ خط بڑودہ نہ پہنچا یا وہ خود ہی لکھ کر نہ بھیجتا یا مکتوب الیہم عورت کو نہ سناتے کہ جو الفاظ طلاق لکھے یا بتائے جب ان میں کوئی شرط نہیں کہ یہ خط جب پہنچے یا سنایا جائے اس وقت طلاق ہو تو ان کا لکھنا یا بتانا ہی طلاق کا موجب ہو گیا بھیجنے پہنچنے سنانے پر توقف نہ رہا مگر از انجا کہ طلاق رجعی ہے عورت نکاح سے نہ نکلے گی جب تک عدت نہ گزر جائے ۔ ایام عدت میں بے تجدید نکاح عورت سے رجعت کر سکتا ہے مثلاً زبان سے کہہ دے میں نے اسے اپنے نکاح میں پھر لیا، بدستور اس کی زوجیت میں باقی رہے گی جس میں عورت کی رضامندی بھی ضرور نہیں ، اور اگر عدت گزر

گئی تو برضائے عورت اس سے از سر نو نکاح کر سکتا ہے کچھ حلالہ کی حاجت نہیں جبکہ اس سے پہلے دو طلاقیں نہ دے چکا ہو۔ اور اگر واقع میں یہ اس شخص کا کام نہیں بلکہ کسی اور نے بطور خود اس کے نام سے لکھ بھیجا ہے تو طلاق نہ واقع ہوئی کہ دوسرے کے نزدیک طلاق اسی وقت ثابت ہوگی جبکہ اسے اس خط کا اقرار ہو یا انکار کرے تو گواہان عادل شرعی گواہی دیں کہ اس نے ہمارے سامنے یہ کاروائی کی ، بغیر اس کے صرف اتنی بات کہ خط اس کے ہاتھ کا لکھا معلوم ہوتا ہے بیکار آمد نہیں ، ہاں اگر واقع میں یہ کاروائی اسکی تھی اور منکر ہو گیا اور گواہ نہیں تو اس کا وبال اسی پر ہے ، عورت پر گناہ نہیں ۔ مبسوط امام محمد و خلاصہ و بزاز یہ و اشباہ و شامی و کفایہ و ردالمحتار میں ہے :

عربی **اردو ترجمہ**

ان کتب علی وجه الرسالة اگر طلاق نامہ تحریر کیا ہو تو باقاعدہ سرنامہ کے ساتھ بھیجنے کے

مصدرا معنونا ثبت ذلك انداز میں لکھا گیا ہو اور لکھنے والے کے اقرار سے یا گواہوں سے

باقراره او بالبينة اس کا ثبوت ہو تو وہ زبانی

Fatawa Razawiyya (Header Right) Volume 12 (Header Left)

"Like speech[1]." It will be effective like a divorce. (T)

It is stated in Fatawa Qazi Khan and Alamgiri: "If he sends a divorce [in writing], then as he wrote, it occurs, and the waiting period ('Iddah) becomes obligatory for her from the time of writing. And if it is conditional on the arrival of the letter, then as long as it has not reached her, it does not [occur][2]." - Summarized. If a written divorce has been sent, then whatever is written in it, that many divorces will take place, and the 'Iddah will be counted from the time of writing. And if the divorce was made conditional on receiving the letter, it will not occur until it arrives. Summarized. (T)

It is in Khaniyah: "A man said to another, 'Inform my wife of her divorce' or say to her, 'She is divorced,' it occurs immediately, just as if he had said, 'Write to my wife that she is divorced[3]'." - Summarized. A person said to another, "Give information of divorce to my wife," or said, "Tell my wife that she is a divorced woman," then divorce will occur from that very moment, just as if someone said, "Write to my wife that she is a divorced woman," then the divorce will occur at that very moment. Summarized. (T)

It is in Hidayah: "Because the writing resembles [other] writing, so it is not established[4]." Writing resembles writing, therefore it will not be considered reliable. (T)

The rest of the research on this issue is in our Fatawa. And Allah Almighty knows best. Problem 216: From Chhattisgarh state, Raipur city, Baijnath Bara locality, house of Munshi Rahim Bakhsh (Petition Writer), sent by Munshi Muhammad Ishaq Sahib, 10 Rajab 1312 AH. To the presence of the blessed personage, the repository of divine knowledge and the mine of God-given wisdom, collector of branches and principles, Maulana Sahib.

Footnotes: 1 Rad al-Muhtar, Chapter: Kitab al-Qadi ila al-Qadi, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/353. 2 Fatawa Hindiyyah, Section Six: On divorce by writing, Nurani Kutub Khana, Peshawar, 1/378; Fatawa Qazi Khan, Section on divorce by writing, Nawal Kishore, Lucknow, 2/218. 3 Fatawa Qazi Khan, Book of Divorce, First Chapter: On explicit divorce, Nawal Kishore, Lucknow, 2/210. 4 Hidayah, Book of: Kitab al-Qadi ila al-Qadi, Matba' Yusufi, Lucknow, 3/139.

फतावा रजविया (शीर्षक दायां) जिल्द बारह (शीर्षक बायां)

"संबोधन के समान[1]।" यह तलाक की तरह प्रभावी होगा। (त)

फतावा काज़ी खाँ और आलमगीरी में है: "यदि उसने तलाक [लिखित में] भेजा, तो जैसा उसने लिखा, वह घटित हो जाता है, और लिखने के समय से उस पर इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) अनिवार्य हो जाती है। और यदि इसे पत्र के आने पर निर्भर किया गया है, तो जब तक वह उसके पास नहीं पहुँचता, तब तक नहीं [होता][2]।" - संक्षेपित। यदि लिखित तलाक भेजी गई हो तो जो कुछ उसमें लिखा है उतनी तलाकें वाक़े(घटित) हो जाएंगी, और तहरीर (लेखन) के वक़्त से इद्दत शुमार (गिनी) की जाएगी। और अगर तलाक को ख़त मिलने पर मुअल्लक (निर्भर) किया हो तो आने से पहले तलाक न होगी। संक्षेपित। (त)

खानिया में है: "एक आदमी ने दूसरे से कहा, 'मेरी पत्नी को उसकी तलाक की सूचना दे दो' या उससे कहा, 'वह तलाकशुदा है', तो यह तुरंत घटित हो जाता है, जैसे कि उसने कहा हो, 'मेरी पत्नी को लिखो कि वह तलाकशुदा है[3]'।" - संक्षेपित। एक व्यक्ति ने दूसरे से कहा कि मेरी बीवी को तलाक की इत्तला (सूचना) दे दो, या कहा कि मेरी बीवी से कहो कि वह तलाक वाली है, तो उसी वक़्त से तलाक होगी, जैसे किसी ने कहा हो मेरी बीवी को लिख दो कि वह तलाक वाली है, तो उसी वक़्त तलाक हो जाएगी। संक्षेपित। (त)

हिदाया में है: "क्योंकि लेखन [अन्य] लेखन के सदृश होता है, इसलिए यह सिद्ध नहीं होता[4]।" लेखन, लेखन के सदृश होता है इसलिए विश्वसनीय नहीं होगा। (त)

इस मसले की बाक़ी तहक़ीक़ (शोध) हमारे फतावा में है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। मसला 216: मुल्क छत्तीसगढ़, शहर रायपुर, मोहल्ला बैजनाथ बाड़ा, मकान मुंशी रहीम बख्श अर्जी नवीस, प्रेषक मुंशी मोहम्मद इसहाक साहब, 10 रजब 1312 हिजरी। बखिदमत सरापा बरकत जनाब फैज़ मआब उलूम-ए-सुब्हानी व मा'दन-ए-यज़दानी जामे फ़ुरआ व उसूल मौलाना साहब।

पाद-टिप्पणी: 1 रद-उल-मुख्तार, अध्याय: किताब अल-काज़ी इला अल-काज़ी, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/353। 2 फतावा हिंदिया, छठा खंड: लिखित तलाक पर, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 1/378; फतावा काज़ी खाँ, लिखित तलाक पर खंड, नवल किशोर, लखनऊ, 2/218। 3 फतावा काज़ी खाँ, किताबुल तलाक, पहला अध्याय: स्पष्ट तलाक पर, नवल किशोर, लखनऊ, 2/210। 4 हिदाया, किताब: किताब अल-काज़ी इला अल-काज़ी, मतबा यूसुफी, लखनऊ, 3/139।

فکالخطاب[1]۔ طلاق کی طرح نافذالعمل ہوگا۔ (ت)

فتاوی قاضی خاں و عالمگیری میں ہے: ان ارسل الطلاق فکما کتب یقع وتلزمھا العدۃ من وقت الکتابۃ وان علق بمجیئ الکتاب فمالم یجیئ الیھا لا[2] اھ ملخصًا۔ اگر تحریری طلاق بھیجی ہو تو جو کچھ اس میں لکھا ہے اتنی طلاقیں واقع ہو جائیں گی، اور تحریر کے وقت سے عدت شمار ہو جائے گی اور اگر طلاق کو خط ملنے پر معلق کیا ہو تو آنے سے پہلے طلاق نہ ہوگی اھ ملخصاً۔ (ت)

خانیہ میں ہے: رجل قال لغیرہ اخبر امرأتی بطلاقھا اوقل لھا انھا طالق طلقت للحال کما لوقال اکتب الی امرأتی انھا طالق[3] اھ ملخصًا۔ ایک شخص نے دوسرے کو کہا کہ میری بیوی کو طلاق کی اطلاع دے دو، یا کہا کہ میری بیوی کو کہو کہ وہ طلاق والی ہے، تو اسی وقت سے طلاق ہوگی، جیسے کسی نے کہا تو میری بیوی کو لکھ کر وہ طلاق والی ہے، تو اسی وقت طلاق ہو جائے گی اھ ملخصاً (ت)

ہدایہ میں ہے: لان الکتاب یشبہ الکتاب فلا یثبت[4]۔ تحریر، تحریر کے مشابہ ہوتی ہے لہذا معتبر نہ ہوگی۔ (ت)

اس مسئلہ کی باقی تحقیق ہمارے فتاوی میں ہے۔ واللہ تعالی اعلم مسئلہ ۲۱۶: از ملک چھتیس گڑھ شہر رائےپور محلہ بیجناتھ باڑہ مکان منشی رحیم بخش عرضی نویس مرسلہ منشی محمد اسحق صاحب ۱۰ رجب ۱۳۱۲ھ بخدمت سراپا برکت جناب فیض مآب علوم سبحانی و معدن یزدانی جامع فروع واصول مولانا صاحب

1 ردالمختار باب کتاب القاضی الی القاضی داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۳۵۳ 2 فتاوی ہندیہ الفصل السادس فی الطلاق بالکتابۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۷۸، فتاوی قاضی خاں فصل فی الطلاق بالکتابۃ نولکشور لکھنؤ ۲/ ۲۱۸ 3 فتاوی قاضی خاں کتاب الطلاق الفصل الاول فی صریح الطلاق نولکشور لکھنؤ ۲/ ۲۱۰ 4 ہدایہ کتاب القاضی الی القاضی مطبع یوسفی لکھنؤ ۳/ ۱۳۹

Fatawa Ridawiyyah Volume 12

May Allah preserve him. After greetings, the humble servant Muhammad Ishaq submits that the fatwa of his Eminence reached me, and it brought immense joy. May Allah Almighty grant you a great reward in accordance with the saying, "The best of people are those who benefit people." (T - Translator's note). The request in your blessed service is that Talewar Khan admits; he has admitted not once but a thousand times. His statement is only this: "Indeed, I wrote this letter. Now, according to it, what is the Shariah ruling for me?" When this letter arrived, Sarmast Khan Sahib read it word for word to Talewar Khan's wife, Umdah, and her father, Najm Khan. In this situation, it is desired to know what the Shariah ruling is regarding Umdah. Can Talewar Khan force her to remarry him or not? And since the waiting period (Iddah) has passed, does Umdah have the choice to marry whoever she wants? And regarding the ruling and occurrence of divorce, does only the first letter matter, or others too? Please clarify and be rewarded.

The Answer: Since Talewar Khan is the writer of the said letter and Sarmast Khan, at Talewar Khan's request, read this letter word for word to both of them as mentioned in the question, the Shariah ruling regarding Umdah in the query is that two irrevocable divorces (Talaq-e-Ba'in) took place upon her. One was at the very time Talewar Khan wrote these words: "I give you permission to marry her to some other person, so marry her to someone else. I give permission for her marriage, that marry her to some other person, so marry her to another person, I give permission for the marriage of the wife." Indeed, these are metaphors of divorce, and the wording of this letter from beginning to end is clear in the intention of ending the marriage, as is not hidden from any expert, and we have explained it previously (T). And from these metaphors, irrevocable divorce (Talaq-e-Ba'in) occurs.

It is in Kanz al-Daqaiq:

In words other than these [the three explicit words], it is irrevocable (Ba'in), and it is Ba'in, Haram, [and] seek husbands (ibtahgi al-azwaj).	In words other than the three mentioned ones, it will be irrevocable divorce (Talaq-e-Ba'in). And the words for irrevocable divorce are: 'Ba'in' (irrevocable), 'Haram' (prohibited), 'Search for a husband' - End of quote summarized (T).

Therefore, upon careful reading of the letter, divorce has occurred, and the counting of the waiting period (Iddah) should start from that very time. It is in Fatawa Qadi Khan:

If he sent a divorce [in writing], then it is as he wrote, and it is binding upon her.	If he sent a divorce in writing, then whatever was written, that divorce has occurred.

[1]Kanz al-Daqaiq, Chapter on Metaphors, H.M. Saeed Company Karachi, p. 116.

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

अल्लाह उन्हें सुरक्षित रखे। अभिवादन के बाद, विनम्र सेवक मुहम्मद इसहाक निवेदन करता है कि हुज़ूर पुर नूर का फ़तवा पहुँचा और अत्यंत प्रसन्नता हुई। अल्लाह तआला आपको 'खैरुन नास मन यनफ़ाउन नास' (लोगों में सबसे अच्छा वह है जो लोगों को लाभ पहुँचाए। त) के अनुसार महान पुरस्कार प्रदान करेगा। आपकी बरकत वाली सेवा में निवेदन यह है कि तालेवर खाँ स्वीकार करता है; वह एक बार नहीं बल्कि हज़ार बार स्वीकार कर चुका है। उसका कथन केवल यह है कि "निश्चित रूप से यह पत्र मैंने ही लिखा है। अब इसके अनुसार शरीअत की दृष्टि से मेरे लिए क्या आदेश है?" जब यह पत्र आया, तो सरमस्त खाँ साहब ने तालेवर खाँ की पत्नी उम्दा और उसके पिता नज्म खाँ को अक्षर-अक्षर पढ़ कर सुना भी दिया। इस स्थिति में, यह जानना वांछित है कि शरीअत की दृष्टि से उम्दा के अधिकार में क्या आदेश है? क्या तालेवर खाँ उसे अपने साथ पुनः निकाह करने के लिए मजबूर कर सकता है या नहीं? और चूंकि इद्दत की अवधि बीत चुकी है, तो क्या उम्दा को जिससे चाहे निकाह करने का अधिकार है या नहीं? और तलाक़ के आदेश और होने में क्या केवल पहले पत्र का प्रभाव है या अन्यों का भी? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: चूंकि तालेवर खाँ स्वयं उस पत्र को लिखने वाला है और सरमस्त खाँ ने तालेवर खाँ के अनुरोध पर यह पत्र उन दोनों को अक्षर-अक्षर सुनाया जैसा कि प्रश्न में उल्लेख है, तो पूछताछ की गई स्थिति में उम्दा के संबंध में शरीअत का आदेश यह है कि उस पर दो तलाक़-ए-बाइन (अटल तलाक़) हो गईं। एक तो उसी समय जब तालेवर खाँ ने ये शब्द लिखे थे कि "मैं आपको अनुमति देता हूँ कि उसका निकाह किसी दूसरे व्यक्ति के साथ कर दो कि दूसरे से निकाह ज़न अनुमति देता हूँ कि उसका निकाह किसी दूसरे व्यक्ति के साथ कर दो कि दूसरे से निकाह ज़न की अनुमति देनी..." निश्चित रूप से ये तलाक़ के संकेत (कनायात) हैं और इस पत्र की शब्दावली आदि से अंत तक निकाह को समाप्त करने की नीयत में स्पष्ट है जैसा कि किसी विशेषज्ञ से छिपा नहीं है और हमने इसे पहले ही स्पष्ट कर दिया है (त)। और इन संकेतों से तलाक़-ए-बाइन ही पड़ती है।

'कंज उद-दक़ाइक' में है:

"अन्य शब्दों में वह बाइन है, और वह बाइन, हराम, पतियों की तलाश करो उल्लिखित तीन शब्दों के अतिरिक्त अन्य शब्दों में तलाक़-ए-बाइन होगी और तलाक़-ए-बाइन के शब्द ये हैं: 'बाइन'

(इब्तगी अल-अज़वाज) है।" - उद्धरण समाप्त।	(अटल), 'हराम' (वर्जित), 'तो शौहर तलाश कर'। - उद्धरण समाप्त, संक्षेपित (त)।

अतः पत्र को ध्यान से पढ़ने पर तलाक़ हो गई और उसी समय से इद्दत की गणना शुरू की जाए।
'फ़तावा क़ाज़ी खाँ' में है:

"यदि उसने लिखित में तलाक़ भेजी, तो वह वैसा ही है जैसा उसने लिखा, और वह उस पर अनिवार्य है।"	यदि तलाक़ लिखकर भेजी, तो जो लिखा वह तलाक़ प्रभावी हो गई।

[1]कंज उद-दक़ाइक, कनायात का अध्याय, एच. एम. सईद कंपनी कराची, पृष्ठ 116।

पृष्ठ 688 का 449

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

سلّمہ اللہ تعالیٰ بعد از آداب کے بندہ محمد اسحٰق عرض رساں ہے کہ حضور پر نور کا فتویٰ پہنچا کمال درجہ کی خوشی حاصل ہوئی، اللہ تعالیٰ آپ کو اجرِ عظیم بفحوائے خیر الناس من ینفع الناس (لوگوں میں سے بہتر ہو جو لوگوں کو نفع پہنچائے۔ ت) عطا فرمائے گا، التماس خدمتِ بابرکت میں یہ ہے کہ طالعور خاں اقرار کرتا ہے ایک مرتبہ نہیں ہزار مرتبہ اقرار کر چکا ہے فقط اس کا مقولہ یہ ہے کہ بیشک یہ خط تو میں نے تحریر کیا ہے اب اس کے موافق مجھے شرع سے کیا حکم ہوتا ہے اور جب یہ خط آیا تو سرمست خاں صاحب نے طالعور خاں کی زوجہ عمدہ اور اس کے والد نجم خاں کو حرف بحرف پڑھ کر سنا بھی دیا، اس صورت میں یہ معلوم کرنا منظور ہ کہ از روئے شرع عمدہ کے حق میں کیا حکم ہے، طالعور خاں اس پر اپنے ساتھ نکاح کر لینے کا جبر کر سکتا ہے یا نہیں اور عمدہ کو بوجہ اس کے کہ عدت گزر چکی جس سے چاہے نکاح کر لینے کا اختیار ہے یا نہیں اور حکم و وقوع طلاق میں کیا صرف پہلے خط کو دخل ہے یا اوروں کو بھی؟ بینوا توجروا۔

الجواب: جبکہ طالعور خاں اسی خط کے لکھنے کا مقرہ اور سرمست خاں نے حسب درخواست طالعور خاں یہ خط ان دونوں کو حرف بحرف سنا بھی جیسا کہ سوال میں مذکور ہے تو مستفسرہ میں عمدہ کے حق میں حکم شرع یہ ہے کہ اس پر دو طلاقیں بائن ہو گئیں ایک تو اسی وقت جبکہ طالعور خاں نے یہ لفظ لکھے تھے کہ آپ کو اجازت دیتا ہوں کہ اس کا نکاح کسی دوسرے شخص کے ساتھ کر دو کہ دوسرے سے نکاح زن اجازت دیتا ہوں کہ اُس کا نکاح کسی دوسرے شخص کے ساتھ کر دو کہ دوسرے سے نکاح زن کی اجازت دینی بیشک کنایاتِ طلاق سے ہے اور اس خط کی عبارت اول تا آخر نیتِ ازالہ نکاح میں ظاہر کما لایخفی علی کل ماہر وقد بیناہ فی ماسیبق

(جیسا کہ کسی ماہر پر مخفی نہیں ہے اور ہم نے اس کو پہلے بیان کر دیا ہے۔ ت) او ان کنایوں سے طلاق بائن ہی پڑتی ہے۔

کنزالدقائق میں ہے:

في غیرھا بائنۃ وھی بائن، مذکورہ الفاظ ثلاثہ کے غیر میں طلاق بائنہ ہوگی اور طلاق بائنہ کے حرام، ابتغی الازواج اھ الفاظ یہ ہیں: بائن، حرام، تو شوہر تلاش کر اھ ملخصاً (ت)

تو بغورِ تحریر خط طلاق ہو گئی اور اسی وقت سے عدت کا شمار لیا جائے۔ فتاوی قاضی خاں میں ہے:

ان ارسل الطلاق فکما کتب وتلزمہا اگر طلاق لکھ کر بھیجی تو جو لکھا وہ طلاق واقع ہو گئی،

[1]کنزالدقائق باب لکنایات ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۱۱۶

Fatawa Rizwia, Volume 12

“The ‘Iddah (waiting period) begins from the time of writing [the divorce letter]... (Summary)” And for the wife, ‘Iddah will be mandatory from the time of writing... (Summary). (T)

And secondly, at the time when this letter, in fine handwriting, was read out to [the woman] Umda and her father by Sarmast Khan, stating that Sarmast Khan should convey the writing of Tala’ur Khan so that divorce becomes Shari'a-obligatory upon her. It was a conditional divorce, so when the condition was met during the days of ‘Iddah, this divorce also took effect. And since the first divorce was ‘Ba’in’ (irrevocable), this second one also necessarily became ‘Ba’in’. It is stated in Rad-ul-Muhtar:

“If an explicit revocable divorce is given after an irrevocable (Ba’in) divorce, it also becomes irrevocable, because after the first Ba’in divorce, reconciliation (Ruju’) is forbidden, as mentioned in Al-Khulasa.” If an explicit revocable divorce is given after an irrevocable (Ba’in) divorce, it also becomes irrevocable, because after the first Ba’in divorce, reconciliation is forbidden, as mentioned in Al-Khulasa. (T)

In short, it is mandatory for Umda to consider herself out of the marriage of Tala’ur Khan. Tala’ur Khan has no right to coerce her at all; Umda has the choice to marry whomever she wishes, as a woman becomes independent after an irrevocable divorce. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

“Because she does not own herself except [after] a Ba’in [divorce].” The wife becomes her own master after an irrevocable divorce. (T)

And since the first letter already caused an irrevocable divorce and the waiting period (‘Iddah) has passed, the subsequent letters have no role in the occurrence of divorce. It is stated in Alamgiri:

“The condition for it is that the bond remains upon the woman, [either] marriage or ‘Iddah, as in Al-Muhit al-Sarakhsi... (Summary). And Allah knows best.” The condition for the occurrence of divorce is that the wife is still bound by marriage or ‘Iddah. As mentioned in Muhit al-Sarakhsi (Summary) - And Allah Almighty knows best. (T)

Issue 71: From Bareilly, Muhallah Neem ki Charhai, sent by Chaudhary Ishtiaq Ahmed, 22 Rabi-ul-Akhir Sharif 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid informed Khalid through writing that “I have...”

1. Fatawa Qazi Khan, Chapter on Divorce by Writing, Nawal Kishore Lucknow, 2/218.
2. Rad-ul-Muhtar, Chapter on Metaphors (Al-Kinayat), Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/269.
3. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Explicit (Al-Sarih), Matba Mujtabai Delhi, 1/222.
4. Fatawa Hindiya, Book of Divorce, Chapter One, Noorani Kutub Khana Karachi, 1/348.

फ़तावा रज़विया, खंड 12

“इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) लेखन के समय से अनिवार्य होगी... (सारांश)” और पत्नी के लिए, लेखन के समय से इद्दत अनिवार्य होगी... (सारांश)। (T)

और दूसरी बात यह कि उस समय जब यह पत्र सुंदर लिखावट में उम्दा और उसके पिता को सरमस्त खाँ ने पढ़कर सुनाया कि तालौर खाँ का लिखा हुआ सरमस्त खाँ सुना दें ताकि उस पर शरीयत के अनुसार तलाक अनिवार्य हो जाए। यह एक सशर्त तलाक था, इसलिए जब इद्दत के दिनों में शर्त पूरी हुई, तो यह तलाक भी प्रभावी हो गया। और चूंकि पहला तलाक 'बाइन' (अपरिवर्तनीय) था, इसलिए यह दूसरा भी अनिवार्य रूप से 'बाइन' हो गया। रद-उल-मुह्तार में लिखा है:

“यदि बाइन तलाक के बाद स्पष्ट रजई (प्रतिसंहरणीय) तलाक दिया जाए, तो वह भी बाइन हो जाएगा, क्योंकि पहले बाइन तलाक के बाद सुलह (रुजू) करना वर्जित हो जाता है, जैसा कि अल-खुलासा में है।” यदि बाइन तलाक के बाद स्पष्ट रजई तलाक दिया जाए, तो वह भी बाइन हो जाएगा, क्योंकि पहले बाइन तलाक के बाद सुलह करना वर्जित हो जाता है, जैसा कि अल-खुलासा में है। (T)

संक्षेप में, उम्दा के लिए अनिवार्य है कि वह स्वयं को तालौर खाँ के निकाह से बाहर समझे। तालौर खाँ का उस पर कोई अधिकार नहीं है; उम्दा को अधिकार है कि वह जिससे चाहे निकाह कर ले, क्योंकि बाइन तलाक के बाद स्त्री स्वतंत्र हो जाती है। दुर्र-ए-मुख्तार में है:

“क्योंकि वह बाइन [तलाक] के बाद ही स्वयं की मालिक होती है।” पत्नी बाइन तलाक के बाद स्वयं की मालिक हो जाती है। (T)

और चूंकि पहले पत्र से ही बाइन तलाक हो गया था और इद्दत की अवधि भी बीत चुकी थी, इसलिए बाद के पत्रों का तलाक के होने में कोई प्रभाव नहीं है। आलमगीरी में है:

“इसके लिए शर्त यह है कि स्त्री निकाह या इद्दत के बंधन में हो, जैसा कि अल-मुहीत अल-सरख़सी में है... (सारांश)। और अल्लाह ही बेहतर जानता है।” तलाक होने के लिए शर्त यह है कि पत्नी अभी भी निकाह या इद्दत के बंधन में हो। जैसा कि मुहीत अल-सरख़सी में है (सारांश) - और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। (T)

मसाला 71: बरेली, मोहल्ला नीम की चढ़ाई, प्रेषक चौधरी इश्तियाक अहमद, 22 रबी-उल-आख़िर शरीफ़ 1338 हिजरी। इस विषय में धर्मगुरुओं का क्या कहना है: ज़ैद ने खालिद को लिखकर सूचित किया कि "मैंने..."

---

1. फ़तावा काज़ी ख़ान, लेखन द्वारा तलाक़ का अध्याय, नवल किशोर लखनऊ, 2/218।
2. रद-उल-मुह्तार, प्रतीकात्मक शब्द (अल-किनायात) का अध्याय, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 2/269।
3. दुर्र-ए-मुख्तार, स्पष्ट शब्द (अल-सरीह) का अध्याय, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/222।
4. फ़तावा हिंदीया, तलाक़ की किताब, अध्याय एक, नूरानी कुतुब खाना कराची, 1/348।

فتاوی رضویہ جلددوازدہم

العدّۃ من وقت الکتابۃ الخ[1] (ملخّصاً) اور بیوی کو لکھائی کے وقت سے عدت لازم ہوگی الخ (ملخصاً)۔ (ت)

اور دوسری اس وقت جبکہ یہ خط بحرف عمدہ اور اس کے والد کو سرمست خاں نے سنایا کہ طالعور خاں کا لکھنا سرمست خاں سُنا دیں تاکہ اس پر طلاق شرعاً واجب ہو جائے طلاق معلق تھی تو جب شرط ایام عدت میں پائی گئی یہ طلاق بھی واقع ہوئی اور ازانجا کہ پہلی طلاق بائن تھی یہ دوسری بھی خواہ مخواہ بائن ہوگئی۔ ردالمحتار میں ہے:

اذ الحق الصریح البائن کان بائناً لان البینونۃ السابقہ علیہ تمنع الرجعۃ کما فی الخلاصۃ[2]۔ اگر بائنہ طلاق کے بعد رجعی طلاق دی تو وہ رجعی بھی بائنہ ہو جائے گی، کیونکہ پہلی بائنہ کے بعد رجوع ممنوع ہو جاتا ہے جیسا کہ خلاصہ میں ہے (ت)

بالجملہ عمدہ پر واجب کہ اپنے آپ کو طالعور خاں کے نکاح سے باہر سمجھے طالعور خاں کو اس پر ہر گز جبر نہیں پہنچتا، عمدہ کو اختیار ہے جس سے چاہے نکاح کر لے کہ طلاق بائن سے عورت خود مختار ہو جاتی ہے۔ در مختار میں ہے:

لانہا لا تملك نفسہا الا البائن[3]۔ بیوی بائنہ طلاق کے بعد اپنے آپ کی مالک ہو جاتی ہے۔ (ت)

اور جبکہ پہلے ہی خط بائن طلاق پڑی اور عدت گزر چکی تو بعد کے خطوط کو وقوع طلاق میں کچھ دخل نہیں۔ عالمگیری میں ہے:

شرطه قيام القيد في المرأة نكاح او عدة كذا في المحيط السرخسی[4] اه ملخصاً-واللہ تعالیٰ اعلم۔ وقوع طلاق کے لئے شرط ہے کہ بیوی ابھی تک نکاح یا عدّت میں مقید ہو۔ جیسا کہ محیط سرخسی میں ہے اه ملخصاً- واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۷۱: بریلی محلّہ نیم کی چڑھائی مرسلہ چودھری اشتیاق احمد ۲۲ ربیع الآخر شریف ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے خالد کو بذریعہ تحریر کے یہ اطلاع دی کہ میں نے

---

[1] فتاوی قاضی خاں فصل فی الطلاق بالکتابۃ نولکشور لکھنؤ ۲۱۸/۲ [2] ردالمحتار باب الکنایات دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۶۹/۲ [3] درمختار باب الصریح مطبع مجتبائی دہلی ۲۲۲/۱ [4] فتاوی ہندیہ کتاب الطلاق باب الاول نورانی کتب خانہ کراچی ۳۴۸/۱

Fatawa Razawiyya Volume 12

He separated from his wife, upon which Khalid wrote, "Please inform us if you have divorced your second wife." Below Khalid's writing, Zaid wrote, "Yes," and subsequently signed it. Due to this writing, divorce has occurred for Zaid's second wife, and Zaid no longer has the opportunity to revoke it (Ruju). Explain and be rewarded.

Answer: If Zaid confesses or it is proven by Shari'i witnesses that both these writings are his, then the woman has left the marriage. He cannot revoke it; however, he can remarry her with the wife's consent without Halala, provided he has not given her two divorces before this. And Allah Almighty knows best.

Question 218: From Hansi, District Hisar, Main Post Office, asked by Muhammad Zahiruddin and Muhammad Naziruddin Attaran, 3 Rabi' al-Awwal 1339 AH. What do the scholars of religion, the Muftis of the firm Sharia, and the masters of authority say regarding this matter: Zaid used to cause distress to his wedded wife, named Hindah, regarding food and drink. Thus, Hindah's father, in order to alleviate his daughter's distress, gathered a Panchayat (council) and sought a decision, although Zaid was not agreeable to the gathering of the Panchayat. The Panchayat decided that the person named Zaid should give a sum along with 8/- to his wife Hindah. A document was also written to the effect that "if the aforementioned Zaid does not give the prescribed amount to his aforementioned wife Hindah, then divorce will occur for Hindah." This was written by the Panchayat for the purpose of threat, not with the intention of divorce. Zaid neither asked for the document to be written with his tongue nor wrote it with his own pen; instead, another person wrote the document. Despite Zaid being a literate person, he signed the document out of fear of the community; he was not agreeable. After the Panchayat's decision, Hindah's father took her to his house. After two months, Hindah returned to Zaid's house, and Zaid continued to provide her with maintenance. In the above-mentioned situation, when Zaid did not give the amount prescribed by the Panchayat, did divorce occur for Hindah or not, according to the principle "Actions are judged by intentions" (Al-A'malu bin-Niyyat)? Because there was no intention to give divorce, nor did the Panchayat want to cause a divorce; it was merely a threat. Explain and be rewarded, with citations from books and references to chapters and sections. (Explain with citations from books and references to sections and chapters and receive reward. - Editor) That is all.

Answer: In explicit (Sarih) words, intention is not required. Writing it oneself or signing after hearing what someone else has written is the same. And fear of the community, if it does not reach the limit of compulsion (Ikrah), is no excuse. If the writing stated that...

उसने अपनी पत्नी को अलग कर दिया, जिस पर खालिद ने यह लिखा कि "कृपया सूचित करें कि क्या आपने अपनी दूसरी पत्नी को तलाक दे दिया है?" खालिद के लिखे के नीचे ज़ैद ने लिखा "जी हाँ" और उसके बाद अपने हस्ताक्षर कर दिए। इस लेख के कारण ज़ैद की दूसरी पत्नी को तलाक हो गया और ज़ैद के पास रुजू (वापसी) का कोई मौका नहीं रहा। बयान करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: यदि ज़ैद स्वीकार करता है या शरीयत के गवाहों से सिद्ध होता है कि ये दोनों लेख उसके हैं, तो महिला निकाह से बाहर निकल गई है। वह रुजू नहीं कर सकता; हाँ, हलाला के बिना पत्नी की सहमति से दोबारा निकाह कर सकता है, बशर्ते कि उसने इससे पहले कभी उसे दो तलाक न दिए हों। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

प्रश्न २१८: हांसी, जिला हिसार, मुख्य डाकघर से मोहम्मद जहीरउद्दीन और मोहम्मद नजीरउद्दीन अत्तारान द्वारा पूछा गया, ३ रबी-उल-अव्वल १३३९ हिजरी। दीन के विद्वान, सुदृढ़ शरीयत के मुफ्ती और अधिकार संपन्न लोग इस मामले में क्या कहते हैं: ज़ैद अपनी विवाहित पत्नी मुसम्मात हिंदा को खाने-पीने की तकलीफ देता था। अतः हिंदा के पिता ने अपनी बेटी की तकलीफ दूर करने के लिए पंचायत बुलाई और फैसला चाहा, हालांकि ज़ैद पंचायत बुलाने पर राजी नहीं था। पंचायत ने फैसला किया कि ज़ैद नाम का व्यक्ति अपनी पत्नी मुसम्मात हिंदा को ८/- रुपये के साथ एक राशि दिया करे। इस आशय का एक कागज भी लिखा गया कि "यदि उपरोक्त ज़ैद अपनी उपरोक्त पत्नी मुसम्मात हिंदा को निर्धारित राशि नहीं देगा, तो हिंदा को तलाक हो जाएगा।" यह पंचायत द्वारा धमकी के उद्देश्य से लिखवाया गया था, न कि तलाक की नीयत से। ज़ैद ने न तो अपनी जुबान से कागज लिखने को कहा और न ही अपनी कलम से वह कागज लिखा, बल्कि एक अन्य व्यक्ति ने कागज लिखा। हालांकि ज़ैद स्वयं एक साक्षर व्यक्ति है, उसने बिरादरी के डर से कागज पर हस्ताक्षर किए; वह राजी नहीं था। पंचायत के फैसले के बाद हिंदा का पिता उसे अपने घर ले गया। दो महीने बाद हिंदा ज़ैद के घर आई और ज़ैद उसे नियमित रूप से भरण-पोषण देता रहा। उपरोक्त स्थिति में, जब ज़ैद ने पंचायत द्वारा निर्धारित राशि नहीं दी, तो क्या हिंदा को तलाक हो गया या नहीं, "कार्यों का दारोमदार नीयतों पर है" (अल-अमालु बिन-नियात) के सिद्धांत के अनुसार? क्योंकि न तो तलाक देने की नीयत थी और न ही पंचायत तलाक दिलाना चाहती थी, बल्कि यह केवल एक धमकी थी। किताबों के उद्धरणों और अध्याय व खंड के संदर्भ के साथ बयान करें और पुण्य प्राप्त करें। (किताबों के इबारत और खंड और अध्याय के संदर्भ के साथ बयान करें और अज्र पाएं। - संपादक) बस।

उत्तर: स्पष्ट (सरीह) शब्दों में नीयत की आवश्यकता नहीं होती है, और खुद लिखना या दूसरे के लिखे हुए को सुनकर उस पर हस्ताक्षर करना एक समान है। और बिरादरी का डर, जब तक कि वह मजबूरी (इकराह) की सीमा तक न पहुँच जाए, कोई बहाना नहीं है। अगर तहरीर (लेख) में यह था कि...

पृष्ठ ४५१ (कुल ६८८ में से)

اپنی زوجہ کو علیحدہ کردیا جس پر خالد نے یہ تحریر کردیا کہ مہربانی کرکے مطلع کیجئے کہ آپ نے اپنی زوجہ ثانیہ کو طلاق دے دی زید نے خالد کی تحریر کے نیچے تحریر کردیا جی ہاں اور بعد اس کے اپنے دستخط کردئے زید کی زوجہ ثانیہ کو اس تحریر سے طلاق واقعہ ہوگئی اور زید کو رجوع کا موقع نہ رہا۔ بینوا توجروا۔

الجواب: اگر زید مقرر ہو یا گواہانِ شرعی سے ثابت ہو کہ یہ دونوں تحریریں اُس کی ہیں تو عورت نکاح سے نکل گئی رجوع نہیں کر سکتا، ہاں بے حلالہ دوبارہ برضائے زوجہ کرسکتا ہے اگر اس سے پہلے کبھی اسے دو طلاقیں نہ دے چکا ہو۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۱۸: از ہانسی ضلع حصار ڈاک خانہ خاص مسئولہ محمد ظہیر الدین و محمد نظیر الدین عطاران ۳ ربیع الاول ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین و اربابِ با تمکین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی منکوحہ مسماۃ ہندہ کو کھانے پینے کی تکلیف دیتا تھا پس مسماۃ ہندہ کے والد نے بوجہ اپنی لڑکی کی تکلیف دفع کرنے کے پنچایت کو جمع کرکے فیصلہ چاہا حالانکہ زید پنچایت کے جمع کرنے پر راضی نہ تھا، پنچایت نے یہ فیصلہ کیا کہ مسمیٰ زید اپنی بیوی مسماۃ ہندہ کو مبلغ معہ ۸/ دیا کرے جس کا ایک کاغذ بھی لکھا گیا بایں مضمون کہ "اگر زید مذکور اپنی بیوی مسماۃ ہندہ مذکورہ کو رقم مجوزہ نہ دے گا تو ہندہ کو طلاق واقع ہو جاوے گی" جو بغرض دھمکی پنچایت نے لکھوایا تھا نہ کہ طلاق کی نیت سے زید نے نہ کاغذ لکھنے کو کہا اپنی زبان سے اور نہ اپنے قلم سے کاغذ مذکور لکھا بلکہ ایک دوسرے شخص نے کاغذ لکھا بوجودیکہ خود شخص زید خواندہ شخص ہے اور کاغذ پر دستخط زید نے برادری کے خوف سے کئے ہیں راضی نہ تھا بعد فیصلہ پنچایت مسماۃ ہندہ کو اس کا والد اپنے مکان پر لے گیا اور ہندہ

مذکورہ بعد دو ماہ کے زید کے مکان میں آئی تو زید برابر اس کو نان نفقہ دیتا رہا مذکورہ بالا صورت میں جبکہ زید نے وہ رقم مجوزہ پنچایت نہیں دی ہندہ کو طلاق ہو گئی یا بمصداق الاعمال بالنیات (اعمال کا دارومدار نیتوں پر ہے۔ ت) نہیں ہوئی کیونکہ نہ اس کی طلاق دینے کی نیت تھی اور نہ پنچایت طلاق دلانا چاہتی تھی بلکہ محض دھمکی تھی بینوا توجروا مع عبارۃ الکتب و بحوالہ الفصل والباب (عبارت کتب اور فصل اور باب کے حوالہ کے ساتھ بیان کیجئے اور اجر پائے۔ ت) فقط

الجواب: صریح الفاظ میں نیت کی حاجت نہیں ہوتی، اور خود لکھنا اور دوسرے کے لکھے ہوئے کو سن کر اس پر دستخط کرنا یکساں ہے اور خوفِ برادری کہ حدِ اکراہ تک نہ ہو کوئی عذر نہیں، اگر تحریر میں یہ تھا کہ

Fatawa Razawiyya Volume 12

From today, let him pay this much monthly, i.e., month by month, and if a month passes and he hasn't paid, then one revocable divorce (Talaq Raj'i) will occur. He has the right to revoke it within the waiting period (Iddah), provided he hasn't already given two divorces before; otherwise, it will be three divorces, and marriage will not be possible without Halala. And Allah Almighty knows best.

Problem 219: From village Bhartol, district Bareilly, posed by Nizam Ali Sahib, 4 Rabi al-Akhir 1339 AH.

What do the scholars of religion say regarding this matter: One named Badlu was married to a woman named Kamni about three years ago. No children were born. About two and a half years ago, Badlu went to Dera Ismail Khan for employment and stopped providing for her maintenance and care. When his wife's heirs, i.e., mother and maternal uncle, sent letters regarding maintenance and care, he replied in a letter stating that he had divorced the named woman and left her from his marriage. For further precaution, the mother and uncle of Kamni filed a report at the police station and showed the letter. A telegram was also sent through the Station House Officer. The reply to the telegram came via an unstamped letter saying 'I have divorced the named woman.' Then a third letter came, which also stated the same words: 'We have divorced Kamni.' Are these divorces valid according to Sharia? In the third letter, the words written are: 'From my side, it is three divorces, do not send letters to us anymore.' When a telegram was sent again, the reply was again of divorce.

The Answer:

If Kamni is truly and correctly certain that these letters were written by Badlu himself, then she should consider herself divorced by three divorces and can remarry after the waiting period (Iddah). However, if he comes and denies writing these letters, then without the testimony of just witnesses, divorce will not be proven, and the second marriage will be annulled. And Allah Almighty knows best.

Problem 220: From Rangpur, posed by Muhammad Yunus, 11 Ramadan Sharif 1339 AH.

(1) If there is a dispute between the spouses regarding divorce, the husband denies it and the wife wants to provide proof of divorce, what is the method of proof? (2) Witnesses are present on both sides; the witnesses of the divorcee give testimony,

while the husband's witnesses testify that the divorcee told them after the divorce that the husband wanted to give a divorce but did not. So, which statement is admissible now? Explain and be rewarded.

The Answer:

In case of a dispute, the proof of divorce will be by witnesses, and two just (Adil) witnesses must provide Sharia testimony in accordance with Sharia rules...

फतावा रज़विया जिल्द 12

आज से इतनी मासिक राशि यानी महीने-दर-महीने दिया करे, और महीना गुज़र गया और उसने नहीं दिया तो एक तलाक-ए-रजई होगी। इद्दत के अंदर उसे रुजू (तलाक वापस लेने) का अधिकार है, बशर्ते कि उसने पहले कभी दो तलाक़ें न दी हों, वरना तीन तलाक़ें हो गईं और बिना हलाला के निकाह मुमकिन न होगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 219: ग्राम भरतौल, ज़िला बरेली से, मुस्तइल निज़ाम अली साहब, 4 रबी उल आख़िर 1339 हिजरी।

उलमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि मुसम्मी बदलू का निकाह मुसम्मात कामनी से लगभग तीन साल पहले हुआ था, कोई औलाद पैदा नहीं हुई। लगभग ढाई साल हुए कि बदलू नौकरी के लिए डेरा इस्माइल ख़ां चला गया, देखभाल और ख़र्च-पानी छोड़ दिया। जब उसकी बीवी के वारिसों यानी माँ और खालू ने गुज़ारे के बारे में ख़त भेजे, तो उसने जवाब में ख़त भेजा कि मैंने मुसम्मी (कामनी) को तलाक़ दे दी और उसे ज़ौज़ियत (वैवाहिक संबंध) से आज़ाद कर दिया। चुनाँचे, मज़ीद एहतियात के तौर पर कामनी की माँ और खालू ने थाने में रिपोर्ट लिखवा दी और ख़त दिखा दिया और थानेदार के ज़रिए एक तार (टेलीग्राम) भेजा। तार का जवाब बैरंग ख़त के ज़रिए आया कि 'मैंने मुसम्मात को तलाक़ दे दी'। फिर तीसरा ख़त आया, उसमें भी यही शब्द लिखे थे कि 'हमने मुसम्मात कामनी को तलाक़ दे दी'। अब क्या यह तलाक़ शरई तौर पर हो गई या नहीं? तीसरे ख़त में यही शब्द लिखे हैं कि 'मेरी तरफ़ से तीन बार तलाक़ है, अब हमारे पास ख़त न भेजना'। अब तार दोबारा भेजा गया, तब भी तलाक़ का ही जवाब दिया।

जवाब:

अगर कामनी को वाक़ई सही इत्मीनान (भरोसा) है कि ये ख़त बदलू ने ही लिखे हैं, तो वह अपने आप को तीन तलाक़ों से मुतलक़ा (तलाक़शुदा) समझे और इद्दत के बाद निकाह कर सकती है। लेकिन अगर वह आया और इन ख़तों के लिखने से मुकर गया, तो आदिल (विश्वसनीय) गवाहों की गवाही के बिना तलाक़ साबित न होगी और दूसरा निकाह रद्द कर दिया जाएगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 220: रंगपुर से, मुस्तइल मोहम्मद यूनुस, 11 रमज़ान शरीफ़ 1339 हिजरी।

(1) अगर पति-पत्नी में तलाक़ के बारे में विवाद हो, पति इनकार करे और पत्नी तलाक़ का सबूत देना चाहती हो, तो सबूत का क्या तरीक़ा है? (2) दोनों पक्षों के गवाह मौजूद हों; मुतलक़ा (पत्नी) के गवाह गवाही दें और पति के इस बात पर कि मुतलक़ा ने तलाक़ के बाद उनसे कहा है कि पति तलाक़ देना चाहता था लेकिन नहीं दी, तो अब कौन सी बात क़ाबिल-ए-समाअत (सुनने योग्य) है? बयान करें और पुण्य पायें।

जवाब:

विवाद की स्थिति में तलाक़ का सबूत गवाहों से होगा और दो आदिल (विश्वसनीय) गवाह शरई तरीक़े से गवाही अदा करें...

पृष्ठ 452 का 688

فتاوی رضویہ جلد دو ازدہم

آج سے اس قدر ماہوار یعنی ماہ بماہ دیا کرے، اور مہینہ گزر گیا کہ اس نے نہ دیا تو ایک طلاق رجعی ہوگی عدت کے اندر اسے رجوع کا اختیار ہے اگر پہلے کبھی دو طلاقیں نہ دے چکا ہو ورنہ تیں طلاقیں ہو گئیں اور بے حلالہ نکاح نہ ہوسکے گا واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۱۹: از موضع بھر تول ضلع بریلی مسئولہ نظام علی صاحب ۴ ربیع الآخر ۱۳۳۹ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مسمیٰ بدلو کا نکاح مسماۃ کامنی سے عرصہ تین برس کا ہوا تھا کوئی اولاد پیدا نہیں ہوئی، عرصہ ڈھائی سال کا ہوا کہ بدلو ملازم ہو کر ڈیرہ اسمعیل خاں چلا گیا، خبر گیری نان نفقہ کی چھوڑ دی، جب اس کی بیوی کے ورثانے یعنی والدہ اور خالو نے خط بنابر خبر گیری نان نفقہ کے روانہ کئے تو اس نے اس کے جواب میں خط روانہ کیا کہ میں نے مسمیٰ کو طلاق دی اور اُسے زوجیت سے چھوڑ دیا، چنانچہ مزید احتیاط والدہ خالو مسماۃ کامنی نے تھانے میں رپٹ لکھالی اور خط دکھلا دیا اور ایک تار معرفت تھانہ دار روانہ کیا، تار کا جواب بذریعہ خط بیرنگ کے دیا کہ میں نے مسماۃ کو طلاق دے دی، پھر تیسرا خط آیا اس میں بھی یہی لفظ تحریر ہیں کہ ہم نے مسماۃ کامنی کو طلاق دے دی، اب یہ طلاق شرعی ہوئی یا نہیں؟ تیسرے خط میں ہی لفظ تحریر ہیں کہ میری طرف سے تین دفعہ طلاق ہے اب ہمارے پاس خط نہ بھیجنا اب تار پھر دیا تب بھی جواب طلاق کا دیا۔

الجواب:

اگر کامنی کو واقعی صحیح اطمینان ہے کہ یہ خطوط بدلو ہی کے لکھے ہوئے ہیں تو وہ اپنے آپ کو تین طلاقوں سے مطلقہ سمجھے اور بعد عدت نکاح کرسکتی ہے لیکن اگر وہ آیا اور ان خطوط

کے لکھنے سے منکر ہوا تو بغیر شہادت گواہانِ عادل طلاق ثابت نہ ہوگی اور نکاحِ ثانی رَد کر دیا جائے گا واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۲۰: از رنگپور مسئولہ محمد یونس ۱۱ رمضان شریف ۱۳۳۹ھ

(۱) اگر زوجین میں طلاق کی بابت اختلاف ہو خاوند منکر اور بی بی طلاق کا ثبوت دینا چاہتی ہو تو ثبوت کا کیا طریقہ؟ (۲) جانبین میں شاہدین موجود ہوں مطلقہ کے شاہد کی گواہی دیں اور خاوند کے اس بات پر کہ مطلقہ نے بعد طلاق ان سے کہا ہے کہ خاوند نے طلاق دینا چاہا تھا مگر نہ دی تو اب کون سی بات قابلِ سماعت ہے؟ بینوا توجروا

الجواب:

بحالت اختلاف طلاق کا ثبوت گواہوں سے ہوگا اور دو گواہ عادل شرعی شہادت بروجہ شرعی ادا

Fatawa Razawiya Volume 12

...that this person divorced his wife, the divorce will be established. Then, if the husband provides witnesses for the denial, or for the fact that the divorcee spoke to him after the divorce, it will not be heard at all. Yes, if the woman cannot provide legal witnesses, an oath will be taken from the husband. If he says under oath that he did not divorce her, the divorce will not be established. And if he refuses to take an oath before a Shariah judge, the divorce will be considered established. Allah Ta'ala knows best.

Issue 222: From Kota, Rajputana, Mohalla Rozpura Farash Pain, sent by Abdul Shakoor Khan Sahib, 16 Jamadi al-Akhir 1338 AH.

Zaid was married to Hindah. After a long time, Hindah filed a suit against Zaid for the dower money (Mehr) stating that Zaid kicked her out of the house saying, "My mother died leaving me a will that if you keep your wife in your marriage, I will hold you accountable on the Day of Judgment." Zaid, considering the Mehr as a debt on him, accepted the claim for Mehr and, accepting Hindah as his wife, desired her surrender. The court granted the decree for Mehr. One year and ten months later, Hindah filed a suit for maintenance during the iddah period, claiming divorce based on the Mehr lawsuit, i.e., based on the aforementioned will and words. Zaid completely denies Hindah's statement; instead, he has filed a suit in court for his wife's return. In such a situation, can divorce occur with such words? Can it be assumed based on the Mehr lawsuit? Can Zaid keep his wife in his marriage, and can Hindah receive maintenance for the iddah period in this condition?

The Answer: Merely based on Hindah's statement that Zaid expelled her by mentioning his mother's will, divorce cannot be established, especially when Zaid does not accept Hindah's statement. Even if these words were proven from Zaid's own statement, they were not a positive divorce. Stating the mother's will is not divorce. Expelling a woman from the house is not divorce unless he says "Get out" with the intention of divorce. The resolution of the intention of divorce will be proven by his confession; if he says "I did not mean divorce" and takes an oath, it will be credible.

(Arabic) And that is because "Go out" carries the possibility of rejection, so it depends on the intention for each situation, and taking an oath in its place is sufficient as in al-Durr al-Mukhtar.	**(Urdu) This is because "Get out" contains the possibility of a reply (refusal), therefore, in every case, taking it to mean divorce depends on intention. And for intention, it is sufficient to take an oath from the husband at home, as it is in Durr-e-Mukhtar (T).**

In summary, in the questioned case, divorce is not established. Zaid can keep her in his marriage. Hindah's lawsuit [is invalid].

---

1. Durr-e-Mukhtar, Chapter of Metaphors (Al-Kinayat), Mujtabai Press, Delhi, 1/224. Page 453 of 688

फ़तावा रज़विया खंड 12

...करें कि इस व्यक्ति ने अपनी पत्नी को तलाक़ दे दी, तो तलाक़ साबित हो जाएगी। फिर यदि पति इनकार के गवाह देगा या इस बात के कि तलाक़ के बाद तलाक़शुदा महिला उससे बोली, तो यह बिल्कुल भी सुना नहीं जाएगा। हाँ, यदि महिला शरीयत के अनुसार गवाह नहीं दे पाती है, तो पति से शपथ ली जाएगी। यदि वह शपथ लेकर कहता है कि उसने तलाक़ नहीं दी, तो तलाक़ साबित नहीं होगी। और यदि वह शरिया जज के सामने शपथ लेने से इनकार करता है, तो तलाक़ साबित मानी जाएगी। अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसाला 222: कोटा राजपूताना, मोहल्ला रोज़पुरा फ़राश पाइन से, प्रेषक अब्दुल शकूर ख़ान साहिब, 16 जमादी अल-आखिर 1338 हिजरी।

ज़ैद की शादी हिंदा से हुई। काफी समय बाद हिंदा ने ज़ैद पर महर की राशि के लिए मुकदमा दायर किया कि ज़ैद ने यह कहते हुए उसे घर से निकाल दिया, "मेरी माँ मरते समय मुझे यह वसीयत कर गई है कि अगर तू अपनी पत्नी को अपने विवाह में रखेगा, तो मैं क़यामत के दिन तेरा दामन थामूँगी (जवाबदेह ठहराऊँगी)।" ज़ैद ने महर को अपने ऊपर वाजिब समझकर महर के दावे को स्वीकार कर लिया और हिंदा को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करते हुए उसकी सुपुर्दगी की इच्छा जताई। अदालत ने महर की डिक्री दे दी। एक साल दस महीने बाद हिंदा ने महर के मुकदमे के आधार पर तलाक़ का दावा करते हुए, यानी उपरोक्त वसीयत और शब्दों के आधार पर इद्दत के दिनों के भरण-पोषण (नान-नफ़क़ा) का मुकदमा दायर किया। ज़ैद हिंदा के इस बयान से पूरी तरह इनकार करता है, बल्कि उसने अदालत में पत्नी की सुपुर्दगी का मुकदमा दायर किया है। तो क्या ऐसी स्थिति में ऐसे शब्दों से तलाक़ हो सकती है? और क्या महर के मुकदमे के आधार पर इसे तलाक़ माना जा सकता है? और क्या ज़ैद अपनी पत्नी को अपने विवाह में रख सकता है? और क्या हिंदा ऐसी स्थिति में इद्दत के दिनों का भरण-पोषण पा सकती है?

जवाब: केवल हिंदा के इस बयान से कि ज़ैद ने अपनी माँ की वसीयत का ज़िक्र करके उसे निकाल दिया, तलाक़ साबित नहीं हो सकती, जबकि ज़ैद हिंदा के इस बयान को स्वीकार नहीं करता। बल्कि अगर इतने शब्द खुद ज़ैद के बयान से साबित हों, तब भी वे सकारात्मक तलाक़ नहीं थे। माँ की वसीयत का ज़िक्र करना तलाक़ नहीं है। औरत को घर से निकाल देना तलाक़ नहीं है जब तक कि ज़बान से तलाक़ की नीयत (इरादे) से "निकल जा" न कहे। और तलाक़ की नीयत का हल उसके

इक़रार (स्वीकृति) से साबित होगा; वह कहे कि "मैंने तलाक़ नहीं कहा" और शपथ ले ले, तो वह विश्वसनीय होगा।

(अरबी) और यह इसलिए क्योंकि 'निकल जा' में वापसी (अस्वीकार) की संभावना है, इसलिए यह हर स्थिति के लिए नीयत पर निर्भर है, और इसके स्थान पर शपथ दिलाना पर्याप्त है जैसा कि अल-दुर अल-मुख्तार में है।

(उर्दू) यह इसलिए कि 'निकल जा' में जवाब की संभावना है, इसलिए हर स्थिति में इससे तलाक़ मुराद लेना नीयत पर निर्भर होगा। और नीयत के लिए पति से घर में शपथ ले लेना काफी है जैसा कि दुर-ए-मुख्तार में है (त)।

संक्षेप में, पूछे गए मामले में तलाक़ साबित नहीं है। ज़ैद उसे अपने विवाह में रख सकता है। हिंदा का दावा [अमान्य है]।

---

1. दुर-ए-मुख्तार, बाबुल किनायात, मुतबा मुज्तबाई दिल्ली 1/ 224। पृष्ठ 453/688

کریں کہ اس شخص نے اپنی زوجہ کو طلاق دی طلاق ثابت ہو جائے گی، پھر اگر شوہر نفی کے گواہ دے گا یا اس بات کے کہ مطلقہ بعد طلاق اس سے بولی کچھ اصلاً مسموع نہ ہوگا، ہاں اگر عورت گواہ بزوجہ شرعی نہ دے سکے تو شوہر پر حلف رکھا جائے گا اگر حلف سے کہہ دے گا کہ اس نے طلاق نہ دی طلاق ثابت نہ ہوگی اور اگر حاکم شرعی کے سامنے حلف سے انکار کرے گا تو طلاق ثابت مانی جائے گی۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۲۲: از کوٹہ راجپوتانہ محلہ روز پورہ فراش پائن مرسلہ عبد الشکور خاں صاحب ۱۶ جمادی الآخرہ ۱۳۳۸ھ زید کی شادی ہندہ سے ہوئی بعد عرصہ دراز ہندہ نے زید پر اس مضمون سے نالش زرِ مہر دائر کی کہ زید نے یہ کہہ کر کہ مجھ کو میری والدہ یہ وصیت کر کے مری ہے کہ اگر تُو اپنی زوجہ کو پانی زوجیت میں رکھے گا تو میں قیامت میں دامنگیر ہوں گی گھر سے نکال دیا زید نے زر مہر اپنے ذمہ واجب سمجھ کر دعویٰ زر مہر سے اقبال کیا اور ہندہ کو اپنی زوجہ قبول کر کے سپردگی خواہش کی کچہری نے زر مہر کی ڈگری دے دی ہندہ نے ایک سال دس ماہ بعد نالش زر مہر کو طلاق کی بنا پر ظاہر کر کے یعنی وصیت والفاظ مذکورہ بالا کی بنا پر نالش نان و نفقہ ایام عدت دائر کی، زید اس بیانِ ہندہ سے قطعی انکاری ہے بلکہ کچہری میں نالش سپردگی زوجہ دائر کی ہے تو کیا ایسی صورت میں ایسے الفاظ سے طلاق ہو سکتی ہے اور کیا نالش زرِ مہر کی بنا پر تصور ہو سکتی ہے اور کیا زید اپنی زوجہ کو اپنی زوجیت میں رکھ سکتا ہے اور کیا ہندہ ایسی حالت میں نان و نفقہ ایام عدت پا سکتی ہے؟

الجواب: محض بیانِ ہندہ سے کہ زید نے اپنی ماں کی یہ وصیت بیان کر کے اسے نکال دیا طلاق ثابت نہیں ہو سکتی جبکہ زید اس بیان ہندہ کو تسلیم نہیں کرتا بلکہ اگر اتنے الفاظ خود بیانِ زید سے ثابت ہوں جب بھی مثبت طلاق نہ تھے، ماں کی وصیت بیان کرنا طلاق نہیں، عورت کو گھر سے نکال دینا طلاق نہیں جب تک زبان سے بہ نیت طلاق نہ کہے کہ "نکل جا"، اور نیت طلاق کا حل اس کے اقرار سے ثابت ہو گا وہ کہے میں نے طلاق نہ کہا اور قسم کھا لے معتبر ہوگی۔

وذلك لان اخرجی یحتمل ردا فیتوقف علی النیة لکل حال ویکفی تحلیفها في منزلة کما في الدرالمختار۔

یہ اسلئے کہ "نکل جا" میں جواب کا احتمال ہے لہذا ہر صورت میں اس سے طلاق مراد لینا نیت پر موقوف ہوگا، اور نیت کے لئے خاوند سے گھر میں قسم لے لینا کافی ہے جیسا کہ درمختار میں ہے (ت)

بالجملہ صورت مسئولہ میں طلاق ثابت نہیں زدی اُسے اپنی زوجیت میں رکھ سکتا ہے، ہندہ کی نالش

---

1 در مختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۲۴ Page 453 of 688

is void, and when there is no divorce, where is the 'iddah (waiting period) for maintenance to be due? Maintenance belongs to the marriage if she stays at the husband's place. And Allah Almighty knows best.

Problem 223: From Old City Bareilly, Shahdana neighborhood, late Nasrullah Sahib, 14 Dhu al-Hijjah 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid, in a state of anger, went to hit his wife and said, "If you do not stop fighting and being stubborn, I will give you divorce." She did not comply. The husband then said, "I have given you divorce, go, I have given you divorce." The result of this is obvious. Now Zaid wants to take her back. What is the ruling according to Shariah?

Answer: Three divorces have occurred. She cannot come into his marriage without halala.

Arabic Text

Because (Ja/Go), although it carries the possibility of being a rejection or its end result if divorce preceded it, since the context is a discussion of divorce. However, that which carries the possibility of rejection requires intention in it absolutely. Except that his execution of divorce rejects the intention of rejection. Likewise, his saying (this is the result of it), for the result of her disobedience is her divorce, not her rejection. So it was against the apparent meaning, thus it is not believed in court. And the circumstance is like the judge. As in Al-Fath and Al-Bahr. It says in Al-Durr al-Mukhtar: "Go and get married" constitutes one divorce without intention. Al-Shami said: Because "get married" is a circumstance. If he intended three, then three, according to Al-Bazzaziya. Then he disputed it with "get married."

Urdu Explanation

Because the word "Ja" (Go), although it has the potential to be a response, and if divorce was given earlier, it also has the potential to be its final point. Since the current state is a discussion of divorce, however, in a word that has the possibility of being a response, intention for divorce is necessary. But here, the husband's action of executing the divorce rejects the possibility of it being a response. Similarly, the husband saying "this is the result of it" also ends the possibility of a response because the result of the wife's disobedience was declared to be divorce, not a response. Therefore, the possibility of it being a response is against the apparent reality, so it will not be judicially confirmed either. And the circumstantial evidence is like a judge...

1. Bahr al-Ra'iq, Book of Divorce, HM Saeed Company Karachi, 3/257

2. Durr al-Mukhtar, Chapter on Metaphors (Al-Kinayat), Mujtabai Press Delhi, 1/226
3. Radd al-Muhtar, Chapter on Metaphors (Al-Kinayat), Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/274

बातिल है, और जब तलाक नहीं तो इद्दत कहाँ कि उसका नफ़क़ा (ख़र्च) हो, नफ़क़ा निकाह का होगा अगर वह शौहर के यहाँ रहेगी। वल्लाहु तआला अअलम (अल्लाह ही बेहतर जानता है)।

मसाला २२३: पुराना शहर बरेली, मोहल्ला शाहदाना के मरहूम नस्रुल्लाह साहिब द्वारा पूछा गया, १४ ज़िल-हिज्जा १३३८ हिजरी। आलिम-ए-दीन इस बारे में क्या कहते हैं: ज़ैद ने गुस्से की हालत में अपनी बीवी को मारने के लिए गया और कहा कि "अगर तू लड़ने और ज़िद करने से बाज़ नहीं आई, तो मैं तुझे तलाक दे दूँगा," वह नहीं मानी। शौहर ने कहा, "तुझे तलाक दी मैंने, जा तुझे तलाक दी मैंने"। इसका नतीजा यह है... अब ज़ैद रुजू (सुलह) करना चाहता है, शरीअत के मुताबिक क्या हुक्म है?

अल-जवाब: तीन तलाकें हो गईं, बिना हलाला के वह उसके निकाह में नहीं आ सकती।

अरबी पाठ

क्योंकि (जा) हालांकि यह जवाब बनने या तलाक पहले होने की सूरत में उसके अंत होने की संभावना रखता है, क्योंकि स्थिति तलाक की चर्चा की है। लेकिन जिसमें जवाब की संभावना हो उसमें पूर्ण रूप से नीयत ज़रूरी है। सिवाय इसके कि उसका तलाक देना जवाब की नीयत को रद्द करता है। और ऐसे ही उसका कहना (इसका नतीजा यह है), क्योंकि उसकी नाफरमानी का परिणाम उसे तलाक देना है न कि उसे जवाब देना। तो यह ज़ाहिर के खिलाफ था, इसलिए कानूनी तौर पर इसकी तस्दीक नहीं होगी। और क़रीना (संकेत) काज़ी की तरह है। जैसा कि अल-फ़त और अल-बहर में है। दुर्रे मुख्तार में है: "जा और निकाह कर ले" बिना नीयत के एक तलाक होती है। शामी ने कहा: क्योंकि "निकाह कर ले" एक संकेत है। अगर तीन की नीयत की तो बज़्ज़ाज़िया के अनुसार तीन होंगी। फिर उसने "निकाह कर ले" के साथ इस पर बहस की।

उर्दू व्याख्या

क्योंकि "जा" का शब्द हालांकि जवाब बनने की संभावना रखता है और अगर पहले तलाक दी गई हो तो उसके अंत होने की भी संभावना रखता है, क्योंकि वर्तमान स्थिति तलाक की बातचीत की है। लेकिन जिस शब्द में जवाब की संभावना हो उसमें तलाक के लिए नीयत (इरादा) ज़रूरी है, मगर यहाँ शौहर का तलाक देना जवाब की संभावना को रद्द कर देता है और इसी तरह शौहर का यह कहना "इसका नतीजा यह है" भी जवाब की संभावना को खत्म करता है क्योंकि बीवी की नाफरमानी का नतीजा तलाक को करार दिया गया है, जवाब को नहीं। इसलिए जवाब की संभावना ज़ाहिर के खिलाफ है, अतः कानूनी तौर पर भी इसकी तस्दीक नहीं होगी, और क़रीना काज़ी की तरह है...

1. बहर-उर-राइक, किताब-उत-तलाक, एच एम सईद कंपनी कराची, ३/२५७
2. दुर्र-ए-मुख्तार, बाब-उल-किनायात, मतबा मुजतबाई दिल्ली, १/२२६
3. रद-उल-मुहतार, बाब-उल-किनायात, दार इहया-उत-तुरात अल-अरबी बेरूत, २/२७४

باطل ہے، اور جب طلاق نہیں عدت کہاں کہ اس کا نفقہ ہو، نفقہ زوجیت کا ہوگا اگر شوہر کے یہاں رہے گی۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۲۳: از شہر کہنہ بریلی محلہ شاہدانہ صاحب رحمتہ اللہ تعالیٰ علیہ مسئولہ نصر اللہ صاحب ۱۴ ذی الحجہ ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے حالت غصہ میں اپنی زوجہ کو مارنے گیا اور کہا کہ اگر تو لڑنے اور منہ زوری کرنے سے نہ مانے گی تو میں تجھ کو طلاق دے دوں گا، وہ نہ مانی، شوہر نے کہا کہ " تجھ کو طلاق دی میں نے، جا تجھ کو طلاق دی میں نے "۔ اس کا نتیجہ یہ ہے جافظ، اب زید رجوع کرنا چاہتا ہے، بموجب شرع کے کیا حکم ہے؟

الجواب: تین طلاقیں ہو گئیں بغیر حلالہ اس کے نکاح میں نہیں آسکتی،

عربی عبارت	اردو وضاحت
لان (جا) وان كان يحتمل ردا او غايته تقدم الطلاق ان الحال حال المذاكرة لكن ما يحتمل الرد ينوى فيه مطلقا غير ان ايقاعه الطلاق يرد ارادة الرد وكذا قوله (اس کا نتیجہ یہ ہے) فان الناتج من نشوزها تطليقها لا ردها فكان خلاف الظاہر فلا يصدق فيه قضاء، والقرينة كالقاضى ١ كما في الفتح والبحر قال في الدر المختار ٢ ذهبى وتزوجى تقع واحدة بلانية ٣ قال الشامي لان	اس لئے کہ "جا" کا لفظ اگرچہ جواب بننے کا احتمال رکھتا ہے اور اگر پہلے طلاق دی ہو تو اس کی غایت بننے کا بھی احتمال رکھتا ہے، چونکہ حال مذاکرہ طلاق ہے لیکن جواب کے احتمال والے لفظ میں طلاق کے لئے نیت ضروری ہے، مگر یہاں خاوند کا طلاق کو واقع کرنا جواب کے احتمال کو رد کر دیتا ہے اور یوں ہی خاوند کا کہنا "اس کا نتیجہ یہ ہے" بھی جواب کے احتمال کو ختم کرتا ہے کیونکہ بیوی کی نافرمانی کا نتیجہ طلاق کو قرار دیا گیا جواب کو نہیں، لہذا

عربی عبارت	اردو وضاحت
تزوجی قرینة فان نوی الثلاث فثلاث بزازیة ۳ ثم نازعه بان تزوجی	جواب کا احتمال خلافِ ظاہر ہے اس لئے قضاءً بھی اس کی تصدیق نہ ہوگی، اور قرینہ قاضی کی

۱ بحر الرائق کتاب الطلاق ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳/۲۵۷ ۲ درمختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۲۲۶/۱ ۳ رد المحتار باب الکنایات دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۷۴/۲

Fatawa Razawiyya Volume 12

“ایضا کنایۃ فکیف یکون قرینۃ وان القرینۃ لابد لھا من التقدم وھو ھھنا متاخر ' اھـ محصلہ، ولا ورد لشئ منھما فیما نحن فیہ لتقدم الصریح واللہ تعالی اعلم۔” Similarly, it is decided as it is in 'Fath' and 'Bahr'. It is stated in 'Durr-e-Mukhtar' that the husband said, "You go away and get married," then one divorce will take place for his wife even without intention. Allama Shami said: This is because the phrase "get married" is a contextual clue (qarana), and in the mentioned case, if there was an intention for three, then there would be three divorces, [as per] Bazazia. End. Then Allama Shami raised a question on this that "get married" itself is an allusion (kinaya), so how can it be a clue? Furthermore, a clue must precede, whereas "get married" comes after "you go away". End, summarized. However, in our current under-discussion problem, these two objections do not exist because here the explicit (sarih) divorce is first and the word "go" is after. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 222: From Baroda, Mohalla Fathpura, Pani Gara, House of Rahman Mahawat, sent by Zainab Bibi daughter of Pir Khan, 17 Dhul-Hijjah 1311 AH. What do the scholars of the Muhammadan Sharia (peace and blessings of Allah be upon him) say in response to my question? My husband gave me a 'Talaq Ba'in' (irrevocable divorce) two years ago in front of four witnesses. Has the marriage become void or not? May Allah the Magnificent reward for this.

Answer: As soon as 'Talaq Ba'in' is given, the woman immediately leaves the marriage; the man no longer has any authority over her. It is stated in 'Alamgiri': “اما حکمہ فوقوع الفرقۃ بانقضاء العدۃ في الرجعي وبدونہ في البائن کذا فی فتح القدیر2۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔” The ruling of divorce is that in 'Talaq Raj'i' (revocable divorce), the separation between husband and wife occurs as soon as the 'Iddah' (waiting period) passes, and in 'Talaq Ba'in', the separation happens right after the divorce; there will be no waiting for the 'Iddah' to pass. As mentioned in 'Fath al-Qadir'. And Allah Almighty knows best. (T)

1 Radd al-Muhtar, Bab al-Kinayat, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut. 2 Fatawa Hindiyya, Kitab al-Talaq, Al-Bab al-Awwal, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/348. Page 455 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

"ایضا کنایة فکیف یکون قرینة وان القرینة لابد لها من التقدم وھو ھھنا متاخر ' اھـ محصلہ"، "ولا ورد لشئ منھما فیما نحن فیہ لتقدم الصریح واللہ تعالی اعلم۔" उसी तरह फैसला होता है जैसा कि 'फ़तह' और 'बहर' में है। 'दुर्रे मुख़्तार' में कहा गया कि शौहर ने कहा "तू चली जा और निकाह कर ले" तो उसकी बीवी को बिना नीयत के भी एक तलाक़ हो जाएगी। अल्लामा शामी ने फरमाया: यह इसलिए कि "निकाह कर ले" का लफ़्ज़ क़रीना (संकेत) है, और ज़िक्र की गई सूरत में अगर तीन की नीयत थी तो तीन तलाक़ें होंगी, बज़ाज़िया। समाप्त। फिर अल्लामा शामी ने इस पर सवाल उठाया कि "निकाह कर ले" खुद किनाया (अप्रत्यक्ष शब्द) है, तो यह क़रीना कैसे होगा? इसके अलावा, क़रीना पहले होना चाहिए जबकि "निकाह कर ले" "तू चली जा" के बाद है। समाप्त, सार। जबकि हमारे ज़ेरे-बहस मसले में ये दोनों ऐतराज़ (आपत्तियाँ) नहीं हैं क्योंकि यहाँ सरीह (स्पष्ट) तलाक़ पहले है और "जा" का लफ़्ज़ बाद में है। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)। (त)

मसला 222: बड़ौदा मोहल्ला फ़तहपुरा पानी गराह मकान रहमान महावत, मुरसिला ज़ैनब बीबी बिन्त पीर खान, 17 ज़ुल-हिज्जा 1311 हिजरी। उलमा-ए-शरियत-ए-मोहम्मदी (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) मेरे सवाल के जवाब में क्या इरशाद फरमाते हैं? मेरे शौहर ने चार गवाहों के रूबरू दो साल पहले 'तलाक़े बाइन' (अटल तलाक़) दिया। क्या निकाह बातिल (अमान्य) हो गया या नहीं? इसका अज्र अल्लाह जल्ला शानुहु देगा।

अल-जवाब: तलाक़े बाइन देते ही औरत फौरन निकाह से निकल जाती है, मर्द का उस पर कोई इख़्तियार (अधिकार) नहीं रहता। 'आलमगीरी' में है: "अम्मा हुक्मुहु फ़-वक़ूउल फुरक़ति बि-इनक़िज़ा-इल इद्दति फिर-रजी-इ व बि-दूनीहि फिल-बाइन कज़ा फ़ी फ़तहिल क़दीर।" वल्लाहु तआला आलम। तलाक़ का हुक्म यह है कि रजी (वापसी योग्य) तलाक़ में इद्दत गुज़रते ही बीवी और शौहर में जुदाई हो गई और बाइन तलाक़ में तलाक़ के बाद ही फुरक़त (जुदाई) हो जाएगी, इद्दत गुज़रने का इंतज़ार नहीं होगा। जैसा कि 'फ़तह अल-क़दीर' में है। वल्लाहु तआला आलम। (त)

1 रद्दुल मुहतार, बाब अल-किनायात, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत। 2 फ़तावा हिन्दिया, किताब अत-तलाक़, अल-बाब अल-अव्वल, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 1/348। पेज 455/688

ایضا کنایۃ فکیف یکون قرینۃ وان القرینۃ لابد لھا من التقدم وھو ھھنا متاخر ' اھـ محصلہ، ولا ورد لشئ منھما فیما نحن فیہ لتقدم الصریح واللہ تعالی اعلم۔ طرح فیصل ہوتا ہے جیسا کہ فتح اور بحر میں ہے، در مختار میں کہا کہ خاوند نے کہا "تو چلی جا اور نکاح کرلے" تو اس کی بیوی کو ایک طلاق بغیر نیت بھی ہوجائے گی۔ علامہ شامی نے فرمایا : یہ اس لئے کہ "نکاح کرلے" کا لفظ قرینہ ہے اور مذکورہ صورت میں تین کی نیت کی تو تین طلاقیں ہوں گی، بزازیہ اھـ پھر علامہ شامی نے اس پر سوال اٹھایا کہ "نکاح کرلے" خود کنایہ ہے تو یہ کیسے قرینہ ہوگا، نیز قرینہ پہلے ہونا چاہیے جبکہ "نکاح کرلے" "تو چلی جا" کے بعد ہے، اھـ، محصلہ، جبکہ ہمارے زیر بحث مسئلہ میں یہ دونوں اعتراض نہیں ہیں کیونکہ یہاں صریح طلاق پہلے ہے اور "جا" کا لفظ بعد میں ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۲۲۲: از بڑودہ محلہ فتح پورہ پانی گرہ مکان رحمن مہاوت مرسلہ زینب بی بی بنت پیر خاں ۱۷ ذی الحجہ ۱۳۱۱ھ علمائے شریعت محمدی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم مطابق میرے سوال کے جواب میں کیا ارشاد فرماتے ہیں، میرے شوہر نے رو برو چار گواہ کے عرصہ دو برس کا ہوا طلاق بائن دیا نکاح باطل ہو گیا یا نہیں؟ اس کا اجر اللہ جل شانہ دے گا۔

الجواب: طلاق بائن دیتے ہی عورت فوراً نکاح سے نکل جاتی ہے مرد کو اس پر کچھ اختیار نہیں رہتا۔ عالمگیری میں ہے: اما حکمہ فوقوع الفرقۃ بانقضاء العدۃ في الرجعي وبدونہ في البائن کذا فی فتح القدیر2۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ طلاق کا حکم یہ ہے کہ رجعی طلاق میں عدت گزرتے ہی بیوی اور خاوند میں جدائی ہوگئی اور بائنہ طلاق میں طلاق کے بعد ہی فرقت ہوجائے گی عدت گزرنے کا انتظار نہیں ہوگا کذا فی فتح القدیر واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

'ردالمحتار باب الکنایات دار احیاء التراث العربی بیروت / 2فتاوی ہندیہ کتاب الطلاق الباب الاول

نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۴۸ Page 455 of 688

Fatawa Razawiyya Volume 12

Problem 225: From Bombay, Kamayipura neighborhood, second lane, sent by Muhammad Usman Sahib Hanafi Sunni Qadri, 12 Jumada al-Akhira 1338 AH.

What do the scholars of religion say? Zaid said to his wife Hindah in front of a person, "I divorce you." This is exactly what Zaid's wife and Khwahid Aman say. Afterwards, a divorce deed was written in which this statement was recorded: "I have said 'Talakh' to my wife Zuhra." Zaid's father says on oath that my son said "I give divorce." Regarding his father, two persons said that this person does not lie. Zaid's father also said that this person, i.e., Zaid who is a boy, did not take the name of Zuhra Bibi's father, who was Bhola, but rather said, "I divorce Zuhra daughter of Lal Muhammad." And the divorce deed was written in front of five persons; one of them said that when Zaid was asked to give divorce, Zaid said "Yes, I give." In this case, did an irrevocable (Baina) divorce occur or a revocable (Raj'i) one, or not?

The Answer: The questioner has not written whether Zaid now admits to giving divorce or denies it. If he admits, then whatever kind of divorce he acknowledges—revocable, irrevocable, or severe—has occurred. If he denies it, then based on the statements written in the question, if they are indeed as stated, no divorce is proven at all. His saying "I give you divorce" has only one man and one woman as witnesses, and she is his wife's mother. The words in the divorce deed, "gave Talakh to wife Zuhra," do not effect a divorce; its meaning is only that he authorized someone else to give divorce. As for the father's statement, it also does not confirm divorce such that, combined with the first man, the required quorum of witnesses would be complete. When there was no indication towards the wife but a name was mentioned, "Lal Muhammad's daughter," and she is not Lal Muhammad's daughter, then no divorce is effected for her. In the latter statement, there is no attribution to her, neither in the question nor the answer. Since this statement was made at the time of writing the divorce deed, its meaning is clearly based on intent. At most, if that first person and this latter person are trustworthy and just, Zaid should be asked to take an oath. If he swears that his intention was not divorce, then no divorce is proven at all. Yes, if in the copy of the divorce deed the extra word "ko" (to) was an error by the questioner's pen, and it is written that he "gave Zuhra divorce," and he admits to writing that deed or two Shari'a-compliant just witnesses give formal testimony, then one revocable (Raj'i) divorce will be proven. And Allah Almighty knows best. From the city of Bareilly, Bagh Ahmad Ali Khan neighborhood. 30 Rabi al-Awwal Sharif 1317 AH.

Problem 226: What do the scholars of religion say in this matter: Zaid spoke the word of divorce to Hindah in a state of anger...

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

मसला 225: बम्बई, कमाईपुरा मोहल्ला, दूसरी गली से, प्रेषक मुहम्मद उस्मान साहब हनफ़ी सुन्नी क़ादरी, 12 जमादी अल-आखिर 1338 हिजरी।

धर्म के विद्वान क्या कहते हैं? ज़ैद ने अपनी पत्नी हिन्दा से एक व्यक्ति के सामने कहा, "मैं तुझे तलाक़ देता हूँ।" ज़ैद की पत्नी और ख़्वाहिद अमान का यही कहना है। इसके बाद एक तलाक़नामा लिखा गया जिसमें यह इबारत दर्ज थी: "अपनी बीवी ज़ोहरा को तलाख़ कह दिया।" ज़ैद के पिता शपथ लेकर कहते हैं कि मेरे लड़के ने "तलाक़ देता हूँ" कहा था। उसके पिता के बारे में दो व्यक्तियों ने कहा कि यह व्यक्ति झूठ नहीं बोलता। ज़ैद के पिता ने यह भी कहा कि इस व्यक्ति यानी ज़ैद ने ज़ोहरा बीबी के पिता का नाम नहीं लिया जो भोला था, बल्कि यह कहा, "मैं ज़ोहरा पुत्री लाल मुहम्मद को तलाक़ देता हूँ।" और तलाक़नामा पाँच व्यक्तियों के सामने लिखा गया, जिनमें से एक ने कहा कि जब ज़ैद से तलाक़ देने को कहा गया तो ज़ैद ने कहा "हाँ, देता हूँ।" इस स्थिति में तलाक़-ए-बाइन (अपरिवर्तनीय) हुई या रजई (परिवर्तनीय), या नहीं?

उत्तर: प्रश्नकर्ता ने यह नहीं लिखा कि ज़ैद अब तलाक़ देने का इक़रार करता है या इनकार। यदि वह इक़रार करता है, तो वैसी ही तलाक़ हो गई जिसे वह स्वीकार करता है—रजई, बाइन या मुग़ल्लज़ा। और यदि वह इनकार करता है, तो प्रश्न में लिखे गए बयानों के आधार पर, यदि वे वास्तव में वैसे ही हैं, तो मूलतः कोई तलाक़ सिद्ध नहीं होती। उसके ये शब्द कि "मैं तुझको तलाक़ देता हूँ," का गवाह केवल एक पुरुष और एक स्त्री है, और वह भी उसकी पत्नी की माँ है। तलाक़नामे के ये शब्द कि "अपनी बीवी ज़ोहरा को तलाख़ दिया," से तलाक़ नहीं होती; इसका अर्थ केवल इतना है कि उसने तलाक़ देने के लिए किसी को अधिकृत किया। पिता का बयान भी तलाक़ की पुष्टि नहीं करता कि पहले पुरुष के साथ मिलकर गवाहों की संख्या पूरी हो जाए। जब पत्नी की ओर संकेत नहीं था बल्कि नाम लिया गया और "लाल मुहम्मद की बेटी" कहा गया, जबकि वह लाल मुहम्मद की बेटी नहीं है, तो उसे तलाक़ नहीं हुई। पिछले बयान में उसकी ओर कोई जुड़ाव न प्रश्न में है न उत्तर में। चूँकि यह बयान तलाक़नामा लिखते समय का है, तो इसका अर्थ नीयत पर आधारित होना स्पष्ट है। अधिक से अधिक यह कि यदि वह पहला और यह पिछला व्यक्ति विश्वसनीय और न्यायप्रिय हों, तो ज़ैद से शपथ ली जाए। यदि वह शपथपूर्वक कह दे कि मेरा इरादा तलाक़ का नहीं था, तो तलाक़ बिल्कुल सिद्ध नहीं होगी। हाँ, यदि तलाक़नामे की नक़ल में अतिरिक्त शब्द "को" प्रश्नकर्ता की कलम की चूक है और उसमें लिखा है कि "ज़ोहरा को तलाख़ दिया," और वह उस तलाक़नामे को लिखने का इक़रार

करे या दो शरीयत के अनुसार न्यायप्रिय गवाह औपचारिक गवाही दें, तो एक तलाक़-ए-रजई सिद्ध होगी। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। बरेली शहर, बाग अहमद अली खान मोहल्ला। 30 रबी अल-अव्वल शरीफ 1317 हिजरी।

मसला 226: धर्म के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने हिन्दा को गुस्से की हालत में तलाक़ के शब्द बोले...

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

مسئلہ ۲۲۵: از بمبئی محلہ کمائی پورہ دوسری گلی مرسلہ محمد عثمان صاحب حنفی سنّی قادری ۱۲ جمادی الاخرہ ۱۳۳۸ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین، زید نے اپنی زوجہ ہندہ کو ایک شخص کے سامنے کہا "میں تجھے طلاق دیتا ہوں" بعینہ یہی زید کی زوجہ اور خواہد امن کا کہنا ہے، بعدہ ایک طلاق نامہ تحریر کیا گیا جس میں یہ عبارت درج تھی کہ اپنی بی بی زہرہ کو تلاخ کہہ دیا اور زید کا والد حلفاً کہتا ہے کہ میرے لڑکے نے "طلاق دیتا ہوں" کہا تھا اور اس کے والد کی نسبت دو ۲ آدمیوں نے کہا کہ یہ شخص جھوٹ نہیں کہتا اور زید کے والد نے یہ بھی کہا کہ یہ شخص یعنی زید جو لڑکا ہے میرا زہرہ بی بی کے والد کا نام نہ لیا جو بھولی تھا بلکہ زہرہ لعل محمد کو طلاق دیتا ہوں۔ اور طلاق نامہ پانچ آدمیوں کے رُوبرو تحریر کیا گیا ان میں ایک آدمی یہ کہتا تھا کہ زید سے جب کہا گیا کہ طلاق دے تو زید نے کہا "ہوں دیتا ہوں" اس صورت میں طلاق بائنہ ہوئی یا رجعی یا نہیں؟

الجواب: سائل نے کچھ نہ لکھا کہ زید اب طلاق دینے کا اقرار کرتا ہے یا منکر ہے، اگر اقرار کرتا ہے تو جیسی طلاق کو وہ مقر ہے ویسی ہو گئی رجعی یا بائن یا مغلظہ، اور اگر منکر ہے تو ان بیانوں سے جو سوال میں لکھے گئے اگر واقع میں ایسے ہی ہیں اصلاً کوئی طلاق ثابت نہیں، اُس کا یہ لفظ کہ "میں تجھ کو طلاق دیتا ہوں" اس کا گواہ صرف ایک مرد ایک عورت اور وہ بھی اس کی عورت کی ماں، اور طلاق نامہ کے یہ لفظ سوال میں ہیں کہ "اپنی بی بی زہرہ کو تلاخ کو دیا" اس سے طلاق نہیں ہوتی، اس کا تو اتنا حاصل ہے کہ اسے طلاق دینے کے لئے کسی کو سپرد اور کیا اور اس باپ کا جو بیان ہے وہ بھی مثبت طلاق نہیں کہ پہلے مرد کے ساتھ مل کر نصاب کامل ہو جائے، جب عورت کی طرف اشارہ نہیں بلکہ نام لیا اور لعل محمد کی بیٹی کہا اور وہ لعل محمد

کی بیٹی نہیں تو اس کو طلاق نہیں۔ پچھلے بیان میں اس کی طرف اضافت نہ سوال میں ہے نہ جواب میں، اور طلاق نامہ لکھتے وقت کا یہ بیان ہے تو معنی ارادہ پر حمل واضح ہے، غایت یہ کہ اگر وہ پہلا اور یہ پچھلا شخص ثقہ عادل ہوں تو زید سے حلف لیا جائے، اگر حلفاً کہہ دے کہ میرا ارادہ طلاق کا نہ تھا تو ہرگز طلاق ثابت نہیں، ہاں اگر نقل طلاق نامہ میں دوسرا لفظ "کو" قلم سائل سے زائد نکل گیا ہے اور اس میں یہ لکھا ہے کہ "زہرہ کو تلاخ دیا" اور اس طلاق نامہ کے لکھنے کا وہ مقر ہو یا دو ۲ گواہ عادل شرعی باقاعدہ شہادت دیں تو ایک طلاق رجعی ثابت ہو گی۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ از شہر بریلی محلہ باغ احمد علی خاں ۳۰ ربیع الاول شریف ۱۳۱۷ھ

مسئلہ ۲۲۶: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے ہندہ کو غصہ کی حالت میں طلاق کے لفظ بولا

That is, he said, "You bastard, I have divorced you, get out of my house, I will not keep you." Now Zaid says, "Indeed I divorced Hindah, but I don't remember at that time if I gave two divorces or three. However, there were two women present at that time: one was Zaid's mother-in-law and the other his sister. Both these women say that Zaid gave his wife one divorce and said, 'You bastard, get out of my house, I will not keep you.' Hindah, Zaid's wife, also says the same. What is the ruling in Shari'ah? Has the divorce occurred or not? Is it Raj'i (revocable), Ba'in (irrevocable), or Mughallazah (finalized)? Provide an answer and may you be rewarded. Only Peace.

The Answer: When there is doubt in divorce whether it was two or three, it will be considered as two unless there is proof of more from Shari'ah witnesses.

[Table Content] Arabic: In 'al-Ashbah', 'al-Durr al-Mukhtar', 'al-Uqud al-Durriya', etc.: If there is doubt whether one or more divorces were given, it is based on the minimum. Urdu: It is in 'Ashbah', 'Dur-e-Mukhtar', 'Uqud-e-Durriya', etc., that if there is doubt between one divorce or more, the lesser number will be considered certain. (T)

Zaid, by saying the phrase "Get out of my house," if he intended divorce, then two Ba'in (irrevocable) divorces occurred because a Ba'in divorce can follow an explicit (Sarih) and Raj'i (revocable) divorce, making it Ba'in (A Ba'in divorce can be attached to a Raj'i one; when attached to a Ba'in, a Raj'i also becomes Ba'in. - T). Otherwise, one Raj'i divorce occurred.

[Table Content] Arabic: Because "get out" is among the phrases that carry the possibility of rejection, it does not occur without intention, even if the situation is that of discussing divorce. If divorce was already mentioned previously, it occurs as stated by jurists. Urdu: Because the word "get out" holds the possibility of rejection, divorce will not occur through it without intention. However, if the state was a discussion of divorce, like divorce had already been given before, then divorce will occur through "get out," as the jurists have explicitly stated. (T)

Yes, if this entire sentence "I have divorced you, get out of my house" was said again, and even once in those instances "get out of my house" was said with the intention of divorce, then three divorces occurred. And Allah the Almighty knows best.

1. Dur-e-Mukhtar, Chapter on Explicit Divorce, Mujtabai Press, Delhi, 1/222

फतवा रज़विया खंड 12

यानी कहा "हरामज़ादी, तुझे मैंने तलाक़ दिया तो मेरे घर से निकल जा, मैं तुझे नहीं रखूँगा।" अब ज़ैद कहता है कि "बेशक मैंने हिंद को तलाक़ दिया लेकिन उस वक्त दो तलाक़ दिए या तीन, मुझे याद नहीं है। मगर उस जगह उस वक्त दो औरतें थीं, एक ज़ैद की सास और दूसरी बहन। ये दोनों औरतें कहती हैं कि ज़ैद ने अपनी बीवी को एक तलाक़ दिया और कहा, 'हरामज़ादी मेरे घर से निकल जा, मैं तुझे नहीं रखूँगा' और हिंदा (ज़ैद की बीवी) भी यही कहती है। शरीअत में क्या हुक्म है? तलाक़ वाक़े हुआ या नहीं, तो रजई (revocable) है या बाइन (irrevocable) या तलाक़-ए-मुग़ल्लज़ा (finalized)? जवाब दें और सवाब पायें। सलाम।

जवाब: जब तलाक़ में शक हो कि दो थे या तीन, तो दो समझे जाएँगे जब तक कि शरीअत के गवाहों से ज़्यादा का सबूत न हो।

[तालिका सामग्री] अरबी: अल-अश्बाह, अल-दुर्र अल-मुख्तार, अल-उक़ूद अल-दुर्रिया आदि में: अगर शक हो कि एक तलाक़ दिया गया या ज़्यादा, तो कम संख्या को आधार बनाया जाए। उर्दू: अश्बाह, दुर्रे मुख्तार, उक़ूद-ए-दुर्रिया आदि में है कि एक तलाक़ या ज़्यादा में शक हो तो कम संख्या वाली बात यक़ीनी होगी। (त)

ज़ैद ने इस लफ्ज़ से कि "तू मेरे घर से निकल जा" अगर तलाक़ की नीयत की थी तो दो तलाक़ें बाइन (irrevocable) पड़ गईं, क्योंकि बाइन तलाक़ सरीह और रजई तलाक़ के साथ मिल सकती है, जिससे वह बाइन हो जाती है (बाइन तलाक़, रजई तलाक़ को लग सकती है तो बाइन के लगने पर रजई भी बाइन हो जाती है। त)। वर्ना एक तलाक़ रजई पड़ी।

[तालिका सामग्री] अरबी: क्योंकि "निकल जा" उन शब्दों में से है जिसमें झिड़कने (रद) की संभावना होती है, इसलिए बिना नीयत के इससे तलाक़ नहीं होगी, भले ही तलाक़ की चर्चा चल रही हो। अगर पहले तलाक़ दी जा चुकी हो तो "निकल जा" से तलाक़ वाक़े होगी, जैसा कि फ़ुक़हा ने साफ़ कहा है। उर्दू: क्योंकि "निकल जा" यह शब्द झिड़की का भी अर्थ रखता है, इसलिए नीयत के बिना इससे तलाक़ नहीं होगी, और अगर मामला तलाक़ की चर्चा का हो जैसे पहले तलाक़ दे दी हो तो "निकल जा" से तलाक़ वाक़े होगी, जैसा कि फ़ुक़हा ने इस पर साफ़ बयान किया है। (त)

हाँ अगर यह सारा जुमला कि "मैंने तुझे तलाक़ दी, मेरे घर से निकल जा" दोबारा कहा, इनमें एक बार भी "मेरे घर से निकल जा" से तलाक़ की नीयत की, तो तीन तलाक़ें हो गईं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

1. दुर्रे मुख्तार, बाब अस-सरीह, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/222

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

یعنی کہا حرامزادی تجھ کو میں نے طلاق دیا تو میرے گھر سے نکل جا میں تجھ کو نہیں رکھوں گا۔ تو اب زید کہتا ہے ہندو کو میں نے بیشک طلاق دیا لیکن دو طلاق دی یا تین طلاق دیا اس وقت میری یاد نہیں ہے مگر اس جگہ میں اُس وقت دو عورت تھی ایک زید کی میا دوسری بہن یہ دونوں عورتیں کہتی ہیں زید نے اپنی بی بی کو ایک طلاق دیا اور حرامزادی میرے گھر سے نکل جا میں تجھ کو نہیں رکھوں گا اور ہندہ زید کی بیوی بھی یہی کہتی ہے۔ شرع شریف میں کیا حکم ہے طلاق واقع ہوا یا نہیں تو رجعی یا بائن یا طلاق مغلظہ؟ بینوا توجروا زیادہ والسلام فقط۔

الجواب: جب طلاق میں شک ہو کہ دو تھی یا تین ، تو دو سمجھی جائیں گی جب تک گواہانِ شرعی سے زیادہ کا ثبوت نہ ہو،

فی الاشباہ والدرالمختار والعقود الدریۃ وغیرہا لو شک اطلق واحدۃ او اکثر بنی علی الاقل۔ اشباہ ، درمختار ، عقودریہ وغیرہا میں ہے کہ ایک طلاق یا زیادہ میں شک ہو تو کم عدد والی یقینی ہوگی۔ (ت)

زید نے اس لفظ سے کہ "تُو میرے گھر سے نکل جا" اگر طلاق کی نیت کی تھی تو دو طلاقیں بائن پڑیں فان البائن یلحق الصریح والرجعی یصیر بائنا بلحوق البائن (بائن طلاق، رجعی طلاق کو لاحق ہو سکتی ہے تو بائنہ کے لاحق پر رجعی بھی بائنہ ہو جاتی ہے۔ ت) ورنہ ایک طلاق رجعی پڑی،

لان اخرجی مما یحتمل ردا فلا یقع بہ بلانیۃ وان کانت الحال حال المذاکرۃ لتعدم التطبیق یقع کما نصوا علیہ۔ کیونکہ "نکل جا" یہ لفظ رد کا احتمال رکھتا ہے لہٰذا نیت کے بغیر اس سے طلاق نہ ہوگی،

اور اگر مذاکرہ طلاق کا حال جیسے پہلے طلاق دے دی ہو تو "نکل جا" سے طلاق واقع ہوگی، جیسا کہ فقہاء نے اس پر تصریح کی ہے۔ (ت)

ہاں اگر یہ سارا جملہ کہ "میں نے تجھ کو طلاق دی، میرے گھر سے نکل جا" دوبارہ کہا ان میں ایک بار بھی "میرے گھر سے نکل جا" سے نیت طلاق کی کی تو تین طلاقیں ہو گئیں۔ واللہ تعالی اعلم بالصواب۔

1 درمختار باب الصریح مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۲۲

Fatawa Razawiya - Volume 12

Problem 772: Muhammad Hasan from Madrasa Manzar-e-Islam, Bareilly. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid considers talking to, kissing, and having intercourse/cohabitation with his wife as 'Haram' (forbidden). Will divorce occur or not? And Zaid also says, "For your entire life, you are forbidden (Haram) to me." Has divorce occurred or not?

The Answer: Merely thinking it does nothing until it is spoken by the tongue. By saying, "You are forbidden (Haram) to me," a Talaq-e-Ba'in (irrevocable divorce) occurs. The woman is released from the marriage contract. After the 'Iddah (waiting period), she has the choice to marry whomever she wishes. And if she wants to remarry that same husband, it can happen during the 'Iddah or afterwards as well.

[Box Content] (Left - Arabic): In Radd al-Muhtar, under the phrase "solitary, free, forbidden, irrevocable etc." regarding the word "forbidden", it says that in our times, an irrevocable divorce will occur by it without intention due to customary usage, whether one says "upon me" first or not, etc. The complete research on this is in what we have commented upon it. And Allah Almighty knows best. (Right - Urdu): In Radd al-Muhtar, under the text "you are solitary, you are free, you are forbidden - irrevocable divorce", it is written that regarding the text's phrase "is forbidden", an explanation will soon follow that in our times, an irrevocable divorce will occur even without intention because this word has become a customary term for divorce, whether one says "upon me" (Alayya) with forbidden or not, etc. The complete research on this is in our margin. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 228 to 229: From Sunawah Qadri Post Office, Chittagong District, Junior Madrasa, sent by Mawlawi Jamal al-Din Sahib, 7 Ramadan 1338 AH. [Bottom Box Content] (Left column): (1) If someone gave one or two irrevocable divorces to his wife and then renewed the marriage contract, does he again become the owner of three divorces or not? (2) Giving three divorces in one go or pronouncing them at once is not proven by any verse or Hadith, Sir. (Right column): (1) If someone gave one or two irrevocable divorces to his wife and then remarried her, will he again be considered the owner of three divorces or not? (2) Giving three divorces in one word or three divorces at one time is not proven by any verse or Hadith.

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Metaphors, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/264 Page 458 of 688

फ़तावा रज़विया - जिल्द १२

मसला ७७२: मोहम्मद हसन, मदरसा मंज़र-ए-इस्लाम बरेली से। क्या फ़रमाते हैं उलमा-ए-दीन इस मसले के बारे में कि ज़ैद अपनी बीवी से बोलना और चूमना और संभोग/सहवास करना 'हराम' (वर्जित) समझता है, क्या तलाक़ वाक़े होगा या नहीं? और ज़ैद यह भी कहता है कि "तमाम उम्र तू मुझ पर हराम है", तलाक़ वाक़े हुई या नहीं?

अल-जवाब: सिर्फ समझने से कुछ नहीं होता जब तक ज़ुबान से न कहे। और इस कहने से कि "तू मुझ पर हराम है" तलाक़-ए-बाइन (अपरिवर्तनीय तलाक़) हो गई, औरत निकाह से निकल गई। इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के बाद अधिकार है जिससे चाहे निकाह करे, और अगर उस शौहर से निकाह करना चाहे तो इद्दत में भी हो सकता है और बाद में भी।

[बॉक्स सामग्री] (बाएं- अरबी): रद्द अल-मुह्तार में "खलियाह, बरीयाह, हराम, बाइन आदि" शब्दों के तहत "हराम" शब्द के बारे में लिखा है कि हमारे ज़माने में इसके ज़रिए बिना नियत (इरादे) के भी बाइन तलाक़ वाक़े हो जाएगा क्योंकि यह उर्फ़(प्रचलन) बन चुका है, चाहे पहले 'अलैया' (मुझ पर) कहे या न कहे आदि। इसकी पूरी तहक़ीक़ हमने जो इस पर हाशिया लिखा है उसमें है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (दाएं- उर्दू): रद्द अल-मुह्तार में मतन के"तू अकेली है, तू बरी है, तू हराम है - तलाक़-ए-बाइन" के तहत लिखा है कि मतन का क़ौल "हराम है" अनक़रीब बयान आएगा कि इस हमारे ज़माने में बग़ैर नियत भी बाइन तलाक़ वाक़े होगी क्योंकि तलाक़ के लिए यह लफ्ज़ उर्फ़ बन चुका है, हराम के साथ 'अलैया' (मुझ पर) कहे या न कहे आदि। इसकी मुकम्मल तहक़ीक़ इस पर हमारे हाशिये में है। वल्लाह तआला आलम। (त)

मसला २२८ ता २२९: डाकखाना सुनवाह क़ादरिया, ज़िला चाटगाँव, जूनियर मदरसा, प्रेषित मौलवी जमालुद्दीन साहब, ७ रमज़ान १३३८ हिजरी। [निचला बॉक्स सामग्री] (बायां कॉलम): (१) अगर किसी ने अपनी बीवी को दो या एक तलाक़-ए-बाइन दी हो और उसके बाद दोबारा निकाह किया हो, तो क्या वह दोबारा तीन तलाक़ों का मालिक होगा या नहीं? (२) एक साथ तीन तलाक़ देना और उसे वाक़े करना किसी आयत या हदीस से साबित नहीं है हुज़ूर। (दायां कॉलम): (१) अगर किसी ने अपनी बीवी को एक या दो बाइन तलाक़ें दी हों और दोबारा निकाह कर लिया हो तो क्या वह दोबारा तीन तलाक़ों

का मालिक क़रार पाएगा या नहीं? (२) एक लफ्ज़ से तीन तलाक़ें या एक वक़्त में तीन तलाक़ें देना किसी आयत या हदीस से साबित नहीं।

1. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-किनायात, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत २/२६४ पेज ४५८ ऑफ़ ६८८

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

مسئلہ ۷۷۲: محمد حسن از مدرسہ منظر اسلام بریلی کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ ذیک میں کہ زید اپنی بی بی سے بولنا اور بوسہ لینا اور جماع کرنا اور مباشرت کرنا حرام سمجھتا ہے، آیا طلاق واقع ہو گی یا نہیں؟ اور زید یہ بھی کہتا ہے کہ تمام عمر تو مجھ پر حرام ہے طلاق واقع ہوئی یا نہیں؟ الجواب: نرے سمجھنے سے کچھ نہیں ہوتا جب تک زبان سے نہ کہے اور اس کہنے سے کہ تو مجھ پر حرام ہے طلاق بائن ہو گئی عورت نکاح سے نکل گئی بعد عدت اختیار ہے جس سے چاہے نکاح کرے، اور اگر اُس شوہر سے نکاح چاہے تو عدت میں بھی ہو سکتا ہے اور بعد بھی۔

[Box Content] (Left Column Arabic) فی ردالمحتار تحت قولہ خلیة. بریة حرام بائن الخ قولہ حرام سیأتی وقوع حرام بائن بہ بلانیة فی زماننا للتعارف سواء قال علیّ اولاً الخ وتمام تحقیقہ فیما علقناہ علیہ۔واللہ تعالٰی اعلم۔ (Right Column Urdu) ردالمحتار میں متن کے "تو اکیلی ہے، تو بری ہے، تو حرام ہے طلاق بائن" کے تحت لکھا ہے کہ متن کا قول "حرام ہے" عنقریب بیان آئے گا کہ اس ہمارے زمانے میں بغیر نیت بھی بائنہ طلاق واقع ہو گی کیونکہ طلاق کے لئے یہ لفظ عرف بن چکا ہے حرام کے ساتھ عَلَیَّ (مجھ پر) کہے یا نہ کہے الخ، اسکی مکمل تحقیق اس پر ہمارے حاشیہ میں ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۲۲۸ تا ۲۲۹: از ڈاک خانہ سنواہ قادریہ ضلع چانگام جونیر مدرسہ مرسلہ مولوی جمال الدین صاحب ۷ رمضان ۱۳۳۸ھ [Bottom Box Content] (Left Column): (۱) اگر کسے زنے خود را دو یا یک طلاق بائن دہد بعد ازاں تجدید عقد نماید پیش ثانیاً مالک سہ طلاق گردد یا نہ؟ (۲) در آن واحد سہ طالق معادادن و ایقاعش نمودن از کدامی آیت و حدیث ثابت نگردد حضرت

(Right Column Urdu): (۱) اگر کسی نے اپنی بیوی کو ایک یا دو بائنہ طلاقیں دی ہوں اور دوبارہ نکاح کرلیا ہو تو کیا وہ دوبارہ تین طلاقوں کا مالک قرار پائے گا یا نہیں (۲) ایک لفظ سے تین طلاقیں یا ایک وقت میں تین طلاقیں دینا کسی آیت یا حدیث سے ثابت

1 ردالمحتار باب الکنایات دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۶۴/۲ Page 458 of 688

Fatawa Razawiyya Volume 12

[Question Box] (Left Column - Persian): From where did Umar (may Allah be pleased with him) get this command and why was there a consensus on it? And if someone acts contrary to it and gives the command of one divorce, will there be accountability or not? Why? (Right Column - Urdu): No, from where did Hazrat Umar (may Allah be pleased with him) bring this command and why was there a consensus on it? If someone declares those mentioned three [divorces] as one divorce, will they be held accountable or not? If so, why?

Al-Jawab (The Answer): (1) (Persian): He will not be the owner of three divorces; whatever remains is in his hand. And Allah Almighty knows best. (1) (Urdu): He will not be the owner of three divorces; rather, he will remain the owner of the remaining divorce. And Allah Almighty knows best. (2) (Persian/Arabic): No one should oppose it except the opponent of the Great Majority (Sawad-e-Azam), and the command of Umar is the command of God. Allah Almighty said: "And whatever the Messenger has given you - take; and what he has forbidden you from - refrain from." [1] And he (peace and blessings be upon him) said: "Follow my Sunnah and the Sunnah of the Rightly Guided Caliphs and cling to it firmly." [2] And he (peace and blessings be upon him) said: "Follow those after me, Abu Bakr and Umar." [3] As for where he brought it from, he brought it from here, as the Holy Subhan (Allah) said regarding Umar: "...those among them who can derive its correct conclusion would have known it." [4] And Allah Almighty knows best. (2) (Urdu): Only an opponent of the Great Majority (Sawad-e-Azam) will oppose the decision of Hazrat Umar (may Allah be pleased with him) and the consensus on it, because the command of Umar Farooq is a representation of Allah Almighty. Allah Almighty said: "Hold fast to whatever is the Sunnah and the Sunnah of the Rightly Guided Caliphs and stay firm on it." And the Prophet (peace and blessings be upon him) said: "Follow Abu Bakr and Umar (may Allah be pleased with them both) after me." As for where Umar Farooq brought the command from, he brought it from where Allah Almighty said regarding Umar Farooq (may Allah be pleased with him): "Those among them who derive conclusions (istinbat) will know the command from you." And Allah Almighty knows best. (T)

Footnotes: 1. Al-Quran Al-Karim 59/7 2. Sunan Ibn Majah, Chapter on following the Sunnah of the Rightly Guided Caliphs, HM Saeed Company Karachi, p. 5 3. Musnad Ahmad bin Hanbal, Hadith of Hudhayfah bin al-Yaman from the Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), 382/5 4. Al-Quran 4/83

फतावा रज़विया जिल्द बारह

[सवाल बॉक्स] (बायाँ कॉलम - फारसी): उमर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) ने यह हुक्म कहाँ से लाया और उस पर इज्मा (आम सहमति) क्यों हुई? और अगर कोई इसके खिलाफ काम करता है और एक तलाक का हुक्म देता है, तो क्या पकड होगी या नहीं? क्यों? (दायाँ कॉलम - उर्दू): नहीं, तो हज़रत उमर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) यह हुक्म कहाँ से लाए और इस पर इज्मा क्यों हुआ? अगर कोई इन ऊपर बताए गए तीन [तलाकों] को एक तलाक करार दे, तो क्या पकड होगी या नहीं? और क्यों?

अल-जवाब (उत्तर): (१) (फारसी): वह तीन तलाकों का मालिक नहीं होगा; जो कुछ भी बचा है वह उसके हाथ में है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (१) (उर्दू): वह तीन तलाकों का मालिक नहीं होगा; बल्कि वह शेष तलाक का मालिक रहेगा। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (२) (फारसी/अरबी): सवाद-ए-आज़म (बहुसंख्यक समुदाय) के विरोधी के अलावा कोई भी इसका विरोध नहीं करेगा, और उमर का हुक्म खुदा का हुक्म है। अल्लाह तआला ने फरमाया: "और जो कुछ रसूल तुम्हें दें उसे ले लो, और जिससे तुम्हें मना करें उससे रुक जाओ।" [१] और उन्होंने (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) फरमाया: "मेरी सुन्नत और खुलफा-ए-राशिदीन की सुन्नत को थामे रहो और उसे मजबूती से पकड़े रहो।" [२] और उन्होंने (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) फरमाया: "मेरे बाद अबू बक्र और उमर का अनुसरण करो।" [३] जहाँ तक बात है कि वे इसे कहाँ से लाए, तो वे इसे यहाँ से लाए, जैसा कि सुभान (अल्लाह) ने उमर के बारे में फरमाया है: "...वे लोग जो इससे सही निष्कर्ष निकाल सकते हैं, इसे जान लेते।" [४] और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (२) (उर्दू): हज़रत उमर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के फैसले और उस पर हुए इज्मा का विरोध केवल सवाद-ए-आज़म का विरोधी ही करेगा, क्योंकि उमर फारूक का हुक्म अल्लाह तआला का प्रतिनिधित्व है। अल्लाह तआला ने फरमाया: "जो कुछ सुन्नत और खुलफा-ए-राशिदीन की सुन्नत है उसे लाज़िम पकड़ो और उस पर मजबूती से कायम रहो।" और हुज़ूर (स.अ.व.) ने फरमाया: "मेरे बाद अबू बक्र और उमर (अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) की पैरवी करो।" लेकिन यह कि उमर फारूक हुक्म कहाँ से लाए, तो वे उसे वहीं से लाए जहाँ अल्लाह तआला ने उमर फारूक (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) के बारे में फरमाया है: "वे लोग जो इस्तिनबात (निष्कर्ष निकालना) करते हैं, तुम में से हुक्म को जान लेंगे।" और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

पाद टिप्पणियाँ: १. अल-कुरान अल-करीम ५९/७ २. सुनन इब्न माजाह, खुलफा-ए-राशिदीन की सुन्नत के पालन का अध्याय, एचएम सईद कंपनी कराची, पृष्ठ ५ ३. मुसनद अहमद बिन हनबल, नबी (स.अ.व.) से हुजैफा बिन अल-यमन की हदीस, ३८२/५ ४. अल-कुरान ४/८३

पृष्ठ ४५९ का ६८८

فتاوی رضویه جلد دوازدہم

[سوال والا خانہ] (بایاں کالم - فارسی): عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ ایں حکم از کجا آوردند واجماع بروئے چرا نمودند واگر خلافش کند و حکم یک طالق دہد مواخذہ خواھد شد یا نہ چرا؟ (دایاں کالم - اردو): نہیں تو حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہاں سے یہ حکم لائے اور اس پر اجماع کیوں ہو، اگر کوئی ان مذکورہ تین کو ایک طلاق قرار دے تو مواخذہ ہوگا یا نہیں تو کیوں؟

الجواب: (۱) مالک سہ طلاق نہ شود ہرچہ باقی ماندہ است ہموں بدست اوست واللہ تعالٰی اعلم۔ (۱) تین طلاقوں کا مالک نہ ہوگا بلکہ باقیماندہ طلاق کا مالک رہے گا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (۲) خلافش نہ کند مگر مخالف سواد اعظم و حکم عمر حکم خداست قال اللہ تعالیٰ "مَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ " 1 و قال صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم "علیکم بسنتی وسنة الخلفاء الراشدین وعضواعلیها بالنواجذ" 2 و قال صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم "اقتدوا بالذین من بعدي ابی بکر وعمر" 3 اما آنکہ از کجا آورد از اینجا آوردہ کہ حق سبحانہ ہم در حق عمر فرمودہ "لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ" 4 واللہ تعالٰی اعلم (۲) حضرت عمر رضی اللہ تعالٰی عنہ کے فیصلہ اور اس پر اجماع کی مخالفت صرف سوادِ اعظم کی مخالف ہی کرے گا، کیونکہ عمر فاروق کا حکم اللہ تعالیٰ کی ترجمانی ہے اللہ تعالٰی نے فرمایا: "جو کچھ سنت اور خلفائے راشدین کی سنّت کو لازم پکڑو اور اس پر مضبوطی سے قائم رہو۔" اور حضور علیہ الصلوۃ والسلام نے فرمایا: میرے بعد ابوبکر اور عمر رضی اللہ تعالٰی عنہما کی پیروی کرو۔" لیکن یہ کہ عمر فاروق حکم کہاں سے لائے، تو وہاں سے لائے جہاں اللہ تعالٰی نے عمر فاروق رضی اللہ تعالٰی عنہ کے متعلق فرمایا ہے حکم کو معلوم کر لیں گے وہ لوگ جو استنباط کریں تم سے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

حواشی: 1 القرآن الکریم ۵۹/۷ 2 سُنن ابنِ ماجہ باب اتباع سنۃ الخلفاء الراشدین المھدیین ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۵ 3 مسند احمد بن حنبل حدیث حذیفہ بن الیمان عن النبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ۳۸۲/۵ 4 القرآن ۸۳/۴

Fatawa Razawiyya, Volume 12

Problem 230: From the town of Kurdarkot, District Etawah, submitted by Mohiuddin Ahmed Sahab, 22 Shaban 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A Muslim man divorced his wife and she stayed outside his house for a week. Within that week, he took her back into his house, and she is present in his house as a wife. What is the Islamic legal ruling for him?

The Answer: If he took her back after a week of divorcing her; if three divorces were given, he became a transgressor (fasiq) and an adulterer (zani). Similarly, if it was an irrevocable divorce (talaq-e-bain) and he took her back without remarrying, it is illicit behavior. But if it was an irrevocable divorce and he took her back after remarrying, or if it was a revocable divorce (talaq-e-raji) and he took her back without a new marriage contract (within the waiting period), then there is no sin. And Allah the Almighty knows best.

Problem 231: 8 Rajab 1312 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A woman's father, brother, mother, and other heirs, with the intention of seizing the husband's property, are spreading rumors of divorce so they can end her marital status with her husband and marry her off elsewhere to profit from the husband's wealth. According to Sharia, what is the ruling for such people? Please clarify and be rewarded.

The Answer: If, in reality, he did not give a divorce, and these people are knowingly spreading lies about a divorce to separate the woman from her husband, then they are deserving of severe punishment and divine curse. (May Allah's protection be sought). Allah the Almighty says:

"...And they learn from them that by which they cause separation between a man and his wife..." (1)

The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "He is not from us who turns a wife against her husband or a slave against his master." (2)

(1) Al-Quran Al-Karim 2:102 (2) Al-Mustadrak al-Hakim, Chapter: 'He is not from us who turns a wife against her husband...', Dar al-Fikr Beirut, 2/196; Sunan Abi Dawud, Book of Divorce, Aftab-e-Alam Press Lahore, 1/296.

फ़तावा रज़विया, खंड 12

मसला 230: कस्बा कुरदरकोट, जिला इटावा से, मुहियुद्दीन अहमद साहब द्वारा प्रस्तुत, 22 शाबान 1338 हिजरी। दीन के उलेमा इस मसले में क्या फरमाते हैं कि एक मुसलमान ने अपनी पत्नी को तलाक दिया और वह उसके घर से एक हफ्ते बाहर रही। एक हफ्ते के भीतर ही उसने उसे फिर से अपने घर में रख लिया, वह उसके घर में पत्नी की तरह मौजूद है, उसके लिए शरीयत का क्या हुक्म है?

जवाब: अगर औरत को तलाक देकर एक हफ्ते बाद फिर रख लिया; अगर तीन तलाकें दी थीं तो वह फासिक (उल्लंघन करने वाला) और ज़ानी (व्यभिचारी) हो गया। इसी तरह अगर 'तलाक-ए-बाइन' (अटल तलाक) दी थी और दोबारा निकाह किए बिना साथ रखा तो हरामकारी हुई। और अगर 'तलाक-ए-बाइन' थी और निकाह करके रखा, या 'तलाक-ए-रजी' (प्रतिसंहरणीय तलाक) थी और बिना (नया) निकाह किए वापस ले लिया (इद्दत के दौरान), तो गुनाह नहीं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 231: 8 रजब 1312 हिजरी। दीन के उलेमा इस मसले में क्या फरमाते हैं कि उस स्त्री के पिता, भाई, माँ और अन्य वारिस, इस इरादे से तलाक की खबर फैला रहे हैं कि पति की जो जायदाद है उसे छीन लें और पति से वैवाहिक संबंध खत्म करवाकर उसकी शादी कहीं और कर दें और पति के धन से लाभ उठाएं। शरीयत के अनुसार ऐसे व्यक्तियों के लिए क्या हुक्म है? बयान करें, सवाब पाएंगे।

जवाब: अगर हकीकत में उसने तलाक नहीं दी है और ये लोग जानबूझकर झूठ बोलकर तलाक की अफवाह फैला रहे हैं ताकि औरत को उसके शौहर से अलग कर सकें, तो वे सख्त अज़ाब और अल्लाह की लानत के हकदार हैं। (अल्लाह की पनाह)। अल्लाह तआला फरमाता है:

"...और वे उन दोनों से वह सीखते हैं जिससे मर्द और उसकी बीवी में जुदाई कर सकें.." (1)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं: "वह व्यक्ति हम में से नहीं है जो किसी की बीवी को उसके(पति के) खिलाफ भड़काए, या किसी गुलाम को उसके आका के खिलाफ।" (2)

(1) कुरानुल करीम 2:102 (2) अल-मुस्तदरक अल-हाकिम, अध्याय: 'वह हम में से नहीं जो पत्नी को पति के विरुद्ध भड़काए...', दारुल फिक्र बेरूत, 2/196; सुनन अबू दाऊद, तलाक की किताब, आफताब-ए-आलम प्रेस लाहौर, 1/296।

पृष्ठ 688 का 460

فتاویٰ رضویہ، جلد دوازدہم

مسئلہ ۲۳۰: از قصبہ کور در کوٹ ضلع اٹاوہ مسئولہ محی الدین احمد صاحب ۲۲ شعبان ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک مسلمان نے اپنی زوجہ کو طلاق دی اور وہ اس کے گھر سے باہر ایک ہفتہ رہی، اندر ایک ہفتہ کے پھر اس نے اُس کو اپنے گھر میں رکھ لیا وہ وہ اس کے گھر میں مثل زوجہ موجود ہے، اس کے واسطے شرعی کیا حکم ہے؟

الجواب: اگر عورت کو طلاق دے کر ہفتہ کے بعد پھر رکھ لیا، اگر تین طلاقیں دی تھی فاسق وزانی ہوا، یونہی اگر طلاق بائن دی تھی اور دوبارہ نکاح نہ کیا حرامکاری ہوا، اور اگر طلاق بائن تھی اور نکاح کرکے رکھا یا طلاق رجعی تھی اور بلا نکاح واپس کر لیا تو گناہ نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۳۱: ۸ رجب ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مسماۃ کے باپ اور بھائی اور ماں اور دیگر ورثاء بہ نیت اس امر کے طلاق مشہور کرتے ہیں کہ جو کچھ جائداد شوہر کی ہے اس کو چھین کر اور شوہر سے زوجیت کو چھڑا کر بجائے دیگر اس کا عقد کریں اور زر شوہر سے نفع اٹھاویں، بموجب شرع کے ایسے شخصوں کے واسطے کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا

الجواب: اگر واقع میں اس نے طلاق نہ دی یہ لوگ دانستہ جھوٹ باندھ کر طلاق مشہور کرتے ہیں تاکہ عورت کو اس کے شوہر سے چھڑا لیں تو سخت عذاب ولعنت الٰہی کے مستحق ہیں والعیاذ باللہ تعالیٰ (اللہ تعالیٰ کی پناہ۔ ت) قال اللہ تعالیٰ:

فَیَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا یُفَرِّقُونَ بِهٖ بَیْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ ط1 ۔ اور سیکھتے ہیں ان دونوں سے وہ جس سے مرد اور اسکی بیوی میں جدائی کر سکیں۔ (ت)

رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: لیس منّا من خبب امرأة علی زوجها او عبدا علی سیده 2 ۔ وہ شخص ہم میں سے نہیں جو کسی کی بیوی کو اس کے خلاف بنائے، یا کسی غلام کو اپنے آقا کے خلاف۔

1 القرآن الکریم ۱۰۲/۲۔ 2 المستدرک للحاکم باب لیس منّا من خبب امرأة علی زوجها الخ دارالفکر بیروت ۱۹۶/۲، سنن ابو داؤد کتاب الطلاق آفتاب عالم پریس لاہور ۲۹۶/۱

Fatwa Razawiyya (Volume 12)

[Arabic text]: Abu Dawud, Al-Nasa'i, and Al-Hakim narrated with a sound chain, and Ibn Hibban in his 'Sahih' from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him). It is also recorded by Ahmad with a sound chain, and Al-Hakim said it is 'Sahih' (authentic) and he established it. Al-Bazzar and Ibn Hibban narrated from Buraidah. Al-Tabarani recorded it in 'Al-Awsat' and 'Al-Saghir' from Ibn Umar. And it is with Abu Ya'la and Al-Tabarani in 'Al-Awsat' from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them).

...did. It was narrated by Abu Dawud, Nasa'i, and Hakim with a sound chain, and Ibn Hibban in his 'Sahih' from Abu Hurairah (may Allah be pleased with him). According to Imam Ahmad, it has a sound chain, and Imam Hakim said it is 'Sahih' and he confirmed its authenticity. Al-Bazzar and Ibn Hibban narrated it from Buraidah (may Allah be pleased with him), and Al-Tabarani narrated it in 'Al-Awsat' and 'Al-Saghir' from Ibn Umar (may Allah be pleased with him). It is also narrated by Abu Ya'la and by Al-Tabarani in 'Al-Awsat' from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them). (T)

Problem 232: From Baijanath Bara, District Raipur, sent by Sheikh Akbar Hussain Sahab, Mutawalli (caretaker) of the Baijanath Bara Mosque, 13 Dhu al-Qi'dah 1312 AH. What do the scholars of the religion say about this matter: In district Raipur, a hereditary Qazi (judge) divorced his wife according to Shariah and left no stone unturned in executing the divorce, even giving back her clothes etc., and sending her from his house to her mother's home. Some residents of Raipur held a gathering for the purpose of verifying whether the divorce was actually given or not. In that gathering, the Qazi repeatedly stated in clear words that he... they also tried to explain much in their own way. After about four years, the woman's heirs filed a claim for her dower (Mahr). When it reached the stage of a warrant, the Qazi and other people, whose intention was to somehow bring about a reconciliation, brought that divorced woman together with him through another woman. The legal dispute in court was settled upon the woman's arrival. Now, what is the decree of the Shariah court? Has the divorce taken place or not? In the event that the divorce has occurred, in what way can he bring her back into his marriage? And can this person perform the duties of an Imam (leading prayer) and a Qazi (judge) or not? And can another person serve as his deputy by his command or not? And what is the ruling for those individuals who assisted in persuading and calling back the woman? Please clarify, and may you be rewarded. The Answer: When the Qazi has divorced his wife, the divorce has indeed taken place; there is absolutely no doubt in this. Then, if the divorce...

[अरबी पाठ]: अबू दाऊद, अल-नसाई और अल-हाकिम ने सही सनद के साथ, और इब्न हिब्बान ने अपनी 'सही' में अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत किया। यह अहमद के पास सही सनद के साथ है, और अल-हाकिम ने इसे सही कहा और इसकी पुष्टि की। और अल-बज़्ज़ार और इब्न हिब्बान ने बुरैदा से। और अल-तबरानी ने 'अल-औसत' और 'अल-सगीर' में इब्न उमर से। और अबू याला और अल-तबरानी के पास 'अल-औसत' में इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) से।

...किया। इसे अबू दाऊद, नसाई और हाकिम ने सही सनद के साथ और इब्न हिब्बान ने अपनी सही में अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत किया, और यह इमाम अहमद के यहाँ सही सनद है और इमाम हाकिम ने कहा सही है और उन्होंने इसे साबित करार दिया, और बज़ार और इब्न हिब्बान ने बुरैदा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से और तबरानी ने औसत और सगीर में इब्न उमर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) से और अबू याला के यहाँ और तबरानी ने औसत में इब्न अब्बास (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) से रिवायत किया। (त)

मसला २३२: बैजनाथ बाड़ा, जिला रायपुर से, प्रेषक शेख अकबर हुसैन साहब, मुतवल्ली (कार्यवाहक) मस्जिद बैजनाथ बाड़ा, १३ ज़ुल-कादा १३१२ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या फरमाते हैं कि: जिला रायपुर में एक पुश्तैनी काजी ने अपनी पत्नी को शरई तौर पर तलाक दिया और तलाक देने में कोई कसर बाकी न रखी, यहाँ तक कि उसके कपड़े आदि भी दे दिए और अपने यहाँ से उसे उसकी माँ के घर पहुँचा दिया। रायपुर के कुछ निवासियों ने यह जाँचने के लिए कि तलाक दिया गया या नहीं, एक सभा आयोजित की। काजी ने उस सभा में भी बार-बार इन शब्दों में बयान किया कि मैंने... उन्होंने भी अपने तौर पर बहुत कुछ समझाया। लगभग चार साल बाद, महिला के वारिसों ने मेहर (स्त्रीधन) का दावा किया। जब वारंट की नौबत आई, तो काजी और अन्य लोगों ने, जिनकी यह मंशा थी कि किसी तरह बस मेल-मिलाप हो जाए, किसी दूसरी महिला के माध्यम से उस तलाकशुदा महिला को मिला दिया। कचहरी का झगड़ा तो महिला के आने पर तय हो गया। अब शरई अदालत क्या हुक्म फरमाती है? क्या तलाक हुआ या नहीं? तलाक होने की सूरत में, वह उसे किस तरह अपने निकाह में ला सकता है? और क्या यह व्यक्ति इमामत और कज़ावत (न्याय) कर सकता है या नहीं? और क्या दूसरा व्यक्ति उसके आदेश से उप-पद (नियाबत) संभाल सकता है या नहीं? और जिन व्यक्तियों ने महिला को राजी करने और बुलाने में मदद की, उनके लिए क्या हुक्म है?

स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा। उत्तर: चूँकि काजी ने अपनी पत्नी को तलाक दे दिया, तो तलाक हो गया, इसमें तो बिल्कुल भी संदेह नहीं है। फिर अगर तलाक...

ابوداؤد والنسائی والحاکم بسند صحیح وابن حبان فی صحیحہ عن ابی ہریرۃ رضی اللہ تعالٰی عنہ وھو عند احمد بسند صحیح والحاکم وقال صحیح واقرہ والبزار وابن حبان عن بریدۃ وعن الطبرانی فی الاوسط والصغیر عن ابن عمر وعند ابی یعلی والطبرانی فی الاوسط عن ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہم۔

کرے۔ اس کو ابوداؤد، نسائی اور حاکم نے بسند صحیح اور ابن حبان نے اپنی صحیح میں ابوہریرہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے روایت کیا، اور یہ امام احمد کے ہاں صحیح سند اور امام حاکم نے کہا صحیح ہے اور اس کو انہوں نے ثابت قرار دیا، اور بزار اور ابن حبان نے بریدہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے اور طبرانی نے اوسط اور صغیر میں ابن عمر رضی اللہ تعالٰی عنہ سے اور ابویعلٰی کے ہاں اور طبرانی نے اوسط میں ابن عباس رضی اللہ تعالٰی عنہم سے روایت کیا۔(ت)

مسئلہ ۲۳۲: از بجناتھ باڑہ ضلع رائے پور مرسلہ شیخ اکبر حسین صاحب متولی مسجد بجنا تھ باڑہ ۱۳ ذیقعدہ ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ضلع رائے پور میں ایک موروثی قاضی نے اپنی بی بی کو شرعی طور پر طلاق دی اور طلاق دینے میں کوئی دقیقہ باقی نہ رکھا حتی کہ اس کے کپڑے وغیرہ بھی دے دیئے اور اپنے یہاں سے اس کی ماں کے گھر پہنچا دیا بعض بعض باشندگان رائے پور نے بغرض تحقیق اس بات کے کہ طلاق دی یا نہیں جلسہ کیا قاضی نے اس جلسہ میں بھی مکرر سہ کرر ان الفاظ سے بیان کی کہ میں انہوں نے بھی اپنے طور پر بہت کچھ سمجھایا، تقریباً چار برس کے بعد عورت کے وارثوں نے مہر کا دعوٰی کیا جب نوبت وارنٹ کی پہنچی تو قاضی اور دوسرے لوگوں نے جن کی یہ منشا تھی کہ کسی طرح سے بس اس

میں میل ہو جائے کسی دوسری عورت کے ذریعہ اس عورت مطلقہ کو ملا دیا کچہری کا جھگڑا تو عورت کے آنے پر طے ہوا اب عدالت شرعی کیا حکم فرماتی ہے آیا طلاق ہوئی یا نہیں در صورت طلاق ہونے کے یہ کس صورت میں اپنے نکاح میں لا سکتا ہے اور یہ شخص امامت اور قضاوت کر سکتا ہے یا نہیں، اور دوسرا شخص اس کے حکم سے نیابت کر سکتا ہے یا نہیں، اور جن اشخاص نے عورت کو راضی کرنے اور بلانے میں مدد کی ان کے واسطے کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا الجواب: جبکہ قاضی نے اپنی عورت کو طلاق دی طلاق ہو گئی، اس میں تو اصلاً شبہ نہیں، پھر اگر طلاق

Fatawa Ridawiyya Volume 12

...gave a revocable divorce (Bain) or it became revocable after the waiting period (Iddah) ended, then reuniting with that woman without a new marriage (Nikah) was absolutely forbidden (Haram). And if three divorces had been given, then even a new marriage without Halala was impossible. The idea that divorce does not occur at all in anger is a purely ignorant thought; divorce usually occurs in anger—who leaves someone in a state of mutual agreement? Thus, in the previous two scenarios, if the Qazi (judge) arranged a reunion without a new marriage, and in the last scenario without Halala and marriage, then he and all those who participated and assisted in this reunion committed a forbidden act and became transgressors (Fasiq). A transgressor is not fit to be made an Imam, to the extent that whoever keeps him in the position of Imamate will be a sinner, as explicitly stated in Radd al-Muhtar on the authority of Al-Ghaniyya from Al-Hujja. Similarly, he is also not deserving of the position of Sharia-based judgeship (the text ends here due to being worm-eaten).

In Ad-Durr al-Mukhtar: A transgressor must not be appointed [as a judge] and the one who appoints him sins. This is the given fatwa. Abridged.	It is in Durr-e-Mukhtar: It is necessary that the position of judge should not be handed over to a transgressor; the one who makes him a judge is a sinner. The fatwa is based on this. Abridged (T).

And he himself should not be kept in these positions; he should make someone else a deputy. And this customary judgeship, i.e., performing marriages, which is called the office of Qadha, should also not be entrusted to a transgressor because marriage is a specific religious matter, and hundreds of religious rulings throughout life depend on it. A transgressor's word is not reliable in religious matters, nor is there any reassurance in anything he says. Therefore, it is stated in the Great Qur'an:

O you who have believed, if there comes to you a disobedient person with information, investigate... [49:6]	O believers! If a transgressor brings you news, investigate it thoroughly... (the verse) (T).

And Allah, glorified and exalted is He, knows best, and His knowledge, may His glory be magnificent, is most complete and wise.

Problem 233: From Bhadrak, Balasore District, Odisha. Queried by Zamir Khan Nangha, 8 Shawwal 1339 AH.

What do the scholars of religion say regarding this matter: A person named Zamir Khan committed adultery with his own sister-in-law (wife's real sister). Her husband filed a case against Zamir in court. After the case, her husband formally divorced her. However, while the case was ongoing, because Zamir's wife spoke harshly to him, he had already given his wife three divorces in anger. When Zamir was released from the case, he [married/reunited with] his sister-in-law...

---

1. Durr al-Mukhtar, Kitab al-Qadha, Mujtabai Press, Delhi, 2/171.
2. The Holy Qur'an, 49/6.

फतावा रिज़विया खंड 12

...तलाक-ए-बाइन दी थी या इद्दत गुज़रने के बाद बाइन हो गई, तो बिना नए निकाह के उसी औरत से मिलना पूरी तरह हराम (वर्जित) था। और यदि तीन तलाकें दे दी गई थीं, तो बिना हलाला के नया निकाह भी असंभव था। यह विचार कि गुस्से में तलाक बिल्कुल नहीं होता, पूरी तरह अज्ञानतापूर्ण है; तलाक अक्सर गुस्से में ही होता है—सहमति में कौन छोड़ता है? अतः पिछली दो स्थितियों में यदि काजी ने बिना नए निकाह के और अंतिम स्थिति में बिना हलाला और निकाह के उस महिला से मिलाप करा दिया, तो वह और इस मिलाप में शामिल और सहायक सभी लोग हराम के अपराधी और फासिक (अधर्मी) हुए। फासिक इमाम बनने के योग्य नहीं है, यहाँ तक कि जो उसे इमाम बनाए रखेगा वह गुनाहगार होगा, जैसा कि रद्द-उल-मुहतार में अल-ग़निय्या के हवाले से अल-हुज्जा से स्पष्ट रूप से उद्धृत किया गया है। इसी तरह, वह शरीयत के आधार पर काजी (न्यायाधीश) के पद के योग्य भी नहीं है (दीमक द्वारा खाए जाने के कारण इबारत यहाँ समाप्त हो गई है)।

दुर्र-ए-मुख्तार में है: फासिक को अनिवार्य रूप से नियुक्त नहीं किया जाना चाहिए और उसे नियुक्त करने वाला गुनाहगार होता है। इसी पर फतवा है। संक्षेप में।

दुर्र-ए-मुख्तार में है: यह ज़रूरी है कि फासिक को काजी का पद न सौंपा जाए; उसे काजी बनाने वाला गुनाहगार होता है। इसी पर फतवा है। संक्षेप में (त)।

और उसे स्वयं इन पदों पर न रखा जाए; वह किसी और को प्रतिनिधि बनाए। और यह प्रथागत काजीगिरी, यानी निकाह पढ़ाना जिसे काजी का पद कहा जाता है, यह भी फासिक को नहीं सौंपा जाना चाहिए क्योंकि निकाह एक विशिष्ट धार्मिक मामला है और जीवन भर सैकड़ों धार्मिक आदेश उस पर आधारित होते हैं। धार्मिक मामलों में फासिक का कोई एतबार (भरोसा) नहीं है, न ही उसकी किसी बात पर इत्मीनान (संतुष्टि) हो सकती है। इसलिए, महान कुरान में इरशाद हुआ:

ऐ ईमान वालों! अगर तुम्हारे पास कोई फासिक खबर लाए तो उसकी अच्छी तरह जाँच कर लो... (आयत 49:6)।

ऐ ईमान वालों! अगर तुम्हारे पास कोई फासिक खबर लाए तो उसकी अच्छी तरह जाँच कर लो... (आयत) (त)।

और अल्लाह सुब्हानहू व तआला सबसे बेहतर जानता है, और उसका ज्ञान पूर्ण और हिकमत वाला है।

मसला 233: भद्रक, जिला बालेश्वर, ओडिशा से। प्रेषक ज़मीर खान नंगा, 8 शव्वाल 1339 हिजरी।

धर्म के विद्वान इस मसले में क्या फरमाते हैं कि ज़मीर खान नाम के एक व्यक्ति ने अपनी सगी साली के साथ ज़िना (व्यभिचार) किया। उसके पति ने ज़मीर पर कचहरी में मुकदमा दायर किया। मुकदमे के बाद उसकी साली को उसके पति ने बाकायदा तलाक दे दिया। लेकिन जिस समय मुकदमा चल रहा था, ज़मीर की पत्नी द्वारा ज़मीर को बुरा-भला कहने के कारण उसने गुस्से में अपनी पत्नी को तीन तलाक दे दी थी। जब ज़मीर मुकदमे से बरी हुआ, तो उसने अपनी साली से...

---

1. दुर्रे मुख्तार किताबुल कज़ा, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 2/171
2. अल-कुरानुल करीम, 49/6

بائن دی تھی یا عدت گزر کر بائن ہو گئی تو بے نکاحِ جدید اُسی عورت سے مل جانا حرام قطعی تھا، اور اگر تین طلاقیں دے چکا جب تو بے حلالہ نکاحِ جدید بھی ناممکن تھا اور یہ خیال کہ غصہ میں مطلقاً طلاق نہیں ہوتی محض جاہلانہ خیال ہے، طلاق اکثر غصہ ہی میں ہوتی ہے رضامندی میں کون چھوڑتا ہے، پس دو صورت سابقہ میں اگر قاضی نے بے نکاحِ جدید اور صورتِ اخیرہ میں بے حلالہ و نکاح اُس عورت سے میل کرا لیا تو وہ اور اس کے ساتھی جتنے لوگ اس ملانے میں شریک و مددگار تھے سب مرتکب حرام و فاسق ہوئے، فاسق امام بنانے کے لائق نہیں یہاں تک کہ جو اُسے امامت پر باقی رکھے گا گنہگار ہوگا کما نص علیہ فی ردالمختار عن الغنیۃ عن الحجۃ (جیسا کہ ردالمحتار میں غنیہ کے حوالے سے حجہ سے صراحتاً نقل کیا ت) یونہی وہ عہدہ قضاءِ شرعی کا بھی مستحق نہیں (کرم خوردہ ہونے کی وجہ سے عبارت ختم ہو گئی ہے ۱۲)

فی الدر المختار الفاسق لا یقلد وجوباً ویأثم مقلدہ بہ یفتی اھ ملخصاً۔

دُرِ مختار میں ہے ضروری ہے کہ فاسق کو قاضی کا عہدہ نہ سونپا جائے اس کو قاضی کرنیوالا گنہگار ہوتا ہے، اسی پر فتوٰی ہے اھ ملخصاً (ت)

اور وہ خود ان عہدوں پر نہ رکھا جائے، دوسرے کو نائب کیا کرے گا اور یہ قضائے عرف یعنی نکاح خوانی جسے عہدہ قضا بولتے ہیں یہ بھی فاسق کو تفویض نہ کرنا چاہئے کہ نکاح خاص امر دین ہے اور عمر بھر صدہا احکامِ دینیہ اُس پر متفرع ہوتے رہتے ہیں اور فاسق کا امورِ دینیہ میں کچھ اعتبار نہیں، نہ اس پر کسی بات میں اطمینان، ولہذا قرآنِ عظیم میں ارشاد ہوا:

یَا أَیُّھَا الَّذِینَ آمَنُوا إِنْ جَاءَکُمْ فاسِقٌ اے ایمان والو! اگر تمہارے پاس کوئی فاسق خبر لائے تو اس کی بِنَبَإٍ فَتَبَیَّنُوا الآیۃ۔ خوب چھان بین کرلے الآیۃ (ت)

واللہ سبحنہ و تعالی اعلم وعلمہ جل مجدہ اتم واحکم۔

مسئلہ ۲۳۳: از بھدرک ضلع بالیسر ملک اوڑیسہ مسئولہ ضمیر خاں ننگھا ۸ شوال ۱۳۳۹ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ضمیر خاں نامی ایک شخص نے اپنی حقیقی سالی سے زنا کا مرتکب ہوا، اُسکے شوہر نے ضمیر پر کچہری میں مقدمہ دائر کیا بعد مقدمہ اس کی سالی کو اُسکے شوہر نے با قاعدہ طلاق دے دی لیکن جس وقت مقدمہ چل رہا تھا ضمیر کی زوجہ کے ضمیر کو سخت سُست کہنے سے غصہ میں اپنی زوجہ کو تین طلاق دے چکا تھا جب مقدمہ سے ضمیر نے خلاص پایا اُس نے اپنی سالی سے

---

1. درمختار کتاب القضاء مطبع مجتبائی دہلی ۲/۱۷۱

2. القرآن الکریم ۶/۴۹

Fatawa Razawiyya Volume 12

...promised that, "if I am released from the case, I will keep you in my house." Therefore, having been freed from the case due to his sister-in-law's silence, he brought his sister-in-law into his house. According to the above statement, the villagers pressured Zamir to take action and held a meeting, saying, "Whether you want to cast out the younger sister or divorce the elder one and marry the younger one." At that time, Zamir gave a triple divorce (Talaq-e-Thalatha) to his wedded wife and married his sister-in-law. What is the ruling of the Sharia in such a situation? Please explain and be rewarded.

The Answer: His first wife received three divorces. If the marriage took place after her waiting period (iddah) had passed, and also after the iddah of the divorce given to the sister-in-law by her husband had passed, then this marriage is valid. If any of the two iddah periods were still remaining, then it was prohibited and void (fasid). It is obligatory upon him to leave this second wife as well. Once the iddah periods of both sisters have passed, he can marry this second one.

Issue 234: From Daleel Ganj, Post Office Jahanabad, District Pilibhit, sent by Akbar Yar Khan Sahib and Hafiz Syed Mir Sahib, 14 Jumada al-Akhira 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A woman who was from another place, her mother had been living here for a long time. When her mother fell ill, that woman (her daughter) came to Daleel Ganj to see her. During this time, her mother died. Her two sisters are also present in Daleel Ganj, whose marriages also took place here. After the death of her mother, her brother-in-law kept her in his house. For some time, she stayed at her brother-in-law's brother's place. Then her husband was called, and after giving him fourteen rupees, a divorce was obtained from her husband. Now she is still present with that person. Is this decision made by the arbitrators correct? What is the ruling regarding those persons who formed this panchayat (assembly)? And regarding the one in whose house an unmarried woman is present, now he intends to marry her after the iddah; will that marriage be correct or wrong?

The Answer: Divorce has taken place; marriage after the iddah will be valid. As for the one who kept her at his place without marriage, if he committed any unlawful act with her, even if it was just being together in a lonely house for a minute, then he is a transgressor (fasiq) and deserving of punishment. And if the fourteen rupees were given not as a proprietary claim, as is the custom among some base and ignorant

people, then this giving and taking is haram (forbidden) for both, and all those making the decision are guilty of sin. And if there is agreement between the man and woman...

...वादा किया था कि "अगर मैं मुक़दमे से छूट गया तो तुझे अपने घर में रखूँगा।" अतः अपनी साली की खामोशी की वजह से मुक़दमे से बरी पाकर वह अपनी साली को अपने घर ले आया। ऊपर के बयान के अनुसार, गाँव वालों ने ज़मीर पर कार्रवाई करने के लिए दबाव डाला और एक पंचायत बुलाकर कहा, "चाहे तुम छोटी को निकाल दो या बड़ी को तलाक़ दे दो और छोटी से निकाह कर लो।" उस समय ज़मीर ने अपनी ब्याहता पत्नी को तलाक़-ए-सलासा (तीन तलाक़) दे दिया और अपनी साली से निकाह कर लिया। ऐसी स्थिति में शरीयत का क्या हुक्म है? बयान फरमाएं और सवाब पाएं।

उत्तर: उसकी पहली पत्नी को तीन तलाक़ हो गए। यदि निकाह उसकी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) गुज़रने के बाद हुआ है, और साथ ही साली को उसके पति द्वारा दिए गए तलाक़ की इद्दत भी गुज़र चुकी थी, तो यह निकाह सही है। और अगर दोनों इद्दतों में से कोई भी इद्दत बाकी थी, तो यह हराम और फासिद (अवैध) हुआ। उस पर फर्ज़ है कि वह इस दूसरी पत्नी को भी छोड़ दे। जब दोनों बहनों की इद्दत गुज़र जाए, तो वह इस दूसरी से निकाह कर सकता है।

मसला २३४: दलील गंज, डाकखाना जहानाबाद, जिला पीलीभीत से प्रेषित, अकबर यार खान साहब और हाफ़िज़ सैयद मीर साहब द्वारा, १४ जमादी-उल-आखिरा १३३८ हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या फरमाते हैं: एक औरत जो दूसरी जगह की रहने वाली थी, उसकी माँ काफी समय से यहाँ रह रही थी। जब उसकी माँ बीमार हुई, तो वह औरत यानी उसकी बेटी उसे देखने के लिए दलील गंज आई। इसी बीच उसकी माँ का इंतकाल हो गया। उसकी दो बहनें भी दलील गंज में मौजूद हैं, जिनकी शादी भी यहीं हुई थी। उसकी माँ की मृत्यु के बाद, उसके बहनोई ने उसे अपने घर में रख लिया। कुछ समय तक वह अपने बहनोई के भाई के यहाँ रही। फिर उसके पति को बुलवाया गया और चौदह रुपये देकर उसके पति से तलाक़ दिलवाया गया। अब वह पहले की तरह उस व्यक्ति के पास मौजूद है। क्या इन पंचों द्वारा किया गया यह फैसला सही है? और उन लोगों के बारे में क्या हुक्म है जिन्होंने यह पंचायत की? और उस व्यक्ति के संबंध में जिसके घर में एक गैर-निकाह वाली औरत मौजूद है और अब वह इद्दत के बाद उससे निकाह करने का इरादा रखता है, क्या वह निकाह सही होगा या गलत?

उत्तर: तलाक़ हो गया है; इद्दत के बाद निकाह सही होगा। और जिस व्यक्ति ने बिना निकाह के उसे अपने यहाँ रखा है, यदि उसने उसके साथ किसी नाजायज़ काम का अपराध किया है, यहाँ तक कि

एक मिनट के लिए अकेले घर में साथ रहना भी, तो वह फासिक़ (पापी) है और सज़ा का हकदार है। और अगर वे चौदह रुपये मालिकाना हक के तौर पर नहीं दिए गए, जैसा कि कुछ नीच जाहिलों में रिवाज है, तो यह लेना-देना दोनों के लिए हराम है और वे फैसला करने वाले सभी गुनाहगार हैं। और अगर स्त्री और पुरुष में सहमति है...

पृष्ठ 463/688

وعدہ کیا تھا، اگر میں مقدمہ سے خلاص ہوا تو تجھے اپنے مکان میں رکھوں گا لہٰذا اپنی سالی کی زبان بندی سے مقدمہ سے مخلص پایا اور اپنی سالی کو اپنے مکاں میں لے آیا اوپر کے بیان کے مطابق ضمیر کو کاروائی کرنے سے بستی والوں نے جبر کیا اور ایک جلسہ کر کے کہا تو چاہے چھوٹی کو نکال دے یا بڑی کو طلاق دے اور چھوٹی سے نکاح کرلے، اس وقت ضمیر نے اپنی منکوحہ کو طلاقِ ثلاثہ دیا اور اپنی سالی سے نکاح کرلیا، ایسی حالت میں کیا حکم شرع شریف ہے۔ بینوا توجروا۔

الجواب: اس کی پہلی زوجہ کو تین طلاقیں ہو گئیں، اس کی عدت گزرنے کے بعد نکاح کیا ہے نیز سالی کو اس کے شوہر نے جو طلاق دی اس کی عدت بھی گزرنے کے بعد تو یہ نکاح صحیح ہو گیا اور اگر دونوں عدتوں میں سے کوئی عدت باقی تھی تو حرام فاسد ہوا اس پر فرض ہے کہ اس دوسری کو بھی چھوڑ دے جب دونوں بہنوں کی عدتیں گزر جائیں اس دوسری سے نکاح کرسکتا ہے۔

مسئلہ ۲۳۴: از دلیل گنج ڈاک خانہ جہان آباد ضلع پیلی بھیت مرسلہ اکبر یار خان صاحب و حافظ سید میر صاحب ۱۴ جمادی الاخرہ ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت جو غیر جگہ کی رہنے والی تھی اس کی ماں ایک عرصہ سے یہاں آباد تھی جب اس کی ماں بیمار ہوئی تو اس کے دیکھنے کی غرض وہ عورت یعنی اس کی لڑکی دلیل گنج آئی اس کی ماں اس عرصہ میں مرگی اسکی دو بہنیں بھی دلیل گنج میں موجود ہیں جن کی شادی بھی یہیں ہوئے بعد انتقال اس کی ماں کے اس کے بہنوئی نے اپنے گھر میں رکھ لیا کچھ عرصہ تک وہ اپنے

بہنوئی کے بھائی کے یہاں رہی پھر اس کے خاوند کو بلوایا اور چودہ روپے دے کر اس کے خاوند سے طلاق دلوائی اب وہ بدستور اس شخص کے یہاں موجود ہے یہ فیصلہ جن پنچوں نے کیا ہے آیا صحیح ہے اور ان شخصوں کی بابت کیا حکم ہے جنہوں نے یہ پنچائت کی اور اس کی نسبت جس کے گھر میں غیر نکاحی عورت موجود ہے اب اس کا نکاح بعد عدت کرنے کا ارادہ ہے آیا وہ نکاح صحیح ہوگا یا غلط؟

الجواب: طلاق ہو گئی بعد عدت نکاح صحیح ہوگا اور یہ جس نے بلا نکاح اسے اپنے یہاں رکھا ہے اگر کسی امرِ ناجائز کا اس کے ساتھ مرتکب ہوا ہے اگرچہ اسی قدر کہ تنہا مکان میں ایک منٹ کے لئے ساتھ ہونا تو فاسق ہے مستحقِ عذاب ہے اور چودہ روپے اگرچہ بطورِ مالکانہ نہ دئے گئے جیسا بعض رذیل جاہلوں میں رواج ہے تو یہ لینا دینا دونوں حرام اور وہ فیصلہ کرنے والے سب مبتلائے آثام، اور اگر مرد و زن میں اتفاق

Fatawa Razawiyya Volume 12

...there was no way, and the woman gave money to obtain a divorce (khula), or someone else gave it on her behalf, then this situation falls under khula. The blame lies with whoever was excessive. And Allah Almighty knows best.

Problem 235: From Awan Village, Begowal Post Office, Kapurthala State, 8 Jumada al-Ula 1336 AH. Zaid has been separated from his wedded wife for nine or ten years, although he kept sending letters. From the day of the marriage, his wife lived at her parents' house. Now, a year ago, Zaid's wedded wife herself committed adultery and married another husband, Bakr. A boy was born from his (Bakr's) seed, but news and letters from her first husband named Zaid keep coming. Now the petition is, is this marriage valid? And is the offspring Bakr obtained from this woman through a valid method and Islamically legitimate? Bakr is also a mosque Imam. Since he did this illegal act, are the prayers of those who have been praying behind him valid? And if not valid, what punishment should they receive?

Answer: If Bakr married this woman not knowing she was wedded to another, then this marriage was not a sin on his part. If a child was born six months or more after this marriage, it will not be called a child of adultery (illegitimate), and it belongs to Bakr himself.

[Left column]: This is according to the opinion to which the Imam (Abu Hanifa) returned and the fatwa is based on it. (Ref: Tajnis, Khaniya, Sirajiya, Hindiyya, etc.) [Right column]: Based on the direction to which the Imam sahib returned, and upon this is the Fatwa. Tajnis, Khaniya, Sirajiya, Hindiyya etc. (T)

Furthermore, if he still does not know, there is no blame on him, nor is there any harm in his leading the prayer for this reason. But if he found out later and did not leave the woman, then he is an adulterer, and praying behind him is 'Makruh Tahrimi' (strongly prohibited); performing it is a sin and if performed, it is obligatory to repeat it. And if at the time of marriage he knew she was wedded to another and intentionally married her, then the marriage did not take place; it was pure adultery. This is the ruling given (Bah-Yafti, Zakhira, Bazaziya, Fath, Bahr). In this case, the boy belongs to Zaid. The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) said:

"The child belongs to the [marriage] bed, and for the adulterer is the stone."

The child is the husband's and for the adulterer, there is stoning. And Allah Almighty knows best.

1. Musnad Ahmad bin Hanbal, Hadith from Affan, Dar al-Fikr Beirut, 1/59; Kanz al-Ummal Hadith, Turath al-Islami Aleppo, Beirut 5/293.

फ़तावा रज़विया खंड 12

...कोई रास्ता नहीं था और महिला ने पैसे देकर तलाक (खुला) ले लिया या किसी और ने उसकी ओर से दिए, तो यह स्थिति 'खुला' के अंतर्गत आएगी। जिस किसी की ओर से ज्यादती हुई, दोष उसी पर होगा। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसाला 235: ग्राम आवां, डाकखाना बेगोवाल, रियासत कपूरथला, 8 जमाद-उल-उला 1336 हिजरी। ज़ैद अपनी विवाहिता पत्नी से नौ या दस साल से अलग है, हालांकि वह पत्र भेजता रहा। विवाह के दिन से ही उसकी पत्नी अपने माता-पिता के घर रही। अब एक साल पहले, ज़ैद की विवाहिता पत्नी ने स्वयं व्यभिचार किया और दूसरे पति बक्र से निकाह कर लिया। उसके(बक्र के) वीर्य से एक लड़का पैदा हुआ, लेकिन उसके पहले पति जिसका नाम ज़ैद है, उसकी खबरें और पत्र आते रहते हैं। अब प्रार्थना यह है कि क्या यह निकाह जायज़ है? और बक्र ने इस महिला से जो संतान प्राप्त की है, क्या वह जायज़ तरीके से है और शरीयत के अनुसार हलाल है? और बक्र मस्जिद का इमाम भी है। चूंकि उसने यह नाजायज़ काम किया, तो जो लोग उसके पीछे नमाज़ अदा करते रहे हैं, क्या वे सही हैं? और अगर सही नहीं हैं, तो उन्हें क्या सज़ा मिलनी चाहिए?

उत्तर: बक्र ने जो इस महिला से निकाह किया, अगर उसे यह मालूम नहीं था कि यह किसी दूसरे की विवाहिता है, तो यह निकाह उसके हक में गुनाह नहीं हुआ। और इस निकाह से अगर छह महीने या उससे अधिक समय के बाद बच्चा पैदा हुआ, तो उसे 'वलद-उज़-ज़िना' (व्यभिचारी की संतान) नहीं कहेंगे और वह इसी बक्र का है।

[बायां कॉलम]: इमाम (अबू हनीफा) जिस तरफ लौटे, उस पर आधारित और इसी पर फतवा है। तजनीस, खानिया, सिराजिया, हिंदिया वगैरह। [दायां कॉलम]: इमाम साहब ने जिस तरफ रुजू फरमाया उसकी बिना पर और इसी पर फतवा है। तजनीस, खानिया, सिराजिया, हिंदिया वगैरह। (त)

फिर अगर उसे अब तक पता नहीं है, तो उस पर कोई दोष नहीं है, न ही इस वजह से उसकी इमामत में कोई हर्ज है। लेकिन अगर उसे बाद में पता चल गया और उसने महिला को नहीं छोड़ा, तो वह ज़ानी (व्यभिचारी) है और उसके पीछे नमाज़ 'मकरूह तहरीमी' है, जिसे पढ़ना गुनाह है और अगर पढ़ ली तो उसे दोहराना वाजिब है। और अगर निकाह के वक्त ही उसे मालूम था कि यह दूसरे की विवाहिता है और जानबूझकर निकाह किया, तो निकाह हुआ ही नहीं; यह केवल व्यभिचार था।

फतवा इसी पर है (ज़खीरा, बज़ाज़िया, फ़तह, बहर)। इस सूरत में लड़का ज़ैद का है। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

"बच्चा बिस्तर (निकाह) वाले का है और व्यभिचारी के लिए पत्थर है।"

यानी बच्चा पति का होगा और व्यभिचारी के लिए पत्थर (रजम) है। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

---

1. मसनद अहमद बिन हंबल, हदीस अफ़्फ़ान से, दारुल फ़िक्र बेरूत, 1/59; कंज़ुल उम्माल हदीस, तुरासुल इस्लामी हलब, बेरूत 5/293।

کی کوئی صورت نہ تھی اور عورت نے روپے دے کر طلاق لی یا اس کی طرف سے کسی اور نے دئے تو یہ صورت خلع میں آجائے اور جس کی طرف سے زیادتی ہے اس پر الزام رہے گا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۳۵: از موضوع آواں ڈاکخانہ بیگووال ریاست کپور تھلہ ۸ جمادی الاولٰی ۱۳۳۶ھ زید اپنی منکوحہ سے نو یا دس سال سے جدا ہو گیا البتہ خط ارسال کرتا رہا اس کی منکوحہ روز نکاح سے اپنے والدین کے گھر میں رہی اب ایک سال سے زید کی منکوحہ نے خود زنا اپنا دوسرے خاوند بکر سے نکاح کر لیا اس کے نطفہ سے ایک لڑکا پیدا ہوا لیکن اس کے پہلے خاوند مسمیٰ زید کی خبر اور خط آتے رہتے ہیں اب عرض یہ ہے کہ نکاح جائز ہے اور اولاد اس عورت سے بکر نے جو حاصل کی طریقہ جائز ہے اور وہ اولاد شرعاً حلال ہے؟ اور بکر امام مسجد بھی ہے اور اس نے یہ ناجائز کام کیا تو جو شخص اس کے پیچھے نمازیں ادا کرتے رہے کیا وہ درست ہیں؟ اور اگر درست نہیں تو انہیں کیا تعزیر ہونی چاہئے؟

الجواب: بکر نے جو اس عورت سے نکاح کیا اگر اسے معلوم نہ تھا کہ یہ دوسرے کی منکوحہ ہے تو یہ نکاح اس کے حق میں گناہ نہ ہوا اور اس نکاح سے اگر چھ مہینے یا زیادہ کے بعد بچہ پیدا ہوا تو اسے ولد الزنا نہ کہیں گے اور وہ اسی بکر کا ہے،

علی مارجع الیہ الامام وعلیہ الفتوٰی تجنیس، امام صاحب نے جس طرف رجوع فرمایا اس کی بناء پر اور اسی خانیہ،سراجیہ، ہندیہ وغیرہا۔ پر فتوٰی ہے۔ تجنیس،خانیہ،سراجیہ،ہندیہ وغیرہ۔(ت)

پھر اگر اسے اب تک نہیں معلوم تو اس پر الزام نہیں، نہ اس وجہ سے اس کی امامت میں کوئی حرج، اور اگر بعد کو معلوم ہوگیا اور عورت کو نہیں چھوڑا تو زانی ہے اور اس کے پیچھے نماز مکروہ تحریمی کہ پڑھنی گناہ اور پڑھی تو پھیرنی واجب اور اگر وقت نکاح ہی سے اسے معلوم تھا کہ یہ دوسرے کی منکوحہ ہے اور دانستہ نکاح کیا تو نکاح نہ ہوا زنائے محض ہوا بہ یفتی، ذخیرہ، بزازیہ، فتح، بحر (اسی پر فتویٰ ہے ذخیرہ، بزازیہ، فتح، بحر۔ت) اور اس صورت میں لڑکا زید کا ہے۔ نبی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم فرماتے ہیں:

الولد للفراش وللعاھر الحجر ۱

بچہ شوہر کا اور زانی کو پتھر، واللہ تعالٰی اعلم۔

---

۱ مسند احمد بن حنبل حدیث بن عفان دار الفکر بیروت ۱/ ۵۹، کنز العمال حدیث تراث الاسلامی حلب بیروت ۵/ ۲۹۳

Fatawa Rizvia, Volume 12

Problem 236: From Raipur, Central Provinces, Mohalla Baijnath Barah, sent by Munshi Muhammad Ishaq Sahib, 29 Jumada al-Thani 1312 AH.

Question: What do the scholars of religion say regarding this matter: If a woman has been given a minor irrevocable divorce (Talaq-e-Bain Ghayr Mughallazah), her remarriage to her husband can occur after the waiting period ('iddah). However, in a situation where she is not willing to return to her husband, can she legally (Shariah-wise) marry another person after the 'iddah is complete or not? Please clarify and be rewarded. (State it and get rewarded. T)

Answer: Remarriage with the husband is possible even immediately; there is no need for the 'iddah to pass. Yes, she can marry another person after the 'iddah has passed. A woman who is given an irrevocable divorce (Talaq-e-Bain) becomes independent immediately upon the divorce. After the 'iddah, she can marry whomever she chooses and cannot be forced to remarry her first husband.

Arabic Text	**Urdu Translation**
In Al-Hindiyyah, quoted from Al-Hidayah: "If the divorce is irrevocable but less than three, it is permissible for him to remarry her during the 'iddah and after its completion..."	It is narrated in Hindiyyah from Hidayah that when there is an irrevocable divorce and it is less than three, it will be permissible for the husband to remarry within the 'iddah and upon its completion etc.
And in it from Al-Fath: "The ruling is that separation occurs upon the completion of 'iddah in a revocable divorce (Raj'i), and without it in an irrevocable divorce (Bain)."	And in Hindiyyah, it is narrated from Fath that the ruling of divorce is that if it is revocable, separation will occur after the 'iddah ends, and if it is irrevocable, separation occurs even before the 'iddah ends.
And in Al-Durr al-Mukhtar: "Because she does not own herself except by an irrevocable divorce."	In Durr-e-Mukhtar, it is stated that with an irrevocable divorce, the wife becomes independent for marriage.
And in Al-'Uqud al-Durriyah: "If an irrevocable divorce occurs, she becomes owner of herself. When her	In 'Uqud-e-Durriyah, it is stated that upon the occurrence of an irrevocable divorce, she becomes her own master, and upon the

Arabic Text	Urdu Translation
'iddah ends, she becomes a stranger (to the former husband)." Summarized. All these matters are well-known and clear. And Allah Almighty knows best.	completion of 'iddah, she becomes a stranger to the husband. Summarized. All these issues are famous and clearly known. And Allah, glorified and exalted be He, knows best. (T)

1. Fatawa Hindiyyah, Chapter on what makes a divorced woman lawful and related matters, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/471-472.
2. Fatawa Hindiyyah, Book of Divorce, First Chapter, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/328.
3. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Express Divorce, Matba' Mujtabai Delhi, 1/222.
4. Al-'Uqud al-Durriyah fi Tanqih Fatawa al-Hamidiyyah, Book of Divorce, Tajiran-e-Kutub Arg Bazar Kandahar Afghanistan, 1/35.

फ़तावा रिज़विया, जिल्द बारहवीं

मसला 236: रायपुर, सेंट्रल प्रोविंस, मोहल्ला बैजनाथ बारह से मुंशी मोहम्मद इशाक साहब द्वारा भेजा गया, 29 जमादी अल-थानी 1312 हिजरी।

सवाल: दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि जो औरत तलाक़-ए-बाइन ग़ैर मुग़ल्लज़ह (एक या दो तलाक़ के बाद अलगाव) से तलाक़शुदा है, तो उसकी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के बाद अपने पति से दोबारा शादी हो सकती है, लेकिन जिस स्थिति में वह अपने पति से राजी न हो, क्या वह इद्दत के बाद शरीयत के अनुसार किसी दूसरे व्यक्ति से शादी कर सकती है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें। (बयान करें और सवाब पाएं। त)

जवाब: पति से तो उसी समय निकाह हो सकता है, इद्दत गुज़रने की ज़रूरत नहीं। हाँ, दूसरे व्यक्ति से इद्दत गुज़रने के बाद कर सकती है। जिस औरत पर तलाक़-ए-बाइन हो जाए, वह तलाक़ होते ही फ़ौरन मुख़्तार (स्वतंत्र) हो जाती है। इद्दत के बाद जिससे चाहे निकाह कर ले, पहले पति से निकाह करने पर मजबूर नहीं की जा सकती।

अरबी मूलपाठ	**उर्दू अनुवाद**
हन्दिया में हिदाया से उद्धृत है: "अगर तलाक़ बाइन हो और तीन से कम हो, तो उसके लिए इद्दत के दौरान और उसके पूरा होने के बाद उससे शादी करना जायज़ है..."	हन्दिया में हिदाया से उद्धृत है कि जब तलाक़-ए-बाइन हो और तीन से कम हों, तो पति के लिए इद्दत के अंदर और उसके समाप्त होने पर दोबारा निकाह करना जायज़ होगा, इत्यादि।
और उसी में फ़तह से: "उसका हुक्म यह है कि अलगाव रजई तलाक़ में इद्दत पूरी होने पर होता है, और बाइन तलाक़ में उसके बिना ही हो जाता है।"	और हन्दिया में फ़तह से उद्धृत है कि तलाक़ का हुक्म यह है कि अगर रजई (प्रतिसंहरणीय) हो तो इद्दत ख़त्म होने पर और अगर बाइन (अपरिवर्तनीय) हो तो इद्दत ख़त्म हुए बिना भी जुदाई हो जाएगी।
और दुर्रे मुख़्तार में: "क्योंकि वह बाइन तलाक़ के बिना स्वयं की मालिक नहीं होती।"	दुर्रे मुख़्तार में है कि बाइन तलाक़ से पत्नी निकाह के लिए खुद स्वतंत्र हो जाती है।
और उक़ूद दुर्रिया में: "उस पर बाइन तलाक़ हो गई जिससे वह स्वयं की मालिक बन गई। और जब उसकी इद्दत समाप्त हो गई, तो वह	उक़ूद दुर्रिया में है कि बाइन तलाक़ वाक़े हो जाने पर वह स्वयं की मालिक हो जाती है और इद्दत पूरी होने पर वह पति के लिए अजनबी बन जाती है। सारांश

अरबी मूलपाठ	उर्दू अनुवाद
अजनबी हो गई।" संक्षेपित। ये सभी मसले प्रसिद्ध और स्पष्ट रूप से ज्ञात हैं। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।	यह कि ये सभी मसले प्रसिद्ध और स्पष्ट रूप से ज्ञात हैं। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है। (त)

1. फ़तावा हन्दिया, फ़स्ल फ़ीमा तहुल्लु बिही अल-मुतल्लक़ा व मा यत्तसिलु बिही, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/471-472.
2. फ़तावा हन्दिया, किताबुत तलाक़, पहला बाब, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/328.
3. दुर्रे मुख़्तार, बाबुस सरीह, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/222.
4. अल-उक़ूद अल-दुर्रिया फ़ी तनक़ीह फ़तावा अल-हामिदिया, किताबुत तलाक़, ताजिराने कुतुब अर्ग बाज़ार कंधार अफ़गानिस्तान, 1/35.

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

مسئلہ ۲۳۶: از رائے پور ممالک متوسط محلہ بیجنا تھ بارہ مرسلہ منشی محمد اسحق صاحب ۲۹ جمادی الآخرہ ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ جو عورت مطلقہ بطلاق بائن غیر مغلظہ ہے تو اس کا نکاح بعد عدت اس کے زوج سے تو ہو سکتا ہے لیکن جس صورت میں کہ وہ اپنے زوج سے راضی نہ ہو بعد عدت بائن کسی دوسرے شخص سے نکاح کر سکتی ہے عند الشرع یا نہیں؟ بینوا توجروا (بیان کر واجر پاؤ۔ ت)

الجواب: شوہر سے تو اسی وقت نکاح ہو سکتا ہے کچھ عدت گزرنے کی حاجت نہیں، ہاں دوسرے شخص سے بعد عدت گزرنے کے کر سکتی ہے، جس عورت پر طلاق بائن ہو وہ فوراً طلاق پڑتے ہی خود مختار ہو جاتی ہے بعد عدت جس سے چاہے نکاح کرلے، شوہر اوّل سے نکاح کرنے پر مجبور نہیں ہو سکتی،

في الهندية عن الهداية اذاكان الطلاق بائنا دون الثلاث فله ان يتزوجها في العدة وبعد انقضائها الخ

ہندیہ میں ہدایہ سے منقول ہے کہ جب طلاق بائنہ ہو اور تین سے کم ہوں تو خاوند کو عدت کے اندر اور ختم ہونے پر دوبارہ نکاح کرنا جائز ہوگا الخ

وفيها عن الفتح حكمه وقوع الفرقة بانقضاء العدة في الرجعي وبدونه في البائن اه

اور ہندیہ میں فتح سے منقول ہے کہ طلاق کا حکم یہ ہے کہ رجعی ہو تو عدت ختم ہو جانے پر اور بائنہ ہو تو عدت ختم ہوئے بغیر بھی جدائی ہو جائے گی اھ،

وفی الدر المختار لا نها لا تملك نفسها الا بالبائن اه

در مختار میں ہے کہ بائنہ طلاق سے بیوی نکاح کے لئے خود مختار ہو جاتی ہے اھ،

في الهندية عن الهداية اذاكان الطلاق بائنا دون الثلاث فله ان يتزوجها في العدة وبعد انقضائها الخ

وفی العقود الدرية وقع عليه طلقة بائنة ملكت بها نفسها وحيث انقضت عدتها صارت اجنبية اه ملخصاً والمسائل كلها واضحة شهيرة معلومة والله تعالٰی اعلم۔

ہندیہ میں ہدایہ سے منقول ہے کہ جب طلاق بائنہ ہو اور تین سے کم ہوں تو خاوند کو عدت کے اندر اور ختم ہونے پر دوبارہ نکاح کرنا جائز ہوگا الخ

عقود دریہ میں ہے کہ بائنہ طلاق واقع ہو جانے پر اپنے آپ کی مالک ہو جاتی ہے اور عدت ختم ہو جانے پر وہ خاوند کیلئے اجنبی بن جاتی ہے ، ملخصاً، یہ تمام مسائل مشہور اور واضح طور پر معلوم ہیں۔ واللہ سبحنہ و تعالی اعلم (ت)

1 فتاوٰی ہندیہ فصل فیما تحل به المطلقة و ما یتصل به نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۴۷۱-۴۷۲ 2 فتاوٰی ہندیہ کتاب الطلاق الباب الاول نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۲۸ 3 در مختار باب الصریح مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۲۲ 4 العقود الدرية في تنقيح فتاوى الحامدية كتاب الطلاق تاجران كتب ارگ بازار قندهار افغانستان ۱/ ۳۵

Fatawa Rizvia Volume 12

Problem 237: From Mauza Lalpur, Post Office Mohanpur, Bengal, sent by Muniruddin Ahmad Lapuri Kamarlovi, 8 Shawwal 1333 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: If people who held firm beliefs in shirk (polytheism) and, by performing prostration etc. in a temple, were excluded from the marriage with their wives; if they repent and become Muslims, and marry the said wife, should they perform halala or is the marriage valid without halala?

The Answer: He who has already given three divorces, whether he, the wife, or both, in order to take the curse of the Almighty upon themselves, become apostates, polytheists, or idolaters, those three divorces will remain. After becoming Muslim, the necessity of halala will still exist; it will absolutely not be valid without halala. And Allah Almighty knows best.

Problem 238: What do the scholars of religion say regarding this matter: Hinda married Bakr two months after her divorce from Zaid. She stayed with him for 18 years, during which they had four sons. Zaid was imprisoned; even after his release, he did not claim Hinda. Now, after such a long period, Hinda left Bakr's house without his consent and went to Khalid's. In this case, is Hinda the wedded wife of Bakr, and is Bakr's claim to keep her valid or not? Clarify and be rewarded.

The Answer: In the case questioned, if Hinda had completed three full menstrual cycles after the divorce and the marriage took place after that—meaning the cycles started after the divorce and finished before the second marriage—or if Hinda was pregnant at the time of Zaid's divorce and childbirth occurred after the divorce (even if it was on the same day) and she then married Bakr, then in both these cases, the marriage with Bakr was undoubtedly correct. Bakr can claim to take her back, and the woman shall be returned to him by force.

Allah Almighty said: "Men are in charge of women." (Quran 4:34). Allah the Almighty has stated: Men have been given dominance over women.

And if in those two months, three full menstrual cycles did not pass after the divorce, nor did childbirth occur before she married Bakr, then she... Note: According to Imam-e-Azam, three cycles can occur in at least sixty days, and according to the Sahibayn, in forty-eight days. 12.

Al-Quran al-Kareem 4/34 Page 466 of 688

फ़तवा रिज़विया जिल्द 12

मसअला 237: मौज़ा लालपुर, डाकखाना मोहनपुर, बंगाल, प्रेषक मुनीर उद्दीन अहमद लापुरी कमरलोवी, 8 शव्वाल 1333 हिजरी। धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि जो लोग शिर्क (बहुदेववाद) पर दृढ़ विश्वास रखते हैं और मंदिर में सजदा आदि करने के कारण अपनी पत्नी के साथ निकाह से बाहर हो गए, यदि वे तौबा करके मुसलमान हो जाएं और उक्त पत्नी से निकाह करें, तो क्या हलाला करना होगा या हलाला के बिना निकाह सही है?

जवाब: जिसने तीन तलाक दे दिए हों, वह या उसकी पत्नी या दोनों, ईश्वर के प्रकोप को अपने सिर लेने के लिए चाहे मुर्तद (धर्मत्यागी), मुशरिक (बहुदेववादी) या मूर्तिपूजक ही क्यों न हो जाएं वे तीन तलाकें बनी रहेंगी। मुसलमान होने के बाद फिर हलाला की आवश्यकता होगी, हलाला के बिना यह किसी भी हाल में सही नहीं होगा। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसअला 238: धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि हिंदा ने ज़ैद से तलाक के दो महीने बाद बक्र से निकाह कर लिया। वह 18 साल तक उसके यहाँ रही, इस दौरान उनके चार बेटे हुए। ज़ैद जेल में था, जेल से छूटने के बाद भी उसने हिंदा पर दावा नहीं किया। अब इतने लंबे समय के बाद, हिंदा बक्र की सहमति के बिना बक्र का घर छोड़कर खालिद के यहाँ चली गई। इस स्थिति में क्या हिंदा बक्र की विवाहित पत्नी है और क्या बक्र का उसे अपने पास रखने का दावा सही है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

जवाब: पूछे गए मामले में, यदि तलाक के बाद हिंदा के तीन पूर्ण मासिक धर्म चक्र बीत चुके थे और उसके बाद निकाह हुआ—अर्थात मासिक धर्म तलाक के बाद शुरू हुए हों और दूसरे निकाह से पहले समाप्त हो चुके हों—या ज़ैद के तलाक के समय हिंदा गर्भवती थी और तलाक के बाद प्रसव हो गया (चाहे वह उसी दिन हुआ हो) और उसके बाद उसने बक्र से निकाह किया, तो इन दोनों स्थितियों में बक्र के साथ निकाह निस्संदेह सही था। बक्र उसे वापस लेने का दावा कर सकता है, और महिला को बलपूर्वक उसे दिलाया जाएगा।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "पुरुष स्त्रियों के संरक्षक हैं।" (कुरान 4:34)। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: पुरुषों को स्त्रियों पर प्रधानता प्राप्त है।

और यदि उन दो महीनों में तलाक के बाद तीन पूर्ण मासिक धर्म चक्र नहीं बीते थे और न ही प्रसव हुआ था कि उसने बक्र से निकाह कर लिया, तो वह... नोट: इमाम-ए-आज़म के अनुसार तीन मासिक धर्म चक्र कम से कम साठ दिनों में और साहिबैन के अनुसार अड़तालीस दिनों में हो सकते हैं। 12.

अल-कुरान अल-करीम 4/34 पृष्ठ 466 का 688

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

مسئلہ ۲۳۷: از موضع لال پور ڈاکخانہ موہن پور بنگال مرسلہ منیر الدین احمد لاپوری کمر لوی ۸ شوال ۱۳۳۳ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ جولوگ شرک پر عین اعتقاد رکھے اور بتخانہ میں سجدہ وغیرہ کرنے سے اپنی بی بی کے نکاح سے خارج ہو گیا وہ اگر توبہ کرکے مسلمان ہو جائے بی بی مذکورہ سے نکاح کرے تو حلالہ کرے یا بغیر حلالہ کے نکاح درست ہے؟

الجواب: جو تین طلاق دے چکا ہو وہ یا جور و یا دونوں اگر قہار کی لعنت اپنے سر لینے کو مرتد، مشرک، بت پرست کچھ بھی ہو جائیں وہ تین طلاقیں رہیں گی مسلمان ہو جانے کے بعد پھر حلالہ کی ضرورت ہو گی بے حلالہ ہر گز ہر گز درست نہ ہو گا۔ وھو تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۳۸: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ نے طلاق زید سے دو مہینے بعد بکر سے نکاح کر لیا ۱۸ سال تک اس کے یہاں رہی اس مدت میں چار بیٹے ہوئے زید قید ہو گیا تھا بعد قید بھی ہندہ کا دعویٰ دار نہ ہوا اب اس قدر مدت کثیرہ کے بعد ہندہ بے رضائے بکر خانہ بکر سے نکل کر خالد کے ہاں چلی گئی اس صورت میں ہندہ منکوحہ بکر ہے اور اس پر بکر کا دعویٰ اپنے پاس رکھنے کا پہنچتا ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: صورت مسئولہ میں اگر طلاق کے بعد ہندہ کو تین حیض کامل گزر چکے تھے اس کے بعد نکاح ہوا یعنی حیض بعد طلاق شروع ہوئے ہوں اور قبل نکاح ثانی ختم ہو چکے ہوں یا وقت طلاق زید ہندہ حاملہ تھی اور بعد طلاق وضع حمل ہو گیا اگر چہ اُس دن ہوا ہو اُس کے بعد اس نے بکر سے نکاح کیا تو ان دونوں صورتوں میں تو بیشک نکاح بکر صحیح تھا اور بکر اسے لینے کا دعویٰ کر سکتا ہے عورت جبراً اسے دلائی جائے گی،

قال اللہ تعالٰی الرِّجَالُ قَوَّامُونَ عَلَی النِّسَاءِ۔ اللہ تعالیٰ نے فرمایا: مردوں کو عورتوں پر غلبہ حاصل ہے۔ (ت)

اور اگر ان دو مہینے میں تین حیض کامل بعد طلاق گزرے تھے نہ وضع حمل ہوا کہ بکر سے نکاح کر لیا تو وہ عہ: امام اعظم کے نزدیک تین حیض کم سے کم ساٹھ دن اور صاحبین کے نزدیک اڑتالیس دن میں ہو سکتے ہیں ۱۲۔

Fatawa Razawiyya, Volume 12

The marriage was never valid at all.

Allah Almighty says: "And divorced women shall wait [concerning] themselves for three monthly periods." (1) Allah Almighty has commanded: Divorced women should keep themselves bound until the completion of three menstrual cycles.

And Allah Almighty says: "And do not resolve on the knot of marriage until the prescribed term reaches its end." (2) And Allah Almighty has commanded: Divorced women should not resolve on a new marriage until the waiting period ('Iddah) is completed.

(T)

In this situation, far from forcing the woman to go to Bakr, it is obligatory for both of them to separate and sever their relationship. If Bakr does not agree, the woman can separate herself; otherwise, the judge should forcibly separate them.

In Ad-Durr al-Mukhtar: "Each of them has the right to annulment (fasakh), whether in the presence or absence of the other, whether consummation has occurred or not, according to the more correct view, so as to avoid sin. Therefore, this does not contradict the obligation of annulment; rather, despite this, it is mandatory for the judge to effect a separation between them." (3) - And Allah, Glorified and Exalted, knows best.

In Ad-Durr al-Mukhtar it is stated: Both have the authority to annul the marriage in the presence or absence of each other, whether consummation has taken place or not; this is the most correct view so that sin can be avoided. Therefore, this is not contrary to the obligation of annulment, but rather, despite this, it is mandatory for the judge to separate them. And Allah, Glorified and Exalted, knows best. (T)

Problem 239: From Kanpur, Feel Khana Mohalla, Old Market, house of Maulvi Syed Muhammad Ashraf Sahib, lawyer, sent by Maulvi Syed Muhammad Asif Sahib, 12 Ramadan 1317 AH.

What do the scholars of religion say regarding this issue: It is stated in Fatawa Shams-ud-Din and Fatawa Tamartashi that if someone marries a woman but intends in his heart to divorce her after a certain number of days, this marriage is valid. So, if a person divorces every few days or every few months and continues this practice of marriage and also inclines others toward this so that they may remain protected

from adultery, will such a person receive a reward or not? And in the case of such persistence, will it not be considered Mut'ah (temporary marriage)? Explain and you will be rewarded.

The Answer: It will certainly not be Mut'ah as long as a specific or unspecified time limit is not stipulated within the marriage contract itself.

1. Al-Quran Al-Karim 2/227
2. Al-Quran Al-Karim 2/235
3. Ad-Durr al-Mukhtar, Chapter on Mahr, Mujtabai Press, Delhi 1/201

फतावा रज़विया, जिल्द 12

निकाह हरगिज़ सही न हुआ।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "तलाकशुदा औरतें अपने आप को तीन हैज़ (मासिक धर्म) पूरा होने तक पाबंद रखें।" (1) अल्लाह तआला ने फ़रमाया है: तलाकशुदा औरतें अपने आप को तीन हैज़ मुकम्मल होने तक पाबंद रखें।

और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और जब तक इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) पूरी न हो जाए, नए निकाह का इरादा न करो।" (2) और अल्लाह तआला ने फ़रमाया है: इद्दत मुकम्मल होने तक तलाकशुदा औरतें नए निकाह का इरादा न करें।

(त)

इस सूरत में औरत पर बक्र के पास जाने का दबाव डालना तो दूर की बात है, इन दोनों पर फ़र्ज़ है कि वे एक-दूसरे से अलग हो जाएँ और संबंध तोड़ लें। अगर बक्र न माने तो औरत खुद अलग हो सकती है, वर्ना हाकिम जबरन जुदाई करा दे।

दुर्रे मुख्तार में है: "दोनों को एक-दूसरे की मौजूदगी या गैर-मौजूदगी में निकाह ख़त्म (फ़स्ख़) करने का अधिकार है, चाहे सहवास हो चुका हो या नहीं, यही सही कौल है ताकि गुनाह से बचा जा सके। लिहाज़ा, यह बात फ़स्ख़ की अनिवार्यता के खिलाफ नहीं है, बल्कि इसके बावजूद काज़ी पर वाजिब है कि दोनों में जुदाई करा दे।" (3) - वल्लाहु सुब्हानहु व तआला आलम।

दुर्रे मुख्तार में है: दोनों को एक दूसरे की मौजूदगी या गैर-मौजूदगी में फ़स्ख़ का अधिकार है, चाहे हमबिस्तरी (दखुल) हो चुकी हो या न की हो, सबसे सही कौल यही है ताकि गुनाह से बचा जा सके। लिहाज़ा, यह बात फ़स्ख़ के वाजिब होने के खिलाफ नहीं है, बल्कि इसके बावजूद काज़ी पर अनिवार्य है कि दोनों में अलगाव करा दे। और अल्लाह पाक ही बेहतर जानता है। (त)

मसला 239: कानपुर, फील खाना मोहल्ला, पुराना बाज़ार, मौलवी सैयद मुहम्मद अशरफ साहब वकील का मकान, प्रेषक मौलवी सैयद मुहम्मद आसिफ साहब, 12 रमज़ान 1317 हिजरी।

दीन के उलमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं: 'फतावा शम्सुद्दीन' और 'फतावा तमरताशी' में है कि अगर कोई किसी औरत से निकाह करे लेकिन नीयत में यह हो कि इतने दिनों बाद तलाक दे दूँगा, तो

यह निकाह दुरुस्त है। तो जो शख्स दो-चार दिन या दो-चार महीने में तलाक दे दिया करे और इस किस्म के निकाह को जारी रखे और लोगों को भी इस तरफ प्रेरित करे ताकि वे लोग ज़िना (व्यभिचार) से महफ़ूज़ रहें, तो क्या ऐसे शख्स को सवाब मिलेगा या नहीं? और इस निरंतरता की सूरत में यह 'मुतआ' (अस्थायी निकाह) तो नहीं होगा? स्पष्ट करें और पुण्य पाएँ।

अल-जवाब: मुतआ तो हरगिज़ न होगा जब तक निकाह के अनुबंध (अक्द) में ही कोई निश्चित या अनिश्चित अवधि की सीमा तय न की जाए।

1. अल-कुरान अल-करीम 2/227
2. अल-कुरान अल-करीम 2/235
3. दुर्रे मुख्तार, बाबुल महर, मतबअ मुजतबाई दिल्ली 1/201

पृष्ठ 688 का 467

فتاوٰی رضویہ، جلد دوازدہم

نکاح ہرگز صحیح نہ ہوا،

قال تعالٰی: وَالْمُطَلَّقٰتُ یَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ۱ اللہ تعالٰی نے فرمایا: مطلقہ عورتیں اپنے آپ کو تین حیض مکمل ہونے تک پابند رکھیں۔

وقال تعالٰی: وَ لَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتّٰى یَبْلُغَ الْكِتٰبُ اَجَلَهٗؕ۲ اور اللہ تعالٰی نے فرمایا: عدت مکمل ہونے تک مطلقہ عورتیں نئے نکاح کا عزم نہ کریں۔

(ت)

اس صورت میں عورت پر بکر کے پاس جانے کا جبر ہونا درکنار ان دونوں پر فرض ہے کہ باہم جدا ہو جائیں اور ترکِ تعلق کریں، اور بکر نہ مانے تو عورت بطورِ خود جدا ہو سکتی ہے ورنہ حاکم بالجبر جدائی کرادے،

فی الدر المختار: یثبت لکل واحد منهما فسخه ولو بغیر محضر صاحبه دخل بها اولا فی الاصح خروجا عن المعصیة فلا ینافی وجوبه بل یجب علی القاضی التفریق بینهما۳- واللہ سبحانہ وتعالی اعلم۔

در مختار میں ہے: دونوں کو ایک دوسرے کی موجودگی یا غیر موجودگی میں فسخ کا اختیار ہے دخول کر چکا ہو یا نہ کیا ہو، اصح قول یہی ہے تاکہ گناہ سے اجتناب ہو سکے، لہٰذا یہ بات وجوبِ فسخ کے منافی نہیں بلکہ اس کے باوجود قاضی پر واجب ہے کہ دونوں میں تفریق کرے۔ واللہ سبحانہ وتعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۲۳۹: از کانپور محلہ فیل خانہ بازار کہنہ مکان مولوی سید محمد اشرف صاحب وکیل مرسلہ مولوی سید محمد آصف صاحب ۱۲ رمضان ۱۳۱۷ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ فتاویٰ شمس الدین وفتاویٰ تمرتاشی میں ہے کہ اگر کسی عورت سے نکاح کیا لیکن نیت میں ہے کہ بعد اتنے دنوں کے طلاق دوں تو یہ نکاح درست ہے پس جو شخص دو چار روز یا دو چار مہینے میں طلاق دے دیا کرے اور اس قسم نکاح پر مداومت کرے اور لوگوں کو بھی اس جانب مائل کرے تاکہ وہ لوگ زنا سے محفوظ رہیں تو آیا ایسے شخص کو ثواب ملے گا یا نہیں، اور مداومت کی صورت میں متعہ تو نہ ہوگا؟ بینوا توجروا

الجواب: متعہ تو ہرگز نہ ہوگا جب تک نفس عقد میں مدت معینہ خوا غیر معینہ کی حد نہ مقرر کی جائیگی،

۱ القرآن الکریم ۲/ ۲۲۷ ۲ القرآن الکریم ۲/ ۲۳۵ ۳ درمختار باب المهر مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۰۱

Volume 12 Fatawa Razawiyya

In Al-Durr al-Mukhtar: "Mut'ah marriage and temporary marriage are void, even if the period is unknown or long according to the more correct view. This does not include cases where one marries her on the condition that he will divorce her after a month, or if he intends to stay with her for a specific period in his heart."[1] In Durr-e-Mukhtar it is stated: Mut'ah and marriage for a fixed term are void, even if the fixed term is unknown or long according to the more correct view. And if marriage was performed on the condition of giving divorce after one month, or if the intention was merely to keep her for a specific period, then these two cases will not be considered void. (T)

In Bahr al-Raiq: "Fixation of time only occurs through verbal expression."[2] For marriage until a fixed term, verbal specification of the period is necessary (which makes it void). (T)

However, people should not be encouraged towards such a thing, and one should abstain from it oneself unless there is a genuine Sharia-compliant need every time for a divorce of the wife. Divorcing a woman without a Sharia-compliant need is forbidden in Sharia, let alone being a virtuous act.

As authenticated in Al-Fath and verified in Radd al-Muhtar, it is narrated from the scholars of the school of thought that the basic principle regarding it (divorce) is prohibition, because it involves ingratitude for the blessing of marriage, and it is only permissible due to the need for release.[3] Divorcing without a Sharia-compliant necessity is forbidden, as authenticated in Fath and verified in Radd al-Muhtar. In the same source, it is quoted from Fath that it is narrated from the elders (scholars) that prohibition is the original rule in divorce because it is ungratefulness for the blessing of marriage, and divorce being permissible is due to the need for release. (T)

In the Hadith, the Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "Marry and do not divorce,[4] for Allah does not like those who taste (men and women) who change partners frequently."[5] In another version: "Do not divorce women." Marry, and as long as no doubt arises from the woman's side (i.e., without a valid Sharia need), do not give divorce.

---

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on Prohibitions, Mujtabai Press Delhi, 1/190 2 Bahr al-Raiq, Chapter on Prohibitions, H.M. Saeed Company Karachi, 3/108 3 Radd al-Muhtar, Book of Divorce, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/416 4 Tarikh Baghdad,

Translation Number, Dar al-Kitab al-Arabi Beirut, 12/191 5 Majma' al-Zawa'id, Chapter on those who divorce frequently, Dar al-Kitab al-Arabi Beirut, 2/335

खण्ड 12 फ़तावा रज़विया

अल-दुर्रुल मुख्तार में है: "मुत'अह और एक निश्चित समय तक का निकाह बातिल (अमान्य) है, चाहे वह समय अज्ञात हो या बहुत लंबा हो, सबसे सही राय के अनुसार। इसमें वे मामले शामिल नहीं हैं जहाँ कोई इस शर्त पर निकाह करता है कि वह उसे एक महीने बाद तलाक़ दे देगा, या अगर उसने केवल अपने मन में एक निश्चित समय तक साथ रहने का इरादा किया हो।"[1] दुर्र-ए-मुख्तार में है: मुत'अह और निर्धारित अवधि तक का निकाह बातिल है, भले ही निर्धारित अवधि अज्ञात हो या लंबी हो, सबसे सही कथन के अनुसार। और अगर एक महीने बाद तलाक़ देने की शर्त पर निकाह किया गया या केवल नीयत में एक निश्चित अवधि तक पास रखना उद्देश्य हो, तो ये दोनों स्थितियाँ बातिल की श्रेणी में नहीं आएँगी। (त)

बहरुल राइक़ में है: "समय का निर्धारण केवल शाब्दिक अभिव्यक्ति से होता है।"[2] निर्धारित अवधि तक निकाह के लिए जुबानी तौर पर समय का निर्धारण ज़रूरी है (जो कि बातिल है)। (त)

लेकिन लोगों को ऐसी चीज़ की ओर प्रोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए और खुद भी इससे बचना चाहिए जब तक कि हर बार पत्नी को तलाक़ देने की कोई सही शरीअत सम्मत ज़रूरत न हो, क्योंकि बिना किसी शरीअत सम्मत ज़रूरत के महिला को तलाक़ देना शरीअत में वर्जित है, पुण्य का काम होना तो दूर की बात है।

जैसा कि अल-फ़तह में सही ठहराया गया है और रद-उल-मुह्तार में इसकी पुष्टि की गई है, और उसमें मज़हब के विद्वानों से वर्णित है कि इसमें (तलाक़ में) मूल नियम मनाही है क्योंकि इसमें निकाह जैसी नेमत की नाशुक्री (कृतघ्नता) है, और यह केवल रिहाई की ज़रूरत के कारण जायज़ है।[3] शरीअत सम्मत ज़रूरत के बिना तलाक़ देना वर्जित है जिसकी पुष्टि फ़तह में है और उसका शोध रद-उल-मुह्तार में है, और उसी में फ़तह से उद्धृत है कि विद्वानों से वर्णित है कि तलाक़ में मूल रूप से मनाही है क्योंकि इसमें निकाह जैसी नेमत की नाशुक्री है, और तलाक़ का मुबाह (अनुमेय) होना रिहाई की ज़रूरत की वजह से है। (त)

हदीस में है, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "निकाह करो और तलाक़ न दो,[4] क्योंकि अल्लाह उन लोगों (मर्दों और औरतों) को पसंद नहीं करता जो स्वाद चखने वाले हैं (बार-बार साथी बदलते हैं)।"[5] और एक शब्द में: "महिलाओं को तलाक़ न दो।" निकाह करो और जब तक

औरत की तरफ से कोई शक (कमी) पैदा न हो (यानी बिना किसी सही शरीअत सम्मत ज़रूरत के) तलाक़ न दो।

---

1 दुर्र-ए-मुख्तार, अध्याय: वर्जनाएँ, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/190 2 बहरुल राइक़, अध्याय: वर्जनाएँ, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 3/108 3 रद-उल-मुह्तार, किताबुत तलाक़, दारु इहयाइत तुरास अल-अरबी बेरुत, 2/416 4 तारीख़ बग़दाद, अनुवाद संख्या, दारुल किताब अल-अरबी बेरुत, 12/191 5 मज्मउज़ ज़वाइद, अध्याय: जो बहुत तलाक़ देते हैं, दारुल किताब अल-अरबी बेरुत, 2/335

पृष्ठ 468/688

في الدرالمختار بطل نکاح متعة مؤقت وان جهلت المدة اوطالت في الاصح وليس منه مالو نكحها على ان يطلقها بعد شهر او نوى مكثه معها مدة معينة[1]۔ در مختار میں ہے: متعہ اور مقررہ مدت تک کا نکاح باطل ہے اگرچہ مدت مقررہ مجہول ہو یا دراز ہو اصح قول میں، اور اگر ایک ماہ بعد طلاق دینے کی شرط پر نکاح کیا یا صرف نیت میں معینہ مدت تک پاس رکھنا مقصود ہو تو یہ دونوں صورتیں از قبیل باطل نہ ہوں گے۔ (ت)

بحر الرائق میں ہے: التوقیت انما یکون باللفظ[2]۔ مدتِ مقررہ تک نکاح کے لئے زبانی مدت کا تعین ضروری ہے (جو کہ باطل ہے)۔ (ت)

مگر ایسے کی طرف لوگوں کو ترغیب نہ کی جائے اور خود بھی اس سے احتراز چاہئے جب تک کوئی حاجتِ صحیحہ شرعیہ ہر بار طلاقِ زوجہ کی طرف داعی نہ ہو کہ بے حاجتِ شرعیہ عورت کو طلاق دینا ثواب درکنار شرعاً ممنوع،

على ماصححه في الفتح وحققه في ردالمحتار وفيه وعنه عن مشائخ المذهب ان الاصل فيه الحظر لما فيه من كفران نعمة النكاح والاباحة للحاجة الى الخلاص[3]۔ شرعی ضرورت کے بغیر طلاق دینا ممنوع ہے جس کی تصحیح فتح میں ہے اور اس کی تحقیق ردالمحتار میں ہے، اور اسی میں فتح سے منقول کہ مشائخ سے مروی ہے کہ طلاق میں اصل ممانعت ہے کیونکہ اس میں نکاح جیسی نعمت کی ناشکری ہے، اور طلاق کا مباح ہونا خلاصی کے لئے حاجت کی وجہ سے ہے۔ (ت)

حدیث میں ہے رسول اللہ صلی اللہ تعالی علیہ وسلم فرماتے ہیں: تزوجوا ولا تطلقوا[4]فان اللہ لا یحب الذواقین ولا الذواقات[5]وفي لفظ لا تطلقوا النساء نکاح کرو اور جب تک عورت کی طرف سے کوئی شک نہ پیدا ہو (یعنی بے حاجتِ صحیحہ) طلاق نہ دو۔

---

1 درمختار فصل فی المحرمات مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۰/۱ 2 بحر الرائق فصل فی المحرمات ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۱۰۸/۳ 3 ردالمحتار کتاب الطلاق داراحیاء التراث العربی بیروت ٤١٦/٢ 4 تاریخ بغداد ترجمہ نمبر دار الکتاب العربی بیروت ۱۹۱/۱۲ 5 مجمع الزوائد باب فیمن یکثر الطلاق دار الکتاب العربی بیروت ۳۳٥/۲

Fatawa Razawiyya Volume 12

"Except for suspicion, for Allah Almighty does not love the tasters (men) and the tasters (women)." 1 - Reported by Al-Tabarani in Al-Kabir from Abu Musa Al-Ash'ari, may Allah be pleased with him. Allah does not like men who taste a lot and women who taste a lot, meaning those who marry just to taste and then leave. (This was reported by Al-Tabarani in the Kabir from Abu Musa Al-Ash'ari, may Allah be pleased with him. - T)

Reflect upon it, the noble verse "desiring chastity, not committing fornication" 2 also hints at this prohibition. That is, marry to keep women in protection, not just to vent lust or spill water. The frequent marriages and divorces reported from some companions, such as Sayyiduna Imam Hasan Mujtaba and Mughira bin Shu'bah, etc. (may Allah be pleased with them), are attributed to this state of Shariah need.

In Radd al-Muhtar: "If the aforementioned need is found, it is permitted, and upon this is carried what occurred from him (the Prophet), peace and blessings of Allah be upon him, and from his companions and others among the Imams, to protect them from futility and causing harm without cause." 3 It is stated in Radd al-Muhtar that when the mentioned need arises, divorce is permissible, and it is upon this meaning that the instances of multiple marriages from the Holy Prophet (peace and blessings of Allah be upon him), the companions, and other Imams are based, so that no attribution of futility or causing harm can be made to these noble personages. (T)

The excuse of "protected adultery" is meaningless; Shariah allows up to four at a time, and more can never be gathered. Reason, tradition, and experience bear witness that the more you pull the reins of the carnal soul (Nafs al-Ammara), the more it is suppressed, and the more slack you give, the more it spreads its feet. And the soul is like a child; if you leave him alone, he will grow up with a love for suckling, but if you wean him, he will be weaned. (The soul is like a child; if you give it opportunity, it will remain bold in drinking the mother's milk, and if you wean it, it will leave it. - T)

1. Al-Mu'jam al-Awsat, Hadith Number, Al-Maktaba al-Ma'arif, Riyadh, 8/214.
2. The Holy Quran, 4/24.
3. Radd al-Muhtar, Kitab al-Talaq, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/216.

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

"सिवाय संदेह के, क्योंकि अल्लाह तआला बहुत चखने वाले पुरुषों और बहुत चखने वाली महिलाओं को पसंद नहीं करता।" 1 - इसे तबरानी ने अल-कबीर में अबू मूसा अल-अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है। अल्लाह उन पुरुषों और महिलाओं को पसंद नहीं करता जो बहुत चखते हैं, यानी वे जो केवल चखने और छोड़ने के लिए निकाह करते हैं। (इसे तबरानी ने कबीर में अबू मूसा अल-अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है। - त)

गौर करें तो आयत-ए-करीमा "मुहसिनीन गैरा मुसाफिहीन" 2 में भी इसी मनाही की ओर इशारा है, यानी निकाह करो औरतों को हिफाज़त में रखने के लिए, न कि केवल वासना निकालने या पानी बहाने के लिए। कुछ सहाबा-ए-किराम जैसे सैय्यदुना इमाम हसन मुजतबा और मुगीरा बिन शोबा आदि (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से जो अधिक निकाह और तलाक का वर्णन है, वह इसी शरीअत की आवश्यकता की स्थिति पर आधारित है।

रद-उल-मुह्तार में: "यदि उल्लेखित आवश्यकता पाई जाती है, तो यह जायज़ है, और इसी पर वह सब आधारित है जो हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम), उनके सहाबा और अन्य इमामों से हुआ है, ताकि उन्हें बिना किसी कारण के व्यर्थता और कष्ट पहुँचाने से बचाया जा सके।" 3 रद-उल-मुह्तार में है कि जब उल्लेखित आवश्यकता पाई जाए तो तलाक जायज़ है, और इसी अर्थ पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, सहाबा-ए-किराम और अन्य इमामों से अनेक निकाहों की घटनाओं को आधारित किया गया है, ताकि उन हस्तियों की ओर व्यर्थता और कष्ट पहुँचाने का आरोप न लग सके। (त)

"सुरक्षित व्यभिचार" का बहाना अर्थहीन है; शरीअत एक समय में चार तक की अनुमति देती है, और उससे अधिक कभी जमा नहीं हो सकतीं। अक्ल, नक़्ल (परंपरा) और अनुभव गवाह हैं कि नफ्स-ए-अम्मारा की लगाम जितनी खींचो वह दबता है और जितनी ढील दो वह उतना ही पैर फैलाता है। और नफ्स बच्चे की तरह है; अगर आप उसे अकेला छोड़ देंगे, तो वह दूध पीने के प्रेम के साथ बड़ा होगा, लेकिन यदि आप उसका दूध छुड़ा देंगे, तो वह छूट जाएगा। (नफ्स बच्चे की तरह है; अगर आप उसे मौका देंगे, तो वह माँ का दूध पीने में दिलेर रहेगा, और अगर आप दूध छुड़ा देंगे तो वह छोड़ देगा। - त)

1. अल-मुअजम अल-अवसत, हदीस नंबर, अल-मकतबा अल-मआरिफ, रियाद, 8/214।
2. अल-क़ुरआन अल-करीम, 4/24।

3. रद-उल-मुह्तार, किताबुत तलाक, दारु एतहाउत तुरास अल-अरबी, बेरुत, 2/216।

पृष्ठ 469/688

فتاوی رضویہ جلد دوا زدہم

الا من ریبة فان اللہ تعالی لا یحب الذواقین ولا الذواقات 1- رواہ الطبرانی فی الکبیر عن ابي موسی الاشعری رضي اللہ تعالی عنہ- کہ اللہ بہت چکھنے والے مردوں اور بہت چکھنے والی عورتوں کو دوست نہیں رکھتا یعنی جو چکھ چکھ کر چھوڑ دینے کے لئے نکاح کرتے ہیں (اس کو طبرانی نے کبیر میں ابو موسیٰ اشعری رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا۔ت)

غور کیجئے تو آیہ کریمہ مُحْصِنِیْنَ غَیْرَ مُسٰفِحِیْنَ 2 میں بھی اسی سے ممانعت کی طرف اشارہ ہے یعنی نکاح کرو عورتوں کو قید میں رکھنے، نہ مستی نکالنے، پانی گرانے۔ بعض صحابہ کرام مثل سید نا امام حسن مجتبیٰ و مغیرہ بن شعبہ وغیرہ ہماری اللہ تعالیٰ عنہم سے جو کثرتِ نکاح و طلاق منقول ہے اسی حالت حاجت شرعیہ پر محمول ہے،

في ردالمحتار اذا وجدت الحاجة المذکورة ابیح وعلیها یحمل ماوقع منه صلی اللہ تعالی علیه وسلم ومن اصحابه وغیرهم من الائمة صونالهم عن العبث والایذاء بلاسبب 3- ردالمحتار میں ہے کہ جب حاجت مذکورہ پائی جائے تو طلاق مباح ہے، اور اسی معنی پر محمول ہیں حضور صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم اور صحابہ کرام اور دیگر ائمہ کرام سے متعدد نکاح کے واقعات ہوئے، تاکہ ان حضرات کی طرف عبث اور ایذاء رسانی کی نسبت نہ ہونے پائے۔ (ت)

محفوظ زنا کا عذر بے معنی ہے ایک وقت میں چار تک شرعی اجازت ہے اور اس سے زائد کبھی جمع نہیں ہو سکتیں، اور عقل و نقل و تجربہ شاہد ہیں کہ نفس امارہ کی باگ جتنی کھینچے دبتا ہے اور جس قدر ڈھیل دیجئے زیادہ پاؤں پھیلاتا ہے، والنفس کالطفل ان تمهله شبّ علی حب الرضاع وان

تفطمه ینفطم (نفس بچے کی طرح ہے اگر آپ اسے موقع دیں گے تو وہ ماں کا دودھ پینے میں دلیر رہے گا، اور آپ دودھ چھڑا دیں تو وہ چھوڑ دے گا ۔ت)

1 المعجم الاوسط حدیث نمبر المکتبۃ المعارف الریاض ۲۱۴/۸ 2 القرآن الکریم ۲۴/۴ 3 ردالمحتار کتاب الطلاق دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۱۶/۲

Volume 12 Fatawa-e-Razvia

When a habit of constant new desire has been formed, and it's clear that finding a new rich woman to keep for a few days and then discard is very difficult, especially in India, then when there is a decrease in this, the ill-natured soul, which was never habituated to patience, will show its true colors, as one who is content with one wife is unaware of its influence. And refuge is sought with Allah Almighty, and Allah Almighty Subhanuhu wa Ta'ala knows best.

Problem 240 to 242: Sent by Muhammad Abdul Rahman Jashani Shafi'i from Banaras, Mohalla Madanpura, Madrasa Imdad al-Ulum Masjid Kalan, Dhu al-Hijjah 1312 AH.

What do the scholars of religion and the muftis of the firm Shariah say regarding the following issues according to the Shafi'i school of thought (may Allah Almighty have mercy on him): (1) A couple followed the Shafi'i school of thought and lived together. The husband developed leprosy. Due to the fear of this, his wife went to her mother's house. The husband kept calling her, but due to the fear of his illness, his wife did not come until the husband passed away from the same illness. In this situation, can the wife receive the dowry, inheritance, and maintenance from the husband's estate or not? Please write according to the fine Shariah with references from authentic books. (2) Some people refuse to give inheritance and maintenance from the late husband's estate to the aforementioned wife and say that nothing reaches the wife. Is the wife's inheritance proven from the Holy Quran or not, and will the one who denies it be considered outside the circle of Islam or not? Just explain and you will be rewarded.

The Answer: In the described situation, the deceased's wife will definitely receive the dowry and inheritance by the consensus of the Imams Hanifa and Shafi'i (may Allah Almighty have mercy on them). According to the Hanafi Imams, except for 'Jubb' and 'Annat' (types of impotence), i.e., cutting of the organ or impotence, no disease of the husband is absolutely a reason for the annulment of marriage. It is stated in Durr al-Mukhtar:

Arabic	**Urdu translation**
Neither of the spouses has the option [to annul the marriage] due to a physical defect in the other, even if it is severe, such as insanity, leprosy, or vitiligo, etc.	Neither husband nor wife has the right of annulment due to the other's physical defect, such as the diseases of insanity, leprosy, and vitiligo, etc. (T)

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter on Impotence, Matba' Mujtabai Delhi, 1/254

जिल्द 12 फ़तावा-ए-रज़विया

जब हमेशा नई इच्छा की आदत डाली गई हो, और यह स्पष्ट है कि कुछ दिनों के लिए रखकर छोड़ने के लिए एक नई अमीर औरत का मिलना, विशेषकर भारत में, बहुत कठिन है, तो जब इसमें कमी होगी, तो बुरा स्वभाव वाला मन, जिसे कभी धैर्य का आदी नहीं बनाया गया था, अपना रंग दिखाएगा, क्योंकि एक पर संतोष करने वाले उसकी हवा से भी अनभिज्ञ हैं। और अल्लाह तआला की पनाह, और अल्लाह तआला सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है।

मसला 240 से 242: प्रेषक मुहम्मद अब्दुर रहमान जशानी शाफ़ई, बनारस, मोहल्ला मदनपुरा, मदरसा इमदाद उल-उलूम मस्जिद कलां, ज़िल-हिज्जा 1312 हिजरी।

धर्म के विद्वान और शरीअत के मुफ़्ती शाफ़ई मत (रहमतुल्लाह अलैहि) के अनुसार निम्नलिखित मुद्दों पर क्या कहते हैं: (1) शाफ़ई मत को मानने वाला एक जोड़ा साथ रहता था। पति को कुष्ठ रोग (जज़ाम) हो गया। इसके डर से उसकी पत्नी अपनी माँ के घर चली गई। पति उसे बुलाता रहा, लेकिन बीमारी के डर से पत्नी नहीं आई, यहाँ तक कि पति की उसी बीमारी में मृत्यु हो गई। इस स्थिति में, क्या पत्नी को पति की संपत्ति से मेहर, विरासत और भरण-पोषण मिल सकता है या नहीं? शरीअत के अनुसार प्रामाणिक पुस्तकों के संदर्भ के साथ लिखें। (2) कुछ लोग उक्त पत्नी को दिवंगत पति की संपत्ति से विरासत और भरण-पोषण देने से इनकार करते हैं और कहते हैं कि पत्नी को कुछ नहीं मिलता। क्या पत्नी की विरासत कुरान मजीद से सिद्ध है या नहीं, और क्या इसका इनकार करने वाले को इस्लाम के दायरे से बाहर समझा जाएगा या नहीं? बस, बयान करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: पूछी गई स्थिति में, मृत व्यक्ति की पत्नी को इमाम हनीफ़ा और शाफ़ई (रहमतुल्लाह अलैहिम) की सहमति से मेहर और विरासत निश्चित रूप से मिलेगी। हनफ़ी इमामों के अनुसार, 'जुब्ब' और 'अन्नत' (नपुंसकता के प्रकार) के अलावा, पति की कोई भी बीमारी निकाह रद्द करने का कारण नहीं है। दुर्र-ए-मुख़्तार में है:

अरबी	उर्दू अनुवाद
पति-पत्नी में से किसी को भी दूसरे के शारीरिक दोष के कारण [निकाह रद्द करने का] विकल्प नहीं है, भले ही वह गंभीर हो, जैसे कि पागलपन, कुष्ठ रोग और सफ़ेद दाग (बरस) आदि।	पति-पत्नी में से किसी को भी दूसरे के शारीरिक दोष, जैसे पागलपन, कुष्ठ रोग और सफ़ेद दाग आदि के कारण निकाह रद्द करने का अधिकार नहीं है। (त)

[1] दुर्र-ए-मुख़्तार, बाबुल अन्नीन, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/254

पृष्ठ 470/688

جب ہمیشہ خواہشِ نو کی عادت ڈالی گئی اور پُر ظاہر کہ چند روز رکھ کر چھوڑنے کے لئے دولتا تازہ عورت کا ملنا خصوصاً ہندوستان میں سخت مشکل ہے تو جب اس میں کمی ہوگی نفسِ بدخو جسے صبر کا خوگر کیا ہی نہ تھا وہ رنگ لائے گا کہ ایک پر قناعت کرنے والے اس کی ہوا سے آگاہ نہیں۔ والعیاذ باللہ تعالیٰ، واللہ تعالیٰ سبحانہ وتعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۴۰ تا ۲۴۲: مرسلہ محمد عبدالرحمن جاشانی شافعی از بنارس محلہ مدنپورہ مدرسہ امداد العلوم مسجد کلاں ذی الحجہ ۱۳۱۲ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین مسائلِ مندرجہ ذیل میں ازروئے مذہبِ شافعی رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کے: (۱) ایک شخص شافعی المذہب زوجین باہم رہتے تھے شوہر کو جذام کا عارضہ ہوگیا جس کے خوف کی وجہ سے اس کی زوجہ اپنے ماں کے یہاں چلی گئی، شوہر اس کو بلاتا رہا مگر اس کے لاحقہ عارضہ کے خوف سے اس کی زوجہ نہ آئی یہاں تک کہ شوہر اس کا اسی عارضہ میں فوت ہوا، اس صورت میں مہر و ورثہ و نان نفقہ زوج کے ترکہ سے زوجہ کو پہنچ سکتا ہے یا نہیں؟ از روئے شرع لطیف بحوالہ کتب معتبرہ تحریر فرمایا جاوے۔ (۲) بعض اشخاص زوجہ مذکورہ بالا کو زوجِ مرحوم کے ترکہ سے ورثہ و نان نفقہ دینے میں انکار کرتے ہیں اور کہتے ہیں کہ زوجہ کو کچھ پہنچتا ہی نہیں ورثہ زوجہ قرآنِ مجید سے ثابت ہے یا نہیں اور منکر اس کا دائرہ اسلام سے خارج سمجھا جائے گا یا نہیں فقط، بینوا توجروا

الجواب: زوجہ متوفی کو صورتِ مستفسرہ میں باتفاق ائمہ حنیفہ و شافعیہ رحمہم اللہ تعالیٰ مہر و ترکہ قطعاً ملے گا، ائمہ حنیفہ کے نزدیک تو جبّ وعنّت یعنی آلتِ بریدگی یا نامردی کے سوا کوئی مرض شوہر مطلقاً سببِ فسخِ نکاح نہیں، درمختار میں ہے:

عربی	اردو ترجمہ
لا یتخیر احد الزوجین بعیب الاخر ولو فاحشا کجنون وجذام وبرص الخ۔	خاوند بیوی میں کسی کو دوسرے کے عیبِ جسمانی مثلاً جنون، جذام اور برص کے امراض کی وجہ سے فسخ کا اختیار نہیں ہے الخ (ت)

۱ درمختار باب العنین مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۵۴

Fatawa Razawiyya Volume Twelve

According to the Shafi'i Imams, although the right to annulment (khiyar al-faskh) is granted due to established insanity, leprosy, or vitiligo, it does not mean that the marriage is automatically dissolved due to these diseases, or that the woman has the authority to annul the marriage herself. Instead, it means that she has the right to immediately bring a request for annulment before a Sharia judge. The marriage is only annulled when the judge issues a decree of annulment; without it, they remain husband and wife as before. Imam Allama Yusuf Ardabili (may Allah have mercy on him), who is among the prominent Shafi'i scholars, states in the book "Al-Anwar":

"The right of annulment due to defect (khiyar al-ayb) is not immediately established before vitiligo and leprosy become persistent, and the spouses cannot unilaterally annul the marriage; rather, it is necessary to refer the matter to the judge." (Summarized).

La yuthbitu bil-bars-i wal-judham-i qabla al-istihkaam khiyaar al-ayb 'ala al-fawr wa la yanfaridaani bil-faskh bal la budda min al-raf'i ila al-qaadhi. (Al-Anwar - Summarized)

In this case, since no appeal was made to a Sharia judge, nor did the judge decree the annulment of the marriage, but instead, the woman went to her mother's house on her own, then by the consensus of the Imams, the marriage remained intact. Therefore, by the definitive text of the Great Quran, she is entitled to her share of the inheritance as ordained by Allah.

Allah Almighty says: "And for them [your wives] is one-fourth of what you leave if you have no child. But if you have a child, then for them is one-eighth of what you leave, after [payment of] any bequest you may have made or debt." (Quran 4:12).

Qaal Allahu Ta'ala: WA LAHUNNA AR-RUBU'U MIMMA TARAKTUM IN LAM YAKUN LAKUM WALADUN FA-IN KANA LAKUM WALADUN FA-LAHUNNA ATH-THUMUNU MIMMA TARAKTUM MIN BA'DI WASIYYATIN TŪSŪNA BIHĀ AW DAYNIN.

The inheritance of a wife is undoubtedly among the necessities of religion, upon which there is a consensus among all Islamic sects, and it is known to everyone, elite and commoners alike. Therefore, to deny it absolutely—i.e., to say that being a spouse is not a means of inheritance in Sharia—is an explicit statement of disbelief (kufr). However, if due to ignorance, one denies the woman's right to inheritance by mistakenly believing that the onset of leprosy itself dissolves the marriage, then it is

a matter of ignorance and foolishness by consensus, and a bold audacity against the pure Sharia, but not disbelief. In summary, in the queried situation, the woman is certainly entitled to the inheritance. Similarly, by consensus, the specified dower (mahr musamma) is fully and completely payable. It is clear according to the Hanafis, and according to the Shafi'is because the husband died before the marriage was annulled. As stated in "Al-Anwar":

1. Al-Anwar li-A'mal al-Abrar, Tenth Section on Defects, Jamaliyya Press, Egypt, 2/37.
2. The Holy Quran, 4/12.

फ़तावा रज़विया खंड बारहवाँ

शाफ़ई इमामों के अनुसार, यद्यपि पुख्ता पागलपन, कुष्ठ रोग और सफेद दाग ے कारण निकाह खत्म करने का अधिकार (खियार-ए-फस्ख़) प्राप्त होता है, लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि इन रोगों के कारण निकाह अपने आप समाप्त हो जाता है या महिला को स्वयं निकाह समाप्त करने का अधिकार मिल जाता है। बल्कि इसका अर्थ यह है कि उसे तुरंत बिना देरी के शरीयत के काज़ी के सामने निकाह खत्म करने की मांग पेश करने का अधिकार मिलता है। जब काज़ी निकाह खत्म करने का फैसला देता है, तभी निकाह खत्म होता है, इसके बिना वे पहले की तरह पति-पत्नी ही रहते हैं। इमाम अल्लामा यूसुफ़ अर्दबीली (अल्लाह उन पर रहमत करे), जो प्रमुख शाफ़ई विद्वानों में से हैं, अपनी पुस्तक 'अल-अनवार' में फरमाते हैं:

"सफेद दाग और कुष्ठ रोग के पुख्ता होने से पहले तत्काल 'खियार-ए-अयब' (दोष के कारण विकल्प) साबित नहीं होता है, और पति-पत्नी स्वयं निकाह खत्म नहीं कर सकते, बल्कि काज़ी के पास मामला ले जाना अनिवार्य है।" (संक्षिप्त)।

ला युथबितु बिल-बर्स-इ वल-जुदाम-इ क़बला अल-इस्तहकाम खियार अल-अयब अला अल-फौर व ला यनफरिदानी बिल-फस्ख़ बल ला बुद्दा मिन अल-रफ़्इ इला अल-क़ाज़ी।

यहाँ जब न तो शरीयत के काज़ी की ओर मामला ले जाया गया, न ही उसने निकाह खत्म करने का आदेश दिया, बल्कि महिला स्वयं अपनी माँ के घर चली गई, तो इमामों की सर्वसम्मति से निकाह कायम रहा। अतः कुरान मजीद के स्पष्ट निर्देश के अनुसार, वह अल्लाह द्वारा निर्धारित विरासत (तरके) की हकदार है।

अल्लाह तआला ने फरमाया: "और तुम्हारे लिए जो तुम छोड़ जाओ उसमें से तुम्हारी पत्नियों का चौथा हिस्सा है यदि तुम्हारी कोई संतान न हो। और यदि तुम्हारी संतान हो, तो उनके लिए तुम्हारे छोड़े हुए माल में से आठवाँ हिस्सा है, तुम्हारे द्वारा की गई वसीयत या ऋण (कर्ज) अदा करने के बाद।" (कुरान 4:12)।

क़ाल अल्लाहु तआला: व लहुन्नर-रुबुओ मिम्मा तरक्तुम इन लम यकुन लकुम वलदुन फ़-इन काना लकुम वलदुन फ़-लहुन्नथ-थुमुनु मिम्मा तरक्तुम मिम बाअदि वसिय्यतिन तूसूना बिहा अव दयिन।

पत्नी की विरासत निस्संदेह धर्म की अनिवार्यताओं (जरूरियात-ए-दीन) में से है, जिस पर सभी इस्लामी समुदायों की सर्वसम्मति है और जिसके बारे में खास और आम सभी जानते हैं। इसलिए, इसे पूरी तरह से नकारना—यानी यह कहना कि शरीयत में पति-पत्नी होना विरासत का जरिया ही नहीं है—स्पष्ट रूप से कुफ़्र (अविश्वास) का शब्द है। हाँ, यदि अज्ञानता के कारण किसी ने कुष्ठ रोग की स्थिति को स्वयं निकाह खत्म करने वाला समझकर उस महिला के विरासत के अधिकार से इनकार किया, तो सर्वसम्मति से यह अज्ञानता और मूर्खता है, और पवित्र शरीयत के प्रति एक साहसी धृष्टता है, कुफ़्र नहीं। कुल मिलाकर, पूछे गए मामले में महिला निश्चित रूप से विरासत की हकदार है। इसी तरह, सर्वसम्मति से तयशुदा मेहर (मेहर-ए-मुसम्मा) पूरी तरह से देय है। हनफ़ियों के अनुसार तो यह स्पष्ट ही है, और शाफ़ईयों के अनुसार इसलिए कि निकाह खत्म होने से पहले ही पति की मृत्यु हो गई। 'अल-अनवार' में है:

1. अल-अनवार ली-अमाल अल-अबरार, दोषों पर दसवाँ खंड, जमालिया प्रेस, मिस्र, 2/37।
2. पवित्र कुरान, 4/12।

पृष्ठ 471/688

فتاوی رضویہ جلد دو از دہم

اور ائمہ شافعیہ کے یہاں اگرچہ جنون و جذام مستحکم و برص مستحکم سے خیار فسخ حاصل ہوتا ہے مگر اس کے یہ معنی نہیں کہ ان امراض کے سبب آپ ہی نکاح زائل یا عورت کو بطورِ خود فسخ نکاح کا اختیار حاصل ہو جائے بلکہ یہ معنی کہ فی الفور بلا تاخیر قاضی شرع کے حضور مطالبہ فسخ پیش کرنے کا اختیار ملتا ہے، جب وہ حکم فسخ دے اس وقت نکاح فسخ ہوتا ہے، بغیر اس کے وہ بدستور زوج وزوجہ ہیں۔ امام علامہ یوسف اردبیلی رحمہ اللہ تعالٰی علیہ کہ اجلہ شافعیہ سے ہیں کتاب الانوار میں فرماتے ہیں:

لا یثبت بالبرص والجذام قبل الاستحکام خیار العیب علی الفور ولا ینفردان بالفسخ بل لابد من الرفع الی القاضی 1اھ ملتقطا۔

برص اور جذام کے مستحکم ہونے سے قبل فوری طور پر خیار عیب ثابت نہیں ہوتا، اور خاوند بیوی خود فسخ نہیں کر سکتے بلکہ قاضی کے ہاں مرافعت ضروری ہے اھ ملتقطاً (ت)

یہاں جبکہ نہ حاکم شرع کی طرف مرافعت ہوا، نہ اس نے فسخ نکاح کا حکم دیا بلکہ عورت بطور خود اپنی ماں کے یہاں چلی گئی تو باتفاق ائمہ نکاح قائم رہا پس بنص قطعی قرآن عظیم وہ اس کے ترکہ میں مستحق فریضتہ اللہ ہے۔

قال اللہ تعالی: وَ لَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ إِن لَّمْ يَكُن لَّكُمْ وَلَدٌ ۚ فَإِن كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُم مِّن بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوصُونَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ ۗ 2

اللہ تعالیٰ نے فرمایا: اگر تم نے ترکہ چھوڑا اور تمہاری اولاد نہ ہو تو بیویوں کو ترکہ کا چوتھائی حصہ، اور اگر تمہاری اولاد ہو تو پھر بیویوں کو تمہارے ترکہ میں سے آٹھواں حصہ ملے گا، یہ تقسیم وراثت تمہاری وصیت اور قرضہ ادا کرنے کے بعد ہے۔ (ت)

وراثت زوجہ بلاشبہ ضروریات دین سے ہے جس پر تمام فرقِ اسلام کا اجماع اور ہر خاص وعام کو اس کی اطلاع، تو مطلقاً اس کا انکار یعنی یہ کہنا کہ زوجیت شرع میں ذریعہ وراثت ہی نہیں صریح کلمہ کفر ہے، ہاں اگر براہِ ناواقفی عروضِ جذام کو خود مزیل نکاح سمجھ کر اس عورت کے استحقاقِ وراثت سے انکار کیا تو جہل وسفاہت باتفاق اور شرع مطہر پر بے باکانہ جرات ہے کفر نہیں، بالجملہ صورتِ مسئولہ میں عورت یقیناً مستحق ترکہ ہے، یو نہی باتفاقِ مہر مسمی تمام و کمال واجب الادا ہے، حنفیہ کے طور پر تو ظاہر ہے، شافعیہ کے نزدیک یوں کہ شوہر قبل انفساخ نکاح مر گیا، انوار میں ہے:

1 الانوار لاعمال الابرار الطرف العاشر فی العیوب مطبعۃ جمالیۃ مصر ۳۷/۲ 2 القرآن الکریم ۱۲/۴

[Arabic]: If the person with the defect dies before annulment, the dower (Mahr) is established and no annulment takes place. (T) - If the husband with a defect dies before the marriage is annulled, the dower will become obligatory, and there will be no annulment. (T)

Furthermore, even if the marriage were supposedly annulled here, the equivalent dower (Mahr-e-Mithl) would not be waived. It is clear from the text of the question that the husband contracted this illness after the consummation of the marriage (Zifaf); therefore, even in the event of annulment, the full dower remains payable. It is stated in Al-Anwar:

[Arabic]: When an annulment occurs, if it is before consummation, the dower is waived and there is no gift (Mut'ah), whether he or she initiated the annulment. If it is after consummation, and if it was due to a defect existing at the time of marriage or arising before consummation, the equivalent dower (Mahr-e-Mithl) becomes obligatory. If it arose after consummation, then the specified dower (Mahr-e-Musamma) becomes obligatory. (T) - If a man or woman annuls the marriage, and if this annulment occurs before consummation, the dower will be waived, and the gift of clothing (Mut'ah) will not be due. If the annulment occurs after consummation, then if the defect arose with consummation or before consummation, the equivalent dower will be obligatory. And if the defect arose after consummation, then the fixed dower will be obligatory. (T)

As for maintenance and provisions (nan-o-nafaqah) during the waiting period (iddat) after the husband's death or thereafter, it is fundamentally not obligatory according to the consensus of the correct Hanafi and Shafi'i schools. If the heirs refuse to give it, they are certainly justified. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

[Arabic]: No type of maintenance is obligatory for a woman observing the iddat of death, absolutely, even if she is pregnant. (T) - No kind of maintenance will be obligatory for one observing the iddat of death, absolutely, even if she is pregnant. (T)

It is stated in Anwar-e-Shafi'i:

[Arabic]: A woman observing the iddat of an invalid (fasid) marriage has no maintenance, whether she is pregnant or not; the same rule applies to one observing the iddat of death. (T) - For a woman in the iddat of an invalid marriage, there is no

maintenance, whether she is pregnant or not, and this is the same ruling for one in the iddat of death. (T)

In the Marginalia of Lakhmashri on Al-Anwar, it is stated:

[Arabic]: A woman observing the iddat of death is not entitled to maintenance or expenses. - A woman in the iddat of death is not entitled to maintenance and expenses.

1 Al-Anwar li-A'mal al-Abrar, Tenth section on defects, Jamaliyya Press, Egypt, 3/72. 2 Al-Anwar li-A'mal al-Abrar, Tenth section on defects, Jamaliyya Press, Egypt, 3/72. 3 Durr-e-Mukhtar, Chapter on Maintenance, Mujtabai Press, Delhi, 1/372. 4 Al-Anwar li-A'mal al-Abrar, Book of Maintenance, Third section on impediments to maintenance, Jamaliyya Press, Egypt, 2/228.

[अरबी]: यदि दोष वाला व्यक्ति रद्दीकरण (फस्ख) से पहले मर जाता है, तो महर (दहेज) निर्धारित हो जाता है और कोई रद्दीकरण नहीं होता है। (त) - दोष वाला पति यदि फस्ख से पहले मर जाए तो महर लाज़िम होगा, फस्ख नहीं होगा। (त)

बल्कि यहाँ तो मान लीजिए कि अगर निकाह फस्ख भी कर दिया जाता तब भी महर-ए-मिसल साक़ित न होता। सवाल की इबारत से ज़ाहिर है कि शौहर को इस मर्ज़ का पैदा होना ज़फ़ाफ़ (सुहागरात) के बाद हुआ, तो फस्ख की सूरत में भी पूरा महर अदा करना लाज़िम है। अनवार में है:

[अरबी]: जब फस्ख होता है, यदि वह संभोग से पहले हो, तो महर साक़ित हो जाता है और कोई तोहफ़ा (मुतआ) नहीं होता, चाहे फस्ख उसने किया हो या उसने। यदि वह संभोग के बाद हो, और यदि वह निकाह के समय मौजूद या संभोग से पहले पैदा हुए दोष के कारण हो, तो महर-ए-मिसल लाज़िम होता है। और यदि वह संभोग के बाद पैदा हुए दोष के कारण हो, तो मुक़र्रर महर (महर-ए-मुसम्मा) लाज़िम होता है। (त) - मर्द या औरत ने निकाह फस्ख किया तो अगर यह फस्ख दुख़ूल (संभोग) से पहले हुआ तो महर साक़ित हो जाएगा, और मुतआ (जोड़ा) साक़ित न होगा, और अगर फस्ख निकाह दुख़ूल के बाद हुआ तो अगर दुख़ूल के साथ या दुख़ूल से पहले दोष पैदा हुआ तो महर-ए-मिसल वाजिब होगा, और दुख़ूल के बाद दोष पैदा हुआ तो फिर मुक़र्रर महर वाजिब होगा। (त)

रहा रोटी और ख़र्चा (नान-ओ-नफ़क़ा), वह शौहर की मौत के बाद इद्दत के ज़माने में या उसके बाद हनफ़ी और शाफ़ई मज़हब की सही राय के इत्तेफ़ाक़ से असल में वाजिब नहीं है। अगर वारिस इसे देने से इनकार करते हैं तो बेशक सही है। दुर्रे मुख़्तार में है:

[अरबी]: मौत की इद्दत गुज़ारने वाली के लिए किसी भी प्रकार का नफ़क़ा लाज़िम नहीं है, मुतलक़न, चाहे वह गर्भवती ही क्यों न हो। (त) - किसी किस्म का नफ़क़ा मौत की इद्दत वाली के लिए मुतलक़न वाजिब न होगा अगरचे हामिला (गर्भवती) हो। (त)

अनवार-ए-शाफ़ई में है:

[अरबी]: निकाह-ए-फ़ासिद की इद्दत वाली के लिए कोई नफ़क़ा नहीं है, चाहे वह हामिला हो या न हो; और यही हुक्म मौत की इद्दत वाली का है। (त) - निकाह-ए-फ़ासिद की इद्दत वाली के लिए कोई नफ़क़ा नहीं, हामिला हो या ग़ैर-हामिला हो, और यही हुक्म मौत की इद्दत वाली का है। (त)

हाशिया लख़मशरी अल-अनवार में है:

[अरबी]: मौत की इद्दत वाली नफ़क़ा और ख़र्चे की हक़दार नहीं है। - मौत की इद्दत वाली नफ़क़ा और ख़र्चे की मुस्तहिक़ नहीं है।

1 अल-अनवार अल-आमाल अल-अबरार, दोषों पर दसवां खंड, जमालिया प्रेस, मिस्र 3/72. 2 अल-अनवार अल-आमाल अल-अबरार, दोषों पर दसवां खंड, जमालिया प्रेस, मिस्र 3/72. 3 दुर्रे मुख़्तार, नफ़क़ा का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली 1/372. 4 अल-अनवार अल-आमाल अल-अबरार, नफ़क़ा की किताब, नफ़क़ा की बाधाओं पर तीसरा खंड, जमालिया प्रेस, मिस्र 2/228.

पेज 472/688

لو مات المعیب قبل الفسخ تقرر المھر ولا فسخ - عیب والا خاوند اگر فسخ سے قبل فوت ہو جائے تو مہر لازم ہوگا، فسخ نہ ہوگا۔ (ت)

بلکہ یہاں تو بالفرض اگر نکاح فسخ بھی کر دیا جاتا جب بھی مہر مثل ساقط نہ ہوتا۔ عبارتِ سوال سے ظاہر کہ شوہر کو اس مرض کا حدوث بعدِ زفاف ہوا تو بحالتِ فسخ بھی پورا مہر لازم الادا انوار میں ہے:

اذا فسخ فان کان قبل الدخول سقط المھر ولا متعۃ، فسخ ھو او ھي وان کان بعدہ فان کان بعیب مقارن او حادث قبل الدخول وجب مھر المثل وان کان بحادث بعدہ وجب المسمی - مرد یا عورت نے نکاح فسخ کیا تو اگر یہ فسخ دخول سے قبل ہوا تو مہر ساقط ہو جائے گا، اور جوڑا ساقط نہ ہوگا، اور اگر فسخ نکاح دخول کے بعد ہوا تو اگر دخول کے ساتھ یا دخول سے قبل، عیب پیدا ہوا تو مہرِ مثل واجب ہوگا، اور دخول کے بعد عیب پیدا ہوا تو پھر مقررہ مہر واجب ہوگا۔ (ت)

رہا نان و نفقہ وہ بعد موت شوہر زمانہ عدت یا اس کے بعد کا باتفاق مذہب صحیح حنفی وشافعی اصلاً واجب نہیں، اس کے دینے سے ورثاء انکار کرتے ہوں تو بیشک بجا ہے۔ درمختار میں ہے:

لا تجب النفقۃ بأنواعھا لمعتدۃ موت مطلقاً ولو حاملاً - کسی قسم کا نفقہ موت کی عدت والی کے لئے مطلقاً واجب نہ ہوگا اگرچہ حاملہ ہو۔ (ت)

انوارِ شافعی میں ہے:

المعتدة عن النکاح الفاسد لا نفقة لها حاملاً کانت او حائلاً وکذا الممتدة عن الوفاة - نکاحِ فاسد کی عدت والی کے لئے کوئی نفقہ نہیں، حاملہ ہو یا غیر حاملہ ہو، اور یہی حکم موت کی عدت والی کا ہے۔ (ت)

حاشیہ لکھمشری علی الانوار میں ہے:

المعتدة عن الوفاة لا تستحق النفقة والمؤنة - موت کی عدت والی نفقہ اور خرچہ کی مستحق نہیں ہے،

1 الانوار الاعمال الابرار الطرف العاشر فی العیوب مطبعة جمالیة مصر ۳/۷۲ 2 الانوار الاعمال الابرار الطرف العاشر فی العیوب مطبعة جمالیة مصر ۳/۷۲ 3 درمختار باب النفقه مطبع مجتبائی دہلی ۱/۳۷۲ 4 الانوار لا عمال الابرار کتاب النفقات الطرف الثالث فی موانع النفقة مطبعة جمالیة مصر ۲۲۸/۲

For the authenticity of the report regarding that. (T)

Because there is a Sahih Hadith in this matter. (T)

Similarly, if she asks for maintenance (nafaqah) for the days in which she went to her mother's house without the husband's permission and the husband kept calling but she did not come, then she will not receive maintenance for those days by consensus, as by going she becomes disobedient (nashiza), and for a disobedient woman, there is no maintenance by consensus as long as she remains disobedient. It is stated in Qurrat al-Ayn by Allama Zain Shafi'i:

Maintenance is forfeited by disobedience even for an hour, such as refusing intimacy without excuse or leaving the house without permission.

A wife's disobedience, even if it happens once, such as refusing intercourse without a valid reason, or leaving the house without permission, forfeits the maintenance. (T)

It is stated in Al-Anwar:

There is no maintenance for a disobedient woman even if he is able to return her to obedience by force. And if she flees from him or leaves his house without his permission, she is disobedient. Summary.

A disobedient wife has no right to maintenance even if the husband can force her back into obedience by power. If the wife runs away or leaves home without permission, she will be declared disobedient. Summary (T)

Yes, if before those days of submission of self and non-disobedience, maintenance was not received for some day, then according to our Imams, she cannot even claim for that, because maintenance, if prescribed by the judge's ruling, is forfeited upon the death of one of the spouses. However, if the prescribed maintenance was not received from the husband and by order of the Sharia Qazi the woman spent by taking loans, then in this case, it becomes a debt on the husband's responsibility and is not forfeited by death. It is in Tanweer Hanafi:

By the death of one of them or her divorce, the prescribed amount is dropped, unless she borrowed by order of the Qazi.	**Upon the death of either the wife or the husband, or in case of divorce, the previously fixed maintenance will be forfeited. However, if the wife continued to spend by taking a loan on the order of the Qazi, that debt will not be forfeited. (T)**

However, according to the Shafi'i Imams, when maintenance for the mentioned days was not received, it is absolutely a debt upon the husband that does not drop with anyone's death.

---

1. Al-Kumthari 'ala al-Anwar, Third Part on obstacles to maintenance, Matba'ah Jamaliyah Egypt, 2/228.
2. Qurrat al-Ayn fi Sharh Fath al-Mu'in, section on maintenance, Aamir-ul-Islam Pur Press, Utrawangari Kabir, pp. 220-222.
3. Al-Anwar li-A'mal al-Abrar, Third Part on obstacles to maintenance, Matba'ah Jamaliyah Egypt, 2/228.
4. Durr al-Mukhtar Sharh Tanweer al-Absar, chapter on maintenance, Matba' Mujtabai Delhi, 1/70.

उस बारे में रिपोर्ट की सत्यता के लिए। (त) क्योंकि इस मामले में सही हदीस है। (त)

इसी तरह, अगर वह उन दिनों के खर्च (नफ़क़ह) की मांग करती है जिनमें वह पति की अनुमति के बिना अपनी माँ के यहाँ चली गई और पति बुलाता रहा लेकिन वह नहीं आई, तो सर्वसम्मति से उसे उन दिनों का खर्च नहीं मिलेगा, क्योंकि जाने से वह 'नाशिज़ा' (अवज्ञाकारी) हो जाती है और एक अवज्ञाकारी महिला के लिए, जब तक वह वैसी रहती है, सर्वसम्मति से कोई खर्च नहीं है। अल्लामा ज़ैन शाफ़ई की 'कुर्रतुल ऐन' में है:

एक घंटे की भी अवज्ञा से खर्च समाप्त हो जाता है जैसे बिना किसी बहाने के संभोग से इनकार करना या बिना अनुमति के घर से निकलना।

पत्नी की अवज्ञा, भले ही वह एक बार हो, जैसे बिना किसी वैध बहाने के संभोग से इनकार करना, या बिना अनुमति के घर से निकलना, खर्च के अधिकार को समाप्त कर देता है। (त)

'अनवार' में है:

अवज्ञाकारी महिला के लिए कोई खर्च नहीं है, भले ही वह उसे जबरदस्ती आज्ञाकारिता में वापस लाने में सक्षम हो। और अगर वह उससे भाग जाती है या बिना उसकी अनुमति के घर से निकल जाती है, तो वह अवज्ञाकारी है। संक्षेप।

अवज्ञाकारी पत्नी खर्च की हकदार नहीं है, भले ही पति उसे जबरन आज्ञा मानने पर मजबूर कर सके। अगर पत्नी भाग जाए या बिना अनुमति के घर से निकल जाए, तो वह अवज्ञाकारी मानी जाएगी। संक्षेप (त)

हाँ, अगर उन दिनों से पहले जब वह आज्ञाकारी थी, किसी दिन का खर्च नहीं मिला था, तो हमारे इमामों के अनुसार वह इसके लिए दावा भी नहीं कर सकती, क्योंकि खर्च, यदि जज के आदेश द्वारा तय किया गया हो, जीवनसाथी में से किसी एक की मृत्यु पर समाप्त हो जाता है। लेकिन अगर तयशुदा खर्च पति से नहीं मिला और महिला ने शरिया काजी के आदेश से कर्ज लेकर खर्च किया, तो इस स्थिति में यह पति की जिम्मेदारी पर कर्ज बन जाता है और मृत्यु से समाप्त नहीं होता। 'तन्वीर हनफी' में है:

उनमें से किसी एक की मृत्यु या तलाक से, तयशुदा राशि समाप्त हो जाती है, सिवाय इसके कि अगर उसने काजी के आदेश से उधार लिया हो।

पत्नी या पति में से किसी एक की मृत्यु होने पर या तलाक के मामले में, पिछला तयशुदा खर्च समाप्त हो जाएगा। हालांकि, अगर पत्नी काजी के आदेश पर कर्ज लेकर खर्च करती रही, तो वह कर्ज समाप्त नहीं होगा। (त)

हालांकि, शाफई इमामों के अनुसार, जब उल्लिखित दिनों का खर्च नहीं मिला, तो यह पति पर पूरी तरह से कर्ज है जो किसी की मृत्यु से [खत्म नहीं होता]।

---

1. अल-कुमथरी 'अलल अनवार', नफ़क़ह की रुकावटों पर तीसरा हिस्सा, मतबआ जमालिया मिस्र, 2/228।
2. कुर्रतुल ऐन फ़ी शरह फ़तहुल मुईन, नफ़क़ह पर अनुभाग, आमिर-उल-इस्लाम पुर प्रेस, उत्रावंगारी कबीर, पृष्ठ 220-222।
3. अल-अनवार ली-अमाल अल-अबरार, नफ़क़ह की रुकावटों पर तीसरा हिस्सा, मतबआ जमालिया मिस्र, 2/228।
4. दुर्रे मुख्तार शरह तन्वीरुल अबसार, नफ़क़ह का अध्याय, मतबअ मुजतबाई दिल्ली, 1/70।

لصحة الخبر بذلك۔ کیونکہ اس معاملہ میں صحیح حدیث ہے۔ (ت)

اسی طرح اگر ان دنوں کا نفقہ مانگتی ہے جن میں وہ بے اجازتِ شوہر اپنی ماں کے یہاں چلی گئی اور شوہر بلاتا رہا، نہ آئی، تو ان ایام کا نفقہ بھی بالاتفاق نہ پائے گی کہ اس چلے جانے سے وہ ناشزہ و نافرمان ہے اور ناشزہ کے لئے جب تک ناشزہ رہے بالاجماع نفقہ نہیں۔ قرۃ العین علامہ زین شافعی میں ہے:

تسقط بنشوز ولو ساعة کامتناع من بیوی کی نافرمانی اگرچہ ایک دفعہ ہو جیسا کہ بلاعذر جماع تمتع لا لعذر وخروج من مسکن بلا سے انکار، یا بغیر اجازت گھر سے نکلنا نفقہ کو ساقط اذن ۔ کردیتا ہے۔ (ت)

انوار میں ہے:

لانفقة للناشزة وان قدر علی ردھا نافرمان بیوی کے لئے نفقہ کا استحقاق نہیں اگرچہ جبراً الی الطاعة قھرا ولو ھربت منه او خاوند اسے اطاعت پر مجبور کرسکتا ہو، اور اگر بیوی بھاگ خرجت بلا اذنه من بیته فناشزة اھ جائے یا گھر سے بلا اجازت نکل جائے تو وہ نافرمان قرار ملخصا۔ پائے گی اھ ملخصاً(ت)

ہاں اس سے پہلے ایام تسلیم نفس وعدم نشوز میں اگر کسی دن کا نفقہ نہ ملا تھا تو ہمارے ائمہ کے نزدیک تو اس کا بھی دعوٰی نہیں کرسکتی کہ نفقہ اگر مفروضہ بحکم حاکم ہو موت احد الزوجین سے ساقط ہوجاتا ہے مگر جبکہ نفقہ مفروضہ شوہر سے نہ ملا اور بحکم قاضی شرع عورت نے

قرض لے لے کر خرچ کیا ہو کہ اس صورت میں ذمہ شوہر پر دین قرار پا کر موت سے ساقط نہیں ہوتا، تنویر حنفی میں ہے:

بموت احدهما وطلاقها يسقط المفروض الا اذا استدانت بامر القاضي ۔ (ت)

بیوی اور خاوند میں سے کسی ایک کے فوت ہوجانے یا طلاق ہوجانے سابقہ مقررہ نفقہ ساقط ہوجائے گا لیکن اگر قاضی کے حکم پر بیوی قرض لے کر خرچ کرتی رہی تو وہ قرض ساقط نہ ہوگا۔

البتہ ائمہ شافعیہ کے نزدیک جب ایام مذکورہ کا نفقہ نہ ملا شوہر پر مطلقاً دین ہے کہ کسی کی موت سے

---

1 الکمثری علی الانوار الطرف الثالث فی موانع النفقۃ مطبعۃ جمالیہ مصر ۲۲۸/۲ 2 قرۃ العین فی شرح فتح المعین فصل فی النفقۃ عامر الاسلام پور پریس اتروانگاری کبیر ص ۲۲۰ تا ۲۲۲ 3 الانوار لاعمال الابرار الطرف الثالث فی موانع النفقہ مطبعۃ جمالیہ مصر ۲۲۸/۲ 4 درمختار شرح تنویر الابصار باب النفقۃ مطبع مجتبائی دہلی ۷۰/۱

Fatawa Razawiya Volume 12

...It will not lapse; according to such a claim, she can do it. It is mentioned in Hidayah Hanfiyyah:

[Arabic Text]: Imam Shafi'i (may Allah have mercy on him) said: It becomes a debt before judgment and does not lapse with death because in his view it is a compensation, so it becomes like other debts. [Urdu Translation]: Imam Shafi'i (may Allah have mercy on him) said: Even without a judge's order, the loan taken by the wife for maintenance will not lapse due to death, because in their view maintenance is a compensation, therefore it will be like other payable matters. (T)

In Anwar-e-Shafi'iyah it is stated:

[Arabic Text]: If he did not clothe her for a period, it becomes a debt upon him. [Urdu Translation]: If the wife was not given clothes for some time, it will be a debt on the husband's responsibility. (T)

In the same [book] it is stated:

[Arabic Text]: If she dies during that period without receiving it, it is a debt on his responsibility. And Allah Almighty knows best. [Urdu Translation]: If the wife dies in the meantime, it will still be payable by the husband. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 222: From Ganghar, sent by Sheikh Ahmed Bakhsh, 5th Ramadan-ul-Mubarak 1320 AH. What do the scholars of religion and the jurists of the clear Shariah say regarding this matter: Hinda lived with Bakr for thirteen years as husband and wife, with a dower (Mahr) fixed at one lakh rupees and ten red dinars, in his house. She stayed continuously for eight years. Two years after Hinda moved into Bakr's house, Bakr began to suffer from leprosy. For six years, there was no intimacy between Hinda and Bakr as husband and wife. After eight years, Bakr turned Hinda out of his house. Hinda continued to survive however she could. Six months after turning her out, Bakr filed a criminal case against Hinda for desertion. In that, Hinda denied the marriage, and Bakr admitted to a dower of one hundred rupees instead of one lakh rupees. The criminal court upheld her status as a wife. A year later, a civil case was filed to return the wife. At that time, through mutual settlement, it was decided that Hinda could live wherever she wanted. During this

five-year period, he did not provide maintenance, and for thirteen years, due to illness, there was no intimacy, and Bakr has indeed...

1. Al-Hidayah, Chapter on Maintenance, Al-Maktabah al-Arabiyyah, Karachi, 2/420.
2. Al-Anwar li-A'mal al-Abrar, Book of Maintenance, second section on the method of maintenance, Jamaliya Press, Egypt, 2/225.
3. Al-Anwar li-A'mal al-Abrar, Book of Maintenance, second section on the method of maintenance, Jamaliya Press, Egypt, 2/225. Page 474 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

...साक़ित न होगा, इतने दावे के नज़दीक कर सकती है। हिदाया हनफ़िया में है:

[अरबी इबारत]: इमाम शाफ़ई (रहमतुल्लाह अलैह) ने फ़रमाया: फ़ैसले से पहले ही यह क़र्ज़ हो जाता है और मौत से साक़ित नहीं होता क्योंकि उनके नज़दीक यह मुआवज़ा है, लिहाज़ा यह दीगर क़र्जों की तरह हो गया। [उर्दू तर्जुमा]: इमाम शाफ़ई (रहमतुल्लाह अलैह) ने फ़रमाया: क़ाज़ी के हुक्म के बग़ैर भी बीवी का लिया हुआ नफ़क़ा (खर्च) के लिए क़र्ज़, मौत की वजह से साक़ित न होगा, क्योंकि उनके नज़दीक नफ़क़ा मुआवज़ा है लिहाज़ा दूसरे वाजिब-उल-अदा उमूर की तरह होगा। (त)

अनवार-ए-शाफ़ईया में है:

[अरबी इबारत]: अगर उसने एक मुद्दत तक उसे लिबास नहीं दिया तो वह उस पर क़र्ज़ हो गया। [उर्दू तर्जुमा]: अगर कुछ मुद्दत बीवी को लिबास न दिया तो वह शौहर के ज़िम्मे क़र्ज़ होगा। (त)

इसी में है:

[अरबी इबारत]: अगर वह इसी दौरान क़ब्ज़े के बग़ैर मर गई तो वह उसके ज़िम्मे क़र्ज़ है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। [उर्दू तर्जुमा]: अगर बीवी इसी दौरान फ़ौत हो जाए तब भी शौहर के ज़िम्मे वाजिब-उल-अदा होगा, वल्लाह तआला आलम। (त)

मसला 222: गंगाधर से मुर्सला शेख अहमद बख्श, 5 रमज़ान-उल-मुबारक 1320 हिजरी। क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरा-ए-मतीन इस मसले में कि हिन्दा साथ बक्र के तेरह साल हुए जब बतौर ज़ौजा और शौहर ब-तय्युन मेहर एक लाख रुपये और दस दीनार-ए-सुर्ख के उसके मकान में रही, आठ बरस तक बराबर रही। हिन्दा के जाने से मकान में बक्र के दो बरस के बाद बक्र को बीमारी जुज़ाम की शुरू हुई जब छह बरस तक हिन्दा से और बक्र से सोहबत मिस्ल ज़न-ओ-शौहर के नहीं हुई। इसके बाद आठ बरस के हिन्दा को बक्र ने अपने घर से निकाल दिया। हिन्दा अपनी गुज़र औक़ात जिस तरह मुमकिन हुआ करती रही। मकान से निकाल देने से छह माह बाद हिन्दा पर बक्र ने दावा-ए-फ़रारी फ़ौजदारी में दायर किया, इसमें हिन्दा ने ज़ौज़ियत से इंकार किया और बक्र ने बजाय एक लाख रुपये के सौ रुपये के मेहर का इक़रार किया। कचहरी फ़ौजदारी ने ज़ौज़ा होना क़ायम रखा। बाद इसके साल भर बाद दिलाने ज़ौज़ा का दावा दीवानी में दायर किया,

उस वक़्त हस्ब तस्फ़िया बाहमी यह तय हुआ कि हिन्दा जहाँ चाहे रहे। इस अर्सा पाँच बरस नान-नफ़क़ा नहीं देता है और अर्सा तेरह बरस से बवजह बीमारी सोहबत नहीं हुई और बक्र ने वाक़ई...

1. अल-हिदाया, बाब-उन-नफ़क़ा, अल-मक़्तबतुल अरबिया कराची, 2/420.
2. अल-अनवार ली-अमाल-उल-अबरार, किताब-उन-नफ़क़ात, दूसरा हिस्सा, मिस्र, 2/225.
3. अल-अनवार ली-अमाल-उल-अबरार, किताब-उन-नफ़क़ात, दूसरा हिस्सा, मिस्र, 2/225. पेज 474 ऑफ़ 688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

ساقط نہ ہوگا اتنے دعوٰی کے نزدیک کر سکتی ہے۔ ہدایہ حنفیہ میں ہے:

قال الشافعی رحمہ اللہ تعالٰی تصیر دینا قبل القضاء ولا تسقط بالموت لانہ عوض عندہ فصار کسائر الدیون 1۔ امام شافعی رحمہ اللہ تعالٰی نے فرمایا: قاضی کے حکم کے بغیر بھی بیوی کا لیا ہوا قرض برائے نفقہ ، موت کی وجہ سے ساقط نہ ہوگا، کیونکہ ان کے نزدیک نفقہ معاوضہ ہے لہذا دوسرے واجب الادا امور کی طرح ہوگا۔ (ت)

انوارِ شافعیہ میں ہے:

لو لم یکسھا مدۃ صارت علیہ دیناً 2۔ اگر کچھ مدت بیوی کو لباس نہ دیا تو وہ خوند کے ذمہ قرض ہوگا۔ (ت)

اسی میں ہے:

لو ماتت فی اثنائہ بلا قبض فدین فی ذمتہ 3۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ اگر بیوی اسی اثناء میں فوت ہو جائے تب بھی خوند کے ذمہ واجب الادا ہوگا، واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۲۲۲: از گنگھر مرسلہ شیخ احمد بخش ۵ رمضان المبارک ۱۳۲۰ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ ہندہ ساتھ بگر کے تیرہ سال ہوئے جب بطور زوجہ اور شوہر بہ تعین مہر صدِ حد ہزار روپے اور دس دینارِ سرخ کے اس کے مکان میں رہی آٹھ برس تک برابر رہی ہندہ کے جانے سے مکان میں بگر کے دو برس کے بعد بگر کو بیماری جذام کی شروع ہوئی جب چھ برس تک ہندہ سے اور بگر سے صحبت مثل زن و شوہر کے نہیں ہوئی اس کے بعد آٹھ برس کے ہندہ کو بگر نے اپنے گھر سے نکال دیا ہندہ اپنی گزر اوقات جس طرح ممکن ہوا

کرتی رہی مکان سے نکال دینے سے چھ ماہ بعد ہندہ پر بگر نے دعویٰ فراری فوجداری میں دائر کیا اس میں ہندہ نے زوجیت سے انکار کیا اور بگر نے بجائے صدِ حد ہزار روپے سو روپے کے مہر کا اقرار کیا کچہری فوجداری نے زوجہ ہونا قائم رکھا بعد اس کے سال بھر بعد دلانے زوجہ کا دعویٰ دیوانی میں دائر کیا اس وقت حسب تصفیہ باہمی یہ طے ہوا کہ ہندہ جہاں چاہے رہے اس عرصہ پانچ برس نان نفقہ نہیں دیتا ہے اور عرصہ تیرہ برس سے بوجہ بیماری صحبت نہیں ہوئی اور بگر نے واقعی

1 الهداية باب النفقة المكتبة العربية كراچی ۴۲۰/۲ 2 الانوار لاعمال الابرار كتاب النفقات الطرف الثانی فی كيفية الانفاق مطبعة جمالية مصر ۲۲۵/۲ 3 الانوار لاعمال الابرار كتاب النفقات الطرف الثانی فی كيفية الانفاق مطبعة جمالية مصر ۲۲۵/۲ Page 474 of 688

Fatawa-e-Razviyah, Volume 12

...refused the dower and does not provide maintenance, and is not capable of sexual intercourse. In such a situation, what remedy should there be for Hindah (the wife)? Can Hindah obtain a Khula (divorce initiated by the wife) or a regular divorce? Also, can Hindah receive maintenance and house rent or not, because Bakr (the husband) lives with his wife and daughter in a rented house, while Hindah lives separately in another house at a distance of one 'jarib' (a unit of measure) from Bakr's house on rent. Please clarify so you may be rewarded.

The Answer:

It is mandatory for Bakr to arrange maintenance and housing for Hindah as long as Hindah keeps herself under his authority. A wanderer (one who leaves the husband's home without permission) does not receive maintenance. If Hindah does nothing on her part that would forfeit her right to maintenance and Bakr still does not provide it, then the ruler/judge should compel Bakr to either provide maintenance or give a divorce. Or, if Bakr agrees, Hindah can initiate Khula by giving up her dower etc. Without this, as long as Bakr is alive, even if he is ill and incapable of sexual intercourse, Hindah cannot become independent (divorce herself). And Allah Almighty knows best.

Issue 224: From Sangpur, sent by Mr. Ibrahim.

What do the scholars of religion say regarding this issue: A person suffering from leprosy left the settlement, but despite the separation, he does not divorce his wife. The mentioned woman has an intense desire for marriage. Another person named Rustam committed adultery with the above-mentioned woman, which he admitted, so no further proof is needed. The Muslim brothers have boycotted this criminal (stopped sharing hookah, water, greetings, and speech). Now he is regretful and penitent. Therefore, they want to reintegrate him. Can he join the Muslim community in this way? That's all, Peace.

The Answer:

If that person (the husband) is capable of having intercourse with the woman and able to fulfill her rights, then it is not obligatory for him to divorce the woman, and the woman cannot separate from him. And if he is not capable of fulfilling her rights, then it is obligatory for him to give a divorce to the woman. If he does not give it, he will be a sinner. In the case where it is obligatory upon him and he did not give it, if a

divorce is taken from him by force, it will be valid. The Prophet (peace and blessings of Allah be upon him) says:

"He is not of us who turns a woman against her husband." [1] - Narrated by Abu Dawud (He who spoils someone's wife against him is not from our group - Abu Dawud and Al-Hakim narrated this with an authentic chain from Abu Hurairah).

[1] Sunan Abu Dawud, Kitab al-Talaq, Aftab-e-Alam Press Lahore 1/296; Al-Mustadrak lil-Hakim, Chapter: He is not of us who turns a woman against her husband, etc., Dar al-Fikr Beirut 2/196.

फ़तावा-ए-रज़विया, जिल्द 12

...मेहर से इनकार किया और नान-नफ़क़ा (खर्च) नहीं देता है और सोहबत (यौन संबंध) के काबिल नहीं है, तो ऐसी सूरत में हिन्दा (पत्नी) के लिए क्या चारा होना चाहिए? क्या हिन्दा खुला या तलाक़ पा सकती है? या क्या हिन्दा नान-नफ़क़ा और मकान का किराया पा सकती है या नहीं, क्योंकि बक्र (पति) अपनी पत्नी और अपनी बेटी के साथ एक किराये के मकान में रहता है और हिन्दा बक्र के मकान से एक 'जरीब' की दूरी पर दूसरे किराये के मकान में रहती है। स्पष्ट करें ताकि आपको पुण्य मिले।

उत्तर:

बक्र पर हिन्दा के नान-नफ़क़ा और रहने का इंतज़ाम करना अनिवार्य है जब तक कि हिन्दा खुद को उसके अधिकार में रखे। आवारा गर्द (बिना अनुमति घर से बाहर रहने वाली) का नान-नफ़क़ा नहीं होता। अगर हिन्दा अपनी तरफ से ऐसा कुछ न करे जिससे नान-नफ़क़ा खत्म हो और बक्र फिर भी नफ़क़ा न दे, तो शासक (न्यायाधीश) बक्र को मजबूर करे कि वह नफ़क़ा दे वरना तलाक़ दे। या अगर बक्र राज़ी हो तो हिन्दा उससे मेहर आदि माल के बदले 'खुला' कर ले। इसके बिना, जब तक बक्र जीवित है, भले ही वह बीमार हो और सोहबत के काबिल न रह गया हो, हिन्दा खुद मुख़्तार (स्वतंत्र) नहीं हो सकती। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 224: संगपुर से, प्रेषक इब्राहिम साहब।

धर्म के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं: एक व्यक्ति कोढ़ की बीमारी के कारण बस्ती छोड़कर चला गया, लेकिन अलगाव के बावजूद अपनी पत्नी को तलाक़ नहीं देता। उक्त स्त्री निकाह की अत्यधिक इच्छा रखती है। एक अन्य व्यक्ति जिसका नाम रुस्तम है, उसने उसी उपर्युक्त स्त्री के साथ व्यभिचार (ज़िना) किया, जिसे उसने स्वीकार कर लिया है, इसलिए अधिक प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। मुस्लिम भाइयों ने इस अपराधी के साथ हुक्का-पानी, सलाम और बातचीत बंद कर दी है। अब वह शर्मिंदा है और तौबा करने वाला है, इसलिए वे उसे वापस मिलाना चाहते हैं। क्या वह इस तरीके से मुस्लिम भाइयों में शामिल हो सकता है? फ़क़त वसलाम।

उत्तर:

अगर वह व्यक्ति स्त्री के साथ सोहबत कर सकता है और उसके अधिकार अदा करने में सक्षम है, तो उस पर अनिवार्य नहीं है कि स्त्री को तलाक़ दे और स्त्री उससे अलग नहीं हो सकती। और अगर वह उसका अधिकार अदा करने में सक्षम नहीं है, तो उस पर अनिवार्य है कि स्त्री को तलाक़ दे दे। अगर नहीं देगा तो गुनहगार होगा। ऐसी स्थिति में जहाँ उस पर अनिवार्य हो और उसने नहीं दिया, अगर जबरन उससे तलाक़ ले लिया जाए तो वह हो जाएगा। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाते हैं:

"वह हममें से नहीं है जिसने किसी महिला को उसके पति के खिलाफ बहकाया।" [1] - अबू दाऊद द्वारा रिवायत (जो किसी की पत्नी को उसके खिलाफ बिगाड़ दे वह हमारे समूह से नहीं है - इसे अबू दाऊद और हाकिम ने अबू हुरैरा से सही सनद के साथ रिवायत किया है)।

[1] सुनन अबू दाऊद, किताब अल-तलाक़, आफ़ताब-ए-आलम प्रेस लाहौर 1/296; अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम, बाब: लैसा मिन्ना मन खब्बब इमराअतन अला ज़ौजिहा आदि, दारुल फ़िक्र बेरूत 2/196।

فتاویٰ رضویہ، جلد دو ازدہم

مہر سے انکار کیا اور نان نفقہ نہیں دیتا ہے اور قابل صحبت نہیں ہے تو ایسی صورت میں کیا چارہ ہندہ کے واسطے ہونا چاہئے ہندہ خلع یا طلاق پا سکتی ہے یا کیا ہندہ نان نفقہ اور کرایہ مکان پا سکتی ہے یا نہیں کیونکہ بکر اپنی زوجہ کے ساتھ مع اپنی دختر کے ایک کرایہ کے مکان میں رہتے ہیں اور ہندہ علیحدہ ایک مکان میں بکر کے مکان سے بفاصلہ ایک جریب کرایہ پر رہتی ہے۔ بینوا توجروا

الجواب:

بکر پر نان و نفقہ و مسکن ہندہ کا انتظام لازم ہے جبکہ ہندہ اپنے آپ کو اس کی قید میں رکھے، آوارہ گرد کا نان نفقہ نہیں ہوتا، اگر ہندہ اپنی جانب سے کوئی بات سقط نان و نفقہ نہ کرے اور بکر پھر بھی نفقہ نہ دے تو حاکم بکر کو مجبور کرے کہ نفقہ دے ورنہ طلاق دے، یا بکر راضی ہو تو ہندہ اس سے مہر وغیرہ مال پر خلع کر لے بغیر اس کے جب تک بکر زندہ ہے اگر چہ بیمار ہے ناقابل صحبت ہو گیا ہندہ خود مختار نہیں ہو سکتی، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۲۴: از سنگ پور مرسلہ ابراہیم صاحب

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں ایک شخص بعارضہ جذام مبتلا ہو کر بستی سے نکل گیا مگر اپنی زوجہ کو باوجود علیحدگی بھی طلاق نہیں دیتا، عورت مذکور از حد خواہش نکاح رکھتی ہے، دیگر ایک شخص مسمیٰ رستم نے اسی عورت مندرجہ بالا سے زنا کیا جس کا مقر ہے زیادہ ثبوت کا حاجت نہیں، بردران اسلام نے اس مجرم پر اس کا حقہ پانی سلام و کلام ترک کر دیا ہے

اب وہ نادم اور توبہ کار ہے لہٰذا اس کو ملانا چاہتے تو آیا وہ اس طریقہ سے شامل برادرن اسلام ہو سکتا ہے؟ فقط والسلام۔

الجواب:

اگر وہ شخص عورت سے صحبت کر سکتا ہے اور اس کے ادائے حق پر قادر ہے تو اس پر واجب نہیں کہ عورت کو طلاق دے اور عورت اس سے جدائی نہیں کر سکتی، اور اگر اُس کا حق ادا کرنے پر قادر نہیں تو اس پر واجب ہے کہ عورت کو طلاق دے دے، اگر نہ دے گا گنہگار ہوگا، اس صورت میں کہ صورت اس پر واجب ہو اور نہ دی، اگر جبراً اُس سے طلاق لے لی جائے تو ہو جائے گی۔ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں:

لیس منّا من خبّب امرأۃً علی زوجھا ۱- رواہ ابو داؤد ہمارے گروہ سے نہیں جس کسی کی عورت کو اس سے بگاڑدے (اس کو ابوداؤد اور حاکم نے صحیح سند کے ساتھ والحاکم بسند صحیح عن ابی ھریرۃ)

۱- سنن ابو داؤد کتاب الطلاق آفتاب عالم پریس لاہور ۱/۲۹۶، المستدرک للحاکم باب لیس منّا من جب امرأۃً علی زوجھا الخ دارالفکر بیروت ۲/۱۹۶

At-Tabarani narrated in al-Saghir and similarly in al-Awsat from Ibn Umar, and in al-Awsat like Abu Ya'la with a Sahih chain from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them all). And Allah knows best. [It was narrated] from Abu Huraira (may Allah be pleased with him), and at-Tabarani narrated in al-Saghir and similarly in al-Awsat from Umar (may Allah be pleased with them both), and in al-Awsat like Abu Ya'la from Ibn Abbas (may Allah be pleased with them both). And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 244: From Balrampur, district Gonda, near Orphanage, sent by Nazr Muhammad Sahib, 13 Rabi-ul-Awwal Sharif 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid married a young woman, Hindah, in his old age. After a few days, various disagreements arose between Hindah and Zaid. Due to Zaid's bad character, Hindah asked for a divorce on the condition that she would waive her dowry (Mahr) if he divorced her. Zaid did not agree. Compelled, Hindah presented her case in the Tehsildar's court. The Tehsildar granted Hindah a divorce decree. Now, can Hindah marry another person or not? If the woman is young and strong, and the husband is old and decrepit, and the woman does not want to live with her husband, while the husband does not want to let her go, what course of action should be taken according to Sharia?

The Answer: La ilaha illallah. A divorce granted by a Tehsildar cannot occur without the husband giving the divorce. Allah Almighty said: "In whose hand is the marriage tie"[1] (Allah has said: the knot of marriage is only in the hands of the husband). If she marries elsewhere, it will be absolutely forbidden and adultery. Allah Almighty said: "And [also prohibited are] married women"[2] (Allah has said: and forbidden are wedded women). Yes, it is obligatory for the husband to keep her well and fulfill her rights; if he is unable to do so, it is obligatory for him to divorce her. Allah Almighty said: "either keep [them] in an acceptable manner or release them in an acceptable manner."[3] | Allah Almighty has said: After one or two divorces, keep the wife with good treatment or release her with kindness. And Allah Almighty knows best. | And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 245: From Balrampur, Purnia Talab locality, district Gonda, sent by Tegh Bahadur Khan, 16 Rabi-ul-Awwal Sharif 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A woman, Hindah, against her husband Zaid, during a dispute...

[1] Al-Quran al-Kareem 2/237 [2] Al-Quran al-Kareem 4/24 [3] Al-Quran al-Kareem 2/25

तबरानी ने अल-सगीर और इसी तरह अल-औसत में इब्न उमर से, और अल-औसत में अबू याला की तरह सही सनद के साथ इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन से रिवायत की है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से, और तबरानी ने सगीर में और इसी तरह औसत में उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा से और औसत में अबू याला की तरह इब्न अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत की। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसअला २४४: बलरामपुर ज़िला गोंडा, यतीम खाना के पास से, मुर्सला नज़र मोहम्मद साहब, १३ रबीउल अव्वल शरीफ १३३८ हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसअले में क्या फरमाते हैं कि ज़ैद ने बुढ़ापे में हिंदा नाम की एक जवान औरत से निकाह किया। कुछ दिनों बाद हिंदा और ज़ैद के बीच तरह-तरह के मतभेद पैदा हो गए। ज़ैद के खराब व्यवहार के कारण हिंदा ने ज़ैद से तलाक मांगा, इस शर्त पर कि वह मेहर माफ कर देगी। ज़ैद नहीं माना। मजबूर होकर हिंदा ने अपना मामला तहसीलदार की कचहरी में पेश किया। तहसीलदार ने हिंदा को तलाक की डिक्री दे दी। अब क्या हिंदा किसी दूसरे व्यक्ति से निकाह कर सकती है या नहीं? अगर औरत जवान और ताकतवर है और शौहर बूढ़ा और कमज़ोर है, और औरत शौहर के पास नहीं रहना चाहती, जबकि शौहर उसे छोड़ना नहीं चाहता, तो शरीयत के अनुसार क्या रास्ता अपनाना चाहिए?

अल-जवाब: ला इलाहा इल्लल्लाह। शौहर के तलाक दिए बिना तहसीलदार के तलाक देने से तलाक नहीं हो सकता। अल्लाह तआला ने फरमाया: "जिसके हाथ में निकाह की गिरह है"[1] (अल्लाह ने फरमाया: निकाह की गांठ केवल शौहर के हाथ में है)। अगर वह कहीं और निकाह करेगी तो यह बिल्कुल हराम और ज़िना (व्यभिचार) होगा। अल्लाह तआला ने फरमाया: "और [हराम हैं] विवाहित स्त्रियाँ"[2] (अल्लाह ने फरमाया: और विवाहित स्त्रियाँ हराम हैं)। हाँ, शौहर पर फर्ज़ है कि वह उसे अच्छी तरह रखे और उसके हक़ अदा करे; अगर वह इसमें सक्षम नहीं है, तो उस पर फर्ज़ है कि वह उसे तलाक दे दे। अल्लाह तआला ने फरमाया: "या तो उन्हें भली-भांति रोक रखो या भली-भांति विदा कर दो।"[3] | अल्लाह तआला ने फरमाया: एक या दो तलाक के बाद बीवी को अच्छे व्यवहार के साथ पास रखो या उन्हें भलाई के साथ विदा कर दो। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। | और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसअला २४५: बलरामपुर, मुहल्ला पुरनिया तालाब, ज़िला गोंडा, मुर्सला तेग बहादुर खां, १६ रबीउल अव्वल शरीफ १३३८ हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसअले में क्या फरमाते हैं कि एक औरत हिंदा ने अपने शौहर ज़ैद पर विवाद की स्थिति में...

[1] अल-कुरान अल-करीम २/२३७ [2] अल-कुरान अल-करीम ४/२४ [3] अल-कुरान अल-करीम २/२५

والطبرانی فی الصغیر ونحوہ فی الاوسط عن ابن عمر وفی الاوسط کابی یعلی بسند صحیح عن ابن عباس رضی اللہ تعالی عنہم اجمعین۔ واللہ تعالی اعلم۔ ابوہریرہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ، اور طبرانی نے صغیر میں اور ایسے ہی اوسط میں عمر رضی اللہ تعالیٰ عنہما اور اوسط میں ابویعلی کی طرح ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہما سے روایت کیا۔ واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۲۴۴: از بلرام پور ضلع گونڈہ متصل یتیم خانہ مرسلہ نذر محمد صاحب ۱۳ ربیع الاول شریف ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے پیر سالگی میں ہندہ نوجوان سے نکاح کیا بعد چند روز کے ہندہ اور زید میں طرح طرح کی مخالفتیں واقع ہوئیں اور بوجہ بد کرداری زید کے ہندہ نے زید سے طلاق مانگا اس شرط پر کہ میں مہر معاف کردوں اور تم طلاق دے دو زید نے نہ مانا مجبور ہو کر ہندہ نے اپنا معاملہ حاکم تحصیل کی کچہری میں پیش کیا حاکم تحصیل نے ہندہ کو طلاق کی ڈگری دے دی اب ہندہ دوسرے شخص سے نکاح کرسکتی ہے یا نہیں، اگر عورت جوان طاقتور ہے اور شوہر بڑھا فرتوت ہے عورت شوہر کے پاس نہیں رہنا چاہتی ہے شوہر چھوڑنا نہیں چاہتا تو شرعا کیا صورت اختیار کرنی چاہئے؟

الجواب: لا الہ الا اللہ بے شوہر کے طلاق دئے طلاق تحصیلدار کے دئے نہیں ہو سکتی قال اللہ تعالیٰ بِیَدِہٖ عُقْدَۃُ النِّکَاحِ 1 (اللہ تعالیٰ نے فرمایا: نکاح کی گرہ صرف خاوند کے ہاتھ میں ہے۔ ت) دوسری جگہ نکاح کرے گی تو حرام قطعی و زنا ہوگا قال اللہ تعالیٰ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ 2 (اللہ تعالیٰ نے فرمایا: اور حرام ہیں منکوحہ عورتیں۔ ت) ہاں شوہر پر فرض ہے کہ اسے اچھی طرح رکھے اس کے حقوق ادا کرے ، اگر وہ اس پر قادر نہیں تو اس پر فرض ہے کہ اسے طلاق دے دے، قال اللہ تعالیٰ فَاَمْسِکُوْھُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ فَارِقُوْھُنَّ بِمَعْرُوْفٍ۔3 | اللہ تعالیٰ نے فرمایا: ایک یا دو

طلاقوں کے بعد بیوی کو بحسنِ سلوک سے پاس رکھو یا ان کو بھلائی کے ساتھ فارغ کردو۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ | واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۲۴۵: از بلرامپور محلہ پورنیا تالاب ضلع گونڈہ مرسلہ تیغ بہادر خاں ۱۶ ربیع الاول شریف ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت ہندہ نے اپنے شوہر زید پر بحالت نزاع

1 القرآن الکریم ۲/۲۳۷ 2 القرآن الکریم ۴/۲۴ 3 القرآن الکریم ۲/۲۵

Fatawa Rizvia Volume Twelve

A lawsuit for divorce was filed in the civil court. After presenting evidence, etc., the woman obtained a decree for her divorce. Now, can this woman, according to the Sharia, marry another person or not? And if the first husband seeks reconciliation (ruju) after four or five months of obtaining the divorce, is it permissible or not? Please clarify and may you be rewarded.

The Answer: If in reality Zaid had given the divorce and Hind obtained the decree by making a true claim, then if it was an irrevocable divorce (Talaq Ba'in), she can marry after the waiting period ('iddah) in any case. If it was a revocable divorce (Talaq Raj'i), she can marry on the condition that Zaid did not reconcile during the 'iddah. However, if Zaid did not actually give a divorce and Hind obtained the decree by presenting false witnesses, or if it was a revocable divorce and Zaid reconciled before the end of the 'iddah, then it is absolutely forbidden (haram) for Hind to marry elsewhere. If she does, it will be adultery (zina). Allah Almighty says: "And [forbidden to you are] women already married" [1] (Allah Almighty said: And married women are forbidden. - T). The 'iddah for a menstruating woman is three menstrual cycles that begin and end after the divorce.

"And divorced women shall wait [as regards their marriage] for three menstrual periods" [2]. Divorced women should restrain themselves for three menstrual cycles. (T)

If three menstrual cycles have not started and finished within these four or five months, then the husband can reconcile; otherwise, not. And Allah Almighty knows best.

Problem 246: From Bareilly, Mohalla Baharipur, sent by Ghulam Murtaza Sahib, 16 Shaban 1326 AH Hind is a righteous woman, but her husband is a transgressor (fasiq), wicked (fajir), hurtful, an open usurer, a drunkard, and a debauchee. He used to beat Hind and even threatened her with knives and daggers. Once he struck her with a knife, cutting her palm. Another time he struck with a knife, injuring her left wrist, scars of which are still present. He often forced the woman to drink alcohol while intoxicated. Once, when Hind expressed her aversion to wine despite his coercion, he threw the same glass at her, causing an injury and wine to enter her eyes, which made them sore and painful for a long time. Furthermore, the said person had illicit relations with several women; he married one of them and drove her out after a few days by beating her. Hind was extremely distressed by these

unseemly actions of her husband, and he often kept those immoral women in the house. Finally...

[1] Al-Quran al-Karim 4/24 [2] Al-Quran al-Karim 2/228 Page 477 of 688

फतावा रज़विया खंड बारह

दीवानी कचहरी में तलाक का दावा दायर किया गया। गवाही आदि पेश करके औरत ने अपनी तलाक की डिक्री प्राप्त कर ली। अब क्या यह औरत शरीयत के अनुसार दूसरे व्यक्ति से निकाह कर सकती है या नहीं? और यदि तलाक प्राप्त करने के चार-पांच महीने बाद पहला पति उससे रुजू (सुलह) करे तो क्या यह जायज़ है या नहीं? बयान फरमाएं, आपको पुण्य मिलेगा।

जवाब: यदि वास्तव में जैद ने तलाक दिया था और हिंद ने सच्चा दावा करके डिक्री प्राप्त की, तो यदि वह तलाक-ए-बाइन (अटल तलाक) था, तो इद्दत के बाद वह निश्चित रूप से निकाह कर सकती है। और यदि वह रजई (प्रतिसंहरणीय) तलाक था, तो इस शर्त पर कि जैद ने इद्दत के दौरान रुजू न किया हो, वह निकाह कर सकती है। लेकिन अगर जैद ने वास्तव में तलाक नहीं दिया था और हिंद ने झूठे गवाह पेश करके डिक्री ली थी, या तलाक-ए-रजई दिया था और इद्दत खत्म होने से पहले जैद ने रुजू कर लिया था, तो हिंद का दूसरी जगह निकाह करना कतई हराम है। अगर वह ऐसा करेगी तो वह ज़िना (व्यभिचार) होगा। अल्लाह तआला का फरमान है: "वल् मुह् सनातू मिनन् निसा-इ" [1] (अल्लाह तआला ने फरमाया: और विवाहित स्त्रियाँ हराम हैं। - त)। मासिक धर्म वाली महिला की इद्दत तीन मासिक धर्म है जो तलाक के बाद शुरू होकर समाप्त हो।

"वल् मुतल्लकातु यतरब्बस्ना बि-अन्फुसिहिन्ना सलासाता कुरु-इन्" [2]। तलाकशुदा औरतें अपने आप को तीन मासिक धर्म तक रोके रखें (पाबंद करें)। (त)

यदि इन चार-पांच महीनों में तीन मासिक धर्म शुरू होकर समाप्त नहीं हुए हों, तो पति रुजू कर सकता है, अन्यथा नहीं। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला २४६: बरेली, मोहल्ला बहारीपुर से, प्रेषक गुलाम मुर्तज़ा साहिब, १६ शाबान १३२६ हिजरी हिंद एक नेक (सालेहा) औरत है और उसका पति फासिक, फाजिर, सताने वाला, खुलेआम सूदखोर, शराबी और अय्याश है। वह हिंद की पिटाई करता था, यहाँ तक कि चाकूछुरी लेकर तैयार रहता था। एक बार उसने चाकू मारा जिससे उसके हथेली कट गई, दूसरी बार चाकू मारा जिससे बाईं कलाई में घाव हो गया जिसके निशान आज भी मौजूद हैं। वह अक्सर औरत को नशे की हालत में शराब पीने पर मजबूर करता था। चुनाँचे एक बार उसके दबाव पर हिंद ने शराब से नफरत जाहिर की, तो उसने वही गिलास मार दिया जिससे उसे चोट लग गई और आँखों में शराब चली गई, जिससे आँखें दुखने लगीं और काफी समय तक दर्द रहा। इसके अलावा, उक्त व्यक्ति का कई महिलाओं के साथ अवैध

संबंध था; उसने उनमें से एक से निकाह कर लिया और कुछ दिनों बाद उसे मारपीट कर निकाल दिया। पति की इन अशोभनीय हरकतों से हिंद बहुत परेशान रहती थी और वह उन बदचलन औरतों को अक्सर घर में रखता था। आखिरकार...

[1] अल-कुरान अल-करीम ४/२४ [2] अल-कुरान अल-करीम २/२२८ पृष्ठ ४७७ / ६८८

فتاوٰی رضویہ جلد دوا زدہم

کچہری دیوانی میں دعوٰی طلاق دائر کیا۔ شہادت وغیرہ پیش کرکے عورت نے اپنی طلاق کی ڈگری حاصل کرلی اب یہ عورت ازروئے شرع شریف دوسرے شخص سے نکاح کرسکتی ہے یا نہیں، اور اگر بعد طلاق حاصل کردہ شوہر اول اس سے بعد چار پانچ ماہ کے رجعت کرے تو جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: اگر واقع میں زید نے طلاق دی تھی اور ہندہ نے سچا دعوٰی دے کر ڈگری لی تو اگر طلاق بائن تھی تو بعد عدت مطلقاً اور اگر رجعی تھی تو اس شرط پر کہ زید نے عدت میں رجعت نہ کی ہو نکاح کرسکتی ہے، اور اگر زید نے واقع میں طلاق نہ دی تھی ہندہ نے جھوٹے گواہ پیش کرکے ڈگری لے لی یا طلاقِ وجعی دی تھی اور ختم عدت سے پہلے زید نے رجعت کرلی تو ہندہ کو دوسری جگہ نکاح حرام قطعی ہے اگر کرے گی زنا ہوگا قال اللہ تعالٰی وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ ۱ (اللہ تعالٰی نے فرمایا: اور منکوحہ عورتیں حرام ہیں۔ت) حیض والی عورت کی عدت تین حیض ہیں جو طلاق کے بعد شروع ہو کر ختم ہوں،

وَالْمُطَلَّقٰتُ یَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِہِنَّ ثَلٰثَۃَ قُرُوْءٍ ۲ طلاق دی ہوئی عورت اپنے آپ کو تین حیض تک پابند کریں (ت)

اگر اس چار پانچ مہینے میں تین حیض شروع ہو کر ختم نہ ہوئے ہوں تو شوہر رجعت کرسکتا ہے ورنہ نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۴۶: از بریلی محلہ بہاری پور مرسلہ غلام مرتضی صاحب ۱۶ شعبان ۱۳۲۶ھ ہندہ صالحہ ہے اور اس کا شوہر فاسق فاجر موذی معلن سود خوارہ اور شرابی و عیاش ہے، ہندہ کو مار پیٹ

کرتا تھا بلکہ چاقو چھری سے آمادہ رہتا تھا اور ایک بار چاقو مارا کہ جس سے گھائی دینے ہاتھ کی کٹ گئی، دوسری مرتبہ ایک چاقو مارا جس بائیں ہاتھ کی کلائی میں زخم پہنچا جس کے ہر نشان اب تک موجود ہیں، اکثر عورت کو شراب پینے پر بحالتِ نشہ مجبور کرتا تھا، چنانچہ ایک بار اس کے جبر پر ہندہ نے شراب سے نفرت ظاہر کی تو اس کے وہی گلاس مارا جس سے اس کو چوٹ لگ گئی اور آنکھوں میں شراپ پڑی جس سے آنکھیں دکھ آئیں اور عرصہ تک تکلیف رہی اور شخص مذکور تعلق ناجائز کئی عورتیں سے رکھتا تھا ان میں سے ایک عورت سے نکاح کرلیا تھا چند روز بعد اسے مار پیٹ کر نکال دیا شوہر کی ان حرکاتِ ناشائستہ سے ہندہ نہایت پریشان رہتی تھی ار ان بد چلن عورتوں کو اکثر گھر میں رکھتا تھا آخر کار

Fatawa Razvia, Volume 12

Hind's parents were forced to take her in for a period of seven (7) years. During this time, Hind's husband did not take any notice of her food and maintenance, and his misconduct continues in the same manner to this day. It has been about two and a half years since he married another woman. In the meantime, the husband filed a lawsuit to obtain his wife, which was dismissed due to proof of his misconduct. The husband appealed, but that too was dismissed. Hind has no desire whatsoever to go back to that cruel man's house because, besides other hardships, there is now a predominant fear for her life. This is because mutual hostility has significantly increased after the dismissal of the said lawsuit. Therefore, in this situation, a query is made to the religious scholars: can a divorce or relinquishment be obtained from the husband, and can the marriage be annulled according to Sharia or not?

Answer: In the situation described, the woman shall by no means be coerced into going to her husband's house because it entails religious, worldly, life-threatening, and physical harm to her in every respect. The fear of losing her life remains present, and according to Sharia, it is mandatory to avert harm. Allah Almighty says: "And do not harm them" 1 — do not cause harm to women. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah be upon him) says: "There should be neither harming nor reciprocating harm in Islam." 2 | In Islam, there is neither causing harm nor harming anyone in return.

Therefore, if some righteous and religious people are available in whose protection it is Sharia-compliant for the woman to stay, and they can sufficiently look after her and prevent the husband from transgressing against her religion, body, and life, then the woman could surrender herself to the husband so that the rights of both are observed. It is stated in Rad al-Muhtar:

"In Al-Bahr: If she said that he beats me and harms me, then order that I be settled among righteous people. If the judge knows this, he should rebuke him and prevent him from transgressing against her right, and he shall not be questioned about his action. If they (the neighbors) confirm her statement, he should prevent him from transgressing against her right and not leave her there."

In Al-Bahr, it is stated: If a wife petitions the Qazi (Judge) saying her husband beats and tortures her, so order that I be given residence among righteous people; if the Qazi himself is aware of this matter, he should scold the husband and prevent him from beating and excess, otherwise, he should inquire from neighbors about the

husband's behavior. If they confirm the wife's statement, the Qazi should stop the husband from excess.

1 Al-Quran al-Karim 65/6 2 Mu'jam al-Awsat, Hadith, Maktaba al-Ma'arif al-Riyadh 6/91

फतावा रज़विया, खंड 12

मजबूरन हिंदा के माता-पिता ने सात (7) साल से उसे अपने पास रखा हुआ है। इस अवधि के दौरान, हिंदा के पति ने उसके भोजन और भरण-पोषण की कोई सुध नहीं ली और उसका बुरा व्यवहार अब तक वैसा ही बना हुआ है। लगभग ढाई साल पहले उसने एक और औरत से शादी कर ली। इसी बीच पति ने पत्नी को वापस पाने के लिए मुकदमा दायर किया जो उसके दुराचार के सबूत के कारण खारिज हो गया। पति ने अपील भी की, वह भी खारिज हो गई। हिंदा की यह इच्छा बिल्कुल नहीं है कि मैं उस अत्याचारी के घर जाऊं क्योंकि अन्य कष्टों के अलावा अब जान का खतरा भी प्रबल है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उक्त मुकदमे के खारिज होने के बाद आपसी शत्रुता बहुत बढ़ गई है। अतः इस स्थिति में धर्मगुरुओं से प्रश्न है कि क्या पति से तलाक या साथ छोड़ने का आदेश मिल सकता है या नहीं, और क्या शरीयत के अनुसार निकाह रद्द (फस्ख़) हो सकता है या नहीं?

उत्तर: पूछी गई स्थिति में औरत पर हरगिज़ दबाव नहीं डाला जाएगा कि वह पति के यहाँ जाए क्योंकि इसमें उसका हर तरह का दीनी (धार्मिक), दुनियावी, जानी और जिस्मानी नुकसान है। जान जाने का डर बना हुआ है और शरीयत के अनुसार नुकसान को दूर करना अनिवार्य है। अल्लाह अज़्ज़वजल फ़रमाता है: "और उन्हें तकलीफ न पहुँचाओ" 1 - औरतों को नुकसान न पहुँचाओ। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं: "इस्लाम में न तो किसी को नुकसान पहुँचाना है और न ही बदले में नुकसान पहुँचाना है।" 2 | इस्लाम में न नुकसान है और न ही किसी को नुकसान पहुँचाना।

अतः यदि कुछ नेक और धार्मिक लोग मिल सकें जिनकी पनाह में औरत का रहना शरीयत के अनुसार जायज़ हो और वे उसकी अच्छी तरह देखभाल कर सकें और पति को उसके धर्म, शरीर और जान पर ज़्यादती न करने दें, तब तो औरत वहाँ अपने आप को पति के सुपुर्द कर दे ताकि इसमें दोनों के अधिकारों का सम्मान रहे। रद अल-मुह्तार में है:

"अल-बह्र में है: यदि वह कहे कि वह मुझे मारता है और सताता है, तो मुझे नेक लोगों के बीच रहने का आदेश दें, यदि काजी को यह पता चले, तो वह उसे डांटे और उसे उसके अधिकारों का उल्लंघन करने से रोके, और उसके कार्य के बारे में नहीं पूछा जाएगा। यदि वे (पड़ोसी) उसकी पुष्टि करते हैं, तो वह उसे उसके अधिकारों का उल्लंघन करने से रोके और उसे वहाँ न छोड़े।"

अल-बह्र में है: अगर पत्नी ने काज़ी से आवेदन किया कि पति मुझे मारता और सताता है, तो आप यह आदेश दें कि मुझे नेक लोगों के बीच निवास दिया जाए। यदि काज़ी स्वयं इस मामले से अवगत है, तो पति को डांटे और मारने और ज़्यादती से रोके, अन्यथा पड़ोसियों से पति के व्यवहार के बारे में पूछताछ करे। यदि वे पत्नी की बात की पुष्टि करते हैं, तो काज़ी पति को ज़्यादती करने से रोके।

1 अल-क़ुरआन अल-करीम 65/6 2 मुअजम अल-औसत, हदीस, मकतबा अल-मआरिफ़ अर-रियाज़ 6/91

فتاویٰ رضویہ، جلد دوازدہم

مجبوراً ہندہ کے والدین نے عرصہ سات ۲ سال کا ہو اٹھا لیا اس مدت میں شوہر ہندہ نے نان و نفقہ کی کچھ خبر نہ لی اور بدچلنی اس کی اب تک برابر اسی روش پر ہے عرصہ ڈھائی سال کے قریب ہوا کہ ایک عورت اور کر لی ہے اسی دوران میں شوہر نے نالش دلانے زوجہ کے دائر کی کہ وہ بوجہ ثبوت بدچلنی کے خارج ہو گئی پر شوہر نے اپیل بھی کی وہ بھی خارج ہو گئی ہندہ کی یہ خواہش ہرگز نہیں ہے کہ میں اس موذی کے گھر جاؤں کیونکہ علاوہ دیگر تکالیف کے اب اندیشہِ جان بھی غالب ہے اس لئے کہ نالش مذکور خارج ہو جانے سے مخالفت باہمی بہت کچھ بڑھ گئی ہے پس اس صورت میں علمائے دین سے استفسار ہے کہ شوہر سے طلاق یادست برداری ہو سکتی ہے یا نہیں، اور شرعاً فسخِ نکاح بھی ہو سکتا ہے یا نہیں؟

الجواب: صورت مستفسرہ میں عورت پر ہر گز جبر نہ ہوگا کہ شوہر کے یہاں جائے کہ اس میں دینی دنیوی و جانی و جسمانی اُس کا ہر طرح کا ضرر ہے، جان جانے کا اندیشہ باقی و موجود اور ضرر شرعاً واجب الدفع ہے اللہ عزوجل فرماتا ہے: وَلَا تُضَآرُّوْهُنَّ 1 عورتوں کو ضرر نہ پہنچاؤ۔ رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم فرماتے ہیں: لَا ضَرَرَ وَ لَا ضِرَارَ فِي الْإِسْلَامِ 2 ۔ | اسلام میں نہ ضرر ہے نہ کسی کو ضرر دینا۔

پس اگر کچھ لوگ صالحین واہل دین میسر ہو سکتے جن کی حمایت میں عورت کا رہنا شرعاً بھی جائز ہو اور وہ اس کی نگہداشت کافی طور پر کر سکیں اور شوہر کو اس کے دین جسم و جاں پر تعدی نہ کرنے دیں جب تو عورت وہاں اپنے آپ کو سپرد شوہر کرتی کہ اس میں دونوں کے حق مراعات رہتے۔ ردالمحتار میں ہے:

في البحر لو قالت انه يضربني ويؤذيني فمر وان يسكنني بين قوم صالحين فأن علم القاضي ذلك زجره ومنعه عن التعدى فى حقها والايسأل عن صنيعه فأن صدقوها منعه عن التعدى فى حقها ولا يتركها ثمه

بحر میں ہے اگر بیوی نے قاضی کو درخواست دی کہ خاوند مجھے مارتا اور اذیت دیتا ہے تو اس حکم دیجئے کہ مجھے نیک لوگوں میں سکونت دے، اگر قاضی خود اس معاملہ سے آگاہ ہو تو خاوند کو ڈانٹے اور مارنے اور زیادتی سے منع کرے، ورنہ پڑوسیوں سے خاوند کے رویے کے متعلق معلوم کرے اگر وہ بیوی کی تصدیق کریں تو قاضی خاوند کو زیادتی سے منع کرے

1 القرآن الکریم ۶/۶۵ 2 معجم اوسط حدیث مکتبۃ المعارف الریاض ۹۱/۶

Fatawa Razawiyya Volume 12

"And if there is no one trustworthy in her neighborhood, or if they side with the husband, the judge shall command him to house her among righteous people." (1) Otherwise, let her stay in that dwelling. And if there is no trustworthy person in her neighborhood, or the neighbors side with the husband, then the husband should be bound to provide her housing among pious people. (T)

But in this age, such hope or such people will not be found among strangers, but mandatory maintenance will continue because she is not 'Nashiza' (disobedient) because her refusal is based on a right (because she is not disobedient as she is preventing the husband from intercourse for her right. -T). Then, if there is a fear in being alone with him, prevent him from it, and this is the valid form. If there is a genuine fear now and there is no hope of sufficient arrangement, and in reality, managing a drunkard is almost impossible, then the ruler (judge) should compel the husband to divorce the woman. Allah Almighty says:

"Either retain them in kindness or release them in kindness." (2) Keep them with you with goodness, or set them free with goodness. (T)

Keep women well or leave them well. When it is not possible to keep them well, then it becomes obligatory to leave them well. Abandoning an obligatory act is a sin, and the ruler can punish for this sin,

"As it is in Al-Bahr, Ad-Durr, and others, that for every perpetrator of a sin for which there is no 'Hadd' (prescribed punishment), there is 'Ta'zir' (discretionary punishment)." (3) As it is in Bahr, a sin for which there is no 'Hadd' punishment, 'Ta'zir' is applicable. (T)

Apart from this, the form of self-annulment of marriage is not in our school of thought. And Allah Almighty knows best. Problem 742: From the village of Ghorni, post office Krishnagarh, district Nadia. 3 Jamadi al-Awwal 1336 AH. [Persian/Urdu] Whether the annulment of marriage, however it may be, can occur without the Qazi making a separation, and due to the absence of a Sharia Qazi, without the order of the ruler of the time, or not, and in our country...

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Maintenance, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/262.
2. The Holy Quran, 2/231.
3. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Ta'zir, Mujtabai Press, Delhi, 1/327.

फतावा रज़विया जिल्द 12

"और यदि उसके पड़ोस में कोई भरोसेमंद व्यक्ति न हो, या वे पति की ओर झुकें, तो वह (न्यायाधीश) उसे नेक लोगों के बीच रहने का आदेश दे।" (1) वरना उसी निवास में रहने दे, और यदि उसके पड़ोस में कोई विश्वसनीय व्यक्ति न हो या पड़ोसी पति का पक्ष लें तो पति को बाध्य करे कि वह पत्नी को नेक लोगों के बीच रहने का स्थान दे। (त)

लेकिन इस ज़माने में अजनबियों से ऐसी उम्मीद या ऐसे लोग नहीं मिलेंगे, पर अनिवार्य भरण-पोषण जारी रहेगा क्योंकि वह 'नाशिज़ा' (अवज्ञाकारी) नहीं है, क्योंकि उसका इनकार हक के आधार पर है (क्योंकि वह अवज्ञाकारी नहीं है क्योंकि वह अपने हक के लिए पति को संभोग से रोकती है। -त)। फिर यदि उसके साथ एकांत में डर हो तो उसे इससे मना करें और यही मान्य रूप है। और यदि अब सही डर हो और पर्याप्त व्यवस्था की उम्मीद न हो और वास्तव में शराबी का प्रबंधन लगभग असंभव हो, तो शासक (न्यायाधीश) पति पर दबाव डाले कि वह स्त्री को तलाक दे दे। अल्लाह तआला फरमाता है:

"या तो उन्हें भलाई के साथ रोक रखो या भलाई के साथ विदा कर दो।" (2) उन्हें भलाई के साथ अपने पास रखो, या उन्हें भलाई के साथ विदा कर दो। (त)

औरतों को तो अच्छी तरह रखो या अच्छी तरह छोड़ दो, जब अच्छी तरह रखना संभव न हो तो अच्छी तरह छोड़ना उस पर वाजिब (अनिवार्य) हो गया और वाजिब को छोड़ना गुनाह है, इस गुनाह पर शासक सज़ा दे सकता है,

"जैसा कि अल-बह्र, अद-दुर्र और अन्य में है कि हर गुनाह करने वाले के लिए जिस पर 'हद' (निर्धारित दंड) न हो, 'ताज़ीर' (विवेकाधीन दंड) है।" (3) जैसा कि बह्र में है कि वह गुनाह जिस पर 'हद' सज़ा न हो, उस पर 'ताज़ीर' होती है। (त)

इसके बिना स्वयं विवाह विच्छेद (निकाह का रद्द होना) का रूप हमारे मज़हब में नहीं है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। मसला 742: मौज़ा घोरनी, डाकघर कृष्णगढ़, जिला नदिया। 3 जमादी अल-अव्वल 1336 हिजरी। [फ़ारसी/उर्दू] निकाह का फ़स्ख़ (विच्छेद) चाहे जिस भी कारण से

हो, काज़ी के अलगाव के बिना और शरीयत के काज़ी न होने के कारण समय के शासक के आदेश के बिना हो सकेगा या नहीं, और हमारे देश में...

1. रद अल-मुह्तार, बाब अल-नफ़क़ा, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/262।
2. अल-क़ुरान अल-करीम, 2/231।
3. दुर्रे मुख्तार, बाब अल-ताज़ीर, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/327।

فتاوی رضویہ جلد دو ازدہم

وان لم یکن في جوارھا من یوثق بہ او کانوا یمیلون الی الزوج امرہ باسکانھا بین قوم صالحین۔ ۱ کرے ورنہ اسی مسکن میں رہنے دے، او اگر اس کے پڑوس میں کوئی ثقہ آدمی نہ ہو یا پڑوسی خاوند کی طرفداری کریں تو خاوند کو پابند کرے کہ وہ بیوی کو نیک لوگوں میں رہائش دے۔ (ت)

مگر غیر لوگوں سے اس زمانے میں نہ ایسی اُمید نہ ایسے لوگ ملیں گے پر نان نفقہ لازم کا ہی جائے لانھالیست بناشزۃ لان امتناعھا بحق (کیونکہ وہ نافرمان نہیں کیونکہ اپنے حق کے لئے وہ خاوند کو جماع سے روکتی ہے۔ت) پھر اگر اس کے ساتھ خلوت میں اندیشہ ہو تو اس سے منع کریں اور یہی صورت معتبر ہے، اور اگر اب اندیشہ صحیحہ ہو اور بندوبست کافی کی اُمید نہ ہو اور فی الواقع شرابی کا بندوبست ناممکن سا ہے تو حاکم شوہر پر جبر کرے کہ عورت کو طلاق دے۔ اللہ تعالٰی فرماتا ہے:

فَأَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ أَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ ۲ ص ان کو پاس روکے رکھو بھلائی کے ساتھ ، یا ان کو فارغ کر دو بھلائی کے ساتھ ۔(ت)

عورتوں کو تو اچھی طرح رکھو یا اچھی طرح چھوڑ دو، جب اچھی طرح رکھنا نہیں تو اچھی طرح چھوڑنا اس پر واجب ہوا اور ترکِ واجب گناہ ہے اس گناہ پر حاکم سزا دے سکتا ہے،

کما فی البحر والدر وغیرھما ان کل مرتکب معصیۃ لاحد فیھا فیھا التعزیر۔ ۳ جیسا کہ بحر میں ہے کہ وہ گناہ جس پر حد نہ ہو اس پر تعزیر ہوتی ہے۔(ت)

بغیر اس کے بطور خود فسخِ نکاح کی صورت ہمارے یہاں مذہب میں نہیں ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۷۴۲: از موضع گھورنی ڈاک خانہ کرشن گڑھ ضلع ندیا ۳ جمادی الاولی ۱۳۳۶ھ فسخ نکاح

بہر وجہیکہ بود بلا تفرقہ قاضی شرع وبشرط نبودن قاضی شرع بلا حکم حاکم وقت میتواند شد یا نہ، ودریں بلاد ما نکاح کا فسخ جیسے بھی ہو، قاضی کو تفریق کے بغیر اور قاضی شرع نہ ہونے کی وجہ سے وقت کے حاکم کے بغیر ہو سکے گا یا نہیں، اور ہمارے ملک

۱ ردالمحتار باب النفقة دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۶۲/۲ ۲ القرآن الکریم ۲۳۱/۲ ۳ در مختار باب التعزیر مطبع مجتبائی دہلی ۳۲۷/۱

Fatawa Razawiyya Volume 12

Question: In a place where a Sharia-compliant judge (Qazi) is non-existent, can a non-Muslim ruler act as a substitute for the Qazi to annul a marriage (Faskh-e-Nikah) or not? If they can annul it, is it necessary to obtain permission from them for deputy representation (niyabat) or not? (T)

Answer: Annulment of marriage (Faskh) is of two types: First, for the sake of upholding Sharia law, and this occurs when a Sharia prohibition exists from the beginning, such as marrying a woman's sister while still married to her, or when the wife's ascendants (mother, grandmother, etc.) or descendants (daughter from a previous marriage) have been touched with lust, or if there is a foster relationship (radha'at), etc. Or, if the Sharia prohibition arises after the marriage, for instance, if a foster relationship or affinity (musaharat) occurs after the marriage, or—Allah forbid—the husband becomes an apostate (murtad). In all such cases, there is no need for a Qazi's decree. Instead, it is mandatory for both the man and the woman to consider it annulled and separate, so as to honor the Sharia and avoid sin. This has been explicitly stated in authoritative books like Ad-Durr al-Mukhtar.

The second type of annulment is for the sake of the wife's rights, such as when she has the option of annulment upon reaching puberty (Khiyar al-Bulugh) or if the husband is impotent ('Inneen), etc. In these types, a Qazi's decree is a condition. The wife or her guardian does not have the independent authority to decide on separation without a Qazi. In such cases, if the guardian marries the woman to another person without a Qazi's decree, that marriage will be prohibited (haram) because the first [marriage]...

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

सवाल: जहाँ शरिया काज़ी मौजूद न हो, क्या वहाँ गैर-मुस्लिम शासक काज़ी के प्रतिनिधि के रूप में निकाह को फ़स्ख़ (रद्द) कर सकते हैं या नहीं? और अगर वे फ़स्ख़ कर सकते हैं, तो क्या उनके लिए प्रतिनिधित्व (नियाबत) की अनुमति प्राप्त करना आवश्यक है या नहीं? (त)

जवाब: निकाह का फ़स्ख़ (विच्छेद) दो प्रकार का होता है: पहला, शरीअत के नियमों के पालन के लिए। यह तब होता है जब शुरू से ही कोई शरीअत की मनाही हो, जैसे पत्नी के रहते उसकी बहन से निकाह करना, या पत्नी की माँ, दादी आदि या उसकी पिछली बेटी को कामेच्छा के साथ छूना, या दूध का रिश्ता (रज़ाअत) होना, आदि। या फिर शरीअत की मनाही निकाह के बाद पैदा हो गई हो, जैसे निकाह के बाद रज़ाअत या मुसाहरत (सम्बन्धजन्य निषेध) पैदा हो गया हो, या—अल्लाह न करे—पति धर्मभ्रष्ट (मुर्तद) हो गया हो। इन सभी स्थितियों में काज़ी के किसी आदेश की आवश्यकता नहीं है। बल्कि स्त्री और पुरुष दोनों पर अनिवार्य है कि वे निकाह को रद्द मानकर अलग हो जाएँ, ताकि शरीअत का सम्मान हो और पाप से बचा जा सके। 'दुर्रे मुख़्तार' आदि प्रमाणिक पुस्तकों में इसका स्पष्ट उल्लेख है।

दूसरा प्रकार वह है जहाँ पत्नी के अधिकारों के लिए फ़स्ख़ किया जाता है, जैसे कि बालिग होने पर निकाह रद्द करने का अधिकार (खियारुल बुलूग) या पति का नामर्द होना आदि। इन स्थितियों में काज़ी का फ़ैसला एक अनिवार्य शर्त है। पत्नी या उसके संरक्षक (वली) को काज़ी के बिना विच्छेद का स्वतंत्र अधिकार नहीं है। ऐसी स्थिति में, यदि संरक्षक ने काज़ी के आदेश के बिना स्त्री का निकाह किसी और से कर दिया, तो वह निकाह हराम (अवैध) होगा क्योंकि अभी पहले...

पेज 480/688

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

کہ قاضی شرع عدیم الوجود ست حکم حاکم غیر مسلم مناسب تفرقہ قاضی میواند شد یا نہ بتقدیر جواز نیابت اذن اولا بدیست یا نہ؟ میں شرعی قاضی موجود نہیں تو کیا غیر مسلم حکمران قاضی کے قائم مقام ہو کر نکاح کو فسخ کر سکتے ہیں یا نہیں اور اگر یہ فسخ کر سکتے ہیں تو کیا نیابت کیلئے ان کو اجازت حاصل کرنا ضروری ہے یا نہیں؟ (ت) الجواب: فسخ نکاح ہر دو گونہ است یکے آنکہ حقا للشرع باشد مقارن بہیچو نکاح زنے برخواہرش یا اصول و فروع ممسوسہ یا آنکہ حرمت رضاعت داشتہ باشد الی غیر ذلک خواہ طاری چوں آنکہ رضاع یا مصاہرت بعد نکاح حرمت آرد یا شوہر مرتد شود والعیاذ باللہ تعالیٰ در بہیچو صور ہیچ حاجت قضانیست بر ہر یک زن و شوہر واجب است فسخ کردنش اعطاً ما للشریعۃ واعداماً للمعصیۃ نص علیہ فی الدر المختار وغیرہ من معتمدات الاسفار، دوم آنکہ برائے حق زن باشد چوں خیار بلوغ و عنین وغیر ہما اینجا قضائے قاضی شرط است تنہا زن یا ولی او باد مستبد تنواں شد اگر ولی بے تفریق قاضی جُدا کردہ بزنے دیگر دید حرام باشد زیرا کہ حق زوج باد متعلق ست و شرع حکم بتفریق نہ فرمودہ است واصل این منصب شرع مطہر راست کہ کار کارِ دین است پس ایں تفریق نہ رسد مگر قاضی را کہ نائب۔

نکاح کا فسخ دو قسم ہے، ایک شرع کی پاسداری کے لئے ، اور یہ شرعی حق کو ابتداء سے عارض ہو ، جیسے بیوی کی موجودگی میں اس کی بہن سے نکاح ، یا بیوی کے اصول (ماں، دادی) وغیرہ یا فروع (بیوی کی پہلی بیٹی) کو شہوت سے چُھوا ہو، یا بیوی رضاعت کی وجہ سے حرام ہو وغیرہ ذالک، یا شرعی حق نکاح کے بعد لاحق ہوا، مثلاً رضاعت یا مصاہرت کی حرمت نکاح کے بعد عارض ہوئی ہو یا والعیاذ باللہ تعالیٰ، خاوند مرتد ہو گیا ہو تو ان تمام صورتوں میں فسخ نکاح کے لئے قاضی کی کوئی ضرورت نہیں، بلکہ مرد و عورت دونوں پر لازم ہے کہ وہ

فسخ قرار دے کر جدائی اختیار کریں تاکہ شریعت کی تعظیم اور گناہ سے اجتناب کیا جاسکے، اس پر در مختار وغیرہ معتبر کتب میں تصریح کی گئی ہے، فسخ کی دوسری قسم یہ ہے کہ بیوی کے حق کی وجہ سے فسخ کیا جائے مثلاً بیوی کو بالغ ہونے پر فسخ کا اختیار حاصل ہو یا خاوند نامرد ہو وغیرہ، تو اس قسم میں فسخ کے لئے قاضی شرط ہے، بیوی یا اس کے ولی کو مستقل اختیار نہیں کہ وہ قاضی کے بغیر جدائی کا فیصلہ کریں، اگر اس صورت میں ولی نے قاضی کے بغیر عورت کا دوسرے سے نکاح کردیا تو یہ نکاح حرام ہوگا کیونکہ ابھی پہلے

Fatawa Razawiya Volume 12

(Top Box Content) Persian: The pure Sharia is such that as imamate in prayer is the right of the rulers, but the condition is being Muslim. And Allah Almighty knows best. Urdu: The husband's right over this woman remains, and legally (according to Sharia) this separation will not occur because this is a religious matter in which Sharia alone has authority. Therefore, this process cannot happen without a Qazi (Islamic judge). Because he is the deputy of Sharia, just as the right of imamate in prayer is held only by the ruler, provided he is a Muslim. And Allah Almighty knows best.

Problem 248: The aforementioned questioner (the same questioner mentioned earlier).

(Question Section) Persian: If a woman's husband has become insane and has been confined in a hospital for three or four years, does she have the right to annul her marriage without a Qazi's separation or a ruler's order? Can she marry another person without completing the waiting period (iddah) of annulment? Or does her guardian (wali) have the right, at her request or without it, to marry her to another person simply because the husband is insane, without a Qazi's separation? And in case of necessity, such as fear of adultery or need for financial support, would it be permissible to act according to a school of thought other than the Hanafi school or according to a non-standard opinion of the Hanafi Imams? If permissible, is there an option for annulment of marriage without a Qazi upon the husband becoming insane according to another Imam's school? And in case of non-annulment, what is the ruling for the person performing the marriage, the bridegroom, and the bride?

Urdu: If a woman's husband has been confined in a hospital for three or four years due to insanity, does such a woman have the right to annul (fasakh) her marriage without a Qazi's separation or without a ruler's order? And can she marry another person without completing the waiting period (iddah) of annulment? Or does her guardian (wali) have the right, at her request or without it, to marry her to another person simply because the husband is insane, without a Qazi's separation? And in case of necessity, for example, the risk of adultery (zina) or the need for financial support (nafaqah), would it be permissible to act according to a non-standard (ghair mufta-bihi) opinion or follow a school of thought other than the Hanafi school? If it is permissible, is there an option for annulment of marriage without a Qazi upon the husband becoming insane according to another Imam's school of thought? In the

case of impermissibility without a Qazi, what is the ruling for the one conducting the marriage, and for the man and woman getting married?

(The Answer) Persian: If the husband becomes insane, in our view, the marriage can never be annulled. And if the Qazi of Sharia is a follower (muqallid) of the Hanafi school and rules for annulment, it is also invalid, as there is no [option] for the follower to...

Urdu: If the husband becomes insane, in no way is the annulment of marriage permissible in our Hanafi school. If the Qazi is a follower (muqallid) of the Hanafi school and he annuls it, then his...

फ़तावा रजविया जिल्द 12

(ऊपरी बॉक्स की सामग्री) फ़ारसी: शरीयत-ए-मुतह्हरा के अनुसार, जैसे नमाज़ में इमामत शासकों का अधिकार है, लेकिन शर्त इस्लाम है। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है। उर्दू: पति का अधिकार उस स्त्री पर बना रहता है, और शरीयत के अनुसार यह अलगाव (तफरीक) नहीं होगा क्योंकि यह एक धार्मिक मामला है जिसमें शरीयत का ही अधिकार है। अतः यह कार्यवाही काज़ी के बिना नहीं हो सकेगी। क्योंकि वह शरीयत का प्रतिनिधि है, जैसे कि नमाज़ में इमामत का अधिकार केवल शासक को होता है, बशर्ते वह मुसलमान हो। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

मसला 248: उक्त प्रश्नकर्ता (वही प्रश्नकर्ता जिसका पहले उल्लेख किया गया है)।

(प्रश्न अनुभाग) फ़ारसी: जिस स्त्री का पति पागल हो गया है और तीन-चार साल से अस्पताल में कैद है, क्या वह काज़ी या शासक के आदेश के बिना अपना निकाह रद्द कर सकती है? क्या वह रद्द करने की इद्दत पूरी किए बिना दूसरे व्यक्ति से निकाह कर सकती है? या क्या उसके वली को यह अधिकार है कि वह पति के पागल होने पर काज़ी के बिना उसका निकाह दूसरे से करा दे? और ज़रूरत पड़ने पर क्या हनफ़ी मज़हब के अलावा किसी और मज़हब या किसी गैर-मानक राय पर अमल करना जायज़ है? और यदि जायज़ है, तो क्या दूसरे इमाम के मज़हब के अनुसार काज़ी के बिना निकाह रद्द करने का अधिकार है?

उर्दू: जिस स्त्री का पति पागलपन के कारण तीन-चार साल से अस्पताल में कैद है, क्या उस स्त्री को यह अधिकार है कि वह काज़ी के अलगाव के बिना या शासक के आदेश के बिना निकाह रद्द (फ़स्ख़) कर ले? और रद्द करने की इद्दत पूरी किए बिना दूसरे व्यक्ति से निकाह कर सकती है या नहीं? या क्या उसके वली (संरक्षक) को यह अधिकार है कि स्त्री की माँग पर या बिना माँग के, केवल पति के पागल होने के आधार पर काज़ी के अलगाव के बिना दूसरे व्यक्ति से उस स्त्री का निकाह कर दे या नहीं? और क्या ज़रूरत के समय, जैसे व्यभिचार (ज़िना) या भरण-पोषण (नफ़क़ा) की आवश्यकता के खतरे पर, गैर-मुफ़्ता-बिही (असामान्य) राय के अनुसार हनफ़ी मज़हब के अलावा किसी दूसरे मज़हब पर अमल करना जायज़ होगा या नहीं? यदि जायज़ है, तो क्या दूसरे किसी इमाम के मज़हब के अनुसार पति के पागल होने पर काज़ी के बिना निकाह रद्द करने का अधिकार है या नहीं? काज़ी के बिना जायज़ न होने की स्थिति में निकाह कराने वाले और निकाह करने वाले पुरुष और स्त्री का क्या हुक्म है?

(उत्तर) फ़ारसी: यदि पति पागल हो जाए, तो हमारे यहाँ कभी भी निकाह रद्द नहीं किया जा सकता। और यदि शरीयत का काज़ी हनफ़ी मज़हब का मुक़ल्लिद हो और वह रद्द करने का फ़ैसला दे, तो वह भी बातिल (अमान्य) है, क्योंकि मुक़ल्लिद के लिए...

उर्दू: यदि पति पागल हो जाए, तो हमारे हनफ़ी मज़हब में किसी भी तरह से निकाह का रद्द (फ़स्ख़) होना जायज़ नहीं है। यदि काज़ी हनफ़ी मज़हब का अनुयायी (मुक़ल्लिद) हो और वह रद्द करेगा तो उसका...

पृष्ठ 481 का 688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

شرع مطہر است چنانچہ امامت در نماز حق حکام ست فاما شرط اسلام ست، واللہ تعالٰی اعلم۔ خاوند کا حق اس عورت پر باقی ہے، اور شرعاً یہ تفریق نہ ہوگی کیونکہ یہ دینی معاملہ ہے جس میں شرع کو ہی حق ہے، لہذا یہ کاروائی قاضی کے بغیر نہ ہو سکے گی۔ کیونکہ وہی شرع کا نائب ہے، جیسا کہ نماز میں حق امامت حاکم کو ہی حاصل ہے، ہاں مسلمان ہونا شرط ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۲۴۸: سائل مذکور الصدر (سائل وہی پہلے مذکور ہے۔ ت) زنے را کہ شوہرش دیوانہ شدہ از سہ چہار سال بہسپتال مقید گردیدہ است میرسد کہ بلا تفرقہ قاضی شرعی یا بلا حکم حاکم فسخ نکاح خود کند یا نہ و بلا انقضائے عدتِ فسخ با دیگری نکاح خود میتواند کرد یا نہ یا ولی او را میرسد کہ بطلب او یا بلا طلب او تفریق را وبلا تفرقہ قاضی حج بہتِ مجنون شدن شوہر نکاح اوبادیگری کردہ بدہد یانہ وبوقتِ ضرورت مثلاً خوفِ زنا و احتیاج نفقہ و غیرہ عمل بمذہبِ دیگر یا بقولِ غیر مفتی بہ از اقوال کے از ائمہ حنفیہ روا باشد یانہ وبشرطِ جواز قول کسے درباره جوازِ فسخ نکاح آں مجنون الزوج را بلا تفرقہ قاضی ہست یانہ ، و در صورت عدمِ فسخ نکاح حکمِ ناکح و منکوحہ و منکح چیست۔ جس عورت کا خاوند دیوانہ ہونے کی وجہ سے تین چار سال ہسپتال میں پابند ہے ایسی عورت کو یہ اختیار ہے کہ وہ قاضی کی تفریق کے بغیر یا حکمِ حاکم کے بغیر نکاح فسخ کرلے یا نہیں ؟ اور فسخ کی عدت پوری کئے بغیر دوسرے شخص سے نکاح کرسکتی ہے یا نہیں ؟ یا کیا اس کے ولی کو یہ اختیار ہے عورت کے مطالبہ پر یا بغیر مطالبہ خود ہی قاضی تفریق کے بغیر صرف خاوند کے مجنون ہونے کی بنا پر دوسرے شخص سے اس عورت کا نکاح کردے یا نہ ؟ اور کیا بوقت ضرورت مثلاً زنا یا نفقہ کی محتاجی کے خطرہ پر غیر مفتی بہ قول کے مطابق حنفی

مذہب کے علاوہ دوسرے کسی مذہب پر عمل جائز ہوگا یا نہیں ؟ اگر جائز ہے تو دوسرے کسی امام کے مذہب پر خاوند کے مجنون ہونے پر قاضی کے بغیر فسخ نکاح کا اختیار ہے یا نہیں ؟ قاضی کے بغیر عدمِ جواز کی صورت میں نکاح کرانے والے اور نکاح کرنے والے مرد اور عورت کا کیا حکم ہے؟

الجواب: شوہر اگر مجنون گردد نزد ما ہیچ گاہ فسخِ نکاح نتواں شد و اگر قاضی شرع مقلد حنفی بحکم بفسخ کند نیز باطل ست اذلیس للمقدان خاوند اگر مجنون ہو جائے تو کسی طرح بھی ہمارے مذہب حنفی میں نکاح کا فسخ جائز نہیں ہے۔ اگر قاضی حنفی مذہب کا مقلد ہو تو اگر وہ فسخ کرے گا تو اس کا

Fatawa Razawiyya Volume 12

[Left Column - Persian/Arabic Text] ...opposes his school of thought. It is in ‘Sahih al-Quduri’ by Allama Qasim and then in ‘Durr al-Mukhtar’ that issuing a verdict (fatwa) or judgment based on a less-preferred (marjooh) opinion is ignorance and a violation of consensus (ijma'). (And an independent mujtahid has been non-existent for hundreds of years. Yes, if a Shafi'i or Hanafi judge is appointed by the ruler and given permission that, at the time of necessity, he may judge according to a less-preferred opinion in the school or according to another school, then his judgment would be correct and enforceable. It is clear that if this separation occurs, it will be for the sake of the woman. If the Sharia judge performs the separation and the guardian gives her to another man, or the woman herself marries another man, it is by no means permissible. The marriage and the married couple are both adulterous, and the one who solemnizes the marriage as well, if he is aware of the situation. At the time of necessity, if it is genuine, one can act according to a less-preferred opinion or the school of another Imam for one's own self in that specific matter. However, a Mufti is not allowed to issue a fatwa for it, nor can a judge who is bound to judge according to a specific school issue a ruling on it; if he does, it becomes void, as we have already established. All this is clearly stated in reliable books. And for one who acts upon it for himself, it is obligatory that he observes all the conditions of that opinion. For example, the opinion of Imam Muhammad regarding the separation of an insane woman requires the condition of a judge's separation. Without these, acting on a less-preferred opinion would not be valid but would rather be following one's own desires, and refuge is sought with Allah.)

[Right Column - Urdu Text] Annulment will be void because a follower (muqallid) cannot oppose his own school of thought. In the correction of 'al-Quduri', Allama Qasim, and then in 'Durr al-Mukhtar', stated that issuing a fatwa or judgment based on a less-preferred (marjooh) opinion is ignorance and contrary to consensus (ijma'). An independent jurist (mujtahid) has been non-existent for centuries. Yes, if a Shafi'i or Hanafi judge was appointed to a position by the ruler and given permission that he may, based on necessity, decide according to a less-preferred opinion of his school or another school, then that judge's decision would be correct and enforceable. It is clear that if this separation occurs, it will be for the sake of the woman, not for the sake of the Sharia's right. As we have already mentioned, in such a case, if a guardian (wali) or the woman herself marries another person without the judge's separation, it will not be permissible at all. Both parties to the marriage and

those facilitating it will be guilty of adultery, provided the person performing the marriage ceremony is aware of the situation. If there is a genuine and real necessity, then the person afflicted should act upon the less-preferred opinion or another school of thought himself. However, a Mufti cannot issue a fatwa for it. Even a judge who is bound to make decisions according to his school of thought cannot make such a decision; if he does, it will be void, as we have stated before. This is clearly stated in reliable books. And if the afflicted person himself...

[Footnote] 1 Durr al-Mukhtar, Introduction to Kitab Rasm al-Mufti, Mujtabai Press, Delhi, 1/15.

[बायाँ कॉलम - फ़ारसी/अरबी पाठ] ...अपने पंथ (मज़हब) का विरोध करता है। अल्लामा क़ासिम की 'सहीह अल-कुदूरी' और फिर 'दुर-ए-मुख़्तार' में उल्लेख है कि कम पसंदीदा (मरजूह) राय पर फ़तवा या निर्णय देना अज्ञानता है और आम सहमति (इज्मा) का उल्लंघन है। (और सैकड़ों वर्षों से कोई स्वतंत्र मुज्तहिद अस्तित्व में नहीं है। हाँ, यदि किसी शफीई या हनफ़ी न्यायाधीश को सुल्तान द्वारा नियुक्त किया जाता है और उसे यह अनुमति दी जाती है कि आवश्यकता के समय वह पंथ की किसी कम पसंदीदा राय या किसी अन्य पंथ के अनुसार निर्णय ले सकता है, तो उसका निर्णय सही और लागू करने योग्य होगा। यह स्पष्ट है कि यदि यह अलगाव होता है, तो यह महिला के लिए होगा। यदि शरीयत न्यायाधीश अलगाव करता है और वली उसे किसी अन्य पुरुष को देता है, या महिला स्वयं किसी अन्य पुरुष से विवाह करती है, तो यह किसी भी तरह से जायज़ नहीं है। विवाह और विवाहित जोड़ा दोनों व्यभिचारी हैं, और विवाह कराने वाला भी, यदि उसे स्थिति का पता हो। आवश्यकता के समय, यदि वह वास्तविक हो, तो कोई व्यक्ति उस विशिष्ट मामले में स्वयं के लिए कम पसंदीदा राय या किसी अन्य इमाम के पंथ के अनुसार कार्य कर सकता है। हालाँकि, एक मुफ़्ती को इसके लिए फ़तवा देने की अनुमति नहीं है, न ही एक न्यायाधीश जो एक विशिष्ट पंथ के अनुसार न्याय करने के लिए बाध्य है, इस पर कोई आदेश जारी कर सकता है; यदि वह ऐसा करता है, तो वह अमान्य हो जाता है, जैसा कि हम पहले ही स्थापित कर चुके हैं। यह सब विश्वसनीय पुस्तकों में स्पष्ट रूप से बताया गया है। और जो व्यक्ति स्वयं इसके लिए कार्य करता है, उसके लिए यह अनिवार्य है कि वह उस राय की सभी शर्तों का पालन करे। उदाहरण के लिए, एक पागल महिला के अलगाव के संबंध में इमाम मुहम्मद की राय के लिए न्यायाधीश के अलगाव की शर्त आवश्यक है। इनके बिना, कम पसंदीदा राय पर कार्य करना मान्य नहीं होगा, बल्कि यह अपनी इच्छाओं का पालन करना होगा, और अल्लाह की शरण मांगी जाती है।)

[दायाँ कॉलम - उर्दू पाठ] विच्छेद (फ़स्ख़) अमान्य होगा क्योंकि एक अनुयायी (मुक़ल्लिद) अपने पंथ (मज़हब) का विरोध नहीं कर सकता। 'अल-कुदूरी' के सुधार में अल्लामा क़ासिम ने और फिर 'दुर-ए-मुख़्तार' में कहा है कि कम पसंदीदा (मरजूह) राय पर फ़तवा या निर्णय देना अज्ञानता है और आम सहमति (इज्मा) के विरुद्ध है। सदियों से कोई स्वतंत्र न्यायविद (मुज्तहिद) मौजूद नहीं है। हाँ, यदि किसी शफीई या हनफ़ी न्यायाधीश को सुल्तान द्वारा पद पर नियुक्त करते समय यह अनुमति दी गई हो कि वह आवश्यकता के आधार पर अपने पंथ की कम पसंदीदा राय या किसी अन्य पंथ के

अनुसार निर्णय ले सकता है, तो उस न्यायाधीश का निर्णय सही और लागू करने योग्य होगा। यह स्पष्ट है कि यदि यह अलगाव होता है, तो यह महिला के लिए होगा, शरीयत के अधिकार के लिए नहीं। जैसा कि हम पहले बता चुके हैं कि ऐसी स्थिति में यदि किसी वली (अभिभावक) ने या महिला ने स्वयं न्यायाधीश के अलगाव के बिना किसी अन्य व्यक्ति से विवाह किया, तो वह किसी भी स्थिति में जायज़ नहीं होगा। विवाह के दोनों पक्ष और विवाह कराने वाले व्यभिचार (ज़िना) के दोषी होंगे, बशर्ते विवाह कराने वाले को स्थिति का पता हो। यदि आवश्यकता सही और वास्तविक हो, तो पीड़ित व्यक्ति को स्वयं कम पसंदीदा राय या अन्य पंथ पर अमल करना चाहिए। लेकिन एक मुफ़्ती कभी इस पर फ़तवा नहीं दे सकता। यहाँ तक कि वह न्यायाधीश भी जो अपने पंथ के अनुसार निर्णय लेने के लिए बाध्य है, ऐसा निर्णय नहीं ले सकता; यदि वह ऐसा करता है, तो वह अमान्य होगा, जैसा कि हमने पहले बताया है। विश्वसनीय पुस्तकों में इसका स्पष्ट उल्लेख है। और यदि पीड़ित व्यक्ति स्वयं...

[फुटनोट] 1 दुर-ए-मुख़्तार, किताब रस्म-उल-मुफ़्ती की प्रस्तावना, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/15।

पृष्ठ 482 / 688

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

[بایاں کالم - فارسی/عربی متن] یخالف مذهبه در صحیح القدوری علامہ قاسم باز ودر مختار ست الحکم والفتیا بالقول المرجوح جهل وخرق للاجماع (و مجتهد خود از صدها سال مفقود است، آرے اگر قاضی شرعی شافعی المذهب باشد یا حنفی مگر سلطان کہ اور ابر قضا داشته است اذن داده باشد مثلاً ہنگام ضرورت بقول مرجوح فی المذهب یا بمذہب دیگر قضا کنی آن گاہ قضائے او صحیح و نافذ باشد و پیداست کہ ایں تفریق اگر باشد بخاطر جا گرے تفریق قاضی شرع ولی بزنی دیگر دہد یا زن خودش بد گرے نکاح کند زنہار جائز نیست نکاح و منکوحه هر دو زنه کار و منح نیز اگر بریں حال مطلع باشد بوقت ضرورت اگر صادقہ باشد عمل بقول مرجوح یا مذہب امام دیگر در آں خاص مسئله مبتلا برائے نفس خودش عمل میتوان کرد فاما مفتی را نمی رسد کہ باو فتویٰ دهد یا قاضی مقلد مقید بالقضا بالمذهب با و حکم تواں کرد واگر کند باطل شد کما قد منأ وکل ذلك مصرح به في الكتب المعتمدة و آنکہ برائے نفس خودش با و عمل کند واجب ست کہ جملہ شرائط آں قول مرعی دارد مثلاً قول امام محمد در تفریق زن مجنون شرط تفریق قاضی کہ بے رو براں قول مرجوح ہم عمل بنباشد بلکہ بہوائے نفس والعیاذ)

[دایاں کالم - اردو متن] فسخ باطل ہوگا کیونکہ مقلد اپنے مذہب کی مخالفت نہیں کر سکتا، قدوری کی تصحیح میں علامہ قاسم نے اور پھر درمختار میں فرمایا کہ فتوی اور فیصلہ قولِ مرجوح پر جہالت ہے اور اجماع کے خلاف ہے، اور مستقل مجتہد صدیوں سے مفقود ہے، ہاں اگر شافعی یا حنفی قاضی کو سلطان نے عہدہ پر مقرر کرتے ہوئے یہ اجازت دی ہو کہ وہ ضرورت کی بنا پر اپنے مذہب کے مرجوح قول یا دوسرے مذہب پر فیصلہ کر سکتا ہے تو اس قاضی کا فیصلہ صحیح ہوگا اور نافذ بھی ہوگا۔ اور یہ واضح ہے کہ اگر یہ تفریق ہو گی تو عورت کی خاطر ہوگی، شریعت

کے حق کے لئے نہ ہوگی جبکہ ہم اوپر بیان کر چکے ہیں کہ ایسی صورت میں اگر ولی نے یا خود عورت نے قاضی کی تفریق کے بغیر دوسرے شخص سے نکاح کیا تو ہر گز جائز نہ ہوگا، نکاح کے دونوں فریق اور نکاح کر کے دینے والے زنا کاری میں مبتلا ہوں گے بشرطیکہ نکاح پڑھانے والے کو صورت حال کا علم ہو، ضرورت اگر صحیح اور واقعی ہو تو پھر مرجوح قول یا دوسرے مذہب پر مبتلا شخص کو چاہئے کہ وہ خود عمل کرے لیکن مفتی ہر گز فتوی نہیں دے سکتا، اور وہ قاضی بھی جو اپنے مذہب کے مطابق فیصلے کرنے کا پابند ہو، وہ بھی ایسا فیصلہ نہیں کر سکتا اگر فیصلہ کرے گا تو وہ بھی باطل ہوگا جیسا کہ ہم پہلے بیان کر آئے ہیں اور قابلِ اعتماد کتب میں اس کی تصریح موجود ہے، اور اگر مبتلا شخص خود دوسرے

[حاشیہ] 1 درمختار مقدمہ کتاب رسم المفتی مطبع مجتبائی دہلی ۱/۱۵

Fatawa Razawiyyah Volume 12

By Allah Almighty. And Allah Almighty knows best. If one acts upon a [particular] school of thought or a less preferred (marjuh) opinion, it is necessary to observe all its conditions. For example, Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) conditioned the permissibility of separation for the wife of an insane person upon the judge's (Qadi) decision; without this, separation would not be permissible even based on the less preferred opinion, but rather it would be following carnal desires. And refuge is sought with Allah Almighty. And Allah Almighty knows best.

Issue 249: From Azamgarh, Post Office Mubarakpur, Old Settlement neighborhood, adjacent to Nazir Ji's house, sent by Habibullah son of Babu, 12 Jumadi al-Ula 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A girl was married in her minority, and she has not yet gone to her husband's home from her parents' house. It has been three years since her husband became ill. He is constantly undergoing treatment, but no medicine helps, nor does any doctor identify the disease. Now the husband's condition is such that no limb is functional; he is disabled in every limb. He can neither walk nor stand, and is completely incontinent of urine and feces. His speech is also impaired, such that he cannot speak clearly enough for anyone to understand; someone else has to clean him after he relieves himself. This has been the condition for three years. He has become like a madman, has no regard for his clothes, and even becomes stark naked. He cannot support himself or a wife, nor have the husband's parents cared for the maintenance (nafqah) of this woman. The girl's parents, feeling helpless, have sent this question through Habibullah son of Babu. In all these circumstances, can the girl's marriage be annulled or not? All these conditions and facts are truthfully recorded.

The Answer: The marriage cannot be annulled for these reasons. It is stated in Durr-e-Mukhtar: "Neither of the spouses has the choice [of annulment] due to a defect in the other, even if it is a severe defect like insanity, leprosy (judham), vitiligo (baras), or vaginal obstruction (ratq and qarn)."[1] Neither the husband nor the wife has the right of annulment (faskh) based on a defect in the other, even if the defect is obvious, such as insanity, leprosy, vitiligo, or if there is narrowness in the woman's private part or a bone or tumor has developed in it. (T)

In it is: [1] Durr-e-Mukhtar, Chapter of the Impotent (Bab al-Innin), Mujtabai Press, Delhi, 1/254.

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

अल्लाह तआला के नाम से। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। यदि कोई किसी मज़हब (विचारधारा) या मरजूह (कम तरजीह दिए गए) मत पर अमल करता है, तो उसके लिए उन सभी शर्तों का पालन करना ज़रूरी है। उदाहरण के तौर पर, इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहमत करे) ने पागल व्यक्ति की पत्नी के लिए अलगाव (तफ़रीक़) की अनुमति को काज़ी के फैसले से शर्तबद्ध किया है; इसके बिना मरजूह मत पर भी अलगाव जायज़ नहीं होगा, बल्कि यह नफ़्सानी (इंद्रिय) इच्छाओं का पालन होगा। और अल्लाह तआला की पनाह। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला 249: आजमगढ़, डाकखाना मुबारकपुर, मोहल्ला पुरानी बस्ती, नाज़िर जी के मकान के पास से, मुर्सला हबीबुल्लाह वल्द बाबू, 12 जमादी-उल-अव्वल 1337 हिजरी। उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि: एक लड़की का निकाह बचपन (नाबालिगी) में हुआ और वह बीबी अब तक मायके से विदा होकर ससुराल नहीं गई है। तीन साल का समय बीत गया है कि पति बीमार हो गया है और बराबर इलाज भी हो रहा है, लेकिन कोई दवा फ़ायदा नहीं कर रही है और न ही कोई हकीम (डॉक्टर) बीमारी का पता बता पा रहा है कि कौन सी बीमारी है। अब पति की हालत यह है कि कोई अंग काम करने के लायक नहीं है, हर अंग से मजबूर है, न चल सकता है न खड़ा हो सकता है और पाखाना-पेशाब से बिल्कुल लाचार है, ज़बान भी सही नहीं है कि ज़बान से कोई बात साफ़ निकले जिसे कोई समझ सके, बल्कि पाखाना करता है तो दूसरा व्यक्ति उसे साफ़ करता है। यही हालत आज तीन साल से है और वह पागलों जैसा हो गया है, अपने कपड़ों का कोई ख्याल नहीं रहता, कभी नग्न भी हो जाता है। अपना खर्च भी नहीं चला सकता और न औरत का चला सकता है और न ही पति के माता-पिता ने अब तक इस औरत के नान-नफ़क़ा (भरण-पोषण) का ख्याल किया। लड़की के माता-पिता मजबूर होकर आपके पास यह सवाल हबीबुल्लाह वल्द बाबू के ज़रिए भेजा है। क्या इन सब परिस्थितियों में लड़की का निकाह निरस्त (फ़स्ख़) हो सकता है या नहीं? ये सभी स्थितियाँ और घटना सच्ची लिखी गई है।

उत्तर: इन वजहों से निकाह फ़स्ख़ (निरस्त) नहीं हो सकता, 'दुर्रे मुख्तार' में है: "पति-पत्नी में से किसी को दूसरे में दोष (ऐब) होने के कारण [निकाह] निरस्त करने का अधिकार नहीं है, चाहे वह दोष गंभीर ही क्यों न हो जैसे पागलपन, कोढ़ (जुज़ाम), सफ़ेद दाग (बरस), या महिला के गुप्तांग में कोई बाधा (रत़क़ या क़रन) हो।"[1] पति-पत्नी में से किसी को दूसरे में किसी दोष के आधार पर फ़स्ख़ का

अधिकार नहीं है, चाहे वह दोष स्पष्ट हो जैसे पागलपन, कोढ़, सफ़ेद दाग या महिला की जननांग में तंगी हो या उसमें हड्डी या गांठ पैदा हो गई हो। (त)

इसमें है: [1] दुर्रे मुख्तार, बाब अल-इन्नीन, मत़बा मुज्त़बाई दिल्ली, 1/254।

पेज 483 / 688

باللہ تعالیٰ۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ مذہب یا مرجوح قول پر عمل کرے تو ضروری ہے کہ وہ ان تمام شرائط کی رعایت کرے، مثلاً امام محمد رحمۃ اللہ تعالیٰ نے مجنون کی بیوی کے متعلق تفریق کے جواز کو قاضی سے مشروط کیا ہے اس کے بغیر مرجوح قول پر بھی تفریق جائز نہ ہوگی بلکہ یہ نفسانی خواہش کی پیروی ہوگی۔ والعیاذ باللہ تعالیٰ۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۴۹: از اعظم گڑھ ڈاکخانہ مبارکپور محلہ پرانی بستی متصل مکان ناظر جی مرسلہ حبیب اللہ ولد بابو ۱۲ جمادی الاولی ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک لڑکی کا نابالغی میں نکاح ہوا اور وہ بی بی میکے سے اب تک رخصت ہو کر سسرال نہیں گئی عرصہ تین برس کا ہوا کہ شوہر بیمار ہو گیا ہے اور برابر علاج بھی ہو رہا ہے مگر کوئی دوا فائدہ نہیں کرتی اور نہ کوئی حکیم مرض کا پتا بتائے کہ کون سا مرض ہے اب شوہر کی یہ حالت ہے کہ کوئی عضو کام کرنے کے لائق نہیں ہے ہر عضو سے معذور ہے، نہ چل سکتا ہے نہ کھڑا ہو سکتا ہے اور پاخانہ پیشاب سے بالکل معذور ہے اور زبان بھی درست نہیں ہے کہ زبان سے کوئی بات صاف نکلے کہ جو کوئی سمجھ سکے بلکہ پاخانہ پھرتا ہے تو دوسرا آبدست لے دیتا ہے یہی حالت آج تین برس سے ہے اور وہ باؤلے کی شکل ہو گیا ہے اپنے کپڑے کا کچھ خیال نہیں کرتا ننگا مادر زاد بھی ہو جاتا ہے اپنا خرچ بھی نہیں چلا سکتا اور نہ عورت کا چلا سکتا اور نہ شوہر کے والدین نے اس عورت کے نان نفقہ کا ابھی تک خیال کیا، لڑکی کے والدین عاجز ہو کر کے آپ کے پاس یہ سوال حبیب اللہ ولد بابو نے روانہ کیا ہے، ان سب حالتوں میں لڑکی کا نکاح فسخ ہو سکتا ہے یا نہیں؟ یہ سب حالت اور واقعہ سچا تحریر ہے۔

الجواب: ان وجوہ سے نکاح فسخ نہیں ہو سکتا، در مختار میں ہے: لا یتخیر احد الزوجین بعیب الآخر ولو فاحشا کجنون وجذام وبرص ورتق وقرن۔ 1 خاوند بیوی سے کسی کو دوسرے میں عیب کی بنا پر فسخ کا اختیار نہیں ہے اگر وہ عیب واضح ہو مثلاً جنون، جذام، برص یا عورت کی شرمگاہ میں تنگی یا اس میں ہڈی یا غدود پیدا ہو گئی ہو۔ (ت)

اس میں ہے: 1 درمختار باب العنین مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۵۴

Fatawa Razawiyya Volume 12

[Arabic Boxed Text]: Separation shall not be effected between them due to his inability to provide maintenance. And even if a Hanafi judge passes such a decree, it shall not be executed. [Urdu Translation of Boxed Text]: If the husband is unable to provide maintenance, separation is still not permissible. If a Hanafi Qazi has given such a decision, it will not be implemented. (T) According to Hanafi (law) it is not executed. And Allah Almighty knows best.

Problem 250 to 252: From Mumbai Post 9, Pyrollin, sent by Maulvi Muhammad Husain Sahib, Manager Tilismy Press, 26 Jumada al-Ula 1338 AH. What do the scholars of religion and the muftis of the clear Sharia say about this issue: Zaid was married to Hindah 7 years ago, and for this entire duration, the expenses were borne by the parents. Zaid does not want to do any work and has placed his burden on the small income of his younger brother. For this reason, Zaid's father is also unhappy that despite much counseling, he does not want to do any work. After the death of Hindah's father, Zaid was called and counseled by his mother-in-law, but he did not listen and went to his house and sent this letter. Afterwards, after the death of Hindah's mother, one of Hindah's relative brothers wrote letters because there is no real brother. Therefore, it is requested to know whether a decree for annulment of marriage (faskh-e-nikah) or delegation of divorce (tafwiz-e-talaq) can be given based on the following statements? And what is the ruling according to the fatwa of Imam Shafi'i (may Allah have mercy on him) in the case of non-receipt of maintenance? Explain and be rewarded.

(1) Letter to the mother-in-law: "Apart from this, I am not your adversary, nor can I interfere in any of your affairs. I do not need your well-being or news. I only send letters because of my girl (wife). You have authority over all your affairs. Who are we to interfere? Do whatever suits your people's temperament." After the parents' death, the relative brother sent a letter saying, "Now at least take care, it's a very critical time." His reply is as follows:

(2) "Keep the Quran and Hadith in front of you and then decide which woman has a right over a man and for what reasons a woman goes out of marriage. There are many dealings and habits such that if a man tolerates those habits of a woman, he would become destined for Hell; all those are present in my 'virtuous' wife. Afterwards, regarding the request to 'take care' and not considering 'taking care' as a duty, write clear words of separation. If you accept any form, I will make this

concession: I will have the rights of Hindah until now waived in case of togetherness, and the dower (Mahr) too in case of separation, so that you are not held accountable before Allah either."

Footnote: 1 Durr al-Mukhtar, Chapter of Maintenance, Mujtabai Press, Delhi, 1/269.

फ़तावा रज़विया खंड 12

[अरबी बॉक्स]: भरण-पोषण (नफ़क़ा) देने में पति की अक्षमता के कारण उनके बीच अलगाव नहीं किया जाएगा। और यदि किसी हनफ़ी न्यायाधीश ने ऐसा निर्णय दिया भी हो, तो उसे लागू नहीं किया जाएगा। [बॉक्स का उर्दू अनुवाद]: यदि पति नफ़क़ा (खर्चा) देने में असमर्थ हो, तो भी अलगाव जायज़ नहीं है। यदि हनफ़ी काज़ी ने ऐसा निर्णय दिया है, तो वह प्रभावी नहीं होगा। (त) हनफ़ी मत के अनुसार यह लागू नहीं होता। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसाला 250 से 252: मुंबई पोस्ट 9, पैरोलिन से, प्रेषक मौलवी मोहम्मद हुसैन साहब, मैनेजर तिलिस्मी प्रेस, 26 जमादि-उल-उला 1338 हिजरी। धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस मामले में क्या कहते हैं: ज़ैद की शादी हिंदा से 7 साल पहले हुई थी, और इस पूरे समय का खर्चा माता-पिता उठाते रहे। ज़ैद कोई काम नहीं करना चाहता और अपने छोटे भाई की मामूली आय पर अपना बोझ डाले हुए है। इसी वजह से ज़ैद के पिता भी नाखुश हैं कि बहुत समझाने के बावजूद वह कोई काम नहीं करना चाहता। हिंदा के पिता की मृत्यु के बाद, ज़ैद को उसकी सास ने बुलाकर समझाया लेकिन उसने नहीं माना और अपने घर जाकर यह पत्र भेज दिया। उसके बाद हिंदा की माँ की मृत्यु के बाद, हिंदा के एक रिश्तेदार भाई ने पत्राचार किया क्योंकि उसका कोई सगा भाई नहीं है। अतः यह जानना आवश्यक है कि निम्नलिखित बयानों के आधार पर निकाह के निरस्तीकरण (फ़स्ख़-ए-निकाह) या तलाक के अधिकार सौंपने (तफ़वीज़-ए-तलाक़) का आदेश दिया जा सकता है या नहीं? और भरण-पोषण न मिलने की स्थिति में इमाम शाफ़ई (रहमतुल्लाहि अलैहि) के फ़तवे के अनुसार क्या हुक्म है? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

(1) सास के नाम पत्र: "इसके अलावा, मैं आपका कोई विरोधी नहीं हूँ और न ही मैं आपके किसी काम में हस्तक्षेप कर सकता हूँ। मुझे आपकी कुशलता या समाचार की आवश्यकता नहीं है। मैं केवल अपनी लड़की (पत्नी) के कारण पत्र भेजता हूँ। आपको अपने हर काम का अधिकार है। हम हस्तक्षेप करने वाले कौन होते हैं? जो आपके लोगों के मिजाज में आए वही करें।" माता-पिता की मृत्यु के बाद, रिश्तेदार भाई ने एक पत्र भेजा कि "अब तो देखभाल करो, अब बहुत नाजुक समय है।" उसका उत्तर नीचे दिया गया है।

(2) "ज़रा कुरान और हदीस को सामने रखें और फिर फैसला करें कि मर्द पर किस औरत का क्या हक़ है और किन कारणों से औरत निकाह से बाहर हो जाती है। बहुत से मामले और आदतें ऐसी हैं

कि अगर मर्द औरत की उन आदतों को बर्दाश्त करे तो वह जहन्नमी हो जाए; वे सभी मेरी नेक पत्नी में मौजूद हैं। इसके बाद, यह लिखने पर कि 'देखभाल करो' और देखभाल को अपनी ज़िम्मेदारी न समझते हुए, अलगाव के स्पष्ट शब्द लिख दो। यदि आप कोई भी रूप स्वीकार करते हैं, तो मैं यह रियायत करूँगा कि साथ रहने की स्थिति में अब तक के हिंदा के अधिकारों को माफ़ करा दूँगा और अलग होने की स्थिति में मेहर भी, ताकि अल्लाह के सामने भी आपकी पकड़ न हो।"

पाद टिप्पणी: 1 दुर्रे मुख्तार, बाब-उन-नफ़क़ा, मुतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/269. पृष्ठ 484/688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

[عربی عبارت]: لا یفرق بینھما بعجزہ عنھا ای عن النفقۃ ولو قضی خاوند اگر نفقہ دینے سے عاجز ہو تو بھی تفریق جائز نہیں، اگر حنفی قاضی نے ایسا فیصلہ دیا تو نافذ نہ ہو گا۔ (ت) بہ حنفی لم ینفذ - واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۵۰ تا ۲۵۲: از ممبئی پوسٹ ۹ پیرولین مرسلہ مولوی محمد حسین صاحب مینیجر طلسمی پریس ۲۶ جمادی الاولی ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید کی شادی ہندہ سے ہوئی ۷ سال ہوئے اور اس تمام زمانہ کا خرچہ والدین پر رہا زید کوئی کام کرنا نہیں چاہتا اپنے چھوٹے بھائی کی معمولی آمدنی پر اپنا بار ڈالے ہوئے ہے اسی وجہ سے زید کے والد بھی ناخوش ہیں کہ باوجود ان کے بہت سمجھانے کے بھی کچھ کام نہیں چاہتا، ہندہ کے والد کے انتقال کے بعد زید کو اس کی خوشدامن نے بلا کر سمجھایا مگر وہ نہ مانا اور اپنے مکان جا کر یہ خط بھیج دیا بعدہ ہندہ کی والدہ نے انتقال کے بعد ہندہ کے ایک رشتہ دار بھائی نے خط کتابت کی اس لئے کہ حقیقی کوئی بھائی بھی نہیں ہے لہذا دریافت طلب یہ امر ہے کہ مندرجہ ذیل عبارات پر فسخ نکاح یا تفویض طلاق کا حکم ہوسکتا ہے یا نہیں اور بفتوائے امام شافعی رحمۃ اللہ تعالٰی بحالت عدم وصولی نان نفقہ کیا حکم ہے؟ بینوا توجروا

(۱) خط خوشدامن کے نام ، ماسوا اس کے میں تمہارا کوئی مزاحم نہیں اور نہ میں تمہارے کسی کام میں دخل دے سکتا ہوں مجھے تمہاری خیریت اور خبر کی ضرورت نہیں ہے صرف اپنی لونڈیا کی وجہ سے خط بھیجتا ہوں تمہارے ہر کام کا تم کو اختیار ہے ہم کوئی نہیں کیوں دخل دیں گے جو تمہارے لوگوں کے مزاج میں آوے وہ کرو، بعد انتقال والدین عمر بھر شتہ کے بھائی نے خط بھیجا کہ اب تو خبر گیری کرو اب نہایت نازک وقت ہے، اس کا جواب ذیل ہے۔

(۲) ذرا قرآن اور حدیث کو سامنے رکھئے اور پھر تصفیہ کیجئے گا کہ مرد پر کون سی عورت کا حق ہے اور کس وجوہات سے عورت نکاح سے باہر ہو جاتی ہے بہت معاملات اور عادات ایسے کہ اگر مرد ان عادات کو عورت کی گوارہ کرے تو جہنمی ہوجائے وہ میری نیک بخت بیوی میں سب موجود ہیں، بعدہ یہ لکھنے پر کہ خبر گیری کرو اور خبر گیری اپنے ذمہ واجب نہیں سمجھتے تو صاف صاف علیحدگی کے الفاظ لکھ دو اگر کوئی صورت بھی منظور کرتے ہو تو میں یہ رعایت کروں گا کہ بحالت یکجائی اب تک کے حقوق ہندہ سے معاف کرادوں گا اور بحالت علیحدگی مہر بھی، تاکہ عند اللہ بھی آپ ماخوذ نہ ہوں۔

حاشیہ: 1 درمختار باب النفقہ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۶۹ صفحہ 484 از 688

Fatawa Razawiyya Volume 12

(3) Answer: Your current view is that after the death of the father-in-law, your respected mother-in-law called me here and instead of forcing me to keep (her daughter), she said it would be better if you give a divorce. I remained silent. Had I not given a way in the house, the matter would have been settled then and there. But I became acquainted with the aunts and stayed there waiting, thinking perhaps the noble temperament would improve. But Masha'Allah, that blessed temperament rose to such heights that it always showed a fourfold increase in being 'unbridled'. Well, I have no complaint; I never like to stay in the company of such disobedient, arrogant people because I myself have a bad nature. Therefore, it is better that she also lives an independent life. This is also my opinion, but write down what the fate of Zohra will be. This decision is on your head, whatever you decide. If you also give Zohra, it's your wish, I am ready. If you don't give, I am still satisfied. In any case, whatever settlement you make, I will write whatever you want in response to this letter. (After this, a second letter came).

(4) Please inform me with the reply to this letter so that whatever the opinion is, it can be acted upon. Upon Amr's statement that Zohra is still a minor and unfamiliar with your faces, separating her in such a state would be like burying her alive, so keep this matter for the future and send your written separation signed by two or four people. To reassure you, they write that all rights of Hindah are waived provided you send your writing in such a manner. (The reply to this was):

(5) I do not want Zohra to be separated from you all at present because she is still a minor. Until she becomes mature, I prefer to keep her there. Until the time they come to me, this matter is difficult. That is all.

Al-Jawab (The Answer): The first letter is addressed to the mother-in-law. In it, there is no address to the wife nor a mention of her. Even if he had said to the wife herself, "You have the choice," and intended to delegate the divorce, that choice would be limited to that session and not continue until now. It is stated in Durr al-Mukhtar:

"The husband said to the wife, 'You have the choice,' or 'Your matter is in your hand.' And if these words were said with the intention of giving the wife the choice of divorce, then the wife will have the choice to divorce herself in the same session in which she was informed of receiving this choice, provided that upon hearing it, from there..."

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on Delegation of Divorce, Mujtabai Press, Delhi, 1/226.

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

(३) जवाब: आपकी अभी यह राय है कि ससुर साहब के इंतक़ाल के बाद जनाब क़िबला सास साहिबा ने मुझे यहाँ बुलाया और इसके बजाय कि वह (अपनी बेटी को) रखने पर मजबूर करतीं, उन्होंने यह कहा कि तुम तलाक़ दे दो तो बेहतर है। मैं खामोश रहा। अगर मैं घर में गुंजाइश न देता तो तभी मामला तय हो जाता। मगर मुझे खालतों (मौसियों) से वाक़फ़ियत हो गई और मैंने फिर वहाँ रहकर इंतज़ार किया कि शायद मिज़ाज-ए-आली दुरुस्त हो जाए। मगर माशा-अल्लाह, उस मुबारक मिज़ाज ने वो उरूज हासिल किया कि हमेशा से चार गुना बे-लगाम सा नज़र आया। खैर, मुझे शिकायत नहीं है। मैं ऐसे नाफ़रमान मुतकब्बिर लोगों की सोहबत में कभी रहना पसंद नहीं करता क्योंकि मैं ख़ुद बद-फ़ितरत (खराब स्वभाव वाला) हूँ। इसलिए बेहतर है कि वह भी आज़ादाना ज़िन्दगी बसर करें, मेरी भी यही राय है। लेकिन यह लिख दीजिए कि ज़ोहरा का क्या हश्र होगा? यह फ़ैसला आपके सर है जो आप कर दें। अगर ज़ोहरा को भी दे दें तो आपकी मर्जी, मैं तैयार हूँ। अगर आप न दें तो भी राज़ी हूँ। बहरहाल, जो तसफ़िया आप करें, इस ख़त के जवाब पर आप जो चाहेंगे मैं लिख दूँगा। (इसके बाद दूसरा ख़त आया)

(४) बराए करम इस ख़त के जवाब से मुत्तला फ़रमाएँ ताकि जो राय हो उस पर अमल-दरामद किया जाए। इस पर अम्र के यह कहने पर कि ज़ोहरा अभी छोटी (सग़ीर) है और तुम लोगों की शक्लों से ना-आश्ना (अनजान) है, ऐसी हालत में उसे अलग करना गोया ज़िन्दा दरगोर (ज़िन्दा दफ़्न) करना है। लिहाज़ा यह मामला मुस्तक़बिल पर रखो और अपनी अलहदगी (जुदाई) की तहरीर दो-चार दस्तख़त करके भेज दो। आपकी तसल्ली के लिए वे लिखते हैं कि हिंदा के तमाम हुक़ूक़ माफ़ हैं बशर्ते कि तुम अपनी तहरीर ऐसी ही भेज दो। (इसका जवाब यह आया):

(५) मैं यह नहीं चाहता कि फिलहाल ज़ोहरा को आप लोगों से अलग किया जाए क्योंकि अभी वह नाबालिग (सग़ीरा) है। जब तक वह होशयार न हो जाए तब तक मैं उसे वहीं रखना पसंद करता हूँ। जब तक वो मुझ तक नहीं आएँगी, तब तक यह बात मुश्किल है। फ़क़त।

अल-जवाब (उत्तर): पहला ख़त सास के नाम है, इसमें न तो बीवी को संबोधित किया गया है और न ही उसका ज़िक्र है। अगर उसने ख़ुद बीवी से कहा होता कि "तुम्हें इख़्तियार (अधिकार) है" और तलाक़ सौंपने (तफ़वीज़) का इरादा करता, तो वह अधिकार भी उसी मजलिस (बैठक) तक सीमित रहता, न कि अब तक जारी रहता। 'दुर्रे मुख़्तार' में है:

"शौहर ने बीवी को कहा 'तुझे इख़्तियार है' या 'तेरा मामला तेरे हाथ में है'। और ये अलफ़ाज़ बीवी को तलाक़ का इख़्तियार देने की नीयत से कहे तो बीवी को उसी मजलिस में जिसमें उसको इस इख़्तियार के मिलने की इत्तिला मिली अपने को तलाक़ देने का इख़्तियार होगा बशर्ते कि वो सुन कर वहाँ से..."

---

१ दुर्रे मुख़्तार, तफ़वीज़-ए-तलाक़, मतब-ए-मुज्तबाई, दिल्ली, २२६/१।

(۳) جواب: آپ کا تو اب یہ خیال ہے جناب قبلہ خوشدامن صاحبہ نے بعد انتقال خسر صاحب مجھ کو یہاں سے بلایا اور مجھ سے بجائے اسکے کہ وہ رکھنے پر مجبور کرتیں یہ کہا کہ تم طلاق دیدو تو بہتر ہے میں خاموش ہو رہا گھر میں طرح نہ دے دیتا تو جب ہی معاملہ طے تھا مگر مجھے خالوتوں سے واقفیت ہو گئی اور میں نے پھر وہاں رہ کر انتظار کیا کہ شاید مزاج عالی درست ہو جائے مگر ماشاء اللہ اس مزاج مبارک نے وہ عروج حاصل کیا کہ ہمیشہ سے چہار چند سوار نگر د کھلا یا اور خیر مجھے شکایت نہیں ہے میں ایسے نافرمان متکبر لوگوں کی صحبت میں کبھی رہنا پسند نہیں کرتا اس واسطے کہ میں خود بد طینت ہوں اس وجہ سے بہتر ہے کہ وہ بھی آزادانہ زندگی بسر کریں میری بھی یہی رائے ہے لیکن یہ لکھ دیجئے کہ زہرہ کا کیا حشر ہو گا یہ فیصلہ آپ کے سر ہے جو آپ کر دیں اگر زہرہ کو بھی دے دیں تو آپ کو مرضی، میں تیار ہوں، اگر آپ نہ دیں تو بھی راضی ہوں، بہر حال جو تصفیہ آپ کریں اس خط کے جواب پر آپ جو چاہیں گے میں لکھ دوں گا (بعدہ دوسرا خط آیا)

(۴) برائے کرم جواب سے خط ہذا کے مطلع فرمائیے تاکہ جو رائے ہو اس پر عمل درآمد کیا جائے، اس پر عمرو کے یہ کہنے پر کہ زہرہ ابھی صغیر سن ہے اور تم لوگوں کی صورت سے نا آشنا ایسی حالت میں اس کو علیحدہ کرنا گویا زندہ درگور کرنا ہے، لہذا یہ معاملہ آئندہ پر رکھو اور اپنی علیحدگی کی تحریر دو چار دستخط کر کے بھیج دو تمہارے اطمینان کو یہ لکھ دیتے ہیں کہ ہندہ کے تمام حقوق بشرطیکہ تم اپنی تحریر ایسی بھیجد و معاف ہیں (اس کو جواب یہ آیا)

(۵) میں یہ نہیں چاہتا کہ فی الحال، زہرہ آپ لوگوں سے علیحدگی کی جائے کیونکہ ابھی وہ صغیرہ ہے جب تک وہ ہوشیار نہ ہو جائے تب تک میں اس کو وہاں رکھنا پسند رکھتا ہوں جس وقت وہ مجھ تک نہ آجائینگی جب تک یہ امر دشوار ہے، فقط

الجواب: پہلا خط خوشدامن کے نام ہے اس میں نہ زوجہ سے خطاب نہ اس کا ذکر۔ اگر خود زوجہ سے کہتا تم کو اختیار ہے اور تفویض طلاق چاہتا تو اختیار بھی اسی مجلس پر موقوف رہتا نہ کہ اب تک مستمر۔ درمختار میں ہے :

قال لہا اختاری او امرك بيدك ينوی تفويض الطلاق | خاوند نے بیوی کو کہا تجھے اختیار ہے، یا تیرا معاملہ تیرے ہاتھ میں فلها ان تطلق في مجلس علمها به مالم تقم او تعمل | ہے۔ اور یہ الفاظ بیوی کو طلاق کا اختیار دینے کی نیت سے کہے تو ما يقطعه - 1 | بیوی کو اسی مجلس میں جس میں اس کو اس اختیار کے ملنے کی اطلاع ملی اپنے کو طلاق دینے کا اختیار ہو گا بشرطیکہ وہ سُن کر وہاں سے

---

1 درمختار تفویض الطلاق مطبع مجتبائی دہلی ۲۲۶/۱

Fatawa Razawiya, Volume 12

...has not stood up or has not performed such an act by which her choice becomes void. (T) And if instead of saying "If we are nothing", he himself says to his wife, "Neither are you in my marriage, nor am I your husband", even then, according to the Sahiban (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad), the divorce would be absolute.

[Arabic Box]: In Jawahir al-Akhlati, al-Khulasah, and Khizanat al-Muftin, this is the preferred view, even if he intended. [Urdu Explanation]: It is stated in Jawahir al-Akhlati, al-Khulasah, and Khizanat al-Muftin that even if the intention was made, this is the preferred view. (T)

And according to the Imam (Abu Hanifa), it would remain dependent on the intention.

[Arabic Box]: It was put forward in al-Khaniyah, and restricted to in al-Bada'i, al-Kanz, and al-Multaqa, and it was the most appropriate view. [Urdu Explanation]: It was mentioned first in al-Khaniyah. It was relied upon in al-Bada'i, al-Kanz, and al-Multaqa; therefore, this is the prevailing view. (T)

In Durr al-Mukhtar, it says:

[Arabic Box]: "I am not your husband and you are not my wife" is a divorce if he intended it, contrary to the two [Imams] - (Summarized). [Urdu Explanation]: If the husband says to the wife, "I am not your husband, so you are not my wife," it will occur if intended as divorce. The view of the Sahiban is contrary to this (Summarized). (T)

In Radd al-Muhtar, it says:

[Arabic Box]: It was restricted by intention because it does not occur without it by consensus, as it is among the allusions (kinayat). He indicated that the circumstantial evidence (dalalat al-hal) does not substitute for it, because that is only in what is suitable as an answer, and these are words among which this is not one. [Urdu Explanation]: Restricting it with intention means that without the intention of divorce, it will not occur by consensus, because these are among the metaphors (kinayat). In this, an indication is given that the circumstantial state cannot substitute for intention because circumstantial evidence is considered reliable where it can only serve as a response, and those are specific words; this is not among them. (T)

In the second letter, it is asked by what means a woman goes out of marriage; it has nothing to do with the initiation of divorce, even if in his heart it is so, that in the woman 'Hindah' there are certain reasons due to which she is out of marriage...

---

1. Khulasat al-Fatawa, Book of Divorce, Maktaba Habibiyah, Quetta, 2/97.
2. Durr al-Mukhtar, Chapter of Explicit (Sarih) Divorce, Mujtabai Press, Delhi, 1/222.
3. Radd al-Muhtar, Chapter of Explicit (Sarih) Divorce, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/253.

फ़तावा रज़विया, खंड 12

...नहीं उठी हो या ऐसा कोई काम नहीं किया हो जिससे उसका अधिकार समाप्त हो जाए। (त) और 'यदि हम कोई नहीं' के स्थान पर वह स्वयं पत्नी से कहे 'न तो तुम मेरे निकाह में हो न मैं तुम्हारा पति हूँ' तब भी साहिबैन के निकट तलाक़ मुतलक़ (निरपेक्ष) होती,

[अरबी बॉक्स]: जवाहर अल-अख़लाती, अल-ख़ुलासा और ख़िज़ानत अल-मुफ़्तीन में यही चुना हुआ मत है, भले ही नियत (इच्छा) की हो। [उर्दू स्पष्टीकरण]: जवाहर अल-अख़लाती, ख़ुलासा, ख़िज़ानत अल-मुफ़्तीन में है कि भले ही नियत की हो, यही पसंदीदा मत है। (त)

और इमाम के निकट नियत पर निर्भर रहती,

[अरबी बॉक्स]: इसे ख़ानिया में पहले उल्लेख किया गया और बदाइ', कंज और मुल्तक़ा में इसी पर सीमित रहा और यही सबसे उचित था। [उर्दू स्पष्टीकरण]: ख़ानिया में इसे पहले ज़िक्र किया गया। बदाइ' और कंज और मुल्तक़ा में इसी पर बस किया गया, इसलिए यही प्रचलित है। (त)

दुर-ए-मुख़्तार में है:

[अरबी बॉक्स]: "मैं तुम्हारा पति नहीं हूँ और तुम मेरी पत्नी नहीं हो, यह तलाक़ है यदि उसने इसकी नियत की हो, उन दोनों (साहिबैन) के विरुद्ध - (संक्षिप्त)।" [उर्दू स्पष्टीकरण]: पति ने यदि पत्नी से कहा "मैं तुम्हारा पति नहीं तो तुम मेरी पत्नी नहीं" तलाक़ की नियत से कहा तो होगी। इसमें साहिबैन का मत इसके विपरीत है (संक्षिप्त)। (त)

रद्द अल-मुह्तार में है:

[अरबी बॉक्स]: इसे नियत के साथ प्रतिबंधित किया गया क्योंकि सर्वसम्मति से इसके बिना तलाक़ नहीं होती, क्योंकि यह किनायात (इशारों) में से है। उसने संकेत दिया कि स्थिति का प्रमाण (दलालत-ए-حال) नियत का स्थान नहीं ले सकता क्योंकि स्थिति का प्रमाण वहां मान्य होता है जहां वह केवल एक उत्तर बन सके और वे विशेष शब्द हैं, यह उनमें से नहीं है। [उर्दू स्पष्टीकरण]: नियत से बांधने का अर्थ यह है कि बिना नियत तलाक़ नहीं होगी सर्वसम्मति से, क्योंकि यह किनायात (संकेतों) में से है। इसमें यह संकेत दिया गया कि हाल का प्रमाण नियत के स्थान पर नहीं आ सकता क्योंकि हाल का प्रमाण वहां विश्वसनीय होता है जहां वह केवल उत्तर बन सके और वे विशेष शब्द हैं, यह उनमें से नहीं है। (त)

दूसरे पत्र में यह पूछा गया है कि किन कारणों से स्त्री निकाह से बाहर हो जाती है, इसका तलाक़ शुरू करने से कोई संबंध नहीं है, भले ही उसके दिल में यही हो कि हिंदा में कुछ ऐसे कारण हुए जिनके कारण वह निकाह से...

---

1. ख़ुलासतुल फ़तावा, किताबुल तलाक़, मकतबा हबीबिया, क्वेटा, 2/97
2. दुर्रे मुख़्तार, बाबुल सरीह, मतब-ए-मुजतबाई, दिल्ली, 1/222
3. रद्दुल मुह्तार, बाबुल सरीह, दार इहयाउल तुरासुल अरबी, बेरूत, 2/253

पृष्ठ 486 / 688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

اٹھی نہ گئی ہو یا ایسا عمل نہ کیا ہو جس سے اس کا اختیار باطل ہوتا ہو۔(ت) اور "اگر ہم کوئی نہیں" کی جگہ خود زوجہ سے کہتا "نہ تو میری زوجہ میں نہ میں تیرا شوہر" جب بھی طلاق صاحبین کے نزدیک مطلقانہ ہوتی،

[عربی متن]: وفي جواهر الاخلاطی والخلاصة وخزانة المفتين هو المختار وان نوی -1 [اردو ترجمہ]: جواہر اخلاطی، خلاصہ، خزانہ المفتین میں ہے کہ اگرچہ نیت کی ہو یہی مختار قول ہے (ت)

اور امام کے نزدیک کی نیت پر موقوف رہتی،

[عربی متن]: قدمه في الخانية واقتصر عليه في البدائع والكنز والملتقی وكان هو الاوجه- [اردو ترجمہ]: خانیہ میں اس کو پہلے ذکر کیا۔ بدائع اور کنز اور ملتقی میں اسی پر اکتفاء کیا، لہذا یہی رائج ہے (ت)

در مختار میں ہے :

[عربی متن]: لست لك بزوج ولست لي بامرأة طلاق ان نواه خلافا لهما 2 - (ملخصاً) [اردو ترجمہ]: خاوند نے اگر بیوی کو کہا "میں تیرا خاوند نہیں تو میری بیوی نہیں" طلاق کی نیت سے کہا تو ہوگی۔ اس میں صاحبین کا قول مخالف ہے (ملخصاً)۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے :

[عربی متن]: قيد بالنية لانه لا يقع بدونها اتفاقاً لكونه من الكنايات واشار الی انه لا يقوم مقامها دلالة الحال لان ذلك فيما يصلح جواباً فقط وهو الفاظ ليس هذا منها 3 - [اردو ترجمہ]: نیت سے مقید کرنے

کا مطلب یہ ہے کہ بغیر نیت طلاق نہ ہوگی بالاتفاق، کیونکہ یہ کنایات میں سے ہے۔ اس میں یہ اشارہ دیا کہ دلالتِ حال نیت کے قائم مقام نہیں بن سکتا کیونکہ دلالت حال وہاں معتبر ہوتا ہے جہاں وہ فقط جواب بن سکے اور وہ خاص الفاظ ہیں یہ ان میں سے نہیں ہے۔ (ت)

خط دوم میں یہ پوچھا ہے کہ کن وجوہ سے عورت نکاح سے باہر ہوجاتی ہے اسے انشائے طلاق سے کچھ علاقہ نہیں اگرچہ اس کے دل میں یہی کہ ہندہ میں بعض وجوہ ایسی ہوئیں جن کے سبب وہ نکاح سے

---

1 خلاصہ الفتاوی کتاب الطلاق مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۹۷/۲ 2 درمختار باب الصریح مطبع مجتبائی دہلی ۲۲۲/۱ 3 ردالمحتار باب الصریح داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۵۳/۲

Fatawa Razawiyya Volume 12

...it went out that divorce occurred through words, the intention of the heart doesn't matter. In the same letter, he said that my wife etc. In the third letter, the decision is left to someone else and that whatever you want, I will write down. This is a promise and it is an opinion that it is better for her to live an independent life as well, that she is set free. The fourth letter seeks advice. In the fifth letter, there is a refusal to grant a divorce until 'Zohra' (perhaps a name or amount) is received. In short, there is no word in these letters that constitutes divorce. The well-wishers are trying to force him either to provide maintenance (Naan-o-Nafqa) or give a divorce, under pressure or threat of legal action. Otherwise, there is no pure form. Imam Shafi'i (may Allah be pleased with him) also does not allow separation for non-payment of maintenance, but rather in cases of total incapacity/poverty where one is unable to pay. Even if he were, it is obligatory for a Hanafi to follow their Imam. And Allah knows best.

Problem 255: From Rampur, Mohalla Gheriu Yusuf ud Din Khan, southern wall of the garden adjacent to Masjid Pakhar, Clinic No. 43. Queried by Syed Mukhtar Ahmed Yatimi Doctor, Jamadi al-Ula. A Muslim man entered into a Sharia-compliant marriage with a pure Muslim woman. However, the said husband now has no outward or inward relationship with the married woman and is indifferent to her in every way. From the beginning of the marriage until now, there has been no consummation or privacy associated with husband-wife relations. It has become known that the husband is completely outside the realm of masculinity, meaning he is impotent. Therefore, is marriage with this type of impotent man valid or invalid? What action does this woman need to take, and what is the ruling according to the Hadith Sharif?

The Answer: The marriage is valid. The woman cannot be separated except by death or divorce, even if the man is impotent. Yes, the remedy is to file a case in the Sharia court. After obtaining proof that the man is incapable, the judge will give the man a full one-year grace period to seek treatment. During this year, the woman should not stay separated from the man. If the year passes and he is still incapable, the woman should file a claim again. After taking proof again, the judge will ask the woman whether she wants to stay with her husband or choose her own self (divorce). If the woman immediately says, "I have chosen myself," the judge will separate them. This separation constitutes a divorce, and after the waiting period ('iddah), the woman can marry someone else, otherwise not. This ruling is from the woman's side. As for the man, the Sharia ruling for him is that when he cannot fulfill the woman's right, it

is obligatory (fard) for him to grant the woman a divorce. If he does not, he will be a sinner and deserving of punishment.

...बाहर हो गई कि तलाक़ लफ़्ज़ से हुई है, दिल का तसव्वुर कुछ नहीं। इसी ख़त में उसने कहा है कि मेरी बीवी वग़ैरह... तीसरे ख़त में फ़ैसला दूसरे के सिर रखा है और यह कि जो आप चाहेंगे मैं लिख दूँगा। यह एक वादा है और वह एक राय है कि बेहतर है कि वह भी आज़ादाना ज़िंदगी बसर करें, यह कि उसे आज़ाद किया। चौथे ख़त में मशविरा माँगा गया है। पाँचवें ख़त में जब तक 'ज़ोहरा' न मिल जाए, तलाक़ देने से इनकार है। अल-ग़रज़, इन ख़तों में तलाक़ का कोई शब्द मौजूद नहीं है। सम्मानित लोग दबाव डाल कर या मुक़दमे के डर से उसे मजबूर कर रहे हैं कि वह ख़र्चा (नान नफ़क़ा) दे या तलाक़ दे। इसके अलावा कोई सूरत नहीं है। इमाम शाफ़ई (रज़ियल्लाहु अन्हु) भी ख़र्चा न देने पर अलगाव नहीं कराते बल्कि मजबूर और मोहताज होने पर जो ख़र्चा देने पर क़ादिर न हो, और अगर हो भी तो हनफ़ी को अपने इमाम की पैरवी करना वाजिब है। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है)।

मसला 255: रामपुर, मोहल्ला घेरियु यूसुफ़ुद्दीन ख़ान, बाग़ की दक्षिणी दीवार के पास मस्जिद पाखर, मतब (क्लीनिक) नंबर 43, से मुस्तफ़ती (पूछने वाले) सैय्यद मुख़्तार अहमद यतीमी डॉक्टर, जमादी-उल-उला। एक मुसलमान मर्द का एक पाक मुसलमान औरत के साथ शरीयत के अनुसार निकाह हुआ। लेकिन अब उक्त शौहर का उस मनकूहा (निकाहशुदा औरत) से कोई ज़ाहिरी या बातिनी (बाहरी या भीतरी) ताल्लुक़ नहीं है और वह हर तरह से मनकूहा से बेपरवाह है। निकाह की शुरुआत से अब तक पति-पत्नी वाले किसी भी एकांत (तख़्लिया) की बात नहीं हुई। मालूम हुआ कि शौहर मर्दानगी के दायरे से बिल्कुल बाहर है, यानी नामर्द है। लिहाज़ा इस तरह के या ऐसे नामर्द से मनकूहा निकाह जायज़ है या नाजायज़? उस औरत को क्या कार्रवाई करने की ज़रूरत है, और हदीस शरीफ़ के मुताबिक़ क्या हुक्म है?

अल-जवाब (उत्तर): निकाह सही हो गया। औरत मौत या तलाक़ के बिना अलग नहीं हो सकती, चाहे मर्द नामर्द हो। हाँ, इसका हल शरई हाकिम (काज़ी) के पास दावा करना है। वह यह सबूत लेने के बाद कि मर्द इस पर क़ादिर (सक्षम) नहीं हुआ, मर्द को एक साल की पूरी मोहलत दे कि अपना इलाज कराए। इस साल में औरत मर्द से अलग न रहे। अगर साल गुज़र जाए और अब भी वह क़ादिर न हो, तो औरत फिर से दावा करे। हाकिम फिर से सबूत लेने के बाद औरत से पूछे कि क्या तू अपने शौहर के पास रहना चाहती है या अपने नफ़्स (स्वयं) का अख़्तियार चाहती है? अगर औरत तुरंत बिना किसी देरी के कह दे कि "मैंने अपने नफ़्स को अख़्तियार किया," तो हाकिम उनमें तफ़रीक़

(अलगाव) और जुदाई कर दे। यह तफ़रीक़ तलाक़ मानी जाएगी, और अब इद्दत के बाद औरत दूसरे से निकाह कर सकेगी, वरना नहीं। यह हुक्म औरत की तरफ़ से है। रहा मर्द, तो उसके लिए शरीयत का हुक्म है कि जब वह औरत का हक़ अदा नहीं कर सकता, तो उस पर फ़र्ज़ है कि औरत को तलाक़ दे दे। अगर नहीं देगा तो वह गुनहगार और अज़ाब का मुस्तहिक़ (हक़दार) होगा।

पेज 487 / 688

باہر ہو گئی کہ طلاق لفظ سے ہوئی ہے دل کا تصور کچھ نہیں، اسی خط میں اس میں اس نے کہا ہے کہ میری بی بی الخ خط سوم میں فیصلہ دوسرے کے سر رکھا ہے اور یہ کہ جو آپ چاہیں گے میں لکھ دوں گا، یہ ایک وعدہ ہے اور وہ ایک رائے ہے کہ بہتر ہے کہ وہ بھی آزادانہ زندگی بسر کریں یہ کہ اسے آزاد کیا۔ خط چہارم میں طلب مشورہ ہے۔ خط پنجم میں جب تک زہرہ نہ مل جائے طلاق دینے سے انکار ہے۔ غرض ان خطوط میں کوئی حرف صورت طلاق کا نہیں چاہ ہی کار معززین کے دباؤ خواہ نالش سے مجبور کرتا ہے کہ نان نفقہ دے یا طلاق، بغیر اس کے کوئی صورت خالص نہیں۔ امام شافعی رضی اللہ تعالیٰ عنہ بھی نفقہ نہ دینے پر تفریق نہیں کراتے بلکہ عاجز محتاج ہونے پر جو ادائے نفقہ پر قادر نہ ہو اور اگر ہو بھی تو حنفی کو اپنے امام کا اتباع واجب ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۵۵: از رامپور محلہ گھیریو یوسف الدین خاں دیوار جنوبی باغ متصل مسجد پاکھر مطب نمبر ۴۳ مسئولہ سید مختار احمد یتیمی ڈاکٹر کے جمادی الاولیٰ ایک مرد مسلمان کا پاک عورت مسلمان کے ساتھ عقد شرعی ہوا، لیکن اب منکوحہ سے شوہر مذکور کوئی تعلق ظاہری و باطنی نہیں رکھتا اور ہر طرح منکوحہ سے بے پروا ہے ابتدائے نکاح سے ہنوز کوئی بات تخلیہ شوہریت کا بھی نہیں ہوا معلوم ہوا کہ شوہر دائرہ مردانیت سے بالکل بعید ہے یعنی نامرد ہے لہذا اس قسم سے یا ایسے نامرد سے منکوحہ نکاح جائز ہے یا ناجائز، اس عورت کو کیا عمل کرنے کی ضرورت ہے، اور موافق حدیث شریف کیا حکم ہے؟ الجواب: نکاح صحیح ہو گیا، عورت بے موت یا طلاق جدا نہیں ہو سکتی اگر چہ مرد نامرد ہو۔ ہاں چارہ کار حاکم شرعی کے یہاں دعویٰ ہے وہ اس ثبوت لینے کے بعد کہ مرد اس پر قادر نہ ہوا، مرد کو ایک سال کی کامل مہلت دے کہ اپنا

علاج کرے، اس سال میں عورت مرد سے جدا نہ رہے اگر سال گزر جائے، اور اب بھی قادر نہ ہو عورت پھر دعویٰ کرے اور حاکم پھر ثبوت لینے کے بعد عورت پوچھے کہ تو اپنے اس شوہر کے پاس رہنا چاہتی ہے یا اپنے نفس کو اختیار کرتی ہے، اگر عورت فوراً بلاتاخیر کہہ دے کہ میں نے اپنے نفس کو اختیار کیا، تو حاکم ان میں تفریق و جدائی کر دے، یہ تفریق طلاق ہوئی، اور اب بعد عدت عورت دوسرے سے نکاح کر سکے گی ورنہ نہیں، یہ حکم عورت کی جانب ہے، رہا مرد، اسے حکم شریعت ہے کہ جب وہ عورت کا حق ادا نہیں کر سکتا تو اُس پر فرض ہے کہ عورت کو طلاق دے دے نہ دے گا تو گنہگار و مستحق عذاب

Fatawa Razawiyya Volume Twelve

...will be, and Allah Almighty knows best.

Problem 256: Sent by Maulvi Rahim Bakhsh Sahib, teacher, resident of Sherkot, merchant Almora. 6 Rabi-ul-Akhir 1338 Hijri.

Here in the mountains of Almora, a person named Amanullah married his daughter to Syed Fazl Hussain Shah, a resident of Thakurdwara. The marriage was consummated, and she stayed with her husband for a year. Then she came to her father's house. Some resentment arose between Amanullah and Syed Fazl Hussain. Fazl Hussain wanted to take his wedded wife back to Thakurdwara, but Amanullah did not allow it; instead, various disputes occurred to the point of litigation. Amanullah filed a false claim of divorce, which the judge dismissed due to the falsehood being evident. Secondly, a case for permission of autonomous action was filed, which was also dismissed. Afterwards, Syed Fazl Hussain was at his home. He had some conflict with the local police station officer. Out of malice, the officer sent the aforementioned Syed to the mental asylum in Bareilly. Meanwhile, Amanullah, finding an opportunity, filed a case based on him being insane and sought permission for a second marriage from the judge. The Hindu judge established the reason of insanity and granted permission for a second marriage. Ten days after the permission, Amanullah performed the second marriage, and many years have passed since then. Now, when Syed Fazl Hussain was released, he came seeking justice and filed a lawsuit. Therefore, an inquiry is requested from the scholars of religion and muftis of the firm Sharia in this case: whether the second marriage of Amanullah's daughter on the grounds of insanity was valid or not? If it was invalid, has Fazl Hussain's claim been forfeited due to the passage of several years? Please explain and be rewarded.

The Answer: In the case under inquiry, this second marriage of the woman (Hindah), which she contracted with another person during the lifetime of her husband without a divorce having occurred, is by consensus absolutely invalid and rejected. The permission of the judge is void and discarded. According to the school of our Imam, our master Imam-e-Azam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him), whom we follow, and according to the school of his greatest companions like Hazrat Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on him), the invalidity of this absurd marriage and the fact that the woman still remains in the marriage of the first husband is clearer than the midday sun. In our Imam's school of thought, a woman never has the right

to seek separation due to the husband's insanity. This is the school of thought of the greatest pillar of the school, Imam Abu Yusuf, and this is preferred for numerous reasons. This has been adopted in all the core texts of the school, such as Kanz, Wafi, Wiqayah, Nuqayah, Mukhtar, Islah, Tanwir, Multaqa, etc. All authoritative commentaries like Hidaya, Kafi, Tabyeen, Ikhtiyar, Fath al-Qadir, etc., have referred to this argument. Most fatwas are in agreement with this, and the great Imam Qazi Khan in his fatwas...

फतवा-ए-रज़विया जिल्द बारहवीं

...होगा और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 256: मौलवी रहीम बख्श साहब, शिक्षक, निवासी शेरकोट, व्यापारी अल्मोड़ा द्वारा प्रेषित। 6 रबी-उल-आख़िर 1338 हिजरी।

यहाँ अल्मोड़ा के पहाड़ों पर अमानुल्लाह नामक एक व्यक्ति ने अपनी बेटी का निकाह ठाकुरद्वारा निवासी सैयद फ़ज़ल हुसैन शाह से किया। विदाई हो गई, एक साल तक वह महिला अपने पति के साथ रही और सहवास भी हुआ। फिर वह अपने पिता के घर आई। अमानुल्लाह और सैयद फ़ज़ल हुसैन के बीच कुछ अनबन हो गई। फ़ज़ल हुसैन अपनी ब्याहता पत्नी को ठाकुरद्वारा ले जाना चाहते थे, लेकिन अमानुल्लाह ने उसे ले जाने नहीं दिया, बल्कि तरह-तरह के विवाद हुए यहाँ तक कि बात कानूनी कार्रवाई तक पहुँच गई। अमानुल्लाह ने तलाक का झूठा दावा किया जिसे जज ने झूठ उजागर होने के कारण खारिज कर दिया। दूसरी बात, स्वायत्त कार्यवाही की अनुमति के लिए एक मामला दायर किया गया था, वह भी खारिज कर दिया गया। इसके बाद, सैयद फ़ज़ल हुसैन अपने घर पर थे। स्थानीय थाना प्रभारी से उनका कुछ विवाद था। थाना प्रभारी ने द्वेषवश उक्त सैयद को बरेली के पागलखाने भेज दिया। इसी बीच, अमानुल्लाह ने मौका पाकर उनके पागल होने के आधार पर मामला दायर किया और जज से दूसरे निकाह की अनुमति माँगी। हिंदू जज ने पागलपन के कारण को आधार बनाकर दूसरे निकाह की अनुमति दे दी। अनुमति मिलने के दस दिन बाद अमानुल्लाह ने दूसरा निकाह कर दिया, जिसे अब कई साल बीत चुके हैं। अब जब सैयद फ़ज़ल हुसैन रिहा हुए, तो वे न्याय मांगने आए और मामला दायर कर दिया। अतः धर्म के विद्वानों और शरीयत के मुफ़्तियों से इस मामले में पूछताछ की जा रही है कि पागलपन के आधार पर अमानुल्लाह की बेटी का दूसरा निकाह जायज़ हुआ या नहीं? यदि यह नाजायज़ था, तो क्या कई साल बीत जाने के कारण फ़ज़ल हुसैन का दावा समाप्त हो गया है? कृपया स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: पूछे गए मामले में, महिला (हिंदा) का यह दूसरा निकाह, जो उसने अपने पति के जीवित रहते हुए बिना तलाक के किसी अन्य व्यक्ति से कर लिया, सर्वसम्मति से पूरी तरह से नाजायज़ और खारिज है। जज की अनुमति शून्य और त्याज्य है। हमारे इमाम-ए-मज़हब सैयदना इमाम-ए-आज़म अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु), जिनके हम अनुयायी हैं, और उनके सबसे बड़े साथियों जैसे हज़रत इमाम अबू यूसुफ़ (रहमतुल्लाह अलैहि) के मज़हब के अनुसार, इस निरर्थक निकाह का अवैध होना

और महिला का अभी तक पहले पति के निकाह में बने रहना दोपहर के सूरज से भी ज़्यादा स्पष्ट है। हमारे इमाम के मज़हब में, पति के पागल होने के कारण पत्नी को अलगाव कराने का अधिकार कभी प्राप्त नहीं होता है। यही मज़हब के सबसे बड़े स्तंभ इमाम अबू यूसुफ़ का मत है और इसे कई कारणों से प्राथमिकता प्राप्त है। इसी को मज़हब के सभी मूल ग्रंथों जैसे कंज़, वाफ़ी, वक़ाया, नुक़ाया, मुख़्तार, इस्लाह, तनवीर, मुल्तका आदि में अपनाया गया है। इसी तर्क को हिदाया, काफ़ी, तबयीन, इख़्तियार, फ़त्हुल क़दीर आदि जैसी सभी विश्वसनीय टीकाओं में संदर्भित किया गया है। अधिकांश फतवे इसी पर सहमत हैं, और महान इमाम क़ाज़ी ख़ान ने अपने फतवों में...

ہوگا واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۵۶: مرسلہ مولوی رحیم بخش صاحب مدرس ساکن شیر کوٹ تاجر الموڑہ ۶ ربیع الاخر ۱۳۳۸ھ یہاں کوہ الموڑہ پر ایک شخص امان اللہ نے اپنی دختر کا نکاح سید فضل حسین شاہ باشندہ ٹھاکر دوارہ سے دیا ، رخصت ہو گئی ، سال بھر تک عورت اپنے شوہر کے پاس رہی اور ہم بستری ہوئی، پھر باپ کے یہاں آئی ، امان اللہ و سید فضل حسین میں کوئی رنجش پیدا ہوئی، فضل حسین اپنی منکوحہ کو ٹھاکر دوارہ لے جانا چاہا ، امان اللہ نے لے جانے نہ دیا بلکہ قسم قسم کے تنازع ہو گئے یہاں تک کہ نوبت نالش کی آئی ۔ امان اللہ نے جھوٹا طلاق کا دعویٰ کیا کہ بوجہ ظہور دروغ حاکم نے خارج کر دیا۔ ثانیاً مقدمہ اجازت فعل مختاری قائم کیا وہ بھی خارج ہوا، بعد ازاں سید فضل حسین اپنے مکان پر تھا، یہاں کے تھانہ دار سے کچھ مخاصمت تھی تھانہ دار نے عناداً سید مذکور کو بریلی کے پاگل خانے میں بھیج دیا، اس اثناء میاں امان اللہ موقع پاکر ببرناء پاگل ہونے کے مقدمہ دائر کرکے حاکم سے اجازت نکاح ثانی کی چاہی، حاکم ہندو نے وجہ پاگل ہونے کی قائم کرکے نکاح ثانی کی اجازت دے دی ، امان اللہ نے اجازت سے دس دن بعد نکاح ثانی کر دیا جسے اب کئی سال گزرے، جب سید فضل حسین رہائی یاب ہوا تو آ کر داد خواہ ہوا اور مقدمہ دائر کر دیا۔ لہذا علمائے دین و مفتیان شرع متین سے اس صورت میں استفسار مطلوب ہے کہ نکاح ثانی دختر امان اللہ کا بنائے مجنونیت پر جائز ہوا یا نہیں، اگر نا جائز ہو تو بوجہ مرور مدت چند سال فضل حسین کا دعویٰ ساقط ہوا یا نہیں؟ بینو اتو جروا۔

الجواب: صورتِ مستفسرہ میں ہندہ کا یہ نکاح ثانی کہ اس نے زندگی شوہر میں بے وقوع طلاق دوسرے شخص سے کر لیا بالاتفاق محض ناجائز مردود ہے اور حاکم کی اجازت باطل و مطرود ۔ ہمارے امام مذہب سیدنا امام اعظم ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے جن کے ہم پیرو ہیں اور ان کے اعظم اصحاب حضرت امام ابو یوسف رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ کے مذہب پر تو اس بیہودہ نکاح کے عدم جواز اور عورت کا اب تک بدستور زوجیت شوہر اول میں ہونا آفتابِ نیمروز سے زیادہ روشن کہ ہمارے امام کے مذہب میں جنون شوہر کے باعث عورت کو ہرگز کسی وقت تفریق کرانے کا اختیار حاصل نہیں ہوتا ، اور یہی مذہب اعظم ارکان مذہب امام ابو یوسف کا ہے اور اسی کو بوجوہِ کثیرہ ترجیح حاصل ، اسی کو تمام متون مذہب مثل کنز و وافی و وقایہ و نقایہ و مختار و اصلاح و تنویر و ملتقٰی وغیرہما میں اختیار فرمایا، اسی دلیل کو عامہ شروح معتمدہ مثل ہدایہ و کافی و تبیین و اختیار و فتح القدیر وغیرہ میں مرجع کیا، اسی پر اکثر فتاوی کا اطباق ہوا، اسی کو امام اجل قاضی خاں نے اپنے فتاوی میں

Fatawa Razawiyya, Volume 12

They prioritized it, and they gave precedence to the opinion which is predominant and reliable. Allama Ibrahim Halabi gave it precedence in 'Multaqi al-Abhur', and they prioritize what is supported. It was called our school of thought (Madhab) in 'Khaniyah' and then in 'Khazanat al-Muftin'. Imam Allama Fakhruddin al-Zayla'i in 'Sharh Kanz al-Daqaiq', and then Imam al-Muhaqqiq 'ala al-Itlaq Kamaluddin Muhammad bin al-Humam in 'Sharh al-Hidayah' supported and praised our school of thought with such great and majestic research that no room for argument remains. "Man sha'a fal-yusharrif bi-mutala'atihima" (Whoever wishes may be honored by studying them). In most books of our school, such a definitive decision was made that the opposing view wasn't even mentioned. Here I quote passages from a few books: It is mentioned in 'Wiqayah', 'Nuqayah', and 'Islah'—these three books:

Arabic: لايتخير احدهما بعيب الآخر 1.	**Neither of them has the choice to annul due to a defect in the other. (T)**

In 'Kanz' it is stated: | Arabic: 2 لم يتخير احدهما بعيب. | One cannot choose to annul because of the other's defect. (T) | | :--- | :--- |

In 'Multaqi al-Abhur' and its commentary 'Majma' al-Anhur', it says: | Arabic: لاخيار لها 3 ان وجدت(المرأة)به(اى بالزوج)جنوبا الخ. | The wife will not have the option if she finds her husband to be insane, etc. (T) | | :--- | :--- |

In 'Al-Ikhtiyar Sharh al-Mukhtar', it says: | Arabic: الحاصل اذا كان بأحد الزوجين عيب فلا خيار للأخر الا فى الجب والعنة والخصى 4. | In short, if there is a defect in either of the spouses, the other will not have the option unless the husband is 'majboob' (organ amputated), impotent, or castrated; then the woman will have the option. (T) | | :--- | :--- |

It is mentioned in 'Khazanat al-Muftin' and 'Fatawa Imam Qazi Khan': ...

Footnotes: 1. Mukhtasar al-Wiqayah fi Masail al-Hidayah, Kitab al-Talaq, Nur Muhammad Karkhana Tijarat Kutub, Karachi, pp. 70-71. 2. Kanz al-Daqaiq, Bab al-'Unayn, H.M. Saeed Company, Karachi, p. 127. 3. Majma' al-Anhur Sharh Multaqi al-Abhur, Bab al-'Unayn, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/464. 4. Al-Ikhtiyar li-Ta'lil al-Mukhtar, Fasl fi al-Uyub al-lati yathbut bihi al-Khiyar etc., Dar Faras lil-Nashr wa al-Tawzi', 3/115.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

वे इसे प्राथमिकता देते हैं और उसी मत को प्रधानता देते हैं जो प्रबल और विश्वसनीय हो। अल्लामा इब्राहिम हलबी ने 'मुल्तक़ी अल-अबहुर' में इसे प्राथमिकता दी है और वे उसी को प्रधानता देते हैं जो समर्थित हो। 'खानिया' और फिर 'ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन' में इसे हमारा मज़हब (विचारधारा) कहा गया। इमाम अल्लामा फख़रुद्दीन ज़ैलाई ने 'शरह कंज़ुद दक़ाइक़' में, फिर इमाम मोहक़्क़िक़ अला अल-इतलाक़ कमालुद्दीन मुहम्मद बिन हुमाम ने 'शरह हिदाया' में इस महान और गौरवशाली शोध के साथ हमारे इस मज़हब का समर्थन और प्रशंसा की और विपरीत मत को इतना कमज़ोर साबित किया कि बहस की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी। "मन शा-अ फल-युशर्रिफ़ बि-मुताल-अतिहिमा" (जो चाहे उनके अध्ययन से सम्मानित हो सकता है)। मज़हब की अधिकांश पुस्तकों में इस पर ऐसा निर्णायक निर्णय दिया गया है कि विपरीत मत का नाम तक नहीं लिया गया। यहाँ मैं कुछ पुस्तकों के उद्धरण दे रहा हूँ: 'विक़ाया', 'नुक़ाया' और 'इसलाह' इन तीनों किताबों में है:

अरबी: لایتخیر احدھما بعیب الآخر 1।	**दोनों में से किसी के दोष की वजह से दूसरे को निकाह रद्द करने का अधिकार नहीं है। (त)**

'कंज़' में है: | अरबी: لم یتخیر احدھما بعیب 2।। | एक के दोष की वजह से दूसरा रद्द करने का अधिकार नहीं रख सकता। (त) | | :--- | :--- |

'मुल्तक़ी अल-अबहुर' और उसकी व्याख्या 'मज्मअ अल-अन्हुर' में है: | अरबी: لاخیار لھا ان وجدت(المرأة)به(ای بالزوج)جنوبا الخ 3। | पत्नी को अधिकार नहीं होगा अगर वह पति में पागलपन पाए आदि। (त) | | :--- | :--- |

'अल्-इख़्तियार शरह मुख्तार' में है: | अरबी: الحاصل اذا کان بأحد الزوجین عیب فلا خیار للأخر الا فی الجب والعنة والخصی 4।। | सारांश यह है कि यदि दंपत्ति में से किसी एक में कोई दोष हो, तो दूसरे के पास कोई विकल्प नहीं होगा, सिवाय इसके कि यदि पति का लिंग कटा हुआ हो (मजबूब), वह नपुंसक हो, या बधिया (ख़सी) हो, तो स्त्री के पास विकल्प होगा। (त) | | :--- | :--- |

'ख़ज़ानतुल मुफ़्तीन' और 'फ़तावा इमाम क़ाज़ी' में है: ...

पाद-टिप्पणियाँ (Footnotes): 1. मुख्तसर अल-विक़ाया फ़ी मसाइल अल-हिदाया, किताब अल-तलाक़, नूर मुहम्मद कारखाना तिज़ारत कुतुब, कराची, पृ. 70-71। 2. कंज़ुद दक़ाइक़, बाब

अल-'उनैन, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, पृ. 127। 3. मज्मअ अल-अन्हुर शरह मुल्तक़ी अल-अबहुर, बाब अल-'उनैन, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 1/464। 4. अल-इख़्तियार लि-ता'लील अल-मुख्तार, फ़स्ल फ़िल-उयूब अल्लती यथबुत बिहिल खियार आदि, दार फ़रास लिन-नश्र वत-तौज़ी, 3/115।

مقدم رکھا اور وہ اسی قول کو مقدم رکھتے ہیں جو راجح و معتمد ہو، اسی کو علامہ ابراہیم حلبی نے ملتقی الابحر میں تقدیم دی اور وہ اسی کو تقدیم دیتے ہیں جو مؤید ہو ، اسی کو خانیہ پھر خزانتہ المفتین میں ہمارا مذہب کہا امام علامہ فخرالدین زیلعی نے شرح کنز الدقائق پھر امام محقق علی الاطلاق کمال الدین محمد بن الہمام نے شرح ہدایہ میں اس عظیم و جلیل تحقیق کے ساتھ ہمارے اس مذہب کی تائید و توصیف اور قول خلاف کی تضعیف و تزییف فرمائی کہ اصلاً گنجائش کلام باقی نہ رکھی من شاء فلیشرف بمطالعتھما (جو چاہے ان کے مطالعہ سے مشرف ہو۔ ت) اور اکثر کتب مذہب میں تو اس پر ایسا جزم قطعی فرمایا کہ قول خلاف کا نام تک نہ لیا، میں یہاں صرف چند کتابوں کی عبارتیں نقل کرتا ہوں، وقایہ و نقایہ و اصلاح تینوں کتابوں میں ہے :

لایتخیر احدھما بعیب دونوں میں سے کسی کے عیب کی وجہ سے دوسرے کو فسخ کا اختیار نہیں ہے۔ (ت) الآخر 1۔

کنز میں ہے : | لم یتخیر احدھما بعیب 2۔ | ایک کے عیب کی وجہ سے دوسرا فسخ کو اختیار نہیں کر سکتا۔ (ت) | | :--- | :--- |

ملتقی الابحر اور اس کی شرح مجمع الانہر میں ہے : | لاخیار لھا ان وجدت(المرأۃ)بہ(ای بالزوج)جنوبا الخ 3۔ | بیوی کو اختیار نہ ہوگا اگر وہ خاوند میں جنون پائے الخ (ت) | | :--- | :---: |

اختیار شرح مختار میں ہے : | الحاصل اذا کان بأحد الزوجین عیب فلا خیار للأخر الا فی الجب والعنۃ والخصی 4۔ | الحاصل اگر زوجین میں سے کسی میں عیب ہو تو دوسرے کے پاس اختیار نہ

ہوگا مگر جب شوہر مقطوع الذکر یا نامرد یا خصی ہو تو عورت کا اختیار ہوگا۔ (ت) | | :---: | ---: |

خزانتہ المفتین و فتاوی امام قاضی میں ہے : ...

حواشی: 1 مختصر الوقایہ فی مسائل الھدایۃ کتاب الطلاق نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ص ۷۰۔۷۱ 2 کنز الدقائق باب العنین ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۱۲۷ 3 مجمع الانھر شرح ملتقی الابحر باب العنین دار احیاء التراث العربی بیروت ۱/ ۴۶۴ 4 الاختیار لتعلیل المختار فصل فی العیوب التي یثبت به الخیار الخ دار فراس للنشر والتوزیع ۳/۱۱۵

صفحہ 489 از 688

Fatawa Razawiya, Volume 12

| Arabic: The right of annulment due to a defect is not established in marriage according to us. Therefore, a woman is not returned due to any defect, and if a woman finds her husband to be insane, leper, or having vitiligo, she does not have the right to separation. Summary. | Urdu: According to us, the right to annul a marriage due to a defect will not be established. Therefore, a wife cannot be rejected due to any defect, and if a woman finds the husband afflicted with insanity, leprosy, or vitiligo, she will not have the right to separation. Summary. (T) |

In Tanwir al-Absar and its commentary Dur al-Mukhtar, it is stated:

| Arabic: Neither of the spouses has a choice due to the defect of the other, even if it is heinous like insanity, etc. | Urdu: Neither the husband nor the wife has the choice to annul if the other has a defect, even if it is severe, such as insanity, etc. (T) |

From this brief explanation of this humble servant, it has become clear for many reasons why our school of thought holds precedence:

Firstly: The fact itself that it is the Imam's (Abu Hanifa's) school of thought, and the Imam's school is the leader of all schools, from which deviating is never permissible.

| Arabic: Except for necessity, weakness of evidence, or public practice being contrary to it, as they have explicitly stated, and we have clarified this in our fatwas. | Urdu: Except due to weakness of evidence or being against public practice, as the jurists have explicitly stated, and we have explained this in our fatwas. (T) |

Secondly: This is the opinion of Imam Abu Yusuf, the greatest pillar of the school. Scholars state that after the instructions of Imam al-Azam, the opinion of Imam Abu Yusuf is preferred and prioritized. In Dur al-Mukhtar, it says:

| Arabic: The judge, like the Mufti, takes the opinion of Abu Hanifa unconditionally, then the opinion of Abu Yusuf, then the opinion of Muhammad, etc. | Urdu: The judge, like the Mufti, will absolutely adopt the opinion of Imam Abu Hanifa (may Allah the Almighty have mercy on him), then the opinion of Imam Abu Yusuf, then the opinion of Imam Muhammad, etc. (T) |

Thirdly: Upon this is the consensus of the foundational texts (mutun), whose grandeur no book can match, as they have unanimously specified and we have verified it in the Book of Marriage in our fatwas (as all jurists have explicitly stated this, and we have researched it in the Book of Marriage of our fatwas. T).

1 Qazi Khan, Chapter on Options related to Marriage, Nawal Kishore Lucknow 1/187 2 Dur al-Mukhtar, Chapter on the Impotent, Matba Mujtabai Delhi 1/252 3 Dur al-Mukhtar, Commentary on Tanwir al-Absar, Book of Judicature, Matba Mujtabai Delhi 2/2

फतावा रज़विया, जिल्द 12

| अरबी: हमारे निकट दोष के कारण निकाह के निरस्तीकरण (फस्ख) का अधिकार स्थापित नहीं होता है। अतः स्त्री को किसी भी दोष के कारण वापस नहीं किया जाता, और यदि स्त्री अपने पति को पागल, कोढ़ी या सफ़ेद दाग वाला पाए, तो उसे अलगाव का अधिकार नहीं है। सारांश। | उर्दू: हमारे नज़दीक ऐब (दोष) की वजह से निकाह के फस्ख का हक़ नहीं होगा, लिहाज़ा बीवी किसी ऐब की वजह से रद्द नहीं की जा सकेगी, और औरत अगर खाविन्द (पति) में जुनून (पागलपन), जुज़ाम (कोढ़) या बरसों (सफ़ेद दाग) का मर्ज़ पाए तो उसको जुदाई का हक़ न होगा। खुलासा। (त) |

तनवीर अल-अबसार और उसकी शरह (व्याख्या) दुर्रे मुख्तार में है:

| अरबी: दोनों में से किसी भी जीवनसाथी को दूसरे के दोष के कारण विकल्प नहीं है, चाहे वह घिनौना ही क्यों न हो जैसे पागलपन आदि। | उर्दू: खाविन्द और बीवी में से किसी के ऐब अगरचे फोहश (घिनौने) हों, पर दूसरे को इख्तियार-ए-फस्ख (निरस्तीकरण का विकल्प) नहीं, मिसाल के तौर पर जुनून (पागलपन) आदि। (त) |

फ़कीर (लेखक) के इस संक्षिप्त बयान से साफ़ हो गया कि हमारा यह मज़हब (विचारधारा) कितनी वजहों से श्रेष्ठता रखता है:

पहला: खुद यही कि वह इमाम का मज़हब है और इमाम का मज़हब, तमाम मज़हबों का सरदार है जिससे हटना हरगिज़ जायज़ नहीं।

| अरबी: सिवाय ज़रूरत के, दलील की कमज़ोरी के, या उसके खिलाफ़ लोक-व्यवहार के, जैसा कि उन्होंने स्पष्ट किया है और हमने अपने फ़तवों में इसे स्पष्ट कर दिया है। | उर्दू: मगर दलील की कमज़ोरी या लोक-व्यवहार के खिलाफ़ होने पर, जैसा कि फुक़हा (कानूनविदों) ने इस पर स्पष्टीकरण दिया है जिसकी व्याख्या हमने अपने फ़तवों में की है। (त) |

दूसरा: यही इमाम अबू यूसुफ़ का कौल (कथन) है जो मज़हब के महान स्तंभ हैं, उलेमा साफ़ फरमाते हैं कि इमाम-ए-आज़म के इरशाद (निर्देश) के बाद इमाम अबू यूसुफ़ का कौल श्रेष्ठ और प्राथमिकता वाला है। दुर्रे मुख्तार में है:

| अरबी: क़ाज़ी, मुफ्ती की तरह, बिना किसी शर्त के इमाम अबू हनीफा के कौल को अपनाता है, फिर इमाम अबू यूसुफ के कौल को, फिर इमाम मुहम्मद के कौल को आदि। | उर्दू: क़ाज़ी भी मुफ्ती

की तरह मुतलकन (पूर्णत) इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैह के कौल को अपनाएगा, फिर इमाम अबू यूसुफ़, फिर इमाम मुहम्मद के कौल को आदि। (त) |

तीसरा: इस पर उन मतून (मूल ग्रंथों) की सर्वसम्मति (इज्मा) है जिनकी महानता तक कोई किताब नहीं पहुँच सकती, जैसा कि उन्होंने सर्वसम्मति से स्पष्ट किया है और हमने अपने फ़तवों की 'किताबुन निकाह' में इसकी पुष्टि की है (जैसा कि तमाम फ़ुक़हा ने इस पर स्पष्ट रूप से लिखा है और हमने इसकी शोध अपने फ़तवों की किताबुन निकाह में की है। त)।

---

1 क़ाज़ी ख़ान, फ़स्ल अल-खियारात जो निकाह से संबंधित हैं, नवल किशोर लखनऊ 1/187 2 दुर्रे मुख्तार, बाब अल-इन्नीन, मतबा मुजतबाई दिल्ली 1/252 3 दुर्रे मुख्तार, शरह तनवीर अल-अबसार, किताबुल क़ज़ा, मतबा मुजतबाई दिल्ली 2/2

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

| حق الفسخ بسبب العیب عندنا لایثبت فی النکاح فلاترد المرأة بعیب ما وان وجدت المرأة زوجہا جنوباً وجذاماً وبرصاً لیس لہا حق الفرقۃ، ملخصاً | ہمارے نزدیک عیب کی وجہ سے نکاح کے فسخ کا حق نہ ہوگا، لہذا بیوی کسی عیب کی وجہ سے رد نہیں کی جاسکے گا، اور عورت اگر خاوند میں جنون، جذام یا برص کا مرض پائے تو اس کو جدائی کا حق نہ ہوگا، ملخصاً۔ (ت) |

تنویر الابصار اور اس کی شرح در مختار میں ہے:

| لایتخیر احد الزوجین بعیب الآخر ولو فاحشا کجنون الخ۔ | خاوند اور بیوی سے کسی کے عیب اگر چہ فحش ہو، پر دوسرے کو اختیار فسخ نہیں مثلاً جنون الخ (ت) |

فقیر کی اس اجمالی تقریر سے واضح ہو گیا کہ ہمارا یہ مذہب کتنی وجوہ کثیر سے ترجیح رکھتا ہے :

اولاً خود یہی کہ وہ مذہب امام ہے اور مذہب امام ، امام مذاہب جس سے عدول ہرگز جائز نہیں۔

| الا لضرورۃ ضعف دلیلہ او تعامل بخلافہ کما نصوا علیہ وقد اوضحناہ في فتاونا۔ | مگر ضعف دلیل یا تعامل کے خلاف ہونے پر ، جیسا کہ فقہا نے اس پر تصریح کی ہے جس کی وضاحت ہم نے اپنے فتاوی میں کی ہے۔ (ت) |

ثانیاً یہی امام ابو یوسف اعظم ارکان مذہب کا قول ہے، علماء تصریح فرماتے ہیں کہ بعد ارشاد امام اعظم قول امام ابو یوسف مرجح و مقدم ہے۔ در مختار میں ہے :

| يأخذ القاضي كالمفتي بقول ابي حنيفة على الاطلاق ثم بقول ابي يوسف ثم بقول محمد الخ | قاضی بھی مفتی کی طرح مطلقاً امام ابو حنیفہ رحمہ اللہ تعالیٰ کے قول کو اپنائے گا، پھر امام ابو یوسف پھر امام محمد کے قول کو الخ۔ (ت) |

ثالثاً اس پر اجماع متون جن کی جلالت شان کو کوئی کتاب نہیں پہنچ سکتی کما نصوا علیه قاطبة وحققناه في كتاب النكاح من فتاونا (جیسا کہ تمام فقہاء نے اس پر تصریح کی ہے اور ہم نے اس کی تحقیق اپنے فتاوی کی کتاب النکاح میں کی ہے۔ ت)

---

1 قاضی خاں فصل الخیارات التي تتعلق بالنکاح نولکشور لکھنؤ ۱/۱۸۷ 2 در مختار باب العنین مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۵۲ 3 در مختار شرح تنویر الابصار کتاب القضاء مطبع مجتبائی دہلی ۲/۲

Fourthly: Zafar Sharh-e-Wahban, as per the clarification of scholars, takes precedence over Fatawa, and it will be quoted soon from Al-Ghamz. (Al-Ghamz will be quoted shortly. T) Fifthly: The abundance of those who are certain and rely upon it. It is mentioned in Imdad al-Fattah, Radd al-Muhtar, and Uqud al-Durriya: "The rule is that action should be upon what the majority is upon." Sixthly: The grandeur and greatness of those who consider it preferable and chosen, among whom are eminent leading imams like Burhan al-Din, author of al-Hidaya, Imam Qadi Khan, and Imam al-Muhaqqiq 'ala al-Itlaq, etc. Scholars state that the preference of Imam Qadi Khan takes precedence over the preferences of others, and they say one should not deviate from it because he is 'Faqih al-Nafs' (deeply grounded in jurisprudence), as mentioned in Radd al-Muhtar etc. (As in Radd al-Muhtar etc. T) Seventhly: The strength of the evidence which, after observing Tabyin al-Haqa'iq and Fath al-Qadir, becomes as clear as the sun.

[Table Content] Arabic Text: I say: All praise be to Allah, it is established that the citations of Al-Hawi al-Qudsi saying "Here we take the statement of Muhammad," as narrated from him in Al-Hindiyya, is just like his saying about an anomalous (shadh) narration from Abu Yusuf, which contradicts the relied-upon school of thought agreed upon across texts, commentaries, and fatwas—namely, that supererogatory prayer (nafl) is not disliked on Friday at the time of zenith (istiwa') because the Hellfire is not stoked on that day—that "the fatwa is based upon it." As cited in Al-Ashbah from Al-Hilya from Al-Hawi. I say: What is meant by Al-Hawi here is Al-Hawi al-Qudsi, for I have seen this clarification in Al-Hilya. Allama Sayyid al-Hamawi stated in Ghamz al-'Uyun that merely Al-Hawi claiming "the fatwa is upon it" does not necessarily mean that it is the authenticated (musahhah) position.

Urdu Text: I say: (I say) Praise be to Allah, it is established that Al-Hawi al-Qudsi saying here that we take the statement of Imam Muhammad, as narrated from them in Al-Hindiyya, then it is just as they said regarding an anomalous narration from Imam Abu Yusuf which is contrary to the relied-upon school of thought and all texts, commentaries, and fatwas—that on Friday at the time of the sun's zenith, it is not disliked to offer supererogatory prayer because on that day the fire does not flame up—saying "the fatwa is upon it," just as they narrated it in Al-Ashbah from Al-Hilya from Al-Hawi. I say: (I say) here by Al-Hawi, this Al-Hawi al-Qudsi is meant because I have seen its clarification in Al-Hilya; Allama Sayyid Hamawi stated in Ghamz al-Uyun

that merely the claim of Al-Hawi that "the fatwa is upon it" does not necessitate that it is authenticated.

[Footnote] 1 Al-Uqud al-Durriyya fi Tanqih al-Fatawa al-Hamidiyya, Miscellaneous issues and benefits from prohibition and permissibility, Haji Abdul Ghaffar and Sons, Kandahar Afghanistan 2/256

फ़तावा रज़विया खंड बारह

चौथा: विद्वानों के स्पष्टीकरण के अनुसार ज़फ़र शरह-ए-वहबान को फ़तावा पर वरीयता प्राप्त है, और जल्द ही अल-ग़म्ज़ से इसे उद्धृत किया जाएगा। (ग़म्ज़ से जल्द ही उद्धृत किया जाएगा। त) पांचवां: इस पर दृढ़ विश्वास और भरोसा करने वालों की बहुतायत। इमदाद अल-फ़त्ताह, रद अल-मुहतार और उक़ूद अद-दुर्रिया में उल्लेख है: "नियम यह है कि बहुमत जिस पर है, उसी पर अमल किया जाना चाहिए।" छठा: इसे बेहतर और पसंद करने वालों की महानता और भव्यता, जिनमें बुरहान अल-दीन (हिदाया के लेखक), इमाम क़ाज़ी ख़ान और इमाम अल-मुहक़्क़िक़ आला अल-इतलाक़ जैसे प्रमुख इमाम शामिल हैं। विद्वान कहते हैं कि इमाम क़ाज़ी ख़ान की वरीयता दूसरों की वरीयता पर हावी है, और वे कहते हैं कि इससे विचलित नहीं होना चाहिए क्योंकि वे 'फ़क़ीह अल-नफ़्स' (गहन विधिवेत्ता) हैं, जैसा कि रद अल-मुहतार आदि में है। (जैसा कि रद अल-मुहतार आदि में है। त) सातवां: साक्ष्य की शक्ति जो तब्यीन अल-हक़ाएक़ और फ़तह अल-क़दीर को देखने के बाद सूरज की तरह स्पष्ट हो जाती है।

[तालिका सामग्री] अरबी पाठ: मैं कहता हूँ: अल्लाह की प्रशंसा हो, यह सिद्ध हो गया कि अल-हावी अल-क़ुदसी के हवाले "यहाँ हम मुहम्मद के कथन को अपनाते हैं," जैसा कि अल-हिंदिया में उनसे उद्धृत है, वैसा ही है जैसा उन्होंने अबू यूसुफ से एक असामान्य (शाज़) रिवायत के बारे में कहा था, जो विश्वसनीय मत और सभी ग्रंथों, व्याख्याओं और फ़तवों के विरुद्ध है - यानी शुक्रवार को दोपहर (इस्तिवा) के समय नफ़्ल पढ़ना मकरूह नहीं है क्योंकि उस दिन आग नहीं भड़कती - कि "फ़तवा इसी पर है।" जैसा कि अल-अशबाह में अल-हिल्या से अल-हावी के हवाले से उद्धृत है। मैं कहता हूँ: यहाँ अल-हावी से तात्पर्य अल-हावी अल-क़ुदसी ही है, क्योंकि मैंने अल-हिल्या में इसकी स्पष्टता देखी है। अल्लामा सैय्यद अल-हमवी ने ग़म्ज़ अल-'उयून में फ़रमाया कि अल-हावी का केवल यह दावा करना कि "फ़तवा इसी पर है", यह अनिवार्य नहीं करता कि यही प्रमाणित (मुसहहह) पक्ष है।

उर्दू पाठ: अक़ूल: (मैं कहता हूँ) अलहम्दुलिल्लाह यह साबित हो गया कि हावी कुदसी का यहाँ कहना कि इमाम मुहम्मद के क़ौल को हम लेंगे, जैसा कि हिन्दिया में उनसे मन्क़ूल है, तो यह ऐसे है जैसे उन्होंने इमाम अबू यूसुफ से एक शाज़ रिवायत जो कि मोतमद मज़हब और तमाम मुतून व शुरूह व फ़तावा के खिलाफ है कि जुमा के रोज़ इस्तेवा-ए-शम्स के वक़्त नफ़्ल पढ़ना मकरूह नहीं क्योंकि उस दिन आग शोलाज़न नहीं होती, के मुतअल्लिक़ अलैहिल फ़तवा (उस पर फ़तवा है) कह दिया, जैसा कि उसको अशबाह में हिलिया से उन्होंने हावी से नक़्ल किया है। कुलतु (मैं कहता हूँ) वहाँ हावी

से यही हावी कुदसी मुराद है क्योंकि मैंने इसकी तसरीह हिलिया में देखी है, अल्लामा सैय्यद हमवी ने ग़म्ज़ुल उयून में फ़रमाया कि हावी का सिर्फ़ यह दावा करना कि "उस पर फ़तवा है" से लाज़िम नहीं आता कि यह तसहीह शुदा है।

[पाद लेख] 1 अल-उक़ूद अद-दुर्रिया फ़ी तनक़ीह अल-फ़तावा अल-हामिदिया, हज़्र और इबाहात के विभिन्न मसले और फ़ायदे, हाजी अब्दुल ग़फ़्फ़ार और संस, कंधार अफगानिस्तान 2/256

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

رابعاً : ظافر شرح و ہکبہ بتصریح علماء فتاوٰی پر مقدم ہیں و سیاتی عن الغمز (غمز سے عنقریب منقول ہو گا۔ ت) خامساً : اس پر جزم و اعتماد کرنے والوں کی کثرت۔ امداد الفتاح و رد المحتار و عقود الدریہ میں ہے : القاعدة ان العمل بما علیه الاکثر (قاعدہ یہ ہے کہ اکثریت کے قول پر عمل ہو گا۔ ت) سادساً : اس کو مرجح و مختار رکھنے والوں کی جلالت و عظمت جن میں مثل برہان الدین صاحب ہدایتہ و امام قاضی خاں و امام محقق علی الاطلاق و غیرہم اجلّہ ائمہ اعلام ہیں، علماء فرماتے ہیں امام قاضی خان کی ترجیح اوروں کی ترجیح پر مقدم ہے اور فرماتے ہیں اُس سے عدول نہ کیا جائے کہ وہ فقیہ النفس ہیں کمافی ردالمختار و غیرہ (جیسا کہ ردالمختار وغیرہ میں ہے۔ ت) سابعاً : قوتِ دلیل کہ بعد ملاحظہ تبیین الحقائق و فتح القدیر آفتاب کی طرح واضح ہو جاتی ہے۔

[جدول کا متن] عربی متن: اقول: فثبت بحمد الله نقول الحاوی القدسی بقول محمد هنا به ناخذ کما نقله عنه في الهندیة انما هو کقوله ایضاً الروایة شاذة عن ابی یوسف مخالفة للمذهب المعتمد المجمع علیه بین المتون والشروح والفتاوی وهي عدم کراهیة النفل یوم الجمعة عند الاستواء لان النار لاتسعر فیه ان علیه الفتوی کما نقله فی الاشباه عن الحلیة عن الحاوی قلت والمراد هو هذا اعنی حاوی القدسی فقد رأیت التصریح به في الحلیة قال العلامة السید الحموی فی غمز العیون مجردد عوی الحاوی ان الفتوی علیه لا یقتضی انه المصحح

اردو متن: اقول : (میں کہتا ہوں) الحمد للہ یہ ثابت ہو گیا کہ حاوی قدسی کا یہاں کہنا کہ امام محمد کے قول کو ہم لیں گے، جیسا کہ ہندیہ میں ان سے منقول ہے، تو یہ ایسے ہے جیسے انہوں نے امام ابو یوسف سے ایک شاذ روایت جو کہ معتمد مذہب اور تمام متون و شروح و فتاوٰی کے خلاف ہے

کہ جمعہ کے روز استواء شمس کے وقت نفل پڑھنا مکروہ نہیں کیونکہ اس دن آگ شعلہ زن نہیں ہوتی، کے متعلق علیہ الفتویٰ (اس پر فتویٰ ہے) کہہ دیا، جیسا کہ اس کو اشباہ میں حلیہ سے انہوں نے حاوی سے نقل کیا ہے قلت (میں کہتا ہوں) وہاں حاوی سے یہی حاوی قدسی مراد ہے کیونکہ میں نے اس کی تصریح حلیہ میں دیکھی ہے، علامہ سید حموی نے غمز العیون میں فرمایا کہ حاوی کا صرف یہ دعویٰ کرنا کہ " اس پر فتویٰ ہے " سے لازم نہیں آتا کہ یہ تصحیح شدہ

[فٹ نوٹ] 1 العقود الدرية في تنقيح الفتاوى الحامدية مسائل و فوائد شتى من الحظر و الاباحة حاجی عبدالغفار و پسران قندهار افغانستان ۲۵۶/۲

Fatawa Razawiyyah, Volume 12

[Table 1] (Arabic): The reliable position in the school of thought, how can it be when all the authors of basic texts (Matun) and commentaries (Shuruh) follow the statement of the two sides (Imam Abu Hanifa and Imam Abu Yusuf, may Allah be pleased with them)? And the authors of the Matun have explicitly committed to the correction that what is in the Matun and Shuruh takes precedence over what is in the Fatawa. [Al-Ghamz 1] (Urdu): How can it be that this is the relied-upon position when all authors of Matun and Shuruh adhere to the saying of the two parties (Imam Abu Hanifa and Imam Abu Yusuf), and there is an obligatory clarification from the authors of Matun that the statement of Matun and Shuruh takes precedence over the statement of Fatawa. (T)

Anyway, so far the discussion was based on our original school of thought, but I must state here that the aforementioned marriage has absolutely no connection even with the "contrary report" (riwayat-e-khilaf); rather, it occurred as purely invalid by the consensus of all our Imams. Although I can prove this with numerous arguments, suffice it here to focus on a few clear points. The "contrary report" definitely does not rule that in the case of a husband's insanity, the judge should immediately grant permission for a second marriage. Instead, when insanity occurs, it is mandatory to give the man a full year's respite from the day of the hearing. If he recovers within that time, separation is never permissible. And if he does not recover, until the woman files a claim again, the judge must never pass a ruling; they will remain husband and wife as before. Yes, if the woman comes again requesting separation, the judge should give her the choice: if she wishes, she may choose herself (separation) or her husband. If she chose her husband, or left without saying anything, or stood up, or the judge's guards removed her, or the judge immediately stood up and left, then she no longer has the choice; she remains his wife forever and can never claim separation. And if in that same session she chose herself, then the judge should grant the separation. This separation will be counted as an irrevocable divorce (Talaq-e-Ba'in). After this, the woman, having completed her waiting period (Iddah), may marry whomever she wishes. And it is necessary for the woman to present the request before the judge of Egypt or Medina; he will grant a period of one year. Besides this, the postponement by anyone else in the world is not reliable. It is stated in Fatawa 'Alamgiri:

[Table 2] (Arabic): Imam Muhammad said: If insanity is recent, he is given a year's respite like impotence (al-'ana), then the woman is given a choice after the year if he

is not cured. [Fatawa Hindiyyah 2] (Urdu): Imam Muhammad (may Allah Ta'ala have mercy on him) said: If a new bout of insanity afflicts the husband, he shall be given a year's respite like impotence. Then, after a year, the wife shall be given the option of annulment, provided he has not recovered. (T)

---

1. Ghamz 'Uyun al-Basa'ir Sharh al-Ashbah wa al-Naza'ir, al-Qawl Fi Ahkam al-Jumu'ah, Idarat al-Qur'an Karachi, 3/238.
2. Fatawa Hindiyyah, Al-Bab al-Thani fi al-'Anin, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/526.

फ़तावा रज़विया, खंड 12

[टेबल 1] (अरबी): पंथ में विश्वसनीय क्या है और कैसे, जबकि ग्रंथों (मतून) और टीकाओं (शुरू) के सभी लेखक दोनों पक्षों (इमाम अबू हनीफा और इमाम अबू यूसुफ, अल्लाह उन दोनों से प्रसन्न हो) के कथन पर कायम हैं? और मतून के लेखकों की ओर से यह अनिवार्य स्पष्टीकरण मौजूद है कि मतून और शुरू का बयान फ़तावा के बयान पर भारी है। [अल-ग़मज़ 1] (उर्दू): यह कैसे हो सकता है कि यह विश्वसनीय पंथ हो जबकि सभी मतून और शुरू के लेखक दोनों पक्षों (طرفین) के कथन पर कायम हैं, और मतून के लेखकों की ओर से यह अनिवार्य स्पष्टीकरण मौजूद है कि मतून और शुरू का बयान फ़तवे के बयान पर प्राथमिकता रखता है। (त)

खैर, यहाँ तक तो हमारे मूल पंथ के आधार पर चर्चा थी, लेकिन मुझे यहाँ यह बताना है कि उक्त निकाह का 'विपरीत रिवायत' (रिवायत-ए-खिलाफ) से भी कोई संबंध नहीं है, बल्कि वह हमारे सभी इमामों की सर्वसम्मति से पूरी तरह से नाजायज हुआ है। हालाँकि मैं इसे कई दलीलों से साबित कर सकता हूँ, लेकिन यहाँ केवल कुछ स्पष्ट बातों पर ध्यान देना ही काफी है। 'विपरीत रिवायत' का यह आदेश हरगिज नहीं है कि पति के पागलपन की स्थिति में न्यायाधीश (हाकिम) तुरंत दूसरे निकाह की अनुमति दे दे। बल्कि जब पागलपन पैदा हो, तो आवश्यक है कि सुनवाई के दिन से पुरुष को पूरे एक साल की मोहलत दी जाए। यदि वह इस बीच ठीक हो गया, तो अब अलगाव (तफरीक़) हरगिज़ जायज़ नहीं है। और यदि वह ठीक नहीं हुआ, तो जब तक महिला फिर से दावा न करे, हाकिम हरगिज़ फैसला न दे; वे पहले की तरह पति-पत्नी रहेंगे। हाँ, यदि अब महिला फिर से अलगाव का अनुरोध लेकर आए, तो काज़ी उसे विकल्प दे कि चाहे तो अपने आप को (अलगाव) चुन ले या पति को। यदि उसने पति को चुना, या बिना कुछ कहे चली गई, या खड़ी हो गई, या काज़ी के सिपाहियों ने उसे हटा दिया, या काज़ी तुरंत उठकर खड़ा हो गया, तो अब उसे कोई विकल्प नहीं रहा; वह हमेशा के लिए उसकी पत्नी है और कभी अलगाव का दावा नहीं कर सकती। और यदि उसी बैठक (मजलिस) में उसने स्वयं को चुन लिया, तो अब काज़ी अलगाव कर दे। यह अलगाव 'तलाक़-ए-बाइन' (अपरिवर्तनीय तलाक) माना जाएगा। इसके बाद महिला अपनी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) पूरी करके जिससे चाहे निकाह कर ले। और यह आवश्यक है कि महिला मिस्र या मदीना के काज़ी के समक्ष आवेदन प्रस्तुत करे; वह एक साल का समय देगा। इसके अलावा दुनिया में किसी और की मोहलत विश्वसनीय नहीं है। फ़तावा आलमगीरी में है:

[टेबल 2] (अरबी): इमाम मुहम्मद ने कहा: यदि पागलपन नया है, तो उसे नपुंसकता की तरह एक वर्ष की मोहलत दी जाएगी, फिर वर्ष के बाद महिला को विकल्प दिया जाएगा यदि वह ठीक नहीं होता है। [फ़तावा हिन्दिया 2] (उर्दू): इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैहि) ने फरमाया: यदि पति को नया पागलपन हुआ है, तो उसे नपुंसकता (نامردی) की तरह एक साल की मोहलत दी जाएगी, फिर साल के बाद पत्नी को निकाह रद्द (फ़स्ख़) करने का विकल्प दिया जाएगा, बशर्ते कि वह स्वस्थ न हुआ हो। (त)

---

1. ग़मज़ उयून अल-बसायर शरह अल-अशबाह वा अल-नज़ायर, अल-क़ौल फ़ी अहकाम अल-जुमुआ, इदारात अल-क़ुरआन कराची, 3/238।
2. फ़तावा हिन्दिया, अल-बाब अल-थानी फ़ी अल-अनीन, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/526।

[پہلا خانہ] (عربی): المعتمد فی المذھب کیف واصحاب المتون قاطبۃ والشروح ماشون علی قولھما (یعنی الطرفین رضي الله عنهما) ومشی اصحاب المتون تصحیح التزامی علی ان مافی المتون والشروح مقدم علی مافی الفتاوٰی ۱ھ (اردو): ہو اور مذہب معتمد علیہ ہو یہ کیونکر ہو سکتا جبکہ تمام اصحاب متون و شروح، طرفین کے قول پر قائم ہیں، اور اصحاب متون کی طرف سے یہ التزامی تصریح موجود ہے کہ متون و شروح کا بیان فتوٰی کے بیان پر مقدم ہے اھ (ت)

خیر یہاں تک ہمارے اصلا مذہب پر بنائے سخن تھی مگر مجھے یہاں یہ بیان کرنا ہے کہ نکاح مذکور کو روایت خلاف سے بھی اصلاً تعلق نہیں بلکہ وہ باتفاق ہمارے تمام ائمہ کے محض ناجائز واقع ہوا۔ میں اگرچہ اسے متعدد دلائل سے ثابت کر سکتا ہوں مگر یہاں صرف چند واضح امور پر اقتصاد کافی، روایت خلاف کا ہرگز یہ حکم نہیں کہ جنون شوہر میں مطلقاً حاکم فوراً اجازت نکاح ثانی دے بلکہ جب جنون پیدا ہو تو لازم کہ روز مرافعہ سے مرد کو سال بھر کامل کی مہلت دے اگر اس میں اچھا ہو گیا تو اب ہرگز تفریق جائز نہیں، اور نہ اچھا ہوا تو عورت جب تک پھر دعوٰی نہ کرے حاکم ہرگز حکم نہ دے وہ بدستور زوج زوجہ رہیں گے ہاں اگر اب عورت پھر دوبارہ خواستگاری تفریق کو آئے تو قاضی اسے اختیار دے کہ چاہے تو اپنے نفس کو اختیار کریا شوہر کو، اگر اس نے شوہر کو اختیار کیا یا بغیر کچھ کہے چلی گئی یا کھڑی ہوگئی یا قاضی سپاہیوں نے اسے اٹھا دیا یا قاضی فوراً اٹھ کر کھڑا ہوا تو اب اسے اصلاً اختیار نہ رہا ہمیشہ کے لئے اس کی زوجہ ہے کہ کبھی دعوٰی تفریق نہیں کر سکتی، اور اگر اسی جلسہ میں اس نے اپنے نفس کو اختیار کرلیا تو اب قاضی تفریق کردے، یہ تفریق طلاق بائن گنی جائے گی، اس کے بعد عورت ایام عدت پورے کر کے جس سے چاہے نکاح کرلے، اور ضرور ہے کہ عورت درخواست قاضی

مصر یا مدینہ کے حضور پیش کرے وہ سال بھر کی مدت دے، اس کے سوا دنیا میں کسی کی تا جیل کی معتبر نہیں۔ فتاوٰی عالمگیری میں ہے :

[دوسرا خانہ] (عربی): قال محمد ان کان الجنون حادثا یؤجله سنة کالعنة ثم یخیر المرأة بعد الحول اذالم یبرأ اھ ۲ (اردو): امام محمد رحمہ اللہ تعالٰی نے فرمایا : اگر خاوند کو جنون نیا عارض ہوا تو اس کو نامردی کی طرح ایک سال کی مہلت دی جائے گی، پھر سال کے بعد بیوی کو فسخ کا اختیار دیا جائیگا بشرطیکہ تندرست نہ ہواھ (ت)

---

1. غمز عیون البصائر شرح الاشباہ والنظائر القول احکام الجمعة ادارة القرآن کراچی ۲۳۸/۳
2. فتاوٰی ہندیہ الباب الثانی فی العنین نورانی کتب خانہ پشاور ۵۲۶/۱

Fatawa Razawiyya Volume 12

In the same [book] it is stated:

[Arabic Text]: If a woman comes to the judge after the period [of one year] has passed, and her husband has not reached her [had intercourse], the judge shall give her the choice of separation. This is mentioned in the commentary of 'Jami al-Saghir' by Qadi Khan. If she chooses her husband, or gets up from her session [of choice], or the judge's assistants make her get up, or the judge gets up before she makes a choice, her right of choice is voided. This is how it is mentioned in 'Al-Muhit'. Similar is narrated from Imam Muhammad (may Allah have mercy on him), and the fatwa is based on this. In 'Al-Tatarkhaniyya', it is quoted from 'Al-Waqi'at' that if she chooses separation, the judge shall order the husband to give an irrevocable (bain) divorce. If he refuses, the judge shall effect separation between them. This was mentioned by Imam Muhammad in 'Al-Asl', as it is in 'Al-Tabyin'. (Summarized)

[Urdu Text]: In the aforementioned case, if the woman comes after a year and says my husband has not recovered, and the husband was unable to have intercourse during this period, then the judge will give the wife the option at that time. It is mentioned in the commentary of 'Jami al-Saghir' by Qadi Khan that if on this option given by the judge, the woman prioritized her husband or she got up from this assembly of choice, or the judge's officials removed her from there, or the judge left before the woman's decision was announced, then the woman's option will end. This is stated in 'Muhit', and similarly narrated from Imam Muhammad (may Allah have mercy on him), and the fatwa is based on this. In 'Tatarkhaniyya' it is similarly quoted from 'Waqi'at'. And if contrary to the aforementioned cases, the woman preferred separation from her husband, then the judge will issue an order for the husband to give an irrevocable (bain) divorce. If the husband refused to divorce, then the judge himself will separate the two. Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) mentioned this in 'Al-Asl' (Mabsut), as it is in 'Tabyin'. (Summarized) (T)

In the same it is stated:

[Arabic Text]: This postponement shall only be in the presence of the judge of a city or town. If the woman gives him the time, or someone other than a judge gives it, it is not considered. As mentioned in 'Fatawa Qadi Khan'. [2]

[Urdu Text]: This order of respite will be given in the presence of the city's judge. If the woman herself gave this respite to the husband or some non-judge gave it, then it will not be valid, as it is in 'Fatawa Qadi Khan'. (T)

In the same it is stated:

[1] Fatawa Hindiyya, Chapter 12 on Impotence, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/522 [2] Fatawa Hindiyya, Chapter 12 on Impotence, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/523

फ़तावा रज़विया खंड 12

इसी में है:

[अरबी पाठ]: यदि स्त्री अवधि (एक वर्ष) बीतने के बाद काज़ी (न्यायाधीश) के पास आए और उसका पति उस तक नहीं पहुँचा हो (संभोग न किया हो), तो काज़ी उसे अलगाव का विकल्प देगा। 'जामे सगीर' की व्याख्या में क़ाज़ी ख़ान द्वारा ऐसा ही उल्लेख किया गया है। यदि वह अपने पति को चुनती है, या अपनी सभा (विकल्प की) से उठ जाती है, या काज़ी के सहायक उसे उठा देते हैं, या काज़ी उसके निर्णय से पहले उठ जाता है, तो उसका विकल्प का अधिकार समाप्त हो जाता है। 'अल-मुहीत' में इसी प्रकार उल्लेख है। इमाम मोहम्मद (रहमतुल्लाहि अलैहि) से भी ऐसा ही वर्णित है और इसी पर फ़तवा है। 'तातारख़ानिया' में 'वाक़िआत' के हवाले से लिखा है कि यदि वह अलगाव चुनती है, तो काज़ी पति को 'बाइन' (अटल) तलाक़ देने का आदेश देगा। यदि वह मना करता है, तो काज़ी स्वयं उनके बीच विच्छेद करा देगा। इमाम मोहम्मद ने 'अल-अस्ल' में इसका उल्लेख किया है, जैसा कि 'तबीन' में है। (संक्षिप्त)

[उर्दू पाठ]: उक्त स्थिति में, यदि स्त्री एक वर्ष के बाद आकर कहे कि मेरा पति स्वस्थ नहीं हुआ है, और पति इस दौरान संभोग नहीं कर सका हो, तो काज़ी पत्नी को उस समय विकल्प देगा। क़ाज़ी ख़ान की 'जामे सगीर' की व्याख्या में ऐसा ही उल्लेख है कि यदि काज़ी द्वारा दिए गए इस विकल्प पर स्त्री ने अपने पति को प्राथमिकता दी या वह इस विकल्प की सभा से उठ गई, या काज़ी के अधिकारियों ने उसे वहाँ से हटा दिया, या काज़ी स्त्री के निर्णय बताने से पहले चला गया, तो स्त्री का विकल्प समाप्त हो जाएगा। 'मुहीत' में ऐसा ही वर्णित है, और इसी तरह इमाम मोहम्मद (रहमतुल्लाहि अलैहि) से वर्णित है और इसी पर फ़तवा है। 'तातारख़ानिया' में 'वाक़िआत' से इसी प्रकार उद्धृत है। और यदि उक्त स्थितियों के विपरीत स्त्री ने पति से अलगाव को प्राथमिकता दी, तो काज़ी पति को 'बाइन' तलाक़ देने का आदेश जारी करेगा। यदि पति ने तलाक़ देने से इनकार कर दिया, तो काज़ी स्वयं दोनों के बीच विच्छेद कर देगा। इमाम मोहम्मद (रहमतुल्लाहि अलैहि) ने 'अल-अस्ल' (मबसूत) में ऐसा ही उल्लेख किया है, जैसा कि 'तबीन' में है। (संक्षिप्त) (त)

उसी में है:

[अरबी पाठ]: यह मोहलत केवल शहर या कस्बे के काज़ी की उपस्थिति में ही होगी। यदि स्त्री उसे समय देती है, या काज़ी के अलावा कोई और देता है, तो इसे मान्य नहीं माना जाता। जैसा कि 'फ़तावा क़ाज़ी ख़ान' में उल्लेख है। [2]

[उर्दू पाठ]: मोहलत का यह आदेश शहर के काज़ी की मौजूदगी में दिया जाएगा। यदि स्त्री ने स्वयं पति को यह मोहलत दी या किसी गैर-काज़ी ने दी, तो यह मान्य नहीं होगी, जैसा कि 'फ़तावा क़ाज़ी ख़ान' में है। (त)

उसी में है:

[1] फ़तावा हिन्दिया, अध्याय 12 नपुंसकता पर, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/522 [2] फ़तावा हिन्दिया, अध्याय 12 नपुंसकता पर, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/523

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

اسی میں ہے:

جاءت المرأة الی القاضی بعد مضی الاجل والزوج لم یصل الیها خیرها القاضی فی الفرقة کذا فی شرح الجامع الصغیر لقاضی خاں فان اختارت زوجها اوقامت عن مجلسها او اقامها اعوان القاضی او قام القاضی قبل ان تختار بطل خیارها کذا فی المحیط، وهکذا روی عن محمد رحمہ اللہ تعالٰی عنہ وعلیہ الفتوی کذا فی التاتارخانیہ ناقلا عن الواقعات، ان اختارت الفرقة امر القاضی ان یطلقها بائنة، فان ابی فرق بینهما هکذا ذکر محمد فی الاصل کذافی التبیین اھ ملخصاً۔

مذکورہ صورت میں عورت سال کے بعد آکر کہے میرا خاوند تندرست نہیں ہوا، خاوند اس دوران جماع نہ کرسکا ہو تو قاضی بیوی کو اس وقت اختیار دے گا، شرح جامع صغیرہ قاضی خاں میں ایسے ہی ذکر کیا ہے تو قاضی کے اس اختیار پر عورت نے اپنے خاوند کو ترجیح دی یا اس مجلس اختیار سے اٹھ گئی، یا قاضی کے اہلکاروں نے اسے وہاں سے اٹھا دیا یا قاضی عورت کے فیصلہ بتانے سے قبل چلا گیا، تو عورت کا اختیار ختم ہو جائے گا، محیط میں ایسے ہی بیان ہے، اور یونہی امام محمد رحمہ اللہ تعالٰی سے مروی ہے اور اسی پر فتوٰی ہے۔ تاتار خانیہ میں واقعات سے یونہی منقول ہے، اور اگر مذکور صورتوں کو خلاف عورت نے خاوند سے فرقت کو ترجیح دی تو قاضی خاوند کو بائنہ طلاق دینے کا حکم صادر کرے گا، اگر خاوند نے طلاق سے انکار کردیا تو پھر قاضی خود دونوں میں تفریق کردے گا، امام محمد رحمہ اللہ تعالٰی نے اصل (مبسوط) میں یوں ذکر فرمایا، جیسا کہ تبیین میں ہے اھ ملخصاً (ت)

اُسی میں ہے:

لایکون ھذا التاجیل الاعند قاضی مصر اومدینۃ فان اجلتہ المرأۃ او اجلہ غیر القاضی لا یعتبر ذلک کذا فی فتاوٰی قاضی خاں۔ 2

یہ مہلت کا حکم قاضی شہر کی موجودگی میں دیا جائیگا، اگر خود عورت نے خاوند کو یہ مہلت دی یا کسی غیر قاضی نے دی ہو تو یہ معتبر نہ ہوگی، جیسا کہ فتاوٰی قاضی خاں میں ہے (ت)

اُسی میں ہے:

1 فتاوٰی ہندیہ الباب الثانی عشر فی العنین نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۵۲۲ 2 فتاوٰی ہندیہ الباب الثانی عشر فی العنین نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۵۲۳

Fatawa Razawiyya Volume XI

The appointment of a judge is not valid until the appointee meets the conditions of testimony, as stated in Al-Hidayah, which include being a Muslim, free, and legally accountable, etc.

The grace period given by a judge will only be valid when all the conditions for appointment are met in that judge. These are the same conditions as for testimony, i.e., being a Muslim, free, and legally accountable (Takleef), etc. (T)

It is clear that in the case presented in the question, the husband's insanity was newly emerged, as only four months had passed for the purpose of proof. Therefore, the method for allowing a second marriage and obtaining a separation was absolutely not that the ruler would grant her permission for a second marriage. Rather, it was obligatory upon him to give a grace period of one year after complete proof, and then carry out the aforementioned proceedings. Here, neither was a year's grace given, nor did the woman file a claim again after the grace period, nor did the woman express her choice for herself in the same session after being given the option. The irony is that the ruler is not a Muslim at all. Such proceedings cannot be considered valid at all, nor can she emerge from the marital bond with the first husband because of it. Marriage and divorce are religious and spiritual matters for us Muslims, in which there is no choice but to observe all the commands of our Shariah. If someone gives permission for marriage to a married woman without the occurrence of divorce or separation, will it become permissible for her to marry whoever she wants? Never, absolutely not. Nor will she be free from her husband's protection (Ismah). Exactly the same situation occurred here. To top it off, the woman did not even observe the waiting period (Iddah); she entered into a second marriage just ten days after the permission. What doubt can there be in its being forbidden? We have just quoted from Alamgiri that this separation is a 'Bain' (irrevocable) divorce, and for divorce, a waiting period of three menstrual cycles is obligatory.

Allah Almighty said: "And divorced women shall wait [concerning] themselves for three menstrual cycles."[2]

Allah Almighty said: Women in their waiting period should keep themselves restricted until three complete menstrual cycles have passed. (T)

In short, this second marriage is certainly unlawful, and according to all our Imams, this is what is called bigamy in current law. No foolish person can imagine that with the passage of time, the wife's marital bond was terminated and now on what basis

can the husband claim? "And there is no power nor strength except in Allah, the Most High, the Most Great." Therefore, it is absolutely obligatory for the woman to desist from this forbidden act and distance herself from anyone other than her husband. And Allah Almighty knows best.

[1] Fatawa Hindiyyah, Kitab Adab al-Qadhi, Chapter One on the interpretation of the meaning of Adab, etc., Nurani Kutub Khana, Peshawar, 3/307. [2] Al-Quran al-Karim, 2/228

फतावा रज़विया जिल्द 11

न्यायाधीश की नियुक्ति तब तक वैध नहीं है जब तक कि नियुक्त व्यक्ति में गवाही की शर्तें न हों, जैसा कि अल-हिदाया में उल्लेख है, जिनमें मुस्लिम होना, स्वतंत्र होना और कानूनी रूप से जवाबदेह होना आदि शामिल हैं।

काज़ी द्वारा दी गई मोहलत भी तब विश्वसनीय होगी जब उस काज़ी में नियुक्ति की सभी शर्तें मौजूद हों। वे गवाही वाली शर्तें हैं यानी इस्लाम, आज़ाद होना और मुकल्लफ़ (जवाबदेह) होना आदि (त)।

ज़ाहिर है कि सवाल में पेश की गई सूरत में शौहर का पागलपन नया था क्योंकि सबूत के लिए अभी चार ही महीने गुज़रे थे। तो निकाह-ए-सानी (दूसरे निकाह) और अलगाव प्राप्त करने का यह तरीका हरगिज़ नहीं था कि हाकिम उसे दूसरे निकाह की इजाज़त दे देता, बल्कि उस पर फ़र्ज़ था कि कामिल (पूर्ण) सबूत के बाद एक साल की मोहलत देता, उसके बाद ज़िक्र की गई कार्रवाई करता। यहाँ न साल की मोहलत दी गई, न मोहलत के बाद औरत ने दोबारा दावा किया, न तख़यीर (विकल्प) के बाद औरत ने उसी मजलिस में अपनी जान का इख़्तियार ज़ाहिर किया। मज़ा तो यह है कि हाकिम सिरे से मुसलमान भी नहीं है। ऐसी कार्रवाई बिल्कुल भी काबिल-ए-एतबार नहीं हो सकती, न ही इसके कारण वह पहले शौहर की ज़ौजीयत (पत्नीत्व) से बाहर आ सकती है। निकाह और तलाक़ हम मुसलमानों के दीनी और मज़हबी मामले हैं जिनमें हमारी शरीयत के तमाम अहकाम का लिहाज़ किए बिना कोई चारा नहीं। अगर कोई औरत वाले शौहर को बिना तलाक़ और अलगाव के निकाह की इजाज़त दे दे तो क्या उसके लिए यह जायज़ हो जाएगा कि वह जिससे चाहे निकाह कर ले? हरगिज़ नहीं, कभी नहीं। न ही वह शौहर की इस्मत (संरक्षण) से बाहर आएगी। यहाँ हूबहू यही सूरत पेश आई। उस पर तुर्रा यह कि औरत इद्दत में भी नहीं बैठी और इजाज़त के सिर्फ दस दिनों बाद ही दूसरा निकाह कर लिया। इसके हराम होने में क्या संदेह है? हमने अभी आलमगीरी से नक़ल किया है कि यह तफ़रीक़-ए-बाइन (अंतिम अलगाव) होती है, और तलाक़ में तीन हैज़ (मासिक धर्म) की इद्दत फ़र्ज़ है।

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "और तलाक़शुदा औरतें अपने आप को तीन हैज़ (मासिक धर्म) तक रोके रखें।"[2]

अल्लाह तआला ने फ़रमाया: इद्दत वाली औरतें अपने आप को तीन कामिल हैज़ होने तक पाबंद रखें (त)।

कुल मिलाकर यह दूसरा निकाह यक़ीनन नाजायज़ है, और हमारे सभी इमामों के नज़दीक यह वही चीज़ है जिसे वर्तमान कानून में पुनर्विवाह (द्विपत्नीत्व के संदर्भ में) कहते हैं। और कोई नासमझ यह गुमान नहीं कर सकता कि मुद्दत गुज़रने से ज़ौजीयत ख़त्म हो गई और अब शौहर किस आधार पर दावा कर सकता है? "और अल्लाह के सिवा कोई शक्ति और सामर्थ्य नहीं है, जो सबसे ऊँचा और सबसे महान है।" इसलिए औरत पर यह लाज़िमी है कि वह इस हराम काम से बाज़ आए और अपने शौहर के सिवा दूसरे से किनारा करे। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

[1] फतावा हिन्दिया, किताब अदब अल-काज़ी, अध्याय एक, अदब के अर्थ की व्याख्या आदि, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 3/307। [2] अल-कुरआन अल-करीम, 2/228

पृष्ठ 494/688

لا تصح ولایة القاضی حتی یجتمع فی المولی شرائط الشهادة کذا فی الهدایة من الاسلام والحریة و التکلیف الخ ۔

قاضی کی دی ہوئی مہلت بھی تب معتبر ہو گی جب اس قاضی میں تقرری کے تمام شرائط موجود ہوں، وہ شہادت والے شرائط ہیں یعنی اسلام، آزاد ہونا اور مکلف ہونا الخ (ت)

ظاہر ہے صورت مظہرہ سوال میں شوہر کا جنون نو پیدا تھا کہ بغرض ثبوت ہنوز چار ہی مہینے گزرے تھے تو جوز نکاح ثانی و تحصیل فرقت کا یہ طریقہ ہر گز نہ تھا کہ حاکم اسے نکاح ثانی کی اجازت دے دیتا بلکہ اس پر فرض تھا کہ ثبوتِ کامل کے کر سال بھی کی مہلت دیتا اس کے بعد کاروائی مذکور کرتا۔ یہاں نہ سال کی مہلت دی گئی، نہ بعد مہلت عورت نے دوبارہ دعوٰی کیا، نہ بعد تخییر عورت نے اسی جلسہ میں اپنے نفس کو اختیار کرنا ظاہر کیا، طرفہ یہ کہ حاکم سرے سے مسلمان بھی نہیں، ایسی کاروائی اصلاً قابلِ اعتبار نہیں ہو سکتی، نہ اس کے سبب وہ زوجیت شوہر اول سے باہر آ سکتی ہے، نکاح و طلاق ہم مسلمانوں کے دینی و مذہبی معاملات ہیں جن میں ہماری شریعت تمام احکام کی مراعات بغیر چارہ نہیں۔ اگر کوئی زن شوہر دار کو بے وقوع طلاق و افتراق اجازت نکاح دے دے تو کیا اسے جائز ہو جائے گا کہ وہ جس سے چاہے نکاح کرلے، حاشا ہر گز روانہ ہو گا نہ وہ عصمت شوہر سے باہر آئے گی۔ یہاں بعینہ یہی صورت واقع ہوئی، طرہ یہ کہ عورت عدت بھی نہ بیٹھی اجازت سے دس ۱۰ ہی دن بعد نکاح ثانی کر لیا، اس کے حرام ہونے میں کیا شبہ ہے، ہم ابھی عالمگیری سے نقل کر آئے کہ یہ تفریق بائن ہوتی ہے، اور طلاق میں تین حیض کی عدت فرض۔

قَالَ اللہُ تَعَالٰی وَالْمُطَلَّقٰتُ یَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِھِنَّ ثَلٰثَۃَ قُرُوْءٍ ط 2

اللہ تعالیٰ نے فرمایا: عدت والی عورتیں اپنے آپ تین حیض کامل ہونے تک پابند رکھیں (ت)

بالجملہ یہ دوسرا نکاح بالیقین ناجائز، اور ہمارے سب ائمہ کے نزدیک یہ وہی چیز قانونِ حال میں ازدواج مکرر کہتے ہیں، اور کوئی سفیہ سافیہ گمان نہیں کر سکتا کہ مرور مدت سے زوجیت زوجہ ہو گئی اور ہو گئی اب شوہر کس بنا پر دعویٰ کر سکتا ہے ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم، پس عورت پر واجب حتمی ہے کہ اس حرام سے باز آئے اور اپنے شوہر کے سوا دوسرے سے کنارہ کرے۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

1 فتاویٰ ہندیہ کتاب ادب القاضی الباب الاول فی تفسیر معنی الادب الخ نورانی کتب خانہ پشاور ۳/ ۳۰۷ 2 القرآن الکریم ۲/ ۲۲۸

Fatawa Razawiyya, Volume 12

Mas'ala 257: 22 Muharram-ul-Haram 1313 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: Hindah's husband turned out to be a born *unin* (impotent). Accordingly, a doctor examined him and issued a certificate of impotence. In this situation, what is the legal ruling on his marriage? Does the wife need a divorce from the husband or not? And in such a state, is she entitled to any portion of the dower (Mahr) or not? And is a doctor's certificate sufficient to prove impotence or not? Explain and be rewarded.

The Answer: The husband's being impotent is not an impediment to the validity of the marriage. The wife of an impotent man, like other women, does not have the authority to separate from her husband without a divorce. If *Khalwat-e-Sahiha* (valid seclusion) occurred, she will receive the full and complete dower.

In Al-Tanwir: If there is no impediment in seclusion, it will be considered like intercourse, even if the husband is *majboob* (having the organ severed), *unin* (impotent), or *khasi* (castrated). Thus, this seclusion will be like intercourse in establishing lineage and making the dower mandatory. (Abridged).

A doctor's certificate is purely insufficient and unreliable. Allah the Almighty said: "O you who have believed, if there comes to you a disobedient person with information, investigate." (Al-Quran). And Allah Almighty knows best.

Mas'ala 258: From Bareilly city, Muhalla Kohara Peer, asked by Mr. Naseerullah, 7 Jumada al-Akhira 1319 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A woman states her husband's incompetence, saying it has been six years since the marriage and yet there is no manhood in the husband. The husband's condition is also known to his heirs. The man keeps getting treated, but no treatment has been beneficial. Now the woman wants to be married to another person, and the man does not object to her idea. So, is the marriage with such a man valid or not? And how should she fulfill her intention? Should he give a divorce or is there no need?

1. Al-Durr al-Mukhtar, Chapter on Dower, Matba' Mujtabai Delhi, 1/198.
2. The Holy Quran, 49/6.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

मसला 257: 22 मुहर्रम-उल-हराम 1313 हिजरी धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: हिंदा का पति पैदाइशी अनीन (नामर्द) निकला, इसलिए डॉक्टर ने उसकी जांच की और नामर्द होने का प्रमाण पत्र दे दिया। इस स्थिति में उसके निकाह का शरीयत में क्या हुक्म है? क्या पत्नी को पति से तलाक की आवश्यकता है या नहीं? और ऐसी स्थिति में क्या वह मेहर के किसी हिस्से की हकदार है या नहीं? और क्या डॉक्टरी प्रमाण पत्र नामर्दी साबित करने के लिए पर्याप्त है या नहीं? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: पति का नामर्द होना निकाह की वैधता में बाधक नहीं है। नामर्द की पत्नी अन्य स्त्रियों की तरह बिना तलाक के पति से अलग होने का अधिकार नहीं रखती। यदि 'खलवत-ए-सहीहा' (एकांतवास) हुआ हो, तो उसे पूरा मेहर मिलेगा।

'अत-तन्वीर' में है: यदि एकांतवास में कोई बाधा न हो, तो उसे संभोग के समान माना जाएगा, चाहे पति 'मजबूब' (अंग कटा हुआ), 'अनीन' (नामर्द) या 'ख़सी' (बधिया) ही क्यों न हो। अतः यह एकांतवास वंश की स्थापना और मेहर को अनिवार्य करने में संभोग की तरह ही होगा। (संक्षिप्त)।

डॉक्टरी प्रमाण पत्र पूरी तरह से अपर्याप्त और अविश्वसनीय है। अल्लाह तआला ने फरमाया: "ऐ ईमान वालों! अगर तुम्हारे पास कोई फासिक़ (पापी/झूठा) खबर लाए तो उसकी पुष्टि कर लिया करो।" (अल-क़ुरान)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 258: बरेली शहर, मोहल्ला कोहाड़ा पीर से, प्रार्थी नसीरुल्लाह साहब, 7 जमादि-उल-आख़िर 1319 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: एक महिला अपने पति की अक्षमता का वर्णन करती है कि शादी को छह साल बीत चुके हैं लेकिन अभी तक पति में कोई पुरुषत्व नहीं है। पति की यह स्थिति उसके वारिसों को भी ज्ञात है। वह व्यक्ति स्वयं इलाज कराता रहता है लेकिन कोई इलाज फायदेमंद नहीं हुआ। अब महिला चाहती है कि उसका निकाह दूसरे व्यक्ति से हो जाए, और पति को उसके इस विचार से कोई आपत्ति नहीं है। तो क्या ऐसे व्यक्ति के साथ निकाह जायज़ रहा या नहीं? और वह अपना इरादा किस तरह पूरा करे, क्या वह तलाक दे या इसकी कोई आवश्यकता नहीं है?

1. अद-दुर्रुल मुख्तार, मेहर का अध्याय, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/198।

2. पवित्र कुरान, 49/6।

पृष्ठ 495 / 688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

مسئلہ ۲۵۷: ۲۲ محرم الحرام ۱۳۱۳ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ کا شوہر پیدائشی عنین یعنی نامرد نکلا چنانچہ ڈاکٹر نے اس کا ملاحظہ کیا اور سند نامرد ہونے کی دے دی دریں صورت نکاح اس کا شرعاً کیا حکم رکھتا ہے آیا زوجہ شوہر سے محتاج طلاق ہے یا نہیں اور ایسی حالت میں مستحق کسی جزء مہر کی ہوتی ہے یا نہیں اور ڈاکٹری سند ثبوت نامردی کے لئے کافی ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: زوج کا عنین ہونا مانع صحت نکاح نہیں، زوجہ عنین مثل دیگر زنان بے طلاق شوہر سے جدائی کا اختیار نہیں رکھتی، خلوت صحیحہ اگر ہوئی تو مہر تمام و کمال پائے گی،

فی التنویر الخلوۃ بلامانع کالوطء ولو مجبوباً او عنیناً اوخصیاً فی ثبوت النسب وتاکد المھر اھ ملتقطاً۔

تنویر میں ہے: خلوت میں مانع نہ ہو تو وہ وطی کے حکم میں ہوگی اگرچہ خاوند کا ذکر کٹا ہوا ہو، یا نامرد یا خصی ہو، تو یہ خلوت نسب کے ثبوت اور مہر کو لازم کرنے میں وطی کی طرح ہوگی، اھ ، ملتقطاً (ت)

سند ڈاکٹری محض ناکافی و نامعتبر ہے، قال اللہ تعالٰی یَاأَیُّھَا الَّذِینَ آمَنُوا إِنْ جَاءَکُمْ فَاسِقٌ بِنَبَإٍ فَتَبَیَّنُوا الأٰیۃ۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ اللہ تعالٰی نے فرمایا: اے ایمان والو! اگر تمہارے پاس کوئی فاسق خبر لائے تو اس کی وضاحت کرلو الآیہ۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۲۵۸: از شہر بریلی محلہ کوہاڑا پیر مسئولہ نصیر اللہ صاحب ۷ جمادی الآخرہ ۱۳۱۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت اپنے شوہر کی نا قابلیت بیان کرتی ہے کہ چھ برس کا عرصہ شادی کو ہوا اب تک شوہر میں کوئی مردی نہیں۔ مرد کی ایسی حالت اس کے

ورثاء کو بھی معلوم ہے مرد خود علاج کراتا رہتا ہے لیکن کوئی علاج مفید نہ ہوا اب عورت چاہتی ہے میرا عقد دوسرا شخص کے ساتھ ہو جائے مرد کو اس کے خیال سے تعرض نہیں تو ایسے مرد کے ساتھ نکاح جائز ہوا یا نہیں، اور اپنا ارادہ کس طرح پورا کرے، آیا طلاق دے یا کوئی ضرورت نہیں؟

1 الدر المختار باب المہر مطبع مجتبائی دہلی ۱۹۸/۱ 2 القرآن الکریم ۶/۴۹

The Answer: The aforementioned marriage is valid and correct. It is not permissible for the woman to marry another person without a divorce or legal separation; if she does so, it will be strictly forbidden (haram). When a man is unable to fulfill the woman's rights in sexual intercourse, it is mandatory for him to divorce her. Allah Almighty said: "Then either keep them in an acceptable manner or release them with good treatment."[1] | Allah Almighty said: After one or two divorces, keep the wife or free her with kindness. (T) After divorce, the woman must observe the waiting period ('iddah) if the man has had seclusion (khilwat) with her, even if he was unable to perform. After that, she can marry whoever she wishes. If seclusion has not occurred yet, then after divorce, she can immediately marry whoever she wishes. In "Al-Hindiyya," in the chapter of "Rulings on the Impotent," it is stated that by consensus (ijma'), 'iddah is mandatory for the woman if the husband has had seclusion with her; if he did not have seclusion, there is no 'iddah on her, etc. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 259: From the Survey Department, Gorakhpur District, sent by Munshi Farid Ahmed, Clerk of the Colonel's Office, 9 Rabi' al-Awwal 1305 AH. What do the scholars of the religion say about this matter: Maryam was ten years old and Zaid was fifteen years old when their parents married them off with their mutual consent. When Maryam reached maturity, it became apparent that the husband was impotent. In this situation, did the marriage take place or not? Can Maryam marry someone else without a divorce from Zaid or not? If the husband does not give a divorce, what is the way out? Is the claim for dower (mahr) valid or not? Please explain and be rewarded.

The Answer: In the situation asked, the marriage is absolutely valid because it proceeded from eligible persons in its proper place (for it is a marriage issued from its folk in its place. T). As long as there is no divorce from Zaid's side, she remains his wife, and marrying someone else is strictly not permissible. Allah Almighty said: "And [also prohibited are] married women..."[3] (Allah Almighty said:

[1] Al-Quran al-Karim 2/231 [2] Fatawa Hindiyya, Chapter 12 on the Impotent, Nurani Kutub Khana Peshawar 1/522 [3] Al-Quran al-Karim 4/24

अल-जवाब (उत्तर): उक्त निकाह जायज़ और सही है, औरत को यह अधिकार नहीं कि वह बिना तलाक या शरीअत के अलगाव के दूसरे से निकाह कर ले; अगर वह ऐसा करती है, तो यह पूरी तरह से हराम होगा। जब मर्द हमबिस्तरी में औरत के हक को पूरा करने में सक्षम न हो, तो उस पर फ़र्ज़ है कि वह औरत को तलाक दे दे। अल्लाह तआला ने फरमाया: "तो या तो उन्हें भलाई के साथ रोक लो या भलाई के साथ रुख़सत कर दो।"[1] | अल्लाह तआला ने फरमाया: एक या दो तलाक के बाद बीवी को अपने पास रख लो या उसे भलाई के साथ आज़ाद कर दो। (त) तलाक के बाद औरत इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) में बैठेगी यदि मर्द ने उसके साथ खल्वत (एकांतवास) किया हो, चाहे वह उस पर सक्षम न रहा हो। इसके बाद वह जिससे चाहे निकाह कर सकती है। और अगर अब तक खल्वत नहीं हुई है, तो तलाक के बाद वह तुरंत जिससे चाहे निकाह कर सकती है। फ़तावा हिन्दिया में "नामर्द के अहकाम" के बाब (अध्याय) में है कि औरत पर इज्मा (सर्वसम्मति) से इद्दत वाजिब होगी जब पति ने खल्वत की हो, और अगर खल्वत न हुई हो, तो फिर औरत पर इद्दत नहीं है आदि। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है)। (त)

मसला २५९: महकमा पैमाइश ज़िला गोरखपुर से मुंशी फरीद अहमद, पेशी कर्नल के कर्मचारी द्वारा प्रेषित, ९ रबी-उल-अव्वल १३०५ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: मरियम दस साल की थी और ज़ैद पंद्रह साल का, जब उनके माता-पिता ने अपनी रज़ामंदी से उनका निकाह कर दिया। जब मरियम बालिग (वयस्क) हुई, तो ज़ाहिर हुआ कि शौहर (पति) नामर्द है। इस स्थिति में वह निकाह हुआ या नहीं? और क्या मरियम बिना तलाक के ज़ैद के अलावा किसी और से निकाह कर सकती है या नहीं? और अगर शौहर तलाक न दे, तो निजात का रास्ता क्या है? क्या मेहर का दावा किया जा सकता है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य कमाएं।

अल-जवाब (उत्तर): पूछी गई स्थिति में निकाह पूरी तरह से सही है क्योंकि यह अपने योग्य लोगों द्वारा अपने उचित स्थान पर सम्पन्न हुआ है। और जब तक ज़ैद की तरफ से तलाक न हो, वह उसकी पत्नी है, और दूसरे से निकाह किसी भी हाल में जायज़ नहीं है। अल्लाह तआला ने फरमाया: "और [हराम की गई हैं] विवाहित स्त्रियाँ..."[3] (अल्लाह तआला ने फरमाया:

[1] अल-कुरान अल-करीम २३१/२ [2] फतावा हिन्दिया, अध्याय १२ नामर्द के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर १/५२२ [3] अल-कुरान अल-करीम २४/४

الجواب: نکاح مذکور جائز و صحیح ہے، عورت کو مہر گزروا نہیں کہ بے طلاق یا فرقت شرعیہ کے دوسرے سے نکاح کرلے، اگر کرے محض حرام ہوگا۔ مرد جب ہمبستری میں عورت کا حق ادا کرنے پر قادر نہ ہو تو اس پر فرض ہے کہ عورت کو طلاق دے دے۔ قال اللہ تعالٰی: "فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ"۱ | اللہ تعالٰی نے فرمایا: ایک یا دو طلاقوں کے بعد بیوی پاس رکھ لو یا بھلائی کے ساتھ آزاد کر دو۔ (ت) بعد طلاق عورت عدت بیٹھے اگر مرد خلوت کر چکا ہوا گرچہ اس پر قادر نہ ہوا ہو۔ اس کے بعد جس سے چاہے نکاح کرلے، اور اگر اب تک خلوت نہ ہوئی تو بعد طلاق فوراً جس سے چاہے نکاح کر سکتی ہے۔ فی الھندیۃ من باب العنین علیھا العدۃ بالاجماع ان۲ | ہندیہ میں "نامرد کے احکام" کے باب میں ہے کہ عورت پر کان الزوج قد خلا بھا و ان لم یخل بھا فلا عدۃ | بالاجماع عدت ہو گی جب خاوند نے خلوت کرلی ہو، اور اگر علیھا الخ۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ | خلوت نہ پائی ہو تو پھر عورت پر عدت نہیں ہے الخ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۲۵۹: از محکمہ پیمائش ضلع گورکھپور مرسلہ منشی فرید احمد اہلکار پیشی کرنل ۹ ربیع الاول ۱۳۰۵ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مریم دس برس کی تھی اور زید پندرہ برس کا کہ ان کے والدین نے برضا و غبت خود ان کا نکاح کر دیا جب مریم بالغہ ہوئی تو اسے ظاہر ہوا کہ شوہر نامرد ہے اس صورت میں وہ نکاح ہوا یا نہیں، اور مریم بے طلاق زید کے دوسرے سے نکاح کر سکتی ہے یا نہیں، اور شوہر طلاق نہ دے تو صورت خلاص کیا ہے، دعوٰی مہر پہنچتا ہے یا نہیں، بینوا توجروا۔

الجواب: صورت مستفسرہ میں نکاح قطعاً صحیح ہے لصدورھا عن اھلہ فی محلہ (کیونکہ یہ نکاح اپنے محل میں اپنے اہل سے صادر ہوا ہے۔ ت) اور جب تک زید کی طرف سے طلاق نہ ہو اس

کی زوجہ ہے، اور دوسرے سے نکاح ہرگز جائز نہیں، قال اللہ تعالیٰ وَالْمُحْصَنَتُ مِنَ النِّسَاء ۳ (اللہ تعالیٰ نے فرمایا :

۱ القرآن الکریم ۲۳۱/۲ ۲ فتاوی ہندیہ الباب الثانی عشر فی العنین نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۵۲۲

۳ القرآن الکریم ۲۴/۴

Fatawa Ridawiyya Volume 12

It is forbidden to marry women who are already married. (T) It is mentioned in Uqud-ud-Durriya:

[Table Start] Left Column (Arabic): He was asked about a virgin minor whose father married her to a man who consummated the marriage with her, then she reached maturity and sound mind and claimed he was impotent and requested separation. What is the ruling? Answer: They are not separated solely based on her claim that he is impotent, etc.

Right Column (Urdu): They were asked that a person married his virgin minor daughter to a man and the husband had intercourse. After that, the daughter reached adulthood and despite having reason and understanding, she claimed the husband's impotence in which she demanded separation (annulment of marriage). So, what is the Sharia ruling in such a case? It was answered that separation will not occur solely on the girl's claim that the husband is impotent, etc. (T) [Table End]

However, when Zaid is incapable and unable to fulfill her rights, it is obligatory upon him by the definitive text of the Quran to give a divorce; if he keeps her like this, he will be a sinner.

Allah Almighty said: "Either retain them on reasonable terms or release them with kindness."[2] - Allah Almighty said: After one or two divorces, keep the wife with you with goodness or set her free with kindness. (T)

So, if he does not give a divorce, the way to release is that Maryam and Zaid appoint some religious scholar or firm jurist as an arbitrator,

[Table Start] Left Column (Arabic): In Fatawa al-Khayriyya by Allamah Khayr al-Din al-Ramli, he was asked regarding an impotent person when arbitrators are appointed between him and his wife and they gave him a year's respite which passed. Do they have the right to separate them if she requests it or not? He replied: Yes, arbitration is valid in the matter of an impotent person because it is not a matter of corporal punishment (hadd), retaliation (qisas), or blood money (diyat) upon the paternal relatives (aqila), and they have the right to separate them at the request of the wife. And Allah knows best.[3] End. I say, this is a text that takes precedence over deduction.

Right Column (Urdu): It is in Fatawa Khayriyya: The author Khayr al-Din al-Ramli was asked that on the claim of being impotent, arbitrators should be appointed in the

matter of husband and wife and those arbitrator gentlemen give the husband one year's respite and the respite ends, so can the arbitrator gentlemen decide on separation or not? So he replied that yes they can because he is impotent, it is not a matter of hadd or qisas or diyat upon the aqila, therefore for the arbitrator gentlemen the wife's... [Table End]

[1] Uqud-ud-Durriya, Chapter on Impotence, Haji al-Ghaffar and Sons, Kandahar, Afghanistan, 1/32 [2] The Holy Quran, 2/229 [3] Fatawa Khayriyya, Chapter on Arbitration, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 16/2

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

औरतों से मनकूह औरतें हराम हैं। (त) उक़ूद-उद-दरिया में है:

[तालिका शुरू] बायां कॉलम (अरबी): उनसे एक कुंवारी नाबालिग लड़की के बारे में पूछा गया जिसका निकाह उसके पिता ने एक पुरुष से कर दिया था और उसने उसके साथ सहवास किया, फिर वह लड़की बालिग और समझदार हुई और उसने उसके नामर्द होने का दावा किया और अलगाव की मांग की। क्या हुक्म है? जवाब: उनके बीच केवल उसके इस दावे पर अलगाव नहीं किया जाएगा कि वह नामर्द है, इत्यादि।

दायां कॉलम (उर्दू): उनसे सवाल किया गया कि एक व्यक्ति ने अपनी कुंवारी नाबालिग बेटी का निकाह एक व्यक्ति से किया और पति ने सहवास कर लिया, उसके बाद वह बेटी बालिग हुई तो उसने बुद्धि और समझ के बावजूद पति के नामर्द होने का दावा किया जिसमें उसने अलगाव (निकाह रद्द करने) की मांग की, तो ऐसी स्थिति में शरीयत का क्या हुक्म है? तो उत्तर दिया गया कि केवल लड़की के इस दावे पर कि पति नामर्द है, अलगाव नहीं होगा, इत्यादि। (त) [तालिका समाप्त]

बेशक, जब ज़ैद असमर्थ है और हक अदा करने से लाचार है, तो कुरान के स्पष्ट निर्देश के अनुसार उस पर तलाक देना वाजिब है; यदि वह उसे इसी तरह रखेगा तो गुनहगार होगा।

अल्लाह तआला ने फरमाया: "या तो भलाई के साथ रोक रखो या नेकी के साथ आज़ाद कर दो।"[2] - अल्लाह तआला ने फरमाया: एक या दो तलाकों के बाद पत्नी को भलाई के साथ पास रख लो या नेकी के साथ आज़ाद कर दो। (त)

अतः यदि वह तलाक न दे, तो रिहाई का तरीका यह है कि मरियम और ज़ैद किसी आलिम-ए-दीन या मज़बूत फ़क़ीह को पंच (मध्यस्थ) नियुक्त करें,

[तालिका शुरू] बायां कॉलम (अरबी): अल्लामा खैर अल-दीन अल-रमली की फ़तावा अल-खैरिया में, उनसे एक नामर्द व्यक्ति के बारे में पूछा गया कि जब उसके और उसकी पत्नी के बीच मध्यस्थ नियुक्त किए जाएं और वे उसे एक साल की मोहलत दें जो बीत जाए। क्या उन्हें यह अधिकार है कि पत्नी की मांग पर वे उनके बीच अलगाव कर दें या नहीं? उन्होंने उत्तर दिया: हाँ, नामर्द के मामले में मध्यस्थता मान्य है क्योंकि यह शारीरिक दंड (हद्द), प्रतिशोध (क़सास), या पितृपक्ष के रिश्तेदारों पर रक्त-मुआवज़ा (दियत) का मामला नहीं है, और उन्हें पत्नी के अनुरोध पर उन्हें अलग करने का

अधिकार है। और अल्लाह बेहतर जानता है।[3] समाप्त। मैं कहता हूँ, यह एक ऐसा पाठ है जो अनुमान पर वरीयता रखता है।

दायां कॉलम (उर्दू): फ़तावा खैरिया में है: लेखक खैर अल-दीन अल-रमली से पूछा गया कि नामर्द होने के दावे पर पति और पत्नी के मामले में मध्यस्थ बनाया जाए और वे मध्यस्थ सज्जन पति को एक साल की मोहलत दें और मोहलत समाप्त हो जाए, तो क्या मध्यस्थ सज्जन अलगाव का फैसला कर सकते हैं या नहीं? तो उन्होंने उत्तर दिया कि हाँ वे कर सकते हैं क्योंकि वह नामर्द है, यह हद्द या क़सास या आक़िला पर दियत का मामला नहीं है, इसलिए मध्यस्थ सज्जनों के लिए पत्नी के..
[तालिका समाप्त]

[1] उक़ूद-उद-दरिया, नामर्दی का अध्याय, हाजी अल-गफ्फार एंड संस, कंधार, अफगानिस्तान, 1/32 [2] पवित्र कुरान, 2/229 [3] फ़तावा खैरिया, मध्यस्थता का अध्याय, दार अल-मआरिफ़ा, बेरूत, 16/2

पृष्ठ 497/688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

عورتوں سے منکوحہ عورتیں حرام ہیں۔ ت) عقودالدریہ میں ہے:

[جدول کا آغاز] بایاں کالم (عربی): سئل في بکر صغیرة زوجها ابوها من رجل ودخل بها ثم بلغت رشیدة وادعت به عنة وطلبت التفریق فما الحکم، الجواب لا یفرق بینهما بمجرد دعواها انه عنین الخ

دایاں کالم (اردو): ان سے سوال کیا گیا کہ ایک شخص نے اپنی باکرہ نابالغہ بیٹی کا نکاح ایک شخص سے کیا اور خاوند نے جماع کر لیا اس کے بعد وہ بیٹی بالغ ہوئی تو اس نے عقل و فہم کے باوجود خاوند کے نامرد ہونے کا دعوٰی کیا جس میں اس نے تفریق (فسخ نکاح) کا مطالبہ کیا تو ایسی صورت میں شرعی حکم کیا ہے، تو جواب دیا کہ لڑکی کے محض اس دعوٰی پر کہ خاوند نامرد ہے تفریق نہ ہو گی الخ (ت) [جدول کا اختتام]

البتہ جب زید نے غیر قادر اور اس کے ادائے حق سے قاصر ہے تو اس پر بنص قطعی قرآن طلاق دینا واجب، اگر یونہی رکھ چھوڑے گا گنہگار ہوگا۔

قال تعالٰی: "فَإِمْسَاكٌ بِمَعْرُوْفٍ أَوْ تَسْرِيْحٌ بِإِحْسَانٍ" 2 - اللہ تعالٰی نے فرمایا: ایک یا دو طلاقوں کے بعد بیوی کو بھلائی کے ساتھ پاس روک لو یا نیکی کے ساتھ آزاد کر دو۔ (ت)

پس اگر وہ طلاق نہ دے تو صورتِ خلاص یہ ہے کہ مریم وزید کسی عالم دین فقیہ متین کو پنچ کریں،

[جدول کا آغاز] بایاں کالم (عربی): في الفتاوی الخیریة للعلامة خیرالدین الرملی، سئل فی العنین اذاجعل بینہ وبین زوجة محکمین فاجلوہ سنة و مضت، هل لهم ان یفرقوا بینهما اذا طلبت ام لا ؟ اجاب

نعم یصح التحکیم فی مسئلۃ العنین لانہ لیس یحدو لقود ولا یۃ علی العاقلۃ ولھم ان یفرقوا بطلب الزوجۃ، واللہ اعلم 3 اھ قلت و ھذا نص یقدم علی استظھار

دایاں کالم (اردو): فتاویٰ خیریہ میں ہے مصنف خیر الدین رملی سے سوال کیا گیا نامرد ہونے کے دعویٰ پر خاوند اور بیوی کے معاملہ میں ثالث بنایا جائے اور وہ ثالثی والے حضرات خاوند کو ایک سال کی مہلت دیں اور مہلت ختم ہو جائے تو کیا ثالث حضرات اس پر تفریق کا فیصلہ کر سکتے ہیں یا نہیں، تو انہوں نے جواب دیا کہ ہاں کر سکتے ہیں کیونکہ یہ نامرد ہے، حد یا قصاص یا عاقلہ پر دیت کا معاملہ نہیں ہے اس لئے ثالث حضرات کو بیوی کے [جدول کا اختتام]

1 عقود الدریہ باب العنین حاجی الغفار و پسران قندھار افغانستان ۱/۳۲ 2 القرآن الکریم ۲/۲۲۹ 3 فتاویٰ خیریہ باب التحکیم دارالمعرفۃ بیروت ۱۶/۲

Fatawa Razawiyya Volume 12

Separation upon demand is permissible, and Allah knows best. [Thus said] Allama Amin al-Din Ibn Abidin. However, upon contemplation, despite what he expressed, it does not benefit him, as we have clarified in the margins we wrote on it. So, reflect upon it. (T) I say: This is a juristic text (nass) which takes precedence over the opinion of Allama Ibn Abidin. However, upon close examination, it becomes clear that his opinion itself is not beneficial for him, as we explained in the footnote there. Thus, careful consideration is needed. (T)

If Hindah makes a claim in his presence, the judge should take a response from Zaid. If he admits his impotence and inability to have intimacy with Maryam, grant him a full year's respite starting from today. If he denies it, then a trustworthy, prayerful, and pious woman should examine Maryam. When she testifies that Maryam is indeed still a virgin, then Zaid should be given a year's respite. If the day starts at the end of a lunar month, then the twelve months of the year shall be taken according to 13 crescents; otherwise, count three hundred and sixty (360) days. Any days within this period during which Maryam, of her own choice, does not stay in Zaid's residence, or if she or Zaid suffers from such an illness that makes intimacy impossible, those days will not be counted. If Zaid himself does not keep her or does not come to her, he will receive no deduction/credit (for those days). Similarly, the days of menstruation will also not be deducted. When a year passes in this manner and Zaid is still unable to have intimacy with Maryam, Maryam should again approach the judge with a claim for separation and annulment of marriage. The judge shall again take a response from Zaid. If he confesses, or in case of denial, if it is proven by the ocular testimony of some reliable, prayerful, and God-fearing woman that Maryam is still a virgin as before, then the judge shall ask Maryam: "Do you choose Zaid or your own self?" If she says "Zaid," or leaves without saying anything, or stands up, or is made to stand up, or the judge stands up, then her claim becomes void and the marriage remains binding. But if, in the same sitting, she says, "I have chosen myself," then the judge shall command Zaid to divorce her, stating that according to Sharia, it is mandatory for you to give her a divorce. If he gives it, then well and good; otherwise, the judge shall say, "I have separated you two." Maryam will immediately be released from his marriage and may marry whomever she wishes. Then, if privacy (khalwah) had already occurred between Zaid and Maryam, Maryam must observe the waiting period (iddah) and Zaid is

responsible for the full dowry (mahr). Otherwise, there is no iddah and only half the mahr is due.

In 'Tanwir al-Absar', 'al-Durr al-Mukhtar', and 'Radd al-Muhtar': "If she finds him impotent, he is granted a lunar year by the crescents according to the [Hanafi] school. If the respite is granted during a month, then [the count is] by days according to consensus (every month being thirty days)." It is stated in 'Tanwir al-Absar', 'al-Durr al-Mukhtar', and 'Radd al-Muhtar' that if a wife finds her husband to be impotent, the husband shall be granted a respite of one year according to lunar months, as is the position of the school. And if the respite was given in the middle of a month, then by consensus, the count of days shall be calculated at the rate of thirty days per month, and the month of Ramadan and...

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

मांग पर यह अलगाव जायज़ है, और अल्लाह बेहतर जानता है। ऐसा अल्लामा अमीन-उद-दीन इब्न आबिदीन ने कहा है। लेकिन गौर करने पर, बावजूद उसके जो उन्होंने प्रकट किया, वह उनके लिए फायदेमंद नहीं है, जैसा कि हमने उन पर लिखे हाशिये (नोट्स) में स्पष्ट किया है। तो, इस पर विचार करें। (त) मैं कहता हूँ: यह एक फ़िक़्ही नस (स्पष्ट धार्मिक पाठ) है जो अल्लामा इब्न आबिदीन की राय पर प्रधानता रखती है। हालाँकि, बारीकी से देखने पर पता चलता है कि उनकी राय उनके लिए स्वयं लाभदायक नहीं है, जैसा कि हमने वहां हाशिये में स्पष्ट किया है। अत; गौर करने की ज़रूरत है। (त)

हिंदा अगर उसके(काज़ी के) सामने दावा पेश करे, तो काज़ी ज़ैद से जवाब ले। यदि वह अपनी नपुंसकता और मरियम पर सामर्थ्य न रखने को स्वीकार कर ले, तो उसे आज से पूरे एक साल की मोहलत दी जाए। यदि वह इनकार करे, तो एक भरोसेमंद, नमाज़ी और परहेज़गार महिला मरियम की जाँच करे। जब वह गवाही दे कि मरियम वास्तव में अभी भी कुंवारी है, तो ज़ैद को एक साल की मोहलत दी जानी चाहिए। यदि वह दिन चंद्रमा के महीने के अंत में हो, तो वर्ष के बारह महीने १३ चांदों (हिलालों) से गिने जाएंगे; अन्यथा तीन सौ साठ (३६०) दिन गिनें। इस अवधि के दौरान जितने दिन मरियम स्वेच्छा से ज़ैद के घर में न रहे, या उसे या ज़ैद को ऐसी बीमारी हो जिसमें सहवास संभव न हो, वे दिन गिनती में नहीं आएंगे। और यदि ज़ैद स्वयं उसे न रखे या उसके पास न आए, तो उसे कोई रियायत नहीं मिलेगी। इसी तरह मासिक धर्म के दिन भी नहीं काटे जाएंगे। जब इस तरह एक साल बीत जाए और ज़ैद मरियम पर सामर्थ्य न पा सके, तो मरियम फिर से काज़ी के पास अलगाव और निकाह खत्म करने का दावा लेकर जाए। काज़ी फिर ज़ैद से जवाब ले। यदि वह स्वीकार कर ले, या इनकार की स्थिति में फिर से किसी भरोसेमंद, नमाज़ी और परहेज़गार महिला की आँखों देखी गवाही से साबित हो जाए कि मरियम पहले की तरह अभी भी कुंवारी है, तो काज़ी मरियम से पूछे: "तुम ज़ैद को चुनती हो या स्वयं को?" यदि वह ज़ैद कहे, या बिना कुछ कहे चली जाए, या खड़ी हो जाए, या उसे उठा दिया जाए, या काज़ी खड़ा हो जाए, तो उसका दावा निरस्त हो जाएगा और निकाह कायम रहेगा। लेकिन यदि वह उसी सभा (बैठक) में कह दे कि "मैंने स्वयं को चुन लिया है," तो काज़ी ज़ैद को आदेश दे कि उसे तलाक दे, क्योंकि शरिया के हुक्म के अनुसार तुझ पर तलाक देना वाजिब (अनिवार्य) है। यदि वह दे दे तो बेहतर, अन्यथा काज़ी कह दे कि "मैंने तुम दोनों के बीच अलगाव कर दिया।" मरियम तुरंत उसके निकाह से निकल जाएगी और जिससे चाहे निकाह कर ले। फिर यदि ज़ैद और मरियम के बीच एकांत (खलवत) हो चुका हो, तो मरियम पर इद्दत (प्रतीक्षा

अवधि) अनिवार्य होगी और ज़ैद के ज़िम्मे पूरा मेहर होगा, अन्यथा इद्दत नहीं होगी और आधा मेहर देना होगा।

'तनवीरुल अबसार', 'दुर्रे मुख्तार' और 'रद्दुल मुहतार' में है: "यदि वह उसे नपुंसक पाए, तो उसे मज़हब के अनुसार चांदों के हिसाब से एक चंद्र वर्ष की मोहलत दी जाएगी। और यदि मोहलत महीने के दौरान दी गई हो, तो सर्वसम्मति (इज्मा) से दिनों के हिसाब से होगी (हर महीना तीस दिन का)।" और रमज़ान और दिन... 'तनवीरुल अबसार', 'दुर्रे मुख्तार' और 'रद्दुल मुहतार' में है कि यदि पत्नी अपने पति को नपुंसक पाए, तो पति को चंद्र महीनों के हिसाब से एक साल की मोहलत दी जाएगी, जैसा कि मज़हब में है। और यदि महीने के बीच में मोहलत दी गई, तो फिर सर्वसम्मति से दिनों की गिनती हर महीने तीस दिन के हिसाब से की जाएगी, और रमज़ान का महीना और...

पृष्ठ 498 का 688

مطالبہ پر یہ تفریق جائز ہے، واللہ اعلم اھ العلامۃ امین الدین ابن عابدین اما بالتامل مع ان ما استظھر بہ لا یفیدہ کما اوضحنا فیما علقناہ علیہ فتبصر۔ قلت (میں کہتا ہوں) یہ فقہی نص ہے جو علامہ ابن عابدین کی رائے پر مقدم ہے لیکن بغور معلوم ہورہا ہے کہ ان کی رائے ان کو خود مفید نہیں ہے جیسا کہ ہم نے وہاں حاشیہ میں واضح کیا ہے، تو غور چاہئے۔ (ت)

ہندہ اگر اس کے حضور دعوٰی کرے حکم زید سے جواب لے اگر اپنی نامردی اور مریم پر قدرت نہ پانے کا مقرر ہو اسے آج سے سال بھر کامل کی مہلت دے اور منکر ہو تو عورت ثقہ نمازی پرہیز گار مریم کو دیکھے جب وہ شہادت دے کہ واقعی مریم ہنوز بکر ہے تو زید کو سال بھر کی مہلت دی جائے اگر وہ دن ختم ماہ قمری ہو تو سال کے بارہ مہینے ۱۳ ہلالوں سے لئے جائیں ورنہ تین سو ساٹھ ۳۶۰ دن شمار کرلیں اور اس مدت میں جتنے دنوں مریم باختیار خود زید کے مسکن میں نہ رہے یا اسے خواہ زید کو ایسا مرض ہو جس میں مجامعت نہ ہو سکے وہ دن شمار میں نہ آئیں گے اور اگر زید ہی اسے نہ رکھے یا اس کے پاس نہ آئے تو کچھ مجرانہ پائے گا یونہی ایام حیض بھی مجرانہ ہونگے ، جب اس طرح سال گزر جائے اور زید مریم پر قدرت نہ پائے مریم پھر حکم کے پاس تفریق وازالہ نکاح کا دعوٰی کر حکم پھر زید سے جواب لے اگر معترف ہو یا بحالت انکار پھر کسی عورت معتمدہ نمازی متقیہ کی شہادت معائنیہ سے ثابت ہو کہ اب بھی مریم بدستور بکر ہے تو حکم مریم سے پوچھے تو زید کو اختیار کرتی ہے یا اپنے نفس کو اگر کہے زید کو یا بغیر کچھ کہے چلی جائے یا کھڑی ہو جائے یا اٹھادی جائے یا حکم اٹھ کھڑا ہو تو اب اس کا دعوٰی باطل اور نکاح لازم ہوگیا اور اگر اسی جلسہ میں کہہ دے میں اپنے نفس کو اختیار کیا تو حکم زید کو حکم دے کہ اسے طلاق دے کہ بحکم شرع تجھ پر طلاق دینی واجب ہے اگر دیدے فبہا ورنہ

حکم کہہ دے میں تم دونوں میں تفریق کردی فورا مریم اس کے نکاح سے نکل جائے گی جس سے چاہے نکاح کرلے ، پس اگر زید و مریم میں خلوت ہو چکی تو مریم پر عدت اور زید کے ذمہ پورا مہر ورنہ عدت نہیں اور آدھا مہر،

فی تنویر الابصار والدر المختار ورد المحتار لو وجدتہ عنینا اجل سنة قمریة بالاهلة علی المذهب ولواجل فی اثناء الشهر فبالایام اجماعاً (کل شهر ثلثون یوماً) ورمضان وایام تنویر الابصار، درمختار اور ردالمختار میں ہے کہ اگر بیوی اپنے خاوند کو نامرد پائے تو خاوند کو ایک سال کی قمری مہینوں کے حساب سے مہلت دی جائے گی ، جیسا کہ مذہب میں ہے ، اور اگر مہینہ کے درمیان مہلت دی گئی تو پھر بالاجماع دنوں کی گنتی بحساب ہر ماہ تیس دن مہلت شمار ہوگی ، اور ماہ رمضان اور

Fatawa Razawiyya - Volume Twelve

[Main Table] Arabic: حیضها منها وکذاحجہ وغیبتہ لامدۃ حجها وغیبتها ومرضہ ومرضا ویوجل من وقت الخصومۃ فان وطئ مرة فیها والابانت بالتفریق من القاضی ان ابی طلاقها بطلبها یتعلق بالجمیع(ای جمیع الافعال وهی فرق واجل وبانت)ولو ادعی وانکرتہ فقالت امرأۃ ثقة والنتنان احوط هی بکر خیرت فی مجلسها(ای یخیرهاالقاضی)وان اختارتہ بطل حقها کما لو وجد منها دلیل اعراض بان قامت من مجلسها واقامها اعوان القاضی اوقام القاضی قبل ان تختار شیئًا بہ یفتی لامکانہ مع القیام١ اه ملتقطا- Urdu: The days of a woman's menstruation shall be counted within the term (waiting period), and similarly, the days of the husband's pilgrimage or absence shall not be counted in the term. The counting of the term begins from the time the claim is presented. If the husband has intercourse with the wife once during this period, it is better; otherwise, the wife will become divorced (Baina) through the judge's separation, even if the husband refuses to grant a divorce. This proceeding occurs at the wife's request. The wife's request pertains to all matters: separation, the term, and her becoming 'Baina'. If during the term the husband claims to have had intercourse and the wife denies it, and then one reliable woman or two women state that the wife is still a virgin, the wife will be given a choice in that same assembly (by the judge). If the wife chooses the husband at that time, her right to choose will end. Similarly, if in the assembly of choice the wife stands up to show her dislike for separation, or if the judge's staff makes her stand up, or if the judge himself stands up and leaves before the wife has made a decision, in all these cases, the wife's choice becomes void. The fatwa is based on this because in the wife's standing up, there exists the possibility of ending the choice. (Condensed extract).

In Alamgiri, it is stated: Arabic: ان اختارت الفرقۃ امر القاضی ان یطلقها بائنۃ فان ابی فرق بینهما هکذا ذکر محمد رحمه اللہ تعالی فی الاصل کذا فی التبیین Urdu: If the wife chooses separation, the judge will order the husband to give her a 'Baina' (irrevocable) divorce. If he refuses, the judge shall separate them himself. This is how Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) mentioned it in 'Al-Asl' (Al-Mabsut), and similarly in 'At-Tabyin'.

1. Durr al-Mukhtar sharh Tanwir al-Absar, Chapter on the impotent, Matba' Mujtabai Delhi, 1/254; Radd al-Muhtar, Chapter on the impotent, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/295.

[मुख्य तालिका] अरबी: حیضها منها وکذاحجہ وغیبتہ لامدۃ حجها وغیبتها ومرضہ ومرضا ویوجل من وقت الخصومۃ فان وطئ مرۃ فیها والابانت بالتفریق من القاضی ان ابی طلاقها بطلبها یتعلق بالجمیع(ای جمیع الافعال وهی فرق واجل وبانت)ولو ادعی وانکرتہ فقالت امرأۃ ثقۃ والنتنان احوط هی بکر خیرت فی مجلسها(ای یخیرهاالقاضی)وان اختارتہ بطل حقها کما لو وجد منها دلیل اعراض بان قامت من مجلسها واقامها اعوان القاضی اوقام القاضی قبل ان تختار شیئًا بہ یفتی لامکانہ مع القیام۱ اه ملتقطا- उर्दू: स्त्री के मासिक धर्म के दिन अवधि (मोहलत) में गिने जाएंगे, और इसी तरह पति की हज या अनुपस्थिति के दिन अवधि में नहीं गिने जाएंगे। अवधि की गणना दावा प्रस्तुत करने के समय से होगी। इस अवधि के दौरान यदि पति ने पत्नी के साथ एक बार संभोग किया, तो यह बेहतर है; अन्यथा काजी (न्यायाधीश) द्वारा अलगाव किए जाने पर पत्नी 'बाइना' (तलाकशुदा) हो जाएगी, भले ही पति तलाक देने से इनकार कर दे। यह कार्यवाही पत्नी की मांग पर होगी। पत्नी की मांग अलगाव, अवधि और उसके'बाइना' होने जैसे सभी मामलों से संबंधित है। यदि अवधि के दौरान पति संभोग का दावा करता है और पत्नी इससे इनकार करती है, और फिर एक विश्वसनीय महिला या दो महिलाएं कहती हैं कि पत्नी अभी भी कुंवारी है, तो पत्नी को उसी सभा में काजी द्वारा विकल्प दिया जाएगा। यदि पत्नी उस समय पति को चुन लेती है, तो उसका विकल्प का अधिकार समाप्त हो जाएगा। इसी तरह, यदि विकल्प सभा में पत्नी अलगाव को नापसंद करते हुए उठ जाती है, या काजी के कर्मचारियों ने उसे उठा दिया, या काजी स्वयं उठकर चला गया और पत्नी ने अभी तक कोई निर्णय नहीं लिया था, तो इन सभी स्थितियों में पत्नी का विकल्प अधिकार शून्य हो जाएगा। इसी पर फतवा है क्योंकि पत्नी के उठ जाने में यह संभावना मौजूद है। (संक्षिप्त उद्धरण)।

आलमगीरी में है: अरबी: ان اختارت الفرقۃ امر القاضی ان یطلقها بائنۃ فان ابی فرق بینهما هکذا ذکر محمد رحمه اللہ تعالی فی الاصل کذا فی التبیین उर्दू: यदि पत्नी ने अलगाव को चुना, तो काजी पति को उसे 'बाइना' तलाक देने का आदेश देगा। यदि वह इनकार करता है, तो काजी

स्वयं उनके बीच अलगाव कर देगा। इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) ने 'अल-अस्ल' (मबसूत) में ऐसा ही फरमाया है, जैसा कि 'अत-तबीन' में है।

1. दुर्रे मुख्तार शरह तनवीरुल अबसार, बाबुल अनैन, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/254; रदुल मुहतार, बाबुल अनैन, दार इहयाउत तुरास अल-अरबी बैरुत, 2/295.

पृष्ठ 499 का 688

[مرکزی جدول] عربی: حیضھا منھا وکذاحجہ وغیبتہ لامدۃ حجھا وغیبتھا ومرضہ ومرضا ویوجل من وقت الخصومۃ فان وطئ مرۃ فیھا والابانت بالتفریق من القاضی ان ابی طلاقھا بطلبھا یتعلق بالجمیع(ای جمیع الافعال وھی فرق واجل وبانت)ولو ادعی وانکرتہ فقالت امرأۃ ثقۃ والنتنان احوط ھی بکر خیرت فی مجلسھا(ای یخیرھاالقاضی)وان اختارتہ بطل حقھا کما لو وجد منھا دلیل اعراض بان قامت من مجلسھا واقامھا اعوان القاضی اوقام القاضی قبل ان تختار شیئًا بہ یفتی لامکانہ مع القیام۱ اہ ملتقطا- اردو: عورت کے حیض کے دن مہلت میں شمار ہوں گے، اور یونہی خاوند کے حج اور غیر حاضری کے ایام مہلت میں شمار نہ ہوں گے، اور مہلت کا شمار دعوٰی پیش ہونے کے وقت سے ہوگا، اس دوران مہلت اگر خاوند نے بیوی سے ایک مرتبہ جماع کرلیا تو بہتر ہے ورنہ قاضی کی تفریق سے بیوی بائنہ ہو جائے گی اگرچہ خاوند طلاق دینے سے انکار کردے یہ کاروائی بیوی کے مطالبہ پر ہوگی، عورت کے مطالبہ کا تعلق، تفریق، مہلت اور اس کے بائنہ ہونے تمام امور سے ہے، اگر مہلت کے دوران خاوند وطئ کرنے کا مدعی ہو اور بیوی انکار کرتی ہو تو پھر ثقہ ایک عورت یا دو عورتوں نے کہہ دیا کہ بیوی تاحال باکرہ ہے تو بیوی کو اسی مجلس میں اختیار ہوگا، اور یہ اختیار قاضی دے گا، اگر بیوی نے اس موقعہ پر خاوند کو اپنایا تو بیوی کا اختیار ختم ہو جائیگا جس طرح مجلس اختیار میں بیوی خاوند سے جدائی کو ناپسند کرتے ہوئے اٹھ جائے یا قاضی کے عملہ نے بیوی کو اٹھا دیا، یا قاضی خود اٹھ کر چلا گیا اور بیوی نے ابھی تک کوئی فیصلہ نہ کیا تھا تو ان تمام صورتوں میں بیوی کا اختیار باطل ہو جائے گا، اسی پر فتوٰی ہے کیونکہ بیوی کے اٹھ جانے میں یہ امکان موجود ہے اہ ملتقطا(ت)

عالمگیری میں ہے: عربی: ان اختارت الفرقۃ امر القاضی ان یطلقھا بائنۃ فان ابی فرق بینھما ھکذا ذکر محمد رحمہ اللہ تعالی فی الاصل کذا فی التبیین اردو: اگر بیوی نے فرقت کو پسند کیا تو قاضی خاوند کو بائنہ طلاق دینے کا حکم دے گا، اگر خاوند انکار کردے تو قاضی خود تفریق کردے۔ امام محمد رحمۃ اللہ تعالیٰ نے اصل (مبسوط) میں یو نہی فرمایا ہے، جیسا کہ التبیین میں ہے۔

1. در مختار شرح تنویر الابصار باب العنین مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۵۴، ردالمحتار باب العنین دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۹۵/۲

Fatawa Razawiya, Volume 12

[Arabic Box 1]: Separation is an irrevocable divorce (Talaq Ba'in), as stated in Al-Kafi. She is entitled to the full dower, and the waiting period (Iddah) is mandatory for her by consensus if the husband had established privacy (Khalwah) with her. If he did not enter her, then there is no waiting period for her, and she is entitled to half of the dower if it was specified. If it was not specified, then in this case, only a gift (Mut'ah) shall be given, as mentioned in Al-Bada'i. End.

[Urdu Box 1]: As mentioned in Tabyeen, the separation by a judge will be considered an irrevocable divorce (Talaq Ba'in), as mentioned in Al-Kafi. The wife will receive the full dower and by consensus, the waiting period (Iddah) will be mandatory for her, provided that the husband had established privacy. If he did not establish privacy with the wife, then there will be no waiting period, and the dower will also be half. If the dower was not fixed, then in this situation, only a gift of clothing (Mut'ah) will be given, as mentioned in Al-Bada'i. End (T).

The original ruling is this: Then, if Zaid, out of mischief and to harm his wife, does not agree to appoint anyone as an arbitrator, the remedy is for Maryam to present her claim herself before the most learned religious scholar of that city, who excels all other people of knowledge there in Fiqh and religious sciences. The mentioned scholar should summon Zaid and proceed in the aforementioned manner.

[Arabic Box 2]: Because the most learned scholar of a town, in our times, does not need arbitration in such matters, as stated by the noble master Sayyidi Abdul Ghani al-Nabulsi in 'Al-Hadiqa al-Nadiyya', quoting from Imam al-Atabi and from Sayyid al-Samhudi, and then from al-Manawi (may Allah Almighty have mercy on them all).

[Urdu Box 2]: Because the prominent scholar of an area in our time is not bound by any panchayat (arbitration council), meaning he does not need arbitration, as clarified by the esteemed scholar Maulana Abdul Ghani al-Nabulsi in 'Al-Hadiqa al-Nadiyya', quoting from Imam al-Atabi, Sayyid al-Samhudi, and then Allama al-Manawi (may Allah Almighty have mercy on them all). (T)

Then, if Zaid also refuses to come, the praised scholar should take the trouble of going to him himself.

[Arabic Box 3]: In Al-Hindiyya, it is said that he should go himself or send someone to summon him. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah Almighty be upon them all) practiced both ways. End, summarized.

[Urdu Box 3]: In Hindiyya, it is stated that he should go himself or send someone to summon him. The Messenger of Allah (peace and blessings of Allah Almighty be upon him) adopted both methods. End, summarized (T).

And probably, due to his ignorance of the ruling on this issue, he will have no hesitation in meeting and talking with the mentioned scholar. He should just ask him: "Maryam is complaining about your impotence; is it really so or not?" If he confesses...

---

1 Fatawa Hindiyya, Chapter 12 on Impotence, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/522
2 Fatawa Hindiyya, Book on Adab al-Qadi, Chapter 11, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 3/335

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

[अरबी बॉक्स 1]: अल-काफ़ी में वर्णित है कि विच्छेद अटल तलाक़ (तलाक़ बाइन) है। पत्नी पूर्ण मेहर की हक़दार है, और यदि पति ने उसके साथ एकांत (खलवत) प्राप्त किया हो तो सर्वसम्मति से उस पर इद्दत अनिवार्य है। यदि उसने उसके साथ एकांत प्राप्त न किया हो, तो उस पर कोई इद्दत नहीं है, और यदि मेहर तय था तो वह आधे मेहर की हक़दार है। यदि मेहर तय नहीं था, तो इस स्थिति में केवल मुतअ (वस्त्र का जोड़ा) दिया जाएगा, जैसा कि अल-बदाइ में वर्णित है। समाप्त।

[उर्दू बॉक्स 1]: जैसा कि तब्यीन में वर्णित है, क़ाज़ी द्वारा किया गया विच्छेद अटल तलाक़ माना जाएगा, जैसा कि अल-काफ़ी में वर्णित है। पत्नी के लिए पूरा मेहर होगा और सर्वसम्मति से उस पर इद्दत अनिवार्य होगी, बशर्ते कि पति ने एकांत प्राप्त किया हो। यदि उसने पत्नी के साथ एकांत प्राप्त नहीं किया, तो इद्दत नहीं होगी और मेहर भी आधा होगा। यदि मेहर तय नहीं था, तो इस स्थिति में केवल (मुतअ) जोड़ा दिया जाएगा, जैसा कि बदाइ में वर्णित है। समाप्त (त)।

मूल हुक्म यह है: फिर यदि ज़ैद शरारत और पत्नी को कष्ट पहुँचाने के लिए किसी को पंच नियुक्त करने पर सहमत न हो, तो समाधान यह है कि मरियम उस शहर के सबसे बड़े धार्मिक विद्वान के पास जाए, जो वहां के सभी विद्वानों में फ़िक़्ह और धार्मिक विज्ञान में श्रेष्ठ हो, और स्वयं वहां अपना दावा पेश करे। उक्त विद्वान ज़ैद को बुलाकर बताए गए तरीक़े से कार्रवाई करें।

[अरबी बॉक्स 2]: क्योंकि हमारे समय में किसी शहर का सबसे बड़ा विद्वान ऐसे मामलों में मध्यस्थता का मोहताज नहीं है, जैसा कि आदरणीय स्वामी सैय्यदी अब्दुल ग़नी नाबुलसी ने 'अल-हदीक़ा अल-नदिय्या' में इमाम अताबी और सैय्यद समहूदी से, और फिर मनावी (अल्लाह उन सब पर दया करे) से उद्धृत करते हुए स्पष्ट किया है।

[उर्दू बॉक्स 2]: क्योंकि हमारे समय में किसी क्षेत्र का बड़ा विद्वान किसी पंचायत का पाबंद नहीं है, अर्थात उसे मध्यस्थता की आवश्यकता नहीं है, जैसा कि आदरणीय विद्वान मौलाना अब्दुल ग़नी नाबुलसी ने 'अल-हदीक़ा अल-नदिय्या' में इमाम अताबी, सैय्यद समहूदी और फिर अल्लामा मनावी (अल्लाह उन पर दया करे) के हवाले से स्पष्ट किया है। (त)

फिर यदि ज़ैद आने से भी इनकार करे, तो उक्त विद्वान स्वयं उसके पास जाने का कष्ट करें।

[अरबी बॉक्स 3]: अल-हिन्दिया में है कि स्वयं जाए या किसी को भेजकर बुलाए। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने दोनों तरीक़े अपनाए हैं। संक्षिप्त।

[उर्दू बॉक्स 3]: हिन्दिया में है कि स्वयं जाए या किसी को भेजकर बुलाए। अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने दोनों तरीक़े अपनाए हैं। संक्षिप्त (त)।

और संभवत; इस मसले के हुक्म से अनभिज्ञता के कारण, उसे उक्त विद्वान से मिलने और बात करने में कोई संकोच नहीं होगा। वह उससे बस इतना पूछ ले कि: "मरियम तुम्हारी नामर्दी की शिकायत कर रही है; क्या वास्तव में ऐसा ही है या नहीं?" यदि वह स्वीकार कर ले...

---

1 फ़तावा हिन्दिया, अध्याय 12, नामर्दी के विषय में, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 1/522 2 फ़तावा हिन्दिया, किताब अदब अल-क़ाज़ी, अध्याय 11, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 3/335

فتاوٰی رضویہ، جلد دو ازدہم

[Arabic Box 1]: والفرقة تطلیقه بائنة کذا فی الکافی ولها المهر کاملا وعلیها العدة بالاجماع ان کان الزوج قد خلا بها وان لم یدخل بها فلا عدة علیها ولها نصف المهر ان کان مسمّٰی والمتعة ان لم یکن مسمی کذا فی البدائع اھـ

[Urdu Box 1]: کہ تبیین میں مذکور ہے، اور قاضی کی تفریق بائنہ طلاق قرار پائے گی جیسا کہ کافی میں مذکور ہے۔ بیوی کے لئے کامل مہر ہوگا اور اس پر بالاجماع عدت لازم ہوگی بشر طیکہ خاوند نے خلوت پالی ہو، اور اگر اس نے خلوت بیوی سے نہ کی ہو تو عدت نہ ہوگی اور مہر بھی نصف ہوگا، اور اگر مہر مقرر نہ تھا تو اس صورت میں صرف (متعہ) جوڑا دیا جائے گا، جیسا کہ بدائع میں مذکور ہے اھ (ت)

اصل حکم یہ ہے پھر زید براہِ شرارت واضرارِ زوجہ کسی کو پنچ کرنے پر راضی نہ ہو تو چارہ کاریہ ہے کہ اس شہر میں جو عالمِ دین وہاں کے سب اہلِ علم فقہ وعلومِ دینیہ میں زائد ہو مریم اُس کے یہاں بطورِ خود دعوٰی مذکور کرے عالم موصوف زید کو بلا کر کاروائی بروجہِ مذکور کرے۔

[Arabic Box 2]: فان اعلم البلد لایحتاج فی زماننا فی امثال ھٰذا الی التحکیم کما نص علیہ المولٰی الفاضل سیدی عبدالغنی النابلسی فی الحدیقة الندیة عن الامام العتابی وعن السید السمهودی ثم عن المناوی رحمهم الله تعالٰی علیهم اجمعین۔

[Urdu Box 2]: کیونکہ علاقہ کا بڑا عالم ہمارے زمانہ میں کسی پنچایت کا پابند نہیں یعنی ثالثی کا محتاج نہیں، جیسا کہ فاضل محترم مولانا عبدالغنی نابلسی نے حدیقہ ندیہ میں اس پر تصریح

فرماتے ہوئے امام عتابی اور سید سمہودی اور پھر علامہ مناوی رحمہم اللہ تعالیٰ علیہم اجمعین سے نقل کیا ہے۔ (ت)

پھر اگر زید کو آنے میں بھی انکار ہو تو عالِم ممدوح خود اس کے پاس تکلیف کرے،

[Arabic Box 3]: فی الھندیۃ یذھب بنفسہ اویبعث من یحضرہ ورسول اللہ صلی اللہ تعالٰی علیھم فعل کلا النوعین اھ ملخصاً۔

[Urdu Box 3]: ہندیہ میں ہے خود جائے یا کسی کو بھیج کر طلب کرے، رسول اللہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم نے دونوں طریقے اپنائے ہیں اھ ملخصاً (ت)

اور غالباً ہنوز حکمِ مسئلہ سے ناواقفی کے باعث اسے عالم موصوف سے ملنے اور گفتگو کرنے میں باک نہ ہوگا بس صرف اتنا اس سے دریافت کرلے کہ مریم تیری نامردی کی شاکی ہے آیا واقعی ایسا ہی نہیں اگر اقرار

---

1 فتاوٰی ہندیہ الباب الثانی عشر فی العنّین نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۵۲۲ 2 فتاوٰی ہندیہ کتاب ادب القاضی الباب الحادی عشر نورانی کتب خانہ پشاور ۳/ ۳۳۵

Give him a year's respite. In case of denial, show her to trustworthy women to prove the persistence of her virginity and inform Zaid about the one-year respite. When the period expires and the woman desires separation again, the scholar should go to Zaid once more and, if possible, carry out the aforementioned proceedings. However, if Zaid's only intention is to intentionally harm Maryam, it's not surprising if he doesn't meet the scholar again after hearing about the respite, as there's no way for legal compulsion. If such a situation arises, Maryam should consider herself independent of the scholar's assistance in this second proceeding and be content with just the aid provided the first time when Zaid's impotence was proven by the scholar's order and respite was given. Now, if Zaid doesn't meet the scholar and doesn't allow future proceedings, Hind (the woman) should herself say, "I have chosen myself and am out of Zaid's marriage." According to the school of the two companions (Sahibayn - Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad), this much will suffice, and Maryam will be saved from his oppression.

In Radd al-Muhtar, under the author's statement "(otherwise she will become irrevocably divorced by the judge's separation)", it is stated: "Some said that instead of separation by the judge, if the wife herself declares herself separated, it is sufficient and there is no need for a judge, just as in the case of the option of manumission (khiyar al-itq) where the woman has the power to act herself. Some declared this view as most correct, as in Ghayat al-Bayan. In al-Majma', the first view (separation by the judge) is attributed to the Imam [Abu Hanifa] (may Allah be pleased with him) and the second to the two companions [Sahibayn] – Nahr. And in al-Bada'i, it is narrated from the commentary of Mukhtasar al-Tahawi that the second view is the Zahir al-Riwayah (manifest narration), and then it said that in some places, Zahir al-Riwayah is the view of the two companions. Finished. (T)"

I say: Our scholars have explicitly stated that following someone other than one's own Great Imam (Imam Azam Abu Hanifa, may Allah be pleased with him) is permissible in...

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter of the Impotent (Bab al-Unayn), Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 595/2.

उसे एक साल की मोहलत दें। इनकार की स्थिति में, विश्वसनीय महिलाओं को दिखाकर उसके कौमार्य (virginity) के बने रहने का प्रमाण प्राप्त करें और ज़ैद को एक साल की मोहलत की सूचना दें। जब अवधि बीत जाए और स्त्री फिर से अलगाव चाहे, तो विद्वान (आलिम) को फिर से ज़ैद के पास जाना चाहिए और यदि संभव हो, तो उक्त कार्यवाही करनी चाहिए। लेकिन अगर ज़ैद का एकमात्र उद्देश्य मरियम को जानबूझकर नुकसान पहुँचाना ही है, तो यह आश्चर्य की बात नहीं होगी कि मोहलत सुनने के बाद वह विद्वान से दोबारा न मिले, क्योंकि कानूनी मजबूरी (legal compulsion) का कोई रास्ता नहीं है। यदि ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है, तो मरियम को इस दूसरी कार्यवाही में विद्वान की सहायता से स्वतंत्र समझना चाहिए और केवल उसी सहायता पर संतोष करना चाहिए जो पहली बार विद्वान के आदेश से ज़ैद की नपुंसकता सिद्ध होने पर दी गई थी और मोहलत दी गई थी। अब, यदि ज़ैद विद्वान से नहीं मिलता है और भविष्य की कार्यवाही की अनुमति नहीं देता है, तो हिंदा (स्त्री) स्वयं कह दे कि "मैंने अपने आप को चुन लिया है और मैं ज़ैद के निकाह से बाहर आ गई हूँ।" साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद) के मत के अनुसार, इतना ही पर्याप्त होगा और मरियम को उसके ज़ुल्म से निजात मिल जाएगी।

रद्द अल-मुह्तार में लेखक के कथन "(अन्यथा वह काज़ी के अलगाव से बाइनह [तलाकशुदा] हो जाएगी)" के तहत यह वर्णित है: "कुछ ने कहा कि काज़ी द्वारा अलगाव के बजाय, यदि पत्नी स्वयं को अलग घोषित कर दे, तो यह पर्याप्त है और काज़ी की आवश्यकता नहीं है, जैसे कि दासता से मुक्ति के विकल्प (ख़ियार अल-इतक़) के मामले में स्त्री को स्वयं कार्यवाही करने का अधिकार होता है। कुछ ने इस मत को सबसे सही घोषित किया, जैसा कि ग़ायत अल-बयान में है। और अल-मजमा' में पहले मत (काज़ी द्वारा अलगाव) को इमाम साहब (रज़ियल्लाहु अन्हु) का मत और दूसरे को साहिबैन का मत बताया गया है – नहर। और अल-बदाइ' में मुख्तसर अल-तहावी की व्याख्या से उद्धृत है कि दूसरा मत ज़ाहिर अल-रिवायत (प्रकट कथन) है, और फिर कहा गया है कि कुछ स्थानों पर ज़ाहिर अल-रिवायत साहिबैन का मत है। समाप्त। (त)"

मैं कहता हूँ: हमारे विद्वानों ने स्पष्ट रूप से कहा है कि अपने इमाम आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) के अलावा किसी और का अनुसरण करना जायज़ है...

---

1. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-उन्नैन, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, ५९५/२।

فتاوی رضویہ جلد دو ازدہم

کرے سال بھر کی مہلت دے داور بحالت انکار زنان ثقات کو دکھا کر بقائے بکارت کا ثبوت لے کر زید کو مہلت ایک سال کی اطلاع کودے جب بعد مرور مدت عورت پھر جدائی چاہے عالم دوبارہ زید کے پاس جائے ، بن پڑے تو کاروائی مذکور کرے مگر جب زید کو خواہی نخواہی ایذا و ضرر مریم ہی منظور ہے تو بعد سماع مہلت عجب نہیں کہ دوبارہ عالم سے نہ ملے کہ آخر جبر شرعی کی طرف تو کوئی راہ ہی نہیں ، اگر ایسی صورت واقع ہو تو مریم اس بار دوم کی کاروائی میں اپنے آپ کو اعانت عالم سے غنی سمجھے اور صرف اس قدر امداد پر جو اول بار بحکم عالم نامردی زید ثابت ہو کر مہلت یہاں دی گئی تھی قناعت کرے اب کہ زید عالم سے نہ ملے اور کاروائی آئندہ نہ ہونے دے ہندہ خود کہہ دے کہ میں نے اپنے نفس کو اختیار کیا اور زید کے نکاح سے باہر آئی مذہب صاحبین پر اس قدر بھی کافی ہو جائے گا اور مریم اس کے ظلم سے نجات پائے گی،

في ردالمحتار تحت قوله والابانہ بالتفریق من القاضی وقیل یکفی اختیارھا نفسھا ولا یحتاج الی القضاء کخیار العتق قیل وھو الاصح کذا فی غایۃ البیان وجعل فی المجمع الاول قول الامام والثانی قولھما نھر ، وفي البدائع عن شرح مختصر الطحاوي ان الثانی ظاھر الروایۃ ثم قال وذکر في بعض المواضع ان ماذکر في ظاھر الروایۃ قولھما ا نتھی۔

ردالمحتار میں ماتن کے قول (ورنہ قاضی کی تفریق سے بائنہ ہوجائے گا) کے تحت بیان کیا کہ بعض نے کہا قاضی کی تفریق کے بجائے بیوی خود اپنے کو علیحدہ قرار دے تو کافی ہے اور قاضی کی ضرورت نہیں ، جیسا کہ عتق میں خیار کی صورت میں عورت کو خود کاروائی کا

اختیار ہے ، بعض نے اس قول کو اصح قرار دیا ، جیسا کہ غایۃ البیان میں ہے۔ اور مجمع میں پہلے قول (قاضی کی تفریق) کو امام صاحب رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا قول اور دوسرے کو صاحبین کا قول قرار دیا ہے ، نہر۔ اور بدائع میں مختصر الطحاوی کی شرح سے منقول ہے کہ دوسرا قول ظاہر روایت ہے ، اور پھر کہا کہ بعض مواقع میں ظاہر روایت صاحبین کا قول ہے ، اھ۔ (ت)

اقول: وقد نص علماؤنا ان تقلید الغیر یجوز فی اقول : (میں کہتا ہوں) ہمارے علماء نے نص فرمائی ہے کہ اپنے امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ

---

1۸ ردالمحتار باب العنین دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۵۹۵

Fatawa Razawiyya, Volume 12

[Right Column Text]: In addition, following [another opinion] at a time of necessity is permissible, and Allah the Almighty has said: "Allah has not placed upon you any hardship in religion." So what hesitation can you have in acting upon the saying of both students (Sahibayn) of the Imam, may Allah the Almighty have mercy on him, while that saying, within the context of Zahir al-Riwayah, also carries a form of preference? The jurists have explicitly stated that in the school of thought (Madhhab), there is no saying other than that of the Great Imam (Imam-e-Azam), may Allah the Almighty be pleased with him. And whatever is attributed to the two companions or one of them is also a saying of the Great Imam, may Allah be pleased with him, which is narrated from them, and some students adopt this saying as his students have mentioned through strong oaths, as described in books like Radd al-Muhtar and others. Allah the Almighty loves to create ease and does not like oppression or harm in Islam, and the complaint regarding the states of the times is in His court alone. And Allah the Almighty knows best. (T)

[Left Column Text (Arabic and Urdu)]: In cases of necessity, Allah the Almighty said: "He has not placed upon you in the religion any hardship." So what is your thought on acting upon the word of the two companions of the Imam, established in Zahir al-Riwayah, followed by preference? For they have explicitly stated that there is no word in the Madhhab for anyone other than the Great Imam, may Allah be pleased with him. As for what is attributed to the two companions or one of them, it is nothing but a narration from him that some companions inclined towards, so it was attributed to him, as the companions swore by strong and firm oaths, as mentioned in Radd al-Muhtar and other books. Allah loves ease and is not pleased with oppression, harm, or reciprocated harm in Islam. To Him is the complaint regarding the states of the times. And Allah the Almighty knows best.

Problem 260: 11 Jumada al-Akhirah 1319 AH What do the scholars of religion say in this matter: A man is impotent and has divorced his wife. Now he is making a false case in court claiming "we have not given divorce." The court ordered a doctor's examination, and it was observed that he is indeed impotent. A few people have instigated him to file a lawsuit. What is the ruling in this matter?

Answer: When the divorce was given and the waiting period (iddat) passed, it was an irrevocable divorce (Talaq Ba'in). Thus, the woman is out of the marriage contract, and he is a liar.

1. The Holy Quran 22/78
2. Al-Mu'jam al-Kabir, Hadith, Maktaba al-Ma'arif Riyadh 6/91

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

[दायां कॉलम]: ज़रूरत के समय [किसी अन्य का] अनुसरण करना जायज़ है, और अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "अल्लाह ने धर्म में तुम पर कोई तंगी नहीं रखी है।" तो इमाम साहब (रहमतुल्लाह अलैह) के दोनों शिष्यों (साहिबैन) के कथन पर अमल करने के बारे में आपको क्या संदेह हो सकता है, जबकि वह कथन ज़ाहिर अर-रिवायत के अंतर्गत एक प्रकार की प्राथमिकता भी अपने साथ लिए हुए है। फ़क़ीहों (धर्मशास्त्रियों) ने स्पष्ट किया है कि संप्रदाय (मज़हब) में इमाम-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) के अलावा किसी और का कोई कथन नहीं है। और जो कुछ भी दो शिष्यों या उनमें से किसी एक की ओर आरोपित किया जाता है, वह भी इमाम-ए-आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) का ही कथन है जो उनसे वर्णित होता है और कुछ शिष्य इस कथन को अपना लेते हैं जैसा कि उनके शिष्यों ने कड़ी कसमों के माध्यम से इसका उल्लेख किया है, जैसा कि रद अल-मुह्तार और अन्य पुस्तकों में वर्णित है। अल्लाह तआला आसानी पैदा करना पसंद करता है और इस्लाम में ज़ुल्म या नुकसान को पसंद नहीं करता है, और ज़माने की परिस्थितियों की शिकायत उसी के दरबार में है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। (टी)

[बायां कॉलम]: ज़रूरत के मौकों पर अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "उसने धर्म में तुम पर कोई तंगी नहीं रखी है।" तो इमाम के दो साथियों के कथन पर अमल करने के बारे में आपका क्या विचार है जो ज़ाहिर अर-रिवायत में स्थापित है और प्राथमिकता के साथ है? क्योंकि उन्होंने स्पष्ट किया है कि मज़हब में इमाम-ए-हुमाम (रज़ियल्लाहु अन्हु) के अलावा किसी का कोई कथन नहीं है। रहा वह जो दो साथियों या उनमें से एक की ओर आरोपित है, तो वह उनके माध्यम से एक रिवायत ही है जिसकी ओर कुछ साथियों का झुकाव हुआ, तो वह उनकी ओर आरोपित किया गया जैसा कि साथियों ने इसके लिए कड़ी कसमें खाईं जैसा कि रद अल-मुह्तार और अन्य पुस्तकों में उल्लेख है। अल्लाह आसानी पसंद करता है और इस्लाम में ज़ुल्म, नुकसान या बदला लेने वाले नुकसान को पसंद नहीं करता। ज़माने के हालात की शिकायत उसी की ओर है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसाला 260: 11 जमादी अल-आख़िरा 1319 हिजरी धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: एक व्यक्ति नपुंसक है और उसने अपनी पत्नी को तलाक दे दिया है। अब वह अदालत में झूठा मामला बना रहा है कि "हमने तलाक नहीं दिया है।" अदालत ने डॉक्टर द्वारा जांच का आदेश दिया, और यह देखा गया कि वह वास्तव में नपुंसक है। कुछ लोगों ने उसे उकसा कर मुकदमा दायर करवाया है। इस मामले में क्या हुक्म (आदेश) है?

जवाब: जब तलाक दे दिया गया और इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) बीत गई, तो वह तलाक-ए-बाइन (अटल तलाक) था। अतः महिला निकाह के अनुबंध से बाहर हो गई है और वह झूठा है।

1. पवित्र क़ुरान 22/78
2. अल-मुअजम अल-कबीर, हदीस, मकतबा अल-मआरिफ, रियाद, 6/91

पृष्ठ 502 का 688

مواقع الضرورۃ قال اللہ تعالٰی مَا جَعَلَ عَلَیْکُمْ فِي الدِّیْنِ مِنْ حَرَجٍ ط فما ظنك بالعمل بقول صاحبی الامام المثبت فی ظاھر الروایۃ المذیل بترجیح مأفقد صرحوا انہ لیس فی المذھب قول لاحد غیر الامام الہمام رضی اللہ تعالٰی عنہ، واما ما ینسب الٰی الصاحبین او الٰی احدھما فما ھو الاروایۃ عنہ مال الیھا بعض الاصحاب، فنسبت الیہ کما اقسم علیہ الاصحاب بآیمان غلاظ شداد کما ذکرہ فی رد المحتار و غیرہا من الاسفار واللہ یحب التیسر ولایرضی بالظلم ولاضرر ولا ضرار فی الاسلام والیہ المشتکی من احوال الزمان، واللہ تعالٰی اعلم۔

کے علاوہ کی تقلید بوقت ضرورت جائز ہے، اور اللہ تعالٰی نے فرمایا: "اللہ تعالٰی نے تمہارے لئے دین میں تنگی نہیں فرمائی۔" تو امام صاحب رحمۃ اللہ تعالٰی کے دونوں شاگردوں (صاحبین) کے قول پر عمل کے بارے میں تجھے کیا تردد ہو سکتا جبکہ وہ قول ظاہر الروایہ کے ضمن میں ایک طرح کی ترجیح بھی دامن میں لئے ہوئے ہے، فقہاء نے تصریح فرمائی ہے کہ مذہب میں امامِ اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ کے قول کے ماسوا کوئی قول نہیں اور جو صاحبین یا ان میں کسی ایک کی طرف منسوب ہے تو وہ بھی امامِ اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ کا ہی قول ہے جو ان سے مروی ہوتا ہے اور بعض شاگرد اس قول کو اپنا لیتے ہیں جیسا کہ اس کو آپ کے شاگردوں نے شدید قسموں کے ذریعے ذکر فرمایا ہے کہ جیسا کہ اس کو ردالمحتار وغیرہ کتب میں بیان کیا ہے، اور اللہ تعالٰی آسانی پیدا کرنے کو پسند فرماتا ہے اور ظلم اور ضرر کو اسلام میں پسند نہیں فرماتا، اور اس کے دربار میں ہی زمانہ کے احوال کی شکایت ہے، واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۲۶۰: ۱۱ جمادی الآخرہ ۱۳۱۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نامرد ہے اُس نے اپنی زوجہ کو طلاق دے دی اب وہ مقدمہ جھوٹا بنا کر کچہری چڑھتا ہے کہ ہم

نے طلاق نہیں دی ہے کچہری سے حکم ہوا ڈاکٹر معائنہ کرے اس کا ملاحظہ بھی ہوا وہ نامرد ہے دو چار شخصوں نے اس کو چڑھوا کر نالش کردی ہے، اس مسئلہ میں کیا حکم ہے؟

الجواب: جب طلاق دے دی اور عدت گزر گئی طلاق بائن تھی تو عورت نکاح سے نکل گئی اور وہ جھوٹی

1 القرآن الکریم ۲۲/ ۷۸ 2 المعجم الکبیر حدیث مکتبہ المعارف الریاض ۹۱/۶

By filing a lawsuit he became a grave sinner, and if it was a revocable divorce (Talaq Raj'i) and he took her back within the waiting period (Iddah), then the woman is in his marriage and he did not become a sinner in the lawsuit, although he should not have said that he did not give divorce. And Allah the Exalted knows best.

Problem 261: 28 Rabi al-Akhir Sharif 1322 AH. What do the scholars of religion and muftis of Sharia say without favor to anyone regarding the following detailed matters: A young woman of thirty (30) years, whose husband has been insane for a long time. Every type of treatment was tried for him but no recovery occurred. And this person's insanity has reached the limit that the jurists call permanent insanity (Junoon Mutbiq). Furthermore, this insane person has no property or possessions through which the maintenance (food and clothing) of this woman can be arranged. Is there a right of separation (Khiyar-e-Tafreeq) for the wife of such an insane person according to any of the three Imams (Imam Malik, Imam Shafi'i, Imam Ahmad bin Hanbal)? And in this matter, on which Imam's saying is the fatwa for separation given? If in a time of need, a fatwa is given on the saying of another Imam in a Sharia matter and acted upon, as in books of jurisprudence like Sharh Waqaya, Hidaya, Shami etc., in many matters they prove the preference of the saying of the Two Companions (Sahibayn) over the Imam's saying, and in books of fatwa like Alamgiriya and Qazi Khan etc., they give fatwa on the saying of the Two Companions. Is this permissible or not? In matters where there is no judge or ruler to give a ruling, for example, nowadays under the rule of Christians, can the mufti's fatwa take that place or not? Please grant a clear answer to the problem with references to books.

The Answer: In our school of thought (Hanafi), separation can never occur due to insanity. It is stated in 'Durr-e-Mukhtar':

Arabic	Urdu Translation
Neither spouse has a choice [to annul the marriage] due to the defect of the other, even if it is a gross defect like insanity, etc.	Neither husband nor wife has the right to annulment (fasakh) based on a defect in the other, even if that defect is clear like insanity, etc. (T)

Redd al-Muhtar states:

Arabic	Urdu Translation
And 'Al-Fath' has undertaken to refute what the three Imams and Muhammad (may	In 'Al-Fath', the stance of the three Imams and Imam Muhammad (may

Arabic	Urdu Translation
Allah have mercy on them) used as evidence, to an extent that nothing more can be added.	Allah the Exalted have mercy on them) was well-refuted, leaving no room for more. (T)

[1] Durr-e-Mukhtar, Chapter on Impotence (Al-Inneen), Mujtabai Press Delhi 1/254 [2] Redd al-Muhtar, Chapter on Impotence, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 2/597

नालिश (मुकदमा) करने से वह सख्त गुनहगार हुआ, और अगर तलाक रजई (प्रतिसंहरणीय तलाक) थी और इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के अंदर रुजू (वापसी) कर ली तो औरत उसके निकाह में है और नालिश में वह गुनहगार न हुआ, हालांकि उसे यह नहीं कहना चाहिए था कि तलाक नहीं दी, और अल्लाह सुब्हानहू व तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 261: 28 रबी-उल-आख़िर शरीफ 1322 हिजरी। दीन के उलमा और शरीयत के मुफ्ती बिना किसी रियायत के निम्नलिखित विस्तृत मसलों में क्या फरमाते हैं: एक जवान औरत उम्र 30 साल, जिसका शौहर लंबे समय से पागल (मजनून) है और उसका हर तरह का इलाज कराया गया मगर कोई सुधार नहीं हुआ, और इस शख्स का पागलपन उस हद तक पहुँच गया है जिसे फिक़्ह (इस्लामी न्यायशास्त्र) वाले 'जुनून-ए-मुतबिक' (स्थायी पागलपन) कहते हैं, और साथ ही इस पागल के पास कोई माल-असबाब भी नहीं है जिससे इस औरत के खाने-पीने और रहने (नान-ओ-नफ़क़ा) का इंतज़ाम हो सके। क्या ऐसे मजनून की बीवी को तीन इमामों (अइम्मा सलासा) में से किसी के नज़दीक तफ़रीक़ (जुदा होने) का अधिकार (खियार) है या नहीं? और इस मसले में किस इमाम के कौल (कथन) पर तफ़रीक़ का फतवा है? अगर ज़रूरत के समय शरीअत के किसी मसले में दूसरे इमाम के कौल पर फतवा दिया जाए और उस पर अमल किया जाए, जैसा कि फिक़्ह की किताबों जैसे शरह वक़ाया, हिदाया, शामी वग़ैरह में अक्सर मसलों में साहिबैन (इमाम अबू हनीफा के दो महान शिष्य) के कौल की तरजीह इमाम के कौल पर साबित करते हैं, और फतावा की किताबों जैसे आलमगीरी और काज़ी ख़ाँ वग़ैरह में साहिबैन के कौल पर फतवा देते हैं, तो क्या यह बात जायज़ है या नहीं? जिन मसलों में काज़ी और हाकिम का हुक्म वग़ैरह नहीं है, जैसा कि आजकल ईसाइयों (नसारा) की हुकूमत है, तो इस सूरत में मुफ्ती का फतवा उस जगह काम कर सकता है या नहीं? मसले का साफ़-साफ़ जवाब किताबों के हवाले के साथ इनायत फरमायें।

अल-जवाब (उत्तर): हमारे मज़हब (हनफी) में पागलपन की वजह से कभी भी तफ़रीक़ (जुदाई) नहीं हो सकती। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

अरबी	**उर्दू अनुवाद**
ला यतख़य्यर अहदुज़ ज़ौजैन बि-ऐबिल आख़रि वलौ फ़ाहिशन क-जुनूनिन इलख़	शौहर और बीवी में से किसी को भी दूसरे में मौजूद ऐब (दोष) की बिना पर निक़ाह तोड़ने (फ़स्ख) का अधिकार नहीं है, चाहे वह ऐब पागलपन की तरह ज़ाहिर ही क्यों न हो। (त)

रद्दुल मुहतार में है:

अरबी	उर्दू अनुवाद
व क़द तकफ़्फ़ला फ़िल फ़तहि बि-रद-मि-स्तदल्ला बिहिल अइम्मतुस सलासतु व मुहम्मदुन बि-मा ला मज़ीदा अलैहि।	'फ़तह' में तीनों इमामों और इमाम मुहम्मद (अल्लाह तआला उन पर रहम फरमाए) के रुख (दलील) का अच्छी तरह से रद्द किया गया है, जिसके बाद और कुछ कहने की गुंजाइश नहीं है। (त)

[1] दुर्रे मुख्तार, बाबुल इन्नीन (नपुंसकता का अध्याय), मुजतबाई प्रेस दिल्ली 1/254 [2] रद्दुल मुहतार, बाबुल इन्नीन, दार एहयाउत तुरासुल अरबी बेरुत 2/597

पृष्ठ 503/688

نالش کرنے سے سخت گنہگار ہوا، اور اگر طلاق رجعی تھی اور عدت کے اندر رجعت کرلی تو عورت اُس کے نکاح میں ہے اور نالش میں وہ گنہگار نہ ہوا اگرچہ طلاق نہ دی کہنا نہ چاہئے تھا، واللہ سبحانہ و تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۶۱: ۲۸ ربیع الآخر شریف ۱۳۲۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع بلار رعایت کسی کے مسائل مفصلہ ذیل میں، ایک عورت جوان تمیں ۳۰ سالہ کہ جس کا خاوند مدت دراز سے مجنون ہے اور اس کا علاج بھی ہر قسم سے کرایا گیا مگر کچھ افاقہ نہ ہوا، اور اس شخص کا جنون حد کو پہنچ گیا کہ جس کو فقہ والے جنون مطبق کہتے ہیں، اور نیز اس مجنون کے پاس کچھ مال و اسباب بھی نہیں ہے جس سے اس عورت کے نان و نفقہ کا انتظام ہوسکے، ایسے مجنون کی زوجہ کو ائمہ ثلاثہ سے کسی امام کے نزدیک خیار تفریق ہے یا نہیں اور مسئلہ میں خیار تفریق کس امام کے قول پر فتوٰی ہے۔ اگر ضرورت کے وقت مسئلہ شرعی میں دوسرے امام کے قول پر فتوٰی دیا جائے اور اس پر عمل کیا جائے، چنانچہ فقہ کی کتابوں میں مثلاً شرح وقایہ و ہدایہ و شامی وغیرہ میں اکثر مسائل کے اندر صاحبین کے قول کی ترجیح، امام کے قول پر ثابت کرتے ہیں، اور کتب فتاوٰی مثلاً عالمگیریہ و قاضی خاں وغیرہ میں صاحبین کے قول پر فتوٰی دیتے ہیں، آیا یہ بات جائز ہے یا نہیں۔ جن مسائل میں قاضی و حاکم حکم وغیرہ نہیں ہے چنانچہ آج کل عملداری نصاریٰ کی ہے تو اس صورت میں مفتی کا فتوٰی قائم مقام ہو سکتا ہے یا نہیں، جواب مسئلہ صاف صاف معہ حوالہ کتب کے مرحمت فرمایا جائے۔

الجواب: ہمارے مذہب میں جنون کی وجہ سے ہر گز تفریق نہیں ہو سکتی۔ در مختار میں ہے:

عربی	اردو ترجمہ
لا یتخیر احد الزوجین بعیب الآخر ولو فاحشا کجنون الخ	خاوند بیوی میں سے کسی کو دوسرے میں عیب کی بناء پر اگرچہ وہ عیب جنون کی طرح واضح ہو، فسخ کا اختیار نہیں الخ (ت)

رد المحتار میں ہے:

عربی	اردو ترجمہ
وقد تکفل فی الفتح بردمأ استدل بہ الائمۃ الثلثۃ و محمد بما لا مزید علیہ -	فتح میں ائمہ ثلاثہ اور امام محمد رحمہم اللہ تعالٰی کے موقف کا خوب رد کیا جس سے زائد کی گنجائش نہیں ہے (ت)

[1] درمختار باب العنین مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۵۴ [2] رد المحتار باب العنین دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۵۹۷

Fatawa Razawiyya Volume 12

Our scholars, including Imam Muhammad (mercy of Allah be upon him), have leaned towards choice (khiyar). In 'Hawi Qudsi', as per habit, contrary to general texts, commentaries, and fatwas, it is also written with the attribution 'bihi na'khudhu' (this is our chosen view), as it is quoted in Alamgiriyyah. In the fatwas of this humble servant, it has been explained in full detail that the adopted, chosen, reliable, and mandatory path of interpretation (Madhab) of our Master, Imam Azam (may Allah be pleased with him), is:

Arabic

And the statement in 'Hawi' against the Imam's view with 'bihi na'khudhu' [is problematic]. Indeed, it is contrary to the Madhab and the majority of its leaders, especially since the evidence also strongly supports the view of Imam Sahib (may Allah be pleased with him). Therefore, there is no need to pay attention to what is contrary to it.

Urdu Translation

The statement of Hawi against Imam's view as 'bihi na'khudhu' (this is our choice) is contrary to the Madhab and the majority of its leaders, whereas the evidence of Imam Sahib (mercy of Allah be upon him) is also strong; hence there is no need to turn towards its opposition. (T)

However, if insanity is recent—the husband was not insane before marriage but it occurred afterwards—and if the state of necessity, without deception or following of whims, is truly and genuinely established, then acting upon the view of Imam Muhammad is possible.

Arabic

For the jurists have permitted following others upon the establishment of valid necessity. Thus, this is more entitled to permission, as by the grace of Allah, there is no statement in the Madhab outside the statements of the Imam, as specified by noble scholars and mentioned by the companions of our Imam (may Allah be pleased with him and them) with solemn oaths and the strongest

Urdu Translation

The noble jurists have permitted the following of other Imams on the basis of genuine necessity, so here, following the statement of Imam Muhammad (mercy of Allah be upon him) will be permissible in the first degree because, by the praise of Allah, no statement of the Madhab is outside the statement of Imam Azam (mercy of Allah be upon him), as the noble scholars have specified. And the students of our Imam Azam (mercy of Allah be upon him) have

Arabic	Urdu Translation
categories, especially when it is appended with the most emphatic words of legal verdict.	explained this through solemn oaths and severe categories, especially when emphatic words of fatwa have been mentioned under the statement of Imam Muhammad (mercy of Allah be upon him). (T)

However, Imam Muhammad's view is not that if the husband becomes insane, the woman can unilaterally separate from him and marry someone else; this is not permissible according to anyone.

Arabic	Urdu Translation
Because in it is a grand, severe, and strong disagreement, rather grander and stronger. Thus, this side is not preferred except by judicial decree, as in the case of impotence, rather...	Because in this, there is a grand, strong, and severe, rather a very grand strong disagreement; therefore, this aspect cannot be preferred without a judge's decision, as in the case of [impotence]...

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

हमारे उलेमा से इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) खियार (विकल्प) की ओर गए हैं और 'हावी कुदसी' में आदत के अनुसार आम मतून, शूरूह और फ़तावा के विपरीत इसके बारे में 'बिही नाखुज़ु' (यही हमारा चुना हुआ मत है) भी लिख दिया गया है, जैसा कि आलमगीरिया में उद्धृत है। इस फ़कीर के फ़तावा में पूरी तफ़सील के साथ स्पष्ट कर दिया गया है कि हमारे आका इमाम आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) का अख़्तियार किया गया, चुना हुआ, विश्वसनीय और अनिवार्य व्याख्या वाला मज़हब यह है:

अरबी	उर्दू अनुवाद
और 'हावी' का इमाम के विचार के खिलाफ 'बिही नाखुज़ु' कहना। वास्तव में, यह मज़हब और इसके अधिकांश नेताओं के विपरीत है, विशेष रूप से क्योंकि प्रमाण भी इमाम साहब (रहमतुल्लाह अलैह) के विचार का दृढ़ता से समर्थन करते हैं। इसलिए, इसके विपरीत किसी भी चीज़ पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है।	'हावी' का इमाम साहब के कौल के खिलाफ 'बिही नाखुज़ु' (यही हमारा चुना हुआ मत है) कहना, मज़हब और मज़हब के ज़्यादातर इमामों के खिलाफ है, जबकि दलील भी इमाम साहब (रहमतुल्लाह अलैह) की ही मज़बूत है, इसलिए इसके विपरीत ध्यान देने की कोई ज़रूरत नहीं है। (त)

बहरहाल, अगर पागलपन नया है—निकाह से पहले पति पागल नहीं था, बाद में हुआ—और ज़रूरत की हालत बिना किसी मक्र व फरेब और नफ्स की पैरवी के सच्ची, पक्की और हकीकत में साबित हो, तो इमाम मुहम्मद के कौल पर अमल मुमकिन है।

अरबी	उर्दू अनुवाद
क्योंकि न्यायविदों ने वैध आवश्यकता स्थापित होने पर दूसरों का अनुसरण करने की अनुमति दी है। इस प्रकार, यह अनुमति का अधिक पात्र है, क्योंकि अल्लाह के अनुग्रह से, मज़हब में इमाम के कथनों के बाहर कोई कथन नहीं है, जैसा कि महान विद्वानों द्वारा निर्दिष्ट किया गया है और हमारे इमाम	फ़ुक़हा-ए-किराम ने सही ज़रूरत की बिना पर दूसरे इमामों की तक़लीद को जायज़ करार दिया है, तो यहाँ इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) के कौल की पैरवी करना बेहतर तौर पर जायज़ होगा, क्योंकि अल्लाह के फज़्ल से मज़हब का कोई भी कौल इमाम आज़म (रहमतुल्लाह अलैह) के कौल से बाहर नहीं है, जैसा कि उलेमा-ए-किराम ने स्पष्ट किया है।

अरबी	उर्दू अनुवाद
(अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के साथियों द्वारा गंभीर शपथ और सबसे मजबूत श्रेणियों के साथ उल्लेख किया गया है, विशेष रूप से जब इसे कानूनी फैसले के सबसे प्रभावशाली शब्दों के साथ जोड़ा जाता है।	और हमारे इमाम (रज़ियल्लाहु अन्हु) के साथियों ने इसे सख्त कसमों और मज़बूत श्रेणियों के ज़रिए बयान किया है, खासकर जबकि इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैह) के कौल के नीचे फ़तवा के ताकीदी अल्फाज़ ज़िक्र किए गए हों। (त)

लेकिन इमाम मुहम्मद का कौल यह नहीं है कि अगर पति पागल हो जाए तो औरत खुद ही उससे अलग होकर दूसरे से निकाह कर ले; यह किसी के नज़दीक जायज़ नहीं है।

अरबी	उर्दू अनुवाद
क्योंकि इसमें एक महान, गंभीर और मजबूत असहमति है, बल्कि अधिक महान और मजबूत। इस प्रकार, इस पक्ष को न्यायिक आदेश के बिना प्राथमिकता नहीं दी जा सकती, जैसा कि नपुंसकता के मामले में है, बल्कि...	क्योंकि इसमें बहुत बड़ा, मज़बूत और सख्त, बल्कि बहुत अज़ीम इख्तिलाफ (विरोध) है, इसलिए इस पहलू को काज़ी के फैसले के बिना तरजीह (प्राथमिकता) नहीं दी जा सकती, जैसा कि 'उन्नत' (नपुंसकता) के मसले में है...

ہمارے علماء سے امام محمد رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ جانب خیار گئے اور حاوی قدسی میں حسب عادت برخلاف عامہ متون وشروح وفتاوٰی اس کی نسبت "بہ ناخذ" (ہمارا اخذ مختار ہے۔ ت) بھی لکھ دیا جیسا کہ اُس سے عالمگیریہ میں منقول ہوا۔ فقیر کے فتاوٰی میں بتفصیل تام واضح کر دیا گیا ہے کہ ماخوذ ومختار، معتمد و واجب التعویل مذہب مہذب سیدنا امام اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ سے :

عربی	اردو ترجمہ
وان قول الحاوی لخلافہ بہ ناخذ، قد خالف فیہ المذھب وجمھور ائمۃ المذھب والدلیل ایضا فان الدلیل مع الامام فلا یلتفت الی خلافہ۔ (ت)	حاوی کا امام صاحب کے قول کے خلاف پر بہ ناخذ (ہماری یہی مختار ہے) کہنا، یہ مذہب اور جمہور ائمہ مذہب کے خلاف ہے جبکہ دلیل بھی امام صاحب رحمۃ اللہ تعالٰی کی ہی قوی ہے اس لئے اس کے خلاف کی طرف التفات کی ضرورت نہیں۔

باہمہ اگر جنون حادث ہے پیش از نکاح شوہر مجنون نہ تھا بعد کو پیدا ہوا اور حالتِ ضرورت بلامکر و فریب و پیروی نفس سچی پکی واقعی متحقق ہے تو قول امام محمد پر عمل ممکن۔

عربی	اردو ترجمہ
فقد اجاز والتحقق الضرورۃ الصحیحۃ تقلید الغیر بشرائط فھذا اولی بالجواز اذلیس بحمد اللہ في المذھب قول خارج عن اقوال الامام	فقہاء کرام نے صحیح ضرورت کی بناء پر دیگر ائمہ کی تقلید کو جائز قرار دیا ہے تو یہاں امام محمد رحمۃ اللہ تعالٰی کے قول کی بطریقِ اولٰی اتباع جائز ہوگی کیونکہ بحمدہ تعالٰی مذہب کا کوئی قول امام اعظم رحمہ اللہ تعالٰی کے قول سے

عربی	اردو ترجمہ
کما نص علیه العلماء الکرام وذکره اصحاب امامنا رضی الله تعالی عنه وعنهم بغلاظ الایمان وشد ادالاقسام لاسیما وقد ذیل لما هوا کد الفاظ الافتاء۔	خارج نہیں ہے جیسا کہ اس پر علماء کرام نے نص کی ہے اور اس چیز کو ہمارے امام اعظم رحمۃ اللہ تعالیٰ کے شاگردوں نے غلیظ حلقوں اور شدید قسموں کے ذریعہ بیان کیا ہے خصوصاً جبکہ امام محمد رحمۃ اللہ تعالیٰ کے قول کے ذیل میں فتویٰ کے پُر تاکید الفاظ کو ذکر کیا گیا ہو۔ (ت)

مگر قول امام محمد یہ نہیں کہ شوہر کو جنون ہو جائے تو عورت بطور خود اس سے فرقت کر کے دوسرے سے نکاح کر لے یہ کسی کے نزدیک جائز نہیں۔

عربی	اردو ترجمہ
لان فیه خلافا عظیما شدیدا قویا بل اجل واقوی فلایترجح هذا الجانب الا بالقضاء کمافی العنتہ بل	کیونکہ اس میں عظیم، قوی اور شدید بلکہ بہت بڑا قوی خلاف ہے، اس لئے اس پہلو کو قاضی کے فیصلہ کے بغیر ترجیح نہیں ہو سکتی، جیسا کہ مسئلہ...

Fatawa Ridawiyya, Volume 12

Better, as is not hidden. Impotent (male), rather even more appropriate than that, as it is not hidden. (T)

Rather, the ruling is that the woman should file a claim before the Sharia judge. Upon receiving proof of insanity, he shall grant a period of one full year from the day of the lawsuit. If the husband recovers within this period, then well and good. If he does not recover and the woman does not file another claim after the expiry of the year, she remains his wife as before. If she returns to the judge and it is proven to him that the husband is still insane, he will then give the woman the choice to either choose her husband or choose her self (separation). If the woman chooses her husband, or leaves without saying anything, or stands up, or someone picks her up, or the judge himself stands up, then the woman no longer has any choice; she remains the wife of that insane man forever. If, before the assembly changes, the woman chooses her self, the judge will then decree a separation. From that day, the woman will observe the waiting period (Iddah) for divorce, after which she may marry whomever she wishes. This is in the case where insanity is proven but its continuity (being permanent) is not proven. If it is proven to the judge that a long period has indeed passed where this person is insane and there is no relief, and his insanity is continuous (i.e., persistent and extended), then he shall not grant a year's grace but shall immediately give the woman the choice to either choose her husband or her self. (Note 1) As stated in al-Hindiyya:

Arabic

If the husband has insanity, leprosy, or elephantiasis, she has no choice, as in al-Kafi. Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) said: If the insanity is recent, he is given a delay of one year, like impotence. Then the woman is given the choice after the year if he is not cured. If it is continuous (mutbaq), then it is like castration, and that is what we take, as in al-Hawi al-Qudsi 1.

English Translation

Even if the husband suffers from defects such as insanity, leprosy, or elephantiasis, the wife does not have the right of annulment, as stated in al-Kafi. Imam Muhammad (may Allah have mercy on him) stated: If the husband is afflicted with insanity after marriage, the Qazi (judge) will grant him a year's grace, just like an impotent man. Then, if he is not cured after the year, the woman will be given the choice to annul the marriage. And if the insanity has been present from the beginning, its ruling will be like that of a castrated person (whose organ is severed), and

Arabic	English Translation
	this is what we practice, as stated in al-Hawi al-Qudsi. (T)

Note 1: Here there is a blank space in the original.

1. Fatawa Hindiyyah, Book 12 on Impotence, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/526.

बेहतर, जैसा कि छुपा नहीं है। नपुंसक (पुरुष), बल्कि इससे भी अधिक उपयुक्त, जैसा कि छिपा नहीं है। (त)

बल्कि नियम यह है कि महिला शरीयत के न्यायाधीश (काजी) के समक्ष दावा दायर करे। पागलपन का प्रमाण मिलने पर, वह मुक़दमे के दिन से एक पूरे वर्ष की मोहलत देगा। यदि इस अवधि के भीतर पति ठीक हो जाता है, तो बहुत अच्छा। यदि वह ठीक नहीं होता है और वर्ष बीतने के बाद महिला फिर से दावा नहीं करती है, तो वह पहले की तरह उसकी पत्नी बनी रहेगी। यदि वह फिर से काजी के पास जाती है और यह सिद्ध हो जाता है कि पति अभी भी पागल है, तो वह महिला को विकल्प देगा कि चाहे वह अपने पति को चुने या स्वयं को (अलगाव)। यदि महिला ने अपने पति को चुना या बिना कुछ कहे चली गई या खड़ी हो गई या किसी ने उसे उठा दिया या काजी स्वयं खड़ा हो गया, तो अब महिला के पास कोई विकल्प नहीं रहा; वह हमेशा उस पागल व्यक्ति की पत्नी बनी रहेगी। और यदि मजलिस (सभा) बदलने से पहले महिला ने स्वयं को चुन लिया, तो अब काजी उनके बीच अलगाव (तफ़रीक़) कर देगा। उस दिन से महिला तलाक की इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) में बैठेगी, जिसके बाद वह जिससे चाहे निकाह कर सकती है। यह उस स्थिति में है जब पागलपन सिद्ध हो गया हो लेकिन उसका स्थायी होना सिद्ध न हुआ हो। और यदि न्यायाधीश को यह सिद्ध हो जाए कि वास्तव में एक लंबी अवधि बीत चुकी है कि यह व्यक्ति पागल है और उसे आराम नहीं मिलता, उसका पागलपन 'मुत्बिक़' यानी निरंतर और स्थायी है, तो वह अब साल की मोहलत नहीं देगा, बल्कि तुरंत महिला को विकल्प देगा कि चाहे वह पति को चुने या स्वयं को। (टिप्पणी 1) हिंदिया में वर्णित है:

अरबी	**हिन्दी अनुवाद**
यदि पति को पागलपन, कोढ़ (बरस) या हाथीपाँव (जुज़ाम) हो, तो उसे कोई विकल्प नहीं है, जैसा कि अल-काफ़ी में है। इमाम मुहम्मद (अल्लाह उन पर रहम करे) ने कहा: यदि पागलपन नया है, तो उसे नपुंसकता की तरह एक वर्ष की मोहलत दी जाएगी। फिर यदि वह ठीक नहीं होता है,	जब पति में पागलपन, कोढ़ या हाथीपाँव जैसी बीमारियों का दोष हो, तो भी पत्नी को निकाह रद्द करने (फ़स्ख़) का अधिकार नहीं है, जैसा कि 'काफ़ी' में है कि इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाहि अलैहि) ने फरमाया: यदि निकाह के बाद पति को पागलपन हुआ, तो नामर्द की तरह उसे भी काजी एक साल की मोहलत देगा, फिर साल के बाद स्वस्थ न होने पर औरत को निकाह रद्द करने का

अरबी	हिन्दी अनुवाद
तो वर्ष के बाद महिला को विकल्प दिया जाएगा। यदि वह स्थायी (मुख़्बिक़) है, तो वह लिंग-कटे व्यक्ति की तरह है, और यही हम अपनाते हैं, जैसा कि अल-हावी अल-कुदसी में है।	अधिकार दिया जाएगा। और यदि पागलपन शुरू से चला आ रहा हो, तो उसका हुक्म लिंग-कटे व्यक्ति की तरह होगा, और इसी पर हमारा अमल है, जैसा कि 'हावी कुदसी' में बयान किया गया है। (त)

टिप्पणी 1: यहाँ मूल प्रति में रिक्त स्थान है।

1. फ़तावा हिंदिया, अध्याय 12, नपुंसकता के विषय में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/526।

فتاوٰی رضویہ ، جلد دوازدہم

اولٰی کما لا یخفی۔ عنین (نامرد) بلکہ اس سے بھی اولٰی تر، جیسا کہ مخفی نہیں۔ (ت)

بلکہ حکم یہ ہے کہ عورت حاکمِ شرعی کے حضور دعوٰی کرے وہ ثبوتِ جنون لے کر روزِ نالش ایک سالِ کامل کی مہلت دے، اگر اس مدت میں شوہر اچھا ہو گیا فبہا، اور اگر اچھا نہ ہوا اور عورت نے بعد انقضائے سال پھر دعوٰی نہ کیا تو وہ بدستور اس کی زوجہ ہے، اور اگر پھر رجوع لائی اور حاکم کو ثابت ہوا کہ شوہر ہنوز مجنون ہے تو اب وہ عورت کو اختیار دے گا کہ چاہے اپنے شوہر کو اختیار کرے یا اپنے نفس کو، اور اگر عورت نے اپنے شوہر کو اختیار کیا یا بغیر کچھ کہے چلی گئی یا کھڑی ہو گئی یا کسی نے اسے اٹھا دیا یا حاکم خود اٹھ کھڑا ہوا تو اب عورت کو اصلاً اختیار نہ رہا وہ بدستور ہمیشہ اس مجنون کی زوجہ رہے گی، اور اگر مجلس بدلنے سے پہلے عورت نے اپنے نفس کو اختیار کر لیا تو اب حاکم تفریق کر دے گا اس روز سے عورت طلاق کی عدت بیٹھے بعدہ، جس سے چاہے نکاح کرے، یہ اس صورت میں ہے کہ جنون ثابت ہوا اس کا مطبق ہونا ثابت نہ ہوا، اور اگر حاکم کو ثابت ہو جائے کہ واقعی مدتہائے دراز گزر گئیں کہ یہ شخص مجنون ہے اور آرام نہیں ہوتا جنون اس کا مطبق یعنی ملازم و ممتد ہے تو اب سال کی مہلت نہ دے گا بلکہ فی الفور عورت کا اختیار دے گا کہ چاہے شوہر کو اختیار کرے یا اپنے نفس کو(ع۱) بیان ہوئے ہندیہ میں ہے :

عربی متن	اردو ترجمہ
اذا کان بالزوج جنون او برص او جذام فلا خیار لہا کذا فی الکافی	جب خاوند میں جنون، برص یا جذام جیسی امراض کا عیب ہو تو بھی بیوی کو فسخ کا اختیار نہیں ہے جیسا کہ کافی میں ہے کہ

عربی متن	اردو ترجمہ
قال محمد رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ ان کان الجنون حادثاً یؤجلہ سنۃ کالعنۃ ثم یخیّر المرأۃ بعد الحول اذا لم یبرأ وان کان مطبقاً فھو کالجب وبہ نأخذ کذا فی الحاوی القدسی 1۔	امام محمد رحمۃ اللہ تعالیٰ نے فرمایا: اگر خاوند کو نکاح کے بعد جنون لاحق ہوا تو نامرد کی طرح اس کو بھی قاضی ایک سال کی مہلت دے گا، پھر سال کے بعد تندرست نہ ہونے پر عورت کو نکاح کے فسخ کا اختیار دیا جائے گا، اور اگر جنون شروع سے چلا آرہا ہو تو اس کا حکم ذکر کٹے کی طرح ہوگا، اور اسی پر ہمارا عمل ہے جیسا کہ حاوی قدسی میں بیان کیا ہے۔ (ت)

ع ۱: یہاں اصل میں بیاض ہے۔

1 فتاویٰ ہندیہ الباب الثانی عشر فی العنین نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۵۲۶

In any case, this separation cannot occur without a Sharia ruling. Where there is no Sharia judge (Qadi), the religious scholar who is truthful and the most knowledgeable in jurisprudence (Fiqh) among all the people of the city acts as the Sharia authority in such matters:

[Boxed text left: As stated in Al-Hadiqa an-Nadiya from the Fatawa of Imam Al-Atabi (may Allah the Almighty have mercy upon him).] [Boxed text right: As it has been explicitly mentioned in Al-Hadiqa an-Nadiya from the Fatawa of Imam Atabi (may Allah the Almighty have mercy upon him). (T)]

However, it is essential to ensure that such a decision does not cause any legal difficulty for him; otherwise, the scholar should certainly avoid it, and these people should seek redress in Islamic states like Rampur, etc. And Allah knows best.

Problem 262: From Bhebhiri, 3 Dhu al-Qi'dah 1312 AH. Question: What do the scholars of religion say regarding this matter: Hindah was married as a minor by her father to Zaid. Many years have passed, and the consummation (Rukhsati) took place, but Zaid turned out to be impotent. Hindah stayed with him with great difficulty for some days. Despite being asked repeatedly, Zaid does not give a divorce. What is the remedy for Hindah in this situation? Explain and you will be rewarded.

The Answer: Since Zaid was unable to have power over Hindah and failed to fulfill her obligatory rights, it is religiously mandatory (fard) for him to divorce her. If he does not, he will be a sinner.

[Boxed text left: Allah the Almighty said: "Then, either keep [her] in an acceptable manner or release [her] with good treatment."] [Boxed text right: Allah the Almighty said: After one or two divorces, keep the wife with kindness or release her with goodness. (T)]

If Zaid, lacking fear of God, does not give a divorce, the remedy in the pure Sharia is for Hindah to file a lawsuit before the Sharia authority (Hakim-e-Shara). The Hakim should take a statement from Zaid. If he confesses to his inability to perform with Hindah, well and good. Otherwise, the Hakim should have a pious, chaste, reliable, and intelligent Muslim woman examine Hindah to testify whether she is still a virgin. Subsequently, Zaid should be given a full year's grace period. If within this year Zaid becomes capable with Hindah, it is well; otherwise, the woman should sue again and seek separation. If then, even through the testimony of one reliable Muslim woman,

Hindah's virginity is proven, the Hakim should ask the woman whether she chooses herself or her husband. If the woman chooses her husband or delays her choice until the assembly changes, her lawsuit will be completely dismissed. Therefore, in the same assembly...

[1] Al-Quran Al-Karim 2/229 Page 506 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

बहरहाल, यह अलगाव बिना शरई आदेश के नहीं हो सकता। जहाँ शरई काज़ी न हो, वहाँ जो धार्मिक विद्वान (आलिम-ए-दीन) सच्चा हो और पूरे शहर के लोगों में फ़िक़ह (न्यायशास्त्र) का सबसे बड़ा जानकार हो, वह ऐसे मामलों में शरई हाकिम (अधिकारी) है:

[बायाँ बॉक्स: जैसा कि अल-हदीक़त अन-नदिया में इमाम अताबी (अल्लाह उन पर रहमत करे) के फ़तावा से इस पर स्पष्ट उल्लेख किया गया है।] [दायाँ बॉक्स: जैसा कि इस पर फ़तावा इमाम अताबी रहमतुल्लाह तआला अलैह से हदीक़तुन नदिया में नस (स्पष्ट उल्लेख) की गई है। (त)]

मगर यह ध्यान रखना आवश्यक है कि ऐसा फ़ैसला उसके लिए किसी कानूनी मुश्किल का कारण न बने, अन्यथा विद्वान को इससे बचना चाहिए और इन लोगों को रामपुर आदि जैसी इस्लामी रियासतों में न्याय के लिए जाना चाहिए। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला २६२: भेभीरी से, ३ ज़िल-क़ादा १३१२ हिजरी। क्या फ़रमाते हैं विद्वान इस मसले में कि: हिन्दा का निकाह उसके बचपन में उसके पिता ने ज़ैद के साथ किया था। अब कई साल बीत चुके हैं, रुख़्सती भी हो गई, मगर ज़ैद नामर्द निकला। हिन्दा बड़ी मुश्किल से उसके पास कुछ दिनों तक रही। ज़ैद से बार-बार कहने के बावजूद वह तलाक़ नहीं देता। इस समय हिन्दा के लिए क्या उपाय है? बयान करें और पुण्य पाएँ।

उत्तर: चूँकि ज़ैद हिन्दा पर समर्थ नहीं रहा और उसके अनिवार्य हक अदा करने में असमर्थ रहा, तो उस पर शरीयत के अनुसार फ़र्ज़ है कि वह हिन्दा को तलाक़ दे दे। अगर वह ऐसा नहीं करेगा, तो गुनहगार होगा।

[बायाँ बॉक्स: अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "फिर या तो भलाई के साथ पास रख लो या नेकी के साथ आज़ाद कर दो।"] [दायाँ बॉक्स: अल्लाह तआला ने फ़रमाया: एक तलाक़ या दो तलाक़ों के बाद बीवी को भलाई के साथ पास रोक लो या नेकी के साथ उसको आज़ादी दे दी। (त)]

अगर ज़ैद खुदा से न डरते हुए तलाक़ नहीं देता, तो शरीयत-ए-मुतह्हरा में इसका उपाय यह है कि हिन्दा शरई हाकिम (न्यायाधीश) के हुज़ूर दावा पेश करे। हाकिम ज़ैद से जवाब ले। अगर वह हिन्दा पर समर्थ न होने का इक़रार (स्वीकार) कर ले तो ठीक, अन्यथा हाकिम किसी नेक, परहेज़गार, विश्वसनीय और समझदार मुस्लिम महिला से जाँच कराकर गवाही ले कि हिन्दा अभी भी कुंवारी है।

इसके बाद, ज़ैद को एक साल का पूरा समय दिया जाए। अगर इस एक साल के दौरान ज़ैद हिन्दा पर समर्थ हो जाता है तो बेहतर, वरना महिला फिर से दावा करे और अलगाव (तफ़रीक़) चाहे। अब फिर अगर ज़ैद के विरुद्ध, चाहे एक विश्वसनीय मुस्लिम महिला की गवाही से भी हिन्दा का कुंवारापन साबित हो जाए, तो हाकिम महिला से पूछे कि वह अपने आप को चुनती है या शौहर को। अगर महिला शौहर को चुनती है, या अपने चुनाव में देरी करती है कि महफ़िल बदल जाए, तो उसका दावा पूरी तरह समाप्त हो जाएगा। इसलिए, उसी महफ़िल में...

[1] अल-क़ुरान अल-करीम २/२२९ पृष्ठ ५०६/६८८

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

بہر حال یہ تفریق بے حکم شرع نہیں، جہاں قاضی شرع نہ ہو وہاں جو عالم دین سچا تمام اہلِ شہر میں فقہ کا اعلم ہو ایسے امور میں حاکم شرعی ہے:

کما نص علیه في الحدیقة الندیة عن فتاوی الامام العتبي رحمة الله تعالی علیه۔ جیسا کہ اس پر فتاوٰی امام عتابی رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ سے حدیقۃ الندیہ میں نص کی گئی ہے (ت)

مگر یہ لحاظ لازم ہے کہ ایسا فیصلہ اس کے لئے کسی قانونی دقت کا موجب نہ ہو ورنہ عالم اس سے ضرور احتراز کرے اور یہ لوگ رامپور وغیرہ ریاست اسلامیہ میں چارہ جوئی کریں۔ واللہ تعالٰی اعلم

مسئلہ ۲۶۲: از بھبیڑی ۳ ذیقعدہ ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ نابالغہ کا نکاح اس کے باپ نے زید کے ساتھ کیا اب کئی سال گزرے رخصت بھی ہو گئی مگر زید نامرد نکلا ہندہ اس کے پاس بدقت تمام کچھ دنوں تک رہی، ہر چند زید سے کہا جاتا ہے طلاق بھی نہیں دیتا اس وقت میں ہندہ کے واسطے چارہ کار کیا ہے؟ بینوا توجروا

الجواب: جبکہ زید نے ہندہ پر قدرت نہ پائی اور اس کے ادائے حق واجب میں قاصر رہا تو اس پر شرعاً فرض ہے کہ ہندہ کو طلاق دے دے، اگر نہ دے گا گنہگار رہے گا۔

قال اللہ تعالٰی "فَاِمْسَاكٌ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ تَسْرِیْحٌۢ بِاِحْسَانٍ"ط اللہ تعالٰی نے فرمایا: ایک طلاق یا دو طلاقوں کے بعد بیوی کو بھلائی کے ساتھ پاس روک لو یا نیکی کے ساتھ اس کو آزادی دے دی۔ (ت)

اگر زید خدا نترسی کر کے طلاق نہیں دیتا تو اس کی تدبیر شرع مطہر میں یہ ہے کہ ہندہ حاکم شرع کے حضور دعوٰی کرے، حاکم زید سے جواب لے، اگر وہ ہندہ پر اپنے قادر نہ ہونے کا اقرار

کر لے فبہا ورنہ حاکم کسی عورت مسلمان نیک پارسائثقہ معتمدہ ہوشیار کو دکھا کر شہادت لے کہ ہندہ دوشیزہ ہے، بعدہ، زید کو ایک سال کامل کی مہلت دے، اس سال میں زید ہندہ پر قادر ہو جائے تو بہتر ورنہ عورت پھر دعویٰ کرے اور تفریق چاہے، اب پھر اگر زید خواہ شہادتِ یک عورت مسلمہ ثقہ سے ہندہ کی دوشیزگی ثابت ہو تو حاکم عورت سے دریافت کرے کہ اپنے نفس کو اختیار کرتی ہے یا شوہر کو، اگر عورت شوہر کو اختیار کرے، یا اپنے نفس کے اختیار میں تاخیر کرے کہ مجلس بدل جائے تو اب اس کا دعویٰ بالکل ساقط ہو جائے گا، لہٰذا اسی جلسہ میں

[1] القرآن الکریم ۲/۲۲۹ Page 506 of 688

Fatawa Razvia, Volume 12

Immediately exercise the choice for yourself. At that time, the judge (Hakim) should order Zaid. If he agrees, it's better; otherwise, the judge himself should order separation (Tafriq) between them. This separation will result in a 'Bain' (irrevocable) divorce. After the completion of the waiting period (Iddat), Hindah will have the choice to marry whomever she wishes.

Arabic	Urdu
In 'Al-Durr al-Mukhtar': If a wife finds her husband to be impotent, a lunar year's grace period shall be granted. If he has intercourse once during this time, it is settled; otherwise, she becomes separated through the judge's decree if the husband refuses her request for divorce. (Summarized)[1]	In 'Durr-e-Mukhtar': If a wife finds her husband to be impotent, a grace period of one year according to lunar months shall be given to the husband. If he has intercourse once during this time, it is better; otherwise, at the woman's request, the wife will receive a 'Baina' divorce by the judge's separation, if the husband refuses to grant divorce. (Summarized) (T)

All these proceedings must take place before a Sharia Judge appointed by the Islamic ruler for the adjudication of cases. In 'Al-Durr': "There is no consideration for a deferment granted by someone other than the city's judge."[2] (In 'Durr-e-Mukhtar', the deferment granted by anyone other than the city's judge is not considered. T). If there is no such judge in their city, then Zaid and Hindah should appoint a person of knowledge as an arbitrator (Panch), and these proceedings should take place before him.

Arabic	Urdu
In 'Al-Khayriyyah': Arbitration is valid in the case of an impotent person because it is not a matter of 'Hadd' (prescribed punishment), 'Qisas' (retribution), or 'Diyat' (blood money) upon the kin. They have the right to effect separation at the wife's request.[3]	In 'Fatawa Khairiyyah': Arbitration is permissible in the case of an impotent person because it is not a matter of 'Hadd', 'Qisas', or 'Diyat' on the 'Aaqilah' (kin). Therefore, it is permissible for the arbitrators to effect separation at the wife's request. (T)

If Zaid does not agree to appoint anyone as a 'Panch' (arbitrator), then Hindah should go to Islamic cities like Rampur and file a claim before the Sharia Judge, provided the

Islamic ruler has not restricted his judicial authority specifically to the residents of that particular city.

Arabic	Urdu
For judicial authority accepts specification by time and place, as mentioned in 'Al-Ashbah' and elsewhere.	Because judicial authority can be specified for a particular time and place, as stated in 'Al-Ashbah' etc. (T)

He should implement the aforementioned rulings.

Arabic	Urdu
In 'Bahr al-Ra'iq', 'Radd al-Muhtar' and others...	In the books 'Bahr al-Ra'iq', 'Radd al-Muhtar', etc., it is stated that...

---

[1] Durr-e-Mukhtar, Bab al-Innin, Matba' Mujtabai Delhi, 1/254 [2] Durr-e-Mukhtar, Bab al-Innin, Matba' Mujtabai Delhi, 1/254 [3] Fatawa Khairiyyah, Bab al-Tahkim, Dar al-Ma'rifah Beirut, 2/16

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

तुरंत अपने स्वयं का विकल्प (इख़्तियार) चुन ले। उस समय हाकिम जैद को आदेश दे। यदि वह मान ले तो बेहतर है, अन्यथा हाकिम स्वयं उनके बीच अलगाव (तफ़रीक़) का आदेश दे दे। यह अलगाव 'तलाक़-ए-बाइन' (अटल तलाक) बन जाएगा। इद्दत बीतने के बाद हिन्दा को अधिकार होगा कि जिससे चाहे विवाह कर ले।

अरबी

'अल-दुर्रुल मुख्तार' में है: यदि पत्नी पति को नपुंसक पाए, तो उसे चंद्र महीनों के हिसाब से एक साल की मोहलत दी जाएगी। यदि इस दौरान वह एक बार भी सहवास कर ले तो ठीक है; अन्यथा वह काज़ी के अलगाव के फैसले से अलग हो जाएगी, यदि पति उसके तलाक़ की मांग को अस्वीकार करता है। (संक्षिप्त)[1]

उर्दू

'दुर्रे मुख्तार' में है: अगर बीवी शौहर को नामर्द पाए तो क़मरी महीनों के हिसाब से साल भर की शौहर को मोहलत दी जाएगी। अगर इस दौरान में एक मर्तबा वती (सहवास) कर ले तो बेहतर, वरना औरत के मुतालबे पर क़ाज़ी की तफ़रीक़ से बीवी को बाइन तलाक़ होगी, अगर शौहर तलाक़ देने से इनकार करे। (मुल्ख़्ख़सन) (त)

यह सारी कार्यवाही शरीअत के काज़ी के सामने होनी चाहिए जिसे इस्लामी हाकिम ने मुकदमों के फैसले के लिए नियुक्त किया हो। 'अल-दुर्र' में है: "शहर के काज़ी के अलावा किसी और की दी गई मोहलत का कोई महत्व नहीं है।"[2] (दुर्रे मुख्तार में है कि शहर के क़ाज़ी के इलावा किसी और की मोहलत का एतबार नहीं है। त)। अगर उनके शहर में ऐसा कोई काज़ी न हो, तो जैद और हिन्दा किसी विद्वान को पंच (मध्यस्थ) नियुक्त करें और उनके यहाँ ये कार्यवाहियाँ हों।

अरबी

'अल-ख़ैरिया' में है: नपुंसक के मामले में मध्यस्थता (सालिसी) मान्य है क्योंकि यह न तो 'हद' है, न 'क़िसास' और न ही 'आक़िला' पर 'दियत' का मामला है। उन्हें पत्नी के अनुरोध पर अलगाव कराने का अधिकार है।[3]

उर्दू

'फ़तावा ख़ैरिया' में है: नामर्द के मसले में सालिसी (मध्यस्थता) फैसला जायज़ है क्योंकि यह हद, क़िसास या आक़िला पर दियत का मसला नहीं है, तो सालिस हज़रात को बीवी के मुतालबे पर तफ़रीक़ करना जायज़ है। (त)

अगर जैद किसी को पंच बनाने पर राज़ी न हो, तो हिन्दा रामपुर वगैरह इस्लामी शहरों में जाकर शरीअत के काज़ी के यहाँ दावा दायर करे, जिसकी न्यायिक शक्ति को इस्लामी शासक ने केवल उसी शहर के निवासियों तक सीमित न किया हो।

अरबी	उर्दू
क्योंकि न्याय प्रणाली समय और स्थान के विनिर्देश को स्वीकार करती है, जैसा कि 'अशबाह' आदि में है।	क्योंकि क़ज़ा ज़माना और मकान के लिये मख़्सूस हो सकती है जैसा कि 'अशबाह' वगैरह में है। (त)

वह उपर्युक्त आदेशों पर अमल करे।

अरबी	उर्दू
'बहरुर राइक़', 'रद्दुल मुह्तार' और अन्य पुस्तकों में है कि...	'बहरुर राइक़', 'रद्दुल मुह्तार' वग़ैरह कुतुब (पुस्तकों) में है कि...

---

[1] दुर्रे मुख्तार, बाब अल-इन्नीन, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/254 [2] दुर्रे मुख्तार, बाब अल-इन्नीन, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/254 [3] फ़तावा ख़ैरिया, बाब अल-तहकीम, दार अल-मआरिफ़ बेरुत, 2/16

فوراً اپنے نفس کو اختیار کرلے اس وقت حاکم زید کو حکم دے وہ اگر مان لے بہتر ورنہ حاکم خود ان میں تفریق کا حکم کردے، یہ تفریق طلاق بائن ہوجائے گی، بعد مرور عدت ہندہ کو اختیار ملے گا جس سے چاہے نکاح کرلے،

عربی	اردو
فی الدرالمختار لووجدته عنینا اجل سنة قمریة فان وطئ مرة فیها والا بانت بالتفریق من القاضی ان ابی طلاقها بطلبها اھ ملخصاً۔	در مختار میں ہے اگر بیوی خاوند کو نامرد پائے تو قمری مہینوں کے حساب سے سال بھر کی خاوند کو مہلت دی جائے گی، اگر اس دوران میں ایک مرتبہ وطی کرلے تو بہتر، ورنہ عورت کے مطالبہ پر قاضی کی تفریق سے بیوی کو بائنہ طلاق ہوگی، اگر خاوند طلاق دینے سے انکار کرے اھ ملخصاً۔ (ت)

یہ ساری کارروائی قاضی شرع کے حضور جسے حاکم اسلام نے فصل مقدمات پر مقرر کیا ہو، فی الدرلاعبرة بتاجیل غیر قاضی البلدة (در مختار میں ہے کہ شہر کے قاضی کے علاوہ کسی اور کی مہلت کا اعتبار نہیں ہے۔ ت) اگر ان کے شہر میں کوئی ایسا قاضی نہ ہو تو زید و ہندہ کسی ذی علم کو پنچ مقرر کریں اس کے یہاں یہ کاروائیاں ہوں،

عربی	اردو
فی الخیریة یصح التحکیم فی مسئلہ العنین لانه لیس بحد ولاقود ولادیة	فتاوی خیریہ میں ہے نامرد کے مسئلہ میں ثالثی فیصلہ جائز ہے کیونکہ یہ حد، قصاص یا عاقلہ پر دیت کا مسئلہ نہیں

عربی	اردو
على العاقلة ولهم ان يفرقوا بطلب الزوجة ۔	ہے، تو ثالث حضرات کو بیوی کے مطالبہ پر تفریق کرنا جائز ہے۔ (ت)

اگر زید کسی کو پنچ بنانے پر راضی نہ ہو تو ہندہ رامپور وغیرہ بلاد اسلامیہ میں جا کر قاضی شرع کے یہاں دعوی کرے جس کی قضاء کو والی اسلام نے اس کے خاص اس شہر والوں سے مخصوص نہ کر دیا ہو،

عربی	اردو
فان القضاء يقبل التخصيص بالزمان والمكان كما في الاشباه وغيرہا ۔	کیونکہ قضاء زمانہ اور مکان کے لئے مخصوص ہو سکتی ہے جیسا کہ اشباہ وغیرہ میں ہے۔ (ت)

وہ احکام مذکورہ پر عملدرآمد کرے۔

عربی	اردو

فی بحر الرائق وردالمحتار وغیرھا من بحرالرائق، ردالمحتار و غیر ہما کتب میں ہے کہ

---

1 در مختار باب العنین مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۵۴ 2 در مختار باب العنین مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۵۴ 3 فتاوی خیریہ باب التحکیم دارالمعرفہ بیروت ۲/ ۱۶

Fatawa-e-Razawiyyah Volume 12

[Boxed Text] Al-Asfar: It is not a condition that the litigants belong to the city of the Qazi (Judge). [Footnote 1] And Allah knows best. Translation: It is not necessary for the claimants to belong to the city of the Qazi etc. And Allah knows best. (T)

Issue 263: From Bareilly, Mohalla Bagh Ahmad Ali Khan, adjacent to Bans Mandi, questioned by Ishaq Ahmed Sahib, 25 Shawwal 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Nasiban's marriage was performed with Zaid. Zaid is impotent. Nasiban was happily present in her husband's house, but her parents want the said woman to be separated from him. Is it obligatory to take divorce from Zaid or not? It has been two and a half years since Nasiban's marriage. In the beginning of the marriage, intercourse happened only three times, after which he became impotent. Now the said Nasiban is unhappy. The reason for the unhappiness is that Zaid's father had gifted a house in her name at the time of marriage, but now he has forcibly taken it back and got it registered in his own name.

Answer: Divorce is not obligatory, nor can a claim be made now on the grounds of impotence because intercourse has occurred once, let alone three times. Yes, if Zaid knows that he is unable to fulfill her right, then it is mandatory upon him before Allah to divorce her if she is not willing to forgo her right to intercourse. Allah the Almighty said: "Then retain them with honor or release them with kindness." [Footnote 2] Allah the Almighty said: After one or two divorces, keep the wife with goodness or set her free with virtue. And Allah the Almighty knows best. (T) And Allah knows best.

Issue 264: From Bareilly, Mohalla Malukpur, questioned by Amanat Ali Sahib, 30 Jumada al-Ula 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: A person sent marriage proposals to two different places. The girls' families found out through investigation that the man is impotent. At a third place, he deceived them and married a girl, and he was proven to be impotent. So, in such a case, is the marriage valid or not?

Answer: Yes, the marriage is valid. The woman will file a claim, then after impotence is proven, the man will be given a one-year grace period for treatment.

[Footnotes] 1. Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Qadhi, H.M. Saeed Company, Karachi, 7/257. 2. Al-Quran al-Karim, 2/229.

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 12

[बॉक्स किया हुआ टेक्स्ट] अल-असफ़ार: यह शर्त नहीं है कि मुक़दमा करने वाले काज़ी के शहर के हों। [फुटनोट 1] और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। अनुवाद: दावा करने वालों के लिए ज़रूरी नहीं है कि वे काज़ी के शहर के हों आदि। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसला 263: बरेली, मोहल्ला बाग अहमद अली खान, बांस मंडी के पास से, मुस्तौलिह (पूछने वाले) इसहाक अहमद साहब, 25 शव्वाल 1337 हिजरी। दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि नसीबन का निकाह ज़ैद के साथ हुआ, ज़ैद नामर्द है और नसीबन अपने पति के घर में खुशी-खुशी मौजूद थी लेकिन नसीबन के माता-पिता चाहते हैं कि उक्त महिला उससे अलग हो जाए। ज़ैद से तलाक़ लेना वाजिब है या नहीं? नसीबन के निकाह को ढाई साल का समय हो गया है। निकाह की शुरुआत में सिर्फ़ तीन बार संभोग का मौका मिला, जिसके बाद वह नामर्द हो गया। अब उक्त नसीबन नाखुश है। नाखुशी का कारण यह है कि ज़ैद के पिता ने निकाह के समय उसके नाम पर एक मकान कर दिया था, अब उसे ज़बरदस्ती वापस ले लिया और रजिस्ट्री करा ली।

अल-जवाब: तलाक़ लेना वाजिब नहीं है, और न ही अब नामर्दी के आधार पर दावा किया जा सकता है क्योंकि एक बार छोड़ तीन बार संभोग हो चुका है। हाँ, अगर ज़ैद जानता है कि वह उसके हक़ की अदायगी से लाचार है, तो अल्लाह के नज़दीक उस पर लाज़िम है कि उसे तलाक़ दे दे, यदि वह अपना संभोग का हक़ छोड़ने पर राज़ी न हो। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: "तो भलाई के साथ रोक रखो या नेकी के साथ आज़ाद कर दो।" [फुटनोट 2] अल्लाह तआला ने फ़रमाया: एक तलाक़ या दो तलाक़ के बाद बीवी को भलाई के साथ रोक रखो या उसे नेकी के साथ आज़ाद कर दो। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त) वल्लाह तआला आलम (अल्लाह सबसे बेहतर जानता है)।

मसला 264: बरेली, मोहल्ला मलूकपुर से, मुस्तौलिह अमानत अली साहब, 30 जमादी-उल-उला 1338 हिजरी। दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक व्यक्ति ने दो जगहों पर अपने निकाह का पैगाम भेजा। लड़कियों के घरवालों को जांच-पड़ताल से पता चला कि यह व्यक्ति नामर्द है। तीसरी जगह उसने धोखा देकर एक लड़की से निकाह कर लिया और वह नामर्द साबित हुआ। तो ऐसी स्थिति में निकाह जायज़ हुआ या नहीं?

अल-जवाब: हाँ, निकाह हो गया। औरत दावा करेगी, तो नामर्दी साबित होने के बाद मर्द को एक साल के इलाज की मोहलत दी जाएगी।

[फ़ुटनोट्स] 1. अल-बह्र अर-रायिक, किताब अल-काज़ी, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 7/257। 2. अल-कुरान अल-करीम, 2/229।

فتاوٰی رضویہ جلد دو ازدہم

الاسفار ولا یشترط ان یکون المتداعیان عن بلد القاضی 1- واللہ تعالٰی اعلم دعوٰی کرنے والوں کے لئے ضروری نہیں کہ وہ قاضی کے شہر کے ہوں الخ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۲۶۳: از بریلی محلہ باغ احمد علی خاں متصل بانس منڈی مسئولہ اسحق احمد صاحب ۲۵ شوال ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ نصیبن کا نکاح زید کے ساتھ ہوا، زید نامرد ہے اور نصیبن خانہ زوج میں بخوشی اپنی موجود تھی مگر والدین نصیبن مذکور چاہتے ہیں کہ مسماۃ مذکور اس سے علیحدہ کر لی جائے، زید سے طلاق لینا واجب ہے یا نہیں، نصیبن کے نکاح کو عرصہ ڈھائی برس کا ہوا شروع نکاح میں صرف تین مرتبہ ہمبستری کا اتفاق ہوا ازاں بعد نامرد ہوگیا اب نصیبن مذکور ناخوش ہے بنائے ناخوشی یہ ہے کہ زید کے باپ نے ایک مکان وقتِ نکاح اس کے نام کر دیا تھا اب جبراً واپس لے لیا اور رجسٹری کرالی۔

الجواب: طلاق لینا واجب نہیں، نہ اب بر بنائے نامردی دعوٰی ہو سکتا ہے کہ ایک بار چھوڑ تین بار ہمبستری کر چکا ہے، ہاں اگر زید جانتا ہے کہ وہ اس کے ادائے حق سے قاصر ہے تو عنداللہ اس پر لازم ہے کہ اسے طلاق دے دے جبکہ وہ اپنا حقِ جماع چھوڑنے پر راضی نہ ہو، قال تعالٰی فَإِمْسَاكٌ بِمَعْرُوفٍ أَوْ تَسْرِيحٌ بِإِحْسَانٍ ط 2- اللہ تعالٰی نے فرمایا: ایک طلاق یا دو طلاق کے بعد بیوی کو بھلائی کے ساتھ روک رکھو یا اسے نیکی کے ساتھ آزاد کردو واللہ تعالٰی اعلم (ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۶۴: از بریلی محلہ ملوکپور مسئولہ امانت علی صاحب ۳۰ جمادی الاولٰی ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے دو ۲ جگہ اپنے نکاح کا پیام بھیجا لڑکی

والوں کو تحقیقات سے معلوم ہوا کہ یہ شخص نامرد ہے تیسری جگہ دھوکہ دے کر ایک لڑکی سے عقد کر لیا اور نامرد ثابت ہوا، پس ایسی حالت میں نکاح جائز ہوا یا نہیں ؟

الجواب: ہاں نکاح ہو گیا، عورت دعویٰ کرے گی کہ تو بعدِ ثبوتِ نامردی مرد کو سال بھر کا مل کی مہلت دی جائیگی،

1 بحر الرائق کتاب القاضی ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۷/ ۲۵۷ 2 القرآن الکریم ۲/ ۲۲۹

Fatawa Razawiya Volume 12

If he becomes capable over this woman within this period, then it's fine; otherwise, if the woman makes a claim again and impotence is still proven, the ruler will give the woman the choice: whether she wants to stay with the husband or separate. If she immediately says she wants separation, he will separate them. At that time, the woman can marry elsewhere after the 'iddah' (waiting period). And Allah Almighty knows best.

Problem 265: From Pratapgarh, Syed Amin neighborhood, asked by Abdul Rabb Sahib, 26 Rabi al-Akhir 1336 AH. For a woman whose husband has been missing and unheard from for more than five years, in such a situation, does the woman have the right to take another husband? Imam Malik and Shafi'i (may Allah Almighty's mercy be upon them), in one saying, state: "When four years pass, the judge should effect a separation between them, and after that, she may marry a second husband." And the questioner's purpose is: assuming it is permissible, how should the annulment of marriage be effected by the judge, since in this turbulent time, the influence of judges' rulings is completely blocked due to the rulers being of another religion? So at such a time, how should the method of annulment of marriage be carried out? Secondly, after the judge effects the annulment, should she observe 'iddah' for divorce or death, or can she remarry without 'iddah'? Thirdly, if someone, out of necessity, follows the saying of Imam Shafi'i or Imam Malik in some matters, is it then obligatory for that person to follow that Imam in all matters forever or not? Fourthly, can Hanafis also give a fatwa according to this fatwa? Explain and be rewarded.

The Answer: In our school of thought, she cannot marry until 70 or 80 years have passed from the husband's birth and his death is decreed; at that time, she can marry after the 'iddah' of death. This is also the school of Imam Ahmad, and Imam Shafi'i also turned towards this. Imam Malik's decree of four years is not from the day of his disappearance, but from the day of filing the case in the judge's court; Imam Malik himself specified in the book 'Al-Mudawwanah' that even if twenty (20) years have passed before filing, they are not counted. The remedy for the claim of necessity was not found there either. Whatever time has passed until today is useless. Now, even if there were a Sharia judge and a case were filed with him, and he confirmed the husband's disappearance, he would grant a four-year respite and then investigate if he is still missing. After that, he would effect a separation, and the woman would sit in 'iddah'. How would this extended period pass without a husband and without sustenance (nafaqa)? The religion would be lost and the period not

ended. Therefore, she should do what the Commander of the Faithful, Mawla Ali (may Allah Almighty ennoble his face), said:

[Arabic Box] She is a woman who has been put to trial, so let her be patient.

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

अगर इस मुद्दत (अवधि) में वह इस औरत पर क़ादिर हो गया तो ठीक है, वरना फिर औरत दावा करे और अब भी नामर्दी साबित हो जाने पर हाकिम (न्यायाधीश) औरत को अख्तियार देगा कि चाहे शौहर के पास रहना माने या जुदाई। अगर वह फ़ौरन कहेगी कि जुदाई चाहती हूँ तो दोनों में तफ़रीक़ (अलगाव) कर देगा। उस वक़्त औरत इद्दत के बाद दूसरी जगह निकाह कर सकेगी। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 265: अज़ प्रतापगढ़ मोहल्ला सैयद अमीन, मसूला अब्दुर रब्ब साहब, 26 रबी-उल-आख़िर 1336 हिजरी। जिस औरत का मर्द पाँच साल से ज़्यादा से नामलूम व बेनिशान है, तो ऐसी सूरत में औरत को अख्तियार है कि दूसरा शौहर कर ले? इमाम मालिक व शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि एक क़ौल में फ़रमाते हैं कि "जब 4 बरस गुज़र जाएँ, तो क़ाज़ी उन दोनों के दरमियान तफ़रीक़ करा दे, उसके बाद वह दूसरे शौहर से निकाह करे।" और मुस्तफ़सिर (पूछने वाले) का मक़सद यह है कि जायज़ होने की तक़दीर पर निकाह का फ़स्ख़ (निरसन) क़ाज़ी से कैसे कराया जाए? इस पुर-आशूब ज़माने में ग़ैर-मज़हब हुक्काम की वजह से क़ाज़ी के एहकाम बिल्कुल बंद हो गए हैं, तो ऐसे वक़्त में फ़स्ख़-ए-निकाह का तरीक़ा कैसे अमल में लाया जाएगा? दूसरे यह कि क़ाज़ी के फ़स्ख़ करा देने के बाद, क्या उसे तलाक़ या वफ़ात की इद्दत करनी होगी या बग़ैर इद्दत के दूसरा निकाह कर ले? तीसरे यह कि अगर कोई शख़्स ज़रूरत के वक़्त बाज़ मसलों में इमाम शाफ़ई या इमाम मालिक के क़ौल पर अमल करे, तो क्या उस शख़्स को हमेशा के लिए उन इमामों की तक़लीद लाज़िम होगी या नहीं? चौथे यह कि क्या हनफ़ी भी इस फ़तवे के मुवाफ़िक़ फ़तवा दे सकते हैं? बयान करें सवाब पाएँ।

अल-जवाब: हमारे मज़हब में वह निकाह नहीं कर सकती जब तक शौहर की उम्र 70 या 80 साल गुज़र कर उसकी मौत का हुक्म न दिया जाए; उस वक़्त वह इद्दत-ए-वफ़ात के बाद निकाह कर सकेगी। यही मज़हब इमाम अहमद का है और इसी तरफ़ इमाम शाफ़ई ने रुजू फ़रमाया। इमाम मालिक ने जो चार साल मुक़र्रर फ़रमाए हैं, वह उसके गुम होने के दिन से नहीं बल्कि क़ाज़ी के यहाँ मुराफ़ा (मुक़दमा दर्ज करने) के दिन से हैं; ख़ुद इमाम मालिक ने किताब 'मुदव्वना' में तसरीह फ़रमाई कि मुराफ़ा से पहले अगर बीस (20) बरस भी गुज़र चुके हों तो उनका एतबार नहीं। ज़रूरत के दावे का इलाज तो वहाँ भी नहीं निकला। आज तक जितना ज़माना गुज़रा बेकार है। अब अगर शर्ई क़ाज़ी हो भी और उसके यहाँ मुराफ़ा किया जाए और वह शौहर के लापता होने की तस्दीक़ करे, तो उसके बाद चार साल की मोहलत देगा और फिर तहक़ीक़ करेगा कि अब तक लापता है। उसके

बाद तफ़रीक़ करेगा और औरत इद्दत बैठेगी। यह लम्बा ज़माना बग़ैर शौहर और बग़ैर नान-नफ़क़ा (भरण-पोषण) के कैसे गुज़रेगा? मज़हब भी छूटा और काल भी न कटा। लिहाज़ा, वह करे जो अमीर-उल-मोमिनीन मौला अली (करमल्लाहु तआला वज्हहुल करीम) ने फ़रमाया:

[अरबी बॉक्स] यह एक औरत है जिसे अल्लाह तआला ने आज़माइश में डाला है, तो उसे सब्र करना चाहिए।

पेज 509 / 688

اگر اس مدت میں اس عورت پر قادر ہوگیا فبہا، ورنہ پھر عورت کے دعوٰی کرے اور اب بھی نامردی ثابت ہوجانے پر حاکم عورت کو اختیار دے گا کہ چاہے شوہر کے پاس رہنا مانے یا جدائی، اگر وہ فوراً کہے گی کہ جدائی چاہتی ہوں تو دونوں میں تفریق کردے گا، اُس وقت عورت بعد عدت دوسری جگہ نکاح کرسکے گی، واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۶۵: از پرتاب گڑھ محلہ سید امین مسئولہ عبدالرب صاحب ۲۶ ربیع الآخر ۱۳۳۶ھ جس عورت کا مرد پانچ سال سے زیادہ تک نامعلوم و بے نشان ہے تو ایسی صورت میں عورت کو اختیار ہے کہ دوسرا شوہر کرلیوے۔ امام مالک شافعی رحمۃ اللہ تعالٰی بیچ ایک قول کے فرماتے ہیں کہ "جب ۴ برس گزر جائیں چار برس تو تفریق کرادے درمیان میں ان دونوں کے قاضی، بعد اس کے نکاح کریں زوج ثانی سے۔" اور غرض مستفسر کی یہ ہے کہ بر تقدیر جائز ہونے اس مسئلے کے فسخ نکاح کی کیوں کر قاضی سے کرادی جائے، اس زمانہ پُر آشوب میں بواعث حکام غیر مذہب کے احکام قاضی کے بالکل مسدود ہوگئے ہیں پس ایسے وقت میں طریقہ اُس کے فسخ کرنے نکاح کے کیونکر عمل میں لائی جائے گی۔ دوسرے یہ کہ بعد فسخ کرادینے نکاح قاضی کے، آیا اس کے لئے کوئی عدت طلاق یا وفات کی کرنا چاہئے یا کہ بدون عدت کے نکاح ثانی کرلے۔ تیسرے یہ کہ اگر کوئی شخص ضرورت کے وقت بعض مسئلوں میں امام شافعی و امام مالک کے قول پر عمل کرے تو اس صورت میں اس شخص کو ہمیشہ کے لئے کل مسئلوں میں اس امام کی تقلید لازم ہوتی ہے یا نہیں؟ چوتھے یہ کہ حنفیہ بھی اس فتوے کے موافق فتوٰی دے سکتے ہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: ہمارے مذہب میں وہ نکاح نہیں کرسکتی جب تک شوہر کی عمر سے ۷۰ یا ۸۰ سال گزر کر اس کی موت کا حکم نہ دیا جائے اس وقت وہ بعد عدت وفات نکاح کرسکے گی۔ یہی مذہب امام احمد کا ہے اور اسی طرف امام شافعی نے رجوع فرمائی، امام مالک کے چار سال مقرر فرماتے ہیں وہ اس کے گم ہونے کی دن سے نہیں بلکہ قاضی کے یہاں مرافعہ کے دن دے سے خود امام مالک نے کتاب مدونہ میں تصریح فرمائی کہ مرافعہ سے پہلے اگرچہ بیس ۲۰ برس گزر چکے ہوں اُن کا اعتبار نہیں، ادعائے ضرورت کا علاج تو اُن کے یہاں بھی نہ نکلا، آج تک تو جتنا زمانہ گزرا بیکار ہے اب قاضی شرع اگر ہو بھی اور اسکے یہاں مرافعہ کیا جائے اور وہ شوہر کا مفقود الخبر ہونا تصدیق کرے اُس کے بعد چار برس کی مہلت دے اور پھر اب تک مفقود رہنا تحقیق کرے اُس کے بعد تفریق کرے اور عورت عدت بیٹھے یہ ممتد زمانہ بے شوہر اور بے نان نفقہ کے کیسے گزرے گا، مذہب بھی چھوڑا اور کال بھی نہ کٹا، لہٰذا وہ کرے جو امیر المومنین مولاعلی کرم اللہ تعالیٰ نے فرمایا:

[عربی ڈبہ] ھی امرأۃ ابتلتیت فلتصبر (یہ ایک عورت ہے جسے اللہ تعالیٰ نے بلا میں مبتلا)

Fatawa Razawiyya, Volume 12

[Box Top Left]: Until death or divorce comes to her. (1) [Box Top Right]: It has been stated that it is mandatory for her to be patient until the husband's death or divorce is confirmed.

When, due to a genuine necessity, a specific Imam from the three Imams is followed in a matter, the observance of their school of thought (madhab) will be mandatory only in that specific matter regarding obligatory affairs. In other matters, one's own Imam should be followed. And Allah Almighty knows best.

Problem 266: What do the scholars of religion say regarding this matter: Hindah's husband stabbed her with a knife with the intent to kill her and, in his view, had finished her off. However, by divine decree, she survived. The husband was later sentenced to ten years in prison and sent across the sea (exile). The husband did not utter a word of divorce. Now the wife is in need and unable to earn a living; can she marry another person or not? At the time of the case, when the British official sentenced the husband to the sea, and the husband stated, "I have already killed her completely," the wife's heirs said to the official, "Get the wife a divorce from this man too." The official replied, "Ask your scholars; as for the criminal, he had already killed his wife in his mind, so what is the need for an inquiry and request for divorce?" And indeed, the husband had beaten his wife in such a way that her survival was a miracle—her intestines etc., had all come out. In short, in the stated situation, is Hindah still in her husband's marriage or not? Can she marry someone else? And can a woman whose husband is permanently imprisoned marry someone else?

THE ANSWER: She cannot marry another without separation through death or divorce. According to us, whether absence or inability to provide maintenance (nafaqah) due to poverty or the woman's deprivation from receiving maintenance, these are not causes for separation. Rather, even according to the Shafi'is and others, the meaning of the permissibility of separation is that the woman presents her case before a Shari'a Qazi (judge), and the Qazi, after taking Shari'a witnesses, decrees a separation. It does not mean the woman can marry whomever she wishes on her own. This is not at all allowed according to the four Imams...

---

1. Musannaf Abd al-Razzaq, Chapter: The woman who learns of her husband's death, Al-Maktaba al-Islamiya Beirut, 7/90-91, Hadith No. 12337, 12338, 12340. Page 510 of 688

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

[बॉक्स ऊपर बाईं ओर]: जब तक उसे मृत्यु या तलाक़ न आ जाए। (1) [बॉक्स ऊपर दाईं ओर]: यह फ़रमाया गया है कि उस पर लाज़िम (अनिवार्य) है कि सब्र करे यहाँ तक कि शौहर की मौत या तलाक़ ज़ाहिर हो।

सच्ची ज़रूरत के वक़्त जब किसी मसले में अइम्मा-ए-सलासा (तीन इमामों) में से किसी इमाम की तक़लीद की जाती है, तो सिर्फ़ उस मसले में उनके मज़हब की रियायत उमूरे-वाजिबा (अनिवार्य कार्यों) में ज़रूर होगी, अन्य मसाइल में अपने इमाम ही की तक़लीद की जाएगी। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

मसला 266: क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि हिंदा के शौहर ने अपनी ज़ौजा (पत्नी) के क़त्ल की नियत से चाकू मारे और अपनी दानिश (समझ) में उसका काम तमाम कर दिया था, मगर क़ज़ाये इलाही से वह ज़िंदा बच गई। शौहर को बाद में सज़ा-ए-जुर्म में दस बरस के लिए दरिया-ए-शोर (काला पानी) भेजा गया। शौहर ने लफ़्ज़े तलाक़ का कुछ नहीं कहा था। अब ज़ौजा मोहताज है और कसब (कमाने) पर क़ादिर नहीं, दूसरे शख़्स से वह निकाह कर सकती है या नहीं? मुक़द्दमे के वक़्त जब अंग्रेज़ ने शौहर को दरिया-ए-शोर भेजा था और शौहर ने यह बयान दिया था कि मैंने तो उसको बिल्कुल मार डाला था, ज़ौजा के वारिसों ने हाकिम से यह कहा कि इस शख़्स से ज़ौजा को तलाक़ भी दिलवा दो, तो हाकिम ने यह कहा कि तुम अपने उलेमा से दरयाफ़्त (पूछो) करो, बाक़ी मुजरिम ने तो अपनी ज़ौजा को अपने ज़हन में क़त्ल ही कर डाला था, तलाक़ के इस्तिफ़सार (पूछताछ) व तलब की हाजत (ज़रूरत) क्या है? और वाक़ई शौहर ने ज़ौजा को इस तौर मारा था कि उसका बच जाना तअज्जुबात (चमत्कारों) से है यानी ज़ौजा की आंतें वग़ैरह सब निकल कर बाहर आ गई थीं। फ़िल-जुमला (संक्षेप में) सूरते-मुस्तफ़सिरा (वर्णित स्थिति) में हिंदा ज़ौजा के निकाह में है या नहीं और दूसरे से निकाह कर सकती है या नहीं? और जिस औरत का शौहर दायमुल-हब्स (उम्रक़ैद) हो गया, वह निकाह दूसरे से कर सकती है या नहीं?

अल-जवाब: बे-इफ़्तिराक़ (अलगाव के बिना) बमौत या तलाक़ दूसरे से निकाह नहीं कर सकती। हमारे नज़दीक, ग़ैबत (अनुपस्थिति) ख़्वाह उसरत (ग़रीबी) के सबब अदाय-ए-नफ़क़ा (ख़र्च देने) से शौहर का इज्ज़ (असमर्थता) या तहसील-ए-नफ़क़ा (ख़र्च प्राप्त करने) से औरत की महरूमी बाइसे-तफ़रीक़ (अलगाव का कारण) नहीं, बल्कि शाफ़ईया वग़ैरह के नज़दीक भी जवाज़े-तफ़रीक़

(अलगाव की अनुमति) के यह मानी हैं कि औरत क़ाज़ी-ए-शरअ के हुज़ूर दावा पेश करे और क़ाज़ी गवाह-ए-शरई लेकर तफ़रीक़ कर दे, न कि यह कि औरत बतौरे-ख़ुद (स्वयं) जिससे चाहे निकाह कर ले। यह हरगिज़ अइम्मा-ए-अरबा (चारों इमामों) में...

---

1. मुसन्निफ़ अब्द अर-रज़्ज़ाक़, बाब: वह औरत जो अपने शौहर की हलाकत के बारे में जाने, अल-मकतब अल-इस्लामी बैरूत, 7/90-91, हदीस नंबर 12337, 12338, 12340। पेज 510 का 688

فتاوی رضویہ جلد دوازدھم

حتی یا تیتھا موت او طلاق ۱ - فرمایا ہے اس پر لازم ہے کہ صبر کرے یہاں تک کہ شوہر کی موت یا طلاق ظاہر ہو۔

ضرورت صادقہ کے وقت جو کسی مسئلہ میں ائمہ ثلاثہ سے کسی امام کی تقلید کی جاتی ہے صرف اس مسئلہ میں اس کے مذہب کی رعایت امور واجبہ میں ضرور ہوگی، دیگر مسائل میں اپنے امام ہی کی تقلید کی جائے گی۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۶۶ : کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ہندہ کے خاوند نے اپنی زوجہ کے قتل کی نیت سے چاقو مارے اور اپنی دانست میں اس کا کام تمام کر دیا تھا مگر قضائے الٰہی سے وہ زندہ بچ گئی، شوہر بعد میں سزائے جرم میں دس برس کے لئے دریائے شور بھیجا گیا، شوہر نے لفظ طلاق کا کچھ نہیں کہا تھا اب زوجہ محتاج ہے اور کسب پر قادر نہیں، دوسرے شخص سے وہ نکاح کر سکتی ہے یا نہیں؟ وقت مقدمہ جب انگریز نے شوہر کو دریائے شور بھیجا تھا اور شوہر نے یہ بیان کیا تھا میں نے تو اس کو بالکل مار ڈالا تھا ، وارثان زوجہ نے حاکم سے یہ کہا کہ اس شخص سے زوجہ کو طلاق بھی دلوا دو، تو حاکم نے یہ کہا کہ تم اپنے علماء سے دریافت کرو، باقی مجرم نے تو اپنی زوجہ کو اپنے ذہن میں قتل ہی کر ڈالا تھا ، طلاق کے استفسار و طلب کی حاجت کیا ہے، اور واقعی شوہر نے زوجہ کو اس طور مارا تھا کہ اس کا بچ جانا تعجبات سے ہے یعنی زوجہ کی آنتیں وغیرہ سب نکل کر باہر آگئی تھیں فی الجملہ صورت مستفسرہ میں ہندہ زوجہ کے نکاح میں ہے یا نہیں اور دوسرے سے نکاح کر سکتی ہے یا نہیں اور جس عورت کا شوہر دائم الحبس ہو گیا وہ نکاح دوسرے سے کر سکتی ہے یا نہیں؟

الجواب: بے افتراق بموت یا طلاق دوسرے سے نکاح نہیں کر سکتی، ہمارے نزدیک، غیبت خواہ عسرت کے سبب ادائے نفقہ سے شوہر کا عجز یا تحصیل نفقہ سے عورت کی محرومی باعث تفریق نہیں بلکہ شافعیہ وغیرہ ہم کے نزدیک بھی جواز تفریق کے یہ معنی کہ عورت قاضی شرع کے حضور دعوی پیش کرے اور قاضی گواہ شرعی لے کر تفریق کر دے نہ یہ کہ عورت بطور خود جس سے چاہے نکاح کر لے، یہ ہرگز ائمہ اربعہ میں

---

1 مصنّف عبد الرزاق باب التي تعلم مهلك زوجها المكتبة الاسلامي بيروت ٧ / ٩١-٩٠ حديث نمبر ١٢٣٣٧، ١٢٣٣٨، ١٢٣٤٠

Fatawa Rizvia Volume 12

...is the religion of no one; similarly, a husband's act of taking up a weapon with the intent to kill his wife and believing in his mind that he has finished her off is not considered a cause for separation by anyone. Not even the most ignorant of the ignorant could say such a thing. And Allah Almighty knows best.

Masla 267: What do the scholars of religion say in this matter: A person's wedded wife, whose age was approximately 10 years, died. She was unable to engage in marital relations with her husband due to being physically unfit; her vagina was not capable of penetration. Naturally, she lacked the capacity for intercourse. Intercourse never occurred between the husband and wife, nor was any child born. What rights are imposed on the husband of this wife, and does the husband have Sharia rights in the movable and immovable property left by the wife, or do both have no rights in each other's assets? Or [one person] says such and such an amount and [another] says such and such, or [one person] says there is no right at all and [another] says there is. Please clarify and be rewarded.

The Answer: In the questioned scenario, the mutual rights of husband and wife are the same as with a woman capable of intercourse. The only difference is that if penetration of the glans was impossible into the vagina and in such a state the husband gave a divorce, half of the dower (mahr) would be mandatory even if they had been in seclusion (khalwat), because that seclusion was not 'Khalwat-e-Sahiha' (valid seclusion) due to the impediment. And the waiting period ('iddat) would still be mandatory, and the wife's maintenance would also be mandatory for the husband. Now that the woman has passed away, her entire dower has become payable by the husband, and half of the woman's estate will go to the husband as inheritance. This is because marriage with such a woman is legally valid and binding, so much so that the husband cannot claim for annulment. It is stated in Durr-e-Mukhtar:

| Neither of the spouses has the choice [to annul] due to a defect in the other, even if it is severe, such as insanity, leprosy, vaginal constriction (ratq), or bone protrusion (qarn).[1] | Even if the defect is severe, neither the husband nor the wife has the right to annul the marriage based on the defect, for example, insanity, leprosy, or constriction or bone in the woman's private part. (T) |

It is also in the same [book]:

| Seclusion without an impediment like ratq, qarn, or insanity is like intercourse in confirming the dower, and the waiting period ('iddat) is mandatory in all cases, even if [the marriage was] invalid. | Seclusion in which an impediment to intercourse is found, such as constriction or bone etc. in the woman's private part, then such seclusion will be considered equivalent to intercourse, whereby the dower becomes mandatory. |

[1] Durr-e-Mukhtar, Chapter of Al-'Innin (The Impotent), Mujtabai Press, Delhi, 1/254

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

...किसी का धर्म नहीं है; इसी तरह, पत्नी को मारने के इरादे से पति का हथियार उठाना और अपने गुमान में उसका काम तमाम कर देना किसी के नज़दीक अलगाव (तलाक) का कारण नहीं है। कोई बड़े से बड़ा जाहिल भी ऐसी बात नहीं कह सकता। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 267: धर्म के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक व्यक्ति की ब्याहता पत्नी, जिसकी आयु लगभग 10 वर्ष थी, मर गई। वह शारीरिक रूप से अक्षम होने के कारण पति के साथ संभोग करने में मजबूर थी; उसकी योनि प्रवेश के योग्य नहीं थी। प्राकृतिक रूप से उसमें संभोग की क्षमता नहीं थी। पति-पत्नी के बीच कभी संभोग नहीं हुआ और न ही कोई संतान पैदा हुई। तो इस पत्नी के पति पर क्या-क्या अधिकार लागू होते हैं और क्या पति पत्नी की छोड़ी हुई चल और अचल संपत्ति में शरीयत के अनुसार अधिकार रखता है, या दोनों एक-दूसरे की संपत्ति में कोई अधिकार नहीं रखते? या फ़लाँ इतना कहता है और फ़लाँ इतना, या फ़लाँ कहता है कि बिल्कुल अधिकार नहीं है और फ़लाँ कहता है कि है। स्पष्ट करें और पुण्य पाएँ।

उत्तर: पूछी गई स्थिति में, पति और पत्नी के आपसी अधिकार वैसे ही होते हैं जैसे संभोग के योग्य स्त्री के साथ होते हैं। केवल अंतर यह है कि यदि योनि में लिंग के अग्रभाग का प्रवेश असंभव था और ऐसी स्थिति में पति तलाक देता, तो आधा मेहर देना अनिवार्य होता भले ही उन्होंने एकांत (खलवत) बिताया हो, क्योंकि वह एकांत किसी बाधा के कारण 'खलवत-ए-सहीहा' (वैध एकांत) नहीं था। और इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) तब भी अनिवार्य होती और पत्नी का भरण-पोषण भी पति पर अनिवार्य होता। अब चूंकि स्त्री की मृत्यु हो चुकी है, उसका पूरा मेहर पति पर देय हो गया है और स्त्री की आधी विरासत विरासत के रूप में पति को मिलेगी। क्योंकि ऐसी स्त्री के साथ निकाह शरीयत के अनुसार सही और अनिवार्य है, यहाँ तक कि पति निकाह रद्द करने का दावा नहीं कर सकता। 'दुर्रे मुख्तार' में है:

| किसी भी पति-पत्नी को दूसरे में दोष के कारण [निकाह रद्द करने का] विकल्प नहीं है, चाहे वह दोष गंभीर ही क्यों न हो, जैसे पागलपन, कुष्ठ रोग, योनि का संकुचित होना (रत्क़) या हड्डी का होना (क़र्न)।[1] | यदि दोष गंभीर हो तब भी पति या पत्नी में से किसी को दोष के आधार पर निकाह रद्द करने का अधिकार नहीं है, जैसे पागलपन, कुष्ठ रोग, पत्नी की योनि में संकुचन या हड्डी होना। (त) |

इसी में है:

| वह एकांत जिसमें रत्क़, क़र्न या पागलपन जैसी संभोग में बाधा न हो, मेहर की पुष्टि में संभोग के समान है, और इद्दत सभी मामलों में अनिवार्य है, भले ही [निकाह] अमान्य हो। | वह एकांत जिसमें संभोग में बाधा पाई जाए, जैसे स्त्री की योनि में संकुचन या हड्डी आदि हो, तो ऐसा एकांत संभोग के हुक्म में होगा जिससे मेहर अनिवार्य हो जाएगा। |

[1] दुर्रे मुख्तार, बाब अल-इन्नीन (नपुंसक का अध्याय), मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/254

سے کسی کا مذہب نہیں، اسی طرح شوہر کا بقصد قتل زوجہ پر حربہ کرنا اور اپنے گمان میں اس کا کام تمام کردینا کسی کے نزدیک موجب افتراق نہیں، کوئی جاہل سا جاہل بھی ایسی بات نہیں کہہ سکتا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۶۷: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص کی زوجہ منکوحہ جس کی عمر تخمیناً ۱۰ سال کی تھی فوت ہوگئی وہ بوجہ ناقابل ہونے زوجیت کے مباشرت شوہری سے مجبور ہے اندام نہانی قابل ادخال نہ تھا قدرۃً اس میں قابلیت مباشرت نہ تھی زن وشوہر میں کبھی مجامعت نہ ہوئی نہ کوئی اولاد پیدا ہوئی بس اس زوجہ کے شوہر پر کیا کیا حقوق عائد ہوسکتے ہیں اور شوہر متروکہ منقولہ وغیر منقولہ زوجہ میں حقوق شرعی رکھتا ہے یادونوں ایک دوسرے کی مالیت میں کچھ حق نہیں رکھتے یا فلاں اس قدر کہتا ہے اور فلاں اس قدر یا فلاں بالکل حق نہیں رکھتا اور فلاں رکھتا ہے۔ بینوا توجروا

الجواب: صورت مسئولہ میں زن و شوہر کے باہمی حقوق ویسے ہی ہوتے ہیں جیسے زن قابلِ جماع کے ساتھ صرف فرق اتنا ہے کہ اگر فرج داخل میں بقدر حشفہ ادخال نا ممکن تھا اور ایسی حالت میں شوہر طلاق دیتا تو نصف مہر لازم آتا اگرچہ خلوت کرچکا ہوتا کہ وہ خلوت بوجہ مانع، خلوت صحیح نہ تھی اور عدت جب بھی لازم آتی اور عورت کا نفقہ بھی شوہر پر لازم آتا اب کہ عورت کا انتقال ہوگیا اس کا کل مہر ذمہ شوہر واجب الادا ہوگیا اور عورت کا نصف ترکہ شوہر کو وراثۃً پہنچے گا کہ ایسی عورت کے ساتھ نکاح شرعاً صحیح بلکہ لازم ہوتا ہے کہ شوہر دعویٰ فسخ نہیں کرسکتا، در مختار میں ہے:

| لایتخیر احدالزوجین بعیب الأخرولو فاحشا کجنون وجذام ورتق وقرن۔[1] | فحش عیب ہو تو بھی خاوند بیوی میں سے کسی کو دوسرے میں عیب کی بناء پر فسخ نکاح کا اختیار نہیں، مثلاً جنون، جذام، بیوی کی شرمگاہ میں تنگی یا ہڈی ہو۔ (ت) |

اسی میں ہے:

| الخلوۃ بلامانع کرتق وقرن وعقل کالوطء فی تأکد المھر وتجب العدۃ فی الکل ولو فاسد قد | خلوت جس میں مانع جماع نہ پایا جائے مثلاً عورت کی شرمگاہ میں تنگی یا ہڈی وغیرہ ہو تو ایسی خلوت وطی کے حکم میں ہوگی جس سے مہر لازم ہوجائے گا |

[1] درمختار باب العنین مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۵۴

Fatawa-e-Razviya Volume 12

Death is also like intercourse regarding the rights of 'Iddah (waiting period) and Mahr (dowry). [Durr-e-Mukhtar, Multaqatan[1]]. 'Iddah will be obligatory even if the marriage was irregular (fasid). Death is like intercourse; it also makes Mahr and 'Iddah mandatory. [Summary] (T)

In the same: Maintenance (Nafaqah) is obligatory for the wife in a valid marriage, even if she has an anatomical obstruction (ratqaa or qarnaa) or is elderly and incapable of intercourse. [Durr-e-Mukhtar, Summary[2]]. Maintenance is obligatory for the wife if the marriage is valid, whether there is narrowing in the wife's private parts due to bone or gland issues, or she is unable to have intercourse due to old age. [Summary] (T)

In the same: Inheritance is entitled through a valid marriage, not through an irregular (fasid) or void (batil) one. [Durr-e-Mukhtar, Summary[3]]. And Allah Almighty knows best. Entitlement to inheritance exists in a valid marriage, not in a fasid or batil one. [Summary] And Allah Almighty knows best. (T)

1. Durr-e-Mukhtar, Chapter of Mahr, Mujtabai Press, Delhi, 1/198.
2. Durr-e-Mukhtar, Chapter of Maintenance, Mujtabai Press, Delhi, 1/266-267.
3. Durr-e-Mukhtar, Book of Inheritance, Mujtabai Press, Delhi, 2/352.

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 12

इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) और महर के अधिकारों के संबंध में मृत्यु भी संभोग (वति) के समान है। [दुर्रे-मुख़्तार, संक्षिप्त[1]]। इद्दत वाजिब होगी भले ही निकाह फ़ासिद (अनियमित) हो, और मृत्यु भी संभोग की तरह है, इससे भी महर और इद्दत लाज़िम होगी। [संक्षिप्त] (त)

इसी में है: एक वैध निकाह में पत्नी के लिए गुज़ारा भत्ता (नफ़क़ा) वाजिब है, भले ही वह शारीरिक बाधा (रतक़ा या क़रना) वाली हो या वृद्ध हो जिससे संभोग संभव न हो। [दुर्रे-मुख़्तार, संक्षिप्त[2]]। पत्नी के लिए नफ़क़ा वाजिब है यदि निकाह सही हो, चाहे पत्नी के गुप्त अंग में हड्डी या ग्रंथि के कारण संकुचन हो, या बुढ़ापे के कारण संभोग के योग्य न हो। [संक्षिप्त] (त)

इसी में है: विरासत का अधिकार सही (वैध) निकाह से प्राप्त होता है, न कि फ़ासिद या बातिल (शून्य) निकाह से। [दुर्रे-मुख़्तार, संक्षिप्त[3]]। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। सही निकाह में विरासत का अधिकार होता है, फ़ासिद या बातिल में नहीं। [संक्षिप्त] और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

1. दुर्रे-मुख़्तार बाब अल-महर मुतबा' मुज्तबाई दिल्ली 1/198
2. दुर्रे-मुख़्तार बाब अन-नफ़क़ा मुतबा' मुज्तबाई दिल्ली 1/266-267
3. दुर्रे-मुख़्तार किताबुल फ़राइद मुतबा' मुज्तबाई दिल्ली 2/352

पृष्ठ 512 का 688

فتاوٰی رضویہ جلد دو ازدہم

الموت ایضاً کالوطئ في حق العدة والمهر 1 اھ ملتقطا۔ عدت واجب ہوگی اگرچہ نکاح فاسد ہو، اور موت بھی وطی کی طرح ہے اس سے بھی مہر اور عدت لازم ہوگی اھ ملتقطاً (ت)

اسی میں ہے: النفقة تجب للزوجة بنكاح صحيح ولو رتقاء او قرناء او كبيرة لا توطأ 2 (ملخصاً) بیوی کے لئے نفقہ واجب ہے نکاح صحیح ہو خواہ بیوی کی شرمگاہ میں ہڈی یا غدود کی وجہ سے تنگی ہو ، یا بڑھاپے کی وجہ سے جماع کے قابل نہ ہو (ملخصاً) (ت)

اسی میں ہے: يستحق الارث بنكاح صحيح لافاسد ولاباطل 3 (ملخصاً)۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ صحیح نکاح میں وراثت کا استحقاق ہوتا ہے فاسد یا باطل میں نہیں (ملخصاً) واللہ تعالٰی اعلم (ت)

1 درمختار باب المہر مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۱۹۸ 2 درمختار باب النفقہ مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۶۶۔۲۶۷ 3 درمختار کتاب الفرائض مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۳۵۲

صفحہ 512 منجانب 688

Fatawa Rizvia Volume 12

Chapter on Kinayah (Allusive expressions) (Description of divorce by allusive words)

Raheeq-ul-Ihaq fi Kalimat-it-Talaq 1311 AH (Describing the number and details of words for Talaq-e-Ba'in [irrevocable divorce])

In the name of Allah, the Most Gracious, the Most Merciful.

Problem 268: From Baroda, district Gujarat Kalan, location Paigah Qasim Hala, sent by Ghulam Hussain Hala, 11 Jumada al-Ukhra 1311 AH. What do the scholars of the Shariat of Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him) say regarding this issue: A person married a woman. A few days later, her husband gave her Talaq-e-Ba'in (irrevocable divorce). Is it permissible or not? The woman is an adulteress; her husband gave her Talaq-e-Ba'in, is it permissible or not? What is called Talaq-e-Ba'in? What is the method of Talaq-e-Ba'in? How is Talaq-e-Ba'in given? Can a husband give his wife Talaq-e-Ba'in whenever he wants? Please write the clarification along with the names of the books, Arabic text and Urdu translation. May the Almighty Lord reward you. Explain and be rewarded.

The Answer: Talaq-e-Ba'in is that divorce due to which the woman immediately leaves the marriage contract. If, after marriage, intercourse has not yet occurred, even if privacy (khalwat) has taken place, and divorce is given, it will be Ba'in (irrevocable).

Page 513 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

बाब अल-किनाया (तलाक-ए-किनाया का बयान)

रहीकुल इहकाक फ़ी कलमातित तलाक १३११ हिजरी (तलाक-ए-बाइन के शब्दों की संख्या और उनके विवरण के बयान में)

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम।

मसला २६८: बड़ौदा, ज़िला गुजरात कलां, ठिकाना पैगाह कासिम हाला, प्रेषक गुलाम हुसैन हाला, ११ जमादि-उल-उखरा १३११ हिजरी। मुहम्मदी शरीअत (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक व्यक्ति ने एक औरत से निकाह किया, कुछ दिनों बाद उसके पति ने उसे तलाक-ए-बाइन (अटल तलाक) दे दी, क्या यह जायज़ है या नहीं? औरत बदचलन है, पति ने तलाक-ए-बाइन दी, क्या यह जायज़ है या नहीं? तलाक-ए-बाइन किसे कहते हैं? तलाक-ए-बाइन का तरीका क्या है? तलाक-ए-बाइन किस प्रकार दी जाती है? क्या पति जब चाहे अपनी पत्नी को तलाक-ए-बाइन दे सकता है? मुहर और किताब के नाम, अरबी इबारत और उर्दू अनुवाद के साथ सारांश लिखें, ईश्वर आपको इसका प्रतिफल प्रदान करेगा। स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: बाइन वह तलाक है जिसके कारण औरत तुरंत निकाह से निकल जाए। यदि निकाह के बाद अभी संभोग की नौबत नहीं आई हो, चाहे एकांत (खलवत) हो चुका हो, तो दी जाने वाली तलाक बाइन ही होगी।

पृष्ठ ५१३ / ६८८

فتاوٰی رضویہ جلددوازدہم

باب الکنایہ (طلاق کنایہ کا بیان)

رحیق الاحقاق فی کلمات الطلاق ۱۳۱۱ھ (طلاق بائن کے الفاظ کی تعداد اور ان کی تفصیل کے بیان میں)

بسم اللہ الرحمن الرحیم ط

مسئلہ ۲۶۸: از بڑودہ ضلع گجرات کلاں ٹھکانہ پائیگاہ قاسم حالہ مرسلہ غلام حسین حالہ ۱۱ جمادی الاخری ۱۳۱۱ھ کیا فرماتے ہیں عالم شریعت محمدی صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے ایک عورت کے ساتھ نکاح کیا، چند روز بعد اُس کے خاوند نے طلاق بائن دی جائز یا نہیں؟ عورت فاحشہ ہے خاوند نے طلاق بائن دیا جائز ہے یا نہیں؟ طلاق بائن کسے کہتے ہیں؟ طلاق بائن کا کیا طریقہ ہے؟ طلاق بائن کس طور سے دیتے ہیں؟ جس وقت چاہے خاوند اپنی عورت کو طلاق بائن دے سکتا ہے یا نہیں؟ مع مہر و نام کتاب عبارت عربی ترجمہ اردو، خلاصہ تحریر فرمائیے، اس کا اجر آپ کو خداوند کریم عطا کرے گا۔ بینوا توجروا۔

الجواب: بائن وہ طلاق جس کے سبب عورت فوراً نکاح سے نکل جائے، اگر بعد نکاح ابھی وطی و جماع کی نوبت نہ پہنچی اگرچہ خلوت ہو چکی ہو تو طلاق دی جائے بائن ہی ہوگی۔

صفحہ ۵۱۳ از ۶۸۸

In Tanwir, ad-Durr, and Radd al-Muhtar, it is stated that privacy (khalwat) is not like intercourse (wat'i) regarding the right of return (ruju'). That is, if a clear divorce (talaq-e-sarih) is given after privacy but before intercourse, return to the wife is not possible after such a clear divorce. This is according to Bahr, because a clear divorce before intercourse is 'bain' (irrevocable). [Extracted from various sources]

Similarly, when the number of divorces reaches three, whether in one go or over ten years, they also become 'bain' (irrevocable); in fact, they are of the 'akbar' (major) type of bain, meaning remarriage is not possible without halala. The third form of 'bain' is a divorce given in exchange for wealth. For example, the husband says, "I divorce you in exchange for a thousand rupees" or "in exchange for your dower," and the woman accepts. Or the woman says, "I absolve you from my dower or such-and-such debt on the condition that you divorce me," and the man divorces her. Or the man says, "Absolve me from all the rights that women have over their husbands," and she says, "I have absolved you," and he immediately says, "I have divorced you." In this case, even if compensation was not explicitly mentioned, the situation serves as evidence of exchange.

In Tanwir, it is stated that a divorce occurring in exchange for wealth is a 'bain' (irrevocable) divorce. In Radd al-Muhtar, it is explained that 'wealth' is general, whether it is cash or the wife's property owed by the husband, such as dower, etc. If the wife absolves the husband of her right in exchange for divorce, even if she says, "In exchange for divorce, I absolve you of my right," and he gives the divorce, it will be a 'bain' divorce. Al-Bahr has mentioned this from Bazzaziyya. In al-Fath, at the end of the chapter, it is mentioned: the husband says, "Absolve me from every right that women have against men," and the wife does so, and the husband immediately says, "I have divorced you." If the wife has been consummated, then this is a 'bain' divorce because it is in exchange.

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, Chapter of Dower, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/342 2. Durr al-Mukhtar, Chapter of Khul', Mujtabai Press, Delhi, 1/245 3. Radd al-Muhtar, Chapter of Khul', Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/560

तनवीर, दुर्र, रद अल-मुह्तार में उल्लेख है कि वापसी (रुजू) के अधिकार के मामले में एकांत (खलवत) संभोग की तरह नहीं है। अर्थात, यदि एकांत के बाद लेकिन संभोग से पहले स्पष्ट तलाक (तलाक-ए-सरीह) दिया गया हो, तो इस स्पष्ट तलाक के बाद पत्नी के पास वापस जाना संभव नहीं है। बहर के अनुसार, संभोग से पहले स्पष्ट तलाक 'बाइन' (अपरिवर्तनीय) होता है। [विभिन्न स्रोतों से संकलित]

इसी तरह, जब तलाक की संख्या तीन तक पहुँच जाती है, चाहे एक बार में हो या दस वर्षों में, वे भी 'बाइन' हो जाते हैं; वास्तव में, वे बाइन के'अकबर' (प्रमुख) प्रकार के होते हैं, जिसका अर्थ है कि हलाला के बिना पुनर्विवाह संभव नहीं है। बाइन का तीसरा रूप वह तलाक है जो धन के बदले में दिया जाता है। उदाहरण के लिए, पति कहता है, "मैं एक हज़ार रुपये के बदले तुम्हें तलाक देता हूँ" या "तुम्हारे मेहर के बदले तलाक देता हूँ," और महिला स्वीकार कर लेती है। या महिला कहती है, "मैं तुम्हें अपने मेहर या अमुक ऋण से इस शर्त पर मुक्त करती हूँ कि तुम मुझे तलाक दे दो," और पुरुष उसे तलाक दे देता है। या पुरुष कहता है, "महिलाओं के पतियों पर जो भी अधिकार होते हैं, उन सब से मुझे मुक्त करो," और वह कहती है, "मैंने मुक्त किया," और वह तुरंत कहता है, "मैंने तलाक दिया।" इस मामले में, भले ही मुआवजे का स्पष्ट उल्लेख न हो, लेकिन स्थिति विनिमय का प्रमाण है।

तनवीर में कहा गया है कि धन के बदले होने वाला तलाक, 'बाइन' तलाक होगा। रद अल-मुह्तार में स्पष्ट किया गया है कि 'धन' से तात्पर्य सामान्य है, चाहे वह नकद हो या पति के पास पत्नी की संपत्ति जैसे मेहर आदि। यदि पत्नी तलाक के बदले पति को अपने अधिकार से मुक्त कर देती है, यहाँ तक कि अगर वह कह दे कि "तलाक के बदले में मैं तुम्हें अपने अधिकार से मुक्त करती हूँ," और वह तलाक दे देता है, तो यह 'बाइन' तलाक होगा। बहर ने इसे बज़ाज़िया के हवाले से उल्लेख किया है। फतह में इस अध्याय के अंत में है: पति ने कहा, "तुम मुझे हर उस अधिकार से मुक्त कर दो जो महिलाओं का पुरुषों पर होता है," और पत्नी ने ऐसा कर दिया, तो पति ने तुरंत कहा, "मैंने तुम्हें तलाक दिया।" यदि पत्नी के साथ संभोग हो चुका हो, तो यह 'बाइन' तलाक है क्योंकि यह बदले (मुआवजे) के रूप में है।

पाद-टिप्पणियाँ: 1. रद अल-मुह्तार, मेहर का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/342 2. दुर्र मुख़्तार, खुल' का अध्याय, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/245 3. रद अल-मुह्तार, खुल' का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/560

فی التنویر والدر ورد المحتار الخلوۃ لاتکون کالوطئ فی حق الرجعۃ لارجعۃ لہ بعد الطلاق الصریح بعد الخلوۃ بحرای لوقرع الطلاق بائناً۔ اھ بالالتلقاط۔ تنویر، در، ردالمحتار میں ہے کہ بیوی سے رجوع کے معاملہ میں خلوت، وطی کی طرح نہیں ، یعنی خلوت کے بعد اور جماع سے پہلے طلاق دی ہو تو اس صریح طلاق کے بعد بیوی سے رجوع نہیں ہو سکتا ہے، بحر کیونکہ صریح طلاق قبل از جماع بائنہ ہوتی ہے اھ ملتقطاً(ت)

یونہی جب طلاقیں تین تک پہنچ جائیں خواہ ایک بار میں خواہ دس برس میں، تو وہ بھی بائن ہو جاتی ہیں بلکہ وہ بائن کی قسم اکبر ہیں کہ پھر بے حلالہ اس سے نکاح نہیں ہو سکتا۔ بائن کی تیسری صورت وہ طلاق کہ مال کے بدلے دی جائے مثلاً شوہر نے کہا میں بعوض ہزار روپیہ تجھے طلاق دی یا تیرے مہر کے بدلے طلاق دی، اور عورت نے قبول کر لیا، یا عورت نے کہا میں نے اپنے مہر یا فلاں قرض سے تجھے بری کیا اس شرط پر کہ تُو مجھے طلاق دے دے، مرد نے دے دی، یا مرد نے کہا جتنے حق عورتوں کے شوہروں پر ہوتے ہیں ان سب سے مجھے بری کر ، اس نے کہا بری کیا ، اس نے فوراً کہا میں نے طلاق دی، کہ اس میں اگر چہ صراحۃً ذکر عوض نہ تھا مگر صورتِ حال دلیلِ معاوضہ ہے،

فی التنویر الواقع بالطلاق علی مال طلاق بائن اھوفی ردالمحتار اراد بالمال ما یشمل الابراء منہ حتی لو قالت ابرأتک عمالی علیک علی طلاقی ففعل برئی و بانت۔ بحر عن البزازیۃ وفی الفتح اخر الباب قال ابرئینی من کل حق یکون للنساء علی الرجال ففعلت فقال فی فورہ طلقتک وھی مدخول بھا یقع بائنا لانہ بعوض[3]۔ تنویر میں ہے کہ مال کے عوض طلاق، بائنہ طلاق ہوگی اھ، اور ردالمحتار میں

ہے کہ مال سے مراد عام ہے نقد ہو یا خاوند کے ذمہ اگر بیوی کا مال ہو مثلاً مہر وغیرہ تو طلاق کے عوض بیوی کا خاوند کو اپنے حق سے بری کرنا حتی کہ اگر بیوی نے کہہ دیا کہ طلاق کے عوض میں تجھے اپنے حق سے بری کرتی ہوں، اور اس نے طلاق دے دی تو یہ طلاق بائنہ ہوگی، بحر نے اس کو بزازیہ کے حوالے سے ذکر کیا ہے، اور فتح میں اس باب کے آخر میں ہے خاوند نے کہا تو مجھے ہر ایسے حق سے بری کردے جو عورتوں کا مردوں کے ذمہ ہوتا ہے، اور بیوی نے ایسے کر دیا تو خاوند نے فوری طور پر کہہ دیا میں نے تجھے طلاق دی، اگر بیوی مدخولہ ہو تو یہ طلاق بائنہ

1. رد المحتار باب المہر دار احیاء التراث العربی بیروت ۳۴۲/۲
2. درمختار باب الخلع مطبع مجتبائی دہلی ۲۴۵/۱
3. رد المحتار باب الخلع دار احیاء التراث العربی بیروت ۵۶۰/۲

Fatawa Razawiya Volume 12

...will be because this is a divorce for consideration (bil-awad). (T) The fourth type is a divorce of any kind given, and if the waiting period ('iddah) passes without revocation (ruju'), that divorce also becomes irrevocable (ba'in). In all these four cases, there is no specification of word; all words hold the same rule. The fifth is when a woman is divorced after intercourse, and the count has not reached three, nor is it a divorce in exchange for property, nor has the waiting period passed, yet it becomes irrevocable (ba'in) immediately upon being given. Specific words are designated for this; if said with these words, it will be irrevocable, and if said with those, it will be revocable (raj'i), meaning the right of revocation within the waiting period will be given. For example, if he says with his tongue, 'I have taken you back into my marriage,' then the woman will not leave the marriage and will remain a wife as before, and the ruling of divorce will not be voided.

Some words for Irrevocable (Ba'in) Divorce are: 1. Go, 2. Get out, 3. Walk away, 4. Depart, 5. Stand up, 6. Be standing, 7. Veil yourself, 8. Put on your headscarf, 9. Put on a face-veil, 10. Move back, 11. Move aside, 12. Leave the place, 13. Vacate the house, 14. Be far, 15. Go far away, 16. O empty one!, 17. O severed one!, 18. O separated one!, 19. You are separate from me, 20. I have set you free without restriction, 21. I have parted from you, 22. You are separate,

Arabic	Urdu Translation
In al-Durr [al-Mukhtar]: Go out, go away, stand up, veil yourself, cover your head, hide yourself, move, depart, go far, go away (from 'ghurba' or 'uzuba'). These could imply rejection. And similarly, 'abandoned', 'free', 'forbidden', 'irrevocable', and their synonyms like 'severed', 'absolute' can be used as insults. 'You are free', 'I have released you', 'I have parted from you' do not imply insult or rejection. In a state of satisfaction,	It is in Durr [al-Mukhtar]: Get out, go away, stand up, veil yourself, put on your headscarf, move back, leave the place, be far, be empty; 'aghrabi' or 'a'zabi' is from 'ghurbat' (strangeness) or 'uzubat' (singlehood). These words also have the possibility of being a response. And 'alone', 'O free one', or 'forbidden', or 'irrevocable' (ba'ina), these words and their synonyms, such as 'you are separate from me', 'I gave you freedom', also have the possibility of being a scolding. And 'you are free from me', 'I have made you unrestricted', 'I have parted from you', these words do not carry the possibility of scolding or being a response. If all

Arabic	Urdu Translation
these categories depend on intention. (Selected)	these types were said in a state of satisfaction/ pleasure, they will depend on intention. (T)

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on Metaphors (al-Kinayat), Mujtabai Press, Delhi, 1/224

...होगी क्योंकि यह प्रतिफल (बिल-अवाज़) के साथ तलाक है। (त) चौथा यह कि किसी भी प्रकार का तलाक दिया गया हो और बिना सुलह (रुजू) किए इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) बीत गई हो, तो वह तलाक भी बाइन (अपरिवर्तनीय) हो जाएगा। इन चारों स्थितियों में किसी शब्द का विशेष विवरण नहीं है; सभी शब्दों का एक ही नियम है। पाँचवाँ यह कि स्त्री से संभोग के बाद उसे तलाक दिया जाए और संख्या तीन तक न पहुँचे, न ही यह संपत्ति के बदले तलाक हो और न ही इद्दत बीती हो, इसके बावजूद तलाक देते ही वह बाइन हो जाए। इसके लिए शब्द निर्धारित हैं; यदि इन शब्दों के साथ कहा गया तो बाइन होगा, और यदि उन शब्दों के साथ कहा गया तो रजई (परिवर्तनीय) होगा, यानी इद्दत के भीतर सुलह का अधिकार दिया जाएगा। उदाहरण के लिए, यदि वह अपनी जुबान से कहे कि 'मैंने तुम्हें अपने निकाह में वापस ले लिया,' तो स्त्री निकाह से बाहर नहीं होगी और पहले की तरह पत्नी बनी रहेगी, और तलाक का हुक्म खत्म नहीं होगा।

बाइन तलाक के कुछ शब्द ये हैं: 1. जा, 2. निकल, 3. चल, 4. रवाना हो, 5. उठ, 6. खड़ी हो, 7. पर्दा कर, 8. दुपट्टा ओढ़, 9. नकाब डाल, 10. हट, 11. सरक, 12. जगह छोड़, 13. घर खाली कर, 14. दूर हो, 15. चल दूर, 16. ऐ खाली!, 17. ऐ अलग होने वाली!, 18. ऐ जुदा!, 19. तू मुझसे जुदा है, 20. मैंने तुझे बे-क़ैद किया, 21. मैंने तुझसे जुदाई की, 22. तू जुदा है,

अरबी	**उर्दू अनुवाद**
दुर्र-ए-मुख्तार में: निकल जाओ, चले जाओ, खड़े हो जाओ, परदा कर लो, सिर ढँक लो, छुप जाओ, चले जाओ, रवाना हो जाओ, दूर हो जाओ, दूर चले जाओ (ग़ुर्बत या उज़ूबत से)। ये शब्द प्रत्युत्तर की संभावना रखते हैं। और इसी तरह 'एकाकी', 'मुक्त', 'वर्जित', 'अपरिवर्तनीय' और उनके समानार्थी जैसे 'कटा हुआ', 'पूर्ण' को गाली के रूप में उपयोग किया जा सकता है। 'तुम स्वतंत्र हो', 'मैंने तुम्हें छोड़ दिया', 'मैंने तुमसे अलगाव कर लिया' गाली या प्रत्युत्तर का भाव नहीं रखते। संतुष्टि	दुर्र-ए-मुख्तार में है: निकल जा, चली जा, खड़ी हो जा, पर्दा कर, दुपट्टा ओढ़, हट जा, जगह छोड़, दूर हो, खाली हो, 'अग्रबी' या 'अज़बी' का अर्थ परदेस या कुंवारेपन से है, ये शब्द उत्तर की संभावना भी रखते हैं। और अकेली, ऐ बरी या हराम या बाइनह, ये शब्द और इनके समानार्थी जैसे, 'तू मुझसे जुदा है', 'मैंने तुझे आज़ादी दी', डाँट की संभावना भी रखते हैं। और 'तू मुझसे आज़ाद है', 'मैंने तुझे बे-क़ैद किया', 'मैंने तुझसे जुदाई की', ये शब्द डाँट

अरबी

की स्थिति में, ये श्रेणियां नियत (इरादे) पर निर्भर करती हैं। (चयनित)

उर्दू अनुवाद

और उत्तर की संभावना नहीं रखते। ये सभी प्रकार यदि प्रसन्नता की स्थिति में कहे गए हों, तो नियत (इरादे) पर निर्भर होंगे। (त)

1 दुर्र-ए-मुख्तार, बाब अल-किनायात, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 1/224 पेज 515 का 688

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

ہوگی کیونکہ یہ طلاق بالعوض ہے۔ (ت) چوتھی جو طلاق کسی قسم کی دی گئی اور بغیر رجعت ہوئے عدت گزر گئی وہ طلاق بھی بائن ہوگی۔ ان چاروں صورتوں میں کسی لفظ کی تخصیص نہیں سب الفاظ ایک ہی حکم رکھتے ہیں۔ پانچواں یہ کہ عورت سے جماع ہونے اس کے بعد طلاق دے اور گنتی بھی تین تک نہ پہنچے، نہ مال کے بدلے طلاق ہو نہ عدت گزرے، بایں ہمہ طلاق دیتے ہی بائن ہو جائے اس کے لئے الفاظ مقرر ہیں کہ ان لفظوں سے کہا تو بائن ہوگی اور ان سے کہا تو رجعی کہ عدت کے اندر رجعت کا اختیار دیا جائیگا مثلاً اگر زبان سے کہہ دے کہ میں نے تجھے اپنے نکاح میں پھیر لیا تو عورت نکاح سے نکلنے نہ پائے گی بدستور زوجہ رہے گی اور حکم طلاق زائل نہ ہوگا۔

بائن کے بعض الفاظ یہ ہیں: 1 جا، 2 نکل، 3 چل، 4 روانہ ہو، 5 اٹھ، 6 کھڑی ہو، 7 پردہ کر، 8 دوپٹہ اوڑھ، 9 نقاب ڈال، 10 ہٹ، 11 سرک، 12 جگہ چھوڑ، 13 گھر خالی کر، 14 دور ہو، 15 چل دور، 16 اے خالی، 17 اے بریفتہ با، 18 اے جدا، 19 تو مجھ سے جدا ہے، 20 میں نے تجھ بے قید کیا، 21 میں نے تجھ سے مفارقت کی، 22 تو جدا ہے،

عربی متن **اردو ترجمہ**

فی الدر فحو اخرجی واذھبی وقومی تقنعی، تخمری، استتری، انتقلی انطلقی، اغربی، اعزبی من الغربۃ اومن العزوبۃ یحتمل ردا، ونحو

ڈُر میں ہے، نکل جا، چلی جا، کھڑی ہو جا، پردہ کر، دوپٹہ اوڑھ، ہٹ جا، جگہ چھوڑ، دُور ہو، خالی ہو، اغربی یا اعزبی غربت یا عزوبت سے ہے، یہ الفاظ جواب کا بھی احتمال رکھتے ہیں، اور اکیلی، اے بَری یا حرام یا بائنہ، یہ الفاظ اور

عربی متن	اردو ترجمہ
خلية، برية، حرام بائن، ومراد فها كبتة بتلة يصلح سبا، انت حر ة، سرحتك، فارقتك لا يحتمل السب والرد، ففی حالة الرضی تتوقف الاقسام علی نية (ملتقطاً)۔	ان کے ہم معنی جیسے، تو مجھ سے جدا ہے، میں نے تجھے آزادی دی، ڈانٹ کا احتمال بھی رکھتے ہیں، اور، تو مجھ سے آزاد ہے، میں نے تجھے بے قید کیا، میں نے تجھ سے مفارقت کی، یہ الفاظ ڈانٹ اور جواب کا احتمال نہیں رکھتے، یہ تمام اقسام رضا کی حالت میں کہے ہوں تو نیت پر موقوف ہوں گے۔ (ت)

1 در مختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی 1/ 224 صفحہ 515 از 688

Fatawa Razawiyya, Volume Twelve

"Measure the path," "take your way" – both are metaphors for leaving/going. (T) "Blacken your face," "show your gait," "get going," "get out of my sight," "get lost," "dal became ain" (disappear), "vanish," "empty the cage," "get away and rot," "lose your face," "pick up your bedding," "look out for yourself," "tie your bundle," "spread your filth separately," "go away," "take the basket of departure," "go where your horns fit," "eat your own parting" – enough has been done, now please be kind. All these are metaphors for distance and departure. (T) "O you who are disconnected," like saying 'batta batla' – if he says 'be disconnected', it is like 'batta' and 'batla'. (T) "Hide your face," like saying 'taqanna'i' (veil yourself), 'takhmmari' (wear a headscarf), 'istatiri' (cover yourself) – they are like wear a veil, take a scarf, put on a niqab. (T) "Go to hell," "go into the stove," "go into the furnace."

(Arabic) In the branches of al-Durr: "Go to hell," occurs if intended. Khulasa.

(Urdu) In the secondary issues of al-Durr: "Go to hell," he said; if he intended divorce, divorce will occur. Khulasa. (T)

"Move away from me," "be victorious in your purpose," "we have annulled the marriage," "you are to me like a carcass or swine or wine."

(Arabic) Also in it, and similarly [if he said] "Go away from me," "prosper," "I have annulled the marriage," "and you are to me like a carcass or like the flesh of swine or forbidden like water."

(Urdu) It is in the same [book], and similarly if he said: "Get away from me," "be successful in your purpose," "I have annulled the marriage," "you are to me like a carcass," "you are to me like swine or like wine." (T)

Not like hemp or opium or the property of so-and-so or the wife of so-and-so.

| (Arabic) In Radd al-Muhtar under the statement of al-Durr: "You are to me like a carcass," and what is meant is comparison with that which is inherently forbidden (haram al-'ayn) like wine, swine, and carcasses. The ruling in this is like the ruling in "You are forbidden to me," unlike if he said, "You are to me like the property of so-and-so," then it [divorce] does not occur even if he intended it. It was stated in al-Dhakhira. | (Urdu) In Radd al-Muhtar, regarding the statement of Durr al-Mukhtar "You are like a carcass to me," the meaning is something which is strictly forbidden like wine, pork, and carcass. Their ruling is the same as "You are forbidden to me."

Contrary to this, if he said "You are to me like the property of so-and-so," even if he intended it, divorce will not occur. This was stated in Dhakhira. (T) |

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on Metaphors, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/226 2 Durr al-Mukhtar, Chapter on Metaphors, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/226 3 Radd al-Muhtar, Chapter on Metaphors, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/474

फतावा रज़विया, जिल्द बारहवीं

"रास्ता नापो," "अपना रास्ता लो" – ये दोनों जाने/चले जाने के रूपक (किनाया) हैं। (त) "अपना मुँह काला करो," "चाल दिखाओ," "चलती बनो," "नज़रों से दूर हो," "दफ़ा हो जाओ," "दाल ने ऐन हो" (गायब हो जाओ), "रफ़ूचक्कर हो जाओ," "पिंजरा खाली करो," "हट के सड़ो," "अपनी सूरत गँवाओ," "बिस्तर उठाओ," "अपना भला देखो," "अपनी गठरी बाँधो," "अपनी गंदगी अलग फैलाओ," "तशरीफ़ ले जाइए," "तशरीफ़ का टोकरा ले जाइए," "जहाँ सींग समाएँ जाओ," "अपनी जुदाई खाओ" – बहुत हो चुका अब मेहरबानी कीजिए। ये सब दूरी और चले जाने के रूपक हैं। (त) "ऐ बे-ताल्लुक हो" जैसे 'बत्ता बतला' कहना – अगर 'बे-ताल्लुक हो' कहा तो 'बत्ता' और 'बतला' की तरह है। (त) "मुँह छुपाओ," जैसे 'तक़न्नई', 'तख़म्मरी', 'इस्ततिरी' कहना – ये पर्दा कर लो, ओढ़नी ले लो, नक़ाब डाल लो की तरह हैं। (त) "जहन्नुम में जाओ," "चूल्हे में जाओ," "भाड़ में जाओ।"

(अरबी) अल-दुर की शाखाओं में: "जहन्नुम में जाओ," यदि नियत की हो तो प्रभावी होगा। ख़ुलासा।

"मेरे पास से चल," "अपने मकसद में कामयाब हो," "हमने निकाह रद्द किया," "तो मुझ पर मुर्दार या सुअर या शराब की तरह है।"

(अरबी) इसी में यह भी है, और इसी तरह [अगर कहा] "मुझसे दूर हो जा," "कामयाब हो," "मैंने निकाह रद्द किया," और "तू मुझ पर मुर्दार की तरह या सुअर के मांस की तरह या पानी की तरह हराम है।"

(उर्दू) दुर के फ़रई मसलों में है: "जहन्नुम में जाओ," कहा; अगर तलाक की नियत की तो तलाक हो जाएगी। ख़ुलासा। (त)

(उर्दू) इसी में है और इसी तरह अगर कहा: "मेरे पास से चली जा," "अपनी मुराद पर कामयाब हो," "मैंने निकाह रद्द किया," "तो मुझ पर मुर्दार की तरह है," "तो मुझ पर सुअर की तरह या शराब की तरह है।" (त)

न कि भांग या अफीम या फ़लाँ के माल या फ़लाँ की पत्नी की तरह।

| (अरबी) रद अल-मुहतार में दुर [अल-मुख़्तार] के कथन के तहत: "तू मुझ पर मुर्दार की तरह है," और इसका मतलब उस चीज़ से तुलना है जो मूल रूप से हराम है (हराम अल-ऐन) जैसे शराब, सुअर और मुर्दार। इसमें हुक्म वही है जो "तू मुझ पर हराम है" में है, इसके विपरीत अगर उसने कहा "तू मुझ पर फ़लाँ की संपत्ति की तरह है," तो तलाक नहीं होगा चाहे उसने नियत ही क्यों न की हो। यह

अल-ज़ख़ीरा में बताया गया है। | (उर्दू) रद अल-मुहतार में दुर्रे-मुख़्तार के कॉल "तू मुझ पर मुर्दार की तरह है" से मुराद वह चीज़ है जो कतई हराम है जैसे शराब, सुअर और मुर्दार। इनका हुक्म वही है जो "तू मुझ पर हराम है" का है, इसके बरअक्स अगर उसने कहा "तू मुझ पर फ़लाँ के माल की तरह है" इसमें नियत की हो तब भी तलाक न होगी, ज़ख़ीरा में यह इफ़ादा किया। (त) |

1 दुर्रे मुख़्तार, बाब अल-किनायात, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/226 2 दुर्रे मुख़्तार, बाब अल-किनायात, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/226 3 रद अल-मुहतार, बाब अल-किनायात, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/474

"رستہ ناپ، اپنی راہ لے" کنایتان عن الذھاب یہ دونوں کنایہ ہیں، جانے، سے۔ (ت) "کالا منہ کر، چال دکھا، چلتی بن، چلتی نظر آ، دفع ہو، دال نے عین ہو، رفو چکر ہو، پنجرا خالی کر، ہٹ کے سڑ، اپنی صورت گما، بستر اٹھا، اپنا سوجھتا دیکھ، اپنی گٹھڑی باندھ، اپنی نجاست الگ پھیلا، تشریف لے جائیے، تشریف کا ٹوکرا لے جائیے، جہاں سینگ سمائے جا، اپنا مانگ کھا،" بہت ہو چکی اب مہربانی فرمائیے، کلھا کنایۃ عن البعد والذھابیہ سب دور ہونے، اور جانے سے، کنایہ ہیں۔ (ت) "اے بے علاقہ ہو" کقولہ بتۃ بتلۃ 'بے علاقہ ہو' کہا تو بتہ اور بتلہ کی طرح ہے۔ (ت) "منہ چھپاؤ،" کقولہ تقنعی تخمری استتری پردہ کر، اوڑھنی لے، نقاب ڈال، کی طرح ہیں۔ (ت) "جہنم میں جا، چولھے میں جا، بھاڑ میں جاؤ،"

في فروع الدر اذھبی الی جھنم یقع ان نوی خلاصۃ

"میرے پاس سے چل، اپنی مراد پر فتح مند ہو، ہمیں نے نکاح فسخ کیا، تو مجھ پر مثل مردار یا سؤر یا شراب کے ہے"

فیھا ایضاً وکذا اذھبی عنی وافلحی وفسخت النکاح وانت علی کالمیتۃ اوکلحم الخنزیر اوحرام کالماء

دُر کے فروعی مسائل میں ہے: جہنم میں جا، کہا، اگر طلاق کی نیت کی تو طلاق ہو جائے گی، خلاصہ۔ ت

اسی میں ہے اور یوں ہی اگر کہا میرے پاس سے چلی جا، اپنی مراد پر کامیاب ہو، میں نے نکاح فسخ کیا، تو مجھ پر مردار کی طرح ہے، تو مجھ پر خنزیر کی طرح یا شراب کی طرح ہے۔ت

نہ مثل بھنگ یا افیون یا مال فلاں یا زوجہ فلاں کے،

| في ردالمحتار تحت قول الدرانت علی کالمیتۃ والمراد التشبیہ بما ھو محرم العین کالخمر والخنزیر و المیتۃ فالحکم فیہ کالحکم فی انت علی حرام بخلاف مالوقال انت علی کمتاع فلان فلا یقع وان نوی افادہ فی الذخیرۃ | ردالمحتار میں درمختار کے قول "تو مجھ پر مردار کی طرح ہے" سے مراد وہ چیز ہے جو قطعی حرام ہے جیسے شراب، خنزیر اور مردار۔ ان کا حکم وہی ہے جو "تو مجھ پر حرام ہے" کا ہے، اس کے برخلاف اگر اس نے کہا "تو مجھ پر فلاں کے مال کی طرح ہے" اس میں نیت کی ہو تب بھی طلاق نہ ہو گی، ذخیرہ میں یہ افادہ کیا۔ (ت) |

1 درمختار باب الکنایات مطبع مجتبائی، دہلی ۱/۲۲۶ 2 درمختار باب الکنایات مطبع مجتبائی، دہلی ۱/۲۲۶ 3 ردالمحتار باب الکنایات دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۴۷۴

Fatawa Razawiya Volume 12

1. "You are like my mother" or 56. "sister" or 57. "daughter". And if one says: "You are my mother, sister, daughter", then it is nothing but a sin.

[Arabic Box:] In ad-Durr: If he intends [divorce], she is separated by [phrases like] "like my mother" or "as my mother". Likewise, if "upon me" is omitted. In al-Khaniyah: Whether intending kindness, zihar, or divorce, his intention is valid and what he intended occurs because it is a kinayah (metaphor). Otherwise, if he intends nothing or the particle of comparison "kaf" (like) is omitted, it is considered idle talk, and only the lowest meaning is determined, which is "birr" (kindness) meaning honor. It is disliked (Makruh) to say: "You are my mother", "O my daughter", "O my sister", and the like. - 1

[Urdu Explanation:] It is in ad-Durr that if one says to his wife "You are to me like my mother", mentioning the word "misl" (like) or "kaf" for comparison, and similarly if the word "alayya" (upon me) is omitted, then whatever the intention is—service, zihar, or divorce—that ruling will apply. Each intention will be valid because these words are metaphorical. If there was no intention at all, or if the word of comparison was omitted, then it would be idle speech, and only the lowest meaning, i.e., service and respect, would be intended. Phrases like "You are my mother", "O my daughter", "O my sister" are disliked (Makruh). (T)

1. "Your neck is released", 60. "You are pure". In Radd al-Muhtar: "Anta Khalisatun" (You are pure). - 2 (In Radd al-Muhtar: "You became pure". T) "Lawful things of God", or 62. "Lawful things of Muslims" 63. "Outside [are] forbidden for me", 64. "You are with me in forbiddenness".

[Arabic Box:] All of this is in ash-Shami as will come explicitly. The later scholars (muta'akhkhirun) disagreed with our earlier imams (mutaqaddimun) and said: there is no need for intention because it has become customary (al-muta'araf) [for divorce]. I say: in our lands, the custom has vanished, so the matter returns to what it was. Ash-Shami said that the later scholars disagreed based on the newly emerged custom, so the occurrence of irrevocable divorce (ba'in) through it now depends on the existence of that custom.

[Urdu Explanation:] All this is in Fatawa Shami, as will be explicitly stated later. In this, the later jurists disagreed with our earlier imams and said that there is no need for intention in these words because they have become the custom (urf) for divorce. I

say (the author says) that in our region, this is not the custom, so these words will return to their original [non-divorce] meaning. Allama Shami stated: The later scholars disagreed based on a new custom, so the occurrence of irrevocable divorce through it depends on the existence of that custom. (T)

1. "I sold you to yourself" - if no consideration (price) is mentioned.

[Arabic Box:] In Radd al-Muhtar from al-Khaniyah: And if he says "I sold your self to you" and she says "I bought", it occurs [as divorce].

[Urdu Explanation:] It is narrated in Radd al-Muhtar from al-Khaniyah that if a husband said to his wife, "I have sold you to yourself", then [if she accepts, divorce occurs].

---

1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Zihar, Mujtabai Press, Delhi, 1/249
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Kinayat, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/462

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

1. "तू मेरी माँ की तरह है" या 56. "बहन" या 57. "बेटी"। और अगर यों कहा कि "तू माँ, बहन, बेटी है", तो यह गुनाह के सिवा कुछ नहीं है।

[अरबी बॉक्स:] दुर्र में है: यदि तलाक की नीयत हो, तो 'मेरी माँ की तरह' या 'जैसी मेरी माँ' जैसे शब्दों से जुदाई हो जाती है। इसी तरह यदि 'मुझ पर' (अलैया) शब्द हटा दिया जाए। खानिया में है: चाहे नीयत नेकी की हो, ज़िहार की हो या तलाक की, उसकी नीयत सही मानी जाएगी और वही होगा जो उसने नीयत की, क्योंकि यह किनाया (सांकेतिक शब्द) है। अन्यथा, यदि कोई नीयत न हो या उपमा वाला शब्द 'काफ़' (जैसा) हटा दिया जाए, तो यह व्यर्थ शब्द होगा और केवल निम्नतम अर्थ, यानी 'बिर्र' (नेकी) अर्थात सम्मान ही लिया जाएगा। 'तू मेरी माँ है', 'ऐ मेरी बेटी', 'ऐ मेरी बहन' जैसे शब्द कहना मकरूह (नापसंद) है। - 1

[उर्दू स्पष्टीकरण:] दुर्र में है कि अगर बीवी को कहा 'तू मुझ पर मेरी माँ की तरह', लफ्ज़ 'मिसल' या 'काफ़' को तशबीह (तुलना) के लिए ज़िक्र किया, और यों ही अगर लफ्ज़ 'अ़ली' (मुझ पर) को हटा दिया हो, तो ख़िदमत या ज़िहार या तलाक जो भी नीयत करेगा वही हुक्म होगा, हर एक की नीयत सही होगी क्योंकि यह लफ्ज़ किनाया है। और अगर कुछ भी नीयत न थी या तशबीह के लफ्ज़ को हटा दिया हो तो यह लग्व (व्यर्थ) कलाम होगा, और सिर्फ अदना (निम्नतम) मानी यानी ख़िदमत व करामत मुराद होगा, और 'तू मेरी माँ है और ऐ मेरी बेटी, ऐ मेरी बहन' जैसे अल्फाज़ मकरूह हैं। (त)

1. "तेरी गर्दन आज़ाद हुई", 60. "तू पाक हुई"। रद-उल-मुह्तार में है: 'अन्ता ख़ालिसतुन' (तू पाक हुई)। - 2 (रद-उल-मुह्तार में है: तू ख़ालिस हुई। त) "खुदा की हलाल चीज़ें", या 62. "मुसलमानों की हलाल चीज़ें" 63. "बाहर मुझ पर हराम हैं", 64. "तू मेरे साथ हराम में है"।

[अरबी बॉक्स:] यह सब शामी में है जैसा कि आगे स्पष्ट रूप से आएगा। इसमें बाद के विद्वानों (मुतअख़्ख़िरीन) ने हमारे पहले के इमामों (मुतक़द्दिमीन) का विरोध किया और कहा: नीयत की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि यह उ़र्फ(प्रचलन) बन चुका है। मैं कहता हूँ: हमारे इलाकों में यह उ़र्फ खत्म हो चुका है, इसलिए मामला वहीं लौट आएगा जैसा पहले था। शामी ने कहा कि बाद के विद्वानों ने नए उ़र्फ के आधार पर विरोध किया, इसलिए अब इसके द्वारा तलाक-ए-बाइन (अटल तलाक) का होना उ़र्फ की मौजूदगी पर निर्भर है।

[उर्दू स्पष्टीकरण:] यह तमाम फ़तावा शामी में है जैसा कि आगे स्पष्ट रूप से आएगा, इनमें मुतअख़्ख़िरीन फ़ुक़हा (बाद के न्यायविद) ने हमारे मुतक़द्दिमीन अइम्मा (पहले के इमाम) का विरोध किया है और कहा कि इन अल्फाज़ में नीयत की ज़रूरत नहीं है क्योंकि ये तलाक में उ़र्फ(लोक-प्रसिद्धि) बन चुके हैं। क़ुल्तु (मैं कहता हूँ) हमारे इलाके में यह उ़र्फ नहीं है, तो ये अल्फाज़ अपने असल पर लौट आएँगे। अल्लामा शामी ने फ़रमाया: मुतअख़्ख़िरीन ने नए उ़र्फ की बिना पर विरोध किया, तो इसके साथ वुक़ूए-बाइन (अटल तलाक का होना) उ़र्फ की मौजूदगी पर निर्भर होगा। (त)

1. "मैंने तुझे तेरे हाथ बेचा" - यदि किसी बदले (कीमत) का ज़िक्र न करे।

[अरबी बॉक्स:] रद-उल-मुह्तार में खानिया के हवाले से है: और अगर उसने कहा 'मैंने तेरी जान को तेरे हाथ बेचा' और उसने कहा 'मैंने खरीदा', तो [तलाक] हो जाती है।

[उर्दू स्पष्टीकरण:] रद-उल-मुह्तार में खानिया से मन्क़ूल (उद्धृत) है कि अगर शौहर ने बीवी को कहा कि 'मैंने तुझे तेरे पास फरोख्त किया (बेचा)' तो [अगर वह स्वीकार करे, तो तलाक हो जाएगी]।

---

1. दुर्र-ए-मुख़्तार, बाब-उज़-ज़िहार, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/249
2. रद-उल-मुह्तार, बाब-उल-किनायात, दार इहया-उत-तुराथ-अल-अरबी, बेरूत, 2/462

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

۵۵ تو مثل میری ماں یا ۵۶ بہن یا ۵۷ بیٹی کے ہے اور یوں کہا کہ تو ماں، بہن، بیٹی ہے تو گناہ کے سوا کچھ نہیں،

[عربی عبارت:] في الدر وان نوی بانت علی مثل امي او کامي وکذالو حذف علي، خانیہ براوظہاراو طلاقا، صحت نیتہ ووقع مانواہ لانہ کنایۃ والاینوشیئاً او حذف الکاف لغاو تعین الادنی اے البر یعنی الکرامۃ ویکرہ قولہ انت امي و یابنتي و یا اختي ونحوہ -۱

[اردو وضاحت:] دُرّ میں ہے اگر بیوی کو کہا 'تو مجھ پر میری ماں کی طرح' لفظ مثل یا کاف کو تشبیہ کے لیے ذکر کیا، اور یوں ہی اگر لفظ علیٰ (مجھ پر) کو حذف کر دیا ہو اور خدمت یا ظہار یا طلاق جو بھی نیت کرے گا وہی حکم ہوگا، ہر ایک کی نیت صحیح ہو گی کیونکہ یہ لفظ کنایہ ہے، اور کچھ بھی نیت نہ تھی یا تشبیہ کے لفظ کو حذف کر دیا ہو تو یہ لغو کلام ہو گا، اور صرف ادنیٰ معنی یعنی خدمت و کرامت مراد ہوگا، اور 'تُو میری ماں ہے اور اے میری بیٹی اے میری بہن' جیسے الفاظ مکروہ ہیں۔ (ت)

۵۹ تیری گلو خلاصی ہوئی، ۶۰ تو خالص ہوئی فی ردالمحتار انت خالصۃ -۲ (ردالمحتار میں ہے: تو خالص ہوئی۔ ت) " حلالِ خدا، یا ۶۲ حلالِ مسلماناں ۶۳ باہر حلال مجھ پر حرام، ۶۴ تو میرے ساتھ حرام میں ہے،

[عربی عبارت:] الکل في الشامي کما یأتی صریحا وخالف فیہا المتأخرون ائمتنا المتقدمین فقالوا لا حاجۃ الی النیۃ لانہ المتعارف قلت وفي بلادنا قد انعدم التعارف فالامر الی ما کان علیہ قال الشامي ان المتاخرین خالفوا العرف الحادث فیتوقف الان وقوع البائن بہ علی وجود العرف -

[اردو وضاحت:] یہ تمام فتاویٰ شامی میں ہے جیسا کہ آئندہ صراحتاً آئے گا، ان میں متاخرین فقہاء نے ہمارے متقدمین ائمہ کی مخالفت کی ہے اور کہا ان الفاظ میں نیت کی ضرورت نہیں ہے کیونکہ یہ طلاق میں عُرف بن چکے ہیں، قلت (میں کہتا ہوں) ہمارے علاقہ میں یہ عُرف نہیں ہے تو یہ الفاظ اپنے اصل پر لوٹ آئیں گے، علامہ شامی نے فرمایا: متاخرین نے جدید عُرف کی بنا پر خلاف کیا تو اس کے ساتھ وقوع بائن وجودِ عُرف پر موقوف ہوگا۔ (ت)

۶۵ میں نے تجھے تیرے ہاتھ بیچا اگر کسی عوض کا ذکر نہ کرے،

[عربی عبارت:] في ردالمحتار عن الخانية ولو قال بعت نفسك منك فقالت اشتريت يقع

[اردو وضاحت:] ردالمحتار میں خانیہ سے منقول ہے کہ اگر خاوند نے بیوی کو کہا کہ "میں نے تجھے تیرے پاس فروخت کیا" تو

---

۱ درمختار باب الظهار مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۴۹ ۲ ردالمحتار باب الكنايات دار احياء التراث العربي بيروت ۲/۴۶۲

Fatawa Razawiya, Volume 12

[Arabic Text]: It is an irrevocable divorce (Bain) because selling herself [to her] is making the woman owner of her own self, and ownership of the self is not attained except through an irrevocable divorce, thus it becomes irrevocable. End. [Urdu Translation]: If the wife said, 'I bought it,' then it becomes an irrevocable divorce because for the husband to sell it to her is making the wife the owner of herself. Ownership of the self cannot be attained by the wife without an irrevocable divorce, therefore an irrevocable divorce takes place. End. (T)

I say: (I say) here there is no need even for the woman to say that 'I bought it', [Arabic Text]: Because this is giving ownership of herself, and she does not own herself except through an irrevocable divorce. This is contrary to what will come shortly from his saying 'I sold your divorce to you,' for that is giving ownership of the divorce, so it was a delegation (Tafweed), thus her acceptance is a condition. [Urdu Translation]: Because this is declaring the wife the owner of herself, and the wife cannot become the owner of her own self without an irrevocable divorce. Contrary to this is what will come shortly hereafter, where if the husband says, "I sold you your divorce," it would mean making her the owner of the divorce. Therefore, this is the husband delegating the divorce to the wife, in which the wife's acceptance is a condition. (T)

1. I have turned back from you, 77. I have overlooked you (In Radd al-Muhtar it is: I overlooked you. T) 78. You are of no use to me, 79. You are of no concern to me, 80. You are of no utility, as we have researched in the margins of Radd al-Muhtar (as we investigated in the footnotes of Radd al-Muhtar - T), 81. I have no way over you, 82. No control, 83. No ownership, 84. I have cleared your path, 85. You have left my ownership, 86. I have done Khula with you, 87. Sit in your parental home, 88. I have loosened your reins, 89. I have released your rope, 90. I have removed your bridle, 91. Go and join your companions.

[Arabic Text]: In al-Hindiyya: Imam Abu Yusuf (may Allah Almighty have mercy on him) joined 'Khaliyah' (Free), 'Bariyah' (Exempt), 'Battah' (Severed), 'Ba'in' (Irrevocable), and 'Haram' (Prohibited) with four other phrases mentioned by al-Sarakhsi in 'al-Mabsut' and Qadi Khan in 'Sharh al-Jami' al-Saghir' and others, which are: 'La sabila li 'alayki' (I have no way over you), 'La milka li 'alayki' (I have no ownership over you), 'Khallaytu sabilaki' (I have cleared your path), 'Faraqtuki' (I have separated from you). And there is no narration regarding 'You have exited from my ownership.' They said it is... [Urdu Translation]: In Hindiyya it is: Imam Abu Yusuf (may

Allah have mercy on him) has appended four other phrases with the words Khaliyah, Bariyah, Battah, Ba'in, and Haram. These four others have been mentioned by Imam Sarakhsi in Mabsut and Qadi Khan in Sharh Jami' Saghir and other gentlemen. They are: 'La sabila li 'alayki' (I have no way over you), 'La milka li 'alayki' (You are no longer in my ownership), 'Khallaytu sabilaki' (I have set your path free), 'Faraqtuki' (I have separated from you).

1. Radd al-Muhtar, Chapter of Khula, under the phrase 'Kaba'tu nafsaka', Mujtabai Press, Delhi, 2/559.
2. Radd al-Muhtar, Chapter of Metaphors, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/262.

फ़तावा-ए-रज़विया, खंड 12

[अरबी पाठ]: यह एक अटल तलाक़ (बाइन) है क्योंकि खुद को (उसे) बेचना स्त्री को स्वयं का मालिक बनाना है, और स्वयं का स्वामित्व बिना बाइन तलाक़ के प्राप्त नहीं होता, अतः यह बाइन हो जाता है। समाप्त। [उर्दू अनुवाद]: यदि पत्नी ने कहा, 'मैंने खरीद लिया', तो यह बाइन तलाक़ हो जाएगा क्योंकि पति द्वारा उसे बेचना पत्नी को स्वयं का मालिक बनाना है। स्वयं का स्वामित्व पत्नी को बाइन तलाक़ के बिना प्राप्त नहीं हो सकता, इसलिए बाइन तलाक़ हो जाता है। समाप्त। (त)

अक़ूल: (मैं कहता हूँ) यहाँ औरत के यह कहने की भी आवश्यकता नहीं है कि 'मैंने खरीद लिया', [अरबी पाठ]: क्योंकि यह उसे स्वयं का स्वामित्व देना है, और वह बिना बाइन तलाक़ के स्वयं की स्वामी नहीं होती। इसके विपरीत वह है जो शीघ्र ही उसके इस कथन से आएगा 'मैंने तुम्हारी तलाक़ तुम्हें बेच दी,' क्योंकि वह तलाक़ का स्वामित्व देना है, इसलिए वह तफ़वीज़ (प्रतिनिधित्व) था, अतः उसकी स्वीकृति शर्त है। [उर्दू अनुवाद]: क्योंकि यह पत्नी को उसके अपने नफ़्स का मालिक घोषित करना है, और पत्नी अपने नफ़्स की मालिक बाइन तलाक़ के बिना नहीं बन सकती। इसके विपरीत जो भविष्य में शीघ्र ही आएगा कि पति यदि कहे "मैंने तुझे तेरी तलाक़ बेच दी," तो इसका अर्थ उसे तलाक़ का मालिक बनाना हुआ। अतः यह पति द्वारा पत्नी को तलाक़ सौंपना (तफ़वीज़) है जिसमें पत्नी की स्वीकृति अनिवार्य शर्त है। (त)

1. मैं तुझसे पीछे हटा, 77. मैं तुझसे दरगुज़र हुआ (रद्दुल मुहतार में है: मैं तुझसे दरगुज़रा। त) 78. तू मेरे काम की नहीं, 79. तू मेरे मतलब की नहीं, 80. तू किसी उपयोग की नहीं, जैसा कि हमने रद्दुल मुहतार के हाशिये में शोध किया है (जैसा कि हमने रद्दुल मुहतार के फुटनोट में जांच की है - त), 81. मेरा तुझ पर कोई वश नहीं, 82. कोई नियंत्रण नहीं, 83. कोई स्वामित्व नहीं, 84. मैंने तेरा रास्ता खाली कर दिया, 85. तू मेरे स्वामित्व से निकल गई, 86. मैंने तुझसे खुला किया, 87. अपने मायके बैठ, 88. तेरी बाग ढीली की, 89. तेरी रस्सी छोड़ दी, 90. तेरी लगाम उतार ली, 91. अपने साथियों से जा मिल।

[अरबी पाठ]: अल-हिन्दिया में है: इमाम अबू यूसुफ (अल्लाह उन पर रहम करे) ने 'खलियाह' (मुक्त), 'बरीयाह' (मुक्त), 'बत्तह' (कटा हुआ), 'बाइन' (अटल), और 'हराम' (वर्जित) के साथ चार अन्य वाक्यांशों को जोड़ा है जिनका उल्लेख अल-सरख़सी ने 'अल-मबसूत' में और क़ाज़ी खान ने 'शरह अल-जामी अल-सगीर' और अन्य विद्वानों ने किया है, वे हैं: 'ला सबीला ली अलैकि' (मेरा तुझ पर कोई

वश नहीं), 'ला मिल्का ली अलैकि' (तुझ पर मेरा कोई स्वामित्व नहीं), 'खल्लैतु सबीलकि' (मैंने तेरा रास्ता स्वतंत्र कर दिया), 'फ़ारक़तुकि' (मैंने तुझसे विच्छेद कर लिया)। और 'तू मेरे स्वामित्व से निकल गई' के संबंध में कोई वर्णन नहीं है। उन्होंने कहा कि यह... [उर्दू अनुवाद]: हिन्दिया में है: इमाम अबू यूसुफ (रहमतुल्लाह अलैहि) ने खलियाह, बरीयाह, बत्तह, बाइन और हराम शब्दों के साथ चार अन्य शब्दों को जोड़ा है। इन चार अन्य का उल्लेख इमाम सरख़सी ने मबसूत में और क़ाज़ी खाँ ने शरह जामे सगीर में और अन्य सज्जनों ने किया है। वे हैं: 'ला सबीला ली अलैकि' (मुझ पर तेरा कोई वश नहीं), 'ला मिल्का ली अलैकि' (तुझ पर मेरा कोई स्वामित्व नहीं), 'खल्लैतु सबीलकि' (मैंने तेरा रास्ता आज़ाद किया), 'फ़ारक़तुकि' (मैंने तुझसे विच्छेद किया)।

1. रद्दुल मुहतार, बाब अल-खुला, वाक्यांश 'कबा'तु नफ़सका' के तहत, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 2/559।
2. रद्दुल मुहतार, बाब अल-किनायात, दार इहया अल-तुरास अल-अरबी, बेरूत, 2/262।

पृष्ठ 518 / 688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

طلاق بائن لان بیع نفسہا تملیک النفس من المرأۃ و ملک النفس لایحصل الا بالبائن فیکون بائناً اھ بیوی نے کہا میں نے خریدا، تو بائنہ طلاق ہو جائیگی، کیونکہ بیوی کو اس کے پاس فروخت کرنا بیوی کو اپنے نفس کا مالک بنانا ہے نفس کی ملکیت بیوی کو بغیر بائنہ طلاق کے حاصل نہیں ہو سکتی، لہٰذا بائنہ طلاق ہو گئی۔ اھ (ت)

اقول: (میں کہتا ہوں) یہاں عورت کے اس کہنے کی بھی حاجت نہیں کہ میں نے خریدا، لانہ تملیک نفسہا وہی لاتملک نفسہا الا بالبائن بخلاف مایجیئی من قولہ بعت منک طلاقک فانہ تملیک الطلاق منہا فکان تفویضاً فاشترط قبولہا۔ کیونکہ یہ بیوی کو اپنے نفس کا مالک قرار دینا ہے تو بیوی اپنے نفس کی مالک بائنہ طلاق کے بغیر نہیں بن سکتی، اسکے بخلاف جو آئندہ عنقریب آئے گا کہ خاوند اگر یوں کہے "میں نے تجھے تیری طلاق فروخت کی" تو اسے یہ طلاق کا مالک بنانا ہوا لہٰذا یہ خاوند کا بیوی کو طلاق تفویض کرنا ہے جس میں بیوی کا قبول کرنا شرط ہے۔ (ت)

۷۶ میں تجھ سے باز آیا، ۷۷ میں تجھ سے درگزر آئی (ردالمحتار میں ہے: میں تجھ سے درگزرا۔ ت) ۷۸ تو میرے کام کی نہیں، ۷۹ میرے مطلب کی نہیں، ۸۰ مصرف کی نہیں کما حققناہ علی ہامش ردالمحتار (جیسا کہ ہم نے ردالمحتار کے حاشیہ میں اس تحقیق کی ہے ۔ت) ۸۱ مجھے تجھ پر کوئی راہ نہیں، ۸۲ کچھ قابو نہیں، ۸۳ ملک نہیں، ۸۴ میں نے تیری راہ خالی کردی، ۸۵ تو میری ملک سے نکل گئی، ۸۶ میں نے تجھ سے خلع کیا، ۸۷ اپنے میکے بیٹھ، ۸۸ تیری باگ ڈھیلی کی، ۸۹ تیری رسی چھوڑی، ۹۰ تیری لگام اتار لی، ۹۱ اپنے رفیقوں سے جامل،

فی الہندیۃ والحق ابویوسف رحمہ اللہ تعالیٰ بخلیۃ وبریۃ وبتۃ وبائن وحرام اربعۃ اخری ذکرہا السرخسی فی المبسوط وقاضی خان فی شرح الجامع الصغیر واخرون وہی لاسبیل لی علیک، لاملک لی علیک، خلیت سبیلک، فارقتک، ولاروایۃ فی خرجت من ملکی قالو اھو ہندیہ میں ہے امام ابویوسف رحمہ اللہ نے خلیۃ، بریۃ، بتۃ، بائن اور حرام کے الفاظ کے ساتھ دیگر چار الفاظ کو ملحق کیا ہے ان دیگر چاروں کو امام سرخسی نے مبسوط میں اور قاضی خاں نے شرح جامع صغیر میں اور دوسرے حضرات نے ذکر کیا ہے وہ لَا سَبِیْلَ لِی عَلَیْکَ (مجھ تجھ پر چارہ نہیں) لَا مِلْکَ لِی عَلَیْکَ (تجھ پر میری ملکیت نہیں) خَلَّیْتُ سَبِیْلَکَ (میں نے تیرا راستہ آزاد کیا) فارقتک (میں نے تجھ سے مفارقت کی)۔

۱ ردالمحتار باب الخلع قولہ کبعت نفسک مطبع مجتبائی دہلی ۲/۵۵۹ ۲ ردالمحتار باب الکنایات داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۶۲

Fatawa Razawiya - Volume 12

[Arabic Text Block]: Equivalent to 'I have set you free'. In 'Al-Yanabi', Imam Abu Yusuf (may Allah Almighty have mercy on him) added six more words to the five, which are the four previously mentioned, plus 'I have divorced you by Khula' and 'Go and join your family'. This is stated in 'Ghaya al-Saruji'. I say (the author): This is mentioned in the narration of the woman seeking refuge, and also therein. Regarding the statement 'Your rope is on your shoulder/hump', divorce does not occur except with intention, as stated in 'Fatawa Qazi Khan'. Phrases like 'Move away' and 'Speak' are like 'Join'. In 'Al-Bazzaziyya', if one says 'Join your companions', it occurs if intended. This is also stated in 'Al-Bahr al-Ra'iq'.

[Urdu Text Block]: There is no narration regarding the phrase 'Kharajti min milki' (You have left my ownership). Jurists have said it is equivalent to 'Khallaytu sabilaki' (I have set you free). In 'Al-Yanabi', it is mentioned that Imam Abu Yusuf (may Allah Almighty have mercy on him) added six more words to the five mentioned before. These include the four previously mentioned and two more: 'Khala'tuki' (I have divorced you by Khula) and 'Ilhaqi bi-ahliki' (Go and join your family). This is stated as such in 'Ghaya al-Saruji'. I say: This is mentioned in the narration of the woman seeking refuge. Similarly, in 'Ghaya al-Saruji', it is mentioned that if a husband tells his wife, 'Your rope is on your shoulder', divorce will not occur without intention. Just as in 'Fatawa Qazi Khan', terms like 'Move away' or 'Go' are similar to 'Join'. In 'Al-Bazzaziyya', if it is said 'Join your friends', and the intention was for divorce, then it will occur. It is the same in 'Al-Bahr al-Ra'iq'. (T)

[Middle Section]: 82. 'I have no authority over you' is like his saying 'I have no recourse against you'. (T) 83. 'Look for a husband'. In 'Al-Hindiyya': 'and she seeks husbands', one irrevocable (Ba'in) divorce occurs if intended, and two or three if those were intended. This is also in 'Sharh al-Wiqaya'. And in 'Al-Hindiyya' it is: If he said, 'You look for a husband', one Ba'in divorce will occur if intended, or two and three if they were intended. It is similar in 'Sharh al-Wiqaya'. (T)

[Annotation]: Note: I compared the statement with the original manuscript of 'Al-Hindiyya' and found it as such: 'or two and three'. Hamid Raza, may he be forgiven. I compared it with the original handwritten manuscript of 'Al-Hindiyya' and found the phrase there as 'and two and three'. 12 Hamid Raza, may he be forgiven. (T)

[Footnotes]: 1. Fatawa Hindiyya, Chapter 5 on Allusions, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/574 2. Fatawa Hindiyya, Chapter 5 on Allusions, Nurani Kutub Khana

Peshawar, 1/574 3. Fatawa Hindiyya, Chapter 5 on Allusions, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/574

फ़तावा रज़विया - जिल्द 12

[अरबी पाठ]: 'मैंने तुम्हें स्वतंत्र कर दिया' के बराबर। 'अल-यनाबी' में, इमाम अबू यूसुफ़ (रहमतुल्लाह अलैह) ने पाँच के साथ छह और शब्द जोड़े हैं, जो पहले बताए गए चार हैं, और साथ में 'मैंने तुमसे खुला किया' और 'अपने परिवार के पास जाओ'। यह 'ग़ाया अल-सरूजी' में कहा गया है। मैं (लेखक) कहता हूँ: यह पनाह माँगने वाली की हदीस में वर्णित है। 'तुम्हारी रस्सी तुम्हारे कंधे पर है' के बारे में, तलाक़ बिना नीयत के नहीं होती, जैसा कि 'फ़तावा क़ाज़ी ख़ान' में उल्लेखित है। 'हट जाओ' और 'बोलो' जैसे शब्द 'मिल जाओ' के समान हैं। 'अल-बज़्ज़ाज़िया' में, यदि कोई कहता है 'अपने साथियों से मिल जाओ', तो नीयत होने पर तलाक़ हो जाती है। 'अल-बहर अल-राइ'क़' में भी ऐसा ही है।

[उर्दू पाठ]: 'ख़रज्ती मिन मिल्की' (तुम मेरी मिल्कियत से निकल गई) के बारे में कोई रिवायत नहीं है, और फ़ुक़हा ने फ़रमाया कि यह 'ख़ल्लैतु सबीलकि' के समान है। 'अल-यनाबी' में उल्लेख है कि इमाम अबू यूसुफ़ (रह.) ने पांच शब्दों के साथ छह और शब्द जोड़े हैं: पहले ज़िक्र किए गए चार और दो और - 'ख़ालअतुकि' (मैंने तुझसे खुला किया) और 'इल्हाक़ी बि-अह्लिकि' (अपने परिवार में चली जा)। 'ग़ाया अल-सरूजी' में ऐसा ही उल्लेख है। मैं कहता हूँ: यह पनाह माँगने वाली के हदीस में है। और 'ग़ाया अल-सरूजी' में यह भी है कि अगर पति ने पत्नी से कहा, 'तेरी रस्सी तेरे कंधे पर है', तो नीयत के बिना तलाक़ नहीं होगी। जैसा कि 'फ़तावा क़ाज़ी ख़ान' में है कि 'हट जाओ' या 'चली जाओ', 'मिल जाओ' के समान है। 'अल-बज़्ज़ाज़िया' में है कि अगर कहा गया 'अपने दोस्तों से मिल जा', और नीयत तलाक़ की थी, तो वह हो जाएगी। 'अल-बहर अल-राइ'क़' में भी ऐसा ही है। (त)

[मध्य अनुभाग]: 82. 'मुझे तुझ पर कोई अधिकार नहीं' का अर्थ 'ला सबीला ली अलैकि' (मेरा तुझ पर कोई बस नहीं) जैसा है। (त) 83. 'पति तलाश कर।' 'अल-हिन्दिया' में है: 'और वह पति तलाश करे', अगर नीयत हो तो एक बाइन तलाक़ होगी, और अगर दो या तीन की नीयत हो तो वे होंगी। 'शर्ह अल-विक़ाया' में भी ऐसा ही है। और 'हिन्दिया' में है: अगर उसने कहा, 'तू पति तलाश कर', तो नीयत होने पर एक बाइन तलाक़ होगी, या दो और तीन यदि उनकी नीयत की गई हो। 'शर्ह अल-विक़ाया' में भी ऐसा ही है। (त)

[नोट]: नोट: मैंने 'अल-हिन्दिया' के मूल हस्तलिखित नुस्खे से इस इबारत की तुलना की और इसे 'या दो और तीन' के रूप में पाया। हामिद रज़ा, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। मैंने 'हिन्दिया' के मूल

हस्तलिखित नुस्खे से तुलना की और वहाँ इबारत 'और दो और तीन' पाई। 12 हामिद रज़ा, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (त)

[पाद लेख]: 1. फ़तावा हिन्दिया, अध्याय 5, किनयात, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/574 2. फ़तावा हिन्दिया, अध्याय 5, किनयात, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/574 3. फ़तावा हिन्दिया, अध्याय 5, किनयात, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/574

पृष्ठ 519/688

فتاوٰی رضویہ - جلد دو از دہم

بمنزلة خليت سبيلك ، وفی الينابيع الحق ابو يوسف رحمه الله تعالی بالخمسة ستة اخری وهی الاربعة المتقدمة وزاد خالعتك والحقی باهلك هكذا فی غاية السروجي۔ اهـ قلت وهو فی حديث المستعيذة وفيها ايضاً ، وفی قوله حبلك علی غاربك لا يقع الطلاق الا بالنية كذا فی فتاوی قاضی خان وانتقلی وانطقی كالحقی وفی البزازية وفی الحقی برفقنك يقع اذا نوی كذا فی البحر الرائق -

اور "خرجت من ملكي" (تو میری ملکیت سے نکل گئی) میں کوئی روایت نہیں ہے، اور فقہاء نے فرمایا یہ بمنزلہ "خليت سبيلك" کے ہے، اور ینابیع میں ہے امام ابو یوسف رحمہ اللہ تعالٰی نے پانچ الفاظ کے ساتھ مزید چھ الفاظ ملحق فرمائے ہیں، اور وہ چار پہلے ذکر شدہ اور دو مزید، وہ خالعتك (میں نے تجھ سے خلع کیا)، الحقی باهلك (اپنے خاندان میں چلی جا) غایۃ السروجی میں یونہی مذکور ہے اھ، قلت (میں کہتا ہوں) یہ بات پناہ طلب کرنے والی میں ہے، اور اسی غایۃ السروجی میں یہ بھی ہے کہ اگر خاوند نے بیوی کو کہا "تیری ڈوری تیرے کندھے پر ہے" تو نیت کے بغیر طلاق نہ ہوگی، جیسا کہ فتاوٰی قاضی خاں میں ہے تو منتقل ہو، تو جا، الحقی کی طرح ہے، اور بزازیہ میں ہے اگر یوں کہا "اپنے دوستوں سے مل جا" نیت کی تو طلاق ہو جائے گی، بحر الرائق میں یونہی ہے۔ (ت)

۸۲ مجھ تجھ پر کچھ اختیار نہیں ہو كقوله لا سبيل لی عليك (جیسا کہ اس کا قول "مجھ تجھ پر چارہ نہیں" ت) ۸۳ خاوند تلاش کر، في الهندية ويأت بغی الازواج تقع واحدة بائنة ان نواها عہ واثنتين وثلث ان نواها هكذا فی شرح الوقاية۔ اور ہندیہ میں ہے اگر یوں کہا "تو خاوند تلاش کر" ایک بائنہ طلاق ہوگی اگر نیت کی ہو، یا دو اور تین ہونگی اگر ان کی نیت کی ہو، شرح وقایہ میں ایسے ہی ہے۔ (ت)

عه: قابلت عبارة عن اصل الهندية فوجدتها هکذا او ثنتان وثلث حامد رضا غفر لہ۔ میں نے ہندیہ کے اصل قلمی نسخہ سے مقابلہ کیا تو میں نے وہاں یوں عبارت پائی اور دو اور تین ۱۲ حامد رضا غفر لہ (ت)

1 فتاوی هندیه الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۵۷۴ 2 فتاوی هندیه الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۵۷۴ 3 فتاوی هندیه الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۵۷۴

Fatawa Ridawiyya Volume 12

1. [Phrases like] "I have no need for you," "I have no concern with you," "I have no work with you," "no purpose," "no meaning," "you are not required by me," "I have no inclination towards you," "I do not want you." These are merely meaningless even if one intends [divorce].

In Al-Hindiyyah: If one says "I have no need for you" intending divorce, it is not a divorce. This is also stated in Al-Siraj al-Wahhaj. And when one says "I do not want you," or "I do not love you," or "I do not desire you," or "I have no inclination towards you," divorce does not occur even if intended, according to the opinion of Imam Abu Hanifa (may Allah have mercy on him), as stated in Bahr al-Ra'iq. (T)

1. "I am separated from you" or "I became [separated]" (Saying "I am separated" or "I became [separated]" alone is not enough even if said with the intention of divorce).

In Al-Hindiyyah: If one says "I am 'Ba'in' (separated) from you" and intends divorce, it occurs. But if one says "I am 'Ba'in'" without saying "from you," it does not occur despite the intention. This is similarly mentioned in Muhit al-Sarakhsi. (T)

1. "I have separated you," "I have made a separation from you," 87 "You are independent," 88 "You are free."

In Al-Hindiyyah: If, during a discussion about divorce, one says "I separated you" (Bantuki) or "I made you separate" (Abantuki) or "I separated from you" (Bintu minki) or "You are Sa'ibah" or "You are free," divorce occurs. If he says "I did not intend divorce," his claim will not be judicially accepted (in court). (T)

---

1. Fatawa Hindiyyah, Chapter 5 on Allusions (Kinayat), Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/375
2. Fatawa Hindiyyah, Chapter 5 on Allusions (Kinayat), Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/375
3. Fatawa Hindiyyah, Chapter 5 on Allusions (Kinayat), Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/377

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

1. [वाक्य जैसे] "मुझे तेरी ज़रूरत नहीं," "मुझे तुझसे सरोकार नहीं," "तुझसे मुझे काम नहीं," "गरज़ नहीं," "मतलब नहीं," "तू मुझे दरकार नहीं," "तुझसे मुझे रग़बत (रुचि) नहीं," "मैं तुझे नहीं चाहता," ये महज़ बेकार (शब्द) हैं चाहे नियत (इरादा) की हो।

अल-हिंदिया में है: यदि कोई कहे "मुझे तुझमें कोई ज़रूरत नहीं है" और तलाक़ का इरादा रखे, तो तलाक़ नहीं होगा, जैसा कि सिराज अल-वहाज में उल्लेख है। और जब इस प्रकार कहा जाए "मैं तुझे नहीं चाहता" या "मैं तुझे पसंद नहीं करता" या "मैं तुझमें इच्छा नहीं रखता" या "मुझे तुझमें रुचि नहीं है", तो तलाक़ नहीं होगा चाहे नियत की हो, यह इमाम आज़म (रहमतुल्लाहि अलैहि) का कथन है, बहर अल-रैक़ ने भी ऐसा ही वर्णन किया है। (त)

1. "मैं तुझसे जुदा (अलग) हूँ" या "हुआ" (सिर्फ़"मैं जुदा हूँ" या "हुआ" काफ़ी नहीं है चाहे तलाक़ की नियत से कहे)।

अल-हिंदिया में है: यदि कोई कहे "मैं तुझसे बाइन (पूर्णतः अलग) हूँ" और तलाक़ की नियत की, तो तलाक़ हो जाएगा। और यदि सिर्फ़"मैं बाइन हूँ" कहा और "तुझसे" नहीं कहा, तो नियत के बावजूद तलाक़ नहीं होगा, मुहीत अल-सरख़सी में ऐसा ही वर्णित है। (त)

1. "मैंने तुझे जुदा कर दिया," "मैंने तुझसे जुदाई की," 87 "तू स्वतंत्र है," 88 "तू आज़ाद है।"

अल-हिंदिया में है: यदि तलाक़ की बातचीत के दौरान कोई कहे "मैंने तुझे अलग किया" या "जुदा किया" या "मैं तुझसे जुदा हुआ" या "तू साएबा है" या "तू आज़ाद है", तो तलाक़ हो जाएगा। और यदि वह कहे कि "मैंने तलाक़ की नियत नहीं की थी", तो न्यायलय (क़ज़ा) में उसकी बात नहीं मानी जाएगी। (त)

---

1. फ़तावा हिंदिया, अध्याय 5, किनायात (इशारों) के बारे में, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/375
2. फ़तावा हिंदिया, अध्याय 5, किनायात (इशारों) के बारे में, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/375
3. फ़तावा हिंदिया, अध्याय 5, किनायात (इशारों) के बारे में, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/377

۸۴ مجھے تیری حاجت نہیں، ۲ مجھے تجھ سے سروکار نہیں، ۳ تجھ سے مجھے کام نہیں، ۴ غرض نہیں، ۵ مطلب نہیں، ۶ تو مجھے درکار نہیں، ۷ تجھ سے مجھے رغبت نہیں، ۸ میں تجھے نہیں چاہتا، یہ محض مہمل ہیں اگرچہ نیت کرے۔

في الهندية ولو قال لا حاجة لي فيك ينوى الطلاق فليس بطلاق كذا في السراج الوهاج واذا قال لا اريدك اولا احبك اولا اشتهيك اولا رغبة لي فيك فإنه لا يقع وان نوى في قول ابي حنيفة رحمه الله تعالى كذا في بحر الرائق۔[1] ہندیہ میں ہے اگر کہا "مجھے تجھ میں حاجت نہیں ہے، طلاق کی نیت کی ہو تو طلاق نہ ہوگی، جیسا کہ سراج وہاج میں مذکور ہے، اور جب یوں کہا " میں تجھے نہیں چاہتا" یا "میں تجھے پسند نہیں کرتا" یا " میں تجھ میں خواہش نہیں رکھتا" یا " مجھے تجھ میں دلچسپی نہیں" تو طلاق نہ ہو گی اگرچہ نیت کی ہو، یہ امام اعظم رضی اللہ تعالٰی عنہ کا قول ہے، بحر الرائق نے ایسے ہی بیان کیا۔ (ت)

۸۵ میں تجھ سے جدا ہوں یا ہوا (فقط میں جدا ہوں یا ہوا کافی نہیں اگرچہ بنیت طلاق کہے)

في الهندية ولو قال انا منك بائن ونوى الطلاق يقع ولو قال انا بائن ولم يقل منك لا يقع وان نوى كذا في محيط السرخسي[2]۔ ہندیہ میں ہے اگر یوں کہا، میں تجھ سے بائن ہوں اور طلاق کی نیت کی تو طلاق ہو جائے گی، اور اگر صرف میں بائن ہوں اور " تجھ سے " نہ کہا تو نیت کے باوجود طلاق نہ ہوگی، محیط سرخسی میں ایسے ہی مذکور ہے۔ (ت)

۸۶ میں نے تجھے جدا کردیا، میں نے تجھ سے جدائی کی، ۸۷ تو خود مختار ہے، ۸۸ تو آزاد ہے،

في الهندية ولو قال في حال مذاكرة الطلاق بانتك او ابنتك او بئت منك او انت سائبة او انت حرة يقع الطلاق وان قال لم انو الطلاق لا يصدق قضاء[3]۔ ہندیہ میں ہے اگر حالت مذاکرہ طلاق میں، میں تجھ سے جدا ہوں، میں نے تجھ کو جدا کیا، میں تجھ سے جدا ہوا، تو سائبہ ہے یا تو آزاد ہے، تو طلاق ہو جائے گی اور اگر وہ کہے کہ میں نے طلاق کی نیت نہیں کی تو قضاء اس کی تصدیق نہ کی جائے گی۔ (ت)

---

1 فتاوی ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۷۵ 2 فتاوی ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۷۵ 3 فتاوی ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۷۷

Fatawa Razawiyya Volume 12

89 "There is no marriage between me and you, 90 no marriage remains between me and you."

Arabic	Urdu
In Al-Hindiya: If he said to her, "There is no marriage between me and you," or said, "No marriage remains between me and you," divorce occurs if intended, as stated in Fatawa Qazi Khan -1.	It is in Al-Hindiya: If he said, "There is no marriage between me and you," or said, "No marriage remains between me and you," then divorce will occur with the intention of divorce, as it is in Fatawa Qazi Khan. (T)

91 "I have given you to your family members or father 92 or mother 93 or husbands 94 or 95 given yourself to you (and if he said it to your brother or maternal uncle or paternal uncle or any stranger, it is nothing)."

Arabic	Urdu
In Al-Hindiya: Al-Hasan narrated from Abu Hanifa (may Allah Almighty have mercy on him) that if he said: "I have gifted you to your brother, or your maternal uncle, or your paternal uncle, or so-and-so stranger," divorce will not occur, as stated in Siraj al-Wahhaj. And if he said to her: "I have gifted your soul to yourself," then it is among the metaphorical words (kinayat); if he intended divorce by it, it occurs, otherwise not - 2.	It is in Al-Hindiya: Imam Hasan (may Allah Almighty have mercy on him) narrated from Imam-e-Azam (may Allah Almighty have mercy on him) that if he said: "I have gifted you to your brother, maternal uncle, paternal uncle, or so-and-so stranger," divorce will not occur, as stated in Siraj al-Wahhaj. And if he said: "I have gifted your soul to yourself," then it is among the metaphorical words; if he intended it, divorce will occur, otherwise not. (T)

96 "No matter remains between me and you, or there is nothing between you and me, even if he intends it."

Arabic	Urdu
In Al-Hindiya: If he said, "Nothing remains between me and you," and intended divorce by it, it does not occur. And in the Fatawas, "No action	It is in Al-Hindiya: If he said, "Nothing remains between you and me," and intended divorce by it, it will not be divorce. And it is mentioned in the Fatawas: if he said, "No

Arabic	Urdu
remains between me and you," and he intended it, it occurs, as stated in Al-'Atabiyya - 3.	matter remains between you and me," and intended it, divorce will occur, as mentioned in Al-'Atabiyya. (T)

97 "I am free from your marriage, 98 I am fed up/indifferent."

Arabic	Urdu
In it, from Al-Khaniya: And if he said, "I am free from..."	It is in Al-Hindiya, quoted from Al-Khaniya: If he said, "I am... from your"

1 Fatawa Hindiya, Chapter Five on Metaphorical Words, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1 / 375 2 Fatawa Hindiya, Chapter Five on Metaphorical Words, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1 / 376 3 Fatawa Hindiya, Chapter Five on Metaphorical Words, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1 / 376

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

89 "मेरे और तुम्हारे बीच निकाह नहीं है, 90 मेरे और तुम्हारे बीच निकाह शेष नहीं रहा।"

अरबी

अल-हिंदिया में: और यदि उसने उससे कहा, "मेरे और तुम्हारे बीच निकाह नहीं है" या कहा, "मेरे और तुम्हारे बीच निकाह शेष नहीं रहा", तो तलाक हो जाएगा यदि इरादा हो, जैसा कि फ़तावा क़ाज़ी ख़ान-1 में है।

उर्दू

अल-हिंदिया में है: यदि कहा, "तुममें मुझमें निकाह नहीं है," या कहा, "मुझमें और तुममें निकाह बाकी नहीं है," तो नियत-ए-तलाक से तलाक होगी, जैसा कि फ़तावा क़ाज़ी ख़ान में है। (टी)

91 "मैंने तुम्हें तुम्हारे घरवालों या पिता 92 या माँ 93 या पतियों को दिया या 95 खुद तुम्हें दे डाला (और तुम्हारे भाई या मामा या चाचा या किसी अजनबी को कहा तो कुछ नहीं)।"

अरबी

अल-हिंदिया में: अल-हसन ने अबू हनीफा (अल्लाह उन पर रहम करे) से रिवायत की है कि यदि उसने कहा: "मैंने तुम्हें तुम्हारे भाई, तुम्हारे मामा, तुम्हारे चाचा या फलां अजनबी को उपहार में दे दिया," तो यह तलाक नहीं होगा, जैसा कि सिराज अल-वहाज में है। और यदि उसने उससे कहा: "मैंने तुम्हारी जान तुम्हें ही उपहार में दे दी," तो यह रूपक शब्दों (किनायात) में से है; यदि उसने इससे तलाक का इरादा किया तो तलाक हो जाएगा, अन्यथा नहीं - 2।

उर्दू

अल-हिंदिया में है: इमाम हसन (रहमतुल्लाह अलैहि) ने इमाम-ए-आज़म (रहमतुल्लाह अलैहि) से रिवायत की कि अगर यूँ कहा, "मैंने तुम्हें तुम्हारे भाई, खालू, चाचा या फ़लां अजनबी को हिबा (उपहार) किया" तो तलाक न होगी जैसा कि सिराज वहजा में है। और अगर यूँ कहा, "मैंने तुम्हारा नफ़्स तुम्हें हिबा किया" तो किनाया के अल्फ़ाज़ में से है, अगर नियत की तो तलाक हो जाएगी, वरना नहीं। (टी)

96 "मुझमें और तुममें कोई मामला नहीं रहा, या तुममें मुझमें कुछ शय नहीं भले ही नियत करे।"

अरबी

अल-हिंदिया में: यदि उसने कहा, "मेरे और तुम्हारे बीच कुछ भी शेष नहीं है," और उससे

उर्दू

अल-हिंदिया में है: अगर कहा, "तुम्हारे और मेरे दरमियान कोई शय बाकी नहीं," और इससे

अरबी	उर्दू
तलाक का इरादा किया, तो तलाक नहीं होगा। और फ़तावा में है, "मेरे और तुम्हारे बीच कोई काम शेष नहीं रहा," और उसने इरादा किया, तो यह हो जाता है, जैसा कि अल-अतबिया-3 में है।	नियत-ए-तलाक की हो तो तलाक न होगी, और फ़तावा में मज़कूर है अगर यूँ कहा, "तुम्हारे और मेरे दरमियान कोई मामला बाकी नहीं रहा," नियत की हो तो तलाक होगी, जैसा कि अतबिया में मज़कूर है। (टी)

97 "मैं तुम्हारे निकाह से बरी हूँ, 98 बेज़ार हूँ।"

अरबी	उर्दू
इसमें खानिया से है: और यदि उसने कहा "मैं बरी हूँ..."	अल-हिंदिया में है खानिया से मनक़ूल है, अगर कहा "मैं तुम्हारे..."

1 फ़तावा हिंदिया, अल-फ़स्ल अल-ख़ामिस फ़िल-किनायात, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1 / 375 2 फ़तावा हिंदिया, अल-फ़स्ल अल-ख़ामिस फ़िल-कि؛यात, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1 / 376 3 फ़तावा हिंदिया, अल-फ़स्ल अल-ख़ामिस फ़िल-किनायात, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1 / 376

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

۸۹"مجھ میں تجھ میں نکاح نہیں، ۹۰مجھ میں تجھ میں نکاح باقی نہ رہا،

عربی	اردو
فی الھندیة ولو قال لھا لانکاح بینی وبینك اوقال لم یبق بینی وبینك نکاح یقع الطلاق اذانوی کذافی فتاوی قاضی خان۱۔	ہندیہ میں ہے اگر کہا، تجھ میں مجھ میں نکاح نہیں، یا کہا، مجھ میں اور تجھ میں نکاح باقی نہیں ہے، تو نیت طلاق سے طلاق ہوگی، جیسا کہ فتاوٰی قاضیخاں میں ہے۔ (ت)

۹۱"میں نے تجھے تیرے گھر والوں یا باپ ۹۲ یا ماں ۹۳ یا خاوندوں کو دیا یا ۹۵ خود تجھ کو دے ڈالا (اور تیرے بھائی یا ماموں یا چچا یا کسی اجنبی کو کہا تو کچھ نہیں)

عربی	اردو
فی الھندیة روی الحسن عن ابی حنیفة رحمه الله تعالی انه اذا قال وھبتك لاخیك اولخالك اولعمك اولفلان الاجنبی لم یکن طلاق کذافی السراج الوھاج ولوقال لھا وھبت نفسك منك فھو من جملة الکنایات ان نوی به الطلاق یقع والافلا۲۔	ہندیہ میں ہے: امام حسن رحمہ اللہ تعالٰی نے امام اعظم رحمہ اللہ تعالٰی سے روایت کیا کہ اگر یوں کہا، میں نے تجھے تیرے بھائی، خالو، چچا یا فلاں اجنبی کو ہبہ کیا طلاق نہ ہوگی جیسا کہ سراج وہاج میں ہے۔ اور اگر یوں کہا، میں نے تیرا نفس تجھے ہبہ کیا تو کنایہ کے الفاظ میں سے ہے اگر نیت کی تو طلاق ہوجائے گی، ورنہ نہیں۔ (ت)

۹۶"مجھ میں تجھ میں کچھ معاملہ نہ رہا، یا تجھ میں مجھ میں کچھ شئی نہیں اگرچہ نیت کرے،

عربی	اردو
فی الھندیة ولوقال لم یبق بینی وبینك شئی ونوی به الطلاق لا یقع وفی الفتاوی لم یبق بینی وبینك عمل ونوی یقع کذافی العتابیة۳۔	ہندیہ میں ہے اگر کہا، تیرے اور میرے درمیان کوئی شئی باقی نہیں، اور اس سے نیت طلاق کی ہو تو طلاق نہ ہوگی، اور فتاوٰی میں مذکور ہے اگر یوں کہا، تیرے اور میرے درمیان کوئی معاملہ باقی نہیں رہا، نیت کی ہو تو طلاق ہوگی، جیسا کہ عتابیہ میں مذکور ہے۔ (ت)

۹۷"میں تیرے نکاح سے بری ہوں، ۹۸ بیزار ہوں،

عربی	اردو
فیھا عن الخانیة ولو قال انا بریٔ من ہندیہ میں ہے خانیہ سے منقول ہے، اگر کہا میں تیرے	

1 فتاوٰی ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۳۷۵ 2 فتاوٰی ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۳۷۶ 3 فتاوٰی ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۳۷۶

- Your marriage, divorce will occur if intended. — (T)
- [Arabic text: Nikahuka yaqa'u al-talaqu idha nawa - 1] Translation: Divorce will occur from marriage if intended as divorce. (T)
- "Get away from me,"
- [Arabic text: Fiha 'anha walau qala ab'udi 'anni wanawa al-talaqa yaqa'u - 2] Translation: It is narrated in Hindiyya from Khaniyya, if he says "get away from me," divorce will occur with the intention of divorce. (T)
- "Don't show me your face,"
- [Arabic text: Wahadha bim'ana ab'udi 'anni, wafihi yanwi kama marra anfan... - 4] Translation: And this is in the meaning of "be distant from me," and in it intention will be considered as mentioned before. Unlike "hide from me," because the addition of "from me" (Manni) takes it out of being a metaphor (kinayah), as also in Al-Khaniyya. Furthermore, Allama Shami said that here the word "from me" (Manni) is a verbal clue that he intended divorce; this is at the level of a discussion of divorce, one should ponder. I remember writing on its margin whose text is: I say: (I say) that contrary to this is saying "so don't show me your face," because this word is for the expression of hatred and aversion, therefore the second possibility will not be finished, ponder. (T)
- "Be aside," "You have gained salvation from me,"
- [Arabic text: Fil Hindiyyati wamina al-kinayati tanajji 'anni wanajawti minni kadha fi fath il-qadir - 5] Translation: In Hindiyya it is: among the metaphorical words (Kinayat) are, "be aside," "you gained salvation from me," similarly it is in Fath al-Qadir. (T)

Footnotes: 1. Fatawa Hindiyya, Chapter 5 on Metaphors, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/471 2. Fatawa Hindiyya, Chapter 5 on Metaphors, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/471 3. Rad al-Muhtar, Chapter on Metaphors, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/264 4. Jadd al-Mumtar, Chapter on Metaphors, Annotation. Al-Majma' al-Islami Mubarakpur, 2/515 5. Fatawa Hindiyya, Chapter 5 on Metaphors, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/471

- निकाह से बरी हूँ, तलाक़ की नियत से तलाक़ हो जाएगी। (त)
- [अरबी: निकाहुक यक़अ' उत-तलाक़ु इज़ा नवा - 1]
- "मुझसे दूर हो जा,"
- [अरबी: फ़ीहा अन्हा वलौ काला अब'उदी अन्नी वनवा अत-तलाक़ा यक़अ' - 2] अनुवाद: हिंदिया में ख़ानिया से मनक़ूल है, अगर कहा तू मुझसे दूर हो जा, तलाक़ की नियत से तलाक़ हो जाएगी। (त)
- "मुझे सूरत न दिखा,"
- [अरबी: वहाज़ा बिमा'ना अब'उदी अन्नी, वफ़ीहि यन्वी कमा मर्रा आन्फ़न... - 4] अनुवाद: और यह "मुझसे दूर हो जा" के अर्थ में है, और इसमें नियत करेगा, जैसा कि अभी गुज़रा, इसके बरख़िलाफ़ "मुझसे पर्दा कर" मनी (मुझसे) का लफ़्ज़ ज़ायद होने की वजह से किनाया से ख़ारिज है, जैसा कि ख़ानिया में भी है, नीज़ अल्लामा शामी ने फ़रमाया कि यहाँ मनी (मुझसे) का लफ़्ज़ क़रीना लफ़्ज़िया है कि उसने तलाक़ मुराद ली है यह बमन्ज़लह मुज़ाकरह तलाक़ है, ग़ौर चाहिये। मुझे इसके हाशिये पर लिखना याद है जिसकी इबारत यह है, अक़ूल: (मैं कहता हूँ) कि इसके बरख़िलाफ़ है यह कहना, तो अपना चेहरा मुझे न दिखा, क्यूंकि यह लफ़्ज़ बुग़्ज़ और नफ़रत के इज़हार के लिए है लिहाज़ा दूसरा एहतिमाल ख़त्म न होगा, ग़ौर करो। (त)
- "किनारे हो," "तूने मुझसे निजात पाई,"
- [अरबी: फ़िल हिन्दिय्या वमिनल किनायाति तनाज्जी अन्नी वनजवती मिन्नी कज़ा फ़ी फ़तहिल क़दीर - 5] अनुवाद: हिंदिया में है: अल्फ़ाज़ किनाया में से, किनारे हो, मुझसे तूने निजात पाई, ऐसे ही फ़तह अल-क़दीर में है। (त)

पादलेख: 1. फ़तावा हिंदिया, पांचवां अध्याय किनायात पर, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/471 2. फ़तावा हिंदिया, पांचवां अध्याय किनायात पर, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/471 3. रद अल-मुह्तार, किनायात का अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी बेरूत, 2/264 4. जद्द अल-मुमतार, किनायात का अध्याय, हाशिए। अल-मजमा अल-इस्लामी मुबारकपुर, 2/515 5. फ़तावा हिंदिया, पांचवां अध्याय किनायात पर, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/471

पृष्ठ 522/688

نکاحک یقع الطلاق اذانوٰی -[1] | نکاح سے بری ہوں، طلاق کی نیت سے طلاق ہو جائے گی۔ (ت)

۹۹ مجھ سے دُور ہو جا، فیھا عنھا ولو قال ابعدی عنی ونوی الطلاق یقع -[2] | ہندیہ میں خانیہ سے منقول ہے، اگر کہا تُو مجھ سے دُور ہو جا، طلاق کی نیت سے طلاق ہو جائے گی (ت)

۱۰۰ مجھے صورت نہ دکھا، وھذا بمعنی ابعدی عنی، وفیہ ینوی کما مرانفا بخلاف استتری منی فانہ بزیادۃ منی خرج عن کونہ کما فی الخانیۃ ایضا قال الشامی یکون قولہ منی قرینۃ لفظیۃ علی ارادۃ الطلاق بمنزلۃ المذاکرۃ تأمل اھ، ورأیتنی کتبت علی ھامشہ مانصہ، اقول وذٰلك بخلاف ان یقول لاترنی وجھك فانہ یکون عبارۃ عن البغض والتنفر فلا یزول الاحتمال اھ فافھم -[4] | اور یہ "مجھ سے دُور ہو جا" کے معنٰی میں ہے، اور اس میں نیت کرے گا، جیسا کہ ابھی گزرا، اس کے برخلاف "مجھ سے پردہ کر" منٰی (مجھ سے) کا لفظ زائد ہونے کی وجہ سے کنایہ سے خارج ہے، جیسا کہ خانیہ میں بھی ہے، نیز علامہ شامی نے فرمایا کہ یہاں منٰی (مجھ سے) کا لفظ قرینہ لفظیہ ہے کہ اس نے طلاق مراد لی ہے یہ بمنزلہ مذاکرہ طلاق ہے، غور چاہئے اھ مجھے اس کے حاشیے پر لکھنا یاد ہے جس کی عبارت یہ ہے، اقول: (میں کہتا ہوں) کہ اس کے برخلاف ہے یہ کہنا، تو اپنا چہرہ مجھے نہ دکھا، کیونکہ یہ لفظ بغض اور نفرت کے اظہار کے لئے ہے لہذا دوسرا احتمال ختم نہ ہوگا، اھ ، غور کرو۔ (ت)

۱۰۱ کنارے ہو، ۱۰۲ تُو نے مجھ سے نجات پائی، فی الھندیہ ومن الکنایات تنجی عنی ونجوت منی کذا فی فتح القدیر-[5] | ہندیہ میں ہے: الفاظ کنایہ میں سے ، کنارے ہو ، مجھ سے تو نے نجات پائی ، ایسے ہی فتح القدیر میں ہے۔ (ت)

[1] فتاویٰ ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۴۷۱ [2] فتاویٰ ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۴۷۱ [3] ردالمحتار باب الکنایات دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۶۴/۲ [4] جد الممتار باب الکنایات حاشیة . المجمع الاسلامی مبارکپور ۵۱۵/۲ [5] فتاویٰ ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۴۷۱

Fatawa Razviya Volume 12

And its example is: (T) 103 "Be separate," 104 "I have loosened your feet."

Arabic Text	Urdu Translation
Due to the lack of customary usage in our lands; and what is in 'Al-Khulasa': "I have loosened your feet" is conventionally the interpretation of his saying "I have divorced you," so it becomes a revocable divorce (raj'i) and occurs without intent. So, as you see, it is based on custom. In 'Al-Hindiyyah', from 'Al-Dhakheerah' on the authority of Imam Zahir al-Din, it is ruled that for words other than these, intent is a condition, and the divorce that occurs will be irrevocable (ba'in).	Due to the absence of such custom in our region, and what is mentioned in 'Khulasa'—"I have loosened your feet"—is equivalent in custom to "I have divorced you." Therefore, it results in a revocable divorce, and divorce will occur even without intent. Thus, as you can see, it is based on custom. It is narrated in 'Hindiyyah' from 'Zakheerah' on the authority of Imam Zahir al-Din that regarding words other than those mentioned, the verdict will be given based on intent being a condition, and it will be an irrevocable divorce. (T)

105 "I have set you free," 106 "Become free,"

Arabic Text	Urdu Translation
In it: And if he said "I have set you free," divorce occurs with intent, as in 'Mi'raj al-Dirayah'. And "Be free" or "Set yourself free" is like "You are free," as in 'Al-Bahr al-Ra'iq'.	In 'Hindiyyah': And if the husband says "I have set you free," divorce will occur with intent, as stated in 'Mi'raj al-Dirayah'. And "Become free" or "You are free" is like "Anta Hurrah" (You are a free woman), as mentioned in 'Bahr al-Ra'iq'. (T)

107 "Your bond is severed," 108 "You are unrestricted,"

Arabic Text	Urdu Translation
In it: And if he said "You are released (as-sarah)," it is as if he said to her "You are set apart (khaliyya)," as in 'Fatawa Qadi Khan'.	In 'Hindiyyah': If he said "You are unrestricted," it is just like saying "You are separate," as in 'Fatawa Qadi Khan'. (T)

109 "I am absolved of you,"

Arabic Text	Urdu Translation
In it: In 'Majmu' al-Nawazil', a woman said to her husband, "I am absolved of you," so the husband said...	In 'Hindiyyah' it is stated that in 'Majmu' al-Nawazil', a wife said "I am absolved of you," then the husband replied in response...

1 Khulasa-tul-Fatawa, Kitab-ut-Talaq, Maktaba Habibiya Quetta, 2/99 2 Fatawa Hindiyyah, Chapter 7 on Divorce in Persian words, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/479 3 Fatawa Hindiyyah, Chapter 5 on Metaphorical terms, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/376 4 Fatawa Hindiyyah, Chapter 5 on Metaphorical terms, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/376

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द बारहवीं

और इसकी मिसाल है। (अनु.) १०३ "अलग हो," १०४ "मैंने तेरा पाँव खोल दिया"

अरबी पाठ

हमारे देशों में प्रथा की कमी के कारण; और जो 'ख़ुलासा' में है: 'मैंने तेरे पैर ढीले कर दिए' उसकी इस बात की व्याख्या है कि 'मैंने तुझे तलाक़ दे दी', प्रथागत रूप से ताकि यह प्रतिसंहरणीय (रज'ई) हो और बिना इरादे के घटित हो जाए। तो, जैसा कि आप देख रहे हैं, यह प्रथा पर आधारित है। 'अल-हिंदिया' में 'अल-ज़ख़ीरा' के हवाले से इमाम ज़हीर अल-दीन से वर्णित है कि इनके अलावा अन्य शब्दों में इरादे (नियत) की शर्त पर फ़तवा दिया जाएगा और होने वाली तलाक़ अपरिवर्तनीय (बाइन) होगी।

उर्दू अनुवाद

हमारे क्षेत्र में प्रथा न होने के कारण, और जो 'ख़ुलासा' में है कि "मैंने तेरे पाँव खोल दिए," आम बोलचाल में "मैंने तुझे तलाक़ दी" के हम-मानी (समान अर्थी) है, इसलिए इससे तलाक़-ए-रज'ई (प्रतिसंहरणीय तलाक़) होगी, और बिना नियत के तलाक़ हो जाएगी। तो यह प्रथा पर आधारित है जैसा कि आप देख रहे हैं। 'हिंदिया' में 'ज़ख़ीरा' से इमाम ज़हीर उद्दीन से उद्धृत है कि उल्लेखित शब्दों के अलावा अन्य शब्दों में नियत शर्त होने पर फ़तवा दिया जाएगा और उससे बाइन तलाक़ होगी। (अनु.)

१०५ "मैंने तुझे आज़ाद किया," १०६ "आज़ाद हो जा,"

अरबी पाठ

उसमें है: और अगर उसने कहा "मैंने तुझे आज़ाद किया," तो नियत से तलाक़ होगी, जैसा कि 'मेराज अद-दराया' में है। और "आज़ाद हो जा" या "आज़ाद हो" "अंत हुर्रा" (तू स्वतंत्र है) की तरह है, जैसा कि 'बह्र अर-राइक़' में है।

उर्दू अनुवाद

'हिंदिया' में है: और अगर पति कहे "मैंने तुझे आज़ाद किया," तो नियत से तलाक़ होगी, जैसा कि 'मेराज अद-दराया' में है, और "तू आज़ाद हो जा" या "तू आज़ाद है" "अंत हुर्रा" की तरह है, जैसा कि 'बह्र अर-राइक़' में है। (अनु.)

१०७ "तेरी बेड़ी कट गई," १०८ "तू बंधन मुक्त है,"

अरबी पाठ

उसमें है: और अगर उसने कहा "तू मुक्त है (अस-सराह)," तो यह वैसा ही है जैसे उसने उससे कहा "तू

उर्दू अनुवाद

'हिंदिया' में है: अगर कहा "तू बे-क़ैद (बंधन मुक्त) है" यह वैसे ही है जैसे यूँ कहे "तू जुदा

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
अलग है (ख़लिय्या)," जैसा कि 'फ़तावा क़ाज़ी ख़ान' में है।	है" जैसा कि 'फ़तावा क़ाज़ी ख़ान' में है। (अनु.)

१०९ "मैं तुझसे बरी हूँ,"

अरबी पाठ	उर्दू अनुवाद
उसमें 'मजमूअ अल-नवाज़िल' में है कि एक महिला ने अपने पति से कहा "मैं तुझसे बरी (मुक्त) हूँ," तो पति ने कहा...	'हिंदिया' में है कि 'मजमूअ अल-नवाज़िल' में है, पत्नी ने कहा "मैं तुझसे बरी हूँ" तो पति ने जवाब में...

---

1 ख़ुलासा-तुल-फ़तावा, किताब-उत-तलाक़, मकतबा हबीबिया क्वेटा, 2/99 2 फ़तावा हिंदिया, फ़स्ल 7 फ़ारसी शब्दों में तलाक़, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/479 3 फ़तावा हिंदिया, फ़स्ल 5 प्रतीकात्मक शब्दों में, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/376 4 फ़तावा हिंदिया, फ़स्ल 5 प्रतीकात्मक शब्दों में, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/376

فتاوٰی رضویہ جلد دو ازدہم

ومثلها (اور اسی کی مثال ہے۔ت) ۱۰۳"الگ ہو،"۱۰۴"میں نے تیرا پاؤں کھول دیا

عربی عبارت	اردو ترجمہ
لعدم التعارف في بلادنا وما في الخلاصة پائے کشادہ کردم ترا تفسیر قوله طلقتك عرفا حتى يكون رجعيا وتقع بدون النية اه فمبنى كما ترى على العرف في الهندية عن الذخيرة عن الامام ظهير الدين يفتى فيما سواها باشتراط النية ويكون الواقع بائنا۔	ہمارے علاقہ کا عرف نہ ہونے کی بنا پر، اور جو خلاصہ میں ہے کہ "میں نے تیرے پاؤں کھول دئیے، عرف میں "میں نے تجھے طلاق دی" کے ہم معنی ہے، لہٰذا اس سے طلاق رجعی ہوگی، اور بغیر نیت طلاق ہو جائے گی اھ تو یہ عرف پر مبنی ہے جیسا کہ تو دیکھ رہا ہے، ہندیہ میں ذخیرہ سے امام ظہیر الدین سے منقول ہے کہ مذکورہ الفاظ کے علاوہ میں نیت شرط ہونے پر فتوٰی دیا جائے گا اور اس سے بائنہ طلاق ہوگی۔ (ت)

۱۰۵"میں نے تجھے آزاد کیا،" ۱۰۶"آزاد ہو جا،

عربی عبارت	اردو ترجمہ
فيها ولوقال اعتقتك طلقت بالنية كذا في معراج الدراية وكوني حرة واعتقى مثل انت حرة كذافي بحرالرائق۔	ہندیہ میں ہے: اور اگر خاوند کہے "میں نے تجھے آزاد کیا" تو نیت سے طلاق ہوگی، جیسا کہ معراج الدرایہ میں ہے، اور "تو آزاد ہو جا" یا "تو آزاد ہے" "انت حرة" کی طرح ہے، جیسا کہ بحر الرائق میں ہے۔ (ت)

۱۰۷"تیری بند کٹی،" ۱۰۸"تُو بے قید ہے،

عربی عبارت	اردو ترجمہ
فیھا ولوقال انت السراح فھو کما قال لھا انت خلیۃ کذا في فتاوٰی قاضی خان۔	ہندیہ میں ہے: اگر کہا "تو بے قید ہے" یہ ایسے ہی ہے جیسے یوں کہے "تُو جدا ہے" جیسا کہ فتاوٰی قاضی خان میں ہے۔ (ت)

۱۰۹"میں تجھ سے بری ہوں،

عربی عبارت	اردو ترجمہ
فیھا في مجموع النوازل امرأۃ قالت لزوجھا انا بریئۃ منك فقال الزوج	ہندیہ میں ہے کہ مجموع النوازل میں ہے، بیوی نے کہا "میں تجھ سے بری ہوں" تو خاوند نے جواب میں

---

1 خلاصۃ الفتاوی کتاب الطلاق مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۹۹/۲ 2 فتاوٰی ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالالفاظ الفارسیہ نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۴۷۹ 3 فتاوٰی ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۳۷۶ 4 فتاوٰی ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۳۷۶

Fatawa Ridawiyyah Volume 12

[Arabic]: I am free from you too. She asked, "What are you saying?" He said, "I did not intend divorce." Divorce does not occur due to the absence of intention, as mentioned in Al-Muhit. — 1 [Urdu]: He said, "I too am free from you." Then the wife said, "Think about what you are saying." The husband replied, "I did not say it with the intention of divorce." Thus, divorce will not occur because there was no intention, as stated in Al-Muhit. (T)

"Perform your own marriage," marry whomever you wish.

[Arabic]: In it, if he said, "Marry," and intended divorce or triple divorce, it is valid; if he intended nothing, it does not occur. As in Al-Atabiyyah. — 2 [Urdu]: In Hindiya, it states: If he said "Marry yourself off" and intended divorce, it is one divorce, and if he intended three, there will be three. If no intention was made, no divorce will occur, as stated in Al-Atabiyyah. (T)

"I have become weary of you."

[Arabic]: In it, from Al-Khulasa: If he said to her, "I have become weary of you," divorce does not occur without intention. 3 I say: Apparently, it is not like his saying, "I am divorced from you." So understand and remain firm. [Urdu]: In Hindiya, from Khulasa, it is stated: If he said "I am weary of you," then without intention, divorce will not occur. I say (the author) that apparently the mentioned word is not like the husband's saying "I am of the divorced ones from you." Ponder and stay firm. (T)

"There is no marriage for me with you."

[Arabic]: In Al-Khaniya, regarding your saying, "There is no marriage for me over you," divorce does not occur except with intention. 4 — (Abridged) [Urdu]: In Khaniya it is: From this saying of the husband "There is no marriage for me over you," divorce will not occur without intention. (T)

"I have annulled your marriage."

[Arabic]: In it, if he said to her, "I have annulled your marriage," divorce occurs. [Urdu]: In Khaniya it is: If he said to the wife, "I have annulled your marriage..."

[Arabic Note]: (Annotation): This is an indication that what is in Ad-Durr is an oversight. 2 From him. [Urdu]: This is an indication that what is in Durr-e-Mukhtar is an oversight. (T)

1 Fatawa Hindiyyah, Chapter Five, regarding Metaphors, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/376 2 Fatawa Hindiyyah, Chapter Five, regarding Metaphors, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/376 3 Fatawa Hindiyyah, Chapter Seven, regarding Divorce in Persian Words, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/386 4 Fatawa Qazi Khan, Chapter regarding Metaphors, Naval Kishore Lucknow, 2/216

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

[अरबी]: मैं भी तुझसे बरी हूँ। उसने पूछा, "आप क्या कह रहे हैं?" उसने कहा, "मेरा तलाक का इरादा नहीं था।" नीयत की कमी के कारण तलाक नहीं होता, जैसा कि अल-मुहीत में है। — 1 [उर्दू]: कहा "मैं भी तुझसे बरी हूँ" फिर बीवी ने कहा ख्याल करो क्या कह रहे हो, तो खावंद ने कहा मैंने तलाक की नीयत से नहीं कहा, तो तलाक न होगी क्योंकि नीयत नहीं है, जैसा कि मुहीत में है। (त)

"अपना निकाह कर," जिससे चाहे निकाह कर,

[अरबी]: उसमें, अगर उसने कहा, "निकाह कर ले," और तलाक या तीन तलाक का इरादा किया, तो यह मान्य है; यदि कुछ भी इरादा नहीं किया, तो यह नहीं होता। जैसा कि अल-अताबिया में है। — 2 [उर्दू]: हिंदिया में है अगर कहा "तू निकाह कर ले" और तलाक की नीयत की हो तो एक तलाक, और तीन की नीयत की तो तीन होंगी। और कोई नीयत नहीं की तो कोई तलाक न होगी, जैसा कि अताबिया में है (त)

"मैं तुझसे बेज़ार हुआ,"

[अरबी]: उसमें, अल-खुलासा से: यदि उसने उससे कहा, "मैं तुमसे ऊब गया हूँ (बेज़ार हो गया हूँ)," तो नीयत के बिना तलाक नहीं होता। 3 मैं कहता हूँ: स्पष्ट रूप से, यह उसके यह कहने जैसा नहीं है, "मैं तुमसे तलाकशुदा हूँ।" तो समझें और दृढ़ रहें। [उर्दू]: हिंदिया में खुलासा से है, अगर कहा "मैं तुझसे बेज़ार हूँ" तो नीयत के बगैर तलाक न होगी। कुलत (मैं कहता हूँ) ज़ाहिर यह है कि मज़कूर लफ़्ज़ खावंद के कौल "मैं तुझसे तलाक वाला हूँ" की तरह नहीं है, गौर करो और साबित रहो। (त)

"मेरे लिये तुझ पर निकाह नहीं,"

[अरबी]: अल-खनिया में, आपके इस कथन के बारे में कि "मेरे लिए तुम पर कोई निकाह नहीं है," नीयत के बिना तलाक नहीं होता। 4 — (संक्षिप्त) [उर्दू]: खानिया में है: खावंद के इस कौल से कि "मेरे लिये तुझ पर निकाह नहीं है" नीयत के बगैर तलाक न होगी। (त)

"मैंने तेरा निकाह फ़स्ख किया,"

[अरबी]: उसमें, यदि उसने उससे कहा, "मैंने तुम्हारा निकाह रद्द कर दिया," तो तलाक हो जाता है। [उर्दू]: खानिया में है: अगर बीवी को कहा "मैंने तेरा निकाह..."

[अरबी नोट]: (हाशिया): यह एक संकेत है कि अद-दुर्र में जो है वह एक चूक है। 2 उनकी ओर से। [उर्दू]: यह इस तरफ इशारा है कि जो दुर्रे मुख्तार में है वह सहव (चूक) है। (त)

1 फ़तावा हिंदिया, अध्याय पांच, कनायात (रूपकों) के संबंध में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/376 2 फ़तावा हिंदिया, अध्याय पांच, कनायात के संबंध में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/376 3 फ़तावा हिंदिया, अध्याय सात, फारसी शब्दों में तलाक के संबंध में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/386 4 फ़तावा काज़ी ख़ां, कनायात के संबंध में अध्याय, नवल किशोर लखनऊ, 2/216

पृष्ठ 688 का 524

فتاوٰی رضویہ جلد دو از دہم

انا برئ منك ایضا" فقالت ماذا تقول فقال مانویت الطلاق لا یقع الطلاق لعدم النیة کذا في المحیط۔ ۱ کہا "میں بھی تجھ سے بری ہوں" پھر بیوی نے کہا خیال کرو کیا کہہ رہے ہو، تو خاوند نے کہا میں نے طلاق کی نیت سے نہیں کہا، تو طلاق نہ ہوگی کیونکہ نیت نہیں ہے، جیسا کہ محیط میں ہے۔ (ت)

"اپنا نکاح کر،" جس سے چاہے نکاح کر،

فیھا ولو قال تزوجی ونوی الطلاق او الثلاث صح وان لم ینوشیئالم یقع کذا في العتابیة۔ ۲ ہندیہ میں ہے اگر کہا "تو نکاح کر لے" اور طلاق کی نیت کی ہو تو ایک طلاق، اور تین کی نیت کی تو تین ہوں گی۔ اور کوئی نیت نہیں کی تو کوئی طلاق نہ ہوگی، جیسا کہ عتابیہ میں ہے (ت)

"میں تجھ سے بیزار ہوا،

فیھا عن الخلاصة ولو قال لھا از تو بیزار شدم لا یقع بدون النیة ۳ قلت وظاھرا ن لیس کقولہ انامنك طالق فافھم عه وثبت۔ ہندیہ میں خلاصہ سے ہے، اگر کہا "میں تجھ سے بیزار ہوں" تو نیت کے بغیر طلاق نہ ہوگی۔ قلت (میں کہتا ہوں) ظاہر یہ ہے کہ مذکور لفظ خاوند کے قول "میں تجھ سے طلاق والا ہوں" کی طرح نہیں ہے، غور کرو اور ثابت رہو۔ (ت)

"میرے لئے تجھ پر نکاح نہیں،

فی الخانیة وفی قولك لانکاح لی علیك لا یقع الطلاق الا بالنیة ۴۔ (ملخصا) خانیہ میں ہے: خاوند کے اس قول سے کہ "میرے لئے تجھ پر نکاح نہیں ہے" نیت کے بغیر طلاق نہ ہوگی۔ (ت)

"میں نے تیرا نکاح فسخ کیا،

فیھا ولو قال لھا فسخت نکاحك یقع الطلاق خانیہ میں ہے: اگر بیوی کو کہا "میں نے تیرا نکاح

عہ: اشارۃ الی ان ما فی الدر سھو ۲ امنہ یہ اس طرف اشارہ ہے کہ جو در مختار میں ہے وہ سہو ہے ۱۲منہ (ت)

۱ فتاوٰی ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۷۶ ۲ فتاوٰی ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۷۶ ۳ فتاوٰی ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالفاظ الفارسیہ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۸۶ ۴ فتاوٰی قاضی خاں فصل فی الکنایات نولکشور لکھنؤ ۲ /۲۱۶

If he intended - divorce will occur through intention. (T) "Opened four paths for you (and if he says, "four paths are open to you," then it is nothing until he also says, "choose whichever path you wish")."

Arabic Text

In 'Khaniyah' it is stated: If a husband said to her, "Four paths are open to you" and intended divorce, divorce will not occur unless he says, "Four paths are open to you, so take whichever path you wish." Then divorce will occur if intended. If he said (I have opened four paths for you [Persian]), divorce will not occur without intention. In 'Al-Hindiyyah' it is stated: If he said to her, "Four paths are open to you [Persian]," divorce will not occur even if intended unless he says, "Take whichever you wish." This is according to most scholars and is narrated from Imam Muhammad (may Allah have mercy on him). But if he said, "I have opened four paths for you [Persian]," divorce occurs if intended, even if he did not say, "Take whichever you wish."

Urdu Translation

In 'Khaniyah' it is: If the husband said "Four paths are open to you" and intended divorce, then divorce will not occur until he says along with it, "Choose whichever path you wish." If he said this with the intention of divorce, then divorce will occur. And if he said, "I have opened four paths for you," then without intention, divorce will not occur. In 'Hindiyyah' it is also stated that if the husband only said "Four paths are open to you," then despite intention it will not occur until he says along with it, "Choose whichever you want." This is according to most scholars. And the same is narrated from Imam Muhammad (may Allah have mercy on him). And if he said, "I am opening four paths for you," then if he intended, divorce will occur, even though he did not say, "Choose whichever you wish." (T)

"I have withdrawn from you." | Arabic Text | Urdu Translation | | :--- | :--- | | In 'Khaniyah' [Persian: I have withdrawn from you], Faqih Abu Ja'far said it is one irrevocable divorce (Bainah), while others said it occurs as a revocable divorce (Raj'iyyah), and the first [opinion] is more correct. | In 'Khaniyah' it is: If the husband said "I have withdrawn from you," then Faqih Abu Ja'far said it will be one irrevocable divorce (Talaq-e-Bainah), and others said that it will be one revocable divorce (Talaq-e-Raj'i), the first statement is more correct. (T) |

1. Fatawa Qazi Khan, Chapter on Metaphors, Nawal Kishore, Lucknow, 2/216
2. Fatawa Qazi Khan, Chapter on Metaphors, Nawal Kishore, Lucknow, 2/217

3. Fatawa Hindiyyah, Chapter Seven on Divorce in Persian words, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/381
4. Fatawa Qazi Khan, Chapter on Metaphors, Nawal Kishore, Lucknow, 2/217

अगर नीयत की - नीयत से तलाक़ हो जाएगी। (T) "तुम्हारे लिए चारों रास्ते खोल दिए (और अगर उसने यह कहा कि "तुम्हारे लिए चारों रास्ते खुले हैं" तो कुछ नहीं होगा जब तक कि यह भी न कहे, "जो रास्ता चाहो उसे चुन लो")।

अरबी पाठ

खानिया में है: अगर पति ने उससे कहा, "चारों रास्ते तुम पर खुले हैं" और तलाक़ की नीयत की, तो तलाक़ नहीं होगा जब तक कि वह न कहे, "चारों रास्ते तुम पर खुले हैं, सो जिस रास्ते को तुम चाहो ले लो।" तब तलाक़ हो जाएगा अगर नीयत की। और अगर कहा (चारों रास्ते तुम पर खोल दिए [फारसी]), तो नीयत के बिना तलाक़ नहीं होगा। अल-हिंदिया में है: अगर उसने उससे कहा, "चारों रास्ते तुम पर खुले हैं [फारसी]," तो नीयत होने के बावजूद तलाक़ नहीं होगा जब तक कि वह न कहे, "जिसे चाहो ले लो।" यह अधिकांश विद्वानों (मशायिख) के अनुसार है और इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैहि) से वर्णित है। लेकिन अगर उसने कहा, "मैंने तुम्हारे लिए चारों रास्ते खोल दिए [फारसी]," तो तलाक़ हो जाता है अगर नीयत की, भले ही उसने यह न कहा हो, "जिसे चाहो ले लो।"

उर्दू अनुवाद

खानिया में है: अगर पति ने कहा "चारों रास्ते तुम पर खुले हैं" और तलाक़ की नीयत की, तो तलाक़ नहीं होगा जब तक कि वह साथ में यह न कहे कि "जिस रास्ते को तुम चाहो उसे चुन लो।" अगर तलाक़ की नीयत से यह कहा तो तलाक़ हो जाएगा। और अगर कहा "तुम पर चारों रास्ते खोल दिए", तो नीयत के बिना तलाक़ नहीं होगा। हिंदिया में भी है कि अगर पति ने सिर्फ यह कहा "तुम पर चार राहें खुली हैं" तो नीयत होने के बावजूद नहीं होगा जब तक कि साथ में यह न कहे "तो जिसे चाहो" चुन लो। यह अधिकांश विद्वानों के यहाँ है। और इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैहि) से भी यही वर्णित है। और अगर कहा "मैं तुम पर चारों रास्ते खोलता हूँ", तो नीयत की तो तलाक़ हो जाएगा, हालांकि उसने यह न कहा हो कि "जिसे तुम चाहो उसे चुन लो"। (T)

"मैं तुमसे दस्तबरदार हुआ (अलग हुआ)।" | अरबी पाठ | उर्दू अनुवाद | | :--- | :--- | | खानिया में [फारसी: मैं तुमसे दस्तबरदार हुआ], फकीह अबू जाफ़र ने कहा कि यह एक तलाक़-ए-बाइन (अपरिवर्तनीय तलाक़) है, जबकि दूसरों ने कहा कि यह तलाक़-ए-रजई (प्रतिसंहरणीय तलाक़) के रूप में होता है, और पहला [विचार] अधिक सही है। | खानिया में है: अगर पति ने कहा "मैं तुमसे

दस्तबरदार हुआ", तो अबू जाफ़र फकीह ने कहा कि एक तलाक़-ए-बाइन होगा, और दूसरों ने कहा कि एक तलाक़-ए-रजई होगा, पहला कथन अधिक सही है। (T) |

1. फ़तावा क़ाज़ी खान, फ़सल फ़िल-किनायात, नवल किशोर, लखनऊ, २/२१६
2. फ़तावा क़ाज़ी खान, फ़सल फ़िल-कि८यात, नवल किशोर, लखनऊ, २/२१७
3. फ़तावा हिंदिया, अल-फ़सल अस-साबे फ़ित-तलाक़ बिल-अल्फ़ाज़ अल-फ़ारसिया, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, १/३८१
4. फ़तावा क़ाज़ी खान, फ़सल फ़िल-कि८यात, नवल किशोर, लखनऊ, २/२१७

पृष्ठ ५२५ / ६८८

اذا نوٰی - فسخ کیا ، نیت سے طلاق ہو جائے گی۔ (ت) "تجھ پر چاروں راہیں کھول دیں (اور اگر یوں کہا کہ "تجھ پر چاروں کھلی ہیں" تو کچھ نہیں جب تک یہ بھی نہ کہے، "جو راستہ چاہے اختیار کر

عربی متن

فھاولو قال لھا"اربع طرق علیك مفتوحة ونوی الطلاق لایقع الطلاق الان یقول اربع طرق علیك مفتوحة فخذی فی ای طریق شئت فحینئذ یقع الطلاق اذانوی ولاقال(چہار راہ بر تو کشادم)لایقع الطلاق مالم ینو وفي الھندیة اذا قال لھا چہار راہ بر تو کشادہ است لایقع الطلاق وان نوی مالم یقل خذی ایما شئت عند اکثر المشائخ وانه منقول عن محمد رحمه الله تعالی واذاقال لھا چہار راہ بر تو کشادم یقع الطلاق اذانوی وان لم یقل خذی ایما شئت۔

اردو ترجمہ

خانیہ میں ہے: اگر خاوند نے کہا"چاروں راہ تجھ پر کھلے ہیں" اور طلاق کی نیت کی تو طلاق نہ ہو گی جب تک ساتھ یہ نہ کہے جس راستے کو تو چاہے اختیار کرلے، اگر طلاق کی نیت سے یہ کہہ دیا تو طلاق ہو جائے گی، اور اگر کہا تجھ پر چاروں راہیں کھول دیں، تو نیت کے بغیر طلاق نہ ہو گی، اور ہندیہ میں بھی ہے کہ اگر خاوند نے صرف یہ کہا "تجھ پر چار راہیں کھلی ہیں تو نیت کے باوجود نہ ہو گی جب تک ساتھ یہ نہ کہے "توجس کو چاہے" اختیار کرلے۔" اکثر مشائخ کے ہاں یہ ہے۔ اور امام محمد رحمتہ اللہ تعالٰی سے یہی منقول ہے۔ اور اگر کہا "تجھ پر چاروں راہیں کھولتا ہوں" تو نیت کی تو طلاق ہو جائیگی، اگرچہ اس نے "جس کو تو چاہے اختیار کرے " نہ کہا ہو۔ (ت)

"میں تجھ سے دست بردار ہوا" | عربی متن | اردو ترجمہ | | :--- | :--- | | في الخانية (جنگ باز داشتم) از تو قال الفقية ابو جعفر واحدة بائنة وغيره يقع رجعية والأول اصح۔ | خانیہ میں ہے: اگر خاوند نے کہا" میں تجھ سے دستبردار ہوا" تو ابو جعفر فقیہ نے کہا ایک طلاق بائنہ ہوگی، اور دوسروں نے کہا کہ ایک طلاق رجعی ہو گی، پہلا قول اصح ہے (ت) |

1 فتاوٰی قاضی خاں فصل فی الکنایات نولکشور لکھنؤ ۲/ ۲۱۶ 2 فتاوٰی قاضی خاں فصل فی الکنایات نولکشور لکھنؤ ۲/ ۲۱۷ 3 فتاوٰی ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالالفاظ الفارسیة نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۸۱ 4 فتاوٰی قاضی خاں فصل فی الکنایات نولکشور لکھنؤ ۲/ ۲۱۷

Fatawa Razvia Volume 12

18: I returned you to your family, or 19: father, or 20: mother,

In al-Tahtawi, narrated from al-Durr al-Muntaqa: "I returned you to them," and their acceptance is not a condition. - 1

In Tahtawi, it is narrated from Durr al-Muntaqa that if a husband said, "I have returned you to your family," then the family's acceptance is not a condition. (T)

21: You are out of my protection/bond,

In al-Uqud, it is clarified in al-Wajiz by Burhan al-Aimmah that if he said, "I have annulled the marriage between me and you, and nothing remains between me and you," it does not take effect except with intention. It is not hidden that his saying, "You are outside my protection," is similar in meaning to what is mentioned in the stated fatawa. I say: Being out of protection (ismah) occurs through divorce (talaq) or annulment (faskh), such as the path of the prohibition of affinity (hurmat al-musaharah), even if it is from his side. Therefore, divorce is not uniquely determined for annulment, and similarly, being out of ownership (milk), as previously mentioned. - 2

In Uqud al-Durriya, it is mentioned that Allama Burhan al-Aimmah clarified in al-Wajiz: if the husband said, "The marriage between me and you is annulled and no marriage remains between us," it will not be a divorce without intention. And it is not hidden that the husband saying, "You are out of my protection," is similar in meaning to what is narrated in the aforementioned fatwa. I (the author) say: Being out of protection occurs with divorce and annulment. For example, due to the prohibition of affinity which can also occur from the husband's side. Hence, divorce is not specific for annulment, and similarly for being out of ownership as mentioned before. (T)

22: I have legally removed my name from your ownership,

In al-Khayriyya, it was asked about a man who said, in a state of anger and when asked for divorce by his wife, "I have legally withdrawn from her." Does she become irrevocably divorced by that or not? (He answered) I have not seen anyone address this in their words, but I

In al-Khayriyya: It was asked of them that a person said to his wife in anger and upon a demand for divorce, "I have removed my legal name from her." So will this person's wife become divorced (ba'ina) or not? They answered: I did not find the mention of this issue in the

have seen various branches in the metaphors (kinayat) which necessitate that...

words of the jurists, but I have found many issues of metaphors...

1. Tahtawi on al-Durr al-Mukhtar, Chapter of Metaphors, Dar al-Ma'rifa, Beirut, 2/138.
2. Uqud al-Durriya in Tanqih al-Hamidiyya, Book of Divorce, Haji Abdul Ghaffar, Kandahar, Afghanistan, 1/73.

फ़तावा रिज़विया जिल्द बारहवीं

18: मैंने तुम्हें तुम्हारे घर वालों या 19: पिता या 20: माँ को वापस कर दिया,

अल-तहतावी में अल-दुर अल-मुन्तका से उद्धृत है: "मैंने तुम्हें उन्हें वापस कर दिया," और उनकी स्वीकृति शर्त नहीं है। - 1

तहतावी में दुर्रे मुंतका से उद्धृत है, पति ने कहा "मैंने तुम्हें तुम्हारे घर वालों को वापस कर दिया" तो घर वालों का स्वीकार करना शर्त नहीं है। (त)

21: तुम मेरे संरक्षण/निकाह से बाहर हो गई,

अल-उकूद में बुरहान अल-अइम्मा द्वारा अल-वजीज़ में स्पष्ट किया गया है कि यदि उसने कहा, "मैंने मेरे और तुम्हारे बीच निकाह रद्द कर दिया है और मेरे और तुम्हारे बीच कुछ भी शेष नहीं है," तो यह बिना नियत (इरादे) के प्रभावी नहीं होता है। यह छिपा नहीं है कि उसका यह कहना कि "तुम मेरे संरक्षण से बाहर हो" उसी के समान अर्थ में है जो उक्त फ़तावा में वर्णित है। मैं कहता हूँ: संरक्षण (इस्मत) से बाहर होना तलाक़ (तलाक) या निरस्तीकरण (फ़स्ख) के माध्यम से होता है, जैसे कि विवाह द्वारा निषेध (हुरमत-ए-मुसाहरत) का मार्ग, भले ही वह उसकी ओर से हो। इसलिए, निरस्तीकरण के लिए तलाक़ अनिवार्य रूप से निर्धारित नहीं है, और इसी तरह स्वामित्व (मिल्क) से बाहर होना भी, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है। - 2

उकूद अल-दुर्रिया में है कि अल्लामा बुरहान अल-अइम्मा ने वजीज़ में स्पष्ट किया है: यदि पति ने कहा "मेरे और तुम्हारे बीच निकाह फ़स्ख (रद्द) हो गया है और हमारे बीच निकाह बाकी नहीं रहा" तो नीयत (इरादे) के बिना तलाक नहीं होगा, और यह गुप्त नहीं है कि पति का यह कहना कि "तुम मेरी इस्मत (संरक्षण) से बाहर हो" अर्थ में उसी के समान है जो पूर्वोक्त फ़तवा से वर्णित है। मैं कहता हूँ: इस्मत से बाहर होना तलाक और फ़स्ख के साथ होता है। उदाहरण के लिए, हुरमत-ए-मुसाहरत के कारण जो पति की ओर से भी हो सकती है, इसलिए फ़स्ख के लिए तलाक तय नहीं है, और इसी तरह मिल्कियत (स्वामित्व) से बाहर होना भी है जैसा कि पहले गुज़रा। (त)

22: मैंने कानूनी तौर पर तुम्हारा साथ छोड़ दिया (अपना नाम हटा लिया),

अल-खैरिया में, एक ऐसे व्यक्ति के बारे में पूछा गया जिसने क्रोध की स्थिति में और अपनी पत्नी द्वारा तलाक मांगे जाने पर कहा, "मैंने उससे

खैरिया में है: उनसे सवाल किया गया कि एक व्यक्ति ने पत्नी को गुस्से में और तलाक की मांग पर कहा "मैंने उससे शरई (कानूनी) नाम उतार

कानूनी तौर पर नाम हटा लिया है।" क्या वह इससे अलग हो जाएगी (तलाक हो जाएगा) या नहीं? (उन्होंने उत्तर दिया) मैंने उनके शब्दों में किसी को भी इसे संबोधित करते हुए नहीं देखा है, लेकिन मैंने रूपकों (किनायत) में विभिन्न शाखाओं को देखा है जो यह आवश्यक बनाती हैं कि...

दिया" तो क्या इस व्यक्ति की पत्नी बाइना (अलग) हो जाएगी या नहीं? उन्होंने जवाब दिया मैंने फ़ुक़्हा (धर्मशास्त्रियों) के कलाम (शब्दों) में इस मसले के बयान को नहीं पाया, लेकिन मैंने किनाया के बहुत से मसले...

1. तहतावी अली अल-दुर अल-मुख्तार, बाब अल-किनायात, दार अल-मआरिफा, बेरुत, 2/138।
2. उकूद अल-दुर्रिया फी तन्क़ीह अल-हामिदिया, किताब अल-तलाक, हाजी अब्दुल गफ्फार, कंधार, अफगानिस्तान, 1/73।

فتاوٰی رضویہ جلد دو ازدہم

۱۸ میں نے تجھے تیرے گھر والوں یا ۱۹ باپ یا ۲۰ ماں کو واپس دیا،

في الطحطاوی عن الدرالمنتقی ردتك اليهم ولا يشترط قبولهم - ۱

طحطاوی میں درمنتقی سے منقول ہے، خاوند نے کہا "میں نے تجھے تیرے گھر والوں کو واپس کردیا" تو گھر والوں کا قبول کرنا شرط نہیں ہے (ت)

۲۱ تو میری عصمت سے نکل گئی،

في العقودصرح في الوجيز لبرهان الائمة انه لو قال فسخت النكاح بيني وبينك ولم يبق بيني وبينك لا يقع الا بالنية، ولا يخفى ان قوله انت خارجة عن عصمتي مثله فی المعنی من الفتاوی المزبورة قلت فان الخروج عن العصمة يكون بطلاق وفسخ كطريق حرمة مصاهرة ولومن قبله، فلم يتعين للطلاق وكذاالخروج عن الملك كما مر ۲ -

عقود دریہ میں ہے کہ علامہ برہان الائمہ نے وجیز میں تصریح کی ہے اگر خاوند نے کہا "میرے اور تیرے درمیاں نکاح فسخ ہوگیا ہے اور ہمارے درمیان نکاح باقی نہ رہا" تو نیت کے بغیر طلاق نہ ہوگی، اور یہ مخفی نہیں کہ خاوند کا کہنا کہ "تو میری عصمت سے خارج ہے" معنی میں اسی کی مثل ہے جو فتاوٰی مذکورہ سے مروی ہے قلت (میں کہتا ہوں) عصمت سے خارج ہونا طلاق اور فسخ کے ساتھ ہوتا ہے_ مثلاً حرمتِ مصاہرہ کی بناپر جو کہ خاوند کی طرف سے بھی طاری ہوسکتی ہے لہٰذا فسخ کے لئے طلاق متعین نہیں ہے، اور اسی طرح ملکیت سے خارج ہونا بھی ہے جیسا کہ گزرا۔ (ت)

۲۲ میں نے تیری ملک سے شرعی طور پر اپنا نام اتار دیا،

في الخيرية سئل في رجل قال فی حال الغضب وسؤال الطلاق لزوجته نزلت عنها نزولا شرعياً هل تبين بذلك ام لا

خیریہ میں ہے: ان سے سوال کیا گیا کہ ایک شخص نے بیوی کو غصہ میں اور طلاق کے مطالبہ پر کہا "میں نے اس سے شرعی نام اتار دیا" تو کیا اس شخص کی بیوی

(اجاب) لم ار من تعرض لهذا في بائنہ ہوجائے گی یا نہیں؟ انہوں نے جواب دیا میں نے فقہاء کلامهم لكن رأيت فروعاً متعددة فی الكنايات تقتضی انه

کے کلام میں اس مسئلہ کے بیان کو نہیں پایا، لیکن میں نے کنایہ کے بہت سے مسائل

۱ طحطاوی علی الدرالمختار باب الکنایات دارالمعرفۃ بیروت ۱۳۸/۲ ۲ عقودالدریہ فی تنقیح الحامدیۃ کتاب الطلاق حاجی عبدالغفار قندھار افغانستان ۱/۷۳

| Irrevocable divorce (Talaq-e-Ba'in) occurs through such words if intention is present or indicated by circumstances. Therefore, it is necessary to issue a fatwa for its occurrence in this incident. Since it is known that the husband's statement in the mentioned case can only be a reply, and after contemplating the branches mentioned by the author of al-Bahr, al-Tatarkhaniyya, and others, I am certain that the ruling for the occurrence of divorce is as we have mentioned. (T) | I have seen these, in the light of which, in the aforementioned case, it will be an irrevocable divorce when intention is found or the indication of circumstances is found. Therefore, the fatwa for divorce in this mentioned incident will be fixed. When it is known that the husband's saying in the mentioned problem can only be a reply, and I have reflected on the branches mentioned in Bahr, Tatarkhaniyya, etc., then I am certain that the ruling on the occurrence of divorce is just as we have mentioned. (T) |

123 "You are not fit for me until Judgment Day or 124 for life," | In al-Khulasa: If a man says to his wife: "You are not suitable for me until the Day of Judgment or for life," divorce does not occur without intention. | It is in al-Khulasa: If he said to his wife, "You are not fit for me until the Day of Judgment or for life," then divorce will not occur without intention. (T) |

125 "You are as far from me as Makkah al-Mu'azzamah is from Madinah al-Tayyibah or Delhi from Lucknow," | In al-Khulasa: If he said to her, "You are as far as Makkah is from Madinah," divorce does not occur without intention. | It is in al-Khulasa: If he said to his wife, "You are as far from me as Madinah Munawwarah is from Makkah Mukarramah," then divorce will not occur without intention. (T) |

In all these cases, if there is an intention for divorce, then an irrevocable divorce (Talaq-e-Ba'in) will occur. Then she is an irrevocably divorced woman (without the particle of conjunction) or "So you are a divorced then irrevocable woman," the most obscene divorce upon you, a satanic divorce, a divorce of innovation (bid'ah), a worse divorce, like a mountain, like a thousand, a roomful, a severe or long or wide divorce, the worst, the hardest, the dirtiest, the most impure, the toughest, the biggest, the widest, the longest, the thickest divorce, the greatest divorce.

1 Al-Fatawa al-Khayriyya, Book of Divorce, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 1/50 2 Khulasat al-Fatawa, Chapter Two on Kinayat (Allusions), Maktaba Habibiyya Quetta, 2/100 3 Khulasat al-Fatawa, Book of Divorce, Maktaba Habibiyya Quetta, 2/99

| इस तरह के शब्दों से तलाक-ए-बाइन (अटल तलाक) हो जाती है यदि इरादा (नीयत) मौजूद हो या परिस्थितियों से इसका संकेत मिलता हो। इसलिए, इस घटना में इसके होने का फ़तवा देना आवश्यक है। चूँकि यह ज्ञात है कि उल्लिखित मामले में पति का कथन केवल एक उत्तर हो सकता है, और अल-बहर, अल-ततरखनियाह और अन्य के लेखक द्वारा उल्लिखित शाखाओं पर विचार करने के बाद, मुझे यकीन है कि तलाक होने का नियम वैसा ही है जैसा हमने उल्लेख किया है। (त) | इन्हें देखा है, जिनकी रोशनी में उपर्युक्त स्थिति में तलाक-ए-बाइन होगी जब नीयत पाई जाए या हाल (परिस्थिति) की दलालात पाई जाए, इसलिए इस उपर्युक्त हादसे में तलाक का फतवा मुतय्यन होगा। जब मालूम हो गया कि मसला-ए-मज़कूर में खाविंद का कौल जवाब ही हो सकता है और मैंने बहर और ततरखनिया वगैरह हुमा में मज़कूर फरूआत (शाखाओं) में गौर किया, तो मुझे यकीन हो गया कि तलाक के वुकू(होने) का हुक्म ऐसे ही है जैसे हमने ज़िक्र किया है। (त) |

123 "तू मेरे योग्य नहीं क़यामत तक या 124 उम्र भर," | अल-खुलासा में: और अगर किसी ने अपनी पत्नी से कहा: "तू मेरे योग्य नहीं क़यामत तक या उम्र भर," तो नीयत के बिना तलाक नहीं होगी। | खुलासा में है: अगर बीवी को कहा "तू मेरे लायक नहीं है क़यामत तक या उम्र भर, तो नीयत के बगैर तलाक न होगी। (त) |

125 "तू मुझ से ऐसी दूर है जैसे मक्का मुअज़्ज़मा मदीना तय्यबा से या दिल्ली लखनऊ से," | अल-खुलासा में: और अगर उसने उससे कहा कि तू उतनी दूर है जितना मक्का मदीना से है, तो नीयत के बिना तलाक नहीं होगी। | खुलासा में है: अगर बीवी को कहा "तू मुझ से ऐसी दूर है जैसे मदीना मुनव्वरा से मक्का मुकर्रमा" तो बगैर नीयत तलाक न होगी। (त) |

इन सब सूरतों में अगर तलाक की नीयत हो तो तलाक-ए-बाइन पड़ जाएगी, तो मुतल़्लका-ए-बाइन है (बगैर हरफ़-ए-अतफ़ के) या तू मुतल़्लका फिर बाइन है, तुझ पर सब से फहश तरीन (अश्लील) तलाक, शैतानी तलाक, बिदअत की तलाक, बदतर तलाक, पहाड़ की मिस्ल (तरह), हज़ार की मिस्ल, कोठरी भर के सख्त या लम्बी या चौड़ी तलाक, सब से बुरी, सब से कड़ी, सब से गंदी, सब से नापाक, सब से कड़ी, सब से बड़ी, सब से चौड़ी, सब से लम्बी, सब से मोटी तलाक, कलां तर (बहुत बड़ी) तलाक।

1 अल-फ़तावा अल-खैरिया, किताबुत तलाक, दारु एहयाउत्तुरसा अल-अरबी, बेरूत, 50/1 2 खुलासातुल फ़तावा, अल-फ़सलुस सानी फिल किनायात, मकतबा हबीबिया क्वेटा, 100/2 3 खुलासातुल फ़तावा, किताबुत तलाक, मकतबा हबीबिया क्वेटा, 99/2

पृष्ठ 688 में से 527

| یقع بمثلہ الطلاق البائن اذا وجدت النیۃ اودلالۃ الحال فتعین الافتاء بالوقوع فی الحادثۃ واذا علمت ان ھذا یصلح جوابا لارد ا وشتمیۃ وتأملت فی فروع ذکرھا صاحب البحر والتتارخانیۃ وغیرھا قطعت بما ذکرنا۔ | دیکھے ہیں جن کی روشنی میں اس صورت مذکورہ میں طلاق بائنہ ہوگی جب نیت پائی جائے یا حال کی دلالت پائی جائے، لہذا اس مذکورہ حادثہ میں طلاق کا فتوٰی متعین ہوگا، جب معلوم ہوگیا کہ مسئلہ مذکور میں خاوند کا قول جواب ہی ہوسکتا ہے اور میں نے بحر اور تاتارخانیہ وغیرہ ہما میں مذکور فروعات میں غور کیا، تو مجھے یقین ہوگیا کہ طلاق کے وقوع کا حکم ایسے ہی ہے جیسے ہم نے ذکر کیا ہے۔ (ت) |

۱۲۳"تو میرے لائق نہیں قیامت یا ۱۲۴عمر بھر، | فی الخلاصۃ ولو قال لامرأتہ: تو مرا نہ شائی تا قیامت او بہ عمر، لا یقع الطلاق بدون النیۃ- | خلاصہ میں ہے: اگر بیوی کو کہا "تو میرے لائق نہیں ہے قیامت تک یا عمر بھر، تو نیت کے بغیر طلاق نہ ہوگی۔ (ت) |

۱۲۵"تو مجھ سے ایسی دُور ہے جیسے مکہ معظمہ مدینہ طیبہ سے یا دِلی لکھنو سے، | فی الخلاصۃ ولو قال لہا تو از چناں دُوری کہ مکہ از مدینہ لایقع الطلاق بدون النیۃ- | خلاصہ میں ہے: اگر بیوی کو کہا "تو مجھ سے ایسی دور ہے جیسے مدینہ منورہ سے مکہ مکرمہ" تو بغیر نیت طلاق نہ ہوگی۔ (ت) |

ان سب صورتوں میں اگر طلاق کی نیت ہو طلاق بائن پڑ جائے گی، تو مطلقہ بائنہ ہے (بے حرف عطف) یا تو مطلقہ پس بائنہ ہے تجھ پر سب سے فحش تر طلاق، شیطانی طلاق، بدعت کی طلاق، بدتر طلاق، پہاڑ کی مثل، ہزار کے مثل، کوٹھری بھر کے، سخت یا لمبی یا چوڑی طلاق، سب سے

بری، سب سے کڑی، سب سے گندی، سب سے ناپاک، سب سے کڑی، سب سے بڑی، سب سے چوڑی، سب سے لمبی، سب سے موٹی طلاق، کلاں تر طلاق،

---

1 الفتاوی الخیریہ کتاب الطلاق دار احیاء التراث العربی بیروت ۵۰/۱ 2 خلاصۃ الفتاوی الفصل الثانی فی الکنایات مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۱۰۰/۲ 3 خلاصۃ الفتاوی کتاب الطلاق مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۹۹/۲

Fatawa Razawiya - Volume 12

[Table/Column 1] Arabic text: It is stated in al-Durr: An irrevocable divorce (talaq bain) occurs by saying 'You are divorced irrevocably,' or the foulest divorce, or the devil's divorce, or the heretical divorce, or the worst divorce, or like a mountain, or like a thousand, or filling the house, or a severe, long, wide, or most evil, or most intense, or most foul, or biggest, or widest, or longest, or thickest, or greatest divorce, provided three were not intended. Also, if mentioned with the letter 'fa' (i.e., in saying 'you are divorced, so you are irrevocable'), it is irrevocable according to Dhakirah. (Summarized)[1] Urdu text: It is in Durr al-Mukhtar: If a husband says to his wife: 'You have an irrevocable divorce (bain talaq), the most obscene divorce, satanic divorce, the worst divorce, heretical divorce, or equal to a mountain, or equal to a thousand, or a room-full of divorce, severe divorce, long, wide, worst of all, most intense, biggest, widest, longest, thickest, greatest divorce.' In all these cases, it will be one irrevocable divorce provided the intention for three was not made. And if 'irrevocable' (bain) is mentioned with 'fa', for example, 'so you are an irrevocable divorcee' (fubainatun), it will be irrevocable. Dhakirah. (T)

[Table/Column 2] 23. A divorce upon you by which you become independent. Arabic text: In al-Durr: Just as an irrevocable divorce occurs if he says: 'You are divorced with a divorce by which you possess yourself,' for she does not possess herself except with an irrevocable divorce.[2] Urdu text: It is in Durr al-Mukhtar: If he said "A divorce upon you by which you become independent", then an irrevocable divorce (talaq bain) will occur because a wife cannot become her own master without an irrevocable divorce. (T)

[Table/Column 3] 24. An irrevocable divorce upon you. Arabic text: In Radd al-Muhtar under his saying "because she does not possess herself": It was explicitly stated in al-Bada'i', and it says: When divorce is described with an attribute that signifies irrevocability (bainunah), it becomes irrevocable. This attribute is in the sense of saying: "You are divorced with an irrevocable divorce," etc.[3] Urdu text: In Radd al-Muhtar, under the author's statement that "she will not be the owner of herself," it is clarified in al-Bada'i', where it says that when a divorce is described with an attribute that indicates it being irrevocable, then that divorce will be irrevocable. And this attribute is in the sense of "you are one with an irrevocable divorce," etc. (T)

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on Explicit Divorce, Mujtabai Press, Delhi, 1/222. 2 Durr al-Mukhtar, Chapter on Explicit Divorce, Mujtabai Press, Delhi, 1/222. 3 Radd al-Muhtar, Chapter on Explicit Divorce, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/504.

फ़तावा रज़विया - खंड 12

[टेबल/कॉलम 1] अरबी पाठ: अल-दुर्र में है: एक अटल तलाक (तलाक बइन) तब होता है जब कहा जाए 'तुम्हें अटल तलाक दिया गया है,' या सबसे गंदा तलाक, या शैतान का तलाक, या विधर्मी तलाक, या सबसे बुरा तलाक, या पहाड़ की तरह, या एक हजार की तरह, या घर भरने वाला, या गंभीर, लंबा, चौड़ा, या सबसे बुरा, या सबसे तीव्र, या सबसे गंदा, या सबसे बड़ा, या सबसे चौड़ा, या सबसे लंबा, या सबसे मोटा, या सबसे बड़ा तलाक, बशर्ते कि तीन का इरादा न हो। इसके अलावा, यदि 'फ़ा' अक्षर के साथ उल्लेख किया गया है (यानी, यह कहने में कि 'तुम्हें तलाक दिया गया है, इसलिए तुम अटल हो'), तो ज़खिरा के अनुसार यह अटल है। (संक्षिप्त)[1] उर्दू पाठ: दुर्रे मुख्तार में है: यदि पति अपनी पत्नी से कहे: 'तुझे बइन तलाक़ (अटल तलाक), सबसे घृणित तलाक़, शैतानी तलाक़, सबसे बुरा तलाक़, बिदअत तलाक़, या पहाड़ के बराबर, या हज़ार के बराबर, या कमरा भर तलाक़, तीव्र तलाक़, लंबा, चौड़ा, सबसे बुरा, सबसे तीव्र, सबसे बड़ा, सबसे चौड़ा, सबसे लंबा, सबसे गाढ़ा, सबसे महान तलाक़।' तो इन सभी स्थितियों में एक बइन (अटल) तलाक़ होगी बशर्ते कि यहाँ भी तीन की नियत (इरादा) न की गई हो। और यदि 'बइन' को 'फ़ा' के साथ उल्लेख करे, उदाहरण के लिए "तो तलाक़ वाली फ़-बइना" कहा, तो वह बइन होगी। ज़ख़ीरा। (त)

[टेबल/कॉलम 2] 23. तुझ पर ऐसी तलाक़ जिससे तू अपने अधिकार में हो जाए। अरबी पाठ: अल-दुर्र में: जिस तरह एक अटल तलाक होता है यदि वह कहता है: 'तुम्हें एक ऐसे तलाक के साथ तलाक दिया गया है जिसके द्वारा तुम खुद की मालिक बन जाओ,' क्योंकि वह अटल तलाक के बिना खुद की मालिक नहीं होती है।[2] उर्दू पाठ: दुर्रे मुख्तार में है: यदि कहा "तुझ पर ऐसी तलाक़ जिससे तू अपने अधिकार में हो जाए" तो बइन तलाक़ प्रभावी होगी क्योंकि पत्नी बइन तलाक़ के बिना अपनी मालिक नहीं हो सकती। (त)

[टेबल/कॉलम 3] 24. तुझ पर बइन तलाक़। अरबी पाठ: रद अल-मुह्तार में उनके इस कथन के तहत कि "क्योंकि वह खुद की मालिक नहीं होती": अल-बदई में स्पष्ट रूप से कहा गया था, और यह कहता है: जब तलाक को एक ऐसे गुण के साथ वर्णित किया जाता है जो अटल होने (बइनूना) को दर्शाता है, तो यह अटल हो जाता है। यह गुण यह कहने के अर्थ में है: "तुम्हें एक अटल तलाक के साथ तलाक दिया गया है," आदि।[3] उर्दू पाठ: रद अल-मुह्तार में लेखक के कथन "अपने नफ़्स की मालिक न होगी" के तहत है, इसकी व्याख्या बदाइ में की गई है, और कहा गया है कि जब तलाक़

को ऐसे गुण से वर्णित किया जाए जो उसके बइन होने का संकेत दे, तो वह तलाक़ बइन होगी। और यह गुण "तू बइन तलाक़ वाली है" के अर्थ में होगा, आदि। (त)

---

1 दुर्रे मुख्तार, बाब अल-सरीह, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/222। 2 दुर्रे मुख्तार, बाब अल-सरीह, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/222। 3 रद अल-मुह्तार, बाब अल-सरीह, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/504।

فتاوی رضویہ - جلد دوازدہم

[پہلا کالم] في الدر يقع بقوله انت طالق بائن او افحش الطلاق او طلاق الشيطان والبدعة او اشر الطلاق او كالجبل او كالف او ملئ البيت او تطليقة شديدة او طويلة او عريضة او اسوأه او اشده او اخبثه او اكبره او اعرضه او اطوله او اغلظه او اعظمه واحدة بائنة ان لم ينو ثلاثاً، فيه ایضاً ولو بالفاء (ای فی قوله انت طالق فبائن) فبائنة ذخيرة- (ملخصاً)[1] درّمختار میں ہے: خاوند نے بیوی کو کہا تجھے بائن طلاق، فحش تر طلاق، شیطانی طلاق، بدتر طلاق، بدعت طلاق، یا پہاڑ برابر، یا ہزار برابر، کوٹھری بھر طلاق، شدید طلاق، طویل، عریض، سب سے بری، سب سے شدید، سب بڑی، سب سے عریض سب سے طویل، سب سے غلیظ، سب سے عظیم طلاق۔ تو ان تمام صورتوں میں ایک بائنہ طلاق ہوگی جبکہ یہاں بھی تین کی نیت نہ کی ہو۔ اور اگر بائن کو ف کے ساتھ ذکر کرے مثلاً "تو طلاق والی فبائنہ" کہا تو بائنہ ہوگی۔ ذخیرہ۔ (ت)

[دوسرا کالم] ۲۳ تجھ پر ایسی طلاق جس سے تو اپنے اختیار میں ہو جائے، في الدر كما يقع البائن لو قالت انت طالق طلقة تملكي بها نفسك لانها لا تملك نفسها الا بالبائن-[2] درّمختار میں ہے: اگر کہا " تجھ پر ایسی طلاق جس سے تو اپنے اختیار میں ہو جائے" تو بائنہ طلاق واقع ہوگی کیونکہ بیوی بائنہ طلاق کے بغیر اپنی مالک نہیں ہوسکتی (ت)

[تیسرا کالم] ۲۴ تجھ پر بائن طلاق، في ردالمحتار تحت قوله لانه لا تملك نفسها صرح به في البدائع وقال اذا وصف الطلاق بصفة تدل على البينونة كان بائناً اه وهذه الصفة بمعنى قوله انت طالق طلقة بائنة الخ-[3] ردالمحتار میں ماتن کے قول کہ "اپنے نفس کی مالک نہ ہوگی" کے تحت ہے اس کی تصریح بدائع میں کی ہے، اور کہا کہ جب طلاق ایسے وصف سے موصوف ہو جو بائنہ ہونے پر

دلالت کرے تو وہ طلاق بائنہ ہوگی اھ، اور یہ صفت "تو بائنہ طلاق والی ہے" کے معنی میں ہوگی الخ (ت)

---

[1] درمختار باب الصریح مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۲۲ [2] درمختار باب الصریح مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۲۲ [3] ردالمحتار باب الصریح داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۵۰۴

Fatawa Razawiyya Volume 12

"On you is that divorce in which I have no right of return (ruju'), in this, by consensus of our Imams' school of thought, it will be an irrevocable divorce (Talaq-e-Ba'in). And if he said, 'You are divorced on the condition that I have no right of return,' it is stated in Al-Jawhara that it will be a revocable divorce (Raj'i), and the view of it being Ba'in is stated as weak. However, in Tabyeen al-Haqa'iq, Ghayat al-Bayan, and Fath al-Qadir, it is stated that firstly, its being Raj'i is not accepted by us, and even if it were, the reason for it is a discussion by which the occurrence of Ba'in is not proven as the original school of our Imams in this case, although in Bahr al-Ra'iq, based on this same discussion, it was concluded that here the occurrence of Ba'in is our school of thought."

[Table/Box 1] Left Column (Arabic): In Al-Bahr from Al-Jawhara: if he said, 'You are divorced on the basis that I have no return over you,' it is void and he owns the return. It was said: one Ba'in occurs, and if he intended three, then three [occur]. End. And the apparent meaning in Al-Hidaya is that the second view is the school of thought, for he said: 'And if the divorce is described with a kind of severity and increase, it is Ba'in.' End. Right Column (Urdu): It is narrated in Bahr from Al-Jawhara: If the husband said, 'I divorce you on this condition in which I have no right of return,' then this will be revocable (Raj'i), and some said one irrevocable (Ba'ina) will occur, and if he intended three, they will be three. And from the statement of Hidaya, it appears that the second saying is the chosen school of thought because he said that if divorce is described with some intensity and excess, it will be Ba'ina. End. (T)

"Besides this, there is a third scenario: that 'I divorce you and I have no right of return.' In this, it will undoubtedly be Raj'i as in Ash-Shami and as will come later (T). Similarly, if he said 'Talaq is upon you on the condition that there is no return after it,' rather he said like this, 'upon you is that divorce after which there is no return,' rather he said like this, 'upon you is that divorce after which there will be no return,' then in all these scenarios it should be Raj'i without dispute."

[Table/Box 2] Left Column (Arabic): The secret in it is that the scenarios here are three: conjunction, condition, and description. Like his saying: 'You are divorced and I have no return over you,' or 'You are divorced on the condition that I have no return over you,' or 'You are divorced a [certain kind of] divorce...' Right Column (Urdu): The secret in this is that there are three scenarios here: one is conjunction (atf), second is condition (shart), third is description (wasf). First, like he says 'I divorce you and I

have no right of return over you.' Second, like he says 'I divorce you on the condition that for me...'

1. Bahr al-Ra'iq, Chapter of Kinaya, H.M. Saeed Company Karachi, 291/3.

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

"तुझ पर वह तलाक़ जिसमें मुझे रुजू का अधिकार नहीं है, इसमें हमारे इमामों के मज़हब में सर्वसम्मति से 'तलाक़-ए-बाइन' (अपरिवर्तनीय तलाक़) होगी। और अगर यह कहा 'तुझ पर तलाक़ है इस शर्त पर कि मुझे रुजू का अधिकार नहीं है', तो 'जौहरा' में फरमाया कि इसमें 'रजई' (परिवर्तनीय) होगी, और बाइन होने को कमज़ोर बताया। मगर 'तबीय्युल हक़ाएक़', 'ग़ायतुल बयान' और 'फतहुल क़दीर' में फरमाया कि पहली बात तो यह है कि हमारे पास इसका रजई होना स्वीकार्य नहीं है, और अगर हो भी तो इसकी वजह यह है कि यह एक बहस है जिससे असल में हमारे इमामों के मज़हब में इस सूरत में बाइन का होना साबित नहीं होता, हालांकि 'बहरुर राइक़' में इसी बहस की बिना पर यह तय किया गया है कि यहाँ बाइन का होना ही हमारा मज़हब है।"

[तालिका/बॉक्स 1] बायां कॉलम (अरबी): 'बहर' में 'जौहरा' के हवाले से है: अगर उसने कहा कि तुझे तलाक़ है इस आधार पर कि मुझे तुझ पर रुजू का हक़ नहीं, तो यह (शर्त) निरर्थक है और उसे रुजू का अधिकार होगा। और कहा गया कि एक बाइन तलाक़ होगी, और अगर उसने तीन की नीयत की तो तीन होंगी। (समाप्त)। और 'हिदाया' में जो है उससे ज़ाहिर होता है कि दूसरा कौल (मत) ही मज़हब है, क्योंकि उसने कहा कि अगर तलाक़ को किसी प्रकार की शिद्दत और ज़्यादती के साथ वर्णित किया जाए, तो वह बाइन होगी। (समाप्त)। दायां कॉलम (उर्दू): बहर में जौहरा से नक़ल है: अगर शौहर ने कहा कि तुझे तलाक़ इस शर्त पर जिसमें मुझे रुजू का इख़्तियार नहीं, तो यह रजई होगी, और बाज़ ने कहा एक बाइनह वाक़े होगी, और अगर तीन की नीयत की तो तीन होंगी। और हिदाया के बयान से ज़ाहिर यह है कि दूसरा कौल मुख़्तार (चुना हुआ) मज़हब है क्योंकि उसने कहा कि अगर तलाक़ को किसी शिद्दत और ज़्यादती के साथ मौसूफ़ (विशेषित) किया जाए तो वह बाइनह होगी। समाप्त। (त)

"इसके सिवा तीसरी सूरत एक और है वह यह कि 'तुझे तलाक़ है और मुझे रुजू का इख़्तियार नहीं', इसमें बिला-शुबा (निस्संदेह) रजई होगी जैसा कि 'शामी' में है और आगे आएगा (त)। इसी तरह अगर कहा 'तुझ पर तलाक़ है इस शर्त पर कि इसके बाद रुजू नहीं', बल्कि यूँ कहा 'तुझ पर वह तलाक़ है जिसके बाद रुजू नहीं', बल्कि यूँ कहा कि 'तुझ पर वह तलाक़ है जिसके बाद रुजू न होगी', तो इन सब सूरतों में बिला-इख़्तिलाफ़ (बिना विवाद) रजई होना चाहिए।"

[तालिका/बॉक्स 2] बायां कॉलम (अरबी): इसमें राज़ (राज़ की बात) यह है कि यहाँ तीन सूरतें हैं: अत्फ़ (संयोजन), शर्त और वस्फ़ (विशेषण)। जैसे उसका कहना: 'तुझे तलाक़ है और मेरा तुझ पर कोई रुजू नहीं', या 'तुझे तलाक़ है इस शर्त पर कि मेरा तुझ पर कोई रुजू नहीं', या 'तुझे तलाक़ है एक ऐसी तलाक़...' दायां कॉलम (उर्दू): इसमें राज़ यह है कि यहाँ तीन सूरतें हैं, एक अत्फ़, दूसरी शर्त, तीसरी वस्फ़। पहली, जैसे कहे 'तुझे तलाक़ और मुझे रुजू का हक़ तुझ पर नहीं।' दूसरी, जैसे कहे 'तुझे तलाक़ इस शर्त पर कि मुझे...'

1. बहरुर राइक़, बाबुल किनायात, एच. एम. सईद कंपनी कराची, 291/3

"تجھ پر وہ طلاق جس میں مجھے رجعت کا اختیار نہیں، اس میں بالاتفاق ہمارے ائمہ کے مذہب میں طلاق بائن ہوگی۔ اور اگر یہ کہا 'تجھ پر طلاق ہے اس شرط پر کہ مجھے رجعت کا اختیار نہیں، جوہرہ میں فرمایا کہ اس میں رجعی ہو گی، اور بائن ہونے کو ضعیف بتایا مگر تبیین الحقائق اور غایۃ البیان اور فتح القدیر میں فرمایا کہ اوّل تو ہمیں رجعی ہونا مسلم نہیں اور ہو بھی تو اس کی وجہ یہ ہے یہ ایک بحث ہے جس سے اصلاً مذہب ہمارے ائمہ کا اس صورت میں وقوع بائن ہونا ثابت نہیں ہوتا اگر چہ بحر الرائق میں اسی بحث کی بناء پر جزم فرمایا کہ یہاں وقوع بائن ہمارا مذہب ہے،"

[باکس 1] کالم بائیں (عربی): في البحر عن الجوهرة ان قال انت طالق على انه لا رجعة لی عليك يلغو ويملك الرجعة وقيل تقع واحدة بائنة وان نوى الثلث فثلاث اهـ وظاهر ما في الهداية ان المذهب الثاني فانه قال واذا وصف الطلاق بضرب من الشدة والزيادة كان بائنا اهـ کالم دائیں (اردو): بحر میں جوہرہ سے منقول ہے: اگر خاوند نے کہا تجھے طلاق اس شرط پر جس میں مجھے رجعت کا اختیار نہیں، تو یہ رجعی ہوگی، اور بعض نے کہا ایک بائنہ واقع ہو گی، اور اگر تین کی نیت کی تو تین ہوں گی۔ اور ہدایہ کے بیان سے ظاہر یہ ہے کہ دوسرا قول مختار مذہب ہے کیونکہ اس نے کہا کہ اگر طلاق کو کسی شدت اور زیادتی کے ساتھ موصوف کیا جائے تو وہ بائنہ ہوگی اھ (ت)

"اس کے سوا تیسری صورت ایک اور ہے وہ یہ کہ تجھے طلاق ہے اور مجھے رجعت کا اختیار نہیں، اس میں بلا شبہ رجعی ہو گی کما فی الشامی و یاتی (جیسا کہ شامی میں ہے اور آگے آئے گا۔ ت) یو نہی اگر کہا تجھ پر طلاق ہے اس شرط پر کہ اس کے بعد رجعت نہیں بلکہ یوں کہا تجھ پر

وہ طلاق ہے جس کے بعد رجعت نہیں بلکہ یوں کہا کہ تجھ پر وہ طلاق ہے جس کے بعد رجعت نہ ہو گی، تو ان سب صورتوں میں بلا خلاف رجعی ہونا چاہئے،"

[باکس 2] کالم بائیں (عربی): والسر فیه ان الصور ههنا ثلث العطف والشرط و الوصف کقوله انت طالق ولارجعة لی علیك او انت طالق علی ان لا رجعة لی علیك او انت طالق طلقة کالم دائیں (اردو): اس میں راز یہ ہے کہ یہاں تین صورتیں ہیں، ایک عطف، دوسری شرط، تیسری وصف، پہلی، جیسے کہے 'تجھے طلاق اور مجھے رجوع کا حق تجھ پر نہیں۔' دوسری، جیسے کہے 'تجھے طلاق اس شرط پر کہ مجھے'

1 بحر الرائق باب الکنایات ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۹۱/۳

Fatawa-e-Razvia Volume 12

[Left Column (Arabic Text)]: There is no return for me upon you in it. The first is an independent statement that does not change what preceded it, so it remains according to its Sharia ruling. The second is an altering statement, and opinions differ on it. Whoever considers it a change to the legal ruling, annuls it and pronounces it as a revocable (raji'i) divorce because the condition for a revocable divorce is more worthy and reliable. "A condition not in the Book of Allah is void, even if there were a hundred conditions," as guided by the Sahih Hadith. And whoever relates it to the meaning of a description pronounces it as irrevocable (bain), not making it a change but rather an expression, as if he says, "My intention is a divorce in which there is no return." You know the first view is more apparent, but perhaps this is supported by the fact that acting upon words is better than neglecting them. As for the third, there is no doubt about it for us because it has been established that if a divorce is described with a degree of severity and increase, it is irrevocable. As for what I mentioned that a revocable divorce should occur without dispute when he says "You are divorced once, I will not return to you after it," the reasoning is that a revocable divorce does not necessitate a return, so its absence does not contradict it. Rather, it contradicts the lack of choice. Thus, it took the place of distancing, and with this amount, the option of return is not taken away. From this aspect, the possibility of this meaning was not a definitive text regarding intention.

[Right Column (Urdu Text)]: "...no right of return." Third, like saying "I give you that divorce in which I have no right of return to you." In the first case, due to the conjunction, it is an independent statement and will not change what preceded it, and the preceding statement will not be altered from its Sharia ruling. In the second case, due to the condition, it will alter the preceding statement. There are different views on this: one who considers it as an alterer for what precedes and changing the Sharia ruling, declared the condition void and the divorce as revocable (raji'i), because making it a condition for a revocable divorce is more weighty. They said a condition contrary to Allah's command is void, even if there were a hundred such conditions, as stated in the Sahih Hadith. As for the third case, it is a description; those who deemed it a description said that due to this description, it would be an irrevocable divorce (bainah). Therefore, according to them, this description is not a change of the previous statement but rather its expression, as if he said, "My intention for divorce is such a divorce in which I have no right of return." You know that the first case is clear, and in the second case, preference should be given to

considering the condition effective because making use of words is better than rendering them useless. In the third case, there is no doubt, because when divorce is described with a quality of severity and excess, it becomes irrevocable (bainah). However, regarding the husband's statement "I divorce you so that I will not return to you," which I mentioned that it is unanimously revocable...

[Footer] 1 Sahih al-Bukhari, Chapter 'If a condition is made in conditions that are not permissible', Qadimi Kutub Khana Karachi, 1/290. Page 530 of 688

फ़तावा-ए-रजविया जिल्द बारहवीं

[बायां कॉलम (अरबी पाठ)]: इसमें मेरा तुझ पर वापसी का अधिकार नहीं है। पहला एक स्वतंत्र कथन है जो अपने से पहले वाले को नहीं बदलता है, इसलिए वह अपने शरीयत के हुक्म पर बना रहता है। दूसरा परिवर्तक है और इसमें राय अलग-अलग है। जिसने इसे शरीयत के हुक्म के लिए बदलाव माना, उसने इसे अमान्य कर दिया और तलाक-ए-रजई को प्रभावी किया क्योंकि रजई की शर्त अधिक हक़दार और भरोसेमंद है। "और जो शर्त अल्लाह की किताब में नहीं है, वह बातिल है, चाहे सौ शर्तें ही क्यों न हों," जैसा कि सहीह हदीस ने निर्देशित किया है। और जिसने इसे वस्फ़ (गुण) के अर्थ में लिया, उसने तलाक-ए-बाइन को प्रभावी किया, इसे बदलाव नहीं बल्कि अभिव्यक्ति माना, मानो वह कह रहा है कि मेरा इरादा ऐसी तलाक है जिसमें वापसी का अधिकार न हो। आप जानते हैं कि पहला नज़रिया अधिक स्पष्ट है, लेकिन शायद इसकी पुष्टि इस बात से होती है कि शब्दों को अर्थ देना उन्हें व्यर्थ छोड़ देने से बेहतर है। रही बात तीसरे की, तो हमारे पास इसमें कोई संदेह नहीं है क्योंकि यह बताया जा चुका है कि जब तलाक को तीव्रता और अधिकता वाले वस्फ़ के साथ वर्णित किया जाए, तो वह बाइन होता है। जहाँ तक मैंने उल्लेख किया है कि रजई तलाक बिना किसी विवाद के होना चाहिए जब वह कहे "तुझे एक तलाक है, इसके बाद मैं तुझसे रुजू (वाپसी) नहीं करूँगा", तो इसका तर्क यह है कि रजई तलाक वापसी को अनिवार्य नहीं करता है, इसलिए उसकी अनुपस्थिति इसके विपरीत नहीं है। बल्कि यह विकल्प की कमी के विपरीत है। इस प्रकार इसने दूरी का स्थान ले लिया और इस मात्रा से रुजू का अधिकार समाप्त नहीं होता। इस दृष्टिकोण से, इस अर्थ की संभावना इरादे में कोई निर्णायक पाठ नहीं थी।

[दायां कॉलम (उर्दू पाठ)]: "...वापसी का अधिकार नहीं।" तीसरी, जैसे कहे "तुझे वह तलाक जिसमें मुझे तुझ पर वापसी का अधिकार नहीं।" पहली स्थिति में, संयोजक (अत्फ़) के कारण, यह एक स्वतंत्र कथन है और पहले जो कहा गया उसे नहीं बदलेगा, और पिछला कथन अपने शरीयत के हुक्म से नहीं बदलेगा। दूसरी स्थिति में, शर्त के कारण, यह पिछले कथन को बदल देगा। इसमें राय अलग-अलग है: जिसने इसे पिछले के लिए परिवर्तक माना और शरीयत के हुक्म को बदलते देखा, उसने शर्त को अमान्य घोषित किया और तलाक को रजई (प्रतिसंहरणीय) माना, क्योंकि इसे रजई की शर्त बनाना अधिक वज़नी है। उन्होंने कहा कि अल्लाह के हुक्म के ख़िलाफ़ शर्त बातिल है, चाहे ऐसी सौ शर्तें भी क्यों न हों, जैसा कि सहीह हदीस में बताया गया है। तीसरी स्थिति वस्फ़ (विशेषण) है; जिन्होंने इसे वस्फ़ माना, उन्होंने कहा कि इस वस्फ़ के कारण तलाक बाईना होगी। इसलिए, उनके अनुसार

यह वस्फ़ पहले के बयान में बदलाव नहीं है बल्कि इसकी व्याख्या है, मानो उसने कहा हो "तलाक से मेरा मतलब ऐसी तलाक है जिसमें मुझे वापसी का अधिकार न हो"। आप जानते हैं कि पहली स्थिति स्पष्ट है, और दूसरी स्थिति में शर्त को प्रभावी मानने को प्राथमिकता दी जाएगी क्योंकि किसी बात को अर्थपूर्ण बनाना उसे बेकार घोषित करने से बेहतर है। तीसरी स्थिति में कोई संदेह नहीं है क्योंकि जब तलाक को किसी गंभीर और अधिकता वाले वस्फ़ से वर्णित किया जाता है, तो वह तलाक बाईना हो जाती है। लेकिन पति के इस कथन "तुझे तलाक इस तरह कि मैं तुझसे रुजू न करूँगा" के बारे में जो मैंने ज़िक्र किया है कि इसमें सर्वसम्मति से रजई...

[पाद टिप्पणी] 1 सहीह अल-बुखारी, अध्याय 'जब शर्तों में ऐसी शर्तें लगाई जाएँ जो जायज़ न हों', क़दीमी कुतुब खाना कराची, 1/290। पृष्ठ 688 में से 530

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

[بایاں کالم (عربی متن)]: لا رجعة لی فیها علیك، الاول کلام مستقل لایغیر ماقبله فلایتغیر عن حکمه الشرعی والثانی مغیر ویختلف النظر فیه فمن نظر الی انه تغیر لحکم الشرع، الغاه و اوقع الرجعی لان شرط الرجعی احق واوثق و من شرط مالیس فی کتاب الله فشرطه باطل وان شرط مائة شرط کما ارشد الیه الحدیث الصحیح ومن ارجعه الی معنی الوصف اوقع به البائن فلم یجعله تغیرا بل تعبیرا کأنه یقول ان مرادی طلاق لارجعة لی فیه وانت تعلم ان الاول اظهر لکن ربما یؤید هذالان الاعمال اولی من الاهمال و اما الثالث فلاشبهة فیه عندنا لما مر انه اذا وصف الطلاق بضرب من الشدة والزیادة کان بائنا، اماماً ذکرت انه ینبغی وقوع الرجعی بلاخلاف فیما اذا قال انت طالق طلقة لا ارجعك بعدها فالوجه فیه ان الطلاق الرجعی لا یستلزم الرجعة فلا ینافی عدمها انما ینافی عدم اختیارها، فحل محل ابعاد وبهذا القدر لا یسلب منه خیار الرجعة فمن جهته احتمال هذا المعنی لم یکن نصاً فی ارادة

[دایاں کالم (اردو متن)]: رجوع کا حق نہیں ہے۔" تیسری، جیسے کہے "تجھے وہ طلاق جس میں مجھے تجھ پر رجوع کا حق نہیں"۔ پہلی صورت میں عطف کی وجہ سے مستقل کلام ہے ماقبل کو تبدیل نہیں کرے گا اور ما قبل اپنے شرعی حکم سے متغیر نہ ہوگا، اور دوسری صورت میں شرط کی وجہ سے ماقبل متغیر کرے گا، اور اس میں وجہ مختلف ہے، جس نے یہ وجہ بنائی کہ ماقبل کے لئے مغیر ہے اور شرعی حکم متغیر کر رہا ہے، تو اس شرط کو لغو قرار دیا اور ما قبل کو رجعی قرار دیا، کیونکہ اس کو رجعی کی شرط بنانا زیادہ وزنی ہے اور یہ کہا کہ اللہ کے حکم کے خلاف شرط باطل ہے، اگرچہ ایسی سو شرطیں بھی ہوں تو وہ باطل ہوں گی جیسا کہ حدیث صحیح میں ارشاد ہے۔ اور تیسری صورت وصف تو جس نے یہاں وصف قرار دیا انہوں نے کہا اس وصف کی وجہ سے طلاق بائنہ ہوگی، لہذا ان کے نزدیک یہ وصف پہلے بیان کی تبدیلی نہیں بلکہ

یہ اس کی تعبیر ہے گویا اس نے کہا "طلاق سے میری مراد ایسی طلاق جس میں مجھے رجوع کا حق نہ ہو"۔ آپ جانتے ہیں کہ پہلی صورت واضح ہے، اور دوسری صورت میں شرط کو موثر ماننے کو ترجیح ہو گی کیونکہ کسی کلام کو عمل میں لانا اسے مہمل قرار دینے سے بہتر ہے، اور تیسری صورت میں کوئی شبہ نہیں ہے کیونکہ جب طلاق کو کسی شدید اور زیادتی والے وصف سے موصوف کیا جائے تو وہ طلاق بائنہ ہو جاتی ہے، لیکن خاوند کے اس قول میں "تجھے طلاق وہ کہ میں تجھ سے رجوع نہ کروں گا" کے متعلق جو میں نے ذکر کیا ہے کہ اس میں بالاتفاق رجعی

[حاشیہ] 1 صحیح البخاری باب اذا اشترط فی شروطا لاتحمل قدیمی کتب خانہ کراچی 1/290

Fatawa Razawiyya, Volume 12

[Top Left Arabic Box] Separation did not occur with certainty due to doubt. If this is the case in a description, it is even more so in a condition. This is what appeared to me, so it should be referred to and refined. And Allah Almighty knows best.

[Top Right Urdu Box] Divorce should take place. The reason for this is that for a revocable divorce (Talaq Raj'i), return (ruju) is not mandatory but depends on the husband's will. Yes, the husband saying "I will not return" is contrary to the act of return, so this saying of his is far from return, not contradictory. Therefore, for this reason alone, the husband cannot be practically stopped from returning. So, based on this possibility, the aforementioned words "will not be a clear text for an irrevocable divorce (Talaq-e-Bain)". Due to this doubt, it will not be an irrevocable divorce. When there is this scope in the description, then in the condition there will be scope more appropriately. This is what became clear to me, however, one should refer to research and adopt clarification.

1. Veil yourself from me,

[Middle Left Arabic Box] As preceded from Al-Shami, and it is his saying "Veil yourself from me."

[Middle Right Urdu Box] As the statement of Shami has passed: "So, veil yourself from me." (T)

1. O haram, 29. You are haram, 30. You are haram to me, 31. I made you haram, 32. I made you haram for myself, 33. I am haram for you, 34. I made myself haram for you. Here only "I am haram" or "I made myself haram" is not sufficient until he says "for you".

[Bottom Left Arabic Box] In Radd al-Muhtar, it is said regarding "haram": it will soon be mentioned that an irrevocable divorce occurs by it without intention in our time due to common usage. There is no difference in that between "muharrama" or "hurmatuka", whether he says "upon me" or not, or "the halal of Muslims is haram for me", and "every halal is haram for me", and "you are with me in haram". And regarding his saying "I made myself haram", it is necessary to say "upon you". I say: and it is so; with these words, it is common usage among us, unlike what has passed from his saying "halal of Allah" or "halal of Muslims" or "every halal", for by these three, divorce does not occur.

[Bottom Right Urdu Box] It is in Radd al-Muhtar: The husband's saying "You are haram" will soon be mentioned that in our time, it has become a common usage for divorce, and it will result in divorce without intention. There is no difference between "muharrama" or "hurmatuka" (prohibited or I make you prohibited). And then, whether he says the word "upon me" or not, it will make no difference. And the husband saying, "the halal of Muslims is prohibited to me", and "every halal is prohibited to me", "you are with me in prohibited", there is no difference among these. However, in "hurmat-e-nafsi" (I made my soul prohibited)...

1 Radd al-Muhtar, Chapter on Express Words, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/249. Page 531 of 688

फतावा रज़विया, जिल्द 12

[शीर्ष बायाँ अरबी बॉक्स] विच्छेद (बैनूनत) संदेह से नहीं हुआ। यदि वर्णन (वस्फ) में यह स्थिति है, तो शर्त में यह और अधिक उपयुक्त है। यह मेरे सामने स्पष्ट हुआ है, अतः इसका पुनरीक्षण और संशोधन किया जाना चाहिए। और अल्लाह ताला सबसे अधिक जानता है।

[शीर्ष दायाँ उर्दू बॉक्स] तलाक होना चाहिए। इसकी वजह यह है कि तलाक-ए-रजई में रुजू (वापसी) अनिवार्य नहीं है बल्कि पति की इच्छा पर है। हाँ, पति का कहना "मैं रुजू नहीं करूँगा" रुजू के कार्य के विरुद्ध है, तो उसका यह कहना रुजू से दूर है, विरोधाभासी नहीं। इसलिए केवल इस कारण से पति को व्यावहारिक रूप से रुजू से नहीं रोका जा सकता। तो इस संभावना के आधार पर उक्त शब्द "तलाक-ए-बाइन के लिए स्पष्ट प्रमाण नहीं बन सकेंगे"। तो इस संदेह के कारण तलाक-ए-बाइन नहीं होगी। जब वर्णन में यह गुंजाइश है, तो शर्त में और अधिक गुंजाइश होगी। यह वह है जो मुझ पर स्पष्ट हुआ, हालांकि शोध की ओर लौटना और स्पष्टीकरण अपनाना चाहिए।

1. मुझसे पर्दा कर,

[मध्य बायाँ अरबी बॉक्स] जैसा कि शामी से पहले बताया गया है, और वह उनका कहना है "मुझसे पर्दा कर।"

[मध्य दायाँ उर्दू बॉक्स] जैसा कि शामी का बयान गुज़रा और वह, तो मुझसे पर्दा कर। (त)

1. ऐ हराम, 29. तू हराम है, 30. तुझ पर हराम है, 31. मैंने तुझे हराम किया, 32. मैंने तुझे अपने ऊपर हराम किया, 33. मैं तुझ पर हराम हूँ, 34. मैंने अपने आप को तुझ पर हराम किया। यहाँ केवल "हराम हूँ" या "मैंने अपने आप को हराम किया" काफी नहीं जब तक "तुझ पर" न कहे।

[नीचे बायाँ अरबी बॉक्स] रद-अल-मुहतार में "हराम" के बारे में कहा गया है: शीघ्र ही उल्लेख किया जाएगा कि हमारे समय में सामान्य व्यवहार (उर्फ़) के कारण बिना नियत के तलाक-ए-बाइन हो जाती है। इसमें "मुहर्रमा" या "हुरमतुका" के बीच कोई अंतर नहीं है, चाहे वह "मुझ पर" कहे या न कहे, या "मुसलमानों का हलाल मुझ पर हराम", और "हर हलाल मुझ पर हराम", और "तू मेरे साथ हराम में है"। और उनके इस कथन के बारे में "मैंने अपने आप को हराम किया", "तुझ पर" कहना आवश्यक है। मैं कहता हूँ: और ऐसा ही है; इन शब्दों के साथ यह हमारे यहाँ प्रचलित है, इसके विपरीत जो

"अल्लाह का हलाल" या "मुसलमानों का हलाल" या "हर हलाल" कहने से गुज़रा है, क्योंकि इन तीनों से तलाक नहीं होता है।

[नीचे दायाँ उर्दू बॉक्स] रद-अल-मुहतार में है: पति का कहना "तू हराम है" जल्द ही आएगा कि इससे हमारे ज़माने में तलाक के लिए उर्फ़ बन जाने के कारण बिना नियत तलाक हो जाएगी। इसमें "मुहर्रमा" या "हुरमतुका" (हराम की हुई या तुझे हराम करता हूँ) में कोई अंतर नहीं, और फिर "मुझ पर" का शब्द कहे या न कहे तो भी कोई अंतर न होगा, और पति का कहना, "मुसलमानों का हलाल मुझ पर हराम, और हर हलाल मुझ पर हराम, तू मेरे साथ हराम में है", इनमें कोई अंतर नहीं है, हालांकि हुरमत-ए-नफ्सी (मैंने अपने नफ़्स को हराम किया) के..

1 रद-अल-मुहतार, बाबू अल-सरीह, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/249 पेज 531 ऑफ़ 688

فتاوٰی رضویہ ، جلد دوازدہم

البینونۃ فلم یکن بائنًا بالشك، فاذا کان ھذا فی الوصف ففی الشرط اولی ھذا ماظھر لی فلیراجع ولیحرر، واللہ تعالٰی اعلم۔

طلاق ہونی چاہئے۔ اس کی وجہ یہ ہے کہ طلاقِ رجعی کو رجوع لازم نہیں ہے بلکہ خاوند کی مرضی پر ہے، ہاں خاوند کا کہنا "میں رجوع نہ کروں گا" رجوع کے عمل کے خلاف ہے تو اس کا یہ کہنا رجوع سے بعید ہے منافی نہیں، لہٰذا صرف اس وجہ سے خاوند کو عملاً رجوع سے نہیں روکا جاسکتا، تو اس احتمال کی بنا پر مذکورہ الفاظ "بائنہ طلاق کے لئے نص نہ بن سکیں گے" تو اس شک کی وجہ سے طلاق بائنہ نہ ہوگی۔ جب وصف میں یہ گنجائش ہے تو شرط میں بطریق اولٰی گنجائش ہوگی، یہ وہ ہے جو مجھ پر عیاں ہوا، تاہم تحقیق کی طرف رجوع اور وضاحت کو اختیار کرنا چاہئے۔

۲۷ مجھ سے پردہ کر،

کما تقدم عن الشامی وھو قولہ استتری منی۔

جیسا کہ شامی کا بیان گزرا اور وہ، تو مجھ سے پردہ کر۔ (ت)

۲۸ اے حرام، ۲۹ تو حرام ہے، ۳۰ تجھ پر حرام ہے، ۳۱ میں نے تجھے حرام کیا، ۳۲ میں نے تجھے اپنے اوپر حرام کیا، ۳۳ میں تجھ پر حرام ہوں، ۳۴ میں نے اپنے آپ کو تجھ پر حرام کیا۔ یہاں فقط حرام ہوں یا میں نے اپنے آپ کو حرام کیا کافی نہیں جب تک تجھ پر نہ کہے۔

فی ردالمحتار قولہ حرام سیأتی وقوع البائن بہ بلانیۃ فی زماننا للتعارف لافرق فی ذلك بین محرمۃ وحرمتك سواء قال علی اولا، او حلال المسلمین علی حرام وکل حل علی حرام وانت معی فی الحرام

وفی قولہ حرمت نفسی لابد ان یقول علیك اھـ قلت وھو کذلك بھذہ الالفاظ متعارف عندنا بخلاف مامُر من قولہ حلال اللہ او المسلمین اوکل حلال فبھذہ الثلثۃ لا یقع الطلاق

ردالمحتار میں ہے: خاوند کا کہنا "تو حرام ہے" عنقریب آئے گا کہ اس سے ہمارے زمانہ میں طلاق کے لیے عرف بن جانے کی وجہ سے بغیر نیت طلاق ہوجائے گی۔ اس میں محرمہ یا حرمتک (حرام شدہ یا تجھے حرام کرتا ہوں) میں کوئی فرق نہیں، اور پھر "مجھ پر" کا لفظ کہے یا نہ کہے تو بھی کوئی فرق نہ ہوگا، اور خاوند کا کہنا، مسلمانوں کا حلال مجھ پر حرام، اور ہر حلال مجھ پر حرام، تو میرے ساتھ حرام میں ہے، ان میں کوئی فرق نہیں، تاہم حرمتِ نفسی (میں نے اپنے نفس کو حرام کیا) کے

۱ ردالمحتار باب الصریح داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۴۹/۲ Page 531 of 688

Fatawa Ridawiyya Volume 12

[Text on the top right:] ...unless there is an intention, due to the lack of custom in our time. It is necessary to say 'upon you' (alayk) with it. I say (the author): For this word, the ruling in our time is also that divorce will occur without intention. However, phrases like "Allah's lawful [is forbidden]" or "Muslims' lawful [is forbidden]" or "Every lawful thing is forbidden for me" are contrary to this; with these three phrases, divorce will not occur without intention because they are not well-known for divorce in our time. (T)

(35) One divorce equal to a thousand divorces: [Arabic quote:] Shami reports from al-Bahr: "And in [the phrase] 'one like a thousand', it is [considered] one by consensus, even if he intended three."[1] Shami quoted from al-Bahr that there is consensus that "one divorce equal to a thousand divorces" results in only one divorce, even if he intended three. (T) In all these cases, a ruling of irrevocable (ba'in) divorce will be given without the need for intention.

Some words for revocable (raj'i) divorce are: 1. I gave you divorce (Main ne tujhe talaq di), 2. O divorced woman (with tashdid on 'lam') (Ay mutallaqah), 3. O caught by divorce (Ay talaq giriftah), 4. O divorce was given (Ay talaq di gayi), 5. O divorcee (Ay talaqan), 6. O divorced (Ay talaq shudah), 7. O divorce recipient (Ay talaq yaftah), 8. O divorce-done (Ay talaq kardah),

[Arabic quote:] In al-Durr: "And you are divorced (tāliq)" or "divorced (mutallaqah)" with tashdid.[2] In al-Durr it is stated: "You are divorced (talaq wali)" or "divorced (talaq di hui)" with tashdid. (T)

1. O divorce-given (Ay talaq dadah), [Arabic quote:] In al-Khizānah: "If he said to her 'O divorced one', one [divorce] occurs."[3] In al-Khizānah it is stated: If he said "O divorced one" (Ay talaq di hui), then one divorce will occur. (T)

However, if this woman had received a divorce from her first husband and the current husband said these eight phrases with that meaning (referring to her past), then no divorce will occur.

[Arabic quote:] In al-Khāniyah: A man said to his wife, "O divorced one," and she had a husband before him who had divorced her... In al-Khāniyah it is stated: If a husband said to his wife "O divorced one" (Ay talaq di hui), while this wife had previously been divorced by another husband...

[1] Radd al-Muhtar, Chapter on Metaphors (Kitab al-Kinayat), Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/464. [2] Durr al-Mukhtar, Chapter on Explicit Divorce (Bab al-Sarih), Matba' Mujtabai, Delhi, 1/218. [3] Khizanat al-Muftin, Chapter on Explicit Divorce, Manuscript, 1/110.

फ़तावा रज़विय्या, जिल्द बारहवीं

[ऊपर दाईं ओर का पाठ:] ...सिवाय नीयत के, क्योंकि हमारे समय में इसका प्रचलन नहीं है। इसके साथ 'तज पर' (अलैका) कहना ज़रूरी है। मैं (लेखक) कहता हूँ: इस शब्द के बारे में हमारे ज़माने में भी यही हुक्म है कि बिना नीयत के तलाक़ हो जाएगी, लेकिन "अल्लाह का हलाल [मुझ पर हराम है]" या "मुसलमानों का हलाल" या "हर हलाल मुझ पर हराम है" इसके विपरीत हैं; इन तीन जुमलों से बिना नीयत तलाक़ नहीं होगी क्योंकि हमारे समय में ये तलाक़ के लिए प्रसिद्ध नहीं हैं। (त)

(35) हज़ार तलाक़ के बराबर एक तलाक़: [अरबी उद्धरण:] शामी ने अल-बहर से उद्धृत किया: "'एक हज़ार के समान' में सर्वसम्मति से एक ही तलाक़ होगी, चाहे उसने तीन की नीयत की हो।"[1] शामी ने बहर से नक़ल किया कि "हज़ार तलाक़ के बराबर एक तलाक़" में इत्तिफ़ाक़ है कि एक ही होगी चाहे वह तीन की नीयत करे। (त) इन सभी सूरतों में बिना नीयत की ज़रूरत के तलाक़-ए-बाइन (अटल तलाक़) का हुक्म दिया जाएगा।

तलाक़-ए-रजई (प्रतिसंहरणीय तलाक़) के कुछ शब्द ये हैं: 1. मैंने तुझे तलाक़ दी, 2. ऐ मुतल्लक़ा (लाम पर तशदीद के साथ), 3. ऐ तलाक़ गिरफ़्तह, 4. ऐ तलाक़ दी गई, 5. ऐ तलाक़न, 6. ऐ तलाक़ शुदा, 7. ऐ तलाक़ याफ़्ता, 8. ऐ तलाक़ करदा,

[अरबी उद्धरण:] अल-दुर्र में है: "और तुम तलाक़शुदा हो (तालिक़)" या "मुतल्लक़ा" तशदीद के साथ।[2] दुर्र में है: "तू तलाक़ वाली है या तलाक़ दी हुई" तशदीद के साथ। (त)

1. ऐ तलाक़ दादा, [अरबी उद्धरण:] अल-ख़िज़ानाह में है: "अगर उसने उससे कहा 'ऐ तलाक़ दी हुई', तो एक तलाक़ वाक़े होगी।"[3] ख़िज़ानाह में है कि अगर कहा "ऐ तलाक़ दी हुई" तो एक तलाक़ वाक़े होगी। (त)

मगर इस औरत ने अगर अपने पहले शौहर से तलाक़ पाई थी और वर्तमान शौहर ने इस अर्थ में ये आठ शब्द कहे (उसकी पिछली तलाक़ की ओर इशारा करते हुए), तो तलाक़ नहीं होगी।

[अरबी उद्धरण:] अल-ख़ानियाह में है: एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा, "ऐ मुतल्लक़ा," जबकि उससे पहले उसका एक शौहर था जिसने उसे तलाक़ दी थी... ख़ानियाह में है: अगर खाविंद ने बीवी को कहा "ऐ तलाक़ दी हुई" जबकि इस बीवी को पहले किसी खाविंद ने तलाक़...

[1] रद अल-मुह्तार, बाब अल-किनायात, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/464. [2] दुर्र मुख़्तार, बाब अल-सरीह, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/218. [3] ख़िज़ानत अल-मुफ़्तीन, फ़स्ल फ़ी सरीह अल-तलाक़, क़लमी नुस्ख़ा, 1/110.

पृष्ठ 532/688

فتاوی رضویہ، جلد دوازدہم

[اوپر دائیں کالم کا متن:] الا بالنية لعدم العرف في زماننا۔ ساتھ علیک (تجھ پر) کہنا ضروری ہے اھ۔ قلت (میں کہتا ہوں) اس لفظ میں ہمارے زمانے میں بھی یہی حکم ہے کہ بغیر نیت طلاق ہو جائے گی، لیکن "اللہ کا حلال یا مسلمانوں کا حلال اور ہر حلال مجھ پر حرام ہے" اس کے برخلاف ہے، ان تین الفاظ سے بغیر نیت طلاق نہ ہوگی کیونکہ ہمارے زمانے میں یہ طلاق کے لئے معروف نہیں ہیں۔ (ت)

(۳۵) ہزار طلاق کے برابر ایک طلاق، شامی عن البحر وفي واحدة كالف واحدة اتفاقا وان نوی الثلث1۔ شامی نے بحر سے نقل کیا "ہزار طلاق کے برابر ایک طلاق" میں اتفاق ہے کہ ایک ہی ہوگی اگرچہ وہ تین کی نیت کرے۔ (ت) ان سب صورتوں میں بے حاجت نیت طلاق بائن کا حکم دیا جائے گا۔

رجعی کے بعض الفاظ یہ ہیں: ۱ میں نے تجھے طلاق دی، ۲ اے مطلقہ بتشدید لام، ۳ اے طلاق گرفتہ، ۴ اے طلاق دی گئی، ۵ اے طلاقن، ۶ اے طلاق شدہ، ۷ اے طلاق یافتہ، ۸ اے طلاق کردہ،

في الدر وانت طالق و مطلقة بالتشديد2۔ | دُر میں ہے "تو طلاق والی ہے یا طلاق دی ہوئی" بالتشدید۔ (ت)

۹ اے طلاق دادہ، في الخزانة ولو قال لها ای طلاق داده يقع واحدة3۔ | خزانہ میں ہے کہ اگر کہا "اے طلاق دی ہوئی" تو ایک طلاق واقع ہوگی (ت)

مگر اس عورت نے اگر اپنے پہلے شوہر سے طلاق پائی تھی بایں معنی اس نے یہ آٹھ الفاظ کہے تو طلاق نہ ہوگی،

في الخانية رجل قال لامرأته يا مطلقة وكان لها زوج قبله وقد كان طلقها ذلك | خانیہ میں ہے: اگر خاوند نے بیوی کو کہا "اے طلاق دی ہوئی" جبکہ اس بیوی کو پہلے کسی خاوند نے طلاق

1 ردالمحتار باب الکنایات داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۴۶۴ 2 در مختار باب الصریح مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۱۸ 3 خزانة المفتين فصل فی صریح الطلاق قلمی نسخه ۱/ ۱۱۰

- The husband, if he did not intend by his words to narrate (a previous event), the divorce occurs. And if he said, 'I meant by it the narration religiously between me and Allah Almighty,' then would he be believed in judicial terms? Narrations differ on this, and the correct view is that he should be believed. [1] If the husband did not intend to narrate a previous incident, the divorce will take place. If he says, 'I have narrated and informed about a previous incident,' then religiously, i.e., before Allah Almighty, this statement will be accepted. However, whether his statement will also be accepted judicially (in court) or not, there is a difference of narrations. The correct view is that he should be believed and a ruling should be given that no divorce occurred. (T)
- 'I have left you.' In Al-Hindiyyah: 'Tar-a-behashtam' [I have released you in Persian] is the interpretation of his saying 'I divorced you' according to custom, such that it becomes a revocable divorce. [2] It is mentioned in Hindiyyah that if he says 'I have left you,' then in common usage, it is in the sense of 'I have divorced you,' to the extent that it results in a revocable divorce. (T)
- 'I gave you a letter of discharge (Far-Khati) or Far-Kheti.' Because in the language of many common craftsmen like weavers and others, it is an explicit term for divorce. In fact, many of them do not know any word for divorce other than this. It is well known that the speech of every person who takes an oath is carried upon their own specific custom, and it is not mandatory for that custom to be common among all people, as stated clearly by Al-Muhaqqiq [Ibn al-Humam] where he spoke generally. So, this word is in the sense of an explicit (Sareeh) term in the language of many people. In fact, many people do not know any word for divorce other than this. It is a settled principle that the speech of someone who swears an oath is interpreted according to their specific custom, and it is not necessary for that custom to be widespread among all people, as clarified by Muhaqqiq Ibn al-Humam. (T)
- 'Your husband has divorced you,' its ruling is the same. Note: Thus it is in the original by the scribe's pen, and the correct view in my opinion is 'according to his custom' (ala urfihi). Hamid Raza, may he be forgiven. In the original, it is like this by the narrator's pen, while in my view 'according to his custom' is correct. Hamid Raza, may he be forgiven. (T)

[1] Fatawa Qazi Khan, Book of Divorce, Naval Kishore, Lucknow, 1/209. [2] Fatawa Hindiyyah, Seventh Chapter on Divorce in Persian Words, Nurani Kutub Khana, 1/389.

- पति ने यदि अपने शब्दों से (पिछले वाकये को) बयान करने की नीयत नहीं की तो तलाक़ हो जाएगी, और अगर उसने कहा कि मेरा मतलब पिछली घटना को बयान करना और उसके बारे में सूचना देना था, तो धार्मिक रूप से (यानी अल्लाह के पास) उसकी बात मान ली जाएगी। लेकिन क्या अदालती तौर पर भी उसकी बात मानी जाएगी या नहीं, इस बारे में रिवायतों में मतभेद है। सही बात यह है कि उसकी तस्दीक़ की जाए और तलाक़ न होने का फ़ैसला दिया जाए। [1]

- 'मैंने तुझे छोड़ दिया।' अल-हिन्दिया में है: 'तर-ए-बेहस्तम' (फ़ारसी में 'मैंने तुझे छोड़ दिया') प्रथा (उर्फ़) के अनुसार 'मैंने तुझे तलाक़ दी' कहने के बराबर है, यहाँ तक कि यह रजई तलाक़ (वह तलाक़ जिसमें सुलह की गुंजाइश हो) हो जाएगी। [2] हिन्दिया में उल्लेख है कि यदि कोई कहे 'मैंने तुझे छोड़ दिया', तो आम बोलचाल में इसका अर्थ 'मैंने तुझे तलाक़ दे दी' होता है, यहाँ तक कि इससे रजई तलाक़ हो जाती है। (त)

- 'मैंने तुझे फ़ार-ख़ती (छुटकारा पत्र) या फ़ार-खेती दे दी।' क्योंकि कई दस्तकारों (जैसे जुलाहे आदि) की भाषा में यह तलाक़ के लिए स्पष्ट शब्द है। वास्तव में, उनमें से कई लोग इसके अलावा तलाक़ के लिए कोई दूसरा शब्द जानते ही नहीं। यह सर्वविदित नियम है कि शपथ लेने वाले के शब्दों को उसकी विशिष्ट प्रथा के अनुसार समझा जाता है, और यह आवश्यक नहीं है कि वह प्रथा सभी लोगों में आम हो, जैसा कि मोहक़्क़िक़ (इब्न अल-हुमाम) ने स्पष्ट रूप से वर्णन किया है। तो यह शब्द कई लोगों की ज़बान में स्पष्ट तलाक़ के अर्थ में है। वास्तव में, बहुत से लोग इसके अलावा तलाक़ का कोई और शब्द जानते ही नहीं। यह एक स्थापित सिद्धांत है कि कसम खाने वाले के कलाम को उसकी विशिष्ट प्रथा (उर्फ़) पर आधारित माना जाएगा, और यह ज़रूरी नहीं है कि वह प्रथा सभी लोगों में प्रसिद्ध हो, जैसा कि मोहक़्क़िक़ इब्न-ए-हुमाम ने स्पष्ट किया है। (त)

- 'तुझे तेरे पति ने तलाक़ दे दी', इसका भी यही हुक्म है। नोट: मूल प्रति में लेखक की कलम से ऐसा ही है, जबकि मेरे विचार में 'उसकी प्रथा के अनुसार' (अ़ला उ़र्फ़िही) सही है। हामिद रज़ा, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। मूल में नकल करने वाले की कलम से इसी तरह लिखा है, जबकि मेरे नज़दीक 'अ़ला उ़र्फ़िही' सही है। हामिद रज़ा, अल्लाह उन्हें क्षमा करे। (त)

[1] फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, किताबुत्तलाक़, नवल किशोर, लखनऊ, 1/209। [2] फ़तावा हिन्दिया, फ़ारसी शब्दों में तलाक़ पर सातवाँ अध्याय, नूरानी कुतुब ख़ाना, 1/389।

पृष्ठ 533 / 688

الزوج ان لم ینوبکلامہ الاخبار طلقت، وان قال عنیت بہ الاخبار دین فیما بینہ وبین اللہ تعالی وھل یدین فی القضاء اختلفت الروایات فیہ والصحیح انہ یدین-۱ دی تھی، تو اگر خاوند نے پہلے واقعہ کی حکایت کی نیت نہ کی تو طلاق ہو جائے گی، اور اگر اس نے کہا کہ میں نے پہلے واقعہ کی حکایت اور خبر دی ہے تو دیانۃً یعنی اللہ تعالٰی کے ہاں اس بات کو تسلیم کیا جائے گا، لیکن کیا قضاءً بھی اس کی بات تسلیم کی جائے گی یا نہیں، اس میں روایات کا اختلاف ہے، اور صحیح یہ ہے کہ تصدیق کیجائے اور طلاق نہ ہونے کا فیصلہ دیا جائے گا۔ (ت)

''میں نے تجھے چھوڑ دیا'' فی الھندیۃ ترابھشتم فھذا تفسیر قولہ طلقتک عرفا حتی یکون رجعیاً-۲ ہندیہ میں ہے ''اگر کہا ''میں نے تجھے چھوڑ دیا'' تو عرف میں یہ ''میں نے تجھے طلاق دی'' کے معنی میں ہے حتٰی کہ اس سے رجعی طلاق ہو گئی (ت)

''میں نے تجھے فار خطی یا ''فار کھیتی دی'' فانہ بلسان کثیر من اھل الحرف الدنیۃ کالحائکین وغیرھم صریح فی الطلاق بل کثیر منھم لایعرف للطلاق لفظا غیر ھذا ومعلوم ان کلام کل حالف یحمل علی عرفہ خاصۃ ولایجب شیوع ذلك العرف فی الناس عامۃ کما صرح بہ المحقق حیث اطلق- تو یہ لفظ کئی لوگوں کی زبان میں صریح کے معنی میں ہے بلکہ بہت سے لوگ اس کے علاوہ کوئی لفظ طلاق کے لئے سمجھتے ہی نہیں، اور یہ بات مسلّم ہے ہے حلف والے کی کلام کو اس کے خاص عرف پر محمول کیا جائے گا، اور اس عرف کا تمام لوگوں میں معروف ہونا ضروری نہیں ہے جیسا کہ اس پر محقق ابن ہمام نے تصریح کی ہے (ت)

۱۳ تجھے تیرے شوہر نے طلاق دی، اس کا بھی وہی حکم ہے، عہ: ھکذا فی الاصل بقلم الناسخ والصواب عندی علی عرفہ حامد رضاغفرلہ۔ اصل میں ناقل کے قلم سے اسی طرح ہے جبکہ میرے نزدیک علیٰ عرفہ درست ہے۔ حامد رضا غفرلہ (ت)

۱ فتاویٰ قاضی خان کتاب الطلاق نولکشور لکھنو ۱/۲۰۹ ۲ فتاویٰ ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالفاظ الفارسیہ نورانی کتب خانہ ۱/۳۸۹

Fatawa Razawiyya | Volume 12

Section 1: In Al-Hindiyya, it is mentioned that some scholars were asked about a drunken person who says to his wife: "O you with red lips, whose face is like the moon, my lady, you are divorced." They answered that it should be seen: if the woman was previously divorced and had been consummated by another husband, and then this man married her, then divorce will not occur with these words unless he intended divorce. But if she had not been divorced by anyone before, then divorce will occur whether he intended it or not, as stated in Tatar-Khaniyah. (T)

Section 2: 15. Divorce upon you, Because it is clearer than even explicit divorce in our time and custom, so the statement in Al-Bahr will not be applicable here as an objection. And as mentioned in Al-Durr, saying "divorce is upon me" results in divorce even without intention because it is a common custom for divorce. On this, Allama Shami said: Al-Durr's point is not contradictory to the upcoming statement that saying "divorce upon me" does not cause divorce. This is because that is where this word is not the dominant custom for divorce etc. (T)

Section 3: 16. Be divorced, In Al-Durr, it is mentioned that if he says "be divorced", this is also an explicit divorce.

Footnotes: 1 Fatawa Hindiyya, Section regarding what divorce occurs etc., Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/354 2 Radd al-Muhtar, Chapter on Explicit Divorce, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/432

Page 534 of 688

फतावा रज़विया | जिल्द 12

अनुभाग 1: अल-हिन्दिया में है कि कुछ उलमा से पूछा गया कि जब कोई व्यक्ति नशे में अपनी पत्नी से इस तरह कहे: "ऐ लाल होंठों वाली, चाँद जैसे चेहरे वाली मेरी बानो! तुझे तलाक दी गई।" तो उन्होंने जवाब दिया कि देखा जाएगा कि अगर पत्नी पहले किसी पति से तलाक़शुदा और मदख़ूला है और बाद में उससे निकाह किया, तो फिर इन शब्दों से तलाक नहीं होगी बशर्ते कि उसने तलाक की नीयत न की हो, और अगर वह पत्नी पहले किसी से तलाक़शुदा नहीं थी तो नीयत की हो या न की हो हर तरह तलाक हो जाएगी, जैसा कि तातार-ख़ानिया में है। (त)

अनुभाग 2: 15. तुझ पर तलाक, तो यह हमारे समय और प्रथा (उर्फ़) में स्पष्ट तलाक से भी अधिक स्पष्ट तलाक है, इसलिए अल-बहर का बयान यहाँ आपत्ति के तौर पर लागू नहीं होगा। और जैसा कि अल-दुर्र का कहना है कि "मुझ पर तलाक है" कहने से बिना नीयत भी तलाक हो जाएगी क्योंकि यह प्रथा में तलाक है, तो इस पर अल्लामा शामी ने फरमाया: दुर्र की यह बात आने वाली उस बात के विपरीत नहीं है जिसमें कहा गया है कि "मुझ पर तलाक" कहने से तलाक नहीं होगी। यह इसलिए कि यह वहाँ के लिए है जहाँ यह शब्द तलाक के लिए प्रचलित प्रथा नहीं है। (त)

अनुभाग 3: 16. तलाक हो जा, अल-दुर्र में है कि अगर कहा "तलाक हो", यह भी स्पष्ट तलाक है।

पादलेख (Footnotes): 1 फतावा हिन्दिया, फ़सल फ़ीमा यक़अ तलाक़ुहू इलख, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/354 2 रद अल-मुह्तार, बाब अल-सरीह, दार इहया अत-तुरास अल-अरबी बैरूत, 2/432

فی الھندیہ سئل بعضھم عن سکران قال لامرأتہ ای سرخ لبک بماہ ماند رویت کہ بانوی من طلاق دادہ شویت قال ینظر ان کانت المرأۃ ثیبا وکان قبل ھذا لھا زوج طلقھا ثم تزوجھا ھذا فانہ لا یقع الطلاق بھذا اللفظ ان لم تکن لہ نیۃ الطلاق وان لم یکن لہ قبل ھذا زوج یقع الطلاق نوی اولم ینو کذا فی التتارخانیۃ۔

ہندیہ میں ہے کہ بعض علماء سے پوچھا گیا کہ جب کوئی شخص نشے میں اپنی بیوی کو یوں کہے: "اے سرخ رخسار چاند جیسے چہرے والی میری بانو! تجھے طلاق دی گئی" تو انہوں نے جواب دیا کہ دیکھا جائے گا کہ اگر بیوی پہلے کسی خاوند سے مطلقہ اور مدخولہ ہے اور بعد میں اس سے نکاح کیا، تو پھر اس لفظ سے طلاق نہ ہوگی بشرطیکہ اس نے طلاق کی نیت نہ کی ہو، اور اگر وہ بیوی کسی سے مطلقہ نہ ہوئی تھی تو نیت کی یا نہ کی ہر طرح طلاق ہو جائے گی، جیسا کہ تاتارخانیہ میں ہے۔ (ت)

۱۵ تجھ پر طلاق، فانہ من اصرح صریح فی زماننا وعرفنا فلا یرد ما فی البحر و ذلک مثل قول الدر علی الطلاق یقع بلانیۃ للعرف قال الشامی ولا ینافی ذلک ما یأتی من انہ لو قال طلاقک علی لم یقع، لان ذاک عند عدم غلبۃ العرف۔ الخ۔ تو یہ صریح طلاق سے بھی زیادہ واضح طلاق ہے ہمارے زمانہ اور عرف میں، لہذا بحر کا بیان یہاں اعتراض کے طور پر وارد نہ ہوگا اور جیسا کہ در کا قول کہ "مجھ پر طلاق ہے" کہا تو بغیر نیت بھی طلاق ہو جائے گی کیونکہ یہ عرف میں طلاق ہے، تو اس پر علامہ شامی نے فرمایا: ڈر کی یہ بات آئندہ آنے والی اس بات کے منافی نہیں جس میں کہا گیا ہے کہ "مجھ پر طلاق" کہنے پر طلاق نہ ہوگی، یہ اس لئے کہ یہ وہاں ہے جہاں یہ لفظ طلاق کے لئے عُرف غالب نہ ہو الخ (ت)

۱۶ طلاق ہو جا، فی الدر ویدخل طلاق باش بلافارق بین در میں ہے کہ اگر کہا "طلاق ہو" یہ بھی صریح طلاق

حاشیہ: 1 فتاویٰ ہندیہ فصل فیما یقع طلاقہ الخ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۵۴ 2 ردالمحتار باب الصریح داراحیاء التراث العربي بیروت ۲/ ۴۳۲

Fatawa Razawiya Volume 12

Scholar and Ignorant[1].

Included in the ruling, whether a scholar says it or an ignorant person says it, there is no difference. -(T)

18- "You are divorced", 18 "You have been divorced."

In al-Durr it is: If one says "You are divorce", it will be one revocable divorce whether there is any intention or intention for one or two. And if this word was said with the intention of three divorces, then there will be three divorces. (T)

In al-Durr: "You are divorce" or "divorce" occurs as one revocable (raj'i) divorce if no intention is made, or if one or two are intended. If three are intended, then it is three[2].

19- Take [your] divorce,

In Radd al-Muhtar it is: If he said "Take your divorce", in response the wife said "I have taken it", then divorce has occurred even without intention. This is correct as in al-Fath, and in it, saying "I have taken it" by the woman in response is also not a condition, as in al-Bahr. (T)

In Radd al-Muhtar: "Take your divorce", so she said "I have taken it", then it has correctly occurred without the requirement of intention, as in al-Fath. Similarly, her saying "I have taken it" is required as in al-Bahr[3].

She was going out when he said, "Go take [your] divorce,"

In Khaniyyah it is: If a quarrel occurred between husband and wife and the wife got up to go outside, so the husband said "Take three divorces with you", on this Sheikh Imam Abu Bakr bin Fadl, may Allah Almighty have mercy on him, said: if the husband said it with the intention of effecting divorce, then divorce will occur, and even if there is no intention, divorce will still occur because the outward meaning of this speech is divorce. (T)

In al-Khaniyyah: And if an argument occurred between her and her husband, and she stood up to leave, so he (the husband) said (Go take three divorces with you), then Sheikh Imam Abu Bakr Muhammad bin al-Fadl, may Allah Almighty have mercy on him, said: If he intended for it to occur, it occurs. If he had no intention, then it is the same because it is an explicit occurrence[4].

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter on Explicit Divorce, Mujtabai Press, Delhi, 1/218 [2] Durr al-Mukhtar, Chapter on Explicit Divorce, Mujtabai Press, Delhi, 1/218 [3] Radd al-Muhtar, Chapter on Explicit Divorce, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/230 [4] Fatawa Qazi Khan, Book of Divorce, Naval Kishore, Lucknow, 4/212

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

आलिम और जाहिल[1]।

१८- "तू तलाक़ है", १८ "तू तलाक़ हो गई।"

दर-ए-मुख्तार में है: "तू तलाक़ है" या "तलाक़" कहने से एक रजई तलाक़ वाक़े होगी अगर कोई नीयत न हो या एक या दो की नीयत हो। अगर तीन की नीयत की हो तो तीन होंगी[2]।

१९- तलाक़ ले,

रद्दुल मुहतार में है: "अपनी तलाक़ ले", तो उसने कहा "मैंने ले ली", तो नीयत की शर्त के बिना भी तलाक़ वाक़े हो गई जैसा कि फ़तह में है। इसी तरह उसका "मैंने ले ली" कहना शर्त है जैसा कि बहर में है[3]।

वह बाहर जा रही थी कि कहा "तलाक़ लेकर जा",

ख़ानिया में है: और अगर मियाँ-बीवी में झगड़ा हुआ और बीवी उठकर बाहर जाने लगी तो शौहर ने कहा (अपने साथ तीन तलाक़ें ले जा), तो शैख़ इमाम अबू बक्र मोहम्मद बिन फ़ज़ल रहमतुल्लाहि अलैहि ने फ़रमाया: अगर शौहर ने तलाक़ वाक़े करने की नीयत से कहा तो तलाक़ हो जाएगी और नीयत न हो तो भी तलाक़ हो जाएगी क्योंकि इस कलाम का ज़ाहिर तलाक़ है[4]।

हुक्म में शामिल है, चाहे आलिम कहे या जाहिल कहे, कोई फ़र्क नहीं। -(त)

दर में है: अगर कहा "तू तलाक़ है" तो एक रजई तलाक़ होगी चाहे कोई नीयत न हो या एक या दो की नीयत की हो, और अगर तीन तलाक़ की नीयत से यह लफ़्ज़ कहा तो तीन तलाक़ें होंगी। (त)

रद्दुल मुहतार में है: अगर कहा "अपनी तलाक़ ले", जवाब में बीवी ने कहा "मैंने ले ली", तो नीयत के बिना भी तलाक़ हो गई, सही यही है जैसा कि फ़तह में है, और इसमें औरत का जवाब में "मैंने ले ली" कहना भी शर्त नहीं है, जैसा कि बहर में है। (त)

ख़ानिया में है: अगर खाविंद बीवी में झगड़ा हुआ और बीवी उठ कर बाहर जाने लगी तो खाविंद ने कहा "अपने हमराह तीन तलाक़ें ले जा", इस पर शैख़ इमाम अबू बक्र मोहम्मद बिन फ़ज़ल रहमतुल्लाह तआला ने फ़रमाया: अगर खाविंद ने तलाक़ वाक़े करने की नीयत से कहा तो तलाक़ हो जाएगी और नीयत न हो तो भी तलाक़ हो

आलिम और जाहिल[1]।

हुक्म में शामिल है, चाहे आलिम कहे या जाहिल कहे, कोई फ़र्क नहीं। -(त)

जाएगी क्योंकि इस कलाम का ज़ाहिर तलाक़ है। (त)

[1] दर-ए-मुख्तार, बाब अस-सरीह, मतबा मुजतबाई, दिल्ली २१८/१ [2] दर-ए-मुख्तार, बाब अस-सरीह, मतबा मुजतबाई, दिल्ली २१८/१ [3] रद्दुल मुहतार, बाब अस-सरीह, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी, बैरूत २३०/२ [4] फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, किताब अत-तलाक़, नवल किशोर, लखनऊ २१२/४

عالم وجاہل[1]۔

کے حکم میں داخل ہے خواہ عالم کہے یا جاہل کہے کوئی فرق نہیں -(ت)

۱۸- "تو طلاق ہے"، ۱۸ "تو طلاق ہو گئی۔"

فی الدر وفی انت الطلاق او طلاق یقع واحدة رجعیة ان لم ینویشیئا اونوی واحدة او ثنتین فان نوی ثلاثا فثلث[2]۔

در میں ہے: اگر کہا "تو طلاق ہے" تو ایک رجعی طلاق ہوگی خواہ کوئی نیت نہ ہو یا ایک یا دو کی نیت کی ہو، اور اگر تین طلاق کی نیت سے یہ لفظ کہا تو تین طلاقیں ہوں گی۔(ت)

۱۹- طلاق لے،

فی رد المحتار خذی طلاقك فقالت اخذت فقد صح الوقوع به بلا اشتراط نیة کما في الفتح وکذا یشترط قولها اخذت کما في البحر[3]۔

رد المحتار میں ہے: اگر کہا "اپنی طلاق لے" جواب میں بیوی نے کہا "میں نے لی" تو نیت کے بغیر بھی طلاق ہوگئی، صحیح یہی ہے، جیسا کہ فتح میں ہے، اور اس میں عورت کا جواب میں "میں نے لی" کہنا بھی شرط نہیں ہے، جیسا کہ بحر میں ہے (ت)

وہ باہر جاتی تھی کہ کہا " طلاق لئے جا،

فی الخانیة واذا جرت الخصومة بینها وبین زوجها فقامت لتخرج فقال (الزوج

خانیہ میں ہے : اگر خاوند بیوی میں جھگڑا ہوا اور بیوی اٹھ کر باہر جانے لگی تو خاوند نے کہا "اپنے ہمراہ تین

عالم وجاہل[1]۔

کے حکم میں داخل ہے خواہ عالم کہے یا جاہل کہے کوئی فرق نہیں -(ت)

سه طلاق باخویشتن طلاق ببر) فقال الشیخ الامام ابوبکر محمد بن الفضل رحمه الله تعالی ان نوی الایقاع یقع فان لم تکن له نیة فکذلك لانه ایقاع ظاهرا[4]۔

طلاقیں لے جا" اس پر شیخ امام ابوبکر محمد بن فضل رحمہ اللہ تعالیٰ نے فرمایا: اگر خاوند نے طلاق واقع کرنے کی نیت سے کہا تو طلاق ہوجائے گی اور نیت نہ ہو تو بھی طلاق ہو جائے گی کیونکہ اس کلام کا ظاہر طلاق ہے۔(ت)

[1] درمختار باب الصریح مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۱۸ [2] درمختار باب الصریح مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۱۸ [3] ردالمحتار باب الصریح دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۳۰ [4] فتاوی قاضی خاں کتاب الطلاق نولکشور لکھنؤ ۴/۲۱۲

Fatawa Razawiyya Volume 12

21 "Take your divorce and depart." In al-Hindiyyah, from al-Khulasah: If he says to her, "Take three divorces for yourself and go," it occurs without intention. (1) It is narrated in al-Hindiyyah from al-Khulasah: If he says, "Take your divorce and go," then the divorce will occur even without intention. (T)

22 "I have tied your divorce in the corner of your shawl." In al-Khizana, from al-Khulasah: If he says, "I have tied three divorces to the edge of your shawl, go," she is divorced. (2) It is narrated in al-Khizana from al-Khulasah: If he says, "I have tied your divorce in the corner of your shawl, go," then the divorce has occurred. (T)

23 "Go, divorce be upon you" (And if he had said only "go" with the intention of divorce, it would have been irrevocable [ba'in]). In al-Khayriyyah, a question was asked regarding a man who said to his wife, "Go, you are divorced." Does it result in a revocable (raj'i) or irrevocable (ba'in) divorce? And if you say it is revocable, then what is the difference between this and when he limits himself to saying "go" with the intention of divorce, where you gave a fatwa that it is irrevocable? He answered: Because in his saying "go, you are divorced," the meaning is "go in the state of divorce," so it occurs by explicit (sarih) words. This is unlike "go," for its occurrence is through an allusive (kinaya) word. (3) In al-Khayriyyah, it is mentioned: He was asked that if a person says to his wife, "Go, divorce be upon you," will it be a revocable or irrevocable divorce? If you say that this is revocable, then what will be the difference between saying only "go" and this, while your fatwa is that saying only "go" with the intention of divorce results in an irrevocable divorce? So he replied in answer: The meaning of "Go, divorce be upon you" is "go, being characterized by the quality of divorce," so this is an explicit divorce, therefore it will be revocable. On the other hand, if only "go" is said, it is not explicit but an allusion, therefore it will be irrevocable. (T)

24 "Divorce to you" or "To you, divorce." In al-Hindiyyah, from Khizanat al-Muftin: If he said... It is narrated in al-Hindiyyah from Khizanat al-Muftin: "Divorce to you...

(1) Fatawa Hindiyyah, Chapter 7 regarding divorce in Persian words, Noorani Kutub Khana Peshawar 1/382 (2) Khizanat al-Muftin, chapter on explicit divorce, manuscript version 1/108 (3) Fatawa Khayriyyah, Book of Divorce, Bulaq Egypt 1/51

Page 536 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

21 "अपनी तलाक उठा और रवाना हो," अल-हिंदिया में अल-खुलासा से उद्धृत है: यदि वह उसे कहे, "अपने लिए तीन तलाक उठा और चली जा," तो यह बिना किसी इरादे के भी प्रभावी हो जाता है। (1) हिंदिया में खुलासा से उद्धृत है: यदि कहा "तू अपनी तलाक उठा और जा" तो बिना नियत के भी तलाक हो जाएगा। (त)

22 "मैंने तेरी तलाक तेरे आँचल में बांध दी," अल-ख़ज़ाना में अल-खुलासा से उद्धृत है: यदि उसने कहा, "मैंने तेरे दुपट्टे के किनारे पर तीन तलाक बांध दिए हैं, जा," तो वह तलाकशुदा है। (2) ख़ज़ाना में खुलासा से उद्धृत है: यदि कहा "मैंने तेरी तलाक तेरे आँचल में बांध दी जा" तो तलाक हो गया। (त)

23 "जा तुझ पर तलाक" (और अगर सिर्फ'जा' तलाक की नियत से कहता तो बाइन [अटल] होती) अल-खैरिय्याह में, एक व्यक्ति के बारे में पूछा गया जिसने अपनी पत्नी से कहा, "जा, तू तलाकशुदा है।" क्या यह एक प्रतिसंहरणीय (रजई) या अप्रतिसंहरणीय (बाइन) तलाक के रूप में घटित होता है? और यदि आप कहते हैं कि यह रजई के रूप में घटित होता है, तो इसमें और सिर्फ"जा" कहने (जब तलाक की नियत हो) में क्या अंतर है, जहाँ आपने फतवा दिया था कि वह बाइन है? उन्होंने उत्तर दिया: क्योंकि उनके"जा, तू तलाकशुदा है" कहने में अर्थ है "तलाक की अवस्था में जा," इसलिए यह स्पष्ट (सरीह) शब्दों द्वारा घटित होता है। यह सिर्फ"जा" कहने के विपरीत है, क्योंकि उसका घटित होना एक लाक्षणिक (किनाया) शब्द के माध्यम से है। (3) खैरिय्या में है: उनसे सवाल किया गया कि एक व्यक्ति ने बीवी को कहा "जा तुझ पर तलाक" रजई होगी या बाइनह होगी। अगर आप कहें कि यह रजई है तो फिर सिर्फ"जा" कहने में और इस में क्या फर्क होगा जबकि तलाक की नियत से सिर्फ"जा" कहा तो आपका फतवा है कि यह तलाक बाइनह है। तो उन्होंने जवाब में फ़रमाया "जा तुझ पर तलाक" का मतलब यह है कि तू तलाक की सिफत से मौसूफ होकर जा, तो यह सरीह तलाक है इसलिए रजई होगी, इसके बरखिलाफ अगर सिर्फ"जा" कहा तो सरीह नहीं बल्कि किनाया है इसलिए यह बाइनह होगी। (त)

24 "तुझे तलाक या तलाक तुझको," अल-हिंदिया में खज़ानत अल-मुफ़्तीन से: यदि उसने कहा... हिंदिया में खज़ानतुल मुफ़्तीन से उद्धृत है "तुझे तलाक...

(1) फ़तावा हिंदिया, फ़ारसी शब्दों में तलाक के बारे में अध्याय 7, नूरानी कुतुब खाना पेशावर 1/382 (2) खज़ानतुल मुफ़्तीन, सरीह तलाक पर अध्याय, पांडुलिपि संस्करण 1/108 (3) फ़तावा खैरिय्या, तलाक की किताब, बुलाक मिस्र 1/51

पृष्ठ 688 में से 536

فتاوٰی رضویہ جلد دو ازدہم

۲۱ اپنی طلاق اٹھا اور روانہ ہو، فی الھندیۃ عن الخلاصۃ ولو قال لھا سہ طلاق خود بردار ورفتی یقع بدون النیۃ ۱۔ ہندیہ میں خلاصہ سے منقول ہے: اگر کہا "تو اپنی طلاق اٹھا اور جا" تو بغیر نیت بھی طلاق ہو جائے گی۔ (ت)

۲۲ میں نے تیری طلاق تیرے آنچل میں باندھ دی، فی الخزانۃ عن الخلاصۃ ولو قال سہ طلاق بکرانہ چادر تو بر بستم برو تطلق ۲۔ خزانہ میں خلاصہ سے منقول ہے: اگر کہا " میں نے تیری طلاق تیرے آنچل میں باندھ دی جا" تو طلاق ہو گئی (ت)

۲۳ جا تجھ پر طلاق (اور اگر صرف جا بنیت طلاق کہتا تو بائن تھی) فی الخیریۃ سئل فی رجل قال لزوجتہ روحی طالق ھل تطلق طلاقا رجعیا ام بائنا واذا قلتم تطلق رجعیا فما الفرق بینہ وبین ما اذا اقتصر علی قولہ روحی ناویا بہ طلاقا حیث افتیتم بانہ بائن اجاب بانہ فی قولہ روحی طالق معناہ روحی بصفۃ الطلاق فوقع بالصریح بخلاف روحی فأن وقوعہ بلفظ الکنایۃ ۳۔ خیریہ میں ہے: ان سے سوال کیا گیا کہ ایک شخص نے بیوی کو کہا "جا تجھ پر طلاق رجعی ہوگی یا بائنہ ہو گی۔ اگر آپ کہیں کہ یہ رجعی ہے تو پھر صرف "جا" کہنے میں اور اس میں کیا فرق ہوگا جبکہ طلاق کی نیت سے صرف "جا" کہا تو آپ کا فتوٰی ہے کہ یہ طلاق بائنہ ہے۔ تو انہوں نے جواب میں فرمایا "جا تجھ پر طلاق" کا مطلب یہ ہے کہ تو طلاق کی صفت سے موصوف ہو کر جا، تو یہ صریح طلاق ہے اس لئے رجعی ہوگی، اس کے برخلاف اگر صرف "جا" کہا تو صریح نہیں بلکہ کنایہ ہے اس لئے یہ بائنہ ہوگی۔ (ت)

۲۴ تجھے طلاق یا طلاق تجھ کو، فی الھندیۃ خزانۃ المفتین ولو قال ہندیہ میں خزانہ المفتین سے منقول ہے "تجھے طلاق

۱ فتاویٰ ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالالفاظ الفارسیۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۸۲ ۲ خزانہ المفتین فصل فی صریح الطلاق قلمی نسخہ ۱۰۸/۱ ۳ فتاویٰ خیریہ کتاب الطلاق بولاق مصر ۱/ ۵۱

Fatawa Razawiyya, Volume 12

"To you is Talaq" or "Talaq is to you," it is a divorce. There is no difference in putting either first or last; divorce will occur in any case.

Similarly, those words spoken by people with a speech impediment, for example: *Tamlaq*, *Tamlak*, *Tamlagh*, *Tamllakh*, *Tamllakh* with a doubled 'L' (both these words are also with a doubled L). Rather, from the tongue of a stutterer, *Tamlatat*.

On this basis of analogy, everything is clear. In *At-Tahtawi*, it is mentioned that in *Al-Bahr*, the mispronounced words are five: *Talaq*, *Talagh*, *Tolok*, *Tologh*, *Tolok*. *An-Nahr* adds *Tala'a* and *Talal*. It is appropriate to mention here that in these words, the first letter (fa-kalima) is either 'T' (ت) or 'Ta' (ط), and the last letter (lam-kalima) is 'Q' (ق), 'Ayn' (ع), 'Ghayn' (غ), 'K' (ک), or 'L' (ل). Thus, by multiplying the two possibilities of the first letter with the five possibilities of the last letter, there are a total of ten forms (words). Among these, with 'Ta' (ط) and 'Q' (ق), the word 'Talaq' is explicit. All others are altered forms. I say (the author): It is mentioned in *Al-Khulasa* that if a man says to his wife "to you is *talaq*" (with 'T'), there are five words here, among which *tolagh* and *tolok* are counted. And it says that Imam Abu Bakr Muhammad bin al-Fadl stated that divorce occurs even if it was done intentionally and he intended for it not to occur. Legally (Qada'an), it occurs, while religiously (Diyanatan) his word is accepted.

Note: Some text is missing here. In *Al-Khulasa*, the phrasing is: "It will not be accepted legally (Qada'an)". Hamid Raza, may he be forgiven.

The same applies here, and it's all apparent. It's mentioned in *At-Tahtawi*, citing *Al-Bahr*, that there are five mispronounced words: *Talaq*, *Talagh*, *Tolok*, *Tologh*, *Tolok*. *An-Nahr* also includes *Tala'a* and *Talal*. It is appropriate to state here that the first letter (fa-kalima) is either 'T' (ت) or 'Ta' (ط) and the last letter (lam-kalima) is 'Q' (ق), 'Ayn' (ع), 'Ghayn' (غ), 'K' (ک), or 'L' (ل). Thus, multiplying the 2 possibilities for the first letter by the 5 possibilities for the last letter results in 10 forms (words). Among these, with 'Ta' (ط) and 'Q' (ق), it is explicitly the word 'Talaq' in its clear form. All others besides that are altered. I say (the author): In *Al-Khulasa* it is mentioned thus: if a person says to his wife "to you is *talaq*" (with 'T'). There are five words here; in them they have counted *tolagh* and *tolok*. And he said that Imam Abu Bakr Muhammad bin al-Fadl stated that among them...

Some text is missing here. In *Al-Khulasa*, the phrasing is thus: "Legally, confirmation should not be made". 12 Hamid Raza, may he be forgiven.

---

1. *Fatawa Hindiyya*, Chapter Seven on Divorce in Persian words, Nurani Kutub Khana, Peshawar, 1/384.
2. *Tahtawi on Ad-Durr al-Mukhtar*, Chapter of Explicit Divorce, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 2/112.

3. *Khulasat al-Fatawa*, Book of Divorce, Another section on words of Divorce, Maktabah Habibiyya, Quetta, 2/83.

फ़तावा रज़विया, खंड 12

"तुझे तलाक़ है" या "तलाक़ है तुझे", तो इसमें आगे-पीछे होने से कोई फ़र्क नहीं पड़ता, हर तरह से यह तलाक़ हो जाएगा।

इसी तरह वे शब्द जो तुतली ज़बान वाले कहते हैं, उदाहरण के लिए: तमलैक, तुमलाक, तुमलाग, तुमल्लाख, तुमल्लाख, लाम पर तशदीद के साथ (ये दोनों शब्द लाम मुशद्दद के साथ भी हैं)। बल्कि तुतले की ज़बान से 'तमल्लतात'।

इसी पर कयास (अनुमान) है और सब ज़ाहिर है। तहतावी में है कि 'बह्र' में पाँच परिवर्तित शब्द बताए गए हैं: तलाक़, तलाग़, तोलाक़, तोलग़, तोलाक। 'अन-नहर' में 'तलाअ' और 'तलाल' को भी शामिल किया गया है। तो यहाँ यह बताना उचित होगा कि इन शब्दों में पहला अक्षर (फा-कलिमा) 'त' या 'तॉ' (ط) है और आख़िरी अक्षर (लाम-कलिमा) 'क़', 'अ़', 'ग़', 'क', या 'ल' है। इस प्रकार पहले अक्षर की 2 संभावनाओं को अंतिम अक्षर की 5 संभावनाओं से गुणा करने पर कुल 10 रूप (शब्द) बनते हैं। इनमें 'तॉ' और 'क़' के साथ 'तलाक़' शब्द स्पष्ट (सरीह) है, और इसके अलावा बाकी सभी परिवर्तित रूप हैं। मैं कहता हूँ (लेखक): 'खुलासा' में इस प्रकार उल्लेख है कि यदि किसी व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा "तुझे तलाक़ (त के साथ) है", यहाँ पाँच शब्द हैं, जिनमें उन्होंने 'तोलाग़' और 'तोलाक' को गिना है। और कहा कि इमाम अबू बक्र मुहम्मद बिन अल-फ़ज़ल ने फ़रमाया कि तलाक़ हो जाएगा, भले ही उसने जानबूझकर कहा हो और इरादा किया हो कि तलाक़ न हो। क़ानूनी तौर पर (क़ज़ा-अन) यह होगा, हालांकि धार्मिक रूप से (दियानत-अन) उसकी बात मानी जाएगी।

नोट: यहाँ कुछ इबारत (पाठ) रह गई है, 'खुलासा' में इबारत इस तरह है: "क़ज़ा-अन तस्दीक़ न की जाए"। हामिद रज़ा, अल्लाह उन्हें माफ़ करे।

इसी पर कयास है और सब ज़ाहिर है। तहतावी में उल्लेख है कि 'बह्र' में परिवर्तित शब्द पाँच हैं: तलाक़, तलाग़, तोलाक़, तोलग़, तोलाक। 'अन-नहर' ने 'तलाअ' और 'तलाल' को भी शामिल किया है। यहाँ यह विवरण उचित होगा कि इन शब्दों में पहला अक्षर 'त' या 'तॉ' है और अंतिम अक्षर 'क़', 'अ़', 'ग़', 'क' या 'ल' है। तो पहले अक्षर की दो संभावनाओं को अंतिम अक्षर की पाँच संभावनाओं में गुणा करने से कुल दस शब्द बनते हैं। उनमें 'तॉ' और 'क़' के साथ शब्द 'तलाक़' स्पष्ट है, और उसके अलावा बाकी सब परिवर्तित हैं। मैं कहता हूँ: 'खुलासा' में यूँ वर्णित है कि यदि किसी व्यक्ति ने पत्नी से कहा 'तुझे तलाक़' है। यहाँ पाँच शब्द हैं, उनमें उन्होंने 'तोलाग़' और 'तोलाक' को गिना है। और कहा कि इमाम अबू बक्र मुहम्मद बिन अल-फ़ज़ल ने फ़रमाया कि उन...

यहाँ कुछ इबारत रह गई है, 'खुलासा' में इबारत इस तरह है: "क़ज़ा-अन तस्दीक़ न की जाए"। 12 हामिद रज़ा, अल्लाह उन्हें माफ़ करे।

---

1. फतावा हिन्दिया, सातवां अध्याय, फ़ारसी शब्दों में तलाक़, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 1/384।

2. तहतावी अलद-दुर्रुल मुख्तार, स्पष्ट तलाक़ का अध्याय, दारुल मारिफ़ा, बेरूत, 2/112।
3. खुलासतुल फतावा, किताबुल तलाक़, तलाक़ के शब्दों में एक और भाग, मकतबा हबीबिया, क्वेटा, 2/83।

पृष्ठ 537/688

لھا تراطلاق او طلاق ترا فھي طلاق ولافارق بین التقدیم والتأخیر۔

یا طلاق تجھے" تو اس تقدیم و تاخیر میں کوئی فرق نہیں ہر طرح یہ طلاق ہو جائے گی (ت)

یوں ہی وہ الفاظ جو کجئی زبان والے کہتے ہیں ،مثلاً تملأق، تملاک ، تملاغ ، تمللا کھ، تمللاخ ، تمللاکھ ، تمللاخ لہٰذا ن بتشدید اللام (یہ دونوں الفاظ لام مشدد کے ساتھ بھی ہیں۔ت) بلکہ تو تلے کی زبان سے تمللات

وعلى هذا القياس، وكله ظاهر، في الطحطاوي ذكر في البحران الفاظ المصحفة خمسة وهي تلاق وتلاغ وطلاک وطلاغ،تلاك زاد في النهر تلاع وتلال و ينبغي ان يقال ان الفاء اما طاء او تاء واللام اما قاف او عين او غين او كاف اولا م واثنان في خمسة بعشرة الصريح منها الطاء مع القاف و ما عدا ذلك مصحف اهـ اقول: وذكر في الخلاصة رجل قال لامرأته ترا تلاق ههنا خمسة الفاظ (وعد منها) طلاغ وتلاك عن الامام ابى بكر محمد بن الفضل انه يقع وان تعمد وقصد ان لا يقع عـ قضاء ويصدق ديانة.

عـ : ههنا سقط والعبارة في الخلاصة هكذا ولا يصدق قضاء حامد رضا غفر لہ۔

اسی پر قیاس ہے اور سب ظاہر ہے۔طحطاوی میں ہے کہ بحر میں ہے کہ تبدیل شدہ الفاظ پانچ ہیں :تلاق،تلاغ، طلاک، طلاغ، تلاک۔،اور نہر میں تلاع اور تلال کو بھی شامل کیا ہے۔ تو یہاں یہ بیان مناسب ہوگا، ان الفاظ میں پہلا حرف (فاء کلمہ) ت یا ط ہے اور آخری حرف (لام کلمہ) ق،ع، غ،ک، یال ہے تو یوں پہلے حرف کے دو احتمال کو آخری حرف کے پانچ احتمالات میں ضرب سے کل دس صورتیں (الفاظ) ہوئیں ان میں سے ط اور ق کے ساتھ لفظ طلاق میں صریح ہے، اور اس کے علاوہ باقی تمام تبدیل شدہ ہیں اهـ اقول:(میں کہتا ہوں کہ)خلاصہ میں یوں مذکور ہے کہ اگر کسی شخص نے بیوی کو کہا تجھے تلاق ہے، یہاں پانچ الفاظ ہیں،ان میں انہوں نے طلاغ اور تلاک کو شمار کیا ہے،اور کہا کہ امام ابوبکر محمد بن فضل نے فرمایا کہ ان

یہاں کچھ عبارت رہ گئی ہے خلاصہ میں عبارت اس طرح ہے قضاءً تصدیق نہ کی جائے ۱۲ حامد رضا غفر لہ (ت)

---

1. فتاوی ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالفاظ الفارسیۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۸۴

2. طحطاوی علی الدرالمختار باب الصریح دار المعرفہ بیروت ۲/ ۱۱۲

3. خلاصۃ الفتاوی کتاب الطلاق جنس آخر فی الفاظ الطلاق مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ ۲/ ۸۳

Fatawa Razawiyya Volume 12

Divorce will occur with these words. If he says before the judge (Qazi) that he intended by these words that divorce should not occur, the judge will not confirm his claim, but it will be religiously confirmed. (T) Someone said, "Your woman is divorced," he replied "Yes" or "Why not".

[Box 1] Arabic: In 'al-Durr': If it was said to him, "Did you divorce your wife?" and he replied "Na'am" (Yes) or "Bala" (Why not) by spelling them out, divorce occurs - al-Bahr (1). Urdu: It is in 'Durr': If someone asked a husband, "Did you divorce your wife?" and he replied "Yes" or "Why not" while spelling the words, divorce will occur, Bahr. (T)

But when spoken in such a harsh voice or tone that denial or lack of admission is understood, this point is noteworthy in most contexts; as in 'al-Khaniya' and 'al-Khizana' etc. (It is in Khaniya and Khizana etc. - T). Or if he said "Divorce is not upon your woman," and then said "Why not?" (And if he says 'no' or 'yes' then divorce will not occur).

[Box 2] Arabic: As for the first, it is explicit in denial. As for the latter, there are two possibilities: affirmation of the negation or affirmation of what was negated, i.e., divorce. So it does not occur with doubt. I say: What is in 'al-Fath' regarding the lack of difference between 'Na'am' and 'Bala' is not rejected because its basis is on custom as the author of 'al-Fath' said. And what is appropriate is the lack of difference, for people of custom do not differentiate, rather they understand from both the affirmation of the negated (2) end of quote. As for our custom, its meaning is as I said in 'Radd al-Muhtar' from 'al-Bahr' that the implication of 'Na'am' is confirmation... Urdu: Among these, the first word (No) is explicit denial, and for the second (Yes), there are several possibilities: affirming the negation or affirming the negated, i.e., affirmation of divorce. So, in such a situation if there is doubt, divorce will not occur. I say (I mean): Mentioning the lack of difference between "Yes" and "Why not" here in 'Fath' is not objectionable because their statement is based on custom, as the author of 'Fath' himself stated that it is proper for there to be no difference between these two because common people do not differentiate between them; rather, they understand affirmation of the negated in both. [End of quote].

However, in our custom, there is a difference between these two, as I have said. It is quoted from 'Bahr' in 'Radd al-Muhtar' that 'Na'am' (Yes) indicates...

1. Durr al-Mukhtar, Chapter on Explicit (Divorce), Mujtabai Press, Delhi, 1/218.
2. Radd al-Muhtar with reference to Fath al-Qadir, Mujtabai Press, Delhi, 2/543.

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

इन शब्दों से तलाक़ प्रभावी हो जाएगी। और अगर वह क़ाज़ी के सामने कहे कि इन शब्दों से मेरा उद्देश्य यह था कि तलाक़ न हो, तो क़ाज़ी इसकी पुष्टि नहीं करेगा, लेकिन धार्मिक रूप से (दीयानतन) पुष्टि की जाएगी। (त) किसी ने कहा "तुम्हारी औरत पर तलाक़ है," उसने कहा "हाँ" या "क्यों नहीं"।

[बॉक्स 1] अरबी: 'अद-दुर्र' में है: यदि उससे कहा गया "क्या तुमने अपनी पत्नी को तलाक़ दी?" और उसने "नअम" (हाँ) या "बला" (क्यों नहीं) हिज्जे के साथ कहा, तो तलाक़ हो जाएगी - बहर (1)। उर्दू: 'दुर्र' में है: यदि किसी ने पति से पूछा "क्या तुमने बीवी को तलाक़ दी है?" और उसने जवाब में "हाँ" या "क्यों नहीं" के हिज्जे करते हुए कहा, तो तलाक़ हो जाएगी, बहर। (त)

लेकिन जब ऐसी कठोर आवाज़ या लहज़े में कहा जाए जिससे इनकार या इक़रार की कमी समझी जाए, तो यह बात अक्सर जगहों पर विचारणीय है; जैसा कि 'अल-ख़ानिया' और 'अल-ख़ज़ाना' आदि में है (ख़ानिया और ख़ज़ाना आदि में है। त)। या कहा "तुम्हारी औरत पर तलाक़ नहीं है," फिर कहा "क्यों नहीं" (और अगर वह 'ना' या 'हाँ' कहे तो तलाक़ नहीं होगी)।

[बॉक्स 2] अरबी: जहाँ तक पहले का सवाल है, वह स्पष्ट इनकार है। जहाँ तक बाद वाले का सवाल है, इसमें दो संभावनाएँ हैं: निषेध की पुष्टि या जो निषेध किया गया उसकी पुष्टि, यानी तलाक़। इसलिए संदेह की स्थिति में तलाक़ नहीं होगी। मैं कहता हूँ: 'फ़त्ह' में "नअम" और "बला" के बीच अंतर न होने की जो बात है, वह अस्वीकार्य नहीं है क्योंकि इसका आधार प्रथा (उर्फ़) पर है, जैसा कि 'फ़त्ह' के लेखक ने कहा है। और उचित यही है कि कोई अंतर न हो क्योंकि प्रथा के लोग अंतर नहीं करते, बल्कि वे दोनों से निषिद्ध बात की पुष्टि समझते हैं (2) उद्धरण समाप्त। जहाँ तक हमारी प्रथा का सवाल है, इसका अर्थ वैसा ही है जैसा मैंने 'बहर' के हवाले से 'रद्दुल मुहतार' में कहा है कि "नअम" का अर्थ पुष्टि है... उर्दू: इनमें पहला शब्द (ना) स्पष्ट इनकार है, और दूसरे (हाँ) में कई संभावनाएँ हैं: निषेध की पुष्टि या निषिद्ध (यानी तलाक़) की पुष्टि। तो ऐसी स्थिति में यदि संदेह हो तो तलाक़ नहीं होगी। मैं कहता हूँ (अक़ूल): यहाँ 'फ़त्ह' में "हाँ" और "क्यों नहीं" के बीच अंतर न होने का उल्लेख करना आपत्तिजनक नहीं है क्योंकि उनका बयान प्रथा (उर्फ़) पर आधारित है, जैसा कि स्वयं 'फ़त्ह' के लेखक ने स्पष्ट किया है कि उचित यही है कि इन दोनों में अंतर न हो क्योंकि प्रथा वाले इनमें अंतर नहीं करते बल्कि दोनों में निषिद्ध की पुष्टि समझते हैं। [उद्धरण समाप्त]। लेकिन हमारी प्रथा में इन

दोनों के बीच अंतर है, जैसा कि मैंने कहा है। 'रद्दुल मुहतार' में 'बहर' से उद्धृत है कि "नअम" (हाँ) का अर्थ है...

1. दुर्रे मुख़्तार, बाब अस-सरीह, मतबा मुजतबाई दिल्ली 1/218।
2. रद्दुल मुहतार, हवाला फ़त्हुल क़दीर, मतबा मुजतबाई दिल्ली 2/543।

पेज 538 का 688

الفاظ سے طلاق واقع ہو گی، اور اگر وہ قاضی کے ہاں کہے میں نے ان الفاظ سے یہ قصد کیا ہے کہ طلاق واقع نہ ہو تو قاضی اس کی تصدیق نہ کرے گا، لیکن دیانۃً تصدیق کی جائے گی۔ (ت)

کسی نے کہا تیری عورت پر طلاق ہے کہا "ہاں" یا "کیوں نہیں،

[Box 1] Arabic: فی الدر: ولو قیل لہ طلقت امرأتك فقال نعم او بلی بالهجاء طلقت بحر ۱۔

Urdu: در میں ہے: اگر کسی نے خاوند سے پوچھا "تونے بیوی کو طلاق دی ہے" تو اس نے جواب میں کہا "ہاں" یا "کیوں نہیں" کے ہجے کرتے ہوئے، تو طلاق ہو جائے گی، بحر۔ (ت)

مگر جب ایسی سخت آواز ایسے لہجہ سے کہا جس سے انکا وعدم اقرار سمجھا جائے، یہ فائدہ اکثر جگہ قابلِ لحاظ ہے فی الخانیۃ والخزانۃ وغیرہما (خانیہ اور خزانہ وغیرہما میں ہے۔ ت) یا کہا تیری عورت پر طلاق نہیں، کہا کیوں نہیں (اور اگر کہے نہ یا ہاں تو طلاق نہ ہوگی)

[Box 2] Arabic: اما الاول فانه صریح في الانکار اما الأخر ففیه احتمالان اثبات النفی واثبات المنفی ای الطلاق فلا یقع بالشک، اقول ولا یرد ما فی الفتح من عدم الفرق بین نعم وبلی لان مبناه علی العرف کما قال صاحب الفتح والذي ینبغی عدم الفرق فان اهل العرف لا یفرقون بل یفهمون منهما ایجاب المنفی ۱۲ھ امانی عرفنا فمعناه کما قلت فی ردالمحتار عن البحر ان موجب نعم تصدیق Urdu: ان میں پہلا لفظ (نہ) صریح انکار ہے، اور دوسرا (ہاں) تو اس میں کئی احتمالات ہیں، نفی کا اثبات یا منفی یعنی طلاق کا اثبات، تو ایسی صورت میں شک ہو تو طلاق نہ ہو گی۔ اقول (میں کہتا ہوں) فتح میں یہاں "ہاں" اور "کیوں نہیں" میں عدمِ فرق کو ذکر کرنا قابلِ اعتراض نہیں کیونکہ ان کے اس بیان کا مبنٰی عرف پر ہے جیسا کہ صاحبِ فتح نے خود بیان کیا ہے کہ مناسب یہی ہے کہ ان

دونوں میں فرق نہ ہو کیونکہ عرف والے ان میں فرق نہیں کرتے بلکہ وہ دونوں میں منفی کا اثبات سمجھتے ہیں اھ، لیکن ہمارے عرف میں ان دونوں میں فرق ہے، جیسا کہ میں نے کہا ہے۔

ردالمحتار میں بحر سے منقول ہے کہ نعم (ہاں) کا

۱ درمختار باب الصریح مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۱۸ ۲ ردالمحتار بحوالہ فتح القدیر مطبع مجتبائی دہلی ۲/ ۵۴۳

Fatawa Razawiya, Volume 12

[Box 1] (Arabic): That which precedes it, whether negative or affirmative, interrogative or informative, and the response 'Bala' (indeed/why not) confirms what follows the negation, whether it was interrogative or informative. Now, what is considered in the rulings of the Shariah is custom ('Urf), to the extent that each is substituted for the other. (1) (Urdu): The word 'N'am' (Yes) is used to confirm the first statement, whether it is affirmative, negative, interrogative, or informative. And 'Bala' (Why not) is used to affirm the negation in the first statement, whether that negation is in an interrogative form or an informative form. However, in the rulings of Sharia, custom is considered in every case, so much so that in custom, one can be intended in place of the other. (T)

1. "You are divorced and I have no right of revocation." (Arabic): In Al-Shami, from Al-Khayriyya, from Al-Sayrafiyya: "You are divorced and I have no revocation over you" - it is a revocable divorce. (2) (Urdu): It is quoted in Fatawa Shami from Khayriyya, and they from Sayrafiyya, that if a husband said, "You are divorced and I have no right to return," it will be one revocable (Raj'i) divorce. (T)
2. "Divorce is upon you; neither a judge, nor a ruler, nor a scholar can return you." (Arabic): In Al-Khayriyya: He was asked about a man who said to his wife, "You are divorced; neither judge nor ruler nor scholar can return you." Would it be irrevocable (Ba'in) or revocable (Raj'i)? He replied: It is revocable, and he does not have the power to take it out of its Shari'ah designation by that statement. (3) (Urdu): It is in Khayriyya: A question was asked that a person said to his wife, "You are divorced; no judge, ruler, or scholar can return you." So in this case, will the divorce be revocable or irrevocable? They replied that it will be revocable, and by his saying so, the Shari'ah rule will not be nullified. (T)
3. "Then you are divorced according to the religion of Jews or Christians or the four schools of thought or all Muslims." (Arabic): In Al-Khayriyya: He said in Minh al-Ghaffar: I say, and it has become frequent in our time for a man to say, "You are divorced according to the four schools of thought," meaning by that, the divorce occurs upon her. (Urdu): It is in Khayriyya: It was said in Minh al-Ghaffar, "I say that in our time, the husband's saying 'you are divorced according to the four religions' implies that the divorce is agreed upon by all schools of thought. So, in such a case, certainly divorce..."

[Footnotes] 1. Radd al-Muhtar, Chapter on Explicit Divorce, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/253 2. Radd al-Muhtar, Chapter on Explicit Divorce, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/251 3. Fatawa Khayriyya, Book of Divorce, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/46

फतावा रज़विया, जिल्द 12

[बॉक्स 1] (अरबी): इसके पूर्ववर्ती कथन, चाहे वे नकारात्मक हों या सकारात्मक, प्रश्नवाचक हों या सूचनात्मक, और 'बला' (क्यों नहीं/वास्तव में) का परिणाम निषेध के बाद आने वाली बात की पुष्टि है, चाहे वह प्रश्नवाचक रही हो या सूचनात्मक। अब, शरीयत के फैसलों में जो मान्य है वह 'उर्फ (लोक-प्रथा) है, यहाँ तक कि एक को दूसरे के स्थान पर रखा जाता है। (1) (उर्दू): शब्द 'नाम' (हाँ) का उपयोग पिछले कथन की पुष्टि के लिए होता है, चाहे वह सकारात्मक हो, नकारात्मक हो, प्रश्नवाचक हो या सूचनात्मक। और 'बला' (क्यों नहीं) का उपयोग पहले कथन में निषेध की पुष्टि के लिए होता है, चाहे वह निषेध प्रश्नवाचक रूप में हो या सूचनात्मक रूप में। हालांकि, शरीयत के फैसलों में हर हाल में 'उर्फ (प्रथा) का विचार किया जाता है, यहाँ तक कि उर्फ में एक को दूसरे की जगह इस्तेमाल करना मुराद लिया जाता है। (त)

1. "तुझे तलाक है और मुझे रुजू (वापसी) का अधिकार नहीं है।" (अरबी): अल-शामी में अल-खैरिया से अल-सैराफिया के हवाले से: "तुझे तलाक है और मुझ पर तेरे लिए कोई रुजू नहीं है" - तो यह रजी (वापसी योग्य) तलाक है। (2) (उर्दू): फतावा शामी में खैरिया से और उन्होंने सैराफिया से नकल किया कि अगर पति ने कहा "तुझे तलाक है और मुझे रुजू करने का अधिकार नहीं है" तो एक रजी (Raj'i) तलाक होगा। (त)

2. "तुझ पर तलाक है, न तुझे कोई काजी फिराये (वापस लाये), न हाकिम, न आलिम।" (अरबी): अल-खैरिया में: एक ऐसे व्यक्ति के बारे में पूछा गया जिसने अपनी पत्नी से कहा, "तुझे तलाक है, तुझे न कोई काजी लौटा सकता है, न कोई शासक और न ही कोई विद्वान।" क्या यह बाइन (अटल) होगा या रजी (वापसी योग्य)? उन्होंने उत्तर दिया: यह रजी है, और वह इसे अपने शरीयत के दायरे से बाहर निकालने का अधिकार नहीं रखता। (3) (उर्दू): खैरिया में है: सवाल किया गया कि एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा "तुझे तलाक है न तुझे कोई काजी, कोई हाकिम या आलिम वापस न कर सके', तो क्या इस सूरत में तलाक रजी होगी या बाइन? तो उन्होंने जवाब दिया कि रजी होगी, और उसके ऐसा कहने से शरई ज़ाबता (नियम) खत्म नहीं होगा। (त)

3. "तो यहूदियों या ईसाइयों के धर्म के अनुसार या चारों मज़ाहिब (धर्मों) या सभी मुसलमानों के अनुसार तलाकशुदा।" (अरबी): अल-खैरिया में: मिन्ह अल-गफ्फार में कहा: मैं कहता हूं, हमारे

समय में एक आदमी का यह कहना अक्सर हो गया है कि "तुझे चारों मज़ाहिब के अनुसार तलाक है," इसका अर्थ यह है कि उस पर तलाक लागू हो गया है। (उर्दू): खैरिया में है: मिन्ह अल-गफ्फार में कहा "मैं कहता हूं कि हमारे ज़माने में खाविंद का यह कहना 'तुझे चारों मज़हब तलाक'", तो इससे मुराद यह है कि तमाम मज़ाहिब पर मुत्तफ़क़ा (सर्वसम्मत) तलाक है, तो ऐसी सूरत में यक़ीनन तलाक...

[पादलेख] 1. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-सरीह, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/253 2. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-सरीह, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/251 3. फतावा खैरिया, किताब अल-तलाक, दार अल-मआरिफ़ा, बेरुत, 1/46

पृष्ठ 539/688

فتاوی رضویه جلد دو از دہم

ما قبلها من كلام منفي او مثبت استفهاماً كان او خبرا وموجب بلی ایجاب مابعد النفی استفهاماً كان او خبرا ۔ الان المعتبر فی احكام الشرع العرف حتی یقام كل واحد منهما مقام الاخر 1اھ | استعمال پہلی کلام کی تصدیق کے لئے ہوتا ہے خواہ وہ مثبت ہو منفی استفہامی ہو یا خبری، اور بلی (کیوں نہیں) کا استعمال پہلی کلام میں نفی کا اثبات کرنے لئے ہوتا ہے خواہ وہ نفی استفہامی میں ہو یا خبر میں، مگر احکام شرع میں بہر حال عرف کا اعتبار ہے، حتی کہ عرف میں ایک دوسرے کی جگہ استعمال مراد لیا جاتا ہے اہـ (ت)

۳۷ تجھے طلاق ہے اور مجھے اختیار رجعت نہیں، في الشامي عن الخيرية عن الصيرفية انت طالق ولا رجعة لي عليك فرجعية 2۔ | فتاوی شامی میں خیریہ سے اور انہوں نے صیرفیہ سے نقل کیا کہ اگر خاوند نے کہا "تجھے طلاق اور مجھے رجوع کا حق نہیں ہے" تو ایک رجعی طلاق ہوگی (ت)

۳۸ تجھ پر طلاق ہے نہ پھیرے تجھے کوئی قاضی نہ حاکم نہ عالم، في الخيرية سئل في رجل قال لزوجته انت طالق لا يردك قاضی ولا وال ولا عالم هل يكون بائنا ام رجعيا اجاب هو رجعی ولا يملك اخراجه عن موضوعه الشرعی بذلك 3۔ | خیریہ میں ہے: سوال کیا گیا کہ ایک شخص نے اپنی بیوی کو کہا "تجھے طلاق ہے نہ تجھے کوئی قاضی، کوئی حاکم یا عالم واپس نہ کر سکے، تو کیا اس صورت میں طلاق رجعی ہوگی یا بائن؟ تو انہوں نے جواب دیا کہ رجعی ہوگی، اور اس کے کہنے سے شرعی ضابطہ ختم نہ ہو گا۔ (ت)

تو ۳۹ مذہب یہودیوں یا نصاری یا چاروں مذہب یا سب مسلمین پر مطلقہ، فی الخیریة قال فی منح الغفار اقول وقد کثر فی زماننا قول الرجل انت طالق علی الاربعة مذاهب یرید بذلك ان الطلاق یقع علیها | خیریہ میں ہے: منح الغفار میں کہا "میں کہتا ہوں کہ ہمارے زمانہ میں خاوند کا قول تجھے چاروں مذہب طلاق" تو اس سے مراد یہ ہے کہ تمام مذاہب پر متفقہ طلاق ہے، تو ایسی صورت میں یقیناً طلاق

1 ردالمحتار باب الصریح داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۵۳/۲ 2 ردالمحتار باب الصریح داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۵۱/۲ 3 فتاوی خیریه کتاب الطلاق دارالمعرفة بیروت ۴۶/۱

It (divorce) will occur legally (qaza'an) and religiously (diyanatan), as is clear. Ah. I say: (I say) This divorce will undoubtedly be revocable (raj'i) and not irrevocable (ba'in), as has been stated before. Furthermore, they were asked about a person who said to his wife, 'You are divorced according to the Jewish and Christian religion,' and another who said to his wife, 'You are divorced according to all the religions of Muslims.' They replied in both cases that this would be a revocable divorce. (T)

"Go, you are divorced, be lawful for 33 pigs or Jews and forbidden for me."

In 'Al-Khayriyya', it is mentioned that they were asked: A man said to his wife, "Go, you are divorced, you are lawful for the Jews and forbidden for me," and another said to his wife, "Go, you are divorced, you are lawful for pigs and forbidden for me." They replied that this would be a revocable divorce, because "Go, you are divorced" is an explicit (sarih) divorce. As for his saying "you are lawful for Jews or pigs," it is a futile statement and contrary to the Sharia, as he does not have authority over it. And his saying "and you are forbidden for me" refers to the prohibition that occurs after the completion of the waiting period (iddah), as established in Sharia after divorcing a consummated wife. (T)

However, this is when he did not intend divorce with the words "be forbidden for me," otherwise two irrevocable (ba'in) divorces would occur. In 'Ash-Shami': Yes, if he intended by his words "and you are forbidden" | In 'Fatawa Shami': Yes, if he said "you are to me..."

1. Fatawa Khayriyya, Book of Divorce, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/46
2. Fatawa Khayriyya, Book of Divorce, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/74
3. Fatawa Khayriyya, Book of Divorce, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/50

यह (तलाक़) क़ज़ाई (कानूनी) और दियानती (धार्मिक) रूप से प्रभावी होगा, जैसा कि स्पष्ट है। 'अह'। अक़ूल: (मैं कहता हूँ) यह तलाक़ निस्संदेह रजई (वापस लेने योग्य) होगा, बाइन (अटल) नहीं, जैसा कि पहले बताया जा चुका है। साथ ही, उनसे एक ऐसे व्यक्ति के बारे में पूछा गया जिसने अपनी पत्नी से कहा, 'तुम्हें यहूदी और ईसाई धर्म के अनुसार तलाक़ है,' और दूसरे ने अपनी पत्नी से कहा, 'तुम्हें मुसलमानों के सभी धर्मों के अनुसार तलाक़ है।' उन्होंने उत्तर दिया कि दोनों स्थितियों में यह रजई तलाक़ होगा। (त)

"जा तुझे तलाक़ है, 33 सुअरों या यहूदियों को हलाल और मुझ पर हराम हो,"

'अल-खैरिया' में है कि उनसे पूछा गया: एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा, "जा तलाक़ है, तू यहूदियों के लिए हलाल और मुझ पर हराम है," और इसी तरह एक दूसरे ने पत्नी से कहा, "जा तलाक़ है, तू सूअरों के लिए हलाल और मुझ पर हराम है।" उन्होंने उत्तर दिया कि यह रजई तलाक़ होगा, क्योंकि "जा तलाक़ है" स्पष्ट (ज़रीह) तलाक़ है। और उसका यह कहना कि यहूदियों या सूअरों के लिए हलाल है, एक व्यर्थ बात है और शरीयत के विरुद्ध है, जिसका उसे अधिकार नहीं है। और उसके"तू मुझ पर हराम है" कहने का अर्थ वह निषेध (हुरमत) है जो इद्दत बीतने के बाद होती है, जैसा कि शरीयत में सुहागन (मदख़ूला) पत्नी को तलाक़ देने के बाद निषेध होता है। (त)

लेकिन यह उस समय है जब उसने इन शब्दों "मुझ पर हराम हो" से तलाक़ की नीयत (इरादा) नहीं की थी, अन्यथा दो बाइन (अटल तलाक़) पड़ जाएंगे। 'अश-शामी' में है: हाँ, यदि उसने अपने शब्दों "और तू हराम है" से नीयत की... | 'फ़तावा शामी' में है: हाँ, अगर उसने कहा "तू मुझ पर..."

1. फ़तावा ख़ैरिया, किताबुत्तलाक़, दारुल मारिफ़ा, बेरुत, 1/46
2. फ़तावा ख़ैरिया, किताबुत्तलाक़, दारुल मारिफ़ा, बेरुत, 1/74
3. फ़तावा ख़ैरिया, किताबुत्तलाक़, दारुल मारिफ़ा, बेरुत, 1/50

पृष्ठ 540 का 688

باتفاقهم وينبغي الجزم بوقوعه قضاء وديانة كما لا يخفى اهـ اقول: ولا شبهة في كونه رجعياً لا بائناً لما قدمنا (۱)۔ سئل عن رجل قال لزوجته انت طالق علی مذهب اليهود والنصاری، وعن رجل قال لزوجته انت طالق علی سائر مذاهب المسلمين اجاب فيهما بانه طلاق رجعي (۲)۔ ہو جائے گی قضاءً بھی اور دیانۃً بھی، جیسا کہ واضح ہے اھ، اقول: (میں کہتا ہوں) یہ طلاق بلاشبہ رجعی ہوگی بائنہ نہ ہوگی، جیسا کہ پہلے بیان ہو چکا ہے، نیز ان سے سوال کیا گیا کہ ایک شخص نے بیوی کو کہا تجھے یہودی اور نصرانی مذہب پر طلاق، دوسرے نے بیوی کو کہا تجھے مسلمانوں کے تمام مذاہب پر طلاق، تو انہوں نے جواب دیا کہ یہ طلاق رجعی ہوگی۔ (ت)

"جا تجھے طلاق ہے، ۳۳ سوروں یا یہودیوں کو حلال اور مجھ پر حرام ہو،"

فی الخيرية سئل في رجل قال لزوجته روحی طالق تحلی لليهودی وتحرمی علیّ وعمن قال روحی طالق تحلی للخنازير وتحرمی علیّ، اجاب بانه رجعي لان قوله روحی طالق صريح فيه، وقوله تحلی لليهود او للخنازير لغو لانه خلاف المشروع وهو لا يملكه، وقوله وتحرمی ای حرمة تحصل بانقضاء العدة اذ هو ثابت شرعاً بصريح الطلاق بعد الدخول (۳)۔ خیریہ میں ہے ان سے سوال ہوا کہ ایک شخص نے اپنی بیوی کو کہا "جا طلاق ہے تو یہودیوں کے لئے حلال اور مجھ پر حرام" اور یوں ایک دوسرے نے بیوی کو کہا "جا طلاق ہے تو خنزیروں کے لئے حلال اور مجھ پر حرام ہے" تو انہوں نے جواب دیا کہ یہ طلاق رجعی ہوگی، کیونکہ "جا طلاق ہے" صریح طلاق ہے، اور اس کا یہ کہنا تو یہودیوں یا خنزیروں کے لئے حلال ہے، لغو بات ہے اور خلاف شرع ہے جس کا اسے اختیار نہیں، اور اس کا یہ کہنا کہ "تُو مجھ پر حرام ہے" سے مراد وہ حرمت ہے جو عدّت گزرنے کے بعد ہوتی ہے جیسا کہ شریعت میں مدخولہ بیوی کو طلاق دینے کے بعد حرمت ہوتی ہے (ت)

مگر یہ اس وقت جبکہ اس لفظ سے کہ "مجھ پر حرام ہو" طلاق کی نیت نہ کی ورنہ دو بائن پڑیں گی، فی الشامي نعم لو قصد بقوله وتحرمی | فتاویٰ شامی میں ہے ہاں اگر اس نے "تو مجھ پر

۱ فتاویٰ خیریہ کتاب الطلاق دارالمعرفۃ بیروت ۱/ ۴۶ ۲ فتاویٰ خیریہ کتاب الطلاق دارالمعرفۃ بیروت ۱/ ۷۴ ۳ فتاویٰ خیریہ کتاب الطلاق دارالمعرفۃ بیروت ۱/ ۵۰

Fatawa Razvia Volume 12

[Column 1 (Arabic)] On causing a divorce, it occurs as another 'Ba'in' (irrevocable) divorce. I say: it cannot be objected that making one's wife forbidden to oneself or making oneself forbidden to her is a divorce without intention, as mentioned before, because this is in the present/future tense (mudari'), and its apparent meaning is for the future, like his saying 'I will divorce' or 'you will be a divorcee,' so understand.

[Column 2 (Urdu)] If the intention was to cause a new divorce with the phrase "it is forbidden," then this will be a second 'Ba'in' (irrevocable) divorce. I say: here an objection might arise that it was mentioned earlier that for a husband to say to his wife that she is forbidden to him or he is forbidden to her results in divorce even without intention, whereas here it is said that saying "with the intention of a new divorce, you are forbidden to me" results in divorce due to intention. These two statements seem contradictory. The answer is that here the word "Tuharrami" (you will be forbidden to me) is apparently in the future tense, which carries the same rule as saying "I will give a divorce" or "you will be a divorcee." Think over it. (T)

41 So, she is 'Mutallaqa' (divorced) and 'Ba'in' (irrevocable), or 42 'Mutallaqa' then 'Ba'in'.

[Column 1 (Arabic)] In 'Al-Durr': If he added a conjunction and said "and Ba'in" or "then Ba'in" and did not intend anything, it is a 'Raj'i' (revocable) divorce. (2)

[Column 2 (Urdu)] It is in 'Durr': If he used a conjunction and said "you are divorced and Ba'in," or said "you are divorced then Ba'in," and did not intend any new divorce with the word Ba'in, then it will be only one revocable divorce. (T)

However, if a separate divorce was intended with each word, then it would be two irrevocable (Ba'in) divorces.

[Column 1 (Arabic)] In 'Radd al-Muhtar': The meaning of the restriction regarding lack of intention is that if he intended to repeat the act of divorce with all three letters, or intended three with the word 'Ba'in', then what he intended occurs. (3)

[Column 2 (Urdu)] In 'Radd al-Muhtar' it is stated: The meaning of "absence of intention" is that if he uttered the three letters with the intent of a new divorce, or made this repetition with the intent of three divorces, or intended three with the word 'Ba'in', then whatever intent he had, that will occur. (T)

43 Seeing the woman's son and saying "O son of a divorced woman," 44 "O mother of a divorcee." Note: This is how it is in the original (manuscript) and perhaps it is a scribe's error; in my opinion, the correct version is "O your mother is six-times divorced," as it will appear from 'Al-Hindiyya'. 12 Faqir Hamid Raza Qadri.

Footnotes: 1. Radd al-Muhtar, Chapter on Express Divorce, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/251 2. Durr al-Mukhtar, Chapter on Express Divorce, Matba Mujtabai, Delhi, 1/222 3. Radd al-Muhtar, Chapter on Express Divorce, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/250

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

[कॉलम 1 (अरबी)] तलाक देने पर, यह एक और 'बाइन' (अप्रतिसंहरणीय) तलाक के रूप में होता है। मैं कहता हूँ: इस पर यह आपत्ति नहीं की जा सकती कि अपनी पत्नी को अपने लिए हराम करना या खुद को उसके लिए हराम करना बिना नीयत के तलाक है, जैसा कि पहले बताया गया है, क्योंकि यह वर्तमान/भविष्य काल (मुज़ारे) में है, और इसका स्पष्ट अर्थ भविष्य के लिए है, जैसे उसका यह कहना 'मैं तलाक दूंगा' या 'तुम तलाकशुदा होगी', इसलिए समझें।

[कॉलम 2 (उर्दू)] यदि "हराम है" वाक्यांश के साथ एक नया तलाक देने का इरादा था, तो यह दूसरा 'बाइन' (अप्रतिसंहरणीय) तलाक होगा। मैं कहता हूँ: यहाँ एक आपत्ति उठ सकती है कि पहले यह उल्लेख किया गया था कि एक पति का अपनी पत्नी से यह कहना कि वह उसके लिए हराम है या वह उसके लिए हराम है, बिना नीयत के भी तलाक का परिणाम देता है, जबकि यहाँ यह कहा गया है कि "नए तलाक की नीयत से, तुम मुझ पर हराम हो" कहने पर नीयत के कारण तलाक होता है। ये दोनों कथन विरोधाभासी लगते हैं। उत्तर यह है कि यहाँ "तुहर्रमी" (तुम मुझ पर हराम होगी) शब्द स्पष्ट रूप से भविष्य काल में है, जिसमें वही नियम लागू होता है जो "मैं तलाक दूंगा" या "तुम तलाकशुदा होगी" कहने पर होता है। इस पर विचार करें। (त)

41 तो, वह 'मुतल्लाका' (तलाकशुदा) और 'बाइन' (अप्रतिसंहरणीय) है, या 42 'मुतल्लाका' फिर 'बाइन' है।

[कॉलम 1 (अरबी)] 'अल-दुर्र में: यदि उसने एक संयोजक जोड़ा और कहा "और बाइन" या "फिर बाइन" और कुछ भी इरादा नहीं किया, तो यह एक 'रजई' (प्रतिसंहरणीय) तलाक है। (2)

[कॉलम 2 (उर्दू)] 'दुर्र में है: यदि उसने एक संयोजक का उपयोग किया और कहा "तुम तलाकशुदा और बाइन हो," या कहा "तुम तलाकशुदा फिर बाइन हो," और बाइन शब्द से किसी नए तलाक का इरादा नहीं किया, तो यह केवल एक प्रतिसंहरणीय तलाक होगा। (त)

हालांकि, यदि प्रत्येक शब्द के साथ एक अलग तलाक का इरादा था, तो वे दो अप्रतिसंहरणीय (बाइन) तलाक होंगे।

[कॉलम 1 (अरबी)] 'रद्द अल-मुह्तार' में: नीयत की कमी के संबंध में प्रतिबंध का अर्थ यह है कि यदि उसने तीनों अक्षरों के साथ तलाक के कार्य को दोहराने का इरादा किया, या 'बाइन' शब्द के साथ तीन का इरादा किया, तो वही होता है जिसका उसने इरादा किया था। (3)

[कॉलम 2 (उर्दू)] 'रद्द अल-मुह्तार' में कहा गया है: "नीयत की अनुपस्थिति" का अर्थ यह है कि यदि उसने नए तलाक के इरादे से तीनों अक्षर कहे, या तीन तलाक के इरादे से यह दोहराव किया, या 'बाइन' शब्द से तीन का इरादा किया, तो उसने जो भी नीयत की होगी, वही होगा। (त)

43 औरत के बेटे को देखकर कहना "ऐ तलाकशुदा के बेटे," 44 "ऐ तलाकशुदा की माँ।" नोट: मूल (पांडुलिपि) में ऐसा ही है और शायद यह लेखक की गलती है; मेरी राय में, सही संस्करण है "ऐ तेरी माँ छह-तलाकशुदा है," जैसा कि 'अल-हिंदिया' से सामने आएगा। 12 फकीर हामिद रज़ा कादरी।

पादलेख: 1. रद्द अल-मुह्तार, स्पष्ट तलाक पर अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/251 2. दुर्र अल-मुख्तार, स्पष्ट तलाक पर अध्याय, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/222 3. रद्द अल-मुह्तार, स्पष्ट तलाक पर अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/250

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

[کالم 1 (عربی)] علی ایقاع الطلاق وقع به اخری بائنة اھ اقول: ولا یرد ان تحریما او تحریم نفسه علیها طلاق بلانیة کما تقدم لان هذا مضارع ظاهره الاستقبال کقوله طلاق کنم او تکونین مطلقة فافهم۔

[کالم 2 (اردو)] "حرام ہے" سے نئی طلاق واقع کرنے کا ارادہ کیا ہو تو یہ دوسری طلاق بائنہ ہوگی اھ، اقول: (میں کہتا ہوں) یہاں یہ اعتراض ہوگا کہ پہلے گزرا ہے کہ بیوی کو اپنے لئے یا اپنے آپ کو بیوی پر حرام کرنا، بغیر نیت بھی طلاق ہو گی جبکہ یہاں یہ کہنا کہ "نئی طلاق کی نیت سے مجھ پر حرام ہے" کہا تو نیت سے طلاق، تو دونوں بیان آپس میں مختلف ہیں، تو جواب یہ کہ یہاں "تحرمی" (تو مجھ پر حرام ہوگی) ظاہر طور پر یہ استقبال ہے، جیسا کہ میں طلاق دوں گا یا تو طلاق والی ہوگی، کا حکم ہے، غور کرو۔ (ت)

۴۱ تو مطلقہ اور بائنہ یا ۴۲ مطلقہ پھر بائنہ ہے،

[کالم 1 (عربی)] فی الدر ولو عطف فقال وبائن او ثم بائن ولم ینو شیئا فرجعیة ۲-

[کالم 2 (اردو)] در میں ہے: اگر عطف کیا تو یوں کہا انت طالق وبائن، یا یوں کہا انت طالق ثم بائن، اور لفظ بائن سے کوئی نئی طلاق مراد نہ لی تو ایک ہی رجعی طلاق ہو گی (ت)

مگر جبکہ ہر لفظ سے جدا طلاق کی نیت کی ہو تو دو بائنہ ہیں،

[کالم 1 (عربی)] فی رد المحتار ومفهوم التقیید بعدم النیة انه لونوی تکریر الایقاع مع الحروف الثلثة اونوی بالبائن الثلاث انه یقع مانوی ۳-

[کالم 2 (اردو)] ردالمحتار میں ہے: نیت نہ ہونے کا مطلب یہ ہوا کہ اگر اس نے نئی طلاق کی نیت سے تینوں حروف کہے ہوں اور تین طلاقوں کی نیت سے یہ تکرار کیا یا بائن سے تین کی نیت کی ہو، جو بھی نیت کی ہوگی وہ واقع ہو گی۔ (ت)

۴۳ عورت کے بیٹے کو دیکھ کر کہ اے طلاقن کے جئے ، ۴۴ اے مادر طلاقہ عہ ، عہ: ھکذا فی الاصل ولعلہ نسخہ الناسخ وعندی صوابہ ای مادرت شش طلاقہ کما یجئی عن الھندیۃ فقیر حامد رضا قادری۔ اصل (قلمی نسخہ) میں ایسے ہی ہے اور ممکن ہے یہ ناقل کی غلطی ہو، میرے خیال میں درست یوں ہے اے مادرت شش طلاقہ ، جیسا کہ ہندیہ سے آئے گا ۱۲ فقیر حامد رضا قادری

حواشی: ۱ ردالمحتار باب الصریح داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۵۱/۲ ۲ درمختار باب الصریح مطبع مجتبائی دہلی ۲۲۲/۱ ۳ ردالمحتار باب الصریح داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۵۰/۲

Volume Twelve Fatawa Razawiyya

In al-Hindiyyah, quoting from al-Zahiriyyah, it is stated that a man had a habit that whenever he saw a child, he would say, "O you, whose mother has six divorces." Once he got intoxicated with wine and in that state, his own son came to him. In his drunken state, he thought it was a stranger's child and said to him too, "Go, your mother has six divorces," not knowing that it was his own son. Consequently, his wife will be divorced three times. End quote. (T)

I say: (In this also, the same detail is required as mentioned before regarding the word 'mutallaqa' etc., as is not hidden. T) 48. Divorce on you fully, or 49. half, or 50. one-third etc. 51. One-thousandth part of a divorce on you.

In Al-Durr, it is mentioned: A part of divorce, even if it is a thousandth part, counts as one divorce because divorce cannot be divided into parts. (T)

1. Minimum degree of divorce on you.

In Al-Khaniyah, if someone says "the minimum amount of divorce", it will be one divorce. (T)

1. Half on you, 54. quarter on you, 55. one-thousandth piece on you, 56. divorce on your soul, 57. divorce on your life, 58. divorce on your nose (and if he says it on 'anf' or 'beeni' or says in Arabic or Persian 'anfuka taliq', 'bar beeni tu talaq' [divorce on your nose - T], then nothing happens. On the contrary, if he says in Arabic 'unquka taliq' or 'farjuka taliq' [divorce on your neck or your private parts - T], divorce will occur. However, if in Urdu he says divorce on your 'unuq' or 'gardan' [neck] or 'faraj', nothing happens unless the word 'faraj' or its synonym is used which in Indian custom refers to the whole woman. Even if it is a specific Urdu word, the reason is that it must be a specific word used in that language to represent the person's essence. In Arabic, 'unuq' and 'faraj' are such words, but in our language, 'unuq', 'gardan', specific words, and 'beeni' etc., are not like that, nor is it common parlance here).
2. Fatawa Hindiyyah, Chapter Seven on Divorce in Persian words, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/385
3. Durr-e-Mukhtar, Chapter Seven, Matba Mujtabai Delhi, 1/219
4. Fatawa Qazi Khan, Book of Divorce, Naval Kishore Lucknow, 1/208

बारहवाँ खंड फ़तावा रज़विया

अल-हिंदिया में अल-ज़हीरिया के हवाले से है कि एक व्यक्ति की आदत है कि जब वह किसी बच्चे को देखता है तो कहता है, "अरे तेरी माँ छह तलाक़ वाली", तो वह शराब के नशे में था, उसी स्थिति में उसका अपना बेटा आया तो उसने नशे में उसे कोई अजनबी बच्चा समझकर उसे भी कह दिया, "जा तेरी माँ छह तलाक़ वाली", यह जानते हुए भी नहीं कि वह उसका अपना बेटा है। तो उसकी पत्नी को तीन तलाक़ हो जाएँगे। इह (त)

मैं कहता हूँ: (इसमें भी वही विस्तार चाहिए जो शब्द 'मुतल्लाक़ा' आदि के बारे में पहले गुज़रा है जैसा कि छिपा नहीं है। त) 48. तुझ पर पूरी या 49. आधी या 50. तिहाई आदि, 51. तुझ पर तलाक़ का हज़ारवाँ हिस्सा।

अल-दुर में है: तलाक़ का हिस्सा चाहे हज़ारवाँ हिस्सा ही क्यों न हो, एक ही तलाक़ होगी, क्योंकि तलाक़ के टुकड़े नहीं हो सकते। (त)

1. तुझ पर कम दर्जे की तलाक़।

ख़ानिया में है अगर कहा कम से कम तलाक़ तो एक ही होगी। (त)

1. तेरे पर आधा, 54. तेरे चौथाई पर तलाक़, 55. तेरे हज़ारवें टुकड़े पर तलाक़, 56. तेरी रूह पर तलाक़, 57. तेरी जान पर तलाक़, 58. तेरी नाक पर तलाक़ (और अगर 'अन्फ़' या 'बीनी' पर कहे या अरबी-फ़ारसी में 'अन्फ़ुका तालिक़', 'बर बीनी तू तलाक़' कहे तो कुछ नहीं। इसके विपरीत अगर अरबी में 'उनुक़ुका तालिक़' या 'फ़र्ज़ुका तालिक़' कहे तो तलाक़ हो जाएगी, और उर्दू में तेरी उनुक़ या गर्दन या फ़र्ज पर तलाक़ कहे तो कुछ नहीं, बशर्ते कि शब्द 'फ़र्ज' या उसका पर्यायवाची बोले जिससे भारतीय रीति-रिवाजों में पूरी औरत मुराद न लेते हों, चाहे वह उर्दू का ही विशिष्ट शब्द हो। कारण यह है कि यहाँ वह विशिष्ट शब्द होना चाहिए जो उस भाषा में इंसान की ज़ात (अस्तित्व) को व्यक्त करता हो। अरबी में 'उनुक़' और 'फ़र्ज' ऐसे ही हैं और हमारी भाषा में 'उनुक़', 'गर्दन', विशिष्ट शब्द और 'बीनी' आदि ऐसे नहीं हैं, और हमारे यहाँ का यह आम मुहावरा है)।
2. फ़तावा हिंदिया, अध्याय सात, फ़ारसी शब्दों में तलाक़, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/385

3. दुर्रे मुख़्तार, अध्याय सात, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/219

4. फ़तावा काज़ी खान, तलाक़ की किताब, नवल किशोर लखनऊ, 1/208

جلد دوازدہم فتاوٰی رضویہ

فی الھندیة عن الظھیریة رجل من عادتہ ان یقول اذا رأی صبیاً ای ماردت شش طلاقہ فسکر من الخمر فاتاہ ابنہ فظنہ صبیا اجنبیاً فقال روا ے ماردت شش طلاقہ ولم یعلم انہ ابنہ طلقت امرأتہ ثلثاً اھ - ہندیہ میں ظہیریہ سے ہے کہ ایک شخص کی عادت ہے کہ وہ جب کسی بچے کو دیکھتا ہے تو کہتا ہے "اے تیری ماں چھ طلاق والی" تو اس کو شراب کا نشہ تھا اس حالت میں اس کا اپنا بیٹا آیا تو اس نے نشے میں سمجھا کہ کوئی اجنبی بچہ ہے تو اس نے اس کو بھی "جاوے تیری ماں چھ طلاق والی" کہہ دیا تو اس کی بیوی کو تین طلاقیں ہو جائیں گی اھ (ت)

اقول: (اس میں بھی وہی تفصیل چاہئے جو لفظ مطلقہ وغیرہ میں گزری کما لایخفی) جیسا کہ مخفی نہیں۔ ت) ۴۸ تجھ پر پوری یا ۴۹ آدھی یا ۵۰ تہائی وغیرہ ۵۱ تجھ پر طلاق کا ہزارواں حصہ،

فی الدر وجزء الطلقة ولو من الف جزء تطلیقة لعدم التجزی ۲- در میں ہے: طلاق کی جزء خواہ ہزارویں جز، ایک ہی طلاق ہوگی، کیونکہ طلاق کے اجزاء نہیں ہو سکتے۔ (ت)

۵۲ تجھ پر کم درجہ کی طلاق،

فی الخانیة ولو قال اقل الطلاق یقع واحدة ۳- خانیہ میں ہے اگر کہا کم از کم طلاق تو ایک ہی ہوگی۔ (ت)

۵۳ تیرے پر نصف، ۵۴ تیرے چوتھائی پر طلاق، ۵۵ تیرے ہزارویں ٹکڑے پر طلاق، ۵۶ تیری روح پر طلاق، ۵۷ تیری جان پر طلاق، ۵۸ تیری ناک پر طلاق (اور اگر انف یا بینی پر کہے یا عربی فارسی میں انفك طالق، بر بینی تو طلاق (تیری ناک پر طلاق۔ ت) کہے تو کچھ نہیں۔ برعکس اس کے عربی میں عنقك طالق یا فرجك طالق (تیری گردن کو طلاق یا تیری شرمگاہ کو طلاق۔ ت)

کہے، طلاق ہو جائے گی، اور اُردو میں تیری عنق یا گردن یا فرج یا فرج پر طلاق کہے تو کچھ نہیں جبکہ لفظ فرج یا اس کا مرادف بولے جس سے عرف ہند میں کل عورت مراد نہ لیتے ہوں اگرچہ خاص اردو ہی کا لفظ ہو، وجہ یہ ہے کہ یہاں خاص وہ لفظ ہونا چاہئے جس سے اُس زبان میں انسان کی ذات کو تعبیر ہوں، عربی میں عنق و فرج ایسے ہی ہیں اور ہماری زبان میں عنق و گردن و خاص لفظ و بینی وغیرہ ایسے نہیں، اور ہمارے یہاں کا یہ عام محاورہ ہے

1 فتاوٰی ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالالفاظ الفارسیہ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۳۸۵ 2 درمختار باب السابع مطبع مجتبائی دہلی ۲۱۹/۱ 3 فتاوٰی قاضی خاں کتاب الطلاق نولکشور لکھنؤ ۱/۲۰۸

That so-and-so person is the "nose" of the whole city, the "nose" of the family, or a woman is like a "nose of wax" [meaning easily influenced], then apparently divorce should occur in these cases. Similarly, using a term for the private parts to refer to the entire woman.

Arabic	Urdu Translation/Explanation
In Ad-Durr: When divorce is attributed to her or to what represents her whole being, such as the neck, throat, soul, body (badan), physical frame (jasad) - limbs are included in 'jasad' but not in 'badan' - the private parts, the face, and the head, and likewise the buttocks; contrary to the vulva and blood according to the preferred view in 'Khulasah'. Or if it is attributed to a common share of her, like a half, a third, up to a tenth (and similarly if attributed to one part out of a thousand as in 'Al-Khaniyah'), it occurs because divorce is indivisible. (Radd al-Muhtar adds: Similarly, it does not occur if attributed to the nose.)	It is in Durr-e-Mukhtar that when divorce is attributed to the wife or to such a part of her from which her personality is meant, for example, the neck, throat, soul, body, physical frame (hands and feet are parts of the 'jasad' but not the 'badan'), private parts, face, head, and similarly the buttocks, then divorce will occur for the wife. But divorce will not occur if attributed to the vulva, anus, or blood. In Khulasah, this has been declared as the preferred view. Similarly, if divorce is attributed to an unspecified share of the wife, such as a half, a third, up to a tenth share, or even a specified share no matter how small, e.g., one-thousandth share, divorce will occur because divorce cannot be divided into parts, as added in Al-Khaniyah. Radd al-Muhtar adds that just as attributing divorce to the nose, e.g., 'your nose is divorced', does not result in divorce. (Translator)

If someone said regarding his wife, "Inform her of her divorce," or "Inform her," or "Write to her," or "Tell her she is divorced," or "Write a certificate or memo of divorce for her," the divorce takes place immediately even if he hasn't yet told or written to her. However, if he said, "Tell her: You are divorced," then it will occur when the person goes and tells her, otherwise not.

Arabic	Urdu Translation/Explanation
In Al-Khaniyah: A man said to another, "Inform my wife of her divorce," or	It is in Al-Khaniyah: If he said to another person, "Inform my wife of her divorce," or

Arabic	Urdu Translation/Explanation
"Convey her divorce to her," or "Inform her that she is divorced."	"Take her divorce to her," "Inform her," or say, "she is divorced."

1 Durr-e-Mukhtar, Bab al-Sarih, Mujtabai Press Delhi, 1/219; Radd al-Muhtar, Bab al-Sarih, Mujtabai Press Delhi, 2/436 2 Durr-e-Mukhtar, Bab al-Sarih, Mujtabai Press Delhi, 1/219

कि फ़लाँ व्यक्ति पूरे शहर की नाक है, परिवार की नाक है, या औरत मोम की नाक है [यानी आसानी से प्रभावित होने वाली], तो ज़ाहिर है कि इसमें तलाक़ हो जानी चाहिए। इसी तरह शर्मगाह का वह नाम जिससे पूरी औरत मुराद ली जाती हो।

अरबी

अद्दुर में है: जब तलाक़ को पत्नी की ओर या उसके ऐसे अंगों की ओर मंसूब किया जाए जो उसके पूरे व्यक्तित्व को दर्शाते हों, जैसे गर्दन, गला, रूह (आत्मा), बदन (शरीर), जसद (ढांचा) - हाथ-पैर जसद में शामिल हैं बदन में नहीं - शर्मगाह, चेहरा, सिर और इसी तरह चूतड़; इसके विपरीत योनि और खून की ओर निस्बत करने से तलाक़ नहीं होगी, जैसा कि 'ख़ुलासा' में मुख्तार (पसंदीदा) है। या अगर पत्नी के किसी गैर-मुअय्यन हिस्से जैसे आधा, तिहाई, या दसवें हिस्से की ओर (और इसी तरह अगर हज़ारवें हिस्से की ओर जैसा कि अल-ख़ानिया में है) निस्बत की जाए, तो तलाक़ हो जाएगी क्योंकि तलाक़ के टुकड़े नहीं हो सकते। (रद्द अल-मुह्तार में यह भी है कि नाक की ओर निस्बत करने से तलाक़ नहीं होगी।)

उर्दू अनुवाद/व्याख्या

दुर्रे मुख्तार में है कि जब तलाक़ को बीवी की तरफ या उसके ऐसे हिस्से की तरफ मंसूब करे जिससे बीवी की शख्सियत मुराद ली जाती हो, मसलन गर्दन, रक़बा, रूह, बदन, जिस्म (हाथ और पाँव जसद का हिस्सा हैं बदन का हिस्सा नहीं हैं) शर्मगाह, चेहरा, सर और इसी तरह सुरीन, तो बीवी को तलाक़ हो जाएगी। मगर बज़अ, दुबुर और खून की तरफ निस्बत की तलाक़ न होगी। 'ख़ुलासा' में इसको मुख्तार करार दिया है, और यूँही अगर तलाक़ को बीवी के गैर-मुअय्यन हिस्से मसलन निस्फ़ (आधा), सुलुस (तिहाई) से दसवें हिस्से की तरफ मंसूब किया और अगर मुअय्यन हिस्सा ख़्वाह कितना ही छोटा हो मसलन हज़ारवाँ हिस्सा, तो तलाक़ हो जाएगी क्योंकि तलाक़ के अजज़ा (हिस्से) नहीं होते, जैसा कि ख़ानिया में इज़ाफ़ा है। रद्दुल-मुह्तार में इज़ाफ़ा करते हुए कहा कि जिस तरह नाक की तरफ तलाक़ की निस्बत, मसलन 'तेरी नाक को तलाक़', तो तलाक़ न होगी। (त)

किसी ने अपनी औरत के बारे में कहा 'उसे उसकी तलाक़ की ख़बर दे' या 'उसे ख़बर दे' या 'लिख भेज' या 'उससे कह कि वह तलाक़शुदा है' या 'उसके लिए उसकी तलाक़ की सनद या याददाश्त लिख दे', तो अभी तलाक़ हो गई चाहे उसने उससे न कहा हो और न लिखा हो। और अगर यूँ कहा

कि 'उससे कह कि तू मुतल्लक़ा (तलाक़शुदा) है', तो जब वह जाकर कहेगा उसी वक़्त तलाक़ होगी, वरना नहीं।

अरबी	उर्दू अनुवाद/व्याख्या
अल-ख़ानिया में है: एक व्यक्ति ने दूसरे से कहा, "मेरी पत्नी को उसकी तलाक़ की सूचना दे," या "उसका तलाक़ उस तक पहुँचा दे," या "उसे सूचित कर दे कि वह तलाक़शुदा है।"	ख़ानिया में है, अगर दूसरे शख्स को कहा, मेरी बीवी को उसकी तलाक़ की ख़बर दे, या, उसकी तलाक़ उसकी तरफ ले जा, उसको ख़बर दे दो या कह दो कि वह तलाक़ वाली है।

---

1 दुर्रे मुख्तार, बाब अल-सरीह, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/219; रद्दुल मुह्तार, बाब अल-सरीह, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 2/436 2 दुर्रे मुख्तार, बाब अल-सरीह, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/219

کہ فلاں شخص شہر بھر کی ناک ہے، خاندان کی ناک ہے، عورت موم کی ناک ہے، تو ظاہر اس میں طلاق ہو جانا چاہئے۔ اسی طرح فرج کا وہ نام جس سے کل عورت مراد لیتے ہوں۔

عربی **اردو ترجمہ و تشریح**

در مختار میں ہے کہ جب طلاق کو بیوی کی طرف یا اس کے ایسے حصے کی طرف منسوب کرے جس سے بیوی کی شخصیت مراد لی جاتی ہو، مثلاً گردن، رقبہ، روح، بدن، جسم (ہاتھ اور پاؤں جسد کا حصہ ہیں بدن کا حصہ نہیں ہیں) شرمگاہ، چہرہ، سر اور اسی طرح سرین، تو بیوی کو طلاق ہو گی۔ مگر بضع، دبر اور خون کی طرف نسبت کی طلاق نہ ہو گی۔ خلاصہ میں اس کو مختار قرار دیا ہے، اور یونہی اگر طلاق کو بیوی کے غیر معین حصہ مثلاً نصف، ثلث تا دسویں حصہ کی طرف منسوب کیا اور اگر معین حصہ خواہ کتنا مثلاً ہزارواں حصہ تو طلاق ہو جائے گی کیونکہ طلاق کے اجزاء نہیں ہیں جیسا کہ خانیہ میں اضافہ ہے اھ ردالمحتار میں اضافہ کرتے ہوئے کہا کہ جس طرح ناک کی طرف طلاق کی نسبت، مثلاً تیری ناک کو طلاق، تو طلاق نہ ہو گی۔ (ت)

فی الدر واذ اضیف الطلاق الیھا اوالی مایعبربہ عنھا کالرقبۃ والعنق والروح والبدن والجسد (الاطراف داخلۃ فی الجسد دون البدن) والفرج والوجہ والراس وکذا الاست بخلاف البضع والدم علی المختار خلاصۃ او اضافۃ الی جزء شائع منھا کنصفھا وثلثھا الی عشرھا (وکذالواضافہ الی جزء من الف جزء منھا کما فی الخانیۃ) وقع لعدم تجزیہ اھ مزیدا من رد المحتار وفیہ ایضاً کما لا یقع لو اضافہ الی الانف-2

کسی سے اپنی عورت کی نسبت کہا اسے اس کی طلاق کی خبر دے یا اسے خبر دے یا اس لکھ بھیج یا اس سے کہہ کہ وہ مطلقہ ہے یا اس کے لئے اس کی طلاق کی سند یا یادداشت لکھ دے ابھی طلاق ہو گئی اگرچہ یہ اس سے نہ کہے نہ لکھے ، اور یوں کہا کہ اس سے کہہ کہ تو مطلقہ ہے تو جب جا کر کہے گا اس وقت پڑے گی ورنہ نہیں،

عربی	اردو ترجمہ و تشریح
فی الخانیة رجل قال لغیرہ اخبر امرأتی بطلاقها او احمل الیها طلاقها او اخبرها انها طالق	خانیہ میں ہے، اگر دوسرے شخص کو کہا، میری بیوی کو اس کی طلاق کی خبر دے، یا، اس کی طلاق اس کی طرف لے جا، اسکو خبر دے دو یا کہہ دو کہ وہ طلاق والی ہے،

---

1 در مختار باب الصریح مطبع مجتبائی دہلی ۲۱۹/۱، ردالمحتار باب الصریح مطبع مجتبائی دہلی

۴۳۶/۲ 2 در مختار باب الصریح مطبع مجتبائی دہلی ۲۱۹/۱

Fatawa Razawiyya, Volume 12

[Right Column - Arabic with Urdu translation] Or say to her: 'She is divorced.' Divorce occurs immediately and does not depend on the arrival of the news to her, nor on the designated person saying it. If he said: 'Tell her: You are divorced,' divorce does not occur until the designated person says it to her. If he said: 'Write her divorce for her,' the divorce should occur immediately, just as if he said: 'Carry her divorce to her,' and as if he said: 'Write to my wife that she is divorced.' Al-Uqud differed in the matter of 'Tell her she is such-and-such,' making it an appointment of an agency (wakala), so refer to it.

[Left Column - Urdu translation and explanation] In these cases, divorce will take place at that very moment and will not be dependent on the news reaching the wife or that person telling the wife. And if it was said like this: 'You tell her that you are divorced,' then in this case, divorce will not take place until that person tells the wife this thing. And if the other was told: 'You write divorce to my wife,' then divorce will take place at the same time, just as it was said 'Deliver the divorce to her' or just as it was said 'Write to my wife that she is divorced.' And 'Al-Uqud al-Durriyya' has given a contrary opinion in the matter of 'Tell the wife that she is divorced' and said that this is the husband appointing the other person as an agent, so for research, one should refer to 'Al-Uqud al-Durriyya.' (T)

[Annotation section] Annotation: The text of Al-Uqud is as follows: A man was asked about someone who said to another: 'Tell my wife she is divorced by three' and the other person said nothing to her. Does she not become divorced until he says it? The answer is 'Yes,' because it is an agency as explicitly stated in 'Al-Bazzaziya' in the section on 'Types of expressions'. End. I had written on its margin, which is: I say: The present/future tense (continued on next page).

The text of Al-Uqud is as follows: A question was asked regarding a person who said to another: 'You tell my wife that you are divorced by three,' and while the other person has not said this to his wife, will divorce not occur until that person tells the wife this thing? In response to this question, it was said: 'Yes' (it will not occur) because it is agency, as explicitly stated in 'Bazzaziya' in 'Kinds of words of divorce' etc. I wrote on its margin, which is this: I say: (I say) The present/future tense (remaining on the next page).

---

1. Fatawa Qadi Khan, Kitab al-Talaq, Naval Kishore Lucknow, 1/210

2. Al-Uqud al-Durriyya, Kitab al-Talaq, Haji Abdul Ghaffar and Sons, Kandahar Afghanistan, 1/41

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

[दायां स्तंभ - उर्दू अनुवाद के साथ अरबी] या उससे कहो: 'वह तलाक़शुदा है।' तलाक़ तुरंत हो जाती है और यह उस तक खबर पहुँचने पर निर्भर नहीं है, न ही उस व्यक्ति द्वारा ऐसा कहे जाने पर जिसे आदेश दिया गया है। यदि उसने कहा: 'उससे कहो: तुम तलाक़शुदा हो', तो तलाक़ तब तक नहीं होती जब तक कि वह व्यक्ति उससे ऐसा न कह दे। यदि उसने कहा: 'उसके लिए उसका तलाक़ लिख दो', तो तलाक़ तुरंत हो जानी चाहिए, जैसे कि उसने कहा हो: 'उसका तलाक़ उस तक ले जाओ', और जैसे कि उसने कहा हो: 'मेरी पत्नी को लिखो कि वह तलाक़शुदा है'। अल-उक़ूद ने 'उससे कहो कि वह ऐसी-वैसी है' के मामले में असहमति जताई है और इसे वकालत (एजेंसी) माना है, तो उसे देखें।

[बायां स्तंभ - उर्दू अनुवाद और व्याख्या] तो इन स्थितियों में उसी समय तलाक़ हो जाएगी और पत्नी को खबर पहुँचने या उस व्यक्ति के पत्नी को कह देने पर निर्भर नहीं होगी। और अगर ऐसे कहा कि 'तू उसको कह दे कि तू तलाक़ वाली है' तो इस स्थिति में उस समय तक तलाक़ न होगी जब तक वह व्यक्ति पत्नी को यह बात कह न दे। और अगर दूसरे को कहा कि 'तू मेरी पत्नी को तलाक़ लिख दे', तो उसी समय तलाक़ होगी जिस तरह कि कहा 'उसको तलाक़ पहुँचा दे' या जिस तरह कहा 'तू मेरी पत्नी की तरफ लिख दे कि उसको तलाक़ है'। और 'उक़ूद-उद-दुर्रिया' ने 'पत्नी को कह दे कि उसको तलाक़ है' के मामले में विपरीत बात कही है और कहा है कि यह पति की ओर से दूसरे व्यक्ति को वकील बनाना है, तो उक़ूद-उद-दुर्रिया की ओर शोध के लिए रुजू करना चाहिए। (त)

[टिप्पणी अनुभाग] टिप्पणी: उक़ूद की इबारत इस प्रकार है: एक व्यक्ति के बारे में पूछा गया जिसने दूसरे से कहा: 'मेरी पत्नी से कहो कि वह तीन तलाक़ के साथ तलाक़शुदा है' और दूसरे व्यक्ति ने उससे कुछ नहीं कहा। क्या वह तब तक तलाक़शुदा नहीं होगी जब तक वह ऐसा न कह दे? उत्तर है 'हाँ, क्योंकि यह वकालत है जैसा कि 'बज़ाज़िया' में 'अभिव्यक्तियों के प्रकार' भाग में स्पष्ट किया गया है। समाप्त। मैंने इसके हाशिये पर लिखा था: मैं कहता हूँ: मुज़ारिअ (वर्तमान/भविष्य काल) (अगले पृष्ठ पर जारी)।

उक़ूद की इबारत इस प्रकार है: उस व्यक्ति के बारे में सवाल हुआ जिसने दूसरे को कहा 'तू मेरी पत्नी से कह दे कि तू तीन तलाक़ वाली है' और जबकि दूसरे व्यक्ति ने यह बात उसकी पत्नी को न कही हो, तो क्या तलाक़ न होगी जब तक वह व्यक्ति पत्नी को यह बात कह न दे? इस सवाल के जवाब में

फ़रमाया 'हाँ' (न होगी) क्योंकि वकालत है जैसा कि 'बज़ाज़िया' में 'तलाक़ के शब्दों के प्रकार' आदि में इसकी तफ़सील है। मैंने इसके हाशिये पर लिखा, जो यह है: अक़ूल: (मैं कहता हूँ) मुज़ारिअ (बाकी अगले पन्ने पर)।

---

1. फ़तावा क़ाज़ी खां, किताब-उत-तलाक़, नवल किशोर लखनऊ, 1/210
2. अल-उक़ूद अल-दुर्रिया, किताब-उत-तलाक़, हाजी अब्दुल ग़फ़्फ़ार और संस, कंधार अफ़गानिस्तान, 1/41

فتاوی رضویہ، جلد دو از دہم

[دایاں کالم - عربی مع اردو ترجمہ] او قل لہا انہا طالق طلقت للحال ولا یتوقف علی وصول الخبر الیہا ولا علی قول المامور ذلک، ولو قال قل لہا انت طالق لا یقع الطلاق مالم یقل لہا المامور ذلک، ولو قال اکتب لہا طلاقہا ینبغي ان یقع الطلاق للحال کما لو قال احمل الیہا طلاقہا، وکما لو قال اکتب الی امرأتی انہا طالق ۔ وخالف العقود فی مسئلۃ قل لہا ہی کذا فجعلہ توکیلا فراجع عہ۔

[بایاں کالم - اردو ترجمہ و تشریح] تو ان صورتوں میں اسی وقت طلاق ہو جائے گی اور بیوی کو خبر پہنچنے یا اس شخص کے بیوی کو کہہ دینے پر موقوف نہ ہوگی، اور اگر یوں کہا کہ تُو اس کو کہہ دے کہ تُو طلاق والی ہے تو اس صورت میں اس وقت تک طلاق نہ ہوگی جب تک وہ شخص بیوی کو یہ بات کہہ نہ دے، اور اگر دوسرے کو کہا کہ تُو میری بیوی کو طلاق لکھ دے، تو اسی وقت طلاق ہوگی جس طرح کہ کہا "اس کو طلاق پہنچادے" یا جس طرح کہا "تو میری بیوی کی طرف لکھ دے کہ اس کو طلاق ہے۔ " اور عقوددریہ نے "بیوی کو کہہ دے کہ اس کو طلاق ہے" کے مسئلہ میں مخالف قول کیا ہے اور کہا کہ یہ خاوند کی طرف سے یہ دوسرے شخص کو وکیل بنانا ہے، تو عقوددریہ کی طرف تحقیق کے لئے رجوع کرنا چاہئے۔ (ت)

[حاشیہ کا حصہ] عہ: عبارۃ العقود ہکذا سئل فی رجل قال لآخر قل لامرأتی تکون طالقۃ بالثلث ولم یقل لہا الآخر شیئا فہل لا تطلق مالم یقل لہا الجواب نعم لانہ توکیل کما صرح بہ فی البزازیۃ فی نوع الفاظہ اھ و کنت کتبت علی ہامشہ مانصہ، اقول: المضارع

عقود کی عبارت یوں ہے: اس شخص کے متعلق سوال ہوا جس نے دوسرے کو کہا "تُو میری بیوی سے کہہ دے کہ تُو تین طلاق والی ہے" اور جبکہ دوسرے شخص نے یہ بات اس کی بیوی کو نہ

کہی ہو تو کیا طلاق نہ ہوگی جب تک وہ شخص بیوی کو یہ بات کہہ نہ دے، اس سوال کے جواب میں فرمایا ہاں (نہ ہوگی) کیونکہ وکالت ہے جیسا کہ بزازیہ میں اس کی تصریح "طلاق کے الفاظ کے اقسام" میں ہے اھ میں نے اس کے حاشیہ پر لکھا، جو یہ ہے، اقول: (میں کہتا ہوں) مضارع

(باقی اگلے صفحہ پر)

---

1 فتاوی قاضی خاں کتاب الطلاق نولکشور لکھنو ۱/ ۲۱۰ 2 العقود الدریة کتاب الطلاق حاجی عبد الغفار و پسران قندھار افغانستان ۱/ ۴۱

1. I divorce you. (Remaining footnote from the previous page)

The formula for divorce will only be effective when the present tense is predominantly intended. In such a case, the ruling would be as if a husband tells another person to tell his wife that she is divorced. It is clearly stated in Al-Khaniyyah that divorce occurs immediately in this situation. This is in contrast to when he says, "Tell my wife: 'you are divorced'", in which case divorce will not take place until he actually says it. Refer back to this and verify. If the issue (i.e., the issue of Al-Uqud) is such that the husband tells another person to say to his wife, "Be divorced" (omitting the 'nun' from 'takuni' and adding 'ya' as is common in colloquial language, especially among the general public, so the formula becomes an imperative form of address), then this answer from Al-Uqud would undoubtedly be correct and in accordance with the statement in Al-Khaniyyah. So, direct your attention to the text of Al-Bazzaziyyah. Then, by the grace of Allah, the issue in Al-Bazzaziyyah became clear, that the matter is exactly as I mentioned and understood: that 'takuni' was changed to 'takun' due to a scribal error. For the text of Al-Bazzaziyyah is as follows: if the husband said this, divorce would take place; otherwise, if the husband did not say it, divorce would not occur. In contrast, when a husband told another person to tell my wife... (Continued on the next page)

1. मैं तुझे तलाक़ देता हूँ। (पिछले पृष्ठ का शेष फ़ुटनोट)

तलाक़ का शब्द तब प्रभावी होगा जब उससे मुख्य रूप से वर्तमान काल का अर्थ लिया जाए। ऐसी स्थिति में, नियम वैसा ही होगा जैसे एक पति दूसरे व्यक्ति से कहे कि पत्नी से कह दो कि उसे तलाक़ है। 'अल-ख़ानिया' में यह स्पष्ट किया गया है कि इससे उसी समय तलाक़ हो जाएगा। इसके विपरीत, यदि वह कहे, "पत्नी से कह दो कि तुम्हें तलाक़ है," तो तलाक़ तब तक नहीं होगा जब तक वह कह न दे। इस पर विचार करें और जाँचें। और यदि यह 'अल्-उक़ूद' का मसला इस प्रकार हो कि पति दूसरे से कहे कि मेरी पत्नी से कह दो "तू तलाक़ वाली हो जा" ('तकुनी' में 'नुन' को हटाकर और 'या' जोड़कर कहना जैसा कि आम बोलचाल में विशेष रूप से जनता के बीच प्रचलित है, जिससे यह संबोधन का आज्ञावाचक रूप बन जाता है), तो 'अल्-उक़ूद' का यह उत्तर निस्संदेह सही होगा और 'अल-ख़ानिया' के बयान के अनुकूल होगा। तो 'अल-बज़्ज़िया' के पाठ पर ध्यान दें। फिर अल्लाह तआला के अनुग्रह से 'अल-बज़्ज़िया' का मसला स्पष्ट हो गया कि मामला वही है जैसा मैंने उल्लेख किया और समझा कि 'तकुनी' के स्थान पर लिपिकीय त्रुटि से 'तकून' हो गया है। क्योंकि 'अल-बज़्ज़िया' का पाठ इस प्रकार है: यदि पति ने यह कहा, तो तलाक़ हो जाएगा; अन्यथा यदि पति ने नहीं कहा, तो तलाक़ नहीं होगा। इसके विपरीत, जब पति ने दूसरे व्यक्ति से कहा कि मेरी पत्नी से... (अगले पृष्ठ पर जारी)

۲۸ میں تجھے طلاق دیتا ہوں، (بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ)

کا صیغہ طلاق میں تب عمل کرے گا جب اس سے غالب طور پر حال مراد ہو ، تو ایسی صورت میں اس کا حکم ایسا ہوگا جیسے خاوند دوسرے کو کہے کہ بیوی کو کہہ دو اس کو طلاق ہے، اور خانیہ میں تصریح ہے کہ اس سے اسی وقت طلاق ہوگی، بخلاف جب کہے "بیوی کو تو کہہ دے کہ تجھے طلاق ہے " تو طلاق نہ ہوگی جب تک وہ نہ کہہ دے اس کی طرف رجوع کر کے دیکھو ، اور اگر یہ عقود کا مسئلہ ، یوں ہو کہ، دوسرے کو خاوند کہے، کہ، تو میری بیوی سے کہہ دے " تو طلاق والی ہو جا" (تکونی میں نون کا حذف اور یاء کا اضافہ کرکے کہے جیسا کہ یہ عام طور پر خصوصاً عوام میں مشہور ہے، تو یہ صیغہ امر خطاب ہوگا) تو عقود کا یہ جواب بلاشبہ درست ہوگا، اور خانیہ کے بیان کے موافق ہوگا، تو بزازیہ کی عبارت پر غور کرواؤ ، پھر اللہ تعالیٰ نے احسان فرما کر بزازیہ کا مسئلہ واضح کردیا کہ معاملہ وہی ہے جو میں نے ذکر کیا اور سمجھا کہ "تکونی" کی تبدیلی میں "تکون" ہو گیا ، کیونکہ بزازیہ کی عبارت یوں ہے خاوند نے یہ کہہ دیا تو طلاق ہو جائے گی ورنہ اگر خاوند نے نہ کہا تو طلاق نہ ہوگی ، اس کے برخلاف جب خاوند نے دوسرے شخص کو کہا کہ تو میری بیوی سے (باقی بر صفحہ آئندہ)

[Box - Right Column]: It is in Hindiyyah: And in Al-Muhit, if one says the imperfect verb (Atliqu) in Arabic, divorce will not occur, unless this word is predominantly used for the present state, then divorce will occur. And in Hindiyyah, it is narrated from Al-Khulasah that the wife said to the husband, "Divorce is in your power, divorce me." If the husband replied by saying, "I am divorcing, I am divorcing," and repeated it three times, then there will be three divorces. In contrast, if he says, "I will do it," then divorce will not occur because this is the future tense; hence, there will be doubt, and divorce will not occur. (T)

[Box - Left Column]: In Al-Hindiyyah and in Al-Muhit: If one says in Arabic "Utliqu" [I release/divorce in a tense that can be future], it will not be a divorce unless its use for the present state prevails, in which case it is a divorce. And in it, from Al-Khulasah: [Persian text] She said, "Divorce is in my hand; divorce me." The husband said, "I am divorcing, I am divorcing," and repeated it three times. "Your divorce is three times." This is contrary to his saying "Kunam" [I will do] because it is for the future, so it is not established due to doubt.

[Text below box - Right Column]: "29. I am leaving you a divorce," (Remaining footnote from previous page) Tell her that "She is divorced," then divorce will occur whether that person says it to the wife or not. Its origin is mentioned in Al-Mabsut that the husband said to another person, "Say my wife is divorced" or "Give her the news of divorce" or "Take her divorce to her." In these cases, whether he informs her or not, divorce occurred in every way. And if the husband said to another person like this, "Say to my [wife] that you are divorced," then until that person says it to the wife, divorce will not occur, because this was making that person an agent (Wakil). End. So, as you are seeing, this is according to Al-Khaniyah and is a situation specific to the form of address. And Allah Almighty knows best what is correct. (T)

[Text below box - Left Column]: ...she is divorced whether the man said it or not. Its origin is what is mentioned in Al-Asl: He said to another, "Inform her of her divorce" or "Give her the good news of it" or "Carry her divorce to her," it occurs whether he informs her or not. But if he said to another, "Say to her: 'You are divorced'," it does not occur as long as he does not say it, because it is an appointment of agency (Tawkil). End. So, as you see, it is in accordance with what is in Al-Khaniyah and is specific to the form of address. And Allah Almighty knows best what is correct. From him.

[Footnotes]: 1. Fatawa Hindiyyah, Chapter Seven on Divorce in Persian words, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/384. 2. Fatawa Hindiyyah, Chapter Seven on Divorce in Persian words, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/384. 3. Fatawa Hindiyyah, on the margin of Fatawa Hindiyyah, Book of Divorce, Nurani Kutub Khana Peshawar, 2/457-471.

[बॉक्स - दायां कॉलम]: हिन्दिया में है: और मुहीत में है कि यदि अरबी में मुज़ारे (अतलिक़ु) कहा तो तलाक न होगी, मगर जब यह लफ्ज़ ग़ालिब तौर पर हाल (वर्तमान) के लिए इस्तेमाल होता हो तो तलाक हो जाएगी, और हिन्दिया में 'खुलासा' से मन्कूल है कि बीवी ने खावन्द से कहा "तलाक तेरे इख्तियार में है मुझे तलाक करदे" तो खावन्द ने अगर जवाब में यह कहा "मैं तलाक कर रहा हूँ, मैं तलाक कर रहा हूँ" तीन मर्तबा तकरार किया तो तीन तलाकें होंगी, इसके बर-खिलाफ अगर यूँ कहे "मैं करूँगा" तो तलाक न होगी क्योंकि यह इस्तकबाल (भविष्य) है लिहाज़ा शक होगा और तलाक न होगी। (त)

[बॉक्स - बायां कॉलम]: अल-हिन्दिया और अल-मुहीत में है: यदि कोई अरबी में "उतलिकु [भविष्य/वर्तमान का अनिश्चित शब्द] कहे, तो यह तलाक नहीं होगा जब तक कि इसका मुख्य रूप से वर्तमान काल के लिए उपयोग न किया जाए, तब यह तलाक होगा। और इसमें 'खुलासा' से है: [फ़ारसी] पत्नी ने कहा, "तलाक मेरे हाथ में है, मुझे तलाक दे दो।" पति ने कहा, "मैं तलाक दे रहा हूँ, मैं तलाक दे रहा हूँ," और इसे तीन बार दोहराया। "तुम्हें तीन बार तलाक दिया।" इसके विपरीत यदि वह कहे "कुनम" [मैं करूँगा], क्योंकि यह भविष्य काल है, इसलिए संदेह के कारण यह वास्तविकता नहीं होगी।

[बॉक्स के नीचे का पाठ - दायां कॉलम]: "29. मैं तुझे तलाक छोड़ता हूँ," (बकिया हाशिया सफ़्हा गुज़शता) कह दे कि "वह तलाक वाली है" तो तलाक हो जाएगी वह शख्स बीवी से कहे या न कहे, इसका असल मबसूत में मज़कूर है कि खावन्द ने दूसरे को कहा कि तू मेरी बीवी को तलाक कह दे या उसको खुशख़बरी तलाक की दे या तू उसकी तलाक उसको ले जावे, इन सूरतों में खबर दे या न दे हर तरह तलाक हो गई और खावन्द ने दूसरे को यूँ कहा कि तू मेरी को कह कि तुझे तलाक है, तो जब तक वह शख्स बीवी को कह न देगा तलाक न होगी, क्योंकि यह इस शख्स को वकील बनाना हुआ। अहा (समाप्त), तो जैसा कि आप देख रहे हैं यह खानिया के मुताबिक है और खिताब (संबोधन) के सीगे (रूप) से मुख्तस सूरत है। वल्लाह तआला आलम बिस-सवाब। (त)

[बॉक्स के नीचे का पाठ - बायां कॉलम]: ...वह तलाकशुदा है चाहे आदमी ने कहा हो या नहीं। इसका आधार वह है जो 'अल-अस्ल' में वर्णित है: उसने दूसरे से कहा, "उसे उसके तलाक की सूचना दो" या "उसे इसकी खुशखबरी दो" या "उसका तलाक उस तक ले जाओ," यह होता है चाहे वह उसे सूचित

करे या न करे। लेकिन अगर उसने दूसरे से कहा, "उससे कहो: 'तुम तलाकशुदा हो'", तो यह तब तक नहीं होता जब तक वह नहीं कहता, क्योंकि यह वकालत (तवकील) सौंपना है। समाप्त। तो, जैसा कि आप देख रहे हैं, यह अल-खनिया में जो है उसके अनुरूप है और संबोधन के रूप के लिए विशिष्ट है। और अल्लाह तआला ही सबसे बेहतर जानता है। उनकी ओर से।

[पाद-टिप्पणियाँ]: 1. फ़तावा हिन्दिया, सातवां अध्याय, फारसी शब्दों में तलाक के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/384. 2. फ़तावा हिन्दिया, सातवां अध्याय, फारसी शब्दों में तलाक के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/384. 3. फ़तावा हिन्दिया, फ़तावा हिन्दिया के हाशिये पर, तलाक की किताब, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 2/457-471.

فی الھندیۃ وفی المحیط لوقال بالعربیۃ اطلق لایکون طلاقا الا اذا غلب استعمالہ للحال فیکون طلاقاً، وفیھا عن الخلاصۃ قالت طلاق بدست مرا طلاق کن فقال الزوج طلاق میکنم طلاق میکنم وکرر ثلثا طلاقت ثلثا بخلاف قولہ کنم لانہ استقبال فلم یکن تحقیقاً بالتشکیك۔ ہندیہ میں ہے: اور محیط میں ہے اگر عربی میں مضارع (اطلق) کہا تو طلاق نہ ہوگی، مگر جب یہ لفظ غالب طور پر حال کے لئے استعمال ہوتا ہو تو طلاق ہو جائے گی، اور ہندیہ میں خلاصہ سے منقول ہے کہ بیوی نے خاوند کو کہا "طلاق تیرے اختیار میں ہے مجھے طلاق کردے" تو خاوند نے اگر جواب میں یہ کہا "میں طلاق کررہا ہوں طلاق کررہا ہوں" تین مرتبہ تکرار کیا تو تین طلاقیں ہوں گی، اس کے برخلاف اگر یوں کہے "میں کروں گا" تو طلاق نہ ہوگی کیونکہ یہ استقبال ہے لہٰذا شک ہوگا اور طلاق نہ ہوگی۔ (ت)

۲۹ میں تجھے طلاق چھوڑتا ہوں، (بقیہ حاشیہ صفحہ گزشتہ) انھا طالق حیث تطلق قال الرجل ام لا ۔ اصلہ ماذکر فی الاصل قال لاخر اخبرھا بطلاقھا او بشرھا اواحمل الیھا طلاقھا یقع اخبر ام لا ، ولو قال لاخر قل لھا انت طالق لاتطلق مالم یقل لانہ توکیل اھ فھو کما تری مطابق لما فی الخانیۃ ومختص بصورۃ الخطاب۔ واللہ تعالٰی اعلم بالصواب منہ۔ کہہ دے کہ "وہ طلاق والی ہے" تو طلاق ہوجائے گی وہ شخص بیوی سے کہے یا نہ کہے، اس کا اصل مبسوط میں مذکور ہے کہ خاوند نے دوسرے کو کہا کہ تو میری بیوی کو طلاق کہہ دے یا اس کو خوشخبری طلاق کی دے یا تو اس کی طلاق اس کو لیجاوے، ان صورتوں میں خبر دے یا نہ دے ہر طرح طلاق ہوگئی اور خاوند نے دوسرے کو یوں کہا کہ تو میری کو کہہ کہ تجھے طلاق ہے، تو جب تک وہ شخص بیوی کو کہہ نہ دے گا طلاق نہ ہوگی، کیونکہ یہ اس شخص کو وکیل بنانا ہوا اھ، تو جیسا کہ آپ دیکھ رہے ہیں یہ

خانیہ کے مطابق ہے اور خطاب کے صیغہ سے مختص صورت ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم بالصواب۔

(ت)

۱ فتاوٰی ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالفاظ الفارسیہ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۸۴ ۲ فتاوٰی ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالفاظ الفارسیہ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۸۴ ۳ فتاوٰی ہندیہ علی ہامش فتاوٰی ہندیہ کتاب الطلاق نورانی کتب خانہ پشاور ۲/ ۴۵۷-۴۷۱

Fatawa Ridawiyya Volume 12

Arabic Text	Urdu Explanation
In *Radd al-Muhtar*, quoting *Al-Bahr*: Concerning the clear present/future tense (*Mudari'*), if it is predominantly used for the present state, it shall be counted as a clear (*Sarih*) divorce. I say: Then what of it if it is used exclusively for the present? Especially since the word "leaving" (*Chhodna*) in our language is a clear word for divorce.	In *Radd al-Muhtar*, it is narrated from *Bahr* that when the present/future tense form is predominantly used for the current state, it will be counted among clear divorces. I say: And if it is purely for the current state, then it would be clear by priority, as the word "leaving" is clear for divorce in our language. (T)

Yes, if he says it with the intention of resolve and will, in the sense of "I intend to divorce you," then in the sight of Allah, divorce will not occur.

Arabic Text	Urdu Explanation
In *Al-Khayriyya*: His statement is religiously accepted in every case, even if he made a mistake regarding the current state.	In *Fatawa Khayriyya*, it says: In the present/future tense, the husband's statement will be religiously (*Diyanatan*) accepted in any case, even if that tense is predominantly used for the current state. (T)

"Divorce has been upon you for two months," while in reality he had not given it. It takes effect now, provided that the marriage has not been for less than two months, otherwise it is nothing. If the intention was a false report, then in the sight of Allah it is nothing; this applies to every form of address.

Arabic Text	Urdu Explanation
As in *Al-Khayriyya* and others, it states: He said to her, "You are divorced for two months," and then says, "I intended it as a false report of the past." Does divorce occur to her or not? And if you say it occurs, does he have the right to take her back or not? He answered: It occurs legally (*Qada'an*), not religiously (*Diyanatan*). Based on the legal ruling, he has the right to take her back during the waiting period (*Iddah*) without a new contract, and after the waiting period	In *Khayriyya* etc., it is mentioned: For example, if he said "You have been divorced for two months," and after that he said, "I said this as a false report of the past," will divorce occur upon her or not? And if you say that divorce will occur, will he have the right of return (*Ruju'*) or not? The answer given was that divorce will occur legally, not religiously. According to the judge's decision, he has the right of return during the waiting period without a new marriage contract, and after the

Arabic Text

with a new contract, provided that the husband did not issue anything besides what was mentioned. In *Ad-Durr*, it is similar if he says, "You are divorced since yesterday," and he had married her today. If he married her before yesterday, it occurs now, because creating an action in the past is considered as creating it in the present. (Summarized)

Urdu Explanation

waiting period with a new marriage contract, provided the husband has said nothing else besides the mentioned action. In *Durr*, it is stated: Similarly, if the husband said, "You are divorced since yesterday," if the marriage was done today, this statement is void. If the marriage was done before yesterday, then she will be divorced from now, because an initiation in the past is considered as initiation in the present. (T)

---

1. *Radd al-Muhtar*, Chapter on Clear Divorce, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/430.
2. *Fatawa Khayriyya*, Book of Divorce, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/39.
3. *Fatawa Khayriyya*, Book of Divorce, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/50.
4. *Durr al-Mukhtar*, Chapter on Clear Divorce, Mujtabai Press, Delhi, 1/220.

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

अरबी पाठ

रद-अल-मुह्तार में 'बहर' से नक़्ल है: स्पष्ट मुज़ारे (वर्तमान/भविष्य काल) के बारे में, जब यह वर्तमान अवस्था के लिए प्रबल रूप से उपयोग किया जाता है, तो इसे स्पष्ट (सरीह) तलाक गिना जाएगा। मैं कहता हूँ: फिर इसके बारे में क्या कहना जब यह विशेष रूप से वर्तमान के लिए हो? विशेष रूप से जब हमारी भाषा में "छोड़ना" शब्द तलाक के लिए स्पष्ट है।

उर्दू व्याख्या

रद-अल-मुह्तार में बहर से नक़्ल है कि मुज़ारे का शब्द जब वर्तमान के लिए अधिक उपयोग होता हो, तो इसे तलाक-ए-सरीह में गिना जाएगा। मैं कहता हूँ: और अगर यह शुद्ध रूप से वर्तमान के लिए हो, तो यह और भी अधिक स्पष्ट होगा, जबकि हमारी भाषा में "छोड़ना" शब्द तलाक में स्पष्ट है। (त)

हाँ, अगर वह दृढ़ निश्चय और इरादे की नीयत से कहेगा, इस अर्थ में कि "मैं तुझे तलाक देना चाहता हूँ," तो अल्लाह के यहाँ तलाक नहीं होगी।

अरबी पाठ

अल-खैरिया में है: उसकी बात धार्मिक रूप से हर हाल में स्वीकार की जाएगी, भले ही उसने वर्तमान अवस्था के संबंध में गलती की हो।

उर्दू व्याख्या

फ़तावा खैरिया में है: मुज़ारे में शौहर (पति) की बात पर धार्मिक रूप से (दियानतन) हर हाल में विश्वास किया जाएगा, चाहे वह मुज़ारे वर्तमान के अर्थ में प्रबल क्यों न हो। (त)

"तुझ पर दो महीने से तलाक है," जबकि वास्तविकता में उसने नहीं दी थी। यह अब लागू हो जाएगी, बशर्ते कि निकाह (विवाह) को दो महीने से कम न हुए हों, अन्यथा कुछ नहीं। और अगर इरादा झूठी खबर का था, तो अल्लाह के यहाँ कुछ नहीं; यह हर संबोधन के रूप में लागू होता है।

अरबी पाठ

जैसा कि खैरिया आदि में है: उसने उससे कहा, "तू दो महीने से मुतलका (तलाकशुदा) है," और फिर कहता है, "मेरा इरादा अतीत की एक झूठी खबर देने का था।" क्या उस पर तलाक होगी या नहीं? और यदि आप कहें कि होगी, तो क्या उसे रुजू

उर्दू व्याख्या

खैरिया आदि में जैसा है: उदाहरण के लिए यदि उसने कहा "तू दो महीने से मुतलका है," और उसके बाद उसने कहा, "मैंने यह अतीत की झूठी खबर के तौर पर कहा है," तो क्या उस पर तलाक होगी या नहीं? और यदि आप कहें कि

अरबी पाठ

(वापसी) का अधिकार होगा या नहीं? जवाब दिया गया: कानूनी तौर पर (क़ज़ाअन) तलाक होगी, धार्मिक तौर पर (दियानतन) नहीं। कानूनी आदेश के आधार पर, उसे इद्दत के दौरान बिना नए अनुबंध के रुजू का अधिकार है, और इद्दत के बाद नए अनुबंध के साथ, बशर्ते कि पति ने उल्लेखित के अलावा कुछ और न कहा हो। 'अद-दुर्र' में है: इसी तरह यदि वह कहे, "तू कल से तलाकशुदा है," और उसने आज ही उससे निकाह किया हो। यदि उसने कल से पहले निकाह किया था, तो यह अब लागू होता है, क्योंकि अतीत में किसी कार्य की रचना करना वर्तमान में उसकी रचना माना जाता है। (संक्षेपित)

उर्दू व्याख्या

तलाक होगी, तो क्या उसे रुजू का अधिकार होगा या नहीं? जवाब दिया गया कि कानूनी तौर पर तलाक होगी, धार्मिक तौर पर नहीं। और काज़ी के फैसले पर उसे इद्दत में बिना नए निकाह के और इद्दत के बाद नए निकाह के साथ रुजू का अधिकार होगा, बशर्ते कि पति ने उपर्युक्त के अलावा और कुछ न कहा हो। 'दुर्र' में है: इसी तरह यदि शौहर ने कहा, "तू कल से तलाक वाली है," अगर निकाह आज किया गया था, तो यह बात व्यर्थ है। यदि निकाह कल से पहले किया गया था, तो तलाक अभी से हो जाएगी, क्योंकि अतीत में किसी बात का 'इन्शा' (शुरू करना) वर्तमान में उसका 'इन्शा' माना जाता है। (त)

---

1. रद-अल-मुह्तार, बाब अस-सरीह, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/430.
2. फ़तावा खैरिया, किताब अत-तलाक, दार अल-मारिफ़ा, बेरुत, 1/39.
3. फ़तावा खैरिया, किताब अत-तलाक, दार अल-मारिफ़ा, बेरुत, 1/50.
4. दुर्रे मुख्तार, बाब अस-सरीह, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/220.

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

عربی عبارت	اردو وضاحت
فی ردالمحتار عن البحر من الصریح المضارع اذا غلب فی الحال، اھ قلت فکیف اذا تمحض لہ وھجوز نا من الصریح بلساننا۔	ردالمحتار میں بحر سے منقول ہے کہ مضارع کا صیغہ جب حال کے لئے غالب الاستعمال ہو تو یہ طلاق صریح میں شمار ہوگا۔ قلت (میں کہتا ہوں) اور اگر خالص حال کے لئے ہو تو پھر بطریق اولیٰ صریح ہوگا جبکہ "چھوڑنا" کا لفظ ہماری زبان میں طلاق میں صریح ہے۔ (ت)

ہاں اگر عزم وارادہ کی نیت پر کہے گا بایں معنی کہ تجھے طلاق دیا چاہتا ہوں تو عند اللہ طلاق نہ ہوگی،

عربی عبارت	اردو وضاحت
فی الخیریۃ یدین علی کل حال أی ولو غلط فی الحال۔	فتاویٰ خیریہ میں ہے : مضارع میں خاوند کی بات پر دیانۃً تصدیق بہر حال ہوگی اگر چہ وہ مضارع ، حال کے معنی میں غالب ہو۔ (ت)

"تجھ پر دو مہینے سے طلاق ہے اور واقع میں نہ دی تھی ابھی پڑ گئی بشرطیکہ نکاح کو دو مہینے سے کم نہ ہوئے ہوں ورنہ کچھ نہیں، اور اگر جھوٹی خبر کی نیت تھی تو عند اللہ کچھ نہیں یہ ہر صیغہ میں جاری ہے،

عربی عبارت	اردو وضاحت
کما فی الخیریۃ وغیرھا وفیہ ایضاً قال لھا انت مطلقۃ من شھرین ویقول نویت	خیریہ وغیرہ میں جیسے ہے کہ اگر کہا "تُو دو ماہ سے مطلقہ ہے، اور اس کے بعد کہا کہ میں نے یہ ماضی کی

عربی عبارت	اردو وضاحت
الاخبار فی الماضي کاذباً هل یقع علیه الطلاق ام لا واذا قلتم یقع هل له ان یردها ام لا، اجاب یقع قضاءً لادیانةً وعلی حکم القضاء له مراجعتها فی العدة بغیر عقد وبعدها بعقد جدید حیث لم یصدر منه سوی ماذکر، وفي الدر وکذا انت طالق امس وقد نکحها الیوم ولو نکحها قبل امس وقع الأن لان الانشاء فی الماضی انشاء فی الحال۔ (ملخصاً)	خبر کاذب کے طور پر کہا ہے، تو کیا اس پر طلاق ہوگی یا نہیں اور اگر آپ فرمائیں کہ طلاق ہوگی تو اس کو رجوع کا حق ہوگا یا نہیں، اس کا جواب دیا کہ قضاءً طلاق ہوگی دیانۃً نہ ہوگی، اور قاضی کے فیصلہ پر اس کو عدت میں بغیر نکاح اور عدت کے بعد جدید نکاح سے رجوع کا حق ہوگا، جبکہ مذکورہ کارروائی کے علاوہ خاوند نے کچھ اور نہ کہا ہو، اور دُرّ میں ہے کہ یونہی اگر خاوند نے کہا "تُو گزشتہ روز سے طلاق والی ہے" تو اگر نکاح آج کیا ہو تو یہ بات لغو ہوگی اور گزشتہ روز سے قبل نکاح کیا ہو تو ابھی سے طلاق ہو جائیگی کیونکہ ماضی کا انشاء حال کا انشاء متصور ہوگا (ت)

---

1 ردالمحتار باب الصریح داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۴۳۰ 2 فتاوٰی خیریہ کتاب الطلاق دارالمعرفۃ بیروت ۱/۳۹ 3 فتاوٰی خیریہ کتاب الطلاق دارالمعرفۃ بیروت ۱/۵۰ 4 درمختار باب الصریح مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۲۰

Fatawa Razawiya, Volume 12

1. "Divorce is upon you for two years," in this case, it will occur after two years. In 'Al-Khairiyyah' it is mentioned: If one tells his wife, "Divorce to you upon two years" and has no specific intention, what is the ruling? The answer was given that after two years, one revocable (raj'i) divorce will occur. This is explicitly stated in 'Al-Bahr', 'Al-Bazzaziyyah', 'Al-Walwalijiyyah', and other books of the Hanafi school. (T)
2. "Divorce is upon you from here to Arabia," and if he said, "such a long or big divorce," then it will be an irrevocable (ba'in) divorce. In 'Al-Durr' it is stated: If the husband says, "You are divorced from here to the land of Syria," then one revocable divorce will occur, provided he did not describe the divorce with length or greatness; and if he described it with such a quality, it will be irrevocable. (T)
3. "You are more divorced than so-and-so woman," divorce will occur even if that woman is not divorced. Contrary to when it is said in Arabic, "Anti atlaqu min fulanah" (You are more divorced than so-and-so), then divorce will not occur without intention. Even with intention, it will only occur if that woman is divorced. In 'Al-Durr', the husband's saying "A bigger divorce to you than so-and-so's wife, provided that woman is divorced" is counted among the metaphors (kinaya) from which one revocable divorce occurs. Allama Shami (may Allah forgive him) stated regarding this that the reason given in 'Al-Fath' is that the comparative form (ism-e-tafzil) is not explicit (sarih) in divorce; reflect on this. Contrary to our case, where the word 'mutallaqah' (divorced woman) is explicit and does not admit the probability of addition, for its purpose is only the establishment of divorce.

Footnotes: 1 Fatawa Khairiyyah, Kitab al-Talaq, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/51 2 Durr-e-Mukhtar, Bab al-Sarih, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/219 3 Durr-e-Mukhtar, Bab al-Kinayat, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/225 4 Radd al-Muhtar, Bab al-Kinayat, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/466

फतावा रज़विया, जिल्द 12

1. "तुझ पर दो साल तक तलाक है," इसमें तलाक दो साल बाद होगा। 'अल-खैरिया' में है: यदि किसी ने अपनी पत्नी से कहा "तुझे दो साल पर तलाक" और कोई विशेष नियत (इरादा) न हो तो क्या हुक्म है? उत्तर दिया गया कि दो साल बाद एक रजई (प्रतिसंहरणीय) तलाक होगा। इसकी स्पष्ट व्याख्या 'अल-बह्र', 'अल-बज्जाज़िया', 'अल-वलवलिजिया' और अन्य हनफी किताबों में मौजूद है। (त)

2. "तुझ पर यहाँ से अरब तक तलाक," और अगर यूँ कहा कि इतनी लंबी या बड़ी तलाक तो बाइन (अपरिवर्तनीय) होगी। 'अल-दुर्र' में है: पति ने कहा "तुझे यहाँ से मुल्क-ए-शाम तक तलाक है" तो एक रजई तलाक होगी, बशर्ते उसने तलाक को किसी लंबाई या बड़ाई से वर्णित न किया हो, और अगर ऐसी सिफ़त (विशेषण) से वर्णित किया तो वह बाइन होगी। (त)

3. "तू फलां औरत से ज़्यादा मुतल्लका (तलाकशुदा) है," तलाक हो जाएगा चाहे वह फलां औरत मुतल्लका न भी हो। इसके विपरीत जब अरबी में यूँ कहा "अंति अत-लकु मिन फुलाना" (तू फलां से ज़्यादा तलाक वाली है) तो नियत के बिना तलाक नहीं होगी, नियत से भी तब होगी जब वह फलां औरत मुतल्लका हो। पति के इस कथन कि "तुझे फलां की औरत से बड़ी तलाक बशर्ते वह फलां की औरत मुतल्लका हो" तो 'दुर्र' में इसे उन कनायात (रूपकों) में गिना है जिनसे एक रजई तलाक होती है। अल्लामा शामी ने इस पर फरमाया कि 'फ़तह' में इसकी वजह यह बयान की है कि सिग़ा-ए-तफ़ज़ील (तुलनात्मक रूप) तलाक में सरीह (स्पष्ट) नहीं है, गौर करो। इसके विपरीत वह (हमारा मामला) जिसमें 'मुतल्लका' शब्द स्पष्ट है और इसमें किसी वृद्धि की संभावना नहीं है, क्योंकि इसमें केवल तलाक को साबित करना ही मक़सद है।

पाद-टिप्पणी: 1 फतावा खैरिया, किताबुत तलाक, दारुल मारिफा बेरूत, 1/51 2 दुर्रे मुख्तार, बाबुस सरीह, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/219 3 दुर्रे मुख्तार, बाबुल कनायात, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/225 4 रद-उल-मुहतार, बाबुल कनायात, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी बेरूत, 2/466

पृष्ठ 688 का 548

فتاوی رضویہ، جلد دو ازدہم

۱۔ "تجھ پر دو برس تک طلاق ہے"، اس میں دو برس بعد پڑے گی، فی الخیریۃ قال لھا انت طالق الی سنتین ولانیۃ لہ فما الحکم ، اجاب یقع علیہا بعد السنتین طلقۃ واحدۃ رجعیۃ صرح بہ صاحب البحر والبزازیۃ والولوجیۃ وغیرہ من کتب الحنفیۃ۔ ۱ خیریہ میں ہے: اگر بیوی کو کہا "تجھے دو سال پر طلاق" اور کوئی خاص نیت نہ کی ہو تو کیا حکم ہے، تو جواب دیا کہ دو سال بعد رجعی طلاق ہوگی اس کی تصریح بحر، بزازیہ اور ولوالجیۃ وغیرہ کتب حنفیہ میں موجود ہے۔ (ت)

۲۔ "تجھ پر یہاں سے عرب تک طلاق"، اور اگر یوں کہا کہ اتنی لمبی یا بڑی طلاق تو بائن ہوگی، فی الدر وبقولہ من ھنا الی الشام واحدۃ رجعیۃ مالم یصفھا بطول اوکبر فبائنۃ۔ ۲ در میں ہے: خاوند نے کہا "تجھے یہاں سے ملک شام تک طلاق ہے" تو ایک رجعی طلاق ہوگی بشرطیکہ اس نے طلاق کو کسی طوالت یا بڑائی سے موصوف نہ کیا ہو، اور اگر ایسی صفت سے موصوف کیا تو بائنہ ہوگی (ت)

۳۔ "تو فلاں عورت سے زیادہ مطلقہ ہے"، طلاق ہوجائے گی اگرچہ فلاں عورت مطلقہ نہ بھی ہو، بخلاف مالو قال بالعربیۃ انت اطلق من فلانۃ فلا تطلق الا بالنیۃ بشرط ان تکون فلانۃ مطلقۃ فقد عد فی الدر قولہ انت اطلق من امراۃ فلان وہی مطلقۃ ۳ من الکنایات التی یقع بھا الرجعی، قال الشامی عفا اللہ فی الفتح بان افعل التفضیل لیس صریحا فافہم ۴ اھ بخلاف مانحن فیہ فانہ مطلقۃ صریحۃ ولا یعتریہ الاحتمال بزیادۃ فمافیہ الاثبات الطلاق بخلاف اس کے جب بزبان یوں کہا "انت اطلق من فلانہ" تو نیت کے بغیر طلاق نہ ہوگی، نیت سے بھی تب ہوگی جب وہ فلاں عورت مطلقہ ہو، خاوند کے اس قول کہ "تجھے فلاں کی عورت سے بڑی طلاق بشرطیکہ وہ فلاں کی عورت مطلقہ ہو" تو در میں اس کو ان کنایات میں شمار کیا ہے جن سے ایک رجعی طلاق ہوتی ہے۔ علامہ شامی نے اس پر

فرمایا کہ فتح میں اس کی وجہ یہ بیان کی ہے کہ صیغہ تفضیل طلاق میں صریح نہیں ہے، غور کرو اھ، اس کے برخلاف وہ

حواشی: ۱ فتاوی خیریہ کتاب الطلاق دار المعرفۃ بیروت ۱/۵۱ ۲ در مختار باب الصریح مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۱۹ ۳ در مختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۲۵ ۴ رد المحتار باب الکنایات دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۴۶۶

Fatawa Ridawiyya Volume 12

| (Arabic) And the addition, we have already verified it in what we annotated on Radd al-Muhtar. | (Urdu) The case we have mentioned is because it is explicitly 'mutallaqa' (divorced woman). In this, the possibility of addition etc. will not be an obstacle; this is the affirmation of divorce and addition, and we have researched this in the margins of Radd al-Muhtar. (T) |

In all these cases, a revocable divorce occurs without the need for intention. For example, 'mutallaqa' with a sukun on the letter 'taa'; in Al-Durr: "Anti mutallaqa" with light pronunciation (it is in Al-Durr: the husband said 'mutlaqa' i.e., with jazm on 'taa', to his wife "You are mutlaqa" - T). 2 "I have left your divorce," 3 "I have sent your divorce," 4 "I have left the path of your divorce."

| (Arabic) In Radd al-Muhtar, regarding the saying: "I have cleared the way for your divorce," and similarly "I cleared your divorce" or "I left your divorce," if he intended, it occurs, otherwise not. Khania. [1] | (Urdu) In Radd al-Muhtar it is stated: If a husband said, "I have left the way of your divorce," "I have sent your divorce," "I have left your divorce," then if he intended it, divorce has occurred, otherwise not. Khania. (T) |

5 "On you T, L, A, Q." 6 "On you T, L, A, M Alif, Lam Alif, Q, A, F."

| (Arabic) In Radd al-Muhtar, regarding his saying "or T L A Q", what is apparent here is like what is in Al-Fath and Al-Bahr: he brings the named letters of the alphabet, and the apparent meaning is that there is no difference between them and their names. In Al-Dhakhira it says: if he says to his wife "Alif, Nun, Ta, Ta, Alif, Lam, Qaf", that if he intended divorce, the woman is divorced [2]. (Summary) | (Urdu) In Radd al-Muhtar it is stated: Or the husband's saying T, L, A, Q, then it is apparent in divorce. Similar to it is in Al-Fath and Al-Bahr that if one mentions the letters of the alphabet and their names, there is no difference in appearance. We have explained the names of the letters. In Al-Dhakhira it is mentioned that if he said to his wife "Alif, Nun, Ta, Ta, Alif, Lam, Qaf," and intended divorce, then divorce occurred (Summary). (T) |

7 "I gifted your divorce to you," 8 "gave as a loan," 9 "mortgaged with you," 10 "kept as a trust," 11 "I wanted your divorce," 12 "Divorce is for you," "Allah wanted your divorce," 13 "Allah Almighty predestined your divorce."

| (Arabic) In Radd al-Muhtar and other such things like divorce. | (Urdu) In Radd al-Muhtar under the author's words "and other such things." |

[1] Radd al-Muhtar, Chapter of Metaphors, Mujtabai Press Delhi 2/266 [2] Radd al-Muhtar, Chapter of Explicit (Divorce), Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 2/230

फतावा रज़विया जिल्द 12

| (अरबी) और अधिकता, हमने इसे रद-अल-मुह्तार पर अपनी टिप्पणी में पहले ही प्रमाणित कर दिया है। | (उर्दू) जो सूरत हमने ज़िक्र की है क्योंकि वह स्पष्ट 'मुतल्लक़ा' (तलाकशुदा) है, इसमें अधिकता आदि की संभावना बाधा नहीं होगी; यह तलाक और अधिकता की पुष्टि है और हमने इसे रद-अल-मुह्तार के हाशिये में प्रमाणित किया है। (त) |

इन सभी सूरतों में बिना नीयत की ज़रूरत के तलाक़-ए-रज्ई हो जाती है। इसे 'मुतल्लक़ा' त' पर सुकून के साथ, 'फी अद-दुर': "अन्ती मुतल्लक़ा" बिना तशदीद के(दुर में है: पति ने मुतल्लक़ा यानी त' पर जज़्म के साथ पत्नी से कहा "तू मुतल्लक़ा है"-त) 2 "मैंने तेरी तलाक छोड़ दी", 3 "मैंने तेरी तलाक रवाना कर दी", 4 "मैंने तेरी तलाक का रास्ता छोड़ दिया"।

| (अरबी) रद-अल-मुह्तार में, इस कथन के बारे में: "मैंने तेरी तलाक का रास्ता खाली कर दिया," और इसी तरह "मैंने तेरी तलाक खाली कर दी" या "मैंने तेरी तलाक छोड़ दी," यदि उसने नीयत की तो (तलाक) हो जाएगी, अन्यथा नहीं। खानिया। [1] | (उर्दू) रद-अल-मुह्तार में है: पति ने कहा "मैंने तेरी तलाक का रास्ता छोड़ दिया, मैंने तेरी तलाक रवाना कर दी, मैंने तेरी तलाक छोड़ दी", तो अगर नीयत की तो तलाक हो गई वरना नहीं। खानिया। (त) |

5 "तुझ पर त, ल, अ, क़।" 6 "तुझ पर त, ल, अ, म अलिफ़, लाम अलिफ़, क़, अ, फ़।"

| (अरबी) रद-अल-मुह्तार में, उनके कथन "या त ल अ क़" के बारे में, जो यहाँ स्पष्ट है वही 'अल-फतह' और 'अल-बहर' में है: वह वर्णमाला के अक्षरों के नामों को लाता है, और स्पष्ट अर्थ यह है कि उनमें और उनके नामों में कोई अंतर नहीं है। 'अज-ज़ख़ीरा' में है: यदि वह अपनी पत्नी से कहे "अलिफ़, नून, ता, ता, अलिफ़, लाम, क़ाफ़", कि यदि उसने तलाक की नीयत की, तो महिला को तलाक हो जाएगा [2]। (सारांश) | (उर्दू) रद-अल-मुह्तार में है: या पति का कहना त, ल, अ, क़ तो यह तलाक में स्पष्ट है, इसी की तरह 'फतह' और 'बहर' में है कि वर्णमाला के अक्षरों और उनके नामों का उल्लेख करे तो स्पष्ट रूप से कोई अंतर नहीं है। हमने अक्षरों के नामों को बयान कर दिया है। 'ज़खीरा' में है कि अगर पत्नी को कहा "अलिफ़, नून, ता, ता, अलिफ़, लाम, क़ाफ़" और तलाक की नीयत की, तो तलाक हो गई (सारांश)। (त) |

7 "मैंने तेरी तलाक तुझे हिबा (उपहार) की," 8 "कर्ज़ दी," 9 "तेरे पास गिरवी रखी," 10 "अमानत रखी," 11 "मैंने तेरी तलाक चाही," 12 "तेरे लिए तलाक है," "अल्लाह ने तेरी तलाक चाही," 13 "अल्लाह तआला ने तेरी तलाक मुक़द्दर की।"

| (अरबी) रद-अल-मुह्तार में और ऐसी ही अन्य चीज़ें तलाक की तरह हैं। | (उर्दू) रद-अल-मुह्तार में मूल लेखक (मातन) के शब्दों "वग़ैरा ज़ालिका" (इत्यादि) के तहत। |

---

[1] रद-अल-मुह्तार, बाब अल-किनायात, मतबा मुजतबाई दिल्ली 2/266 [2] रद-अल-मुह्तार, बाब अस-सरीह, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी बैरूत 2/230

| والزیادۃ وقد حققناہ فیما علقناہ علی ردالمحتار۔ | صورت جو ہم نے ذکر کی ہے کیونکہ وہ صریح مطلقہ ہے اس میں زیادتی وغیرہ کا احتمال رکاوٹ نہ ہوگا یہ طلاق اور زیادتی کا اثبات ہے اور اس کو ہم نے ردالمحتار کے حاشیہ میں محقق کیا ہے۔ (ت) |

ان سب صورتوں میں بے حاجت نیت طلاق رجعی پڑتی ہے، اسے مطلقہ بسکون طاء، فی الدر انت مطلقۃ بالتخفیف (درمیں ہے خاوند نے مطلقہ یعنی ط پر جزم کے ساتھ، بیوی کو کہا "تو مُطْلَقَہ ہے"۔ت) ۲ میں نے تیری طلاق چھوڑ دی، ۳ میں نے تیری طلاق روانہ کر دی، ۴ میں نے تیری طلاق کا راستہ چھوڑ دیا،

| فی ردالمحتار قولہ خلیت سبیل طلاقك وکذا خلیت طلاقك او ترکت طلاقك ان نوی وقع والا فلا خانیۃ۔ ۱ | ردالمحتار میں ہے : خاوند نے کہا "میں نے تیری طلاق کا راستہ چھوڑ دیا، میں نے تیری طلاق روانہ کر دی ، میں نے تیری طلاق چھوڑ دی " تو اگر نیت کی تو طلاق ہو گئی ورنہ نہیں۔ خانیہ۔ (ت) |

۵ تجھ پر ط، ل، ا، ق۔ ۶ تجھ پر ط، ل، ا، م الف، لام الف، ق، ا، ف۔

| فی ردالمحتار قولہ او ط ل ا ق ظاھر ماھنا مثلہ فی الفتح والبحران یاتی بمسمّی احرف الھجاء والظاھر عدم الفرق بینھا وبین اسمائھا ففی الذخیرۃ قال لامراتہ الف نون تاء طاء الف لام قاف انہ ان نوی الطلاق تطلق المرأۃ ۲۔ (ملخصاً) | ردالمحتار میں ہے : یا خاوند کا قول ط، ل، ا، ق تو یہ طلاق میں ظاہر ہے ، اسی کی مثل فتح اور بحر میں ہے کہ حروفِ ہجاء اور اس کے مسمّٰی کو ذکر کرے تو ظاہر میں کوئی فرق نہیں، ہم نے حروف کے اسماء کو بیان کردیا ہے تو ذخیرہ میں ہے کہ اگر

بیوی کو کہا الف، نون، تاء ، طاء ، الف ، لام ، قاف ، اور طلاق کی نیت کیا تو طلاق ہو گئی (ملخصاً)۔ (ت) |

۷ میں نے تیری طلاق تجھے ہبہ کی، ۸ قرض دی، ۹ تیرے پاس گرو کی ، ۱۰ امانت رکھی ، ۱۱ میں نے تیری طلاق چاہی، ۱۲ تیرے لئے طلاق ہے ، اللہ نے تیری طلاق چاہی، ۱۳ اللہ تعالیٰ نے تیری طلاق مقدر کی،

| فی ردالمحتار وغیر ذلک مثل الطلاق | ردالمحتار میں ماتن کے قول وغیرہ ذلک کے تحت |

---

۱ ردالمحتار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۲ / ۲۶۶ ۲ ردالمحتار باب الصریح دار احیاء التراث العربی بیروت ۲ / ۲۳۰

[Arabic Text Box:] 'Alayka wahabtuka talaqaka, ba'tuka talaqaka' (I gifted you your divorce, I sold you your divorce) if she says 'I bought it without a replacement', 'Take your divorce', 'I lent you your divorce', 'If Allah willed your divorce' or 'decreed' or 'if you wished'. In all of these, it occurs with intention as a revocable (raj'i) divorce as in *Al-Fath*. It was added in *Al-Bahr*: 'The divorce is for you' etc. [1] And in it (Al-Bahr) as well: 'I deposited your divorce with you' and 'I pledged your divorce to you'. Then the commentator will mention the correction that divorce does not occur through these [2]. I say: That is, if they did not intend it, because the purpose here is to refute *Al-Bahr* for considering it explicit (sarih). (T)

[Urdu Text Box:] Explained: 'I gifted you your divorce', 'I sold you your divorce' when in response the woman says 'I bought it without compensation', 'I lent you your divorce', 'Allah willed your divorce' or 'Allah decreed your divorce', 'Do you want it?'. In these mentioned cases, if there is intention, it will be one revocable divorce as in *Al-Fath*. In *Al-Bahr*, there is an addition: 'Divorce is for you' etc. And it is in *Radd al-Muhtar* as well, but what *Al-Bahr* stated is also that: 'I have kept your divorce with you as a trust (amanat) or as a pledge (rehn)'. On this, the commentator on divorce is mentioning the correction of its non-occurrence. I say: (i.e., if intention was not made, then this is the issue because the goal is to refute *Al-Bahr* as they consider it explicit). (T)

[Bottom Section:] (I sold your divorce to you, the woman said I bought it, and no financial compensation was mentioned, so it will not be irrevocable (bain)). [Arabic:] In *Radd al-Muhtar* from *Al-Bahr*: 'And if he said: I sold you a divorce and she said: I bought it, it occurs revocably for free because it is explicit [3]'. End. And in *Al-Durr*: 'The ruling for an explicit divorce occurring for wealth is an irrevocable (bain) divorce [4]'. [Urdu:] It is narrated from *Al-Bahr* in *Radd al-Muhtar*: 'If the husband said: I sell you one divorce, and the wife replied: I bought it, then without compensation it will be one revocable divorce, because this is explicit'. End. And it is in *Al-Durr* that if an explicit divorce occurs in exchange for money, it will have the ruling of an irrevocable (bainah) divorce. (T)

[Footnotes:] 1. Radd al-Muhtar, Chapter of Metaphors, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/267. 2. Radd al-Muhtar, Chapter of Explicit Divorce, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/230. 3. Radd al-Muhtar, Chapter of Khul', Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/559. 4. Durr al-Mukhtar, Chapter of Khul', Mujtabai Press, Delhi, 1/245.

[अरबी पाठ बॉक्स:] 'अलैका वहब्तुका तलाक़का, बा'तुका तलाक़का' (मैंने तुम्हें तुम्हारा तलाक़ उपहार में दिया, मैंने तुम्हें तुम्हारा तलाक़ बेच दिया) यदि वह कहे 'मैंने बिना किसी प्रतिफल के खरीदा', 'अपना तलाक़ ले लो', 'मैंने तुम्हें तुम्हारा तलाक़ उधार दिया', 'अल्लाह ने तुम्हारा तलाक़ चाहा' या 'निर्धारित किया' या 'यदि तुमने चाहा'। इन सब में, यदि नीयत है, तो 'अल-फ़तह' के अनुसार एक रज़ई (प्रतिसंहरणीय) तलाक़ होगा। 'अल-बहर' में अतिरिक्त है: 'तलाक़ तुम्हारे लिए है' आदि [1]। और उसमें (अल-बहर में) यह भी है: 'मैंने तुम्हारे पास तुम्हारा तलाक़ अमानत रखा' और 'मैंने तुम्हारा तलाक़ तुम्हारे पास गिरवी रखा'। फिर व्याख्याकार इसके न होने के सुधार का उल्लेख करेंगे [2]। मैं कहता हूँ: यानी यदि उन्होंने नीयत नहीं की, क्योंकि इसका उद्देश्य 'अल-बहर' का खंडन करना है क्योंकि वे इसे स्पष्ट (सरीह) मानते हैं। (त)

[उर्दू पाठ बॉक्स:] बयान किया गया: 'मैंने तुम्हें तुम्हारा तलाक़ उपहार में दिया', 'मैंने तुम्हें तुम्हारा तलाक़ बेच दिया' जब जवाब में औरत कहे कि 'मैंने बिना किसी प्रतिफल के खरीदा', 'मैंने तुम्हें तुम्हारा तलाक़ उधार दिया', 'अल्लाह ने तुम्हारा तलाक़ चाहा' या 'अल्लाह ने तुम्हारा तलाक़ मुक़द्दर फ़रमाया', 'क्या तुम चाहती हो?'। इन ज़िक्र की गई सूरतों में नीयत की तो एक तलाक़-ए-रज़ई होगी जैसा कि 'अल-फ़तह' में है। 'अल-बहर' में इस पर ज़ायद (अतिरिक्त) है 'तुम्हारे लिए तलाक़ है' आदि। और इसी 'रद्द अल-मुह्तार' में है लेकिन जो 'अल-बहर' ने अफ़ादा फ़रमाया वह भी कि, 'मैंने तुम्हारे पास तुम्हारी तलाक़ अमानत रखी है या रहन रखी है', इस पर शारेह (व्याख्याकार) तलाक़ के वाक़े न होने की तसहीह ज़िक्र कर रहे हैं। अक़ूल: (मैं कहता हूँ) यानी अगर नीयत न की हो तो यह मसला है क्योंकि इससे मक़सद 'अल-बहर' पर रद (खंडन) करना है क्योंकि वो इसको सरीह क़रार देते हैं। (त)

[निचला भाग:] (मैंने तुम्हारा तलाक़ तुम्हारे हाथ बेचा, औरत ने कहा मैंने खरीदा, और किसी माल के बदले का ज़िक्र न हो तो वो बाइन नहीं होगी)। [अरबी:] 'रद्द अल-मुह्तार' में 'अल-बहर' से: 'यदि उसने कहा: मैंने तुम्हें एक तलाक़ बेचा और उसने कहा: मैंने खरीदा, तो यह मुफ़्त में रज़ई रूप में होता है क्योंकि यह स्पष्ट है [3]'। समाप्त। और 'अल-दुर्र' में है: 'माल के बदले स्पष्ट तलाक़ वाक़े होने का हुक्म तलाक़-ए-बाइन है [4]'। [उर्दू:] 'रद्द अल-मुह्तार' में 'अल-बहर' से मन्क़ूल (उद्धृत) है: 'अगर खावंद (पति) ने कहा: मैं तुझे एक तलाक़ फ़रोख्त (बेचता) करता हूँ, तो बीवी ने जवाब में कहा:

मैंने खरीदा, तो बिना मुआवज़े के एक तलाक़-ए-रज़ई होगी, क्योंकि यह सरीह (स्पष्ट) है'। समाप्त। और 'दुर' में है कि माल के बदले सरीह तलाक़ वाक़े हो तो वह बाइनह के हुक्म में होगी। (त)

[पाद टिप्पणियाँ:] 1. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-किनायात, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/267 2. रद्द अल-मुह्तार, बाब अस-सरीह, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/230 3. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-खुल, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/559 4. दुर्रे मुख़्तार, बाब अल-खुल, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/245

पृष्ठ 550 / 688

علیک وھبتك طلاقك، بعتك طلاقك اذا قالت اشتریت من غیر بدل، خذی طلاقك اقرضتك طلاقك شاء اللہ طلاقك او قضاء او شئت ففی الکل یقع بالنیة رجعی کما في الفتح، زاد في البحر الطلاق لك الخ^1 وفیه اماما فی البحر ایضا من ان منه اودعتك طلاقك ورھنتك طلاقك فسیذکر الشارح تصحیح عدم الوقوع به^2 اقول: ای ان لم ینولان المقصود به الرد علی البحر في جعله صریحا۔ بیان کیا، میں نے تجھے تیری طلاق ہبہ کی، میں نے تیری طلاق تجھ کو فروخت کی جب جواب میں عورت یہ کہے کہ میں نے بدلہ کے بغیر خریدی، میں نے تیری طلاق تجھے قرض دی، اللہ نے تیری طلاق چاہی، یا اللہ نے تیری طلاق مقدر فرمائی، کیا تو چاہتی ہے، ان مذکورہ صورتوں میں نیت کی تو ایک طلاق رجعی ہوگی جیسا کہ فتح میں ہے، بحر میں اس پر زائد ہے تیرے لئے طلاق ہے الخ اور اسی ردالمحتار میں ہے لیکن جو بحر نے افادہ فرمایا وہ بھی کہ، میں نے تیرے پاس تیری طلاق امانت رکھی ہے یا رہن رکھی ہے، اس پر شارح طلاق نے واقع ہونے کی تصحیح ذکر کر رہے ہیں، اقول: (میں کہتا ہوں) یعنی اگر نیت نہ کی ہو تو یہ مسئلہ ہے کیونکہ اس سے مقصد بحر پر رد کرنا ہے کیونکہ وہ اس کو صریح قرار دیتے ہیں۔ (ت)

^5میں نے تیری طلاق تیرے ہاتھ بیچی، عورت نے کہا میں نے خریدی، اور کسی عوض مالی کا ذکر نہ ہو اور نہ بائن ہوگی) فی ردالمحتار عن البحر ولو قال بعت منك تطلیقة فقالت اشتریت یقع رجعیا مجانالانہ صریح^3 اھوفی الدر وحکم الواقع بالطلاق الصریح علی مال طلاق بائن^4۔

ردالمحتار میں بحر سے منقول ہے : اگر خاوند نے کہا میں تجھے ایک طلاق فروخت کرتا ہوں، تو بیوی نے جواب میں کہا میں نے خریدا، تو بلا معاوضہ ایک طلاق رجعی ہوگی، کیونکہ یہ صریح ہے اھ اور دُر میں ہے کہ مال کے بدلے صریح طلاق واقع ہو تو وہ بائنہ کے حکم میں ہوگی (ت)

1۸ ردالمحتار باب الكنايات دار احياء التراث العربي بيروت ۲۶۷/۲ 2۸ ردالمحتار باب الصريح دار احياء التراث العربي بيروت ۲۳۰/۲ 3۸ ردالمحتار باب الخلع دار احياء التراث العربي بيروت ۵۵۹/۲ 4۸ درمختار باب الخلع مطبع مجتبائی دہلی ۲۴۵/۱

Fatawa Razawiya - Volume 12

(16) I have divorced you regarding this woman on the condition that you remove such and such demand from me for so many days.

If the compensation is not wealth, then in Radd al-Muhtar, after the mention of divorce for wealth: contrary to [the case of] 'divorce me on the condition that I delay my wealth due from you,' for delay is not wealth. The delay is valid if it has a known limit, otherwise not. And the divorce is absolutely revocable (Raj'i), as transmitted from al-Bazzaziyyah in al-Bahr, as mentioned before.

Since this compensation is not wealth, it is mentioned in Radd al-Muhtar after divorce for wealth. This is in contrast to when a wife says, 'Give me a divorce in exchange for me delaying the payment of the wealth you owe me.' If the husband divorces her on this basis, it will be a revocable (Raj'i) divorce because this compensation, i.e., the delay of wealth, is not itself wealth. If a period was fixed for the wealth, this delay would be valid; otherwise not. This was cited from al-Bazzaziyyah in al-Bahr in the same manner as before. (T)

1. I have placed the divorce in your lap (skirt). [Note 1]

In Al-Khazanah from Al-Khulasah: even if he said 'I have placed a thousand divorces in your lap,' it occurs if he intended it or if it was said during a discussion of divorce; otherwise not. 2

It is narrated in Khazanah from Khulasah that the husband said, "I have placed a thousand divorces in your lap." If he had the intention, the divorce occurs. Likewise, if this was said during a discussion about divorce, the divorce will occur; otherwise not. (T)

1. Sit for Iddah (waiting period). In Radd al-Muhtar [Note 2], 19. One upon you,

Note 1: I say: Perhaps the difference between the 'lap' (daman) issue and the previous 'scarf' (chadar) issue is due to the presence or absence of the possessive attachment (idafah) of divorce. There, it was said 'your divorce is tied to your scarf,' hence it occurred without intent. Here, only 'divorce' was mentioned, not 'your divorce,' therefore it depends on intention. Allah, the Exalted, knows best. 12 [From the author]

Note 2: Here in the original, there is a blank space. Perhaps the required phrase from it is what is quoted here in the appendix: His statement 'I'taddi' is a command for

'I'tidad,' which is from 'Iddah' or from 'Add' (counting), meaning count my blessings upon you in my marriage to you. [From Bada'i]. The humble Hamid Raza Qadri, may he be forgiven.

[Footnote column 2]: There is a blank space in the manuscript here. It is possible that the desired text is the statement quoted in the appendix: 'I'taddi' is a command from 'I'tidad,' which comes from 'Iddah' or from 'Adad' (counting), meaning consider the blessing of God upon you in my marriage. [From Bada'i]. 12. The humble Hamid Raza Qadri, may he be forgiven. (T)

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Khul', Matba' Mujtabai, Delhi, 2/560
2. Khazanat al-Muftin, Chapter on Explicit Divorce, Manuscript, 1/108

फ़तावा रज़विया - जिल्द १२

(१६) मैंने तुझे इस औरत पर इस शर्त पर तलाक दी कि तू इतने दिनों के लिए फुलां मुतालबा (मांग) मुझ से हटा दे।

यदि मुआवज़ा माल नहीं है, तो रद अल-मुह्तार में माल के बदले तलाक के उल्लेख के बाद है: इसके विपरीत कि [जब वह कहे] 'मुझे इस शर्त पर तलाक दे कि मैं वह माल जो तेरे ज़िम्मे है उसे तुझ पर मुअख़्ख़र (विलंबित) करती हूँ', क्योंकि विलंब माल नहीं है। विलंब तब मान्य है जब उसकी कोई ज्ञात सीमा हो, अन्यथा नहीं। और तलाक पूर्णतः रजई (प्रतिसंहरणीय) है, जैसा कि बहर ने बज़ाज़िया के हवाले से पहले की तरह उद्धृत किया है।

चूँकि यह मुआवज़ा माल नहीं है, इसलिए रद अल-मुह्तार में माल के बदले तलाक के बाद इसका ज़िक्र किया गया। इसके विपरीत जब पत्नी कहे, 'मेरा जो माल तेरे ज़िम्मे है, उसे मैं तुझ पर मुअख़्ख़र (टालती) करती हूँ, उसके बदले तू मुझे तलाक दे।' पति ने इस पर तलाक दे दी तो वह रजई होगी क्योंकि यह मुआवज़ा यानी माल का टालना, माल नहीं है। अगर माल की कोई अवधि तय थी तो यह टालना सही होगा वरना नहीं। बज़ाज़िया से बहर ने पिछले मसले की तरह ही इसे नक़ल किया। (त)

1. मैंने तलाक तेरे दामन में रख दी। (टिप्पणी १)

अल-खज़ाना में खुलासा से उद्धृत है: यदि उसने कहा 'मैंने तेरे दामन में हज़ार तलाक रख दी', तो यह तब होगा यदि उसने नीयत की हो या तलाक की चर्चा के दौरान कहा हो; अन्यथा नहीं। २

खज़ाना में खुलासा से मन्क़ूल (वर्णित) है कि पति ने कहा "मैंने तेरे दामन में हज़ार तलाक रख दी है"। अगर नीयत की तो तलाक होगी, इसी तरह अगर यह बात तलाक की चर्चा के बाद कही तो तलाक वाक़े (प्रभावी) होगी वरना नहीं। (त)

1. इद्दत बैठ। रद अल-मुह्तार टिप्पणी २ में, १९. तुझ पर एक,

टिप्पणी १: मैं कहता हूँ: शायद 'दामन' के मसले और पिछले 'चादर' के मसले में अंतर तलाक के संबंध (इज़ाफ़त) के होने या न होने के कारण है। वहाँ यह कहा गया था 'तेरी तलाक तेरे आँचल में बांध दी', इसलिए बिना नीयत के हो गई। यहाँ सिर्फ़'तलाक' कहा गया, 'तेरी तलाक' नहीं कहा गया,

इसलिए यह नीयत पर टिकी है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। १२ मिन्हु (लेखक की ओर से)

टिप्पणी २: यहाँ मूल में रिक्त स्थान है। संभवतः वांछित इबारत वह है जिसे यहाँ परिशिष्ट में उद्धृत किया गया है: उनका कथन 'एतद्दी' (اعتدی), एतदाद (اعتداد) से अमर (आदेश) है जो इद्दत से है या अदद (गिनती) से है, यानी मेरे निकाह में अपने ऊपर ख़ुदा की नेमत शुमार कर। [बदाए'अ से]। तुच्छ हामिद रज़ा क़ादरी, अल्लाह उसे माफ़ करे।

[फुटनोट कॉलम २]: यहाँ क़लमी नुस्ख़े (पांडुलिपि) में बयाज़ (खाली जगह) है। हो सकता है इससे वांछित वह इबारत हो जिसकी ज़ैल (नीचे) में नक़ल किया जाता है कि 'एतद्दी', एतदाद से अमर है जो इद्दत से है या अदद से है यानी मेरे निकाह को अपने ऊपर ख़ुदा की नेमत शुमार कर। [बदाए'अ से]। १२. तुच्छ हामिद रज़ा क़ादरी, अल्लाह उसे माफ़ करे। (त)

1. रद अल-मुह्तार, बाब अल-ख़ुलअ, मतबा मुज्तबाई, दिल्ली, २/५६०
2. खज़ानतुल मुफ़्तीन, फ़स्ल फ़ी सरीह अत-तलाक़, क़लमी नुस्ख़ा, १/१०८

पृष्ठ ५५१/६८८

فتاوٰی رضویہ - جلد دو ازدہم

(۱۶) میں نے تجھے اس عورت پر طلاق دی کہ تو اتنے دنوں کے لئے فلاں مطالبہ مجھ سے ہٹادے۔

فان العوض غير مال ففي ردالمحتار بعد ذكر الطلاق على مال بخلاف طلقني على ان اؤخر مالی علیک، فان التأخير ليس بمال و صح التأخير لوله غاية معلومة والا فلا، والطلاق رجعی مطلقاً بحر عن البزازية كما مر - کیونکہ یہ عوض مال نہیں تو رد المحتار میں طلاق بعوض مال کے بعد ذکر کیا، بخلاف اس کے کہ جب بیوی کہے میرا جو مال تیرے ذمہ ہے اسے میں تجھ پر مؤخر کرتی ہوں اس کے عوض تو مجھے طلاق دے۔ خاوند نے اس پر طلاق دے دی تو وہ رجعی ہو گی کیونکہ یہ عوض یعنی تاخیر مال نہیں ہے۔ اگر مال کی کوئی مدت مقرر تھی یہ تاخیر درست ہو گی ورنہ نہیں، بزازیہ سے بحر نے گزشتہ کی طرح نقل کیا۔ (ت)

۲؎ میں نے طلاق تیرے دامن میں رکھ دی عہ ۱

فی الخزانة عن الخلاصة ولو قال ہزار طلاق در د امنت کردم ان نوی او کان فی حال مذاکرة الطلاق یقع والا فلا۔ ۲؎ خزانہ میں خلاصہ سے منقول ہے کہ خاوند نے کہا "میں نے تیرے دامن میں ہزار طلاق رکھ دی ہے" اگر نیت کی تو طلاق ہو گی، یونہی اگر یہ بات طلاق کے مذاکرہ کے بعد کہی تو طلاق واقع ہو گی ورنہ نہیں۔ (ت)

۸عدت بیٹھ فی ردالمحتار عہ ۲ ، ۱۹ تجھ پر ایک،

عہ ۱: اقول: شاید مسئلہ دامن و مسئلہ سابقہ چادر میں فرق بوجہ اضافت و عدم اضافت طلاق ہے کہ وہاں یہ کہا تھا تیری طلاق تیرے آنچل باندھی، لہذا بے نیت پڑ گئی۔ یہاں صرف طلاق کہا، تیری طلاق نہ کہا لہذا نیت پر رہی، واللہ سبحانہ وتعالی اعلم ۱۲ منہ

عہ ۲: ههنا فی الاصل بیاض ولعل العبارة المطلوبة منها هی ما نقل ههنا فی الذیل قوله اعتدی امر بالا عتداد الذی هو من العدة او من العد، ای اعتدی نعمی علیك بدائع اه الفقیر حامد رضا قادری غفرله۔

[حاشیہ کالم ۲]: یہاں قلمی نسخہ میں بیاض ہے ہو سکتا ہے اس سے مطلوب وہ عبارت ہو جس کی ذیل میں نقل کیا جاتا ہے کہ اعتدی، اعتداد سے امر ہے جو عدت سے ہے یا عدد سے ہے یعنی میرے نکاح کو اپنے اوپر خدا کو نعمت شمار کر، بدائع اھ ۱۲ الفقیر حامد رضا قادری غفر لہ (ت)

۱ ردالمحتار باب الخلع مطبع مجتبائی دہلی ۲/۵۶۰ ۲ خزانة المفتین فصل فی صریح الطلاق قلمی نسخہ ۱/۱۰۸

Fatawa Ridawiyya, Volume 12

[Table Header] Arabic Text: In the texts (Mutun): "You are one," and what we have translated is known to the one who knows the evidence. Urdu Translation: It is in the texts: "You are one," so it is known to the one who knows the evidence from the heading established by us. (T)

[Main Body Text] "On you are two," in this, two revocable (raj'i) divorces will occur given the intention. Because this is also known for the same reason, as here the word 'divorce' is implicit, due to which it will be a revocable divorce, and because of the possibility of it being other than divorce, it depends on the intention. In Al-Bahr, it is counted from this category that when one says, "You are not my wife and I am not your husband," if he intended it, one revocable divorce will occur. I say (the author): the occurrence of divorce with these words is the school of thought of Imam Al-A'zam (may Allah's mercy be upon him), and according to the two companions (Abu Yusuf and Muhammad), despite the intention, divorce will not occur. In Al-Bahr, the Imam's opinion was mentioned first, but in Al-Khulasa, Khizanat al-Muftin, Jawahir al-Akhlati, and Al-Hindiyya, it is mentioned that if the husband said, "You are not my wife," then despite the intention, divorce will not occur; this is the chosen (preferred) opinion. And Allah Almighty knows best. (T)

In all these, intention is required; if there is no intention, then nothing happens, and if there is, it is a revocable divorce. Note 1: Without cause, without reason divorce.

Note 1: In the original, there is this much more text: These are two hundred and twenty (220) words of divorce, of which one hundred and thirty (130) result in irrevocable (ba'in) divorce, and ninety (90) result in revocable (raj'i) divorce. In both, ninety-nine (99) words require no intention, and for the rest, the intended meaning applies. Still, in every category, additions were made and remaining words from other sayings were added after completing the words. Therefore, words requiring intention are one hundred and forty-five (145), and those not requiring intention are one hundred and eight (108); these total two hundred and fifty-three (253) words, one hundred and sixty (160) of which result in irrevocable divorce and ninety-three (93) in revocable divorce. 2 Ahmad Raza, may he be forgiven.

[Footnotes] 1. Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter of Metaphors, H.M. Saeed Company Karachi, 3/300. 2. Fatawa Hindiyya, Chapter Seven on Divorce in Persian Words, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/386.

फ़तावा रज़विया, खंड 12

[तालिका शीर्षक] अरबी पाठ: मूल ग्रंथों (मुतून) में: "तुम एक हो," और हमने जो अनुवाद किया है वह उसे ज्ञात है जो प्रमाण को जानता है। उर्दू अनुवाद: मूल ग्रंथों में है: "तुम एक हो," तो हमारे द्वारा स्थापित शीर्षक से प्रमाण जानने वाले को ज्ञात है। (त)

[मुख्य पाठ] "तुम पर दो," इसमें नियत (इरादे) की स्थिति में दो रजई (प्रतिसंहरणीय) तलाक होंगे। क्योंकि यह भी पहले ही कारण की तरह ज्ञात है कि यहाँ 'तलाक' शब्द छिपा हुआ है जिससे यह रजई तलाक होगा, और तलाक के अलावा अन्य होने की संभावना के कारण यह नियत पर निर्भर होगा। 'बहर' में इसी श्रेणी से गिना गया है कि जब वह कहे कि "तुम मेरी पत्नी नहीं हो और मैं तुम्हारा पति नहीं हूँ," यदि नियत की तो एक रजई तलाक होगा। मैंने (लेखक) कहा: इन शब्दों से तलाक का होना इमाम-ए-आज़म (रहमतुल्लाहि अलैहि) का मज़हब है, और साहिबैन (इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद) के निकट नियत के बावजूद तलाक नहीं होगा। 'बहर' में इमाम के कथन को पहले उल्लेख किया गया है, लेकिन 'खुलासा', 'खज़ानतुल मुफ़्तीन', 'जवाहिर अल-अख्लाती' और 'हिन्दिया' में उल्लेख है कि यदि पति ने कहा "तुम मेरी पत्नी नहीं हो," तो नियत के बावजूद तलाक नहीं होगा; यही मुख्तार (पसंदीदा) राय है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

इन सब में नियत की आवश्यकता है; यदि नियत नहीं तो कुछ नहीं और यदि है तो रजई तलाक। नोट 1: बिना वजह बिना कारण तलाक।

नोट 1: मूल में इतनी इबारत और अधिक है: ये दो सौ बीस (220) तलाक के शब्द हैं जिनमें से एक सौ तीस (130) से बाइन (अप्रतिसंहरणीय) तलाक पड़ता है, नब्बे (90) से रजई। दोनों में निन्यानबे (99) बिना नियत के हैं और बाकी मनवी (नियत पर आधारित) हैं, और अभी भी हर श्रेणी में वृद्धि को और शेष शब्दों को अन्य कथनों के शब्दों को पूरा करने के बाद जोड़ा गया। अतः मनवी एक सौ पैंतालीस (145), गैर-मनवी एक सौ आठ (108); ये कुल दो सौ तिरपन (253) शब्द हैं, एक सौ साठ (160) से बाइन और तिरानबे (93) से रजई। 2 अहमद रज़ा, अल्लाह उन्हें क्षमा करे।

[पाद टिप्पणियाँ] 1. बहरुल रैक, बाबुल किनायात, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 3/300। 2. फ़तावा हिन्दिया, फ़स्ल सातवीं फ़ारसी शब्दों में तलाक के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/386।

पृष्ठ 552 का 688

فی المتون انت واحدۃ ویعرف مآترجمنا من یعرف الدلیل۔ | متون میں ہے: تو ایک ہے، تو ہمارے قائم کردہ عنوان سے دلیل جاننے والے کو معلوم ہے۔ (ت)

'تجھ پر دو، اس میں دو طلاقیں رجعی بحالت نیت پڑیں گی، فانہ مثلہ بعین الوجہ لان الوقوع بطلاق مضمر فکان رجعیا ویحتمل غیرہ فتوقف علی النیۃ وعد فی البحر من ھذا القسم لست لی بامراۃ وما انالک بزوج ،حیث یقع رجعی ان نوی قلت والوقوع بہ مذہب الامام وعندہمالاوان نوی کما فی الخانیۃ و قد قدم قول الامام لکن فی الخلاصۃ وخزانۃ المفتین وجواھر الاخلاطی والھندیۃ فی قولہ توزن من نبی لایقع وان نوی ھو المختار واللہ تعالٰی اعلم۔ | کیونکہ یہ بھی پہلی ہی وجہ کی طرح معلوم ہے کہ یہاں لفظ طلاق پوشیدہ ہے جس سے یہ طلاق رجعی ہوگی، اور غیر طلاق کا احتمال ہونے کی وجہ سے نیت پر موقوف ہوگی، اور بحر میں اسی قسم سے شمار کیا ہے جب یہ کہے کہ "تو میری بیوی نہیں اور میں تیرا خاوند نہیں" نیت کی تو ایک رجعی طلاق ہوگی، قلت (میں کہتا ہوں) اس کلام سے طلاق کا وقوع امام اعظم رحمۃ اللہ تعالٰی کا مذہب ہے اور صاحبین کے نزدیک نیت کے باوجود طلاق نہ ہوگی، اور بحر میں امام کے قول کو پہلے ذکر کیا ہے، لیکن خلاصہ، خزانہ المفتین، جواہر الاخلاطی اور ہندیہ میں مذکور ہے کہ خاوند نے کہا "تو میری بیوی نہیں ہے" تو نیت کے باوجود طلاق نہ ہوگی، یہی مختار ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

ان سب میں نیت کی حاجت ہے اگر نیت نہیں تو کچھ نہیں اور ہے تو طلاق رجعی عہ ۱۔ بے وجہ بے سبب طلاق عہ ۱: اصل میں اتنی عبارت اور زائد ہے یہ دوسو بیس ۲۲۰ الفاظ طلاق ہیں جن میں سے ایک سو تیس ۱۳۰ سے بائن پڑتی ہے، نوے ۹۰ سے رجعی۔ دونوں میں ننانوے ۹۹ سے بے نیت باقی سے منوی، اور ہنوز ہر قسم میں زیادت کو اور الفاظ باقی اقوال بعد تکمیل الفاظ اضافہ

فرمائے گئے۔ لہٰذا منوی ایک سو سینتالیس ۱۴۵، غیر منوی ایک سو آٹھ ۱۰۸، یہ کل دوسو تپن الفاظ ہیں ۲۵۳، ایک سو ساٹھ ۱۶۰ سے بائن اور ترانوے ۹۳ رجعی ۲ احمد رضا غفرلہ

1 بحر الرائق باب الکنایات ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳/۳۰۰ 2 فتاویٰ ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالالفاظ الفارسیہ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۳۸۶

Fatawa-e-Razvia Volume 12

Giving [divorce] is inherently undesirable, rather Shari'ah condemns it, especially a 'Bain' (irrevocable) divorce without necessity is purely an innovation (Bid'at) and prohibited. Although a woman being an adulteress (God forbid) is the greatest reason for permitting divorce, it is possible to achieve the effect of 'Bain' by giving a 'Raj'i' (revocable) divorce according to the Sunnah and then not taking her back; it will automatically become 'Bain'. Regarding the timing of divorce, there's a specific rule: a woman who has been consummated should not be divorced during menstruation (Hayd) or post-natal bleeding (Nifas). However, Khula and other forms of divorce given in exchange for wealth are permissible even in this state. If a woman is less than nine years old, or has reached fifty-five, or is young but never menstruated, or is pregnant, such a woman should not be given two divorces in one month. For women other than these four, she should not be divorced during a state of purity (Tuhr) in which, or in the menstruation preceding it, he had intercourse with her, or someone else had intercourse with her by mistake. These twelve situations are prohibited for divorce. The meaning of these prohibitions is that the man will be a sinner for violating them, otherwise, divorce will occur in any case as long as the woman is under the bond of marriage or 'Iddah (waiting period) and the man has any remaining right to divorce.

Arabic Text	**English Translation**
In Fath al-Qadir, at the beginning of the Book of Divorce, it states: The more correct view is its prohibition except in case of need, but need is not limited only to old age and doubt. End of summary.	In Fath al-Qadir, at the beginning of the Book of Divorce, it states: The more correct view is its prohibition except in case of need, but need is not limited only to old age and doubt. End of summary.
In Radd al-Muhtar, it states: The view that divorce is only permissible due to old age or doubt is weak. The view corrected in 'Fath' does not specify this restriction, as the jurists have mentioned 'need' in absolute terms. Our discourse clarifies that there is no contradiction between what was claimed as the official position of the school of thought and what was corrected in 'Fath'. And in it, quoting from	In Radd al-Muhtar, it states: The view that divorce is only permissible due to old age or doubt is weak. The view corrected in 'Fath' does not specify this restriction, as the jurists have mentioned 'need' in absolute terms. Our discourse clarifies that there is no contradiction between what was claimed as the official position of the school of thought and what was corrected in 'Fath'. And in it, quoting from

Arabic Text	English Translation
'Al-Bahr' and 'Fath', it states that a single 'Bain' divorce is considered an innovated (Bid'i) divorce in the 'Zahir al-Riwayah' (apparent narration), etc.	'Al-Bahr' and 'Fath', it states that a single 'Bain' divorce is considered an innovated (Bid'i) divorce in the 'Zahir al-Riwayah' (apparent narration), etc.

1. Fath al-Qadir, Book of Divorce, Nooria Razvia, Sukkur, 3/327.
2. Radd al-Muhtar, Book of Divorce, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/216.
3. Book of Divorce, 2/218.

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द 12

तलाक देना अपने आप में नापसंद और शरई तौर पर निंदनीय है, विशेष रूप से बिना आवश्यकता के'बाइन' (अटल) तलाक देना पूरी तरह से बिद्दत (नवाचार) और निषिद्ध है। हालाँकि स्त्री का (ईश्वर न करे) व्यभिचारिणी होना तलाक की अनुमति का सबसे बड़ा कारण है, फिर भी 'बाइन' का प्रभाव सुन्नत के अनुसार 'रजई' (वापसी योग्य) तलाक देकर और फिर उससे मेल न करके भी प्राप्त किया जा सकता है; वह स्वयं ही 'बाइन' हो जाएगी। तलाक के समय की भी एक विशेषता है कि जिस पत्नी से सहवास हो चुका हो, उसे मासिक धर्म (हैज़) या प्रसव के बाद के रक्तस्राव (नफ़ास) के दौरान तलाक न दिया जाए। लेकिन 'खुला' और अन्य प्रकार के तलाक जो धन के बदले में दिए जाते हैं, वे इस स्थिति में भी जायज़ हैं। यदि स्त्री की आयु नौ वर्ष से कम है, या पचपन तक पहुँच चुकी है, या जवान तो हुई पर कभी मासिक धर्म नहीं आया, या गर्भवती है, तो ऐसी स्त्री को एक महीने में दो तलाक न दिए जाएं। इनके अलावा जो स्त्रियाँ हैं, उन्हें ऐसी पाकी (पवित्रता की स्थिति) में तलाक न दिया जाए जिसमें, या उससे पहले के मासिक धर्म में, पति ने उससे सहवास किया हो, या धोखे से किसी दूसरे व्यक्ति ने उससे सहवास कर लिया हो। तलाक में ये बारह स्थितियाँ वर्जित हैं। इन तमाम मनाहियों का अर्थ यह है कि मर्द इनके खिलाफ करने पर गुनहगार होगा, वरना तलाक तो हर हाल में हो जाती है जब तक कि औरत निकाह या इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के बंधन में हो और मर्द के हाथ में कोई तलाक बाकी हो।

अरबी पाठ	**हिंदी अनुवाद**
'फ़तहुल क़दीर' में 'किताबुत् तलाक़' के प्रारंभ में है: अधिक सही बात यह है कि तलाक वर्जित है, सिवाय इसके कि कोई आवश्यकता हो, लेकिन आवश्यकता केवल बुढ़ापे और संदेह तक सीमित नहीं है। (संक्षिप्त)	'फ़तहुल क़दीर' में 'किताबुत् तलाक़' के प्रारंभ में है: अधिक सही बात यह है कि तलाक वर्जित है, सिवाय इसके कि कोई आवश्यकता हो, लेकिन आवश्यकता केवल बुढ़ापे और संदेह तक सीमित नहीं है। (संक्षिप्त)
'रद्दुल मुहतार' में है: तलाक का केवल बुढ़ापे या संदेह के आधार पर जायज़ होना कमज़ोर (ज़ईफ़) बात है, और जिसे 'फ़त्ह' में सही माना गया है, उसमें यह शर्त नहीं बताई गई है, जैसा कि फुक़हा (विधिवेत्ताओं) ने सामान्य आवश्यकता का	'रद्दुल मुहतार' में है: तलाक का केवल बुढ़ापे या संदेह के आधार पर जायज़ होना कमज़ोर (ज़ईफ़) बात है, और जिसे 'फ़त्ह' में सही माना गया है, उसमें यह शर्त नहीं बताई गई है, जैसा कि फुक़हा (विधिवेत्ताओं) ने सामान्य आवश्यकता का

अरबी पाठ

उल्लेख किया है। हमारे विमर्श से यह स्पष्ट हो गया कि जिस चीज़ के बारे में मज़हब होने का दावा किया गया और जिसे 'फ़त्ह' में सही माना गया, उसमें कोई मतभेद नहीं है। और उसी में 'अल-बह्र' और 'फ़त्ह' से उद्धृत किया गया है कि एक 'बाइन' तलाक 'ज़ाहिरुल रिवायत' के अनुसार बिदई (अनुचित/नवाचारी) तलाक है।

हिंदी अनुवाद

उल्लेख किया है। हमारे विमर्श से यह स्पष्ट हो गया कि जिस चीज़ के बारे में मज़हब होने का दावा किया गया और जिसे 'फ़त्ह' में सही माना गया, उसमें कोई मतभेद नहीं है। और उसी में 'अल-बह्र' और 'फ़त्ह' से उद्धृत किया गया है कि एक 'बाइन' तलाक 'ज़ाहिरुल रिवायत' के अनुसार बिदई (अनुचित/नवाचारी) तलाक है।

1. फ़तहुल क़दीर, किताबुत् तलाक़, नूरिया रज़विया, सुक्कुर, 3/327।
2. रद्दुल मुहतार, किताबुत् तलाक़, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/216।
3. किताबुत् तलाक़, 2/218।

دینا فی نفسہ ناپسندیدہ بلکہ شرعاً مذموم ہے، خصوصاً بائن کے بے ضرورت محض بدعت و ممنوع ہے۔ عورت کا معاذ اللہ فاحشہ ہونا اگرچہ سب سے بڑھ کر اجازتِ طلاق کی وجہ، مگر بائن کی بھی کار براری ممکن کہ طلاق رجعی بطور مسنون دے اور رجعت نہ کرے خود ہی بائن ہوجائے گی، وقت طلاق میں بھی یہ خصوصیت ہے کہ زن مدخولہ کو حیض یا نفاس میں طلاق نہ دے مگر خلع وغیرہ جو طلاق مال کے عوض ہو وہ اس حال میں بھی جائز ہے، عورت کی عمر اگر نو برس سے کم ہے، یا پچپن تک پہنچ چکی ہو، یا جوان تو ہوئی مگر حیض کبھی نہ آیا، یا حاملہ ہے تو ایسی عورت کو ایک مہینے میں دو طلاق نہ دے، اور جو عورت ان چار کے علاوہ ہے اسے ایسی پاکی نہ دے کہ اس میں یا اس سے پہلے کے حیض میں یہ اسے طلاق دے چکا، یا ان میں، یا دھوکے سے دوسرا شخص اس سے جماع کر چکا ہے، طلاق میں یہ بارہ صورتیں منع ہیں، پھر ان سب ممانعتوں کے یہ معنی کہ مرد ان کے خلاف سے گنہگار ہوگا ورنہ طلاق تو بہرحال پڑجاتی ہے جب تک عورت پر قید نکاح یا عدت اور مرد کے ہاتھ میں کوئی طلاق باقی ہے۔

عربی عبارت	**اردو ترجمہ**
في فتح القدير اول كتاب الطلاق الاصح حظره الالحاجة غيران الحاجة لاتقتصر على الكبر والريبة اهـ ملخصاً	فتح القدیر میں کتاب الطلاق کے شروع میں ہے، اصح یہ ہے کہ طلاق ممنوع ہے مگر حاجت ہو تو ممنوع نہیں ہے، مگر حاجت صرف بڑھاپے اور شکوک میں منحصر نہیں ہے اھ ملخصاً۔

عربی عبارت	اردو ترجمہ
في ردالمحتار ان الضعيف هو عدم اباحته الاكبر اوريبة والذى صححه في الفتح عدم التقييد بذلك كما هو مقتضى اطلاقهم الحاجة وبما قررناه ظهر ان لامخالفة بين ماادعاه انه المذهب وما صححه في الفتح اهـ وفيه عن البحر عن الفتح الواحدة البائنة بدعية في ظاهر الرواية الخ	ردالمختار میں ہے کہ طلاق کا صرف بڑھاپے یا شکوک کی بناء پر مباح ہونا ضعیف ہے اور جس کو فتح میں صحیح قرار دیا ہے اس میں اس کی قید نہیں بیان کی، جیسا کہ فقہاء کرام نے مطلق حاجت کو بیان کیا ہے، اور ہماری تقریر سے ظاہر ہوگیا کہ جس کے متعلق مذہب ہونے کا دعوی کیا اور جس کی تصحیح فتح میں کی ہے اس میں کوئی اختلاف نہیں ہے اھ اور اسی میں بحر اور اس نے فتح سے نقل کیا کہ ایک بائنہ طلاق، ظاہر روایت میں بدعی طلاق ہے۔

1. فتح القدیر کتاب الطلاق نوریہ رضویہ سکھر ۳/۳۲۷
2. ردالمحتار کتاب الطلاق داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۱۶
3. کتاب الطلاق ۲/۲۱۸

Fatawa Razawiyya - Volume 12

In Al-Durr [al-Mukhtar], a single revocable divorce (talaq raj'i) only in a period of purity (tuhr) in which no intercourse occurred is the 'Ahsan' (best) form. A single divorce for a non-consummated wife is valid even during menstruation. For a consummated wife, the 'Hasan' or 'Sunni' form consists of three divorces separated over three periods of purity with no intercourse in them, nor in the menstruation preceding that purity, and no divorce during menstruation for those who menstruate; and for those who do not menstruate, it is three divorces separated over three months. Divorcing a post-menopausal woman, a minor, or a pregnant woman immediately after intercourse is permissible because the reason for the dislike (karahah) in menstruating women is the possibility of pregnancy, which is applicable to them. 'Bid'i' (innovative/un-Islamic) divorce is that which contradicts these two forms. Khul' (divorce initiated by the wife) during menstruation is not disliked, and postnatal bleeding (nifas) carries the same ruling as menstruation. Summary concluded. Allama Shami said regarding the text's phrase "purity in which no intercourse occurred": it did not say "intercourse from him (the husband)," so that the statement could include intercourse by mistake/doubt (shubha), because in such a case also, the divorce would be 'bid'i', as explicitly stated by Al-Isbijabi. Through this, it is known that the author's wording is superior to the wording of others who said "he did not have intercourse with her in it," however, it is necessary that...

---

1 Al-Durr al-Mukhtar, Kitab al-Talaq, Mujtabai Press Delhi, 1/215 to 217 Page 554 of 688

फतावा रज़विया - खंड 12

'अल-दुर' में है कि ऐसे पवित्रता के समय (तुहर) में एक ही रजई तलाक़ जिसमें संभोग न किया गया हो, 'अहसन' (सर्वश्रेष्ठ) तलाक़ है। और जिस पत्नी के साथ संभोग न हुआ हो, उसे मासिक धर्म के दौरान भी एक तलाक़ देना अनुमत है। और संभोग की हुई पत्नी के लिए तीन पवित्र अवधियों में तीन अलग-अलग तलाक़ देना, जिनमें संभोग न हुआ हो, और न ही उस पवित्रता से पहले वाले मासिक धर्म में संभोग हुआ हो, और न ही मासिक धर्म के दौरान तलाक़ हो; और जिन्हें मासिक धर्म नहीं आता, उनके लिए तीन महीनों में तीन अलग-अलग तलाक़ देना 'हसन' और सुन्नी तलाक़ होगा। वृद्ध महिला, नाबालिग और गर्भवती महिला को संभोग के तुरंत बाद तलाक़ देना जायज़ है, क्योंकि संभोग के बाद तलाक़ देना इसलिए नापसंद है क्योंकि गर्भ ठहरने की संभावना होती है, जो मासिक धर्म वाली युवतियों में हो सकती है। 'बिदई' तलाक़ वह है जो इन दो प्रकारों (अहसन और हसन) के विरुद्ध हो। मासिक धर्म के दौरान 'खुलअ' नापसंद नहीं है और प्रसवोत्तर रक्तस्राव (निफास) का भी मासिक धर्म जैसा ही हुक्म है। सारांश समाप्त। अल्लामा शामी ने कहा: पाठ का कथन "वह पवित्रता जिसमें संभोग न हुआ हो", इसमें यह नहीं कहा कि "उससे (पति से) संभोग न हुआ हो", ताकि यह कथन संदेहास्पद संभोग (शब्हा) को भी शामिल कर सके क्योंकि ऐसी स्थिति में भी तलाक़ 'बिदई' होगी जैसा कि अल-इस्बीजाबी ने इस पर स्पष्ट किया है। और इससे यह ज्ञात हुआ कि लेखक के शब्द दूसरों के शब्दों से श्रेष्ठ हैं जिन्होंने कहा था "उसने उसमें संभोग नहीं किया", लेकिन यह आवश्यक है कि...

---

1 दुर्रे मुख़्तार, किताब अल-तलाक़, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/215 से 217 पृष्ठ 688 में से 554

فی الدر طلقة رجعية فقط في طهر لاوطئ فيه احسن، وطلقة لغير موطؤة ولو في حيض، ولموطؤة تفريق الثلث في ثلاثة اطهار لا وطئ فيها ولا في حيض قبلها ولا طلاق فيه فيمن تحيض وفي ثلثة اشهر في حق غيرها حسن وسني، وحل طلاق الايسة والصغيرة والحامل عقب وطئ لان الكراهة فيمن تحيض لتوهم الحبل، والبدعي مأخالفهما والخلع في الحيض لا يكره والنفاس كالحيض اه ملخصاً، قال الشامي قوله لاوطء فيه لم يقل، منه، ليدخل في كلامه ما لو وطئت بشبهة، فان طلاقها فيه حينئذ بدعي نص عليه الاسبيجابی، وبهذا عرف ان كلام المصنف اولی من قول غيره لم يجامعها فيه لكن لابد ان

ہے الخ ، اور دُر میں ہے کہ ایک رجعی طلاق ایسے طہر میں جس میں وطی نہ کی ہو فقط وہی احسن طلاق ہے اور غیر موطوہ بیوی کو اگرچہ حیض کے دوران ایک طلاق اور وطی شدہ کو تین طہروں میں تین طلاقیں متفرق کرنا جن میں وطی نہ ہوئی اور نہ ایسے طہر سے پہلے حیض میں وطی ہو اور نہ طلاق ہو حیض والی کے لئے ، اور تین مہینوں میں تین طلاقیں متفرق کرنا جس کو حیض نہ آتا ہو ، تو ایسی طلاقیں حسن اور سنی ہوں گی۔ اور بوڑھی ، نابالغہ اور حاملہ کو وطی کے بعد طلاق دینا حلال ہے کیونکہ وطی کے بعد طلاق دینا اسلئے مکروہ ہے کہ حمل ٹھہرنے کا احتمال ہوتا ہے جو کہ جوان حیض والی میں ہو سکتا ہے ، اور بدعی طلاق وہ ہے جو ان مذکورہ دو قسموں (احسن اور حسن) کے خلاف ہو ، اور حیض میں خلع مکروہ نہیں اور نفاس بھی حیض کا حکم رکھتا ہے اھ ملخصاً ۔ علامہ شامی نے فرمایا: متن کا قول "وہ طہر جس میں وطی نہ ہو" کہا، یہ نہ کہا کہ اس خاوند سے وطی نہ ہوئی ہو ، یہ اس لئے تاکہ کلام شبہ سے وطی کو بھی شامل ہو سکے، کیونکہ ایسی صورت میں بھی طلاق بدعی ہو گی جیسا کہ اس پر اسپیجابی نے

نص کی ہے۔ اور اس سے معلوم ہوا کہ مصنف کا کلام دوسروں کے کلام سے اولیٰ ہے جنہوں نے کہا "اس نے اس میں جماع نہ کیا ہو" لیکن لابد کہ...

---

1 در مختار کتاب الطلاق مطبع مجتبائی دہلی ۲۱۵/۱ تا ۲۱۷ صفحہ 554 از 688

Fatawa Razawiya, Volume 12

[Main Text Body] (Left Column - Arabic Translation): He says: nor in the menses preceding it, nor divorce in both of them, and her pregnancy should not be apparent, nor should she be menopausal or a minor, as stated in 'al-Bada'i'. This is because if he divorced her in a state of purity (tuhr) while having had intercourse in the preceding menses, it would be an innovated (bid'i) divorce. Similarly, if he had divorced her in that menses and then in this purity, because combining two divorces in a single purity is disliked (makruh) according to us. His statement "regarding others" refers to a woman who reached maturity by age but never saw blood, or was pregnant, or a minor who has not reached nine years according to the chosen opinion, or a menopausal woman who reached fifty-five years according to the preferred opinion. As for a woman with prolonged purity, she is considered among those who menstruate because she is young and has seen blood, so he should not divorce her according to the Sunnah except once until she enters the age of menopause. It is mentioned in 'al-Dhakhira' from 'al-Muntaqa': there is no harm if...

(Right Column - Urdu): That the author's statement is superior compared to others because others said that the husband should not have had intercourse in this purity, but it was also necessary in the author's speech to state that there should be no intercourse in the menses before this purity, nor should there be a divorce, and pregnancy should not be apparent, and she should not be old or a minor. As stated in 'al-Bada'i', if a divorce is given in such a purity where intercourse occurred in the preceding menses, it will be an innovated (bid'i) divorce even if there was no intercourse in the purity itself. Likewise, if a divorce was given in that menses followed by a divorce in the purity, because in such a case, two divorces would be counted in one purity, which is disliked among us. The author's (Matan) statement "in its others" means a woman considered mature by age instead of menstruation, who has not seen or found menstrual blood, or is pregnant, or is a minor less than 9 years old according to the chosen opinion, or is menopausal (a woman who has reached 55 years) according to the preferred opinion, or among menstruating women, one whose purity does not end for a long duration. Since for a young woman who has experienced menstruation, her Sunnah divorce will only be one until she reaches the stage of menopause. It is narrated in 'al-Dhakhira' from 'al-Muntaqa': If there is something undesirable from the wife...

[Footnotes] 1. Radd al-Muhtar, Kitab al-Talaq, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/218. 2. Radd al-Muhtar, Kitab al-Talaq, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/219.

फ़तावा रज़विया, जिल्द बारहवीं

[मुख्य पाठ] (बायाँ कॉलम - अरबी अनुवाद): वह कहता है: न उसके पूर्ववर्ती मासिक धर्म में, और न ही दोनों में तलाक़, और उसका गर्भ स्पष्ट नहीं होना चाहिए, और न ही वह रजोनिवृत्त (आइसह) या नाबालिग होनी चाहिए, जैसा कि 'अल-बदाई' में है। क्योंकि यदि उसने उसे ऐसी पवित्रता (तुह्र) में तलाक़ दिया जिसमें उससे पहले के मासिक धर्म में संभोग किया गया था, तो वह बिदअती (नवाचारी) तलाक़ होगा। इसी तरह, यदि उसने उसे उस (मासिक धर्म) में और इस पवित्रता में तलाक़ दिया होता, क्योंकि हमारे अनुसार एक ही पवित्रता में दो तलाक़ों को मिलाना मकरूह (नापसंद) है। उनका कथन "दूसरों के संबंध में" का अर्थ है उस स्त्री के संबंध में जो उम्र से वयस्क हो गई लेकिन रक्त नहीं देखा, या गर्भवती थी, या एक नाबालिग जो चुनिंदा राय के अनुसार नौ साल की नहीं हुई, या एक रजोनिवृत्त महिला जो पसंदीदा राय के अनुसार पचपन साल की हो गई। जहाँ तक लंबी पवित्रता वाली स्त्री का सवाल है, वह मासिक चक्र वाली महिलाओं में से है क्योंकि वह जवान है और उसने रक्त देखा है, इसलिए सुन्नत के अनुसार उसे तब तक केवल एक ही तलाक़ देना चाहिए जब तक कि वह रजोनिवृत्ति की आयु तक न पहुँच जाए। 'अल-ज़खीरा' में 'अल-मुंतका' से उद्धृत है: इसमें कोई बुराई नहीं है यदि...

(दायाँ कॉलम - उर्दू अनुवाद): लेखक (मुसन्निफ़) का कथन दूसरों की तुलना में श्रेष्ठ है क्योंकि दूसरों ने कहा है कि पति ने इस पवित्रता में संभोग न किया हो, लेकिन लेखक के कथन में यह कहना भी आवश्यक था कि इस पवित्रता से पहले मासिक धर्म में भी संभोग न हुआ हो और न ही तलाक़ हुआ हो, और गर्भ स्पष्ट न हो और न ही वह बूढ़ी या नाबालिग हो। जैसा कि 'अल-बदाई' में है, क्योंकि यदि ऐसी पवित्रता में तलाक़ दिया गया जिसमें पिछले मासिक धर्म में संभोग किया गया था, तो वह बिदअती तलाक़ होगा चाहे पवित्रता में संभोग न हुआ हो। इसी तरह, यदि उस मासिक धर्म में तलाक़ के बाद पवित्रता में तलाक़ दिया गया हो क्योंकि ऐसी स्थिति में एक ही पवित्रता में दो तलाक़ गिने जाएंगे जो हमारे यहाँ मकरूह है। और मातिन (मूल लेखक) का कथन कि "उसके अलावा में" अर्थात वह स्त्री जो मासिक धर्म के बजाय उम्र के हिसाब से वयस्क मानी जाए और उसने कोई मासिक धर्म का रक्त न देखा और न पाया हो, या स्त्री गर्भवती हो, या ऐसी नाबालिग जो चुनिंदा कथन के अनुसार नौ साल से कम उम्र की हो, या आइसह (वह स्त्री जो पचपन साल की हो चुकी हो) पसंदीदा कथन के अनुसार, या मासिक धर्म वाली महिलाओं में वह स्त्री जिसकी पवित्रता लंबे समय तक समाप्त न हो। क्योंकि जिस युवा स्त्री को मासिक धर्म का खून आ चुका है, उसके लिए सुन्नत तलाक़ केवल एक ही

होगी जब तक कि वह रजोनिवृत्ति की सीमा तक न पहुँच जाए। ज़खीरा में मुंतका से मनकूल है: यदि पत्नी से कोई नापसंदीदा...

[पाद टिप्पणियाँ] 1. रद अल-मुह्तार, किताब अत-तलाक़, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/218. 2. रद अल-मुह्तार, किताब अत-तलाक़, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/219.

فتاویٰ رضویہ، جلد دوازدہم

[متن] (بایاں کالم - عربی ترجمہ): وہ فرماتے ہیں: نہ اس سے پہلے والے حیض میں اور نہ ان دونوں میں طلاق ہو، اور اس کا حمل ظاہر نہ ہو، اور وہ نہ آیسہ ہو اور نہ صغیرہ جیسا کہ البدائع میں ہے، کیونکہ اگر اس نے اسے ایسے طہر میں طلاق دی جس سے پہلے والے حیض میں اس سے وطی کی تھی تو یہ طلاق بدعی ہوگی، اور اسی طرح اگر اس نے اسے اس (حیض) میں بھی طلاق دی تھی اور اس طہر میں بھی، کیونکہ ہمارے نزدیک ایک طہر میں دو طلاقوں کو جمع کرنا مکروہ ہے۔ ان کا قول "دوسروں کے حق میں" یعنی اس عورت کے حق میں جو عمر کے اعتبار سے بالغ ہو گئی لیکن خون نہیں دیکھا، یا حاملہ تھی، یا صغیرہ (نابالغہ) جو مختار قول کے مطابق نو سال کی عمر کو نہیں پہنچی، یا آیسہ جو راجح قول کے مطابق پچپن سال کی ہو گئی۔ رہی بات طویل طہر والی عورت کی، تو وہ ایام والی عورتوں میں سے ہے کیونکہ وہ جوان ہے جس نے خون دیکھا ہے، پس وہ اسے سنت کے مطابق صرف ایک ہی طلاق دے جب تک کہ وہ حد ایاس (رجونویتی) میں داخل نہ ہو جائے۔ الذخیرہ میں المنتقیٰ سے منقول ہے: کوئی حرج نہیں اگر...

(دایاں کالم - اردو): کہ مصنف کی کلام دوسروں کی نسبت اولیٰ ہے کیونکہ دوسروں نے یوں کہا ہے کہ خاوند نے اس طہر میں وطی نہ کی ہو، لیکن مصنف کی کلام میں یہ کہنا بھی ضروری تھا کہ اس طہر سے قبل حیض میں بھی وطی نہ ہو اور نہ طلاق ہو، اور حمل ظاہر نہ ہو اور بوڑھی اور نابالغہ نہ ہو، جیسا کہ بدائع میں ہے کیونکہ اگر ایسے طہر میں طلاق دی جس سے قبل حیض میں وطی کی ہو تو وہ طلاق بدعی ہوگی اگرچہ طہر میں وطی نہ ہو، اور یوں ہی اگر اس حیض میں طلاق کے بعد طہر میں طلاق دی ہو کیونکہ ایسی صورت میں ایک طہر میں دو ۲ طلاقیں شمار ہوں گی جو کہ ہمارے ہاں مکروہ ہے۔ اور ماتن کا قول کہ "اس کے غیر میں" یعنی وہ

عورت حیض کی بجائے عمر کے حساب سے بالغ قرار پائے اور اس نے کسی حیض کا خون نہ دیکھا اور نہ پایا، یا عورت حاملہ ہو، یا ایسی نابالغہ جو نو ۹ سال سے کم عمر والی ہو مختار قول کے مطابق، یا آئسہ (وہ عورت جو پچپن ۵۵ سال کو پہنچ چکی ہو) راجح قول کے مطابق، یا حیض والی عورتوں میں وہ عورت جس کا طہر دراز مدت تک ختم نہ ہو، کیونکہ نوجوان عورت جس کو خون حیض آچکا ہے تو اس کو سنت طلاق صرف ایک ہی ہوگی جب تک وہ حد ایاس تک نہ پہنچی ہو۔ ذخیرہ میں منتقی سے منقول ہے: اگر بیوی سے کوئی ناپسندیدہ

[حواشی] 1. ردالمحتار كتاب الطلاق داراحياء التراث العربي بيروت ۲۱۸/۲ 2. ردالمحتار كتاب الطلاق داراحياء التراث العربي بيروت ۲۱۹/۲

يخلعها في الحيض اذا ارای منها مایکره اه وکذا الطلاق علی مال لایکره في الحيض كما صرح به في البحر عن المعراج والمراد بالخلع ماذاکان خلعا بمال، قوله والنفاس کالحیض قال في البحر ولما کان المنع من الطلاق في الحيض لتطويل العدة عليها کان النفاس مثله جوهرة اه ملتقطاً۔ واللہ تعالیٰ اعلم بالصواب۔

If he perceives something unpleasant from her, there is no harm in performing Khula (divorce initiated by wife) even during menstruation. Similarly, if divorce is given in exchange for wealth during menstruation, it is not disliked (Makruh), as explicitly stated in 'Al-Bahr' quoting from 'Al-Mi'raj'. By Khula, what is meant is that which is in exchange for wealth. The statement "Post-natal bleeding (Nifas) is like menstruation" - 'Al-Bahr' states that the prohibition of divorce during menstruation is to avoid prolonging the waiting period ('iddah) for the woman. The same applies to post-natal bleeding, so it is also like menstruation. (Complete excerpt from Radd al-Muhtar, summarized). And Allah Almighty knows best what is right.

List of Divorce Words In all these cases, if there is an intention of divorce, an irrevocable divorce (Talaq-e-Ba'in) will occur.

Serial No.	Words of Divorce	Page	Serial No.	Words of Divorce	Page
1	Go	515	11	Move away	515
2	Get out	515	12	Leave the place	515
3	Walk	515	13	Empty the house	515
4	Depart	515	14	Be far away	515
5	Get up	515	15	Go far away	515
6	Stand up	515	16	O free one	515
7	Observe veil	515	17	O absolved one	515
8	Put on dupatta	515	18	O separate one	515
9	Put on veil	515	19	You are separate	515
10	Move back	515	20	You are separate from me	515

1 Radd al-Muhtar, Kitab al-Talaq, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/218 2 Radd al-Muhtar, Kitab al-Talaq, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/218

يخلعها في الحيض اذا ارای منها مایکره اه وکذا الطلاق علی مال لایکره في الحيض کما صرح به في البحر عن المعراج والمراد بالخلع ماذاکان خلعا بمال، قوله والنفاس کالحيض قال في البحر ولما کان المنع من الطلاق في الحيض لتطويل العدة عليها کان النفاس مثله جوهرة اه ملتقطاً۔ واللہ تعالیٰ اعلم بالصواب۔

यदि वह उसमें कुछ अप्रिय अनुभव करे, तो मासिक धर्म के दौरान भी खुला करने में कोई हर्ज नहीं है। इसी तरह, यदि मासिक धर्म के दौरान माल के बदले तलाक दिया जाए तो यह नापसंद (मक़रूह) नहीं है, जैसा कि 'बहर' में 'मेराज' से उद्धृत करते हुए स्पष्ट किया गया है। और 'खुला' से तात्पर्य वह है जो माल के बदले में हो। मूल पाठ का कथन है कि "प्रसवोत्तर रक्तस्राव (निफास) मासिक धर्म की तरह है"। 'बहर' में कहा गया है कि मासिक धर्म के दौरान तलाक देना महिला के लिए प्रतीक्षा अवधि (इद्दत) को लंबा करने से बचाने के लिए मना है, तो निफास में भी यही बात है, इसलिए यह भी मासिक धर्म की तरह है। (रद्द अल-मुह्तार का पूरा अंश, संक्षिप्त)। और अल्लाह तआला ही सबसे बेहतर जानता है।

तलाक के शब्दों की सूची इन सभी स्थितियों में, यदि तलाक की नियत हो, तो तलाक-ए-बाइन (अटल तलाक) हो जाएगा।

क्रम संख्या	तलाक के शब्द	पृष्ठ	क्रम संख्या	तलाक के शब्द	पृष्ठ
1	जा	515	11	सरक	515
2	निकल	515	12	जगह छोड़	515
3	चल	515	13	घर खाली कर	515
4	रवाना हो	515	14	दूर हो	515
5	उठ	515	15	चल दूर	515
6	खड़ी हो	515	16	ऐ खाली	515
7	पर्दा कर	515	17	ऐ बरी	515
8	दुपट्टा ओढ़	515	18	ऐ जुदा	515
9	नकाब डाल	515	19	तू जुदा है	515

क्रम संख्या	तलाक के शब्द	पृष्ठ	क्रम संख्या	तलाक के शब्द	पृष्ठ
10	हट	515	20	तू मुझसे जुदा है	515

1 रद्द अल-मुह्तार, किताब अत-तलाक, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/218 2 रद्द अल-मुह्तार, किताब अत-तलाक, दार इह्या अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/218

يخلعها في الحيض اذا ارای منها مایکرہ اہ وکذا الطلاق علی مال لایکرہ في الحيض كما صرح به في البحر عن المعراج والمراد بالخلع ماذاکان خلعا بمال، قوله والنفاس كالحيض قال في البحر ولما كان المنع من الطلاق في الحيض لتطويل العدة عليها كان النفاس مثله جوهرة اہ ملتقطاً۔ واللہ تعالیٰ اعلم بالصواب۔

امر محسوس کرے تو حیض کے دوران بھی خلع کرنے میں کوئی حرج نہیں اھ، یوں ہی مال کے عوض طلاق حیض میں دی جائے تو مکروہ نہیں جیسا کہ بحر میں معراج سے نقل کرتے ہوئے تصریح کی ہے اور خلع سے مراد وہ ہے جو مال کے عوض ہو۔ متن کا قول کہ "نفاس، حیض کی طرح ہے"۔ بحر میں فرمایا کہ حیض میں طلاق عورت کی عدت کو طوالت سے بچانے کی وجہ سے ممنوع ہے تو نفاس میں یہی بات ہے اس لئے یہ بھی حیض کی طرح ہے، اھ (رد المحتار کی تمام عبارت، ملتقطاً) واللہ تعالیٰ اعلم بالصواب۔ (ت)

فہرست الفاظ طلاق ان سب صورتوں میں اگر طلاق کی نیت ہو طلاق بائن پڑ جائے گی

نمبر شمار	الفاظ طلاق	صفحہ	نمبر شمار	الفاظ طلاق	صفحہ
۱	جا	۵۱۵	۱۱	سرک	۵۱۵
۲	نکل	۵۱۵	۱۲	جگہ چھوڑ	۵۱۵
۳	چل	۵۱۵	۱۳	گھر خالی کر	۵۱۵
۴	روانہ ہو	۵۱۵	۱۴	دُور ہو	۵۱۵
۵	اُٹھ	۵۱۵	۱۵	چل دُور	۵۱۵

نمبر شمار	الفاظ طلاق	صفحہ	نمبر شمار	الفاظ طلاق	صفحہ
۶	کھڑی ہو	۵۱۵	۱۶	اے خالی	۵۱۵
۷	پردہ کر	۵۱۵	۱۷	اے بَری	۵۱۵
۸	دو پٹہ اوڑھ	۵۱۵	۱۸	اے جُدا	۵۱۵
۹	نقاب ڈال	۵۱۵	۱۹	تو جُدا ہے	۵۱۵
۱۰	ہٹ	۵۱۵	۲۰	تو مجھ سے جُدا ہے	۵۱۵

1 رد المحتار کتاب الطلاق دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۱۸/۲ 2 رد المحتار کتاب الطلاق دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۱۸/۲

Fatawa Razawiyya Volume Twelve

Serial No. | Words of Divorce | Page | Serial No. | Words of Divorce | Page 21 | I have set you free without restraint | 515 | 40 | Take your leave and go away | 515 22 | I have separated from you | 515 | 41 | Go wherever your horns can fit (i.e., go anywhere) | 515 23 | Measure the path (Leave) | 516 | 42 | Earn and eat your own livelihood | 515 24 | Take your own path | 516 | 43 | It's been enough, now please be kind (leave) | 515 25 | Do not talk | 516 | 44 | O unrelated one | 515 26 | Show your walk (i.e., leave) | 516 | 45 | Hide your face | 515 27 | Be on your way | 516 | 46 | Go to Hell | 515 28 | Get out of sight | 516 | 47 | Go into the stove (i.e., go to Hell) | 515 29 | Get lost | 516 | 48 | Go into the furnace (i.e., go to Hell) | 515 30 | [An idiomatic expression for leaving] | 516 | 49 | Go away from me | 515 31 | Be off / disappear | 516 | 50 | Be successful in your desire | 515 32 | Empty the cage (i.e., leave the house) | 516 | 51 | I have annulled the marriage | 515 33 | Move away and rot | 516 | 52 | To me you are like a carcass (Note 1) | 515 34 | Vanish your face | 516 | 53 | Or like a pig | 515 35 | Pick up your bedding | 516 | 54 | Or like wine | 515 36 | Look for your own way | 516 | 55 | You are like my mother (Note 2) | 517 37 | Tie your bundle | 516 | 56 | Or sister | 515 38 | Spread your filth elsewhere | 516 | 57 | Or like a daughter | 515 39 | Please take your leave | 516 | 58 | You are released/free | 515

Note 1: Not like hemp, opium, someone else's property, or someone else's wife. Note 2: If said "you are mother, daughter", then it is nothing but a sin (not necessarily divorce).

Page 557 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

क्रमांक | तलाक़ के शब्द | पृष्ठ | क्रमांक | तलाक़ के शब्द | पृष्ठ 21 | मैंने तुझे बंधनमुक्त कर दिया | 515 | 40 | तशरीफ़ का टोका लेकर चली जाओ | 515 22 | मैंने तुझसे पृथक्करण कर लिया | 515 | 41 | जहाँ सींग समाएं चली जाओ | 515 23 | रास्ता नापो (चले जाओ) | 516 | 42 | अपनी मांग खाओ (अपना कमाओ) | 515 24 | अपनी राह लो | 516 | 43 | बहुत हो चुका अब मेहरबानी फरमाइए (चली जाइए) | 515 25 | बात न कर | 516 | 44 | ऐ बे-ताल्लुक | 515 26 | चाल दिखाओ (यानी चली जाओ) | 516 | 45 | मुँह छुपाओ | 515 27 | चलती बनो | 516 | 46 | जहन्नुम में जाओ | 515 28 | नज़र से दूर हो | 516 | 47 | चूल्हे में जाओ | 515 29 | दफ़ा हो | 516 | 48 | भाड़ में जाओ | 515 30 | [चली जाने का मुहावरा] | 516 | 49 | मेरे पास से चली जाओ | 515 31 | रफू चक्कर हो | 516 | 50 | अपनी मुराद पर कामयाब हो | 515 32 | पिंजरा खाली कर (यानी घर छोड़ दो) | 516 | 51 | मैंने निकाह फ़स्ख़ किया | 515 33 | हटकर सड़ो | 516 | 52 | तू मुझ पर मुर्दार (लाश) की तरह है (फुटनोट १) | 515 34 | अपनी सूरत गायब करो | 516 | 53 | या सुअर की तरह | 515 35 | बिस्तर उठा | 516 | 54 | या शराब की तरह है | 515 36 | अपना सुझता देख | 516 | 55 | तू मेरी माँ की तरह है (फुटनोट २) | 517 37 | अपनी गठरी बांध | 516 | 56 | या बहन | 515 38 | अपनी गंदगी अलग फैला | 516 | 57 | या बेटी की तरह है | 515 39 | तशरीफ़ ले जाइए | 516 | 58 | तू आज़ाद है | 515

फुटनोट: १: न कि भांग, अफीम या फलां के माल या फलां की बीवी की तरह। २: अगर यों कहा कि तू 'माँ-बेटी' है, तो सिवाय गुनाह के और कुछ नहीं।

पृष्ठ 557 of 688

فتاوٰی رضویہ جلد دو ازدہم

نمبر شمار | الفاظ طلاق | صفحہ | نمبر شمار | الفاظ طلاق | صفحہ ۲۱ | میں نے تجھے بے قید کیا | ۵۱۵ | ۴۰ | تشریف کا ٹو کرالے جائیے | ۵۱۵ ۲۲ | میں نے تجھ سے مفارقت کی | ۵۱۵ | ۴۱ | جہاں سینگ سمائے جا | ۵۱۵ ۲۳ | رستہ ناپ | ۵۱۶ | ۴۲ | اپنا مانگ کھا | ۵۱۵ ۲۴ | اپنی راہ لے | ۵۱۶ | ۴۳ | بہت ہو چکی اب مہربانی فرمائیے | ۵۱۵ ۲۵ | کلام نہ کر | ۵۱۶ | ۴۴ | اے بے علاقہ | ۵۱۵ ۲۶ | چال دکھا | ۵۱۶ | ۴۵ | منہ چھپا | ۵۱۵ ۲۷ | چلتی بن | ۵۱۶ | ۴۶ | جہنم میں جا | ۵۱۵ ۲۸ | چلتی نظر آ | ۵۱۶ | ۴۷ | چولھے میں جا | ۵۱۵ ۲۹ | دفع ہو | ۵۱۶ | ۴۸ | بھاڑ میں جا | ۵۱۵ ۳۰ | دال نے عین ہو | ۵۱۶ | ۴۹ | میرے پاس سے چل | ۵۱۵ ۳۱ | رفو چکر ہو | ۵۱۶ | ۵۰ | اپنی مراد پر فتحمند ہو | ۵۱۵ ۳۲ | پنجر اخالی کر | ۵۱۶ | ۵۱ | میں نے نکاح فسخ کیا | ۵۱۵ ۳۳ | ہٹ کے سڑ | ۵۱۶ | ۵۲ | تو مجھ پر مثل مردار (ع۱) | ۵۱۵ ۳۴ | اپنی صورت گما | ۵۱۶ | ۵۳ | یا مثل سور | ۵۱۵ ۳۵ | بسترا اٹھا | ۵۱۶ | ۵۴ | یا مثل شراب کے ہے | ۵۱۵ ۳۶ | اپنا سوجھتا دیکھ | ۵۱۶ | ۵۵ | تو مثل میری ماں (ع۲) | ۵۱۷ ۳۷ | اپنی گٹھڑی باندھ | ۵۱۶ | ۵۶ | یا بہن | ۵۱۵ ۳۸ | اپنی نجاست الگ پھیلا | ۵۱۶ | ۵۷ | یا بیٹی کے ہے | ۵۱۵ ۳۹ | تشریف لے جائیے | ۵۱۶ | ۵۸ | تو خلاص ہے | ۵۱۵

ع ۱ : نہ مثل بھنگ یا افیون یا مال فلاں یا زوجہ فلاں کے۔ ع ۲ : یوں کہا تو ماں بیٹی ہے، لو گناہ کے سوا کچھ نہیں۔

Fatawa Rizvia | Volume 12

No.	Words of Divorce	Page	No.	Words of Divorce	Page
59	Your neck was freed	517	79	Your rope was released	518
60	You became exclusive	517	80	Your reins were taken off	518
61	Lawful of God	517	81	Join your companions	518
62	Or lawful for Muslims	517	82	I have no authority over you	519
63	Or every lawful thing is forbidden for me	517	83	Search for a husband	519
64	You are in a state of prohibition with me	517	84	I am separated from you [Note 2]	520
65	I sold you to your own hand [Note 1]	517	85	I separated you	520
66	I refrained from you	518	86	I made a separation from you	520
67	I passed over from you	518	87	You are independent	520
68	You are of no use to me	518	88	You are free	520
69	Not for my purpose	518	89	There is no marriage between me and you	521
70	Not for my usage	518	90	No marriage remains between me and you	521
71	I have no access over you	518	91	I [gave] you to your family [Note 3]	521
72	No control	518	92	Or father	521
73	No ownership	518	93	Or mother	521
74	I cleared your path	518	94	Or gave to husbands	521
75	You have left my ownership	518	95	Or gave you to yourself	521
76	I did Khula with you	518	96	No dealings remain between me and you [Note 4]	521
77	Sit in your parental home	518	97	I am free from your marriage	521
78	Loosened your reins	518	98	I am fed up	521

Note 1: Even if no compensation is mentioned, and there is no need for the woman to say "I have bought". Note 2: Only "I am separated" or "happened" is not enough, even if said with the intention of divorce. Note 3: If I said "I gave you to your brother,

maternal uncle, paternal uncle, or some stranger," then it counts for nothing. Note 4: From "Nothing remains between me and you," nothing results even if intended.

फतावा रज़विया | जिल्द बारहवीं

क्रम संख्या	तलाक के शब्द	पृष्ठ	क्रम संख्या	तलाक के शब्द	पृष्ठ
५९	तुम्हारी गर्दन आज़ाद हुई	५१७	७९	तुम्हारी रस्सी छोड़ दी	५१८
६०	तुम विशिष्ट/खालिस हुई	५१७	८०	तुम्हारी लगाम उतार ली	५१८
६१	ख़ुदा का हलाल	५१७	८१	अपने साथियों से जा मिल	५१८
६२	या मुसलमानों का हलाल	५१७	८२	मुझे तुझ पर कोई अधिकार नहीं	५१९
६३	या हर हलाल मुझ पर हराम	५१७	८३	पति तलाश कर	५१९
६४	तू मेरे साथ हराम में है	५१७	८४	मैं तुझसे जुदा हुआ [नोट २]	५२०
६५	मैंने तुझे तेरे हाथ बेचा [नोट १]	५१७	८५	मैंने तुझे जुदा किया	५२०
६६	मैं तुझसे बाज़ आया	५१८	८६	मैंने तुझसे जुदाई की	५२०
६७	मैं तुझसे दरगुज़रा	५१८	८७	तू खुद मुख्तार (स्वतंत्र) है	५२०
६८	तू मेरे काम की नहीं	५१८	८८	तू आज़ाद है	५२०
६९	मेरे मतलब की नहीं	५१८	८९	मुझमें तुझमें निकाह नहीं	५२१
७०	मेरे इस्तेमाल की नहीं	५१८	९०	मुझमें तुझमें निकाह बाकी न रहा	५२१
७१	मुझे तुझ पर कोई राह नहीं	५१८	९१	मैंने तुझे तेरे घर वालों [नोट ३]	५२१
७२	कुछ काबू नहीं	५१८	९२	या बाप	५२१
७३	मिल्कियत नहीं	५१८	९३	या माँ	५२१
७४	मैंने तेरी राह खाली कर दी	५१८	९४	या पतियों को दिया	५२१
७५	तू मेरी मिल्कियत से निकल गई	५१८	९५	या खुद तुझको दे डाला	५२१
७६	मैंने तुझसे ख़ुला किया	५१८	९६	मुझमें तुझमें कुछ मामला न रहा [नोट ४]	५२१
७७	अपने मायके बैठ	५१८	९७	मैं तेरे निकाह से बरी हूँ	५२१

क्रम संख्या	तलाक के शब्द	पृष्ठ	क्रम संख्या	तलाक के शब्द	पृष्ठ
७८	तेरी बाग ढीली की	५१८	७८	बेज़ार (तंग) हूँ	५२१

नोट १: भले ही किसी प्रतिफल का उल्लेख न करे और महिला को यह कहने की भी आवश्यकता नहीं है कि 'मैंने खरीदा है'। नोट २: केवल 'मैं अलग हूँ' या 'हुआ' पर्याप्त नहीं है, भले ही तलाक की नियत से कहा जाए। नोट ३: क्या मैंने तुम्हें तुम्हारे भाई या मामा या चाचा या किसी अजनबी को दे दिया, तो कुछ नहीं (तलाक नहीं)। नोट ४: 'मेरे और तुम्हारे बीच कुछ नहीं रहा' से कुछ नहीं होता, भले ही नियत की जाए।

نمبر شمار	الفاظِ طلاق	صفحہ
۵۹	تیری گلو خلاصی ہوئی	۵۱۷
۶۰	تو خالص ہوئی	۵۱۷
۶۱	حلالِ خدا	۵۱۷
۶۲	یا حلالِ مسلماناں	۵۱۷
۶۳	یا ہر حلال مجھ پر حرام	۵۱۷
۶۴	تو میرے ساتھ حرام میں ہے	۵۱۷
۶۵	میں نے تجھے تیرے ہاتھ بیچا عہ۱	۵۱۷
۶۶	میں تجھ سے باز آیا	۵۱۸
۶۷	میں تجھ سے درگزرا	۵۱۸
۶۸	تو میرے کام کی نہیں	۵۱۸
۶۹	میرے مطلب کی نہیں	۵۱۸
۷۰	میرے مصرف کی نہیں	۵۱۸
۷۱	مجھے تجھ پر کوئی راہ نہیں	۵۱۸
۷۹	تیری رسی چھوڑ دی	۵۱۸
۸۰	تیری لگام اتار لی	۵۱۸
۸۱	اپنے رفیقوں سے جامل	۵۱۸
۸۲	مجھے تجھ پر کچھ اختیار نہیں	۵۱۹
۸۳	خاوند تلاش کر	۵۱۹
۸۴	میں تجھ سے جدا ہوا عہ۲	۵۲۰
۸۵	میں نے تجھے جدا کیا	۵۲۰
۸۶	میں نے تجھ سے جدائی کی	۵۲۰
۸۷	تو خود مختار ہے	۵۲۰
۸۸	تو آزاد ہے	۵۲۰
۸۹	مجھ میں تجھ میں نکاح نہیں	۵۲۱
۹۰	مجھ میں تجھ میں نکاح باقی نہ رہا	۵۲۱
۹۱	میں نے تجھے تیرے گھر والوں عہ۳	۵۲۱

نمبر شمار	الفاظِ طلاق	صفحہ
۷۲	کچھ قابو نہیں	۵۱۸
۷۳	ملک نہیں	۵۱۸
۷۴	میں نے تیری راہ خالی کر دی	۵۱۸
۷۵	تو میری ملک سے نکل گئی	۵۱۸
۷۶	میں نے تجھ سے خلع کیا	۵۱۸
۷۷	اپنے میکے بیٹھ	۵۱۸
۷۸	تیری باگ ڈھیلی کی	۵۱۸
۹۲	یا باپ	۵۲۱
۹۳	یا ماں	۵۲۱
۹۴	یا خاوندوں کو دیا	۵۲۱
۹۵	یا خود تجھ کو دے ڈالا	۵۲۱
۹۶	مجھ میں تجھ میں کچھ معاملہ نہ رہا عہ۴	۵۲۱
۹۷	میں تیرے نکاح سے بری ہوں	۵۲۱
۹۸	بیزار ہوں	۵۲۱

عہ۱: اگرچہ کسی عوض کا ذکر نہ کرے اور عورت کے اس کہنے کی بھی حاجت نہیں کہ میں نے خریدا۔ عہ۲: فقط میں جدا ہوں یا ہوا کافی نہیں اگرچہ بہ نیت طلاق کہے۔ عہ۳: کیا میں نے تجھے تیرے بھائی یا ماموں یا چچا یا کسی اجنبی کو دے دیا تو کچھ نہیں۔ عہ۴: مجھ میں تجھ میں کچھ نہیں رہا سے کچھ نہیں اگرچہ نیت کرے۔

Fatawa Razawiyya Volume 22

Problem 269: From Kanpur, Farash Khana 'Aqt Abkari Road, near Kodh Ghar, House of Hafiz Zubair Hasan, sent by Maulvi Syed Saeed-ul-Hasan Sahab, 11 Jamadi-ul-Ukhra 1318 AH. What do the scholars of religion and jurists of the clear Sharia say regarding this matter: A woman named Hind wrote a letter to her husband Zaid saying, "Give me a discharge paper (farigh khatti/divorce)." Upon this request from the wife Hind, the husband Zaid wrote back, "From my side, it is three times 'farigh khatti'. I have no concern with you anymore; do whatever you wish." Now, in this situation, did divorce occur or not? And what should the woman Hind do now? Is it permissible for her to go back to her husband Zaid or not? If she goes, what is the consequence? Clarify through the Book, and you shall be rewarded on the Day of Judgment.

The Answer: In the described situation, three divorces have occurred. It is strictly forbidden for her to go back to Zaid. A marriage with Zaid cannot take place without 'Halala'. "For indeed, this expression from a man to his wife is used only in the sense of divorce, and nothing else is intended or understood by it. Therefore, it is among the explicit (sarih) terms that do not require intention, because when it occurs as an answer to her question, as in this case, it does not admit the possibility of rejection, as is not hidden." The use of this word by a husband for his wife occurs only in the sense of divorce, and this is what is meant and understood by it. Therefore, this word is explicit (sarih) and does not require intention because, as mentioned here in response to the wife's request, there is no possibility of rejection, as is evident. (T)

It is stated in Radd al-Muhtar: "Whatever is used therein only for divorce is explicit (sarih) and occurs without intention. And what is used for divorce and other than that, its ruling is like the ruling of Arabic metaphors (kinayat) in all matters, [from] Bahr." A word that is used only for divorce is explicit (sarih), in which intention is not needed. And a word used for both divorce and non-divorce is like Arabic metaphors in all rulings. [from] Bahr. (T)

Similarly, it is mentioned in 'Alamgiri from Badai'. And Allah Sub-hanahu wa Ta'ala knows best.

1. Radd al-Muhtar, Chapter of Explicit Divorce, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/229.

फ़तावा रज़विया जिल्द 22

मसला 269: कानपुर, फ़राश खाना अक़्त आबकारी सड़क, कोढ़ घर के पास, हाफ़िज़ ज़ुबैर हसन का मकान, मुर्सला मौलवी सैयद सईद-उल-हसन साहब, 11 जमादी-उल-उख़रा 1318 हिजरी। दीन के उलेमा और शरीअत-ए-मतीन के मुफ़्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि मुसम्मात हिंदा ने अपने शौहर ज़ैद को ख़त के ज़रिए लिखा कि तुम मुझको फ़ारिग़ ख़त्ती (तलाकनामा) दे दो और इस ज़ौजा हिंदा के लिखने पर शौहर ज़ैद ने यह लिख दिया कि मेरी तरफ़ से तीन मर्तबा फ़ारिग़ ख़त्ती है, मुझको तुमसे कुछ मतलब नहीं, जो तुम्हारा जी चाहे वह करो। तो अब इस सूरत में तलाक़ वाक़े हुई या नहीं? और मुसम्मात हिंदा को अब क्या करना चाहिए? शौहर ज़ैद के पास जाना दुरुस्त है या नहीं? अगर जाए तो क्या हुक्म है? किताब की रौशनी में बयान करें, क़यामत के दिन अज्र पाएंगे।

अल-जवाब: पूछी गई सूरत में तीन तलाक़ें हो गईं। ज़ैद के पास उसका जाना सरासर हराम है। बिना हलाला के ज़ैद से निकाह नहीं हो सकता। (अरबी इबारत का तर्जुमा): "बेशक शौहर का अपनी बीवी के लिए इस लफ़्ज़ का इस्तेमाल सिर्फ़ तलाक़ के माना में होता है और इससे कुछ और मुराद नहीं ली जाती और न ही समझा जाता है। लिहाज़ा यह लफ़्ज़ 'स़रीह' (स्पष्ट) है जिसमें नियत की ज़रूरत नहीं होती क्योंकि जैसा कि यहाँ बीवी के सवाल के जवाब में कहा गया है, तो इसमें रद्द का कोई इमकान नहीं रहता, जैसा कि साफ़ ज़ाहिर है।" खाविंद की तरफ़ से बीवी के लिए इस लफ़्ज़ का इस्तेमाल सिर्फ़ तलाक़ के मायनों में होता है और इससे मुराद और फ़हम यही होता है। लिहाज़ा यह लफ़्ज़ स़रीह है जिसमें नियत की मोहताजी नहीं है क्योंकि जैसे यहाँ बीवी के सवाल के जवाब में ज़िक्र हो तो इससे रद्द का एहतमाल नहीं होता, जैसा कि मख़्फ़ी (छुपा हुआ) नहीं है। (त)

रद्द-उल-मुहतार में है: "जो लफ़्ज़ सिर्फ़ तलाक़ में इस्तेमाल हो वह 'स़रीह' है जो बिना नियत के वाक़े हो जाता है। और जो लफ़्ज़ तलाक़ और उसके अलावा के लिए इस्तेमाल हो तो उसका हुक्म तमाम अहकाम में अरबी 'किनाया' (संकेत) जैसा होता है।" बहर। जो लफ़्ज़ सिर्फ़ तलाक़ में इस्तेमाल हो वह स़रीह होता है जिसमें नियत की हाजत नहीं, और जो लफ़्ज़ तलाक़ और ग़ैर-तलाक़ में इस्तेमाल हो तो उसका हुक्म तमाम अहकाम में अरबी किनाया जैसा होता है। बहर। (त)

इसी तरह आलमगीरिया में बदाइ' से है। वल्लाहु सुब्हानहू व तआला आलम।

1. रद्द-उल-मुहतार, बाबू-स़रीह, दार-ए-एहया-उल-तुरात-उल-अरबी, बैरुत, 2/229.

فتاوٰی رضویہ جلد دو از دہم

مسئلہ ۲۶۹: از کانپور فراش خانہ عقت آبکاری سڑک جدید متصل کوڑھ گھر مکان حافظ زبیر حسن مرسلہ مولوی سید سعید الحسن صاحب ۱۱جمادی الاخرٰی ۱۳۱۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ مسماۃ ہندہ نے اپنے شوہر زید کو بذریعہ خط یہ لکھا کہ تم مجھ کو فارغ خطی دے دو اور اس زوجہ ہندہ کے لکھنے پر شوہر زید نے یہ لکھ دیا کہ میری طرف سے تین مرتبہ فارغ خطی ہے مجھ کو تم سے کچھ مطلب نہیں جو تمہارا جی چاہے وہ کرو، تو اب اس صورت میں طلاق واقع ہوئی یا نہ؟ اور مسماۃ ہندہ کو اب کیا کرنا چاہئے؟ شوہر زید کے پاس جانا درست ہے یا نہ؟ اگر جائے تو کیا ہے؟ بینوا فی الکتاب توجروا یوم الحساب۔ الجواب: صورتِ مستفسرہ میں تین طلاقیں ہو گئیں، زید کے پاس اسے جانا حرامِ محض ہے، بے حلالہ کے زید سے نکاح نہیں ہو سکتا، فأن هذا اللفظ من الرجل لامرأته لا يستعمل الا فی معنی الطلاق ولا يراد ولا يفهم منه الا هذا، فكان من الصريح الذی لايحتاج الی النية لانه حيث يقع جوابا لسؤالها كما ههنا فانه لايحتمل الردكما لايخفی۔ خاوند کی طرف سے بیوی کے لئے اس لفظ کا استعمال صرف طلاق کے معنی میں ہوتا ہے اور اس سے مراد اور فہم یہی ہوتا ہے، لہذا یہ لفظ صریح ہے جس میں نیت کی محتاجی نہیں ہے کیونکہ جیسے یہاں بیوی کے سوال کے جواب میں مذکور ہو تو اس سے رد کا احتمال نہیں ہوتا، جیسا کہ مخفی نہیں ہے(ت)

ردالمحتار میں ہے: فما لا يستعمل فيها الا فی الطلاق فهو صريح يقع بلانية وما استعمل فيما استعمال الطلاق وغيره فحكمه حكم كنايات العربية فی جميع الاحكام، بحر ۱۔ جو لفظ صرف طلاق میں استعمال ہو وہ صریح ہوتا ہے جس میں نیت کی حاجت نہیں، اور جو لفظ طلاق اور غیر طلاق میں استعمال ہو تو اس کا حکم تمام احکام میں عربی کنایہ جیسا ہوتا ہے، بحر۔ (ت)

اسی طرح عالمگیر یہ میں بدائع سے ہے، واللہ سبحنہ وتعالیٰ اعلم۔

۱ ردالمحتار باب الصریح داراحیاء التراث العربی بیروت ۲۲۹/۲

Fatawa Razawiyya Volume 12

Problem 70: (Question not found in the draft)

The Answer: If what he said is true—that he had already sent a 'Farigh Khatti' (letter of release/divorce) in a previous letter—then if that letter stated, "I have given you freedom," one divorce occurred the moment the letter was written. If the letter stated, "When this letter reaches you, you are free," and that letter reached her, then she was divorced at that time. In any case, if after that divorce, the woman had already completed three menstrual cycles (iddah), then the subsequent letter (the copy of which is in the question) is useless because the divorce had already taken place and the waiting period was over. If he did not revoke the divorce (ruju'), she became a stranger to him and was no longer subject to his divorce. In this case, the woman can marry whomever she wishes. However, if before writing or receiving this letter, the woman had not yet completed three menstrual cycles, or if he wrote in the letter that divorce is given upon arrival but it was not delivered, or if he had not written a letter at all and just claimed falsely, then in all these cases, three divorces have occurred upon her. After the completion of the waiting period, she can marry anyone except her husband. She cannot remarry her husband without 'Halala'. It is mentioned in Halabi, then Shami on Al-Durr al-Mukhtar:

"You are unto me..." The fatwa is that it does not depend on intention because it is an irrevocable (Ba'in) divorce. (Summarized)[1]	**To say "You are forbidden to me," according to the fatwa, does not depend on intention, even though it is an irrevocable divorce. (Summarized) (T)**

Also, in Radd al-Muhtar it is stated:

Later scholars gave a fatwa regarding "You are forbidden to me" that it is an irrevocable divorce due to custom, without need for intention.[2]	**Later scholars said that by saying "You are forbidden to me," an irrevocable divorce occurs; it will happen without intention because of custom. (T)**

'Farigh Khatti' (letter of release) is an explicit divorce (Talaq Sarih) in custom because when addressed to a woman, only divorce is intended and understood from it. It is stated in Radd al-Muhtar:

Explicit (Sarih) is that which is predominantly used for divorce in custom such that it is not used in custom for anything else, regardless of language. This is the case in the custom of our time, so it is necessary to consider it as explicit.[3]

Explicit is that word whose predominant use in custom is for divorce. And in any custom, it is used only for divorce without need for intention, and this word is exactly like this in the custom of our era, so it is necessary to consider it as explicit. (T)

[1] Radd al-Muhtar, Chapter of Metaphors, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/269. [2] Radd al-Muhtar, Chapter of Explicit Divorce, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/432. [3] Radd al-Muhtar, Chapter of Explicit Divorce, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/432.

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

मसाला 70: (मसौदे में सवाल नहीं मिला)

जवाब: यदि उसने यह सच कहा कि "मैं पहले ही पत्र में फ़ारिग़ खत्ती (मुक्ति पत्र) भेज चुका हूँ", तो: यदि उस पत्र में यह था कि "मैंने तुझे फ़ारिग़ खत्ती दे दी", तो पत्र लिखते ही एक तलाक़ हो गई थी। और यदि पत्र में यह था कि "जब यह पत्र तुझे पहुँचे, तो तू फ़ारिग़ खत्ती है", और वह पत्र उसे पहुँचा, तो उस समय उसे तलाक़ हो गई थी। बहरहाल, उस तलाक़ के बाद यदि औरत को तीन मासिक धर्म (इद्दत) हो चुके थे, तो उसके बाद यह पत्र लिखना (जिसकी नकल सवाल में है) बेकार है, क्योंकि तलाक़ पहले ही हो चुकी थी और इद्दत बीत चुकी थी। और यदि उसने रुजू (पुनर्मिलन) नहीं किया, तो औरत अजनबी हो गई और तलाक़ का पात्र नहीं रही। इस स्थिति में औरत जिससे चाहे निकाह कर सकती है। और यदि इस पत्र को लिखने या पहुँचने से पहले औरत को अभी तीन मासिक धर्म नहीं हुए थे, या पत्र पहुँचने पर तलाक़ लिखी थी और वह नहीं पहुँचाया गया, या उसने सिरे से पत्र लिखा ही नहीं था और बस गलत लिख दिया, तो इन सभी स्थितियों में उस पर तीन तलाक़ें हो गईं। इद्दत बीतने के बाद वह पति के सिवा जिससे चाहे निकाह कर सकती है; पति के साथ बिना 'हलाला' के निकाह नहीं हो सकता। हलाबी, फिर शामी अल-दुर्र अल-मुख्तार में है:

"तुम मुझ पर..." फतवा यह है कि यह नीयत (इरादे) पर निर्भर नहीं है क्योंकि यह 'बाइन' (अपरिवर्तनीय) तलाक़ है। (संक्षिप्त)[1]

"तुम मुझ पर हराम हो" कहने पर, मुफ़्ता-बिह (जिस पर फतवा दिया गया हो) बात में नीयत पर निर्भर नहीं है, हालाँकि यह तलाक़-ए-बाइन है। (संक्षिप्त) (त)

साथ ही रद अल-मुह्तार में है:

बाद के विद्वानों ने "तुम मुझ पर हराम हो" के बारे में फतवा दिया कि यह प्रथा के कारण बिना नीयत के भी तलाक़-ए-बाइन है।[2]

बाद के विद्वानों ने कहा कि "तू मुझ पर हराम है" कहने से तलाक़-ए-बाइन हो गई, प्रथा (उर्फ़) के कारण नीयत के बिना ही घटित हो जाएगी। (त)

'फ़ारिग़ खत्ती' प्रथा में तलाक़-ए-सरीह (स्पष्ट तलाक़) है, क्योंकि औरत की ओर इसके संबंध से तलाक़ ही मुराद और लाभ होती है। रद अल-मुह्तार में है:

स्पष्ट (सरीह) वह शब्द है जिसका प्रथा में अधिक उपयोग तलाक़ के लिए हो, इस तरह कि प्रथा में उसका उपयोग किसी और चीज़ के लिए न हो, चाहे भाषा कोई भी हो। हमारे समय की प्रथा में यह शब्द ऐसा ही है, इसलिए इसे स्पष्ट मानना अनिवार्य होगा।[3]

स्पष्ट वह शब्द है जिसका प्रथा में मुख्य उपयोग तलाक़ के लिए हो। और किसी भी प्रथा में वह बिना नीयत के केवल तलाक़ के लिए उपयोग हो, और यह शब्द हमारे समय की प्रथा में ऐसा ही है, इसलिए इसे स्पष्ट मानना आवश्यक होगा। (त)

[1] रद अल-मुह्तार, बाबुल किनायात, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/269. [2] रद अल-मुह्तार, बाबुल सरीह, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/432. [3] रद अल-मुह्तार, बाबुल सरीह, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/432.

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

مسئلہ ۷۰: (مسودہ میں سوال نہیں ملا)

الجواب: اگر یہ بات اس نے صحیح کہی کہ میں تو پہلے خط میں فارغ خطی بھیج چکا ہوں تو اگر اس خط میں یہ تھا کہ میں نے تجھے فارغ خطی دی تو خط لکھتے ہی ایک طلاق ہو گئی تھی اور اگر خط میں یہ تھا کہ جب یہ خط تجھے پہنچے تو تجھے فارغ خطی ہے، اور وہ خط اسے پہنچا تو اس وقت اسے طلاق ہو گئی تھی بہر حال اس طلاق کے بعد اگر تین حیض عورت کو ہو چکے تھے ، اس کے بعد یہ خط لکھا جس کی نقل سوال میں ہے جب تو یہ خط بیکار ہے کہ پہلے طلاق ہو چکی اور عدت گزر لی اور اگر اس نے رجعت نہ کی تو عورت اجنبیہ ہو گئی اس کی طلاق کا محل نہ رہی اس صورت میں عورت جس سے چاہے نکاح کر سکتی ہے، اور اگر اس خط کے لکھنے یا پہنچنے کے بعد عورت کو ابھی تین حیض نہ ہوئے یا خط پہنچنے پر طلاق لکھی تھی اور وہ نہ پہنچایا اس نے سرے سے خط لکھا ہی نہ تھا یوں ہی غلط لکھ دیا تو ان سب صورتوں میں اس پر تین طلاقیں ہو گئیں ، بعد انقضائے عدت سوائے شوہر جس سے چاہے نکاح کر سکتی ہے شوہر سے بے حلالہ نہیں ہو سکتا ، حلبی پھر شامی علی الدر المختار میں ہے:

انت علی المفتی بہ من عدم تو فقہ علی النیۃ لکونہ بائناً ، ملخصاً۔[1] **تو مجھ پر حرام ہے ، کہنے پر مفتی بہ قول میں نیت پر موقوف نہیں، حالانکہ یہ طلاق بائنہ ہے ملخصاً (ت)**

نیز ردالمحتار میں ہے:

افتی المتاخرون فی انت علی حرام بأنہ طلاق بائن للعرف بلانیۃ۔[2] **متاخرین نے کہا "تو مجھ پر حرام ہے" کہنے میں طلاق بائنہ ہوگئی، عرف کی وجہ سے نیت کے بغیر واقع ہوگی(ت)**

فارغ خطی عرف میں طلاق صریح ہے کہ عورت کی طرف اس کی اضافت سے طلاق ہی مراد و مفاد ہوتی ہے، ردالمحتار میں ہے:

الصریح ماغلب فی العرف استعماله في الطلاق بحیث لا یستعمل عرفاً الا فیه من ایّ لغة کانت وهذا في عرف زماننا کذلك فوجب اعتباره صریحاً۔[3]

صریح وہ لفظ ہے جس کا عرف میں غالب استعمال طلاق کے لئے ہو۔ اور کسی بھی عرف میں وہ بغیر نیت صرف طلاق کے لئے استعمال ہو اور یہ لفظ ہمارے زمانہ کے عرف میں ایسا ہی ہے لہذا اس کے صریح ہونے کا اعتبار ضروری ہوگا۔ (ت)

1 رد المحتار باب الکنایات دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۲۶۹ 2 رد المحتار باب الصریح دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۴۳۲ 3 رد المحتار باب الصریح دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۴۳۲

Fatawa Razawiya, Volume 12

And the correct view is that saying "take divorce" (talaq le) is explicit divorce. It is stated in Al-Muhit, then in Al-Hindiyyah: "If a man says to his wife 'give divorce' (dad talaq), it takes effect without intention, and this is more appropriate. Because saying 'give' (dad) is customary, and saying 'take' (khudh) is the same. If he says 'take your divorce', it occurs without intention; similarly here, as stated in Al-Muhit." [Summarized] If the husband said "give divorce", it will occur without intention of divorce, and this is more aligned with the truth, because saying "dad" is like someone saying "khudh" (take/hold). In custom, "dad" (Persian) and "khudh" (Arabic) are both equal. And if a husband says "take hold of divorce", it occurs without intention of divorce, so it will be the same here as in Al-Muhit. [Summarized (Translator)]

And repeating the word will result in a new divorce, not an emphasis. It is stated in Al-Ashbah: "Founding (Tasis) is better than emphasis (Ta'kid). When a word fluctuates between the two, it must be interpreted as founding. That is why our companions (the jurists) - may Allah Almighty have mercy on them - said that if a man says to his wife 'You are divorced, divorced, divorced,' she is divorced thrice. And Allah Almighty knows best." Tasis, meaning a new benefit, is better than emphasis. Therefore, when a word has the possibility of both Tasis and Ta'kid, it is mandatory to interpret it as Tasis. For this reason, our companions (the jurists) - may Allah Almighty have mercy on them - said that if a husband repeats the word 'divorce' three times, then three divorces will occur. And Allah Almighty knows best. (Translator)

Issue 271: 11 Ramadan 1339 AH If in the aforementioned letter, the word "take" (le) was not repeated, and it was written as "take the discharge paper" (farigh khati le), would three divorces have occurred due to the rest of the text, or what would be the ruling? Please explain and you will be rewarded.

Answer: The rules for writing and receiving a letter are the same as those mentioned before. If it was written in the letter that divorce occurs upon its arrival, and it did not arrive, then two irrevocable (ba'in) divorces occurred. So, if he intended divorce with the phrase "you are of no use to me," then one [more] from it. "And intention is required even though the situation is one of discussing divorce, as mentioned with a chain of transmission." Even though it was the state of discussing divorce (as there is a reference to the letter from the wife's father), it will still require intention.

Footnotes: 1. Fatawa Hindiyyah, Chapter 7 regarding divorce in Persian words, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/382. 2. Al-Ashbah wal-Naza'ir, Tasis is better than Ta'kid, Idarat al-Qur'an Karachi, 1/181. Page 561 of 688

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

और सही यह है कि "तलाक ले" (तलाक ले) तलाक-ए-सरीह (स्पष्ट तलाक) है, मुहीत फिर हिन्दिया में है: "यदि पति ने अपनी पत्नी से कहा 'तलाक दे' (दाद तलाक), तो वह बिना किसी इरादे के प्रभावी हो जाएगा और यही सत्य के अधिक निकट है। क्योंकि 'दे' (दाद) कहना प्रथागत है, और 'ले' (ख़ुज़) कहना एक जैसा ही है। यदि वह कहता है 'अपनी तलाक ले ले', तो यह बिना किसी इरादे के हो जाता है; इसी तरह यहाँ भी, जैसा कि मुहीत में बताया गया है।" [संक्षिप्त] अगर पति ने कहा "तलाक दे" तो बिना नीयत के तलाक हो जाएगा, और यही सत्य के अधिक निकट है, क्योंकि "दाद" कहना ऐसा ही है जैसे किसी ने "ख़ुज़" (ले/पकड़) कहा। रिवाज में "दाद" (फ़ारसी) और "ख़ुज़" (अरबी) दोनों बराबर हैं, और अगर पति कहे "ले तलाक पकड़" तो बिना नीयत के तलाक हो जाता है, तो यहाँ भी वैसा ही होगा जैसा मुहीत में है। [संक्षिप्त (टीका)]

और शब्द को दोहराना नई तलाक होगी न कि ताकीद (ज़ोर देना), अश्बाह में है: "तासीस (नई बात) ताकीद से बेहतर है। जब कोई शब्द दोनों के बीच घूमता है, तो उसे तासीस पर आधारित करना अनिवार्य है। इसीलिए हमारे साथियों (फ़ुकहा) - अल्लाह उन पर दया करे - ने कहा कि यदि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी से कहे 'तू तलाकशुदा है, तलाकशुदा है, तलाकशुदा है,' तो तीन तलाकें हो जाएंगी। और अल्लाह बेहतर जानता है।" तासीस यानी नया फ़ायदा, ताकीद से बेहतर है। इसलिए, जब किसी शब्द में तासीस और ताकीद दोनों की संभावना हो, तो उसे तासीस मानना अनिवार्य होगा। इसी कारण हमारे साथियों (फ़ुकहा) - अल्लाह तआला उन पर रहम फरमाए - ने फरमाया कि अगर पति ने तलाक शब्द को तीन बार दोहराया तो तीन तलाकें होंगी। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (टीका)

मसला 271: 11 रमज़ान 1339 हिजरी अगर उक्त पत्र में "ले" शब्द दोहराया न गया होता, और इस तरह होता कि "फारिग खती ले" (छुटकारा पत्र ले), तो क्या बाकी इबारत की वजह से तीन तलाकें होतीं या क्या हुक्म था? बयान फरमाएं सवाब पाएं।

जवाब: पत्र लिखने और पहुँचने के नियम वही हैं जो पहले बीत चुके हैं। और अगर उसमें पत्र पहुँचने पर तलाक लिखी थी और वह नहीं पहुँचा तो दो तलाक-ए-बाइन (अटल तलाक) हुईं। तो अगर उसने इस शब्द "तू मेरे काम की नहीं" से तलाक की नीयत की तो एक उससे। "और नीयत की आवश्यकता होगी हालाँकि स्थिति तलाक की चर्चा की है जैसा कि सनद के साथ उल्लेख किया गया

है।" तलाक की चर्चा की स्थिति होने के बावजूद (जैसा कि पत्नी के पिता के पत्र का हवाला है) नीयत की ज़रूरत होगी।

फुटनोट्स: 1. फ़तावा हिन्दिया, फारसी शब्दों में तलाक पर सातवां अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/382। 2. अल-अश्बाह वल-नज़ाइर, तासीस ताकीद से बेहतर है, इदारातुल कुरान कराची, 1/181। पेज 561 / 688

فتاوی رضویہ، جلد دو ازدہم

اور صحیح یہ ہے کہ طلاق لے طلاق صریح ہے، محیط پھر ہندیہ میں ہے: لو قال لھا داد طلاق یقع من غیر نیتہ و ھو الاشبہ لان قولہ داد فی العادۃ، و قولہ خذ سواء و لو قال لھا خذی طلاقک یقع من غیر نیتہ کذاھھنا کذا فی المحیط ملخصاً۔ اگر خاوند نے کہا "طلاق دے" تو بغیر نیت طلاق ہو جائے گی، اور یہی اشبہ بالحق ہے، کیونکہ "داد" کہنا ایسے ہی ہے جیسے کسی نے "خذ" (لے پکڑ) کہا تو عادت میں "داد" (فارسی) اور خذ (عربی) دونوں مساوی ہیں، اور اگر خاوند کہے "لے طلاق پکڑ" تو بغیر نیت طلاق ہو جاتی ہے، تو یہاں بھی ایسے ہی ہوگا جیسا کہ محیط میں ہے۔ ملخصاً (ت)

اور دوبارہ لفظ کے طلاق جدید ہو گا نہ تاکید، اشباہ میں ہے: التأسیس خیر من التأکید فاذا دار اللفظ بینھما تعین الحمل علی التأسیس ولذا قال اصحابنا رحمھم اللہ تعالی لو قال لزوجتہ انت طالق طالق طالق طلقت ثلثا، واللہ تعالی اعلم۔ تاسیس یعنی نیا فائدہ، تاکید سے بہتر ہے، لہٰذا جب کوئی لفظ تاسیس اور تاکید دونوں کا احتمال رکھے تو اس کو تاسیس پر محمول کرنا متعین ہوگا، اس لئے ہمارے اصحاب رحمہم اللہ تعالیٰ نے فرمایا اگر خاوند نے لفظ طلاق کو تین مرتبہ دہرایا تو تین طلاقیں ہوں گی۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۲۷۱: ۱۱ رمضان ۱۳۳۹ھ اگر خط مذکور میں "لے" کا لفظ مکرر نہ ہوتا، یوں ہوتا کہ کہ فارغ خطی لے تو بقیہ کی وجہ سے تین طلاقیں ہوتیں یا کیا حکم تھا؟ بینوا توجروا

الجواب: خط لکھنے اور پہنچنے کے احکام وہی ہیں جو گزرے اور اگر اس میں خط پہنچنے پر طلاق لکھی تھی اور وہ نہ پہنچا تو دو طلاقیں بائن ہوئیں، تو اگر اس نے اس لفظ کہ "تو میرے کام

کی نہیں" طلاق کی نیت کی تو ایک اس سے وانما احتاج الی النیة مع ان الحال حال المذاکرة کما ذکرہ مسندا حالتِ مذاکرہ طلاق (جیسا کہ بیوی کے باپ کے خط کا حوالہ ہے) ہونے کے باوجود نیت کا محتاج ہوگا

حواشی: 1 فتاویٰ ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالالفاظ الفارسیۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۳۸۲

2 الاشباہ والنظائر التأسیس خیر من التأکید ادارۃ القرآن کراچی ۱ / ۱۸۱ صفحہ 561 از 688

Fatawa Razawiyya Volume 12

[Arabic column]: [Return] to her father's house, for it carries the possibility of a scolding, as we established in Jadd al-Muhtar. Given the state is one of anger, do not let the discussion of divorce dispense with intention, as we established therein.

[Urdu column]: Because this phrase also carries the possibility of a scolding, as we have researched in Jadd al-Muhtar, while the situation here is also one of anger. Therefore, the discussion of divorce here cannot dispense with intention, just as we have researched by benefitting from Fath al-Qadir, and...

[Arabic column continued]: ...for the questioner, and another [divorce from saying] 'Take a discharge letter (faragh-khati),' because it is an explicit revocable (raj'i) divorce, so it attaches to an irrevocable (ba'in) one. As for his saying 'It has become forbidden (haram),' even if it has become explicit through custom, it does not attach to an irrevocable divorce according to what is in al-Halabi then al-Shami, where they said: 'You are forbidden to me' is not rejected based on the Fatwa-given position that it does not depend on intention, even though it does not attach to an irrevocable divorce, nor does an irrevocable divorce attach to it, because it is irrevocable in a way that its lack of dependence on intention is an incidental matter for it, not according to its original status. End.

[Urdu column continued]: The second (divorce is by saying 'Take a discharge letter,' because it is an explicit revocable divorce, so it will attach to an irrevocable one. But the husband's saying 'It has become forbidden' - although this phrase has become an explicit divorce based on custom - it will not attach to an irrevocable one. Furthermore, there will be no objection to Shami's statement that 'According to the rule, you are forbidden to me,' just as on the Fatwa-given position, it does not depend on intention (i.e., it is an explicit divorce). However, neither can an irrevocable divorce attach to it, nor can it attach to an irrevocable divorce, because it is the kind of irrevocable divorce that does not depend on intention, and its lack of dependence on intention (i.e., being explicit) is due to an incidental reason, not according to its original status. End (T).

I say: The reason for this could be that it can be treated as a report/narrative, so there is no necessity to treat it as an initiation (of divorce). (I say, the reason for this could be that it can be considered a narrative or report of a previous divorce, so there is no need to consider it an initiation. T). And if with the phrase 'You are of no use to

me,' he intended divorce, then one occurred from 'forbidden' and the second from 'discharge letter.' In any case, nothing will occur from the remaining words.

Because everything after it are metaphors of irrevocable divorce (kinayat ba'in), so they do not attach to an irrevocable divorce. And the second phrase, even if what occurred through it was revocable, has become irrevocable by being joined to an irrevocable divorce, so it [subsequent divorces] does not attach to it.

Because all the words after it are those of irrevocable divorce, therefore they will not attach to an irrevocable divorcee. And the second word, although a revocable divorce occurred through it, by an irrevocable divorce attaching to it, it became irrevocable, so it...

---

1. Radd al-Muhtar, Chapter of Metaphors, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/469.

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

[अरबी कॉलम]: [वापस जाओ] उसके पिता के घर, क्योंकि इसमें डांट-फटकार की संभावना है जैसा कि हमने जद्द अल-मुह्तार में स्थापित किया है। चूँकि स्थिति गुस्से की है, इसलिए तलाक की चर्चा को नियत (इरादे) से मुक्त न करें, जैसा कि हमने उसमें शोध किया है।

[उर्दू कॉलम]: क्योंकि यह शब्द डांट की संभावना भी रखता है जैसा कि हम जद्द अल-मुह्तार में शोध कर चुके हैं, जबकि यहाँ स्थिति भी गुस्से की है। इसलिए तलाक की चर्चा यहाँ नियत से मुक्त नहीं हो सकती, जैसा कि हमने फ़तह अल-क़दीर से लाभ उठाकर शोध किया है, और...

[अरबी कॉलम जारी]: ...मुस्तफ़्ती (प्रश्नकर्ता) के लिए, और दूसरी [तलाक] 'फ़ारिग़ ख़ती ले' कहने से, क्योंकि यह स्पष्ट रजई (वापसी योग्य) तलाक है, इसलिए यह बाइन (अटल) से जुड़ जाता है। जहाँ तक उसके'हराम हो चुकी' कहने का सवाल है, भले ही यह प्रथा के कारण स्पष्ट हो गया हो, यह बाइन तलाक से नहीं जुड़ता, जैसा कि अल-हलबी और फिर अल-शामी में है, जहाँ उन्होंने कहा: 'तुम मुझ पर हराम हो' इस फ़तवे वाली बात पर खारिज नहीं होता कि यह नियत पर निर्भर नहीं है, हालाँकि यह बाइन तलाक से नहीं जुड़ता, और न ही बाइन तलाक इससे जुड़ता है, क्योंकि यह इस तरह से बाइन है कि इसका नियत पर निर्भर न होना इसके लिए एक आकस्मिक मामला है, न कि इसकी मूल स्थिति के अनुसार। समाप्त।

[उर्दू कॉलम जारी]: दूसरी (तलाक यह कहने से कि 'फ़ारिग़ ख़ती ले' क्योंकि यह स्पष्ट रजई तलाक है तो बाइन को लाहिक़ (संलग्न) होगी, लेकिन पति का कहना 'हराम हो चुकी है' - यह शब्द यद्यपि प्रथा के आधार पर स्पष्ट तलाक बन चुका है लेकिन बाइन को लाहिक़ न होगी। और फिर शामी के इस बयान पर कि 'नियमतः तुम मुझ पर हराम हो' से कोई आपत्ति नहीं होगी जैसा कि फ़तवे वाली बात पर यह नियत पर निर्भर नहीं है (अर्थात स्पष्ट तलाक है)। हालाँकि न बाइन इसे लाहिक़ हो सकती है और न ही यह बाइन को लाहिक़ हो सकती है, क्योंकि यह ऐसी बाइन है जो नियत पर निर्भर नहीं है, और इसका नियत पर निर्भर न होना (अर्थात स्पष्ट होना) किसी बाहरी कारण से है न कि इसकी मूल प्रकृति के अनुसार। समाप्त (त)।

मैं कहता हूँ: इसका कारण यह हो सकता है कि इसे समाचार/वृतांत (इख़बार) माना जा सकता है, इसलिए इसे नया प्रारंभ (इनशा) मानने की आवश्यकता नहीं है। (मैं कहता हूँ, इसकी वजह यह हो सकती है कि इसे पहले दी गई तलाक का वृतांत माना जा सकता है, इसलिए इसे नई तलाक मानने

की आवश्यकता नहीं है। त)। और यदि 'तुम मेरे काम की नहीं' शब्द से उसने तलाक का इरादा किया, तो एक 'हराम' से हो गई और दूसरी 'फ़ारिग़ ख़ती' से। बहरहाल, बाकी शब्दों से कुछ नहीं होगा,

क्योंकि इसके बाद के सभी शब्द 'किनायात बाइन' (अटल तलाक के रूपक) हैं, इसलिए वे बाइन तलाक से नहीं जुड़ते। और दूसरा शब्द, भले ही उससे रजई तलाक हुई हो, बाइन के जुड़ने से वह बाइन हो गई, इसलिए वे [बाद के शब्द] उससे नहीं जुड़ेंगे।

क्योंकि इसके बाद के सभी शब्द बाइन तलाक वाले हैं, इसलिए वे बाइनह को लाहिक़ नहीं होंगे। और दूसरा शब्द, यद्यपि उससे रजई तलाक हुई, मगर उसे बाइनह लाहिक़ होने पर वह बाइनह हो गई, इसलिए उसे...

---

1. रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-किनायात, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/469.

الی کتاب ابیھا لانہ یحتمل السب کما حققناہ فی جدالمحتار والحالۃ حالۃ الغضب فلاتجعلہ المذاکرۃ غنیاً من النیۃ کما حققناہ فیہ | کیونکہ یہ لفظ ڈانٹ کا بھی احتمال رکھتا ہے جیسا کہ ہم جد المختار میں تحقیق کر چکے ہیں جبکہ یہاں حالت بھی غصہ کی ہے، اس لئے مذاکرہ طلاق یہاں نیت سے مستغنی نہیں کر سکتا، جیسا کہ ہم نے فتح القدیر سے ان کو استفادہ کر کے تحقیق کی ہے، اور

مستفتدین اور دوسری فارغ خطی لے، سے لانہ رجعی صریح فیلحق البائن اما قولہ حرام ہو چکی فھو وان صار صریحاً بالعرف لایلحق البائن علی مافی الحلبی ثم الشامی، حیث قالا ولایرد انت علی حرام، علی المفتی بہ من عدم توقفہ علی النیۃ مع انہ لایلحق البائن ولایلحقہ البائن لکونہ بائناً لما ان عدم توقفہ علی النیۃ امر عارض لہ لایحسب اصل وضعہ اھ | دوسری (طلاق یہ کہنے سے کہ "فارغ خطی لے" کیونکہ یہ صریح رجعی طلاق ہے تو بائن کو لاحق ہوگی، لیکن خاوند کا کہنا "حرام ہو چکی ہے" یہ لفظ اگرچہ عرف کی بناء پر صریح طلاق بن چکا ہے لیکن بائن کو لاحق نہ ہوگی اور پھر شامی کے بیان پر کہ "ضابطہ پر تو مجھ پر حرام ہے" سے اعتراض نہ ہوگا جیسا کہ مفتی بہ قول پر یہ نیت پر موقوف نہیں ہے (یعنی صریح طلاق ہے) حالانکہ نہ بائنہ اس کو لاحق ہو سکتی اور نہ ہی یہ بائنہ کو لاحق ہو سکتی ہے، کیونکہ ایسی بائنہ ہے جو نیت پر موقوف نہیں ہے، اور اس کا نیت پر موقوف نہ ہونا (یعنی صریح ہونا) عارضہ کی بناء پر ہے اپنے اصل کے اعتبار سے نہیں اھ (ت)

اقول: والوجہ فیہ انہ یمکن جعلہ اخبار افلا ضرورۃ جعلہ انشاء (میں کہتا ہوں، اس کی وجہ یہ ہوسکتی ہے کہ اس کو قبل ازیں طلاق سے حکایت اور خبر قرار دیا جاسکتا ہے اس لئے اس کو انشاء قرار دینے کی ضرورت نہیں ہے ت) اور اگر اس لفظ سے کہ "تو میرے کام کی نہیں" اس

نے نیت طلاق کی تو ایک حرام سے ہو چکی اور دوسری فارغ خطی سے، بہر حال باقی الفاظ سے کچھ نہ پڑے گی،

لان کل ما بعدہ کنایات بائن فلاتلحق البائن و اللفظ الثانی و ان کان الواقع بہ رجعیاً قد صار بلحوقہ البائن بائناً فلاتلحقہ

کیونکہ اس کے بعد تمام الفاظ بائن طلاق والے ہیں لہٰذا وہ بائنہ کو لاحق نہ ہوں گے، اور دوسرا لفظ، اگرچہ اس سے رجعی طلاق ہوئی مگر اس کو بائنہ لاحق ہونے پر وہ بائنہ ہو گئی اس لئے اس کو

---

1 ردالمحتار باب الکنایات دار احیاء التراث العربی بیروت ۴۶۹/۲ Page 562 of 688

Volume 12 Fatawa Rizvia

[Arabic Quote 1]: Kinaya-e-Baain (metaphorical irrevocable divorce) cannot be attached [after a previous divorce] because it's not possible to make it a report [of past event]. Rather, its attachment [should be seen] with the second one... as it was already Baain (irrevocable), so its attachment is prevented as we explained in Jadd al-Muhtar.

[Urdu Translation of Arabic 1]: An irrevocable divorce through metaphorical words cannot occur again. Instead, it's possible to treat it as a report of a past event. Since it's not considered as initiating a new divorce, it won't occur. Rather, the attachment to the second will be considered as attachment to the first. Since this is already an irrevocable divorce, all subsequent irrevocable divorces will be barred, as we have explained in Jadd al-Muhtar. (T)

And if he had not written that letter at all, then three divorces should take place.

[Arabic Quote 2]: Because his admission regarding the prior "discharge letter" (Farigh-khati) is an admission of divorce. So it will be a divorce in the eyes of law/ court. And the remaining two divorces will occur by the two mentioned words. This is what appeared to me, and the knowledge of truth is with my Lord. And Allah Almighty knows best.

[Urdu Translation of Arabic 2]: Because his earlier admission regarding the "discharge letter" is an admission of divorce, so legally (qada'an) this will be a divorce, and the remaining two divorces will occur through the two mentioned words. This is what became known to me, while the true reality is known to my Lord. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 272: From Mirzapur, Calcutta, sent by Abdul Ghafoor Khan, 4 Sha'ban 1312 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: There was an argument between me and my wife. I beat her. We came out of the house where she was. Sitting in my factory, my son from my second wife said to me, "Leave her, we will give you whatever children we produce." So I said, "Since you say so, I don't want her." I said twice, "I don't want her, I don't want her." The son said, "Give her a discharge letter (Farigh-khati)." I said, "It's up to you." The boy brought a written discharge letter, I didn't read it or have it read to me, I just signed it. The discharge letter is in Bengali language and is sent herewith exactly as it is. In this situation, did

divorce occur or not? Now the woman wants to remarry without Halala. Is this permissible or not? Answer and be rewarded.

The Answer: Undoubtedly, it is permissible. There is absolutely no need for Halala. Along with this question, two papers in Bengali language and script arrived. One from the wife's side mentioning receiving dower and divorce from the husband. The second from the husband's side, which several reliable Muslim Bengali students translated as: (I, Abdul Ghafoor Khan, resident of Calcutta, Mirzapur, the divorce is: I married Shahid-un-Nisa for three and a half rupees dower according to the Sharia of Muhammad's religion. At this time, I paid the dower by consent and gave an irrevocable divorce (Talaq-e-Baain). Written by: Abdul Ghafoor Khan). Abdul Ghafoor saying two or even ten times "I don't want her"...

जिल्द बारहवीं फ़तावा रिज़विया

[अरबी उद्धरण 1]: किनाया-ए-बाइन (रूपक अपरिवर्तनीय तलाक) संलग्न नहीं हो सकता [पिछले तलाक के बाद] क्योंकि इसे पिछली घटना की रिपोर्ट बनाना संभव नहीं है। बल्कि, इसका जुड़ाव दूसरे के साथ... जैसा कि यह पहले से ही बाइन (अपरिवर्तनीय) था, इसलिए इसका जुड़ाव वर्जित है जैसा कि हमने जद्द अल-मुह्तार में स्पष्ट किया है।

[उर्दू अनुवाद]: रूपक शब्दों के माध्यम से एक अपरिवर्तनीय तलाक फिर से नहीं हो सकता। इसके बजाय, इसे पिछली घटना की रिपोर्ट के रूप में मानना संभव है। चूंकि इसे नया तलाक शुरू करने के रूप में नहीं माना जाता है, इसलिए यह नहीं होगा। बल्कि, दूसरे से जुड़ाव को पहले से जुड़ाव माना जाएगा। चूंकि यह पहले से ही एक अपरिवर्तनीय तलाक है, इसलिए बाद के सभी अपरिवर्तनीय तलाक वर्जित होंगे, जैसा कि हमने जद्द अल-मुह्तार में बताया है। (त)

और अगर उसने वह पत्र लिखा ही नहीं था, तो तीन तलाक होने चाहिए।

[अरबी उद्धरण 2]: क्योंकि पूर्व "डिस्चार्ज लेटर" (फ़ारिग़-ख़ती) के संबंध में उसकी स्वीकारोक्ति तलाक की स्वीकारोक्ति है। इसलिए यह कानून/अदालत की दृष्टि में तलाक होगा। और शेष दो तलाक उल्लिखित दो शब्दों द्वारा होंगे। यह वही है जो मुझे प्रतीत हुआ, और सत्य का ज्ञान मेरे प्रभु के पास है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

[उर्दू अनुवाद]: क्योंकि "फ़ारिग़-ख़ती" के बारे में उसकी पहले की स्वीकारोक्ति तलाक की स्वीकारोक्ति है, इसलिए कानूनी तौर पर (क़ज़ा-अन) यह एक तलाक होगा, और शेष दो तलाक उल्लिखित दो शब्दों के माध्यम से होंगे। मुझे यही पता चला है, जबकि वास्तविक सच्चाई मेरे रब के पास है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 272: मिर्ज़ापुर, कलकत्ता से, प्रेषक अब्दुल ग़फ़ूर ख़ान, 4 शाबान 1312 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले के बारे में क्या कहते हैं: मेरे और मेरी पत्नी के बीच बहस हुई। मैंने उसे पीटा। हम उस घर से बाहर आ गए जहाँ वह थी। अपने कारखाने में बैठे हुए, मेरी दूसरी पत्नी से मेरे बेटे ने मुझसे कहा, "उसे छोड़ दो, हम जो भी बच्चे पैदा करेंगे वह तुम्हें दे देंगे।" तो मैंने कहा, "चूंकि तुम ऐसा कह रहे हो, तो मुझे वह नहीं चाहिए।" मैंने दो बार कहा, "मुझे वह नहीं चाहिए, मुझे वह नहीं चाहिए।" बेटे ने कहा, "उसे डिस्चार्ज लेटर (फ़ारिग़-ख़ती) दे दो।" मैंने कहा, "यह तुम पर निर्भर है।" लड़का एक लिखित डिस्चार्ज लेटर लेकर आया, मैंने इसे न तो पढ़ा और न ही किसी से पढ़वाया, बस

उस पर हस्ताक्षर कर दिए। डिस्चार्ज लेटर बंगाली भाषा में है और उसी तरह यहाँ भेजा गया है। इस स्थिति में तलाक हुआ या नहीं? अब वह महिला बिना हलाला के पुनर्विवाह करना चाहती है। क्या यह जायज़ है या नहीं? उत्तर दें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: निःसंदेह, यह जायज़ है। हलाला की बिल्कुल भी आवश्यकता नहीं है। इस प्रश्न के साथ बंगाली भाषा और लिपि में दो कागज़ आए। एक पत्नी की ओर से जिसमें पति से मेहर और तलाक प्राप्त करने का उल्लेख है। दूसरा पति की ओर से, जिसका अनुवाद कई विश्वसनीय मुस्लिम बंगाली छात्रों ने इस प्रकार किया: (मैं अब्दुल ग़फ़ूर ख़ान, निवासी कलकत्ता, मिर्ज़ापुर, तलाक यह है: मैंने मुहम्मद के धर्म की शरीयत के अनुसार साढ़े तीन रुपये मेहर पर शाहिद-उन-निसा से निकाह किया था। इस समय, मैंने सहमति से मेहर का भुगतान किया और अपरिवर्तनीय तलाक (तलाक-ए-बाइन) दिया। लेखक: अब्दुल ग़फ़ूर ख़ान)। अब्दुल ग़फ़ूर का दो या दस बार "मुझे वह नहीं चाहिए" कहना...

पृष्ठ 563 का 688

جلد دو ازدہم فتاویٰ رضویہ

كناية بائن لامكان جعله اخبار ابل لحوقه بالثاني لحوقه بالاول وقد كان بائنا فيمتنع كله كما بيناه في جدالمحتار،

کنایہ والی بائنہ لاحق نہ ہوسکے گی، بلکہ اس کو خبر بنایا جانا ممکن ہے اس لئے اس کو طلاق نہ قرار دینے کی وجہ سے بھی لحوق نہ ہوگا بلکہ اس کو ثانی کو لحوق ہی اول کو لحوق قرار دیا جائے گا جبکہ یہ بائنہ ہے لہذا اس کے بعد والی تمام بائنہ ممنوع ہوں گی جیسا کہ ہم نے جدالمحتار میں بیان کیا ہے۔ (ت)

اور اگر وہ خط اس نے لکھا ہی نہ تھا تو تین طلاقیں ہونا چاہئے۔

لان اقراره بتقديم فار غخطی اقرار بالطلاق، فيكون طلاقا قضاء والباقيان باللفظين المذكورين هذا ماظهر لی والعلم بالحق عند ربی۔ والله تعالی اعلم۔

کیونکہ اس کا "فارغ خطی" کے بارے میں پہلے ہونے کا اقرار، طلاق کا اقرار ہے تو یہ قضاءً طلاق ہوگی اور باقی دو طلاقیں مذکورہ دو لفظوں سے ہو جائیں گی، مجھے یہ معلوم ہوا جبکہ حقیقت کا علم میرے رب کے پاس ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۲۷۲: از مرزا پور کلکتہ مرسلہ عبدالغفور خاں ۴ شعبان ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مجھ میں اور میری بی بی میں تکرار ہوئی اس کو مار پیٹ کیا جس گھر میں وہ تھی اس گھر میں سے ہم باہر نکل آئے اپنے کارخانے میں بیٹھے ہوئے لڑکے نے جو دوسری بیوی سے ہے ہم سے کہا کہ اس کو چھوڑ دو ہم جو پیدا کریں گے تم کو دیں گے ، تو ہم نے کہا کہ تم کہتے ہو تو ہم اس کو مانگتا نہیں دو مرتبہ کہا ہم اس کو مانگتا نہیں مانگتا نہیں، بیٹے نے کہا تم اس

کو فارغ خطی دے دو، ہم نے کہا تم کو اختیار ہے، لڑکا ہمارا فارغ خطی لکھ کر لایا لکھوایا یا ہم نے اس کو پڑھوایا نہیں، دستخط اس پر کر دیئے، فارغ خطی زبانِ بنگلہ میں ہے بجنسہ بلف ہذا مرسل ہے ، اس صورت میں طلاق ہوا یا نہیں؟ اب عورت چاہتی ہے کہ بے حلالہ کے نکاح ہو جائے، یہ جائز ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: بلا شبہ جائز ہے، حلالہ کی اصلاً ضرورت نہیں، اس سوال کے ساتھ زبان و خطِ بنگلہ میں دو کاغذ آئے، ایک از جانب زوجہ جس میں شوہر سے مہر و طلاق پانے کا ذکر ہے، دوسرا از جانب شوہر جس کا ترجمہ چند معتبر مسلمان بنگالی طلبہ علم نے یہ کیا (میں عبدالغفور خاں ساکن کلکتہ مرزا پور ، طلاق یہ ہے کہ شاہد النساء کو ساڑھے تین روپے دینِ مہر مطابق شریعتِ دینِ محمدی کے نکاح کیا، اس وقت راضی سے مہر ادا کر کے طلاقِ بائنہ دی۔ راقم عبدالغفور خاں) عبدالغفور کا دو خواہ دس بار کہنا ہم اس کو مانگتا نہیں

Fatawa Razawiya Volume Twelve

[The speaker] does not ask for it; this was merely ineffective because its meaning is the negation of desire, demand, and intention, and divorce does not occur by their negation even if said with the intention of divorce. In Al-Hindia: If the husband said, 'I don't want you', or 'I don't like you', or 'I don't desire you', or 'I have no inclination towards you', divorce will not occur even if the intention is divorce, according to the saying of Imam Abu Hanifa (may Allah have mercy on him). It is similarly stated in Al-Bahr al-Ra'iq. (T)

And the original purpose of a 'Farigh-khati' (deed of release) is for a document given to a debtor regarding full payment and exoneration, meaning there is no further claim against him. When this term is attributed to a woman, it means writing for the woman that she is free from the claims and rights of marriage, the essence of which was a written irrevocable divorce (talaq-e-ba'in).

Besides, it is the conventional reality as you know; it is evident in itself even if there is nothing else to manifest it. (T)

When the son of Abdul Ghafoor Khan requested a deed of release from him and he said, "You have the choice/authority," this was giving him the authority for a written irrevocable divorce. When a man gives someone else the authority to divorce his wife, the rule is that this authority remains valid only until that same sitting (majlis). If that person gets up without necessity, or for a necessity unrelated to the matter of divorce, or remains sitting there but engages in some other unrelated work or irrelevant conversation, then that authority is nullified.

In Al-Hindia from Al-Khulasa from Al-Sughra: If he said to a stranger, "My wife's matter is in your hands," it is restricted to the current sitting, and he (the husband) does not have the right to revoke it. (End) And similarly in Khaniya.

1. Fatawa Hindia, Fifth Chapter on Kinaya (Allusions), Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/475
2. Fatawa Hindia, Second Chapter on 'Matter in the Hand', 1/393

फ़तावा रज़विया बारहवीं जिल्द

[वक्ता] माँगता नहीं, यह तो केवल निष्प्रभावी था क्योंकि इसका अर्थ इच्छा, माँग और इरादे का निषेध है, और इनके निषेध से तलाक़ नहीं होता चाहे तलाक़ की नीयत से ही क्यों न कहा जाए। अल-हिन्दिया में है: जब पति ने कहा, 'मैं तुम्हें नहीं चाहता', या 'मैं तुम्हें पसंद नहीं करता', 'मैं तुम्हारी इच्छा नहीं करता', या 'मुझे रुचि नहीं है', इन शब्दों से तलाक़ नहीं होगा चाहे तलाक़ की नीयत हो, यह इमाम अबू हनीफ़ा (रहमतुल्लाह अलैह) का कथन है, बहरुल राइक़ में भी ऐसा ही है। (त)

और 'फ़ारिग़-ख़ती' (मुक्ति-पत्र) का मूल उद्देश्य उस काग़ज़ के लिए है जो ऋणी को ऋण मुक्ति और बरी होने के बारे में लिखकर दिया जाता है जिसका अर्थ यह होता है कि अब उस पर कोई दावा शेष नहीं रहा। यह शब्द जब महिला की ओर संदर्भित किया जाए तो इसका अर्थ महिला को यह लिखकर देना होता है कि वह विवाह के दावों और अधिकारों से मुक्त हो गई, जिसका परिणाम एक लिखित अपरिवर्तनीय तलाक़ (तलाक़-ए-बाइन) था।

इसके अतिरिक्त, यह प्रथागत वास्तविकता है जैसा कि आप जानते हैं कि यह स्वयं स्पष्ट है भले ही इसे प्रकट करने के लिए कोई दूसरी चीज़ न हो। (त)

जब अब्दुल ग़फ़ूर ख़ान के बेटे ने उससे फ़ारिग़-ख़ती देने का अनुरोध किया और उसने कहा "तुम्हें अधिकार है", तो यह उसे लिखित अपरिवर्तनीय तलाक़ का अधिकार देना हुआ। पुरुष जब अपनी पत्नी का तलाक़ का अधिकार किसी को देता है, तो नियम यह है कि वह अधिकार उसी बैठक (मजलिस) तक बना रहता है। यदि वह व्यक्ति बिना ज़रूरत के, या ऐसी ज़रूरत के लिए जो तलाक़ के कार्य से संबंधित नहीं थी, उठ जाए या वहीं बैठा किसी और काम बल्कि असंबंधित बातचीत में लग जाए, तो वह अधिकार समाप्त हो जाता है।

अल-हिन्दिया में अल-ख़ुलासा से अल-सुग़रा के हवाले से: यदि किसी अजनबी से कहा, 'मेरी पत्नी का मामला तेरे हाथ में है', तो अधिकार उसी बैठक के लिए होगा, और उसे वापस लेने का अधिकार नहीं होगा। (समाप्त) और इसी तरह ख़ानिया में।

1. फ़तावा हिन्दिया, कनायात पर पाँचवाँ अध्याय, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/475
2. फ़तावा हिन्दिया, 'मामला हाथ में' पर दूसरा अध्याय, 1/393

पृष्ठ 564 / 688

فتاوٰی رضویہ جلد دوا ز دہم

مانگتا نہیں، یہ تو محض بے اثر تھا کہ اس کے معنی نفی خواہش و طلب وارادہ ہے اور ان کی نفی سے طلاق نہیں ہوتی اگر چہ بہ نیت طلاق کہے، فی الھندیۃ اذاقال لااریدک، اولااحبک، اولا اشتھیک، اولارغبۃ لی فیک، فانہ لایقع وان نوی فی قول ابی حنیفۃ رحمۃ اللہ تعالٰی کذافی البحرالرائق۔ 1 ہندیہ میں ہے: جب خاوند نے کہا، میں تجھے نہیں چاہتا، یا، میں تجھے پسند نہیں کرتا، میں تیری خواہش نہیں کرتا، یا، مجھے رغبت نہیں، ان الفاظ سے طلاق نہ ہوگی اگر چہ طلاق کی نیت ہو، یہ امام ابو حنیفہ رحمۃ اللہ تعالٰی کے قول میں ہے، بحر الرائق میں یونہی ہے۔ (ت)

اور فارغ خطی کی اصل وضع اس کاغذ کے لئے ہے جو مدیون کو بابت بے باقی وبرا ت ذمہ لکھ کردیا جاتا ہے جس کے معنی یہ ہوتے ہیں کہ اب اس پر کچھ مطالبہ نہ رہا، یہ لفظ جب عورت کی طرف نسبت کیا جائے تو اس سے مراد عورت کو لکھ دینا ہوتا ہے کہ وہ اس کے مطالبہ وحقوق نکاح سے بری ہوئی جس کا حاصل طلاق نامہ بائن تحریری تھی

علانہ ھو الحقیقۃ العرفیۃ کما علمت فھو ظاھر بنفسہ وان لم یکن ھناک مظھر لہ۔ اس کے علاوہ یہ حقیقت عرفیہ ہے جیسا کہ آپ کو معلوم ہے کہ یہ خود ظاہر ہے اگرچہ کوئی دوسری چیز اس کو ظاہر نہ کرے۔ (ت)

پسر عبدالغفور خاں نے جبکہ اس سے فارغ خطی دینے کی درخواست کی اور اس نے کہا تم کو اختیار ہے تو یہ طلاق بائن تحریری کا اسے اختیار دینا ہوا، مرد جسے اپنی عورت کو طلاق کا اختیار دے اس میں حکم یہ ہے کہ وہ اختیار اسی جلسہ تک باقی رہتا ہے اگر وہ شخص بلا

ضرورت خواہ کسی ایسی ضرورت کیلئے جو اس کار طلاق سے متعلق نہ تھی اٹھ جائے یا وہیں بیٹھا کسی اور کام بلکہ بے علاقہ کلام میں مشغول ہو جائے تو وہ اختیار زائل ہو جاتا ہے،

فی الھندیۃ عن الخلا صۃ عن الصغریٰ لوقال لاجنبی امرأتی بیدک، یقتصر علی المجلس ولایملك الرجوع2 اھ وفیا اگر کسی اجنبی کو کہا، کہ ، میری بیوی کا اختیار تیرے ہاتھ میں ہے، تو اختیار اسی مجلس کے لئے ہوگا، اور رجوع کا اختیار نہ ہوگا اھ اور اسی میں خانیہ

1 فتاوٰی ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۴۷۵ 2 فتاویٰ ہندیہ الفصل الثانی فی الامر بالید ۱/ ۳۹۳

Fatawa Rizvia, Volume 12

From al-Khaniyah: If a husband says to another person, "Divorce my wife, for I have delegated that to you," then it is a delegation restricted to the session (majlis), etc. In al-Durr al-Mukhtar, concerning his statement to a stranger, "Divorce my wife," his revocation of it is valid and it is not restricted to the session because it is an appointment of agency (tawkil), unless he conditions it on his will (mashi'ah), in which case it becomes an ownership (tamlik). The difference between them lies in five rulings: in tamlik, one cannot revoke or dismiss, and it is restricted to the session, etc. summarized. In Radd al-Muhtar, from al-Fath: What changes the session is what decisively cuts off the first speech and proceeds to something else, etc. In it, the most correct view is that standing up must be accompanied by evidence of turning away, etc. In it, foreign speech is evidence of turning away, etc. (T)

The words of the question are that he brought or got written a deed of separation (faragh-khati), from which it is apparent that the son did not write the deed of separation at the same place but it was written after getting up from there. Now if the situation is that the said paper was written by the son with his own hand and before that he did not engage in any other work; this getting up was out of necessity to get a pen, inkpot, or paper as these things were not present there, then this writing occurred based on that same power, and as soon as the son wrote it, one divorce occurred on Shahid-un-Nisa.

1. Fatawa Hindiyyah, Al-Fasl al-Thani fil Amr bil-Yad, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/393
2. Durr al-Mukhtar, Bab Tafwid al-Talaq, Mujtabai Press Delhi, 1/227
3. Radd al-Muhtar, Bab Tafwid al-Talaq, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/78
4. Radd al-Muhtar, Bab Tafwid al-Talaq, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, 2/77
5. Radd al-Muhtar, Bab Tafwid al-Talaq, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, 2/77

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

अल-खानिया से उद्धृत है: यदि पति ने दूसरे को तलाक का अधिकार देते हुए कहा, "तुम मेरी पत्नी को तलाक दे दो", तो यह अधिकार उसी मजलिस (बैठक) के लिए होगा, आदि। अल-दुर अल-मुख्तार में है कि अगर पति ने अजनबी से कहा "मेरी पत्नी को तलाक दे दो", तो उसका इससे मुकरना (वापस लेना) सही है और यह मजलिस के साथ सीमित नहीं है क्योंकि यह 'तवकील' (एजेंसी बनाना) है, बशर्ते कि उसने इसे उसकी इच्छा (मशियत) पर न छोड़ा हो, जिसमें यह 'तमलीक' (स्वामित्व सौंपना) हो जाता है। इन दोनों के बीच पांच हुक्मों में अंतर है: तमलीक में न तो वापस लिया जा सकता है और न ही हटाया जा सकता है, और यह मजलिस तक सीमित है, आदि संक्षेप में। रद अल-मुह्तार में अल-फतह से है: मजलिस को बदलने वाली चीज़ वह है जो पहले कलाम को पूरी तरह से काट दे और किसी दूसरी चीज़ में लग जाए, आदि। इसमें सबसे सही राय यह है कि मजलिस से उठने के साथ विमुख होने (अराज़) का कोई सुबूत होना ज़रूरी है। इसमें यह भी है कि अजनबी (ग़ैर-मुताल्लिका) बात करना विमुख होने की दलील है। (त)

सवाल के शब्द ये हैं कि फ़ारिग़-ख़ती (तलाकनामा) लिखकर लाया या लिखवाया जिससे ज़ाहिर है कि बेटे ने उसी जगह फ़ारिग़-ख़ती नहीं लिखी बल्कि वहाँ से उठकर जाने के बाद लिखी गई। अब अगर वाक़या यह है कि उक्त काग़ज़ बेटे ने अपने हाथ से लिखा और उससे पहले किसी ग़ैर (दूसरे) काम में मशग़ूल नहीं हुआ; यह उठना केवल क़लम, दवात या काग़ज़ लाने की ज़रूरत के कारण था क्योंकि ये चीज़ें वहाँ मौजूद नहीं थीं, तो यह लेखन उसी अधिकार के आधार पर हुआ और बेटे के लिखते ही 'शाहिद-उन-निसा' पर एक तलाक़ वाक़े(प्रभावी) हो गई।

1. फ़तावा हिंदिया, अल-फ़स्ल अल-सानी फ़िल अम्र बिल-यद, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/393
2. दुर्रे मुख़्तार, बाब तफ़वीज़ अल-तलाक़, मतबा मुजतबाई देहली, 1/227
3. रद अल-मुह्तार, बाब तफ़वीज़ अल-तलाक़, दार इह्या अल-तुरास अल-अरबी बैरूत, 2/78
4. रद अल-मुह्तार, बाब तफ़वीज़ अल-तलाक़, दार इह्या अल-तुरास अल-अरबी, 2/77
5. रद अल-मुह्तार, बाब तफ़वीज़ अल-तलाक़, दार इह्या अल-तुरास अल-अरबी, 2/77

पृष्ठ 565 / 688

عن الخانیۃ لو قال لغیرہ طلق امرأتی فقد جعلت ذلک الیک فھو تفویض یقتصر الی المجلس ۱ الخ وفی الدرالمختار فی قولہ لاجنبی طلق امرأتی یصح رجوعہ عنہ ولم یقیّد بالمجلس لانہ توکیل الّا اذا علقہ بالمشیئۃ فیصیر تملیکا والفرق بینھما فی خمسۃ احکام ففی التملیك لایرجع ولایعزل ویتقید بمجلس ۲ الخ ملخصاً، وفی ردالمحتار عن الفتح المبدل للمجلس مایکون قطعاً للکلام الاول وافاضۃ فی غیرہ ۳ الخ وفیہ الاصح انہ لابد ان یکون مع القیام دلیل الاعراض اھ ۴ وفیہ الکلام الاجنبی دلیل الاعراض اھ ۵۔

سے منقول ہے: اگر خاوند نے دوسرے کو طلاق کا اختیار دیتے ہوئے کہا "تو میری بیوی کو طلاق دے"، تو یہ اختیار اسی مجلس کے لئے ہو گا الخ درمختار میں ہے اگر خاوند نے دوسرے کو کہا "تو میری بیوی کو طلاق دے" اگر اجنبی نے اس اختیار سے طلاق دے دی تو رجعی ہوگی، انہوں نے اس اختیار کو صرف مجلس کے لئے نہیں کہا اور کہا یہ توکیل ہے اور اگر تیری مرضی ہو تو میری بیوی کو طلاق کہا تو پھر تملیک ہوگی، اور وکیل بنانا اور مالک بنانا ان دونوں باتوں میں پانچ فرق ہیں، مالک بنانے پر اختیار کو واپس نہیں لے سکتا اور نہ ہی اسے معزول کرسکتا ہے اور یہ اختیار مجلس کے لئے ہی ہوگا الخ ملخصاً۔ رد المحتار میں ہے کہ مجلس کی تبدیلی ایسی چیز سے ہوگی جو پہلی بات کو منقطع کر دے اور دوسرے کام میں مصروف کر دے الخ۔ اور اسی میں ہے مجلس سے کھڑا ہو جانا اس میں اعراض کے لئے دلیل بھی ہونی ضروری ہے اھ، اسی میں ہے پہلے بات سے ہٹ کر کوئی اجنبی بات کرنا اعراض کی دلیل ہے اھ (ت)

الفاظِ سوال یہ ہیں کہ فارغ خطی لکھ کر لایا لکھوایا جس سے ظاہر ہے کہ پسر نے اسی جگہ فارغ خطی نہ لکھی بلکہ وہاں سے اٹھ کر جانے کے بعد تحریر ہوئی، اب اگر صورت واقعہ یہ ہے کہ کاغذ مذکور پسر نے اپنے ہاتھ سے لکھا اور اس سے پہلے کسی غیر کام میں مصروف نہ ہوا یہ

اٹھ کر جانا بضرورت قلم یا دوات یا کاغذ لینے کے تھا یہ اشیا وہاں موجود نہ تھیں جب تو یہ تحریر اسی اختیار کی بناء پر واقع ہوئی اور پسر کے لکھتے ہی شاہد النساء پر ایک طلاق

1 فتاویٰ ہندیہ الفصل الثانی فی الامر بالید نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۹۳ 2 درمختار باب تفویض الطلاق مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۲۷ 3 رد المحتار باب تفویض الطلاق داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۷۸ 4 رد المحتار باب تفویض الطلاق داراحیاء التراث العربی ۲/ ۷۷ 5 رد المحتار باب تفویض الطلاق داراحیاء التراث العربی ۲/ ۷۷

Fatawa Ridawiyya, Volume 12

The divorce (Bain) has taken place. It was not at all necessary for Abdul Ghafoor Khan to read or hear this writing.

[Table] Arabic Text: For indeed he only acted according to the delegation (Tafwid), and the person to whom it is delegated (al-mufawwad) is an owner. An owner acts by their own will without depending on the consent of the one who gave the ownership (al-mumallik), to the extent that even if they take it back after giving ownership, they do not have the right to revoke it, as mentioned previously. Urdu Translation: Because he acted according to the delegation, and the one to whom delegation is given is made the owner. And the one who is made the owner acts according to their own will and does not remain dependent on the will of the one who made them the owner. To the extent that once someone is made the owner, the one who made them the owner no longer has the right to take it back, as has passed before. (T)

And if this getting up and leaving was without necessity, or for some purpose other than the necessity of the writing, or if he had that writing written by someone else, then in these cases it would not be on the basis of that authority but rather the writing of an unauthorized person (fuzuli) and a stranger.

[Table] Arabic Text: For indeed, the person to whom it was delegated, by the intervention of a stranger, becomes a stranger. And he was only delegated the task of divorcing, not appointing an agent (Tawkīl), just as an agent for divorce does not have the power to appoint someone else as an agent or to authorize what someone else has done, as explicitly stated in Al-Anqarawi from Al-Khaniyah. Urdu Translation: When an authority is entrusted to someone, and then a stranger interferes, that person also becomes a stranger. Because the owner has entrusted him with the authority to give divorce, not with the authority to appoint someone else as an agent. Just as an agent for divorce is not authorized to appoint another as an agent, nor can he validate another's action in this matter, as Anqarawi has clarified in a citation from Khaniyah. (T)

And an unauthorized person (fuzuli) - who does not have or no longer has the command or written permission from the husband - if he brings a written divorce for the woman, its implementation depends on the husband's permission. If he, being aware of its content, implements this writing, for example, explicitly says 'I have made it valid' or 'I have given permission' or 'I have implemented it', or performs an action that indicates implementation, for example, signs it or sends it to the woman

from his side or asks for it to be sent, then that writing becomes implemented and is as if it were the husband's own writing; otherwise, it is not.

[Table] Arabic Text: In Al-Bazzaziyyah, shortly before the issues of authorization, it is stated: Someone other than the husband wrote the letter of divorce and read it to the husband, so he took it and sealed it, or said to a man, 'Send this letter to her,' this is equivalent to his writing it himself. Urdu Translation: In Bazzaziyyah, a little before the issues of permission, it is written that someone other than the husband wrote the divorce deed and then read it to the husband. Then the husband took it and put his seal on it, or told another person 'Go and give this divorce deed to my wife', then this action would be just as if the husband had himself [written it].

तलाक़ (बाइन) हो गई। अब्दुल ग़फ़ूर ख़ान का इस तहरीर को पढ़ना या सुनना ज़रुरी नहीं था।

[तालिका] अरबी पाठ: क्योंकि उसने अधिकार-प्रत्यायोजन (तफ़वीज़) के अनुसार कार्य किया है, और जिसे अधिकार सौंपा गया हो वह स्वामी (मालिक) होता है। एक स्वामी अपनी इच्छा से कार्य करता है और स्वामी बनाने वाले (अल-मुमल्लिक) की सहमति पर निर्भर नहीं रहता, यहाँ तक कि अगर वह स्वामित्व देने के बाद इसे वापस ले भी ले, तो उसे इसे रद्द करने का अधिकार नहीं होता, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है। उर्दू अनुवाद: क्योंकि उसने तफ़वीज़ (अधिकार सौंपना) के अनुसार कार्य किया है, और जिसे अधिकार सौंपा गया हो उसे स्वामी बना दिया जाता है। और जिसे स्वामी बनाया गया हो वह अपनी इच्छा से कार्य करता है और स्वामी बनाने वाले की इच्छा पर निर्भर नहीं रहता। यहाँ तक कि जब किसी को स्वामी बना दिया गया तो अब स्वामी बनाने वाला इसे वापस लेने का अधिकार नहीं रखता, जैसा कि पहले बताया गया है। (त)

और अगर यह उठकर जाना बिना ज़रूरत के था या तहरीर की ज़रूरत के अलावा किसी और मक़सद के लिए था, या उसने वह तहरीर किसी और से लिखवाई थी, तो इन स्थितियों में वह उस अधिकार के आधार पर नहीं होता बल्कि एक फ़ुज़ूल और अजनबी व्यक्ति का लिखना होता।

[तालिका] अरबी पाठ: क्योंकि वास्तव में जिसे अधिकार सौंपा गया था, वह किसी अजनबी के हस्तक्षेप से अजनबी हो जाता है। और उसे केवल तलाक़ देने का कार्य सौंपा गया था, न कि वकील (एजेंट) नियुक्त करने का कार्य, जैसे तलाक़ का वकील किसी दूसरे को वकील नियुक्त करने या दूसरे के कार्य को मान्य करने की शक्ति नहीं रखता, जैसा कि अल-अनक़रवी ने अल-ख़ानिया से स्पष्ट रूप से उद्धृत किया है। उर्दू अनुवाद: जिसे कोई अधिकार सौंपा जाए, तो किसी अजनबी व्यक्ति के हस्तक्षेप की वजह से वह भी अजनबी हो जाता है। क्योंकि स्वामी ने उसे तलाक़ देने का अधिकार सौंपा है, न कि दूसरे को वकील बनाने का अधिकार सौंपा। जिस तरह तलाक़ का वकील दूसरे को वकील बनाने का पात्र नहीं है और न ही वह दूसरे के कार्य को इसमें मान्य कर सकता है, जैसा कि अनक़रवी ने ख़ानिया से उद्धरण में स्पष्ट किया है। (त)

और वह फ़ुज़ूल व्यक्ति जिसे पति की ओर से आदेश या लिखित अनुमति नहीं है या नहीं रही, अगर वह महिला की तलाक़ लिख कर लाए तो उसका लागू होना पति की अनुमति पर निर्भर रहता है। यदि वह इसकी सामग्री से अवगत होकर इस तहरीर को लागू कर दे, उदाहरण के लिए स्पष्ट रूप से कह

दे कि 'मैंने मान्य किया' या 'अनुमति दी' या 'लागू किया', या कोई ऐसा कार्य करे जो लागू करने का प्रमाण हो, उदाहरण के लिए उस पर अपने हस्ताक्षर कर दे या अपनी ओर से महिला के पास भेज दे या भेजने को कहे, तो वह तहरीर लागू हो जाती है और मानों पति की अपनी तहरीर मानी जाती है, अन्यथा नहीं।

[तालिका] अरबी पाठ: अल-बज़्ज़ाज़िया में, प्राधिकरण के मसलों से कुछ समय पहले, यह कहा गया है: पति के अलावा किसी अन्य ने तलाक़ का पत्र लिखा और उसे पति को सुनाया, इसलिए उसने इसे लिया और इस पर मुहर लगा दी, या एक व्यक्ति से कहा, 'यह पत्र उसे भेज दो,' तो यह उसके स्वयं लिखने के समान है। उर्दू अनुवाद: बज़्ज़ाज़िया में अनुमति के मसलों से थोड़ा पहले है कि पति के अलावा किसी और ने तलाक़नामा लिखा और फिर उसे पति को पढ़कर सुनाया। फिर पति ने उसे लेकर उस पर मोहर लगाई या किसी दूसरे व्यक्ति से कहा कि 'यह तलाक़नामा मेरी पत्नी को जाकर दे दो', तो यह कार्यवाही वैसी ही होगी जैसे पति ने स्वयं [लिखी हो]।

पृष्ठ 566/688

فتاوی رضویہ جلد دوازدھم

بائن پڑگئی، عبدالغفور خاں کا اس تحریر کو پڑھنا سننا کچھ ضرور نہ تھا،

[جدول] فانہ انما عمل بموجب التفویض والمفوض ملك والملك یعمل بمشیة نفسه من دون توقف علی رضا المملك بالكسر حتی لو رجع بعد ماملك لم یملك الرجوع كما تقدم۔ کیونکہ اس نے تفویض کے مطابق عمل کیا ہے، اور جس کو تفویض کیا گیا ہو وہ مالک بنا دیا جاتا ہے اور جس کو مالک بنایا گیا ہو وہ اپنی مرضی سے عمل کرتا ہے اور مالک بنانے والے کی مرضی پر موقوف نہیں رہتا، حتی کہ جب کسی کو مالک بنا دیا تو اب مالک بنانیوالا واپس لینے کا مالک نہیں رہتا، جیسا کہ پہلے گزرا۔ (ت)

اور اگر یہ اٹھ کر جانا بے ضرورت یا ضرورت تحریر سے جدا کسی اور غرض کے لئے تھا یا وہ تحریر اس نے کسی اور سے لکھوائی تو ان صورتوں میں اُس اختیار کی بناء پر نہ ہوا بلکہ ایک فضول واجنبی کا لکھنا تھا،

[جدول] فان المفوض الیه بفصل اجنبی یصیر اجنبیا۔ وھو انما فوض الیه التطلیق دون التوکیل كما ان الوكیل بالطلاق لا یملك ان یوكل غیره او یجیز ما فعل غیره كما نص علیه فی الانقروی من الخانیة۔ جس کو کوئی اختیار سونپا جائے تو اجنبی شخص سے دخل کی وجہ سے وہ بھی اجنبی ہو جاتا ہے کیونکہ مالک نے اس کو طلاق دینے کا اختیار سونپا ہے نہ کہ دوسرے کو وکیل بنانے کا اختیار سونپا، جس طرح وکیل بالطلاق دوسرے کو وکیل بنانے کا مجاز نہیں اور نہ ہی وہ دوسرے کے عمل کے اس میں جائز کرسکتا ہے جیسا کہ انقروی نے خانیہ سے نقل میں اس کی تصریح کی ہے۔ (ت)

اور فضولی شخص جسے شوہر کی طرف سے امر یا اذنِ تحریر نہیں یا نہ رہا وہ اگر عورت کی طلاق لکھ لائے تو اس کا نفاذ اجازتِ شوہر پر موقوف رہتا ہے اگر وہ اس کے مضمون پر مطلع ہو کر اس تحریر کو نافذ کردے مثلاً صراحتہً کہہ دے کہ میں نے جائز کیا یا اجازت دی یا نفاذاً دیا کوئی فعل ایسا کرے جو نافذ کرنے پر دلیل ہو مثلاً اس پر اپنے دستخط کردے یا اپنی طرف سے عورت کے پاس روانہ کرے یا بھیجنے کو کہے تو وہ تحریر نافذ ہو جاتی اور گویا خود شوہر کی تحریر قرار پاتی ہے ورنہ نہیں۔

[جدول] فی البزازیة قبیل مسائل المجازاة کتب غیر الزوج کتاب الطلاق وقرأه علی الزوج فاخذه وختم علیه او قال لرجل ابعث هذا الکتاب الیها فهذا بمنزلة کتابته بزازیہ میں اجازت کے مسائل سے تھوڑا پہلے ہے کہ زوج کے غیر نے طلاق نامہ لکھا اور پھر اس کو خاوند پر پڑھا تو خاوند نے لے کر اس پر مہر لگائی یا دوسرے کسی شخص کو کہا یہ طلاق نامہ میری بیوی کو جا کر دے دو، تو یہ کارروائی ایسے ہی ہوگی جیسے خاوند نے خود

Fatawa Razawiya, Volume 12

[Arabic]: ...by himself, [ended]. Similarly in Al-Khulasa. I say: Perhaps this is the meaning of what is in Al-Hindiyya from Al-Muhit from Al-Muntaqa, and in Radd al-Muhtar from Al-Tatarkhaniyya that every document which he (the husband) did not write with his own hand nor dictate himself, divorce does not occur by it unless he acknowledges that it is his document, [ended]. For acknowledgment can be explicit or by indication. [Urdu]: A divorce deed is written, and it is also mentioned in Al-Khulasa. I say (the author) that in Al-Hindiyya from Al-Muhit and they from Al-Muntaqa, and in Radd al-Muhtar from Al-Tatarkhaniyya, it is mentioned that a divorce deed not written or dictated by the husband himself will not cause divorce unless the husband confirms this writing as his own action. Thus, the meaning of the aforementioned text from Bazzaziya is the same, because just as an acknowledgment can be explicit, it can also be by indication. (T)

And it is evident that for implementation, only being informed of the content is required, and it is not limited to having it read word-for-word. Rather, if you read it yourself, or see it, or someone else reads it out, or provides a summary of the content, the purpose is achieved in every way.

[Arabic]: So the saying in Al-Bazzaziya 'read it to the husband' is not a restriction but an illustration of informing the husband of what is in it, for there is no meaning in implementing what is not known. [Urdu]: So Bazzaziya's statement 'read and recited to the husband' is not a restriction but a way of informing the husband about the content of the divorce deed, because an action from the husband's side without his knowledge is meaningless. (T)

In Al-Ashbah: [Arabic]: It is said in Fath al-Qadir: Its form is that he writes to her in his handwriting, and when the letter reaches her, she brings witnesses and reads it to them and says, 'I have married myself to him,' or she says, 'So-and-so wrote to me proposing, so bear witness that I have married myself to him.' But if she did not say... [Urdu]: It is stated in Fath al-Qadir: Its method is that a man writes a letter to a woman, and someone takes this marriage message and presents it to the woman. The woman should call witnesses, recite the letter to them, and then say, 'I have married myself to so-and-so,' or say, 'So-and-so has written a proposal of

engagement to me, so be witnesses that I have married myself to him.' But if the woman [receives] a marriage proposal...

1. Fatawa Bazzaziya on the margin of Al-Hindiyya, section 'The End of Agency and Metaphor', Noorani Kutub Khana Peshawar, 4/185.
2. Fatawa Hindiyya, Chapter Six on Divorce in Writing, Noorani Kutub Khana Peshawar, 2/185.

फतावा रज़विया, जिल्द 12

[अरबी]: ...स्वयं के द्वारा, [समाप्त]। अल-ख़ुलासा में भी ऐसा ही है। मैं कहता हूँ: शायद यही अर्थ है जो अल-हिन्दिया में अल-मुहीत से अल-मुन्तक़ा के माध्यम से है, और रद अल-मुहतार में अल-ततारखानीया से है कि प्रत्येक दस्तावेज़ जिसे उसने (पति ने) अपने हाथ से नहीं लिखा और न ही स्वयं लिखवाया, उससे तलाक़ नहीं होता जब तक कि वह स्वीकार न कर ले कि यह उसका दस्तावेज़ है, [समाप्त]। क्योंकि स्वीकृति स्पष्ट भी हो सकती है और संकेत के माध्यम से भी। [उर्दू]: तलाक़नामा लिखा हुआ हो, और अल-ख़ुलासा में भी ऐसा ही है। 'क़ुलतु' (मैं कहता हूँ) हिन्दिया में मुहीत से और उन्होंने मुन्तक़ा से और रद अल-मुहतार में ततारख़ानिया से जो ज़िक्र किया कि जो तलाक़नामा पति ने स्वयं न लिखा न लिखवाया तो उससे तलाक़ नहीं होगी जब तक कि पति इस लेखन की पुष्टि न कर दे कि यह मेरी कार्यवाही है। तो बज़ज़िया के उपर्युक्त कथन का अर्थ भी यही है, क्योंकि जिस तरह इक़रार (स्वीकृति) स्पष्ट होती है, वैसे ही दलालतन (संकेत से) भी हो सकती है। (त)

और यह स्पष्ट है कि कार्यान्वयन के लिए केवल विषय-वस्तु से अवगत होना आवश्यक है, और यह इस पर निर्भर नहीं है कि इसे शब्द-दर-शब्द पढ़कर सुनाया जाए। बल्कि यदि आप स्वयं पढ़ लें, या देख लें, या कोई दूसरा पढ़ दे, या उसकी विषय-वस्तु का सारांश बता दे, तो हर तरह से उद्देश्य प्राप्त हो जाता है।

[अरबी]: तो अल-बज़ज़िया का यह कहना कि 'उसे पति पर पढ़ा जाए' कोई शर्त नहीं है बल्कि पति को इसकी सामग्री से अवगत कराने का एक तरीका है, क्योंकि जो बात ज्ञात न हो उस पर अमल करने का कोई मतलब नहीं है। [उर्दू]: तो बज़ज़िया का कथन कि 'पति पर पढ़ा और सुनाया जाए' शर्त नहीं है, बल्कि पति को तलाक़नामा के लेखन से अवगत कराने का एक रूप है, क्योंकि पति की जानकारी के बिना उसकी ओर से कार्यवाही अर्थहीन है। (त)

अल-अश्बाह में है: [अरबी]: फ़तह अल-क़दीर में कहा गया है: इसका तरीका यह है कि वह अपनी लिखावट में उसे (स्त्री को) पत्र लिखे, और जब पत्र उसके पास पहुँचे, तो वह गवाहों को बुलाए और उनके सामने उसे पढ़कर सुनाए और कहे, 'मैंने स्वयं को उससे विवाह में दे दिया है,' या वह कहे, 'अमुक ने मुझे निकाह का संदेश लिखा है, अतः गवाह बन जाओ कि मैंने उससे निकाह कर लिया है।' लेकिन यदि उसने नहीं कहा... [उर्दू]: फ़तह अल-क़दीर में फ़रमाया: इसकी सूरत यह है कि पुरुष स्त्री को पत्र लिखे और इस निकाह के संदेश को कोई ले जाकर स्त्री को पेश करे, स्त्री गवाहों

को हाज़िर करके उन्हें पत्र सुनाए और फिर यूँ कहे कि 'मैंने अमुक से अपना निकाह किया,' या यूँ कहे कि 'अमुक ने मुझे मंगनी का संदेश लिखा है तो तुम गवाह बन जाओ कि मैंने अपना निकाह उससे कर दिया है।' लेकिन अगर औरत निकाह का संदेश...

1. फतावा बज़ज़िया, हिन्दिया के हाशिये पर, 'एजेंसी और रूपक का अंत' खंड, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 4/185।
2. फतावा हिन्दिया, लिखित तलाक पर छठा अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 2/185।

فتاوٰی رضویہ ، جلد دو ازدہم

[Arabic]: بنفسه اھ، ومثله فی الخلاصة قلت ولعل هذا هو محمل مافی الهندیة عن المحیط عن المنتقی وفی ردالمحتار عن التاترخانیة ان کل کتاب لم یکتبه بخطه ولم یمله بنفسه لا یقع الطلاق به اذالم یقرانه کتابه اھ فان الاقرار کما یکون صریحا فکذالك دلالة۔ [Urdu]: طلاق نامہ لکھا ہوا ہو، اور خلاصہ میں بھی ایسا ہے قلت (میں کہتا ہوں) ہندیہ میں محیط سے اور انہوں نے منتقٰی سے اور ردالمحتار میں تاتارخانیہ سے جو ذکر کیا کہ جو طلاق نامہ خاوند نے خود نہ لکھا نہ لکھوایا تو اس سے طلاق نہ ہوگی تا وقتیکہ خاوند اس تحریر کی تصدیق نہ کردے کہ یہ میری کارروائی ہے، تو بزازیہ کی مذکورہ عبارت کا محمل بھی یہی ہے کیونکہ جس طرح اقرار صراحتاً ہوتا ہے یونہی دلالۃً بھی ہوسکتا ہے (ت)

اور پُرظاہر کہ تنفیذ کے لئے صرف مضمون پر مطلع ہونا درکار ہے اور وہ اس میں منحصر نہیں کہ حرف بحرف اسے پڑھوا کر سنے بلکہ آپ پڑھ لے یا دیکھ لے یا دوسرا پڑھ دے یا اس کا خلاصہ مضمون بتادے ہر طرح حاصل ہے۔

[Arabic]: فقول البزازیة قرأه علی الزوج غیر قید بل تصویر لا طلاع الزوج علی مافیه فانه لا معنی لتنفیذ ما لا یدری۔ [Urdu]: تو بزازیہ کا قول کہ "خاوند پر پڑھے اور سنائے" قید نہیں ہے بلکہ خاوند کو طلاق نامہ کی تحریر پر اطلاع کی ایک صورت ہے کیونکہ خاوند کے علم کے بغیر اس کی طرف سے کارروائی بے معنی ہے (ت)

اشباہ میں ہے: [Arabic]: قال فی فتح القدیر وصورته ان یکتب الیها بخطها فاذا بلغها الکتاب احضرت الشهود وقرأته علیهم وقالت زوجت نفسی منه، او تقول ان فلانا کتب الی یخطبنی فاشهدوا انی

قد زوجت نفسی منه، اما لولم تقل [Urdu]: فتح القدیر میں فرمایا: اس کی صورت یہ ہے کہ مرد عورت کو خط لکھے اور اس نکاح کے پیغام کو کوئی لے جاکر عورت کو پیش کرے، عورت گواہوں کو حاضر کر کے انہیں خط سنائے اور پھر یوں کہے کہ میں نے فلاں سے اپنا نکاح کیا، یا یوں کہے کہ فلاں نے مجھے منگنی کا پیغام لکھا ہے تو تم گواہ بن جاؤ کہ میں نے اپنا نکاح اس سے کر دیا ہے۔ لیکن اگر عورت نکاح کا پیغام

1 فتاویٰ بزازیہ علی ہامش ہندیہ نوع آخر التوکیل والکنایۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۴ / ۱۸۵ 2 فتاویٰ ہندیہ الفصل السادس في الطلاق بالکتابۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۲ / ۱۸۵

Fatawa Razawiyya, Volume 12

[Boxed Text] Arabic Quote: "In their presence, if one only says 'I have married myself to so-and-so', the marriage is not concluded. This is because hearing both parts [proposal and acceptance] is a condition. By letting them hear the written text or expressing it, they have heard both parts, as opposed to when these are absent." Urdu Translation of Quote: Without reciting it, if one simply says to the witnesses present in the gathering, 'I have married myself to so-and-so,' the marriage will not be valid. This is because it is necessary for the witnesses to hear both the proposal (Ijab) and the acceptance (Qabul) in a single gathering. So, if a woman reads out the engagement letter to the witnesses or mentions the proposal from so-and-so and then mentions her own acceptance, both pillars of marriage have been heard by the witnesses in one gathering. Conversely, if this is absent, the marriage will not be valid. (T)

And undoubtedly, the general rule is that if a person brings a document and asks another to sign or seal it, if they do not read it word for word, they must at least state the gist of the content. Or if they don't, the person sealing it will ask what is written in it. So, if this happened and Abdul Ghafoor Khan sealed it after being informed of its content, then from the moment of sealing, a divorce occurred upon Shahid-un-Nisa. And perhaps it happened contrary to this, and the document was sealed without knowing the content, then divorce certainly did not occur. In short, if this latter situation occurred, then Shahid-un-Nisa remains in the marriage of Abdul Ghafoor Khan as before. If those first two situations occurred, then divorce occurred in one case upon writing by the son and in the other case at the time of sealing. In any case, it did not exceed one divorce. If he had never given two divorces before this, he can remarry her without hesitation; there is no need for Halala. This is all that appeared to the weak servant [the author], while the knowledge of truth is with the All-Knowing, the Subtle. (This is all that was revealed to this weak servant (the author), while the knowledge of the reality lies with the All-Knowing and All-Aware one. T) And Allah Almighty knows best.

Issue 273: From Mangrol Bandar, Kathiawar, Tai Bari, sent by Fateh Muhammad bin Noor Muhammad Jamadar, 24th Rabi' al-Awwal 1336 AH. Respected Master, may Allah protect you. From Mangrol Bandar, your humble servant Fateh Muhammad son of Noor Muhammad Jamadar sends utmost respect and salutations. Let it be clear that because my wife refused to stop arguing with a neighbor, in anger I wrote a 'divorce release' (Talaq Farighati) and sent it to her mother. Later I regretted it very

much. There is also a small child of one year old with us. Since then, both are in great distress.

---

1 Al-Ashbah wal-Nazair, Ahkam al-Kitabah, Idarat al-Qur'an Karachi 2/196-597

फतावी रज़विया, जिल्द बारहवीं

[बॉक्स में दिया गया पाठ] अरबी उद्धरण: "गवाहों की मौजूदगी में उन्हें सुनाए बिना सिर्फ यह कहना कि 'मैंने अपना निकाह फलां से कर लिया है' तो निकाह नहीं होगा, क्योंकि गवाहों का ईजाब और कुबूल दोनों बातों को एक ही महफ़िल में सुनना ज़रूरी है..." उर्दू अनुवाद: बिना सुनाए, महफ़िल में मौजूद गवाहों को सिर्फ यह कहना कि 'मैंने अपना निकाह फलां से कर दिया है' तो निकाह नहीं होगा, क्योंकि गवाहों के लिए ईजाब (प्रस्ताव) और कुबूल (स्वीकृति) दोनों बातों को एक ही महफ़िल में सुनना ज़रूरी है। अत; यदि औरत गवाहों को मंगनी का खत सुना दे या फलां की तरफ से मंगनी का ज़िक्र करे और फिर अपनी तरफ से कुबूलियत का ज़िक्र करे, तो निकाह के दोनों अरकान (स्तंभ) गवाहों ने एक ही महफ़िल में सुन लिए। इसके विपरीत यदि यह चीज़ न हो तो निकाह नहीं होगा। (त)

और निःसंदेह सामान्य नियम यही है कि जो व्यक्ति कोई काग़ज़ लाए और दूसरे से उस पर हस्ताक्षर या मुहर लगवाए, तो यदि वह शब्द-दर-शब्द पढ़कर नहीं सुनाएगा, तो विषय का सार ज़रूर बताएगा, या यदि वह न बताए तो मुहर लगाने वाला पूछ लेगा कि इसमें क्या लिखा है। तो यदि ऐसा ही हुआ और अब्दुल गफूर खां इसके विषय से अवगत होकर मुहर की, तो मुहर लगाने के समय से शाहिद-उन-निसा पर तलाक हो गई। और शायद इसके विपरीत हुआ हो और बिना जानकारी के विषय पर मुहर कर दी हो, तो निश्चित रूप से तलाक नहीं हुई। संक्षेप में, यदि यह बाद वाली स्थिति हुई है, तो शाहिद-उन-निसा पहले की तरह अब्दुल गफूर खां के निकाह में है। और यदि वे पहली दो स्थितियां हुईं, तो एक स्थिति में बेटे के लिखने पर और दूसरी स्थिति में मुहर लगाने के समय तलाक हुई। बहरहाल, एक तलाक से अधिक नहीं हुई, यदि उसने इससे पहले कभी दो तलाकें नहीं दी थीं, तो वह बिना किसी संकोच के उससे निकाह कर सकता है, हलाला की कोई आवश्यकता नहीं है। यह सब वह है जो इस कमज़ोर बंदे (लेखक) पर ज़ाहिर हुआ, जबकि सच्चाई का ज्ञान सर्वज्ञ और सूक्ष्मदर्शी के पास है। (त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला २७३: मांगरोल बंदर, काठियावाड़, ताई बाड़ी से, प्रेषक फतेह मोहम्मद बिन नूर मोहम्मद जमादार, २४ रबी-उल-अव्वल १३३६ हिजरी। आदरणीय मौलाना साहब, अल्लाह आपको सलामत रखे। मांगरोल बंदर की ओर से विनीत फतेह मोहम्मद पुत्र नूर मोहम्मद जमादार की ओर से अत्यंत आदर और सलाम। निवेदन है कि मैंने अपनी पत्नी को पड़ोसी के साथ झगड़ा करने से मना करने पर, उसके न मानने के कारण गुस्से में तलाकनामा (तलाक-ए-फारिगती) लिखकर उसकी माँ के पास

भेज दिया। बाद में मुझे बहुत पछतावा हुआ। हमारे साथ एक साल का छोटा बच्चा भी है। इसके बाद हम दोनों बहुत परेशान और बेचैन हैं।

---

१ अल-अश्बाह वल-नज़ायर, अहकाम अल-किताबह, इदारत अल-क़ुरआन कराची २/१९६-५९७

पृष्ठ ५६८/६८८

فتاوی رضویہ، جلد دو ازدہم

[باکس میں متن] بحضرتھم سوی زوجت نفسي من فلان لاینعقد لان سماع الشطرین شرط باسماعھم الکتاب او التعبیر عنه منھما قد سمعوا الشطرین بخلاف ما اذا انتفیا۔ سنائے بغیر مجلس میں موجود گواہوں کو صرف یہ کہے کہ میں نے اپنا نکاح فلاں سے کر دیا ہے تو نکاح نہ ہوگا کیونکہ گواہوں کا ایجاب اور قبول دونوں باتوں کو ایک مجلس میں سننا ضروری ہے، تو عورت کا گواہوں کو منگنی کا خط سنانا یا منگنی کو فلاں کی طرف سے ذکر کرنا اور پھر اپنی طرف سے قبولیت کو ذکر کرنے سے نکاح کے دونوں رکن گواہوں نے ایک مجلس میں سُن لئے، اس کے برخلاف اگر یہ چیز منتفی ہو تو نکاح نہ ہوگا۔ (ت)

اور بلاشبہ قاعدہ عامہ یہی ہے کہ جو شخص کوئی کاغذ لائے اور دوسرے سے اس پر دستخط یا مہر کرائے تو اگر وہ حرف بحرف پڑھ کر نہ سنائے گا تو حاصلِ مضمون ضرور بتائے گا یا وہ نہ بتائے تو یہ مہر کرنے والا پوچھ لے گا کہ اس میں کیا لکھا ہے پس اگر ایسا ہی ہوا اور عبدالغفور خاں نے اس کے مضمون پر مطلع ہو کر مہر کی تو اب وقتِ مہر سے شاہد النساء پر طلاق پڑگئی اور شاید اس کے خلاف ہی واقع ہوا اور بے اطلاع مضمون مہر کر دی تو البتہ طلاق نہ ہوئی، بالجملہ اگر یہ پچھلی صورت واقع ہے جب تو شاہد النساء بدستور نکاح نکاح عبدالغفور خاں میں ہے اور اگر وہ پہلی دو صورتیں واقع ہوئیں تو ایک صورت پر تحریرِ پسر اور دوسری صورت پر مہر کرنے کے وقت طلاق پڑی بہر حال ایک طلاق سے زائد نہ ہوئی اگر اس سے پہلے کبھی دو طلاقیں نہ دے چکا تھا تو بے تکلف اس سے نکاح کر سکتا ہے حلالہ کی کچھ حاجت نہیں، ھٰذا کلہ ماظھر للعبد الضعیف والعلم بالحق عند الخبیر اللطیف (یہ تمام وہ ہے جو اس عبد ضعیف (مصنف) پر ظاہر ہوا، جبکہ حقیقت کا علم علیم خبیر کے پاس ہے۔ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۷۳: از مانگرول بندر کاٹھیا واڑ تائی باڑی مرسلہ فتح محمد بن نور محمد جمعدار ۲۴ ربیع الاول ۱۳۳۶ھ حضرت قبلہ گاہ مولانا صاحب سلمہم اللہ تعالیٰ از جانب مانگرول بندر فدوی خاکسار فتح محمد ابن نور محمد جمعدار کے ازحد آداب و تسلیمات کے واضح ہو کہ میں نے میری عورت کو پڑوسی کے ساتھ تکرار کرنے میں منع کرنے سے نہ ماننے کے سبب غصہ میں طلاق فارغتی لکھ کے اس کی والدہ کے اس کو فارغتی بھیج دی، پھر بہت پچھتایا، ایک اور بچہ بھی صغیر برس روز کا ساتھ ہے اس کے بعد دونوں کو تڑپ بے حد ہے۔

---

۱ الاشباہ والنظائر احکام الکتابۃ ادارۃ القرآن کراچی ۲ / ۱۹۶-۵۹۷

They are crying day and night, and he has written a "faraghti" (release/divorce paper) but has said nothing with his mouth. Finally, seeing her crying and because my child is small, we thought of bringing her back home. Among the scholars here, when Maulana Ahmad was consulted, he says it is not correct without Halala, and Maulana Mahmood has passed away. Now, whatever ruling you give in this matter will be followed.

Question: What do the scholars of the religion and the muftis of the firm Shariah say regarding this issue: a man, due to some dispute and in a state of anger, after his wife went to her parents' house, wrote vaguely on a piece of paper without mentioning a number using the word 'divorce' as follows: "I give a divorce and provide a faraghti (release paper)". Please provide an answer with reference to books.

The Answer: In the described situation, two divorces have occurred. There is no need for Halala. If the 'iddat' (waiting period) has passed after this divorce, i.e., three menstrual cycles have begun and ended, then he can remarry her with the woman's consent. If the iddat remains, then there are two possibilities: if giving 'faraghti' is understood as explicit words of divorce in the local idiom there—as it is among some people here, where saying it in relation to a woman is understood as divorce—then two 'raj'i' (revocable) divorces have occurred, and he can take her back within the iddat. For example, if he says verbally "I have taken you back into my marriage", she will remain his wife as before, provided he had never given her a single divorce before this. Otherwise, indeed, they have now become three, and it is not permissible without Halala. And if this word is not considered explicit there, then two 'ba'in' (irreversible) divorces have occurred; the woman is out of the marriage, but he can remarry her with her consent, whether the iddat has passed or not, on the same condition that no divorce was given before this. All this is in the case that by 'faragh khatti' (release note) he did not mean that paper specifically. And if the intention was that "after giving divorce I am sending this as its proof", then in this case, there will be only one revocable divorce, such that he can take her back within the iddat if he has never given two divorces before. Allah Almighty knows best.

Problem 274: From the office of Madrasa Rahmania Pilibhit, sent by Maulana Fazl-ul-Haq Sahib, 18 Shawwal 1338 AH.

What do the scholars of religion say regarding this issue: A tense conversation was taking place between Zaid and his in-laws. In the meantime, the matter of leaving Hindah, who was Zaid's wife, was brought up, and Zaid was told to leave her due to these daily quarrels. Zaid said, "You want to have her leave tomorrow, I'm leaving her now." He repeated this last sentence three times or more. Has a divorce occurred on Hindah or not, and what kind of divorce has occurred? Provide reference from books.

वे दिन-रात रो रहे हैं और फ़ारग़ती (तलाकनामा) लिखकर दे दिया है लेकिन ज़ुबान से कुछ नहीं कहा है। अंत में उसके रोने और मेरे बच्चे के छोटा होने की वजह से उसे फिर घर लाने का विचार किया है। यहाँ के आलिमों में मौलवी अहमद से पूछा तो वे कहते हैं कि बिना हलाला के यह मुमकिन नहीं है, और मौलवी महमूद का देहांत हो गया है। अब आप इसमें जो हुक्म फरमाएंगे, वैसा ही किया जाएगा।

सवाल: दीन के आलिम और शरीयत के मुफ़्ती इस मसले में क्या कहते हैं कि एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी को किसी विवाद के कारण गुस्से की हालत में उसके मायके जाने के बाद एक कागज़ पर बिना संख्या बताए तलाक के शब्द अस्पष्ट रूप से इस तरह लिखे: "तलाक देकर फ़ारग़ती देता हूँ।" कृपया किताबों के हवाले के साथ जवाब इनायत फरमाएँ।

जवाब: पूछी गई स्थिति में दो तलाक हो गई हैं। हलाला की कोई आवश्यकता नहीं है। यदि इस तलाक के बाद इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) बीत चुकी है, यानी तीन मासिक धर्म शुरू होकर खत्म हो गए हैं, तो वह महिला की सहमति से उसके साथ दोबारा निकाह कर सकता है। और अगर इद्दत अभी बाकी है तो दो स्थितियाँ हैं: अगर वहाँ के मुहावरे में 'फ़ारग़ती' देना तलाक के स्पष्ट शब्दों (तलाक-ए-सरीह) में समझा जाता है—जैसा कि यहाँ की कुछ जातियों में है कि औरत के संबंध में इसे कहने का अर्थ तलाक ही समझा जाता है—तो दो 'तलाक-ए-रजई' (वापस लेने योग्य तलाक) हुईं कि वह इद्दत के अंदर उसे वापस ले सकता है। उदाहरण के लिए, ज़ुबान से इतना कह दे कि "मैंने तुझे अपने निकाह में वापस ले लिया," तो वह पहले की तरह उसकी पत्नी रहेगी, बशर्ते कि इससे पहले कभी उसने एक तलाक न दी हो। वरना बेशक अब तीन हो गईं और अब बिना हलाला के निकाह जायज़ नहीं है। और अगर यह शब्द वहाँ स्पष्ट नहीं समझा जाता, तो दो 'तलाक-ए-बाइन' (अपरिवर्तनीय तलाक) हुईं; औरत निकाह से बाहर हो गई लेकिन उसकी मर्जी के साथ दोबारा उससे निकाह कर सकता है, चाहे इद्दत बीत गई हो या नहीं, इसी शर्त पर कि इससे पहले कोई तलाक न दी हो। यह सब उस स्थिति में है जब फ़ारग़ खत्ती (छुटकारा पत्र) से उसका आशय वह कागज़ न रहा हो। और अगर यह उद्देश्य है कि "तलाक देकर मैं यह उसकी सनद (प्रमाण) भेजता हूँ," तो इस स्थिति में एक ही तलाक-ए-रजई होगी कि वह इद्दत के अंदर उसे वापस ले सकता है, बशर्ते कि पहले कभी दो तलाक न दी हों। अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 274: मदरसा रहमानिया पीलीभीत के दफ्तर से, प्रेषक मौलवी फ़ज़्ल-उल-हक़ साहब, 18 शव्वाल 1338 हिजरी।

दीन के आलिम इस मसले में क्या फरमाते हैं कि ज़ैद और उसके ससुराल वालों के बीच अनबन के साथ बातचीत हो रही थी। इसी बीच हिन्दा, जो ज़ैद की पत्नी थी, को छोड़ने की बात छिड़ गई और ज़ैद से कहा गया कि इन रोज़-रोज़ के झगड़ों से पीछा छुड़ाओ (उसे छोड़ दो)। ज़ैद ने कहा, "तुम कल छुड़ाती हो, मैं अभी छोड़ता हूँ।" इस अंतिम वाक्य को तीन बार या उससे अधिक दोहराया गया। क्या हिन्दा पर तलाक हुई या नहीं और किस प्रकार की तलाक हुई? किताबों के हवाले के साथ।

وہ رات روز رو رہے ہیں اور فارغتی لکھ کردی ہے اور منہ سے کچھ بھی نہیں کہا ہے، آخر اس کے رونے پر اور میرا بچہ چھوٹا سا تھ ہونے پر پھر گھر میں لانے کا خیال کیا ہے ہمارے یہاں کے عالموں میں مولوی احمد سے دریافت کیا تو فرماتے ہیں کہ سوا حلالہ کے درست نہیں ہو سکتی اور مولوی محمود انتقال کر گئے اب آپ اس میں جو حکم فرمائیں سو کیا جائے گا۔

سوال: کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک مرد نے اپنی زوجہ کو باعث کسی منازعت کے حالت غصہ میں اس کے والدین کے گھر جانے کے بعد ایک ورقہ میں مبہم بلا عدد لفظ طلاق کے یوں لکھا کہ طلاق دے کر فارغتی دیتا ہوں، جواب بحوالہ کتب مرحمت فرمائیں۔

الجواب: صورت مستفسرہ میں دو طلاقیں ہو گئیں، حلالہ کی کوئی حاجت نہیں، اگر اس طلاق کے بعد عدت گزر گئی ہے یعنی تین حیض شروع ہو کر ختم ہوگئے جب تو عورت کی رضامندی سے اس کے ساتھ نکاح کرلے اور اگر عدت باقی تو دو صورتیں ہیں اگر فارغتی دینا وہاں کے محاورہ میں طلاق کے الفاظ صریحہ سے سمجھا جاتا ہے جیسا کہ یہاں کی بعض اقوام میں ہے کہ عورت کی نسبت اس کے کہنے سے طلاق ہی مفہوم ہوتی ہے جب تو دو طلاقیں رجعی ہوئیں کہ عدت کے اندر رجعت کر سکتا ہے مثلاً زبان سے اتنا کہہ دے کہ میں نے تجھے اپنے نکاح میں پھیر لیا وہ بدستور اس کی زوجہ رہے گی بشرطیکہ اس سے پہلے کبھی ایک طلاق نہ دے چکا ہو ورنہ بیشک اب تین ہو گئیں اور اب بے حلالہ جائز نہیں، اور اگر یہ لفظ وہاں صریح نہیں سمجھا جاتا تو دو طلاقیں بائن ہوئیں، عورت نکاح سے نکل گئی مگر اس کی رضا کے ساتھ دوبارہ اس سے نکاح

کر سکتا ہے خواہ عدت گزری ہو یا نہیں اسی شرط پر کہ اس سے پہلے کوئی طلاق نہ دی ہو یہ سب اس صورت میں کہ فارغ خطی سے اس نے وہ کاغذ مراد نہ رکھا ہو اور اگر یہ مقصود ہے کہ طلاق دے کر یہ اس کی سند بھیجتا ہوں تو اس صورت میں ایک ہی طلاق رجعی ہوگی کہ عدت کے اندر رجعت کر سکتا ہے جب کہ پہلے کبھی دو طلاقیں نہ دے چکا ہو۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۷۴: از دفتر مدرسہ رحمانیہ پیلی بھیت مرسلہ مولوی فضل حق صاحب ۱۸ شوال ۱۳۳۸ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید اور اس کے سسرالیوں میں رنجش کے ساتھ گفتگو ہو رہی تھی اس درمیان میں ہندہ جو زوجہ زید تھی اس کے چھوڑ دینے کی بات چھڑ گئی اور زید سے کہا گیا کہ اس روز روز کے جھگڑے سے چھوڑ دو، زید نے کہا تم کل چھڑاتی ہو میں ابھی چھوڑتا ہوں۔ اس اخیر جملہ کی تین بار یا اس سے زیادہ تکرار کی ہندہ پر طلاق ہوئی یا نہیں اور کس قسم کی طلاق پڑی؟ بحوالہ کتب سے

Volume 12 Fatawa Razawiyya

I am hopeful for an immediate answer to the text.

Answer: Three irrevocable divorces have taken place. Apart from the clarifications in Muheet, Zakhira, Khulasa, and Hindiyya, this issue is evident to a person of knowledge, so they would not ask for a reference and text on it. And for an ignorant person to ask for a reference along with the text is bad manners. And Allah knows best.

Question 275: From Pilibhit, Mohalla Abdul Latif Khan, questioned by Pyare, 19 Dhu al-Hijjah 1338 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: if a fight breaks out between a father-in-law and a son-in-law and the son-in-law says, "If you would have had me leave her tomorrow, I leave her today," does divorce occur upon saying these words or not?

Answer: A revocable divorce (Talaq Raj'i) has occurred. And Allah knows best.

Question 276: From the city of Kanpur, AB Road, shop of Mr. Hafiz Pir Bakhsh Sahib Merchant, questioned by Wali Muhammad Sahib, 7 Jumada al-Akhirah. What do the scholars of religion say regarding this matter: when Zaid went to his in-laws' house to bring his wife home, his mother-in-law said, "We will not let the girl go; rather, we want to end the matter." Upon this, Zaid said to his mother-in-law, "I know that my coming here was very unpleasant for you people." Then the mother-in-law said some words that meant Zaid should divorce his wife. Zaid became very enraged and said, "If I am not liked, then get her married to someone else." In response to this, the mother-in-law said, "Yes, you are not liked." In such a situation, will Zaid's wife be divorced or not? Clarify and be rewarded.

Answer: If the intention was divorce, then one irrevocable divorce (Talaq Ba'in) has occurred. And if he says under oath that his intention was not divorce, it will be accepted and the ruling of the occurrence of divorce will not be given. It is stated in Alamgiri from 'Inaya: "If he says 'Marry [someone else]' and intended divorce or three [divorces], it is valid. And if he did not intend anything, it does not occur."[1] If a husband says to his wife "Go get married," and he had the intention of one or three divorces, then accordingly one or three divorces will be valid. And if he had no intention, then it will not occur. (T)

[1] Fatawa Hindiyya, Chapter 5 on Metaphors (Al-Kinayat), Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/376.

जिल्द 12 फ़तावा रज़विया

मैं उत्तर के इबारत के लिए जल्द ही आशान्वित हूँ।

उत्तर: तीन मग़ल्लज़ा (अत्यंत सख्त) तलाकें हो गई हैं। मुहीत, जख़ीरा, खुलासा और हिन्दिया के स्पष्टीकरणों के अलाला, एक ऱिद्वान व्यक्ति के लिए यह मसला स्पष्ट है, इसलिए वह इस पर संदर्भ और पाठ की मांग नहीं करेगा। और एक अज्ञानी व्यक्ति के लिए संदर्भ सहित पाठ की मांग करना अशिष्टता (बभ-अदबी) हैं। और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला 275: पीलीभीत, मोहल्ला अब्दुल लतीफ़ खान से, मुस्तौला (पूछने वाले) प्यारे, 19 ज़िल हिज्जा 1338 हिजरी। दीन के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ससुर और दामाद के बीच झगड़ा होने पर दामाद कहे कि "अगर तुम कल छुड़वाते हो तो मैं आज ही छोड़ता हूँ," इन शब्दों के कहने पर तलाक हुई या नहीं?

उत्तर: तलाक-ए-रजई (प्रतिसंहरणीय तलाक) हो गई। और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला 276: कानपुर शहर, ए.बी. रोड, जनाब हाफ़िग़ पीर बख्श साहब व्यापारी की दुकान से, मुस्तौला वली मोहम्मद साहब, 7 जमादि-उल-उखरा। दीन के विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद अपनी पत्नी को विदा कराने के लिए जब अपनी ससुराल गया, तो उसकी सास ने कहा कि हम लड़की को विदा नहीं करेंगे, बल्कि हम किस्सा खत्म करना चाहते हैं। इस पर ज़ैद ने अपनी सास से कहा कि मैं जानता हूँ कि मेरा आना आप लोगों को बहूत बुरा लगा। फिर सास ने कुछ एसे शब्द कहे जिनका अर्थ यह था कि ज़ैद अपनी पत्नी को तलाक दे दे। इस पर ज़ैद बहुत क्रोधित हुआ और कहा कि अगर मैं पसंद नहीं हूँ तो दूसरे से निकाह कर दो। इसके जाब में सास ने कहा, हाँ पसंद नहीं हो। क्या एसी स्थितल में ज़ैद की पत्नी को तलाक हो जाएगी या नहीं? बयान फ़रमाएं और सवाब पायें।

उत्तर: अगर तलाक की नियत थी तो एक तलाक-ए-बाइन (अप्रतिसंहरणीय तलाक) हो गई, और अगर वह कसम खाकर कहे कि मेरी नियत तलाक की नहीं थी, तो स्वीकार करेंगे और तलाक होने का हुक्म नहीं देंगे। आलमगीरी में 'इनाया' से उद्धृत है: "अगर उसने कहा 'निकाह कर ले' और तलाक या तीन की नियत की, तो सही है। और अगर कुछ नियत नहीं की, तो (तलाक) नहीं होगी।"[1] अगर पति अपनी पत्नी से कहे कि तू निकाह कर ले, और उसने एक या तीन तलाक की नियत की हो, तो नियत के अनुसार एक या तीन तलाकें सही होंगी और अगर कुछ नियत नहीं की तो तलाक नहीं होगी। (त)

[1] फ़तावा हिन्दिया, बाब 5 किनायात (इशारों में बात) पर, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 1/376।

جلددو از دہم فتاویٰ رضویہ

عبارت جواب کا جلد اُمید وار ہونے۔ الجواب: تین طلاقیں مغلظہ ہو گئیں محیط و ذخیرہ و خلاصہ و ہندیہ کی تصریحات کے علاوہ ذی علم پر یہ مسئلہ بدیہیات سے ہے تو وہ اس پر حوالہ و عبارت طلب نہ کرے گا اور جاہل کا حوالہ وہ بھی مع عبارت طلب کرنا سوءِ ادب ہے۔ واللہ تعالیٰ اعلمے۔ مسئلہ ۲۷۵: از پیلی بھیت محلہ عبداللطیف خاں مسئولہ پیارے ۱۹ ذی الحجہ ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ خُسر اور داماد میں لڑائی ہونے پر داماد کہے کہ اگر تم کل چھوڑواتے ہو تو میں آج ہی چھوڑتا ہوں اس لفظ کے کہنا پر طلاق ہوئی یا نہیں؟ الجواب: طلاق رجعی ہو گئی۔ واللہ تعالیٰ اعلمے۔ مسئلہ ۲۷۶: از شہر کانپور اے بی روڈ دکان جناب حافظ پیر بخش صاحب سوداگر مسئولہ ولی محمد صاحب ۷ جمادی الاخریے کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید اپنی زوجہ کو رخصت کرانے کے لئے جب اپنے سسرال گیا تو اس کی خوشدامن نے کہا کہ ہم لڑکی کو رخصت نہیں کریں گے بلکہ ہم قصہ ختم کرنا چاہتے ہیں اس پر زید نے اپنی خوشدامن سے کہا کہ میں جانتا ہوں کہ میرا آنا آپ لوگوں کو بہت ناگوار ہوا پھر خوشدامن نے کچھ ایسے الفاظ کہے جس سے اس کا منشاء یہ تھا کہ زید اپنی زوجہ کو طلاق دے دے اس پر زید نہایت برہم ہوا اور کہا کہ اگر میں پسند نہیں ہوں تو دوسرے سے نکاح کر دو اس کے جواب میں خوشدامن نے کہا ہاں تو پسند نہیں ہے آیا ایسی صورت میں زید کی زوجہ کو طلاق ہو جائے گی یا نہیں؟ بینوا توجروا۔ الجواب: اگر یہ نیت طلاق تھا ایک طلاق بائن گئی اور اگر بقسم کہے کہ میری نیت طلاق کی نہ تھی قبول کرینگے اور وقوع طلاق کا حکم نہ دیں گے۔ عالمگیریہ میں عنایہ سے ہے: لو قال تزوجی ونوی الطلاق او الثلاث صح وان لم ینو شیئا لم یقع۔[1]

اگر خاوند بیوی کو کہے کہ تو نکاح کر لے طلاق کی نیت یا تین طلاقوں کی نیت کی ہو نیت کے مطابق ایک یا تین طلاقیں صحیح ہوں گی اور اگر کچھ نیت نہ کی تو واقع نہ ہو گی (ت)

[1] فتاوٰی ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱ ۳۷۶

Fatawa Rizvia - Volume 12

In Rad-ul-Muhtar, from the commentary of Jame Saghir by Imam Qazi Khan, it is stated:

| Arabic: If he said, 'Go and marry,' and said, 'I did not intend divorce,' then nothing occurs because its meaning is: 'If it is possible for you.' And Allah Almighty knows best. | Urdu: If there was no intention, divorce will not occur because the purpose of saying it would be: 'Marry if it is possible for you' (whereas it is not possible without divorce, so divorce will not occur). And Allah Almighty knows best. (T) |

Problem 777: From Village Nan-Tu, Post Office Akbarabad, District Aligarh. Petitioner: Muhammad Tahseen Ali Sahib, 1st Rajab-ul-Murajab 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid accused his wife of misconduct and adultery and said to her, "I have left you, you are of no use to me," but Zaid now says, "I absolutely did not give a divorce." In this situation, has the wife of Zaid exited his marriage by the utterance of these words or not?

The Answer: If this statement is factual, then two 'Talaq-e-Bain' (irrevocable divorces) have occurred; the woman has exited the marriage. If he had never given her any divorce before, he can remarry her with a new dower (Mahr) with her consent. If he gives one more divorce later, there will be three, and he will not be able to remarry without 'Halala'. And if the woman is not willing to remarry him at this time, he cannot force her. And if he had already given her one divorce previously, then these have made three divorces; he cannot remarry without 'Halala'.

| Arabic: And that is because the first phrase is explicit (Sareeh) and the second is metaphorical (Kinaya) which could mean scolding. And the state of affairs has already become a discussion of divorce due to the first phrase, so the metaphorical one becomes 'Bain' through it. Thus, the first is also made 'Bain'. And Allah Almighty knows best. | Urdu: This is because the first word is explicit in divorce, and the second is metaphorical which has the possibility of being a scold, whereas due to the first word, it became a state of discussing divorce. So, because of this context, the metaphorical word will also be considered an irrevocable divorce (Talaq-e-Bain), due to which the explicit divorce will also fall under the ruling of 'Bain'. And Allah Almighty knows best. (T) |

Problem 778: From Pilibhit, Mohalla Pakriya. Petitioner: Bashir Ahmed Sahib, 15th Rajab 1339 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid,

whose academic qualification in Arabic knowledge is near completion (Dastar-bandi), said these words to his wife several times in a state of sound mind: "I happily give you permission that wherever your..."

1. Rad-ul-Muhtar, Chapter of Kinayat, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/474.

फ़तावा रज़विया - जिल्द बारहवीं

रद-उल-मुह्तार में इमाम क़ाज़ी ख़ां की शरह़ जामे सगी़र से है:

| अरबी: यदि उसने कहा, 'जाओ और निकाह कर लो,' और कहा, 'मेरा इरादा तलाक़ का नहीं था,' तो कुछ भी नहीं होगा क्योंकि इसका अर्थ है: 'यदि तुम्हारे लिए संभव हो।' और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। | उर्दू: यदि कोई इरादा नहीं किया गया था, तो तलाक़ नहीं होगी क्योंकि इसे कहने का उद्देश्य यह होगा: 'यदि तुम्हारे लिए संभव हो तो निकाह कर लो' (जबकि तलाक़ के बिना संभव नहीं है, तो तलाक़ नहीं होगी)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त) |

मसला 777: ग्राम नान-तू, डाकखाना अकबराबाद, ज़िला अलीगढ़। प्रार्थी: मुहम्मद तहसीन अली साहब, 1 रजब-उल-मुरज्जब 1339 हिजरी। धार्मिक विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं: ज़ैद ने अपनी पत्नी पर दुराचार और बदचलन होने का आरोप लगाया और उससे कहा, "मैंने तुझे छोड़ दिया, तू मेरे काम की नहीं," लेकिन ज़ैद अब कहता है कि मैंने हरगिज़ तलाक़ नहीं दी। तो क्या इस स्थिति में इन शब्दों के उच्चारण से ज़ैद की पत्नी उसके निकाह से बाहर हो गई या नहीं?

उत्तर: यदि यह बयान वास्तव में सही है, तो दो (2) तलाक़-ए-बाइन (अटल तलाक़) हो गईं; महिला निकाह से बाहर हो गई। यदि पहले कभी उसे कोई तलाक़ नहीं दी थी, तो वह महिला की सहमति से नए महर के साथ उससे दोबारा निकाह कर सकता है। और फिर कभी एक तलाक़ देगा तो तीन हो जाएँगी और बिना 'हलाला' के निकाह नहीं कर सकेगा। और यदि उस समय महिला उससे दोबारा निकाह पर राज़ी नहीं है, तो वह उस पर ज़बरदस्ती नहीं कर सकता। और यदि पहले कभी एक तलाक़ उसे दे चुका था, तो अब तीन तलाक़ें हो गईं; बिना 'हलाला' के निकाह नहीं कर सकता।

| अरबी: और यह इसलिए कि पहला शब्द स्पष्ट (सरीह) है और दूसरा सांकेतिक (किनाया) है जिसमें डांटने की संभावना है। और पहले शब्द के कारण स्थिति तलाक़ की चर्चा वाली हो गई, इसलिए इसके ज़रिए सांकेतिक शब्द भी 'बाइन' हो गया। अतः पहला भी 'बाइन' माना गया। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। | उर्दू: यह इसलिए क्योंकि पहला शब्द तलाक़ में स्पष्ट है, और दूसरा सांकेतिक है जिसमें डांट की संभावना भी है, जबकि पहले शब्द की वजह से तलाक़ की चर्चा की स्थिति हो गई थी। तो इस संदर्भ के कारण सांकेतिक शब्द भी तलाक़-ए-बाइन माना जाएगा, जिसकी वजह से स्पष्ट तलाक़ भी 'बाइन' के हुक्म में हो जाएगी। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त) |

मसला 778: पीलीभीत, मोहल्ला पकरिया। प्रार्थी: बशीर अहमद साहब, 15 रजब 1339 हिजरी। धार्मिक विद्वान इस मसले में क्या फ़रमाते हैं: ज़ैद, जिसकी अरबी भाषा की शैक्षणिक योग्यता दस्तार-बंदी (स्नातक) के निकट है, ने अपनी पत्नी को स्वस्थ मानसिक अवस्था में कई बार ये शब्द कहे: "मैं तुम्हें खुशी से अनुमति देता हूँ कि जहाँ तुम्हारा..."

1. रद-उल-मुह्तार, बाब-उल-किनायात, दार इह़या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/474. पृष्ठ 688 में से 571

ردالمحتار میں شرح جامع صغیر امام قاضی خاں سے ہے:

| لو قال اذھبی فتزوجی وقال لم انوالطلاق لایقع شیئ لان معناہ ان امکنک ۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ | اگر کچھ نیت نہ کی تو طلاق نہ ہوگی کیونکہ اس کے کہنے کا مقصد یہ ہوگا کہ تجھے ممکن ہو تو نکاح کر (جبکہ طلاق کے بغیر ممکن نہیں، تو طلاق نہ ہوگی) واللہ تعالٰی اعلم (ت) |

مسئلہ ۷۷۷: از موضع نان تو ڈاکخانہ اکبرآباد ضلع علی گڑھ مسئولہ محمد تحسین علی صاحب یکم رجب المرجب ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی بیوی کو بد چلنی اور بد کاری کے الزام لگائے اور اس سے کہا کہ میں نے تجھے چھوڑ دیا تو میرے کام کی نہیں مگر زید کہتا ہے کہ میں نے ہرگز طلاق نہیں دی، تو کیا اس صورت میں ادائے لفظ طلاق زید کی بیوی زید کے نکاح سے خارج ہوگئی یا نہیں؟ الجواب: اگر یہ بیان واقعی ہے تو دو ۲ طلاقیں بائن ہو گئیں، عورت نکاح سے خارج ہوگئی، اگر پہلے کبھی اسے کوئی طلاق نہ دی تھی تو عورت کی مرضی سے اس سے دوبارہ جدید مہر کے ساتھ نکاح کرسکتا ہے اور پھر کبھی ایک طلاق دے گا تو تین ہو جائیں گی اور بے حلالہ نکاح نہ کرسکے گا، اور اگر اس وقت عورت اس سے دوبارہ نکاح پر راضی نہیں تو یہ اس پر جبر نہیں کرسکتا، اور اگر پہلے کبھی ایک طلاق اسے دے چکا تھا تو اب بھی تین طلاقیں ہو گئیں، بے حلالہ نکاح نہیں کرسکتا،

| وذلک لان اللفظ الاول صریح والثانی کنایہ یحتمل السب وقدمصار الحال باللفظ الاول حال المذاکرہ فوقع بہ بائن فجعل الاول ایضاً بائنا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ | یہ اس لئے کہ پہلا لفظ طلاق میں صریح ہے، اور دوسرا کنایہ ہے جو کہ ڈانٹ کا احتمال بھی رکھتا ہے جبکہ پہلے لفظ کی وجہ سے مذاکرہ

طلاق کی حالت ہوگئی تو اس قرینہ کی وجہ سے کنایہ لفظ بھی طلاق بائنہ قرار پائے گا جس کی وجہ سے صریح طلاق بھی بائنہ کے حکم میں ہوجائے گی۔ واللہ تعالٰی اعلم۔(ت) |

مسئلہ ۲۷۸: از پیلی بھیت محلہ پکریا مسئولہ بشیر احمد صاحب ۱۵ رجب ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مسمّٰی زید جس کی علمی لیاقت علم عربی میں قریب دستار بندی ہے اب بیوی کو چند بار یہ الفاظ بحالت صحت نفس کہے کہ میں تم کو خوشی سے اجازت دیتا ہوں کہ جہاں تمہارا

1 ردالمحتار باب الکنایات دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۴۷۴ Page 571 of 688

Go wherever your heart desires, whether you take another husband or remain without a husband. However, even after hearing these words several times, the wife remained silent. After some days, [Zaid] said, 'I regret that she is such a shameless woman; I am happily giving permission to leave, yet she does not stop following me.' When this reproach was cast upon the wife, she prepared to leave. Then Zaid handed over the village land documents of which Zaid was the manager to the wife. Now, what is the ruling of Shariah in this matter? The wife is no longer pleased with Zaid and is severing ties with him.

The Answer: These words are metaphorical (kinayah); the ruling depends on the intention. If Zaid said them with the intention of divorce, one divorce (talaq) has occurred, and the woman has come out of the marriage. He can remarry her with her consent without needing a halala, provided he has not already given her two divorces before this. If he denies on oath, saying, 'I did not say these words with the intention of divorce,' then the divorce will not be accepted. If Zaid takes a false oath, the burden of sin will be on him. And Allah Almighty knows best.

Problem 279: From Arrah, questioned by Maulvi Abdul Ghafoor Sahib 14 Sha'ban 1339 AH What do the scholars of religion say about this: Zaid said to his wedded wife Zainab, in a state of disagreement, 'We will not eat food prepared by your hand.' Then the said wife replied, 'If you will not eat, then give me clearance (safai).' Then Zaid said, 'I have given clearance.' The wife said, 'You have given clearance?' He again said, 'I have given clearance.' The wife said, 'You have given clearance?' He again said, 'I have given clearance.' The wife then said, 'Then should we go somewhere?' Zaid replied, 'Go wherever you want.' In this mentioned situation, has an irrevocable divorce (talaq mughallaza) occurred or not? If divorce has not occurred, please state the evidence with reference to reliable books. Explain and you will be rewarded.

The Answer: In the mentioned situation, an irrevocable divorce (talaq mughallaza) has not occurred in any way because 'a divorcee (ba'inah) does not follow another divorcee (ba'inah)' as stated in the texts (Mutoon). (Because an irrevocable divorce is not added to another irrevocable divorce, as it is in the texts. -T). Yes, if in these four phrases that Zaid said, if he intended to divorce the woman with any one word, or two, three, or all four, then one irrevocable divorce (talaq-e-ba'in) has occurred. The woman has come out of the marriage, and he can remarry her with the woman's

consent. If he had no intention of divorce with any word at all, then she remains his wife as before; no divorce has occurred. It is stated in Durr al-Mukhtar:

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter on Metaphors, Mujtabai Press, Delhi, 1/225

जहाँ तुम्हारा दिल चाहे चली जाओ, चाहे तुम दूसरा पति कर लो या बिना पति के रहो। लेकिन, पत्नी ने कई बार ये शब्द सुनकर भी चुप्पी साधे रखी। कुछ दिनों बाद, [ज़ैद ने] कहा, 'मुझे अफ़सोस है कि वह कितनी बेशरम औरत है कि मैं खुशी-खुशी जाने की इजाजत दे रहा हूँ, फिर भी मेरा पीछा नहीं छोड़ती।' जब पत्नी पर यह लांछन लगाया गया, तो पत्नी ने जाने की तैयारी की। तब ज़ैद ने पत्नी को गाँव की ज़मींदारी के दस्तावेज़ सौंप दिए, जिसका ज़ैद कर्मचारी था। अब इस मामले में शरीयत का क्या हुक्म है? और पत्नी अब ज़ैद से खुश नहीं है और उससे संबंध विच्छेद कर रही है।

उत्तर: ये शब्द 'किनाया' (अप्रत्यक्ष) हैं, हुक्म नीयत (इरादे) पर निर्भर है। अगर ज़ैद ने तलाक़ की नीयत से ये शब्द कहे, तो एक तलाक़ हो गई और औरत निकाह से बाहर निकल गई। वह बिना हलाला के उसकी रजामंदी से दोबारा निकाह कर सकता है, बशर्ते उसने इससे पहले उस औरत को दो तलाक़ न दिए हों। और अगर वह कसम खाकर इनकार कर दे कि 'मैंने तलाक़ की नीयत से ये शब्द नहीं कहे थे', तो तलाक़ नहीं मानी जाएगी। अगर ज़ैद झूठी कसम खाएगा, तो उसका गुनाह उसी पर होगा। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसाला 279: आरह से, मौलवी अब्दुल ग़फ़ूर साहब द्वारा पूछा गया 14 शाबान 1339 हिजरी धर्म के विद्वान क्या कहते हैं कि ज़ैद ने अपनी विवाहित पत्नी ज़ैनब से अनबन की स्थिति में कहा कि 'हम तुम्हारे हाथ का खाना नहीं खाएंगे।' तब उक्त पत्नी ने कहा कि 'जब खाना नहीं खाओगे तो हमें सफ़ाई (छुटकारा) दे दो।' तब ज़ैद ने कहा 'सफ़ाई दे दी।' पत्नी ने कहा 'सफ़ाई दे दी?' फिर कहा 'सफ़ाई दे दी।' फिर पत्नी ने कहा 'सफ़ाई दे दी?' फिर कहा 'सफ़ाई दे दी।' तो पत्नी ने कहा कि 'तब हम कहीं चले जाएं' ज़ैद ने कहा 'कहीं चली जाओ।' इस वर्णित स्थिति में 'तलाक़े मुग़ल्ल्ज़ा' (अत्यंत गंभीर/अंतिम तलाक़) हुई या नहीं? अगर तलाक़ नहीं हुई, तो विश्वसनीय किताबों के हवाले से दलील पेश करें। बयान करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: वर्णित स्थिति में 'तलाक़े मुग़ल्ल्ज़ा' तो किसी भी तरह नहीं हुई क्योंकि 'बाइनह (तलाकशुदा) को दूसरी बाइनह नहीं लगती' जैसा कि ग्रंथों (मूतून) में है। (क्योंकि एक बाइन तलाक़ के ऊपर दूसरी बाइन तलाक़ नहीं जुड़ती, जैसा कि ग्रंथों में है। -त)। हाँ, ज़ैद ने जो चार शब्द कहे, अगर उनमें से किसी एक शब्द, या दो, तीन या चारों से औरत को तलाक़ देने की नीयत ज़ैद ने की थी, तो एक 'तलाक़े बाइन' हो गई, औरत निकाह से निकल गई। औरत की रजामंदी से वह उससे दोबारा निकाह

कर सकता है। और अगर मूल रूप से किसी भी शब्द से तलाक़ की नीयत नहीं की, तो वह पूर्ववत उसकी पत्नी है, तलाक़ नहीं हुई। दुर्रे मुख्तार में है:

1 दुर्रे मुख्तार, बाबुल किनायात, मतबा मुजतबाई, दिल्ली 1/225

पृष्ठ 572/688

دل چاہے چلی جاؤ خواہ تم دوسرا خاوند کرلو خواہ بلا خاوند رہو، مگر بی بی چند بار یہ الفاظ سن کر بھی خاموش رہی تو کچھ دن کے بعد یہ کہا کہ مجھ کو افسوس ہے کہ کیسی بے حیا عورت ہے کہ میں خوشی سے اجازت چلے جانے کی دیتا ہوں اور میرا پیچھا نہیں چھوڑتی جب بی بی پر یہ ملامت ڈالی تو بی بی نے جانے کی تیاری کی تو زید نے کاغذات دیہہ زمینداری بی بی جس کا زید کارکن تھا حوالہ کر دئے تو اب اس مسئلہ میں شرع شریف کا کیا حکم ہے اور بیوی اب زید سے راضی نہیں ہے اور زید سے قطع تعلق کرتی ہے۔ الجواب: یہ الفاظ کنایہ ہیں نیت پر حکم ہے، اگر زید نے بہ نیت طلاق کہے ایک طلاق ہوگئی اور عورت نکاح سے نکل گئی، اس سے بلا حلالہ اس کی رضامندی سے دوبارہ نکاح کر سکتا ہے جبکہ اس سے پہلے اس عورت کو دو طلاقیں نہ دے چکا ہو، اور اگر وہ قسم کھا کر انکار کردے کہ میں نے یہ الفاظ بہ نیت طلاق نہ کہے تھے تو طلاق نہ مانی جائے گی، اگر زید جھوٹی قسم کھائے گا وبال اس پر رہے گا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۷۹: از آرہ مسئولہ مولوی عبد الغفور صاحب ۱۴ شعبان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین کہ زید نے اپنی بی بی منکوحہ زینب سے کہا بصورت نااتفاقی کہ ہم تمہارے ہاتھ کا کھانا نہیں کھائیں گے، تب اس پر بی بی مذکور نے کہا کہ جب کھانا نہیں کھاؤ گے تو ہم کو صفائی دے دو تب زید نے کہا کہ صفائی دے دیابی بی نے کہا صفائی دے دیا تو پھر کہا کہ صفائی دے دیا پھر بی بی نے کہ صفائی دے دیا تو پھر کہا صفائی دے دیا تو بی بی نے کہا کہ تب ہم کہیں چلے جائیں تو زید نے کہا کہ کہیں چلی جاؤ اس صورت مذکورہ میں طلاق مغلظ واقع ہوا کہ نہیں اگر طلاق واقع نہیں ہوا تو کیا دلیل بحوالہ کتب معتبرہ تحریر فرمائیں، بینوا توجروا الجواب: صورت مذکورہ میں طلاق مغلظ تو کسی طرح نہ ہوئی فان البائن لایلحق البائن کما فی المتون (کیونکہ بائنہ طلاق بائنہ کو

لاحق نہیں ہوتی، جیسا کہ متون میں ہے۔ ت) ہاں اگر ان چار لفظوں میں جو زید نے کہے اگر کسی ایک لفظ یا دو تین یا چاروں سے عورت کو طلاق دینے کی نیت زید نے کی تو ایک طلاق بائن ہو گئی عورت نکاح سے نکل گئی عورت کی رضا سے اس سے نکاح دوبارہ کر سکتا ہے اور اگر اصلاً کسی لفظ سے نیت طلاق نہ کی تو وہ بدستور اس کی زوجہ ہے طلاق نہ ہوئی، در مختار میں ہے:

1 در مختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۲۵

Volume Twelve Fatawa Razawiyya

- "Go away" (idhhabi) carries the possibility of rejection, similar to "you are free" (khaliyya) or "you are unrelated" (bariyyah), which can be used as insults. (up to his statement). In a state of anger, the first two phrases are suspended; if he intended divorce, it occurs, otherwise not.[1] | Because this can also be an answer, and "you are separate," "you are free," these words carry the possibility of scolding, up to his statement that "in anger, the first two words will be suspended; if divorce was intended, divorce will occur, otherwise not." (T)

It is mentioned in Mabsut Imam Sarakhsi: - And from Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on him), he categorized these words: "I have set your way free" (khallaytu sabilaki), "I have parted from you" (faraqtuki), "There is no path to you for me" (la sabila ilayki), "I have no ownership over you" (la mulka li 'alayki), as similar, because they carry the possibility of insult—meaning "I have no ownership over you because you are too lowly to be owned," and "I have parted from you to avoid your evil," and "I have set your way free because you are insignificant to me."[2] (Summarized) | According to Imam Abu Yusuf (may Allah have mercy on him), "I have opened your path," "I have parted from you," and "I have no ownership over you" are categorized together because these words also carry the possibility of scolding, i.e., "I have no ownership over you" could also mean that you are not worthy of me being your owner, and "I have parted from you" means I am away from your evil, "I opened your path because you are lowly to me." (Summarized) (T)

It is mentioned in Fath al-Qadir: - His statement will be accepted in a state of anger, because these words are mentioned for distancing, and a state of anger distances a man from his wife.[3] | In anger, the husband's confirmation regarding these words will be accepted because these words are used to create distance, whereas in a state of anger, a man stays away from his wife. (T)

The point that he did not fundamentally intend divorce with any of these words—if Zaid says so under oath, it will be accepted and no decree of divorce will be given. If Zaid takes a false oath, the sin will be upon him. A woman can also make him take this oath at home. It is in Durr al-Mukhtar: - It is sufficient for her to make him swear... | The woman making the man take an oath at home.

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter on Metaphors (Bab al-Kinayat), Mujtabai Press Delhi 1/ 251- 244 [2] Mabsut Imam Sarakhsi, Chapter on what causes separation, etc. (Bab ma

taqa' bihi al-furqah), Dar al-Ma'rifah Beirut 81/6 [3] Fath al-Qadir, Section on Divorce before consummation (Fasl fi al-talaq qabl al-dukhul), Maktaba Nooria Razawiyya Sukkur 3/ 404

जिल्द बारहवीं फ़तावा रज़विया

- "चली जाओ" (इज़हबी) में तिरस्कार की संभावना है जैसे "तुम स्वतंत्र हो" (ख़लिय्या) या "तुम बरी हो" (बरिय्या) जो अपमान (गाली) के लिए उपयुक्त हैं (उसके कथन तक)। क्रोध में पहले दो शब्द स्थगित रहेंगे, यदि तलाक की नियत की तो तलाक हो जाएगा वरना नहीं।[1] | क्योंकि यह उत्तर भी बन सकता है और "तुम जुदा हो", "तुम बरी हो", ये शब्द डांट की संभावना रखते हैं उसके इस कथन तक कि "क्रोध में पहले दोनों शब्द स्थगित रहेंगे, अगर तलाक की नियत की तो तलाक वाकेअ (घटित) होगा वरना नहीं"। (त)

मबसूत इमाम सरख़सी में है: - और इमाम अबू यूसुफ रहमतुल्लाह अलैहि से रिवायत है कि उन्होंने इन शब्दों को एक श्रेणी में रखा: "मैंने तुम्हारा रास्ता खोल दिया", "मैं तुमसे अलग हो गया", "मेरे लिए तुम्हारी ओर कोई रास्ता नहीं", "मेरा तुम पर कोई स्वामित्व नहीं", क्योंकि इनमें अपमान की संभावना है—यानी "मेरा तुम पर कोई स्वामित्व नहीं क्योंकि तुम स्वामित्व के योग्य होने से बहुत निम्न हो", और "मैं तुमसे अलग हो गया तुम्हारी बुराई से बचने के लिए", और "मैंने तुम्हारा रास्ता खोल दिया क्योंकि तुम मेरे लिए तुच्छ हो"।[2] (संक्षेप में) | इमाम अबू यूसुफ रहमतुल्लाह अलैहि के अनुसार ये "मैंने तुम्हारा रास्ता खोल दिया" "मैं तुमसे अलग हो गया" और "मेरी तुम पर कोई मिल्कियत (स्वामित्व) नहीं" के साथ संबद्ध हैं क्योंकि ये शब्द डांट की संभावना भी रखते हैं यानी "मेरी तुम पर मिल्कियत नहीं" का यह अर्थ भी हो सकता है कि तुम इस योग्य नहीं कि मैं तुम्हारा मालिक बनूँ, और "मैं तुमसे अलग हुआ" यानी तुम्हारी बुराई से अलग हूँ, "मैंने तुम्हारा रास्ता खोला क्योंकि मेरे यहाँ तुम तुच्छ हो" (संक्षेप में) (त)

फ़तह अल-क़दीर में है: - क्रोध में उसकी बात मानी जाएगी क्योंकि ये शब्द दूरी के लिए कहे जाते हैं और क्रोध की स्थिति इंसान को पत्नी से दूर कर देती है।[3] | गुस्से में इन शब्दों के बारे में पति की पुष्टि स्वीकार की जाएगी क्योंकि ये शब्द दूर करने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं जबकि गुस्से की हालत में इंसान पत्नी से दूर रहता है। (त)

यह बात कि इनमें से वास्तव में किसी शब्द से तलाक की नियत नहीं की थी, अगर ज़ैद कसम खाकर कह दे तो स्वीकार कर लेंगे और तलाक का हुक्म नहीं देंगे। अगर ज़ैद झूठी कसम खाएगा तो उसका गुनाह उस पर होगा, यह कसम घर में औरत भी ले सकती है। दुर्रे मुख्तार में है: - और उसके लिए उसका कसम खिलाना काफी है... | औरत का मर्द से घर में कसम लेना

[1] दुर्रे मुख्तार बाबुल किनायात मतबा मुजतबाई दिल्ली 1/ 251- 244 [2] मबसूत इमाम सरख़सी बाब मा तकउ बिहिल फ़ुरक़ा अल-दारुल मारिफ़ा बेरुत 81/6 [3] फ़तह अल-क़दीर फ़स्ल फ़ित-तलाक़ क़ब्लद-दुख़ूल मकतबा नूरया रज़विया सुक्कुर 3/ 404

पेज 573 / 688

جلد دوازدہم فتاوٰی رضویہ

اذھبی یحتمل رداونحو خلیة بریة یصلح سباً (الی قولہ) في الغضب توقف الاولان ان نوی وقع والالا۔[1] | اس لئے کہ یہ جواب بھی بن سکتا ہے اور تو جدا ہے، تو بری ہے، یہ الفاظ ڈانٹ کا احتمال رکھتے ہیں اس کے قول کہ "غصہ میں پہلے دونوں الفاظ موقوف رہیں گے، اگر طلاق کی نیت کی تو طلاق واقع ہوگی ورنہ نہیں" تک۔ (ت)

مبسوط امام سرخسی میں ہے: وعن ابي یوسف رحمہ اللہ تعالی انہ الحق بھذہ الالفاظ خلیت سبیلك، فارقتك، لاسبیل الیك، لاملک لی علیك لانھا تحتمل السب- ای لاملک لی علیك لانك ادون من ان تملکي وفارقتك اتقاء لشرک وخلیت سبیلك لھوانك علی[2] (ملخصاً) | امام ابویوسف رحمۃ اللہ تعالٰی کے نزدیک یہ "میں نے تیرا رستہ کھول دیا" "میں تجھ سے جدا ہوا" اور "میری تجھ پر کوئی ملکیت نہیں" کے ساتھ ملحق ہے کیونکہ یہ الفاظ ڈانٹ کا احتمال بھی رکھتے ہیں یعنی "میری تجھ پر ملکیت نہیں" کا یہ معنٰی بھی ہوسکتا ہے کہ تو اس قابل نہیں کہ میں تیرا مالک بنوں، اور میں تجھ سے جدا ہوا یعنی تیرے شر سے جدا ہوں، میں نے تیرا راستہ کھولا کیونکہ میرے ہاں تو حقیر ہے (ملخصاً) (ت)

فتح القدیر میں ہے: یدین في الغضب لان ھذہ الالفاظ تذکر للابعاد وحالة الغضب یبعد الانسان عن الزوجة۔[3] | غصہ میں ان الفاظ کے متعلق خاوند کی تصدیق کی جائیگی کیونکہ یہ الفاظ دور کرنے کے لئے استعمال کئے جاتے ہیں جبکہ غصہ کی حالت میں انسان بیوی سے دور رہتا ہے۔ (ت)

یہ بات کہ ان میں اصلاً کسی لفظ سے طلاق کی نیت نہ کی تھی اگر زید قسم کھا کر کہہ دے قبول کرلیں گے اور حکم طلاق نہ دیں گے اگر زید جھوٹی قسم کھائے گا وبال اس پر ہوگا یہ قسم گھر

میں عورت بھی کر سکتی ہے۔ درمختار میں ہے: ویکفی تحلیفہا لہ فی | عورت کا مرد سے گھر قسم لینا

[1] درمختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۵۱- ۲۴۴ [2] مبسوط امام سرخسی باب ما تقع بہ الفرقۃ الخ دار المعرفۃ بیروت ۸۱/۶ [3] فتح القدیر فصل فی الطلاق قبل الدخول مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر ۳/ ۴۰۴

Fatawa-e-Razvia Volume 12

Status - And Allah Almighty knows best - is sufficient. And Allah Almighty knows best (T).

Issue 280: From Marehra Mutahira, requested by Hafiz Abdul Karim Sahib, 25 Muharram 1306 AH. What do the scholars of religion say in this matter: A person said in front of his mother-in-law and father-in-law, as well as in the presence of several other women, "I am renouncing all claims (la-da'wa) to your daughter; take her back, otherwise I will dishonor her and kick her out." In this situation, has a divorce (Talaq) occurred or not? Please explain and be rewarded.

The Answer: In the stated situation, if by these words "I am renouncing all claims to your daughter," he intended to give a divorce and said this with the intention of divorce, then the divorce has taken place; otherwise not. It is stated in the Fatawa of Imam Khairuddin Ramli:

[Arabic Quote Table] (Question) A question was asked about a man who beat his wife, and when her family reproached him, he said to the wife, "You are mujarah (protected/separated), I will not come near you", without intending divorce. Does divorce occur with this statement or not? (Answer) Divorce does not occur. In al-Khaniyyah, regarding the statements: "I have no ownership over you", "I have no path over you", "I have set your way free", "Go back to your family"; if he said this during a discussion of divorce or in a state of anger, and then says "I did not intend divorce by it," his word is legally accepted according to the opinion of Abu Hanifa. But Abu Yusuf said it is not legally accepted. And the meaning of "you are mujarah" is that you are rescued and sheltered from what you dislike. This is close to the meaning of these aforementioned phrases. And Allah knows best. End. I say:

Among these, a question was asked about such a person who beat his wife, so the husband was reproached by the wife's family members. Upon this, the husband said to the wife, "You have become protected, I will not come near you." If he did not intend divorce, will divorce occur from this statement or not? In response, he said that divorce will not occur. Thus, it is in al-Khaniyyah: The husband saying to the wife, "There is no ownership of mine over you," "There is no recourse for me over you," "I have opened your path," or said "Go to your family." If these words are said during a discussion of divorce or in anger, and he states that he did not say them with the intention of divorce, then according to Imam Abu Hanifa (may Allah Almighty have mercy on him), the husband's word will be legally accepted. And according to Imam

Abu Yusuf, it will not be legally confirmed. The meaning of "you are mujarah" is that you are in a sanctuary, saved from that which you dislike, and this word is close to the meaning of the words mentioned above. And Allah Almighty knows best. End. I say:

---

1. Durr-e-Mukhtar, Chapter of Metaphors, Mujtabai Press Delhi, 1/224.
2. Fatawa Khairiyyah, Book of Divorce, Dar al-Ma'rifah Beirut, 1/51.

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द बारहवीं

रुतबा - और अल्लाह तआला बेहतर जानता है - पर्याप्त है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है (टी)।

मसला २८०: मारहरा मुतहरा से, मुस्तफ़्ती हाफ़िज़ अब्दुल क्रीम साहब, २५ मुहर्रम १३०६ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: एक व्यक्ति ने अपनी सास और ससुर के सामने और कई अन्य महिलाओं की मौजूदगी में कहा, "मैं तुम्हारी बेटी से ला-दावा (अधिकारहीन) होता हूँ, तुम उसे बुला लो वरना मैं उसे बेइज़्ज़त करके निकाल दूँगा।" इस स्थिति में तलाक हुआ या नहीं? शरीयत की रोशनी में जवाब दें और पुण्य पाएँ।

अल-जवाब (उत्तर): पूछी गई स्थिति में, अगर उसने इन शब्दों से कि "मैं तुम्हारी बेटी से ला-दावा होता हूँ" तलाक देने का इरादा किया था और तलाक की नीयत से यह बात कही थी, तो तलाक हो गया, अन्यथा नहीं। फ़तावा इमाम खैरुल दीन रमली में है:

[अरबी उद्धरण तालिका] (प्रश्न) एक व्यक्ति के बारे में सवाल किया गया जिसने अपनी पत्नी को पीटा, और जब उसके परिवार ने उसे फटकारा, तो उसने पत्नी से कहा, 'तुम मुजारा (सुरक्षित/अलग) हो, मैं तुम्हारे करीब नहीं आऊंगा', तलाक की नीयत के बिना। क्या इस कथन से तलाक होगा या नहीं? (उत्तर) तलाक नहीं होगा। अल-खनियाह में इन बयानों के बारे में है: 'तुम पर मेरा कोई स्वामित्व नहीं है', 'तुम पर मेरा कोई अधिकार नहीं है', 'मैंने तुम्हारा रास्ता स्वतंत्र कर दिया है', 'अपने परिवार के पास वापस जाओ'; यदि उसने तलाक की चर्चा के दौरान या गुस्से की स्थिति में ऐसा कहा, और फिर कहता है कि 'मेरा इरादा इससे तलाक का नहीं था,' तो इमाम अबू हनीफ़ा की राय के अनुसार कानूनी तौर पर उसकी बात स्वीकार की जाएगी। लेकिन इमाम अबू यूसुफ़ के अनुसार कानूनी रूप से इसे स्वीकार नहीं किया जाएगा। और 'तुम मुजारा हो' का अर्थ है कि तुम उस चीज़ से बच गई हो और सुरक्षित हो जिसे तुम नापसंद करती हो। यह उपरोक्त शब्दों के अर्थ के करीब है। और अल्लाह बेहतर जानता है। अंत। मैं कहता हूँ:

इनमें से एक ऐसे व्यक्ति के बारे में सवाल किया गया जिसने अपनी पत्नी को पीटा, तो पति को पत्नी के घर वालों ने मलामत (फटकार) की। इस पर पति ने पत्नी से कहा कि "तू महफ़ूज़ (सुरक्षित) हो गई, मैं तेरे करीब नहीं आऊंगा"। अगर तलाक की नीयत न की हो तो क्या इस बात से तलाक हो जाएगा या नहीं? जवाब में उन्होंने फरमाया तलाक नहीं होगा। तो खनिया में है: पति का पत्नी को कहना, "तुझ

पर मेरी मिल्कियत नहीं", "तुझ पर मुझे कोई चारा (अधिकार) नहीं", "तेरा रास्ता मैंने खोल दिया" या कहा "तू अपने घर वालों के पास जा"। अगर ये शब्द तलाक की चर्चा या गुस्से में कहे जाएँ और बयान किया जाए कि मैंने तलाक की नीयत से नहीं कहे, तो इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैहि के नज़दीक कानूनी तौर पर पति की बात मान ली जाएगी। और इमाम अबू यूसुफ़ के नज़दीक कानूनी तौर पर इसकी तस्दीक नहीं की जाएगी। "तू मुजारा" का अर्थ है कि तू उस चीज़ से पनाह में आ गई जिससे तू नफरत करती है, और यह शब्द ऊपर बताए गए शब्दों के करीब है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। अंत। मैं कहता हूँ:

---

1. दुर्र-ए-मुख्तार, बाबुल किनायात, मुज्तबाई प्रेस दिल्ली, १/२२४।
2. फ़तावा खैरिया, किताबुत तलाक, दारुल मारिफ़ा बेरुत, १/५१।

पेज ५७४ / ६८८

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

منزلہ - واللہ تعالٰی اعلم - کافی ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت) مسئلہ ۲۸۰: از مارہرہ مطہرہ مسئولہ حافظ عبدالکریم صاحب ۲۵ محرم ۱۳۰۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین بیچ اس امر کے ایک شخص نے اپنی خوشدامن و خسرو نیز روبرو چند عورات دیگر کے یہ کہا کہ میں تمہاری دختر سے لا دعوی ہوتا ہوں تم اس کو بلا لو ورنہ میں اس کو بے عزت کرکے نکال دوں گا۔ اس صورت میں طلاق ہوئی یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: صورتِ مستفسرہ میں اگر اس نے ان لفظوں سے کہ "میں تمہاری دختر سے لا دعوی ہوتا ہوں" طلاق دینے کا قصد کیا تھا اور بہ نیت طلاق یہ کلام کہا تھا تو طلاق واقع ہو گئی ورنہ نہیں۔ فتاوی امام خیر الدین رملی میں ہے:

سئل في رجل ضرب زوجته فلامه اهلها فقال انت مجارة اني ما اقربك غير ناو طلاقاً هل تطلق بهذا القول ام لا (اجاب) لا تطلق، ففی الخانية فی قوله لملك لی عليك، لاسبيل لی عليك خليت سبيلك الحقی باهلك، لو قال ذلك فی حال مذاكرة الطلاق او فی الغضب وقال لم انو به الطلاق يصدق قضاء فی قول ابی حنيفة وقال ابو يوسف لا يصدق و معنی انت مجارة انت منتقذة معاذة مما تكرهينه وهو قريب من معنی هذه الالفاظ واللہ اعلم انتہٰی اقول:

ان میں سے ایک ایسے شخص کے متعلق سوال کیا گیا جس نے اپنی بیوی کو پیٹا تو خاوند کو بیوی کے گھر والوں نے ملامت کی، اس پر خاوند نے بیوی کو کہا کہ "تو محفوظ ہوگئی میں تیرے قریب نہ ہوں گا" طلاق کی نیت نہ کی ہو تو کیا اس بات سے طلاق ہو جائے گی یا نہیں، جواب میں انہوں نے فرمایا طلاق نہ ہوگی۔ تو خانیہ میں ہے: خاوند کا بیوی کو کہنا، تجھ پر میری ملکیت نہیں، تجھ

پر مجھے کوئی چارہ نہیں، تیرا راستہ میں نے کھول دیا "یا کہا" تو اپنے گھر والوں کے ہاں جا"۔ اگر یہ الفاظ مذاکرہ طلاق یا غصہ میں کہے اور بیان کیا کہ میں نے طلاق کی نیت سے نہیں کہے، تو امام ابو حنیفہ رحمہ اللہ تعالیٰ کے نزدیک قضاءً خاوند کی بات مان لی جائے گی، اور امام ابو یوسف کے نزدیک قضاءً تصدیق نہ کی جائے گی "تو مجارہ" کا معنی تو بچی ہوئی پناہ میں ہے اس چیز سے جس کو تو ناپسند کرتی ہے، اور یہ لفظ اوپر مذکورہ الفاظ کے قریب ہے واللہ تعالٰی اعلم انتہٰی اقول:

---

1 درمختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۲۴ 2 فتاوی خیریہ کتاب الطلاق دار المعرفۃ بیروت ۱/ ۵۱

Fatawa Razawiya Volume 12

"And you know that this issue of ours is closer to what is explicitly mentioned in the texts than the issue of Khairiyah, as is not hidden." (T) (I say that) our discussed issue is closer to the issue mentioned in Khairiyah, as it is not hidden. (T) So if he swears an oath and says that I did not intend to give a divorce with these words, it will be accepted and the ruling of the occurrence of divorce will not be given.

"In al-Durr al-Mukhtar: The husband's word under oath regarding the absence of intention shall be accepted, and it is sufficient for her to make him swear in her house; if he refuses, she shall take him to the judge, and if he persists in refusing, the judge shall separate them. [Mujtaba]"[1] In Durr al-Mukhtar: In the matter of intention or its absence, the husband's word under oath will be credible and it is sufficient to take an oath from him at home. If he refuses to take the oath, the wife can present the case to the judge; if he still insists on refusing to take the oath there, then the judge should separate the husband and wife. [Mujtaba] (T)

Yes, if in reality he had intended for a divorce and has now taken a false oath, then in the sight of Allah, divorce has occurred, but its burden is on the husband, not on the woman. And Allah the Almighty knows best.

Problem 281: From Bareilly Sadar, asked by Sheikh Abdul Khaliq, 7 Muharram al-Sharif 1314 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter where Abdul Khaliq wrote a divorce deed for his wife, and in that document, he wrote the divorce in these words: "I have no claim, let this woman marry wherever she wishes." In such a situation, did divorce occur or not? And if Abdul Khaliq wants to bring her into marriage again, will Halala be necessary or not? Explain and you will be rewarded.

Answer: In the stated situation, when these words were written with the intention of writing a divorce, one divorce has occurred on the woman and she is out of the marriage contract. Now, to marry her, only a new marriage with the consent of the wife is sufficient; there is no need for Halala if he has not given her two divorces before this. And Allah Subhanahu wa Ta'ala knows best.

Problem 282: Sent by Hakim Ahmad Husain Sahib, Mahalla Tawila, 7 Shawwal 1308 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter where Zaid and Hindah were husband and wife and often had quarrels between them, and often he...

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter of Metaphors (Bab al-Kinayat), Mujtabai Press Delhi, 1/224.

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

"और आप जानते हैं कि हमारा यह मसला नुसूस (स्पष्ट उल्लेखों) के करीब है 'खैरिया' के मसले की तुलना में, जैसा कि छुपा नहीं है।" (त) (मैं कहता हूँ कि) हमारा विचाराधीन मसला खैरिया में बताए गए मसले के अधिक निकट है, जैसा कि स्पष्ट है। (त) अतः यदि वह शपथ खाकर कहे कि इन शब्दों से मेरा इरादा तलाक़ देने का नहीं था, तो उसे स्वीकार किया जाएगा और तलाक़ होने का आदेश नहीं दिया जाएगा।

"दुर्र-ए-मुख्तार में है: नियत की अनुपस्थिति के बारे में पति की बात शपथ के साथ स्वीकार्य होगी, और घर पर ही उससे शपथ लेना पर्याप्त है; यदि वह इनकार करे, तो पत्नी उसे न्यायाधीश (हाकिम) के पास ले जाए, और यदि वह वहाँ भी शपथ लेने से इनकार करे, तो न्यायाधीश उनके बीच अलगाव (तफ़रीक़) कर दे। [मुजतबा]"[1] दुर्र-ए-मुख्तार में है: नियत होने या न होने में पति की बात शपथ के साथ विश्वसनीय होगी और घर पर ही उससे शपथ ले लेना पर्याप्त है। यदि वह शपथ देने से इनकार करे तो पत्नी मामला न्यायाधीश के पास पेश कर सकती है; यदि वह वहाँ भी शपथ से इनकार पर अड़ा रहे, तो फिर न्यायाधीश पति-पत्नी में अलगाव कर दे। [मुजतबा] (त)

हाँ, यदि वास्तव में उसने तलाक़ की नियत की थी और अब झूठी शपथ खा ली, तो अल्लाह के नज़दीक तलाक़ हो गई, लेकिन इसका पाप पति पर है, महिला पर कोई दोष नहीं। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

मसला 281: बरेली सदर से, प्रार्थी शेख अब्दुल ख़ालिक़, 7 मुहर्रम शरीफ 1314 हिजरी। धर्मशास्त्री इस मामले में क्या कहते हैं कि अब्दुल ख़ालिक़ ने अपनी पत्नी के लिए तलाक़नामा लिखा और उस दस्तावेज़ में इन शब्दों में तलाक़ लिखी: "मेरा कोई दावा नहीं है, यह महिला जहाँ चाहे शादी कर ले।" ऐसी स्थिति में तलाक़ हुई या नहीं? और यदि अब्दुल ख़ालिक़ फिर से उसे निकाह में लाना चाहे, तो क्या हलाला की आवश्यकता होगी या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य पाएँ।

उत्तर: पूछी गई स्थिति में, जब ये शब्द तलाक़ लिखने की नियत से लिखे गए हों, तो महिला पर एक तलाक़ हो गई और वह निकाह से निकल गई। अब उससे निकाह करने के लिए पत्नी की सहमति से केवल नया निकाह पर्याप्त है; हलाला की कोई आवश्यकता नहीं है, यदि उसने इससे पहले कभी उसे दो तलाक़ न दी हों। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है।

मसला 282: प्रेषक हकीम अहमद हुसैन साहब, मोहल्ला तवीला, 7 शव्वाल 1308 हिजरी।
धर्मशास्त्री इस मसले में क्या कहते हैं कि ज़ैद और हिन्दा पति-पत्नी थे और उनके बीच अक्सर झगड़ा रहता था, अक्सर वह...

[1] दुर्र-ए-मुख्तार, बाब अल-किनायात, मुजतबाई प्रेस दिल्ली, 1/224

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

وانت تعلم ان مسئلتنا هذه اقرب الی المنصوص من مسئلة الخیریة کما لا یخفی۔ (ت) (میں کہتا ہوں کہ) ہمارا زیر بحث مسئلہ خیریہ میں بیان کردہ مسئلہ کے زیادہ قریب ہے ، جیسا کہ مخفی نہیں ہے۔ (ت) پس اگر وہ قسم کھا کر کہہ دے کہ ان لفظوں سے میں نے طلاق دینے کی نیت نہ کی تھی قبول کرلیں گے اور وقوع طلاق کا حکم نہ دیں گے۔

فی الدرالمختار القول لہ بیمینہ فی عدم النیة ویکفی تحلیفها له فی منزله فان ابی رفعته للحاکم فان نکل فرق بینهما مجتبی 1۔ در مختار میں ہے : نیت ہونے نہ ہونے میں خاوند کی بات قسم کے ساتھ معتبر ہوگی اور اس سے گھر میں ہی حلف لے لینا کافی ہے اور اگر وہ حلف دینے سے انکار کرے تو بیوی معاملہ کو حاکم کے ہاں پیش کر سکتی ہے تو اگر وہاں بھی حلف سے انکار پر مصر رہے تو پھر حاکم خاوند بیوی میں تفریق کردے ، مجتبیٰ۔ (ت)

ہاں اگر واقع میں اس نے نیت طلاق کی تھی اور اب جھوٹی قسم کھالی تو عند اللہ طلاق ہو گئی مگر اس کا وبال شوہر پر ہے ، عورت پر الزام نہیں ، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۸۱: از بریلی صدر مسئولہ شیخ عبد الخالق ۷ محرم شریف ۱۳۱۴ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ عبدالخالق نے اپنی عورت کو طلاق نامہ لکھا اور اس دستاویز میں ان الفاظ سے طلاق لکھی " میں لاد عوی ہوں یہ عورت جہاں چاہے شادی کرلے" ایسی صورت میں طلاق ہوئی یا نہیں؟ اور اگر عبدالخالق پھر اسے نکاح میں لانا چاہے تو ضرورت حلالہ ہوگی یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: صورت مستفسرہ میں جب کہ طلاق لکھنے کی نیت سے یہ الفاظ لکھے ہوں عورت پر ایک طلاق ہو گئی وہ نکاح سے نکل گئی ، اب اس سے نکاح کرے تو صرف نکاح جدید برضائے زوجہ کافی ہے حلالہ کی کچھ حاجت نہیں اگر اس سے پہلے کبھی اسے دو طلاقیں نہ دے چکا ہو، واللہ سبحانہ و تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۸۲: مرسلہ حکیم احمد حسین صاحب محلہ طویلہ ۷ شوال ۱۳۰۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید و ہندہ میاں بی بی میں باہم جھگڑا رہتا تھا اکثر اسے

1 در مختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۲۴

Fatawa Rizvia, Volume 12

He used to torture and beat her; he asked for jewelry, she refused, and he said, "I will kill you with a knife." Out of fear for her life, Hindah went to her parents' home. The husband also accused her of theft and intended to report it to the police. People counselled him, and the following conversation took place as recorded: Adviser: "Why are you causing disgrace?" Zaid: "She is no longer my wife; what disgrace?" Adviser: "Look, don't talk nonsense." Zaid: "Since she left without my permission, she is out of my marriage and of no use to me. I have no concern with her." Adviser: "Look, divorce can occur even through metaphors and hints. Speak thoughtfully; you are an educated man." Zaid: "I have no concern with her, nor is she my wife." Question: Has the woman been divorced by this conversation? Please explain and you will be rewarded.

Answer: Zaid's latter statement that "she is not my wife" is not essentially among the words of divorce according to the chosen (mukhtar) school of thought. Even if said with the intention of divorce, it will not occur. It is stated in Alamgiri:

If he said (in Persian) "Tu zan-e-man na-ee" (You are not my wife), divorce does not occur even if intended; this is the chosen opinion, as in Jawahir al-Akhlati [1].

If one said "You are not my wife," then despite the intention of divorce, divorce will not occur; this is the chosen opinion, as in Jawahir al-Akhlati. (Translator)

Similarly, "I have no concern (gharaz) with her" is also not a word of divorce because 'concern' (gharaz) is used in the sense of 'longing' as in Al-Qamus (Translator), or 'intent and desire' as in Al-Muntakhab (Translator), or 'need' as in Shuruh al-Nisab (Translator). The negation of these things does not cause divorce even if used with the intention of divorce. It is stated in Alamgiri:

If one says "I have no need for you" intending divorce, it is not divorce. Similarly in Al-Siraj al-Wahhaj: if he says "I do not want you," "I do not love you," "I do not desire you," or "I have no inclination toward you," it does not occur even if intended, according to the opinion of Imam Abu Hanifa (may Allah

If he said "I have no need for you" and intended divorce, even then divorce will not occur; it is stated similarly in Siraj al-Wahhaj. And he said "I do not want you," "I do not like you," "I have no inclination toward you," even if intended, according to Imam Abu Hanifa (may Allah Almighty

Almighty have mercy on him). Similarly in Al-Bahr al-Ra'iq [2].

have mercy on him), divorce will not occur; it is exactly so in Bahr al-Ra'iq. (Translator)

[1] Fatawa Hindiyya, Chapter 7 regarding Divorce in Persian words, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/386 [2] Fatawa Hindiyya, Chapter 5 regarding Metaphorical expressions, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/375

फ़तावा रिज़विया, खंड 12

वह उसे प्रताड़ित करता और मारता था; उसने उससे गहने माँगे, उसने मना कर दिया, तो उसने कहा, "मैं तुझे चाकू से मार डालूँगा।" जान के डर से हिन्दा अपने माता-पिता के घर चली आई। पति ने उस पर चोरी का आरोप भी लगाया और थाने में रिपोर्ट करने का इरादा किया। लोगों ने उसे समझाया और उस समय यह बातचीत हुई जो लिखी जा रही है: सलाहकार: "क्यों रुसवाई करा रहे हो?" ज़ैद: "वह अब मेरी पत्नी ही नहीं रही, तो रुसवाई कैसी?" सलाहकार: "देखो, फ़ालतू बातें मत करो।" ज़ैद: "जब वह मेरी इजाज़त के बिना चली गई, तो वह मेरे निकाह से बाहर है और वह मेरे किसी काम की नहीं रही। मुझे उससे कोई ग़रज़ (वास्ता) नहीं है।" सलाहकार: "देखो, कनाया (इशारे) से भी तलाक़ हो जाती है। ज़रा सोच-समझकर बोलो, तुम पढ़े-लिखे आदमी हो।" ज़ैद: "मुझे उससे कोई ग़रज़ नहीं और न ही वह मेरी पत्नी है।" सवाल: क्या इस बातचीत से वह महिला तलाक़शुदा हो गई या नहीं? बयान करें, आपको पुण्य मिलेगा।

जवाब: ज़ैद का पिछला कहना कि 'न वह मेरी पत्नी है' मुख़्तार मज़हब के अनुसार मूलतः तलाक़ के शब्दों में से नहीं है, यहाँ तक कि यदि तलाक़ की नियत से भी कहे, तब भी तलाक़ नहीं होगी। आलमगीरी में है:

यदि (फारसी में) कहा "तू ज़न-ए-मन न-ई" (तू मेरी बीवी नहीं है), तो तलाक़ नहीं होगी चाहे नियत हो; यही मुख़्तार है जैसा कि जवाहरुल अख़लाती [1] में है।	अगर कहा "तू मेरी बीवी नहीं है" तो तलाक़ की नीयत के बावजूद तलाक़ नहीं होगी, यही क़ौल (विचार) मुख़्तार है, जैसा कि जवाहरुल अख़लाती में है। (त)

इसी तरह "मुझे उससे कोई ग़रज़ नहीं" यह भी तलाक़ का शब्द नहीं है क्योंकि 'ग़रज़' का उपयोग 'शौक' के अर्थ में होता है जैसा कि क़ामूस (त) में है, या 'इच्छा और चाहत' के अर्थ में जैसा कि मुंतख़ब (त) में है, या 'ज़रूरत' के अर्थ में जैसा कि शुरूहुन्निसाब (त) में है। और इन चीज़ों के इनकार से तलाक़ नहीं होती चाहे वह तलाक़ की नीयत से ही क्यों न कहा जाए। आलमगीरी में है:

यदि कहा "मुझे तुम्हारी कोई ज़रूरत नहीं" और तलाक़ की नीयत की हो तो वह तलाक़ नहीं है। इसी तरह सिराजुल वहाज में है: यदि कहा "मैं तुझे नहीं चाहता", "मैं तुझे प्यार नहीं करता", "मैं तुझे पसंद	अगर कहा "मुझे तेरे बारे कोई ज़रूरत नहीं" और तलाक़ की नीयत की हो तो भी तलाक़ नहीं होगी, सिराजुल वहाज में ऐसे ही है। और कहा "मैं तुझे नहीं चाहता", "मैं तुझे पसंद नहीं

नहीं करता", या "मुझे तुझमें कोई दिलचस्पी नहीं", तो तलाक़ नहीं होगी चाहे नियत हो, इमाम अबू हनीफ़ा (रहमतुल्लाह अलैह) के क़ौल के अनुसार। बहरुल रैक [2] में भी ऐसा ही है।

करता", "तेरे बारे मुझे रग़बत (रुचि) नहीं", अगर नीयत हो तब भी इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैह के नज़दीक तलाक़ न होगी, बहरुल रैक में यूँ ही है। (त)

[1] फ़तावा हिन्दिया, सातवाँ अध्याय, फ़ारसी शब्दों में तलाक़ के बारे में, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/386 [2] फ़तावा हिन्दिया, पाँचवाँ अध्याय, कनायात (इशारों) के बारे में, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/375

فتاوی رضویہ، جلد دو ازدہم

تکلیف دیتا اور مارتا لیکن اس سے زیور مانگا اس نے انکار کیا کہا تجھے چاقو سے مار ڈالوں گا ہندہ بخوف جان والدین کے یہاں چلی آئی شوہر نے چوری کا الزام بھی لگایا اور تھانہ میں رپورٹ کا ارادہ کیا لوگوں نے سمجھایا اس وقت یہ گفتگو ہوئی جو لکھی جاتی ہے ، ناصح کیا فضیحت کراؤگے۔ زید: وہ میری بیوی ہی نہیں رہی فضیحت کیسی۔ ناصح: دیکھو لغو باتیں نہ کرو۔ زید: جب وہ میری بلا اجازت چلی گئی میرے نکاح سے باہر ہے اور وہ میرے کام کی نہ رہی مجھ کو اس سے کچھ غرض نہیں۔ ناصح: دیکھو کنایہ اشارہ سے بھی طلاق ہو جاتی ہے ذرا سوچ سمجھ کر کہو تم پڑھے لکھے آدمی ہو۔ زید: مجھ کو اس سے کچھ غرض نہیں نہ وہ میری بیوی ہے۔ آیا اس گفتگو سے وہ عورت مطلقہ ہوئی یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: زید کا پچھلا قول کہ "نہ وہ میری بیوی ہے" مذہب مختار پر اصلا الفاظ طلاق سے نہیں یہاں تک کہ بہ نیت طلاق بھی کہے تاہم واقع نہ ہو گی۔ عالمگیری میں ہے:

لو قال تزدِنِ من نئی لایقع وان نوی اگر کہا "تو میری بیوی نہ ہے" تو طلاق کی نیت کے باوجود ہو المختار کذا فی جواھر الاخلاطی طلاق نہ ہوگی، یہی قول مختار ہے، جیسا کہ جواہر الاخلاطی میں ہے۔ (ت) - 1

اسی طرح "مجھ کو اس سے کچھ غرض نہیں" یہ بھی لفظ طلاق نہیں کہ غرض بمعنی شوق مستعمل ہے کما فی القاموس (جیسا کہ قاموس میں ہے۔ ت) یا قصد وخواہش کما فی المنتخب (جیسا کہ منتخب میں ہے۔ ت) یا حاجت کما فی شروح النصاب (جیسا کہ شروح النصاب میں ہے۔ ت) اور ان اشیاء کی نفی سے طلاق نہیں ہوتی اگرچہ بہ نیت طلاق اطلاق کرے۔ عالمگیری میں ہے:

لو قال لاحاجة لی فیك ینوی الطلاق فلیس بطلاق کذافی السراج الوھاج اذا قال لا اریدك اولا احبك اولا اشتھیك ولا رغبة لی فیك فانه لا یقع وان نوی فی قول ابی حنیفة رحمه الله تعالی کذافی البحر الرائق2-

اگر کہا "مجھے تیرے بارے کوئی حاجت نہیں" اور طلاق کی نیت کی ہو تو بھی طلاق نہ ہوگی، سراج وہاج میں ایسے ہی ہے۔ اور کہا "میں تجھے نہیں چاہتا" "میں تجھے پسند نہیں کرتا" "تیرے بارے مجھے رغبت نہیں" اگر نیت ہو تب بھی امام ابو حنیفہ رحمہ اللہ تعالیٰ کے نزدیک طلاق نہ ہوگی، بحر الرائق میں یوں ہی ہے۔ (ت)

1 فتاوی ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالالفاظ الفارسیہ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۸۶ 2 فتاوی ہندیہ الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۷۵

Fatawa Razawiyya - Volume 12

In the same [book] it is stated:

[Arabic Box 1] "A man said to his wife, 'You are of no use to me' (in Persian: Mara bikar nesti) and intended divorce by it. The divorce does not take place. Thus it is in al-Zahiriyyah." [Urdu Side] A person said to his wife, "You are of no use to me," then despite the intention, divorce will not occur, as is in [Fatawa] al-Zahiriyyah. (T)

Yes, "She is no longer my wife" is among the allusions (kinayah) of divorce. It is stated in [Fatawa] al-Alamgiriyyah:

[Arabic Box 2] "If he said, 'You have become someone other than my wife,' in pleasure or anger, divorce occurs if he intended it. Thus it is in al-Khulasah." [Urdu Side] If the husband said in pleasure or anger, "You are no longer my wife," if there was an intention for divorce, then divorce will occur, as is in [al-] Khulasah. (T)

Similarly, this phrase that "She is outside my marriage" is not explicit (sareeh) but an allusion (kinayah),

[Arabic Box 3] "Because exiting marriage happens by divorce and by every separation (furqah) that comes from his side, such as kissing her daughter, or from her side, such as kissing his son, etc. So it is not designated solely for expressing divorce. It becomes like his saying 'nothing remains' or 'there is no marriage between me and you'; rather, they are two expressions for one meaning. This depends on intention, and so does that." [Urdu Side] Because exiting marriage can happen through divorce and other reasons. For example, the husband kisses the wife's daughter (with lust) or the wife kisses the husband's son similarly, or there could be many other causes for separation. Therefore, this word was not specific to divorce. When he says "marriage did not remain" or "there is no marriage between you and me," rather both these are of the same meaning, they will depend on intention. This is also like that. (T)

In [Fatawa] al-Alamgiriyyah it is stated:

[Arabic Box 4] "If he said to her, 'There is no marriage between me and you,' or he said, 'No marriage remains between me and you,' divorce occurs if he intended it." [Urdu Side] If he said, "Marriage no longer remains between you and me," if there was intent, then divorce will occur, otherwise not. (T)

Similarly, "She is of no use to me" is also among the allusions (kinayah), as we have researched in what we annotated on Radd al-Muhtar.

1. Fatawa Hindiyyah, Chapter 7 regarding divorce in Persian words, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/380
2. Fatawa Hindiyyah, Chapter 5 regarding allusions (kinayah), Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/376
3. Fatawa Hindiyyah, Chapter 5 regarding allusions (kinayah), Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/375

फ़तावा रज़विया - जिल्द 12

इसी में है:

[अरबी बॉक्स 1] "एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा, 'तुम मेरे किसी काम की नहीं' (फ़ारसी में: मरा बेकार नेस्ती) और उससे तलाक़ की नीयत की। तलाक़ नहीं होगी। इसी तरह ज़हीरिया में है।" [उर्दू पक्ष] किसी व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा "तू मेरे लिए काम की नहीं" तो नीयत के बावजूद तलाक़ न होगी, जैसा कि ज़हीरिया में है। (त)

हाँ, "वह मेरी बीवी ही न रही" तलाक़ के किनायात (संकेत) में से है। आलमगीरी में है:

[अरबी बॉक्स 2] "यदि उसने प्रसन्नता या क्रोध में कहा, 'तुम मेरी पत्नी के अलावा कुछ और हो गई हो', तो नीयत होने पर तलाक़ हो जाएगी। इसी तरह ख़ुलासा में है।" [उर्दू पक्ष] अगर पति ने रज़ा या नाराज़गी में कहा "तू मेरी बीवी न रही" अगर तलाक़ की नीयत हो तो तलाक़ हो जाएगी, जैसा कि ख़ुलासा में है (त)

इसी तरह यह शब्द भी कि "वह मेरे निकाह से बाहर है" सरीह (स्पष्ट) नहीं किनाया (संकेत) है,

[अरबी बॉक्स 3] "क्योंकि निकाह से बाहर निकलना तलाक़ के साथ और हर उस जुदाई (फ़ुरक़ा) से होता है जो उसकी ओर से आए जैसे उसकी बेटी का चुंबन लेना, या उसकी पत्नी की ओर से जैसे उसके बेटे का चुंबन लेना आदि। इसलिए यह तलाक़ व्यक्त करने के लिए विशिष्ट नहीं है। यह उसके उस कथन की तरह हो गया कि 'कुछ शेष नहीं रहा' या 'मेरे और तुम्हारे बीच निकाह नहीं है'; बल्कि ये एक ही अर्थ के दो भाव हैं। यह नीयत पर निर्भर करता है, और वैसा ही वह भी है।" [उर्दू पक्ष] क्योंकि निकाह से ख़ुरूज (निकलना), तलाक़ के साथ और अन्य कारणों से भी हो सकता है। उदाहरण के लिए, पति पत्नी की बेटी का (कामुकता के साथ) चुंबन ले या पत्नी पति के बेटे का इसी तरह चुंबन ले या इसके अलावा भी कई तरह से फ़ुरक़त (अलगाव) के कारण हो सकते हैं, इसलिए यह शब्द तलाक़ के लिए विशिष्ट न रहा। जब वह कहे "निकाह बाक़ी न रहा" या "तेरे मेरे दरमियान निकाह नहीं है" बल्कि ये दोनों हम-मानी (समानार्थी) हैं तो नीयत पर मौक़ूफ़ (निर्भर) होंगे, यह भी ऐसा ही है (त)

आलमगीरी में है:

[अरबी बॉक्स 4] "यदि उसने उससे कहा, 'मेरे और तुम्हारे बीच कोई निकाह नहीं है' या उसने कहा, 'मेरे और तुम्हारे बीच कोई निकाह शेष नहीं रहा', तो नीयत होने पर तलाक़ हो जाएगी।" [उर्दू पक्ष] अगर कहा "तेरे मेरे दरमियान निकाह बाक़ी नहीं रहा" अगर नीयत हो तो तलाक़ होगी वर्ना नहीं। (त)

इसी तरह "वह मेरे काम की न रही" भी किनायात में से है जैसा कि हमने रद-उल-मुहतार पर अपने हाशिये में शोध किया है।

---

1. फ़तावा हिन्दिया, सातवाँ अध्याय फ़ारसी शब्दों में तलाक़ के बारे में, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/380
2. फ़तावा हिन्दिया, पाँचवाँ अध्याय किनायात (संकेतों) के बारे में, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/376
3. फ़तावा हिन्दिया, पाँचवाँ अध्याय किनायात (संकेतों) के बारे में, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/375

فتاوٰی رضویہ جلد دو ازدہم

اسی میں ہے:

رجل قال لامرأته مرا بکارنیستی ونوی به الطلاق لا یقع کذا فی الظهیریة 1 کسی شخص نے اپنی بیوی سے کہا "تُو میرے لئے کام کی نہیں" تو نیت کے باوجود طلاق نہ ہو گی، جیسا کہ ظہیریہ میں ہے۔ (ت)

ہاں "وہ میری بیوی ہی نہ رہی" کنایات طلاق سے ہے۔ عالمگیری میں ہے:

لو قال صرت غیرا مرأتی فی رضا أو سخط تطلق اذا نوی کذا فی الخلاصة 2 اگر خاوند نے رضا یا ناراضگی میں کہا "تو میری بیوی نہ رہی" اگر طلاق کی نیت ہو تو طلاق ہو جائے گی، جیسا کہ خلاصہ میں ہے (ت)

اسی طرح یہ لفظ بھی کہ "وہ میرے نکاح سے باہر ہے" صریح نہیں کنایہ ہے،

لان الخروج من النکاح یکون بالطلاق وبکل فرقة جاءت من قبله کتقبیله بنتها او من قبلها کتقبیلها ابنه وغیر ذلك، فلم یتعین لافادة الطلاق وصار کقوله لم یبق اولیس بیني وبینك نکاح بل هما عبارتان عن معنی واحد ، وهذا یتوقف علی النیة فکذا ذاک۔ کیونکہ نکاح سے خروج، طلاق کے ساتھ اور دیگر وجوہ سے بھی ہو سکتا ہے۔ مثلاً خاوند بیوی کی بیٹی کا (شہوت کے ساتھ) بوسہ لے یا بیوی خاوند کے بیٹے کا اسی طرح بوسہ لے یا اس کے علاوہ بھی کئی طرح سے فرقت کے اسباب ہو سکتے ہیں، لہذا یہ لفظ طلاق کے لئے خاص نہ رہا، جب وہ کہے "نکاح باقی نہ رہا" یا "تیرے میرے درمیان نکاح نہیں ہے" بلکہ یہ دونوں ہم معنی ہیں تو نیت پر موقوف ہوں گے، یہ بھی ایسا ہے (ت)

عالمگیری میں ہے:

لو قال لها لا نكاح بيني وبينك او قال لم يبق بيني وبينك نكاح يقع الطلاق اذا نوی 3 اگر کہا "تیرے میرے درمیان نکاح باقی نہیں رہا" اگر نیت ہو تو طلاق ہو گی ورنہ نہیں۔ (ت)

یوں ہی "وہ میرے کام کی نہ رہی" بھی کنایات سے ہے کما حققناہ فیما علقناہ علی رد المحتار

---

1 فتاوی ہندیہ، الفصل السابع في الطلاق بالالفاظ الفارسیة، نورانی کتب خانہ پشاور، 1/380 2 فتاوی ہندیہ، الفصل الخامس في الکنایات، نورانی کتب خانہ پشاور، 1/376 3 فتاوی ہندیہ، الفصل الخامس في الکنایات، نورانی کتب خانہ پشاور، 1/375

(As we have researched in the marginalia of Radd al-Muhtar. — T) However, it is evident from the context of the speech that Zaid uttered these words as a statement of information, not with the intention of initiating a divorce. The third word is conjoined to the second, and the second serves as an explanation and a statement of the cause for the first. This statement is based on that erroneous notion prevalent among the common people of these times that if a woman leaves home without her husband's permission, she is no longer in wedlock. Any statement or confession of divorce based on a misunderstanding of a religious matter is fundamentally ineffective in terms of religious ruling.

In Al-Khayriyyah, from Al-Ashbah, from Jami' al-Fusulayn and Al-Quniyah: If one confesses to divorce based on a Mufti's decree, and it then becomes clear that no divorce occurred, then that confession shall not be deemed a divorce.

It is narrated in Khayriyyah from Ashbah, and from there from Jami' al-Fusulayn and Quniyah, that if someone confessed to a divorce occurring based on a Mufti's fatwa, and it later transpired that the divorce did not actually occur, then that confession will not be considered a divorce. (T)

Anyway, the crux of the matter depends on the intention. If Zaid had intended to give a divorce using all or some of these three words, then one irrevocable (Ba'in) divorce has occurred. If the woman consents, she can remarry him either during or after the waiting period (Iddat) without needing a Halala. It is stated in Alamgiri:

One irrevocable divorce does not follow another irrevocable divorce. If he says to her, "You are divorced irrevocably," and then says again, "You are divorced irrevocably," only one irrevocable divorce occurs.

If he said, "I give you one irrevocable divorce," and then said again, "I give you an irrevocable divorce," only one irrevocable divorce will take place because after the first irrevocable divorce, a second irrevocable one cannot be added to it. (T)

And if he did not intend to give a divorce through any of these three words, even if the last two words were spoken with the intention of divorce, then fundamentally no divorce has occurred. She remains his wife as before. In the matter of the absence of the intention of divorce, the husband's statement under oath is credible. If he says under oath that he absolutely did not intend to initiate a divorce with any of those

three words, it must be accepted and they will be considered husband and wife. If he is lying in this oath, the sin is upon him, and no blame lies on the woman. It is stated in Durr al-Mukhtar: "His word under oath is credible regarding the absence of intention." (In the case of absence of intention, the husband's word will be credible. — T) And Allah Almighty knows best.

---

1. Fatawa-e-Khayriyyah, Kitab al-Talaq, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/74
2. Fatawa-e-Hindiyyah, Al-Fasl al-Khamis fi al-Kinayat, Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/377
3. Durr al-Mukhtar, Bab al-Kinayat, Matba' Mujtabai, Delhi, 1/224

(जैसा कि हमने रद-उल-मुहतार के हाशिये में इसकी तहक़ीक़ कर दी है। - त) मगर बातचीत के लहज़े से ज़ाहिर यह है कि ज़ैद ने ये अल्फ़ाज़ बतौर ख़बर कहे, न कि तलाक़ शुरू करने की नियत से। तीसरा लफ़्ज़ दूसरे पर जुड़ा हुआ है और दूसरा पहले की व्याख्या और कारण का बयान है। और इस ख़बर की बुनियाद वह ग़लत गुमान है जो आजकल के आम लोगों में मशहूर है कि अगर औरत शौहर की इजाज़त के बिना घर से चली जाए तो निकाह से बाहर हो जाती है। और जो ख़बर या इक़रार-ए-तलाक़ किसी दीनी मसले की ग़लतफ़हमी पर आधारित हो, वह दीनी तौर पर बिल्कुल भी प्रभावी नहीं होता।

फ़तावा ख़ैरिया में अश्बाह से और वहाँ से जामे-उल-फ़ुसूलैन और.क़ुनिया से मंक़ूल है कि: यदि मुफ्ती के फ़तवे के आधार पर तलाक़ होने का इक़रार किया और फिर पता चला कि तलाक़ नहीं हुआ था, तो उस इक़रार को तलाक़ नहीं माना जाएगा।

ख़ैरिया में अश्बाह से और वहाँ से जामे-उल-फ़ुसूलैन और.क़ुनिया से मंक़ूल है कि अगर मुफ्ती के फ़तवे की बिना पर तलाक़ होने का इक़रार किया, फिर मालूम हुआ कि तलाक़ न हुई, तो उस इक़रार को तलाक़ न क़रार दिया जाएगा। (त)

ख़ैर, बहरहाल मामले का दारोमदार नियत पर है। अगर ज़ैद ने इन तीनों लफ़्ज़ों में से सभी या किसी से तलाक़ देने का इरादा किया था, तो एक 'तलाक़-ए-बाइन' (अटल तलाक़) वाक़े हुई। अगर औरत राज़ी हो तो अब इद्दत के दौरान या बाद में जब चाहे बिना हलाला के उससे निकाह कर सकती है। आलमगीरी में है:

एक बाइन तलाक़ के बाद दूसरी बाइन तलाक़ नहीं जुड़ती। यदि उसने उससे कहा, "तू बाइन है," फिर कहा, "तू बाइन है," तो केवल एक बाइन तलाक़ ही होगी।

अगर कहा, "तुझे एक बाइन तलाक़," इसके बाद दोबारा कहा, "तुझे बाइन तलाक़," तो एक ही बाइन तलाक़ होगी क्योंकि पहले बाइन के बाद दूसरी बाइन उसे नहीं लग सकती। (त)

और अगर इन तीन में से किसी लफ़्ज़ से तलाक़ देने की नियत न की, हालाँकि आख़िरी के दोनों लफ़्ज़ तलाक़ की नियत से कहे हों, तो असल में तलाक़ नहीं हुई। वह पहले की तरह उसकी बीवी है। और तलाक़ की नियत न होने के मामले में शौहर की बात क़सम के साथ विश्वसनीय है। अगर वह क़सम खाकर कह दे कि मैंने इन तीनों लफ़्ज़ों में से किसी से तलाक़ की नियत नहीं की थी, तो इसे निश्चित

रूप से मान लिया जाएगा और उन्हें पति-पत्नी समझा जाएगा। अगर वह इस क़सम में झूठा है, तो इसका गुनाह उस पर है, औरत पर कोई इल्ज़ाम नहीं। दुर्रे-मुख़्तार में है: "नियत न होने के मामले में क़सम के साथ उसी की बात मानी जाएगी।" (नियत न होने में शौहर की बात विश्वसनीय होगी। - त) और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

---

1. फ़तावा ख़ैरिया, किताब-उत-तलाक़, दार-उल-मआरिफ़त, बेरुत, 1/74
2. फ़तावा हिंदिया, अल-फ़स्ल-उल-ख़ामिस फ़िल-किनायात, नूरानी कुतुब ख़ाना, पेशावर, 1/377
3. दुर्रे-मुख़्तार, बाब-उल-किनायात, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 1/224

(جیسا کہ ہم نے اس کی تحقیق ردالمحتار کے حاشیہ میں کر دی ہے۔ ت) مگر سوقِ کلام سے ظاہر یہ ہے کہ زید نے یہ الفاظ بطورِ اخبار کہے، نہ نیت انشائے طلاق۔ تیسرا لفظ دوسرے پر معطوف ہے اور دوسرا پہلے کی شرح و بیانِ علت، اور اس اخبار کا مبنٰی وہ غلط گمان جو عوام زمانہ میں شائع ہے کہ عورت بے اجازتِ شوہر گھر سے چلی جائے تو نکاح سے نکل جاتی ہے اور جو اخبار واقرار طلاق بربنائے غلط فہمی مسئلہ ہو دیانۃً اصلاً موثر نہیں۔

في الخيرية عن الاشباه عن جامع الفصولين والقنية اذا اقر بالطلاق بناء على ما افتى به المفتى ثم تبين عدم الوقوع فانه لا يقع.1

خیر یہ میں اشباہ سے اور وہاں سے جامع الفصولین اور قنیہ سے منقول ہے کہ اگر مفتی کے فتوٰی کی بنا پر طلاق ہونے کا اقرار کیا تو پھر معلوم ہوا کہ طلاق نہ ہوئی، تو اس اقرار کو طلاق نہ قرار دیا جائے گا۔ (ت)

خیر بہرحال مدار کار نیت پر ہے، اگر زید نے ان تینوں لفظوں میں کُل یا بعض کسی سے طلاق دینے کا قصد کیا تھا تو ایک طلاق بائن واقع ہوئی کہ عورت راضی ہو تو اب یا عدت کے بعد جب چاہے بے حلالہ اس سے نکاح کر سکتی ہے۔ عالمگیری میں ہے:

لا يلحق البائن البائن بان قال لها انت بائن بائن لا يقع الا طلقة واحدة بائنة.2

اگر کہا، تجھے ایک بائنہ طلاق، اس کے بعد دوبارہ کہا تجھے بائنہ طلاق، تو ایک ہی بائنہ طلاق ہو گی کیونکہ پہلے بائنہ کے بعد دوسری بائنہ اس کو لاحق نہیں ہو سکتی۔ (ت)

اور اگر ان تین میں کسی لفظ سے طلاق دینے کی نیت نہ کی اگرچہ اخیر کے دونوں لفظ بہ نیت طلاق کہے ہوں تو اصلاً طلاق نہ ہوئی وہ بدستور اس کی زوجہ ہے اور نیت طلاق نہ ہونے میں

شوہر کا قول قسم کے ساتھ معتبر ہے اگر وہ بقسم کہہ دے کہ میں نے ان تینوں لفظوں میں کسی سے نیت انشائے طلاق نہ کی تھی قطعاً مان لیں گے اور انہیں زوج و زوجہ جانیں گے، اگر وہ اس قسم میں جھوٹا ہے تو وبال اس پر ہے عورت پر الزام نہیں۔ درمختار میں ہے: القول له بيمينه في عدم النية3 (نیت نہ ہونے میں خاوند کی بات معتبر ہو گی۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

---

1 فتاوٰی خیریہ کتاب الطلاق دارالمعرفۃ بیروت ۱/۷۴ 2 فتاوٰی ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱/۳۷۷ 3 درمختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۲۴

Fatawa Ridawiyyah Volume 12

Problem 283: From Mathura, Mohalla Kishorpura, sent by Hakim Tauheed-ul-Haq Sahib, 22 Dhu al-Hijjah 1308 AH.

Question: What do the scholars of religion and muftis of the clear Shari'ah say regarding this: Zaid, an adult of sound mind, performed the offer and acceptance (ijab-o-qubul) with Hindah due to the persuasion of others and the compulsion of his parents, and thus married her. The bride's departure (rukhsati) has not yet occurred, nor has there been any valid seclusion (khalwat-e-sahiha) because Hindah is still with her mother. Afterwards, Zaid expressed his lack of consent for the marriage before two or three honest and just individuals, stating, "I did not perform the offer with Hindah with my own consent and inclination; rather, I only voiced verbal consent due to the pressure and persuasion of others. Therefore, I do not accept this marriage; it should be performed anew." In these circumstances, his relatives became displeased, prompting him to leave for a journey. He has not sought any news of Hindah since. His behavior and circumstances suggest he will not return. There, he gave the impression to all witnesses and the Qadi that he is still a bachelor and unmarried, and that his marriage has not occurred with anyone. He also gave the impression that none of his relatives are alive and that he no longer has any connection to his homeland, nor will he ever. So, under the mentioned circumstances, is Hindah still in Zaid's marriage or not? And in this situation, how can Hindah be freed from Zaid? That is all.

The Answer: In the inquired case, regardless of whether legal compulsion (ikrah-e-shar'i) was established or not, compulsion and coercion in marriage do not hinder its validity, enforcement, and binding nature. It is stated in Al-Hindiyyah:

फ़तावा रिज़विया जिल्द 12

मसला 283: मथुरा, मोहल्ला किशोरपुरा से, हकीम तौहीदुल हक़ साहब द्वारा प्रेषित, 22 ज़ुल-हिज्जा 1308 हिजरी।

प्रश्न: विद्वान और मुफ्ती इस बारे में क्या कहते हैं कि ज़ैद, जो एक समझदार बालिग है, उसने दूसरे लोगों के कहने और माता-पिता के दबाव में आकर हिन्दा से निकाह का प्रस्ताव और स्वीकृति (ईजाब-ओ-क़ुबूल) की और उससे निकाह कर लिया। अभी रुख़सती नहीं हुई है और न ही एकांतवास (ख़लवत-ए-सहीहा) हुआ है क्योंकि हिन्दा अभी अपनी माँ के पास है। इसके बाद ज़ैद ने दो-तीन सच्चे और न्यायप्रिय व्यक्तियों के सामने निकाह पर अपनी असहमति व्यक्त की और कहा कि "मैंने हिन्दा के साथ अपनी इच्छा और पसंद से प्रस्ताव नहीं किया था, बल्कि केवल दूसरों के दबाव और समझाने के कारण ज़ुबानी तौर पर अपनी सहमति दी थी। इसलिए मुझे यह निकाह मंज़ूर नहीं है; यह निकाह फिर से होना चाहिए।" इन परिस्थितियों में उसके रिश्तेदार नाराज़ हो गए, जिस पर वह किसी यात्रा पर निकल गया और हिन्दा की कोई ख़बर नहीं ली। उसके हाव-भाव से भी लगता है कि वह वापस नहीं आएगा। वहाँ उसने सभी गवाहों और काज़ी आदि को यह प्रभावित किया कि वह अभी कुंवारा और अविवाहित है, और उसका निकाह किसी से नहीं हुआ है। उसने यह भी जताया कि उसका कोई भी रिश्तेदार जीवित नहीं है और उसका अब अपने वतन से कोई सरोकार नहीं है और न ही होगा। तो क्या इन परिस्थितियों में हिन्दा अभी भी ज़ैद के निकाह में है या नहीं? और इस स्थिति में हिन्दा को ज़ैद से छुटकारा कैसे मिल सकता है? केवल।

उत्तर: पूछी गई स्थिति में, चाहे शरई दबाव (इकराह-ए-शरई) सिद्ध हुआ हो या नहीं, निकाह में ज़बरदस्ती और दबाव इसकी वैधता, प्रवर्तन और अनिवार्यता के लिए बाधक नहीं होते हैं। अल-हिन्दिया में है:

पृष्ठ 579 का 688

فتاویٰ رضویہ جلد دو ازدہم

مسئلہ ۲۸۳: از متھرا محلہ کیشور پورہ مرسلہ حکیم توحید الحق صاحب ۲۲ ذی الحجہ ۱۳۰۸ھ

سوال: علمائے دین ومفتیانِ شرعِ متین کیا فرماتے ہیں، کہ زید عاقل بالغ نے دوسرے لوگوں کی تلقین اور والدین کے جبر پر ہندہ سے ایجاب و قبول کیا اور اس سے نکاح کر لیا، اور ابھی رخصتی نہ ہوئی اور خلوتِ صحیحہ نہ ہوئی کیونکہ ہندہ ابھی والدہ کے پاس ہے، اس کے بعد زید نے دو تین سچے اور عادل حضرات کے سامنے نکاح پر عدمِ رضامندی ظاہر کی اور کہا کہ میں نے ہندہ سے اپنی رضامندی اور رغبت کے ساتھ ایجاب نہیں کیا بلکہ محض دوسروں کی زبردستی کی بنا پر اور ان کی تلقین کی وجہ سے صرف زبانی رضامندی ظاہر کی تھی اس لئے یہ نکاح مجھے منظور نہیں، یہ نکاح دوبارہ ہونا چاہئے، اندریں حالات خویش و اقارب کی ناراضگی ہوئی جس پر وہ کہیں سفر پر نکل گیا اور ہندہ کی خبر تک نہ لی، اور اس کے قرائن واطوار بھی ظاہر کرتے ہیں کہ وہ واپس نہیں آئے گا، وہاں اس نے تمام گواہوں اور قاضی وغیرہ کو بالجزوم یہ تاثر دیا کہ وہ ابھی کنوارہ غیر شادی شدہ ہے اور کسی سے اس کا نکاح نہیں ہوا، اور یہ بھی تاثر دیا کہ میرے خویش و اقارب میں کوئی بھی زندہ نہیں رہا اور میرا اب وطن سے کوئی سروکار نہیں ہے اور نہ ہی ہوگا۔ تو مذکورہ حالات میں ہندہ ابھی زید کے نکاح میں ہے یا نہیں؟ اور اس صورت میں زید سے ہندہ کا چھٹکارا کیسے ہو؟ فقط

الجواب: صورتِ مسئولہ میں قطعِ نظر اس بات کے کہ یہ جبر واکراہ شرعی تھا یا نہیں، نکاح میں جبر واکراہ اس کے نفاذ اور لزوم کے لئے مانع نہیں ہوتا۔ ہندیہ میں ہے

صفحہ 579 از 688

Fatawa Rizvia, Volume 12

According to us, all verbal transactions made under duress are valid. And those matters which do not admit of annulment, such as divorce, manumission of slaves, and marriage, become binding, as stated in Al-Kafi, summarized. Therefore, his saying "I am still a bachelor and have not married anyone yet" is of no consequence because the denial of marriage is a false report which carries no weight. It is mentioned in Al-Hindiyya that if one says "I did not marry you" even with the intention of divorce, divorce does not occur by consensus, as stated in Al-Badai'. Similarly, if he says "I have no wife," even with the intention of divorce, divorce will not occur. Zaid's statement that "I have no concern and will have no concern with anyone in the homeland" means that I have no heart-felt connection or purpose with anyone, which signifies desire and need. It is as if he said, "I have no purpose or need for anyone, or I don't care about anyone," whereas these mentioned words are not among the expressions of divorce. It is in Al-Hindiyya that if a husband says "I have no need for you," or "I do not like you," "I have no desire for you," "I have no inclination towards you," divorce will not occur even if said with the intention of divorce, according to Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him). Furthermore, the noble scholars have said...

---

1 Fatawa Hindiyya, Book of Coercion, Chapter One on the Legal Definition, etc., Noorani Kutub Khana, Peshawar, 5/35. 2 Fatawa Hindiyya, Chapter Five on Metaphors (Al-Kinayat), Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/57. 3 Fatawa Hindiyya, Chapter Five on Metaphors (Al-Kinayat), Noorani Kutub Khana, Peshawar, 1/57.

हमारे अनुसार, दबाव में किए गए सभी मौखिक व्यवहार मान्य हैं। और वे मामले जिनमें रद्द होने की संभावना नहीं होती, जैसे तलाक, दास-मुक्ति और विवाह, वे बाध्यकारी हो जाते हैं जैसा कि 'अल-काफी' में संक्षिप्त में बताया गया है। इसलिए उसका यह कहना कि "मैं अभी कुंवारा हूँ और मैंने अभी तक किसी से विवाह नहीं किया है" कोई मायने नहीं रखता क्योंकि विवाह का इनकार एक झूठी खबर है जिसका कोई महत्त्व नहीं है। 'अल-हिंदिया' में है कि यदि कोई कहे "मैंने तुझसे विवाह नहीं किया" तो तलाक की नीयत होने पर भी सर्वसम्मति से तलाक नहीं होगा, जैसा कि 'अल-बदाइ' में है। इसी तरह यदि वह कहे "मेरी कोई पत्नी नहीं है," तो तलाक की नीयत के बावजूद तलाक नहीं होगा। ज़ैद का यह कहना कि "वतन में मेरा किसी से कोई सरोकार नहीं है और न होगा" तो इसका अर्थ यह है कि मेरा किसी से कोई दिल का लगाव या उद्देश्य नहीं है, जिसका अर्थ चाहत और ज़रूरत है। मानो उसने कहा कि मुझे किसी से कोई मतलब या ज़रूरत नहीं है या मुझे किसी की परवाह नहीं है, जबकि ये शब्द तलाक के शब्दों में से नहीं हैं। 'अल-हिंदिया' में है कि यदि पति कहे "मुझे तेरी ज़रूरत नहीं है" या "मैं तुझे पसंद नहीं करता," "मैं तेरी चाहत नहीं रखता," "मुझे तुझसे कोई झुकाव नहीं है," तो तलाक प्रभावी नहीं होगा चाहे तलाक की नीयत से ही क्यों न कहा हो, इमाम अबू हनीफ़ा (रज़ियल्लाहु अन्हु) के अनुसार। साथ ही, विद्वानों ने फ़रमाया है...

---

1 फ़तावा हिंदिया, किताबुल इकरा (दबाव की किताब), प्रथम अध्याय, शरीयत की परिभाषा आदि, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 5/35. 2 फ़तावा हिंदिया, पाँचवाँ अध्याय, किनयात (परोक्ष शब्दों) में, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 1/57. 3 फ़तावा हिंदिया, पाँचवाँ अध्याय, किनयात (परोक्ष शब्दों) में, नूरानी कुतुब खाना, पेशावर, 1/57.

تصرفات المکرہ کلھا قولاً منعقدۃ عندنا وما لا یحتمل الفسخ منہ کالطلاق والعتاق والنکاح فھو لازم کذا فی الکافی اھ ملخصاً کہ مجبور کئے ہوئے شخص کے قولی تصرفات ہمارے نزدیک منعقد ہو جاتے ہیں اور وہ امور جو فسخ کا احتمال نہیں رکھتے مثلاً طلاق، عتاق اور نکاح یہ لازم ہو جاتے ہیں جیسا کہ کافی میں ہے، ملخصاً۔ قول او من ناکت خدام و ھنوز با کسی نکاح نہ کردہ چیزی نیست زیرا کہ جحودِ نکاح خبرِ دروغ ست واثری ندارد لہذا اس کا یہ کہنا کہ میں ابھی کنوارا ہوں اور ابھی تک کسی سے نکاح نہیں کیا کوئی چیز نہیں کیونکہ نکاح کا انکار جھوٹی خبر ہے جس کا کچھ اعتبار نہیں۔ فی الھندیۃ ان قال لم اتزوجك ونوی الطلاق لا یقع الطلاق بالاجماع کذا فی البدائع ہندیہ میں ہے کہ اگر کہے "میں نے تجھ سے نکاح نہیں کیا" تو طلاق کی نیت ہو تو بھی طلاق بالاجماع نہ ہوگی، جیسا کہ بدائع میں ہے، ولو قال مانی امراۃ لا یقع وان نوی، ہمچناں قول او مرا در وطن با کسے سروکارے نیست و نخواھد بود کہ سروکار نبودن بمعنی نفی غرض و تعلقِ قلب ست کہ عبارت از رغبت وحاجت باشد گویا گفت باکسے غرضے ندارم یا حاجتم نیست یا بروائے کسے ندارم و اینما خود از الفاظِ طلاق نیست اور یوں نہیں اگر کہے "میری کوئی بیوی نہیں" طلاق کی نیت کے باوجود طلاق نہ ہوگی۔ زید کا یہ کہنا کہ "وطن میں میرا کسی سے کوئی سروکار نہیں اور نہ ہوگا" تو اس کا مطلب یہ ہے کہ میرا قلبی تعلق یا غرض کسی سے نہیں ہے، جس کا معنی رغبت اور حاجت ہے، گویا اس نے یوں کہا مجھے کسی سے غرض یا حاجت نہیں ہے یا مجھے کسی کی پروا نہیں ہے جبکہ یہ مذکورہ الفاظ طلاق میں سے نہیں ہیں، فی الھندیۃ لو قال لا حاجۃ لی فیک، ینوی الطلاق فلیس بطلاق اذا قال لا اریدك ولا احبك ولا اشتھیك اولا رغبۃ لی فیک فانہ لایقع وان نوی فی قول ابی حنیفۃ رحمہ اللہ تعالٰی باز علماء ہندیہ میں ہے اگر خاوند نے کہا مجھے تجھ میں

حاجت نہیں یا میں تجھے پسند نہیں کرتا، میں تیری خواہش نہیں رکھتا، مجھے تجھ سے رغبت نہیں، تو طلاق واقع نہ ہو گی اگرچہ طلاق کی نیت سے کہے، امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے نزدیک۔ نیز علماء کرام نے فرمایا ہے

---

1 فتاویٰ ہندیہ کتاب الاکراہ الباب الاول فی تفسیر شرعاً الخ نورانی کتب خانہ پشاور ۳۵/۵ 2 فتاویٰ ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۵۷/۱ 3 فتاویٰ ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۵۷/۱

Fatawa Razawiya, Volume 12

It is stated that if a person says "all the women of Baghdad are divorced," and his wife is also from Baghdad, she will not be divorced unless he specifically intended her divorce with those words. It is mentioned in Radd al-Muhtar that if someone says, "The wives of all the residents of Baghdad are divorced," al-Dhakhira first mentions a difference of opinion regarding this: according to Imam Abu Yusuf (may Allah be pleased with him), divorce will not occur. And there is one narration from Imam Muhammad (may Allah be pleased with him) to the same effect, as long as he does not intend his own wife, because this is a general statement. In al-Ashbah, citing al-Khaniyah, it is stated that the fatwa is based on the opinion of Imam Abu Yusuf (may Allah be pleased with him). Zaid used the word "homeland" (watan), which encompasses many cities and villages, and furthermore, he did not specify women but only referred to "homeland." Therefore, "homeland" includes all men, women, boys, and girls. The summary of the discussion is that in the case in question, Zaid's marriage to Hindah remains valid and established, and no divorce has occurred. The only remedy is to approach a Shari'i authority so that he may facilitate a divorce or restore marital rights. And Allah the Glorified and Exalted knows best. (T)

Problem 274: From Pilibhit, Bashir Khan locality, adjacent to the house of Mina Shah, sent by Nizamuddin Shaneh, 29 Ramadan al-Mubarak 1311 AH. What do the scholars of the religion say about this matter: a person said to his consummated wife three times, "I have set you free." In this case, does the marriage remain intact or not? And can he marry her now or not? Explain and be rewarded.

1. Radd al-Muhtar, Chapter on Divorce of the Unconsummated Wife, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/461.
2. Radd al-Muhtar, Chapter on Divorce of the Unconsummated Wife, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/461.

फ़तावा रज़विया, खंड 12

यह कहा गया है कि यदि कोई व्यक्ति कहे कि "बग़दाद की सभी औरतों को तलाक़ है" और उसकी पत्नी भी बग़दाद की हो, तो उसकी पत्नी को उस समय तक तलाक़ नहीं होगी जब तक कि उसने उस शब्द से अपनी पत्नी की तलाक़ की नीयत न की हो। रद्दुल मुहतार में है कि यदि कोई व्यक्ति कहे "बग़दाद के सभी निवासियों की औरतों को तलाक़," तो जखीरा में पहले इसके बारे में मतभेद का उल्लेख किया गया है: इमाम अबू यूसुफ़ (रहमतुल्लाह अलैहि) के अनुसार तलाक़ नहीं होगी। और इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैहि) से भी एक रिवायत यही है, जब तक कि वह अपनी पत्नी की नीयत न करे, क्योंकि यह एक सामान्य बात है। अल-अश्बाह में अल-खानिया के हवाले से कहा गया है कि फ़तवा इमाम अबू यूसुफ़ (रहमतुल्लाह अलैहि) के कथन पर है। ज़ैद ने "वतन" (मातृभूमि) कहा है जिसमें कई शहर और गाँव शामिल हैं, और फिर उसने विशेष रूप से औरतों का ज़िक्र नहीं किया बल्कि केवल "वतन" से सरोकार रखा, तो "वतन" में सभी पुरुष, महिलाएँ, बच्चे और बच्चियाँ शामिल हैं। सारांश यह है कि पूछी गई स्थिति में ज़ैद का हिन्दह के साथ निकाह सही और स्थापित है, और कोई तलाक़ साबित नहीं हुई है। छुटकारे का उपाय यही है कि किसी शरई हाकिम (काज़ी) के पास जाए ताकि वह तलाक़ दिलवाए या वैवाहिक अधिकार बहाल कराए। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है। (टी)

मसला 274: पीलीभीत, मोहल्ला बशीर खाँ, मीना शाह के घर के पास से, निज़ामुद्दीन शाने द्वारा प्रेषित, 29 रमज़ान उल-मुबारक 1311 हिजरी। दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि एक व्यक्ति ने अपनी मदखूला (जिसके साथ सहवास हुआ हो) पत्नी से तीन बार कहा "मैंने तुझे आज़ाद किया।" इस स्थिति में निकाह कायम रहा या नहीं? और क्या अब वह उससे निकाह कर सकता है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

1. रद्दुल मुहतार, बाबुत तलाक़ गैरुल मदखूला बिहा, दार इहयाउत तुरासुल अरबी, बेरूत, 2/461
2. रद्दुल मुहतार, बाबुत तलाक़ गैरुल मदखूला बिहा, दार इहयाउत तुरासुल अरबी, बेरूत, 2/461

पृष्ठ 688 में से 581

فرموده اند اگر گفت زنانے بغداد ہمہ طلاقہ اند وزن او نیز از بغدادست مطلقہ نشود مگر آں کہ بالتعمیر نیت او کردہ باشد فی رد المحتار ذکر فی الذخیرۃ اولا الخلاف فی نساء اھل بغداد طالق، فعند ابی یوسف وروایۃ عن محمد لا تطلق الا ان ینویھا لان ھذا امر عام ، وفیہ ایضا عن الاشباہ عن الخانیۃ الفتوی علی قول ابی یوسف ۲ (ایں جا لفظ وطن گفتہ است کہ از بلدہ وقریہ عام ترست باز تخصیص زناں ہم نہ کرد مطلق لفظ کسے گفت کہ زناں ومردان وپیراں ودختراں ہمہ را شامل است بالجملہ در صورت مسئولہ نکاح صحیح ولازم ست وطلاق ثابت نیست چارہ کار جزیں چیست کہ رجوع بحکومت کردہ آید تا طلاق رسد یا حقوق زنا شوئی مودی شود واللہ سبحنہ وتعالی اعلم۔ کہ کوئی شخص کہے بغداد کی تمام عورتوں کو طلاق ہے اور اس کی بیوی بھی بغداد میں ہو تو اس کی بیوی کو اس وقت طلاق نہ ہوگی جب تک اس لفظ سے بیوی کی طلاق کی نیت نہ کرے۔ ردالمحتار میں ہے کہ اگر کوئی شخص یہ کہے تمام بغداد والوں کی عورتوں کو طلاق تو ذخیرہ میں اولاً اسکے متعلق اختلاف ذکر کیا ہے کہ امام ابویوسف رحمہ اللہ تعالیٰ کے نزدیک طلاق نہ ہوگی، اور امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ کے نزدیک ایک روایت بھی یہی ہے تا وقتیکہ بیوی کی نیت سے نہ کہے، کیونکہ یہ عام بات ہے اور اس میں اشباہ اور وہاں خانیہ سے منقول ہے کہ فتویٰ امام ابو یوسف رحمہ اللہ تعالیٰ کے قول پر ہے، زید نے وطن کہا ہے جو کئی شہروں اور قریوں پر مشتمل ہے، اور پھر اس نے خاص عورتوں کا ذکر نہیں کیا بلکہ صرف 'وطن' سے سروکار نہیں کہا، تو وطن سب مردوں، عورتوں، بچوں اور بچیوں کو شامل ہے۔ خلاصہ کلام یہ ہے کہ مسئولہ صورت میں زید کا ہندہ سے نکاح صحیح ثابت ہے اور طلاق ثابت نہیں ہے، چھٹکارے کا چارہ کار یہی ہے

کہ کسی شرعی حاکم کے ہاں رجوع کرے تاکہ وہ طلاق حاصل کرائے یا حقوق زوجیت بحال کرائے۔ واللہ سبحنہ وتعالی اعلم (ت)

مسئلہ ۲۷۴: از پیلی بھیت محلہ بشیر خاں متصل مکان مینہ شاہ مرسلہ نظام الدین شانہ ۲۹ رمضان المبارک ۱۳۱۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے اپنی عورت مدخولہ سے تین بار کہا "میں نے تجھے آزاد کیا" اس صورت میں نکاح قائم رہا یا نہیں؟ اور اب اس سے نکاح کر سکتا ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

۱ رد المحتار باب الطلاق غیر المدخول بھا دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۴۶۱ ۲ رد المحتار باب الطلاق غیر المدخول بھا دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۴۶۱

The Answer: This word that "the man said to the woman," if the meaning of divorce was not intended, then no divorce took place at all. And if it was said with the intention of divorce, then one divorce has occurred. The woman has exited the marriage, but there is no need for *halala* etc., nor is there any need for her to wait. If both agree, they can remarry anew immediately. Yes, if the husband himself said any of those words with the intention of three divorces, then undoubtedly it became a heavy/irrevocable divorce (*mughallaza*) so that now he cannot marry her without *halala*.

(Arabic Text)

In Al-Hindiyya: if one says 'I have emancipated you', divorce occurs with intention, as in Mi'raj al-Dirayah (1). And in Al-Durr: Metaphorical (kinaya) is what is not specifically coined for it, i.e., divorce, but carries its possibility along with others. Irrevocable divorce (ba'in) occurs if intended, or two, or three if intended. Irrevocable does not follow [another] irrevocable if it is possible to make it a report (ikhbar) of the first, such as 'ba'in ba'in' or 'you are divorced with an irrevocable divorce'. Thus it does not occur because it is a report, and there is no necessity to make it a new pronouncement (insha), unlike 'you are ba'in with another' or if he said 'I intended the major separation' because of the impossibility of construing it as a report, so it is made a new pronouncement (2). Abridged.

(Urdu Translation)

In Hindiyya it is stated: if the husband said "I have set you free," then with the intention of divorce, divorce will occur, as mentioned in Mi'raj al-Diraya. And in Durr it is stated: that word is a metaphor (kinaya) which is not coined for divorce and carries the possibility of both divorce and non-divorce. From such a word, a bain (irrevocable) divorce occurs, and from such a word, a bain divorce will occur; with the intention of one or two, one, and with the intention of three, there will be three. And such a word will not follow a previous bain divorce unless it carries the possibility of being a narration of the first divorce, then it will be considered as news and narration. For example, if he says "you are bain bain" or says "I have given one bain divorce," the second bain will not occur, because there is no need to make it a new pronouncement (insha). On the contrary, when he says "I gave you a second bain divorce" or says "I intended the major bain divorce," then in this case it cannot be correct to consider it as news, therefore it must be considered as a new pronouncement (insha). Abridged. (T)

Problem 285: From Budaun, sent by Aala Hazrat Syed Abul Hasan Ahmad Noori (may Allah be pleased with him), 20 Dhu al-Qi'dah 1319 AH. A stranger man forcibly committed adultery with a woman. When the husband heard this, not considering the element of coercion, he said these words:

---

1. Fatawa Hindiyya, Chapter Five on Metaphorical Expressions, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/273.
2. Durr-e-Mukhtar, Chapter on Metaphorical Expressions, Mujtabai Press Delhi, 1/224.

उत्तर: यह शब्द कि "पुरुष ने स्त्री से कहा," यदि इससे तलाक़ का अर्थ अभिप्रेत नहीं था, तो मूल रूप से कोई तलाक़ नहीं हुआ। और यदि तलाक़ की नीयत से कहा, तो एक तलाक़ हो गया। स्त्री निकाह से निकल गई, लेकिन हलाला आदि की कोई आवश्यकता नहीं है, न ही उसे किसी प्रतीक्षा की ज़रूरत है। यदि दोनों आपस में सहमत हों, तो उसी समय फिर से नया निकाह कर लें। हाँ, यदि पति ने स्वयं उनमें से कोई शब्द तीन तलाक़ों की नीयत से कहा, तो निस्संदेह तलाक़ मुग़ल्लज़ा (अत्यंत कठोर/अकाट्य) हो गया कि अब वह हलाला के बिना उससे निकाह नहीं कर सकता।

(अरबी पाठ)

अल-हिन्दिया में है: यदि पति ने कहा 'मैंने तुझे आज़ाद किया', तो नीयत के साथ तलाक़ हो जाएगी, जैसा कि मेराजुद्दराया में है (१)। और दुर्र में है: किनाया (सांकेतिक) वह है जो उसके लिए, यानी तलाक़ के लिए बनाया न गया हो, लेकिन उसकी और अन्य संभावनाएँ रखता हो। बाइन (अकाट्य) तलाक़ तब होता है जब नीयत हो, या दो, या तीन की नीयत पर तीन। बाइन, बाइन के बाद प्रभावी नहीं होता यदि उसे पहले का समाचार (इख़बार) बनाना संभव हो, जैसे 'बाइन बाइन' या 'तू बाइन तलाक़ के साथ है'। अतः यह घटित नहीं होता क्योंकि यह समाचार है, और इसे नया आदेश (इंशा) बनाने की कोई आवश्यकता नहीं है, 'तू दूसरी के साथ बाइन है' या 'मैंने बड़ी जुदाई की नीयत की' के विपरीत, क्योंकि इसे समाचार के रूप में लेना असंभव है, इसलिए इसे नया आदेश माना जाता है (२)। संकलित।

(उर्दू अनुवाद का हिंदी रूपांतरण)

हिन्दिया में है: यदि पति ने कहा "मैंने तुझे आज़ाद किया" तो तलाक़ की नीयत से तलाक़ हो जाएगी, जैसा कि मेराजुद्दराया में है। और दुर्र में है: वह शब्द किनाया (सांकेतिक) होता है जो तलाक़ के लिए बनाया न गया हो और वह तलाक़ और गैर-तलाक़ दोनों तरह की संभावना रखता हो। ऐसे शब्द से बाइन तलाक़ होगी, और ऐसे शब्द से बाइन तलाक़ होगी; एक या दो की नीयत से एक, और तीन की नीयत से तीन होंगे। और ऐसा शब्द पहले बाइन तलाक़ के बाद प्रभावी नहीं होगा जब तक कि वह पहले तलाक़ के वर्णन की संभावना न रखता हो, तो उसे केवल समाचार और वर्णन ही माना जाएगा। उदाहरण के लिए, यदि वह कहे "तू बाइन बाइन है" या कहे "मैंने एक बाइन तलाक़ दी है," तो दूसरा बाइन घटित नहीं होगा, क्योंकि इसे नया आदेश (इंशा) बनाने की आवश्यकता नहीं है। इसके विपरीत, जब वह कहे "मैंने तुझे दूसरी बाइन तलाक़ दी" या कहे "मैंने बड़ी बाइन की नीयत की है," तो इस स्थिति में इसे समाचार मानना सही

(अरबी पाठ)

(उर्दू अनुवाद का हिंदी रूपांतरण)

नहीं हो सकता, इसलिए इसे नया आदेश (इंशा) ही मानना होगा। संकलित। (त)

मसला २८५: बदायूँ से, प्रेषक आलाहज़रत सैयद अबुल हसन अहमद नूरी (रज़ियल्लाहु अन्हु), २० ज़ीकादा १३१९ हिजरी। एक महिला के साथ एक अजनबी पुरुष ने ज़बरदस्ती व्यभिचार (बलात्कार) किया। पति ने सुना तो ज़बरदस्ती का विचार न करके ये शब्द कहे कि:

---

1. फ़तावा हिन्दिया, पांचवां अध्याय, किनायात के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, १/२७३।
2. दुर्रे मुख्तार, किनायात का अध्याय, मुज्तबाई प्रेस दिल्ली, १/२२४।

पृष्ठ ५८२/६८८

الجواب یہ لفظ کہ "مرد نے عورت سے کہا" اگر ان سے طلاق کے معنی مراد نہ تھے جب تو طلاق اصلاً نہ ہوئی اور اگر بہ نیت طلاق کہے تو ایک طلاق پڑ گئی عورت نکاح سے نکل گئی مگر حلالہ وغیرہ کی کچھ ضرورت نہیں، نہ اسے کچھ انتظار کی حاجت، دونوں آپس میں راضی ہوں تو اسی وقت پھر نئے سرے سے نکاح کرلیں، ہاں اگر شوہر نے خود ہی ان میں کوئی لفظ تین طلاقوں کی نیت سے کہا تو بیشک طلاق مغلظہ ہو گئی کہ اب بے حلالہ کے اس سے نکاح نہیں کر سکتا،

| فی الھندیۃ لوقال اعتقتك، طلقت بالنیۃ کذانی معراج الدرایۃ اھ۱ وفی الدر، کنایتہ مالم یوضع لہ ای الطلاق واحتملہ وغیرہ ویقع البائن ان نواھا اوالثنتین وثلث ان نواہ، ولا یلحق البائن اذا امکن جعلہ اخبارا عن الاول کانت بائن بائن او ابنتك بتطلیقۃ فلا یقع لانہ اخبار فلا ضرورۃ فی جعلہ انشاء بخلاف ابنتك باخری او قال نویت البینونہ الکبری لتعذر حملہ علی الاخبار فیجعل انشاء ۱۲ھ ملتقطا۔ | ہندیہ میں ہے اگر خاوند نے کہا "میں نے تجھے آزاد کیا" تو نیتِ طلاق سے طلاق ہو جائے گی، جیسا کہ معراج الدرایہ میں ہے اھ اور دُرّ میں ہے وہ لفظ کنایہ ہوتا ہے جو طلاق کے لئے وضع نہ ہو اور وہ طلاق اور غیر طلاق دونوں قسم کا احتمال رکھتا ہو تو ایسے لفظ سے بائنہ طلاق ہو گی اور ایسے لفظ سے بائنہ طلاق ہو گی ایک یا دو کی نیت سے ایک، اور تین کی نیت سے تین ہوں گی اور ایسا لفظ پہلے بائنہ طلاق کو لاحق نہ ہوگا مگر جب وہ پہلی طلاق کی حکایت کا احتمال رکھتا ہو تو اس کو خبر و حکایت ہی قرار دیا جائے گا، مثلاً یوں کہے "تو بائن بائن ہے" یا کہے "میں نے ایک طلاق بائنہ دی ہے" تو دوسری بائنہ واقع نہ ہو گی، کیونکہ اس کو انشاء بنانے کی ضرورت نہیں، اس کے برخلاف جب یوں کہے "میں نے تجھے دوسری بائنہ طلاق دی" یا کہے

"میں نے بڑی بائنہ کی نیت کی ہے" تو اس صورت میں اس کو خبر قرار دینا درست نہیں ہو سکتا، لہٰذا اس کو انشاء ہی ماننا پڑے گا اھ ملتقطاً (ت) |

مسئلہ ۲۸۵: از بدایوں مرسلہ اعلیحضرت سید ابوالحسن احمد نوری رضی اللہ تعالیٰ عنہ ۲۰ ذیقعدہ ۱۳۱۹ھ ایک عورت سے ایک مرد اجنبی نے جبریہ زنا کیا شوہر نے سنا تو اعتبارِ جبر نہ کر کے یہ کلمات کہے کہ

---

۱ فتاویٰ ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۲۷۳ ۲ درمختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۲۴

Fatawa Razawiyya Volume 12

"She is no longer useful for my work, I have left her. If she comes, I will cut her nose. Let her go wherever she wants, let her do whatever she wants." More than a year has passed since this; has divorce occurred or not? Can that woman enter into another marriage or not? Despite being counseled, the husband did not revoke it (take her back) and remains firm on what he said. The words were not explicit words of divorce, these were exactly the words spoken, that is all.

Answer: Leaving a woman is explicitly understood as divorce in common usage (urf). It is stated in Khulasa and Hindiyya:

Persian Text	**Urdu Translation**
If a man says to his wife: "I have released you, I have left you, I have set you free, or I have opened your feet," then in common usage, all these phrases are synonymous with "I have divorced you." Therefore, a revocable (raj'i) divorce will occur through them, even without the intention of divorce.	

(T)

"And go wherever she wants" is among the metaphorical expressions (kinayat) of divorce. Since explicit mention of divorce preceded it in the speech, it no longer requires a clarification of intention.

Arabic Citation	**Urdu Translation**
It is stated in Tanwir al-Absar that a word not specifically coined for divorce and which carries the possibility of divorce or something else, will not cause divorce without intention or circumstantial evidence. On this, it is stated in Radd al-Muhtar: "Evidence" refers to a clear external situation that is useful for the purpose, such as the mention of divorce before these words. This is quoted from Muhit in Bahr.	

(T)

And since this irrevocable (ba'in) statement joined that clear revocable (raj'i) divorce, it also became irrevocable (ba'in).

Arabic Principle	Urdu Translation
For indeed, the irrevocable (ba'in) follows the revocable (raj'i) and attaches to it.	When an irrevocable divorce attaches to a revocable one, then for the husband...

1 Fatawa Hindiyya, Chapter Seven on Divorce in Persian Words, Noorani Kutub Khana Peshawar 1/379 2 Durr-e-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Chapter on Metaphors, Matba' Mujtabai Delhi 1/222 3 Radd al-Muhtar, Chapter on Metaphors, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut 2/464

"मेरे काम की न रही, मैंने छोड़ दी, अगर आएगी तो नाक काट लूँगा, जहाँ चाहे चली जाए, जो चाहे सो करे।" और इस बात को साल भर से ज़्यादा गुज़र गया, क्या तलाक़ हो गई या नहीं? क्या वह औरत दूसरा निकाह करे या न करे? शौहर ने समझाने के बावजूद रुजू (वापसी) नहीं किया, बदस्तूर उसी बात पर कायम है जो कही थी। तलाक़ के साफ़ लफ्ज़ नहीं थे, बस यही लफ्ज़ थे जो कहे गए, फ़क़त।

जवाब: औरत को छोड़ देना उर्फ़(आम बोलचाल) में तलाक़ का साफ़ लफ्ज़ है। ख़ुलासा और हिन्दिया में है:

फ़ारसी इबारत **उर्दू तर्जुमा**

अगर कोई व्यक्ति अपनी बीवी से कहे: "मैंने तुझे छोड़ दिया है, तुझे अलग कर दिया है, या तेरे पाँव खोल दिए हैं," तो उर्फ़ में ये तमाम अल्फ़ाज़ "तुझे तलाक़ दी" के हम-माना (समानार्थी) हैं। इसलिए इनसे रजई तलाक़ होगी और बिना नीयत के भी तलाक़ हो जाएगी।

(त)

"जहाँ चाहे चली जाए" यह तलाक़ के किनाया (अप्रत्यक्ष) अल्फ़ाज़ में से है। चूँकि बातचीत में पहले तलाक़ का साफ़ ज़िक्र आ चुका है, इसलिए इसकी नीयत पूछने की ज़रूरत नहीं रहती।

अरबी इबारत **उर्दू तर्जुमा**

तन्वीरुल अबसार में है कि जो लफ़्ज़ तलाक़ के लिए मख़्सूस न हो और उसमें तलाक़ और ग़ैर-तलाक़ दोनों का एहतमाल हो, तो ऐसे लफ़्ज़ से बिना दलालत और नीयत के तलाक़ नहीं होगी। इस पर रद्दुल मुहतार में है: दलालत से मुराद ऐसी ज़ाहिर हालत है जो मक़सद साफ़ कर दे, और इसी तरह यह भी है कि इन अल्फ़ाज़ से पहले तलाक़ का ज़िक्र हो चुका हो। यह बहर में मुहीत से नक़ल किया गया है।

(त)

और चूँकि यह बाएना (पक्की तलाक़) उस सरीह रजई तलाक़ से मिल गई, इसलिए वह भी बाएना हो गई।

अरबी कायदा **उर्दू तर्जुमा**

बेशक बाएना तलाक़ जब रजई को लाहक़ हो जाए (जुड़ जाए) तो अब शौहर को...

1 फ़तावा हिन्दिया, अध्याय सात फ़ारसी शब्दों में तलाक़, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर 1/379 2 दुर्रे मुख़्तार शरह तन्वीरुल अबसार, किनाया का अध्याय, मतबा मुजतबाई दिल्ली 1/222 3 रद्दुल मुहतार, किनाया का अध्याय, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी बेरुत 2/464

पेज 583/688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

"میرے کام کی نہ رہی، میں نے چھوڑدی، اگر آئے گی تو ناک کاٹ لوں گا، جہاں چاہے چلی جائے، جو چاہے سو کرے"۔ اور اس کو عرصہ سال بھر سے زیادہ گزر گیا، آیا طلاق پڑی یا نہیں؟ وہ عورت دوسرا نکاح کرے یا نہ کرے؟ خاوند نے باوجود فہمائش بھی رجوع نہ کیا، بدستور مقر اسی بات کا ہے جو کہی تھی الفاظ طلاق صریح نہ تھے یہی تھے جو کہے، فقط

الجواب: عورت کو چھوڑ دینا عرفاً طلاق میں صریح ہے، خلاصہ و ہندیہ میں ہے :

| لو قال الرجل لامرأتہ تراجنگ باز داشتم او ہشتم اویلہ کردم | اگر کوئی شخص بیوی کو کہے "میں نے تیرا چنگ باز رکھا، تجھے | | ترا اوپائے کشادہ کردم ترا فہذا کلہ تفسیر قولہ طلقتک | چھوڑا ہے، تجھے جُدا کردیا ہے یا تیرے پاؤں کھول دئے | | عرفاً حتی یکون رجعیاً یقع بدون النیۃ ۱۔ | ہیں، تو یہ تمام الفاظ عرفاً " تجھے طلاق دی" کے ہم معنی ہیں، | | | اس لئے ان سے رجعی طلاق ہوگی اور بغیر نیت طلاق ہو گی۔ | (ت)

"اور جہاں چاہے چلی جائے" کنایاتِ طلاق سے ہے کہ کلام میں تقدمِ طلاق صریح کے باعث وہ بھی تنقیحِ نیت کا محتاج نہ رہا،

| فی التنویر کنایتہ مالم یوضع لہ واحتملہ وغیرہ | تنویر الابصار میں ہے کہ جو لفظ طلاق کے لئے وضع نہ ہو اور | | فلاتطلق بھا الابنیۃ اودلالۃ الحال فی ردالمحتار | طلاق و غیر طلاق کا احتمال رکھتا ہو تو ایسے لفظ سے بغیر دلالت | | المراد بھا الحالۃ الظاھرۃ المفیدۃ المقصودۃ ومنھا | و نیت طلاق نہ ہوگی، اس پر ردالمختار میں ہے: دلالت سے | | تقدم ذکر الطلاق، بحر عن المحیط ۳۔ | مراد یہ ہے کہ کوئی ظاہر ایسی حالت ہو جو مقصود کے لئے مفید | | | ہوسکے

اسی قبیل سے ہے کہ ان الفاظ سے قبل طلاق کا ذکر | | | ہوچکا ہو، بحر میں محیط سے منقول ہے۔ (ت) |

اور جبکہ یہ بائنہ اس طلاق صریح رجعی سے ملی وہ بھی بائنہ ہو گئی،

| فان البائن یلحق الرجعی ویلحقہ یبطل | بائنہ طلاق جب رجعی کو لاحق ہو جائے تو اب خاوند کو |

۱ فتاوٰی ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالالفاظ الفارسیۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۷۹ ۲ در مختار شرح تنویر الابصار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۲۲ ۳ ردالمحتار باب الکنایات داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۴۶۴

Fatawa Razawiyya Volume 12

[Boxed Text] Arabic: The option of returning (Ruj'ah) is lost, so they become irrevocably divorced (Bain), as the jurists have explicitly stated. Urdu: The option of revocation is terminated because both become irrevocably divorced, as the jurists have clarified. (T)

Thus, in the mentioned case, the woman has left the marriage bond; two irrevocable divorces have occurred upon her. If the waiting period (Iddah) has passed during this time, she is free to marry whomever she wishes. And Allah Almighty knows best. 26 Dhu al-Qi'dah 1319 AH

Problem 286: A man gave his wife "Chutti" (leave/separation) twice. After this, people of his neighborhood said that divorce had occurred, but the husband says no divorce happened. The woman also says she wasn't divorced, but only that the man said "Chutti di" (I gave leave) in front of people. Secondly, when the woman went to her house, it caught fire. People said that the fire was started by the person whose wife she was. Now, while both the man and woman were being taken to the police station by name, they were told to say that she is his mother or sister. Out of fear, that person said, "This woman is my sister." Then those people released them. Now, both the man and woman are mutually willing; can their marriage take place or not? And what is the consequence for someone who takes a fatwa from you but does not act according to it? State the ruling and be rewarded by Allah.

The Answer: Saying about the wife that "she is my sister" does not cause any harm to the marriage. The questioner stated that in a state of anger, the person said twice regarding his wife, "I have given her Chutti." By saying this, one irrevocable divorce (Talaq-e-Bain) has occurred on the woman; she has left the marriage bond. Since both the man and woman are willing, they should remarry with a new contract.

[Bottom Table] Arabic Column: In Tanwir al-Absar: "Go out" and "Go away" may imply rejection or "forbidden, irrevocable," it could be an insult, and "I have released you" does not imply insult or rejection. In a state of pleasure, all types depend on intention, and in a state of anger, the first two do, and during a discussion of divorce, only the first word depends on intention. Summarized. Urdu Column: In Tanwir al-Absar it is mentioned: 'The husband's saying to the wife "Get out, go away" can also imply a response, and his saying like "It is forbidden, it is irrevocable" can also imply a scolding. And saying "I have set you free" does not imply either a scold or a response. So, in a state of pleasure, all these words will depend on intention, and in a state of

anger, the first two are dependent, and during a discussion of divorce, only the first word will depend on intention. Briefly. (T)

1 Durr al-Mukhtar Sharh Tanwir al-Absar, Chapter on Allusions (Al-Kinayat), Mujtabai Press Delhi 1/224

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

[बॉक्स टेक्स्ट] अरबी: लौटने का विकल्प (रुजूअ) समाप्त हो जाता है, इसलिए वे दोनों 'बाइन' (अपरिवर्तनीय रूप से तलाकशुदा) हो जाते हैं, जैसा कि फ़ुक़हा (विधिवेत्ताओं) ने स्पष्ट रूप से बताया है। उर्दू: रुजूअ का अधिकार समाप्त हो जाता है क्योंकि दोनों बाइन बन जाती हैं, जैसा कि फ़ुक़हा ने तसरीह (स्पष्टीकरण) फ़रमाई है (त)।

अत: उपरोक्त स्थिति में महिला निकाह से बाहर हो गई, उस पर दो तलाक-ए-बाइन पड़ गए। यदि इस दौरान उसकी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) गुज़र गई हो, तो उसे अधिकार है कि जिससे चाहे निकाह कर ले। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। २६ ज़ीक़ादा १३१९ हिजरी

मसाला २८६: एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी को दो बार "छुट्टी" दी। इसके बाद उसके मुहल्ले के लोग कहते हैं कि तलाक हो गया, और उसका पति कहता है कि तलाक नहीं हुआ, और महिला कहती है कि मुझे तलाक नहीं दिया गया, केवल लोगों के सामने इस आदमी ने यह कहा कि "छुट्टी दी"। दूसरी बात यह कि जब महिला अपने घर चली गई तो उसके घर में आग लग गई, लोगों ने कहा कि आग उस व्यक्ति ने लगाई जिसकी वह पत्नी है। अब आदमी और औरत दोनों को नाम लेकर चौकी (थाने) ले जाया जा रहा था और यह कहा जा रहा था कि कहो कि वह उसकी माँ-बहन है। डर की वजह से उस व्यक्ति ने कह दिया कि "यह औरत मेरी बहन है", तो उन लोगों ने उन्हें छोड़ दिया। अब वे दोनों पुरुष और महिला आपस में राज़ी हैं, तो क्या उनका निकाह हो सकता है या नहीं? और जो व्यक्ति आपसे फतवा ले जाए और उसके अनुसार कार्य न करे, तो उसका क्या परिणाम है? बयान करें, अल्लाह के यहाँ सवाब पाएं।

अल-जवाब (उत्तर): पत्नी के बारे में यह शब्द कहना कि "यह मेरी बहन है", निकाह में कोई बाधा नहीं डालता। प्रश्नकर्ता ने व्यक्त किया कि उस व्यक्ति ने क्रोध की स्थिति में अपनी पत्नी के बारे में दो बार ये शब्द कहे कि "मैंने उसे छुट्टी दी"। इस कहने से महिला पर एक तलाक-ए-बाइन पड़ गई, वह निकाह से निकल गई। जब पुरुष और महिला दोनों राज़ी हैं, तो नए सिरे से फिर से निकाह कर लें।

[तालिका टेक्स्ट] अरबी कॉलम: तनवीरुल अबसार में है: 'निकल जा' और 'चली जा' में उत्तर या निषेध की संभावना है, 'बाइन' (अपरिवर्तनीय) है, यह अपशब्द के लिए भी उपयुक्त है और 'मैंने तुम्हें छोड़ दिया' में अपशब्द या उत्तर की संभावना नहीं है। तो प्रसन्नता की स्थिति में सभी श्रेणियां नीयत (इरादे) पर निर्भर करती हैं, और क्रोध में पहले दो, और तलाक की चर्चा में केवल पहला शब्द नीयत पर

निर्भर होगा। संक्षिप्त। उर्दू कॉलम: तनवीरुल अबसार में है कि पति का पत्नी को कहना "तू निकल जा, तू चली जा", ये जवाब की संभावना भी रखते हैं, और उसका यह कहना "हराम है, बाइन है" ये डांट की संभावना भी रखते हैं। और यह कहना "मैंने तुझे आज़ाद कर दिया" ये डांट और जवाब दोनों की संभावना नहीं रखते, तो रज़ामंदी की स्थिति में ये तमाम अल्फाज़ नीयत पर मौकूफ़ (निर्भर) होंगे, और गुस्सा की स्थिति में पहले दोनों मौकूफ़ और मुज़ाकरा-ए-तलाक (तलाक की चर्चा) में केवल पहला लफ्ज़ नीयत पर मौकूफ़ होगा। मुख़्तसरन (संक्षेप में)। (त)

१ दुर्रे मुख्तार शरह तनवीरुल अबसार, बाबुल किनायात, मतबा मुज्तबाई दिल्ली १/२२४

पेज ५८४ / ६८८

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

[خانہ] عربی: خیار الرجعة فیصیران بائنین، کما صرحوا بہ۔ اردو: رجوع کا اختیار ختم ہو جاتا ہے کیونکہ دونوں بائنہ بن جاتی ہیں، جیسا کہ فقہاء نے تصریح فرمائی ہے (ت)

پس صورت مذکورہ میں عورت نکاح سے نکل گئی اس پر دو طلاقیں بائن پڑگئیں، اگر اس مدت میں عدت گزر گئی ہو تو اسے اختیار ہے جس سے چاہے نکاح کرلے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ ۲۶ ذیقعدہ ۱۳۱۹ھ

مسئلہ ۲۸۶: اپنی عورت کو دو مرتبہ اس نے چھٹی دی اس کے بعد جو آدمی اس کے محلے کے ہیں وہ کہتے ہیں کہ طلاق ہوگئی اور اس کا آدمی کہتا ہے کہ طلاق نہیں ہوئی اور عورت کہتی ہے کہ مجھ کو طلاق نہیں دی صرف آدمیوں کے سامنے اس آدمی نے یہ کہا کہ چھٹی دی اور دوسرے یہ کہ جب عورت اپنے مکان کو چلی گئی تو اس کے مکان کو آگ لگ گئی تو لوگوں نے کہا کہ آگ اس شخص نے دی جس کی تو عورت ہے اب اس کا نام لے کر آدمی کو اور عورت کو دونوں کو چوکی پر لئے جاتے تھے اور یہ کہتے تھے یہ کہو کہ اس شخص کی ماں بہن ہیں اور اس شخص نے بوجہ خوف کے یہ بات کہہ دی کہ یہ عورت میری بہن ہے تو ان دونوں کو اُن آدمیوں نے چھوڑ اب وہ عورت مرد دونوں باہم راضی ہیں تو اس کا نکاح ہو سکتا ہے یا نہیں؟ اور جو شخص آپ کے پاس سے فتوی لے جاوے اور اس کے مطابق عمل نہ کرے تو اس کا کیا نتیجہ ہے؟ بینوا توجروا عند اللہ۔

الجواب: عورت کی نسبت یہ لفظ کہنا کہ "یہ میری بہن ہے" نکاح میں کچھ خلل نہیں ڈالتا۔ سائل نے اظہار کیا کہ اس شخص نے حالتِ غضب میں اپنی زوجہ کی نسبت دو بار یہ لفظ کہے کہ "میں نے

اسے چھٹی دی" اس کہنے سے عورت پر ایک طلاق بائن پڑ گئی وہ نکاح سے نکل گئی جب مرد و عورت دونوں راضی ہیں نئے سرے سے پھر نکاح کرلیں۔

[جدول] عربی کالم: فی تنویر الابصار اخرجی واذھبی یحتمل ردا وحرام، بائن، یصلح سبا وسرحتك لایحتمل السب والرد ففی حالة الرضا تتوقف الاقسام علی نیة وفی الغضب الاولان وفی مذاکرة الطلاق الاول فقط اھ مختصرا۔ اردو کالم: تنویر الابصار میں ہے 'خاوند کا بیوی کو کہنا "تو نکل جا، تو چلی جا" یہ جواب کا احتمال بھی رکھتے ہیں، اور اس کا یوں کہنا "حرام ہے، بائن ہے" یہ ڈانٹ کا احتمال بھی رکھتے ہیں۔ اور یہ کہنا "میں نے تجھے آزاد کردیا" یہ ڈانٹ اور جواب دونوں کا احتمال نہیں رکھتے، تو رضا کی حالت میں یہ تمام الفاظ نیت پر موقوف ہوں گے، اور غصہ کی حالت میں پہلے دونوں موقوف اور مذاکرہ طلاق میں صرف پہلا لفظ نیت پر موقوف ہوگا۔ مختصراً (ت)

۱ در مختار شرح تنویر الابصار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۲۴

Fatawa Ridawiyya Volume 12

...he himself has clarified this in the second question. (T) Rather, the correct reason for its occurrence is what this humble person has stated. Success is from Allah, and Allah knows best.

Issue 288: What is your ruling, may Allah have mercy on you? (T) In a situation where someone locked Zaid's wife in a house with another man. When Zaid found out, he addressed his father-in-law in front of four or five men and said, "Since you people locked my wife in a house with another person, therefore she is now forbidden (Haram) to me." So, what is the ruling? Has she become divorced, or is she still his wife as before? In the case that the marriage bond continues, is any expiation (Kaffarah) due from him or not? Explain and be rewarded.

The Answer: Although this word, due to custom, is attached to explicit (Sarih) divorce, such that irrevocable divorce (Talaq Ba'in) occurs without the need for intention,

[Table Column 1 (Arabic)]: In Radd al-Muhtar, regarding the statement 'haram', it will be mentioned later that in our times, irrevocable divorce occurs through it without intention due to customary usage. There is no difference in this between 'muharramah' and 'hurmatuki', whether one says 'ala' (on me) or not. Summarized, and the full text is therein. [Table Column 2 (Urdu)]: In Radd al-Muhtar, it is stated that if a husband says "You are forbidden," it will soon be explained that with this word in our times, irrevocable divorce occurs without intention because it has become customary for it to mean divorce. "Forbidden for me" and "I have made you forbidden" are both equal; here, whether the words "on me" are said or not makes no difference. (Summary, full text in the book). (T)

However, Zaid's words "Since you did this, therefore she is forbidden" also bear the possibility that he is stating the act of locking her up as the cause of prohibition, as is common among many ignorant people who think that if a woman goes out without her husband's permission, she leaves the marriage bond. On this interpretation, this speech will not be the initiation of divorce but rather an acknowledgment of divorce based on a false foundation, and that is purely absurd.

[Table Column 1 (Arabic)]: In al-Khaniyyah: A man divorced his wife while suffering from pleurisy (delirium). When he recovered, he said, "I have divorced my wife." Then he said, "I used to think that divorce in that state had occurred." Our scholars, may Allah Almighty have mercy on them, said... [Table Column 2 (Urdu)]: In Khania, it is

mentioned that a man thought divorce occurs automatically during the illness of pleurisy. Based on this, he said "My wife has become divorced." Then, after recovering, while acknowledging the divorce, he says, "I thought that divorce occurs automatically in pleurisy."

---

1 Radd al-Muhtar, Chapter of Allusions, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/464.

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

...उसने स्वयं इसे दूसरे प्रश्न में स्पष्ट कर दिया है। (त) बल्कि इसके होने का सही कारण वही है जो इस फकीर (लेखक) ने बयान किया है। सफलता अल्लाह की ओर से है, और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसाला 288: आपका क्या फ़रमान है, अल्लाह आप पर रहम करे? (त) उस स्थिति में जब किसी ने ज़ैद की पत्नी को किसी दूसरे व्यक्ति के साथ एक घर में बंद कर दिया। जब ज़ैद को पता चला, तो उसने चार-पांच लोगों के सामने अपने ससुर को संबोधित करते हुए कहा कि क्योंकि तुम लोगों ने मेरी पत्नी को गैर व्यक्ति के साथ एक घर में बंद किया है, इसलिए अब वह मुझ पर हराम है। तो क्या हुक्म है, क्या वह पत्नी तलाक़शुदा हो गई या अब भी पहले की तरह उसकी पत्नी है? वैवाहिक संबंध बने रहने की स्थिति में, क्या उस पर कोई कफ़ारा (प्रायश्चित) है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

अल-जवाब (उत्तर): यद्यपि यह शब्द 'उर्फ (लोक-प्रथा) के कारण 'सरिह' (स्पष्ट) से जुड़ा हुआ है कि बिना तलाक़ की नियत के भी 'तलाक़-ए-बाइन' (अटल तलाक़) हो जाए।

[तालिका - अरबी]: 'रद्दुल मुहतार' में हराम शब्द के बारे में है कि जल्द ही बयान होगा कि हमारे समय में इस शब्द से बिना नियत के बाइन तलाक़ हो जाएगी क्योंकि तलाक़ होने पर इसका 'उर्फ बन चुका है। इसमें 'मुहर्रमा' और 'हुर्मतुकी' के बीच कोई अंतर नहीं है, चाहे 'अला' (मुझ पर) शब्द कहे या न कहे। यह संक्षिप्त है और पूर्ण विवरण पुस्तक में है। [तालिका - उर्दू]: 'रद्दुल मुहतार' में है कि पति का यह कहना कि "तू हराम है": जल्द ही बयान होगा कि हमारे समय में इस शब्द से बिना नियत के बाइन तलाक़ हो जाएगी क्योंकि तलाक़ होने पर इसका 'उर्फ बन चुका है। "मुझ पर हराम है" और "मैंने तुझे हराम किया" दोनों बराबर हैं, यहाँ "मुझ पर" शब्द कहे या न कहे, कोई अंतर नहीं है। संक्षिप्त, पूरी इबारत किताब में है। (त)

मगर ज़ैद का यह कहना "चूंकि तुमने ऐसा किया इसलिए हराम है", इसका यह अर्थ भी संभावित है कि वह सिर्फ इस बंद करने को हराम होने का कारण बता रहा है, जैसा कि बहुत से जाहिल (अज्ञानी) लोगों के मन में होता है कि यदि औरत पति की अनुमति के बिना बाहर चली जाए तो निकाह से निकल जाती है। इस आधार पर यह बात तलाक़ देना नहीं होगी बल्कि एक गलत आधार पर तलाक़ का इकरार (स्वीकारोक्ति) होगा, और वह मात्र व्यर्थ है।

[तालिका - अरबी]: 'खनिया' में है कि एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी को तलाक़ दिया जब वह 'बिरसाम' (प्रलाप/उन्माद) का रोगी था। जब वह स्वस्थ हुआ तो उसने कहा, "मैंने अपनी पत्नी को तलाक़ दे दी है।" फिर उसने कहा, "मैं समझता था कि उस स्थिति में तलाक़ हो गई थी।" हमारे मशायख (विद्वान) फरमाते हैं... [तालिका - उर्दू]: 'खनिया' में है कि एक व्यक्ति ने ख्याल किया कि 'बिरसाम' की बीमारी में तलाक़ अपने आप हो जाती है, इस आधार पर उसने कहा "मेरी पत्नी तलाक़शुदा हो गई", फिर स्वस्थ होने के बाद तलाक़ का इकरार करते हुए कहता है कि मैंने सोचा था कि बिरसाम में तलाक़ अपने आप हो जाती है।

---

1 रद्दुल मुहतार, बाबुल किनायात, दारु इहया-उत-तुरास अल-अरबी बेरूत 464/2

पृष्ठ 586/688

نے خود اس کو دوسرے سوال میں واضح کیا ہے۔ت) بلکہ ایک پڑنے کی صحیح وجہ یہ ہے جو فقیر نے بیان کی وباللہ التوفیق، واللہ تعالٰی اعلم۔ مسئلہ ۲۸۸: ماقولکم رحمکم اللہ(اللہ آپ پر رحم کرے آپ کا کیا فرمان ہے۔ت) اس صورت میں کہ زید کی زوجہ کو کسی نے دوسرے ایک شخص کے ساتھ ایک مکان میں بند کیا جب زید کو خبر ہوئی تو اس نے چار پانچ آدمیوں کے روبرو اپنے خسر سے مخاطب ہو کر کہا کہ چونکہ تم لوگوں نے میری زوجہ کو غیر شخص کے ساتھ ایک مکان میں بند کیا لہٰذا اب وہ مجھ پر حرام، پس کیا حکم ہے، آیا وہ زوجہ طلاق ہوگئی یا ہنوز حسب سابق اس کی زوجہ ہے، بر تقدیر تعلق زوجیت کے قائل کے ذمہ کچھ کفارہ ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا الجواب: ہر چند یہ لفظ بوجہ عرف ملحق بالصریح ہے کہ بے حاجت نیت طلاق بائن واقع ہو،

فی ردالمحتار قولہ حرام سیأتی وقوع البائن بہ بلانیة فی زماننا للتعارف لافرق فی ذلك بین محرمة وحرمتك سواء قال علی اولا اھ ملخصا و تمامہ فیہ۔ | ردالمحتار میں ہے کہ خاوند کا کہنا "تو حرام ہے" عنقریب بیان ہوگا کہ اس لفظ سے ہمارے زمانے میں بغیر نیت بائنہ طلاق واقع ہوگی کیونکہ اس کے طلاق ہونے پر عرف بن چکا ہے۔ تو مجھ پر حرام ہے، اور میں نے تجھے حرام کیا، دونوں برابر ہیں، یہاں "مجھ پر" کا لفظ کہے نہ کہے کوئی فرق نہیں ہے اھ ملخصاً، مکمل عبارت کتاب میں ہے۔(ت)

مگر کلامِ زید "چونکہ تم نے ایسا کیا لہٰذا حرام ہے" اس کے یہ معنی بھی محتمل کہ صرف اس بند کرنے کو موجب حرمت بتاتا ہے جیسے بہت جہّال کے خیال میں ہوتا ہے کہ عورت بے اجازت

شوہر باہر جائے تو نکاح سے نکل جاتی ہے اس تقدیر پر یہ کلام انشائے طلاق نہ ہوگا بلکہ ایک بنائے باطل پر اقرارِ اطلاق، اور وہ محض لغو ہے،

فی الخانیة رجل طلق امرأته وهو صاحب برسام فلماصح قال قد طلقت امرأتی ثم قال انی کنت اظن ان الطلاق فی تلك الحالة کان واقعا قال مشائخنا رحمهم الله تعالی | خانیہ میں ہے کہ ایک شخص نے خیال کیا کہ مرضِ برسام میں خود بخود طلاق ہو جاتی ہے، اس بناء پر اس نے کہا "میری بیوی مطلقہ ہوگئی" پھر تندرست ہونے کے بعد طلاق کا اقرار کرتے ہوئے کہتا ہے میں نے گمان کیا کہ برسام میں خود بخود طلاق ہو جاتی ہے،

---

1 ردالمحتار باب الکنایات داراحیاء التراث العربی بیروت ۴۶۴/۲

Fatawa Razawiya, Volume 12

“When he admits to divorce, but refers it back to a state of delirium (Birsam) and says 'I divorced my wife while in a state of delirium,' then the divorce is not effective, etc.” 1 In this case, our scholars have said that if while admitting to divorce, one states illness as the reason and says "I divorced in the state of delirium (Birsam)," then divorce will not occur, etc. (T)

So, if this meaning was intended, then no divorce occurred nor is any penance necessary. And if those words were said with the intention of divorce, then one irrevocable divorce (Talaq Ba'in) occurred, and the woman is out of the marriage bond. And Allah Almighty knows best.

Problem 289: From Bajri Abad, Post Office Sadat, District Ghazipur, 7 Dhu al-Hijjah 1312 AH. Question from Muhammad Abul Khair. What do the scholars of religion and the muftis of the firm Sharia say in this matter? Zaid, suspecting his wife of adultery, became angry and took her to her father's house and said, "We will not keep you; you are no longer fit for us." After a couple of months, it is not known where he went. It has been seven years, and he is still missing. Following this, her father called the husband's elder brother, who is the head and elder of the family, and said, "This woman is your honor and respect, take her; she will not be allowed to stay here." The husband's elder brother refused and said, "First, her husband is not at home. Second, this woman is not fit for our service; we will not take her. You have the authority to do whatever you want." Upon this answer, while her father was arranging for another marriage, the woman went away of her own accord with another man without marriage and stayed with him. Now, she has married that man she went away with. Is this second marriage of hers legally valid or not? And does the first husband's angry statement "We will not keep you; you are no longer fit for us" and then leaving her and taking back given items constitute divorce or not? Based on the mentioned circumstances, did the saying "We will not keep you" result in divorce or not, even though present circumstances and evidence suggest that Zaid said the above words, which are metaphorical (Kinaya) for divorce, with the intention of divorce? It is stated in Mukhtasar al-Wiqaya:

Arabic Text	Urdu Meaning
A metaphor (Kinaya) is that which holds the possibility of divorce and	And a metaphor is that which holds the possibility of both divorce and non-divorce.

Arabic Text	Urdu Meaning
non-divorce. For example, "get out," "go away," "stand up."	For example: get out, go away, get up. These words could be a response to something.
It can be a rejection. Words like "separated," "free," "severed," "forbidden," "irrevocable."	And terms like: separated, free, severed, forbidden, irrevocable.
It can be for scolding. Words like "count (your Iddah)" and "seek purification."	Holds the possibility of a scolding.

1. Qazi Khan, Kitab al-Talaq, Naval Kishore, Lucknow, 1/213

फ़तावा रज़विया, खंड 12

“जब वह तलाक को स्वीकार करता है लेकिन उसे प्रलाप (बिरसाम) की स्थिति से जोड़ता है और कहता है 'मैंने प्रलाप की स्थिति में अपनी पत्नी को तलाक दिया,' तो तलाक प्रभावी नहीं होता है, आदि।” 1 इस स्थिति में हमारे विद्वानों ने कहा है कि यदि तलाक स्वीकार करते समय बीमारी को कारण बताया जाए और कहा जाए कि "मैंने बिरसाम (प्रलाप) की स्थिति में तलाक दिया है," तो तलाक प्रभावी नहीं होगा, आदि। (त)

अतः यदि यही अर्थ अभिप्रेत था, तो न तो तलाक हुआ और न ही कोई कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) आवश्यक है। और यदि उन शब्दों को तलाक की नियत से कहा गया था, तो एक तलाक-ए-बाइन (अटल तलाक) हो गया और वह स्त्री निकाह से बाहर हो गई। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है।

मसला 289: बजरी आबाद, डाकखाना सादात, ज़िला ग़ाज़ीपुर, 7 ज़ुल-हिज्जा 1312 हिजरी। मुहम्मद अबुल खैर का प्रश्न। धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस मामले में क्या कहते हैं? ज़ैद ने अपनी पत्नी पर व्यभिचार का संदेह होने पर नाराज़ होकर उसे उसके पिता के घर छोड़ दिया और कहा, "हम तुम्हें नहीं रखेंगे; तुम हमारे लायक नहीं रहीं।" इसके एक-दो महीने बाद वह कहीं चला गया जिसका पता नहीं है। अब सात साल हो गए हैं और वह अभी भी लापता (मफ़्क़ूदुल ख़बर) है। इसके बाद, पिता ने पति के बड़े भाई को, जो परिवार के मुखिया और बड़े हैं, बुलाकर कहा, "यह औरत आपकी इज़्ज़त और आबरू है, इसे ले जाइए; हमारे यहाँ इसका गुज़ारा नहीं होगा।" पति के बड़े भाई ने मना कर दिया और कहा, "पहली बात तो यह है कि उसका पति घर पर नहीं है, दूसरी बात यह औरत हमारे काम के लायक नहीं है, हम इसे नहीं ले जाएँगे। आपको अधिकार है कि जहाँ चाहें कर दें।" इस जवाब पर उसका पिता दूसरे निकाह की तैयारी कर ही रहा था कि इस बीच वह औरत स्वयं अपनी मर्ज़ी से एक व्यक्ति के साथ बिना निकाह के चली गई और उसी के साथ रहने लगी। अब उस औरत ने उसी व्यक्ति के साथ निकाह कर लिया है। क्या उसका यह दूसरा निकाह शरीयत के अनुसार वैध है या नहीं? और पहले पति का गुस्से में यह कहना कि "हम तुम्हें नहीं रखेंगे, तुम हमारे लायक नहीं रहीं" और फिर उसे छोड़ देना और दी गई चीज़ें वापस लेना क्या तलाक के हुक्म में है या नहीं? और इन संकेतों के अनुसार, इस कहने से कि "हम तुम्हें नहीं रखेंगे", तलाक हुआ या नहीं, जबकि वर्तमान परिस्थितियों और संकेतों से पता चलता है कि ज़ैद ने उपरोक्त शब्द, जो तलाक का 'किनाया' (परोक्ष शब्द) हैं, तलाक के इरादे से कहे थे? मुख़्तसर अल-वक़ाया में है:

अरबी पाठ	उर्दू अर्थ
किनाया वह है जिसमें तलाक और गैर-तलाक दोनों की संभावना हो। जैसे 'निकल जाओ', 'चली जाओ', 'खड़ी हो जाओ'।	और किनाया वह है कि तलाक और गैर-तलाक दोनों का संभावना रखता हो मसलन निकल जा, चली जा, उठ जा। ये शब्द किसी बात का जवाब हो सकते हैं।
यह एक अस्वीकार हो सकता है। जैसे 'पृथक', 'मुक्त', 'पूर्ण', 'वर्जित', 'अटल'।	और जैसे पृथक, मुक्त है, अलग है, हराम है, अटल है।
यह डांट के लिए हो सकता है। जैसे 'अपनी इद्दत गिनो' और 'शुद्धि चाहो'।	डांट की संभावना।

1. क़ाज़ी ख़ान, किताब अल-तलाक, नवल किशोर, लखनऊ, 1/213

حین ما اقربالطلاق ان ردہ الی حالۃ البرسام وقال قد طلقت امرأتی فی حالۃ البرسام فالطلاق غیر واقع الخ۔ 1 تو اس صورت میں ہمارے مشائخ نے فرمایا کہ اگر طلاق کا اقرار کرتے ہوئے مرض کو وجہ بتائے اور کہے کہ "میں نے مرضِ برسام میں طلاق دی ہے" تو طلاق واقع نہ ہوگی الخ۔ (ت)

پس اگر یہی معنی مراد تھے تو نہ طلاق ہوئی نہ کوئی کفارہ لازم، اور اگر بہ نیت طلاق الفاظِ مذکورہ کہے تو ایک طلاق بائن ہوئی عورت نکاح سے نکل گئی۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۸۹: از بجری آباد ڈاکخانہ سادات ضلع غازی پور ۷ ذی الحجہ ۱۳۱۲ھ مسئلہ محمد ابوالخیر کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی زوجہ مرتکبِ زنا سمجھ کر ناراض ہو کر اس کے باپ کے گھر پہنچادیا اور یہ کلام کیا کہ ہم تجھ کو نہ رکھیں گے تو ہمارے قابل نہ رہی اور بعد دو ایک مہینہ کے نہیں معلوم کہاں چلا گیا اس کو عرصہ سات برس کا ہوا کہ ہنوز مفقود الخبر ہے اس کے بعد اس کے باپ نے زوجہ کے شوہر کے بڑے بھائی کو جو مالک و بزرگِ خاندان ہے بلا کر یہ کہا کہ یہ عورت عزّت و آبرو تمہاری ہے لے جاؤ ہمارے یہاں اس کا گزر نہیں ہوگا اس کے شوہر کے بڑے بھائی نے انکار کیا اور یہ کہا اول تو شوہر اس کا مکان پر نہیں ہے دوسرے یہ عورت ہمارے کام کے لائق نہیں ہے ہم نہ لے جائیں گے تم کو اختیار ہے کہ جہاں چاہو کردو، اس جواب پر اس کا باپ دوسرے نکاح کے سامان میں تھا کہ اس اثناء میں وہ عورت بطورِ خود ایک شخص کے ساتھ بلا نکاح چلی گئی اور اسی مرد کے ساتھ اس زمانہ سے بلا نکاح رہی اب اس عورت نے اس شخص کے ساتھ جس کے ساتھ بطورِ خود چلی گئی تھی نکاح کرلیا تو آیا یہ نکاح ثانی اس کا شرعاً جائز ہوا یا نہیں اور زوجِ اوّل کا غصے سے یہ کہنا کہ

ہم تجھ کو نہ رکھیں گے تو ہماری قابل نہیں رہی اور بعد اس کے اس کو چھوڑ دینا اور دی ہوئی چیز واپس لینا حکم میں طلاق کے ہے یا نہیں؟ اور بقرائنِ مذکور اس کہنے سے کہ ہم تجھ کو نہ رکھیں گے طلاق واقع ہوئی یا نہیں حالانکہ قرائنِ حالیہ و دلالتِ حال اس امر پر موجود ہے کہ زید نے کلام بالا جو کنایہ طلاق ہے بارادہ طلاق کہا تھا مختصر وقایہ میں ہے:

عربی عبارت	اردو معنی
وكناية ما يحتمله وغيره فنحو اخرجي واذهبي وقومي	اور کنایہ وہ ہے کہ طلاق اور غیر طلاق دونوں کا احتمال رکھتا ہو مثلاً نکل جا، چلی جا، اٹھ جا۔ یہ الفاظ کسی بات کا جواب ہو سکتے ہیں
يحتمل ردا ونحو خلية وبرية بتہ، حرام، بائن، يصلح سبا ونحو اعتدي واستبرئي	اور مثلاً جدا، بری ہے، علیحدہ ہے، حرام ہے، بائن ہے، ڈانٹ کا احتمال

1 قاضی خاں کتاب الطلاق نولکشور لکھنو ۱/ ۲۱۳

Fatawa Razawiya Volume 12

[Table/Box 1] Arabic: Rakhmuki anti wahidah, anti hurrah, ikhtari, amruki bi-yadik, sarrahtuki, faraqtuki. La yahtamilu ar-raddu was-sabbu. Urdu Translation/ Explanation: [These phrases mean:] Take care [of yourself], for example, complete the waiting period ('iddah), cleanse the womb, you are alone, you are free, you have your choice, your matter is in your hands, I have left you, I have separated from you. These only carry the possibility of divorce. (T)

In Sharh Wiqayah, it is stated:

[Table/Box 2] Arabic: Wa fi halat al-ghadab yatawaqqafu al-awwalani ay ma yasluhu raddan wa ma yasluhu sabban 'ala an-niyah in nawa al-talaq yaqa'u bihi al-talaq wa in lam yanwi la yaqa'u wa ammal qismul akhiru wa huwa ma la yasluhu raddan wa la sabban yaqa'u bihi al-talaq wa in lam yanwi. A.H. Urdu Translation/Explanation: And in a state of anger, the first two types of words, meaning those that can serve as a response [to a request for divorce] and those that can serve as a rebuke, depend on intention. If the intention is divorce, it occurs; and if there is no intention, it does not occur. However, the last category, those words which cannot be a rebuke or a response, will be considered divorce in a state of anger even without intention. A.H. (T)

And it is clear that "We have left you, we will not keep you" has the same meaning and falls under the last category. Explain and you will be rewarded.

The Answer: "We will not keep you" is purely for the future and for distancing, and such a word, even if it were explicit, is not effective at all. For example, if one says a thousand times, "I will give you a divorce," divorce will not occur.

[Table/Box 3] Arabic: Wa hadha zahirun jiddan. Wa fi Jawahir al-Akhlati: Fa qala al-zawju 'talaq mi-kunam', innaha thalathun li-anna 'mi-kunam' yatamahhadu lil-hall wa huwa tahqiqun bi khilafi qawlihi 'kunam' li-annahu yatamahhadu lil-istiqbal, wa bil-'arabiyati qawluhu 'utalliqu' la yakunu talaqan li-annahu da'irun bayn al-hal wal-istiqbal. Urdu Translation/Explanation: This is very clear. And in Jawahir al-Akhlati, it is mentioned: A husband said, "I do divorce (mi-kunam)"; this results in three divorces because "mi-kunam" is specific to the present tense and it effects divorce. Contrary to this is his saying "kunam" (I shall do) because it is purely for the future. And in Arabic, the phrase "utalliqu" (I will divorce) does not result in divorce because it fluctuates between the present and the future.

1. Mukhtasar al-Wiqayah, Kitab al-Talaq, Nur Muhammad Karkhana Tijarat Kutub, Karachi, p. 61.
2. Sharh al-Wiqayah, Bab Iyqa' al-Talaq, Matba' Mujtabai, Delhi, 88/2.

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

[बॉक्स 1] अरबी: रख़मुकि अन्ति वाहिदह, अन्ति हुर्रह, इख़तारी, अम्रुकि बि-यदिक, सर्रह्तुकि, फ़ारक़्तुकि। ला यह्तमिलु अर-रद्दु वस्-सब्बु। उर्दू अनुवाद/व्याख्या: [इन वाक्यांशों का अर्थ है:] ख्याल रखो, उदाहरण के लिए, इद्दत पूरी करो, गर्भाशय साफ़ करो, तुम अकेली हो, तुम स्वतंत्र हो, तुम्हें अपना अधिकार है, तुम्हारा मामला तुम्हारे हाथ में है, मैंने तुम्हें छोड़ दिया, मैंने तुमसे जुदाई कर ली। ये शब्द केवल तलाक की संभावना रखते हैं। (त)

शरह विक़ाया में है:

[बॉक्स 2] अरबी: व फ़ी हालतिल ग़ज़बि यतवक़्क़फ़ुल अव्वलानि अई मा यस्लुह रद्दन व मा यस्लुह सब्बन 'अलन् नियह इन् नवा अल-तलाक़ यक़अु बिहिल् तलाक़ व इन् लम् यन्वि ला यक़अु व अम्मल क़िस्मुल आख़िरु व हुवा मा ला यस्लुह रद्दन व ला सब्बन यक़अु बिहिल् तलाक़ व इन् लम् यन्वि। अ.ह. उर्दू अनुवाद/व्याख्या: और गुस्से की स्थिति में पहले दोनों प्रकार के शब्द, यानी जो जवाब बन सकते हैं और जो डांट बन सकते हैं, वे नीयत (इरादे) पर निर्भर होंगे। अगर तलाक की नीयत हो तो तलाक प्रभावी होगा, और अगर नीयत न हो तो तलाक नहीं होगा। लेकिन तीसरी श्रेणी, वे शब्द जो डांट या जवाब नहीं बन सकते, गुस्से की स्थिति में बिना नीयत के भी तलाक माने जाएंगे। अ.ह. (त)

और यह स्पष्ट है कि "हमने तुम्हें छोड़ दिया, हम तुम्हें नहीं रखेंगे" एक ही अर्थ रखते हैं और अंतिम श्रेणी में आते हैं। बयान करें, पुण्य पाएंगे।

जवाब: "हम तुम्हें नहीं रखेंगे" पूरी तरह से भविष्य और दूरी बनाने के लिए है, और ऐसा शब्द भले ही स्पष्ट हो, बिल्कुल भी प्रभावी नहीं होता। उदाहरण के लिए, अगर कोई हज़ार बार कहे "मैं तुम्हें तलाक दे दूँगा", तो तलाक नहीं होगा।

[बॉक्स 3] अरबी: व हाज़ा ज़ाहिरुन जिद्दन। व फ़ी जवाहिर अल-अख़्लाती: फ़क़ालल ज़ौजु 'तलाक़ मी-कुनम', इन्नहा सलासुन लि-अन्ना 'मी-कुनम' यतमह्हदु लिल-हल्ल व हुवा तहक़ीक़ुन बि ख़िलाफ़ि क़ौलिही 'कुनम' लि-अन्नहु यतमह्हदु लिल-इस्तिक़बाल, व बिल-'अरबियति क़ौलुहु 'उतल्लिक़ु' ला यकूनु तलाक़न लि-अन्नहु दाइरुन बैनल हालि वल-इस्तिक़बाल। उर्दू अनुवाद/व्याख्या: यह बिल्कुल स्पष्ट है। और जवाहिर अल-अख़्लाती में है: शौहर ने कहा "मैं तलाक करता हूँ (मी-कुनम)"; इससे तीन तलाकें होंगी क्योंकि उसका कहना "करता हूँ" केवल वर्तमान काल के लिए विशिष्ट है और यह तलाक को प्रभावी बनाता है। इसके विपरीत उसका यह कहना "तलाक करूँगा (कुनम)" पूरी तरह

भविष्य के लिए है। और अरबी में, "उतल्लिक़ु" (तलाक दूँगा) कहने से तलाक नहीं होगा, क्योंकि यह वर्तमान और भविष्य के बीच घूमता रहता है।

---

1. मुख्तसर अल-विकाया, किताब अल-तलाक़, नूर मोहम्मद कारखाना तिजारत कुतुब, कराची, पृष्ठ 61।
2. शराह अल-विकाया, बाब ईका-ए-तलाक़, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 88/2।

पृष्ठ 688 में से 588

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

[باکس 1] عربی: رحمك انت واحدة انت حرة اختاری امرك بیدك سرحتك فارقتك، لایحتمل الرد والسب[1]۔ اردو: رکھتے ہیں، اور مثلاً عدت پوری کر، رحم کو صاف کر، تو اکیلی ہے، تو آزاد ہے، تجھے اپنا اختیار ہے، تیرا معاملہ تیرے اختیار میں ہے، میں نے تجھے چھوڑ دیا، میں نے تجھ سے فرقت کرلی، یہ صرف طلاق کا احتمال رکھتے ہیں۔ (ت)

شرح وقایہ میں ہے:

[باکس 2] عربی: وفی حالة الغضب یتوقف الاولان ای مایصلح ردا‌و مایصلح سباً علی النیة ان نوی الطلاق یقع به الطلاق وان لم ینو لایقع واما القسم الاخیر وهو مایصلح ردالاسبّا یقع به الطلاق وان لم ینو[2] اھ۔ اردو: اور غصہ کی حالت میں پہلے دونوں الفاظ یعنی جو جواب بن سکتے اور وہ جو ڈانٹ بن سکتے ہیں، نیت پر موقوف ہوں گے، اگر طلاق کی نیت نہ ہو تو طلاق واقع نہ ہوگی، لیکن تیسری قسم جو ڈانٹ اور جواب نہیں بن سکتے وہ غصہ کی حالت میں بغیر نیت بھی طلاق قرار پائیں گے، اھ (ت)

اور ظاہر ہے کہ ہم نے تجھ کو چھوڑ دیا ہم تجھے نہ رکھیں گے متحد المفاد و داخل قسم اخیر ہے، بینوا توجروا۔

الجواب: ہم تجھ کو نہ رکھیں گے متمحض للاستقبال والابعاد ہے اور ایسا لفظ اگر صریح بھی ہو اصلاً موثر نہیں مثلاً اگر ہزار بار کہے میں تجھے طلاق دے دوں گا طلاق نہ ہوگی۔

[باکس 3] عربی: وهذا ظاهر جدا، وفي جواهر الاخلاطی فقال الزوج طلاق میکنم انها ثلاث لان می کنم یتمحض للحل وهو تحقیق بخلاف قوله کنم لانه یتمحض للاستقبال، وبالعربیة قوله اطلق لا یکون

طلاقاً لانه دائر بين الحال والاستقبال اردو: یہ بالکل ظاہر ہے، اور جواہر الاخلاطی میں ہے خاوند نے کہا "میں طلاق کرتا ہوں" طلاق کرتا ہوں تو تین طلاقیں ہوں گی کیونکہ اس کا قول "کرتا ہوں" صرف حال کیلئے مختص ہے اور یہ طلاق کو واقع کرتا ہے اس کے برخلاف اس کا یہ کہنا "طلاق کروں گا" یہ خالص استقبال کے لئے ہے اور عربی میں اطلق (طلاق دوں گا) سے طلاق نہ ہوگی، کیونکہ یہ

---

[1] مختصر الوقایہ کتاب الطلاق نور محمد کارخانہ تجارت کتب کراچی ص ۶۱ [2] شرح الوقایہ باب ایقاع الطلاق مطبع مجتبائی دہلی ۸۸/۲

Fatawa Rizvia Volume 12

"So it was not proven with certainty along with doubt (1) etc." It is common to both the present and the future; therefore, on the basis of doubt, divorce will not occur etc. (T)

And "you are no longer worthy of us," although it can be a metaphor (kinaya), is also likely to mean an expression of her unworthiness and uselessness, just as the husband's brother also said words of this content. Since it was a state of anger as evident from the statement of the question, all such appropriate words will depend on intention. Without the appearance of intention, a ruling of divorce cannot be given due to doubt, as is evident from the text of 'Al-Niqayah' quoted by the questioner and 'Al-Jawahir' which we quoted. (As is apparent from the text of Al-Niqayah cited by the questioner and the text of Al-Jawahir Al-Akhlati cited by us. -T) And kicking her out, taking away clothes etc., is evidence of anger, not evidence of divorce. Thus, without the appearance of divorce or the clarity of actual or legal death (which, by the passage of a fixed period for a missing person according to the fatwa-supported school of thought bolstered by Hadith, is seventy years from the day of birth), it is absolutely not permissible for the woman to remarry. She is still involved in sin and opposition to the pure Shariah, and refuge is sought with Allah Almighty, and Allah Almighty knows best.

Problem 290: What do the scholars of religion say in this matter that Zaid, in a state of anger, said these words to his wife Hindah: "I have no business with you. Copulate with whomsoever you wish. Make whomever you want your husband. There remained no connection between me and you." In this situation, did divorce occur and did Hindah leave his marriage or not? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: In the case asked about, the first phrase i.e., "I have no business with you" is not among the words of divorce at all, so much so that even if he intends it by this, it will not occur.

In Fatawa of Imam Qazi Khan it is stated: If the husband said: [Note: Reference to Al-Hindiyya below] Note: It is stated in Al-Hindiyya, if he said to her "I have no business with you and you have no business with me. Give me back what I have with you and go wherever you wish," divorce does not occur without intention. Likewise in Al-Khulasa. (Signed) Mufti-e-Azam of the Ummah, Mustafa Raza (may his shadow be extended).

In Hindiyya it is said, if he says so: "I have no business with you and you have no business with me. Give me back whatever of mine is with you, go wherever you want," then without the intention of divorce, it will not happen. It is similarly in 'Khulasa'. 12 Mufti-e-Azam-ul-Ummah Mustafa Raza Mad-Zillah (T).

1. Jawahir al-Akhlati, Chapter on Explicit Divorce, Manuscript, p. 69-70.
2. Fatawa Hindiyya, Seventh Chapter, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/385.

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

"तो संदेह के साथ यह सिद्ध नहीं हुआ (1) आदि।" यह वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए समान है, इसलिए संदेह के आधार पर तलाक़ नहीं होगा आदि। (त)

और "तुम हमारे काबिल नहीं रही" यद्यपि यह 'किनाया' (अप्रत्यक्ष शब्द) हो सकता है, लेकिन यह इस बात की भी संभावना रखता है कि यह उसकी नालायकी और निकम्मेपन का इज़हार है, जैसा कि पति के भाई ने भी इसी आशय के शब्द कहे थे। और जब क्रोध की स्थिति थी जैसा कि प्रश्न के विवरण से स्पष्ट है, तो सभी उपयुक्त शब्द नीयत (इरादे) के मोहताज रहेंगे। नीयत के प्रकट हुए बिना संदेह के कारण तलाक़ का हुक्म नहीं दिया जा सकता, जैसा कि 'निक़ायाह' की इबारत से ज़ाहिर है जिसे प्रश्नकर्ता ने उद्धृत किया और 'जवाहर' की इबारत जिसे हमने उद्धृत किया। (जैसा कि 'निक़ायाह' की इबारत से स्पष्ट हो रहा है जिसे प्रश्नकर्ता ने उद्धृत किया है और 'जवाहर अख़लाती' की इबारत से भी जिसे हमने उद्धृत किया है। -त) और उसे निकाल देना, कपड़े आदि छीन लेना क्रोध का प्रमाण है, तलाक़ का प्रमाण नहीं। तो तलाक़ के प्रकट हुए बिना या मृत्यु (वास्तविक या 'मफ़क़ूद' के लिए निर्धारित समय बीतने पर कानूनी रूप से, जो हदीस से समर्थित मुफ़्ती-बहस मज़हब के अनुसार जन्म के दिन से सत्तर वर्ष है) की स्पष्टता के बिना, औरत के लिए दूसरा निकाह करना हरगिज़ जायज़ नहीं। वह अब भी गुनाह और शरीअत-ए-मुतह्हरा के विरोध में मुब्तला है, और अल्लाह तआला की पनाह, और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला 290: धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने क्रोध की स्थिति में अपनी पत्नी हिंदह से ये शब्द कहे: "मुझे तुझसे कोई काम नहीं। जिससे चाहे संभोग कर। जिसे चाहे अपना पति बना ले। मेरा तुझसे अब कोई संबंध नहीं रहा।" इस स्थिति में क्या तलाक़ हुआ और क्या हिंदह उसके निकाह से बाहर हुई या नहीं? बयान करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: पूछे गए मामले में पहला शब्द अर्थात "मुझे तुझसे कोई काम नहीं" तलाक़ के शब्दों में से ही नहीं है, यहाँ तक कि अगर वह इससे नीयत भी करे तब भी (तलाक़) नहीं होगा।

'फ़तावा अल-इमाम क़ाज़ी ख़ान' में है: यदि पति ने कहा: [नोट: नीचे 'हिन्दिया' का संदर्भ है] हाशिया: 'अल-हिन्दिया' में कहा गया है, यदि उसने उससे कहा "मेरा तुझसे कोई काम नहीं और तेरा मुझसे नहीं, जो मेरा तेरे पास है मुझे दे दे और जहाँ चाहे चली जा", तो नीयत के बिना (तलाक़) नहीं होता।

'अल-ख़ुलासा' में भी ऐसा ही है। (हस्ताक्षरित) मुफ़्ती-ए-आज़म उम्मत मुस्तफ़ा रज़ा (उनका साया बना रहे)।

'हिन्दिआ' में कहा गया है, अगर इस तरह कहे: "मेरा तुझसे काम नहीं और तेरा मुझसे नहीं, मेरा जो कुछ तेरे पास है मुझे दे दे, जहाँ चाहे चली जा," तो बिना तलाक़ की नीयत के यह नहीं होगा। 'ख़ुलासा' में भी ऐसा ही है। 12 मुफ़्ती-ए-आज़म-उल-उम्मत मुस्तफ़ा रज़ा मद-ज़िल्लहु (त)।

1. जवाहर अल-अख़लाती, सरेह तलाक़ का अध्याय, पांडुलिपि, पृ. 69-70।
2. फ़तावा हिन्दिया, सातवाँ अध्याय, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/385।

पृष्ठ 589/688

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

فلم یکن تحقیقًا مع الشک ۱ـہ الخ۔ حال اور استقبال دونوں میں مشترک ہے، لہٰذا شک کی بناء پر طلاق واقع نہ ہو گی الخ(ت)

اور "تو ہمارے قابل نہ رہی" اگرچہ کنایہ ہو سکتا ہے مگر وہ سب کو بھی محتمل ہے کہ اس کی نالائقی و ناکارگی کا اظہار ہے جس طرح برادر شوہر نے بھی اس مضمون کے لفظ کہے، اور جب کہ حالت غضب تھی جیسا کہ تقریر سوال سے ظاہر ، تو الفاظ صالحہ سب محتاج نیت رہیں گے بے ظہور نیت بوجہ شک حکم طلاق نہیں دے سکتے کما یظھر من عبارۃ النقایۃ التي نقل السائل و الجواھر التي نقلنا (جیسا کہ نقایہ کی عبارت جس کو سائل نے نقل کیا ہے سے ظاہر ہو رہا ہے اور جواہر اخلاطی کی عبارت جس کو ہم نے نقل کیا ہے ، سے بھی ظاہر ہو رہا ہے ۔ت) اور اسے نکال دینا، کپڑے وغیرہ چھین لینا دلیل غضب ہے، نہ دلیل طلاق تو بے ظہور طلاق یا وضوح موت حقیقیہ یا بالحکم بمرور مدت معینہ للمفقود بمذھب مفتی بہ مؤید بالحدیث روز ولادت سے ستر سال ہے ، عورت کو نکاح ثانی ہرگز نہ تھانہ ہے وہ اب بھی معصیت و مخالفت شرع مطہر میں مبتلا ہے والعیاذ باللہ تعالٰی، واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۹۰: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی زوجہ ہندہ سے بحالت غضب یہ لفظ کہے: "مجھے تجھ سے کچھ کام نہیں۔ جس سے چاہ مباشرت کر۔ جسے چاہے اپنا خاوند بنا۔ مجھ سے تجھ سے کچھ تعلق نہ رہا" اس صورت میں طلاق واقع اور ہندہ اس کے نکاح سے خارج ہوئی یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: صورت مسئولہ بہا میں لفظ اول یعنی "مجھے تجھ سے کچھ کام نہیں" الفاظ طلاق ہی سے نہیں حتی کہ اگر اس سے نیت کرے گا تاہم واقع نہ ہوگی،

فی فتاوی الامام قاضی خان لو قال | فتاوی امام قاضی خاں میں ہے: اگر خاوند نے کہا

عه: قال في الهندية لو قال لها مرا با تو کارے نیست و تر ابا من نے اعطینی ما کان لی عندك واذهبی حیث شئت لا یقع بدون النیة کذا في الخلاصة ۲ مفتی اعظم الامه مصطفی رضا مد ظلہ۔ | ہندیہ میں کہا، اگر یوں کہے، میرا تجھ سے کام نہیں اور تیرا مجھ سے نہیں میرا جو کچھ تیرے پاس ہے مجھے دے دے، جہاں چاہے چلی جا، تو بغیر نیت طلاق نہ ہو گی۔ خلاصہ میں یونہی ہے ۱۲ مفتی اعظم الامۃ مصطفیٰ رضا مدظلہ (ت)

۱ جواہر الاخلاطی فصل فی طلاق الصریح قلمی نسخہ ص ۷۰ - ۶۹ ۲ فتاوی ہندیہ الفصل السابع نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۸۵

Fatawa Rizvia - Volume 12

[Box 1] Arabic: “I have no need for you” and if he intended divorce, it does not occur. Likewise, if he said “You are of no use to me” and likewise, if he said “I do not want you” اھ۔ Urdu: “I have no need for you” – and if the intention for divorce was made, even then divorce will not occur. Similarly, if he said “You are of no use to me” and similarly if he said “I do not want you,” then divorce will not occur even if the intention was divorce. اھ (T)

Regarding the remaining three phrases, there are several scenarios: (1) If he did not intend divorce with any of the words, then a ruling of one irrevocable divorce (Talaq Ba'in) will be given because the third phrase does not carry the possibility of rejection or abuse, and such words in a state of anger do not require intention.

[Box 2] Arabic: It is stated in Al-Hidayah: In the state of anger, he (the husband) is believed in all of that due to the possibility of rejection and abuse, except in what is suitable for divorce and not suitable for rejection and insult. اھ finished. Urdu: It is stated in Hidayah that in a state of anger, the husband's claim will be verified regarding all these words because these words also carry the possibility of scolding and responding. However, those words which only carry the possibility of divorce and cannot be scolding or a response, there verification will not be given. اھ (T)

(2) And if he intended divorce from the first word only, then provided that from the second word he did not mean the literal meaning—i.e., “I have already given divorce, now you have the choice of marriage”—then two irrevocable divorces will occur. From the first word by the ruling of intention, and from the second due to the reason that because of the precedence and accompaniment of the intention, it became a state of discussion [of divorce], and in this state, words not suitable for rejection do not remain bound by intention.

[Box 3] Arabic: In Al-Hidayah: When he intended divorce with the first word, the state became a state of discussing divorce, so the remaining two became specified for divorce by this indication; unlike when he says “I intended divorce by the third, not the first two,” where only one occurs because the state [is not as such]. Urdu: It is stated in Hidayah: When the intention for divorce is made with the first word, then due to it becoming a discussion of divorce, the remaining two words will also be specified for divorce. Contrary to this, when he says that I meant divorce from the third word and not the first two, then only the last one will be divorce because the first two...

1. Fatawa Qazi Khan, Chapter on Metaphors and Allusions, Naval Kishore Lucknow, 1/216
2. Al-Hidayah, Chapter on Divorce before Consummation, Al-Maktabah al-Arabiyyah Karachi, 2/354

फतावा रिज़विया - जिल्द बारहवीं

[बॉक्स 1] अरबी: "मुझे तुझमें कोई हाजत (ज़रूरत) नहीं" और तलाक की नीयत की हो तो तलाक वाकै(घटित) नहीं होगी। इसी तरह अगर उसने कहा "तू मेरे काम की नहीं" और इसी तरह अगर कहा "मैं तुझे नहीं चाहता" اھ।। उर्दू: "मुझे तुझमें कोई हाजत नहीं" और तलाक की नीयत की हो तब भी तलाक न होगी, इसी तरह अगर कहा "तू मेरे काम की नहीं" और इसी तरह अगर कहा "मैं तुझे नहीं चाहता" तो तलाक न होगी अगरचे नीयत तलाक की हो। اھ। (त)

बाकी तीन शब्दों में कुछ स्थितियाँ हैं: (1) अगर उसने किसी शब्द से तलाक की नीयत नहीं की तो एक तलाक-ए-बाइन (अटल तलाक) होने का हुक्म दिया जाएगा क्योंकि तीसरा शब्द रद्(अस्वीकार) और सब्ब (गाली) की संभावना नहीं रखता, और ऐसे शब्द गुस्से की हालत में नीयत की ज़रूरत नहीं रखते।

[बॉक्स 2] अरबी: हिदाया में है: गुस्से की हालत में इन तमाम (शब्दों) में शौहर की बात मानी जाएगी क्योंकि उनमें रद् और सब्ब का एहतिमाल (संभावना) है, सिवाय उन शब्दों के जो तलाक के लिए उपयुक्त हों और रद् व शत्मी (गाली) के लिए उपयुक्त न हों। اھ। समाप्त। उर्दू: हिदाया में है कि गुस्से की हालत में इन तमाम अल्फाज़ (शब्दों) में शौहर की तस्दीक (पुष्टि) की जाएगी क्योंकि ये अल्फाज़ डांट और जवाब का भी एहतिमाल रखते हैं, मगर वो अल्फाज़ जो सिर्फ तलाक का एहतिमाल रखते हैं और डांट और जवाब नहीं बन सकते वहाँ तस्दीक न की जाएगी। اھ। (त)

(2) और जिसने सिर्फ पहले शब्द से तलाक की नीयत की तो बशर्ते कि दूसरे लफ्ज़ से हकीकी मानी यानी 'मैं तो तलाक दे चुका अब निकाह का तुझे अधिकार है' मुराद न लिए हों, तो दो बाइनह (अटल तलाक) वाकै होंगी। पहले लफ्ज़ से नीयत के हुक्म से और दूसरे से इस कारण कि नीयत के पहले और साथ होने की वजह से हालत 'मुज़ाकरा-ए-तलाक' (तलाक की चर्चा) हो गई और इस हालत में वो अल्फाज़ जो रद्(अस्वीकार) के काबिल नहीं होते, नीयत के पाबंद नहीं रहते।

[बॉक्स 3] अरबी: हिदाया में है: जब उसने पहले (शब्द) से तलाक की नीयत की तो हालत तलाक की चर्चा की हालत हो गई, अतः बाकी दो इस दलालत (संकेत) से तलाक के लिए तय हो गए। इसके विपरीत जब वह कहे "मैंने तीनों (शब्दों) से तलाक की नीयत की, पहले दो के बिना" तो केवल एक ही वाकै होगी क्योंकि हालत... उर्दू: हिदाया में है: जब पहले लफ्ज़ से तलाक की नीयत की हो तो मुज़ाकरा-ए-तलाक हो जाने की वजह से बाकी दो अल्फाज़ भी तलाक के लिए मुतअय्यन (तय) हो

जाएंगे। इसके बरखिलाफ (विपरीत) जब ये कहे कि मैंने तीसरे लफ्ज़ से तलाक मुराद ली है और पहले दोनों से नहीं, तो फिर सिर्फ आखिरी एक तलाक होगी क्योंकि पहले दोनों के..

---

1. फतावा काज़ी ख़ां, कनायात और उनके अर्थों का बयान, नवल किशोर लखनऊ, 1/216
2. अल-हिदाया, रुख़सती से पहले तलाक का बयान, अल-मक्तबा अल-अरबिया कराची, 2/354

पृष्ठ 590/688

فتاوٰی رضویہ - جلد دوازدہم

[Box 1] عربی: لا حاجة لی فیک ونوی الطلاق لایقع وکذا لوقال "مرا بکار نیستی" وکذا لوقال "ماازیدک" اھ اردو: "مجھے تجھ میں کوئی حاجت نہیں" اور طلاق کی نیت کی ہو تب بھی طلاق نہ ہوگی، یونہی اگر کہا " تو میرے کام کی نہیں " اور یونہی اگر کہا " میں تجھے نہیں چاہتا" تو طلاق نہ ہوگی اگرچہ نیت طلاق ہواھ (ت)

باقی الفاظِ ثلاثہ میں چند صورتیں ہیں: (۱) اگر اس نے کسی لفظ سے نیت طلاق نہ کی تو ایک طلاق بائن واقع ہونے کا حکم دیا جائے گا کہ لفظِ ثالث محتمل رد و سبّ نہیں، اور ایسے الفاظ حالتِ غضب میں حاجتِ نیت نہیں رکھتے۔

[Box 2] عربی: فی الھدایة فی حالة الغضب یصدق فی جمیع ذلک لاحتمال الرد والسب الا فیما یصلح للطلاق ولایصلح للرد والشتم اھ انتھی۔ اردو: ہدایہ میں ہے کہ غصہ کی حالت میں ان تمام الفاظ میں خاوند کی تصدیق کی جائے گی کیونکہ یہ الفاظ ڈانٹ اور جواب کا بھی احتمال رکھتے ہیں، مگر وہ الفاظ جو صرف طلاق کا احتمال رکھتے ہیں اور ڈانٹ اور جواب نہیں بن سکتے وہاں تصدیق نہ کی جائیگی اھ (ت)

(۲) اور جو صرف پہلے سے نیت طلاق کی تو بشرطیکہ لفظِ ثانی سے معنی حقیقی یعنی میں تو طلاق دے چکا اب تزوج کا تجھے اختیار ہے مراد نہ لئے ہوں تو دو بائنہ واقع ہوں گی، لفظِ اول سے بحکم نیت اور ثانی سے بدیں سبب کہ بوجہ تقدم و مقارنت نیت حالتِ مذاکرہ ہوگئی اور اس حالت میں الفاظ غیر صالحہ رد پابندِ نیت نہیں رہتے،

[Box 3] عربی: فی الهدایة لما نوی بالاولی الطلاق صار الحال حال مذاکرة الطلاق فتعین الباقیان للطلاق بهذه الدلالة، بخلاف ما اذا قال نویت بالثلاثة الطلاق دون الاولیین حیث لایقع الا واحدة لان الحال اردو: ہدایہ میں ہے: جب پہلے لفظ سے طلاق کی نیت کی ہو تو مذاکرہ طلاق ہوجانے کی وجہ سے باقی دو الفاظ بھی طلاق کے لئے متعین ہو جائیں گے اس کے برخلاف جب یہ کہے کہ میں نے تیسرے لفظ سے طلاق مراد لی ہے تو پھر پہلے دونوں لفظ طلاق نہ ہونگے صرف آخری ایک طلاق ہوگی کیونکہ پہلے دونوں کے

---

1 فتاوی قاضی خاں فصل فی الکنایات والمدلولات الکنایات نو لکشور لکھنو ۱/ ۲۱۶ 2 الهدایه فصل فی الطلاق قبل الدخول المکتبة العربیة کراچی ۳۵۴/۲

Fatawa Rizvia, Volume 12

[Table Header] Arabic Column: "According to the first two, it was not during a discussion about divorce (and in it) he said, 'I intended divorce with the first [word] and menstruation with the second,' he will be believed in judgment because he intended the literal meaning of his speech, summarized, end. In Al-Kafi Sharh Al-Wafi: In the state of discussing divorce, divorce occurs in all categories legally, not in what is suitable as a reply or rejection, for it is not made a divorce. This is attributed to him in Al-Alamgiriyyah. (2)"

Urdu Column: "At the time, there was no discussion of divorce, and in the mentioned situation, if he says 'I meant divorce by the first word and menstruation by the second', the husband's claim will be verified because he intended the literal meaning of the word. Summary (Trans.). And it is stated in Al-Kafi Sharh Al-Wafi that during a discussion of divorce, divorce occurs legally with all those words that also have the possibility of meaning divorce. However, with words that only have the possibility of being a scolding or a reply, divorce will not occur because they will not be deemed as divorce. This passage in Alamgiri is attributed to Al-Kafi. (Trans.)"

[Body Text] As for the third word, although it also did not require intention, because it was possible to consider the second divorce as information (news) about the previous one, and in such a situation, a 'Bain' (irrevocable) divorce does not follow another 'Bain', divorce did not occur through it.

[Second Table Row] Arabic: "In Al-Durr al-Mukhtar: A Bain does not follow [another] Bain when it is possible to make it information about the first, whether it was 'Bain' or 'I have separated you with a divorce', because it is information, so there is no necessity in making it an initiation (Insha). (3)"

Urdu: "In Durr al-Mukhtar, it says: After a Bain, another Bain will not occur if the second Bain can be a narration of the first. For example, 'You are Bain, Bain' or 'I made you Bain with divorce.' This is reporting the first, there's no need to make it an initiation from the start. (Trans.)"

(3) Similarly, if intention for divorce was made with the first or both the second (4) or all three, then only two 'Bain' divorces will occur, as mentioned before that a Bain does not follow a Bain as long as it can be interpreted as information. Like it passed that a Bain does not follow a Bain when it can be a narration. (Trans.)

In all other cases, whether (5) only the second (6) or only the third (7) or both the first and the third (8) or...

[Footnotes] 1. Al-Hidaya, chapter on divorce before consummation, Al-Maktabah al-Arabiyyah Karachi, 355/2 2. Al-Kafi Sharh al-Wafi 3. Durr al-Mukhtar, chapter on metaphors, Matba' Mujtabai Delhi, 225/1

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

[तालिका शीर्षक] अरबी कॉलम: "पहले दो के अनुसार, तलाक की चर्चा का समय नहीं था (और उसमें) उसने कहा, 'मैंने पहले [शब्द] से तलाक और दूसरे से मासिक धर्म का इरादा किया,' तो निर्णय में उसकी बात मानी जाएगी क्योंकि उसने अपने भाषण के वास्तविक अर्थ का इरादा किया, सारांश, समाप्त। अल-काफ़ी शरह अल-वाफ़ी में: तलाक की चर्चा की स्थिति में, कानूनी तौर पर सभी श्रेणियों में तलाक होता है, उन शब्दों में नहीं जो उत्तर या अस्वीकृति के रूप में उपयुक्त हों, क्योंकि उन्हें तलाक नहीं बनाया जाता है। अल-आलमगीरिय्याह में इसका श्रेय उन्हें दिया गया है। (2)"

उर्दू कॉलम: "उस समय तलाक की चर्चा नहीं थी, और उल्लेखित स्थिति में यदि वह कहता है कि 'मैंने पहले शब्द से तलाक और दूसरे से मासिक धर्म का मतलब लिया है', तो पति के दावे की पुष्टि की जाएगी क्योंकि उसने शब्द के वास्तविक अर्थ का इरादा किया है। सारांश (अनु.) और अल-काफ़ी शरह अल-वाफ़ी में है कि तलाक की चर्चा के दौरान उन सभी शब्दों से कानूनी तौर पर तलाक हो जाएगा जिनमें तलाक का अर्थ होने की संभावना भी है। हालाँकि, उन शब्दों से तलाक नहीं होगा जिनमें केवल डांट या उत्तर होने की संभावना है क्योंकि उन्हें तलाक नहीं माना जाएगा। आलमगीरी में इस अंश का श्रेय अल-काफ़ी को दिया गया है। (अनु.)"

[मुख्य पाठ] रही बात तीसरे शब्द की, हालाँकि उसे भी इरादे की आवश्यकता नहीं थी, लेकिन इस कारण कि दूसरी तलाक को पिछली के बारे में जानकारी (समाचार) मानना संभव था, और ऐसी स्थिति में एक 'बाइन' (अटल) तलाक के बाद दूसरा 'बाइन' प्रभावी नहीं होता, इसलिए उससे तलाक नहीं हुआ।

[दूसरी तालिका पंक्ति] अरबी: "अल-दुर्र अल-मुख्तार में: एक बाइन के बाद [दूसरा] बाइन नहीं होता जब उसे पहले के बारे में जानकारी बनाना संभव हो, चाहे वह 'बाइन' हो या 'मैंने तुम्हें तलाक के साथ बाइन कर दिया', क्योंकि यह जानकारी है, इसलिए इसे नया आरंभ (इन्शा) बनाने की आवश्यकता नहीं है। (3)"

उर्दू: "दुर्र अल-मुख्तार में है: एक बाइन के बाद दूसरी बाइन नहीं होगी यदि दूसरी बाइन पहली का वर्णन बन सके। उदाहरण के लिए, 'तू बाइन बाइन है' या 'मैंने तुझे तलाक के साथ बाइन कर दिया।' यह पहले की सूचना है, इसे शुरुआत से नया आरंभ बनाने की आवश्यकता नहीं है। (अनु.)"

(3) इसी तरह, यदि पहली या दोनों दूसरी (4) या तीनों के साथ तलाक का इरादा किया गया हो, तो केवल दो 'बाइन' तलाक ही होंगे, जैसा कि पहले बताया गया है कि एक बाइन तलाक के बाद दूसरा बाइन तब तक प्रभावी नहीं होता जब तक उसे सूचना के रूप में व्याख्यायित किया जा सके। जैसा कि उल्लेख किया गया कि बाइन बाइन को प्रभावी नहीं करता जब वह वर्णन बन सके। (अनु.)

बाकी सभी मामलों में, चाहे (5) केवल दूसरा (6) या केवल तीसरा (7) या पहला और तीसरा दोनों (8) या...

[पादलेख] 1. अल-हिदाया, संभोग से पहले तलाक पर अध्याय, अल-मकतबा अल-अरबिया कराची, 355/2 2. अल-काफी शरह अल-वाफी 3. दुर्र अल-मुख्तार, रूपकों पर अध्याय, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 225/1

[ٹیبل ہیڈر] عربی کالم: عند الاولیین لم تکن حال مذاکرۃ الطلاق (وفیھا) قال نویت بالاولی طلاقا وبالثانی حیضادین فی القضاء لانه نوی حقیقة کلامه ملخصاً انتہی،وفی الکافی شرح الوافی فی حالة مذاکرۃ الطلاق یقع الطلاق فی سائر الاقسام قضاء لافیما یصلح جوابا ورد افانه لایجعل طلاقاً عزاہ له فی العلمگیریۃ۔ 2

اردو کالم: وقت مذاکرہ طلاق نہ تھا، اور اسی میں اگر مذکورہ صورت میں یہ کہے کہ میں نے پہلے لفظ سے طلاق اور دوسرے سے حیض مراد لیا ہے تو خاوند کی تصدیق کی جائے گی کیونکہ اس نے لفظ کے حقیقی معنی کی نیت کی ہے اھ ملخصاً (ت) اور کافی شرح وافی میں ہے کہ مذاکرہ طلاق میں ان تمام الفاظ سے قضاءً طلاق واقع ہوگی جو طلاق کا بھی احتمال رکھتے ہیں اور جو صرف ڈانٹ یا جواب بننے کا احتمال رکھتے ہیں ان میں طلاق واقع نہ ہوگی کیونکہ ان کو طلاق قرار نہ دیا جائے گا، اس عبارت کو عالمگیری میں کافی کی طرف منسوب کیا ہے۔ (ت)

[متن] رہا تیسرا لفظ، ہر چند وہ بھی محتاج نیت نہ تھا مگر اس سبب سے کہ دوسری طلاق سابق سے اخبار قرار دینا ممکن، اور ایسی صورت میں بائن سے بائن لاحق نہیں ہوتی اس سے طلاق واقع نہ ہوئی۔

[دوسری ٹیبل رو] عربی: فی الدرالمختار لایلحق البائن اذا امکن جعله اخبارا عن الاول کانت بائن او ابنتك بتطلیقة لانه اخبار فلاضرورۃ فی جعله انشاء۔ 3

اردو: در مختار میں ہے: بائن کے بعد دوسری بائن نہ ہوگی جبکہ دوسری بائن پہلی سے حکایت بن سکے، مثلاً "تو بائن بائن ہے" یا "میں نے تجھے طلاق کے ساتھ بائنہ کردیا" یہ اخبار ہے اول سے کو انشاء بنانے کی ضرورت نہیں ہے۔ (ت)

(۳) اسی طرح اگر پہلی یا دوسری دونوں (۴) یا تینوں سے نیت طلاق کی تو دو ہی بائنہ واقع ہوں گی، لما مر من ان البائن لایلحق البائن ما امکن حملہ علی الاخبار۔ جیسا کہ گزرا کہ بائن بائنہ کو لاحق نہیں ہوتی جب وہ پہلی سے حکایت بن سکے (ت)

باقی سب صورت میں خواہ (۵) صرف دوسرا (۶) یا صرف تیسرا (۷) یا پہلا اور تیسرا دونوں (۸) یا

[فٹ نوٹ] 1 الہدایہ فصل فی الطلاق قبل الدخول المکتبۃ العربیۃ کراچی ۲/۳۵۵ 2 الکافی شرح الوافی 3 درمختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۲۵

Fatawa-e-Razvia Volume 12

If the second and third are combined with intention, only one 'Baina' (irrevocable) divorce will occur.

[Arabic Box 1] Left: Kama yazharu mimma alqaina alaika minal adillati wa anna la talaqa bith-thalithati kullama taqaddamaha talaq. Right: As is apparent from the proofs we have presented to you, and that divorce will not occur with the third word when an irrevocable divorce has already occurred before it. (T)

So there is no doubt that Hindah (the wife) has exited Zaid's marriage, and until Zaid performs a new marriage (nikah) with her, she cannot be his wife.

[Arabic Box 2] Left: Fi Tanweer al-Absar wa yunkahu mubanatuhu bima doonath-thalathi fil iddah wa ba'daha bil ijmaa. Wallahu Ta'ala A'lam. Right: It is in 'Tanweer al-Absar' that in an irrevocable divorce of less than three (pronouncements), a re-marriage is necessary, whether it is during the iddah (waiting period) or after the iddah. And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 291: What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid said about his wife, "I have no use for her, I will not keep her. If I keep her in the house, I should drink her milk (meaning taking an oath of prohibition)." Then, out of fear that perhaps divorce had occurred, he married her again. In this case, did divorce occur for the woman or not, and was this (re-)marriage sufficient or not? Clarify and be rewarded.

Answer: In the inquired situation, divorce did not occur for this woman, and her first marriage remains established as it was. There was no need for a second marriage; it happened in vain.

[Arabic Box 3] Left: Fi al-Alamgiriyyah rajulun qala li-imra'atihi 'mura bikar neesti' wa nawa bihit-talaqa la yaqa'u. Intaha. Right: It is in 'Alamgiri' that if someone said to his wife "You are of no use to me," then divorce will not occur even if he intended it. End. (T)

Regarding his statement "I will not keep her":

[Arabic Box 4] Left: Fa-hadha wa in ihtamala al-jima'a li-anna ruknana bilughatina yukna bihi 'an al-jima'i illa annahu 'iddatun fala yufeedo shai'an, wa amma qauluhu (as ko ghar mein rakhon) Right: So even if this carries the possibility of intercourse,

because "to keep" (rakhna) in our language is a metaphor for intercourse, but this is a promise, therefore nothing will be meant by it, and its (keeping her in the house...)

---

1. Durr-e-Mukhtar Sharh Tanweer al-Absar, Bab al-Raja'ah, Matba Mujtabai Delhi, 1/240.
2. Fatawa Hindiyyah, Al-Fasl al-Khamis fil Kinayat, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/380.

फतावा रज़विया जिल्द 12

यदि दूसरा और तीसरा इरादे के साथ संयुक्त हैं, तो केवल एक ही 'बाइना' (अंतिम) तलाक़ होगा।

[अरबी बॉक्स 1] बाएँ जैसा कि हमने आपके सामने पेश किए गए प्रमाणों से स्पष्ट है, और यह कि तीसरे शब्द से तलाक़ नहीं होगा जब उससे पहले तलाक़-ए-बाइना हो चुका हो। दाएँ जैसा कि हमने आपके सामने पेश किए गए प्रमाणों से स्पष्ट है, और यह कि तीसरे शब्द से तलाक़ नहीं होगा जब उससे पहले तलाक़-ए-बाइना हो चुका हो। (त)

अतः इसमें कोई संदेह नहीं है कि हिंदा ज़ैद के निकाह से बाहर हो गई है और जब तक ज़ैद उसके साथ नया निकाह नहीं करता, वह उसकी पत्नी नहीं हो सकती।

[अरबी बॉक्स 2] बाएँ 'तन्वीर अल-अबसार' में है कि तीन से कम 'बाइना' में दोबारा निकाह किया जा सकता है, इद्दत में या इद्दत के बाद इबादत के साथ। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। दाएँ 'तन्वीर अल-अबसार' में है कि तीन से कम 'बाइना' (तलाक़) में फिर से निकाह की ज़रूरत होती है, चाहे वह इद्दत के दौरान हो या इद्दत के बाद। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त)

मसला 291: दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं: ज़ैद ने अपनी पत्नी के बारे में कहा, "मुझे उससे कोई काम नहीं है, मैं उसे नहीं रखूँगा। अगर मैं उसे घर में रखूँ तो उसी का दूध पियूँ।" फिर इस डर से कि शायद तलाक़ हो गया हो, उसने उससे फिर से निकाह कर लिया। इस स्थिति में महिला पर तलाक़ हुआ या नहीं और क्या यह निकाह पर्याप्त था या नहीं? बयान करें और पुण्य पाएं।

उत्तर: पूछी गई स्थिति में इस महिला पर तलाक़ नहीं हुआ और उसका पहला ही निकाह अपनी जगह कायम है। दूसरे निकाह की कोई ज़रूरत नहीं थी; यह व्यर्थ हुआ।

[अरबी बॉक्स 3] बाएँ आलमगिरी में है कि एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी से कहा 'तुझे मुझसे कोई काम नहीं' और तलाक़ की नियत की, तो तलाक़ नहीं होगी। दाएँ आलमगिरी में है कि अगर किसी ने अपनी पत्नी से कहा "तू मेरे काम की नहीं है", तो तलाक़ नहीं होगी चाहे उसने इरादा भी किया हो। (त)

जहाँ तक उसके इस कथन का सवाल है "मैं उसे नहीं रखूँगा":

[अरबी बॉक्स 4] बाएँ तो यह हालांकि संभोग (जमाह) की संभावना भी रखता है क्योंकि हमारी भाषा में यह संभोग के लिए संकेत है, पर यह वादा है इसलिए इससे कुछ नहीं होगा। और उसका यह

कहना (उसे घर में रखूँ) दाएँ तो यह हालांकि संभोग (जमाह) की संभावना भी रखता है क्योंकि "रखना" हमारी भाषा में संभोग के लिए एक संकेत (किनाया) है, लेकिन यह एक वादा है इसलिए इससे कुछ भी मुराद नहीं होगा, और उसका...

---

1. दुर्रे मुख्तार शरह तन्वीर अल-अबसार, बाब अल-रजअह, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/240।
2. फतावा हिन्दिया, अल-फ़स्ल अल-ख़ामिस फ़िल किनायात, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/380।

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

دوسرا اور تیسرا مقرون بہ نیت ہوں تو ایک ہی بائنہ واقع ہوگی،

[Box 1] کما یظھر مما القینا علیک من الادلۃ وان لاطلاق بالثالثۃ کلما تقدمھا طلاق۔ جیسے ہم نے آپ کو دلائل بیان کر دئے اس سے ظاہر ہے ، اور یہ کہ تیسرے لفظ سے طلاق نہ ہوگی جب اس سے قبل طلاق بائنہ ہوچکی ہو۔ (ت)

پس اس میں شبہ نہیں کہ ہندہ نکاح زید سے خارج ہوگئی اور تا وقتیکہ زید اس سے نکاح جدید نہ کرے وہ اس کی زوجہ نہیں ہو سکتی،

[Box 2] فی تنویر الابصار وینکح مبانتہ بمادون الثلث فی العدۃ وبعدھا بالاجماع ۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ تنویر الابصار میں ہے کہ تین سے کم بائنہ میں دوبارہ نکاح کی ضرورت ہوتی ہے خواہ عدت میں ہو یا عدت کے بعد ہو۔ واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۲۹۱: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی زوجہ کی نسبت کہا "مجھے اس سے کچھ کام نہیں میں اسکو نہیں رکھوں گا اگر اسے گھر میں رکھوں تو اسی کا دودھ پیوں" پھر اس اندیشہ سے کہ شاید اس سے طلاق نہ ہو گئی ہو اس سے پھر نکاح کرلیا، اس صورت میں عورت پر طلاق ہوئی یا نہیں اور یہ نکاح کافی ہوا یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: صورت مستفسرہ میں اس عورت پر طلاق واقع نہ ہوئی اور پہلا ہی نکاح اس کا بحال خود قائم ہے دوسرے نکاح کی کچھ حاجت نہ تھی یہ عبث واقع ہوا۔

[Box 3] فی العالمگیریة رجل قال لامرأته مرا بکار نیستی ونوی به الطلاق لا یقع انتهی۔ عالمگیری میں ہے کہ کسی نے اپنی بیوی کو کہا " تو میرے کام کی نہیں " تو طلاق نہ ہوگی اگرچہ نیت بھی کی ہواھ (ت)

اما قولہ "میں اس کو نہیں رکھوں گا"

[Box 4] فهذا وان احتمل الجماع لان رکننا بلغتنا یکنی به عن الجماع الا انه عدة فلایفید شیئا، واما قوله (اس کو گھر میں رکھوں) تو یہ اگرچہ جماع کا احتمال بھی رکھتا ہے کیونکہ "رکھنا" ہماری لغت میں جماع سے کنایہ ہوتا ہے مگر یہ وعدہ ہے لہذا اس سے کچھ بھی مراد نہ ہوگا، اور اس کا

---

1 درمختار شرح تنویر الابصار باب الرجعة مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۴۰ 2 فتاوی ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۸۰

Fatawa Razawiyya Volume Twelve

(Top Right Box - Urdu): The statement "If I keep her in the house, I will drink her milk" is not in the sense of 'Ila' (oath of abstinence), because "keeping in the house" means granting permission to reside in the house; it cannot mean sexual intercourse. It cannot even be considered an oath, so much so that even if he kept her in the house, no expiation for an oath would be required, because drinking a wife's milk is, at most, forbidden (haram). Similarly, if one says "If I do this, I am an adulterer, or a thief, or a drunkard, or a consumer of interest," it will not be an oath. This is narrated from 'Al-Kafi' in 'Al-Hindiyya,' so no expiation is required for it. And Allah (Exalted) knows best. (T)

(Top Left Box - Arabic/Urdu): (Drink her milk) This is not at all from the chapter of Ila, because "keeping in the house" is only Ila if it means enabling her to reside in his house, and it is not used as a metaphor for sexual intercourse, nor is it an oath. Thus, even if he sheltered her and enabled her after enabling, no expiation for an oath is due on him, because drinking the milk of a wife, at its most, is forbidden. And his saying, "If I do such-and-such, then I am an adulterer or a thief or a wine-drinker or a consumer of interest," then he is not one who has sworn an oath. Thus it is in Al-Hindiyya from Al-Kafi, so nothing is necessary for him due to that. And Allah, Glory be to Him and Exalted is He, knows best.

Problem 292: What do the scholars of religion and the muftis of the firm Shariah say regarding this case: Zaid, in a state of anger or displeasure, said to Hindah, who is his wife, these words: "Get out of my house, and I will no longer keep you here. Now you may take another husband, or develop an intimacy with someone, I have nothing to do with you. And if you do not leave upon my saying so, I will cut off your nose so that you become useless for taking a husband again." Hindah, fearing for her nose and because of these words of Zaid, left and went to a house belonging to her relatives. Rumors of this spread in the neighborhood. When the people of the neighborhood came and spoke to Zaid, Hindah's father received an answer from Zaid: "My disposition is now very displeased with her; I will not keep her with me anymore." And whoever asked received the same answer: "I have no concern with her; she is free to go wherever she wants." One person said that it would be a dishonor for you, to which Zaid replied, "What dishonor will it be? Do men not leave women? There is no dishonor or disgrace in it." So, did these words of Zaid count as divorce in the case of Hindah or not? Whatever the ruling of the Shariah, please state it and be rewarded.

The Answer: These words that Zaid spoke are among the metaphors of divorce (Kinayat-e-Talaq). One divorce occurs through these words, meaning...

[1] Fatawa Hindiyya, Book of Oaths, Chapter Two, Nurani Kutub Khana Peshawar, 2/55.

फ़तावा रज़विया खंड बारह

(ऊपर दायां बॉक्स - उर्दू): कथन "अगर मैं उसे घर में रखूँ तो उसी का दूध पियूँ" यह ईला (परहेज की शपथ) के अर्थ में नहीं है क्योंकि "घर में रखना" का अर्थ घर में रहने की अनुमति देना है; इससे संभोग मुराद नहीं हो सकता। और यह शपथ भी नहीं हो सकती, यहाँ तक कि अगर उसने उसे घर में रखा भी तो शपथ का कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) नहीं देना होगा क्योंकि पत्नी का दूध पीना ज़्यादा से ज़्यादा हराम है। इसी प्रकार, अगर कहा गया "अगर मैं यह काम करूँ तो मैं व्यभिचारी या चोर या शराबी या सूदखोर माना जाऊँ" तो यह शपथ नहीं होगी। 'हिन्दिया' में 'काफ़ी' से यही उद्धृत है, इसलिए इससे कोई कफ़्फ़ारा अनिवार्य नहीं होगा। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला बेहतर जानता है। (त)

(ऊपर बायां बॉक्स - अरबी/उर्दू): (उसी ؏ दूध पियूँ) तो यह ईला के अध्याय से बिल्कुल नहीं है क्योंकि "घर में रखना" वास्तव में ईला है यानी घर में रहने की अनुमति देना, और इससे संभोग का संकेत नहीं मिलता, और न ही यह शपथ है। यहाँ तक कि अगर उसने उसे पनाह दी और उसे रहने दिया, तो उस पर शपथ का कोई कफ़्फ़ारा नहीं है क्योंकि पत्नी का दूध पीना अधिकतम सीमा तक हराम है। और उसका यह कहना "अगर मैं ऐसा करूँ तो मैं व्यभिचारी या चोर या शराबी या सूदखोर हूँ," तो वह कसम खाने वाला नहीं है। 'हिन्दिया' में 'काफ़ी' से ऐसा ही है, इसलिए उस पर इससे कुछ भी अनिवार्य नहीं है। और अल्लाह पवित्र और महान है, वह सबसे बेहतर जानता है।

मसला २९२: धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ्ती इस मामले में क्या कहते हैं: ज़ैद ने गुस्से या नाराजगी की हालत में अपनी पत्नी हिंदह से ये शब्द कहे: "मेरे घर से निकल जा और मैं अब तुझे अपने यहाँ नहीं रखूँगा। अब तू कोई और पति कर ले, या किसी से जान-पहचान कर ले, मुझे तुझसे कोई सरोकार नहीं है। और अगर तू मेरे कहने पर नहीं निकलेगी तो मैं तेरी नाक काट दूँगा ताकि तू फिर से पति करने के लायक न रहे।" हिंदह, नाक कटने के डर से और ज़ैद के इन शब्दों की वजह से, वहाँ से निकलकर अपने रिश्तेदारों के एक घर में चली गई। मोहल्ले में इसकी चर्चा फैल गई। जब मोहल्ले वालों ने आकर ज़ैद से कहा, तो हिंदह के पिता को ज़ैद से यह जवाब मिला: "मेरा स्वभाव अब उससे बहुत नाराज़ है, मैं अब उसे अपने पास नहीं रखूँगा।" और जिसने भी पूछा उसे यही जवाब मिला: "मुझे उससे कोई मतलब नहीं है, वह स्वतंत्र है जहाँ चाहे वहाँ जाए।" एक व्यक्ति ने कहा कि इससे तुम्हारी बेइज्जती होगी, तो ज़ैद ने कहा, "क्या बेइज्जती होगी? क्या पुरुष महिलाओं को नहीं छोड़ देते? इसमें कोई बेइज्जती या अपमान नहीं है।" तो, क्या ज़ैद के ये शब्द हिंदह के हक़ में तलाक के समान हुए या नहीं? शरीयत का जो भी हुक्म हो, उसे बयान करें और पुण्य के पात्र बनें।

उत्तर: ये शब्द जो ज़ैद ने कहे हैं, वे तलाक के संकेतों (किनायाते तलाक) में से हैं। इन शब्दों से एक तलाक प्रभावी हो जाता है, यानी...

[1] फ़तावा हिन्दिया, किताबुल ईमान, अध्याय दो, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, २/५५।

فتاوی رضویہ جلد دوازدھم

(اوپری دایاں خانہ - اردو): قول "اس کو گھر میں رکھوں تو اسی کا دودھ پیوں" تو یہ ایلاء یعنی قسم کے معنی میں نہیں ہے کیونکہ گھر میں رکھنا، گھر میں رہنے کی اجازت دینا ہے، اس سے وطی مراد نہیں ہوسکتی، اور قسم بھی نہیں ہوسکتی حتی کہ اس کو گھر میں رکھا بھی تو قسم کا کفارہ نہ پڑے گا کیونکہ بیوی کا دودھ پینا زیادہ سے زیادہ حرام ہے، اور یوں ہی اگر کہا اگر میں یہ کام کروں تو میں زانی یا چور یا شرابی یا سود خور قرار پاؤں، قسم نہ ہو گی۔ ہندیہ میں کافی سے یہی منقول ہے، لہذا اس سے کوئی کفارہ لازم نہ ہو گا۔ واللہ سبحانہ وتعالیٰ اعلم۔ (ت)

(اوپری بایاں خانہ - عربی/اردو): تو اسی کا دودھ پیوں) فهذه ليس من باب الايلاء في شئ لان گھر میں رکھنا انما هو الايلاء اى هو التمكين من ان تسكن فى بيته ولا يكنى به عن الوطى و لا يكون يمينا ايضا حتى لو أواها ومكنها بعد من التمكن لا تلزمه كفارة يمين لان شرب لبن العرس غايته ان يكون حراما وقوله ان فعلت كذا فانا زان او سارق او شارب خمر او آكل ربو فليس بحالف هكذا في الهندية عن الكافى فلا يلزمه بذلك شيئ، والله سبحانه وتعالى اعلم۔

مسئلہ ۲۹۲: کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین بیچ اس باب کے کہ زید نے حالت ناراضگی یا رانجھگی میں ہندہ سے جو اس کی زوجہ ہے یہ کلمے کہے کہ "میرے مکان سے نکل جا اور میں اب تجھ کو اپنے یہاں نہ رکھوں گا، تو اب اور کوئی شوہر کر لے، یا کسی سے آشنائی کر، مجھ کو تجھ سے کچھ واسطہ نہیں، اور اگر تو میرے کہنے سے نہ نکلے گی تو پھر میں تیری ناک کاٹ لوں گا کہ پھر تو خاوند کرنے سے بھی بیکار ہو جائے گی" وہ ہندہ بخوف ناک اور بسبب یہ کلمے کہنے زید کے، وہاں سے نکل کر ایک مکان میں کہ جو اس کے اقرباؤں کا تھا چلی آئی، چرچا اس کا محلہ میں پھیلا، جب زید سے آکر اہل محلہ نے کہا ہندہ کے باپ نے جواب پایا زید

سے کہ "میری اب طبیعت اس سے بہت ناراض ہے میں اس کو اب اپنے پاس نہ رکھوں گا" اور جس نے کہا یہی جواب پایا کہ "مجھ کو اس سے کچھ سروکار نہیں اس کو اختیار ہے کہ جہاں چاہے وہاں جائے" اور ایک صاحب نے کہا کہ تمہاری بے حرمتی ہو گی تو زید نے کہا "کیا بے حرمتی ہو گی کیا مرد عورت کو چھوڑ نہیں دیتے ہیں کچھ بے حرمتی اور بے عزتی نہیں ہے" بس یہ کلمے زید کے مثل طلاق ہوئے بیچ حق ہندہ کے یا نہیں؟ جو حکم شرع انوار قام فرمائیں فقط بینوا توجروا۔

الجواب: یہ کلمات جو زید نے کہے کنایات طلاق میں سے ہیں ان الفاظ سے ایک طلاق واقع ہوتی ہے یعنی

[1] فتاوی ہندیہ کتاب الایمان الباب الثانی نورانی کتب خانہ پشاور ۵۵/۲

Fatawa Rizwia, Volume 12

The mentioned Zaid has the option to perform *raj'at* (revocation of divorce) or remarry her after the completion of the *iddah* period. It is quoted from *Durr al-Mukhtar* (citing *Al-Khulasa*):

| **Arabic:** Go away and get married [to someone else]; one [divorce] takes place even without intention. | **Urdu:** Meaning, if the husband says to his wife, "Go away and find another husband," then one divorce will occur regardless of whether the husband intended divorce or not. |

Written by Muhammad Ahsan al-Siddiqi al-Hanafi. [Muhammad Ahsan Siddiqi, 1276 AH]

The Answer: I say, and through Allah do I seek help: (I say, and I seek help from Allah. -T) The answer does not address the words mentioned in the question. The ruling quoted from *Durr al-Mukhtar*, i.e., if a husband says to his wife "Go away and find another husband," is not applicable to the current situation as presented. Even if no distinction is made between "get out" (*ukhruji*) and "go away" (*idhhbi*), the presence of a third phrase, i.e., in this statement: "I will no longer keep you with me," changes the nature of the case. Thus, the respondent's argument—aside from the fact that it's not clear if a revocable divorce (*raj'i*) was ruled upon—is irrelevant to the question. This is because the ruling for a collective state can differ from the ruling for an individual state, hence the correlation is not established at all (i.e., the claim and the proof do not match. -T). Furthermore, even if we accept that these words are metaphors (*kinayat*) of divorce, it is strange to call the said divorce 'revocable' (*raj'i*). This is because, except for a few specific words mentioned in books of jurisprudence (*fiqh*), other metaphorical expressions result in an irrevocable divorce (*talaq-e-ba'in*). In *Wiqayat al-Riwayah*, the phrase "seek [other] husbands" is mentioned among metaphors, and it is stated "it is one irrevocable [divorce]" (i.e., one irrevocable divorce has occurred. -T).

The correct answer is that in the questioned scenario, three metaphorical expressions of divorce are mentioned: 1. First, "get out of my house," which carries the meaning of "get out" (*ukhruji*). On the condition of intention, it becomes an irrevocable divorce, as previously mentioned. (-T) 2. Second, "you may now find another husband or form an acquaintance." The first part of this alternative also carries the same ruling, as has also been mentioned. (-T) 3. Third, "I have nothing to

do with you." This phrase is also among the metaphors of divorce, which, on the condition of intention from it...

---

1. *Durr al-Mukhtar*, Chapter on Metaphors, Mujtabai Press, Delhi, 1/226.
2. *Sharh al-Wiqayah*, Chapter on Metaphors, Mujtabai Press, Delhi, 2/87.

फ़तावा रज़विया, खंड 12

उल्लेखित ज़ैद को अधिकार है कि वह उससे रुजू (सुलह) कर ले या इद्दत समाप्त होने के बाद निकाह कर ले। 'दुर्रे मुख्तार' में 'खुलासा' के हवाले से उद्धृत है कि:

| **अरबी:** चली जाओ और निकाह कर लो, बिना नियत के भी एक (तलाक़) पड़ जाएगी। | **उर्दू:** यानी अगर शौहर ने बीवी से कहा कि "चली जा और दूसरा शौहर कर ले," तो इससे एक तलाक़ पड़ जाएगी चाहे शौहर की तलाक़ की नियत हो या न हो। |

मुहम्मद अहसन अल-सिद्दीकी अल-हनफी द्वारा लिखित। [मुहम्मद अहसन सिद्दीकी, 1276 हिजरी]

उत्तर: मैं कहता हूँ, और अल्लाह ही से मदद चाहता हूँ: (मैं कहता हूँ और अल्लाह से मदद माँगता हूँ। -त) उत्तर में सवाल में दिए गए शब्दों पर ध्यान नहीं दिया गया है। 'दुर्रे मुख्तार' से जिस बात का हुक्म नक़ल किया गया है, यानी अगर शौहर ने बीवी से कहा "चली जा और दूसरा शौहर कर ले", वह वर्तमान स्थिति के स्वरूप में नहीं है। यदि "निकल जा" (उख़रुजी) और "चली जा" (इज़हबी) में अंतर न भी किया जाए, तो भी तीसरे जुमले यानी इस कलाम के कारण कि "मैं अब तुझे अपने यहाँ नहीं रखूँगा", मामले की सूरत बदल जाएगी। अतः उत्तरदाता की दलील—इस बात से हटकर कि इससे तलाक़े रज़ई (प्रतिसंहरणीय तलाक़) होना स्पष्ट नहीं है—सवाल से संबंध नहीं रखती क्योंकि सामूहिक स्थिति का हुक्म व्यक्तिगत स्थिति के हुक्म से अलग हो सकता है, इसलिए कोई तालमेल नहीं बैठता (अर्थात दावा और दलील मेल नहीं खाते। -त)। इसके अलावा, यह स्वीकार करने के बाद कि ये शब्द तलाक़ के किनायात (संकेत) हैं, उक्त तलाक़ को 'रज़ई' करार देना बहुत अजीब है। क्योंकि फ़िक़्ह की किताबों में वर्णित चंद शब्दों के अलावा, बाकी किनायात से 'तलाक़े बाइन' (अप्रतिसंहरणीय तलाक़) वाक़े होती है। 'विक़ायतुर रिवाया' में "पति तलाश कर" शब्द को किनायात में ज़िक्र करके कहा गया है "वाहिदतुन बाइनतुन" (एक बाइन तलाक़ हो गई। -त)।

सही जवाब यह है कि पूछे गए मामले में तलाक़ के तीन किनाया शब्द ज़िक्र किए गए हैं: 1. पहला, "मेरे मकान से निकल जा" जिसका अर्थ "उख़रुजी" (निकल जा) है। नियत की शर्त पर इससे तलाक़े बाइन हो जाती है जैसा कि पहले गुज़र चुका है। (-त) 2. दूसरा, "अब तू कोई शौहर कर ले या किसी से जान-पहचान कर ले"। इस विकल्प के पहले हिस्से का भी यही हुक्म है, और यह भी गुज़र चुका है। (-त) 3. तीसरा, "मुझे तुझसे कोई वास्ता नहीं", यह शब्द भी तलाक़ के किनायात में से है कि नियत की शर्त पर इससे...

1. दुर्रे मुख्तार, बाबुल किनायात, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 1/226.
2. शरह अल-विक़ाया, बाबुल किनायात, मुज्तबाई प्रेस, दिल्ली, 2/87.

पृष्ठ 594/688

زید مذکور کو اختیار ہے کہ اس سے رجعت کرلے یا بعد انقضائے عدت نکاح کرلے۔ در مختار میں خلاصہ سے نقل کیا ہے کہ:

| **اذھبی وتزوّجی یقع واحدۃ بلا نیۃ ۔** | یعنی اگر شوہر نے زوجہ کو کہا کہ چلی جا اور دوسرا شوہر کرلے تو اس سے ایک طلاق پڑ جائے گی خود شوہر کی نیت طلاق کی ہو یا نہ ہو۔ |

کتبہ محمد احسن الصدیقی الحنفی محمد احسن صدیقی ۱۲۷۶ھ

الجواب: اقول: وباللہ استعین (میں کہتا ہوں اور اللہ سے مدد مانگتا ہوں۔ت) جواب میں الفاظ مندرجہ سوال سے تعرض نہیں اور جس بات کا حکم در مختار سے نقل کیا یعنی اگر شوہر نے زوجہ کو کہا "چلی جا اور دوسرا شوہر کرلے" سوال میں ہیئت کذائی نہیں۔ اگر "اخرجی اور اذہبی" میں فرق نہ کیا جائے تاہم بسبب لفظ ثالث یعنی اس کلام کے کہ "میں اب تجھ کو اپنے یہاں نہ رکھوں گا" صورت مسئلہ کی بدل جائے گی، پس دلیل جناب مجیب کی قطع نظر اس سے کہ رجعی ہونا صورت محکوم علیہا کا اس سے ظاہر نہیں سوال سے علاقہ نہیں رکھتی کہ حکم ہیئت اجتماعیہ کا حالت انفرادی کے حکم سے مغایر ہو سکتا ہے فلایتم التقریب اصلا (تو دعوی اور دلیل مطابق نہ ہوئے۔ت) علاوہ بریں بعد التسلیم اس امر کے کہ یہ کلمات کنایات طلاق سے ہیں طلاق مذکورہ کو رجعی قرار دینا بس عجیب ہے اس لئے کہ سوا چند الفاظ کے کہ کتب فقہ میں مذکور ہیں باقی کنایات سے طلاق بائن واقع ہوتی ہے اور لفظ ابتغی الازواج (خاوند تلاش کر۔ت) کو وقایۃ الروایۃ میں کنایات میں ذکر کر کے کہا واحدۃ بائنۃ (ایک بائنہ طلاق ہوگئی۔ت)

پس جواب صحیح یہ ہے کہ صورت مسئولہ میں تین لفظ کنایات طلاق سے مذکور ہیں: اول، تو میرے مکان سے نکل جا کہ حاصل معنی "اخرجی" کا ہے بشرط نیت اس سے طلاق بائن ہو جاتی ہے کما مر (جیسا کہ گزر چکا ہے۔ت) دوم، تو اب کوئی شوہر کرلے یا کسی سے آشنائی کر، اس تردید کے جزء اول کا بھی یہی حکم ہے، وقد مر ایضاً (اور یہ بھی گزر چکا۔ت) سوم، مجھ کو تجھ سے کچھ واسطہ نہیں، یہ لفظ بھی کنایات طلاق سے ہے کہ بشرط نیت اس سے

---

۱ درمختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۲۶ ۲ شرح الوقایہ باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۲/۸۷

Fatawa Ridawiyya Volume Twelve

Irrevocable divorce occurs. It is stated in Fatawa Qadi Khan:

And if he said, 'There remains no action between me and you,' divorce occurs if he intended it.	**If one says, 'No dealing remains between you and me,' and it is said with the intention of divorce, then divorce takes place. (T)**

Adhanawi - 1

Therefore, if the entire phrase or some of the mentioned words were said with the intention of divorce, an irrevocable divorce (Talaq-e-Ba'in) occurs. Physical intimacy with the woman is prohibited without a renewal of the marriage contract (Tajdid-e-Nikah). It is in Tanwir al-Absar:

Irrevocable divorce can follow an explicit one, but not another irrevocable one, except when...	**An irrevocable divorce can follow an explicit (Sarih) one, but not another irrevocable one except when... (T)**

Al-Ba'inu Yalhaqul Sariha Lal Ba'ina Illa Idha - 2

(Incomplete answer found)

Question 293: From Old City, 19 Muharram al-Haram 1314 AH What do the scholars of religion say regarding this case: Zaid began to cause various troubles to his wife, Hindah, who had been married to him for several years, for the purpose of remarrying elsewhere. He forcibly accused her of adultery, wrote it on a paper, and kept it in his pen case. On that day, he treated Hindah so harshly that Zaid's heirs informed Hindah's heirs, saying, 'Take your daughter to your home, she is in severe distress.' Consequently, Hindah's mother brought Hindah to her home, along with the aforementioned paper. Hindah's heirs then counseled Zaid in a public gathering regarding those written words. In response, Zaid said, 'I have left her, I have no connection with her. Take Hindah's belongings from me right now.' Hindah's heirs sent two people to Zaid to collect Hindah's belongings. Zaid gave all the belongings, which they handed over to Hindah. Hindah said, 'My jewelry is still left, bring that too.' The same persons went to Zaid for the jewelry. Zaid promised to give it in two days. Accordingly, on the twentieth day, in front of four people, Zaid gave all the jewelry and then said, 'There is no connection with me.' In this case, Zaid said twice the phrase 'There is no connection with me.' Zaid's intention is clear from these

words. Four years have passed since then, and he has had no connection. In this situation, has divorce occurred for Hindah according to Sharia or not? Please clarify and be rewarded.

Answer: In the inquired case, a ruling will be given that divorce has occurred for Hindah and she is out of Zaid's marriage. Yes...

1. Fatawa Qadi Khan, Chapter on Allusions (Al-Kinayat), Naval Kishore Lucknow, 1/216
2. Durr al-Mukhtar, Chapter on Allusions (Al-Kinayat), Matba' Mujtabai Delhi, 1/225

फ़तावा रिज़विया खंड: बारहवाँ

तलाक़-ए-बाइन (अपरिवर्तनीय तलाक़) हो जाता है। फ़तावा क़ाज़ी ख़ान में है:

और यदि उसने कहा, 'मेरे और तुम्हारे बीच कोई काम नहीं रहा,' तो यदि उसने इरादा किया था, तो तलाक़ हो जाता है।

अगर इस तरह कहा कि "तेरे और मेरे दरमियान कोई अमल न रहा" जब तलाक़ की नीयत से हो तलाक़ वाक़े होगी। (त)

अज़ानवी - 1

अतः यदि पूरे वाक्य या उल्लेखित कुछ शब्दों को तलाक़ की नीयत से कहा गया, तो तलाक़-ए-बाइन वाक़े हो गई। निकाह के नवीनीकरण (तजदीद-ए-निकाह) के बिना महिला के साथ शारीरिक संबंध हराम है। तनवीरुल अबसार में है:

बाइन तलाक़, स्पष्ट (सरीह) के बाद आ सकती है, लेकिन दूसरी बाइन के बाद नहीं, सिवाय इसके कि...

बाइन तलाक़, सरीह को लाहिक़ हो सकती है बाइन को नहीं मगर जब। (त)

अल-बाइनु यलहक़ुस सरीहा लल बाइन इल्ला इज़ा - 2

(अधूरा उत्तर मिला)

मसला २९३: शहर-ए-कुहना से, १९ मुहर्रमुल हराम १३१४ हिजरी क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस सूरत में कि ज़ैद ने अपनी बीवी हिंदा, जो कई साल से उसके निकाह में थी, दूसरी जगह शादी करने के इरादे से तरह-तरह की तकलीफ़ें देना शुरू कीं। ज़बरदस्ती उस पर ज़िना की तोहमत लगा कर एक पर्चा लिखा और उसे अपने क़लमदान में रखा। उस दिन ज़ैद के वारिसों ने हिंदा के वारिसों को ख़बर दी कि तुम अपनी लड़की को अपने घर ले जाओ, वह सख़्त तकलीफ़ में है। इस पर हिंदा की माँ उसे अपने घर ले आई और वह पर्चा भी साथ लाई। हिंदा के वारिसों ने एक मजमे में ज़ैद को उन तहरीरी अलफ़ाज़ पर नसीहत की। जवाब में ज़ैद ने कहा, "मैंने छोड़ दिया, मेरा कोई ताल्लुक़ नहीं, हिंदा का जो सामान है अभी मुझसे ले लो।" हिंदा के वारिसों ने दो शख़्सों को सामान लेने भेजा, ज़ैद ने सारा सामान दे दिया। हिंदा ने कहा, "मेरा ज़ेवर बाक़ी है, वह भी लाओ।" वही लोग ज़ेवर लेने गए। ज़ैद ने दो दिन में देने का वादा किया। बीसवें दिन चार आदमियों के सामने ज़ैद ने सारा ज़ेवर दे दिया और फिर कहा, "मुझसे कुछ ताल्लुक़ नहीं।" इस सूरत में ज़ैद ने दो बार यह जुमला कहा कि "मुझसे कुछ ताल्लुक़ नहीं।" ज़ैद की नीयत इन अलफ़ाज़ से ज़ाहिर है। चार साल का अरसा बीत गया, तब से

अब तक कोई ताल्लुक़ नहीं रखा। क्या इस सूरत में शरीअत के मुताबिक़ हिंदा पर तलाक़ वाक़े हुई या नहीं? बयान फ़रमाएँ, सवाब पायें।

जवाब: पूछी गई सूरत में हुक्म दिया जाएगा कि हिंदा पर तलाक़ पड़ गई और वह ज़ैद के निकाह से बाहर हो गई। हाँ...

1. फ़तावा क़ाज़ी ख़ान फ़स्ल फ़िल किनायात नवलकिशोर लखनऊ 1/216
2. दुर्रे मुख़्तार बाबुल किनायात मतबा मुजतबाई दिल्ली 1/225

पृष्ठ 595 का 688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

طلاق بائن ہوتی ہے۔ فتاوٰی قاضی خاں میں ہے :

ولو قال لم یبق بینی وبینك عمل اگر یوں کہا کہ "تیرے اور میرے درمیان کوئی عمل نہ رہا" جب یقع الطلاق اذانوی۔ 1 طلاق کی نیت سے ہو طلاق واقع ہوگی۔ (ت)

اذانوی۔ 1

پس اگر جملہ یا بعض الفاظ مذکورہ بہ نیت طلاق کہے طلاق بائن واقع ہوئی، بے تجدیدِ نکاح کے مباشرت عورت سے حرام ہے۔ تنویر الابصار میں ہے :

البائن یلحق الصریح لالبائن الا اذا۔ بائن طلاق، صریح کو لاحق ہو سکتی ہے بائن کو نہیں مگر 2 جب۔ (ت)

البائن یلحق الصریح لا البائن الا اذا

2 -

(جواب ناقص ملا)

مسئلہ ۲۹۳: از شہر کہنہ 19 محرم الحرام 1314 ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس صورت میں کہ زید نے اپنی زوجہ سے جس کا نام ہندہ اور جو کئی سال سے اس کے نکاح میں تھی بغرض اپنی شادی دوسری جگہ کرنے کے اس کو طرح طرح کی تکلیفیں دینا شروع کیں اور بجبر اس پر تہمت زنا کی لگا کر ایک پرچہ تحریر کیا اور پرچہ اپنے قلمدان میں رکھا اس روز ہندہ کو سختی ایسی دی کہ زید کے وارثان نے ہندہ کے وارثوں کو خبر دی کہ تم اپنی لڑکی کو اپنے گھر لے جاؤ وہ سخت تکلیف میں ہے۔ اس پر ہندہ کی ماں ہندہ کو اپنے گھر لے آئی اور پرچہ جس کا ذکر اوپر

ہوا ہے وہ بھی ہندہ اپنے ساتھ لائی اس پر ہندہ کے وارثوں نے ایک مجمع عام میں زید کو ایسے کلمات کی تحریر سے نصیحت فہمائش کی، بجواب اس کے زید نے کہا کہ میں نے چھوڑا، مجھے کچھ تعلق نہیں، جو اسباب ہندہ کا ہے ابھی مجھ سے لے لو۔ ہندہ کے وارثوں نے دو شخصوں کو زید کے پاس ہندہ کا اسباب لینے کو بھیجا، زید نے کُل اسباب دے دیا، ان لوگوں نے ہندہ کے حوالہ کردیا، ہندہ نے کہا کہ میرا زیور باقی ہے وہ بھی لاؤ۔ وہ ہی شخص زیور لینے زید کے پاس گئے ، زید نے زیور کا وعدہ کیا کہ میں 2 روز میں دوں گا۔ چنانچہ زید نے بیسویں روز رُوبرو چار آدمیوں کے کل زیور دے دیا اور پھر کہا کہ مجھ سے کچھ تعلق نہیں۔ اس صورت میں زید نے دو مرتبہ یہ کلمہ کہا کہ مجھ سے کچھ تعلق نہیں۔ منشا زید کا ان کلمات سے ظاہر ہے۔ عرصہ چار سال ہوا جب سے اس وقت تک کچھ تعلق نہیں رکھا۔ اس صورت میں شرعاً ہندہ پر طلاق واقع ہوئی یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: صورتِ مستفسرہ میں ہندہ پر طلاق پڑ جانے اور نکاح زید سے باہر ہو جانے کا حکم دیا جائے گا، ہاں

1 فتاویٰ قاضی خاں فصل فی الکنایات نولکشور لکھنؤ ۱/ ۲۱۶ 2 درمختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۲۵

Fatawa Razawiyya, Volume 12

If the words Zaid uttered were only these, and he states under a religious oath that he did not utter these words regarding Hindah, and divorce was not intended, then a ruling for the occurrence of divorce will not be given. Furthermore, if he is lying in his oath, the burden of this and the divine punishment will fall upon Zaid alone; no blame shall be on Hindah.

| In Al-Hindiyya, citing Al-Khulasa and other Fatawa, it is mentioned: If a man says to his wife, "If you are 'woman' (aurat), you have three divorces from me," without adding the suffix 'i' (for 'my woman/wife' - aurati), and then he says he didn't intend divorce, it won't occur. Since he omitted the 'i', it is no longer attributed to her. | In Al-Hindiyya, citing Al-Khulasa and other Fatawa, it is mentioned: If someone says to his wife, "If you are 'woman' (aurat) you have three divorces from me," without adding the suffix 'i' (to mean 'my woman'), and then says he didn't intend divorce, it won't occur. Since he omitted the 'i', divorce is no longer attributed to the wife. | | In Al-Bazaziyya and Al-Khaniyya, regarding the statement "Do not leave the house without my permission, for I have sworn an oath of divorce," the husband's explanation is acceptable because it's possible he meant the divorce of someone else when swearing the oath. And Allah knows best. | In Al-Bazaziyya and Al-Khaniyya, it is stated that if a husband tells his wife, "Do not leave the house without my permission, for I have sworn an oath of divorce," his explanation will be credible because it is possible he meant someone else's divorce when taking the oath. And Allah Almighty knows best. (T) |

Problem 293: From Qasba Wali, Tehsil Aonla, District Bareilly, sent by Musammat Mahmudi daughter of Sheikh Aleemullah, 14 Jamadi-ul-Akhirah 1312 AH.

What do the scholars of religion say regarding this matter: The named person Wilayat Khan, husband of (me, Musammat Mahmudi), has left me for a long time. He does not provide me with maintenance (food and clothing). I am in great distress due to not receiving maintenance. Therefore, I too am unhappy with that person because he abandons prayers and also does not provide maintenance. Consequently, a notice of unhappiness from the said husband came to me, which is attached to this question. I hope that for the sake of God's religion, according to the noble Sharia, you will issue a decree of freedom so that I may marry a righteous person and live my life. The text of the notice is: "Your notice regarding the aforementioned maintenance of your daughter, namely Mahmudi, was received. The reply to it is that

as long as your daughter stayed in my house, you remained my father-in-law. From the day I freed her..."

---

1. Fatawa Hindiyya, Chapter 7 on Divorce in Persian words, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/382.
2. Fatawa Qazi Khan, Book of Divorce, Nawal Kishore Lucknow, 1/215.

फ़तावा रज़विया, खंड 12

यदि ज़ैद द्वारा कहे गए शब्द केवल इतने ही थे और वह धार्मिक शपथ के साथ यह बयान करता है कि मैंने ये शब्द हिंदा के संबंध में नहीं कहे थे और उसे छोड़ना मेरा इरादा नहीं था, तो तलाक के होने का फैसला नहीं दिया जाएगा। इसके बाद यदि वह अपनी इस शपथ में झूठ बोल रहा है, तो इसकी जिम्मेदारी और ईश्वरीय दंड का हकदार ज़ैद ही होगा; हिंदा पर कोई इल्जाम नहीं आएगा।

| फ़ी अल-हिंदिया अन अल-खुलासा अन अल-फ़तावा रजुलन काला लि-इमरातिही... (अरबी पाठ) | अल-हिंदिया में 'अल-खुलासा' और अन्य 'फ़तावा' से उद्धृत है: यदि किसी ने अपनी पत्नी से कहा, "अगर तू 'औरत' (aurat) है तो मुझसे तीन तलाक," जिसमें 'या' (یا) का लोप हो (यानी 'मेरी औरत' न कहकर केवल 'औरत' कहा), और फिर वह कहे कि मेरा इरादा तलाक का नहीं था, तो तलाक नहीं होगा। क्योंकि जब उसने 'या' हटा दिया, तो अब तलाक पत्नी की ओर संबंधित नहीं रहा। | | अल-बज़ज़िया और अल-ख़ानिया में है कि अगर पति ने पत्नी से कहा, "मेरी अनुमति के बिना घर से मत निकलना, क्योंकि मैंने तलाक की कसम खाई है," तो इसमें पति की व्याख्या विश्वसनीय मानी जाएगी क्योंकि यह संभव है कि उसने कसम खाते समय किसी और के तलाक का इरादा किया हो। और अल्लाह बेहतर जानता है। | अल-बज़ज़िया और अल-ख़ानिया में है कि अगर पति ने पत्नी से कहा, "मेरी अनुमति के बिना घर से मत निकलना, क्योंकि मैंने तलाक की कसम खाई है," तो इसमें पति की व्याख्या विश्वसनीय मानी जाएगी क्योंकि यह संभव है कि उसने कसम खाते समय किसी और के तलाक का इरादा किया हो। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है। (त) |

मसाला 293: कस्बा वली, तहसील आंवला, जिला बरेली से, प्रेषक मुसम्मात महमूदी पुत्री शेख अलीमुल्लाह, 14 जमादी-उल-आख़िर 1312 हिजरी।

धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं: नामित व्यक्ति विलायत खान, जो पति है (मेरा, मुसम्मात महमूदी का), ने मुझे लंबे समय से छोड़ दिया है। वह मुझे गुजारा भत्ता (रोटी-कपड़ा) नहीं देता है। गुजारा भत्ता न मिलने के कारण मैं बहुत कष्ट में हूँ। इसलिए, मैं भी उस व्यक्ति से इसलिए नाखुश हूँ क्योंकि वह नमाज छोड़ता है और गुजारा भत्ता भी नहीं देता है। इसी बीच, उक्त पति का एक नाराजगी का नोटिस मेरे पास आया है जो इस सवाल के साथ संलग्न है। उम्मीद है कि खुदा के दीन की खातिर, शरीयत-ए-मुकद्दसा के अनुसार आजादी (तलाक) का हुक्म जारी फरमाएं ताकि मैं किसी नेक इंसान से निकाह कर सकूँ और अपनी उम्र बसर कर सकूँ। नोटिस का मजमून यह है: "आपका

नोटिस आपकी बेटी यानी महमूदी के गुजारे भत्ते के संबंध में प्राप्त हुआ। इसका उत्तर यह है कि जब तक आपकी बेटी मेरे घर रही, तब तक आप मेरे ससुर रहे। जिस दिन से मैंने उसे आजाद..."

---

1. फ़तावा हिंदिया, फ़ारसी शब्दों में तलाक पर सातवां अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/382।
2. फ़तावा काजी खान, किताब-उत-तलाक, नवल किशोर लखनऊ, 1/215।

पेज 596 का 688

اگر لفظ جو زید نے کہے اسی قدر ہیں اور اس حالت میں وہ حلف شرعی کے ساتھ بیان کرے کہ میں نے یہ الفاظ ہندہ کی نسبت نہ کہے تھے اسے چھوڑ نا مراد نہ تھا تو وقوع طلاق کا حکم نہ دیں گے پھر اگر وہ اپنے اس حلف میں جھوٹا ہو تو اس کا وبال اور عذاب الہی کا استحقاق زید ہی پر رہے گا ہندہ پر الزام نہ آئے گا،

| في الهندية عن الخلاصة عن الفتاوی رجل قال لامراته اگر تو زن منی سه طلاق مع حذف الياء لا يقع اذا قال لم انو الطلاق لانه لما حذف فلم يكن مضيفا اليها اهـ | ہندیہ میں خلاصہ سے اور وہاں فتاوی سے منقول ہے اگر کسی نے بیوی کو کہا "اگر تو عورت ہے تو مجھ سے تین طلاق" عورت کے ساتھ یاء نسبت کو ذکر نہ کیا، تو پھر کہے کہ میں نے طلاق کی نیت نہیں کی، تو طلاق نہ ہوگی اس نے جب یاء کو حذف کردیا تو اب طلاق بیوی کی طرف منسوب نہ ہوئی اھ | | وفي البزازية والخانية في قوله لا تخرجی من الدار الا بأذنی فانی حلفت بالطلاق انه يحتمل الحلف بطلاق غيرها فالقول قوله اهـ والله تعالٰی اعلم۔ | بزازیہ اور خانیہ میں ہے کہ خاوند نے بیوی کو کہا گھر سے میری اجازت کے بغیر مت نکل، کیونکہ میں نے طلاق کی قسم کھائی ہے، تو اس میں خاوند کی وضاحت معتبر ہوگی کیونکہ ہوسکتا ہے کہ اس نے کسی اور کی طلاق مراد لے کر قسم کھائی ہو اھ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت) |

مسئلہ ۲۹۳: از قصبہ ولی تحصیل آنولہ ضلع بریلی مرسلہ مسماۃ محمودی بنت شیخ علیم اللہ ۱۴ جمادی الآخرہ ۱۳۱۲ھ علمائے دین اس مسئلہ میں کیا فرماتے ہیں کہ مسمی ولایت خاں شوہر (مجھ مسماۃ محمودی) نے عرصہ دراز سے مجھ کو چھوڑ دیا ہے، نہ مجھ کو نان نفقہ دیتا ہے، میں بوجہ نہ ملنے نان و نفقہ کے بہت تکلیف میں ہوں، لہٰذا میں بھی اس شخص سے بوجہ تارک الصلوۃ

و نیز نہ دینے نان و نفقہ کے ناخوش ہوں، چنانچہ ایک پرچہ نوٹس ناخوشی شوہر مذکور کا میرے پاس آیا وہ ہمشتہ سوال ہذا ہے، امید کہ برائے خدائے دین بموجب شرع شریف حکم آزادگی کا ارقام فرمائیں تاکہ میں نکاح اپنا کسی شخص صالح سے کرلوں اور عمر میری بسر ہو، عبارت نوٹس یہ ہے کہ پرچہ نوٹس آپ کا درباره ناشی متذکرہ نان و نفقہ دختر آپ کی کا یعنی محمودی کا آیا، اس کا جواب یہ ہے کہ جب تک آپ کی لڑکی میرے گھر رہی تب تک آپ میرے خسر رہے جس روز سے کہ اس کو میں نے آزاد

---

1 فتاویٰ ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالالفاظ الفارسیة نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۸۲ 2 فتاویٰ قاضی خاں کتاب الطلاق نولکشور لکھنو ۱/ ۲۱۵

Fatawa Razawiyya Volume 12

...along with all the dowry items, etc., she was sent with it and dispatched to your house. Legally, no relationship remains between me and her, nor does any of her property remain in my responsibility. On that day, many elders (panchan) of Saroli town were present; they too are witnesses to this matter. If there were any relationship between me and the said woman, I would definitely be concerned about her maintenance. Why do you keep writing continuously? Now, from your notice, it is known that you are going to bring the elders together again to my house. If you do this, there will be extreme grief between me and you. Therefore, do not intend to gather the elders anymore; for this reason, the notice was given, so stay informed. From Dhanora, sent by Wilayat Khan, 21 October 1920.

The Answer: From the wording of the notice ("that as long as she stayed in my house, you were my father-in-law; from the day I freed her and sent her to your house"), a clear confession of divorce is evident.

[Table/Box Text] Arabic: Freeing a woman, even if it is among the metaphorical words (Kinayah), does not bear the possibility of rejection or abuse as is not hidden. In 'Ad-Durr al-Mukhtar' it is said: "You are free" does not bear abuse or rejection. Imam Shami said: "I have freed you" is like "you are free" as mentioned in 'Al-Fath'. And the state, as you see, is a state of anger, so in the ruling, nothing but divorce is understood, and the woman is like a judge, as mentioned in 'Al-Fath' and others.

Urdu: To say to a wife, "She is free," although it is among the words of metaphor (kinayah), it does not carry the possibility of a scolding or a response, and only divorce will be meant, as is not hidden. It is stated in Durr al-Mukhtar: To say to a wife, "You are free," does not carry the possibility of scolding and response, and upon this Allama Shami said, "I have freed you" is just like someone saying, "You are free," as is in Al-Fath. And if the state is also one of anger, then only divorce can be understood as the ruling; in this, the woman is like a judge, as is in Al-Fath etc. (T)

Therefore, if it is proven by Sharia witnesses that this notice was written by him or if he confesses to it, then one 'Talaq Ba'in' (irrevocable divorce) has occurred. The 'Iddah' (waiting period) will be counted from the time the notice was written, even if the woman (Hindah) also admits that he had divorced her at the time he expelled her

from the house, which is acknowledged in this notice. Yes, if Hindah, at the time of being expelled from the house...

1. Ad-Durr al-Mukhtar, Chapter of Kinayat, Mujtabai Press Delhi, 1/224
2. Radd al-Muhtar, Chapter of Kinayat, Dar Ihya at-Turath al-Arabi Beirut, 2/465

फतावा रजविया जिल्द 12

...दहेज के सभी सामान आदि के साथ उसे उसके साथ कर दिया गया और आपके घर भेज दिया गया। कानूनी तौर पर मेरे और उसके बीच कोई संबंध नहीं रहा, न ही उसका कोई सामान मेरी जिम्मेदारी में बचा है, बल्कि उस दिन सिरौली कस्बे के कई गणमान्य लोग (पंचान) मौजूद थे, वे भी इस बात के गवाह हैं। अगर मेरे और उक्त महिला के बीच कोई संबंध होता तो मैं निश्चित रूप से उसके भरण-पोषण की चिंता करता। आप लगातार क्यों लिख रहे हैं? अब आपके नोटिस से पता चला है कि आप फिर से पंचों को इकट्ठा करके मेरे घर लाने वाले हैं। अगर आपने ऐसा किया तो मेरे और आपके बीच गहरा दुख होगा। इसलिए, अब पंचों को इकट्ठा करने का इरादा न करें, इसी कारण से नोटिस दिया गया है, सूचित रहें। स्थान धनौरा से, प्रेषक विलायत खान, 21 अक्टूबर 1920।

उत्तर: नोटिस की इबारत से ("कि जब तक वह मेरे घर रही आप मेरे ससुर रहे, जिस दिन से मैंने उसे आज़ाद करके आपके घर भेज दिया") तलाक का स्पष्ट इक़रार ज़ाहिर होता है,

[तालिका/बॉक्स टेक्स्ट] अरबी: स्त्री को आज़ाद करना, भले ही वह रूपक शब्दों (किनाया) में से हो, अस्वीकृति या अपमान की संभावना नहीं रखता जैसा कि छिपा नहीं है। 'अद-दुर्र अल-मुख्तार' में है: "तुम आज़ाद हो" अपमान या अस्वीकृति को सहन नहीं करता। इमाम शामी ने कहा: "मैंने तुम्हें आज़ाद कर दिया" वैसा ही है जैसे "तुम आज़ाद हो" जैसा कि 'अल-फ़तह' में है। और स्थिति, जैसा कि आप देख रहे हैं, गुस्से की स्थिति है, इसलिए हुक्म में तलाक के अलावा कुछ नहीं समझा जाता, और स्त्री काजी (न्यायाधीश) के समान है, जैसा कि 'अल-फ़तह' और अन्य में वर्णित है।

उर्दू: पत्नी को "आज़ाद है" कहना, हालाँकि शब्द किनाया (अलंकारिक) में से हैं, फिर भी यह डाँट और जवाब की संभावना नहीं रखता और केवल तलाक ही मुराद (अभिप्राय) होगी, जैसा कि गुप्त नहीं है। दुर्रे मुख्तार में है: पत्नी को कहना "तू आज़ाद है" डाँट और जवाब की संभावना नहीं रखता, और इस पर अल्लामा शामी ने फरमाया "मैंने तुझे आज़ाद किया" वैसा ही है जैसे कोई कहे "तू आज़ाद है" जैसा कि फतह में है। और यदि स्थिति भी क्रोध की हो तो फिर तलाक ही हुक्म समझा जा सकता है, इसमें स्त्री काजी की तरह है जैसा कि फतह आदि में है। (त)

अतः, यदि शरिया गवाहों से यह सिद्ध हो जाए कि यह नोटिस उसी का लिखा हुआ है या वह इसे स्वीकार कर ले, तो एक 'तलाक-ए-बायन' (अपरिवर्तनीय तलाक) हो गया है। 'इद्दत' (प्रतीक्षा अवधि) नोटिस लिखने के समय से मानी जाएगी, भले ही हिंदा (महिला) भी यह स्वीकार करती हो कि जब

उसने उसे घर से निकाला था तभी तलाक दे दिया था, जिसका इक़रार इस नोटिस में है। हाँ, यदि हिंदा को घर से निकालते समय...

1. दुर्रे मुख्तार, बाबुल किनायात, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/224
2. रद्दुल मुख्तार, बाबुल किनायात, दारु इह्याउत तुरास अल-अरबी बैरूत, 2/465

पृष्ठ 597/688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

...کرکے معہ جملہ اسباب جہیز وغیرہ اس کے ہمراہ کردیا گیا اور آپ کے گھر بھیج دیا گیا۔ مجھ سے اور اس سے کچھ تعلق شرعاً نہیں رہا، نہ اس کا کوئی سامان میرے ذمہ باقی رہا بلکہ اس روز بہت پنچان قصبہ سرولی کے موجود تھے وہ بھی اس امر کے گواہ ہیں ، اگر مجھ سے اور مسماۃ مذکور سے کچھ تعلق ہوتا تو میں ضرور اس کے نان ونفقہ کی فکر کرتا، آپ کیوں برابر تحریر کرتے ہیں، اب آپ کے نوٹس سے معلوم ہوتا ہے کہ اب آپ پھر پنچان جمع کرکے میرے مکان پر لانے والے ہیں اگر آپ نے ایسا کیا تو مجھ سے اور آپ سے رنج حد کو پہنچے گا، لہٰذا اب آپ پنچان کے جمع کرنے کا ارادہ نہ کریں، اس واسطے نوٹس دیا گیا مطلع رہو۔ از مقام دھنورہ مرسلہ ولایت خاں ۲۱، اکتوبر ۱۹۲۰ء۔

الجواب: عبارت نوٹس سے (کہ جب تک میرے گھر رہی آپ میرے خسر رہے جس روز سے اس کو میں نے آزاد کرکے آپ کے گھر بھیج دیا) صاف اقرارِ طلاق ظاہر ہے،

[جدول] عربی: اعتاق المرأۃ وان کانت من الکنایات فلایتحمل رداً ولا سباً کما لا یخفی، وفی الدر المختار انت حرۃ لا یحتمل السب والرد ، قال الشامی واعتقتک مثل انت حرۃ کما فی الفتح والحالۃ کما تری حالۃ الغضب فلا یفہم فی الحکم الا الطلاق والمرأۃ کالقاضی کما فی الفتح وغیرہ۔

اردو ترجمہ: بیوی کو "آزاد ہے" کہنا ، اگرچہ الفاظ کنایہ میں سے ہے تاہم یہ ڈانٹ اور جواب کا احتمال نہیں رکھتا اور صرف طلاق مراد ہوگی جیسا کہ مخفی نہیں ہے، درمختار میں ہے : بیوی کو کہنا "تو آزاد ہے" ڈانٹ اور جواب کا احتمال نہیں رکھتا، اور اس پر علامہ شامی نے فرمایا "میں نے تجھے آزاد کیا" ایسے ہی ہے جیسے کوئی کہے "تو آزاد ہے" جیسا کہ فتح میں ہے، اور

حالت بھی غصہ کی ہو تو پھر طلاق ہی حکم سمجھا جاسکتا ہے، اس میں عورت قاضی کی مانند ہے جیسا کہ فتح وغیرہ میں ہے۔ (ت)

پس اگر گواہانِ شرعی سے ثابت ہو کہ یہ نوٹس اسی کا لکھا ہوا ہے یا وہ مقر ہو تو ایک طلاقِ بائن واقع ہوگئی اور وقت تحریرِ نوٹس سے عدت لی جائے گی اگرچہ ہندہ بھی تسلیم کرتی ہو کہ جس وقت اس نے گھر سے نکالا تھا طلاق دے دی تھی جس کا اقرار اس نوٹس میں ہے، ہاں اگر ہندہ گھر سے نکالتے وقت

1 در مختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۲۴ 2 ردالمختار باب الکنایات دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۴۶۵

Fatawa Razawiya Volume 12

If she acknowledges the divorce having been given and the time passed from that point until the written notice is such that the 'iddah (waiting period) has expired, then Mahmuda will have to observe 'iddah from the day of the written notice, but she will not receive maintenance for this 'iddah from her husband.

[Arabic]: She is held accountable for her own acknowledgment, even if the Law (Shari'ah) has mandatorily ordered her to observe 'iddah to prevent forgery. [Urdu Explanation]: This is a consequence of the wife's own acknowledgment, although the Law has commanded her to observe 'iddah because there might be a lie involved. (T)

If Mahmuda does not acknowledge that the divorce was given at that [prior] time, she will also receive maintenance for the days of that 'iddah from her husband,

[Arabic]: Because maintenance during the 'iddah of divorce is established upon the husband by explicit text (Nass), and by this, the weakness of what is in Al-Khayriyyah becomes apparent. [Urdu Explanation]: Because maintenance in the 'iddah of divorce is established on the husband due to a clear text, from this, the weakness of the statement in Khayriyyah has become clear. (T)

[Arabic]: In Al-Khayriyyah, a question was asked regarding a man upon whom the judge (Qadi) had imposed maintenance and clothing for his wife. Some time passed, and then he claimed to have divorced her a long time ago. The answer was: if she exposes his lie regarding the timing and no proof is established, she must observe 'iddah from the time of his claim, and she is entitled to maintenance and housing during it. If she corroborates his claim, she has no right to maintenance or housing. (Summary) And Allah Almighty knows best.

[Urdu Translation]: In Fatawa Khayriyyah, a question was asked: maintenance and clothing for a man's wife were made mandatory by a judge. After some time, the husband claimed, "I divorced my wife a long time ago." So they replied: If the woman proves this claim of the husband to be false with evidence and cannot present witnesses, then 'iddah will become obligatory for the wife from the time of the claim, and she will receive maintenance and residence during the 'iddah. And if the wife declares the husband's claim to be true, then she will not get maintenance and residence during the 'iddah. And Allah Almighty knows best. (T)

1. Fatawa Khayriyyah, Chapter of Maintenance, Dar al-Ma'rifah, Beirut, 1/75. Page 598 of 688

फतावा रज़विया जिल्द 12

यदि वह तलाक दिए जाने की पुष्टि करती है और उस समय से लिखित नोटिस के समय तक इतना समय बीत चुका है जिसमें इद्दत समाप्त हो गई हो, तो महमूदा को लिखित नोटिस के दिन से ही इद्दत करनी पड़ेगी, लेकिन वह इस इद्दत का खर्च (नफ़क़ा) पति से प्राप्त नहीं करेगी।

[अरबी]: उस पर उसके अपने इकरार के कारण मुआख़ज़ा (ज़वाबदेही) है, हालांकि शरीयत ने जालसाज़ी को रोकने के लिए उसे इद्दत का आदेश दिया है। [उर्दू विवरण]: यह पत्नी के अपने इकरार पर पकड़ है, हालांकि शरीयत ने उसे इद्दत का हुक्म दिया है क्योंकि झूठ हो सकता है। (त)

यदि महमूदा उस समय तलाक दिए जाने की पुष्टि नहीं करती है, तो वह उस इद्दत के दिनों का खर्च भी पति से प्राप्त करेगी।

[अरबी]: क्योंकि तलाक की इद्दत का खर्च स्पष्ट पाठ (नस्स) के कारण पति पर अनिवार्य है, और इससे अल-ख़ैरिया में जो लिखा है उसकी कमजोरी स्पष्ट हो जाती है। [उर्दू विवरण]: क्योंकि तलाक की इद्दत में नफ़क़ा (खर्च) पति पर स्पष्ट प्रमाण (नस्स) के कारण साबित हुआ है, इससे खैरिया के बयान की कमजोरी स्पष्ट हो गई है। (त)

[अरबी]: अल-ख़ैरिया में एक व्यक्ति के बारे में सवाल किया गया जिस पर काजी ने अपनी पत्नी के लिए नफ़क़ा और कपड़ों का प्रावधान अनिवार्य किया था। कुछ समय बीतने के बाद, उसने दावा किया कि उसने उसे बहुत पहले तलाक दे दिया था। उत्तर दिया गया: यदि वह समय के संबंध में उसके झूठ को उजागर करती है और कोई प्रमाण स्थापित नहीं होता है, तो उस पर दावे के समय से इद्दत अनिवार्य होगी और उसे इसमें नफ़क़ा और आवास का अधिकार होगा। यदि वह उसके दावे की पुष्टि करती है, तो उसे नफ़क़ा या आवास का कोई अधिकार नहीं है। (संक्षेप में) और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

[उर्दू अनुवाद]: फतावा खैरिया में है कि सवाल किया गया: एक व्यक्ति पर उसकी पत्नी का नफ़क़ा और लिबास काजी ने अनिवार्य किया, और कुछ समय बीतने पर पति ने यह दावा किया कि मैंने अपनी पत्नी को बहुत पहले से तलाक दे रखा है। तो उन्होंने जवाब दिया कि यदि औरत पति के इस दावे को दलील से झूठ साबित कर दे और गवाह पेश न कर सके तो पत्नी पर दावे के वक्त से इद्दत

लाज़िम हो जाएगी, और इद्दत में उसको नफ़क़ा और रिहाइश मिलेगी, और अगर बीवी पति के दावे को सच करार दे तो फिर इद्दत में नफ़क़ा और रिहाइश नहीं मिलेगी। वल्लाह तआला आलम। (त)

---

1. फतावा खैरिया, बाब-उन-नफ़क़ा, दारुल मारिफ़ा, बेरुत, 1/75. पृष्ठ 598/688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

طلاق دینے کی مقر ہے اور اس وقت سے تحریر نوٹس کے وقت تک اتنا زمانہ گزر گیا جس میں عدت منقضی ہو تو عدت تو محمودی کو روزِ تحریر نوٹس ہی سے کرنی پڑے گی مگر اس عدت کا نفقہ شوہر سے نہ پائے گی

مواخذة علیھا باقرارھا وان امرہ الشرع بالعدة قطعاً للتزویر۔ یہ بیوی کے اپنے اقرار پر مواخذہ ہے اگرچہ شرع نے اس کو عدت کا حکم دیا ہے کیونکہ جھوٹ ہو سکتا ہے۔ (ت)

اگر محمودی اس وقت طلاق دئے جانے کی مقر نہیں تو اس عدت کے ایام کا نفقہ بھی شوہر سے پائے گی،

لان نفقة عدة الطلاق علی الزوج بالنص و بہ ظھر ضعف مانی الخیریة۔ کیونکہ طلاق کی عدت میں نفقہ خاوند پر نص کی وجہ سے ثابت ہوا ہے، اس سے خیر یہ کے بیان کا ضعف واضح ہو گیا ہے (ت)

فی الخیریة سئل فی رجل فرض علیہ القاضی نفقة و کسوة لزوجتہ و مضت مدة فادعی طلاقھا منذ زمان اجاب ان کذبتہ فی الاسناد ولم تقم بینة کان علیھا العدة من وقت الدعوی و لھا فیھا النفقة والسکنی و ان صدقتہ فلا نفقة لھا ولا سکنی (ملخصاً) واللہ تعالٰی اعلم۔ فتاوٰی خیر یہ میں ہے سوال کیا گیا کہ ایک شخص پر اس کی بیوی کا نفقہ اور لباس قاضی نے لازم کیا، اور کچھ مدت گزرنے پر خاوند نے یہ دعوٰی کیا کہ میں نے بیوی کو مدت سے طلاق دے رکھی ہے، تو انہوں نے جواب دیا کہ اگر عورت خاوند کے اس دعوٰی کو دلیل سے جھوٹ ثابت کر دے اور گواہ پیش نہ کر سکے تو بیوی پر دعوٰی کے وقت سے عدت لازم ہو جائے گی، اور عدت میں اس کو نفقہ اور رہائش ملے

گی، اور اگر بیوی خاوند کے دعوے کو سچ قرار دے تو پھر عدت میں نفقہ اور رہائش نہ ملے گی۔

واللہ تعالٰی اعلم (ت)

---

1 فتاوٰی خیر یہ باب النفقۃ دار المعرفۃ بیروت ۱/۷۵ صفحہ ۵۹۸ از ۶۸۸

Fatawa Razawiya, Volume 12

Issue 295:

What is the ruling of the noble scholars (may Allah have mercy on you) on this matter: Zaid's marriage with Hindah took place according to the laws of the Muhammadan Shariah (peace and blessings be upon him). A few days later, Hindah was afflicted with a jinn (mental illness/possession). Despite prayers and medicine, she did not recover at all and remained in this state for a year. Then, Hindah's parents took her to their home, and Zaid's parents kept urging Zaid to sever ties and stay away from Hindah's company, lest this calamity overcome him too. Zaid, not paying heed to his parents' advice, continued to visit Hindah secretly. When Zaid's parents became aware of these visits, they became very strict with Zaid and absolutely prohibited him from this interaction. Zaid followed his parents' advice and severed all ties with Hindah. During this time, by the grace of Allah, Hindah fully recovered, but Zaid maintained his total separation and has not returned to Hindah to this day, nor does he have any intention of returning. For the past two or three years, Hindah has been staying with her parents, bearing all expenses herself, and the entire burden is on Hindah's parents, while they are impoverished and laborers. Zaid has never even sent a morsel of bread for Hindah's support. Attempts were made several times to resolve the matter between both parties, but Zaid and his parents gave a clear refusal and said, 'We have absolutely no concern with Hindah, and from our side, this is clear [meaning it should be understood as a divorce].' So, in this situation, will it be permissible to marry Hindah to another person or not? Scholars...

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

मसअला 295:

विद्वान उलेमाओं का इस मसअले में क्या कहना है (अल्लाह आप पर रहम करे): ज़ैद का निकाह हिन्दा के साथ शरीअत-ए-मुहम्मदी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मुताबिक हुआ। इसके कुछ दिनों बाद हिन्दा को कोई मानसिक रोग या साया (आसेब) हो गया। इलाज और दुआओं के बावजूद हिन्दा को कोई राहत नहीं मिली। वह एक साल तक इसी हालत में रही। फिर हिन्दा के माता-पिता उसे अपने घर ले गए। ज़ैद के माता-पिता ज़ैद को हिन्दा से रिश्ता तोड़ने और दूर रहने की ताकीद करते रहे ताकि ज़ैद इस बीमारी से प्रभावित न हो। ज़ैद ने अपने माता-पिता की इस सलाह की परवाह न करते हुए छिपकर हिन्दा के पास आना-जाना जारी रखा। जब ज़ैद के माता-पिता को इसका पता चला, तो उन्होंने ज़ैद पर सख़्ती की और उसे मिलने-जुलने से पूरी तरह रोक दिया। ज़ैद ने माता-पिता की मनाही पर अमल किया और हिन्दा से पूरी तरह नाता तोड़ लिया। इसी बीच अल्लाह के फ़ज़ल से हिन्दा बिल्कुल तंदुरुस्त हो गई, लेकिन ज़ैद ने अपना अलगाव बनाए रखा और अब तक हिन्दा की तरफ़ रुजू (वापसी) नहीं की और न ही वापसी का कोई इरादा रखता है। दो-तीन सालों से हिन्दा अपने माता-पिता के पास ही है और वे ही उसके सारे ख़र्चे उठा रहे हैं, जबकि हिन्दा के माता-पिता ख़ुद बहुत गरीब और मज़दूर हैं। ज़ैद ने हिन्दा के लिए रोटी के एक टुकड़े तक का खर्च कभी नहीं भेजा। कई बार दोनों पक्षों के बीच सुलह की कोशिश हुई, लेकिन ज़ैद और उसके माता-पिता ने साफ़ जवाब दे दिया और कहा, 'हमारा हिन्दा से कोई सरोकार नहीं है और हमारी तरफ़ से यह साफ़ (तलाक समझा जाए)।' ऐसी सूरत में, क्या हिन्दा का निकाह किसी और से करना जायज़ होगा या नहीं? उलेमा-ए-किराम...

पृष्ठ 599/688

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

مسئلہ ۲۹۵:

(بایاں کالم - فارسی و عربی): ما قولکم رحمکم اللہ فی ھذہ المسئلۃ نکاح زید با ہندہ حسب آئین شرع محمدی صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم منعقد گشت بعد چند روز ہندہ را خلل جن واقع گردید از دعا و دوا ہیچ فاقہ نہ شد سالے ہمیں حال مبتلا ماند والدین ہندہ را بر مکان خود آوردند و والدین زید را نصیحت کردند کہ انقطاع و احتراز از صحبت ہندہ باید کرد مبادا ایں بلا بر تو ہم مستولی نشود زید نوعے خیال ایں سخن نکرد و خفیہ از والدین خود آمد و شد جاری داشت وقتیکہ والدین زید ازیں آمد و شد مطلع شدند زید را تنگ گرفتند و ممانعت قطعی نمودند زید نصیحت و امتناع والدین کا ر گر شد و از ہندہ انقطاع کلی کرد و ہدریں اثنا بفضل الٰہی ہندہ را صحت کلی حاصل گشت مگر زید از و انقطاع دار و و تا حال بہ ہندہ رجوع نگردید و ارادہ رجوع ہم ندارد و تاسہ سال کامل نزد والدین خود قیام نمود و تاحال موجود ست جملہ مصارف ہندہ متعلق والدین ہندہ ماند و والدین ہندہ مفلوک الحال و مزدور پیشہ ہستند و زید از قرض نانے ہم باہندہ گاہے مسلوک نگشت و نمی شود بارہا گفتگوئے ایں بجانبین در میان آمد الازید و والدینش صاف جواب داد و گفت کہ (ما را از ہندہ مطلق سروکار نیست از جانب ما ایں جواب صاف را اطلاق فہمید) پس اندریں صورت نکاح ہندہ بادیگر کس کردن جائز خواھد شد یا نہ ، علمائے

(دایاں کالم - اردو): علمائے کرام، آپ رحمکم اللہ تعالیٰ کا اس مسئلہ میں کیا ارشاد ہے کہ زید کا ہندہ کے ساتھ شرع محمدی کے مطابق نکاح ہوا، اس کے چند روز بعد ہندہ کو آسیب ہو گیا، علاج و دعا کے باوجود ہندہ کو کوئی افاقہ نہ ہوا، ایک سال اسی حال میں مبتلا رہی، تو ہندہ کے والدین ہندہ کو اپنے گھر لے گئے، اور زید کے والدین زید کو ہندہ سے انقطاع اور احتراز کی تاکید کرتے

رہے تاکہ زید اس بیماری سے متاثر نہ ہو، تو زید نے اپنے والدین کی اس نصیحت کی پروانہ کرتے ہوئے خفیہ طور پر ہندہ کے پاس آنا جانا جاری رکھا، جب زید کے والدین کو اس پر اطلاع ہوئی تو انہوں نے زید کو سختی سے اس میل جول سے منع کردیا اور زید نے والدین کی ممانعت پر عمل کرتے ہوئے ہندہ سے کلی طور انقطاع کر لیا اسی دوران اللہ کا فضل ہوا اور ہندہ بالکل تندرست ہوگئی، مگر زید نے اپنا کُلی انقطاع قائم رکھا اور اب تک اس نے ہندہ کی طرف رجوع نہ کیا اور نہ ہی رجوع کا ارادہ رکھتا ہے اور دو تین سال سے والدین کے پاس ہی ہندہ تمام مصارف پورے کر رہی ہے اور تمام بوجھ ہندہ کے والدین پر ہے جب کہ ہندہ کے والدین خود مفلوک الحال اور مزدور پیشہ ہیں اور زید نے کبھی ہندہ کے لئے روٹی کی ٹکیہ تک خرچہ نہ بھیجا، متعدد بار فریقین میں معاملہ بنانے کی کوشش ہوئی مگر زید اور اس کے والدین نے صاف جواب دے دیا اور کہا ہمارا ہندہ سے کوئی سروکار نہیں اور ہماری طرف سے یہ صاف

Fatawa Ridawiyya, Volume 12

[Question Section - Left Box] Respected scholars and honorable muftis, please adorn the query with your clear legal answers, seals, and signatures; be informed and rewarded. Furthermore, the discussion with the parents which is based on giving a clear answer—is giving a divorce permissible or not? Only.

[Question Section - Right Box] ...the answer is that it should be understood as a divorce; so in these circumstances, is Hindah's marriage to another person permissible or not? Respected scholars and muftis are requested to grace the answer to the query with their signatures and seals and be rewarded. Also, it is reiterated: should the statement of Zaid and his parents, "Consider our clear answer as divorce," be regarded as giving a divorce or not? Only. (T)

[Answer Section] Answer: O Allah! Guide us to the truth and correctness. (T)

[Main Body - Persian and Arabic Text on the Left] In the questioned case, divorce did not occur to the woman. Because "having no concern" signifies only an expression of indifference and lack of interest and does not convey any other meaning. If a husband says to his wife, "I have no concern with you," or "We have no care for you," or "You are of no use to me," or "You are nothing to me," or "Nothing remains between me and you," divorce will never occur, even if these words were spoken with that intention and purpose of divorce. For it is apparent that "having no concern" is not stronger than these words. Rather, prominent scholars have stated that if he said to his wife, "You are a stranger to me," this too would be absurd and meaningless. Thus, the words mentioned in the question are even more deserving of being disregarded as meaningless. It is mentioned in Al-Alamgiriyyah: "If he says: 'I have no need for you,' intending divorce, it is not a divorce." And in it: "If he says: 'I do not want you,' or 'I do not love you,' or 'I do not desire you,' or 'I have no inclination towards you,' then it does not occur even if he intended it, according to the opinion of Imam Abu Hanifa, may Allah have mercy on them."

[Main Body - Urdu Text on the Right] O Allah! Guide us to the truth. (T) In the questioned case, divorce did not occur to the woman, because "having no concern" does not mean anything other than lack of interest and indifference. Rather, if a husband specifically says to his wife, "I have no concern with you," "I do not care about you," "You are of no use to me," "You are nothing to me," or "Nothing remains between me and you," even then divorce will never occur, even if these words were spoken with the intention of divorce and the intention for divorce was made. For

"having no concern" is not more severe than these mentioned words. On the contrary, prominent scholars have stated that if a husband says to his wife, "You are a stranger to me," it would be considered meaningless and absurd talk. Thus, the words mentioned in the question are even more deserving of being treated as meaningless. It is in Alamgiri that if a husband says to his wife, "I have no need for you," and intends divorce, then divorce will not occur. And in the same, it is stated that if he says, "I do not want you," "I do not like you," "I have no desire for you," or says "I have no inclination in you..."

फतावा रज़विया, जिल्द 12

[प्रश्न अनुभाग - बायां बॉक्स] माननीय विद्वान और सम्मानित मुफ्ती साहबान, इस्तेफ़्ता (प्रश्न) को अपने स्पष्ट शरीयत सम्मत उत्तरों, मुहरों और हस्ताक्षरों से सुशोभित करें; आपको इसका पुण्य मिले। इसके अतिरिक्त, माता-पिता के साथ वह बातचीत जो स्पष्ट जवाब देने पर आधारित है—क्या तलाक देना जायज़ है या नहीं? बस।

[प्रश्न अनुभाग - दायां बॉक्स] ...जवाब है और इसे तलाक समझा जाए; तो क्या ऐसी स्थितियों में, हिंदह का किसी अन्य व्यक्ति से निकाह जायज़ होगा या नहीं? विद्वान और मुफ्ती साहबान से निवेदन है कि इस्तेफ़्ता का उत्तर अपने हस्ताक्षरों और मुहरों से सुशोभित करके प्रदान करें और पुण्य प्राप्त करें। साथ ही, फिर से वही बात: ज़ैद और उसके माता-पिता का यह कहना कि "हमारे स्पष्ट जवाब को तलाक समझा जाए", इसे तलाक देना माना जाएगा या नहीं? बस। (त)

[उत्तर अनुभाग] उत्तर: ऐ अल्लाह! सत्य का मार्ग दिखा। (त)

[मुख्य भाग - फारसी और अरबी पाठ - बाईं ओर] पूछी गई स्थिति में महिला को तलाक नहीं हुआ। क्योंकि 'सरोकार न होना' बेरुखी और उदासीनता व्यक्त करने के अलावा कोई और अर्थ नहीं रखता। यदि पति अपनी पत्नी से कहता है, "मुझे तुझसे कोई सरोकार नहीं है," या "हमें तुम्हारी परवाह नहीं है," या "तू मेरे किसी काम की नहीं है," या "तू मेरे लिए कुछ नहीं है," या "मेरे और तेरे बीच अब कुछ नहीं बचा," तब भी तलाक कभी नहीं होगा, भले ही ये शब्द तलाक के इरादे और नीयत से कहे गए हों। ज़ाहिर है कि 'सरोकार न होना' इन शब्दों से अधिक कठोर नहीं है। बल्कि, प्रसिद्ध विद्वानों ने कहा है कि यदि वह अपनी पत्नी से कहे, "तू मेरे लिए अजनबी है," तो यह भी निरर्थक और बेकार बात होगी। इसलिए, सवाल में उल्लिखित शब्द और भी ज़्यादा उपेक्षा के पात्र और निरर्थक हैं। आलमगीरी में उल्लेख है: "यदि वह कहता है: 'मुझे तेरी कोई ज़रूरत नहीं है' और तलाक की नीयत करता है, तो वह तलाक नहीं है।" और उसी में: "यदि वह कहता है: 'मैं तुझे नहीं चाहता,' या 'मैं तुझे पसंद नहीं करता,' या 'मुझे तुझमें कोई दिलचस्पी नहीं है,' या 'मेरी तुझमें कोई रुचि नहीं है,' तो तलाक नहीं होगा भले ही उसने नीयत की हो, इमाम अबू हनीफा (रहमहुमुल्लाह) के कथन के अनुसार।"

[मुख्य भाग - उर्दू पाठ - दाईं ओर] ऐ अल्लाह! हक की रहनुमाई फरमा। (त) पूछी गई स्थिति में औरत को तलाक नहीं हुई, क्योंकि 'सरोकार न होना', बेरुखी और लापरवाही के अलावा कोई अर्थ

नहीं रखता। बल्कि अगर पति खास तौर पर पत्नी से कहे, "मुझे तुझसे सरोकार नहीं है," "मैं तेरी परवाह नहीं करता," "तू मेरे काम की नहीं है," "तू मेरे लिए कुछ नहीं है," या "तेरे और मेरे बीच अब कुछ नहीं बचा," तब भी तलाक हरगिज़ नहीं होगी, भले ही ये शब्द तलाक की नीयत से कहे गए हों और तलाक का इरादा किया गया हो। क्योंकि 'सरोकार नहीं' इन ज़िक्र किए गए शब्दों से अधिक कठोर नहीं है। इसके विपरीत, प्रसिद्ध विद्वानों का कहना है कि अगर पति पत्नी से यह कहे, "तू मेरे लिए अजनबी है," तो यह निरर्थक और बेकार बात होगी। अतः सवाल में ज़िक्र किए गए शब्द और भी ज़्यादा निरर्थक हैं। आलमगीरी में है कि अगर पति अपनी पत्नी से कहे, "मुझे तुझसे कोई ज़रूरत नहीं है" और तलाक की नीयत रखे, तब भी तलाक नहीं होगी। और उसी में है कि अगर वह कहे, "मैं तुझे नहीं चाहता," "मैं तुझे पसंद नहीं करता," "मैं तुझसे कोई इच्छा नहीं रखता," या कहे "मुझे तुझमें कोई दिलचस्पी..."

पृष्ठ 600 / 688

فتاوی رضویہ ، جلد دوازدہم

[سوال کا حصہ - بایاں باکس] ذوی الکرام ومفتیان ذوی الاحترام استفتاء را از مواہیر و دستخط بجواب صاف شرعیہ مزین فرمایند بینواتوجروا مکرر اینکہ گفتگو سے اور والدین کہ آں بر جواب صاف دادن مبنی ست جواز طلاق دادن را یا نہ فقط ،

[سوال کا حصہ - دایاں باکس] جواب ہے اور اس کو طلاق سمجھا جائے، تو کیا اندریں حالات، ہندہ کا کسی دوسرے شخص سے نکاح جائز ہوگا یا نہیں؟ علمائے کرام اور مفتیان ذوی الاحترام سے درخواست ہے کہ استفتاء کا جواب اپنے دستخطوں اور مہروں سے مزین فرما کر ماجور ہوں ، نیز مکرر ہے کہ زید اور اس کے والدین کا یہ کہنا کہ "ہمارے صاف جواب کو طلاق سمجھا جائے" کو طلاق دینا متصور کیا جائے یا نہیں، فقط، (ت)

[جواب کا حصہ] الجواب: اللھم ھدایۃ الحق والصواب۔ اے اللہ! حق کی رہنمائی فرما۔ (ت)

[بایاں کالم - فارسی و عربی متن] در صورت مستفسرہ طلاق بر اں زن واقع نشد زیرا کہ سروکار نبودن جز اظہار بے غرضی و بے پروائی افادۃ معنی دیگر نمی کند واگر شوہر مزنش را گوید مرا با تو غرضے نیست یا پروائے تو نداریم یا تو مرا بکار نیستی یا تو مرا چیزے نباشی یا میان من و تو چیزے نماندہ است ہر گز طلاق واقع نشود اگر چہ بایں ارادہ ونیت طلاق کردہ شد وبہر ظاہر کہ سروکار نبودن بیش ازیں الفاظ نیست بلکہ علماء روشن گفتہ اند کہ اگر زن را گفت تو مرا بیگانہ ایں ہم لغو و مہمل باشد پس لفظ مذکور فی السؤال اولی با ہمال فی العالمگیریۃ لو قال لا حاجۃ لی الیك ینوی الطلاق فلیس بطلاق (وفیھا) اذا قال لا اریدك اولا احبك اولا اشتھیك اولا رغبۃ لی فیك فانہ لا یقع وان نوی فی قول ابی حنیفۃ رحمہم۔

[دایاں کالم - اردو متن] اے اللہ! حق کی رہنمائی فرما۔ (ت) مسئولہ صورت میں عورت کو طلاق نہ ہوئی، کیونکہ سروکار نہ ہونا، بے غرضی، بے پروائی کے علاوہ کوئی معنی نہیں رکھتا، بلکہ اگر شوہر خاص بیوی کو کہے "مجھے تجھ سے غرض نہیں، میں تیری پروا نہیں رکھتا، تو میرے کام کی نہیں، تو میرے لئے کوئی چیز نہیں، یا تیرے اور میرے درمیان کوئی چیز باقی نہیں رہی" تب بھی ہرگز طلاق نہ ہوگی، اگرچہ یہ الفاظ طلاق کی نیت سے بھی کہہ دے اور طلاق کی نیت کرے، تو "سروکار نہیں" ان مذکورہ الفاظ سے زیادہ سخت نہیں، بلکہ مشہور علماء کا ارشاد ہے کہ اگر خاوند ، بیوی کو یہ کہے "تو میرے لئے بیگانی ہے" تو یہ مہمل اور لغو کلام ہو گی، تو سوال میں مذکور الفاظ بطریق اولٰی مہمل ہیں ، عالمگیری میں ہے کہ خاوند بیوی کو کہے "مجھے تجھ سے کوئی حاجت نہیں" اور طلاق کی نیت کرے تو بھی طلاق نہ ہوگی۔ اور اسی میں ہے اگر یوں کہے کہ "میں تجھے نہیں چاہتا، میں تجھے پسند نہیں کرتا، میں تجھ سے خواہش نہیں رکھتا" یا کہے "مجھے تجھ میں کوئی رغبت...."

Fatawa Razawiyya --- Volume 12

[Left Column Text]: Allah Almighty (And in it) - If he said "Nothing remains between me and you" and intended divorce by it, divorce does not occur. In 'Al-Khulasa', it says: "You are a stranger to me" or if he said "I have no need for you," it does not occur even if he intended (divorce). In 'Al-Hindiyya' also, Allama Abu Bakr was asked about a drunken man who said to his wife "I am fed up, I am fed up, I am fed up, you are nothing to me" until his statement "I hope that she is not divorced and she remains his wife." Since it has become clear that these words are not from the words of divorce, neither explicit nor metaphorical, then their statement "from our side consider the clear answer as divorce" is also absurd and meaningless because before this there was no expression of divorce from Zaid. So the gist of his speech is as if he said "I intended divorce with this statement," and even if he did intend, it would not be effective for divorce as has been clarified. Thus, an expression of meaninglessness is nothing but meaningless. I say: and it is not possible to make it a fresh divorce because...

[Right Column Text]: No," then despite the intention of divorce, divorce will not occur; this is according to the statement of Imam Abu Hanifa, may Allah Almighty have mercy on him. And it is in the same that if one said "nothing remains between me and you," then despite the intention of divorce, divorce will not occur. And in 'Al-Khulasa', it is that if the husband said "you are a stranger to me" or said "I have no need for you," then despite the intention of divorce, divorce will not occur. In 'Alamgiri' it is that Allama Abu Bakr was asked about a drunken man who said to his wife "I am fed up, I am fed up, I am fed up, you are nothing for me," so he stated in the answer that "I hope that divorce will not occur and the wife will remain as she is." So it became clear that the word mentioned in the question is not a word of explicit or metaphorical divorce, so their saying that "our clear answer should be understood as divorce" is also absurd and meaningless, because before this there was no expression of divorce from Zaid's side, so the summary of his speech is as if he said "I have intended divorce with this statement" and even if he intends, it is not effective for divorce as it has become clear, so this is meaningless.

1 Fatawa Hindiyya, Chapter Five on Allusions (Al-Kinayat), Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/375 2 Fatawa Hindiyya, Chapter Five on Allusions (Al-Kinayat), Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/376 3 Khulasat al-Fatawa, Book of Divorce, Maktaba Habibiya Quetta, 2/98 4 Fatawa Hindiyya, Chapter Seven on Divorce in Persian words, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/383 Page 601 of 688

[बायाँ स्तंभ पाठ]: अल्लाह तआला (और उसमें है) - यदि उसने कहा "मेरे और तुम्हारे बीच कुछ नहीं बचा" और इसके ज़रिए तलाक की नियत की, तो तलाक नहीं होगा। और 'अल-खुलासा' में है: उसने कहा "तुम मेरे लिए अजनबी हो" या उसने कहा "मुझे तुम्हारी कोई ज़रूरत नहीं," तो तलाक की नियत के बावजूद तलाक नहीं होगा। 'अल-हिन्दिया' में भी अल्लामा अबू बक्र से एक नशे में धुत्त व्यक्ति के बारे में पूछा गया जिसने अपनी पत्नी से कहा "मैं बेज़ार हूँ, मैं बेज़ार हूँ, मैं बेज़ार हूँ, तुम मेरे लिए कुछ नहीं हो," उनके इस बयान तक कि "मुझे आशा है कि तलाक नहीं होगा और वह उसकी पत्नी ही रहेगी।" चूँकि यह स्पष्ट हो गया है कि ये शब्द तलाक के शब्दों में से नहीं हैं, न तो स्पष्ट (सरीह) और न ही लाक्षणिक (किनाया), तो उनका यह कहना कि "हमारी तरफ से साफ़ जवाब को तलाक समझा जाए" भी व्यर्थ है क्योंकि इससे पहले ज़ैद की तरफ से तलाक की कोई अभिव्यक्ति नहीं थी। अतः उनकी बातों का सारांश यह है कि जैसे उन्होंने कहा "मैंने इस बात से तलाक की नियत की है," और नियत भी कर ले तब भी तलाक के लिए प्रभावी नहीं है जैसा कि स्पष्ट हो चुका है, अतः एक निरर्थक अभिव्यक्ति निरर्थक के अलावा कुछ नहीं है। मैं कहता हूँ: और इसे नई तलाक मानना संभव नहीं है क्योंकि...

[दायाँ स्तंभ पाठ]: नहीं," तो तलाक की नियत के बावजूद तलाक नहीं होगा, यह इमाम अबू हनीफ़ा (रहमतुल्लाह अलैहि) के कथन के अनुसार है। और उसी में है कि यदि ऐसा कहा गया "मेरे और तुम्हारे बीच कोई चीज़ बाक़ी नहीं," तो तलाक की नियत के बावजूद तलाक नहीं होगा। और 'खुलासा' में है कि यदि पति ने कहा "तुम मेरे लिए पराई हो" या कहे "मुझे तुमसे कोई ज़रूरत नहीं," तो तलाक की नियत के बावजूद तलाक नहीं होगा। 'आलमगीरी' में है कि अल्लामा अबू बक्र से नशे वाले के बारे में सवाल किया गया जिसने अपनी पत्नी से कहा "मैं बेज़ार हूँ, मैं बेज़ार हूँ, मैं बेज़ार हूँ, तो मेरे लिए कुछ नहीं," तो उन्होंने जवाब में बयान फ़रमाया कि मुझे उम्मीद है कि तलाक नहीं होगा और पत्नी बहाल रहेगी। तो स्पष्ट हो गया कि सवाल में उल्लेखित शब्द, स्पष्ट या सांकेतिक तलाक का शब्द नहीं है, तो उनका कहना कि "हमारा साफ़ जवाब तलाक समझा जाए" भी व्यर्थ और निरर्थक है, क्योंकि इससे पहले ज़ैद की तरफ से तलाक की कोई अभिव्यक्ति नहीं है, तो उनकी बात का सारांश यह हुआ कि जैसे उन्होंने कहा "मैंने इस बात से तलाक की नियत की है" और नियत भी कर ले तब भी तलाक के लिए कारगर नहीं है जैसा कि स्पष्ट हो चुका है, अतः यह निरर्थक है।

1 फ़तावा हिन्दिया, अध्याय पाँच, कनायात (संकेतों) में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/375 2 फ़तावा हिन्दिया, अध्याय पाँच, कनायात (संकेतों) में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/376 3 खुलासतुल फ़तावा, किताबुल तलाक़, मकतबा हबीबिया क्वेटा, 2/98 4 फ़तावा हिन्दिया, अध्याय सात, फ़ारसी शब्दों में तलाक़ में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/383 पृष्ठ 601 / 688

فتاویٰ رضویہ --- جلد دوازدہم

[بائیں کالم کی عبارت]: اللہ تعالیٰ (وفیها) لوقال لم یبق بیني وبینك شیئ ونوی به الطلاق لایقع وفي الخلاصة قال تو مرا بیگانہ او قال لا حاجة لي فیك لایقع وان نوی ، وفی الهندیة ایضاً سئل ابوبکر عن سکران قال لامرأته بیزارم بیزارم بیزارم تو مرا چیزے نباشی الی قوله ارجوانها لاتطلق وهي امرأته ، و چون ظاہر شد کہ ایں لفظ از الفاظ طلاق نیست نہ صریح نہ کنایہ ، پس قول اُو کہ از جانبِ مالاں جوابِ صاف را طلاق فهمند نیز لغو باشد زیرا کہ اُوپیش از اظہار طلاق نیست پس گویا حاصل کلامش آن ست کہ چنین گفتہ کہ بایں گفتن نیت طلاق کردم و خود اگر نیت می کرد کارگر نمی باشد کما وضحنا پس اظہارِ مہمل جز مہمل نباشد قلت ولایمکن جعله طلاقامبتدأ لأنه

[دائیں کالم کی عبارت]: نہیں" تو طلاق کی نیت کے باوجود طلاق نہ ہوگی، یہ امام ابو حنیفہ رحمہ اللہ تعالیٰ کے قول کے مطابق ہے۔ اور اسی میں ہے کہ اگر یوں کہا "میرے اور تیرے درمیان کوئی چیز باقی نہیں" تو نیت طلاق کے باوجود طلاق نہ ہوگی۔ اور خلاصہ میں ہے اگر خاوند نے کہا تو میرے لئے بیگانی ہے یا کہے مجھے تجھ سے کوئی حاجت نہیں، تو طلاق کی نیت کے باوجود طلاق نہ ہوگی۔ عالمگیری میں ہے کہ علامہ ابوبکر سے نشہ والے کے بارے میں سوال کیا گیا اس نے اپنی بیوی کو کہا "میں بیزار ہوں میں بیزار ہوں میں بیزار ہوں، تو میرے لئے کچھ نہیں" تو انہوں نے جواب میں بیان فرمایا کہ مجھے امید ہے کہ طلاق نہ ہوگی اور بیوی بحال رہے گی۔ تو واضح ہوگیا کہ سوال میں مذکور لفظ، صریح یا کنایہ طلاق کا لفظ نہیں ہے تو ان کا کہنا کہ "ہمارا صاف جواب طلاق سمجھا جائے" بھی لغو اور مہمل ہے، کیونکہ اس سے قبل زید کی طرف سے طلاق کا کوئی اظہار نہیں، تو اس کی کلام کا خلاصہ یہ ہوا کہ گویا اس نے کہا "میں نے اس بات

سے طلاق کی نیت کی ہے" اور نیت بھی کرے تب بھی طلاق کے لئے کار گر نہیں ہے جیسا کہ واضح ہوچکا ہے، پس یہ مہمل

1 فتاویٰ ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور 1 / 375 2 فتاویٰ ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور 1 / 376 3 خلاصۃ الفتاویٰ کتاب الطلاق مکتبہ حبیبیہ کوئٹہ 2 / 98 4 فتاویٰ ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالفاظ الفارسیۃ نورانی کتب خانہ پشاور 1 /

Fatawa Razawiya Volume 12

[Arabic Text Box Left]: Guidance towards what is legally (shari'a) invalid, and what is not considered legally valid, it is not within anyone's power to make it valid. It is stated in Al-Durr al-Mukhtar: The divorce of a sleeping person does not occur, even if he says [after waking up], "I have permitted it" or "I have made it occur," it does not occur because the pronoun refers back to what is invalid (Al-Jawhara)[1]. And it has been explicitly mentioned as a specific case in Al-Khaniya where it says: [If] he says to her, "Assume you are divorced," it does not occur even if he intended it.[2] [End of summary].

[Urdu Text Box Right]: ...is for the meaningless/futile. I say (T) — It is not correct to consider this conversation as the initiation of divorce, because legally (Shari'a) it is an indication towards an invalid word, and what is legally invalid, no one can make it valid. It is stated in 'Durr-e-Mukhtar' that the divorce of a person while sleeping will not occur, even if after waking up he says, "I have sanctioned it" or "I am making it happen," it will still not occur because the speech he wants to validate is the speech of sleep which is invalid. (Al-Jawhara, End). And in 'Khaniya', there is a clarification for this specific case that if a husband tells his wife, "Suppose/imagine you are divorced," divorce will not occur even if he says it with the intention of divorce. (End of summary). Therefore, in the mentioned situation, it is absolutely not permissible for Hindah to marry another man. This is my research; the true knowledge belongs to Allah Almighty, the Lord of Honor. And Allah, Glory be to Him and Most High, knows best. (T)

Problem 296: 5 Rabi-ul-Awwal Sharif 1316 AH What do the scholars of religion and muftis of the firm Sharia say on this matter: A person stated in court regarding his wife that his marriage with her did not take place and her children are not from his seed. Following this statement, the judge decided the case and ruled that she is not his wife and the children are not his. However, in reality, his marriage had already taken place with that woman. Now, does his marriage remain valid according to Sharia or not? And will his children inherit his estate after his death or not? And after breaking the oath (hanth), will the expiation (kaffarah) for the oath be applicable to this person or not? Clarify and you shall be rewarded.

---

[1] Durr-e-Mukhtar, Kitab al-Talaq, Mujtabai Press, Delhi, 1/218. [2] Qazi Khan, Kitab al-Talaq, Nawal Kishore, Lucknow, 1/210. Page 602 of 688

फतावा रज़विया जिल्द 12

[अरबी पाठ बॉक्स बायां]: शरीयत की दृष्टि से अमान्य चीज़ की ओर मार्गदर्शन, और जो शरीयत की दृष्टि से मान्य नहीं है, उसे मान्य बनाने की शक्ति किसी में नहीं है। 'अल-दुर अल-मुख्तार' में कहा गया है: सोते हुए व्यक्ति का तलाक नहीं होता, भले ही वह [जागने के बाद] कहे, "मैंने इसे अनुमति दे दी" या "मैंने इसे प्रभावी कर दिया", यह नहीं होता क्योंकि सर्वनाम उस चीज़ की ओर इशारा करता है जो अमान्य है (अल-जौहरा)[1]। और 'अल-खानिया' में एक विशेष मामले के रूप में स्पष्ट किया गया है जहाँ कहा गया है: [यदि] वह उससे कहता है, "मान लो कि तुम तलाकशुदा हो", तो तलाक नहीं होता भले ही उसकी नीयत रही हो।[2] [सारांश समाप्त]।

[उर्दू पाठ बॉक्स दायां]: ...निरर्थक के लिए है। मैं कहता हूँ (त) — इस बातचीत को तलाक की शुरुआत मानना सही नहीं है, क्योंकि शरीयत के अनुसार यह एक अमान्य शब्द की ओर इशारा है, और जो शरीयत के अनुसार अमान्य है, उसे कोई भी मान्य नहीं बना सकता। 'दुर्रे मुख्तार' में फ़रमाया गया है कि सोते हुए व्यक्ति का तलाक नहीं होगा, चाहे वह जागने के बाद कहे कि मैंने इसे जायज़ करार दिया है या मैं इसे प्रभावी करता हूँ, तो भी नहीं होगा क्योंकि वह जिस कलाम को प्रभावी करना चाहता है वह नींद का कलाम है जो अमान्य है। (जौहरा, अंत)। और 'खानिया' में इस विशेष मामले की स्पष्टता की गई है कि अगर पति अपनी पत्नी से कहे, "यह मान लो कि तुम तलाक वाली हो", तो तलाक नहीं होगा चाहे वह तलाक की नीयत से ही क्यों न कहे। (सारांश समाप्त)। अतः उल्लिखित स्थिति में हिंदा के लिए यह कतई जायज़ नहीं है कि वह किसी दूसरे मर्द से निकाह करे। यह मेरी तहकीक (शोध) है; वास्तविक ज्ञान अल्लाह तआला, इज़्ज़त के रब के पास है। और अल्लाह सुब्हानहु व तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

मसला 296: 5 रबी-उल-अव्वल शरीफ 1316 हिजरी दीन के विद्वान और सुदृढ़ शरीयत के मुफ्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं: एक व्यक्ति ने कचहरी (अदालत) में अपनी पत्नी के बारे में बयान दिया कि मेरा उससे निकाह नहीं हुआ है और उसकी संतान मेरे वीर्य से नहीं है। इस बयान के आधार पर हाकिम (जज) ने मामले का फैसला कर दिया और उसे उसकी पत्नी और बच्चों को उसकी संतान नहीं माना। जबकि वास्तव में उस औरत के साथ उसका निकाह हो चुका था। अब शरीयत के अनुसार उसका निकाह कायम रहा या नहीं? और उसकी संतान उसकी मृत्यु के बाद उसकी विरासत (तरका) पाएगी या नहीं? और शपथ भंग (हंथ) के बाद क्या उस व्यक्ति पर शपथ का कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) लागू होगा या नहीं? बयान करें, पुण्य पायें।

[1] दुर्रे मुख्तार, किताब अल-तलाक, मुजतबाई प्रेस, दिल्ली, 1/218। [2] काज़ी खान, किताब अल-तलाक, नवल किशोर, लखनऊ, 1/210। पृष्ठ 602 of 688

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

[عربی متن بائیں باکس]: ارشاد الی غیر معتبر شرعاً وما لم یعتبر شرعاً فلیس في وسع احدان یجعله معتبراً قال في الدر المختار لا یقع طلاق النائم ولو قال اجزته او اوقعته لا یقع لانه اعاد الضمیر الی غیر معتبر جوهرة 1 اه وقد صرح بالجزئیة في الخانیة حیث قال، قال لها احسبی انك طالق لا یقع وان نوی 2 اه ملخصاً۔

[اردو متن دائیں باکس]: برائے مہمل ہے۔ قلت (میں کہتا ہوں-ت) اس گفتگو کو ابتداء طلاق قرار دینا درست نہیں، کیونکہ شرعی طور پر غیر معتبر لفظ سے اشارہ ہے، اور جو شرعاً غیر معتبر ہو اس کو کوئی بھی معتبر نہیں بنا سکتا، دُر مختار میں فرمایا کہ سوئے ہوئے کی طلاق واقع نہ ہوگی اگرچہ وہ بیدار ہو کر کہے کہ میں نے اسے جائز قرار دیا ہے یا اس کو واقع کرتا ہوں، تو پھر بھی نہ ہو گی کیونکہ وہ جس کلام کو واقع کرنا چاہتا ہے وہ نیند کی کلام ہے جو غیر معتبر ہے، جوہرہ، اھ اور خانیہ میں اس خاص جزئیہ کی تصریح کی ہے کہ اگر خاوند بیوی کو کہے، تو یہ خیال کرلے کہ تو طلاق والی ہے تو طلاق نہ ہو گی اگرچہ طلاق کی نیت سے بھی کہے اھ ملخصاً، لہٰذا مسئولہ صورت میں ہندہ کو ہرگز جائز نہیں کہ کسی دوسرے مرد سے نکاح کرے۔ یہ میری تحقیق ہے حقیقی علم اللہ تعالیٰ رب العزت کو ہے۔ واللہ سبحانہ و تعالی اعلم (ت)

مسئلہ ۲۹۶: ۵ ربیع الاول شریف ۱۳۱۶ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے کچہری میں اپنی بی بی کی نسبت بیان کیا کہ میرا اس سے نکاح نہیں ہوا اور اس کی اولاد میرے نطفہ سے نہیں ہے اور حاکم نے بموجب بیان کے مقدمہ کو فیصل کرکے اس کی بی بی اور اس کی اولاد قرار نہ دی حالانکہ نکاح اس کا در حقیقت اسی عورت سے ہو چکا

تھا اب شرعاً نکاح اس کا جائز رہا یا نہ اور اولاد اس کی فوت ہونے کے بعد اس کا ترکہ پائے گی یا نہ اور بعد حنث اس شخص پر کفارہ یمین عائد ہوگا یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

---

1 درمختار کتاب الطلاق مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۱۸ 2 قاضی خان کتاب الطلاق نولکشور لکھنؤ ۱/ ۲۱۰ صفحہ 602 of 688

Fatawa Razawiya, Volume Twelve

The Answer: The petitioner states that the aforementioned person made such a sworn statement in an English (secular) court for some strategic reason. Therefore, in the described scenario, that person is guilty of a false oath; he should repent and seek forgiveness. As for the marriage, it is not invalidated, nor is any expiation (kaffara) due, nor are his children deprived of inheritance from him.

Regarding the continuation of the marriage, his denial does not dissolve it because the context here is specifically for giving information, as it is a formal declaration, especially one made under oath. Moreover, the words themselves do not carry the potential of initiating (divorce), as is evident. This is unlike someone saying, "You are not my wife," which by consensus is not a divorce (even though it could be an initiation). (T)

Regarding the continuation of the marriage, his denial does not dissolve it because the context here is specifically for giving information, as it is a formal declaration, especially one made under oath. Moreover, the words themselves do not carry the potential of initiating (divorce), as is evident. This is unlike someone saying, "You are not my wife," which by consensus is not a divorce (even though it could be an initiation). (T)

In Alamgiri:

If he says, "I did not marry you" and intends divorce, the divorce does not occur by consensus, as mentioned in Al-Badai'. 1

If the husband says, "I have not married you," then by consensus, divorce will not occur despite the intention of divorce, as it is in Badai'. (T)

In the same:

They all agreed that if he says, "By Allah, you are not a wife to me" and "By Allah, you are not a wife," nothing occurs even if he intends so, as mentioned in As-Siraj al-Wahhaj. Summarized.

There is consensus on this that if the husband says, "By God, you are not my wife" or says, "By God, (you are) not my wife," then despite the intention of divorce, divorce will not occur, as summarized in Siraj al-Wahaj. (T)

Similarly, it is in other books:

As for the lack of expiation, it is because what is customary in their courts is not

And however, there is no expiation because in the court, an oath is not

Regarding the continuation of the marriage, his denial does not dissolve it because the context here is specifically for giving information, as it is a formal declaration, especially one made under oath. Moreover, the words themselves do not carry the potential of initiating (divorce), as is evident. This is unlike someone saying, "You are not my wife," which by consensus is not a divorce (even though it could be an initiation). (T)

considered an (Islamic) oath, and even if it were, there is no expiation.

Regarding the continuation of the marriage, his denial does not dissolve it because the context here is specifically for giving information, as it is a formal declaration, especially one made under oath. Moreover, the words themselves do not carry the potential of initiating (divorce), as is evident. This is unlike someone saying, "You are not my wife," which by consensus is not a divorce (even though it could be an initiation). (T)

considered a religious oath, and even if it were an oath, [it wouldn't apply here].

1. Fatawa Hindiyyah, Chapter Five on Allusions, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/475.
2. Fatawa Hindiyyah, Chapter Five on Allusions, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/475.

फ़तावा रज़विया, जिल्द बारहवीं

जवाब: सवाली का बयान है कि उक्त व्यक्ति ने किसी उद्देश्य से अंग्रेज़ी कचहरी में ऐसा हलफ़िया बयान दिया। तो पूछी गई स्थिति में वह व्यक्ति झूठी क़सम खाने का गुनहगार हुआ, उसे तौबा व इस्तिग़फ़ार (क्षमा याचना) करनी चाहिए। बाकी न तो निकाह ख़त्म हुआ और न ही कोई कफ़्फ़ारा (प्रायश्चित) लागू हुआ, और न ही उसकी संतान उसके उत्तराधिकार से वंचित हुई।

जहाँ तक निकाह के बने रहने की बात है, तो उसका इनकार निकाह को समाप्त नहीं करता, क्योंकि यह स्थान जानकारी देने के लिए निर्धारित है क्योंकि यह एक बयान है और वह भी हलफ़ (क़सम) के साथ। बल्कि शब्द स्वयं भी 'इन्शा' (नया हुक्म लागू करने) की संभावना नहीं रखते, जैसा कि ज़ाहिर है। इसके विपरीत, अगर कोई कहे "तू मेरी बीवी नहीं है", तो आम सहमति (इजमा) के अनुसार यह तलाक़ नहीं है (बावजूद इसके कि यह इन्शा है)। (त)

जहाँ तक निकाह के बने रहने की बात है, तो उसका इनकार निकाह को समाप्त नहीं करता, क्योंकि यह स्थान जानकारी देने के लिए निर्धारित है क्योंकि यह एक बयान है और वह भी हलफ़ (क़सम) के साथ। बल्कि शब्द स्वयं भी 'इन्शा' (नया हुक्म लागू करने) की संभावना नहीं रखते, जैसा कि ज़ाहिर है। इसके विपरीत, अगर कोई कहे "तू मेरी बीवी नहीं है", तो आम सहमति (इजमा) के अनुसार यह तलाक़ नहीं है (बावजूद इसके कि यह इन्शा है)। (त)

आलमगीरी में है:

"अगर उसने कहा 'मैंने तुझसे निकाह नहीं किया' और तलाक़ की नियत की, तो इजमा के अनुसार तलाक़ नहीं होगी, जैसा कि बदाए में है।" 1

अगर शौहर कहे "मैंने तुझसे निकाह नहीं किया" तो इजमा के अनुसार तलाक़ की नियत के बावजूद तलाक़ नहीं होगी, जैसा कि बदाए में है। (त)

उसी में है:

"सभी इस पर सहमत हैं कि अगर उसने कहा 'अल्लाह की क़सम! तू मेरी बीवी नहीं है' और 'अल्लाह की क़सम! तू बीवी नहीं है', तो कुछ भी

इस पर सबका इत्तेफ़ाक़ है कि अगर शौहर कहे "ख़ुदा की क़सम तू मेरी बीवी नहीं" या यूँ कहे "ख़ुदा की क़सम मेरी बीवी नहीं" तो तलाक़ की

जहाँ तक निकाह के बने रहने की बात है, तो उसका इनकार निकाह को समाप्त नहीं करता, क्योंकि यह स्थान जानकारी देने के लिए निर्धारित है क्योंकि यह एक बयान है और वह भी हलफ़ (क़सम) के साथ। बल्कि शब्द स्वयं भी 'इन्शा' (नया हुक्म लागू करने) की संभावना नहीं रखते, जैसा कि ज़ाहिर है। इसके विपरीत, अगर कोई कहे "तू मेरी बीवी नहीं है", तो आम सहमति (इजमा) के अनुसार यह तलाक़ नहीं है (बावजूद इसके कि यह इन्शा है)। (त)

(तलाक़) नहीं होगा चाहे उसने नियत ही क्यों न की हो, जैसा कि सिराजुल वहाज में है।" संक्षेप में।

जहाँ तक निकाह के बने रहने की बात है, तो उसका इनकार निकाह को समाप्त नहीं करता, क्योंकि यह स्थान जानकारी देने के लिए निर्धारित है क्योंकि यह एक बयान है और वह भी हलफ़ (क़सम) के साथ। बल्कि शब्द स्वयं भी 'इन्शा' (नया हुक्म लागू करने) की संभावना नहीं रखते, जैसा कि ज़ाहिर है। इसके विपरीत, अगर कोई कहे "तू मेरी बीवी नहीं है", तो आम सहमति (इजमा) के अनुसार यह तलाक़ नहीं है (बावजूद इसके कि यह इन्शा है)। (त)

नियत के बावजूद तलाक़ नहीं होगी, जैसा कि सिराजुल वहाज में है, संक्षेप में। (त)

इसी तरह दूसरी किताबों में है:

"रहा कफ़्फ़ारा न होने का सवाल, तो इसलिए कि उनकी अदालतों में जो प्रचलित है वह (इस्लामी) क़सम नहीं है, और अगर वह क़सम हो भी तब भी कफ़्फ़ारा नहीं है।"

और लेकिन कफ़्फ़ारा इसलिए नहीं कि कचहरी में हलफ़ को क़सम नहीं माना जाता है, और अगर क़सम हो भी तो...

1. फ़तावा हिन्दिया, पांचवां अध्याय, किनायात के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/475.
2. फ़तावा हिन्दिया, पांचवां अध्याय, किनायात के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/475.

فتاوٰی رضویہ، جلد دوازدہم

الجواب: سائل مظہر کہ شخص مذکور نے انگریزی کچہری میں کسی مصلحت سے ایسا اظہار حلفی دیا پس صورت مستفسرہ میں وہ شخص جھوٹے حلف کا گنہگار ہوا، توبہ استغفار کرے، باقی نہ نکاح گیا نہ کفارہ آیا، نہ اولاد اس کے لئے ترکہ سے محروم ہوئی،

امابقاء النکاح فلان جحودہ لایزیلہ والمقام ھھنا متعین للاخبار لانہ في اظہار لاسیما مع الحلف بل اللفظ بنفسہ لا یحتمل الانشاء کما لا یخفی بخلاف قول القائل لست لی بامرأۃ فلم یکن طلاقا اجماعا۔

نکاح کا باقی رہنا اس لئے کہ اس کا انکار نکاح کو مؤثر نہیں کرتا جبکہ یہ مقام بھی خبر دینے کے لئے متعین ہے کیونکہ یہ اظہار ہے اور وہ بھی حلف کے ساتھ ہے بلکہ خود لفظ بھی انشاء کا احتمال نہیں رکھتا، جیسا کہ مخفی نہیں، اس کے برخلاف اگر کوئی کہے کہ "تو میری بیوی نہیں ہے" تو یہ بالاجماع طلاق نہیں (باوجودیکہ یہ انشاء ہے)۔(ت)

عالمگیری میں ہے:

ان قال لم اتزوجك ونوی الطلاق لا یقع الطلاق بالاجماع کذا فی البدائع۔ 1

اگر خاوند کہے "میں نے تجھ سے نکاح نہیں کیا" تو بالاجماع طلاق کی نیت کے باوجود طلاق نہ ہوگی، جیسا کہ بدائع میں ہے۔(ت)

اُسی میں ہے:

اتفقوا جمیعا انہ لو قال واللہ ما انت لی بامرأۃ ولست واللہ بامرأۃ فأنہ لا

اس پر سب کا اتفاق ہے کہ اگر خاوند کہے "خدا کی قسم تو میری بیوی نہیں" یا یوں کہے "خدا کی قسم میری بیوی نہیں"

امابقاء النكاح فلان جحوده لايزيله والمقام ههنا متعين للاخبار لانه في اظہار لاسیما مع الحلف بل اللفظ بنفسه لا یحتمل الانشاء کما لا یخفی بخلاف قول القائل لست لی بامرأة فلم یکن طلاقا اجماعا۔

نکاح کا باقی رہنا اس لئے کہ اس کا انکار نکاح کو مؤثر نہیں کرتا جبکہ یہ مقام بھی خبر دینے کے لئے متعین ہے کیونکہ یہ اظہار ہے اور وہ بھی حلف کے ساتھ ہے بلکہ خود لفظ بھی انشاء کا احتمال نہیں رکھتا، جیسا کہ مخفی نہیں، اس کے برخلاف اگر کوئی کہے کہ "تو میری بیوی نہیں ہے" تو یہ بالاجماع طلاق نہیں (باوجودیکہ یہ انشاء ہے)۔(ت)

یقع شیئ وان نوی کذا فی السراج الوھاج۔ ملخصاً۔

تو طلاق کی نیت کے باوجود طلاق نہ ہوگی، جیسا کہ سراج الوہاج میں ہے ملخصاً۔ (ت)

اسی طرح اور کتب میں ہے:

واما عدم الکفارۃ فلان المعھود فی محاکمھم غیر القسم وان کان فلا کفارۃ

اور لیکن کفارہ اس لئے نہیں کہ کچہری میں حلف کو قسم نہیں قرار دیا جاتا ہے، اور اگر قسم ہو بھی تو

1 فتاوٰی ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۴۷۵ 2 فتاوٰی ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۴۷۵

Fatawa Ridawiyya, Volume 12

Arabic Quote	Urdu Translation/Commentary
Regarding a false oath (Yamīn Ghamūs). As for the lack of negation of the child's lineage such that they are deprived of inheritance, it is due to the non-realization of Li'ān (mutual imprecation). Mere negation does not negate [lineage], even if both spouses agree upon it.	This is a false oath (Yamīn Ghamūs) for which no expiation (kaffāra) is required. (A false oath regarding a past event is called Yamīn Ghamūs). As for the child's lineage, it will not be negated because without Li'ān, the marital relation cannot be negated. Even if both husband and wife agree on the negation without Li'ān, the lineage of the offspring still cannot be negated. (T)

It is stated in Durr al-Mukhtar: | Arabic Quote | Urdu Translation/Commentary | | :--- | :--- | | He who accuses his wife of adultery and denies the lineage of a child from himself or another, and she demands the consequence of accusation, which is the punishment (Hadd), he shall perform Li'ān. Then if she performs Li'ān after him [it is complete], otherwise she is imprisoned until she performs Li'ān or confirms his statement. If she confirms it, the lineage is not negated because it is the right of the child, and the two are not to be believed in its nullification. End of excerpt. And Allah Ta'ala knows best. | Whoever accused his wife of adultery or denied the child's lineage, or negated the child's lineage from his father by saying it's from the wife's former husband, and the wife filed a claim for the punishment of slander (Hadd al-Qadhf) in the court of the judge (Qazi), then the husband performed Li'ān. After this, if the woman also performs Li'ān, it is better; otherwise, the wife will be imprisoned until she is ready for Li'ān or confirms the husband's accusation. If she confirms the husband's statement, the lineage will still not be negated because it is the child's right. Therefore, their agreement to nullify the child's right will not be accepted. End of excerpt. And Allah Ta'ala knows best. (T) |

Problem 297: 19 Dhu al-Hijjah 1312 AH What do the scholars of religion and muftis of the firm Shariah say about this: Zaid said to his wedded wife twice, "You are out of my marriage, in place of my mother and sister." Did divorce occur on his wife or not? Is this Zihar or not? If divorce occurred, can he take her back (Ruju') or not? And after taking her back, should the husband pay the expiation for Zihar or not? Explain and be rewarded. The Answer: The questioner stated upon investigation that he told his wife to go somewhere, and she...

[Footnote] 1: Durr al-Mukhtar, Chapter of Li'an, Matba' Mujtabai Delhi, 1/251-52. Page 604 of 688

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

अरबी उद्धरण	उर्दू अनुवाद/व्याख्या
यमीन-ए-ग़मूस (झूठी कसम) के बारे में। जहाँ तक बच्चे के वंश (नसब) के न हटने का सवाल है, ताकि वे विरासत से वंचित न हों, तो यह लआन (आपसी शाप) के न होने के कारण है। महज़ इनकार करने से नसब खत्म नहीं होता, चाहे दोनों पति-पत्नी इस पर सहमत क्यों न हों।	यह यमीन-ए-ग़मूस है जिस पर कफ़्फ़ारा लाज़िम नहीं होता। (अतीत के किसी मामले में झूठी कसम खाने को यमीन-ए-ग़मूस कहते हैं)। जहाँ तक बच्चे के वंश के हटने की बात है, तो यह इसलिए नहीं होगा क्योंकि बिना लआन के निकाह का रिश्ता खत्म नहीं हो सकता। और बिना लआन के अगर पति और पत्नी दोनों नसब के इनकार पर सहमत भी हो जाएं तब भी औलाद का वंश खत्म नहीं हो सकता। (त)

दुर्र-ए-मुख्तार में है: | अरबी उद्धरण | उर्दू अनुवाद/व्याख्या | | :--- | :--- | | जिसने अपनी पत्नी पर व्यभिचार का आरोप लगाया और बच्चे के नसब का अपने आप से या किसी और से इनकार कर दिया, और पत्नी ने उस पर आरोप के परिणाम यानी सज़ा (हद) की माँग की, तो वह लआन करेगा। फिर यदि वह उसके बाद लआन करती है [तो पूर्ण है], अन्यथा उसे तब तक कैद किया जाएगा जब तक कि वह लआन न करे या उसकी पुष्टि न कर दे। यदि वह पुष्टि कर देती है, तो नसब खत्म नहीं होगा क्योंकि यह बच्चे का अधिकार है, और उन दोनों की बात इसके निरस्तीकरण में स्वीकार नहीं की जाएगी। अंश समाप्त। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है। | जिसने अपनी पत्नी पर व्यभिचार का आरोप लगाया या बच्चे के नसब से इनकार कर दिया, या पत्नी के पहले पति से बच्चे के नसब को उसके पिता से हटा दिया और पत्नी ने काज़ी के यहाँ उस पर हद-ए-क़ज़्फ़ (मानहानि की सज़ा) का दावा किया, तो पति ने लआन किया। इसके बाद अगर औरत ने लआन किया तो बेहतर है, वरना पत्नी को तब तक कैद किया जाएगा जब तक कि वह लआन के लिए तैयार न हो जाए या पति के दावे की पुष्टि न कर दे। और अगर उसने पति की बात की पुष्टि कर दी, तब भी नसब खत्म नहीं होगा क्योंकि यह बच्चे का अधिकार है। इसलिए, बच्चे के अधिकार को बातिल (अमान्य) करने में उन दोनों की बात स्वीकार नहीं की जाएगी। अंश समाप्त। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त) |

मसला 297: 19 ज़िल हिज्जा 1312 हिजरी दीन के उलेमा और शरिया के मुफ़्ती क्या कहते हैं कि ज़ैद ने अपनी निकाह की हुई पत्नी से दो बार कहा, "तू मेरे निकाह से बाहर है, मेरी माँ-बहन की जगह है।" क्या उसकी पत्नी को तलाक़ हुई या नहीं? और क्या यह ज़िहार है या नहीं? और अगर

तलाक़ हो गई तो रुजू (वापसी) हो सकती है या नहीं? और रुजू के बाद पति को ज़िहार का कफ़्फ़ारा अदा करना चाहिए या नहीं? बयान करें, सवाब मिलेगा। जवाब: पूछने वाले ने तहकीकात के दौरान बयान किया कि उसने अपनी पत्नी से कहीं जाने के लिए कहा था, उसने...

[फुटनोट] 1: दुर्र-ए-मुख्तार, बाब-उल-लआन, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/251-52। पेज 604 of 688

عربی متن	اردو ترجمہ
في غَمُوْسٍ وَاَمَّا عَدَمُ انْتِفَاءِ نَسَبِ الْوَلَدِ حَتّٰی یُحْرَمُوْا مِن تَرِکَۃٍ فَلِعَدَمِ تَحَقُّقِ اللِّعَانِ وَمُجَرَّدُ النَّفْيِ لَا یَنْفِيْ وَاِنْ تَصَادَقَ عَلَیْہِ الزَّوْجَانِ۔	یہ یمین غموس ہے جس پر کفارہ لازم نہیں ہوتا، (ماضی کے معاملہ میں جھوٹی قسم کو یمین غموس کہتے ہیں) باقی بچے کے نسب کا انتفاء اس لئے نہیں ہوگا کہ لعان کے بغیر نکاح کی نسبت منتفی نہیں ہو سکتی، اور لعان کے بغیر نفی پر خاوند بیوی دونوں متفق ہو جائیں تب بھی اولاد کی نسب منتفی نہیں ہو سکتی۔ (ت)

درمختار میں ہے: | عربی متن | اردو ترجمہ | | :--- | :--- | | من قذف زوجته ونفی نسب الولد منه او من غیره وطالبته بموجب القذف وهو الحد، لاعن فان لاعنت بعده والاجست تلاعن او تصدقه فأن صدقته لا ینتفی النسب لانه حق الولد فلا یصدقان فی ابطاله اه ملتقطاً، واللہ تعالیٰ اعلم۔ |

جس نے بیوی پر زنا کی تہمت لگائی یا بچے کے نسب سے انکار کردیا، یا بیوی کے پہلے خاوند سے بچے کے نسب کو اس کے والد سے منتفی کیا اور بیوی نے قاضی کے ہاں اس پر حدِ قذف کا دعوی کیا تو خاوند نے لعان کیا تو اس کے بعد اگر عورت نے لعان کیا تو بہتر ورنہ بیوی کو قید کیا جائے گا حتی کہ وہ لعان کے لئے تیار ہوجائے یا خاوند کی تصدیق کرے، اور خاوند کی تصدیق کردی تو نسب منتفی نہ ہوگا کیونکہ یہ بچے کا حق ہے، لہٰذا بچے کے حق کو باطل کرنے میں ان دونوں کی بات تسلیم نہ کی جائیگی اہ ملتقطاً واللہ تعالیٰ اعلم (ت) |

مسئلہ ۲۹۷: ۱۹ ذی الحجہ ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیانِ شرعِ متین کہ زید نے اپنی منکوحہ سے دو بار کہا کہ "تو میرے نکاح سے باہر ہے، بجائے میری ماں بہن کے ہے" آیا اس کی منکوحہ پر طلاق پڑی یا نہیں؟ اور یہ ظہار ہے یا نہیں؟ اور اگر طلاق ہوگئی تو رجعت ہو

سکتی ہے یا نہیں؟ اور بعدِ رجعت کفارہ ظہار زوج کو ادا کرنا چاہئے یا نہیں؟ بینوا توجروا الجواب:

سائل نے عند التفتیش بیان کیا کہ اس نے ایک جگہ جانے کے لئے اپنی زوجہ کو کہا تھا اس نے

1 در مختار باب اللعان مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۵۱-۵۲ Page 604 of 688

Fatawa Razawiyya Volume 12

...she refused, he insisted, finally he said, "If you don't go, you will be out of my marriage." When she still didn't agree, he said, "Then you are out of my marriage, you are in place of my mother and sister." In this case, the ruling is that one 'Talaq-e-Bain' (irrevocable divorce) has occurred on the woman.

لان اللفظ من الكنايات كقوله لم يبق بينى وبينك نكاح كما فى الهنديہ و ظاهر انه لا يصلح رداً ولا سبّاً والحالة حالة الغضب۔

Because this word is from the metaphors (Kinayat), like saying "no marriage remains between me and you" as mentioned in Al-Hindiyyah. It is evident that this word cannot be meant as a rebuke or insult, and the situation was one of anger. (T)

And now there is no room for Zihar (comparing wife to mother/sister).

فان الظهار يعتمد الزوجية كما فى الدرالمختار وانه بعد البينونة صادق فى بيان الحرمة كما فى ردالمحتار -

Because Zihar can only occur during marriage as stated in Al-Durr al-Mukhtar, and after separation (Bainunah), the husband is truthful in his declaration of prohibition as stated in Radd al-Muhtar. (T)

So there is no need for expiation (Kaffarah), and it is not a matter of simple reconciliation (Ruju), but rather they must remarry. And Allah Almighty knows best.

Issue 298: From Rachha Thana, Bhetari District, Bareilly. 15 Dhu al-Qi'dah 1318 AH. What do the scholars of religion and muftis of the clear Shari'ah say regarding this matter: Zaid became displeased with his sons and separated them. People of the community gathered to bring them together and started advising the father, i.e., Zaid. During this, Zaid said regarding his wife, "I have no connection with her; whether she stays with her sons or goes anywhere, I have no claim, I have nothing to do with her." One person among the gathered community, Amr, said, "O Zaid! Be quiet! Control your tongue, what are you saying? Such words are not spoken." Zaid said again twice, thrice in the same way, "I say it again, I have no claim, let her go wherever she wants, I have no connection." In short, as much as Amr advised him, Zaid repeated those words even more. Four to six times, Zaid uttered these words before them all. Now Zaid wants to keep his wife with him. Some people of the community also say that Zaid said it in anger at that time, there is no harm, and they want to reconcile the husband and wife. So please state, in this situation, did divorce occur or not? And for the husband and wife to mix...

1. Fatawa Hindiyyah, Chapter Five on Metaphors, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/574. Page 605 of 688

फ़तावा रज़विया, खंड 12

...उसने इनकार किया, उसने ज़ोर दिया, अंत में कहा "अगर तुम नहीं जाओगी, तो तुम मेरे निकाह से बाहर हो जाओगी।" जब वह फिर भी नहीं मानी तो उसने कहा "तो तुम मेरे निकाह से बाहर हो गईं, तुम मेरी माँ और बहन की जगह हो।" इस स्थिति में, स्त्री पर एक 'तलाक़-ए-बाइन' (अपरिवर्तनीय तलाक़) होने का हुक्म है।

لان اللفظ من الكنايات كقوله لم يبق بينى وبينك نكاح كما فى الهنديہ و ظاهر انه لا يصلح رداً ولا سبّاً والحالة حالة الغضب۔

क्योंकि यह शब्द 'किनायात' (संकेतों) में से है, जैसे "तुम्हारे और मेरे बीच कोई निकाह नहीं बचा" जैसा कि अल-हिन्दिया में है। यह स्पष्ट है कि यह शब्द डांट या जवाब नहीं बन सकता और स्थिति भी गुस्से वाली थी। (त)

और अब 'ज़िहार' (पत्नी को माँ-बहन कहना) का कोई अवसर नहीं है।

فان الظهار يعتمد الزوجية كما فى الدرالمختار وانه بعد البينونة صادق فى بيان الحرمة كما فى ردالمحتار -

क्योंकि ज़िहार निकाह पर निर्भर करता है जैसा कि 'दुर-ए-मुख्तार' में है, और अलगाव (बाइनूनत) के बाद वह अपनी हुरमत (निषेध) के बयान में सच्चा है जैसा कि 'रद्द-उल-मुह्तार' में वर्णित है। (त)

इसलिए कफ़्फ़ारे (प्रायश्चित) की आवश्यकता नहीं है और केवल रुजू (सुलाह) की सूरत नहीं बल्कि निकाह फिर से करे। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 298: रच्छा थाना, भिटेरी जिला बरेली से। 15 ज़िल-कादा 1318 हिजरी। धर्म के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस मामले में क्या कहते हैं: ज़ैद अपने बेटों से नाराज़ हो गया और उन्हें अलग कर दिया। बिरादरी के लोग उन्हें एक जगह इकट्ठा करने के लिए जमा हुए, पिता यानी ज़ैद को समझाना शुरू किया। इसी बीच ज़ैद ने अपनी बीवी के बारे में कहा कि "मेरा उससे कोई संबंध नहीं है, चाहे वह अपने लड़कों के पास रहे या कहीं भी चली जाए, मैं ला-दावा (दावे रहित) हूँ, मुझे उससे कोई सरोकार नहीं है।" जमा हुए लोगों में से एक व्यक्ति 'अम्र' ने कहा, "ऐ ज़ैद! चुप रहो! अपनी ज़ुबान पर लगाम लगाओ, यह क्या कह रहे हो? ऐसे शब्द नहीं बोले जाते।" ज़ैद ने फिर दोबारा, तिबारा उसी तरह कहा कि "मैं फिर कहता हूँ कि मेरा कोई दावा नहीं है, जहाँ चाहे चली जाए, मेरा कोई संबंध नहीं है।" संक्षेप में, जैसे-जैसे अम्र उसे समझाता, ज़ैद उन शब्दों को और बार-बार कहता। चार-छह बार ज़ैद ने उन सबके सामने ये शब्द अपनी ज़ुबान से निकाले। अब ज़ैद चाहता है कि मैं बीवी को

अपने पास रखूँ। बिरादरी के कुछ लोग भी कहते हैं कि ज़ैद ने उस समय गुस्से में कह दिया था, कोई हर्ज नहीं है, और चाहते हैं कि मियाँ-बीवी का मेल-जोल करा दें। तो बताइए कि इस स्थिति में तलाक़ हुआ या नहीं? और मियाँ-बीवी को घुलने-मिलने...

---

1. फ़तावा हिन्दिया, पाँचवाँ अध्याय, किनायात पर, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/574। पृष्ठ 605 का 688

انکار کیا اس نے اصرار کیا آخر کہا "اگر نہ جائے گی تو میرے نکاح سے باہر ہو جائے گی" اس نے پھر بھی نہ مانا تو کہا "تو میرے نکاح سے باہر ہو گئی، تو بجائے میری ماں بہن کے ہے" اس صورت میں عورت پر ایک طلاق بائن پڑ جانے کا حکم ہے،

لان اللفظ من الکنایات کقولہ لم یبق بینی وبینك نکاح کما فی الھندیہ و ظاھر انہ لا یصلح رداً ولا سبّاً والحالۃ حالۃ الغضب۔

کیونکہ یہ لفظ کنایات میں سے ہے، جیسا کہ "تیرے اور میرے درمیان نکاح نہیں" جیسا کہ ہندیہ میں ہے، اور ظاہر ہے کہ یہ لفظ ڈانٹ اور جواب نہیں بن سکتا اور حالت بھی غصہ والی ہے۔ (ت)

اور اب ظہار کا کوئی محل نہیں،

فان الظھار یعتمد الزوجیۃ کما فی الدرالمختار وانہ بعد البینونۃ صادق فی بیان الحرمۃ کما فی ردالمحتار -

کیونکہ ظہار نکاح میں ہو سکتا ہے جیسا کہ در مختار میں ہے، اور خاوند طلاق بائن کے بعد اپنے بیانِ حرمت میں سچا ہے جیسا کہ ردالمحتار میں بیان کیا گیا ہے۔ (ت)

تو کفارے کی حاجت نہیں اور صرف رجعت کی صورت نہیں بلکہ نکاح پھر کرے، واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۲۹۸: از رچھاتھانہ بھٹیری ضلع بریلی ۱۵ ذیقعدہ ۱۳۱۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید اپنے بیٹوں سے ناخوش ہوا اور ان کو علیحدہ کر دیا، لوگ برادری کے جمع ہوئے کہ ان کو ایک جگہ جمع کر دیں، باپ یعنی زید کو سمجھانا شروع کیا، اسی اثناء میں زید نے اپنی بی بی کی نسبت کہا کہ مجھ کو اس سے کوئی تعلق نہیں خواہ یہ اپنے لڑکوں میں رہے یا کسی جگہ چلی جائے میں لا دعوٰی ہوں مجھ کو اس سے کچھ مطلب نہیں، وہ برادری

کے لوگ جو جمع تھے ان میں سے ایک شخص عمرو نے کہا کہ اے زید! خاموش ہو اپنی زبان کو روک، یہ کیا کہتا ہے، ایسے لفظ نہیں بولتے ہیں زید نے پھر دوبارہ سہ بارہ اسی طرح سے کہا کہ میں پھر کہتا ہوں کہ مجھ کو کوئی دعویٰ نہیں جہاں چاہے چلی جائے مجھ کو کچھ تعلق نہیں، غرض جوں جوں عمر و اس کو سمجھاتا تھا اُتنا ہی زید ان الفاظ کو بار بار کہتا تھا چار چھ مرتبہ اُن سب کے رُوبرو یہ الفاظ زید نے اپنی زبان سے نکالے، اب زید چاہتا ہے کہ میں بی بی کو اپنے پاس رکھوں، برادری کے بعض لوگ بھی کہتے ہیں کہ زید نے اس وقت غصے میں کہہ دیا تھا کچھ حرج نہیں اور چاہتے ہیں کہ میاں بی بی کا میل جول کرا دے، تو فرمائیے کہ اس صورت میں طلاق ہوئی یا نہیں؟ اور میاں بی بی کو خلط ملط

---

1 فتاویٰ ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۵۷۴ Page 605 of 688

Fatawa Razawiyya Volume 12

Is it permissible or not? Or state what is with Allah; explain with truth and correctness, and you will be rewarded by Allah on the Day of Reckoning.

The Answer: Except for the words "I have no concern with this," the remaining words are from the metaphors (kinaya) of divorce. If Zaid, by saying them, intended to divorce the woman and expel her from his marriage, then one irrevocable divorce (talaq-e-ba'in) has occurred.

[Arabic Box Left]: And it does not multiply with repetition because a metaphorical irrevocable (divorce) does not attach to an irrevocable divorce, as stated in al-Bahr, al-Durr, and others. [Urdu Box Right]: And these cannot be multiple divorces due to repetition, because a metaphorical irrevocable divorce cannot follow the first irrevocable divorce, as stated in Bahr and Durar etc. (t)

In this case, let him marry the woman with her consent. And if these words were not said with the intention of divorcing the woman, then no divorce occurred at all; the woman remains in his marriage as before. Whether or not there was an intention of divorce through these words will be known from Zaid's own statement. The woman should ask him after making him take an oath. If he takes an oath and says, "I did not intend divorce with these words," then the ruling of divorce will not apply.

[Arabic Box Left]: In al-Durr al-Mukhtar: It is sufficient for her to make him swear in her house. -1 [Urdu Box Right]: It is in Durr al-Mukhtar that it is sufficient for the woman to take an oath from the husband in the house. (t)

If Zaid takes a false oath, the burden of it is on Zaid himself; the woman is free from blame. And if Zaid refuses to take an oath or clearly admits that he said those words with the intention of divorce, then they cannot reunite without a new marriage (nikah). And Allah Almighty knows best.

Issue 299: From Sirouli Pargana Anola, District Bareilly, Mohalla Rangrezan, sent by Masitan, wife of Wazir Beg, 11 Jumada al-Akhirah 1322 AH.

What do the scholars of religion say regarding this matter: that my husband Mirza Wazir Beg has expelled me from his house after causing all kinds of distress for a long time, and I am living at my father's house, to the extent that I am destitute and lack daily bread. Thus, a few times I requested maintenance from the said husband in writing, in response to which he sent this notice which is attached to this question. It

is certain that it must have been perused. Therefore, I hope that for the sake of Allah, in accordance with the command of the noble Shari'ah, permission be granted for me to marry some righteous man...

---

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on Metaphors, Mujtabai Press Delhi, 1/224

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

क्या यह जायज़ है या नहीं? या जो बात अल्लाह के नज़दीक हो बयान फरमाएं, सच्चाई और दुरुस्ती के साथ बयान करें और क़यामत के दिन अल्लाह के यहाँ अज्र पाएं।

अल-जवाब (उत्तर): "मुझे इससे कोई मतलब नहीं" के अलावा बाकी शब्द तलाक़ के किनया (संकेत) में से हैं। यदि जैद ने उन्हें कहते समय औरत को तलाक़ देने और उसे अपने निकाह से बाहर कर देने की नीयत की थी, तो एक तलाक़-ए-बाइन (अटल तलाक़) हो गई।

[अरबी]: और यह दोहराव से कई गुना नहीं होता क्योंकि एक प्रतीकात्मक अटल तलाक़ दूसरे अटल तलाक़ के बाद प्रभावी नहीं होता, जैसा कि अल-बहर, अल-दुर्र और अन्य में है। [उर्दू]: और यह दोहराव की वजह से कई तलाक़ें नहीं हो सकतीं, क्योंकि किनया वाली बाइन तलाक़ पहली बाइन को लागू नहीं हो सकती, जैसा कि बहर और दुरर वगैरह में है। (त)

इस सूरत में वह औरत की रज़ामंदी के साथ उससे निकाह कर ले। और अगर ये शब्द औरत को तलाक़ देने की नीयत से नहीं कहे थे, तो तलाक़ हुई ही नहीं; औरत पहले की तरह उसके निकाह में है। यह बात कि इन शब्दों से तलाक़ की नीयत की थी या नहीं, खुद जैद के बयान से मालूम होगी। औरत उससे कसम लेकर पूछे। अगर वह कसम खाकर कह दे कि "मैंने इन शब्दों से तलाक़ की नीयत नहीं की थी," तो तलाक़ का हुक्म नहीं होगा।

[अरबी]: अल-दुर्र अल-मुख्तार में है: उसे उसके घर में कसम दिलाना ही काफी है। -1 [उर्दू]: दुर्रे मुख़्तार में है कि औरत का घर में शौहर से कसम ले लेना काफी है। (त)

अगर जैद झूठी कसम खाएगा तो उसका वबाल (गुनाह) जैद ही पर है, औरत इल्ज़ाम से बरी है। और अगर जैद कसम खाने से इनकार कर दे या साफ़ इकरार कर ले कि मैंने वे शब्द तलाक़ की नीयत से कहे थे, तो बिना नए निकाह के उनमें मेल-जोल नहीं हो सकता। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 299: सिरौली परगना आंवला, ज़िला बरेली, मोहल्ला रंगरेज़ां से भेजा गया मुर्सला मसीतन ज़ौजा वज़ीर बेग 11 जमादी अल-आखिरह 1322 हिजरी।

उलेमा-ए-दीन इस मसले में क्या फरमाते हैं कि मुझ मुसम्मात मसीतन को मेरे शौहर मिर्ज़ा वज़ीर बेग ने अरसा दराज़ से हर तरह की तकलीफ़ देकर अपने मकान से निकाल दिया है और मैं अपने बाप

के घर रहती हूँ, यहाँ तक कि मैं रोटी के लिए मोहताज हूँ। चुनाँचे चंद बार मैंने शौहर मज़कूर से रोटी और ख़र्चे (नान-ओ-नफ़क़ा) के बारे में लिख कर माँगा, तो उसके जवाब में यह नोटिस भेजा जो इस सवाल के साथ नत्थी है। यकीन है कि मुलाहिज़ा से गुज़रा होगा, लिहाज़ा उम्मीद है कि अल्लाह के लिए शरीयत-ए-मुतहरा के हुक्म के मुताबिक इजाज़त दी जाए कि मैं अपना निकाह किसी नेक मर्द...

---

1 दुर्रे मुख़्तार, बाबुल किनयात, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/ 224

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

جائز ہے یا نہیں؟ یا جو بات عند اللہ ہو بیان فرمائے، بینوا بالصدق والصواب و توجروا عند اللہ یوم الحساب۔

الجواب: "مجھ اس سے کچھ مطلب نہیں" کے سوا باقی الفاظ کنایات طلاق سے ہیں ان کے کہنے میں اگر زید نے عورت کو طلاق دینے اور اپنے نکاح سے باہر کر دینے کی نیت کی تھی تو ایک طلاق بائن ہوگئی،

ولا یتعدد بالتکرار لان الکنایۃ البائنۃ لا تلحق طلاقا بائنا کما في البحر والدر وغیرھا۔ | اور یہ تکرار کی وجہ سے متعدد طلاقیں نہیں ہوسکتی، کیونکہ کنایہ والی بائنہ طلاق پہلی بائنہ کو لاحق نہیں ہو سکتی، جیسا کہ بحر اور دُرر وغیرہما میں ہے (ت)

اس صورت میں تو عورت کو رضامندی کے ساتھ اس سے نکاح کرلے اور اگر یہ الفاظ عورت کو طلاق دینے کی نیت سے نہ کہے تھے تو طلاق ہی نہ ہوئی عورت بدستور اس کے نکاح میں ہے یہ بات کہ ان الفاظ سے طلاق کی نیت کی تھی یا نہ کی تھی خود زید کے بیان سے معلوم ہوگی عورت اس سے قسم لے کر پوچھے اگر وہ قسم کھا کر کہہ دے کہ میں نے ان لفظوں سے طلاق کی نیت نہ کی تھی تو طلاق کا حکم نہ ہوگا،

في الدر المختار ویکفي تحلیفھا لہ في منزلہ-1 | در مختار میں ہے کہ عورت کا گھر میں خاوند سے قسم لے لینا کافی ہے (ت)

اگر زید جھوٹی قسم کھائے گا تو اس کا وبال زید ہی پر ہے، عورت الزام سے بری ہے اور اگر زید قسم کھانے سے انکار کر دے یا صاف اقرار کر دے کہ میں نے وہ الفاظ بنیت طلاق کہے تھے تو بغیر نکاح جدید کے اُن میں میل جول نہیں ہوسکتا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۲۹۹: از سرولی پرگنہ آنولہ ضلع بریلی محلہ رنگریزاں مرسلہ مسیتن زوجہ وزیر بیگ ۱۱ جمادی الآخرہ ۱۳۲۲ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مجھ مسماۃ مسیتن کو مرزا وزیر بیگ شوہر میرے نے عرصہ دراز سے ہر طرح کی تکلیف دے کر اپنے مکان سے نکال دیا ہے اور میں اپنے باپ کے گھر رہتی ہوں، یہاں تک کہ میں نان شبینہ کو محتاج ہوں، چنانچہ چند بار میں نے شوہر مذکور سے بابت نان و نفقہ بذریعہ تحریر طلب کیا سو اس کے جواب میں یہ نوٹس بھیجا جو ہمرشتہ سوال ہذا ہے یقین ہے کہ ملاحظہ سے گزرا ہوگا لہذا امید ہوں کہ برائے عند اللہ بموجب حکم شرع شریف کے اجازت ہو کہ میں اپنا نکاح کسی مرد صالح...

---

1 درمختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۲۴

Fatawa Razawiya, Volume 12

...with whom I may satisfy my physical needs. Only. Copy of Note: Notice to Mst. Maseetan d/o Khairati. Let it be clear that you have written to me several times for expenses, stating that you are in dire need of money. Fine, if you hadn't gone to your mother's house without my permission, I would have given you some expenses, even though I was already extremely unhappy with you. But now I have absolutely no connection with you anymore. Don't expect anything from me; rather, you have control over yourself. I am withdrawing from you. Writing no more. Writer: Wazir Baig from Pyas, 9 July 1904. **The Answer:** In the situation asked about, a ruling of one 'Talaq-e-Bain' (irrevocable divorce) will be given. The woman should consider herself out of the marriage contract. After three complete menstrual cycles starting from the day of divorce are finished, she is free to marry whomever she wishes. **Because the denial of connection is among the metaphors for divorce, and similarly 'withdrawing'. They do not bear the possibility of rejection or verbal abuse, and the state was one of anger. Therefore, the ruling of occurrence is given. Rather, the remaining words are also metaphors for divorce, not for delegation (of divorce to the wife), as is known by anyone who knows the styles of conversation. And Allah Almighty knows best.** Because in metaphors, the denial of connection is established as giving a divorce, and the same is the rule for "being withdrawn". These two words do not have the possibility of being a response or a scolding, and the situation was also angry. Therefore, the ruling for the occurrence of divorce will be given, and similarly, the rest of the words are also metaphorical from which only divorce is intended, and they do not mean giving the choice to the wife, as every person who understands the meanings of idioms knows. And Allah Almighty knows best (T).

Problem 300: What do the scholars of religion say regarding this matter: A woman and her man, i.e., her husband, had a quarrel and dispute as husband and wife. There was anger. In that state of anger, the woman said, "Give me a divorce." In the state of anger, her husband said three times, "You have become our sister, you have become our sister, you have become our sister." In this situation, did a divorce occur or not? When the anger subsided, he thought, "What have I said?" That's all. This incident happened on November 1st, 1906; today is the fifth day. **The Answer:** In this situation, there is absolutely no scope for three divorces. **Because it was 'Bain' (irrevocable), and an irrevocable divorce does not join another irrevocable divorce.** | Because if it is 'Bain', it cannot join the first 'Bain'.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

... के साथ कर लूँ जिससे मेरी शारीरिक ज़रूरतें पूरी हो सकें। फ़क़त। नक़ल नोट: नोटिस बनाम मुसम्मात मसीतन सुपुत्री खैराती। साफ़ ज़ाहिर हो कि तुमने कई बार ख़र्च के लिए मुझे लिखा कि मुझे ख़र्च की सख्त ज़रूरत है। अच्छी बात है, अगर तुम मेरी इजाज़त के बिना अपनी माँ के घर न चली जातीं तो मैं तुम्हें कुछ न कुछ ख़र्च दिया करता, हालाँकि मैं पहले ही तुमसे बेहद नाखुश हूँ, लेकिन अब तो मेरा तुमसे बिल्कुल ही कोई ताल्लुक़ नहीं रहा। मुझसे किसी किस्म की उम्मीद मत रखना, बल्कि तुम अब आज़ाद हो। मैं तुमसे दस्तबरदार (अलग) होता हूँ। ज़्यादा क्या लिखूँ। लेखक: वज़ीर बेग, निवासी प्यास, 9 जुलाई 1904। **उत्तर:** पूछी गई स्थिति में, एक 'तलाक़-ए-बाइन' (अपरिवर्तनीय तलाक़) होने का हुक्म दिया जाएगा। औरत खुद को निकाह से बाहर समझे और तलाक़ के दिन के बाद तीन मुकम्मल मासिक धर्म शुरू होकर खत्म हो जाने के बाद उसे अधिकार है कि जिससे चाहे निकाह करे। **क्योंकि ताल्लुक़ की नफ़ी (इनकार) तलाक़ के किनाया (संकेत) में से है, और इसी तरह 'दस्तबरदारी'। ये दोनों शब्द अस्वीकार या गाली-गलौज की संभावना नहीं रखते, और स्थिति गुस्से की थी। इसलिए तलाक़ होने का हुक्म दिया जाएगा। बल्कि शेष शब्द भी तलाक़ के लिए किनाया हैं, न कि अधिकार सौंपने के लिए, जैसा कि बातचीत के तौर-तरीकों को जानने वाला हर व्यक्ति जानता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।** क्योंकि किनाया (इशारों) में ताल्लुक़ के इनकार को तलाक़ देना करार दिया गया है और यही हुक्म "दस्तबरदार होने" का है। ये दोनों शब्द जवाब और डांट का अर्थ नहीं रखते और स्थिति भी गुस्से वाली है, इसलिए तलाक़ होने का हुक्म होगा। इसी तरह बाकी शब्द भी किनाया वाले हैं जिनसे तलाक़ ही मुराद होती है और उनसे पत्नी को अधिकार देना नहीं होता, जैसा कि मुहावरों के अर्थ समझने वाला हर व्यक्ति जानता है। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है (त)।

मसला 300: दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि एक औरत और उसके मर्द यानी पति के बीच झगड़ा और फ़साद हुआ और गुस्सा था। उस गुस्से की हालत में औरत ने कहा, "मुझे तलाक़ दे दो।" उसके पति ने गुस्से की हालत में तीन बार कहा, "तुम हमारी बहन हो चुकीं, तुम हमारी बहन हो चुकीं, तुम हमारी बहन हो चुकीं।" इस सूरत में तलाक़ हुई या नहीं? जब गुस्सा उतरा तो उसने सोचा कि यह मैंने क्या कह दिया। फ़क़त। यह घटना 1 नवंबर 1906 को हुई, आज पांचवां दिन है। **उत्तर:** इस स्थिति में तीन तलाक़ की बिल्कुल भी गुंजाइश नहीं है। **क्योंकि वह 'बाइन'**

(अपरिवर्तनीय) थी, और एक 'बाइन' दूसरे 'बाइन' के साथ नहीं जुड़ती। | क्योंकि अगर वह बाइन हो तो वह पहली बाइन से नहीं मिल सकती।

पृष्ठ 607 / 688

کے ساتھ کرلوں جس سے قوت بسری میری منصور ہو فقط نقل نوٹ: نوٹس بنام مسماۃ مسیتن دخیر خیراتی واضح ہو تم نے چند بار واسطے خرچ کے مجھ کو لکھا کہ مجھ کو خرچ کی سخت ضرورت ہے خوب بات ہے اگر تم بلا اجازت میرے اپنی ماں کے گھر نہ چلی جاتیں تو میں تم کو خرچ کچھ نہ کچھ دیا کرتا اگرچہ میں پہلے ہی تم سے ازحد ناخوش ہوں مگر اب تو میرا بالکل ہی تم سے کچھ تعلق نہیں رہا، مجھ سے تم کسی قسم کی اُمید مت رکھنا بلکہ تم کو اپنی ذات کا اختیار ہو چکا، میں تم سے دست بردار ہوں، زیادہ اور لکھوں فقط، راقم وزیر بیگ از پیاس ۹ جولائی ۱۹۰۴ء **الجواب:** صورت مستفسرہ میں ایک طلاق بائن پڑنے کا حکم دیا جائے گا عورت اپنے آپ کو نکاح سے باہر سمجھے اور روز طلاق کے بعد تین حیض کامل شروع ہو کر ختم ہو جانے کے بعد اسے اختیار ہے جس سے چاہے نکاح کرے، **لان نفی التعلق من بین کنایات التطلیق و کذا دست برداری ولا یحتملان ردا و لاسبا والحالۃ حالۃ الغضب فیحکم بالوقوع بل اللفظ الباقی ایضا کنایۃ عن التطلیق دون التفویض کما یعلم من یعرف اسالیب التحاور واللہ تعالی اعلم.** کیونکہ کنایات میں تعلق کی نفی کو طلاق دینا قرار دیا گیا ہے اور یونہی "دستبردار ہونا" کا حکم ہے، یہ دونوں لفظ جواب اور ڈانٹ کا احتمال نہیں رکھتے اور حالت بھی غصہ والی ہے، اس لئے طلاق واقع ہونے کا حکم ہو گا اور اسی طرح باقی الفاظ بھی کنایہ والے ہیں جن سے طلاق ہی مراد ہوتی ہے اور ان سے بیوی کو اختیار دینا نہیں ہوتا جیسا کہ محاورات کے مفہومات کو سمجھنے والا ہر شخص جانتا ہے، واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۳۰۰: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ ایک عورت اور اس کا مرد یعنی خاوند اس کا میاں بی بی میں جھگڑا اور فساد ہوا اور غصہ تھا اس غصہ کی حالت میں عورت نے کہا

مجھ کو طلاق دے دو، اس کے میاں نے غصہ کی حالت میں تین بار کہا تو ہماری بہن ہو چکی تو ہماری بہن ہو چکی تو ہماری بہن ہو چکی۔ اس صورت میں طلاق ہوئی یا نہیں جب غصہ اترا تو خیال کیا یہ ہم نے کیا کہا فقط یہ واقعہ ہوا ہے ایک نومبر ۱۹۰۶ء کو، آج پانچواں دن ہے۔ **الجواب:** تین طلاق کی اس صورت میں اصلاً گنجائش نہیں، **لانہ کان بائنا والبائن لا یلحق البائن** | کیونکہ اگر بائن ہو تو وہ پہلی بائن کو لاحق نہیں ہو سکتی،

Fatawa Radawiyya Volume 12

وظاهر انہ لیس ظہار العدم التشبیہ وظاہر کلامہم ان لا اطلاق فیہ تامل۔	**And the apparent (meaning) is that it is not Zihar because Zihar involves a comparison, which is absent here. Therefore, the apparent view of the jurists is that divorce will not occur in this case; it requires consideration. (T)**

As a precaution, they should remarry in the presence of two men or one man and two women. And Allah the Almighty knows best.

From Shahjahanpur, Mohalla Baruzi Awwal 8 Shawwal 1326 AH

Problem 301: What do the scholars of religion say regarding this situation: Hindah went to her parents' house due to the bad temperament and harsh words of her mother-in-law. Her husband Zaid, who is employed in a foreign land, wrote a letter in his own hand via mail to Hindah's father. In addition to harsh words, he also wrote: "Now keep the girl for the rest of her life and she will never be called back, and now you will see how people give me girls. Now keep the girl with you, and what quality is there in your girl? Now keep the girl as long as you wish, and I have no connection with her, and now no one will call your girl. I will write to my father that no connection should be kept with you and the girl should be called (not be called), and my correspondence with you also ends here. Now do not reply to this, I don't want it." So, do these words written by Zaid reach the level of divorce or not?

The Answer: Divorce cannot occur through such a letter until Zaid admits to writing it. Even after admission, the ruling of divorce cannot be given unless he admits to saying the phrase "I have no connection with her" with the intention of divorce. Yes, if he says, "I wrote this letter and these words with the intention of divorce," then definitely a ruling for one Talaq-e-Ba'in (irrevocable divorce) will be given. And if in reality he wrote these words with the intention of divorce and now denies it, the sin of it will be upon him. And Allah the Almighty knows best.

Problem 302: From Shahjahanpur, Mohalla Daldak, near Kotthi Mosque, Babu Samiullah Khan, sent by Syed Amjad Ali Sahib, retired Head Constable. 25 Rabi-ul-Akhir 1336 AH

Amr is a professional worker, and his daughter Mahmoodah lived with her stepmother. About three or four years ago, her stepmother, with the advice of her biological brother (who is Mahmoodah's step-maternal uncle), married Mahmoodah, who was 14 years old, without Amr's consent to Khalid, who is a person of bad

character and irreligious. Within ten to twelve days, when Mahmoodah realized that nothing here was according to Sharia, she advised Khalid to be punctual in prayers, upon which...

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

وظاهر انہ لیس ظھار العدم التشبیہ وظاھر کلامھم ان لا اطلاق فیہ تامل۔	**और ज़ाहिर यह है कि यह ज़िहार नहीं है क्योंकि ज़िहार में उपमा (तशबीह) होती है जो यहाँ नहीं है, इसलिए प्रतिष्ठित न्यायविदों (फ़ुक़हा) का स्पष्ट मत यही है कि इस स्थिति में तलाक़ नहीं होगी, गौर करने की ज़रूरत है। (त)**

एहतियात यह है कि दो पुरुषों या एक पुरुष और दो महिलाओं के सामने फिर से निकाह कर लें। वल्लाह तआला आलम (और अल्लाह बेहतर जानता है)।

शाहजहाँपुर, मोहल्ला बारोज़ी अव्वल से 8 शव्वाल 1326 हिजरी

मसला 301: दीन के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि हिंदा अपनी सास के खराब मिजाज और कड़वी बातों की वजह से अपने माता-पिता के घर चली आई। ज़ैद, जो उसका पति है और विदेश में नौकरी करता है, उसने अपने हाथ से डाक द्वारा हिंदा के पिता को एक पत्र लिखा। कठोर शब्दों के अलावा, उसने यह भी लिखा: "अब आप जीवन भर लड़की को अपने पास रखें और अब वह कभी नहीं बुलायी जाएगी और अब आप देखेंगे कि लोग मुझे लड़कियाँ कैसे देते हैं। अब लड़की को अपने पास रखें और आपकी लड़की में क्या गुण है? अब लड़की को जब तक चाहें रखें, और मेरा उससे कोई संबंध नहीं है और अब आपकी लड़की को कोई नहीं बुलाएगा और मैं अपने पिता जी को लिख दूँगा कि आपसे कोई संबंध न रखा जाए और न ही लड़की को बुलाया जाए, और मेरी आपसे लिखा-पढ़ी भी यहीं खत्म होती है। अब इसका जवाब न दीजिएगा, मैं नहीं चाहता।" तो, क्या ज़ैद द्वारा लिखे गए ये शब्द तलाक़ तक पहुँचते हैं या नहीं?

अल-जवाब: ऐसे पत्र से तलाक़ नहीं हो सकती जब तक ज़ैद इसे लिखने की बात स्वीकार न कर ले। स्वीकार करने के बाद भी तब तक तलाक़ का हुक्म नहीं दिया जा सकता जब तक वह यह स्वीकार न करे कि "मेरा उससे कोई संबंध नहीं है" वाले शब्द उसने तलाक़ की नीयत से लिखे थे। हाँ, अगर वह कहे कि यह पत्र और ये शब्द मैंने तलाक़ की नीयत से लिखे थे, तो निश्चित रूप से एक तलाक़-ए-बाइन का हुक्म दिया जाएगा। और अगर वास्तव में उसने ये शब्द तलाक़ की नीयत से लिखे थे और अब वह इससे इनकार कर दे, तो इसका पाप उसी पर होगा। वल्लाह तआला आलम।

मसला 302: शाहजहाँपुर, मोहल्ला दलदाक, कोठी बाबू समीउल्लाह खान मस्जिद के पास, प्रेषक: सैयद अमजद अली साहब, रिटायर्ड हेड कांस्टेबल। 25 रबी-उल-आख़िर 1336 हिजरी

अम्र एक कामकाजी व्यक्ति है और उसकी एक बेटी महमूदा अपनी सौतेली माँ के साथ रहती थी। लगभग तीन-चार साल पहले, उसकी सौतेली माँ ने अपने सगे भाई (महमूदा के सौतेले मामा) की सलाह पर, अम्र की मर्जी के बिना, 14 वर्षीय महमूदा की शादी खालिद से कर दी, जो एक दुराचारी और अधर्मी व्यक्ति है। दस-बारह दिनों में, जब महमूदा को पता चला कि यहाँ कोई भी काम शरीयत के मुताबिक नहीं है, तो उसने खालिद को नमाज़ की पाबंदी करने की नसीहत दी, जिस पर...

पृष्ठ 608 / 688

وظاھر انہ لیس ظھار العدم التشبیہ وظاھر کلامھم ان لا اطلاق فیہ تامل۔

اور ظاہر یہ ہے کہ ظہار نہیں کیونکہ ظہار میں تشبیہ ہوتی ہے جو یہاں نہیں ہے لہذا فقہاء کرام کا ظاہر قول یہی ہے کہ اس صورت میں طلاق نہ ہوگی، غور کی ضرورت ہے۔ (ت)

احتیاط یہ کہ آپس میں نکاح نئے سرے سے کرلیں، دو مردوں یا ایک مرد اور دو عورتوں کے سامنے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

از شاہجہانپور محلہ باروزی اول ۸ شوال ۱۳۲۶ھ

مسئلہ ۳۰۱: کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس صورت میں کہ ہندہ اپنی ساس کی بد مزاجی اور سخت کلامی سے اپنے والدین کے مکان پر چلی آئی زید اس کے شوہر نے جو پردیس میں ملازم ہے ایک خط بقلم خود بذریعہ ڈاک ہندہ کے باپ کے نام لکھا، علاوہ کلماتِ سخت کے یہ بھی لکھا کہ اب آپ عمر بھر لڑکی کو بٹھائے رکھئے اور اب وہ کبھی نہیں بلائی جاوے گی اور اب آپ دیکھئے گا کہ مجھ کو لوگ کیسے لڑکی دیتے ہیں اور اب آپ لڑکی کو اپنے پاس رکھئے اور آپ کی لڑکی میں کیا صفت ہے، اب آپ لڑکی کو بٹھائے رکھئے جب تک جی چاہے، اور میرا اس کا کچھ تعلق نہیں اور اب آپ کی لڑکی کو کوئی نہیں بلائے گا اور میں والد صاحب کو لکھ دوں گا کہ آپ سے کچھ تعلق نہ رکھا جاوے اور لڑکی کو بلایا جاوے اور میری آپ کی خط و کتابت بھی یہیں سے قطع ہوتی ہے اب آپ جواب اس کا نہ دیجیے گا میں نہیں چاہتا، پس یہ کلمات جو زید نے لکھے وہ طلاق تک پہنچے یا نہیں؟

الجواب: ایسے خط سے طلاق نہیں ہو سکتی جب تک زید اس کے لکھنے کا اقرار نہ کرے، پھر بعد اقرار بھی حکم طلاق نہیں ہو سکتا جب تک وہ اس لفظ کے بہ نیت طلاق کہنے کا اقرار نہ کرے کہ میرا اس کا کوئی تعلق نہیں، ہاں اگر وہ کہے کہ یہ خط میں نے اور یہ الفاظ بہ نیت طلاق لکھے تھے تو ضرور ایک طلاق بائن کا حکم دیا جائیگا اور اگر واقع میں اس نے یہ لفظ بہ نیت طلاق لکھے تھے اور اب اس کا انکار کر جائیگا تو اس کا وبال اس پر ہو گا۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۳۰۲: از شاہجہان پور محلہ دلداک متصل مسجد کوٹھی بابو سمیع اللہ خاں مرسلہ سید امجد علی صاحب ہیڈ کانسٹیبل پنشنر ۲۵ ربیع الآخر ۱۳۳۶ھ

عمرو ایک نوکری پیشہ ہے اور اس کی ایک لڑکی محمودہ اپنی سوتیلی ماں کے ساتھ رہتی تھی عرصہ تین چار سال ہوا کہ اس کی ماں سوتیلی نے اپنے حقیقی بھائی کی صلاح سے جو محمودہ کا سوتیلا ماموں ہے بلا رضا مندی عمرو محمودہ جس کی عمر ۱۴ سال تھی کی شادی خالد جو بد چلن لامذہب آدمی ہے سے کردی، دس بارہ یوم میں محمودہ کو جب علم ہوا کہ یہاں پر کوئی کام مطابق شرع نہیں، تب خالد کو فہمائش پابندی نماز کی کی جس پر

Mahmuda was treated harshly and subjected to all kinds of hardships regarding food, drink, and performing prayers and fasting. Finally, Khalid sent Mahmuda to her father's house. After some time, Khalid's mother and maternal grandmother came, and by invoking God and the Messenger and promising that the girl would not be troubled and would not be kept unhappy, they took Mahmuda back. Mahmuda stayed there for ten to fifteen days, but seeing that the oath and promise were not being kept, she returned to her parent's home. In short, during these four years, this happened four or five times. The last time, Khalid's father took an oath and took responsibility, taking the girl back. However, after some time, Khalid stopped talking to Mahmuda and stopped coming home. Finally, he stripped her of her jewelry and clothes and said, "Now go for the rest of your life; we have no connection or relation with you," and sent her to her parents' house. In a gathering of a large group, where several people who pray and fast regularly were present, he said, "We have now burned down the 'darbah' (nest/abode), and there is no relation left between me and Mahmuda." Since then until now, no inquiry has been made about her.

The Answer: People ask very vague questions. Nothing was mentioned as to whether Mahmuda was an adult (baligha) or a minor (nabaligha) at the time of marriage. At the age of fourteen, both are possible. If her menstrual cycle had started, she is an adult; otherwise, she is a minor. It was not mentioned whether, if she was an adult, her consent was obtained or not. And if she was a minor, what did the father say upon hearing about this marriage, and with whose permission did the departure (rukhsati) happen? Until the details of these matters are provided, a definitive ruling cannot be given, and giving a ruling for every possibility is contrary to Shari'a interests. From the wording of the question, it appears that the inquiry is about divorce, assuming the marriage was valid—whether it occurred with these words or not. If he is truly 'la-mazhab' (irreligious) in the sense that he is a heretic or atheist and holds no religion, or in the sense that he is a Wahhabi non-conformist (ghair muqallid), then the marriage itself never took place; so how can there be a divorce? But if it is meant in the sense that he does not adhere to religious commands and mingles with all kinds of people, then even if a valid marriage is assumed (the reality of which will not be clear without the aforementioned matters), regarding divorce, the answer is that these words are 'kinaya' (metaphorical/ambiguous). Divorce depends on his intention. If he said it with the intention of divorce, one 'talaq-e-ba'in' (irrevocable divorce) has occurred, and the woman is out of the marriage contract;

otherwise, not. And regarding the presence or absence of intention, the man's statement under oath is credible, as stated in Durr-ul-Mukhtar etc. And Allah Almighty knows best.

Problem 303: From Ranchi, Upper Bazaar, sent by Mr. Abdul Rabb, 7 Jumada al-Ula 1336 AH. The husband said to his wife, "I have no business or relation with you; I have left you."

महमूदा को बहुत बुरा-भला कहा गया और उसे खाने-पीने और नमाज़-रोज़े के मामले में हर तरह की तकलीफ़ दी गई। आखिरकार खालिद ने महमूदा को उसके पिता के घर भेज दिया। कुछ समय बाद खालिद की माँ और नानी आईं और खुदा और रसूल की कसम खाकर और यह वादा करके कि अब लड़की को कोई तकलीफ़ नहीं होगी और उसे नाखुश नहीं रखा जाएगा, महमूदा को विदा करा ले गईं। महमूदा दस-पंद्रह दिनों तक वहां रही, लेकिन कसम और वादे का पालन न होते देख वह वापस अपने मायके आ गई। संक्षेप में, इन चार वर्षों के दौरान ऐसा चार-पांच बार हुआ। आख़िरी बार खालिद के पिता ने शपथ ली और ज़िम्मेदारी उठाई, और लड़की को विदा करा ले गया। लेकिन कुछ समय बाद खालिद ने महमूदा से बात करना और घर आना छोड़ दिया। अंततः उसके गहने और कपड़े उतरवा लिए और यह कहकर कि 'अब जीवन भर के लिए जाओ, हमारा तुमसे कोई वास्ता और संबंध नहीं है', उसे मायके भेज दिया। एक बड़ी सभा में, जिसमें कई नमाज़ी और रोज़ेदार लोग मौजूद थे, उसने कहा कि 'हमने अब पिंजरा (दरबा) ही जला दिया है और मेरा और महमूदा का कोई संबंध नहीं रहा'। तब से अब तक कोई खबर नहीं ली गई है।

अल-जवाब (उत्तर): लोग बहुत घुमावदार सवाल पूछते हैं। यह नहीं बताया गया कि निकाह के समय महमूदा बालिग़ (वयस्क) थी या नाबालिग़। चौदह साल की उम्र में दोनों बातें संभव हैं। यदि मासिक धर्म शुरू हो गया हो तो बालिग़ है, अन्यथा नाबालिग़। यह नहीं बताया गया कि यदि वह बालिग़ थी, तो उसकी अनुमति ली गई थी या नहीं। और यदि वह नाबालिग़ थी, तो पिता ने इस निकाह के बारे में सुनकर क्या कहा और यह विदाई किसकी अनुमति से हुई? जब तक इन बातों का विवरण न बताया जाए, निश्चित आदेश (हुक्म) नहीं दिया जा सकता, और हर संभावना के लिए आदेश बताना शरिया के हितों के विरुद्ध है। सवाल के शब्दों से स्पष्ट है कि निकाह को सही मानकर तलाक के बारे में पूछा गया है कि इन शब्दों से तलाक हुआ या नहीं। यदि वह वास्तव में 'ला-मज़हब' है, इस अर्थ में कि वह नास्तिक या धर्महीन है, उसका कोई धर्म नहीं है, या इस अर्थ में कि वह वहाबी ग़ैर-मुक़ल्लिद है, तो निकाह ही नहीं हुआ, फिर तलाक कैसा? और यदि इस अर्थ में कहा गया है कि वह धर्म के आदेशों का पालन नहीं करता, हर तरह के लोगों से मेल-जोल रखता है, तो यदि निकाह को सही मान लिया जाए (जिसकी वास्तविकता उपरोक्त बातों के बिना स्पष्ट नहीं होगी), तो तलाक के संबंध में इतना उत्तर है कि ये शब्द 'किनाया' (अस्पष्ट/सांकेतिक) हैं। तलाक उसकी नीयत (इरादे) पर निर्भर है। यदि उसने तलाक की नीयत से कहा है, तो एक 'तलाक-ए-बायन' (अटल तलाक) हो गया, और औरत

निकाह से निकल गई; अन्यथा नहीं। और नीयत होने या न होने के बारे में पुरुष का कथन शपथ के साथ मान्य है, जैसा कि 'दुर-अल-मुख़्तार' आदि में है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला 303: रांची, ऊपरी बाज़ार से, प्रेषक जनाब अब्दुल रब्ब, 7 जमादी-उल-उला 1336 हिजरी। पति ने अपनी पत्नी से कहा कि 'मेरा और तेरा कोई सरोकार या वास्ता नहीं है, मैंने तुझे छोड़ दिया'।

पृष्ठ 609 / 688

محمودہ کو سخت و سست کہا گیا اور ہر طرح کی تکلیف خوردونوش اور صوم و صلاۃ کی دی گئی اور آخرکار خالد نے محمودہ کو باپ کے گھر پہنچا دیا، کچھ عرصہ بعد والدہ و نانی خالد کی آئیں اور خدا اور رسول کو درمیان میں ڈال کر اور اقرار اس بات کا کر کے کہ اب لڑکی کو تکلیف نہ ہوگی اور اس کو ناخوش نہ رکھا جائے گا محمودہ کو رخصت کرائے گئیں، دس پندرہ یوم تک محمودہ وہاں رہی، مگر قسم اور اقرار کی پابندی نہ دیکھ کر وہ میکہ چلی آئی غرضیکہ اس عرصہ چار سال میں چار پانچ مرتبہ ایسا ہی اتفاق ہوا، اخیر مرتبہ خالد کے باپ نے حلف لیا اور ذمہ دار ہوا اور لڑکی کو رخصت کرالے گیا۔ لیکن کچھ عرصہ بعد خالد نے محمودہ سے بات چیت کرنا گھر میں آنا چھوڑ دیا اور بالآخر زیور و کپڑا اتار کر یہ کہہ کر کہ اب عمر بھر کو جاؤ ہم سے کوئی واسطہ اور تعلق نہیں اس کو میکے میں پہنچا دیا اور ایک جماعت کثیرہ کے جلسہ میں جس میں چند اصحاب نمازی اور پابند صوم و صلوٰۃ موجود تھے کہا کہ ہم نے اب دربہ ہی پھونک دیا اور مجھ سے و محمودہ سے کوئی تعلق نہیں رہا اور جب سے اب تک کوئی خبر گیری نہ لی۔

الجواب: لوگ بہت گول سوال کرتے ہیں کچھ نہ بتایا کہ نکاح کے وقت محمودہ بالغہ تھی یا نابالغہ، چودہ سال کی عمر میں دونوں باتیں محتمل ہیں، اگر عارضہ ماہواری آتا ہو بالغہ ہے ورنہ نابالغہ، یہ نہیں بتایا گیا کہ اگر بالغہ تھی تو اس کا اذن لیا گیا یا نہیں، اور نابالغہ تھی تو باپ نے اس نکاح کو سن کر کیا کہا اور یہ رخصت کس کی اجازت سے ہوئی۔ جب تک ان باتوں کی تفصیل نہ بتائی جائے حکم متعین نہیں ہو سکتا، اور ہر شق کا حکم بتانا خلاف مصلحت شرعیہ ہے، تقریر سوال سے ظاہر ہے کہ نکاح کو صحیح مان کر طلاق کی نسبت استفسار ہے کہ ان لفظوں سے ہوئی یا نہیں، اگر وہ واقعی لامذہب ہے بایں معنی کہ زندیق و دہر یہ ہے کوئی دین نہیں رکھتا یا بایں معنی

کہ وہابی غیر مقلد ہے جب تو نکاح ہی نہ ہوا طلاق کیسی، اور اگر بایں معنی کہا کہ دین کے احکام پر قائم نہیں، ہر قسم کے لوگوں سے میل جول ہے، تو اگر نکاح صحیح فرض کر لیا جائے جس کی حقیقت بغیر امور مذکورہ کے واضح نہ ہو گی تو طلاق کی نسبت اتنا جواب ہے کہ یہ الفاظ کنایہ ہیں، طلاق اس کی نیت پر موقوف ہے، اگر بہ نیت طلاق کہے ایک طلاق بائن ہوگئی، عورت نکاح سے نکل گئی ورنہ نہیں، اور نیت ہونے نہ ہونے میں مرد کا قول قسم کے ساتھ معتبر ہے، کما فی الدرالمختار وغیرہ (جیسا کہ در مختار وغیرہ میں ہے۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۰۳: از رانچی اوپر بازار مرسلہ جناب عبدالرب ۷ جمادی الاولٰی ۱۳۳۶ھ شوہر نے اپنی بی بی سے کہا کہ مجھ سے اور تجھ سے کوئی سروکار واسطہ نہیں میں نے تجھ کو چھوڑ دیا

Fatawa Razawiyya Volume 12

After saying these words, separation and cutting off of ties occurred. After a period of one and a half years, another man wished to marry this woman. Some said that her husband had not divorced her. When the husband was asked whether he had divorced her or not, he stated, "I left her one and a half to two years ago, and I have no connection or concern with her, and that is included in divorce, and consider it divorce itself." The question is that the words "no connection or concern" and "I have left her" are metaphorical expressions of divorce (Kinaya) which require intention and circumstantial evidence. Maintaining mutual separation and cutting off ties for a period of one and a half to two years, according to the second view of Imam Muhammad, which is chosen by Saghdi, is evidence for the intention of divorce. The third sentence, "it is included in divorce" or "consider it divorce itself," is explicit (Sarih). Therefore, is the occurrence of divorce attributed to the past time within the period of one and a half to two years proven or not? And according to jurisprudential narrations, does the completion of the waiting period (Iddah) within one and a half to two years from the time of divorce relate to it? And is this second marriage after one and a half to two years valid or not? Zaid, based on reliable jurisprudential books like Hidaya, Bahr, Fath, etc., proves that since the occurrence of divorce is attributed to past time and divorce is the cause of Iddah, the Iddah has passed within one and a half to two years, making the second marriage valid. Bakr says no, rather Iddah will be counted from the time of admission; this second marriage is void, rather the intimacy between them falls under adultery. So, is Bakr's statement correct or Zaid's?

The Answer "I have no concern with you" – these are not words of divorce at all,

Like his saying: "I have no need of you, I do not desire you," as explicitly mentioned in al-Alamgiriyyah and others.	**As the husband says, "I have no need for you, I have no desire for you," as there is a text (nass) for this in Alamgiri etc. (T)**

"There is no connection between me and you" is certainly among the metaphorical expressions (kinayat) of divorce, like his saying "Nothing remains between me and you" (As if he says there is nothing between me and you. T). And "I have left you" is an explicit term (sarih) as we have explained in our footnotes on Radd al-Muhtar (As we have explained in the margin of Radd al-Muhtar. T). Now, if he intended divorce with these words "there is no connection between me and you," then two irrevocable (ba'in) divorces have occurred.

1. Fatawa Hindiyya, Chapter Five on Metaphorical Expressions, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/375
2. Fatawa Hindiyya, Chapter Five on Metaphorical Expressions, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/376

इन शब्दों को कहने के बाद, अलगाव और संबंधों के टूटने के डेढ़ साल बाद, एक अन्य व्यक्ति ने इस महिला से निकाह करना चाहा। कुछ लोगों ने कहा कि उसके पति ने उसे तलाक नहीं दिया है। पति से पूछा गया कि क्या उसने तलाक दिया है या नहीं, तो उसने बयान दिया कि "डेढ़-दो साल से मैंने उसे छोड़ दिया है और मेरा कोई वास्ता और सरोकार नहीं है और वह तलाक में शामिल है और इसे तलाक ही समझें।" सवाल यह है कि "वास्ता और सरोकार नहीं" और "मैंने उसे छोड़ दिया है," तलाक के किनाया (अप्रत्यक्ष) शब्द हैं जो इरादे और परिस्थिति के साक्ष्य के मोहताज हैं। डेढ़-दो साल की अवधि से आपसी अलगाव और संबंधों का टूटना इमाम मुहम्मद के दूसरे कथन के अनुसार, जो मुख़्तार-ए-सग़दी है, तलाक के इरादे पर दलील है। तीसरा वाक्य "तलाक में शामिल है" या "तलाक ही जानिये" स्पष्ट (सरीह) है। तो, क्या तलाक का होना पिछले समय में डेढ़-दो साल की अवधि के भीतर साबित है या नहीं? और क्या फ़िक़ही रिवायतों के अनुसार तलाक होने के समय से डेढ़-दो साल के भीतर इद्दत का पूरा होना संबंधित है या नहीं? और क्या यह दूसरा निकाह डेढ़-दो साल बाद सही हुआ या नहीं? ज़ैद विश्वसनीय फ़िक़ही किताबों हिदाया, बह्र, फ़तह आदि के आधार पर यह साबित करता है कि जब तलाक का होना पिछले समय के संदर्भ में है और तलाक इद्दत का कारण है, तो डेढ़-दो साल के भीतर इद्दत बीत गई और दूसरा निकाह सही है। बक्र कहता है कि नहीं, बल्कि इद्दत इकरार (स्वीकारोक्ति) के समय से गिनी जाएगी, यह दूसरा निकाह बातिल (अमान्य) है बल्कि उनके बीच का संबंध ज़िना (व्यभिचार) में आता है। तो बक्र की बात सही है या ज़ैद की?

उत्तर "मुझ को तुझ से कोई सरोकार नहीं," ये तो तलाक के शब्द ही नहीं हैं,

जैसा कि उसका कहना है: 'मुझे तुम्हारी कोई ज़रूरत नहीं है, मैं तुम्हारी इच्छा नहीं रखता', जैसा कि अल-आलमगीरिय्याह और अन्य में स्पष्ट किया गया है।

जैसा कि पति कहे "मुझे तुझ में हाजत नहीं, तुझ में मेरी ख्वाहिश नहीं है," जैसा कि आलमगीरी आदि में इस पर ऩस (स्पष्ट प्रमाण) मौजूद है। (त)

"मुझ से तुझ से कोई वास्ता नहीं," यह निश्चित रूप से तलाक के किनायात (अप्रत्यक्ष शब्दों) में से है, जैसा कि उसका कहना "मेरे और तेरे बीच कुछ शेष नहीं रहा" (जैसा कि वह कहे कि मेरे और तेरे बीच कुछ नहीं है। त)। और "मैंने तुझ को छोड़ दिया," यह शब्द स्पष्ट (सरीह) है जैसा कि हमने रद-

उल-मुहतार के हाशिये में स्पष्ट कर दिया है। (त) अब अगर उसने इन शब्दों से कि "मुझ से तुझ से कोई वास्ता नहीं" तलाक की नीयत की थी, तो दो तलाक़-ए-बाइन हो गईं।

---

1. फ़तावा हिन्दिया, पांचवां अध्याय किनायात के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/375
2. फ़तावा हिन्दिया, पांचवां अध्याय किनायात के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/376

पृष्ठ 610/688

فتاوی رضویہ جلد دوا زدہم

بعد کہنے ان الفاظ کے تفرّقہ و قطعِ تعلق بعد زمانہ ڈیڑھ سال کے دوسرے مرد نے اس عورت سے نکاح کرنا چاہا بعض نے کہا کہ اسے شوہر نے طلاق نہیں دیا ہے، شوہر سے پوچھا کہ تم نے طلاق دی ہے یا نہیں، اس نے بیان کیا کہ ڈیڑھ دو سال سے میں نے اس کو چھوڑ دیا ہے اور کوئی واسطہ و سروکار نہیں ہے اور وہ داخلِ طلاق ہے اور طلاق ہی جانئے، سوال یہ ہے کہ واسطہ و سروکار نہیں اور میں نے اس کو چھوڑ دیا ہے، طلاق بالکنایہ محتاجِ نیت و دلالتِ حال کی ہے، عرصہ ڈیڑھ دو برس سے باہمی تفرّقہ و قطعِ تعلق رکھنا موافق قول ثانی امام محمد کے جو مختارِ سغدی ہے دلیل اوپر نیتِ طلاق کے ہے تیسرا جملہ داخلِ طلاق یا طلاق ہی جانئے صریح ہے، پس وقوعِ طلاق مسند زمانہ ماضی اندر مدّت ڈیڑھ دو سال کے ثابت ہے یا نہیں اور انقضائے عدت زمانہ وقوعِ طلاق سے عرصہ ڈیڑھ دو سال کے اندر موافق روایاتِ فقہیہ متعلق ہے یا نہیں، اور یہ دوسرا نکاح بعد ڈیڑھ دو سال کے صحیح ہوا یا نہیں، زید بسند کتب معتبرہ فقہیہ ہدایہ و بحر و فتح وغیرہ ثابت کرتا ہے کہ جب وقوعِ طلاق باسنادِ سندِ زمانِ ماضی متعلق ہے اور طلاق سببِ عدت تو عدت اندر ڈیڑھ دو سال کے گزر گئی نکاح دوسرا صحیح ہے بکر کہتا ہے کہ نہیں بلکہ وقتِ اقرار سے عدت محسوب ہو گی یہ دوسرا نکاح باطل ہے بلکہ تمتع فیما بین داخلِ زنا، پس قول بکر کا صحیح ہے یا زید کا؟

الجواب "مجھ کو تجھ سے کوئی سروکار نہیں" یہ تو الفاظ طلاق سے ہی نہیں،

كقوله لا حاجة لی فيك لا اشتهيك كما نص عليه في العالمگيرية وغيرہا۔

جیسا کہ خاوند کہے "مجھے تجھ میں حاجت نہیں، تجھ میں میری خواہش نہیں ہے، جیسا کہ عالمگیری وغیرہ میں اس پر نص موجود ہے (ت)

"مجھ سے تجھ سے کوئی واسطہ نہیں" یہ ضرور کنایاتِ طلاق سے ہے کقولہ لم یبق بینی وبینك شیء (جیسا کہ یوں کہے میرے اور تیرے درمیان کچھ نہیں ہے۔ت) اور "میں نے تجھ کو چھوڑ دیا" یہ لفظ صریح ہے کما بیناہ فیما علقناہ علی ردالمحتار (جیسا کہ ہم نے ردالمحتار کے حاشیہ میں اس کو بیان کر دیا ہے۔ت) اب اگر اُس نے ان لفظوں سے کہ "مجھ سے تجھ سے کوئی واسطہ نہیں" طلاق کی نیت کی تھی تو دو طلاقیں بائن ہو گئیں۔

---

1 فتاوی ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۷۵ 2 فتاوی ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۷۶

Fatawa Rizvia, Volume 12

Arabic	Urdu
For indeed, an explicit divorce (Sarih) attaches to both a 'Bain' (irrevocable) and a 'Raj'i' (revocable) divorce. If it's combined with 'Bain', it makes it 'Baina' because the return (Raj'at) is precluded.	Because an explicit divorce attaches to a 'Bain' divorce, and when an explicit and a 'Bain' divorce are combined, the 'Baina' makes the explicit one 'Baina' because no return (Raj'at) is possible. (T)

And if there was no intention of divorce from it, then it is one revocable divorce, even if no intention was made with the other word.

Arabic	Urdu
Because an explicit divorce does not require intention, and since it follows the metaphorical (Kinaya) word, it could not serve as an indication for the intention of divorce with it.	Because an explicit divorce does not require intention. Since the explicit divorce here follows the metaphorical term (Kinaya), at the time of the metaphor, there was no indication (Qarina) for the intention of divorce. (T)

From 'Alamgiriyya', citing 'Al-Muhit':

Arabic	Urdu
If he says to her, "Be separate, you are divorced," it is one divorce if he did not intend divorce with the word "separate".	If a husband says, "Be separate, you are divorced," then this is one divorce, provided he did not intend divorce with the phrase "be separate". (T)

From 'Fatawa Khayriyya':

Arabic	Urdu
He said to his wife in a state of anger, "My soul is divorced." One revocable divorce occurs, even if he intended more or 'Ibana' (irrevocability), or if he intended nothing at all, because it is explicit. For a metaphorical (Kinaya) term is one that carries the possibility of divorce but divorce is not explicitly mentioned, as Qadhi Khan stated in the	A husband said to his wife in anger, "My soul is divorced." Then one revocable divorce will occur, whether he intends multiple divorces or an irrevocable one, or makes no intention at all; it will be a revocable divorce in any case. This is because it is an explicit term, and a metaphor (Kinaya) is that which holds the possibility of divorce but divorce itself is

Arabic	Urdu
chapter of Kinayat. Here, divorce is explicitly mentioned.	not mentioned, as Qadhi Khan mentioned in the chapter of Kinayat, whereas here, the divorce is explicitly mentioned. (T)

From 'Radd al-Muhtar':

Arabic	Urdu
It is mentioned after it, whereas an indication (Qarina) must precede it, as is known from what has passed.	This is mentioned later, while for it to be an indication (Qarina), it is necessary for it to come first, as in the case of 'I'taddi' (observe your waiting period).

1. Fatawa Hindiyya, Chapter Five on Kinayat, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/377
2. Fatawa Khayriyya, Book of Divorce, Dar al-Ma'rifa Beirut, 1/53 & 55

फ़तावा रिज़विया, जिल्द 12

अरबी

क्योंकि स्पष्ट तलाक़ (सरीह) 'बाइन' (अपरिवर्तनीय) और 'रजी' (परिवर्तनीय) दोनों से जुड़ता है। यदि यह 'बाइन' के साथ जुड़ जाए, तो यह उसे 'बाइना' बना देता है क्योंकि फिर वापसी (रुजू) संभव नहीं होती।

उर्दू

क्योंकि स्पष्ट तलाक़ बाइन से जुड़ती है, और जब स्पष्ट और बाइन एक साथ हों, तो 'बाइना' स्पष्ट तलाक़ को भी 'बाइना' बना देती है क्योंकि रुजू मुमकिन नहीं होता। (त)

और अगर इससे तलाक़ की नीयत न की हो, तो एक तलाक़-ए-रजी (परिवर्तनीय) होगी, चाहे दूसरे शब्द से भी नीयत न की हो।

अरबी

क्योंकि स्पष्ट तलाक़ (सरीह) नीयत की मोहताज नहीं होती, और चूंकि यहाँ सरीह तलाक़ कनाया (संकेत) के बाद है, इसलिए कनाया के समय तलाक़ की नीयत का कोई संकेत (क़रीना) मौजूद नहीं था।

उर्दू

क्योंकि स्पष्ट तलाक़ नीयत की मोहताज नहीं होती। चूंकि स्पष्ट तलाक़ यहाँ कनाया के बाद है, इसलिए कनाया के समय तलाक़ की नीयत का कोई संकेत (क़रीना) मौजूद नहीं था। (त)

'आलमगीरिया' में 'मुहीत' से है:

अरबी

अगर पति कहे "तू जुदा हो, तुझे तलाक़ है", तो यह एक तलाक़ है, बशर्ते उसने "तू जुदा हो" से तलाक़ की नीयत न की हो।

उर्दू

अगर शौहर कहे "तू जुदा हो, तुझे तलाक़ है", तो यह एक तलाक़ है, बशर्ते उसने "तू जुदा हो" से तलाक़ की नीयत न की हो। (त)

'फ़तावा खैरिया' में है:

अरबी

पति ने गुस्से में अपनी पत्नी से कहा, "मेरी रूह तलाक़ वाली है"। तो एक तलाक़-ए-रजी होगी, चाहे वह अधिक तलाक़ों की या 'बाइना' की नीयत करे या

उर्दू

शौहर ने बीवी को गुस्से में कहा "मेरी रूह तलाक़ वाली है" तो एक तलाक़-ए-रजी होगी चाहे वह ज़्यादा तलाक़ों की या बाइन की नीयत करे या

अरबी

रखे या कोई नीयत न रखे, हर स्थिति में एक 'रजी' ही होगी। क्योंकि यह स्पष्ट (सरीह) है, और 'कनाया' वह होता है जिसमें तलाक़ की संभावना हो और तलाक़ का स्पष्ट उल्लेख भी न हो, जैसा कि काज़ी खान ने 'कनायात' के अध्याय में उल्लेख किया है, जबकि यहाँ तलाक़ स्पष्ट रूप से उल्लेखित है।

उर्दू

कोई नीयत न करे, हर तरह से एक रजी होगी। क्योंकि यह सरीह है और कनाया वह होती है जिसमें तलाक़ का एहतमाल (संभावना) हो और तलाक़ का ज़िक्र भी न हो, जैसा कि इसे काज़ी ख़ान ने कनायात के बाब में ज़िक्र किया है, जबकि यहाँ सरीह तलाक़ मस्कूर (उल्लेखित) है। (त)

'रद्दुल मुहतार' में है:

अरबी

यह बाद में उल्लेखित है, जबकि संकेत (क़रीना) के लिए यह ज़रूरी है कि वह पहले हो, जैसा कि पहले 'एतद्दी' (यानी इद्दत गुज़ार)।

उर्दू

यह बाद में मस्कूर है, जबकि क़रीना के लिए ज़रूरी है कि वह पहले हो, जैसा कि पहले एतद्दी (तू इद्दत कर)।

1. फ़तावा हिंदिया, अध्याय पाँच कनायात पर, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/377
2. फ़तावा खैरिया, तलाक़ की किताब, दारुल मारिफ़ा बेरुत, 1/53 और 55

فتاوٰی رضویہ، جلد دو ازدہم

عربی	اردو
فان الصریح یلحق البائن والرجعی اذا جامعه البائن جعله بائناً لامتناع الرجعة۔	کیونکہ صریح بائن کو لاحق ہوتی ہے اور صریح اور بائن جمع ہو جائیں تو بائنہ صریح کو بائنہ بنا دیتی ہے کیونکہ رجوع نہیں ہو سکتا۔ (ت)

اور اگر اس سے طلاق کی نیت نہ کی ہو تو ایک طلاق رجعی ہوئی اگرچہ دوسرے لفظ سے بھی نیت نہ کی ہو،

عربی	اردو
لان الصریح لا یحتاج الی النیة ولتاخره عن الکنایة لم یکن قرینة علی نیة الطلاق بها۔	کیونکہ صریح طلاق نیت کی محتاج نہیں ہوتی، چونکہ صریح طلاق یہاں کنایہ کے بعد ہے لہذا کنایہ کے وقت نیت طلاق کا قرینہ موجود نہ تھا۔ (ت)

عالمگیریہ میں محیط سے ہے:

عربی	اردو
لو قال لها بینی فانت طالق فهی واحدة اذالم ینو بقوله بینی طلاقاً۔	اگر خاوند کہے "تُو جدا ہو تجھے طلاق" تو یہ ایک طلاق ہے، اگر اس نے "تُو جدا ہو" سے طلاق کی نیت نہ کی ہو۔ (ت)

فتاوٰی خیریہ میں ہے:

عربی	اردو
قال لامرأته فی حال الغضب روحی طالق یقع واحدة رجعیة وان نوی الاکثر والابانة اولم ینوشیئاً لانه صریح، اذ الکنایة ماتحتمل الطلاق ولا یکون الطلاق مذکوراً ایضاً کما صرح به قاضی خاں فی الکنایات، وھنا الصریح مذکور۔	خاوند نے بیوی کو غصہ میں کہا "میری روح طلاق والی ہے" تو ایک طلاق رجعی ہوگی اگرچہ وہ زیادہ طلاقوں کی یا بائنہ کی نیت کرے یا کوئی نیت نہ کرے ہر طرح ایک رجعی ہوگی، کیونکہ یہ صریح ہے اور کنایہ وہ ہوتی ہے جس میں طلاق کا احتمال ہو اور طلاق کا ذکر بھی نہ ہو جیسا کہ اس کو قاضی خاں نے کنایات کے باب میں ذکر کیا ہے جبکہ یہاں صریح طلاق مذکور ہے۔ (ت)

ردالمحتار میں ہے:

عربی	اردو
انه مذکور بعده والقرینة لابد ان تتقدم کما یعلم ممامر	یہ بعد میں مذکور ہے جبکہ قرینہ کے لئے ضروری ہے کہ وہ پہلے ہو، جیسا کہ پہلے اعتدی (تو عدت

1 فتاوٰی ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۳۷۷ 2 فتاوٰی خیریہ کتاب الطلاق دار المعرفۃ بیروت ۱ / ۵۳ و ۵۵

Fatawa Razawiyya, Volume 12

Regarding saying 'Count three times' - (T) It has already been known regarding saying 'complete (count) three times'. (T) In the same [source] it is [mentioned]:

[Arabic Text - Left Column]: Nothing occurs with the first [statement] because he did not intend it and the circumstantial evidence was found after it. 2 I say: In what was mentioned in al-Khayriyya, there is a kind of contradiction to what was passed from al-Muhit, and the apparent [correct view] is what is in al-Muhit. The wording of al-Khaniya is: 'Kinayah (allusion) is that which admits the possibility of divorce and divorce is not mentioned explicitly.' 3 Its meaning is that it is not an explicit text for divorce. How can this be, while it was said in it: 'If he said, "You are divorced, so count (the waiting period)," and said "I meant the iddah," his intention is valid. And if he meant by it another divorce or did not intend anything, then it is another divorce. Likewise, [if he said] "and count" or said "count" without the conjunction letter, 4 then he has effected another divorce through allusion upon intention despite the presence of the explicit [divorce]. Intention was not needed only because of the preceding explicit [divorce], so it was part of the discussion [on divorce], unlike our current case, for it is like his saying "Separate, for you are divorced."' And Allah (Exalted) knows best.

[Urdu Text - Right Column]: If the allusion (kinayah) comes first, no divorce will occur if there is no intention of divorce, because in such a case, both intention and circumstantial evidence were not found, and although circumstantial evidence is present, it is [found] later, which cannot serve as a contextual indicator (qarinah). I say: (I say) what is mentioned in al-Khayriyya is somewhat contrary to what is reported from al-Muhit, while the apparent [correct view] is what is in al-Muhit. The wording of al-Khaniya is that allusion is what carries the possibility of divorce and explicit divorce is not mentioned, while its meaning is that there is no clear text in it regarding divorce. How can this not be so when they said in al-Khaniya that if a husband says to his wife "You are divorced, so complete your iddah (waiting period)" and then says "I meant the iddah period by 'fa-i'taddi' (so complete your iddah)," his intention will be correct. And if he says "I meant a second divorce by it" or says "I had no intention," then it will be counted as a second divorce, and similarly if he says "and count" with the conjunction 'wa' or without the conjunction "i'taddi" and "i'taddi," the ruling is the same. So here in this statement, they have accepted the occurrence of a second divorce through the allusion of "i'taddi" with intention, even though an explicit divorce was mentioned before it. Undoubtedly, there would be no need for

intention in the allusion where explicit divorce is mentioned first so that it becomes part of the discourse on divorce. Contrary to what we are explaining, in this case, the allusion comes first and the explicit [divorce] is after it.

---

1 Radd al-Muhtar, Chapter on Allusions, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/274 2 Radd al-Muhtar, Chapter on Allusions, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/464 3 Fatawa Qazi Khan, Section on Allusions and Implications, Naval Kishore, Lucknow, 3/216 4 Fatawa Qazi Khan, Section on Allusions and Implications, Naval Kishore, Lucknow, 3/216

फतावा रज़विया, जिल्द 12

'तीन बार गिन' (इतद्दी सलासा) कहने के बारे में - (त) पूरी कर) तीन बार कहने के सम्बन्ध में ज्ञात हो चुका है। (त) इसी में है:

[अरबी पाठ - बायाँ कॉलम]: पहले (इशारे/किनाया) से कुछ भी नहीं होता क्योंकि उसने उसका इरादा नहीं किया था और परिस्थितिजन्य साक्ष्य इसके बाद मिले। 2 मैं कहता हूँ: 'खैरिया' में जो बताया गया है, वह 'मुहीत' से जो वर्णित है, उसके कुछ विपरीत है, जबकि प्रत्यक्षतः 'मुहीत' वाली बात ही सही है। 'खानिया' का कथन है कि किनाया वह है जिसमें तलाक की संभावना हो और तलाक स्पष्ट रूप से वर्णित न हो। 3 जबकि इसका अर्थ यह है कि तलाक के बारे में कोई स्पष्ट पाठ न हो। यह कैसे संभव है जबकि उन्होंने इसमें कहा है: 'यदि उसने कहा, "तुझे तलाक है, अतः तू अपनी इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) पूरी कर," और फिर कहा कि "मैंने इद्दत ही मुराद ली है," तो उसकी नीयत सही मानी जाएगी। और यदि उसने इससे दूसरी तलाक मुराद ली है या कोई नीयत नहीं की, तो यह दूसरी तलाक मानी जाएगी। इसी प्रकार यदि "व" (और) के साथ या बिना किसी संयोजक शब्द के"इतद्दी" कहे, 4 तो उसने स्पष्ट (सरीह) तलाक की मौजूदगी के बावजूद नीयत के साथ किनाया के माध्यम से दूसरी तलाक वाके कर दी। नीयत की आवश्यकता केवल इसलिए नहीं हुई क्योंकि स्पष्ट तलाक पहले आ चुका था, अतः वह तलाक की चर्चा का हिस्सा बन गया, इसके विपरीत हमारा वर्तमान मामला है, क्योंकि यह उसके इस कथन के समान है "अलग हो जा, क्योंकि तुझे तलाक है।"' और अल्लाह (सर्वोच्च) सबसे बेहतर जानता है।

[उर्दू पाठ - दायाँ कॉलम]: यदि किनाया (इशारा) पहले हो तो उससे कोई तलाक नहीं होगी जब तक कि तलाक की नीयत न हो, क्योंकि ऐसी स्थिति में नीयत और परिस्थितिजन्य साक्ष्य दोनों ही नहीं पाए गए, और यद्यपि साक्ष्य मौजूद है, लेकिन वह बाद में है जो संदर्भ (करीना) नहीं बन सकता। मैं कहता हूँ: (मैं कहता हूँ) 'खैरिया' में जो उल्लेख है, वह 'मुहीत' से जो उद्धृत है उसके कुछ विपरीत है, जबकि प्रत्यक्ष वही है जो 'मुहीत' में है। 'खानिया' का कथन यह है कि किनाया वह है जो तलाक की संभावना रखता हो और स्पष्ट तलाक का उल्लेख न हो, जबकि इसका अर्थ यह है कि तलाक में कोई स्पष्ट पाठ (नस्सो) न हो। यह कैसे संभव नहीं हो सकता जबकि उन्होंने 'खानिया' में फरमाया है कि यदि पति पत्नी से कहे "तुझे तलाक है, अतः तू अपनी इद्दत पूरी कर" और फिर कहे कि मैंने 'फ़-इतद्दी' (अतः तू इद्दत पूरी कर) से इद्दत ही मुराद ली है, तो उसकी नीयत सही होगी। और यदि वह कहे कि मैंने इससे दूसरी तलाक मुराद ली है या कहे कि मैंने कोई नीयत नहीं की, तो यह दूसरी

तलाक मानी जाएगी। इसी प्रकार यदि "व" के साथ या बिना संयोजक के"इतद्दी" और "इतद्दी" कहे, तो भी यही हुक्म है। तो यहाँ इस बयान में उन्होंने 'इतद्दी' के किनाया से नीयत के साथ दूसरी तलाक होना स्वीकार किया है, बावजूद इसके कि उससे पहले स्पष्ट तलाक का जिक्र है। निस्संदेह किनाया में नीयत की आवश्यकता नहीं होगी जहाँ स्पष्ट तलाक पहले वर्णित हो ताकि वह तलाक की चर्चा का हिस्सा बन सके। इसके विपरीत जो हम वर्णन कर रहे हैं, उसमें किनाया पहले है और स्पष्ट तलाक बाद में है।

---

1 रद्दुल मुह्तार, बाबुल किनायात, दारु इहयाइत तुरासिल अरबी, बेरुत, 2/274 2 रद्दुल मुह्तार, बाबुल किनायात, दारु इहयाइत तुरासिल अरबी, बेरुत, 2/464 3 फतावा काज़ी ख़ाँ, फ़स्ल फ़िल किनायात वल मदलूलात, नवल किशोर, लखनऊ, 3/216 4 फतावा काज़ी ख़ाँ, फ़स्ल फ़िल किनायात वल मदलूलात, नवल किशोर, लखनऊ, 3/216

فتاوی رضویہ، جلد دوازدہم

فی اعتدّی ثلثا ۱ ۔ پوری کر) تین مرتبہ کہنے کے متعلق معلوم ہو چکا ہے۔ (ت) اسی میں ہے :

لایقع بالاول شیئ لانه لم ینوبه ودلالة الحال وجدت بعده ۲ اقول: وفیما ذکر فی الخیریة نوع مخالفة لمامر عن المحیط والظاهر مافی المحیط و عبارة الخانیة الکنایة ماتحتمل الطلاق ولایکون الطلاق مذکوراً نصاً ۳ فانما معناه لایکون نصاً فی الطلاق کیف وقد قال فیها لو قال انت طالق فاعتدی وقال عنیت به العدة صحت نیته وان عنی به تطلیقه اخری اولم ینو شیئاً فهی تطلیقة اخری وکذلك واعتدی او قال اعتدی بغیر حرف العطف ۴ فقد اوقع بالکنایة اخری عند النیة مع وجود الصریح وانما لم یحتج الی النیة لتقدم الصریح فکان من المذاکرة بخلاف مانحن فیه فأنه کقوله بینی فانت طالق واللہ تعالٰی اعلم۔

کنایہ پہلے ہو تو اس سے کوئی طلاق نہ ہوگی جبکہ نیت طلاق نہ ہو، کیونکہ ایسی صورت میں نیت اور دلالت دونوں نہ پائے گئے، اور دلالت اگرچہ ہے مگر بعد میں ہے جو کہ قرینہ نہیں بن سکتی اقول : (میں کہتا ہوں) خیریہ میں جو مذکور ہے وہ محیط سے منقول کے کچھ خلاف ہے جبکہ ظاہر وہی ہے جو محیط میں ہے، خانیہ کی عبارت یوں ہے کہ کنایہ وہ جو طلاق کا احتمال رکھے اور صراحۃً طلاق مذکور نہ ہو، جبکہ اس کا معنی یہ ہے کہ طلاق میں نص نہ ہو، یہ کیونکر نہ ہو جبکہ انہوں نے خانیہ میں فرمایا کہ اگر خاوند بیوی کو کہے " تو طلاق والی ہے پس تو عدت پوری کر " اور پھر کہے کہ میں نے فاعتدی (پس تو عدت پوری کر) سے عدت مراد لی ہے، تو اس کی نیت صحیح ہوگی اور اگر کہے کہ میں نے اس سے دوسری طلاق مراد لی ہے یا کہے کہ میں نے کوئی نیت نہیں کی، تو یہ دوسری طلاق شمار ہوگی، اور یونہی اگر "و" عطف کے ساتھ یا بغیر عطف واعتدی اور اعتدی کہے تو بھی یہی حکم ہے، تو یہاں اس بیان میں انہوں نے "اعتدی" کے کنایہ سے نیت کے ساتھ دوسری طلاق باوجودیکہ اس سے پہلے صریح طلاق

مذکور ہے، واقع ہونا تسلیم کیا ہے، تو بلا شک کنایہ میں نیت کی ضرورت نہ ہوگی جہاں صریح طلاق پہلے مذکور ہو تاکہ وہ مذاکرہ طلاق بن سکے، اس کے بر خلاف جو ہم بیان کر رہے ہیں اس میں کنایہ پہلے اور صریح بعد میں ہے

---

1 ردالمحتار باب الکنایات دار احیاء التراث العربی بیروت ۲۷۴/۲ 2 ردالمحتار باب الکنایات دار احیاء التراث العربی بیروت ۴۶۴/۲ 3 فتاوی قاضی خاں فصل فی الکنایات والمدلولات نولکشور لکھنئو ۲۱۶/۳ 4 فتاوی قاضی خاں فصل فی الکنایات والمدلولات نولکشور لکھنئو ۲۱۶/۳

Therefore, it is like "You are separate, divorce is upon you," and Allah Almighty knows best (T). Considering 'Iddah (waiting period) from the time of acknowledgement, contrary to the four Imams and the majority of the Sahaba and Tabi'un (may Allah be pleased with them all), is the fatwa of later scholars only in places of suspicion. And even there, it applies where divorce is proven only by acknowledgement. If it was known beforehand, then undoubtedly, by consensus, 'Iddah starts from the time of divorce itself. Similarly, if there is no prior proof of divorce, but the husband states he gave divorce from a certain time and has separated the wife since then, even in this case, the fatwa of later scholars does not apply. Here, both these things are present: divorce is proven before acknowledgement, and he had already separated her since that time. Therefore, taking 'Iddah from the time of acknowledgement here is explicitly false and contrary to consensus. It is stated in Rad al-Muhtar:

Arabic Text

It says in Al-Bahr: The apparent meaning of Muhammad's words in Al-Mabsut and the wording of Al-Kanz is that it is considered from the time of divorce. However, the later scholars chose its obligation from the time of acknowledgement so that it would not be lawful for him to marry her sister or four others besides her as a punishment for him since he concealed her divorce. This is the chosen view as in Al-Sughra (end of quote). Al-Sughdi reconciled between Imam Muhammad's words by applying Imam Muhammad's words to cases where they were separated from the time he attributed the divorce to. But if they were together, then the lie in their words is apparent; they are not believed in the attribution. It says in Al-Bahr: And this is the reconciliation, if Allah Almighty wills. In Al-Fath, it says that the fatwa of the

Urdu Translation / Explanation

In Al-Bahr, it is stated that in Imam Muhammad's (may Allah's mercy be upon him) Mabsut and the text of Kanz, the consideration of 'Iddah is from the time of divorce. However, later scholars have accepted the obligation of 'Iddah from the time of acknowledgement. Therefore, marriage to his wife's sister and four other women will not be lawful for him until the full 'Iddah is completed after the acknowledgement. This ruling of later scholars is a punishment for concealing the divorce, and this is the chosen view as in Sughra. Al-Sughdi reconciled the words of Imam Muhammad and the later scholars by saying that the interpretation of Imam Muhammad's (may Allah's mercy be upon him) words is when the husband and wife had separated from the stated time of divorce. If both have been living

Arabic Text

later scholars is contrary to the four Imams and the majority of the Sahaba and Tabi'un. Since their disagreement is based on suspicion, it should be limited to its appropriate places and people who are likely suspects. This is why Al-Sughdi made a distinction as he saw fit (summarized).

Page 613 of 688

Urdu Translation / Explanation

together from that time until the acknowledgement, then their lie in the stated time of divorce is apparent. Therefore, they will not be believed in the statement of time (and it will be meant from the time of acknowledgement, summarized).

फतावा रज़विया, जिल्द 12

इसलिए यह "तू अलग है, तुझे तलाक़ है" की तरह है, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है (त)। इक़रार (स्वीकृति) के समय से इद्दत का एतबार करना अइम्मा अरबआ (चार इमामों) और सहाबा व ताबेईन (रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन) के बहुमत के विपरीत परवर्ती विद्वानों (मुतअख़िरीन) का फ़तवा केवल संदेह के मामलों में है। और वह भी वहाँ जहाँ तलाक़ केवल इक़रार से प्रमाणित हुई हो। यदि पहले से ज्ञात है, तो निसंदेह सर्वसम्मति (इज्मा) से तलाक़ के समय से ही इद्दत होगी। इसी प्रकार, यदि पहले से तलाक़ का कोई प्रमाण नहीं है, लेकिन वह बयान करता है कि उसने अमुक समय से तलाक़ दी है और उस समय से पत्नी को अलग कर दिया है, तो इस स्थिति में भी परवर्ती विद्वानों का फ़तवा लागू नहीं होता। और यहाँ ये दोनों बातें मौजूद हैं: इक़रार से पहले तलाक़ प्रमाणित है, और वह उस समय से उसे अलग भी कर चुका था। अतः यहाँ इक़रार के समय से इद्दत लेना स्पष्ट रूप से बातिल (असत्य) और इज्मा के विरुद्ध है। 'रद अल-मुहतार' में है:

अरबी पाठ

'बहर' में कहा गया है: 'मबस्त' में मुहम्मद के शब्दों का स्पष्ट अर्थ और 'कन्ज़' की शब्दावली यह है कि इसे तलाक के समय से माना जाता है। हालाँकि, बाद के विद्वानों ने स्वीकृति के समय से इसके दायित्व को चुना ताकि उसे अपनी पत्नी की बहन या उसके अलावा चार अन्य महिलाओं से शादी करने की अनुमति न दी जाए, क्योंकि उसने अपनी पत्नी के तलाक को छिपाया था। यह 'अल-सुग़रा' (उद्धरण समाप्त) के अनुसार चुना गया दृष्टिकोण है। अल-सुग़दी ने इमाम मुहम्मद के शब्दों को उन मामलों पर लागू करके सामंजस्य स्थापित किया जहाँ वे उस समय से अलग हो गए थे जब उन्होंने तलाक को जिम्मेदार ठहराया था। लेकिन अगर वे साथ थे, तो उनके शब्दों में झूठ स्पष्ट है; उन पर विश्वास नहीं किया जाता। 'बहर' में कहा गया है: और यह

उर्दू अनुवाद / व्याख्या

'बहर' में कहा गया है कि इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैहि) के'मबस्त' और 'कन्ज़' के पाठ में, इद्दत का एतबार तलाक़ के समय से है। हालाँकि, परवर्ती विद्वानों ने इक़रार (स्वीकृति) के समय से इद्दत की अनिवार्यता को स्वीकार किया है। इसलिए, इक़रार के बाद पूरी इद्दत पूरी होने तक उसकी पत्नी की बहन और चार अन्य महिलाओं से विवाह उसके लिए वैध नहीं होगा। परवर्ती विद्वानों का यह आदेश तलाक़ छिपाने की सज़ा के रूप में है, और यही 'सुग़रा' के अनुसार पसंदीदा मत है। सुग़दी ने इमाम मुहम्मद और परवर्ती विद्वानों के शब्दों में यह कहते हुए सामंजस्य बिठाया कि इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैहि) के शब्दों की व्याख्या

अरबी पाठ

सामंजस्य है, यदि अल्लाह सर्वशक्तिमान चाहे। 'अल-फतह' में कहा गया है कि बाद के विद्वानों का फतवा चार इमामों और सहाबा और ताबेईन के बहुमत के विपरीत है। चूंकि उनकी असहमति संदेह पर आधारित है, इसलिए इसे इसके उचित स्थानों और उन लोगों तक सीमित रखा जाना चाहिए जो संभावित संदिग्ध हैं। इसीलिए अल-सुग़दी ने अपनी इच्छानुसार भेद किया (संक्षेप में)।

उर्दू अनुवाद / व्याख्या

तब की जाती है जब पति-पत्नी तलाक़ के बताए गए समय से अलग हो गए हों। यदि दोनों उस समय से इक़रार तक साथ रह रहे हैं, तो तलाक़ के बताए गए समय में उनका झूठ स्पष्ट है। इसलिए, समय के बयान में उन पर विश्वास नहीं किया जाएगा (और इसका मतलब इक़रार के समय से होगा, संक्षिप्त)।

لہٰذا وہ "تو جدا ہو تجھے طلاق ہے" کی طرح ہے، واللہ تعالیٰ اعلم (ت) وقتِ اقرار سے عدت معتبر ہونا کہ برخلاف ائمہ اربعہ و جمہور صحابہ و تابعین رضی اللہ تعالیٰ عنہم اجمعین فتوائے متأخرین ہے صرف محلِ تہمت میں ہے اور وہ بھی وہاں کہ طلاق صرف اقرار سے ثابت ہوا اگر پہلے سے معلوم ہے تو بلا شبہ بالاجماع وقتِ طلاق ہی سے عدت ہے، یوں ہی اگر پہلے سے طلاق کا ثبوت نہیں مگر جس وقت سے طلاق دینا بیان کرتا ہے جب سے زوجہ کو جُدا کر دیا ہے تو اس صورت سے بھی فتوائے متأخرین متعلق نہیں، اور یہاں یہ دونوں باتیں موجود ہیں طلاق قبلِ اقرار ثابت ہے اور اس وقت سے وہ اسے جُدا بھی کر چکا تو یہاں وقتِ اقرار سے عدت لینا صراحتًا باطل و خلافِ اجماع ہے۔ ردالمحتار میں ہے:

عربی عبارت	اردو ترجمہ / تشریح
قال في البحر ظاہر کلام محمد في المبسوط وعبارۃ الکنز اعتبارھا من وقت الطلاق الا ان المتأخرین اختاروا وجوبھا من وقت الاقرار حتی لایحل لہ التزوج باختھا واربع سواھا زجرالہ حیث کتم طلاقھا، وھو المختار کما فی الصغری اھ و وفق السغدی بحمل کلام محمد علی ما اذا کان متفرقین من الوقت الذي اسند الطلاق الیہ، اما اذا کان مجتمعین فالکذب فی کلامھما	بحر میں فرمایا کہ امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ کا مبسوط میں ظاہر کلام اور کنز کی عبارت میں ہے کہ عدت کا اعتبار طلاق کے وقت سے ہے مگر متأخرین نے اس میں اقرار کے وقت سے عدت کا وجوب مانا ہے، اس لئے اس کو بیوی کی بہن اور اس کے ماسوا زائد چار عورتوں سے نکاح حلال نہ ہوگا جب تک اقرار کے بعد مکمل عدت پوری نہ ہو جائے، متأخرین کا یہ حکم طلاق کو چھپانے کی سزا کے طور پر ہے اور یہی مختار ہے جیسا کہ صغریٰ میں ہے اھ، اور سغدی نے امام محمد

عربی عبارت

ظاہر لایصدقان فی الاسناد، قال فی البحر وھذا ھو التوفیق ان شاء اللہ تعالی وفی الفتح ان فتوی المتأخرین مخالفة للائمة الاربعة وجمہور الصحابہ والتابعین وحیث کانت مخالفتھم للتھمة فینبغي ان یتحری بہ محالھا و الناس الذین ھم مظانھا، ولھذا فصل السغدی بما مراہ ملخصاً۔

اردو ترجمہ / تشریح

اور متأخرین کے کلاموں میں موافقت پیدا کرتے ہوئے یوں کہا کہ امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ کے کلام کا محمل یہ ہے کہ جب خاوند اور بیوی بیان کردہ وقتِ طلاق سے علیحدگی اختیار کرچکے ہوں اور اگر وہ دونوں اس وقت سے اب اقرار تک اکٹھے رہ رہے ہوں تو پھر طلاق کے لئے بیان کردہ وقت میں دونوں کا جھوٹ ظاہر ہے اس لئے وقت کے بیان میں تصدیق نہ کی جائے گی (اور اقرار کے وقت سے ہی مراد ملخصاً)

Fatawa Razawiyya Volume Twelve

"It was confirmed in Al-Bahr and Al-Nahr."[1] (The waiting period will be counted) and it is stated in Al-Bahr that this agreement is correct, if Allah Almighty wills. And it is stated in Al-Fath that the fatwa of the later scholars is contrary to the consensus of the four Imams, the majority of the companions, and the followers (Tabi'in). So this opposition is a matter of suspicion; hence, it is better to think carefully to understand its reason. Such incidents exist among people, which is why Saghdī has provided a detailed explanation that has already been mentioned, summarized here. It has been upheld in Al-Bahr and Al-Nahr. (Translator)

Although in one and a half to two years, the completion of the waiting period for women who menstruate is not necessarily required, "for sometimes the period of purity can be prolonged" (since sometimes there are those with long periods of purity. Trans.), but there is no doubt that such a duration is certainly sufficient for the completion of the waiting period. According to the Imam (Abu Hanifa), at least two months, and according to the two companions (Imam Abu Yusuf and Imam Muhammad), three menstrual cycles can occur within thirty-nine (39) days. A woman's initiation of marriage is an admission of the completion of her waiting period, so there is no doubt about the validity of the marriage unless her claim is proven false according to Sharia. For example, if she marries one and a half years after divorce, and a child is born six months after this marriage and before two years have passed since the divorce, then in this case, it becomes clear that the waiting period had not ended. It is stated in Al-Badā'i, Al-Bahr, Durr al-Mukhtār, etc.:

"Her proceeding for marriage is evidence of the completion of her waiting period."[2] A wife's step towards marriage can be a sign that her waiting period has ended. (Trans.)

In short, Bakr's statement is purely erroneous, and the conclusion of Zaid's statement is based on the reasoning we have presented, and Allah Almighty knows best.

Problem 304: From the aforementioned questioner on the mentioned date.

Regarding this same issue, Bakr, by exerting pressure, tries to persuade Zaid with worldly honor and respect, saying, "If you admit to the admission of doubt in this matter, we will double your honor among the common people. If anyone objects, we will silence them by presenting hundreds of mistakes and doubts attributed to the Rightly Guided Caliphs and the Mujtahid Imams. In case of non-admission of doubt,

we will label you a 'Bid'ati' (innovator)." It should be considered whether showing mistakes of the elite in a minor issue as compared to the common folk is regarded as insulting the elite or not? And how is it to call a Muslim a 'Bid'ati'?

[1] Radd al-Muhtar, Chapter on Iddah, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/610. [2] Al-Bahr al-Ra'iq, Chapter on Iddah, H.M. Saeed Company, Karachi, 4/147.

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

"इक़र्रहु फ़िल बहर वन् नह्र"[1] (इसे अल-बहर और अन-नह्र में पुष्ट किया गया है।) (इद्दत गिनी जाएगी) और बहर में कहा गया है कि यह सहमति सही है, यदि अल्लाह तआला ने चाहा। और फ़त्ह में है कि बाद के विद्वानों (मुतअख़िरीन) का फ़तवा चारों इमामों, सहाबा-ए-किराम और ताबिईन के बहुमत के कथन के विपरीत है, तो यह विरोध संदेह का विषय है। इसलिए बेहतर है कि इसके कारण को समझने के लिए सोच-विचार से काम लिया जाए, और लोगों में ऐसी घटनाएँ मौजूद हैं, इसीलिए स़ग्दी ने इसका विस्तृत विवरण दिया है जो पहले गुज़र चुका है, यहाँ संक्षेप में दिया गया है। और इसे अल-बहर और अन-नह्र में स्थिर रखा गया है। (त.)

डेढ़-दो साल में हालांकि मासिक धर्म वाली महिलाओं (ज़वातिल हैज़) की इद्दत का समाप्त होना अनिवार्य नहीं है, "फ़क़द तकूनु मुम्तदतुत्तहर" (क्योंकि कभी लंबे पवित्रता काल वाली महिलाएँ भी होती हैं। त.), लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि इतनी अवधि इद्दत समाप्त होने के लिए निश्चित रूप से पर्याप्त है। इमाम (अबू हनीफ़ा) के अनुसार कम से कम दो महीने, और साहिबैन के अनुसार उनतालीस (39) दिनों में तीन मासिक धर्म गुज़र सकते हैं। और महिला का विवाह के लिए पहल करना इद्दत समाप्त होने का इक़रार है, तो निकाह की वैधता में कोई संदेह नहीं है जब तक कि महिला का यह इक़रार शरीअत के अनुसार झूठ साबित न हो जाए। जैसे कि तलाक़ के डेढ़ साल बाद निकाह किया और उस निकाह को छह महीने और तलाक़ को दो साल बीतने से पहले बच्चा पैदा हुआ, तो इस स्थिति में साफ़ ज़ाहिर हुआ कि इद्दत नहीं गुज़री थी। बदाइ, बहर, और दुर्रे मुख़्तार आदि में है:

"इक़दामुहा अलत तज़व्वुज दलीलु इन्क़िज़ा-ए इद्दतिहा"[2] (उसका विवाह के लिए आगे बढ़ना उसकी इद्दत समाप्त होने का प्रमाण है।) पत्नी का निकाह के लिए आगे बढ़ना उसकी इद्दत खत्म होने की दलील हो सकती है। (त.)

संक्षेप में, बक्र का कथन पूरी तरह गलत है और ज़ैद के कथन का सार उसी आधार पर है जिसकी हमने व्याख्या की है, और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 304: उपर्युक्त प्रश्नकर्ता द्वारा, उपर्युक्त तिथि पर।

इसी मसले के संबंध में बक्र अपनी बातों के प्रभाव से ज़ैद को दुनियावी इज़्ज़त और सम्मान का प्रलोभन देकर कहता है कि "तुम इस मसले में शुबह का इक़रार कर लो, तो हम आम लोगों के

सामने तुम्हारी इज़्ज़त दोगुनी करवा देंगे। अगर कोई आपत्ति करेगा तो ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन और अइम्मा-ए-मुजतहिदीन की सैकड़ों गलतियों और शंकाओं को पेश करके लोगों को चुप करा देंगे। और यदि शुबह का इक़रार नहीं किया, तो तुम्हें 'बिदअती' घोषित कर देंगे।" विचार किया जाए कि आम लोगों के मुक़ाबले में एक छोटे से मसले में ख़ास लोगों (बुज़ुर्गों) की गलतियाँ दिखाना क्या उनका अपमान माना जाएगा या नहीं? और एक मुसलमान को बिदअती कहना कैसा है?

[1] रद उल मुहतार, बाब अल-इद्दत, दार अहया अल-तुरास अल-अरबी, बेरूत, 2/610। [2] अल-बहर अल-राइक़, बाब अल-इद्दत, एच.एम. सईद कंपनी, कराची, 4/147।

فتاوی رضویہ جلد دو ازدہم

اقرہ فی البحر والنہر-1 (عدت شمار ہوگی) اور بحر میں فرمایا یہ موافقت درست ہے ان شاء اللہ تعالٰی۔ اور فتح میں ہے کہ متاخرین کا فتوٰی ائمہ اربعہ، جمہور صحابہ کرام اور تابعین کے قول کے مخالف ہے، تو یہ مخالفت تہمت کے مقام میں ہے، تو بہتر ہے کہ اس کی وجہ معلوم کرنے کے لئے سوچ بچار سے کام لیا جائے، اور لوگوں میں ایسے واقعات موجود ہیں اسی لئے سغدی نے اس کی تفصیل بیان کی ہے جو گزر چکی اھ ملخصاً، اور اس کو بحر اور نہر میں ثابت رکھا ہے۔ (ت)

ڈیڑھ دو سال میں اگرچہ ذوات الحیض کی مدت کا انقضاء لازم نہیں فقد تکون ممتدۃ الطھر (کیونکہ کبھی لمبے طہر والی ہوتی ہے۔ت) مگر شک نہیں کہ اتنی مدت انقضائے عدت کے لئے کافی ضرور ہے کہ امام کے نزدیک کم از کم دو مہینے اور صاحبین کے ہاں انتالیس ۳۹ دن میں تین حیض گزر سکتے ہیں اور عورت کا نکاح پر اقدام انقضائے عدت کا اقرار تو صحت نکاح میں کوئی شبہہ نہیں جب تک کہ عورت کا اس اقرار میں کذب شرعانہ ثابت ہو یوں کہ طلاق سے مثلاً ڈیڑھ برس بعد نکاح کیا اور اس نکاح کو چھ مہینے اور طلاق کو دو برس گزرنے سے پہلے بچہ پیدا ہوا کہ اس صورت میں صاف ظاہر ہوا کہ عدت نہ گزری تھی ، بدائع ، و بحر و در مختار و غیرہا میں ہے:

اقدامھا علی التزوج دلیل انقضاء عدتھا۔2 بیوی کا نکاح کے لئے اقدام اس کی عدت ختم ہونے کی دلیل ہو سکتی ہے (ت)

بالجملہ قول بکر غلط محض ہے اور حاصل قول زید کا اس وجہ پر کہ ہم نے تقریر کی ہے واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۳۰۴: سائل مذکور الصدر بتاریخ مذکور

اسی مسئلے کے متعلق بکر بزور طبع زید کو ترغیب عزت و احترام دنیاوی دلا کر کہتا ہے کہ تم اس مسئلہ میں اقرار شبہہ کا اقرار کرو تو ہم بمقابلہ عوام تمہاری عزت دونی کرادیویں گے اگر کوئی اعتراض کرے گا تو صد ہا غلطیاں و شبہات خلفائے راشدین و ائمہ مجتہدین پیش کرکے لوگوں کو سرنگوں کر دیں گے وبصورت عدم اقرار شبہہ بدعتی کا حکم لگا دیں گے، غور فرمایا جائے کہ بمقابلہ عوام کے خواص کی غلطیاں دکھلانا ایک جزئی مسئلہ میں تو ہین خواص منصور ہے یا نہیں؟ اور ایک مسلمان کو بدعتی کہنا کیسا ہے؟

1 رد المحتار باب العدة دار احیاء التراث العربی بیروت ۶۱۰/۲ 2 بحر الرائق باب العدة ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۴/ ۱۴۷

Fatawa Razawiya Volume 12

The Answer: The ruling Bakr gave that this marriage did not take place and that intimacy would be adultery was his fabrication against the pure Sharia. It is mandatory for him to admit his mistake. If he persists, then he is an innovator who does not accept the rulings of Sharia and sticks to his own forged ruling. Until then, if his fabrication was unintentional, but now if he persists knowingly, he will be an intentional fabricator against Allah, and Allah Almighty says:

"Only they forge lies who believe not." (1) (T) — Those who do not believe are the ones who make up false fabrications.

And Allah Almighty says:

"Indeed, those who invent falsehood about Allah will not succeed." (2) (T) — Surely those who invent lies against Allah will not find success.

His giving the bribe of greed that 'we will increase your honor' is impure and rejected. All honor is in the hands of Allah.

"Do they seek honor from them? For surely all honor is Allah's." (3) — Do they seek honor with them? Then surely all honor belongs to Allah.

Knowingly calling the truth false and by retracting from the truth, showing doubt in it, is not a cause for honor but a cause for severe humiliation in both worlds. The Rightly Guided Caliphs and the Mujtahid Imams (may Allah be pleased with them) never retracted from the truth. Mentioning them in such a way is undoubtedly an insult; Bakr is disrespectful and religiously compromised. And Allah Almighty knows best.

Problem 305: From Marehra, District Etah, behind the police station, sent by Ismatullah Khan Qadri, 9 Jamadi al-Ula 1346 AH.

Ms. Majeedan, who was about 9 years old, was married to her paternal aunt's son, Rahim Khan. There was never any intimacy between them as husband and wife should have. Currently, Majeedan's age is about 13 years. Her husband has spread rumors in the village that he is not a man nor capable of a woman. A few people, including relatives and strangers...

1. Al-Quran 16/105
2. Al-Quran 10/69

3. Al-Quran 4/139

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

उत्तर (अल-जवाब): बक्र ने जो फैसला सुनाया था कि यह निकाह नहीं हुआ और शारीरिक संबंध ज़िना (व्यभिचार) होगा, यह शरीअत-ए-मुतह्हरा पर उसका झूठा आरोप (इफ़्तरा) था। उस पर अपनी गलती स्वीकार करना अनिवार्य है। यदि वह इस पर अड़ा रहता है, तो वही बिदअती है जो शरीयत के अहकाम को नहीं मानता और अपने गढ़े हुए हुक्म पर डटा हुआ है। अब तक यदि उसका यह आरोप अनजाने में था और अब जानबूझकर अड़ा रहेगा तो वह अल्लाह पर जानबूझकर झूठ गढ़ने वाला होगा, और अल्लाह अज़्ज़-ओ-जल्ल फ़रमाता है:

"झूठा इफ़्तरा (आरोप) वही लोग गढ़ते हैं जो ईमान नहीं लाते।" (1) (त)

और अल्लाह अज़्ज़-ओ-जल्ल फ़रमाता है:

"बेशक जो लोग अल्लाह तआला पर झूठ मढ़ते हैं वे फ़लाह (कल्याण) नहीं पाएंगे।" (2) (त)

उसका लालच की रिश्वत देना कि 'हम तुम्हारी इज़्ज़त बढ़ा देंगे' नापाक और अस्वीकार्य है। सारी इज़्ज़त अल्लाह के हाथ में है।

"क्या वे उनके पास इज़्ज़त चाहते हैं? तो बेशक सारी इज़्ज़त अल्लाह तआला के लिए है।" (3)

जानबूझकर सच को झूठ कहना और सच से पलटकर उसमें अपना संदेह जताना सम्मान का कारण नहीं बल्कि दोनों जहाँ में घोर अपमान का कारण है। खुलफ़ा-ए-राशिदीन और आइम्मा-ए-मुजतहिदीन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) ने कभी भी सच से मुँह नहीं मोड़ा। उनके बारे में इस तरह बात करना निस्संदेह अपमान है; बक्र बदतमीज़ और धर्म-भ्रष्ट है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसला 305: मारहरा, जिला एटा, थाने के पीछे से प्रेषक अस्मतुल्लाह खान क़ादरी, 9 जमादी-उल-उला 1346 हिजरी।

मुसम्मात मजीदन, जिसकी उम्र लगभग 9 साल थी, का निकाह उसकी बुआ के लड़के रहीम खान से हुआ। स्त्री-पुरुष का जैसा मेल-जोल होना चाहिए, वैसा कभी नहीं हुआ। वर्तमान में मजीदन की उम्र

लगभग 13 साल है। उसके पति ने गाँव में मशहूर कर दिया कि वह मर्द नहीं है और न ही औरत के काबिल है। कुछ लोग, जिनमें रिश्तेदार और गैर-लोग...

1. अल-क़ुरान 16/105
2. अल-क़ुरान 10/69
3. अल-क़ुरान 4/139

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

الجواب: بکر نے جو حکم لگایا تھا کہ یہ نکاح نہ ہوا اور تمتع زنا ہو گا یہ شریعتِ مطہرہ پر اس کا افتراء تھا، اسی پر اپنی خطا کا اقرار لازم ہے، اگر اصرار کرے تو وہی بدعتی ہے کہ احکام شریعت کو نہیں مانتا اور اپنے گھڑے حکم پر جما ہے اس وقت تک اگر اس کا افتراء نادانستہ تھا اور اب جان کر مُصر ہوگا تو قصداً مفتری علی اللہ ہوگا، اور اللہ عزوجل فرماتا ہے:

اِنَّمَا یَفْتَرِی الْکَذِبَ الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ۔۱ جھوٹا افتراء وہ لوگ بناتے ہیں جو ایمان نہیں لاتے۔ (ت)

اور اللہ عزوجل فرماتا ہے:

اِنَّ الَّذِیْنَ یَفْتَرُوْنَ عَلَی اللہِ الْکَذِبَ لَا یُفْلِحُوْنَ۔۲ بیشک جو لوگ اللہ تعالٰی پر جھوٹ افتراء بازی کرتے ہیں وہ فلاح نہیں پائیں گے۔ (ت)

اس کا یہ طمع کی رشوت دینا کہ ہم تمہاری عزت بڑھادیں گے ناپاک و مردود ہے، عزت سب اللہ کے ہاتھ ہے،

اَیَبْتَغُوْنَ عِنْدَہُمُ الْعِزَّۃَ فَاِنَّ الْعِزَّۃَ لِلّٰہِ جَمِیْعًا۔۳ کیا وہ ان کے ہاں عزت چاہتے ہیں تو عزت ساری کی ساری بیشک اللہ تعالٰی کے لئے ہے (ت)

دانستہ حق کو باطل کہنا اور حق سے رجوع کر کے اس میں اپنا شبہ بتانا موجب عزت نہیں دارین میں سخت ذلت کا باعث ہے، خلفائے راشدین و ائمہ مجتہدین رضی اللہ تعالٰی عنہم نے کبھی رجوع عن الحق نہ فرمائی ان کا اس طرح ذکر بلاشبہ توہین ہے بکر بے ادب مختل الدین ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۰۵: از مارہرہ ضلع ایٹہ عقب تھانہ مرسلہ عصمت اللہ خاں قادری ۹ جمادی الاولیٰ ۱۳۴۶ھ

مسماۃ مجیدن جس کی عمر قریب ۹ سال کے تھی اس کا نکاح اس کی پھپھی کے لڑکے رحیم خاں سے ہوا، کبھی میل جول عورت مرد کا جیسا ہونا چاہئے نہ ہوا، اس وقت مجیدن کی عمر قریب ۱۳ سال کے ہے اس کے شوہر نے گاؤں میں مشہور کیا کہ وہ مرد نہیں ہے نہ عورت کے قابل، چند آدمی اپنے رشتہ دار اور غیر لوگوں

۱ القرآن ۱۰۵/۱۶ ۲ القرآن ۶۹/۱۰ ۳ القرآن ۱۳۹/۴

Fatawa Ridawiyya Volume 12

And he said to his mother-in-law, "I am not capable, I will give an answer; have her married to my younger brother, she is not a wife but a maternal cousin." At this, his mother-in-law became very unhappy. Now, when asked for an answer, he refuses; sometimes he says, "I have now become a man," and sometimes he tells people, "I will cut off this woman's nose." This woman does not want to go to his house, nor does her mother want to send her; instead, she wants to get married elsewhere. Can that woman now marry elsewhere without getting a divorce?

The Answer:

His saying that "I am not capable," and "I will give an answer," and "she is not my wife," and "she is a maternal cousin," none of these words are words of divorce. However, his words "marry her to so-and-so" can be a metaphorical divorce (Kinayah).

[Arabic quote]: Ali ma'na zawwijuha fulanan li'anni tallaqtuha kama qala Sh fi man zawwaja imra'atahu min ghayrihi muwajjihan li man qala in nawa tallaqat la'alla wajhahu anna qawlahu zawwajtuka imra'ati fulanah yahtamilu an yakuna ala taqdiri in sahha tazwijuha minka aw taqdiri li'annaha taliqun minni fa'idha nawa al-tallaqa ta'ayyana al-thani fatatluq. Ah.

It corresponds to: "Marry her to so-and-so because I have divorced her," as Allama Shami mentioned regarding the statement of the author "The one who marries his wife to another." Regarding this, he said if divorce was intended, divorce will occur. Explaining this statement, he said the husband's saying "I married my such-and-such wife to you" has one possibility that "I married her to you if marrying her to you is permissible." And the second possibility is "I married her to you because I have divorced her." So, when he says it with the intention of divorce, only the second possibility will be meant, therefore divorce will occur. End (T).

Rahim Khan should be made to swear an oath whether he had the intention of divorce with these words or not. If he swears that he did not intend divorce with these words, divorce will not be established, and marrying elsewhere would be purely forbidden (haram). If he refuses to swear, divorce will be established, and the woman from that time when...

1. Radd al-Muhtar, Chapter of Metaphors, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/474.

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

और अपनी सास से यह कहा कि मैं किसी काबिल नहीं हूँ, मैं जवाब दे दूँगा, मेरे छोटे भाई से उसका निकाह कर दो, यह बीवी नहीं है बल्कि मामूँ-ज़ाद बहन है। इस पर उसकी सास बहुत नाख़ुश हुई। अब उससे जवाब के लिए कहा जाता है तो वह इनकार करता है, कभी कहता है मैं अब मर्द हो गया हूँ, कभी लोगों से कहता है मैं इस औरत की नाक काट लूँगा। यह औरत उसके घर नहीं जाना चाहती न उसकी माँ उसको भेजना चाहती है, बल्कि दूसरी जगह निकाह करना चाहती है। क्या वह औरत अब बिना तलाक़ लिए दूसरी जगह अपना निकाह कर सकती है?

जवाब:

उसका यह कहना कि "मैं किसी काबिल नहीं हूँ" और यह कि "मैं जवाब दे दूँगा", और यह कि "मेरी बीवी नहीं", और यह कि "मामूँ-ज़ाद बहन है", इनमें से कोई लफ़्ज़ तलाक़ का कलमा नहीं है। अलबत्ता उसका यह लफ़्ज़ कि "फलाँ से उसका अक्द (निकाह) कर दो" किनाया-ए-तलाक़ (तलाक़ का इशारा) हो सकता है।

[अरबी उद्धरण]: अली माना ज़व्विजुहा फ़ुलानन लि-अन्नी तल्लाक्तुहा कमा काला श फ़ी मन ज़व्वजा इमरा-अतहु मिन गैरिही मुवज्जिहन लि-मन काला इन नवा तल्लाकत लअल्ला वज्हहु अन्ना कौलहु ज़व्वज्तुका इमरा-अती फ़ुलानह यहतमिलु अन यकूना अला तक़दीरि इन सह्हा तज़्वीजुहा मिन्का औ तक़दीरि लि-अन्नहा तालिकुन मिन्नी फ़-इज़ा नवा अत-तल्लाक़ तअय्यना अस-सानी फ़-ततलुक। अह।

"उसका निकाह फलाँ से कर दो क्योंकि मैंने उसको तलाक़ दे दी है" के मुताविक है, जैसा कि अल्लामा शामी ने 'मातिन' के कौल "जिसने अपनी बीवी का निकाह दूसरे से कर दिया" के मुताल्लिक जिसने कहा अगर तलाक़ की नियत की हो तो तलाक़ हो जाएगी। इस कौल की तौजीह बयान करते हुए कहा कि शौहर का कहना कि "मैंने अपनी फलाँ बीوی का तुझसे निकाह किया", इसमें एक एहतेमाल (संभावना) यह है कि "तुझसे निकाह किया अगर तुझसे निकाह करना जायज़ हो।" और दूसरा एहतेमाल यह है कि "तुझसे निकाह क्योंकि मैंने उसको तलाक़ दे रखी है", तो जब तलाक़ की नियت से कहे तो सिर्फ दूसरा एहतेमाल मुराद होगा, इसलिए तलाक़ हो जाएगी। अह (त)।

रहीम ख़ान से क़सम ली जाए कि तूने इस लफ़्ज़ से तलाक़ की नियत की थी या नहीं। अगर वह क़सम खा लेगा कि मैंने इस लफ़्ज़ से तलाक़ की नियत नहीं की थी, तो तलाक़ साबित नहीं होगी, दूसरी

जगह निकाह करना महज़ हराम होगा। और अगर क़सम खाने से इनकार कर देगा तो तलाक़ साबित हो जाएगी और औरत उसी वक्त से जब से...

---

1. रद-उल-मुहतार, बाब-अल-किनायात, दार इहया अत-तुरास अल-अरबी, बेरुत, 2/474.

पेज 616/688

فتاوی رضویہ جلد دوازدھم

اور اپنی ساس سے یہ کہا کہ میں کسی قابل نہیں ہوں میں جواب دے دوں گا میرے چھوٹے بھائی سے اس کا عقد کردو یہ بیوی نہیں ہے بلکہ ماموں زاد بہن ہے۔ اس پر اس کی ساس بہت ناخوش ہوئی، اب اس سے جواب کے لئے کہا جاتا ہے وہ انکار کرتا ہے، کبھی کہتا ہے میں اب مرد ہو گیا، کبھی لوگوں سے کہا میں اس عورت کی ناک کاٹ لوں گا۔ یہ عورت اس کے گھر جانا نہیں چاہتی نہ اس کی ماں اس کو بھیجنا چاہتی ہے بلکہ دوسری جگہ نکاح کرنا چاہتی ہے۔ آیا وہ عورت اب بلا طلاق لئے دوسری جگہ اس کا نکاح کر سکتی ہے؟

الجواب:

اس کا کہنا کہ میں کسی قابل نہیں اور یہ کہ میں جواب دے دوں گا، اور یہ کہ میری بی بی نہیں، اور یہ کہ ماموں زاد بہن ہے، ان میں سے کوئی لفظ کلمہ طلاق نہیں البتہ اس کا یہ لفظ کہ "فلاں سے اس کا عقد کر دو" کنایہ طلاق ہو سکتا ہے،

علی معنی زوجوھا فلانا لانی طلقتھا کما قال ش فیمن زوج امرأتہ من غیرہ موجھا لمن قال ان نوی طلقت لعل وجھہ ان قولہ زوجتك امرأتی فلانۃ یحتمل ان یکون علی تقدیر ان صح تزویجھا منك او تقدیر لانھا طالق منی فاذا نوی الطلاق تعین الثانی فتطلق اھ

"اس کا نکاح فلاں سے کر دو کیونکہ میں نے اس کو طلاق دے دی ہے" کے مطابق ہے، جیسا کہ علامہ شامی نے ماتن کے قول "جس نے اپنی بیوی کا نکاح دوسرے سے کر دیا" کے متعلق جس نے کہا اگر طلاق نیت کی ہو طلاق ہو جائیگی اس قول کی توجیہ بیان کرتے ہوئے کہا خاوند کا کہنا کہ "میں نے اپنی فلاں بیوی کا تجھ سے نکاح کیا" اس میں ایک احتمال یہ ہے کہ تجھ سے نکاح کیا

اگر تجھ سے نکاح کرنا جائز ہو۔ اور دوسرا احتمال یہ ہے تجھ سے نکاح کیونکہ میں نے اس کو طلاق دے رکھی ہے، تو جب طلاق کی نیت سے کہے تو صرف دوسرا احتمال مراد ہوگا، اس لئے طلاق ہو جائے گی اھ (ت)

رحیم خاں سے قسم لی جائے کہ تُونے اس لفظ سے طلاق کی نیت کی تھی یا نہیں، اگر قسم کھالے گا کہ میں نے اس لفظ سے طلاقِ مجید کی نیت نہ کی تھی طلاق ثابت نہ ہوگی دوسری جگہ نکاح حرام محض ہوگا، اور اگر قسم کھانے سے انکار کر دے گا تو طلاق ثابت ہو جائے گی اور عورت اسی وقت سے جب سے

---

1 رد المحتار باب الکنایات دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/ ۴۷۴

These words he spoke to his mother-in-law, she will be considered out of the marriage. Then, if there was no privacy (consummation) at all, the woman became eligible for a second marriage from the very moment of divorce. And if there was privacy, although he could not have intercourse, if the 'iddah, i.e., three menstrual cycles, have started and finished since then, then she can marry someone else now, otherwise whenever they finish. And if Rahim Khan is not found so that an oath could be administered to him, then divorce is not proven, and marriage (with another) will be forbidden. Allah Almighty said: "And [also prohibited are] women already married" (Allah Almighty said: And married women are forbidden. -T). And Allah Almighty knows best.

Problem 306: From Chhappar Mohalla, Nayi Bazar, Tiruna, sent by Haji Abdul Razzaq Sahib, 1st Sha'ban 1336 AH. Zaid repeatedly said to his wife in a state of anger, "Get away from our sight and presence." When she does not move away from him, at that time he runs with a shoe, then she separates from him. Does divorce occur or not?

The Answer: If he did not say these words with the intention of divorce, then no divorce occurred. And if he said them even once with the intention of divorce, then divorce took place and the woman is out of the marriage. An oath should be taken from the man; if he says under oath that "I never said these words with the intention of divorce," then the ruling of divorce will not be given. If he takes a false oath, the burden of sin is upon him. It is not necessary for this oath to be in front of a judge; the woman can take the oath at home. In Durr-e-Mukhtar, it is:

"Taking an oath from her husband in his house is sufficient." And Allah Almighty knows best. (T)

Problem 307: What do the scholars of religion and the muftis of the firm Shariah say regarding this matter: that it has been about 11 years since my marriage took place. My husband turned me out of his house three or four times. Relatives gathered and brought me back to my husband's place, and after some time, my husband turned me out of the house again and said, "You get out, from today there is no relationship of any kind between me and you." Now, for a period of 6 or 7 years, I have been at my parents' house. In the meantime, two individuals went to my husband's house on the fixed date of 2nd Shawwal 1336 AH, Friday, and they said these words to my husband: "Your wife is in great distress and she is your..."

1. Al-Quran 4/24
2. Durr-e-Mukhtar, Bab al-Kinayaat, Matba' Mujtabai Delhi, 1/242 Page 617 of 688

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

ये अलफ़ाज़ उसने अपनी सास से कहे थे, वह निकाह से बाहर समझी जाएगी। फिर अगर ख़लवत असलन न हुई तो औरत वक़्त-ए-त़लाक़ ही से निकाह-ए-सानी की महल हो गई। और अगर ख़लवत हुई थी अगरचे जमाअ न कर सका, तो अगर तब से अब तक इद्दत यानी तीन हैज़ शुरू होकर ख़त्म हो गए, तो अब वह दूसरे से निकाह कर सकती है, वरना जब ख़त्म हों। और अगर रहीम ख़ान न मिले कि उस पर क़सम रखी जाती, तो त़लाक़ साबित नहीं, और (दूसरे से) निकाह हराम होगा। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: 'وَ الْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ' (अल्लाह तआला ने फ़रमाया: और शादीशुदा औरतें तुम पर हराम हैं। -त) वल्लाहु तआला आलम।

मसअला 306: अज़ छप्पर मोहल्ला नई बाज़ार, तर्बना, मुरसला हाजी अब्दुल रज़्ज़ाक़ साहब, यकुम शाबान 1336 हिजरी। ज़ैद ने बार-बार अपनी बीवी को गुस्से की हालत में कहा, "तुम हमारे सामने और नज़र से दूर हो जाओ।" जब वह सामने से दूर नहीं होती, उस वक़्त वह जूता लेकर दौड़ता है तब वह सामने से अलग हो जाती है। क्या त़लाक़ वाक़े होती है या नहीं?

अल-जवाब: अगर उसने ब-निय्यत-ए-त़लाक़ ये अलफ़ाज़ न कहे तो त़लाक़ न हुई। और अगर एक बार भी ब-निय्यत-ए-त़लाक़ कहे तो त़लाक़ हो गई, औरत निकाह से निकल गई। मर्द से क़सम ली जाए; अगर वह हलफ़ से कह दे कि "मैंने ये लफ़्ज़ कभी ब-निय्यत-ए-त़लाक़ नहीं कहे" तो हुक्म-ए-त़लाक़ न देंगे। अगर झूठी क़सम खाएगा तो वबाल उस पर है। यह क़सम हाकिम के सामने होना ज़रूरी नहीं, औरत घर में क़सम ले सकती है। "दुर्रे मुख्तार" में है:

"औरत का ख़ाविन्द से घर में क़सम ले लेना काफ़ी है। वल्लाहु तआला आलम। (त)"

मसअला 307: क्या फ़रमाते हैं उलमा-ए-दीन व मुफ़्तियान-ए-शरअ-ए-मतीन इस मसअले में कि अरसा तक़रीबन 11 साल का हुआ मेरी शादी को हुए। मेरे शौहर ने मुझे तीन-चार बार अपने मकान से निकाल दिया। बिरादरान जमा हुए और मुझे मेरे शौहर के यहाँ पहुँचा दिया, और फिर कुछ अरसा के बाद मेरे शौहर ने मुझे फिर अपने मकान से बाहर निकाल दिया और कह दिया कि "तू निकल जा, आज से मुझसे और तुझसे किसी क़िस्म का कुछ तअल्लोक़ नहीं"। अब अरसा 6-7 साल से अपने वालिदैन के मकान पर हूँ। दर-ऐन दौरान दो शख़्स मुक़र्ररा तारीख़ 2 शव्वाल 1336 हिजरी यौम-ए-जुमा को मेरे शौहर के मकान पर गए और उन्होंने ये लफ़्ज़ मेरे शौहर से कहे कि "तुम्हारी बीवी बहुत तक़लीफ़ में है और वह तुम्हारी..."

1. अल-क़ुरआन 4/24
2. दुर्रे मुख्तार, बाब अल-किनायात, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/242 पेज 617 ऑफ़ 688

فتاوی رضویہ، جلد دو از دہم

یہ الفاظ اس نے اپنی ساس سے کہے تھے نکاح سے باہر سمجھی جائے گی پھر اگر خلوت اصلا نہ ہوئی جب تو عورت وقت طلاق ہی سے نکاح ثانی کی محل ہو گئی اور اگر خلوت ہوئی اگرچہ جماع نہ کرسکا تو اگر جب سے اب تک عدت یعنی تین حیض شروع ہو کر ختم ہوگئے تو اب ورنہ جب ختم ہوں دوسرے سے نکاح ہوسکتا ہے اور اگر رحیم خاں نہ ملے کہ اس پر قسم رکھی جاتی تو طلاق ثابت نہیں نکاح حرام ہوگا قال اللہ تعالٰی وَ الْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ ۱ (اللہ تعالٰی نے فرمایا: اور شادی شدہ عورتیں حرام ہیں۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۰۶: از چھپّر محلہ نئی بازار تربنہ مرسلہ حاجی عبد الرزاق صاحب یکم شعبان ۱۳۳۶ھ زید نے بار ہا اپنی بی بی کو غصہ کی حالت میں کہا تم ہمارے سامنے و نظر سے دور ہو جاؤ جب وہ سامنے سے دُور نہیں ہوتی اس وقت وہ جوتا لے کر دوڑتا ہے تب وہ سامنے سے علیحدہ ہو جاتی ہے آیا طلاق عائد ہوتا ہے یا نہیں؟

الجواب: اگر اس نے بہ نیت طلاق یہ الفاظ نہ کہے تو طلاق نہ ہوئی، اور اگر ایک بار بھی بہ نیت طلاق کہے تو طلاق ہوگئی عورت نکاح سے نکل گئی مرد سے قسم لی جائے اگر حلف سے کہہ دے کہ میں نے یہ لفظ کبھی بہ نیت طلاق نہ کہے تو حکم طلاق نہ دیں گے ،اگر جھوٹی قسم کھائے گا وبال اس پر ہے ، یہ قسم حاکم کے سامنے ہونا ضروری نہیں عورت گھر میں قسم لے سکتی ہے۔ درمختار میں ہے:

یکفی تحلیفہالہ فی منزلہ ۲۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ عورت کا خاوند سے گھر میں قسم لے لینا کافی ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۳۰۷: کیا فرماتے ہیں علمائے دین ومفتیانِ شرعِ متین اس مسئلہ میں کہ عرصہ تقریباً ۱۱سال کا ہوا میری شادی کو ہوئے، میرے شوہر نے مجھ کو تین چار بار اپنے مکان سے نکال دیا ، برادر جمع ہوئے اور مجھ کو میرے شوہر کے یہاں پہنچا دیا ، اور پھر چند عرصہ کے بعد میرے شوہر نے مجھ کو اپنے مکان سے باہر نکال دیا اور کہہ دیا کہ "تُو نکل جا، آج سے مجھ سے اور تجھ سے کسی قسم کا کچھ تعلق نہیں"۔ اب عرصہ چھ ۷ سال سے اپنے والدین کے مکان پر ہوں، درانِ دوان دو شخص مقررہ مؤرخہ ۲ شوال ۱۳۳۶ھ یومِ جمعہ کو میرے شوہر کے مکان پر گئے اور انہوں نے یہ لفظ میرے شوہر سے کہے کہ تمہاری بی بی بہت تکلیف میں ہے اور وہ تمہارے

---

۱ القرآن ۴/۲۵ ۲ درمختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۴۲ Page 617 of 688

(She) wants to come near (reunite), to which my husband replied, "She has not been my wife from the date she left, and I had divorced her from that date; I had only kept it (the fact) to bother her." Now what do the scholars of religion say regarding this issue, whether I remained in the marital bond of my husband or not?

The Answer: In the inquired situation, one 'Talaq-e-Bain' (irrevocable divorce) has occurred on the woman and she has left his marriage. If, from that day until now, which the questioner describes as a period of six years, she has undergone and completed three menstrual cycles, as is apparent, then in this case she has the choice to marry whomever she wishes. And if perhaps three cycles have not yet occurred, then when they are completed, marriage to another will be permissible for her. This is because he has confessed to giving divorce six years ago, and both have been separate since that time, so the Iddah (waiting period) will be calculated from then. It is in Radd al-Muhtar:

[Table/Column Section]

Left Column (Arabic Source): It is stated in Al-Bahr: The apparent meaning of Imam Muhammad's speech in Al-Mabsut and the wording of Al-Kanz is that it (Iddah) is considered from the time of divorce. However, the later scholars chose its obligation from the time of confession, so that it is not permissible for him to marry her sister or four other women besides her as a punishment for him since he concealed her divorce. This is the chosen view as in Al-Sughra. Al-Saghdi reconciled by applying Imam Muhammad's speech to when they were separate from the time the divorce was attributed to, but if they were together, then the falsehood in their speech is apparent, so they are not believed in the attribution. It is stated in Al-Bahr: This is the reconciliation, God willing. And in Al-Fath: Indeed, the fatwa of the later scholars is contrary to the four Imams.

Right Column (Urdu Translation/Explanation): It is stated in Bahr that in Mabsut, Imam Muhammad's apparent words and the text of Kanz state that the waiting period (Iddah) is considered from the time of divorce. But the later scholars have deemed the obligation of Iddah from the time of confession. Therefore, it will not be permissible for such a person to marry the wife's sister or four women other than his wife until the full Iddah is completed after the confession. This ruling of the later scholars is as a punishment for concealing the divorce, and this is the chosen view as in Sughra. Al-Saghdi, while creating harmony between the words of Imam

Muhammad and the later scholars, said that the intent of Imam Muhammad's (RA) words is when the husband and wife had already separated from the stated time of divorce. And if both have been living together from that time until the time of confession, then the lie of both is apparent. Therefore, they will not be affirmed in their statement of time (and Iddah will be counted from the time of confession).

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

वह (स्त्री) पास आना चाहती है, जिस पर मेरे पति ने यह जवाब दिया कि "वह मेरी पत्नी तो उसी तारीख से नहीं रही जब से वह गई है और उसी तारीख से छोड़ चुका हूँ, सिर्फ उसे परेशान करने के लिए छोड़ रखा है"। अब धर्म के विद्वान इस विषय में क्या कहते हैं कि मैं अपने पति के विवाह बंधन में रही या नहीं?

अल-जवाब (उत्तर): पूछी गई स्थिति में स्त्री पर एक 'तलाक-ए-बाइन' (अपरिवर्तनीय तलाक) हो गया और वह उसके विवाह बंधन से निकल गई। यदि उस दिन से अब तक, जिसे प्रश्नकर्ता ने छह साल की अवधि बताया है, उसे तीन मासिक धर्म शुरू होकर समाप्त हो गए हों, जैसा कि स्पष्ट है, तो इस स्थिति में उसे अधिकार है कि जिससे चाहे विवाह कर ले। और यदि शायद अभी तीन मासिक धर्म नहीं हुए हों, तो जब हो जाएँ तब उसके लिए दूसरे से विवाह करना जायज होगा, क्योंकि वह छह वर्ष से तलाक देने का स्वीकारोक्ति कर रहा है और वे दोनों उसी समय से अलग हैं, तो इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) तभी से मानी जाएगी। 'रद अल-मुहतार' में है:

[तालिका/कॉलम खंड]

बायाँ कॉलम (अरबी मूल): 'बहर' में कहा गया है कि 'मबसूत' में इमाम मुहम्मद का स्पष्ट कथन और 'कन्ज़' के शब्दों में है कि इद्दत का विचार तलाक के समय से है। हालांकि, बाद के विद्वानों ने स्वीकारोक्ति (इकरार) के समय से इसकी अनिवार्यता को चुना है, ताकि उसे उसकी बहन या उसके अलावा चार अन्य महिलाओं से निकाह करने की अनुमति न हो, उसे तलाक छिपाने की सजा के रूप में। यही चुनी हुई राय है जैसा कि 'अल-सुघरा' में है। अस-सगदी ने इमाम मुहम्मद के कथन को उस स्थिति पर लागू करके सामंजस्य बिठाया जब वे उस समय से अलग थे जिस समय तलाक दिया गया था, लेकिन यदि वे साथ थे, तो उनके शब्दों में झूठ स्पष्ट है, इसलिए उस श्रेय में उन पर विश्वास नहीं किया जाता है। 'बहर' में कहा गया है: यह सामंजस्य है, यदि ईश्वर ने चाहा। और 'अल-फतह' में: वास्तव में बाद के विद्वानों का फतवा चारों इमामों के विरुद्ध है।

दायाँ कॉलम (उर्दू अनुवाद/व्याख्या): 'बहर' में कहा गया है कि 'मबसूत' में इमाम मुहम्मद का स्पष्ट कथन और 'कन्ज़' के शब्दों में है कि इद्दत का विचार तलाक के समय से है। लेकिन बाद के विद्वानों ने इसमें स्वीकारोक्ति (इकरार) के समय से इद्दत की अनिवार्यता मानी है, ताकि ऐसे व्यक्ति के लिए पत्नी की बहन और उसकी पत्नी के अलावा चार महिलाओं से निकाह तब तक हलाल न हो जब तक

कि स्वीकारोक्ति के बाद पूरी इद्दत समाप्त न हो जाए। बाद के विद्वानों का यह आदेश तलाक छिपाने की सजा के तौर पर है, और यही चुनिंदा विचार है जैसा कि 'सुघरा' में है। सघदी ने इमाम मुहम्मद और बाद के विद्वानों के कथनों के बीच सामंजस्य बिठाते हुए कहा कि इमाम मुहम्मद (रहमतुल्लाह अलैहि) के कथन का अर्थ यह है कि जब पति-पत्नी बताए गए तलाक के समय से अलग हो चुके हों। और यदि वे दोनों उस समय से स्वीकारोक्ति के समय तक साथ रह रहे हों, तो दोनों का झूठ स्पष्ट है, इसलिए समय के विवरण में दोनों की पुष्टि नहीं की जाएगी (और इद्दत स्वीकारोक्ति के समय से ही गिनी जाएगी)।

पृष्ठ 618/688

فتاوی رضویه جلد دواز دہم

پاس آنا چاہتی ہے، اس پر میرے شوہر نے یہ جواب دیا کہ "وہ میری بی بی تو اسی تاریخ سے نہیں رہی جب سے وہ گئی ہے اور اسی تاریخ سے چھوڑ چکا ہوں صرف اس کو پریشان کرنے کے واسطے چھوڑ رکھا ہے"۔ اب کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ میں اپنے شوہر کی زوجیت میں رہی یا نہیں؟

الجواب: صورت مستفسرہ میں عورت پر ایک طلاق بائن ہوگئی اور وہ اس کی زوجیت سے نکل گئی، اگر اس روز سے آج تک جسے سائلہ چھ سال کا عرصہ بتاتی ہے اسے تین حیض شروع ہو کر ختم ہو گئے ہوں جیسا کہ ظاہر یہی ہے اس صورت میں اسے اختیار ہے جس سے چاہے نکاح کرلے، اور اگر شاید ابھی تین حیض نہ ہوئے ہوں تو جب ہو جائیں اس وقت اسے دوسرے سے نکاح جائز ہوگا اس لئے کہ وہ چھ برس سے طلاق دینے کا مقر ہے اور وہ دونوں اسی وقت سے جدا ہیں تو عدت جبھی سے لی جائے گی۔ ردالمختار میں ہے :

[Table Content]

قال في البحر وظاهر كلام محمد في المبسوط وعبارة الكنز اعتبارها من وقت الطلاق، الان المتاخرين اختاروا وجوبها من وقت الاقرار حتى لا يحل له التزوج باختها واربع سواها زجرا له حيث كتم طلاقها وهو المختار كما في الصغرى اه ووفق السغدى بحمل كلام محمد على ما اذا كان متفرقين من الوقت الذى اسند الطلاق اليه، اما اذا كانا مجتمعين فالكذب في كلامهما ظاهر فلا يصدقان في الاسناد قال في البحر وهذا هو التوفيق ان شاء الله تعالىٰ وفي الفتح ان فتوى المتاخرين مخالفة للائمة الاربعة و

بحر میں فرمایا کہ مبسوط میں امام محمد کا ظاہر کلام اور کنز کی عبارت میں ہے کہ عدت کا اعتبار طلاق کے وقت سے ہے مگر متاخرین نے اس میں اقرار کے وقت سے عدت کا وجوب مانا ہے اس لئے ایسے شخص کو بیوی کی بہن اور اس کی بیوی کے ماسوا چار عورتوں سے نکاح حلال نہ ہو گا جب تک اقرار کے بعد مکمل عدت پوری نہ ہو جائے، متاخرین کا یہ حکم طلاق کو چھپانے کی سزا کے طور پر ہے، اور یہی مختار ہے جیسا کہ صغری میں ہے اھ، اور سغدی نے امام محمد اور متاخرین کے کلاموں میں موافقت پیدا کرتے ہوئے کہا کہ امام محمد رحمہ اللہ تعالیٰ کے کلام کا محمل یہ ہے کہ جب خاوند و بیوی بیان کردہ وقتِ طلاق سے علیحدگی اختیار کر چکے ہوں، اور اگر وہ دونوں اس وقت سے وقتِ اقرار تک اکٹھے رہ رہے ہوں، تو دونوں کا جھوٹ ظاہر ہے لہذا وقت کے بیان میں دونوں کی تصدیق نہ کی جائے گی (اور اقرار کے وقت سے ہی عدت شمار ہوگی)

Fatawa Razawiyya | Volume 12

Arabic Text Segment: The majority of the Companions and the Followers (may Allah be pleased with them) [held this]. Since their opposition is due to suspicion, it is appropriate to investigate the situations and people where such suspicion is likely. Therefore, Al-Saghdi detailed the matter, and it was affirmed in Al-Bahr and Al-Nahr. I say: The matter was attributed to his acknowledgment because his saying "Nikal ja" (Get out) carries the possibility of being a rejection, as jurists have specified. And his saying "Talluq nahi" (No connection) carries the possibility of an insult, as we have researched in Jadd al-Mumtar. Since the state was one of anger, a ruling of divorce will not be given unless he acknowledges the intention for divorce. And the word "Chhodna" (leaving/divorcing) is explicit divorce in our language. So if his statement "from this date etc." refers back to those two previous phrases, it will be considered an acknowledgment of the intention for divorce. Therefore, by consensus, the waiting period (iddah) will be counted from that date. If his words are turned from the well-known meaning to an obscure and hidden one, or the acknowledgment is deemed false—even though this is contrary to the obvious—it would be an initiation (insha) of divorce. In that case, the present time will be considered, and the iddah will be counted from then, as mentioned in the case of agreement. And Allah the Almighty knows best.

Urdu Explanation/Translation Segment: It is stated in 'Al-Bahr' that this reconciliation in both statements is correct, God willing. And in 'Al-Fath' it is mentioned that the fatwa of the later scholars is contrary to the four Imams and the majority of the Sahaba and Tabi'in (may Allah be pleased with them), and this fatwa of the later scholars is for the place of suspicion. Therefore, it is appropriate to act with deliberation regarding the context and situation, and such incidents occur among people. This is why Al-Saghdi stated the aforementioned agreement while explaining its details, and it was maintained in 'Al-Bahr' and 'Al-Nahr'. I say: The ruling will depend on the husband's acknowledgment because his saying "Nikal ja" has the possibility of being a response, as jurists have stipulated. And the husband's saying "Talluq nahi" has the possibility of being a scolding, as we investigated in the Jadd al-Mumtar commentary on Radd al-Muhtar. Since the state is one of anger, the ruling of divorce will not be given unless he acknowledges the intention for divorce. The word "Chhodna" is explicit divorce in our language; therefore, if the husband's saying "from this date etc." refers back to the first two phrases, it will be considered an acknowledgment of the intention for divorce. Thus, by consensus, the iddah will be

counted from that date. If his talk is turned from the well-known meaning to an obscure and hidden meaning, or the acknowledgment is declared false—even though it is contrary to the apparent—then it will be an initiation (insha), and the current time will be considered. Hence, the iddah will be counted from here, as was mentioned in the case of agreement. And Allah the Almighty knows best.

[1] Radd al-Muhtar, Chapter of Metaphors, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/610

अरबी मूल: मशहूर सहाबा और ताबिईन (रज़ियल्लाहु अन्हुम) का भी यही मानना है। चूँकि उनका विरोध संदेह (तहमते) के कारण है, इसलिए उन जगहों और लोगों की जाँच करना उचित है जहाँ ऐसा संदेह हो सकता है। इसीलिए अल-सग़दी ने इस मामले का विस्तार से वर्णन किया है, और अल-बहर और अल-नहर में इसकी पुष्टि की गई है। मैं (लेखक) कहता हूँ: इस मामले को उसके इक़रार (स्वीकृति) पर इसलिए टाला गया है क्योंकि उसके कहने "निकल जा" में जवाब/अस्वीकार का भी पहलू है, जैसा कि फ़ुक़हा (विधिवेत्ताओं) ने स्पष्ट किया है। और उसके कहने "ताल्लुक नहीं" में डाँट या गाली का पहलू हो सकता है, जैसा कि हमने जद्दुल मुम्तार (रद्दुल मुहतार का हाशिये) में शोध किया है। और चूँकि स्थिति गुस्से वाली थी, इसलिए जब तक वह तलाक़ की नीयत का इक़रार न करे, तब तक तलाक़ का हुक्म नहीं दिया जाएगा। और शब्द "छोड़ना" हमारी भाषा (उर्दू) में स्पष्ट तलाक़ है। इसलिए यदि पति का यह कहना कि "इसी तारीख से..." उन पिछले दो शब्दों की ओर इशारा करता है, तो इसे तलाक़ की नीयत का इक़रार माना जाएगा। अतः सर्वसम्मति (इज्मा) से इद्दत की गिनती उसी तारीख से होगी। और यदि उसकी बात को प्रसिद्ध अर्थ के बजाय किसी अज्ञात और छिपे हुए अर्थ की ओर मोड़ा जाए, या इक़रार को झूठ मान लिया जाए—भले ही यह ज़ाहिरी तौर पर गलत हो—तो यह तलाक़ की नई शुरुआत (इन्शा) मानी जाएगी। ऐसी स्थिति में वर्तमान समय का ही एतबार होगा और इद्दत यहीं से गिनी जाएगी, जैसा कि सहमति की स्थिति में बताया गया है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

उर्दू व्याख्या/अनुवाद: 'बहर' में फ़रमाया कि इन दोनों कलामों में यह समन्वय (तौफीक) इंशाअल्लाह दुरुस्त है। और 'फत्ह' में है कि बाद के विद्वानों (मुताखिरीन) का फतवा चारों इमामों, प्रसिद्ध सहाबा और ताबिईन (रज़ियल्लाहु अन्हुम) के खिलाफ है। मुताखिरीन का यह फतवा संदेह की स्थिति के लिए है, इसलिए उचित है कि स्थिति और स्थान के अनुसार सोच-विचार से काम लिया जाए, क्योंकि लोगों में ऐसे वाकयात होते रहते हैं। इसीलिए सग़दी ने इसकी स्पष्ट व्याख्या करते हुए उल्लेखित सहमति व्यक्त की है। इसे 'बहर' और 'नहर' में भी स्थिर रखा गया है। मैं कहता हूँ: पति के इकरार पर फैसला इसलिए आधारित होगा क्योंकि उसके द्वारा "निकल जा" कहना जवाब बनने का भी अर्थ रख सकता है, जैसा कि फुकहा (कानूनविदों) ने स्पष्ट किया है। और उसका कहना "ताल्लुक नहीं" डाँट-फटकार का अर्थ रख सकता है, जैसा कि हमने 'जिद्दुल मुम्तार' (हाशिया रद्दुल मुहतार) में शोध किया है। चूँकि वह क्रोध की स्थिति में था, इसलिए तलाक का हुक्म तब तक नहीं दिया

जाएगा जब तक वह तलाक की नीयत स्वीकार न कर ले। हमारी भाषा में शब्द "छोड़ना" स्पष्ट तलाक (सरीह तलाक) है। अतः यदि पति का यह कहना कि "इसी तारीख से..." पिछले दो कथनों से संबंधित है, तो इसे तलाक की नीयत का इकरार माना जाएगा और सर्वसम्मति से इद्दत की गिनती उसी तारीख से होगी। यदि उसके कथन को ज्ञात अर्थ के बजाय किसी अज्ञात और छिपे हुए अर्थ की ओर मोड़ा जाए, या उसके इकरार को झूठ करार दिया जाए—भले ही यह ज़ाहिरी तौर पर गलत हो—तो यह तलाक की नई शुरुआत (इन्शा) मानी जाएगी। ऐसी स्थिति में वर्तमान समय का एतबार होगा और इद्दत यहीं से गिनी जाएगी, जैसा कि सहमति की स्थिति में उल्लेख हुआ है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है। (त)

[1] रद्दुल मुहतार, बाबुल किनायात, दार इहयाउत तुरास अल-अरबी, बेरूत, 2/610 पृष्ठ 619/688

عربی متن: جمهور الصحابة والتابعين رضي الله تعالى عنهم وحيث كانت مخالفتهم للتهمة فينبغي ان يتحرى به محالها والناس الذين هم مظانها ولهذا فصل السغدى بامر اه واقره في البحر والنهر اه اقول: وانما اسند الامر الى اقراره لان قوله "نکل جا" يحتمل الرد كما نصوا عليه، و قوله "تعلق نہیں" يحتمل السب كما حققناه في جد الممتار والحال حال الغضب فلا يحكم بالطلاق الا اذا اقر بالنيّة و "چھوڑنا" من الصريح بلساننا فان كان قوله "اسی تاریخ سے" الخ راجعا الى ذينك اللفظين، كان اقرار بالنية، فالقاعدة مذذاك بالاجماع وان فرض على خلاف الظاهر صرفه عن الكلام المعروف الى كلام باطن مجهول او جعل اقرار كاذبا كاف انشاء مسند افالقاعدة مذذاك بحكم التوفيق۔ والله تعالى اعلم۔

اردو تشریح و ترجمہ: بحر میں فرمایا دونوں کلاموں میں یہ توفیق ان شاء اللہ درست ہے، اور فتح میں ہے کہ متاخرین کا فتویٰ ائمہ اربعہ، جمہور صحابہ اور تابعین رضی اللہ تعالیٰ عنہم کے مخالف ہے اور متاخرین کا یہ فتویٰ مقام تہمت کے لئے ہے، لہذا مناسب ہے کہ موقع محل کے متعلق سوچ بچار سے کام لیا جائے، اور لوگوں میں ایسے واقعات پائے جاتے ہیں، اسی لئے سغدی نے اس کی تفصیل واضح کرتے ہوئے مذکورہ موافقت بیان کی ہے اھ، اور اس کو بحر اور نہر میں ثابت رکھا ہے اھ اقول: (میں کہتا ہوں) اور خاوند کے اقرار سے حکم متعلق اس لئے ہو گا کہ خاوند کا کہنا "نکل جا" جواب بننے کا احتمال رکھتا ہے جیسا کہ فقہاء نے اس پر نص کی ہے، اور خاوند کا کہنا "تعلق نہیں" ڈانٹ کا احتمال رکھتا ہے جیسا کہ ہم نے جد الممتار حاشیہ ردالمحتار میں تحقیق کی ہے جبکہ حالت بھی غضب والی ہے تو اس وقت تک طلاق کا حکم نہ ہو گا جب تک طلاق کی نیت کا اقرار نہ کرے، اور لفظ "چھوڑنا" ہماری زبان میں صریح طلاق ہے، اس لئے خاوند کا کہنا "اسی تاریخ سے الخ" اگر پہلے دونوں لفظوں کی طرف راجع ہو تو یہ نیت طلاق کا اقرار قرار

پائے گا لہذا عدت کا شمار بالاجماع اسی تاریخ سے ہو گا، اور اگر اس کی بات کو معروف معنی کے بجائے مجہول اور مخفی معنی کی طرف پھیرا جائے یا اقرار کو جھوٹ قرار دیا جائے، اگرچہ یہ خلافِ ظاہر ہے تاہم یہ انشاء ہو گا اور اس وقت کا اعتبار ہو گا لہذا عدت یہاں سے شمار ہو گی جیسا کہ موافقت کی صورت میں ذکر ہوا ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔ (ت)

[1] ردالمحتار باب الکنایات دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۶۱۰ Page 619 of 688

Fatawa Razawiyya, Volume 12

Problem 308: From Rampur State, Mohalla Shahabad Darwaza, asked by Syed Nadir Ali Sahib, 28 Dhu al-Qi'dah 1336 AH.

Zaid beat his wedded wife due to her insolence. She responded with more abuse and unseemly talk. Zaid became harsher and out of compulsion said to his wife, "Go away." At that time, Zaid's brother-in-law was present. Hearing the words "Go away," he said to Zaid, "How can your marriage remain now?" At this, Zaid's anger increased to an extreme degree, which could be considered at its peak, and he did not consider the consequences. In that state of rage, facing his brother-in-law who was standing near him, he said the word "talaq" (divorce) several times, the exact number of which he doesn't fully remember. He also said, "I have set you free." Zaid did not address these words directly to his wife; rather, at that time Zaid was about seven or eight steps away from his wife, she was not in front of him, and there was no offer and acceptance. In such a case, does the marriage remain valid or has it become void? Also, Zaid's wife is five months pregnant. Therefore, this issue is presented to the scholars of religion so that you may grace it with your seal and signature.

The Answer: Zaid said the words "talaq, talaq" several times. If his intention was to divorce his wife, then three divorces have occurred. She cannot come back into his marriage without halala.

(Arabic Text): Because if he said it thrice, then that is it; and if he said it twice, then the third one is his saying "I have set you free", because it does not admit rejection or abuse, and the situation had become one of discussing [divorce], because he said it to his consummated wife "Talaq, Talaq" as mentioned by the questioner. And the attribution in the preceding [statement] is attribution in the succeeding one, like saying "I divorced you, I divorced you."

(Urdu Translation): Because if he said it three times, then three; otherwise if he said "talaq" twice, then the third divorce occurred upon his saying "I have set you free," because this word does not have the possibility of being a scolding or a reply, while by saying "talaq" first, the discussion of divorce has already been established because he said "talaq, talaq" to a consummated woman as mentioned by the questioner. And the attribution of the first divorce to the wife will also be valid in the last word, just as it is in "I have given you divorce." (t)

However, this depends on his confession that by the words "talaq, talaq" he intended to divorce his wife. If he does not confess, then the decree of divorce will not be issued by these words. If in reality he had the intention of divorce and denies it, then the sin will be upon him.

फ़तावा-ए-रज़विया, खंड 12

मसअला 308: रियासत रामपुर, मोहल्ला शाहबाद दरवाज़ा से, सायल सैयद नादिर अली साहिब, 28 ज़ुल-क़ादा 1336 हिजरी।

ज़ैद ने अपनी निकाहशुदा बीवी को उसकी बदज़ुबानी की वजह से मारा, जिस पर उसने और ज़्यादा बदज़ुबानी और अभद्र बातें कीं। ज़ैद ने और सख्ती की और मजबूरी में बीवी से कहा "चली जा"। इस घटना के समय ज़ैद के साले मौजूद थे। "चली जा" सुनकर उन्होंने ज़ैद से कहा कि अब तुम्हारा निकाह कहाँ रहा। इस पर ज़ैद का गुस्सा और बढ़ गया जिसे चरम पर माना जा सकता है, और उसने किसी परिणाम की परवाह नहीं की। उसी गुस्से की हालत में अपने साले की तरफ मुखातिब होकर, जो उसके पास खड़ा था, शब्द "तलाक़" कई बार कहा जिसकी ठीक संख्या याद नहीं है। और यह भी कहा कि "आज़ाद किया"। ये शब्द ज़ैद ने अपनी बीवी की तरफ मुतवज्जा होकर या उसे संबोधित करके नहीं कहे, बल्कि उस समय ज़ैद और उसकी बीवी के बीच सात-आठ कदम का फासला था और बीवी ज़ैद के सामने नहीं थी और न ही इसमें ईजाब-ओ-क़ुबूल (प्रस्ताव और स्वीकृति) हुआ। ऐसी सूरत में निकाह बरकरार रहा या बातिल हो गया? और ज़ैद की बीवी 5 महीने की गर्भवती भी है। लिहाज़ा यह मसअला दीनी उलेमा की खिदमत में पेश किया जाता है कि आप हज़रात अपनी मुहर और दस्तखत से इसे सुशोभित करें।

अल-जवाब: ज़ैद ने शब्द "तलाक़ तलाक़" कई बार कहा। अगर उससे अपनी पत्नी को तलाक़ देना ही मक़सद था तो तीन तलाक़ें हो गईं, बिना हलाला के वह उसके निकाह में नहीं आ सकती।

(अरबी पाठ): क्योंकि अगर उसने इसे तीन बार कहा, तो वही है; और यदि उसने इसे दो बार कहा, तो तीसरा उसका यह कहना है "मैंने तुम्हें आज़ाद कर दिया", क्योंकि यह अस्वीकृति या गाली की संभावना नहीं रखता, और स्थिति [तलाक़ के] विचार-विमर्श की बन गई थी, क्योंकि उसने अपनी मदखूला (जिसके साथ संभोग हुआ हो) पत्नी को "तलाक़ तलाक़" कहा था जैसा कि प्रश्नकर्ता ने उल्लेख किया है। और पिछले [बयान] में जो संबंध है, वही अगले में भी होगा, जैसे कि कहना "मैंने तुम्हें तलाक़ दी, मैंने तुम्हें तलाक़ दी"।

(उर्दू अनुवाद): क्योंकि अगर तीन मर्तबा कहा तो तीन, वरना अगर दो मर्तबा तलाक़ कहा तो फिर तीसरी तलाक़ उसके"आज़ाद किया" कहने पर हो गई, क्योंकि यह लफ्ज़ डांट और जवाब बनने का एहतमाल (संभावना) नहीं रखता, जबकि पहले "तलाक़" कहने पर मुज़ाकरा-ए-तलाक़ भी बन चुका

है क्योंकि मदखूला औरत को तलाक़ तलाक़ कहा है जैसा कि सायल ने ज़िक्र किया है, और पहले तलाक़ में बीवी की निसबत आख़िरी लफ्ज़ में भी मोतबर होगी, जैसा कि "मैंने तुझे तलाक़ दी" में होता है। (त)

मगर यह उसके इक़रार (स्वीकृति) पर मौक़ूफ़ (निर्भर) है कि इस लफ्ज़ "तलाक़ तलाक़" से बीवी को तलाक़ देना मुराद था। अगर इक़रार नहीं करेगा तो इन अल्फाज़ से हुक्म-ए-तलाक़ न होगा। अगर वाक़ई में उसने नियत-ए-तलाक़ की थी और मुकर जाएगा तो वबाल (पाप) उसी पर रहेगा।

पृष्ठ 620 का 688

فتاویٰ رضویہ، جلد دو از دہم

مسئلہ ۳۰۸: از ریاست رامپور محلہ شاہ آباد دروازہ مسئولہ سید نادر علی صاحب ۲۸ ذیقعدہ ۱۳۳۶ھ

زید نے اپنی منکوحہ کو بوجہ زبان درازی مارا، اس پر اور زیادہ بد کلامی اور گفتگو نا شائستہ کرنی چاہی، زید نے اور سختی کی، اور یہ لفظ مجبور ہو کر منکوحہ سے کہا کہ چلی جا۔ اس واقعہ کے وقت زید کے بہنوئی موجود تھے، لفظ "چلی جا" سن کر زید سے کہا کہ اب تمہارا نکاح کب رہا، اس پر زید کو اور زیاد غیظ و غضب بڑھا جو انتہا درجہ پر شمار کیا جائے اور کوئی نشیب و فراز کا خیال نہ کیا اسی حالت غیظ میں اپنے بہنوئی کی طرف مخاطب ہو کر چونکہ وہ اس کے پاس کھڑا تھا لفظ طلاق چند بار جس کی تعداد پورے طور یاد نہیں کہا اور یہ بھی کہا کہ " آزاد کیا "، ان لفظوں کی ادائیگی زید نے متوجہ کر کے یا مخاطب ہو کر اپنی منکوحہ سے نہ کہے بلکہ اس وقت زید کا فاصلہ اپنی منکوحہ سے آٹھ سات قدم کا تھا اور منکوحہ زید کے رو برو نہ تھی اور اس کا ایجاب و قبول نہ ہوا۔ ایسی صورت میں نکاح جائز رہا یا باطل ہوا؟ اور زید کی منکوحہ ۵ ماہ کی حاملہ بھی ہے، لہذا یہ مسئلہ علمائے دین کی خدمت میں پیش کیا جاتا ہے کہ آپ صاحبان اپنی مُہر و دستخط سے مزین فرمائیں۔

الجواب: زید نے لفظ "طلاق طلاق" چند بار کہا اگر اس سے اپنی زوجہ کو طلاق دینی مقصود تھی تو تین طلاقیں ہو گئیں، بے حلالہ اس کے نکاح میں نہیں آ سکتی،

لانه ان ثلث فذاك وان ثنى فثالثهما قوله قوله "آزاد کیا" لانه لا یحتمل ردا ولا سبا و قد صارت الحال حال المذاکرة لانه قاله لمد خوله "طلاق طلاق " کما ذکره السائل والاضافة فی السابق اضافة فی

اللاحق كقوله طلقتك طلقتك۔ | کیونکہ اگر تین مرتبہ کہا تو تین، ورنہ اگر دو مرتبہ طلاق کہا تو پھر تیسری طلاق اس کے "آزاد کیا" کہنے پر ہوگئی، کیونکہ یہ لفظ ڈانٹ اور جواب بننے کا احتمال نہیں رکھتا، جبکہ پہلے "طلاق" کہنے پر مذاکرہ طلاق بھی بن چکا ہے کیونکہ مدخولہ عورت (وطی شدہ) کو طلاق طلاق کہا ہے جیسا کہ سائل نے ذکر کیا ہے، اور پہلے طلاق میں بیوی کی نسبت آخری لفظ میں بھی معتبر ہوگی، جیسا کہ "میں نے تجھے طلاق دی" میں ہوتا ہے۔ (ت)

مگر یہ اس کے اقرار پر موقوف ہے کہ اس لفظ "طلاق طلاق" سے زوجہ کو طلاق دینی مراد تھی اگر اقرار نہ کرے گا ان الفاظ سے حکم طلاق نہ ہو گا اگر واقع میں اس نے نیت طلاق کی تھی اور مکر جائے گا تو وبال اس پر رہے گا

Volume 12 | Fatawa Razawiyya

He will be deserving of the punishment of hellfire; going to the woman will be adultery for him, while the woman will not be blamed. A summary is then in [Al-Fatawa] al-Hindiyya:

[Table] Arabic: سکران هربت منه امرأته فتبعها ولم یظفر بها فقال بالفارسیة بسه طلاق ان قال عنیت امرأتی یقع وان لم یقل شیئا لا یقع۱۔ English: A drunken man's wife ran away from him, so he followed her but did not catch her. He said in Persian, "Three divorces." If he later says, "I meant my wife," divorce occurs. If he says nothing, it does not occur.

Urdu Translation: A drunken man's wife ran away from him; he ran after her but was unsuccessful, so he said (in Persian) "Three divorces." Afterwards, if he says, "I said it to my wife," divorce will occur, and if he said nothing, divorce will not occur. (T)

In Wajiz Kardi then in al-Fatawa:

[Table] Arabic: فرت ولم یظفر بها فقال سہ طلاق ان قال اردت امرأتی یقع والا لا۲۔ English: She fled and he did not catch her, so he said "Three divorces." If he says, "I intended my wife," it occurs, otherwise not.

Urdu Translation: The wife ran away, so on being unsuccessful he said "Three divorces." If he says afterwards "I said it to my wife," then divorce will occur, otherwise not. (T)

Then if he makes the aforementioned admission, there is no dispute that three divorces have occurred. And if he does not admit, then these words are excluded and two words remain. (T) "Go away" and "Set free". The first word is not absolutely dependent on intention. In Durr al-Mukhtar: "Go away" (idhhaby) can imply a rejection (because it can be an answer. T). If he swears an oath saying he did not say it with the intention of separating from the wife, then divorce will not be accepted from this word; this oath is sufficient at home, being before a judge is not necessary. If he takes a false oath, the burden of adultery will be upon him. In Durr al-Mukhtar:

[Table] Arabic: یکفی تحلیفها لہ فی منزلہ۴۔ English: Administering the oath to him in his house is sufficient.

Urdu Translation: Taking the oath from the husband in the house itself is sufficient. (T)

The second phrase "Set free" (Azad kiya), although it doesn't imply rejection or insult, and it is a state of anger, then divorce should have occurred absolutely. In Durr al-Mukhtar:

[Table] Arabic: انت حرة لايحتمل السب والردہ۔ English: "You are free" does not imply insult or rejection.

Urdu Translation: Saying "You are free" cannot be considered a scolding or an answer. (T)

1. Al-Fatawa al-Hindiyya, Chapter Seven on Divorce in Persian words, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/382
2. Al-Fatawa al-Fatwiyya, Book of Divorce, Dar al-Isha'at al-Arabiya Qandahar Afghanistan, 1/71
3. Durr al-Mukhtar, Chapter of Metaphorical Expressions, Matba' Mujtabai Delhi, 1/224
4. Durr al-Mukhtar, Chapter of Metaphorical Expressions, Matba' Mujtabai Delhi, 1/224
5. Durr al-Mukhtar, Chapter of Metaphorical Expressions, Matba' Mujtabai Delhi, 1/224

जिल्द बारहवीं | फ़तावा रज़विया

वह नरक की आग की सज़ा का हक़दार होगा; औरत के पास जाना उसके लिए व्यभिचार (ज़िना) होगा, औरत पर कोई इल्ज़ाम नहीं होगा। फिर हिन्दिया का सारांश इस प्रकार है:

[Table] अरबी: سكران هربت منه امرأته فتبعها ولم يظفر بها فقال بالفارسية بسه طلاق ان قال عنيت امرأتى يقع وان لم يقل شيئا لا يقع۱۔ हिन्दी अनुवाद: एक नशे में धुत व्यक्ति की पत्नी उससे भाग गई, उसने उसका पीछा किया लेकिन उसे पकड़ नहीं पाया। उसने फ़ारसी में कहा "तीन तलाक़"। अगर वह बाद में कहता है, "मेरा मतलब मेरी पत्नी से था," तो तलाक़ हो जाता है। अगर वह कुछ नहीं कहता, तो नहीं होता।

उर्दू अनुवाद: एक नशे वाले की बीवी उससे भाग गई तो यह उसके पीछे भागा और कामयाब न हुआ तो (फ़ारसी शब्दों में) कहा "तीन तलाक़" बाद में अगर वह कहता है कि मैंने बीवी को कहा था, तो तलाक़ वाक़े हो जाएगी, और अगर कुछ न कहा तो तलाक़ न होगी। (त)

वजीज़ करदी फिर अल-फ़तविया में है:

[Table] अरबी: فرت ولم يظفر بها فقال سہ طلاق ان قال اردت امرأتى يقع والا لا۲۔ हिन्दी अनुवाद: वह भाग गई और वह उसे पकड़ नहीं पाया, तो उसने कहा "तीन तलाक़"। अगर वह कहता है, "मेरा इरादा मेरी पत्नी से था," तो यह होता है, अन्यथा नहीं।

उर्दू अनुवाद: बीवी भागी तो कामयाब न होने पर उसने कहा "तीन तलाक़" अगर बाद में कहे "मैंने बीवी को कहा है" तो तलाक़ होगी वरना नहीं। (त)

फिर अगर वह उक्त इक़रार कर ले तो कोई बहस ही नहीं रही कि तीन तलाक़ें हो गईं और अगर इक़रार न करे तो ये अल्फ़ाज़ निकल कर दो लफ़्ज़ रह गए। (त) "चली जा" और "आज़ाद किया"। पहला लफ़्ज़ पूरी तरह नीयत का मोहताज नहीं है। दुर्र-ए-मुख़्तार में है: 'इज़हबी' (चली जा) में रद (इनकार) का एहतमाल है (क्योंकि यह जवाब बन सकता है। त)। अगर वह क़सम खाकर कहे कि पत्नी से अलग होने की नीयत से नहीं कहा था, तो इस लफ़्ज़ से तलाक़ नहीं मानेंगे। यह क़सम घर पर ही काफ़ी है, हाकिम के सामने होना ज़रूरी नहीं। अगर झूठी क़सम खाएगा तो उस पर फिर व्यभिचार का गुनाह होगा। दुर्र-ए-मुख़्तार में है:

[Table] अरबी: ٤ـ يكفى تحليفها لہ فى منزلہ हिन्दी अनुवाद: घर में ही उससे क़सम लेना काफ़ी है।

उर्दू अनुवाद: खाविन्द से घर में ही क़सम ले लेना काफ़ी है (त)

दूसरा लफ़्ज़ "आज़ाद किया" हालांकि न तो रद (इनकार) मुमकिन है और न ही सब (गाली), और ग़ुस्से की हालत है, तो तलाक़ मुतलक़न होनी चाहिए थी। दुर्र-ए-मुख़्तार में है:

[Table] अरबी: ٥ـ انت حرة لايحتمل السب والرد हिन्दी अनुवाद: "तू आज़ाद है" इसमें गाली या इनकार का एहतमाल नहीं है।

उर्दू अनुवाद: "तू आज़ाद है" कहना डांट और जवाब नहीं बन सकता। (त)

1. फ़तावा हिन्दिया, सातवां अध्याय फ़ारसी शब्दों में तलाक़ के बारे में, नूरानी कुतुब ख़ाना पेशावर, 1/382
2. फ़तावा अल-फ़तविया, किताबुत्तलाक़, दारुल इशाअत अल-अरबिया कंदहार अफ़ग़ानिस्तान, 1/71
3. दुर्र-ए-मुख़्तार, बाबुल्-किनायात, मतबा मुजतबाई देहली, 1/224
4. दुर्र-ए-मुख़्तार, बाबुल्-किनायात, मतबा मुजतबाई देहली, 1/224
5. दुर्र-ए-मुख़्तार, बाबुल्-किनायात, मतबा मुजतबाई देहली, 1/224

مستحق عذابِ نار ہوگا، عورت کے پاس جانا اس کے لئے زنا ہوگا عورت پر الزام نہ ہوگا۔ خلاصہ پھر ہندیہ میں ہے:

[Table] سکران ھربت منه امرأته فتبعها ولم یظفر بها فقال بالفارسیة بسه طلاق ان قال عنیت امرأتی یقع وان لم یقل شیئا لا یقع۱۔ | ایک نشے والے کی بیوی اس سے بھاگ گئی تو یہ اس کے پیچھے بھاگا اور کامیاب نہ ہوا تو (بالفاظِ فارسی) کہا "تین طلاق" بعد میں اگر وہ کہتا ہے کہ میں نے بیوی کو کہا تھا، تو طلاق واقع ہو جائے گی، اور اگر کچھ نہ کہا تو طلاق نہ ہو گی۔ (ت)

وجیز کردی پھر الفتویہ میں ہے:

[Table] فرت ولم یظفر بها فقال سہ طلاق ان قال اردت امرأتی یقع والا لا۲۔ | بیوی بھاگی تو کامیاب نہ ہونے پر اس نے کہا "تین طلاق" اگر بعد میں کہے "میں نے بیوی کو کہا ہے" تو طلاق ہو گی ورنہ نہیں۔ (ت)

پھر اگر وہ اقرار مذکور کرلے جب تو کوئی بحث ہی نہ رہی کہ تین طلاقیں ہو گئیں اور اگر اقرار نہ کرے تو یہ الفاظ خارج ہو کر دو لفظ رہے۔ ت)" چلی جا " اور " آزاد کیا" پہلا لفظ مطلقاً محتاج نیت نہیں ہے۔ در مختار میں: اذہبی یحتمل ردا۳ (کیونکہ جواب بن سکتا ہے۔ ت) اگر قسم کھا کر کہے کہ بہ نیت تفریق زن نہ کہا تھا، تو اس لفظ سے طلاق نہ مانیں گے یہ قسم مکان ہی پر کافی ہے حاکم کے سامنے ہونا ضرور نہیں، اگر جھوٹی قسم کھائے گا تو اس کا بھی پھر زنا کا وبال اس پر ہے، در مختار میں ہے:

[Table] یکفی تحلیفها لہ فی منزلہ٤۔ | خاوند سے گھر میں ہی قسم لے لینا کافی ہے (ت)

دوسرا لفظ "آزاد کیا" اگرچہ نہ محتمل ردّ ہے نہ محتمل سبّ، اور حالت غضب ہے تو طلاق مطلقاً ہونی چاہئے تھی، در مختار میں ہے:

[Table] انت حرة لایحتمل السب والرد٥۔ | "تو آزاد ہے" کہنا ڈانٹ اور جواب نہیں بن سکتا۔ (ت)

1 فتاوٰی ہندیہ الفصل السابع فی الطلاق بالفاظ الفارسیۃ نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۸۲ 2 فتاوٰی الفتویہ کتاب الطلاق دار الاشاعت العربیہ قندھار افغانستان ۱/ ۷۱ 3 درمختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۲۴ 4 درمختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۲۴ 5 درمختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۲۴

Fatawa Razawiyya Volume Twelve

However, if the word 'freed' (azad kiya) is not attributed towards the woman, then if he states under oath that he did not say it in relation to the woman, there will be no ruling of divorce at all. If he takes a false oath, then the burden of adultery and severe punishment will be upon him. It is stated in Khaniya and Bazzaziya:

لا تخرجي الا باذنی فانی حلفت بالطلاق فخرجت لا یقع لعدم ذکر حلفہ بطلاقہا ویحتمل الحلف بطلاق غیرها فالقول له[1]

"Do not go out without my permission, for I have sworn by divorce." He said this, then the woman went out; divorce does not occur because he did not mention the oath of her divorce, and there is a possibility that the divorce of another woman was intended. Therefore, the husband's explanation will be accepted. (T)

In short, if he admits the intention of divorce with "talaq talaq", then three divorces occurred, otherwise it is a ruling of one 'ba'in' (irrevocable divorce). The woman is out of the marriage contract; he can remarry her during or after the 'iddah' period. However, if he says under oath that the word 'freed' was not said in relation to this wife, then an oath will be taken from him whether by 'go away' (chali ja) he intended 'talaq-e-ba'in' for this woman or not. If he takes an oath on this as well, there will be no ruling of divorce. If he refuses the oath, the matter will be presented before the Qazi (judge). If he refuses before the ruler too, a ruling of one 'talaq-e-ba'in' will be given. The woman is out of the marriage contract. Anger or pregnancy or the woman being far away is not contrary to divorce. And Allah Almighty knows best.

Problem 309: From Shahjahanpur, Muhalla Mehmand Garhi, sent by Hafiz Nazir Hasan Sahab, 26 Safar 1337 AH.

What do the scholars of religion and jurists of the firm Shariah say regarding this matter: Zaid has left his wife for seven years and does not inquire about her at all, neither provides food nor clothing, nor gives divorce so she can be married elsewhere. There is no relative or supporter from among people for her so that her maintenance could somehow be managed. She is severely helpless. Now, whatever the ruling of the masters of the firm Shariah be, let it be followed, state it and receive reward. During this period, the woman tried very hard that her husband would now take her and consider her as his wife. For this purpose, the woman sent several letters and also sent people, but the husband did not pay any attention. Then she went herself, still he did not keep her and sent her back. Then, out of helplessness, she filed a claim for maintenance in court, there he [provided] food and clothing...

[1] Fatawa Qazi Khan, Kitab al-Talaq, Naval Kishore, Lucknow, 1/215

फ़तावा रज़विया जिल्द बारह

लेकिन अगर शब्द 'आज़ाद किया' का संबंध औरत की ओर नहीं है, तो अगर वह शपथ लेकर कह दे कि औरत के संबंध में नहीं कहा था, तो तलाक़ का बिल्कुल आदेश नहीं होगा। अगर वह झूठी शपथ लेगा, तो उस पर व्यभिचार का पाप और कठोर दंड का बोझ होगा। खानिया और बज़ाज़िया में है:

لا تخرجي الا باذنی فانی حلفت بالطلاق فخرجت لا یقع لعدم ذکر حلفہ بطلاقہا ویحتمل الحلف بطلاق غیرہا فالقول لہ[1]

"मेरी अनुमति के बिना मत निकल क्योंकि मैंने तलाक़ की शपथ ली है।" उसने यह कहा, फिर औरत निकल गई, तलाक़ नहीं होगा क्योंकि उसने अपनी पत्नी की तलाक़ की शपथ नहीं कही, और संभावना है कि किसी दूसरी औरत की तलाक़ मुराद ली हो। इसलिए पति के स्पष्टीकरण का ऐतबार किया जाएगा। (त)

संक्षेप में, यदि वह 'तलाक़ तलाक़' से तलाक़ की नीयत का इक़रार करे तो तीन तलाक़ें हो गईं वरना एक 'बआइन' (अपरिवर्तनीय तलाक़) का हुक्म है। औरत निकाह से निकल गई, इद्दत के दौरान या इद्दत के बाद उससे दोबारा निकाह कर सकता है। लेकिन अगर वह शपथ लेकर कहे कि शब्द 'आज़ाद किया' इस पत्नी के संबंध में नहीं कहा था, तो अब उससे शपथ लेंगे कि 'चली जा' से इस औरत को तलाक़-ए-बआइन का इरादा किया था या नहीं। अगर वह इस पर भी शपथ ले लेगा तो मूलतः तलाक़ का हुक्म न होगा। और अगर वह शपथ से इनकार करे तो क़ाज़ी के सामने पेश किया जाए, अगर हाकिम के सामने भी इनकार करे तो एक तलाक़-ए-बआइन का हुक्म दिया जाएगा। औरत निकाह से निकल गई। क्रोध या गर्भावस्था या औरत का दूर होना तलाक़ के विपरीत नहीं है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

मसला ३०९: शाहजहाँपुर, मुहल्ला महमद गढ़ी से प्रेषित हाफ़िज़ नज़ीर हसन साहब, २६ सफ़र १३३७ हिजरी।

दीन के विद्वान और शरीयत के मुफ़्ती इस मामले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद ने अपनी औरत को सात साल से छोड़ रखा है और उसकी बिल्कुल ख़बर-गीरी नहीं करता, न रोटी देता है न कपड़ा और न तलाक़ देता है कि उसका दूसरी जगह निकाह कर दिया जाए। और उसका कोई रिश्तेदार या मददगार नहीं है जो उसकी मदद कर सके ताकि उसका गुज़ारा हो सके। वह अत्यंत मजबूर है। अब शरीयत के मालिकों का जो भी हुक्म हो उस पर अमल किया जाए, बयान करें और पुण्य प्राप्त करें। इस अवधि के दौरान महिला ने बहुत कोशिश की कि उसका पति अब उसे विदा कर ले और उसे

अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करे। इसके लिए महिला ने कई पत्र भी भेजे और लोगों को भी भेजा लेकिन पति ने कोई ध्यान नहीं दिया। फिर वह खुद भी गई, फिर भी उसने नहीं रखा और वापस भेज दिया। तब मजबूर होकर अदालत में गुज़ारे (नान-नफ़क़ा) का दावा किया, वहाँ उसने रोटी कपड़ा...

[1] फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, किताब अल-तलाक़, नवल किशोर, लखनऊ, १/२१५

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

مگر لفظ آزاد کیا میں عورت کی طرف اضافت نہیں تو اگر بحلف کہہ دے گا کہ عورت کی نسبت نہ کہا تھا ، تو طلاق کا اصلاً حکم نہ ہوگا اگر جھوٹا حلف کرے گا تو اس کا پھر زنا کا وبال اور عذاب شدید کا استحقاق اُس پر ہے۔ خانیہ وبزازیہ میں ہے:

لا تخرجي الا باذنی فانی حلفت بالطلاق فخرجت لا یقع لعدم ذکر حلفہ بطلاقہا ویحتمل الحلف بطلاق غیرھا فالقول لہ[1]

"تو میری اجازت کے بغیر مت نکل کیونکہ میں نے طلاق کی قسم کھائی ہے" کہا، تو عورت نکل گئی، طلاق نہ ہوگی کیونکہ بیوی کی طلاق کی قسم نہ کہا، اور احتمال ہے کہ کسی دوسری عورت کی طلاق مرادی ہے لہذا شوہر کی وضاحت کا اعتبار کیا جائے گا۔ (ت)

بالجملہ اگر "طلاق طلاق" سے نیت طلاق کی اقرار کرے تو تین طلاقیں ہو گئیں ورنہ ایک بائن کا حکم ہے، عورت نکاح سے نکل گئی، عدت میں خواہ بعد عدت اس سے دوبارہ نکاح کر سکتا ہے مگر یہ کہ بحلف کہے کہ لفظ "آزاد کیا" اس زوجہ کی نسبت نہ کہا تھا تو اب اس سے حلف لیں گے کہ "چلی جا" سے اس عورت کو طلاقِ بائن کا ارادہ کیا تھا یا نہیں، اگر اس پر بھی حلف کر لے گا تو اصلاً حکم طلاق نہ ہوگا، اور اگر اس پر حلف سے انکار کرے تو قاضی کے حضور پیش کیا جائے اگر حاکم کے سامنے بھی انکار کرے تو ایک طلاق بائن کا حکم دیا جائے گا، عورت نکاح سے نکل گئی، عُصہ یا حمل یا عورت کا دُور ہونا کچھ منافی طلاق نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۰۹: از شاہجہاں پور محلہ مہمند گڑھی مرسلہ حافظ نذیر حسن صاحب ۲۶ صفر ۱۳۳۷ھ

کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی عورت کو عرصہ سات برس سے چھوڑ رکھا اور اس کا اصلاً خبر گیراں نہیں ہوتا ہے، نہ روٹی دیتا ہے نہ کپڑا دیتا ہے اور نہ طلاق دیتا ہے کہ اس کا دوسری جگہ نکاح کر دیا جائے اور اس کا کوئی علاقہ بندوں سے دستگیر نہیں ہے کہ اس کا نان نفقہ کسی طرح پر چل سکے سخت مجبور ہے، اب جو حکم صاحبانِ شرع متین کا ہو اس پر عمل کیا جائے، بیان کرواجر پاؤ، اور اس مدت کے درمیان میں مسماۃ نے اس بات کی بہت کوشش کی کہ اب میرا شوہر مجھ کو رخصت کر لیجاوے اور بطور اپنی زوجہ کے مجھ کو سمجھے، اس کے واسطے مسماۃ نے چند خط بھی روانہ کئے اور آدمیوں کو بھی بھیجا لیکن شوہر نے کچھ توجہ نہیں کی، پھر اس کے بعد خود بھی گئی، پھر بھی اس نے نہیں رکھا واپس کر دیا، تب مجبور ہو کر عدالت سے نان نفقہ کا دعویٰ کیا وہاں اس نے روٹی کپڑا

[1] فتاوی قاضی خاں کتاب الطلاق نولکشور لکھنؤ ۱/ ۲۱۵

Volume 12 Fatawa Razvia

...agreed to give, yet that case was dismissed. Then after that, the lady waited for some time, then the lady sent word there. Upon this, he sent such a card that looking at it, one's senses are lost. Since outwardly that person confesses and inwardly he is such, so it is proven from this that he wants to humiliate the lady. That person is a resident of District Shahjahanpur, village Sandhol, and the lady is a resident of Shahjahanpur, Mahalla Mehand Ghadi. The card he sent is also kept in this. Please send back with your signature and signatures of those who are scholars of the Sunnah. I am extremely helpless and poor, living in poverty. If the fatwa comes with the signatures of the scholars of religion, I will marry elsewhere and will pray for you, and Allah Almighty will give you a great reward for it. For the sake of Allah, have mercy on me.

The Answer: The card was seen. In it is only this phrase: "You say, take your woman away; she brought a case against me and went to lawyers and returned, meeting everyone, so she is of no use to me at all." On such words, unless it is proven they were said with the intention of divorce, the ruling of divorce cannot be given. Nor can the woman marry elsewhere; if she does, it will be purely forbidden (haram). He should be asked. If he admits, "Yes, I said these words with the intention of divorce," then the divorce occurred from that time. If three menstrual cycles have passed and finished by now, or when they finish, she can marry elsewhere. And if he does not admit the intention of divorce, he should be put on oath. If he says under oath, "I did not intend divorce with these words," then there will be no ruling of divorce. It is stated in Durr al-Mukhtar: "His oath taken at his home is sufficient for her."[1] (Taking an oath from the husband at home is enough. - Note) And if he refuses the oath, then a Shari'a legal action should be brought stating he said these words and they have the possibility of divorce. If he refuses this oath even before a judge, divorce will be proven, and the woman can marry elsewhere after the waiting period (Iddah). And if he takes the oath there, divorce will not be proven. If he took a false oath here or there, the burden of sin is on him. And Allah Almighty knows best.

Issue 310: From Bareilly Old City, Mahalla Qaroli, sent by Azeemullah Khan Sahib, 9 Shawwal 1337 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid drinks wine and gambles; he...

[1] Durr al-Mukhtar, Chapter on Metaphors (Al-Kinayat), Mujtabai Press, Delhi, 1/224
Page 623 of 688

जिल्द द्वादश (खंड 12) फ़तावा रज़विया

...देने का इक़रार किया, फिर भी वह मुक़दमा ख़ारिज किया गया। फिर उसके बाद मुसमात (महिला) ने कुछ समय इंतज़ार किया, फिर मुसमात ने वहाँ ख़बर भेजी। इस पर उसने एक ऐसा कार्ड भेजा जिसे देखकर होश उड़ गए। चूंकि ज़ाहिर में वह व्यक्ति इक़रार करता है और बातिन (मन) में वह ऐसा है, तो इससे यह साबित होता है कि वह मुसमात को ज़लील करना चाहता है। वह व्यक्ति ज़िला शाहजहाँपुर, ग्राम संधोल का निवासी है और मुसमात शाहजहाँपुर के मोहल्ला मेहंद घड़ी की रहने वाली है। जो कार्ड उसने भेजा है, वह भी इसमें रखा है। आप अपने हस्ताक्षर और जो सुन्नत के विद्वान (उलेमा-ए-सुन्नत) हों, उनके हस्ताक्षर करवा कर भेजें। मैं अत्यंत असहाय और निर्धन हूँ, फ़ाक़ाकशी कर रही हूँ। आप विद्वान जनों के हस्ताक्षर वाला फ़तवा आ जाएगा तो मैं दूसरी जगह निकाह कर लूँगी और आपको दुआएँ दूँगी और अल्लाह तआला इसका आपको अज़ीम (बड़ा) अज्र (पुण्य) देगा। अल्लाह के वास्ते मुझ पर रहम करें।

अल-जवाब: कार्ड देखा गया। इसमें केवल ये शब्द हैं: "आप कहते हैं अपनी औरत को ले जाओ और उसने मुझ पर मुक़दमा चलाया और वकीलों के पास गई और वापस आई और हर किसी से मिली, इसलिए वह बिल्कुल मेरे काम की न रही।" इन शब्दों पर जब तक तलाक़ की नीयत से कहना साबित न हो, तलाक़ का हुक्म नहीं हो सकता। न ही औरत हरगिज़ दूसरी जगह निकाह कर सकती है; अगर करेगी तो वह केवल हराम होगा। उससे पूछा जाए। अगर वह इक़रार करे कि "हाँ, मैंने ये शब्द तलाक़ की नीयत से कहे थे," तो तभी से तलाक़ हो गई। अगर अब तक औरत को तीन माहवारी (हैज़) आकर समाप्त हो गए हों या जब समाप्त हो जाएँ तो वह दूसरी जगह निकाह कर सकती है। और अगर वह तलाक़ की नीयत का इक़रार न करे, तो उस पर हलफ़ (शपथ) रखी जाए। अगर वह हलफ़ से कह दे कि "मैंने इन शब्दों से तलाक़ की नीयत नहीं की थी," तो हरगिज़ तलाक़ का हुक्म न होगा। 'दुर्रे मुख़्तार' में है: 'यकफ़ी तहलीफ़ुहा लहू फ़ी मंज़िलिही'[1] (शौहर से घर में ही क़सम ले लेना काफ़ी है - अनुवाद)। और अगर वह हलफ़ से इनकार करे, तो शरई मुक़दमा दायर किया जाए कि उसने ये शब्द कहे हैं और उनसे तलाक़ की संभावना है। अगर वह हाकिम (न्यायाधीश) के सामने भी इस हलफ़ से इनकार करे, तो तलाक़ साबित हो जाएगी और औरत इद्दत के बाद दूसरी जगह निकाह कर सकेगी। और अगर उसने वहाँ हलफ़ ले लिया, तो तलाक़ साबित न होगी। अगर उसने यहाँ या वहाँ झूठा हलफ़ लिया, तो इसका वबाल (पाप) उसी पर है। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

मसला ३१०: बरेली पुराना शहर, मोहल्ला क़रौली से अज़ीमुल्लाह ख़ान साहब द्वारा भेजा गया, ९ शव्वाल १३३७ हिजरी। दीन के उलेमा इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि ज़ैद शराब पीता है और जुआ खेलता है, उसने...

[1] दुर्रे मुख़्तार, बाब अल-किनायात, मतबा मुजतबाई दिल्ली १/२२४ पेज 623 of 688

دینے کا اقرار کیا اس پر بھی وہ مقدمہ خارج کیا گیا، پھر اس کے بعد مسماۃ نے کچھ عرصہ تک انتظار کیا، پھر مسماۃ نے وہاں خبر بھیجی اس پر اس نے ایک ایسا کارڈ روانہ کیا کہ جس کو دیکھ کر عقل گم ہو گئی، چونکہ ظاہر میں وہ شخص اقرار کرتا ہے اور باطن میں وہ ایسا ہے، پس اس سے ثابت ہوتا ہے کہ وہ مسماۃ کو ذلیل کرنا چاہتا ہے اور وہ شخص ضلع شاہجہان پور مقام موضع سندھول کا رہنے والا ہے اور مسماۃ باشندہ شاہجہان پور ہے محلہ مہند گھڑی، اور جو کارڈ اس نے روانہ کیا وہ کارڈ بھی اس میں رکھا ہے، آپ اپنے دستخط اور جو علمائے سنت ہوں ان کے دستخط کروا کے روانہ کیجئے، نہایت عاجز اور مسکین ہوں فقر فاقہ کرتی ہوں، آپ صاحبان علمائے دین کے دستخط ہو کر فتویٰ آجائے گا تو اور جگہ نکاح کر لوں گی اور آپ کو دعاؤں گی اور آپ کو اللہ تعالیٰ اس کا اجر عظیم دے گا، واسطے اللہ کے میرے اوپر رحم کیجئے۔

الجواب: کارڈ دیکھا گیا اس میں صرف یہ لفظ ہے آپ کہتے ہیں اپنی عورت کو لے جاؤ اور اس نے مجھ پر مقدمہ چلایا اور وکیلوں کے پاس گئی اور پھری گئی اور ہر کس و ناکس سے ملی اس لئے وہ بالکل میرے کام کی نہ رہی، اتنے لفظ پر جب تک طلاق کی نیت سے کہنا ثابت نہ ہو طلاق کا حکم نہیں ہو سکتا، نہ ہرگز عورت دوسری جگہ نکاح کر سکتی ہے اگر کرے گی محض حرام ہو گا، اس سے پوچھا جائے اگر وہ اقرار کرے کہ ہاں میں نے یہ لفظ بہ نیت طلاق کہا تھا تو جبھی سے طلاق ہو گئی جب سے اب تک اگر عورت کو تین حیض آکر ختم ہو گئے یا جب ختم ہو جائیں دوسری جگہ نکاح کر سکتی ہے اور اگر وہ نیت طلاق کا اقرار نہ کرے اس پر حلف رکھا جائے اگر حلف سے کہہ دے کہ میں نے ان لفظوں سے نیت طلاق نہ کی تھی تو ہرگز حکم طلاق نہ ہو گا۔ در مختار میں ہے یکفی تحلیفہالہ فی منزلہ 1 (خاوند سے گھر میں ہی قسم لے لینا کافی ہے۔ت)

اور اگر حلف سے انکار کرے تو شرعی نالش کی جائے کہ اس نے یہ الفاظ کہے ہیں اور ان سے طلاق کا احتمال ہے اگر وہ حاکم کے سامنے بھی اس حلف سے انکار کرے تو طلاق ثابت ہو جائے گی اور عورت بعد عدت دوسری جگہ نکاح کر سکے گی اور اگر وہاں حلف کر لیا تو طلاق ثابت نہ ہو گی، اگر جھوٹی حلف یہاں یا وہاں کیا تو وبال اس پر ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم مسئلہ ۳۱۰: از بریلی شہر کہنہ محلہ قرولی مرسلہ عظیم اللہ خاں صاحب ۹ شوال ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید مے نوشی و قمار بازی کرتا ہے، اس نے

1 در مختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۲۴ Page 623 of 688

Fatawa Razawiyya Volume 12

In a state of intoxication and the irritation of losing in gambling, he demanded money from his wife. The wife hesitated to give the money, thinking his condition was not normal, for fear of harshness and also thinking that children might suffer. This delay and refusal of money displeased him so much that he wrote and gave this document which is presented before your presence: Copy of Writing: I give Musammat Aisha Begum the choice to either marry someone else or remain as she is; I have no objection. Inayatullah son of Muhammad Mustafa resident of Bareilly Old City, Qarauli Mohalla, dated July 7, 1919.

The Answer: If he wrote this document with the intention of divorce, i.e., "I have divorced her and made her free and independent to marry another if she wishes," then it will be one irrevocable divorce (Talaq-e-Bain). The woman is out of the marriage contract; she has the right to marry whomever she wishes after the waiting period (Iddat). And if it was not written with the intention of divorce, then no divorce occurred. The claim that there was no intention of divorce depends on Zaid's oath; if he swears that he did not intend to exclude her from his marriage, it will be accepted, and no decree of divorce will be given. If Zaid takes a false oath, the burden will be on him. It is stated in Durr-al-Mukhtar: "And his word with his oath regarding the absence of intention is accepted, and it is sufficient for her to have him take an oath at his home." - And Allah Almighty knows best.

His word will be accepted with an oath, and it will be sufficient for the wife to take an oath from the husband in the house. (T) - And Allah Almighty knows best.

Problem 311: From Bareilly City Camp Saddar, asked by Habib Ahmad Sahib, 20 Dhul-Hijjah 1337 AH What do the scholars of religion say regarding this: it has been 9 years since a person's marriage. After the marriage, that person stayed with his wife for only fifteen days, then went on a journey and has been wandering for 9 years. When news of his whereabouts in Delhi was received, his wife went to him. He said, "Go away from here or else I will cut your nose. Do whatever your heart desires, don't come to me." The woman is young. Does the marriage still hold with the aforementioned husband?

The Answer: If the intention for divorce from these words is proven, a decree of divorce will be given, otherwise...

[1] Durr-al-Mukhtar, Bab-al-Kinayat, Matba' Mujtabai Delhi 1/224

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

नशे की हालत और जुए में हार की झुंझलाहट में उसने अपनी पत्नी से रुपये माँगे। पत्नी ने यह सोचकर रुपये देने में देर की कि उसकी हालत ठीक नहीं है और वह कठोर हो सकता है, साथ ही यह भी सोचा कि बच्चों को तकलीफ़ न हो। रुपये देने में यह देरी और इनकार उसे इतना नागवार गुज़रा कि उसने यह लिख कर दे दिया जो हुज़ूर के सामने पेश है: लिखावट की नक़ल: मैं मुसम्मात आयशा बेगम को अधिकार देता हूँ कि वह चाहे किसी के साथ निकाह करे या बैठी रहे, मुझे कोई आपत्ति नहीं है। इनायतुल्लाह वल्द मोहम्मद मुस्तफ़ा, निवासी बरेली पुराना शहर, मोहल्ला क़रौली, दिनांक 7 जुलाई 1919 ईस्वी।

अल-जवाब: अगर यह तहरीर उसने तलाक़ की नीयत से लिखी यानी "मैंने उसे तलाक़ देकर आज़ाद और मुख़्तार कर दिया, वह चाहे तो दूसरे से निकाह कर ले", तब तो एक तलाक़-ए-बाइन होगी और औरत निकाह से निकल गई। औरत को अधिकार है कि इद्दत के बाद जिससे चाहे निकाह कर ले। और अगर तलाक़ की नीयत से नहीं लिखी तो तलाक़ नहीं हुई। यह बात कि तलाक़ की नीयत नहीं थी, ज़ैद की क़सम (हलफ़) पर है; अगर वह क़सम खाकर कह देगा कि मैंने उसे अपने निकाह से बाहर करने की नीयत नहीं की थी, तो मान लेंगे और तलाक़ का हुक्म नहीं देंगे। अगर ज़ैद झूठी क़सम खाएगा तो इसका बोझ (वबाल) उसी पर है। दुर्रे मुख़्तार में है: "और नीयत न होने के बारे में उसकी बात क़सम के साथ मान ली जाएगी, और बीवी के लिए घर में शौहर से क़सम लेना काफ़ी होगा।" - वल्लाहु तआला आलम।

उसकी बात क़सम के साथ स्वीकार कर ली जाएगी, और पत्नी का घर में पति से क़सम लेना पर्याप्त होगा। (त) - वल्लाहु तआला आलम।

मसला 311: बरेली शहर कैंप सदर से, सायल हबीब अहमद साहब, 20 ज़ुल-हिज्जा 1337 हिजरी धर्म के विद्वान इस बारे में क्या कहते हैं कि एक व्यक्ति की शादी हुए 9 साल का समय हो गया। शादी के बाद वह व्यक्ति केवल पंद्रह दिन अपनी पत्नी के पास रहा, फिर वह सफ़र पर चला गया और 9 साल से मारा-मारा फिर रहा है। जब दिल्ली में उसके ठहरने की ख़बर मिली, तो उसकी पत्नी उसके पास गई। उसने कहा, "तू यहाँ से चली जा वरना तेरी नाक काट लूँगा, जो तेरा दिल चाहे वह तू कर, मेरे पास मत आ।" औरत जवान है, क्या उपरोक्त पति के साथ निकाह बरक़रार रहा?

अल-जवाब: अगर इन शब्दों से तलाक़ की नीयत होना साबित हो जाए, तो तलाक़ का हुक्म दे देंगे, अन्यथा...

[1] दुर्रे मुख़्तार, बाब-अल-किनायात, मतबा मुज्तबाई दिल्ली 1/224

पृष्ठ 624 का 688

حالتِ مے نوشی وبار کی سوزش قمار بازی میں بیوی اپنی سے روپیہ طلب کیا، روپیہ دینے میں بیوی نے تساہل کیا یہ سمجھ کر کہ حالتِ غیر ہے اس وجہ سے تشدد ہے نیز یہ بھی خیال کیا کہ بچوں کو تکلیف نہ ہو، یہ سستی کرنا اور انکار روپیہ سے کرنا اس کو اس قدر ناگوار ہوا کہ یہ تحریر لکھ کر دے دی جو حضور کے پیش نظر ہے: نقل تحریر: مسماۃ عائشہ بیگم کو اختیار دیتا ہوں کہ وہ چاہے کسی کے ساتھ عقد کرے یا بیٹھی رہے مجھے کچھ عذر نہیں ہے۔ عنایت اللہ ولد محمد مصطفیٰ ساکن بریلی شہر کہنہ محلہ قرولی مورخہ ۷ جولائی ۱۹۱۹ء۔ الجواب: اگر یہ تحریر اس نے بہ نیت طلاق لکھی یعنی "میں نے اسے طلاق دے کر آزاد خود مختار کردیا چاہے تو دوسرے سے نکاح کرلے" جب تو ایک طلاق بائن ہوگی عورت نکاح سے نکل گئی عورت کو اختیار ہے کہ بعد عدت جس سے چاہے نکاح کرلے اور اگر نیت طلاق سے نہ لکھی تو طلاق نہ ہوئی یہ بات کہ طلاق کی نیت نہ تھی زید کے حلف پر ہے اگر وہ قسم کھا کر کہہ دے گا کہ میں نے اسے اسے اپنے نکاح سے خارج کرنے کی نیت نہ کی تھی مان لیں گے اور حکم طلاق نہ دیں گے، اگر زید جھوٹا حلف کرے گا وبال اس پر ہے۔ در مختار میں ہے: والقول لہ بیمینہ فی عدم النیۃ ویکفی تحلیفھالھ فی منزلہ '- واللہ تعالیٰ اعلم۔

اس کی بات قسم کے ساتھ تسلیم کر لی جائے گی، اور بیوی کا گھر میں خاوند سے قسم لینا کافی ہوگا۔(ت) واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۱۱: از شہر بریلی کیمپ صدر مسئولہ حبیب احمد صاحب ۲۰ ذی الحجہ ۱۳۳۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس بارے میں کہ ایک شخص کی شادی ہوئے عرصہ ۹ سال کا ہوا، شادی کر کے وہ شخص صرف پندرہ روز اپنی زوجہ کے پاس رہا بعد میں وہ سفر کو چلا گیا اور ۹ سال

سے آوارہ پھرتا ہے، جب اس کے قیام کی خبر دہلی میں معلوم ہوئی اس کی زوجہ اس کے پاس گئی اس نے کہا " تو یہاں سے چلی جاورنہ تیری ناک کاٹ لوں گا، جو تیرا دل چاہے وہ تُو کر، میرے پاس مت آ۔" عورت نوجوان ہے شوہر متذکرہ بالا پر کیا نکاح جائز رہا؟ الجواب: اگر اس کی نیت ان لفظوں سے طلاق کی نیت ہونا ثابت ہو جائے حکم طلاق دے دیں گے ورنہ

1 در مختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۲۴

Fatawa Razawiyya, Volume 12

...No, he should be asked whether he said these words with the intention of divorce or not. If he takes an oath that he did not say them with the intention of divorce, then divorce will not be considered. And if he refuses to take an oath, then divorce will be established. As long as this refusal is not before a Sharia judge, divorce will not be established. Yes, if he confesses that he said it with the intention of divorce, then divorce has occurred. And Allah Almighty knows best.

Problem 312: From Pilibhit, Mohalla Sher Muhammad, asked by Owais Khan alias Sharifullah Khan, 12 Jumada al-Akhirah 1338 AH. What do the scholars of religion and muftis of the firm Sharia say about this: a person, while going abroad to join the army, left his parents saying, "This woman of mine is not of my use/liking; before my return, expel her with great hardship, and I will come back and remarry." Accordingly, the man's parents expelled the woman within two months as requested, and within one month, that woman married another person. The said woman was also expelled from the second husband's house without divorce because she was pregnant. Now, about a year has passed since she left her first husband's house, and her husband also returned from army service five or six months ago. Since his return until today, he has not enquired about the said woman. Before going abroad, one day her husband had arranged to write a divorce deed and gathered some people, but some thought stopped him from completing the divorce deed. The parents of the said woman are also not willing to keep her with them, and she has a seven-year-old boy in her lap from the first husband. Can the said woman marry another person?

The Answer: The phrase "this woman is not of my use/liking" is among metaphors (kinayat) and is multi-faceted. If it was said in a state of anger, the ruling on divorce depends on the intention. If the first husband confesses that he said these words with the intention of divorce, then divorce will be established. After the completion of the waiting period (Iddah) following delivery, she will have the right to marry another. If he denies the intention of divorce, then an oath will be taken from him. If he swears that his intention was not for divorce, then divorce will not occur, and it will be forbidden (haram) for the woman to marry elsewhere. As for the marriage she had with the second person, it was haram anyway, as it was without proof of divorce, and even if proof were established, it was within the waiting period (Iddah). And Allah Almighty knows best.

Problem 313: From Ajmer Sharif, Mohalla Chah Art, asked by Syed Muhammad Azeem Sahib, 22 Ramadan 1339 AH. What do the scholars of religion say? A woman states that for a long time, there has been no relationship with my husband due to disagreements. Accordingly, he has now stated verbally and in writing, "You within a week my... [text continues on next page]"

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

...नहीं, उससे पूछा जाए कि तूने ये लफ़्ज़ ब-नीयत-ए-तलाक़ कहे थे या नहीं, अगर क़सम खा ले कि मैंने ब-नीयत-ए-तलाक़ न कहे थे, तो तलाक़ न मानी जाएगी, और अगर क़सम खाने से इनकार करे तो तलाक़ साबित हो जाएगी जब तक ये इनकार हाकिम-ए-शरा के हुज़ूर न हो तलाक़ साबित न होगी हाँ अगर इक़रार कर दे कि ब-नीयत-ए-तलाक़ कहे थे तो तलाक़ हो गई। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 312: पीलीभीत, मोहल्ला शेर मुहम्मद से, मुस्तौ़ला ओवैस खां उर्फ़ शरीफ़ुल्लाह खां, 12 जमादी अल-उख़रा 1338 हिजरी। क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरा-ए-मतीन इस बारे में कि एक शख़्स मुलाज़िम-ए-फ़ौज होकर परदेस जाने के वक़्त अपने वालिदैन से ये कहकर रुख़सत हुआ कि "मेरी ये औरत मेरे मतलब की नहीं है मेरी वापसी से क़ब्ल निहायत ईज़ा के साथ इसको निकाल देना, मैं वापस आकर दूसरी शादी कर लूँगा।" चुनाँचे उस शख़्स की औरत को मुताबिक़-ए-इस्तदुआ के उसके वालिदैन ने अंदर दो माह निकाल दिया और उस औरत ने अंदर एक माह दूसरे शख़्स के साथ अपना निकाह कर लिया, औरत मज़कूरा दूसरे शौहर के यहाँ से भी बिला तलाक़ के ब-वजह हमल होने के निकाल दी गई अब उस औरत को अपने पहले शौहर के मकान से निकले हुए तक़रीबन एक साल गुज़र गया और उसका शौहर भी मुलाज़मत-ए-फ़ौज से वापस आया और पाँच छह माह हुए वक़्त वापसी के आज तक औरत मज़कूरा का ख़बरगीराँ नहीं हुआ और क़ब्ल जाने परदेस के एक दिन उसके शौहर ने तलाक़ नामा लिखने का बंदोबस्त किया था और कुछ लोगों को जमा किया था मगर उसको किसी ख़याल ने तकमील-ए-तलाक़ नामा से रोक दिया था, औरत मज़कूरा को उसके माँ-बाप भी अपने पास रखने के रवादार नहीं हैं और उसकी गोद में एक लड़का सात साल का पहले शौहर का मौजूद है क्या औरत मज़कूर अपना निकाह किसी और शख़्स से कर सकती है?

अल-जवाब: ये लफ़्ज़ कि "ये औरत मेरे मतलब की नहीं" किनायात से है और मोह्तमल-ए-सब है और हालत हालत-ए-ग़ज़ब है तो हुक्म-ए-तलाक़ नीयत पर मौक़ूफ़ है कि पहला शौहर अगर ये इक़रार करे कि ब-नीयत-ए-तलाक़ ये लफ़्ज़ कहे थे तो तलाक़ साबित हो जाएगी और बाद वज़ा-ए-ह़मल इद्दत गुज़र गई दूसरे से निकाह का उसे इख़्तियार होगा, अगर वो नीयत-ए-तलाक़ का इनकार करे तो उससे हलफ़ लिया जाए, अगर हलफ़ करेगा कि उसकी नीयत तलाक़ की न थी तो तलाक़ न होगी और औरत को दूसरी जगह निकाह हराम होगा, और वो जो दूसरे से निकाह किया था वो तो

बहरहाल हराम था कि बिला सुबूत-ए-तलाक़ था और अगर सुबूत भी हो जाता तो इद्दत के अंदर था। वल्लाहु तआला आलम।

मसला 313: अजमेर शरीफ़, मोहल्ला चाह आर्ट से, मुस्तौ़ला सैयद मुहम्मद अज़ीम साहब, 22 रमज़ान 1339 हिजरी। क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन कि औरत का बयान है कि मेरे ख़ावंद से अर्सा दूर रस से कोई ताल्लुक़ ना-इत्तिफ़ाक़ियों के बाइस नहीं था चुनाँचे अब उसने ज़बानी और तहरीर से ये लिख दिया है कि "तू हफ़्ता के अंदर मेरे... [पाठ अगले पृष्ठ पर जारी है]"

पेज 625/688

نہیں، اس سے پوچھا جائے کہ تُو نے یہ لفظ بہ نیتِ طلاق کہے تھے یا نہیں، اگر قسم کھا لے کہ میں نے بہ نیتِ طلاق نہ کہے تھے، تو طلاق نہ مانی جائے گی، اور اگر قسم کھانے سے انکار کے تو طلاق ثابت ہو جائے گی جب تک یہ انکار حاکمِ شرع کے حضور نہ ہو طلاق ثابت نہ ہو گی ہاں اگر اقرار کر دے کہ بہ نیت طلاق کہے تھے تو طلاق ہو گئی۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۱۲: از پیلی بھیت محلہ شیر محمد مسئولہ اویس خاں عرف شریف اللہ خاں ۱۲ جمادی الآخرہ ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس بارے میں کہ ایک شخص ملازم فوج ہو کر پردیس جانے کے وقت اپنے والدین سے یہ کہہ کر رخصت ہوا کہ میری یہ عورت میرے مطلب کی نہیں ہے میری واپسی سے قبل نہایت ایذا کے ساتھ اس کو نکال دینا، میں واپس آکر دوسری شادی کر لوں گا۔ چنانچہ اس شخص کی عورت کو مطابق استدعا کے اس کے والدین نے اندر دو ماہ نکال دیا اور اس عورت نے اندر ایک ماہ دوسرے شخص کے ساتھ اپنا نکاح کرلیا، عورت مذکورہ دوسرے شوہر کے یہاں سے بھی بلا طلاق کے بوجہ حمل ہونے کے نکال دی گئی اب اس عورت کو اپنے پہلے شوہر کے مکان سے نکلے ہوئے تقریباً ایک سال گزر گیا اور اس کا شوہر بھی ملازمت فوج سے واپس آیا اور پانچ چھ ماہ ہوئے وقت واپسی کے آج تک عورت مذکورہ کا خبر گیراں نہیں ہوا اور قبل جانے پردیس کے ایک دن اس کے شوہر نے طلاق نامہ لکھنے کا بندوبست کیا تھا اور کچھ لوگوں کو جمع کیا تھا مگر اس کو کسی خیال نے تکمیل طلاق نامہ سے روک دیا تھا، عورت مذکورہ کو اس کے ماں باپ بھی اپنے پاس رکھنے کے روادار نہیں ہیں اور اس کی گود میں ایک لڑکا ساتھ سال کا پہلے شوہر کا موجود ہے کیا عورت مذکور اپنا نکاح کسی اور شخص سے کر سکتی ہے؟

الجواب: یہ لفظ کہ "یہ عورت میرے مطلب کی نہیں" کنایات سے ہے اور محتمل سب ہے اور حالت حالتِ غضب ہے تو حکم طلاق نیت پر موقوف ہے کہ پہلا شوہر اگر یہ اقرار کرے کہ بہ نیتِ طلاق یہ لفظ کہے تھے تو طلاق ثابت ہو جائے گی اور بعد وضع حمل عدت گزر گئی دوسرے سے نکاح کا اسے اختیار ہوگا، اگر وہ نیت طلاق کا انکار کرے تو اس سے حلف لیا جائے، اگر حلف کرے گا کہ اس کی نیت طلاق کی نہ تھی تو طلاق نہ ہو گی اور عورت کو دوسری جگہ نکاح حرام ہوگا، اور وہ جو دوسرے سے نکاح کیا تھا وہ تو بہر حال حرام تھا کہ بلا ثبوتِ طلاق تھا اور اگر ثبوت بھی ہو جاتا تو عدت کے اندر تھا۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۱۳: از اجمیر شریف محلہ چاہ ارٹ مسئولہ سید محمد عظیم صاحب ۲۲ رمضان ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین کہ عورت کا بیان ہے کہ میرے خاوند سے عرصہ دور رس سے کوئی تعلق نا اتفاقیوں کے باعث نہیں تھا چنانچہ اب اس نے زبانی اور تحریر سے یہ لکھ دیا ہے کہ "تو ہفتہ کے اندر میرے... [بقیہ اگلے صفحہ پر]"

“If you do not come to me, go wherever you want; you have authority over your heart and I have authority over mine.” Thus, the woman, considering these words as divorce, declared herself separated (ba’in). Therefore, state whether this divorce took place or not? And can the woman marry another after the waiting period ('iddat)? Clarify and be rewarded.

The Answer: In this situation, the occurrence of divorce depends on the husband's intention. The woman has no authority to consider herself divorced on her own. If the husband declares on oath that he did not intend divorce with these words, then divorce will never be recognized, and she will remain his wife as before. Yes, if he refuses to take an oath, then a complaint should be filed before a Sharia judge; if the husband refuses to take an oath before him as well, then divorce will be established. And Allah Almighty knows best.

Problem 314: From Bareilly City, 6 Shawwal 1339 AH What do the scholars of religion say regarding this matter: In a state of anger and during a request for divorce, Zaid said to his mother-in-law and father-in-law, “If I am not liked, then marry her off to someone else or get her married.” In response, it was said, “Yes, you are not liked.” Has the marriage broken due to this or not? Clarify and be rewarded.

The Answer: The mentioned state is one of anger and the word is not liable to rejection or insult, therefore divorce has occurred and the woman has come out of the marriage bond. This is my opinion (haaza ma 'indi). And Allah Almighty knows best.

Problem 315: From Jeetpur Kathiawar, Jamia Masjid Madrasa, through Mr. Maulvi Syed Ghulam Haider, Mas’oola (Petitioner): Maulvi Jameel-ur-Rehman Sahib Rizwi Bareillawi, 4 Dhu al-Qi'dah 1339 AH. What is the ruling of the pure Sharia on this matter: Zaid, being severely angry with his wife Hindah, said in a state of anger, “Go to your house, you are of no use to me, I have divorced you.” Hindah is eight months pregnant. Zaid takes an oath that, “I said these words only for admonition, and never said these words with the intent of divorce, and at that time I was out of my senses due to anger.” Now, what should Zaid and Hindah do? If halala becomes necessary, has the pure Sharia mentioned any such way that halala does not have to be performed and the relationship between Zaid and Hindah remains established or can be re-established? Clarify and be rewarded.

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

"अगर पास न आए तो जहाँ चाहे जा, तुझे इख़्तियार है तेरे दिल का और मुझे इख़्तियार है अपने दिल का।" लिहाज़ा औरत ने इन अल्फ़ाज़ को तलाक़ समझ कर अपने को बाइन (अलग) कर लिया। लिहाज़ा फ़रमायें कि यह तलाक़ हुई या नहीं? और औरत इद्दत के बाद दूसरे से निकाह कर सकती है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य पाएँ।

उत्तर: इस सूरत में तलाक़ का होना शौहर (पति) की नीयत पर मुनहसिर (निर्भर) है, औरत को कोई इख़्तियार नहीं कि वह खुद को तलाक़शुदा समझे। शौहर अगर क़सम खाकर कह दे कि मैंने इन लफ़्ज़ों से तलाक़ की नीयत नहीं की थी, तो हरगिज़ तलाक़ नहीं मानी जाएगी और वह बदस्तूर उसकी बीवी रहेगी। हाँ, अगर क़सम खाने से इनकार करे तो शरीयत के क़ाज़ी के पास शिकायत की जाए; अगर शौहर उसके सामने भी हलफ़ (शपथ) से इनकार करेगा तो तलाक़ साबित हो जाएगी। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 314: शहर बरेली से, 6 शव्वाल 1339 हिजरी क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि गुस्से की हालत में और तलाक़ की माँग के दौरान ज़ैद ने अपनी सास और ससुर से कहा, "अगर मैं पसंद नहीं हूँ तो दूसरे से निकाह कर दो या शादी कर दो।" जवाब में उन्होंने कहा, "हाँ, तुम पसंद नहीं हो।" क्या इससे निकाह टूट गया या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य पाएँ।

उत्तर: बताई गई स्थिति क्रोध की है और लफ़्ज़ न रद्द होने वाला है न अपमानजनक, इसलिए तलाक़ हो गई और औरत निकाह से निकल गई। यह मेरी राय है (हाज़ा मा इंदी)। और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसला 315: जीतपुर काठियावाड़, जामा मस्जिद मदरसा के माध्यम से, श्री मौलवी सैयद गुलाम हैदर साहब, सवाली: मौलवी जमील-उर-रहमान साहब रिज़वी बरेलवी, 4 ज़ुल-क़ादा 1339 हिजरी। क्या हुक्म है शरीयत-ए-मुतहरा का इस मसले में कि ज़ैद ने अपनी बीवी हिंदा पर सख्त गुस्सा होकर गुस्से की हालत में यह कहा कि "तू अपने घर जा, मेरे काम की नहीं, मैंने तुझको तलाक़ दी।" हिंदा को आठ महीने का गर्भ है। ज़ैद क़सम खाता है कि "मैंने केवल चेतावनी देने के लिए ये अल्फ़ाज़ कहे थे, हरगिज़ ऐसे अल्फ़ाज़ तलाक़ के इरादे से नहीं कहे थे, और मैं उस समय गुस्से में आपे से बाहर था।" अब ज़ैद और हिंदा को क्या करना चाहिए? अगर हलाला ज़रूरी होता हो, तो क्या शरीयत-ए-

मुतहरा ने ऐसी कोई सूरत बताई है कि हलाला न करना पड़े और ज़ैद व हिंदा के संबंध बने रहें या फिर से कायम हो जाएँ। स्पष्ट करें और पुण्य पाएँ।

पृष्ठ 626 / 688

پاس نہ آئے تو جہاں پر چاہے جا، تجھے اختیار ہے تیرے دل کا اور مجھے اختیار ہے اپنے دل کا۔ "لہذا عورت نے ان الفاظ کو طلاق سمجھ کر اپنے کو بائن کر لیا لہذا فرمائیے کہ یہ طلاق ہوئی یا نہیں ؟ اور عورت بعد عدت دوسرے سے عقد کر سکتی ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: اس صورت میں طلاق ہونا نیت شوہر پر موقوف ہے عورت کو کوئی اختیار نہیں کہ بطور خود اپنے آپ کو مطلقہ سمجھے، شوہر اگر قسم سے کہہ دے گا کہ میں نے ان لفظوں سے طلاق کی نیت نہ کی تھی تو ہرگز طلاق نہ مانی جائے گی اور وہ بدستور اس کی زوجہ ہوگی ، ہاں اگر قسم کھانے سے انکار کرے تو حاکم شرعی کے حضور نالش کی جائے اگر شوہر اس کے سامنے بھی حلف سے انکار کرے گا تو طلاق ثابت ہو جائے گی، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۳۱۴: از شہر بریلی ۶ شوال ۱۳۳۹ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ غصہ کی حالت میں اور دوران طلب طلاق میں زید نے اپنی ساس اور خسر سے کہا اگر میں پسند نہیں ہوں تو دوسرے سے نکاح کر دو یا شادی کر دو، سنے جواب میں کہا ہاں تو پسند نہیں ہے اس سے نکاح ٹوٹ گیا نہیں ؟ بینوا توجروا۔

الجواب: حالت حالت مذکورہ و غضب ہے اور لفظ نہ محتمل رد نہ محتمل سب ہے لہذا طلاق ہو گئی اور عورت نکاح سے نکل گئی ہذا ما عندی (یہ جواب میرے ہاں ہے) واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۳۱۵: از جیت پور کاٹھیاواڑ جامع مسجد مدرسہ معرفت جناب مولوی سید غلام حیدر صاحب مسئولہ مولوی جمیل الرحمن صاحب رضوی بریلی ۴ ذیقعدہ ۱۳۳۹ھ ، کیا حکم ہے شریعت مطہرہ کا اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی بی بی ہندہ پر سخت غصہ ہو کر بحالت غصہ یہ کہا کہ " تو اپنے

گھر کو جا میرے کام کی نہیں ، میں نے تجھ کو طلاق دی ۔ ہندہ کو آٹھ ماہ کا حمل ہے زید حلف اٹھاتا ہے کہ " میں نے فقط تنبیہ کے لئے یہ الفاظ کہے تھے ہر گز ایسے الفاظ طلاق کی غرض سے نہ کہے تھے اور میں اس وقت غصے میں آپے سے باہر تھا، اب زید و ہندہ کیا کرنا چاہئے؟ اگر حلالہ لازم آتا ہو ، تو کوئی صورت شریعت مطہرہ نے ایسی بھی بتائی ہے کہ حلالہ نہ کرنا پڑے اور زید و ہندہ کے تعلقات قائم رہیں یا قائم ہو جائیں۔ بینوا توجروا۔

Fatawa Razawiyya Volume Twelve

The Answer: If the situation is as described—that neither the woman nor anyone else had asked for divorce on her behalf, in response to which he uttered these words, nor did he repeat these words but only said them once—then in this case, only one revocable divorce (talaq-e-raj'i) has occurred.

[Table/Box Section] Arabic Text: Because the first word carries the possibility of a refusal, therefore, intention is required in any case. And the second word carries the possibility of an insult (scolding), thus in a state of anger, the intention for divorce is necessary. And taking an oath in his house is sufficient as mentioned in al-Durr al-Mukhtar. And the third word, even if it is explicit (sarih), cannot be a context (qarinah) for the first two because the condition for intention is that it must precede, as stated in Radd al-Muhtar. Urdu Translation of the Box Content: Because the first word also carries the possibility of a refusal, therefore in any case, the intention for divorce is necessary. And the second word also carries the possibility of a scolding, so in a state of anger, the intention for divorce would be required, while he has already sworn an oath, and giving an oath at home is sufficient as mentioned in Durr-e-Mukhtar. And although the third word is explicit regarding divorce, it cannot serve as a contextual indicator (qarinah) for the first two words because for something to be a context, it must precede the words, as stated in Radd al-Muhtar. (T)

Therefore, if he had never given two divorces before this, nor one irrevocable divorce (talaq-e-ba'in) whose iddah (waiting period) is still ongoing, then as long as the delivery of a child has not occurred (if pregnant), he can take her back (ruju'). For example, if he says verbally, "I have taken you back into my marriage," she will remain in his marriage as before. And if he does not take her back until the child is born, then after that, a re-marriage with the woman's consent will be necessary. Halala is not required in either case; Halala becomes mandatory only after three divorces, and once it becomes mandatory, there is no way to waive it. (Everything mentioned in al-Qunyah regarding tricks (hila) is false and has no basis - T). And Allah Almighty knows best.

Problem 316: Sent by Mustaqeem Khan, Landowner, 14 Safar 1317 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: The daughter of Ali Muhammad Khan was married to Bhoora Khan. The bride had not yet moved to the groom's house (rukhsati) when a dispute arose. Barkatullah Khan, Mustaqeem Khan, and Naziruddin Khan went for reconciliation. In front of everyone, Bhoora Khan said, "She is not my

wife, I have left her before," and repeated several times, "I have left her, left her, I have no concern, she is not my wife." In this case, has a divorce occurred or...

---

1 Durr al-Mukhtar, Chapter on Metaphors, Mujtabai Press, Delhi, 1/224. Page 627 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

अल-जवाब (उत्तर): यदि घटना केवल इतनी ही है कि न तो उस महिला ने और न ही किसी अन्य ने उसके लिए तलाक की मांग की थी, जिसके उत्तर में उसने ये शब्द कहे, और न ही उसने इन शब्दों को दोहराया बल्कि केवल एक बार कहा, तो इस स्थिति में केवल एक तलाक-ए-रजई (प्रतिसंहरणीय तलाक) प्रभावी हुआ।

[टेबल/बॉक्स सेक्शन] अरबी पाठ: चूंकि पहले शब्द में अस्वीकृति की संभावना है, इसलिए हर हाल में नीयत (इरादा) आवश्यक है। और दूसरे शब्द में अपमान (डांट) की संभावना है, इसलिए क्रोध की स्थिति में तलाक की नीयत जरूरी है। और अपने घर में शपथ लेना पर्याप्त है जैसा कि 'अल-दुर अल-मुख़्तार' में उल्लेखित है। और तीसरा शब्द, भले ही वह स्पष्ट (सरिह) हो, पहले दो के लिए साक्ष्य (क़रीना) नहीं हो सकता क्योंकि नीयत की शर्त यह है कि उसे पहले होना चाहिए, जैसा कि 'रद्दुल मुहतार' में कहा गया है। बॉक्स सामग्री का उर्दू अनुवाद: क्योंकि पहले शब्द में अस्वीकृति की भी संभावना है, इसलिए हर हाल में तलाक की नियत (इरादा) आवश्यक है। और दूसरे शब्द में डांटने की भी संभावना है, इसलिए क्रोध की स्थिति में तलाक की नियत करनी होगी, जबकि वह शपथ ले चुका है और घर में शपथ लेना पर्याप्त है जैसा कि 'दुर-ए-मुख़्तार' में है। और तीसरा शब्द हालाँकि तलाक में स्पष्ट है, लेकिन यह पहले दो शब्दों के लिए साक्ष्य (क़रीना) नहीं हो सकता क्योंकि साक्ष्य के लिए पहले होना शर्त है जैसा कि 'रद्दुल मुहतार' में है। (त)

अतः, यदि उसने इससे पहले कभी दो तलाक नहीं दिए थे और न ही एक तलाक-ए-बाइन (अप्रतिसंहरणीय तलाक) दिया था जिसकी इद्दत अभी बाकी हो, तो जब तक प्रसव (यदि गर्भवती है) न हो जाए, वह रुजू (वापसी) कर सकता है। उदाहरण के लिए, ज़ुबान से इतना कह दे कि "मैंने तुझे अपने निकाह में वापस ले लिया," तो वह यथावत उसके निकाह में रहेगी। और यदि प्रसव तक रुजू नहीं करेगा, तो उसके बाद महिला की सहमति से उससे दोबारा निकाह करने की आवश्यकता होगी। हलाला की आवश्यकता दोनों स्थितियों में नहीं है; हलाला तीन तलाकों पर अनिवार्य होता है, और जब अनिवार्य हो जाता है, तो उसे रद्द करने का कोई तरीका नहीं है। (कनियाह में जो हले ज़िक्र किए गए हैं वे निराधार हैं। - त)। और अल्लाह सबसे बेहतर जानता है।

मसाला 316: प्रेषक मुस्तकीम खान ज़मींदार, 14 सफ़र 1317 हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि अली मुहम्मद खान की बेटी का निकाह भूरा खान के साथ हुआ था। अभी रुख़सती

नहीं हुई थी कि आपस में विवाद हो गया। बरकतुल्लाह खान, मुस्तकीम खान, और नज़ीरुद्दीन खान सुलह के लिए गए। सबके सामने भूरा खान ने कहा, "यह मेरी पत्नी नहीं है, मैंने इसे पहले ही छोड़ दिया है" और कई बार कहा "मैंने छोड़ दी, छोड़ दी, मुझे इससे कोई मतलब नहीं है, मेरी बीवी नहीं है।" इस स्थिति में तलाक हुआ या...

---

1 दुर-ए-मुख़्तार, बाबुल किनायात, मतबा मुजतबाई दिल्ली, 1/224। पृष्ठ 627 का 688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

الجواب: اگر واقعہ اسی قدر ہے عورت نے یا کسی اور نے عورت کے لئے طلاق نہ مانگی تھی جس کے جواب میں یہ لفظ اس نے کہے نہ اس نے ان الفاظ کو مکرر کہا بلکہ صرف ایک ہی بار کہا تو اس صورت میں ایک ہی طلاق رجعی واقع ہوئی

[جدول / بکس کا حصہ] عربی عبارت: لان اللفظ الاول یحتمل الرد فینوئ علی کل حال والثانی یحتمل السب فینوئ فی الغضب وقد حلف ویکفی حلفہ فی منزلہ کما فی الدر المختار واللفظ الثالث وان کان صریحا لا یکون قرینۃ فی الاولین لان شرط النیۃ ان تتقدم کما فی ردالمحتار۔ اردو ترجمہ (بکس کے مواد کا): کیونکہ پہلا لفظ جواب کا بھی احتمال رکھتا لہٰذا بہر صورت نیت طلاق ضروری ہے، اور دوسرا لفظ ڈانٹ کا بھی احتمال رکھتا ہے اس لئے صرف غصہ کی حالت میں طلاق کی نیت کرنی ہوگی جبکہ وہ قسم دے چکا ہے اور گھر میں قسم دے دینا کافی ہے جیسا کہ درمختار میں ہے۔ اور تیسرا لفظ اگر چہ طلاق میں صریح ہے لیکن یہ پہلے دونوں لفظوں کے لئے قرینہ کافی نہیں ہو سکتا کیونکہ قرینہ کے لئے پہلے ہونا شرط ہے جیسا کہ ردالمحتار میں ہے۔ (ت)

پس اگر اس سے پہلے کبھی دو طلاقیں نہ دی تھیں نہ ایک طلاق بائن دی تھی جس کی عدت باقی ہو تو جب تک وضع حمل نہ ہو رجعت کر سکتا ہے، مثلاً زبان سے اتنا کہہ دے کہ "میں نے تجھے اپنے نکاح میں پھیر لیا" تو وہ بدستور اس کے نکاح میں رہے گی، اور اگر وضع حمل تک رجعت نہ کرے گا تو اس کے بعد برضائے زن اس سے دوبارہ نکاح کرنے کی حاجت ہوگی، حلالہ کی حاجت دونوں صورتوں میں نہیں، حلالہ تین طلاقوں پر لازم ہوتا ہے، اور جب لازم ہوتا ہے اس کے ساقط کرنے کی کوئی صورت نہیں وکل ما ذکر فی القنیۃ من الحیل و غیرہا باطل لا اصل لہ (قنیہ میں جو حیلے ذکر کئے گئے وہ باطل ہیں ان کی کوئی اصل نہیں ۔ ت) واللہ تعالٰی اعلم ۔

مسئلہ ۳۱۶: مرسلہ مستقیم خاں زمیندار ۱۴ صفر ۱۳۱۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ علی محمد خاں کی بیٹی کا نکاح بھورا خاں کے ساتھ ہوا ابھی رخصت نہ ہوئی تھی کہ باہم نزاع ہو گیا۔ برکت اللہ خاں، مستقیم خاں، نظیر الدین خاں صلح کے لئے گئے۔ سب کے سامنے بھورا خاں نے کہا "یہ میری زوجہ نہیں ہے میں نے اس کو پہلے چھوڑ دیا ہے" اور چند مرتبہ کہا "میں نے چھوڑ دی چھوڑ دی مجھ کو کچھ سروکار نہیں، میری بی بی نہیں ہے" اس صورت میں طلاق ہوئی یا

---

1 در مختار باب الکنایات مطبع مجتبائی دہلی ۱/ ۲۲۴ صفحہ 627 از 688

Fatawa Ridawiyya - Volume 12

...no? State it and you will be rewarded.

The Answer: In this case, the woman has come out of the marriage contract; one 'Talaq Ba'in' (irrevocable divorce) has occurred upon her. Half of the dower has become payable by the husband. The woman does not need to observe the waiting period ('iddah'); she may marry whenever she wishes. If she agrees to marry the same former husband, she can do so; there is no need for 'halala'. And Allah Almighty knows best.

Problem 731: Questioned by Maulana Hashmat Ali Sahib Suni Hanafi Qadri Razvi Lucknowi, student at Madrasah Ahl-e-Sunnat-o-Jamaat, 19th Rajab al-Sharif, Friday, 1338 AH, Bareilly Sharif.

What do the scholars of the religion say: Zayd said to his mother-in-law, "I am leaving your girl, she is of no use to me." Now the question is, did a divorce occur or not? State it and you will be rewarded.

The Answer: Two 'Ba'in' divorces occurred; the woman has come out of the marriage contract. She can marry someone else after the waiting period. If the marriage had not been consummated, there is no need for a waiting period either. And if she wishes to marry Zayd himself, she can do that too, whether during the waiting period or after it, provided he had not given her any divorce before this, because if that were the case, it would be three divorces and it would not be possible without 'halala'.

(Arabic Text)

And that is because the first word is explicit (sarih), so divorce occurred by it even if he did not intend it. Through it, the situation became one of discussing divorce. The second word does not admit rejection but rather insult, so it is independent of intention due to the discussion of divorce. What occurred by it is 'ba'in' (irrevocable) because it is among the metaphorical expressions (kinayat) other than the three known ones like 'i'taddi' (count your periods)

(Urdu Text)

Because the first word is explicit, therefore this divorce occurred even if there was no intention. From it, the state of discussing divorce was established, and the second word only holds the possibility of a scolding and cannot be an answer. Therefore, there is no need for intention here because the discussion of divorce has already taken place. From this, an irrevocable (ba'inah) divorce occurred because it is among the metaphors (kinayat). However, 'i'taddi' and words like it are not among the three

(Arabic Text)

and its sisters. Its following the first made the first revocable (raj'i) divorce also 'ba'in' due to the impossibility of taking back (ruju') with the second. So she became irrevocably divorced by two. And Allah Almighty knows best.

Page 628 of 688

(Urdu Text)

metaphors [that signify three divorces]. Therefore, because of this second word, the first explicit divorce also became 'ba'inah' because the second is 'ba'inah' due to which 'ruju' (taking back) in the first is not possible. Thus, the wife received two 'ba'inah' divorces. And Allah Almighty knows best.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 12

...नहीं? बयान फ़रमाएं सवाब मिलेगा।

अल-जवाब (उत्तर): इस सूरत में औरत निकाह से निकल गई, उस पर एक तलाक-ए-बाइन हो गई, आधा महर शौहर पर वाजिब-उJ-अदा हुआ, औरत को इद्दत की ज़रूरत नहीं, जिस वक्त चाहे निकाह कर ले, अगर वह साबिक (पुराने) शौहर ही से राज़ी हो तो उससे भी निकाह हो सकता है, हलाला की हाजत नहीं। वल्लाहु तआला आलम (और अल्लाह तआला बेहतर जानता है)।

मसला 731: मुस्तफ़ा मौलाना हशमत अली साहब सुन्नी हनफी कादरी रज़वी लखनवी, मुतअल्लिम मदरसा अहले सुन्नत व जमाअत, 19 रजब शरीफ बरोज़ जुम्मा 1338 हिजरी बरेली शरीफ।

क्या फरमाते हैं उलमा-ए-दीन कि ज़ैद ने अपनी सास से कहा "मैं तुम्हारी लड़की को छोड़ता हूँ, मेरे काम की नहीं।" अब सवाल यह है कि तलाक हुई या नहीं? बयान फ़रमाएं सवाब मिलेगा।

अल-जवाब (उत्तर): दो तलाकें बाइन हो गईं, औरत निकाह से निकल गई, इद्दत के बाद दूसरे से निकाह कर सकती है और अगर रुख्सती न हुई थी तो इद्दत की भी हाजत नहीं, और अगर ज़ैद ही से निकाह चाहे तो उससे भी कर सकती है, इद्दत में ख़्वाह इद्दत के बाद, जबकि इससे पहले कोई तलाक उसे न दे चुका हो कि ऐसा था तो तीन हो गईं, बे-हलाला नहीं हो सकेगा।

(अरबी पाठ का अनुवाद)

और यह इसलिए क्योंकि पहला शब्द स्पष्ट (सरिह) है, तो इसके द्वारा तलाक हो गई चाहे उसने नियत (इरादा) न भी की हो। और इसके ज़रिए स्थिति तलाक की चर्चा की हो गई। और दूसरा शब्द इनकार की गुंजाइश नहीं रखता बल्कि गाली/डांट है, इसलिए तलाक की चर्चा के कारण नियत की आवश्यकता नहीं रही। और इसके द्वारा जो हुआ वह 'बाइन' है क्योंकि यह उन प्रतीकात्मक शब्दों (किनायात) में से है जो उन तीन ज्ञात शब्दों (जैसे इअतद्दी) के अलावा हैं। इसके पहले के साथ जुड़ने

(उर्दू पाठ का अनुवाद)

क्योंकि पहला लफ्ज़ सरिह (स्पष्ट) है इसलिए यह तलाक हुई अगरचे नियत न भी हो, इससे मुज़ाकरा-ए-تلاک का हाल हो गया, और दूसरा लफ्ज़ सिर्फ डांट का एहतमाल रखता है और जवाब नहीं बन सकता, लिहाज़ा यहाँ नियत की ज़रूरत नहीं क्योंकि मुज़ाकरा-ए-تلاک हो चुका है, इससे बाइनह तलाक हुई क्योंकि यह किनायात में से है, लेकिन 'इअतद्दी' और इस जैसे लफ्ज़ किनाया तीन में से नहीं है, लिहाज़ा इस दूसरे लफ्ज़ से पहली सरिह तलाक भी

(अरबी पाठ का अनुवाद)

ने पहली रज्ई तलाक को भी बाइन बना दिया क्योंकि दूसरे के कारण रुजूअ (वापस लेना) असंभव हो गया। तो वह दो तालों से बाइन हो गई। वल्लाहु तॉला आलम।

पेज 628 of 688

(उर्दू पाठ का अनुवाद)

बाइनह हो गई क्योंकि दूसरी बाइनह है जिसकी वजह से पहली में रुजूअ मुमकिन न रहा, लिहाज़ा बीवी को दो बाइनह तलाकें हुईं, वल्लाहु तआला आलम।

نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: اس صورت میں عورت نکاح سے نکل گئی، اس پر ایک طلاق بائن ہوگئی، آدھا مہر شوہر پر واجب الادا ہوا، عورت کو عدت کی ضرورت نہیں جس وقت چاہے نکاح کرلے، اگر اس شوہر سابق ہی سے راضی ہو تو اس سے بھی نکاح ہو سکتا ہے حلالے کی حاجت نہیں۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۷۳۱: مسئولہ مولانا حشمت علی صاحب سنی حنفی قادری رضوی لکھنوی متعلم مدرسہ اہلسنت و جماعت ۱۹ رجب شریف یوم جمعہ ۱۳۳۸ھ بریلی شریف

کیا فرماتے ہیں علمائے دین کہ زید نے اپنی ساس سے کہا "میں تمہاری لڑکی کو چھوڑتا ہوں میرے کام کی نہیں" اب سوال یہ ہے کہ طلاق ہوئی یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: دو طلاقیں بائن ہو گئیں، عورت نکاح سے نکل گئی، عدت کے بعد دوسرے سے نکاح کر سکتی ہے اور اگر رخصت نہ ہوئی تھی تو عدت کی بھی حاجت نہیں، اور اگر زید ہی سے نکاح چاہے تو اس سے بھی کر سکتی ہے عدت میں خواہ عدت کے بعد، جبکہ اس سے پہلے کوئی طلاق اسے نہ دے چکا ہو کہ ایسا تھا تو تین ہو گئیں بے حلالہ نہیں ہو سکے گا،

| وذلك لان اللفظ الاول صريح فوقع به طلاق وان لم ينو وصار الحال به حال المذاكرة واللفظ الثانى لا يحتمل الرد بل السب فاستغنى عن النية لاجل المذاكرة، والواقع به بائن لانه من الكنايات غير الثلاث المعلومة اعتدى واخيها فلحوقه جعل الرجعى الاول ايضاً بائنا لامتناع الرجعة بالثانى فبانت بثنتين۔ واللہ تعالیٰ اعلم۔ | کیونکہ پہلا لفظ صریح ہے اس لئے یہ طلاق ہوئی اگرچہ نیت نہ بھی ہو، اس سے مذاکرہ طلاق کا حال ہو گیا، اور دوسرا لفظ صرف ڈانٹ کا احتمال رکھتا اور جواب نہیں بن سکتا،

لہٰذا یہاں نیت کی ضرورت نہیں کیونکہ مذاکرہ طلاق ہو چکا ہے، اس سے بائنہ طلاق ہوئی کیونکہ یہ کنایات میں سے ہے لیکن اعتدی اور اس جیسے الفاظ کنایہ تین میں سے نہیں ہے، لہٰذا اس دوسرے لفظ سے پہلی صریح طلاق بھی بائنہ ہو گئی کیونکہ دوسری بائنہ ہے جس کی وجہ سے پہلی میں رجوع ممکن نہ رہا، لہٰذا بیوی کو دو بائنہ طلاقیں ہوئیں، واللہ تعالیٰ اعلم۔ |

Fatawa Razawiyya, Volume 12

Issue 318: 23 Jumadi al-Akhira 1338 AH. Zaid said to his wife, "Go, I have left you," and he said the same several times in front of some people: "I have left her." But he did not use the word "talaq" (divorce). Did divorce occur or not?

Answer: If it was said three times, three divorces have occurred. Now he cannot marry her without Halala. If it was said less than three times and the waiting period (iddah) has passed, they can remarry each other. If the iddah has not passed, it is sufficient for the man to say, "I have taken you back into my marriage." And Allah the Almighty knows best.

Issue 319: 7 Rajab al-Murajab 1338 AH. From the city of Bareilly, Muhalla Zakhira, asked by Sayyid Sharafat Ali Sahib. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid's wife is at her parents' house. A man went from Zaid's house to bring her back, but her parents did not send her. The next day Zaid went himself, but they still did not send her, nor did they provide any specific reason. Zaid felt offended and said, "If you don't send her, I will give your daughter an answer (divorce) and you should call four or five people right now so that I can give the answer in their presence and sever ties." Zaid's father-in-law and mother-in-law replied, "We will neither gather people nor do we wish to receive an answer." Zaid, saying, "I give the answer from this moment and hold no relation, and tomorrow I will inform you again via registered mail," left. The next day, he sent a registered letter writing, "I sever ties and give divorce." Zaid's father-in-law returned it. Zaid went abroad and returned after two months. Then a relative of Zaid, who was a close relative of his wife, met Zaid and wanted him to reconcile with his wife. Zaid replied to him, "I have already given divorce, how can there be reconciliation now?" He fell silent. Similarly, Zaid said to another man, "I have already given divorce to my wife." Now Zaid wants to know if his wife is divorced or not?

Answer: Divorce has occurred and the woman is out of the marriage bond. If he had not given any divorce before this, he can marry her with the woman's consent; there is no need for Halala. But if he had already given one divorce previously, then he cannot remarry now without Halala because they have become three (one before, and one from this instance where he said "I give the answer from this moment and hold no relation," and then writing "I sever ties"). These together count as one [additional divorce after the first one]. For indeed, a final divorce does not follow another final divorce [in the same instance], and the intention has become manifest.

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

मसाला 318: 23 जमादी-अल-आखिर 1338 हिजरी। ज़ैद ने अपनी बीवी से कहा कि "जा मैंने तुझे छोड़ दिया" और चंद मर्तबा और चंद आदमियों के सामने यही कहा कि "मैंने उसको छोड़ दिया", मगर "तलाक" का लफ़्ज़ नहीं कहा, तो तलाक हुई या नहीं?

अल-जवाब: अगर तीन बार कहा तो तीन तलाकें हो गईं, अब बिना हलाला के उससे निकाह नहीं कर सकता। और अगर तीन बार से कम कहा और इद्दत गुज़र गई तो आपस में दूसरा निकाह कर सकते हैं, और इद्दत न गुज़री तो मर्द का इतना कहना काफ़ी है कि मैंने तुझे अपने निकाह में वापस ले लिया, वल्लाहु तआला आलम।

मसाला 319: 7 रजब मुरज्जब 1338 हिजरी। शहर बरेली मोहल्ला ज़खीरा से, सायल सैय्यद शराफ़त अली साहब। क्या फ़रमाते हैं उलेमा-ए-दीन इस मसले में कि ज़ैद की बीवी अपने मायके में है, ज़ैद के घर से एक आदमी उसे लेने गया, उसके वालिदैन ने नहीं भेजा। दूसरे दिन ज़ैद खुद गया, फिर भी नहीं भेजा और न कोई वजह बताई। ज़ैद को बुरा लगा, उसने कहा कि "अगर आप नहीं भेजते तो आपकी लड़की को जवाब (तलाक) दे दूँगा और आप इसी वक़्त दो-चार आदमियों को बुलवा लीजिए ताकि मैं उनकी मौजूदगी में जवाब दे दूँ और रिश्ता खत्म कर दूँ।" ज़ैद के सास-ससुर ने जवाब दिया कि "न हम आदमियों को बुलाएँगे और न जवाब सुनना मंजूर है।" ज़ैद ने यह कहकर कि "मैं इसी वक़्त से जवाब देता हूँ और मेरा कोई ताल्लुक नहीं है और कल रजिस्टर्ड डाक से फिर इत्तिला दूँगा," चला गया। दूसरे दिन उसने यह लिखकर कि "मैं ताल्लुक खत्म करता हूँ और तलाक देता हूँ" रजिस्ट्री कर दी। ज़ैद के ससुर ने वह रजिस्ट्री वापस कर दी। ज़ैद परदेश चला गया और दो महीने बाद वापस आया। तब ज़ैद के एक अज़ीज़ ने, जो उसकी बीवी का भी करीबी रिश्तेदार था, ज़ैद से मिल कर सुलह करानी चाही। ज़ैद ने उसे जवाब दिया कि "मैं तलाक दे चुका हूँ अब सुलह कैसी?" वह खामोश हो गया। एक और आदमी से भी ज़ैद ने यही कहा कि "मैं अपनी बीवी को तलाक दे चुका हूँ।" अब ज़ैद जानना चाहता है कि उसकी बीवी को तलाक हुई या नहीं?

अल-जवाब: तलाक हो गई और औरत निकाह से निकल गई। अगर उसने इससे पहले कोई तलाक नहीं दी थी, तो औरत की रज़ामंदी से दोबारा निकाह कर सकता है, हलाला की ज़रूरत नहीं। और अगर पहले भी एक तलाक दे चुका था, तो अब बिना हलाला के निकाह नहीं कर सकता क्योंकि तीन हो गईं (एक पहले और एक इस वक़्त जब उसने कहा कि "मैं इसी वक़्त से जवाब देता हूँ और अपना

कोई ताल्लुक नहीं रखता," और फिर लिखा कि "मैं ताल्लुक खत्म करता हूँ")। ये सब मिल कर एक ही हुई। क्योंकि यकीनन एक मुकम्मल तलाक के बाद दूसरी मुकम्मल तलाक नहीं जुड़ती (उसी मजलिस में) और नीयत ज़ाहिर हो चुकी है।

पृष्ठ 629 का 688

فتاویٰ رضویہ، جلد دوازدہم

مسئلہ ۳۱۸: ۲۳ جمادی الاخرہ ۱۳۳۸ھ زید نے اپنی بی بی سے کہا کہ "جا میں نے تجھے چھوڑ دیا" اور چند مرتبہ اور چند آدمیوں کے سامنے یہی کہا کہ "میں نے اس کو چھوڑ دیا" مگر "طلاق" کا لفظ نہیں کہا تو طلاق ہوئی یا نہیں؟

الجواب: اگر تین بار کہا تین طلاقیں ہو گئیں، اب بے حلالہ اس سے نکاح نہیں کر سکتا اور تین بار سے کم کہا اور عدت گزر گئی تو دوسرا نکاح آپس میں کر سکتے ہیں، اور عدت نہ گزری تو مرد کا اتنا کہنا کافی ہے کہ میں نے تجھے اپنے نکاح میں پھیر لیا، واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۳۱۹: ۷ رجب مرجب ۱۳۳۸ھ از شہر بریلی محلہ ذخیرہ مسئولہ سید شرافت علی صاحب۔ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید کی بیوی اپنے میکہ میں ہے، زید کے گھر سے ایک آدمی اس کو لینے گیا، اس کے والدین نے نہیں بھیجا، دوسرے دن زید خود گیا پھر بھی نہیں بھیجا اور نہ کوئی وجہ خاص بتلائی، زید کو ناگوار ہوا اس نے کہا کہ "اگر آپ نہیں بھیجتے تو آپ کی لڑکی کو جواب دے دوں گا اور آپ اس وقت دوچار آدمیوں کو بلوا لیجئے تاکہ میں اس وقت اُن کی موجودگی میں جواب دے دوں اور قطع تعلق کر لوں۔" زید کے خسر اور ساس نے جواب دیا کہ "نہ ہم آدمیوں کو جمع کریں گے اور نہ جواب لینا منظور ہے" زید یہ کہہ کر کہ "میں اس وقت سے جواب دیتا ہوں اور اپنا کوئی تعلق نہیں رکھتا اور کل بذریعہ رجسٹری ڈاکخانہ سے دوبارہ آپ کو اطلاع دوں گا۔" دوسرے دن اس نے یہ لکھ کر کہ "میں قطع تعلق کرتا ہوں اور طلاق دیتا ہوں" رجسٹری کر دی، زید کے خُسر نے واپس کردی، زید پردیس چلا گیا وہاں سے دو ماہ کے بعد آیا اس وقت زید کے ایک عزیز نے جو کہ اس کی بی بی کا قریبی رشتہ دار تھا، زید سے مل کر یہ چاہا کہ بیوی سے صلح ہو جائے، زید نے اس کو یہ جواب دیا کہ "میں طلاق دے چکا ہوں اب

صلح کیسی" وہ خاموش ہو گیا، چنانچہ ایک اور آدمی سے بھی زید نے یہ کہا کہ "میں اپنی بی بی کو طلاق دے چکا ہوں" اب زید معلوم کرنا چاہتا ہے کہ اس کی بی بی کو طلاق ہو گئی یا نہیں؟

الجواب: طوق ہو گئی اور عورت نکاح سے نکل گئی، اگر اس سے پہلے کوئی طلاق نہ دے چکا تھا تو برضائے زن اس سے نکاح کر سکتا ہے حلالہ کی حاجت نہیں، اور اگر پہلے ایک طلاق بھی دے چکا تھا تو اب بے حلالہ نہیں کر سکتا کہ تین ہو گئیں ایک پہلے اور ایک اس وقت اس کا کہنا کہ "میں اس وقت سے جواب دیتا ہوں اور اپنا کوئی تعلق نہیں رکھتا" پھر لکھنا کہ "میں قطع تعلق کرتا ہوں" یہ مجموع ایک ہی ہو گئی فان البائن لا یلحق البائن والنیۃ قد ظہرت۔

Fatawa Rizvia Volume Twelve

(A second 'Bain' divorce cannot occur after the first 'Bain' divorce; it required intention, which was present. -T) And one thing is his writing "I give divorce" and by returning the registry, the divorce will not be retracted as it was unconditional. Allah Almighty knows best.

Issue 320: From Middle Country, City Raipur, Neighborhood Baijnath Bara, sent by Munshi Muhammad Ishaq Maulood Khwan, Petition Writer, 19 Jumada al-Ukhra 1312 AH.

What do the scholars of religion and muftis of the firm Sharia say on this matter: a person named Tala'war Khan, in a state of rage and anger, wrote a letter to his real father-in-law. The summary of which is: "Respected Uncle Najam Khan Sahab (may his shadow be prolonged), after greetings of peace, let it be clear that I told you many times not to take Umdah from here, but you took her away without my consent. You insisted on your way. I was also extremely displeased with her behavior; during these four months she never served me. The improper behaviors in her are impossible to remove, and even worse habits are in Umdah. Therefore, with full pleasure, I give you permission to marry her off to someone else, because when my heart is not happy with her and hers is not with me, in such a state we will surely desire each other's life. Let this not happen, hence with consent and willingness, I gave you permission. Her being bad is the reason I gave permission for a second marriage so that Pure God, by His grace, does not make me a perpetrator of sin. Consider this letter as a divorce deed. If you get her married, I will have no excuse or objection in the future. Only one hundred and fifty rupees were spent on the marriage, which is certainly regrettable as it was money for Hajj that got spent, but what's the cure? There's no choice; the will of the Lord is above all. Do not feel sorry in your heart either; consider this brief writing as extensive. Now there is no concern between Umdah and me; the relationship that existed before remains now. Sarmast Khan should read this letter word for word to Uncle Sahab and also Umdah so that Shariah-wise, divorce becomes mandatory on her, because her leaving without my permission makes it clearer than the sun that she is out of the marriage. Only, servant Tala'war Khan from place Sakoli."

When this letter arrived, Sarmast Khan read it to Umdah and her father Najam Khan. After a week, Tala'war Khan came to his father-in-law's place and said, "Send my wife Umdah with me." Najam Khan agreed to send her in front of a few people. Then after

two hours, when Tala'war Khan came to take her, he found out Najam Khan had gone to the villages. After several months, Najam Khan explicitly told Tala'war Khan, "How can we send the girl? You have sent a written divorce deed." Then after 22 months, Tala'war Khan wrote this letter to his father-in-law:

"Respected Uncle Sahab! After greetings of peace, let it be clear that I have asked several scholars here, and all..."

फतावा रज़विया जिल्द बारहवीं

(बाइना तलाक़ पहली बाइना के बाद नहीं आ सकती, इसमें नियत की ज़रूरत थी जो कि पाई गई। -त) और एक उसका यह लिखना कि "तलाक़ देता हूँ" और रजिस्ट्री वापस देने से तलाक़ वापस न होगी क्योंकि वह बिना किसी शर्त के थी। वल्लाहु तआला आलम (अल्लाह सबसे बेहतर जानता है)।

मसअला ३२०: मुल्क मुतवस्सित, शहर रायपुर, मोहल्ला बैजनाथ बाड़ा से, प्रेषक मुंशी मुहम्मद इसहाक मौलूद ख़्वां, अर्ज़ी लेखक, १९ जमादी-उल-उख़रा १३१२ हिजरी।

उलमा-ए-दीन और मुफ़्तियान-ए-शरअ-ए-मतीन इस मसअले में क्या फ़रमाते हैं कि एक व्यक्ति जिसका नाम तालएवर ख़ाँ है, ने क्रोध और गुस्से की स्थिति में अपने सगे ससुर के नाम एक पत्र लिखा जिसका सारांश यह है: "जनाब मामूँ नज्म ख़ाँ साहब (दाम ज़िल्लुहु), सलाम के बाद स्पष्ट हो कि मैंने आपसे बार-बार कहा कि उम्दा को यहाँ से मत ले जाओ, लेकिन आप उसे बिना सहमति के ले ही गए। आपने अपनी ही ज़िद की। मैं भी उसके व्यवहार से बहुत नाखुश था, इन चार महीनों के दौरान उसने कभी मेरी सेवा नहीं की। जो अभद्र व्यवहार उसमें हैं, उन्हें दूर करना असंभव है, और इससे भी बुरी आदतें उम्दा में हैं। इसलिए पूरी खुशी के साथ मैं आपको अनुमति देता हूँ कि उसका निकाह किसी दूसरे व्यक्ति के साथ कर दो, क्योंकि जिस स्थिति में मेरा दिल उससे खुश नहीं और उसका भी मुझसे नहीं, ऐसी स्थिति में हम एक-दूसरे की जान के प्यासे ही रहेंगे। ऐसा न हो, इसलिए रज़ामंदी और स्वेच्छा से आपको अनुमति दी। उसका बुरा होना ही दूसरे निकाह की अनुमति देने का कारण बना ताकि पाक खुदा मुझे अपने फ़ज़्ल से गुनहगार न बनाए। इस पत्र को तलाक़नामे के रूप में समझें। यदि आप उसका निकाह करा देंगे, तो मुझे भविष्य में किसी प्रकार का उज़्र या आपत्ति नहीं होगी। निकाह में केवल डेढ़ सौ रुपये खर्च हुए, जिसका अफ़सोस तो है कि हज का पैसा खर्च हो गया, पर क्या इलाज है, कोई चारा नहीं; मौला की मर्ज़ी सबसे ऊपर है। आप अपने दिल में भी इस बात का दुख न करें, इस संक्षिप्त लेखन को विस्तार समझें। अब उम्दा और मुझसे कोई सरोकार नहीं रहा; जो रिश्ता पहले था वही अब रहेगा। सरमस्त ख़ाँ इस पत्र को अक्षर-अक्षर पढ़कर मामूँ साहब और उम्दा को भी सुना दें ताकि उस पर शरीअत के अनुसार तलाक़ वाजिब हो जाए, क्योंकि उसका मेरी अनुमति के बिना जाना निकाह से बाहर होना सूर्य के समान स्पष्ट है। फ़क़त, बंदा तालएवर ख़ाँ, स्थान साकोली से।"

जब यह पत्र पहुँचा, सरमस्त ख़ाँ ने उम्दा और उसके पिता नज्म ख़ाँ को सुना दिया। एक सप्ताह के बाद तालएवर ख़ाँ अपने ससुर के यहाँ आए और कहने लगे कि मेरी पत्नी उम्दा को मेरे साथ विदा कर दो। नज्म ख़ाँ ने कुछ लोगों के सामने भेजने का वादा किया। फिर दो घंटे बाद जब तालएवर ख़ाँ लेने आए, तो पता चला कि नज्म ख़ाँ देहात (गाँव) चले गए हैं। कुछ महीनों बाद नज्म ख़ाँ ने तालएवर ख़ाँ से स्पष्ट रूप से कह दिया कि हम लड़की को कैसे विदा करें? तुमने तो तलाक़नामा लिखकर भेज दिया था। फिर २२ महीने बाद तालएवर ख़ाँ ने अपने ससुर के नाम यह पत्र लिखा:

"जनाब मामूँ साहब! सलाम के बाद स्पष्ट हो कि मैंने यहाँ कई उलमा से दरयाफ़्त (पूछताछ) की है, सब..."

पृष्ठ ६८८ में से ६३०

(بائنہ طلاق پہلی بائنہ کے بعد نہیں آسکتی اس میں نیت کی ضرورت تھی جو کہ پائی گئی ۔ت) اور ایک اس کا لکھنا کہ "طلاق دیتا ہوں" اور رجسٹری واپس دینے سے طلاق واپس نہ ہوگی کہ بلا شرط تھی واللہ تعالیٰ اعلم۔

مسئلہ ۳۲۰: از ملک متوسط شہر رائے پور محلہ بیجنا تھ بارہ مرسلہ منشی محمد اسحق مولود خواں عرائض نویس ۱۹ جمادی الاخرہ ۱۳۱۲ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص مسمیٰ طالع ور خاں نے بحالتِ غیظ و غضب ایک خط اپنے خسر حقیقی کے نام لکھا جس کا خلاصہ یہ ہے جناب ماموں نجم خاں صاحب دام ظلہ بعد السلام علیکم واضح ہو میں نے آپ سے بارہا کہا کہ عمدہ کو یہاں سے مت لے جاؤ، مگر آپ لے ہی گئے بغیر رضا مندی، آپ نے اپنی ہی ضد کی، میں بھی اس کے اطوار سے نہایت درجہ ناخوش تھا، اس چار مہینہ کے عرصہ میں کبھی میری خدمت نہ کی، اطوار ناشائستہ جو اس میں ہیں اُن کا دفع غیر ممکن ہے، اس سے بڑھ کر خراب عادات عمدہ میں ہیں، لہذا بخوشی تمام آپ کو اجازت دیتا ہوں کہ اس کا نکاح کسی دوسرے شخص کے ساتھ کر دو، کیونکہ جس حالت میں میرا دل اس سے خوش نہیں اور اس کا بھی مجھ سے نہیں ایسی حالت میں ایک دوسرے کی جان کے ضرور خواہاں رہیں گے ایسا نہ ہونا سبب، برضا و رغبت آپکو اجازت دیا، اس کا خرابانہ ہونا سبب دوسرے نکاح کی اجازت دیا تاکہ خدائے پاک مجھ کو اپنے فضل سے مرتکب گناہ نہ کرے، اس خط کو بطور طلاقنامہ کے تصور فرمائیں اگر آپ اس کا نکاح کرا دیں گے تو مجھ کو کسی نوع کا عذر و تکرار آگے نہیں اور نہ کروں گا صرف ڈیڑھ سو روپیہ نکاح میں صرف ہوا اس کا تو البتہ افسوس ہے کہ حج کار وپیہ خرچ ہو گیا مگر کیا علاج ہے کچھ چارہ نہیں، مرضی مولیٰ از ہمہ اولیٰ۔ آپ اپنے دل

میں بھی اس امر کا رنج نہ کریں تحریر مختصر کو کثیر تصور فرمائیں، عمدہ سے اور مجھ سے اب کچھ سروکار نہ رہا جو رشتہ پہلے تھا وہی اب قائم رہے گا، سرمست خاں اس خط کو حرف بحرف پڑھ کر ماموں صاحب اور عمدہ کو بھی سنا دیں تاکہ اس پر شرعاً طلاق واجب ہو جائے، کیونکہ وہ میری بلا اجازت گئی تو نکاح کے باہر ہو نا اظہر من الشمس ہے، فقط بندہ طالع ور خاں از مقام ساکولی۔ جس وقت یہ خط پہنچا سرمست خاں نے عمدہ اور اس کے والد نجم خاں کو سنا دیا، بعد ایک ہفتہ کے طالع ور خاں اپنے خسر کے یہاں آئے اور کہنے لگے کہ میری زوجہ عمدہ کو میرے ساتھ روانہ کر دو، نجم خاں نے روبرو چند آدمیوں کے بھیجنے کا اقرار کیا پھر بعد دو گھنٹہ کے طالع ور خاں لینے آئے تو معلوم ہوا کہ نجم خاں دیہات پر چلا گیا، بعد چند ماہ کے نجم خاں نے طالع ور خاں سے صراحتہً کہہ دیا کہ ہم لڑکی کو کیسے روانہ کریں تم نے تو طلاقنامہ لکھ کر روانہ کر دیا، پھر بائیس ۲۲ ماہ کے بعد طالع ور خاں نے اپنے خسر کے نام یہ خط لکھا:

جناب ماموں صاحب! بعد سلام علیک واضح ہو میں نے یہاں پر کئی علماء سے دریافت کیا سب

Fatawa Rizwia, Volume 12

They say that divorce has occurred, so I am requesting you to arrange the marriage of your daughter. I no longer have any connection with her. Please do not be distressed; it is a matter of compulsion, otherwise what would be the way to bring her back, that's all.

Then, after nine months, a letter was written to the father-in-law stating that a fatwa (religious decree) was requested from the scholars of Farangi Mahal by sending a letter. The answer received was that the divorce had occurred, and regarding the dowry (Mahr), they decreed that half of the dowry should be paid. However, I am waiting for more answers. So, the request is: In the above-mentioned situation, did the divorce from 'Umda' occur or not? If it did, with which words? And what kind of divorce was it? And how many divorces took place? In short, did Umda remain in the marriage of Tal'aur Khan or not? Clarify and you shall be rewarded.

The Answer:

O Allah, Guide towards truth and correctness. There were eight phrases in this letter: (1) I give permission with complete pleasure that you may arrange her marriage with someone else. (2) With consent and willingness, I gave you permission. (3) Its becoming ruined became the reason for permitting another marriage. (4) Consider this letter as a deed of divorce (Talaq-nama). (5) If you arrange her marriage, I will not have any kind of objection or dispute in the future. (6) There remained no concern between Umda and me. (7) Recite this letter to the uncle and Umda so that divorce becomes religiously obligatory through it. (8) Since she went without my permission, her being out of marriage is clearer than the sun. Among these, the fourth phrase is not suitable for effecting a divorce; because "Consider it as a deed of divorce" clearly means that in reality, it is not a deed of divorce. It is stated in Fatawa Imam Qazi Khan:

Arabic	**Urdu Translation/Explanation**
A woman said to her husband, "Give me a divorce." The husband replied, "Consider it as given" or "Consider it as done." Divorce does not take place even if he intended it, as if he said in Arabic: "Imagine that you are divorced." If he	A wife said to her husband, "Give me divorce." The husband replied, "Consider it as done or happened." Then divorce will not occur even if divorce was intended, because in Arabic its meaning is like "Think that you are divorced." And if spoken in

Arabic	Urdu Translation/Explanation
said it in those words, divorce does not occur even if he intended it. Summarized.	Arabic words, divorce will not occur even if the intention of divorce was there. Summarized (T).

[1] Fatawa Qazi Khan, Book of Divorce, Nawal Kishore, Lucknow, 1/210 Page 631 of 688

फ़तावा रज़विया, जिल्द बारहवीं

यही कहते हैं कि तलाक़ हो चुका है, इसलिए मैं आपसे निवेदन कर रहा हूँ कि आप अपनी बेटी का निकाह कहीं और करा दें। मेरा अब उससे कोई वास्ता नहीं रहा। आप दुखी न हों, यह मजबूरी की बात है, वरना वापस लाने की क्या सूरत होती, बस इतना ही।

फिर नौ महीने बाद ससुर को पत्र लिखा गया कि फरंगी महल के विद्वानों (उलेमा) से पत्र भेजकर फ़तवा माँगा गया था। उत्तर आया कि तलाक़ हो चुका है, और मेहर के संबंध में उन्होंने फ़तवा दिया कि आधा मेहर दिया जाना चाहिए। लेकिन मैं अन्य उत्तरों की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। अतः निवेदन यह है कि उपर्युक्त स्थिति में 'उम्दा' पर तलाक़ हुआ या नहीं? यदि हुआ तो किन शब्दों से? और किस प्रकार का? और कितने तलाक़ प्रभावी हुए? संक्षेप में, क्या उम्दा, ताल'और खाँ के निकाह में रही या नहीं? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर:

ऐ अल्लाह, सत्य और सही मार्ग का मार्गदर्शन कर। इस पत्र में आठ वाक्यांश थे: (१) मैं पूरी खुशी के साथ अनुमति देता हूँ कि उसका निकाह किसी दूसरे के साथ कर दो। (२) रज़ा और मर्जी के साथ मैंने आपको अनुमति दी। (३) इसका खराब होना दूसरे निकाह की अनुमति का कारण बना। (४) इस पत्र को तलाक़नामे (तलाक़ का दस्तावेज़) के रूप में समझें। (५) यदि आप उसका निकाह करा देंगे, तो भविष्य में मुझे किसी प्रकार का कोई एतराज या विवाद नहीं होगा। (६) उम्दा और मेरा अब कोई सरोकार नहीं रहा। (७) इस पत्र को मामा साहब और उम्दा को सुना दें ताकि इस पर शरई तौर पर तलाक़ वाजिब (अनिवार्य) हो जाए। (८) वह मेरी बिना अनुमति के गई तो निकाह से बाहर होना सूरज की तरह साफ़ (स्पष्ट) है। इनमें से चौथा वाक्यांश तलाक़ प्रभावी करने के लिए उपयुक्त नहीं है, क्योंकि "तलाक़नामा समझें" का स्पष्ट अर्थ यह है कि वास्तव में यह तलाक़नामा नहीं है। इमाम काज़ी खाँ के फ़तावा में है:

अरबी	**हिन्दी अनुवाद/व्याख्या**
एक महिला ने अपने पति से कहा, "मुझे तलाक़ दे दो।" पति ने उत्तर दिया, "दिया हुआ मान लो" या "किया हुआ मान लो।" तलाक़ नहीं होगा चाहे उसने नीयत की हो, जैसे उसने अरबी में कहा हो:	पत्नी ने पति से कहा "मुझे तलाक़ दे।" पति ने जवाब में कहा "थोड़ी हुई या की हुई ख्याल करले" तो तलाक़ नहीं होगा चाहे तलाक़ की नीयत की हो, क्योंकि अरबी में इसका अर्थ यूँ है

अरबी	हिन्दी अनुवाद/व्याख्या
"सोच लो कि तुम तलाक़शुदा हो।" यदि उसने उन शब्दों में कहा, तो तलाक़ नहीं होगा चाहे तलाक़ की नीयत रही हो। सारांश।	"तू गुमान (सोच) कर ले कि तू तलाक़ वाली है" और अगर यूँ अरबी शब्दों में कहा तो तलाक़ नहीं होगा चाहे तलाक़ की नीयत की हो। सारांश (त)।

[1] फ़तावा काज़ी खाँ, किताबुल तलाक़, नवल किशोर, लखनऊ, १/ २१० पेज ६३१ का ६८८

فتاوی رضویہ جلد دوازدھم

یہی کہتے ہیں کہ طلاق ہو چکی اس لئے عرض پرداز ہوں کہ آپ اپنی لڑکی کا نکاح کرا دیجئے مجھ سے کوئی واسطہ نہ رہا آپ رنجیدہ نہ ہوں امر مجبوری ہے ورنہ کوئی صورت لانے کی کیا ہو تا فقط

پھر نوماہ کے بعد خسر کو خط لکھا کہ فرنگی محل کے علماء سے خط بھیج کر فتوی طلب کیا تھا، جواب آیا کہ طلاق ہو چکی مہر کے نسبت انہوں نے فتوی دیا کہ نصف مہر دینا چاہئے، مگر میں اور جوابوں کا منتظر ہوں، پس عرض یہ ہے کہ صورت مرقومہ بالا میں عمدہ پر طلاق ہوئی یا نہیں؟ اگر ہوئی تو کن لفظوں سے؟ اور کس قسم کی؟ اور کتنی طلاق متحقق ہوئیں؟ غرض عمدہ طالعور خاں کے نکاح میں رہی یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب:

اللھم ھدایۃ الحق والصواب۔ اس خط میں آٹھ لفظ تھے: (۱) بخوشی تمام اجازت دیتا ہوں کہ اس کا نکاح کسی دوسرے کے ساتھ کر دو۔ (۲) برضا ورغبت آپ کو اجازت دیا۔ (۳) اس کا خرابانہ ہو نا سبب دوسرے نکاح کی اجازت دیا۔ (۴) اس خط کو بطور طلاق نامہ تصور فرمائیں۔ (۵) اگر آپ اس کا نکاح کرا دیں گے تو مجھ کو کسی نوع کا عذر تکرار آگے نہیں اور نہ کروں گا۔ (۶) عمدہ سے اور مجھ سے کوئی سروکار نہ رہا۔ (۷) اس خط کو ماموں صاحب اور عمدہ کو سنادیں کہ اس پر شرعاً طلاق واجب ہو جائے۔ (۸) وہ میری بلا اجازت گئی تو نکاح کے باہر ہونا اظہر من الشمس ہے۔

ان میں لفظ چہارم صالح ایقاع طلاق نہیں کہ بطور طلاق نامہ تصور فرمائیں، کے صاف یہ معنی کہ حقیقت میں طلاق نامہ نہیں، فتاوی امام قاضی خاں میں ہے:

| امرأة قالت لزوجہا مرا طلاق دہ فقال الزوج دادہ انگار او کردہ انگار لا یقع وان نوی کانہ قال لھا بالعربیۃ احسبی انك طالق وان قال ذلك لا یقع وان نوی اہ ملخصاً۔ | بیوی نے خاوند کو کہا "مجھے طلاق دے" خاوند نے جواب میں کہا "ٹھوڑی ہوئی یا کی ہوئی خیال کرلے" تو طلاق نہ ہو گی اگرچہ طلاق کی نیت کی ہو، کیونکہ عربی میں اس کا معنی یوں ہے "تو گمان کر لے کہ تو طلاق والی ہے" اور اگر یوں بالفاظ عربی کہا تو طلاق نہ ہو گی چاہے طلاق کی نیت کی ہو اھ ملخصاً (ت) |

[1] فتاوی قاضی خاں کتاب الطلاق نولکشور لکھنو ۱/ ۲۱۰ Page 631 of 688

Fatawa Rizwia Volume 12

It is stated in the same: Arabic text: 'If it is said to a man: Have you divorced your wife? and he says: Count her as divorced, or consider her divorced, his wife is not divorced.' Complete research on this is in our detailed fatwas. (T)

The fifth word is apparently a promise to end the dispute, The word 'Aagay' (Ahead/ Future) means in the future. 'Or it is suspended upon marriage if by saying 'Aagay' he intended after the marriage, or it is informing about the intention in some of the previous words when he intended it after writing that word.' Keep this preserved. (T)

The sixth word is also not among the words of divorce. 'Sar' means thought and desire, and 'Kaar' means need. 'Sar-o-kaar nahi' means no purpose, motive, need, or work. Divorce does not occur with these words even if said with the intention of divorce. It is stated in Khania, Bazzazia, etc.: 'If he says: I have no need for you, and intends divorce, it does not occur. Similarly, if he says: You are of no use to me, and similarly if he says: I do not want you,' divorce will not take place. (T)

In Bahr-ur-Raiq, it is stated: 'When he says: I have no need for you, or I do not want you, or I do not love you, or I do not desire you, or I have no inclination...'

1. Fatawa Qazi Khan, Kitab-ut-Talaq, Naval Kishore Lucknow, 1/213
2. Fatawa Qazi Khan, Chapter on Kinayat (Metaphors), Naval Kishore Lucknow, 1/216

Page 632 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

इसी में है: अरबी पाठ: 'यदि किसी व्यक्ति से कहा गया: क्या तुमने अपनी पत्नी को तलाक़ दे दी? और वह कहे: उसे तलाक़शुदा गिन ले, या उसे तलाक़शुदा समझ ले, तो उसकी पत्नी को तलाक़ नहीं होगी।' इसकी पूरी तहक़ीक़ (शोध) हमारे विस्तृत फ़तवों में है। (त)

पाँचवाँ शब्द ज़ाहिर तौर पर झगड़ा समाप्त करने का वादा है, 'आगे' का अर्थ भविष्य में है। 'या यह निकाह करने पर निर्भर है यदि उसने 'आगे' शब्द से निकाह के बाद की नीयत की हो, या पहले बताए गए शब्दों में से किसी शब्द में नीयत की सूचना देना है जबकि उसने वह शब्द लिखने के बाद यह मुराद ली हो।' इसे सुरक्षित कर लें। (त)

छठा शब्द भी तलाक़ के शब्दों में से नहीं है। 'सर' का अर्थ विचार और इच्छा है और 'कार' का अर्थ ज़रूरत है। 'सरोकार नहीं' यानी कोई उद्देश्य, मतलब, ज़रूरत या काम नहीं। और इन शब्दों से तलाक़ नहीं होती चाहे तलाक़ की नीयत से कहे गए हों। ख़ानिया और बज़्ज़ाज़िया आदि में है: 'यदि पति ने कहा: मुझे तुझमें कोई ज़रूरत नहीं, और तलाक़ की नीयत की, तो तलाक़ नहीं होगी। इसी तरह यदि उसने कहा: तू मेरे काम की नहीं, इसी तरह यदि उसने कहा: मैं तुझे नहीं चाहता,' तो तलाक़ नहीं होगी। (त)

बहर-उर-राईक़ में है: 'जब उसने कहा: मुझे तुझमें कोई ज़रूरत नहीं है, या मैं तुझे नहीं चाहता, या मैं तुझे पसंद नहीं करता, या मुझे तेरी चाहत नहीं है या कोई इच्छा नहीं...'

1. फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, किताबुत्तलाक़, नवल किशोर लखनऊ, 1/213
2. फ़तावा क़ाज़ी ख़ान, फ़स्ल फ़िल-किनायात, नवल किशोर लखनऊ, 1/216

पृष्ठ 632/688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

اسی میں ہے: لو قیل لرجل اطلقت امرأتك فقال عدها مطلقة او احسبها مطلقة لا تطلق امرأته اھ تمام تحقیق ذلک فی فتاوٰنا المفصلۃ۔ | ایک شخص نے دوسرے سے کہا "کیا تو نے اپنی بیوی کو طلاق دی ہے" اور دوسرا جواب میں کہے "تو اس کو طلاق دی ہوئی شمار کر لے تو مطلقہ سمجھ لے" تو بیوی کو طلاق نہ ہو گی اھ، اس کی مکمل تحقیق ہمارے مفصل فتووں میں ہے۔ (ت)

لفظ پنجم ظاہرًا ترکِ نزاع کا وعدہ ہے، آگے بمعنی آئندہ "او ھو تعلیق علی الانکاح ان ارید بقولہ آگے "بعد الانکاح، او اخبار عن النیۃ فی بعض الالفاظ السابقۃ ان ارید بہ من بعد ما کتبت ھذا۔ | آگے بمعنی آئندہ یا یہ نکاح کردینے پر معلق ہے اگر اس نے "آگے" کے لفظ سے نکاح کردینے کے بعد کی نیت کی ہو، یا پہلے مذکور الفاظ میں سے کسی لفظ میں نیت کی خبر دینا ہے جبکہ اس نے وہ لفظ لکھنے کے بعد مراد لی ہو۔ اسے محفوظ کرلو۔ (ت)

لفظ ششم بھی الفاظ طلاق سے نہیں، سر بمعنی خیال و خواہش اور کار بمعنی حاجت ہے، سروکار نہیں یعنی غرض، مطلب حاجت کام نہیں۔ اور ان الفاظ سے طلاق نہیں ہوتی اگرچہ بہ نیت طلاق کہے۔ خانیہ و بزازیہ وغیرہما میں ہے: لو قال لا حاجۃ لی فیك ونوی الطلاق لا یقع وکذا لو قال مرا بکار نیستی وکذا لو قال ما اریدك۔ | اگر خاوند نے کہا "مجھے تجھ میں کوئی حاجت نہیں" تو طلاق کی نیت کے باوجود طلاق نہ ہوگی۔ یوں ہی اگر اس نے کہا "تو میرے کام کی نہیں" یوں ہی اگر اس نے کہا "میں تجھے نہیں چاہتا" تو طلاق نہ ہو گی۔ (ت)

بحرالرائق میں ہے: اذا قال لا حاجۃ لی فیك او لا اریدك او لا احبك او لا اشتھیك او لا رغبۃ | اگر خاوند نے یہ الفاظ کہے "مجھے تجھ میں حاجت نہیں، میں تجھے نہیں چاہتا، میں تجھے پسند نہیں کرتا، میں تجھے پسند نہیں کرتا، میں تجھے پسند نہیں کرتا،

1 فتاویٰ قاضی خان کتاب الطلاق نولکشور لکھنؤ ۱/ ۲۱۳ 2 فتاویٰ قاضی خان فصل فی الکنایات نولکشور لکھنؤ ۱/ ۲۱۶

(Arabic Text) "I have no desire for you, I have no inclination towards you." Even with the intention of divorce, divorce will not occur. (T)

The eighth word is also purely absurd and wrong, as it is a false notion that being outside of marriage is indicated. If a woman leaves without her husband's permission, she is not outside of marriage, and an admission based on a mistake is not valid. It is stated in Al-Khaniyah:

A boy said, "If I drink this, every woman I marry will be divorced." Then he drank that thing during childhood. Later, after reaching adulthood, he married a woman. His in-laws thought that due to his aforementioned statement, a divorce had occurred. The boy then said, "Yes (in Persian: *Aare*), she is forbidden to me." In this case, according to the correct opinion, his wife will not be forbidden to him, because he did not state the prohibition of the wife from the start. Rather, he admitted the existence of the cause upon which both agreed, and that cause on which he based this admission is void. [End of summary] (T)

(Arabic Text) A boy said, "If I drink this, every woman I marry will be divorced." Then he drank that thing during childhood. Later, after reaching adulthood, he married a woman. His in-laws thought that due to his aforementioned statement, a divorce had occurred. The boy then said, "Yes (Aare), she is forbidden to me." His wife will not be forbidden to him according to the correct opinion, because he did not admit the prohibition originally, but admitted the cause they both agreed upon, and that cause is void. [End of summary]

Among the remaining four words, three previous words result in giving permission for marriage, and they are certainly among the metaphors (*Kinayat*).

Because these words inform of the removal of the bond of marriage and inform of her removal from his protection, like the husband saying "Go marry," as in Al-Khaniyah, and "Seek husbands," as in Al-Kanz.

Because it informs of the lifting of the bond of marriage and her removal from protection for himself, such as his saying "Marry"[3] as in Al-Khaniyah, and "Seek husbands"[4] as in Al-Kanz, and "I have gifted you to husbands"[5] as in

1. *Bahr al-Ra'iq*, Chapter of Metaphors, H.M. Saeed Company Karachi, 3/304
2. *Fatawa Qazi Khan*, Chapter of Suspension, Naval Kishore Lucknow, 1/235

3. *Fatawa Qazi Khan*, Section on Metaphors, Naval Kishore Lucknow, 1/216
4. *Kanz al-Daqaiq*, Chapter of Metaphors, H.M. Saeed Company Karachi, p. 116
5. *Fatawa Hindiyyah*, Chapter Five on Metaphors, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/376

(अरबी पाठ) "मुझे तुम्हारी कोई इच्छा नहीं है, मुझे तुम्हारे प्रति कोई आकर्षण नहीं है।" तलाक की नीयत के बावजूद तलाक नहीं होगा। (त)

आठवां शब्द भी पूरी तरह से बेतुका और गलत है क्योंकि यह एक गलत धारणा है कि विवाह से बाहर होना बताया जाता है। यदि कोई स्त्री पति की अनुमति के बिना चली जाए, तो वह विवाह से बाहर नहीं होती और गलत आधार पर किया गया इकरार मान्य नहीं है। खानिया में है:

एक बच्चे ने कहा, "अगर मैं यह पी लूँ, तो मैं जिस भी औरत से शादी करूँगा उसे तलाक हो जाएगा।" फिर उसने बचपन में वह चीज़ पी ली। बाद में बालिग होने पर उसने एक औरत से शादी की और उसके ससुराल वालों ने सोचा कि उसके उक्त कथन के कारण तलाक हो गया है। उस लड़के ने कहा, "हाँ (फारसी: आरे), यह मुझ पर हराम है।" तो इस स्थिति में, सही कथन के अनुसार, उसकी पत्नी उस पर हराम नहीं होगी, क्योंकि यहाँ शुरुआत में पत्नी को हराम नहीं कहा गया, बल्कि उसने उस कारण (सबब) के अस्तित्व को स्वीकार किया जिस पर वे दोनों सहमत थे, और वह कारण जिस पर उसने यह स्वीकारोक्ति की, वह अमान्य (बातिल) है। [संक्षिप्त] (त)

(अरबी पाठ) एक बच्चे ने कहा, "अगर मैं यह पी लूँ, तो मैं जिस भी औरत से शादी करूँगा उसे तलाक हो जाएगा।" फिर उसने बचपन में वह चीज़ पी ली। बाद में बालिग होने पर उसने एक औरत से शादी की और उसके ससुराल वालों ने सोचा कि तलाक हो गया है। उस बालिग ने कहा (हाँ, यह मुझ पर हराम है), उसकी पत्नी हराम नहीं होगी, यही सही मत है, क्योंकि उसने शुरुआत में हराम होने का इकरार नहीं किया, बल्कि उस सबब का इकरार किया जिस पर वे सहमत थे, और वह सबब बातिल है। [संक्षिप्त]

शेष चार शब्दों में से तीन पिछले शब्दों का अर्थ विवाह की अनुमति देना है और वे निश्चित रूप से रूपकों (किनायात) में से हैं।

क्योंकि ये शब्द विवाह के बंधन को समाप्त करने की सूचना देते हैं और अपनी सुरक्षा (अस्मत) से निकालने की सूचना देते हैं, जैसे पति कहे "शादी कर ले" जैसा कि खानिया में है, "पति ढूँढ ले" जैसा कि कंज़ में है।

क्योंकि यह निकाह के बंधन को खत्म करने और उसे अपनी सुरक्षा से बाहर करने की सूचना देता है, जैसे उसका कहना "शादी कर ले"[3] जैसा कि खानिया में है, और "पति तलाश कर"[4] जैसा कि कंज़ में है, और "मैंने तुम्हें पतियों को उपहार में दिया"[5] जैसा कि...

1. बहर-उर-रैक, किनायात का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 3/304
2. फ़तावा काज़ी ख़ान, तालीक़ का अध्याय, नवल किशोर लखनऊ, 1/235
3. फ़तावा काज़ी ख़ान, किनायात पर खंड, नवल किशोर लखनऊ, 1/216
4. कंज़-उद-दक़ाएक, किनायात का अध्याय, एच.एम. सईद कंपनी कराची, पृष्ठ 116
5. फ़तावा हिंदिया, किनायात पर पांचवां अध्याय, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/376

لی فیك فانه لا یقع وان نوی - مجھے تیری خواہش نہیں، تجھ میں میرے لئے رغبت نہیں "تو طلاق کی نیت کے باوجود طلاق نہ ہوگی۔ (ت)

لفظ ہشتم بھی محض لغو و غلط ہے کہ ایک باطل خیال جہاں پر نکاح سے باہر ہونا بتاتا ہے بے اجازت شوہر عورت چلی جائے تو نکاح سے باہر نہیں ہوتی اور جو اقرار غلط بنا پر ہو معتبر نہیں۔ خانیہ میں ہے :

صبی قال ان شربت فکل امرأة تزوجها فهی طالق فشرب وهو صبی فتزوج وهو بالغ وظن صهره ان الطلاق واقع فقال هذا البالغ آرے حرام است بر من) لا تحرم امرأته هو الصحیح لانه ما اقر بالحر مة ابتداء وانما اقر بالسبب الذی تصادقا علیه وذلك السبب باطل 2 اه ملخصا.

ایک بچے نے کہا " اگر میں یہ پی لوں تو جس عورت سے بھی نکاح کروں تو اس کو طلاق" پھر اس نے دوران بچپن وہ چیز پی لی، پھر بالغ ہونے کے بعد اس نے کسی عورت سے نکاح کیا اور اس کے سسرال نے خیال کیا کہ اس کے مذکور قول کے مطابق کی وجہ سے طلاق ہو گئی تو اس لڑکے نے کہا "ہاں یہ مجھ پر حرام ہے" تو اس صورت میں صحیح قول کے مطابق اس کی بیوی اس پر حرام نہ ہوگی ، کیونکہ یہاں ابتداء بیوی کو حرام نہیں کہا بلکہ اس نے اس سبب کے وجود کا اقرار کیا جس پر یہ دونوں بچے اور جس سبب پر اس نے یہ اقرار کیا وہ باطل ہے اہ ملخصا (ت)

بقیہ چار الفاظ میں تین لفظ پیشین کا حاصل اجازت نکاح دینا ہے اور وہ بیشک کنایات سے ہے،

کیونکہ یہ الفاظ نکاح کی قید کو ختم کرنے کی خبر دیتے ہیں اور اپنی عصمت سے نکالنے کی خبر دیتے ہیں جیسے کہ خاوند یوں کہے " تو نکاح کر " جیسا کہ خانیہ میں ہے " تو خاوند تلاش کر " جیسا کہ کنز میں ہے

فانه ينبئ عن رفع قيد النكاح واخراجها عن عصمة لنفسه كقوله تزوجي 3 كما في الخانية وابتغى الازواج 4 كما في الكنز ووهبتك للازواج 5 كما في

1 بحر الرائق باب الكنايات ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳۰۴/۳ 2 فتاوی قاضی خاں باب التعلیق نولکشور لکھنؤ ۲۳۵/۱ 3 فتاوی قاضی خاں فصل فی الکنایات نولکشور لکھنؤ ۲۱۶/۱ 4 کنز الدقائق باب الکنایات ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ص ۱۱۶ 5 فتاوی ہندیہ الفصل الخامس فی الکنایات نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۷۶

| Al-Hindiya | "I have handed you over to husbands," as stated in Hindiya. (T) |

However, with these three and all other metaphorical expressions of irrevocable divorce (Kinayat-e-Ba'in), only one irrevocable divorce (Talaq-e-Ba'in) will occur, even if the intention was made for all of them. Because an irrevocable divorce does not follow another irrevocable divorce (since after one Ba'in divorce, another Ba'in cannot take effect). (T)

The seventh word is an explicit divorce, but it is contingent on the condition that Sarmast Khan, Najm Khan, and Umdah read the letter word for word and make them hear it.

| (Arabic text: Fa-inna lafzahū tā-kay taḏīd-hunā tarattub at-talāq 'alā al-ismā' ay rabṭ huṣūl dhāka bi-huṣūl hādhā wa-hādhā huwa ma'nā at-ta'līq wa-fī ad-Durr al-Mukhtār yakfī ma'nā ash-shart) | Because the word "so that" (ta-kay) is used here to make the divorce contingent upon making them hear; that is, to show the attainment of one thing upon the attainment of another, and this is the meaning of "hanging" (contingency/ta'aleeq). And in Durr-ul-Mukhtar, it says that the meaning of contingency itself is sufficient for a condition. (T) |

Thus, the essence of these eight words remained only two: one metaphorical (kinayah), from which an irrevocable divorce (ba'in) will occur based on intention; the other explicit-contingent (sareeh-mu'allaq), from which a revocable divorce (raj'i) will occur after the condition is fulfilled. The ruling for explicit divorce is the same both religiously (diyanatan) and judicially (qada'an): if Sarmast Khan read the letter word for word to both of them, the divorce occurred. If there was any deficiency in making even one of them hear it, such that it cannot be called reading word for word, then it did not occur. However, the ruling for metaphorical (kinayah) expressions here is different; religiously, it requires intention. It is stated in Radd al-Muhtar:

| (Arabic text: Lā yaqa' diyānatan bidūn an-niyyah wa-law wujidat dalālat al-ḥāl fa-wuqū'uh bi-wāḥid min an-niyyah aw dalālat al-ḥāl innamā huwa fī al-qaḍā' faqaṭ kamā huwa ṣarīḥ al-Baḥr wa-ghayrih) | In the case of metaphorical expression (kinayah), divorce will not occur without intention. And even if circumstantial evidence (dalalat-al-haal) is present, the occurrence of divorce with either intention or circumstantial evidence is only for judicial purposes (qada'an). This is the explicit statement of Al-Bahr and others. (T) |

And judicially, due to the contextual evidence of the preceding and succeeding words, the ruling is of the occurrence of divorce absolutely.

---

1 Durr-ul-Mukhtar, Chapter of Contingency (At-Ta'leeq), Mujtabai Press Delhi, 1/230. 2 Radd al-Muhtar, Chapter of Metaphorical Expressions (Al-Kinayat), Dar Ihya at-Turath al-Arabi, Beirut, 2/463.

| अल-हिन्दिया | "मैंने तुझे पतियों के हवाले किया" जैसा कि हिन्दिया में है। (त) |

लेकिन इन तीन और उनके साथ जितने भी किनायात-ए-बाइन (परोक्ष स्पष्ट तलाक़) हों, उन सब से एक ही तलाक़-ए-बाइन होगी, चाहे सब की नीयत की हो। क्योंकि एक बाइन तलाक़ के बाद दूसरी बाइन तलाक़ लागू नहीं हो सकती। (त)

सातवाँ शब्द स्पष्ट तलाक़ (सरेह) है, मगर इस शर्त पर मुअ़ल्लक (निर्भर) है कि सरमस्त ख़ान, नज्म ख़ान और उम्दा को हर्फ़ब-हर्फ़(अक्षरशः) ख़त पढ़कर सुना दे।

| (अरबी इबारत: फ़-इन्ना लफ़्ज़हु ता-कै तदीद-हुना तरत्तुब अत-तलाक़ अला अल-इस्मा' अय रब्त हुसूल ज़ाका बि-हुसूल हाज़ा व-हाज़ा हुवा माना अत-ता'लीक़ व-फ़ि अद-दुर्र अल-मुख़्तार यक्फ़ी माना अश-शर्त) | क्योंकि "ताकि" शब्द यहाँ सुनाने पर तलाक़ को मुर्तब (क्रमबद्ध/निर्भर) करने के लिए है, यानी इस चीज़ के हासिल हो जाने पर उस चीज़ का हासिल होना बताने के लिए है और यही तालीक़ (निर्भरता) का अर्थ होता है। और 'दुर्रे मुख़्तार' में है कि तालीक़ का अर्थ ही शर्त के लिए काफ़ी होता है। (त) |

तो इन आठ शब्दों का सार सिर्फ़ दो शब्द रहे, एक किनाया जिससे नीयत के लिहाज़ से तलाक़-ए-बाइन पड़ेगी, दूसरा सरेह-मुअ़ल्लक (स्पष्ट-निर्भर) जिससे शर्त पूरी होने के बाद तलाक़-ए-रजई होगी। सरेह का हुक्म तो दियानतन (धार्मिक रूप से) और क़ज़ान (कानूनी रूप से) दोनों में एक ही है कि अगर सरमस्त ख़ान ने उक्त ख़त दोनों को हर्फ़ब-हर्फ़ सुना दिया तो तलाक़ हो गई और अगर उनमें से एक को सुनाने में भी कुछ कमी रही जिसे हर्फ़ब-हर्फ़ सुनाना न कहें तो न हुई। मगर किनाया का हुक्म यहाँ अलग है, दियानतन नीयत की आवश्यकता है। 'रद्दुल मुहतार' में है:

| (अरबी इबारत: ला यक़'अ दियानतन बिदूनी अन-निय्यत व-लौ वुजिदत दलालत अल-हाल फ़-वुक़ूउहु बि-वाहिद मिन अन-निय्यत औ दलालत अल-हाल इन्नमा हुवा फ़ि अल-क़ज़ा'अ फ़क़त कमा हुवा सरेह अल-बहर व-ग़ैरिही) | किनाया की सूरत में नीयत के बिना तलाक़ न होगी और अगर दलालत-ए-हाल (परिस्थितिजन्य साक्ष्य) भी पाया जाए तो तलाक़ का वाक़े होना नीयत या दलालत-ए-हाल में से एक के साथ होगा, यह सिर्फ़ क़ज़ान (न्यायिक रूप से) तलाक़ होती है। 'बह्र' आदि की स्पष्टता यही है। (त) |

और क़ज़ान (न्यायिक रूप से) पूर्व-पर (आगे-पीछे के) संदर्भों के कारण तलाक़ वाक़े होने का हुक्म पूर्णतः(अला इत्तलाक़) है।

---

1 दुर्रे मुख़्तार, बाबुत तालीक़, मुतबा मुज्तबाई दिल्ली 1/230. 2 रद्दुल मुहतार, बाबुल किनायात, दार इह्या अत-तुरास अल-अरबी, बेरुत 2/463.

| الھندیۃ | "میں نے تجھ کو خاوندوں کے سپرد کیا" جیسا کہ ہندیہ میں ہے۔ (ت) |

مگر ان تین اور ان کے ساتھ جتنی ہی کنایات بائن ہوں سب سے ہو گی تو ایک ہی طلاق بائن ہوگی اگرچہ سب سے نیت کی ہو فان البائن لا یلحق البائن (کیونکہ بائن طلاق کے بعد دوسری بائن لاحق نہیں ہو سکتی۔ (ت)

لفظ ہفتم طلاق صریح ہے مگر اس شرط پر معلق کہ سرمست خاں، نجم خاں اور عمدہ کو حرف بحرف خط پڑھ کر سنادے،

| فان لفظہ تاکہ تضیدھنا ترتب الطلاق علی الاسماع ای ربط حصول ذاک بحصول ہذا وہذا ھو معنی التعلیق و فی الدرالمختار یکفی معنی الشرط 1- | اس لئے کہ "تا کہ" کا لفظ یہاں سنانے پر طلاق کو مرتب کرنے کے لئے ہے یعنی اس چیز کے حاصل ہو جانے پر اس چیز کا حصول بتانے کے لئے ہے اور یہی تعلیق کا معنی ہوتا ہے۔ اور درمختار میں ہے کہ تعلیق کا معنی ہی شرط کے لئے کافی ہوتا ہے (ت) |

تو ان آٹھ لفظوں کا حاصل صرف دو لفظ رہے، ایک کنایہ جس سے بلحاظ نیت طلاق بائن پڑیگی دوسرا صریح معلق جس سے بعد تحقق شرط طلاق رجعی ہوگی، صریح کا حکم تو دیانۃً و قضاءً دونوں میں ایک ہی ہے کہ اگر سرمست خاں نے خط مذکور دونوں کو حرف بحرف سُنا دیا تو طلاق ہوگئی اور اگر ان میں ایک کو سُنانے میں بھی کچھ کمی رہی جسے حرف بحرف سُنانا نہ کہیں تو نہ ہوئی مگر حکم کنایہ یہاں مختلف ہے دیانۃً حاجت نیت ہے۔ ردالمحتار میں ہے:

| لایقع دیانۃ بدون النیۃ ولو وجدت دلالۃ الحال فوقوعہ بواحد من النیۃ اودلالۃ الحال انما ھو فی القضاء فقط کما ھو صریح البحر وغیرہ 2۔ | کنایہ کی صورت میں نیت کے بغیر طلاق نہ ہوگی اور اگر دلالتِ حال بھی پائی جائے تو طلاق کا وقوع نیت یاد لالتِ حال میں سے ایک کے ساتھ ہوگا یہ صرف قضاءً طلاق ہوتی ہے بحر وغیرہ کی صراحت یہی ہے۔ (ت) |

اور قضاءً بوجہ قرائن سباق وسیاق وقوع طلاق کا حکم علی الاطلاق،

---

1 درمختار باب التعلیق مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۳۰ 2 ردالمحتار باب الکنایات دار احیاء التراث العربی بیروت ۲/۴۶۳

Fatawa Razawiya, Volume 12

- [Arabic]: For even if the wording could potentially serve as a rejection, as mentioned in Al-Ghurar, Al-Bahr, and Al-Khaniya, yet it is surrounded by indicators that reject the meaning of 'rejection', such as his saying 'for this [reason]', and his saying 'the reason being alienation', and his saying 'so that God the Pure [etc.]'. Verily these justifications and derivations do not suit the intent of rejection, as is not hidden. And the indication of speech is like the indication of state.
- [Urdu]: As mentioned in Ghurar, Bahr, and Khaniya, although the word can be a response, the crowd of context clues there declares its being a response as rejected. For example, the words here are: 'the reason being alienation', 'the reason being its ruinous nature', 'so that God the Pure etc.', because these words, being justifications and derivations, are not suitable for the intention of a response, as is not hidden; and the indication of speech is like the indication of state. (T)

In Radd al-Muhtar, from Nahr al-Faiq, it is stated: "The indication of state encompasses the indication of speech." (T) However, a ruling of divorce occurring based on a letter can only be given when it is proven by the husband's confession or by Shari'i just witnesses (two men or one man and two women) that this letter is his; otherwise, a ruling cannot be given based solely on the resemblance of handwriting. It is in Al-Ashbah:

- [Arabic]: If he wrote it in the form of a message, with a beginning and an address, and it is proven by his confession or by evidence, then it is like a verbal address.
- [Urdu]: If the letter is written starting with an address and then proven by his confession or witnesses, then this writing is like a verbal address. (T)

Therefore, in the inquired case, the judicial ruling is that if it is not proven that this letter belongs to Taleour Khan, neither by his confession nor by just witnesses, then there is no ruling of divorce at all. And if there is proof by confession or testimony, then an irrevocable divorce (Talaq-e-Ba'in) has occurred for Umdah. If Sarmast Khan

read it word-for-word to both Umdah and Najm Khan, then two irrevocable divorces occurred.

- [Arabic]: For the explicit (divorce) follows the irrevocable and the revocable; when it follows it, it becomes like it due to the impossibility of establishing return (ruju'), as in Al-Bazzaziya.
- [Urdu]: This is because explicit divorce can follow an irrevocable one, and when a revocable (raj'i) one follows an irrevocable (ba'inah) one, that raj'i divorce also becomes like the ba'inah.
- Radd al-Muhtar, Chapter of Metaphors, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/263
- Al-Ashbah wa al-Naza'ir, Third Art, Rulings of Writing, Idarat al-Qur'an, Karachi, 2/98-29

फतावा रज़विया, खंड बारहवां

- [अरबी]: क्योंकि भले ही शब्द 'अस्वीकृति' के रूप में उपयुक्त हो सकते हों, जैसा कि अल-ग़ुरर, अल-बहर और अल-ख़ानिया में उल्लेख किया गया है, लेकिन इसके बावजूद कई संकेत ऐसे हैं जो 'अस्वीकृति' के अर्थ को खारिज करते हैं, जैसे कि उसका कहना 'इस कारण से', और उसका कहना 'अलग होना कारण है', और उसका कहना 'ताकि शुद्ध ईश्वर [आदि]'। वास्तव में ये स्पष्टीकरण और उप-कारण अस्वीकृति के इरादे के अनुरूप नहीं हैं, जैसा कि स्पष्ट है। और 'कथन का संकेत' 'अवस्था के संकेत' की तरह है।
- [उर्दू]: जैसा कि ग़ुरर, बहर और ख़ानिया में उल्लेख किया गया है, हालाँकि शब्द एक उत्तर हो सकता है, लेकिन वहाँ संदर्भ संकेतों की भीड़ इसे उत्तर होने के रूप में अस्वीकार करती है। उदाहरण के लिए, यहाँ शब्द हैं: 'अलग होना कारण है', 'इसका विनाशकारी होना कारण है', 'ताकि शुद्ध ईश्वर आदि', क्योंकि ये शब्द, स्पष्टीकरण और उप-कारण होने के कारण, उत्तर के इरादे के लिए उपयुक्त नहीं हैं, जैसा कि छिपा नहीं है; और कथन का संकेत अवस्था के संकेत की तरह है। (त)

रद्दुल मुहतार में नहुल फ़ायिक़ से है: "अवस्था का संकेत, कथन के संकेत को भी सम्मिलित करता है।" (त) लेकिन पत्र के आधार पर तलाक़ होने का निर्णय केवल उसी स्थिति में दिया जा सकता है जब पति की स्वीकारोक्ति या शरीअत के अनुसार न्यायप्रिय गवाहों (दो पुरुष या एक पुरुष और दो महिलाएँ) द्वारा यह सिद्ध हो जाए कि यह पत्र उसका है; अन्यथा, केवल लिखावट की समानता के आधार पर निर्णय नहीं दिया जा सकता। अल-अशबाह में है:

- [अरबी]: यदि उसने इसे एक संदेश के रूप में, एक आरंभ और एक पते के साथ लिखा, और यह उसके इक़रार या प्रमाण से सिद्ध हो जाता है, तो यह मौखिक संबोधन की तरह है।
- [उर्दू]: यदि पत्र पते के साथ शुरू करके लिखा गया है और फिर उसके इक़रार या गवाहों से सिद्ध हो जाता है, तो यह लिखना मौखिक संबोधन की तरह है। (त)

इसलिए, पूछे गए मामले में न्यायिक निर्णय यह है कि यदि यह सिद्ध नहीं होता है कि यह पत्र तालेउर ख़ान का है, न तो उसके इक़रार से और न ही न्यायप्रिय गवाहों से, तो मूल रूप से तलाक़ का कोई आदेश नहीं है। और यदि इक़रार या गवाही से प्रमाण मिल जाता है, तो उम्दा पर एक अटल तलाक़

(तलाक़-ए-बाइन) हो गई है। यदि सरमस्त ख़ान ने इसे उम्दा और नज्म ख़ान दोनों को शब्द-दर-शब्द सुना दिया, तो दो अटल तलाक़ हो गईं।

- [अरबी]: क्योंकि स्पष्ट (तलाक़) अटल और प्रतिसंहरणीय (रजी) के बाद भी प्रभावी होती है; जब यह इसके बाद आती है, तो यह 'रुजू' स्थापित करने की असंभावना के कारण उसी की तरह हो जाती है, जैसा कि अल-बज़्ज़ाज़िया में है।
- [उर्दू]: ऐसा इसलिए है क्योंकि स्पष्ट तलाक़ एक अटल तलाक़ के बाद आ सकती है, और जब एक रजी (प्रतिसंहरणीय) तलाक़ एक बाइन (अटल) तलाक़ के बाद आती है, तो वह रजी तलाक़ भी बाइन की तरह हो जाती है।
- रद्दुल मुहतार, बाबुल किनायात, दार इहया अत-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 2/263
- अल-अशबाह व अन-नज़ैर, तीसरा खंड, अहकामुल किताबह, इदारातुल कुरान, कराची, 2/98-29

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

فان اللفظ وان کان مما یصلح ردا کما فی الغرر والبحر والخانیة لکن قد حفته قرائن ترد معنی الرد کقوله لهذا وقوله ایبانہ ہونا سبب وقوله تاکه خدائے پاک الخ فان هذه التعلیلات والتفریعات لا تلائم قصد الرد کما لا یخفی ودلالة القال کدلالة الحال۔

غرر، بحر اور خانیہ میں جیسا کہ مذکور ہے کہ لفظ اگرچہ جواب بن سکتا ہو مگر وہاں قرائن کا ہجوم اس کے جواب ہونے کو مردود قرار دیتا ہے، جیسا کہ یہاں ایبانہ ہونا سبب، اس کا خرابانہ ہونا سبب، تاکہ خدائے پاک الخ کے الفاظ ہیں، کیونکہ یہ الفاظ تعلیل اور تفریع ہونے کی بنا پر، جواب کے ارادہ سے مناسب نہیں ہیں، جیسا کہ مخفی نہیں ہے، اور دلالت قال، دلالت حال کی طرح ہے۔ (ت)

ردالمحتار میں نہرالفائق سے ہے، دلالۃ الحال تعم دلالۃ المقال (دلالت حال، دلالت قال کو بھی شامل ہے۔ت) مگر خط کی بنا پر وقوع طلاق کا حکم اسی حالت میں ہو سکتا ہے جب کہ شوہر مقر یا گواہانِ عادل شرعی دو مرد یا ایک مرد دو عورت سے ثابت ہو کہ یہ خط اس کا ہے ورنہ صرف مشابہت خط پر حکم نہیں۔ اشباہ میں ہے:

ان کتب علی وجه الرسالة مصدرا معنونا وثبت ذلك باقراره او بالبینة فکالخطاب۔

اگر خط کا عنوان شروع کر کے لکھا اور پھر اس کے اقرار یا گواہوں سے ثابت ہو جائے تو یہ لکھنا زبانی خطاب کی طرح ہے۔ (ت)

پس صورتِ مستفسرہ میں حکمِ قضایہ ہے کہ اگر اس خط کا طالعور خاں کا ہونا نہ اس کے اقرار سے ثابت نہ گواہانِ عادل سے، جب تو اصلاً حکمِ طلاق نہیں، اور اگر اقرار یا شہادت سے ثبوت

ہے تو عمدہ پر طلاقِ بائن پڑ گئی، اگر سرمست خاں نے عمدہ و نجم خاں دونوں کو حرف بحرف سنا دیا جب تو دو طلاقیں بائن ہوئیں،

فان الصریح یلحق البائن والرجعی اذا لحقه صار مثله لعدم امکان اثبات الرجعة کما فی البزازیة.

اس لئے کہ صریح طلاق، بائنہ کو لاحق ہو سکتی ہے، اور جب بائنہ کے بعد اس کو رجعی لاحق ہو تو وہ رجعی طلاق بھی بائنہ کی طرح ہو جاتی ہے

1. ردالمحتار باب الکنایات دار احیاء التراث العربي بیروت ۲۶۳/۲
2. الاشباہ والنظائر الفن الثالث احکام الکتابة ادارة القرآن کراچی ۹۸/۲-۲۹

etc. Because in such a case there is no possibility of revocation (rujoo), as mentioned in Bazaziya etc. (T)

Otherwise, a necessity occurred; in any case, Umda is out of the marriage. This detail, which is a judicial ruling (hukm-e-qadhai), Umda is bound to act upon it. "For the woman is like a judge, as in Al-Fath and others" (because the wife in this matter is like a judge, as in Fath etc. - T). And the religious ruling (hukm-e-diyanat) is that if this letter belongs to Talawur Khan and he intended to terminate the marriage with all or some of the metaphorical words (alfaz-e-kinaya), then a 'talaq ba'in' (irrevocable divorce) occurred. Furthermore, if the condition of reading out that letter was also fulfilled, then two 'talaq ba'in' occurred; in any case, Umda is out of the marriage bond. And if he intended, then in the state where the condition of reading out was fulfilled, one 'talaq raj'i' (revocable divorce) occurred, in which he had the right of revocation until the days of iddah. And if there was a deficiency in this condition as well, then no divorce occurred at all. Similarly, if this letter is not his, then also no divorce occurred, even if witnesses testify or he himself made a false confession.

"For a false confession has no religious effect." This is the sum of the statement, and because a false confession has no effect in terms of religious integrity (diyanatan). This is all the summary of the speech, and the detail is mentioned in our Fatawa. (T)

The detail is in our mentioned fatwa.

And since 'Khalwat-e-Sahiha' (valid privacy/consummation) occurred between Umda and Talawur Khan, as is apparent from the statement of the question that she stayed at the husband's place for four months, therefore after divorce, the full dower (mahr) is payable; there is no reason for half to be dropped. And Allah Almighty knows best.

1. Al-Bahr al-Ra'iq, Kitab al-Talaq, Bab al-Talaq al-Sarih, H.M. Saeed Company Karachi, 3/257. Radd al-Muhtar, Bab al-Kinayat, Dar Ihya al-Turath al-Arabi Beirut, 2/468.

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

इत्यादि। क्योंकि ऐसी स्थिति में रुजू (वापसी) की संभावना नहीं रहती, जैसा कि बज़ाज़िया आदि में है (त)

अन्यथा, एक आवश्यकता हुई; बहरहाल, उम्दा निकाह से निकल गई। यही विवरण जो न्यायिक आदेश (हुक्मे कज़ाई) है, उम्दा के लिए उसी पर अमल करना वाजिब है। "निश्चय ही स्त्री काज़ी (न्यायाधीश) की तरह है, जैसा कि अल-फ़तह आदि में है" (क्योंकि पत्नी इस मामले में काज़ी की तरह है, जैसा कि फ़तह आदि में है - त)। और दीवानी (धार्मिक) हुक्म यह है कि यदि यह पत्र तालवुर खां का है और उसने 'अल्फ़ाज़-ए-किनाया' (अप्रत्यक्ष शब्दों) में पूरे या कुछ शब्दों से निकाह खत्म करने की नीयत की, तो 'तलाक़े बाइन' (अटल तलाक़) हो गया। फिर उसके साथ वह पत्र सुनाने की शर्त भी पूरी पाई गई, तो दो 'तलाक़े बाइन' हो गईं; बहरहाल, उम्दा निकाह से बाहर हो गई। और यदि उसने नीयत की, तो सुनाने की शर्त पूरी होने की स्थिति में एक 'तलाक़े रजई' (वापसी योग्य तलाक़) हुई, जिसमें उसे इद्दत के दिनों तक रुजू (वापसी) का अधिकार था। और यदि इस शर्त में भी कोई कमी रही, तो मूल रूप से कोई तलाक़ नहीं हुई। इसी प्रकार यदि यह पत्र उसका नहीं है, तो भी तलाक़ नहीं हुई, भले ही गवाह गवाही दें या उसने स्वयं गलत इक़रार (स्वीकृति) कर लिया हो।

"झूठा इक़रार दीनी तौर पर कोई प्रभाव नहीं रखता।" यह कथन का सारांश है, और

क्योंकि झूठे इक़रार का धार्मिक दृष्टि (दियानतन) से कोई प्रभाव नहीं होता। यह सब बातचीत का सारांश है, और विवरण हमारे फ़तावा में उल्लेखित है। (त)

विवरण हमारे उल्लेखित फ़तवे में है।

और चूँकि उम्दा और तालवुर खां के बीच 'खलवते सहीहा' (वैध एकांत/संभोग) हुआ जैसा कि प्रश्न के विवरण से स्पष्ट है कि वह चार महीने पति के यहाँ रही, तो तलाक़ के बाद पूरा मेहर वाजिब-उल-अदा (देय) है, आधा माफ़ होने का कोई कारण नहीं है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

1. अल-बहरुर राइक, किताबुल तलाक़, बाबुत तलाक़ अस्-सरीह, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 3/257। रदुल मुहतार, बाबुल किनायात, दार इहयाउत तुरास अल-अरबी बैरूत, 2/468।

पृष्ठ 636 / 688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

وغیرہا۔ کیونکہ ایسی صورت میں رجوع کا امکان نہیں رہتا، جیسا کہ بزازیہ وغیرہ میں ہے (ت)

ورنہ ایک ضرورت ہوئی بہر حال، عمدہ نکاح سے نکل گئی، یہی تفصیل جو حکم قضائی ہے عمدہ کو اسی پر عمل واجب ہے فان المرأۃ کالقاضی کما فی الفتح وغیرہ (کیونکہ بیوی اس میں قاضی کی طرح ہے، جیسا کہ فتح وغیرہ میں ہے۔ ت) اور حکم دیانت یہ ہے کہ اگر یہ خط طالع ور خاں کا ہے اور اس نے الفاظ کنایہ میں کل یا بعض سے نیت ازالہ نکاح کی تو طلاق بائن ہوئی پھر اسکے ساتھ وہ خط سنانے کی شرط بھی پوری پائی گئی تو دو طلاقیں بائن ہوئی بہر حال عمدہ نکاح سے باہر ہوئی اور اگر نیت کی تو سنانے کی شرط پائے جانے کی حالت میں ایک طلاق رجعی پڑی جس میں اسے اختیار رجعت تا ایام عدت تھا، اور اگر اس شرط میں بھی کمی رہی تو اصلا طلاق نہ پڑی، یونہی اگر یہ خط اس کا نہیں جب بھی طلاق نہ ہوئی اگرچہ گواہ گواہی دیں یا خود اس نے غلط اقرار کر دیا ہو،

فان الاقرار الکاذب لا اثر لہ دیانۃ ھذا جملۃ القول و التفصیل فی فتوانا المذکورہ۔

اس لئے کہ جھوٹے اقرار کا کوئی اثر دیانۃً نہیں ہے، یہ تمام خلاصہ کلام ہے اور تفصیل ہمارے فتاوٰی میں مذکور ہے۔ (ت)

اور جب کہ عمدہ وطالعور خاں میں خلوت صحیحہ ہوئی جیسا کہ بیانِ سوال سے ظاہر ہے کہ وہ چار مہینے شوہر کے یہاں رہی تو بعد طلاق کُل مہر واجب الادا ہے ، نصف ساقط ہونے کی کوئی وجہ نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

۱ بحرالرائق کتاب الطلاق باب الطلاق الصریح ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۲۵۷/۳، ردالمحتار باب الکنایات دار احیاء التراث العربی بیروت ۴۶۸/۲

Fatawa Razawiyya Volume 12

Chapter on Delegation of Divorce (Description of Delegation of Divorce)

Problem 321: From the state of Bengal, District Sylhet, Post Office Kamalganj, Village Phool Toli, sent by Maulvi Abdul Ghani Sahib, 6 Rajab 1317 AH. What is your opinion, may Allah have mercy on you in both worlds (May Allah Almighty have mercy on you in both worlds, what is your blessed instruction? -T) on this issue where Zaid divorced his wife named Zainab and proposed to Hindah. Then Hindah said that if you agree to this condition, I can enter your marriage, otherwise not. The condition is that you shall not bring that divorced woman or anyone else into marriage without our permission; if you do, the power of three divorces will be in my hands. Zaid accepted the condition and brought Hindah into marriage and lived for five or six months. Then Zaid brought Zainab back home in marriage. Hindah got angry and after a brief quarrel with Zainab, she said to him, "Now I cannot stay according to the agreement," and left the house. For this statement of Hindah, are witnesses also a condition or not? And will exercising such power be valid or not? And after eight or nine months, Hindah's guardian went and asked Zaid for a divorce. Zaid said that return the 70 rupees I gave to Banu as dower, then I will give a divorce. According to Zaid's words, the 70 rupees which were regarding the dower were returned and the divorce was obtained. Is it valid or futile? Is 'Iddah mandatory for Hindah after this divorce or not? If during the 'Iddah, Hindah enters into marriage with Bakr, is that marriage forbidden or permissible according to Sharia? Give your verdict and be rewarded.

Page 637 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

बाब तफ़वीज़-ए-तलाक़ (तलाक़ सौंपने का बयान)

मसला 321: मुल्क बंगाल, जिला सिलहट, पोस्ट ऑफिस कमालगंज, मौज़ा फूल टोली से प्रेषित, मौलवी अब्दुल ग़नी साहब, 6 रजब 1317 हिजरी। मा क़ौलिकुम रहमकुमुल्लाह फ़िद-दारैन (अल्लाह तआला दोनों जहानों में आप पर रहम फ़रमाए, आपका क्या पाक हुक्म है? -टी) इस मसले में कि ज़ैद ने अपनी बीवी मुसम्मात ज़ैनब को तलाक़ देकर हिन्दह को निकाह का पैगाम दिया, तब हिन्दह ने कहा कि अगर तुम इस शर्त पर राज़ी हो तो मैं तुम्हारे निकाह में आ सकती हूँ, वरना नहीं। शर्त यह है कि हमारी इजाज़त के बिना उस तलाक़शुदा औरत या किसी और को निकाह में न लाएँ अगर लाएँ तो तीन तलाक़ का इख़्तियार मेरे हाथ में रहे। ज़ैद ने शर्त को स्वीकार कर लिया और हिन्दह से निकाह करके पाँच-छह महीने रहा। फिर ज़ैद ने ज़ैनब को निकाह के बाद घर ले आया। हिन्दह नाराज़ होकर ज़ैनब के साथ थोड़ी देर लड़ाई-झगड़े के बाद उससे कहा कि "अब मैं इकरारनामे के मुताबिक़ नहीं रह सकती" और घर से निकल गई। हिन्दह के इस कथन के साथ गवाह भी शर्त हैं या नहीं? और इस तरह का इख़्तियार इस्तेमाल करना सही होगा या नहीं? और आठ-नौ महीने बाद हिन्दह के वली ने जाकर ज़ैद से तलाक़ माँगा। ज़ैद ने कहा कि जो मैंने 70 रुपये महर बानो को दिए थे वो वापस कर दो, तब मैं तलाक़ दूँगा। ज़ैद के कहने के मुताबिक़ वो 70 रुपये जो महर के थे, वापस करके तलाक़ दिलवा दी गई। यह सही है या बेमानी? इस तलाक़ के बाद क्या हिन्दह पर इद्दत वाजिब है या नहीं? अगर इद्दत के अंदर ही हिन्दह बक्र के साथ निकाह कर ले तो वो निकाह शरीअत की रोशनी में हराम है या हलाल? बयान फ़रमाएँ और अज्र पाएँ।

पेज 637 ऑफ 688

فتاوٰی رضویہ جلد دو ازدہم

باب تفویض الطلاق (تفویض طلاق کا بیان)

مسئلہ ۳۲۱: از ملک بنگالہ ضلع سلہٹ پوسٹ آفس کمال گنج موضع پھول ٹولی مرسلہ مولوی عبدالغنی صاحب ۶ رجب ۱۳۱۷ھ ما قولکم رحمکم اللہ فی الدارین (اللہ تعالٰی دونوں جہانوں میں آپ پر رحم فرمائے آپ کا کیا ارشاد مبارک ہے۔ت) اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنا خاتون مسمّٰی زینب کو طلاق دے کر ہندہ کو خطبہ کیا تب ہندہ کہے کہ اگر اس شرط پر راضی ہو تو تیرے نکاح میں آسکتی ہوں ورنہ نہیں شرط یہ ہے، بغیر اذن ہمارے اس خاتون مطلقہ کو یا کسی اور غیر کو نکاح میں نہ لائیں، اگر لائیں تو اختیار تین طلاق کی میرے ہاتھ میں رہے، زید نے شرط کو قبول کیا اور ہندہ کو نکاح میں لا کر پانچ چھ مہینے رہا پھر زید نے زینب کو بہ نکاح گھر میں لایا ہندہ خفا ہو کر زینب کے ساتھ تھوڑی دیر جنگ و خصومت کے بعد اس کے کہا کہ اب میں مطابق اقرار نامہ نہیں رہ سکتی ہوں کہہ کر گھر سے نکل گئی اس قول ہندہ کے ساتھ گواہ بھی شرط ہے یا نہیں، اور اس طرح کے اختیار کرنا صحیح ہوگا یا نہیں، اور بعد آٹھ نو مہینے کے ولی ہندہ نے جاکر زید سے طلاق مانگا زید نے کہا کہ جو میں نے ستر ۷۰ روپے مہر بانو کو دیا تھا واپس دے دو تب طلاق دوں گا بحسب کہنے زید کے ستر ۷۰ روپے جو کہ بابت مہر کے تھے واپس دے کر طلاق دلایا، صحیح ہے یا لغو، بعد اس طلاق کے ہندہ پر عدت واجب ہے یا نہیں؟ اگر عدت کے اندر ہندہ بکر کے ساتھ نکاح بیٹھے تو وہ نکاح شرعاً حرام ہے یا حلال؟ بینوا توجروا۔

The Answer:

Regardless of the conversation between Zaid and Hindah that occurred before the marriage, to what extent was a valid Sharia suspension (ta'liq) and attribution to ownership (idafat ila al-mulk) established in it? If the words were insufficient at that time, was this condition mentioned in the marriage contract itself or not? If so, with what words? And was it in the offer (ijab) or the acceptance (qabul)? After examining these details, it will become clear whether Hindah, based on this agreement, in the event of marriage to Zainab without Hindah's permission, actually gained the authority to give herself three divorces or not. Suppose that legally the authority was obtained; even then, its meaning is that after the fulfillment of the condition, in the gathering (majlis) where Hindah learns of the marriage to Zainab, she should divorce herself in that same gathering without any extraneous (ajnabi) talk. Leaving after saying, "Now I cannot stay according to the authorization document," is not a divorce. And when she left without giving herself a divorce, the gathering changed and the authority was lost. In fact, even if saying this was assumed to be a divorce, before that, the quarrel and idle, extraneous talk with Zainab would have already changed the gathering and the authority would no longer remain. It is stated in Durr-ul-Mukhtar:

Arabic Original	Urdu Translation / Explanation
Whatever is executed with his permission and its types are three: delegation (tafwid), agency (tawkil), and message (risalah). The words of delegation are three: choosing (takhyir), the matter in hand (amr bi-yad), and will (mashi'ah). He says to her: 'Choose' or 'Your matter is in your hand', intending delegation of divorce, or 'Divorce yourself.' Then she has the right to divorce in the gathering where she learns of it, whether face-to-face or through news, even if it lasts a day or more,	If someone else effects a divorce with the husband's permission, there are three methods for it: 1. Delegation (Tafwid), 2. Agency (Tawkil), and 3. Letter or Messenger. There are three expressions to delegate the right of divorce to the wife: giving her the choice of divorce, or handing over the matter of divorce to her, or expressing consent to her will. Therefore, if the wife was told 'Choose for yourself' or 'Your matter is in your hands,' it will be a delegation of divorce. Or she was told 'Divorce yourself,' then in these cases, in whichever gathering the wife came to know of this delegation, she can exercise her authority

Arabic Original	Urdu Translation / Explanation
as long as he did not specify a time and the time passed before her knowledge, and as long as she did not get up so as to change her gathering in reality or in ruling by doing something that cuts it off and indicates turning away.	in that gathering, whether face-to-face or upon receiving information. If the husband has not restricted this authority to a specific time, then this gathering can last for a whole day or even longer. And if he restricted the authority to a specific time and that time expired before the wife's knowledge, then...

1. Durr-ul-Mukhtar, Chapter on Delegation of Divorce, Mujtabai Press, Delhi, 1/226.

उत्तर:

ज़ैद और हिंदा के बीच निकाह से पहले जो बातचीत हुई, उसे एक तरफ रखते हुए, उसमें वैध शरीयत निलंबन (तअलीक़) और स्वामित्व के प्रति जुड़ाव (इज़ाफ़त इलल मुल्क) किस हद तक सिद्ध था? यदि उस समय शब्द अपर्याप्त थे, तो क्या निकाह के विशेष अनुबंध में भी इस शर्त का उल्लेख आया या नहीं? यदि आया, तो किन शब्दों में? और क्या यह प्रस्ताव (ईजाब) में था या स्वीकृति (क़बूल) में? इन विवरणों पर विचार करने के बाद यह स्पष्ट होगा कि हिंदा को इस समझौते के आधार पर, हिंदा की अनुमति के बिना ज़ैनब से निकाह होने की स्थिति में, अपने आप को तीन तलाक़ देने का अधिकार प्राप्त हुआ भी या नहीं। मान लीजिए कि शरीयत के अनुसार अधिकार प्राप्त हो गया था; फिर भी इसका अर्थ यह है कि शर्त पूरी होने के बाद, जिस महफ़िल (मजलिस) में हिंदा को ज़ैनब के निकाह की सूचना मिले, उसी महफ़िल में बिना किसी बाहरी (अजनबी) बातचीत के वह अपने आप को तलाक़ दे ले। यह कहकर चले जाना कि "अब मैं अधिकार पत्र के अनुसार नहीं रह सकती हूँ" तलाक़ नहीं है। और जब वह अपने आप को तलाक़ दिए बिना चली गई, तो महफ़िल बदल गई और अधिकार समाप्त हो गया। वास्तव में, यदि इस कथन को तलाक़ ही मान लिया जाए, तब भी उससे पहले ज़ैनब के साथ झगड़ा और व्यर्थ की बाहरी बातचीत ने महफ़िल बदल दी थी और अधिकार नहीं रहा था। दुर्र-ए-मुख्तार में है:

अरबी मूल	**उर्दू अनुवाद / व्याख्या**
वह जो अपनी अनुमति से करता है और उसके प्रकार तीन हैं: प्रत्यायोजन (तफ़वीज़), एजेंसी (तौकील) और संदेश (रिसालह)। प्रत्यायोजन के शब्द तीन हैं: चुनना (तख़य्युर), मामला हाथ में होना (अम्र बि-यद), और इच्छा (मशीअत)। वह उससे कहता है: 'चुन ले' या 'तेरा मामला तेरे हाथ में है', तलाक़ के प्रत्यायोजन का इरादा करते हुए, या 'अपने आप को तलाक़ दे ले'। तो उसे उस महफ़िल में तलाक़ देने का अधिकार	यदि पति की अनुमति से कोई अन्य व्यक्ति तलाक़ देता है, तो इसके तीन तरीके हैं: १. तफ़वीज़ (प्रत्यायोजन), २. तौकील (प्रतिनिधि बनाना), और ३. पत्र या दूत। पत्नी को तलाक़ का अधिकार सौंपने के लिए तीन शब्द हैं: पत्नी को तलाक़ का अधिकार देना, या तलाक़ का मामला उसे सौंपना, या उसकी इच्छा पर सहमति व्यक्त करना। अतः पत्नी से कहा गया 'चुन ले' या 'तेरा मामला तेरे सुपुर्द' तो यह तलाक़ का प्रत्यायोजन होगा। या उससे कहा गया 'तू

अरबी मूल

है जहाँ उसे इसकी जानकारी मिली, चाहे वह आमने-सामने हो या समाचार के माध्यम से, भले ही वह एक दिन या उससे अधिक समय तक चले, जब तक कि उसने समय निर्धारित न किया हो और समय उसकी जानकारी से पहले बीत गया हो, और जब तक कि वह खड़ी न हो गई हो जिससे उसकी महफ़िल वास्तविकता में या निर्णय में बदल गई हो, ऐसा कुछ करके जो इसे काट दे और विमुखता का संकेत दे।

उर्दू अनुवाद / व्याख्या

अपने आप को तलाक़ दे ले', तो इन स्थितियों में पत्नी को जिस महफ़िल में इस प्रत्यायोजन का ज्ञान हुआ, उस ज्ञान की महफ़िल में वह आमने-सामने या सूचना के तौर पर अपने अधिकार का उपयोग कर सकती है। यदि पति ने इस अधिकार को किसी समय के साथ सीमित नहीं किया है, तो यह महफ़िल एक पूरा दिन या उससे भी अधिक हो सकती है। और यदि अधिकार को किसी समय के साथ सीमित किया हो और वह समय पत्नी के ज्ञान से पहले समाप्त हो गया हो, तब...

---

1. दुर्र-ए-मुख्तार, बाब तफ़वीज़-उत-तलाक़, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, १/२२६.

पृष्ठ 638 का 688

جلد دو ازدہم فتاوی رضویہ

الجواب:

قطع نظر اس سے کہ زید و ہندہ میں جو یہ گفتگو قبل از نکاح ہوئی، اس میں تعلیق صحیح شرعی واضافتہ الی الملک کہاں تک متحقق تھی کہ اگر اس وقت الفاظ ناکافیہ تھے تو خاص عقد نکاح میں بھی اس شرط کا ذکر آیا یا نہیں، آیا تو کن الفاظ سے؟ اور ایجاب میں تھا یا قبول میں؟ ان تفصیل پر نظر کے بعد یہ واضح ہوگا کہ ہندہ کو اس قرار داد کی بناء پر بتقدیر نکاح زینب بے اذن ہندہ اپنے نفس کو تین طلاق دے لینے کا اختیار حاصل بھی ہوا یا نہیں، صورت یہی فرض کر لیجئے کہ شرعاً اختیار حاصل ہو گیا تھا پھر بھی اس کے معنی یہ ہیں کہ بعد تحقق شرط جس مجلس میں ہندہ کو نکاح زینب کی اطلاع ہو اس مجلس میں بے کسی کلام اجنبی کے اپنے نفس کو طلاق دے لے، یہ کہہ کر چلا جانا کہ اب میں مطابق اختیار نامہ رہ نہیں سکتی ہوں طلاق نہیں، اور جب اپنے نفس کو بے طلاق دئے چلی گئی مجلس بدل گئی اور اختیار جاتا رہا بلکہ اگر یہ کہنا طلاق ہی فرض کیا جائے تاہم اس سے پہلے زینب سے جنگ وجدل کلام فضولی واجنبی کیا ان سے بھی مجلس بدل گئی اور اختیار نہ رہا، در مختار میں ہے:

عربی متن	اردو ترجمہ / تشریح
مایوقعه باذنه وانواعه ثلثة تفویض خاوند کی اجازت سے دوسرا کوئی شخص طلاق واقع کرے تو	
وتوکیل ورسالة. والفاظ التفویض اس کے لئے تین طریقے ہیں: ۱۔ تفویض، ۲۔ توکیل، اور ۳۔ خط	
ثلثة تخییر وامر بیدو مشیئة. قال یا قاصد۔ بیوی کو طلاق کا حق تفویض کرنے کیلئے تین الفاظ	
لها اختاری اوامرك بیدك ینوی ہیں، بیوی کو طلاق کا اختیار، یا معاملہ طلاق سپرد کرنا، یا اس	

عربی متن	اردو ترجمہ / تشریح
تفويض الطلاق او طلقى نفسك. فلها ان تطلق في مجلس علمها به مشافهة او اخبارا. وان طال يوما او اكثر مالم يوقته ويمضى الوقت قبل علمها مالم تقم لتبدل مجلسها حقيقة اوحكما بان تعمل مايقطعه ممايدل على الاعراض - 1	کی مرضی پر رضامندی ظاہر کرنا، لہذا بیوی کو کہا "اختیار کر لے" یا "تیرا معاملہ تیرے سپرد" تو تفویض طلاق ہوگی۔ یا اس کو کہا "تو اپنے آپ کو طلاق دے" تو ان صورتوں میں بیوی کو جس مجلس میں اس تفویض کا علم ہوا اس مجلس علم میں وہ بالمشافہ یا بطور اطلاع اپنے اختیار کو استعمال کر سکتی ہے، اگر خاوند نے یہ اختیار کسی وقت کے ساتھ مخصوص نہ کیا ہو تو یہ مجلس ایک پورا دن یا اس سے بھی زیادہ ہو سکتی ہے اور اختیار کو کسی وقت سے مخصوص کیا ہو اور وہ وقت بیوی کے علم سے قبل ختم ہو گیا تب

---

1 در مختار باب تفویض الطلاق مطبع مجتبائی دہلی ۲۲۶/۱

Fatawa Razawiya, Volume 12.

The wife would also retain the choice in the assembly of knowledge (majlis-e-ilm), provided that no change has occurred in this assembly by getting up or doing any action or talk equivalent to getting up. Because such a talk or action would be considered a change of the assembly, either in reality or legally. For instance, if she becomes busy in some such work there that it is understood she has abandoned and ended the choice. (T)

It is in Radd al-Muhtar: "And foreign speech is included in the action."

Similarly, foreign speech unrelated to the choice in such a task will also be considered turning away (a'raz). (T)

Therefore, in the inquired situation, that choice was never valid, nor did any divorce occur on Hindah at that time. Yes, when the guardian (wali) of Hindah asked for divorce and Zaid gave the divorce after taking back the mahr, this divorce certainly became valid, and iddah became mandatory for Hindah from the time of this divorce. If she marries Bakr or anyone other than Zaid before the end of iddah, it will be absolutely void and strictly forbidden.

Allah Almighty has said: "And divorced women shall wait [concerning] themselves for three periods [of menstruation]." Allah Almighty has commanded: Divorced women should keep themselves bound in iddah until the end of three menstruations. And Allah Subhanu wa Ta'ala knows best. (T)

And Allah Almighty knows best.

Question 322: From Bengal, District Sylhet, Post Office Kamalganj, Village Phool Toli, sent by Maulvi Abdul Ghani Sahib, 22 Dhu al-Qi'dah 1317 AH.

What is your decree, may Allah Almighty have mercy on you in both worlds? (T) What do the scholars of religion and the muftis of the firm Shariah say about this matter: Zaid married Hindah after divorcing his previous wife, Zainab, on the condition that if he brings his previously divorced wife back or marries any other woman without Hindah's permission, Hindah would have the choice of three divorces, whether she chooses to divorce herself or stays at her husband's will. Now Zaid has brought his previously divorced wife home through marriage without Hindah's permission. In this situation, is a formal assembly (majlis) a condition for Hindah to exercise the choice of issuing a divorce or not? Hindah claims that as soon as Zainab arrived, she

exercised her choice for herself. Zaid and two women present in the assembly of Hindah say that Hindah did not say anything...

Footnote 1: Radd al-Muhtar, Chapter of Delegation of Divorce, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/76. Footnote 2: The Holy Quran, 2/228.

फतावा रज़विया, खंड 12।

पत्नी के पास इल्म की महफिल (मजलिस-ए-इल्म) में भी विकल्प (अख्तियार) बना रहेगा, बशर्ते कि उस महफिल में उठने या उठने के समान किसी काम या बात करने से कोई बदलाव न आया हो। क्योंकि ऐसी बात या काम वास्तव में या कानूनी तौर पर महफिल के बदलने का कारण माना जाएगा। उदाहरण के तौर पर, अगर वह वहीं किसी ऐसे काम में व्यस्त हो जाए जिससे यह समझा जाए कि उसने विकल्प को छोड़ दिया और समाप्त कर दिया है। (त)

रद्दुल मुहतार में है: "और बाहरी बातचीत कार्य में शामिल है।"

ऐसे काम में बाहरी और विकल्प से असंबंधित बातचीत को भी विमुखता (एराज़) माना जाएगा। (त)

इसलिए, पूछी गई स्थिति में वह विकल्प कभी सही नहीं हुआ और न ही उस समय हिंदा पर कोई तलाक पड़ा। हाँ, जब हिंदा के वली ने तलाक माँगा और ज़ैद ने मेहर वापस लेकर तलाक दे दिया, तो यह तलाक निश्चित रूप से सही हो गया और इसी तलाक के समय से हिंदा पर इद्दत अनिवार्य हो गई। यदि वह इद्दत समाप्त होने से पहले बकर या ज़ैद के अलावा किसी और से निकाह करती है, तो वह पूरी तरह से शून्य और निश्चित रूप से हराम होगा।

अल्लाह तआला ने फरमाया है: "और तलाकशुदा औरतें अपने आप को तीन मासिक धर्म तक रोके रखें।" अल्लाह तआला ने फरमाया है: तलाकशुदा औरतें तीन मासिक धर्म खत्म होने तक खुद को इद्दत में पाबंद रखें। और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है। (त)

और अल्लाह तआला बेहतर जानता है।

मसाला 322: बंगाल, जिला सिलहट, डाकखाना कमाल गंज, गाँव फूल टोली से मौलवी अब्दुल गनी साहिब द्वारा भेजा गया, 22 ज़ुल-क़ादा 1317 हिजरी।

दोनों जहानों में अल्लाह तआला आप पर रहम फरमाए, इस बारे में आपका क्या हुक्म है? (त) दीन के उलेमा और मज़बूत शरीयत के मुफ्ती इस मामले में क्या फरमाते हैं कि ज़ैद ने अपनी पिछली पत्नी ज़ैनब को तलाक देकर हिंदा से इस शर्त पर निकाह किया कि अगर वह हिंदा की अनुमति के बिना अपनी पिछली तलाकशुदा पत्नी को लाया या किसी दूसरी औरत से निकाह किया, तो हिंदा को तीन तलाक का अधिकार होगा, चाहे वह तलाक का विकल्प चुनकर खुद को आजाद कर ले या पति की इच्छा पर रहे। अब ज़ैद ने हिंदा की अनुमति के बिना निकाह के ज़रिये अपनी पिछली तलाकशुदा

पत्नी को घर ले आया। इस स्थिति में, क्या हिंदा के लिए तलाक देने के वास्ते महफिल (मजलिस) की शर्त है या नहीं? हिंदा का दावा है कि ज़ैनब के आते ही उसने अपने लिए विकल्प का इस्तेमाल कर लिया था। ज़ैद और हिंदा की महफिल में मौजूद दो औरतों का कहना है कि हिंदा ने कोई बात नहीं कही...

पाद-टिप्पणी 1: रद्दुल मुहतार, बाब तफ़वीज़-ए-तलाक़, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/76। पाद-टिप्पणी 2: अल-क़ुरान अल-करीम, 2/228।

पृष्ठ 639/688

بھی بیوی کو مجلسِ علم میں اختیار باقی ہوگا بشرطیکہ اس مجلس علم میں کوئی تبدیلی اٹھنے یا اٹھنے کے مترادف کوئی کام یا بات کرنے سے نہ آئی ہو کیونکہ ایسی بات یا کام حقیقۃ یا حکما مجلس کی تبدیلی قرار پائے گا، مثلاً کسی ایسے کام میں وہاں ہی مصروف ہو جائے جس سے یہ سمجھا جائے کہ اس نے اختیار کو چھوڑ دیا اور ختم کردیا ہے (ت)

ردالمحتار میں ہے: ودخل فی العمل الکلام الاجنبی۔ ۱ ایسے کام میں اجنبی اور اختیار سے لاتعلق کلام بھی اعراض سمجھا جائے گا۔ (ت)

پس صورت مستفسرہ میں وہ اختیار ہرگز صحیح نہ ہوا نہ اس وقت تک ہندہ پر کوئی طلاق پڑی، ہاں جب ولی ہندہ نے طلاق مانگی اور زید نے مہر واپس لے کر طلاق دی، یہ طلاق بیشک صحیح ہوئی اور اسی طلاق کے وقت سے ہندہ پر عدت لازم آئی، اگر ختم عدت سے پہلے بکر وغیرہ زید کے سوا کسی سے نکاح کرے گی باطل محض و حرام قطعی ہوگا،

قال اللہ تعالٰی "وَالْمُطَلَّقٰتُ یَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِھِنَّ ثَلٰثَۃَ قُرُوْءٍ " ۲ اللہ تعالٰی نے فرمایا ہے: طلاق والی عورتیں اپنے آپ کو تین حیض ختم ہونے تک عدت میں پابند رکھیں واللہ سبحٰنہ و تعالٰی اعلم۔ (ت)

واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۲۲: از بنگالہ ضلع سلہٹ ڈاکخانہ کمال گنج موضع پھول ٹولی مرسلہ مولوی عبدالغنی صاحب ۲۲ ذیقعدہ ۱۳۱۷ھ

ماقولکم رحمکم اللہ تعالٰی فی الدارین (اللہ تعالٰی دونوں جہانوں میں آپ پر رحم فرمائے آپ کا کیا فرمان ہے۔ت) کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیانِ شرعِ متین اس مسئلہ میں کہ زید نے اپنی اگلی

خاتون مسماۃ زینب کو طلاق دے کر ہندہ کو اس شرط پر نکاح کیا کہ اگر بلا اذن ہندہ اپنے اگلے خاتون مطلقہ کو لایا اور دوسری کسی کو اپنے نکاح میں لائے تو ہندہ کو تین طلاق کا اختیار ہے خواہ کہ طلاق کو اختیار کرکے اپنے نفس کو چھڑائے یا مرضی شوہر پر رہے۔ اب زید بلا اذن ہندہ اپنی اگلی خاتون مطلقہ کو بہ نکاح گھر میں لایا اس صورت میں ہندہ کو اختیار ایقاعِ طلاق کے واسطے مجلس شرط ہے یا نہیں، ہندہ دعوی کرتی ہے کہ بمجرد آتے ہی زینب کے اپنے نفس کو اختیار کرلیا تھا زید اور دو عورت حاضر مجلس ہندہ تھے کہتے ہیں ہندہ نے کوئی بات

۱ ردالمحتار باب تفویض الطلاق داراحیاء التراث العربی بیروت ۲/۷۶ ۲ القرآن الکریم ۲/۲۲۸

Fatawa Rizvia Volume 12

...not said, but she left the house and fought with Zainab. In this dispute, according to Shariah, is the witness credible or is Hinda's statement credible? Please explain with evidence. If Hinda, based on the aforementioned claim, enters into a marriage (Nikah) with Bakr after three months, is this marriage valid or not? And despite the aforementioned claim, if Hinda took Khula (divorce initiated by the wife) from Zaid, is this Khula credible according to Shariah or not? The objector says that if Hinda's claim were correct, why did she take Khula? Hinda says she took Khula due to fear of the ruler, not due to lack of self-authority. In the case of a dispute between spouses, the wife's statement is proven in Alamgiri as follows:

[Arabic Side]: "And when he (the husband) places her matter in her hands, and she divorces herself, and the husband says: 'You only divorced yourself after engaging in conversation or work (another action),' and she says: 'Rather, I divorced myself in that same assembly without engaging in other talk or anything else,' then her word is taken and the divorce is effective. Thus it is in Fushul al-Ustrushani. End."

[Urdu Side]: "If the husband gave his wife the authority of her divorce, and the wife divorced herself on that basis, and the husband said: 'Since you were busy with another job or another talk, and you divorced after that,' and the wife, denying the husband's allegation, said: 'No, but I divorced myself in that same assembly and I was not busy with any other work or foreign talk,' then the wife's statement will be credible, and the divorce given by the wife will take place. This is mentioned in the chapters (Fushul) of Ustrushani. End (T)"

In this described case, whose evidence is credible according to Shariah? Explain and you shall be rewarded.

The Answer: In the questioned case, the husband's statement under oath is credible. Unless Hinda proves with Shariah-compliant just witnesses (two men or one man and two women) that she had divorced herself in that same assembly, her word will not be heard at all, nor will she be allowed to marry Bakr. The Khula that was performed is correct. After the iddah (waiting period) of Khula passes, she can marry whomever she wishes. There is a great difference between this situation and the case mentioned in Fatawa Alamgiri. There, the husband also admitted that the woman had divorced herself, but he claimed that her giving of divorce was void because it happened after the assembly had changed. This is clearly against the apparent fact

because when the woman, after being given the choice, intended to divorce, it is apparent that...

---

1 Fatawa Hindiyyah, Al-Fasl al-Thani fi al-Amr bi al-Yad, Nurani Kutub Khana Peshawar, 1/391

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

...नहीं कहा बल्कि घर से बाहर चली गई और ज़ैनब से झगड़ा और दुश्मनी की, इस विवाद में शरीयत के अनुसार गवाह विश्वसनीय है या हिंदा का कथन विश्वसनीय है? साक्ष्य के साथ वर्णन करें। यदि हिंदा उक्त दावे के आधार पर तीन महीने के बाद बक्र के साथ निकाह कर ले, तो यह निकाह सही हुआ या नहीं? और उक्त दावे के बावजूद यदि हिंदा ने ज़ैद से खुला लिया, तो क्या यह खुला शरीयत के अनुसार विश्वसनीय है या नहीं? आपत्ति करने वाला कहता है कि यदि हिंदा का दावा सही होता तो उसने खुला क्यों लिया? हिंदा कहती है कि उसने शासक के डर के कारण खुला लिया था, न कि स्वयं के अधिकार की कमी के कारण। पति-पत्नी के विवाद की स्थिति में पत्नी का कथन आलमगीरी में इस प्रकार प्रमाणित है:

[अरबी पक्ष]: "और जब पति अपनी पत्नी का मामला उसके हाथ में दे दे और वह स्वयं को तलाक दे दे, और पति कहे: 'तुमने केवल बातचीत या किसी काम में व्यस्त होने के बाद स्वयं को तलाक दिया है,' और वह कहे: 'बल्कि, मैंने उसी सभा (मजलिस) में बिना किसी अन्य बातचीत या किसी और चीज़ में व्यस्त हुए स्वयं को तलाक दिया है,' तो उसी की बात मानी जाएगी और तलाक प्रभावी हो जाएगा। फूसुल अल-उस्तरुशानी में ऐसा ही है। समाप्त।"

[उर्दू पक्ष]: "यदि पति ने पत्नी को उसके तलाक का मामला उसके हाथ में दे दिया, और पत्नी ने उस पर स्वयं को तलाक दे दिया और पति ने कहा कि चूंकि तुम दूसरे काम में व्यस्त हो गई थी या दूसरी बात में व्यस्त हो चुकी थी, और उसके बाद तुमने तलाक दिया है, और पत्नी ने पति के इस आरोप से इनकार करते हुए कहा 'नहीं बल्कि मैंने उसी सभा में स्वयं को तलाक दे दिया है और मैं किसी दूसरे काम या अजनबी बात में व्यस्त नहीं हुई', तो पत्नी की बात विश्वसनीय होगी, और पत्नी द्वारा दिया गया तलाक प्रभावी हो जाएगा। उस्तरुशानी के अध्यायों (फूसुल) में ऐसा ही उल्लेख है। समाप्त (त)"

इस वर्णित स्थिति में शरीयत के अनुसार किसका प्रमाण विश्वसनीय है? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: पूछी गई स्थिति में, पति का कथन शपथ के साथ विश्वसनीय है। जब तक हिंदा शरीयत के अनुसार न्यायप्रिय गवाहों (दो पुरुष या एक पुरुष और दो महिलाएं) की गवाही से यह साबित न कर दे कि मैंने उसी सभा में स्वयं को तलाक दे दिया था, उसकी बात बिल्कुल नहीं सुनी जाएगी और न ही उसे बक्र से निकाह करने की अनुमति होगी। जो खुला किया गया वह सही है। खुला की इद्दत (प्रतीक्षा

अवधि) बीतने पर वह जिससे चाहे निकाह कर सकती है। इस घटना की स्थिति और फ़तावा आलमगीरी की स्थिति में बहुत बड़ा अंतर है। वहाँ पति ने भी स्वीकार किया था कि महिला ने स्वयं को तलाक दिया था, लेकिन वह कहता था कि उसका यह तलाक देना शून्य है क्योंकि यह सभा बदलने के बाद हुआ था। यह स्पष्ट रूप से प्रत्यक्ष तथ्य के विरुद्ध है क्योंकि जब महिला ने अधिकार मिलने के बाद तलाक का इरादा किया, तो प्रत्यक्ष यही है कि...

---

1 फ़तावा हिन्दिया, अल-फ़स्ल अल-थानी फ़ी अल-अम्र बिल-यद, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/391

पृष्ठ 640/688

نہ کہی بلکہ گھر سے باہر گئی اور زینب سے جنگ و خصومت کی، اس اختلاف میں عند الشرع گواہ معتبر ہے یا قولِ ہندہ معتبر ہے؟ مع الدلیل بیان فرمائیں، اگر ہندہ اس دعوٰی مذکورہ کے بنا پر بعد تین مہینے کے بکر کے پاس نکاح بیٹھے تو یہ نکاح صحیح ہوا یا نہیں؟ اور باوجود اس دعوٰی مذکورہ کے ہندہ نے زید سے خلع کیا تو یہ خلع عند الشرع معتبر ہے یا نہیں؟ معترض کہتا ہے اگر وہ دعوٰی ہندہ صحیح ہوتا تو کیوں خلع کیا، ہندہ کہتی ہے بسببِ خوفِ حاکم خلع کیا تھا، نہ عدمِ اختیارِ نفس کے اختلافِ زوجین کی صورت میں قول زوجہ عالمگیری میں ثابت ہے جیسا کہ:

[عربی حصہ]: واذا جعل امرها بيدها وطلقت نفسها وقال الزوج انما طلقت نفسك بعد اشتغالك بكلام او بعمل، وقالت بل طلقت نفسي في ذلك المجلس من غير ان اشتغل بكلام آخر وشيئ آخر فالقول قولها وقع الطلاق كذا في فصول الاستروشني، انتهى۔

[اردو ترجمہ در جدول]: اگر خاوند نے بیوی کو اس کی طلاق کا معاملہ اس کے ہاتھ میں دے دیا، اور بیوی نے اس پر اپنے آپ کو طلاق دے دی اور خاوند نے کہا چونکہ تو دوسرے کام میں مشغول ہو گئی تھی یا دوسری بات میں مشغول ہو چکی تھی، اور اس کے بعد تو نے طلاق دی ہے اور بیوی نے خاوند کے اس الزام کا انکار کرتے ہوئے کہا "نہیں بلکہ میں نے اسی مجلس میں اپنے آپ کو طلاق دے دی ہے اور میں کسی دوسرے کام میں مشغول یا اجنبی بات میں مشغول نہیں ہوئی" تو بیوی کی بات معتبر ہوگی، اور بیوی کی دی ہوئی طلاق واقع ہو جائیگی، استروشنی کے فصول میں یوں ہی مذکور ہے۔ انتہی (ت)

اس صورتِ مسطور میں عند الشرع کس کی دلیل معتبر ہے؟ بینوا توجروا۔

الجواب: صورتِ مستفسرہ میں قولِ زوج قسم کے ساتھ معتبر ہے، ہندہ جب تک گواہان عادل شرعی دو مرد یا ایک مرد دو عورتوں کی شہادت سے ثابت نہ کرے کہ میں نے اسی مجلس میں اپنے نفس کو طلاق دے لی تھی اس کی بات ہرگز نہ سنی جائے گی نہ اسے بکر سے نکاح کی اجازت ہوگی خلع جو کیا صحیح ہے، خلع کی عدت گزرنے پر جس سے چاہے نکاح کر سکتی ہے، اس صورت واقعہ اور صورتِ مسئلہ فتاویٰ عالمگیری میں فرقِ عظیم ہے وہاں شوہر کو بھی تسلیم تھا کہ عورت نے اپنے نفس کو طلاق دی مگر یہ کہتا تھا کہ اس کا یہ طلاق دینا باطل واقع ہوا کہ بعد تبدیل مجلس تھا، یہ صراحۃً خلافِ ظاہر ہے کہ جب عورت نے بعد تخییر طلاق کا قصد کیا تو ظاہر یہی ہے

---

1 فتاویٰ ہندیہ الفصل الثانی فی الامر بالید نورانی کتب خانہ پشاور ۱/ ۳۹۱

Fatawa Razawiyyah, Volume 12

If divorce was given at such a time that his intention was fulfilled, i.e., before changing the assembly, then in this case the husband was making a claim contrary to the apparent situation. Therefore, the woman's statement is reliable. Here, the husband does not admit to initiating divorce at all, but rather says that Hindah left without being divorced, and Hindah claims divorce, so she is the claimant for the termination of the marriage and the husband is the denier. Therefore, the husband's statement is reliable. Just by being given the option of divorce, it is not necessarily apparent that the woman will definitely choose divorce. It is stated in Jami' al-Fusulayn:

[Arabic Section]: T (i.e., Al-Ziyadat) states: He said [to his wife], "Your matter is in your hands," so she divorced herself. Then he said, "You only divorced yourself after being occupied with talk or work," and she said, "Rather, I divorced myself in that assembly without any change." Her word is the one accepted because the cause was established by his admission. Muhtam (i.e., Mukhtasar al-Hakim): He said, "I gave you the option yesterday and you did not choose," and she said, "I have chosen." His word is the one accepted. Shakh (i.e., Shams al-A'imma al-Sarakhsi): He said to his slave, "I put your matter in your hand regarding freedom yesterday and you did not free yourself." The slave said, "I did." He is not believed since the master did not admit to his manumission, because putting the matter in his hand does not necessitate manumission as long as the slave does not free himself. The slave claims that, and the master denies it, and the slave's word is not accepted at that moment because he is reporting what...

[Urdu Section]: T (i.e., Al-Ziyadat) states: The husband said to the wife, "Your matter is in your hands," so the wife divorced herself. After that, the husband told her that you divorced yourself after a change in the assembly after having the choice; in this case, the wife's word will be reliable because the reason for confirming the wife's statement is the husband's own admission that (the wife divorced herself), which has been found. Muhtam (i.e., Mukhtasar al-Hakim): The husband said to the wife, "I gave you the choice yesterday but you did not use your choice," in response, the wife said, "I have used the choice," then the husband's word will be reliable. Shakh (i.e., Shams al-A'imma al-Sarakhsi): The master said to his slave, "I gave you the choice to be free yesterday but you did not free yourself," the slave said, "I have done so," then the slave's word will not be reliable because the master did not admit to his freedom, as merely giving the choice of freedom does not make manumission mandatory unless

the slave frees himself upon the master's choice, whereas the slave is its claimant and the master...

फ़तावा रज़विया, खंड 12

यदि ऐसे समय में तलाक़ दिया गया जिससे उसका यह उद्देश्य पूरा हो जाए, यानी सभा बदलने से पहले, तो इस स्थिति में पति प्रत्यक्ष स्थिति के विपरीत दावा कर रहा था, इसलिए महिला का कथन विश्वसनीय माना गया। यहाँ पति तलाक़ देने का इक़रार ही नहीं करता बल्कि कहता है कि हिन्दा बिना तलाक़ लिए चली गई, और हिन्दा तलाक़ का दावा करती है, तो वह निकाह की समाप्ति की दावेदार है और पति मुनकिर (अस्वीकार करने वाला) है, इसलिए पति का कथन विश्वसनीय है। और तलाक़ का विकल्प दिए जाने से यह ज़ाहिर नहीं होता कि महिला तलाक़ को ही चुनेगी। जामिउल फ़ुसूलैन में है:

[अरबी अनुभाग]: त (अर्थात ज़ियादात) में है: उसने (अपनी पत्नी से) कहा, "तेरा मामला तेरे हाथों में है," तो उसने खुद को तलाक़ दे दी। फिर उसने कहा, "तुमने किसी बातचीत या काम में व्यस्त होने के बाद ही खुद को तलाक़ दी है," और उसने कहा, "बल्कि, मैंने उसी सभा में बिना किसी बदलाव के खुद को तलाक़ दी है।" उसकी बात मानी जाएगी क्योंकि उसका कारण उसके इक़रार से स्थापित हो गया। मुह्तम (अर्थात मुख़्तसरुल हाकिम): उसने कहा, "मैंने तुम्हें कल विकल्प दिया था और तुमने नहीं चुना," और उसने कहा, "मैंने चुन लिया है।" उसकी (पति की) बात मानी जाएगी। शख़ (अर्थात शम्सुल अइम्मा सरख़सी): उसने अपने ग़ुलाम से कहा, "मैंने कल आज़ादी के संबंध में तेरा मामला तेरे हाथ में दिया था और तूने खुद को आज़ाद नहीं किया।" ग़ुलाम ने कहा, "मैंने किया है।" उसका विश्वास नहीं किया जाएगा क्योंकि मालिक ने उसकी आज़ादी का इक़रार नहीं किया, क्योंकि मामला उसके हाथ में देने से आज़ादी अनिवार्य नहीं हो जाती जब तक कि ग़ुलाम खुद को आज़ाद न कर ले। ग़ुलाम इसका दावा करता है, और मालिक इससे इनकार करता है, और उस समय ग़ुलाम की बात नहीं मानी जाएगी क्योंकि वह रिपोर्ट कर रहा है जो...

[उर्दू अनुभाग]: त (यानी ज़ियादात) में है: पति ने पत्नी से कहा कि "तेरा मामला तेरे हाथ में है" तो इस पर पत्नी ने स्वयं को तलाक़ दे दी, इसके बाद पति ने उससे कहा कि तूने विकल्प मिलने के बाद सभा में किसी बदलाव के बिना अपने को तलाक़ दी है तो इस स्थिति में पत्नी की बात विश्वसनीय होगी क्योंकि पत्नी की पुष्टि का कारण पति का अपना इक़रार है कि (पत्नी ने तलाक़ ली है) वह पाया गया है। मुह्तम (यानी मुख़्तसरुल हाकिम): पति ने पत्नी से कहा "मैंने तुम्हें कल विकल्प दिया था पर तुमने अपना विकल्प इस्तेमाल नहीं किया" तो जवाब में पत्नी ने कहा "मैंने विकल्प का इस्तेमाल कर लिया है" तो पति की बात विश्वसनीय होगी। शख़ (यानी शम्सुल अइम्मा सरख़सी): मालिक ने अपने ग़ुलाम

से कहा कि "मैंने तुझे कल आज़ाद होने का विकल्प दिया था पर तूने स्वयं को आज़ाद नहीं किया" तो ग़ुलाम ने कहा "मैंने कर लिया है" तो ग़ुलाम की बात विश्वसनीय नहीं होगी क्योंकि मालिक ने उसकी आज़ादी का इक़रार नहीं किया, क्योंकि केवल आज़ादी का विकल्प देना आज़ादी को अनिवार्य नहीं करता जब तक कि ग़ुलाम मालिक के विकल्प देने पर स्वयं को आज़ाद न कर ले, जबकि ग़ुलाम इसका दावेदार है और मालिक...

पृष्ठ 641 का 688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

کہ ایسے ہی وقت طلاق دی جس سے اُس کا یہ قصد پورا ہو یعنی مجلس بدلنے سے پہلے تو اس صورت میں شوہر خلاف ظاہر دعوٰی کرتا تھا، لہذا قول عورت کا معتبر ہوا، اور یہاں شوہر سرے سے ایقاعِ طلاق ہی کا اقرار نہیں کرتا بلکہ کہتا ہے کہ ہندہ بے طلاق دئے چلی گئی ، اور ہندہ دعوٰی طلاق کرتی ہے تو وہ زوال نکاح کی مدعیہ اور شوہر منکر ہے ، لہذا قول شوہر معتبر ہے ، اور اختیارِ طلاق دئے جانے سے خواہی نخواہی یہی ظاہر نہیں کہ عورت طلاق ہی اختیار کرے گی، جامع الفصولین میں ہے :

ت (ای الزیادات) قال امرك بیدك فطلقت نفسها فقال انما طلقت نفسك بعد الاشتغال بكلام او عمل وقالت بل طلقت نفسی فی ذلك المجلس بلا تبدل فالقول قولها لانه وجد سببه باقراره محتم (ای مختصر الحاكم) قال خیرتك امس فلم تختاری وقالت قد اخترت فالقول قوله شخ (ای شمس الائمة السرخسی) قال لقنّه جعلت امرك بیدك فی العتق امس فلم تعتق نفسك قال القن فعلته لا یصدق اذ المولی لم یقر بعتقه لان جعل الامر بیده لا یوجب العتق مالم یعتق القن نفسه والقن یدعی ذلك والمولی ینكره ولا قول للقن فی الحال لانه یخبر بما

ت (یعنی زیادات) میں ہے، خاوند نے بیوی کو کہا کہ "تیرا معاملہ تیرے ہاتھ میں ہے " تو اس پر بیوی نے اپنے آپ کو طلاق دے دی، اس کے بعد خاوند نے اسے کہا کہ تُونے اختیار کے بعد مجلس میں کسی تبدیلی کے بغیر اپنے کو طلاق دی ہے تو اس صورت میں بیوی کی بات معتبر ہوگی کیونکہ بیوی کی تصدیق کا سبب خاوند کا اپنا اقرار ہے کہ (بیوی نے طلاق دی ہے) وہ پایا گیا ہے محتم (یعنی مختصر الحاکم) ، خاوند نے بیوی کو کہا " میں نے تجھے کل اختیار دیا تھا تو نے اپنا اختیار استعمال نہ کیا " تو جواب میں بیوی نے کہا " میں نے اختیار کو استعمال کرلیا ہے"

تو خاوند کی بات معتبر ہوگی شخ (یعنی شمس الائمہ سرخسی)، مالک نے اپنے غلام کو کہا کہ "میں نے تجھے کل آزاد ہونے کا اختیار دیا تو تُونے اپنے آپ کو آزاد نہ کیا " تو غلام نے کہا " میں نے کر لیا ہے " تو غلام کی بات معتبر نہ ہوگی کیونکہ مالک نے اس کی آزادی کا اقرار نہ کیا، کیونکہ محض آزادی کا اختیار دینا عتق کو لازم نہیں کرتا جب تک مالک کے اختیار پر غلام اپنے آپ کو آزاد نہ کرلے، جبکہ غلام اس کا مدعی ہے اور مالک۔

Fatawa Rizvia Volume 12

[Top Box - Arabic Text:] He does not possess the right to initiate [it] because the matter has left his hand due to a change in the assembly. Similarly, if he said, "I freed you for property yesterday and you did not accept," and the slave says, "I accepted," then the statement of the master is taken. This applies to divorce and the matter being in your hand as well. Summarized.

[Top Box - Urdu Translation/Explanation:] He denies it. In this conversation, the slave's claim that "I have freed myself" is reporting something whose initiation he did not yet own. So, at present, no word of the slave is valid because due to the change in the assembly, the choice has left his hand. Likewise, if the master said, "I gave you the choice of freedom for property yesterday which you did not accept," and the slave said, "I had accepted it," the master's word will be considered credible. And all these scenarios are the same regarding divorce and giving the choice into the wife's hand. Summarized. (T)

[Middle Box - Arabic Text from Bahr al-Ra'iq:] In Bahr al-Ra'iq it is mentioned: The difference between them is that in the first case, there is agreement on the occurrence of the pronouncement [of divorce] from her after delegation, and the husband claims the invalidation of her pronouncement, so it is not accepted from him. And Allah (Glorified and Exalted is He) knows best.

[Middle Box - Urdu Translation/Explanation:] The difference in the aforementioned cases is that in the first issue, both husband and wife agree on using the choice in the assembly after the choice was given. However, the husband is claiming to invalidate the wife's right, therefore his statement will not be accepted, etc. And Allah (Glorified and Exalted is He) knows best. (T)

Problem 323: What do the scholars of religion and muftis of the firm Shariah say about this issue: A person, before marriage, agreed with a woman that "if I perform a second marriage with another woman, you have the choice to divorce yourself." That person performed a second marriage. If the woman immediately divorces herself according to the choice, and the husband is not satisfied with it, will the divorce occur or not? And will this condition before marriage be considered valid or not?

The Answer: If the words that this person said to this woman before marriage are exactly as they are in the question...

[1] Jami' al-Fasulayn, Chapter 23, Regarding Al-Amr bi'l-Yad and its related matters, Islami Kutub Khana Binori Town Karachi, 31/302 [2] Bahr al-Ra'iq, Section on Al-Amr bi'l-Yad, H.M. Saeed Company Karachi, 3/326

फतावा रज़विया जिल्द 12

[शीर्ष बॉक्स - अरबी पाठ:] वह इसे शुरू करने का अधिकार नहीं रखता क्योंकि मजलिस बदलने के कारण मामला उसके हाथ से निकल गया है। इसी तरह अगर उसने कहा, "मैंने कल तुम्हें माल के बदले आज़ाद किया था और तुमने स्वीकार नहीं किया," और गुलाम कहता है, "मैंने स्वीकार कर लिया था," तो मालिक की बात मानी जाएगी। और यही सब तलाक और 'अम्रुक़ बि-यदिका' (तुम्हारा मामला तुम्हारे हाथ में है) के बारे में भी है। संक्षेप में।

[शीर्ष बॉक्स - उर्दू अनुवाद/व्याख्या:] वह इनकार करता है और इस बातचीत में गुलाम का यह कहना कि "मैंने खुद को आज़ाद कर लिया है", उस चीज़ की सूचना दे रहा है जिसके शुरू करने का वह अभी तक मालिक नहीं बना था। तो वर्तमान में गुलाम का कोई कथन मान्य नहीं है, क्योंकि अब मजलिस बदलने की वजह से विकल्प उसके हाथ से निकल चुका है। और इसी तरह अगर कहा कि "मैंने कल तुझे माल के बदले आज़ादी का विकल्प दिया था जिसे तूने स्वीकार नहीं किया", तो गुलाम ने कहा "मैंने स्वीकार कर लिया था" तो मालिक की बात विश्वसनीय होगी। और यही तमाम स्थितियाँ तलाक और पत्नी के हाथ में विकल्प देने के बारे में हैं। संक्षेप में। (त)

[मध्य बॉक्स - अरबी पाठ (बहरुल रैक़ से):] बहरुल रैक़ में है: उनके बीच अंतर यह है कि पहले मसले में प्रत्यायोजन (डेलीगेशन) के बाद उसकी ओर से तलाक़ होने पर सहमति है, और पति उसके तलाक़ को अमान्य करने का दावा करता है, इसलिए उसकी बात स्वीकार नहीं की जाएगी। और अल्लाह (महिमामय और सर्वोच्च) बेहतर जानता है।

[मध्य बॉक्स - उर्दू अनुवाद/व्याख्या:] उपरोक्त स्थितियों में अंतर यह है कि पहले मसले में पति और पत्नी दोनों विकल्प दिए जाने के बाद मजलिस में विकल्प का उपयोग करने पर सहमत हैं, लेकिन पति पत्नी के अधिकार को अमान्य करने का दावा कर रहा है, इसलिए उसकी बात स्वीकार नहीं की जाएगी आदि। और अल्लाह (सुभानहू व तआला) बेहतर जानता है। (त)

मसला 323: दीन के विद्वान और मज़बूत शरीयत के मुफ्ती इस मसले में क्या कहते हैं कि एक व्यक्ति ने एक महिला से निकाह से पहले यह तय किया कि "अगर मैं किसी दूसरी महिला से दूसरा निकाह करूँ तो तुझे अधिकार है कि तू खुद को तलाक दे ले", उस व्यक्ति ने दूसरा निकाह कर लिया, महिला अपने आप को तुरंत अधिकार के अनुसार तलाक दे ले और पति उस पर सहमत न हो तो तलाक होगा या नहीं? और निकाह से पहले यह शर्त जायज़ मानी जाएगी या नहीं?

अल-जवाब: अगर शब्द जो उस व्यक्ति ने उस महिला से निकाह से पहले कहे, वे ठीक उतने ही और वैसे ही हैं जैसे सवाल में हैं...

---

[1] जामिउल फुसुलैन, अध्याय 23, अल-अम्र बिल-यद और संबंधित मामले, इस्लामी कुतुब खाना बनोरी टाउन कराची, 31/302 [2] बहरुल रैक़, अल-अम्र बिल-यद पर खंड, एच.एम. सईद कंपनी कराची, 3/326

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

لا یملک انشاءہ لخروج الامر من یدہ بتبدل مجلسہ وکذا لو قال اعتقتک علی مال امس فلم تقبل فقال القن قبلت فالقول للمولی وکذا ھذا کلہ فی الطلاق وفی امرک بیدك[1] اھ ملخصاً۔

انکار کرتا ہے اور اس گفتگو میں غلام کا کہنا کہ میں نے اپنے آپ کو آزاد کر لیا ہے یہ اس چیز کی خبر دے رہا ہے جس کی انشاء کا ابھی تک وہ مالک نہیں بنا تو فی الحال غلام کا کوئی قول نہیں ہے، کیونکہ اب مجلس بدلنے کی وجہ سے اختیار اس کے ہاتھ سے نکل چکا ہے، اور یو نہی اگر کہا کہ "میں نے کل تجھے مال کے عوض آزادی کا اختیار دیا تھا جسے تُو نے قبول نہ کیا"، تو غلام نے کہا "میں نے قبول کر لیا تھا" تو مالک کی بات معتبر ہوگی۔ اور یہی تمام صورتیں طلاق اور بیوی کے ہاتھ میں اختیار دینے کے متعلق ہیں اہ ملخصاً(ت)

بحر الرائق میں ہے: الفرق بینھما ان فی المسئلۃ الاولی اتفاقاً علی صدور الایقاع منھا بعد التفویض، والزوج یدعی ابطال ایقاعھا فلا یقبل منہ[2]۔ واللہ سبحنہ و تعالٰی اعلم۔

مذکورہ صورتوں میں فرق یہ ہے کہ پہلے مسئلہ میں خاوند و بیوی دونوں اختیار کے بعد مجلس میں اختیار کو استعمال کرنے پر متفق ہیں مگر خاوند، بیوی کے حق کو باطل کرنے کا مدعی ہے اس لئے اس کی بات مقبول نہ ہوگی الخ۔ واللہ سبحانہ و تعالیٰ اعلم (ت)

مسئلہ ۳۲۳: کیا فرماتے ہیں علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کہ ایک شخص نے ایک عورت سے قبل نکاح یہ قرار دیا کہ اگر میں دوسرا نکاح کسی اور عورت سے کروں تو تجھ کو اختیار ہے کہ تو اپنے آپ کو طلاق دے لے، اس شخص نے دوسرا نکاح کر لیا، عورت اپنے آپ کو

فوراً حسبِ اختیار طلاق دے لے اور شوہر اس پر رضامند نہ ہو تو طلاق ہو گی یا نہیں؟ اور قبل نکاح یہ شرط جائز تصور ہو گی یا نہیں؟

الجواب: اگر لفظ جو اس شخص نے اس عورت سے قبل نکاح کہے اسی قدر اور یونہی ہیں جس طرح سوال میں

---

[1] جامع الفصولین الفصل الثالث والعشرون فی الامر بالید و متعلقہ اسلامی کتب خانہ بنوری ٹاؤن کراچی ۳۱/ ۳۰۲ [2] بحر الرائق فصل فی الامر بالید ایچ ایم سعید کمپنی کراچی ۳/ ۳۲۶

...mentioned, then in this case the woman does not gain any authority to take a second divorce upon the estimation of a second marriage. Her giving herself a divorce is not sufficient unless the husband enforces this divorce,

| because for the ownership or attribution to it, it is necessary to exist at the time of giving divorce, whereas it is not present here; or it is a divorce by an unauthorized person (fuzuli), and the divorce by a fuzuli is contingent upon the husband's permission. (T) | فان الملك اوالاضافة اليه لابد منه ولم يوجد، او طلاق الفضولى يتوقف عندناعلى اجازة الزوج۔ |

Any condition made with these words before marriage is void and meaningless. And Allah Almighty knows best.

Case 324: From Bengal, 20 Rabi al-Akhir 1317 AH. What do the scholars of religion say regarding this matter: Zaid married Zainab on the condition that "If I leave you without food and without news for six months, I have given the authority of initiating three divorces into your hand." Now, after a year, Zaid, after making his wife happy and content and fixing a monthly allowance, went on a journey for some work, and three witnesses are also present. Now, after a few days, Zaid's wife claims that her divorce has occurred. Is this claim correct or not? Clarify and be rewarded.

The Answer: If the words of the condition that Zaid spoke are exactly as mentioned in the question, then there are four possibilities: First: Zaid said these words before the marriage, even if he married immediately after. Second: The condition was made during the specific offer (Ijab) and acceptance (Qabul), and the start of the offer was with this condition from Zaid's side, meaning Zaid said "I take you into my marriage on the condition that if for six months etc.", and Zainab said "I accepted." Third: The condition was in the contract itself and the start of the offer was from Zainab's side, for example, Zainab or her representative said "I have given myself or my client Zainab daughter of so-and-so son of so-and-so into your marriage on the condition that if you for six months etc.", Zaid said "I accepted", or Zainab or the representative said "I have given myself or the aforementioned client into your marriage", Zaid said "I accepted on this condition that if I for six months etc." Fourth: This condition was made after the realization of offer and acceptance. In the first two cases, this delegation of divorce, i.e., giving Zainab the authority of divorce on the said condition, was not correct at all. Even if, for the sake of argument, Zaid leaves her for six years without maintenance and without care and...

फ़तावा रज़विया | जिल्द बारहवीं

...उल्लेखित हैं, तो इस स्थिति में स्त्री को दूसरे विवाह के अनुमान पर तलाक़ लेने का कोई अधिकार प्राप्त नहीं हुआ। उसका स्वयं को तलाक़ देना तब तक पर्याप्त नहीं है जब तक कि पति उस तलाक़ को प्रभावी न करे,

| क्योंकि तलाक़ देते समय स्वामित्व या उससे संबंध का होना आवश्यक है, जबकि यहाँ यह मौजूद नहीं है; या यह कि यह फ़ुज़ूली (अनधिकृत व्यक्ति) की तलाक़ है, और हमारे निकट फ़ुज़ूली की तलाक़ पति की अनुमति पर निर्भर होती है। (त) | فان الملك اوالاضافة اليه لابد منه ولم يوجد، او طلاق الفضولى يتوقف عندناعلى اجازة الزوج۔ |

विवाह से पहले जो इन शब्दों के साथ शर्त लगाई जाए, वह निरर्थक और व्यर्थ है। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

मसाला ३२४: बंगाल से, २० रबी उल-आख़िर शरीफ़ १३१७ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि ज़ैद ने ज़ैनब से इस शर्त पर निकाह किया कि "अगर मैं तुम्हें ६ महीने तक बिना भोजन और बिना सूचना के छोड़ दूँ, तो मैंने तीन तलाक़ देने का अधिकार तुम्हारे हाथ में दे दिया।" अब ज़ैद ने एक साल बाद अपनी पत्नी को खुश और संतुष्ट करके और मासिक भोजन भत्ता तय करके किसी काम के लिए यात्रा पर गया और तीन गवाह भी मौजूद हैं। अब कुछ दिनों के बाद, ज़ैद की पत्नी दावा करती है कि मेरी तलाक़ हो गई है। क्या यह दावा सही है या नहीं? स्पष्ट करें, आपको पुण्य मिलेगा।

उत्तर: यदि शर्त के वे शब्द जो ज़ैद ने कहे थे वही हैं जो प्रश्न में बताए गए हैं, तो इसमें चार स्थितियाँ हैं: प्रथम: ज़ैद ने ये शब्द निकाह से पहले कहे, चाहे उसने उसी समय तुरंत निकाह कर लिया हो। द्वितीय: विशेष ईजाब (प्रस्ताव) और क़बूल (स्वीकृति) के दौरान शर्त रखी गई और ईजाब की शुरुआत ज़ैद की ओर से इस शर्त के साथ थी, यानी ज़ैद ने कहा "मैंने तुम्हें अपने निकाह में लिया इस शर्त पर कि अगर तुम्हें ६ महीने तक इत्यादि", ज़ैनब ने कहा "मैंने स्वीकार किया।" तृतीय: शर्त स्वयं निकाह के अनुबंध (अक़्द) में थी और ईजाब की शुरुआत ज़ैनब की ओर से थी, उदाहरण के लिए ज़ैनब या उसके प्रतिनिधि ने कहा "मैंने स्वयं को या अपनी मुवक्किला (मुवक्किल स्त्री) ज़ैनब पुत्री फलां बिन फलां को तुम्हारे निकाह में दिया इस शर्त पर कि अगर तुम छह महीने तक इत्यादि", ज़ैद ने कहा "मैंने स्वीकार किया", या ज़ैनब या प्रतिनिधि ने कहा "मैंने स्वयं को या उक्त मुवक्किला को तुम्हारे निकाह में दिया", ज़ैद ने कहा "मैंने इस शर्त पर स्वीकार किया कि अगर मैं तुम्हें छह महीने तक

इत्यादि"। चतुर्थ: यह शर्त ईजाब और क़बूल के पूरा होने के बाद की थी। पहली दो स्थितियों में शुरू से ही यह तलाक़ का अधिकार सौंपना (तफ़वीज़-ए-तलाक़), यानी ज़ैनब को उक्त शर्त पर तलाक़ का अधिकार देना सही ही नहीं हुआ। यदि मान लिया जाए कि ज़ै› ने उसे छह साल तक बिना भोजन-भत्ते और बिना देखरेख के छोड़ दिया और...

पृष्ठ ६४३ / ६८८

مذکور ہوئے تو اس صورت میں عورت کو بر تقدیر نکاحِ ثانی کوئی اختیار طلاق دے لینے کا حاصل نہ ہوا اس کا اپنے نفس کو طلاق دینا کافی نہیں جب تک شوہر اس طلاق کو نافذ نہ کرے،

| کیونکہ طلاق دیتے وقت ملکیت یا اس کی طرف نسبت کا موجود ہونا ضروری ہے جبکہ یہاں یہ موجود نہیں، یا یہ کہ یہ فضولی کی طلاق ہے جبکہ فضولی کی طلاق خاوند کی اجازت پر موقوف ہوتی ہے (ت) | فان الملك اوالاضافة اليه لابد منه ولم يوجد، او طلاق الفضولی يتوقف عندناعلی اجازة الزوج۔ |

پیش از نکاح جو ان الفاظ سے شرط کی جائے لغو و مہمل ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۲۴: از بنگالہ ۲۰ ربیع الآخر شریف ۱۳۱۷ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید نے اس شرط پر زینب سے نکاح کیا کہ اگر تم کو چھ ۶ مہینے تک بے خوراک و بے خبری چھوڑوں گا تو اختیارِ ایقاعِ تین طلاق کی ملک تیرے ہاتھ دے دیا، اب زید نے بعد ایک سال کے اپنی منکوحہ کو خوش وراضی کر کے فی ماہ خوراک مقرر کر کے واسطے کسی کام کے سفر میں گیا اور تین گواہ بھی موجود ہیں، اب بعد چند روز کے منکوحہ زید دعوٰی کرتی ہے کہ میری طلاق واقع ہوگئی، آیا یہ دعوٰی صحیح ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا۔

الجواب: اگر الفاظِ شرط کہ زید نے کہے یہی ہیں جو سوال میں مذکور ہوئے تو اس میں چار صورتیں ہیں: اول: یہ لفظ زید نے پیش از نکاح کہے اگرچہ اسی وقت معاً نکاح کرلیا۔ دوم: خاص ایجاب و قبول میں شرط کی اور ابتدائے ایجاب اس شرط کے ساتھ جانبِ زید سے تھی یعنی زید نے کہا میں تجھے اپنے نکاح میں لایا اس شرط پر کہ اگر تجھ کو چھ ۶ مہینے تک الخ، زینب نے کہا

میں نے قبول کیا۔ سوم: شرط خود عقد میں تھی اور ابتدائے ایجاب زینب کی طرف سے مثلاً زینب یا اس کے وکیل نے کہا میں نے اپنے نفس یا اپنی موکلہ زینب بنت فلاں بن فلاں کو تیرے نکاح میں دیا اس شرط پر کہ اگر تو تیرے چھ ۶ مہینے تک الخ، زید نے کہا میں نے قبول کیا، یا زینب خواہ وکیل نے کہا میں نے اپنے نفس یا موکلہ مذکورہ کو تیرے نکاح میں دیا، زید نے کہا میں نے قبول کی اس شرط پر کہ اگر میں تجھ کو چھ ۶ مہینے تک الخ۔ چہارم: یہ شرط بعد تحققِ ایجاب و قبول کی، پہلی دو صورتوں میں سرے سے یہ تفویضِ طلاق یعنی زینب کو بشرطِ مذکور طلاق کا اختیار دینا ہی صحیح نہ ہوا، اگر بالفرض زید چھ برس بے نفقہ و بے خبر گیری چھوڑے اور

Fatawa-e-Razvia Volume 12

Even if Zainab divorces herself a hundred times, the divorce will not take effect,

| For the delegation (of the right to divorce) depends on ownership or attribution to it, which is not present here. (T) | Because delegation depends on ownership and attribution to it, and it does not exist. |

In Fatawa Qazi Khan and others it is stated:

| If the wife asked the husband for the authority to divorce, and the husband then initiated the delegation, this delegation would be considered to have occurred after the marriage. This is because if he only said "I accepted" in response to his wife, this delegation would be after the marriage because the repetition in the answer is credible, as if he said, "I accepted that the matter is in your hands." Summarized (T). | When the initiation is from the husband, the delegation is after the marriage. Because when the husband, after the woman's speech, said "I accepted," and the answer includes the repetition of what was in the question, it becomes as if he said "I accepted on the condition that the matter is in your hand," so it becomes delegated after the marriage. Summarized. |

And in the previous two cases, the delegation became valid. Now, if Zaid did not leave Zainab without maintenance and care for six months after marriage, then there is no meaning to divorce happening to Zainab due to the non-fulfillment of the condition (because the condition was not met - T). And if the mentioned condition was met, then at the time six months passed, Zainab surely gained the authority to take her own divorce, but this authority will remain only until that sitting (majlis). If the sitting changed, or any action or word was issued by Zainab that was foreign to giving herself a divorce, then that authority would be lost immediately. Now, even if she divorces herself a hundred times, it will not happen. For example, when six months passed, Zainab was sitting in one place, and then she stood up from there, or she was standing and started walking, or asked for food, or combed her hair, or said something foreign to anyone other than this matter; if she divorced herself after that, it would never take effect. And if she divorced herself in the same sitting without any such word or action, and this was the very first thing she did, then divorce certainly occurred. In Fatawa Hindia it is stated:

| Delegated divorce that is conditional on a certain condition has two forms: either a time will be fixed or it will not be fixed. If the time is not fixed with the condition, such

as saying "your matter is in your hand when such and such a person comes," then... | Delegation linked to a condition either is absolute as to time or is timed. If it is absolute, such as by saying "when so-and-so arrives, then your matter is in your hand," then when so-and-so arrives, her matter is in her hand when she learns of it in her sitting in which... |

1. Fatawa Qazi Khan, Chapter on Marriage upon a Condition, Nawal Kishore, Lucknow 1/152.

फतावा-ए-रज़विया जिल्द 12

ज़ैनब सौ बार अपने नफ्स (स्वयं) को तलाक़ दे, तलाक़ नहीं होगी।

| क्योंकि तफ़्वीज़ (अधिकार सौंपना) का दारोमदार मिल्कियत या उसकी तरफ निस्बत पर है जो कि यहाँ मौजूद नहीं है। (त) | क्योंकि प्रत्यायोजन (तफ़्वीज़) स्वामित्व और उससे संबंधित होने पर निर्भर करता है, और वह यहाँ मौजूद नहीं है। |

फ़तावा क़ाज़ी ख़ाँ वग़ैरा में है:

| बीवी ने शौहर से तलाक़ का इख्तियार (अधिकार) माँगा तो अब शौहर ने तफ़्वीज़ की शुरुआत की तो यह तफ़्वीज़ निकाह के बाद मानी जाएगी क्योंकि अगर बीवी के जवाब में सिर्फ"क़बूल किया" कहा, तो यह तफ़्वीज़ निकाह के बाद इसलिए होगी कि सवाल का जवाब में दोहराव विश्वसनीय होता है गोया कि यूँ कहा "मैंने क़बूल किया कि मामला तेरे हाथ में है"। संक्षिप्त (त)। | जब पहल शौहर की तरफ से हो, तो तफ़्वीज़ निकाह के बाद होती है। क्योंकि जब शौहर ने, औरत की बात के बाद कहा "मैंने क़बूल किया," और जवाब में वह सब शामिल है जो सवाल में था, तो यह ऐसा हो गया जैसे उसने कहा "मैंने इस शर्त पर क़बूल किया कि मामला तुम्हारे हाथ में हो," इसलिए निकाह के बाद यह तफ़्वीज़ हो गई। संक्षिप्त। |

और पिछली दो सूरतों में तफ़्वीज़ सही हो गई, अब अगर ज़ैद ने निकाह के बाद छह महीने तक बिना ख़र्च और देख-भाल के नहीं छोड़ा तो भी ज़ैनब पर तलाक़ होने के कोई मायने नहीं 'लअदम तहक़्क़ुक़-ए-शर्त' (शर्त पूरी न होने की वजह से। त) और अगर ज़िक्र की गई शर्त पाई गई तो जिस वक़्त छह महीने गुज़रे ज़ैनब को अपनी तलाक़ दे लेने का इख्तियार तो ज़रूर हासिल हुआ मगर यह इख्तियार उसी मजलिस (बैठक) तक रहेगा। अगर मजलिस बदल गई या कोई काम या बात ज़ैनब से ऐसी हुई जो अपने आप को तलाक़ देने से अलग हो तो वह इख्तियार फ़ौरन चला गया, अब चाहे सौ बार अपने नफ्स को तलाक़ दे, नहीं होगी। मिसाल के तौर पर जिस वक़्त छह महीने गुज़रे ज़ैनब एक जगह बैठी थी वहाँ से खड़ी हो गई या खड़ी थी चलने लगी या खाना माँगा या कंघी की या किसी से कोई अलग बात इस मामले के अलावा कही; इसके बाद अपने आप को तलाक़ दी तो हरगिज़ नहीं होगी। और अगर इसी मजलिस में बिना किसी ऐसी बात या काम के अपने आप को तलाक़ दी, सबसे पहले यही बात की तो बेशक तलाक़ हो गई। फ़तावा हिन्दिया में है:

| वह तफ़्वीज़ जो किसी शर्त से जुड़ी हो तो उसकी दो सूरतें हैं, वक़्त तय होगा या तय नहीं होगा। अगर शर्त के साथ वक़्त तय न हो जैसे यूँ कहे "तेरा मामला तेरे हाथ है जब फ़लाँ शख़्स आ जाए तो..." | एक शर्त से जुड़ा प्रत्यायोजन (तफ़्वीज़) या तो समय के संबंध में पूर्ण है या समयबद्ध है। यदि यह पूर्ण है, जैसे यह कहकर कि "जब अमुक व्यक्ति आ जाए, तो तुम्हारा मामला तुम्हारे हाथ में है," तो जब अमुक व्यक्ति आता है, तो उसका मामला उसके हाथ में होता है जब वह अपनी उस मजलिस में इसके बारे में जानती है जिसमें... |

1. फ़तावा क़ाज़ी ख़ाँ, फ़स्ल फ़ीन निकाह अलशर्त, नवल किशोर लखनऊ 1/152.

पेज 644 का 688

زینب سو بار اپنے نفس کو طلاق دے طلاق نہ پڑے گی،

| کیونکہ تفویض کا دار ومدار ملکیت یا اس کی طرف نسبت پر ہے جو کہ یہاں موجود نہیں ہے۔ (ت) | لان التفویض تعتمد الملك والاضافة الیه ولم یوجد۔ |

فتاوٰی قاضی خاں وغیرہ میں ہے:

| بیوی نے خاوند سے طلاق کا اختیار طلب کیا تو اب خاوند نے تفویض کی ابتداء کی تو یہ تفویض نکاح کے بعد متصور ہوگی کیونکہ اگر بیوی کے جواب میں صرف "قبلت" (میں نے قبول کیا) کہا، تو یہ تفویض نکاح کے بعد اس لئے ہو گی کہ سوال کا جواب میں اعادہ معتبر ہوتا ہے گویا کہ یوں کہا میں نے قبول کیا کہ معاملہ تیرے ہاتھ میں ہو اھ مختصراً(ت) | البدأة اذاکانت من الزوج کان التفویض بعد النکاح لان الزوج لما قال بعد کلام المرأة قبلت والجواب یتضمن اعادة مافی السؤال صار کانه قال قبلت علی ان یکون الامر بیدك، فیصیر مفوضاً بعد النکاح اھ مختصراً۔ |

اور پچھلی دو صورتوں میں تفویض صحیح ہو گئی، اب اگر زید نے بعد نکاح چھ مہینے تک بے نفقہ و خبر گیری نہ چھوڑا تو بھی زینب پر طلاق ہونے کے کوئی معنی نہیں لعدم تحقق الشرط (شرط نہ پائے جانے کی وجہ سے۔ت) اور اگر شرط مذکور پائی گئی تو جس وقت چھ مہینے گزرے زینب کو اپنی طلاق دے لینے کا اختیار تو ضرور حاصل ہوا مگر یہ اختیار اسی جلسہ تک رہے گا اگر مجلس بدلی یا کوئی فعل یا قول زینب سے ایسا صادر ہوا جو اپنے آپ کو طلاق دینے سے اجنبی ہو تو وہ اختیار فوراً جاتا رہا اب چاہے سو بار اپنے نفس کو طلاق دے نہ ہو گی، مثلاً جس وقت چھ مہینے گزرے زینب ایک جگہ بیٹھی تھی وہاں سے کھڑی ہو گئی یا کھڑی تھی چلنے

لگی یا کھانا مانگا یا کنگھی کی یا کسی سے کوئی اجنبی بات اس معاملے کے علاوہ کہی اس کے بعد اپنے آپ کو طلاق دی ہرگز نہ پڑے گی اور اگر اسی جلسہ میں بغیر کسی ایسے قول و فعل اپنے آپ کو طلاق دے سب سے پہلے یہی بات کی تو بیشک طلاق ہو گئی۔ فتاویٰ ہندیہ میں ہے:

| وہ تفویض جو کسی شرط سے معلق ہو تو اس کی دو صورتیں ہیں، وقت مقرر ہو گا یا مقرر نہ ہو گا۔ اگر شرط کے ساتھ وقت مقرر نہ ہو جیسے یوں کہے "تیرا معاملہ تیرے ہاتھ ہے جب فلاں شخص آجائے تو | التفويض المعلق بشرط اما ان يكون مطلقاً عن الوقت واماان يكون مؤقتا فان كان مطلقاً بان قال اذا قدم فلان فامرك بيدك فقدم فلان فامرها بيدها اذا علمت في مجلسها الذى |

١ فتاویٰ قاضی خاں فصل فی النکاح علی الشرط نولکشور لکھنؤ ١/ ١٥٢

Fatawa Razawiyya Volume 12

Qadam fihi etc. In this situation, the wife will obtain her authority in the assembly where she is informed of someone's arrival, etc. (T)

It is stated in the same [source]: | If she rises from her assembly before choosing herself, and likewise if she engages in another task known to be a severance of what preceded it, such as if she calls for food to eat, or sleeps, or grooms herself, or bathes, or applies henna, or her husband has intercourse with her, or she addresses a man regarding buying and selling—all of this invalidates her option. This is stated in Al-Siraj al-Wahhaj.[2] | If the wife stood up in her assembly before divorcing herself, or became busy with some other task through which it becomes known that this is a severance for the option; for example, if the wife in that assembly, before exercising the option, asked for food to eat, or started combing hair, or started bathing, or started applying henna, or started intercourse with the husband, or started talking about buying and selling with another person, then all these acts will invalidate her option. It is mentioned similarly in Al-Siraj al-Wahhaj. (T) | |---|---|

It is stated in Durr-e-Mukhtar: | And the ship for her is like a house, and its movement is like her movement, so the assembly does not change with the ship's sailing, but it changes with the movement of a riding animal [3] etc. | A ship is like a house, and the movement of the ride is like the movement of the woman herself, until the assembly of option will not change while the ship is sailing, but the assembly will change upon the movement of the riding animal, etc. (T) | |---|---|

In summary, three matters are necessary for the divorce to occur on Zainab in the inquired case: 1. First, that the delegation from the husband's side happened correctly, i.e., this authority was given after marriage, or at the time of marriage in such a way that the initial proposal (ijab) was from the woman's side. 2. Second, that six months have passed after marriage without maintenance or care.

---

[1] Fatawa Hindiyya, Section Two, regarding 'Al-Amr bil-Yad', Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/392. [2] Fatawa Hindiyya, Chapter Three, regarding Delegation of Divorce, Noorani Kutub Khana Peshawar, 1/387. [3] Durr-e-Mukhtar, Chapter on Delegation of Divorce, Matba' Mujtabai Delhi, 1/227.

क़दम फ़ीहि इत्यादि इस स्थिति में पत्नी को फ़लां के आने की सूचना वाली मजलिस में अपना अधिकार प्राप्त हो जाएगा इत्यादि। (त)

उसी में है: | यदि वह स्वयं को चुनने से पहले अपनी मजलिस (सभा) से उठ जाए, और इसी तरह यदि वह किसी अन्य कार्य में व्यस्त हो जाए जिसे पूर्ववर्ती कार्य का विच्छेद माना जाता है, जैसे कि यदि वह खाने के लिए भोजन मांगे, या सो जाए, या सजने-संवरने लगे, या स्नान करे, या मेंहदी लगाए, या उसका पति उसके साथ संभोग करे, या वह किसी व्यक्ति से खरीद-फरोख्त के बारे में बात करे—तो यह सब उसके विकल्प को शून्य कर देता है। अल-सिराज अल-वहाज में ऐसा ही है।[2] | यदि पत्नी अपनी मजलिस में स्वयं को तलाक़ देने से पहले उठ खड़ी हुई या किसी दूसरे काम में मसरूफ हो गई जिससे मालूम हो जाए कि यह अधिकार के लिए बातिल (समाप्त करने वाला) है; जैसे पत्नी उस मजलिस में अधिकार का उपयोग करने से पहले खाने के लिए खाना तलब कर ले या कंघी करना शुरू कर दे या गुस्ल (स्नान) शुरू कर दे या ख़िज़ाब (मेंहदी) लगाना शुरू कर दे या पति से हमबिस्तरी (संभोग) शुरू कर दे या किसी दूसरे व्यक्ति से खरीद-फरोख्त की बात शुरू कर दे, तो ये तमाम काम उसके अधिकार को बातिल कर देंगे। सिराज अल-वहाज में ऐसा ही वर्णित है। (त) | |---|---|

दुर्र-ए-मुख्तार में है: | और उसके लिए नौका घर की तरह है, और उसका चलना उसके चलने की तरह है, इसलिए नौका के चलने से मजलिस नहीं बदलती, लेकिन सवारी के चलने से बदल जाती है[3] इत्यादि। | कश्ती (नाव), घर की तरह है, और सवारी का चलना औरत के अपने चलने की तरह है, यहाँ तक कि मजलिस-ए-इख़्तियार तब्दील नहीं होगी जब तक कश्ती चलती रही हो, मगर सवारी के चलने पर मजलिस तब्दील हो जाएगी इत्यादि। (त) | |---|---|

कुल मिलाकर, पूछताछ की गई स्थिति में ज़ैनब पर तलाक़ होने के लिए तीन बातें ज़रूरी हैं: १. एक यह कि पति की ओर से यह अधिकार (तफ़वीज़) सही तरीके से हुआ हो, यानी निकाह के बाद यह अधिकार दिया गया हो या निकाह के समय इस तरह से कि पहली पेशकश (ईजाब) औरत की तरफ से हो। २. दूसरे यह कि निकाह के बाद छह महीने बिना किसी गुज़ारा भत्ता और देखभाल के गुज़र गए हों।

---

[1] फ़तावा हिंदिया, दूसरा खंड, 'अल-अम्र बिल-यद' के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/392। [2] फ़तावा हिंदिया, तीसरा अध्याय, तलाक़ के प्रत्यायोजन (तफ़वीज़) के बारे में, नूरानी कुतुब खाना पेशावर, 1/387। [3] दुर्र-ए-मुख्तार, तलाक़ के प्रत्यायोजन का अध्याय, मतबा मुज्तबाई दिल्ली, 1/227।

पृष्ठ 645 का 688

قدم فیه الخ اس صورت میں بیوی کو فلاں کے آنے کی اطلاع والی مجلس میں اپنا اختیار حاصل ہو جائے گا الخ (ت)

اسی میں ہے: | اذا قامت عن مجلسها قبل ان تختار نفسها و کذا اذا اشتغلت بعمل آخر یعلم انه کان قاطعاً لما قبله کما اذا دعت بطعام لتأکله او نامت او نشطت او اغتسلت او اختضبت او جامعها زوجها او خاطبت رجلاً بالبیع والشراء فهذا کله یبطل خیارها کذا في السراج الوهاج۔[2] | اگر بیوی مجلس میں اپنے کو طلاق دینے سے قبل اٹھ کھڑی ہوئی یا کسی دوسرے کام میں مصروف ہوگئی جس سے معلوم ہوجائے کہ یہ اختیار کے لئے قاطع ہے مثلاً بیوی اس مجلس میں اختیار استعمال کرنے سے قبل کھانے کے لئے کھانا طلب کرلے یا کنگھی کرنا شروع کردے یا غسل شروع کردے یا خضاب مہندی لگانا شروع کردے یا خاوند سے ہمبستری شروع کردے یا کسی دوسرے شخص سے خرید وفروخت کی بات شروع کردے، تو یہ تمام افعال اس کے اختیار کو باطل کردیں گے۔ سراج الوہاج میں ایسے ہی مذکور ہے (ت) | |---|---|

درمختار میں ہے: | والفلك لها کالبیت وسیره ابتها کسیرها حتی لایتبدل المجلس بجري الفلك ویتبدل بسیر الدابة [3] الخ۔ | کشتی، گھر کی طرح ہے، اور سواری کا چلنا عورت کے اپنے چلنے کی طرح ہے حتی کہ مجلس اختیار تبدیل نہ ہوگی جب کشتی چلتی رہی ہو مگر سواری کے چلنے پر مجلس تبدیل ہوجائے گی الخ (ت) | |---|---|

بالجملہ صورت مستفسرہ میں زینب پر طلاق ہونے کے لئے تین امور ضرور : ایک یہ کہ وہ تفویض جانب زوج سے صحیح واقع ہوئی یعنی بعد نکاح یہ اختیار دیا ہو یا وقت نکاح اس طور پر

کہ ابتدائے ایجاب عورت کی طرف سے ہو۔ دوسرے یہ کہ بعد نکاح چھ مہینے بے نفقہ و خبر گیری گزرے ہوں۔

---

[1] فتاویٰ ہندیہ الفصل الثانی فی الامر بالید نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۳۹۲ [2] فتاویٰ ہندیہ الباب الثالث فی تفویض الطلاق نورانی کتب خانہ پشاور ۱ / ۳۸۷ [3] درمختار باب تفویض الطلاق مطبع مجتبائی دہلی ۱ / ۲۲۷

Fatawa Razawiyya Volume 22

Thirdly, as soon as they passed, in that same assembly, Zainab must have divorced herself without any unrelated conversation. If even one of these three matters is missing, the claim of divorce is purely false and void. Now, if Zaid admits the existence of these three things, the divorce will be established automatically. But if he denies some of them, then for the first and second points, it is necessary for Zainab to provide witnesses; she must prove through Shari'i testimony that the husband delegated the right of divorce to her in a Shari'i acceptable manner, and that six months passed without maintenance and care. If she cannot prove this with righteous witnesses, Zaid's statement under oath will be accepted, and divorce will not be established. Regarding the third point, if Zaid completely denies that the pronouncement of divorce was issued by the wife after the condition was met, then too, the burden of proof is on Zainab. However, if the occurrence of the pronouncement is also admitted by Zaid, then the burden of proof lies on Zaid. That is, the validity of delegation, the completion of six months, and the pronouncement of divorce are either admitted by Zaid or proven by witnesses, and only the clarification of this point remains: whether Zainab divorced herself in that same assembly after the passing of that period, or if Zainab says later, 'I divorced myself at that very time,' and Zaid denies it. In this case, the burden of proof is on Zaid; he must prove with witnesses that when the six months passed, Zainab became occupied with some other work without having divorced herself. If he proves it, there will be no divorce; otherwise, Zainab's statement under oath will be accepted, and the divorce will be established. It is stated in Durr-ul-Mukhtar:

Arabic	**Urdu**
She said, 'I divorced myself in the assembly without change,' and he denied it; the word is hers. He placed her affair in her hand if he struck her without an offense, then he struck her, and they disagreed; the word is his because he is the denier, and her evidence on the negative condition[1] is accepted, as will	The wife said, 'I have divorced myself without changing the assembly,' and the husband denies it, then the wife's statement will be reliable. A man gave the woman the right to divorce if he beats her without fault, then the husband beat the wife. Now, if there is a dispute between husband and wife about the condition of beating without fault being met, then the husband's statement will be reliable as he is the denier. If the woman presents witnesses against the husband's stance on the non-fulfillment of the condition, it will be accepted

Arabic	Urdu
come—and Allah, Glorified and Exalted, knows best.	as will be mentioned shortly. And Allah, Glorified and Exalted, knows best. (T)

Issue 325: From the country of Bengal, district Sylhet, sent by Maulana Abdul Hakim Sahib, 21 Sha'ban 1320 AH. What do the scholars of the clear Shari'ah say regarding this issue: that Abdul Karim Mian to Mst. Gunjtang Bibi... What do the scholars of religion and Muftis of the clear Shari'ah say in this matter: that Abdul Karim from Mst. Gunjtang Bibi...

[1] Durr-ul-Mukhtar, Chapter Al-Amr bi al-Yad, Mujtabai Press, Delhi, 1/229 Page 646 of 688

फतावा रज़विया जिल्द 22

तीसरा यह कि उनके गुज़रते ही उसी मजलिस (सभा) में बिना किसी अजनबी बात के ज़ैनब ने अपने आप को तलाक़ दे ली हो। इन तीन उमूर (बातों) में से अगर एक भी कम है, तो तलाक़ का दावा सरासर ग़लत और बातिल (अमान्य) है। अब अगर ज़ैद इन तीनों बातों के वजूद का मुक़िर (स्वीकार करने वाला) हो तो आप ही तलाक़ साबित हो जाएगी, और अगर उनमें से बाज़ (कुछ) का मुनकिर (इनकार करने वाला) हो तो अम्र (बात) अव्वल व दोम (पहली और दूसरी) में ज़ैनब पर गवाह देना ज़रूरी हैं, शहादत-ए-शरईया (शरई गवाही) से साबित करे कि शौहर ने उसे तफ़वीज़-ए-तलाक़ (तलाक़ का अधिकार सौंपना) बरवजह मक़बूल-ए-शरई की और छह महीने बे-नफ़क़ा (बिना ख़र्चा) व ख़बर-गीरी गुज़र गए। अगर गवाहान-ए-आदिल (न्यायप्रिय गवाहों) से इसे साबित न कर सकेगी तो ज़ैद का क़ौल (कथन) क़सम के साथ मान लिया जाएगा और तलाक़ साबित न होगी। और अम्र-ए-सोम (तीसरी बात) में अगर ज़ैद को सिरे से शर्त हासिल होने के बाद ज़ौजा (पत्नी) की जानिब से ईक़ाअ-ए-तलाक़ (तलाक़ वाक़े होने) सादिर होने ही का इनकार है, तब भी गवाह ज़िम्र-ए-ज़ैनब (ज़ैनब की ज़िम्मेदारी) हैं। और अगर ईक़ाअ भी ज़ैद को तस्लीम (स्वीकार) है तो गवाह देना ज़ैद पर लाज़िम है, यानी सेहत-ए-तफ़वीज़ व इनक़ज़ा-ए-शशमाही (छह महीने बीतने) व ईक़ाअ-ए-तलाक़ ज़ैद को तस्लीम या गवाहों से साबित है और तनक़ीह (स्पष्टीकरण) सिर्फ इस बात की बाक़ी है कि उस मुद्दत (अवधि) गुज़रने पर ज़ैनब ने उसी मजलिस में अपने आप को तलाक़ दे ली या बाद में ज़ैनब कहती है 'इसी वक़्त मैंने दे ली थी' और ज़ैद मुनकिर है, तो इसका बार-ए-सबूत ज़ैद पर है, यह गवाहों से साबित करे कि जिस वक़्त छह महीने गुज़रे हैं ज़ैनब बे-तलाक़ दिए हुए किसी और काम में मश्गूल (व्यस्त) हो गई। अगर साबित कर देगा तो तलाक़ न होगी वर्ना ज़ैनब का क़ौल क़सम के साथ मान लिया जाएगा और तलाक़ साबित कर देंगे। 'दुर्रे मुख़्तार' में है:

अरबी	**उर्दू**
उसने कहा, 'मैंने मजलिस में बिना स्थान बदले स्वयं को तलाक़ दे लिया,' और उसने इनकार किया; तो कथन उसका (पत्नी का) है। उसने अपना मामला उसके हाथ में कर दिया यदि उसने उसे बिना किसी अपराध के मारा, तो उसने उसे मारा, फिर उनमें	बीवी ने कहा मैंने मजलिस तब्दील किए बग़ैर अपने आप को तलाक़ दे दी है, और ख़ावंद (पति) इसका इनकार करता है तो बीवी की बात मोतबर (विश्वसनीय) होगी, मर्द ने औरत को तलाक़ का इख़्तियार (अधिकार) दिया अगर वह उसके बग़ैर क़ुसूर (बिना दोष के) मारे, फिर ख़ावंद ने बीवी को पीट दिया तो अब बग़ैर क़ुसूर

अरबी	उर्दू
विवाद हुआ; तो कथन उसका (पति का) है क्योंकि वह इनकार करने वाला है, और उसकी गवाही नकारात्मक शर्त पर स्वीकार की जाती है, जैसा कि आगे आएगा —और अल्लाह सुब्हानहू व तआला बेहतर जानता है।	पीटने की शर्त पाए जाने में ख़ावंद बीवी का इख़्तिलाफ़ (मतभेद) हुआ तो ख़ावंद का क़ौल मोतबर होगा कि वह मुनकिर है, अगर औरत शर्त के न पाए जाने के मौक़िफ़ (पक्ष) पर ख़ावंद के ख़िलाफ़ शहादत (गवाही) पेश करे तो क़बूल की जाएगी जैसा कि अनक़रीब (शीघ्र ही) ज़िक्र आएगा। वल्लाह सुब्हानहू व तआला आलम। (त)

मसला 325: मुल्क-ए-बंगाल ज़िला सिलहट से, मुर्सला (प्रेषित) मौलवी अब्दुल हकीम साहब, 21 शाबान 1320 हिजरी। दीन के विद्वान और शरीअत-ए-मतीन इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि अब्दुल करीम मियां ने मुसम्मात गुंजतंग बीबी को... दीन के विद्वान और शरीअत के मुफ़्ती इस मसले में क्या फ़रमाते हैं कि अब्दुल करीम ने मुसम्मात गुंजतंग बीबी से...

[1] दुर्रे मुख़्तार, बाब अल-अम्र बिल-यद, मतब-ए-मुज्तबाई देहली, 1/229 पेज 646 of 688

فتاوٰی رضویہ جلد دو ازدہم

تیسرے یہ کہ اُن کے گزرتے ہی اسی مجلس میں بے کسی اجنبی بات کے زینب نے اپنے آپ کو طلاق دے لی ہو۔ ان تین امور سے اگر ایک بھی کم ہے دعوٰی طلاق محض غلط و باطل ہے اب اگر زید ان تینوں باتوں کے وجود کا مقر ہو تو آپ ہی طلاق ثابت ہو جائے گی ، اور اگر ان میں بعض کا منکر ہو تو امر اوّل و دوم میں زینب پر گواہ دینے ضرور ہیں ، شہادت شرعیہ سے ثابت کرے کہ شوہر نے اسے تفویض طلاق بروجہ مقبول شرعی کی اور چھ مہینے بے نفقہ و خبر گیری گزر گئے اگر گواہان عادل سے اسے ثابت نہ کر سکے گی تو زید کا قول قسم کے ساتھ مان لیا جائے گا اور طلاق ثابت نہ ہوگی ، اور امر سوم میں اگر زید کو سرے سے بعد حصول شرط زوجہ کی جانب سے ایقاعِ طلاق صادر ہونے ہی کا انکار ہے جب بھی گواہ ذمہ زینب ہیں اور اگر ایقاع بھی زید کو تسلیم ہے تو گواہ دینا زید پر لازم ہے یعنی صحت تفویض و انقضائے ششماہی و ایقاع طلاق زید کو تسلیم یا گواہوں سے ثابت ہے اور تنقیح صرف اس بات کی باقی ہے کہ اس مدت گزرنے پر زینب نے اسی مجلس میں اپنے آپ کو طلاق دے لی یا بعد زینب کہتی ہے اسی وقت میں نے دے لی تھی اور زید منکر ہے ، تو اس کا بار ثبوت زید پر ہے ، یہ گواہوں سے ثابت کرے کہ جس وقت چھ مہینے گزرے ہیں زینب بے طلاق دئے ہوئے کسی اور کام میں مشغول ہو گئی اگر ثابت کر دے گا طلاق نہ ہو گی ورنہ زینب کا قول قسم کے ساتھ مان لیا جائے گا اور طلاق ثابت کردیں گے۔ در مختار میں ہے :

عربی **اردو**

قالت طلقت نفسی فی المجلس بیوی نے کہا میں نے مجلس تبدیل کئے بغیر اپنے آپ کو طلاق دے

بلاتبدل وانکر فالقول لھا، دی ہے ، اور خاوند اس کا انکار کرتا ہے تو بیوی کی بات معتبر

عربی	اردو
جعل امرھا بیدھا ان ضربھا بغیرجنایۃ فضربھا ثم اختلفا فالقول لہ لانہ منکر وتقبل بینتھا علی الشرط المنفی[1]، کما سیجی- واللہ سبحانہ وتعالی اعلم۔	ہوگی ، مرد نے عورت کو طلاق کا اختیار دیا اگر وہ اس کے بغیر قصور مارے ، پھر خاوند نے بیوی کو پیٹ دیا تو اب بغیر قصور پیٹنے کی شرط پائے جانے میں خاوند بیوی کا اختلاف ہوا تو خاوند کا قول معتبر ہوگا کہ وہ منکر ہے ، اگر عورت شرط کے نہ پائے جانے کے موقف پر خاوند کے خلاف شہادت پیش کرے تو قبول کی جائے گی جیسا کہ عنقریب ذکر آئیگا۔ واللہ سبحانہ وتعالی اعلم۔ (ت)

مسئلہ ۳۲۵: از ملک بنگالہ ضلع سلہٹ مرسلہ مولوی عبدالکیم صاحب ۲۱ شعبان ۱۳۲۰ھ چہ می فرمایند علمائے دین شرع متین اندریں مسئلہ کہ عبدالکریم میاں مسماۃ گنجٹنگ بی بی را علمائے دین و مفتیان شرع متین اس مسئلہ میں کیا فرماتے ہیں کہ عبدالکریم نے مسماۃ گنجٹنگ بی بی سے

[1] درمختار باب الامر بالید مطبع مجتبائی دہلی ۱/۲۲۹ Page 646 of 688

Fatawa Razawiya Volume 12

[Left Column - Persian text with legal context] He took her in marriage and a daughter was born from the mentioned womb. Thereafter, Abdul Karim, for some reason, became displeased and gave the aforementioned lady Bano an absolute divorce (talaq-e-bain). The mentioned lady moved from Abdul Karim's house to another house. After that, Abdul Karim married Mst. Matoon Bibi and gave a written document as dower with this content: 'That without you, I shall not take any woman, whether it be Tiljang Bibi or another woman, into my marriage. If I do, and that other woman sets foot on the threshold of the door, then you have the choice of triple divorce at any time you wish, to remove yourself from my marriage and you can marry another husband. If at that time I make a claim of marriage, it will be against Sharia and English law.' He gave this writing to Matoon Bibi and made several people from the Muslim gathering witnesses. After a few days, Abdul Karim went against his word and brought the first lady, Tiljang Bibi, to his house. Thereafter, fighting and quarrelling occurred between both women. Tiljang, with her own boldness and bravery, turned Matoon Bibi out of Abdul Karim's house. Then Matoon Bibi stayed by force one day at the house of Abdul Karim's father, and the next day related the words of what her co-wife had done the previous day and said, 'In accordance with the agreement deed, I exercise my choice of three divorces and am going,' and she went to her parents' house. After that, Abdul Karim went against the agreement deed and made a claim of marriage. Then Matoon Bibi, after four months, out of fear of her husband's fighting and quarrelling, separated herself from him.

[Right Column - Urdu translation of the above case] He married and a girl was born from her womb. After that, Abdul Karim gave the aforementioned Bano an absolute divorce and she went from Abdul Karim's house to another house. Then Abdul Karim married Mst. Matoon Bibi and gave her a written marriage contract stating: 'If I marry Tiljang Bibi or any other woman besides you, when she steps on the threshold of the door, then I give you the power of three divorces so that you can leave my marriage whenever you wish and marry whoever else you want. If at that time I claim a marital relationship with you, this claim will be considered against Sharia and English law.' Several Muslims present were made witnesses to this writing. After a few days, Abdul Karim violated his promise and brought his first wife, Tiljang Bibi, to his house, after which a fight started between the two wives. Tiljang Bibi, with her courage and boldness, turned Matoon Bibi out of Abdul Karim's house. Matoon Bibi stayed for one day by force at Abdul Karim's father's house and there told Abdul

Karim's father the story of what happened with her co-wife the previous day and said, 'I divorce myself according to the written agreement of Abdul Karim's declaration and use my power.' Saying this, she went to her parents'...

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

[बायां कॉलम - फारसी कानूनी पाठ] उसने उसे निकाह में लाया और उसकी कोख से एक बेटी का जन्म हुआ। उसके बाद, अब्दुल करीम ने किसी कारणवश अप्रसन्न होकर उक्त बानो को पूर्ण तलाक (तलाक-ए-बाइन) दे दिया। उक्त बीवी अब्दुल करीम के घर से दूसरे घर चली गई। बाद में अब्दुल करीम ने मुस्म्मात मून बीबी से निकाह किया और निकाहनामे में मेहर के तौर पर यह लिखा: 'तुम्हारे बिना मैं किसी भी औरत को निकाह में नहीं लाऊंगा, चाहे वह तिलजंग बीबी हो या कोई और औरत। अगर मैं उसे लाता हूँ और वह औरत घर की चौखट पर कदम रखती है, तो तुम्हें किसी भी समय तीन तलाक का अधिकार है कि तुम खुद को मेरे निकाह से अलग कर सको और किसी और से शादी कर सको। अगर उस समय मैं तुम पर निकाह का दावा करूँतो यह शरीयत और अंग्रेजी कानून के खिलाफ होगा।' उसने यह लिखकर मून बीबी को दे दिया और मुस्लिम सभा के कई लोगों को गवाह बनाया। कुछ दिनों बाद अब्दुल करीम अपनी बात से मुकर गया और अपनी पहली पत्नी तिलजंग बीबी को घर ले आया। इसके बाद दोनों पत्नियों के बीच लड़ाई-झगड़ा शुरू हो गया। तिलजंग ने अपनी हिम्मत और बहादुरी से मून बीबी को अब्दुल करीम के घर से निकाल दिया। तब मून बीबी एक दिन जबरदस्ती अब्दुल करीम के पिता के घर रुकी और अगले दिन उसने अपनी सौतन की हरकतों के बारे में बताया और कहा, 'इकरारनामे के मुताबिक मैं अपने तीन तलाक के अधिकार का इस्तेमाल करती हूँ और जा रही हूँ,' और वह अपने माता-पिता के घर चली गई। इसके बाद अब्दुल करीम इकरारनामे के खिलाफ गया और निकाह का दावा किया। फिर चार महीने बाद मून बीबी ने पति के झगड़े के डर से खुद को उससे अलग कर लिया।

[दायां कॉलम - उर्दू अनुवाद] निकाह किया और उसके गर्भ से एक लड़की पैदा हुई, उसके बाद अब्दुल करीम ने बानो मौसूफ़ा को बान तलाक दे दी और वह अब्दुल करीम के मकान से दूसरे मकान में चली गई, फिर अब्दुल करीम ने मुस्म्मात मून बीबी से निकाह किया और निकाह नामे में यह तहरीर करके मून बीबी को दे दिया कि 'वह तेरे बगैर तिलजंग बीबी या किसी दूसरी औरत से निकाह करूँ तो वह जब दरवाजे की चौखट पर कदम रखे तो तुझे तीन तलाक़ों का इख्तियार देता हूँ कि तू जिस वक्त चाहे मेरे निकाह से खारिज हो जाए और दूसरे जिस शख्स से चाहे निकाह कर सकती है, अगर इस वक्त मैं तुझ पर ज़ौजियत का दावा करूँ तो यह दावा शरीयत और अंग्रेज़ी कानून के खिलाफ मुतसव्वर होगा' इस तहरीर पर चंद हाज़िर मुसलमानों को गवाह बनाया, इसके बाद चंद रोज़ में ही अब्दुल करीम ने अपने वादे की खिलाफ वर्जी करते हुए पहली बीवी तिलजंग

बीबी को अपने मकान پر ले आया जिसके बाद दोनों बीवियों में झगड़ा शुरू हो गया और तिलजंग बीबी ने अपनी जुर्रत और दिलेरी से मून बीबी को अब्दुल करीम के मकान से निकाल दिया तो मून बीबी एक रोज़ ज़बरदस्ती अब्दुल करीم کے वालिद के घर ठहरी और वहाँ अब्दुल करीम के वालिद को अपनी सौकन के साथ होने वाली गुज़श्ता रोज़ की कहानी सुनाई और कहा कि मैंने निकाह नामा तहरीर शुदा अब्दुल करीम के इक़रार के मुताबिक अपने आप को तलाक देती हूँ और अपने इख्तियार को इस्तेमाल करती हूँ, वह यह कह कर अपने वालिदैन के..

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

[بایاں کالم - فارسی متن] در عقد نکاح خود آورد واز بطن مذکورہ دخترے تولد شد بعد ازاں عبد الکریم از کسے وجہ ناراضی بانو موصوفہ را طلاق بائن داد، بی بی مذکور از مکان عبد الکریم بمکان دیگر رفت بعد ازاں عبد الکریم مسماۃ مائتون بی بی را نکاح کرد و نامہ بطور کابین بریں مضمون نوشتہ داد کہ بغیر تونیچ زن را خواہ تلجنگ بی بی باشد یا زن دیگر در نکاح من نیارم اگر آرم وآں زن دیگر در باب چوکھٹ پائے نہد پس ترا اختیار طلاق ثلثہ است بہر وقتے کہ باید خود را از نکاح من خارج کردہ با شوہر دیگر نکاح توانی کرد، اگر درآں وقت دعوے زوجیت بکنم خلاف شریعت و قانون انگریزی خواہد شد نوشتہ بدست مائتون بی بی داد چند کس را از مجلس مسلمین گواہ کرد، پس از چند روز عبد الکریم قول خود را خلاف نمودہ بانو اول تلجنگ بی بی را بمکان خود آورد بعد ازاں میان ہر دوزن جنگ وجدال شد تلجنگ از شجاعت ودلیری خود مائتون بی بی را از مکان عبد الکریم بیرون کرد پس مائتون بی بی جبراً روزے بمکان والد عبد الکریم ماندہ بروز دیگر سخنائے کہ ضرہ خود دیروز شدہ بود بیان کردہ گفت کہ من بمطابق اقرار نامہ سہ طلاق خود را اختیار می روم وبمکان والدین رفت بعد ازاں عبد الکریم قول خود را خلاف اقرار نامہ کردہ دعوے زوجیت کرد پس مائتون بی بی بعد چہار ماہ بخوف جنگ وجدال شوہر سے خود را بفتاد

[دایاں کالم - اردو متن] نکاح کیا اور اس کے بطن سے ایک لڑکی پیدا ہوئی ، اس کے بعد عبد الکریم نے بانو موصوفہ کو بائن طلاق دے دی اور وہ عبد الکریم کے مکان سے دوسرے مکان میں چلی گئی ، پھر عبد الکریم نے مسماۃ مائتون بی بی سے نکاح کیا اور نکاح نامہ میں یہ تحریر کرکے مائتون بی بی کو دے دیا کہ "وہ تیرے بغیر تلجنگ بی بی یا کسی دوسری عورت سے نکاح کروں تو وہ جب دروازے کی چوکھٹ پر قدم رکھے تو تجھے تین طلاقوں کا اختیار دیتا ہوں کہ تو

جس وقت چاہے میرے نکاح سے خارج ہوجائے اور دوسرے جس شخص سے چاہے نکاح کرسکتی ہے ، اگر اس وقت میں تجھ پر زوجیت کا دعویٰ کروں تو یہ دعویٰ شریعت اور انگریزی قانون کے خلاف متصور ہوگا" اس تحریر پر چند حاضر مسلمانوں کو گواہ بنایا ، اس کے بعد چند روز میں ہی عبد الکریم نے اپنے وعدے کی خلاف ورزی کرتے ہوئے پہلی بیوی تلجنگ بی بی کو اپنے مکان پر لے آیا جس کے بعد دونوں بیویوں میں جھگڑا شروع ہوگیا اور تلجنگ بی بی نے اپنی جرات اور دلیری سے مائتون بی بی کو عبد الکریم کے مکان سے نکال دیا تو مائتون بی بی ایک روز زبر دستی عبد الکریم کے والد کے گھر ٹھہری اور وہاں عبد الکریم کے والد کو اپنی سوکن کے ساتھ ہونے والی گزشتہ روز کی کہانی سنائی اور کہا کہ میں نے نکاح نامہ تحریر شدہ عبد الکریم کے اقرار کے مطابق اپنے آپ کو طلاق دیتی ہوں اور اپنے اختیار کو استعمال کرتی ہوں ، وہ یہ کہہ کر اپنے والدین کے

Fatawa-e-Razvia Volume 12

Question: ...she went home. After that, contrary to his agreement, Abdul Karim claimed Maitun Bibi as his wife. To avoid conflict, Maitun Bibi paid seventy rupees as 'Khula' (divorce initiated by the wife) to Abdul Karim in exchange for his claim four months later. At that time, Abdul Karim gave Maitun Bibi three divorces. One day later, Maitun Bibi married another person. Is this marriage of hers valid or not? Please provide an answer based on Shariah proofs and strong arguments. It should be noted that there has been a disagreement over this issue for three years. Give a fatwa, you will be rewarded.

Answer: If Abdul Karim wrote that document before marriage and it contained the same words as mentioned by the questioner, in which the marriage with Maitun Bibi was not explicitly mentioned as a condition—for example, if the situation was such that "if I marry you and then bring another woman as a wife over you, and she comes to my house, then you have the option of three divorces," etc.—then in such a case, this document is null and void. And if he marries a first or second wife and brings her home, Maitun Bibi will not have the option to give herself three divorces. She remains Abdul Karim's wife as before. After the 'Khula', upon Abdul Karim giving her three divorces, she was declared divorced, and her 'Iddah' (waiting period) started from that time. Marrying another person before the completion of 'Iddah' is haram (forbidden), invalid, void, and considered adultery. It is a duty to abstain from it. Allah Almighty says: "And divorced women shall wait [as regards their marriage] for three menstrual periods." [Holy Quran 2:228]

1. Holy Quran 2/228 Page 648 of 688

फ़तावा-ए-रज़विया जिल्द बारहवीं

सवाल: ...वह घर चली गई। इसके बाद अब्दुल करीम ने अपने इकरारनामा के खिलाफ मैतूँ बीबी पर अपनी ज़ौजियत (पत्नी होने) का दावा कर दिया। मैतूँ बीबी ने लड़ाई-झगड़े से बचते हुए अब्दुल करीम को उसके दावे के बदले में चार महीने बाद सत्तर रुपये 'खुला' के तौर पर अदा कर दिए। उस समय अब्दुल करीम ने मैतूँ बीबी को तीन तलाक़ दे दीं। इसके एक दिन बाद मैतूँ बीबी ने दूसरे व्यक्ति से निकाह कर लिया। क्या उसका यह निकाह जायज़ है या नहीं? शरीयत के प्रमाणों और मज़बूत दलीलों के साथ जवाब लिखा जाए। याद रहे कि इस मसले में तीन साल से विवाद चला आ रहा है। उत्तर दें, आपको पुण्य मिलेगा।

जवाब: अगर अब्दुल करीम ने वह दस्तावेज़ निकाह से पहले लिखा हो और उसमें वही शब्द हों जो पूछने वाले ने लिखे हैं, जिसमें मैतूँ बीबी से निकाह को शर्त के तौर पर स्पष्ट रूप से ज़िक्र नहीं किया गया था—उदाहरण के तौर पर, अगर सूरत यह हो कि "अगर मैं तुझसे निकाह करूँ और फिर तुझ पर दूसरी औरत को बीवी बनाऊँ और वह मेरे घर आए तो तुझे तीन तलाक़ों का अधिकार है" इत्यादि —तो ऐसी स्थिति में यह दस्तावेज़ व्यर्थ और अमान्य है। और यदि वह पहली बीवी या किसी दूसरी से निकाह कर के घर लाए, तो मैतूँ बीबी को यह अधिकार नहीं होगा कि वह स्वयं को तीन तलाक़ दे दे। वह पहले की तरह ही अब्दुल करीम की बीवी रहेगी। और 'खुला' के बाद अब्दुल करीम द्वारा उसे तीन तलाक़ देने पर वह तलाक़शुदा मानी गई, और उसी समय से उसकी 'इद्दत' (प्रतीक्षा अवधि) गिनी जाएगी। और इद्दत पूरी होने से पहले दूसरे व्यक्ति से उसका निकाह हराम, नाजायज़, बातिल और ज़िना (व्यभिचार) है। इससे बचना फर्ज़ है। अल्लाह तआला फरमाता है: "और तलाक़ दी हुई औरतें अपने आप को तीन माहवारी तक रोके रखें।" [अल-क़ुरआन २:२२८]

1. अल-क़ुरआन २/२२८ पेज ६४८ ऑफ़ ६८८

فتاویٰ رضویہ جلد دوازدہم

سوال: ...گھر چلی گئی، اس کے بعد عبدالکریم نے اپنے اقرار نامہ کے برخلاف مائتوں بی بی پر اپنی زوجیت کا دعویٰ کردیا، تو مائتوں بی بی نے جنگ وجدال سے بچتے ہوئے عبدالکریم کو اس کے دعویٰ کے عوض ستر روپے خلع کے طور پر چار ماہ بعد ادا کر دئے، تو عبدالکریم نے اس وقت مائتوں بی بی کو تین طلاقیں دیں، تو اس کے ایک روز بعد مائتوں بی بی نے دوسرے شخص سے نکاح کرلیا، تو کیا اس کا یہ نکاح جائز ہے یا نہیں؟ براہین شرعیہ اور دلائل قویہ سے جواب لکھا جائے۔ یاد رہے کہ اس مسئلہ میں تین سال سے اختلاف چلا آرہا ہے، بینوا توجروا۔

الجواب: اگر عبدالکریم نے وہ تحریر نکاح سے پہلے لکھی ہو اور اس میں وہی الفاظ ہوں جو سائل نے تحریر کئے ہیں جس میں مائتوں بی بی سے نکاح کو بطور شرط صراحۃً ذکر نہیں کیا گیا، مثلاً یہ صورت ہو کہ اگر تجھ سے نکاح کروں اور پھر تجھ پر دوسری عورت کو بیوی بناؤں اور وہ میرے گھر آئے تو تجھے تین طلاقوں کا اختیار ہے الخ- تو ایسی صورت میں یہ تحریر لغو اور باطل ہے، اور پہلی بیوی یا کسی دوسری کو نکاح کر کے گھر لائے تو مائتوں بی بی کو اختیار نہ ہوگا کہ وہ اپنے آپ کو تین طلاق دے وہ بدستور عبدالکریم کی بیوی ہوگی اور خلع کے بعد اس کو عبدالکریم کے تین طلاق دینے پر وہ مطلقہ قرار پائی اور اس وقت سے اس کی عدت شمار ہوئی، اور عدت پوری ہونے سے قبل دوسرے شخص سے اس کا نکاح حرام، ناجائز و باطل و زنا و حرام بود از باز ماندن فرض ست قال اللہ تعالیٰ وَالْمُطَلَّقٰتُ یَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِھِنَّ ثَلٰثَۃَ قُرُوْءٍط [القرآن الکریم ۲۲۸/۲]

1. القرآن الکریم ۲۲۸/۲ Page 648 of 688

Fatawa Razawiyya - Volume 12

[Main Text Body] (Left Column) Arabic: "I married you on the condition that your affair is in your hand, and you accepted. The marriage is valid but the condition is void because the authority (for divorce) is only valid within ownership (marriage) or when attributed to it, and neither existed here. This is unlike what has passed before, for the authority became in her hand concurrent with her becoming a married woman." - End, Nahr.

Persian/Urdu: And if the written deed was after the marriage of Maitoon, the delegation of divorce did not take place [Note: moth-eaten part] as stated in that document, it became correct. And due to Abdul Karim's statement "whenever it is needed" etc., it did not remain restricted to the session.

Arabic: In Al-Durr al-Mukhtar, from the chapter on 'Will' (al-Mashiah): "It is restricted to the session because it is a transfer of ownership, unless he adds 'whenever you wish' or similar phrases that indicate generality of time, then she can divorce unconditionally." 2.

Persian/Urdu: So, based on this estimation, from the time she exercised her choice of divorce, she became out of the marriage, even if this meaning became apparent on the second day.

Arabic/Urdu: And that is because his statement "whenever she wants" etc. is an explanation of the delegation mentioned in his saying "then you have the choice of three [divorces]", as is apparent from the commonly understood concept in such discourse. And if it is assumed to be a separate statement, then it is a delegation.

(Right Column) Urdu: It is illegitimate and void, rather it is adultery. Therefore, it is necessary and obligatory for Maitoon to separate from this other person and refrain from him. Allah Almighty says: "And divorced women shall wait for three menstrual periods." It is stated in Rad al-Muhtar: "If a person says to a woman, 'I marry you on the condition that your matter is in your hands,' and the woman accepts the marriage on this condition, then the marriage will be valid but the mentioned condition will be void, because the authority for divorce can only be valid within a marriage or by attributing it to the marriage, while neither of these two conditions is present here. This is contrary to what has passed before, because there the authority for divorce becomes concurrent with the marriage due to the woman becoming married." - End, Nahr.

And if Abdul Karim wrote that document after marrying Maitoon Bibi, then the delegation of three divorces as present in the deed of choice is correct. And because Abdul Karim wrote "whenever she wants" in the document, this delegation did not remain restricted to this session. In the chapter on 'Will' in Durr al-Mukhtar, it states that this 'will', meaning the choice of divorce, remains in the current session and is restricted by it, but...

[Footnotes] Note: Here it is moth-eaten (damaged). 12 1. Rad al-Muhtar, Chapter on Recantation, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 540/2. 2. Durr al-Mukhtar, Chapter on 'Affair in Hand', Majtabai Press, Delhi, 229/1.

फ़तावा रज़विया - जिल्द 12

[मुख्य पाठ] (बायां कॉलम) अरबी: "मैंने तुमसे इस शर्त पर शादी की कि तुम्हारा मामला तुम्हारे हाथ में है, और तुमने स्वीकार कर लिया। निकाह जायज़ है लेकिन शर्त बातिल है क्योंकि मामला केवल स्वामित्व (निकाह) में या उससे संबंधित होने पर ही सही होता है, और यहाँ दोनों में से कोई भी मौजूद नहीं था। यह पहले जो बीत चुका है उसके विपरीत है, क्योंकि वहाँ मामला उसके हाथ में उसके विवाहित होने के साथ ही आ गया था।" - अल-नहर।

फारसी/उर्दू: और अगर लिखित विलेख मैतून के निकाह के बाद का है, तो तलाक का प्रत्यायोजन [नोट: दीमक खाया हिस्सा] जैसा कि उस दस्तावेज़ में कहा गया है, सही हो गया। और अब्दुल करीम के कथन "जब भी ज़रूरत हो" आदि के कारण, यह सत्र (मजलिस) तक सीमित नहीं रहा।

अरबी: अल-दुर्र अल-मुख्तार में, इच्छा (अल-मशियाह) के अध्याय से: "यह सत्र तक सीमित है क्योंकि यह स्वामित्व का हस्तांतरण है, जब तक कि वह 'जब भी तुम चाहो' या इसी तरह के वाक्यांश न जोड़े जो समय की व्यापकता का संकेत देते हैं, तब वह बिना शर्त तलाक दे सकती है।" 2.

फारसी/उर्दू: तो, इस अनुमान के आधार पर, जिस समय से उसने तलाक के अपने विकल्प का प्रयोग किया, वह निकाह से बाहर हो गई, भले ही यह अर्थ दूसरे दिन स्पष्ट हुआ हो।

अरबी/उर्दू: और वह इसलिए क्योंकि उसका कथन "जब भी वह चाहे" आदि, उसके इस कथन में उल्लिखित प्रत्यायोजन का स्पष्टीकरण है कि "तो तुम्हारे पास तीन [तलाक] का विकल्प है", जैसा कि इस तरह के संवादों में सामान्य रूप से समझे जाने वाले अर्थ से स्पष्ट है। और यदि इसे एक अलग कथन माना जाए, तो यह एक प्रत्यायोजन है।

(दायां कॉलम) उर्दू: यह नाजायज़ और बातिल है, बल्कि ज़िना है। इसलिए मैतून के लिए इस दूसरे व्यक्ति से अलग होकर रुकना ज़रूरी और फ़र्ज़ है। अल्लाह तआला का इरशाद है: "और तलाकशुदा औरतें तीन-तीन हैज़ मुकम्मल होने तक अपने आप को पाबंद रखें।" रद अल-मुह्तार में है: "अगर किसी शख्स ने किसी औरत से कहा कि मैं तुझसे इस शर्त पर निकाह करता हूँ कि तेरा मामला तेरे हाथ में है, तो औरत ने इस शर्त पर निकाह को कबूल कर लिया, तो निकाह सही होगा और ज़िक्र की गई शर्त लग़्व (शून्य) हो जाएगी, क्योंकि तलाक का अधिकार निकाह में या निकाह की तरफ निस्बत करने में सही हो सकता है, जबकि ये दोनों बातें यहाँ नहीं हैं। इसके विपरीत जो गुज़रा

क्योंकि वहाँ तलाक का अधिकार निकाह के साथ हो जाता है औरत के मनकूहा (विवाहित) हो जाने की वजह से।" - अल-नहर।

और अगर अब्दुल करीम ने वह तहरीर नामा मैतून बीवी से निकाह करने के बाद लिखा है, तो फिर तीन तलाक का प्रत्यायोजन जिस तरह अधिकार पत्र में मौजूद है, सही है। और अब्दुल करीम के तहरीर नामा में "जिस वक्त चाहे" लिखने की वजह से यह प्रत्यायोजन इस मजलिस से मुकय्यद (सीमित) न रहा। दुर्रे मुख्तार की फ़स्ल फ़ी अल-मशियाह में है कि यह मशियात यानी तलाक का अधिकार मौजूदा मजलिस में रहता है और उसी से मुकय्यद होता है उसके..

[पाद टिप्पणियां] नोट: यहाँ दीमक खाया हुआ है। 12 1. रद अल-मुह्तार, बाब अल-रजाअत, दार इहया अल-तुरास अल-अरबी, बेरुत, 540/2. 2. दुर्रे मुख्तार, बाब अल-अम्र बिल-यद, मतबा मुजतबाई, दिल्ली, 229/1.

पेज 649 / 688

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

تزوجتك على ان امرك بيدك فقبلت جاز النكاح ولغا الشرط لان الامر انما يصح فی الملك او مضافا اليه ولم يوجد واحد منهما بخلاف مامرفان الامر صار بيدها مقارنا لصيروتها منكوحة اھ نہر، واگر تحریر نامہ پس از نکاح مائتون ست تفویض طلاق نجانہ عہ آنچناں کہ دراں نامہ گفتہ است صحیح شد و بوجہ قول عبدالکریم بہر وقتیکہ باید الخ متقید بمجلس نماند في الدر المختار من فصل المشيئة تقيد بالمجلس لانه تمليك الا اذا زاد متى شئت و نحوه مما يفيد عموم الوقت فتطلق مطلقاً 2۔ پس بریں تقدیر زاں باز کہ طلاق خویش اختیار کرد از نکاح بیروں شد اگر چہ ایں معنی روز دوم رونمود و ذلک لان قولہ بہر وقتیکہ باید الخ توضیح للتفویض المذکور في قوله پس ترا اختیار ثلاثہ است کما ھو الظاھر لمتبادر المفهوم المتعارف من امثال التحاور ، وان فرض كونه كلاما بحياله فهو تفويض

ناجائز اور باطل بلکہ زنا ہے اس لئے مائتون کو اس دوسرے شخص سے علیحدہ ہو کر باز رہنا ضروری اور فرض ہے، اللہ تعالیٰ کا ارشاد ہے: اور مطلقہ عورتیں تین تین حیض مکمل ہونے تک اپنے آپ کو پابند رکھیں۔ ردالمختار میں ہے: اگر ایک شخص نے کسی عورت سے کہا کہ میں تجھ سے اس شرط پر نکاح کرتا ہوں کہ تیرا معاملہ تیرے ہاتھ میں ہے تو عورت نے اس شرط پر نکاح کو قبول کر لیا تو نکاح صحیح ہو گا اور شرط مذکور لغو ہو جائیگی، کیونکہ طلاق کا اختیار نکاح میں یا نکاح کی طرف نسبت کرنے میں صحیح ہو سکتا ہے جبکہ یہ دونوں امر یہاں نہیں ہیں، اس کے برخلاف جو گزرا کیونکہ وہاں طلاق کا اختیار نکاح سے مقارن ہو جاتا ہے عورت کے منکوحہ ہو جانے کی وجہ سے اھ نہر۔ اور اگر عبدالکریم نے وہ تحریر نامہ مائتون بی بی سے نکاح کرنے کے بعد لکھا ہے تو پھر تین طلاقوں کی تفویض جس طرح اختیار نامہ میں موجود ہے صحیح ہے اور عبدالکریم کے تحریر نامہ "جس وقت چاہے" لکھنے کی وجہ سے یہ تفویض اس

مجلس سے مقید نہ رہی۔ در مختار کی فصل فی المشئیۃ میں ہے کہ یہ مشیت یعنی اختیار طلاق مجلس موجود میں رہتا ہے اور اسی سے مقید ہوتا ہے اسکے

عہ: یہاں کرم خوردہ ہے ۱۲ 1 رد المحتار باب الرجعة دار احیاء التراث العربی بیروت ۵۴۰/۲ 2 درمختار باب الامر بالید مطبع مجتبائی دہلی ۲۲۹/۱

Fatawa Razawiya, Volume 12

[Right Column] ...does not remain afterwards because this is Tamlik (granting ownership), but if the phrase "whenever she wishes" or any other term signifying generality of time was added, then the divorce will occur absolutely without being restricted to the session (Majlis). Therefore, in this case, Myntun Bibi's act of divorcing herself was correct, and she has exited Abdul Karim's marriage. Even if Abdul Karim opposed this action the next day and tried to revoke it, the marriage has ended. This is because he used the words "whenever she wishes," which is an explanation for the delegation (Tafwid) of three divorces, as is conceptually understood from the usage of this idiom in common practice. And if it is assumed that this was the actual speech, then it would be a delegation in itself. Since there is no mention of a single divorce in delegation, choosing three divorces here will not be contradictory according to Imam Abu Hanifa (may Allah be pleased with him). (Yes, if the wife says "one and one and one" three times instead of three divorces in a single word, then by consensus, it counts as one). But here it is absolute speech which includes all, whether it be one or more irrevocable (Bainah) divorces. So on this basis also, adopting three divorces is correct, although in saying them separately, one results in 'Bainah', and in one word, three result in 'Bainah'. It is stated in Rad al-Muhtar that if a husband gave his wife [authority for] one divorce...

[Left Column] ...by itself, and there is no explicit text regarding the delegation of a single divorce such that choosing three would contradict it according to the Imam. It is rather absolute speech so as to include every separation (Bainuna), whether it comes with one or more. Thus, it is correct on this basis too, even if she did not separate except by one. And according to the first [opinion], with three. It is stated in Rad al-Muhtar: Nothing occurs in the case where he commanded her with one and she divorced with three in one word according to the Imam. But if she said "one, and one, and one", then one occurs by consensus because he did not mention the number explicitly, and the word is suitable for generality and specificity. Its complete discussion is in al-Bahr. 1

If this statement is as represented by the questioner, meaning in Abdul Karim's speech the word "whenever needed" was also extra, then in this state, if after that divorce Myntun has completed three full menstrual cycles, then marriage with another person after that would be permissible, otherwise it is forbidden (Haram). And the occurrence of this meaning after four months from the first divorce is definitive proof.

1 Rad al-Muhtar, Chapter on Will, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 2/288. Page 650 of 688

[दायाँ कॉलम] ...बाद में नहीं रहता क्योंकि यह 'तम्लीक' (मालिकाना हक़ देना) है, लेकिन अगर 'जब चाहे' शब्द जोड़ा गया हो या इसी तरह समय की व्यापकता के लिए कोई और शब्द जोड़ा गया हो, तो फिर मज्लिस की पाबंदी के बिना मुतलक़न (बिना शर्त) तलाक़ होगी। अतः इस स्थिति में माइन्टून बीबी का अपने आप को तलाक़ देना सही हुआ और वह अब्दुल करीम के निकाह से बाहर हो गई है। भले ही अब्दुल करीम इस कार्रवाई के दूसरे दिन इसके खिलाफ कदम उठाकर इसे रद्द भी कर दे, फिर भी निकाह खत्म हो गया है। यह इसलिए क्योंकि उसने 'जिस वक्त चाहे' शब्द का उल्लेख किया और यह तीन तलाक़ों के प्रत्यायोजन (तफ़वीज़) का स्पष्टीकरण है, जैसा कि आम बोलचाल में इस मुहावरे के इस्तेमाल से वैचारिक रूप से समझा जाता है। और अगर इसे ज्यों का त्यों वचन मान लिया जाए, तो यह अपने आप में तफ़वीज़ होगी। चूंकि तफ़वीज़ में एक तलाक़ का ज़िक्र नहीं है, इसलिए यहाँ तीन तलाक़ों को चुनना इमाम अबू हनीफा (रज़ियल्लाहु अन्हु) के नज़दीक विरोधाभासी नहीं होगा। (हाँ, अगर पत्नी एक शब्द में तीन तलाक़ के बजाय 'एक और एक और एक' तीन बार कहती है, तो सर्वसम्मति से एक होती है)। लेकिन यहाँ तो मुतलक़ (निरपेक्ष) कलाम है जिसमें एक या अधिक बाइना (अंतिम) तलाक़ें शामिल हैं। तो इस आधार पर भी तीन तलाक़ें अपनाना सही है। यद्यपि अलग-अलग कहने में एक ही से बाइना और एक ही शब्द में तीन तलाक़ों से ही बाइना हो जाती है। रद अल-मुह्तार में है कि अगर पति ने पत्नी को एक तलाक़ का...

[बायाँ कॉलम] ...अपने आप में, और इसमें एक तलाक़ के प्रत्यायोजन पर कोई स्पष्ट पाठ नहीं है कि इमाम के अनुसार तीन को चुनना उसका विरोध करे। यह तो एक मुतलक़ कलाम है ताकि इसमें हर वह जुदाई (बैनुनाह) शामिल हो जाए जो एक या अधिक के साथ आए। अतः इस पर भी सही है, भले ही वह एक के अलावा अलग न हुई हो। और पहले [मत] के अनुसार, तीन के साथ। रद अल-मुह्तार में कहा गया है: उस स्थिति में कुछ भी घटित नहीं होता जहाँ उसने उसे एक का आदेश दिया और उसने इमाम के अनुसार एक ही शब्द में तीन तलाक़ दे दिए। लेकिन अगर उसने कहा 'एक, और एक, और एक', तो सर्वसम्मति से एक घटित हुई क्योंकि उसने संख्या का स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं किया, और शब्द सामान्यता और विशिष्टता के लिए उपयुक्त है। इसकी पूरी चर्चा अल-बह्र में है। 1

अगर यह बात वैसी ही है जैसा कि पूछने वाले ने ज़ाहिर किया, यानी अब्दुल करीम के कलाम में (हर वक्त जब चाहे) शब्द भी अतिरिक्त था, तो इस स्थिति में अगर उस तलाक़ के बाद माइन्टून को तीन

पूर्ण मासिक धर्म आ चुके हों, तो उसके बाद किसी अन्य व्यक्ति से निकाह जायज़ होगा, अन्यथा हराम। और पहली तलाक़ के चार महीने बाद इस अर्थ का घटित होना निश्चित प्रमाण है।

1 रद अल-मुह्तार, इच्छा पर अध्याय, दार इह्या अल-तुराथ अल-अरबी, बेरुत, 2/288। पृष्ठ 650/688

فتاویٰ رضویہ، جلد دوازدہم

[دایاں کالم] بعد نہیں رہتا کیونکہ یہ تملیک ہے، لیکن اگر "جب چاہے" کا لفظ زائد کیا ہو یا اس کی مثل اور کوئی عموم وقت کے لئے لفظ زائد کیا ہو تو پھر مجلس کی قید کے بغیر مطلقاً طلاق ہوگی، پس اس صورت میں مائنٹون بی بی کا اپنے آپ کو طلاق دینا درست ہوا اور وہ عبدالکریم کے نکاح سے خارج ہوگئی ہے، اگرچہ عبدالکریم اس کارروائی کے دوسرے روز اس کے خلاف اقدام کرکے رَد بھی کردے، تاہم نکاح ختم ہو گیا ہے، یہ اس لئے کہ اس نے "جس وقت چاہے" کا لفظ ذکر کیا اور یہ تین طلاقوں کی تفویض کی وضاحت ہے، جیسا کہ عرف میں اس محاورہ کے استعمال سے متبادر طور پر مفہوماً سمجھا جاتا ہے، اور اگر بعینہ اس کو کلام فرض کیا جائے تو یہ بنفسہ تفویض ہوگی اور تفویض میں چونکہ ایک طلاق کا ذکر نہیں ہے اس لئے یہاں تین طلاقوں کو اختیار کرنا امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے ہاں منافی نہ ہوگا، (ہاں اگر بیوی تین طلاقوں کو بیک لفظ کی بجائے "ایک اور ایک اور ایک" تین مرتبہ کہتی ہے تو پھر بالاتفاق ایک ہوتی) لیکن یہاں تو مطلق کلام ہے جس میں ایک یا زیادہ بائنہ طلاقیں ہوں سب کو شامل ہے، تو اس بناء پر بھی تین طلاقیں اپنانا درست ہے اگرچہ علیحدہ علیحدہ کہنے میں ایک ہی سے بائنہ اور بیک لفظ میں تین طلاقوں سے ہی بائنہ ہو جاتی ہے، ردالمحتار میں ہے کہ اگر خاوند نے بیوی کو ایک طلاق کا

[بایاں کالم] بنفسه وليس فيه التنصيص على تفويض طلاق واحد حتى ينافيه اختيار الثلاث عند الامام انما هو كلام مطلق ليشتمل كل بينونة بواحدة اتت او باكثر فصح على هذا ايضاً وان لم تبن الابواحدة۔ وعلى الاول بثلث، قال في ردالمحتار لايقع شيئ فيما اذا امرها بالواحدة فطلقت ثلثاً بكلمة واحدة عند

الامام اما لوقالت واحدة وواحدة وواحدة وقعت واحدة اتفاقاً لانه لم يتعرض للعدد لفظاً واللفظ صالح للعموم والخصوص وتمامه في البحر ١،

اگر ایں سخن ،ہمچناں راست باشد کہ سائل وانمود یعنی در کلام عبدالکریم لفظ (ہر وقتیکہ باید) نیز زائد بود پس دریں حالت اگر پس آں طلاق مائنٹون راسہ حیض کامل آمدہ ختم شدہ بود بعد آں نکاح با شخصے دیگر جائز باشد و رنہ حرام، و وقوع ایں معنی بعد چہار ماہ از طلاق اولین دلیل قطعی

١ ردالمحتار باب في المشية داراحياء التراث العربی بیروت ٢٨٨/٢ صفحہ 650 از 688

Fatawa Razawiyya Volume 12

[Left Column - Persian] It is not the expiration of the 'iddah (waiting period); the woman knows her own condition best. It can happen that sometimes even in three years, three menstrual cycles are not completed. This is the ruling for the case in question. However, I (the humble one) fear that this issue is the same one that came to me three times from Sylhet in 1317 AH. The questioner this time also said that this corruption has been going on there for three years. The first time, on 6 Rajab 1317 AH, the statement that came, its apparent meaning is that this acknowledgment by Zaid, i.e., Abdul Karim, was before the marriage to Hindah (i.e., Mainun). There was no explicit mention of attribution to ownership or cause of ownership. Disregarding that, in the questions of 6 Rajab, 19 Shawwal, and 22 Dhu al-Qidah 1317 AH, there was no mention of this new addition that should have been there each time. Rather, in the first question, the word 'Hindah' was written only to the extent that: "Now I cannot live according to the agreement," she said this and left the house. I replied that these words were not divorce. Supposing it were divorce, before them there was further quarrel and argument, which was vain and foreign talk; the setting changed and the authority for divorce was lost. Divorce occurred from the day she performed Khula'; from that day, the matter of 'iddah became obligatory, otherwise marriage is haram (forbidden). Similarly, a necessary answer was given in the question of Shawwal, restricting it to the session. In the question of Dhu al-Qidah, he added that Hindah claims that as soon as he came...

[Right Column - Urdu] ...gave the authority, and the wife adopted the three (divorces) in a single word, then according to Imam Abu Hanifa, no divorce will occur. If she chose the three divorces one by one for herself, then the first one occurred by consensus because the husband did not mention the number in words, so there is a possibility of both general and specific meaning. The complete discussion on this is in 'Al-Bahr'. So if the matter is as the questioner has expressed, meaning Abdul Karim, while delegating the authority, added "whenever she wants," then in this situation, after the wife Mainun adopted the divorce, three complete menstrual cycles must have passed. If she then married another person, this marriage is permissible. Otherwise, marrying without completing the 'iddah is haram. Mere passage of four months after divorce is not definitive proof of the completion of 'iddah. The woman knows about this because sometimes three menstrual cycles are not completed even in three years. This is the ruling for the case at hand. I, the humble one, fear that this is the same issue that came to me from Sylhet three times in 1317 AH, and the

questioner also mentioned that this problem has been going on for three years. The first time the question came on 6 Rajab 1317 AH, it was stated that this agreement of Zaid, i.e., Abdul Karim, was written before marriage, and it did not mention the ownership or cause of marriage with Mainun. Regardless of that, questions were asked three times on 6 Rajab, 19 Shawwal, and 22 Dhu al-Qidah 1317 AH, in which this new...

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

[बायां कॉलम - फारसी] इद्दत की समाप्ति नहीं हुई है; स्त्री स्वयं अपनी स्थिति बेहतर जानती है। ऐसा हो सकता है कि कभी-कभी तीन वर्षों में भी तीन मासिक धर्म पूर्ण न हों। यह पूछे गए मामले का हुक्म है। लेकिन, मैं (फकीर) डरता हूँ कि यह वही मामला है जो 1317 हिजरी में तीन बार सिलहट से मेरे पास आया था। इस बार भी पूछने वाले ने कहा कि यह बिगाड़ वहां तीन साल से जारी है। पहली बार, 6 रजब 1317 हिजरी को जो बयान आया, उसका स्पष्ट अर्थ यह है कि ज़ैद यानी अब्दुल करीम का यह इकरार हंदा (अर्थात मैनून) के निकाह से पहले था। और वहां मालिकाना हक या उसके कारण का कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं था। उसे छोड़कर, 6 रजब, 19 शव्वाल और 22 ज़ुल-क़ादा 1317 हिजरी के सवालों में, हर तीनों बार इस नई वृद्धि का कोई उल्लेख नहीं था जो हर बार होना चाहिए था। बल्कि पहले सवाल में 'हंदा' शब्द केवल इतना लिखा था कि: "अब मैं इकरारनामे के अनुसार नहीं रह सकती", उसने यह कहा और घर से निकल गई। मैंने उत्तर दिया कि ये शब्द तलाक़ नहीं थे। मान लीजिए कि अगर वह तलाक़ होता, तो उससे पहले उनके बीच झगड़ा और विवाद हुआ, जो कि व्यर्थ और बाहरी बात थी; सभा बदल गई और तलाक़ का अधिकार समाप्त हो गया। तलाक़ उस दिन से हुआ जब उसने खुला (Khula) किया; उस दिन से इद्दत का मामला अनिवार्य हो गया, अन्यथा निकाह हराम है। इसी तरह, शव्वाल के सवाल में भी सभा की पाबंदी के साथ आवश्यक उत्तर दिया गया। ज़ुल-क़ादा के सवाल में उसने जोड़ा कि हंदा दावा करती है कि जैसे ही वह आया...

[दायां कॉलम - उर्दू] ...अधिकार दिया और पत्नी ने तीन (तलाक़ों) को एक ही शब्द में अपना लिया, तो इमाम साहब के अनुसार कोई तलाक़ नहीं होगा। और यदि उसने एक-एक करके तीन तलाक़ों को अपने लिए चुना, तो पहली एक सर्वसम्मति से प्रभावी हो गई क्योंकि पति ने शब्दों में संख्या का उल्लेख नहीं किया था, इसमें सामान्य और विशेष दोनों अर्थों की संभावना है। इसकी पूरी चर्चा 'अल-बहर' में है। तो अगर मामला वैसा ही है जैसा पूछने वाले ने स्पष्ट किया है, यानी अब्दुल करीम ने अधिकार सौंपते हुए "जब चाहे" भी जोड़ा है, तो इस स्थिति में पत्नी मैनून के तलाक़ अपनाने के बाद तीन पूर्ण मासिक धर्म बीत चुके हों। यदि उसके बाद उसने दूसरे व्यक्ति से निकाह किया है, तो यह निकाह जायज़ है। अन्यथा, इद्दत पूरी किए बिना निकाह करना हराम है। तलाक़ के बाद केवल चार महीने बीत जाना इद्दत के पूरा होने का निश्चित प्रमाण नहीं है। स्त्री को इसके बारे में पता होता है क्योंकि कभी-कभी तीन साल में भी तीन मासिक धर्म पूरे नहीं होते। यह पूछे गए मामले का हुक्म है। मुझ फकीर को डर है कि यह वही मामला हो सकता है जो 1317 हिजरी में तीन बार सिलहट से मेरे

पास आया था, और पूछने वाले ने भी उल्लेख किया है कि यहाँ यह समस्या तीन साल से चली आ रही है। पहली बार 6 रजब 1317 हिजरी को यह सवाल आया तो उसमें यह बयान था कि ज़ैद यानी अब्दुल करीम का यह इकरारनामा निकाह से पहले लिखा गया था, और उसमें मैनून के साथ निकाह के स्वामित्व या कारण का ज़िक्र भी न था। उसे छोड़कर, 6 रजब, 19 शव्वाल और 22 ज़ुल-क़ादा 1317 हिजरी में तीन बार सवाल किए गए जिनमें यह नया...

पृष्ठ 651 का 688

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

[بایاں کالم - فارسی] انقضائے عدت نیست زن بحال خود عالمہ است می تواند کہ گاہے در سہ سال نیز سہ حیض تمام نشود ایں ست حکم صورت مسؤلہ، اما فقیر می ترسم کہ ایں مسئلہ ہماں ست کہ در ۱۳۱۷ ھ سہ بار از ہمیں سلہٹ نزد فقیر آمدہ بود وسائل ایں بار نیز گفت کہ ایں فساد از سہ سال آنجا بر پاست، بار اوّل ۶ رجب ۱۳۱۷ ھ بیانی کہ آمد ظاہرش آنست کہ ایں اقرار زید یعنی عبد الکریم پیش از نکاح ہندہ اعنی مائنون بود و آنجا نیز تصریح اضافت بملک یا سبب ملک نیست و قطع نظر از اں ۶ رجب و ۱۹ شوال و ۲۲ ذی قعدہ ۱۳۱۷ ھ در سوالات ہر سہ بار ہیچ ذکرایں زیادت تازہ کہ ہر وقتیکہ باید نبود بلکہ در سوال اول لفظ ہندہ ہمیں قدر نوشتہ بود کہ اب میں مطابق اقرار نامہ نہیں رہ سکتی ہوں ، ایں گفت واز خانہ بروں رفت جواب دادم کہ ایں الفاظ طلاق نبود بالفرض اگر طلاق باشد پیش آنہا باز ضرہ خود جنگ و جدل سخنے فضول و اجنبی بود مجلس متبدل شد و اختیار طلاق از دست رفت طلاق ازاں روز شد کہ خلع کرد ازیں روز امر در عدت واجب ست ورنہ نکاح حرام، بریں واجب جواب در سوال شوال نیز ہمیں از تقید بمجلس سوال کرد جواب رفت، در سوال ذیقعدہ فزود کہ ہندہ دعوی میکند کہ بمجرد آمدن

[دایاں کالم - اردو] اختیار دیا اور بیوی نے تین کو بیک لفظ اپنایا تو امام صاحب کے نزدیک کوئی طلاق نہ ہوگی اور ایک ایک کر کے تین طلاقوں کو اپنے لئے اختیار کیا تو پہلی ایک بالاتفاق واقع ہوگئی کیونکہ لفظوں میں خاوند نے عدد کو ذکر نہیں کیا اس میں عموم اور خصوص دونوں کا احتمال ہے اس کی پوری بحث بحر میں ہے تو اگر بات ایسے ہی ہے جیسے سائل نے ظاہر کی ہے یعنی عبدالکریم نے اختیار سونپتے ہوئے "جب چاہے" بھی زائد کیا ہے، پس اندریں صورت مائنون بی بی کے طلاق کو اپنانے کے بعد تین حیض کامل گزر چکے ہوں اور اس کے بعد اس نے

دوسرے شخص سے نکاح کیا ہے تو یہ نکاح جائز ہے ورنہ عدت مکمل ہوئے بغیر نکاح کیا تو یہ حرام ہے اور محض چار ماہ طلاق کے بعد گزرنا یہ عدت کے پورا ہونے کی قطعی دلیل نہیں ہے، اس کے متعلق عورت کو علم ہوتا ہے کیونکہ کبھی تین سال میں بھی تین حیض مکمل نہیں ہوتے، یہ صورت مسئولہ کا حکم ہے۔ مجھ فقیر کو خطرہ ہے کہ یہ وہی مسئلہ ہو جو میرے پاس ۱۳۱۷ھ میں تین بار سلہٹ سے آیا تھا، اور سائل نے بھی ذکر کیا ہے کہ یہاں یہ فساد تین سال سے چلا آرہا ہے۔ پہلی بار ۶ رجب ۱۳۱۷ھ کو یہ سوال آیا تو اس میں یہ بیان تھا کہ زید یعنی عبدالکریم کا یہ اقرار نامہ نکاح سے پہلے لکھا گیا ہے اور اس میں مائنون سے نکاح کی ملکیت یا سبب کا ذکر بھی نہ تھا، اس سے قطع نظر ۶ رجب ۱۹ شوال اور ۲۲ ذیقعدہ ۱۳۱۷ تین مرتبہ سوالات کئے گئے جن میں اس تازہ

Fatawa Razawiyyah Volume 12

...at that time in the house, I had chosen myself, and the husband denies the essence of this, saying Hinda said nothing and left. In this case, whose word is reliable? I wrote the answer: Zaid's (the husband's) word is true. After three years, this question has come for the fourth time, and there is an additional word that completely removes the restriction of the session (majlis). In this sense, one should be aware that if this question pertains to the same incident, then those making changes should fear God. If they obtain a ruling from a Mufti by rephrasing the incident, what answer will they give to the Knower of the unseen and the witnessed? 'Then whoever changes it after he has heard it - the sin of it is only upon those who change it.' [Quran 2:181] And Allah Almighty knows best.

The additional phrase "whenever she wants" was not there. Rather, in the first inquiry, under the heading of Hinda, it was written that "Now I cannot live according to the agreement," she said this and left Zaid's house. So I answered that these words do not constitute divorce. Even if, for the sake of argument, these words of Hinda were divorce, her first quarrelling with her co-wife, being irrelevant and a foreign matter, changed the session of choice (majlis-e-ikhtiyar), due to which the power of divorce left Hinda's hand. Therefore, Hinda, i.e., Mankun Bibi, was divorced on the day she obtained Khula from her husband, and from that day the waiting period (iddat) became obligatory, and its completion is necessary, otherwise her marriage is forbidden (haram). After this answer, in the question of Shawwal as well, the inquiry was made regarding the restriction of the session of choice given by the husband, and it was answered. In the question of Dhu al-Qi'dah, there was an addition that Hinda claims the husband gave her the option of divorce only upon the co-wife's arrival at the house, which she exercised at that moment. The husband denies this and says Hinda said nothing at that moment and left the house. In this case, whose statement is reliable, the husband's or the wife's? I wrote in the answer that Zaid's, i.e., the husband's, statement is reliable. After the mentioned three inquiries, now after three years, this question has come for the fourth time, and one more addition has been made: it is written ("and whenever she wants, she may divorce herself"), and the condition regarding the session has been completely removed. Therefore, this matter should be investigated. If this last question also refers to the same incident as the first three questions, then those changing the question should fear God. Although they may obtain a desired ruling from the Mufti by changing the question, what answer will they give before Allah Almighty, the

Knower of the unseen and the witnessed? For whoever changes it after hearing it, the sin is upon those who change it. And Allah Almighty knows best. (T)

1. The Holy Quran 2/181. Page 652 of 688

फतावा रज़विया जिल्द 12

...उस समय घर में मैंने स्वयं को चुन लिया था, और पति इस बात के मूल से इनकार करता है, कहता है कि हिंदा ने कुछ नहीं कहा और चली गई। इस स्थिति में किसकी बात सही है? मैंने उत्तर लिखा: ज़ैद (पति) की बात सही है। तीन साल बाद चौथी बार यह प्रश्न आया है और इसमें एक शब्द अतिरिक्त है जिसने सभा (मजलिस) की पाबंदी को पूरी तरह खत्म कर दिया है। इस अर्थ में यह जानना चाहिए कि यदि यह प्रश्न उसी पूरी घटना से संबंधित है, तो परिवर्तन करने वालों को ईश्वर से डरना चाहिए। यदि वे घटना का विवरण बदलकर मुफ्ती से अपनी इच्छानुसार कोई आदेश प्राप्त कर लेते हैं, तो वे परोक्ष और प्रत्यक्ष के ज्ञाता (अल्लाह) को क्या उत्तर देंगे? 'फिर जो कोई इसे सुनने के बाद बदल देता है, उसका पाप केवल उन्हीं पर है जो इसे बदलते हैं।' [क़ुरआन 2:181] और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है।

अतिरिक्त शब्द "जब चाहे" शामिल नहीं था। बल्कि पहली बार प्रश्न में हिंदा के हवाले से लिखा गया था कि "अब मैं इकरारनामे के अनुसार नहीं रह सकती", उसने यह कहा और ज़ैद के घर से चली गई। तो मैंने उत्तर दिया कि ये शब्द तलाक नहीं बन सकते। और यदि मान भी लिया जाए कि हिंदा के ये शब्द तलाक थे, तो उसका पहले अपनी सौतन के साथ झगड़ा करना, एक असंबद्ध और बाहरी बात होने के कारण, चुनाव वाली सभा (मजलिस-ए-इख्तियार) बदल गई, जिससे हिंदा के हाथ से तलाक का अधिकार चला गया। अतः हिंदा यानी मानकुन बीबी को उस दिन तलाक हुई जिस दिन उसने पति से खुला (Khula) लिया, और उसी दिन से इद्दत वाजिब हो गई और उसका पूरा होना ज़रूरी है, अन्यथा उसका निकाह हराम है। इस उत्तर के बाद शव्वाल वाले प्रश्न में भी पति द्वारा दी गई चुनाव की सभा की पाबंदी के बारे में पूछा गया था, जिसका उत्तर दिया गया। और ज़िलक़ादा वाले प्रश्न में यह बात अतिरिक्त थी कि हिंदा दावा करती है कि पति ने उसे केवल सौतन के घर आने पर तलाक का अधिकार दिया था जिसका उसने उसी समय उपयोग कर लिया था। और पति इस बात से इनकार करता है और कहता है कि हिंदा ने उस समय कुछ नहीं कहा और घर से चली गई। इस स्थिति में किसका बयान विश्वसनीय है, पति का या पत्नी का? मैंने उत्तर में लिखा कि ज़ैद यानी पति का बयान विश्वसनीय है। उल्लेखित तीन प्रश्नों के बाद अब तीन साल बाद चौथी बार यह प्रश्न आया है और इसमें एक और वृद्धि की गई है: लिखा गया है ("और जब चाहे अपने आप को तलाक दे दे"), और सभा की पाबंदी वाली स्थिति को पूरी तरह खत्म कर दिया गया है। इसलिए इस मामले की जांच होनी चाहिए। यदि यह अंतिम प्रश्न भी उन्हीं पहले तीन प्रश्नों वाली घटना है, तो प्रश्न में बदलाव

करने वालों को ईश्वर से डरना चाहिए। हालाँकि वे प्रश्न बदलकर मुफ्ती से मनचाहा आदेश प्राप्त कर लेंगे, लेकिन अल्लाह तआला, जो परोक्ष और प्रत्यक्ष का ज्ञाता है, के सामने क्या उत्तर देंगे? जिसने इसे सुनने के बाद बदल दिया, उसका गुनाह बदलने वालों पर है। और अल्लाह तआला सबसे बेहतर जानता है। (त)

1. अल-क़ुरआन अल-करीम 181/2. पेज 652 of 688

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

ضرہ بخانہ ہماں وقت نفس خودم را اختیار کردہ بودم و شوہر منکر اصل این معنی است میگوید کہ ہندہ پیچ نگفت و بدر رفت دریں صورت قول کراست جواب نوشتم زید راست، بعد سہ سال چہارم بار این سوال آمد و در لفظے زائد است کہ تقیید مجلس از پیخ برانداخت بایں معنی با خبر باید بود اگر ایں سوال متعلق بہمہ واقعہ است پس تبدیل کنندگاں از خدا تر سند اگر بہ تعبیر واقعہ حکمے از مفتی بدست آرند عالم الغیب والشہادۃ راچہ جواب دہند۔ فَمَنْ بَدَّلَہٗ بَعْدَ مَا سَمِعَہٗ فَاِنَّمَا اِثْمُہٗ عَلَی الَّذِیْنَ یُبَدِّلُوْنَہٗ ۱ ط۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

زائد لفظ "جب چاہے" کا اضافہ نہ تھا بلکہ پہلی مرتبہ سوال میں، ہندہ کے عنوان سے لکھا گیا کہ "اب میں اقرار نامہ کے مطابق نہیں رہ سکتی ہوں، یہ کہا اور زید کے گھر سے چلی گئی ،تو میں نے اس کا جواب دیا کہ یہ الفاظ طلاق نہیں بن سکتے اور اگر بالفرض ہندہ کے یہ الفاظ طلاق ہوں بھی تو اس کا پہلے اپنی سوکن کے ساتھ جھگڑا کرنا ،لا تعلق اور اجنبی بات ہونے کی وجہ سے اختیار والی مجلس تبدیل ہو گئی جس سے ہندہ کے ہاتھ طلاق کا اختیار جاتا رہا، لہٰذا ہندہ یعنی مانکون بی بی کو اس روز طلاق ہوئی جس روز اس نے خاوند سے خلع کیا ، اور اسی دن سے عدت واجب ہوئی اور اس کا مکمل ہونا ضروری ہے ورنہ اس کا نکاح حرام ہے، اس جواب کے بعد شوال والے سوال میں بھی خاوند کی طرف سے دیئے گئے اختیار والی مجلس کی قید سے سوال کیا گیا اس کو جواب دیا گیا، اور ذیقعدہ والے سوال میں یہ بات زائد تھی کہ ہندہ دعوی کرتی ہے کہ خاوند نے صرف سوکن کی گھر آمد پر مجھے طلاق کا اختیار دیا تھا جس کو میں نے اس موقع پر استعمال کر لیا تھا، اور خاوند اس بات سے انکار کرتا ہے اور وہ کہتا ہے کہ ہندہ نے اس موقع پر کچھ نہیں کہا اور گھر سے چلی گئی، اس صورت کے بارے میں سوال کیا گیا خاوند یا

بیوی کس کی بات معتبر ہے؟ میں نے جواب میں لکھا زید یعنی خاوند کی بات معتبر ہے۔ مذکور تین بار سوال کے بعد چوتھی مرتبہ تین سال کے بعد اب یہ سوال آیا ہے اور اس میں ایک مزید اضافہ کیا گیا("اور جب چاہے اپنے آپ کو طلاق دے دے") لکھا گیا ہے اور مجلس کی قید والی صورت کو سرے سے ہی ختم کر دیا گیا لہٰذا اس معاملہ کی تحقیق ہونی چاہئے اگر یہ آخری سوال بھی ان پہلے تین سوالوں کا واقعہ ہے تو پھر سوال میں تبدیلی کرنے والوں کو خدا سے ڈرنا چاہئے، اگرچہ سوال کی تبدیلی کے ذریعہ مفتی سے مطلب کا حکم حاصل کرلیں گے لیکن عالم الغیب والشہادت اللہ تعالیٰ کے ہاں کیا جواب دیں گے۔ جس نے اس کو سننے کے بعد تبدیل کیا تو گناہ بدلنے والوں پر ہے واللہ تعالیٰ اعلم (ت)

1 القرآن الکریم ۱۸۱/۲ Page 652 of 688

Fatawa Razawiyya Volume 12

Issue 326: From Khairabad Miansarai, Madrasa Arabiya, District Sitapur, Awadh, sent by Sayyid Fakhrul Hasan Sahib Razawi, 7 Jumada al-Ula 1336 AH. The marriage contract of one named Zahid Ali son of Abid Ali with Musammat Karima daughter of Abdullah was solemnized with the agreement of 'Amr Bil-Yad' (delegated right of divorce). The marriage certificate was written as follows:

Copy of Marriage Certificate

(Arabic Box): Praise be to Allah who distinguished between the lawful and the prohibited and joined them with the thread of order, and prohibited adultery as a protection for the world and to preserve the progeny of the sons of Adam. Blessings and peace be upon the best of His creation, Muhammad, the master of mankind, and upon his noble, righteous family and his great companions.

(Urdu Box): All praise is for Allah Almighty who distinguishes between forbidden and permissible, and who joins the thread of order. For the protection of the world's system and to keep the progeny of Adam's children safe, He has forbidden adultery. Blessings and peace be upon the Master of the world, the best of Allah Almighty's creation, Muhammad (peace and blessings of Allah be upon him and his progeny), upon his family who are pure and noble, and upon his companions who are of great rank. (T)

After that, I, Sayyid Zahid Ali, son of Sayyid Abid Ali, resident of Khairabad, have of my own free will and desire, taken Musammat Karima daughter of Sayyid Abdullah into my marriage in exchange for a prompt dower (Mahr-e-Mu'ajjal) of four Mithqal of silver, which amounts to one hundred and fifty-six units according to the weight of the current minted coins. I have, with my own consent and without any coercion or compulsion from anyone, granted the mentioned Musammat Karima the right of 'Amr-ha-bi-yad-ha' (her affair is in her hands), meaning the praised Musammat Karima can, whenever she wishes, exclude herself from my marriage and free herself. I will never be able to claim her presence in my marriage in any way because this 'Amr-ha-bi-yad-ha' means she will certainly and definitely be out of my marriage at that time. Therefore, this document has been written so that it may be useful in time of need. Only because, before the marriage, complaints about the bad character and misconduct of the named Zahid Ali were heard from outside, which most of the brotherhood denied and forced Sayyid Abdullah to perform the marriage. Finally,

Sayyid Abdullah performed the marriage in the manner mentioned above. And in the end, the same expected result came out according to the saying:

(Poetry): A bad habit that becomes ingrained in a nature, Does not leave except at the time of death.

(A bad habit that becomes part of one's nature does not vanish until death. T) The named Zahid Ali adopted the same misconduct after a few days and eventually was punished by the court. Musammat Karima, although...

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

मसाला 326: खैर आबाद मियाँसराय, मदरसा अरबिया, जिला सीतापुर, अवध से मुर्सला सैयद फ़ख़रुल हसन साहिब रज़वी, 7 जमादी अल-उला 1336 हिजरी। मुसम्मी ज़ाहिद अली वल्द आबिद अली का निकाह मुसमात करीमा बिंत अब्दुल्लाह के साथ 'अम्र बिल-यद' (तलाक का अधिकार सौंपना) के इकरार के साथ संपन्न हुआ, निकाहनामा इस प्रकार लिखा गया:

नक़ल निकाहनामा

(अरबी बॉक्स): तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिसने हलाल और हराम के बीच फर्क किया और उन्हें व्यवस्था की डोरी से जोड़ा, और दुनिया की हिफाज़त और आदम की नस्ल को सुरक्षित रखने के लिए ज़िना (व्यभिचार) को हराम करार दिया। दुरूद और सलाम उसकी बेहतरीन मखलूक, इंसानों के सरदार मुहम्मद पर, और उनके नेक और पाक परिवार और उनके महान साथियों पर।

(उर्दू बॉक्स): तमाम प्रशंसा अल्लाह तआला के लिए है जो हराम और हलाल में फर्क करने वाला है और व्यवस्था की डोरी को जोड़ने वाला है। जिसने दुनिया की व्यवस्था की सुरक्षा के लिए और आदम की औलाद की नस्ल को महफ़ूज़ रखने के लिए ज़िना को हराम फ़रमाया है। अल्लाह तआला की बेहतरीन मखलूक, जहान के आका मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर दुरूद और सलाम हो, उनके उस परिवार पर जो पाक और बुज़ुर्ग है, और उन सहाबा पर जो महान दर्जे वाले हैं। (त)

इसके बाद, मैं सैयद ज़ाहिद अली, वल्द सैयद आबिद अली, निवासी खैर आबाद, ने अपनी मर्ज़ी और खुशी से मुसमात करीमा सुपुत्री सैयद अब्दुल्लाह को चार मिस्क़ाल चाँदी के'मेहर-ए-मुअज्जल' (नकद देय मेहर) के बदले, जो मौजूदा सिक्कों के वज़न के हिसाब से एक सौ छप्पन होते हैं, अपने निकाह में लिया। और मैंने अपनी रजामंदी से, बिना किसी दबाव या ज़बरदस्ती के, उक्त मुसमात करीमा को 'अम्र-हा-बि-यद-हा' (उसका मामला उसके हाथ में) का अधिकार दे दिया है, यानी मुसमात करीमा जब चाहें खुद को मेरे निकाह से बाहर करके आज़ाद कर सकती हैं। मुझे कभी भी किसी तरह उनके मेरे निकाह में रहने का दावा करने का हक नहीं होगा, क्योंकि यह 'अम्र-हा-बि-यद-हा' का विषय है कि उस वक्त वह निश्चित रूप से मेरे निकाह से बाहर हो जाएंगी। इसलिए यह दस्तावेज़ लिख दिया गया है ताकि ज़रूरत के समय काम आए। चूँकि निकाह से पहले मुसम्मी ज़ाहिद अली के बुरे व्यवहार और चाल-चलन की शिकायतें बाहर से सुनी गई थीं, जिसे बिरादरी के

अधिकांश लोगों ने गलत बताकर सैयद अब्दुल्लाह को निकाह के लिए मजबूर किया था। अंततः सैयद अब्दुल्लाह ने उपरोक्त तरीके से निकाह कर दिया। और अंत में वही हुआ जिसकी आशंका थी:

(कविता): बुरी आदत जो स्वभाव में रच-बस जाए, वह मौत के वक्त तक हाथ से नहीं जाती।

(बुरी आदत जो स्वभाव में रच-बस जाए वह मौत के समय तक खत्म नहीं होती। त) मुसम्मी ज़ाहिद अली ने कुछ दिनों बाद वही बुरा चाल-चलन अपना लिया और अंत में कचहरी से सजा पाई। मुसमात करीमा यद्यपि...

पृष्ठ 653/688

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

مسئلہ ۳۲۶: از خیر آباد میانسرائے مدرسہ عربیہ ضلع سیتا پور اودھ مرسلہ سید فخر الحسن صاحب رضوی ۷ جمادی الاولٰی ۱۳۳۶ھ مسمّی زاہد علی ولد عابد علی کا عقدِ نکاح مسماۃ کریمہ بنت عبد اللہ کے ساتھ باقرارِ امر بالید منعقد ہوا، حسبِ ذیل نکاح نامہ تحریر ہوا:

نقل نکاح نامہ

الحمد للہ الذي فصل بین الحلال والحرام وواصلا بسلك النظام وحرم السفاح عصمة للعالم وحفظاً لنسل بنی ادم والصلوة والسلام علی خیر خلقه محمد سید الانام وعلی اله البررة الکرام واصحابه العظام۔

تمام تعریفیں اللہ تعالٰی کے لئے جو حرام وحلال میں فرق فرمانے والا ہے اور نظام کی ڈوری جوڑنے والا ہے اور جس نے نظامِ عالم کی حفاظت کے لئے اور نسلِ بنی آدم کو محفوظ رکھنے کے لئے زنا کو حرام فرمایا ہے، صلوۃ و سلام اللہ تعالٰی کی بہترین مخلوق جہان کے آقا محمد صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم پر، اس آل جو پاک اور بزرگ ہے، اور صحابہ پر جو عظیم مرتبہ والے ہیں۔ (ت)

اما بعد میں سید زاہد علی ولد سید عابد علی ساکن بلدہ خیر آباد نے برضا و رغبت خود مسماۃ کریمہ دختر سید عبد اللہ کو بعوض مہر معجل چار مثقال نقرہ جس کے ایک سو چھپن بروئے وزن روپیہ چہرہ دار رائج الوقت ہوتے ہیں اپنے عقدِ نکاح میں لایا، اور مسماۃ کریمہ موصوفہ کو برضا مندی خود بلا اکراہ و اجبار احدی مضمون امرہا بیدھا (پر مختار کر دیا یعنی مسماۃ کریمہ ممدوحہ جب چاہیں اپنی ذات کو میرے عقدِ نکاح سے خارج کر کے آزاد کر لیں مجھ کو کبھی کسی طرح اپنے نکاح میں رہنے کا دعوٰی نہ ہو سکے گا کیونکہ یہ مضمون امرہا بیدھا اس وقت قطعاً ویقیناً وہ

میرے عقد سے خارج ہو جائیں گی لہذا یہ تحریر لکھ دی کہ وقتِ ضرورت کام آئے فقط، چونکہ قبل انعقاد نکاح کے مسمی زاہد علی کی بد اطواری و خراب چلنی کی شکایت خارجاً مسموع ہوئی تھی جس کی بالاتفاق اکثر اہل برادری نے تکذیب کرکے نکاح کر دینے پر سید عبد اللہ کو مجبور کیا اور بالآخر سید عبد اللہ نے بطریقِ مندرجہ بالا نکاح کر دیا تھا اور بالآخر ہموں آش درکاسہ سامنے آیا بمقتضائے

خوئے بد در طبیعتے کہ نشست نرود جز بوقت مرگ از دست

(بُری عادت جو طبیعت میں رچ بس جائے وہ وقت موت تک زائل نہیں ہوتی۔ت) مسمی زاہد علی نے بعد چند روز کے وہی بد چلنی اختیار کی اور انجام کار کچہری سے سزایاب ہو گیا۔ مسماۃ کریمہ اگرچہ

Fatawa Rizwia Volume 12

Due to innate modesty and self-respect, she does not express her inner pain and suffering to anyone, but she is wasting away. Since Karima is still young, Syed Abdullah and other relatives think that provided Mst. Karima consents, she should be granted a Sunnah divorce from him and be remarried in a suitable place. Therefore, guidance is sought for this necessity, to be told some Urdu phrases or sentences which Mst. Karima can speak with her own tongue in front of a few people to obtain a Sunnah divorce so that no legal impropriety or defect remains. Please provide detailed and explicit guidance on the best method and suitable Urdu words for obtaining this Sunnah divorce.

The Answer: In this writing, the phrases 'affairs are in her hands', 'made her the authority', 'excluded from marriage', 'to be free' are all metaphors. It is a state of contentment, not anger, nor a discussion of divorce. In a state of contentment, all words are dependent on the husband's intention. Karima should give herself one divorce, saying: "By virtue of the general authority given to me by my husband, I give myself one divorce from my husband." Then Zahid Ali should be asked: "When you wrote those words, was it your intention to give her the authority of divorce or not?" If he admits it, then well and good. If he denies it, he should be put under oath. If he swears that it was not his intention, then no divorce will occur. If he swears falsely, the burden will be on him. If he refuses to swear, the divorce will occur, and in both cases, it will be a 'Ba'in' (irrevocable) divorce. The woman will be out of the marriage. If there has been no consummation yet, then she can remarry whomever she wishes immediately, otherwise after the waiting period (Iddat). And Allah knows best.

Question 37: From Rampur, Kothi Chirya Khana, sent by Hussain Ahmed Sahib Daf'adar, 22 Safar 1338 AH. What do the scholars of religion say in this matter that the marriage of Mst. Hinda daughter of Zaid was performed with Bakr on these conditions? Accordingly, an agreement was written by Bakr at the same time after the marriage stated that he would have 2 tolas of gold earrings and a 4 masha nose-ring made within a period of six months, otherwise there is divorce. Hinda returned to her father Zaid's house upon the expiry of the mentioned period. The agreement bears the signatures of witnesses Umar, Khalid, etc., relatives of Bakr, and the thumbprint (as 'Al-Abd') of Bakr. So, in this situation, has divorce occurred or not?

The Answer: A copy of the agreement was also observed. In it too, the wording is "otherwise there is divorce". It is not stated who is divorced. Therefore, in the

inquired situation, apparently since he did not provide these things within six months, one...

स्वाभाविक लज्जा और आत्मसम्मान के कारण वह अपने आंतरिक कष्ट और संताप को किसी पर व्यक्त नहीं करती, लेकिन वह घुलती जा रही है। चूँकि करीमा अभी कम उम्र और जवान है, सैयद अब्दुल्ला और अन्य रिश्तेदारों का विचार है कि बशर्ते मम्मात करीमा की सहमति हो, उसे सुन्नत के अनुसार तलाक दिलाकर किसी उपयुक्त स्थान पर उसका पुनर्विवाह कर दिया जाए। अतः इस आवश्यकता के लिए मार्गदर्शन माँगा गया है कि उर्दू के कुछ ऐसे वाक्यांश या वाक्य बताए जाएँ जिन्हें मुसमात करीमा स्वयं अपनी जुबान से कुछ लोगों के सामने कहकर सुन्नत तलाक प्राप्त कर ले, जिससे कोई शरई दोष या कमी शेष न रहे। सुन्नत तलाक प्राप्त करने की सर्वोत्तम विधि और उपयुक्त उर्दू शब्दों के बारे में विस्तृत और स्पष्ट मार्गदर्शन प्रदान किया जाए।

उत्तर: इस लेख में 'मामले उसके हाथ में हैं', 'अधिकार दे दिया', 'निकाह से बाहर होना', 'आज़ाद होना' जितने भी शब्द हैं, वे सब परोक्ष (किनाया) हैं। यह प्रसन्नता की अवस्था है, न कि क्रोध की और न ही तलाक की चर्चा है। प्रसन्नता की अवस्था में सभी शब्द पति की नियत (इरादे) पर निर्भर करते हैं। करीमा स्वयं को एक तलाक दे और कहे: "मेरे पति ने मुझे जो सामान्य अधिकार दिया है, उसके आधार पर मैं स्वयं को पति की ओर से एक तलाक देती हूँ।" इसके बाद ज़ाहिद अली से पूछा जाए कि: "तुमने जो शब्द लिखे थे, क्या उनमें उसे तलाक का अधिकार देने की तुम्हारी नियत थी या नहीं?" यदि वह स्वीकार कर ले तो ठीक है। और यदि वह इनकार करे तो उसे शपथ दिलाई जाए। यदि वह शपथ ले ले कि मेरी नियत यह नहीं थी, तो तलाक नहीं होगा। यदि वह झूठी शपथ लेगा तो उसका पाप उस पर होगा। और यदि वह शपथ लेने से इनकार कर देगा तो तलाक हो जाएगा, और दोनों ही स्थितियों में यह 'बाइन' (अपरिवर्तनीय) तलाक होगा। स्त्री निकाह से बाहर हो जाएगी। यदि अभी तक संभोग (खलवत) नहीं हुआ था तो वह तुरंत, अन्यथा इद्दत (प्रतीक्षा अवधि) के बाद जिससे चाहे निकाह कर सकती है। और अल्लाह बेहतर जानता है।

मसला ३७: रामपुर, कोठी चिड़ियाखाना से प्रेषित, हुसैन अहमद साहब दफ़ेदार, २२ सफ़र १३३८ हिजरी। धर्म के विद्वान इस मामले में क्या कहते हैं कि मुसमात हिंदा पुत्री ज़ैद का विवाह बक्र के साथ इन शर्तों पर हुआ था। तदनुसार, बक्र द्वारा विवाह के तुरंत बाद एक इकरारनामा लिखा गया कि मैं छह महीने की अवधि के भीतर २ तोले की सोने की बाली और ४ माशे की नथनी बनवा दूँगा, अन्यथा तलाक है। हिंदा उक्त अवधि बीतने पर अपने पिता ज़ैद के घर चली आई। इकरारनामे पर बक्र के

रिश्तेदारों उमर, खालिद आदि की गवाही और बक्र के अंगूठे का निशान (अल-अब्द के रूप में) मौजूद है। तो, इस स्थिति में तलाक हुआ या नहीं?

उत्तर: इकरारनामे की प्रति भी देखी गई। इसमें भी यही शब्द है कि "अन्यथा तलाक है"। यह नहीं बताया गया है कि किसे तलाक है। अतः पूछताछ की गई स्थिति में, प्रत्यक्ष रूप से चूँकि उसने छह महीने के भीतर ये चीज़ें नहीं बनवा कर दीं, एक...

पृष्ठ 654 का 688

بوجہ شرم و غیرت خلقی کے کوفت وسوخت درونی کا کسی پر اظہار نہیں کرتی مگر تحلیل ہوتی جاتی ہے، چونکہ کریما ہنوز نو عمر و جوان ہے سید عبداللہ و نیز دیگر اعزاء کا خیال ہے کہ بشرط رضا مندی مسماۃ کریما اس سے طلاق مسنونہ دلا کر دوسری جگہ مناسب پر اس کا نکاح کر دیا جائے، پس اس ضرورت سے ہدایت خواہ ہوں کہ ایسے الفاظ اُردو کا کوئی فقرہ یا چند فقرات بتائے جائیں جس کو مسماۃ کریما اپنی زبان سے روبرو چند لوگوں کے ادا کر کے طلاق مسنونہ حاصل کر کے جس میں کوئی قباحت و سقم شرعی باقی نہ رہے، اس طلاق مسنونہ حاصل کرنے کے متعلق جو طریقہ عمدہ ہو اور جو جو الفاظ اُردو مناسب ہوں اس سے مفصلاً و تصریحاً ہدایت فرمائی جائے۔

الجواب: اس تحریر میں امر ہا بیدھا مختار کر دیا نکاح سے خارج ہونا آزاد ہونا جتنے الفاظ ہیں سب کنایہ ہیں اور حالتِ رضا ہے نہ غضب ہے نہ مذاکرہ طلاق، اور حالتِ رضا میں جملہ الفاظ نیت زوج پر موقوف رہتے ہیں، کریما اپنے آپ کو ایک طلاق دے کہ میں نے بحکم اس اختیار عام کے جو میرے شوہر نے مجھے دیا اپنے آپ کو شوہر کی طرف سے ایک طلاق دی اس پر زاہد علی سے دریافت کیا جائے کہ تو نے جو وہ الفاظ لکھے اُن میں طلاق کا اختیار دینے کی تیری نیت تھی یا نہیں، اگر وہ اقرار کرے فبہا، اور اگر انکار کرے تو اس پر حلف رکھا جائے، اگر حلف کر لے کہ میری نیت یہ نہ تھی تو طلاق نہ ہوگی۔ اگر جھوٹا حلف کرے گا وبال اس پر ہے، اور اگر حلف سے انکار کر دے گا تو طلاق ہو جائے گی، اور دونوں صورتوں میں بائن ہوگی۔ عورت نکاح سے نکل جائے گی اگر اب تک خلوت نہ ہوئی تھی تو ابھی ورنہ بعد عدت جس سے چاہے نکاح کر سکتی ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

مسئلہ ۳۷: از رامپور کوٹھی چڑیا خانہ مرسلہ حسین احمد صاحب دفعدار ۲۲ صفر ۱۳۳۸ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ مسماۃ ہندہ بنت زید کا عقد بکر کے ساتھ اس شرائط سے ہوا چنانچہ ایک اقرار نامہ بکر نے اسی وقت بعد عقد مذکور کے لکھ دیا کہ ۲ تولہ کی بالی طلائی اور ۴ ماشہ کی نتھنی اندر میعاد چھ ماہ کے بنوادوں گا ورنہ طلاق ہے، ہندہ میعاد مذکور پر اپنے باپ زید کے گھر چلی آئی، اقرار نامہ پر عمر خالد وغیرہ رشتہ داران بکر کی گواہی اور بکر کے (العبد) انگوٹھے کے نشان موجود ہیں، پس اس صورت میں طلاق ہوئی یا نہیں؟

الجواب: اقرار نامہ کی نقل بھی ملاحظہ ہوئی اس میں بھی یہی لفظ ہے کہ "ورنہ طلاق ہے" یہ بیان نہیں کہ کس کو طلاق ہے، لہٰذا صورتِ مستفسرہ میں باعتبار ظاہر جبکہ اس نے چھ مہینے کے اندر یہ چیزیں بنوا کر نہ دیں ایک

Fatawa-e-Razvia Volume 12

It will be considered a revocable divorce (Talaq-e-Raji), meaning the husband will have the right to revoke it within the waiting period ('iddah). However, if Zaid takes an oath and says that by saying "it is a divorce" he did not intend to divorce Hindah, his statement will be accepted, and originally no ruling of divorce will be applied. If he takes a false oath, the sin will be upon him.

(Arabic)

He said to her: "Do not leave the house except with my permission, for I have sworn by divorce." She left, but no divorce occurs because he did not mention his oath regarding her divorce, and it is possible he swore by the divorce of another woman. So, the statement is his. (Radd al-Muhtar from al-Bazzaziyyah). And Allah Almighty knows best.

(Urdu)

If a husband says to his wife, "Do not leave the house without my permission because I have taken an oath of divorce," and the wife leaves, the divorce will not take place. This is because he did not specify the oath of his wife's divorce, while it could be an oath regarding some other woman's divorce. Therefore, the husband's word will be considered credible here, as quoted in Radd al-Muhtar from Bazzaziyyah. And Allah Almighty knows best (T).

Issue 328: 30 Jumada al-Ula 1311 AH What do the scholars of religion say regarding this issue? Zaid lived at the house of his mother-in-law, Hindah. Hindah asked him to vacate the house; he refused. She wanted to throw out his belongings. He said, "If you throw my belongings, I will divorce your daughter." On this, two men and one woman testify that Zaid gave the divorce in front of them. However, two other men say he only said, "If you throw the belongings, I will give the divorce," and neither were the belongings thrown, nor did he give the divorce. Zaid also denies giving the divorce. In this situation, is the divorce established or not? Clarify and be rewarded.

Answer: Regarding those two men and one woman who claimed the divorce occurred: it was found about one man that he is an unrestrained person, to the extent that he is not even punctual with prayers. Another man, who previously said [he saw it], now denies it, saying, "Divorce was not given in front of me; I was saying what I had heard." And the reliability (adalah) of that woman is not known; even if it were, she is just one woman.

1 Radd al-Muhtar, Bab al-Sareeh, Dar Ihya al-Turath al-Arabi, Beirut, 3/269. Page 655 of 688

फ़तावा-ए-रजविया जिल्द 12

इसे प्रतिसंहरणीय तलाक (तलाक-ए-रजई) माना जाएगा, यानी इद्दत की अवधि के भीतर पति को इसे वापस लेने का अधिकार होगा। लेकिन अगर ज़ैद कसम खाकर कहे कि "तलाक है" कहने से उसका इरादा हिन्दा को तलाक देना नहीं था, तो उसकी बात मान ली जाएगी और मूल रूप से तलाक का कोई फैसला नहीं होगा। यदि वह झूठी कसम खाएगा, तो उसका पाप उसी पर होगा।

(अरबी)

उसने उससे कहा: "मेरी अनुमति के बिना घर से बाहर मत निकलना, क्योंकि मैंने तलाक की कसम खाई है।" वह चली गई, लेकिन तलाक नहीं होता क्योंकि उसने उसके तलाक के संबंध में अपनी कसम का उल्लेख नहीं किया, और यह संभव है कि उसने किसी अन्य महिला के तलाक की कसम खाई हो। इसलिए, बयान उसी का माना जाएगा। (रद्द अल-मुह्तार, अल-बज्जाज़िया से)। और अल्लाह सर्वशक्तिमान सबसे बेहतर जानता है।

(उर्दू)

यदि पति अपनी पत्नी से कहे कि "मेरी अनुमति के बिना घर से मत निकलना क्योंकि मैंने तलाक की कसम खाई है," और पत्नी बाहर चली जाए, तो तलाक नहीं होगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि उसने अपनी पत्नी के तलाक की कसम का विशेष रूप से उल्लेख नहीं किया, जबकि यह किसी अन्य महिला के तलाक की कसम हो सकती है। इसलिए, यहाँ पति की बात विश्वसनीय मानी जाएगी, जैसा कि बज्जाज़िया के हवाले से रद्द अल-मुह्तार में उद्धृत है। और अल्लाह सर्वशक्तिमान बेहतर जानता है (टी)।

मसला 328: 30 जमादी अल-उला 1311 हिजरी धर्म के विद्वान इस मसले में क्या कहते हैं? ज़ैद अपनी सास हिन्दा के यहाँ रहता था। हिन्दा ने उससे घर खाली करने को कहा; उसने इनकार कर दिया। वह उसका सामान बाहर फेंकना चाहती थी। उसने कहा, "अगर तुम मेरा सामान फेंकोगी तो मैं तुम्हारी लड़की को तलाक दे दूँगा।" इस पर दो पुरुष और एक महिला गवाही देते हैं कि ज़ैद ने हमारे सामने तलाक दे दिया। लेकिन, दो अन्य पुरुष कहते हैं कि उसने केवल यह कहा था कि "अगर माल फेंका तो तलाक दे दूँगा," न तो माल फेंका गया और न ही उसने तलाक दिया। ज़ैद भी तलाक देने से इनकार करता है। इस स्थिति में, क्या तलाक सिद्ध होता है या नहीं? स्पष्ट करें और पुण्य प्राप्त करें।

उत्तर: उन दो पुरुषों और एक महिला के संबंध में जिन्होंने तलाक का दावा किया था: एक पुरुष के बारे में पता चला कि वह एक स्वच्छंद व्यक्ति है, यहाँ तक कि वह नमाज़ का भी पाबंद नहीं है। दूसरा पुरुष, जो पहले कहता था [उसने देखा], अब इनकार करता है और कहता है कि "मेरे सामने तलाक नहीं दिया गया; मैं सुनी-सुनाई बात कह रहा था।" और उस महिला की विश्वसनीयता (अदालत) ज्ञात नहीं है; और यदि होती भी, तो वह केवल एक महिला है।

---

1 रद्द अल-मुह्तार, बाब अल-सरीह, दार इहया अल-तुराथ अल-अरबी, बेरूत, 3/269। पृष्ठ 688 में से 655

طلاق رجعی سمجھی جائے گی کہ عدّت کے اندر شوہر کو رجعت کا اختیار ہوگا لیکن اگر زید قسم کھا کر کہہ دے کہ اس نے "طلاق ہے" سے ہندہ کو طلاق دینا مراد نہ لیا تھا اس کی بات مان لی جائے اور اصلاً حکم طلاق نہ ہوگا، اگر جھوٹی قسم کھائے گا وبال اس پر رہے گا،

(عربی)

قال لها لاتخرجی من الدار الا باذنی فانی حلفت بالطلاق فخرجت لایقع لعدم ذکر حلفہ بطلاقها ویحتمل الحلف بطلاق غیرها فالقول لہ (ردالمحتار عن البزازیہ) واللہ تعالی اعلم۔

(اردو)

خاوند نے اگر بیوی کو کہا کہ میری اجازت کے بغیر گھر سے نہ نکل کیونکہ میں نے طلاق کی قسم کھائی ہے، تو اگر بیوی باہر نکل جائے تو طلاق نہ ہوگی کیونکہ اس نے بیوی کی طلاق کی قسم کا ذکر نہیں کیا جبکہ دوسری کسی عورت کی طلاق کی قسم ہوسکتی ہے، لہٰذا یہاں خاوند کی بات معتبر ہوگی، جیسا کہ ردالمختار میں بزازیہ سے منقول ہے۔ واللہ تعالٰی اعلم (ت)

مسئلہ ۳۲۸: ۳۰ جمادی الاولٰی ۱۳۱۱ھ کیا فرماتے ہیں علمائے دین اس مسئلہ میں کہ زید اپنی ساس ہندہ کے یہاں رہتا تھا ہندہ نے اس سے مکان خالی کرنے کو کہا اس نے انکار کیا اس نے اس کا اسباب پھینک دینا چاہا اُس نے کہا اگر میرا اسباب پھینکوگی تو میں تمہاری لڑکی کو طلاق دے دوں گا، اس پر دو مرد اور ایک عورت تو یہ گواہی دیتے ہیں کہ زید نے ہمارے سامنے طلاق دے دی، اور دو مرد کہتے ہیں اس نے صرف یہ کہا کہ مال پھینکا تو طلاق دے دونگا نہ اس نے پھینکا نہ اس نے طلاق دی، زید بھی طلاق دینے سے انکار کرتا ہے، اس صورت میں طلاق ثابت ہے یا نہیں؟ بینوا توجروا

الجواب: ان دو مَردوں اور ایک عورت جو مدعیِ طلاق تھے ایک مرد کی نسبت معلوم ہوا کہ بے قید آدمی ہے یہاں تک کہ نماز کا بھی پابند نہیں، اور ایک مرد پہلے کہتا تھا اب وہ منکر ہے کہ میرے سامنے طلاق نہ دی میں سنی سنائی کہتا تھا اور اس عورت کی عدالت معلوم نہیں، اور ہو بھی تو ایک عورت کی

---

۱ ردالمحتار باب الصریح دار احیاء التراث العربی بیروت ۳ / ۲۶۹ Page 655 of 688

Fatawa Razawiyya Volume Twelve

Proof is not established through testimony, and Zaid has stated before us under a Shari'a oath: "I never gave a divorce; I only said that if you throw the wealth away, I will give a divorce." Therefore, in this case, divorce is not proven. And Allah Almighty knows best.

Note: The final topic of this volume is "Chapter on Delegation of Divorce" (Bab Tafwid al-Talaq); the thirteenth volume will begin with the "Chapter on Conditional Divorce" (Bab Ta'liq al-Talaq).

Page 656 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

गवाही से प्रमाण सिद्ध नहीं होता और ज़ैद ने हमारे सामने शरई शपथ के साथ कहा कि "मैंने हरगिज़ तलाक़ नहीं दी, मैंने सिर्फ इतना कहा था कि यदि तुम माल फेंकोगी तो तलाक़ दे दूँगा।" अतः इस स्थिति में तलाक़ साबित नहीं होती। और अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है।

नोट: इस जिल्द का अंतिम शीर्षक "बाब तफ़वीज़ अल-तलाक़" (तलाक़ सौंपने का अध्याय) है, तेरहवीं जिल्द का प्रारंभ "बाब तअलीक़ अल-तलाक़" (शर्त पर आधारित तलाक़ का अध्याय) से होगा।

पेज 656 / 688

فتاویٰ رضویہ جلددو از دہم

گواہی سے ثبوت نہیں ہوتا اور زید نے ہمارے سامنے حلفِ شرعی کے ساتھ کہا کہ میں نے ہرگز طلاق نہ دی میں نے صرف اتنا کہا تھا کہ مال پھینکو گی تو طلاق دے دوں گا، پس اس صورت میں طلاق ثابت نہیں۔ واللہ تعالٰی اعلم۔

نوٹ: اس جلد کا آخری عنوان "باب تفویض الطلاق" ہے، تیرھویں جلد کا آغاز "باب تعلیق الطلاق" سے ہوگا،

Volume Twelve Fatawa Razawiyya

Sources and References

No. | Book Name | Author | Hijri Year of Death

1. Al-Ajza fi al-Hadith | Abd al-Rahman bin Umar bin Muhammad al-Baghdadi known as al-Nahhas | 416
2. Al-Ajnas fi al-Furu' | Abu al-Abbas Ahmad bin Muhammad al-Natafi al-Hanafi | 446
3. Al-Ikhtiyar Sharh al-Mukhtar | Abdullah bin Mahmud (bin Mawdud) al-Hanafi | 683
4. Al-Adab al-Mufrad li al-Bukhari | Muhammad bin Ismail al-Bukhari | 256
5. Irshad al-Sari Sharh al-Bukhari | Shihab al-Din Ahmad bin Muhammad al-Qastallani | 923
6. Irshad al-Aql al-Salim | Abu al-Sa'ud Muhammad bin Muhammad al-Imadi | 951
7. Al-Arkan al-Arba' | Maulana Abd al-Ali Bahr al-Ulum | 1225
8. Al-Ashbah wa al-Naza'ir | Sheikh Zayn al-Din bin Ibrahim bin Nujaym | 970
9. Ash'at al-Lam'at Sharh al-Mishkat | Sheikh Abd al-Haq Muhaddith Dehlawi | 1052
10. Usul al-Bazdawi | Ali bin Muhammad al-Bazdawi | 482
11. Al-Islah wa al-Idah li al-Wiqaya fi al-Furu' | Ahmad bin Sulayman bin Kamal Pasha | 940
12. Akam al-Marjan fi Ahkam al-Jann | Qadi Badr al-Din Muhammad bin Abdullah al-Shibli | 769
13. Anfa' al-Wasa'il ila Tahrir al-Masa'il | Qadi Burhan al-Din Ibrahim bin Ali al-Tarsusi al-Hanafi | 758
14. Imdad al-Fattah Sharh Nur al-Idah | Hasan bin Ammar al-Shurunbulali | 1069
15. Al-Anwar li-Amal al-Abrar | Imam Yusuf al-Ardabili al-Shafi'i | 799

जिल्द बारहवीं फ़तावा रज़विय्या

स्रोत्र और सन्दर्भ

नंबर | किताब का नाम | लेखक | हिजरी मृत्यु वर्ष

1. अल-अजज़ा फ़िल हदीस | अब्दुर्रहमान बिन उमर बिन मुहम्मद अल-बग़दादी अल-मारूफ बिल-नहस | 416
2. अल-अजनास फ़िल फ़ुरूं| अबुल अब्बास अहमद बिन मुहम्मद अन-नातफ़ी अल-हनफ़ी | 446
3. अल-इख़्तियार शरह अल-मुख़्तार | अब्दुल्लाह बिन महमूद (बिन मौदूद) अल-हनफ़ी | 683
4. अल-अदब अल-मुफ़रद लिल बुखारी | मुहम्मद बिन इस्माइल अल-बुखारी | 256
5. इर्शाद अस-सारी शरह अल-बुखारी | शिहाब-उद-दीन अहमद बिन मुहम्मद अल-क़स्तलानी | 923
6. इर्शाद अल-अक्ल अल-सलीम | अबू सऊद मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-इमादी | 951
7. अल-अरकान अल-अर्बा | मौलाना अब्दुल अली बहरुल उलूम | 1225
8. अल-अशबाह वन-नज़ायर | शैख़ ज़ैन-उद-दीन बिन इब्राहीम इब्न-ए-नजीम | 970
9. अशिअत अल-लमआत शरह अल-मिशकात | शैख़ अब्दुल हक़ मोहद्दिस देहलवी | 1052
10. उसूल अल-बज़दवी | अली बिन मुहम्मद अल-बज़दवी | 482
11. अल-इस्लाह वल-ईज़ाह लिल विक़ाया फ़िल फ़ुरूं| अहमद बिन सुलेमान बिन कमाल पाशा | 940
12. आकाम अल-मर्जान फ़ी अहकाम अल-जान | क़ाज़ी बद्र-उद-दीन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अल-शिबली | 769
13. अन्फ़ा अल-वसायल इला तहरीर अल-मसायल | क़ाज़ी बुरहान-उद-दीन इब्राहीम बिन अली अल-तरसूसी अल-हनफ़ी | 758
14. इमदाद अल-फ़त्ताह शरह नूरुल ईज़ाह | हसन बिन अम्मार अल-शुरुनबुलाली | 1069
15. अल-अनवार ली अमल अल-अबरार | इमाम यूसुफ़ अल-अरदबेली अल-शाफ़ई | 799

पेज 657 ऑफ़ 688

جلد دوازدہم فتاویٰ رضویہ

مآخذ و مراجع

نمبر | نام کتاب | مصنف | سن وفات ہجری

۱۔ الاجزاء في الحديث | عبدالرحمن بن عمر بن محمد البغدادی المعروف بالنحاس | ۴۱۶ ۲۔ الاجناس في الفروع | ابوالعباس احمد بن محمد الناطفی الحنفی | ۴۴۶ ۳۔ الاختیار شرح المختار | عبداللہ بن محمود (بن مودود) الحنفی | ۶۸۳ ۴۔ الادب المفرد للبخاری | محمد بن اسماعیل البخاری | ۲۵۶ ۵۔ ارشاد الساری شرح البخاری | شہاب الدین احمد بن محمد القسطلانی | ۹۲۳ ۶۔ ارشاد العقل السلیم | ابوسعود محمد بن محمد العمادی | ۹۵۱ ۷۔ الارکان الاربع | مولانا عبدالعلی بحرالعلوم | ۱۲۲۵ ۸۔ الاشباہ والنظائر | شیخ زین الدین بن ابراہیم بابن نجیم | ۹۷۰ ۹۔ اشعۃ اللمعات شرح المشکوۃ | شیخ عبدالحق المحدث الدہلوی | ۱۰۵۲ ۱۰۔ اصول البزدوی | علی بن محمد البزدوی | ۴۸۲ ۱۱۔ الاصلاح والایضاح للوقایۃ فی الفروع | احمد بن سلیمان بن کمال پاشا | ۹۴۰ ۱۲۔ آکام المرجان فی احکام الجان | قاضی بدر الدین محمد بن عبد اللہ الشبلی | ۷۶۹ ۱۳۔ انفع الوسائل الی تحریر المسائل | قاضی برہان الدین ابراہیم بن علی الطر سوسی الحنفی | ۷۵۸ ۱۴۔ امداد الفتاح شرح نور الایضاح | حسن بن عمار الشرنبلالی | ۱۰۶۹ ۱۵۔ الانوار لعمل الابرار | امام یوسف الاردبیلی الشافعی | ۷۹۹

صفحہ ۶۵۷ از ۶۸۸

Fatawa Rizvia Volume Twelve

1. Amali fi al-Hadith - Abdul Malik bin Muhammad bin Muhammad Bishran - 432
2. Al-Ijaz fi al-Hadith - Ahmad bin Muhammad, known as Ibn al-Sunni - 364
3. Alqab al-Ruwat - Ahmad bin Abdul Rahman al-Shirazi - 407
4. Al-Asl (Mabsut) - Abu Abdullah Muhammad bin Hasan al-Shaybani - 189
5. Akhbar Madina - Muhammad bin Hasan al-Madani Ibn Zubalah - 200
6. Al-Umm - Muhammad bin Idris al-Shafi'i - 202
7. Akhbar Madina - Zubair ibn Bakkar al-Zubayri - 256
8. Amthal al-Nabi (PBUH) - Al-Hasan bin Abdur Rahman al-Ramahurmuzi - 360
9. Arba'in lil-Hakim - Abu Abdullah Muhammad bin Abdullah al-Nisapuri - 405
10. Ihya al-Ulum - Imam Muhammad bin Muhammad al-Ghazali - 505
11. Arba'in Nawawi - Muhiuddin Yahya bin Sharaf al-Nawawi al-Shafi'i - 676
12. Al-Adhkar al-Muntakhaba min Kalam Sayyid al-Abrar Abu Zakariyya Yahya Sharaf al-Nawawi - 676
13. Usd al-Ghaba fi Ma'rifat al-Sahaba - Ali bin Muhammad Ibn Athir al-Shaybani - 630
14. Alfiyat al-Iraqi fi Usul al-Hadith - Imam Zayn al-Din Abdur Rahim bin al-Husayn al-Iraqi - 806
15. Al-Isaba fi Tamyiz al-Sahaba - Shihab al-Din Ahmad bin Ali bin Hajar al-Asqalani - 852
16. Unmudhaj al-Ulum - Allama Jalal al-Din Muhammad bin As'ad al-Dawani - 903
17. Al-Itqan Jalal al-Din - Abdur Rahman bin Kamal al-Din al-Suyuti - 911
18. I'lam bi Qawati' al-Islam - Ahmad bin Hajar al-Haytami al-Makki - 974
19. Al-Asrar al-Marfu'a fi al-Akhbar al-Mawdu'a - Nur al-Din Ali bin Sultan Muhammad al-Qari (Mulla Ali al-Qari) - 1014
20. Al-Intibah fi Salasil Awliya - Shah Waliullah bin Abdur Rahim - 1179
21. Ithaf al-Sada al-Muttaqin - Sayyid Muhammad bin Muhammad Murtada al-Zabidi - 1205
22. Injäh al-Häjah Häshiya Sunan Ibn Mäjah - Abdul Ghani al-Dahlawi al-Madani - 1273
23. I'anat al-Talibin - Sayyid Muhammad Shata al-Dimyati
24. Al-Isharat Ibn Sina - Abu Ali Hasan bin Abdullah, famous as Ibn Sina - 428

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

1. अमाली फ़िल हदीस - अब्दुल मलिक बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद बिशरान - 432
2. अल-ईजाज़ फ़िल हदीस - अहमद बिन मुहम्मद, जिन्हें इब्न अस-सुन्नी के नाम से जाना जाता है - 364
3. अल्काब अर-रुवात - अहमद बिन अब्दुर रहमान अल-शिराज़ी - 407
4. अल-अस्ल (मबसूत) - अबू अब्दुल्ला मुहम्मद बिन हसन अल-शैबानी - 189
5. अख़बार मदीना - मुहम्मद बिन हसन अल-मदनी इब्न ज़ुबाला - 200
6. अल-उम्म - मुहम्मद बिन इदरीस अल-शाफ़ई - 202
7. अख़बार मदीना - ज़ुबैर इब्न बक्कर अल-ज़ुबैरी - 256
8. अमसाल अन-नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) - अल-हसन बिन अब्दुर रहमान अल-रामहुर्मुज़ी - 360
9. अरबईन लिल हाकिम - अबू अब्दुल्ला मुहम्मद बिन अब्दुल्ला निशापूरी - 405
10. इहया अल-उलूम - इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-ग़ज़ाली - 505
11. अरबईन नववी - मुहियुद्दीन याह्या बिन शरफ़ अल-नववी अल-शाफ़ई - 676
12. अल-अज़कार अल-मुंतख़बा मिन कलाम सैय्यद अल-अबरार अबू ज़कारिया याह्या शरफ़ अल-नववी - 676
13. उस्द अल-ग़ाबा फ़ी मा'रिफ़त अस-सहाबा - अली बिन मुहम्मद इब्न असीर अल-शैबानी - 630
14. अल्फ़ियत अल-इराकी फ़ी उसूल अल-हदीस - इमाम ज़ैनुद्दीन अब्दुर रहीम बिन अल-हुसैन अल-इराकी - 806
15. अल-इसाबा फ़ी तमयीज़ अस-सहाबा - शिहाब अल-दीन अहमद बिन अली बिन हजर अल-अस्क़लानी - 852
16. उनमूज़ज अल-उलूम - अल्लामा जलालुद्दीन मुहम्मद बिन असद अद-दवानी - 903
17. अल-इतकान जलालुद्दीन - अब्दुर रहमान बिन कमालुद्दीन अल-सुयूती - 911
18. इ'लाम बि कवाति' अल-इस्लाम - अहमद बिन हजर अल-हैतमी अल-मक्की - 974
19. अल-असरार अल-मर्फ़ुआ फ़िल अख़बार अल-मौज़ूआ - नूरुद्दीन अली बिन सुल्तान मुहम्मद अल-क़ारी (मुल्ला अली अल-क़ारी) - 1014
20. अल-इंतिबाह फ़ी सलासिल औलिया - शाह वलीउल्लाह बिन अब्दुर रहीम - 1179

21. इत्हाफ़ अल-सादा अल-मुत्तकीन - सैय्यद मुहम्मद बिन मुहम्मद मुर्तज़ा अल-ज़ुबैदी - 1205
22. इंजाअ अल-हाजा हाशिया सुनन इब्न माजा - अब्दुल ग़नी अल-दहलवी अल-मदनी - 1273
23. इआनत अल-तालिबीन - सैय्यद मुहम्मद शत्ता अल-दिम्याती
24. अल-इशारात इब्न सीना - अबू अली हसन बिन अब्दुल्ला, जो इब्न सीना के नाम से मशहूर हैं - 428

فتاوٰی رضویہ جلد دو ازدہم

۱۶ - امالی فی الحدیث - عبدالملک بن محمد بن محمد بشران - ۴۳۲ ۱۷ - الایجاز فی الحدیث - احمد بن محمد المعروف بابن السنی - ۳۶۴ ۱۸ - القاب الروات - احمد بن عبدالرحمن الشیرازی - ۴۰۷ ۱۹ - الاصل (مبسوط) - ابو عبد اللہ محمد بن حسن الشیبانی - ۱۸۹ ۲۰ - اخبار مدینہ - محمد بن حسن المدنی ابن زبالہ - ۲۰۰ ۲۱ - الام - محمد بن ادریس الشافعی - ۲۰۲ ۲۲ - اخبار مدینہ - زبیر ابن بکار الزبیری - ۲۵۶ ۲۳ - امثال النبی صلی اللہ علیہ وسلم - الحسن بن عبدالرحمن الرامهرمزی - ۳۶۰ ۲۴ - اربعین للحاکم - ابو عبد اللہ محمد بن عبد اللہ نیشاپوری - ۴۰۵ ۲۵ - احیاء العلوم - امام محمد بن محمد الغزالی - ۵۰۵ ۲۶ - اربعین نووی - محی الدین یحییٰ بن شرف النووی الشافعی - ۶۷۶ ۲۷ - الاذکار المنتخبه من کلام سید الابرار ابو زکریا یحیی شرف النووی - ۶۷۶ ۲۸ - اسد الغابة فی معرفة الصحابة - علی بن محمد ابن اثیر الشیبانی - ۶۳۰ ۲۹ - الفیة العراقی فی اصول الحدیث - امام زین الدین عبدالرحیم بن الحسین العراقی - ۸۰۶ ۳۰ - الاصابة فی تمییز الصحابة - شہاب الدین احمد بن علی بن حجر عسقلانی - ۸۵۲ ۳۱ - انموذج العلوم - علامہ جلال الدین محمد بن اسعد الدوانی - ۹۰۳ ۳۲ - الاتقان جلال الدین - عبدالرحمن بن کمال الدین السیوطی - ۹۱۱ ۳۳ - اعلام بقواطع الاسلام - احمد بن حجر الهیتمی المکی - ۹۷۴ ۳۴ - الاسرار المرفوعة فی الاخبار الموضوعه - نور الدین علی بن سلطان محمد القاری (ملا علی القاری) - ۱۰۱۴ ۳۵ - الانتباه فی سلاسل اولیاء - شاہ ولی اللہ بن عبدالرحیم - ۱۱۷۹ ۳۶ - اتحاف السادة المتقین - سید محمد بن محمد مرتضی الزبیدی - ۱۲۰۵ ۳۷ - انجاح الحاجة حاشیة سنن ابن ماجه - عبدالغنی الدہلوی المدنی - ۱۲۷۳ ۳۸ - اعانة الطالبین - سید محمد شطأ الدمیاطی ۳۹ - الاشارات ابن سینا - ابو علی حسن بن عبد اللہ الشہیر بابن سینا - ۴۲۸

Fatawa Razawiyyah Volume 12

1. Al-Isharat Ibn Sina - Abu Ali Hasan bin Abdullah Ash-Shaykh bin Sina - 428

B (Letter 'Ba') 40. Bada'i' al-Sana'i' - Ala al-Din Abi Bakr bin Mas'ud al-Kasani - 587 41. Al-Hidayah (Bidayat al-Mubtadi) - Ali bin Abi Bakr al-Marghinani - 593 42. Al-Bahr al-Ra'iq - Shaykh Zayn al-Din bin Ibrahim bin Nujaym - 970 43. Al-Burhan Sharh Mawahib al-Rahman - Ibrahim bin Musa al-Tarabulusi - 922 44. Bustan al-Arifin - Faqih Abu al-Layth Nasr bin Muhammad al-Samarqandi - 372 45. Al-Basit fi al-Furu' - Hujjat al-Islam Muhammad bin Muhammad al-Ghazali - 505 46. Al-Binayah Sharh al-Hidayah - Imam Badr al-Din Abu Muhammad al-'Ayni - 855 47. Bahjat al-Asrar - Yusuf bin Jarir al-Lakhmi al-Shattanufi - 713 48. Bulugh al-Maram - Ahmad bin Ali ibn Hajar al-Asqalani - 852 49. Bustan al-Muhaddithin - Shah Abd al-Aziz bin Shah Waliullah - 1239 50. Barahin-e-Qati'ah - Rashid Ahmad Gangohi - 1905 AD

T (Letter 'Ta') 51. Taj al-Arus - Sayyid Muhammad Murtada al-Zabidi - 1205 52. Tarikh Ibn Asakir - Ali bin al-Hasan al-Dimashqi ibn Asakir - 715 53. Tarikh al-Bukhari - Muhammad bin Ismail al-Bukhari - 256 54. Al-Tajnis wa al-Mazid - Burhan al-Din Ali bin Abi Bakr al-Marghinani - 593 55. Tahrir al-Usul - Kamal al-Din Muhammad bin Abd al-Wahid ibn al-Humam - 861 56. Tuhfat al-Fuqaha - Imam Ala al-Din Muhammad bin Ahmad al-Samarqandi - 520 57. Tahqiq al-Husami - Abd al-Aziz bin Ahmad al-Bukhari - 730 58. Al-Tarjih wa al-Tashih 'ala al-Quduri - Allamah Qasim bin Qutlubugha al-Hanafi - 879 59. Al-Ta'rifat li Sayyid Sharif - Sayyid Sharif Ali bin Muhammad al-Jurjani - 816 60. Al-Tamhid lima fi al-Muwatta min al-Ma'ani wa al-Asanid - Yusuf bin Abdullah ibn Abd al-Barr al-Andalusi - 463

फतावा रज़विया, खंड 12

1. अल-इशारात इब्न सीना - अबू अली हसन बिन अब्दुल्लाह अल-शेख बिन सीना - 428

ब (अक्षर 'बा') 40. बदाइ अल-सनाइट - अला अल-दीन अबी बक्र बिन मसूद अल-कासानी - 587 41. अल-हिदाया (बिदायत अल-मुब्तदी) - अली बिन अबी बक्र अल-मरग़ीनानी - 593 42. अल-बह्र अल-रईक - शेख ज़ैन अल-दीन बिन इब्राहिम बिन नुजैम - 970 43. अल-बुर्हान शरह मवाहिब अल-रहमान - इब्राहिम बिन मूसा अल-तराबुलुसी - 922 44. बुस्तान अल-आरिफ़ीन - फ़क़ीह अबू अल-लैथ नसर बिन मोहम्मद अल-समरकंदी - 372 45. अल-बसीत फ़ी अल-फुरू - हुज्जतुल इस्लाम मोहम्मद बिन मोहम्मद अल-ग़ज़ाली - 505 46. अल-बिनाया शरह अल-हिदाया - इमाम बद्र अल-दीन अबू मोहम्मद अल-ऐनी - 855 47. बहजत अल-असरार - यूसुफ बिन जरीर अल-लखमी अल-शत्तनूफ़ी - 713 48. बुलूग़ अल-मराम - अहमद बिन अली इब्न हजर असकलानी - 852 49. बुस्तान अल-मुहद्दिसीन - शाह अब्दुल अज़ीज़ बिन शाह वलीउल्लाह - 1239 50. बराहीन-ए-क़ातिआ - रशीद अहमद गंगोही - 1905 ईस्वी

त (अक्षर 'ता') 51. ताज अल-अरूस - सैय्यद मोहम्मद मुर्तज़ा अल-ज़बीदी - 1205 52. तारीख़ इब्न असाकिर - अली बिन अल-हसन अल-दिमश्की इब्न असाकिर - 715 53. तारीख़ अल-बुखारी - मोहम्मद बिन इस्माइल अल-बुखारी - 256 54. अल-तजनीस वल मज़ीद - बुरहान अल-दीन अली बिन अबी बक्र अल-मरग़ीनानी - 593 55. तहरीर अल-उसूल - कमाल अल-दीन मोहम्मद बिन अब्दुल वाहिद इब्न अल-हुमाम - 861 56. तोहफ़त अल-फुक़हा - इमाम अला अल-दीन मोहम्मद बिन अहमद अल-समरकंदी - 520 57. तहक़ीक़ अल-हुसामी - अब्दुल अज़ीज़ बिन अहमद अल-बुखारी - 730 58. अल-तरजीह वत तसहीह अला अल-क़ुदूरी - अल्लामा क़ासिम बिन कुत्लूबुग़ा अल-हनफ़ी - 879 59. अल-ता'रीफ़ात ली सैय्यद शरीफ़ - सैय्यद शरीफ़ अली बिन मोहम्मद अल-जुरजानी - 816 60. अत-तमहीद लिमा फ़िल मुवत्त'आ मिनल मा'आनी वल असानीद - यूसुफ बिन अब्दुल्लाह इब्न अब्दुल बर अल-अंदालुसी - 463

पृष्ठ 659 का 688

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

۳۹۔ الاشارات ابن سینا ابو علی حسن بن عبداللہ الشیر بابن سینا ۴۲۸

ب ۴۰۔ بدائع الصنائع علاء الدین ابی بکر بن مسعود الکاسانی ۵۸۷ ۴۱۔ الہدایۃ (بدایۃ المبتدی) علی بن ابی بکر المرغینانی ۵۹۳ ۴۲۔ البحر الرائق شیخ زین الدین بن ابراھیم بابن نجیم ۹۷۰ ۴۳۔ البربان شرح مواہب الرحمان ابراھیم بن موسی الطرابلسی ۹۲۲ ۴۴۔ بستان العارفین فقیہ ابواللیث نصر بن محمد السمرقندی ۳۷۲ ۴۵۔ البسیط فی الفروع حجتہ الاسلام محمد بن محمد الغزالی ۵۰۵ ۴۶۔ البنایۃ شرح الہدایۃ امام بدرالدین ابو محمد العینی ۸۵۵ ۴۷۔ بہجۃ الاسرار یوسف بن جریر اللخمی الشطنوفی ۷۱۳ ۴۸۔ بلوغ المرام احمد بن علی ابن حجر عسقلانی ۸۵۲ ۴۹۔ بستان المحدثین شاہ عبدالعزیز بن شاہ ولی اللہ ۱۲۳۹ ۵۰۔ براہین قاطعہ رشید احمد گنگوہی ۱۹۰۵ء

ت ۵۱۔ تاج العروس سید محمد مرتضی الزبیدی ۱۲۰۵ ۵۲۔ تاریخ ابن عساکر علی بن الحسن الدمشقی بابن عساکر ۷۱۵ ۵۳۔ تاریخ البخاری محمد بن اسماعیل البخاری ۲۵۶ ۵۴۔ التجنیس والمزید برہان الدین علی بن ابی بکر المرغینانی ۵۹۳ ۵۵۔ تحریر الاصول کمال الدین محمد بن عبدالواحد بن الہمام ۸۶۱ ۵۶۔ تحفۃ الفقہاء امام علاء الدین محمد بن احمد السمرقندی ۵۲۰ ۵۷۔ تحقیق الحسامی عبدالعزیز بن احمد البخاری ۷۳۰ ۵۸۔ الترجیح والتصحیح علی القدوری علامہ قاسم بن قطلوبغا الحنفی ۸۷۹ ۵۹۔ التعریفات لسید شریف سید شریف علی بن محمد الجرجانی ۸۱۶ ۶۰۔ التمہید لما فی الموطأ من المعانی والاسانید یوسف بن عبداللہ ابن عبدالبر الاندلسی ۴۶۳

Fatawa Razawiyya, Volume 12

61- Tanbih al-Anam fi Adab al-Siyam 62- Tafsir al-Jalalayn — Allama Jalal al-Din al-Mahalli and Jalal al-Din al-Suyuti — 862-911 63- Tahdhib al-Tahdhib — Abu al-Fadl Ahmad bin Ali ibn Hajar al-Asqalani — 852 64- Tanzih al-Shari'ah al-Marfu'ah 'an al-Akhbar al-Shani'ah al-Mawdu'ah — Abu al-Hasan Ali bin Muhammad bin Iraq al-Kinani — 963 65- Tafsir Ibn Abi Hatim — Abd al-Rahman bin Muhammad al-Razi (Hafiz) — 327 66- Tahdhib al-Athar — Abu Ja'far Muhammad bin Muhammad bin Jarir — 310 67- Taqrib al-Qarib — Abu Zakariya Yahya bin Sharaf al-Nawawi — 911 68- Al-Taqrir wa al-Tahbir — Muhammad bin Muhammad ibn Amir al-Hajj al-Halabi — 879 69- Al-Taysir Sharh al-Jami' al-Saghir — Abd al-Rauf bin Taj al-Arifin bin Ali al-Munawi — 1031 70- Tabyin al-Haqa'iq — Fakhr al-Din 'Uthman bin Ali al-Zayla'i — 743 71- Taqrib al-Tahdhib — Shihab al-Din Ahmad bin Ali ibn Hajar al-Asqalani — 852 72- Tanwir al-Miqyas — Abu Tahir Muhammad bin Ya'qub al-Fayruzabadi — 817 73- Tanwir al-Absar — Shams al-Din Muhammad bin Abdullah bin Ahmad al-Tumurtashi — 1004 74- Ta'zim al-Salat — Muhammad bin Nasr al-Marwazi — 294 75- Tarikh Baghdad — Abu Bakr Ahmad bin Ali al-Khatib al-Baghdadi — 463 76- Al-Tawshih fi Sharh al-Hidayah — 'Umar bin Ishaq al-Siraj al-Hindi — 773 77- Tarikh al-Tabari — Muhammad bin Jarir al-Tabari — 310 78- Tanbih al-Ghafilin — Nasr bin Muhammad bin Ibrahim Samarqandi — 373 79- Tarikh Ibn Najjar — Muhammad bin Mahmud bin Hasan Baghdadi Ibn Najjar — 643 80- Al-Targhib wa al-Tarhib — Zaki al-Din Abd al-Azim bin Abd al-Qawi al-Mundhiri — 656 81- Al-Tawdih Sharh al-Tanqih fi Usul al-Fiqh — Ubayd Allah bin Mas'ud bin Taj al-Shari'ah — 747 82- Tadhkirat al-Huffaz — Shams al-Din Abu Abd Allah Muhammad bin Ahmad al-Dhahabi — 748 83- Tahdhib Tahdhib al-Kamal — Shams al-Din Muhammad bin Ahmad al-Dhahabi — 748 84- Al-Talwih Sharh Tawdih — Sa'd al-Din Mas'ud bin 'Umar bin Abd Allah Taftazani — 792 85- Tadrib al-Rawi — Jalal al-Din Abd al-Rahman bin Abi Bakr al-Suyuti — 911

Page 660 of 688

फ़तावा रज़विया, जिल्द 12

61- तन्बीह अल-अनाम फ़ी आदाब अल-सियाम 62- तफ़्सीर अल-जलालैन — अल्लामा जलालुद्दीन अल-महल्ली और जलालुद्दीन अल-सुयूती — 862-911 63- तहज़ीब अल-तहज़ीब — अबुल फ़ज़ल अहमद बिन अली इब्न हजर अल-अस्कलानी — 852 64- तन्ज़ीह अल-शरीआह अल-मरफ़ूआ 'अन अल-अख़बार अल-शानीआ अल-मौदूआ — अबुल हसन अली बिन मुहम्मद बिन इराक़ अल-किनानी — 963 65- तफ़्सीर इब्न अबी हातिम — अब्दुर्रहमान बिन मुहम्मद अल-राज़ी (हाफ़िज़) — 327 66- तहज़ीब अल-आसार — अबू जाफ़र मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन जरीर — 310 67- तक़रीब अल-क़रीब — अबू ज़करिया यह्या बिन शरफ़ अल-नववी — 911 68- अत-तक़रीर व अत-तहबीर — मुहम्मद बिन मुहम्मद इब्न अमीर अल-हज अल-हलबी — 879 69- अत-तयसीर शरह अल-जामी अस-सग़ीर — अब्दुर्रऊफ़ बिन ताज अल-आरिफ़ीन बिन अली अल-मुनावी — 1031 70- तब्यीन अल-हक़ाएक़ — फ़खरुद्दीन उस्मान बिन अली अल-ज़ैलई — 743 71- तक़रीब अल-तहज़ीब — शिहाबुद्दीन अहमद बिन अली इब्न हजर अल-अस्कलानी — 852 72- तनवीर अल-मिक़्यास — अबू ताहिर मुहम्मद बिन याक़ूब अल-फ़ैरूज़ाबादी — 817 73- तनवीर अल-अबसार — शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अहमद अत-तुमुरताशी — 1004 74- ताज़ीम अस-सलात — मुहम्मद बिन नस्र अल-मरवज़ी — 294 75- तारीख़ बग़दाद — अबू बक्र अहमद बिन अली अल-ख़तीब अल-बग़दादी — 463 76- अत-तौशीह फ़ी शरह अल-हिदाया — उमर बिन इसहाक़ अल-सिराज अल-हिंदी — 773 77- तारीख़ अत-तबरी — मुहम्मद बिन जरीर अत-तबरी — 310 78- तन्बीह अल-ग़ाफ़िलीन — नस्र बिन मुहम्मद बिन इब्राहीम समरकंदी — 373 79- तारीख़ इब्न नज्जार — मुहम्मद बिन महमूद बिन हसन बग़दादी इब्न नज्जार — 643 80- अत-तर्ग़ीब व अत-तरहीब — ज़कीउद्दीन अब्दुल अज़ीम बिन अब्दुल क़वी अल-मुन्ज़िरी — 656 81- अत-तौज़ीह शरह अत-तनक़ीह फ़ी उसूल अल-फ़िक़्ह — उबैदुल्लाह बिन मसूद बिन ताज अल-शरीआ — 747 82- तज़किरत अल-हुफ़्फ़ाज़ — शम्सुद्दीन अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद अद-दहबी — 748 83- तहज़ीब तहज़ीब अल-कमाल — शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन अहमद अद-दहबी — 748 84- अत-तलवीह शरह तौज़ीह — सअदुद्दीन मसूद बिन उमर बिन अब्दुल्लाह तफ़्ताज़ानी — 792 85- तदरीब अल-रावी — जलालुद्दीन अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र अल-सुयू911 — تی

पृष्ठ 660 का 688

۶۱- تنبیہ الانام فی آداب الصیام ۶۲- تفسیر الجلالین — علامہ جلال الدین المحلی وجلال الدین السیوطی — ۹۱۱-۸۶۲ ۶۳- تہذیب التہذیب — ابوالفضل احمد بن علی ابن حجر العسقلانی — ۸۵۲ ۶۴- تنزیہ الشریعہ المرفوعہ عن اخبار الشنیعہ الموضوعہ — ابوالحسن علی بن محمد بن عراق الکنانی — ۹۶۳ ۶۵- تفسیر ابن ابی حاتم — عبدالرحمن بن محمد الرازی (حافظ) — ۳۲۷ ۶۶- تہذیب الآثار — ابو جعفر محمد بن محمد بن جریر — ۳۱۰ ۶۷- تقریب القریب — ابوزکریا یحییٰ بن شرف النووی — ۹۱۱ ۶۸- التقریر والتحبیر — محمد بن محمد ابن امیر الحاج الحلبی — ۸۷۹ ۶۹- التیسیر شرح الجامع الصغیر — عبدالرؤف بن تاج العارفین بن علی المناوی — ۱۰۳۱ ۷۰- تبیین الحقائق — فخر الدین عثمان بن علی الزیلعی — ۷۴۳ ۷۱- تقریب التہذیب — شہاب الدین احمد بن علی ابن حجر العسقلانی — ۸۵۲ ۷۲- تنویر المقیاس — ابوطاہر محمد بن یعقوب الفیروزآبادی — ۸۱۷ ۷۳- تنویر الابصار — شمس الدین محمد بن عبداللہ بن احمد التمرتاشی — ۱۰۰۴ ۷۴- تعظیم الصلوٰۃ — محمد بن نصر المروزی — ۲۹۴ ۷۵- تاریخ بغداد — ابوبکر احمد بن علی الخطیب البغدادی — ۴۶۳ ۷۶- التوشیح فی شرح الہدایۃ — عمر بن اسحق السراج الہندی — ۷۷۳ ۷۷- تاریخ الطبری — محمد بن جریر الطبری — ۳۱۰ ۷۸- تنبیہ الغافلین — نصر بن محمد بن ابراہیم سمرقندی — ۳۷۳ ۷۹- تاریخ ابن نجار — محمد بن محمود بن حسن بغدادی ابن نجار — ۶۴۳ ۸۰- الترغیب والترہیب — زکی الدین عبدالعظیم بن عبدالقوی المنذری — ۶۵۶ ۸۱- التوضیح شرح التنقیح فی اصول الفقہ — عبید اللہ بن مسعود بن تاج الشریعہ — ۷۴۷ ۸۲- تذکرۃ الحفاظ — شمس الدین ابو عبداللہ محمد بن احمد الذہبی — ۷۴۸ ۸۳- تہذیب تہذیب الکمال — شمس الدین محمد بن احمد الذہبی — ۷۴۸ ۸۴- التلویح شرح توضیح — سعد الدین مسعود بن عمر بن

عبدالله تفتازانی — ۷۹۲ ۸۵- تدریب الراوی — جلال الدین عبدالرحمن بن ابی بکر السیوطی — ۹۱۱

Fatawa Rizvia Volume 12

1. Al-Ta'qubat ala al-Mawdu'at - Jalal al-Din Abd al-Rahman bin Abi Bakr al-Suyuti - 911
2. Tarikh al-Khamis - Sheikh Husayn bin Muhammad bin al-Hasan Diyar Bakri - 966
3. Tadhkirat Uli al-Albab Antaki - Da'ud bin 'Umar al-Antaki - 1008
4. Al-Tibyan fi Bayan ma fi Laylat al-Nisf min Sha'ban - Ali bin Sultan Muhammad al-Qari - 1014
5. Tafsirat Ahmadiyya - Ahmad bin Abu Sa'id al-Ma'ruf Mulla Jiwan - 1130
6. Al-Tafsir al-Mazhari - Qadi Thana Ullah Panipati - 1225
7. Tuhfa Ithna Ashariyya - Shah Abdul Aziz Dehlavi - 1239
8. Tanbih Dhawi al-Afham - Muhammad Amin Ibn Abidin - 1252
9. Al-Tahrir al-Mukhtar (Taqrirat al-Rafi'i) - Abd al-Qadir al-Rafi'i al-Faruqi - 1323
10. Tadhkirat al-Mawdu'at lil-Fatani - Muhammad bin Tahir al-Fatani - 986
11. Tajnis al-Multaqat
12. Tuhfat al-Mu'minin fi al-Tibb - Muhammad Mu'min bin Muhammad Zaman al-Husayni
13. Tuhfat al-Salat (Persian) - Husayn bin Ali al-Kashifi al-Wa'iz - 910

Letter 'Tha' (ث) 99. Al-Thamanun fi al-Hadith - Abu Bakr Muhammad bin al-Husayn al-Ajurri - 360 100. Thabt Abu Muhammad bin Amir al-Makki al-Misri

Letter 'Jim' (ج) 101. Jami' al-Tirmidhi - Abu 'Isa Muhammad bin 'Isa al-Tirmidhi - 279 102. Jami' al-Rumuz - Shams al-Din Muhammad al-Khurasani - 962 103. Al-Jami' al-Sahih lil-Bukhari - Imam Muhammad bin Isma'il al-Bukhari - 256 104. Al-Jami' al-Saghir fi al-Fiqh - Imam Muhammad bin Hasan al-Shaybani - 189 105. Al-Jami' al-Sahih li-Muslim - Muslim bin al-Hajjaj al-Qushayri - 261 106. Jami' al-Fiqh (Jawami' al-Fiqh) - Abu Nasr Ahmad bin Muhammad al-Atabi - 586

फ़तावा रिज़विया जिल्द बारहवीं

1. अत-ताकुबात अलल मौज़ूआत - जलालुद्दीन अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र अस-सुयूती - 911
2. तारीख़ुल ख़मीस - शैख़ हुसैन बिन मुहम्मद बिन अल-हसन दियार बकरी - 966
3. तज़किरतु उली अल-अल्बाब अंताकी - दाऊद बिन उमर अंताकी - 1008
4. अत-तिब्यान फ़ी बयान मा फ़ी लैलतुन निस्फ़ मिन शाबान - अली बिन सुल्तान मुहम्मद अल-कारी - 1014
5. तफ़सीराते अहमदिया - अहमद बिन अबू सईद अल-मारूफ़ मुल्ला जीवन - 1130
6. अत-तफ़सीर अल-मज़हरी - क़ाज़ी सनाउल्लाह पानीपती - 1225
7. तोहफ़ा इस्ना अशरिया - शाह अब्दुल अज़ीज़ देहलवी - 1239
8. तन्बीह ज़वी अल-अफ़हाम - मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन - 1252
9. अत-तहरीर अल-मुख़्तार (तक़रीरात अल-राफ़ई) - अब्दुल क़ादिर अल-राफ़ई अल-फ़ारूक़ी - 1323
10. तज़किरतुन मौज़ूआत लिल-फ़तनी - मुहम्मद बिन ताहिर अल-फ़तनी - 986
11. तजनीस अल-मुल्तक़त
12. तोहफ़तुल मोमिनीन फ़िल तिब - मुहम्मद मोमिन बिन मुहम्मद ज़मान अल-हुसैनी
13. तोहफ़तुस सलात (फारसी) - हुसैन बिन अली अल-काशिफ़ी अल-वाइज़ - 910

थ (ث) 99. अस-समानून फ़िल हदीस - अबू बक्र मुहम्मद बिन अल-हुसैन अल-आर्जुरी - 360 100. सब्त अबू मुहम्मद बिन अमीर अल-मक्की अल-मिसरी

ज (ج) 101. जामिअत-तिर्मिज़ी - अबू ईसा मुहम्मद बिन ईसा अत-तिर्मिज़ी - 279 102. जामिअ अल-रुमूज़ - शम्सुद्दीन मुहम्मद अल-ख़ुरासानी - 962 103. अल-जामिअ अस-सहीह लिल-बुख़ारी - इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल अल-बुख़ारी - 256 104. अल-जामिअ अस-सग़ीर फ़िल फ़िक़्ह - इमाम मुहम्मद बिन हसन अशु-शैबानी - 189 105. अल-जामिअ अस-सहीह लि-मुस्लिम - मुस्लिम बिन अल-हज्जाज अल-कुशैरी - 261 106. जामिअ अल-फ़िक़्ह (जवामिअ अल-फ़िक़्ह) - अबू नसर अहमद बिन मुहम्मद अल-अताबी - 586

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

۸۶۔ التعقبات علی الموضوعات جلال الدین عبدالرحمن بن ابی بکر السیوطی ۹۱۱ ۸۷۔ تاریخ الخمیس شیخ حسین بن محمد بن الحسن دیار بکری ۹۶۶ ۸۸۔ تذکرۃ اولی الالباب انطاکی داؤد بن عمر انطاکی ۱۰۰۸ ۸۹۔ التبیان فی بیان ما فی لیلۃ النصف من شعبان علی بن سلطان محمد القاری ۱۰۱۴ ۹۰۔ تفسیرات احمدیہ احمد بن ابو سعید المعروف ملا جیون ۱۱۳۰ ۹۱۔ التفسیر المظہری قاضی ثناء اللہ پانی پتی ۱۲۲۵ ۹۲۔ تحفہ اثناء عشریہ شاہ عبدالعزیز دہلوی ۱۲۳۹ ۹۳۔ تنبیہ ذوی الافہام محمد امین ابن عابدین ۱۲۵۲ ۹۴۔ التحریر المختار (تقریرات الرافعی) عبدالقادر الرافعی الفاروقی ۱۳۲۳ ۹۵۔ تذکرۃ الموضوعات للفتنی محمد بن طاہر الفتنی ۹۸۶ ۹۶۔ تجنیس الملتقط ۹۷۔ تحفۃ المومنین فی الطب محمد مومن بن محمد زمان الحسینی ۹۸۔ تحفۃ الصلوۃ (فارسی) حسین بن علی الکاشفی الواعظ ۹۱۰ ث ۹۹۔ الثمانون فی الحدیث ابو بکر محمد بن الحسین الآجری ۳۶۰ ۱۰۰۔ ثبت ابو محمد بن امیر المکی المصری

ج ۱۰۱۔ جامع الترمذی ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ الترمذی ۲۷۹ ۱۰۲۔ جامع الرموز شمس الدین محمد الخراسانی ۹۶۲ ۱۰۳۔ الجامع الصحیح للبخاری امام محمد بن اسمعیل البخاری ۲۵۶ ۱۰۴۔ الجامع الصغیر فی الفقہ امام محمد بن حسن الشیبانی ۱۸۹ ۱۰۵۔ الجامع الصحیح لمسلم مسلم بن حجاج القشیری ۲۶۱ ۱۰۶۔ جامع الفقہ (جوامع الفقہ) ابو نصر احمد بن محمد العتابی ۵۸۶

Fatawa Rizwia Volume Twelve

1. Jami' al-Fusulayn - Shaykh Badr al-Din Mahmud bin Isra'il bin al-Qadi - 823
2. Al-Jami' al-Kabir fi Furu' al-Hanafiyyah - Abi al-Hasan 'Ubaydullah bin Husayn al-Karkhi - 340
3. Jawahir al-Akhlati - Burhan al-Din Ibrahim bin Abu Bakr al-Akhlati - .
4. Al-Jawahir al-Zakiyyah - Ahmad bin Turki bin Ahmad al-Maliki - 989
5. Jawahir al-Fatawa - Rukn al-Din Abu Bakr bin Muhammad bin Abi al-Fakhir - 565
6. Al-Jawharat al-Nayyirah - Abu Bakr bin 'Ali bin Muhammad al-Haddad al-Yamani - 800
7. Al-Jarh wa al-Ta'dil fi Rijal al-Hadith - Yahya bin Ma'in al-Baghdadi - 233
8. Al-Jami' al-Saghir fi al-Hadith - 'Allamah Jalal al-Din 'Abd al-Rahman bin Abi Bakr al-Suyuti - 911
9. Jami' al-Bayan fi Tafsir al-Qur'an (Tafsir al-Tabari) - Muhammad bin Jarir al-Tabari - 310
10. Juz' Hadithi Hasan bin 'Arafah - Abu 'Ali Hasan bin 'Arafah (after) - 256
11. Al-Jami' li-Akhlaq al-Rawi wa al-Sami' - Abu Bakr Ahmad bin 'Ali Khatib al-Baghdadi - 463
12. Jami' Ahkam al-Sighar fi al-Furu' - Muhammad bin Mahmud al-Ustrushani - 632
13. Jami' al-Adwiyah wa al-Aghdhiyah - Diya' al-Din 'Abdullah bin Ahmad al-Malaqi - 646
14. Jawahir al-Iqdayn fi Fadl al-Sharafayn - Nur al-Din 'Ali bin Ahmad al-Samhudi al-Misri - 911
15. Jawahir Khamsah - Muhammad Ghawth bin 'Abdullah Gwaliyari - 970
16. Jam' al-Jawami' fi al-Hadith - Abu Bakr Jalal al-Din 'Abd al-Rahman bin Kamal al-Din Suyuti - 911
17. Jawhar Munazzam fi Ziyarat Qabr al-Nabi al-Akram ﷺ - Shihab al-Din Ahmad bin Muhammad ibn Hajar al-Makki - 974
18. Jazb al-Qulub ila Diyar al-Mahbub - 'Abd al-Haq bin Sayf al-Din Muhaddith Dehlawi - 1052
19. Al-Jami' al-Kabir fi al-Fatawa - Imam Nasir al-Din Muhammad bin Yusuf al-Samarqandi - 556

H 126. Hashiyah 'ala al-Durar - Muhammad bin Mustafa Abu Sa'id al-Khadimi - 1176 127. Hashiyat Ibn Shalbi 'ala al-Tabyin - Ahmad bin Muhammad al-Shalbi - 1021 128. Hashiyah 'ala al-Durar - 'Abd al-Halim bin Muhammad al-Rumi - 1013 129. Hashiyah 'ala al-Durar li-Mulla Khusraw - Qadi Muhammad bin Faramuz Mulla Khusraw - 885

फतावा रज़विया खंड बारह

1. जामे अल-फुसुलैन - शेख बद्रुद्दीन महमूद बिन इस्राइल बिन अल-काज़ी - ८२३
2. अल-जामे अल-कबीर फी फुरू अल-हनफ़िया - अबुल हसन उबैदुल्लाह बिन हुसैन अल-करखी - ३४०
3. जवाहिरे अल-अखलाती - बुरहानुद्दीन इब्राहिम बिन अबू बक्र अल-अखलाती - .
4. अल-जवाहिरे अल-ज़किया - अहमद बिन तुर्की बिन अहमद अल-मालिकी - ९८९
5. जवाहिरे अल-फतावा - रुक्नुद्दीन अबू बक्र बिन मुहम्मद बिन अबिल फाखिर - ५६५
6. अल-जौहरातुन नैय्यरा - अबू बक्र बिन अली बिन मुहम्मद अल-हद्दाद अल-यमनी - ८००
7. अल-जर्ह वत ता'दील फी रिजाल अल-हदीस - यहया बिन मईन अल-बगदादी - २३३
8. अल-जामे अस-सगीर फी अल-हदीस - अल्लामा जलालुद्दीन अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र अस-सुयूती - ९११
9. जामे अल-बयान फी तफ़्सीर अल-कुरआन (तफ़्सीर तबरी) - मुहम्मद बिन जरीर अत-तबरी - ३१०
10. जुज़' हदीसी हसन बिन अर्फा - अबू अली हसन बिन अर्फा (के बाद) - २५६
11. अल-जामे लि-अखलाक़ अर-रावी वस-सामे - अबू बक्र अहमद बिन अली ख़तीब बग़दादी - ४६३
12. जामे अहकाम अस-सिगार फी अल-फुरू - मुहम्मद बिन महमूद अल-उस्तुशानी - ६३२
13. जामे अल-अद्विया वल-अग़ज़िया - ज़ियाउद्दीन अब्दुल्लाह बिन अहमद अल-मालाक़ी - ६४६
14. जवाहिरे अल-इक़दैन फी फ़ज़्ल अश-शरफ़ैन - नूरुद्दीन अली बिन अहमद अस-सम्हुदी अल-मिस्री - ९११
15. जवाहिरे खमसा - मुहम्मद गौस बिन अब्दुल्लाह ग्वालियर - ९७०
16. जमअल जवामे फी अल-हदीस - अबू बक्र जलालुद्दीन अब्दुर्रहमान बिन कमालुद्दीन सुयूती - ९११
17. जौहरे मुनज़्ज़म फी ज़ियारते क़ब्र अन-नबी अल-अकरम ﷺ - शहाबुद्दीन अहमद बिन मुहम्मद इब्न हजर अल-मक्की - ९७४
18. जज़्ब अल-कुलूब इला दियारे अल-महबूब - अब्दुल हक़ बिन सैफ़ुद्दीन मुहद्दिस देहलवी - १०५२

19. अल-जामे अल-कबीर फी अल-फतावा - इमाम नासिरुद्दीन मुहम्मद बिन यूसुफ अस-समरकंदी - ५५६

ह १२६. हाशिया अला अद-दुरर - मुहम्मद बिन मुस्तफ़ा अबू सईद अल-खादिमी - ११७६ १२७. हाशिया इब्न शल्बी अला अत-तब्ईन - अहमद बिन मुहम्मद अल-शल्बी - १०२१ १२८. हाशिया अला अद-दुरर - अब्दुल हलीम बिन मुहम्मद अर-रूमी - १०१३ १२९. हाशिया अला अद-दुरर लि-मुल्ला खुसरो - क़ाज़ी मुहम्मद बिन फ़रामुज़ मुल्ला खुसरो - ८८५

पृष्ठ ६६२/६८८

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

۱۰۷۔ جامع الفصولین - شیخ بدرالدین محمود بن اسرائیل بابن قاضی - ۸۲۳ ۱۰۸۔ الجامع الکبیر فی فروع الحنیفۃ - ابی الحسن عبیداللہ بن حسین الکرخی - ۳۴۰ ۱۰۹۔ جواہر الاخلاطی - برہان الدین ابراہیم بن ابوبکر الاخلاطی - . ۱۱۰۔ الجواہر الزکیۃ - احمد بن ترکی بن احمد المالکی - ۹۸۹ ۱۱۱۔ جواہر الفتاوٰی - رکن الدین ابوبکر بن محمد بن ابی الفاخر - ۵۶۵ ۱۱۲۔ الجوہرۃ النیرۃ - ابوبکر بن علی بن محمد الحداد الیمنی - ۸۰۰ ۱۱۳۔ الجرح والتعدیل فی رجال الحدیث - یحیٰی بن معین البغدادی - ۲۳۳ ۱۱۴۔ الجامع الصغیر فی الحدیث - علامہ جلال الدین عبدالرحمن بن ابی بکر السیوطی - ۹۱۱ ۱۱۵۔ جامع البیان فی تفسیر القرآن (تفسیر طبری) - محمد بن جریر الطبری - ۳۱۰ ۱۱۶۔ جزء حدیثی حسن بن عرفہ - ابو علی حسن بن عرفہ بعد از - ۲۵۶ ۱۱۷۔ الجامع لاخلاق الراوی والسامع - ابوبکر احمد بن علی خطیب بغدادی - ۴۶۳ ۱۱۸۔ جامع احکام الصغار فی الفروع - محمد بن محمود الاستروشنی - ۶۳۲ ۱۱۹۔ جامع الادویہ والاغذیہ - ضیاء الدین عبداللہ بن احمد المالقی - ۶۴۶ ۱۲۰۔ جواہر العقدین فی فضل الشرفین - نورالدین علی بن احمد السمہودی والمصری - ۹۱۱ ۱۲۱۔ جواہر خمسہ - محمد غوث بن عبداللہ گوالیاری - ۹۷۰ ۱۲۲۔ جمع الجوامع فی الحدیث - ابوبکر جلال الدین عبدالرحمن بن کمال الدین سیوطی - ۹۱۱ ۱۲۳۔ جوہر منظم فی زیارت قبر النبی الکرم صلی اللہ علیہ وسلم - شہاب الدین احمد بن محمد ابن حجر المکی - ۹۷۴ ۱۲۴۔ جذب القلوب الٰی دیار المحبوب - عبدالحق بن سیف الدین محدث دہلوی - ۱۰۵۲ ۱۲۵۔ الجامع الکبیر فی الفتاوٰی - امام ناصر الدین محمد بن یوسف السمر قندی - ۵۵۶

ح ۱۲۶۔ حاشیۃ علی الدرر - محمد بن مصطفیٰ ابو سعید الخادمی - ۱۱۷۶ ۱۲۷۔ حاشیۃ ابن شلبی علی التبیین - احمد بن محمد الشلبی - ۱۰۲۱ ۱۲۸۔ حاشیۃ علی الدرر - عبدالحلیم بن محمد الرومی - ۱۰۱۳ ۱۲۹۔ حاشیۃ علی الدرر لملا خسرو - قاضی محمد بن فراموز ملا خسرو - ۸۸۵

Fatawa Razawiya, Volume 12

130- Hashiya 'ala al-Muqaddimah al-'Ashmawiyya - Allama Safati - 925 131- Al-Hashiya li-Sa'di Afandi 'ala al-'Inaya - Sa'dullah bin Isa al-Afandi - 1143 132- Al-Hadiqa al-Nadiyya Sharh Tariqa Muhammadiyya - Abdul Ghani al-Nabulsi - 600 133- Al-Hawi al-Qudsi - Qadi Jamal al-Din Ahmad bin Muhammad Nuh al-Qabisi al-Hanafi - 372 134- Hasr al-Masa'il fil-Furu' - Imam Abu al-Layth Nasr bin Muhammad al-Samarqandi al-Hanafi - 430 135- Hilyat al-Awliya fil-Hadith - Abu Nu'aym Ahmad bin Abdullah al-Asbahani - 879 136- Hilyat al-Muhalla Sharh Munyat al-Musalli - Muhammad bin Muhammad ibn Amir al-Hajj - 590 137- Hirz al-Amani wa-Wajh al-Tahani - Abu Muhammad Qasim bin Firruh al-Shatibi al-Maliki - 682 138- Hayat al-Hayawan al-Kubra lil-Damiri - Zakariya bin Muhammad bin Mahmud al-Qazwini - 833 139- Al-Hisn al-Hasin min Kalam Sayyid al-Mursalin (peace be upon him) - Shams al-Din Muhammad bin Muhammad ibn al-Jazari - 885 140- Hashiya al-Talwih Mulla Khusraw - Muhammad bin Faramuz Mulla Khusraw - 668 141- Hashiya al-Talwih Husayn Chalapi - Hasan bin Muhammad Shah al-Fanari Chalapi - 1012 142- Hirz Thamin Sharh Hisn Hasin - Nur al-Din Ali bin Sultan Muhammad al-Qari - 1179 143- Hujjat Allah al-Baligha - Shah Waliullah bin Shah Abdul Rahim al-Dahlawi - 1179 144- Hashiya Maktubat Shah Waliullah - Shah Waliullah bin Shah Abdul Rahim al-Dahlawi - 1257 145- Hasr al-Sharid fi Asanid al-Shaykh - Muhammad Abid al-Sindi 146- Hashiya al-Kumthari 'ala al-Anwar 147- Hashiya Kifayat al-Talib al-Rabbani 148- Hashiya al-Hafni 'ala al-Jami' al-Saghir - Allama al-Hafni 149- Al-Hawi lil-Fatawa - Jalal al-Din Abd al-Rahman bin Kamal al-Din al-Suyuti - 911 150- Husn al-Maqsad fi 'Amal al-Mawlid - Jalal al-Din Abd al-Rahman bin Kamal al-Din al-Suyuti - 911

Kh

151- Khizanat al-Riwayat Qadi Jakan al-Hanafi 152- Khizanat al-Fatawa - Tahir bin Ahmad Abd al-Rashid al-Bukhari - 522

Page 663 of 688

फतावा रज़विया, खंड 12

130- हाशिया अला अल-मुकद्दिमा अल-अशमाविया - अल्लामा सफ़ती - 925 131- अल-हाशिया ली-सादी अफंदी अला अल-इनाया - सादुल्लाह बिन ईसा अल-अफंदी - 1143 132- अल-हदीका अल-नदिया शरह तरीक़ा मुहम्मदिया - अब्दुल गनी अल-नाबुलसी - 600 133- अल-हावी अल-कुदसी - काज़ी जमालुद्दीन अहमद बिन मुहम्मद नूह अल-काबिसी अल-हनफी - 372 134- हस्न अल-मसाइल फिल-फुरू - इमाम अबुल लैस नस्र बिन मुहम्मद अल-समरकंदी अल-हनफी - 430 135- हिल्या अल-औलिया फिल-हदीस - अबू नुएयम अहमद बिन अब्दुल्लाह अल-असबहानी - 879 136- हिल्या अल-मुहल्ला शरह मुनिया अल-मुसल्ली - मुहम्मद बिन मुहम्मद इब्न अमीर अल-हज - 590 137- हिर्ज़ अल-अमानी व-वजह अल-तहानी - अबू मुहम्मद कासिम बिन फिरु अल-शातिबी अल-मालिकी - 682 138- हयात अल-हैवान अल-कुबरा लिल-दमिरी - ज़करिया बिन मुहम्मद बिन महमूद अल-क़ज़वीनी - 833 139- अल-हिस्न अल-हसीन मिन कलाम सैय्यद अल-मुरसलीन (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) - शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन मुहम्मद इब्न अल-जज़री - 885 140- हाशिया अल-तलवीह मुल्ला खुसरु - मुहम्मद बिन फरामुज़ मुल्ला खुसरु - 668 141- हाशिया अल-तलवीह हुसैन चलपी - हसन बिन मुहम्मद शाह अल-फनारी चलपी - 1012 142- हिर्ज़ समीन शरह हिस्न हसीन - नूरुद्दीन अली बिन सुल्तान मुहम्मद अल-कारी - 1179 143- हुज्जतुल-लाहिल-बालिगा - शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम अल-दहलवी - 1179 144- हाशिया मकतूबात शाह वलीउल्लाह - शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम अल-दहलवी - 1257 145- हस्न अल-शारिद फी असानीद अल-शैख - मुहम्मद आबिद अल-सिंधी 146- हाशिया अल-कुमथरी अला अल-अनवार 147- हाशिया किफ़ायत अल-तालिब अल-रब्बानी 148- हाशिया अल-हफ्नी अला अल-जामे अल-सगीर - अल्लामा अल-हफ्नी 149- अल-हावी लिल-फतावा - जलालुद्दीन अब्दुल रहमान बिन कमालुद्दीन अल-सुयूती - 911 150- हुस्न अल-मक़्सद फी अमल अल-मौलिद - जलालुद्दीन अब्दुल रहमान बिन कमालुद्दीन अल-सुयूती - 911

ख

151- ख़िज़ानतुल रिवायत काज़ी जकन अल-हनफी 152- ख़िज़ानतुल फतावा - ताहिर बिन अहमद अब्दुल रशीद अल-बुखारी - 522

पृष्ठ 663 of 688

فتاوٰی رضویہ، جلد دوازدہم

۱۳۰- حاشية على المقدمة العشماوية - علّامہ سفطی - ۹۲۵ ۱۳۱- الحاشية لسعدی آفندی على العناية - سعد الله بن عيسى الآفندی - ۱۱۴۳ ۱۳۲- الحديقة الندية شرح طريقة محمدية - عبد الغنی النابلسی - ۶۰۰ ۱۳۳- الحاوي القدسي - قاضی جمال الدين احمد بن محمد نوح القابسی الحنفی - ۳۷۲ ۱۳۴- حصر المسائل فی الفروع - امام ابواللیث نصر بن محمد السمرقندی الحنفی - ۴۳۰ ۱۳۵- حلية الاولياء فی الحديث - ابونعيم احمد بن عبدالله الاصبہانی - ۸۷۹ ۱۳۶- حلية المحلی شرح منية المصلی - محمد بن محمد ابن امير الحاج - ۵۹۰ ۱۳۷- حرز الامانی ووجه التهانی - ابو محمد قاسم بن فيره الشاطبی المالکی - ۶۸۲ ۱۳۸- حيوة الحيوان الکبری للدميری - زکريا بن محمد بن محمود القزوينی - ۸۳۳ ۱۳۹- الحصن الحصين من کلام سيد المرسلين صلی الله عليہ وسلم - شمس الدين محمد بن محمد ابن الجزری - ۸۸۵ ۱۴۰- حاشية التلويح ملا خسرو - محمد بن فراموز ملا خسرو - ۶۶۸ ۱۴۱- حاشية التلويح حسين چلپی - حسن بن محمد شاه الفناری چلپی - ۱۰۱۲ ۱۴۲- حرز ثمين شرح حصن حصين - نور الدين علی بن سلطان محمد القاری - ۱۱۷۹ ۱۴۳- حجۃ الله البالغہ - شاه ولی الله بن شاه عبد الرحيم الدہلوی - ۱۱۷۹ ۱۴۴- حاشية مکتوبات شاه ولی الله - شاه ولی الله بن شاه عبد الرحيم الدہلوی - ۱۲۵۷ ۱۴۵- حصر الشارد فی اسانيد الشيخ - محمد عابد السندی ۱۴۶- حاشية الکمثری على الانوار ۱۴۷- حاشية کفايۃ الطالب الربانی ۱۴۸- حاشية الحفنی على الجامع الصغير - علامہ الحفنی ۱۴۹- الحاوی للفتاوی - جلال الدين عبد الرحمن بن کمال الدين السيوطی - ۹۱۱ ۱۵۰- حسن المقصد فی عمل المولد - جلال الدين عبد الرحمن بن کمال الدين السيوطی - ۹۱۱

خ

۱۵۱- خزانۃ الروایات قاضی جکن الحنفی ۱۵۲- خزانۃ الفتاوی - طاہر بن احمد عبد الرشید البخاری - ۵۲۲

صفحہ 663 of 688

Volume 12 Fatawa Rizviya

1. Khizanat al-Muftin — Husayn bin Muhammad al-Simani al-Simiqani — After 740
2. Khulasat al-Dala'il — Husam al-Din Ali bin Ahmad al-Makki al-Razi — 598
3. Khulasat al-Fatawa — Tahir bin Ahmad Abd al-Rashid al-Bukhari — 542
4. Khayrat al-Hisan — Shihab al-Din Ahmad bin Hajar al-Makki — 973
5. Al-Khasa'is al-Kubra — Jalal al-Din Abd al-Rahman bin Kamal al-Din al-Suyuti — 911
6. Khulasat al-Wafa — Ali bin Ahmad al-Samhudi — 911
7. Khaza'in al-Asrar fi Sharh Tanwir al-Absar — Ala' al-Din Muhammad bin Ali al-Haskafi — 1088

د (Dal) 160. Al-Diraya Sharh al-Hidaya — Shihab al-Din Ahmad bin Ali ibn Hajar al-Asqalani — 852 161. Al-Durar (Durar al-Hukkam) — Qadi Muhammad bin Faramuz Mulla Khusraw — 885 162. Al-Durr al-Mukhtar fi Sharh Tanwir al-Absar — Ala' al-Din al-Haskafi — 1088 163. Al-Durr al-Nathir — Jalal al-Din Abd al-Rahman al-Suyuti — 911 164. Al-Durr al-Manthur fi al-Tafsir bil-Ma'thur — Allama Jalal al-Din Abd al-Rahman al-Suyuti — 911

ذ (Zal) 165. Dhakhirat al-Uqba — Yusuf bin Junayd al-Halabi (Chalapi) — 905 166. Dhakhirat al-Fatawa — Burhan al-Din Mahmud bin Ahmad — 616 167. Dhamm al-Ghibah — Abdullah bin Muhammad ibn Abi al-Dunya al-Qurashi — 281

ر (Ra) 168. Al-Rahmaniya 169. Radd al-Muhtar — Muhammad Amin ibn Abidin al-Shami — 1252 170. Rahmat al-Ummah fi Ikhtilaf al-A'immah — Abu Abdullah Muhammad bin Abd al-Rahman al-Dimashqi — 781 171. Ragha'ib al-Qur'an Abu Marwan — Abd al-Malik bin Habib al-Sulami (al-Qurtubi) — 239

जिल्द बारहवीं फ़तावा रिज़विया

1. खिज़ानतुल मुफ़्तीन — हुसैन बिन मुहम्मद अल-सिमानी अल-सिमिक़ानी — ७४० के बाद
2. खुलासतुल दलाइल — हुसामुद्दीन अली बिन अहमद अल-मक्की अल-राज़ी — ५९८
3. खुलासतुल फ़तावा — ताहिर बिन अहमद अब्दुर रशीद अल-बुखारी — ५४२
4. खैरातुल हिसान — शहाबुद्दीन अहमद बिन हजर अल-मक्की — ९७३
5. अल-ख़साइसुल कुबरा — जलालुद्दीन अब्दुर्रहमान बिन कमालुद्दीन अल-सुयूती — ९११
6. खुलासतुल वफ़ा — अली बिन अहमद अल-समूदी — ९११
7. खज़ाइनुल असरार फ़ी शरह तनवीरुल अबसार — अलाउद्दीन मुहम्मद बिन अली अल-हसकफ़ी — १०८८

द (दाल) १६०. अल-दिराया शरह अल-हिदाया — शहाबुद्दीन अहमद बिन अली इब्न हजर अल-अस्क़लानी — ८५२ १६१. अल-दुरर (दुररुल हुक्काम) — क़ाज़ी मुहम्मद बिन फ़रामुज़ मुल्ला खुसरू — ८८५ १६२. अल-दुरुल मुख़्तार फ़ी शरह तनवीरुल अबसार — अलाउद्दीन अल-हसकफ़ी — १०८८ १६३. अल-दुरुल नथीर — जलालुद्दीन अब्दुर्रहमान अल-सुयूती — ९११ १६४. अल-दुरुल मनसूर फ़िल तफ़्सीर बिल मासूर — अल्लामा जलालुद्दीन अब्दुर्रहमान अल-सुयूती — ९११

ध (ज़ाल) १६५. ज़खीरतुल उक़बा — यूसुफ़ बिन जुनैद अल-हलबी (चलपी) — ९०५ १६६. ज़खीरतुल फ़तावा — बुरहानुद्दीन महमूद बिन अहमद — ६१६ १६७. ज़म्मुल ग़ीबा — अब्दुल्ला बिन मुहम्मद इब्न अबी अल-दुनिया अल-क़ुरशी — २८१

र (रे) १६८. अल-रहमानिया १६९. रद अल-मुहतार — मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अल-शामी — १२५२ १७०. रहमतुल उम्मा फ़ी इख्तिलाफ़ुल अइम्मा — अबू अब्दुल्ला मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान अल-दमिश्क़ी — ७८१ १७१. रग़ाइबुल क़ुरआन अबू मरवान — अब्दुल मलिक बिन हबीब अल-सलमी (अल-क़ुरतुबी) — २३९

पेज 664 / 688

جلد دوازدہم فتاوٰی رضویہ

۱۵۳۔ خزانہ المفتین — حسین بن محمد السمانی السمیقانی — ۷۴۰ کے بعد ۱۵۴۔ خلاصہ الدلائل — حسام الدین علی بن احمد المکی الرازی — ۵۹۸ ۱۵۵۔ خلاصہ الفتاوٰی — طاہر بن احمد عبد الرشید البخاری — ۵۴۲ ۱۵۶۔ خیرات الحسان — شہاب الدین احمد بن حجر المکی — ۹۷۳ ۱۵۷۔ الخصائص الکبرٰی — جلال الدین عبد الرحمن بن کمال الدین السیوطی — ۹۱۱ ۱۵۸۔ خلاصہ الوفا — علی بن احمد السمہودی — ۹۱۱ ۱۵۹۔ خزائن الاسرار فی شرح تنویر الابصار — علاء الدین محمد بن علی الحصکفی — ۱۰۸۸

د ۱۶۰۔ الدرایۃ شرح الہدایۃ — شہاب الدین احمد بن علی ابن حجر العسقلانی — ۸۵۲ ۱۶۱۔ الدرر (درر الحکام) — قاضی محمد بن فراموز ملا خسرو — ۸۸۵ ۱۶۲۔ الدر المختار فی شرح تنویر الابصار — علاء الدین الحصکفی — ۱۰۸۸ ۱۶۳۔ الدر النثیرہ علامہ — جلال الدین عبد الرحمن السیوطی — ۹۱۱ ۱۶۴۔ الدر المنثور فی التفسیر بالمأثور — علامہ جلال الدین عبد الرحمن السیوطی — ۹۱۱

ذ ۱۶۵۔ ذخیرہ العقبٰی — یوسف بن جنید الحلبی (چلپی) — ۹۰۵ ۱۶۶۔ ذخیرہ الفتاوٰی — برہان الدین محمود بن احمد — ۶۱۶ ۱۶۷۔ ذم الغیبۃ — عبد اللہ بن محمد ابن ابی الدنیا القرشی — ۲۸۱

ر ۱۶۸۔ الرحمانیۃ ۱۶۹۔ رد المحتار — محمد امین ابن عابدین الشامی — ۱۲۵۲ ۱۷۰۔ رحمۃ الامۃ فی اختلاف الائمۃ — ابو عبد اللہ محمد بن عبد الرحمن الدمشقی — ۷۸۱ ۱۷۱۔ رغائب القرآن ابو مروان — عبد الملک بن حبیب السلمی (القرطبی) — ۲۳۹

Fatawa Razawiya, Volume 12

172- Raf' al-Ghisha' fi Waqt al-Asr wa al-Isha --- Sheikh Zain al-Din Ibn Nujaim --- 970 173- Radd 'ala al-Jahmiyyah --- Uthman bin Sa'id al-Darimi --- 280 174- Risala Nuzur --- Molvi Ismail Dehlvi --- 1831 AD, 1246 AH 175- Risala Qushayriyya --- Abd al-Karim bin Hawazin al-Qushayri --- 465 176- Ramz al-Haqa'iq Sharh Kanz al-Daqa'iq --- Badr al-Din Abu Muhammad Mahmud bin Ahmad al-Ayni --- 855 177- Raf' al-Ishtibah 'an Subul al-Miyah --- Qasim bin Qutlubugha al-Misri --- 879 178- Risala Tulu' Thurayya --- Jalal al-Din Abd al-Rahman bin Kamal al-Din al-Suyuti --- 911 179- Risala It-haf al-Ghurfa --- Jalal al-Din Abd al-Rahman bin Kamal al-Din al-Suyuti --- 911 180- Rasa'il Ibn Nujaim --- Zain al-Din bin Ibrahim Ibn Nujaim --- 970 181- Risala Ibtida' --- Ali bin Sultan Muhammad al-Qari --- 1014 182- Risala al-Qawl al-Baligh fi Hukm al-Tabligh --- Ahmad bin Sayyid Muhammad Makki al-Hamwi --- 1098 183- Risala Insaf --- Shah Waliullah Dehlvi --- 1179 184- Rasa'il Ibn Abidin --- Muhammad Amin Afandi Ibn Abidin --- 1252 185- Risala Milad Mubarak (Al-Kawkab al-Anwar 'ala 'Aqd al-Jawhar) --- Ja'far Ismail al-Barzanji --- 1317 186- Al-Riyad al-Nadira fi Fada'il al-'Ashra --- Abu Ja'far Ahmad bin Ahmad ash-Shahir bi al-Muhibb al-Tabari al-Makki --- 694 187- Risala Bid'at --- Miyan Ismail bin Shah Abdul Ghani Dehlvi 1831 AD --- 1246 188- Risala Du'aiya --- Molvi Khurram Ali --- 189- Risala Ghayat al-Maqal --- Abu al-Hasanat Muhammad Abd al-Hayy --- 1323

Z (ز)

190- Zad al-Fuqaha --- Sheikh al-Islam Muhammad bin Ahmad al-Isbijabi (d. late 6th century) --- 191- Zad al-Faqir --- Kamal al-Din Muhammad bin Abd al-Wahid, known as Ibn al-Humam --- 861 192- Zawajir al-Jawahir --- Muhammad bin Muhammad al-Timurtashi (approx.) --- 1016 193- Ziyadat --- Imam Muhammad bin Hasan al-Shaybani --- 189 194- Zuhr al-Nasrin fi Hadith al-Mu'ammarin --- Muhammad bin Ali al-Shawkani --- 1250

फ़तावा रज़विया, खंड 12

172- रफ़उल ग़िशा फ़ी वक़्तुल अस्र वल इशा --- शेख़ ज़ैनुद्दीन इब्न नुजैम --- 970 173- रद अला अल-जहमिया --- उस्मान बिन सईद अद-दारमी --- 280 174- रिसाला नुज़ूर --- मौलवी इस्माइल देहलवी --- 1831 ईस्वी, 1246 हिजरी 175- रिसाला कुशैरिया --- अब्दुल करीम बिन हवाज़िन अल-कुशैरी --- 465 176- रम्ज़ुल हक़ाएक़ शरह कन्ज़ुल दक़ाएक़ --- बदरुद्दीन अबू मुहम्मद महमूद बिन अहमद अल-ऐनी --- 855 177- रफ़उल इश्तिबाह अन सुबुलिल मियाह --- क़ासिम बिन क़ुतलुबुग़ा अल-मिस्री --- 879 178- रिसाला तुलू-ए-सुरैया --- जलालुद्दीन अब्दुल रहमान बिन कमालुद्दीन अल-सुयूती --- 911 179- रिसाला इत्हाफ़ अल-ग़ुरफ़ा --- जलालुद्दीन अब्दुल रहमान बिन कमालुद्दीन अल-सुयूती --- 911 180- रसाईल इब्न नुजैम --- ज़ैनुद्दीन बिन इब्राहीम इब्न नुजैम --- 970 181- रिसाला इब्तिदा --- अली बिन सुल्तान मुहम्मद अल-क़ारी --- 1014 182- रिसाला अल-क़ौल अल-बलीग़ फ़ी हुक्म अल-तबलीग़ --- अहमद बिन सैय्यद मुहम्मद मक्की अल-हमवी --- 1098 183- रिसाला इंसाफ़ --- शाह वलीउल्लाह देहलवी --- 1179 184- रसाईल इब्न आबिदीन --- मुहम्मद अमीन अफ़ंदी इब्न आबिदीन --- 1252 185- रिसाला मीलाद मुबारक (अल-कौकब अल-अनवार अला अक़द अल-जौहर) --- जाफ़र इस्माइल अल-बरज़ंजी --- 1317 186- अल-रियाज़ अल-नज़रा फ़ी फ़ज़ाइल अल-अशरा --- अबू जाफ़र अहमद बिन अहमद अल-शहीर बिल मुहिब अल-तबरी अल-मक्की --- 694 187- रिसाला बिदअत --- मियां इस्माइल बिन शाह अब्दुल ग़नी देहलवी 1831 ईस्वी --- 1246 188- रिसाला दुआइया --- मौलवी ख़ुर्रम अली --- 189- रिसाला ग़ायत अल-मक़ाल --- अबुल हसनात मुहम्मद अब्दुल हई --- 1323

ज़ (ز)

190- ज़ादुल फ़ुक़्हा --- शेखुल इस्लाम मुहम्मद बिन अहमद अल-अस्बीजाबी (मृत्यु छठी सदी के अंत में) --- 191- ज़ादुल फ़क़ीर --- कमालुद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुल वाहिद, जो इब्नुल हुमाम के नाम से प्रसिद्ध हैं --- 861 192- ज़वाज़िर अल-जवाहर --- मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-तिमुर्ताशी (लगभग) --- 1016 193- ज़ियादात --- इमाम मुहम्मद बिन हसन अल-शैबानी --- 189 194- ज़ुह्र अल-नसरीन फ़ी हदीस अल-मुअम्मरीन --- मुहम्मद बिन अली अल-शौकानी --- 1250

पृष्ठ 665 का 688

فتاوی رضویہ، جلد دوازدہم

172- رفع الغشاء في وقت العصر والعشاء --- شیخ زین الدین ابن نجیم --- 970 173- رد علی الجہمیۃ --- عثمان بن سعید الدارمی --- 280 174- رسالہ نذور --- مولوی اسمعیل دہلوی --- 1831ء 1246 175- رسالہ قشیریہ --- عبدالکریم بن ہوازن القشیری --- 465 176- رمز الحقائق شرح کنز الدقائق --- بدرالدین ابو محمد محمود بن احمد العینی --- 855 177- رفع الاشتباہ عن سبل المیاہ --- قاسم بن قطلوبغا المصری --- 879 178- رسالہ طلوع ثریا --- جلال الدین عبدالرحمن بن کمال الدین السیوطی --- 911 179- رسالہ اتحاف الغرفہ --- جلال الدین عبدالرحمن بن کمال الدین السیوطی --- 911 180- رسائل ابن نجیم --- زین الدین بن ابراہیم ابن نجیم --- 970 181- رسالہ ابتداء --- علی بن سلطان محمد القاری --- 1014 182- رسالہ القول البلیغ فی حکم التبلیغ --- احمد بن سید محمد مکی الحموی --- 1098 183- رسالہ انصاف --- شاہ ولی اللہ دہلوی --- 1179 184- رسائل ابن عابدین --- محمد امین آفندی ابن عابدین --- 1252 185- رسالہ میلاد مبارک (الکوکب الانوار علی عقد الجوہر) --- جعفر اسمعیل البرزنجی --- 1317 186- الریاض النضرۃ فی فضائل العشرۃ --- ابو جعفر احمد بن احمد الشہیر بالمحب الطبری المکی --- 694 187- رسالہ بدعت --- میاں اسمعیل بن شاہ عبدالغنی دہلوی 1831ء --- 1246 188- رسالہ دعائیہ --- مولوی خرم علی --- 189- رسالہ غایۃ المقال --- ابوالحسنات محمد عبدالحی --- 1323

ز

190- زاد الفقہاء --- شیخ الاسلام محمد بن احمد الاسبیجابی المتوفی اواخر القرن السادس --- 191- زاد الفقیر --- کمال الدین محمد بن عبدالواحد المعروف بابن الہمام --- 861 192- زواجر الجواہر ---

محمد بن محمد التمرتاشی تقریباً --- 1016 193- زیادات --- امام محمد بن حسن الشیبانی --- 189

194- زہرالنسرین فی حدیث المعمرین --- محمد بن علی الشوکانی --- 1250

صفحہ 665 از 688

Fatawa Rizvia Volume 12

195- Zabr al-Rubi 'ala al-Mujtaba - Jalal al-Din 'Abd al-Rahman al-Suyuti - 911 196- Zabr al-Rawd fi Mas'alat al-Hawd - Muhammad ibn 'Abd Allah ibn Shihnah - 921 197- al-Zawajir 'an al-Kaba'ir - Shihab al-Din Ahmad ibn Muhammad ibn Hajar al-Makki - 974 198- Zubdat al-Athar fi Akhbar Qutb al-Akhbar - Shaykh 'Abd al-Haqq Muhaddith Dihlawi - 1252 199- Zubdat al-Asrar fi Manaqib Ghawth al-Abrar - Shaykh 'Abd al-Haqq Muhaddith Dihlawi - 1252

Letter S (س)

200- al-Siraj al-Wahhaj - Abu Bakr ibn 'Ali ibn Muhammad al-Haddad al-Yamani - 800 201- al-Sunan li-Ibn Majah - Abu 'Abd Allah Muhammad ibn Yazid ibn Majah - 273 202- al-Sunan li-Ibn Mansur - Sa'id ibn Mansur al-Khurasani - 273 203- al-Sunan li-Abi Dawud - Abu Dawud Sulayman ibn Ash'ath - 275 204- al-Sunan li-l-Nasa'i - Abu 'Abd al-Rahman Ahmad ibn Shu'ayb al-Nasa'i - 303 205- al-Sunan li-l-Bayhaqi - Abu Bakr Ahmad ibn Husayn ibn 'Ali al-Bayhaqi - 458 206- al-Sunan li-l-Daraqutni - 'Ali 'Umar al-Daraqutni - 385 207- al-Sunan li-l-Darimi - 'Abd Allah ibn 'Abd al-Rahman al-Darimi - 255 208- Sirat Ibn Hisham - Abu Muhammad 'Abd al-Malik ibn Hisham - 213 209- Sirat 'Uyun al-Athar - Muhammad ibn 'Abd Allah ibn Sayyid al-Nas - 734 210- Siraji fi al-Mirath - Siraj al-Din Sajawandi (Seventh Century Hijri) 211- Siyar A'lam al-Nubala' - Shams al-Din Muhammad Ahmad al-Dhahabi - 748 212- al-Si'ayah fi Kashf ma fi Sharh al-Wiqa'yah - Muhammad ibn 'Abd Allah Lakhnawi - 1302 213- Sirat 'Umar ibn Muhammad Mulla - 'Umar ibn Muhammad Mulla 214- Sirat Ibn Ishaq - Muhammad ibn Ishaq ibn Yasar - 151 215- Siraj al-Qari 216- al-Sa'diyah 217- al-Sa'y al-Mashkur fi Radd al-Madhhab al-Ma'thur - Muhammad ibn 'Abd Allah Lakhnawi Hindi - 1302

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

195- ज़ब्र अल-रुबी अला अल-मुजतबा - जलालुद्दीन अब्दुल रहमान अल-सुयुती - 911 196- ज़ब्र अल-रौद फ़ी मसअला-ए-हौद - मुहम्मद बिन अब्दुल्ला इब्न शिहना - 921 197- अल-ज़वाज़िर अन अल-कबा'इर - शिहाबुद्दीन अहमद बिन मुहम्मद इब्न हजर अल-मक्की - 974 198- ज़ुबदत अल-आसार फ़ी अख़बार कुत्ब अल-अख़बार - शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी - 1252 199- ज़ुबदत अल-असरार फ़ी मनाक़िब गौस अल-अबरार - शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी - 1252

अक्षर 'स' (س)

200- अल-सिराज अल-वहाज - अबू बकर बिन अली बिन मुहम्मद अल-हद्दाद अल-यमनी - 800 201- अल-सुनन ली-इब्न माजा - अबू अब्दुल्ला मुहम्मद बिन यज़ीद इब्न माजा - 273 202- अल-सुनन ली-इब्न मंसूर - सईद बिन मंसूर अल-ख़ुरासानी - 273 203- अल-सुनन ली-अबी दाऊद - अबू दाऊद सुलेमान बिन अशअ़स - 275 204- अल-सुनन ली-ल-नसाई - अबू अब्दुल रहमान अहमद बिन शुएब अल-नसाई - 303 205- अल-सुनन ली-ल-बैहक़ी - अबू बकर अहमद बिन हुसैन बिन अली अल-बैहक़ी - 458 206- अल-सुनन ली-ल-दारकुतनी - अली उमर अल-दारकुतनी - 385 207- अल-सुनन ली-ल-दारमी - अब्दुल्ला बिन अब्दुल रहमान अल-दारमी - 255 208- सीरत इब्न हिशाम - अबू मुहम्मद अब्दुल मलिक बिन हिशाम - 213 209- सीरत उयून अल-असर - मुहम्मद बिन अब्दुल्ला इब्न सय्यिद अल-नास - 734 210- सिराजी फ़ी अल-मीरास - सिराजुद्दीन सजावंदी (सातवीं शताब्दी हिजरी) 211- सियर आ'लाम अल-नुबला - शम्सुद्दीन मुहम्मद अहमद अल-ज़हबी - 748 212- अल-सि'आया फ़ी कश्फ मा फ़ी शरह अल-विकाया - मुहम्मद बिन अब्दुल्ला लखनवी - 1302 213- सीरत उमर बिन मुहम्मद मुल्ला - उमर बिन मुहम्मद मुल्ला 214- सीरत इब्न इसहाक़ - मुहम्मद बिन इसहाक़ बिन यसार - 151 215- सिराज अल-क़ारी 216- अल-सा'दिया 217- अल-सअ़ी अल-मशहूर फ़ी रद अल-मज़हब अल-मा'सूर - मुहम्मद बिन अब्दुल्ला लखनवी हिंदी - 1302

पृष्ठ 666 / 688

فتاوىٰ رضويہ جلد دو ازدہم

۱۹۵- زبر الربي على المجتبي - جلال الدين عبد الرحمن السيوطى - ۹۱۱ ۱۹۶- زبر الروض في مسئلة الحوض - محمد بن عبد الله ابن شحنہ - ۹۲۱ ۱۹۷- الزواجر عن الكبائر - شہاب الدين احمد بن محمد ابن حجر المكى - ۹۷۴ ۱۹۸- زبدة الآثار في اخبار قطب الاخبار - شيخ عبد الحق محدث دہلوى - ۱۲۵۲ ۱۹۹- زبدة الاسرار في مناقب غوث الابرار - شيخ عبد الحق محدث دہلوى - ۱۲۵۲

س

۲۰۰- السراج الوہاج - ابو بكر بن على بن محمد الحداد اليمنى - ۸۰۰ ۲۰۱- السنن لابن ماجة - ابو عبد الله محمد بن يزيد ابن ماجة - ۲۷۳ ۲۰۲- السنن لابن منصور - سعيد بن منصور الخراسانى - ۲۷۳ ۲۰۳- السنن لابى داؤد - ابو داؤد سليمان بن اشعث - ۲۷۵ ۲۰۴- السنن للنسائى - ابو عبد الرحمن احمد بن شعيب النسائى - ۳۰۳ ۲۰۵- السنن للبيہقى - ابو بكر احمد بن حسين بن على البيہقى - ۴۵۸ ۲۰۶- السنن للدارقطنى - على عمر الدارقطنى - ۳۸۵ ۲۰۷- السنن للدارمى - عبد الله بن عبد الرحمن الدارمى - ۲۵۵ ۲۰۸- سيرت ابن ہشام - ابو محمد عبد الملک بن ہشام - ۲۱۳ ۲۰۹- سيرت عيون الاثر - محمد بن عبد الله ابن سيد الناس - ۷۳۴ ۲۱۰- سراجى فى الميراث - سراج الدين سجاوندى ساتويں صدى ہجرى ۲۱۱- سير اعلام النبلاء - شمس الدين محمد احمد الذہبى - ۷۴۸ ۲۱۲- السعايہ فى كشف ما في شرح الوقايہ - محمد بن عبد الله لكھنوى - ۱۳۰۲ ۲۱۳- سيرت عمر بن محمد ملا - عمر بن محمد ملا ۲۱۴- سيرت ابن اسحاق - محمد بن اسحاق بن يسار - ۱۵۱ ۲۱۵- سراج القارى ۲۱۶- السعديہ ۲۱۷- السعى المشكور فى رد المذہب الماثور - محمد بن عبد الله لكھنوى ہندى - ۱۳۰۲

Fatawa Rizvia Volume Twelve

Sheen (Letter) 218- Al-Shafi — Shams al-A'immah Abdullah bin Mahmud al-Kurdari — 973 219- Sharh al-Arba'in li'n-Nawawi — Shihab al-Din Ahmad bin Hajar al-Makki — 1106 220- Sharh al-Arba'in li'n-Nawawi — Ibrahim ibn Atiyyah al-Maliki — 978 221- Sharh al-Arba'in li'n-Nawawi — Allama Ahmad bin al-Hijazi — 1099 222- Sharh al-Ashbah wa'n-Nazair — Ibrahim bin Husain bin Ahmad bin Muhammad ibn al-Biri — 592 223- Sharh al-Jami' al-Saghir — Imam Qazi Khan Husain bin Mansur — 1062 224- Sharh al-Durar — Sheikh Isma'il bin Abd al-Ghani al-Nabulsi — 1052 225- Sharh Safar al-Sa'adah — Sheikh Abd al-Haqq al-Muhaddith al-Dehlawi — 516 226- Sharh al-Sunnah — Husain bin Mansur al-Baghawi — 931 227- Sharh Shir'at al-Islam — Yaqub bin Sayyidi Ali Zadah — 480 228- Sharh Mukhtasar al-Tahawi lil-Isbijabi — Abu Nasr Ahmad bin Mansur al-Hanafi al-Isbijabi — 766 229- Sharh al-Gharibayn — 321 230- Sharh al-Muslim li'n-Nawawi — Sheikh Abu Zakariya Yahya bin Sharaf al-Nawawi — 921 231- Sharh Ma'ani al-Athar — Abu Ja'far Ahmad bin Muhammad al-Tahawi — 1252 232- Sharh al-Manzumah li-ibn Wahban — Abd al-Barr bin Muhammad ibn Shahnah — 911 233- Sharh al-Manzumah fi Rasm al-Mufti — Muhammad Amin ibn Abidin al-Shami — 1122 234- Sharh al-Sudur bi-Sharh Hal al-Mawta wa'l-Qubur — Allama Jalal al-Din Abd al-Rahman al-Suyuti — 1122 235- Sharh Mawahib al-Ladunniyyah — Allama Muhammad bin Abd al-Baqi al-Zurqani — 766 236- Sharh Muwatta Imam Malik — Allama Muhammad bin Abd al-Baqi al-Zurqani — 932 237- Sharh al-Muhadhdhab li'n-Nawawi — Sheikh Abu Zakariya Yahya bin Sharaf al-Nawawi — 747 238- Sharh al-Niqayah — Maulana Abd al-Ali al-Birjandi — 890 239- Sharh al-Wiqayah — Sadr al-Shari'ah Ubayd Allah bin Mas'ud 240- Sharh al-Hidayah — Muhammad bin Muhammad bin Muhammad ibn Shahnah

Page 667 of 688

श (शीन) 218- अल-शाफ़ी — शम्सुल अइम्मा अब्दुल्लाह बिन महमूद अल-कुरदरी — 973 219- शरह अल-अरबईन लिन-नववी — शिहाबुद्दीन अहमद बिन हजर अल-मक्की — 1106 220- शरह अल-अरबईन लिन-नववी — इब्राहीम इब्न अतिय्या अल-मालिकी — 978 221- शरह अल-अरबईन लिन-नववी — अल्लामा अहमद बिन अल-हिजाज़ी — 1099 222- शरह अल-अश्बाह वन्-नज़ाइर — इब्राहीम बिन हुसैन बिन अहमद बिन मुहम्मद इब्न अल-बीरी — 592 223- शरह अल-जामिउल सगीर — इमाम क़ाज़ी खान हुसैन बिन मंसूर — 1062 224- शरह अद-दुरर — शैख़ इस्माईल बिन अब्दुल गनी अन-नाबुलुसी — 1052 225- शरह सफरुल सआदत — शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी — 516 226- शरह अस-सुन्ना — हुसैन बिन मंसूर अल-बगवी — 931 227- शरह शिरअतुल इस्लाम — याकूब बिन सैय्यदी अली ज़ादा — 480 228- शरह मुख़्तसर अत-तहावी लिल-अस्बीजाबी — अबू नस्र अहमद बिन मंसूर अल-हन्फ़ी अल-अस्बीजाबी — 766 229- शरह अल-गरीबैन — 321 230- शरह अल-मुस्लिम लिन-नववी — शैख़ अबू ज़करिया यहया बिन शरफ अन-नववी — 921 231- शरह मानी अल-आसार — अबू जाफ़र अहमद बिन मुहम्मद अत-तहावी — 1252 232- शरह अल-मंज़ूमा लि-इब्न वहबान — अब्दुल बर्र बिन मुहम्मद इब्न शहना — 911 233- शरह अल-मंज़ूमा फ़ी रस्मिल मुफ्ती — मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अश-शामी — 1122 234- शरह अस-सुदूर बि-शरह हाल अल-मौता वल-कुबूर — अल्लामा जलालुद्दीन अब्दुर्रहमान अस-सुयूती — 1122 235- शरह मवाहिबुल लदुन्निया — अल्लामा मुहम्मद बिन अब्दुल बाक़ी अज़-ज़ुरक़ानी — 766 236- शरह मुवत्ता इमाम मालिक — अल्लामा मुहम्मद बिन अब्दुल बाक़ी अज़-ज़ुरक़ानी — 932 237- शरह अल-मुहज़्ज़ब लिन-नववी — शैख़ अबू ज़करिया यहया बिन शरफ अन-नववी — 747 238- शरह अन-निकाया — मौलाना अब्दुल अली अल-बिरजंदी — 890 239- शरह अल-विक़ाया — सद्रुश शरीया उबैदुल्लाह बिन मसऊद 240- शरह अल-हिदाया — मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद इब्न शहना

ش ٢١٨- الشافى — شمس الائمتہ عبد الله بن محمود الكردرى — ٩٧٣ ٢١٩- شرح الاربعين للنووى — شہاب الدين احمد بن حجر المكى — ١١٠٦ ٢٢٠- شرح الاربعين للنووى — ابراہيم ابن عطيہ المالكى — ٩٧٨ ٢٢١- شرح الاربعين للنووى — علامہ احمد بن الحجازى — ١٠٩٩ ٢٢٢- شرح الاشباه والنظائر — ابراہيم بن حسين بن احمد بن محمد ابن البيرى — ٥٩٢ ٢٢٣- شرح الجامع الصغير — امام قاضى خان حسين بن منصور — ١٠٦٢ ٢٢٤- شرح الدرر — شيخ اسمعيل بن عبد الغنى النابلسى — ١٠٥٢ ٢٢٥- شرح سفر السعادة — شيخ عبد الحق المحدث الدہلوى — ٥١٦ ٢٢٦- شرح السنہ — حسين بن منصور البغوى — ٩٣١ ٢٢٧- شرح شرعة الاسلام — يعقوب بن سيدى على زاده — ٤٨٠ ٢٢٨- شرح مختصر الطحاوى للاسبيجابى — ابو نصر احمد بن منصور الحنفى الاسبيجابى — ٧٦٦ ٢٢٩- شرح الغريبين — ٣٢١ ٢٣٠- شرح المسلم للنووى — شيخ ابوزكريا يحيى بن شرف النووى — ٩٢١ ٢٣١- شرح معانى الآثار — ابو جعفر احمد بن محمد الطحاوى — ١٢٥٢ ٢٣٢- شرح المنظومة لابن وہبان — عبد البر بن محمد ابن شحنة — ٩١١ ٢٣٣- شرح المنظومة فى رسم المفتي — محمد امين ابن عابدين الشامى — ١١٢٢ ٢٣٤- شرح الصدور بشرح حال الموتىٰ والقبور — علامہ جلال الدين عبد الرحمن السيوطى — ١١٢٢ ٢٣٥- شرح مواہب اللدنيہ — علامہ محمد بن عبد الباقى الزرقانى — ٧٦٦ ٢٣٦- شرح مؤطا امام مالك — علامہ محمد بن عبد الباقى الزرقانى — ٩٣٢ ٢٣٧- شرح المهذب للنووى — شيخ ابوزكريا يحيى بن شرف النووى — ٧٤٧ ٢٣٨- شرح النقاية — مولانا عبد العلى البرجندى — ٨٩٠ ٢٣٩- شرح الوقاية — صدر الشريعة عبيد الله بن مسعود ٢٤٠- شرح الہداية — محمد بن محمد بن محمد ابن شحنة

Fatawa Razawiya, Volume 12

240- Sharh al-Hidaya - Muhammad bin Muhammad bin Muhammad Ibn Shuhna - 890 241- Shir'at al-Islam - Imam al-Islam Muhammad bin Abi Bakr - 573 242- Shu'ab al-Iman - Abu Bakr Ahmad bin Husayn bin Ali al-Bayhaqi - 458 243- Sharh al-Jami' al-Saghir - Ahmad bin Mansur al-Hanafi al-Isbijabi - 480 244- Sharh al-Jami' al-Saghir - Umar bin Abdul Aziz al-Hanafi - 536 245- Al-Shifa fi Ta'rif Huquq al-Mustafa ﷺ - Abu al-Fadl Iyad bin Musa Qadi - 524 246- Sharh Shafiyah Ibn Hajib - Radi al-Din Muhammad bin al-Hasan al-Astarabadi - 686 247- Sharh Kafiyah Ibn Hajib - Radi al-Din Muhammad bin al-Hasan al-Astarabadi - 686 248- Sharh Tawali' al-Anwar - Mahmud bin Abdul Rahman al-Isfahani - 739 249- Shifa al-Saqam fi Ziyarat Khayr al-Anam - Taqi al-Din Ali bin Abd al-Kafi al-Subki - 756 250- Sharh Aqa'id al-Nasafi - Sa'd al-Din Mas'ud bin Umar Taftazani - 792 251- Sharh al-Maqasid Sa'd al-Din - Mas'ud bin Umar Taftazani - 792 252- Sharh al-Mawaqif - Sayyid Sharif Ali bin Muhammad al-Jurjani - 816 253- Sharh al-Siraji - Sayyid Sharif Ali bin Muhammad al-Jurjani - 816 254- Sharh Chaghmini - Musa Pasha bin Muhammad al-Rumi - 841 255- Sharh Hashiya al-Kanz li Mulla Miskin - Mu'in al-Din al-Harawi Mulla Miskin - 952 256- Sharh Fiqh Akbar - Ali bin Sultan Muhammad al-Qari - 1012 257- Sharh Ayn al-Ilm - Ali bin Sultan Muhammad al-Qari - 1012 258- Sharh Qasida Tayyib al-Nagham - Shah Waliullah bin Shah Abdul Rahim al-Dihlawi - 1179 259- Sharh Qasida Hamziya - Shah Waliullah bin Shah Abdul Rahim al-Dihlawi - 1179 260- Sharh Rubaiyat - Shah Waliullah bin Shah Abdul Rahim al-Dihlawi - 1179 261- Sharh Fawatih al-Rahmut - Shah Waliullah bin Shah Abdul Rahim al-Dihlawi - 1179 262- Shifa al-Alil - Shah Waliullah bin Shah Abdul Rahim al-Dihlawi - 1179 263- Sharh al-Nuqaya li Abi al-Makarim - Abu al-Makarim bin Abdullah bin Muhammad Ba'd az - 907 264- Sharaf al-Mustafa - Hafiz Abdul Malik bin Muhammad Nishapuri - 406 265- Sharh Muqaddima Ushnawiya - Ahmad bin Turki al-Maliki

फ़तावा रज़विया, जिल्द बारहवीं

२४०- शरह अल-हिदाया - मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद इब्न शुहना - ८९० २४१- शिरअतुल इस्लाम - इमामुल इस्लाम मुहम्मद बिन अबी बक्र - ५७३ २४२- शुअबुल ईमान - अबू बक्र अहमद बिन हुसैन बिन अली अल-बैहक़ी - ४५८ २४३- शरह अल-जामे अस-सग़ीर - अहमद बिन मन्सूर अल-हनफ़ी अल-इस्बीजाबी - ४८० २४४- शरह अल-जामे अस-सग़ीर - उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ अल-हनफ़ी - ५३६ २४५- अल-शिफ़ा फ़ी तारीफ़ हुक़ूक़ अल-मुस्तफ़ा ﷺ - अबुल फ़ज़्ल अयाज़ बिन मूसा क़ाज़ी - ५२४ २४६- शरह शाफ़िया इब्न हाजिब - रज़ीउद्दीन मुहम्मद बिन अल-हसन अल-अस्तराबादी - ६८६ २४७- शरह काफ़िया इब्न हाजिब - रज़ीउद्दीन मुहम्मद बिन अल-हसन अल-अस्तराबादी - ६८६ २४८- शरह तवालेउल अनवार - महमूद बिन अब्दुल रहमान अल-इसफ़हानी - ७३९ २४९- शिफ़ाउल सक़ाम फ़ी ज़ियारत ख़ैर अल-अनाम - तक़ीउद्दीन अली बिन अब्दुल काफ़ी अल-सुबकी - ७५६ २५०- शरह अक़ाइद अल-नस्फ़ी - सअदउद्दीन मसऊद बिन उमर तफ़्ताज़ानी - ७९२ २५१- शरह अल-मक़ासिद सअदउद्दीन - मसऊद बिन उमर तफ़्ताज़ानी - ७९२ २५२- शरह अल-मवाक़िफ़ - सैय्यद शरीफ़ अली बिन मुहम्मद अल-जुरजानी - ८१६ २५३- शरह अल-सिराजी - सैय्यद शरीफ़ अली बिन मुहम्मद अल-जुरजानी - ८१६ २५४- शरह चग़मीनी - मूसा पाशा बिन मुहम्मद अल-रूमी - ८४१ २५५- शरह हाशिया अल-कन्ज़ लि मुल्ला मिस्कीन - मुईनुद्दीन अल-हरवी मुल्ला मिस्कीन - ९५२ २५६- शरह फ़िक़्ह अकबर - अली बिन सुल्तान मुहम्मद अल-क़ारी - १०१२ २५७- शरह ऐन अल-इल्म - अली बिन सुल्तान मुहम्मद अल-क़ारी - १०१२ २५८- शरह क़सीदा तैय्यिब अल-नग़म - शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम अल-देहल्वी - ११७९ २५९- शरह क़सीदा हमज़िया - शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम अल-देहल्वी - ११७९ २६०- शरह रुबाइयात - शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम अल-देहल्वी - ११७९ २६१- शरह फ़वातेह अल-रहमूत - शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम अल-देहल्वी - ११७९ २६२- शिफ़ाउल अलील - शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम अल-देहल्वी - ११७९ २६३- शरह अल-नुक़ाया लि अबिल मकारिम - अबुल मकारिम बिन अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बाद अज़ - ९०७ २६४- शरफ़ अल-मुस्तफ़ा - हाफ़िज़ अब्दुल मलिक बिन मुहम्मद नीशापूरी - ४०६ २६५- शरह मुक़द्दमा उशनावीया - अहमद बिन तुर्की अल-मालकी

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

۲۴۰- شرح الهدایۃ - محمد بن محمد بن محمد ابن شحنۃ - ۸۹۰ ۲۴۱- شرعۃ الاسلام - امام الاسلام محمد بن ابی بکر - ۵۷۳ ۲۴۲- شعب الایمان - ابوبکر احمد بن حسین بن علی البیهقی - ۴۵۸ ۲۴۳- شرح الجامع الصغیر - احمد بن منصور الحنفی الاسبیجابی - ۴۸۰ ۲۴۴- شرح الجامع الصغیر - عمر بن عبدالعزیز الحنفی - ۵۳۶ ۲۴۵- الشفاء فی تعریف حقوق المصطفٰی صلی اللہ علیہ وسلم - ابوالفضل عیاض بن موسٰی قاضی - ۵۲۴ ۲۴۶- شرح شافیہ ابن حاجب - رضی الدین محمد بن الحسن الاسترآبادی - ۶۸۶ ۲۴۷- شرح کافیہ ابن حاجب - رضی الدین محمد بن الحسن الاسترآبادی - ۶۸۶ ۲۴۸- شرح طوالع الانوار - محمود بن عبدالرحمن الاصفہانی - ۷۳۹ ۲۴۹- شفاء السقام فی زیارۃ خیر الانام - تقی الدین علی بن عبد الکافی السکی - ۷۵۶ ۲۵۰- شرح عقائد النسفی - سعد الدین مسعود بن عمر تفتازانی - ۷۹۲ ۲۵۱- شرح المقاصد سعد الدین - مسعود بن عمر تفتازانی - ۷۹۲ ۲۵۲- شرح المواقف - سید شریف علی بن محمد الجرجانی - ۸۱۶ ۲۵۳- شرح السراجی - سید شریف علی بن محمد الجرجانی - ۸۱۶ ۲۵۴- شرح چغمینی - موسٰی پاشا بن محمد الرومی - ۸۴۱ ۲۵۵- شرح حاشیہ الکنز لملا مسکین - معین الدین الہروی ملا مسکین - ۹۵۲ ۲۵۶- شرح فقہ اکبر - علی بن سلطان محمد القاری - ۱۰۱۲ ۲۵۷- شرح عین العلم - علی بن سلطان محمد القاری - ۱۰۱۲ ۲۵۸- شرح قصیدہ طیب النغم - شاہ ولی اللہ بن شاہ عبد الرحیم الدہلوی - ۱۱۷۹ ۲۵۹- شرح قصیدہ ہمزیہ - شاہ ولی اللہ بن شاہ عبد الرحیم الدہلوی - ۱۱۷۹ ۲۶۰- شرح رباعیات - شاہ ولی اللہ بن شاہ عبد الرحیم الدہلوی - ۱۱۷۹ ۲۶۱- شرح فواتح الرحموت - شاہ ولی اللہ بن شاہ عبد الرحیم الدہلوی - ۱۱۷۹ ۲۶۲- شفاء العلیل - شاہ ولی اللہ بن شاہ عبد الرحیم الدہلوی - ۱۱۷۹ ۲۶۳- شرح النقایہ لابی

المکارم - ابو المکارم بن عبد الله بن محمد بعد از - ۹۰۷ ۲۶۴- شرف المصطفیٰ - حافظ عبد الملک بن محمد نیشاپوری - ۴۰۶ ۲۶۵- شرح مقدمہ عشناویہ - احمد بن ترکی المالکی

Fatawa Rizvia - Volume Twelve

264 - Sharaf al-Mustafa - Hafiz Abdul Malik bin Muhammad Nishapuri - 406 266 - Sharh Jami' al-Usul lil-Mudif - Mubarak bin Muhammad, known as Ibn al-Athir al-Jazari - 686 267 - Sharh al-Multaqa lil-Bahnasī - Muhammad bin Muhammad, known as Ibn al-Bahnasi - 987 268 - Sharh Durar al-Bihar - Abdul Wahhab ibn Ahmad, famous as Ibn Wahban - 768

Letter: Sad (ص) 269 - Sihah al-Jawhari - Isma'il bin Hammad al-Jawhari - 393 270 - Sahih Ibn Hibban (Kitab al-Taqasim wa al-Anwa') - Muhammad bin Hibban - 354 271 - Sahih Ibn Khuzaymah - Muhammad bin Ishaq Ibn Khuzaymah - 311 272 - Al-Surah - Abu al-Fadl Muhammad bin Umar bin Khalid al-Qurashi (approx.) - 690 273 - Sagheri Sharh Munyah - Ibrahim al-Halabi - 956 274 - Sirat-e-Mustaqim - Syed Ahmad Shaheed Bareilly - 1226 275 - Al-Sawa'iq al-Muhriqah - Shihab al-Din Ahmad bin Hajar al-Makki - 973

Letter: Ta (ط) 276 - Al-Tahtawi 'ala al-Durr - Syed Ahmad al-Tahtawi - 1302 277 - Al-Tahtawi 'ala al-Maraqi - Syed Ahmad al-Tahtawi - 1302 278 - Tabaqat al-Muqri'in - Muhammad bin Ahmad al-Dhahabi - 748 279 - Tabaqat al-Qurra - Muhammad bin Muhammad al-Jazari - 833 280 - Al-Tariqah al-Muhammadiyyah - Muhammad bin Bir 'Ali, known as Birgili - 981 281 - Tulabat al-Talabah - Najm al-Din 'Umar bin Muhammad al-Nasafi - 537

Letter: 'Ayn (ع) 282 - 'Umdat al-Qari Sharh Sahih al-Bukhari - Allama Badr al-Din Abi Muhammad Mahmud bin Ahmad al-Ayni - 855 283 - Al-'Inayah Sharh al-Hidayah - Akmal al-Din Muhammad bin Muhammad al-Babarti - 786 284 - 'Inayat al-Qadi Hashiyah 'ala Tafsir al-Baydawi - Shihab al-Din al-Khafaji - 1069

Page 669 of 688

फ़तावा रज़विया - जिल्द बारहवीं

२६४ - शरफ अल-मुस्तफ़ा - हाफ़िज़ अब्दुल मलिक बिन मुहम्मद नीशापुरी - ४०६ २६६ - शरह जामि' अल-उसूल लिल-मुदीफ़ - मुबारक बिन मुहम्मद, जिन्हें इब्न अल-असीर अल-जज़री के नाम से जाना जाता है - ६८६ २६७ - शरह अल-मुल्तका लिल-बहन्सी - मुहम्मद बिन मुहम्मद, जिन्हें इब्न अल-बहन्सी के नाम से जाना जाता है - ९८७ २६८ - शरह दुरर अल-बिहार - अब्दुल वहाब इब्न अहमद, जो इब्न वहबान के नाम से प्रसिद्ध हैं - ७६८

अक्षर: स्वाद (ص) २६९ - सिहाह अल-जौहरी - इस्माइल बिन हम्माद अल-जौहरी - ३९३ २७० - सहीह इब्न हिब्बान (किताब अल-तकासिम वल-अनवा') - मुहम्मद बिन हिब्बान - ३५४ २७१ - सहीह इब्न खुज़ैमा - मुहम्मद बिन इसहाक इब्न खुज़ैमा - ३११ २७२ - अल-सुराह - अबू अल-फ़ज़ल मुहम्मद बिन उमर बिन खालिद अल-कुरशी (लगभग) - ६९० २७३ - सग़ीरी शरह मुनियाह - इब्राहिम अल-हलबी - ९५६ २७४ - सिराते मुस्तकीम - सैयद अहमद शहीद बरेलवी - १२२६ २७५ - अल-सवाइक अल-मुहरिका - शिहाब अल-दीन अहमद बिन हजर अल-मक्की - ९७३

अक्षर: तोय (ط) २७६ - अल-तहतावी अला अद-दुर्र - सैयद अहमद अल-तहतावी - १३०२ २७७ - अल-तहतावी अला अल-मराक़ी - सैयद अहमद अल-तहतावी - १३०२ २७८ - तबकात अल-मुकरीन - मुहम्मद बिन अहमद अल-ज़हबी - ७४८ २७९ - तबकात अल-कुर्रा - मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-जज़री - ८३३ २८० - अल-तरीका अल-मुहम्मदिया - मुहम्मद बिन बीर अली, जिन्हें बिरगिली के नाम से जाना जाता है - ९८१ २८१ - तुलबत अल-तुलबा - नज्म अल-दीन उमर बिन मुहम्मद अल-नसफ़ी - ५३७

अक्षर: ऐन (ع) २८२ - उम्दत अल-कारी शरह सहीह अल-बुखारी - अल्लामा बद्र अल-दीन अबी मुहम्मद महमूद बिन अहमद अल-ऐनी - ८५५ २८३ - अल-इनाया शरह अल-हिदाया - अकमल अल-दीन मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-बाबरती - ७८६ २८४ - इनायत अल-क़ाज़ी हाशिया अला तफ़सीर अल-बैज़ावी - शिहाब अल-दीन अल-खफ़ाजी - १०६९

पृष्ठ ६६९/६८८

فتاوی رضویه - جلد دو ازدہم

۲۶۴ - شرف المصطفٰی - حافظ عبد الملک بن محمد نیشا پوری - ۴۰۶ ۲۶۶ - شرح جامع الاصول للمضیف - مبارک بن محمد المعروف بابن الاثیر الجزری - ۶۸۶ ۲۶۷ - شرح الملتقی للبهنسی - محمد بن محمد المعروف بابن البهنسی - ۹۸۷ ۲۶۸ - شرح درر البحار - عبد الوہاب ابن احمد الشهیر بابن وهبان - ۷۶۸

ص ۲۶۹ - صحاح الجوهری - اسمعیل بن حماد الجوهری - ۳۹۳ ۲۷۰ - صحیح ابن حبان (کتاب التقاسیم والانواع) - محمد بن حبان - ۳۵۴ ۲۷۱ - صحیح ابن خزیمة - محمد بن اسحاق ابن خزیمہ - ۳۱۱ ۲۷۲ - الصراح - ابو فضل محمد بن عمر بن خالد القرشی تقریبیًا - ۶۹۰ ۲۷۳ - صغیری شرح منیه - ابراہیم الحلبی - ۹۵۶ ۲۷۴ - صراط مستقیم - سید احمد شہید بریلوی - ۱۲۲۶ ۲۷۵ - الصواعق المحرقة - شہاب الدین احمد بن حجر المکی - ۹۷۳

ط ۲۷۶ - الطحطاوی علی الدر - سید احمد الطحطاوی - ۱۳۰۲ ۲۷۷ - الطحطاوی علی المراقی - سید احمد الطحطاوی - ۱۳۰۲ ۲۷۸ - طبقات المقرئین - محمد بن احمد الذہبی - ۷۴۸ ۲۷۹ - طبقات القراء - محمد بن محمد الجزری - ۸۳۳ ۲۸۰ - الطریقة المحمدیة - محمد بن بیر علی المعروف برکلی - ۹۸۱ ۲۸۱ - طلبة الطلبة - نجم الدین عمر بن محمد النسفی - ۵۳۷

ع ۲۸۲ - عمدة القاری شرح صحیح البخاری - علامہ بدر الدین ابی محمد محمود بن احمد العینی - ۸۵۵ ۲۸۳ - العنایة شرح الهدایة - اکمل الدین محمد بن محمد البابرتی - ۷۸۶ ۲۸۴ - عنایة القاضي حاشیة علی تفسیر البیضاوی - شہاب الدین الخفاجی - ۱۰۶۹

285- Uyoon al-Masail | Abul Laith Nasr bin Muhammad al-Samarqandi | 378 286- Uqud al-Durriyah | Muhammad Amin ibn Abidin al-Shami | 1252 287- Uddat Kamal al-Din | Muhammad bin Ahmad al-Shaheer bi Tashkubri | 1030 288- Amal al-Yawm wal-Laylah | Abu Bakr Ahmad bin Muhammad ibn al-Sunni | 364 289- Awarif al-Ma'arif | Shihab al-Din Suhrawardi | 632 290- Al-Iqd al-Farid | Abu Abdullah Muhammad bin Abdul Qawi al-Maqdisi | 699 291- Ayn al-Ilm | Muhammad bin Uthman bin Umar al-Hanafi al-Balkhi | 830 292- Al-Iqd al-Jayyid | Shah Waliullah bin Shah Abdul Rahim al-Dahlawi | 1179 293- Uqud al-Durriyah fi Tanqih al-Fatawa al-Hamidiyyah | Muhammad Amin Afandi ibn Abidin | 1252 294- Umdat al-Ri'ayah fi Hall Sharh al-Wiqayah | Muhammad bin Abdul Hayy al-Lucknowi | 1304

غ (Ghayn) 295- Ghayat al-Bayan Shaykh Qawam al-Din | Amir Katib ibn Amir al-Itqani | 758 296- Ghurar al-Ahkam | Qadi Muhammad bin Faramuz Mulla Khusrow | 885 297- Gharib al-Hadith | Abul Hasan Ali bin Mughirah al-Baghdadi al-Ma'ruf bi Athram | 230 298- Ghamz Uyun al-Basa'ir | Ahmad bin Muhammad al-Hamawi al-Hanafi | 1098 299- Ghunyat Dhu al-Ahkam | Hasan bin Ammar bin Ali al-Shurunbulali | 1069 300- Ghunyat al-Mustamli | Muhammad Ibrahim bin Muhammad al-Halabi | 956 301- Ghayth al-Naf' fi al-Qira'at al-Sab' | Yahya bin Sharaf al-Nawawi | 676

ف (Fa) 302- Fath al-Bari Sharh al-Bukhari | Shihab al-Din Ahmad bin Ali ibn Hajar al-Asqalani | 852 303- Fath al-Qadir | Kamal al-Din Muhammad bin Abdul Wahid ibn al-Humam | 861 304- Fatawa al-Nasafi | Imam Najm al-Din al-Nasafi | 537 305- Fatawa al-Bazzaziyyah | Muhammad bin Muhammad bin Shihab ibn Bazzaz | 827

जिल्द बाइसवीं (Volume 22) फ़तावा रज़विया

285- उयून अल-मसाइल | अबुल लैथ नस्र बिन मुहम्मद अल-समरकंदी | 378 286- उक़ूद अद-दुर्रिया | मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अल-शामी | 1252 287- उद्दत कमाल अद-दीन | मुहम्मद बिन अहमद अल-शहीर बि ताशकुबरी | 1030 288- अमल अल-यौम वल-लैलह | अबू बक्र अहमद बिन मुहम्मद इब्न अल-सुन्नी | 364 289- अवारिफ अल-मआरिफ | शिहाब अद-दीन सुहरावर्दी | 632 290- अल-इक्द अल-फ़रीद | अबू अब्दुल्ला मुहम्मद बिन अब्दुल क़वी अल-मक़दसी | 699 291- ऐन अल-इल्म | मुहम्मद बिन उस्मान बिन उमर अल-हनफी अल-बल्ख़ी | 830 292- अल-इक्द अल-जय्यिद | शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम अल-दहलवी | 1179 293- उक़ूद अद-दुर्रिया फ़ी तन्क़ीह अल-फ़तावा अल-हामिदिय्या | मुहम्मद अमीन अफ़ंदी इब्न आबिदीन | 1252 294- उम्दत अर-रिआया फ़ी हल शरह अल-विकाया | मुहम्मद बिन अब्दुल हयी अल-लखनवी | 1304

ग़ (अक्षर ग़ैन) 295- ग़ायत अल-बयान शैख़ क़वाम अद-दीन | अमीर कातिब इब्न अमीर अल-इतकानी | 758 296- ग़ुरर अल-अहकाम | क़ाज़ी मुहम्मद बिन फ़रामुज़ मुल्ला खुसरो | 885 297- ग़रीब अल-हदीस | अबुल हसन अली बिन मुग़ीरा अल-बग़दादी अल-मरूफ़ बि असरम | 230 298- ग़म्ज़ उयून अल-बसाइर | अहमद बिन मुहम्मद अल-हमवी अल-हनफी | 1098 299- ग़ुनियत ज़ु अल-अहकाम | हसन बिन अम्मार बिन अली अल-शुरुनबुलाली | 1069 300- ग़ुनियत अल-मुस्तमली | मुहम्मद इब्राहीम बिन मुहम्मद अल-हलबी | 956 301- ग़ैथ अन-नफ़' फ़ी अल-क़िरात अस-सब' | यह्या बिन शरफ़ अन-नववी | 676

फ़ (अक्षर फ़ा) 302- फ़तह अल-बारी शरह अल-बुख़ारी | शिहाब अद-दीन अहमद बिन अली इब्न हजर अल-अस्क़लानी | 852 303- फ़तह अल-क़दीर | कमाल अद-दीन मुहम्मद बिन अब्दुल वाहिद इब्न अल-हुमाम | 861 304- फ़तावा अन-नसफ़ी | इमाम नज्म अद-दीन अन-नसफ़ी | 537 305- फ़तावा अल-बज़्ज़ाज़िय्या | मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन शिहाब इब्न बज़्ज़ाज़ | 827

पेज 670 का 688

جلد دو ازدہم فتاوئ رضویہ

۲۸۵- عیون المسائل | ابواللیث نصر بن محمد السمرقندی | ۳۷۸ ۲۸۶- عقود الدریة | محمد امین ابن عابدین الشامی | ۱۲۵۲ ۲۸۷- عدة کمال الدین | محمد بن احمد الشهیر بطاشکبری | ۱۰۳۰ ۲۸۸- عمل الیوم واللیلة | ابوبکر احمد بن محمد ابن السنی | ۳۶۴ ۲۸۹- عوارف المعارف | شهاب الدین سهروردی | ۶۳۲ ۲۹۰- عقد الفرید | ابو عبد الله محمد بن عبد القوی المقدسی | ۶۹۹ ۲۹۱- عین العلم | محمد بن عثمان بن عمر الحنفی البلخی | ۸۳۰ ۲۹۲- عقد الجید | شاه ولی الله بن شاه عبد الرحیم الدهلوی | ۱۱۷۹ ۲۹۳- عقود الدریة فی تنقیح الفتاوی الحامدیه | محمد امین آفندی ابن عابدین | ۱۲۵۲ ۲۹۴- عمدة الرعایة فی حل شرح الوقایه | محمد بن عبد الحی اللکهنوی | ۱۳۰۴

غ ۲۹۵- غایة البیان شیخ قوام الدین | امیر کاتب ابن امیر الاتقانی | ۷۵۸ ۲۹۶- غرر الاحکام | قاضی محمد بن فراموز ملا خسرو | ۸۸۵ ۲۹۷- غریب الحدیث | ابوالحسن علی بن مغیرة البغدادی المعروف باثرم | ۲۳۰ ۲۹۸- غمز عیون البصائر | احمد بن محمد الحموی الحنفی | ۱۰۹۸ ۲۹۹- غنیة ذوالاحکام | حسن بن عمار بن علی الشرنبلالی | ۱۰۶۹ ۳۰۰- غنیة المستملی | محمد ابراهیم بن محمد الحلبی | ۹۵۶ ۳۰۱- غیث النفع فی القراء السبع | یحیی بن شرف النووی | ۶۷۶

ف ۳۰۲- فتح الباری شرح البخاری | شهاب الدین احمد بن علی ابن حجر العسقلانی | ۸۵۲ ۳۰۳- فتح القدیر | کمال الدین محمد بن عبد الواحد بابن الهمام | ۸۶۱ ۳۰۴- فتاوی النسفی | امام نجم الدین النسفی | ۵۳۷ ۳۰۵- فتاوی بزازیة | محمد بن محمد بن شهاب ابن بزاز | ۸۲۷

Volume 12 Fatawa Rizvia

1. Fatawa Hujjah
2. Fatawa Khayriyya Allama Khayr al-Din bin Ahmad bin Ali al-Ramli 1081
3. Fatawa Sirajiyya Siraj al-Din Ali bin Uthman al-Ushi 585
4. Fatawa Ata bin Hamza Ata bin Hamza al-Saghdi
5. Fatawa Ghiyathiyya Dawud bin Yusuf al-Khatib al-Hanafi
6. Fatawa Qadi Khan Hasan bin Mansur Qadi Khan 592
7. Fatawa Hindiyya Jamiyat-ul-Ulama, Aurangzeb Alamgir
8. Fatawa Zahiriyya Zahir al-Din Abu Bakr Muhammad bin Ahmad 619
9. Fatawa Walwalijiyya Abd al-Rashid bin Abi Hanifa al-Walwaliji 540
10. Fatawa al-Kubra Imam Sadr al-Shahid Husam al-Din Umar bin Abd al-Aziz 536
11. Fiqh al-Akbar Al-Imam al-A'zam Abi Hanifa Nu'man bin Thabit al-Kufi 150
12. Fath al-Mu'in Sayyid Muhammad Abi al-Sa'ud al-Hanafi
13. Fath al-Mu'in Sharh Qurrat al-Ayn Zayn al-Din bin Ali bin Ahmad al-Shafi'i 928
14. Al-Futuhat al-Makkiyya Muhiy al-Din Muhammad bin Ali ibn Arabi 638
15. Fawatih al-Rahamut Abd al-Ali Muhammad bin Nizam al-Din al-Kanawi 1225
16. Al-Fawa'id Tammam bin Muhammad bin Abdullah al-Bajali 412
17. Fawa'id al-Mukhashshasa Muhammad Amin ibn Abidin al-Shami 1252
18. Fayd al-Qadir Sharh al-Jami' al-Saghir, Abd al-Ra'uf al-Munawi 1031
19. Fawa'id Sawiyya Ismail bin Abdullah, nicknamed Sumayyah 267
20. Fada'il al-Qur'an li-Ibn Durays Abu Abdullah Muhammad bin Ayyub ibn Durays al-Bajali 294
21. Fawa'id al-Khal'i Abu al-Hasan Ali bin al-Husayn al-Mawsili 492
22. Fusul al-Imadi Muhammad bin Mahmud Ustruyashani 636
23. Fatawa Tatar-Khaniyya Alim bin al-Ala al-Ansari al-Dihlawi 786
24. Fath al-Mughith Imam Muhammad bin Abd al-Rahman al-Sakhawi 903
25. Fatawa Zayniyya Zayn al-Din bin Ibrahim ibn Nujaym 970

जिल्द बारहवीं फतावा रज़विया

1. फतावा हुज्जह
2. फतावा खैरय्या अल्लामा खैर अल-दीन बिन अहमद बिन अली अल-रमल १०८१
3. फतावा सिराजिया सिराज अल-दीन अली बिन उस्मान अल-ओशी ५८५
4. फतावा अता बिन हमज़ा अता बिन हमज़ा अल-सग़दी
5. फतावा ग़ियासिया दाऊद बिन यूसुफ़ अल-खतीब अल-हनाफ़ी
6. फतावा काज़ी खान हसन बिन मंसूर काज़ी खान ५९२
7. फतावा हिंदिया जमीअत-उल-उलेमा, औरंगज़ेब आलमगीर
8. फतावा ज़हीरिया ज़हीर अल-दीन अबू बक्र मुहम्मद बिन अहमद ६१९
9. फतावा वलवालिजिया अब्द अल-रशीद बिन अबी हनीफ़ा अल-वलवालिजी ५४०
10. फतावा अल-कुबरा इमाम सदर अल-शहीद हुसाम अल-दीन उमर बिन अब्द अल-अज़ीज़ ५३६
11. फ़िक़्ह अल-अकबर अल-इमाम अल-आज़म अबी हनीफ़ा नुमान बिन साबित अल-कूफ़ी १५०
12. फ़तह अल-मुईन सैय्यद मुहम्मद अबी अल-सऊद अल-हनाफ़ी
13. फ़तह अल-मुईन शरह कुर्रत अल-ऐन ज़ैन अल-दीन बिन अली बिन अहमद अल-शाफ़ई ९२८
14. अल-फ़ुतूहात अल-मक्किया मुही अल-दीन मुहम्मद बिन अली इब्न अरबी ६३८
15. फ़वातिह अल-रहमूत अब्द अल-अली मुहम्मद बिन निज़ाम अल-दीन अल-कनवी १२२५
16. अल-फ़वाइद तमाम बिन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अल-बजली ४१२
17. फ़वाइद अल-मुखाश्शसा मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अल-शामी १२५२
18. फ़ैज़ अल-क़दीर शरह अल-जामि अल-सग़ीर, अब्द अल-रऊफ़ अल-मुनावी १०३१
19. फ़वाइद सविया इस्माइल बिन अब्दुल्लाह, उपनाम सुमैय्या २६७
20. फ़ज़ाइल अल-क़ुरान लि-इब्न दुरैस अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अय्यूब इब्न दुरैस अल-बजली २९४
21. फ़वाइद अल-खलई अबू अल-हसन अली बिन अल-हुसैन अल-मौसिली ४९२
22. फ़ुसूल अल-इमादी मुहम्मद बिन महमूद उस्त्रुयशनी ६३६
23. फतावा तातार-खानिया आलिम बिन अल-अला अल-अंसारी अल-देहल्वी ७८६
24. फ़तह अल-मुग़ीस इमाम मुहम्मद बिन अब्द अल-रहमान अल-सखावी ९०३

25. फतावा ज़ैनबिया ज़ैन अल-दीन बिन इब्राहीम इब्न नुजैम ९७०

पृष्ठ ६८८ में से ६७१

جلد دوازدہم فتاوٰی رضویہ

۳۰۶۔ فتاوٰی حجہ ۳۰۷۔ فتاوٰی خیریہ علامہ خیر الدین بن احمد بن علی الرملی ۱۰۸۱ ۳۰۸۔ فتاوٰی سراجیہ سراج الدین علی بن عثمان الاوشی ۵۸۵ ۳۰۹۔ فتاوٰی عطاء بن حمزہ عطاء بن حمزہ السغدی ۳۱۰۔ فتاوٰی غیاثیہ داؤد بن یوسف الخطیب الحنفی ۳۱۱۔ فتاوٰی قاضی خان حسن بن منصور قاضی خان ۵۹۲ ۳۱۲۔ فتاوٰی ہندیہ جمعیت علماء، اورنگ زیب عالمگیر ۳۱۳۔ فتاوٰی ظہیریہ ظہیر الدین ابوبکر محمد بن احمد ۶۱۹ ۳۱۴۔ فتاوٰی ولوالجیہ عبدالرشید بن ابی حنیفہ الوالوالجی ۵۴۰ ۳۱۵۔ فتاوٰی الکبرٰی امام صدر الشہید حسام الدین عمر بن عبدالعزیز ۵۳۶ ۳۱۶۔ فقہ الاکبر الامام الاعظم ابی حنیفہ نعمان بن ثابت الکوفی ۱۵۰ ۳۱۷۔ فتح المعین سید محمد ابی السعود الحنفی ۳۱۸۔ فتح المعین شرح قرۃ العین زین الدین بن علی بن احمد الشافعی ۹۲۸ ۳۱۹۔ الفتوحات المکیۃ محی الدین محمد بن علی ابن عربی ۶۳۸ ۳۲۰۔ فواتح الرحموت عبدالعلی محمد بن نظام الدین الکنوی ۱۲۲۵ ۳۲۱۔ الفوائد تمام بن محمد بن عبداللہ البجلی ۴۱۲ ۳۲۲۔ فوائد المخصصۃ محمد امین ابن عابدین الشامی ۱۲۵۲ ۳۲۳۔ فیض القدیر شرح الجامع الصغیر عبدالرؤف المناوی ۱۰۳۱ ۳۲۴۔ فوائد سویہ اسمعیل بن عبداللہ الملقب بسمویہ ۲۶۷ ۳۲۵۔ فضائل القرآن لابن ضریس ابو عبداللہ محمد بن ایوب ابن ضریس البجلی ۲۹۴ ۳۲۶۔ فوائد الخلعی ابوالحسن علی بن الحسین الموصلی ۴۹۲ ۳۲۷۔ فصول العمادی محمد بن محمود استروشنی ۶۳۶ ۳۲۸۔ فتاوٰی تاتارخانیہ عالم بن العلاء الانصاری الدہلوی ۷۸۶ ۳۲۹۔ فتح المغیث امام محمد بن عبدالرحمن السخاوی ۹۰۳ ۳۳۰۔ فتاوٰی زینبیہ زین الدین بن ابراہیم ابن نجیم ۹۷۰

Fatawa Razawiya Volume Twelve

1. Fath al-Mubin Sharh al-Arba'in - Shihab al-Din Ahmad ibn Muhammad ibn Hajar al-Makki - 974
2. Fath al-Ilah Sharh al-Mishkat - Shihab al-Din Ahmad ibn Muhammad ibn Hajar al-Makki - 974
3. Fatawa al-Faqih Ibn Hajar al-Makki - Shihab al-Din Ahmad ibn Muhammad ibn Hajar al-Makki - 974
4. Fatawa al-Qarawiya - Muhammad ibn Husayn al-Anqarawi - 1098
5. Fatawa Asadiyya - Sayyid As'ad ibn Abi Bakr al-Madani al-Husayni - 1116
6. Fawa'id Majmu'a - Shawkani Muhammad ibn Ali ibn Mahmud al-Shawkani - 1250
7. Fatawa Jamal ibn Umar al-Makki - Jamal ibn Umar al-Makki - 1284
8. Fadl Libas al-Ama'im - Abu Abdullah Muhammad ibn Waddah
9. Fatawa Qa'idiyya - Abu Abdullah Muhammad ibn Ali al-Qadiri
10. Fatawa Ghazzi - Muhammad ibn Abdullah al-Timurtashi - 1004
11. Fatawa Shams al-Din al-Ramli
12. Fath al-Malik al-Majid
13. Fath al-Aziz (Tafsir Azizi) - Abdul Aziz ibn Waliullah al-Dahlawi - 1239

Q (Qaf) 344. Al-Qamus al-Muhit - Muhammad ibn Ya'qub al-Firuzabadi - 817 345. Qurrat al-Ayn - Allama Zayn al-Din ibn Ali al-Malibari - 928 346. Al-Qunya - Najm al-Din Mukhtar ibn Muhammad al-Zahidi - 658 347. Al-Quran al-Karim 348. Qut al-Qulub fi Mu'amalat al-Mahbub - Abu Talib Muhammad ibn Ali al-Makki - 386 349. Al-Qawl al-Musaddad - Shihab al-Din Ahmad ibn Ali al-Qastalani - 852 350. Qurrat al-Aynayn fi Tafdil al-Shaykhayn - Shah Waliullah ibn Shah Abdul Rahim al-Dahlawi - 1179 351. Al-Qawl al-Jamil - Shah Waliullah ibn Shah Abdul Rahim al-Dahlawi - 1179 352. Qamar al-Aqmar Hashiyah Nur al-Anwar - Muhammad ibn Abdul Hayy Lakhnawi Ansari - 1304 353. Al-Qawl al-Sawab fi Fadl Umar ibn al-Khattab - Ibrahim ibn Abdullah al-Yamani - 1304

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

1. फ़तह अल-मुबीन शरह अल-अरबईन - शिहाब अल-दीन अहमद बिन मुहम्मद इब्न हजर अल-मक्की - 974
2. फ़तह अल-इलाह शरह अल-मिश्कात - शिहाब अल-दीन अहमद बिन मुहम्मद इब्न हजर अल-मक्की - 974
3. फ़तावा अल-फ़कीह इब्न हजर अल-मक्की - शिहाब अल-दीन अहमद बिन मुहम्मद इब्न हजर अल-मक्की - 974
4. फ़तावा अल-क़रवीया - मुहम्मद बिन हुसैन अल-अन्क़रवी - 1098
5. फ़तावा असदिया - सैय्यद असअद इब्न अबी बक्र अल-मदनी अल-हुसैनी - 1116
6. फ़वाइद मजमुआ - शौकानी मुहम्मद बिन अली बिन महमूद अल-शौकानी - 1250
7. फ़तावा जमाल बिन उमर अल-मक्की - जमाल बिन उमर अल-मक्की - 1284
8. फ़ज़्ल लिबास अल-अमा'इम - अबू अब्दुल्ला मुहम्मद बिन व़द्दाह
9. फ़तावा क़ाइदिया - अबू अब्दुल्ला मुहम्मद बिन अली अल-कादरी
10. फ़तावा ग़ज़्ज़ी - मुहम्मद बिन अब्दुल्ला अल-तिमुरताशी - 1004
11. फ़तावा शम्स अल-दीन अल-रम्ली
12. फ़तह अल-मलिक अल-मजीद
13. फ़तह अल-अज़ीज़ (तफ़सीर अज़ीज़ी) - अब्दुल अज़ीज़ बिन वली उल्लाह अल-दहलवी - 1239

क़ (अक्षर क़ाफ़) 344. अल-क़ामूस अल-मुहीत - मुहम्मद बिन याक़ूब अल-फ़िरोज़ाबादी - 817 345. कुर्रत अल-ऐन - अल्लामा ज़ैन अल-दीन बिन अली अल-मलीबारी - 928 346. अल-कुन्या - नज्म अल-दीन मुख्तार बिन मुहम्मद अल-ज़ाहीदी - 658 347. अल-क़ुरान अल-करीम 348. कूत अल-कुलूब फ़ी मुआमलात अल-महबूब - अबू तालिब मुहम्मद बिन अली अल-मक्की - 386 349. अल-क़ौल अल-मुसद्दद - शिहाब अल-दीन अहमद बिन अली अल-क़स्तलानी - 852 350. कुर्रत अल-ऐनैन फ़ी तफ़दील अल-शैखैन - शाह वली उल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम अल-दहलवी - 1179 351. अल-क़ौल अल-जमील - शाह वली उल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम अल-दहलवी - 1179 352. कमर अल-अक़मार हाशिया नूर अल-अनवार - मुहम्मद बिन अब्दुल हई लखनवी अंसारी - 1304 353. अल-क़ौल अल-सवाब फ़ी फ़ज़्ल उमर बिन अल-ख़त्ताब - इब्राहिम बिन अब्दुल्ला अल-यमनी - 1304

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

۳۳۱۔ فتح المبین شرح اربعین - شہاب الدین احمد بن محمد ابن حجر المکی - ۹۷۴ ۳۳۲۔ فتح الالہ شرح المشکاۃ - شہاب الدین احمد بن محمد ابن حجر المکی - ۹۷۴ ۳۳۳۔ فتاوی الفقیہ ابن حجر مکی - شہاب الدین احمد بن محمد ابن حجر المکی - ۹۷۴ ۳۳۴۔ فتاوی القرویہ - محمد بن حسین الانقروی - ۱۰۹۸ ۳۳۵۔ فتاوٰی اسعدیہ - سید اسعد ابن ابی بکر المدنی الحسینی - ۱۱۱۶ ۳۳۶۔ فوائد مجموعہ - شوکانی محمد بن علی بن محمود الشوکانی - ۱۲۵۰ ۳۳۷۔ فتاوٰی جمال بن عمر المکی - جمال بن عمر المکی - ۱۲۸۴ ۳۳۸۔ فضل لباس العمائم - ابو عبداللہ محمد بن وضاح ۳۳۹۔ فتاوٰی قاعدیہ - ابو عبداللہ محمد بن علی القادری ۳۴۰۔ فتاوٰی غزی - محمد بن عبداللہ التمر تاشی - ۱۰۰۴ ۳۴۱۔ فتاوٰی شمس الدین الرملی ۳۴۲۔ فتح الملک المجید ۳۴۳۔ فتح العزیز (تفسیر عزیزی) - عبدالعزیز بن ولی اللہ الدہلوی - ۱۲۳۹

ق ۳۴۴۔ القاموس المحیط - محمد بن یعقوب الفیروز آبادی - ۸۱۷ ۳۴۵۔ قرۃ العین - علامہ زین الدین بن علی المليباری - ۹۲۸ ۳۴۶۔ القنیۃ - نجم الدین مختار بن محمد الزاہدی - ۶۵۸ ۳۴۷۔ القرآن الکریم ۳۴۸۔ قوت القلوب فی معاملۃ المحبوب - ابوطالب محمد بن علی المکی - ۳۸۶ ۳۴۹۔ القول المسدد - شہاب الدین احمد بن علی القسطلانی - ۸۵۲ ۳۵۰۔ قرۃ العینین فی تفضیل الشیخین - شاہ ولی اللہ بن شاہ عبدالرحیم الدہلوی - ۱۱۷۹ ۳۵۱۔ القول الجمیل - شاہ ولی اللہ بن شاہ عبدالرحیم الدہلوی - ۱۱۷۹ ۳۵۲۔ قمر الاقمار حاشیہ نورالانوار - محمد بن عبدالہ لکھنوی انصاری - ۱۳۰۴ ۳۵۳۔ القول الصواب فی فضل عمر بن الخطاب - ابراہیم بن عبداللہ الیمنی - ۱۳۰۴

Fatawa Razawiyya Volume Twelve

Kaf 354. Al-Kafi fil Furoo' - Hakim Shaheed Muhammad bin Muhammad - 332 355. Al-Kamil li Ibn 'Adi - Abu Ahmad Abdullah bin 'Adi - 365 356. Al-Kibrit al-Ahmar - Sayyid Abdul Wahhab al-Sha'rani - 973 357. Kitab al-Athar - Imam Muhammad bin Hasan al-Shaybani - 189 358. Kitab al-Athar - Imam Abu Yusuf Yaqub bin Ibrahim al-Ansari - 182 359. Kitab al-Imam fi Adab Dukhul al-Hammam - Abul Has Muhammad bin Ali - 430 360. Kitab al-Siwak - Abu Nu'aym Ahmad bin Abdullah - 1050 361. Kitab al-Hadiyyah li Ibn 'Imad - Abdur Rahman bin Muhammad Imad al-Din bin Muhammad al-'Imadi 362. Kitab al-Tuhur li Abi 'Ubayd - 327 363. Kitab al-'Ilal 'ala Abwab al-Fiqh - Abu Muhammad Abdur Rahman ibn Abi Hatim Muhammad al-Razi - 189 364. Kitab al-Asl - Imam Muhammad bin Hasan al-Shaybani - 730 365. Kitab al-Waswasah - Abu Bakr bin Abi Dawud 366. Kashf al-Asrar - 'Ala al-Din Abdul Aziz bin Ahmad al-Bukhari - 768 367. Kashf al-Ramz 'Alama al-Maqdisi - 975 368. Kashf al-Astar 'an Zawa'id al-Bazzar - Amin al-Din Abdul Wahhab bin Wahban al-Dimashqi - Approx. 800 369. Kanz al-'Ummal - 'Ala al-Din Ali al-Muttaqi bin Husam al-Din - 973 370. Al-Kifayah - Jalal al-Din bin Shams al-Din al-Khwarizmi - 710 371. Kaff al-Rua' - Shihab al-Din Ahmad bin Hajar al-Haytami - 405 372. Kanz al-Daqa'iq - Abdullah bin Ahmad bin Mahmud - 786 373. Al-Kuna lil Hakim - Abu Abdullah al-Hakim - 352 374. Al-Kawakib al-Durari - Shams al-Din Muhammad bin Yusuf al-Shafi'i al-Kirmani - 198 375. Kitab al-Jarh wal Ta'dil - Muhammad bin Hibban al-Tamimi 376. Kitab al-Maghazi - Yahya bin Sa'id al-Qattan

फतावा रज़विया जिल्द बारहवीं

क (काफ़) 354. अल-काफ़ी फिल फुरू - हाकिम शहीद मुहम्मद बिन मुहम्मद - 332 355. अल-कामिल लि इब्न अदी - अबू अहमद अब्दुल्ला बिन अदी - 365 356. अल-किबरीत अल-अहमर - सय्यद अब्दुल वहाब अल-शरानी - 973 357. किताब अल-आसार - इमाम मुहम्मद बिन हसन अल-शैबानी - 189 358. किताब अल-आसार - इमाम अबू यूसुफ याकूब बिन इब्राहिम अल-अंसारी - 182 359. किताब अल-इमाम फ़ी आदाब दुखूल अल-हम्माम - अबुल हास मुहम्मद बिन अली - 430 360. किताब अल-सिवाक - अबू नुएम अहमद बिन अब्दुल्ला - 1050 361. किताब अल-हदिया लि इब्न इमाद - अब्दुल रहमान बिन मुहम्मद इमाद अल-दीन बिन मुहम्मद अल-इमादी 362. किताब अल-तूहूर ली अबी उबैद - 327 363. किताब अल-इलाल अला अबवाब अल-फ़िक्ह - अबू मुहम्मद अब्दुल रहमान इब्न अबी हातिम मुहम्मद अल-राज़ी - 189 364. किताब अल-अस्ल - इमाम मुहम्मद बिन हसन अल-शैबानी - 730 365. किताब अल-वसवसा - अबू बक्र बिन अबी दाऊद 366. कश्फ़ अल-असरार - अला अल-दीन अब्दुल अज़ीज़ बिन अहमद अल-बुखारी - 768 367. कश्फ़ अल-रम्ज़ अलामा अल-मक़दिसी - 975 368. कश्फ़ अल-अस्तार अन ज़वाइद अल-बज़ार - अमीन अल-दीन अब्दुल वहाब बिन वहबान अल-दमिश्की - लगभग 800 369. कन्ज़ अल-उम्माल - अला अल-दीन अली अल-मुत्तकी बिन हुसाम अल-दीन - 973 370. अल-किफ़ाया - जलाल अल-दीन बिन शम्स अल-दीन अल-ख्वारिज़मी - 710 371. कफ़ अल-रुअ - शिहाब अल-दीन अहमद बिन हजर अल-हैतमी - 405 372. कन्ज़ अल-दक़ाइक़ - अब्दुल्ला बिन अहमद बिन महमूद - 786 373. अल-कुना लिल हाकिम - अबू अब्दुल्ला अल-हाकिम - 352 374. अल-कवाकिब अल-दुरारी - शम्स अल-दीन मुहम्मद बिन यूसुफ अल-शाफई अल-किरमानी - 198 375. किताब अल-जरह वल तादील - मुहम्मद बिन हिब्बान अल-तमीमी 376. किताब अल-मगाज़ी - यहया बिन सईद अल-क़त्तान

पृष्ठ 673 का 688

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

ک ۳۵۴۔ الکافی فی الفروع حاکم شہید محمد بن محمد ۳۳۲ ۳۵۵۔ الکامل لابن عدی ابواحمد عبداللہ بن عدی ۳۶۵ ۳۵۶۔ الکبریت الاحمر سید عبدالوہاب الشعرانی ۹۷۳ ۳۵۷۔ کتاب الاثار امام محمد بن حسن الشیبانی ۱۸۹ ۳۵۸۔ کتاب الاثار امام ابویوسف یعقوب بن ابراہیم الانصاری ۱۸۲ ۳۵۹۔ کتاب الالمام فی آداب دخول الحمام ابوالحاس محمد بن علی ۴۳۰ ۳۶۰۔ کتاب السواک ابونعیم احمد بن عبد اللہ ۱۰۵۰ ۳۶۱۔ کتاب الھدیۃ لابن عماد عبدالرحمن بن محمد عمادالدین بن محمد العمادی ۳۶۲۔ کتاب الطھورلابی عبید ۳۲۷ ۳۶۳۔ کتاب العلل علی ابواب الفقہ ابو محمد عبدالرحمن ابن ابی حاتم محمد الرازی ۱۸۹ ۳۶۴۔ کتاب الاصل امام محمد بن حسن الشیبانی ۷۳۰ ۳۶۵۔ کتاب الوسوسۃ ابوبکر بن ابی داؤد ۳۶۶۔ کشف الاسرار علاء الدین عبدالعزیز بن احمد البخاری ۷۶۸ ۳۶۷۔ کشف الرمزعلامۃ المقدسی ۹۷۵ ۳۶۸۔ کشف الاستار عن زوائد البزار امین الدین عبدالوہاب بن وہبان الدمشقی تقریباً ۸۰۰ ۳۶۹۔ کنزالعمال علاء الدین علی المتقی بن حسام الدین ۹۷۳ ۳۷۰۔ الکفایۃ جلال الدین بن شمس الدین الخوارزمی ۷۱۰ ۳۷۱۔ کف الرعاع شہاب الدین احمد بن حجر الہیتمی ۴۰۵ ۳۷۲۔ کنزالدقائق عبداللہ بن احمد بن محمود ۷۸۶ ۳۷۳۔ الکنی للحاکم ابوعبداللہ الحاکم ۳۵۲ ۳۷۴۔ الکواکب الدراری شمس الدین محمد بن یوسف الشافعی الکرمانی ۱۹۸ ۳۷۵۔ کتاب الجرح والتعدیل محمد بن حبان التمیمی ۳۷۶۔ کتاب المغازی یحیی بن سعید القطان

Fatawa Razawiya Volume 12

377_ Kitab al-Samt — Abdullah bin Muhammad ibn Abi al-Dunya al-Qurashi — 281 378_ Kitab al-Zuhd — Abdullah bin Mubarak — 180 379_ Al-Kashshaf 'an Haqa'iq al-Tanzil — Jarallah Mahmud bin Umar al-Zamakhshari — 538 380_ Kitab al-Hujjah — Imam Muhammad Rahmah Allah Ta'ala Abu Abdullah Muhammad bin Hasan al-Shaybani — 189 381_ Kitab al-Mashikhah — Imam Muhammad Abu Abdullah Muhammad bin Hasan al-Shaybani — 189 382_ Kitab al-Marasil — Sulayman bin Ash'ath al-Sajistani — 275 383_ Kitab al-Ba'th wa al-Nushur — Abdullah bin Muhammad ibn Abi al-Dunya — 281 384_ Kitab al-Ikhwan — Abu Bakr Abdullah bin Muhammad ibn Abi al-Dunya — 281 385_ Kitab al-Du'afa al-Kabir — Abu Ja'far Muhammad bin Umar al-Uqayli al-Makki — 322 386_ Kitab al-Zubd al-Kabir lil-Bayhaqi — Ahmad bin Hasan al-Bayhaqi — 458 387_ Kitab al-Ruwat 'an Malik ibn Anas — Abu Bakr Ahmad bin Ali al-Khatib al-Baghdadi — 463 388_ Kitab al-Hujjah 'ala Tarik al-Hujjah — Nasr bin Ibrahim al-Maqdisi — 490 389_ Kimiya-e-Sa'adat — Imam Muhammad bin Muhammad al-Ghazali — 505 390_ Kifayah al-Talib al-Rabbani Sharh li-Risalah Ibn Abi Zayd al-Qayrawani — Abu al-Hasan Ali bin Nasir al-Din al-Shadhili — 939 391_ Kashf al-Zunun — Mustafa bin Abdullah Haji Khalifa — 1067 392_ Kashf al-Ghummah — Sheikh Abdul Wahhab bin Ahmad al-Sha'rani — 973 393_ Kitab al-Siffin — Yahya bin Sulayman al-Ju'fi (Teacher of Imam Bukhari) 394_ Kitab al-Masahif Ibn al-Anbari 395_ Kamalayn Hashiyah Jalalayn — Sheikh Salamullah bin Muhammad Sheikh al-Islam Muhaddith Rampuri — 1233 396_ Kitab al-Maghazi — Muhammad bin Umar bin Waqid al-Waqidi — 207

L (Letter Lam) 397_ Lama'at al-Tanqih — Allama Sheikh Abdul Haq Muhaddith Dehlvi — 1052 398_ Laqt al-Marjan fi Akhbar al-Jan — Allama Jalal al-Din Abd al-Rahman bin Muhammad al-Suyuti — 911

Page 674 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

३७७_ किताब अल-सम्त — अब्दुल्ला बिन मुहम्मद इब्न अबी अल-दुनिया अल-कुरैशी — २८१ ३७८_ किताब अज़-ज़ुहद — अब्दुल्ला बिन मुबारक — १८० ३७९_ अल-कश्शाफ़ 'अन हक़ा'इक़ अत-तन्ज़ील — जारुल्लाह महमूद बिन उमर अल-ज़मख़्शरी — ५३८ ३८०_ किताब अल-हुज्जह — इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाह तआला अबू अब्दुल्ला मुहम्मद बिन हसन अल-शैबानी — १८९ ३८१_ किताब अल-मशायख़ह — इमाम मुहम्मद अबू अब्दुल्ला मुहम्मद बिन हसन अल-शैबानी — १८९ ३८२_ किताब अल-मरासील — सुलेमान बिन अशअथ अस-सिजिस्तानी — २७५ ३८३_ किताब अल-बा'थ व अन-नुशूर — अब्दुल्ला बिन मुहम्मद इब्न अबी अल-दुनिया — २८१ ३८४_ किताब अल-इख़वान — अबू बक्र अब्दुल्ला बिन मुहम्मद इब्न अबी अल-दुनिया — २८१ ३८५_ किताब अज़-ज़ुआफ़ा अल-कबीर — अबू जाफ़र मुहम्मद बिन उमर अल-उक़ैली अल-मक्की — ३२२ ३८६_ किताब अज़-ज़ुबद अल-कबीर लिल-बैहक़ी — अहमद बिन हसन अल-बैहक़ी — ४५८ ३८७_ किताब अर-रुवात 'अन मालिक बिन अनस — अबू बक्र अहमद बिन अली ख़तीब बग़दादी — ४६३ ३८८_ किताब अल-हुज्जह 'अला तारिक अल-हुज्जह — नस्र बिन इब्राहिम अल-मक़दिसी — ४९० ३८९_ कीमिया-ए-सा'आदत — इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-ग़ज़ाली — ५०५ ३९०_ किफ़ायत अत-तालिब अर-रब्बानी शरह रिसाला इब्न अबी ज़ैद अल-क़ैरवानी — अबुल हसन अली बिन नासिरुद्दीन अश्-शाज़ली — ९३९ ३९१_ कश्फ़ अज़-ज़ुनून — मुस्तफ़ा बिन अब्दुल्ला हाजी ख़लीफ़ा — १०६७ ३९२_ कश्फ़ अल-ग़ुम्मा — शैख़ अब्दुल वहाब बिन अहमद अश्-शा'रानी — ९७३ ३९३_ किताब अस्-सिफ़्फ़ीन — यहया बिन सुलेमान अल-जुफ़ी (इमाम बुख़ारी के उस्ताद) ३९४_ किताब अल-मसाहिफ़ इब्न अल-अंबारी ३९५_ कमालैन हाशिया जलालैन — शैख़ सलाम अल्लाह बिन मुहम्मद शैख़ अल-इस्लाम मुहद्दिस रामपुरी — १२३३ ३९६_ किताब अल-मग़ाज़ी — मुहम्मद बिन उमर बिन वाक़िद अल-वाक़िदी — २०७

ल (अक्षर ल) ३९७_ लमा'त अत-तनक़ीह — अल्लामा शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी — १०५२ ३९८_ लक़्त अल-मर्जान फ़ी अख़बार अल-जान — अल्लामा जलालुद्दीन अब्दुर रहमान बिन मुहम्मद अस-सुयूती — ९११

पृष्ठ ६७४ / ६८८

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

۳۷۷۔ کتاب الصمت — عبد اللہ بن محمد ابن ابی الدنیا القرشی — ۲۸۱ ۳۷۸۔ کتاب الزہد — عبد اللہ بن مبارک — ۱۸۰ ۳۷۹۔ الکشاف عن حقائق التنزیل — جار اللہ محمود بن عمر الزمخشری — ۵۳۸ ۳۸۰۔ کتاب الحجہ — امام محمد رحمۃ اللہ تعالٰی ابو عبد اللہ محمد بن حسن الشیبانی — ۱۸۹ ۳۸۱۔ کتاب المشیخہ — امام محمد ابو عبد اللہ محمد بن حسن الشیبانی — ۱۸۹ ۳۸۲۔ کتاب المراسیل — سلیمان بن اشعث السجستانی — ۲۷۵ ۳۸۳۔ کتاب البعث والنشور — عبد اللہ بن محمد ابن ابی الدنیا — ۲۸۱ ۳۸۴۔ کتاب الاخوان — ابو بکر عبد اللہ بن محمد ابن ابی الدنیا — ۲۸۱ ۳۸۵۔ کتاب الضعفاء الکبیر — ابو جعفر محمد بن عمر العقیلی المکی — ۳۲۲ ۳۸۶۔ کتاب الزہد الکبیر للبیہقی — احمد بن حسن البیہقی — ۴۵۸ ۳۸۷۔ کتاب الرواۃ عن مالک بن انس — ابو بکر احمد بن علی خطیب بغدادی — ۴۶۳ ۳۸۸۔ کتاب الحجہ علی تارک الحجہ — نصر بن ابراھیم المقدسی — ۴۹۰ ۳۸۹۔ کیمیائے سعادت — امام محمد بن محمد الغزالی — ۵۰۵ ۳۹۰۔ کفایۃ الطالب الربانی شرح لرسالہ ابن ابی زید القیروانی — ابوالحسن علی بن ناصر الدین الشاذلی — ۹۳۹ ۳۹۱۔ کشف الظنون — مصطفی بن عبد اللہ حاجی خلیفہ — ۱۰۶۷ ۳۹۲۔ کشف الغمہ — شیخ عبدالوہاب بن احمد الشعرانی — ۹۷۳ ۳۹۳۔ کتاب الصفین — یحیی بن سلیمان الجعفی (استاد امام بخاری) ۳۹۴۔ کتاب المصاحف ابن الانباری ۳۹۵۔ کمالین حاشیہ جلالین — شیخ سلام اللہ بن محمد شیخ الاسلام محدث رامپوری — ۱۲۳۳ ۳۹۶۔ کتاب المغازی — محمد بن عمر بن واقد الواقدی — ۲۰۷

ل (حرف لام) ۳۹۷۔ لمعات التنقیح — علامہ شیخ عبدالحق المحدث الدہلوی — ۱۰۵۲ ۳۹۸۔ لقط المرجان فی اخبار الجان — علامہ جلال الدین عبدالرحمن بن محمد السیوطی — ۹۱۱

Fatawa Razawiyyah Volume 12

399- Lisan al-Arab - Jamal al-Din Muhammad bin Mukarram ibn Manzur al-Misri - 711 400- Al-La'ali al-Masnu'ah fi al-Ahadith al-Mawdu'ah - Abu Bakr Abdul Rahman bin Kamal al-Din al-Suyuti - 911 401- Lawaqih al-Anwar al-Qudsiyyah al-Muntakhab min al-Futuhat al-Makkiyyah - Abdul Wahhab bin Ahmad al-Sha'rani - 973

M 402- Mashariq al-Anwar - Sheikh Abdul Latif bin Abdul Aziz ibn al-Malik - 801 403- Mabsut Khwaharzadah - Bakr Khwaharzadah Muhammad bin Hasan al-Bukhari al-Hanafi - 483 404- Mabsut al-Sarakhsi - Shams al-Aimmah Muhammad bin Ahmad al-Sarakhsi - 483 405- Majma' al-Anhur Sharh Multaqa al-Abhur - Nur al-Din Ali al-Baqani - 995 406- Majma' Bihar al-Anwar - Muhammad Tahir al-Siddiqui - 981 407- Majmu' al-Nawazil - Ahmad bin Musa bin Isa - 550 408- Majma' al-Anhur fi Sharh Multaqa al-Abhur - Abdul Rahman bin Muhammad bin Sulaiman al-Ma'ruf bi Damad Efendi Shaykhizadah - 1078 409- Al-Muhit al-Burhani - Imam Burhan al-Din Mahmud bin Taj al-Din - 616 410- Al-Muhit al-Radawi - Radi al-Din Muhammad bin Muhammad al-Sarakhsi - 671 411- Mukhtarat al-Nawazil - Burhan al-Din Ali bin Abi Bakr al-Marghinani - 593 412- Mukhtar al-Sahah - Muhammad bin Abi Bakr Abdul Qadir al-Razi - 660 413- Al-Mukhtarah fi al-Hadith - Diya al-Din Muhammad bin Abdul Wahid - 643 414- Al-Mukhtasar - Allama Jalal al-Din al-Suyuti - 911 415- Madkhal al-Shar' al-Sharif - Ibn al-Hajj Abi Abdullah Muhammad bin Muhammad al-Abdari - 737 416- Maraqi al-Falah bi Imdad al-Fattah Sharh Nur al-Idah - Hasan bin Ammar bin Ali al-Shurunbulali - 1069 417- Mirqat Sharh Mishkat - Ali bin Sultan Mulla Ali Qari - 1014 418- Mirqat al-Su'ud - Allama Jalal al-Din al-Suyuti - 911 419- Mustakhlas al-Haqa'iq - Ibrahim bin Muhammad al-Hanafi 420- Al-Mustadrak lil-Hakim - Abu Abdullah al-Hakim - 405 421- Al-Mustasfa Sharh al-Fiqh al-Nafi' - Hafiz al-Din Abdullah bin Ahmad al-Nasafi - 710

फतावा रज़विया जिल्द बारहवीं

३९९- लिसान अल-अरब - जमाल अल-दीन मुहम्मद बिन मुकर्रम इब्न मंज़ूर अल-मिस्री - ७११ ४००- अल-ला'ली अल-मसनूआ फ़ी अल-अहादीथ अल-मवदूआ - अबू बक्र अब्दुल रहमान बिन कमाल अल-दीन अल-सुयूती - ९११ ४०१- लवाकिह अल-अनवार अल-कुदसिया अल-मुंतखब मिन अल-फुतूहात अल-मक्कीय्या - अब्दुल वहाब बिन अहमद अल-शारानी - ९७३

म ४०२- मशारिक अल-अनवार - शेख अब्दुल लतीफ बिन अब्दुल अज़ीज़ इब्न अल-मलिक - ८०१ ४०३- मबसत ख्वाहरज़ादा - बक्र ख्वाहरज़ादा मुहम्मद बिन हसन अल-बुखारी अल-हनाफी - ४८३ ४०४- मबसत अल-सरखसी - शम्स अल-अइम्मा मुहम्मद बिन अहमद अल-सरखसी - ४८३ ४०५- मज्म' अल-अन्हुर शरह मुल्तका अल-अभुर - नूर अल-दीन अली अल-बकानी - ९९५ ४०६- मज्म' बिहार अल-अनवार - मुहम्मद ताहिर अल-सिद्दीकी - ९८१ ४०७- मज्मू अल-नवाज़िल - अहमद बिन मूसा बिन ईसा - ५५० ४०८- मज्म' अल-अन्हुर फ़ी शरह मुल्तका अल-अभुर - अब्दुल रहमान बिन मुहम्मद बिन सुलेमान अल-मारूफ़ बे दामाद आफ़ंदी शेखीज़ादा - १०७८ ४०९- अल-मुहीत अल-बुरहानी - इमाम बुरहान अल-दीन महमूद बिन ताज अल-दीन - ६१६ ४१०- अल-मुहीत अल-रज़वी - रज़ी अल-दीन मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-सरखसी - ६७१ ४११- मुख्तरात अल-नवाज़िल - बुरहान अल-दीन अली बिन अबी बक्र अल-मरग़ीनानी - ५९३ ४१२- मुख्तार अल-सहाह - मुहम्मद बिन अबी बक्र अब्दुल कादिर अल-राज़ी - ६६० ४१३- अल-मुख्तारा फ़ी अल-हदीथ - ज़िया अल-दीन मुहम्मद बिन अब्दुल वाहिद - ६४३ ४१४- अल-मुख्तसर - अल्लामा जलाल अल-दीन अल-सुयूती - ९११ ४१५- मदखल अल-शर' अल-शरीफ - इब्न अल-हाज अबी अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-अब्दरी - ७३७ ४१६- मराकी अल-फलाह बि इमदाद अल-फत्ताह शरह नूर अल-इदाह - हसन बिन अम्मार बिन अली अल-शुरुनबुलाली - १०६९ ४१७- मिरकात शरह मिश्कात - अली बिन सुल्तान मुल्ला अली कारी - १०१४ ४१८- मिरकात अल-सऊद - अल्लामा जलाल अल-दीन अल-सुयूती - ९११ ४१९- मुस्तखलस अल-हकाइक - इब्राहिम बिन मुहम्मद अल-हनाफी ४२०- अल-मुस्तदरक लिल-हाकिम - अबू अब्दुल्लाह अल-हाकिम - ४०५ ४२१- अल-मुस्तसफ़ा शरह अल-फिक्ह अल-नाफ़े - हाफ़िज़ अल-दीन अब्दुल्लाह बिन अहमद अल-नस्फ़ी - ७१०

पेज ६७५ ऑफ ६८८

فتاوی رضویه جلد دوازدهم

۳۹۹۔ لسان العرب ، جمال الدین محمد بن مکرم ابن منظور المصری ، ۷۱۱ ۴۰۰۔ الآلي المصنوعة فی الاحادیث الموضوعه ، ابوبکر عبدالرحمن بن کمال الدین السیوطی ، ۹۱۱ ۴۰۱۔ لواقح الانوار القدسیه سید المنتخب من الفتوحات المکیه ، عبدالوہاب بن احمد الشعرانی ، ۹۷۳

م ۴۰۲۔ مشارق الانوار ، الشیخ عبداللطیف بن عبدالعزیز ابن الملک ، ۸۰۱ ۴۰۳۔ مبسوط خواہرزاده ، بکر خواہر زاده محمد بن حسن البخاری الحنفی ، ۴۸۳ ۴۰۴۔ مبسوط السرخسی ، شمس الائمہ محمد بن احمد السرخسی ، ۴۸۳ ۴۰۵۔ مجمع الانہر شرح ملتقی الابحر ، نور الدین علی الباقانی ، ۹۹۵ ۴۰۶۔ مجمع بحار الانوار ، محمد طاہر الصدیقی ، ۹۸۱ ۴۰۷۔ مجموع النوازل ، احمد بن موسی بن عیسی ، ۵۵۰ ۴۰۸۔ مجمع الانہر فی شرح ملتقی الابحر ، عبد الرحمن بن محمد بن سلیمان المعروف بداماد آفندی شیخی زاده ، ۱۰۷۸ ۴۰۹۔ المحیط البرہانی ، امام برہان الدین محمود بن تاج الدین ، ۶۱۶ ۴۱۰۔ المحیط الرضوی ، رضی الدین محمد بن محمد السرخسی ، ۶۷۱ ۴۱۱۔ مختارات النوازل ، برہان الدین علی بن ابی بکر المرغینانی ، ۵۹۳ ۴۱۲۔ مختار الصحاح ، محمد بن ابی بکر عبدالقادر الرازی ، ۶۶۰ ۴۱۳۔ المختارة فی الحدیث ، ضیاء الدین محمد بن عبدالواحد ، ۶۴۳ ۴۱۴۔ المختصر ، علامہ جلال الدین السیوطی ، ۹۱۱ ۴۱۵۔ مدخل الشرع الشریف ، ابن الحاج ابی عبداللہ محمد بن محمد العبدری ، ۷۳۷ ۴۱۶۔ مراقی الفلاح بامداد الفتاح شرح نور الایضاح ، حسن بن عمار بن علی الشرنبلالی ، ۱۰۶۹ ۴۱۷۔ مرقات شرح مشکوة ، علی بن سلطان ملا علی قاری ، ۱۰۱۴ ۴۱۸۔ مرقات الصعود ، علامہ جلال الدین السیوطی ، ۹۱۱ ۴۱۹۔ مستخلص الحقائق ، ابراہیم بن محمد الحنفی ۴۲۰۔ المستدرک للحاکم ، ابو عبداللہ الحاکم ، ۴۰۵ ۴۲۱۔ المستصفی شرح الفقہ النافع ، حافظ الدین عبداللہ بن احمد النسفی ، ۷۱۰

Fatawa Razawiyya Volume 12

1. Musallam-ut-Thubut | Muhibbullah al-Bari | 1119
2. Musnad Abi Dawood | Sulayman bin Dawood al-Tayalisi | 204
3. Musnad Abi Ya'la | Ahmad bin Ali al-Mawsili | 307
4. Musnad Ishaq ibn Rahwayh | Hafiz Ishaq ibn Rahwayh | 238
5. Musnad al-Imam Ahmad bin Hanbal | Imam Ahmad bin Muhammad bin Hanbal | 221
6. Musnad al-Kabir fi al-Hadith | Abu Bakr Ahmad bin Amr bin Abd al-Khaliq al-Bazzar | 292
7. Musnad al-Kabir fi al-Hadith | Abu Muhammad Abd bin Muhammad Humayd al-Kashi | 292
8. Musnad al-Firdaws | Shir-dar bin Shirwayh al-Daylami | 558
9. Misbah al-Munir | Ahmad bin Muhammad bin Ali | 770
10. Al-Musaffa | Hafiz-ud-Din Abdullah bin Ahmad al-Nasafi | 710
11. Musannaf Ibn Abi Shaybah | Abu Bakr Abdullah bin Muhammad Ahmad al-Nasafi | 235
12. Musannaf Abd al-Razzaq | Abu Bakr Abd al-Razzaq bin Hammam al-San'ani | 211
13. Misbah al-Duja | Imam Hasan bin Muhammad al-Saghani al-Hindi | 650
14. Ma'rifat al-Sahaba | Abu Nu'aym Ahmad bin Abdullah al-Asbahani | 430
15. Al-Mu'jam al-Awsat | Sulayman bin Ahmad al-Tabarani | 360
16. Al-Mu'jam al-Saghir | Sulayman bin Ahmad al-Tabarani | 360
17. Al-Mu'jam al-Kabir | Sulayman bin Ahmad al-Tabarani | 360
18. Mi'raj al-Dirayah Qawam al-Din | Muhammad bin Muhammad al-Bukhari | 729
19. Mishkat al-Masabih | Shaykh Wali-ud-Din al-Iraqi | 722
20. Al-Mughni fi al-Usul | Shaykh Umar bin Muhammad al-Khabbazi al-Hanafi | 291
21. Al-Maghrib | Abu al-Fath Nasir bin Abd al-Sayyid al-Mutarrizi | 610
22. M. Mukhtasar al-Quduri | Abu al-Husayn Ahmad bin Muhammad al-Quduri al-Hanafi | 428
23. Mafatih al-Jinan | Ya'qub bin Sayyid Ali | 931
24. Al-Mufradat li-l-Imam Raghib | Husayn bin Muhammad bin Mufaddal al-Isfahani | 502
25. Al-Muqaddimah al-Ashmawiyyah fi Fiqh al-Malikiyyah | Abu al-Abbas Abd al-Bari al-Ashmawi al-Maliki

फ़तावा रज़विया खंड १२

1. मुसल्लम-उत-सुबूत | मोहिबुल्लाह अल-बारी | १११९
2. मुसनद अबी दाऊद | सुलैमान बिन दाऊद अल-तयालिसी | २०४
3. मुसनद अबी यला | अहमद बिन अली अल-मूसली | ३०७
4. मुसनद इसहाक इब्न राहवैह | हाफ़िज़ इसहाक इब्न राहवैह | २३८
5. मुसनद अल-इमाम अहमद बिन हंबल | इमाम अहमद बिन मुहम्मद बिन हंबल | २२१
6. मुसनद अल-कबीर फ़ी अल-हदीस | अबूबकर अहमद बिन अम्र बिन अब्दुल ख़ालिक़ अल-बज़्ज़ार | २९२
7. मुसनद अल-कबीर फ़ी अल-हदीस | अबू मुहम्मद अब्द बिन मुहम्मद हमीद अल-कशी | २९२
8. मुसनद अल-फ़िरदौस | शीर-दार बिन शीरवैह अल-दैलामी | ५५८
9. मिस्बाह अल-मुनीर | अहमद बिन मुहम्मद बिन अली | ७७०
10. अल-मुसफ़्फ़ा | हाफ़िज़-उद-दीन अब्दुल्ला बिन अहमद अल-नस्फ़ी | ७१०
11. मुसन्निफ़ इब्न अबी शैबा | अबूबकर अब्दुल्ला बिन मुहम्मद अहमद अल-नस्फ़ी | २३५
12. मुसन्निफ़ अब्दुर रज्ज़ाक़ | अबूबकर अब्दुल रज्ज़ाक़ बिन हम्माम अल-सनआनी | २११
13. मिस्बाह अद-दुजा | इमाम हसन बिन मुहम्मद अल-सग़ानी अल-हिंदी | ६५०
14. मारिफ़त अल-सहाबा | अबू नुऐम अहमद बिन अब्दुल्ला अल-असबहानी | ४३०
15. अल-मुअजम अल-औसत | सुलैमान बिन अहमद अल-तबरानी | ३६०
16. अल-मुअजम अस-सग़ीर | सुलैमान बिन अहमद अल-तबरानी | ३६०
17. अल-मुअजम अल-कबीर | सुलैमान बिन अहमद अल-तबरानी | ३६०
18. मेराज अद-दिराया क़वाम-उद-दीन | मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-बुख़ारी | ७२९
19. मिश्कात अल-मसाबीह | शेख़ वली-उद-दीन अल-इराक़ी | ७२२
20. अल-मुग़नी फ़ी अल-उसूल | शेख़ उमर बिन मुहम्मद अल-ख़ब्बाज़ी अल-हनफ़ी | २९१
21. अल-मगरिब | अबुल फ़तह नासिर बिन अब्दुल सैयद अल-मुतर्रिज़ी | ६१०
22. म. मुख़्तसर अल-क़ुदूरी | अबुल हुसैन अहमद बिन मुहम्मद अल-क़ुदूरी अल-हनफ़ी | ४२८
23. मफ़ातीह अल-जिनान | याक़ूब बिन सैय्यद अली | ९३१
24. अल-मुफ़रदात लिल-इमाम राग़िब | हुसैन बिन मुहम्मद बिन मुफ़ज़्ज़ल अल-इसफ़हानी | ५०२

25. अल-मुक़द्दिम-तुल-अशमाविया फ़ी फ़िक़्ह अल-मलिकिया | अबुल अब्बास अब्दुल बारी अल-अशमावी अल-मालिकी

पृष्ठ ६७६ / ६८८

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

۴۲۲۔ مسلم الثبوت | محب اللہ الباری | ۱۱۱۹ ۴۲۳۔ مسند ابی داؤد | سلیمان بن داؤد الطیالسی | ۲۰۴ ۴۲۴۔ مسند ابی یعلیٰ | احمد بن علی الموصلی | ۳۰۷ ۴۲۵۔ مسند اسحق ابن راہویۃ | حافظ اسحق ابن راہویۃ | ۲۳۸ ۴۲۶۔ مسند الامام احمد بن حنبل | امام احمد بن محمد بن حنبل | ۲۲۱ ۴۲۷۔ مسند الکبیر فی الحدیث | ابوبکر احمد بن عمر و بن عبد الخالق البزار | ۲۹۲ ۴۲۸۔ مسند الکبیر فی الحدیث | ابومحمد عبد بن محمد حمید الکشی | ۲۹۲ ۴۲۹۔ مسند الفردوس | شیر دار بن شیر ویہ الدیلمی | ۵۵۸ ۴۳۰۔ مصباح المنیر | احمد بن محمد بن علی | ۷۷۰ ۴۳۱۔ المصفیٰ | حافظ الدین عبد اللہ بن احمد النسفی | ۷۱۰ ۴۳۲۔ مصنف ابن ابی شیبۃ | ابوبکر عبد اللہ بن محمد احمد النسفی | ۲۳۵ ۴۳۳۔ مصنف عبدالرزاق | ابوبکر عبد الرزاق بن ہمام الصنعانی | ۲۱۱ ۴۳۴۔ مصباح الدجیٰ | امام حسن بن محمد الصغانی الہندی | ۶۵۰ ۴۳۵۔ معرفۃ الصحابۃ | ابو نعیم احمد بن عبد اللہ الاصبہانی | ۴۳۰ ۴۳۶۔ المعجم الاوسط | سلیمان بن احمد الطبرانی | ۳۶۰ ۴۳۷۔ المعجم الصغیر | سلیمان بن احمد الطبرانی | ۳۶۰ ۴۳۸۔ المعجم الکبیر | سلیمان بن احمد الطبرانی | ۳۶۰ ۴۳۹۔ معراج الدرایۃ قوام الدین | محمد بن محمد البخاری | ۷۲۹ ۴۴۰۔ مشکوٰۃ المصابیح | شیخ ولی الدین العراقی | ۷۲۲ ۴۴۱۔ المغنی فی الاصول | شیخ عمر بن محمد الخبازی الحنفی | ۲۹۱ ۴۴۲۔ المغرب | ابوالفتح ناصر بن عبد السید المطرزي | ۶۱۰ ۴۴۳۔ م مختصر القدوری | ابوالحسین احمد بن محمد القدوری الحنفی | ۴۲۸ ۴۴۴۔ مفاتیح الجنان | یعقوب بن سید علی | ۹۳۱ ۴۴۵۔ المفردات للامام راغب | حسین بن محمد بن مفضل الاصفہانی | ۵۰۲ ۴۴۶۔ المقدمۃ العشماویۃ فی الفقہ المالکیۃ | ابوالعباس عبد الباری العشماوی المالکی

صفحہ 676 از 688

Fatawa Razawiyya Volume 12

556 447. Al-Multaqat (fi Fatawa Nasiri) - Nasir al-Din Muhammad bin Yusuf al-Husayni --- 807 448. Majma' al-Zawa'id - Nur al-Din 'Ali bin Abi Bakr al-Haythami --- 827 449. Manaqib al-Kardari - Muhammad bin Muhammad bin Shihab ibn Bazzaz --- 307 450. Al-Muntaqa (fi al-Hadith) - Abdullah bin Ali ibn Jarud --- 334 451. Al-Muntaqa fi Furu' al-Hanafiyya - Al-Hakim al-Shahir Muhammad bin Muhammad bin Ahmad --- 1252 452. Minhat al-Khaliq Hashiyah Bahr al-Ra'iq - Muhammad Amin ibn 'Abidin al-Shami --- 1004 453. Minh al-Ghaffar - Muhammad bin Abdullah al-Tamartashi --- 956 454. Multaqat al-Abhur - Imam Ibrahim bin Muhammad al-Halabi --- 676 455. Minhaj al-Nawawi (Sharh Sahih Muslim) - Shaykh Abu Zakaria Yahya bin Sharaf al-Nawawi --- 694 456. Majma' al-Bahrayn - Muzaffar al-Din Ahmad bin 'Ali bin Tha'lab al-Hanafi --- 456 457. Al-Mubtagha - Shaykh Isa bin Muhammad ibn Aynaj al-Hanafi --- 510 458. Al-Mabsut - Abdul Aziz bin Ahmad al-Halwani --- 262 459. Musnad fi al-Hadith - Al-Hafiz Abu al-Fath Nasr bin Ibrahim al-Mabrawi --- 705 460. Al-Musnad al-Kabir - Yaqub bin Shaybah al-Sadusi --- 179 461. Munyat al-Musalli - Sadid al-Din Muhammad bin Muhammad al-Kashghari --- 807 462. Muwatta Imam Malik - Imam Malik bin Anas al-Madani --- 642 463. Mawarid al-Zaman - Nur al-Din 'Ali bin Abi Bakr al-Haythami --- 476 464. Mushkilat - Ahmad bin Muzaffar al-Razi --- 973 465. Muhadhdhab - Abi Ishaq ibn Muhammad al-Shafi'i --- 728 466. Mizan al-Shari'ah al-Kubra - Abdul Wahhab al-Sha'rani --- 410 467. Mizan al-I'tidal - Muhammad bin Ahmad al-Dhahabi --- 327 468. Al-Mustakhraj 'ala al-Sahih al-Bukhari - Ahmad bin Musa ibn Mardawayh --- 150 469. Makarim Akhlaq - Muhammad bin Ja'far al-Khara'iti --- 189 470. Musnad al-Imam al-A'zam - Abu Hanifa Nu'man bin Thabit 471. Muwatta al-Imam Muhammad - Abu Abdullah Muhammad bin al-Hasan al-Shaybani

फ़तावा रज़विया जिल्द 12

556 447. अल-मुल्तक़त (फ़ी फ़तावा नासिरी) - नासिरुद्दीन मुहम्मद बिन यूसुफ अल-हुसैनी --- 807 448. मजमा-उज़-ज़वाइद - नूरुद्दीन अली बिन अबी बकर अल-हैथमी --- 827 449. मनाक़िब अल-करदरी - मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन शिहाब इब्न बज़ाज़ --- 307 450. अल-मुंतक़ा (फ़ी अल-हदीस) - अब्दुल्ला बिन अली इब्न जारूद --- 334 451. अल-मुंतक़ा फ़ी फ़ुर-उल-हनफ़िया - अल-हाकिम अल-शहीर मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन अहमद --- 1252 452. मिन्हात अल-ख़ालिक हाशिया बहर अल-राइक - मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अल-शामी --- 1004 453. मिन्हा अल-ग़फ़्फ़ार - मुहम्मद बिन अब्दुल्ला अल-तमरताशी --- 956 454. मुल्तक़त अल-अब्हुर - इमाम इब्राहिम बिन मुहम्मद अल-हलबी --- 676 455. मिन्हाज अल-नवावी (शरह सहीह मुस्लिम) - शेख अबू ज़कारिया याहया बिन शर्फ अल-नवावी --- 694 456. मजमा अल-बहरैन - मुज़फ़्फ़र उद्दीन अहमद बिन अली बिन सालब अल-हनफ़ी --- 456 457. अल-मुब्तग़ा - शेख ईसा बिन मुहम्मद इब्न आयनाज़ अल-हनफ़ी --- 510 458. अल-मबसूत - अब्दुल अज़ीज़ बिन अहमद अल-हलवानी --- 262 459. मुस्नद फ़ी अल-हदीस - अल-हाफ़िज़ अबुल फ़तह नस्र बिन इब्राहिम अल-मबरवी --- 705 460. अल-मुस्नद अल-कबीर - याक़ूब बिन शैबा अल-सदौसी --- 179 461. मुनियतुल मुसल्ली - सदीद उद्दीन मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-काशग़री --- 807 462. मुअत्ता इमाम मालिक - इमाम मालिक बिन अनस अल-मदनी --- 642 463. मवारिद अल-ज़मान - नूरुद्दीन अली बिन अबी बकर अल-हैथमी --- 476 464. मुश्किलात - अहमद बिन मुज़फ़्फ़र अल-राज़ी --- 973 465. मुहज़्ज़ब - अबी इसहाक़ इब्न मुहम्मद अल-शाफ़ई --- 728 466. मीज़ान अल-शरिया अल-कुबरा - अब्दुल वहाब अल-शा'रानी --- 410 467. मीज़ान अल-एतिदाल - मुहम्मद बिन अहमद अल-ज़हाबी --- 327 468. अल-मुस्तख़राज अला अल-सहीह अल-बुखारी - अहमद बिन मूसा इब्न मरदुवैह --- 150 469. मकारिम अख़लाक़ - मुहम्मद बिन जाफ़र अल-खरैती --- 189 470. मुस्नद अल-इमाम अल-आज़म - अबू हनीफ़ा नुमान बिन साबित 471. मुअत्ता अल-इमाम मुहम्मद - अबू अब्दुल्ला मुहम्मद बिन अल-हसन अल-शैबानी

فتاوی رضویه جلد دو ازدہم

۵۵۶ ۴۴۷۔ الملتقط (فی فتاوی ناصری) ناصر الدین محمد بن یوسف الحسینی --- ۸۰۷ ۴۴۸۔ مجمع الزوائد نور الدین علی بن ابی بکر الہیثمی --- ۸۲۷ ۴۴۹۔ مناقب الکردری محمد بن محمد بن شہاب ابن بزاز --- ۳۰۷ ۴۵۰۔ المنتقی (فی الحدیث) عبد اللہ بن علی ابن جارود --- ۳۳۴ ۴۵۱۔ المنتقی فی فروع الحنیفیہ الحاکم الشہیر محمد بن محمد بن احمد --- ۱۲۵۲ ۴۵۲۔ منحۃ الخالق حاشیہ بحر الرائق محمد امین ابن عابدین الشامی --- ۱۰۰۴ ۴۵۳۔ منح الغفار محمد بن عبداللہ التمر تاشی --- ۹۵۶ ۴۵۴۔ ملتقی الابحر امام ابراہیم بن محمد الحلبی --- ۶۷۶ ۴۵۵۔ منہاج النووی (شرح صحیح مسلم) شیخ ابوز کریا یحییٰ بن شرف النووی --- ۶۹۴ ۴۵۶۔ مجمع البحرین مظفر الدین احمد بن علی بن ثعلب الحنفی --- ۴۵۶ ۴۵۷۔ المبتغی شیخ عیسیٰ بن محمد ابن ایناج الحنفی --- ۵۱۰ ۴۵۸۔ المبسوط عبد العزیز بن احمد الحلوانی --- ۲۶۲ ۴۵۹۔ مسند فی الحدیث الحافظ ابوالفتح نصر بن ابراہیم المبروی --- ۷۰۵ ۴۶۰۔ المسند الکبیر یعقوب بن شیبہ السدوسی --- ۱۷۹ ۴۶۱۔ منیۃ المصلی سدید الدین محمد بن محمد الکاشغری --- ۸۰۷ ۴۶۲۔ مؤطا امام مالك امام مالك بن انس المدنی --- ۶۴۲ ۴۶۳۔ موارد الظمآن نور الدین علی بن ابی بکر الہیثمی --- ۴۷۶ ۴۶۴۔ مشکلات احمد بن مظفر الرازی --- ۹۷۳ ۴۶۵۔ مہذب ابی اسحٰق ابن محمد الشافعی --- ۷۲۸ ۴۶۶۔ میزان الشریعۃ الکبری عبد الوہاب الشعرانی --- ۴۱۰ ۴۶۷۔ میزان الاعتدال محمد بن احمد الذہبی --- ۳۲۷ ۴۶۸۔ المستخرج علی الصحیح البخاری احمد بن موسیٰ ابن مردویہ --- ۱۵۰ ۴۶۹۔ مکارم اخلاق محمد بن جعفر الخرائطی --- ۱۸۹ ۴۷۰۔ مسند الامام اعظم ابو حنیفہ نعمان بن ثابت ۴۷۱۔ مؤطا الامام محمد ابو عبد اللہ محمد بن الحسن الشیبانی

Volume 12 | Fatawa-e-Razawiyya

472 - Al-Musnad fil-Hadith | Hassan bin Sufyan al-Nasawi | 303 473 - Ma'alim al-Sunan li-Abi Sulayman al-Khattabi | Ahmad bin Muhammad bin Ibrahim al-Khattabi | 388 474 - Maqamat-e-Hariri | Qasim ibn Ali al-Hariri | 516 475 - Ma'alim al-Tanzil Tafsir al-Baghawi | Abu Muhammad al-Husayn bin Mas'ud al-Baghawi | 516 476 - Al-Milal wan-Nihal | Abu al-Fath Muhammad bin Abdul Karim al-Shahrastani | 528 477 - Mawdu'at Ibn Jawzi | Abu al-Faraj Abdul Rahman bin Ali bin al-Jawzi | 597 478 - Muqaddimah Ibn al-Salah fi 'Ulum al-Hadith | Abu 'Amr 'Uthman bin Abdul Rahman ibn al-Salah | 632 479 - Mukhtasar Sunan Abi Dawud lil-Hafiz al-Mundhiri | Abdul Azim bin Abdul Qawi al-Mundhiri | 656 480 - Madarik al-Tanzil Tafsir al-Nasafi | Abu al-Barakat Abdullah bin Ahmad al-Nasafi | 710 481 - Al-Mawaqif al-Sultaniyah fi 'Ilm al-Kalam | 'Adud al-Din Abdul Rahman bin Rukn al-Din Ahmad | 756 482 - Muqaddimah Jazariyyah | Muhammad bin Muhammad al-Jazari | 833 483 - Maqasid-e-Hasanah | Shams al-Din Muhammad bin Abdul Rahman al-Sakhawi | 902 484 - Al-Mawahib al-Ladunniyyah | Ahmad bin Muhammad al-Qastalani | 923 485 - Al-Minah al-Fikriyyah Sharh Muqaddimah Jazariyyah | Ali bin Sultan Muhammad al-Qari | 1012 486 - Al-Maslak al-Muqassat fil-Mansak al-Mutawassit | Ali bin Sultan Muhammad al-Qari | 1012 487 - Ma Thabata bis-Sunnah | Sheikh Abdul Haq bin Sayf al-Din al-Dahlawi | 1052 488 - Al-Maybudhi | Qadi Mir Husayn bin Mu'in al-Din | 1096 489 - Musawwa Musaffa Sharh Muwatta Imam Malik | Shah Waliullah bin Shah Abdul Rahim al-Dahlawi | 1179 490 - Maktubat Shah Waliullah | Shah Waliullah bin Shah Abdul Rahim al-Dahlawi | 1179 491 - Maktubat | Mirza Mazhar Jan-e-Janan | 1195 492 - Malfuzat | Mirza Mazhar Jan-e-Janan | 1195 493 - Mamoolat | Mirza Mazhar Jan-e-Janan | 1195 494 - Makhzan-e-Adwiya fit-Tibb | Muhammad Husayn bin Muhammad al-Hadi Bahadur Khan | 495 - Majmu'a Fatawa | Abu al-Hasanat Muhammad Abdul Hayy | 1243 496 - Mi'yar al-Haq | Sayyid Nazir Husayn al-Dahlawi | 1243

Page 678 of 688

जिल्द बारहवीं | फ़तावा-ए-रज़विया

472 - अल-मुसनद फ़िल-हदीस | हसन बिन सुफ़ियान अल-नसवी | 303 473 - मालिम अस-सुनन लि-अबी सुलेमान अल-खत्ताबी | अहमद बिन मुहम्मद बिन इब्राहिम अल-खत्ताबी | 388 474 - मक़ामात-ए-हरीरी | क़ासिम इब्न अली अल-हरीरी | 516 475 - मालिम अत-तंज़ील तफ़सीर अल-बग़वी | अबू मुहम्मद अल-हुसैन बिन मसूद अल-बग़वी | 516 476 - अल-मिलल वन-निहल | अबुल फ़तह मुहम्मद बिन अब्दुल करीम अल-शहरस्तानी | 528 477 - मौज़ूआत इब्न जौज़ी | अबू अल-फ़रज अब्दुल रहमान बिन अली बिन अल-जौज़ी | 597 478 - मुक़द्दमा इब्न अल-सलाह फ़ी उलूम अल-हदीस | अबू अम्र उस्मान बिन अब्दुल रहमान इब्न अल-सलाह | 632 479 - मुख़्तसर सुनन अबी दाऊद लिल-हाफ़िज़ अल-मुन्ज़िरी | अब्दुल अज़ीम बिन अब्दुल क़वी अल-मुन्ज़िरी | 656 480 - मदारिक अत-तंज़ील तफ़सीर अल-नस्फ़ी | अबू अल-बरकात अब्दुल्लाह बिन अहमद अल-नस्फ़ी | 710 481 - अल-मवाक़िफ़ अस-सुल्तानिया फ़ी इल्म अल-कलाम | अज़ुद अल-दीन अब्दुल रहमान बिन रुकन अल-दीन अहमद | 756 482 - मुक़द्दमा जज़रिया | मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-जज़री | 833 483 - मक़ासिद-ए-हसना | शम्स अल-दीन मुहम्मद बिन अब्दुल रहमान अल-सखावी | 902 484 - अल-मवाहिब अल-लदुन्निया | अहमद बिन मुहम्मद अल-क़स्तलानी | 923 485 - अल-मिनह अल-फ़िक्रिया शरह मुक़द्दमा जज़रिया | अली बिन सुल्तान मुहम्मद अल-क़ारी | 1012 486 - अल-मस्लक अल-मुक़स्सत फ़िल-मन्साक अल-मुतवस्सित | अली बिन सुल्तान मुहम्मद अल-क़ारी | 1012 487 - मा सबत बिस-सुन्ना | शेख़ अब्दुल हक़ बिन सैफ़ अल-दीन अल-देहल्वी | 1052 488 - अल-मयबूज़ी | क़ाज़ी मीर हुसैन बिन मुईन अल-दीन | 1096 489 - मुसव्वा मुसफ़्फ़ा शरह मुवत्ता इमाम मालिक | शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम अल-देहल्वी | 1179 490 - मकतूबात शाह वलीउल्लाह | शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम अल-देहल्वी | 1179 491 - मकतूबात | मिर्ज़ा मज़हर जान-ए-जानां | 1195 492 - मल्फ़ूज़ात | मिर्ज़ा मज़हर जान-ए-जानां | 1195 493 - मामूलात | मिर्ज़ा मज़हर जान-ए-जानां | 1195 494 - मख़ज़न-ए-अद्विया फ़ित-तिब्ब | मुहम्मद हुसैन बिन मुहम्मद अल-हादी बहादुर ख़ान | 495 - मजमुआ फ़तावा | अबू अल-हसनात मुहम्मद अब्दुल हई | 1243 496 - मेयार अल-हक़ | सय्यद नज़ीर हुसैन अल-देहल्वी | 1243

۴۷۲ - المسند فی الحدیث | حسن بن سفیان النسوی | ۳۰۳ ۴۷۳ - معالم السنن لابی سلیمان الخطابی | احمد بن محمد بن ابراھیم الخطابی | ۳۸۸ ۴۷۴ - مقامات حریری | قاسم ابن علی الحریری | ۵۱۶ ۴۷۵ - معالم التنزیل تفسیر البغوی | ابو محمد الحسین بن مسعود البغوی | ۵۱۶ ۴۷۶ - الملل والنحل | ابوالفتح محمد بن عبد الکریم الشہرستانی | ۵۲۸ ۴۷۷ - موضوعات ابن جوزی | ابو الفرج عبد الرحمن بن علی بن الجوزی | ۵۹۷ ۴۷۸ - مقدمہ ابن الصلاح فی علوم الحدیث | ابو عمرو عثمان بن عبد الرحمن ابن الصلاح | ۶۳۲ ۴۷۹ - مختصر سنن ابی داؤد للحافظ المنذری | عبدالعظیم بن عبدالقوی المنذری | ۶۵۶ ۴۸۰ - مدارک التنزیل تفسیر النسفی | ابوالبرکات عبد اللہ بن احمد النسفی | ۷۱۰ ۴۸۱ - المواقف السلطانیہ فی علم الکلام | عضد الدین عبد الرحمن بن رکن الدین احمد | ۷۵۶ ۴۸۲ - مقدمہ جزریہ | محمد بن محمد الجزری | ۸۳۳ ۴۸۳ - مقاصد حسنہ | شمس الدین محمد بن عبد الرحمن السخاوی | ۹۰۲ ۴۸۴ - المواہب اللدنیہ | احمد بن محمد القسطلانی | ۹۲۳ ۴۸۵ - المنح الفکریہ شرح مقدمہ جزریہ | علی بن سلطان محمد القاری | ۱۰۱۲ ۴۸۶ - المسلک المتقسط فی المنسک المتوسط | علی بن سلطان محمد القاری | ۱۰۱۲ ۴۸۷ - ماثبت بالسنۃ | شیخ عبد الحق بن سیف الدین الدہلوی | ۱۰۵۲ ۴۸۸ - المبیذی | قاضی میر حسین بن معین الدین | ۱۰۹۶ ۴۸۹ - مسوٰی مصفٰی شرح مؤطا امام مالک | شاہ ولی اللہ بن شاہ عبد الرحیم الدہلوی | ۱۱۷۹ ۴۹۰ - مکتوبات شاہ ولی اللہ | شاہ ولی اللہ بن شاہ عبد الرحیم الدہلوی | ۱۱۷۹ ۴۹۱ - مکتوبات | مرزا مظہر جان جاناں | ۱۱۹۵ ۴۹۲ - ملفوظات | مرزا مظہر جان جاناں | ۱۱۹۵ ۴۹۳ - معمولات | مرزا مظہر جان جاناں | ۱۱۹۵ ۴۹۴ - مخزن ادویہ فی الطب | محمد حسین بن

1. Mazahir-ul-Haq: Maulvi Nazir-ul-Haq Meeruthi - 1034
2. Maktubat-e-Imam-e-Rabbani: Sheikh Ahmad Sirhindi
3. Munasaha fi Tahqiq Mas'alah al-Musafaha
4. Miftah al-Salat
5. Mujtaba Sharh Quduri
6. Mashyakha Ibn Shadhan
7. Ma'rifat al-Sahaba by Abu Nuaym: Ahmad ibn Abdullah Isbahani - 430
8. Mafatih al-Ghayb (Tafsir al-Kabir): Imam Fakhr al-Din al-Razi - 606

Nun (Letter Section) 505. Al-Nuqaya Mukhtasar al-Wiqaya: Abdullah ibn Mas'ud - 745 506. Nasb al-Rayah: Abu Muhammad Abdullah ibn Yusuf al-Hanafi al-Zayla'i - 762 507. Nur al-Idah: Hasan ibn Ammar ibn Ali al-Shurunbulali - 1069 508. Al-Nihaya: Husam al-Din Husayn ibn Ali al-Sighnaqi - 711 509. Al-Nihaya by Ibn Athir: Majd al-Din Mubarak ibn Muhammad al-Jazari ibn al-Athir - 606 510. Al-Nahr al-Faiq: Umar ibn Nujaym al-Misri - 1005 511. Nawadir fi al-Fiqh: Hisham ibn Ubaydullah al-Mazini al-Hanafi - 201 512. Nur al-Ayn: Muhammad ibn Ahmad al-Ma'ruf bi-Nishanji-Zada - 1031 513. Al-Nawazil fi al-Furu': Abu al-Layth Nasr ibn Muhammad ibn Ibrahim al-Samarqandi - 376 514. Nawadir al-Usul fi Ma'rifat Akhbar al-Rasul: Abu Abdullah Muhammad ibn Ali al-Hakim al-Tirmidhi - 255

Waw (Letter Section) 515. Al-Wafi fi al-Furu': Abdullah ibn Ahmad al-Nasafi - 710 516. Al-Wajiz fi al-Furu': Abu Hamid Muhammad ibn Muhammad al-Ghazali - 505 517. Al-Wiqaya: Mahmud ibn Sadr al-Shari'ah - 673

फ़तावा रज़विया | जिल्द बारहवीं

1. मज़ाहिर-उल-हक़: मौलवी नज़ीर-उल-हक़ मेरठी - 1034
2. मक़तूबात-ए-इमाम-ए-रब्बानी: शेख अहमद सरहिंदी
3. मुनासाहा फ़ी तहक़ीक़ मसअला अल-मुसाफ़हा
4. मिफ़्ताह अल-सलात
5. मुजतबा शरह क़ुदूरी
6. मशयख़ा इब्न शाज़ान
7. मारिफ़त अल-सहाबा अबी नुअैम: अहमद बिन अब्दुल्लाह असबहानी - 430
8. मफ़ातीह अल-ग़ैब (तफ़सीर कबीर): इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी - 606

न (अक्षर अनुभाग) 505. अन-नुक़ाया मुख्तसर अल-विक़ाया: अब्दुल्लाह बिन मसूद - 745 506. नसब अर-राया: अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ अल-हनाफ़ी अल-ज़ैलई - 762 507. नूर अल-ईज़ाह: हसन बिन अम्मार बिन अली अल-शुरुनबुलाली - 1069 508. अन-निहाया: हुसामुद्दीन हुसैन बिन अली अल-सिग़नाक़ी - 711 509. अन-निहाया लि-इब्न असीर: मजदुद्दीन मुबारक बिन मुहम्मद अल-जज़री इब्न अल-असीर - 606 510. अन-नहर अल-फ़ाइक़: उमर बिन नुजैम अल-मिस्री - 1005 511. नवादिर फ़ी अल-फ़िक़्ह: हिशाम बिन उबैदुल्लाह अल-माज़नी अल-हनाफ़ी - 201 512. नूर अल-ऐन: मुहम्मद बिन अहमद अल-मारूफ़ बिनिशानजी-ज़ादा - 1031 513. अन-नवाज़िल फ़ी अल-फ़ुरूअ: अबुल लैस नस्र बिन मुहम्मद बिन इब्राहीम अल-समरक़ंदी - 376 514. नवादिर अल-उसूल फ़ी मारिफ़त अख़बार अर-रसूल: अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अली अल-हाकिम अल-तिर्मिज़ी - 255

व (अक्षर अनुभाग) 515. अल-वाफ़ी फ़ी अल-फ़ुरूअ: अब्दुल्लाह बिन अहमद अन-नसाफ़ी - 710 516. अल-वजीज़ फ़ी अल-फ़ुरूअ: अबू हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-ग़ज़ाली - 505 517. अल-विक़ाया: महमूद बिन सद्र अल-शरिया - 673

पृष्ठ 679/688

۴۹۷۔ مظاہر حق: مولوی نذیر الحق میرٹھی ۱۰۳۴ ۴۹۸۔ مکتوبات امام ربانی: شیخ احمد سرہندی ۴۹۹۔ مناصحہ فی تحقیق مسئلہ المصافحہ ۵۰۰۔ مفتاح الصلوۃ ۵۰۱۔ مجتبٰی شرح قدوری ۵۰۲۔ مشیخہ ابن شاذان ۵۰۳۔ معرفۃ الصحابہ لابی نعیم: احمد بن عبداللہ اصبہانی ۴۳۰ ۵۰۴۔ مفاتیح الغیب (تفسیر کبیر): امام فخر الدین رازی ۶۰۶

ن ۵۰۵۔ النقایہ مختصر الوقایہ: عبداللہ بن مسعود ۷۴۵ ۵۰۶۔ نصب الرایۃ: ابو محمد عبداللہ بن یوسف الحنفی الزیلعی ۷۶۲ ۵۰۷۔ نورالایضاح: حسن بن عمار بن علی الشرنبلالی ۱۰۶۹ ۵۰۸۔ النہایۃ: حسام الدین حسین بن علی السغناقی ۷۱۱ ۵۰۹۔ النہایۃ لابن اثیر: مجد الدین مبارک بن محمد الجزری ابن اثیر ۶۰۶ ۵۱۰۔ النہرالفائق: عمر بن نجیم المصری ۱۰۰۵ ۵۱۱۔ نوادر فی الفقہ: ہشام بن عبیداللہ المازنی الحنفی ۲۰۱ ۵۱۲۔ نورالعین: محمد بن احمد المعروف بنشانجی زادہ ۱۰۳۱ ۵۱۳۔ النوازل فی الفروع: ابواللیث نصر بن محمد بن ابراہیم السمرقندی ۳۷۶ ۵۱۴۔ نوادر الاصول فی معرفۃ اخبار الرسول: ابو عبداللہ محمد بن علی الحکیم الترمذی ۲۵۵

و ۵۱۵۔ الوافی فی الفروع: عبداللہ بن احمد النسفی ۷۱۰ ۵۱۶۔ الوجیز فی الفروع: ابو حامد محمد بن محمد الغزالی ۵۰۵ ۵۱۷۔ الوقایۃ: محمود بن صدر الشریعہ ۶۷۳

Volume Twelve Fatawa Razawiyya

518- Al-Wasit fi al-Furu' Abi Hamid Muhammad bin Muhammad al-Ghazali 505

H

519- Al-Hidayah fi Sharh al-Bidayah Burhan al-Din Ali bin Abi Bakr al-Marghinani 593

Y

520- Al-Yawaqit wa al-Jawahir Sayyid Abd al-Wahhab al-Sha'rani 973

521- Yanabi' fi Ma'rifat al-Usul Abi Abdullah Muhammad ibn Ramadan al-Rumi 769

Page 680 of 688

खंड बारह फ़तावा-ए-रज़विया

518- अल-वसीत फ़ी अल-फ़ुरूअ अबी हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-ग़ज़ाली 505

ह

519- अल-हिदाया फ़ी शरह अल-बिदाया बुरहानुद्दीन अली बिन अबी बक्र अल-मरग़ीनानी 593

य

520- अल-यवाक़ीत वल-जवाहर सैय्यद अब्दुल वहाब अल-शअरानी 973

521- यनाबीअ फ़ी मारिफ़त अल-उसूल अबी अब्दुल्लाह मुहम्मद इब्न रमज़ान अल-रूमी 769

पृष्ठ 680 का 688

جلد دوازدہم فتاوٰی رضویہ

۵۱۸- الوسیط في الفروع ابی حامد محمد بن محمد الغزالی ۵۰۵

ھ

۵۱۹- الھدایة في شرح البدایة برہان الدین علی بن ابی بکر المرغینانی ۵۹۳

ی

۵۲۰- الیواقیت والجواہر سید عبد الوہاب الشعرانی ۹۷۳

۵۲۱- ینابیع فی معرفة الاصول ابی عبد اللہ محمد ابن رمضان الرومی ۷۶۹

Fatawa Razawiyya Volume 12

Appendix Sources and References

S.No. | Name of Book | Author | Hijri Year of Death 1- | Anwar al-Tanzil fi Asrar al-Tawil (Tafsir al-Baydawi) | Nasir al-Din Abu Sa'id Abdullah bin Umar al-Baydawi | 685/692/691 - | Hadiyat al-Arifin | - | 463/1 2- | Al-Isti'ab fi Ma'rifat al-Ashab | Abu Amr Yusuf bin Abdullah al-Numari al-Qurtubi | 462 3- | Audah Ramz 'ala Sharh Nazm al-Kanz | Ali bin Muhammad ibn Ghanim al-Maqdisi | 1004 4- | Al-Istidhkar | Yusuf bin Abdullah ibn Abd al-Barr al-Andalusi | 463 5- | Al-Afrad | Ali bin Umar al-Daraqutni | 385 6- | Al-Idah fi Sharh al-Tajrid | Imam Abu al-Fadl Abd al-Rahman bin Ahmad al-Kirmani | 523 7- | Asbab al-Nuzul | Abu al-Hasan Ali bin Ahmad al-Wahidi | 468 8- | Idah al-Haqq al-Sarih fi Ahkam al-Mayyit wal-Darih | Shah Muhammad Ismail bin Shah Abd al-Ghani Dehlawi | 1246 9- | Anfas al-Arifin | Shah Waliullah bin Shah Abd al-Rahim | 1176 10- | Insan al-Ayn | Shah Waliullah bin Shah Abd al-Rahim | 1176 11- | Insan al-Uyun fi Sirat al-Amin al-Ma'mun | Ali bin Burhan al-Din Halabi | 1044 12- | Irshad al-Talibin | Qazi Muhammad Thanaullah Panipati | 1225 13- | Al-I'lam bi-A'lam Balad Allah al-Haram | Qutb al-Din Muhammad bin Ahmad al-Hanafi | 989

Page 681 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

परिशिष्ट स्रोत और संदर्भ

क्रम संख्या | पुस्तक का नाम | लेखक | हिजरी मृत्यु वर्ष १- | अनवार अल-तन्ज़ील फ़ी असरार अल-तावील (तफ़सीर अल-बैज़ावी) | नासिर अल-दीन अबू सईद अब्दुल्ला बिन उमर अल-बैज़ावी | ६८५/६९२/६९१ - | हदियत अल-आरिफ़ीन | - | ४६३/१ २- | अल-इस्तियाब फ़ी मारिफ़त अल-असहाब | अबू अम्र यूसुफ़ बिन अब्दुल्ला अल-नुमरी अल-क़ुर्तुबी | ४६२ ३- | औज़ह रम्ज़ अला शरह नज़्म अल-कन्ज़ | अली बिन मुहम्मद इब्न ग़ानिम अल-मक़दिसी | १००४ ४- | अल-इस्तिज़कार | यूसुफ़ बिन अब्दुल्ला इब्न अब्द अल-बर्र अल-अंदलुसी | ४६३ ५- | अल-अफ़राद | अली बिन उमर अल-दाराकुत्नी | ३८५ ६- | अल-ईज़ाह फ़ी शरह अल-तजरीद | इमाम अबुल फ़ज़्ल अब्द अल-रहमान बिन अहमद अल-किरमानी | ५२३ ७- | अस्बाब अल-नुज़ूल | अबुल हसन अली बिन अहमद अल-वाहिदी | ४६८ ८- | ईज़ाह अल-हक़ अल-सरीह फ़ी अहकाम अल-मय्यित वल-ज़रीह | शाह मुहम्मद इस्माइल बिन शाह अब्द अल-ग़नी देहलवी | १२४६ ९- | अनफ़ास अल-आरिफ़ीन | शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्द अल-रहीम | ११७६ १०- | इंसान अल-ऐन | शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्द अल-रहीम | ११७६ ११- | इंसान अल-उयून फ़ी सीरत अल-अमीन अल-मामून | अली बिन बुरहान अल-दीन हलबी | १०४४ १२- | इरशाद अल-तालिबीन | क़ाज़ी मुहम्मद सनाउल्लाह पानीपती | १२२५ १३- | अल-इलाम बि-आलाम बलद अल्लाह अल-हराम | कुतुब अल-दीन मुहम्मद बिन अहमद अल-हनफ़ी | ९८९

पृष्ठ ६८१ का ६८८

فتاوی رضویہ جلد دو ازدہم

ضمیمہ مآخذ و مراجع

نمبر شمار | نام کتاب | مصنف | سن وفات ہجری ۱- | انوار التنزیل فی اسرار التاویل (تفسیر البیضاوی) | ناصر الدین ابو سعید عبد اللہ بن عمر البیضاوی | ۶۸۵/۶۹۲/۶۹۱ - | ھدیۃ العارفین | - | ۱/۴۶۳ ۲- | الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب | ابو عمرو یوسف بن عبد اللہ النمری القرطبی | ۴۶۲ ۳- | اوضح رمز علی شرح نظم الکنز | علی بن محمد ابن غانم المقدسی | ۱۰۰۴ ۴- | الاستذکار | یوسف بن عبد اللہ ابن عبد البر الاندلسی | ۴۶۳ ۵- | الافراد | علی بن عمر الدار قطنی | ۳۸۵ ۶- | الایضاح فی شرح التجرید | امام ابوالفضل عبد الرحمن بن احمد الکرمانی | ۵۲۳ ۷- | اسباب النزول | ابوالحسن علی بن احمد الواحدی | ۴۶۸ ۸- | ایضاح الحق الصریح فی احکام المیت والضریح | شاہ محمد اسماعیل بن شاہ عبد الغنی دہلوی | ۱۲۴۶ ۹- | انفاس العارفین | شاہ ولی اللہ بن شاہ عبد الرحیم | ۱۱۷۶ ۱۰- | انسان العین | شاہ ولی اللہ بن شاہ عبد الرحیم | ۱۱۷۶ ۱۱- | انسان العیون فی سیرۃ الامین المأمون | علی بن برہان الدین حلبی | ۱۰۴۴ ۱۲- | ارشاد الطالبین | قاضی محمد ثناء اللہ پانی پتی | ۱۲۲۵ ۱۳- | الاعلام با علام بلد اللہ الحرام | قطب الدین محمد بن احمد الحنفی | ۹۸۹

صفحہ 681 از 688

Volume Twelve Fatawa Ridawiya

1. Irshad al-Sari ila Manasik al-Mulla Ali al-Qari - Husain bin Muhammad Saeed Abdul Ghani al-Makki al-Hanafi --- 310
2. Al-Adab al-Hameeda wal-Akhlaq - Muhammad bin Jarir al-Tabari --- 555
3. Al-Arba'in Ta'iya - Abu al-Fath Muhammad bin Muhammad al-Ta'i al-Hamadani --- 911
4. Anis al-Gharib - Jalal al-Din Abdullah bin Abi Bakr al-Suyuti --- 478
5. Al-Irshad fil-Kalam - Imam Abu al-Ma'ali Abdul Malik ibn Abdullah al-Juwayni, known as Imam al-Haramayn --- 974
6. Afdal al-Qira' bi-Qira' Umm al-Qura - Ahmad bin Muhammad ibn Hajar Makki --- 584
7. Al-I'tibar fi Bayan al-Nasikh wal-Mansukh minal-Akhbar - Muhammad bin Musa al-Hazimi al-Shafi'i

T 21. Talkhis al-Jami' al-Kabir - Kamal al-Din Muhammad bin Abbad al-Hanafi --- 652 22. Tuhfat al-Haris fi Sharh al-Talkhis - Ali bin Balban al-Farisi al-Misri al-Hanafi --- 739 23. Taqwiyat al-Iman - Shah Muhammad Ismail bin Shah Abdul Ghani Dehlawi --- 1246 24. Ta'lim al-Muta'allim - Imam Burhan al-Din al-Zarnuji 25. Al-Targhib wat-Tarhib - Abu al-Qasim Ismail bin Muhammad al-Asbahani --- 535 26. Tazkirat al-Mawta wal-Qubur - Qazi Muhammad Thanaullah Panipati --- 1225 27. Al-Tathbit 'ind al-Tabyit - Jalal al-Din Abd al-Rahman bin Kamal al-Din al-Suyuti --- 911 28. Talkhis al-Adilla li-Qawa'id al-Tawhid - Abu Ishaq Ibrahim bin Ismail al-Saffar al-Bukhari --- 534 29. Tafheem al-Masa'il 30. Tanbih al-Ghafil wal-Wasnan - Muhammad Amin ibn Abidin al-Shami --- 1252

Th 31. Thaqafiyat - Abu Abdullah Qasim bin al-Fadl al-Thaqafi al-Asbahani --- 489 32. Thawab al-A'mal li-ibn Hibban - Muhammad bin Hibban --- 354

J 33. Al-Jami' li-Ahkam al-Quran (Tafsir Qurtubi) - Abu Abdullah Muhammad bin Ahmad al-Qurtubi --- 671

Page 682 of 688

जिल्द बारहवीं फतावा रज़विया

1. इरशाद अल-सारी इला मनासिक अल-मुल्ला अली अल-कारी - हुसैन बिन मुहम्मद सईद अब्दुल गनी अल-मक्की अल-हनाफी --- 310
2. अल-आदब अल-हमीदा वल-अख्लाक़ - मुहम्मद बिन जरीर अल-तबरी --- 555
3. अल-अरबईन ताइया - अबुल फ़तह मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-ताई अल-हमदानी --- 911
4. अनीस अल-गरीब - जलालुद्दीन अब्दुल्ला बिन अबी बक्र अल-सुयुती --- 478
5. अल-इरशाद फिल-कलाम - इमाम अबुल मआली अब्दुल मलिक इब्न अब्दुल्ला अल-जुवैनी, जिन्हें इमाम अल-हरमैन के नाम से जाना जाता है --- 974
6. अफ़ज़ल अल-क़ुर्रा बि-क़िरा उम्म अल-क़ुरा - अहमद बिन मुहम्मद इब्न हजर मक्की --- 584
7. अल-ऐतबार फी बयान अल-नासिह वल-मंसूख मिनल-अखबार - मुहम्मद बिन मूसा अल-हाज़िमी अल-शाफ़ई

त 21. तलखीस अल-जामे अल-कबीर - कमालुद्दीन मुहम्मद बिन अब्बाद अल-हनाफी --- 652 22. तोहफ़तुल हरीस फी शरह अल-तलखीस - अली बिन बलबान अल-फ़ारसी अल-मिस्री अल-हनाफी --- 739 23. तक़वियदुल ईमान - शाह मुहम्मद इस्माइल बिन शाह अब्दुल गनी देहलवी --- 1246 24. तालीमुल मुताअल्लिम - इमाम बुरहानुद्दीन अल-ज़रनूजी 25. अल-तर्गीब वत-तरहीब - अबुल कासिम इस्माइल बिन मुहम्मद अल-असबहानी --- 535 26. तज़किरातुल मौता वल-क़ुबूर - क़ाज़ी मुहम्मद सनाउल्लाह पानीपती --- 1225 27. अल-तस्बीत इंदल तब्यीत - जलालुद्दीन अब्दुर्रहमान बिन कमालुद्दीन अल-सुयुती --- 911 28. तलखीस अल-अदिल्ला ली-क़वाइद अल-तौहीद - अबू इसहाक़ इब्राहीम बिन इस्माइल अल-सफ़्फ़ार अल-बुखारी --- 534 29. तफ़हीमुल मसाइल 30. तनबीह अल-गाफ़िल वल-वस्नान - मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अल-शामी --- 1252

थ 31. सक़फ़ियात - अबू अब्दुल्ला क़ासिम बिन अल-फ़ज़ल अल-सक़फ़ी अल-असबहानी --- 489 32. सवाबुल आमाल लि-इब्न हिब्बान - मुहम्मद बिन हिब्बान --- 354

ज 33. अल-जामे ली-अहकाम अल-क़ुरआन (तफ़सीर क़ुर्तुबी) - अबू अब्दुल्ला मुहम्मद बिन अहमद अल-क़ुर्तुबी --- 671

पेज 682/688

جلد دو ازدہم فتاوی رضویہ

۱۴۔ ارشاد الساری الی مناسک الملا علی القاری - حسین بن محمد سعید عبدالغنی المکی الحنفی --- ۳۱۰ ۱۵۔ الآداب الحمیدہ والاخلاق - محمد بن جریر الطبری --- ۵۵۵ ۱۶۔ الاربعین طائیہ - ابوالفتح محمد بن محمد الطائی الہمدانی --- ۹۱۱ ۱۷۔ انیس الغریب - جلال الدین عبداللہ بن ابی بکر السیوطی --- ۴۷۸ ۱۸۔ الارشاد فی الکلام - امام ابوالمعالی عبدالمالک ابن عبداللہ الجوینی الشہیر بامام الحرمین --- ۹۷۴ ۱۹۔ افضل القراء بقراء اُم القراء - احمد بن محمد ابن حجر مکی --- ۵۸۴ ۲۰۔ الاعتبار فی بیان الناسخ والمنسوخ من الاخبار - محمد بن موسیٰ الحازمی الشافعی

ت ۲۱۔ تلخیص الجامع الکبیر - کمال الدین محمد بن عباد الحنفی --- ۶۵۲ ۲۲۔ تحفۃ الحریص فی شرح التلخیص - علی بن بلبان الفارسی المصری الحنفی --- ۷۳۹ ۲۳۔ تقویۃ الایمان - شاہ محمد اسمعیل بن شاہ عبدالغنی دہلوی --- ۱۲۴۶ ۲۴۔ تعلیم المتعلم - امام برہان الدین الزرنوجی ۲۵۔ الترغیب والترہیب - ابوالقاسم اسمعیل بن محمد الاصبہانی --- ۵۳۵ ۲۶۔ تذکرۃ الموتیٰ والقبور - قاضی محمد ثناء اللہ پانی پتی --- ۱۲۲۵ ۲۷۔ التثبیت عند التبییت - جلال الدین عبدالرحمن بن کمال الدین السیوطی --- ۹۱۱ ۲۸۔ تلخیص الادلہ لقواعد التوحید - ابواسحق ابراہیم بن اسمعیل الصفار البخاری --- ۵۳۴ ۲۹۔ تفہیم المسائل ۳۰۔ تنبیہ الغافل والاسنان - محمد امین ابن عابدین الشامی --- ۱۲۵۲

ث ۳۱۔ ثقفیات - ابو عبداللہ قاسم بن الفضل الثقفی الاصفہانی --- ۴۸۹ ۳۲۔ ثواب الاعمال لابن حبان - محمد بن حبان --- ۳۵۴

ج ۳۳۔ الجامع لاحکام القرآن (تفسیر قرطبی) - ابو عبداللہ محمد بن احمد القرطبی --- ۶۷۱

Fatawa Razawiyya Volume Twelve

33- Al-Jami' li-Ahkam al-Qur'an (Tafsir al-Qurtubi) | Abu Abdullah Muhammad bin Ahmad al-Qurtubi | 671 34- Jami' al-Mudammarat wa al-Mushkilat (Sharh Quduri) | Yusuf bin Umar al-Sufi | 832 35- Jadd al-Mumtar 'ala Radd al-Muhtar | Imam Ahmad Raza bin Naqi Ali Khan | 1340

Letter Ha (ح)

36- Al-Husami | Muhammad bin Muhammad bin Umar Husam al-Din al-Hanafi | 632 37- Hashiyah dar Ghurar Nablusi | Isma'il bin Abd al-Ghani Nablusi | 1062 38- Husn al-Tawassul fi Ziyarat Afdal al-Rusul | Abd al-Qadir al-Fakihi | 982 39- Hawashi 'ala Ma'alim al-Tanzil | Imam Ahmad Raza Khan bin Naqi Ali Khan | 1340 40- Husam al-Haramayn 'ala Manhar al-Kufr wa al-Din | Imam Ahmad Raza Khan bin Naqi Ali Khan | 1340

Letter Kha (خ)

41- Khulasat Khulasat al-Wafa | Nur al-Din Ali bin Ahmad al-Samhudi | 911

Letter Dal (د)

42- Dala'il al-Nubuwwah | Abu Bakr bin Ahmad bin Husayn al-Bayhaqi | 458 43- Durr-e-Thamin fi Mubashirat al-Nabi (S.A.W) | Shah Waliullah bin Shah Abd al-Rahim | 1176 44- Durr-e-Munazzam fi Mawlid al-Nabi al-Mu'azzam (S.A.W) | Abu al-Qasim Muhammad bin Uthman al-Lu'lu'i al-Dimashqi | 867 45- Kitab al-Da'awat | Ahmad bin Husayn al-Bayhaqi | 458 46- Al-Durrah al-Mughbiyyah fi Ziyarat al-Mustafawiyyah | Nur al-Din Ali bin Sultan Muhammad al-Qari | 1012 47- Al-Durrah al-Thaminah fi Akhbar al-Madinah | Hafiz Muhib al-Din Muhammad bin Mahmud bin Najjar | 633 48- Al-Durar al-Saniyyah fi al-Radd 'ala al-Wahhabiyyah | Mufti Ahmad bin al-Sayyid Zayni Dahlan | 1304

Letter Zal (ذ)

49- Dhikr al-Mawt | Abdullah bin Muhammad bin Abi al-Dunya al-Baghdadi | 281

फतावा रज़विया खंड बारहवाँ

33- अल-जामि' लि-अहकाम अल-क़ुरान (तफ़सीर क़ुर्तुबी) | अबू अब्दुल्ला मुहम्मद बिन अहमद अल-क़ुर्तुबी | 671 34- जामि' अल-मुदम्मरात व अल-मुश्किलत (शरह क़ुदूरी) | यूसुफ बिन उमर अल-सूफ़ी | 832 35- जद्द अल-मुम्तार अला रद्द अल-मुह्तार | इमाम अहमद रज़ा बिन नक़ी अली खान | 1340

अक्षर हा (ح)

36- अल-हुसामी | मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन उमर हुसामुद्दीन अल-हनफ़ी | 632 37- हाशया दर ग़ुरर नाबुलसी | इस्माइल बिन अब्दुल ग़नी नाबुलसी | 1062 38- हुस्न अल-तवस्सुल फी ज़ियारत अफ़ज़ल अल-रुसुल | अब्दुल क़ादिर अल-फ़ाकिही | 982 39- ह़वाशी अला मआलिम अल-तन्ज़ील | इमाम अहमद रज़ा खान बिन नक़ी अली खान | 1340 40- हुसाम अल-हरमैन अला मन्हर अल-कुफ़्र वल-दीन | इमाम अहमद रज़ा खान बिन नक़ी अली खान | 1340

अक्षर खा (خ)

41- खुलासात खुलासात अल-वफ़ा | नूरुद्दीन अली बिन अहमद अल-समहूदी | 911

अक्षर दाल (د)

42- दलाइल अल-नुबुव्वह | अबू बक्र बिन अहमद बिन हुसैन अल-बैहक़ी | 458 43- दुर्र-ए-थमीन फ़ी मुबश्शिरात अल-नबी (स.अ.व) | शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम | 1176 44- दुर्र-ए-मुनज़्ज़म फ़ी मौलिद अल-नबी अल-मुअज़्ज़म (स.अ.व) | अबुल क़ासिम मुहम्मद बिन उस्मान अल-लुलुई अद-दमिश्क़ी | 867 45- किताब अल-दा'वात | अहमद बिन हुसैन अल-बैहक़ी | 458 46- अद-दुर्रह अल-मुग़बिय्यह फ़ी ज़ियारत अल-मुस्तफ़विय्यह | नूरुद्दीन अली बिन सुल्तान मुहम्मद अल-क़ारी | 1012 47- अद-दुर्रह अल-थमीनह फ़ी अख़बार अल-मदीना | हाफ़िज़ मुहिब उद्दीन मुहम्मद बिन महमूद बिन नज्जार | 633 48- अद-दुरर अस-सनिय्यह फ़ी अर-रद्द अलल वहाबिय्यह | मुफ्ती अहमद बिन अल-सैय्यद ज़ैनी दहलान | 1304

अक्षर ज़ाल (ذ)

49- ज़िक्र अल-मौत | अब्दुल्ला बिन मुहम्मद बिन अबी अद-दुनिया अल-बग़दादी | 281

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

۳۳- الجامع لاحکام القرآن (تفسیر قرطبی) | ابو عبد اللہ محمد بن احمد القرطبی | ۶۷۱ ۳۴- جامع المضمرات والمشکلات (شرح قدوری) | یوسف بن عمر الصوفی | ۸۳۲ ۳۵- جد الممتار علی رد المحتار | امام احمد رضا بن نقی علی خاں | ۱۳۴۰

ح

۳۶- الحسامی | محمد بن محمد بن عمر حسام الدین الحنفی | ۶۳۲ ۳۷- حاشیہ درغرر نابلسي | اسماعیل بن عبد الغنی نابلسی | ۱۰۶۲ ۳۸- حسن التوسل في زیارۃ افضل الرسل | عبد القادر الفاکہی | ۹۸۲ ۳۹- حواشی علی معالم التنزیل | امام احمد رضا خاں بن نقی علی خاں | ۱۳۴۰ ۴۰- حسام الحرمین علی منحر الکفر والدین | امام احمد رضا خاں بن نقی علی خاں | ۱۳۴۰

خ

۴۱- خلاصۃ خلاصۃ الوفاء | نور الدین علی بن احمد السمہودی | ۹۱۱

د

۴۲- دلائل النبوۃ | ابو بکر بن احمد بن حسین البیہقی | ۴۵۸ ۴۳- درثمین فی مبشرات النبی صلی اللہ علیہ وسلم | شاہ ولی اللہ بن شاہ عبد الرحیم | ۱۱۷۶ ۴۴- درمنظم فی مولد النبی المعظم صلی اللہ علیہ وسلم | ابوالقاسم محمد بن عثمان اللؤلؤی الدمشقی | ۸۶۷ ۴۵- کتاب الدعوات | احمد بن حسین البیہقی | ۴۵۸ ۴۶- الدرۃ المغبیۃ فی زیارۃ المصطفویۃ | نور الدین علی بن سلطان محمد القاری | ۱۰۱۲ ۴۷- الدرۃ الثمینیہ فی اخبار المدنیۃ | حافظ محب الدین محمد بن محمود بن نجار | ۶۳۳ ۴۸- الدرر السنیۃ فی الرد علی الوہابیہ | مفتی احمد بن السید زینی دحلان | ۱۳۰۴

ذ

۴۹- ذکر الموت | عبد الله بن محمد بن ابی الدنیا البغدادی | ۲۸۱

صفحہ 683 از 688

Fatawa Razawiyya Volume Twelve

R 50. Raf' al-Intiqad wa Daf' al-I'tirad etc., Muhammad Amin ibn Abidin known as Ibn Abidin, 1252

S (Seen) 51. Salafiyat min Ajza' al-Hadith, Hafiz Abu al-Tahir Ahmad ibn Muhammad al-Salafi, 586 52. Al-Siraj al-Munir fi Sharh Jami' al-Saghir, Ali ibn Muhammad ibn Ibrahim al-Ma'arri al-Azizi, 1070 53. Sunan al-Huda, Abdul Ghani ibn Ahmad ibn Shah Abdul Quddus Gangohi 54. Sunan fi al-Hadith, Hafiz Abu Ali Sa'id ibn Uthman ibn al-Sakan al-Baghdadi, 353

Sh (Sheen) 55. Sharh Risalah Fazaliyah, Allama Ibrahim ibn Muhammad al-Bajuri, 1276 56. Sharh al-Sughra, Allama Muhammad Yusuf al-Sanusi, 895 57. Al-Shamil fi Furu' al-Hanafiyyah, Abu al-Qasim Ismail ibn Husain al-Baihaqi al-Hanafi, 402 58. Sharh Sahih Bukhari Al-Kawakib al-Durari, Muhammad ibn Yusuf al-Kirmani, 786 59. Shifa' al-Alil Sharh al-Qawl al-Jamil, Maulvi Khurram Ali Bilhori probably, 1271 60. Sharh Sahih Bukhari, Nasir al-Din Ali ibn Muhammad ibn Munir 61. Sharh Rattaj Sultani, Abdul A'la ibn Muhammad ibn Husain, 933 62. Shifa' al-Alil wa Bill al-Ghalil, Ibn Abidin Muhammad Amin Afandi, 1252

S (Suad) 63. Al-Sihah al-Ma'thurah 'an al-Nabi (Sallallahu Alaihi Wa Sallam) 64. Sughra Sharh Munyah al-Musalli, Sheikh Ibrahim ibn Muhammad al-Halabi, 956 65. Sirat-e-Mustaqim, Shah Muhammad Ismail ibn Abdul Ghani Dehlavi, 1236

Page 684 of 688

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

र ५०. रफ़' अल-इंतिकाद व दफ़' अल-इ'तिराज़ आदि, मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन जिन्हें इब्न आबिदीन के नाम से जाना जाता है, १२५२

स (सीन) ५१. सलफ़ियात मिन अज्ज़ा अल-हदीस, हाफ़िज़ अबू अल-ताहिर अहमद बिन मुहम्मद अल-सलफ़ी, ५८६ ५२. अल-सिराज अल-मुनीर फ़ी शरह जामे' अल-सग़ीर, अली बिन मुहम्मद बिन इब्राहिम अल-म'अरी अल-अज़ीज़ी, १०७० ५३. सुनन अल-हुदा, अब्दुल ग़नी बिन अहमद बिन शाह अब्दुल कुद्दूस गंगोही ५४. सुनन फ़ी अल-हदीस, हाफ़िज़ अबू अली सईद बिन उस्मान इब्न अल-सकन अल-बग़दादी, ३५३

श (शीन) ५५. शरह रिसाला फ़ज़ालिया, अल्लामा इब्राहिम बिन मुहम्मद अल-बाजौरी, १२७६ ५६. शरह अल-सुग़रा, अल्लामा मुहम्मद यूसुफ़ अल-सनूसी, ८९५ ५७. अल-शामिल फ़ी फ़ुरू' अल-हनफ़िया, अबू अल-कासिम इस्माइल बिन हुसैन अल-बैहकी अल-हनफी, ४०२ ५८. शरह सहीह बुखारी अल-कवाकिब अल-दुरारी, मुहम्मद बिन यूसुफ अल-किरमानी, ७८६ ५९. शिफ़ा अल-अलील शरह अल-कौल अल-जमील, मौलवी खुर्रम अली बिलहोरी शायद, १२७१ ६०. शरह सहीह बुखारी, नासिर अल-दीन अली बिन मुहम्मद इब्न मुनीर ६१. शरह रत्तज सुल्तानी, अब्दुल आला बिन मुहम्मद बिन हुसैन, ९३३ ६२. शिफ़ा अल-अलील व बिल्ल अल-ग़लील, इब्न आबिदीन मुहम्मद अमीन अफंदी, १२५२

स (सुआद) ६३. अल-सिहाह अल-मसूरह अन अल-नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ६४. सुग़रा शरह मुनयाह अल-मुसल्ली, शेख इब्राहिम बिन मुहम्मद अल-हलबी, ९५६ ६५. सिराते मुस्तकीम, शाह मुहम्मद इस्माइल बिन अब्दुल ग़नी देहलवी, १२३६

पेज ६८४ ऑफ ६८८

فتاوٰی رضویہ جلد دوازدہم

ر ۵۰۔ رفع الانتقاض ودفع الاعتراض الخ، محمد امین ابن عابدین الشہیر بابن عابدین، ۱۲۵۲

س ۵۱۔ سلفیات من اجزاء الحدیث، حافظ ابو الطاہر احمد بن محمد السلفی، ۵۸۶ ۵۲۔ السراج المنیر فی شرح جامع الصغیر، علی بن محمد بن ابراہیم المعری العزیزی، ۱۰۷۰ ۵۳۔ سنن الہدی، عبدالغنی بن احمد بن شاہ عبدالقدوس گنگوہی ۵۴۔ سنن فی الحدیث، حافظ ابو علی سعید بن عثمان ابن السکن البغدادی، ۳۵۳

ش ۵۵۔ شرح رسالہ فضالیہ، علامہ ابراہیم بن محمد الباجوری، ۱۲۷۶ ۵۶۔ شرح الصغرٰی، علامہ محمد یوسف السنوسی، ۸۹۵ ۵۷۔ الشامل فی فروع الحنفیہ، ابوالقاسم اسمعیل بن حسین البیہقی الحنفی، ۴۰۲ ۵۸۔ شرح صحیح بخاری الکواکب الدراری، محمد بن یوسف الکرمانی، ۷۸۶ ۵۹۔ شفاء العلیل شرح القول الجمیل، مولوی خرم علی بلہوری غالباً، ۱۲۷۱ ۶۰۔ شرح صحیح بخاری، ناصر الدین علی بن محمد ابن منیر ۶۱۔ شرح رتّج سلطانی، عبدالاعلٰی بن محمد بن حسین، ۹۳۳ ۶۲۔ شفاء العلیل وبل الغلیل، ابن عابدین محمد امین آفندی، ۱۲۵۲

ص ۶۳۔ الصحاح المأثورہ عن النبی صلی اللہ علیہ تعالٰی علیہ وسلم ۶۴۔ صغرٰی شرح منیۃ المصلی، شیخ ابراہیم بن محمد الحلبی، ۹۵۶ ۶۵۔ صراط مستقیم، شاہ محمد اسمعیل بن عبدالغنی دہلوی، ۱۲۳۶

Fatawa Rizvia Volume Twelve

65- Sirat-e-Mustaqim Shah Muhammad Ismail bin Abdul Ghani Dehlvi 1246

Ta 66- Al-Tabaqat al-Kubra Muhammad ibn Sa'd al-Zuhri 230

Ghayn 67- Ghara'ib al-Qur'an wa Ragha'ib al-Furqan (Tafsir Nishapuri) Nizam al-Din Hasan bin Muhammad Nishapuri 728 68- Gharib al-Hadith Qasim bin Sallam al-Baghdadi 223 69- Gharib al-Hadith Ibrahim bin Ishaq al-Harbi 285 70- Ghayat al-Awtar Translation of Durr al-Mukhtar Maulvi Khurram Ali Belhouri, likely 1271

Fa 71- Al-Futuhat al-Ilahiyya (Tafsir Jamal) Sulayman bin 'Umar al-Shafi'i famously known as Al-Jamal 1204 72- Al-Faraj Ba'd al-Shidda Abdullah bin Muhammad ibn Abi al-Dunya al-Baghdadi 281 73- Fateh Sharh Quduri 74- Fawaid Hakim wa Khalas 75- Fayd al-Qadir Commentary on Al-Jami' al-Saghir Abdul Ra'uf al-Munawi 1031 76- Fuyuz al-Haramayn Shah Waliullah bin Shah Abdur Rahim 1176 77- Fatawa Shah Rafiuddin Shah Rafiuddin 1233 78- Al-Fath al-Mubin Commentary on Arba'in Nawawi Ahmad bin Muhammad ibn Hajar Makki 974 79- Fasl al-Khitab fi Radd Dalalat Ibn Abd al-Wahhab 80- Futuh al-Ghayb Sayyid Shaykh Abdul Qadir Gilani 561 81- Fatawa Azizi Abdul Aziz bin Waliullah Dehlvi 1004

Qaf 82- Qurrat Uyun al-Akhbar Muhammad Amin ibn Abidin famously known as Ibn Abidin 1252

Page 685 of 688

फ़तावा रिज़विया बारहवीं जिल्द

65- सिरात-ए-मुस्तकीम शाह मुहम्मद इस्माइल बिन अब्दुल ग़नी देहलवी 1246

त (ط) 66- अल-तबाक़ात अल-कुबरा मुहम्मद इब्न साद अल-ज़ुहरी 230

ग़ (غ) 67- ग़रायब अल-क़ुरान व रग़ायब अल-फ़ुरक़ान (तफ़सीर निशापूरी) निज़ाम अल-दीन हसन बिन मुहम्मद निशापूरी 728 68- ग़रीब अल-हदीस क़ासिम बिन सल्लम अल-बग़दादी 223 69- ग़रीब अल-हदीस इब्राहीम बिन इसहाक़ अल-हरबी 285 70- ग़ायत अल-अवतार तर्जुमा दुर्रे मुख़्तार मौलवी खुर्रम अली बल्हौरी ग़ालिबन 1271

फ़ (ف) 71- अल-फ़ुतूहात अल-इलाहिया (तफ़सीर जमल) सुलेमान बिन उमर अल-शाफ़ई अश्-शहीर बिल-जमल 1204 72- अल-फ़रज बाद अश-शिद्दा अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद इब्न अबी अद्-दुनिया अल-बग़दादी 281 73- फ़ातेह शरह क़ुदूरी 74- फ़वाइद हाकिम व ख़लास 75- फ़ैज़ अल-क़दीर शरह अल-जामे अस-सग़ीर अब्दुल रऊफ़ अल-मनावी 1031 76- फ़ुयूज़ अल-हरमैन शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुल रहीम 1176 77- फ़तावा शाह रफ़ीउद्दीन शाह रफ़ीउद्दीन 1233 78- अल-फ़तह अल-मुबीन शरह अरबईन नववी अहमद बिन मुहम्मद इब्न हजर मक्की 974 79- फ़स्ल अल-ख़िताब फ़ी रद्दे दलालाते इब्न अब्दुल वहाब 80- फ़ुत्ह अल-ग़ैब सैय्यद शैख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी 561 81- फ़तावा अज़ीज़ी अब्दुल अज़ीज़ बिन वलीउल्लाह देहलवी 1004

क़ (ق) 82- क़ुर्रत उयून अल-अख़बार मुहम्मद अमीन इब्न आबिदीन अश्-शहीर बि-इब्न आबिदीन 1252

पृष्ठ 685 (688 में से)

فتاوىٰ رضويہ جلد دوازدہم

۶۵- صراطِ مستقيم شاه محمد اسماعيل بن عبد الغنى دہلوى ۱۲۴۶

ط ۶۶- الطبقات الكبرى محمد بن سعد الزہرى ۲۳۰

غ ۶۷- غرائب القرآن ورغائب الفرقان (تفسير نيشاپورى) نظام الدين حسن بن محمد نيشاپورى ۷۲۸

۶۸- غريب الحديث قاسم بن سلام البغدادى ۲۲۳ ۶۹- غريب الحديث ابراهيم بن اسحاق الحربي ۲۸۵

۷۰- غايۃ الاوطار ترجمہ در مختار مولوى خرم على بلہورى غالباً ۱۲۷۱

ف ۷۱- الفتوحات الالہيۃ (تفسير جمل) سليمان بن عمر الشافعى الشہير بالجمل ۱۲۰۴ ۷۲- الفرج بعد الشدۃ عبد الله بن محمد ابن ابى الدنيا البغدادى ۲۸۱ ۷۳- فاتح شرح قدورى ۷۴- فوائد حاكم وخلاص

۷۵- فيض القدير شرح الجامع الصغير عبد الرؤف المناوى ۱۰۳۱ ۷۶- فيوض الحرمين شاه ولى الله بن شاه عبد الرحيم ۱۱۷۶ ۷۷- فتاوىٰ شاه رفيع الدين شاه رفيع الدين ۱۲۳۳ ۷۸- الفتح المبين شرح اربعين نووى احمد بن محمد ابن حجر مكى ۹۷۴ ۷۹- فصل الخطاب في رد ضلالات ابن عبد الوہاب

۸۰- فتوح الغيب سيد شيخ عبد القادر گيلانى ۵۶۱ ۸۱- فتاوىٰ عزيزى عبد العزيز بن ولى الله دہلوى ۱۰۰۴

ق ۸۲- قرۃ عيون الاخبار محمد امين ابن عابدين الشہير بابن عابدين ۱۲۵۲

صفحہ ۶۸۵ از ۶۸۸

Fatawa Razawiyya Volume Twelve

Kaf (ک) 83. Kashf al-Ghita ma lam yazal lil-mawta 'ala al-ahya --- Muhammad Sheikh-ul-Islam bin Muhammad Fakhruddin --- 285 84. Kitab Ittiba' al-Amwat --- Ibrahim bin Ishaq al-Harbi --- 360 85. Kitab al-Da'wat --- Sulayman bin Ahmad al-Tabarani --- 399 86. Kitab al-Thawab fil-Hadith --- Abu al-Sheikh Abdullah bin Muhammad bin Ja'far --- 1143 87. Kashf al-Nur 'an Ashab al-Qubur --- Abd al-Ghani Nabulsi --- 241 88. Kitab al-Zuhd --- Imam Ahmad bin Muhammad bin Hanbal --- 281 89. Kitab al-Qubur --- Abdullah bin Muhammad ibn Abi al-Dunya 90. Kitab al-Rawdah --- Abu al-Hasan bin Bara --- 443 91. Kitab al-Zuhd --- Hafiz Hannad bin al-Sari al-Tamimi al-Darimi 92. Kitab Dhikr al-Mawt 93. Kitab Ad'iyat al-Hajj wal-'Umrah --- Qutbuddin al-Dehlawi --- 1289 94. Kunooz al-Haqa'iq fi Hadith Khair al-Khala'iq --- Abd al-Rauf bin Tajuddin bin Ali al-Munawi --- 1031 95. Kitab al-Khurooj --- Qazi Imam Abu Yusuf Yaqub bin Ibrahim Hanafi --- 182 96. Kaff al-Ra'a' 'an al-Muharramat al-Lahw wal-Sama' --- Abu al-Abbas Ahmad bin Muhammad ibn Hajar Makki --- 974

Lam (ل) 97. Lubab al-Manasik --- Sheikh Rahmatullah bin Qazi Abdullah al-Sindi --- 978

Meem (م) 98. Minah al-Rawd al-Azhar fi Sharh al-Fiqh al-Akbar --- Ali bin Sultan Muhammad al-Qari --- 1012 Majmu'ah Khani (Persian) 99. Maqamat-e-Mazhar wa Zamima-e-Maqamat-e-Mazhar --- Mirza Mazhar Jan Janan --- 1195 100. Mashariq al-Anwar al-Qudsiyyah fi Bayan al-'Uhood al-Muhammadiyyah --- Abd al-Wahhab bin Ahmad al-Sha'rani --- 974

फ़तावा रज़विया जिल्द बारहवीं

काफ़ (ک) 83. कश्फ़ अल-ग़िता मा लम यज़ल लिल-मौता अलल-अहया --- मुहम्मद शैखुल इस्लाम बिन मुहम्मद फ़खरुद्दीन --- 285 84. किताब इत्तिबा' अल-अमवात --- इब्राहिम बिन इसहाक़ अल-हरबी --- 360 85. किताब अल-दा'वात --- सुलेमान बिन अहमद अल-तबरानी --- 399 86. किताब अल-सवाब फ़िल-हदीस --- अबुल शैख अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन जा'फ़र --- 1143 87. कश्फ़ अल-नूर अन अस्हाब अल-क़ुबूर --- अब्दुल ग़नी नाबुलसी --- 241 88. किताब अल-ज़ुहद --- इमाम अहमद बिन मुहम्मद बिन हंबल --- 281 89. किताब अल-क़ुबूर --- अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद इब्न अबी अल-दुनिया 90. किताब अल-रौज़ा --- अबुल हसन बिन बरा --- 443 91. किताब अल-ज़ुहद --- हाफ़िज़ हन्नाद बिन अल-सरी अल-तमीमी अल-दारमी 92. किताब ज़िक्र अल-मौत 93. किताब अद'इयत अल-हज वल-उमराह ---.क़ुत्बुद्दीन अल-देहल्वी --- 1289 94. कुनूज़ अल-हकाइक़ फ़ी हदीस खैर अल-खलाइक़ --- अब्दुल रऊफ़ बिन ताजुद्दीन बिन अली अल-मुनावी --- 1031 95. किताब अल-खुरूज --- क़ाज़ी इमाम अबू यूसुफ़ याक़ूब बिन इब्राहिम हनफ़ी --- 182 96. कफ़ अल-रआ' अन अल-मुहर्रमात अल-लहव वस-समा' --- अबुल अब्बास अहमद बिन मुहम्मद इब्न हजर मक्की --- 974

लाम (ل) 97. लुबाब अल-मनासिक --- शैख रहमतुल्लाह बिन क़ाज़ी अब्दुल्लाह अल-सिंधी --- 978

मीम (م) 98. मिनह अल-रौज़ अल-अज़हर फ़ी शरह अल-फ़िक़ह अल-अकबर --- अली बिन सुल्तान मुहम्मद अल-क़ारी --- 1012 मजमुआ खानी (फारसी) 99. मक़ामात-ए-मज़हर व ज़मीमा-ए-मक़ामात-ए-मज़हर --- मिर्ज़ा मज़हर जान जानां --- 1195 100. मशारिक़ अल-अनवार अल-क़ुद्सिया फ़ी बयान अल-उहूद अल-मुहम्मदिया --- अब्दुल वह्हाब बिन अहमद अल-शा'रानी --- 974.

فتاوی رضویہ جلد دو ازدہم

ک ۸۳۔ کشف الغطاء مالم یزل للموتٰی علی الاحیاء --- محمد شیخ الاسلام بن محمد فخر الدین --- ۲۸۵ ۸۴۔ کتاب اتباع الاموات --- ابراهیم بن اسحاق الحربي --- ۳۶۰ ۸۵۔ کتاب الدعوات --- سلیمان بن احمد الطبراني --- ۳۹۹ ۸۶۔ کتاب الثواب فی الحدیث --- ابوالشیخ عبداللہ بن محمد بن جعفر --- ۱۱۴۳ ۸۷۔ کشف النور عن اصحاب القبور --- عبدالغنی نابلسی --- ۲۴۱ ۸۸۔ کتاب الزهد --- امام احمد بن محمد بن حنبل --- ۲۸۱ ۸۹۔ کتاب القبور --- عبداللہ بن محمد ابن ابی الدنیا ۹۰۔ کتاب الروضہ --- ابوالحسن بن براء --- ۴۴۳ ۹۱۔ کتاب الزهد --- حافظ ہناد بن السری التمیمی الدارمی ۹۲۔ کتاب ذکر الموت ۹۳۔ کتاب ادعیة الحج والعمرہ --- قطب الدین الدہلوی --- ۱۲۸۹ ۹۴۔ کنوز الحقائق فی حدیث خیر الخلائق --- عبد الرؤف بن تاج الدین بن علی المناوی --- ۱۰۳۱ ۹۵۔ کتاب الخروج --- قاضی امام ابو یوسف یعقوب بن ابراهیم حنفی --- ۱۸۲ ۹۶۔ کف الرعاع عن المحرمات اللہو والسماع --- ابو العباس احمد بن محمد ابن حجر مکی --- ۹۷۴

ل ۹۷۔ لباب المناسك --- شیخ رحمتہ اللہ بن قاضی عبداللہ السندی --- ۹۷۸

م ۹۸۔ منح الروض الازہر فی شرح الفقہ الاکبر --- علی بن سلطان محمد القاری --- ۱۰۱۲ مجموعہ خانی (فارسی) ۹۹۔ مقامات مظہر و ضمیمہ مقامات مظہر --- مرزا مظہر جان جاناں --- ۱۱۹۵ ۱۰۰۔ مشارق الانوار القدسیہ فی بیان العہود المحمدیہ --- عبد الوہاب بن احمد الشعرانی --- ۹۷۴

Fatawa Razawiya Volume 12

1. Musnad al-Kabir fi al-Hadith — Abu Muhammad 'Ubayd bin Humayd al-Kashshi — 249
2. Al-Muntaqa fi Ahadith al-Ahkam 'an Khayr al-Anam — Ahmad bin 'Abdul-Halim ibn Taymiyyah — 728
3. Manzumah al-Nasafi fi al-Khilaf — Najm al-Din 'Umar bin Muhammad al-Nasafi — 537
4. Mi'raj al-Dirayah fi Sharh al-Hidayah — Imam Qiwam al-Din bin Muhammad al-Kaki — 739
5. Al-Musnad al-Sahih fi al-Hadith — Abu 'Awanah Ya'qub bin Ishaq al-Isfara'ini — 316
6. Musnad al-Shamiyyin — [No author] — [No page]
7. Madarij al-Nubuwwah — Shaykh 'Abdul Haqq Muhaddith Dehlawi — 1052
8. Majma' al-Barakat — Shaykh 'Abdul Haqq Muhaddith Dehlawi — 1052
9. Manahil al-Safa fi Takhrij Ahadith al-Shifa — Jalal al-Din 'Abdul Rahman bin Abi Bakr al-Suyuti — 911
10. Mukhtasar Tarikh Ibn 'Asakir — Imam Muhammad bin Mukram known as Ibn Manzur — 711
11. Ma'ata Masa'il — Muhammad Ishaq Muhaddith Dehlawi — 1262
12. Masa'il Arba'in — Muhammad Ishaq Muhaddith Dehlawi — 1262
13. Mala Budda Minhu — Qazi Muhammad Thana'ullah Panipati — 1225
14. Mishkat al-Masabih — Abu 'Abdullah Muhammad bin 'Abdullah al-Khatib — 740
15. Muttasiq ya Durr al-Muntaqa fi Sharh al-Multaqa — 'Ala al-Din al-Haskafi — 1088
16. Mozi-ul-Quran (Translation of Quran) — Shah 'Abdul Qadir bin Shah Waliullah Dehlawi — 1230
17. Mathnawi Sharif (Persian Poem) — Mulla Jalal al-Din Muhammad bin Muhammad al-Rumi al-Balkhi al-Qonawi — 722
18. Mustalahat al-Hadith — 'Ali bin al-Sayyid Muhammad bin 'Ali al-Jurjani Sayyid Sharif — 816
19. Al-Maqasid fi 'Ilm al-Kalam — 'Allamah Sa'd al-Din Mas'ud bin 'Umar al-Taftazani — 791
20. Mughni al-Mustafti 'an Su'al al-Mufti — 'Allamah Hamid Afandi — [No page]
21. Mazahir-e-Haq (Translation of Mishkat al-Masabih) — Qutubuddin Dehlawi — 1289
22. Minnat al-Jalil — Ibn 'Abidin Muhammad Amin Afandi — 1252

23. Miftah al-Ghayb fi Sharh Futuh al-Ghayb — 'Abdul Haqq bin Saif al-Din Muhaddith Dehlawi — 1052

Nun (Alphabet) 124. Nafi' fi al-Furu' — Imam Nasir al-Din Muhammad bin Yusuf al-Samarqandi — 402 124. Nafi' fi al-Furu' — Imam Nasir al-Din Muhammad bin Yusuf al-Samarqandi — 402

फ़तावा रज़विया खंड १२

1. मुसनद अल-कबीर फ़ी अल-हदीस — अबू मुहम्मद उबैद बिन हुमैद अल-कशी — २४९
2. अल-मुंतका फ़ी अहादीस अल-अहकाम अन खैर अल-अनाम — अहमद बिन अब्दुल-हलीम इब्न तैमिया — ७२८
3. मंज़ूमा अल-नसफ़ी फ़ी अल-खिलाफ़ — नज्म अल-दीन उमर बिन मुहम्मद अल-नसफ़ी — ५३७
4. मेराज अल-दिराया फ़ी शरह हिदाया — इमाम किवाम अल-दीन बिन मुहम्मद अल-काकी — ७३९
5. अल-मुसनद अल-सहीह फ़ी अल-हदीस — अबू अवाना याकूब बिन इस्हाक़ अल-इसफ़राईनी — ३१६
6. मुसनद अल-शामीय्यीन — [कोई लेखक नहीं] — [कोई पृष्ठ नहीं]
7. मदारिज अल-नुबुव्वत — शेख़ अब्दुल हक़ मोहद्दिस देहलवी — १०५२
8. मजमा अल-बरकात — शेख़ अब्दुल हक़ मोहद्दिस देहलवी — १०५२
9. मनाहिल अल-सफ़ा फ़ी तख़रीज़ अहादीस अल-शिफ़ा — जलाल अल-दीन अब्दुल रहमान बिन अबी बक्र अल-सुयुती — ९११
10. मुख़्तसर तारीख़ इब्न असाकिर — इमाम मुहम्मद बिन मुकर्रम मारूफ़ बह इब्न मंज़ूर — ७११
11. मा-त मसाइल — मुहम्मद इस्हाक़ मोहद्दिस देहलवी — १२६२
12. मसाइल अरबईं — मुहम्मद इस्हाक़ मोहद्दिस देहलवी — १२६२
13. माला बुद्दा मिन्हु — क़ाज़ी मुहम्मद सनाउल्लाह पानीपती — १२२५
14. मिश्कात अल-मसाबीह — अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अल-ख़तीब — ७४०
15. मुत्तसिक़ या दुर्र अल-मुंतका फ़ी शरह अल-मुल्तका — अला अल-दीन अल-हसकाफ़ी — १०८८
16. मौज़िह-उल-क़ुरान तर्जुमा क़ुरान — शाह अब्दुल क़ादिर बिन शाह वलीउल्लाह देहलवी — १२३०
17. मसनवी शरीफ़ फ़ारसी मंज़ूम — मुल्ला जलाल अल-दीन मुहम्मद बिन मुहम्मद अल-रूमी अल-बल्ख़ी अल-क़ोनवी — ७२२

18. मुस्तलहात अल-हदीस — अली बिन अल-सैय्यद मुहम्मद बिन अली अल-जुरजानी सैयद शरीफ़ — ८१६
19. अल-मक़ासिद फ़ी इल्म अल-कलाम — अल्लामा साद अल-दीन मसूद बिन उमर अल-तफ्ताज़ानी — ७९१
20. मुग़नी अल-मुस्तफ़ती अन सुआल अल-मुफ़्ती — अल्लामा हामिद अफ़ंदी — [कोई पृष्ठ नहीं]
21. मज़ाहिर-ए-हक़ तर्जुमा मिश्कात अल-मसाबीह — क़ुतुबुद्दीन देहलवी — १२८९
22. मिन्नत अल-जलील — इब्न आबिदीन मुहम्मद अमीन अफ़ंदी — १२५२
23. मिफ़्ताह अल-ग़ैब फ़ी शरह फ़ुतुह अल-ग़ैब — अब्दुल हक़ बिन सैफ़ अल-दीन मोहद्दिस देहलवी — १०५२

न (वर्णमाला) १२४. नाफ़े फ़ी अल-फ़ुरू — इमाम नासिर अल-दीन मुहम्मद बिन यूसुफ़ अल-समरकंदी — ४०२ १२४. नाफ़े फ़ी अल-फ़ुरू — इमाम नासिर अल-दीन मुहम्मद बिन यूसुफ़ अल-समरकंदी — ४०२

पृष्ठ ६८७/६८८

فتاوی رضویہ جلد دوازدہم

۱۰۱۔ مسند الکبیر فی الحدیث — ابو محمد عبید بن حمید الکشی — ۲۴۹ ۱۰۲۔ المنتقی فی احادیث الاحکام عن خیر الانام — احمد بن عبدالحلیم ابن تیمیہ — ۷۲۸ ۱۰۳۔ منظومۃ النسفی فی الخلاف — نجم الدین عمر بن محمد النسفی — ۵۳۷ ۱۰۴۔ معراج الدرایۃ فی شرح ہدایۃ — امام قوام الدین بن محمد الکاکی — ۷۳۹ ۱۰۵۔ المسند الصحیح في الحدیث — ابو عوانہ یعقوب بن اسحق الاسفرائنی — ۳۱۶ ۱۰۶۔ مسند الشامیین — — ۱۰۷۔ مدارج النبوۃ — شیخ عبدالحق محدث الدہلوی — ۱۰۵۲ ۱۰۸۔ مجمع البرکات — شیخ عبدالحق محدث الدہلوی — ۱۰۵۲ ۱۰۹۔ مناہل الصفا فی تخریج احادیث الشفاء — جلال الدین عبدالرحمن بن ابی بکر السیوطی — ۹۱۱ ۱۱۰۔ مختصر تاریخ ابن عساکر — امام محمد بن مکرم المعروف بابن منظور — ۷۱۱ ۱۱۱۔ مائۃ مسائل — محمد اسحق محدث دہلوی — ۱۲۶۲ ۱۱۲۔ مسائل اربعین — محمد اسحق محدث دہلوی — ۱۲۶۲ ۱۱۳۔ مالا بدمنہ — قاضی محمد ثناء اللہ پانی پتی — ۱۲۲۵ ۱۱۴۔ مشکوۃ المصابیح — ابو عبداللہ محمد بن عبداللہ الخطیب — ۷۴۰ ۱۱۵۔ متسق یادر منتقی فی شرح الملتقی — علاء الدین الحصفکی — ۱۰۸۸ ۱۱۶۔ موضح القرآن ترجمہ قرآن — شاہ عبدالقادر بن شاہ ولی اللہ الدہلوی — ۱۲۳۰ ۱۱۷۔ مثنوی شریف فارسی منظوم — ملا جلال الدین محمد بن محمد الرومی البلخی القونوی — ۷۲۲ ۱۱۸۔ مصطلحات الحدیث — علی بن السید محمد بن علی الجرجانی سید شریف — ۸۱۶ ۱۱۹۔ المقاصد فی علم الکلام — علامہ سعد الدین مسعود بن عمر التفتازانی — ۷۹۱ ۱۲۰۔ مغنی المستفتی عن سوال المفتی — علامہ حامد آفندی — ۱۲۱۔ مظاہر حق ترجمہ مشکوۃ المصابیح — قطب الدین دہلوی — ۱۲۸۹ ۱۲۲۔ منۃ الجلیل — ابن عابدین محمد امین آفندی — ۱۲۵۲ ۱۲۳۔ مفتاح الغیب فی شرح فتوح الغیب — عبدالحق بن سیف الدین محدث دہلوی — ۱۰۵۲

ن ۱۲۴۔ نافع فی الفروع — امام ناصر الدین محمد بن یوسف السمرقندی — ۴۰۲ ۱۲۴۔ نافع فی الفروع — امام ناصر الدین محمد بن یوسف السمرقندی — ۴۰۲

Volume 12 | Fatawa Razawiyya

125- Nayl al-Awtar Sharh Muntaqa al-Akhbar | Muhammad ibn Ali al-Shawkani | 1250 126- Nasihat al-Muslimin | Khurram Ali Bilhouri | 1217 127- Nafahat al-Uns min Hadarat al-Quds | Abdul Rahman ibn Ahmad al-Jami | 898 128- Naseem al-Riyadh fi Sharh Shifa Qadi Iyad | Qadi Iyad Ahmad ibn Muhammad al-Khafaji | 1069 129- Al-Nashr fil-Qira'at al-Ashr | Shams al-Din Muhammad ibn Muhammad ibn al-Jazari | 833 130- Nuzhat al-Nazar fi Tawdih Nukhbat al-Fikar | Ahmad ibn Ali Hajar al-Qastallani | 852 131- Naf' al-Mufti wal-Sa'il | Molvi Abdul Ali Madrasi | 1306 132- Nawadir al-Usul | Abu Abdullah Muhammad ibn Ali Hakim al-Tirmidhi | 255 133- Nisab al-Ihtisab fil-Fatawa | Umar ibn Muhammad ibn Awad al-Shami 134- Nur al-Shama'a fi Zafar al-Juma | Ali ibn Ghanim al-Maqdisi | 944 135- Nazm al-Fara'id wa Jam' al-Fawa'id fil-Usul | Abdur Rahim ibn Ali al-Rumi, known as Shaykh Zadeh 136- Nafi' Sharh Quduri 137- Nam-e-Haq | Sharaf al-Din Bukhari 138- Nata'ij al-Afkar fi Kashf al-Rumuz wal-Asrar | Shams al-Din Ahmad ibn Qurd, known as Qadi Zadeh | 988

Waw (Letter W)

139- Wafayat al-A'yan | Shams al-Din Ahmad ibn Muhammad ibn Khallikan | 681 140- Waqi'at al-Muftiyin | 325 141- Wafa al-Wafa | Nur al-Din Ali ibn Ahmad al-Samhudi | 911

He (Letter H)

142- Hawami' | Shah Waliullah ibn Shah Abdur Rahim al-Dahlawi | 1179 143- Hama'at | Shah Waliullah ibn Shah Abdur Rahim al-Dahlawi | 1179

Page 688 of 688

१२५- नैल अल-अवतार शरह मुंतका अल-अखबार | मुहम्मद बिन अली अल-शौकानी | १२५० १२६- नसीहत अल-मुस्लिमीन | खुर्रम अली बिलहोरी | १२१७ १२७- नफ़हात अल-उन्स मिन हज़रात अल-क़ुद्स | अब्दुर्रहमान बिन अहमद अल-जामी | ८९८ १२८- नसीम अल-रियाज़ फी शरह शिफ़ा क़ाज़ी इयाज़ | क़ाज़ी इयाज़ अहमद बिन मुहम्मद अल-खफ़ाजी | १०६९ १२९- अल-नश्र फिल-क़िरात अल-अश्र | शम्स अल-दीन मुहम्मद बिन मुहम्मद इब्न अल-जज़ारी | ८३३ १३०- नुज़हत अल-नज़र फी तौज़ीह नुखबत अल-फ़िकर | अहमद बिन अली हजर अल-क़स्तलानी | ८५२ १३१- नफ़ अल-मुफ्ती वल-साईल | मौलवी अब्दुल अली मद्रासी | १३०६ १३२- नवादिर अल-उसूल | अबू अब्दुल्ला मुहम्मद बिन अली हकीम अल-तिर्मिज़ी | २५५ १३३- निसाब अल-इहतिसाब फिल-फतावा | उमर बिन मुहम्मद बिन अवज़ अल-शमी १३४- नूर अल-शमा'अ फी ज़फ़र अल-जुमा | अली बिन गानिम अल-मक़दसी | ९४४ १३५- नज़्म अल-फ़रायद व जम अल-फ़वायद फिल-उसूल | अब्दुर्रहीम बिन अली अल-रूमी, जिन्हें शेख ज़ादा के नाम से जाना जाता है १३६- नाफ़े शरह कुदूरी १३७- नाम-ए-हक़ | शरफ़ अल-दीन बुखारी १३८- नताइज अल-अफ़कार फी कश्फ़ अल-रुमूज़ वल-असरार | शम्स अल-दीन अहमद बिन कुर्द, जिन्हें क़ाज़ी ज़ादा के नाम से जाना जाता है | ९८८

वाओ (अक्षर व)

१३९- वफ़यात अल-अयान | शम्स अल-दीन अहमद बिन मुहम्मद इब्न खल्लिकान | ६८१ १४०- वाकियात अल-मुफ्तीयीन | ३२५ १४१- वफ़ा अल-वफ़ा | नूर अल-दीन अली बिन अहमद अल-समहूदी | ९११

हे (अक्षर ह)

१४२- हवामिअ | शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुर्रहीम अल-दहलवी | ११७९ १४३- हमात | शाह वलीउल्लाह बिन शाह अब्दुर्रहीम अल-दहलवी | ११७९

पृष्ठ ६८८ में से ६८८

جلددو ازدہم | فتاوٰی رضویہ

۱۲۵- نیل الاوطار شرح منتقی الاخبار | محمد بن علی الشوکانی | ۱۲۵۰ ۱۲۶- نصیحۃ المسلمین | خرم علی بلہوری | ۱۲۱۷ ۱۲۷- نفحات الانس من حضرات القدس | عبد الرحمن بن احمد الجامی | ۸۹۸ ۱۲۸- نسیم الریاض فی شرح شفاء قاضی عیاض | قاضی عیاض احمد بن محمد الخفاجی | ۱۰۶۹ ۱۲۹- النشر فی قراۃ العشر | شمس الدین محمد بن محمد ابن الجزری | ۸۳۳ ۱۳۰- نزہۃ النظر فی توضیح نخبۃ الفکر | احمد بن علی حجر القسطلانی | ۸۵۲ ۱۳۱- نفع المفتی والسائل | مولوی عبدالعلی مدراسی | ۱۳۰۶ ۱۳۲- نوادر الاصول | ابو عبد اللہ محمد بن علی حکیم الترمذی | ۲۵۵ ۱۳۳- نصاب الاحتساب فی الفتاوٰی | عمر بن محمد بن عوض الشامی ۱۳۴- نورالشمعہ فی ظفر الجمعہ | علی بن غانم المقدسی | ۹۴۴ ۱۳۵- نظم الفرائد وجمع الفوائد فی الاصول | عبدالرحیم بن علی الرومی المعروف شیخ زادہ ۱۳۶- نافع شرح قدوری ۱۳۷- نام حق | شرف الدین بخاری ۱۳۸- نتائج الافکار فی کشف الرموز والاسرار | شمس الدین احمد بن قورد المعروف بقاضی زادہ | ۹۸۸

و

۱۳۹- وفیات الاعیان | شمس الدین احمد بن محمد ابن خلکان | ۶۸۱ ۱۴۰- واقعات المفتیین | ۳۲۵ ۱۴۱- وفاء الوفا | نور الدین علی بن احمد السمہودی | ۹۱۱

ھ

۱۴۲- ہوامع | شاہ ولی اللہ بن شاہ عبدالرحیم الدہلوی | ۱۱۷۹ ۱۴۳- ہمعات | شاہ ولی اللہ بن شاہ عبدالرحیم الدہلوی | ۱۱۷۹